BROWN
BOOK ONLY

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

# सांस्कृतिक साहित्य

سانسکرتک ساہتیہ

## हज़रत मोहम्मद और इसलाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल. मूल्य—तीन रुपया

इसलाम के पैग़म्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

## حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—پنڈت سندر لال' مولیہ—تین روپیہ

اسلام کے پیغمبر کے سمبندھ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اس سے سندر کوئی دوسری پستک نہیں

## हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पन्डित सुन्दरलाल. मूल्य—डेढ़ रुपया

## حضرت عیسیٰ اور عیسائی دھرم

لیکھک—پنڈت سندر لال' مولیہ—ڈیڑھ روپیہ

## महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे. क़ीमत—दो रुपया

## مہاتما زر تھسترا اور ایرانی سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے' قیمت—دو روپیہ

## यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे. क़ीमत—दो रुपया

## یہودی دھرم اور سامی سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے' قیمت—دو روپیہ

## प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे. क़ीमत—दो रुपया

## پراچین مصر کی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے' قیمت—دو روپیہ

## सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे. क़ीमत—दो रुपया

## سمیر' بابل اور اسوریا کی پراچین سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے' قیمت—دو روپیہ

## प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे. क़ीमत—दो रुपया

## پراچین یونانی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے' قیمت—دو روپیہ

## गंगा से गोमती तक

( प्रगतिशील कहानी संग्रह )

लेखक—श्री मुजीब रिज़वी. क़ीमत—दो रुपया

## گنگا سے گومتی تک

( پرگتی شیل کہانی سنگرہ )

لیکھک—شری مجیب رضوی' قیمت—دو روپیہ

## आग और आँसू

( भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ )

लेखक—डाक्टर अख़्तर हुसेन रायपुरी. क़ीमत—डेढ़ रुपया

## آگ اور آنسو

( بھاوپورن سماجک کہانیاں )

لیکھک—ڈاکٹر اختر حسین رائے پوری' قیمت - ڈیڑھ روپیہ

## क़ुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आज़ाद. क़ीमत—डेढ़ रुपया

## قرآن اور دھارمک مت بھید

لیکھک—مولانا ابوالکلام آزاد' قیمت—ڈیڑھ روپیہ

## झंकार

( प्रगतिशील कविताओं का संग्रह )

लेखक—रघुपति सहाय फ़िराक़. क़ीमत—तीन रुपया

## جھنکار

( پرگتی شیل کویتاؤں کا سنگرہ )

لیکھک—رگھوپتی سہائے فراق' قیمت—تین روپیہ

मिलने का पता ملنے کا پتہ

**हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी** ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145 مٹھی گنج' الہ آباد

को छोड़कर नये यार के साथ भाग जाय. इस तरह के अनेकों लोग हैं मगर इनमें कुछ का ज़िक्र मिसाल के तौर पर किया गया है कि हमारे साधन का चुनाव—कार्यकर्त्ता—बाक़ी सर्वोदय कार्यक्रम के रास्ते में रुकावट न डाले.

जब गान्धी जी ने सत्याग्रहियों के लिये एक आम मांग की तो उन्होंने कचेहरियां, कालेज और स्कूल छुड़वाये, ये सब न सिर्फ सर्वोदय समाज में न थे बल्कि 'सर्वोदय के विरोधी' थे और उनके बन्द होने से सर्वोदय की प्रगति हुई. मैं यहां इसका ज़िक्र कर दूं कि जब जब गान्धी जी ने आन्दोलन शुरू किये मुझे हर बार गान्धी जी से साफ आदेश मिले कि मैं जिस फर्ज को पूरा करने में लगा हुआ हूं उसे न छोड़ूँ. "गिरफ़्तार होने न जाओ न कोई क़ानून शिकनी करो. अगर तुम अपना फर्ज़ मुनासिब तरीक़े से अदा करोगे तो वे तुम्हें गिरफ़्तार करने के लिये मजबूर हो जायंगे." मैंने न कभी क़ानून शिकनी की और न गिरफ़्तार होने गया. और फिर भी मैं सात मर्तबा जेल गया. अगर सर्वोदय समाज रचना के लिये हमारा जीवन अर्पित है तो हमें किसी भी परिस्थिति में अपनी ज़िम्मेवारी की जगह छोड़कर न भागना चाहिये. किसी कार्यक्रम में लक्ष्य मुक़र्रर करने से ज़्यादा जोश पैदा होता है और तब इस क़िस्म की बातें होती हैं. हमें ऐसे प्रलोभनों से बचना चाहिये.

सर्वोदय में न कोई छोटा है न बड़ा. भंगी का काम भी अगर सच्ची सर्वोदय भावना से किया जाय तो उसकी अहमियत किसी भी काम के बराबर है. असली चीज़ अहिंसा है. उससे बढ़कर अहम और कोई चीज़ नहीं.

—जे. सी. कुमारप्पा



کو چھوڑ کر نئے یار کے ساتھ بھاگ جائے . اِس طرح کے انیکوں لوگ هیں مگر اِن کچھ کا ذکر مثال کے طور پر کیا گیا هے که همارے سادهن کا چناؤ—کاریه‌کرتا—باقی سرودے کاریه‌کرم کے راستے میں رکاوٹ نه ڈالے .

جب گاندھی جی نے ستیاگراهیوں کے لئے ایک عام مانگ کی تو اُنھوں نے کچہریاں، کالج اور اسکول چھڑوائے، یه سب نه صرف سرودے سماج میں نه تھے بلکه 'سرودے کے ورودھی' تھے اور انکے بند هونے سے سرودے کی پرگتی هوئی . میں یہاں اِسکا زکر کر دوں که جب جب گاندھی جی نے آندولن شروع کیئے مجھے هر بار گاندھی جی سے صاف آدیش ملے که میں جس فرض کو پورا کرنے میں لگا هوا هوں اُسے نه چھوڑوں . "گرفتار هونے نه جاؤ نه کوئی قانون شکنی کرو . اگر تم اپنا فرض مناسب طریقے سے اداکرو گے تو وے تمھیں گرفتار کرنے کے لئے مجبور هو جائیں گے." میں نے نه کبھی قانون شکنی کی اور نه گرفتار هونے گیا . اور پھر بھی میں سات مرتبه جیل گیا . اگر سرودے سماج رچنا کے لئے همارا جیون ارپت هے تو همیں کسی بھی پرستھتی میں اپنی زمه‌داری کی جگه چھوڑ کر نه بھاگنا چاهیئے . کسی کاریه کرم میں لکش مقرر کرنے سے زیادہ جوش وخروش پیدا هوتا هے اور تب اِس قسم کی باتیں هوتی هیں . همیں ایسے پرلوبھن سے بچنا چاهئے .

سرودے میں نه کوئی چھوٹا هے نه بڑا . بھنگی کا کام بھی اگر سچی سرودے بھاونا سے کیا جائے تو اُسکی اهمیت کسی بھی کام کے برابر هے . اصلی چیز اهنسا هے . اُس سے بڑھ کر اهم اور کوئی چیز نهیں .

—جے . سی . کمارپا

———

बात नहीं है कि एक बड़े किसान से भूमि लेकर उसे छोटे टुकड़ों में बांटकर व्यक्तिगत किसानों को दे दिया जाय. जमीन को जोतने वाले को कुछ वर्षों के लिये पट्टे पर देना चाहिये और उनके काम की सावधानी के साथ छानबीन करनी चाहिये. इस काम के लिये भी कार्य कर्त्ताओं की तालीम के लिये कृषि कालेजों की जरूरत है.

3. लोग शान्ति पूर्वक जमीन पर अपने स्वामित्व को छोड़ दें इसके लिये उन्हें समझाने की जरूरत है. समझाने बुझाने और लोगों के दिलों को बदलने के लिये भी हमें कार्य कर्त्ताओं की जरूरत होगी. इस लक्ष्य को हासिल करने के लिये शिक्षित कार्यकर्त्ता हमारे साधन हैं. इस बात के लिये भी हमें कृषि कालेजों की जरूरत है.

इस संक्षिप्त विश्लेषण से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि योजना की सफलता का सारा दारमदार कार्यकर्त्ता पर है. वक्त और विस्तार पर ज्यादा तवज्जह देने से हम हिंसा की तरफ़ बढ़ेंगे, लक्ष्य और निशाने (target) हिंसात्मक योजना के अंग हैं.

चूंकि कार्यकर्त्ता हमारे साधन हैं इसलिये समस्या का हल इस बात में है कि कैसे उन्हें पाया जाय. मौजूदा संस्थाओं में जो लोग काम कर रहे हैं उनसे हटाकर उन्हें इस काम में लगाने का अर्थ हिंसा है.

इस बात को साफ़ करने के लिये इस बात की इजाज़त होनी चाहिये कि मैं दो-एक नुमायां मिसालें दूं कि लोग भावावेश के कारण अपनी ज़िम्मेवारियों की जगहें छोड़ कर मौजूदा जरूरत की पूर्ति में लग गये ( मुझे विश्वास है कि सम्बन्धित व्यक्ति मुझे क्षमा करेंगे ). जीवनदान की पुकार पर श्रीमती आशा देवी आर्यनायकम उदार चित्त से आगे बढ़ीं और भूदान आन्दोलन के लिये उन्होंने अपनी सेवायें अर्पित कर दीं. क्या यह मुनासिब बात हुई ? क्या उनका जीवन पहले से ही बुनियादी तालीम के लिये अर्पित नहीं था ? नई तालीम सर्वोदय समाज रचना का एक अंग है. जब सर्वोदय समाज रचना में भूदान का सम्बन्ध उसके आर्थिक, सामाजिक, और राजनैतिग क्षेत्रों से है, भावी नागरिकों की रचना में बुनियादी तालीम सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अंशदान है. कौन ज्यादा जरूरी है ? बुनियादी तालीम का काम छोड़कर भूदान में लगना दरअस्ल एक पिछड़ा हुआ क़दम है. बाइबिल के लफ़्ज़ों को अगर हम इस्तेमाल करें तो यह होगा कि :— "बच्चों की रोटी लेकर उन्हें कुत्तों के आगे फेंकना मुनासिब नहीं है." इसी तरह से श्री शंकर राव देव और श्री अन्ना साहब सहस्रबुद्धे जो सर्व सेवा संघ में जरूरी जगहों पर काम कर रहे थे अपना काम छोड़ कर भूदान के काम में लग गये. यह तो वही बात हुई कि कोई पत्नी अपने विवाहित पति



بات نہیں هے که ایک بڑے کسان سے بھومی لیکر اُسے چھوٹے ٹکڑوں میں بانٹ کر ویکتی گت کسانوں کو دے دیاجائے. زمیں کو جوتنے والے کو کچھ ورشوں کے لئے پٹے پر دینا چاهیئے اور اُنکے کام کی ساودھانی کے ساتھ چھان بین کرنی چاهیئے. اِس کام کے لئے بھی کاریہ کرتاؤں کی تعلیم کے لیئے کرشی کالجوں کی ضرورت هے.

3. لوگ شانتی پوروک زمین پر اپنے سوامتو کو چھوڑ دیں اِسکے لئے اُنهیں سمجھانے بجھانے کی ضرورت هے. سمجھانے بجھانے اور لوگوں کے دلوں کو بدلنے کے لئے بھی همیں کریہ کرتاؤں کی ضرورت هوگی. اِس لکش کو حاصل کرنے کے لئے ٹرینڈ کاریہ کرتا همارا سادهن هے. اِس بات کے لیئے بھی همیں کرشی کالجوں کی ضرورت هے.

اِس سنکچھپت وشلیشن سے هم اِس نتیجے پر پہونچتے هیں که یوجنا کی سپھتا کا سارا دارومدار کاریہ کرتا پر هے. وقت اور وستار پر زیادہ توجه دینے سے هم هنسا کی طرف بڑھیں گے. لکش اور نشانے هنساتمک یوجنا کے انگ هیں.

چونکه کاریہ کرتا همارے سادهن هیں اِسلئے سمسیا کی جڑ اس بات میں هے که کیسے اُنهیں پایا جائے. موجودہ سنستھاؤں میں جو لوگ کام کر رهے هیں اُن سے هٹا کر انهیں اِس کام میں لگانے کا ارتھ هنسا هے.

اِس بات کو صاف کرنے کے لیئے اِس بات کی اجازت هونی چاهئے که میں دو ایک نمایاں مثالیں دوں که بھاواویش کے کارن اپنی زمهداریوں کی جگهیں چھوڑ کر موجودہ ضرورت کی پورتی میں لگ گئے ( مجھے وشواس هے که سمبندهت ویکتی مجھے چھما کریں گے ). جیون دان کی پکار پر شریمتی آشادیوی آریہ نائیکم اُدارچت سے آگے بڑھیں اور بھودان آندولن کے لئے انهوں نے اپنی سیوائیں ارپت کردیں. کیا یه مناسب بات هوئی؟ کیا اُنکا جیون پہلے سے هی بنیادی تعلیم کے لئے ارپت نهیں تھا؟ نئی تعلیم سرودے سماج رچنا کا ایک انگ هے. جبکه سرودے سماج رچنا میں بھودان کا سمبندھ اُسکے آرتھک، ساماجک اور راجنیتک چھیتروں سے هے، بھاوی ناگرکوں کی رچنا میں بنیادی تعلیم سانسکرتک اور ادھیاتمک انشدان هے. کون زیادہ ضروری هے؟ بنیادی تعلیم کا کام چھوڑ کر بھودان میں لگنا دراصل ایک پچھڑا هوا قدم هے بائبل کے لفظوں کو اگر هم استعمال کریں تو یه هوگا که :— "بچوں کی روٹی لیکر اُنهیں کتوں کے آگے پھینکنا مناسب نهیں هے." اِسی طرح سے شری شنکر راؤ دیو اور شری انا صاحب سهسربدھے جو سرو سیوا سنگھ میں ضروری جگهوں پر کام کر رهے تھے اپنا کام چھوڑ کر بھودان کے کام میں لگ گئے. یه تو وهی بات هوئی کی پتنی اپنے وواهت پتی

# भूदान : साध्य और साधन

अहिंसक समाज रचना में हमेशा जागरूक रहने की जरूरत है. इस बात को सदा याद रखना चाहिये कि हमारे साध्य और साधन क्या हैं. साध्य पर जरा ज्यादा जोर देने का नतीजा यह होगा कि मोह पैदा होगा और मोह से हिंसा पैदा होती है. भूदान आन्दोलन चूंकि सर्वोदय समाज रचना की एक जोरदार कोशिश है. इसलिये हमें उसके हर पहलू की होशियारी से जांच करनी चाहिये. उसके साध्य और साधनों को अलग करके हमेशा इस बात पर निगाह रखनी चाहिये कि हमारा उनकी तरफ़ क्या रवइया हो.

भूदान के साध्य ( ends ) और साधनों ( means ) का हम इस प्रकार वर्गीकरण कर सकते हैं :

(1) आर्थिक— साध्य :—ग़रीबी को दूर करना.
साधन :—जमीन का मुनासिब बटवारा और उचित पैदावार.

(2) सामाजिक—साध्य :—सम्पत्ति का स्वामी व्यक्ति के बजाय समाज को बनाना.
साधन—सम्पत्ति का फिर से वितरण.

(3) राजनैतिक—साध्य :—अहिंसक उपायों से भूमि का स्वामित्व बदलना. (भूमि हीनों को भूमि का स्वामी बनाना).
साधन :—समझा बुझा करलोगों के विचारों और दृष्टि कोण को बदलना.

साध्य को समझने के लिये सफ़ाई से देखने की जरूरत है. अगर हम मुनासिब साधन बरतेंगे तो साध्य अपने आप ठीक रहेंगे.

इसलिये हम यहां साधनों के सम्बन्ध में ही विचार करेंगे :

1. भूमि का उचित इस्तेमाल करके ही हम ग़रीबी को दूर कर सकते हैं. जब हम नियात यानी बाहर भेजने के लिये या मिलों के लिये माल का उत्पादन करते हैं तो हम बेकारी को बढ़ाते हैं, ग़रीबी को बढ़ाते हैं और मुसीबतों को बढ़ाते हैं. इसलिये हमें स्वावलम्बन के उसूल को सामने रखकर मुक़ामी जरूरतों को पूरा करने के लिहाज से पैदावार पर जोर देना चाहिये. किसानों और कार्यकर्त्ताओं को इस कार्यक्रम की तफ़सील पर तालीम देने के लिये कृषि कालेजों और प्रदर्शन केन्द्रों की हमें बेहद जरूरत है.

2. इस समय खेतों के मालिक व्यक्तिगत लोग हैं. हमें इसमें तब्दीली करनी है. भूमि किसी की जाती मिल्कीयत नहीं होनी चाहिये, चाहे छोटी हो या बड़ी. यह कोई मुनासिब



# بھودان : سادھیہ اور سادھن

اہنسک سماج رچنا میں ھمیشہ جاگروک رھنے کی ضرورت ھے. اِس بات کر سدا صاف رکھنا چاھیئے کہ ھمارے سادھیہ اور سادھن کیا ھیں. سادھیہ پر ذرا زیادہ زور دینے کا نتیجہ یہ ھوگا کہ موہ پیدا ھوگا اور موہ سے ھنسا پیدا ھوتی ھے. بھودان آندولن چونکہ سرووِدے سماج رچنا کی ایک زوردار کوشش ھے اِسلئے ھمیں اُسکے ھر پہلو کی ھوشیاری سے جانچ کرنی چاھیئے اُسکے سادھیہ اور سادھنوں کو الگ کر کے ھمیشہ اِس بات پر نگاہ رکھنی چاھیئے کہ ھمارا اُنکی طرف کیا رویہ ھو.

بھودان کے سادھیہ ( ends ) اور سادھنوں ( means ) کا ھم اِس پرکار ورگی کرن کر سکتے ھیں :

(1) ارتھک — سادھیہ :—غریبی کو دور کرنا.
سادھن :—زمین کا مناسب بٹوارہ اور اُچت پیداوار.

(2) ساماجک—سادھیہ :—سمپتی کا سوامی ویکتی کے بجائے سماج کو بنانا.
سادھن—سمپتی کا پھر سے وترن.

(3) راجنیک — سادھیہ :—اھنسک اُپایوں سے بھومی کا سوامتو بدلنا. ( بھومی ھینوں کو بھومی کا سوامی بنانا ).
سادھن :—لوگوں کے وچاروں اور درشٹی کون کو سمجھا بجھا کر بدلنا.

سادھیہ کو سمجھنے کے لئے صفائی سے دیکھنے کی ضرورت ھے اور سادھنوں کی پوترتا کو دھیان میں رکھنے کی ضرورت ھے. اگر ھم مناسب سادھن برتینگے تو سادھیہ اپنے آپ ٹھیک رھیں گے.

اسلئے ھم یہاں سادھنوں کے سمبندھ میں ھی وچار کرینگے :

1. بھومی کا اُچت استعمال کر کے ھی ھم غریبی کو دور کر سکتے ھیں، جب ھم نریات یعنی باھر بھیجنے کے لئے یا ملوں کے لئے مال کا اُتپادن کرتے ھیں تو ھم بیکاری کو بڑھاتے ھیں، غریبی کو بڑھاتے ھیں اور مصیبتوں کو بڑھاتے ھیں. اِسلئے ھمیں سواولمبن کے اصول کو سامنے رکھکر مقامی ضرورتوں کو پورا کرنے کے لحاظ سے پیداوار پر زور دینا چاھیئے. کسانوں اور کاریہ کرتاؤں کو اس کاریہ کرم کی تفصیل پر تعلیم دینے کے لیئے کرشی کالجوں اور پردرشن کیندروں کی ھمیں بے حد ضرورت ھے.

2. اس سمے کھیتوں کے مالک ویکتی گت لوگ ھیں. ھمیں اِسمیں تبدیلی کرنی ھے. بھومی کسی کی ذاتی ملکیت نہیں ھونی چاھئے چاھے چھوٹی ھو یا بڑی. یہ کوئی مناسب

## हमारी राय

दोनों प्रधान मंत्रियों ने यह विश्वास प्रकट किया कि रूस और भारत दोनों के बीच कल्चरी, आर्थिक, तिजारती, साइन्सी और तकनीकी सहयोग और लेन देन बराबर बढ़ता रहेगा. कुछ दिन पहले जो तिजारती समझौता रूस और भारत के बीच हुआ था उसकी और जो फ़ौलाद का नया कारख़ाना भारत में खड़ा करने का रूस ने वादा किया है इन दोनों की भी सराहना की गई. दोनों प्रधान मंत्रियों को विश्वास है कि इस तरह मिलकर काम करने से रूस और भारत दोनों का भला होगा.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने अपने इस मिलन पर ख़ुशी ज़ाहिर की और पक्का विश्वास ज़ाहिर किया कि इन दोनों देशों और उनकी जनता के बीच प्रेम और दोस्ती बढ़ती रहेगी जिस से दुनिया की अमन तहरीक को बहुत बड़ी शक्ति मिलेगी.

प्रधान मंत्री बुलगेनिन और प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू का यह एलान दुनिया की तमाम पिछड़ी हुई और कमज़ोर क़ौमों के दिलों को साहस और आशा से भर देगा, क़ौमी आज़ादी की तहरीकों को हर जगह बढ़ावा देगा और जंग के ख़तरे से दुनिया को बचाने में बहुत बड़ा काम करेगा. दुनिया के अमन के लिये सब से बड़ी ज़रूरत इसी चीज़ की है कि कोई किसी दूसरे के अन्दरूनी मामलों में दख़ल न दे. सब अपने अपने घरों में आज़ाद और बाहर दुनिया में एक दूसरे के साथ मिलकर प्रेम और अमन के साथ रहें. किसी देश में किसी दूसरे देश के फ़ौजी अड्डे न हों. कोई किसी देश के दो दलों में से किसी एक को अपनी फ़ौजों या जंगी बेड़ों से मदद न दे. दुनिया की फ़ौजी और जंगी गुट्टें टूटें. सब सब के भले में अपना भला समझें, सब की आज़ादी में अपनी आज़ादी और सब की बहबूदी में अपनी बहबूदी. इसमें हम काले या गोरे, एशिया या यूरप, पूरब या पच्छिम, कम्युनिस्ट या ग़ैर कम्युनिस्ट का कोई फ़र्क़ नहीं करते. दुनिया के इस हालत तक पहुंचने के लिये आज सबसे बड़ी ज़रूरत इसी चीज़ की है कि यह तीन बड़े मुल्क, रूस, चीन और हिन्दुस्तान, जिनकी सरहदें मिली हुई हैं और जिनमें दुनिया की आधे से ज्यादा आबादी रहती है एक दूसरे के साथ मिलकर आज़ादी बराबरी और इनसानी भाईचारे के नाम पर खड़े हों. दुनिया के अमन और सब के भले की यही सबसे बड़ी गारंटी हो सकती है. हम रूस और हिन्दुस्तान दोनों देशों, वहां की जनता और वहां की सरकारों को इस तारीख़ी एलान पर दिल से बधाई देते हैं.

24. 6. 55. —सुन्दरलाल

## ھماری رائے

دونوں پردھان منتریوں نے یہ وشواس پرگٹ کیا کہ روس اور بھارت دونوں کے بیچ کلچری، آرتھک، تجارتی، سائنسی اور ٹکنیکی سہیوگ اور لین دین برابر بڑھتا رھےگا۔ کچھ دن پہلے جو تجارتی سمجھوتا روس اور بھارت کے بیچ ھوا تھا اُس کی اور جو وعدہ فولاد کا نیا کارخانہ بھارت میں کھڑا کرنے کا روس نے کیا ھے اِن دونوں کی بھی سراھنا کی گئی۔ دونوں پردھان منتریوں کو وشواس ھے کہ اس طرح ملکر کام کرنے سے روس اور بھارت دونوں کا بھلا ھوگا۔

دونوں پردھان منتریوں نے اپنے اس ملن پر خوشی ظاھر اور کی پکا وشواس ظاھر کیا کہ اِن دونوں دیشوں اور اُن کی جنتا کے بیچ پریم اور دوستی بڑھتی رھے گی جس سے دنیا کی امن تحریک کو بہت بڑی شکتی ملے گی۔

پردھان منتری بلگینن اور پردھان منتری جواھرلال نہرو کا یہ اعلان دنیا کی تمام پچھڑی ھوئی اور کمزور قوموں کے دلوں کو ساھس اور آشا سے بھر دیگا، قومی آزادی کی تحریکوں کو ھر جگہ بڑھاوا دیگا اور جنگ کے خطرے سے دنیا کو بچانے میں بہت بڑا کام کرےگا۔ دنیا کے امن کے لئے سب سے بڑی ضرورت اِسی چیز کی ھے کہ کوئی کسی دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دے۔ سب اپنے اپنے گھروں میں آزاد اور باھر دنیا میں ایک دوسرے کے ساتھ ملکر پریم اور امن کے ساتھ رھیں۔ کسی دیش میں کسی دوسرے دیش کے فوجی اڈے نہ ھوں۔ کوئی کسی دیش کے دو دلوں میں سے کسی ایک کو اپنی فوجوں یا جنگی بیڑوں سے مدد نہ دے۔ دنیا کی فوجی اور جنگی گٹھ ٹوٹیں۔ سب سب کے بھلے میں اپنا بھلا سمجھیں، سب کی آزادی میں اپنی آزادی اور سب کی بہبودی میں اپنی بہبودی۔ اِس میں ھم کالے یا گورے، ایشیا یا یورپ، پورب یا پچھم، کمیونسٹ یا غیر کمیونسٹ کا کوئی فرق نہیں کرتے۔ دنیا کے اِس حالت تک پہنچنے کے لئے آج سب سے بڑی ضرورت اِسی چیز کی ھے کہ یہ تین بڑے ملک—روس، چین اور ھندستان—جن کی سرحدیں ملی ھوئی ھیں اور جن میں دنیا کی آدھے سے زیادہ آبادی رھتی ھے، ایک دوسرے کے ساتھ ملکر آزادی، برابری اور انسانی بھائی چارے کے نام پر کھڑے ھوں دنیا کے امن اور سب کے بھلے کی یہی سب سے بڑی گارنٹی ھو سکتی ھے۔ ھم روس اور ھندستان دونوں دیشوں، وھاں کی جنتا اور وھاں کی سرکاروں کو اِس تاریخی اعلان پر دل سے بدھائی دیتے ھیں۔

—سندرلال 24. 6. 55

दोनों प्रधान मंत्रियों ने यह राय भी जाहिर की कि बावजूद ऊपर की सब बातों के अंतर राष्ट्रीय तनाव के कई कारन ख़ास कर एशिया में अभी तक मौजूद हैं. उन्हों ने यह उम्मीद जाहिर की कि नए चीनी जनराज का ताईवान यानी फ़ारमूसा पर जो जायज़ हक़ है वह उसे शान्ति के उपायों से मिल सकेगा. दोनों ने अपना यह विश्वास भी दुहराया कि नए चीनी जनराज को यू-एन-ओ. यानी संयुक्त राष्ट्र संघ में लेने से कुछ क़ौमों का लगातार इनकार करना दुनिया की बहुत सी मुसीबतों की जड़ है. उन्होंने जोर दिया कि नए चीनी जनराज को यू. एन. ओ. में मुनासिब जगह मिलने पर ही यू. एन. ओ. का अधिकार पक्का और उसका काम पूरा हो सकता है.

हिन्द चीन की बाबत जनीवा कान्फ़रेंस के फ़ैसलों की सराहना करते हुए दोनों प्रधान मंत्रियों ने उन फ़ैसलों पर ठीक ठीक अमल कराने के लिये अपनी दोनों की ख़ास जिम्मेदारी का एलान किया और यह कहा कि कुछ लोगों की नई हरकतों से उस अमल दरामद में रुकावटें पैदा हो जाने का डर है. उन्होंने उन सब सरकारों पर जिनका हिन्द चीन के मामले से कुछ भी सम्बन्ध है जोर दिया कि वह इस मामले में अपनी अपनी जिम्मेदारियों को ठीक ठीक पूरा करें ताकि हिन्द चीन के सम्बन्ध में जनीवा कान्फ़रेंस के फ़ैसले कामयाब हो सकें. उन्हों ने ख़ासकर इस बात पर जोर दिया कि हिन्द चीन में जहां जहां चुनाव होने वाले हैं वहां वहां सब सरकारों का फ़र्ज़ है कि इस बात की पूरी कोशिश करें कि जनीवा के फ़ैसलों पर अमल करने में कोई रुकावट पैदा होने न पावे.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने यह विचार प्रकट किया कि तरह तरह के हथियार और जंग के सामान, मामूली और ऐटमी, तैयार करते जाने की प्रवृत्ति से क़ौमों के अन्दर एक दूसरे से डर और अविश्वास बढ़ता जा रहा है, जिससे क़ौमों के वह साधन जो जनता को ऊपर उठाने में ख़र्च होने चाहिएं थे जंग की तैयारियों में ख़र्च हो रहे हैं. इस लिये दोनों प्रधान मंत्रियों की राय है कि न्युक्लीयर और थरमो न्युक्लीयर हथियारों (ऐटम बम हाइड्रोजन बम वग़ैरा) के तैयार करने, उनके तजुरबे करने और उनके इस्तेमाल करने पर पूरी पूरी रोक लगा दी जावे और साथ ही मामूली हथियारों और लड़ाई के सामान में भी सब मुल्कों के अन्दर एक साथ जबरदस्त कमी की जावे और इन बातों पर अमल कराने के लिये एक मज़बूत अन्तर राष्ट्रीय संगठन क़ायम किया जावे. जंग के हथियारों की इस मनाही और रोक थाम के लिये सोवियत रूस की हाल की तजवीज़ों की तरफ़ भी दुनिया का ध्यान दिलाया गया है.



دونوں پردھان منتریوں نے یہ رائے بھی ظاھر کی کہ باوجود اُوپر کی سب باتوں کے انتر راشٹریہ تناؤ کے کئی کارن خاص کر ایشیا میں ابھی تک موجود ھیں ۔ اُنھوں نے یہ اُمید ظاھر کی کہ نئے چینی جن راج کا تائی‌وان یعنی فارموسا پر جو جائز حق ھے وہ اُسے شانتی کے اُپایوں سے مل سکے‌گا ۔ دونوں نے اپنا یہ وشواس بھی دھرایا کہ نئے چینی جن راج کو یو-این-او یعنی سنیکت راشٹر سنگھ میں لینے سے کچھ قوموں کا لگاتار انکار کرنا دنیا کی بہت سی مصیبتوں کی جڑ ھے. اُنھوں نے زور دیا کہ نئے چینی جن راج کو یو - این - او میں مناسب جگہ ملنے پر ھی یو - این- او کا ادھیکار پکا اور اُس کا کام پورا ھو سکتا ھے ۔

ھند چین کی بابت جنیوا کانفرنس کے فیصلوں کی سراھنا کرتے ھوئے دونوں پردھان منتریوں نے اُن فیصلوں پر ٹھیک ٹھیک عمل کرنے کے لئے اپنی دونوں کی خاص ذمہ‌داری کا اعلان کیا اور یہ کہا کہ کچھ لوگوں کی نئی حرکتوں سے اُس عمل درآمد میں رکاوٹیں پیدا ھو جانے کا ڈر ھے ۔ اُنھوں نے اُن سب سرکاروں پر جن کا ھند چین کے معاملے سے کچھ سمبندھ ھے زور دیا کہ وہ اِس معاملے میں اپنی اپنی ذمہ‌داریوں کو ٹھیک ٹھیک پورا کریں تاکہ ھند چین کے سمبندھ میں جنیوا کانفرنس کے فیصلے کامیاب ھو سکیں ۔ اُنھوں نے خاص کر اِس بات پر زور دیا کہ ھند چین میں جہاں جہاں چناؤ ھونے والے ھیں وھاں وھاں سب سرکاروں کا فرض ھے کہ اس بات کی پوری کوشش کریں کہ جنیوا کے فیصلوں پر عمل کرنے میں کوئی رکاوٹ پیدا ھونے نہ پاوے ۔

دونوں پردھان منتریوں نے یہ وچار پرگٹ کیا کی طرح طرح کے ھتھیار اور جنگ کے سامان، معمولی اور ایٹمی، تیار کرتے جانے کی پرورتی سے قوموں کے اندر ایک دوسرے سے ڈر اور اَوشواس بڑھتا جا رھا ھے، جس سے قوموں کے وہ سادھن جو جنتا کو اُوپر اُٹھانے میں خرچ ھونے چاھئیں تھے جنگ کی تیاریوں میں خرچ ھو رھے ھیں ۔ اِس لئے دونوں پردھان منتریوں کی رائے ھے کہ نیوکلیر اور تھرمو نیوکلیر ھتھیاروں ( ایٹم بم ھائڈروجن بم وغیرہ ) کے تیار کرنے، اُن کے تجربے کرنے اور اُن کے استعمال کرنے پر پوری پوری روک لگادی جاوے اور ساتھ ھی معمولی ھتھیاروں اور لڑائی کے سامان میں بھی سب ملکوں کے اندر ایک ساتھ زبردست کمی کی جاوے اور اِن باتوں پر عمل کرانے کے لئے ایک مضبوط انترراشٹریہ سنگٹھن قائم کیا جاوے جنگ کے ھتھیاروں کی اِس مناھی اور روک تھام کے لئے سوویت روس کی حال کی تجویزوں کی طرف بھی دنیا کا دھیان دلایا گیا ھے ۔

और एक दूसरे को ठीक ठीक समझने की पक्की बुनियादों पर क़ायम है और क़ायम रहेगा.

दोनों ने पंच शील के मशहूर पाँच सिद्धान्तों पर अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर की. जिन शब्दों में यह पाँच सिद्धान्त एलान के अन्दर दुहराए गए हैं वह यह हैं :—

(1) एक दूसरे के देशों की अखंडता और कामिल आज़ादी की इज़्ज़त करना.

(2) किसी का दूसरे पर हमला न करना.

(3) किसी का दूसरे के अन्दरूनी मामलों में किसी वजह से भी, चाहे वह वजह आर्थिक हो या राजनैतिक या विचारों या आदर्शों सम्बन्धी, किसी तरह का दख़ल न देना.

(4) बराबरी और एक दूसरे के फ़ायदे को हमेशा निगाह में रखना.

और (5) अमन के साथ मिलकर रहना.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने यह पक्का विश्वास प्रकट किया कि दुनिया की क़ौमों के दिमाग़ों से एक दूसरे के डर और बेएतबारी को मिटाने और क़ौमों क़ौमों के बीच के आपसी तनाव को कम करने की सब से बड़ी उम्मीद इसी बात पर है कि सब क़ौमें एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखने में इन उसूलों पर अमल करें.

दोनों ने यह भी कहा कि शान्ति की जो फ़िज़ा सब के इन उसूलों पर अमल करने से पैदा होगी उस फ़िज़ा में ही आज कल के अन्तरराष्ट्रीय सवालों का हल आपसी समझौतों और शान्ति के तरीक़ों से मुमकिन हो सकता है.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने यह एलान किया कि दुनिया के बहुत से हिस्सों में छोटी और कमज़ोर क़ौमों के दिलों में दूसरी ताक़तों से जो डर बैठा हुआ है उसे दूर करना ज़रूरी है और उसे दूर करने का तरीक़ा भी मिल कर रहने के इन्हीं पाँच उसूलों पर अमल करना है.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने अप्रैल सन् 1955 की बान्डुंग की एशियन अफ़रीकन कान्फ़्रेंस और उसके फ़ैसलों की सराहना की और यह राय ज़ाहिर की कि उस कान्फ़्रेंस के फ़ैसलों से दुनिया की शान्ति को बहुत बड़ी मदद मिलेगी.

दोनों ने इन बातों पर ख़ुशी ज़ाहिर की कि पूरबी और दक्खिन पूरबी एशिया में तनाव कम हो रहा है, यूरप में आस्ट्रिया एक अखंड और आज़ाद देश मान लिया गया है, सोवियत रूस और यूगोसलाविया में फिर से प्रेम सम्बन्ध क़ायम हो गया है. और इस ऐटमी ज़माने में जंग के ख़तरों को लगभग सब देशों के लोग पूरी तरह महसूस करने लगे हैं.



ایک دوسرے کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کی پکی بنیادوں پر قائم ھے اور قائم رھےگا .

دونوں نے پنچ شیل کے مشہور پانچ سدھانتوں پر اپنی رضامندی ظاھر کی . جن شبدوں میں یہ پانچ سدھانت اعلان کے اندر دھرائے گئے ھیں وہ یہ ھیں :—

( 1 ) ایک دوسرے کے دیشوں کی اکھنڈتا اور کامل آزادی کی عزت کرنا .

( 2 ) کسی کا دوسرے پر حملہ نہ کرنا .

( 3 ) کسی کا دوسرے کے اندرونی معاملوں میں کسی وجہ سے بھی، چاھے وہ وجہ آرتھک ھو یا راجنیتک وچاروں یا آدرشوں سمبندھی کسی طرح کا دخل نہ دینا .

( 4 ) برابری اور ایک دوسرے کے فائدے کو ھمیشہ نگاہ میں رکھنا اور .

( 5 ) امن کے ساتھ مل کر رھنا .

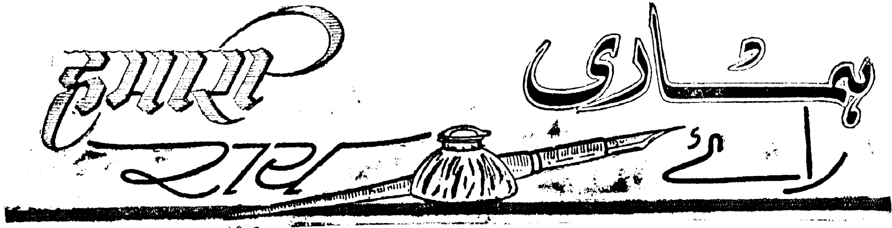
دونوں پردھان منتریوں نے یہ پکا وشواس پرکٹ کیا کہ دنیا کی قوموں کے دماغوں سے ایک دوسرے کے ڈر اور بےاعتباری کو مٹانے اور قوموں قوموں کے بیچ کے آپسی تناؤ کو کم کرنے کی سب سے بڑی امید اسی بات پر ھے کہ سب قومیں ایک دوسرے کے ساتھ سمبندھ رکھنے میں ان اصولوں پر عمل کریں .

دونوں نے یہ بھی کہا کہ شانتی کی جو فضا سب کے ان اصولوں پر عمل کرنے سے پیدا ھوگی اُس فضا میں ھی آجکل کے انترراشٹریہ سوالوں کا حل آپسی سمجھوتوں اور شانتی کے طریقوں سے ممکن ھو سکتا ھے .

دونوں پردھان منتریوں نے یہ اعلان کیا کہ دنیا کے بہت سے حصوں میں چھوٹی اور کمزور قوموں کے دلوں میں دوسری طاقتوں سے جو ڈر بیٹھا ھوا ھے اُسے دور کرنا ضروری ھے اور اُسے دور کرنے کا طریقہ بھی مل کر رھنے کے ان ھی پانچ اصولوں پر عمل کرنا ھے .

دونوں پردھان منتریوں نے اپریل سن 1955 کی بانڈونگ کی ایشین افریقن کانفرنس اور اُس کے فیصلوں کی سراھنا کی اور یہ رائے ظاھر کی کہ اُس کانفرنس کے فیصلوں سے دنیا کی شانتی کو بہت بڑی مدد ملےگی .

دونوں نے ان باتوں پر خوشی ظاھر کی کہ پوربی اور دکھن پوربی ایشیا میں تناؤ کم ھو رھا ھے، یورپ میں آسٹریا ایک اکھنڈ اور آزاد دیش مان لیا گیا ھے، سوویت روس اور یوگوسلاویا میں پھر سے پریم سمبندھ قائم ھو گیا ھے اور اس ایٹمی زمانے میں جنگ کے خطروں کو لگ بھگ سب دیشوں کے لوگ پوری طرح محسوس کرنے لگے ھیں .




## रूस, चीन और हिन्दुस्तान

आज कल की हालत में रूस, चीन और हिन्दुस्तान की दोस्ती न केवल इन तीनों देशों की भलाई, बहबूदी और सलामती के लिये ही जरूरी है बल्कि दुनिया के दूसरे देशों खासकर एशिया और अफ़रीका के पिछड़े हुए देशों की आजादी, तरक्क़ी और सलामती के लिये भी उतनी ही जरूरी है, चीन के प्रधान मंत्री श्री चाऊ एन. लाई के भारत आने और भारत के प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के चीन जाने ने चीन और भारत की दोस्ती को अनन्त काल के लिये पक्का कर दिया और दोनों देशों की करोड़ों जनता के दिलों में प्रेम और एकता की वह सद्-भावनाएं जगा दीं जिन्हों ने दुनिया की पिछड़ी हुई क़ौमों में एक नई रूह फूंक दी. हाल में प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू का जिस प्रेम, उत्साह, उमंग, जोश और खुलूस के साथ रूस की करोड़ों जनता ने जगह जगह स्वागत किया उसकी खबरें दुनिया भर के अखबारों में छप चुकी हैं. कहा जाता है कि एक जगह नहीं अनेक जगह रूसी जनता के प्रेम को देख कर जवाहर लाल जी की आँखों से आँसू छलक पड़े. उनके रूस छोड़ने से पहले रूस के प्रधान मंत्री मारशल बुलगेनिन और भारत के प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू के दसखत से जो एलान दुनिया भर के अखबारों में शाये हुआ है वह हमारी राय में अभी तक इस सदी का सब से बड़ा तारीखी एलान है. उस एलान की खास खास बातें यह हैं :—

प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के रूस की राज-धानी मास्को में रहने के दिनों में प्रधान मंत्री श्री बुलगेनिन और रूसी सरकार के दूसरे मेम्बरों के साथ दोनों देशों के आपसी सम्बन्ध और दुनिया की आज कल की अंतर राष्ट्री स्थिति पर जवाहर लाल जी की अनेक बार खूब दिल खोल कर और दोस्ताना ढंग से बातें हुईं.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने इस बात पर खुशी जाहिर की कि सोवियत रूस और हिन्दुस्तान के बीच सम्बन्ध दोस्ती

## روس' چین اور ھندستان

آجکل کی حالت میں روس' چین اور ھندستان کی دوستی نہ کیول اِن تینوں دیشوں کی بھلائی' بہبودی اور سلامتی کے لئے ھی ضروری ھے بلکہ دنیا کے دوسرے دیشوں' خاص کر ایشیا اور افریقہ کے پچھڑے ھوئے دیشوں کی آزادی' ترقی اور سلامتی کے لئے بھی اُتنی ھی ضروری ھے . چین کے پردھان منتری شری چاؤ : این - لائی کے بھارت آنے اور بھارت کے پردھان منتری شری جواھر لال نہرو کے چین جانے نے چین اور بھارت کی دوستی کو آننت کال کے لئے پکہ کر دیا اور دونوں دیشوں کی کروڑوں جنتا کے دلوں میں پریم اور ایکتا کی وہ سدبھاونائیں جگادیں جنھوں نے دنیا کی پچھڑی ھوئی قوموں میں ایک نئی روح پھونک دی . حال میں پردھان منتری شری جواھرلال نہرو کا جس پریم' اُتساہ' اُمنگ' جوش اور خلوص کے ساتھ روس کی کروڑوں جنتا نے جگہ جگہ سواگت کیا اُس کی خبریں دنیا بھر کے اخباروں میں چھپ چکی ھیں . کہا جاتا ھے کہ ایک جگہ نہیں آنیک جگہ روسی جنتا کے پریم کو دیکھ کر جواھرلال جی کی آنکھوں سے آنسو چھلک پڑے. اُن کےروس چھوڑنے سے پہلے روس کے پردھان منتری مارشل بلگینن اور بھارت کے پردھان منتری جواھرلال نہرو کے دستخط سے جو اعلان دنیا بھر کے اخباروں میں شائع ھوا ھے وہ ھماری رائے میں ابھی تک اِس صدی کا سب سے بڑا تاریخی اعلان ھے . اُس اعلان کی خاص خاص باتیں یہ ھیں :—

پردھان منتری شری جواھرلال نہرو کے روس کی راجدھانی ماسکو میں رھنے کے دنوں میں پردھان منتری شری بلگینن اور روسی سرکار دوسرے ممبروں کے ساتھ دونوں دیشوں کے آپسی سمبندھ اور دنیا کی آجکل کی انتر راشٹریہ استھتی پر جواھرلال جی کی انیک بار خوب دل کھول کر اور دوستانہ ڈھنگ سے باتیں ھوئیں .

دونوں پردھان منتریوں نے اس بات پر خوشی ظاھر کی کہ سوویت روس اور ھندستان کے بیچ سمبندھ دوستی اور

सात अध्याय हैं—खानपान, पहनावा, खेती, उद्योग धन्धे, व्यापार और व्यवसाय. सब पर सर्वोदय की दृष्टि से विचार किया गया है.

दूसरी पुस्तक में सर्वोदय के उसूलों से शोषण हीन समाज व्यवस्था कैसे क़ायम की जा सकती है और उसे अमल में लाने के लिये सर्वोदयवादी राज व्यवस्था कैसे क़ायम हो सकती है इस पर विस्तार से विचार किया गया है. पुस्तक चार खंडों में है. पहला खंड है राजनीति और गान्धी जी, दूसरा खंड है—सर्वोदय में समाज का आदर्श, तीसरे खंड में है—सर्वोदय में राज्य का स्वरूप और चौथे खंड में है—सर्वोदय में राज्य गठन. पुस्तक में दिये हुये लेखक के विचार मनन करने योग्य हैं.

तीसरी पुस्तक में लेखक ने सर्वोदय विचार धारा के प्रचार के लिये जो यात्रा की उसका वर्णन है.

'चौथी पुस्तक प्राकृतिक चिकित्सा ही क्यों' में कुछ रोगियों का ज़िक्र है जो मेहन स्नान, कटि स्नान, मिट्टी और पानी की पट्टी के इलाज से अच्छे हुये. आख़री 24 सफ़ों में प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तों की चर्चा की गई है.

पाँचवीं पुस्तक में 290 सफ़ों में भारत के विधान की विस्तार से चरचा की गई है और पचास सफ़ों में सर्वोदय की दृष्टि से उसकी आलोचना की गई है.

छठवीं पुस्तक में भूदान, एक ही वर्ग—श्रमिक वर्ग, ग्रामोद्योग, मर्यादित यंत्रोद्योग, व्यापार—संस्थागत आदि नियमों पर सर्वोदय की दृष्टि से विचार किया गया है.

## मेरा साहित्यिक जीवन

लेखक श्री भगवान दास केला; छापने वाले—ऊपर के वही, दाम तीन रुपये, सफ़े 268.

केला जी शिक्षक, लेखक, साहित्य सेवी, समाज सेवी, सभी कुछ रहे हैं. अपने विचारों और अनुभवों को उन्होंने दर्जनों पुस्तकों द्वारा पाठकों को उपहार में दिया है. उनके विचारों के पीछे जो जीवन दर्शन है उस पर उनकी इस आत्मकथा से काफ़ी रोशनी पड़ती है. साहित्यिकों के लिये यह पुस्तक प्रोत्साहन देने वाली है.

—वि. ना. पा.



سات ادھیائے ھیں—کھان پان' پہناوا' کھیتی' اُدیوگ دھندھے' وہاپار اور ویوسائے . سب پر سرووِدے کی درشٹی سے وچار کیا گیا ھے .

دوسری پستک میں سرووِدے کے اُصولوں سے شوشن ھین سماج ویوستھا کیسے قائیم کی جا سکتی ھے اور اُسے عمل میں لانے کے لئیے سرووِدےوادی راج ویوستھا کیسے قائیم کی جا سکتی ھے اس پر وستار سے وچار کیا گیا ھے . پستک چار کھنڈوں میں ھے پہلا کھنڈ ھے راج نیتی اور گاندھی جی, دوسرا کھنڈ ھے— سرووِدے میں سماج کا آدرش, تیسرے کھنڈ میں ھے—سرووِدے میں راجیہ کا سوروپ اور چوتھے کھنڈ میں ھے—سرووِدے میں راجیہ گٹھن پستک میں دئے ھوئے لیکھک کے وچار منن کرنے یوگیہ ھیں .

تیسری پستک میں لیکھک نے سرووِدے وچار دھارا کے پرچار کے لیئے جو یاترا کی اسکا ورنن ھے .

چوتھی پستک پراکرتک چکتسا ھی کیوں' میں کچھ روگیوں کا ذکر ھے جو مہن اسنان' کٹی اسنان, مٹی اور پانی کی پٹی کے علاج سے اچھے ھوئے آخری 24 صفحوں میں پراکرتک چکتسا کے سدھانتوں کی چرچا کی گئی ھے .

پانچویں پستک میں 290 صفوں میں بھارت کے ودھان کی وستار سے چرچا کی گئی ھے اور پچاس صفحوں میں سرووِدے کی روشنی سے اُسکو آلوچنا کی گئی ھے .

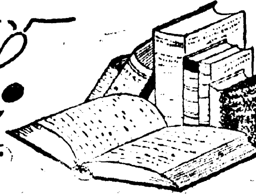
چھٹویں پستک میں بھودان' ایک ھی ورگ—شرمک ورگ' گرامودیوگ مریادت ینترودیوگ. ویاپار-سنستھاگت آدی وشیوں پر سرووِدے کی درشٹی سے وچار کیا گیا ھے .

## میرا ساھتک جیون

لیکھک شری بھگوان داس کیلا ؛ چھاپنے والے اُوپر کے وھی ؛ دام—تین روپئے ؛ صفے—268 کیلاجی شکشک' لیکھک' ساھتت سیوی' سماج سیوی سبھی کچھ رھے ھیں . اپنے وچاروں اور انوبھووں کو اُنہونے درجنوں پستکوں کے دوارا پاٹھکوں کو اُپہار میں دیا ھے . اُنکے وچاروں کے پیچھے جو جیون درشن ھے اُسپر اُنکی اِس آتم کتھا سے کافی روشنی پڑتی ھے . ساھتکوں کے لئے یہ پستک کافی پروتساھن دینے والی ھے .

وی- نا- پا

# कुछ किताबें



# کچھ کتابیں

## (1) सर्वोदय दैनिक जीवन में

लिखने वाले—भगवानदास केला; छापने वाले-भारतीय ग्रन्थ माला, दारागंज; दाम—छै आना. सफ़ा—42;

## (2) राज्य व्यवस्था सर्वोदय दृष्टि से

लिखने वाले—छापने वाले—वही; दाम डेढ़ रुपया. सफ़ा—160;

## (3) मेरी सर्वोदय यात्रा

लिखने वाले—छापने वाले—वही; दाम सात आना. सफ़ा—84;

## (4) प्राकृतिक चिकित्सा ही क्यों ?

लिखने वाले—छापने वाले—वही; दाम पांच आना. सफ़ा—83;

## (5) भारतीय शासन

लिखने वाले—छापने वाले—वही; दाम तीन रुपया. सफ़ा—340;

## (6) आर्थिक क्रान्ति के आवश्यक कदम

लिखने वाले—जवाहिर लाल जैन; छापने वाले—ऊपर के, दाम सात आने; सफ़ा—56;

इन छै किताबों में पांच के लिखने वाले—श्री भगवानदास केला हैं और छठवीं के श्री जवाहर लाल जैन. सभी पुस्तकें गान्धी जी की सर्वोदय विचार धारा को सामने रख कर लिखी गई हैं और अपने उसूलों की जोरदार समर्थक हैं. केला जी अपने आप में एक संस्था हैं. हिन्दी साहित्य को उनकी देन समोपयोगी; क़ीमती और बहुल है.

पहली पुस्तक रोजमर्रा की जिन्दगी में सर्वोदय उसूलों के अमल पर रोशनी डालती है. इस छोटी सी पुस्तक के

## (1) سرودے دینک جیون

لکھنے والے—بھگوان‌داس کیلا؛ چھاپنے والے—بھارتیہ گرنتھ مالا، دارائنج؛ دام—چھ آنہ . صفحہ—24؛

## (2) راجیہ ووستھا سرودے درشٹی سے

لکھنے والے—چھاپنے والے—وھی؛ دام ڈیڑھ روپیہ • صفحہ-160

## (3) راجیہ سرودے یاترا

لکھنے والے—چھاپنے والے—وھی؛ دام سات آنہ . صفحہ—84 .

## (4) پراکرتک چکتسا ھی کیوں

لکھنے والے—چھاپنے والے—وھی؛ دام پانچ آنہ • صفحہ—83•

## (5) بھارت شاشن

لکھنے والے—چھاپنے والے—وھی دام تین روپیہ • صفحہ—340 •

## (6) آرتھک کرانتک کے آوشیک قدم

لکھنے والے— جواھر لال جین؛ چھاپنے والے—اُپر کے، دام سات آنے؛ صفحہ—56 •

ان چھ کتابوں میں پانچ کے لکھنے والے—شری بھگوان‌داس کیلا ھیں اور چھٹویں کے شری جواھر لال جین . سبھی پستکیں گاندھی جی کی سرودے وچار دھارا کو سامنے رکھکر لکھی گئی ھیں اوا اپنے اُصولوں کی زوردار سمرتھک ھیں . کیلا جی اپنے آپ میں ایک سنستھا ھیں • ھندی ساھتیہ کو اُنکی دین سموپیوگی؛ قیمتی اور بھولیہ ھے .

پہلی پستک روزمرہ کی زندگی میں سرودے اُصولوں کے عمل پر روشنی ڈالتی ھے . اِس چھوٹی سی پستک کے

**कक्षा में गई और भइया दूज का महत्व समझाते हुए हिन्दी विभाग के 85 से अधिक विद्यार्थिओं को व चीनी अध्यापकों को मिठाई खिलाई. उस दिन का दृश्य भी याद रहेगा. लड़के हैं तो बड़े बड़े लेकिन ऐसे नाच नाच कर मिठाई खा रहे थे मानों छोटे बच्चे हों. सभी विद्यार्थिओं ने अलग अलग आ कर मुझे दोनों हाथों से पकड़ कर कंधे पर सिर रख कर विश्वास दिलाया कि वे सब मेरे छोटे भाई बहिन हैं. यहां के विद्यार्थी इतनी जल्दी मुझ से इतना स्नेह करने लगेंगे इसकी तो कल्पना भी नहीं की थी. इस तरह दिवाली और भइया दूज बहुत अच्छी तरह हंसी ख़ुशी से कट गये.**



ککشا میں گئی اور بھیا دوئج کا مہتو سمجھاتے ہوئے ہندی وبھاگ کے پچاس سے ادھک ودیارتھیوں کو اور چینی ادھیاپکوں کو مٹھائی کھلائی ۔ اُس دن کا درشیہ بھی یاد رھیگا ۔ لڑکے ھیں تو بڑے بڑے لیکن ایسے ناچ ناچ کر مٹھائی کھا رھے تھے مانو چھوٹے بچے ھوں اور سب ھی ودیارتھیوں نے الگ الگ آکر مجھے دونوں ھاتھوں سے پکڑ کر کندھے پر سر رکھ کر وشواس دلایا کہ وہ سب میرے چھوٹے بھائی بہن ھیں۔ یہاں کے ودیارتھی اتنی جلدی سے مجھے اتنا سنیہہ کرنے لگیں گے اس کی تو کلپنا بھی نہیں تھی ۔ اِس طرح دِوالی اور بھیا دوئج بہت اچھی طرح ھنسی خوشی کٹ گئی ۔

---

"......हमारे सामने जो कुछ हो रहा है, उसे हम देख रहे हैं. आटे की छोटी छोटी मिलें हाथ की चक्कियों को, तेल की मिलें गाँव की ढेंकी को और शकर की मिलें गुड़ बनाने के देहाती साधनों वग़ैरा को मिटाती जा रही हैं. देहाती मज़दूरी के इस तरह उठ जाने से देहात वाले कंगाल हो रहे हैं और धनी लोग मालदार बन रहे हैं. अगर काफ़ी लम्बे अरसे तक यही सिलसिला चलता रहा तो और किसी जतन के बग़ैर ही देहातों का नाश हो जायेगा."

महात्मा गाँधी

"......ھمارے سامنے جو کچھ ھو رھا ھے' اُسے ھم دیکھ رھے ھیں ۔ آٹے کی چھوٹی چھوٹی ملیں ھاتھ کی چکیوں کو' تیل کی ملیں گاؤں کی ڈھینکی کو اور شکر کی ملیں گڑ بنانے کے دیہاتی سادھنوں وغیرہ کو مٹاتی جارھیں ھیں ۔ دیہات والے کنگال ھو رھے ھیں اور دھنی لوگ مالدار بن رھے ھیں ۔ اگر کافی لمبے عرصے تک یہی سلسلہ چلتا رھا تو اور کسی جتن بغیر ھی دیہاتوں کا ناش ھو جائیگا ۔

—مہاتما گاندھی

---

खुल गया है और फिर से भारत चीन मिल रहे हैं मानों सदियों से बिछुड़े हुए दो सगे भाई फिर मिल रहे हों. पंडित नेहरू के भाषणों से यहां पर बहुत अच्छा असर पैदा हुआ है और हम लोग आशा करते हैं कि एक दिन ज़रूर सिर्फ़ शान्ति के लिये ही नहीं बल्कि राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक क्षेत्रों में भी भारत और चीन एक संयुक्त मोर्चा क़ायम करेंगे जिससे कि एशिया की जनता को साम्राज्यवाद, पूंजीवाद, उपनिवेशवाद और सामंतवाद जैसे अभिशापों से सदैव के लिये मुक्ति मिल जायगी.

हम लोगों की इज़्ज़त यहां पहले तो थी ही पर पंडित जी के आने से और भी बढ़ गई है. एक दिन चीन के शिक्षा मंत्री ने हमें दावत दी और बहुत देर तक हम से हमारे यहां के जीवन के बारे में बातें की. इसके अलावा जब भी कोई भारतीय मेहमान पेकिंग विश्वविद्यालय आता है जैसे कि कलकत्ता के मेयर श्री मुखर्जी आये थे तब हम लोगों को ख़ास तौर से बात चीत करने और विश्वविद्यालय का हाल बताने के लिये निमंत्रित किया जाता है. हम लोग आशा करते हैं कि भविष्य में यहां और अधिक संख्या में भारतीय आयंगे और हर दिशा में भारत चीन की दोस्ती का काम ज़्यादा से ज़्यादा आगे बढ़ेगा.

अभी हम लोग एक सिनेमा फिलम देखकर लौटे हैं जिसमें पंडित जी के पेकिंग में स्वागत का दृष्य दिखाया गया है. अभी पूरी रील तो तैयार नहीं हुई सिर्फ़ हवाई अड्डे पर स्वागत वाला भाग दिखाया गया. आशा है कुछ दिनों में पूरी रील तैयार हो जायगी. हम लोग बड़ी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं. यह रील भारत में दिखाई जायगी.

तारीख़ 27 को नेहरू जी वापस गये और तारीख़ 28 को थी भइया दूज. दिवाली के दिन भी दोपहर में मेरी कक्षा के 30 से अधिक विद्यार्थी एकाएक हमारे खाने के समय आ गये और दिवाली की बधाइयां देने लगे. दिवाली का दिन था. तरह तरह की चीज़ें बनवाई थीं. और सब तो ख़तम हो गई थीं अंत में खाने के लिये गाजर का हलुआ बच रहा था वह भी हमारे हिस्से का. खाने ही वाले थे कि वे लोग आधमके और मिठाई खायंगे चिल्लाने लगे. ग़नीमत थी कि मेरी कक्षा के विद्यार्थी थे. किसी तरह थोड़ा थोड़ा हलवा सब को दिया और उनसे वायदा किया कि मिठाई फिर खिलायंगे. हंसते कूदते विद्यार्थी वापस चले गये. तबियत बहुत ख़ुश हुई. इसके बाद तारीख़ 28 को दूज के दिन पांचों कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये मैंने भइया दूज के उपलक्ष में पांच बड़े बड़े पैकेट मिठाइयों के ख़रीदे और एक पैकेट अलग से ख़रीदा चीनी अध्यापकों के लिये. उस दिन यहां वर्मा जी, मुख़्तार और राजेश को टीका लगाया और सूजी का हलवा खिलाया. उस दिन मेरी क्लास तो थी ही मिठाई लेकर मैं



کھل گیا ھے اور پھر سے بھارت چین مل رھے ھیں مانو صدیوں سے بچھڑے ھوے دو بھائی پھر گلے مل رھےھوں. پنڈت نہرو کے بھاشنوں سے یہاں پر بہت اچھا اثر پیدا ھوا ھے اور ھم لوگ آشا کرتے ھیں کہ ایک دن ضرور پھر شانتی کے لئے ھی نہیں بلکہ راج نیتک' سماجک' سانسکرتک اور ویوپارک چھیتروں میں بھی بھارت اور چین ایک سنیکت مورچہ قائم کریں گے جس سے کہ ایشیا کی جنتا کو سامراج واد' پونجی واد' اپنیویشواد اور سامنت واد جیسے ابھشاپوں سے صدیو کے لئے مکتی مل جائے گی .

ھم لوگوں کی عزت یہاں پہلے تو تھی ھی پر پنڈت جی کے آنے سے اور بھی بڑھ گئی ھے . ایک دن چین کے شکشا منتری نے ھمیں دعوت دی اور بہت دیر تک ھم سے ھمارے یہاں کے جیون کے بارے میں باتیں کیں . اِس کے علاوہ جب بھی کوئی بھارتیہ مہمان پیکنگ وشودیالئے آتا ھے' جیسے کہ کلکتہ کے میئر شری مکھرجی آئے تھے' تب ھم لوگوں کو خاص طور سے بات چیت کرنے اور وشودیالئے کا حال بتانے کے لئے نمنترت کیا جاتا ھے. ھم لوگ آشا کرتے ھیں کہ بھوشیہ میں یہاں اور ادھک سنکھیا میں بھارتیہ آئیں گے اور ھر دشا میں بھارت چین کی دوستی کا کام زیادہ سے زیادہ آگے بڑھے گا .

ابھی ابھی ھملوگ ایک سنیما فلم دیکھ کر لوٹے ھیں جس میں پنڈت جی کے پیکنگ میں سواگت کا درشیہ دکھایا گیا ھے . ابھی پوری ریل تو تیار نہیں ھوئی' صرف ھوائی اڈے پر سواگت والا بھاگ دکھایا گیا. آشا ھے کچھ دنوں میں پوری ریل تیار ھو جائیگی . ھملوگ بڑی اُتسکتا سے اُسکی پرتیکشا کر رھے ھیں . یہ ریل بھارت میں بھی دکھائی جائیگی.

تاریخ 27 کو نہرو جی واپس گئے اور تاریخ 28 کو تھی بھیادوئج . دیوالی کے دن دوئج دوپہر میں میری ککشا کے 30 سے ادھک ودیارتھی یکایک ھمارے کھانے کے سمے آگئے اور دیوالی کی بدھائیاں دینے لگے. دیوالی کا دن تھا' طرح طرح کی چیزیں بنوائیں تھیں . اور سب تو ختم ھو گئیں تھیں' انت میں کھانے کے لئے گاجر کا حلوہ بچ رھا تھا' وہ بھی ھمارے حصے کا کھانے ھی والے تھے کہ وے لوگ آدھمکے اور ''مٹھائی کھائیں گے' مٹھائی کھائیں گے'' چلانے لگے. غنیمت تھی کہ میرے ھی ککشا کے ودیارتھی تھے . کسی طرح تھوڑا تھوڑا حلوہ سب کو دیا اور وعدہ کیا کہ مٹھائی پھر کھلائیں گے . ھنستے کودتے ودیارتھی واپس چلے گئے . طبیعت بہت خوش ھوئی . اِس کے بعد تاریخ 28 کو دوئج کے دن پانچوں ککشاؤں کے ودیارتھیوں کے لئے میں نے بھیا دوئج کے اُپلکش میں پانچ بڑے بڑے پیکٹ مٹھائیوں کے خریدے اور ایک پیکٹ الگ سے خریدا چینی ادھیاپکوں کے لئے . اِس دن یہاں ورما جی' مختار اور راجیش کو ٹیکا لگایا اور سوجی کا حلوہ کھلایا. اُس دن میری کلاس تو تھی ھی' مٹھائی لے کر میں

इतना सीख लिया" वे बहुत प्रभावित हुए. इसके बाद थोड़ी देर तक इन्दिरा जी मुझ से बात करती रहीं. पेकिंग विश्वविद्यालय के बारे में उन्होंने दुख प्रगट किया कि समय नहीं मिला कार्यक्रम अधिक व्यस्त रहा. हम लोगों ने उनसे कहा कि आप दुबारा चीन आइये तब तक हमारे सैकड़ों विद्यार्थी आप से हिन्दी में बात करने के लिये तैयार हो जायंगे. इस पर उन्होंने बहुत ख़ुशी जाहिर की और फिर हाथ मिला कर हम लोग वापस आ गये. हां, पन्डित जी ने यह भी बताया कि उन्होंने चीन में चार चीनी शब्द सीख लिये हैं. नी हाव (आप कैसे हैं) चाउ-चि-येन (फिर मिलेंगे) इन्तू रन (भारतीय) और वान-स्वे (जिन्दाबाद).

तारीख 27 को सुबह हम लोग उन्हें बिदा करने फिर हवाई अड्डे पर गये. उस दिन तो सिर्फ़ चुने हुए लोग ही जा पाये थे जिन में हम लोग भी शामिल थे. उस दिन हवाई अड्डे पर एक और अजीब बात हुई. तिब्बत के दलाईलामा और पंचन लामा से हमने खूब बातें कीं. तिब्बत की अजीबो ग़रीब पोशाक में यह दोनों बिलकुल नौजवान नेता बड़े अच्छे लग रहे थे और सब लोगों से खूब बातें कर रहे थे. आठ बजे पंडित जी मोटर से आये फौजी सलामी ली और फिर एक बिदाई का छोटा सा भाषण दिया. इसके बाद सब से हाथ मिला कर हवाई जहाज़ में चले गये. थोड़ी ही देर में हवाई जहाज़ हमारे सिरों पर मंडराने लगा. सब लोग हवाई अड्डे पर खड़े हाथ हिलाकर अभिवादन करते रहे और उनका जहाज़ नान किंग शंघाई की तरफ़ बढ़ा चला जा रहा था. पेकिंग से नान किंग शंघाई हैंगचौ होते हुए केन्टन और वहां से तारीख़ 29 को भारत के लिये रवाना हो गये.

चीनी जनता ने हर जगह पंडित नेहरू का जो शानदार स्वागत किया वह चीन के इतिहास में एक अनोखी यादगार रहेगी. बहुत बूढ़े पुराने लोगों ने, जिन्हें कि पिछले 75 वर्षों से नेताओं के स्वागत देखने का अवसर मिला है, हमें बताया कि उन्होंने पेकिंग में किसी भी व्यक्ति का इस तरह स्वागत होते नहीं देखा. पंडित नेहरू तो भारत पहुंच गये लेकिन यहां की करोड़ों जनता रोज़ रोज़ उनके बारे में तरह तरह के संस्मरणों द्वारा उन्हें अपने पास ही पाती है. चेअरमैन माओ कभी किसी भोज वग़ैरह में शामिल नहीं होते और बहुत कम मेहमानों से मिलते जुलते हैं लेकिन भारतीय राजदूत श्री राघवन द्वारा दिये गये भोज में माओ खुद तशरीफ़ लाये. इसके अलावा पंडित नेहरू के निवास काल में कई बार माओ नेहरू की भेंटें हुईं और देर देर तक बात चीत हुई. पिछले सौ साल से साम्राज्यवादी ताक़तों ने भारत और चीन दोनों देशों को अपने शिकंजे में जकड़ रखा था इसलिये हम भारतीय और चीनियों का एक दूसरे के देश में आना जाना बन्द सा हो गया था. अब फिर यह दरवाजा



اتنا سیکھ لیا" وے بہت پربھاوت ہوئے۔ اِس کے بعد تھوڑی دیر تک اِندرا جی مجھ سے بات کرتی رہیں۔ پیکنگ وشودیالیہ کے بارے میں اُنہوں نے دکھ پرگٹ کیا کہ سمے نہیں ملا' کاریہ کرم ادھک ویست رہا۔ ہم لوگوں نے اُن سے کہا کہ آپ دوبارہ چین آئیے تب تک ہمارے سیکڑوں ودیارتھی آپ سے ہندی میں بات کرنے کے لئے تیار ہو جائینگے۔ اِس پر اُنہوں نے بہت خوشی ظاہر کی اور پھر ہاتھ ملا کر ہم لوگ واپس آگئے۔ ہاں' پنڈت جی نے یہ بھی بتایا کہ اُنہوں نے چین میں چار چینی شبد سیکھ لئے ہیں—نی ہاو (آپ کیسے ہیں) چاؤ - چی - این (پھر ملینگے) اِنتورن (بھارتیہ) اور وان - سوے (زندہ باد).

تاریخ 27 کو صبح ہم لوگ اُنہیں بدا کرنے پھر ہوائی اڈے پر گئے۔ اس دن تو صرف چنے ہوئے لوگ ہی جا پاتے تھے جن میں ہم لوگ بھی شامل تھے۔ اس دن ہوائی اڈے پر ایک اور عجیب بات ہوئی۔ تبت کے دلائی لاما اور پنچن لاما سے ہمنے خوب باتیں کیں۔ تبت کی عجیب و غریب پوشاک میں یہ دونوں بالکل نوجوان نیتا بڑے اچھے لگ رہے تھے اور سب لوگوں سے خوب باتیں کر رہے تھے۔ 8 بجے پنڈت جی موٹر سے آئے' فوجی سلامی لی اور پھر ایک بدائی کا چھوٹا سا بھاشن دیا۔ اس کے بعد سب سے ہاتھ ملا کر ہوائی جہاز میں چلے گئے۔ تھوڑی ہی دیر میں ہوائی جہاز ہمارے سروں پر منڈرانے لگا۔ سب لوگ ہوائی اڈے پر کھڑے ہاتھ ہلاکر ابھیوادن کرتے رہے اور ان کا جہاز نان کنگ شنگھائی کی طرف بڑھا چلا جا رہا ہے۔ پیکنگ سے نان کنگ شنگھائی ہینگچو ہوتے ہوئے کنیٹن اور وہاں سے تاریخ 29 کو بھارت کے لئے روانہ ہوگئے۔

چینی جنتا نے ہر جگہ پنڈت نہرو کا جو شاندار سواگت کیا وہ چین کے اتہاس میں ایک انوکھی یادگار رہے گی۔ بہت بوڑھے پرانے لوگوں نے' جنہیں کہ پچھلے 75 برسوں سے نیتاؤں کے سواگت دیکھنے کا اوسر ملا ہے' ہمیں بتایا کہ انہوں نے پیکنگ میں کسی بھی ویکتی کا اس طرح سواگت ہوتے نہیں دیکھا۔ پنڈت نہرو تو بھارت پہنچ گئے' لیکن یہاں کی کروڑوں جنتا اور روز روز ان کے بارے میں طرح طرح کے سنسمرنوں دوارا انہیں اپنے پاس ہی پاتی ہے۔ چیئرمین ماؤ کبھی کسی بھوج وغیرہ میں شامل نہیں ہوتے اور بہت کم مہمانوں سے ملتے جلتے ہیں۔ لیکن بھارتی راجدوت شری راگھون دوارا دئے گئے بھوج میں ماؤتسے تشریف لائے۔ اس کے علاوہ پنڈت نہرو کے نواس کال میں کئی بار ماؤ-نہرو کی بھینٹ ہوئیں اور دیر دیر تک بات چیت ہوئی۔ پچھلے سو سال سے سامراج وادی طاقتوں نے بھارت - چین دونوں دیشوں کو اپنے شکنجے میں جکڑ رکھا تھا۔ اس لئے ہم بھارتیہ اور چینیوں کا ایک دوسرے کے دیش میں آنا جانا بند سا ہو گیا تھا۔ اب پھر یہ دروازہ

सिखाया और उस दिन पन्डित जी के स्वागत के उपलक्ष में चीनियों द्वारा गाया गया. संस्कृत के कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण और मधुरलय के साथ वन्दे मातरम गीत सुनकर पन्डित जी के साथ वाले सभी भारतीय आश्चर्य चकित रह गये. बाद में एम्बेसी वालों ने हमें घेर लिया और बड़ी देर तक दर्याफ़्त करते रहे कि आखिर वन्दे मातरम जैसा कठिन गीत चीनियों ने कैसे सीख लिया ? इत्तफाक से हम लोग अपने साथ लता मंगेशकर द्वारा गाये हुए वन्दे मातरम का रिकार्ड लेते आये थे जिससे सिखाने में बड़ी मदद मिली.

उस दिन की मीटिंग खतम होने के बाद घंटे भर तक हम लोग पंडित जी के दल के साथ साथ सुनयात सेन पार्क में किये गये नाच समारोहों, गानों और खेल कूद में भाग लेते रहे लेकिन सीधे बात चीत करने का अवसर उस दिन भी नहीं मिला क्योंकि चीनी नेता चाउ-एन-लाइ वग़ैरा स्वयं पंडित जी को समारोहों की बातें बतला रहे थे. शाम हो गई थी. पार्क के पेड़ों पर रंग बिरंगी बिजली बत्तियां जगमगा रही थीं मीटिंग खतम होने के बाद हज़ारों लोग सैकड़ों दलों में विभक्त हो कर नाच नाच कर भारत चीन मैत्री के लिये अपनी ख़ुशी जाहिर कर रहे थे. हम में से हर एक ने महसूस किया कि हम चीन में भारत के करोड़ों लोगों के प्रतिनिधि हैं. सात बजे पंडित जी को चेअरमैन माओ से मिलना था इसलिये वे चाउ-एन-लाइ के साथ रवाना हो गये. हम लोग नौ बजे रात तक पार्क में घूमते रहे.

इसके बाद पंडित नेहरू मुकडेन और पोर्टआर्थर व डायरिन देखने चले गये. तारीख 26 को पेकिंग वापस आये. उस दिन पंडित जी ने चीनी नेताओं के सम्मान में पेकिंग होटल में एक बड़ा भारी भोज दिया. हम लोग भी खास तौर पर आमंत्रित थे. इस भोज में भी चाउ-एन-लाइ, जू-ते, ल्यू शान - ची, मैडम सुनयात सेन वग़ैरा बड़े बड़े नेता शामिल थे और लगभग 800 व्यक्ति आमंत्रित थे. पेकिंग होटल के सजे हुए हाल में दावत का इन्तज़ाम था. हाल चारों ओर से बिजलियों से जगमग था. इत्तफ़ाक की बात कि उस दिन दिवाली थी. हम लोग बहुत खुश थे कि घर से इतनी दूर होते हुए भी हमारी दिवाली अच्छी रही. उसी दिन क़िदवई साहब की मृत्यु का दुख समाचार पहुंचा. पंडित जी ने उस दिन भोज के अपने भाषण में किदवई साहब का हृदय स्पर्शी उल्लेख भी किया. इसी कारण उस दिन के अन्य छोटे मोटे कार्यक्रम नहीं किये गये. उस दिन तो भोज खतम होने पर पंडित जी से सीधे बात चीत करने का मौका मिल गया. वे हम से काफी देर तक बात करते रहे. हमारे यहां आने के बारे में, हमारे यहां के जीवन के बारे में और हमारे यहां के अनुभवों के बारे में. पंडित जी ने मुझ से पूछा कि चीनी भाषा कितनी सीखली है, मैंने जब बताया कि काम चलाने भर को बोल लेती हूं तो ख़ुश होकर कहा "अच्छा!



سکھایا اور اُس دن پنڈت جی کے سواگت کے اوپلکش میں چینیوں دوارا گایا گیا . سنسکرت کے کٹھن شبدوں کا شدھ اُچارن اور مدھرلئے کے ساتھ بندے ماترم گیت سن کر پنڈت جی کے ساتھ والے سبھی بھارتیہ آشچریہ چکت رہ گئے . بعد میں ایمبیسی والوں نے ہمیں گھیر لیا اور بڑی دیرتک دریافت کرتے رہے کہ آخیر بندے ماترم جیسا کٹھن گیت چینیوں نے کیسے سیکھ لیا ؟ اتفاق سے ہم لوگ اپنے ساتھ لتا منگیشکر دوارا گائے ہوئے بندے ماترم کا ریکارڈ لیتے آئے تھے جس سے سکھانے میں بڑی مدد ملی .

اُس دن کی میٹنگ ختم ہونے کے بعد گھنٹے بھر تک ہم لوگ پنڈت جی کے دل کے ساتھ ساتھ سن یات سین پارک میں کئے گئے ناچ سماروہوں' گانوں اور کھیل کود میں بھاگ لیتے رہے' لیکن سیدھے بات چیت کرنے کا اوسر اُس دن بھی نہیں ملا کیونکہ چینی نیتا چاؤ-این-لائی وغیرہ سویم پنڈت جی کو سماروہوں کی باتیں بتلارہے تھے. شام ہوگئی تھی . پارک کے پیڑوں پر رنگ برنگی بجلی کی بتیاں جگمگا رہی تھیں میٹنگ ختم ہونے کے بعد ہزاروں لوگ سیکڑوں دلوں میں وبھکت ہوکر ناچ ناچ کر بھارت چین میتری کے لئے اپنی خوشی ظاہر کر رہے تھے . ہم میں سے ہر ایک نے محسوس کیا کہ ہم چین میں بھارت کے کروڑوں لوگوں کے پرتیندھی ہیں . سات بجے پنڈت جی کو چیئرمین ماؤ سے ملنا تھا اس لئے وے چاؤ-این-لائی کے ساتھ روانہ ہوگئے . ہم لوگ نو بجے رات تک پارک میں گھومتے رہے .

اس کے بعد پنڈت نہرو مکڈین اور پورٹ آرتھر و ڈایرین دیکھنے چلےگئے . تاریخ 26 کو پیکنگ واپس آئے . اُس دن پنڈت جی نے چینی نیتاؤں کے سمان میں پیکنگ ہوٹل میں ایک بڑا بھاری بھوج دیا . ہم لوگ بھی خاص طور پر آمنترت تھے . اُس بھوج میں بھی چاؤ - این- لائی جو-تے, لیو' شان' چی' میڈم سن-یات-سین وغیرہ بڑے بڑے نیتا شامل تھے. اور لگ بھگ 800 ویکتی آمنترت تھے اور پیکنگ ہوٹل کے سجے ہوئے ہال میں دعوت کا انتظام تھا . ہال چاروں اور سے بجلیوں سے جگمگ تھا. اتفاق کی بات ہےکہ اُس دن دیوالی تھی. ہم لوگ بہت خوش تھے کہ آپ لوگوں سے اتنی دور ہوتے ہوئے بھی ہماری دیوالی اچھی رہی. اس دن قدوئی صاحب کی مرتیو کا دکھد سماچار پہنچا . پنڈت جی نے اُس دن بھوج کے اپنے بھاشن میں قدوئی صاحب کا ہردےاسپرشی اُولیکھ بھی کیا اسی کارن اُس دن کے انیہ چھوٹے موٹے کاریہ کرم نہیں کئے گئے . اُس دن تو بھوج ختم ہونے پر پنڈت جی سے سیدھے بات چیت کرنے کا موقع مل گیا . وے ہم سے کافی دیر تک بات کرتے رہے—ہمارے یہاں آنے کے بارے میں' ہمارے یہاں کے جیون کے بارے میں اور ہمارے یہاں کے انوبھوں کے بارے میں . پنڈت جی نے مجھ سے پوچھا کہ چینی بھاشا کتنی سیکھ لی ہے ؟ میں نے جب بتایا کہ کام چلانے بھر کو بول لیتا ہوں تو خوش ہو کر کہاں " اچھا !

के इन दोनों महान नेताओं का अभिवादन किया. नेहरू जी को तो पेकिंग की जनता ने पहली बार देखा ही साथ ही साथ बहुत से लोगों ने हमें बताया कि चाउ-एन-लाइ को भी उन्होंने साफ़ साफ़ पहली बार देखा.

इसके बाद नेहरू जी का पेकिंग में व्यस्त कार्य क्रम शुरू हो गया. चीनी नेताओं से लम्बी लम्बी बात चीत और बाक़ी समय में पेकिंग की मुख्य मुख्य चीजों को देखने का कार्यक्रम हम लोग रोज़ रोज़ अख़बार में पढ़ते रहे. हमें मालूम था कि पंडित जी पेकिंग युनिवर्सिटी भी देखने आयंगे इसलिये हम लोगों ने उनसे मिलने की कोई ख़ास कोशिश नहीं की. इसके बाद उनका कार्यक्रम इतना अधिक व्यस्त रहा कि वे किसी को भी अलग से समय नहीं दे सके. यहां तक कि बाहर से आये हुए भारतीयों तक से अलग से नहीं मिल पाये. बाद में उनका प्रोग्राम कुछ बदल दिया गया और वह लम्बी लम्बी बात चीतों के कारण पेकिंग विश्वविद्यालय भी आ सके. उनके स्वागत में पेकिंग के नागरिकों की ओर से सुनयत सेन पार्क में एक बड़ी भारी आम सभा हुई जिसमें लगभग 50 हज़ार लोग उपस्थित थे. उस दिन पब्लिक मीटिंग में जाने के लिये हमें ख़ास तौर से निमंत्रण मिला हम सब एक घंटा पहले मीटिंग में पहुंचे और सब से आगे बैठाये गये. उस दिन भी पार्क के फाटक से सभा मंच तक हज़ारों आदमियों ने हमारा बड़ा सुन्दर स्वागत किया. हवाई अड्डे पर जाने के समय तो हम लोग मोटर पर थे लेकिन पार्क के फाटक से मंच तक पैदल ही गए. लगभग एक फर्लांग या कुछ ज्यादा इतना रास्ता चलना मुश्किल हो गया हमारे लिये. लोगों की तालियां हमारे मुंह के इतने समीप बज रही थीं कि अपने मुंह को बचाने की कोशिश करनी पड़ती थी. इस तरह के स्वागत की तो हम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे. पहली बार हमें अपने भारतीय होने पर गर्व हुआ और यह सोचकर और ख़ुशी हुई कि मुझे चीन आने और यह सब देखने का मौक़ा मिला. उस दिन भी पंडित जी ने बड़ी देर तक हिन्दी में भाषण दिया जिसका अनुवाद चीनी में किया गया. स्वागत करते हुए पीकिंग के मेयर ने चीनी में भाषण दिया जिसका अनुवाद चीनी से हिन्दी में कर सुनाया गया. चीनी से हिन्दी अनुवाद करने वाली हमारे ही विभाग की एक लड़की चुनी गई थी जिसने बहुत अच्छे तरीक़े से अपना काम किया. पन्डित जी ने बड़े ध्यान से चीनी लड़की के मुंह से हिन्दी सुनी और उनके चेहरे से ज़ाहिर था कि वे ख़ुश हुए. इसी मीटिंग में उनके स्वागत में चीनी नवजवानों और नवयुवतियों ने मिल कर बन्दे मातरम गीत गाया. पन्डित जी के आने के हफ़्ते भर पहले पेकिंग की Music Academy के प्रधान हमारे पास आये थे और चार दिन तक हमारे साथ वन्दे मातरम गान के शब्दों का उच्चारण और उनकी ध्वनि व राग का अभ्यास करते रहे थे. फिर यही राग उन्होंने अपनी एकेडमी के सदस्यों को



کے ان دونوں مہان نیتاؤں کا ابھیوادن کیا . نہرو جی کو تو پیکنگ کی جنتا نے پہلی بار دیکھا ھی ساتھ ھی ساتھ بہت سے لوگوں نے ھمیں بتایا کہ چاؤ - این - لائی کو بھی اُنہوں نے صاف صاف پہلی بار دیکھا .

اس کے بعد نہرو کا پیکنگ میں ویست کاریہ کرم شروع ھو گیا. چینی نیتاؤں سے لمبی لمبی بات چیت اور باقی سمے میں پیکنگ کی خاص خاص چیزوں کو دیکھنے کا کاریہ کرم ھم لوگ روز اخبار میں پڑھتے رھے . ھمیں معلوم تھا کہ پنڈت جی پیکنگ یونیورسٹی بھی دیکھنے آئینگے . اس لئے ھم لوگوں نے اُن سے ملنے کی کوئی خاص کوشش نہیں کی . اس کے بعد ان کا کاریہ کرم اتنا ادھک ویست رہا کہ وے کسی کو بھی الگ سے سمے نہیں دے سکے . یہاں تک کہ باھر سے آئے ھوئے بھارتیوں تک سے الگ سے نہیں مل پائے . بعد میں ان کا پروگرام کچھ بدل دیا گیا اور وہ لمبی لمبی بات چیتوں کے کارن پیکنگ وشودیالیہ بھی نہ آسکے . ان کے سواگت میں پیکنگ کے ناگرکوں کی اور سے سن یات سین پارک میں ایک بڑی بھاری عام سبھا ھوئی جس میں لگ بھگ 50 ھزار لوگ اُپستھت تھے . اس دن پبلک میٹنگ میں جانے کے لئے ھمیں خاص طور سے نمنترن ملا . ھم سب ایک گھنٹہ پہلے میٹنگ میں پہنچے اور سب سے آگے بیٹھائے گئے . اُس دن بھی پارک کے پھاٹک سے سبھا منچ تک ھزاروں آدمیوں نے ھمارا بڑا سندر سواگت کیا . ھوائی اڈے پر جانے کے سمے تو ھم لوگ موٹر پر تھے لیکن پارک کے پھاٹک سے منچ تک پیدل ھی گئے . لگ بھگ ایک فرلانگ یا کچھ زیادہ . اتنا راستہ چلنا مشکل ھو گیا . ھمارے لئے لوگوں کی تالیاں ھمارے منہ کے اتنے سمیپ بج رھی تھیں کہ اپنے منہ کو بچانے کی کوشش کرنی پڑتی تھی . اس طرح کے سواگت کی تو ھم کبھی کلپنا بھی نہیں کر سکتے تھے . پہلی بار ھمیں اپنے بھارتیہ ھونے پر گرو ھوا . اور یہ سوچ کر اور خوشی ھوئی کہ مجھے چین آنے اور یہ سب دیکھنے کا موقع ملا . اس دن بھی پنڈت جی نے بڑی دیر تک ھندی میں بھاشن دیا جس کا انواد ھندی سے چینی میں کیا گیا . سواگت کرتے ھوئے پیکنگ کے میئر نے چینی میں بھاشن دیا جس کا انوواد چینی سے ھندی میں کر سنایا گیا چینی سے ھندی انواد کرنے والی ھمارے ھی وبھاگ کی ایک لڑکی چنی گئی تھی جس نے بہت اچھے طریقہ سے اپنا کام کیا . پنڈت جی نے بڑے دھیان سے چینی لڑکی کے منہ سے ھندی سنی اور ان کے چہرے سے ظاھر تھا کہ وے خوش ھوئے اسی میٹنگ میں ان کے سواگت میں چینی نوجوانوں اور نو یوتیوں نے مل کر بندے ماترم گیت گایا . پنڈت جی کے آنے کے ھفتے بھر پہلے پیکنگ کی Music Academy کے پردھان ھمارے پاس آئے تھے اور چار دن تک ھمارے ساتھ بندے ماترم گان کے شبدوں کے اُچارن اور اُن کی دھونی و راگ کا ابھیاس کرتے رھے تھے . پھر وھی راگ اُنہوں نے اپنی ایکیڈمی کے سدسیوں کو

इत्यादि भी जमा थे. एम्ब्रेसी के लोग तो साढ़े ग्यारह बजे आये हम लोग नौ बजे ही पहुंच गये थे. नौ बजे तक ही 10 हज़ार से ज्यादा लोग जमा हो चुके थे. पंडित नेहरू का हवाई जहाज़ 12.15 पर दिखाई दिया उसके पहले तो हम जगह जगह जा कर जनता के कौतूहल पूर्ण सवालों का जवाब देते रहे. हमारे विद्यार्थी तो हमारे साथ थे ही इसलिये भाषा संबंधी कोई कठिनाई नहीं हुई. चीनी पत्रकारों ने पंडित नेहरू के आने के बारे मे हमारी राय पूछी. हम लोग बहुत खुश थे और भारतीय पोशाक में हज़ारों नर नारियों का ध्यान आकर्षित किये हुए थे, ऐम्बेसी के भारतीय सज्जनगण सब यूरुपीय वेश में थे इसलिये उन की ओर लोगों का ध्यान नहीं गया. जो दूसरे भारतीय आये हुए थे उनके साथ हम लोग खड़े तो हो गये पर हमारा मन अपने विद्यार्थियों के साथ था. पंडित नेहरू के हवाई जहाज़ को ऊपर देखते ही बहुत ज़ोर से नारे लगने शुरू हो गये. चीनी नेता प्रधान मंत्री चाउ. इन. लाई. मैडम सुनयत सेन, दलाइलामा आदि बहुत पहले से हवाई अड्डे पर आ गये थे और आज़ादी से घूम घूम कर सब से खूब बातें कर रहे थे, खूब हंस बोल रहे थे. बहुत से लोगों ने हमें बताया कि इस तरह इतनी आज़ादी के साथ हंसना बोलना भी यहां के लिये नई चीज़ है.

हवाई जहाज़ से उतर कर पंडित नेहरू ने फ़ौजी सलामी ली. उसके बाद चीनी बड़े बड़े नेताओं व राजदूतों वग़ैरा से हाथ मिलाया. फिर हिन्दी में भाषण दिया जिसका अनुवाद चीनी में कर दिया गया. उस दिन मौसम तो बहुत अच्छा था. धूप निकली थी लेकिन हवा तेज़ चल रही थी. भाषण के बाद पंडित नेहरू बारी बारी से स्वागत करने वाले दलों से मिले. सारा हवाई अड्डा नारों से गूँज रहा था. हमारे विद्यार्थियों ने हमसे अनुरोध किया कि हम अपने विभाग का परिचय पंडित नेहरू से करा दें. इसलिये जब पंडित जी पेकिंग विश्वविद्यालय के लड़कों के पास पहुंचे तब हम लोग भी बढ़कर उनमें शामिल हो गये. पंडित जी के आने पर— हम लोगों ने उन्हें हिन्दी विभाग के बारे में बताया. हिन्दी के विद्यार्थियों को देखकर वे बहुत खुश हुए. हमने उन्हें पेकिंग विश्वविद्यालय में आने का निमंत्रण किया. उन्होंने और चाउ-एन-लाइ तथा इंदिरा जी ने हम पांचों अध्यापकों से हाथ मिलाया और हम लोगों को देखकर बहुत खुशी ज़ाहिर की. इसी बीच में मैंने सुश्री इंदिरा गांधी से भी कुछ बातें कीं. उस तमाम हो हल्ले के बीच कोई खास बात करना तो संभव नहीं था पर हमसे परिचय हो जाने का ही हम सब को बड़ा आनन्द हुआ. इसके बाद पंडित जी और चाउ-एन-लाइ एक साथ मोटर में खड़े होकर हवाई अड्डे के बाहर गये. इस तरह से खुली मोटर में खुले आम चाउ-एन-लाइ पहली बार पेकिंग में निकले. लाखों जनता ने ज़ोर शोर से एशिया



اتیاد بھی جمع تھے. ایم بیسی کے لوگ تو ساڑھے گیارہ بجے آئے' ہم لوگ نو بجے ہی پہنچ گئے تھے. نو بجے تک 10 ہزار سے زیادہ لوگ جمع ہو چکے تھے . پنڈت نہرو کا ہوائی جہاز 12.15 پر دکھائی دیا . اُس کے پہلے تو ہم جگہ جگہ جاکر جنتا کے کوتوہل پورن سوالوں کا جواب دیتے رہے. ہمارے ودیارتھی تو ہمارے ساتھ تھے ہی اس لئے بھاشا سمبندھی کوئی کٹھنائی نہیں ہوئی. چینی پترکاروں نے پنڈت نہرو کے آنے کے بارے میں ہماری رائے پوچھی . ہم لوگ بہت خوش تھے اور بھارتیہ پوشاک میں ہزاروں نر ناریوں کا دھیان آکرشت کئے ہوئے تھے . ایم بیسی کے بھارتیہ سجن گن سب یوروپیہ ویش میں تھے . اس لئے ان کی اور لوگوں کا دھیان نہیں گیا . جو دوسرے بھارتیہ آئے ہوئے تھے' اُن کے ساتھ ہم لوگ کھڑے تو ہو گئے پر ہمارا من اپنے ودیارتھیوں کے ساتھ تھا . پنڈت نہرو کے ہوائی جہاز کو اُوپر دیکھتے ہی بہت زور سے نعرے لگانے شروع ہوگئے. چینی نیتا پردھان منتری چو. این. لائی' میڈم سن یات سین' دلائی لاما آدی بہت پہلے سے ہوائی اڈے پر آگئے تھے اور آزادی سے گھوم گھوم کر سب سے خوب ہنس بول رہے تھے . بہت سے لوگوں نے ہمیں بتایا کہ اس طرح اتنی آزادی کے ساتھ ہنسنا بولنا بھی یہاں کے لئے نئی چیز ہے .

ہوائی جہاز سے اُتر کر پنڈت نہرو نے فوجی سلامی لی . اس کے بعد چینی بڑے بڑے نیتاؤں' راج دوتوں وغیرہ سے ہاتھ ملایا . پھر ہندی میں بھاشن دیا جس کا انواد چینی میں کر دیا گیا . اس دن موسم تو بہت اچھا تھا . دھوپ نکلی تھی . لیکن ہوا تیز چل رہی تھی . بھاشن کے بعد پنڈت نہرو باری باری سے سواگت کرنے والے دلوں سے ملے . سارا ہوائی اڈا نعروں سے گونج رہا تھا . ہمارے ودیارتھی نے ہم سے انورودھ کیا کہ ہم اپنے وبھاگ کا پریچے پنڈت نہرو سے کرا دیں . اس لیئے جب پنڈت جی پیکنگ وشودیالیہ کے لڑکوں کے پاس پہنچے تب ہم لوگ بھی بڑھ کر ان میں شامل ہوگئے. پنڈت جی کے آنے پر ہم لوگوں نے اُنہیں ہندی وبھاگ کے بارے میں بتایا . ہندی کے ودیارتھیوں کو دیکھکر وے بہت خوش ہوئے . ہم نے اُنہیں پیکنگ وشودیالیہ میں آنے کا نمنترن دیا . اُنہوں نے اور چاؤ - این - لائی تتھا اِندرا جی نے ہم پانچوں ادھیاپکوں سے ہاتھ ملایا اور ہم لوگوں کو دیکھکر بہت خوشی ظاہر کی . اسی بیچ میں میں نے سوشری اِندرا گاندھی سے بھی کچھ باتیں کیں . اُس تمام ہو ہلے کے بیچ کوئی خاص بات کرنا تو سمبھو نہیں تھا . پر ہم سے پریچے ہوجانے کا ہی ہم سب کو آنند ہوا . اس کے بعد پنڈت جی اور چاؤ - این - لائی ایک ساتھ موٹر میں کھڑے ہو کر ہوائی اڈے کے باہر گئے. اس طرح سے کھلی موٹر میں کھلے عام چاؤ - این - لائی پہلی بار پیکنگ میں نکلے . لاکھوں جنتا نے زور شور سے ایشیا

Indians के दल में शामिल हो कर स्वागत करें व पीकिंग विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ न खड़े हों. यह बात वैसे तो हम लोग न मानते पर विश्वविद्यालय की ओर से प्रार्थना की जाने पर हमने स्वीकार कर लिया. आप समझ सकते हैं कि चीनी विद्यार्थियों के साथ हवाई अड्डे तक जाने और उनके साथ वहां खड़े होने में जो श्रेय व उत्साह मिलता वह किसी दूसरी जगह मिलना संभव न था. हमने निश्चय किया कि जायंगे तो विद्यार्थियों के साथ पर हवाई अड्डे पर खड़े हो जायंगे Oserseas Inians के दल के साथ. सारे चीन से भारतीय आकर पीकिंग में जमा हो गये थे फिर भी उनकी कुल तादाद 10-12 ही थी. शांघाई से भारतीय नहीं आये थे क्योंकि पंडित नेहरू का शांघाई जाने का भी प्रोग्राम था. वहां 200 भारतीय हैं. 19 तारीख़ को सुबह 8 बजे हम हवाई अड्डे के लिये रवाना हुए. हमारी इच्छा न होते हुए भी हमारे लिये ख़ास तौर पर एक मोटर का प्रबंध किया गया. यहां पहली मई और पहली अक्टूबर के अलावा पढ़ाई की और छुट्टियां नहीं होतीं. पहली बार नेहरू जी के आगमन के उपलक्ष में पेकिंग की सब शिक्षण संस्थायें बंद रहीं. उस दिन का दृश्य तो कभी भुलाया नहीं जा सकता. पंडित नेहरू का स्वागत तो पीछे हुआ हवाई अड्डे जाते समय हम लोगों का इतना ज़ोरदार स्वागत हुआ मानों सारा आयोजन हमारे ही लिये किया गया हो. भारतीय पोशाक पहिने हुए हमें मोटर में बैठा देखकर सड़क के दोनों किनारों पर खड़े हज़ारों आदमी ताली बजा बजा कर "भारत चीन मैत्री ज़िन्दाबाद", "शान्ति ज़िन्दाबाद". के नारे लगा कर ख़ूब उछल कूद रहे थे. उस दिन तो दो लाख से ज़्यादा आदमी सड़क के किनारे पर सुबह से खड़े थे. आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस तरह से खुले आम यहां पहले किसी का भी स्वागत नहीं किया गया. आम तौर से नेता लोग आते हैं तो चीन के बड़े बड़े नेता उनके स्वागत के लिये मेहमानों सहित पेकिंग होटल चले जाते हैं जो यहां मेहमानों को ठहराने के लिये ख़ास जगह है. आम जनता को तो अख़बार पढ़कर ही मालूम हो पाता है कि कोई विदेशी नेता पेकिंग में आया है और चीनी नेतागणों के दर्शन तो साल में सिर्फ़ दो बार होते हैं—पहली मई और पहली अक्टूबर को जब कि वह क़तार में खड़े हो कर जनता का स्वागत करते हैं. अब की बार यह सारे नियम टूट गये या यों कहिये कि पंडित नेहरू के आने के बाद से यहां स्वागत का नया रिवाज शुरू हो गया. उस दिन हवाई अड्डे पर 10 हज़ार से ज़्यादा आदमी मौजूद थे. व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से इससे ज़्यादा आदमियों को अड्डे के बाहर सड़कों के किनारे बहुत दूर तक खड़े रहना पड़ा. उस दिन भारतीय और चीनी झंडों से हवाई अड्डा ख़ूब सजाया गया था. बहुत से विदेशी प्रतिनिधि व राजदूत



Indians کے دل میں شامل ہو کر سواگت کریں و پیکنگ وشودیالیہ کے ودیارتھیوں کے ساتھ نہ کھڑے ہوں. یہ بات ویسے تو ہم لوگ نہ مانتے پر وشودیالیہ کی اُور سے پرارتھنا کی جانے پر ہم نے سویکار کر لیا. آپ سمجھ سکتے ہیں کہ چینی ودیارتھیوں کے ساتھ ہوائی اڈے تک جانے اور اُن کے ساتھ وہاں کھڑے ہونے میں جو شرے و اُتساہ ملتا وہ کسی دوسری جگہ ملنا سمبھو نہ تھا. ہم نے نشچے کیا کہ جائینگے تو ودیارتھیوں کے ساتھ پر ہوائی اڈے پر کھڑے ہو جائینگے. Overseas Indians کے دل کے ساتھ. سارے چین سے بھارتیہ آکر پیکنگ میں جمع ہوگئے تھے' پھر بھی اُن کی کل تعداد 10-12 ہی تھی. شنگھائی سے بھارتیہ نہیں آئے تھے کیونکہ پنڈت نہرو کا شنگھائی جانے کا بھی پروگرام تھا. وہاں 200 بھارتیہ ہیں. 19 تاریخ کو صبح 8 بجے ہوائی اڈے کے لیئے روانہ ہوئے. ہماری اِچھا نہ ہوتے ہوئے بھی ہمارے لیئے خاص طور پر ایک موٹر کا پربندھ کیا گیا. یہاں پہلی مئی اور پہلی اکتوبر کے علاوہ پڑھائی کی اور چھٹیاں نہیں ہوتیں. پہلی بار نہرو جی کے آگمن کے اُپلکش میں پیکنگ کی سب شکشا سنستھائیں بند رہیں. اُس دن کا درشیہ تو کبھی بھلایا نہیں جا سکتا. پنڈت نہرو کا سواگت تو پیچھے ہوا' ہوائی اڈے جاتے سمے' ہم لوگوں کا اتنا زوردار سواگت ہوا. مانو وہ سارا آیوجن ہمارے ہی لیئے کیا گیا ہو. بھارتیہ پوشاک پہنے ہوئے ہمیں موٹر میں بیٹھا دیکھکر سڑک کے دونوں کناروں پر کھڑے ہزاروں آدمی تالی بجا بجا کر "بھارت چین میتری زندہ باد" "شانتی زندہ باد" کے نعرے لگا کر خوب اچھل کود رہے تھے. اس دن تو دو لاکھ سے زیادہ آدمی سڑک کے کنارے پر صبح سے کھڑے تھے. آپکو جان کر یہ آشچریہ ہوگا کہ اس طرح سے کھلے عام یہاں پہلے کسی کا بھی سواگت نہیں کیا گیا. عام طور سے جب نیتا لوگ آتے ہیں تو چین کے بڑے بڑے نیتا ان کے سواگت کے لیے مہمانوں سہیت پیکنگ ہوٹل چلے جاتے ہیں' جو یہاں مہمانوں کو ٹھہرانے کے لئے خاص جگہ ہے. عام جنتا کو تو اخبار پڑھکر ہی معلوم ہوتا ہے کہ کوئی ویدیشی نیتا پیکنگ میں آیا ہے اور چینی نیتاگنوں کے درشن تو سال میں صرف دو بار ہوتے ہیں—پہلی مئی اور پہلی اکتوبر کو جب کہ وہ قطار میں کھڑے ہوکر جنتا کا سواگت کرتے ہیں. اب کی بار یہ سارے نیم ٹوٹ گئے یا یوں کہیے کہ پنڈت نہرو کے آنے کے بعد سے یہاں سواگت کا نیا رواج شروع ہو گیا. اس دن ہوائی اڈے پر 10 ہزار سے زیادہ آدمی موجود تھے. ویوستھا بنائے رکھنے کے اُدیش سے اس سے زیادہ آدمیوں کو ہوائی اڈے پر جانے کی صلاح نہیں دی گئی. باقی دو لاکھ سے زیادہ آدمیوں کو اڈے کے باہر سڑکوں کے کنارے بہت دور تک کھڑے رہنا پڑا. اُس دن بھارتیہ اور چینی جھنڈوں سے ہوائی اڈا خوب سجایا گیا تھا. بہت سے ویدیشی پرتِنِدھی و راجدوت

# चीन में पंडित नेहरू

श्रीमती प्रभा प्रसाद
(लेक्चरार, हिन्दी विभाग, पीकिंग विश्वविद्यालय)

[ श्रीमती प्रभादेवी पहली भारतीय महिला हैं जो पीकिंग विश्वविद्यालय में हिन्दी कीशिक्षक हैं. पंडित नेहरू जब चीन गये यह उस समय वे उनके स्वागत का वर्णन है—एडीटर ]

पंडित नेहरू के आने की तैयारी और उनके यहां रहने के दिनों में व्यस्त कार्य-क्रम रहा. 15 अक्टूबर को नेहरू जी भारत से चल दिये थे यह खबर यहां मिलते ही हमारे विद्यार्थियों में हमारे प्रति जो प्यार उमड़ा उसे पत्र में लिखना कठिन है. कक्षा शुरू होने से पहले ही वे मेरे पास आ जाते थे तरह तरह के सवाल करते थे. मेरे साथ ही घर से क्लास तक जाते थे और फिर क्लास खतम होने पर साथ ही घर तक पहुंचाने भी आते थे. उन्हें इस बात की बड़ी बेचैनी थी कि कहीं ऐसा न हो कि अधिक व्यस्त रहने के कारण पंडित जी उन्हें मुलाकात न दे सकें. पंडित नेहरू कैसी टोपी लगाते हैं, कैसे हंसते हैं, कैसे खाना खाते हैं, क्या वह भी बहुत दूध पीते हैं, विद्यार्थियों से मिलना पसंद करते हैं कि नहीं, जल्दी नाराज़ तो नहीं हो जाते, हम कैसे उनसे मिल सकते हैं, आप किसी तरह हमारा परिचय उनसे करा दीजियेगा. हम सिर्फ एक बार उन्हें देखना चाहते हैं, उनके साथ शांति जिंदाबाद का नारा लगाना चाहते हैं, वह एशिया के बहुत बड़े नेता हैं, उनके आने से भारत चीन मैत्री पक्की हो जायगी, आप अपने साथ हमें भी भारत ले चलियेगा ? इत्यादि इत्यादि बातों का जवाब देते देते नाक में दम हो गया. इंदिरा गांधी के बारे में उन्हें नहीं मालूम था, धीरे धीरे खबर आई कि पंडित नेहरू केन्टन पहुंच गये और 50 हज़ार आदमियों ने हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया. इसके बाद मालूम हुआ कि वह उच्छांग ( हैं कौ ) पहुंच गये. उसी रास्ते से जिस रास्ते हम लोग आये थे. वहां इतनी ज्यादा भीड़ थी कि उनकी मोटर एक घंटे तक आगे बढ़ ही नहीं सकी. 18 तारीख को हमें खबर मिली कि 19 को 12 बजे पंडित जी पेकिंग के हवाई अड्डे पर पहुंच जायँगे. आप को तो मालूम ही है कि यहां पर हम पांच भारतीय शिक्षक हैं और एक व्यापारी हैं. एमबेसी वालों ने हमारे विश्वविद्यालय से प्रार्थना की कि भारतीय अध्यापक कृपा करके Overseas

# چین میں پنڈت نہرو

شری متی پربھا پرساد، ایم. اے.
( لیکچرر، هندی وبھاگ، پیکنگ وشوودیالیہ )

[ سری‌متی پربھا دیوی پہلی بھارتی مہیلا ھیں جو پیکنگ وشوودیالیہ میں ھندی کی شکشھک ھیں. پنڈت‌نہرو جب چین گئے یہ اُس سمے کے اُن کے سواگت کا ورنن ھے . اڈیٹر ]

پنڈت نہرو کے آنے کے تیاری اور اُن کے یہاں رھنے کے دنوں منں ویست کاریہ کرم رھا . 15 اکتوبر کو نہرو جی بھارت سے چل دئے تھے یہ خبر یہاں ملتے ھی ھمارے ودیارتھیوں میں ھمارے پرتی جو پیار اُمڑا اُسے پتر میں لکھنا کٹھن ھے . کچھا شورح ھونے سے پہلے ھی وے میرے پاس آجاتے تھے طرح طرح کے سوال کرتے تھے . میرے ساتھ ھی گھر سے کلاس تک جاتے تھے اور کلاس ختم ھونے پر ساتھ ھی گھر تک پہنچانے بھی آتے . اُنہیں اس بات کی بڑی بے چینی تھی کہ کہیں ایسا نہ ھو کہ ادھک ویست رھنے کے کارن پنڈت جی اُنہیں ملاقات دے سکیں . پنڈت نہرو کیسی ٹوپی لگاتے ھیں . کیسے ھنستے ھین، کیسے کھانا کھاتے ھیں، کیا وہ بھی بہت دودھ پیتے ھیں، ودیارتھیوں سے ملنا پسند کرتے ھیں کہ نہیں، جلدی ناراض تو نہین ھوجاتے، ھم کیسے اُن سے مل سکتے ھیں، آپ کسی طرح ھمارا پریچئے اُن سے کرادیجئے گا . ھم صرف ایک بار اُنھیں دیکھنا چاھتے ھیں، اُن کے ساتھ شانتی زندہ باد کا نارا لگانا چاھتے ھیں، وہ ایشیا کے بہت بڑے نیتا ھیں، اُن کے آنے سے بھارت چین میتری پکی ھو جائے گی، آپ اپنے ساتھ ھمیں بھی بھارت لے چلئے گا ؟ اتیادی اتیادی باتوں کا جواب دیتے دیتے ناک میں دم ھوگیا اِندرا گاندھی کے بارے میں نہیں معلوم تھا، دھیرے دھیرے خبر آئی کہ پنڈت نہرو کینٹن پہنچ گئے اور 50 ھزار آدمیوں نے ھوائی اڈے پر اُن کا سواگت کیا . اِس کے بعد معلوم ھوا کہ وہ اُچھانگ ( ھیں کو ) پہنچ گئے . اُسی راستے سے جس راستے ھم لوگ آئے تھے . وھاں اپنی زیادہ بھیڑ تھی کہ اُن کی موٹر ایک گھنٹے تک آگے بڑھ ھی نہیں سکی 18 تاریخ کو ھمیں خبر ملی کہ 19 کو 12 بجے پنڈت جی پیکنگ کے ھوائی اڈے پر پہنچ جائینگے . آپ کو تو معلوم ھی ھے کہ یہاں پر ھم پانچ بھارتیہ سچھک ھیں اور ایک بیاپاری ھیں . ایم بیسی والوں نے ھمارے وشوودیالیہ سے پرارتھنا کی کہ بھارتیہ ادھیاپک کرپا کر کے Overseas

आत्मा पर पाला मार दिया है वहां उन्हें अपने ही देश में अपने तरीक़े से तरक़्क़ी करने में बड़ी बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है.

आज अफ़रीका वासियों के नेताओं का यह फ़र्ज़ है कि वह अपनी जातीय और सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन करें, उनमें जो स्थायी मूल्यों की बातें हैं और जिनसे उनके जीवन को सुन्दर बनाने में मदद मिलेगी, उनसे चिपटे रहें, अपने ऊपर विश्वास रखें, अपने भविष्य के ऊपर विश्वास रखें, उनमें जो पहले कमियां थीं उन्हें आज के ज़माने में और भविष्य में दूर करने की कोशिश करें, एशिया, यूरोप और अमरीका की संस्कृतियों की जिन ख़ूबियों से वह समझते हैं कि उनका दुनियावी फ़ायदा होगा और उनकी बौद्धिक और आध्यात्मिक तरक़्क़ी होगी और पिछली सदियों में उन्होंने जो उन्नति की थी उस तरह की उन्नति वह फिर कर सकें इसमें उन्हें सहायता देंगी, उनको वह पूरी तरह स्वीकार करें. ईश्वर करे अन्य पीड़ित लोगों की तरह पीड़ित अफ़रीका वासियों की आर्त्त पुकार सिर्फ़ यह न हो कि— 'हे ईश्वर ! हे ईश्वर ! क्या तू मेरी गुहार न सुनेगा ?' बल्कि वह एक उम्मीद से भरी और एतक़ाद पैदा करने वाली इबादत हो. और परवरदिगार की रहमत उन पर बरसे जो किसी एक क़ौम का परवरदिगार नहीं है और जिसके उतने नाम हैं जितनी कि ज़बानें और न वह किसी एक गिरोह का परवरदिगार है जो समझता है कि अल्लाह की सब नियामतें सिर्फ़ उसके लिये हैं बल्कि जो सब इनसानों का परवर दिगार है चाहे उनका रंग या मज़हब कैसा ही क्यों न हो. ऐसा सर्व व्यापी परमात्मा अफ़रीका निवासियों को तरक़्क़ी की मंज़िल पर बढ़ने और अपना मक़सद हासिल करने में मदद दे.



آتما پر پالا مار دیا ھے وھاں آنھیں اپنے ھی دیش میں اپنے طریقہ سے ترقی کرنے میں بڑی بڑی مشکلوں کا سامنا کرنا پڑ رھا ھے ۔

آج افریقہ نواسیوں کے نیتاؤں کا یہ فرض ھے کہ وہ اپنی جاتی ارر سنسکرتک وشیشتاؤں کا ادھین کریں' اُن میں جو استھائی مولیوں کی باتیں نھیں اور جن سے اُنکے جیون کو سندر بنانے میں مدد ملے گی' اُن سے چپٹے رھیں' اپنے اوپر وشواس رکھیں' اپنے بھوشیہ کے اوپر وشواس رکھیں' اُن میں جو پہلے کمیاں تھیں اُنھیں آج کے زمانے میں اور بھوشیہ میں دور کرنے کی کوشش کریں' ایشیا' یورپ اور امریکہ کی سنسکرتیوں کی جن خوبیوں سے وہ سمجھتے ھیں کہ اُن کا دنیاوی فائدہ ھوگا اور اُن کی بودھک اور آدھیاتمک ترقی ھوگی اور پچھلی صدیوں میں اُنھوں نے جو اُننتی کی تھی اُس طرح کی اُنتی وہ پھر کر سکیں اِس میں اُنھیں سہایتا دیں گی' ان کو وہ پوری طرح سویکار کریں ۔ ایشور کرے انیہ پیڑت لوگوں کی طرح پیڑت افریقہ واسیوں کی آرت پکار صرف یہ نہ ھو کہ—'ھے ایشور! ھے ایشور! کیا تو میری گوھار نہ سنیے گا!' بلکہ وہ ایک اُمید سے بھری اور اعتقاد پیدا کرنے والی عبادت ھو! اور پروردگار کی رحمت اُن پر برسے جو کسی ایک قوم کا پروردگار نھیں ھے اور جس کے اِتنے نام ھیں جتنی کہ زبانیں اور یہ وہ کسی ایک گروہ کا پروردگار ھے جو سمجھتا ھے کہ اللہ کی سب نعمتیں صرف اُس کے لیئے ھیں بلکہ جو سب انسانوں کا پروردگار ھے چاھے اُن کا رنگ یا مذھب کیسا ھی کیوں نہ ھو ۔ ایسا سرو ویاپی پرماتما افریقہ نواسیوں کو ترقی کی منزل پر بڑھنے اور اپنا مقصد حاصل کرنے میں مدد دے ۔

---

जो रात और दिन एक बार अतीत की ओर चले जाते हैं, वे फिर कभी वापिस नहीं आते; जो मनुष्य पाप करता है, उसके वे रात दिन बिल्कुल निष्फल जाते हैं.

—महाबीर स्वामी

جو رات اور دن ایک بار اَتیت کی اور چلے جاتے ھیں' وے پھر کبھی واپس نھیں آتے؛ جو منش پاپ کرتا ھے' اس کے وے رات دن بالکل نشپھل جاتے ھیں ۔

—مہابیر سوامی

---

पन्द्रहवीं सदी का माली साम्राज्य—निगर वैली की मुसलिम रियासतों में ऊंची संस्कृति और अरब साहित्य को उन्होंने जन्म दिया; प्राचीन अफ़रीक़ी नगर—घना, जेन्ने, टिम्बकटू, गाओ, कानो और पश्चिमी तटके बहुत से शहर, बेनिन और दूसरे; पूर्वी अफ़रीक़ा के बान्तू लोगों की उन्नति—उन्होंने जो साम्राज्य क़ायम किये ( सत्रहवीं सदी का मोनोमोटापा साम्राज्य और दूसरे राज्य ); और उनके निर्माण किये हुये आश्चर्यजनक प्राचीन नगर जैसे ज़िम्बाबावे, जिसके खंडहर अब तक हमारी हैरत के सबब हैं, और इन सबके अलावा पश्चिमी अफ़रीकियों और बान्तू लोगों की महान कला, उनकी कांसे की कलाकृतियां प्राचीन यूनानियों और रोमियों द्वारा बनाई हुई अच्छी से अच्छी कला की चीज़ों से टक्कर लेती हैं. इनके अलावा अफ़रीका निवासियों की धर्म से सम्बन्धित कला और लकड़ी की बेजोड़ खुदाई कि जिसका ताल्लुक़ भी धार्मिक अनुष्ठान की चीज़ों से है.

इनके अलावा अफ़रीका की नृत्य कला और अफ़रीक़ा की संगीत कला भी है—नगाड़ा, बांसुरी और हार्प और गायन. यह सब अफ़रीकियों की विरासत में मिली हुई निधि है. इनका उचित मूल्यांकन होना चाहिये और तभी अफ़रीका निवासी दूसरे इनसानों की तुलना में बड़प्पन हासिल करने की कोशिश करेगा. नाच और गानों के साथ सीधी सादी और ख़ुश ज़िन्दगी, जो अफ़रीकियों को एक चमक दमक देती है; उसकी असीम शक्ति और परिश्रम भी उसे शान के साथ जीने की कला सिखाते हैं और अफ़रीकी ज़िन्दगी को अनमोल विरासत देते हैं. इस तरह से अफ़रीका न केवल अपने को लाभ पहुंचायेगा बल्कि मानव समाज की हित साधना करेगा.

## प्रायश्चित्त की ज़रूरत

इनसानों का वह गिरोह जिसने अफ़रीका निवासियों के साथ ज़ुल्म किये हैं आज के अफ़रीकियों के साथ अपने बर्ताव में तब्दीली करके कम से कम आंशिक प्रायश्चित्त करे और आज उन लोगों को रोक कर जो अफ़रीका निवासियों के साथ अब भी अन्याय और अत्याचार करने की क़सम खाये बैठे हैं अपने पुराने पापों के लिये अफ़रीका निवासियों से क्षमा याचना करे.

जहां अफ़रीका निवासियों की सारी कोशिशें और सारी ज़िन्दगी यूरोप वालों के चुंगल में जकड़कर बेकार नहीं बना दी गई हैं, जैसा कि पश्चिमी अफ़रीका में ( जहां अनेकों हमदर्द और दूरन्देश अंग्रेज़ अफ़सरों. शिक्षकों और अन्य लोगों ने उन्हें मदद दी है ) अफ़रीका निवासियों ने अपनी आत्मा एकदम नहीं खोई है. लेकिन जहां उपनिवेशवाद, शोषण और रंग भेद के ज़हर ने अफ़रीका निवासियों की



پندرھویں صدی کا مالی سامراج نگر ویلی کی مسلم ریاستوں میں اونچی سنسکرتی اور عرب ساھتیہ کو انھوں نے جنم دیا؛ پراچین افریقہ نگر—گھنا، جنینے، ٹمبکٹو، گاؤ، کانو اور پچھمی تٹ کے بہت سے شہر، بینن اور دوسرے؛ پوربی افریقہ کے بانتو لوگوں کی اُنتی انہوں نے جو سامراجیہ قایم کئے ( سترھویں صدی کا مونو موٹاپا سامراجیہ اور دوسرے راجیہ )؛ اور اُن کے نرمان کئے ہوے آسچریہ جنک پراچین نگر جیسے زیمبابوے، جس کے کھنڈھر اب تک ہماری حیرت کے سبب ھیں اور، اُن سب کے علاوہ پچھمی افریقیوں، اور بانتو لوگوں کی مہان کلا؛ اُن کی کانسے کی کلا کرتیاں پراچین یونانیوں اور رومیوں دوارا بنائی ہوئی اچھی سے اچھی کلا کی چیزوں سے ٹکر لیتی ھیں. ان کے علاوہ افریقہ نواسیوں کی دھرم سے سمبندھت کلا اور لکڑی کی بے جوڑ کھدائی کہ جس کا تعلق بھی دھارمک انوشٹھان کی چیزوں سے ھے.

اِن کے علاوہ افریقہ کی نرتیہ کلا اور افریقہ کی سنگیت کلا بھی ھے—نگاڑا، بانسری اور ھارپ اور گاین. یہ سب افریقیوں کی وراثت میں ملی ہوئی ندھی ھے. اِن کا اُچت مولیانکن ھونا چاھئے اور تبھی افریقہ نواسی دوسرے انسانوں کی تلنا میں بڑپن حاصل کرنے کی کوشش کرے گا. ناچ اور گانوں کے ساتھ سیدھی سادی اور خوش زندگی جو افریقیوں کو ایک چمک دمک دیتی ھے؛ اُس کی اسیم شکتی اور پرشرم بھی اُسے شان کے ساتھ جینے کی کلا سکھاتے ھیں اور افریقی زندگی کو انمول وراثت دیتے ھیں. اِس طرح سے افریقہ نہ کیول اپنے کو لابھ پہنچائے گا بلکہ مانو سماج کی ھت سادھنا کرے گا.

## پرائشچت کی ضرورت

انسانوں کا وہ گروہ جس نے افریقہ نواسیوں کے ساتھ ظلم کئے ھیں. آج کے افریقیوں کے ساتھ اپنے برتاویں تبدیلی کر کے کم سے کم آنشک پرائشچت کریں اور آج ان لوگوں کو روک کر جو افریقہ نواسیوں کے ساتھ اب بھی انیائے اور انیاچار کرنے کی قسم کھائے بیٹھے ھیں. اپنے پرانے پاپوں کے لئے افریقہ نواسیوں سے چھما یاچنا کرے.

جہاں افریقہ نواسیوں کی ساری کوششیں اور ساری زندگی یورپ والوں کے چنگل میں جکڑ کر بیکار نہیں بنا دی گئی ھیں، جیسا کہ پچھمی افریقہ میں (جہاں انیکوں ھمدرد اور دوراندیش انگریز افسروں، شکچھکوں اور انیہ لوگوں نے انہیں مدد دی ھے) افریقہ نواسیوں نے اپنی آتما ایک دم نہیں کھوئی ھے. لیکن جہاں اوپنیویش واد شوشن اور رنگ بھید کے زھر نے افریقہ نواسیوں کی

पेशीन गोई कर सकता था कि मध्य और उत्तरी यूरोप के चमड़े से बदन ढकने वाले और नीले रंग से जिस्म रंगने वाले जंगली लोग, जो अपने देवताओं को इनसानों की बलि चढ़ाकर सन्तुष्ट किया करते थे—आज के जर्मन, सेल्ट और स्लाव लोग—मौजूदा सभ्यता के अलम बरदार बनेंगे ?

## आत्म सम्मान की भावना

जब तक अफ़रीका निवासी विभिन्नता में एकता को साकार करने वाली मानव सभ्यता की क़तार में शामिल न होंगे तब तक स्वर की एकता पैदा न होगी. बहुत सी ऐसी क़ौमें, जिनमें माद्दा है और जिन्होंने बहुत कुछ कर दिखाया है, मानव सभ्यता की समृद्धता और विभिन्नता को अपनी सौग़ात देने से वंचित रहे हैं. इस सिलसिले में उत्तर और दक्खिन अमरीका की बहुत सी क़ौमों के नाम लिये जा सकते हैं. इनमें से कुछ की प्राचीन तहज़ीब याफ़्ता क़ौमों में शुमार की जाती थी. मिसाल के तौर पर मैक्सिको के ना-हुआ क़बीलों के लोग (टालटेक, अज़टेक और दूसरे), मिक्सटेक, ज़ेपोटेक, ओटोमी और मेक्सिको की दूसरी क़ौमें और मैक्सिको और गौटेमाला के माया लोग, कोलम्बिया के चिबचास, दक्खिन अमरीका के अन्दीन क्षेत्र के क्वेचुआ और अयमारा, पालीनीशिया के लोग और अमरीका और ओसानिया के दो समूहों के लोग जिन्हें अपने बुज़ुर्गों की कीर्ति की कहानी विरसे में मिली है. मानव सभ्यता को अगर इन जातियों की दिमाग़ी ख़ूबियाँ हासिल होतीं तो उसके कारनामों में चार चाँद लगते. इनमें से बहुत सी क़ौमें या तो मिट गईं या उनकी ख़सूसियतें ख़त्म हो गईं. लेकिन अफ़रीका निवासी अब भी जीवित है और जाग्रत है और अगर मानव सभ्यता के समवेत संगीत में उसका स्वर भी शामिल करना है तो उसे उसका खोया आत्म सम्मान वापस करना होगा. उसे यह महसूस कराना होगा कि उसकी प्राचीन उन्नति कुछ मामूली नहीं थी और अगर उसका अपने अन्दर विश्वास जाग जाय तो अब भी वह मानव सभ्यता की तरक़्क़ी में अपना भी शानदार योगदान दे सकता है.

चलती फिरती तसवीर की तरह हमारी आंखों के सामने से उन साम्राज्यों के नज़ारे घूम जाते हैं जिन्हें अफ़रीका निवासियों ने क़ायम किये थे और जिनकी सभ्यता देश की सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल थी—नाइगर और सेनेगल नदियों के किनारे घना का साम्राज्य, घना के बाद मन्दिगों या माली साम्राज्य; निगर इलाक़े में संघोई, मासी और दूसरे राज्य; ईसाइयों और मुसलमानों से पहले पश्चिमी अफ़रीका की संस्कृति ने उस क्षेत्र में आश्चर्यजनक कला कृतियों को जन्म दिया; चौदहवीं और



پیشین گوئی کر سکتا تھا کہ مدھیہ اور اُتری یورپ کے چمڑے سے بدن ڈھکنے والے اور نیلے رنگ سے جسم رنگنے والے جنگلی لوگ، جو اپنے دیوتاؤں کو انسانوں کی بلی چڑھاکر سنتشٹ کیا کرتے تھے—آج کے جرمن، سیلٹ اور سلاؤ لوگ موجودہ سبھیتا کے علم‌بردار بنینگے ؟

## آتم سمّان کی بھاونا

جب تک افریقہ نواسی وبھنتا میں ایکتا کو ساکار کرنے والی مانو سبھئیتا کی قطار میں شامل نہ ہوں گے تب تک سور کی ایکتا پیدا نہ ہوگی. بہت سی ایسی قومیں، جن میں مادہ ہے اور جنھوں نے بہت کچھ کر دکھایا ہے، مانو سبھئیتا کی سمردھتا اور وبھنتا کو اپنی سوغات دینے سے ونچت رہے ہیں. اس سلسلے میں اُتر اور دکھن امریکہ کی بہت سی قوموں کے نام لیئے جاسکتے ہیں. ان میں سے کچھ کی پراچین تہذیب یافتہ قوموں میں شمار کی جاتی تھی. مثال کے طور پر مکسکو کے نا ھوا قبیلوں کے لوگ (ٹال ٹیک، ازٹیک اور دوسرے) مکسٹیک، زیپورٹیک اُوٹومی اور میکسکو کی دوسری قومیں اور مکیسکو اور گوٹے مالا کے مایا لوگ، کولمبیا کے چیوچاس، دکھن امریکہ کے اندین چھیتر کے کوئیچوآ اور ایمارا پالینیشیا کے لوگ اور امریکہ اور اُوسانیا کے دو سموھوں کے لوگ جنھیں اپنے بزرگوں کی کیرتی کی کہانی ورثہ میں ملی ہے. مانو سبھئیتا کو اگر اِن جاتیوں کی دماغی خوبیاں حاصل ہوتیں تو اس کے کارناموں میں چارچاند لگتے. اِن میں سے بہت سی قومیں یا تو مٹ گئیں یا ان کی خصوصیتیں ختم ہوگئیں. لیکن افریقہ نواسی اب بھی جیوت ہیں اور جاگرت ہے اور اگر مانو سبھئیتا کے سمویت سنگیت میں اُس کا سور بھی شامل کرنا ہے تو اُسے اُس کا کھویا آتم‌سمّان واپس کرنا ہوگا. اُسے یہ محسوس کرانا ہوگا کہ اُس کی پراچین اُنتی کچھ معمولی نہیں تھی اور اگر اُس کا اپنے اندر وشواس جاگ جائے تو اب بھی وہ مانو سبھئیتا کی ترقی میں اپنا بھی شاندار یوگ دان دے سکتا ہے.

چلتی پھرتی تصویر کی طرح ہماری آنکھوں کے سامنے سے اُن سامراجیوں کے نظارے گھوم جاتے ہیں جنھیں افریقہ نواسیوں نے قایم کئے تھے اور جن کی سبھئیتا دیس کی سانسکرت اور آرتھک پرستھتیوں کے انوکول تھی—ناگر اور سینیگل ندیوں کے کنارے گھنا کا سامراجیہ، گھنا کے بعد مندنگوں یا مالی سامراج؛ نگر علاقے میں سنگوئی، ماسی اور دوسرے راج، عیسائیوں اور مسلمانو سے پہلے پچھمی افریقہ کی سنسکرتی نے اُس چھیتر میں آشچریہ جنک کلا کرتیوں کو جنم دیا؛ چودھویں اور

तहज़ीब याफ़्ता क़ौमों में, जिनमें मौजूदा यूरोपियन क़ौमों के पुरखे भी शामिल थे, ज़िन्दा आदमियों की क़ुरबानी का रिवाज था. लेकिन जंगली क़ौमों के मूढ़ विश्वासों के मुताबिक़ मानव बलि उतनी बीभत्स नहीं है जितना धर्म के नाम पर सभ्य और ईसाई यूरोप का मानव बलि का रिवाज. मिसाल के तौर पर रोमन कैथलिकों के 'इन्क्वीज़ीशन' या 'मज़हबी अमल' और शुरू मौजूदा ज़माने और मंझले ज़माने में यूरोप के ज्यादातर ईसाई मुल्कों में 'डायनों' (?) को ज़िन्दा जलाने का रिवाज था. इसके मुताबिक़ हज़ारों आदमी, जिनका क़ुसूर महज़ इतना था कि वे ईसाई मज़हब की दूसरे शाख के मज़हबी अक़ीदों पर विश्वास नहीं करते थे और जिनके ख़िलाफ़ यह इलज़ाम लगाया जाता था कि जादू के बल पर ये असली ईसाइयों को सही रास्ते से बहकाकर झूठे मज़हबी रास्ते पर ले जाने की कोशिश करते हैं, धीमी धीमी आग पर ज़िन्दा जला दिया जाता था. और यह सब मानव इतिहास की उन सदियों के दौरान में हो रहा था जिन में कहा जाता है कि इनसान ने तरक़्क़ी की बहुत सी मंज़िलें तय कीं. जो लोग मज़हबी मामलों और सामाजिक मामलों में अफ़रीका निवासियों की बर्बरता और हैवानियत पर लानत भेजते हैं वे उन लोगों में से हैं जिन के मुताल्लिक़ हज़रत ईसा ने कहा है कि इन्हें दूसरे की आंखों का तिल दिखाई देता है मगर अपनी आंखों का लट्ठा नहीं दिखाई देता.

लेकिन युग-भावना आख़िरकार काम कर रही है. आधुनिक युग के मानव इतिहास की सबसे ख़ास घटना यह है कि अफ़रीका निवासी भी अब सोते से जाग गया है. वह अपनी नींद की ख़ुमारी दूर कर रहा है. वह जातियों और देशों की श्रेणी में अपनी मुनासिब जगह हासिल करने के लिये बेचैन हो रहा है. उसने यह सबक़ पश्चिम के लोगों से सीखा है. इसमें कोई शक नहीं कि यह सचाई अनुग्रह के साथ क़ुबूल करनी पड़ेगी कि यद्यपि पश्चिम के ज्यादातर लोग अफ़रीका वालों को लूटने, उनका शोषण करने और बदनाम करने गये, लेकिन उन्हीं पश्चिम वालों में अफ़रीका वालों को अपने कुछ सच्चे दोस्त और हित चिन्तक भी मिले. सदियों के अत्याचारों, शोषण और ग़लत फ़हमियों के बन्धनों से मुक्त होकर अफ़रीका निवासी इस हालत में आयेगा कि वह मानव उन्नति में अपना भी उचित योगदान दे. क़ुदरत ने उसे जो ख़ूबियाँ अता की हैं उनके ज़रिये वह इस परिस्थिति में होगा कि वह मानव समाज को सुखी बना सके. कोई नहीं जानता कि क़ुदरत, क़िस्मत या ईश्वर ने हमारे लिये क्या योजना बना रखी है. ढाई हज़ार बरस पहले या दो हज़ार बरस पहले सुसभ्य यूनान या रोम में कौन इस बात पर विश्वास कर सकता था या



تہذیب یافتہ قوموں میں جن میں موجودہ یوروپین قوموں کے پرکھے بھی شامل تھے' زندہ آدمیوں کی قربانی کا رواج تھا . لیکن جنگلی قوموں کے موڑھ وشواسوں کے مطابق مانوبلی اتنی ویبھتس نہیں ھے جتنا دھرم کے نام پر سبھیہ اور عیسائی یورب کا مانو بلی کا رواج . مثال کے طور پر رومن کیتھلکوں کے 'انکوئیزیشن' یا مذهبی عمل' اور شروع موجودہ زمانے اور منجھلے زمانے میں یورپ کے زیادہ تر عیسائی ملکوں میں 'ڈائنوں' ( ؟ ) کو زندہ جلانے کا رواج تھا . اِس کے مطابق هزاروں آدمی' جن کا قصور محض اتنا تھا کہ وے عیسائی مذهب کی دوسرے شاخ کے مذهبی عقیدوں پر وشواس نہیں کرتے تھے . اور جن کے خلاف یہ اِلزام لگایا جاتا تھا کہ جادو کے بل پر یہ اصلی عیسائیوں کو صحیح راستے سے وہ بہکاکر جھوٹے مذهبی راستہ پر لیجانے کی کوشش کرتے هیں' دهیمی دهیمی آگ پر زندہ جلا دیا جاتا تھا . اور یہ سب مانو ایتہاس کی اُن صدیوں کے دوران میں هو رها تھا . جن میں کہا جاتا ھے کہ انسان نے ترقی کی بہت سی منزلیں طے کیں . جو لوگ مذهبی معاملوں اور سماجک معاملو میں افریقہ نویسیوں کی بربرتا اور حیوانیت پر لعنت بھیجتے هیں وے اُن لوگوں میں سے هیں جن کے متعلق حضرت عیسیٰ نے کہا ھے کہ اُنہیں دوسرے کی آنکھوں کا تل دکھائی دیتا ھے . مگر اپنی آنکھوں کا لٹھا نہیں دکھائی دیتا .

لیکن یگ بھاونا آخرکار کام کررهی ھے . آدهونک یگ کے مانو اِتہاس کی سب سے خاص گھٹنا یہ ھے کہ افریقہ نواسی بھی اب سوتے سے جاگ گیا ھے . وہ اپنے نیند کی خماری دور کررها ھے . وہ جاتیوں اور دیشوں کی شرینی میں اپنی مناسب جگہ حاصل کرنے کے لئے بیچین هو رها ھے . اس نے یہ سبق پچھم کے لوگوں سے سیکھا ھے . اس میں کوئی شک نہیں کہ سچائی انوگرہ کے ساتھ قبول کرنی پڑے گی کہ حالانکہ پچھم کے زیادہ تر لوگ افریقہ والوں کو لوٹنے اور اس کا شوشن کرنے اور بدنام کرنے گئے' لیکن اُنہیں پچھم والوں میں افریقہ والوں کو اپنے کچھ سچے دوست اور هت چنتک بھی ملے صدیوں کے اتیاچاروں' شوشن اور غلط فہمیوں کے بندھنوں سے مکت هوکر افریقہ نواسی اس حالت میں ائے گا کہ وہ مانو اُننتی میں اپنا هی اُچت یوگ دان دے . قدرت نے اُسے جو خوبیاں عطا کی هیں اُن کے ذریعے وہ اِس پرستھتی میں هوگا کہ وہ مانو سماج کو سکھی بنا سکے . کوئی نہیں جانتا کہ قدرت' قسمت یا ایشور نے همارے لئے کیا یوجنا بنا رکھی ھے . ڈھائی هزار برس پہلے یا دو هزار برس پہلے سوسبھیہ یونان یا روم میں کون اِس بات پر وشواس کر سکتا تھا یا

साहित्य को भी उसने अपनी स्वाभाविकता सादगी से प्रभावित किया है. सभ्यता के माप दण्ड में वह आदिमयुग और सभ्य युग के चौराहे पर खड़ा है. आदिवासी जीवन के रहस्यों से उसका सम्पर्क है, धार्मिक विश्वास का उसके पास बाहुल्य है. इस सबसे वह साहित्य को धनी बनाता है.

## उसे अवसर नहीं मिला

अफ़रीका के काले आदमियों को अपनी शक्ति को पहचानने और तरक़्क़ी की ऊंची मंज़िल तक पहुंचने का अब तक मौक़ा नहीं मिला. अफ़रीका का अब तक जो भी असर पड़ा है वह नुमाया तौर पर अमरीका में उसकी गुलाम आबादी के सबब पड़ा. फिर भी अपनी कला में—खास तौर पर मूर्तिकला की अद्भुत परम्पराओं में, जिनका सम्बन्ध उसकी पशु पूजा के विश्वास के साथ है—लकड़ी की कलापूर्ण खुदाइयों में, हाथी दांत की कला में, पत्थर की मूर्तियों के गढ़ने में कांसे की मूर्तियां बनाने में, मिट्टी के माडेल तैयार करने में उसने प्रसिद्धि पाई है. अफ़रीका के भीतरी मध्य भाग में ठेठ अफ़रीकी लोगों में गुफाओं और चट्टानों पर उसकी प्रागैतिहासिक चित्र कला में, उत्तर और दक्षिण में, उसके सादगी से भरी कच्ची झोपड़ियों के निर्माण में अफ़रीका निवासी ने आज की दुनिया के लिये भी कला की एक नई उदार शैली, और रेखाओं का सुन्दर इस्तेमाल करने की कला दी है. पिछली सदियों में नील के पठार में उसने जिस उन्नत निर्माण कला का प्रदर्शन किया है उससे वह अपनी कला की शक्ति को पहचानने लगा है.

अफ़रीकी मानव परिवार की सबसे अधिक तिरस्कृत सन्तान है. उसके साथ बेहद बदसलूकियां की गई हैं. अब भी ऐसे कुछ लोग हैं जो उसे ग़रीबी, दासता और अज्ञान के बन्धनों में बांधे रखना चाहते हैं जिससे एक ओर तो वह उसका लद्दू बैल की तरह शोषण कर सकें और दूसरी ओर अपनी आत्मा और अपने विवेक को भी साफ़ रख सकें. गृहस्थ और सामाजिक जीवन के दायरे में अफ़रीका में जो पारस्परिक सहयोग और मधुर एकरसता है (अफ़रीकी महिलायें मेहनती और स्वामिभक्त होती हैं और उनमें आदि जीवन की एक सादगी होती है और वे अफ़रीका के गृहस्थ जीवन की बुनियाद होती हैं) उसे भी समझने की कोशिश नहीं की गई और चूंकि पश्चिमी सामाजिक जीवन के तरीक़ों से अफ़रीकी सामाजिक जीवन के तरीक़े भिन्न हैं इसलिये उसकी सरापा निन्दा की जाती है और उसे 'मूढ़ धर्मियों की बर्बर चालें' समझा जाता है.

यह सही है कि अफ़रीका में कुछ क़बीलों में मानव बलिदान उनके धार्मिक विश्वास का अङ्ग समझा जाता था. लेकिन यह इनसानों की बलि चढ़ाने का रिवाज महज़ अफ़रीकनों की ही विशेषता नहीं थी. दुनिया की ज्यादातर



ساھتیہ کو بھی اُس نے اپنی سوابھاوک سادگی سے پربھاوت کیا ھے. سبھیتا کے ماپ دنڈ میں وہ آدیُگ اور سبھیہ یگ کے چوراھے پر کھڑا ھے. آدی واسی جیون کے رھسیوں سے اُس کا سمپرک ھے' دھارمک وشواس کا اُس کے پاس باھولیہ ھے. اُس سب سے وہ ساھتیہ کو دھنی بناتا ھے.

## اُسے اوسر نہیں ملا

افریقہ کے کالے آدمیوں کو اپنی شکتی کو پہچاننے اور ترقی کی اُونچی منزل تک پہنچنے کا اب تک موقع نہیں ملا. افریقہ کا اب تک جو بھی اثر پڑا ھے وہ نمایاں طور پر امریکہ میں اُس کی غلام آبادی کے سبب پڑا. پھر بھی اپنی کلا میں— خاص طور پر مورتی کلا کی ادبھت پرمپراؤں میں' جن کا سمبندھ اُس کی پشو پوجا کے وشواس کے ساتھ ھے. لکڑی کی کلا پورن کھدائیو میں' ھاتھی دانت کی کلا میں' پتھر کی مورتیوں کے گڑھنے میں کانسے کی مورتیاں بنانے میں' مٹی کے ماڈل تیار کرنے میں اُس نے پرسدھ پائی ھے. افریقہ کے بھیتری مدھیہ بھاگ میں ٹھیٹھ افریکی لوگوں میں گپھاؤں اور چٹانوں پر اُس کی پراگ ایتہاسک چتر کلا میں' اُتر اور دکشن میں' اس کے سادگی سے بھری کچی جھوپڑیوں کے نرمان میں افریقہ نواسی نے آج کی دنیا کے لئے بھی کلا کی ایک نئی اُدار شیلی اور ریکھاؤں کا سندر استعمال کرنے کی کلا دی ھے. پچھلی صدیوں میں نیل کے پٹھار میں اُس نے جس اننت نرمان کلا کا پردرشن کیا ھے اُس سے وہ اپنی کلا کی شکتی کو پہچاننے لگا ھے.

افریقہ کی مانو پریوار کی سب سے ادھک ترسکرت سنتان ھے. اُس کے ساتھ بیحد بدسلوکیاں کی گئی ھیں. اب بھی ایسے کچھ لوگ ھیں جو اُسے غریبی' داستا اور اگیان کے بندھنوں میں باندھے رکھنا چاھتے ھیں جس سے ایک اُور تو وہ اُس کا لدو بیل کی طرح شوشن کر سکیں اور دوسری، اُور اپنی آتما اور اپنے وویک کو بھی صاف رکھ سکیں. گرھستھ اور سماجک جیون کے دائرے میں افریقہ میں جو پارسپرک سہیوگ اور مدھر ایکرستا ھے. (افریقی مہلائیں محنتی اور سوامی بھکت ھوتی ھے اور اُن میں آدی جیون کی ایک سادگی ھوتی ھے اور وے افریقہ کے گرھستھ جیون کی بنیاد ھوتی ھیں) اُسے بھی سمجھنے کی کوشش نہیں کی گئی اور چونکہ پچھمی سماجک جیون کے طریقوں سے افریقی سماجک جیون کے طریقے بھن ھیں اِس لئے اُس کی سراپا نندا کی جاتی ھے اور افریقی مذھب کی بھی نندا کی جاتی ھے اور 'اُسے موڑھ دھارمیوں کی بربر چالیں' سمجھا جاتا ھے.

یہ صحیح ھے کہ افریقہ میں کچھ قبیلوں میں مانو بلیدان اُن کے دھارمک وشواس کا انگ سمجھا جاتا تھا. لیکن یہ انسانوں کی بلی چڑھانے کا رواج محض افریقیوں کی ھی وشیشتا نہیں تھی. دنیا کی زیادہ تر

गये. बाद में वे या तो उन जातियों में रल मिल गये जो उनके बाद आई या मिट गये और या दक्खिन भारत या अन्दमान के टापुओं में छोटे छोटे क़बीलों के रूप में अब भी बाक़ी हैं. चूंकि ये लोग इओलिथिक या उस ज़माने के थे जब खाना इकट्ठा करने की तलाश में लोग घूमते थे इसलिये इनकी सभ्यता के कोई निशान बाक़ी नहीं रह गये. लेकिन ऐसा ख़याल किया जाता है कि उनके कुछ मज़हबी अक़ीदे और आचार विचार अब भी उन लोगों के मज़हबी विश्वासों और धार्मिक पूजाओं की बुनियादी तह में पाये जाते हैं जो उनके बाद भारत आये और जिनका अपने से पहले आये हुये अफ़रीक़ी निग्रो लोगों से सम्बन्ध था.

## अफ़रीक़ा और दुनिया

दो हज़ार बरस पहले अचरज से भरकर रोमन कहा करते थे–'अफ़रीक़ा में रहती है हमेशा कुछ न कुछ नवीनता.' प्राचीन सभ्य क़ौमों के साथ साथ रोमन भी अफ़रीक़ा की विशालता, प्राचीनता, अजनबीयत, और प्राग् ऐतिहासिकता से आकर्षित हुये. मिस्र अफ़रीक़ा का ही हिस्सा है और मिस्र के दक्खिन में नूबिया है और काला हिन्टरलैन्ड है जो अब तक यूरोपियनों के लिये एक अज्ञात भू-भाग है और जिससे एशिया की प्राचीन क़ौमों का भी परिचय नहीं था; हालांकि कारथेजी हन्नो ने हज़रत ईसा से छै सौ बरस पहले अटलांटिक से गाइना तक समूचे पच्छिमी अफ़रीक़ा के तट की खोज की थी. यह भी कहा जाता है कि मिस्री फ़ेरोए (फ़रऔन) नेचो ने फ़िनीशी खोजियों को ईसा से सात सदी पहले अफ़रीक़ा की प्रदक्षिणा के लिये भेजा था जो लाल सागर के पूर्वी किनारे से रवाना हुये और पूरे अफ़रीक़ा की परिक्रमा करके जिब्राल्टर और उत्तर अफ़रीक़ा से होते हुये मिस्र लौटे.

अफ़रीक़ा और उसके निग्रो निवासियों का जितना यूरोपियनों और कुछ एशियाइयों ने शोषण किया उतना दुनिया के किसी भी दूसरे हिस्से या उसके निवासियों का शोषण नहीं हुआ. और इसी शोषण के ज़रिये और यह शोषण हृदयहीन शोषण था और जिसने यह दिखा दिया कि गोरे लोग, यूरोप निवासी और पश्चिम एशिया के निवासी दोनों, काले आदमी की बनिस्बत कहीं ज़्यादा असभ्य और जंगली हैं. अफ़रीक़ा का यह निवासी अमरीका और दूसरे देशों में ग़ुलाम बनाकर बेचा गया. ग़ुलाम बनकर जहां-जहां वह गया वहां अपनी हड्डी तोड़ मेहनत के ज़रिये उसने अपनी असहायता में भी मानवता की सेवा की. उसने दूसरे देशों की पैदावार और धन को बढ़ाया. उसने अपने संगीत और नृत्य को आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय रूप देकर कला के क्षेत्र में नई धारा बहाई. अब मूर्तिकला और चित्र कला के क्षेत्र में भी हाल में उसकी देन शुरू हुई है. आधुनिक युग के



گئے. بعد میں وے یا تو اِن جاتیوں میں رل مل گئے جو اُن کے بعد آئیں یا مٹ گئے اور یا دکھن بھارت یا اندمان کے ٹاپوؤں میں چھوٹے چھوٹے قبیلوں کے روپ میں اب بھی باقی ہیں ۔ چونکہ یہ لوگ اِیولتھک یا اُس زمانے کے تھے جب کھانا اکٹھا کرنے کی تلاش میں لوگ گھومتے تھے ۔ اِس لئے ان کی سبھیتا کے کوئی نشان باقی نہیں رہ گئے ۔

لیکن ایسا خیال کیا جاتا ھے کہ اُن کے کچھ مذھبی عقیدے اور آچنر وچار اب بھی اُن لوگوں کے مذھبی وشواسوں اور دھارمک پوجاؤں کی بنیادی تہ میں پائے جاتے ھیں جو اِن کے بعد بھارت آئے اور جن کا اپنے سے پہلے آئے ھوئے افریکی نیگرو لوگوں سے سمبندھ تھا ۔

## افریقہ اور دنیا

دو ھزار برس پہلے اچرج سے بھر کر رومن کہا کرتے تھے—'افریقہ میں رہتی ھے ھمیشہ کچھ نہ کچھ نوینتا'. پراچین سبھیہ قوموں کے ساتھ ساتھ رومن افریقہ کی وشالتا' پراچینتا' اجنبییت' اور پراگ ایتہاسکتا سے آکرشت ھوئے ۔ مصر افریقہ کا ھی حصہ ہے اور مصر کے دکھن میں نوبیا ھے اور کالا ھنٹرلینڈ ھے جو اب تک یوروپینوں کے لئے ایک اگیات بھوبھاگ ھے اور جن سے ایشیا کی پراچین قوموں کا بھی پریچے نہیں تھا؛ حالانکہ کارتھیجی ھنونے حضرت عیسیٰ سے چھ برس پہلے اٹلانٹک سے گائنا تک سموچے پچھمی افریقہ کے تٹ کی کھوج کی تھی ۔ یہ بھی کہا جاتا ھے کہ مصری پیروئے ( فرعون ) نیچو نے فنشی کھوجیوں کو عیسیٰ سے ساتھ صدی پہلے افریقہ کی پردکشن کے لئے بھیجا تھا جو لال ساگر کے پوربی کنارے سے روانہ ھوئے ۔ اور پورے افریقہ کی پریکرما کرکے جیبرالٹر اور اُتر افریقہ سے ھوتے ھوئے مصر لوٹے ۔

افریقہ اور اُس کے نیگرو نواسیوں کا جتنا یوروپینوں اور کچھ ایشیائیوں نے شوسن کیا اُتنا دنیا نے کسی بھی دوسرے حصے یا اُس نواسیوں کا شوشن نہیں ھوا ۔ اور اسی شوشن کے ذریعہ اور یہ شوشن ھردئےھین شوشن تھا ۔ اور جس نے یہ دکھا دیا کہ گورے لوگ' یورپ نواسی اور پچھمی ایشیا کے نواسی دونوں' کالے آدمی کی بنسبت کہیں زیادہ اسبھیہ اور جنگلی ھیں ' افریقہ کا یہ نواسی امریکہ اور دوسرے دیشوں میں غلام بنا کر بیچا گیا ۔ غلام بن کر جہاں جہاں وہ گیا وھاں اپنی ھڈی توڑ محنت کے ذریعہ اُس نے اپنی اسہائتا میں بھی مانوتا کی سیوا کی ۔ اُس نے دوسرے دیشوں کی پیداوار اور دھن کو بڑھایا ۔ اُس نے اپنے سنگیت اور نیرتیہ کو آدھونک انتر راشٹریہ روپ دے کر کلا کے چھیتر میں نئی دھارا بہائی ۔ مورتی کلا اور چھیتر کلا کے چھیتر میں بھی حال میں اُس کی دین شروع ھوئی ھیں ۔ آدھونک یگ کے

मिशनरी जो इस 'अंधेरे महाद्वीप' को रोशन करने गये थे समझते थे कि अपने दक़ियानूसी मज़हबी विचारों, और अपने बर्बर रीति रिवाजों के सबब अफ़रीक़ी अज्ञान और मूढ़ाचारों के अन्धकार में ग़ोता खा रहा है, और जैसा कि ये मिशनरी समझते हैं, ईसू ख्रीस्त का मज़हब ही उसका उद्धार कर सकता है. अफ़रीक़नों की तरफ़ इसलाम के प्रचारकों—अरबों, बर्बरों या नौ मुसलिम अफ़रीक़ियों का, रवय्या भी यही था.

## अफ़रीक़ा का रहस्य

ज़माने के नये दौर का यह तक़ाज़ा है कि हम अफ़रीक़ा के तरफ़ अपने रवय्ये में तब्दीली करें. मिसाल के तौर पर अफ़रीक़ा के ख़ास फूल पौधों को लें. कुछ ख़ास तरह के फूल-पौधे और जानवर, जो दुनिया में और कहीं नहीं मिलते और जिनका जनम अफ़रीक़ा की ही सरज़मीन पर हुआ, अब तक अफ़रीक़ा में मिलते हैं. और इसी वजह से अफ़रीक़ा, जहां की सरज़मीन में क़ुदरत ने अपना रूप बिखेरा है, नवीनता और सतत् दिलचस्पी का केन्द्र है. वहां के पेड़ और पौधे भी अजीब क़िस्म के हैं—तेलिया खजूर 'बाओबाब', कोलानट, गोंद के पौधे—इनके अलावा कुछ ऐसे पेड़ पौधे जो उस ज़माने से पहले के हैं जब धरती के भीतर से ज्वालामुखी फूटी थी और जलते हुये लावा के ढेरों ने ज़मीन की सतह के ऊपर के सब पेड़ पौधों को बरबाद कर दिया था. अफ़रीक़ा के हाथी और गेंडे, जल-हाथी (हिप्पोपोटामस), ज़िराफ़, जेबरा, ओकापी, क्वागा, ग्नू, शेर बबर, इन्सानों की तरह के भीमकाय बन्दर, गोरिल्ला और शिम्पेंजी अफ़रीक़ा की विशेषता हैं. इनके अलावा ख़ुद अफ़रीक़ा का निवासी—वहां का मानव; उसकी जिस्मानी और दिमाग़ी विशेषतायें—काला रंग, शक्तिशाली और उद्योगी, हंसमुख और सादगी की मूरत और क़ुदरत के साथ एकरस—ये उसकी ख़ासियतें हैं जो उसे मानवों की दुनिया में एक ख़ास जगह देती हैं. जो लोग उसे क़रीब से देखते हैं उनके लिये वह पसन्द और प्यार की वस्तु है.

निग्रो या अफ़रीक़ा का काला आदमी इन्सानों के तीन गिरोहों में से एक है. दूसरे दो गिरोह हैं—गोरे या कोह-काफ़ी (जिनमें गेहुंये रंग की जातियां भी शामिल हैं) और पीले या मंगोली (जिनमें अमरीका के रेड इण्डियन जो पीली जातियों ही की शाख़ हैं) दुनिया में जब इनसानी नस्लों की शुरूआत हुई उस समय गोरी जातियों के इनसानों के विकास क्रम में, कहा जाता है कि, काली जातियों के ख़ून के मिश्रण ने तेज़ ख़मीर का काम किया.

जैसा कि इनसानी नस्लों की विद्या के जानकार विद्वानों ने पता लगाया है हमारे देश में ऐतिहासिक युग से पहले अफ़रीक़ी निग्रो आये और देश के एक बड़े भाग में बस





مشنری جو اس اندھیرے 'مہادیپ' کو روشن کرنے گئے تھے سمجھتے تھے کہ اپنے دقیانوس مذہبی وچاروں' اور اپنے بربریت رواجوں کے سبب افریقی اگیان اور موڑھا چاروں کے اندھکار میں غوطہ کھا رہا ھے' اور جیسا کہ یہ مشنری سمجھتے ھیں' عیسو کھرسیت کا مذہب ھی اس کا اُدھار کر سکتا ھے . افریقیوں کی طرف اسلام کے پرچارکوں—عربو' بربروں یا نو مسلم افریکیوں کا' رویہ بھی یہی تھا .

## افریقہ کا رھسیہ

زمانہ کے نئے دور کا یہ تقاضہ ھے کہ ھم افریقہ کے طرف اپنے رویئے میں تبدیلی کریں . مثال کے طور پر افریقہ کے خاص پھول پودھوں کو لیں . کچھ خاص طرح کے پھول پودھے اور جانور' جو دنیا میں اور کہیں نہیں ملتے . اور جن کا جنم افریقہ کی ھی سر زمین پر ھوا' اب تک افریقہ میں ملتے ھیں . اور اِسی وجہ سے افریقہ' جہاں کی سرزمین میں قدرت نے اپنا روپ بکھیرا ھے' نوینتا اور ستت دلچسپی کا کیندر ھے . وھاں کے پیڑ اور پودھے بھی عجیب قسم کے ھیں . تیلیا کھجور 'باؤباب' کولانٹ' گوند کے پودھے—اِن کے علاوہ کچھ ایسے پیڑ پودھے جو اِس زمانے سے پہلے کے ھیں جب دھرتی کے بھیتر سے جوالامکھی پھوٹی تھی اور جلتے ھوے لاوا کے ڈھیروں نے زمین کی سطح کے اوپر کے سب پیڑ پودھوں کو برباد کر دیا تھا . افریقہ کے ھاتھی اور گینڈے' جل ھاتھی ( ھپوپوٹامس ) جراف' زبرا' اوکاپی' کواگا' گنو' شیر ببر' انسانوں کی طرح کے بھیم کایہ بندر گوریلا او رشمپنجی افریقہ کی وشیشتا ھیں . اِن کے علاوہ خود افریقہ کا نواسی—وھاں کا مانو؛ اس کی جسمانی اور دماغی وشیشتائیں—کالا رنگ' شکتی‌شالی اور اُدیوگی' ھنس‌مکھ اور سادگی کی مورت اور قدرت کے ساتھ ایک رس—یہ اُس کی خاصیتیں ھیں جو اسے مانووں کی دنیا میں ایک خاص جگہ دیتی ھیں . جو لوگ اُسے قریب سے دیکھتے ھیں ان کے لیئے وہ پسند اور پیار کی وستو ھے .

نیگرو یا افریقہ کا کالا آدمی انسانوں کے تین گروھوں میں سے ایک ھے . دوسرے دو گروہ ھیں—گورے یا کوہ کافی ( جن میں گیہوئے رنگ کی جاتیاں بھی شامل ھیں ) اور پیلے یا منگولی ( جن میں امریکہ کے ریڈ انڈین جو پیلی جاتیوں ھی کی شاخ ھیں ) . دنیا میں جب انسانی نسلوں کی شروعات ھوئی اُس سمئے گوری جاتیوں کے انسانون کے وکاس کرم میں' کہا جاتا ھے کہ' کالی جاتیوں کے خون کے مشرن نے تیز خمیرا کا کام کیا .

جیسا کہ انسانی نسلوں کی ودیا کے جانکار ودوانوں نے پتہ لگایا ھے . ھمارے دیش میں ایتہاسک یگ سے پہلے افریقی نیگرو آئے اور دیش کے ایک بڑے بھاگ میں بس

डाक्टर सुनीति कुमार चैटरजी एम. ए., डी. लिट.

[लेखक कलकत्ता यूनिवर्सिटी के कम्पेरिटेव फ़ाइलालाजी के प्रोफ़ेसर, एशियाटिक सोसाइटी के अध्यक्ष, और वेस्ट बंगाल लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सभापति हैं. यह लेख रामकृष्ण मिशन इन्स्टिट्यूट आफ़ कल्चर में दिये हुये उनके भाषण—'पच्छिमी अफ़रीक़ा के लोग और उनकी संस्कृति' पर आधारित है. मूल लेख अंगरेज़ी में था. नीचे कविता की लाइनों का अनुवाद लेखक का किया हुआ है.]

❃ ❃ ❃

आंधारे ते भय करिना—
आंधार आमि बासि भालो.
आंधार देखले मने पड़े,
श्यामा मा मोर एमनि कालो.
भयेर आकार देखले परे,
डाकि आमार श्यामा मा रे,
आंधार माझे (भयेर माझे) देखते जे पाइ
मायेर राङ्गा पायेर आलो. *

अफ़रीक़ा को 'श्याम महाद्वीप' कहा गया है. अभी थोड़े समय पहले तक यूरोप और एशिया के लोगों के लिये वह एक अंधेरा और अज्ञात महादेश था लेकिन यूरोपियन लोगों की जिज्ञासा और अरबों और यूरोपियनों के फैलाव और शोषण की भावना की बदौलत अफ़रीक़ा का कोना कोना घनिष्ट परिचय की और रोशनी से जगमग कर रहा है. अफ़रीक़ा को 'काला' भी कहा जाता था क्योंकि वहां के निवासी (बाद के अरब हमलावरों और उत्तर के हमाटिक लोगों को छोड़ कर) काले हैं—गहरे काले रंग से लेकर हलके काले रंग के—जिनकी अपनी ख़ूबसूरती है और जिसकी क़द्र बाहर के लोग नहीं कर पाते. ज्यादातर क्रिस्तानी

*मैं अंधेरे से नहीं डरता—
मैं अंधेरे को प्यार करता हूं.
अंधेरा देखते ही मन में आता है,
मेरी मां काली ! इसी तरह सांवले रंग की हैं.
डर की शक्ल देखने के बाद,
पुकारता हूं 'ओ मा काली !'
अंधेरे के बीच में, डर के बीच में देखता हूं,
मां के पैरों के महावर का प्रकाश.



ڈاکٹر سونیت کمار چٹر جی ایم . اے . ڈی . لٹ

[ لیکھک کلکتہ یونیورسٹی کے کمپیریٹیو فائیلالجی کے پروفیسر ایشیاٹک سوسائٹی کے ادھیکش' ویسٹ بنگال لجسلیٹیو کونسل کے سبھاپتی ہیں . یہ لیکھ رام کرشن مشن انسٹیٹیوٹ آف کلچر میں دئے ہوئے ان کے بھاشن—'پچھمی افریقہ کے لوگ اور ان کی سنسکرتی' پر آدھارت ہے . مول لیکھ انگریزی میں تھا . نیچے کویتا کی لائینوں کا انوواد خود لیکھک کا کیا ہوا ہے . ]

❃ ❃ ❃

آں دھارے تے بھئے کرینا—
آں دھار آمی باسی بھالو .
آں دھار دیکھ لے منے پڑے'
شیاما ما مور ایمنی کالو .
بھیئر آکار دیکھ لے پرے'
ڈاکی آمار شیاما مارے'
آں دھار ماجھے ( بھیر ماجھے ) دیکھتے جے پائی
مائیر رانگا پائیر آلو . *

افریقہ کو 'شیام مہادیپ' کہا گیا ہے . ابھی تھوڑے سمے پہلے تک یورپ اور ایشیا کے لوگوں کے لئے وہ ایک اندھیرا اور اگیات مہادیش تھا لیکن یورپین لوگوں کی جگیاسا اور عربوں اور یوروپینوں کے پھیلاو اور شوشن کی بھاونا کی بدولت افریقہ کا کونہ کونہ گھنشٹ پرچے کی روشنی سے جگمگ کررہا ہے . افریقہ کو 'کالا' بھی کہا جاتا تھا کیونکہ وہاں کے نواسی ( بعد کے عرب حملہ آوروں اور اُتر کے ھماٹک لوگوں کو چھوڑ کر ) کالے ہیں—گہرے کالے رنگ سے لیکر ہلکے کالے رنگ کے—جن کی اپنی خوبصورتی ہے جس کی قدر باھر کے لوگ نہیں کرپاتے . زیادہتر کرستانی

*میں اندھیرے سے نہیں ڈرتا—
میں اندھیرے سے پیار کرتا ہوں .
اندھیرا دیکھتے ہی من میں آتا ہے'
میری ماں کالی ! اسی طرح سانولے رنگ کی ہیں'
ڈر کی شکل دیکھنے کے بعد'
پکارتا ہوں 'او ماں کالی !'
اندھیرے کے بیچ میں' ڈر کے بیچ میں دیکھتا ہوں .
ماں کے پیروں کے مہاور کا پرکاش .

चीन के पुराने फ़िलासफ़र व्यक्तिवाद को "यांग चू" कहा करते थे जिसके मानी हैं 'हर एक अपने को सम्हाले' और समाजवाद को कहा करते थे "मिह्तेह्" यानी सबसे एक बराबर प्रेम करो. इन दोनों असूलों को मिलाकर ही सच्चा समाज संगठन हो सकता है, यह दोनों मिलाकर ही धरती पर मज़बूत और टिकाऊ "अमन" क़ायम कर सकते हैं, क्योंकि इन से ही लोगों में एक दूसरे के भले की इच्छा जाग सकती है. इस तरह के अल्लाह के बंदे ही लोगों में एक दूसरे के भले की इच्छा पैदा कर सकते हैं. इसके लिए उन्हें दो बातें करनी होंगी. पहली यह कि सब अलग अलग धर्मों की बुनियादी एकता और उनकी बुनियादी सच्चाइयों को सामने लाकर उनके मानने वालों में एक दूसरे के साथ प्रेम और एक दूसरे का आदर पैदा करें. और दूसरी यह है कि सब धर्मों के निचोड़ के रूप में दुनिया को यह बतावें कि सच्चे समाज संगठन के असूल क्या होने चाहिएँ जिन पर चलकर सब लोगों की जायज़ ज़रूरतें और जायज़ इच्छाएं पूरी हो सकें. हर एक को ठीक ठीक काम और ठीक ठीक मज़दूरी मिल सके, हर काम के लिए ठीक ठीक आदमी मिल सकें, और हमारे समाज की यह इतनी बड़ी मशीन इस तरह चल सके कि किसी के ऊपर मुनासिब से ज़्यादा बोझ न हो, कोई भूखा, नंगा या बिना घर के न रहे और सबका सब तरह भला और सब की तरक़्क़ी हो.

ऐ दुनिया के साइंसदानों! सब से भारी ज़िम्मेवारी तुम्हारे ऊपर है! तुम ही ज्ञान का पता लगाते हो और उसे फैलाते हो. वह ज्ञान दुनिया के भले के लिए काम में आना चाहिए. लेकिन इस समय वह दुनिया के बुरे के लिए काम में लाया जा रहा है! इसलिए अपनी माद्दी साइंस को रूहानी साइंस से रोशन करो. अपनी साइंस के साथ परोपकार की पक्की भावना को मिला दो! सब मिल जाओ! लोगों को दिखला दो कि समाज संगठन का ठीक तरीक़ा क्या हो सकता है. तुमने अगर अपना यह फ़र्ज़ पूरा न किया तो मानव समाज मिट सकता है! और यदि तुमने अपना यह फ़र्ज़ पूरा कर लिया तो मानव समाज बच सकता है, जी सकता है, और सब शांति और सुख के साथ रह सकते हैं.

———



چین کے پرانے فلسفر ویکتی‌واد کو "یانگ چو" کہا کرتے تھے جس کے معنی ھیں' ھر ایک اپنے کو سمبھالے' اور سماج‌واد کو کہا کرتے تھے "میہ تیہ" یعنی سب سے ایک برابر پریم کرو . ان دونوں اصولوں کو ملاکر ھی سچا سماج سنگٹھن ھوسکتا ھے' یہ دونوں مل‌کر ھی دھرتی پر مضبوط اور ٹکاؤ "امن" قائم کرسکتے ھیں' کیونکہ ان سے ھی لوگوں میں ایک دوسرے کے بھلے کی اچھا جاگ سکتی ھے . اس طرح کے اللہ کے بندے ھی لوگوں میں ایک دوسرے کے بھلے کی اچھا پیدا کرسکتے ھیں . اس کے لئے انھیں دو باتیں کرنی ھونگی . پہلی یہ کہ سب الگ الگ دھرموں کی بنیادی ایکتا اور ان کی بنیادی سچائیوں کو سامنے لاکر ان کے ماننے والوں میں ایک دوسرے کے ساتھ پریم اور ایک دوسرے کا آدر پیدا کریں . اور دوسری یہ ھے کہ سب دھرموں کے نچوڑ کے روپ میں دنیا کو یہ بتاویں کہ سچے سماج سنگٹھن کے اصول کیا ھونے چاھئیں جن پر چل‌کر سب لوگوں کی جائز ضرورتیں اور جائز اچھائیں پوری ھوسکیں' ھر ایک کو ٹھیک ٹھیک کام اور ٹھیک ٹھیک مزدوری مل سکے' ھر کام کے لئے ٹھیک ٹھیک آدمی مل سکیں' اور ھمارے سماج کی یہ اتنی بڑی مشین اس طرح چل سکے کہ کسی کے اوپر مناسب سے زیادہ بوجھ نہ ھو' کوئی بھوکا' ننگا یا بنا گھر کے نہ رھے اور سب کا سب طرح بھلا اور سب کی ترقی ھو .

اے دنیا کے سائنس‌دانوں! سب سے بھاری ذمہ‌واری تمہارے اوپر ھے! تم ھی گیان کا پتہ لگاتے ھو اور اسے پھیلاتے ھو . وہ گیان دنیا کے بھلے کے لئے کام میں آنا چاھئے . لیکن اس سمے وہ دنیا کے برے کے لئے کام میں لایا جا رھا ھے! اس لئے اپنی مادی سائنس کو روحانی سائنس سے روشن کرو . اپنی سائنس کے ساتھ پروپکار کی پکی بھاؤنا کو ملا دو! سب مل جاؤ! لوگوں کو دکھلا دو کہ سماج سنگٹھن کا ٹھیک طریقہ کیا ھوسکتا ھے . تم نے اگر اپنا یہ فرض پورا نہ کیا تو مانو سماج مٹ سکتا ھے! اور یدی تم نے اپنا یہ فرض پورا کرلیا تو مانو سماج بچ سکتا ھے' جی سکتا ھے اور سب شانتی اور سکھ کے ساتھ رہ سکتے ھیں .

———

के क़ानून बनावें ताकि दूसरे उन पर चलें. नेक और समझदार लोग ही नेकी और समझ के क़ानून बना सकते हैं, और ऐसे क़ानूनों से ही दुनिया का भला हो सकता है. सच यह है कि जब इस तरह के ख़ुदा के बंदे दुनिया में क़ाफ़ी हो जायं ,तो क़ानूनों और क़ानूनी लोगों की जरूरत ही बहुत कम रह जाती है. नैतिक यानी इख़लाक़ी क़ानून जो हमारे दिलों में लिखे रहते हैं बाहर के किताबी क़ानूनों को अनावश्यक बना देते हैं. जिस तरह बीमारी को पहले ही से रोकना बीमारी आ जाने पर इलाज करने से कहीं अच्छा है उसी तरह क़ानूनसाज़ी से तालीम कहीं ज्यादे जरूरी है. अन्दर के स्वाभाव से जो चीज़ निकलती है वह बाहर के डर या दबाव से कहीं अच्छी होती है. इसलिए तालीम का मोल बहुत अधिक है. तालीम देने वालों का मिशन बड़ा और ऊंचा मिशन है, सच्चा ब्राह्मण, सच्चा मौलवी और सच्चा रब्बी ही, यानी जनम से अपने को ब्राह्मन, मौलवी या रब्बी मानने वाला नहीं बल्कि अपनी क़ाबलियत और अपने चलन से ब्रह्म, मौला या रब्ब का सच्चा सेवक ही, यानी केवल वह आदमी ही जिसने इस बात को समझ लिया है, कि एक ही परमात्मा एक ही अल्लाह, सबके घट के अन्दर मौजूद है, केवल ऐसे आदमी को ही तालीम का काम और क़ानून बनाने का काम सिपुर्द होना चाहिए. यह दोनों जिम्मेवारियां बड़ी पाक जिम्मेवारियां हैं.

उसी देश के लोग सुखी और ख़ुशहाल रह सकते हैं जिस देश में इस तरह के सच्चे ब्राह्मण, मौलवी या रब्बी काफ़ी हों, जो अच्छे से अच्छे अर्थों में अपनी बातों से और अपनी मिसाल से दोनों से लोगों को ठीक तालीम दे सकें, वे लोग नहीं जिन्होंने धर्म या मज़हब को अपना पेशा बना लिया है और आदमियों आदमियों के बीच भेद भाव और नफ़रतें पैदा करते रहते हैं. इस तरह के देश में ही सच्ची समाजवादी सभ्यता (Socialistic civilisation) पैदा हो सकती है. ऐसे देश में ही लोग बीच के सुनहरे रास्ते पर चलेंगे और सबको अधिक से अधिक सुख मिलेगा. तब ही लोग इस तरह की बातों को समझेंगे जैसे बाइबल का यह कहना कि "कोई आदमी केवल अपने लिए नहीं जीता, हम सब एक दूसरे के अंग हैं......ईश्वर ने धरती की सतह पर रहने वाली सब क़ौमों को एक ख़ून से बनाया है" या वेद का यह कहना कि "सब आदमियों का एक दूसरे के साथ वैसा ही संबंध है जैसा सिर, हाथ, पेट और टांगों का एक दूसरे के साथ" या क़ुरान का यह कहना कि "सब जानदार अल्लाह का कुनबा हैं", या शेख़ सादी का यह कहना कि "आदम की सब औलाद एक दूसरे के हाथ पैरों की तरह हैं." तब ही व्यक्तिवाद और समाजवाद यानी इंडिविजुअलिज़म और सोशलिज़्म में सच्चा समन्वय यानी मेल होगा.



کے قانون بناویں تاکہ دوسرے ان پر چلیں۔ نیک اور سمجھدار لوگ ہی نیکی اور سمجھ کے قانون بنا سکتے ہیں' اور ایسے قانونوں سے ہی دنیا کا بھلا ہوسکتا ھے۔ سچ یہ ھے کہ جب اس طرح کے خدا کے بندے دنیا میں کافی ہوجائیں تو قانونوں اور قانونی لوگوں کی ضرورت ہی بہت کم رہ جاتی ھے ۔ نیتک یعنی اخلاقی قانون جو ہمارے دلوں میں لکھے رہتے ہیں باہر کے کتابی قانونوں کو اناوشیک بنا دیتے ہیں ۔ جس طرح بیماری کو پہلے ہی سے روکنا بیماری آجانے پر علاج کرنے سے کہیں اچھا ھے اسی طرح قانون سازی سے تعلیم کہیں زیادہ ضروری ھے ۔ اندر کے سبھاؤ سے جو چیز نکلتی ھے وہ باہر کے ڈر یا دباؤ سے کہیں اچھی ہوتی ھے ۔ اس لئے تعلیم کا مول بہت ادھک ھے ۔ تعلیم دینے والوں کا مشن بڑا اونچا مشن ھے' سچا برھمن' سچا مولوی' اور سچا ربی ہی' یعنی جنم سے اپنے کو برھمن' مولوی یا ربی ماننے والا نہیں بلکہ اپنی قابلیت اور اپنے چلن سے برھم' مولا یا رب کا سچا سیوک ہی یعنی کیول وہ آدمی ہی جس نے اس بات کو سمجھ لیا ھے' کہ ایک ہی پرماتما ایک ہی اللہ' سب کے گھٹ کے اندر موجود ھے' کیول ایسے آدمی کو ہی تعلیم کا کام اور قانون بنانے کا کام سپرد ہونا چاہئے ۔ یہ دونوں ذمہ واریاں بڑی پاک ذمہ واریاں ہیں ۔

اسی دیش کے لوگ سکھی اور خوشحال رہ سکتے ہیں جس دیش میں اس طرح کے سچے برھمن' مولوی یا ربی کافی ہوں' جو اچھے سے اچھے ارتھوں میں اپنی باتوں سے اور اپنی مثال سے دونوں سے لوگوں کو ٹھیک تعلیم دے سکیں' وے لوگ نہیں جنھوں نے دھرم یا مذھب کو اپنا پیشہ بنا لیا ھے اور آدمیوں آدمیوں کے بیچ بھید بھاؤ اور نفرتیں پیدا کرتے رہتے ہیں ۔ اس طرح کے دیش میں ہی سچی سماجوادی سبھیتا (Socialistic Civilisation) پیدا ہوسکتی ھے ۔ ایسے دیش میں ہی لوگ بیچ کے سنہرے راستے پر چلیں گے اور سب کو ادھک سے ادھک سکھ ملیگا ۔ تب ہی لوگ اس طرح کی باتوں کو سمجھیں گے جیسے بائبل کا یہ کہنا کہ "کوئی آدمی کیول اپنے لئے نہیں جیتا' ہم سب ایک دوسرے کے انگ ہیں... ایشور نے دھرتی کی سطح پر رہنے والی سب قوموں کو ایک خون سے بنایا ھے" یا وید کا یہ کہنا کہ "سب آدمیوں کا ایک دوسرے کے ساتھ ویسا ہی سمبندھ ھے جیسا' سر ہاتھ' پیٹ اور ٹانگوں کا ایک دوسرے کے ساتھ" یا قرآن کا یہ کہنا کہ "سب جاندار اللہ کا کنبہ ہیں" یا شیخ سعدی کا یہ کہنا کہ "آدم کی سب اولاد ایک دوسرے کے ہاتھ پیروں کی طرح ہیں ۔" تب ہی ویکتی واد اور سماجواد یعنی انڈیویجولزم اور سوشلزم میں سچا سمنوے یعنی میل ہوگا ۔

दुनिया के अध्यापक, विद्वान लोग और साइंसदां अगर डटकर अपने फ़र्ज़ को पूरा करने के लिए खड़े हो जावें तो राजकाजी नेताओं की सब बुराइयां उन पर से इस तरह झड़ जावें जिस तरह तूफ़ान के आने पर दरख़्तों के पुराने पत्ते झड़कर गिर पड़ते हैं.

योरुप के इतिहास से पता लगता है कि ईसाई धर्म के पादरी लोग जब जब नेक, निस्वार्थ और सच्चे रहे हैं तब तब उन्होंने अन्यायी राजाओं के ज़ुल्म से दुनिया को बचाया है. इसके ख़िलाफ़ जब जब पादरियों में इंसानी शकल के अन्दर शैतान पैदा हो गए हैं जैसा कि 'इनक्विज़िटर' थे तब तब ज़ालिम बादशाहों के साथ मिलकर उन्होंने धरती को कंपा दिया है. तब तब अनेक राष्ट्रों और करोड़ों इंसानों की आह आसमान तक पहुंची है और अल्लाह की तरफ़ से बदला पाखंडी पुरोहितों और ज़ालिम राजाओं दोनों के सर पर टूटा है. प्राचीन भारत में ऋषियों ने अनेक बार बुरे राजाओं को दंड दिया है और मिटा भी डाला है. इसलाम की तारीख़ में नेक और ख़ुदापरस्त आलिमों ने अकसर सुलतानों और बादशाहों के ज़ुल्मों को रोक दिया है. ईसाई धर्म के अन्दर भी बड़े बड़े बहादुर सुधारक और शहीद हो चुके हैं जिन्होंने अपने आत्मबल से बड़े बड़े बादशाहों से टक्कर ली. यहूदियों में भी जेरेमिया जैसे नबी हुए हैं जिन्होंने अपने समय के ज़ालिमों का मुक़ाबला किया.

आजकल के अध्यापकों और साइंसदानों को चाहिए कि अपने पाक मिशन के लिए खड़े हो जावें. उन्हें चाहिए कि धन और दुनिया के ऐश आराम की चाह को अपने अन्दर से मिटा डालें. ज्ञान और परोपकार की क़ीमत धन नहीं है, प्रेम और मान है, माँ बाप अपने बच्चों से जो प्रेम करते हैं और उनके लिए जो क़ुरबानियां करते हैं उसकी क़ीमत क्या उन्हें धन के रूप में अदा की जा सकी है ?

क़ुरान में लिखा है :—

"बड़ी से बड़ी इज़्ज़त उनको मिलनी चाहिए जो अल्लाह से डरते हैं और लोगों से प्रेम करते हैं. जो सबसे नेक है वही अल्लाह के सबसे नज़दीक है."

अध्यापक को चाहिए कि अपनी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को कम से कम रक्खे और कम से कम ज़रूरतों के पूरा होने में संतोष माने. उसे चाहिए कि जान बूझ कर और अपनी मरज़ी से ग़रीबों की सी ज़िन्दगी बसर करे. तब उसके अन्दर के तप और ज़ोहद की आग यानी उसका आत्मबल बढ़ता और चमकता चला जायगा. सब नेक आदमी उसे प्यार करेंगे और उसका आदर करेंगे. सब बुरे आदमी उससे डरेंगे और उसके असर से धीरे धीरे अपने को बदलेंगे. लोभी और ख़ुदग़रज़ लोग भी उसे देखकर शरमावेंगे और अपने ऊपर क़ाबू हासिल करना सीखेंगे. ऐसे आदमियों से लोग प्रार्थना करेंगे कि वे अच्छे और समझदारी



دنیا کے ادھیاپک ودوان لوگ اور سائنس‌داں اگر ڈٹ‌کر اپنے فرض کو پورا کرنے کے لئے کھڑے ہوجائیں تو راج‌کاجی نیتاؤں کی سب برائیاں ان پر سے اس طرح جھڑ جاویں جس طرح طوفان کے آنے پر درختوں کے پرانے پتے جھڑکر گر پڑتے ھیں ۔

یورپ کے اتہاس سے پتہ چلتا ھے کہ عیسائی دھرم کے پادری لوگ جب جب نیک نسوارتھ اور سچے رھے ھیں تب تب انھوں نے انیائی راجاؤں کے ظلم سے دنیا کو بچایا ھے ۔ اس کے خلاف جب جب پادریوں میں انسانی شکل کے اندر شیطان پیدا ھوگئے ھیں جیسا کہ 'انکوئزیٹر' تھے تب تب ظالم بادشاھوں کے ساتھ مل‌کر انھوں نے دھرتی کو کانپا دیا ھے ۔ تب تب انیک راشٹروں اور کروڑوں انسانوں کی آہ آسمان تک پہونچی ھے اور اللہ کی طرف سے بدلہ پاکھنڈی پروھتوں اور ظالم راجاؤں دونوں کے سر پر ٹوٹا ھے ۔ پراچین بھارت میں رشیوں نے انیک بار برے راجاؤں کو ڈنڈ دیا ھے اور مٹا بھی ڈالا ھے ۔ اسلام کی تاریخ میں نیک اور خدا پرست عالموں نے اکثر سلطانوں اور بادشاھوں کے ظلموں کو روک دیا ھے ۔ عیسائی دھرم کے اندر بھی بڑے بڑے بہادر سدھارک اور شہید ھوچکے ھیں جنھوں نے اپنے آتم‌بل سے بڑے بڑے بادشاھوں سے ٹکر لی ھے ۔ یہودیوں میں بھی جیریمیا جیسے نبی ھوئے ھیں جنھوں نے اپنے سمے کے ظالموں کا مقابلہ کیا ۔

آجکل کے ادھیاپکوں اور سائنسدانوں کو چاھئے کہ اپنے پاک مشن کے لئے کھڑے ھوجائیں ۔ انھیں چاھئے کہ دھن اور دنیا کے عیش و آرام کی چاہ کو اپنے اندر سے مٹا ڈالیں. گیان اور پروپکار کی قیمت دھن نہیں ھے' پریم اور مان ھے ۔ ماں باپ اپنے بچوں سے جو پریم کرتے ھیں اور ان کے لئے قربانیاں کرتے ھیں اس کی قیمت کیا انھیں دھن کے روپ میں ادا کی جاسکتی ھے ؟

قرآن میں لکھا ھے :—

"بڑی سے بڑی عزت ان کو ملنی چاھئے جو اللہ سے ڈرتے ھیں اور لوگوں سے پریم کرتے ھیں ۔ جو سب سے نیک ھے وھی اللہ کے سب سے نزدیک ھے ."

ادھیاپک کو چاھئے کہ اپنی زندگی کی ضرورتوں کو کم سے کم رکھے اور کم سے کم ضرورتوں کے پورا ھونے میں سنتوش مانے ۔ اسے چاھئے کہ جان بوجھکر اور اپنی مرضی سے غریبوں کی سی زندگی بسر کرے ۔ تب اس کے اندر کے تپ اور زھد کی آگ یعنی اس کا آتم بل بڑھتا اور چمکتا چلا جائیگا ۔ سب نیک آدمی اسے پیار کریں‌گے اور اس کا آدر کریں‌گے ۔ سب سے برے آدمی اس سے ڈریں‌گے اور اس کے اثر سے دھیرے دھیرے اپنے کو بدلیں‌گے ۔ لوبھی اور خودغرض لوگ بھی اسے دیکھکر شرماوینگے اور اپنے اوپر قابو حاصل کرنا سیکھیں‌گے ۔ ایسے آدمیوں سے لوگ پرارتھنا کریں‌گے کہ وے اچھے اور سمجھداری

इल्म यानी ज्ञान एक शक्ति होती है. अध्यायक के पास इल्म होता है. उसमें वह शक्ति होती है कि लोगों के दिलों और दिमाग़ों को नेकी की तरफ़ ले जाय या बदी की तरफ़. राजा के पास तलवार होती है. वह अधिक से अधिक आदमी के जिस्म को क़ाबू में कर सकता है. अध्यापक और पुजारी की शक्ति राजा की शक्ति से बढ़कर होती है इसीलिए पाखंडी और झूठे पंडे पुरोहित और मुल्ला पादरी बुरे से बुरे राजाओं और बादशाहों से ज्यादा नुक़सान कर सकते हैं. सीधे या टेढ़े, कम या बहुत, बिना पंडे पुरोहितों की मदद के राजाओं का .ज़ुल्म चल ही नहीं सकता. धर्म और राजनीति अगर आदमी के भले के लिए मिल जावें तो जमीन पर स्वर्ग ला सकते हैं. यही दोनों अगर लोगों को ग़ुलाम बनाने और उन्हें चूसने के लिये मिल जावें तो इस धरती को नरक बना देते हैं. रूहानी शक्ति यानी आत्म-बल राजशक्ति को क़ाबू में कर सकती. है और जिधर चाहे मोड़ सकती है.

वेद में लिखा है कि :—

"विद्या ( साइंस ) किसी ब्राह्मन (ज्ञानी) के पास गई और कहने लगी कि मेरी रक्षा करो और मुझे एक पाक अमानत की तरह बचा कर रक्खो. मुझे उन लोगों को मत दो जिनके मन में खोट है, जिनके दिलों में टेढ़ापन है, जिन्हें अपने ऊपर क़ाबू नहीं है, जो घमंडी हैं, ज़ालिम हैं, लोभी हैं, विलासी हैं और दूसरों से ग़ैरियत बरतते हैं. मुझे केवल ऐसे आदमियों को दो जो नेक और पाक हैं, सबका भला चाहते हैं और सबके भले के काम करते हैं. मुझे केवल उन्हीं को दो तब मेरी शक्ति बढ़ेगी और मैं दुनिया का भला कर सकूँगी !"

मनुस्मृति में लिखा है कि :—

"विद्या की शक्ति यानी आत्मा की शक्ति और राज शक्ति यानी फ़ौजी शक्ति दोनों को एक दूसरे की जरूरत है. इनमें से कोई दूसरे के बिना फलफूल नहीं सकती. पर यदि फ़ौजी शक्ति .ज़ुल्म के रास्ते पर चलने लगे और विद्या की शक्ति को अपना साधन बनाने लगे तो विद्वान का धर्म हो जाता है कि राज शक्ति को रोके और ठीक तरफ़ चलावे. विद्या में ऐसा करने की शक्तिहै क्योंकि विद्या ही राज के हथियारों और साज सामान को बनाती है. जो विद्या हथियारों को बनाती है वही उन्हें तोड़कर ख़तम भी कर सकती है."

शुक्रनीति में लिखा है कि :—

"जब क्षत्री लोग जिनके हाथों में तलवार है यह देखते हैं कि ब्राह्मण यानी अल्लाह वाले अपने धर्म पर डटे हुए हैं तब वे डर जाते हैं और ख़ुद भी अपने सच्चे धर्म से इधर उधर नहीं भटक पाते. इसलिए ज्ञानी और ईश्वर भक्त लोगों को चाहिये कि दुनिया को ठीक रखने के लिए ख़ुद तप यानी रियाज़त में लगे रहें."



علم یعنی گیان ایک شکتی ہے . ادھیاپک کے پاس علم ہوتا ہے . اس میں وہ شکتی ہوتی ہے کہ لوگوں کے دلوں اور دماغوں کو نیکی کی طرف لیجائے یا بدی کی طرف. راجہ کے پاس تلوار ہوتی ہے . وہ ادھک سے ادھک آدمی کے جسم کو قابو میں کرسکتا ہے . ادھیاپک اور پجاری کی شکتی راجہ کی شکتی سے بڑھ کر ہوتی ہے اسی لئے پاکھنڈی اور جھوٹے پنڈے پروہت اور ملا پادری برے سے برے راجاؤں اور بادشاہوں سے زیادہ نقصان کرسکتے ہیں . سیدھے یا ٹیڑھے‘ کم یا بہت بنا پنڈے پروہتوں کی مدد کے راجاؤں کا ظلم چل ہی نہیں سکتا . دھرم اور راج نیتی اگر آدمی کے بھلے کے لئے مل جاویں تو زمین پر سورگ لاسکتے ہیں . یہی دونوں اگر لوگوں کو غلام بنانے اور چوسنے کے لئے مل جاویں تو اس دھرتی کو نرک بنا دیتے ہیں . روحانی شکتی یعنی آتم بل راج شکتی کو قابو میں کرسکتی ہے اور جدھر چاہے موڑ سکتی ہے .

وید میں لکھا ہے کہ :—

"ودیا ( سائنس ) کسی برہمن ( گیانی ) کے پاس گئی اور کہنے لگی کہ میری رکشا کرو اور مجھے پاک امانت کی طرح بچاکر رکھو . مجھے ان لوگوں کو مت دو جن کے من میں کھوٹ ہے‘ جن کے دلوں میں ٹیڑھاپن ہے‘ جنھیں اپنے اوپر قابو نہیں ہے‘ جو گھمنڈی ہیں‘ ظالم ہیں‘ لوبھی ہیں‘ ولاسی ہیں اور دوسروں سے غیریت برتتے ہیں . مجھے کیول ایسے آدمیوں کو دو جو نیک اور پاک ہیں‘ سب کا بھلا چاہتے ہیں اور سب کے بھلے کے کام کرتے ہیں . مجھے کیول انہیں کو دو . تب میری شکتی بڑھیگی اور میں اس دنیا کا بھلا کر سکوں گی !"

منوسمرتی میں لکھا ہے کہ :—

"ودیا کی شکتی یعنی آتما کی شکتی اور راج شکتی یعنی فوجی شکتی دونوں کو ایک دوسرے کی ضرورت ہے . ان میں سے کوئی دوسرے کے بنا پھل پھول نہیں سکتی . پر یدی فوجی شکتی ظلم کے راستے پر چلنے لگے اور ودیا کی شکتی کو اپنا سادھن بنانے لگے تو ودوان کا دھرم ہو جاتا ہے کہ راج شکتی کو روکے اور ٹھیک طرف چلاوے . ودیا میں ایسا کرنے کی شکتی ہے کیونکہ ودیا ہی راج کے ہتھیاروں اور ساز و سامان کو بناتی ہے . جو ودیا ہتھیاروں کو بناتی ہے وہی انہیں توڑ کر ختم بھی کرسکتی ہے ."

شکر نیتی میں لکھا ہے کہ :—

"جب چھتری لوگ جن کے ہاتھوں میں تلوار ہے یہ دیکھتے ہیں کہ برہمن یعنی اللہ والے اپنے دھرم پر ڈٹے ہوئے ہیں تب وے ڈر جاتے ہیں اور خود بھی اپنے سچے دھرم سے اِدھر اُدھر نہیں بھٹک پاتے . اس لئے گیانی اور ایشور بھگت لوگوں کا چاہئے کو دنیا کو ٹھیک رکھنے کے لئے خود تپ یعنی ریاضت میں لگے رہیں ."

चलना चाहिये. जो राजा या हाकिम इस तरह की पाप की चीज़ों से धन कमाता है उसकी बाबत मनुस्मृति में लिखा है कि :—

"जो तालीम देने वाला लोभी और पापी राजाओं से धन लेकर पढ़ाता है वह इस तरह के राजाओं की बुराई उनके सामने प्रगट नहीं कर सकता और इसीलिये ख़ुद भी नरक में जाता है और राजा को भी नरक में ढकेलता है."

सूफ़ी कहता है कि :—

"चूं दिहद क़ाज़ी बदिल रिश्वत क़रार
के शनासद ज़ालिम अज़ मज़लूम ज़ार"

यानी अगर क़ाज़ी ही अपने दिल के अन्दर रिश्वत को जगह दे दे तो फिर ज़ालिम और मज़लूम में फ़रक़ कौन कर सकता है ?

जो तालीम देने वाला मास्टर या अध्यापक ज़ुल्म और बुराई को बढ़ाता है वह आगे की तमाम नस्लों को ख़राब करता है और सारे देश और सारी सभ्यता को बरबादी की तरफ़ ले जाता है, अध्यापक को कोई काम ऐसा नहीं करना चाहिये जिससे उसे किसी दरजे तक भी और किसी तरह भी अपनी आज़ादी, अपने आत्मा और अपनी ज़मीर को बेचना पड़े. अध्यापक के ऊपर सब से बड़ी ज़िम्मेदारी है. वह सारे देश को बना सकता है या मिटा सकता है. वह इन्सानी सभ्यता को चमका सकता है या ख़तम कर सकता है.

मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है:—

जब आलिम नेकी के रास्ते से हट जाते हैं तो सारा आलम ग़लत रास्ते पर पड़ जाता है."

गीता में लिखा है कि :—

"बड़ा या समझदार आदमी जो कुछ करता है बाक़ी सब लोग उसी की नक़ल करते हैं, वह जिस चीज़ को ठीक क़रार दे देता है दुनिया उसी पर चलती है."

इंजील में लिखा है :—

"क्या अंधे अंधों को रास्ता दिखा सकते हैं ? क्या वे दोनों ख़ंदक़ में नहीं गिरेंगे ?"

उपनिषद में लिखा है कि :—

"जो अभागे लोग अंधेरे में पड़े हुए हैं लेकिन ख़ुद अपने को धीर और पंडित मानते हैं और अपनी पंडिताई के घमंड में हैं वे एक गढ़े से दूसरे गढ़े में गिरते रहते हैं, जिस तरह वह अंधे लोग गिरते हैं जिन्हें अंधे रास्ता दिखा रहे हों !"

मुहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"दुनिया के लोग अपने बादशाहों के दीन पर जाते हैं."

ठीक इसी मानी की एक मशहूर संस्कृत कहावत है :—

"यथा राजा तथा प्रजा."



چلنا چاہئے ۔ جو راجا یا حاکم اس طرح کی پاپ کی چیزوں سے دھن کماتا ھے اُس کی بابت منوسمرتی میں لکھا ھے کہ :—

"جو تعلیم دینے والا لوبھی اور پاپی راجاؤں سے دھن لیکر پڑھاتا ھے وہ اِس طرح کے راجاؤں کی برائی ان کے سامنے پرگٹ نہیں کرسکتا اور اسی لئے خود بھی نرک میں جاتا ھے اور راجا کو بھی نرک میں ڈھکیلتا ھے ۔"

صوفی کہتا ھے کہ :—

"چوں دہد قاضی بدل رشوت قرار
کے شناسد ظالم از مظلوم زار"

یعنی اگر قاضی ھی اپنے دل کے اندر رشوت کو جگہ دیدے تو پھر ظالم اور مظلوم میں فرق کون کرسکتا ھے ؟

جو تعلیم دینے والا ماسٹر یا ادھیاپک ظلم اور برائی کو بڑھاتا ھے وہ آگے کی تمام نسلوں کو خراب کرتا ھے اور سارے دیش اور ساری سبھیتا کو بربادی کی طرف لیجاتا ھے ادھیاپک کو کوئی کام ایسا نہیں کرنا چاہئے جس سے اُسے کسی درجہ تک بھی اور کسی طرح بھی اپنی آزادی، اپنی آتما اور اپنے ضمیر کو بیچنا پڑے ۔ ادھیاپک کے اوپر سب سے بڑی ذمہ داری ھے۔ وہ سارے دیش کو بنا سکتا ھے یا مٹا سکتا ھے ۔ وہ انسانی سبھیتا کو چمکا سکتا ھے یا ختم کرسکتا ھے ۔

محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ھے :—

"جب عالم نیکی کے راستے سے ھٹ جاتے ھیں تو سارا عالم غلط راستے پر پڑ جاتا ھے ۔"

گیتا میں لکھا ھے کہ :—

"بڑا یا سمجھدار آدمی جو کچھ کرتا ھے باقی سب لوگ اُسی کی نقل کرتے ھیں ۔ وہ جس چیز کو ٹھیک قرار دیدیتا ھے دنیا اُسی پر چلتی ھے ۔"

انجیل میں لکھا ھے :—

"کیا اندھے اندھوں کو راستہ دکھا سکتے ھیں ؟ کیا وہ دونوں خندق میں نہیں گریں گے ؟"

اُپنشد میں لکھا ھے کہ :—

"جو ابھاگے لوگ اندھیرے میں پڑے ہوئے ھیں لیکن خود اپنے کو دھیر اور پنڈت مانتے ھیں اور اپنی پنڈتائی کے گھمنڈ میں ھیں وے ایک گڑھے سے دوسرے گڑھے میں گرتے رھتے ھیں، جس طرح وے اندھے لوگ گرتے ھیں جنھیں اندھے راستہ دکھا رھے ھوں !"

محمد صاحب کی ایک حدیث ھے :—

"دنیا کے لوگ اپنے بادشاھوں کے دین پر جاتے ھیں ۔"

ٹھیک اسی معنی کی ایک مشہور سانسکرت کہاوت ھے :—

"یتھا راجہ تتھا پرجا ۔"

मिल्कियत न समझें, सबकी मिल्कियत समझें. जो लोग राज करते हैं उनका काम है कि राज करते हुए भी अपनी ख़ुदी को ऊपर आने न दें. जो लोग देश को या मानव समाज को बढ़ने और तरक़्क़ी करने में मदद देते हैं उनका फ़र्ज़ है कि ख़ुद किसी पर हावी होने की कोशिश न करें. यही काम विद्वानों और अध्यापकों का है.

अध्यापक को चाहिये कि वह किसी दूसरे का मोहताज न हो, उसका जीवन सादे से सादा हो, वह अपनी तबियत से आज़ाद हो और फिर भी अपने को छोटे से छोटा समझे. उसका दिल प्रेम से भरा हो और वह प्रेम ही का प्रचारक हो. यदि ऐसा होगा तो उसकी मिसाल को देख कर और उसकी रूहानी ताक़त यानी उसके आत्म बल को देखकर ऊंचे से ऊंचे हाकिम भी बुराई करने से डरेंगे और बचे रहेंगे. जहां भी वह खड़ा हो जायेगा वहां नेकी और परोपकार ही दिखाई देंगे. किसी अध्यापक या सम्पादक को किसी बुरे आदमी से तनख्वाह या मदद नहीं लेनी चाहिये. सब धर्मों की किताबें हमें इस बारे में सावधान करती रही हैं.

मनुस्मृति में लिखा है :—

"जितनी तरह की पाकियां हैं उनमें सब से बढ़कर पाकी पैसे की पाकी है. जो पैसे के मामले में पाक है वही सचमुच पाक है. मिट्टी और पानी से मल मलकर बार बार बदन धोने वाला पाक नहीं है."

एक सूफ़ी ने कहा है :

"जब लालच बीच में आ गई तो हुनर छिप गया, जब ख़ुदी बीच में आ गई तो ख़ुदा ओझल हो गया. इनके आने से सैकड़ों परदे दिल से उठ उठ कर आंख के ऊपर पड़ जाते हैं."

वेदान्त के शब्दों में माया ( ख़ाहिश ) दो काम करती है, एक "आवरण" यानी हमारी आंख पर परदा डाल देना और दूसरा "विक्षेप" यानी हमारे दिल और दिमाग़ को सब तरफ़ से हटा कर अपनी उसी इच्छा को पूरा करने की तरफ़ लगा देना. आवरण का इलाज है "वैराग्य" यानी दुनियावी ख़्वाहिशों की तरफ़ से बेताल्लुक़ हो जाना. इसी को मुजानबत कहते हैं. विक्षेप का इलाज है "आपस" यानी मश्क़. इसे मुनाजलत भी कहते हैं. इन्हीं को इख़लास और जिहाद भी कहा जा सकता है.

गुरु, आलार्थ, अध्यापक, पीर, मौल्लिम और अतालीक़ का फ़र्ज़ है कि अपने अन्दर के इख़लास में फ़रक आने न दे और ख़िदमते ख़ल्क़ को ही अपनी सब से बड़ी इबादत समझे. उसे चाहिये कि हक़ यानी सच्चाई से कभी बाल भर भी इधर उधर न हिले. दिमाग़ी फल की परख उसकी माली यानी आर्थिक जड़ से होती है. इसलिये किसी देश का भी तालीम का ख़र्च शराब जैसी चीज़ों के टैक्सों से नहीं



ملکیت نہ سمجھیں، سب کی ملکیت سمجھیں. لوگ راج جو کرتے ھیں ان کا کام ھے کہ راج کرتے ھوئے بھی اپنی خودی کو اُوپر آنے نہ دیں. جو لوگ دیش کو یا مانو سماج کو بڑھنے اور ترقی کرنے میں مدد دیتے ھیں اُن کا فرض ھے کہ خود کسی پر حاوی ھونے کی کوشش نہ کریں. یہی کام ودوانوں اور ادھیاپکوں کا ھے.

ادھیاپک کو چاھئے کہ وہ کسی دوسرے کا محتاج نہ ھو، اُس کا جیون سادے سے سادہ ھو، وہ اپنی طبیعت سے آزاد ھو اور پھر بھی اپنے کو چھوٹے سے چھوٹا سمجھے اُس کا دل پریم سے بھرا ھو اور وہ پریم ھی کا پرچارک ھو. یدی ایسا ھوگا تو اُس کی مثال کو دیکھ کر اور اُس کی روحانی طاقت یعنی اُس کے آتم بل کو دیکھ کر اُونچے سے اُونچے حاکم بھی برائی کرنے سے ڈریں گے اور بچے رھیں گے. جہاں بھی وہ کھڑا ھوجائیگا وھاں نیکی اور پروپکار ھی دکھائی دیں گے. کسی ادھیاپک یا سمپادک کو کسی برے آدمی سے تنخواہ یا مدد نہیں لینی چاھئے. سب دھرموں کی کتابیں اِس بارے میں ھمیں ساودھان کرتی رھی ھیں.

منو سمرتی میں لکھا ھے :—

"جتنی طرح کی پاکیاں ھیں اُن میں سب سے بڑھ کر پاکی پیسے کی پاکی ھے. جو پیسے کے معاملے میں پاک ھے وھی سچ مچ پاک ھے. مٹی اور پانی سے مل مل کر بار بار بدن دھونے والا پاک نہیں ھے."

ایک صوفی نے کہا ھے :—

"جب لالچ بیچ میں آگئی تو ھنر چھپ گیا، جب خودی بیچ میں آگئی تو خدا اُوجھل ھوگیا. اِن کے آنے سے سیکڑوں پردے دل سے اُٹھ اُٹھ کر آنکھ کے اُوپر پڑجاتے ھیں."

ویدانت کے شبدوں میں مایا ( خواھش ) دو کام کرتی ھے، ایک "آورن" یعنی ھماری آنکھ پر پردہ ڈال دینا اور دوسرا "وکشیپ" یعنی ھمارے دل اور دماغ کو سب طرف سے ھٹاکر اپنی اُسی اچھا کو پورا کرنے کی طرف لگا دینا. آورن کا علاج ھے "ویراگ" یعنی دنیاوی خواھشوں کی طرف سے بے تعلق ھو جانا. اِسی کو مجانبت کہتے ھیں. وکشیپ کا علاج ھے "ابھیاس" یعنی مشق. اِسے منازلت بھی کہتے ھیں. اِنھیں کو اخلاص اور جہاد بھی کہا جاسکتا ھے.

گورو، آچاریہ، ادھیاپک، پیر، معلم اور اطالیق کا فرض ھے کہ اپنے اندر کے اِخلاص میں فرق آنے نہ دے اور خدمت خلق کو ھی اپنی سب سے بڑی عبادت سمجھے. اُسے چاھئے کہ حق یعنی سچائی سے کبھی بال بھر بھی اِدھر اُدھر نہ ھلے. دماغی پھل کی پرکھ اُس کی مالی یعنی آرتھک جڑ سے ھوتی ھے. اِسی لئے کسی دیش کا بھی تعلیم کا خرچ شراب جیسی چیزوں کے ٹیکسوں سے نہیں

हों. स्वराज का मतलब यही है कि हमारे अन्दर का ऊंचा 'स्व' यानी ऊंचा आपा हम सब पर राज करता हो. जो लोग अपने देश में ऐसा सच्चा स्वराज चाहते हैं और उसे क़ायम रखना चाहते हैं उनका पहला फ़र्ज़ यह है कि देश की सारी जनता के अन्दर सब मर्दों, औरतों, बड़ों और छोटों के अन्दर उस बड़ी आत्मा को जगावें ताकि सब सबके भले में ही अपना भला देखें, तब ही सचमुच सबको सुख मिल सकता हैं.

इस नेक और जरूरी काम की शुरूआत हमें तालीम से ही करनी चाहिये, हमारी तालीमगाहें हमारे सब स्कूल और कालिज सचमुच 'देवालय' यानी 'ख़ानए ख़ुदा' होने चाहियें. तालीम से उतर कर यह जिम्मेवारी हमारे अख़बारों पर है क्योंकि अख़बार भी जनता की तालीम का एक बहुत बड़ा साधन है.

इसलिए जिन लोगों के सिपुर्द तालीम का काम है, चाहे स्कूलों और कालिजों के अध्यापक और चाहे अख़बारों के एडीटर, उनके लिये जरूरी है कि वे ऊँचे मानी में ईश्वर प्रेमी हों यानी यह कि उन्हें सबके अन्दर एक ही ईश्वर अल्लाह का जलवा काम करता हुआ दिखाई देता हो. उनके अन्दर तप यानी रियाज़त और इख़लास यानी निस्वार्थता होनी चाहिये. उनमें विद्या यानी इल्म और ज्ञान यानी इरफ़ान होना चाहिये. तब ही वे पहले अपने अन्दर रूहानी बराबरी ( Equality ), भाईचारा ( Fraternity ) और आज़ादी ( Liberty ) पैदा करके जनता को वह तालीम और वह नेक जानकारी दे सकेंगे जिससे जनता के अन्दर सच्ची बराबरी, सच्चा भाईचारा और सच्ची आज़ादी पैदा हो सके.

चीनी महात्मा लाओत्से ने अपनी किताब "ताओ तेह किंग" में लिखा है :—

"सब चीजें उसी एक परमात्मा से पैदा होती हैं. उससे सबको ख़ुराक मिलती है. उसी की शक्ति सबको रूप देती है, वही सबको कमाल तक पहुंचाती है. वही सबकी रक्षा करती है. उसके काम करने के ढंग से हमें तीन सबक़ मिलते हैं. अव्वल यह कि हम सब चीजें और सब तरह का माल पैदा करें लेकिन किसी चीज या किसी माल को अपना न समझें. दूसरा यह कि सब काम करें लेकिन अपनी ख़ुदी को ऊपर आने न दें. और तीसरा यह कि सबको बढ़ावें पर किसी पर हावी होने की इच्छा न करें. परमात्मा सब चीजों को प्यार करता है और चलाता है पर आप कहीं दिखाई नहीं देता. न अपनी मिल्कियत जताता है."

ऊपर के शब्दों में हमारी बड़ी आत्मा का यानी हमारे उस आपे का जिसे हम इन्सान का बड़ा आपा कहते हैं पूरा बयान आ गया. जो लोग मुल्क में धन दौलत पैदा करें उनका फ़र्ज़ है कि धन दौलत पैदा करते हुए भी उसे अपनी



هوں۔ سوراج کا مطلب یہی ھے کہ همارے اندر کا اونچا 'سو' یعنی اونچا آپا هم سب پر راج کرتا هو۔ جو لوگ اپنے دیش میں ایسا سچا سوراج چاهتے هیں اور اسے قائم رکھنا چاهتے هیں ان کا پہلا فرض یہ ھے کہ دیش کی ساری جنتا کے اندر سب مردوں' عورتوں' بڑوں اور چھوٹوں کے اندر اس بڑی آتما کو جگاویں تاکہ سب سب کے بھلے میں هی اپنا بھلا دیکھیں۔ تب هی سچ مچ سب کو سکھ مل سکتا ھے۔

اِس نیک اور ضروری کام کی شروعات همیں تعلیم سے هی کرنی چاهئے۔ هماری تعلیمگاهیں' همارے سب اسکول اور کالج سچ مچ 'دیوآلئے' یعنی 'خانۂ خدا' هونے چاهئیں۔ تعلیم سے اُتر کر یہ ذمہ واری همارے اخباروں پر ھے کیونکہ اخبار بھی جنتا کی تعلیم کا ایک بہت بڑا سادھن هیں۔

اس لئے جن لوگوں کے سپرد تعلیم کا کام ھے چاهے اسکولوں اور کالجوں کے ادھیاپک اور چاهے اخباروں کے ایڈیٹر اُن کے لئے ضروری ھے کہ وہ اونچے معنوں میں ایشور پریمی هوں۔ یعنی یہ کہ انھیں سب کے اندر ایک هی ایشور اللہ کا جلوہ کام کرتا هوا دکھائی دیتا هو۔ ان کے اندر تپ یعنی ریاضت اور اخلاص یعنی نسوارتھتا هونی چاهئے۔ ان میں ودیا یعنی علم اور گیان یعنی عرفان هونا چاهئے۔ تب هی وہ پہلے اپنے اندر روحانی برابری (Equality)' بھائی چارا (Fraternity) اور آزادی (Liberty) پیدا کرکے جنتا کو وہ تعلیم اور وہ نیک جانکاری دے سکیں گے جس سے جنتا کے اندر سچی برابری سچا بھائی چارا اور سچی آزادی پیدا هوسکے۔

چینی مہاتما لاؤتسے نے اپنی کتاب "تاؤتہ کنگ" میں لکھا ھے :—

"سب چیزیں اُسی ایک پرماتما سے پیدا هوتی هیں۔ اُسی سے سب کو خوراک ملتی ھے۔ اُس کی شکتی سب کو روپ دیتی ھے۔ وهی سب کو کمال تک پہونچاتی ھے وهی سب کی رکشا کرتی ھے۔ اُس کے کام کرنے کے ڈھنگ سے همیں تین سبق ملتے هیں: اول یہ کہ هم سب چیزیں اور سب طرح کا مال پیدا کریں لیکن کسی چیز یا کسی مال کو اپنا نہ سمجھیں۔ دوسرا یہ کہ سب کام کریں لیکن اپنی خودی کو اوپر آنے نہ دیں اور تیسرا یہ کہ سب کو بڑھاویں پر کسی پر حاوی هونے کی اِچھا نہ کریں۔ پرماتما سب چیزوں کو پیار کرتا ھے اور چلاتا ھے پر آپ کہیں دکھائی نہیں دیتا نہ اپنی ملکیت جتاتا ھے۔"

اُوپر کے شبدوں میں هماری بڑی آتما کا یعنی همارے اُس آپے کا جسے هم انسان کا بڑا آپا کہتے هیں پورا بیان آگیا۔ جو لوگ ملک میں دھن دولت پیدا کریں اُن کا فرض ھے کہ دھن دولت پیدا کرتے هوئے بھی اسے اپنی

और जिन्दगी की सारी जरूरी चीजें और आदमी को आराम पहुंचाने वाली चीजें सब में बराबर की बंटी हुई हों. सबको सुखी रखने और सबको आराम पहुंचाने में ही हरेक के दिल को सबसे बड़ी राहत मिले. अगर यह बड़ी आत्मा हमारे राजकाज को चलाने लगे तो कोई आदमी अपनी "पार्टी" के लिये काम न करे, सब सबके लिये काम करें. जब हमें सबका भला देखना हो, सबके साथ न्याय करना हो, सबका एक बराबर हित करना हो तो पार्टियों की कोई जरूरत ही नहीं रह जाती. पार्टियां वहीं बनती हैं जहां या तो हमारे आर्थिक हित एक दूसरे से टकराते हों और या हमारे धर्म या सम्प्रदाय एक दूसरे से टक्कर लेते हों. इसी तरह अगर हमारी दूकानों, बाजारों, कारखानों, व्यापार मंडलों, पुलिस चौकियों, फ़ौजों, कचहरियों, म्युनिसिपेलटियों, अस्पतालों, जहाजों और रेलों में और जहां कहीं आदमियों को आदमियों से वास्ता पड़ता है इसी बड़ी आत्मा का राज हो तो हर जगह सब लोग ईमानदारी से, नरमी के साथ, हमदर्दी के साथ और सबका भला चेतते हुए अपने अपने फ़र्ज़ों को अदा करें. अगर यह बड़ी आत्मा हमारी क़ानून सभाओं में क़ानून बनाने वालों के अन्दर जागी हुई हो तो हमारे सब क़ानून नेक, दूरंदेशी के और सबका भला करने वाले हों. तब हम हर क़ानून के बनाने में सब तबियतों और सब पेशों और सब जमातों के लोगों का एकसा ख़याल रक्खें. हमारी यही बड़ी आत्मा यदि हमारे बच्चों की तालीम में हमारे विद्वानों और अध्यापकों की रहनुमाई कर सके तो नई पीढ़ी के लोगों को ठीक ठीक तालीम मिल सके और सब लोगों के सब काम बहुत जल्दी दुरुस्त हो जावें.

जिन लोगों में यह बड़ी आत्मा जाग गई है यानी जिन्होंने सबके अन्दर अपने को और अपने अन्दर सबको और घट घट में समाए हुए एक आत्मा को जान लिया है वही बेग़रज़, बेलाग, परोपकारी, और सचमुच अक़लमन्द हो सकते हैं. इस तरह के मर्द और औरत सब से मान और आदर पाने के हक़दार होते हैं. क़ुदरती तौर पर सब उनपर भरोसा करेंगे, वही क़ौम के सच्चे नुमाइन्दे होंगे, क्योंकि इन्सान के अन्दर जो सब से अच्छे भाव हैं वही उनके अन्दर जागे हुए होंगे. जहां कहीं और जिस देश में भी इस तरह के ऊंचे आदमी हुकूमत करेंगे, इन्तज़ाम करेंगे, क़ानून बनाएंगे और लोगों की रहनुमाई करेंगे, वहीं सच्चा रामराज समझना चाहिए, वहीं हकूमते इलाही है क्योंकि वहां नेकों और नेकी का राज है.

यह जरूरी है कि तालीम के और क़ानून बनाने के मैदानों में कम से कम इन दो जगह इसी तरह के लोगों का बोलबाला हो और उन्हीं की आवाज पर सब चलते



اور زندگی کی ساری ضروری چیزیں اور آدمی کو آرام پہونچانے والی چیزیں سب میں برابر کی بٹی ہوئی ہوں. سب کو سکھی رکھنے اور سب کو آرام پہونچانے میں ہی ہر ایک کے دل کو سب سے بڑی راحت ملے. اگر یہ بڑی آتما ہمارے راج کاج کو چلانے لگے تو کوئی آدمی اپنی پارٹی کے لئے کام نہ کرے، سب سب کے لئے کام کریں۔ جب ہمیں سب کا بھلا دیکھنا ہو، سب کے ساتھ نیائے کرنا ہو، سب کا ایک برابر ہت کرنا ہو تو پارٹیوں کی کوئی ضرورت ہی نہیں رہ جاتی۔ پارٹیاں وہیں بنتی ہیں جہاں یا تو ہمارے آرتھک ہت ایک دوسرے سے ٹکراتے ہوں اور یا ہمارے دھرم یا سمپرادائے ایک دوسرے سے ٹکر لیتے ہوں۔ اسی طرح اگر ہماری دوکانوں، بازاروں، کارخانوں، ویاپار منڈلوں، پولیس چوکیوں، فوجوں، کچہریوں، میونسپلٹیوں، اسپتالوں، جہازوں اور ریلوں میں اور جہاں کہیں آدمیوں کو آدمیوں سے واسطہ پڑتا ہے اسی بڑی آتما کا راج ہو تو ہر جگہ سب لوگ ایمانداری سے، نرمی کے ساتھ، ہمدردی کے ساتھ اور سب کا بھلا چیتتے ہوئے اپنے اپنے فرضوں کو ادا کریں۔ اگر یہ بڑی آتما ہماری قانون سبھاؤں میں قانون بنانے والوں کے اندر جاگی ہوئی ہو تو ہمارے سب قانون نیک، دوراندیشی کے اور سب کا بھلا کرنے والے ہوں۔ تب ہم ہر قانون کے بنانے میں سب طبیعتوں اور سب پیشوں اور سب جماعتوں کے لوگوں کا ایک سا خیال رکھیں۔ ہماری یہی بڑی آتما یدی ہمارے بچوں کی تعلیم میں ہمارے ودوانوں اور ادھیاپکوں کی رہنمائی کرسکے تو نئی پیڑھی کے لوگوں کو ٹھیک ٹھیک تعلیم مل سکے اور سب لوگوں کے سب کام بہت جلدی درست ہو جاویں۔

جن لوگوں میں یہ بڑی آتما جاگ گئی ہے یعنی جنہوں نے سب کے اندر اپنے کو اور اپنے اندر سب کو اور گھٹ گھٹ میں سمائے ہوئے ایک آتما کو جان لیا ہے وہی بےغرض، بےلاگ، پروپکاری، اور سچ مچ عقلمند ہوسکتے ہیں۔ اس طرح کے مرد اور عورت سب سے مان اور آدر پانے کے حقدار ہوتے ہیں۔ قدرتی طور پر سب اُن پر بھروسہ کرینگے، وہی قوم کے سچے نمائندے ہونگے، کیونکہ انسان کے اندر جو سب سے اچھے بھاؤ ہیں وہی ان کے اندر جاگے ہوئے ہونگے۔ جہاں کہیں اور جس دیش میں بھی اس طرح کے اونچے آدمی حکومت کرینگے، انتظام کریں گے، قانون بنائینگے اور لوگوں کی رہنمائی کریں گے وہیں سچا رام راج سمجھنا چاہئے، وہیں حکومت الہیٰ ہے کیونکہ وہاں نیکوں اور نیکی کا راج ہے۔

یہ ضروری ہے کہ تعلیم کے اور قانون بنانے کے میدانوں میں کم سے کم ان دو جگہ اسی طرح کے لوگوں کا بول بالا ہو اور انہیں کی آواز پر سب چلتے

# सच्चा समाजवाद

डाक्टर भगवानदास

दुनिया की सब धार्मिक किताबों में इस धरती के ऊपर रामराज की स्थापना या आसमानी हुकूमत या हुकूमते इलाही के क़ायम होने की चर्चा की गई है. सच यह है कि आदमी के अन्दर दो आपे हैं, एक उसका छोटा आपा और दूसरा बड़ा आपा. छोटा आपा उस आदमी का आपा है जो अपने आपको अपने शख़्सी वजूद तक महदूद समझता है. बड़ा आपा उस आदमी का आपा है जिसने दुनिया के सब लोगों के आपे के साथ अपने आपे की एकता को अनुभव कर लिया है. इस तरह के लोग ही अपने छोटे आपे को जीत कर सचमुच आत्म विजयी, अपने ऊपर क़ाबू रखने वाले, नेक, परोपकारी, तजरबेकार और बुद्धिमान कहला सकते हैं. इस जमीन पर रामराज का मतलब इसी बड़े आपे का राज यानी उन लोगों का राज है जिनके अन्दर यह बड़ी आत्मा जाग चुकी है. यही सच्चा 'स्वराज' है. मनुस्मृति में लिखा है :—

सर्व भूतेषु चात्मानम्
सर्व भूतानि चात्मनि
समं पश्यन् आत्मयाजी
स्वाराज्यं अधिगच्छति

—यानी जो आदमी सब प्राणियों के अन्दर अपनी आत्मा को और अपने अन्दर सब प्राणियों को एक बराबर देखता है और इस बड़ी आत्मा के लिये अपनी छोटी आत्मा को क़ुरबान कर देता है वही 'स्वाराज' को हासिल करता है.

इस अन्दर के स्वराज से ही बाहर का स्वराज पैदा हो सकता है.

इस ऊपर की छोटी सी बात में सारी मानव समस्याओं, सब इन्सानी मुश्किलों का हल मौजूद है, और वही एक हल हो सकता है. अगर हमारे घरेलू जीवन में इसी बड़ी आत्मा का राज हो तो हमारा घरेलू जीवन सुख से भर जावे. तब दूसरों को सुखी रखना हमारा फ़र्ज़ हो जावे और प्रेम हमारा सबसे बड़ा उसूल. अगर यही बड़ी आत्मा आर्थिक मैदान में मानव समाज को चलाने लगे तो कोई आदमी अपनी ख़ुदग़रज़ी के लिये या लोभ में आकर अपने लिये धन जमा न करे, हर आदमी अपनी सारी धन संपत्ति को सबकी चीज़ समझे, उसे सबके भले के लिये ख़र्च करे

# سچا سماجواد

ڈاکٹر بھگوان داس

دنیا کی سب دھارمک کتابوں میں اس دھرتی کے اُوپر رام راج کی استھاپنا یا آسمانی حکومت یا حکومت الہیٰ کے قائم ہونے کی چرچا کی گئی ہے. سچ یہ ہے کہ آدمی کے اندر دو آپے ہیں' ایک اس کا چھوٹا آپا اور دوسرا بڑا آپا. چھوٹا آپا اس آدمی کا آپا ہے جو اپنے آپ کو اپنے شخصی وجود تک محدود سمجھتا ہے. بڑا آپا اس آدمی کا آپا ہے جس نے دنیا کے سب لوگوں کے آپے کے ساتھ اپنے آپے کی ایکتا کو انوبھو کرلیا ہے. اس طرح کے لوگ ہی اپنے چھوٹے آپے کو جیت‌کر سچ مچ آتم وجئی' اپنے اُوپر قابو رکھنے والے' نیک' پروپ‌کاری' تجربہ‌کار اور بدھیمان کہلا سکتے ہیں. اس زمین پر رام راج کا مطلب اسی بڑے آپے کا راج یعنی ان لوگوں کا راج ہے جن کے اندر یہ بڑی آتما جاگ چکی ہے. یہی سچا "سوراج" ہے. منوسمرتی میں لکھا ہے :—

سرو بھوتیشو چات‌مانم
سرو بھوتانی چات‌منی
سمم پشین آتمیاجی
سوراجیم ادھیگچھتی

—یعنی جو آدمی سب پرانیوں کے اندر اپنی آتما کو اور اپنے اندر سب پرانیوں کو ایک برابر دیکھتا ہے اور اس بڑی آتما کے لئے اپنی چھوٹی آتما کو قربان کردیتا ہے وہی 'سوراج' کو حاصل کرتا ہے.

اس اندر کے سوراج سے ہی باہر کا سوراج پیدا ہوسکتا ہے.

اس اُوپر کی چھوٹی سی بات میں ساری مانو سمسیاؤں' سب انسانی مشکلوں کا حل موجود ہے' اور وہی ایک حل ہو سکتا ہے. اگر ہمارے گھریلو جیون میں اسی بڑی آتما کا راج ہو تو ہمارا گھریلو جیون سکھ سے بھر جاے. تب دوسروں کو سکھی رکھنا ہمارا فرض ہو جاوے اور پریم ہمارا سب سے بڑا اصول. اگر یہی بڑی آتما آرتھک میدان میں مانو سماج کو چلانے لگے تو کوئی آدمی اپنی خود غرضی کے لئے یا لوبھ میں آکر اپنے لئے دھن جمع نہ کرے' ہر آدمی اپنی ساری دھن سمپتی کو سب کی چیز سمجھے' اسے سب کے بھلے کے لئے خرچ کرے

जिससे देशों के आपसी सम्बन्ध ठीक ठीक रह सकेंगे. फिर विश्व में तनाव कम हो जायगा, और इसकी पूरी उम्मीद है कि पूरब और पच्छिम की बाक़ी समस्यायें आपसी बात चीत से हल हो सकेंगी."

पञ्चशील उन सब मर्दों, औरतों और बच्चों का समर्थन चाहता है जो अपना और सबका जीवन सुखी बनाने के लिये अपने समय और शक्ति को लगाना चाहते हैं. ये सिद्धान्त यदि टिकाऊ अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्त बना लिये गए तो विश्व की जनता शान्ति, सहयोग, दोस्ती और सुख से अपना जीवन बिता सकेगी.

---



جس سے دیشوں کے آپسی سمبندھ ٹھیک ٹھیک رہ سکیں گے. پھر وشو میں تناؤ کم ہو جائیگا' اور اِس کی پوری اُمید ہے کہ پورب اور پچھم کی باقی سمسیائیں آپسی بات چیت سے حل ہوسکیں گی."

پنچ شیل اُن سب مردوں' عورتوں اور بچوں کا سمرتھن چاہتا ہے جو اپنا اور سب کا جیون سکھی بنانے کے لئے اپنے سمے اور شکتی کو لگانا چاہتے ہیں. یہ سدھانت یدی ٹکاؤ انتر راشٹریہ سدھانت بنالئے گئے تو وشو کی جنتا شانتی' سہیوگ' دوستی اور سکھ سے اپنا جیون بتاسکے گی.

---

"कुछ साम्राजी ताक़तों ने अपने अधीन देशों की जनता को शिक्षा और संस्कृति के बुनियादी अधिकार देने से भी इन्कार कर दिया है, जिस से उनके व्यक्तित्व (शख़सियत) के विकास में रुकावट पड़ती है, और जो एशिया व अफ़रीक़ा की जनता के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों को रोकता है."

इस सम्मेलन में आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक सभी विषयों पर एक राय से प्रस्ताव पास हुए हैं ताकि भविष्य में हर मैदान में एशियाई अफ़रीक़ी मुल्कों के सम्बन्ध क़ायम रह सकें और बढ़ें.

एक और फ़ायदा जो इस बांडुंग सम्मेलन से हुआ है वह है आपसी ग़लतफ़हमियों, शकों और मनमुटाव का कम होना और एक दूसरे को समझना. जो मनमुटाव साम्राजवादियों ने एशियाई मुल्कों के अन्दर पैदा कर दिये थे वे बड़ी हद तक जाते रहे. इसका सब से सुन्दर सबूत पाकिस्तान के प्रधान मंत्री मुहम्मद अली का कलकत्ते का 27 अप्रेल सन 1955 का बयान है. उन्होंने कलकत्ते में प्रेस सम्वाद दाताओं के सामने कहा :—

"चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई से मिलने के बाद मैंने उनके बारे में अपना विचार बदल दिया है......चाउ-ऐन-लाई मुझे बहुत प्रिय हैं. उनकी अमनपसन्दी पर और दुनिया की समस्याओं को शान्तिपूर्वक समझौते के साथ सुलझाने की उनकी हार्दिक इच्छा पर मुझे पूरा विश्वास हो गया है."

श्री नेहरू ने इस सम्मेलन की सफलता पर बोलते हुए कहा:—"एशियाई अफ़रीक़ी सम्मेलन ने जो एकता हासिल की उसकी मिसाल दुनिया में कहीं नहीं है. यह एक अनोखा सम्मेलन था."

## पंचशील और दुनिया का अमन

जनवादी चीन की उपप्रधान मैडम सूंग-चिंग-लिंग (श्रीमती सनयात् सेन) ने पञ्चशील का महत्व बताते हुए एक लेख में लिखा है :—

"पञ्चशील बेहतरीन इन्सानियत और ऊंचे विचारों की उपज है. वैसे भी ये सिद्धान्त उन देशों में सम्बन्ध क़ायम करते हैं जिनमें मनुष्य जाति की अधिकतर आबादी रहती है. हम जो इन सिद्धान्तों का प्रचार करते हैं यह मानते हैं कि इनका असर हमारी सीमा से भी परे तक फैला हुआ है. यह पक्की बात है कि इन सिद्धान्तों को मन्ज़ूर करने वालों और इन पर चलने वालों की तादाद लगातार बढ़ती जायगी. इसके लिये हर अमनपसन्द आदमी को सच्ची कोशिश करनी चाहिये."

"यदि सब इन्हें मान लें तो इन पांच सिद्धान्तों को बहुत से सवाल तय करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा



"کچھ سامراجی طاقتوں نے اپنے آدھین دیشوں کی جنتا کو شکشا اور سنسکرتی کے بنیادی ادھیکار دینے سے بھی انکار کردیا ہے' جس سے اُن کے ویکتتو ( شخصیت ) کے وکاس میں رکاوٹ پڑتی ہے' اور جو ایشیا و افریقہ کی جنتا کے بیچ سانسکرتک سمبندھوں کو روکتا ہے ۔"

اِس سمیلن میں آرتھک' سانسکرتک اور راجنیتک سبھی وشیوں پر ایک رائے سے پرستاؤ پاس ہوئے ہیں تاکہ بھوشیہ میں ہر میدان میں ایشیائی افریقی ملکوں کے سمبندھ قائم رہ سکیں اور بڑھیں ۔

ایک اور فائدہ جو اِس بانڈونگ سمیلن سے ہوا ہے وہ ہے آپسی غلط فہمیوں' شکوں اور من‌مٹاؤ کا کم ہونا اور ایک دوسرے کو سمجھنا ۔ جو من‌مٹاؤ سامراجوادیوں نے ایشیائی ملکوں کے اندر پیدا کردئے تھے وہ بڑی حد تک جاتے رہے ۔ اِس کا سب سے سندر ثبوت پاکستان کے پردھان منتری محمد علی کا کلکتے کا 27 اپریل سن 1955 کا بیان ہے ۔ اُنھوں نے کلکتے میں پریس سموادداتاؤں کے سامنے کہا :—

"چین کے پردھان منتری چاؤ - این - لائی سے ملنے کے بعد میں نے اُن کے بارے میں اپنا وچار بدل دیا ہے......چاؤ این - لائی مجھے بہت پریہ ہیں ۔ اُن کی امن‌پسندی پر اور دنیا کی سمسیاؤں کو شانتی پوروک سمجھوتے کے ساتھ سلجھانے کی اُن کی ہاردک اِچھا پر مجھے پورا وشواس ہوگیا ہے ۔"

شری نہرو نے اِس سمیلن کی سپھلتا پر بولتے ہوئے کہا :—
"ایشیائی افریقی سمیلن نے جو ایکتا حاصل کی اُس کی مثال دنیا میں کہیں نہیں ہے ۔ یہ ایک انوکھا سمیلن تھا ۔"

## پنچ شیل اور دنیا کا امن

جن‌وادی چین کی اُپ پردھان میڈم سونگ - چنگ - لنگ ( شریمتی سن - یات - سین ) نے پنچ شیل کا مہتو بتاتے ہوئے ایک لیکھ میں لکھا ہے :—

"پنچ شیل بہترین انسانیت اور اونچے وچاروں کی اُپج ہے ۔ ویسے بھی یہ سدھانت اُن دیشوں میں سمبندھ قائم کرتے ہیں جن میں منشیہ جاتی کی ادھک‌تر آبادی رہتی ہے ۔ ہم جو اِن سدھانتوں کا پرچار کرتے ہیں یہ مانتے ہیں کہ اِن کا اثر ہماری سیما سے بھی پرے تک پھیلا ہوا ہے ۔ یہ پکی بات ہے کہ اِن سدھانتوں کو منظور کرنے والوں اور اِن پر چلنے والوں کی تعداد لگاتار بڑھتی جائیگی ۔ اِس کے لئے ہر امن پسند آدمی کو سچی کوشش کرنی چاہئے ۔"

"یدی سب اِنھیں مان لیں تو اِن پانچ سدھانتوں کو بہت سے سوال طے کرنے کے لئے استعمال کیا جاسکے گا

में भी अपने एजेन्ट भेज कर कान्फ़रेन्स को असफल बनाने का भरसक प्रयत्न किया था.

प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई ने इस कान्फ़रेन्स में बोलते हुए कहा:—"श्री नेहरू से मुझे यह पता चला है कि ब्रिटेन के प्रधान मंत्री सर ऐन्थनी ऐडन को शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के ये पांच सिद्धान्त मंजूर हैं. यदि यह सच है तो मैं इंगलैन्ड के साथ भी संयुक्त बयान पर वैसे ही दस्तख़त करने को तैयार हूं जैसे मैंने हिन्दुस्तान और बरमा के साथ किये हैं."

अमरीकी साम्राजवादियों की दस्तन्दाज़ी के बावजूद बांडुंग कान्फ़रेन्स पूरी तरह कामयाब हुई, और साम्राजवादियों को वहां एक ज़बरदस्त धक्का पहुंचा.

बांडुंग सम्मेलन के बाद 29 देशों का एक मत से जो ऐलान निकला उसमें पंचशील के ये पांचों उसूल पूरी तरह शामिल और स्वीकार कर लिये गए हैं. यह ऐलान दुनिया के सब अख़बारों में छप चुका है.

चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई ने बांडुंग सम्मेलन से वापिस आकर जकार्ता में कहा कि बांडुंग सम्मेलन का ऐलान पंचशील का ही नया ऐडीशन है.

30 अपरेल को भारत की पार्लिमेन्ट में बांडुंग कान्फरेंस पर बोलते हुए श्री नेहरू ने कहा :—

"बांडुंग में विश्व शान्ति और सहयोग पर जो ऐलान निकला है उसमें हमें पञ्चशील के पांचों उसूल पूरी तरह शामिल मिलते हैं और उनके अलावा वह तफ़सील मिलती है जो इन पांचों उसूलों को और ज्यादा मजबूत कर देती है.........हमें ख़ुश होने के लिये काफ़ी वजह है कि बांडुंग कान्फ़रेन्स ने जिसमें दुनिया की आधी से ज्यादा आबादी के नुमाइन्दे शामिल थे, यह ऐलान कर दिया है कि अगर दुनिया में अमन क़ायम रखना है और राष्ट्रों राष्ट्रों के बीच सहयोग हासिल करना है तो दुनिया के देशों के आपसी सम्बन्ध इन्हीं उसूलों पर क़ायम होने चाहियें."

इस सम्मेलन में सब से बड़ी जीत एकता की हुई. सभी एशियाई अफ़रीक़ी मुल्कों के प्रतिनिधियों ने सब प्रस्तावों को एक राय से पास किया.

उपनिवेशवाद ( दूसरों की ग़ुलामी ) के ख़िलाफ़ प्रस्ताव साम्राजवादियों के लिए एक ज़बरदस्त चुनौती है. इस प्रस्ताव में कहा गया है :—

"एशिया और अफ़रीक़ा के मुल्कों का यह सम्मेलन इस सच्चाई को स्वीकार करता है कि एशिया के बहुत से हिस्सों में उपनिवेशवाद ( दूसरों की ग़ुलामी ) की मौजूदगी, चाहे जिस शक्ल में हो, न केवल हमारे सांस्कृतिक सहयोग को रोकती है बल्कि वहां की जनता की राष्ट्रीय संस्कृतियों को भी कुचलती है.



میں بھی اپنے ایجنٹ بھیج کر کانفرنس کو اسپھل بنانے کا بھرسک پریتن کیا تھا .

پردھان منتری چاؤ - این - لائی نے اِس کانفرنس میں بولتے ہوئے کہا :—"شری نہرو سے مجھے یہ پتہ چلا ہے کہ بریٹین کے پردھان منتری سر اینتھنی ایڈن کو شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے یہ پانچ سدھانت منظور ہیں . یدی یہ سچ ہے تو میں اِنگلینڈ کے ساتھ بھی سنیکت بیان پر ویسے ہی دستخط کرنے کو تیار ہوں جیسے میں نے ہندستان اور برھما کے ساتھ کئے ہیں ."

امریکی سامراج‌وادیوں کی دست‌اندازی کے باوجود بانڈونگ کانفرنس پوری طرح کامیاب ہوئی' اور سامراج‌وادیوں کو وہاں ایک زبردست دھکا پہونچا .

بانڈونگ سمیلن کے بعد 29 دیشوں کا ایک مت سے جو اعلان نکلا اُس میں پنچ شیل کے یہ پانچوں اصول پوری طرح شامل اور سویکار کر لئے گئے ہیں، یہ اعلان دنیا کے سب اخباروں میں چھپ چکا ہے .

چین کے پردھان منتری چاؤ - این - لائی نے بانڈونگ سمیلن سے واپس آکر جکارتا میں کہا کہ بانڈونگ سمیلن کا اعلان پنچ شیل کا ہی نیا ایڈیشن ہے .

30 اپریل کو بھارت کی پارلیمنٹ میں بانڈونگ کانفرنس پر بولتے ہوئے شری نہرو نے کہا :—

"بانڈونگ میں وشوشانتی اور سہیوگ پر جو اعلان نکلا ہے اُس میں ہمیں پنچ شیل کے پانچوں اصول پوری طرح شامل ملتے ہیں اور اُن کے علاوہ وہ تفصیل ملتی ہے جو اِن پانچوں اصولوں کو اور زیادہ مضبوط کردیتی ہے......ہمیں خوش ہونے کے لئے کافی وجہ ہے کہ بانڈنگ کانفرنس نے' جس میں دنیا کی آدھی سے زیادہ آبادی کے نمائندے شامل تھے' یہ اعلان کردیا ہے کہ اگر دنیا میں امن قائم رکھنا ہے اور راشٹروں راشٹروں کے بیچ سہیوگ حاصل کرنا ہے تو دنیا کے دیشوں کے آپسی سمبندھ اِنھیں اصولوں پر قائم ہونے چاہئیں ."

اِس سمیلن میں سب سے بڑی جیت ایکتا کی ہوئی . سبھی ایشیائی افریقی ملکوں کے پرتندھیوں نے سب پرستاؤں کو ایک رائے سے پاس کیا .

اُپنویش‌واد ( دوسروں کی غلامی ) کے خلاف پرستاؤ سامراج‌وادیوں کے لئے ایک زبردست چنوتی ہے . اِس پرستاؤ میں کہا گیا ہے :—

"ایشیا اور افریقہ کے ملکوں کا یہ سمیلن اِس سچائی کو سویکار کرتا ہے کہ ایشیا کے بہت سے حصوں میں اُپنویش‌واد ( دوسروں کی غلامی ) کی موجودگی' چاہے جس شکل میں ہو' نہ کیول ہمارے سانسکرتک سہیوگ کو روکتی ہے بلکہ وہاں کی جنتا کی راشٹریہ سنسکرتیوں کو بھی کچلتی ہے .

के बाद मैंने देखा कि चाउ-नेहरू के संयुक्त बयान पर जापानी जनता में इतना जोश था कि मैं उसे बयान नहीं कर सकता. सब देशों के नर नारी आज भारत चीन की दोस्ती और पञ्चशील को अमन की एक मात्र उम्मीद समझते हैं."

## कलकत्ते की हिन्द चीन मैत्री कान्फ़रेन्स

21 अपरेल से 24 अपरेल सन 1955 तक कलकत्ते में भारत-चीन मैत्री संघ की एक कुल-हिन्द कान्फरेन्स हुई थी जिसमें पीकिंग के चीन-भारत मैत्री संघ की तरफ़ से भी एक प्रतिनिधि मंडल आया था और दिल्ली के चीनी राजदूत जनरल यू-आंग ने भी हिस्सा लिया था. कलकत्ते की उस भारत-चीन मैत्री कान्फरेन्स ने भी पञ्चशील के पांचों सिद्धान्तों को दुनिया के सब देशों के मिलकर शान्तिपूर्वक रहने का आधार ऐलान किया, और इन्हीं की रोशनी में दिल्ली की एशियाई कान्फरेन्स की तरह अमरीका से मांग की कि वह अपनी फ़ौजें ताइवान ( फारमूसा ) से हटा ले और ताइवान को जनवादी चीन के हवाले कर दे. कलकत्ता कान्फ्रेन्स ने यह भी पास किया कि च्यांग-काई-शेक के नुमाइन्दे को चीन के नाम पर यू० एन० ओ० में बैठने का कोई हक़ नहीं है और उसे वहां से हटाकर जनवादी चीन के नुमाइन्दे को उसकी जगह दी जानी चाहिये, और कोई देश किसी दूसरे देश के अन्दर के मामलों में दख़ल न दे.

## बांडुंग एशियाई अफ़रीक़ी कान्फ़रेन्स

18 अपरेल से 24 अपरेल तक के एशियाई अफरीकी बांडुंग सम्मेलन में इन्डोनेशिया के प्रधान मंत्री ने 'पंचशील' का समर्थन करते हुए कहा :—

"पञ्चशील" की यह आलोचना की जाती है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा-पत्र ( ऐलान ) में ये सब सिद्धान्त आगए, इसलिये इसकी कोई अलग आवश्यकता नहीं है, या फिर ये घोषणा-पत्र के अनुसार नहीं हैं.........यह भी कहा जाता है कि ये कम्यूनिस्टों की उपज हैं. पर ये सिद्धान्त हम सब से गहरा सम्बन्ध रखते हैं. दुर्भाग्य से इन सिद्धान्तों के बारे में बहुत सी ग़लतफ़हमियां हैं. यह इसलिये हैं क्योंकि ये सिद्धान्त एशिया और अफ़रीक़ा के उन नेताओं ने निकाले हैं जिनको अभी तक असलियत से परे सपनों की दुनिया में बसने वाले कहा जाता है. असलियत से परे सपनों की दुनिया में बससे वाले कौन हैं ? क्या वे लोग हैं जो इन सिद्धान्तों पर विश्वास करते हैं, या वे लोग हैं जो इस तरह के मायाजाल को फैलाते हैं कि ऐटम और हाइड्रोजन बम ही दुनिया में शान्ति क़ायम कर सकते हैं ?"

ज़ाहिर है कि इन सिद्धान्तों के ख़िलाफ़ वही साम्राज-वादी हैं जो ऐटम और हाइड्रोजन बम की दौड़ में दुनिया को तबाह करना चाहते हैं, और जिन्होंने इस बांडुंग सम्मेलन



کے بعد میں نے دیکھا کہ چاؤ نہرو کے سنیکت بیان پر جاپانی جنتا میں اتنا جوش تھا کہ میں اُسے بیان نہیں کرسکتا ۔ سب دیشوں کے نرناری آج بھارت چین کی دوستی اور پنچ شیل کو امن کی ایک ماتر اُمید سمجھتے ہیں ۔"

## کلکتے کی ہند چین میتری کانفرنس

21 اپریل سے 24 اپریل سن 1955 تک کلکتے میں بھارت چین میتری سنگھ کی ایک کل - ہند کانفرنس ہوئی تھی جس میں پیکنگ کے چین - بھارت میتری سنگھ کی طرف سے بھی ایک پرتیندھی منڈل آیا تھا اور دلی کے چینی راج دوت جنرل یو - آنگ نے بھی حصہ لیا تھا. کلکتے کی اُس بھارت - چین میتری کانفرنس نے بھی پنچ شیل کے پانچوں سدھانتوں کو دنیا کے سب دیشوں کے ملکر شانتی پوروک رہنے کا آدھار اعلان کیا، اور انہیں کی روشنی میں دلی کی ایشیائی کانفرنس کی طرح امریکہ سے مانگ کی کہ وہ اپنی فوجیں تائیوان (فارموسا) سے ہٹا لے اور تائیوان کو جن وادی چین کے حوالے کردے ۔ کلکتہ کانفرنس نے یہ بھی پاس کیا کہ چانگ کائی شیک کے نمائندے کو چین کے نام پر یو - این ۰ او - میں بیٹھنے کا کوئی حق نہیں ہے اور اُسے وہاں سے ہٹاکر جن وادی چین کے نمائندے کو اُس کی جگہ دی جانی چاہئے' اور کوئی دیش کسی دوسرے دیش کے اندر کے معاملوں میں دخل نہ دے ۔

## باندونگ ایشیائی افریقی کانفرنس

18 اپریل سے 24 اپریل تک کے ایشیائی افریقی باندونگ سمیلن میں انڈونیشیا کے پردھان منتری نے 'پنچ شیل' کا سمرتھن کرتے ہوئے کہا :—

"پنچ شیل کی یہ آلوچنا کی جاتی ہے کہ سنیکت راشٹر سنگھ کے گھوشناپتر ( اعلان ) میں یہ سب سدھانت آگئے' اِس لئے اِس کی کوئی الگ آوشیکتا نہیں ہے' یا پھر یہ گھوشناپتر کے انوسار نہیں ہیں......یہ بھی کہا جاتا ہے کہ یہ کمیونسٹوں کی اُپج ہیں . پر یہ سدھانت ہم سب سے گہرا سمبندھ رکھتے ہیں. دربھاگیہ سے اِن سدھانتوں کے بارے میں بہت سی غلط فہمیاں ہیں . یہ اس لئے ہیں کیونکہ یہ سدھانت ایشیا اور افریقہ کے اُن نیتاؤں نے نکالے ہیں جن کو ابھی تک اصلیت سے پرے سپنوں کی دنیا میں بسنے والے کہا جاتا ہے . اصلیت سے پرے سپنوں کی دنیا میں بسنے والے کون ہیں ؟ کیا وے لوگ ہیں جو اِن سدھانتوں پر وشواس کرتے ہیں' یا وہ لوگ ہیں جو اِس طرح کے مایا جال کو پھیلاتے ہیں کہ ایٹم اور ہائڈروجن بم ہی دنیا میں شانتی قائم کرسکتے ہیں ؟"

ظاہر ہے کہ اِن سدھانتوں کے خلاف وہی سامراج وادی ہیں جو ایٹم اور ہائڈروجن بم کی دوڑ میں دنیا کو تباہ کرنا چاہتے ہیں' اور جنہوں نے اِس باندونگ سمیلن

रख हैं. इसीलिए विश्व शांति परिशद, कुल भारत शांति परिशद और हर देश में वहां की मुक़ामी शांति परिशद सब ने लगातार इन सिद्धांतों का प्रचार किया है. विश्व शांति परिशद के क़ायम होने के समय परिशद के प्रेसीडेंट प्रो० जोल्यो क्यूरी ने नीचे लिखे सिद्धांतों पर शांति आंदोलन की रूप रेखा क़ायम की थी :—

( 1 ) विश्व यानी दुनिया में अलग अलग सामाजिक व्यवस्थाओं वाले देश शांतिपूर्वक साथ साथ रह सकते हैं.

( 2 ) राष्ट्रों के बीच सब मतभेद आपसी बातचीत और समझौते से और सब की मंजूरी से तय होने चाहिएं.

( 3 ) किसी भी देश के अन्दर के मामले और मतभेद केवल वहां के लोगों के घरेलू मामले हैं, जिनमें किसी बाहर वाले को दख़ल देने का हक़ नहीं है.

विश्व शांति आंदोलन के शुरू से ही विश्व शांति परिशद ने इन सिद्धांतों के प्रचार और मंजूरी के लिए दुनिया भर में आंदोलन किया. ये सिद्धांत पञ्चशील से मिलते जुलते हैं.

विश्व शान्ति आन्दोलन ने सब देशों की मुकम्मिल आज़ादी और अखंडता की रक्षा के लिये आवाज़ उठाई. उसने किसी देश पर किसी दूसरे देश के हमले का हमेशा विरोध किया.

विश्व शान्ति आन्दोलन ने ऐसी तमाम संधियों और गुटबन्दियों का हमेशा विरोध किया जो एक ताक़तवर राष्ट्र दबाव डालकर या धमकी देकर दूसरे राष्ट्रों पर अपना राजनैतिक, आर्थिक या फ़ौजी असर क़ायम करने के लिये करना चाहता है.

कुल भारत शान्ति परिषद ने इन सिद्धान्तों को पूरे भारत में जनता तक पहुंचाने के लिये लगातार काम किया है.

कुल भारत शान्ति परिषद ऐटम और हाइड्रोजन बमों के ख़िलाफ़ हमेशा आवाज़ उठाती रही है और इन हिंसक हथियारों के बन्द कराने के लिये लाखों की तादाद में जनता से दस्तख़त कराती रही है.

विश्व शान्ति परिषद ने अपनी नवम्बर 1954 की बैठक में चाऊ-नेहरू के इन पांच सिद्धान्तों का पूरी तरह समर्थन किया और देश देश में इसका प्रचार करने का बीड़ा उठाया.

जापान की शान्ति परिषद के प्रेसीडेन्ड प्रसिद्ध देश भक्त प्रो० इकुओ-आयोमा ( Pro. Ikuo-Oyama ) ने कहा है :—

"जापान की जनता ने पञ्चशील को एशिया की शान्ति और विश्व शान्ति और सुरक्षा की एक रोशनी के रूप में स्वीकार कर लिया है. कई हफ़्ते पूरे जापान का दौरा करने



رکھ ھیں ۔ اِسی لئے وشوشانتی پریشد، کل بھارت شانتی پریشد اور ہر دیش میں وھاں کی مقامی شانتی پریشد سب نے لگاتار اِن سدھانتوں کا پرچار کیا ھے ۔ وشوشانتی پریشد کے قائم ھونے کے سمے پریشد کے پریسیڈنٹ پروفیسر جولیو کیوری نے نیچے لکھے سدھانتوں پر شانتی آندولن کی روپ ریکھا قائم کی تھی :—

(1) وشو یعنی دنیا میں الگ الگ سماجک ویوستھاؤں والے دیش شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہ سکتے ھیں ۔

(2) راشٹروں کے بیچ سب متبھید آپسی بات چیت اور سمجھوتے سے اور سب کی منظوری سے طے ھونے چاھئیں ۔

(3) کسی بھی دیش کے اندر کے معاملے اور متبھید کیول وھاں کے لوگوں کے گھریلو معاملے ھیں، جن میں کسی باھر والے کو دخل دینے کا حق نہیں ھے ۔

وشوشانتی آندولن کے شروع سے ھی وشوشانتی پریشد نے اِن سدھانتوں کے پرچار اور منظوری کے لئے دنیا بھر میں آندولن کیا ۔ یہ سدھانت پنچ شیل سے ملتے جلتے ھیں ۔

وشوشانتی آندولن نے سب دیشوں کی مکمل آزادی اور اکھنڈتا کی رکشا کے لئے آواز اُٹھائی ۔ اُس نے کسی دیش پر کسی دوسرے دیش کے حملے کا ھمیشہ ورودھ کیا ۔

وشوشانتی آندولن نے ایسی تمام سندھیوں اور گٹ بندیوں کا ھمیشہ ورودھ کیا جو ایک طاقتور راشٹر دباؤ ڈال کر یا دھمکی دے کر دوسرے راشٹروں پر اپنا راج نیتک، آرتھک یا فوجی اثر قائم کرنے کے لئے کرنا چاھتا ھے ۔

کل بھارت شانتی پریشد نے اِن سدھانتوں کو پورے بھارت میں جنتا تک پہونچانے کے لئے لگاتار کام کیا ھے ۔

کل بھارت شانتی پریشد ایٹم اور ھائڈروجن بموں کے خلاف ھمیشہ آواز اُٹھاتی رھی ھے اور اِن ھنسک ھتیاروں کے بند کرانے کے لئے لاکھوں کی تعداد میں جنتا سے دستخط کراتی رھی ھے ۔

وشوشانتی پریشد نے اپنی نومبر 1954 کی بیٹھک میں چو - نہرو کے اِن پانچ سدھانتوں کا پوری طرح سمرتھن کیا اور دیش دیش میں اِس کا پرچار کرنے کا بیڑا اُٹھایا ۔

جاپان کی شانتی پریشد کے پریسیڈنٹ پرسدھ دیش بھکت پروفیسر اِکواُو - اُویاما (Prof. Ikuo-Oyama) نے کہا ھے :—

"جاپان کی جنتا نے پنچ شیل کو ایشیا کی شانتی اور وشوشانتی اور سرکشا کی ایک روشنی کے روپ میں سویکار کرلیا ھے ۔ کئی ھفتے پورے جاپان کا دورہ کرنے

संयुक्त राष्ट्र संघ में बैठने का च्यांग-काई-शेक के नुमाइन्दे को कोई हक़ नहीं है, उसे वहां से हटाकर जनवादी चीन के सच्चे नुमाइन्दे को उसकी जगह दी जानी चाहिए, फ़िलिस्तीन में अरबों के साथ ज़ुल्म और उनके देश में ग़ैरों की मदाख़लत बन्द होनी चाहिए, वग़ैरा वग़ैरा.

दिल्ली के इस एशियाई सम्मेलन में पूरबी बंगाल के संयुक्त मोर्चे और पाकिस्तानी प्रतिनिधि मंडल के नेता मौलाना भाशानी ने कहा था :—

"मेरी मातृ-भूमि के हाकिम 'दक्खिन पूरबी एशियाई सुरक्षा संस्था ( S. E. A. D. O. )' में शामिल हो गये हैं जिसकी एशिया के अधिकतर मुल्कों ने निन्दा की है. साम्राजवादी जहां भी युद्ध का जाल फैलाते हैं चाहे वह फ़ौजी समझौता हो या गठबंधन, वहां जनतंत्र का चिराग़ बुझ जाता है और युद्ध का ख़तरा बढ़ जाता है.

"एशिया के देश युद्ध नहीं चाहते. युद्ध की नीति और इनसानी ख़ुशहाली साथ साथ नहीं चल सकतीं. आपको इन दोनों में से एक को चुनना पड़ेगा. क्या ही अच्छा हो कि मेरा देश पाकिस्तान पंचशील को स्वीकार करले. यदि मेरा देश पंचशील को मान ले तो मैं आसानी से कल्पना कर सकता हूं कि भारत और पाकिस्तान के सब झगड़े जो अभी तक नहीं सुलझे बहुत जल्दी सुलझ जाएंगे.

"मैं आशा करता हूं कि आगामी एशियाई अफ़रीक़ी बांडुंग कान्फ़रेंस (18 से 24 अप्रैल सन 1955) में आने वाले सब राष्ट्र पञ्चशील के उसूलों को स्वीकार कर लेंगे. मैं यह भी उम्मीद करता हूं कि एशिया और अफ़रीक़ा के देश पञ्चशील को कारामद बनाने के लिए आवश्यक क़दम उठाएंगे."

इसी एशियाई सम्मेलन में बोलते हुए जनवादी चीन के वाइस चेयरमैन को-मो-जो ने कहा था :—

"चीन की जनता को इस बात का अभिमान है कि सब राष्ट्रों के शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के पांच सिद्धान्तों की पहल क़दमी करने वाले दो मुल्कों में से एक चीन है. हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि साथ साथ मिलकर रहने की बुनियाद पर एशिया और तमाम दुनिया के मुल्कों से हम प्रेम क़ायम करें. हम पूरी तरह विश्वास करते हैं कि पञ्चशील के सिद्धान्तों पर ही अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को ठीक ठीक क़ायम किया जा सकता है और मजबूती के साथ आगे बढ़ाया जा सकता है. पर कुछ देशों के शासक शांति पूर्वक साथ साथ रहने के बिलकुल खिलाफ़ हैं. अमरीकी राज मंत्री जान फोस्टर डलेस को इसमें भी 'एक नई चाल' और 'ख़तरा' दिखाई देता है."

## विश्व शान्ति आन्दोलन

पञ्चशील और विश्व शांति दोनों एक ही तसवीर के दो



سنیکت راشٹر سنگھ میں بیٹھنے کا چیانگ کائی شیک کے نمائندے کو کوئی حق نہیں ہے، اُسے وہاں سے ہٹاکر جن‌وادی چین کے سچے نمائندے کو اُس کی جگہ دی جانی چاہئے، فلسطین میں عربوں کے ساتھ ظلم اور اُن کے دیش میں غیروں کی مداخلت بند ہونی چاہئے، وغیرہ وغیرہ۔

دلی کے اِس ایشیائی سمیلن میں پوربی بنگال کے سنیکت مورچے اور پاکستانی پرتیندھی منڈل کے نیتا مولانا بھاشانی نے کہا تھا :—

"میری ماتربھومی کے حاکم 'دکھن پوربی ایشیائی سرکشا سنستھا (S.E.A.D.O.) میں شامل ہوگئے ہیں جس کی ایشا کے ادھکتر ملکوں نے نندا کی ہے۔ سامراج‌وادی جہاں بھی یدھ کا جال پھیلاتے ہیں چاہے وہ فوجی سمجھوتہ ہو یا گٹھ بندھن، وہاں جن‌تنتر کا چراغ بجھ جاتا ہے اور یدھ کا خطرہ بڑھ جاتا ہے۔

"ایشیا کے دیش یدھ نہیں چاہتے۔ یدھ کی نیتی اور انسانی خوشحالی ساتھ ساتھ نہیں چل سکتیں۔ آپ کو اِن دونوں میں سے ایک کو چننا پڑیگا۔ کیا ہی اچھا ہو کہ میرا دیش پاکستان پنچ شیل کو سوئیکار کرلے۔ یدی میرا دیش پنچ شیل کو مان لے تو میں آسانی سے کلپنا کرسکتا ہوں کہ بھارت اور پاکستان کے سب جھگڑے جو ابھی تک نہیں سلجھے بہت جلدی سلجھ جائینگے۔

"میں آشا کرتا ہوں کہ آگامی ایشیائی افریقی بانڈونگ کانفرنس ( 18 سے 24 اپریل سن 1955 ) میں آنے والے سب راشٹر پنچ شیل کے اصولوں کو سوئیکار کرلینگے۔ میں یہ بھی اُمید کرتا ہوں کہ ایشیا اور افریقہ کے دیش پنچ شیل کو کارآمد بنانے کے لئے آوشیک قدم اُٹھائینگے۔"

اِسی ایشیائی سمیلن میں بولتے ہوئے جن‌وادی چین کے وائس چیرمین کو-مو-جو نے کہا تھا :—

"چین کی جنتا کو اِس بات کا ابھیمان ہے کہ سب راشٹروں کے شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے پانچ سدھانتوں کی پہل قدمی کرنے والے دو ملکوں میں سے ایک چین ہے۔ ہماری یہ هاردک اچھا ہے کہ ساتھ ساتھ ملکر رہنے کی بنیاد پر ایشیا اور تمام دنیا کے ملکوں سے ہم پریم قائم کریں۔ ہم پوری طرح وشواس کرتے ہیں کہ پنچ شیل کے سدھانتوں پر ہی انتر راشٹریہ سمبندھوں کو ٹھیک ٹھیک قائم کیا جاسکتا ہے اور مضبوطی کے ساتھ آگے بڑھایا جاسکتا ہے۔ پر کچھ دیشوں کے شاسک شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے بالکل خلاف ہیں۔ امریکی راج منتری جان فوسٹر ڈالس کو اِس میں بھی 'ایک نئی چال' اور 'خطرہ' دکھائی دیتا ہے۔"

## وشوشانتی آندولن

پنچ شیل اور وشوشانتی دونوں ایک ہی تصویر کے دو

सिद्धान्तों की भरसक सराहना की है. लंदन के पत्र "डेली हैराल्ड" ने लिखा है :-"इतिहास 1954 का साल चाउ-नेहरू की दिल्ली बात चीत के लिए सदा याद किया जायगा." इसी तरह इन्डोनेशिया, बरमा, जापान, बग़दाद जैसी अनेक जगहों के अख़बारों ने अपने अपने सम्पादकी लेखों में पंचशील की प्रशंसा की है. रूस के दैनिक पत्र "प्रावदा" ने लिखा है :—"इसमें कोई शक नहीं कि ये सबसे अच्छे पांच सिद्धान्त यदि एशिया और दूसरे मुल्कों ने अपना लिए तो युद्ध का ख़तरा कम हो जायगा, अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने में मदद मिलेगी और मुल्कों मुल्कों के बीच मिलकर रहने और मिलकर काम करने की सम्भावना बढ़ जायगी."

श्री नेहरू ने बड़े जोरदार शब्दों में कहा था :—

"अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को शान्ति के साथ सुलझाने की भावना रखने वाला ऐसा कोई राष्ट्र नहीं जो इन पांच सिद्धान्तों से सहमत न हो. आज संसार में दिक़्क़तें इसलिए पैदा हो गई हैं क्योंकि एक देश दूसरे देश पर हुकूमत करता है और एक दूसरे के मामलों में दस्तन्दाज़ी की जाती है."

प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई ने पंचशील पर बोलते हुए कहा था :—

"इन पांच सिद्धान्तों के आधार पर दुनिया के तमाम राष्ट्र शान्तिपूर्वक साथ साथ रह सकते हैं; चाहे वे मुल्क छोटे हों या बड़े, बलवान हों या कमजोर, और उनकी चाहे कुछ भी सामाजिक व्यवस्था हो. हर राष्ट्र की जनता की क़ौमी आज़ादी और ख़ुद फ़ैसले के अधिकार का हमें आदर करना चाहिए. यदि दुनिया के सब राष्ट्र इन सिद्धान्तों की बुनियाद पर अपने संबंध क़ायम कर लें तो कोई दूसरे पर हमला नहीं कर सकेगा, और दुनिया के सब राष्ट्र सचमुच शान्ति से साथ साथ रहने लगेंगे."

## दिल्ली की एशियाई कान्फ़्रेन्स

6 अप्रैल से 10 अप्रैल 1955 तक दिल्ली में एक बहुत बड़ी ग़ैर सरकारी एशियाई कान्फ़रेंस हुई थी जिसमें भारत, पाकिस्तान, लंका, बरमा, हिन्द-चीन, इन्डोनेशिया, चीन, कोरिया, जापान, एशियाई रूस, सीरिया और दूसरे अरब देशों को मिलाकर 18 देशों के 200 नुमाइन्दों ने हिस्सा लिया था. कान्फ़रेंस ने एक राय से यह तजवीज़ पास की कि दुनिया के और ख़ास कर एशिया के सब देशों के आपसी संबंध पंचशील के पांच सुनहरे असूलों पर ही क़ायम होने चाहिएं. पंचशील के इन असूलों की रोशनी में ही कान्फ़रेंस ने इस तरह के प्रस्ताव भी पास किए कि हिन्द-चीन में बाहर के देशों की दस्तन्दाज़ी बन्द होनी चाहिए, ताइवान (फ़ारमूसा) से अमरीका को अपना जहाज़ी बेड़ा और अपनी फ़ौजें हटाकर ताइवान और आस पास के सब टापू जनवादी चीन के हवाले कर देने चाहिएं, चीन की तरफ़ से



سدھانتوں کی بھرسک سراھنا کی ھے. لندن کے پتر "ڈیلی ھیرالڈ" نے لکھا ھے :—"اِتہاس میں 1954 کا سال چاؤ نہرو کی دلی بات چیت کے لئے سدا یاد کیا جائیگا." اِسی طرح انڈنیشیا' برھما' جاپان' بغداد جیسی انیک جگہوں کے اخباروں نے اپنے اپنے سمپادکی لیکھوں میں پنچ شیل کی پرشنسا کی ھے. روس کے دینک پتر "پراودا" نے لکھا ھے :—"اِس میں کوئی شک نہیں کہ یہ سب سے اچھے پانچ سدھانت یدی ایشیا اور دوسرے ملکوں نے اپنالئے تو یدھ کا خطرہ کم ھو جائیگا' انتر راشٹریہ تناؤ کم کرنے میں مدد ملےگی اور ملکوں ملکوں کے بیچ ملکر رھنے اور ملکر کام کرنے کی سمبھاؤنا بڑھ جائیگی."

شری نہرو نے بڑے زوردار شبدوں میں کہا تھا :—

"انترراشٹریہ سمسیاؤں کو شانتی کے ساتھ سلجھانے کی بھاونا رکھنےوالا ایسا کوئی راشٹر نہیں جو ان پانچ سدھانتوں سے سہمت نہ ھو. آج سنسار میں دقتیں اِس لئے پیدا ھوگئی ھیں کیونکہ ایک دیش دوسرے دیش پر حکومت کرتا ھے اور ایک دوسرے کے معاملوں میں دست‌اندازی کی جاتی ھے."

پردھان منتری چاؤ این - لائی نے پنچ شیل پر بولتے ھوئے کہا تھا :—

"ان پانچ سدھانتوں کے آدھار پر دنیا کے تمام راشٹر شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہ سکتے ھیں' چاھے وہ ملک چھوٹے ھوں یا بڑے' بلوان ھوں یا کمزور' اور اُن کی چاھے کچھ بھی سماجک ویوستھا ھو. ھر راشٹر کی جنتا کی قومی آزادی اور خود فیصلے کے ادھیکار کا ھمیں آدر کرنا چاہئے. یدی دنیا کے سب راشٹر اِن سدھانتوں کی بنیاد پر اپنے سمبندھ قائم کرلیں تو کوئی دوسرے پر حملہ نہیں کرسکےگا' اور دنیا کے سب راشٹر سچ مچ شانتی سے ساتھ ساتھ رھنے لگینگے."

## دلی کی ایشیائی کانفرنس

6 اپریل سے 10 اپریل 1955 تک دلی میں ایک بہت بڑی غیر سرکاری ایشیائی کانفرنس ھوئی تھی جس میں بھارت' پاکستان' لنکا' برھما' ھند چین' انڈونیشیا' چین' کوریا' جاپان' ایشیائی روس' سیریا اور دوسرے عرب دیشوں کو ملاکر 18 دیشوں کے 200 نمائندوں نے حصہ لیا تھا. کانفرنس نے ایک رائے سے یہ تجویز پاس کی کہ دنیا کے اور خاص‌کر ایشیا کے سب دیشوں کے آپسی سمبندھ پنچ شیل کے پانچ سنہرے اصولوں پر ھی قائم ھونے چاھئیں. پنچ شیل کے اِن اصولوں کی روشنی میں ھی کانفرنس نے اِس طرح کے پرستاؤ بھی پاس کئے کہ ھند چین میں باھر کے دیشوں کی دست‌اندازی بند ھونی چاھئے' تائیوان (فارموسا) سے امریکہ کو اپنا جہازی بیڑا اور اپنی فوجیں ھٹاکر تائیوان اور آس پاس کے سب ٹاپو جن‌وادی چین کے حوالے کردینے چاھئیں' چین کی طرف سے

संयुक्त राष्ट्र संघ में बैठने का च्यांग-काई-शेक के नुमाइन्दे को कोई हक़ नहीं है, उसे वहां से हटाकर जनवादी चीन के सच्चे नुमाइन्दे को उसकी जगह दी जानी चाहिए, फ़िलिस्तीन में अरबों के साथ ज़ुल्म और उनके देश में ग़ैरों की मदाखलत बन्द होनी चाहिए, वग़ैरा वग़ैरा.

दिल्ली के इस एशियाई सम्मेलन में पूरबी बंगाल के संयुक्त मोर्चे और पाकिस्तानी प्रतिनिधि मंडल के नेता मौलाना भाशानी ने कहा था :—

"मेरी मातृ-भूमि के हाकिम 'दक्खिन पूरबी एशियाई सुरक्षा संस्था ( S. E. A. D. O. )' में शामिल हो गये हैं जिसकी एशिया के अधिकतर मुल्कों ने निन्दा की है. साम्राजवादी जहां भी युद्ध का जाल फैलाते हैं चाहे वह फ़ौजी सममौता हो या गठबंधन, वहां जनतंत्र का चिराग़ बुझ जाता है और युद्ध का ख़तरा बढ़ जाता है.

"एशिया के देश युद्ध नहीं चाहते. युद्ध की नीति और इनसानी ख़ुशहाली साथ साथ नहीं चल सकतीं. आपको इन दोनों में से एक को चुनना पड़ेगा. क्या ही अच्छा हो कि मेरा देश पाकिस्तान पंचशील को स्वीकार करले. यदि मेरा देश पंचशील को मान ले तो मैं आसानी से कल्पना कर सकता हूं कि भारत और पाकिस्तान के सब झगड़े जो अभी तक नहीं सुलझे बहुत जल्दी सुलझ जाएंगे.

"मैं आशा करता हूं कि आगामी एशियाई अफ़रीक़ी बांडुंग कान्फ़रेंस (18 से 24 अप्रैल सन 1955) में आने वाले सब राष्ट्र पञ्चशील के उसूलों को स्वीकार कर लेंगे. मैं यह भी उम्मीद करता हूं कि एशिया और अफ़रीक़ा के देश पञ्चशील को कारामद बनाने के लिए आवश्यक क़दम उठाएंगे."

इसी एशियाई सम्मेलन में बोलते हुए जनवादी चीन के वाइस चेयरमैन को-मो-जो ने कहा था :—

"चीन की जनता को इस बात का अभिमान है कि सब राष्ट्रों के शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के पांच सिद्धान्तों की पहल क़दमी करने वाले दो मुल्कों में से एक चीन है. हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि साथ साथ मिलकर रहने की बुनियाद पर एशिया और तमाम दुनिया के मुल्कों से हम प्रेम क़ायम करें. हम पूरी तरह विश्वास करते हैं कि पञ्चशील के सिद्धान्तों पर ही अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को ठीक ठीक क़ायम किया जा सकता है और मज़बूती के साथ आगे बढ़ाया जा सकता है. पर कुछ देशों के शासक शांति पूर्वक साथ साथ रहने के बिलकुल ख़िलाफ़ हैं. अमरीकी राज मंत्री जान फ़ोस्टर डलेस को इसमें भी 'एक नई चाल' और 'ख़तरा' दिखाई देता है."

## विश्व शान्ति आन्दोलन

पञ्चशील और विश्व शांति दोनों एक ही तसवीर के दो



سنیکت راشٹر سنگھ میں بیٹھنے کا چیانگ کائی شیک کے نمائندے کو کوئی حق نہیں ہے' اُسے وہاں سے ہٹاکر جن‌وادی چین کے سچے نمائندے کو اُس کی جگہ دی جانی چاہئیے' فلسطین میں عربوں کے ساتھ ظلم اور اُن کے دیش میں غیروں کی مداخلت بند ہونی چاہئیے' وغیرہ وغیرہ.

دلی کے اِس ایشیائی سمیلن میں پوربی بنگال کے سنیکت مورچے اور پاکستانی پرتیندھی منڈل کے نیتا مولانا بھاشانی نے کہا تھا :—

"میری ماتربھومی کے حاکم 'دکھن پوربی ایشیائی سرکشا سنستھا (S.E.A.D.O.)' میں شامل ہوگئے ہیں جس کی ایشا کے ادھکتر ملکوں نے نندا کی ہے . سامراج‌وادی جہاں بھی یدھ کا جال پھیلاتے ہیں چاہے وہ فوجی سمجھوتہ ہو یا گٹھ بندھن' وہاں جن‌تنتر کا چراغ بجھ جاتا ہے اور یدھ کا خطرہ بڑھ جاتا ہے .

"ایشیا کے دیش یدھ نہیں چاہتے . یدھ کی نیتی اور انسانی خوشحالی ساتھ ساتھ نہیں چل سکتیں . آپ کو اِن دونوں میں سے ایک کو چننا پڑیگا . کیا ہی اچھا ہو کہ میرا دیش پاکستان پنچ شیل کو سویکار کرلے . یدی میرا دیش پنچ شیل کو مان لے تو میں آسانی سے کلپنا کرسکتا ہوں کہ بھارت اور پاکستان کے سب جھگڑے جو ابھی تک نہیں سلجھے بہت جلدی سلجھ جائینگے .

"میں آشا کرتا ہوں کہ آگامی ایشیائی افریقی بانڈونگ کانفرنس ( 18 سے 24 اپریل سن 1955 ) میں آنے والے سب راشٹر پنچ شیل کے اصولوں کو سویکار کرلینگے . میں یہ بھی اُمید کرتا ہوں کہ ایشیا اور افریقہ کے دیش پنچ شیل کو کارآمد بنانے کے لئے آوشیک قدم اُٹھائینگے ."

اِسی ایشیائی سمیلن میں بولتے ہوئے جن‌وادی چین کے وائس چیرمین کو - مو - جو نے کہا تھا :—

"چین کی جنتا کو اِس بات کا ابھیمان ہے کہ سب راشٹروں کے شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے پانچ سدھانتوں کی پہل قدمی کرنے والے دو ملکوں میں سے ایک چین ہے . ہماری یہ ہاردک اچھا ہے کہ ساتھ ساتھ ملکر رہنے کی بنیاد پر ایشیا اور تمام دنیا کے ملکوں سے ہم پریم قائم کریں. ہم پوری طرح وشواس کرتے ہیں کہ پنچ شیل کے سدھانتوں پر ہی انتر راشٹریہ سمبندھوں کو ٹھیک ٹھیک قائم کیا جاسکتا ہے اور مضبوطی کے ساتھ آگے بڑھایا جاسکتا ہے. پر کچھ دیشوں کے شاسک شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے بالکل خلاف ہیں . امریکی راج منتری جان فوسٹر ڈالس کو اِس میں بھی 'ایک نئی چال' اور 'خطرہ' دکھائی دیتا ہے ."

## وشوشانتی آندولن

پنچ شیل اور وشوشانتی دونوں ایک ہی تصویر کے دو

सिद्धान्तों की भरसक सराहना की है. लंदन के पत्र "डेली हैराल्ड" ने लिखा है :-"इतिहास 1954 का साल चाउ-नेहरू की दिल्ली बात चीत के लिए सदा याद किया जायगा." इसी तरह इन्डोनेशिया, बरमा, जापान, बग़दाद जैसी अनेक जगहों के अख़बारों ने अपने अपने सम्पादकी लेखों में पंचशील की प्रशंसा की है. रूस के दैनिक पत्र "प्रावदा" ने लिखा है :—"इसमें कोई शक नहीं कि ये सबसे अच्छे पांच सिद्धान्त यदि एशिया और दूसरे मुल्कों ने अपना लिए तो युद्ध का ख़तरा कम हो जायगा, अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने में मदद मिलेगी और मुल्कों मुल्कों के बीच मिलकर रहने और मिलकर काम करने की सम्भावना बढ़ जायगी."

श्री नेहरू ने बड़े ज़ोरदार शब्दों में कहा था :—

"अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को शान्ति के साथ सुलझाने की भावना रखने वाला ऐसा कोई राष्ट्र नहीं जो इन पांच सिद्धान्तों से सहमत न हो. आज संसार में दिक़्क़तें इसलिए पैदा हो गई हैं क्योंकि एक देश दूसरे देश पर हुकूमत करता है और एक दूसरे के मामलों में दस्तन्दाज़ी की जाती है."

प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई ने पंचशील पर बोलते हुए कहा था :—

"इन पांच सिद्धान्तों के आधार पर दुनिया के तमाम राष्ट्र शान्तिपूर्वक साथ साथ रह सकते हैं; चाहे वे मुल्क छोटे हों या बड़े, बलवान हों या कमजोर, और उनकी चाहे कुछ भी सामाजिक व्यवस्था हो. हर राष्ट्र की जनता की क़ौमी आज़ादी और ख़ुद फ़ैसले के अधिकार का हमें आदर करना चाहिए. यदि दुनिया के सब राष्ट्र इन सिद्धान्तों की बुनियाद पर अपने संबंध क़ायम कर लें तो कोई दूसरे पर हमला नहीं कर सकेगा, और दुनिया के सब राष्ट्र सचमुच शान्ति से साथ साथ रहने लगेंगे."

## दिल्ली की एशियाई कान्फ़रेन्स

6 अप्रैल से 10 अप्रैल 1955 तक दिल्ली में एक बहुत बड़ी ग़ैर सरकारी एशियाई कान्फ़रेंस हुई थी जिसमें भारत, पाकिस्तान, लंका, बरमा, हिन्द-चीन, इन्डोनेशिया, चीन, कोरिया, जापान, एशियाई रूस, सीरिया और दूसरे अरब देशों को मिलाकर 18 देशों के 200 नुमाइन्दों ने हिस्सा लिया था. कान्फ़रेंस ने एक राय से यह तजवीज़ पास की कि दुनिया के और ख़ासकर एशिया के सब देशों के आपसी संबंध पंचशील के पांच सुनहरे असूलों पर ही क़ायम होने चाहिएं. पंचशील के इन असूलों की रोशनी में ही कान्फ़रेंस ने इस तरह के प्रस्ताव भी पास किए कि हिन्द-चीन में बाहर के देशों की दस्तन्दाज़ी बन्द होनी चाहिए, ताइवान (फ़ारमूसा) से अमरीका को अपना जहाज़ी बेड़ा और अपनी फ़ौजें हटाकर ताइवान और आस पास के सब टापू जनवादी चीन के हवाले कर देने चाहिएं, चीन की तरफ़ से



سدھانتوں کی بھرسک سراھنا کی ھے. لندن کے پتر "ڈیلی ھیرالڈ" نے لکھا ھے :—"اتہاس میں 1954 کا سال چاؤ نہرو کی دلی بات چیت کے لئے سدا یاد کیا جائیگا." اسی طرح انڈنیشیا' برھما' جاپان' بغداد جیسی انیک جگھوں کے اخباروں نے اپنے اپنے سمپادکی لیکھوں میں پنچ شیل کی پرشنسا کی ھے. روس کے دینک پتر "پراودا" نے لکھا ھے :—

"اس میں کوئی شک نہیں کہ یہ سب سے اچھے پانچ سدھانت یدی ایشیا اور دوسرے ملکوں نے اپنالئے تو یدھ کا خطرہ کم ھو جائیگا' انتر راشٹریہ تناؤ کم کرنے میں مدد ملےگی اور ملکوں ملکوں کے بیچ ملکر رھنے اور ملکر کام کرنے کی سمبھاؤنا بڑھ جائیگی."

شری نہرو نے بڑے زوردار شبدوں میں کہا تھا :—

"انتر راشٹریہ سمسیاؤں کو شانتی کے ساتھ سلجھانے کی بھاونا رکھنے والا ایسا کوئی راشٹر نہیں جو ان پانچ سدھانتوں سے سہمت نہ ھو. آج سنسار میں دقتیں اس لئے پیدا ھوگئی ھیں کیونکہ ایک دیش دوسرے دیش پر حکومت کرتا ھے اور ایک دوسرے کے معاملوں میں دست اندازی کی جاتی ھے."

پردھان منتری چاؤ این - لائی نے پنچ شیل پر بولتے ھوئے کہا تھا :—

"ان پانچ سدھانتوں کے آدھار پر دنیا کے تمام راشٹر شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہ سکتے ھیں' چاھے وہ ملک چھوٹے ھوں یا بڑے' بلوان ھوں یا کمزور' اور اُن کی چاھے کچھ بھی سماجک ویوستھا ھو. ھر راشٹر کی جنتا کی قومی آزادی اور خود فیصلے کے ادھیکار کا ھمیں آدر کرنا چاھئے. یدی دنیا کے سب راشٹر ان سدھانتوں کی بنیاد پر اپنے سمبندھ قائم کرلیں تو کوئی دوسرے پر حملہ نہیں کرسکےگا' اور دنیا کے سب راشٹر سچ مچ شانتی سے ساتھ ساتھ رھنے لگینگے."

## دلی کی ایشیائی کانفرنس

6 اپریل سے 10 اپریل 1955 تک دلی میں ایک بہت بڑی غیر سرکاری ایشیائی کانفرنس ھوئی تھی جس میں بھارت' پاکستان' لنکا' برھما' ھند چین' انڈونیشیا' چین' کوریا' جاپان' ایشیائی روس' سیریا اور دوسرے عرب دیشوں کو ملاکر 18 دیشوں کے 200 نمائندوں نے حصہ لیا تھا. کانفرنس نے ایک رائے سے یہ تجویز پاس کی کہ دنیا کے اور خاص کر ایشیا کے سب دیشوں کے آپسی سمبندھ پنچ شیل کے پانچ سنہرے اصولوں پر ھی قائم ھونے چاھئیں. پنچ شیل کے ان اصولوں کی روشنی میں ھی کانفرنس نے اس طرح کے پرستاؤ بھی پاس کئے کہ ھند چین میں باھر کے دیشوں کی دست اندازی بند ھونی چاھئے' تائیوان (فارموسا) سے امریکہ کو اپنا جہازی بیڑا اور اپنی فوجیں ھٹاکر تائیوان اور آس پاس کے سب ٹاپو جن وادی چین کے حوالے کردینے چاھئیں' چین کی طرف سے

अब उन्होंने दूसरे तरीक़े निकाले हैं. वह फ़ौजी संगठन बनाते हैं और कुछ एशियाई देशों को लालच देकर अपने गुट में मिलाना चाहते हैं. यदि इन फ़ौजी समझौतों को हम ध्यान से देखें तो उन संगठनों में आने के बाद इन देशों को अपनी आज़ादी त्याग देनी पड़ती है.

इस तरह के दो सबसे बड़े फ़ौजी संगठन 'सीटो' और 'नाटो' कहलाते हैं. सीटो का अर्थ है दक्खिन पूरबी एशियाई देशों का संगठन. नाटो का अर्थ है उत्तर अटलांटिक शक्तियों का संगठन. कहा जाता है कि यह फ़ौजी संगठन सामूहिक सुरक्षा के लिये हैं. सामूहिक सुरक्षा का अर्थ है कि यदि 'सीटो' के एक राष्ट्र स्याम पर कोई हमला होता है तो सीटो नामक फ़ौजी गुट के सारे राष्ट्रों को उसकी सहायता करनी पड़ेगी. सहायता कैसे की जाय, यह अमरीकी सरकार तय करेगी. और जो सेना शत्रु का मुक़ाबला करेगी उसकी कमान अमरीका के हाथ में रहेगी, और वह राष्ट्र कठपुतली बनकर अमरीका के इशारों पर नाचेगा. इन फ़ौजी गुट-बन्दियों का केवल यह मतलब है कि एशिया वालों को एशिया वालों से लड़ाया जाय और अपना मतलब सिद्ध किया जाय. इन चालों को विफल करने का तरीक़ा पंचशील है.

भारत में अंग्रेज भी तरह तरह की संधियां कर चुके हैं. वह हमारे राजाओं को एक दूसरे से लड़ाते थे. किसी एक के मित्र बनकर दूसरे को पराजित करते थे और फिर दोनों को गुलाम बना लेते थे. इतिहास गवाह है कि किसी भी लड़ाई में यदि एक तरफ़ खाली अंग्रेज थे और दूसरी तरफ़ खाली हिन्दुस्तानी तो अंग्रेजों को कभी भी विजय नहीं मिली. इसलिये अङ्गरेज हिंदुस्तानियों के साथ मिलकर हिंदुस्तानियों को हराते थे. ठीक यही नीति आज अमरीकी एशिया में चला रहे हैं. इस नीति का खन्डन केवल पंचशील कर सकता है.

इस तरह पञ्चशील हमारी सुरक्षा, शांति और विकास के लिये सबसे आवश्यक है.

18 अप्रैल से 24 अप्रैल सन 1955 तक इंडोनेशिया के बांडुंग शहर में 29 एशियाई और अफ़रीक़ी राष्ट्रों की एक कांफ़रेंस हुई थी. उस कांफ़रेंस की राजनैतिक समिति में बोलते हुए श्री नेहरू ने कहा था कि :—

"उपनिवेशवाद (दूसरे देशों की ग़ुलामी) का सबसे बड़ा रक्षक और समर्थक 'नाटो' है......पच्छिम के नाटो राष्ट्रों ने गोवा में भारत को नीचा दिखाने का प्रयत्न करके सबसे बड़ी बदतमीज़ी का सबूत दिया है......यदि नाटो की गुट न हो तो उत्तरी अफ़रीक़ा के देश आज आज़ाद हो जाएँ."

## पंचशील पर दुनिया की राय

सभी मुल्कों की अमनपसन्द जनता ने पंचशील के पांच



اب اُنھوں نے دوسرے طریقے نکالے ہیں ۔ وہ فوجی سنگھٹن بناتے ھیں اور کچھ ایشیائی دیشوں کو لالچ دےکر اپنے گٹ میں ملانا چاھتے ھیں ۔ یدی اِن فوجی سمجھوتوں کو ھم دھیان سے دیکھیں تو اِن سنگھٹنوں میں آنے کے بعد اِن دیشوں کو اپنی آزادی تیاگ دینی پڑتی ھے ۔

اِس طرح کے دو سب سے بڑے فوجی سنگٹھن 'سی ٹو' اور 'ناٹو' کہلاتے ھیں ۔ سی ٹو کا ارتھ ھے دکھن پوربی ایشیائی دیشوں کا سنگٹھن ۔ ناٹو کا ارتھ ھے اُتر اِٹلانٹک شکتیوں کا سنگٹھن ۔ کہا جاتا ھے کہ یہ فوجی سنگٹھن ساموھک سرکشا کے لئے ھیں ۔ ساموھک سرکشا کا ارتھ ھے کہ یدی 'سی ٹو' کے ایک راشٹر سیام پر کوئی حملہ ھوتا ھے تو سی ٹو نامک فوجی گٹ کے سارے راشٹروں کو اُس کی سہائتا کرنی پڑےگی ۔ سہائتا کیسے کی جائے یہ امریکی سرکار طے کرےگی ۔ اور جو سینا شترو کا مقابلہ کرےگی اُس کی کمان امریکہ کے ھاتھ میں رھےگی' اور وہ راشٹر کٹھ پتلی بنکر امریکہ کے اشاروں پر ناچےگا ۔ اِن فوجی گٹ بندیوں کا کیول یہ مطلب ھے کہ ایشیا والوں کو ایشیا والوں سے لڑایا جائے اور اپنا مطلب سدھ کیا جائے ۔ اِن چالوں کو وپھل کرنے کا طریقہ پنچ شیل ھے ۔

بھارت میں انگریز بھی طرح طرح کی سندھیاں کرچکے ھیں ۔ وہ ھمارے راجاؤں کو ایک دوسرے سے لڑاتے تھے ۔ کسی ایک کے متر بنکر دوسرے کو پراجت کرتے تھے اور پھر دونوں کو غلام بنا لیتے تھے ۔ اِتہاس گواہ ھے کہ کسی بھی لڑائی میں یدی ایک طرف خالی انگریز تھے اور دوسری طرف خالی ھندستانی تو انگریزوں کو کبھی بھی وجے نہیں ملی ۔ اِس لئے انگریز ھندستانیوں کے ساتھ ملکر ھندستانیوں کو ھراتے تھے ۔ ٹھیک یہی نیتی آج امریکی ایشیا میں چلا رھے ھیں ۔ اِس نیتی کا کھنڈن کیول پنچ شیل کرسکتا ھے ۔

اِس طرح پنچ شیل ھماری 'سرکشا' شانتی اور وکاس کے لئے سب سے آوشیک ھے ۔

18 اپریل سے 24 اپریل سن 1955 تک انڈونیشیا کے بانڈونگ شہر میں 29 ایشیائی اور افریقی راشٹروں کی ایک کانفرنس ھوئی تھی ۔ اُس کانفرنس کی راج نیتک سمیتی میں بولتے ھوئے شری نہرو نے کہا تھا کہ :—

"اُپنویش واد ( دوسرے دیشوں کی غلامی ) کا سب سے بڑا رکشک اور سمرتھک 'ناٹو' ھے......پچھم کے ناٹو راشٹروں نے گوآ میں بھارت کو نیچا دکھانے کا پریتن کرکے سب سے بڑی بدتمیزی کا ثبوت دیا ھے......یدی ناٹو کی گٹ نہ ھو تو اُتری افریقہ کے دیش آج آزاد ھوجائیں ۔"

## پنچ شیل پر دنیا کی رائے

سبھی ملکوں کی امن پسند جنتا نے پنچ شیل کے پانچ

सांड की धौंस सुनकर शेर से जाकर कहा कि सांड आप ऐसे महान् व्यक्ति को चुनौती दे रहा है और कभी सांड के पास जाकर शेर की गरज को सांड का अपमान बताया. दोनों चक्कर में आ गए और लड़ बैठे. इसी तरह साम्राजवादी और उनके पिट्ठू कभी हमसे कहते हैं कि चीन दूसरे ऐशियाई देशों को खा जाएगा और कभी पाकिस्तान और लंका से कहते हैं कि भारत तुम्हें हज़म कर जायगा. इस सारे भ्रम को ख़तम करने का एक मात्र रास्ता पञ्चशील है.

कुछ साम्राजवादी एशिया के देशों में जनतंत्र (डेमोक्रेसी) की रक्षा के लिये ज़मीन आसमान एक किये दे रहे हैं. पर सवाल उठता है कि आज़ाद देशों में ही जनतन्त्र की रक्षा करने का भार वह क्यों अपने सर ओढ़ रहे हैं? जो देश अभी तक उनके अधीन हैं उन्हें आज़ाद करके वह वहां जनतन्त्र क़ायम क्यों नहीं करते? मलाया को आज़ादी क्यों नहीं दी जाती? पच्छिमी एशिया के देशों से ये लोग अपना डेरा डंडा क्यों नहीं उठा ले जाते? अफ़रीक़ा में जनतन्त्र के सिद्धान्तों का खुला उल्लंघन वह क्यों कर रहे हैं? फ़ारमूसा में क्या उन्होंने सचमुच जनतन्त्र क़ायम कर रखा है? दक्खिनी कोरिया में सिंगमैन री की सरकार क्या जनतन्त्र के सिद्धान्तों पर क़ायम है? फ़िलीपाइन और स्याम के जनतन्त्रों का हाल भी खुल चुका है. इन देशों पर क़ब्ज़ा जमाए रखने के लिए किस तरह अमरीकी अपने पिट्ठुओं को क़ायम रखते हैं, यह अब किसी से छिपा नहीं है. पाकिस्तान में अमरीका के क़दम आते ही जनतन्त्र के साथ जो सलूक हुआ वह हमारी आंखें खोलने के लिये काफ़ी है. सच यह है कि जनतन्त्र की दुहाई इन लोगों के लिये केवल एक चाल है जिसकी आड़ में वह शिकार खेलना चाहते हैं. उनके ये नापाक मनसूबे ख़ाक में मिलाने का एक मात्र उपाय पञ्चशील के उसूल हैं.

## साम्राजियों की फ़ौजी गुटबन्दियां

इन साम्राजियों को एशिया के देशों से अपने कारख़ानों के लिये कच्चा माल चाहिये, सस्ते मज़दूर चाहिएं और अपना तैयार माल बेचने के लिये मंडियां चाहियें. अपना काम बनाने के लिये वह लड़ाई छेड़ना चाहते हैं. पर लड़ाई हो एशिया एशिया वालों में! लड़ाई में वह मंहगे दामों अपने हथियार बेचें और फिर हमें अपना ग़ुलाम बना सकें! कोरिया में उन्होंने लड़ाई छेड़ी. उन्होंने अपील की कि एशियाई देशों की फ़ौजें कोरिया में लड़ने जाएं, पर उन्हें सफलता न मिली. जब केवल उनके अपने भोले भाले नौजवान ही कोरिया में मरते चले गए तो उन्होंने लड़ाई बन्द कर दी. हिन्द-चीन में भी उन्होंने ताक़त आजमा कर देख लिया. वहां के युद्ध में भी वह एशिया वालों की लाशों पर अपने यश का महल नहीं खड़ा कर सके.



سانڈ کی دھونس سنکر شیر سے جاکر کہا کہ سانڈ آپ ایسی مہان ویکتی کو چنوتی دے رہا ھے اور کبھی سانڈ کے پاس جاکر شیر کی گرج کو سانڈ کا اپمان بتایا. دونوں چکر میں آگئے اور لڑ بیٹھے . اِسی طرح سامراج وادی اور اُن کے پٹھو کبھی ھم سے کہتے ھیں کہ چین دوسرے ایشیائی دیشوں کو کھاجائیگا اور کبھی پاکستان اور لنکا سے کہتے ھیں کہ بھارت تمھیں ھضم کرجائیگا. اِس سارے بھرم کو ختم کرنے کا ایک ماتر راستہ پنچ شیل ھے .

کچھ سامراج وادی ایشیا کے دیشوں میں جن تنتر (ڈیموکریسی) کی رکشا کے لئے زمین آسمان ایک کئے دے رھے ھیں . پر سوال اُٹھتا ھے کہ آزاد دیشوں میں ھی جن تنتر کی رکشا کرنے کا بھار وہ کیوں اپنے سر اُوڑھ رھے ھیں ؟ جو دیش ابھی تک اُن کے آدھین ھیں اُنھیں آزاد کرکے وہ وھاں جن تنتر قائم کیوں نہیں کرتے ؟ ملایا کو آزادی کیوں نہیں دی جاتی ؟ پچھمی ایشیا کے دیشوں سے یہ لوگ اپنا ڈیرا ڈنڈا کیوں نہیں اُٹھالے جاتے ؟ افریقہ میں جن تنتر کے سدھانتوں کا کھلا اُلنگھن وہ کیوں کر رھے ھیں ؟ فارموسا میں کیا اُنھوں نے سچ مچ جن تنتر قائم کررکھا ھے ؟ دکھنی کوریا میں سنگمینری کی سرکار کیا جن تنتر کے سدھانتوں پر قائم ھے ؟ فلپپائن اور سیام کے جن تنتروں کا حال بھی کھل چکا ھے . اِن دیشوں پر قبضہ جمائے رکھنے کے لئے کس طرح امریکی اپنے پٹھوؤں کو قائم رکھتے ھیں، یہ اب کسی سے چھپا نہیں ھے . پاکستان میں امریکہ کے قدم آتے ھی جن تنتر کے ساتھ جو سلوک ہوا وہ ھماری آنکھیں کھولنے کے لئے کافی ھے . سچ یہ ھے کہ جن تنتر کی دوھائی اِن لوگوں کے لئے کیول ایک چال ھے جس کی آڑ میں وہ شکار کھیلنا چاھتے ھیں . اُن کے یہ ناپاک منصوبے خاک میں ملانے کا ایک ماتر اُپائے پنچ شیل کے اصول ھیں .

## سامراجیوں کی فوجی گٹ بندیاں

اِن سامراجیوں کو ایشیا کے دیشوں سے اپنے کارخانوں کے لئے کچا مال چاھئے، سستے مزدور چاھئیں اور اپنا تیار مال بیچنے کے لئے منڈیاں چاھئیں . اپنا کام بنانے کے لئے وہ لڑائی چھیڑنا چاھتے ھیں . پر لڑائی ھو ایشیا ایشیا والوں میں ! لڑائی میں وہ مہنگے داموں اپنے ھتیار بیچیں اور پھر ھمیں اپنا غلام بنا سکیں ! کوریا میں اُنھوں نے لڑائی چھیڑی . اُنھوں نے اپیل کی کہ ایشیائی دیشوں کی فوجیں کوریا میں لڑنے جائیں . پر اُنھیں سپھلتا نہ ملی . جب کیول اُن کے اپنے بھولے بھالے نوجوان ھی کوریا میں مرتے چلے گئے تو اُنھوں نے لڑائی بند کردی. ھند چین میں بھی اُنھوں نے طاقت آزماکر دیکھ لیا. وھاں کے یدھ میں بھی وہ ایشیا والوں کی لاشوں پر اپنے یش کا محل نہیں کھڑا کرسکے .

अपनी आज़ादी क़ायम रख सकते हैं, जो देश अभी तक दूसरों के गुलाम हैं वह गुलामी से छुटकारा पा सकते हैं, एशिया के सब देश एक दूसरे के निकट आकर एकता की डोर में मज़बूती से बंध सकते हैं और पूरे महाद्वीप में वह शान्ति क़ायम हो सकती है जिसके बग़ैर एशिया की पूरी शक्ति निर्माण यानी तामीरी कामों की तरफ़ नहीं लग सकती. एशिया अब सैकड़ों बरस की गुलामी के बाद जाग रहा है. जब हम एशिया के जागरण की बात करते हैं तो उन साम्राजियों का चित्र हमारे सामने सजीव हो उठता है जो अब तक हमें अपने चंगुल में जकड़े हुए थे. उनकी शक्ति कम अवश्य हो गई है पर उनकी साम्राज लालसा अभी मिटी नहीं है. वह भी अपने को अलग अलग कमज़ोर पाकर एक साथ मिल गए हैं और अपनी सामूहिक शक्ति से हमें फिर से क़बज़े में करना और क़बज़े में रखना चाहते हैं. उनके पास धन है, साधन हैं, ऐटम बम हैं, ज़बरदस्त सेनाएं हैं. उनकी साज़िशें खुले तौर पर हमारे चारों तरफ़ जारी हैं. यदि हम होशियार न रहे तो फिर सदियों के लिए गुलाम बन जाने का डर है. अपनी सलामती के लिये हमारे पास सब से बड़ा हथियार एक ही है और वह है हमारी 'एकता.' यह एकता कैसे हो इसका मार्गदर्शन पञ्चशील करता है. इस तरह ऐटम बमों के मुक़ाबले के लिये पंचशील ही हमारा सब से बड़ा हथियार है.

अब हमें दूसरे महायुद्ध के बाद की हालत पर एक निगाह डाल लेनी चाहिये. इन दस बरस का इतिहास हमें बताता है कि एशिया के सब देशों की आज़ादी एक सूत में बंधी हुई है. भारत को छोड़ने से पहले अङ्गरेज़ों ने बरमा या लंका को नहीं छोड़ा. डच और फ़्रांसीसी भी अङ्गरेज़ों के भारत छोड़ने के बाद ही अपने को बेबस अनुभव करने लगे. हमारी सबकी गुलामी और आज़ादी एक दूसरे से बंधी हुई है. यदि हममें से कोई फिर से गुलाम होता है तो हम सबकी आज़ादी ख़तरे में पड़ जाती है. आज भी जैसे जैसे एशिया के बड़े देश साम्राजियों से नाता तोड़ते जाते हैं वैसे वैसे ही दूसरे देश भी उनसे अपना दामन बचा रहे हैं. एशिया के सबसे बड़े दो देश चीन और भारत हैं. इन दोनों के कारण दूसरे देशों को साहस मिलता है और वह अपने बंधन काटने में अपने को निस्सहाय महसूस नहीं करते. यदि एशिया को फिर से गुलाम बनने नहीं देना है तो भारत और चीन को अपनी आज़ादी की भी रक्षा करनी होगी और पूरे एशिया को भी गुलामी से बचाए रखना होगा. इसका रास्ता पञ्चशील के सिवा दूसरा नहीं है.

पच्छमी साम्राजवादी चुप नहीं हैं. कहते कि एक जङ्गल में एक शेर और एक सांड रहते थे. दोनों में दोस्ती थी. एक सियार को उनकी यह दोस्ती नहीं भाई. उसने कभी



اپنی آزادی قائم رکھ سکتے ہیں‘ جو دیش ابھی تک دوسروں کے غلام ہیں وہ غلامی سے چھٹکارا پا سکتے ہیں‘ ایشیا کے سب دیش ایک دوسرے کے نکٹ آکر ایکتا کی ڈور میں مضبوطی سے بندھ سکتے ہیں اور پورے مہادیپ میں وہ شانتی قائم ہو سکتی ہے جس کے بغیر ایشیا کی پوری شکتی نرمان یعنی تعمیری کاموں کی طرف نہیں لگ سکتی ۔ ایشیا اب سیکڑوں برس کی غلامی کے بعد جاگ رہا ہے ۔ جب ہم ایشیا کے جاگرن کی بات کرتے ہیں تو اُن سامراجیوں کا چتر ہمارے سامنے سجیو ہو اُٹھتا ہے جو اب تک ہمیں اپنے چنگل میں جکڑے ہوئے تھے ۔ اُن کی شکتی کم اوشیہ ہو گئی ہے پر اُن کی سامراج لالسا ابھی مٹی نہیں ہے ۔ وہ بھی اپنے کو الگ الگ کمزور پاکر ایک ساتھ مل گئے ہیں اور اپنی ساموہک شکتی سے ہمیں پھر سے قبضے میں کرنا اور قبضے میں رکھنا چاہتے ہیں ۔ اُن کے پاس دھن ہے‘ سادھن ہیں‘ ایٹم بم ہیں‘ زبردست سینائیں ہیں ۔ اُن کی سازشیں کھلے طور پر ہمارے چاروں طرف جاری ہیں ۔ یدی ہم ہوشیار نہ رہے تو پھر صدیوں کے لئے غلام بن جانے کا ڈر ہے ۔ اپنی سلامتی کے لئے ہمارے پاس سب سے بڑا ہتھیار ایک ہی ہے اور وہ ہے ہماری 'ایکتا' ۔ یہ ایکتا کیسے ہو اِس کا مارگ درشن پنچ شیل کرتا ہے ۔ اِس طرح ایٹم بموں کے مقابلے کے لئے پنچ شیل ہی ہمارا سب سے بڑا ہتھیار ہے ۔

اب ہمیں دوسرے مہا یدھ کے بعد کی حالت پر ایک نگاہ ڈال لینی چاہئیے ۔ اِن دس برس کا اتہاس ہمیں بتاتا ہے کہ ایشیا کے سب دیشوں کی آزادی ایک سوت میں بندھی ہوئی ہے ۔ بھارت کو چھوڑنے سے پہلے انگریزوں نے برھما یا لنکا کو نہیں چھوڑا ۔ ڈچ اور فرانسیسی بھی انگریزوں کے بھارت چھوڑنے کے بعد ہی اپنے کو بے بس انوبھو کرنے لگے ۔ ہماری سب کی غلامی اور آزادی ایک دوسرے سے بندھی ہوئی ہے ۔ یدی ہم میں سے کوئی پھر سے غلام ہوتا ہے تو ہم سب کی آزادی خطرے میں پڑ جاتی ہے ۔ آج بھی جیسے جیسے ایشیا کے بڑے دیش سامراجیوں سے ناتا توڑتے جاتے ہیں ویسے ویسے ہی دوسرے دیش بھی اُن سے اپنا دامن بچا رہے ہیں ۔ ایشیا کے سب سے بڑے دو دیش چین اور بھارت ہیں ۔ ان دونوں کے کارن دوسرے دیشوں کو ساہس ملتا ہے اور وہ اپنے بندھن کاٹنے میں اپنے کو نس سہائے محسوس نہیں کرتے ۔ یدی ایشیا کو پھر سے غلام بننے نہیں دینا ہے تو بھارت اور چین کو اپنی آزادی کی بھی رکشا کرنی ہوگی ۔ اور پورے ایشیا کو بھی غلامی سے بچائے رکھنا ہوگا۔ اِس کا راستہ پنچ شیل کے سوا دوسرا نہیں ہے ۔

پچھمی سامراج وادی چپ نہیں ہیں۔ کہتے ہیں کہ ایک جنگل میں ایک شیر اور ایک سانڈ رہتے تھے۔ دونوں میں دوستی تھی۔ ایک سیار کو اُن کی یہ دوستی نہیں بھائی۔ اسنے کبھی

मंत्रियों ने दोनों देशों के आपसी मसलों पर साफ़ साफ़ बात चीत की.

"2—दोनों प्रधान मंत्रियों ने इस बात की दुबारा पुष्टि की कि वे दुनिया में और ख़ास तौर पर दक्षिण पूरबी एशिया में शान्ति क़ायम करने की पूरी कोशिश करेंगे. उन्होंने यह उम्मीद जाहिर की कि हिन्द-चीन में शान्ति क़ायम करने के सवाल पर जनेवा में जो बात चीत चल रही है उसका सन्तोषजनक फ़ैसला हो जाएगा.

"3—चीन और भारत के संबंधों के बारे में जिन सिद्धान्तों पर समझौता हुआ था वह ये हैं :—

"( 1 ) एक दूसरे देशों की अखन्डता और मुकम्मिल आज़ादी का आदर करना.

"( 2 ) किसी दूसरे पर हमला न करना.

"( 3 ) किसी दूसरे के अन्दरूनी मामलों में दख़ल न देना.

"( 4 ) बराबरी और एक दूसरे के हित का ख़याल रखना.

"( 5 ) शान्तिपूर्वक साथ साथ रहना.

"दोनों प्रधान मंत्री इस बात पर सहमत हैं कि ये सिद्धान्त चीन और बरमा के सम्बन्धों में भी पथ-प्रदर्शक होने चाहिएं. यदि इन सिद्धान्तों को तमाम देश मान लें तो अलग अलग सामाजिक, राजनैतिक या आर्थिक व्यवस्था रखने वाले सब देश साथ साथ मिल कर रह सकेंगे और हमले के डर या दूसरे के अन्दरूनी मामलों में दख़ल की धमकी की जगह तसल्ली और एक दूसरे पर विश्वास की चेतना जागेगी.

"4—प्रधान मंत्रियों ने इस बात की फिर से पुष्टि की कि हर देश की जनता को यह हक़ होना चाहिए कि वह दूसरे देशों की मदाख़लत के बिना अपनी राज व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को अपनी मरज़ी से तय कर सके. क्रान्ति बाहर से नहीं लादी जा सकती. पर किसी देश की जनता अपनी इच्छा से जैसी भी व्यवस्था अपने लिये क़ायम करना चाहे किसी दूसरे देश को उसमें दख़ल देने की बिलकुल इजाज़त नहीं होनी चाहिये.

"5—दोनों प्रधान मंत्री इस बात में सहमत हैं कि दोनों देशों में नज़दीकी रिश्ता क़ायम होना चाहिये ताकि दोनों देशों के बीच दोस्ताना सहयोग को और मज़बूत किया जा सके. सारी बात चीत मित्रतापूर्वक और प्रेमपूर्वक हुई है. दोनों प्रधान मंत्री एक दूसरे से मिलने के इस शुभ अवसर की सराहना करते हैं और उसे शान्ति के लिये मददगार समझते हैं." ( 29 जून 1954 )

## एशिया की एकता

पञ्चशील पर चलकर ही एशिया के आज़ाद देश



منتریوں نے دونوں دیشوں کے آپسی مسئلوں پر صاف صاف بات چیت کی .

"2—دونوں پردھان منتریوں نے اِس بات کی دوبارہ پشٹی کی کہ وہ دنیا میں اور خاص طور پر دکھن پوربی ایشیا میں شانتی قائم کرنے کی پوری کوشش کرینگے . اُنہوں نے یہ اُمید ظاہر کی کہ ہند چین میں شانتی قائم کرنے کے سوال پر جنیوا میں جو بات چیت چل رہی ہے اُس کا سنتوش جنک فیصلہ ہو جائیگا .

"3—چین اور بھارت کے سمبندھوں کے بارے میں جن سدھانتوں پر سمجھوتا ہوا تھا وہ یہ ہیں :—

"(1) ایک دوسرے کے دیشوں کی اکھنڈتا اور مکمل آزادی کا آدر کرنا .

"(2) کسی دوسرے پر حملہ نہ کرنا .

"(3) کسی دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دینا .

"(4) برابری اور ایک دوسرے کے ہت کا خیال رکھنا .

"(5) شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنا .

"دونو پردھان منتری اِس بات پر سہمت ہیں کہ یہ سدھانت چین اور برہما کے سمبندھوں میں بھی پتھ پردرشک ہونے چاہئیں . یدی اِن سدھانتوں کو تمام دیش مان لیں تو الگ الگ ساماجک، راج نیتک یا آرتھک ویوستھا رکھنے والے سب دیش ساتھ ساتھ ملکر رہ سکینگے اور حملے کے ڈر یا دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل کی دھمکی کی جگہ تسلی اور ایک دوسرے پر وشواس کی چیتنا جاگے گی .

"4—پردھان منتریوں نے اِس بات کی پھر سے پشٹی کی کہ ہر دیش کی جنتا کو یہ حق ہونا چاہئے کہ وہ دوسرے دیشوں کی مداخلت کے بنا اپنی راج ویوستھا اور ساماجک ویوستھا کو اپنی مرضی سے طے کرسکے . کرانتی باہر سے نہیں لادی جا سکتی . پر کسی دیش کی جنتا اپنی اِچھا سے جیسی بھی ویوستھا اپنے لئے قائم کرنا چاہے کسی دوسرے دیش کو اُس میں دخل دینے کی بالکل اجازت نہیں ہونی چاہئے .

"5—دونوں پردھان منتری اِس بات میں سہمت ہیں کہ دونوں دیشوں میں نزدیکی رشتہ قائم ہونا چاہیئے تاکہ دونوں دیشوں کے بیچ دوستانہ سہیوگ کو اور مضبوط کیا جا سکے . ساری بات چیت مترتا پوروک اور پریم پوروک ہوئی ہے . دونوں پردھان منتری ایک دوسرے سے ملنے کے اِس شبھ اوسر کی سراہنا کرتے ہیں اور اُسے شانتی کے لئے مددگار سمجھتے ہیں ." (29 جون 1954)

## ایشیا کی ایکتا

پنچ شیل پر چلکر ہی ایشیا کے آزاد دیش

चाउ-नेहरू बात चीत ने दुनिया में आशा की एक नई लहर पैदा कर दी. हाल के बरसों में अन्तर्राष्ट्रीय मैदान में इतना बड़ा काम कोई नहीं हुआ था. इस निगाह से चाऊ-नेहरू सम्मेलन जनेवा में बड़ी ताक़तों के सम्मेलन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था.

पूरे विश्व ने इस चाउ-नेहरू मिलन की सराहना की है. इस सराहना के कारण ये हैं :—

सबसे पहले यह मिलन केवल दो प्रधान मंत्रियों का मिलन नहीं था, यह उन दो मुल्कों के प्रधान मंत्रियों का मिलन था जिनकी आबादी सारे संसार की आबादी की लगभग आधी है.

दूसरे यह मिलन ऐसे दो देशों का मिलन था जिनकी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्थाएं अलग अलग हैं.

तीसरे इस भेंट से एक निश्चित समझौता हुआ जिसका सम्बन्ध केवल दोनों देशों की दोस्ती से ही नहीं है बल्कि जो दुनिया में अमन क़ायम करने के लिए एक बड़ा साधन हो सकता है.

चौथे और अन्त में इस समझौते ने पूरे विश्व की जनता को एक नया रास्ता दिखाया, जो रास्ता एक दूसरे पर अविश्वास और फ़ौजी गठबंधनों का रास्ता नहीं है और न दुनिया की जनता को अलग अलग अखाड़ों में बांट कर द्वेष बढ़ाने का रास्ता है. यह रास्ता सारी दुनिया की जनता को एक डोर में बांधने का रास्ता है. इससे सारे अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े शान्ति से हल किए जा सकते हैं. यह वह रास्ता है जो राष्ट्रों की मौजूदा सीमाओं को स्वीकार करता है और सब देशों को इस बात की तसल्ली देता है कि उनके अन्दरूनी मामलों में कोई मदाख़लत नहीं कर सकता. यह वह रास्ता है जो बराबरी और परस्पर सहायता की बुनियाद पर क़ायम है और सबके शान्ति पूर्वक साथ साथ मिल कर रहने के सिद्धान्त को सर्वोच्च मानता है.

## बरमा में चाउ-एन-लाई

बरमा के प्रधान मंत्री यू नू की दावत पर चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई 29 जून को बरमा की राजधानी रंगून पहुंचे. वहां उनका सरकार और जनता दोनों की तरफ़ से शानदार स्वागत हुआ. वहां भी दोनों प्रधान मंत्रियों का इन्हीं पांच सिद्धान्तों पर समझौता हुआ. 29 जून 1954 को चीन और बरमा के प्रधान मंत्रियों ने मिलकर नीचे लिखा बयान निकाला :—

"1—जनवादी चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई बरमा राज संघ के प्रधान मंत्री यू नू के बुलावे पर जनेवा से पीकिंग जाते समय रास्ते में दो दिन के लिए बरमा की राजधानी रंगून में ठहरे. इस थोड़े समय में दोनों प्रधान



چاؤ - نہرو بات چیت نے دنیا میں آشا کی ایک نئی لہر پیدا کردی . حال کے برسوں میں انتر راشٹریہ میدان میں اتنا بڑا کام کوئی نہیں ہوا تھا . اس نگاہ سے چاؤ - نہرو سمیلن جنیوا میں بڑی طاقتوں کے سمیلن سے کہیں ادھک مہتوپورن تھا .

پورے وشو نے اس چاؤ - نہرو ملن کی سراہنا کی ہے. اس سراہنا کے کارن یہ ہیں : —

سب سے پہلے یہ ملن کیول دو پردھان منتریوں کا ملن نہیں تھا. یہ اُن دو ملکوں کے پردھان منتریوں کا ملن تھا جن کی آبادی سارے سنسار کی آبادی کی لگ بھگ آدھی ہے .

دوسرے یہ ملن ایسے دو دیشوں کا ملن تھا جنکی آرتھک، سماجک اور راج نیتک ویوستھائیں الگ الگ ہیں .

تیسرے اس بھینٹ سے ایک نشچت سمجھوتا ہوا جس کا سمبندھ کیول دونوں دیشوں کی دوستی سے ہی نہیں ہے بلکہ جو دنیا میں امن قائم کرنے کے لئے ایک بڑا سادھن ہو سکتا ہے .

چوتھے اور انت میں اس سمجھوتے نے پورے وشو کی جنتا کو ایک نیا راستہ دکھایا. جو راستہ ایک دوسرے پر اوشواس اور فوجی گٹھ بندھنوں کا راستہ نہیں ہے اور نہ دنیا کی جنتا کو الگ الگ اکھاڑوں میں بانٹ کر دویش بڑھانے کا راستہ ہے . یہ راستہ ساری دنیا کی جنتا کو ایک ڈور میں باندھنے کا راستہ ہے . اس سے سارے انتر راشٹریہ جھگڑے شانتی سے حل کئے جا سکتے ہیں . یہ وہ راستہ ہے جو راشٹروں کی موجودہ سیماؤں کو سویکار کرتا ہے اور سب دیشوں کو اس بات کی تسلی دیتا ہے کہ اُن کے اندرونی معاملوں میں کوئی مداخلت نہیں کر سکتا . یہ وہ راستہ ہے جو برابری اور پرسپر سہائتا کی بنیاد پر قائم ہے اور سب کے شانتی پوروک ساتھ ساتھ ملکر رہنے کے سدھانت کو سروچیہ مانتا ہے .

## برھما میں چاؤ - این - لائی

برھما کے پردھان منتری یو نو کی دعوت پر چین کے پردھان منتری چاؤ این . لائی 29 جون کو برھما کی راجدھانی رنگون پہنچے وہاں اُن کا سرکار اور جنتا دونوں کی طرف سے شاندار سواگت ہوا . وہاں بھی دونوں پردھان منتریوں کا انہیں پانچ سدھانتوں پر سمجھوتا ہوا . 29 جون 1954 کو چین اور برھما کے پردھان منتریوں نے ملکر نیچے لکھا بیان نکالا :—

"1—جنوادی چین کے پردھان منتری چاؤ - این - لائی برھما راج سنگھ کے پردھان منتری یو نو کے بلاوے پر جنیوا سے پیکنگ جاتے سمے راستے میں دو دن کے لئے برھما کی راجدھانی رنگون میں ٹھہرے. اس تھوڑے سمے میں دونوں پردھان

5—प्रधान मंत्रियों ने खास तौर से यह आशा प्रकट की कि ये सिद्धान्त हिन्द-चीन की समस्याओं को हल करने में काम आ सकेंगे. वहां के राजकाजी समझौते का उद्देश्य यह होना चाहिये कि सब देश मिलकर आज़ाद जनतन्त्र राज्यों की तरह शान्ति और प्रेम के साथ रह सकें, जिससे वह दूसरी बाहर की शक्तियों की लड़ाइयों के लिए इस्तेमाल न किए जा सकें और विदेशी दख़लन्दाज़ी के चंगुल में न फंसें. इससे इन मुल्कों में आत्म विश्वास बढ़ेगा और आपस में और अपने पड़ौसियों के साथ दोस्ताना सम्बन्ध की भावना मज़बूत होगी. इन ऊपर लिखे सिद्धान्तों को अपनाने से शान्ति का मैदान क़ायम करने में सहायता मिलेगी और परिस्थितियों के अनुसार उसके फैलाव को बढ़ाया जा सकेगा. इस तरह युद्ध के मौक़े कम हो जाएंगे और तमाम दुनिया में शान्ति को बल मिलेगा.

"6—प्रधान मंत्रियों ने भारत और चीन की दोस्ती में अपना विश्वास ज़ाहिर किया और यह विश्वास भी ज़ाहिर किया कि यह दोस्ती संसार में शान्ति क़ायम करने और अपने अपने देशों की और एशिया के दूसरे मुल्कों की शान्तिमय उन्नति में मदद देगी.

"7—दोनों प्रधान मंत्रियों की यह बात चीत एशिया की समस्याओं को अच्छी तरह समझने, शान्ति और सहयोग की कोशिशों को आगे बढ़ाने और दुनिया के दूसरे मुल्कों की इसी तरह की समस्याओं को सुलझाने के विचार को सामने रखकर की गई थी.

"8—दोनों प्रधान मंत्री इस बात पर पूरी तरह सहमत हैं कि दोनों मुल्कों में एक नज़दीकी रिश्ता क़ायम किया जाय ताकि वे एक दूसरे को पूरी तरह समझने की लगातार कोशिशें करते रहें. उन्होंने एक दूसरे से मिलने के इस शुभ अवसर की सराहना की और विचारों की अदला बदली से दोनों में विश्व शान्ति के लिए सहयोग की भावना और ठीक ठीक समझ पैदा हुई."

( 28 जून सन 1954 )

इस संयुक्त बयान के अलावा चीन के प्रधान मंत्री चाउ-एन-लाई ने आल इंडिया रेडियो पर बोलते हुए कहा था—"इन सिद्धान्तों पर हमारा यह समझौता राष्ट्रों के झगड़े आपसी बात चीत से सुलझाने का एक बहुत अच्छा उदाहरण है. प्रधान मंत्री श्री नेहरू से मेरी जो बात चीत हुई उसके दौरान में हम दोनों ने इस बात पर विचार किया कि ऊपर के सिद्धान्तों को एशिया और सारे संसार के मौजूदा अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर लागू करना चाहिए. मुझे पूरा विश्वास है कि भारत और चीन की मिली जुली कोशिश एशिया और तमाम दुनिया को शान्ति के लिए एक बहुत बड़ी देन होगी."



" 5—پردھان منتریوں نے خاص طور سے یہ آشا پرکٹ کی کہ یہ سدھانت ھند چین کی سمسیاؤں کو حل کرنے میں کام آسکینگے. وھاں کے راج کاجی سمجھوتے کا اُدیش یہ ھونا چاھئے کہ سب دیش ملکر آزاد جن تنتر راجیوں کی طرح شانتی اور پریم کے ساتھ رہ سکیں' جس سے وہ دوسری باھر کی شکتیوں کی لڑائیوں کے لئے استعمال نہ کئے جاسکیں اور ودیشی دخل اندازی کے چنگل میں نہ پھنسیں. اِس سے اِن ملکوں میں آتم وشواس بڑھیگا اور آپس میں اور اپنے پڑوسیوں کے ساتھ دوستانہ سمبندھ کی بھاونا مضبوط ھوگی. اِن اُوپر لکھے سدھانتوں کو اپنانے سے شانتی کا میدان قائم کرنے میں سہائتا ملیگی اور پرستھتیوں کے انوسار اُس کے پھیلاؤ کو بڑھایا جاسکیگا. اِس طرح یدھ کے موقعے کم ھوجائینگے اور تمام دنیا میں شانتی کو بل ملیگا.

" 6—پردھان منتریوں نے بھارت اور چین کی دوستی میں اپنا وشواس ظاھر کیا اور یہ وشواس بھی ظاھر کیا کہ یہ دوستی سنسار میں شانتی قائم کرنے اور اپنے اپنے دیشوں کی اور ایشیا کے دوسرے ملکوں کی شانتی مے اُنتی میں مدد دیگی.

" 7—دونوں پردھان منتریوں کی یہ بات چیت ایشیا کی سمسیاؤں کو اچھی طرح سمجھنے' شانتی اور سہیوگ کی کوششوں کو آگے بڑھانے اور دنیا کے دوسرے ملکوں کی اِسی طرح کی سمسیاؤں کو سلجھانے کے وچار کو سامنے رکھ کر کی گئی تھی.

" 8—دونوں پردھان منتری اِس بات پر پوری طرح سہمت ھیں کہ دونوں ملکوں میں ایک نزدیکی رشتہ قائم کیا جائے تاکہ وہ ایک دوسرے کو پوری طرح سمجھنے کی لگاتار کوششیں کرتے رھیں. اُنھوں نے ایک دوسرے سے ملنے کے اِس شبھ اَوسر کی سراھنا کی اور وچاروں کی اَدلا بدلی سے دونوں میں وشو شانتی کے لئے سہیوگ کی بھاونا اور ٹھیک ٹھیک سمجھ پیدا ھوئی." ( 28 جون سن 1954 )

اِس سنیکت بیان کے علاوہ چین کے پردھان منتری چاؤ-این-لائی نے آل انڈیا ریڈیو پر بولتے ھوئے کہا تھا—"اِن سدھانتوں پر ھمارا یہ سمجھوتا راشٹروں کے جھگڑے آپسی بات چیت سے سلجھانے کا ایک بہت اچھا اُداھرن ھے. پردھان منتری شری نہرو سے میری جو بات چیت ھوئی اُس کے دوران میں ھم دونوں نے اِس بات پر وچار کیا کہ اُوپر کے سدھانتوں کو ایشیا اور سارے سنسار کے موجودہ انتر راشٹریہ سمبندھوں پر لاگو کرنا چاھئے. مجھے پورا وشواس ھے کہ بھارت اور چین کی ملی جلی کوشش ایشیا اور تمام دنیا کو شانتی کے لئے ایک بہت بڑی دین ھوگی."

लड़ाई बन्द होने के बारे में जनेवा की बात चीत में कुछ सफलता मिली है. उन्हें इस बात की पूरी उम्मीद है कि यह कोशिशें निकट भविष्य में अवश्य कामयाब होंगी, और उस इलाक़े की राजनैतिक समस्याओं का समझौता हो जायगा.

"2—दोनों प्रधान मंत्रियों की बात चीत का यह मक़सद था कि जनेवा और दूसरे स्थानों पर शान्ति पूर्ण फ़ैसलों की जो कोशिशें हो रही हैं, उन्हें जितना हो सके मदद दी जाए.

"उनका मुख्य उद्देश्य यह था कि अमन क़ायम करने के लिये एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझते हुए एक दूसरे की और दूसरे मुल्कों की मदद से किसी सही नतीजे पर पहुंचा जाय.

"3—हाल में चीन और भारत में एक समझौता हुआ है जो कुछ निश्चित सिद्धान्तों पर क़ायम है. यह सिद्धांत दोनों देशों के बीच सम्बन्धों के पथ प्रदर्शक हैं. वे सिद्धांत ये हैं :—

"1—एक दूसरे के देशों की अखंडता और मुकम्मिल आजादी का आदर करना.

"2—किसी दूसरे पर हमला न करना.

"3—किसी दूसरे के अंदरूनी मामलों में दख़ल न देना.

"4—बराबरी और एक दूसरे के हित का ख़याल रखना.

"5—शांति पूर्वक साथ साथ रहना.

"दोनों प्रधान मंत्रियों ने इन सिद्धांतों की फिर से पुष्टि की और यह महसूस किया कि एशिया के और दुनिया के दूसरे मुल्कों के आपसी सम्बन्धों में भी इनको लागू किया जाय यदि अलग अलग देशों के अलावा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी आम तौर पर इन सिद्धांतों को ही लागू किया जाय तो यह शांति और सुरक्षा की सबसे मजबूत बुनियाद होंगे. तब आज जो एक दूसरे से डर और शक की भावनाएं मौजूद हैं वह विश्वास की भावना में बदल जायंगी.

"4—दोनों प्रधान मंत्रियों ने इस बात को स्वीकार किया कि एशिया और दुनिया के अलग अलग हिस्सों में अलग अलग समाजी और राजकाजी शासन व्यवस्थाएं हैं. पर यदि ऊपर लिखे सिद्धांतों को लिया जाय और उन पर अमल किया जाय और एक दूसरे के अंदरूनी मामलों में दख़ल न दिया जाय तो यह फ़रक़ अमन के रास्ते में रुकावट नहीं हो सकते. हर देश की अखन्डता और मुकम्मिल आजादी का आदर और एक दूसरे पर हमला न करने के सिद्धांत को मानने से देशों के बीच दोस्ताना सम्बन्ध और शांतिपूर्वक साथ साथ रहना संभव हो सकेगा. यह राष्ट्रों राष्ट्रों के बीच आपसी तनाव को कम करेगा और शांति का वातावरण क़ायम करने में मदद देगा.



لڑائی بند ہونے کے بارے میں جنیوا کی بات چیت میں کچھ سپھلتا ملی ہے . اُنھیں اِس بات کی پوری اُمید ہے کہ یہ کوششیں نکٹ بھوشیہ میں اَوشیہ کامیاب ہوں گی اور اُس علاقے کی راج نیتک سمسیاؤں کا سمجھوتا ہو جائیگا .

"2—دونوں پردھان منتریوں کی بات چیت کا یہ مقصد تھا کہ جنیوا دوسرے استھانوں پر شانتی پورن فیصلوں کی جو کوششیں ہو رہی ہیں، اُنھیں جتنا ہوسکے مدد دی جائے.

"اُن کا مکھیہ اُدیش یہ تھا کہ امن قائم کرنے کے لئے ایک دوسرے کے درشٹی کون کو سمجھتے ہوئے ایک دوسرے کی اور دوسرے ملکوں کی مدد سے کسی صحیح نتیجے پر پہونچا جائے .

"3—حال میں چین اور بھارت میں ایک سمجھوتا ہوا ہے جو کچھ نشچت سدھانتوں پر قائم ہے . یہ سدھانت دونوں دیشوں کے بیچ سمبندھوں کے پتھ پردرشک ہیں . وے سدھانت یہ ہیں : —

" (1) ایک دوسرے کے دیشوں کی اکھنڈتا اور مکمل آزادی کا آدر کرنا .

" (2) کسی دوسرے پر حملہ نہ کرنا .

" (3) کسی دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دینا .

" (4) برابری اور ایک دوسرے کے ہت کا خیال رکھنا .

" (5) شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنا .

"دونوں پردھان منتریوں نے اِن سدھانتوں کی پھر سے پشٹی کی اور یہ محسوس کیا کہ ایشیا کے اور دنیا کے دوسرے ملکوں کے آپسی سمبندھوں میں بھی اِن کو لاگو کیا جائے. یدی الگ الگ دیشوں کے علاوہ انترراشٹریہ سمبندھوں میں بھی عام طور پر اِن سدھانتوں کو ھی لاگو کیا جائے تو یہ شانتی اور سرکشا کی سب سے مضبوط بنیاد ہونگے . تب آج جو ایک دوسرے سے ڈر اور شک کی بھاونائیں موجود ہیں وہ وشواس کی بھاونا میں بدل جائینگی .

"4—دونوں پردھان منتریوں نے اِس بات کو سویکار کیا کہ ایشیا اور دنیا کے الگ الگ حصوں میں الگ الگ سماجی اور راج کاجی شاسن ویوستھائیں ہیں . پر یدی اُوپر لکھے سدھانتوں کو مان لیا جائے اور اُن پر عمل کیا جائے اور ایک دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دیا جائے تو یہ فرق امن کے راستے میں رکاوٹ نہیں ہوسکتے . ہر دیش کی اکھنڈتا اور مکمل آزادی کا آدر اور ایک دوسرے پر حملہ نہ کرنے کے سدھانت کو ماننے سے دیشوں کے بیچ دوستانہ سمبندھ اور شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنا سمبھو ہوسکےگا . یہ راشٹروں راشٹروں کے بیچ آپسی تناؤ کو کم کریگا اور شانتی کا واتاورن قائم کرنے میں مدد دیگا .

कनाडा, फ़िलिपाइन्स, टरकी, ग्रीस, नीदरलैंड, कोलम्बिया आदि 19 देशों के प्रतिनिधियों को भी बुलाया गया था.

जनेवा कान्फ़रेन्स में नए चीन के प्रधान मंत्री चाऊ-ऐन-लाई ने हिन्द चीन में शान्ति क़ायम करने के लिये बेहतरीन सिद्धान्त पेश किये जिनका सब पर असर हुआ. कुछ साम्राजवादियों ने भरसक प्रयत्न किया कि जनेवा कान्फ़रेन्स को असफल कर दिया जाए. पर कान्फ़रेन्स की बाग डोर अमरीका के मंत्री जान फ़ोस्टर डलेस की जगह ब्रिटेन के विदेश मंत्री एन्थनी ऐडन के हाथ में थी.

जनेवा कान्फ़रेन्स में हिन्दुस्तान से कोई प्रतिनिधि नहीं बुलाया गया था, फिर भी इसके महत्व को समझते हुए भारत सरकार ने श्री कृष्ण मेनन को वहां भेज दिया था. श्री कृष्ण मेनन जनेवा में कई बार चीन के प्रधान मंत्री चाऊ-ऐन-लाई से मिले और भारत के दृष्टिकोण से उन्हें जानकारी कराते रहे. कान्फ़रेन्स ख़ूब सफल रही. हिन्द-चीन की लड़ाई बन्द हो गई. अन्त में भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने चीन के प्रधान मंत्री चाऊ-ऐन-लाई को दिल्ली आने की दावत दी. चाऊ-ऐन-लाई 25 जून को दिल्ली पहुंच गये.

## भारत में चाऊ-ऐन-लाई

भारत की राजधानी में चीन के प्रधान मंत्री का जनता और सरकार की तरफ़ से जो शानदार स्वागत हुआ उसे बयान नहीं किया जा सकता. चाऊ-ऐन-लाई के स्वागत के लिये लोग सुबह 5 बजे से हवाई अड्डे पर जमा होने शुरू हो गये थे. पूरा हवाई अड्डा "हिन्द चीनी भाई भाई !!" के नारों से गूंज उठा था. जब चाऊ ताजमहल देखने के लिये आगरे पहुंचे तो वहां भी बीस हज़ार जनता ने उनका शानदार स्वागत किया.

चाउ-ऐन-लाई और जवाहरलाल नेहरू ने भारत और चीन के आपसी मसलों पर बात चीत की. तीन दिन की बात चीत के बाद दोनों प्रधान मंत्रियों ने नीचे लिखा संयुक्त बयान निकाला :—

"1—जनवादी चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के निमंत्रण पर दिल्ली आये. वह दिल्ली में तीन दिन ठहरे. इस थोड़े से समय में दोनों प्रधान-मन्त्रियों ने चीन और भारत के आपसी मसलों पर विचार किया. ख़ास तौर पर उन्होंने दक्खिनी पूरबी एशिया की शान्ति और हिन्द चीन के विषय में जनेवा कान्फ़रेस में जो बात चीत चल रही थी उस पर बात की. हिंद चीन की हालत एशिया और विश्व की शान्ति के लिये एक ख़ास अहमियत रखती है. दोनों प्रधान मंत्रियों की यह दिली ख़्वाहिश है कि जनेवा कांफ़रेंस में जो कोशिश हो रही है वह कामयाब हो. दोनों इस बात से संतुष्ट हैं कि



کناڈا، فلپپائنس، ٹرکی، گریسس، نیدرلینڈ، کولمبیا آدی 19 دیشوں کے پرتیندھیوں کو بھی بلایا گیا تھا .

جنیوا کانفرنس میں نئے چین کے پردھان منتری چاؤ-این-لائی نے ھند-چین میں شانتی قائم کرنے کے لئے بہترین سدھانت پیش کئے جن کا سب پر اثر ھوا . کچھ سامراج وادیوں نے بھرسک پریتن کیا کہ جنیوا کانفرنس کو اسپھل کردیا جائے . پر کانفرنس کی باگ ڈور امریکہ کے منتری جان فاسٹر ڈلیس کی جگہ برٹین کے ودیش منتری اینتھنی آیڈن کے ھاتھ میں تھی .

جنیوا کانفرنس میں ھندستان سے کوئی پرتیندھی نہیں بلایا گیا تھا . پھر بھی اِس کے مہتو کو سمجھتے ھوئے بھارت سرکار نے شری کرشن مینن کو وھاں بھیج دیا تھا . شری کرشن مینن جنیوا میں کئی بار چین کے پردھان منتری چاؤ - این - لائی سے ملے اور بھارت کے درشٹی کون سے اُنھیں جانکاری کراتے رھے . کانفرنس خوب سپھل رھی . ھند چین کی لڑائی بند ھوگئی . انت میں بھارت کے پردھان منتری جواھر لال نہرو نے چین کے پردھان منتری چاؤ این - لائی کو دلی آنے کی دعوت دی. چاؤ این - لائی 25 جون کو دلی پہونچ گئے .

## بھارت میں چاؤ این - لائی -

بھارت کی راجدھانی میں چین کے پردھان منتری کا جنتا اور سرکار کی طرف سے جو شاندار سواگت ھوا اُسے بیان نہیں کیا جاسکتا . چاؤ این - لائی کے سواگت کے لئے لوگ صبح پانچ بجے سے ھوائی اڈے پر جمع ھونے شروع ھوگئے تھے . پورا ھوائی اڈا "ھندی چینی بھائی بھائی !!" کے نعروں سے گونج اُٹھا تھا. جب چاؤ تاج محل دیکھنے کے لئے آگرہ پہونچے تو وھاں بھی بیس ھزار جنتا نے اُن کا شاندار سواگت کیا .

چاؤ - این - لائی اور جواھر لال نہرو نے بھارت اور چین کے آپسی مسلوں پر بات چیت کی . تین دن کی بات چیت کے بعد دونوں پردھان منتریوں نے نیچے لکھا سنکیت بیان نکالا :—

"1—جنوادی چین کے پردھان منتری چاؤ - این - لائی بھارت کے پردھان منتری جواھر لال نہرو کے نمنترن پر دلی آئے . وہ دلی میں تین دن ٹھہرے . اِس تھوڑے سے سمے میں دونوں پردھان منتریوں نے چین اور بھارت کے آپسی مسلوں پر وچار کیا . خاص طور پر اُنھوں نے دکھنی پوربی ایشیا کی شانتی اور ھندچین کے وشے میں جنیوا کانفرنس میں جو بات چیت چل رھی تھی اُس پر بات کی . ھند چین کی حالت ایشیا اور وشو کی شانتی کے لئے ایک خاص اھمیت رکھتی ھے. دونوں پردھان منتریوں کی یہ دلی خواھش ھے کہ جنیوا کانفرنس میں جو کوشش ھو رھی ھے وہ کامیاب ھو. دونوں اِس بات سے سنتشٹ ھیں کہ

**शान्ति क़ायम रहे तो यही दौलत पिछड़े देशों के विकास के लिये काम में लाई जा सकती है.**

पंचशील के समर्थन में हमारा भविष्य छिपा है. हर भारतवासी का कर्तव्य है कि वह पंचशील को सफल बनाने में पूरा सहयोग दे.

'पंचशील' हमारे देश का बहुत पुराना शब्द है. हिन्दू, जैन और बौद्ध तीनों धर्मों की किताबों में नीचे लिखी पांच नेकियों को 'पञ्च शील' का नाम दिया गया है :— ( 1 ) किसी को तकलीफ़ न देना, ( 2 ) कभी झूट न बोलना, ( 3 ) किसी दूसरे का माल न लेना, ( 4 ) अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू रखना, और ( 5 ) धन संपत्ति जमा न करना. पञ्चशील के ये पुराने पांचों सिद्धान्त आदमी आदमी के बीच व्यवहार के लिये थे. नये 'पञ्चशील' के इन्हीं से मिलते जुलते पांचों सिद्धान्त देशों और राष्ट्रों के बीच आपसी व्यवहार के लिये हैं. इसलिये पञ्चशील का महत्व और उनका दायरा अब बढ़ गया है. चीन, इंडोनेशिया, बरमा जैसे पुराने बौद्ध देशों में भी ये शब्द भारत ही की तरह काम में आता था. भारत और चीन की दोस्ती से पञ्चशील का एक नया इतिहास प्रारम्भ होता है.

सब से पहले भारत और चीन के बीच तिब्बत को लेकर एक व्यापारी संधि हुई जो इन्हीं पांच सिद्धान्तों पर की गई. यह संधि अप्रैल 1954 में हुई. इसके दो महीने बाद ये सिद्धान्त चीन और हिन्दुस्तान की दोस्ती की बुनियाद क़रार दिये गये.

श्री नेहरू ने लोकसभा में अपने आलोचकों को उत्तर देते हुए कहा था :—"तिब्बत के इलाक़े के बारे में हमारी सरकार ने चीन की सरकार के साथ जो व्यापारी संधि की है और जिन सिद्धान्तों पर की है उसकी मिसाल दुनिया में अभी तक कहीं नहीं मिलती. विदेश मंत्री की हैसियत से अपने पूरे समय में मैंने इससे बेहतर काम नहीं किया. यह संधि और उसके सिद्धान्त दुनिया के सब देशों के लिये एक सबक़ हैं."

## जनेवा कान्फ़रेन्स

उस समय भारत और संसार की जनता शान्ति के लिये आन्दोलन कर रही थी. हिन्द चीन की लड़ाई के ख़िलाफ़ और फ़्रान्स की सरकार के विरुद्ध जगह जगह आवाज उठ रही थी. जनता बड़े बड़े राष्ट्रों से यह मांग कर रही थी कि वे मिलकर बैठें और हिन्द चीन और कोरिया में लड़ाई बन्द करने का कोई उपाय निकालें. फलस्वरूप पांच बड़े राष्ट्र रूस, अमरीका, फ़्रान्स, ब्रिटेन और नए चीन की जनेवा में एक कान्फ़रेन्स हुई. इनके अलावा उत्तरी व दक्खिनी कोरिया, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड,



شانتی قائم رهے تو یہی دولت پچھڑے دیشوں کے وکاس کے لئے کام میں لائی جاسکتی هے .

پنچ شیل کے سمرتھن میں همارا بھوشیه چھپا هے. هر بھارت واسی کا کرتویه هے که وه پنچ شیل کو سپھل بنانے میں پورا سہیوگ دے .

'پنچ شیل' همارے دیش کا بہت پرانا شبد هے . هندو' جین اور بودھ تینوں دھرموں کی کتابوں میں نیچے لکھی پانچ نیکیوں کو' 'پنچ شیل' کا نام دیا گیا هے :—(1) کسی کو تکلیف نه دینا' (2) کبھی جھوٹ نه بولنا (3) کسی دوسرے کا مال نه لینا (4) اپنی اندریوں پر قابو رکھنا اور (5) دھن سمپتی جمع نه کرنا . پنچ شیل کے یه پرانے پانچوں سدھانت آدمی آدمی کے بیچ ویوهار کے لئے تھے . نئے 'پنچ شیل' کے اِنهیں سے ملتے جلتے پانچوں سدھانت دیشوں اور راشٹروں کے بیچ آپسی ویوهار کے لئے هیں . اِس لئے پنچ شیل کا مہتو اور اُن کا دائرہ اب بڑھ گیا هے . چین' انڈونیشیا' برهما جیسے پرانے بودھ دیشوں میں بھی یه شبد بھارت هی کی طرح کام میں آتا تھا . بھارت اور چین کی دوستی سے پنچ شیل کا ایک نیا اتہاس پرارمبھ هوتا هے .

سب سے پہلے بھارت اور چین کے بیچ تبت کو لےکر ایک ویاپاری سندھی هوئی جو اِنهیں پانچ سدھانتوں پر کی گئی . یه سندھی اپریل 1954 میں هوئی . اِس کے دو مہینے بعد یه سدھانت چین اور هندستان کی دوستی کی بنیاد قرار دئے گئے.

شری نہرو نے لوک سبھا میں اپنے آلوچکوں کو اُتر دیتے هوئے کہا تھا :—"تبت کے علاقے کے بارے میں هماری سرکار نے چین کی سرکار کے ساتھ جو ویاپاری سندھی کی هے اور جن سدھانتوں پر کی هے اُن کی مثال دنیا میں ابھی تک کہیں نہیں ملتی . ودیش منتری کی حیثیت سے اپنے پورے سمے میں میں نے اِس سے بہتر کام نہیں کیا . یه سندھی اور اُس کے سدھانت دنیا کے سب دیشوں کے لئے ایک سبق هیں ."

## جنیوا کانفرنس

اس سمے بھارت اور سنسار کی جنتا شانتی کے لئے آندولن کررهی تھی . هند چین کی لڑائی کے خلاف اور فرانس کی سرکار کے ورودھ جگه جگه آواز اُٹھ رهی تھی . جنتا بڑے بڑے راشٹروں سے یه مانگ کررهی تھی که وه ملکر بیٹھیں اور هند چین اور کوریا میں لڑائی بند کرنے کا کوئی اُپائے نکالیں . پھل سروپ پانچ بڑے راشٹر روس' امریکه' فرانس' برٹین اور نئے چین کی جنیوا میں ایک کانفرنس هوئی . اِن کے علاوہ اُتری و دکھنی کوریا' آسٹریلیا' نیوزی لینڈ'

रहने पर निर्भर है. हम स्वभाव से ही अमन पसन्द हैं. इसीलिये हम शान्ति क़ायम करने की कोशिश को बड़े से बड़े कामों में सबसे पहले रखते हैं."

यह समझना ग़लत है कि भारतवासियों को विश्व युद्ध के सम्बन्ध में चिन्ता करने की जरूरत नहीं है. केवल तटस्थ रहने से अब अपनी रक्षा नहीं हो सकती. ऐटम बम से निकलने वाली रेडियाई लहरों की कोई हद नहीं है और तटस्थ और लड़ाकुओं में वह कोई फ़रक़ नहीं करतीं.

भारत पर तरह तरह के एतराज हो रहे हैं और उसे तटस्थता ( ग़ैरजानिबदारी ) से डिगाने के लिये दबाव डाले जा रहे हैं. पाकिस्तान में, लंका में और भारत के उन हिस्सों में जो विदेशियों के आधीन हैं फ़ौजी अड्डे बनाकर हमारे देश को फ़ौजी जालों से घेरा जा रहा है. इन अड्डों के कारण हम पर दबाव पड़ता है और हमारे लिये डर पैदा होता है. दूसरे शक्तिशाली देशों की "आर्थिक सहायता" उस दैवी प्रकोप ( क़हरे इलाही ) के समान है जो सदा सर पर मंडलाता रहता है. पाकिस्तान और पुर्तगाली बस्तियां लड़ाई के लिये तैयार की जा रही हैं.

हिन्द चीन के समझौते में एक बड़ा हिस्सा लेने के लिये हम मजबूर कर दिये गये. जैसे जैसे दिन बीतेंगे भारत को एक निश्चित रुख़ तमाम अन्तर्राष्ट्रीय सवालों पर लेना पड़ेगा, उसे अगुवाई भी करनी पड़ेगी, ख़ास तौर से उन सवालों पर जो एशिया की समस्याओं और राष्ट्रों की आजादी से सम्बन्ध रखते हैं. उन सवालों पर तो भारत को आगे बढ़ कर भाग लेना ही पड़ेगा और एक पक्का रास्ता अपनाना होगा.

बिलकुल अलग थलग रहना अब सम्भव नहीं है. जोड़ तोड़ की लड़ाई हमारी सीमा तक आ पहुंची है. दिन प्रति दिन शान्ति स्थापना का भार भारत के कन्धों पर बढ़ता जा रहा है.

जिन लोगों के हाथों में हकूमत है उन पर ही सारा भार छोड़ देना ठीक नहीं है. हमारे देश में जनता की आवाज़ में क्या शक्ति है, इस पर जोर देने की आवश्यकता है.

शान्ति के लिये जो ये पांच सिद्धान्त तय किये गये हैं उनका समर्थन हमारी अधिक से अधिक जनता करे, यही हमारे सामने आज सवाल है. इन सिद्धान्तों के समर्थन का मतलब यह है कि एशियाई देशों के बीच फूट डालने और उनको ग़ुलाम बनाने के जो प्रयत्न हो रहे हैं उन्हें विफल किया जाए और भारत की दोस्ती एशिया के दूसरे देशों और ख़ासकर हमारे सबसे बड़े पड़ोसी चीन के साथ मजबूत की जाय, और आपस में मेल और एका बढ़ाया जाय. जनता की मेहनत से जो दौलत पैदा होती है उससे हथियार बनाकर उसका दुरुपयोग किया जाता है. यदि



رہنے پر نربھر ہے ۔ ہم سبھاؤ سے ہی امن پسند ہیں ۔ اِسی لئے ہم شانتی قائم کرنے کی کوشش کو بڑے سے بڑے کاموں میں سب سے پہلے رکھتے ہیں ۔"

یہ سمجھنا غلط ہے کہ بھارت واسیوں کو وشو یدھ کے سمبندھ میں چنتا کرنے کی ضرورت نہیں ہے ۔ کیول تٹستھ رہنے سے اب اپنی رکشا نہیں ہوسکتی ۔ ایٹم بم سے نکلنے والی ریڈیائی لہروں کی کوئی حد نہیں ہے اور تٹستھ اور لڑاکوں میں وہ کوئی فرق نہیں کرتیں ۔

بھارت پر طرح طرح کے اعتراض ہو رہے ہیں اور اُسے تٹستھتا ( غیر جانب‌داری ) سے ڈگانے کے لئے دباؤ ڈالے جا رہے ہیں ۔ پاکستان میں' لنکا میں اور بھارت کے اُن حصوں میں جو ودیشیوں کے آدھین ہیں فوجی اڈے بناکر ہمارے دیش کو فوجی جالوں سے گھیرا جا رہا ہے ۔ اِن اڈوں کے کارن ہم پر دباؤ پڑتا ہے اور ہمارے لئے ڈر پیدا ہوتا ہے ۔ دوسرے شکتی شالی دیشوں کی "آرتھک سہائتا" اُس دیوی پرکوپ ( قہرالٰہی ) کے سمان ہے جو سدا سر پر منڈلاتا رہتا ہے ۔ پاکستان اور پرتگالی بستیاں لڑائی کے لئے تیار کی جا رہی ہیں ۔

ہند-چین کے سمجھوتے میں ایک بڑا حصہ لینے کے لئے ہم مجبور کردیئے گئے ۔ جیسے جیسے دن بیتیں گے بھارت کو ایک نشچت رخ تمام انٹرراشٹریہ سوالوں پر لینا پڑے گا' اُسے اگوائی بھی کرنی پڑے گی' خاص طور سے اُن سوالوں پر جو ایشیا کی سمسیاؤں اور راشٹروں کی آزادی سے سمبندھ رکھتے ہیں ۔ اُن سوالوں پر تو بھارت کو آگے بڑھ کر بھاگ لینا ہی پڑے گا اور ایک پکا راستہ اپنانا ہوگا ۔

بالکل الگ تھلگ رہنا اب سمبھو نہیں ہے ۔ جوڑ توڑ کی لڑائی ہماری سیما تک آپہونچی ہے ۔ دن پرتی دن شانتی استھاپنا کا بھار بھارت کے کندھوں پر بڑھتا جا رہا ہے ۔

جن لوگوں کے ہاتھوں میں حکومت ہے اُن پر ہی سارا بھار چھوڑ دینا ٹھیک نہیں ہے ۔ ہمارے دیش میں جنتا کی آواز میں کیا شکتی ہے' اِس پر زور دینے کی آوشیکتا ہے ۔

شانتی کے لئے جو یہ پانچ سدھانت طے کئے گئے ہیں اُن کا سمرتھن ہماری ادھک سے ادھک جنتا کرے' یہی ہمارے سامنے آج سوال ہے ۔ اِن سدھانتوں کے سمرتھن کا مطلب یہ ہے کہ ایشیائی دیشوں کے بیچ پھوٹ ڈالنے اور اُن کو غلام بنانے کے جو پریتن ہو رہے ہیں اُنہیں وپھل کیا جائے اور بھارت کی دوستی ایشیا کے دوسرے دیشوں اور خاصکر ہمارے سب سے بڑے پڑوسی چین کے ساتھ مضبوط کی جائے' اور آپس میں میل اور ایکا بڑھایا جائے ۔ جنتا کی محنت سے جو دولت پیدا ہوتی ہے اُس سے ہتھیار بناکر اُس کا دراُپیوگ کیا جاتا ہے ۔ یدی

चौथा सिद्धान्त यह है कि सब देश एक दूसरे को बराबर समझें और एक दूसरे के हित का ध्यान रखें. यह भी बहुत आवश्यक सिद्धान्त है. कुछ देश दूसरों को सहायता देने के नाम पर उनकी सारी आर्थिक व्यवस्था पर क़ब्ज़ा कर बैठते हैं, और नाजायज फ़ायदा उठाने के लिये तरह तरह की मदाख़लत करते हैं. जब तक सब देश एक दूसरे को बराबर नहीं समझेंगे और एक दूसरे के हित का ध्यान नहीं रखेंगे तब तक शान्ति नहीं हो सकती.

पाचवां सिद्धान्त यह है कि अलग अलग आर्थिक या राजनैतिक व्यवस्था वाले देश एक दूसरे को मिटाने की कोशिश किये बिना साथ साथ अमन से रह सकते हैं. अच्छे विचार न लड़ाई से फैले हैं, न फैलेंगे. जिनके विचार कमज़ोर होते हैं वही लड़ाई और मारपीट पर उतर आते हैं. जो विचार जिस हद तक लोगों का हित कर सकता है उसी हद तक वह बलवान होता है. विचारों का लक्ष्य आम जनता का हित करना है. फिर झगड़ा किस बात का ? समय की कसौटी पर सब विचार अपने आप झूठे, सच्चे, बलवान या कमज़ोर सिद्ध हो जाएंगे. इसलिये पंचशील तमाम उन कोशिशों को बुरा कहता है जो किसी विचार या किसी ख़ास व्यवस्था को ख़तम करने के लिये की जाती हैं.

यह पांचों सिद्धान्त एक दूसरे से मिले हुए हैं और पांचों को एक साथ मान कर ही दुनिया का भला किया जा सकता है.

प्रधान-मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने पार्लियामेन्ट में कहा था—"यह पांच सिद्धान्त विश्व को एशिया का चैलेंज हैं. हम हर देश को यह बात बता देना चाहते हैं कि उसे कहना है कि वह इन सिद्धान्तों को मानता है या नहीं. मैं चाहता हूं कि यह कहने की उनमें हिम्मत हो. मैं तो कहता हूं कि जो देश भी ईमानदारी से शान्ति चाहता है वह इन सिद्धान्तों को स्वीकार करेगा ही. इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है."

पंचशील एक कसौटी है जिस पर कस कर हर देश को परखा जा सकता है कि वह शान्ति के पक्ष में है या युद्ध के पक्ष में यूं तो शान्ति क़ायम करने का दावा सभी करते हैं पर पंचशील वह मंत्र है जो सबका नक़ाब उतार देता है.

## पंचशील और भारत

सवाल होता है कि आख़िर भारत को पंचशील से क्या लाभ ? यह भी कहा जा सकता है कि भारत न किसी देश पर क़ब्ज़ा जमाने का इच्छुक है और न उसका कहीं साम्राज्य है. फिर भारत अपनी शक्ति राष्ट्र निर्माण से हटाकर इस तरफ़ क्यों लगाए ? इसका जवाब पंडित जवाहरलाल ने एक जगह बहुत साफ़ दिया है—"हमारे देश की और एशिया के दूसरे देशों की उन्नति का भविष्य बुनियादन शान्ति क़ायम



چوتھا سدھانت یہ ھے کہ سب دیش دوسرے کو برابر سمجھیں اور ایک دوسرے کے ھت کا دھیان رکھیں ۔ یہ بھی بہت آوشیک سدھانت ھے ۔ کچھ دیش دوسروں کو سہائتا دینے کے نام پر اُن کی ساری آرتھک ویوستھا پر قبضہ کر بیٹھتے ھیں اور ناجائز فائدہ اُٹھانے کے لئے طرح طرح کی مداخلت کرتے ھیں ۔ جب تک سب دیش ایک دوسرے کو برابر نہیں سمجھیں گے اور ایک دوسرے کے ھت کا دھیان نہیں رکھینگے تب تک شانتی نہیں ھوسکتی ۔

پانچواں سدھانت یہ ھے کہ الگ الگ آرتھک یا راجنیتک ویوستھا والے دیش ایک دوسرے کو مٹانے کی کوشش کئے بنا ساتھ ساتھ امن سے رہ سکتے ھیں ۔ اچھے وچار نہ لڑائی سے پھیلے ھیں، نہ پھیلینگے ۔ جن کے وچار کمزور ھوتے ھیں وھی لڑائی اور مارپیٹ پر اُتر آتے ھیں ۔ جو وچار جس حد تک لوگوں کا ھت کرسکتا ھے اُسی حد تک وہ بلوان ھوتا ھے ۔ وچاروں کا لکش عام جنتا کا ھت کرنا ھے. پھر جھگڑا کسی بات کا ؟ سمے کی کسوٹی پر سب وچار اپنے اپ جھوٹے، سچے، بلوان یا کمزور سدھ ھوجائینگے. اِس لئے پنچ شیل تمام اُن کوششوں کو برا کہتا ھے جو کسی وچار یا کسی خاص ویوستھا کو ختم کرنے کے لئے کی جاتی ھیں.

یہ پانچوں سدھانت ایک دوسرے سے ملے ھوئے ھیں اور پانچوں کو ایک ساتھ مان کر ھی دنیا کا بھلا کیا جاسکتا ھے ۔

پردھان منتری جواھر لال نہرو نے پارلیامینٹ میں کہا تھا— "یہ پانچ سدھانت وشو کو ایشیا کا چیلنج ھیں ۔ ھم ھر دیش کو یہ بات بتا دینا چاھتے ھیں کہ اُسے کہنا ھے کہ وہ اِن سدھانتوں کو مانتا ھے یا نہیں ۔ میں چاھتا ھوں کہ یہ کہنے کی اُن میں ھمت ھو. میں تو کہتا ھوں کہ جو دیش بھی ایمانداری سے شانتی چاھتا ھے وہ اِن سدھانتوں کو سویکار کرے گا ھی ۔ اِس کے سوا کوئی دوسرا راستہ نہیں ھے ."

پنچ شیل ایک کسوٹی ھے جس پر کس کر ھر دیش کو پرکھا جاسکتا ھے کہ وہ شانتی کے پکش میں ھے یا یدھ کے پکش میں ۔ یوں تو شانتی قائم کرنے کا دعوی سبھی کرتے ھیں، پر پنچ شیل وہ منتر ھے جو سب کا نقاب اُتار دیتا ھے ۔

## پنچ شیل اور بھارت

سوال ھوتا ھے کہ آخر بھارت کو پنچ شیل سے کیا لابھ ؟ یہ بھی کہا جاسکتا ھے کہ بھارت نہ کسی دیش پر قبضہ جمانے کا اِچھک ھے اور نہ اُس کا کہیں سامراجیہ ھے ۔ پھر بھارت اپنی شکتی راشٹر نرمان سے ھٹاکر اِس طرف کیوں لگائے ؟ اِس کا جواب پنڈت جواھر لال نے ایک جگہ بہت صاف دیا ھے— "ھمارے دیش کی اور ایشیا کے دوسرے دیشوں کی اُنتی کا بھوشیہ بنیاداً شانتی قائم

आज के समय की प्रेरणा पञ्चशील है. साथ रहेंगे तो जिन्दा रहेंगे, अलग रहे तो मिट जाएंगे. इस एकता का नाम ही 'पंचशील' है.

एशिया से बाहर के कुछ देश 'पञ्चशील' से इस तरह डरते हैं जैसे वह कोई भयानक बम हो. पञ्चशील हथियार जरूर है किन्तु लड़ाई करने का हथियार नहीं, लड़ाई रोकने का हथियार है. 'पञ्चशील' के पांच सिद्धान्त यह हैं :—

1—एक दूसरे के देशों की अखन्डता और मुकम्मिल आजादी का आदर करना.

2—किसी दूसरे पर हमला न करना.

3—किसी दूसरे के अन्दूरूनी मामलों में दख़ल न देना.

4—बराबरी और एक दूसरे के हित का ख़याल रखना.

5—शान्तिपूर्वक साथ साथ रहना.

यह पांच सिद्धान्त सारी दुनिया को अभयदान देते हैं. यदि सारी दुनिया इन सिद्धान्तों को मान ले तो दुनिया से डर और लड़ाई ख़तम हो जायें.

इनमें पहला सिद्धान्त सब देशों की पूरी आज़ादी को विश्व शान्ति के लिये ज़रूरी मानता है. जब तक कुछ राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों पर क़ब्ज़ा जमाये रहेंगे तब तक दुनिया में शान्ति नहीं हो सकती. इसलिये पञ्चशील को मानने के लिये हर राष्ट्र को दूसरे राष्ट्रों की भूमि से अपना क़ब्ज़ा उठा लेना पड़ेगा.

दूसरा सिद्धान्त हमले के डर को राष्ट्रों के दिल से दूर करता है. डर ही लड़ाई की जड़ है. इसी के कारण सब राष्ट्र अपनी शक्ति हथियार इकट्ठा करने में लगाते हैं. यदि सारे राष्ट्र सच्चे दिल से इस तरह का ऐलान कर दें तो दुनिया में शान्ति आसानी से क़ायम हो सकती है.

तीसरा सिद्धान्त भी साफ़ है. यदि कुछ राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के मामलों में दख़ल देंगे तो बेचैनी बढ़ेगी. दख़ल देना कई तरह का होता है. किसी देश में या उसके इर्द गिर्द फ़ौजी अड्डे बनाकर उसकी नीति पर असर डालना भी दख़ल देना है. बाहर के देशों के साथ फ़ौजी संगठन या समझौते भी इसी तरह की मदाख़लत हैं. इसके अलावा अरबों डालर बहाकर आज दूसरे देशों में जासूस तैयार किये जा रहे हैं और उन देशों की सरकारों को अपनी नीति बदलने पर मजबूर किया जा रहा है. इस तरह की हर मदाख़लत को यह सिद्धान्त बुरा बताता है. किस देश में कैसी सरकार हो या कैसा नियम क़ानून हो, यह तय करने का अधिकार उस देश की जनता को ही है. उसमें किसी दूसरे को दख़ल नहीं देना चाहिये. आर्थिक या राजनैतिक व्यवस्था अलग अलग होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध ख़राब नहीं होने चाहियें.



آج کے سمے کی پریرنا پنچ شیل ہے ۔ ساتھ رہینگے تو زندہ رہینگے، الگ رہے تو مٹ جائینگے۔ اِس ایکتا کا نام ہی 'پنچ شیل' ہے ۔

ایشیا سے باہر کے کچھ دیش 'پنچ شیل' سے اِس طرح ڈرتے ہیں جیسے وہ کوئی بھیانک بم ہو ۔ پنچ شیل ہتھیار ضرور ہے کنتو لڑائی کرنے کا ہتھیار نہیں، لڑائی روکنے کا ہتھیار ہے۔ 'پنچ شیل' کے پانچ سدھانت یہ ہیں :—

1—ایک دوسرے کے دیشوں کی اکھنڈتا اور مکمل آزادی کا آدر کرنا ۔

2—کسی دوسرے پر حملہ نہ کرنا ۔

3—کسی دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دینا ۔

4—برابری اور ایک دوسرے کے ہت کا خیال رکھنا ۔

5—شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنا ۔

یہ پانچ سدھانت ساری دنیا کو ابھےدان دیتے ہیں ۔ یدی ساری دنیا اِن سدھانتوں کو مان لے تو دنیا سے ڈر اور لڑائی ختم ہوجائیں ۔

اِن میں پہلا سدھانت سب دیشوں کی پوری آزادی کو وشو شانتی کے لئے ضروری مانتا ہے ۔ جب تک کچھ راشٹر دوسرے راشٹروں پر قبضہ جمائے رہینگے تب تک دنیا میں شانتی نہیں ہوسکتی ۔ اِس لئے پنچ شیل کو ماننے کے لئے ہر راشٹر کو دوسرے راشٹروں کی بھومی سے اپنا قبضہ اُٹھا لینا پڑےگا۔

دوسرا سدھانت حملے کے ڈر کو راشٹروں کے دل سے دور کرتا ہے ۔ ڈر ہی لڑائی کی جڑ ہے ۔ اِسی کے کارن سب راشٹر اپنی شکتی ہتھیار اِکھٹا کرنے میں لگاتے ہیں ۔ یدی سارے راشٹر سچے دل سے اِس طرح کا اعلان کردیں تو دنیا میں شانتی آسانی سے قائم ہوسکتی ہے ۔

تیسرا سدھانت بھی صاف ہے ۔ یدی کچھ راشٹر دوسرے راشٹروں کے معاملوں میں دخل دینگے تو بےچینی بڑھیگی ۔ دخل دینا کئی طرح کا ہوتا ہے ۔ کسی دیش میں یا اُس کے اِرد گرد فوجی اڈے بناکر اُس کی نیتی پر اثر ڈالنا بھی دخل دینا ہے ۔ باہر کے دیشوں کے ساتھ فوجی سنگٹھن یا سمجھوتے بھی اِسی طرح کی مداخلت ہیں ۔ اِس کے علاوہ اربوں ڈالر بہاکر آج دوسرے دیشوں میں جاسوس تیار کئے جا رہے ہیں اور اُن دیشوں کی سرکاروں کو اپنی نیتی بدلنے پر مجبور کیا جا رہا ہے۔ اِس طرح کی ہر مداخلت کو یہ سدھانت برا بتاتا ہے ۔ کس دیش میں کیسی سرکار ہو یا کیسا نیم قانون ہو، یہ طے کرنے کا ادھیکار اُس دیش کی جنتا کو ہی ہے۔ اِس میں کسی دوسرے کو دخل نہیں دینا چاہئے ۔ آرتھک یا راج نیتک ویوستھا الگ الگ ہونے کے کارن انتر راشٹریہ سمبندھ خراب نہیں ہونے چاہئیں ۔

का हाथ कहीं रह गया, किसी की टांग कहीं कट कर जा पड़ी. जो मर गये, अच्छे रहे. जो बचे, उनकी दशा देखी नहीं जा सकती थी. यह "तजुरबा" फिर जापान से कुछ ही दूर एक टापू पर दोहराया गया. हज़ारों एशियाई मछवे फिर किसी की लालसा की भेंट चढ़ गये ! इस तरह एशिया को दो बार यह भयानक मौत का नाच देखना पड़ा.

इन मौत के सौदागरों को इसीलिये एशिया ने चेतावनी दी. 'पंच शील' वही चेतावनी है.

एशिया की सरज़मीन पर अनेक सभ्यताएं जन्मीं और फूली फलीं. एशिया ने ही यूरोप को ईसा से सैकड़ों बरस पहले वह 'मित्र-धर्म' दिया था जो एक बार सारे यूरोप में फैल गया था और जिसने यूरोप को पहली बार नेकी और बदी का फ़रक़ सिखाया. एशिया ने ही दुनिया को राम, कृष्ण, ज़रतुश्त, मूसा, बुद्ध, कंगफूत्से, ईसा और मुहम्मद दिये. एशिया का सितारा भी कभी हज़ारों साल चमक चुका है. एशिया ने ही यूरोप वालों को वह पतलून और हैट पहनाये जो दोनों चीन की देन हैं. एशिया ने ही सबसे पहले मनोरंजन के लिये बारूद ईजाद की. उसे उस समय क्या मालूम था कि कुछ जातियां इससे वह गोली बनाएंगी जो एशिया ही के ख़िलाफ़ चलाई जाएंगी. एशिया ने ही वह "हिन्दसे" यूरोप को दिये जिनके बिना विज्ञान की उन्नति हो ही नहीं सकती थी. फिर एक नींद का झोंका आया. एशिया सो गया, उसकी परम्परा सो गई, उसकी क़िस्मत सो गई ! उसने अपने पराये का फ़रक़ भुला दिया. बाहर की कुछ जातियों ने उसकी ज़मीन पर जगह जगह अपना क़ब्ज़ा जमा ल .

पर आज एशिया फिर से जाग रहा है. उसने आज अंगड़ाई ली है. सदियों की जंजीरें टूट रही हैं. एशिया उभर रहा है. एशिया के इस नव जागरण का अन्त करने के लिये शान्ति के दुशमन तरह तरह के जाल लेकर दौड़ रहे हैं. एशिया अब सब कुछ समझता है. उसने अपने शत्रुओं को चेतावनी दी है ! यही चेतावनी 'पंच शील' है.

## पंचशील और उसके उसूल

'पंचशील' एशियाई देशों की एकता का चिह्न है. पंचशील हमारी दोस्ती को पक्का करता है. पंचतंत्र में एक कहानी है :—किसी शिकारी ने जाल फैलाकर उस पर दाने बिखरा दिये. चिड़ियों का एक दल उधर से गुज़रा. दानों की लालच में वह जाल पर उतरा और फंस गया. सब निराशा में डूबकर शिकारी का इन्तज़ार करने लगीं, पर एक कौवे ने उन्हें हिम्मत दिलाई. वह सब एक साथ ज़ोर लगा कर जाल समेत उड़ गईं ! शिकारी मुंह ताकता रह गया !



کا ھاتھ کہیں رہ گیا، کسی کی ٹانگ کہیں کٹ کر جا پڑی. جو مر گئے، اچھے رھے. جو بچے، اُن کی دشا دیکھی نہیں جاسکتی تھی. یہ "تجربہ" پھر جاپان سے کچھ ھی دور ایک ٹاپو پر دھرایا گیا. ھزاروں ایشیائی مچھوے پھر کسی کی لالسا کی بھینٹ چڑھ گئے ! اِس طرح ایشیا کو دو بار یہ بھیانک موت کا ناچ دیکھنا پڑا.

ان موت کے سوداگروں کو اِسی لئے ایشیا نے چیتاونی دی. 'پنچ شیل' وھی چیتاونی ھے.

ایشیا کی سر زمین پر انیک سبھیتائیں جنمیں اور پھولی پھلیں. ایشیا نے ھی یورپ کو عیسیٰ سے سیکڑوں برس پہلے وہ "متر دھرم" دیا تھا جو ایک بار سارے یورپ میں پھیل گیا تھا اور جس نے یورپ کو پہلی بار نیکی اور بدی کا فرق سکھایا. ایشیا نے ھی 'دنیا کو رام' کرشن، زرتشت، موسیٰ، بدھ، کنگ فوتسے، عیسیٰ اور محمد دئے. ایشیا کا ستارا بھی کبھی ھزاروں سال چمک چکا ھے. ایشیا نے ھی یورپ والوں کو وہ پتلون اور ھیٹ پہنائے جو دونوں چین کی دین ھیں. ایشیا نے ھی سب سے پہلے منورنجن کے لئے بارود ایجاد کی. اُسے اُس سمے کیا معلوم تھا کہ کچھ جاتیاں اِس سے وہ گولی بنائینگی جو ایشیا ھی کے خلاف چلائی جائینگی. ایشیا نے ھی وہ "ھندسے" یورپ کو دیئے جن کے بنا وگیان کی اُنتی ھو ھی نہیں سکتی تھی. پھر ایک نیند کا جھونکا آیا. ایشیا سو گیا، اُس کی پرمپرا سو گئی، اُس کی قسمت سو گئی ! اُس نے اپنے پرائے کا فرق بھلا دیا. باھر کی کچھ جاتیوں نے اُس کی زمین پر جگہ جگہ اپنا قبضہ جما لیا.

پر آج ایشیا پھر سے جاگ رھا ھے. اُس نے آج انگڑائی لی ھے. صدیوں کی زنجیریں ٹوٹ رھی ھیں. ایشیا اُبھر رھا ھے. ایشیا کے اُس نوجاگرن کا انت کرنے کے لئے شانتی کے دشمن طرح طرح کے جال لیکر دوڑ رھے ھیں. ایشیا اب سب کچھ سمجھتا ھے. اُس نے اپنے شترؤں کو چیتاونی دی ھے ! یہی چیتاونی 'پنچ شیل' ھے.

## پنچ شیل اور اُس کے اصول

'پنچ شیل' ایشیائی دیشوں کی ایکتا کا چنہ ھے. پنچ شیل ھماری دوستی کو پکا کرتا ھے. پنچ تنتر میں ایک کہانی ھے :— کسی شکاری نے جال پھیلاکر اُس پر دانے بکھرا دئے. چڑیوں کا ایک دل اُدھر سے گذرا. دانوں کی لالچ میں وہ جال پر اُترا اور پھنس گیا. سب نراشا میں ڈوب کر شکاری کا انتظار کرنے لگیں، پر ایک کوے نے اُنھیں ھمت دلائی. وہ سب ایک ساتھ زور لگاکر جال سمیت اُڑ گئیں ! شکاری منھ تاکتا رہ گیا !

# पंचशील और एशिया

श्री ओम प्रकाश 'मंत्री'

## एटम शक्ति और एशिया का नव जागरण

"पंचशील सारे संसार को एक चैलेंज (चुनौती) है''
—जवाहरलाल नेहरू.

❀ ❀ ❀

जवाहरलाल नेहरू ही के शब्दों में इस युग की दो सबसे बड़ी देन ये हैं:—एक ऐटम शक्ति का आविष्कार और दूसरे एशिया का नव जागरण. यह दोनों ही अपने अपने ढंग से संसार को चैलेंज दे रहे हैं.

हर चीज़ का सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों होते हैं, पर ऐटम शक्ति का मामला सबसे गहरा है. इसके सदुपयोग से दुनिया की हालत बदल सकती है—रेगिस्तान लहलहाते खेत बन सकते हैं, बंजर ज़मीन से अनाज पैदा हो सकता है, करोड़ों भूखों को रोटी मिल सकती है, माताओं के लिये धोतियां बुनी जा सकती हैं, बहनों के लिये सुन्दर आंचल तैयार किये जा सकते हैं, दुनिया चैन के हिंडोले में झूल सकती है, हर चीज़ असानी से मिल सकती है, हर चीज़ सस्ती हो सकती है, रोग और महामारियां नष्ट की जा सकती हैं, दुनिया का नक़्शा बदल सकता है, आदमी सच्चे अर्थों में ख़ुद अपना भाग्य विधाता बन सकता है. दूसरी तरफ़ इस शक्ति का दुरुपयोग सारी मनुष्य जाति को ही जड़ मूल से ख़तम कर सकता है, संसार के बड़े से बड़े वैज्ञानिक ऐटम शक्ति के दुरुपयोग के भयानक नतीजों को समय समय पर दुनिया के सामने रखते रहे हैं. इस शक्ति का पहला दुरुपयोग जापान के नगर हीरोशीमा और फिर नागासाकी पर हुआ था, जिससे देखने वाले ही नहीं, सुनने वाले भी कांप उठे थे. जो हुआ वह थोड़े से में यह था:—

ऐटम बम गिरते ही एक विस्फोट हुआ. धूल उठ उठ कर आसमान पर छाने लगी. लाखों मील के अन्दर हर जानदार चीज़ मौत के मुंह में जा पड़ी—चौपाए, चिड़ियां, पेड़, पौधे सभी नष्ट हो गये. लोग तड़प तड़प कर मर रहे थे और कोई मुंह में पानी डालने वाला नहीं था! बम के गिरते ही सारे वातावरण में भयंकर गरमी पैदा हो गई. लोगों के शरीर पर छाले पड़ गये. सब बेतहाशा नदी की बालू की तरफ़ भागे. एक ही जगह उन्हें तसल्ली मिल सकती थी और वह नदी की गरम बालू थी. तपती रेत पर लोग तड़प रहे थे, "पानी! पानी!" चिल्ला रहे थे. किसी

# پنچ شیل اور ایشیا

شری اوم پرکاش 'منتری'

## ایٹم شکتی اور ایشیا کا نوجاگرن

"پنچ شیل سارے سنسار کو ایک چیلینج (چنوتی) ہے!"
—جواہر لال نہرو۔

❀ ❀ ❀

جواہر لال نہرو ہی کے شبدوں میں اس یگ کی دو سب سے بڑی دین یہ ہیں:—ایک ایٹم شکتی کا آوشکار اور دوسرے ایشیا کا نوجاگرن۔ یہ دونوں ہی اپنے اپنے ڈھنگ سے سنسار کو چیلینج دے رہے ہیں۔

ہر چیز کا سد اُپیوگ اور دراُپیوگ دونوں ہوتے ہیں، پر ایٹم شکتی کا معاملہ سب سے گہرا ہے۔ اس کے سد اُپیوگ سے دنیا کی حالت بدل سکتی ہے—ریگستان لہلہاتے کھیت بن سکتے ہیں، بنجر زمین سے اناج پیدا ہوسکتا ہے، کروڑوں بھوکوں کو روٹی مل سکتی ہے، ماتاؤں کے لئے دھوتیاں بنی جاسکتی ہیں، بہنوں کے لئے سندر آنچل تیار کئے جاسکتے ہیں، دنیا چین کے ہنڈولے میں جھول سکتی ہے، ہر چیز آسانی سے مل سکتی ہے، ہر چیز سستی ہوسکتی ہے، روگ اور مہاماریاں نشٹ کی جاسکتی ہیں، دنیا کا نقشہ بدل سکتا ہے، آدمی سچے ارتھوں میں خود اپنا بھاگیہ ودھاتا بن سکتا ہے۔ دوسری طرف اس شکتی کا دراُپیوگ ساری منشیہ جاتی کو ہی جڑ مول سے ختم کرسکتا ہے۔ سنسار کے بڑے سے بڑے ویگیانک ایٹم شکتی کے دراُپیوگ کے بھیانک نتیجوں کو سمے سمے پر دنیا کے سامنے رکھتے رہے ہیں۔ اس شکتی کا پہلا دراُپیوگ جاپان کے نگر ہیروشما اور پھر ناگاساکی پر ہوا تھا، جس سے دیکھنے والے ہی نہیں، سننے والے بھی کانپ اٹھے تھے۔ جو ہوا وہ تھوڑے سے میں یہ تھا:—

ایٹم بم گرتے ہی ایک وسپھوٹ ہوا۔ دھول اٹھ اٹھ کر آسمان پر چھانے لگی۔ لاکھوں میل کے اندر ہر جاندار چیز موت کے منہ میں جا پڑی—چوپائے، چڑیاں، پیڑ، پودے، سبھی نشٹ ہوگئے۔ لوگ تڑپ تڑپ کر مر رہے تھے اور کوئی منہ میں پانی ڈالنے والا نہیں تھا! بم کے گرتے ہی سارے واتاورن میں بھینکر گرمی پیدا ہوگئی۔ لوگوں کے شریر پر چھالے پڑگئے۔ سب بےتحاشا ندی کی بالو کی طرف بھاگے۔ ایک ہی جگہ انہیں تسلی مل سکتی تھی اور وہ ندی کی گرم بالو تھی۔ تپتی ریت پہ لوگ تڑپ رہے تھے "پانی! پانی!" چلا رہے تھے۔ کسی

**वालों को एशिया वालों से लड़ाने का कुछ पच्छिमी राष्ट्रों का नापाक इरादा नाकाम हो जाएगा और वह अपना सा मुंह ले कर रह जाएंगे. हमें यक़ीन है कि चीनी** जनता की **तरह दूसरे देशों के लोग** भी **पूरी तरह चाहते हैं** कि जापानी **जनता की यह मांग पूरी हो. बरबादी के हथियारों के उपयोग के विरुद्ध आन्दोलन करने में** जापानी जनता ने **हाल में ज़बरदस्त कामयाबी हासिल की है. ऐसे हथियारों के उपयोग के ख़िलाफ़** लगभग दो करोड़ तीस लाख जापा-**नियों ने दस्तख़त किये हैं.** जापानी जनता बहादुरी से शान्ति **के लिये कोशिश कर रही है. हम उसकी इस कोशिश के सम्मान में सर झुकाते हैं.**

**बंगकाक में अभी एक सम्मेलन हुआ था. यह सम्मेलन शान्ति क़ायम करने के लिये नहीं था, बल्कि इसका मक़सद लड़ाई की तैयारियां करना था. इस सम्मेलन की मेहमा-नवाज़ी का भार थाईलैंड के सर था. विदेशी ग़ुलामी के आधीन थाईलैंड के निवासी पिस रहे हैं. उनके साथ हमारी पूरी हमदर्दी है. हमें पूरी आशा है कि थाईलैंड के नेता और वहां की जनता इस सचाई को समझ जाएगी कि अपनी ज़मीन पर विदेशियों के फ़ौजी अड्डे क़ायम कराके और विदेशी शक्तियों के बताये मार्ग पर विदेशी नीति पक्की करने से थाईलैंड की सुरक्षा नहीं हो सकती. एशियाई देशों के विशाल परिवार में शामिल होकर ही थाईलैंड की सुरक्षा हो सकती है.**

**ऊंचे ऊंचे पहाड़ों और गहरे समन्दरों ने अरब देशों और चीन को अलग कर रखा है. फिर भी एक समय था जब हम एक दूसरे के नज़दीकी पड़ोसी थे और एक दूसरे के बेहतरीन दोस्त थे. ब्योपार, विचार, कला और विज्ञान की नई सीखों का लेन देन लगातार हमारे बीच होता रहता था. पन्द्रहवीं सदी से हमारे नाते कमज़ोर पड़ने लगे और धीरे धीरे बिलकुल ख़तम हो गए. आज नई नई और दुनिया को हिला देने वाली तबदीलियां हो रही हैं. पूरब के बहुत से देशों ने विदेशी दासता का जुआ उतार कर फेंक दिया है. बीच पूरब और निकट पूरब के लोग शान्ति, आज़ादी, राष्ट्रीय ख़ुदमुख़तारी और आपसी सहयोग के समर्थक हैं. वह आपस में भी सहयोग चाहते हैं और दूसरों से भी सहयोग करना चाहते हैं, पर अपनी आज़ादी खो कर नहीं. इसलिये चीन पूरी तरह अरब देशों की मुकम्मिल आज़ादी का समर्थक है.**

**एशिया की एकता ज़िन्दाबाद! यही हम सबकी प्रार्थना**

---



والوں کو ایشیا والوں سے لڑانے کا کچھ پچھمی راشٹروں کا ناپاک اِرادہ ناکام ہو جائیگا اور وہ اپنا سامنہ لےکر رہ جائینگے۔ ہمیں یقین ہے کہ چینی جنتا کی طرح دوسرے دیشوں کے لوگ بھی پوری طرح چاہتے ہیں کہ جاپانی جنتا کی یہ مانگ پوری ہو. بربادی کے ہتیاروں کے اُپیوگ کے وِرودھ آندولن کرنے میں جاپانی جنتا نے حال میں زبردست کامیابی حاصل کی ہے. ایسے ہتیاروں کے اُپیوگ کے خلاف لگ بھگ دو کروڑ تیس لاکھ جاپانیوں نے دستخط کئے ہیں. جاپانی جنتا بہادری سے شانتی کے لئے کوشش کر رہی ہے. ہم اُس کی اِس کوشش کے سمان میں سر جھکاتے ہیں.

بنککاک میں ابھی ایک سمیلن ہوا تھا. یہ سمیلن شانتی قائم کرنے کے لئے نہیں تھا، بلکہ اس کا مقصد لڑائی کی تیاریاں کرنا تھا، اس سمیلن کی مہماں‌نوازی کا بھار تھائی لینڈ کے سر تھا. ودیشی غلامی کے آدھین تھائی لینڈ کے نواسی پس رہے ہیں. اُن کے ساتھ ہماری پوری ہمدردی ہے. ہمیں پوری آشا ہے کہ تھائی لینڈ کے نیتا اور وہاں کی جنتا اس سچائی کو سمجھ جائےگی کہ اپنی زمیں پر ودیشوں کے فوجی اڈے قائم کراکے اور ودیشی شکتیوں کے بتائے مارگ پر ودیشی نیتی پکی کرنے سے تھائی لینڈ کی سورکشا نہیں ہوسکتی. ایشیائی دیشوں کے وشال پریوار میں شامل ہوکر ہی تھائی لینڈ کی سورکشا ہوسکتی ہے.

اُونچے اُونچے پہاڑوں اور گہرے سمندروں نے عرب دیشوں اور چین کو الگ کر رکھا ہے. پھر بھی ایک سمے تھا جب ہم ایک دوسرے کے نزدیکی پڑوسی تھے اور ایک دوسرے کے بہترین دوست تھے. بیوپار، وچار، کلا اور وگیان کی نئی سیکھوں کا لین دین لگاتار ہمارے بیچ ہوتا رہتا تھا. پندرھویں صدی سے ہمارے ناتے کمزور پڑنے لگے اور دھیرے دھیرے بالکل ختم ہوگئے. آج نئی نئی اور دنیا کو ہلا دینے والی تبدیلیاں ہو رہی ہیں. پورب کے بہت سے دیشوں نے ودیشی داستا کا جوآ اُتارکر پھینک دیا ہے. بیچ پورب اور نکٹ پورب کے لوگ شانتی، آزادی، راشٹریہ خود مختاری اور آپسی سہیوگ کے سمرتھک ہیں. وہ اس میں بھی سہیوگ چاہتے ہیں اور دوسروں سے بھی سہیوگ کرنا چاہتے ہیں، پر اپنی آزادی کھوکر نہیں. اس لئے چین پوری طرح عرب دیشوں کی مکمل آزادی کا سمرتھک ہے.

ایشیا کی ایکتا زندہ‌باد! یہی ہم سب کی پرارتھنا ہے.

---

सेनाएं निकल जाएं. 6 फ़रवरी को हमारे भारती दोस्तों ने "ताइवान छोड़ो दिन" मनाया था. हम दिल से इस भावना की क़द्र करते हैं.

मैं यह भी कह दूं कि ताइवान की समस्या पर विचार करने और उसका हल ढूंढने के लिये दस देशों का सम्मेलन बुलाने के सुझाव से चीनी जनता सहमत हो सकती है. यह दस देश यह होंगे :—भारत, रूस, बरमा, बरतानिया, फ्रांस, चीन, इन्डोनीशिया, लंका, अमरीका और पाकिस्तान. सवाल उठ सकता है कि इस सम्मेलन में च्यांग-काई-शेक और उनके गुरगे क्यों शामिल नहीं हो सकते ? हमारा जवाब यह है: च्यांग-काई-शेक और उनके गुरगे अमरीकी सरकार की एक कठपुतली के सिवा कुछ नहीं हैं. फिर इनसे बात चीत क्यों की जाए ? हम सीधे सीधे अमरीकियों से ही बात क्यों न करें ? इसलिये जब कभी अमरीकी राज़ी होंगे और नेकनीयती से ऐसे सम्मेलन में आयेंगे तो हम उनसे बात कर लेंगे. हम सदा इस पक्ष के समर्थक हैं कि सारे अन्तर्राष्ट्री झगड़े आपस में बात चीत करके शान्तिपूर्ण ढंग से हल किये जाएं. यही तो हमने पांगमुमजाम और फिर जनेवा में किया है. हमें विश्वास है कि शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के पांच सिद्धान्तों, पंचशील, के आधार पर न केवल ताइवान की ही समस्या हल हो सकती है बल्कि सारी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं हल की जा सकती हैं.

कुछ दिनों पहले प्रधान मंत्री नेहरू ने ठीक ही कहा था:—"पंचशील दुनिया के देशों को एशिया की एक चुनौती है और हर देश को इस चुनौती का उत्तर देना है"...... आइये हम पूछें कि अमरीकी सरकार दूसरे देशों पर आक्रमण करेगी या नहीं ? वह दूसरे राष्ट्रों के मामलों में हस्तक्षेप करेगी या नहीं ?

जापानियों की मांग है कि चीन और जापान में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध क़ायम हों. मुझे विश्वास है कि यह भावना दिन बदिन बढ़ती जा रही है और यह मांग जोर पकड़ रही है. जापानी जनता की इस मांग से चीनी जनता को पूरी हमदर्दी है और उनकी कामना है कि यह मांग पूरी हो. चीन और जापान के बीच सम्बन्ध क़ायम होने के रास्ते में रोड़ा कौन है ? निस्संदेह न तो जापान ही इस रास्ते में बाधा खड़ा करता है और न चीन ही रोड़ा अटकाता है. यह तो अमरीका की ही सरकार है जो जापानी सरकार पर दबाव डाल कर जापानी जनता की इस मांग को पूरी होने से रोकती है. चीनी जनता को पूरा विश्वास है कि जब जापान विदेशी जुए को उतार फेंकेगा, आर्थिक और राजनैतिक आज़ादी हासिल कर लेगा और तमाम एशियाई देशों से दोस्ताना सम्बन्ध क़ायम कर लेगा तो जापान में फिर से फ़ौजी शासन को जन्म देने और एशिया



سینائیں نکل جائیں ۔ 6 فروری کو ہمارے بھارتی دوستوں نے "تائیوان چھوڑو دن" منایا تھا ۔ ہم دل سے اِس بھاؤنا کی قدر کرتے ہیں ۔

میں یہ بھی کہدوں کہ تائیوان کی سمسیا پر وچار کرنے اور اُس کا حل ڈھونڈھنے کے لئے دس دیشوں کا سمیلن بلانے کے سجھاؤ سے چینی جنتا سہمت ہوسکتی ہے ۔ یہ دس دیش یہ ہونگے :— بھارت، روس، برما، برطانیہ، فرانس، چین، انڈونیشیا، لنکا، امریکہ اور پاکستان ۔ سوال اُٹھ سکتا ہے کہ اس سمیلن میں چیانگ کائی شیک اور ان کے گرگے کیوں شامل نہیں ہوسکتے؟ ہمارا جواب یہ ہے : چیانگ کائی شیک اور ان کے گرگے امریکی سرکار کی ایک کٹھپتلی کے سوا کچھ نہیں ہے ۔ پھر ان سے بات چیت کیوں کی جائے ؟ ہم سیدھے سیدھے امریکیوں سے ہی بات کیوں نہ کریں ؟ اس لئے جب کبھی امریکی راضی ہونگے اور نیک نیتی سے ایسے سمیلن میں آئینگے تو ہم ان سے بات کرلینگے ۔ ہم سدا اس پکش کے سمرتھک ہیں کہ سارے انتر راشٹری جھگڑے آپس میں بات چیت کرکے شانتی پورن ڈھنگ سے حل کئے جائیں ۔ یہی تو ہم نے پانگ مںجام اور جینوا میں کیا ہے ۔ ہمیں وشواس ہے کہ شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے پانچ سدھانتوں 'پنچ شیل' کے آدھار پر نہ کیول تائیوان کی ہی سمسیا حل ہوسکتی ہے بلکہ ساری انتر راشٹریہ سمسیائیں حل کی جاسکتی ہیں ۔

کچھ دنوں پہلے پردھان منتری نہرو نے ٹھیک ہی کہا تھا :— "پنچ شیل دنیا کے دیشوں کو ایشیا کی ایک چنوتی ہے اور ہر دیش کو اس چنوتی کا اُتر دینا ہے ۔"...... آئیے ہم پوچھیں کہ امریکی سرکار دوسرے دیشوں پر آکرمن کریگی یا نہیں ؟ وہ دوسرے راشٹروں کے معاملوں میں ہستکچھیپ کریگی یا نہیں ؟

جاپانیوں کی مانگ ہے کہ چین اور جاپان میں انتر راشٹریہ سمبندھ قائم ہوں ۔ مجھے وشواس ہے کہ یہ بھاونا دن بہ دن بڑھتی جارہی ہے اور یہ مانگ زور پکڑ رہی ہے ۔ جاپانی جنتا کی اس مانگ سے چینی جنتا کو پوری ہمدردی ہے اور ان کی کامنا ہے کہ یہ مانگ پوری ہو ۔ چین اور جاپان کے بیچ سمبندھ قایم ہونے کے راستے میں روڑا کون ہے ؟ نسندیہ نہ تو جاپان ہی اس راستے میں بادھا کھڑا کرتا ہے اور نہ چین ہی روڑا اٹکاتا ہے ۔ یہ تو امریکہ کی ہی سرکار ہے جو جاپانی سرکار پر دباؤ ڈال کر جاپانی جنتا کی اس مانگ کو پوری ہونے سے روکتی ہے ۔ چینی جنتا کو پورا وشواس ہے کہ جب جاپان ودیشی جوئے کو اُتار پھینکیگا، آرتھک اور راجنیتک آزادی حاصل کرلےگا اور تمام ایشیائی دیشوں سے دوستانہ سمبندھ قائم کرلےگا تو جاپان میں پھر سے فوجی شاسن کو جنم دینے اور ایشیا

लगातार संघर्ष के बाद अन्त में हमने अपने देश को आज़ाद कराया है. हम अपनी क़ौमी ख़ुद मुख़्तारी और आज़ादी को अब कभी हड़प होने नहीं देंगे.

कुछ ऐसे लोग हैं जिनकी नीयत पाक है, जो सच्चे हमदर्द हैं और अपने दोस्त हैं, लेकिन लड़ाई का ख़तरा सामने खड़ा देखकर दुशमन के सामने झुकने का जिनके मन में विचार पैदा होता है, उनके कथन के अनुसार शांति और सुरक्षा की ख़ातिर हमलावर के सामने झुक जाना अक़्लमन्दी है. उनको महसूस होता है कि ताइवान की समस्या को हल करने का आसान तरीक़ा यह है कि "दो चीन" बना दिये जाएं. मुझे ऐसा लगता है कि इन दोस्तों ने ताइवान की समस्या के असली रूप को ग़लत समझा है और इसीलिये समस्या की ख़ास कड़ी इन की आंखों से ओझल है. अमरीकी "देख रेख" में ताइवान दूसरा चीन नहीं है. ताइवान इस तरह सीधे सीधे अमरीका से मिलने के लिये एक उम्मीदवार रियासत है. चीन की ज़मीन और एशिया के महाद्वीप पर हमला करने के लिये जो तीन मोर्चे बने हैं उनमें से एक ताइवान है. अमरीका ने वहां अपने अड्डे तो बना ही लिये हैं. अगर हम डर के सामने झुक जाएं और अपने भविष्य को डर की वेदी पर चढ़ा दें तो नतीजा शीघ्र ही सामने आ जाएगा. जिस बटवारे को "दो चीन" कहा जाता है, नतीजा यह होगा कि उसकी जगह कोई भी चीन बाक़ी न रह जाएगा.

हमारे पुराने दुखद अनुभव ने हमें कोई सबक़ सिखाया है या नहीं? म्युनिच में चैम्बरलेन ने जिस नीति पर अमल किया था उसके कारन सारा योरप नाज़ियों का ग़ुलाम हो गया. 1931 में जापानियों के हमले के समय च्यांग-काई-शेक ने मुक़ाबला न करने की जो नीति अपनाई उसकी वजह से एक बार लगभग सारा चीन हाथ से निकल गया. इस तरह की नीति का असर एक देश या एक महाद्वीप तक ही सीमित नहीं रहा. दुनिया के कोने कोने में इस नीति का प्रभाव पड़ा है.

वाशिंगटन की लड़ाई की धमकियों के सामने इसीलिये चीनी जनता सर नहीं झुकाएगी. अपनी क़ौमी सुरक्षा के लिये ही ताइवान को हमें आज़ाद नहीं कराना है, बल्कि एशिया में और संसार में शांति क़ायम रखने के लिये ताइवान को आज़ाद कराना ज़रूरी है.

हमें आप अच्छी तरह समझ लीजिये. हम चीनी लोग लड़ाई-पसंद लोगों में से नहीं हैं. शांति पूर्ण ढंग से ताइवान की समस्या को हल करने से हम इनकार नहीं करते. 1949 में चीन की राजधानी पीकिंग शांतिपूर्ण ढंग से ही आज़ाद कराई गई थी. लेकिन इस समस्या को शान्तिपूर्ण ढंग से हल करने के लिये जो चीज़ बहुत ज़रूरी है वह यह है कि ताइवान से अमरीकी



لگاتار سنگھرش کے بعد انت میں ہم نے اپنے دیش کو آزاد کرایا ہے. ہم اپنی قومی خودمختاری اور آزادی کو اب کبھی ہڑپ نہیں ہونے دینگے.

کچھ ایسے لوگ ہیں جن کی نیت پاک ہے، جو سچے ہمدرد ہیں اور اپنے دوست ہیں، لیکن لڑائی کا خطرہ سامنے کھڑا دیکھکر دشمن کے سامنے جھکنے کا جن کے من میں وچار پیدا ہوتا ہے، ان کے کتھن کے انوسار شانتی اور سورکشا کی خاطر حملہ‌آور کے سامنے جھک جانا عقلمندی ہے. ان کو محسوس ہوتا ہے کہ تائیوان کی سمسیا کو حل کرنے کا آسان طریقہ یہ ہے کہ "دو چین" بنا دئے جائیں. مجھے ایسا لگتا ہے کہ اِن دوستوں نے تائیوان کی سمسیا کے اصلی روپ کو غلط سمجھا ہے اور اس لئے سمسیا کی خاص کڑی اِن کی آنکھوں سے اُوجھل ہے. امریکی "دیکھ ریکھ" میں تائیوان دوسرا "چین" نہیں ہے. تائیوان اس طرح سیدھے سیدھے امریکہ سے ملنے کے لئے ایک اُمیدوار ریاست ہے. چین کی زمین اور ایشیا کے مہادیپ پر حملہ کرنے کے لئے جو تین مورچے بنے ہیں ان میں سے ایک تائیوان ہے. امریکہ نے وہاں اپنے اڈے تو بنا ہی لئے ہیں. اگر ہم ڈر کے سامنے جھک جائیں اور اپنے بھوشیہ کو ڈر کی ویدی پر چڑھا دیں تو نتیجہ شیگھر ہی سامنے آجائیگا جس بٹوارے کو "دو چین" کہا جاتا ہے، نتیجہ یہ ہوگا کہ اس کی جگہ کوئی بھی چین باقی نہ رہ جائیگا.

ہمارے پرانے دکھد انوبھو نے ہمیں کوئی سبق سکھایا ہے یا نہیں؟ میونیچ میں چیمبرلین نے جس نیتی پر عمل کیا تھا اس کے کارن سارا یورپ نازیوں کا غلام ہوگیا. 1931 میں جاپانیوں کے حملے کے سمئے چیانگ کائی شیک نے مقابلہ نہ کرنے کی جو نیتی اپنائی اس کی وجہ سے ایک بار لگ بھگ سارا چین ہاتھ سے نکل گیا. اس طرح کی نیتی کا اثر ایک دیش یا ایک مہادیپ تک ہی سیمت نہیں رہا. دنیا کے کونے کونے میں اس نیتی کا پربھاو پڑا ہے.

واشنگٹن کی لڑائی کی دھمکیوں کے سامنے اسی لئے چینی جنتا سر نہیں جھکائیگی. اپنی قومی سورکشا کے لئے ہی تائیوان کو ہمیں آزاد نہیں کرانا ہے، بلکہ ایشیا میں اور سنسار میں شانتی قائم رکھنے کے لئے تائیوان کو آزاد کرانا ضروری ہے.

ہمیں آپ اچھی طرح سمجھ لیجئے. ہم چینی لوگ لڑائی پسند لوگوں میں سے نہیں ہیں. شانتی پورن ڈھنگ سے تائیوان کی سمسیا کو حل کرنے سے ہم انکار نہیں کرتے. 1949 میں چین کی راجدھانی پیکنگ شانتی پورن ڈھنگ سے ہی آزاد کرائی گئی تھی. لیکن اِس سمسیا کو شانتی پورن ڈھنگ سے حل کرنے کے لئے جو چیز بہت ضروری ہے وہ یہ ہے کہ تائیوان سے امریکی

ने चीन के खिलाफ़ जाबिराना क़दम उठाए हैं. उन्होंने यह भ्रम फैलाया है कि दूर पूरब में फैले अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का कारन यह है कि चीनियों ने ताइवान पर हमला कर दिया है. लेकिन असलियत सीधी सादी है और आसानी से समझ में आती है. दुनिया भर में फैले मौजूदा अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का असली कारन अमरीका की औपनिवेशिक लालसा, फ़ौजी क़ब्ज़ा और लड़ाई की धमकी की नीति है.

सवाल उठता है कि एशिया और सारी दुनिया में किसने तनाव पैदा कर रखा है? संयुक्तराज अमरीका ने यह तनाव पैदा कर रखा है. अमरीका की छत्र छाया में एशिया और दुनिया के राष्ट्रों को गुलाम बनाने का साम्राजियों का प्रयत्न ही आजकल के अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का एक मात्र कारन है.

पुर्तगाली हुकूमत से गोवा को भारतवासी आज़ाद कराना चाहते हैं. हम उन्हें यक़ीन दिलाते हैं कि चीनी जनता पूरी तरह उनके साथ है. मुझे यह विश्वास है कि एशिया के दूसरे शान्ति प्रेमी देश भी भारतवासियों का समर्थन करते हैं. लेकिन इसके खिलाफ़ गोवा में फ़ौजी अड्डे क़ायम करने की नियत से पुर्तगाल वालों के साथ अमरीकी सरकार ने फ़ौजी गुटबन्दी का एक नया समझौता किया है. इन्डोनीशिया की जनता पच्छिमी ईरियन को डचों के चंगुल से आज़ाद कराना चाहती है. हम उन्हें यक़ीन दिलाते हैं कि चीनी जनता पूरी तरह उनके साथ है. मुझे यह विश्वास है कि एशिया के दूसरे शान्ति प्रेमी राष्ट्र इन्डोनेशिया वासियों का समर्थन करते हैं. लेकिन पच्छिमी ईरियन में फ़ौजी अड्डे बनाने देने के एवज़ में अमरीकी सरकार डच शासन का समर्थन करती है.

यह साफ़ है कि मुकम्मिल आज़ादी की हमारी मांग और साम्राजियों के नामनिहाद अधिकार एक दूसरे के विरुद्ध हैं. सवाल यह है कि साम्राजियों की ख़ातिर हम अपनी जायज़ मांग को छोड़ दें या न छोड़ें?

हमें मालूम है कि अपने झूठे अधिकारों की रक्षा के लिये साम्राजी हम को ऐटमी लड़ाई की धमकी देने से भी नहीं चूकते. सवाल यह है कि इस डर से हम अपने सिद्धांतों को छोड़ दें या न छोड़ें?

चीनी जनता का पक्ष थोड़े में यह है और साफ़ है. हम बेहद इच्छुक हैं कि शांति क़ायम रहे लेकिन हम अपनी ज़मीन का किसी को नज़राना देकर शांति की भीक नहीं मांगेंगे. लड़ाई का विरोध हमारा पक्का इरादा है. लेकिन लड़ाई छेड़ने की किसी की धमकियों से हम डरने वाले नहीं हैं. यह मैं बता दूं कि हमारी मौजूदा पीढ़ी और हमारे बाप दादाओं की पीढ़ी साम्राजियों की ज़ुल्म ज़्यादती और धमकियों की छाया में पली है. सौ साल के लम्बे और





نے چین کے خلاف جابرانہ قدم اُٹھائے ہیں۔ انہوں نے یہ بھرم پھیلایا ہے کہ دور پورب میں پھیلے انتر راشٹریہ تناؤ کا کارن یہ ہے کہ چینیوں نے تائیوان پر حملہ کردیا ہے۔ لیکن اصلیت سیدھی سادی ہے اور آسانی سے سمجھ میں آتی ہے۔ دنیا بھر میں پھیلے موجودہ انتر راشٹریہ تناؤ کا اصلی کارن امریکہ کی اوپنیویشک لالسا، فوجی قبضہ اور لڑائی کی دھمکی کی نیتی ہے۔

سوال اُٹھتا ہے کہ ایشیا اور ساری دنیا میں کس نے تناؤ پیدا کر رکھا ہے؟ سنیکت راج امریکہ نے یہ تناؤ پیدا کر رکھا ہے۔ امریکہ کی چھتر چھایا میں ایشیا اور دنیا کے راشٹروں کو غلام بنانے کا سامراجیوں کا پریتن ہی آجکل کے انتر راشٹریہ تناؤ کا ایک ماتر کارن ہے۔

پرتگالی حکومت سے گوآ کو بھارت واسی آزاد کرانا چاہتے ہیں۔ ہم انہیں یقین دلاتے ہیں کہ چینی جنتا پوری طرح اُن کے ساتھ ہے۔ مجھے یہ وشواس ہے کہ ایشیا کے دوسرے شانتی پریمی دیش بھی بھارت واسیوں کا سمرتھن کرتے ہیں۔ لیکن اس کے خلاف گوا میں فوجی اڈے قائم کرنے کی نیت سے پرتگال والوں کے ساتھ امریکی سرکار نے فوجی گٹ بندی کا ایک نیا سمجھوتہ کیا ہے۔ انڈونیشیا کی جنتا پچھمی ایرین کو ڈچوں کے چنگل سے آزاد کرانا چاہتی ہے۔ ہم اُنہیں یقین دلاتے ہیں کہ چینی جنتا پوری طرح ان کے ساتھ ہے۔ مجھے یہ وشواس ہے کہ ایشیا کے دوسرے شانتی پریمی راشٹر انڈونیشیا واسیوں کا سمرتھن کرتے ہیں۔ لیکن پچھمی ایرین میں فوجی اڈے بنانے دینے کے عیوض میں، امریکی سرکار ڈچ شاسن کا سمرتھن کرتی ہے۔

یہ صاف ہے کہ مکمل آزادی کی ہماری مانگ اور سامراجیوں کے نام نہاد ادھیکار ایک دوسرے کے وِرودھ ہیں۔ سوال یہ ہے کہ سامراجیوں کی خاطر ہم اپنی جائز مانگ کو چھوڑ دیں یا نہ چھوڑیں؟

ہمیں معلوم ہے کہ اپنے جھوٹے ادھیکاروں کی رکشا کے لئے سامراجی ہم کو ایٹمی لڑائی کی دھمکی دینے سے بھی نہیں چوکتے۔ سوال یہ ہے کہ اس ڈر سے ہم اپنے سدھانتوں کو چھوڑ دیں یا نہ چھوڑیں؟

چینی جنتا کا پکش تھوڑے میں یہ ہے اور صاف ہے۔ ہم بےحد اِچھک ہیں کہ شانتی قائم رہے لیکن ہم اپنی زمین کا کسی کو نظرانہ دیکر شانتی کی بھیک نہیں مانگیں گے۔ لڑائی کا وِرودھ ہمارا پکا اِرادہ ہے۔ لیکن لڑائی چھیڑنے کی کسی کی دھمکیوں سے ہم ڈرنے والے نہیں ہیں۔ یہ میں بتادوں کہ ہماری موجودہ پیڑھی اور ہمارے باپ داداؤں کی پیڑھی سامراجیوں کی ظلم زیادتی اور دھمکیوں کی چھایا میں پلی ہے۔ سو سال کے لمبے اور

## एशिया की समस्या

चीनी जनता के लिये जरूरी है कि वह ताइवान को आज़ाद कराए ताकि वह अपनी प्रादेशिक अखन्डता को बाहरी हमलों से बचा सके. ताइवान को आज़ाद कराना हमारा ऐसा ही कर्तव्य है जैसा भारत में गोआ को मिलाना हमारे भारतीय दोस्तों का कर्तव्य है और पच्छिमी ईरियन को आज़ाद कराना हमारे इन्डोनिशियाई मित्रों का फ़र्ज़ है. जब हम अपना फ़र्ज़ पूरा करने के लिये उठेंगे तो हमलावरों से तो हमें टकराना ही होगा. पिछले दिसम्बर में अमरीकी सरकार ने च्यांग-काई-शेक से आपसी सुरक्षा के लिये एक समझौता किया है. ताइवान के ग़ैर क़ानूनी क़ब्ज़े को क़ानूनी बनाने का यह ढंग है. पिछली जनवरी में श्री आइज़नहावर ने राष्ट्र की सुरक्षा के नाम पर अमरीकी कांग्रेस से मांग की कि उन्हें अधिकार दिया जावे कि ताइवान में वह अमरीकी हित की रक्षा कर सकें! अमरीकी हित की रक्षा वह उस जगह करना चाहते हैं जो अमरीका के साहिल से दस हज़ार क़िलोमीटर दूर है! उनकी सेना जो हमले करती रहती है उसे वह कभी नहीं रोकते और चीनी जनता को ज़हरीले और बरबादी के हथियारों के उपयोग की धमकी देते हैं. 24 जनवरी को अमरीकी कांग्रेस को जो सन्देश उन्होंने भेजा था उसमें कहा है कि अगर ताइवान अमरीकी असर में नहीं रहता है तो "पच्छिमी प्रशान्त महासागर में टापुओं की ज़ंजीर टूट जाएगी."

आइये हम पूछें कि अमीरीकी युद्ध प्रेमियों की यह ज़ालिमाना और जाबिराना हरकतें क्या दुनिया की आंखों को साफ़ दिखाई नहीं देतीं. लोकसभा के सामने 31 मार्च को भाषण देते हुए प्रधान-मंत्रि नेहरू ने इधर ठीक इशारा किया था कि यह चालें आम-समझ, दलील और नैतिकता यानी इख़लाक़ सब का बिलकुल उलंघन करती हैं.

लेकिन अमरीका के युद्ध प्रेमियों की बिलकुल दूसरी ही समझ है और वह दूसरी ही दलील मानते हैं. नैतिकता की तो उनसे बात करना ही फ़ज़ूल है. उनकी समझ और उनकी दलील को समझने के लिये सिक्के का दूसरा रुख़ देखना पड़ेगा. जो चीज़ रक्षा कही जाती है असल में वह उपद्रव है. जिसको शान्ति का नाम दिया जाता है वह लड़ाई है. जिसे सुरक्षा की संज्ञा दी जाती है असल में वह आक्रमण है. 'तोड़ फोड़ की रोक' का नाम जिसे दिया जाता है वह दूसरे राष्ट्रों के अन्दरूनी मामलों में दख़ल देने के सिवा और कुछ नहीं है. आर्थिक सहायता भी अपने मतलब के अनुसार अन्त में आर्थिक मदाख़लत का रूप धारन कर लेती है. इस पर तुर्रा यह है कि अमरीका के युद्ध प्रेमी और भविष्य के युद्ध प्रेरक दूसरे देशों को हमलावर बताते हैं. उनकी दलील के अनुसार कोरिया वालों ने कोरिया पर हमला किया, वियतनाम वालों ने वियतनाम पर आक्रमण किया और चीनियों

## ایشیا کی سمسیا

چینی جنتا کے لئے ضروری ہے کہ وہ تائیوان کو آزاد کرائے تاکہ وہ اپنی پرادیشک اکھنڈتا کو باہری حملوں سے بچاسکے. تائیوان کو آزاد کرانا ہمارا ایسا ہی کرتویہ ہے جیسا بھارت میں گوآ کو ملانا ہمارے بھارتیہ دوستوں کا کرتویہ ہے اور پچھمی ایرین کو آزاد کرانا ہمارے انڈونیشیائی متروں کا فرض ہے. جب ہم اپنا فرض پورا کرنے کے لئے اُٹھیں گے تو حملہ‌آوروں سے تو ہمیں ٹکرانا ہی ہوگا. پچھلے دسمبر میں امریکی سرکار نے چیانگ کائی شیک سے آپسی سورکشا کے لئے ایک سمجھوتہ کیا ہے. تائیوان کے غیر قانونی قبضہ کو قانونی بنانے کا یہ ڈھنگ ہے. پچھلی جنوری میں شری آئزن‌ہاور نے راشٹر کی سورکشا کے نام پر امریکی کانگریس سے مانگ کی کہ اُنہیں ادھیکار دیا جاوے کہ تائیوان میں وہ امریکی ہت کی سورکشا کرسکیں! امریکی ہت کی رکشا وہ اُس جگہ کرنا چاہتے ہیں جو امریکہ کے ساحل سے دس ہزار کلومیٹر دور ہے! اُن کی سینا جو حملے کرتی رہتی ہے اسے وہ کبھی نہیں روکتے اور چینی جنتا کو زہریلے اور بربادی کے ہتھیاروں کے اُپیوگ کی دھمکی دیتے ہیں. 24 جنوری کو امریکی کانگریس کو جو سندیش انہوں نے بھیجا تھا اس میں کہا ہے کہ اگر تائیوان امریکی اثر میں نہیں رہتا ہے تو "پچھمی پرشانت مہاساگر میں ٹاپوؤں کی زنجیر ٹوٹ جائے گی."

آؤ ہم پوچھیں کہ امریکی یدھ پریمیوں کی یہ ظالمانہ اور جابرانہ حرکتیں کیا دنیا کی آنکھوں کو صاف دکھائی نہیں دیتیں. لوک سبھا کے سامنے 31 مارچ کو بھاشن دیتے ہوئے پردھان منتری نہرو نے ادھر ٹھیک اشارہ کیا تھا کہ یہ چالیں عام سمجھ، دلیل اور نیتکتا یعنی اخلاق سب کا بالکل اُلنگھن کرتی ہیں.

لیکن امریکہ کے یدھ پریمیوں کی بالکل دوسری ہی سمجھ ہے اور وہ دوسری ہی دلیل کو مانتے ہیں. نیتکتا کی تو ان سے بات کرنا ہی فضول ہے. اُن کی سمجھ اور ان کی دلیل کو سمجھنے کے لئے سکے کا دوسرا رخ دیکھنا پڑےگا. جو چیز رکشا کہی جاتی ہے اصل میں وہ اُپدرو ہے. جس کو شانتی کا نام دیا جاتا ہے اصل میں وہ لڑائی ہے. جسے سورکشا کی سنگیا دی جاتی ہے اصل میں وہ آکرمن ہے. 'توڑ پھوڑ کی روک' کا نام جسے دیا جاتا ہے وہ دوسرے راشٹروں کے اندرونی معاملوں میں دخل دینے کے سوا اور کچھ نہیں ہے. آرتھک سہایتا بھی اپنے مطلب کے انوسار انت میں آرتھک مداخلت کا روپ دھارن کرلیتی ہے. اِس پر طرہ یہ ہے کہ امریکہ کے یدھ پریمی اور بھوشیہ کے یدھ پریرک دوسرے دیشوں کو حملہ‌آور بتاتے ہیں. اُن کی دلیل کے انوسار کوریا والوں نے کوریا پر حملہ کیا، ویتنام والوں نے ویتنام پر آکرمن کیا اور چینیوں

कुछ साल हुए जब जनरल मेकारथर कोरिया में अमरीकी फ़ौजों के सेनापति थे, उन्होंने ऐलान किया था कि अमरीकी सीमा के रूप में वह पच्छिमी प्रशान्त महासागर में जज़ीरों की एक दीवार खड़ी करना चाहते हैं. लेकिन अब तो उत्तर पूरब एशिया से लेकर बीच पूरब और निकट पूरब तक यह दीवार फैल गई है. इसके घेरे में बड़े बड़े फौजी अड्डे क़ायम हैं जिनकी तादाद दिन बदिन बढ़ रही है. इससे सारे एशिया को ज़बरदस्त ख़तरा पैदा हो गया है.

दुनिया को बस में करने की जिस नीति पर अमरीका चल रहा है उसका एक समझा बूझा क़दम यह है कि एशिया को जीता जाए और यहां एक नई औपनिवेशिक शक्ति क़ायम की जाए. इसलिये कोई अचरज नहीं है अगर श्री डलेस और दूसरे अमरीकी साम्राजवादी शान्ति पूर्वक राष्ट्रों के साथ साथ रहने के विचार का विरोध करते हैं.

इस सिलसिले में मेरा उस सवाल के सम्बंध में भी कुछ कहना ठीक होगा जिसने एक बड़ी हद तक दुनिया में तनाव पैदा कर रखा है. मेरा मतलब ताइवान (फ़ारमूसा) से है. इस सच्चाई का खन्डन तो किया ही नहीं जा सकता कि ताइवान चीन का एक हिस्सा है. ताइवान चीन का ऐसा ही एक हिस्सा है जैसा लांग आइलैंड अमरीका का एक हिस्सा है. इस सच्चाई को अमरीका की वह सरकार भी स्वीकार करती थी जिसने अमरीकी सेना को ताइवान पर क़बज़ा करने का हुक्म दिया था. यह दूसरी बात है कि अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों और ख़ुद अपने वचनों से हट कर श्री चरचिल और श्री इडेन ने सर्वसत्ता (सौवरेन्टी) का प्रश्न उठाया है. अगर ताइवान चीन का हिस्सा न होता तो च्यांग-काई-शेक रूपी मिट्टी के पुतले को वहां बैठाए रखने की कौन ज़रूरत थी. हम सब जानते हैं कि च्यांग-काई-शेक अमरीकी अफ़सरों की छायामात्र है. अमरीकी सेना की सहायता के बिना वह चीन के इस बड़े टापू में एक दिन नहीं टिक सकता. ताइवान का सवाल बिलकुल सीधा सादा है. अमरीका ने चीन के इस इलाक़े पर क़बज़ा कर लिया है, यही सवाल है.

जून 1950 में जब अमरीका ने कोरिया पर हमला किया तो उस समय के अमरीकी राष्ट्रपति श्री ट्रूमैन ने अमरीका के सातवें जहाजी बेड़े को ताइवान पर क़बज़ा करने और आस पास के ताइवान शहर के सारे टापुओं को घेर लेने का हुक्म दिया. तब से अमरीका के साम्राजी च्यांग-काई-शेक के साथी देश द्रोहियों का उपयोग कर रहे हैं और ताइवान से हमारे साहिली इलाक़ों पर अकसर हवाई और जहाज़ी बेड़ों से हमले करते रहते हैं. अन्तर्राष्ट्रीय व्योपार के जो जहाज़ शान्ति पूर्वक तिजारत करते हैं उन पर समन्दर में डाका डाला जाता है, यह बात अब सब के कानों तक पहुंच चुकी है.



کچھ سال ہوئے جب جنرل میک آرتھر کوریا میں امریکی فوجوں کے سیناپتی تھے، انہوں نے اعلان کیا تھا کہ امریکی سیما کے روپ میں وہ پچھمی پرشانت مہاساگر میں جزیروں کی ایک دیوار کھڑی کرنا چاہتے ہیں۔ لیکن اب تو اُتر پورب ایشیا سے لے کر بیچ پورب اور نکٹ پورب تک یہ دیوار پھیل گئی ہے۔ اس کے گھیرے میں بڑے بڑے فوجی اڈے قائم ہیں جنکی تعداد دن بدن بڑھ رہی ہے۔ اس سے سارے ایشیا کو زبردست خطرہ پیدا ہو گیا ہے۔

دنیا کو بس میں کرنے کی جس نیتی پر امریکہ چل رہا ہے اس کا ایک سمجھا بوجھا قدم یہ ہے کہ ایشیا کو جیتا جائے اور یہاں ایک نئی اُپنیویشک شکتی قائم کی جائے۔ اِس لئے کوئی اچرج نہیں ہے اگر شری ڈلیس اور دوسرے امریکی سامراجوادی شانتی پوروک راشٹروں کے ساتھ ساتھ رہنے کے وچار کا ورودھ کرتے ہیں۔

اِس سلسلے میں میرا اس سوال کے سمبندھ میں بھی کچھ کہنا ٹھیک ہوگا جس نے ایک بڑی حد تک دنیا میں تناؤ پیدا کر رکھا ہے۔ میرا مطلب تائیوان (فارموسا) سے ہے۔ اِس سچائی کا کھنڈن تو کیا ہی نہیں جاسکتا کہ تائیوان چین کا ایک حصہ ہے۔ تائیوان چین کا ایسا ہی ایک حصہ ہے جیسا لانگ آئی لینڈ امریکہ کا ایک حصہ ہے۔ اِس سچائی کو امریکہ کی وہ سرکار بھی سوئیکار کرتی تھی جس نے امریکی سینا کو تائیوان پر قبضہ کرنے کا حکم دیا تھا۔ یہ دوسری بات ہے کہ انتر راشٹریہ سمجھوتوں اور خود اپنے وچنوں سے ہٹ کر شری چرچل اور شری ایڈن نے سروستتا (ساورینٹی) کا پرشن اُٹھایا ہے۔ اگر تائیوان چین کا حصہ نہ ہوتا تو چیانگ کائی شیک روپی مٹی کے پتلے کو وہاں بٹھائے رکھنے کی کون ضرورت تھی۔ ہم سب جانتے ہیں کہ چیانگ کائی شیک امریکی افسروں کی چھایا ماتر ہے۔ امریکی سینا کی سہایتا کے بنا وہ چین کے اس بڑے ٹاپو میں ایک دن نہیں ٹک سکتا۔ تائیوان کا سوال بالکل سیدھا سادہ ہے۔ امریکہ نے چین کے اس علاقہ پر قبضہ کرلیا ہے، یہی سوال ہے۔

جون 1950 میں جب امریکہ نے کوریا پر حملہ کیا تو اس سمئے کے امریکی راشٹرپتی شری ٹرومین نے امریکہ کے ساتویں جہازی بیڑے کو تائیوان پر قبضہ کرنے اور آس پاس کے تائیوان شہر کے سارے ٹاپوؤں کو گھیر لینے کا حکم دیا۔ تب سے امریکہ کے سامراجی چیانگ کائی شیک کے ساتھی دیش دروہیوں کا اُپیوگ کر رہے ہیں اور تائیوان سے ہمارے ساحلی علاقوں پر اکثر ہوائی اور جہازی بیڑے سے حملے کرتے رہتے ہیں۔ انتر راشٹریہ بیوپار کے جو جہاز شانتی پوروک تجارت کرتے ہیں، ان پر سمندر میں ڈاکہ ڈالا جاتا ہے، یہ بات اب سب کے کانوں تک پہونچ چکی ہے۔

के अन्दरूनी मामलों में दख़ल न देने की नीति अपनाते हैं, अमरीका दूसरे देशों के मामलों में दख़ल देने से किसी तरह नहीं रुकता. जबकि हम चाहते हैं कि सारे राष्ट्र बराबर समझे जावें और एक दूसरे के हित का ख़याल रखें, अमरीका अपनी इजारादारी क़ायम रखना चाहता है और दूसरे देशों के हित को साफ़ नुक़सान पहुंचाते हुए उनके चारों तरफ़ खुले घेरा डालता है. मुख़्तसर यह कि जब हम चाहते हैं कि सारे राष्ट्र शान्तिपूर्वक साथ साथ रह सकें, अमरीका एक के बाद दूसरा फ़ौजी गुट बना रहा है ताकि वह यूरप वालों को, यूरप वालों से और एशिया वालों को एशिया वालों से लड़ा सके. इस तरह राष्ट्रों राष्ट्रों के बीच दुशमनी को और हवा दी जा रही है और यह सब केवल अमरीकी इजारादारों की मुनाफ़ाख़ोरी के लिये किया जा रहा है.

इसमें कोई शक नहीं कि वाशिंगटन के युद्ध प्रेमी गिरोह प्रशान्त महासागर को एक अमरीकी झील समझते हैं. आस्ट्रेलिया, न्युज़ीलैंड और अमरीका के बीच और अमरीका और जापान के बीच परस्पर सुरक्षा के नाम पर जो समझौते 1951 में हुए हैं उनके आधार पर अमरीका ने आस्ट्रेलिया, न्युज़ीलैंड और जापान में अपने अनगिनत फ़ौजी अड्डे क़ायम कर लिये हैं. जुलाई 1953 में मजबूर होकर वाशिंगटन के युद्ध प्रेमियों ने कोरिया में लड़ाई बन्द करने के समझौते पर दस्तख़त किये. लेकिन तीन महीने भी नहीं बीते थे कि अपने कठपुतली सिंगमेन री से आपसी सुरक्षा के नाम पर उन्होंने एक अलग समझौता कर लिया. इस तरह दक्खिनी कोरिया पर अनिश्चित समय तक अपना क़बज़ा जमाए रखने के लिये उन्होंने रास्ता साफ़ कर लिया. इसके बाद भी वह कोशिश कर रहे हैं कि उस कमीशन को ही तोड़ दिया जाये जिसका नाम "तटस्थ राष्ट्रों का सलाहकार कमीशन" है और जो समझौते का अमीन है.

ज़ाहिर है कि अमन पसन्द जनता के लिये जो बातें ख़ुशी की हैं अमरीका के युद्ध प्रेमियों के लिये वही बातें दुखदायी हैं.

हिन्द-चीन में लड़ाई बन्द कराने के लिये पिछली जुलाई में जनेवा में जो समझौता हुआ था उस पर दस्तख़त करने से अमरीका ने केवल इन्कार ही नहीं कर दिया बल्कि दक्खिन पूरब एशिया की रक्षा के नाम पर एक फ़ौजी संगठन खड़ा कर दिया. इस संगठन में आठ देशों ने भाग लिया पर उनमें तीन ही ऐसे देश हैं जिनका वजूद एशिया में है. अभी हाल में इस संगठन की एक बैठक बंगकाक में हुई थी. डलेस साहब ने खुल्लम खुल्ला ऐलान किया कि इस बैठक का मक़सद इस संगठन के मुंह में लड़ाई के दाँत जड़ना था.



کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دینے کی نیتی اپناتے ہیں، امریکہ دوسرے دیشوں کے معاملوں میں دخل دینے سے کسی طرح نہیں رکتا۔ جبکہ ہم چاہتے ہیں کہ سارے راشٹر برابر سمجھے جاویں اور ایک دوسرے کے ہت کا خیال رکھیں، امریکہ اپنی اجارہ داری قائم رکھنا چاہتا ہے اور دوسرے دیشوں کے ہت کو صاف نقصان پہنچاتے ہوئے ان کے چاروں طرف کھلے گھیرا ڈالتا ہے۔ مختصر یہ کہ جب ہم چاہتے ہیں کہ سارے راشٹر شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہ سکیں، امریکہ ایک کے بعد دوسرا فوجی گٹ بنا رہا ہے تاکہ وہ یورپ والوں کو یورپ والوں سے اور ایشیا والوں کو ایشیا والوں سے لڑا سکے۔ اس طرح راشٹروں راشٹروں کے بیچ دشمنی کو اور ہوا دی جا رہی ہے اور یہ سب کیول امریکی اجارہ داروں کی منافع خوری کے لئے کیا جا رہا ہے۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ واشنگٹن کے یدھ پریمی گروہ پرشانت مہا ساگر کو ایک امریکی جھیل سمجھتے ہیں۔ آسٹریلیا، نیوزیلینڈ اور امریکہ کے بیچ اور امریکہ اور جاپان کے بیچ پرسپر سورکشا کے نام پر جو سمجھوتے 1 19 میں ہوئے ہیں ان کے آدھار پر امریکہ نے آسٹریلیا، نیوزیلینڈ اور جاپان میں اپنے ان گنت فوجی اڈے قائم کر لئے ہیں۔ جولائی 1953 میں مجبور ہوکر واشنگٹن کے یدھ پریمیوں نے کوریا میں لڑائی بند کرنے کے سمجھوتے پر دستخط کئے۔ لیکن تین مہینے بھی نہیں بیتے تھے کہ اپنے کٹھ پتلی سنگمینری سے آپسی سورکشا کے نام پر انہوں نے ایک الگ سمجھوتہ کر لیا۔ اس طرح دکھنی کوریا پر انشچت سمے تک اپنا قبضہ جمائے رکھنے کے لئے انہوں نے راستہ صاف کرلیا۔ اس کے بعد بھی وہ کوشش کر رہے ہیں کہ اس کمیشن کو ہی توڑ دیا جائے جسکا نام ''تٹستھ راشٹروں کا صلاحکار کمیشن'' ہے اور جو سمجھوتے کا امین ہے۔

ظاہر ہے کہ امن پسند جنتا کے لئے جو باتیں خوشی کی ہیں امریکہ کے یدھ پریمیوں کے لئے وہی باتیں دکھدائی ہیں۔

ہند چین میں لڑائی بند کرانے کے لئے پچھلی جولائی میں جنیوا میں جو سمجھوتہ ہوا تھا اس پر دستخط کرنے سے امریکہ نے کیول انکار ہی نہیں کردیا بلکہ دکھن پورب ایشیا کی رکشا کے نام پر فوجی سنگٹھن کھڑا کردیا۔ اس سنگٹھن میں آٹھ دیشوں نے بھاگ لیا پر ان میں تین ہی دیش ہیں جن کا وجود ایشیا میں ہے۔ ابھی حال میں اس سنگٹھن کی ایک بیٹھک بنکاک میں ہوئی تھی۔ ڈلیس صاحب نے کھلم کھلا اعلان کیا کہ اس بیٹھک کا مقصد اس سنگٹھن کے منہ میں لڑائی کے دانت جڑنا تھا۔

अमरीका के व्योपार चैम्बर की पत्रिका "नेशन्स बिज़नेस" के जनवरी अंक में श्री डलेस ने कहा है कि "शान्तिपूर्वक साथ साथ रहना ( Peaceful co-existence ) नए शब्दों की धोके की टट्टी है." उन्होंने यह भी कहा कि "इस शब्द पर निगाह रखनी चाहिये, यह वह शब्द है जिससे होशियार रहना है." जुलाई के "यू. एस. न्युज़ एन्ड वर्ल्ड रिपोर्ट" के दूसरे अंक में यह लिखा गया था कि शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने का विचार "अमरीकी शासकों के लिये ज़हर है."

आइये हम पूछें कि संसार भर की शान्ति प्रेमी जनता जिसकी मांग कर रही है उसकी श्री डलेस इस भयानक रूप से निन्दा क्यों कर रहे हैं? जवाब सीधा सादा है. शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने का विचार उस "बल की नीति ( Policy of Strength )" और "नई औपनिवेशिक नीति (New Colonial policy)" के बिलकुल ख़िलाफ़ है जिसे वाशिंगटन के सत्ताधीश चला रहे हैं. पिछले विश्व युद्ध ने अमरीका को नुक़सान नहीं पहुंचाया बल्कि इसके ख़िलाफ़ अमरीका को लड़ाई से ज़बरदस्त मुनाफ़ा हुआ जिससे अमरीका की इजारादारी बढ़ी और औद्योगिक तरक़्क़ी भी हुई, चूंकि उस समय ऐटम बम और हाइड्रोजन बम जैसे बरबादी के हथियारों का बनाना केवल अमरीका के हाथ में था, अमरीका और उसकी पिट्ठू सरकारों को अपने इन हथियारों पर भरोसा था और विश्व के नेता बनने की उनमें इच्छा थी. पच्छिमी जरमनी को हथियारों से लैस करने में वह लगे रहे. एशिया में औपनिवेशिक शासन यानी दूसरों की ग़ुलामी फिर से वापस लाने के लिये उन्होंने क़दम उठाए.

सच यह है कि आज की जैसी हालत कभी भी हमारे सामने नहीं थी. लगभग 50 देशों में अमरीका ने अपने हवाई, समन्दरी और फ़ौजी अड्डे क़ायम कर लिये हैं. यह अड्डे दुनिया भर में फैले हुए हैं. लगभग आठ सौ फ़ौजी अड्डे तो उनके केवल जापान ही में हैं. दूसरे शब्दों में हर 460 वर्ग किलोमीटर के रक़बे में एक अमरीकी अड्डा जापान में मौजूद है. फ़िलीपाइन, थाइलैंड और दूसरे एशियाई देशों में भी अमरीका ने अपने फ़ौजी अड्डे बना रखे हैं.

इसीलिये अमरीका की नीति शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के पांच सिद्धान्तों के ख़िलाफ़ है. जबकि हम यह मांग करते हैं कि एक दूसरे की मुकम्मिल आज़ादी का आदर हो, अमरीका अपने स्वभाव के अनुसार दूसरे राष्ट्रों की आज़ादी हड़प रहा है. जबकि हम यह मांग करते हैं कि सब देशों की अखंडता का सम्मान हो, अमरीका का दूसरे देशों की ज़मीन पर क़बज़ा जारी है. जबकि हम एक दूसरे



امریکہ کے بیوپار چیمبر کی پتریکا "نیشنس بزنیس" کے جنوری انک میں شری ڈلیس نے کہا ھے کہ "شانتی پوروک ساتھ ساتھ رھنا (Peaceful co-existence) نئے شبدوں کی دھوکے کی ٹٹی ھے." انھوں نے یہ بھی کہا ھے کہ "اِن شبدوں پرنگاہ رکھنی چاھئے' یہ وہ شبد ھے جس سے ھوشیار رھنا ھے." جولائی کے "یو. ایس. نیوز اینڈ ورلڈ رپورٹ" کے دوسرے انک میں یہ لکھا گیا تھا کہ شانتی پوروک ساتھ ساتھ رھنے کا وچار "امریکہ کے شاسکوں کے لئے زھر ھے."

آئیے ھم پوچھیں کہ سنسار بھر کی شانتی پریمی جنتا جس کی مانگ کر رھی ھے اُس کی شری ڈلیس اِس بھیانک روپ سے نندا کیوں کر رھے ھیں؟ جواب سیدھا سادہ ھے. شانتی پوروک ساتھ ساتھ رھنے کا وچار اُس "بل کی نیتی (Policy of Strength)" اور "نئی اُپنیویشک (New Colonial Policy)" کے بالکل خلاف ھے جسے واشنگٹن کے ستادھیش چلا رھے ھیں. پچھلے وشو یدھ نے امریکہ کو نقصان نہیں پہنچایا بلکہ اس کے خلاف امریکہ کو لڑائی سے زبردست منافع ھوا جس سے امریکہ کی اجارادای بڑھی اور اودیوگک ترقی بھی ھوئی' چونکہ اُس سمئے ایٹم بم اور ھائڈروجن بم جیسے بربادی کے ھتھیاروں کا بنانا کیول امریکہ کے ھاتھ میں تھا' امریکہ اور اُس کی پٹھو سرکاروں کو اپنے اِن ھتھیاروں پر بھروسہ تھا اور وشو کے نیتا بننے کی ان میں اِچھا تھی. پچھمی جرمنی کو ھتھیاروں سے لیس کرنے میں وہ لگے رھے. ایشیا میں اوپنیویشک شاسن یعنی دوسروں کی غلامی پھر سے واپس لانے کے لئے انھوں نے قدم اٹھائے.

سچ یہ ھے کہ آج کی سی جیسی حالت کبھی بھی ھمارے سامنے نہیں تھی. لگ بھگ 50 دیشوں میں امریکہ نے اپنے ھوائی' سمندری اور فوجی اڈے قائم کر لئے ھیں. یہ اڈے دنیا بھر میں پھیلے ھوئے ھیں. لگ بھگ آٹھ سو فوجی اڈے تو ان کے کیول جاپان ھی میں ھیں. دوسرے شبدوں میں ھر 460 ورگ کیلومیٹر کے رقبے میں ایک امریکی اڈا جاپان میں موجود ھے. فلپائن' تھائی لینڈ اور دوسرے ایشیائی دیشوں میں بھی امریکہ نے اپنے فوجی اڈے بنا رکھے ھیں.

اس لئے امریکہ کی نیتی شانتی پوروک ساتھ ساتھ رھنے کے پانچ سدھانتوں کے خلاف ھے. جب کہ ھم یہ مانگ کرتے ھیں کہ ایک دوسرے کی مکمل آزادی کا آدر ھو' امریکہ اپنے سوبھاؤ کے انوسار دوسرے راشٹروں کی آزادی ھڑپ رھا ھے. جبکہ ھم یہ مانگ کرتے ھیں کہ سب دیشوں کی اکھنڈتا کا سمان ھو' امریکہ کا دوسرے دیشوں کی زمین پر قبضہ جاری ھے. جبکہ ھم ایک دوسرے

# एशिया की समस्या

भाई को. मो. जो.

[ चीन के वाइस चैयरमैन श्री को. मो. जो. चीनी डेलीगेशन के नेता होकर दिल्ली एशियाई कान्फ़रेन्स में आए थे. वे जो वहां के बोले उस नीचे लिखे हिस्सों से एशिया की समस्या पर बहुत अच्छी रोशनी पड़ती है—एडीटर. ]

शान्ति के साथ सब देशों के साथ साथ रहने के पांच सिद्धान्तों को चलाने वालों में एक चीन है, इसका चीनी जनता को गर्व है.

नए जनवादी चीन का जिस दिन जन्म हुआ उसी दिन एक दूसरे की मुकम्मिल आज़ादी और एक दूसरे के देश की अखंडता के आदर और सबकी भलाई और बराबरी के आधार पर दूसरे देशों से सम्बन्ध क़ायम करने का ऐलान कर दिया था. हमने अब तक तेईस देशों से परस्पर राजनैतिक सम्बन्ध क़ायम कर लिये हैं, और तीन और देशों से इसी तरह के सम्बन्ध क़ायम करने की हम तजवीज़ कर रहे हैं. इस से भी अधिक देशों से हमारे आर्थिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध क़ायम हो चुके हैं.

जून 1950 में जब जनवादी कोरिया पर हमला हुआ और अमरीकियों ने हमारे प्रान्त फ़ारमोसा पर क़ब्ज़ा जमा लिया तो सारे एशिया में जिस आग के फैल जाने का ख़तरा था उसे बुझाने के लिये और हमलावरों को पीछे हटाने के लिये, हमने कोरिया की जनता का साथ दिया.

पिछली जुलाई में और राष्ट्रों के साथ साथ जनेवा कान्फ़रेन्स में हिन्द-चीनी समझौता करा कर अन्तर्राष्ट्री तनाव को कम करने का हमने भरसक जतन किया. एशिया के उस इलाक़े में आठ साल से जो लड़ाई हो रही थी उस का इस तरह अन्त हो गया. यह वह ठोस क़दम हैं जो हमारी शान्तिपूर्ण नीति को जाहिर करते हैं.

हमारी यह उत्कट इच्छा है कि हम शान्तिपूर्वक औरों के साथ साथ रहने के लिये पंचशील की बुनियाद पर एशिया के तमाम देशों और संसार के सब राष्ट्रों से राजनैतिक सम्बन्ध क़ायम करें. हमें पूरा विश्वास है कि इन पांच सिद्धान्तों पर अमल करने से ठीक ठीक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध क़ायम हो सकते हैं, वह ठोस बनाए जा सकते हैं और उन्हें आगे बढ़ाया जा सकता है.

लेकिन कुछ देशों के हाकिम शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के इन सिद्धान्तों के घोर विरोधी हैं.

# ایشا کی سمسیا

بھائی کو . مو . جو

[چین کے وائس چیرمین شری کو. مو. جو. چینی ڈیلیگیشن کے نیتا ہو کر دلی ایشیائی کانفرنس میں آئے تھے . وے جو وہاں بولے اُس کے نیچے لکھے حصوں سے ایشا کی سمسیا پر بہت اچھی روشنی پڑتی ہے —ایڈیٹر. ]

شانتی کے ساتھ سب دیشوں کے ساتھ ساتھ رہنے کے پانچ سدھانتوں کو چلانے والوں میں ایک چین ہے، اِس کا چینی جنتا کو گرو ہے .

نئے جن وادی چین کا جس دن جنم ہوا اُسی دن ایک دوسرے کی مکمل آزادی اور ایک دوسرے کے دیش کی اکھنڈتا کے اور سب کی بھلائی اور برابری کے آدھار پر دوسرے دیشوں سے سمبندھ قائم کرنے کا ہمنے اعلان کر دیا تھا . ہمنے اب تک تیئیس دیشوں سے پرسپر راج نیتک سمبندھ قائم کرلیئے ہیں، اور تین اور دیشوں سے اِسی طرح کے سمبندھ قائم کرنے کی ہم تجویز کر رہے ہیں . اس سے بھی ادھک دیشوں سے ہمارے آرتھک اور سانسکرتک سمبندھ قائم ہو چکے ہیں .

جون 1950 میں جب جن‌وادی کوریا پر حملہ ہوا اور امریکیوں نے ہمارے پرانت فارموسا پر قبضہ جما لیا تو سارے ایشیا میں جس آگ کے پھیل جانے کا خطرہ تھا اسے بجھانے کے لئے اور حملہ آوروں کو پیچھے ہٹانے کے لئے، ہمنے کوریا کی جنتا کا ساتھ دیا .

پچھلی جولائی میں اور راشٹروں کے ساتھ ساتھ جنیوا کانفرنس میں ہند چینی سمجھوتہ کراکر انتر راشٹری تناؤ کو کم کرنے کا ہمنے بھرسک جتن کیا . ایشیا کے اس علاقے میں آٹھ سال سے جو لڑائی ہو رہی تھی اُس کا اس طرح انت ہوگیا . یہ وہ ٹھوس قدم ہیں جو ہماری شانتی پورن نیتی کو ظاہر کرتے ہیں .

ہماری یہ اُتکٹ اِچھا ہے کہ ہم شانتی پوروک اوروں کے ساتھ ساتھ رہنے کے لئے پنچ شیل کی بنیاد پر ایشیا کے تمام دیشوں اور سنسار کے سب راشٹروں سے راج نیتک سمبندھ قائم کریں . ہمیں پورا وشواس ہے کہ اِن پانچ سدھانتوں پر عمل کرنے سے ٹھیک ٹھیک انتر راشٹریہ سمبندھ قائم ہو سکتے ہیں، وہ ٹھوس بنائے جا سکتے ہیں اور اُنھیں آگے بڑھایا جا سکتا ہے .

لیکن کچھ دیشوں کے حاکم شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے ان سدھانتوں کے گھور ورودھی ہیں .

# जून 1955 جون


| क्या किस से | सफ़ा صفحہ | کیا کس سے |
|---|---|---|
| 1. एशिया की समस्या | | 1. ایشیا کی سمسیا |
| —भाई को० मो० जो० | 355 | —بھائی کو. مو. جو. |
| 2. पञ्चशील और एशिया | | 2. پنچ شیل اور ایشیا |
| —श्री ओम प्रकाश 'मंत्री' | 364 | —شری اوم پرکاش 'منتری' |
| 3. सच्चा समाजवाद | | 3. سچا سماج واد |
| —डाक्टर भगवानदास | 385 | —ڈاکٹر بھگوان داس |
| 4. अफ़रीका | | 4. افریقہ |
| —डाक्टर सुनीतकुमार चैटरजी एम. ए., डी. लिट. | 394 | —ڈاکٹر سنیت کمار چٹرجی ایم. اے. ڈی. لٹ. |
| 5. चीन में पंडित नेहरू | | 5. چین میں پنڈت نہرو |
| —श्रीमती प्रभा प्रसाद | 402 | —شریمتی پربھا پرساد |
| 6. कुछ किताबें | 410 | 6. کچھ کتابیں |
| 7. हमारी राय— | 412 | 7. ہماری رائے— |
| रूस चीन और हिन्दुस्तान—सुन्दरलाल; भूदान साध्य और साधन—श्री जे. सी. कुमारप्पा. | | روس چین اور ہندستان—سندرلال؛ بھودان سادھیہ اور سادھن—شری جے. سی. کمارپا. |




जिल्द 19 جلد नम्बर 6 نمبر

जून 1955 جون

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

145، مٹھی گنج، الہ آباد

# NAYA HIND

*Monthly Journal of the Hindustani Culture Society*

# नया हिन्द

# نیا ھند



## इस नम्बर के ख़ास लेख

## اِس نمبر کے خاص لیکھ

एशिया की समस्या
—भाई को. मो. जो.

ایشیا کی سمسیا
—بھائی کو. مو. جو.

सच्चा समाजवाद
—डाक्टर भगवानदास

سچا سماج واد
— ڈاکٹر بھگوان داس

अफ़रीक़ा
—डाक्टर सुनीतिकुमार चैटरजी
एम. ए., डी. लिट.

افریقہ
—ڈاکٹر سنیت کمار چٹرجی
ایم. اے. ڈی. لٹ.

पंचशील और एशिया
—भाई ओमप्रकाश 'मंत्री'

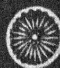
پنچ شیل اور ایشیا
—بھائی اوم پرکاش 'منتری'

चीन में पंडित नेहरू
—श्रीमती प्रभा प्रसाद

چین میں پنڈت نہرو
—شریمتی پربھا پرساد

इसके अलावा
कहानी, स्केच, समालोचना, हमारी राय आदि

اسکے علاوہ
کہانی، اسکیچ، سمالوچنا، ہماری رائے آدی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

जून 1955 جون

ऐसी किसी भी जंगी साज़िश में शामिल होने से जिसमें जंगबाज़ गिरोहों द्वारा एशिया और अफरीक़ा वाले cannon fodder की तरह इस्तेमाल किये जा सकें. आज उनकी भलाई इसी में है कि वे निर्माण या तामीरी कामों में लगें और निर्माण का काम तभी पूरा हो सकता है जब कि दुनिया में शान्ति हो और दुनिया में शान्ति तभी क़ायम रह सकती है जब एशिया और अफ़रीक़ा की क़ौमें यूरोप और अमरीका के जंगबाज़ साम्राज्य वादियों के लड़ाई का चारा बनने से इनकार कर दें.

इस नुक़्ते नज़र से बांदुंग सम्मेलन ने दुनिया की शान्ति को मज़बूत पैराये पर खड़ा करने की कोशिश की है. उन्होंने ग़ैर जानिबदारी यानी neutrality का नारा छोड़ कर शान्ति के नारे को militant यानी जंगी रूप दिया है. इसमें दो राय हो ही नहीं सकतीं कि बांदुंग सम्मेलन ने लड़ाई के ख़ौफ़नाक पुतले को, जिसकी आंखों के कोटर में दहकते हुये एटम और हाइड्रोजन बम जड़े हुये हैं, धक्का मार कर बरसों पीछे ढकेल दिया. दुनिया के हर शान्तिवादी का मस्तक एशिया और अफरीक़ा के इन शान्ति के पुजारियों के लिये इज़्ज़त के साथ झुकेगा. —विश्वम्भरनाथ पांडे

## हिन्दू कोड बिल

पिछले बुधवार 18 मई को हिन्दू कोड बिल क़ानून की शक्ल में हमारे देश में लागू कर दिया गया. एक शौहर की एक बीवी के रिवाज को अब क़ानूनी रुतबा हासिल हो गया. बहुविवाह का रिवाज उस बर्बर ज़माने की यादगार है जब औरतें माले ग़नीमत समझती थीं और उनकी जायदाद की तरह ख़रीद फ़रोख़्त या बदलौवल हो सकती थी. युद्ध में पुरुषों के मारे जाने पर विजेता को पराजित की स्त्रियां भी मिल जाती थीं जो फिर अधिक से अधिक सन्तानें पैदा करके लड़ाई की दूसरी फ़सल तैयार करने का काम देती थीं.

आज समता के युग में पुरुष को यह हक़ हासिल नहीं कि वह स्त्रियों को उसी बर्बर युग की यादगार समझे. उन्हें समाज में बराबर का हक़ हासिल होना ही है. उन्हें आर्थिक दृष्टि से पुरुषों के समक्ष ( पैराये ) होना ही है. स्त्री और पुरुष समाज रूपी गाड़ी के दो पहियों की तरह हैं जिन पर समाज की प्रगति यात्रा आगे बढ़ती है. वे उस मुक्ति पक्षी के दोनों डैनों के समान हैं जिनके सहारे वह सातों आसमान के चक्कर काटता है. एक पहिया अगर कमज़ोर रहा या एक एक डैना अगर बेकार रहा तो समाज की प्रगति ठप रह जायेगी. यह सही है कि हमारे बुज़ुर्गों और महापुरुषों ने स्त्री के आदर करने की हिदायत दी है मगर वह हिदायत आज पोथियों में बन्द पड़ी थी इस क़ानून द्वारा उस हिदायत को आज फिर से अमली जामा पहनाने की कोशिश की गई है. —विश्वम्भरनाथ पांडे



ایسی کسی بھی جنگی سازش میں شامل ہونے سے جس میں جنگ باز گروہوں دوارا ایشیا اور افریقہ والے cannon fodder کی طرح استعمال کئے جاسکیں. آج اُن کی بھلائی اِسی میں ھے کہ وے نرمان یا تعمیری کاموں میں لگیں اور نرمان کا کام تبھی پورا ھوسکتا ھے جب کہ دنیا میں شانتی ھو اور دنیا میں شانتی تبھی قائم رہ سکتی ھے جب ایشیا اور افریقہ کی قومیں یورپ اور امریکہ کے جنگ باز سامراجیہوادیوں کے لڑائی کا چارا بننے سے اِنکار کردیں.

اِس نقطہ نظر سے باندنگ سمیلن نے دنیا کی شانتی کو مضبوط پیرائے پر کھڑا کرنے کی کوشش کی ھے. اُنھوں نے غیر جانبداری یعنی Neutrality کا نعرہ چھوڑکر شانتی کے نعرے کو militant یعنی جنگی روپ دیا ھے. اِس میں دو رائے ھو ھی نہیں سکتیں کہ باندنگ سمیلن نے لڑائی کے خوفناک پتلے کو، جس کی آنکھوں کے کوٹر میں دھکتے ھوئے ایٹم اور ھائڈروجن بم جڑے ھوئے ھیں، دھکا مارکر برسوں پیچھے ٹھکیل دیا. دنیا کے ھر شانتی وادی کا مستک ایشیا اور افریقہ کے اِن شانتی کے پجاریوں کے لئے عزت کے ساتھ جھکیگا.

—وشومبھر ناتھ پانڈے

## ھندو کوڈ بل

پچھلے بدھوار 18 مئی کو ھندو کوڈ بل قانون کی شکل میں ھمارے دیش میں لاگو کر دیا گیا. ایک شوھر کی ایک بیوی کے رواج کو اب قانونی رتبہ حاصل ھوگیا. بھو وواہ کا رواج اِس بربر زمانے کی یادگار ھے جب عورتیں مال غنیمت سمجھی جاتی تھیں اور اُن کی جائداد کی طرح خرید فروخت یا بدلول ھوسکتی تھی. یدھ میں پرشوں کے مارے جانے پر وجیتا کو پراجت کی استریاں بھی مل جاتی تھیں جو پھر ادھک سے ادھک سنتانیں پیدا کرکے لڑائی کی دوسری فصل تیار کرنے کا کام دیتی تھیں.

آج سمتا کے یگ میں پرش کو یہ حق حاصل نہیں کہ وہ استریوں کو اُسی بربر یگ کی یادگار سمجھے. اُنھیں سماج میں برابر کا حق حاصل ھونا ھی ھے. اُنھیں آرتھک درشٹی سے پرشوں کے سمکش ( پیرائے ) ھونا ھی ھے. استری اور پرش سماج روپی گاڑی کے دو پہیوں کی طرح ھیں جن پر سماج کی پرگتی یاترا آگے بڑھتی ھے. وے اُس مکتی پکچھی کے دونوں ڈینوں کے سمان ھیں جن کے سہارے وہ ساتوں آسمان کے چکر کاٹتا ھے. ایک پہیہ اگر کمزور رھا یا ایک ڈینا اگر بیکار رھا تو سماج کی پرگتی ٹھپ رہ جائیگی. یہ صحیح ھے کہ ھمارے بزرگوں اور مہاپرشوں نے استری کے آدر کرنے کی ھدایت دی ھے مگر وہ ھدایت آج پوتھیوں میں بند پڑی تھی. اِس قانون دوارا اُس ھدایت کو آج پھر سے عملی جامہ پہنانے کی کوشش کی گئی ھے.

—وشومبھر ناتھ پانڈے

तो फ़ौरन कर ही सकता है कि अन्धों के साहित्य पर से डाक से भेजने से टिकट लगाने की जरूरत न रहे. यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन के 91 मुल्कों में से 76 ने अन्धों को यह छूट दे रखी है जिन 15 मुल्कों ने अभी तक यह छूट नहीं दी बदक़िस्मती से एक उनमें से हिन्दुस्तान भी है" (स्टेट्स मैन)

—विश्वम्भरनाथ पांडे

## बांडुंग सम्मेलन

एशिया और अफ़रीक़ा के मुल्कों का पहला सम्मेलन जिस शान और कामयाबी के साथ पूरा हुआ उसने इतिहास में एक नया वर्क़ खोला है. पूरब की तहज़ीब और कल्चर की यह ख़ासियत है कि वह विविधता में एकता के दर्शन करती है. तरह तरह से अपने मुल्कों में हुकूमत करने वाले देश इस सम्मेलन में इकट्ठा हुये और बावजूद एशिया और अफ़रीक़ा के दुश्मनों की कोशिशों के उन्होंने सारे फ़ैसले एक राय से किये. उन्होंने दुनिया को यह दिखा दिया कि जहां तक साम्राज्यवाद का सवाल है एशिया और अफ़रीक़ा के मुल्क उसे सख़्त नापसन्द करते हैं और अपने अपने देश की जनता का यह अधिकार समझते हैं कि वह अपने पसन्द का हुकूमत का तरीक़ा अपने देश में चलाने के लिये आज़ाद है.

बावजूद तुर्की, पाकिस्तान, फ़िलिपाइन और लंका के प्रतिनिधियों की अमरीका-परस्ती के सम्मेलन को पूरी कामयाबी हासिल हुई और सब से बड़ी बात जो रही वह यह कि चाओ और कम्यूनिस्ट चीन के तरफ़ इन मुल्कों का भी ज़ाहिरा दोस्ताना तर्ज़ अमल. अमरीकी कूटनीति ने जो नक़्शा खींचा था वह यह कि कुछ कठपुतलियों के ज़रिये हिन्दुस्तान और ख़ास कर श्री नेहरू की टोपी उछालना. मगर हिन्दुस्तान और नेहरू को नीचा दिखाने की कोशिश में उन्होंने चाओ और चीन को बांसों उछाल दिया. इसी को कहते हैं—'जादू वह जो सर पे चढ़ के बोले!'

पच्छिमी साम्राज्यवादियों ने अठारहवीं सदी में जो सब से बड़ी ईजाद की थी वह भाप के इंजन की नहीं बल्कि इस बात की कि एशिया और अफ़रीक़ा की क़ौमों को अपने साम्राज्य विस्तार के लिये भाड़े के सैनिक बनाकर किस तरह न सिर्फ़ दूसरे मुल्कों के ख़िलाफ़ बल्कि ख़ुद अपने ही मुल्क के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया जा सकता है. इसी ईजाद के इस्तेमाल से यूरोप और एशिया के क़रीब क़रीब सब मुल्क पच्छिमी साम्राज्यवाद की गिरिफ़्त में आ गये और अपनी आर्थिक (इक़्तसादी), राजनैतिक (सियासी) और नैतिक (इख़लाक़ी) आज़ादी खो बैठे.

अब चक्र ने उल्टा घूमना शुरू किया है. आज एशिया के मुल्क फिर से अपनी सियासी, इक़्तसादी और इख़लाक़ी आज़ादी सौ फ़ीसदी हासिल करने के लिये कमर बस्ता हैं. आज एशिया और अफ़रीक़ा के मुल्क इनकार कर रहे हैं



تو فوراً کر ہی سکتا ہے کہ اندھوں کے ساہتیہ پر سے ڈاک سے بھیجنے سے ٹکٹ لگانے کی ضرورت نہ ہے ۔ یونیورسل پوسٹل یونین کے 91 ملکوں میں سے 76 نے اندھوں کو یہ چھوٹ دے رکھی ہے. جن 15 ملکوں نے ابھی تک یہ چھوٹ نہیں دی بدقسمتی سے ایک اُن میں سے ہندستان بھی ہے ." ( اسٹسمین ) .

—وشومبھر ناتھ پانڈے

## بانڈنگ سمیلن

ایشیا اور افریقہ کے ملکوں کا پہلا سمیلن جس شان اور کامیابی کے ساتھ پورا ہوا اُس نے اِتہاس میں ایک نیا ورق کھولا ہے ۔ پورب کی تہذیب اور کلچر کی یہ خاصیت ہے کہ وہ وودھتا میں ایکتا کے درشن کرتی ہے ۔ طرح طرح سے اپنے ملکوں میں حکومت کرنے والے دیش اِس سمیلن میں اِکٹھا ہوئے اور باوجود ایشیا اور افریقہ کے دشمنوں کی کوششوں کے اُنھوں نے سارے فیصلے ایک رائے سے کئے ۔ اُنھوں نے دنیا کو یہ دکھا دیا کہ جہاں تک سامراجیہ واد کا سوال ہے ایشیا اور افریقہ کے ملک اُسے سخت ناپسند کرتے ہیں اور اپنے اپنے دیش کی جنتا کا یہ ادھیکار سمجھتے ہیں کہ وہ اپنے پسند کا حکومت کا طریقہ اپنے دیش میں چلانے کے لئے آزاد ہے ۔

باوجود ترکی' پاکستان' فلپائن اور لنکا کے پرتینیدھیوں کی امریکہ پرستی کے سمیلن کو پوری کامیابی حاصل ہوئی اور سب سے بڑی بات جو رہی وہ یہ کہ چاؤ اور کمیونسٹ چین کے طرف اِن ملکوں کی بھی ظاہرہ دوستانہ طرز عمل ۔ امریکی کوٹ نیتی نے جو نقشہ کھینچا تھا وہ یہ کہ کچھ کٹھ پتلیوں کے ذریعے ہندستان اور خاصکر شری نہرو کی ٹوپی اُچھالنا ۔ مگر ہندستان اور نہرو کو نیچا دکھانے کی کوشش میں اُنھوں نے چاؤ اور چین کو بانسوں اُچھال دیا ۔ اِسی کو کہتے ہیں— 'جادو وہ جو سر پہ چڑھ کے بولے !'

پچھمی سامراجیہ وادیوں نے اٹھارھویں صدی میں جو سب سے بڑی ایجاد کی تھی وہ بھاپ کے انجن کی نہیں بلکہ اِس بات کی کہ ایشیا اور افریقہ کی قوموں کو اپنے سامراجیہ وستار کے لئے بھاڑے کے سینک بناکر کس طرح نہ صرف دوسرے ملکوں کے خلاف بلکہ خود اپنے ہی ملک کے خلاف استعمال کیا جا سکتا ہے ۔ اِسی ایجاد کے اِستعمال سے یورپ اور ایشیا کے قریب قریب سب ملک پچھمی سامراجیہ واد کی گرفت میں آگئے اور اپنی آرتھک ( اختصادی )' راجنیتک ( سیاسی ) اور نیتک ( اخلاقی ) آزادی کھو بیٹھے ۔

اب چکر نے اُلٹا گھومنا شروع کیا ہے ۔ آج ایشیا کے ملک پھر سے اپنی سیاسی' اختصادی اور اخلاقی آزادی سو فیصدی حاصل کرنے کے لئے کمر بستہ ہیں ۔ آج ایشیا اور افریقہ کے ملک اِنکار کر رہے ہیں

तिहाई. इनमें से कम से कम पांच लाख अन्धों की तालीम का काम हाथ में लिया जा सकता है. बाक़ी लोग बड़ी उम्र में जाकर आंखों की रोशनी खोते हैं, 14 बरस की उम्र तक के अन्धे बालकों की तादाद क़रीब चालीस हज़ार है लेकिन हिन्दुस्तान में अन्धों के कुल स्कूलों की तादाद सिर्फ़ 50 है जहां महज़ 1500 बच्चे तालीम पाते हैं.

इस मुल्क में अन्धों की तालीम के सिलसिले में सब से उम्दा संस्था देहरादून में है जहां जवान अन्धों को काम सिखाये जाते हैं और जहां एक ब्रेली छापाखाना है, जहां अन्धों के पढ़ने की किताबें छपती हैं. इसी संस्था को मरकज़ी सरकार की मदद से बढ़ाने की योजना बन रही है. इस योजना के मुताबिक़ यहां एक माडेल स्कूल खुलेगा, अन्धी स्त्रियों का ट्रेनिंग सेंटर खुलेगा, टीचरों की ट्रेनिंग का इन्तज़ाम होगा और एक चलती फिरती ब्रेली लाइब्रेरी क़ायम की जायेगी. देहरादून इन्स्टिटयूट में मरकज़ी सरकार की दी हुई क़रीब क़रीब पूरी रक़म खर्च हो जाती है. सन 1954-55 में मरकज़ी सरकार ने कुल साढ़े तीन लाख रूपया अन्धों की तालीम के लिये रखा था. यह रक़म बहुत थोड़ी थी. सूबाई सरकारें भी इस मामले में खुले हाथ नहीं हैं. बम्बई की सरकार की बेशक तारीफ़ की जा सकती है उसके इस फ़ैसले पर कि हर पढ़ने वाले अन्धे विद्यार्थी को वह तीस रूपया महीना वज़ीफ़ा देगी.

दुनिया में अन्धों का सबसे पहला स्कूल 171 बरस पहले वेलेंटिन हायु ने पेरिस में खोला था. तब से अन्धों की तालीम के तरीक़े में काफ़ी सुधार हुये हैं. इस दिशा में सब से ज़्यादा तारीफ़ के क़ाबिल काम लुई ब्रेली ने किया जो खुद अन्धा था. उसके नाम से अन्धों की पढ़ाई की किताबें ही ब्रेली किताबें कहलाने लगीं जिनमें उभरी हुई छपाई होती है और जिसे उगलियों से टटोल कर अन्धे बच्चे पढ़ते हैं. आजकल इस सम्बन्ध में पतले काग़ज़ पर प्लास्टिक स्याही से छपी किताबें या प्लास्टिक काग़ज़ पर छपी किताबों पर अन्धों की पढ़ाई के तजरुबे चल रहे हैं.

अन्धों के काम सीख जाने के बाद जो सब से बड़ी रुकावट उनके रास्ते में आती है वह यह है कि उन्हें कोई नौकर रखने को तैयार नहीं होता हालांकि आंख वालों के मुक़ाबले में वे अपने सीखे हुये काम में काफी दक्ष होते हैं. जब तक उन्हें रोज़गार और नौकरी मिलने की बराबर की सुविधायें न हासिल हों तब तक उन्हें अन्धों की ही वर्कशाप जैसी रोज़गार की जगह बना कर उन्हें काम पर लगाना होगा. दूसरी पंजसाला योजना में इस क़िस्म की वर्कशापों की गुंजाइश रखनी चाहिये. "ऐसी एक तजवीज़ सन 1945 में भी की गई थी. अन्धों को पेन्शनें देने की तजवीज़ के पूरा होने में अभी काफ़ी वक़्त लगेगा लेकिन हिन्दुस्तान एक काम



تہائی۔ اِنمیں سے کم سے کم پانچ لاکھ اندھوں کی تعلیم کا کام ہاتھ میں لیا جاسکتا ہے۔ باقی لوگ بڑی عمر میں جاکر آنکھوں کی روشنی کھوتے ہیں۔ 14 برس کی عمر تک کے اندھے بالکوں کی تعداد قریب چالیس ہزار ہے لیکن ہندستان میں اندھوں کے کل اسکولوں کی تعداد صرف 50 ہے جہاں محض 1500 بچے تعلیم پاتے ہیں۔

اِس ملک میں اندھوں کی تعلیم کے سلسلے میں سب سے عمدہ سنستھا دھرادون میں ہے جہاں جوان اندھوں کو کام سکھائے جاتے ہیں اور جہاں ایک بریلی چھاپاخانہ ہے' جہاں اندھوں کے پڑھنے کی کتابیں چھپتی ہیں۔ اِسی سنستھا کو مرکزی سرکار کی مدد سے بڑھانے کی یوجنا بن رہی ہے۔ اِس یوجنا کے مطابق یہاں ایک ماڈل اسکول کھلیگا' اندھی استریوں کا ٹریننگ سینٹر کھلیگا' ٹیچروں کی ٹریننگ کا اِنتظام ہوگا اور ایک چلتی پھرتی بریلی لائبریری قائم کی جائیگی۔ دھرادون اِنسٹیٹیوٹ میں مرکزی سرکار کی دی ہوئی قریب قریب پوری رقم خرچ ہو جاتی ہے۔ سن 55 - 1954 میں مرکزی سرکار نے کل ساڑھے تین لاکھ روپیہ اندھوں کی تعلیم کے لئے رکھا تھا۔ یہ رقم بہت تھوڑی تھی۔ صوبائی سرکاریں بھی اِس معاملے میں کھلے ہاتھ نہیں ہیں۔ بمبئی کی سرکار کی بےشک تعریف کی جاسکتی ہے اُس کے اِس فیصلے پر کہ ہر پڑھنے والے اندھے ودیارتھی کو وہ تیس روپیہ مہینہ وظیفہ دیگی۔

دنیا میں اندھوں کا سب سے پہلا اسکول 171 برس پہلے ویلینٹن ہایو نے پیرس میں کھولا تھا۔ تب سے اندھوں کی تعلیم کے طریقے میں کافی سدھار ہوئے ہیں۔ اِس دشا میں سب سے زیادہ تعریف کے قابل کام لوئی بریلی نے کیا جو خود اندھا تھا۔ اُس کے نام سے اندھوں کی پڑھائی کی کتابیں ہی بریلی کتابیں کہلانے لگیں جن میں اُبھری ہوئی چھپائی ہوتی ہے اور جسے اُنگلیوں سے ٹٹول کر اندھے بچے پڑھتے ہیں۔ آجکل اِس سمبندھ میں پتلے کاغذ پر پلاسٹک سیاہی سے چھپی کتابیں یا پلاسٹک کاغذ پر چھپی کتابوں پر اندھوں کی پڑھائی کے تجربے چل رہے ہیں۔

اندھوں کے کام سیکھ جانے کے بعد جو سب سے بڑی رکاوٹ اُن کے راستے میں آتی ہے وہ یہ ہے کہ اُنھیں کوئی نوکر رکھنے کو تیار نہیں ہوتا حالانکہ آنکھ والوں کے مقابلے میں وے اپنے سیکھے ہوئے کام میں کافی دکش ہوتے ہیں۔ جب تک اُنھیں روزگار اور نوکری ملنے کی برابر کی سویدھائیں نہ حاصل ہوں تب تک اُنھیں اندھوں کی ہی ورک شاپ جیسی روزگار کی جگہ بناکر اُنھیں کام پر لگانا ہوگا۔ دوسری پنچسالہ یوجنا میں اِس قسم کی ورک شاپوں کی گنجائش رکھنی چاہئے۔ "ایسی ایک تجویز سن 1945 میں بھی کی گئی تھی۔ اندھوں کو پینشنیں دینے کی تجویز کے پورا ہونے میں ابھی کافی وقت لگیگا لیکن ہندستان ایک کام

इस गुरु और शिष्या ने मिलकर अन्धेरे में रोशनी ढूँढ़ी, किस तरह उन्होंने अन्धों के लिये तालीम के दरवाज़े खोले, किस तरह उन्होंने ऊंची से ऊंची विद्या को नाबीनों के लिये आसान बना दिया और किस तरह नेत्र हीनों की नाउम्मीद ज़िन्दगी को उन्होंने आशा और उम्मीदों से भर दिया.

डाक्टर हेलेन केलर ने अपनी उम्र के 75 बरस हाल ही में पूरे किये हैं. 50 बरस से ज़्यादा उन्होंने अपनी ज़बान की ख़ामोशी के साथ, अपने गूंगेपन के साथ, जद्दोजेहद किया और अपनी आवाज़ पर क़ाबू पाया. वे कहती हैं—"मेरी आवाज़ मीठी नहीं है मगर मैंने अपने सपनों को अपने स्वरों के टूटे पंखों पर बैठाकर कल्पना की उड़ानों में घुमाया है. मेरी टूटी फूटी आवाज़ ने मेरे रोम रोम में वह ताक़त भरी है जिससे मैं अपनी बेकसी के साथ कामयाब लड़ाई लड़ सकूँ और यह समझ सकूँ कि इनसान की कोशिशों में कितनी तड़प और गहराई होती है और नाउम्मीदें कितनी मायूसियों से भरी होती हैं."

कुमारी हेलेन ने हर रुकावट को पुख़्ता इरादे और हिम्मत के साथ पार किया. अब वह नाव खेने, घुड़सवारी करने, साइकिल पर चढ़ने में होशियार हो गईं. टेनीसन और दूसरे कवियों की कवितायें वे सुना सकती थीं. बीस बरस की उम्र में वह रेडक्लिफ़ कालेज में भरती हुईं. कालेज के इतिहास में यह पहला मौक़ा था जब एक गूंगा, बहरा और अन्धा विद्यार्थी कालेज में भरती हुआ. लेकिन बावजूद इन तीनों कठिनाइयों के हेलेन ने सन 1904 में 24 बरस की उमर में कालेज से बी० ए० पास किया. अब हेलेन की कीर्ति कालेज की चहारदीवारी पार करके सारे अमरीका, यूरोप और दुनिया के कोने में पहुंचनी शुरू हुई. अन्धों, बहरों और गूँगों को एक मसीहा मिला जो कि उनकी ख़ामोश आवाज़ को चारों ओर पहुंचा सकता था, जो उनकी निराशा को आशा में बदल सकता था, जो उनकी दिल की कैफ़ियत को पुर असर लफ़्ज़ों में बयान कर सकता था, जो दुनिया को उनकी समस्याओं से वाक़िफ़ करा सकता था. डाक्टर हेलेन ने अन्धों, गूंगों और बहरों के मसले को लेकर पांच दफ़ा सारी दुनिया का दौरा किया और अब वह हिन्दुस्तान, बरमा, पाकिस्तान, फ़िलिप्पाइन और लंका के चालीस हज़ार मील के दौरे के लिये निकली हैं. जो रोशनी आज उन्होंने निरीह इन्सानियत के लिये जलाई है वह कभी बुझ नहीं सकती.

हमें हिन्दुस्तान में डाक्टर हेलेन का स्वागत समारोह देखकर बेहद ख़ुशी हुई. किन्तु डाक्टर हेलेन का वास्तविक आदर तो तब समझा जायेगा जब इस देश के अन्धों की हालत को और ज़्यादा बेहतर बनाने के अमली क़दम उठाये जायें, दस बरस पहले के अखंड हिन्दुस्तान में अन्धों की तादाद बीस लाख थी—यानी कुल दुनिया के अन्धों की एक





اِس گرو اور ششیا نے ملکر اندھیرے میں روشنی ڈھونڈھی' کس طرح اُنھوں نے اندھوں کے لئے تعلیم کے دروازے کھولے' کس طرح اُنھوں نے اُونچی سے اونچی ودیا کو نابینوں کے لئے آسان بنا دیا اور کس طرح نیتر ھینوں کی نااُمید زندگی کو اُنھوں نے آشا اور اُمیدوں سے بھر دیا .

ڈاکٹر ھیلین کیلر نے اپنی عمر کے 75 برس حال ھی میں پورے کئے ھیں . 50 برس سے زیادہ اُنھوں نے اپنی زبان کی خاموشی کے ساتھ' اپنے گونگے پن کے ساتھ' جدو جہد کیا اور اپنی آواز پر قابو پایا . وے کہتی ھیں— "میری آواز میٹھی نہیں ھے مگر میں نے اپنے سپنوں کو اپنے سوروں کے ٹوٹے پنکھوں پر بیٹھا کر کلپنا کی اُڑانوں میں گھمایا ھے . میری ٹوٹی پھوٹی آواز نے میرے روم روم میں وہ طاقت بھری ھے جس سے میں اپنی بیکسی کے ساتھ کامیاب لڑائی لڑ سکوں اور یہ سمجھ سکوں کہ اِنسان کی کوششوں میں کتنی تڑپ اور گہرائی ھوتی ھے اور نااُمیدیں کتنی مایوسی سے بھری ھوتی ھیں ."

کماری ھیلین نے ھر رکاوٹ کو پختہ اِرادے اور ھمت کے ساتھ پار کیا . اب وہ ناؤ کھینے' گھڑ سواری کرنے' سائیکل پر چڑھنے میں ھوشیار ھو گئیں . ٹینیسن اور دوسرے کویوں کی کویتائیں وے سنا سکتی تھیں . بیس برس کی عمر میں وہ ریڈ کلف کالج میں بھرتی ھوئیں . کالج کے اِتہاس میں یہ پہلا موقع تھا جب ایک گونگا' بہرا اور اندھا ودیارتھی کالج میں بھرتی ھوا . لیکن باوجود اِن تینوں کٹھنائیوں کے ھیلین نے سن 1904 میں 24 برس کی عمر میں کالج سے بی . اے . پاس کیا . اب ھیلین کی کیرتی کالج کی چہار دیواری پار کرکے سارے امریکہ' یورپ اور دنیا کے کونے میں پہنچنی شروع ھوئی . اندھوں' بہروں اور گونگوں کو ایک مسیحا ملا جو کہ اُنکی خاموش آواز کو چاروں اور پہونچا سکتا تھا' جو اُن کی نراشا کو آشا میں بدل سکتا تھا' جو اُن کی دل کی کیفیت کو پر اثر لفظوں میں بیان کر سکتا تھا' جو دنیا کو اُن کی سمسیاؤں سے واقف کرا سکتا تھا . ڈاکٹر ھیلین نے اندھوں' گونگوں اور بہروں کے مسئلے کو لیکر پانچ دفعہ ساری دنیا کا دورا کیا اور اب وہ ھندستان' برما' پاکستان' فلپائن اور لنکا کے چالیس ھزار میل کے دورے کے لئے نکلی ھیں . جو روشنی آج اُنھوں نے نریہہ انسانیت کے لئے جلائی ھے وہ کبھی بجھ نہیں سکتی .

ھمیں ھندستان میں ڈاکٹر ھیلین کا سواگت سماروہ دیکھکر بےحد خوشی ھوئی . کنتو ڈاکٹر ھیلین کا واستوک آدر تو تب سمجھا جائیگا جب اِس دیش کے اندھوں کی حالت کو اور زیادہ بہتر بنانے کے عملی قدم اُٹھائے جائیں' دس برس پہلے کے اکھنڈ ھندستان میں اندھوں کی تعداد بیس لاکھ تھی—یعنی کل دنیا کے اندھوں کی ایک

को अहमियत दी जाती रहेगी तब तक दुनिया का छुटकारा इन जङ्गों से नहीं हो सकता. यह बात नामुमकिन है कि हथियारबन्दी धीरे धीरे कम करते करते ख़त्म की जा सकती है. या तो दुनिया से हथियार यकबारगी मिटा दिये जायँगे या फिर बिल्कुल ही न मिटेंगे. जब तक फ़ौजें बरक़रार हैं तब तक छोटी से छोटी चिनगारी भी जङ्ग की आग को भड़का सकती है. जब लोग प्रेम और शान्ति की अहमियत समझेंगे तभी दुनिया तरक़्क़ी की एक नई मंजिल पर पहुँचेगी. तरक़्क़ी के उस शिखर पर पहुचकर मानव सन्तान जङ्ग को अपने बुजुर्गों का एक हैवानी कुकृत्य समझेंगी. यह सही है कि ऐसे इनसानों की तादाद आज थोड़ी है लेकिन इन्हीं की बढ़ती हुई ताक़त इस बात का फ़ैसला करेगी कि इनसानी क़ौम कब तक हिंसा और नफ़रत के उस ख़ौफ़नाक अन्धकार में धक्के खाते पड़ी रहेगी जिसे कुछ अन्धे लोग आज अपना आदर्श समझ रहे हैं."

पिछले बड़े जङ्ग के सिलसिले में पुरदर्द आवाज़ के साथ आइन्स्टीन ने कहा था—"आज हमारा आत्मबल काफ़ी साबित नहीं हुआ. आज करोड़ों इनसान मौन होकर जंग के भयंकर तमाशे को देख रहे हैं. जो लोग शान्तिमय तरीक़ों को दुनिया के लिये कल्यानकारी समझते हैं वे भी हिंसा के साथ समझौते को एक सियासी दूरन्देशी समझ रहे हैं. लेकिन उनकी यह दूरन्देशी इन्सानियत के साथ किया हुआ एक ऐसा भयंकर जुर्म है जो नाक़ाबिले माफ़ी है. लेकिन चूंकि हम ख़ुद इनसान हैं इसलिये मानवता से मायूस होने में हमारा कल्यान नहीं. आज भी यह बड़ी आशा की बात है कि गान्धी जैसा व्यक्ति मानवता को ख़ून के दलदल से बाहर निकालने की अनथक कोशिशें कर रहा है."

आइन्स्टीन की मौत से न सिर्फ़ दुनिया का सबसे बड़ा वैज्ञानिक उठ गया बल्कि शान्ति और प्रेम का एक जबर्दस्त पुजारी चल बसा. मौत ने आइन्स्टीन की जो जगह ख़ाली की है उसके आसानी से भरने की कोई उम्मीद दिखाई नहीं देती.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

## अन्धों की मसीहा—हेलेन केलर

पिछले तीन महीने से डाक्टर हेलेन केलर हिन्दुस्तान में घूम घूम कर इस देश के अन्धों को उम्मीद का एक पैग़ाम दे रही हैं. वह इनसान की लामहदूद (अपरिमित) अहमियत अपनी निजी जिन्दगी को सामने रखकर बयान कर रही हैं. अपने जन्म के बाद 19 महीनों तक वह एक साधारण शिशु की तरह थीं फिर उन्हें एकाएक तेज बुखार आया और वे अन्धी, बहरी और गूंगी बन गई माँ-बाप को सख़्त सदमा पहुंचा. सन 1887 में छै बरस की उम्र में उन्होंने हेलेन को एक अन्धी शिक्षक मिस सलीवान के सुपुर्द कर दिया. इनसानियत के लिये यह एक दिलचस्प कहानी है कि किस तरह



کو اہمیت دی جاتی رہے گی تب تک دنیا کا چھٹکارا اِن جنگوں سے نہیں ہو سکتا . یہ بات ناممکن ہے کہ ہتیار بندی دھیرے دھیرے کم کرتے کرتے ختم کی جا سکتی ہے . یا تو دنیا سے ہتیار یکبارگی مٹا دیئے جائیں گے یا پھر بالکل ہی نہ مٹیں گے . جب تک فوجیں برقرار ہیں تب تک چھوٹی سے چھوٹی چنگاری بھی جنگ کی آگ کو بھڑکا سکتی ہے . جب لوگ پریم اور شانتی کی اہمیت سمجھیں گے تبھی دنیا ترقی کی ایک نئی منزل پر پہونچے گی . ترقی کے اُس شکھر پر پہونچ کر مانو سنتان جنگ کو اپنے بزرگوں کا ایک حیوانی کوکرتیہ سمجھیں گی . یہ صحیح ہے کہ ایسے اِنسانوں کی تعداد آج تھوڑی ہے لیکن اِنھیں کی بڑھتی ہوئی طاقت اِس بات کا فیصلہ کرے گی کہ اِنسانی قوم کب تک ہنسا اور نفرت کے اُس خوفناک اندھکار میں دھکے کھاتے پڑی رہے گی جسے کچھ اندھے لوگ آج اپنا آدرش سمجھ رہے ہیں ."

پچھلے بڑے جنگ کے سلسلے میں پردرد آواز کے ساتھ آئنسٹین نے کہا تھا—" آج ہمارا آتم بل کافی ثابت نہیں ہوا . آج کروڑوں اِنسان مون ہو کر جنگ کے بھینکر تماشے کو دیکھ رہے ہیں . جو لوگ شانتی مئے طریقوں کو دنیا کے لئے کلیان کاری سمجھتے ہیں وے بھی ہنسا کے ساتھ سمجھوتے کو ایک سیاسی دور اندیشی سمجھ رہے ہیں . لیکن اُن کی یہ دوراندیشی اِنسانیت کے ساتھ کیا ہوا ایک ایسا بھینکر جرم ہے جو ناقابل معافی ہے . لیکن چونکہ ہم خود اِنسان ہیں اِس لئے مانوتا سے مایوس ہونے میں ہمارا کلیان نہیں . آج بھی یہ بڑی آشا کی بات ہے کہ گاندھی جیسا ویکتی مانوتا کو خون کے دلدل سے باہر نکالنے کی انتھک کوششیں کر رہا ہے ."

آئنسٹین کی موت سے نہ صرف دنیا کا سب سے بڑا ویگیانک اٹھ گیا بلکہ شانتی اور پریم کا ایک زبردست پجاری چل بسا . موت نے آئنسٹین کی جو جگہ خالی کی ہے اُس کے آسانی سے بھرنے کی کوئی اُمید دکھائی نہیں دیتی .

—وشومبھر ناتھ پانڈے

## اندھوں کی مسیحا—ہیلین کیلر

پچھلے تین مہینے سے ڈاکٹر ہیلین کیلر ہندستان میں گھوم گھوم کر اِس دیش کے اندھوں کو اُمید کا ایک پیغام دے رہی ہیں . وہ اِنسان کی لامحدود ( اپری مت ) اہمیت اپنی نجی زندگی کو سامنے رکھکر بیان کر رہی ہیں . اپنے جنم کے بعد 19 مہینوں تک وہ ایک سادھارن ششو کی طرح تھیں . پھر اُنھیں یکایک تیز بخار آیا اور وے اندھی، بہری اور گونگی بن گئیں. ماں باپ کو سخت صدمہ پہونچا. سن 1887 میں چھ برس کی عمر میں اُنھوں نے ہیلین کو ایک اندھی شکشک مس سلیوان کے سپرد کر دیا . اِنسانیت کے لئے یہ ایک دلچسپ کہانی ہے کہ کس طرح

लेकिन आइन्स्टीन का आत्मबल के ऊपर बेहद विश्वास था. उन्होंने लिखा था—"दुनिया की सारी दौलत और उसकी भौतिक तरक़्क़ी उसे इस बरबादी से नहीं बचा सकती. सिर्फ़ महात्माओं की साधनायें और उनकी रूहानी क़ुरबानियां ही उसकी हिफ़ाज़त कर सकती हैं. दौलत और दुनयवी तरक़्क़ी हमेशा इनसानी ख़ुदग़र्ज़ियों को बढ़ाती है. बुद्ध, ईसा और गान्धी ने जो रूहानी इनक़लाब किये क्या यह वे रुपयों की थैलियों के बल कर सकते थे ? उनका चमत्कार तो आत्मबल का ही चमत्कार है और दुनिया के कल्याण का रास्ता दौलत की चाह नहीं बल्कि अपरिग्रह है."

मज़हब और साइन्स की कशमकश के बारे में आइन्स्टीन ने लिखा था—"जब कि साइन्स नैतिक सदाचरण को इनसानी बरताव की कसौटी मानता है मज़हब डर की भावना पैदा करके, इस दुनिया में और आने वाली दुनिया में, इनसानों के आचरण का नियंत्रण करता है. इसी साफ़ ऐलान की वजह से मज़हब के साथ साइन्स की बराबर लड़ाई होती रही है. नैतिक सदाचरण की भावना ने ही वैज्ञानिक अनुसन्धान को बेहद प्रोत्साहन दिया. केपलर और न्यूटन ने जाने कितने बरसों तक साधना की होगी तब कहीं वे अपनी खोजों में कामयाब हुये. सच पूछा जाय तो आज की इस माद्दापरस्त दुनिया में साइन्सदां ही सच्चे मानों में मज़हबी आदमी हैं. इनसान अपने आपे को मांझकर ही महान बनता है. गान्धी जैसे महात्मा तो कलचरी मंझन से ही पैदा होते हैं."

वैज्ञानिक के धर्म के सम्बन्ध में आइन्स्टीन ने लिखा है—'वैज्ञानिक क़ुदरत की अलग अलग सिफ़तों के बीच जो समन्वयात्मक एका है उसको साक्षात करके हैरान रह जाता है. प्रकृति का यह साक्षात्कार ही वैज्ञानिक का अपना धर्म है. यही साक्षात्कार उसके अन्दर आध्यात्मिक भावना भरता है. आज इनसानी क़ौम की क़िस्मत का फ़ैसला इस आध्यात्मिक शक्ति पर है. आज दुनिया विरोधी विचारों के चौराहे पर खड़ी है. आज उसे फ़ैसला करना है कि वह त्याग, शांति और कलचर के रास्ते पर चलेगी अथवा हिंसा, एटम और हाइड्रोजन बम और बरबादी के रास्ते पर चलेगी. पहला रास्ता व्यक्ति की आज़ादी और समाज के कल्याण का रास्ता है और दूसरा रास्ता व्यक्ति की ग़ुलामी और सभ्यता की बरबादी का रास्ता है. जो भी रास्ता हम पकड़ेंगे उसी के मुताबिक़ हमारी क़िस्मत का फ़ैसला होगा ?"

विश्वशान्ति और युद्धों के बारे में आइन्स्टीन ने लिखा है—"आज दुनिया का क़रीब क़रीब हर मुल्क संसार व्यापी जंग की तैयारी में लगा है. एक बड़ी जङ्ग ख़त्म होती है और दूसरी की तैयारी शुरू हो जाती है. जब तक चन्द राजनीतिज्ञ दुनिया की क़िस्मत की रहनुमाई करते रहेंगे, जब तक क़ौमी ग़ुरूर की परिस्तिश होती रहेगी, जब तक जङ्ग की भावना

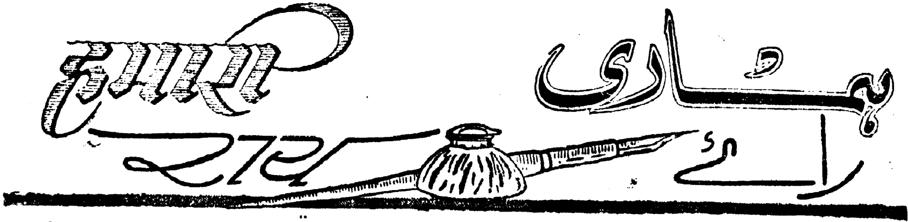


لیکن آئنسٹین کا آتم بل کے اوپر بےحد وشواس تھا. اُنھوں نے لکھا تھا—" دنیا کی ساری دولت اور اُس کی بھوتک ترقی اُسے اس بربادی سے نہیں بچا سکتی. صرف مہاتماؤں کی سادھنائیں اور اُن کی روحانی قربانیاں ھی اُس کی حفاظت کر سکتی ھیں. دولت اور دنیوی ترقی ھمیشہ اِنسانی خودغرضیوں کو بڑھاتی ھے. بدھ، عیسیٰ اور گاندھی نے جو روحانی اِنقلاب کئے کیا یہ وے روپیوں کی تھیلیوں کے بل پر کر سکتے تھے؟ اُن کا چمتکار تو آتم بل کا ھی چمتکار ھے اور دنیا کے کلیان کا راستہ دولت کی چاہ نہیں بلکہ اپریگرہ ھے."

مذھب اور سائنس کی کشمکش کے بارے میں آئنسٹین نے لکھا تھا—" جب کہ سائنس نیتک سداچرن کو اِنسانی برتاؤ کی کسوٹی مانتا ھے مذھب ڈر کی بھاؤنا پیدا کر کے اِس دنیا میں اور آنے والی دنیا میں، اِنسانوں کے آچرن کا نیئنترن کرتا ھے. اِسی صاف اعلان کی وجہ سے مذھب کے ساتھ سائنس کی برابر لڑائی ھوتی رھی ھے. نیتک سداچرن کی بھاؤنا نے ھی ویگیانک انوسندھان کو بےحد پروتساھن دیا. کیپلر اور نیوٹن نے جانے کتنے برسوں تک سادھنا کی ھوگی تب کہیں وے اپنی کھوجوں میں کامیاب ھوئے. سچ پوچھا جائے تو آج کی مادہ‌پرست دنیا میں سائنسداں ھی سچے معنوں میں مذھبی آدمی ھیں. اِنسان اپنے آپے کو مانجھ‌کر ھی مہان بنتا ھے. گاندھی جیسے مہاتما تو کلچری مانجھن سے ھی پیدا ھوتے ھیں."

ویگیانک کے دھرم کے سمبندھ میں آئنسٹین نے لکھا ھے—" ویگیانک قدرت کی الگ الگ صفتوں کے بیچ جو سمنویاتمک ایکا ھے اُس کو ساکشات کر کے حیران رہ جاتا ھے. پرکرتی کا یہ ساکشاتکار ھی ویگیانک کا اپنا دھرم ھے. یہی ساکشاتکار اُس کے اندر ادھیاتمک بھاؤنا بھرتا ھے. آج اِنسانی قوم کی قسمت کا فیصلہ اِس ادھیاتمک شکتی پر ھے آج دنیا وِرودھی وچاروں کے چوراھے پر کھڑی ھے. آج اسے فیصلہ کرنا ھے کہ وہ تیاگ، شانتی اور کلچر کے راستے پر چلے گی اتھوا ھنسا، ایٹم اور ہائڈروجن بم اور بربادی کے راستے پر چلیگی. پہلا راستہ ویکتی کی آزادی اور سماج کے کلیان کا راستہ ھے اور دوسرا راستہ ویکتی کی غلامی اور سبھیتا کی بربادی کا راستہ ھے. جو بھی راستہ ھم پکڑینگے اُسی کے مطابق ھماری قسمت کا فیصلہ ھوگا."

وشو شانتی اور یدھوں کے بارے میں آئنسٹین نے لکھا ھے—" آج دنیا کا قریب قریب ھر ملک سنسار ویاپی جنگ کی تیاری میں لگا ھے. ایک بڑی جنگ ختم ھوتی ھے اور دوسری کی تیاری شروع ھو جاتی ھے. جب تک چند راجنیتگیہ دنیا کی قسمت کی رھنمائی کرتے رھیں گے، جب تک قومی غرور کی پرستش ھوتی رھے گی، جب تک جنگ کی بھاؤنا




## अल्बर्ट आइन्स्टीन

18 अप्रैल सन 55 को रेडियो ने सारी दुनिया को यह पुरदर्द इत्तला दी कि करीब 76 बरस की उम्र में उस दिन दुनिया के मशहूर वैज्ञानिक ( साइन्सदां ) डाक्टर अल्बर्ट आइन्स्टीन की मौत हो गई. डाक्टर आइन्स्टीन की मौत से जो जगह खाली हुई उसे आसानी से नहीं भरा जा सकता. वे महज एक साइन्सदां ही नहीं थे बल्कि यह बात कही जा सकती है कि आजकल की साइन्स की खोजों के वे सबसे बड़े स्रोत थे. गणित में सापेक्षवाद ( Theory of Relativity ) की खोज उन्हीं की की हुई है. एटामिक खोजों को मूर्त रूप देने में उनका बहुत बड़ा हाथ था. उन्हें 1921 में भौतिक विज्ञान पर नोबुल पुरस्कार मिला. साइन्सदाओं का ख्याल है कि दुनिया में साइन्स की तरक्की पर जिन दो वैज्ञानिकों में इनक़लाबी असर डाला उनमें एक कापर्निकस था और दूसरा आइन्स्टीन.

आइन्स्टीन का जनम 14 मार्च 1879 ईसवी में उल्म, बुटेनबर्ग, आस्ट्रिया में हुआ था. क़ौमियत से वह जर्मन यहूदी थी. सन 1933 में नाज़ीवाद के फैलाव के साथ साथ आइन्स्टीन को अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा. उनकी क़ौमियत जब्त कर ली गई. इस पर दुनिया के 34 देशों ने उन्हें अपने देश की क़ौमियत और शरण देने की दावत दी. आइन्स्टीन पहले आक्सफ़ोर्ड में जाकर रहे और बाद में अमरीका चले गये. सन् 1940 में वे प्रिन्स्टन में साइन्स के प्रोफ़ेसर के पद पर मुक़र्रर हुये.

जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं आइन्स्टीन जर्मन थे. किन्तु अपने देश की जर्मन जनता की गिरावट देखकर जनता के ऊपर से उनका विश्वास सा उठ गया था. सन् 1941 में उन्होंने लिखा था—"भेड़ जैसी जनता को 10 दिन के अन्दर अख़बारों के ज़रिये इतना उकसाया जा सकता है कि वह राजनैतिक गिरोहों की जटियल ख़ुदग़र्ज़ियों के लिये अपना और दूसरों का ख़ून बहाने को तैयार हो सकती है. ज़ाती पतन की इससे बड़ी दूसरी मिसाल और कौन हो सकती है कि लोग जबरिया फ़ौजी तालीम के आगे सर झुकायें. ऐसी हालत में अगर कोई इस सभ्यता के नाश की पेशीनगोई करे तो इसमें ताज्जुब की कौनसी बात है ?"

## البرٹ آئنسٹین

18 اپریل سن '55 کو ریڈیو نے ساری دنیا کو یہ پردرد اطلاع دی کہ قریب 76 برس کی عمر میں اس دن دنیا کے مشہور ویگیانک ( سائنسداں ) ڈاکٹر البرٹ آئنسٹین کی موت ہوگئی. ڈاکٹر آئنسٹین کی موت سے جو جگہ خالی ہوئی اسے آسانی سے نہیں بھرا جا سکتا. وے محض ایک سائنسداں ہی نہیں تھے بلکہ یہ بات کہی جا سکتی ہے کہ آجکل کی سائنس کی کھوجوں کے وے سب سے بڑے سروت تھے. گنت میں ساپیکش واد (Theory of Relativity) کی کھوج انہیں کی کی ہوئی ہے. ایٹمک کھوجوں کو مورت روپ دینے میں ان کا بہت بڑا ہاتھ تھا. انہیں سن 1921 میں بھوتک وگیان پر نوبل پرسکار ملا. سائنسداؤں کا خیال ہے کہ دنیا میں سائنس کی ترقی پر جن دو ویگیانکوں میں انقلابی اثر ڈالا ان میں ایک کاپرنیکس تھا اور دوسرا آئنسٹین

آئنسٹین کا جنم 14 مارچ سن 1879 عیسوی میں الم، برٹین برگ، آسٹریا میں ہوا تھا. قومیت سے وہ جرمن یہودی تھی. سن 1933 میں نازی واد کے پھیلاؤ کے ساتھ ساتھ آئنسٹین کو اپنے پد سے استیفیٰ دینا پڑا. ان کی قومیت ضبط کرلی گئی. اس پر دنیا کے 34 دیشوں نے انہیں اپنے دیش کی قومیت اور شرن دینے کی دعوت دی. آئنسٹین پہلے آکسفورڈ میں جا کر رہے اور بعد میں امریکہ چلے گئے. سن 1940 میں وے پرنسٹن میں سائنس کے پروفیسر کے پد پر مقرر ہوئے.

جیسا ہم اوپر چکے ہیں آئنسٹین جرمن تھے. کنتو اپنے دیش کی جرمن جنتا کی گراوٹ دیکھ کر جنتا کے اوپر سے ان کا وشواس سا اٹھ گیا تھا. سن 1941 میں انہوں نے لکھا تھا—" بھیڑ جیسی جنتا کو 10 دن کے اندر اخباروں کے ذریعے اتنا اکسایا جا سکتا ہے کہ وہ راجنیتک گروہوں کی ذلیل خودغرضیوں کے لئے اپنا اور دوسروں کا خون بہانے کو تیار ہو سکتی ہے. ذاتی پتن کی اس سے بڑی دوسری مثال اور کون ہو سکتی ہے کہ لوگ جبریا فوجی تعلیم کے آگے سر جھکائیں. ایسی حالت میں اگر کوئی اس سبھیتا کے ناش کی پیشینگوئی کرے تو اس میں تعجب کی کون سی بات ہے ؟"

लेखक के मुताबिक़ हिन्दी और उर्दू दोनों की एक ही शुरूआत थी. लेखक के शब्द हैं—"लगभग 18वीं सदी के अन्त तक 'उर्दू', शब्द का प्रयोग ( इन्तेमाल ) भाषा ( ज़बान ) के अर्थ में नहीं मिलता, उसकी जगह 'रेख़्ता' या 'हिन्दी' दो ही शब्द कवियों की ज़बान पर चढ़े थे...19वीं शताब्दी के आरम्भ से. कुछ पहले उर्दू का शब्द भी भाषा के अर्थ में बोला जाने लगा. उसी समय से यूरोपियन लेखकों ने इसे हिन्दुस्तानी कहना भी आरम्भ किया."

दूसरे अध्याय में लेखक ने दक्षिण भारत में उर्दू ज़बान की तरक़्क़ी की तारीख़ दी है. जिस तरह उत्तर में ख़ुसरो का नाम मशहूर है उसी तरह दक्षिण में बन्दा नवाज़ गेसू दराज़ का नाम मशहूर है. उनकी शायरी का एक नमूना देखें:—

"नबी कहे तहक़ीक़ के दरमियान ते सत्रह हज़ार पर्दे, उजियाले के, हौर अंधियारे के, अगर उसमें ते एक पर्दा उठ जाये तो उसकी आंच ते मैं जलूं."

15वीं सदी में दक्खिन भारत के शाह मीरान जी के एक उर्दू पद का नमूना देखें—

केते ज्ञान भगत वैरागी केते मूर्ख गंवार,
एक जिन एक मानस कीता एक पुरुष एक नार.

मीरान जी के पुत्र बुरहानुद्दीन का एक उर्दू पद है—

यह रूप प्रगट आप छिपाया कोई न पाया अन्त,
माया मोह में सब जग बांध्या क्योंकर सूझे पन्त.

लेखक वली को उर्दू का पहला कवि नहीं मानता, वह उन्हें दक्खिन भारत का एक बड़ा कवि मानता है जिनकी ज़बान बोल चाल की ज़बान के क़रीब थी.

तीसरे अध्याय में 18वीं सदी में दिल्ली के उर्दू शायरों के हालात लेखक ने बयान किये हैं. चौथे अध्याय में अवधी और उर्दू साहित्य का चर्चा है. पांचवें अध्याय में नज़ीर अकबराबादी की ख़ास तौर पर चर्चा की गई है. अध्याय छै में दिल्ली के शायरों के आख़री दौर की चर्चा है. इनमें ज़ौक़, ग़ालिब और बहादुर शाह 'ज़फ़र' का नाम ख़ास तौर पर लिया गया है. सातवें अध्याय में उर्दू गद्य ( नस्र ) के विकास पर रोशनी डाली गई है. इनमें शुरूर की मशहूर रचना 'फ़िसानए अजायब' की ख़ास तौर पर चर्चा की गई है. आठवां अध्याय इस ज़माने की शुरूआत से पहले के गद्य और पद्य का ज़िक्र करता है. फिर लेखक ने पचास सफ़ों में नये उर्दू अदब का तज़किरा किया है. आख़री अध्याय में उर्दू के भविष्य की चर्चा की गई है. इसमें मौजूदा नये उर्दू शायरों और गद्य लेखकों का संक्षिप्त चर्चा है. आख़ीर में कुछ पारिभाषिक शब्द और किताबों की फ़ेहरिस्त दी है जिनसे इस किताब के लिखने में मदद ली गई है.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

———



لیکھک کے مطابق ھندی اور اردو دونوں کی ایک ھی شروعات تھی. لیکھک کے شبد ھیں—" لگ بھگ 18ویں صدی کے انت تک ' اردو ' شبد کا پریوگ ( اِستعمال ) بھاشا ( زبان ) کے ارتھ میں نہیں ملتا، اُس کی جگہ ' ریختہ ' یا ' ھندی ' دو ھی شبد کویوں کی زبان پر چڑھے تھے......19ویں شتابدی کے آرمبھ سے. کچھ پہلے اردو کا شبد بھی بھاشا کے ارتھ میں بولا جانے لگا. اُسی سمے سے یوروپین لیکھکوں نے اِسے ھندستانی کہنا بھی آرمبھ کیا."

دوسرے ادھیائے میں لیکھک نے دکشن بھارت میں اردو زبان کی ترقی کی تاریخ دی ھے. جس طرح اُتر میں خسرو کا نام مشہور ھے اُسی طرح دکھن میں بندہ نواز گیسو دراز کا نام مشہور ھے. اُن کی شاعری کا ایک نمونہ دیکھیں—

" نبی کہے تحقیق کے درمیان تے سترہ ھزار پردے، اُجیالے کے، ھور اندھیارے کے، اگر اُس میں تے ایک پردا اُٹھ جائے تو اُس کی آنچ تے میں جلوں."

15ویں صدی میں دکھن بھارت کے شاہ میران جی کے ایک اُردو پد کا نمونہ دیکھیں—

کیتے گیان بھگت ویراگی کیتے مورکھ گنوار،
ایک جن ایک مانس کیتا ایک پروش ایک نار.

میران جی کے پتر برھان الدین کا ایک اُردو پد ھے—

یہ روپ پرگٹ آپ چھپایا کوئی نہ پایا انت،
مایا موہ میں سب جگ باندھیا کیونکر سوجھے پنت.

لیکھک ولی کو اُردو کا پہلا کوی نہیں مانتا، وہ اُنھیں دکھن بھارت کا ایک بڑا کوی مانتا ھے جن کی زبان بول چال کی زبان کے قریب تھی.

تیسرے ادھیائے میں 18ویں صدی میں دلی کے اُردو شاعروں کے حالات لیکھک نے بیان کئے ھیں. چوتھے ادھیائے میں اودھی اور اُردو ساھتیہ کا چرچا ھے. پانچویں ادھیائے میں نظیر اکبرآبادی کی خاص طور پر چرچا کی گئی ھے. ادھیائے چھ میں دلی کے شاعروں کے آخری دور کی چرچا ھے. اِن میں ذوق، غالب اور بہادر شاہ ' ظفر ' کا نام خاص طور پر لیا گیا ھے. ساتویں ادھیائے میں اردو گدیہ ( نثر ) کے وکاس پر روشنی ڈالی گئی ھے. اِن میں شرور کی مشہور رچنا ' فسانۂ عجایب ' کی خاص طور پر چرچا کی گئی ھے. آٹھواں ادھیائے اِس زمانے کی شروعات سے پہلے کے گدیہ اور پدیہ کا ذکر کرتا ھے. پھر لیکھک نے پچاس صفحوں میں نئے اُردو ادب کا تذکرہ کیا ھے. آخری ادھیائے میں اُردو کے بھوشیہ کی چرچا کی گئی ھے. اِس میں موجودہ نئے اُردو شاعروں اور گدیہ لیکھکوں کا سنکچھپت چرچا ھے. آخیر میں کچھ پریبھاشک شبد اور اُن کتابوں کی فہرست دی ھے جن سے اِس کتاب کے لکھنے میں مدد لی گئی ھے.

— وشومبھر ناتھ پانڈے

———

कस्तूरबा गान्धी ट्रस्ट का सारा काम उनके सुपुर्द हो गया जिसका मक़सद था गांव की बहिनों के लिये ग्राम सेविकायें तैयार करना.

बापा का असली नाम था अमृतलाल ठक्कर, लेकिन आदर और प्यार से लोग उन्हें ठक्कर बापा कहा करते थे. अपने काम के सिलसिले में ठक्कर बापा को पूर्वी अफरीक़ा में भी रहना पड़ा और वहां के लोगों के रहन सहन और रस्म रिवाजों को उन्हें नज़दीक से देखने का मौक़ा मिला. हिन्दुस्तान में रह कर उनके मन में सेवा की तड़प उठी तो वह स्वर्गीय गोखले के सम्पर्क में आये.

ठक्कर बापा ने लोहाणा जाति की घोघारी शाखा में जन्म लिया था. सन 1910 में वे ऐसे प्रीति भोज में शामिल हुये जिसमें दो हरिजन भी थे. जाति पंचायत ने उन्हें जवाब देने के लिये तलब किया. दन्ड स्वरूप उन्हें 150 रुपया जुर्माना देना पड़ा और अनिवार्य प्रायश्चित्त करना पड़ा. उस घटना ने उनके दिल को खूब मथा और नतीजा यह हुआ कि वे भीलों, आदिवासियों और हरिजनों के महान सेवक बन गये.

अकाल पीड़ितों, हरिजनों और आदिवासियों की सेवा में समाज सेवकों के सामने जो कठिनाइयां आती हैं बापा के इस जीवन प्रसंग से उनपर काफ़ी रोशनी पड़ती है. बापा का यह जीवन चरित बहुत ही दिलचस्प और शिक्षाप्रद है. प्रत्येक समाज सेवी को यह पुस्तक ज़रूर पढ़नी चाहिये.

पांचवीं किताब 'हरिजन सेवकों के लिये' गांधी जी के लेखों का संग्रह है. ये उन समाज सेवकों को रास्ता दिखाने के लिये हैं जिन्होंने हरिजन सेवा को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बना लिया है. गान्धी जी के लेखों का यह संग्रह बड़े महत्व का है.

## उर्दू साहित्य का इतिहास

लिखने वाले—सैयद एहतिशाम हुसेन, शाया करने वाले—अन्जुमने तरक़्क़ीए-उर्दू ( हिन्द ) अलीगढ़; सफ़े—360 ( डिमाइ ); हिन्दी लिपि; क़ीमत सात रुपये चार आने.

पुस्तक संस्कृताई हिन्दी में लिखी गई है और 11 अध्यायों में बंटी है. पहले अध्याय में उर्दू जबान के जनम और बचपन का हाल है. लेखक के मुताबिक़ उर्दू को पहले 'हिन्दवी', हिन्दुई', 'दकनी' या 'दखनी' नाम से पुकारा जाता था. लेखक के मुताबिक़ इस जबान की दाग़बेल खिलजियों और तुग़लकों के वक़्त में पड़ी. यही जमाना अमीर ख़ुसरो का जमाना था. और अमीर ख़ुसरो की यह जबान उस वक़्त की उर्दू थी—

गोरी सोवे सेज पर, और मुख पर डारे केस,
चल ख़ुसरो घर आपने, रैन भई सब देस.



کستوربا گاندھی ترسٹ کا سارا کام اُنکے سپرد ہوگیا جس کا مقصد تھا گاؤں کی بہنوں کے لئے گرام سیوکائیں تیار کرنا .

باپا کا اصلی نام تھا امرت لعل ٹھکر' لیکن آدر اور پیار سے لوگ اُنھیں ٹھکر باپا کہا کرتے تھے . اپنے کام کے سلسلے میں ٹھکر باپا کو پوربی افریقہ میں بھی رہنا پڑا اور وہاں کے لوگوں کے رھن سہن اور رسم رواجوں کو اُنھیں نزدیک سے دیکھنے کا موقعہ ملا . ھندستان میں رہ کر اُن کے من میں سیوا کی تڑپ اُٹھی تو وہ سورگیہ گوکھلے کے سمپرک میں آئے .

ٹھکر باپا کے لوھانا جاتی کی گھوگھاری شاکھا میں جنم لیا تھا . سن 1910 میں وے ایسے پرتی بھوج میں شامل ہوئے جس میں دو ھریجن بھی تھے . جاتیہ پنچایت نے اُنھیں جواب دینے کے لئے طلب کیا . دنڈ سروپ اُنھیں 150 روپیہ جرمانہ دینا پڑا اور انیواریہ پراشچت کرنا پڑا . اُس گھٹنا نے اُن کے دل کو خوب متھا اور نتیجہ یہ ھوا کہ وے بھیلوں' آدی واسیوں اور ھریجنوں کے مہان سیوک بن گئے .

اکال پیڑتوں' ھریجنوں اور آدی واسیوں کی سیوا میں سماج سیوکوں کے سامنے جو کٹھنائیاں آتی ھیں باپا کے اِس جیون پرسنگ سے اُن پر کافی روشنی پڑتی ھے . باپا کا یہ جیون چرت بہت ھی دلچسپ اور شکشا پرد ھے . پرتیک سماج سیوی کو یہ پستک ضرور پڑھنی چاھئے .

پانچویں کتاب ' ھریجن سیوکوں کے لئے ' گاندھی جی کے لیکھوں کا سنگرہ ھے . یہ اُن سماج سیوکوں کو راستہ دکھانے کے لئے ھیں جنھوں نے ھریجن سیوا کو اپنی زندگی کا مقصد بنا لیا ھے . گاندھی جی کے لیکھوں کا یہ سنگرہ بڑے مہتو کا ھے .

## اُردو ساھتیہ کا اِتہاس

لکھنے والے—سید احتشام حسین؛ شائع کرنے والے—انجمن ترقئی اُردو (ھند) علیگڑھ؛ صفحے—360 ( ڈیمائی ؛ ھندی لپی؛ قیمت سات روپئے چار آنے .

پستک سنسکرتائی ھندی میں لکھی گئی ھے اور 11 ادھیایوں میں بنٹی ھے . پہلے ادھیائے میں اُردو زبان کے جنم اور بچپن کا حال ھے . لیکھک کے مطابق اردو کو پہلے 'ھندوی' ' ھندوئی ' ' دکنی' یا ' دکھنی ' نام سے پکارا جاتا تھا . لیکھک کے مطابق اِس زبان کی داغ بیل خلجیوں اور تغلقوں کے وقت میں پڑی . یہی زمانہ امیر خسرو کا زمانہ تھا . اور امیر خسرو کی یہ زبان اُس وقت کی اردو تھی—

گوری سووے سیج پر' اور مکھ پر ڈارے کیس'
چل خسرو گھر آپنے' رین بھئی سب دیس .

जिन्दगी पर क्या तामीरी असर डाला उसकी झांकी हमें इस किताब में खुद गान्धी जी के शब्दों में मिलती है. इस नुक़्ते नजर से यह किताब सियासत के विद्यार्थी के लिये अपनी अहम जगह रखती है.

दूसरी किताब 'बा और बापू की शीतल छाया में' मनु बहन की लिखी हुई है. कुमारी मनु की यह तीसरी किताब है. इसके पहले 'बापू—मेरी मां' और 'कलकत्ते का चमत्कार' नाम की दो किताबें छप चुकी हैं. मनु रिश्ते में गान्धी जी की पोती हैं और 1942 से गान्धी जी के बलिदान के दिन तक उनके साथ रहीं. इस किताब में मनु ने बड़े सरल और स्वाभाविक तरीक़े से बा और बापू के साथ अपने संस्मरणों की झांकियां पेश की हैं. इतने स्वाभाविक रूप से बोल चाल की तरह पुस्तक लिखी गई है कि एक बार उठा कर बिना पूरा किये रखने का मन नहीं करता. बापू और बा के बारे में इस किताब के पन्नों में बड़े सुन्दर संस्मरण हमें पढ़ने को मिलते हैं.

तीसरी किताब 'बापू' गान्धी भक्त श्री रामनारायन चौधरी की लिखी है. श्री चौधरी राजस्थान के प्रसिद्ध कार्यकर्ता रहे हैं और अनेकों बरस तक चौधरी दम्पति बापू के साथ रहे हैं, साबरमती में और सेवा ग्राम में भी. इस किताब में श्री रामनारायण चौधरी ने बापू के साथ अपने लम्बे साथ की 288 यादें दर्ज की हैं. उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अंजना देवी ने बापू और बा के साथ की 14 दिलचस्प और शिक्षा-प्रद झांकियां पेश की हैं. गान्धी जी के जीवन प्रसंग पर, उनके जीवन अमल पर, उनके विचारों पर, उनके उसूलों और आदर्शों पर, उनके साधनों और साधना पर बड़ी सुन्दर रोशनी पड़ती है. पुस्तक गान्धी जी के जीवन परिचय की दृष्टि से क़ीमती है.

चौथी किताब कान्तिलाल शाह की लिखी हुई 'ठक्कर बापा' है. ठक्कर बापा का यह जीवन चरित हिन्दी साहित्यक जीवन चरित भाग को बड़े हद तक पूरा करता है. ठक्कर बापा ने लम्बी 81 बरस की जिन्दगी पाई. 45 बरस से बाद का उनका सारा जीवन सेवा और ख़िदमत का जीवन था. 34 बरस तक उन्होंने समाज की अनवरत सेवा की और 81 बरस की उम्र में दुनिया से बिदा ली.

ठक्कर बापा का जन्म भावनगर ( सौराष्ट्र ) में हुआ था. पेशे से वह इञ्जीनियर थे. कई जगह रहने के बाद बम्बई कार्पोरेशन में वह सैनेटरी इञ्जीनियर के पद पर नियुक्त हुए. वहीं से नौकरी छोड़ कर सेवा के काम में लग गये. भीलों की सेवा पहले चुनी बाद में समस्त आदिबासियों तक उनकी सेवा का क्षेत्र फैल गया. गान्धी जी के वह गहरे दोस्तों में से थे. इसलिये कुदरती तौर पर हरिजन सेवा के काम की बड़ी ज़िम्मेवारी ठक्कर बापा ने सम्भाली. बाद में



زندگی پر کیا تعمیری اثر ڈالا اُس کی جھانکی ہمیں اِس کتاب میں خود گاندھی جی کے شبدوں میں ملتی ہے ۔ اِس نقطہ نظر سے یہ کتاب سیاست کے ودیارتھی کے لئے اپنی اہم جگہ رکھتی ہے ۔

دوسری کتاب 'با اور باپو کی شیتل چھایا میں' منو بہن کی لکھی ہوئی ہے ۔ کماری منو کی یہ تیسری کتاب ہے ۔ اِس کے پہلے 'باپو—میری ماں' اور 'کلکتے کا چمتکار' نام کی دو کتابیں چھپ چکی ہیں ۔ منو رشتے میں گاندھی جی کی پوتی ہیں اور 1942 سے گاندھی جی کے بلیدان کے دن تک ان کے ساتھ رہیں ۔ اِس کتاب میں منو نے بڑے سرل اور سوابھاوک طریقے سے با اور باپو کے ساتھ اپنے سنسمرنوں کی جھانکیاں پیش کی ہیں ۔ اِتنے سوابھاوک روپ سے بول چال کی طرح پستک لکھی گئی ہے کہ ایک بار اُٹھاکر بنا پورا کئے رکھنے کا من نہیں کرتا ۔ باپو اور با کے بارے میں اِس کتاب کے پنّوں میں بڑے سندر سنسمرن ہمیں پڑھنے کو ملتے ہیں ۔

تیسری کتاب 'باپو' گاندھی بھکت شری رام ناتھ چودھری کی لکھی ہے ۔ شری چودھری راجستھان کے پرسدھ کاریہ کرتا رہے ہیں اور انیکوں برس تک چودھری دمپتی باپو کے ساتھ رہے ہیں' سابرمتی میں اور سیوا گرام میں بھی ۔ اِس کتاب میں شری رام نارائن چودھری نے باپو کے ساتھ اپنے لمبے ساتھ کی 288 یادیں درج کی ہیں ۔ اُن کی دھرم پتنی شریمتی انجنا دیوی نے باپو اور با کے ساتھ کی 14 دلچسپ اور شکشاپرد جھانکیاں پیش کی ہیں ۔ گاندھی جی کے جیون پرسنگ پر' اُن کے جیون عمل پر' اُن کے وچاروں پر' اُن کے اصولوں اور آدرشوں پر' اُن کے سادھنوں اور سادھنا پر بڑی سندر روشنی پڑتی ہے ۔ پستک گاندھی جی کے جیون پریچے کی درشٹی سے قیمتی ہے ۔

چوتھی کتاب کانتی لال شاہ کی لکھی ہوئی 'ٹھکر باپا' ہے ۔ ٹھکر باپا کا یہ جیون چرت ہندی ساہتیک جیون چرت بھاگ کو بڑے حد تک پورا کرتا ہے ۔ ٹھکر باپا نے لمبی 81 برس کی زندگی پائی ۔ 45 برس سے بعد کا اُن کا سارا جیون سیوا اور خدمت کا جیون تھا ۔ 34 برس تک اُنھوں نے سماج کی انورت سیوا کی اور 81 برس کی عمر میں دنیا سے بدا لی ۔

ٹھکر باپا کا جنم بھاؤنگر ( سوراشٹر ) میں ہوا تھا ۔ پیشے سے وہ اِنجینیر تھے ۔ کئی جگہ رہنے کے بعد بمبئی کارپوریشن میں وہ سینیٹری اِنجینیر کے پد پر نیُکت ہوئے ۔ وہیں سے نوکری چھوڑکر سیوا کے کام میں لگ گئے ۔ بھیلوں کی سیوا پہلے چنی ۔ بعد میں سمست آدواسیوں تک اُنکی سیوا کا چھیتر پھیل گیا ۔ گاندھی جی کے وہ گہرے دوستوں میں سے تھے ۔ اِس لئے قدرتی طور پر ہریجن سیوا کے کام کی بڑی ذمہ واری ٹھکر باپا نے سنبھالی ۔ بعد میں

# कुछ किताबें

# کچھ کتابیں

## (1) गोखले ( मेरे राजनैतिक गुरु )

लिखने वाले—गान्धी जी; छापने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; सफ़े—64; दाम—एक रुपया.

## (2) बा और बापू की शीतल छाया में

लिखने वाली—कुमारी मनु बहन गान्धी; छापने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; सफ़े—242; दाम—ढाई रुपया.

## (3) बापू ( मैंने क्या देखा और क्या समझा ? )

लिखने वाले—रामनारायन चौधरी; छापने वाले—नव जीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; सफ़े--224; डिमाई साइज; दाम—तीन रुपये.

## (4) ठक्कर बापा

लिखने वाले—कान्तिलाल शाह; छापने वाले—ठक्कर बापा स्मारक समिति, दिल्ली; मिलने का पता—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; सफ़े—456; डिमाई साइज़ जिल्द वाली; दाम—पांच रुपया.

## (5) हरिजन सेवकों के लिये

लिखने वाले—गान्धी जी; छापने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; दाम—छै आने.

गान्धी साहित्य से ताल्लुक़ रखने वाली ये पांच क़ीमती किताबें हाल में छपकर निकली हैं. छपाई, सफ़ाई इन सबकी बहुत अच्छी है. पहली किताब गोखले खुद गान्धी जी के लेखों का संग्रह ( मजमुआ ) है. इसका पहला, दूसरा, पांचवां, आठवां और नवां मज़मून गान्धी जी की 'आत्म कथा' से लिया गया है. तीसरा, चौथा, छठा और सातवां मज़मून 'दक्षिण अफ़रीक़ा का सत्याग्रह' से लिया गया है. किताब की शक्ल में यह मज़मून पहली दफ़ा गुजराती में सन '50 में निकल चुके हैं. यह उसका हिन्दी तरजुमा है.

गोखले की न सिर्फ़ हिन्दुस्तान की सियासी जिन्दगी में क्या जगह थी बल्कि उनकी शख़्सियत ने गान्धी जी की

## (1) گوکھلے ( میرے راجنیتک گرو )

لکھنے والے—گاندھی جی؛ چھاپنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ صفحے—64؛ دام - ایک روپیہ .

## (2) با اور باپو کی شیتل چھایا میں

لکھنے والی—کماری منو بہن گاندھی؛ چھاپنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ صفحے—242؛ دام—ڈھائی روپیہ .

## (3) باپو ( میں نے کیا دیکھا' اور کیا سمجھا ؟ )

لکھنے والے—رام ناراین چودھری؛ چھاپنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ صفحے—224؛ ڈمائی سائز؛ دام—تین روپیہ .

## (4) ٹھکر باپا

لکھنے والے—کانتی لال شاہ؛ چھاپنے والے—ٹھکر باپا اسمارک سمیتی دلی؛ ملنے کا پتہ—نوجیون پرکاشن مندر احمدآباد؛ صفحے—455 ڈمائی سائز جلد والی' دام—پانچ روپیہ .

## (5) ھریجن سیوکوں کے لئے

لکھنے والے—گاندھی جی؛ چھاپنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ دام—چھ آنے .

گاندھی ساھتیہ سے تعلق رکھنے والی یہ پانچ قیمتی کتابیں حال میں چھپ کر نکلی ھیں . چھپائی' صفائی اِن سب کی بہت اچھی ھے . پہلی کتاب گوکھلے خود گاندھی جی کے لیکھوں کا سنگرہ ( مجموعہ ) ھے . اِس کا پہلا' دوسرا' پانچواں' آٹھواں اور نواں مضمون گاندھی جی کی 'آتم کتھا' سے لیا گیا ھے . تیسرا' چوتھا' چھٹا' اور ساتواں مضمون 'دکھن افریقہ کا ستیاگرہ' سے لیا گیا ھے . کتاب کی شکل میں یہ مضمون پہلی دفعہ گجراتی میں سن '50 میں نکل چکے ھیں . یہ اُس کا ھندی ترجمہ ھے .

گوکھلے کی نہ صرف ھندستان کی سیاسی زندگی میں کیا جگہ تھی بلکہ اُن کی شخصیت نے گاندھی جی کی

सौंदर्य के सामने प्रभुत्व तो भीगी बिल्ली बन जाता है. आसुरी शक्ति भी सौंदर्य के सामने सिर झुका देती है."
(काया कल्प)

"नौका पर बैठे हुए जल विहार करते समय हम जिन चट्टानों को घातक समझते हैं, और चाहते हैं कि कोई इन्हें खोदकर फेंक देता, इन्हीं से नौका टूट जाने पर हम चिमट जाते हैं."
(गोदान)

"सत्य की एक चिनगारी असत्य के एक पहाड़ को भस्म कर सकती है."
(गोदान)

भाषा सौंदर्य—

"वातावरण में षड़यंत्र की-सी कुंठा भरी हुई थी."
(गोदान)

"मालती बाहर से तितली है, भीतर से मधुमक्खी."
(गोदान)

"सूर्य के तेज से अभिभूत होकर वृक्षों ने अपना पसार समेट लिया था."
(गोदान)

"शंकर के कपड़े पहले भी त्याग की चरम सीमा तक पहुंच चुके थे अब वह प्रकृति की न्यूनतम रेखाओं में आबद्ध हो गये."
(सवा सेर गेहूं)

सरल वर्णन शैली का नमूना—

"......तीनों आदमी भीड़ चीरते हुए मिल के सामने जा पहुंचे. देखा तो अग्नि का एक सागर आकाश में उमड़ रहा था. अग्नि की उन्मत्त लहरें एक पर एक, दांत पीसती थीं, जीभ लपकाती थीं, जैसे आकाश को भी निगल जायेंगी. उस अग्नि समुद्र के नीचे ऐसा धुआं छाया था, मानो सावन की घटा कालिख में नहाकर नीचे उतर आई हो. उसके ऊपर जैसे आग का थरथराता हुआ, उबलता हुआ, हिमालय खड़ा था. अहाते में लाखों आदमियों की भीड़ थी, पुलिस भी थी, फ़ायर ब्रिगेड भी, सेवा समितियों के सेवक भी, पर सबके सब आग की भीषणता से मानो शिथिल हो गये हों. फ़ायर ब्रिगेड के छींटे उस अग्नि सागर में जाकर जैसे बुझ जाते थे. ईंटें जल रही थीं, लोहे के गर्डर जल रहे थे और पिघली हुई शक्कर के परनाले चारों तरफ़ बह रहे थे. और तो और जमीन से भी ज्वाला निकल रही थी."
(गोदान)

इस प्रकार सरल भाषा में, जनता की भाषा में, सरल और प्रवाह पूर्ण शैली में लिखा गया साहित्य—जैसा प्रेमचन्द ने लिखा—बहुत कम दिखाई देता है. हम चाहते हैं कि लोग अधिक से अधिक प्रेमचन्द साहित्य को पढ़ें और उसकी सरलता व स्वाभाविकता को अपनायें.

---



"سوندریہ کے سامنے پربھوتو بھیگی بلی بن جاتا ھے. آسوری شکتی بھی سوندریہ کے سامنے سر جھکا دیتی ھے.
( کایا کلپ )

نوکا پر بیٹھے ھوئے جل وہار کرتے سمے ھم جن چٹانوں کو گھاتک سمجھتے ھیں، اور چاھتے ھیں کہ کوئی انھیں کھود کر پھینک دیتا، انھیں سے نوکا ٹوٹ جانے پر ھم چمٹ جاتے ھیں."
( گودان )

"ستیہ کی ایک چنگاری استیہ کے ایک پہاڑ کو بھسم کر سکتی ھے."
( گودان )

بھاشا سوندریہ—

"واتاورن میں شڑینتر کی سی کونٹھا بھری ھوئی تھی."
( گودان )

"مالتی باھر سے تتلی ھے، بھیتر سے مدھو مکھی."
( گودان )

"سوریہ کے تیج سے ابھبھوت ھوکر ورکچھوں نے اپنا پسار سمیٹ لیا تھا."
( گودان )

"شنکر کے کپڑے پہلے ہی تیاگ کی چرم سیما تک پہونچ چکے تھے اب وہ پرکرتی کی نیونتم ریکھاؤں میں آبدھ ھوگئے."
( سوا سیر گیہوں )

سرل ورنن شیلی کا نمونہ—

"......تینوں آدمی بھیڑ چیرتے ھوئے مل کے سامنے جا پہونچے. دیکھا تو اگنی کا ایک ساگر آکاش میں اُمڑ رھا تھا. اگنی کی انمت لہریں ایک پر ایک دانت پیستی تھیں، جیبھ لپکاتی تھیں، جیسے آکاش کو بھی نگل جائیں گی. ان اگنی سمندر کے نیچے ایسا دھواں چھایا تھا، مانو ساون کی گھٹا کالکھ میں نہاکر نیچے اتر آئی ھو. اس کے اوپر جیسے آگ کا تھرتھراتا ھوا، ابلتا ھو ھمالے کھڑا تھا. احاطے میں لاکھوں آدمیوں کی بھیڑ تھی، پولس بھی تھی، فائر برگیڈ بھی، سیوا سمیتیوں کے سیوک بھی، پر سب کے سب آگ کی بھیشنتا سے مانو شیتھل ھوگئے ھوں. فائر برگیڈ کے چھینٹے اس اگنی ساگر میں جاکر جیسے بجھ جاتے تھے. اینٹیں جل رھی تھیں، لوھے کے گرڈر جل رھے تھے اور پگھلی ھوئی شکر کے پرنالے چاروں طرف بہہ رھے تھے. اور تو اور زمین سے بھی جوالا نکل رھی تھی.
( گودان )

اس پرکار سرل بھاشا میں، جنتا کی بھاشا میں، سرل اور پرواہ پورن شیلی میں لکھا گیا ساھتیہ—جیسا پریم چند نے لکھا—بہت کم دکھائی دیتا ھے. ھم چاھتے ھیں کہ لوگ ادھک سے ادھک پریم چند ساھتیہ کو پڑھیں اور اس کی سرلتا و سوابھاوکتا کو اپنائیں.

जा सकता था. पन्डित जी की यही क्या कम कृपा थी कि वह भुनगी को अपने गांव में बसाये हुए थे !"

व्यंग के और नमूने देखिये :—

"उनके मन के ऊंचे संस्कारों का ध्वंस न हुआ था. पर पीड़ा मक्कारी, निर्लज्जता और अत्याचार को वह ताल्लुक़ेदारी की शोभा और रोब दाब का नाम देकर अपनी आत्मा को सन्तुष्ट न कर सकते थे. और यही उनकी सबसे बड़ी हार थी." (गोदान)

"मातादीन को कई सौ रुपये खर्च करने के बाद अन्त में काशी के पंडितों ने फिर से ब्राह्मण बना दिया था...... मातादीन को शुद्ध गोबर और गोमूत्र खाना पीना पड़ा. गोबर से उसका मन पवित्र हो गया. मूत्र से उसकी आत्मा में अशुचिता के कीटाणु मर गये.' (गोदान)

"सभ्यता केवल हुनर के साथ ऐब करने का नाम है. आप बुरे से बुरा काम करें, लेकिन अगर आप उस पर पर्दा डाल सकते हैं, तो आप सभ्य हैं, सज्जन हैं, जेंटिलमैन हैं. अगर आपमें यह सिफ़त नहीं, तो आप असभ्य हैं. गंवार हैं, बदमाश हैं. यही सभ्यता का रहस्य है." (सभ्यता का रहस्य)

'बौड़म' कहानी में बौड़म महाशय आगे चलकर कहते हैं:-

"मेरे चाचा साहब को जवानी में एक चमारिन से ताल्लुक़ हो गया था. उससे दो बच्चे, एक लड़का और एक लड़की पैदा हुए. चमारिन लड़की को गोद में छोड़कर मर गई. तब से इन दोनों बच्चों की मेरे यहां वही हालत थी, जो यतीमों की होती है. कोई बात न पूछता था. उनको खाने पीने को भी न मिलता. बेचारे नौकरों के साथ खाते और बाहर झोंपड़े में पड़े रहते थे. जनाब, मुझसे यह न देखा गया. मैंने उन्हें अपने दस्तरख़ान पर खिलाया और अब भी खिलाता हूं. घर में कुहराम मच गया. जिसे देखिये मुझ पर त्योरियां बदल रहा है; मगर मैंने परवाह न की. आख़िर हैं वह भी तो हमारा ही ख़ून. इसीलिए मैं बौड़म कहलाता हूं." (बौड़म)

'गोदान' में होरी की पत्नी धनिया कहती है—"ये हत्यारे गांव के मुखिया हैं, गरीबों का ख़ून चूसने वाले. सूद-ब्याज, डेढ़ी-सवाई, नज़र नज़राना, घूस-घास जैसे भी हो, ग़रीबों को लूटो. उसपर सुराज चाहिए. जेहल जाने से सुराज न मिलेगा. सुराज मिलेगा धरम से, न्याय से."

प्रेमचंद-सहित्य में सैकड़ों सुन्दर-सुन्दर सुयुक्तियां मिलती हैं. नमूने के लिए हम तीन-चार ही नीचे दे रहे हैं—

"पाप अग्नि का वह कुन्ड है, जो आदर और मान, साहस और धैर्य को क्षण-भर में जलाकर भस्म कर देता है." (वरदान)



جاسکتا تھا. پنڈت جی کی یہی کیا کم کرپا تھی کہ وہ بھونگی کو اپنے گاؤں میں بسائے ہوئے تھے !"

ویَنگ کے اور نمونے دیکھئے—

"ان کے من کے اونچے سنسکاروں کا دھونس نہ ہوا تھا. پرپیڑا' مکاری' نرلجتا اور اتیاچار کو وہ تعلقیداری کی شوبھا اور رعب داب کا نام دےکر اپنی آتما کو سنتشٹ نہ کرسکتے تھے. اور یہی اُن کی سب سے بڑی ہار تھی." (گودان)

"ماتا دین کو کئی سو روپئے خرچ کرنے کے بعد انت میں کاشی کے پنڈتوں نے پھر سے براہمن بنا دیا تھا...... ماتا دین کو شدھ گوبر اور گو موتر کھانا پینا پڑا. گوبر سے اس کا من پوتر ہوگیا. موتر سے اُس کی آتما میں اشوچتا کے کٹانو مرگئے." (گودان)

سبھیتا کیول ہنر کے ساتھ عیب کرنے کا نام ہے. آپ برے سے برا کام کریں' لیکن اگر آپ اُس پر پردہ ڈال سکتے ہیں' تو آپ سبھیہ ہیں' سجن ہیں' جنٹلمین ہیں. اگر آپ میں یہ صفت نہیں' تو آپ اسبھیہ ہیں' گنوار ہیں' بدمعاش ہیں. یہی سبھیتا کا رہسیہ ہے. (سبھیتا کا رہسیہ)

بوڑم' کہانی میں بوڑم مہاشے آگے چل کر کہتے ہیں :—

"میرے چاچا صاحب کو جوانی میں ایک چمارن سے تعلق ہوگیا تھا. اس سے دو بچے' ایک لڑکا اور ایک لڑکی پیدا ہوئے. چمارن لڑکی کو گود میں چھوڑکر مرگئی. تب سے اُن دونوں بچوں کی میرے یہاں وہی حالت تھی' جو یتیموں کی ہوتی ہے. کوئی بات نہ پوچھتا تھا. انکو کھانے پینے کو بھی نہ ملتا. بیچارے نوکروں کے ساتھ کھاتے اور باہر جھونپڑے میں پڑے رہتے تھے. جناب' مجھسے یہ نہ دیکھا گیا. میں نے انہیں اپنے دسترخوان پر کھلایا اور اب بھی کھلاتا ہوں. گھر میں کہرام مچ گیا. جسے دیکھئے مجھ پر تیوریاں بدل رہا ہے؛ مگر میں نے پرواہ نہ کی. آخر ہیں وہ بھی تو ہمارا ہی خون. اِس لئے میں بوڑم کہلاتا ہوں." (بوڑم)

'گودان' میں ہوری کی پتنی دھنیا کہتی ہے—"یہ ہتیارے گاؤں کے مکھیا ہیں' غریبوں کے خون چوسنے والے. سود بیاج' ڈیڑھی سوائی' نذر نظرانہ' گھوس گھاس جیسے بھی ہو' غریبوں کو لوٹو. اُس پر سوراج چاہئے. جہل جانے سے سوراج نہ ملیگا. سوراج ملیگا دھرم سے' نیائے سے."

پریم چند ساہتیہ میں سیکڑوں سندر سندر سویکتیاں ملتی ہیں. نمونے کے لئے ہم تین چار ہی نیچے دے رہے ہیں.

"پاپ اگنی کا وہ کنڈ ہے' جو آدر اور مان' ساہس اور دھیریہ کو چھن بھر میں جلاکر بھسم کردیتا ہے." (وردان)

डाइरेक्टर, मेडल, एट्रैक्शन, पालिसी, फ़ार्म, हाल, पबलिक, मिनिस्टर, लीग, डेपुटेशन, प्रेक्टिस, एकेडेमी, बैंकर, बजट, इंचार्ज आदि.

एक इक्के वाले की भाषा देखिये—

"घर कहां है हुजूर; जहां पड़ रहूं, वहीं घर है. जब घर था, तब था. अब तो बेघर, बेज़र, बेदर हूं और सबसे बड़ी बात यह कि बेपर हूं. तक़दीर ने पर काट लिए. लंडरा बनाकर छोड़ दिया. मेरे दादा नवाबी में चकलेदार थे, हुजूर, सात जिले के मालिक, जिसे चाहें तोपदम कर दें, फांसी पर लटका दें. सूरज निकलने के पहले लाखों की थैलियां नज़र चढ़ जाती थीं हुजूर!......" (तगादा)

मुसलमान पात्रों के मुख से क्या सुन्दर और चलती हुई उर्दू बुलवाई है—

"......मैं जिन्दगी को कुछ और समझता हूं, पर मुझे इजाज़त नहीं है कि पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ सकूं. मेरे वालिद हैं. चचा हैं. दोनों साहब पहर रात से पहर रात तक काम में मसरूफ़ रहते हैं. रात दिन हिसाब-किताब, नफ़ा नुक़सान, मन्दी तेजी के सिवाय और कोई ज़िक्र ही नहीं होता, गोया ख़ुदा के बन्दे न हुए इस दौलत के बन्दे हुए." ......(बौड़म)

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में यहां वहां व्यंग का भी अच्छा पुट दिया है. देखिये—

"......चौधरी साहब के तीन सुयोग्य पुत्र थे. बड़े लड़के बितान एक सुशिक्षित मनुष्य थे. डाकिये के रजिस्टर पर दस्तख़त कर लेते थे......कभी कभी सिगरेट भी पीते, जिससे उनका गौरव बढ़ता था." (शंखनाद)

"......गांव के ज़मींदार पंडित उदयभानु पान्डे के दाने भूनने पड़ते उस दिन उसे भूखे ही सो रहना पड़ता था. पंडित जी उससे बेगार में दाने ही न भुनवाते थे, उसे उनके घर का पानी भी भरना पड़ता था और कभी-कभी इस हेतु से भी भाड़ बन्द रहता था. वह पन्डित जी के गांव में रहती थी, इसलिए उन्हें उससे सभी प्रकार की बेगार लेने का पूरा अधिकार था. इसे अन्याय नहीं कहा जा सकता. अन्याय केवल इतना था कि वह सूखी बेगार लेते थे. उनकी धारणा थी कि जब खाने ही को दिया गया, तो बेगार कैसी. किसान को पूरा अधिकार है कि बैलों को दिन भर जोतने के बाद शाम को खूंटे से भूखा बांध दे. यदि वह ऐसा नहीं करता, तो यह उसकी दयालुता नहीं है. केवल अपनी हितचिन्ता है. पन्डित जी को इसकी बहुत चिन्ता न थी क्योंकि एक तो भुनगी दो एक दिन भूखी रहने से मर नहीं सकती थी; और यदि दैवयोग से मर भी जाती, तो उसकी जगह दूसरा गोंड बड़ी आसानी से बसाया



ڈائریکٹر، میڈل، ایٹریکشن، پالیسی، فارم، ہال، پبلک، منسٹر، لیگ، ڈیپوٹیشن، پریکٹس، ایکڈمی، بینکر، بجٹ، اِنچارج آدی

ایک یکے والے کی بھاشا دیکھئے—

" گھر کہاں ہے ھجور؛ جہاں پڑ رہوں، وہیں گھر ہے. جب گھر تھا، تب تھا. اب تو بے گھر، بے زر، بے در ہوں اور سب سے بڑی بات یہ ہے کہ بے پر ہوں. تقدیر نے پر کاٹ لئے. لنڈورا بنا کر چھوڑ دیا. میرے دادا نوابی میں چکلےدار تھے، ھجور، سات جلے کے مالک، جسے چاہیں توپ دم کر دیں، پھانسی پر لٹکا دیں، سورج نکلنے کے پہلے لاکھوں کی تھیلیاں نظر چڑھ جاتی تھیں ھجور! ......" (تگادا)

مسلمان پاتروں کے مکھ سے کیا سندر اور چلتی ہوئی اردو بلوائی ہے—

"......میں زندگی کو کچھ سمجھتا ہوں، پر مجھے اِجازت نہیں ہے کہ پانچوں وقت کی نماز پڑھ سکوں. میرے والد ہیں. چچا ہیں. دونوں صاحب پہر رات سے پہر رات تک کام میں مصروف رہتے ہیں. رات دن حساب کتاب، نفع نقصان، مندی تیزی کے سوائے اور کوئی ذکر ہی نہیں ہوتا، گویا خدا کے بندے نہ ہوئے اِس دولت کے بندے ہوئے." ......(بوڑم)

پریم چند نے اپنی رچناؤں میں یہاں وہاں ویَنگ کا بھی اچھا پٹ دیا ہے.

"......چودھری صاحب کے تین سیوگ پتر تھے. بڑے لڑکے بیتان ایک سوشکشت منشیہ تھے. ڈاکئے کے رجسٹر پر دستخط کر لیتے تھے......کبھی کبھی سگریٹ بھی پیتے، جس سے ان کا گورو بڑھتا تھا." (شنکھ ناد)

"......گاؤں کے زمیندار پنڈت اُدئے بھان پانڈے کے دانے بھوننے پڑتے اُس دن اُسے بھوکے ہی سو رہنا پڑتا تھا. پنڈت جی اُس سے بیگار میں دانے ہی نہ بھنواتے تھے، اُسے ان کے گھر کا پانی بھی بھرنا پڑتا تھا اور کبھی کبھی اِس ہیتو سے بھی بھاڑ بند رہتا تھا. وہ پنڈت جی کے گاؤں میں رہتی تھی، اس لئے انھیں اس سے سبھی پرکار کی بیگار لینے کا پورا ادھیکار تھا. اُسے انیائے نہیں کہا جاسکتا. انیائے کیول اتنا تھا کہ وہ سوکھی بیگار لیتے تھے. ان کی دھارنا تھی کہ جب کھانے ہی کو دیا گیا، تو بیگار کیسی؟ کسان کو پورا ادھیکار ہے کہ بیل کو دن بھر جوتنے کے بعد شام کو کھونٹے سے بھوکا باندھ دے. یدی یہ ایسا نہیں کرتا، تو یہ اُس کی دیالوتا نہیں ہے، کیول اپنی ہت چنتا ہے. پنڈت جی کو اِس کی بہت چنتا نہ تھی کیونکہ ایک تو بھُنگی دو ایک دن بھوکی رہنے سے مر نہیں سکتی تھی؛ اور یدی دیویوگ سے مر بھی جاتی، تو اُس کی جگہ دوسرا گونڈ بڑی آسانی سے بسایا

प्रेमचन्द ने अपनी भाषा को "हिन्दुस्तानी" भाषा कहा है. श्रीमती शिवरानी प्रेमचन्द ने अपनी पुस्तक "प्रेमचन्द: घर में" में उनसे इस विषय में हुई बातचीत का इस प्रकार व्यौरा दिया है. प्रेमचंद महात्मा गांधी से बातचीत कर वर्धा से लौटे थे. बोले—महात्मा गांधी हिन्दू-मुसलमानों की एकता चाहते हैं, तो मैं भी हिन्दी और उर्दू को मिला कर हिन्दुस्तानी बनाना चाहता हूं.

शिवरानी—आप कैसे बनाते हैं हिन्दुस्तानी ?

आप बोले—जो कुछ मैं लिखता हूं, वह हिन्दुस्तानी में लिखता हूं.

शिवरानी—तो आपके लिखने से हिन्दुस्तानी हो गई ?

आप बोले—जिसको हिन्दू मुसलमान दोनों मानें, जिसको आम जनता समझे, वह है हिन्दुस्तानी. और मेरा ख्याल है कि राष्ट्रभाषा जब कभी बनेगी, तो वह हिन्दी-उर्दू को मिलाकर.

प्रेमचंद जनता के साहित्यिक थे, जनता के लिए और जनता की ही भाषा में लिखते थे. स्वाभाविक रूप से गांव, क़सबे और शहर के लोग जिस भाषा को बोलते और समझते हैं, उसी भाषा में उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में वार्तालाप बताया है. जिस प्रकार उन्होंने अपनी रचनाओं में साम्प्रदायिक भावना का विरोध किया है, वैसे ही अपनी भाषा को भी साम्प्रदायिक भावना से दूर रखा है. उनका हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं पर अधिकार था; किन्तु उन्होंने अपनी भाषा में फ़ारसी, अरबी या संस्कृत के भारी भरकम शब्दों को स्थान नहीं दिया. इससे उलटे गँवारू शब्दों और कहावतों को, जो कि जनता में व्याप्त हो हो गये हैं, उन्होंने बड़ी स्वाभाविकता और प्रेम से स्थान दिया है.

कुछ उदाहरण देखिये—"गोरू आते होंगे."

"सांझ की बेला है......( अलग्योझा ).

"उसी बांह गहे की लाज तो निभा रहे हो." (घासवाली).

"लेखा जौ-जौ, बखसीस सौ-सौ". ( सवा सेर गेहूं )

प्रेमचंद ने अनेक घरेलू और ठेठ शब्दों का भी उपयोग किया है. जैसे—जस ( यश ), ढेठी, पहलौंठी लड़का, बूड़ी बातें, मुंह जोहेंगे, अठवारा, बरौठा, गोई, अँतरे दिन, दोनों जून, बखा, रजा, हेटा, बौड़ा, मनावन, उड़क्कू हकनाहक, पुछत्तर, भक्कड़ ( झक्की ) आदि. खल्वाट, अस्नान-पूजा, चोंचाल, पुरवा, चरनी, पवित्तर ब्राह्मन, चमरवा, गोई ( बैल-जोड़ी ), तान-मेहने, थुक्का-फ़जीहत, नियाव ( न्याय ).

उन्होंने हिन्दी में चल-निकले अंग्रेजी शब्दों का भी काफ़ी प्रयोग किया है. जैसे—स्पीच, चार्ज, अपील, सेक्रेटरी, प्रोग्राम, वोटिंग, एजेंट; काउंसिल, फ़ीस, नोट, कम्पनी,



پریم چند نے اپنی بھاشا کو " هندستانی " بھاشا کہا ھے . شریمتی شیورانی پریم چند نے اپنی پستک " پریم چند : گھر میں " میں اُن سے اُس وشے میں هوئی بات چیت کا اِس پرکار بیورا دیا ھے . پریم چند مہاتما گاندھی سے بات چیت کر وردھا سے لوٹے تھے . بولے—مہاتما گاندھی هندو مسلمانوں کی ایکتا چاهتے هیں' تو میں بھی هندی اور اردو کو ملا کر هندستانی بنانا چاهتا هوں .

شیورانی—آپ کیسے بناتے هیں هندستانی ؟

آپ بولے—جو کچھ میں لکھتا هوں' وہ هندستانی میں لکھتا هوں .

شیورانی—تو آپ کے لکھنے سے هندستانی هوگئی؟

آپ بولے—جس کو هندو مسلمان دونوں مانیں' جس کو عام جنتا سمجھے' وہ ھے هندستانی . اور میرا خیال ھے کہ راشٹر بھاشا جب کبھی بنے گی' تو وہ هندی اردو کو ملا کر .

پریم چند جنتا کے ساهتک تھے' جنتا کے لئے اور جنتا کی هی بھاشا میں لکھتے تھے . سوابھاوک روپ سے گاؤں' قصبے اور شہر کے لوگ جس بھاشا کو بولتے اور سمجھتے هیں' اُسی بھاشا میں اُنھوں نے اپنی کہانیوں اور اُپنیاسوں میں وارتالاپ بتایا ھے . جس پرکار اُنھوں نے اپنی رچناؤں میں سامپردائک بھاؤنا کا ورودھ کیا ھے' ویسے هی اپنی بھاشا کو بھی سامپردائک بھاؤنا سے دور رکھا ھے . اور اِن کا هندی اور اردو دونوں بھاشاؤں پر ادھکار تھا؛ کنتو اُنھوں نے اپنی بھاشا میں فارسی' عربی یا سنسکرت کے بھاری بھرکم شبدوں کو استھان نہیں دیا . اِس سے اُلٹے گنوارو شبدوں اور کہاوتوں کو' جو کہ جنتا میں ویاپت هوگئے هیں' اُنھوں نے بڑی سوابھاوکتا اور پریم سے استھان دیا ھے .

کچھ اُداهرن دیکھئے—"گورو آتے هونگے "

" سانجھ کی بیلا ھے . ( الگیوجھا )

" اُسی بانہ گہے کی لاج تو نبھا رھے هو ." ( گھاس والی ).

" لیکھا جو جو' بکھسیس سو سو ." ( سواسیر گیہوں ) .

پریم چند نے انیک گھریلو اور ٹھیٹھ شبدوں کا بھی اُپیوگ کیا ھے . جیسے—جس ( یش )' ھیٹھی' پہلونٹھی لڑکا' بوڑی باتیں' منھ جوهیں گے' اٹھوارا' بروٹھا' گوئی' انترے دن' دونوں جون' برکھا . رجا' هیٹا' بوڑا' منأون' اُڑنکو' هک ناهک' پوچھتر' جھکڑ ( جھکی ) آدی. کھلوات' اسنان پوجا' چونچال' پروا' چرنی' پوتر باهمن' چمروا' گوئیں ( بیل جوڑی )' تانے مہنے' تکا فجیحت' نیاؤ ( نیائے ) .

اُنھوں نے هندی میں چل نکلے انگریزی شبدوں کا بھی کافی پریوگ کیا ھے. ( جیسے—اسپیچ' چارج' اپیل' سکریٹری' پروگرام' ووٹنگ' ایجنٹ' کاؤنسل' فیس' نوٹ' کمپنی'

# प्रेमचन्द की भाषा

राम किशोर 'पाशां'

प्रेमचन्द की रचनाओं की एक बड़ी खूबी यह है कि कम पढ़ी-लिखी साधारण जनता भी उन्हें पढ़कर समझ सकती है. उनकी भाषा में उर्दू और हिन्दी के प्रचलित शब्दों का उपयोग ही अधिक किया गया है, और कहावतें, मुहावरों का भी उपयुक्त स्थान पर उपयोग किया गया है. यह वह भाषा है जो उत्तर-भारत, बिहार, मध्यभारत, अजमेर-मारवाड़, विंध्य-प्रदेश, मध्यप्रदेश तथा राजपूताने के अधिकांश भागों में अधिकांशत: बोली या समझी जाती है. छोटे-छोटे और सरल वाक्यों में अपनी बात कह देना उनकी विशेषता है. अपनी रचनाओं में मानव-सम्बन्धों, प्रकृति, समाज, राजनीति आदि के बारे में कई जगह उन्होंने महत्वपूर्ण उक्तियां कही हैं, जो स्पष्ट ही उनके अनुभवों के आधार पर उनके दिमाग़ की उपज हैं. ये कथन चिरकाल तक के लिए सत्य हैं; मानव के सुख-दुखों के साथ लगे हुए हैं. जब तक मानव-समाज की स्थापना नये आदर्शों, नये मूल्यों पर नहीं होगी—जिसमें सबका भला, सब का उदय होगा—तब तक प्रेमचन्द की उक्तियां सच्ची बनी रहेंगी. कुछ उक्तियां दर्शन के और मानव-हृदय के रहस्यों को सरल व सीधे शब्दों में पाठकों के सामने खोल देने वाली हैं.

प्रेमचन्द ने जिस समय हिन्दी-साहित्य-क्षेत्र में प्रवेश किया था, उस समय हिन्दी भाषा बन रही थी. उसके प्राकृत रूप में तेज़ी के साथ परिवर्तन और सुधार हो रहे थे. नये नये प्रभाव हिन्दी पर पड़ रहे थे, उसका क्षेत्र बढ़ रहा था और उसे अपना कर्त्तव्य पूरा करने में कठिनाई प्रतीत हो रही थी.

प्रेमचन्द की प्रारंभिक रचनाओं में भाषा का एक अजीब सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है—जोकि आगे आने वाली मिली जुली भाषा-शैली की सूचना देता है. यह शैली लोकप्रिय हुई और इसने हिन्दी भाषा के भावी विकास की राह दिखाई. हिन्दी-उर्दू की इस मिश्रित शैली को सन 1921 के आंदोलन से बल मिला, क्योंकि उस समय यह महसूस किया जाने लगा था कि जन-समाज के साथ साहित्य का संपर्क स्थापित करने के लिए ऐसी ही चलती हुई भाषा की आवश्यकता है. हिन्दी भाषा का क्षेत्र अब संकुचित न रहा और इस नव-युग का प्रतिनिधित्व प्रेमचन्द को मिला. वे ज्यों-ज्यों लिखते गये, त्यों-त्यों यह शैली अधिकाधिक परिमार्जित, सरल और स्वाभाविक होती गई.

# پریم چند کی بھاشا

رام کشور 'پاشاں'

پریم چند کی رچناؤں کی ایک بڑی خوبی یہ ھے کہ کم پڑھی لکھی سادھارن جنتا بھی اِنھیں پڑھ کر سمجھ سکتی ھے. اُن کی بھاشا میں اردو اور ھندی کے پرچلت شبدوں کا اُپیوگ ھی ادھک کیا گیا ھے' اور کہاوتیں' محاورں کا بھی اُپیکت استھان پر اُپیوگ کیا گیا ھے. یہ وہ بھاشا ھے جو اُتر بھارت' بہار' مدھیہ بھارت' اجمیر مارواڑ' وندھیہ پردیش' مدھیہ پردیش تتھا اجپوتانہ کے ادھیکانش بھاگوں میں ادھیکانشتہ بولی یا سمجھی جاتی ھے. چھوٹے چھوٹے اور سرل واکیوں میں اپنی بات کہہ دینا اِن کی وشیشتا ھے. اپنی رچناؤں میں مانو سمبندھوں' پرکرتی' سماج' راج نیتی آدی کے بارے میں کئی جگہ اُنھوں نے مہتو پورن اُکتیاں کہی ھیں' جو اسپشٹ ھی اِن کے انوبھوں کے آدھار پر اِن کے دماغ کی اپج ھیں. یہ کتھن چرکال تک کے لئے ستیہ ھیں؛ مانو کے سکھ دکھوں کے ساتھ لگے ھوئے ھیں. جب تک مانو سماج کی استھاپنا نئے آدرشوں' نئے مولیوں پر نہیں ھوگی—جس میں سب کا بھلا' سب کا اُدئے ھوگا—تب تک پریم چند کی اُکتیاں سچی بنی رھیں گی. کچھ اُکتیاں درشن کے اور مانو ھردیے کے رھسیوں کو سرل و سیدھے شبدوں میں پاٹھکوں کے سامنے کھول دینے والی ھیں.

پریم چند نے جس سمے ھندی ساھتیہ چھیتر میں پرویش کیا تھا' اُس سمے ھندی بھاشا بن رھی تھی. اِس کے پراکرت روپ میں تیزی کے ساتھ پریورتن اور سدھار ھو رھے تھے. نئے نئے پربھاؤ ھندی پر پڑ رھے تھے' اُس کا چھیتر بڑھ رھا تھا اور اُسے اپنا کرتویہ پورا کرنے میں کٹھنائی پرتیت ھو رھی تھی.

پریم چند کی پرارمبھک رچناؤں میں بھاشا کا ایک عجیب سمشرن دکھائی پڑتا ھے—جو کہ آگے آنے والی ملی جلی بھاشا شیلی کی سوچنا دیتا ھے. یہ شیلی لوک پریہ ھوئی اور اِس نے ھندی بھاشا کے بھاوی وکاس کی راہ دکھائی. ھندی اردو کی اس مشرت شیلی کو سن 1921 کے آندولن سے بل ملا' کیونکہ اُس سمے یہ محسوس کیا جانے لگا تھا کہ جن سماج کے ساتھ ساھتیہ کا سمپرک استھاپت کرنے کے لئے ایسی ھی چلتی ھوئی بھاشا کی آوشیکتا ھے. ھندی بھاشا کا چھیتر اب سنکوچت نہ رھا اور اِس نویگ کا پرتیندھتو پریم چند کو ملا. وے جوں جوں لکھتے گئے' تیوں تیوں یہ شیلی ادھکادھک پریمارجت سرل اور سوابھاوک ھوتی گئی.

उसे पकड़ने की सब ने कोशिश की. उन्होंने उसे घेर लिया. लेकिन जितने लोग वहां बढ़ते जाते थे उतना ही उस भैंसे का क्रोध बढ़ता जाता था. अपने सींगों से उसने लोगों पर हमला किया. कई लोग घायल हुए फिर भी उसे क़ाबू में न ला सके.

ख़ुशक़िस्मती से उसी समय एक चरवाहा दौड़ता हुआ आया. लोगों ने देखा कि वह बिलकुल नौजवान है, लेकिन बड़े बूढ़ों की तरह बात करता है. उसने कहा—"तुम सब बुद्धू हो." पूरे आत्म विश्वास के साथ, जैसे कुछ हुआ ही न हो, वह मुस्कराता हुआ भैंसे की तरफ़ बढ़ा. एक मूठ घास उसके हाथ में थी. पहले उसने सामने से उसे घास दिखाई. फिर पीछे जाकर उसके पुट्ठे पर हाथ फेरा. शीघ्र ही वह सीधा साधा बन गया. चरवाहा उसकी पीठ पर चढ़ गया और ख़ुशी से चिल्ला चिल्ला कर धीरे धीरे वह उसे घर हंका ले गया. लोगों ने इतमीनान का सांस लिया और शरमा कर स्वीकार किया—"यह सच है कि हम सब के सब बुद्धू थे!"

दूसरों को क़ाबू में करने के लिये जितने साधन हैं उनमें एक सब से असरदार ख़ुशामद है. मैं यह नहीं चाहता कि आप ख़ुशामद करना शुरू कर दें बल्कि कहने का मतलब यह है कि आप ख़ुद ख़ुशामद से बचे रहें.



اسے پکڑنے کی سب نے کوشش کی ۔ انھوں نے اسے گھیر لیا ۔ لیکن جتنے لوگ وھاں بڑھتے جاتے تھے اتنا ھی اس بھینسے کا کرودھ بڑھتا جاتا تھا ۔ اپنے سینگوں سے اس نے لوگوں پر حملہ کیا ۔ کئی لوگ گھائل ھوئے ۔ پھر بھی اسے قابو میں نہ لاسکے ۔

خوش قسمتی سے اسی سمے ایک چرواھا دوڑتا ھوا آیا ۔ لوگوں نے دیکھا کہ وہ بالکل نوجوان ھے' لیکن بڑے بوڑھوں کی طرح بات کرتا ھے۔ اس نے کہا—"تم سب بدھو ھو۔" پورے آتموشواس کے ساتھ' جیسے کچھ ھوا ھی نہ ھو' وہ مسکراتا ھوا بھینسے کی طرف بڑھا ۔ ایک موٹھ گھاس اس کے ھاتھ میں تھی ۔ پہلے اس نے اسے گھاس دکھائی ۔ پھر پیچھے جاکر اس کے پٹھے پر ھاتھ پھیرا ۔ شیگھر ھی وہ سیدھا سادہ بن گیا ۔ چرواھا اس کی پیٹھ پر چڑھ گیا اور خوشی سے چلا چلاکر دھیرے دھیرے وہ اسے گھر ھنکالے گیا ۔ لوگوں نے اطمینان کا سانس لیا اور شرما کر سوئیکار کیا—"یہ سچ ھے کہ ھم سب کے سب بدھو تھے !"

دوسروں کو قابو میں کرنے کے جتنے سادھن ھیں ان میں ایک سب سے اثردار خوشامد ھے ۔ میں یہ نہیں چاھتا کہ آپ خوشامد کرنا شروع کردیں بلکہ کہنے کا مطلب ھے یہ ھے کہ آپ خود خوشامد سے بچے رھیں ۔

---

जिस तरह बबूल के पेड़ पर आम नहीं लग सकते; मिर्च के पौधे पर गुलाब के फूल नहीं आ सकते; उसी तरह बुरे कामों का नतीजा कभी सुखकर नहीं हो सकता.

—अज्ञात

جس طرح ببول کے پیڑ پر آم نہیں لگ سکتے؛ مرچ کے پودھے پر گلاب کے پھول نہیں آسکتے؛ اسی طرح برے کاموں کا نتیجہ کبھی سکھکر نہیں ھوسکتا ۔

—اگیات

---

दखल न दे इसके लिये सांप ने एक क़ानून बनाया और खुद खरगोश के पास उसका ऐलान करने गया.

उसने कहा—"सुनो! यदि बिना खटखटाए और इजाज़त लिये मैं तुम्हारे घर में घुस पड़ूं तो तुम्हें अधिकार है कि तुम मुझसे आकर शिकायत करो."

सांप ने इस क़ानून का ऐलान कर दिया. पर उसे शंका बनी रही कि खरगोश में क़ानून की इतनी समझ है या नहीं, और उसे यह भी डर था कि खरगोश इतनी जल्दी अपने में आत्म विश्वास पैदा कर सकेगा या नहीं. इसलिये उसने निश्चय किया कि वह खरगोश की परीक्षा ले.

जान बूझ कर बिना खटखटाए सांप तेज़ी से खरगोश के बिल में घुस पड़ा और एक बच्चे को काट खाया. फिर जल्दी ही बाहर निकल आया और दरवाज़े पर बैठकर इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि खरगोश आकर उससे शिकायत करे.

बहुत देर तक सांप राह जोहता रहा. खरगोश नहीं आया. हर मिनट सांप का गुस्सा बढ़ रहा था. वह दोबारा खरगोश के घर में घुसा. वहां खरगोश उसे मिल गया. सांप ने उसे ख़ूब डांटा और कहा—"तुमने क़ानून का पालन क्यों नहीं किया?"

खरगोश ने जवाब दिया—"महाशय! आप मुझसे किस क़ानून का पालन चाहते हैं? मैं किसकी किससे शिकायत करूं?

सांप ने कहा—"मेरे खिलाफ़ मुझसे शिकायत न करने का साहस तुमने कैसे किया?"

खरगोश ने जवाब दिया—"अभी आप ही मुजरिम थे और अब आप ही जज भी हैं. आप ही बताइये कि किस मुलज़िम को मैं पकड़ूं और किस जज से न्याय की अपील करूं?"

सांप का गुस्सा क़ाबू से बाहर हो गया. उसने फुंकारा और एक दफ़ा में ही सांप खरगोश को निगल गया.

खरगोश को हड़प कर जाने के बाद सांप ने एक आम ऐलान किया—"जिस तरह से मैंने इस बार खरगोश को मारा है वह उन तरीक़ों से बिलकुल अलग है जिनसे मैं पहले खरगोशों को मारा करता था. इस बार क़ानून के अनुसार मैंने उसे मारा है. गिरफ़्तारी से लेकर सज़ा तक सारी कार्रवाई पूरे क़ानूनी ढंग से की गई है."

( 5 )

## गुस्सैल भैंसा और नौजवान चरवाहा

एक भैंसा अपने गुस्से के लिये बदनाम था. एक दफ़ा भड़क जाने पर वह जो न कर डाले थोड़ा था. एक दिन वह सनक गया और रस्सी तुड़ाकर खेत में चारों तरफ़ पागल की तरह दौड़ने लगा. उसने फ़सल का सत्यानाश कर दिया.



دخل نہ دے اِس کے لئے سانپ نے ایک قانون بنایا اور خود خرگوش کے پاس اُس کا اعلان کرنے گیا۔

اُس نے کہا—"سنو! یدی بنا کھٹکھٹائے اور اجازت لئے میں تمہارے گھر میں گھس پڑوں تو تمہیں ادھیکار ہے کہ تم مجھ سے آکر شکایت کرو۔"

سانپ نے اِس قانون کا اعلان کردیا۔ پر اُسے شنکا بنی رہی کہ خرگوش میں قانون کی اتنی سمجھ ہے یا نہیں، اور اُسے یہ بھی ڈر تھا کہ خرگوش اتنی جلدی اپنے میں آتم وشواس پیدا کرسکے گا یا نہیں۔ اِس لئے اُس نے نشچے کیا کہ وہ خرگوش کی پریکشا لے۔

جان بوجھ کر بنا کھٹکھٹائے سانپ تیزی سے خرگوش کے بل میں گھس پڑا اور ایک بچے کو کاٹ کھایا۔ پھر جلدی ہی باہر نکل آیا اور دروازے پر بیٹھ کر اِس بات کی پرتیکشا کرنے لگا کہ خرگوش آکر اُس سے شکایت کرے۔

بہت دیر تک سانپ راہ جوہتا رہا۔ خرگوش نہیں آیا۔ ہر منٹ سانپ کا غصہ بڑھ رہا تھا۔ وہ دوبارہ خرگوش کے گھر میں گھسا۔ وہاں خرگوش اُسے مل گیا۔ سانپ نے اُسے خوب ڈانٹا اور کہا—"تم نے قانون کا پالن کیوں نہیں کیا؟"

خرگوش نے جواب دیا—"مہاشے! آپ مجھ سے کس قانون کا پالن چاہتے ہیں؟ میں کس کی کس سے شکایت کروں؟"

سانپ نے کہا—"میرے خلاف مجھ سے شکایت نہ کرنے کا ساہس تم نے کیسے کیا؟"

خرگوش نے جواب دیا—"ابھی آپ ہی مجرم تھے اور اب آپ ہی جج بھی ہیں۔ آپ ہی بتائیے کہ کس ملزم کو میں پکڑوں اور کس جج سے نیائے کی اپیل کروں؟"

سانپ کا غصہ قابو سے باہر ہوگیا۔ اُس نے پھنکارا اور ایک دفعہ میں ہی سانپ خرگوش کو نگل گیا۔

خرگوش کو ہڑپ کرجانے کے بعد سانپ نے ایک عام اعلان کیا—"جس طرح سے میں نے اِس بار خرگوش کو مارا ہے وہ اُن طریقوں سے بالکل الگ ہے جن سے میں پہلے خرگوشوں کو مارا کرتا تھا۔ اِس بار قانون کے انوسار میں نے اُسے مارا ہے۔ گرفتاری سے لیکر سزا تک ساری کارروائی پورے قانونی ڈھنگ سے کی گئی ہے۔"

( 5 )

## غصیل بھینسا اور نوجوان چرواہا

ایک بھینسا اپنے غصے کے لئے بدنام تھا۔ ایک دفعہ بھڑک جانے پر وہ جو نہ کرڈالے تھوڑا تھا۔ ایک دن وہ سنک گیا اور رسی تڑاکر کھیت میں چاروں طرف پاگل کی طرح دوڑنے لگا۔ اُس نے فصل کا ستیاناش کردیا۔

उस औरत ने कहा—"मैं आपका स्वागत करती हूं, अन्दर आजाइये. कभी कभार ही भद्र जन इधर आनिकलते हैं. ऐसे मेहमानों का सत्कार हमारे भाग्य में कहां !"

उसके घर पहुंच कर लोमड़ी और भेड़िये ने एक एक चूज़ा उड़ाया. बन्दर ने एक थाली भर कर छीमिया खाईं, लेकिन उनकी तसल्ली नहीं हुई.

लोमड़ी और भेड़िये ने पूछा—"क्या आप के घर में कोई भेड़ भी है ? एक भेड़ चार चूज़ों के बराबर है."

बन्दर ने कहा—"क्या कुछ मूंगफली होंगी ? मुझे इसी तरह की सस्ती चीज़ें पसन्द हैं."

देहाती औरत ने कहा—"मेरे पास एक भेड़ भी है और मूंगफली भी हैं. आप लोग ख़ुशी से उन्हें ले सकते हैं."

लोमड़ी और भेड़िया मिल कर पूरी भेड़ खा गये. बन्दर ने आधी टोकरी मूंगफली साफ़ कर दीं. बाक़ी आधी टोकरी उसने अपने झोले में उंडेल ली. इस पर भी लोमड़ी और भेड़िये की तसल्ली नहीं हुई. वह बोले—"क्या कोई सूअर भी तुम्हारे पास है ? हम ज़रा मज़ा बदलना चाहते हैं."

बन्दर ने कहा—"कुछ चेस्ट नट हों तो लाओ."

देहातिन बोली—"मेरे पास एक सूअर है. उस पर ख़ूब चरबी लदी है ! मैं ख़ुद ही पूछने जा रही थी कि आप लोग उसका आनन्द लें. मेरे पास चेस्ट नट भी हैं."

लोमड़ी और भेड़िया मिलकर पूरा सूअर चट कर गए. चेस्ट नट बन्दर को बहुत अच्छे लगे. आधे वह खा गया और आधे उसने अपने झोले में डाल लिये. भेड़िये और लोमड़ी का पेट फिर भी नहीं भरा. इससे वह नाक भौं चढ़ा रहे थे. उन्होंने हुक्म दिया—"हमारे खाने के लिये अपनी गाय हाज़िर करो."

बन्दर ने कहा—"मेरे लिये कुछ अख़रोट लाओ."

गाय लेने के लिये देहातिन गई और साथ में कुछ अख़रोट भी लाई. लेकिन गाय चट कर जाने के बाद भी लोमड़ी और भेड़िये का पेट नहीं भरा. बन्दर ने भी कुछ और चीज़ें खाने की इच्छा प्रकट की.

उन्होंने पूछा—"अब इसके अलावा तुम्हारे पास और क्या क्या है ?"

देहातिन ने कहा—"मेरे पास एक चीज़ और बाक़ी है." उसके हाथ में लकड़ी फाड़ने की कुल्हाड़ी थी. उसका मज़ा भी उसने उन तीनों को चखा दिया.

भेड़िया, लोमड़ी और बन्दर देहातिन के घर से ज़िन्दा वापिस नहीं गए.

( 4 )

## सांप और ख़रगोश

ख़रगोश अपने घर में आज़ादी से रह सके और कोई



اُس عورت نے کہا—" میں آپ کا سواگت کرتی ہوں' اندر آجائیے . کبھی کبھار ہی بھدرجن اِدھر آ نکلتے ہیں . ایسے مہمانوں کا ستکار ہمارے بھاگیہ میں کہاں !"

اُس کے گھر پہونچ کر لومڑی اور بھیڑیئے نے ایک ایک چوزہ اُڑایا . بندر نے ایک تھالی بھر کر چھیمیاں کھائیں' لیکن اُن کی تسلی نہیں ہوئی .

لومڑی اور بھیڑیئے نے پوچھا—" کیا آپ کے گھر میں کوئی بھیڑ بھی ہے ؟ ایک بھیڑ چار چوزوں کے برابر ہے ."

بندر نے کہا—" کیا کچھ مونگ پھلی ہونگی ؟ مجھے اِسی طرح کی سستی چیزیں پسند ہیں ."

دیہاتی عورت نے کہا—" میرے پاس ایک بھیڑ بھی ہے اور مونگ پھلی بھی ہیں آپ لوگ خوشی سے اُنہیں لےسکتے ہیں."

لومڑی اور بھیڑیا مل کر پوری بھیڑ کھا گئے . بندر نے آدھی ٹوکری مونگ پھلی صاف کر دیں . باقی آدھی ٹوکری اُس نے اپنے جھولے میں اُنڈیل لی . اِس پر بھی لومڑی اور بھیڑیئے کی تسلی نہیں ہوئی وہ بولے :
"کیا کوئی سور بھی تمہارے پاس ہے ؟ ذرا مزہ بدلنا چاہتے ہیں ."

بندر نے کہا—"کچھ چسٹ نٹ ہوں تو لاؤ ."

دیہاتن بولی—"میرے پاس ایک سور ہے . اُس پر خوب چربی لدی ہے ! میں خود ہی پوچھنے جا رہی تھی کہ آپ لوگ اُس کا آنند لیں . میرے پاس چسٹ نٹ بھی ہیں ."

لومڑی اور بھیڑیا مل کر پورا سور چٹ کر گئے . چسٹ نٹ بندر کو بہت اچھے لگے . آدھے وہ کھا گیا اور آدھے اُس نے اپنے جھولے میں ڈال لئے . بھیڑیئے اور لومڑی کا پیٹ پھر بھی نہیں بھرا . اِس سے وہ ناک بھوں چڑھا رہے تھے . اُنھوں نے حکم دیا—"ہمارے کھانے کے لئے اپنی گائے حاضر کرو ."

بندر نے کہا—"میرے لئے کچھ آخروٹ لاؤ ."

گائے لینے کے لئے دیہاتن گئی اور ساتھ میں کچھ آخروٹ بھی لائی . لیکن گائے چٹ کر جانے کے بعد بھی لومڑی اور بھیڑیئے کا پیٹ نہیں بھرا . بندر نے بھی کچھ اور چیزیں کھانے کی اِچھا پرگٹ کی .

انھوں نے پوچھا—"اب اِس کے علاوہ تمہارے پاس اور کیا کیا ہے ؟"

دیہاتن نے کہا—"میرے پاس ایک چیز اور باقی ہے ." اُس کے ہاتھ میں لکڑی پھاڑنے کی کلہاڑی تھی . اُس کا مزا بھی اُس نے اُن تینوں کو چکھا دیا .

بھیڑیا' لومڑی اور بندر دیہاتن کے گھر سے زندہ واپس نہیں گئے .

( 4 )

## سانپ اور خرگوش

خرگوش اپنے گھر میں آزادی سے رہ سکے اور کوئی

लेकिन मासूम बछड़ा अपनी मां से बहुत प्रेम करता था. उस ने सर हिलाया और कहा—"नहीं मां! मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा. तुम्हें कष्ट झेलना पड़ेगा. मां, मुझे इसी तरह अपने पीछे चलने दो. मुझे विश्वास है कि मुझे देख देखकर तुम दुख के भार को कम महसूस करोगी."

उसकी मां बहुत खुश हुई और उसने उसे साथ रहने की इजाज़त दे दी. लेकिन बार बार गाय उसे ताक़ती रही. गाय को डर था कि कहीं बछड़ा गिर न पड़े, या बहुत तेज़ न दौड़ने लगे, या पीछे न छूट जाय. इसलिये वह तेज़ न चल सकी और हमेशा के मुक़ाबले में काम में ढिलाई हुई. किसान इससे बहुत असन्तुष्ट हुआ और तेज चलाने के लिये वह बार बार उसे मारता था. इस तरह पहले से कहीं ज्यादा गाय को मार खानी पड़ी. आखिर उसने फिर बछड़े से कहा—"मेरे लाडले बेटे! अगर तुझे सचमुच अपनी मां से प्यार है तो तू यहां से चला जा ताकि मुझे इतनी मार न खानी पड़े. तेरी वजह से जितनी ज्यादा मार मुझ पर पड़ी है उसकी गिनती नहीं हो सकती!"

दोस्तो! जज़बात यानी भावनाओं के बहुत से बेकार रूप हैं. वह रूप हमें बहुत प्यारे हो सकते हैं लेकिन उनसे पीछा छुड़ाना हमारे लिये बहुत अच्छा है.

( 3 )

## भेड़िया, लोमड़ी, बन्दर और एक देहातिन

एक भेड़िये और एक लोमड़ी ने दो ऊंचे सरकारी अफ़सरों का रूप धारण किया और एक बन्दर वर्दी पहन कर उनका अरदली बन गया. लोगों में अभी तक पुरानी नेक आदतें हैं या नहीं, यह देखने के लिये तीनों एक साथ चल पड़े.

मुश्किल से अभी उन्होंने जंगल छोड़ा होगा कि घाटी में उन्हें एक देहातिन दिखाई पड़ी. भेड़िये ने कहा—"हमें अपनी जांच पड़ताल शुरू कर देनी चाहिये. मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि यह औरत ईमानदार है. यह हमें धोका नहीं देगी."

लोमड़ी बोली—"जब कभी मैं लेख लिखती हूं तो सदा इस बात पर ज़ोर देती हूं कि ईमानदारी एक ऐसा गुण है जिसका हर किसी में होना बहुत ज़रूरी है."

बन्दर ने आवाज़ लगाई—"बहुत खूब! बहुत खूब!"

भेड़िया और बन्दर आगे बढ़े और बोले—"ऐ नेक महिला! क्या तुम्हारे घर में मुर्गी के बच्चे हैं? अधिक मात्रा में हमें उनकी जरूरत नहीं है, बस हममें हर एक को एक एक चूज़ा दे दो."

बन्दर ने कहा—"मैं शाकाहारी हूं. थोड़ी सी फलियों से मेरा काम चल जायेगा."



لیکن معصوم بچھڑا اپنی ماں سے بہت پریم کرتا تھا۔ اُس نے سر ہلایا اور کہا— "نہیں ماں! میں تمہیں نہیں چھوڑوں گا۔ تمہیں کشٹ جھیلنا پڑے گا۔ ماں، مجھے اِسی طرح اپنے پیچھے چلنے دو۔ مجھے وشواس ہے کہ مجھے دیکھ دیکھ کر تم دکھ کے بھار کو کم محسوس کروگی۔"

اُس کی ماں بہت خوش ہوئی اور اُس نے اُسے ساتھ رہنے کی اِجازت دے دی۔ لیکن بار بار گائے اُسے تاکتی رہی۔ گائے کو ڈر تھا کہ کہیں بچھڑا گر نہ پڑے، یا بہت تیز نہ دوڑنے لگے، یا پیچھے نہ چھوٹ جائے۔ اِس لئے وہ تیز نہ چل سکی اور ہمیشہ کے مقابلے میں کام میں ڈھلائی ہوئی۔ کسان اِس سے بہت اسنتشٹ ہوا اور تیز چلانے کے لئے وہ بار بار اُسے مارتا تھا۔ اس طرح پہلے سے کہیں زیادہ گائے کو مار کھانی پڑی۔ آخر اُس نے پھر بچھڑے سے کہا:— "میرے لاڈلے بیٹے! اگر تجھے سچ مچ اپنی ماں سے پیار ہے تو تو یہاں سے چلا جا تاکہ مجھے اتنی مار نہ کھانی پڑے۔ تیری وجہ سے جتنی زیادہ مار مجھ پر پڑی ہے اُس کی گنتی نہیں ہوسکتی!"

دوستو! جذبات یعنی بھاؤناؤں کے بہت سے بیکار روپ ہیں۔ وہ روپ ہمیں بہت پیارے ہو سکتے ہیں لیکن اُن سے پیچھا چھڑانا ہمارے لئے بہت اچھا ہے۔

( 3 )

## بھیڑیا، لومڑی، بندر اور ایک دیہاتن

ایک بھیڑیئے اور ایک لومڑی نے دو اونچے سرکاری افسروں کا روپ دھارن کیا اور ایک بندر وردی پہنکر اُن کا اردلی بن گیا۔ لوگوں میں ابھی تک پرانی نیک عادتیں ہیں یا نہیں، یہ دیکھنے کے لئے تینوں ایک ساتھ چل پڑے۔

مشکل سے ابھی اُنھوں نے جنگل چھوڑا ہوگا کہ گھاٹی میں انہیں ایک دیہاتن دکھائی پڑی۔ بھیڑیئے نے کہا— "ہمیں اپنی جانچ پڑتال شروع کر دینی چاہئے۔ میں پورے وشواس سے کہہ سکتا ہوں کہ یہ عورت ایماندار ہے۔ یہ ہمیں دھوکا نہیں دے گی۔"

لومڑی بولی— "جب کبھی میں لیکھ لکھتی ہوں تو سدا اِس بات پر زور دیتی ہوں کہ ایمانداری ایک ایسا گن ہے جس کا ہر کسی میں ہونا بہت ضروری ہے۔"

بندر نے آواز لگائی... "بہت خوب! بہت خوب!"

بھیڑیا اور بندر آگے بڑھے اور بولے— "اے نیک مہلا! کیا تمہارے گھر میں مرغی کے بچے ہیں؟ ادھک ماترا میں ہمیں اُن کی ضرورت نہیں ہے، بس ہم میں سے ہر ایک کو ایک ایک چوزہ دے دو۔"

بندر نے کہا— "میں شاکاہاری ہوں۔ تھوڑی سی پھلیوں سے میرا کام چل جائے گا۔"

# आजकल की कुछ छोटी चीनी कहानियां

अनुवादक – मुजीब रिज़वी

( 1 )

## गाय और उसकी रस्सी

एक आदमी के घर एक गाय और एक कुत्ता दोनों पले हुए थे. एक दिन उन्होंने सलाह की कि शाम को दोनों इकट्ठे घर से भाग निकलें. उनका विचार था कि बहुत दूर पहाड़ों में चले जायें और वहां आज़ादी से रहें.

समझौते के अनुसार शाम को कुत्ता आया और अपने तेज़ दांतों से जल्दी जल्दी उसने रस्सी के उस हिस्से को काटना शुरू किया जो गाय के नथने में बंधा हुआ था. लेकिन गाय ने उसे फ़ौरन रोक दिया और बोली—"यहां से मेरी रस्सी न काटो. इसके बजाय खूंटे से इसे खोल दो, क्योंकि यह बहुत अच्छी रस्सी हैं. मेरे पास कोई दूसरी सम्पत्ति नहीं है. मैं इस रस्सी को साथ ले जाना चाहती हूं." जैसा गाय ने चाहा वैसा ही कुत्ते ने किया और खूंटे से रस्सी खोलने की कोशिश शुरू कर दी ताकि रस्सी गाय के नथने में बंधी लटकती रहे और वह उसे अपने साथ ले जा सके. फिर दोनों दरवाज़े की तरफ़ झपटे और साथ साथ भाग निकले.

कुत्ता काफ़ी दूर निकल गया, लेकिन गाय की रस्सी सड़क के किनारे के एक पत्थर से अटक गई और गाय को बीच में ही रुक जाना पड़ा. मालिक दोनों का पीछा कर रहा था. गाय को पकड़ना उसके लिये आसान हो गया, और वह उसे पकड़ कर घर वापिस ले गया.

गाय ने अब मन ही मन कहा –"मेरा एक ही दोष था कि मैं इस रस्सी को साथ रखना चाहती थी. सम्पत्ति से चिपटने के कारण ही मेरे सारे किये कराए पर पानी फिर गया."

( 2 )

## गाय और उसका बछड़ा

बसन्त के एक सुहावने दिन एक किसान अपनी गाय को हल जोतने के लिये खेत में ले गया. पीछे पीछे भकरता हुआ गाय का बछड़ा भी चला आया. जब गाय हल में जुत गई और काम शुरू करने का समय आया तो उसने बछड़े से कहा—"जा मेरे मुन्ने ! जा. पास वाली चरागाह में जाकर कलोल कर."

# آجکل کی کچھ چھوٹی چینی کہانیاں

انوواد ک—مجیب رضوی

( 1 )

## گائے اور اُس کی رسی

ایک آدمی کے گھر ایک گائے اور ایک کتا دونوں پلے ہوئے تھے . ایک دن اُنھوں نے صلاح کی کہ شام کو دونوں اکٹھے گھر سے بھاگ نکلیں . اُن کا وچار تھا کہ بہت دور پہاڑوں میں چلے جائیں اور وہاں آزادی سے رہیں .

سمجھوتے کے انوسار شام کو کتا آیا اور اپنے تیز دانتوں سے جلدی جلدی اُس نے رسی کے اُس حصے کو کاٹنا شروع کیا جو گائے کے نتھنے میں بندھا ہوا تھا . لیکن گائے نے اُسے فوراً روک دیا اور بولی—" یہاں سے میری رسی نہ کاٹو . اِس کے بجائے کھونٹے سے اِسے کھول دو' کیونکہ یہ بہت اچھی رسی ہے . میرے پاس کوئی دوسری سمپتی نہیں ہے. میں اِس رسی کو ساتھ لے جانا چاہتی ہوں ." جیسا گائے نے چاہا ویسا ہی کتے نے کیا اور کھونٹے سے رسی کھولنے کی کوشش شروع کر دی' تاکہ رسی گائے کے نتھنے میں بندھی لٹکتی رہے اور وہ اُسے اپنے ساتھ لے جا سکے . پھر دونوں دروازے کی طرف جھپٹے اور ساتھ ساتھ بھاگ نکلے .

کتا کافی دور نکل گیا' لیکن گائے کی رسی سڑک کے کنارے کے ایک پتھر سے اٹک گئی اور گائے کو بیچ میں ہی رک جانا پڑا . مالک دونوں کا پیچھا کر رہا تھا . گائے کو پکڑنا اُس کے لئے آسان ہوگیا' اور وہ اُسے پکڑ کر گھر واپس لے گیا .

گائے نے اب من ہی من کہا—" میرا ایک ہی دوش تھا کہ میں اِس رسی کو ساتھ رکھنا چاہتی تھی . سمپتی سے چپٹنے کے کارن ہی میرے سارے کئے کرائے پر پانی پھر گیا ."

( 2 )

## گائے اور اُس کا بچھڑا

بسنت کے ایک سہاونے دن ایک کسان اپنی گائے کو ہل جوتنے کے لئے کھیت میں لے گیا . پیچھے پیچھے بھکرتا ہوا گائے کا بچھڑا بھی چلا آیا . جب گائے ہل میں جت گئی اور کام شروع کرنے کا سمے آیا تو اُس نے بچھڑے سے کہا—" جا میرے منے ! جا . پاس والی چراگاہ میں جا کر کلیل کر ."

पैग़म्बर से लोगों ने पूछा—"किस चीज़ का दान आपको सब से अधिक पसन्द है?" उन्होंने जवाब दिया—"पानी का."

( इब्ने मुसय्यब, अबूदाऊद )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"ख़ैरात देकर तुम्हें ख़ुश होना चाहिये, क्योंकि मुसीबत ख़ैरात की दीवार को कभी नहीं फाँदती."

( अली, रज़ीन )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि—"जो आदमी तुम से माँगता है, चाहे वह घोड़े पर ही सवार होकर क्यों न आया हो, उसकी बात को तुम सुनो क्योंकि इसका उसे हक़ है."

( अली, अबूदाऊद )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"जब ख़ुदा ने ज़मीन बनाई तो वह हिल रही थी और काँप रही थी. तब ख़ुदा ने उस पर अटल पहाड़ पैदा कर दिये और ज़मीन स्थिर हो गई. पहाड़ की ताक़त से फ़रिश्ते चकित रह गये और बोले—'ऐ मालिक! क्या तूने पहाड़ से भी अधिक शक्ति वाली कोई चीज़ पैदा की है?' अल्लाह ने जवाब दिया—'हां, लोहा, क्योंकि वह पहाड़ को तोड़ डालता है.' फ़रिश्तों ने कहा—'क्या तूने लोहे से भी अधिक मज़बूत कोई चीज़ पैदा की है?' ख़ुदा ने कहा—'हां, आग, क्योंकि वह लोहे को गला देती है.' उन्होंने फिर पूछा—'क्या तूने आग से भी अधिक शक्ति वाली कोई चीज़ पैदा की है?' ख़ुदा ने कहा—'हां! पानी, क्योंकि वह आग को ठन्डा कर देता है.' फ़रिश्तों ने पूछा—'क्या पानी से भी अधिक शक्ति वाली कोई चीज़ तूने पैदा की है?' ख़ुदा ने कहा—'हां! हवा, क्योंकि वह पानी में बहाव पैदा कर देती है.' उन लोगों ने पूछा—'क्या तूने हवा से भी अधिक शक्ति वाली कोई चीज़ पैदा की है?' ख़ुदा ने कहा—'हां, इनसान, उस समय हवा से भी अधिक शक्तिशाली होता है जब वह दाहने हाथ से ख़ैरात देता है और अपने बाएं हाथ को ख़बर तक नहीं होने देता."

( अनस, तिरमिज़ी )

❀ ❀ ❀



پیغمبر سے لوگوں نے پوچھا—" کس چیز کا دان آپ کو سب سے ادھک پسند ہے؟" انہوں نے جواب دیا— "پانی کا."

( ابن مسیب، ابوداؤد )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" خیرات دے کر تمہیں خوش ہونا چاہئے، کیونکہ مصیبت خیرات کی دیوار کو کبھی نہیں پھاندتی."

( علی، رزین )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" جو آدمی تم سے مانگتا ہے، چاہے وہ گھوڑے پر ہی سوار ہو کر کیوں نہ آیا ہو، اُس کی بات کو تم سنو کیونکہ اِس کا اُسے حق ہے."

( علی، ابوداؤد )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" جب خدا نے زمین بنائی تو وہ ہل رہی تھی اور کانپ رہی تھی. تب خدا نے اُس پر اٹل پہاڑ پیدا کر دیئے اور زمین استھر ہو گئی. پہاڑ کی طاقت سے فرشتے چکت رہ گئے اور بولے—"اے مالک! کیا تو نے پہاڑ سے بھی ادھک شکتی والی کوئی چیز پیدا کی ہے؟' اللہ نے جواب دیا—' ہاں، لوہا، کیونکہ وہ پہاڑ کو توڑ ڈالتا ہے.' فرشتوں نے کہا—' کیا تو نے لوہے سے بھی ادھک مضبوط کوئی چیز پیدا کی ہے؟' خدا نے کہا—'ہاں' آگ، کیونکہ وہ لوہے کو گلا دیتی ہے.' اُنہوں نے پھر پوچھا—' کیا تو نے آگ سے بھی ادھک شکتی والی کوئی چیز پیدا کی ہے؟' خدا نے کہا—' ہاں پانی، کیونکہ وہ آگ کو ٹھنڈا کر دیتا ہے.' فرشتوں نے پوچھا—' کیا پانی سے بھی ادھک شکتی والی کوئی چیز تو نے پیدا کی ہے؟' خدا نے کہا—'ہاں، ہوا، کیونکہ وہ پانی میں بہاؤ پیدا کر دیتی ہے.' ان لوگوں نے پوچھا—' کیا تو نے ہوا سے بھی ادھک شکتی والی کوئی چیز پیدا کی ہے؟' خدا نے کہا—'ہاں، انسان، اُس سمے ہوا سے بھی ادھک شکتی شالی ہوتا ہے جب وہ داہنے ہاتھ سے خیرات دیتا ہے اور بائیں ہاتھ کو خبر تک نہیں ہونے دیتا."

( انس، ترمذی )

❀ ❀ ❀

"उन साधनों का ख़ैरात करना सब से अच्छा है जिन से ग़रीबों की रोज़ी चलती है; यह ख़ैरात तुम्हें उससे शुरू करनी चाहिये जो तुम्हारे रिश्तेदारों में से हो."

( अबू हुरैरा, अबू दाऊद )

❀ ❀ ❀

पैग़म्बर से लोगों ने पूछा कि :—सब से अच्छी ख़ैरात कौन सी है ?" मुहम्मद साहब ने कहा :—"उस समय ख़ैरात करना सब से अच्छा है जब तुम तन्दुरुस्त हो और धन को चिपटना चाहते हो, जब तुम धनी बनने के अभिलाषी हो और ग़रीबी से डर रहे हो; ख़ैरात करने का काम उस समय के लिये उठा न रक्खो जब तुम दम तोड़ रहे हो और तुम्हें यह कहना पड़े कि—फ़लां फ़लां आदमियों के लिये मैं यह छोड़े जा रहा हूं; जबकि बहुत पहले ही फ़लां फ़लां आदमी उसके हक़दार हो चुके हैं !"

( अबू हुरैरा, बुख़ारी, मुसलिम, अबू दाऊद, निसाई )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"ज़िन्दगी में एक दिरम ख़ैरात करना मौत के समय सौ दिरम ख़ैरात करने से कहीं बेहतर है."

( अबू सईद, अबू दाऊद )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा है कि :—"अगर कोई मुसलिम किसी दूसरे मुसलिम को कपड़ा पहनाता है तो जब तक उस कपड़े का कोई भी हिस्सा उसके बदन पर रहता है तब तक कपड़ा पहनाने वाले की अल्लाह हिफ़ाज़त करता है."

( इब्ने अब्बास, तिरमिज़ी )

❀ ❀ ❀

किसी आदमी ने कहा कि :—"ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरी मां मर गई है; अगर मैं उसके लिये ख़ैरात दूं तो क्या उसे फ़ायदा होगा ?" पैग़म्बर ने कहा—"हां." उस आदमी ने कहा कि :—"मेरे पास एक बाग़ है, और आपको गवाह बना कर मैं उसे ख़ैरात करता हूं ताकि उसका सवाब मेरी मां को मिले."

( इब्ने अब्बास, बुख़ारी, तिरमिज़ी, अबू दाऊद, निसाई )

❀ ❀ ❀

मैंने कहा कि :—"ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरी मां मर गई है, उसके लिये सब से अच्छा दान कौन सा होगा ?" पैग़म्बर ने कहा—"रेगिस्तान की भयानक गरमी की याद करके पानी दान करना सब से अच्छी ख़ैरात है."

( साद बिन उबैदा, अबूदाऊद, निसाई )

❀ ❀ ❀



"اُن سادھنوں کا خیرات کرنا سب سے اچھا ہے جن سے غریبوں کی روزی چلتی ہے؛ یہ خیرات تمہیں اُس سے شروع کرنی چاہئے جو تمہارے رشتےداروں میں سے ہو."

( ابوہریرہ، ابوداؤد )

❀ ❀ ❀

پیغمبر سے لوگوں نے پوچھا کہ :—" سب سے اچھی خیرات کون سی ہے؟" محمد صاحب نے کہا :—"اُس سمے خیرات کرنا سب سے اچھا ہے جب تم تندرست ہو اور دھن کو چپٹنا چاہتے ہو، جب تم دھنی بننے کے ابھیلاشی ہو اور غریبی سے ڈر رہے ہو؛ خیرات کرنے کا کام اُس سمے کے لئے اُٹھا نہ رکھو جب تم دم توڑ رہے ہو اور تمہیں یہ کہنا پڑے کہ—فلاں فلاں آدمیوں کے لئے میں یہ چھوڑے جا رہا ہوں؛ جبکہ بہت پہلے ہی فلاں فلاں آدمی اُس کے حقدار ہو چکے ہیں !"

( ابوہریرہ، بخاری، مسلم، ابوداؤد، نساعی )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" زندگی میں ایک درم خیرات کرنا موت کے سمے سو درم خیرات کرنے سے کہیں بہتر ہے."

( ابوسعید، ابوداؤد )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" اگر کوئی مسلم کسی دوسرے مسلم کو کپڑا پہناتا ہے تو جب تک اُس کپڑے کا کوئی بھی حصہ اُس کے بدن پر رہتا ہے تب تک کپڑا پہنانے والے کی اللہ حفاظت کرتا ہے."

( ابن عباس، ترمذی )

❀ ❀ ❀

کسی آدمی نے کہا کہ :—" اے اللہ کے رسول ! میری ماں مر گئی ہے؛ اگر میں اُس کے لئے خیرات دوں تو کیا اُسے فائدہ ہوگا ؟" پیغمبر نے کہا—" ہاں." اُس آدمی نے کہا کہ :—"میرے پاس ایک باغ ہے، اور آپ کو گواہ بنا کر میں اُسے خیرات کرتا ہوں تاکہ اِس کا ثواب میری ماں کو ملے."

( ابن عباس، بخاری، ترمذی، ابوداؤد، نساعی )

❀ ❀ ❀

میں نے کہا کہ :—" اے اللہ کے رسول ! میری ماں مر گئی ہے. اُس کے لئے سب سے اچھا دان کونسا ہوگا ؟" پیغمبر نے کہا—" ریگستان کی بھیانک گرمی کی یاد کر کے پانی دان کرنا سب سے اچھی خیرات ہے."

( سعید بن عبیدہ، ابوداؤد، نساعی )

❀ ❀ ❀

यह है कि तुम्हारे हर अमल का नेक बदला भगवान तुम्हें ज़रूर देगा."

( अबू सईद, बुख़ारी, मुसलिम, अबूदाऊद, निसाई )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि:–ख़ुदा कहता है कि "तुम ख़ैरात में ख़र्च करो और मैं तुम को और दूंगा." ख़ुदा के दोनों हाथ धन से भरे हैं, दिन रात ख़र्च करने पर भी उसके धन में कोई कमी नहीं आती, कभी तुमने इस पर सोचा है ? जब से उस ने ज़मीन और आसमान को बनाया है तब से उसने कितना ख़र्च किया होगा ? फिर भी असलियत यह है कि जो कुछ ख़ुदा के हाथ में है उसपर कोई असर नहीं पड़ा."

( अबुहुरैरा, बुख़ारी, मुसलिम, तिरमिज़ी )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने एक बार कहा :—"अल्लाह तुम से कहता है कि ऐ आदम की औलाद ! तुम्हारी ज़रूरत से ज़्यादा जो धन तुम्हारे पास है उसे अपने हाथ से दूसरों को दे डालना तुम्हारे लिये बेहतर होगा, और उस धन को अपने पास रखना तुम्हारे लिये बुरा है अगर खाने पीने के लिये तुम्हें ज़रूरत भर मिल जाता है तो वह तुम्हारे लिये काफ़ी है;–देते समय उस आदमी से शुरू करो जो तुम्हारा रिश्तेदार है."

( अबू उमैया, मुसलिम, तिरमिज़ी )

❀ ❀ ❀

किसी ने कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरे पास एक दीनार है." पैग़म्बर ने कहा—"तो उसे अपने ऊपर ख़र्च कर डालो." उस आदमी ने कहा—"मेरे पास इसके अलावा एक दीनार और है." पैग़म्बर ने कहा—"उसे अपने बच्चों को दे दो." उसने फिर कहा—'मेरे पास एक दीनार और भी है." मुहम्मद साहब ने कहा :—"उसे अपनी बीवी को दे दो." उसने कहा :—मेरे पास अभी एक और दीनार है." पैग़म्बर ने कहा :—"उसे उन लोगों को दे दो जो तुम्हारे सहारे हैं." उस आदमी ने कहा—"मेरे पास फिर भी एक दीनार बचता है." पैग़म्बर ने कहा—"अब जिसे तुम ठीक समझो यह दीनार उसे दे दो."

( अबू हुरैरा, अबू दाऊद, निसाई )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"ख़ैरात से ख़ुदा का ग़ुस्सा ठन्डा हो जाता है."

( अबू हुरैरा, तिरमिज़ी )

❀ ❀ ❀

पैग़म्बर से किसी ने पूछा कि :—"किस तरह की ख़ैरात अच्छी होती है ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया :—



یہ ہے کہ تمہارے ہر عمل کا نیک بدلہ بھگوان تمہیں ضرور دے گا .

( ابو سعید، بخاری، مسلم، ابوداؤد، نسائی )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—"خدا کہتا ہے کہ " تم خیرات میں خرچ کرو اور میں تم کو اور دونگا - خدا کے دونوں ہاتھ دھن سے بھرے ہیں، دن رات خرچ کرنے پر بھی اُس کے دھن میں کوئی کمی نہیں آتی، کبھی تم نے اِس پر سوچا ہے ؟ جب سے اُس نے زمین اور آسمان کو بنایا ہے تب سے اُس نے کتنا خرچ کیا ہوگا ؟ پھر بھی اصلیت یہ ہے کہ جو کچھ خدا کے ہاتھ میں ہے اُس پر کوئی اثر نہیں پڑا ."

( ابو ہریرہ، بخاری، مسلم، ترمذی )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے ایک بار کہا :—"اللہ تم سے کہتا ہے کہ اے آدم کی اولاد ! تمہاری ضرورت سے زیادہ جو دھن تمہارے پاس ہے اُسے اپنے ہاتھ سے دوسروں کو دے ڈالنا تمہارے لئے بہتر ہوگا، اور اُس دھن کو اپنے پاس رکھنا تمہارے لئے برا ہے؛ اگر کھانے پینے کے لئے تمہیں ضرورت بھر مل جاتا ہے تو وہ تمہارے لئے کافی ہے؛—دیتے سمے اُس آدمی سے شروع کرو جو تمہارا رشتہ دار ہے ."

( ابو امیہ، مسلم ترمذی )

❀ ❀ ❀

کسی نے کہا—" اے اللہ کے رسول ! میرے پاس ایک دینار ہے ." پیغمبر نے کہا—" تو اُسے اپنے اوپر خرچ کر ڈالو ." اُس آدمی نے کہا—" میرے پاس اِس کے علاوہ ایک دینار اور ہے ." پیغمبر نے کہا :—" اُسے اپنے بچوں کو دے دو ." اُس نے پھر کہا—" میرے پاس ایک دینار اور بھی ہے ." محمد صاحب نے کہا :—" اُسے اپنی بیوی کو دے دو " اُس نے کہا :— " میرے پاس ابھی ایک اور دینار ہے." پیغمبر نے کہا—" اُسے اُن لوگوں کو دے دو جو تمہارے سہارے ہیں ." اُس آدمی نے کہا :—" میرے پاس پھر بھی ایک دینار بچتا ہے ." پیغمبر نے کہا—" اب جسے تم ٹھیک سمجھو یہ دینار اُسے دے دو."

( ابوہریرہ، ابوداؤد، نسائی )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" خیرات سے خدا کا غصہ ٹھنڈا ہوجاتا ہے ."

( ابوہریرہ، ترمذی )

❀ ❀ ❀

پیغمبر سے کسی نے پوچھا کہ :—" کس طرح کی خیرات اچھی ہوتی ہے ؟" محمد صاحب نے جواب دیا :—

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"हर उस दिन के लिये जब सूरज निकलता है आदमी के जोड़ जोड़ पर जो चीज़ फ़र्ज़ की गई है वह ख़ैरात है; दो आदमियों के बीच इनसाफ़ करना ख़ैरात है; अपने जानवर पर सामान लादने वाले की सहायता करना ख़ैरात है; सामान लादना या किसी आदमी को उनका सामान उठाकर देना ख़ैरात है; मीठी और प्यारी बात कहना ख़ैरात है; ईश्वर से प्रार्थना करने के लिये जितने क़दम उठते हैं वह सब ख़ैरात हैं; चोट पहुंचाने वाली चीज़ों को सड़क पर से हटाना ख़ैरात है."

( अबू हुरैरा, बुख़ारी, मुसलिम )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"हर वह मुसलिम जो पेड़ लगाता है या खेत बोता है और उसके पेड़ या खेत में से चिड़ियां, आदमी और जानवर खाते हैं तो यह उसकी ख़ैरात होती है."

( अनस, बुख़ारी, तिरमिज़ी )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"अच्छी चीज़ों में से लोग ख़ैरात नहीं करते, लेकिन अल्लाह केवल अच्छी चीज़ें ही स्वीकार करता है. फिर भी चाहे दान में सूखे खजूर ही क्यों न दिये गए हों ख़ुदावन्द करीम उस दान को अपने दाहने हाथ से लेता है. यह चीज़ अल्लाह के हाथ में बढ़ती रहती है. यहां तक कि यह पहाड़ से भी बड़ी बन जाती है. अल्लाह उस चीज़ की हिफ़ाज़त ऐसे करता है जैसे तुम अपने दूध पीते बछड़े या अपने दूध छूटे बच्चे की हिफ़ाज़त करते हो."

(अबू हुरैरा, बुख़ारी, मुसलिम, तिरमिज़ी, अबूदाऊद, निसाई, मालिक )

❀ ❀ ❀

एक बद्दू ने पूछा :—"ऐ अल्लाह के रसूल ! हिजरत के सम्बन्ध में मुझे कुछ बताइये." पैग़म्बर ने कहा—"हिजरत करना बहुत कठिन काम है. क्या तुम्हारे पास कोई ऊंट है ?" उस आदमी ने कहा—"हां." मुहम्मद साहब ने पूछा :—"क्या तुम उस पर ज़कात ( क़ीमत के चालीसवें हिस्से का हर साल दान ) भी निकालते हो ?" उस आदमी ने कहा—"हां." मुहम्मद साहब ने फिर पूछा:—"क्या तुम उसका दूध लोगों को अपनी तरफ़ से पीने के लिये देते हो?" उसने कहा—"हां." मुहम्मद साहब ने फिर पूछा:—"और क्या जिस दिन तुम उसको पानी पिलाते हो तो उसका दूध ग़रीबों में बांटते हो ?" उसने कहा—"हां". पैग़म्बर ने कहा—"तब हिजरत का कष्ट भोगने के बजाय तुम समन्दर के इसी पार अपना काम धंदा करो क्योंकि सच



محمد صاحب نے کہا کہ :—"ہر اُس دن کے لئے جب سورج نکلتا ہے آدمی کے جوڑ جوڑ پر جو چیز فرض کی گئی ہے وہ خیرات ہے؛ دو آدمیوں کے بیچ انصاف کرنا خیرات ہے؛ اپنے جانور پر سامان لادنے والے کی سہائتا کرنا خیرات ہے؛ سامان لادنا یا کسی آدمی کو اُس کا سامان اُٹھاکر دینا خیرات ہے؛ میٹھی اور پیاری بات کہنا خیرات ہے؛ ایشور سے پرارتھنا کرنے کے لئے جتنے قدم اُٹھتے ہیں وہ سب خیرات ہیں؛ چوٹ پہونچانے والی چیزوں کو سڑک پر سے ہٹانا خیرات ہے."

( ابوہریرہ، بخاری، مسلم )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—ہر وہ مسلم جو پیڑ لگاتا ہے یا کھیت بوتا ہے اور اُس کے پیڑ یا کھیت میں سے چڑیاں، آدمی اور جانور کھاتے ہیں تو یہ اُس کی خیرات ہوتی ہے."

( انس، بخاری، ترمذی )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—"اچھی چیزوں میں سے لوگ خیرات نہیں کرتے، لیکن اللہ کیول اچھی چیزیں ہی سویکار کرتا ہے. پھر بھی چاہے دان میں سوکھے کھجور ہی کیوں نہ دئے گئے ہوں خداوند کریم اُس دان کو اپنے داہنے ہاتھ سے لیتا ہے. یہ چیز اللہ کے ہاتھ میں بڑھتی رہتی ہے. یہاں تک کہ یہ پہاڑ سے بھی بڑی بن جاتی ہے. اللہ اُس چیز کی حفاظت ایسے کرتا ہے جیسے تم اپنے دودھ پیتے بچھڑے یا اپنے دودھ چھوٹے بچے کی حفاظت کرتے ہو."

( ابو ہریرہ، بخاری، مسلم، ترمذی، ابوداؤد، نسائی، مالک )

❀ ❀ ❀

ایک بدو نے پوچھا :—"اے اللہ کے رسول ! ہجرت کے سمبندھ میں مجھے کچھ بتائیے." پیغمبر نے کہا—"ہجرت کرنا بہت کٹھن کام ہے. کیا تمہارے پاس کوئی اونٹ ہے؟" اُس آدمی نے کہا—"ہاں." محمد صاحب نے پوچھا :—"کیا تم اس پر زکاۃ ( قیمت کے چالیسویں حصہ کا ہر سال دان ) بھی نکالتے ہو؟" اُس آدمی نے کہا—"ہاں." محمد صاحب نے پھر پوچھا :—"کیا تم اُس کا دودھ لوگوں کو اپنی طرف سے پینے کے لئے دیتے ہو؟" اُس نے کہا—"ہاں." محمد صاحب نے پھر پوچھا:—"اور کیا جس دن تم اُس کو پانی پلاتے ہو تو اُس کا دودھ غریبوں بانٹتے ہو؟" اُس نے کہا—"ہاں." پیغمبر نے کہا—"تب ہجرت کا کشٹ بھوگنے کے بجائے تم سمندر کے اِسی پار اپنا کام دھندا کرو کیونکہ سچ

# ख़ैरात (दान) के बारे में मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

अनुवादक—मुजीब रिज़वी

मुहम्मद साहब ने कहा :—"ख़ैरात देना हर मुसलमान का फ़र्ज़ है." लोगों ने पूछा—"अगर इस फ़र्ज़ को पूरा करने के लिये किसी के पास साधन न हों तो ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—"ऐसे आदमी को अपने दोनों हाथों से काम करके अपना भी काम चलाना चाहिये और उसी में से ख़ैरात भी करनी चाहिये." फिर किसी ने पूछा—"अगर वह ऐसा न कर सके या काम करने के क़ाबिल ही न हो तो ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया—"तब उसे ज़रूरतमन्दों और दुखियों की जिस तरह हो सहायता करनी चाहिये." लोगों ने फिर पूछा—"अगर वह यह भी न कर सके तो ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया—"तब उसे दूसरों को नेकी करने की नसीहत करनी चाहिये." लोगों ने कहा—"अगर वह यह भी न कर सके तो ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया—"तब उसे ख़ुद हर बुराई से बचना चाहिये, क्योंकि सचमुच बुराई से बचना ही उसका ख़ैरात करना है."

( अबू मूसा अलअशारी, बुख़ारी, मुसलिम )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने एक बार कहा कि :—"हर नेक काम ख़ैरात है."

( बुख़ारी, मुसलिम अबूदाऊद, तिरमिज़ी )

❀ ❀ ❀

पैग़म्बर ने कहा कि :—"अपने किसी भाई को देखकर मुस्कराना ख़ैरात है; नेकी करने की नसीहत करना ख़ैरात है; बुराई से मना करना ख़ैरात है; किसी नई जगह पर किसी को सही रास्ता बता देना ख़ैरात है; उस आदमी की सहायता करना जिसकी आंखों में ख़राबी है ख़ैरात है; रास्ते से पत्थर, कांटे, हड्डियां वग़ैरा हटाना ख़ैरात है; अपनी बाल्टी का पानी अपने भाई की बाल्टी में उंडेलना ख़ैरात है."

( अबूज़र, तिरमिज़ी )

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"नेक काम के लिये नसीहत करना और बुरे कामों से मना करना ख़ैरात है."

( अबूज़र, मुसलिम )

❀ ❀ ❀

# خیرات (دان) کے بارے میں محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

انوادک—مجیب رضوی

محمد صاحب نے کہا :—"خیرات دینا ہر مسلمان کا فرض ہے." لوگوں نے پوچھا—"اگر اِس فرض کو پورا کرنے کے لئے کسی کے پاس سادھن نہ ہوں تو ؟" پیغمبر نے جواب دیا—"ایسے آدمی کو اپنے دونوں ہاتھوں سے کام کرکے اپنا بھی کام چلانا چاہئے اور اسی میں سے خیرات بھی کرنی چاہئے." پھر کسی نے پوچھا—"اگر وہ ایسا نہ کرسکے یا کام کرنے کے قابل ہی نہ ہو تو ؟" محمد صاحب نے جواب دیا :—"تب اُسے ضرورتمندوں اور دکھیوں کی جس طرح ہو سہائتا کرنی چاہئے." لوگوں نے پوچھا—"اگر وہ یہ بھی نہ کرسکے تو ؟" محمد صاحب نے جواب دیا—"تب اُسے دوسروں کو نیکی کرنے کی نصیحت کرنی چاہئے." لوگوں نے کہا—"اگر وہ یہ بھی نہ کرسکے تو ؟" محمد صاحب نے جواب دیا—"تب اُسے خود ہر برائی سے بچنا چاہئے، کیونکہ سچ مچ برائی سے بچنا ہی اُس کا خیرات کرنا ہے."

(ابو موسیٰ الشعری، بخاری، مسلم )

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے ایک بار کہا کہ :—"ہر نیک کام خیرات ہے."

( بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی )

❀ ❀ ❀

پیغمبر نے کہا کہ :—"اپنے کسی بھائی کو دیکھ کر مسکرانا خیرات ہے؛ نیکی کرنے کی نصیحت کرنا خیرات ہے؛ برائی سے منع کرنا خیرات ہے؛ کسی نئی جگہ پر کسی کو صحیح راستہ بتا دینا خیرات ہے؛ اُس آدمی کی سہائتا کرنا جس کی آنکھوں میں خرابی ہے خیرات ہے؛ راستے سے پتھر، کانٹے، ہڈیاں وغیرہ ہٹانا خیرات ہے؛ اپنی بالٹی کا پانی اپنے بھائی کی بالٹی میں اُنڈیلنا خیرات ہے."

( ابوذر، ترمذی )

❀ ❀ ❀

"محمد صاحب نے کہا کہ :—"نیک کام کے لئے نصیحت کرنا اور برے کاموں سے منع کرنا خیرات ہے."

( ابوذر، مسلم )

❀ ❀ ❀

क्या राग है क्या लैकारी है एक वज्द का आलम तारी है
जो सुर है प्रेम कटारी है जो ज़ख्म है ज़ख्मेकारी है
एहसासे ख़ुदी का नूर हुआ इरफ़ान से दिल मामूर हुआ
यकरंग प्रेमी प्रीतम हैं अब परदए हायल दूर हुआ.

नज़्म 'अछूत उद्धार' में कहते हैं, जबकि रामचन्द्र जी बनबास की हालत में घूमते हुए सबरी के झोंपड़े में पहुंचते हैं और सबरी प्रेम के साथ उनके सामने झूटे बेर रखती है :—

भगवान ने अख़लासो मदारात को देखा
वारफ़्तए दीदार के जज़्बात को देखा
कुछ ज़ात को देखा न कुछ औक़ात को देखा
देखा तो फ़क़त प्रेम की सौग़ात को देखा
डूबे हुए थे बेर मुहब्बत के जो रस में
ख़ुद प्रेम के सागर भी हुए प्रेम के बस में
है रस्म मुहब्बत की ज़माने में निराली
भक्ती कभी तासीर से रहती नहीं ख़ाली
मन्ज़ूर किया राम ने यह तुहफ़ए आली
बुनियाद जहां में पतित उद्धार की डाली
ऐ काश! अछूतों को गले हम भी लगा लें
इस प्रेम के अफ़साने को आदर्श बना लें.

———

मसकन = निवासस्थान. असलाफ़ = पूर्वज. दौरे कुहन = प्राचीन काल. फ़िरदौस = स्वर्ग. अज़मते गुज़िश्ता = बीता हुआ बड़प्पन. अमीं = रक्षक. धरोहर = रखने वाला. जाहो जलाल = शानो शौक़त. तहनशीं = छुपा हुआ. एजाज़े हक़नुमाई = सच्चाई को दिखाने का चमत्कार. रंगे मजाज़ = ऊपरी रंग. मह्वे सना = स्तुति में लगी हुई. दस्तेनाज़ुक = कोमल हाथ. नग़मा आराई = गीत गाना. तारी = छाया हुआ. एहसासे ख़ुदी = अहम्भाव. इर्फ़ान = ज्ञान. मामूर = भरा हुआ. हायल = बीच का. अख़लास = हृदय की शुद्धता. मुदारात = सज्जनता. वारफ़्तए दीदार = दर्शन में डूबा हुआ. सौग़ात = भेंट. तुहफ़ए आली = अच्छी भेंट. पतित उद्धार = गिरे हुओं को ऊपर उठाना.





کیا راگ ھے کیا لے کاری ھے اک وجد کا عالم طاری ھے
جو سر ھے پریم کٹاری ھے جو زخم ھے زخم کاری ھے
احساس خودی کا نور ھوا عرفان سے دل معمور ھوا
یک رنگ پریمی پریتم ھیں اب پردۂ حائل دور ھوا

نظم ' اچھوت اُدھار ' میں کہتے ھیں ' جبکہ رام چندر جی بن باس کی حالت میں گھومتے ھوئے سبری کے جھونپڑے میں پہونچتے ھیں اور سبری پریم کے ساتھ اُن کے سامنے جھوٹے بیر رکھتی ھے :—

بھگوان نے اخلاص و مدارات کو دیکھا
وارفتۂ دیدار کے جذبات کو دیکھا
کچھ ذات کو دیکھا نہ کچھ اوقات کو دیکھا
دیکھا تو فقط پریم کی سوغات کو دیکھا
ڈوبے ھوئے تھے بیر محبت کے جو رس میں
خود پریم کے ساگر بھی ھوئے پریم کے بس میں
ھے رسم محبت کی زمانے میں نرالی
بھگتی کبھی تاثیر سے رھتی نہیں خالی
منظور کیا رام نے یہ تحفۂ عالی
بنیاد جہاں میں پتت اُدھار کی ڈالی
اے کاش! اچھوتوں کو گلے ھم بھی لگالیں
اِس پریم کے افسانے کو آدرش بنالیں

———

مسکن = نواس استھان. اسلاف = پوروج . دورکہن = پراچین کال. فردوس = سورگ. عظمت گذشتہ = بیتا ھوا بڑپن. امین = رکشک' دھروھر = رکھنے والا . جاہ و جلال = شان و شوکت . تہ نشیں = چھپا ھوا. اعجاز حق نمائی = سچائی کو دکھانے کا چمتکار. رنگ مجاز = اُوپری رنگ. محوثنا = اِستتی میں لگی ھوئی. دست نازک = کومل ھاتھ. نغمہ آرائی = گیت گانا . طاری = چھپا ھوا . احساس خودی = اھم بھاؤ . عرفان = گیان . معمور = بھرا ھوا . حائل = بیچ کا . اخلاص = ھردے کی شدھتا . مدارات = سجنتا وارفتۂ دیدار = درشن میں ڈوبا ھوا. سوغات = بھینٹ. تحفۂ عالی = اچھی بھینٹ . پتت اُدھار = گرے ھوؤں کو اوپر اُٹھانا .

इनके कुछ शेर मुलाहिज़ा हों, ज़िन्दगी के मुताल्लिक़ एक रुबाई में कहते हैं :—

करता हूं बयां सुनिये बयाने हस्ती
कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं शाने हस्ती
इस सांस की बुनियाद ही क्या है, बिसमिल
कन्धे पे हवा के है मकाने हस्ती

शाहिदे मुतलक़ की तलाश का बयान इन शेरों में कैसे हसीन पैराये में किया है :—

मुद्दत से सुनते आए हैं वह खानए दिल में रहते हैं
आजांय नज़र तो हम जानें कहने के लिये सब कहते हैं.
नज़रों को नज़र आते जो नहीं तो हम यही दिल से कहते हैं
इस पर्दे में कुछ पर्दा है वह पर्दे में क्यों रहते हैं.
इस सोच में हैं इस चक्कर में इस फ़िक्र में हैं दुनियावाले
वह आलम कैसा आलम है जिस आलम में वह रहते हैं.
छिपने को छिपें सौ पर्दों में इस छिपने से क्या होता है
वह ढूंढ निकालेंगे उनको जो खोज में उनके रहते हैं.

मुन्शी महाराज बहादुर 'बर्क़' देहलवी उर्दू के चोटी के शायरों में गुज़रे हैं. वह चकबस्त की तरह आलमे जवानी में ही चल बसे. उनकी नज़्मों के मजमुए 'मतलए अनवार' में समाजी, तारीख़ी और मज़हबी नज़्में हिन्दुस्तानी रिवायतों की लाजवाब मिसालें हैं. गो इनकी ज़बान सादा नहीं है फिर भी इनके मौज़ू ऐसे बुलन्द हैं कि वह सब नज़्में उर्दू अदब के बेहतरीन सरमाए में जगह पाएंगी. आज का हिन्दी साहित्य अगर इन्हें अपना लेगा तो उसमें और वसअत पैदा होगी और उसका हुस्न दोबाला होगा. इनकी नज़्मों में से चन्द शेर यहां दिये जाते हैं. नज़्म 'गंगा' के चन्द शेर सुनिये :—

मसकन है तू क़दीमी असलाफ़ का हमारे
डाले रहे हैं डेरे सदियों तेरे किनारे
था शान्दार कैसा दौरे कुहन हमारा
फ़िरदौस बर ज़मीं था गोया वतन हमारा
है तुझको याद अब तक वह दास्तां हमारी
लहरें तेरी वरक़ हैं तारीख़ की हमारी
तू अज़मते गुज़िश्ता की आज तक अमीं है
जाहो जलाल तेरे पहलू में तहनशीं है
वहदानियत का नग़मा मौजों के साज़ में है
एजाज़े हक़ नुमाई रंगे मजाज़ में है

नज़्म मीरा बाई में भक्ति और प्रेम मुलाहिज़ा कीजिये :—

भगवान कृष्ण के मन्दिर में है महवे सना मीरा बाई
इक बीन है दस्ते नाज़ुक में लब वक़्फ़े नग़मा आराई



اِن کے کچھ شعر ملاحظہ ہوں، زندگی کے متعلق ایک رباعی میں کہتے ہیں :—

کرتا ہوں بیاں سنئے بیان ہستی
کچھ بھی نہیں، کچھ بھی نہیں شان ہستی
اِس سانس کی بنیاد ہی کیا ہے، بسمل
کندھے پہ ہوا کے ہے مکان ہستی

شاہد مطلق کی تلاش کا بیان اِن شعروں میں کیسے حسین پیرائے میں کیا ہے :—

مدت سے سنتے آئے ہیں وہ خانۂ دل میں رہتے ہیں
آجائیں نظر تو ہم جانیں کہنے کے لئے سب کہتے ہیں۔
نظروں کو نظر آتے جو نہیں تو ہم یہی دل سے کہتے ہیں
اِس پردے میں کچھ پردہ ہے وہ پردے میں کیوں رہتے ہیں۔
اِس سوچ میں ہیں اِس چکر میں اِس فکر میں ہیں دنیاوالے
وہ عالم کیسا عالم ہے جس عالم میں وہ رہتے ہیں۔
چھپنے کو چھپیں سو پردوں میں اس چھپنے سے کیا ہوتا ہے
وہ ڈھونڈھ نکالینگے اُن کو جو کھوج میں اُن کے رہتے ہیں۔

منشی مہاراج بہادر 'برق' دہلوی اردو کے چوٹی کے شاعروں میں گذرے ہیں۔ وہ چکبست کی طرح عالم جوانی میں ہی چل بسے۔ اُن کی نظموں کے مجموعہ 'مطلع انوار' میں سماجی، تاریخی اور مذہبی نظمیں ہندستانی روائتوں کی لاجواب مثالیں ہیں۔ گو اِن کی زبان سادہ نہیں ہے پھر بھی اِن کے موضوع ایسے بلند ہیں کہ وہ سب نظمیں اردو ادب کے بہترین سرمایہ میں جگہ پائیں گی۔ آج کا ہندی ساہتیہ اگر انہیں اپنا لے گا تو اُس میں اور وسعت پیدا ہوگی اور اُس کا حسن دوبالا ہوگا۔ اِن کی نظموں میں سے چند شعر یہاں دیئے جاتے ہیں۔ نظم 'گنگا' کے چند شعر سنئے :—

مسکن ہے تو قدیمی اسلاف کا ہمارے
ڈالے رہے ہیں ڈیرے صدیوں ترے کنارے
تھا شاندار کیسا دور کہن ہمارا
فردوس بر زمیں تھا گویا وطن ہمارا
ہے تجھ کو یاد اب تک وہ داستاں ہماری
لہریں تری ورق ہیں تاریخ کی ہماری
تو عظمت گذشتہ کی آج تک امیں ہے
جاہ و جلال تیرے پہلو میں تہ نشیں ہے
وحدانیت کا نغمہ موجوں کے ساز میں ہے
اعجاز حق نمائی رنگ مجاز میں ہے

نظم میرا بائی میں بھکتی اور پریم ملاحظہ کیجئے :—

بھگوان کرشن کے مندر میں ہے محو ثنا میرا بائی
اِک بین ہے دست نازک میں لب وقف نغمہ آرائی

भी हिन्दी के विद्यार्थियों और अदीबों को शाने कलाम (ओज) ज़ोरेबयान (बल), सलासत (सरलता) की तहसील (प्राप्ति) के लिये उर्दू शायरों और मुसन्निफ़ों के आस्ताने पर जाना होगा......हिंदी के विद्यार्थी और अहले क़लम हिंदी के उस हिस्से में जो सिर्फ़ उर्दू ही में पाया जाता है दर्जे कमाल हासिल करेंगे तब जाकर हिंदी अपने सारे हितचिंतकों की शुभ आशाएं पूरी कर सकेगी."

अब मैं उर्दू शायरों के कलाम के चन्द नमूने पेश करता हूं जिसमें हिन्दी रस्म रिवाज और ख़यालात की तसवीरें मिलती हैं और ज़बान भी सादा है. उर्दू शायरी के हर एक दौर में हिन्दुस्तानी रिवायतों और रहन सहन की नक़्क़ाशी उर्दू शायरों ने की है. नज़ीर अकबराबादी ने तो ख़ालिस हिन्दुस्तानी रहन सहन और कलचर पर लम्बी नज़्में लिखी हैं जो उनकी कुल्लियात में भरी पड़ी हैं. कुछ शेर पुराने दौर के शायरों के नीचे दिये जाते हैं जिनमें हिन्दी के शब्द और विचार मुलाहिज़ा कीजिये :—

जुदाई के ज़माने की, सजन! क्या ज़ियादती कहिये
कि उस ज़ालिम की हम पर जो घड़ी गुज़री सो जुग बीती.
(आबरू)

सांवरा मुखड़ा, रसीले नयन, अलबेली है चाल
ऐसे प्यारे पर 'फ़ुग़ां' क्योंकर न दीवाना बनूं.
(फ़ुग़ां)

भरे मांगों में सेंदुर और सन्दल
गुलाबी मद भरी आंखों में काजल
नुमायां पान की होंटों पे सुर्ख़ी
महावर पांव में हाथों में मेंहदी.

मौजूदा ज़माने के उर्दू शायरों में मज़हबी रिवायतों का ज़्यादा गहरा असर है. यह बात इससे ज़ाहिर होती है कि बहुत से शाइरों ने रामायण, महाभारत, गीता वग़ैरा मज़हबी किताबों के तरजुमे उर्दू नज़्म में किये और मज़हबी शख़्सियतों पर नज़्में लिखीं. इस सिलसिले में मेहर, सुरूर, तालिब इलाहाबादी, नानक लखनवी के कारनामे ख़ास तौर पर चरचा के क़ाबिल हैं. चकबस्त की ऐसी ही नज़्मों में 'रामायण का सीन' बहुत कामयाब नज़्म है. अलावा इसके हफ़ीज़ जालंधरी, इन्द्रजीत शर्मा, मक़बूल हुसेन अहमदपुरी, शौक़ क़िदवई, अज़मतुल्ला की नज़्में जो उर्दू रिसालों में शाया हो चुकी हैं या होती हैं अकसर हिन्दुस्तानी कलचर, माहौल (वातावरण) और विचारों की तर्जुमान और सादा ज़बान रखती हैं. इसी सिलसिले में बिसमिल इलाहाबादी की शायरी भी ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र है. उन्होंने ख़ुद भी अपनी ज़बान की बाबत कहा है :—

सहल लिख लिखके यह क्या अच्छा तमाशा कर दिया
हज़रते बिसमिल ने तो उर्दू को भाषा कर दिया.



بھی هندی کے ودیارتھیوں اور ادیبوں کو شان کلام ( اوج ) زور بیان ( بل ) سلاست ( سرلتا ) کی تحصیل ( پراپتی ) کے لئے اُردو شاعروں اور مصنفوں کے آستانے پر جانا ہوگا......هندی کے ودیارتھی اور اهل قلم هندی کے اُس حصے میں جو صرف اُردو ہی میں پایا جاتا هے درجہ کمال حاصل کرینگے تب جاکر هندی اپنے سارے هت‌چنتکوں کی شبھ آشائیں پوری کرسکے گی۔"

اب میں اردو شاعروں کے کلام کے چند نمونے پیش کرتا هوں جس میں هندی رسم و رواج اور خیالات کی تصویریں ملتی هیں اور زبان بھی سادہ هے ۔ اردو شاعری کے هر ایک دور میں هندستانی روائتوں اور رهن سهن کی نقاشی اردو شاعروں نے کی هے ۔ نظیر اکبرآبادی نے تو خالص هندستانی رهن سهن اور کلچر پر لمبی نظمیں لکھی هیں جو اُن کی کلیات میں بھری پڑی هیں ۔ کچھ شعر پرانے دور کے شاعروں کے نیچے دیئے جاتے هیں جن میں هندی کے شبد اور وچار ملاحظہ کیجئے :—

جدائی کے زمانے کی' سجن! کیا زیادتی کہئے
کہ اُس ظالم کی ہم پر جو گھڑی گذری سو جگ بیتی
( آبرو )

سانورا مکھڑا' رسیلے نین' البیلی هے چال
ایسے پیارے پر 'فغاں' کیوں‌کر نہ دیوانہ بنوں ۔
( فغاں )

بھرے مانگوں میں سیندر اور صندل
گلابی مدبھری آنکھوں میں کاجل
نمایاں پان کی هونٹھوں پہ سرخی
مہاور پاؤں میں هاتھوں میں مہندی ۔

موجودہ زمانے کے اردو شاعروں میں مذهبی روائتوں کا زیادہ گہرا اثر هے ۔ یہ بات اِس سے ظاهر هوتی هے کہ بہت سے شاعروں نے رامائن' مہابھارت' گیتا وغیرہ مذهبی کتابوں کے ترجمے اردو نظم میں کئے اور مذهبی شخصیتوں پر نظمیں لکھیں ۔ اِس سلسلے میں مہر' سرور' طالب الہ آبادی' نانک لکھنوی کے کارنامے خاص طور پر چرچا کے قابل هیں ۔ چکبست کی ایسی هی نظموں میں ' رامائن کا سین ' بہت کامیاب نظم هے ۔ علاوہ اِس کے حفیظ جالندھری' اندرجیت شرما' مقبول حسین احمد پوری' شوق قدوئی' عظمت اللہ کی نظمیں جو اردو رسالوں میں شائع هو چکی هیں یا هوتی هیں اکثر هندستانی کلچر' ماحول ( واتاورن ) اور وچاروں کی ترجمان اور سادہ زبان رکھتی هیں ۔ اس سلسلے میں بسمل الہ آبادی کی شاعری بھی خاص طور پر قابل ذکر هے ۔ اُنھوں نے خود بھی اپنی زبان کی بابت کہا هے :—

سہل لکھ لکھ کے یہ کیا اچھا تماشا کر دیا
حضرت بسمل نے تو اردو کو بھاشا کر دیا۔

उन्होंने इसमें खूबसूरती, जोर, और फैलाव पैदा किया है. उर्दू हिन्दुस्तान ही में बनी और इस मुल्क के कलचर के बनाने में इसका बड़ा हिस्सा है. वह न किसी एक गरोह की ही जबान है और न किसी एक जगह की ही. यह जबान हमेशा आम लोगों के विचारों और भावों को प्रकट करती रही और मुल्की धारों से सेराब होती रही. इसकी रगों में जनता की जिन्दगी का खून बहता है. यही कारण है कि हिन्दुस्तान के लगभग सभी हिस्सों में यह समझी और बोली जाती है. इसकी फुलवारी में सैर करने से ही यह साबित हो सकता है कि जहां उसने चन्द विदेशी जेवर अपनाए हैं वहां मुल्की मोतियों से भी बनी संवरी है. यह इसी जबान का शानदार कारनामा है कि उसने बाजारी शब्दों, महावरों, औरतों की जबान के बहुत से नरम व नाजुक अस्लूब ( शैलियों ), कहावतों को अदब का लिबास पहनाया और उनको अच्छी सोसाइटी में रिवाज दिया.

यहां हम उर्दू के मशहूर अदीब बाबू रघुपति सहाय फ़िराक़ के उस ख़त का कुछ हिस्सा पेश करते हैं जो उन्होंने अंग्रेज़ी में अख़बार 'लीडर', 8 नवम्बर, सन' 38 में शाया कराया था. वह कहते हैं :—

"उर्दू की अहमियत तो इस से जाहिर होती है कि हम उर्दू अदब की किसी मशहूर किताब को चाहे वह नज़्म की हो या नस्र की जुज़न, या कुल्लियतन ( किसी हिस्से को या कुल को) सामने रखकर उससे ग़ैर मुल्की शब्दों को ख़ारिज कर दें तो उसमें हम को ठेठ हिन्दी के शब्द उतनी बड़ी हिन्दी की किताब के बराबर ही नहीं दुगने बल्कि चार या पांच गुने ज्यादा मिलेंगे. यही वजह है कि हिन्दी के मुक़ाबले में उर्दू जनता की बोली से अधिक निकट है बावजूद इसके कि उसमें बहुत से फ़ारसी और अरबी के शब्द शामिल हैं. इसके ख़िलाफ़ हिंदी में आम तौर पर 60 से लेकर 90 फ़ीसदी तक शुद्ध संस्कृत के शब्द होते हैं और 40 से लेकर 10 फ़ीसदी तक ठेठ हिंदी के. दूसरे शब्दों में यूं समझिये कि उर्दू मुरक्कब होती है 75 फ़ीसदी ठेठ हिन्दी शब्दों से और हिंदी सिर्फ़ 25 फ़ीसदी ठेठ हिन्दी शब्दों से."

आगे चलकर वह लिखते हैं :—"उर्दू जबान के बानियों की दूरअंदेशी ने शुद्ध हिंदी के हज़ारों शब्द, फ़िक़रे, महावरे, कहावतें, अक़वाल वग़ैरा बड़ी ख़ूबी से बना डाले क्योंकि वह यह समझते थे कि इसके बग़ैर जबान मुर्दा रहेगी. इसका नतीजा है कि उर्दू की असली, अदबी. ख़ूबियां हिन्दी के उन्हीं महावरों और तर्ज़हाय अदा (शैलियों) से ज़ाहिर होती हैं. अरबी व फ़ारसी शब्दों का दख़्ल इसमें नाम को ही है."

आख़ीर में वह हिंदी वालों को मशविरा देते हैं :—
"जुमलों की तरकीब का सवाल एक अहम सवाल है. यहां



أنهوں نے اِس میں خوبصورتی، زور اور پھیلاؤ پیدا کیا هے . اُردو هندستان هی میں بنی اور اِس ملک کے کلچر کے بنانے میں اِس کا بڑا حصہ هے . وہ نہ کسی ایک گروہ کی هی زبان هے اور نہ کسی ایک جگہ کی هی. یہ زبان همیشہ عام لوگوں کے وچاروں اور بھاؤں کو پرگٹ کرتی رهی اور ملکی دھاروں سے سیراب هوتی رهی . اِس کی رگوں میں جنتا کی زندگی کا خون بہتا هے . یہی کارن هے کہ هندستان کے لگ بھگ سبھی حصوں میں یہ سمجھی اور بولی جاتی هے . اِس کی پھلواری میں سیر کرنے سے هی یہ ثابت هوسکتا هے کہ جہاں اُس نے چند ودیشی زیور اپنائے هیں وهاں ملکی موتیوں سے بھی بنی سنوری هے . یہ اِسی زبان کا شاندار کارنامہ هے کہ اُس نے بازاری شبدوں، محاوروں، عورتوں کی زبان کے بہت سے نرم و نازک اسلوب ( شیلیوں )، کہاوتوں کو ادب کا لباس پہنایا اور اُن کو اچھی سوسائٹی میں رواج دیا.

یہاں هم اُردو کے مشہور ادیب بابو رگھوپتی سہائے فراق کے اُس خط کا کچھ حصہ پیش کرتے هیں جو اُنهوں نے انگریزی میں اخبار 'لیڈر' 8 نومبر' سن 38' میں شائع کرایا تھا . وہ کہتے هیں :—

"اُردو کی اهمیت تو اِس سے ظاهر هوتی هے کہ هم اُردو ادب کی کسی مشہور کتاب کو چاهے وہ نظم کی هو یا نثر کی جزاً یا کلیاً ( کسی حصے کو یا کل کو ) سامنے رکھ کر اُس سے غیر ملکی شبدوں کو خارج کردیں تو اُس میں هم کو ٹھیٹھ هندی کے شبد اُتنی بڑی هندی کی کتاب کے برابر هی نہیں دوگنے بلکہ چار یا پانچ گنے زیادہ ملیں گے . یہی وجہ هے کہ هندی کے مقابلے میں اُردو جنتا کی بولی سے اَدھک نکٹ هے باوجود اِس کے کہ اُس میں بہت سے فارسی اور عربی کے شبد شامل هیں . اِس کے خلاف هندی میں عام طور پر 60 سے لیکر 90 فیصدی تک شدھ سنسکرت کے شبد هوتے هیں اور 40 سے لیکر 10 فیصدی تک ٹھیٹھ هندی کے . دوسرے شبدوں میں یوں سمجھئے کہ اُردو مرکب هوتی هے 75 فیصدی ٹھیٹھ هندی شبدوں سے اور هندی صرف 25 فیصدی ٹھیٹھ هندی شبدوں سے ."

آگے چلکر وہ لکھتے هیں :—"اُردو زبان کے بانیوں کی دور اندیشی نے شدھ هندی کے هزاروں شبد، فقرے، محاورے، کہاوتیں، اقوال وغیرہ بڑی خوبی سے بنا ڈالے کیونکہ وہ یہ سمجھتے تھے کہ اِس کے بغیر زبان مردا رهیگی . اِس کا نتیجہ هے کہ اُردو کی اصلی، ادبی خوبیاں هندی کے اُنهیں محاوروں اور طرز هائے ادا ( شیلیوں ) سے ظاهر هوتی هیں. عربی و فارسی شبدوں کا دخل اِس میں نام کو هی هے ."

آخیر میں وہ هندی والوں کو مشورہ دیتے هیں :—
"جملوں کی ترکیب کا سوال بھی ایک اهم سوال هے . یہاں

# उर्दू हिन्दी को क्या कुछ दे सकती है

श्री नज्मुद्दीन अहमद एम० ए०

इस लेख की ग़रज़ उर्दू की कुछ ख़सूसियतों की तरफ़ ध्यान दिलाना है. वैसे तो जो चीज़ जितना ही नज़दीक होती है उसकी तरफ़ से उतनी ही लापरवाही बरती जाती है. ज़बान की तरफ़ भी हमारा यही रवैया है. हम इसके ज़रिये ज़िन्दगी के बहुत अहम काम अन्जाम देते हैं. ख़याल व जज़बात (भावों) की परवरिश और इल्म व इरफ़ान (ज्ञान) की बुलन्दी तय करते हैं. मगर यह नहीं जानते कि ज़बान किस तरह बनती और तरक़्क़ी करती है. और हमारी ज़िन्दगी और कलचर को किस तरह बनाती और संवारती है. उर्दू ज़बान की पैदाइश हिन्दुस्तान की तारीख़ का एक यादगार कारनामा है. पर इस समय सिर्फ़ इस ज़बान की चन्द ख़ुसूसियतों का ज़िक्र किया जायेगा.

सब से पहला सवाल उर्दू ज़बान में फ़ारसी या अरबी लफ़्ज़ों की मिलावट का है. यह सब के तजरबे की बात है कि जब हम अंग्रेज़ी ज़बान सीखते और उसमें महारत पैदा करना चाहते हैं तो अपनी निजी बातचीत में भी अंग्रेज़ी शब्द लाने लगते हैं क्योंकि वह हमारे नए विचारों को आसानी से ज़ाहिर कर देते हैं. कभी कभी इसमें अपनी इल्मियत दिखाने का ख़याल भी छुपा रहता है, क्योंकि यह भी इनसान की तबियत का तक़ाज़ा है. इसी तरह उस ज़माने में जब फ़ारसी ज़बान सरकार और दफ़्तर की ज़बान थी और उसका जानना बड़ी बात समझा जाता था, इस देश के निवासी जब फ़ारसी को अपनाने लगे तो अपनी निजी बात चीत में फ़ारसी के शब्द लाने लगे. उस वक़्त के हालात के लिए ऐसा होना क़ुदरती और ज़रूरी भी था.

फ़ारसी अरबी शब्दों के अलावा दूसरी विदेशी ज़बानों के शब्द भी उर्दू में मौजूद हैं. जब यह ज़बान बनी देशी विदेशी का सवाल ही न था. मसलन पुर्तगाल के लोग तिजारत के सिलसिले में कितनी ही चीज़ें लाए जो हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी का हिस्सा बन गईं. उनके नाम हमारी ज़बान में इस तरह घुल मिल गए कि आज वह विदेशी मालूम ही नहीं होते. कुछ ऐसे नाम यह हैं:—तम्बाकू, साबूदाना, फ़ीता, साया, मेज़, नीलाम, अंग्रेज़, गुन्डा, तौलिया, साबुन, सन्तरा पुर्तगाली ज़बान के शब्द हैं.

उर्दू प्राकृत भाषा से ही बनी और उसका ढांचा हिन्दी ज़बान ही है. जो फ़ारसी अरबी के शब्द इसमें शामिल हैं

# اُردو ھندی کو کیا کچھ دے سکتی ھے

شری نجم‌الدین احمد ایم . اے

اِس لیکھ کی غرض اُردو کی کچھ خصوصتیوں کی طرف دھیان دلانا ھے . ویسے تو جو چیز جتنا ھی نزدیک ھوتی ھے اُس کی طرف سے اُتنی ھی لاپرواھی برتی جاتی ھے . زبان کی طرف بھی ھمارا یہی رویہ ھے. ھم اِس کے ذریعہ زندگی کے بہت اھم کام انجام دیتے ھیں. خیال و جذبات ( بھاؤں ) کی پرورش اور علم و عرفان ( گیان ) کی بلندی طے کرتے ھیں . مگر یہ نہیں جانتے کہ زبان کس طرح بنتی اور ترقی کرتی ھے . اور ھماری زندگی اور کلچر کو کس طرح بناتی اور سنوارتی ھے. اُردو زبان کی پیدائش ھندستان کی تاریخ کا ایک یادگار کارنامہ ھے . پر اِس سمے صرف اِس زبان کی چند خصوصیتوں کا ذکر کیا جائیگا .

سب سے پہلا سوال اُردو زبان میں فارسی یا عربی لفظوں کی ملاوٹ کا ھے . یہ سب کے تجربے کی بات ھے کہ جب ھم انگریزی زبان سیکھتے اور اُس میں مہارت پیدا کرنا چاھتے ھیں تو اپنی نجی بات چیت میں بھی انگریزی شبد لانے لگتے ھیں کیونکہ وہ ھمارے نئے وچاروں کو آسانی سے ظاھر کردیتے ھیں . کبھی کبھی اِس میں اپنی علمیت دکھانے کا خیال بھی چھپا رھتا ھے، کیونکہ یہ بھی انسان کی طبیعت کا تقاضا ھے . اِسی طرح اُس زمانے میں جب فارسی زبان سرکار اور دفتر کی زبان تھی اور اُس کا جاننا بڑی بات سمجھا جاتا تھا، اِس دیش کے نواسی جب فارسی کو اپنانے لگے تو اپنی نجی بات چیت میں فارسی کے شبد لانے لگے . اُس وقت کے حالات کے لئے ایسا ھونا قدرتی اور ضروری بھی تھا .

فارسی عربی شبدوں کے علاوہ دوسری بدیشی زبانوں کے شبد بھی اُردو میں موجود ھیں . جب یہ زبان بنی دیشی ودیشی کا سوال ھی نہ تھا . مثلاً پرتگال کے لوگ تجارت کے سلسلے میں کتنی ھی چیزیں لائے جو ھندستانی زندگی کا حصہ بن گئیں . اُن کے نام ھماری زبان میں اِس طرح گھل مل گئے کہ آج وہ ودیشی معلوم ھی نہیں ھوتے . کچھ ایسے نام یہ ھیں:— تمباکو، سابودانہ، فیتہ، سایہ، میز، نیلام، انگریز، غنڈا، تولیہ، صابن، سنترہ پرتگالی زبان کے شبد ھیں .

اُردو پراکرت بھاشا سے ھی بنی اور اُس کا ڈھانچہ ھندی زبان ھی ھے . جو فارسی عربی کے شبد اِس میں شامل ھیں

से संबंध रखने वाली. जब वहां दिक़्क़त नहीं हुई तो यहां दिक़्क़त क्यों होती ?

यह कहकर पुरानी बात का रोना नहीं रोना है. जो हो चुका, वह हो चुका. लोग उससे सबक़ लें, उससे पाठ सीखें और अपने हृदय को मजबूत बनायें और राष्ट्रीय स्वरूप वाली हिन्दी को अपनाकर वही क्रांति कर डालें जो अब तक नहीं हो पाई. राष्ट्र शब्द में भी नेशन शब्द का पूरा भाव नहीं आता. राष्ट्र की जगह नेशन शब्द अपना लिया जाय तो बुरा नहीं. उर्दू का क़ौम शब्द जात के मानी में आने लगा. वह भी कमज़ोर पड़ गया. इण्टरनेशनल की जगह अंतर क़ौमी शब्द खासा जम जाता है पर इतने से काम नहीं चलता. नेशन शब्द के लिए कोई ज़ोरदार शब्द देना ही पड़ेगा. अगर 'जनमन' शब्द अपनालिया जाय तो कैसा हो—इस पर विचार किया जा सकता है. इससे जनमनी, जनमना, जनमनीयत, जनमनीयता आदि अनेक शब्द बन सकते हैं. मुश्किल सिर्फ़ यही है कि हिन्दुस्तान की जनता न कभी नेशन थी और न आज नेशन है. यह जनता हिन्दू मुसलमान तो हो सकती है, नेशन बनना इसके लिए अभी भी दुष्कर है. इसका कोई नेशनल त्योहार ही नहीं. यह किसी नेशनल काम के लिए मरना ही नहीं जानती. यह तो भारत का सौभाग्य ही है कि इने गिने मनचलों ने हिन्दुस्तान को आज़ाद करा दिया. नेशन बनने के लिए नेशनल भाषा जरूरी है. हिन्दी अगर राष्ट्रीय भाषा होने का दावा रखती है तो वह उस समय तक पक्की दावेदार नहीं हो सकती जब तक हर भाषाभाषी उसके लिए प्राणदान न दे, फिर चाहे उनकी तादाद कितनी ही कम क्यों न हो.

इस बलिदान के बिना हिन्दी का स्वरूप न तय हो सकेगा, न समझ में आ सकेगा, न खिल सकेगा. नेशन बनने के लिए राष्ट्रभाषा का स्वरूप खिल उठना बहुत जरूरी है और राष्ट्रभाषा का स्वरूप खिल उठने के लिए उसे वही असीम और खुला मैदान देना जरूरी है जो उसे वर्तमान स्वरूप के पहले मिला हुआ था.

---

समझ में न आनेवाली भाषा, बिना रोशनी की लालटेन है.

—अज्ञात

---



سے سمبندھ رکھنے والی . جب وہاں وقت نہیں ہوئی تو یہاں دقت کیوں ہوتی ؟

یہ کہکر پرانی بات کا رونا نہیں رونا ھے . جو ہو چکا' وہ ہو چکا . لوگ اُس سے سبق لیں' اُس سے پاٹھ سیکھیں اور اپنے ہردے کو مضبوط بنائیں اور راشٹریہ سروپ والی ھندی کو اپناکر وھی کرانتی کرڈالیں جو اب تک نہیں ہوپائی. راشٹر شبد میں بھی نیشن شبد کا پورا بھاؤ نہیں آتا. راشٹر کی جگہ نیشن شبد اپنا لیا جائے تو برا نہیں. اُردو کا قوم شبد جات کے معنی میں آنے لگا. وہ بھی کمزور پڑگیا . انٹرنیشنل کی جگہ انتر قومی شبد خاصہ جم جاتا ھے پر اتنے سے کام نہیں چلتا . نیشن شبد کے لئے کوئی زوردار شبد دینا ھی پڑیگا . اگر 'جن من' شبد اپنا لیا جائے تو کیسا ہو—اس پر وچار کیا جاسکتا ھے . اِس سے جن منی' جنمنا جن منیت' جن منیتا آدی انیک شبد بن سکتے ھیں . مشکل صرف یہی ھے کہ ھندستان کی جنتا نہ کبھی نیشن تھی' اور نہ آج نیشن ھے . یہ جنتا ھندو مسلمان تو ھوسکتی ھے' نیشن بننا اس کے لئے اب بھی دشکر ھے . اِس کا کوئی نیشنل تھوہار ھی نہیں . یہ کسی نیشنل کام کے لئے مرنا ھی نہیں جانتی . یہ تو بھارت کا سوبھاگیہ ھی ھے کہ اِنے گنے منچلوں نے ھندستان کو آزاد کرادیا . نیشن بننے کے لئے نیشنل بھاشا ضروری ھے . ھندی اگر راشٹریہ بھاشا ھونے کا دعوی رکھتی ھے تو وہ اُس سمے تک پکی دعویدار نہیں ھوسکتی جب تک ھر بھاشا بھاشی اُس کے لئے پران دان نہ دے' پھر چاھے اُن کی تعداد کتنی ھی کم کیوں نہ ھو .

اِس بلیدان کے بنا ھندی کا سروپ نہ طے ھوسکیگا' نہ سمجھ میں آسکیگا' نہ کھل سکیگا. نیشن بننے کے لئے راشٹر بھاشا کا سروپ کھل اُٹھنا بہت ضروری ھے . اور راشٹر بھاشا کا سروپ کھل اُٹھنے کے لئے اُسے وھی اسیم اور کھلا میدان دینا ضروری ھے جو اُسے ورتمان سروپ کے پہلے ملا ھوا تھا .

---

سمجھ میں نہ آنے والی بھاشا' بنا روشنی کی لالٹین ھے .

—اگیات

---

झगड़े खड़े कर दिये. कोई कोई तो हिन्दी की जगह संस्कृत की आवाज़ उठाने लगे !! इधर पाकिस्तान में भी अरबी की बात चल पड़ी. इससे अंग्रेज़ी ने फ़ायदा उठाया और वह पाकिस्तान तथा हिंदुस्तान के सिर पर आज दिन तक लदी हुई है.

संविधान में दरवाज़ा खुला है. आज भी हिन्दी अगर अपने 'स्वरूप' को अपनाले तो अंग्रेज़ी से कई गुनी बलवाली बन सकती है, उसे आसानी से ऐसे उड़ा सकती है जिस तरह से बच्चा साबुन के बुलबुले को. इसके लिए उसे शब्द गढ़ने की भी ज़रूरत नहीं. आंख बंद करके सब पारिभाषिक अंग्रेज़ी शब्द अपनालेने से ही काम बन जाता है. पर उन शब्दों को उन्हीं बने बनाए रूप में अपनाना चाहिये जो रूप उन्हें कारखानों में मज़दूरों ने दिया है. उसे वह सब उर्दू शब्द भी अपनालेने चाहियें जो गांव गांव में फैल चुके हैं जैसे—पुलिस, टिकट, सिंगल (सिगनल), टेसन (स्टेशन), रेल, मज़दूर, डाकघर, रेवेन्यू, ऐरिंग (इयर रिंग), फ़ारम (फॉम), आबकारी, कचहरी, मुन्शी, तहसीलदार, दीवान, नमूना, बाज़ार, किताब, लायक, लगान सालाना, सरकारी, हिस्सा, जेल, रेडियो, मनीआर्डर (मनीऑर्डर), इंजन (ऐंजिन) गार्ड, क्लोरिन, प्रोटीन, ऐसेटिक ऐसिड, पोटेंशियल, कैलोरी, कारट (कार्ड), प्रोटोन, ऐम्पीयर, वोल्ट आदि आदि.

व्याकरण के मामले में सब सूबों या राज्यों को छूट दे देनी चाहिये कि वह ख़ास ख़ास मामलों को छोड़कर बाक़ी मामलों में लिंग की परवाह बिलकुल न करें. व्याकरण की झंझट में न पड़ें. जहां उन्हें हिन्दी शब्द न सूझे फट प्रांतीय शब्द लिख दें. इसी तरह के कुछ और नियमों के साथ कल से ही हिन्दी अंग्रेज़ी की जगह ले सकती है. अंग्रेज़ी जो हमारे सिर पर लदी हुई है उसमें आपसी झगड़ा तो कारण है ही, एक कारण और भी हुआ. हिन्दुस्तान आज़ाद तो हो गया, अंग्रेज चले गये, हकूमत भारतियों के हाथ में आ गई पर हुआ यह सब समझौते से. क्रांति कहां हुई ? कारण यह है कि क्रांति का प्रणेता गांधी आज़ादी मिलने के बाद बहुत जल्द चल बसा और उसके अभाव में हम और क्रांति ख़ुद अंधेरे में भटक गये. अगर क्रांति का प्रणेता ज़िंदा रहता तो अब तक क्रांति हो गई होती और अंग्रेज़ी हिन्दुस्तान में न रह सकती और अपने आप हिन्दी यानी हिन्दुस्तानी हकूमत के सब काम संभाल लेती और इस तरह राष्ट्रभाषा के स्वरूप के झगड़े खड़े न होते.

नेता जी की आज़ाद हिन्द फ़ौज में देश भर के आदमी थे. उनका काम अगर हिन्दुस्तानी से चल गया तो हमारा क्यों नहीं चल सकता ? आज़ाद हिन्द फ़ौजें तो ऐसे देश में भी काम कर रही थीं जहां की बोली न हिन्दी थी न हिन्दी



جھگڑے کھڑے کردیئے. کوئی کوئی تو ھندی کی جگہ سنسکرت کی آواز اُٹھانے لگے !! اِدھر پاکستان میں بھی عربی کی بات چل پڑی. اس سے انگریزی نے فائدہ اُٹھایا اور وہ پاکستان تتھا ھندستان کے سر پر آج دن تک لدی ھوئی ھے.

سمودھان میں دروازہ کھلا ھے. آج بھی ھندی اگر اپنے 'سروپ' کو اپنا لے تو انگریزی سے کئی گنی بل والی بن سکتی ھے، اُسے آسانی سے ایسے اُڑا سکتی ھے جس طرح سے بچہ صابن کے بلبلے کو. اس کے لئے اُسے شبد گڑھنے کی بھی ضرورت نہیں. آنکھ بند کرکے سب پریبھاشک انگریزی شبد اپنالینے سے ھی کام بن جاتا ھے. پر ان شبدوں کو انھیں بنے بنائے روپ میں اپنانا چاھئے جو روپ انھیں کارخانوں میں مزدوروں نے دیا ھے. اُسے وہ سب اُردو شبد بھی اپنا لینے چاھئیں جو گاؤں گاؤں میں پھیل چکے ھیں جیسے—پولیس، ٹکٹ، سنگل (سگنل)، ٹیسن (اسٹیشن)، ریل، مزدور، ڈاکگھر، ریونیو، ایرنگ (ائیررنگ) فارم (فارم) آبکاری، کچہری، منشی، تحصیلدار، دیوان، نمونہ، بازار، کتاب، لایق، لگان، سالانہ، سرکاری، حصہ، جیل، ریڈیو، منی آڈر، (منی آرڈر) انجن، (اینجن) گارڈ، کلورن، پروٹین، اسٹیک ایسڈ پوٹینشیل، کلوری کارٹ (کارڈ) پروٹون، امپیر، وولٹ آدی آدی.

ویاکرن کے معاملے میں سب صوبوں یا راجیوں کو چھوٹ دے دینی چاھئے کہ وہ خاص خاص معاملوں کو چھوڑکر باقی معاملوں میں لنگ کی پرواہ بالکل نہ کریں. ویاکرن کی جھنجھٹ میں نہ پڑیں. جہاں اُنھیں ھندی شبد انھیں نہ سوجھے پھٹ پرانتیہ شبد لکھ دیں. اسی طرح کے کچھ اور نیموں کے ساتھ کل سے ھی ھندی انگریزی کی جگہ لے سکتی ھے. انگریزی جو ھمارے سر پر لدی ھوئی ھے اُس میں آپسی جھگڑا تو کارن ھے ھی، ایک کارن اور بھی ھوا. ھندستان آزاد تو ھوگیا، انگریز چلے گئے، حکومت بھارتیوں کے ھاتھ میں آگئی پر ھوا یہ سب سمجھوتے سے. کرانتی کہاں ھوئی ؟ کارن یہ ھے کرانتی کا پرنیتا گاندھی آزادی ملنے کے بعد بہت جلد چل بسا اور اس کے اَبھاؤ میں ھم اور کرانتی خود اندھیرے میں بھٹک گئے. اگر کرانتی کا پرنیتا زندہ رھتا تو اب تک کرانتی ھوگئی ھوتی اور انگریزی ھندستان میں نہ رہ سکتی اور اپنے آپ ھندی یعنی ھندستانی حکومت کے سب کام سنبھال لیتی اور اس طرح راشٹر بھاشا کے سروپ کے جھگڑے کھڑے نہ ھوتے.

نیتا جی کی آزاد ھند فوج میں دیش بھر کے آدمی تھے. اُن کا کام اگر ھندستانی سے چل گیا تو ھمارا کیوں نہیں چل سکتا ؟ آزاد ھند فوجیں تو ایسے دیش میں بھی کام کر رھی تھیں جہاں کی بولی نہ ھندی تھی نہ ھندی

जब कोई भाषा एक शब्द अपना लेती है तब उसे यह कहना कि वह दूसरी भाषा का शब्द है, उस शब्द के साथ अन्याय करना है. टोपी और रोटी को पुर्तगाली शब्द बताना भूल नहीं तो और क्या है ? आज तो वह ठेठ हिंदी शब्द हैं, कभी रहे होंगे पुर्तगाली. मेंगो शब्द को हम अंग्रेज़ी शब्द कहते हैं और अंग्रेज़ी डिक्शनरी बताती है कि यह हिंदुस्तानी शब्द है. दक्खिन में आम को मंगूफलम् कहते हैं यही मंगू अंग्रेज़ी डिक्शनरी में मेंगो बन गया. जो जो विदेशी शब्द हिंदी ने अपना लिए उनको आत्मसात कर लिया वह अब हिंदी के हो गये. जिसको इन शब्दों के बाइकाट की सूझती है उसकी बुद्धि पर हमें तरस आता है.

अंग्रेज़ी के अंक 1, 2, 3, 4......9,0 सब अंग्रेज़ी में अरबी अंक माने जाते हैं, क्योंकि अंग्रेज़ों ने उनको अरब वालों से सीखा. अरब में यही एक, दो, तीन......हिंदसे कहलाते हैं, क्योंकि अरबों ने इन्हें हिंद से सीखा. हिंदुस्तान की यह देन मामूली देन नहीं है. अब अंग्रेजी के 1, 2, 3, ......सारी दुनिया में फैलकर अंतर्राष्ट्रीय बन गए हैं. विधान ने यह पास भी कर दिया है कि इन अंतर्राष्ट्रीय अंकों को अंतर्राष्ट्रीय रूप के साथ सारा हिंदुस्तान अपनाले. पर हिंदी भाषाभाषी हैं कि अड़े हैं अपनी ज़िद पर. एक तरह से ये अंक हिंदुस्तान के कोने कोने में पहुंच चुके. गणित की किताबों में हिंदी अंक न रहकर यह अंतर्राष्ट्रीय अंक ही रहने लगे हैं फिर भी इस पर वाद विवाद चल रहा है. भाषा का 'स्वरूप' भी उस समय तक अपना सच्चा रूप न ले पायेगा जब तक यह छोटी मोटी कमियां हिंदी भाषाभाषियों से दूर नहीं होतीं.

हिंदी भाषाभाषी अगर थोड़े उदार होते तो स्वराज्य के साथ ही साथ अंग्रेज़ों के साथ अंग्रेज़ी भी लद गई होती और उसकी जगह आज हिंदुस्तानी होती. पर हिंदी-हिंदुस्तानी और उर्दू-हिंदुस्तानी के झगड़े ने अंग्रेज़ी को हमारे सिर पर लादे रखा और इन झगड़ों टंटों के साथ न जाने यह कब तक लदी रहेगी.

हिंदुस्तान में बहुत कम समझी जाने वाली और नाम मात्र के लिए लिखने में काम आनेवाली अंग्रेज़ी अगर मुग़लों की बादशाही ख़त्म होने के दूसरे दिन से ही हिंदुस्तानी सरकार की दफ़्तरी भाषा बनकर हिंदुस्तान पर राज कर सकती है और चैन की बंसी बजा सकती है तो वही काम 16 अगस्त सन 1947 को हिंदी क्यों नहीं कर सकती थी, जबकि वह सारे देश में समझी जाती थी और हिंदुस्तान की आधी आबादी उसकी लिखावट को भी जानती थी ? यह सिर्फ़ इसी वजह से न हो सका कि हम उस समय आपस में सिर फोड़ने में लगे थे और महात्मा गांधी की बात सुनने के लिए तैयार न थे. जब ज़रा दम लिया तब भाषा के दूसरे



جب کوئی بھاشا ایک شبد اپنا لیتی ھے تب اُسے یہ کہنا کہ وہ دوسری بھاشا شبد ھے، اُس شبد کے ساتھ انیائے کرنا ھے. ٹوپی اور روٹی کو پرتگالی شبد بتانا بھول نہیں تو اور کیا ھے ؟ آج تو وہ ٹھیٹھ ھندی شبد ھیں، کبھی رھیں ھوں گے پرتگالی . مینگو شبد کو ھم انگریزی شبد کہتے ھیں اور انگریزی ڈکشنری بتاتی ھے کہ یہ ھندستانی شبد ھے. دکھن میں آم کو منگوپھلم کہتے ھیں . یہی منگو انگریزی ڈکشنری میں مینگو بن گیا . جو جو ودیشی شبد ھندی میں اپنا لئے اور اُن کو آتمسات کرلیا وہ اب ھندی کے ھوگئے . جس کو اِن شبدوں کے بائیکاٹ کی سوجھتی ھے اُس کی بدھی پر ھمیں ترس آتا ھے .

انگریزی کے انک 1,2,3,4......9,0 سب انگریزی میں عربی انک مانے جاتے ھیں، کیونکہ انگریزوں نے اُن کو عرب والوں سے سیکھا . عرب میں یہی ایک، دو، تین......ھندسے کہلاتے ھیں، کیونکہ عربوں نے انھیں ھند سے سیکھا . ھندستان کی یہ دین معمولی دین نہیں ھے. اب انگریزی کے 1,2,3, ...... ساری دنیا میں پھیل کر انتر راشٹریہ بن گئے ھیں . ودھان نے یہ پاس بھی کردیا ھے کہ اِن انتر راشٹریہ انکوں کو انتر راشٹریہ روپ کے ساتھ سارا ھندستان اپنا لے . پر ھندی بھاشا بھاشی ھیں کہ اڑے ھیں اپنی ضد پر . ایک طرح سے یہ انک ھندستان کے کونے کونے میں پہونچ چکے . گنت کی کتابوں میں ھندی انک نہ رہ کر یہ انتر راشٹریہ انک ھی رھنے لگے ھیں پھر بھی اس پر واد وواد چل رہا ھے . بھاشا کا 'سروپ' بھی اُس سمے تک اپنا سچا روپ نہ لے پائیگا جب تک یہ چھوٹی موٹی کمیاں ھندی بھاشا بھاشیوں سے دور نہیں ھوتیں .

ھندی بھاشابھاشی اگر تھوڑے اُدار ھوتے تو سوراج کے ساتھ ھی ساتھ انگریزوں کے ساتھ انگریزی بھی لدگئی ھوتی اور اُس کی جگہ آج ھندستانی ھوتی . پر ھندی ھندستانی اور اُردو ھندستانی کے جھگڑے نے انگریزی کو ھمارے سر پر لادے رکھا اور اِن جھگڑوں ٹنٹوں کے ساتھ نہ جانے یہ کب تک لدی رھیگی .

ھندستان میں بہت کم سمجھی جانے والی اور نام ماتر کے لئے لکھنے میں کام آنے والی انگریزی اگر مغلوں کی بادشاھی ختم ھونے کے دوسرے دن سے ھی ھندستانی سرکار کی دفتری بھاشا بن کر ھندستان پر راج کرسکتی ھے اور چین کی بنسی بجا سکتی ھے تو وھی کام 16 اگست سن 1947 کو ھندی کیوں نہیں کرسکتی تھی، جب کہ وہ سارے دیش میں سمجھی جاتی تھی اور ھندستان کی آدھی آبادی اُس کی لکھاوٹ کو بھی جانتی تھی ؟ یہ صرف اسی وجہ سے نہ ھوسکا کہ ھم اُس سمے آپس میں سر پھوڑنے لگے تھے اور مہاتما گاندھی کی بات سننے کے لئے تیار نہ تھے. جب ذرا دم لیا تب بھاشا کے دوسرے

एक बार एयरकन्डीशन्ड डब्बे में बैठे हुए कुछ पंडित 'एयरकन्डीशन्ड' के लिए हिन्दी शब्द ढ़ूंढ रहे थे. घंटों मग़ज़ मारने पर भी वे ऐसा शब्द न खोज पाये जिस पर सब सहमत हो जाते. पर जैसे ही वह गाड़ी से नीचे उतरे और जैसे ही उन्होंने अपने चार बरस के बच्चे से किसी मामूली चीज़ के लिए पूछा कि वह कहां गई तो वह जवाब देता है— "वह तो ठंडीगाड़ी में वहीं गिर गई." पंडित एक दूसरे का मुंह ताकने लगे. बच्चे के पास उस 'एयरकन्डीशन्ड डब्बे' का शब्द हिन्दी के स्वरूप के अनुसार बना बनाया तैयार था.

जिस तरह आदमी पूरा बना है वैसे ही हर भाषा अपने आप में पूरी है. बंद करने से वही भाषा अधूरी हो जाती है. अंग्रेज़ी की डिक्शनरी का शायद ही कोई ऐसा सफ़ा मिले जिसमें दो चार हिन्दुस्तानी शब्द न हों. मगर होंगे वही जो अंग्रेज़ों को बोलने में आसान पड़ें और जो उसी के मुक़ाबले के अंग्रेज़ी शब्द से हर तरह छोटे और सुगम हों.

हिन्दी का 'स्वरूप' अंग्रेज़ी राज्य के समय की बनी हुई किताबों में बहुत कम देखने को मिलेगा. इसका कारण यह है कि हिन्दी में उन दिनों जितनी किताबें लिखीं गईं वह अधिकतर उर्दू को बाइकाट करके लिखी गईं. बाइकाट पॉलिसी का यह नतीजा हुआ कि हिन्दी के सब मुहावरे उर्दू वालों के हिस्से में आगये और हिन्दी वालों के लिए कुछ न बच रहे. अब हिन्दी का 'स्वरूप' कहां गया? हिन्दी का स्वरूप देखने को मिलेगा उर्दू में, पर वहां वह मौलवियों की मदद से अरबी फ़ारसी शब्दों के ढेर में छिप गया. हिन्दी में भी हिन्दी के स्वरूप के दर्शन हो सकते हैं पर वह सब मिलेगा पद्य पुस्तकों में. जितने हिंदी कवि हुए हैं उनमें से किसी को पढ़ जाइये. और तो और मुसलमान कवि रसखान को ले लीजिये. उसके कवित्त में जो 'स्वरूप' लिए हुए हिंदी मिलेगी वह अंग्रेज़ों के ज़माने की हिंदी की गद्य पुस्तकों में नहीं मिलेगी. फ़ारसी अरबी का आवरण हटाकर अगर उर्दू की गद्य पुस्तकें पढ़ी जांय तो हिंदी का स्वरूप वहां भी देखने को मिल जायेगा. रसखान के ये रस भरे शब्द देखिये—

> कहालौं सयानी चंद हाथन छिपायवो
> आजहौं निहारो वीर, निपट कलिंदी तीर
> दोऊनको दोऊन ते मुख मुसकायवो
> दोनों परैं पइयां, दोऊ लेत हैं बलैया
> इन्हें भूल गई गइयां, उन गागर उठायवो ॥

चांद को हाथ से छिपाना मुहावरा है. बलैयां लेना मुहावरा है. भूल गई गइयां, मुहावरा है. यह सब मुहावरे उर्दू में मिलेंगे. और तो और, मुहावरा शब्द के लिए विशुद्ध हिंदी की दुहाई देने वालों के पास दूसरा शब्द भी नहीं है. आश्चर्य है इन्होंने "मुहावरा" का बाइकाट नहीं किया !! मुहावरा तो अरबी शब्द है.

ایک بار ایر کنڈیشنڈ ڈبے میں بیٹھے ہوئے کچھ پنڈت 'ایر کنڈیشنڈ' کے لئے ہندی شبد ڈھونڈھ رہے تھے ۔ گھنٹوں مغز مارنے پر بھی وے ایسا شبد وہ نہ کھوج پائے جس پر سب سہمت ہو جاتے ۔ پر جیسے ہی وہ گاڑی سے نیچے اُترے اور جیسے ہی انہوں نے اپنے چار برس کے بچے سے کسی معمولی چیز کے لئے پوچھا کہ وہ کہاں گئی تو وہ جواب دیتا ہے—"وہ تو ٹھنڈی گاڑی میں وہیں گر گئی." پنڈت ایک دوسرے کا منھ تاکنے لگے۔ بچے کے پاس اُس 'ایر کنڈیشنڈ ڈبے' کا شبد ہندی کے سروپ کے انوسار بنا بنایا تیار تھا ۔

جس طرح آدمی پورا بنا ہے ویسے ہی ہر بھاشا اپنے آپ میں پوری ہے ۔ بند کرنے سے وہی بھاشا ادھوری ہو جاتی ہے ۔ انگریزی کی ڈکشنری کا شاید ہی کوئی ایسا صفحہ ملے جس میں دو چار ہندستانی شبد نہ ہوں ۔ مگر ہوں گے وہی جو انگریزوں کو بولنے میں آسان پڑیں اور جو اُسی کے مقابلے کے انگریزی شبد سے ہر طرح چھوٹے اور سگم ہوں ۔

ہندی کا سروپ انگریزی راجیہ کے سمے کی بنی ہوئی کتابوں میں بہت کم دیکھنے کو ملیگا ۔ اِس کا کارن یہ ہے کہ ہندی میں اُن دنوں جتنی کتابیں لکھی گئیں وہ ادھک تر اُردو کو بائیکاٹ کر کے لکھی گئیں ۔ بائیکاٹ پالیسی کا یہ نتیجہ ہوا کہ ہندی کے سب محاورے اُردو والوں کے حصے میں آگئے اور ہندی والوں کے لئے کچھ نہ بچ رہے۔ اب ہندی کا 'سروپ' کہاں گیا؟ ہندی کا سروپ دیکھنے کو ملیگا اُردو میں' پر وہاں وہ مولویوں کی مدد سے عربی فارسی کے ڈھیر میں چھپ گیا. ہندی میں بھی ہندی کے سروپ کے درشن ہوسکتے ہیں پر وہ سب ملیگا پدیہ پستکوں میں ۔ جتنے ہندی کوی ہوئے ہیں اُن میں سے کسی کو پڑھ جائیے ۔ اور تو اور مسلمان کوی رسکھان کو لے لیجئے ۔ اُس کے کبت میں جو 'سروپ' لئے ہوئے ہندی ملے گی وہ انگریزوں کے زمانے کی ہندی کی گدیہ پستکوں میں نہیں ملے گی ۔ فارسی عربی کا آورن ہٹاکر اگر اُردو کی گدیہ پستکیں پڑھی جائیں تو ہندی کا سروپ وہاں بھی دیکھنے کو مل جائیگا ۔ رسکھان کے یہ رس بھرے شبد دیکھئے—

> کہالوں سیانی چند ہاتھن چھپائیوو
> آج ہوں نہارو ویر' نپٹ کلندی تیر
> دوؤن کو دوؤن تے مکھ مسکایوو
> دونوں پریں پیاں' دوؤ لیت ہیں بلیاں
> انہیں بھول گئی گئیاں' اُن گاگر اُٹھائیوو

چاند کو ہاتھ سے چھپانا محاورہ ہے ۔ بلیاں لینا محاورہ ہے ۔ بھول گئی گئیاں' محاورہ ہے ۔ یہ سب محاورے اُردو میں ملیں گے ۔ اور تو اور' محاورہ شبد کے لئے وشدھ ہندی کی دوہائی دینے والوں کے پاس دوسرا شبد ہی نہیں ہے ۔ آشچریہ ہے اِنہوں نے "محاورہ" کا بائیکاٹ نہیں کیا !! محاورہ تو عربی شبد ہے ۔

लिये फ़ारसी पढ़ना ज़रूरी हो गया; अरबी की जानकारी ज़रूरी हो गई. इधर हिन्दी को वह रूप दिया जिसके लिये संस्कृत पढ़ना ज़रूरी हो गया. आज जिस तरह की हिन्दी चल रही है और राष्ट्रभाषा का जो रूप हमारे सामने आ रहा है वह ऐसा ही है जो बग़ैर दूसरी भाषा को सीखे पूरा पूरा नहीं समझा जा सकता और यही कहलाता है भाषा के स्वरूप को बिगाड़ना.

भाषा के स्वरूप के बने रहने में सब से बड़ा फ़ायदा यह है कि वह सरल बनी रहेगी, लोकशाही के काम की होगी. उसके फैलने में सुभीता होगा. नेताओं के पैदा करने में तो वह पूरी तरह ऐसी फलदायक सिद्ध होगी, जैसे हरियाली के पैदा करने में बरसात. सन 1921 में कांग्रेस ने जैसे ही अंगरेज़ी की जकड़ को ढीला किया वैसे ही हिन्दी ने सारे हिन्दुस्तान पर अपनी हुकूमत जमा दी और तीन महीने के अन्दर बारह बारह बरस के लड़के जगह जगह नेता बन बैठे और राजनीतिक मामलों में ऐसे ऊंचे दर्जे के व्याख्यान देने लगे जितने ऊंचे दर्जे के व्याख्यान वह ग्रेजुएट भी नहीं दे सकते थे जो बरसों से कांग्रेस की सेवा करते आ रहे थे. अगर गांधी जी ने हिन्दी को यह छूट न दी होती तो क्या कुछ ही महीनों में देश के कोने कोने में स्वराज की बात फैलाई जा सकती थी? सन 1921 में साल भर में स्वराज देने की प्रतिज्ञा गांधी जी ने की थी. इसके लिये ज़रूरी था कि हिन्दी का 'स्वरूप' क़ायम रखा जाये, नहीं तो साल भर में किसी और दूसरी भाषा के ज़रिये से स्वराज शब्द भी हिन्दुस्तान के कोने कोने में नहीं पहुंचाया जा सकता था.

पंजाबियों ने टाइपिस्ट के लिए शब्द बनाया है— टपटपिया. यह है पंजाबी भाषा का स्वरूप. कितना छोटा और मीठा शब्द बना! गहरा सोचने पर यह तरीक़ा यह भी बताता है कि हमारे ऋषि मुनि इसी तरह शब्द बनाते थे. संस्कृत की बहुत सी धातुएं इसी तरह बनीं. यही हाल लेटिन और ग्रीक का है और यही हाल हिन्दी का है. हिन्दी के शब्द काका, बाबा, चाचा, दादा, नाना कितने आसान और प्यारे शब्द हैं. ऐसे मालूम होते हैं मानों किसी बच्चे ने बनाए हों और अजब नहीं ये बच्चों ही के बनाए हुए हों. हमारे बच्चे बिना सिखाये पानी को पापा कहने ही तो लगते हैं! पंजाबी का 'टपटपिया' शब्द भी हिन्दी वाले अपनालें तो कितना अच्छा हो. पर जिन पंडितों के सिरों में पंडिताऊ शब्दों ने ही जगह ले रखी है वह इस 'टपटपिया' शब्द को कब पास फटकने देंगे?

पंजाबियों का 'शॉर्ट हैन्ड' के लिये शब्द है 'खिचिमिचि'. पर हिन्दी में शॉर्टहैन्ड के लिए है संस्कृत से उधार लिया शीघ्रलिपि, आशुलिपि, हस्तलाघव इत्यादि!



لئے فارسی پڑھنا ضروری ہوگیا؛ عربی کی جانکاری ضروری ہوگئی. ادھر ھندی کو وہ روپ دیا جس کے لئے سنسکرت پڑھنا ضروری ھو گیا. آج جسطرح کی ھندی چل رھی ھے اور راشٹر بھاشا کا جو روپ ھمارے سامنے آ رھا ھے وہ ایسا ھی ھے جو بغیر دوسری بھاشا کو سیکھے پورا پورا نہیں سمجھا جاسکتا اور یہی کہلاتا ھے بھاشا کے سروپ کو بگاڑنا.

بھاشا کے سروپ کے بنے رھنے میں سب سے بڑا فائدہ یہ ھے کہ وہ سرل بنی رھے گی' لوک شاھی کے کام کی ھوگی. اس کے پھیلنے میں سوبھیتا ھوگا. نیتاؤں کے پیدا کرنے میں تو وہ پوری طرح ایسی پھل دائک سدھ ھوگی' جسے ھریالی کے پیدا کرنے میں برسات. سن 1921 میں کانگریس نے جیسے ھی انگریزی کے جکڑ کو ڈھیلا کیا ویسے ھی ھندی نے سارے ھندستان پر اپنی حکومت جما دی اور تین مہینے کے اندر بارہ بارہ برس کے لڑکے جگہ جگہ نیتا بن بیٹھے اور راجنیتک معاملوں میں ایسے اونچے درجے کے وکھیان دینے لگے جتنے اونچے درجے کے ویاکھیان وہ گریجوئیٹ بھی نہیں دے سکتے تھے جو برسوں سے کانگریس کی سیوا کرتے آ رھے تھے. اگر گاندھی جی نے ھندی کو یہ چھوٹ نہ دی ھوتی تو کیا کچھ ھی مہینوں میں دیش کے کونے کونے میں سوراج کی بات پھیلائی جا سکتی تھی؟ سن 1921 میں سال بھر میں سوراج دینے کی پرتگیاں گاندھی جی نے کی تھی. اِس کے لئے ضروری تھا کہ ھندی کا 'سروپ' قائم رکھا جائے' نہیں تو سال بھر میں کسی اور دوسری بھاشا کے ذریعہ سے سوراج شبد بھی ھندستان کے کونے کونے میں نہیں پہونچایا جا سکتا تھا.

پنجابیوں نے ٹائپسٹ کے لئے شبد بنایا ھے— ٹپ ٹپیا. یہ ھے پنجابی بھاشا کا سروپ. کتنا چھوٹا اور میٹھا شبد بنا! گہرا سوچنے پر یہ طریقہ یہ بھی بتاتا ھے کہ ھمارے رشی منی اسی طرح شبد بناتے تھے. سنسکرت کی بہت سی دھاتوئیں اسی طرح بنیں. یہی حال لیٹن اور گریک کا ھے اور یہی حال ھندی کا ھے. ھندی کے شبد کاکا' بابا' چاچا' دادا' نانا کتنے آسان اور پیارے شبد ھیں. ایسے معلوم ھوتے ھیں مانو کسی بچے نے بنائے ھوں اور عجب نہیں یہ بچوں ھی کے بنائے ھوئے ھوں. ھمارے بچے بنا سکھائے پانی کو پاپا کہنے ھی تو لگتے ھیں! پنجابی کا 'ٹپ ٹپیا' شبد بھی ھندی والے اپنالیں تو کتنا اچھا ھو. پر جن پنڈتوں کے سروں میں پنڈتاؤ شبدوں نے ھی جگہ لے رکھی ھے وہ اِس 'ٹپ ٹپیا' شبد کو کب پاس پھٹکنے دینگے؟

پنجابیوں کا 'شارٹ ھینڈ' کے لئے شبد ھے 'کھچی مچی'. پر ھندی میں شارٹ ھینڈ کے لئے ھے سنسکرت سے اُدھار لیا شیگھرلپی' اشولپی' ھست لاگھو اتیادی!

(प्रत्यय) की मदद से अनेक मानों में निभ जाते हैं और मूल शब्द के रूप को बिगड़ने नहीं देते. ऐसी सिफ़त संस्कृत भाषा को प्राप्त है. बस वे संस्कृत पर मुग्ध हो गये और उन्होंने उसकी मदद से संविधान गढ़ डाला. उन्हें यह तक याद न रहा कि संविधान में ही एक ऐसी धारा मौजूद है जो उन्हें ऐसा करने से रोकती है !! अनुवादकों से उस हिन्दी में अनुवाद चाहा गया था जो उत्तर भारत में बोली और समझी जाती है और अनुवाद हुआ उस भाषा में जो कहीं भी बोली समझी नहीं जाती !!

यह पंडिताऊ भाषा अगर संविधान तक ही सीमित रहती तो कुछ बुरा न होता. यह तो प्लेग की तरह हर क्षेत्र में अपने पांव बढ़ाने लगी और जो संविधान में ही ठीक ठीक न समा पाई थी वह राष्ट्रभाषा बनकर देश भर में समाने की सोचने लगी. यह एक तरह से हिन्दी भाषा के स्वरूप पर ही आघात करना था.

पाणिनी ने संस्कृत के लिये व्याकरण रचा है, शब्द नहीं गढ़े हैं. वैयाकरण शब्द नहीं गढ़ा करते. वह तो सिर्फ़ उन नियमों को इकट्ठा कर देते हैं जो किसी भाषा में काम आ रहे हों. अनुवादक वैसा नहीं करता. उसे कहीं कहीं शब्द बनाने भी पड़ते हैं. उसे चाहिये कि वह उसी भाषा के शब्द भंडार और नियमों से काम ले जिस भाषा में उसे अनुवाद करने के लिये कहा जाये. संविधान के बारे में ऐसा नहीं हुआ. अनुवाद हिन्दी में किया गया, मदद संस्कृत शब्दों और संस्कृत व्याकरण से ली गई. यह भाषा के साथ जबरदस्त अन्याय हो गया. हो गया तो, हो गया, पर इससे भी बड़ी मुश्किल यह हो गई कि अन्याय ख़ुद समय का नियम बन बैठा और अब हिन्दी भाषा 'स्वरूप' को ही छोड़, 'पर रूप' लेकर कुरूप बनने पर उतर आई. फिर तो भाषा के स्वरूप का सवाल छिड़ना ही था.

किसी भाषा के स्वरूप को बनाये रखने के लिये यह बहुत ज़रूरी है कि जो विदेशी शब्द अपनाये जायें या जो भी शब्द बाहर से लिये जायें वह सब के सब आकार प्रकार और ध्वनि में ऐसे तो हो ही जायें जो उस भाषा में पराये होकर न चमकें, नहीं तो वह कांटे की तरह खटकेंगे. दूसरे यह भी ख़याल रखना पड़ेगा कि विदेशी शब्द विदेशी व्याकरण लेकर तो नहीं घुस गये ? क्योंकि ऐसा होने से भाषा का स्वरूप तो बिगड़ेगा ही, भाषा क्लिष्ट भी हो जायेगी.

राष्ट्रभाषा का स्वरूप बनाये रखने के लिये यह भी ज़रूरी है कि भाषा ऐसी न होने पाये जिसे सीखने के लिये कोई दूसरी भाषा और सीखनी पड़े. अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तानी भाषा के साथ यही तो ज़ुल्म किया. एक ओर उन्होंने उर्दू खड़ी की और उसको वह रूप दिया जिसको समझने के



( پرتیہ ) کی مدد سے انیک معنوں میں نبھ جاتے ھیں اور مول شبد کے روپ کو بگڑنے نہیں دیتے . ایسی صفت سنسکرت بھاشا کو پراپت ھے . بس وہ سنسکرت پر مگدھ ھوگئے اور اُنھوں نے اُس کی مدد سے سمودھان گڑھ ڈالا . اِنھیں یہ تک یاد نہ رھا کہ سمودھان میں ھی ایک ایسی دھارا موجود ھے جو اِنھیں ایسا کرنے سے روکتی ھے !! انوادکوں سے اُس ھندی میں انواد چاھا گیا تھا جو اُتر بھارت میں بولی اور سمجھی جاتی ھے اور انواد ھوا اس بھاشا میں جو کہیں بھی بولی، سمجھی نہیں جاتی !!

یہ پنڈتاؤ بھاشا اگر سمودھان تک ھی سیمت رھتی تو کچھ برا نہ ھوتا . یہ تو پلیگ کی طرح ھر چھیتر میں اپنے پاؤں بڑھانے لگی اور جو سمودھان میں ھی ٹھیک ٹھیک نہ سما پائی تھی وہ راشٹر بھاشا بن کر دیش بھر میں سمانے کی سوچنے لگی . یہ ایک طرح سے ھندی بھاشا کے سروپ پر ھی آگھات کرنا تھا .

پانِنی نے سنسکرت کے لئے ویاکرن رچا ھے' شبد نہیں گڑھے ھیں . ویاکرن شبد نہیں گڑھا کرتے . وہ تو صرف اُن نیموں کو اکٹھا کر دیتے ھیں جو کسی بھاشا میں کام آ رھے ھوں . انوادک ویسا نہیں کرتا . اُسے کہیں کہیں شبد بنانے بھی پڑتے ھیں . اُسے چاھئے کہ وہ اُسی بھاشا کے شبد بھنڈار اور نیموں سے کام لے جس بھاشا میں اُسے انواد کرنے کے لئے کہا جائے. سمودھان کے بارے میں ایسا نہیں ھوا . انواد ھندی میں کیا گیا' مدد سنسکرت شبدوں اور سنسکرت ویاکرن سے لی گئی . یہ بھاشا کے ساتھ زبردست انیائے ھوگیا . ھوگیا تو ھوگیا' پر اس سے بھی بڑی مشکل یہ ھوگئی کہ انیائے خود سمے کا نیم بن بیٹھا اور اب ھندی بھاشا ' سروپ ' کو ھی چھوڑ ' پرروپ ' لے کر کوروپ بننے پر اتر آئی. پھر تو بھاشا کے سروپ کا سوال چھڑنا ھی تھا .

کسی بھاشا کے سروپ کو بنائے رکھنے کے لئے یہ بہت ضروری ھے کہ جو ودیشی شبد اپنائے جائیں یا جو بھی شبد باھر سے لئے جائیں وہ سب کے سب آکار پرکار اور دھونی میں ایسے تو ھو ھی جائیں جو اس بھاشا میں پرائے ھو کر نہ چمکیں' نہیں تو وہ کانٹے کی طرح کھٹکیں گے . دوسرے یہ بھی خیال رکھنا پڑے گا کہ ودیشی شبد ودیشی ویاکرن لیکر تو نہیں گھس گئے ؟ کیونکہ ایسا ھونے سے بھاشا کا سروپ تو بگڑے گا ھی' بھاشا کلشٹ بھی ھو جائیگی .

راشٹر بھاشا کا سروپ بنائے رکھنے کے لئے یہ بھی ضروری ھے کہ بھاشا ایسی نہ ھونے پائے جسے سیکھنے کے لئے کوئی دوسری بھاشا اور سیکھنی پڑے . انگریزوں نے ھندستانی بھاشا کے ساتھ یہی تو ظلم کیا . ایک اور اُنھوں نے اردو کھڑی کی. اور اُس کو وہ روپ دیا جسکو سمجھنے کے

संविधान बेवक़्त बना. यही हाल पार्लिमेन्ट का हुआ. वह भी बेवक़्त बनी पर ऐसा हुये बिना हिन्दुस्तान आज़ाद भी नहीं हो सकता था. जिस तरह दांत साफ़ करने के लिये दांतों को और काला करना पड़ता है, जिस तरह बरतनों को साफ़ करने के लिये उनको मटियाना पड़ता है उसी तरह हिन्दुस्तानियों को अंगरेज़ों के राज की गन्दगी दूर करने के लिये इन संविधान और पार्लियामेन्ट से काम लेना पड़ा. हिन्दुस्तान का संविधान यानी हिन्दुस्तान की जनता का संविधान अंगरेज़ी में कैसा ? हिन्दुस्तान की किसी भाषा में होना चाहिये था. हिन्दुस्तान में एक भाषा ऐसी थी जो थोड़ी बहुत हर जगह समझी जाती थी. पार्लिमेन्ट के उन इने गिने लोगों के लिये, जो उस भाषा को नहीं समझते थे, अंगरेज़ी में अनुवाद करके समझाया जा सकता था. पर यह सीधा रास्ता न अपनाकर अंगरेज़ी में संविधान रचकर टेढ़ा रास्ता क्यों अपनाया गया ? इसका जवाब सीधा सादा है. हम भारतवासियों की गर्दन बर्तानिया के पंजे में फंसी हुई थी. संविधान उतना हमें समझाने के लिये नहीं बना जितना उस बर्तानिया के समझाने के लिये जिसके पंजे में हमारी गर्दन थी.

अगर हमारा संविधान हिन्दी में तैयार हुआ होता तो भाषा के स्वरूप का सवाल ही न उठता. यह सवाल तो उठाया उस अनुवाद ने जो अंगरेज़ी के कांस्टीट्यूशन का सरकार की तरफ़ से किया गया. अंगरेज़ी का कांस्टीट्यूशन सामने आते ही पंडितों की बाछें खिल गयीं और उन्होंने ऐसी तरकीब निकाल ली कि वह ग़लत सलत जो कुछ भी लिख दें वेद वाक्य की तरह प्रमाण माना जाये. इसलिये उन्होंने ऐसी भाषा का सहारा लिया जिसे पार्लिमेन्ट का शायद ही कोई मेम्बर ठीक ठीक समझता हो. कुछ लोगों का यह कहना है कि जिसने संविधान हिन्दी में अनुवाद किया है वह अगर उसी अनुवादित हिन्दी से फिर से अंगरेज़ी में अनुवाद करके दिखला दे तो वह हज़ारों की शर्त लगाने के लिये तैयार हैं ! हमारा यह ख़याल है कि उनकी इस चुनौती को अनुवादक स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं.

बी०बी०सी० से एक बार किसी फ़्रान्सीसी ड्रामा का हिन्दी अनुवाद ब्राडकास्ट हुआ था. अनुवादक का दावा था कि वह उस ड्रामा के सब रूपों को हिन्दुस्तानी में निभायेगा. यहां तक कि अनुप्रास की सुन्दरता को भी हाथ से नहीं जाने देगा. दो एक हफ़्ते उसने अच्छा निभाया पर आगे उसे हार माननी पड़ी और ख़ालिस हिन्दुस्तानी का सहारा लेना पड़ा. संविधान के अनुवादकों के सामने भी एक ऐसी ही टेढ़ी बात आ गई और वह थी अंगरेज़ी शब्दों की यह ख़ूबी कि वह प्रिफ़िक्स ( उपसर्ग ) और सफ़िक्स



سمودھان بے وقت بنا . یہی حال پارلیامنٹ کا ہوا . وہ بھی بے وقت بنی . پر ایسا ہوئے بنا ہندستان آزاد بھی نہیں ہو سکتا تھا . جسطرح دانت صاف کرنے کے لئے دانتوں کو اور کالا کرنا پڑتا ھے' جسطرح برتنوں کو صاف کرنے کے لئے اُن کو مٹیانا پڑتا ھے اِسی طرح ھندستانیوں کو انگریزوں کے راج کی گندگی دور کرنے کے لئے اِن سمودھان اور پارلیمنٹ سے کام لینا پڑا . ھندستان کا سمودھان یعنی ھندستان کی جنتا کا سمودھان انگریزی میں کیسا ؟ ھندستان کی کسی بھاشا میں ھونا چاھئے تھا . ھندستان میں ایک بھاشا ایسی تھی جو تھوڑی بہت ھر جگہ سمجھی جاتی تھی . پارلیمنٹ کے اُن اِنے گنے لوگوں کے لئے' جو اُس بھاشا کو نہیں سمجھتے تھے' انگریزی میں انواد کر کے سمجھایا جا سکتا تھا . پر یہ سیدھا راستہ نہ اپنا کر انگریزی میں سمودھان رچ کر ٹیڑھا راستہ کیوں اپنایا گیا ؟ اِس کا جواب سیدھا سادہ ھے . ھم بھارت واسیوں کی گردن برطانیہ کے پنجے میں پھنسی ہوئی تھی . سمودھان اتنا ھمیں سمجھانے کے لئے نہیں بنا جتنا اُس برطانیہ کے لئے جس کے پنجے میں ھماری گردن تھی .

اگر ھمارا سمودھان ھندی میں تیار ھوا ھوتا تو بھاشا کے سروپ کا سوال ھی نہ اُٹھتا . یہ سوال تو اُٹھایا اس انواد نے جو انگریزی کے کانسٹیٹیوشن کا سرکار کی طرف سے کیا گیا . انگریزی کا کانسٹیٹیوشن سامنے آتے ھی پنڈتوں کی باچھیں کھل گئیں . اور اُنھوں نے ایسی ترکیب نکالی کہ وہ غلط سلط جو کچھ بھی لکھ دیں وید وانیہ کی طرح پرمان مانا جائے . اِس لئے اُنھوں نے ایسی بھاشا کا سہارا لیا جسے پارلیمنٹ کا شاید ھی کوئی میمبر ٹھیک ٹھیک سمجھتا ھو . کچھ لوگوں کا یہ کہنا ھے کہ جس نے سمودھان ھندی میں انواد کیا ھے وہ اگر اسی انوادت ھندی سے پھر سے انگریزی میں انواد کر کے دکھلا دے تو وہ ھزاروں کی شرط لگانے کے لئے تیار ھیں ! ھمارا یہ خیال ھے کہ اُن کی اِس چنوتی کو انوادک سویکار کرنے کے لئے تیار نہیں .

بی . بی . سی . سے ایک بار کسی فرانسیسی ڈرامہ کا ھندی انواد براڈکاسٹ ھوا تھا . انوادک کا دعویٰ تھا کہ وہ اُس ڈرامہ کے سب روپوں کو ھندستانی میں نبھائے گا . یہاں تک کہ انوپراس کی سندرتا کو بھی ھاتھ سے نہیں جانے دے گا . دو ایک ھفتے اس نے اچھا نبھایا پر آگے اُسے ھار ماننی پڑی اور خالص ھندستانی کا سہارا لینا پڑا . سمودھان کے انوادکوں کے سامنے بھی ایک ایسی ھی ٹیڑھی بات آگئی اور وہ تھی انگریزی شبدوں کی خوبی کہ وہ پریفکس ( اُپسرگ ) اور سافکس

जितनी वह मराठी में चमकती है उतनी औरों में नहीं. हिन्दी में भी यह ख़ासियत थी तभी तो रामायण में दो सौ पचास फ़ारसी शब्द इस तरह समा गये जिस तरह आटे में नमक, कि वह रस देते हैं पर अपना अस्तित्व खोये हुये हैं. हिन्दी की यह ख़ासियत उन लोगों ने खो दी जो शब्द और उच्चारण की शुद्धता पर ज़ोर देने लगे. जब भाई को 'भ्राता', भानजे को 'भगनिज' और देवर को 'द्विवर' कहने की बीमारी चल पड़ेगी तो हिन्दी न जाने क्या रूप ले लेगी !

राष्ट्र भाषा का जो स्वरूप सारे हिन्दुस्तान में फैला वह यूं ही नहीं फैल गया. हिन्दी में लिखी अगर सब किताबें इकट्ठा की जायें और उनके आधार पर कोई व्याकरण तैयार किया जाये तो हज़ार पंडित भी हज़ार बरस की उमर लेकर हज़ार बरस में तैयार नहीं कर सकते. हिन्दी का लिंग भेद और हिन्दी के विशेषण बनाने की रीतियां कुछ ऐसी हैं जो व्याकरण बनाते समय क़ाबू से बाहर हो जाती हैं. यह हमारे शब्द नहीं हैं. उन व्याकरण बनाने वालों के शब्द हैं जिन्होंने इस काम में अपनी उम्र बिता दी है. हिन्दी की यह, चाहे इसे आज़ादी कहो, चाहे उच्छृङ्खलता, ऐसी चीज़ है जो हिन्दी के फैलने में बड़ी सहायक साबित हुई. ताश के पत्तों को ले लीजिये. इक्का, दुरी, तिरी, चौवा, पंजा, छक्का, सत्ता, अट्ठा, नहला, दहला—दस तक का कोई पत्ता व्याकरण के क़ायदे से नहीं बना. नहला, दहला साफ़ फ़ारसी शब्द हैं. इसे छोड़िये, इन्हीं के दूसरे रूप लीजिये—इक्की, दुक्की, तिक्की, चौकी, पंजी, छक्की, सत्ती, अट्ठी, नहली, दहली. इसके और भी कई रूप हैं. छक्की चौसर में जाकर छकड़ी बन गई है. इक्का 'पौ' बन गया है. कहीं कहीं नहला, नौवा बोला जाता है और फिर लुत्फ़ यह कि इन सब रूपों का भी बिना सिखाये बच्चे इतनी जल्दी सीख लेते हैं कि सब दांत तले उंगली दबाते रह जाते हैं. विदेशी जहां हिन्दी का व्याकरण देखकर घबराता है वहां हिन्दी भाषियों में रहकर हिन्दी सीखने में सुख मानता है और बड़ी जल्दी सीख जाता है. यह हम अन्दाज़े से नहीं कह रहे. यह कुछ चीनियों, अमरीकियों और रूसियों के शब्द हैं और हैं कुछ यूरपवासियों के शब्द. उन्हीं का कहना है कि हिन्दी बोली तो है आसान पर हिन्दी व्याकरण मुश्किल.

असल में राष्ट्रभाषा की लोकशाही सिफ़त बनाये रखने के लिये हर एक आदमी का यह धर्म होना चाहिये कि वह उसके स्वरूप का ध्यान रखे. वह किसी तरह भी उसके "अपने रूप" को न बिगड़ने दे.

भाषा के स्वरूप को लेकर जो एक बड़ा तूफ़ान खड़ा हो गया है उसका कारण है हिन्दुस्तान का संविधान और उससे भी बढ़कर दूसरा कारण है हिन्दुस्तान की पार्लिमेन्ट.



جتنی وہ مراٹھی میں چمکتی ہے اتنی اوروں میں نہیں ۔ ہندی میں بھی یہ خاصیت تھی تبھی تو رامائن میں دو سو پچاس فارسی شبد اِس طرح سما گئے جسطرح آٹے میں نمک، کہ وہ رس دیتے ہیں پر اپنا استتو کھوئے ہوئے ہیں ۔ ہندی کی یہ خاصیت اُن لوگوں نے کھو دی جو شبد اور اچارن کی شدھتا پر زور دینے لگے ۔ جب بھائی کو' بھراتا' بھانجے کو ' بھگ نج' اور دیور کو ' دوِوَر ' کہنے کی بیماری چل پڑے گی تو ہندی نہ جانے کیا روپ لے لیگی !

راشٹر بھاشا کا جو سروپ سارے ہندستان میں پھیلا وہ یونہی نہیں پھیل گیا ۔ ہندی میں لکھی اگر سب کتابیں اکٹھا کی جائیں اور اُن کے آدھار پر کوئی ویاکرن تیار کیا جائے تو ہزار پنڈت بھی ہزار برس کی عمر لیکر ہزار برس میں تیار نہیں کر سکتے ۔ ہندی کا لنگ بھید اور ہندی کے وشیشن بنانے کی ریتیاں کچھ ایسی ہیں جو ویاکرن بناتے سمے قابو سے باہر ہو جاتی ہیں ۔ ہیں ۔ یہ ہمارے شبد نہیں ہیں ۔ اُن ویاکرن بنانے والوں کے شبد ہیں جنھوں نے اُس کام میں اپنی عمر بتا دی ہے ۔ ہندی کی یہ' چاہے اِسے آزادی کہو' چاہے اُچھرنکھلتا' ایسی چیز ہے جو ہندی کے پھیلنے میں بڑی سہائک ثابت ہوئی ۔ تاش کے پتوں کو لے لیجئے ۔ اِکا' دری' تری' چوا' پنجہ' چھکا' ستا' اَٹھا' نہلا' دہلا—دس تک کا کوئی پتہ ویاکرن کے قاعدے سے نہیں بنا ۔ نہلا' دہلا' صاف فارسی شبد ہیں ۔ اِسے چھوڑیے' اِنہیں کے دوسرے روپ لیجئے—اِکی' دوئی' تکی' چوکی' پنجی' چھکی' ستی' اٹھی' نہلی' دہلی ۔ اس کے اور بھی کئی روپ ہیں ۔ چھکی چوسر میں جاکر چھکڑی بن گئی ہے ۔ اِکا ' پو ' بن گیا ہے ۔ کہیں کہیں نہلا' نوا بولا جاتا ہے اور پھر لطف یہ ہے کہ اِن سب روپوں کو بھی بنا سکھائے بچے اتنی جلدی سیکھ لیتے ہیں کہ سب دانت تلے انگلی دباتے رہ جاتے ہیں ۔ ودیشی جہاں ہندی کا ویاکرن دیکھ کر گھبراتا ہے وہاں ہندی بھاشیوں میں رہ کر ہندی سیکھنے میں سکھ مانتا ہے اور بڑی جلدی سیکھ جاتا ہے ۔ یہ ہم اندازہ سے نہیں کہہ رہے ۔ یہ کچھ چینیوں' امریکیوں اور روسیوں کے شبد ہیں اور ہیں کچھ یورپ واسیوں کے شبد ۔ اِنہیں کا کہنا ہے کہ ہندی بولی تو ہے آسان پر ہندی ویاکرن مشکل ۔

اصل میں راشٹر بھاشا کی لوک شاہی صفت بنائے رکھنے کے لئے ہر ایک آدمی کا یہ دھرم ہونا چاہئےکہ وہ اُس کے سروپ کا دھیان رکھے ۔ وہ کسی طرح بھی اُس کے " اپنے روپ " کو نہ بگڑنے دے ۔

بھاشا کے سروپ کو لیکر جو ایک بڑا طوفان کھڑا ہو گیا ہے اُس کا کارن ہے ہندستان کا سمودھان اور اُس سے بھی بڑھ کر دوسرا کارن ہے ہندستان کی پارلیامنٹ ۔

मानते हैं. किसी भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों का बाहुल्य देखकर यह कह बैठना भी गलत है कि वह भाषा उस भाषा से निकली है. जिस तरह आदमियों के हाथ पांव जानवरों से न मिलने की वजह से हम उनको अलग मानते हैं वैसे ही भाषा का व्याकरण यह तय कर देता है कि उसका उस भाषा से निकास है या नहीं है जिस भाषा के शब्दों का बाहुल्य उसमें है.

हिन्दी भाषा का व्याकरण संस्कृत भाषा से मेल नहीं खाता-हिन्दी में दो लिंग, संस्कृत में तीन, हिन्दी में दो वचन संस्कृत में तीन, हिन्दी कर्तृवाच्य प्रधान, संस्कृत कर्मवाच्य प्रधान, हिन्दी असमास प्रधान, संस्कृत समास प्रधान और समास विशेषता वाली. हिन्दी की क्रिया में लिंग विचार, संस्कृत की लिंग रहित. इत्यादि, इत्यादि.

थोड़े शब्दों में हिन्दी का व्याकरण संस्कृत से मेल नहीं खाता. इसलिए हिन्दी संस्कृत से निकली हुई भाषा नहीं. यह स्वतंत्र भाषा है. यह कितनी पुरानी है—यह शोध का विषय है. उस भाषा का क्या नाम था जो इस तरह का रूप लेकर हिन्दुस्तानी हिन्दी बन गई—सब्र के साथ खोज करने से पता लग सकता है. हमारी यह बात अगर साफ़ हो जाये तो हिन्दी को संस्कृतमय बनाने की बात लोगों को फिर न सूझे और राष्ट्रभाषा के स्वरूप का बखेड़ा एकदम कम हो जाये.

आज अगर किसी तरह हिन्दी भाषा का वह रूप जो अंग्रेजों के न आने की सूरत में हिन्दुस्तानी जनता अपने आप तैयार करती, सामने रखा जा सके तो वह इतना भोंडा जंचे कि आज के हिन्दी भक्त एक स्वर से चिल्ला उठें—"रोको, रोको; यह गंवारू भाषा है." पर इस लोकशाही के युग में राष्ट्रभाषा ऐसा रूप लेकर रहेगी जिससे बहुतों को नाक भौं सिकोड़ने पड़ेंगे. तभी तो वह अपनी सच्ची जगह ले सकेगी. दबे छिपे क्या आज इस बात पर नाक भौं नहीं सिकुड़ते कि अमीरों के साथ ग़रीब भी संसद की कुरसी पर बैठे होते हैं और विद्वानों के साथ अपढ़ भी बिराजमान रहते हैं, कुलीनों के साथ इतर लोग, कुलीनों की अकड़ लेकर बैठते हैं ? जिस तरह और विभागों में लोकशाही की जरूरत है ठीक उसी तरह और उससे कहीं ज्यादा, भाषा के मामले में लोकशाही जरूरी है. लोकशाही का अर्थ ही है—सरलता, सादगी, ईमानदारी, भलमनसी, भाईबंदी. भाषा में यही सब बातें सुगमता, व्याकरण की सरलता, रिजुता, देश भर के शब्दों का मेल—नाम पाते हैं.

मराठी में एक विशेषता है कि वह दूसरी भाषा के शब्दों को अपनाकर ऐसा रूप दे लेती है कि हर एक के लिये यह आसान काम नहीं रह जाता कि वह जल्दी से उस बिदेशी शब्द को पकड़ सके. यह ख़ासियत हिन्दुस्तान की गुजराती, पंजाबी इत्यादि और भाषाओं में भी है. पर



مانتے هیں. کسی بھاشا دوسری بھاشا کے شبدوں کا باهولیۃ دیکھ کر یہ کہ بیٹھنا بھی غلط هی کہ وہ بھاشا اس بھاشا سے نکلی هے. جس طرح آدمیوں کے هاتھ پاؤں جانوروں سے نہ ملنے کی وجہ سے هم اُن کو الگ مانتے هیں ویسے هی بھاشا کا ویاکرن یہ طے کردیتا هے کہ اُس کا اُس بھاشا سے نکاس هے یا نہیں هے جس بھاشا کے شبدوں کا باهولیہ اس میں هے.

هندی بھاشا کا ویاکرن سنسکرت بھاشا سے میل نہیں کھاتا —هندی میں دو لنگ، سنکرت میں تین، هندی میں دو وچن سنسکرت میں تین، هندی کرتریہ واچیہ پردهان، سنسکرت کرم واچیہ پردهان، هندی اسماس پردهان، سنسکرت سماس پردهان اور سماس وشیشتا والی، هندی کی کریا میں لنگ وچار، سنسکرت کی کریا لنگ رهت، اتیادی اتیادی.

تھوڑے شبدوں میں هندی کا ویاکرن سنسکرت سے میل نہیں کھاتا. اس لئے هندی سنسکرت سے نکلی هوئی بھاشا نہیں. یہ سوتنتر بھاشا هے. یہ کتنی پرانی هے—یہ شودھ کا وشئے هے. اُس بھاشا کا کیا نام تھا جو اِس طرح کا روپ لیکر هندستانی یا هندی بن گئی—صبر کے ساتھ کھوج کرنے سے پتہ لگ سکتا هے. هماری یہ بات اگر صاف هوجائے تو هندی کو سنسکرتمئے بنانے کی بات لوگوں کو پھر نہ سوجھے اور راشٹر بھاشا کے سروپ کا بکھیڑا ایکدم کم هوجائے.

آج کسی طرح هندی بھاشا کا وہ روپ جو انگریزوں کے نہ آنے کی صورت میں هندستانی جنتا اپنے آپ تیار کرتی، سامنے رکھا جاسکے تو وہ اتنا بھونڈا جنچے کہ آج کے هندی بھکت ایک سور سے چلا اُٹھیں—"روکو، روکو، یہ گنوارو بھاشا هے." پر اِس لوک شاهی کے یگ میں راشٹر بھاشا ایسا روپ لےکر رهےگی جس سے بہتوں کو ناک بھوں سکوڑنے پڑیں گے. تبھی تو وہ اپنی سچی جگہ لے سکےگی. دبے چھپے کیا آج اِس بات پر ناک بھوں نہیں سکوڑتے کہ امیروں کے ساتھ غریب بھی سنسد کی کرسی پر بیٹھے هوتے هیں اور ودوانوں کے ساتھ اپڑھ بھی براجمان رهتے هیں، کلینوں کے ساتھ اِتر لوگ کلینوں کی اکڑ لےکر بیٹھتے هیں؟ جس طرح اور وبھاگوں میں لوک شاهی کی ضرورت هے ٹھیک اُسی طرح اور اُس سے کہیں زیادہ، بھاشا کے معاملے میں لوک شاهی ضروری هے. لوک شاهی کا ارتھ هی هے—سرلتا، سادگی، ایمانداری، بھلمنسی، بھائی بندی. بھاشا میں یہی سب باتیں سگمتا، ویاکرن کی سرلتا، رجوتا، دیش بھر کے شبدوں کا میل—نام پاتے هیں.

مراٹھی میں ایک وشیشتا هے کہ وہ دوسری بھاشا کے شبدوں کو اپنا کر ایسا روپ دے لیتی هے کہ هر ایک کے لئے یہ آسان کام نہیں رہ جاتا کہ وہ جلدی سے اُس ودیشی شبد کو پکڑ سکے. یہ خاصیت هندستان کی گجراتی، پنجابی اتیادی اور بھاشاؤں میں بھی هے. پر

स्वरूप के साथ तो अन्याय करते ही हैं, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी, अंग्रेज़ी के साथ भी अन्याय करते हैं

आज जनता का एक हिस्सा राष्ट्रभाषा के स्वरूप को संस्कृत मिश्रित बनाना चाहता है. पर संस्कृत के बहुत से विद्वान संस्कृत मिश्रित हिंदी को नापसंद करते हैं. पटना में तुलसी-जयंती के अवसर पर संस्कृत के एक प्रोफ़ेसर ने एक निमंत्रण पत्र की खिल्ली उड़ाते हुए कहा—"उस निमंत्रण पत्र में लिखा था—'आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है.' इसका तो यह मतलब हुआ कि मेरी उपस्थिति इस योग्य है कि मुझसे उपस्थित रहने की प्राथना की जाये. बताइये मुझे बुलाया कहां गया?" इस तरह की शिकायतें दक्षिणी पंडितों को तो बेहद हैं. उनका कहना है—'उपन्यास' का अर्थ 'Novel' कहां से बन गया? ऐसे ही मराठी वालों से कोई यदि यह पूछ बैठे कि आपकी कितनी 'शिक्षा' हुई है तो वह चिढ़कर यही कहेगा कि—'मैं बीस बार जेल गया हूं, आपको मतलब?' मराठी में 'शिक्षा' के मानी हैं 'सज़ा' या दंड.

हिन्दी भाषा का स्वरूप एक है और एक ही रहेगा. वही सुरूप समझा जायेगा. स्वरूप को बिगाड़ना ही कुरूप समझा जायेगा. हम ऊपर कह आये हैं कि हिन्दी भाषा-भाषी जब कोई ऐसी भाषा सीख लेते हैं जो हिन्दी के स्वरूप से मेल नहीं खाती तो वह हिन्दी के स्वरूप को ऐसा रूप देते हैं कि वह सुरूप नहीं रह जाता. उनके कान भी ऐसे हो जाते हैं कि उनको हर शब्द गंवारू जंचने लगता है. अंग्रेज़ों के ज़माने में हर अंग्रेज़ी पढ़े लिखे को हिन्दी का पंडित गंवार ही जंचता था. उनकी नज़रों में तो वेद का मर्मज्ञ पंडित भी कुछ नहीं जंचता था और यही हाल था अरबी फ़ारसी के आलिमों का. वह भी अंग्रेज़ी पढ़े की नज़रों में अपढ़ ही समझे जाते थे. कभी कभी तो कुपढ़ भी मान लिए जाते थे. आज भी एक हवा चल पड़ी है कि संस्कृत का पंडित हिन्दी पढ़े लिखों को अपढ़ ही समझता है और जब जब मौक़ा मिलता है वह हिन्दी के स्वरूप को संस्कृत का जामा पहनाकर बिगाड़ता रहता है. उसी के बल पर वह कन्हैया के वज़न पर बने शब्द 'लिखैया' की खिल्ली उड़ाता है और 'लेखक' को बहुत महत्व पूर्ण शब्द समझता है. उसे यह मालूम ही नहीं कि जबलपुर की एक तरकारी बेचनेवाली औरत ने एक पंडित जी को उसे 'बहन' की जगह 'भगिनी' कहने पर इतनी बुरी तरह फटकारा था कि वह अपने को संभाल न सके. पंडितों को यह नहीं मालूम कि जो 'पूज्यपाद' शब्द उन्हें सुहाता है वह गांववालों को 'पंडिताऊ' जंचता है. यह याद रहे कि जिस तरह भोंडे शब्दों के लिए पंडितों ने 'गंवारू' शब्द गढ़ रखा है वैसे ही गांव वालों ने भोंडे शब्द के लिए 'पंडिताऊ' शब्द गढ़ रखा है. गांववाले 'पूज्यपाद' शब्द को भोंडा शब्द



سروپ کے ساتھ تو انیائے کرتے ھی ھیں' سنسکرت' فارسی' عربی' انگریزی کے ساتھ بھی انیائے کرتے ھیں .

آج جنتا کا ایک حصہ راشٹر بھاشا کے سروپ کو سنسکرت مشرت بنانا چاھتا ھے. پر سنسکرت کے بہت سے ودوان سنسکرت مشرت ھندی کو ناپسند کرتے ھیں . پٹنہ میں تلسی جینتی کے اوسر پر سنسکرت کے ایک پروفیسر نے ایک نیمنترن پتر کی کھلی اڑاتے ھوئے کہا—اُس نیمنترن پتر میں لکھا تھا—"آپ کی اُپستھتی پرارتھنیہ ھے." اس کا تو یہ مطلب ھوا کہ میری اُپستھتی اِس یوگیہ ھے کہ مجھسے اُپستھت رھنے کی پرارتھنا کی جائے . بتلائے مجھے بلایا کہاں گیا؟" اِس طرح کی شکائتیں دکھنی پنڈتوں کو تو بےحد ھیں . ان کا کہنا ھے—'اُپنیاس' کا ارتھ 'Novel' کہاں سے بن گیا ؟ ایسے ھی مراٹھی والوں سے کوئی یدی یہ پوچھ بیٹھے کہ آپ کی کتنی 'سکچھا' ھوئی ھے تو وہ چڑھ کر یہی کہیگا کہ—'میں بیس بار جیل گیا ھوں آپ کو مطلب ؟ مراٹھی میں 'سکچھا' کے معنی ھیں 'سزا' یا دنڈ .

ھندی بھاشا کا سروپ ایک ھے اور ایک ھی رھیگا . وھی سوروپ سمجھا جائیگا . سروپ کو بگاڑنا ھی کوروپ سمجھا جائیگا. ھم اُوپر کہہ آئے ھیں کہ ھندی بھاشا بھاشی جب کوئی ایسی بھاشا سیکھ لیتے ھیں جو ھندی کے سروپ سے میل نہیں کھاتی تو وہ ھندی کے سروپ کو ایسا روپ دیتے ھیں کہ وہ سوروپ نہیں رہ جاتا . ان کے کان بھی ایسے ھو جاتے ھیں کہ اُن کو ھر شبد گنوارو جنچنے لگتا ھے . انگریزوں کے زمانے میں ھر انگریزی پڑھے لکھے کو ھندی کا پنڈت گنوار ھی جنچتا تھا. اُن کی نظروں میں تو وید کا مرمگیہ پنڈت بھی کچھ نہیں جنچتا تھا اور یہی حال تھا عربی' فارسی کے عالموں کا . وہ بھی انگریزی پڑھے کی نظروں میں اپڑھ ھی سمجھے جاتے تھے . کبھی کبھی تو کوپڑھ بھی مان لئے جاتے تھے . آج بھی ایک ھوا چل پڑی ھے. کہ سنسکرت کا پنڈت ھندی پڑھے لکھوں کو اپڑھ ھی سمجھتا ھے اور جب جب موقع ملتا ھے وہ ھندی کے سروپ کو سنسکرت کا جامہ پہناکر بگاڑتا رھتا ھے . اُسی کے بل پر وہ کنھیا کے وزن پر بنے شبد 'لکھیا' کی کھلی اڑاتا ھے اور 'لیکھک' کو بہت مہتوپورن شبد سمجھتا ھے . اُسے یہ معلوم ھی نہیں کہ جبلپور کی ایک ترکاری بیچنے والی عورت نے ایک پنڈت جی کو اُسے 'بہن' کی جگہ 'بھگنی' کہنے پر اتنی بری طرح پھٹکارا تھا کہ وہ اپنے کو سنبھال نہ سکے. پنڈت جی کو یہ نہیں معلوم کی جو پوجیہ پاد شبد انہیں سوھاتا ھے وہ گاؤں والوں کو 'پنڈتاؤ' جنچتا ھے . یہ یاد رھے جس طرح بھونڈے شبدوں کے لئے پنڈتوں نے 'گنوارو' شبد گڑھ رکھا ھے ویسے ھی گاؤں والوں نے بھونڈے شبد کے لئے پنڈتاؤ شبد گڑھ رکھا ھے . گاؤں والے 'پوجیہ پاد' شبد کو بھونڈا شبد

जायेंगे कृष्ण और गृहस्थी, पढ़े जायेंगे 'किरशण, करुशण' और 'गिरस्थी, ग्रस्थी' और जनता बोलेगी इन्हें करशण और ग्रस्थी या गिरस्थी. इसी तरह इ, ई, उ, ऊ पर भी अब कुछ विद्वानों का मत है कि वे इ, ई, उ, ऊ के रूप में लिखे जांय. Basic English की तरह यदि Basic Hindi तैयार करना हो तो इ, ई, उ, ऊ सचमुच अक्षरों की संख्या बढ़ाने के सिवाय किसी काम के नहीं.

गांव वालों को घिसे घिसाये पत्थर सुघड़ मालूम होते हैं. तभी तो वह शालिगराम की बटिया पूजते हैं. पंडितों को नुकीले पत्थर पसंद आते हैं तभी तो वह तरह तरह की मूर्तियां गढ़ते हैं. शब्दों के उच्चारण में जितना मुँह को ताड़ना मोड़ना पड़ेगा उतना ही पंडित को पसंद आयेगा और उतना ही वह साधारण आदमी को नापसंद होगा और जो शब्द जितना सीधा सादा होगा उतना ही पंडित को अरुचिकर होगा. थोड़े से शब्दों में पंडित क्लिष्टता प्रिय है और साधारण मनुष्य सरलता प्रिय. पंडित की क्लिष्टता प्रियता एरिस्टोक्रेसी को जन्म देती है जिसको उच्चकुलशाही या कुलीनशाही कहा जा सकता है. पंडित चाहे या न चाहे उससे भाषा में जो सुधार होगा वह ऐसा ही होगा जो भाषा में कुलीनशाही का महल खड़ा कर दे. उसे शब्द भी क्लिष्ट ही सूझेंगे. वह इसी में भाषा का उत्थान समझता है. वह यह समझता ही नहीं कि वह जाने अनजाने भाषा के स्वरूप की गर्दन मरोड़ रहा है.

किसी भाषा में दूसरी भाषा के व्याकरण का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रवेश कर देना भाषा की गर्दन मरोड़ना ही है. पंजाबी भाषा ने किताब के लिए अंग्रेजी भाषा का 'बुक' शब्द अपनाया पर उसका बहुवचन वह 'बुक्कां' कहते हैं. अगर वह बुक का बहुवचन 'बुक्स' अपना लें तो पंजाबी भाषा की गर्दन मरोड़ने के गुनाहगार समझे जायेंगे

गांववाले सब भाषाओं से शब्द लेते हैं पर उसकी नोकें घिस डालते हैं. उन्होंने 'कलक्टर' को अपनाया पर कर दिया उसे 'कलट्टर'. अब यह हो गया शुद्ध हिन्दी शब्द. उन्होंने अपनाया सुपरिनटेंडेंट' और कर दिया उसे 'सुपरडेंट' या सिपिंडट और बना लिया उसे ठेठ हिंदी शब्द. असल में गांववाले भाषा के स्वरूप को नहीं बिगड़ने देते. वे भाषा के स्वरूप को मांजकर दुगुना चमका देते हैं, जबकि पंडित लोग भाषा के स्वरूप को और बिगाड़ देते हैं. उस पर दूसरी भाषा के परत जमाकर लोगों के सामने पेश करते हैं, जिससे वह 'स्वरूप' लिए हुए हिन्दी नहीं रह जाती बल्कि पर रूप लिए हुए वह भाषा बन जाती है जिसका रूप हिन्दी पर चढ़ाया गया होता है. तब वह भाषा भी स्वयं शुद्ध न रहकर भोंडी बन जाती है. पंडित लोग हिंदी को अंग्रेजी, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी या और कोई जामा पहनाकर हिंदी के



جائینگے 'کرشنر' اور گرھستی پڑھے جائیں گے کرشن 'کروشن' اور 'گرہستھی' 'گرھستھی' اور جنتا بولے گی انھیں کرشن اور گرستھی یا گرھستھی. اِسی طرح اِی' ای' اُو' پر بھی اب کچھ ودوانوں کا مت ھے کہ وے ای' ائی' او' اؤ کے روپ میں لکھے جائیں. Basic English کی طرح یدی Basic Hindi تیار کرنا ھو تو ای' ائی' او' اؤ سچ مچ اکچھروں کی سنکھیا بڑھانے کے سوائے کسی کام کے نہیں .

گاؤں والوں کو گھسے گھسائے پتھر سگھڑ معلوم ھوتے ھیں. تبھی تو وہ شالگ رام کی بٹیا پوجتے ھیں . پنڈتوں کو نوکیلے پتھر پسند آتے ھیں تبھی تو وہ طرح طرح کی مورتیاں گڑھتے ھیں . شبدوں کے اچارن میں جتنا منھ کو توڑنا موڑنا پڑیگا اتنا ھی پنڈت کو پسند آیگا اور اتنا ھی وہ سادھارن آدمی کو ناپسند ھوگا اور جو شبد جتنا سیدھا سادا ھوگا اتنا ھی پنڈت کو اروچیکر ھوگا . تھوڑے سے شبدوں میں پنڈت کلشٹا پریہ ھیں اور سادھارن منشیہ سرلتا پریہ . پنڈت کی کلشٹتا پریتا ایرسٹو کریسی کو جنم دیتی ھے جس کو اُوچ کل شاھی یا کلین شاھی کہا جاسکتا ھے . پنڈت چاھے یا نہ چاھے اُس سے بھاشا میں جو سدھار ھوگا وہ ایسا ھی ھوگا جو بھاشا میں کلین شاھی کا محل کھڑا کردے . اُسے شبد بھی کلشٹ ھی سوجھیں گے . وہ اِسی میں بھاشا کا اُتھان سمجھتا ھے . وہ یہ سمجھتا ھی نہیں کہ وہ جانے انجانے بھاشا کے سروپ کی گردن مروڑ رھا ھے .

کسی بھاشا میں دوسری بھاشا کے ویاکرن کا پرتیکچھ یا اپرتیکچھ روپ سے پرویش کردینا بھاشا کی گردن مروڑنا ھی ھے. پنجابی بھاشا نے کتاب کے لئے انگریزی بھاشا کا 'بک' شبد اپنایا پر اُس کا بہوبچن وہ 'بکاں' کہتے ھیں . اگر وہ بک کا بہوبچن 'بکس' اپنالیں تو پنجابی بھاشا کی گردن مروڑنے کے گناہگار سمجھے جائیں گے .

گاؤں والے سب بھاشاؤں سے شبد لیتے ھیں پر اُن کی نوکیں گھس ڈالتے ھیں. انھوں نے 'کلکٹر' کو اپنایا پر کردیا اُسے 'کلٹٹر'. اب یہ ھوگیا شدھ ھندی شبد . انھوں نے اپنایا 'سپرنٹینڈینٹ' اور کردیا اُسے 'سوپرڈنٹ' یا سپڈنٹ اور بنالیا اُسے ٹھیٹ ھندی شبد . اصل میں گاؤں والے بھاشا کے سروپ کو نہیں بگڑنے دیتے. وے بھاشا کے سروپ کو مانجھ کر دوگنا چمکا دیتے ھیں ' جب کہ پنڈت لوگ بھاشا کے سروپ کو اور بگاڑ دیتے ھیں . اُس پر دوسری بھاشا کے پرت جماکر لوگوں کے سامنے پیش کرتے ھیں' جس سے وہ 'سروپ' لئے ھوئے ھندی نہیں رہ جاتی بلکہ 'پرروپ' لئے ھوئے وہ بھاشا بن جاتی ھے جس کا روپ ھندی پر چڑھایا گیا ھوتا ھے . تب وہ بھاشا بھی سویم شدھ نہ رہ کر بھونڈی بن جاتی ھے . پنڈت لوگ ھندی کو انگریزی' سنسکرت' فارسی' عربی یا اور کوئی جامہ پہناکر ھندی کے

से दांयीं तरफ़ चलने लगते हैं तो उनकी भाषा अपने आप संस्कृत की तरफ़ मुंह कर बैठती है. रोमन में हिन्दी लिखते समय अंगरेज़ी के शब्द जितना शुद्ध रूप लेंगे उतना शुद्ध रूप वह उस समय नहीं लेंगे जब हिन्दी, उर्दू या नागरी लिखावट में लिखे जायेंगे.

इस से पता चलता है कि लिखावट किस तरह भाषा के स्वरूप को फैलाने और बदलने में मददगार होती है और कब क्यों वही लिखावट उसके प्रचार को रोक रखने का काम करने लगती है. हां, यह ठीक है कि अभ्यास से इस असर को बहुत कम किया जा सकता है और बिलकुल ख़त्म भी किया जा सकता है.

## राष्ट्रभाषा का स्वरूप कैसा है और कैसा हो—

स्वरूप शब्द का अर्थ है "अपना रूप". अपने रूप दो नहीं हो सकते. हाँ, किसी चीज़ के रूप रंग को दो आदमी दो अलग अलग शब्दों से पुकार सकते हैं, जिस तरह पानी को एक जल कह सकता है और दूसरा नीर. इससे स्वरूप में कोई भेद नहीं आता. राष्ट्रभाषा के स्वरूप में कोई मतभेद है ही नहीं. मतभेद है शब्दों के रूप में. शब्दों के रूप के आधार पर भाषा का स्वरूप बदल जाने का भय है. तब राष्ट्रभाषा का स्वरूप सुरूप, न रहकर कुरूप भी हो सकता है. सुरूप कुरूप सापेक्ष शब्द हैं. हो सकता है जिसे एक सुरूप कहता है उसे दूसरा सुरूप कहे और जिसे दूसरा सुरूप कहता है उसे पहला कुरूप कहे.

कुछ शब्द हैं जो पंडितों की नज़र में गंवारू यानी कुरूप जंचते हैं, पर वही गँवारू और कुरूप शब्द गांव वालों को बड़े भले और सुन्दर मालूम होते हैं. कृष्ण का नाम कन्हैया गांव वालों को जितना शिष्ट, सुन्दर और प्यारा मालूम होता है उतना कृष्ण नहीं.

कृष्ण का तो वे उच्चारण भी ठीक ठीक नहीं कर सकते. मूर्धन्य ष का उच्चारण तो अब पंडित भी भूल गये हैं. वह बोला कहीं नहीं जाता, लिखा भर जाता है. बालकों को उसका उच्चारण समझाने के लिए किसी के पास कोई साधन नहीं है. बालक से इसके उच्चारण के बारे में पिंड छुड़ाने के लिये 'पेट चिरा श' कहने के सिवाय कोई उपाय नहीं. यही हाल 'ञ' का है और यही 'ङ, का है. ऌ, ॡ तो वेद की पोथियों में खड़ी खड़ी हिंदी का तमाशा देख रही हैं. ऋ का भी कुछ यही हाल है. बच रही ऋ. वह ऋषि और ऋण जैसे शब्दों के साथ जुड़ी है. विंध्या के उत्तर में पंडितों के लिए वह 'रि' हो गई है और विंध्या के दक्षिण में पंडितों के लिए 'रू' बन गई है. काशी में लिखा जाता है ऋषि, पढ़ा जाता है रिशि. यही महाराष्ट्र और त्रिवेंद्रम में लिखा जायगा ऋषि पर पढ़ा जायगा रूशि. "कृष्ण" का तो इससे भी अजीब हाल है और यही हाल है "गृहस्थी" का. यह लिखे



سے دائیں طرف چلنے لگتے ہیں تو اُن کی بھاشا اپنے آپ سنسکرت کی طرف منہ کر بیٹھتی ہے۔ رومن میں لکھتے سمے انگریزی کے شبد جتنے شدھ روپ لیں گے اتنا شدھ روپ وہ اُس سمے نہیں لینگے جب ہندی، اردو یا ناگری لکھاوٹ میں لکھے جائیں گے۔

اِس سے پتہ چلتا ہے کہ لکھاوٹ کس طرح بھاشا کے سروپ کو پھیلانے اور بدلنے میں مددگار ہوتی ہے اور کب کیوں وہی لکھاوٹ اُس کے پرچار کو روک رکھنے کا کام کرنے لگتی ہے۔ ہاں، یہ ٹھیک ہے کہ ابھیاس سے اس اثر کو بہت کم کیا جا سکتا ہے اور بالکل ختم بھی کیا جا سکتا ہے۔

## راشٹر بھاشا کا سروپ کیسا ہے اور کیسا ہو—

سروپ شبد کا ارتھ ہے "اپنا روپ." اپنے روپ دو نہیں ہوسکتے۔ ہاں، کسی چیز کے روپ رنگ کو دو آدمی دو الگ الگ شبدوں سے پکار سکتے ہیں، جس طرح پانی کو ایک جل کہ سکتا ہے اور دوسرا نیر۔ اس سے سروپ میں کوئی بھید نہیں آتا۔ راشٹر بھاشا کے سروپ میں کوئی مت بھید ہے ہی نہیں۔ مت بھید ہے شبدوں کے روپ میں۔ شبدوں کے روپ کے آدھار پر بھاشا کا سروپ بدل جانے کا بھے ہے۔ تب راشٹر بھاشا کا سروپ سوروپ نہ رہکر کوروپ بھی ہوسکتا ہے۔ سوروپ کوروپ ساپیکش شبد ہیں۔ ہوسکتا ہے جسے ایک سوروپ کہتا ہے اسے دوسرا کوروپ کہے اور جسے دوسرا سروپ کہتا ہے اُسے پہلا کوروپ کہے۔

کچھ شبد ہیں جو پنڈتوں کی نظر میں گنوارو یعنی کوروپ جنچتے ہیں، پر وہی گنوارو اور کوروپ شبد گاؤں والوں کو بڑے بھلے اور سندر معلوم ہوتے ہیں۔ کرشن کا نام کنھیا گاؤں والوں کو جتنا شِشٹ، سندر اور پیارا معلوم ہوتا ہے اتنا کرشن نہیں۔

کرشن کا تو وے اُچارن بھی ٹھیک ٹھیک نہیں کرسکتے۔ مورھنیہ 'شا' کا اچارن تو اب پنڈت بھی بھول گئے ہیں۔ وہ بولا کہیں نہیں جاتا، لکھا بھر جاتا ہے۔ بالکوں کو اُس کا اُچارن سمجھانے کے لئے کسی کے پاس کوئی سادھن نہیں ہے۔ بالک سے اِس کے اُچارن کے بارے میں پنڈ چھڑانے کے لئے 'پیٹ چرا شا' کہنے کے سوائے کوئی اُپائے نہیں۔ یہی حال 'یاں' کا ہے اور یہی 'گیاں' کا ہے۔ لر- لری تو وید کی پوتھیوں میں کھڑی کھڑی ہندی کا تماشہ دیکھ رہی ہیں۔ رری کا بھی کچھ یہی حال ہے۔ بچ رہی رر۔ وہ رشی اور رنڑ جیسے شبدوں کے ساتھ جڑی ہے۔ وندھیا کے اُتر میں پنڈتوں کے لئے وہ 'ری' ہوگئی ہے اور وندھیا کے دکھن میں پنڈتوں کے لئے 'رو' بن گئی ہے۔ کاشی میں لکھا جاتا ہے رشی، پڑھا جاتا ہے ریشی۔ یہی مہاراشٹر اور تریوندرم میں لکھا جائیگا رشی پر پڑھا جائیگا روشی۔ "کرشن" کا تو اِس سے بھی عجیب حال ہے اور یہی حال "گرہستھی" کا۔ یہ لکھے

पवित्र ग्रन्थ वेद नागरी अक्षरों में कम और मुश्किल से मिलेगा पर रोमन अक्षरों में चाहे जितना मिल सकता है. सभी धर्मों के धर्मग्रन्थ रोमन अक्षरों में मौजूद हैं और भी तरह तरह की किताबें रोमन अक्षरों में मौजूद हैं. नागरी लिखावट इस कमी को सैकड़ों बरस में भी पूरा नहीं कर सकती. इसकी वजह यह नहीं कि नागरी अक्षरों में कुछ अयोग्यता है. वजह यह है कि जो अपने आप को नागरी लिपि का मालिक मानते हैं उनमें इतना उत्साह ही नहीं है. उनको इतनी जरूरत ही नहीं है कि वह रोमन अक्षरों में मिलती हुई चीज को नागरी अक्षरों में बदलने की कोशिश करें.

आज कोई यह सोच भी नहीं सकता कि कोई अंगरेज़ी हिन्दी ऐसी डिक्शनरी बनाई जाये जिसमें अंगरेज़ी हिन्दी डिक्शनरी की तरह सारे अंगरेज़ी शब्द नागरी अक्षरों में दिये हुये हों. अगर कोई जोश में आकर ऐसा कर भी डाले तो अपनी तिजौरी के नोटों का स्वाहा कर सकता है. मुफ्त बांटने पर भी उस डिक्शनरी के पढ़ने वाले तो एक ओर, घर की अलमारी में रखने वाले भी न मिलेंगे.

अंगरेज़ों का राज रहते रहते नागरी लिखावट का थोड़ा बहुत जोश रहा और 'नागर' नाम की एक पत्रिका भी निकली जिसमें हिन्दुस्तान की दूसरी भाषाओं के लेख भी नागरी लिपि में रहा करते थे. पर वैसा जोश टिक न पाया और अंगरेज़ों के चले जाने के बाद तो वह बिलकुल गूलर का फूल बन गया.

नागरी अक्षर और अक्षरों से किसी तरह कम नहीं; पर नागरी प्रचारिणी सभा इन्डियन नेशनल कांग्रेस की तरह वैसी ही नीयत से गढ़ी गई थी. कांग्रेस के पिता थे ह्यूम तो नागरी प्रचारिणी सभा के पिता थे सर चार्ल्स मेकडानल्ड, जो एन० डब्ल्यू० पी० ( यू० पी० का पुराना नाम ) के लेफ्टेनेन्ट गवर्नर थे. मेकडानल्ड की नागरी फैलाने की इतनी इच्छा नहीं थी जितनी हिन्दू मुसलमानों को एक दूसरे से अलग करने की. इसलिये नागरी प्रचारिणी सभा इतनी सफल न हो पाई जितनी होनी चाहिये थी. जो काम नागरी प्रचारिणी सभा बीस बरस में न कर पाई वह सन 1920 के बाद दो बरस में हो गया. नागरी अक्षर कैलाश से कुमारी तक और द्वारका से डिब्रूगढ़ तक अपने आप फैल गये क्योंकि इसकी जड़ में हिन्दू मुसलिम एकता थी, देश भक्ति थी, देश प्रेम था, गांधी जी का त्याग और तपस्या थी.

जो लोग हिन्दी और उर्दू दोनों अच्छी तरह जानते हैं वे जब उर्दू का क़लम उठाते हैं और दायें से बांई तरफ़ चलते हैं तो उनकी भाषा अपने आप फ़ारसी की तरफ़ चल देती है और जब हिन्दी पर क़लम उठाते हैं और बाएँ



پوتر گرنتھ وید ناگری اکچھروں میں کم اور مشکل سے ملے گا پر رومن اکچھروں میں چاھے جتنا مل سکتا ھے . سبھی دھرموں کے دھرم گرنتھ رومن اکچھروں میں موجود ھیں اور بھی طرح طرح کی کتابیں رومن اکچھروں میں موجود ھیں . ناگری لکھاوٹ اس کمی کو سیکڑوں برس میں بھی پورا نہیں کر سکتی . اِس کی وجہ یہ نہیں کہ ناگری اکچھروں میں کچھ ایوگتا ھے . وجہ یہ ھے کہ جو اپنے آپ کو ناگری لپی کا مالک مانتے ھیں اُن میں اتنا اتساہ ھی نہیں ھے . ان کو اتنی ضرورت ھی نہیں ھے کہ وہ رومن اکچھروں میں ملتی ھوئی چیز کو ناگری اکچھروں میں بدلنے کی کوشش کریں .

آج کوئی یہ سوچ بھی نہیں سکتا کہ کوئی انگریزی ھندی ایسی ڈکشنری بنائی جائے جس میں انگریزی ھندی ڈکشنری کی طرح سارے انگریزی شبد ناگری اکچھروں میں دیئے ھوئے ھوں . اگر کوئی جوش میں آ کر ایسا کر بھی ڈالے تو اپنی تجوری کے نوٹوں کا سواھا کر سکتا ھے . مفت بانٹنے پر بھی اُس ڈکشنری کے پڑھنے والے تو ایک اُور، گھر کی الماری میں رکھنے والے بھی نہ ملیں گے .

انگریزوں کا راج رھتے رھتے ناگری لکھاوٹ کا تھوڑا بہت جوش رھا اور ' ناگر ' نام کی ایک پتریکا بھی نکلی جس میں ھندستان کی دوسری بھاشاؤں کے لیکھ بھی ناگری لپی میں رھا کرتے تھے . پر ویسا جوش ٹک نہ پایا اور انگریزوں کے چلے جانے کے بعد تو وہ بالکل گولر کا پھول بن گیا .

ناگری اکچھر اور اکچھروں سے کسی طرح کم نہیں؛ پر ناگری پرچارنی سبھا انڈین نیشنل کانگریس کی طرح ویسی ھی نیت سے گڑھی گئی تھی . کانگریس کے پتا تھے ھیوم تو ناگری پرچارنی سبھا کے پتا تھے سر چارلس میکڈونلڈ، جو این - ڈبلو - پی (یو . پی. کا پرانا نام) کے لیفٹیننٹ گورنر تھے.

میکڈونلڈ کی ناگری پھیلانے کی اتنی اِچھا نہیں تھی جتنی ھندو مسلمانوں کو ایک دوسرے سے الگ کرنے کی . اِس لئے ناگری پرچارنی سبھا اتنی سپھل نہ ھو پائی جتنی ھونی چاھئے تھی . جو کام ناگری پرچارنی سبھا بیس برس میں نہ کر پائی وہ سن 1920 کے بعد دو برس میں ھوگیا . ناگری اکچھر کیلاش سے کماری تک اور دوارکا سے ڈبروگڑھ تک اپنے آپ پھیل گئے کیونکہ اِس کی جڑ میں ھندو مسلم ایکتا تھی، دیش بھکتی تھی، دیش پریم تھا، گاندھی جی کا تیاگ اور تپسیا تھی .

جو لوگ ھندی اور اردو دونوں اچھی طرح جانتے ھیں وے جب اردو کا قلم اُٹھاتے ھیں اور داہیں سے بائیں طرف چلتے ھیں تو اُن کی بھاشا اپنے آپ فارسی کی طرف چل دیتی ھے اور جب ھندی پر قلم اُٹھاتے ھیں اور بائیں

आज की हालत देख कर हमारी यह कहने की हिम्मत नहीं होती कि रोमन लिखावट अपनालेने से हिन्दुस्तान पर बहुत बड़ी आफ़त आ जायेगी या हिन्दुस्तान उन्नति की दौड़ में बहुत पीछे पड़ जायेगा. तुरकी, जहां रोमन लिखावट गांव तक इतनी नहीं पहुंची थी जितनी पहुंचनी चाहिये, उसे अपनाकर उन्नति की दौड़ में कुछ आगे ही बढ़ गया तब फिर हिन्दुस्तान उसे अपनाकर कैसे पीछे रह सकता है जबकि अंगरेज़ी के छब्बीसों अक्षर और दसों अंक हिन्दुस्तान के कोने कोने में पहुंच चुके हैं और उन अक्षरों व अंकों पर बच्चों से बूढ़ों तक की नजर सुबह से शाम तक अनेक बार पड़ती रहती है ? अंगरेज़ी प्रभाव को हम कोसें या सराहें उसने यह तो किया ही है कि हमारे बच्चों की रुचि अंगरेज़ी अक्षरों की तरफ़ नागरी अक्षरों से कुछ जियादा नहीं है तो कम भी नहीं है. उसी तरह अंगरेज़ी प्रभाव ने एक विष यह भी बोया है कि हिन्दू बच्चे की रुचि उर्दू अक्षरों की तरफ़ दिन ब दिन कम होती जा रही है और नागरी अक्षरों की तरफ़ बढ़ती जा रही है और मुसलमान बच्चों की रुचि उर्दू अक्षरों की तरफ़ बढ़ती जा रही है और नागरी अक्षरों की ओर से घटती जा रही है. इसका नतीजा यह हो रहा है कि हिन्दू बच्चे हिन्दी की फ़िक्र में ठेठ संस्कृत को अपना रहे हैं और मुसलमान बच्चे उर्दू की फ़िक्र में ठेठ फ़ारसी को, और यह दोनों बातें राष्ट्रभाषा के लिये घातक हैं. हिन्दू बच्चों की तरह मुसलमान बच्चे भी अंगरेज़ी अक्षरों में अपना नाम लिख कर जितना अभिमान अनुभव करते हैं उतना उर्दू अक्षरों में लिख कर नहीं. हमारे बच्चे करें भी क्या ? वह जिस वातावरण में पले हैं वहां अंगरेज़ी अक्षरों का राज था.

लिखावट राष्ट्रभाषा के स्वरूप के फैलाने में बड़ी मददगार होती है. अंगरेज़ी फैलाने में रोमन अक्षर बड़े काम के साबित हो रहे हैं. हिन्दुस्तान की हर भाषा की किताब रोमन अक्षरों में मिल सकती है. हिन्दुस्तान ही नहीं, दुनिया की हर भाषा की किताब रोमन अक्षरों में मिल सकती है. फिर अंगरेज़ी भाषा क्यों न फैले ?

पचास बरस पहले की एक किताब हमारे देखने में आई जो हिन्दी भाषा और नागरी लिपि में छपी हुई है, और पद्यात्मक है. यह अङ्गरेज़ी कोष की किताब अलीगढ़ के किसी छापेखाने में छपी है. उसमें से कुछ पद्य हम नीचे दे रहे हैं :—

फ़ादर बाप, मदर है माई,<br>
सिस्टर बहन, ब्रदर है भाई.<br>
डाटर बेटी, सन है बेटा,<br>
यंगर छोटा, एल्डर जेठा.

इस ढंग की अंगरेज़ी किताबें बहुत मिलेंगी. हिन्दुओं का



آج کی حالت دیکھ کر ھماری یہ کہنے کی ھمت نہیں ھوتی کہ رومن لکھاوٹ اپنالینے سے ھندستان پر بہت بڑی آفت آجائے گی یا ھندستان اُنتی کے دوڑ میں بہت پیچھے پڑ جائےگا . ترکی' جہاں رومن لکھاوٹ گاؤں تک اتنی نہیں پہنچی تھی جتنی پہنچنی چاھئے' اُسے اپنا کر اُنتی کی دوڑ میں کچھ آگے ھی بڑھ گیا تب پھر ھندستان اُسے اپنا کر کیسے پیچھے رہ سکتا ھے جب کہ انگریزی کے چھبیسوں اکچھر اور دسوں انک ھندستان کے کونے کونے میں پہنچ چکے ھیں اور ان اکچھروں و انکوں پر بچوں سے بوڑھوں تک کی نظر صبح سے شام تک انیک بار پڑتی رھتی ھے ؟ انگریزی پربھاؤ کو ھم کوسیں یا سراھیں اُس نے یہ تو کیا ھی ھے کہ ھمارے بچوں کی روچی انگریزی اکچھروں کی طرف ناگری اکچھروں سے کچھ زیادہ نہیں ھے تو کم بھی نہیں ھے . اُسی طرح انگریزی پربھاؤ نے ایک وش یہ بھی بویا ھے کہ ھندو بچے کی روچی اردو اکچھروں کی طرف دن بہ دن کم ھوتی جا رھی ھے اور ناگری اکچھروں کی طرف بڑھتی جا رھی ھے اور مسلمان بچوں کی روچی اردو اکچھروں کی طرف بڑھتی جا رھی ھے اور ناگری اکچھروں کی اور سے گھٹتی جا رھی ھے . اِس کا نتیجہ یہ ھو رھا ھے کہ ھندو بچے ھندی کی فکر میں ٹھیٹ سنسکرت کو اپنا رھے ھیں اور مسلمان بچے اردو کی فکر میں ٹھیٹ فارسی کو' اور یہ دونوں باتیں راشٹر بھاشا کے لئے گھاتک ھیں . ھندو بچوں کی طرح مسلمان بچے بھی انگریزی اکچھروں میں اپنا نام لکھ کر جتنا ابھیمان انبھو کرتے ھیں اتنا اردو اکچھروں میں لکھ کر نہیں . ھمارے بچے کریں بھی کیا ؟ وہ جس واتاورن میں پلے ھیں ' وھاں انگریزی اکچھروں کا راج تھا .

لکھاوٹ راشٹر بھاشا کے سروپ کے پھیلانے میں بڑی مددگار ھوتی ھے . انگریزی پھیلانے میں رومن اکچھر بڑے کام کے ثابت ھو رھے ھیں. ھندستان کی ھر بھاشا کی کتاب رومن اکچھروں میں مل سکتی ھے . ھندستان ھی نہیں' دنیا کی ھر بھاشا کی کتاب رومن اکچھروں میں مل سکتی ھے . پھر انگریزی بھاشا کیوں نہ پھیلے ؟

پچاس برس پہلے کی ایک کتاب ھمارے دیکھنے میں آئی جو ھندی بھاشا اور ناگری لپی میں چھپی ھوئی ھے' اور پدیاتمک ھے . یہ انگریزی کوش کی کتاب علی گڈھ کے کسی چھاپے خانے میں چھپی ھے . اُس میں سے کچھ پدیہ ھم نیچے دے رھے ھیں :—

فادر باپ' مدر ھے مائی'<br>
سسٹر بہن' بردر ھے بھائی .<br>
ڈاٹر بیٹی' سن ھے بیٹا'<br>
ینگر چھوٹا' ایلڈر جیٹھا .

اِسی ڈھنگ کی انگریزی کتابیں بہت ملیں گی. ھندؤں کا

कर हममें से कुछ को एक कैंप में और कुछ को दूसरे कैंप में फेंक रहे हैं.

तीस चौंतीस बरस के बाद उन्हीं अंगरेज़ों ने चालाक ह्यूम की मदद से देश भर के लिये एक राजनीतिक संगठन की नींव डाली और उसका नाम रखा—"इन्डियन नेशनल कांग्रेस." यह न तो सारे हिन्दुस्तानियों के लिये बनाई गयी थी और न इसलिये बनाई गई थी कि हिन्दुस्तानी कोई ऐसी ताक़त हासिल करें जिससे वह अपने देश को अंगरेज़ों के पंजों से छुड़ा सकें. तभी तो इस कांग्रेस का सब काम अंगरेज़ी में होता था और सन 1920 की दिसम्बर तक अंगरेज़ी में होता रहा.

अंगरेज़ी कुधात की बनी इन्डियन नेशनल कांग्रेस हिन्दुस्तानी पारस महात्मा गांधी को छूकर सन 1921 में मध्य प्रदेश के शहर नागपूर में सुधात बन गई और फिर इसका बहुत सा काम उस भाषा में होने लगा जिसे राष्ट्र भाषा कहा जा रहा है. यह भाषा सन 1921 में उसी असली रूप में दुनिया के सामने आई जिसका बचपन यूरोपवासियों ने उस वक़्त देखा था जब वह हिन्दुस्तान के किनारे लगे थे.

## राष्ट्रभाषा स्वरूप और लिखावट—

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जीते जी हिन्दी उर्दू दोनों लिखावटों पर ज़ोर देते रहे. उनके सामने रोमन लिपि अपनाने का सवाल भी आया था पर उन्होंने उसको कुछ इस तरह दुतकारा मानों ऐसा सवाल रखने वाला कोई गुनाह कर रहा हो. यह बात हम उनसे सुनी हुई कह रहे हैं जिन्होंने उस दुतकार को अपने कानों सुना. उन्हीं का यह कहना है कि यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता कि जो राष्ट्रपिता रोमन को दुतकार रहे थे वह उसे अपनाने के लिये कभी राज़ी न होते. हो सकता है राज़ी हो जाते. दो लिखावटों पर ज़ोर दे कर गांधी जी राष्ट्रभाषा हिन्दी की नदी के दो मज़बूत किनारे बना देना चाहते थे जिससे उस नदी में वह पानी तो आ न पाये जिसे नदी में नहीं आना चाहिये और बाढ़ का वह पानी सबका सब आ जाये या ज़ियादा से ज़ियादा आ जाये जिसे नदी में आना चाहिये. यही वह दो किनारे हैं जो राष्ट्रभाषा हिन्दी को एक तरफ़ संस्कृत की ओर भटकने से रोकते हैं और दूसरी तरफ़ फ़ारसी अरबी की ओर भटकने से. संभव है आगे चलकर यह दोनों किनारे एक ही लिखावट के बनने लगें.

रोमन लिखावट अगर तुरकी में अपने पांव जमा सकती है और फल फूल सकती है तो हिन्दुस्तान में फल फूल न सके यह तो नहीं कहा जा सकता. हां, यह हो सकता है कि इमली के पेड़ की तरह फल देने में बहुत बरस लगा दे जिस जोखम के लिये देश इस समय तैयार नहीं है.



کر ہم میں سے کچھ کو ایک کیمپ میں اور کچھ کو دوسرے کیمپ میں پھینک رہے ہیں ۔

تیس چونتیس برس کے بعد انہیں انگریزوں نے چالاک ہیوم کی مدد سے دیش بھر کے لئے ایک راجنیتک سنگٹھن کی نیو ڈالی اور اس کا نام رکھا —" انڈین نیشنل کانگریس ."
یہ نہ تو سارے ہندستانیوں کے لئے بنائی گئی تھی اور نہ اس لئے بنائی گئی تھی کہ ہندستانی کوئی ایسی طاقت حاصل کریں جس سے وہ اپنے دیش کو انگریزوں کے پنجوں سے چھڑا سکیں ۔ تبھی تو اس کانگریس کا سب کام انگریزی میں ہوتا تھا اور سن 1920 کی دسمبر تک انگریزی میں ہوتا رہا ۔

انگریزی کودھات کی بنی انڈین نیشنل کانگریس ہندستانی پارس مہاتما گاندھی کو چھو کر سن 1921 میں مدھیہ پردیش کے شہر ناگپور میں سودھات بن گئی اور پھر اس کا بہت سا کام اس بھاشا میں ہونے لگا جسے راشٹر بھاشا کہا جا رہا ہے۔ یہ بھاشا سن 1921 میں اسی اصلی روپ میں دنیا کے سامنے آئی جسکا بچپن یورپ واسیوں نے اس وقت دیکھا تھا جب وہ ہندستان کے کنارے لگے تھے ۔

## راشٹر بھاشا سروپ اور لکھاوٹ

راشٹر پتا مہاتما گاندھی جیتے جی ہندی اردو دونوں لکھاوٹوں پر زور دیتے رہے ۔ اِن کے سامنے رومن لپی اپنانے کا سوال بھی آیا تھا پر اُنہوں نے اُس کو کچھ اِس طرح دتکارا مانو ایسا سوال رکھنے والا کوئی گناہ کر رہا ہو ۔ یہ بات ہم اُن سے سنی ہوئی کہہ رہے ہیں جنھوں نے اُس دتکار کو اپنے کانوں سنا ۔ اِنھیں کا یہ کہنا ہے کہ یہ ٹھیک ٹھیک نہیں کہا جا سکتا کہ جو راشٹر پتا رومن کو دتکار رہے تھے وہ اُسے اپنانے کے لئے کبھی راضی نہ ہوتے ۔ ہو سکتا ہے راضی ہوجاتے ۔ دو لکھاوٹوں پر زور دے کر گاندھی جی راشٹر بھاشا ہندی کی ندی کے دو مضبوط کنارے بنا دینا چاہتے تھے جس سے اُس ندی میں وہ پانی تو آ نہ پائے جسے ندی میں نہیں آنا چاہئے اور باڑھ کا وہ پانی سب کا سب آ جائے یا زیادہ سے زیادہ آ جائے جسے ندی میں آنا چاہئے ۔ یہی وہ دو کنارے ہیں جو راشٹر بھاشا ہندی کو ایک طرف سنسکرت کی اور بھٹکنے سے روکتے ہیں اور دوسری طرف فارسی عربی کی اور بھٹکنے سے ۔ سمبھو ہے آگے چل کر یہ دونوں کنارے ایک ہی لکھاوٹ کے بننے لگیں ۔

رومن لکھاوٹ اگر ترکی میں اپنے پاؤں جما سکتی ہے اور پھل پھول سکتی ہے تو ہندستان میں پھل پھول نہ سکے یہ تو نہیں کہا جا سکتا ۔ ہاں، یہ ہو سکتا ہے کہ املی کے پیڑ کی طرح پھل دینے میں بہت برس لگادے جس جوکھم کے لئے دیش اس سمے تیار نہیں ہے ۔

समझा जाता था. किताबघर शब्द उस हिन्दुस्तानी बोली का है जो हिन्दी और उर्दू के समुचित मेल से बनी थी और हर जगह समझी और बोली जाती थी, और पुस्तकालय संस्कृत का तत्सम शब्द है.

कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम कालेज में जो जो भाषाएं पढ़ाई जाती थीं उनमें हिन्दी उर्दू नाम की कोई भाषा नहीं मिलती. हां, बंगला इत्यादि भाषा के साथ साथ इस देश की एक भाषा और पढ़ाई जाती थी जिसका नाम था 'हिन्दुस्तानी'. यह भाषा हर अंगरेज के लिये या हर विदेशी के लिये जरूरी होनी चाहिये थी और जरूरी थी भी. हिन्दुस्तानी जाने बिना हिन्दुस्तान भर में विदेशियों का काम नहीं चल सकता था. यह वही भाषा थी जिसका सारा शब्द भंडार आज भी "शब्द सागर" में मौजूद है. यही वह हिन्दुस्तानी थी जो नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में आसानी से लिखी और पढ़ी जा सकती थी. यही हिन्दुस्तानी विदेशी राज्य की फूटनीति से बचकर जहां जहां जीती रही और रूखा सूखा खाकर बढ़ती रही, वहां वहां वह आज तक अपना पुराना शब्द भंडार तो लिये है ही, हजारों नये शब्द भी उसने अपना लिये हैं. उन शब्दों में—अंगरेजी, फ्रेन्च, पुर्तगाली, यूनानी, तुरकी इत्यादि के शब्द और वह शब्द भी शामिल हैं जो उसने बड़े प्यार से हिन्दुस्तान के उन प्रान्तों से अपनाये जिन्होंने उसका स्वागत किया.

ऊपर हमने एक वाक्य इस्तेमाल किया है—"विदेशी राज की फूटनीति." सचमुच अंगरेजों ने हिन्दुस्तान में फूट डालने की गरज से संस्कृत और अरबी के अलग अलग कालेज खोले और हिन्दी उर्दू नाम से दो भाषायें चलाईं जिसमें से एक मुसलमानों के सिर मढ़कर उसको उनकी धर्म भाषा मनवाया और दूसरी हिन्दुओं के सिर मढ़कर उसको उनकी धर्म भाषा. इतना ही नहीं, उन्होंने कुछ ऐसी जादू की लकड़ी कट्टर हिन्दुओं और कट्टर मुसलमानों के सिर पर फेरी कि हिन्दुस्तान से अंगरेजी राज उठ जाने के बाद आज भी उसका असर उनके सिर से उतर नहीं पा रहा है.

जिस फ़ोर्ट विलियम कालेज ने एक भाषा हिन्दुस्तानी का प्रचार किया उसी ने कूटनीतिज्ञ लार्ड मेकाले के इशारे पर लल्लू लाल मिश्र से उस हिन्दी में "प्रेमसागर" लिखवाया और उस उर्दू में इन्शा अल्ला खां से "बहार दरवेश" लिखवाई जो हिन्दी और उर्दू इस देश भर में कहीं भी बोली नहीं जाती थीं. अंगरेजों की यह फूटनीति सफल हुई. उर्दू मुसलमानों की धर्म भाषा बन बैठी और हिन्दी हिन्दुओं की. "हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तान" के नारे चल पड़े! राष्ट्रभाषा हिन्दी का असली और एक रूप हिन्दुस्तानी, दो रूप लेकर हर जगह खड़ा हो गया और साफ़ मालूम होने लगा कि वह दोनों रूप हम हिन्दुस्तानियों को पकड़ पकड़



سمجھا جاتا تھا . کتاب گھر شبد اُس ھندستانی بولی کا ھے جو ھندی اور اردو کے سموچت میل سے بنی تھی اور ھر جگہ سمجھی اور بولی جاتی تھی' اور پستکالیہ سنسکرت کا تتسم شبد ھے .

کلکتے کے فورٹ ولیم کالج میں جو جو بھاشائیں پڑھائی جاتی تھیں اُن میں ھندی اردو نام کی کوئی بھاشا نہیں ملتی. ھاں' بنگلا اتیادی بھاشا کے ساتھ ساتھ اِس دیش کی ایک بھاشا اور پڑھائی جاتی تھی جس کا نام تھا ' ھندستانی .' یہ بھاشا ھر انگریز کے لئے یا ھر ودیشی کے لئے ضروری ھونی چاھئے تھی اور ضروری تھی بھی . ھندستانی جانے بنا ھندستان بھر میں ودیشیوں کا کام نہیں چل سکتا تھا . یہ وھی بھاشا تھی جس کا سارا شبد بھنڈار آج بھی " شبد ساگر " میں موجود ھے . یہی وہ ھندستانی تھی جو ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں آسانی سے لکھی اور پڑھی جا سکتی تھی . یہی ھندستانی ودیشی راجیہ کی پھوٹ نیتی سے بچ کر جہاں جہاں جیتی رھی اور روکھا سوکھا کھا کر بڑھتی رھی' وھاں وھاں وہ آج تک اپنا پرانا شبد بھنڈار تو لئے ھے ھی' ھزاروں نئے شبد بھی اِس نے اپنا لئے ھیں. اِن شبدوں میں—انگریزی' فرینچ' پرتگالی' یونانی' ترکی اتیادی کے شبد اور وہ شبد بھی شامل ھیں جو اُس نے بڑے پیار سے ھندستان کے اُن پرانتوں سے اپنائے جنھوں نے اُس کا سواگت کیا .

اوپر ھم نے ایک واکیہ استعمال کیا ھے—" ودیشی راج کی پھوٹ نیتی ." ھندستان میں پھوٹ ڈالنے کی غرض سے سنسکرت اور عربی الگ الگ کالج کھولے اور ھندی اردو نام سے دو بھاشائیں چلائیں جس میں سے ایک مسلمانوں کے سر منڈھ کر اُس کو اُن کی دھرم بھاشا منوایا اور دوسری ھندوؤں کے سر منڈھ کر اُس کو اُن کی دھرم بھاشا . اتنا ھی نہیں' اُنھوں نے کچھ ایسی جادو کی لکڑی کٹر ھندوؤں اور کٹر مسلمانوں کے سر پر پھیری کہ ھندستان سے انگریزی راج اُٹھ جانے کے بعد آج بھی اُس کا اثر اُن کے سر سے اُتر نہیں پا رھا ھے .

جس فورٹ ولیم کالج نے ایک بھاشا ھندستانی کا پرچار کیا اُسی نے کوٹ نیتگیہ لارڈ میکالے کے اِشارے پر للو لال مصر سے اُس ھندی میں " پریم ساگر " لکھوایا اور اُس اردو میں انشا اللہ خاں سے " چہاردرویش " لکھوائی جو ھندی اور اردو اِس دیش بھر میں کہیں بھی بولی نہیں جاتی تھیں. انگریزوں کی یہ پھوٹ نیتی سپھل ھوئی . اردو مسلمانوں کی دھرم بھاشا بن بیٹھی اور ھندی ھندوؤں کی. "ھندو' ھندی' ھندستان" کے نعرے چل پڑے ! راشٹر بھاشا ھندی کا اصلی اور ایک روپ ھندستانی' دو روپ لیکر ھر جگہ کھڑا ھوگیا اور صاف معلوم ھونے لگا کہ وہ دونوں روپ ھم ھندستانیوں کو پکڑ پکڑ

हिन्द के साथ ही साथ इस देश को ईरान वाले हिन्दुस्तान कहने लगे. ईरान की बोली ईरानी या फ़ारसी में "स्तान", के मानी हैं "स्थान". "हिन्दुओं का स्थान" वहां हिन्दुस्तान बन गया और यहां की बोली हिन्दुस्तानी बन गई. यहां के निवासी हिन्दुस्तानी हो गये. इसी हिन्द से हिन्द के निवासी हिन्दू हो गये. इसी से हिन्दुस्तान के सब धर्मों का नाम विदेशियों की नज़रों में एक 'हिन्दू धर्म' से पुकारा जाने लगा.

कुछ हिन्दी लेखकों को हिन्दुस्तान शब्द में विदेशीपन की गंध आती है. इसलिये वे हिन्दुस्तान न लिख कर हिन्दुस्थान लिखते हैं और कहते हैं. किसी किसी को हिन्द शब्द में भी अरबियत की गंध आती है इसलिये वह हिन्दी भाषा को हिन्दी नहीं कहना चाहते. वह उसे भारत के नाम पर भारती नाम देना चाहते हैं. पर उनके रास्ते में हिन्दुस्तान का संविधान आ खड़ा होता है. उसने जिस भाषा को सरकार की दफ़्तरी भाषा बताया है उसका नाम हिन्दी माना है और संविधान में वेद-वाक्य से कम बदलाव करना हमाशुमा का काम नहीं, इसलिये हिन्दी नाम टिका हुआ है.

दो शब्दों में हमारी राष्ट्रभाषा का हिन्दी नाम अरबी भाषा का है और अगर उसे हिन्दुस्तानी कहें तो वह फ़ारसी का हो जायगा, रहेगा फिर भी विदेशी. हम केवल यह कहना चाहते हैं कि नाम भेद काम के सुभीते भर के लिये होता है. व्याकरण ने नाम की परिभाषा करते वक़्त साफ़ बताया है कि नामकरण में अर्थ पर ध्यान नहीं दिया जाता. नाम पूनमचंद और हैं काले, नाम भूपतिशाह और हैं भिखमंगे, नाम नारंगी और है रंगी हुई. फिर भी भाषा का नाम देश के नाम पर होने से सुभीता होता है. नाम पर वाद विवाद ही न चलता अगर हमारे सिरों में भड़काने वालों ने भड़क पैदा न की होती. आये दिन घर घर में बच्चे पैदा होते हैं और उनके नाम आसानी से रख लिये जाते हैं.

अब हम इस राष्ट्रभाषा का स्वरूप क्या था इसे गहराई से देखें. अंगरेज़ या अंगरेज़ों से पहले जितने यूरप वाले हिन्दुस्तान के किनारे लगे उन्हें यहां एक भाषा ऐसी ज़रूर मिली जो थोड़ी बहुत हर जगह समझी जाती थी, उसका कुछ नाम भी मिला और नाम वही मिला जिस से यह देश अंकित था. वह नाम था हिन्दुस्तान और देश भर की जो एक बोली मिली वह थी हिन्दुस्तानी. इस बात का लिखित प्रमाण फ़ोर्ट विलियम कालेज की वह मोहर है जो कालेज के पुस्तकालय की पुस्तकों पर छापी जाती थी. उस मोहर पर बंगला लिपि में लिखा था—पुस्तकालय. लेकिन नागरी और फ़ारसी दोनों लिपियों में लिखा था "किताब घर" इससे मालूम होता है कि "किताब घर" हिन्दुस्तान के कोने कोने में उस समय कम से कम "पुस्तकालय" से कहीं ज़्यादा



ھند کے ساتھ ھی ساتھ اِس دیش کو ایران والے ھندستان کہنے لگے ۔ ایران کی بولی ایرانی یا فارسی میں " ستان " کے معنی ھیں " استھان ." " ھندوؤں کا استھان " وھاں ھندستان بن گیا اور یہاں کی بولی ھندستانی بن گئی ۔ یہاں کے نواسی ھندستانی ھوگئے ۔ اِسی ھند سے ھند کے نواسی ھندو ھوگئے ۔ اِسی سے ھندستان کے سب دھرموں کا نام ودیشیوں کی نظروں میں ایک " ھندو دھرم " سے پکارا جانے لگا ۔

کچھ ھندی لیکھکوں کو ھندستان شبد میں ودیشی پن کی گندھ آتی ھے ۔ اِس لئے وے ھندستان نہ لکھکر ھندو استھان لکھتے ھیں اور کہتے ھیں ۔ کسی کسی کو ھند شبد میں بھی عربیت کی گندھ آتی ھے اِس لئے وہ ھندی بھاشا کو ھندی نہیں کہنا چاھتے ۔ وہ اُسے بھارت کے نام پر بھارتی نام دینا چاھتے ھیں ۔ پر اِن کے راستے میں ھندستان کا سمودھان آ کھڑا ھوتا ھے ۔ اس نے جس بھاشا کو سرکار کی دفتری بھاشا بتایا ھے اِس کا نام ھندی مانا ھے اور سمودھان میں وید واکیہ سے کم بدلاؤ کرنا ھما شما کا کام نہیں ، اس لئے ھندی نام ٹکا ھوا ھے ۔

دو شبدوں میں ھماری راشٹر بھاشا کا ھندی نام عربی بھاشا کا ھے اور اگر اُسے ھندستانی کہیں تو وہ فارسی کا ھوجائیگا ، رھیگا پھر بھی ودیشی ۔ ھم کیول یہ کہنا چاھتے ھیں کہ نام بھید کام کے سوبھیتے بھر کے لئے ھوتا ھے ۔ ویاکرن نے نام کی پری بھاشا کرتے وقت صاف بتایا ھے کہ نام کرن میں ارتھ پر دھیان نہیں دیا جاتا ۔ نام پونم چند اور ھیں کالے ، نام بھوپتی شاہ اور ھیں بھکمنگے ، نام نارنگی اور ھے رنگی ھوئی ۔ پھر بھی بھاشا کا نام دیش کے نام پر ھونے سے سوبھیتا ھوتا ھے ۔ نام پر واد وواد ھی نہ چلتا اگر ھمارے سروں میں بھڑکانے والوں نے بھڑک پیدا نہ کی ھوتی ۔ آئے دن گھر گھر میں بچے پیدا ھوتے ھیں اور اُن کے نام آسانی سے رکھ لئے جاتے ھیں ۔

اب ھم اِس راشٹر بھاشا کا سروپ کیا تھا اِسے گہرائی سے دیکھیں ۔ انگریز یا انگریزوں سے پہلے جتنے یورپ والے ھندستان کے کنارے لگے اِنھیں یہاں ایک بھاشا ایسی ضرور ملی جو تھوڑی بہت ھر جگہ سمجھی جاتی تھی ، اُس کا کچھ نام بھی ملا اور نام وھی ملا جس سے یہ دیش انکت تھا ۔ وہ نام تھا ھندستان اور دیش بھر کی جو ایک بولی ملی وہ تھی ھندستانی ۔ اِس بات کا لکھت پرمان فورٹ ولیم کالج کی وہ مہر ھے جو کالج کے پستکالیہ کی پستکوں پر چھاپی جاتی تھی ۔ اُس مہر پر بنگلا لپی میں لکھا تھا — پستکالیہ ۔ لیکن ناگری اور فارسی دونوں لپیوں میں لکھا تھا " کتاب گھر " اِس سے معلوم ھوتا ھے کہ ھندستان کے کونے کونے "کتاب گھر" میں اُس سمے کم سے کم "پستکالیہ" سے کہیں زیادہ

प्रदेश के नाम पर नहीं हैं जैसे—उर्दू, संस्कृत. गुरुमुखी इत्यादि. जिन भाषाओं का देश पर नाम नहीं है उनके बारे में यदि यह कहा जाय कि यह कभी किसी देश या प्रदेश की भाषा नहीं रहीं तो ऐसा कहना असत्य नहीं होगा. उर्दू शब्द का अर्थ है-लश्करी यानी फ़ौजी. उर्दू नाम उस बोली या भाषा को दिया गया जो मुस्लिम राजकाल में उस समय के बादशाहों की फ़ौज में बोली जाती थी. यह दूसरी बात है कि उर्दू का व्याकरण और शब्द-भंडार बहुत सा उस भाषा से मिलता है जिसे हम हिंदी कहकर बोलते हैं, जिसे आज राष्ट्रभाषा कहा जाता है और जिसे भारत की सरकार ने अपनी दफ़्तरी भाषा भी मान लिया है. यह भी एक मार्के की बात है कि हिंदी से ही मिलती जुलती उर्दू पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा बनी हुई है और वहां की सरकार की दफ़्तरी भाषा भी. अगर कभी यह दोनों देश मिलकर एक हुए तो इनकी राष्ट्रभाषा और सरकार की दफ़्तरी भाषा में कोई अधिक अंतर नहीं पड़ेगा. हमारे इस पड़ौसी देश पाकिस्तान में यह भी एक आन्दोलन चल रहा है कि बंगला एक दूसरी राष्ट्रभाषा मान ली जाय. अगर ऐसा हो गया तो बंगला का नाम बंगला ही रहेगा या कुछ और हो जायगा यह नहीं कहा जा सकता. यहां इतना और जान लेना है कि उर्दू में लश्करी होने के नाते अनेक भाषाओं के शब्द आ गये हैं जैसे—तुर्की, अरबी, फ़ारसी; और उन भाषाओं के भी जो हिन्दुस्तान में जगह जगह बोली जाती हैं. उर्दू और हिंदी का व्याकरण एक है—यह हम पहले कह चुके हैं. इसमें इतना और जोड़ लेना चाहिये कि उर्दू का सब शब्द-भंडार हिंदी के पेट में समाया हुआ है. "हिंदी शब्द सागर" (डिक्शनरी) में वह सब शब्द मिल सकते हैं जो उर्दू बोली में काम आते हैं.

राष्ट्रभाषा हिन्दी को जो हिंदी नाम मिला हुआ है इसमें यह ख़ूबी अपने आप आगई है जो भाषाओं में होना बहुत जरूरी है, यानी यह कि भाषा का नाम देश पर ही होना चाहिये. हमारे देश का नाम हिन्द है इसलिए उसकी बोली हिन्दी होनी चाहिये और हमारी राष्ट्रभाषा को वही हिन्दी नाम मिल गया है.

अरब वाले आम तौर से 'स' को 'ह' में बदल देते हैं. यही हाल यूनानियों का है. इसलिये हमारे देश में बहनेवाली सिंधु नदी के नाम पर हमारा देश यूनानियों और अरबों के लिए "हिंधु" देश हुआ, फिर "हिंदु" देश हुआ. वही "हिंद" हो गया. पश्चिम में कहीं कहीं यह इंडु और इंडिया है. यही नाम उन अंगरेज़ों ने अपनाया जो सन 1947 तक इस देश के राजा थे. आज भी हमारे विधान में हमारे देश का सिर्फ़ भारत नहीं लिखा गया, वहां लिखा गया है "भारत यानी इंडया."



پردیش کے نام پر نہیں ہیں جیسے—اُردو، سنسکرت، گرمکھی اتیادی۔ جن بھاشاؤں کا دیش پر نام نہیں ہے اُن کے بارے میں یدی یہ کہا جائے کہ یہ کبھی کسی دیش یا پردیش کی بھاشا نہیں رہیں تو ایسا کہنا استیہ نہیں ہوگا۔ اُردو شبد کا ارتھ ہے—لشکری یعنی فوجی۔ اُردو نام اُس بولی یا بھاشا کو دیا گیا ہے جو مسلم راج کال میں اُس سمے کے بادشاہوں کی فوج میں بولی جاتی تھی۔ یہ دوسری بات ہے کہ اُردو کا ویاکرن اور شبد بھنڈار بہت سا اُس بھاشا سے ملتا ہے جسے ہم ہندی کہہ کر بولتے ہیں، جسے آج راشٹر بھاشا کہا جاتا ہے اور جسے بھارت کی سرکار نے اپنی دفتری بھاشا بھی مان لیا ہے۔ یہ بھی ایک معرکے کی بات ہے کہ ہندی سے ہی ملتی جلتی اُردو پاکستان کی راشٹر بھاشا بنی ہوئی ہے اور وہاں کی سرکار کی دفتری بھاشا بھی۔ اگر کبھی یہ دونوں دیش مل کر ایک ہوئے تو ان کی راشٹر بھاشا اور سرکار کی دفتری بھاشا میں کوئی ادھک انتر نہیں پڑیگا۔ ہمارے اِس پڑوسی دیش پاکستان میں یہ بھی ایک آندولن چل رہا ہے کہ بنگلا ایک دوسری راشٹر بھاشا مان لی جائے۔ اگر ایسا ہوگیا تو بنگلا کا نام بنگلا ہی رہےگا یا کچھ اور ہو جائےگا یہ نہیں کہا جاسکتا۔ یہاں اتنا اور جان لینا ہے کہ اُردو میں لشکری ہونے کے ناتے انیک بھاشاؤں کے شبد آگئے ہیں جیسے—ترکی، عربی فارسی؛ اور اُن بھاشاؤں کے بھی جو ہندستان میں جگہ جگہ بولی جاتی ہیں۔ اُردو اور ہندی کا ویاکرن ایک ہے—یہ ہم پہلے کہہ چکے ہیں۔ اِس میں اتنا اور جوڑ لینا چاہئے کہ اُردو کا سب شبد بھنڈار ہندی کے پیٹ میں سمایا ہوا ہے۔ "ہندی شبد ساگر" (ڈکشنری) میں وہ سب شبد مل سکتے ہیں جو اُردو بولی میں کام آتے ہیں۔

راشٹر بھاشا ہندی کو جو ہندی نام ملا ہوا ہے اُس میں یہ خوبی اپنے آپ آگئی ہے جو بھاشاؤں میں ہونا بہت ضروری ہے، یعنی یہ کہ بھاشا کا نام دیش پر ہی ہونا چاہئے۔ ہمارے دیش کا نام ہند ہے اس لئے اُس کی بولی ہندی ہونی چاہئے اور ہماری راشٹر بھاشا کو وہی ہندی نام مل گیا ہے۔

عرب والے عام طور سے 'س' کو 'ہ' میں بدل دیتے ہیں۔ یہی حال یونانیوں کا ہے۔ اِس لئے ہمارے دیش میں بہنے والی سندھ ندی کے نام پر ہمارا دیش یونانیوں اور عربوں کے لئے "ہندھو" دیش ہوا، پھر "ہندو" دیش ہوا۔ وہی "ہند" ہوگیا۔ پچھم میں کہیں کہیں یہ انڈو اور انڈیا ہے۔ یہی نام اُن انگریزوں نے اپنایا جو سن 1947 تک اِس دیش کے راجہ تھے۔ آج بھی ہمارے ودھان میں ہمارے دیش کو صرف بھارت نہیں لکھا گیا، وہاں لکھا گیا ہے "بھارت یعنی انڈیا۔"

# राष्ट्रभाषा का स्वरूप

भाई मिश्रीलाल जैन

[ नीचे के निबन्ध पर श्री मिश्रीलाल जैन को मध्य प्रदेश इंटर कालीजिएट ऐसे कम्पीटीशन में सरकार से पहला इनाम २५०) रु० का मिला है—एडीटर ]

❁ ❁ ❁

## राष्ट्रभाषा का स्वरूप क्या था—

यदि राष्ट्र शब्द का अर्थ किसी देश की वह जनता है जो एक राज्य के नीचे अपना जीवन बिता रही हो तो इन अर्थों में भारत यानी हिन्दुस्तान कभी राष्ट्र नहीं रहा.

यदि राष्ट्र शब्द का अर्थ किसी देश की वह जनता है जो सब रूप से एक हो और अपने ही प्रतिनिधियों द्वारा शासित की जा रही हो तो इन अर्थों में भी हिन्दुस्तान कभी राष्ट्र नहीं रहा.

हिन्दुस्तान बहुत बड़ा देश है. इसे उपमहाद्वीप कहा जाता है. आज भी हिन्दुस्तान हुकूमत के लिहाज से भारत और पाकिस्तान दो हिस्सों में बंटा हुआ है. ऐसी हालत भी हिन्दुस्तान की अब से पहले कभी नहीं रही. जब यह देश किसी तरह राष्ट्र नहीं रहा तब इसकी कोई राष्ट्रभाषा कैसे होती ? फिर भी आज इसमें एक ऐसी भाषा मौजूद है जो थोड़ी बहुत देश के कोने कोने में समझी जाती है. अगर कोई विदेशी यहां आ जाय तो वह उस एक भाषा के सहारे सारे देश में घूम सकता है, भारत और पाकिस्तान दोनों में आसानी से उसी एक भाषा से काम चल सकता है.

इस देश में राष्ट्रभाषा रही हो या न रही हो, ऐसी एक भाषा जरूर थी और आज भी है जो सब जगह समझी जाती थी. यह कब से थी और इसने कब क्या क्या रूप लिए यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता. हो सकता है कि रूप के साथ इसके नाम भी बदले हों. आज जिस भाषा को राष्ट्रभाषा होने का सौभाग्य प्राप्त है उसके भी दो सौ बरस के अन्दर अन्दर कई नाम रह चुके हैं, जैसे—हिन्दवी, हिंदुस्तानी, हिंदुस्थानी इत्यादि.

भाषाओं के नाम ज्यादातर देश के नाम पर होते हैं जैसे—रूसी, चीनी, जापानी, जर्मन, फ्रेंच, इत्यादि. भारत में भी अनेक भाषाओं के नाम देशों या प्रदेशों के नाम पर पड़े हैं जैसे—बंगाली, उड़िया, मद्रासी, गुजराती, मराठी इत्यादि. कुछ ऐसी भाषाएं भी हैं जिनके नाम देश या

# راشٹر بھاشا کا سروپ

بھائی مشری لعل جین

[ نیچے کے نبندھ پر شری مشری لعل جین کو مدھیہ پردیش انٹر کالیجئیٹ ایسے کمپٹیشن میں سرکار سے پہلا انعام 250 روپئہ کا ملا ھے—ایڈیٹر ]

❁ ❁ ❁

## راشٹر بھاشا کا سروپ کیا تھا—

یدی راشٹر شبد کا ارتھ کسی دیش کی وہ جنتا ھے جو ایک راجیہ کے نیچے جیون بتا رھی ھو تو اِن ارتھوں میں بھارت یعنی ھندستان کبھی راشٹر نہیں رہا .

یدی راشٹر شبد کا ارتھ کسی دیش کی وہ جنتا ھے جو سب روپ سے ایک ھو اور اپنے ھی پرتی ندھیوں دوارا شاست کی جا رھی ھو تو اِن ارتھوں میں بھی ھندستان کبھی راشٹر نہیں رہا .

ھندستان بہت بڑا دیش ھے . اِسے اُپ مہادیپ کہا جاتا ھے . آج بھی ھندستان حکومت کے لحاظ سے بھارت اور پاکستان دو حصوں میں بنٹا ھوا ھے . ایسی حالت بھی ھندستان کی اب سے پہلے کبھی نہیں رھی . جب یہ دیش کسی طرح راشٹر نہیں رہا تب اِس کی کوئی راشٹر بھاشا کیسے ھوتی ؟ پھر بھی آج اِس میں ایک ایسی بھاشا موجود ھے جو تھوڑی بہت دیش کے کونے کونے میں سمجھی جاتی ھے . اگر کوئی ودیشی یہاں آجائے تو وہ اُس ایک بھاشا کے سہارے سارے دیش میں گھوم سکتا ھے، بھارت اور پاکستان دونوں میں آسانی سے اُسی ایک بھاشا سے کام چل سکتا ھے .

اِس دیش میں راشٹر بھاشا رھی ھو یا نہ رھی ھو، ایسی ایک بھاشا ضرور تھی اور آج بھی ھے جو سب جگہ سمجھی جاتی تھی . یہ کب سے تھی اور اِس نے کب کیا کیا روپ لئے یہ ٹھیک ٹھیک نہیں کہا جاسکتا . ھوسکتا ھے کہ روپ کے ساتھ اُس کے نام بھی بدلے ھوں . آج جس بھاشا کو راشٹر بھاشا ھونے کا سوبھاگیہ پراپت ھے اس کے بھی دو سو برس کے اندر اندر کئی نام رہ چکے ھیں، جیسے—ھندوی، ھندستانی، ھندستھانی اتیادی .

بھاشاؤں کے نام زیادہ تر دیش کے نام پر ھوتے ھیں جیسے—روسی، چینی، جاپانی، جرمن، فرینچ اتیادی . بھارت میں بھی انیک بھاشاؤں کے نام دیشوں یا پردیشوں کے نام پر پڑے ھیں جیسے—بنگالی، اُڑیا، مدراسی، گجراتی، مراٹھی اتیادی . کچھ ایسی بھاشائیں بھی ھیں جن کے نام دیش یا

अच्छी चीज़ों को सबके साथ मिलकर अपनाने के बीच से होकर यह रास्ता जाता है. दूसरे से नाजायज़ फ़ायदा उठा कर मौज उड़ाने के पुराने तरीक़े ने आज हमें इस नौबत तक पहुंचा दिया है. हम अगर वक़्त पर न चेते तो हम खड्ड के नीचे होंगे. अगर हम दीवार की लिखावट नहीं पढ़ सकते और अपने तरीक़ों को समय की मांग के अनुसार नहीं ढालते तो मानव सभ्यता पांच साल भी जिन्दा नहीं रह सकती. आजकल की स्थिति ने जो डर पैदा किया है उसकी रौ में हमें नहीं बहना चाहिये. ठन्डे दिल और दिमाग़ से हमें इस पर सोचना चाहिये. इनसानियत को और ख़ुद अपने को बचाने का अब भी समय है. हाइड्रोजन बम बनाने वाले राष्ट्र जब तक अपने आर्थिक ढांचे को जड़ से बदलने को तैयार नहीं होते तब तक दूसरे उन राष्ट्रों को जो इन भयानक हथियारों के इस्तेमाल के सचमुच विरोधी हैं, इन ज़िद्दी राष्ट्रों के साथ असहयोग करना चाहिये और पूरे ज़ोर से अपने विरोध का प्रदर्शन करना चाहिये.

क्या हम भारत में यह नहीं कर सकते, क्या अपनी दूसरी पंचसाला योजना को इस आधार पर नहीं बना सकते कि जिसमें युद्ध और झगड़े टंटे की सम्भावना न रहे और हम एक मिले जुले परिवार में एक साथ रहने वाले भाइयों की तरह साथ साथ रह सकें? भगवान हमें इस स्थिति से लड़ने के लिये रोशनी, आध्यात्मिक ताक़त और बुद्धि प्रदान करें. क्या हमारे सामने कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिससे उम्मीद की एक किरन मिल सके?



اچھی چیزوں کو سب کے ساتھ مل کر اپنانے کے بیچ سے ھو کر یہ راستہ جاتا ھے. دوسرے سے ناجائز فائدہ اُٹھا کر موج اُڑانے کے پرانے طریقے نے آج ھمیں اِس نوبت تک پہونچا دیا ھے. ھم اگر وقت پر نہ چیتے تو ھم کھڈ کے نیچے ھوں گے. اگر ھم دیوار کی لکھاوٹ نہیں پڑھ سکتے اور اپنے طریقوں کو سمے کی مانگ کے انوسار نہیں ڈھالتے تو مانو سبھیتا پانچ سال بھی زندہ نہیں رہ سکتی. آجکل کی استھتی نے جو ڈر پیدا کیا ھے اُس کی رو میں ھمیں نہیں بہنا چاھئے. ٹھنڈے دل اور دماغ سے ھمیں اِس پر سوچنا چاھئے. اِنسانیت کو اور خود اپنے کو بچانے کا اب بھی سمے ھے. ھائڈروجن بم بنانے والے راشٹر جب تک اپنے آرتھک ڈھانچے کو جڑ سے بدلنے کو تیار نہیں ھوتے تب تک دوسرے اُن راشٹروں کو جو اِن بھیانک ھتیاروں کے استعمال کے سچ مچ وِرودھی ھیں، اِن ضدی راشٹروں کے ساتھ اسہیوگ کرنا چاھئے اور پورے زور سے اپنے وِرودھ کا پردرشن کرنا چاھئے.

کیا ھم بھارت میں یہ نہیں کر سکتے، کیا اپنی دوسری پنچسالہ یوجنا کو اِس آدھار پر نہیں بنا سکتے کہ جس میں یدھ اور جھگڑے ٹنٹے کی سمبھاؤنا نہ رھے اور ھم ایک ملے جلے پریوار میں ایک ساتھ رھنے والے بھائیوں کی طرح ساتھ ساتھ رہ سکیں؟ بھگوان ھمیں اِس استھتی سے لڑنے کے لئے روشنی، آدھیاتمک طاقت اور بدھی پردان کریں. کیا ھمارے سامنے کوئی ایسی چیز نہیں ھے. جس سے اُمید کی ایک کرن مل سکے؟

---

मैं जानता हूं कि मेरे अन्दर बहुत से प्रेम हैं. पर प्रेम की तो सीमा ही नहीं होती. मैं यह भी जानता हूं कि मेरा प्रेम असीम नहीं है. मैं सांप के साथ कहां खेल सकता हूं? जो अहिंसा-मूर्ति हो उसके सामने सांप भी ठन्डा हो जाता है. मुझे इस पर पूरा पूरा विश्वास है.

—गांधी

میں جانتا ھوں کہ میرے اندر بہت سے پریم ھیں. پر پریم کی تو سیما ھی نہیں ھوتی. میں یہ بھی جانتا ھوں کہ میرا پریم اسیم نہیں ھے. میں سانپ کے ساتھ کہاں کھیل سکتا ھوں؟ جو اھنسا مورتی ھو اُس کے سامنے سانپ بھی ٹھنڈا ھو جاتا ھے. مجھے اِس پر پورا پورا وشواس ھے.

—گاندھی

---

हमें उस कारन को हटाना पड़ेगा जिससे यह डर पैदा होता है. इस सारे डर की जड़ उस आर्थिक ढांचे में है जिसे अभी तक दोनों दलों ने अपना रखा है. पूंजीवादी व्यवस्था तो हिंसा पर क़ायम ही है. पर पूंजीवाद ही की एक क़िस्म आजकल का रूसी कम्युनिज़्म भी है. वह है मुल्की पूंजीवाद ( State Capitalism ). रूस ख़ुद कहता है कि आजकल की समाजी स्थिति से निकल कर वह कम्युनिज़्म की तरफ़ बढ़ेगा. हमारे देश के कर्णधार भी कुछ कुछ इसी राश्ट्री पूंजीवाद की तरफ़ बढ़ते दिखाई देते हैं. बदी से हम नेकी नहीं पा सकते. साम्राज की हिंसा का रुख़ उनकी तरफ़ होता है जिनको वह चूसता है, जबकि राश्ट्री पूंजीवाद की हिंसा का हमला पूंजी वाले व्यक्तियों और उद्योग पतियों पर होता है. इस तरह के पूंजीवाद को राजकीय या सरकारी पूंजीवाद भी कह सकते हैं और जब सरकारी पूंजी पतियों में जो अपने को राष्ट्रीय कहते हैं वह सब दोष पैदा हो जाते हैं जो मामूली पूंजीपतियों में और इसका आभास हम अभी से अपने देश में भी देख सकते हैं तो देश की मामूली जनता के लिये यह पूंजीवाद वैसा ही नाशकर हो जाता है जैसा दूसरा पूंजीवाद. आजकल की इन दोनों व्यवस्थाओं में जो हिंसा छिपी हुई है वह आज हाइडरोजन बमों के रूप में पराकाष्ठा को पहुंच चुकी है. ऊपर से काट छांट करके हम इस तरह के रोग को अच्छा नहीं कर सकते. यह सुझाव रखा गया है कि किसी तरह कोई एक आगे बढ़े, अपने हथियार कम कर दे और अपने हाइडरोजन बम ख़तम कर दे. यह सुझाव बड़ी नेक नियती से किया गया है पर इस तत्व पर यह ध्यान नहीं देता कि हाइडरोजन बम हवा में अपने आप पैदा नहीं हो गया है बल्कि वह आजकल के आर्थिक ढांचे के विकास का एक ज़रूरी रूप और उसका एक अंग है. यह सारी व्यवस्था ही अधार्मिक है और हाइडरोजन बम उसी की पैदावार है. ऊपरी इलाज बुराई को दूर नहीं करेगा. हमारे आर्थिक ढांचे के पीछे जो मनोवृत्ति काम करती है उसे जड़ मूल से उखाड़ना पड़ेगा.

इसके लिये गांधी जी ने हमें रास्ता दिखाया है. वह है सर्वोदय का रास्ता. इस रास्ते को केवल शब्दों में नहीं बताया जा सकता. हमारा देश उस पर अमल करे, तब ही हम दुनिया को यह रास्ता दिखा सकते हैं. यह रास्ता राजशक्ति और धनशक्ति दोनों को कुछ हाथों में जमा होने देने ( centralisation ) के बजाय उन्हें अधिक से अधिक और सब में बांट देने ( decentralisation ) का रास्ता है. अन्त में यह पूंजीवाद और राज दोनों को ख़तम करने का रास्ता है. यही जनता का सच्चा राज हो सकता है. यही सच्चा कम्युनिज़्म कहा जा सकता है और यही असली गांधीवाद है. स्वावलम्बन, अपने पर क़ाबू और जिन्दगी की



ہمیں اُس کارن کو ہٹانا پڑے گا جس سے یہ ڈر پیدا ہوتا ہے . اِس سارے ڈر کی جڑ اُس آرتھک ڈھانچے میں ہے جسے ابھی تک دونوں دلوں نے اپنا رکھا ہے . پونجی‌وادی ویوستھا تو ہنسا پر قائم ہی ہے . پر پونجی‌واد ہی کی ایک قسم آجکل کا روسی کمیونزم بھی ہے . وہ ہے ملکی پونجی‌واد (State Capitalism) روس خود کہتا ہے کہ آجکل کی سماجی استھتی سے نکل کر وہ کمیونزم کی طرف بڑھے گا . ہمارے دیش کے کرن دھار بھی کچھ کچھ اِسی راشٹری پونجی‌واد کی طرف بڑھتے دکھائی دیتے ہیں . بدی سے ہم نیکی نہیں پا سکتے . سامراج کی ہنسا کا رخ اُن کی طرف ہوتا ہے جن کو وہ چوستا ہے، جبکہ راشٹری پونجی‌واد کی ہنسا کا حملہ پونجی والے ویکتیوں اور اُدیوگ پتیوں پر ہوتا ہے . اِس طرح کے پونجی‌واد کو راجکیہ یا سرکاری پونجی‌واد بھی کہہ سکتے ہیں اور جب سرکاری پونجی پتیوں میں جو اپنے کو راشٹریہ کہتے ہیں وہ سب دوش پیدا ہو جاتے ہیں جو معمولی پونجی پتیوں میں اور اِس کا آبھاس ہم ابھی سے اپنے دیش میں بھی دیکھ سکتے ہیں تو دیش کی معمولی جنتا کے لئے یہ پونجی‌واد ویسا ہی ناشکر ہو جاتا ہے جیسا دوسرا پونجی‌واد . آجکل کی اِن دونوں ویوستھاؤں میں جو ہنسا چھپی ہوئی ہے وہ آج ہائڈروجن بموں کے روپ میں پراکاشٹھا کو پہونچ چکی ہے. اوپر سے کاٹ چھانٹ کر کے ہم اِس طرح کے روگ کو اچھا نہیں کر سکتے . یہ سجھاؤ رکھا گیا ہے کہ کسی طرح کوئی ایک آگے بڑھے، اپنے ہتھیار کم کر دے اور اپنے ہائڈروجن بم ختم کر دے . یہ سجھاؤ بڑی نیک نیتی سے کیا گیا ہے پر اِس تتو پر یہ دھیان نہیں دیتا کہ ہائڈروجن بم ہوا میں اپنے آپ پیدا نہیں ہو گیا ہے بلکہ وہ آجکل کے آرتھک ڈھانچے کے وکاس کا ایک ضروری روپ اور اُس کا ایک انگ ہے . یہ ساری ویوستھا ہی ادھارمک ہے اور ہائڈروجن بم اُسی کی پیداوار ہے. اُوپری علاج برائی کو دور نہیں کرے گا . ہمارے آرتھک ڈھانچے کے پیچھے جو منوورتی کام کرتی ہے اُسے جڑ مول سے اُکھاڑنا پڑے گا .

اس کے لئے گاندھی جی نے راستہ دکھایا ہے . وہ ہے سرودے کا راستہ . اِس راستے کو کیول شبدوں میں نہیں بتایا جا سکتا . ہمارا دیش اُس پر عمل کرے، تب ہی ہم دنیا کو یہ راستہ دکھا سکتے ہیں . یہ راستہ راج شکتی اور دھن شکتی دونوں کو کچھ ہاتھوں میں جمع ہونے دینے (centralization) کے بجائے اُنہیں ادھک سے ادھک اور سب میں بانٹ دینے (decentralisation) کا راستہ ہے . انت میں یہ پونجی واد اور راج دونوں کو ختم کرنے کا راستہ ہے . یہی جنتا کا سچا راج ہو سکتا ہے . یہی سچا کمیونزم کہا جا سکتا ہے اور یہی اصلی گاندھی‌واد ہے . سواولمبن، اپنے پر قابو اور زندگی کی

है जो केवल अमरीकी नीति को आगे बढ़ाती है. इस तरह इसका असर भी दुनिया से ख़तम हो गया है.

कम्युनिज़्म आम जनता को ऊपर उठाना चाहता है और जोंकशाहों पर बड़ी बेरहमी से चोट करता है. कम्युनिज़्म के तेज़ी से बढ़ते हुए असर के घेरे के चारों तरफ़ अमरीका एक हिंसक बांध संगठित करने के लिये खुल्लम खुल्ला मैदान में उतर आया है.

अमरीका और रूस दोनों ने आपसी झगड़ों का निपटारा करने के शान्ति के तरीक़ों को छोड़ रखा है और अब दोनों हिंसा के लिये तैयार बैठे हैं. अमरीका ने कोरिया से लेकर, जापान से होते हुए फ़ारमूसा तक और उसके आगे तमाम दक्खिन पूरब एशिया, पाकिस्तान, इराक़, तुर्की, आस्ट्रिया, पच्छुमी जरमनी और बर्तानिया तक एक जाल फैला रखा है और अभूतपूर्व हिंसा के लिये एक दीवार खड़ी कर ली है. अपने इस जाल की रक्षा के लिये वह जापान और पच्छुमी जरमनी को नए नए जहरीले हथियारों से लैस करने की कोशिश कर रहा है और घेरे के चारों तरफ़ अपने फ़ौजी अड्डे क़ायम कर रहा है. बर्तानिया डर रहा है कि जब लड़ाई पूरे ज़ोर शोर से आगे बढ़ेगी तो इंगलैन्ड असहाय रह जाएगा. इसीलिये अपने जज़ीरे की सुरक्षा के लिये अमरीका की नेक नियती पर निर्भर रहने के बजाए बर्तानिया अपनी सुरक्षा का भार ख़ुद संभालना चाहता है. उसने तै कर लिया है कि वह ख़ुद हाइडरोजन बमों से पूरी तरह लैस होकर मैदान में कूदेगा. एशिया में अमरीका ने फ़ारमूसा को अपने आगे बढ़ने का साधन बनाया है. च्यांग-काई-शेक तो केवल एक कठपुतली है. उसे एक मिनट के लिये भी अमरीकी सहायता न मिले अगर अमरीकी हित के लिये वह फ़ायदेमन्द सिद्ध न हो. यही नहीं कि यह गठबन्धन एक दूसरे के लिये सुविधाजनक है बल्कि यह कि न एक को और न दूसरे को ठौर. इसी लिये एक बेतुके और बेमानी आधार पर अमरीका यू. एन. ओ. में फ़ारमूसा की मेम्बरी का समर्थन कर रहा है.

दुनिया को पूरी तरह मिटा डालने वाले नए नए हथियारों के यह तीनों मालिक एक दूसरे से डरे हुए हैं और उस डर के वातावरन के कारन दुनिया हिंसा की बाढ़ में ग़ोते खा रही है. जिन लोगों पर डर का यह भूत सवार है उनके हाथों में दुनिया की सभ्यता की क़िस्मत सुरक्षित समझना एक बड़ी भूल है. ज़रूरत के वक़्त वह क्या कर बैठेंगे यह कोई नहीं कह सकता. एक दूसरे से बात-चीत करने और एक दूसरे के पक्ष को समझने का समय बीत चुका. एक ही रास्ता अब बाक़ी है. ऐसे देश जिनमें किसी का पक्षपात नहीं है बीच बचाव करें और वह देश मिसाल पेश करे जो ख़ुद डर से बौखला नहीं गया है.



هے جو کیول امریکی نیتی کو آگے بڑھاتی هے . اِس طرح اِس کا اثر بھی دنیا سے ختم ہوگیا هے .

کمیونزم عام جنتا کو اُوپر اُٹھانا چاهتا هے اور جونک شاهوں پر بڑی بےرحمی سے چوٹ کرتا هے . کمیونزم کے تیزی سے بڑھتے هوئے اثر کے گھیرے کے چاروں طرف امریکہ ایک هنسک باندھ سنگٹھت کرنے کے لئے کھلم کھلا میدان میں اتر آیا هے .

امریکہ اور روس دونوں نے آپسی جھگڑوں کا نپٹارا کرنے کے شانتی کے طریقوں کو چھوڑ رکھا هے اور اب دونوں هنسا کے لئے تیار بیٹھے هیں . امریکہ نے کوریا سے لے کر' جاپان سے هوتے هوئے فارموسا تک اور اُس کے آگے دکھن پورب ایشیا' پاکستان' عراق' ترکی' آسٹریا' پچھمی جرمنی اور برطانیہ تک ایک جال پھیلا رکھا هے اور ابھوت پورو هنسا کے لئے ایک دیوار کھڑی کر لی هے . اپنے اِس جال کی رکشا کے لئے وہ جاپان اور پچھمی جرمنی کو نئے نئے زهریلے هتیاروں سے لیس کرنے کی کوشش کر رہا هے اور گھیرے کے چاروں طرف اپنے فوجی اڈے قائم کر رہا هے . برطانیہ ڈر رہا هے کہ جب لڑائی پورے زور شور سے آگے بڑھے گی تو انگلینڈ اسہائے رہ جائے گا . اس لئے اپنے جزیرے کی سرکشا کے لئے امریکہ کی نیک نیتی پر نربھر رهنے کے بجائے برطانیہ اپنی سرکشا کا بھار خود سنبھالنا چاهتا هے . اُس نے طے کر لیا هے کہ وہ خود هائڈروجن بموں سے پوری طرح لیس هو کر میدان میں کودے گا . ایشیا میں امریکہ نے فارموسا کو اپنے آگے بڑھنے کا سادھن بنایا هے . چیانگ - کائی - شیک تو کیول ایک کٹھپتلی هے . اُسے ایک منٹ کے لئے بھی امریکی سہائتا نہ ملے اگر امریکی هت کے لئے وہ فائدے مند سدھ نہ هو . یہی نہیں کہ یہ گٹھ بندھن ایک دوسرے کے لئے سووِدھاجنک هے بلکہ یہ کہ نہ ایک کو اور نہ دوسرے کو ٹھور . اِسی لئے ایک بے تکے اور بے معنی آدھار پر امریکہ یو - این - او. میں فارموسا کی ممبری کا سمرتھن کر رہا هے .

دنیا کو پوری طرح مٹا ڈالنے والے نئے نئے هتیاروں کے یہ تینوں مالک ایک دوسرے سے ڈرے هوئے هیں اور اِس ڈر کے واتاورن کے کارن دنیا هنسا کی باڑھ میں غوطے کھا رهی هے . جن لوگوں پر ڈر کا یہ بھوت سوار هے اُن کے هاتھوں میں دنیا کی سبھیتا کی قسمت سرکشت سمجھنا ایک بڑی بھول هے . ضرورت کے وقت وہ کیا کر بیٹھیں گے یہ کوئی نہیں کہہ سکتا . ایک دوسرے سے بات چیت کرنے اور ایک دوسرے کے پکش کو سمجھنے کا سمے بیت چکا . ایک هی راستہ اب باقی هے . ایسے دیش جن میں کسی کا پکشپات نہیں هے بیچ بچاؤ کریں اور وہ دیش مثال پیش کرے جو خود ڈر سے بوکھلا نہیں گیا هے .

का कुछ हिस्सा लेकर "कल्याणकारी राज" (Welfare State) के रूप में इंगलैंड में इसे लागू कर दिया. कुछ हद तक इस तूफ़ान को रोकने में वह सफल रहे. अमरीका ने अपनी पूंजी के बल पर जो सिक्का और क़ब्ज़ा दुनिया पर जमा रखा है उसे खो बैठने के डर के कारन अमरीका की सोचने समझने की सारी ताक़त जाती रही है. वह बिना किसी समझौते के और पूरी तरह डट कर इस तूफ़ान से टक्कर लेने की कोशिश कर रहा है. वह बिलकुल घबरा गया है जिससे एक हद दरजे की नाज़ुक और ख़तरनाक परिस्थिति पैदा हो गई है. चीज़ों के उचित रूप को वह देख ही नहीं पा रहा है. डर ने उसकी आंखों पर परदा डाल दिया है. वह इतना नाउम्मीद हो गया है कि इस नई शक्ति को ख़तम करने की कोशिश में वह अपनी सारी ताक़त लगा देने को तैयार है. इस विश्व व्यापी हिंसा से जो स्थिति पैदा होगी उससे ख़ुद अमरीका को भी लाचार होना पड़ेगा, इसकी उसे चिन्ता ही नहीं.

सामंतवाद को ज़िन्दा रखने के लिये कुछ दशाब्दियों पहले ज़ार अलेक्ज़ेंडर ने योरप के 'सब राजाओं का वियाना धार्मिक गठबन्धन' नाम से एक संगठन बनाया था. लेकिन एक तो वह राजा एक दूसरे पर भरोसा नहीं करते थे और एक दूसरे के ख़िलाफ़ साज़िश करते रहते थे, दूसरे इस संगठन के पीछे योरप की जनता नहीं थी, इसलिये बिना कुछ करे धरे ही वह संगठन मर गया.

उसके बाद अमरीका के प्रेसीडेन्ट वुडरो विलसन आए. राष्ट्र संघ के नाम से तमाम राष्ट्रों को एक सूत में बांधने का उन्होंने सपना देखा. उनके देश की जनता ने भी उनका समर्थन नहीं किया. अंगरेज़ों ने राष्ट्र संघ की मशीनरी के ज़रिये दुनिया की नीति पर क़ाबू रखने और उस संगठन को अपने मतलब के लिये इस्तेमाल करने का आसान रास्ता निकाल लिया. दुनिया की जनता को भुला दिया गया. वह संगठन ऊंची कूटनीति का शतरंज बन गया. जनता का समर्थन न होने के कारण उसका भी वही अन्त हुआ जो होना चाहिये था.

उस कोशिश के विफल होने पर अमरीका ने बात चीत के ज़रिये दुनिया में समझौता कराने और इस तरह सब झगड़े टंटे ख़तम करने की नई कोशिश यू. एन. ओ. नाम से शुरू की. यहां छोटे राष्ट्रों की राय को या तो महत्व ही नहीं दिया गया और या बड़े राष्ट्रों ने उन पर अपनी राय थोप दी. अमल में यह नई संस्था सोवियत कम्युनिज़्म की बाढ़ को रोकने के लिये अमरीकी साम्राज का एक साधन बन कर रह गई. प्रोग्राम बनाते समय अमरीका के हित पर ही अधिक ध्यान दिया जाने लगा. धीरे धीरे बरतानिया का असर इस संस्था पर से जाता रहा. आजकल यह एक ऐसी संस्था



کا کچھ حصہ لیکر "کلیان کاری راج" (Welfare State) کے روپ میں انگلینڈ میں اِسے لاگو کردیا. کچھ حد تک اِس طوفان کو روکنے میں وہ سپھل رہے. امریکہ نے اپنی پونجی کے بل پر جو سکہ اور قبضہ دنیا پر جما رکھا ہے اُسے کھو بیٹھنے کے ڈر کے کارن امریکہ کی سوچنے سمجھنے کی ساری طاقت جاتی رہی ہے. وہ بنا کسی سمجھوتے کے اور پوری طرح ڈٹ کر اِس طوفان سے ٹکر لینے کی کوشش کر رہا ہے. وہ بالکل گھبرا گیا ہے جس سے ایک حد درجہ کی نازک اور خطرناک پرستھتی پیدا ہوگئی ہے. چیزوں کے اُچت روپ کو وہ دیکھ ہی نہیں پا رہا ہے. ڈر نے اُس کی آنکھوں پر پردہ ڈال دیا ہے. وہ اتنا نااُمید ہوگیا ہے کہ اِس نئی شکتی کو ختم کرنے کی کوشش میں وہ اپنی ساری طاقت لگا دینے کو تیار ہے. اِس وشوویاپی ہنسا سے جو استھتی پیدا ہوگی اُس سے خود امریکہ کو بھی لاچار ہونا پڑے گا، اِس کی اُسے چنتا ہی نہیں.

سامنت واد کو زندہ رکھنے کے لئے کچھ دشابدیوں پہلے زار الکزنڈر نے یورپ کے 'سب راجاؤں کا ویانا دھارمک گٹھ بندھن' نام سے ایک سنگٹھن بنایا تھا. لیکن ایک تو وہ راجا ایک دوسرے پر بھروسہ نہیں کرتے تھے اور ایک دوسرے کے خلاف سازش کرتے رہتے تھے، دوسرے اِس سنگٹھن کے پیچھے یورپ کی جنتا نہیں تھی. اِس لئے بنا کچھ کرے دھرے ہی وہ سنگٹھن مر گیا.

اُس کے بعد امریکہ کے پریسیڈنٹ وڈرو ولسن آئے. راشٹر سنگھ کے نام سے تمام راشٹروں کو ایک سوت میں باندھنے کا اُنھوں نے سپنا دیکھا. اُن کے دیش کی جنتا نے بھی اُن کا سمرتھن نہیں کیا. انگریزوں نے راشٹر سنگھ کی مشینری کے ذریعے دنیا کی نیتی پر قابو رکھنے اور اِس سنگٹھن کو اپنے مطلب کے لئے استعمال کرنے کا آسان راستہ نکال لیا. دنیا کی جنتا کو بھلا دیا گیا. وہ سنگٹھن اُونچی کوٹ نیتی کا شطرنج بن گیا. جنتا کا سمرتھن نہ ہونے کے کارن اُس کا بھی وہی انت ہوا جو ہونا چاہئے تھا.

اُس کوشش کے وپھل ہونے پر امریکہ نے بات چیت کے ذریعہ دنیا میں سمجھوتہ کرانے اور اِس طرح سب جھگڑے ٹنٹے ختم کرنے کی نئی کوشش یو. این. او. نام سے شروع کی. یہاں چھوٹے راشٹروں کی رائے کو یا تو مہتو ہی نہیں دیا گیا اور یا بڑے راشٹروں نے اُن پر اپنی رائے تھوپ دی. عمل میں یہ نئی سنستھا سوویت کمیونزم کی باڑھ کو روکنے کے لئے امریکی سامراج کا ایک سادھن بن کر رہ گئی. پروگرام بناتے سمے امریکہ کے ہت پر ہی ادھک دھیان دیا جانے لگا. دھیرے دھیرے برطانیہ کا اثر اِس سنستھا پر سے جاتا رہا. آجکل یہ ایک ایسی سنستھا

# डर की छाया और आशा की एक किरन

डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा

जीवन की अलग अलग मंज़िलों पर हमें अपने अन्दर की कोई न कोई ऐसी अच्छी या बुरी शक्ति रास्ता बताती रहती है जो हमारे सब कामों पर क़ाबू रखती है. कभी प्रेम हमें अन्धा करके आगे ले चलता है, कभी किसी महान शक्ति की भक्ति के कारन हम अपने को पूरी तरह उसके हाथ में दे देते हैं, और कभी घृणा और गुस्से की ज़बर्दस्त प्रवृत्तियों से हर काम में हम प्रभावित रहते हैं. आज जो चीज़ दुनिया पर छाई हुई है वह है डर. अमरीका में जो ज़बर्दस्त शक्ति अमरीका की विदेश नीति का संचालन कर रही है वह है रूस का डर. दूसरों को मिटाने वाली चीज़ों पर वह बिना सोचे समझे धन गंवा रहे हैं. अमरीकी पूंजीपतियों की अनन्त धनलालसा तक को इस डर ने एक बार दबा दिया है.

हर किसी के साथ "बेरोक और मनमानी तिजारत" के पिटे पिटाए सिद्धान्त पर अमरीका ने अमल किया और उसी का नाम "आज़ादी" रखा. अमरीका की आर्थिक व्यवस्था का अधार ही इस पर है कि नतीजों की चिन्ता किये बिना दूसरों से बेरोक जायज़ नाजायज़ फ़ायदा उठाया जावे और उन्हें जिस तरह हो सके चूसा जावे. जब तक रूस मार्क्सवादी प्रोग्राम लेकर दुनिया के सामने नहीं आया और उसने "समाजिक न्याय" क़ायम करने की तरफ़ दुनिया को मोड़ने की कोशिश नहीं की तब तक इस मामले में अमरीका की मौज थी. रूस की नई विचारधारा का ज़ोर विरोधी शक्तियों को ख़तम करने पर था. इससे पहले दुनिया ग़रीब-चूस पूंजीपतियों या जोंकशाहों के रहम करम पर थी. अब एक ताक़त पैदा हो गई जिसने अपनी ज़रूरत की हर चीज़ को मनमानी शर्तों पर दूसरों से हासिल करने के पूंजीपतियों के अधिकार को चैलेंज दिया. सब से बड़ी बात यह हुई कि दुनिया को "उलट पलट करने वाली" इस नई विचारधारा ने 'सोवियत कम्युनिज़्म' के रूप में अमली जामा पहन लिया. यह नए ढंग की सामाजिक व्यवस्था रूस की सीमाओं को पार कर चारों तरफ़ फैलने लगी. एक के बाद दूसरे देशों ने इसे अपनाया. अंगरेज़ कूटनीति की शतरंज के पुराने खिलाड़ी थे. जब उन्होंने इस शक्ति को बढ़ते देखा तो इस नई नाव के पाल से हवा निकाल देने के लिये और अपने यहां के मज़दूरों की तसल्ली के लिये उन्होंने इस प्रोग्राम

# ڈر کی چھایا اور آشا کی ایک کرن

ڈاکٹر جے . سی . کمارپا

جیون کی الگ الگ منزلوں پر ہمیں اپنے اندر کی کوئی نہ کوئی ایسی اچھی یا بری شکتی راستہ بتاتی رہتی ہے جو ہمارے سب کاموں پر قابو رکھتی ہے . کبھی پریم ہمیں اندھا کرکے آگے لے چلتا ہے' کبھی کسی مہان شکتی کی بھکتی کے کارن ہم اپنے کو پوری طرح اُس کے ہاتھ میں دے دیتے ہیں' اور کبھی گھرنا اور غصے کی زبردست پرورتیوں سے ہر کام میں ہم پربھاوت رہتے ہیں. آج جو چیز دنیا پرچھائی ہوئی ہے وہ ہے ڈر . امریکہ میں جو زبردست شکتی امریکہ کی ودیش نیتی کا سنچالن کر رہی ہے وہ ہے روس کا ڈر . دوسروں کو مٹانے والی چیزوں پر وہ بنا سوچے سمجھے دھن گنوا رہے ہیں . امریکی پونجی پتیوں کی اننت دھن لالسا تک کو اِس ڈر نے ایک بار دبا دیا ہے .

ہر کسی کے ساتھ "بےروک اور من مانی تجارت" کے پٹے پٹائے سدھانت پر امریکہ نے عمل کیا اور اُسی کا نام "آزادی" رکھا . امریکہ کی آرتھک ویوستھا کا آدھار ہی اُس پر ہے کہ نتیجوں کی چنتا کئے بنا دوسروں سے بےروک جائز ناجائز فائدہ اُٹھایا جاوے اور اُنہیں جس طرح ہوسکے چوسا جاوے . جب تک روس مارکس وادی پروگرام لے کر دنیا کے سامنے نہیں آیا اور اُس نے "سماجک نیائے" قائم کرنے کی طرف دنیا کو موڑنے کی کوشش نہیں کی تب تک اِس معاملے میں امریکہ کی موج تھی . روس کی نئی وچار دھارا کا زور وِرودھی شکتیوں کو ختم کرنے پر تھا . اِس سے پہلے دنیا غریب چوس پونجی پتیوں یا جونک شاہوں کے رحم کرم پر تھی . اب ایک طاقت پیدا ہوگئی جس نے اپنی ضرورت کی ہر چیز کو من مانی شرطوں پر دوسروں سے حاصل کرنے کے پونجی پتیوں کے ادھیکار کو چیلنج دیا . سب سے بڑی بات یہ ہوئی کہ دنیا کو "اُلٹ پلٹ کردینے والی" اِس نئی وچار دھارا نے سوویت کمیونزم کے روپ میں عملی جامہ پہن لیا . یہ نئے ڈھنگ کی سماجک ویوستھا روس کی سیماؤں کو پار کر چاروں طرف پھیلنے لگی . ایک کے بعد دوسرے دیشوں نے اِسے اپنایا . انگریز کوٹ نیتی کے شطرنج کے پرانے کھلاڑی تھے . جب اُنہوں نے اِس شکتی کو بڑھتے دیکھا تو اِس نئی ناؤ کے پال سے ہوا نکال دینے کے لئے اور اپنے یہاں کے مزدوروں کی تسلی کے لئے اُنہوں نے اِس پروگرام

का कुछ हिस्सा लेकर "कल्याणकारी राज" (Welfare State) के रूप में इंगलैंड में इसे लागू कर दिया. कुछ हद तक इस तूफ़ान को रोकने में वह सफल रहे. अमरीका ने अपनी पूंजी के बल पर जो सिक्का और क़ब्ज़ा दुनिया पर जमा रखा है उसे खो बैठने के डर के कारन अमरीका की सोचने समझने की सारी ताक़त जाती रही है. वह बिना किसी समझौते के और पूरी तरह डट कर इस तूफ़ान से टक्कर लेने की कोशिश कर रहा है. वह बिलकुल घबरा गया है जिससे एक हद दरजे की नाज़ुक और ख़तरनाक परिस्थिति पैदा हो गई है. चीज़ों के उचित रूप को वह देख ही नहीं पा रहा है. डर ने उसकी आंखों पर परदा डाल दिया है. वह इतना नाउम्मीद हो गया है कि इस नई शक्ति को ख़तम करने की कोशिश में वह अपनी सारी ताक़त लगा देने को तैयार है. इस विश्व व्यापी हिंसा से जो स्थिति पैदा होगी उससे ख़ुद अमरीका को भी लाचार होना पड़ेगा, इसकी उसे चिन्ता ही नहीं.

सामंतवाद को ज़िन्दा रखने के लिये कुछ दशाब्दियों पहले ज़ार अलेक्ज़ेंडर ने योरप के 'सब राजाओं का वियाना धार्मिक गठबन्धन' नाम से एक संगठन बनाया था. लेकिन एक तो वह राजा एक दूसरे पर भरोसा नहीं करते थे और एक दूसरे के ख़िलाफ़ साज़िश करते रहते थे, दूसरे इस संगठन के पीछे योरप की जनता नहीं थी, इसलिये बिना कुछ करे धरे ही वह संगठन मर गया.

उसके बाद अमरीका के प्रेसीडेन्ट वुडरो विलसन आए. राष्ट्र संघ के नाम से तमाम राष्ट्रों को एक सूत में बांधने का उन्होंने सपना देखा. उनके देश की जनता ने भी उनका समर्थन नहीं किया. अंगरेज़ों ने राष्ट्र संघ की मशीनरी के ज़रिये दुनिया की नीति पर क़ाबू रखने और उस संगठन को अपने मतलब के लिये इस्तेमाल करने का आसान रास्ता निकाल लिया. दुनिया की जनता को भुला दिया गया. वह संगठन ऊंची कूटनीति का शतरंज बन गया. जनता का समर्थन न होने के कारण उसका भी वही अन्त हुआ जो होना चाहिये था.

उस कोशिश के विफल होने पर अमरीका ने बात चीत के ज़रिये दुनिया में समझौता कराने और इस तरह सब झगड़े टंटे ख़तम करने की नई कोशिश यू. एन. ओ. नाम से शुरू की. यहां छोटे राष्ट्रों की राय को या तो महत्व ही नहीं दिया गया और या बड़े राष्ट्रों ने उन पर अपनी राय थोप दी. अमल में यह नई संस्था सोवियत कम्युनिज़्म की बाढ़ को रोकने के लिये अमरीकी साम्राज का एक साधन बन कर रह गई. प्रोग्राम बनाते समय अमरीका के हित पर ही अधिक ध्यान दिया जाने लगा. धीरे धीरे बरतानिया का असर इस संस्था पर से जाता रहा. आजकल यह एक ऐसी संस्था



کا کچھ حصہ لیکر "کلیان کاری راج" (Welfare State) کے روپ میں انگلینڈ میں اِسے لاگو کردیا. کچھ حد تک اِس طوفان کو روکنے میں وہ سپھل رہے. امریکہ نے اپنی پونجی کے بل پر جو سکہ اور قبضہ دنیا پر جما رکھا ہے اُسے کھو بیٹھنے کے ڈر کے کارن امریکہ کی سوچنے سمجھنے کی ساری طاقت جاتی رہی ہے. وہ بنا کسی سمجھوتے کے اور پوری طرح ڈٹ کر اِس طوفان سے ٹکر لینے کی کوشش کر رہا ہے. وہ بالکل گھبرا گیا ہے جس سے ایک حد درجہ کی نازک اور خطرناک پرستھتی پیدا ہوگئی ہے. چیزوں کے اُچت روپ کو وہ دیکھ ہی نہیں پا رہا ہے. ڈر نے اُس کی آنکھوں پر پردہ ڈال دیا ہے. وہ اتنا ناامید ہوگیا ہے کہ اِس نئی شکتی کو ختم کرنے کی کوشش میں وہ اپنی ساری طاقت لگا دینے کو تیار ہے. اِس وشوویاپی ہنسا سے جو استھتی پیدا ہوگی اُس سے خود امریکہ کو بھی لاچار ہونا پڑے گا، اِس کی اُسے چنتا ہی نہیں.

سامنت واد کو زندہ رکھنے کے لئے کچھ دشابدیوں پہلے زار الگزنڈر نے یورپ کے 'سب راجاؤں کا ویانا دھارمک گٹھ بندھن' نام سے ایک سنگٹھن بنایا تھا. لیکن ایک تو وہ راجا ایک دوسرے پر بھروسہ نہیں کرتے تھے اور ایک دوسرے کے خلاف سازش کرتے رہتے تھے، دوسرے اِس سنگٹھن کے پیچھے یورپ کی جنتا نہیں تھی. اِس لئے بنا کچھ کرے دھرے ہی وہ سنگٹھن مر گیا.

اُس کے بعد امریکہ کے پریسیڈنٹ وڈرو ولسن آئے. راشٹر سنگھ کے نام سے تمام راشٹروں کو ایک سوت میں باندھنے کا اُنہوں نے سپنا دیکھا. اُن کے دیش کی جنتا نے بھی اُن کا سمرتھن نہیں کیا. انگریزوں نے راشٹر سنگھ کی مشینری کے ذریعے دنیا کی نیتی پر قابو رکھنے اور اِس سنگٹھن کو اپنے مطلب کے لئے استعمال کرنے کا آسان راستہ نکال لیا. دنیا کی جنتا کو بھلا دیا گیا. وہ سنگٹھن اُونچی کوٹ نیتی کا شطرنج بن گیا. جنتا کا سمرتھن نہ ہونے کے کارن اُس کا بھی وہی انت ہوا جو ہونا چاہئے تھا.

اُس کوشش کے وِپھل ہونے پر امریکہ نے بات چیت کے ذریعے دنیا میں سمجھوتہ کرانے اور اِس طرح سب جھگڑے ٹنٹے ختم کرنے کی نئی کوشش یو. این. او. نام سے شروع کی. یہاں چھوٹے راشٹروں کی رائے کو یا تو مہتو ہی نہیں دیا گیا اور یا بڑے راشٹروں نے اُن پر اپنی رائے تھوپ دی. عمل میں یہ نئی سنستھا سوویت کمیونزم کی باڑھ کو روکنے کے لئے امریکی سامراج کا ایک سادھن بن کر رہ گئی. پروگرام بناتے سمے امریکہ کے ہت پر ہی ادھک دھیان دیا جانے لگا. دھیرے دھیرے برطانیہ کا اثر اِس سنستھا پر سے جاتا رہا. آجکل یہ ایک ایسی سنستھا

# डर की छाया और आशा की एक किरन

डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा

जीवन की अलग अलग मंजिलों पर हमें अपने अन्दर की कोई न कोई ऐसी अच्छी या बुरी शक्ति रास्ता बताती रहती है जो हमारे सब कामों पर क़ाबू रखती है. कभी प्रेम हमें अन्धा करके आगे ले चलता है, कभी किसी महान शक्ति की भक्ति के कारन हम अपने को पूरी तरह उसके हाथ में दे देते हैं, और कभी घृणा और गुस्से की जबर्दस्त प्रवृत्तियों से हर काम में हम प्रभावित रहते हैं. आज जो चीज़ दुनिया पर छाई हुई है वह है डर. अमरीका में जो जबर्दस्त शक्ति अमरीका की विदेश नीति का संचालन कर रही है वह है रूस का डर. दूसरों को मिटाने वाली चीज़ों पर वह बिना सोचे समझे धन गंवा रहे हैं. अमरीकी पूंजीपतियों की अनन्त धनलालसा तक को इस डर ने एक बार दबा दिया है.

हर किसी के साथ "बेरोक और मनमानी तिजारत" के पिटे पिटाए सिद्धान्त पर अमरीका ने अमल किया और उसी का नाम "आज़ादी" रखा. अमरीका की आर्थिक व्यवस्था का अधार ही इस पर है कि नतीजों की चिन्ता किये बिना दूसरों से बेरोक जायज़ नाजायज़ फ़ायदा उठाया जावे और उन्हें जिस तरह हो सके चूसा जावे. जब तक रूस मार्क्स-वादी प्रोग्राम लेकर दुनिया के सामने नहीं आया और उसने "समाजिक न्याय" क़ायम करने की तरफ़ दुनिया को मोड़ने की कोशिश नहीं की तब तक इस मामले में अमरीका की मौज थी. रूस की नई विचारधारा का ज़ोर विरोधी शक्तियों को ख़तम करने पर था. इससे पहले दुनिया ग़रीब-चूस पूंजीपतियों या जोंकशाहों के रहम करम पर थी. अब एक ताक़त पैदा हो गई जिसने अपनी ज़रूरत की हर चीज़ को मनमानी शर्तों पर दूसरों से हासिल करने के पूंजीपतियों के अधिकार को चैलेंज दिया. सब से बड़ी बात यह हुई कि दुनिया को "उलट पलट करने वाली" इस नई विचारधारा ने 'सोवियत कम्युनिज़्म' के रूप में अमली जामा पहन लिया. यह नए ढंग की सामाजिक व्यवस्था रूस की सीमाओं को पार कर चारों तरफ़ फैलने लगी. एक के बाद दूसरे देशों ने इसे अपनाया. अंगरेज़ कूटनीति की शतरंज के पुराने खिलाड़ी थे. जब उन्होंने इस शक्ति को बढ़ते देखा तो इस नई नाव के पाल से हवा निकाल देने के लिये और अपने यहां के मज़दूरों की तसल्ली के लिये उन्होंने इस प्रोग्राम

# ڈر کی چھایا اور آشا کی ایک کرن

ڈاکٹر جے . سی . کمارپا

جیون کی الگ الگ منزلوں پر ہمیں اپنے اندر کی کوئی نہ کوئی ایسی اچھی یا بری شکتی راستہ بتاتی رہتی ہے جو ہمارے سب کاموں پر قابو رکھتی ہے . کبھی پریم ہمیں اندھا کرکے آگے لے چلتا ہے' کبھی کسی مہان شکتی کی بھکتی کے کارن ہم اپنے کو پوری طرح اُس کے ہاتھ میں دے دیتے ہیں' اور کبھی گھرنا اور غصے کی زبردست پرورتیوں سے ہر کام میں ہم پربھاوت رہتے ہیں. آج جو چیز دنیا پر چھائی ہوئی ہے وہ ہے ڈر . امریکہ میں جو زبردست شکتی امریکہ کی ودیش نیتی کا سنچالن کر رہی ہے وہ ہے روس کا ڈر . دوسروں کو مٹانے والی چیزوں پر وہ بنا سوچے سمجھے دھن گنوا رہے ہیں . امریکی پونجی پتیوں کی اننت دھن لالسا تک کو اِس ڈر نے ایک بار دبا دیا ہے .

ہر کسی کے ساتھ "بےروک اور من مانی تجارت" کے پٹے پٹائے سدھانت پر امریکہ نے عمل کیا اور اُسی کا نام "آزادی" رکھا . امریکہ کی آرتھک ویوستھا کا آدھار ہی اُس پر ہے کہ نتیجوں کی چنتا کئے بنا دوسروں سے بےروک جائز ناجائز فائدہ اُٹھایا جاوے اور اُنہیں جس طرح ہوسکے چوسا جاوے . جب تک روس مارکس وادی پروگرام لے کر دنیا کے سامنے نہیں آیا اور اُس نے "سماجک نیائے" قائم کرنے کی طرف دنیا کو موڑنے کی کوشش نہیں کی تب تک اِس معاملے میں امریکہ کی موج تھی . روس کی نئی وچار دھارا کا زور ورودھی شکتیوں کو ختم کرنے پر تھا . اِس سے پہلے دنیا غریب چوس پونجی پتیوں یا جونک شاہوں کے رحم کرم پر تھی . اب ایک طاقت پیدا ہوگئی جس نے اپنی ضرورت کی ہر چیز کو من مانی شرطوں پر دوسروں سے حاصل کرنے کے پونجی پتیوں کے ادھیکار کو چیلنج دیا . سب سے بڑی بات یہ ہوئی کہ دنیا کو "اُلٹ پلٹ کردینے والی" اِس نئی وچار دھارا نے سوویت کمیونزم کے روپ میں عملی جامہ پہن لیا . یہ نئے ڈھنگ کی ساماجک ویوستھا روس کی سیماؤں کو پار کر چاروں طرف پھیلنے لگی . ایک کے بعد دوسرے دیشوں نے اِسے اپنایا . انگریز کوٹ نیتی کے شطرنج کے پرانے کھلاڑی تھے . جب اُنہوں نے اِس شکتی کو بڑھتے دیکھا تو اِس نئی ناؤ کے پال سے ہوا نکال دینے کے لئے اور اپنے یہاں کے مزدوروں کی تسلی کے لئے اُنہوں نے اِس پروگرام

## अमन और प्रेम का एक ही रास्ता

इंजील में लिखा है :—

"ईश्वर ने आदमी को अपनी ही सूरत पर बनाया."

उपनिषद् में लिखा है :—

"यह जीव ब्रह्म ही है कोई ग़ैर नहीं."

क़ुरआन में लिखा है :—

"ख़ुद अल्लाह की फ़ितरत पर आदमी की फ़ितरत बनाई गई है."

आज से लगभग तीस बरस पहले जब हमारे अंगरेज़ हाकिमों की चालों और हमारी अपनी नादानी के कारण देश में हिन्दू मुसलिम झगड़े जगह जगह हो रहे थे उस समय एक सच्चे दिलवाले मुसलमान शायर ने एक बड़ी सुन्दर नज़्म हिन्दुओं, मुसलमानों और सब के लिये लिखी थी. हमारी राय है कि हर हिन्दुस्तानी स्कूल और कालेज की पढ़ाई की किताबों में यह प्यारी और सच्ची नज़्म होनी चाहिये और देश के सब बच्चों को याद कराई जानी चाहिये. वह नज़्म यह है :—

तुम राम कहो या रहीम कहो, दोनों की ग़रज़ अल्लाह से है,<br>
तुम इश्क़ कहो या प्रेम कहो, मतलब तो उसी की चाह से है.<br>
तुम धर्म कहो या दीन कहो, मक़सद तो उसी की राह से है,<br>
तुम सालिक हो या योगी हो, मंशा तो दिले आगाह से है.<br>
क्यों लड़ता है मूरख बन्दे, यह तेरी ख़ाम ख़याली है,<br>
है पेड़ की जड़ तो एक वही, हर मज़हब एक एक डाली है !

बनवाओ शिवाला या मसजिद, है ईंट वही चूना है वही,<br>
मेमार वही मज़दूर वही, मिट्टी है वही गारा है वही.<br>
तकबीर का जो कुछ मतलब है, नाक़ूस का भी मंशा है वही,<br>
तुम जिनको नमाज़ें कहते हो, हिन्दू के लिये पूजा है वही.<br>
फिर लड़ने से क्या हासिल है, ज़ीफ़हम हो तुम नादान नहीं,<br>
जो भाई पे दौड़े गुर्रा कर वह हो सकता इनसान नहीं !

क्या क़त्ल व ग़ारत ख़ूरेज़ी, तारीफ़ यही ईमान की है ?<br>
क्या आपस में लड़कर मरना, तालीम यही क़ुरआन की है ?<br>
इन्साफ़ करो तफ़सीर यही, क्या वेदों के फ़रमान की है ?<br>
क्या सचमुच यह ख़ूख़ारी ही, आला ख़सलत इन्सान की है ?<br>
तुम ऐसे बुरे आमाल पे अपने, कुछ तो ख़ुदा से शर्म करो !<br>
पत्थर जो बना रक्खा तुमने, इस दिल को ज़रा तो नर्म करो !

## امن اور پریم کا ایک ھی راستہ

انجیل میں لکھا ھے :—

"ایشور نے آدمی کو اپنی ھی صورت پر بنایا ."

اپنشد میں لکھا ھے :—

"یہ جیو برھمہ ھی ھے کوئی غیر نہیں ."

قرآن میں لکھا ھے :—

"خود اللہ کی فطرت پر آدمی کی فطرت بنائی گئی ھے ."

آج سے لگ بھگ تیس برس پہلے جب ھمارے انگریز حاکموں کی چالوں اور ھماری اپنی نادانی کے کارن دیش میں ھندو مسلم جھگڑے جگہ جگہ ھو رھے تھے اُس سمے ایک سچے دل والے مسلمان شاعر نے ایک بڑی سندر نظم ھندوؤں، مسلمانوں اور سب کے لئے لکھی تھی . ھماری رائے ھے کہ ھر ھندستانی اسکول اور کالج کی پڑھائی کی کتابوں میں یہ پیاری اور سچی نظم ھونی چاھئے اور دیش کے سب بچوں کو یاد کرائی جانی چاھئے . وہ نظم یہ ھے :—

تم رام کہو یا رحیم کہو، دونوں کی غرض اللہ سے ھے،<br>
تم عشق کہو یا پریم کہو، مطلب تو اُسی کی چاہ سے ھے .<br>
تم دھرم کہو یا دین کہو، مقصد تو اُسی کی راہ سے ھے،<br>
تم سالک ھو یا یوگی ھو، منشا تو دل آگاہ سے ھے<br>
کیوں لڑتا ھے مورکھ بندے، یہ تیری خام خیالی ھے،<br>
ھے پیڑ کی جڑ تو ایک وھی، ھر مذھب ایک ایک ڈالی ھے !

بنواؤ شوالہ یا مسجد ھے اینٹ وھی چونا ھے وھی،<br>
معمار وھی مزدور وھی، مٹی ھے وھی گارا ھے وھی .<br>
تکبیر کا جو کچھ مطلب ھے، ناقوس کا بھی منشا ھے وھی،<br>
تم جن کو نمازیں کہتے ھو، ھے ھندو کے لئے پوجا ھے وھی .<br>
پھر لڑنے سے کیا حاصل ھے، ذی فہم ھو تم نادان نہیں،<br>
جو بھائی پہ دوڑے غرا کر وہ ھوسکتا انسان نہیں !

کیا قتل و غارت خونریزی، تعریف یہی ایمان کی ھے ؟<br>
کیا آپس میں لڑ کر مرنا، تعلیم یہی قرآن کی ھے ؟<br>
انصاف کرو تفسیر یہی، کیا ویدوں کے فرمان کی ھے ؟<br>
کیا سچ مچ یہ خونخواری ھی، اعلیٰ خصلت انسان کی ھے ؟<br>
تم ایسے برے اعمال پہ اپنے، کچھ تو خدا سے شرم کرو !<br>
پتھر جو بنا رکھا تم نے، اِس دل کو ذرا تو نرم کرو !

मेमार = राज, तकबीर = अल्लाहो अकबर, नाक़ूस = शंख, ज़ीफ़हम = समझदार, तफ़सीर = भाष्य, आलाख़सलत = अच्छी आदत, आमाल = काम.

यानी—रूह के लिये न कोई हिन्दू है न कोई मुस्लिम, न कोई तुर्क न कोई अरब, न कोई ईरानी और न कोई ईसाई, न कोई नस्ल, न कोई जात और न कोई फ़िरक़ा. रूह के लिये बस समझ है और नेकी.

हमारा धर्म या मज़हब हमारे चेहरों पर उस मुस्कराहट की शकल में दिखाई देना चाहिये जो दूसरों के दिलों को जीत ले. हमारे बदन पर वह सुन्दर गहने की तरह चमकना चाहिये. मज़हब का असर यह होना चाहिये कि हमारा अपना दिल ख़ुशी से भरा हुआ हो और हमें देखते ही आस पास के सब लोगों के दिल ख़ुशी से भर जावें. यह नहीं होना चाहिये कि धर्म मज़हब के नाम पर हमारी नाक भौं चढ़ी हुई हो और जो हमें देखे हम से बचकर भागे. धर्म या मज़हब दूसरों को डराने वाला हथियार नहीं होना चाहिये. उससे न हमारे अन्दर डर या बेरहमी पैदा हो और न हमें देखकर दूसरों के अन्दर डर या बेरहमी पैदा हो. मज़हब दिल की चीज़ है. दिल ही में उसकी ख़ास जगह होनी चाहिये. सब की सेवा, प्रेम और नेकी उसके रूप होने चाहियें. मज़हब माथे पर या चेहरे पर साइनबोर्डों या नाम-पट्टियों की तरह दिखावे के लिये नहीं होना चाहिये. सिर पर, होंटों पर या ठोड़ी पर बाल रखने या काटने के तरह तरह के ढंगों या अलग अलग तरह के छापों, बिल्लों या कपड़ों में मज़हब का वह दिखावा नहीं होना चाहिये जिस से केवल अपना इश्तहार हो और एक दूसरे से जुदाई और अधिक चमके. प्रकृति यानी क़ुदरत हर नए पैदा हुए बच्चे के चेहरे पर इन्सानियत बल्कि उलूहियत (ब्रह्मत्व) की मुहर लगाकर पैदा करती है. कोई बच्चा हिन्दू, मुस्लिम, पारसी या ईसाई निशानी लेकर पैदा नहीं होता. यह अलग अलग निशान बाद में हम लोग गढ़ कर हर बच्चे पर चिपका देते हैं. हो सकता है कि किसी ख़ास ज़माने में, ख़ास हालत में और ख़ास जगहों पर इनकी ज़रूरत और इनसे फ़ायदा रहा हो. पर आज इन चीज़ों पर ज़िद करना अदूरदर्शिता यानी कोताह-अन्देशी भी है और सब की बरबादी का कारण भी.

मुहम्मद साहब ने कहा है :—

"जितने बच्चे पैदा होते हैं वह सब केवल एक उसी अल्लाह को तसलीम करते हुए पैदा होते हैं."

महाभारत में लिखा है :—

"ब्रह्म ने शुरू में इस सारी दुनिया को बनाया था इसलिये सब जानदार उसी ब्रह्म की औलाद हैं."

मुहम्मद साहब की मशहूर हदीस है :—

"इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह ने आदम को अपनी सूरत पर बनाया है. हर इन्सान की सूरत रहमान की ही सूरत है."



یعنی—روح کے لئے نہ کوئی ھندو ھے نہ کوئی مسلم، نہ کوئی ترک نہ کوئی عرب، نہ کوئی ایرانی اور نہ کوئی عیسائی، نہ کوئی نسل، نہ کوئی جات اور نہ کوئی فرقہ . روح کے لئے بس سمجھ ھے اور نیکی .

ھمارا دھرم یا مذھب ھمارے چہروں پر اُس مسکراھٹ کی شکل میں دکھائی دینا چاھئے جو دوسروں کے دلوں کو جیت لے . ھمارے بدن پر وہ سندر گہنے کی طرح چمکنا چاھئے . مذھب کا اثر یہ ھونا چاھئے کہ ھمارا اپنا دل خوشی سے بھرا ھوا ھو اور ھمیں دیکھتے ھی آس پاس کے سب لوگوں کے دل خوشی سے بھر جاویں . یہ نہیں ھونا چاھئے کہ دھرم مذھب کے نام پر ھماری ناک بھوں چڑھی ھوئی ھو اور جو ھمیں دیکھے ھم سے بچ کر بھاگے . دھرم یا مذھب دوسروں کو ڈرانے والا ھتیار نہیں ھونا چاھئے. اُس سے نہ ھمارے اندر ڈر یا بےرحمی پیدا ھو اور نہ ھمیں دیکھ کر دوسروں کے اندر ڈر یا بےرحمی پیدا ھو . مذھب دل کی چیز ھے . دل ھی میں اُس کی خاص جگہ ھونی چاھئے . سب کی سیوا، پریم اور نیکی اُس کے روپ ھونے چاھئیں . مذھب ماتھے پر یا چہرے پر سائن بورڈوں یا نام پٹیوں کی طرح دکھاوے کے لئے نہیں ھونا چاھئے . سر پر، ھونٹھوں پر یا ٹھوڑی پر، بال رکھنے یا کٹانے کے طرح طرح کے ڈھنگوں یا الگ الگ طرح کے چھاپوں، بلوں یا کپڑوں میں مذھب کا وہ دکھاوا نہیں ھونا چاھئے جس سے کیول اپنا اشتہار ھو اور ایک دوسرے سے جدائی اور ادھک چمکے . پرکرتی یعنی قدرت ھر نئے پیدا ھوئے بچے کے چہرے پر انسانیت بلکہ الوھیت ( برھمتو ) کی مہر لگا کر پیدا کرتی ھے . کوئی بچہ ھندو، مسلم، پارسی یا عیسائی نشانی لے کر پیدا نہیں ھوتا . یہ الگ الگ نشان بعد میں ھم لوگ گڑھ کر ھر بچے پر چپکا دیتے ھیں . ھو سکتا ھے کہ کسی خاص زمانے میں، خاص حالات میں اور خاص جگہوں پر اِن کی ضرورت اور اِن سے فائدہ رھا ھو . پر آج اِن چیزوں پر ضد کرنا ادوردرشتا یعنی کوتاہ اندیشی بھی ھے اور سب کی بربادی کا کارن بھی .

محمد صاحب نے کہا ھے :—

"جتنے بچے پیدا ھوتے ھیں وہ سب کیول اُسی ایک اللہ کو تسلیم کرتے ھوئے پیدا ھوتے ھیں ."

مہابھارت میں لکھا ھے :—

"برھمہ نے شروع میں اِس ساری دنیا کو بنایا تھا اِس لئے سب جاندار اُسی برھمہ کی اولاد ھیں ."

محمد صاحب کی مشہور حدیث ھے :—

"اِس میں کوئی شک نہیں کہ اللہ نے آدم کو اپنی صورت پر بنایا ھے. ھر انسان کی صورت رحمان کی صورت ھے ."

सनातन धर्म' यानी उसी पुराने 'इसलाम' का एक नया रूप होगा जिसे वेदों में 'सनातन धर्म' और क़ुरान में 'दीनुल-क़ैयमा' कहा गया है. अन्दर की रूह वही पुरानी और ऊपर की शकल ज़माने की ज़रूरत के अनुसार नई. उस नए मज़हब में साइन्स और मज़हब दोनों मिलकर एक हो जायेंगे. साइन्स फिर मज़हबी साइन्स होगी और मज़हब साइन्सी मज़हब होगा. जड़ और चेतन, रूह और माद्दा फिर एक ही हक़ीक़त के दो पहलू दिखाई देंगे. तब जाकर हम इन्सानी ज़िन्दगी की एकता और भरपूरता का आनन्द ले सकेंगे. यह एक बुनियादी सचाई है जिसे दुनिया के सब लोगों को और ख़ासकर हिन्दुस्तान के हिन्दुओं और मुसलमानों को अच्छी तरह समझ लेना है.

श्री कृष्ण ने गीता में कहा है :—

"ऐ पार्थ (यानी अर्जुन !) दुनिया में लोग चारों तरफ़ से जितने रास्तों पर चलते हैं वह सब रास्ते आख़ीर में मुझ तक ही पहुंच जावे हैं."

मुहम्मद साहब की एक हदीस है :—

'दुनिया में जितनी रूहें हैं अल्लाह तक पहुंचने के उतने ही रास्ते हैं.'

इन्जील में लिखा है :—

"न कोई यहूदी है न कोई यूनानी, न कोई ग़ुलाम है न कोई आज़ाद, न कोई पुरुष है न कोई स्त्री, ईसा मसीह में तुम सब एक हो."

शंकराचार्य ने लिखा है :—

"आत्मा का न कोई वर्ण है, न कोई उसकी जात है, न कोई उसका आश्रम, आचार या धर्म है. वह एक ही है. वही सब में है. वही शिव है. वही मैं हूं."

हकीम सनाई ने कहा है :—

"रूह की ज़िन्दगी अक़्ल और इल्म से है, रूह में न कोई पारसी है और न कोई ताज़ी."

इसी ख़याल को मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने इस तरह कहा है :—

"रूह बा अक़्ल अस्त बा इल्म अस्त या
रूह रा बा ताज़ी ओ तुरकी चे कार."

दुनिया भर के मुसलमान मौलाना रूम को बड़ी इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं. उनकी ख़ास किताब मसनवी 'पहलवी यानी फ़ारसी ज़बान में क़ुरआन' कही जाती है. हमारे देश के मशहूर शायर सर मुहम्मद इक़बाल ने मौलाना रूम का ज़िक्र करते हुए कहा है :—"उन्होंने पहलवी हरफ़ों में क़ुरान लिख डाला." हम मौलाना रूम के शब्दों को थोड़ा सा बदल कर कह सकते हैं :—

"रूह रा बा हिन्दुओ मुस्लिम चे कार."



سناتن دھرم' یعنی اُسی پرانے 'اسلام' کا ایک نیا روپ ہوگا جسے ویدوں میں 'سناتن دھرم' اور قرآن میں 'دین القیمہ' کہا گیا ہے . اندر کی روح وہی پرانی اور اُوپر کی شکل زمانے کی ضرورت کے انوسار نئی . اُس نئے مذہب میں سائنس اور مذہب دونوں ملکر ایک ہوجائینگے . سائنس پھر مذہبی سائنس ہوگی اور مذہب سائنسی مذہب ہوگا . جڑ اور چیتن' روح اور مادہ پھر ایک ہی حقیقت کے دو پہلو دکھائی دینگے . تب جاکر ہم انسانی زندگی کی ایکتا اور بھرپورتا کا آنند لے سکینگے . یہ ایک بنیادی سچائی ہے جسے دنیا کے سب لوگوں کو اور خاص کر ھندستان کے ھندوں اور مسلمانوں کو اچھی طرح سمجھ لینا ہے .

شری کرشن نے گیتا میں کہا ہے :—

" اے پارتھ ( یعنی ارجن ! ) دنیا میں لوگ چاروں طرف سے جتنے راستوں پر چلتے ہیں وہ سب راستے آخیر میں مجھ تک ہی پہنچ جاتے ہیں ."

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

" دنیا میں جتنی روحیں ہیں اللہ تک پہنچنے کے اتنے ہی راستے ہیں ."

اِنجیل میں لکھا ہے :—

" نہ کوئی یہودی ہے نہ کوئی یونانی نہ کوئی غلام ہے' نہ کوئی آزاد . نہ کوئی پرش ہے نہ کوئی استری . عیسیٰ مسیح میں تم سب ایک ہو ."

شنکراچاریہ نے لکھا ہے :—

" آتما کا نہ کوئی ورن ہے' نہ کوئی اُس کی جات ہے' نہ کوئی اُس کا آشرم' آچار یا دھرم ہے . وہ ایک ہی ہے . وہی سب میں ہے . وہی شو ہے . وہی میں ہوں ."

حکیم ثنائی نے کہا ہے :—

" روح کی زندگی عقل اور علم سے ہے' روح میں نہ کوئی پارسی ہے اور نہ کوئی تازی ."

اِسی خیال کو مولانا جلال الدین رومی نے اس طرح کہا ہے :—

" روح با عقل است با علم است یار
روح را با تازی و ترکی چہ کار ."

دنیا بھر کے مسلمان مولانا روم کو بڑی عزت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں . اُن کی خاص کتاب مثنوی 'پہلوی یعنی فارسی زبان میں قرآن' کہی جاتی ہے . ہمارے دیش کے مشہور شاعر سر محمد اقبال نے مولانا روم کا ذکر کرتے ہوئے کہا ہے :— " اُنھوں نے پہلوی حرفوں میں قرآن لکھ ڈالا ." ہم مولانا روم کے شبدوں کو تھوڑا سا بدل کر کہ سکتے ہیں :—

" روح را با ھندو و مسلم چہ کار ."

अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, तुरकी, अरब, मिस्र और अफ़रीका को अपनी छाती से लगाए हुए है. यहूदी धर्म और ईसाई धम के मानने वाले फ़िलस्तीन और यूरप को भी वह साथ लिये हुए है. इसके एक कन्धे पर बौद्ध तिब्बत है तो दूसरे कंधे पर मुसलिम तुरकिस्तान. ज़रतुश्ती धर्म के मानने वाले पारसी अब दुनिया में बहुत ही कम रह गए हैं और जो रह गए हैं उनमें से अधिकतर तेरह सौ बरस से इसी देश के दक्खिन पच्छिम को अपना घर बनाए हुए हैं. ज़रतुश्ती धर्म की किताब "गाथाएं" वेद ही की एक शाख़ है और ऐसी भाषा में लिखी हुई है जो वैदिक संस्कृत का एक दूसरा रूप है. हिन्दुस्तान के दक्खिन में हिन्दुस्तानी यहूदियों की भी एक बहुत अच्छी बस्ती है जिसकी आबादी अब कई हज़ार रह गई है. जहां तक ईसाई धर्म का सम्बन्ध है कहा जाता है कि हज़रत ईसा के परलोक सिधारने के थोड़े ही दिनों बाद उनके बारह मशहूर चेलों में से एक सेन्ट टामस ख़ुद हिन्दुस्तान आए थे और उन्होंने इस देश के दक्खिन पूर्वी किनारे पर ईसाई धर्म का बीज बोया था. आज हिन्दुस्तान की ईसाई आबादी पौन करोड़ के लगभग है. मुट्ठी भर ऐसे लोगों को छोड़ कर, जो कहीं बाहर जाकर बस गए हैं, बाक़ी हिन्दुओं, जैनियों और सिक्खों का दुनिया में हिन्दुस्तान के सिवा और कोई घर है ही नहीं. यह देश सात करोड़ से ऊपर मुसलमानों की जन्म भूमि है. बौद्ध धर्म यहीं पैदा हुआ और उसके शुरू के सब तीर्थ इसी देश में हैं. कनफ़्यूशियस धर्म, ताओ धर्म और शिन्तो धर्म तीनों बौद्ध धर्म के अन्दर मिलकर लगभग उसी में समा गए हैं.

बनारस के पास सारनाथ में, जहां महात्मा बुद्ध ने आज से ढाई हज़ार बरस पहले अपने धर्म का उपदेश देना शुरू किया था, पिछले कुछ बरसों के अन्दर पुराने अशोक स्तूप के पास एक बहुत बड़ा नया बौद्ध मन्दिर तामीर किया गया है. जापानी चित्रकारों ने उसकी दीवारों को चित्रों से सजाया है. एक और बड़ा मन्दिर वहां पर ही एक चीनी सज्जन ने बनवाया है. भारत के हिन्दू और बरमा के बौद्ध दोनों ने वहां धर्मशालाएं बनवाई हैं जहां सब जाकर ठहर सकते हैं. इस तरह की और भी धर्मशालाएं बनती जा रही हैं. बौद्ध भिक्षुओं और विद्यार्थियों की एक पूरी बस्ती वहां आबाद हो गई है और बढ़ती जा रही है. बनारस में, जो हिन्दू धर्म का ख़ास गहवारा है, पुराने हिन्दू मन्दिरों के साथ साथ बहुत सी मुस्लिम मसजिदें, जैन मन्दिर, ईसाई गिरजे और सिख संगत पास पास मौजूद हैं. इस तरह दुनिया के सब मज़हब इस देश के अन्दर एक जगह जमा हैं. मालूम होता है कि एक नए आलमगीर वैज्ञानिक यानी साइन्सी मज़हब को जन्म देना और रूप देना भी हिन्दुस्तान ही के लिये बदा है. यह नया धर्म उसी पुराने 'सत्य



غانستان، ایران، ترکی، عرب، مصر اور افریقہ کو اپنی چھاتی سے لگائے ہوئے ھے. یہودی دھرم اور عیسائی دھرم کے ماننے والے فلسطین اور یورپ کو بھی وہ ساتھ لئے ہوئے ھے. اِس کے ایک کندھے پر بودھ تبت ھے تو دوسرے کندھے پر مسلم ترکستان. زرتشتی دھرم کے ماننے والے پارسی اب دنیا میں بہت ھی کم رہ گئے ھیں اور جو رہ گئے ھیں اُن میں سے ادھک‌تر تیرہ سو برس سے اِسی دیش کے دکھن پچھم کو اپنا گھر بنائے ہوئے ھیں. زرتشتی دھرم کی کتاب "گاتھائیں" وید ھی کی ایک شاخ ھے اور ایسی بھاشا میں لکھی ہوئی ھے جو ویدک سنسکرت کا ایک دوسرا روپ ھے. ھندستان کے دکھن میں ھندستانی یہودیوں کی بھی ایک بہت اچھی بستی ھے جس کی آبادی اب کئی ھزار رہ گئی ھے. جہاں تک عیسائی دھرم کا سمبندھ ھے کہا جاتا ھے کہ حضرت عیسیٰ کے پرلوک سدھارنے کے تھوڑے ھی دنوں بعد اُن کے بارہ مشہور چیلوں میں سے ایک سنیٹ‌تامس خود ھندستان آئے تھے اور اُنھوں نے اِس دیش کے دکھن پوربی کنارے پر عیسائی دھرم کا بیج بویا تھا. آج ھندستان کی عیسائی آبادی پون کروڑ کے لگ بھگ ھے. مٹھی بھر ایسے لوگوں کو چھوڑکر، جو کہیں باھر جاکر بس گئے ھیں، باقی ھندوؤں، جینیوں اور سکھوں کا دنیا میں ھندستان کے سوا اور کوئی گھر ھے ھی نہیں. یہ دیش سات کروڑ سے اُوپر مسلمانوں کی جنم بھومی ھے. بودھ دھرم یہیں پیدا ھوا اور اُس کے شروع کے سب تیرتھ اِسی دیش میں ھیں. کنفیوشیس دھرم، تاؤ دھرم اور شنتو دھرم تینوں بودھ دھرم کے اندر ملکر لگ بھگ اُسی میں سما گئے ھیں.

بنارس کے پاس سارناتھ میں، جہاں مہاتما بدھ نے آج سے ڈھائی ھزار برس پہلے اپنے دھرم کا اُپدیش دینا شروع کیا تھا، پچھلے کچھ برسوں کے اندر پرانے اشوک استوپ کے پاس ایک بہت بڑا نیا بودھ مندر تعمیر کیا گیا ھے. جاپانی چترکاروں نے اُس کی دیواروں کو چتروں سے سجایا ھے. ایک اور بڑا مندر وھاں پر ھی ایک چینی سجن نے بنوایا ھے. بھارت کے ھندو اور برما کے بودھ دونوں نے وھاں دھرم‌شالائیں بنوائیں ھیں جہاں سب جاکر ٹھہر سکتے ھیں. اِس طرح کی اور بھی دھرم شالائیں بنتی جارھی ھیں. بودھ بھکشوؤں اور ودیارتھیوں کی ایک پوری بستی وھاں آباد ھوگئی ھے اور بڑھتی جارھی ھے. بنارس میں، جو ھندو دھرم کا خاص گہوارا ھے، پرانے ھندو مندروں کے ساتھ ساتھ بہت سی مسلم مسجدیں، جین مندر، عیسائی گرجے اور سکھ سنگت پاس پاس موجود ھیں. اِس طرح دنیا کے سب مذھب اِس دیش کے اندر ایک جگہ جمع ھیں. معلوم ھوتا ھے کہ ایک نئے عالمگیر ویگیانک یعنی سائنسی مذھب کو جنم دینا اور روپ دینا بھی ھندستان ھی کے لئے بدا ھے. یہ نیا دھرم اُسی پرانے 'ستیہ

की राजनीति और अर्थनीति के नाम पर लड़ाइयां उस समय की मजहब के नाम पर लड़ाइयों से कहीं ज्यादा ख़ौफ़नाक हैं. इन लड़ाई झगड़ों के अन्दर अन्दर एक दूसरे से नफ़रतों की जो आग धधक रही है वह वैसी की वैसी ही है. आजकल की इन लड़ाइयों में एक तरफ़ हद दरजे धन का लोभ, दूसरों को नेस्त नाबूद कर देने की तैयारी और जिस्मानी ऐश की वह चाह है जो देश भक्ति और क़ौम-परस्ती का जामा पहने हुए है. और अपने को 'इन्डिविजुएलइज़्म' यानी व्यक्तिवाद कहती है. और दूसरी तरफ़ वह साम्यवाद ( कम्यूनिज़्म ) या समाजवाद ( सोशलइज़्म ) है जो दुनिया के धन दौलत में सब के साथ मिलकर बराबर का हिस्सा बटाना चाहता है. इस निगाह से इस साम्यवाद या समाजवाद की जड़ें सचमुच रूहानी और धार्मिक हैं. लेकिन अभी तक उसे ख़ुद अपने इस रूप का ठीक ठीक पता नहीं है. अभी तक वह अंधेरे में टटोल रहा है, तजुर्बे कर रहा है और ग़ल्तियां कर रहा है. इन ग़ल्तियों का कारण यह है कि अभी तक उसकी निगाहें ग़लत तरफ़ हैं. उसे अभी तक सच्चे और टिकाऊ समाज संगठन का भेद नहीं मिला. वह यह नहीं समझा कि राजनीति ( पालिटिक्स ) की जड़ें अर्थनीति ( इकोनॉमिक्स ) में होती हैं, अर्थनीति की जड़ें हमारे घरेलू रहन सहन में होती हैं, इस घरेलू रहन सहन की जड़ें हमारे दिल के भावों और दिमाग़ के विचारों और आदर्शों में होती हैं, और इन सब की जड़ें दर्शन शास्त्र यानी ज़िन्दगी के फ़लसफ़े में होती हैं. और यह दर्शन शास्त्र जब पक्का और पूरा होता है तो यही रूहानी मज़हब यानी उस अनन्त जीवन की अध्यात्म विद्या होता है जिसके अन्दर सब साइन्सें, सब विद्याएं और सब हुनर समा जाते हैं.

लेकिन हिन्दुस्तान के अन्दर मज़हबी और ग़ैर मज़हबी, दीनी और दुनियावी, साम्प्रदायिक, राजनीतिक और आर्थिक सब तरह के झगड़े और सब तरह की समस्याएं एक दूसरे में गुथी हुई हैं. मालूम होता है हिन्दुस्तान के लिये ही यह बदा है कि वह इन सब समस्याओं के लिये या तो एक ऐसा हल निकाले जिस से यह सब हल हो जावें और या इस कोशिश में मिट जावे. आज दुनिया में जितने बड़े बड़े मज़हब ज़िन्दा हैं वह सब एशिया ही में ही पैदा हुए. पूरब और पच्छिम का, नए ज़माने और पुराने ज़माने का, एशिया एक ख़ास संगम है. सन 1930 और सन 1931 ईसवी के दिसम्बर-जनवरी में हिन्दुस्तान के अन्दर बनारस में पहली कुल एशियाई एजूकेशन कान्फ़रेन्स हुई थी. यह देश एशिया के ठीक बीचों बीच है. यह अपने एक हाथ से बौद्ध धर्म, शिन्तो धर्म, ताओ धर्म और कनफ़्यूशियस धर्म के मानने वाले बरमा, चीन और जापान को अपने साथ चिपटाए हुए है और दूसरे हाथ से इस्लाम धर्म के मानने वाले



کی راج نیتی اور ارتھ نیتی کے نام پر لڑائیاں اُس سمے کی مذھب کے نام پر لڑائیوں سے کہیں زیادہ خوفناک ھیں ۔ اِن لڑائی جھگڑوں کے اندر اندر ایک دوسرے سے نفرتوں کی جو آگ دھدھک رھی ھے وہ ویسی کی ویسی ہی ھے. آجکل کی اِن لڑائیوں میں ایک طرف حد درجے دھن کا لوبھ' دوسروں کو نیست نابود کر دینے کی تیاری اور جسمانی عیش کی وہ چاہ ھے جو دیش بھگتی اور قوم پرستی کا جامہ پہنے ھوئے ھے اور اپنے کو 'انڈیویجیولزم' یعنی ویکتی واد کہتی ھے ۔ اور دوسری طرف وہ سامیہ واد ( کمیونزم ) یا سماج واد ( سوشلزم ) ھے جو دنیا کے دھن دولت میں سب کے ساتھ ملکر برابر کا حصہ بٹانا چاھتا ھے ۔ اِس نگاہ سے اِس سامیہ واد یا سماج واد کی جڑیں سچ مچ روحانی اور دھارمک ھیں ۔ لیکن ابھی تک اُسے خود اپنے اِس روپ کا ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں ھے ۔ ابھی تک وہ اندھیرے میں ٹٹول رھا ھے' تجربے کر رھا ھے اور غلطیاں کر رھا ھے ۔ اِن غلطیوں کا کارن یہ ھے کہ ابھی تک اُس کی نگاھیں غلط طرف ھیں ۔ اُسے ابھی تک سچے اور ٹکاؤ سماج سنگٹھن کا بھید نہیں ملا ۔ وہ یہ نہیں سمجھا کہ راج نیتی ( پالٹکس ) کی جڑیں ارتھ نیتی ( ایکونومکس ) میں ھوتی ھیں' ارتھ نیتی کی جڑیں ھمارے گھریلو رھن سہن میں ھوتی ھیں' اِس گھریلو رھن سہن کی جڑیں ھمارے دل کے بھاؤں اور دماغ کے وچاروں اور آدرشوں میں ھوتی ھیں' اور اِن سب کی جڑیں درشن شاستر یعنی زندگی کے فلسفے میں ھوتی ھیں ۔ اور یہ درشن شاستر جب پکا اور پورا ھوتا ھے تو یہی روحانی مذھب یعنی اُس اننت جیون کی آدھیاتم ودیا ھوتا ھے جس کے اندر سب سائنسیں' سب ودیائیں اور سب ھنر سما جاتے ھیں ۔

لیکن ھندستان کے اندر مذھبی' اور غیر مذھبی دینی اور دنیاوی' سامپردائک' راج نیتک اور آرتھک سب طرح کے جھگڑے اور سب طرح کی سمسیائیں ایک دوسرے میں گتھی ھوئی ھیں. معلوم ھوتا ھے ھندستان کے لئے ہی یہ بدا ھے کہ وہ اِن سب سمسیاؤں کے لئے یا تو ایک ایسا حل نکالے جس سے یہ سب حل ھوجاویں اور یا اِس کوشش میں مٹ جاوے ۔ آج دنیا میں جتنے بڑے بڑے مذھب زندہ ھیں وہ سب ایشیا ھی میں پیدا ھوئے ۔ پورب اور پچھم کا' نئے زمانے اور پرانے زمانے کا' ایشیا ایک خاص سنگم ھے. سن 1930 اور سن 1931 عیسوی کے دسمبر جنوری میں ھندستان کے اندر بنارس میں پہلی کل ایشیائی ایجوکیشن کانفرنس ھوئی تھی ۔ یہ دیش ایشیا کے ٹھیک بیچوں بیچ ھے ۔ یہ اپنے ایک ھاتھ سے بودھ دھرم' شنتو دھرم' تاؤ دھرم اور کنفوشیس دھرم کے ماننے والے برما' چین اور جاپان کو اپنے ساتھ چپٹائے ھوئے ھے اور دوسرے ھاتھ سے اسلام دھرم کے ماننے والے

बनावट जरूरी हैं. रंज और ख़ुशी, नफ़रत और प्रेम, मग़रूर शैतान और रहमदिल ईश्वर का बेटा. इसी तरह पारसी धर्म में अहरमन और स्पीतम, देवता और दैत्य, सुर और असुर, पापात्मा और पुन्यात्मा, शैतान और फ़रिश्ते, जिन्दगी और मौत, अपना और पराया, यह सब दुनिया में लाज़िम मलज़ूम हैं. एक के साथ दूसरे का होना जरूरी है. इसी उसूल पर मजहब भी अपने ऊंचे मुक़ाम से नीचे गिरता है. असली और जरूरी बातों से हट कर वह बनावटी और ग़ैर जरूरी चीज़ों में फंस जाता है. यहां तक कि गन्दे अंधविश्वास और जालिमाना रीति रिवाज उसमें दाख़िल हो जाते हैं. लोगों के दिलों को मिलाने के बजाय वह उन्हें और फाड़ने लगता है. धरती पर अमन क़ायम करने और लोगों में एक दूसरे से प्रेम पैदा करने की जगह मजहब एक दूसरे को क़तल करने और तकलीफ़ पहुंचाने पर उतर आता है. कुछ दिनों तक यही होता रहता है. फिर हालत पलटती है. आदमी का दिल बदलता है. उसमें पछतावा जागता है. मजहब में सुधार होता है. रूह वही रहती है परऊपर का रूप या जिस्म बदल जाता है. इनसान फिर से पैदा होता है. वह ऊपर उठता है, आदम गुनाह करता है, असीरी यानी बन्धन में पड़ता है, अहंकार की बेड़ियां अपने ऊपर लेता है, ख़ुदी, ग़ुस्सा और शहवत के क़ाबू में आजाता है, और यह सब इसीलिये होता है कि अपनी इस छोटी ख़ुदी को मार कर वह फिर ऊपर उठे और निजात यानी मोक्ष हासिल करे. इसी को फ़ना फ़िल्लाह होजाना यानी ब्रह्म निर्वाण कहते हैं. तब रूह को वह रुतबा हासिल होता है, वह शान्ति प्राप्त होती है जो सुख और दुख, नफ़रत और प्रेम जैसी हर तरह की दुई से अलग और ऊपर है.

जहां तक हमें दुनिया का, ख़ास कर बीच के ज़माने का, इतिहास मालूम है वहां तक पूरब में और पच्छिम में दोनों जगह मजहब के नाम पर लड़ाई झगड़े होते रहे हैं. ईसाइयों और मुसलमानों के बीच सलीबी लड़ाइयों (क्रूसेड्स) के ज़माने में और उसके बाद और ख़ुद ईसाई धर्म के अन्दर अलग अलग सम्प्रदायों के बीच उन मजहबी कचहरियों ने, जो 'इनक्वीज़ीशन' कहलाती थीं, केवल धार्मिक मतभेद के कारण लाखों इनसानों को मौत के घाट उतार दिया या जिन्दा जला दिया. मजहब के नाम पर वह सब कारनामे याद करके आदमी कांप उठता है. यूरप में अब कुछ दिनों से कैथलिक, प्रोटेस्टेन्ट झगड़े नहीं हो रहे हैं. लेकिन यूरप अभी तक उन झगड़ों से पूरी तरह आजाद भी नहीं है. सन 1921 ई० में आजाद आयरिश हकूमत (आयरिश फ़्री स्टेट) के इंगलैन्ड से टूट कर अलग होजाने का कारण एक बड़े दरजे तक यही मजहबी फ़रक़ था. इंगलैन्ड प्रोटेस्टेन्ट है और आयरलैन्ड कैथलिक. सारे यूरप के अन्दर वह बुराई पहले धार्मिक या साम्प्रदायिक थी तो अब राजनैतिक और आर्थिक है, और आजकल



بناوٹ ضروری ہیں ۔ رنج اور خوشی، نفرت اور پریم، مغرور شیطان اور رحمدل ایشور کا بیٹا ۔ اِسی طرح پارسی دھرم میں اھرمن اور اسپیتم، دیوتا اور دیتیہ، سر اور اسر، پاپاتما اور پن آتما، شیطان اور فرشتے، زندگی اور موت، اپنا اور پرایا، یہ سب دنیا میں لازم ملزوم ہیں ۔ ایک کے ساتھ دوسرے کا ہونا ضروری ہے ۔ اِسی اصول پر مذہب بھی اپنے اونچے مقام سے نیچے گرتا ہے ۔ اصلی اور ضروری باتوں سے ہٹ کر وہ بناوٹی اور غیر ضروری چیزوں میں پھنس جاتا ہے ۔ یہاں تک کہ گندے اندھ وشواس اور ظالمانہ ریت رواج اُس میں داخل ہو جاتے ہیں ۔ لوگوں کے دلوں کو ملانے کے بجائے وہ اُنھیں اور پھاڑنے لگتا ہے ۔ دھرتی پر امن قائم کرنے اور لوگوں میں ایک دوسرے سے پریم پیدا کرنے کی جگہ مذہب ایک دوسرے کو قتل کرنے اور تکلیف پہونچانے پر اُتر آتا ہے ۔ کچھ دنوں تک یہی ہوتا رہتا ہے ۔ پھر حالت پلٹتی ہے ۔ آدمی کا دل بدلتا ہے ۔ اُس میں پچھتاوا جاگتا ہے ۔ مذہب میں سدھار ہوتا ہے ۔ روح وہی رہتی ہے پر اوپر کا روپ یا جسم بدل جاتا ہے ۔ اِنسان پھر سے پیدا ہوتا ہے وہ اوپر اُٹھتا ہے ۔ آدم گناہ کرتا ہے، اسیری یعنی بندھن میں پڑتا ہے، اَھنکار کی بیڑیاں اپنے اوپر لیتا ہے، خودی، غصہ اور شہوت کے قابو میں آ جاتا ہے اور یہ سب اِسی لئے ہوتا ہے کہ اپنی اِس چھوٹی خودی کو مار کر وہ پھر اوپر اُٹھے اور نجات یعنی موکش حاصل کرے ۔ اِسی کو فنافی اللہ ہو جانا یعنی برھمہ نروان کہتے ہیں ۔ تب روح کو وہ رتبہ حاصل ہوتا ہے، وہ شانتی پراپت ہوتی ہے جو سکھ اور دکھ، نفرت اور پریم جیسی ہر طرح کی دوئی سے الگ اور اوپر ہے ۔

جہاں تک ہمیں دنیا کا، خاص کر بیچ کے زمانے کا، اتہاس معلوم ہے وہاں تک پورب میں اور پچھم میں دونوں جگہ مذہب کے نام پر لڑائی جھگڑے ہوتے رہے ہیں ۔ عیسائیوں اور مسلمانوں کے بیچ صلیبی لڑائیوں ( کروسیڈس ) کے زمانے میں اور اُس کے بعد اور خود عیسائی دھرم کے اندر الگ الگ سمپردایوں کے بیچ اُن مذہبی کچہریوں نے، جو انکوئیزیشن کہلاتی تھیں ، کیول دھارمک مت بھید کے کارن لاکھوں اِنسانوں کو موت کے گھاٹ اُتار دیا یا زندہ جلا دیا ۔ مذہب کے نام پر وہ سب کارنامے یاد کر کے آدمی کانپ اُٹھتا ہے ۔ یورپ میں اب کچھ دنوں سے کیتھلک، پروٹسٹنٹ جھگڑے نہیں ہو رہے ہیں ۔ لیکن یورپ ابھی تک اُن جھگڑوں سے پوری طرح آزاد بھی نہیں ہے ۔ سن 1921 عیسوی میں آزاد آئرش حکومت ( آئرش فری اسٹیٹ) کے اِنگلینڈ سے ٹوٹ کر الگ ہو جانے کا کارن ایک بڑے درجے تک یہی مذہبی فرق تھا، اِنگلینڈ پروٹسٹنٹ ہے اور آئرلینڈ کیتھلک ۔ سارے یورپ کے اندر وہ برائی پہلے دھارمک یا سامپردائک تھی تو اب راجنیتک اور آرتھک ہے اور آجکل

ये दोनों जानवर उस स्थान के कुछ आदिम जातियों के कुल-देवता थे. लेकिन वे लोग जो वहां के ज़मींदार थे अपने को परम्परागत क्षत्रिय श्रेनी का कहते थे और उन्होंने नया "जाति" सूचक शब्द भी अपना लिया. ठीक इसी तरह बङ्गाल की पूर्वी पहाड़ियों में टिपरा और मनीपूर के राजवंश हैं, जो अपने को क्षत्रिय कहते हैं और आजकल राजपूतों से ही अपना नाता गोता रखते हैं. इसी सबब आज के हिन्दुस्तान में राजपूत और क्षत्रिय (बोलने में छत्री) एक ही माइनों में इस्तेमाल होते हैं.

یہ دونوں جانور اُس استھان کے کچھ آدم جاتیوں کے کل‌دیوتا تھے. لیکن وے لوگ جو وھاں کے زمیندار تھے اپنے کو پرمپراگت چھتریہ شرینی کا کہتے تھے اور انھوں نے نیا "جاتی" سوچک شبد بھی اپنا لیا. ٹھیک اِسی طرح بنگال کی پوروی پہاڑیوں میں ٹپرا اور منی‌پور کے راج ونش ھیں، جو اپنے کو چھتریہ کہتے ھیں اور آجکل راجپوتوں سے ھی اپنا ناتا گوتا رکھتے ھیں. اِسی سبب آج کے ھندستان میں راجپوت اور چھتریہ ( بولنے میں چھتری ) ایک ھی معنوں میں استعمال ھوتے ھیں.

---

# अमन और प्रेम का एक ही रास्ता

# امن اور پریم کا ایک ھی راستہ

डाक्टर भगवानदास

( ڈاکٹر بھگوان داس )

धर्म या मज़हब की एक ही ग़रज़ है और वह यह है कि लोगों के दिलों को एक दूसरे के साथ और अल्लाह के साथ मिलाया जावे. धर्म का कमाल यानी पूरापन इस बात के समझ लेने में है कि एक ही आत्मा सब के अन्दर है और वही अल्लाह है, और इसीलिये सब की सेवा ही अल्लाह की इबादत है.

इन्जील में लिखा है :—"पूरे दिल के साथ ईश्वर से प्रेम करो और अपनी ही तरह अपने पड़ोसी से प्रेम करो." इसमें यह शामिल है कि अपने अन्दर मौजूद आत्मा ही परम आत्मा यानी ईश्वर है.

पर यह सारी कायनात यानी सृष्टि दुई पर क़ायम है और दो-दो विरोधी चीजों से बनी है. वजूद की सुई बराबर दोनों तरफ़ के दो सिरों के बीच में चक्कर काटती रहती है. इसीलिये हमें अनेक में एक यानी कसरत में वहदत की झलक मिलती रहती है. इसी को 'वहदत दर ज़ात' यानी परम तत्व में एकता और 'कसरत दर सिफ़ात' यानी गुणों और धर्मों में अनेकता कहते हैं. हक़ीक़त एक है और उसके गुण यानी सिफ़ात अनगिनत हैं. ऊपरी धर्म बहुत से हैं, धर्मी एक है. अनेकता के अन्दर बिगाड़ का होना भी लाज़मी है. व्यापकता और हक़ीक़त को चमकाने के लिये ख़ुदी और

دھرم یا مذھب کی ایک ھی غرض ھے اور وہ یہ ھے کہ لوگوں کے دلوں کو ایک دوسرے کے ساتھ اور اللہ کے ساتھ ملایا جاوے. دھرم کا کمال یعنی پوراپن اِس بات کے سمجھ لینے میں ھے کہ ایک ھی آتما سب کے اندر ھے اور وھی اللہ ھے، اور اِسی لئے سب کی سیوا ھی اللہ کی عبادت ھے.

اِنجیل میں لکھا ھے :—"پورے دل کے ساتھ ایشور سے پریم کرو اور اپنی ھی طرح اپنے پڑوسی سے پریم کرو." اِس میں یہ شامل ھے کہ اپنے اندر موجود آتما ھی پرم آتما یعنی ایشور ھے.

پر یہ ساری کائنات یعنی سرشٹی دوئی پر قائم ھے اور دو دو ورودھی چیزوں سے بنی ھے. وجود کی سوئی برابر دونوں طرف کے دو سروں کے بیچ میں چکر کاٹتی رھتی ھے. اِسی لئے ھمیں انیک میں ایک یعنی کثرت میں وحدت کی جھلک ملتی رھتی ھے. اِسی کو 'وحدت در ذات' یعنی پرم تتو میں ایکتا اور 'کثرت در صفات' یعنی گنوں اور دھرموں میں انیکتا کہتے ھیں. حقیقت ایک ھے اور اُس کے گن یعنی صفات اَنگنت ھیں. اُوپری دھرم بہت سے ھیں، دھرمی ایک ھے. انیکتا کے اندر بگاڑ کا ھونا بھی لازمی ھے. ویاپکتا اور حقیقت کو چمکانے کے لئے خودی اور

ब्राह्मणों ने ब्राह्मन्यवाद के नाम पर तमाम लड़ाकू जातियों को एक नये क्षत्रिय वर्ण में शामिल करने के लिये शुद्धि आन्दोलन चलाया, क्योंकि उन्हें अपने काम के लिये मददगारों की जरूरत थी. इसलिये जब तक ब्राह्मणवादी धर्म का बोलबाला रहा, जितने भी विदेशी या आदिम निवासी थे सभी क्षत्री वर्ण में शामिल कर लिये गये और उनके लिये नई नई वंशावलियां बना ली गईं. इस तरह उन नये क्षत्रियों ने अपनी जाति को पश्चिमी और मध्य भारत की सरहदों तक महदूद रखा. श्री वैद्य ने खुद इस बात को माना है कि पंजाब राजपूत क़बीलों की फ़ेहरिस्त से अलग था, क्योंकि इस पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो चुका था, या ऐसा भी हो सकता है कि उस समय बौद्ध राजे उस सूबे में राज कर रहे थे. वहां कोई न कोई ऐसी अड़चन जरूर रही होगी, जिससे पंजाब के नये क्षत्रिय इस संगठन आन्दोलन में शामिल न हो सके. पूरब में मगध और बंगाल में बौद्ध पालों का उस समय राज था,❁ इसलिये यह आन्दोलन उन प्रदेशों में न घुस सका. दक्षिण में राजू और बल्लाल पहिले से ही उस पद तक पहुंच चुके थे. इस प्रकार इस क्षेत्र में रहने वाली लड़ाकू लोगों की शासक श्रेणी क्षत्रिय बन गई और उन्हें "राजपूत" का नया नाम मिला. इसी कारन गुर्जर, जाट और अहीर जनता, जो कि शासक श्रेनी में नहीं थी, क्षत्रिय वर्न में शामिल न हो सकी, हालांकि इनसानी नस्ल के जानकार आलिम इनमें और राजपूतों में बहुत नजदीकीपन पाते हैं.

जब राजपूत नाम बाइज्ज़त हो गया और राजपूतों की बहादुरी के सबब उस नाम में बड़प्पन और इज्ज़त होने लगी तो दूसरे लोगों ने भी, जो धीरे-धीरे क्षत्रिय वर्न में शामिल होना चाहते थे, अपने नाम के आगे राजपूत लफ़्ज़ जोड़ लिया. इस प्रकार छोटा नागपूर में हम नाग-वंशी और गो-वंशी राजपूतों को पाते हैं. ये लोग अपने को सांप (नाग) और गाय ( गो )* के वंश का कहते हैं. यह साफ़ है कि



براھمنوں نے براھمن واد کے نام پر تمام لڑاکو جاتیوں کو ایک نئے چھتریہ ورن میں شامل کرنے کے لئے شدھی آندولن چلایا' کیونکہ اُنھیں اپنے کام کے لئے مددگاروں کی ضرورت تھی . اِس لئے جب تک براھمن وادی دھرم کا بول بالا رہا' جتنے بھی ودیشی یا آدم نواسی تھے سبھی چھتری ورن میں شامل کر لئے گئے اور اِن کے لئے نئی نئی ونشاولیاں بنا لی گئیں . اس طرح اُن نئے چھتریوں نے اپنی جاتی کو پچھمی اور مدھیہ بھارت کی سرحدوں تک محدود رکھا . شری ویدیہ نے خود اس بات کو مانا ھے کہ پنجاب راجپوت قبیلوں کی فہرست سے الگ تھا' کیونکہ اِس پر مسلمانوں کا قبضہ ھو چکا تھا' یا ایسا بھی ھو سکتا ھے کہ اُس سمے بودھ راجے اس صوبے میں راج کر رھے تھے . وھاں کوئی نہ کوئی ایسی اڑچن ضرور رھی ھوگی جس سے پنجاب کے نئے چھتری اِس سنگٹھن آندولن میں شامل نہ ھو سکے . پورب میں مگدھ اور بنگال میں بودھ پالوں کا اُس سمے راج تھا.❁ اِس لئے یہ آندولن اُن پردیشوں میں نہ گھس سکا . دکھن میں راجو اور بلال پہلے سے ھی اِس پد پر پہونچ چکے تھے . اِس پرکار اِس چھیتر میں رھنے والی لڑاکو لوگوں کی شاسک شرینی چھتری بن گئی اور اِنھیں " راجپوت " کا نیا نام ملا . اِسی کارن گرجر' جاٹ اور اھیر جنتا' جو کہ شاسک شرینی میں نہیں تھی' چھتریہ ورن میں شامل نہ ھوسکی' حالانکہ انسانی نسل کے جانکار عالم اِن میں اور راجپوتوں میں بہت نزدیکی پن پاتے ھیں .

جب راجپوت نام باعزت ھوگیا اور راجپوتوں کی بہادری کے سبب اُس نام میں بڑپن اور عزت ھونے لگی تو دوسرے لوگوں نے بھی' جو دھیرے دھیرے چھتری ورن میں شامل ھونا چاھتے تھے' اپنے نام کے آگے راجپوت لفظ جوڑ لیا . اس پرکار چھوٹا ناگپور میں ھم ناگ ونشی اور گوونشی راجپوتوں کو پاتے ھیں . یہ لوگ اپنے کو سانپ ( ناگ ) گائے ( گئو ) * کے ونش کا کہتے ھیں . یہ صاف ھے کہ

❁—पञ्जाब के मैदानों के राजपूतों के जाति नाम, जो ज्यादातर मुसलमान हो गये हैं, वही हैं जो कि राजपूताना और गंगा के द्वाबे के राजपूतों के हैं. इसका मतलब यह हुआ कि इन जगहों से लोग पञ्जाब में चले आये थे. इस सूबे की पूरबी पहाड़ियों के राजपूत राजपूताना के राजपूतों से नीची श्रेनी के समझे जाते हैं. यानी वे दूसरी जाति के हैं. उनकी जाति का ठीक ठीक पता अभी तक नहीं चला है, क्योंकि अभी तक उनकी खोज नहीं हो पायी है. इबेटसन कहता है कि इस स्थान का राजपूत शब्द पेशे का सूचक है (P. 362 ).

❁ پنجاب کے میدانوں کے راجپوتوں کے جاتی نام' جو زیادہ تر مسلمان ھو گئے ھیں' وھی ھیں جو کہ راجپوتانہ اور گنگا کے دوآبے کے راجپوتوں کے ھیں . اِسکا مطلب یہ ھوا کہ اِن جگہوں سے لوگ پنجاب میں چلے آئے تھے . اِس صوبے کی پوربی پہاڑیوں کے راجپوت راجپوتانہ راجپوتوں سے نیچے شرینی کے سمجھے جاتے ھیں . یعنی وے دوسری جاتی کے ھیں . ان کی جاتی کا ٹھیک ٹھیک پتہ ابھی تک نہیں چلا ھے' کیونکہ ابھی تک اُن کا کھوج نہیں ھو پایا ھے . ابیٹسن کہتا ھے کہ اِس استھان کا راجپوت شبد پیشے کا سوچک ھے ( P. 36 ).

*—Risley—Tribes and castes of Bengal—Ethnographic glossary, Vol I. PP. 184—8.

हूण हिन्दुस्तान में बसे, वे पूरी तरह से हिन्दुस्तानी हो गये. क्षत्रिय राजाओं से उन लोगों के विवाहों से यह बात साफ़ हो जाती है कि उनके भी शासक क्षत्रिय राजाओं के बराबरी के हुआ करते थे. इसलिये अगर वे ब्राह्मणों द्वारा संपादित धार्मिक शुद्धि-क्रिया के बाद क्षत्रिय वर्ण की हैसियत से हिन्दुओं में शामिल कर लिये गये, तो हमें ताज्जुब नहीं होना चाहिये.

इन तमाम बातों पर विचार कर लेने के बाद, यह कहा जा सकता है कि ऐसा हो सकता है कि शक, हूण और दूसरे विदेशी जो कि हिन्दुस्तान में बस गये, वे हिन्दू व्यवस्था के भीतर शामिल कर लिये गये और जिस जिस वर्ण में गये उसी में विभिन्न टुकड़ियों की हैसियत से समा गये.† ब्राह्मण धर्माचार्यों ने उसूली नुक़्ते नज़र से उन्हें शूद्र की श्रेणी में रखा था,s लेकिन हम तो उन्हें ब्राह्मण और क्षत्रिय राजाओं के यहां शादी करते हुए पाते हैं! इस प्रकार कट्टरपन्थी ब्राह्मणों द्वारा बनाये हुए काग़ज़ी धार्मिक नियमों और जीवन के व्यवहार में हम अन्तर पाते हैं.

इन बातों को देखकर यह मुमकिन मालूम पड़ता है कि

ھن ھندستان میں بسے' وے پوری طرح سے ھندستانی ھوگئے. چھتریہ راجاؤں سے اُن لوگوں کے وواھوں سے یہ بات صاف ھو جاتی ھے کہ اِن کے بھی شاسک چھتریہ راجاؤں کے برابری کے ھوا کرتے تھے. اِس لئے اگر وے براھمنوں دوارا سمپادت دھارمک شدھ کریا کے بعد چھتریہ ورن کی حیثیت سے ھندؤں میں شامل کر لئے گئے' تو ھمیں تعجب نہیں ھونا چاھئیے.

اِن تمام باتوں پر وچار کر لینے کے بعد' یہ کہا جاسکتا ھے کہ ایسا ھوسکتا ھے کہ شک' ھن اور دوسرے ودیشی جو کہ ھندستان میں بس گئے' وے ھندو ویوستھا کے بھیتر شامل کر لئے گئے اور جس جس ورن میں گئے اِسی میں وبھن ٹکڑیوں کی حیثیت سے سما گئے.† براھمن دھرما چاریوں نے اصولی نقطہ نظر سے انھیں شودر کی شرینی میں رکھا تھا'S لیکن ھم تو اُنھیں براھمن اور چھتریہ راجاؤں کے یہاں شادی کرتے ھوئے پاتے ھیں! اِس پرکار کٹر پنتھی دوارا بنائے ھوئے کاغذی دھارمک نیموں اور جیون کے وبوھار میں ھم انتر پاتے ھیں.

اِن باتوں کو دیکھ کر یہ ممکن معلوم پڑتا ھے کہ

†—विष्णु पुराण में [4।3।1—21] उन विदेशियों की चर्चा है जो अयोध्या में बस गये और क्षत्रिय बन गये और जिन्होंने ब्राह्मणों से ब्राह्मन्यवादी पूजा विधियां संपादित करवाईं. (Bd iii, 48, 29-47, J. R. A. S. 1919 pp. 358—6) बाद में सगर ने, तालजंघ हैहयों को हराया और अयोध्या को फिर से जीता (Bd. iii, 48-49,10) उन्होंने विदेशी क़बीलों को ख़त्म करने का पक्का इरादा कर लिया लेकिन इनकी प्रार्थना पर वशिष्ठ मध्यस्थ बने और सगर ने उनकी जान बख़्श दी. लेकिन सगर ने धार्मिक और राजनीतिक नज़र से उन्हें नीचे गिराया." (Pargiter, pp. 269-270)

† وشنو پران میں [21—18-3-4] اُن ودیشیوں کی چرچا ھے جو ایودھیا میں بس گئے اور چھیتریہ بن گئے اور جنھوں نے براھمنوں سے براھمنیہ وادی پوجا ودھیاں سمپادت کروائیں. (Bd iii, 48, 29-47, J. R. A .S. 919 pp. 358—6) بعد میں سگر نے' تال جنگھ ھیھیوں کو ھرایا اور ایودھیا کو پھر سے جیتا (Bd. iii, 48, 49, 10) اُنھوں نے ودیشی قبیلوں کو ختم کرنے کا پکا اِرادہ کر لیا. لیکن اِن کی پرارتھنا پر وششٹھ مدھیستھ بنے اور سگر نے اُن کی جان بخش دی. لیکن سگر نے دھارمک اور راجنیتک نظر سے اُنھیں نیچے گرایا." (Pargiter, pp 269-270)

श्रीजायसवाल ने भी बनारस के सिदियन क्षत्रप बनसफर के उन वंशजों की चर्चा की है, जो बुन्देलखन्ड में रहते थे. वे कहते हैं, "उनको नीच कुल का समझा जाता था. वे राजपूत घरानों में मुश्किल से शादी कर पाते थे और आज भी वे नीची श्रेणी के समझे जाते हैं. उन्हीं के नाम से बुन्देलखन्ड में बनाफरी बोली बोली जाती है. "History of India" in J. B. O R. S. Vol. XIX मध्य भारत में एक राजपूत जाति बनफोड़ है, जो लेखक की खोजों के अनुसार राजपूतों से अन्तर-विवाह मुश्किल से कर पाते थे. महोबा के मध्यकालीन राजपूत वीर—आल्हा और ऊदल बनाफर राजपूत थे लेकिन उनका नीचा स्थान किन्हीं और वजहों से है.

شری جیسوال نے بھی بنارس کے سیدین چھترپ بنسپھر کے اُن ونشجوں کی چرچا کی ھے' جو بندیلکھنڈ میں رھتے تھے. وے کہتے ھیں' "اُن کو نیچ کل کا سمجھا جاتا تھا. وے راجپوت گھرانوں میں مشکل سے شادی کر پاتے تھے اور آج بھی وے نیچے شرینی کے سمجھے جاتے ھیں. اُنھیں کے نام سے بندیلکھنڈ میں بناپھری بولی جاتی ھے. "History of India" in J. B. O. R. S. Vol. XIX مدھیہ بھارت میں ایک راجپوت جاتی بن پھوڑ ھے' جو لیکھک کی کھوجوں کے انوسار راجپوتوں سے انتر وواہ مشکل سے کر پاتے تھے. مہوبا کے مدھیہ کالین راجپوت ویر—آلھا اور اُودل بناپھر راجپوت تھے. لیکن اُن کا نیچا استھان کنھیں اور وجھوں سے ھے.

s—Vide Manu X—43-44, Patanjali 2. 4. 10.

पुराने क्षत्रियों से बिलकुल अलग कर देता है.* तमाशा यह है कि ये तमाम नये क्षत्रिय अपने नाम के आगे सिंह (बोलने में सिंघ) शब्द को जोड़ते हैं. इसलिये क्षत्रप रुद्र सिंह और उनके सजातीय लोगों के राजपूत सिंहों के पूर्वज होने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है.

अब हम कुछ राजपूतों के "हूण" संसर्ग के सवाल पर विचार करेंगे. जैसा कि पहिले कहा जा चुका है टाड ने ही पहिले यह बताया कि राजपूतों में "हूण" नाम का एक क़बीला है. लेकिन श्री वैद्य इस बात को यह कह कर काट देते हैं कि राजपूत क़बीलों की सूची में "हूण" नहीं "हूल" है.❀ आगे वे कहते हैं, मुसलमानों के विरुद्ध हूणों और हूलों का नाम आता है (देखो Tod's Rajasthan by Crooke, Vol. 1, P. 290) हूल हूण से अलग क्षत्रियों में एक क़बीला था.ऽ आगे फिर वे कहते हैं, "कुमार पाल चरित में (इसकी रचना चन्द्र गहरवाला ने 1080-1130 ईसवी में की थी) क्षत्रियों के कुछ राजकुलों की सूची में हूण भी है.† रासो की सूची में इसे हूल कहा गया है."‡ आगे चलकर वे कहते हैं, "लेखों से क्षत्रिय राजाओं का हूण राजकुमारियों से ब्याह होने का पता चलता है.☩ ग्यारहवीं सदी में कलचुरियों के शासक कर्णदेव ने हूण राजकुमारी अवल्ला देवी से शादी की (विक्रम देव चरित).

इस तरह सन् 530 ईसवी में पश्चिमी भारत से यशोधर्मन द्वारा मिहिरकुल के हरा दिये जाने और निकाल दिये जाने के बाद भी हूणों की मौजूदगी का पता चलता है. 9-10 सदियों में हम बंगाल के पाल राजाओं के भाड़े के सिपाहियों के रूप में हूणों का नाम पाते हैं.*

ऐसा लगता है कि वे हिन्दुस्तान भर में घूमते रहते थे और विभिन्न राजाओं के यहां फ़ौजों में काम किया करते थे. इन रचनाओं में यह बात तो मान ही ली गई है कि जो

پرانے چھتریوں سے بالکل الگ کر دیتا ھے.* تماشہ یہ ھے کہ یہ تمام نئے چھتریہ اپنے نام کے آگے سنہ (بولنے میں سنگھ) شبد کو جوڑتے ھیں. اس لئے چھترپ رودر سنگھ اور اُن کے سجاتیہ لوگوں کے راجپوت سنگھوں کے پوروج ھونے میں کوئی آشچریہ کی بات نہیں ھے.

اب ھم کچھ راجپوتوں کے "ھن" سنسرگ کے سوال پر وچار کریں گے. جیسا کہ پہلے کہا جا چکا ھے ٹاڈ نے ھی پہلے یہ بتایا کہ راجپوتوں میں "ھن" نام کا ایک قبیلہ ھے. لیکن شری ویدیہ اس بات کو یہ کہکر کاٹ دیتے ھیں کہ راجپوت قبیلے کی سوچی میں "ھن" نہیں "ھول" ھے. ❀ آگے وے کہتے ھیں' مسلمانوں کے وِرودھ ھنوں اور ھولوں کا نام آتا ھے. (دیکھو Tod's Rajasthan by Crooke, Vol. 1, P.290) ھول ھن سے الگ چھتریوں میں ایک قبیلہ تھا. ऽ آگے پھر وے کہتے ھیں' "کمار پال چرت میں (اِس کی رچنا چندر گھر والا نے 1008-1130 عیسوی میں کی تھی) چھتریوں کے کچھ راج کلوں کی سوچی میں ھن بھی ھیں.† راسو کی سوچی میں اِسے ھول کہا گیا ھے." ‡ آگے چل کر وے کہتے ھیں' "لیکھوں سے چھتریہ راجاؤں کا ھن راجکماریوں سے بیاہ ھونے کا پتہ چلتا ھے. ☩ گیارھویں صدی میں کل چریوں کے شاسک کرن دیو نے ھن راج کماری اولا دیوی سے شادی کی (وکرم دیو چرت).

اِس طرح سن 530 عیسوی میں پچھمی بھارت سے یشو دھرمن دوارا مہرکل کے ھرا دیئے جانے اور نکال دیئے جانے کے بعد بھی ھنوں کی موجودگی کا پتہ چلتا ھے. 9-10 صدیوں میں ھم بنگال کے پال راجاؤں کے بھاڑے کے سپاھیوں کے روپ میں ھن کا نام پاتے ھیں.*

ایسا لگتا ھے کہ وے ھندستان بھر میں گھومتے رھتے تھے اور وبھن راجاؤں کے یہاں فوجوں میں کام کیا کرتے تھے. اِن رچناؤں میں یہ بات تو مان ھی لی گئی ھے کہ جو

---

*—उत्तर बंगाल के कोंच क़बीले ने हिन्दू होने के बाद राजवंशी-शासक कुलों से सम्बन्धित नाम धारण कर लिया. आजकल वे अपने को क्षत्रिय कहते हैं. राजन्य शब्द प्राचीन और राजपूत वर्तमान इतिहास के शब्द हैं. इसलिये उन्हें नये शब्द की जरूरत थी. सच तो यह है कि इस नये नाम का वही अर्थ है जो कि दूसरे शब्दों का है.

* اُتر بنگال کے کونچ قبیلے نے ھندو ھونے کے بعد راج ونشی شاسک کلوں سے سمبندھت نام دھارن کر لیا. آجکل وے اپنے کو چھتریہ کہتے ھیں. راجنیہ شبد پراچین اور راجپوت ورتمان اِتہاس کے شبد ھیں. اِس لئے اُنھیں نئے شبد کی ضرورت تھی. سچ تو یہ کہ اِس نئے نام کا وھی ارتھ ھے جو کہ دوسرے شبدوں کا ھے.

❀—Vaidya, Vol. IV, 23-26.

ऽ—Ibid.

†—मल्लिनाथ, कालिदास के रघुवंशम् की टीका के चौदहवें अध्याय में इन्हें क्षत्रिय बताते हैं.

† ملی ناتھ' کالی داس کے رگھوونشم کی ٹیکا کے چودھویں ادھیائے میں اِنھیں چھتریہ بتاتے ھیں.

‡—Vaidya, Vol. 111, P. 37.

☩—Ibid Vol. 11, P. 26.

*—Vide Pala inscriptions published in Epigraphica Indica.

हमेशा कहता है कि वर्ण गुणों के अनुसार बनते हैं (गीता). वर्ण की बुनियाद कर्म है, इसलिये हिन्दू समाज में ऐसी कोई चीज़ नहीं है. जिससे कि परम्परागत वर्णों में एक नया दल समाज के लिये किये हुये कर्म के आधार पर तैयार किया जाये.

अब हम राजपूतों के विदेशी होने के सवाल पर आते हैं. हमने कहा है कि मानवतत्व वेत्ता यह नहीं मानते कि राजपूतों का निकास सिदियनों से हुआ. लेकिन हम यह देखते हैं कि ब्राह्मनों ने पश्चिमी भारत में दूसरी जातियों के लोगों को क्षत्री बनाया था और इन क्षत्रियों के खानदानी पार्थियन या शक हिन्दू नाम के थे.‡ इस कुल के आख़री लोग रुद्र सिंह तीसरे थे. खन्डहरों की खोजों से पता चलता है कि शकों और बहुत से यवनों ने ब्राह्मन्यवाद स्वीकार कर लिया था.* यह साफ़ है कि शक क्षत्रियों ने ब्राह्मन्यवाद स्वीकार कर लिया क्योंकि ब्राह्मण राजा पुलमई ने चस्तन के पोते क्षत्रप रुद्र दामां की लड़की से शादी की.† इतिहास बताता है कि चन्द्रगुप्त दूसरे ने 388 ईसवी में इस शाही खानदान को खत्म किया. लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि दो सौ बरसों से जितने भी शक इस साम्राज्य में रहते थे सभी खत्म कर दिये गये. इतिहास भी इसकी गवाही नहीं देता. रुद्र सिंह तीसरे तो जरूर खत्म कर दिये गये, लेकिन बहुत से पुराने बसने वालों के सिंह नामधारी ब्राह्मण वंशज रह गये थे. उसी शक साम्राज्य की सीमा के ठीक भीतर वह यज्ञ हुआ था. फिर बाद में हम देखते हैं कि गुर्जर प्रतिहारों ने भी अपनी राजधानी उसी खित्ते में बनाई. तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी कि ब्राह्मणों ने, जैनों और बौद्धों के ख़िलाफ़ अपने लिये लड़ने वालों को कट्टर हिन्दू व्यवस्था के दूसरे वर्ण में पहुंचाने के लिये एक आधार के रूप में मजहबी इजाजत दे दी ! इसलिये यह कोई नामुमकिन बात नहीं है कि बहुत से शक और गुर्जर क़बीले की शासक श्रेणी के लोग क्षत्रिय बन गये और उन्हें "राजपूत" की नई उपाधि मिली. यह नया नाम उन्हें



کہتا ھے کہ ورن گنوں کے انوسار بنتے ھیں ( گیتا ) . ورن کی بنیاد کرم ھے' اس لئےھندو سماج میں ایسی کوئی چیز نہیں ھے' جس سے کہ پرمپراگت ورنوں میں ایک نیا دل سماج کے لئے کئے ھوئے کرم کے آدھار پر تیار کیا جائے .

اب ھم راجپوتوں کے ودیشی ھونے کے سوال پر آتے ھیں . ھم نے کہا ھے کہ مانو تتو ویتا یہ نہیں مانتے کہ راجپوتوں کا نکاس سدینوں سے ھوا. لیکن ھم یہ دیکھتے ھیں کہ براھمنوں نے پچھمی بھارت میں دوسری جاتیوں کے لوگوں کو چھتری بنایا تھا اور ان چھتریوں کے خاندانی پارتھین یا شک ھندو نام کے تھے .‡ اِس کل کے آخری لوگ رودر سنگھ تیسرے تھے . کھنڈروں کی کھوجوں سے پتہ چلتا ھے کہ شکوں اور بہت سے یونوں نے براھمن‌واد سویکار کر لیا تھا .* یہ صاف ھے کہ شک چھیتریوں نے براھمن‌واد سویکار کر لیا کیونکہ براھمن راجا پل‌مئی نے چستن کے پوتے چھترپ رودر داماں کی لڑکی سے شادی کی .† اتہاس بتاتا ھے کہ چندرگپت دوسرے نے 388 عیسوی میں اِس شاھی خاندان کو ختم کیا . لیکن اِس کا ارتھ یہ نہیں کہ دو سو برسوں سے جتنے بھی شک اِس سامراجیہ میں رھتے تھے سبھی ختم کر دئیے گئے . اتہاس بھی اِس کی گواھی نہیں دیتا. رودر سنگھ تیسرے تو ضرور ختم کر دیئے گئے' لیکن بہت سے پرانے بسنے والوں کے سنگھ نام دھاری براھمن ونشج رہ گئے تھے . اُسی شک سامراجیہ کی سیما کے ٹھیک بھیتر وہ یگیہ ھوا تھا . پھر بعد میں ھم دیکھتے ھیں کہ گرجر پرتی‌ھاروں نے بھی اپنی راجدھانی اُسی خطے میں بنائی . تو یہ کوئی اشچریہ کی بات نہیں ھوگی کہ براھمنوں نے' جینوں اور بودھوں کے خلاف اپنے لئے لڑنے والوں کو' کٹر ھندو ویوستھا کے دوسرے ورن میں پہونچانے کے لئے ایک ادھار کے روپ میں مذھبی اجازت دے دی ! اس لئے یہ کوئی ناممکن بات نہیں ھے کہ بہت سے شک اور گرجر قبیلے کی شاسک شرینی کے لوگ چھتریہ بن گئے اور انھیں "راجپوت" کی نئی اُپادھی ملی. یہ نیا نام اُنھیں

---

‡—H. C. Rai Chaudhari: Political History of ancient India. pp. 339, 388-389.

*—देखिये—हेलेनिस्टिक राज्य के हेलेनिस्टिक राजदूत-जिसने कि अपना नाम "परम भागवत हेलियोदोरा" रखा था—का बनाया गोरारा स्तम्भ

( دیکھئے—ھیلینسٹک راجیہ کے ھیلینسٹک راجیہ دوت جس نے کہ اپنا نام "پرم بھاگوت ھیلودورا" رکھا تھا—کا بنایا گورورا استمبھ )

Vincent Smith, Early History of India;—also vide Ep. Indica Vol. VIII The Inscriptions in the Caves of Nasik' No 10 15. 18.

†—H. C. Rai Chaudhari ap, cit, pp. 339, 383-389.

है. B जो इस धरा धाम पर उस समय अवतरित हुआ जब सूर्य कुल लुप्त हो गया. C कहा जाता है कि परमार वशिष्ठ मुनि के क्रोध से पैदा हुये. D चहुमान या चौहान राजा सामन्त 'बिज्योलिया' के अभिलेख में वत्स गोत्र के विप्र अथवा ब्राह्मण कहे गये हैं. E आबू पहाड़ के लूंगित देव अभिलेख में यह कहा गया है कि सूर्य कुल और चन्द्र कुल खत्म हो जाने पर वत्स ऋषि ने एक फ़ौजी जाति का निर्माण किया—यह था चहुमान कुल ! F इन लेखों से यह साफ़ मालूम होता है कि प्राचीन क्षत्रिय वर्ण के अन्दर मध्य युग में नई भर्ती हुई है. इस तरह यह साफ़ है कि पुराने ज़माने में एक 'संगठन' और शुद्धि आन्दोलन ज़रूर हुआ, जिससे क्षत्रिय राजाओं की एक नई धारा निकली, जिन्हें राजपूत कहते हैं. फिर इब्बेट्सन, फुलकियन स्टेट्स गजे़टियर (Phulkian States Gazetteer) से एक उद्धरण देते हैं, जिसमें कहा गया है कि "चन्द्रवंश की मुख्तलिफ़ शाखायें—बद गूजर (बड़ गूजर), कछवाहे, शेखावट, खांप* एक ही जगह से निकले हैं. फिर उन्हीं महाशय ने मि० विलसन का हवाला दिया है, जो कहते हैं कि राजपूतों की गूजर, बड़ गूजर जाति अक्सर साथ ही पाई जाती है, इससे यह मालूम पड़ता है कि बड़ गूजरों का सम्बन्ध गूजरों से वही है, जो खानजादों का मेयों से है, और जो ज्यादातर राजपूतों का जाटों से है."‡ यानी शासक श्रेणी में पहुंच जाने के कारण ये आम जनता से अलग हो गये और उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं मानते. और भी, पंजाब में नाभा में, विभिन्न गूजर जातियां अपने को अस्पष्ट तौर से राजपूत कुल का कहती हैं.§

इस प्रकार मुख्तलिफ़ जांच पड़ताल करने वाले इसी नतीजे पर पहुंचते हैं कि गुर्जरों (आजकल के गूजर) और मुख्तलिफ़ राजपूत जातियों में नसली ताल्लुक़ है. इसलिये ब्राह्मणों द्वारा यज्ञ के ज़रिये शुद्धि और शुद्ध वर्गों का परम्परागत क्षत्रिय वर्ण में शामिल होना मनगढ़न्त कहानी नहीं है, खास तौर से जब हम यह देखते हैं कि हिन्दू समाज आज के हिन्दुस्तान में विभिन्न स्थानों पर वही काम कर रहा है.❀ हिन्दू धर्म



ھے .B جو اس دھرا دھام پر اُس سمے اوترت ھوا جب سوریہ کل لپت ھو گیا . C کہا جاتا ھے کہ پرمار وشِشٹھ منی کے کرودھ سے پیدا ھوئے . D چہومان یا چوھان راجہ سامنت 'بجولیا' کے ابھیلیکھ میں وتس گوتر کے وپر اتھوا براھمن کہے گئے ھیں . E آبو پہاڑ کے لونگت دیو کے ابھیلیکھ میں یہ کہا گیا ھے کہ سوریہ کل اور چندر کل نشٹ ھوجانے پر وتس رشی نے ایک فوجی جاتی کا نرمان کیا—یہ تھا چوھمان کل ! F اِن لیکھوں سے یہ صاف معلوم ھوتا ھے کہ پراچین چھتری ورن کے اندر مدھیہ یگ میں نئی بھرتی ھوئی ھے . اِس طرح یہ صاف ھے کہ پرانے زمانے میں ایک ' سنگٹھن ' اور شدھی آندولن ضرور ھوا جس سے چھتریہ راجاؤں کی ایک نئی دھارا نکلی' جنھیں راجپوت کہتے ھیں . ایبٹسن' پلکین اسٹیٹس گزٹیر ( Pulkian States Gazetteer ) سے ایک ادھرن دیتے ھیں' جس میں کہا گیا ھے کہ " چندر ونش کی مختلف شاکھائیں—بد گوجر (بڑ گوجر)' کچھواھے' شیکھاوت' کھانپ* ایک ھی جگہ سے نکلے ھیں. پھر اُنھیں مہاشے نے مسٹر ولسن کا حوالہ دیا ھے' جو کہتے ھیں کہ راجپوتوں کی گوجر' بڑگوجر جاتی اکثر ساتھ ھی پائی جاتی ھے' اِس سے یہ معلوم پڑتا ھے کہ بڑگوجروں کا سمبندھ گوجروں سے وھی ھے' جو خانزادوں کا میوں سے ھے' اور جو زیادہ تر راجپوتوں کا جاٹوں سے ھے ."‡ یعنی شاسک شرینی میں پہونچ جانے کے کارن یہ عام جنتا سے الگ ھوگئے اور اُن سے کسی پرکار کا سمبندھ نہیں مانتے . اور بھی' پنجاب میں نابھا میں' وبھن گوجر جاتیاں اپنے کو اسپشٹ طور سے راجپوت کل کا کہتی ھیں .§

اِس پرکار مختلف جانچ پڑتال کرنے والے اِسی نتیجے پر پہونچتے ھیں کہ گرجروں (آجکل کے گوجر) اور مختلف راجپوت جاتیوں میں' نسلی تعلق ھے . اِس لئے براھمنوں دوارا یگیہ کے ذریعے شدھی اور شدھ ورگوں کا پرمپراگت چھتریہ ورن میں شامل ھونا من گڑھنت کہانی نہیں ھے' خاص طور سے جب ھم یہ دیکھتے ھیں کہ ھندو سماج آج کے ھندستان میں وبھن استھانوں پر وھی کام کر رھا ھے .❀ ھندو دھرم ھمیشہ

B—Ep. Ind. Vol. XII PP. 10 FF.
C—Indian antiquary Vol. XVIV P. 11.
D—Ep. Ind. Vol. IX, No. 2 P. 11.
E—I. R. A. S. B. Vol. Lv Pt i 1, P. 4 .
F—Ep. Ind. Vol IX No. 44-D-p.F.

*—"पञ्जाब और सीमा प्रांत की जातियों और क़बीलों का कोश." परलोकवासी सर डी० इबेटसन के पञ्जाब की मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट के आधार पर.

* " پنجاب اور سیما پرانت کی جاتیوں اور قبیلوں کا کوش ." پرلوک واسی سر ڈی . ایبٹسن کے پنجاب کی مردم شماری کی رپورٹ کے آدھار پر .

‡—Ibid. PP. 310, 312. §—Ibid.

❀—यहां हमें बौद्धदार्शनिक आर्यदेव की बात याद आ जाती है कि ब्राह्मण तो किसी को भी क्षत्रिय में बदल देते हैं.

❀ یہاں ھمیں بودھ دارشنک آریہ دیو کی بات یاد آجاتی کہ براھمن تو کسی کو بھی چھتریہ میں بدل دیتے ھیں .

जबकि उत्तरी भारत ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों में चला गया और राजपूतों ने भी उसकी प्रभुता स्वीकार कर ली तब कर्नल टाड राजदूत की हैसियत से राजपूत रियासतों में भेजे गये. उन्होंने अपने राजपूताना के इस प्रवास में मुख्तलिफ़ राजपूत क़बीलों की कहानियों और परम्पराओं का अध्ययन किया और इसके फलस्वरूप संसार को अजीबो-ग़रीब समाचार दिया कि राजपूत प्राचीन हमलावरों सिदियनों और हूनों के ख़ानदान से हैं. इसके साथ ही उन्होंने दुनिया को यह भी बताया कि आबू पहाड़ पर ब्राह्मण्यवाद के नायकों का निर्माण करने के लिये ब्राह्मणों ने एक यज्ञ भी किया था. यही "अग्निकुल" के राजपूतों के जन्म की प्रसिद्ध कहानी है. तभी यह कहानी बार-बार हर जगह दोहराई जाती है और राजपूतों के विदेशी होने के हक़ या ख़िलाफ़ तर्क भी पेश किये जाने लगे हैं.❀

श्री वैद्य कहते हैं "यज्ञ की यह कथा, चन्दबरदाई द्वारा लिखे पृथ्वीराजरासो में सिर्फ़ शायराना उड़ान है." लेकिन इस कथा का वर्णन हमें नेमिरथ मन्दिर के जैन अभिलेखों में मिलता है.‡ इस परम्परागत कथा की सचाई पर और बाहरी गवाहियां भी मिल सकती हैं.

अग्निकुल राजपूतों में एक परिहार जाति भी है और श्री भण्डारकर ने साबित किया है§ कि परिहार और प्रतिहार एक ही हैं, और हमने प्रतिहारों को गुजरों की एक शाखा माना है. इसलिये सवाल उठता है कि कब से गुर्जर क़बीला वैदिक क्षत्रिय बन गया ? यही इतिहासकार आगे कहते हैं † कि सोलंकी ( चालुक्य ), चौहान ( चहुमान ) और परमार जो अग्निकुल वालों की सूची पूरी करते हैं, मूल रूप से गुर्जरों की ही शाखा हैं. इसमें होयसल (Hoesule) तोमर और कछवाहों‡ को भी जोड़ना चाहते हैं.

पुरानी लिखावट (पुरा-लिपि) सम्बन्धी (epigraphy) A खोजों से यह पता चलता है कि मेवाड़ के गहलौत आनन्दीपुर के नागर ब्राह्मण गुहदत्त के वंशज थे. अतपुरे (Atpure) के अभिलेख में उसे 'महिदेव' और 'विप्रकुल नन्दन' कहा गया है. उनका वैजयाप ( Vaijayope ) गोत्र है. यह गोत्र नागर ब्राह्मणों में मिलता है. चात्सु ( chatsu ) अभिलेख में गुहिला बालादित्य को ब्रह्म-क्षत्रवित कहा गया



جب کہ اُتری بھارت برٹش ایسٹ انڈیا کمپنی کے ہاتھوں میں چلا گیا اور راجپوتوں نے بھی اُس کی پربھوتا سویکار کر لی تب کرنل ٹاڈ راج دوت کی حیثیت سے راجپوت ریاستوں میں بھیجے گئے۔ اُنہوں نے اپنے راجپوتانہ کے اِس پرواس میں مختلف راجپوت قبیلوں کی کہانیوں اور پرمپراؤں کا ادھین کیا اور اِس کے پھل سروپ سنسار کو عجیب و غریب سماچار دیا کہ راجپوت پراچین حملہ آوروں سدئنوں اور ھونوں کے خاندان سے ھیں۔ اِس کے ساتھ ھی اُنہوں نے دنیا کو یہ بھی بتایا کہ آبو پہاڑ پر براھمن واد کے نایکوں کا نرمان کرنے کے لئے براھمنوں نے ایک یگیہ بھی کیا تھا۔ یہی " اگنی کل " کے راجپوتوں کے جنم کی پرسدھ کہانی ھے۔ تبھی یہ کہانی بار بار ھر جگہ دوھرائی جاتی ھے اور راجپوتوں کے ودیشی ہونے کا حق یا خلاف ترک بھی پیش کئے جانے لگے ھیں۔❀

شری ویدیہ کہتے ھیں " یگیہ کی یہ کتھا، چند بردائی دوارا لکھے پرتھوی راج راسو میں صرف شاعرانہ اُڑان ھے۔" لیکن اِس کتھا کا ورنن ھمیں نیمرتھ مندر کے جین ابھیلیکھوں میں ملتا ھے۔ ‡ اِس پرمپراگت کتھا کی سچائی پر اور باھری گواھیاں بھی مل سکتی ھیں۔

اگنی کل راجپوتوں میں ایک پری ھار جاتی بھی ھے اور شری بھنڈارکر نے ثابت کیا ھے§ کہ پری ھار اور پرتی ھار ایک ھی ھیں، اور ھم نے پرتی ھاروں کو گرجروں کی ایک شاکھا مانا ھے۔ اِس لئے سوال اُٹھتا ھے کہ کب سے گرجر قبیلہ ویدک چھتریہ بن گیا ؟ یہی اتہاسکار آگے کہتے ھیں۔ † کہ سولنکی (چالوکیہ)، چوھان (چہومان) اور پرمار جو اگنی کل والوں کی سوچی پوری کرتے ھیں، مول روپ سے گرجروں کی ھی شاکھا ھیں۔ اس میں ھوئسل (Hoesule) تومر اور کچھواھوں‡ کو بھی جوڑنا چاھتے ھیں۔

پرانی لکھاوٹ (پورا - لپی) سمبندھی (epigraphy) A کھوجوں سے یہ پتہ چلتا ھے کہ میواڑ کے گہلوت آنندی پور کے ناگر براھمن گوھدت کے ونشج تھے۔ اتپورے ( Atpure ) کے ابھیلیکھ میں اُسے 'مہیدیو' اور 'وپرکل نندن' کہا گیا ھے۔ اُن کا ویجیوپ ( Vaijayope ) گوتر ھے۔ یہ گوتر ناگر براھمنوں میں ملتا ھے۔ چاتسو ( Chatsu ) ابھیلیکھ میں گوھیلا بالادتیہ کو برھم - چھتروت کہا گیا

❀—देखिये विन्सेन्ट स्मिथ, भण्डारकर, वैद्य आदि. मानव तत्व शास्त्री इस मामले में ऐतिहासिकों से भिन्न विचार रखते हैं.

❀—دیکھئے ونسینٹ اسمتھ۔ بھنڈارکر ویدیہ آدی۔ مانوتتو شاستری اِس معاملے میں اتہاسکوں سے بھن وچار رکھتے ھیں۔

‡—Vide Epi. Ind Vol. VIII P. 201.

§—Bhandarkar, J. R. A. S. 1905 PP. 1-4, 31-32.

†—Ibid.

‡—Bhandarkar I. R. A. S. 1905 PP. 1-4,31-32.

A—N. C. Vasu, History of kawsupa.

क्षत्रिय बना दिया†." लेकिन अब भी मरहठा जाति का सामाजिक स्थान क्या हिन्दू वर्णाश्रम व्यवस्थाके भीतर है यह सवाल बहस तलब है. अब भी मरहठों को ब्राह्मणों ने जाति की हैसियत से क्षत्रिय नहीं माना है. क्षत्रीपन के दावे का सवाल तब उठा जब कि शिवाजी के नीचे मरहठे एक आज़ाद क़ौम की तरह तरक़्क़ी कर चुके. कुनबी‡ खेतिहर जो कि शूद्र माना जाता है, जब लड़ाकू मरहठा बन गया और उसने शिवाजी की नेताशाही में एक आज़ाद राज्य की स्थापना की, तब उसने प्राचीन क्षत्रिय जाति का सदस्य होने का दावा किया. लेकिन दक्षिण के ब्राह्मण शिवाजी के उत्थान के पहिले उसी प्रदेश में बहुत शक्तिशाली थे और शिवाजी के मरने के बाद इन्होंने ही राजनीतिक अधिकारों को हड़प लिया.

इस तरह हम देखते हैं कि एक कशमकश के बाद ही मरहठे ऊंचा दरजा पा सके थे. लेकिन शिवाजी के बाद के ज़माने में उन्हें शासक और लड़ाकू ब्राह्मणों से सामाजिक संघर्ष (जद्दोजेहद) करना पड़ा, जिसके फलस्वरूप उनकी सामाजिक स्थिति कमज़ोर पड़ गई. उधर जहां तक राजपूतों का मामला है, उनकी सामाजिक स्थिति उनकी राजनीतिक शक्ति के कारन बनी रही. इसलिये ब्राह्मणों ने उसे स्वीकार भी किया.

अब हम राजपूतों की तरक़्क़ी के सवाल को लेंगे. शरीर (जिस्म) विज्ञान की नज़र से (Somatologically) हमने यह देख लिया है कि ये एक ही कुल के नहीं हैं. यह साफ़ है कि अलग अलग जातियों ने मिल कर राजपूत जाति का निर्माण किया; इनमें सब से अधिक संख्या उन लोगों की है, जो आजकल दूसरी जातियों में पाये जाते हैं. इसी कारन वे दूसरे हिन्दुस्तानियों से अलग नहीं किये जा सकते.* इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि वे अलग से एक ख़ास गिरोह हैं. अगर ऐसा है तो हमें उनके बारे में और अधिक विस्तार (तफ़सील) से छान बीन करनी चाहिये.

چھتری بنا دیا.†" لیکن اب بھی مرهٹه جاتی کا ساماجک استھان کیا هندو ورناشرم ویوستھا کےبھیتر هےیه سوال بحث طلب هے. اب بھی مرهٹوں کو براهمنوں نے جاتی کی حیثیت سے چھتری نہیں مانا هے. چھتری پن کے دعوے کا سوال تب اُٹھا جب که شیوا جی کے نیچے مرهٹے ایک آزاد قوم کی طرح ترقی کرچکے. کنبی‡ کھیتہر جو کی شودر مانا جاتا هے' جب لڑاکو مرهٹه بن گیا اور اُس نے شیوا جی کی نیتا شاهی میں ایک آزاد راجیه کی استھاپنا کی' تب اُس نے پراچین چھتری جاتی کا سدسیه هونے کا دعویٰ کیا. لیکن دکھن کے براهمن شیوا جی کے اتھان کے پہلے اُسی پردیش میں بہت شکتی شالی تھے اور شیوا جی کے مرنے کے بعد انہوں نے هی سارے راج نیتک ادھیکاروں کو هڑپ لیا.

اِس طرح هم دیکھتے هیں که ایک کشمکش کے بعد هی مرهٹے اونچی درجه پا سکے تھے. لیکن شیوا جی کے بعد کے زمانے میں اُنهیں شاسک اور لڑاکو براهمنوں سے ساماجک سنگھرش (جدوجهد) کرنا پڑا' جس کے پھل سروپ ان کی ساماجک اِستھتی کمزور پڑ گئی. ادھر جہاں تک راجپوتوں کا معامله هے' اُن کی ساماجک استھتی اِن کی راجنیتک شکتی کے کارن بنی رهی. اِس لئے براهمنوں نے اُسے سویکار بھی کیا.

اب هم راجپوتوں کی ترقی کے سوال کو لیں گے. (جسم) شریر وگیان کی نظر سے (Somatologically) هم نے یه دیکھ لیا هے که یه ایک هی کل کے نہیں هیں. یه صاف هے که مختلف جاتیوں نے مل کر راجپوت جاتی کا نرمان کیا؛ اِن میں سب سے ادھک سنکھیا اِن لوگوں کی هے' جو آجکل دوسری جاتیوں میں پائے جاتے هیں. اِسی کارن وے دوسرے هندستانیوں سے الگ نہیں کئے جا سکتے.* اِس لئے یه نہیں کہا جا سکتا که وه الگ سے ایک خاص گروه هیں. اگر ایسا هے تو همیں اُن کے بارے میں اور ادھک وستار (تفصیل) سے چھان بین کرنی چاهئے.

†—J. N. Sarkar, 'Shivaji and his times." pp. 84-85. शिवाजी की वंशावली के विवाद के बारे में पाठकों को मि. सरकार, वैद्य, एस. एन. सेन., वी. के. राजवाड़े और सरदेसाई के लेखों को पढ़ना चाहिये.

† J. N. Sarkar, "Shivaji and his times." pp 84-85 شیوا جی کی ونشاولی کے وواد کے بارے میں پاٹھکوں کو مسٹر سرکار' ویدیه' ایس. این. سین.' وی. کے. راجواڑے اور سردیسائی کے لیکھوں کو پڑھنا چاهئے.

‡- ऐसा लगता है कि यू० पी० के कुनबी खेतिहरों, दक्षिण के कुनबियों और लड़ाकू मरहठा कुनबियों में जातिगत सम्बन्ध है. देखिये Risley—'People of India.'

‡ ایسا لگتا هے که یو. پی. کے کنبی کھیتہروں' دکھن کے کنبیوں اور لڑاکو مرهٹا کنبیوں میں جاتیه گت سمبندھ هے. دیکھئے Risley—'People of India.'

*—डाक्टर गुहा "हिन्दुस्तान के लोगों की जातिगत समता" के बारे में 1931 की मर्दुमशुमारी बताते हुये कहते हैं कि बंगाल के पोदों का बंगाल के बाहर की दूसरी जातियों में मरहठों और राजपूतों से ज्यादा गहरा सम्बन्ध है. पृष्ठ 7.

* ڈاکٹر گوها "هندستان کے لوگوں کی جاتی گت سمتا" کے بارے میں سن 1931 کی مردم شماری بتاتے هوئے کہتے هیں که بنگال کے پودوں کا بنگال کے باهر کی دوسری جاتیوں میں مرهٹوں اور راجپوتوں سے زیاده گہرا سمبندھ هے. پرشٹھ 7

यह नहीं कहा जा सकता कि वे दोनों एक ही नस्ल के ( Biotypes ) हैं और जैसा कि हम कहीं कह चुके हैं इन्डो-आर्यन् नस्ल की बात कहना ग़लत है. इसलिये प्राचीन क्षत्रिय, आज के राजपूत और मरहठे एक ही जाति के नहीं कहे जा सकते. गोत्रों और प्रवरों के एक हो जाने से जाति भी एक नहीं हो जाती, क्योंकि दूसरी जातियों के गोत्र भी वही होते हैं.‡ गोत्र बदले जा सकते हैं और नये गोत्र अपनाये भी जा सकते हैं.❀ आज दिन भी हिन्दुस्तान में ऐसा होता है.

दक्षिण के मरहठे हमेशा शूद्र माने गये हैं, हालांकि कुछ अमीर कुलों ने अपने को राजपूतों का ख़ानदानी कहने का गर्व दिखाया है. चूंकि वे राजपूतों के ख़ानदानी हैं, इसलिये वे प्राचीन क्षत्रियों में गिने जा सकते हैं अथवा उनके वंशज माने जा सकते हैं. वैद्य भी चाहते हैं कि हम उनकी इस बात पर विश्वास कर लें.* यह सवाल मरहठा साम्राज्य के संस्थापक शिवाजी की राजगद्दी के समय सामने आया था. जैसा कि श्री यदुनाथ सरकार कहते हैं, "शिवाजी और उनके ससुर गायकवाड़ मरहठे अथवा नीची जाति के लोग थे...... शिवाजी को उन ब्राह्मणों के ज़रिये अपनी यह बेइज़्ज़ती बहुत अखरती थी, जिनकी रक्षा और बढ़ती के लिये उन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी लगा दी थी. चूंकि ब्राह्मणों ने शिवाजी को शूद्र ही मानने की ज़िद की, इसलिये मजबूर होकर उन्हें कायस्थों के नेता और ब्राह्मणों के घमण्ड के शिकार बालाजी आवाजी के हाथों में चला जाना पड़ा. बाला जी क़ुदरती तौर पर अपने मालिक के साथ हमदर्दी रखते थे और उन्होंने शिवाजी को सामाजिक नज़र मे ऊंचा उठाने के लिये गागा भट्ट को रखा, जिसने शिवाजी को शूद्र



یہ نہیں کہا جاسکتا کہ وے دونوں ایک ھی نسل کے ( Biotypes ) ھیں اور جیسا کہ ہم کہیں کہہ چکے ھیں اندوآرین نسل کی بات کہنا غلط ھے. اِس لئے پراچین چھتریہ' آج کے راجپوت اور مرھٹے ایک ھی جاتی کے نہیں کہے جاسکتے. گوتروں اور پرورں کے ایک ھوجانے سے جاتی بھی ایک نہیں ھو جاتی' کیونکہ دوسری جاتیوں کے گوتر بھی وھی ھوتے ھیں.‡ گوتر بدلے جاسکتے ھیں اور نئے گوتر اپنائے بھی جاسکتے ھیں.❀ آج دن بھی ھندستان میں ایسا ھوتا ھے.

دکھن کے مرھٹے ھمیشہ شودر مانے گئے ھیں' حالانکہ کچھ امیر کلوں نے اپنے کو راجپوتوں کا خاندانی کہنے کا گرو دکھایا ھے. چونکہ وے راجپوتوں کے خاندانی ھیں' اِس لئے وے پراچین چھتریوں میں گنے جاسکتے ھیں اتھوا اُن کے ونشج مانے جاسکتے ھیں. ویدیہ بھی چاھتے ھیں کہ ھم اِن کی اِس بات پر وشواس کرلیں.* یہ سوال مرھٹہ سامراجیہ کے سنستھاپک شیوا جی کی راج گدی کے سمے سامنے آیا تھا. جیسا کہ شری یدوناتھ سرکار کہتے ھیں' "شیوا جی اور اُن کے سسر گائیکواڑ مرھٹے اتھوا نیچی جاتی کے لوگ تھے...... شیوا جی کو اُن براھمنوں کے ذریعہ اپنی یہ بےعزتی بہت اکھرتی تھی' جن کی رکچھا اور بڑھتی کے لئے انھوں نے اپنی ساری زندگی لگادی تھی. چونکہ براھمنوں نے شیوا جی کو شودر ھی ماننے کی ضد کی' اس لئے مجبور ھوکر انہیں کائستھوں کے نیتا اور براھمنوں کے گھمنڈ کے شکار بالاجی آواجی کے ھاتھوں میں چلا جانا پڑا. بالاجی قدرتی طور پر اپنے مالک کے ساتھ ھمدردی رکھتے تھے اور انھوں نے شیواجی کو سماجک نظر سے اُونچا اُٹھانے کے لئے گاگا بھٹ کو رکھا' جس نے شیوا جی کو شدھ

---

‡—बंगाल की तमाम हिन्दू जातियों के ब्राह्मण गोत्र और उसके साथ के प्रवर होते हैं. लेकिन इससे वे ब्राह्मण नहीं हो जाते.

‡—بنگال کی تمام ھندو جاتیوں کے براھمن گوتر اور اُس کے ساتھ کے پرور ھوتے ھیں. لیکن اِس سے وے براھمن نہیں ھوجاتے.

❀—सनसेप की वैदिक कहानी को देखिये. जिसे विश्वामित्र ने गोद लिया था तब उसने विश्वामित्र के गोत्र को भी ग्रहण कर लिया. इसी प्रकार हर रोज़ हिन्दुस्तान में लोग अपने गोत्र बदल रहे हैं. फिर सामाजिक और धार्मिक परिवर्तनों द्वारा भी अपने गोत्र बदलते हैं, जैसा कि दक्षिण भारत के लिंगायतों ने किया है.

❀—سنسیپ کی ویدک کہانی کو دیکھئے. جسے وشوامتر نے گود لیا تھا تب اُسے وشوامتر کے گوتر کو بھی گرھن کر لیا. اِسی پرکار ھر روز ھندستان میں لوگ اپنے گوتر بدل رھے ھیں. پھر سماجک اور دھارمک پریورتنوں دوارا بھی اپنے گوتر بدلتے ھیں' جیسا کہ دکھن بھارت کے لنگائتوں نے کیا ھے.

*—ऐसा हो सकता है कि कुछ पुराने मरहठा राज बंश राजपूतों से आये हों, लेकिन इससे वे अथवा सारी जाति क्षत्रिय नहीं हो जायगी.

*—ایسا ھوسکتا ھے کہ کچھ پرانے مرھٹا راج ونش راجپوتوں سے آئے ھوں' لیکن اِس سے وے اتھوا ساری جاتی چھتریہ نہیں ھوجائیگی.

इजाजत नहीं थी. वैद्य के मुताबिक़ ऐसा इसलिये हुआ कि वे "आर्य जाति" के शुद्ध क्षत्रिय थे. तो अब हम इन क्षत्रियों के निकास की छानबीन करें.

## राजपूतों का असली निकास

श्री वैद्य की राय है कि 'हम आसानी से यह मान सकते हैं कि राजपूत वैदिक क्षत्रियों के खानदान से हैं."‡ और उन्होंने वेदों के गोत्र और प्रवरों को क़ायम रखा है."§ इसी तरह से वे सोचते हैं कि मराठा जाति भी प्राचीन वैदिक वंशी हैं. मरहठों के बारे में बताते हुये श्री वैद्य कहते हैं, "ये बरार और दक्षिण में बसने वाले आर्य चन्द्र कुल के हैं.$

क़दीम और पाक खानदानी होने के दावे को सही मानने के लिये इन जातियों के स्त्री पुरुषों के जिस्म की बनावट की परीक्षा करनी होगी. राजपूतों के बारे में हमने जो आंकड़े इकट्ठा किये हैं उसका नतीजा हम देख चुके हैं. जहां तक मरहठों का सवाल है, हडन ☫कहता है कि मराठा क्षत्रियों का आम तौर से मस्तक-मान 78.3 और नाक मान 81.0 रहता है और सुकुमसले मराठों का औसतन 82.2 कपाल-मान और 74.0 नासिका मान रखता है. यानी पहिले वाले मझौले माथे और मझौली नाक वाले होते हैं. ( mesocephalmesorhinian ) और दूसरे गोल-माथे और मझौली नाक वाले (brachycephal-mesorrhiniar) होते हैं.

इस तरह हम एक ही जाति के भीतर फ़र्क़ पाते हैं. इससे यह साफ़ हो जाता है कि वे एक वंश के नहीं हैं. आजकल के इनसानी नस्लों के जानकार विद्वान बताते हैं कि बम्बई अहाते में रहने वालों में गोल खोपड़ी वाले "युरेशीयाटिक" या "आरमेनइड" खून वाले लोग मिलते हैं ❀ फिर अभी हाल में हिन्दुस्तान की इनसानी नस्लों के बारे में जो रिपोर्ट निकली है, उसमें मुख्तलिफ़ सूबों की जातियों के अन्तर-सम्बन्धों की चर्चा है. उसमें कहा गया है कि पश्चिमी हिन्दुस्तान और उत्तरी हिन्दुस्तान के लोगों की मिलावट के बहुत कम सबूत मिलते हैं * आगे चलकर उसी रिपोर्ट में कहा गया है कि, मरहठों और बंगाल के पादों ( एक अछूत जाति ) में बहुत गहरा ताल्लुक़ है.†

इस तरह हम यह नहीं कह सकते कि जिस्म की बनावट के नुक़्ते नजर से राजपूत और मरहठे एक हैं. उनके लिये



اِجازت نہیں تھی . ویدیہ کے مطابق ایسا اِس لئے ہوا کہ وے "آریہ‌جاتی" کے شدھ چھتریہ تھے . تو اب ہم اِن چھتریوں کے نکاس کی چھان‌بین کریں .

## راجپوتوں کا اصلی نکاس

شری ویدیہ کی رائے ہے کہ "ہم آسانی سے یہ مان سکتے ہیں کہ راجپوت ویدک چھتریوں کے خاندان سے ہیں ."‡ اور انہوں نے ویدوں کے گوتر اور پرووروں کو قایم رکھا ہے ."§ اِسی طرح سے وے سوچتے ہیں کہ مرھٹا جاتی بھی پراچین ویدک ونشی ہیں . مرھٹوں کے بارے میں بتاتے ہوئے شری ویدیہ کہتے ہیں "یہ برار اور دکھن میں بسنے والے آریہ چندر کل کے ہیں.$

قدیم اور پاک خاندانی ہونے کے دعوے کو سہی ماننے کے لئے اِن جاتیوں کے استری پرشوں کے جسم کی بناوٹ کی پریکچھا کرنی ہوگی . راجپوتوں کے بارے میں ہم نے جو آنکڑے اکٹھے کئے ہیں اس کا نتیجہ ہم دیکھ چکے ہیں . جہاں تک مرھٹوں کا سوال ہے' ھڈن☫ کہتا ہے کہ مرھٹا چھتریوں کا عام طور سے مستک-مان 78.3 اور ناک مان 81·0 رھتا ہے اور سکومسلے مرھٹوں کا اوسطاً 82·2 کپال-مان اور 74·0 ناسکا مان رکھتا ہے. یعنی پہلے والے مجھولے ماتھے - اور مجھولی ناک والے ہوتے ہیں. (mesocephal-mesorhinian) اور دوسرے گول ماتھے اور مجھولی ناک والے (brachycephal-mesorrhiniar) ہوتے ہیں .

اِس طرح ہم ایک ہی جاتی کے بھیتر فرق پاتے ہیں . اِس سے یہ صاف ہوجاتا ہے کہ وے ایک ونش کے نہیں ہیں. آجکل کے اِنسانی نسلوں کے جانکار ودوان مانو تتو ویتا بتاتے ہیں کہ بمبئی احاطے میں رہنے والوں میں گول کھوپڑی والے "یوریشیاٹک" یا "آرمیناٹک" خون والے لوگ ملتے ہیں.❀ پھر ابھی حال میں ہندستان کی اِنسانی نسلوں کے بارے میں جو رپورٹ نکلی ہے اُس میں مختلف صوبوں کی جاتیوں کے انتر سمبندھوں کی چرچا ہے . اُس میں کہا گیا ہے کہ پچھمی ہندستان اور اُتری ہندستان کے لوگوں کی ملاوٹ کے بہت کم ثبوت ملتے ہیں .* آگے چل کر اُسی رپورٹ میں کہا گیا ہے کہ' مرھٹوں اور بنگال کے پودوں (ایک اچھوت جاتی) میں بہت گہرا تعلق ہے .†

اِس طرح ہم یہ نہیں کہہ سکتے کہ جسم کی بناوٹ کے نقطہ نظر سے راجپوت اور مرھٹے ایک ہیں . ان کے لئے

‡—Vaidya Vol. IV, PP. 49-50.
§—Ibid.
$—Vol. I, P. 80.
☫-❀—Haddon—The Races of Man, PP. 107-111.
*—Census of India 1931, Vol. 1, India, Pr. III Ethnographical by B. S. Guha.
†—Ibid.

भारत के क्षत्री शासक कुलों के साथ लगातार उनका विवाह-सम्बन्ध रहा है." आगे चलकर श्री वैद्य कहते हैं कि बंगाल के सेन इस सूची के बाहर हैं क्योंकि, जैसा कि उनका विचार है, उस समय तक सेनों का असर बंगाल में क़ायम नहीं हुआ था; लेकिन वह समय आया जब कि इन लोगों ने अपना सम्बन्ध मरहठों से तोड़ लिया. नतीजे में इस काल के बाद, मरहठा क्षत्रिय जिसमें शिलाहारस भी शामिल थे—( रासो के 36 राज्य कुलों में इनकी चर्चा है )—अलग से एक समुदाय अथवा उपजाति बन गये और इनमें भी 96 मरहठा कुलों की गिनती हुई. इन लोगों का शादी व्याह अब इन्हीं 96 कुलों में हो सकता था."❀

इस तरह प्राचीन ( क़दीम ) आन्ध्रों में भी क्षत्रिय हैं जो 'राजू' और 'बेल्लाल' कहे जाते हैं. उनका अपना एक समुदाय है. फिर हिन्दुस्तान के दूर दक्खिन में कुछ खान्दान हैं, जो अपने को क्षत्रिय तो कहते हैं, लेकिन रहते सब से अलग हैं. बङ्गाल में, ग्यारहवीं अथवा बारहवीं सदी के आख़ीर में हमें ऐसे सेन मिलते हैं, जो अपने को 'करनाट ब्रह्म-क्षत्रिय'* कहते हैं. इसका अर्थ यह हुआ कि मूल रूप से ये लोग कर्नाट ( दक्षिण भारत ) से सम्बन्ध रखते थे. ये लोग ब्राह्मण थे और इन्होंने क्षत्रियों का पेशा अख़्तियार कर लिया था. इन्होंने चालुक्यों से शादी-व्याह भी किया था.† आनन्द भट्ट के 'बल्लाल चरित' में, जो 15वीं सदी में लिखा गया था, बङ्गाल के ब्रह्म-क्षत्रियों और राजपुत्रों की चर्चा मिलती है. 'शेख़ शुभोदय' एक नई खोजी हुई संस्कृत किताब है, जिसका लेखक लक्ष्मण सेन का प्रसिद्ध मन्त्री हलायुध माना जाता है. लेकिन आलोचक इसे उस वक्त का मानते हैं जब कि टोडरमल ने बंगाल की भूमि की जांच पड़ताल की थी. इस ग्रन्थ में "राजपुत्र" जाति का ज़िक्र मिलता है. फिर, "प्रेम बिलास" में, जो 17वीं सदी में लिखे हुये बंगाल के वैष्णव साहित्य का एक जुज़ है, ऐसे ब्रह्म-क्षत्रियों की चर्चा मिलती है, जो पद्मा नदी के किनारे रहा करते थे. उन पालों की भी चर्चा नहीं मिलती, जो मगध ( बिहार ) में उस समय राज करते थे और जो बहुत अर्से से क्षत्रियों से व्याह-शादी करते आये हैं.

इस तरह यह साफ़ है कि राजपूतों ने अपना एक ऐसा गिरोह बना लिया था, जिसमें बाहर वालों के आने की



بھارت کے چھتری شاسک کلوں کے ساتھ لگاتار ان کا وواہ سمبندھ رہا ہے." آگے چل کر شری ویدیہ کہتے ہیں کہ بنگال کے سین اِس سوچی کے باہر ہیں کیونکہ جیسا کہ ان کا وچار ہے اس سمے تک سینوں کا اثر بنگال میں قایم نہیں ہوا تھا، لیکن وہ سمے آیا جب کہ اِن لوگوں نے اپنا سمبندھ مرہٹوں سے توڑ لیا. نتیجے میں اِس کال کے بعد مرہٹا چھتریہ جس میں شلاہارس بھی شامل تھے—(راسو کے 36 راج کلوں میں ان کی چرچا ہے)—الگ سے ایک سمودائے اتھوا اُپجاتی بن گئے اور اِن میں بھی 96 مرہٹا کلوں کی گنتی ہوئی. اِن لوگوں کا شادی بیاہ اب انہیں 36 کلوں میں ہوسکتا تھا."❀

اِسی طرح پراچین (قدیم) آندھروں میں بھی چھتریہ ہیں جو 'راجو' اور 'بیلال' کہے جاتے ہیں. ان کا اپنا ایک سمودائے ہے. پھر ہندستان کے دور دکھن میں کچھ خاندان ہیں، جو اپنے کو چھتریہ تو کہتے ہیں، لیکن رہتے سب سے الگ ہیں. آخیر میں بنگال میں، گیارھویں اتھوا بارھویں صدی کے آخیر میں ہمیں ایسے سین ملتے ہیں، جو اپنے کو 'کرنات برہم چھتریہ'* کہتے ہیں. اِس کا ارتھ یہ ہوا کہ مول روپ سے یہ لوگ کرنات (دکھن بھارت) سے سمبندھ رکھتے تھے. یہ لوگ براہمن تھے اور انہوں نے چھتریوں کا پیشہ اختیار کرلیا تھا. اِنھوں نے چالوکیوں سے شادی بیاہ بھی کیا تھا.† انند بھٹ کے 'بلال چرت' میں، جو 15 ویں صدی میں لکھا گیا تھا، بنگال کے برہم چھتریوں اور راجپتروں کی چرچا ملتی ہے. 'شیخ شوبھودیئے' ایک نئی کھوجی ہوئی سنسکرت کتاب ہے، جس کا لیکھک لچھمن سین کا پرسدھ منتری ہلایدھ مانا جاتا ہے. لیکن آلوچک اِسے اُس وقت کا مانتے ہیں جب کہ ٹوڈرمل نے بنگال کی بھومی کی جانچ پڑتال کی تھی. اِس گرنتھ میں "راج پتر" جاتی کا ذکر ملتا ہے. پھر "پریم بلاس" میں، جو 17 ویں صدی میں لکھے ہوئے بنگال کے ویشنو ساہتیہ کا ایک جز ہے، ایسے برہم چھتریوں کی چرچا ملتی ہے، جو پدما ندی کے کنارے رہا کرتے تھے. اُن پالوں کی بھی چرچا نہیں ملتی، جو مگدھ (بہار) میں اُس سمے راج کرتے تھے اور جو بہت عرصے سے چھتریوں سے بیاہ شادی کرتے آئے ہیں.

اِس طرح یہ صاف ہے کہ راجپوتوں نے اپنا ایک ایسا گروہ بنا لیا تھا، جس میں باہر والوں کے آنے کی

❀—Vaidya, Vol. III, PP. 383–384, 385.

*—N. G. Mazumdar—"Inscription of Bengal," Vol. III vide Madhainagar grant of Samant Sena," P. 44.

†—लक्ष्मण सेन की मां चालुक्य राजकुमारी थी لچھمن سین کی ماں چالوکیہ راجکماری تھی—†
( Tarpandighi plate ), Vide Mazumdar, P. 144.

से गिरोह हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में हैं, जो अपने को ऊंचे क्षत्रिय कहते हैं और समाज में ये लोग भी वही काम करते हैं, यानी वे भी फ़ौजी पेशे के हैं, फिर भी वे राजपूत नहीं हैं. इसलिये हमें राजपूतों के बारे में छान-बीन करनी चाहिये.

हर्षवर्द्धन की मौत के बाद के काल में हमें बहुत से ऐसे लेख मिलते हैं, जिसमें अफ़सरों की सूची में "राजपुत्र" शब्द का प्रयोग है. लेकिन ऐसा लगता है कि यह किसी पद की उपाधि है, किसी जाति का सूचक नहीं है. नहीं तो यह शब्द बङ्गाल और दक्षिण भारत के शिलालेखों में न मिलता. इस शब्द का अर्थ 'राजा का लड़का' भी है. देशी बोली में, उत्तरी बिहार में इस शब्द को ख़राब मायनों में इस्तेमाल किया जाता है और "ब्रह्मवैवर्त पुराण" तथा "बल्लाल चरित" में राजपूत अथवा छत्री को ब्राह्मण और क्षत्रियों का वर्ण-संकर कहा गया है. लेकिन यह शब्द शुरू चाहे जैसे भी हुआ हो, रियासतों के शासक होने के नाते इनका आदर बहुत था. श्री वैद्य कहते हैं, "शुरू में तो वे ब्राह्मणों से भी ऊंचे माने जाते थे. इसके पहिले की सदी के अरब यात्रियों ने जिन राजपूतों के ऊंचे स्थान का ज़िक्र किया है उसकी चर्चा अलबेरूनी—जो देखी हुई बातों से अधिक हिन्दू शास्त्रों की बात कहता है, नहीं करता. लेकिन वे हर तरह से ब्राह्मणों के बराबर माने जाते थे, जैसा कि अलबेरूनी ख़ुद मानता है "उनका स्थान ब्राह्मणों से बहुत नीचे नहीं है."† आजकल के जानकार यह जानते हैं कि राजपूताना में, जहां अब भी राजपूत सामन्तवादी ढंग से राज करते हैं, राजपूत सबसे ऊंची जाति है.

यह पहिले ही कहा जा चुका है कि राजपूतों के समाज में बाहरी लोग पैठ नहीं सकते. इन 36 कुलों अथवा क़बीलों का एक ऐसा समाज था, जिसमें बाहर वालों के घुसने की गुंजाइश नहीं थी, और ये लोग आपस में ही व्याह-शादी कर सकते थे. श्री वैद्य कहते हैं, "साधारण तौर से राजपूत या हिन्दुस्तान के शासक कुलों‡ ने (1100 ई० के क़रीब) जो शुद्ध क्षत्रिय थे, उन राज्य घरानों को मिला कर अपने को एक उपजाति में बांट लिया. पंजाब चूंकि उस समय मुसलमान हुकूमत में था, इसलिये क़ुदरती था कि वह इस श्रेणी में शामिल न किया जाता. दूसरी वजहों से हिमालय-वर्ती कुल ......इसमें शामिल नहीं किये गये. दक्षिण भारत के शासक कुल भी इसमें शामिल नहीं किये गये, क्योंकि वे शुद्ध आर्य जाति और क्षत्रिय घराने के नहीं माने जाते थे. महाराष्ट्र के क्षत्रिय घराने शामिल कर लिये गये, क्योंकि उत्तरी



سے گروہ ھندستان کے مختلف حصوں میں ھیں' جو اپنے کو اونچے چھتریہ کہتے ھیں اور سماج میں یہ لوگ بھی وھی کام کرتے ھیں' یعنی وے بھی فوجی پیشہ کے ھیں' پھر بھی وے راجپوت نہیں ھیں . اِس لئے ھمیں راجپوتوں کے بارے میں چھان بین کرنی چاھئے .

ھرش وردھن کی موت کے بعد کے کال میں ھمیں بہت سے ایسے لیکھ ملتے ھیں' جس میں افسروں کی سوچی میں "راج پتر" شبد کا پریوگ ھے. لیکن ایسا لگتا ھے کہ یہ کسی پد کی اپادھی ھے' کسی جاتی کا سوچک نہیں ھے . نہیں تو یہ شبد بنگال اور دکھن بھارت کے شلالیکھوں میں نہ ملتا . اِس شبد کا ارتھ 'راجہ کا لڑکا' بھی ھے . دیشی بولی میں' اُتری بہار میں اِس شبد کو خراب معنوں میں استعمال کیا جاتا ھے اور "برھم ویورت پران" تتھا "بلال چرت" میں راجپوت اتھوا چھتری کو براھمن اور چھتریوں کا ورن سنکر کہا گیا ھے . لیکن یہ شبد شروع چاھے جیسے بھی ھوا ھو' ریاستوں کے شاسک ھونے کے ناتے اِن کا آدر بہت تھا . شری ویدیہ کہتے ھیں' "شروع میں تو وے براھمنوں سے بھی اونچے مانے جاتے تھے . اِس کے پہلے کی صدی کے عرب یاتریوں نے جن راجپوتوں کے اُونچے استھان کا ذکر کیا ھے اُس کی چرچا البیرونی—جو دیکھی ھوئی باتوں سے ادھک ھندو شاستروں کی بات کہتا ھے' نہیں کرتا . لیکن وے ھر طرح سے براھمنوں کے برابر مانے جاتے تھے' جیسا کہ البیرونی خود مانتا ھے "انکا استھان براھمنوں سے بہت نیچے نہیں ھے ."† آجکل کے جانکار یہ جانتے ھیں کہ راجپوتانہ میں' جہاں اب بھی راجپوت سامنتوادی ڈھنگ سے راج کرتے ھیں' راجپوت سب سے اونچی جاتی ھے .

یہ پہلے ھی کہا جا چکا ھے کہ راجپوتوں کے سماج میں باھری لوگ پیٹھ نہیں سکتے . ان 36 کلوں اتھوا قبیلوں کا ایک ایسا سماج تھا' جس میں باھر والوں کے گھسنے کی گنجائش نہیں تھی' اور یہ لوگ آپس میں ھی بیاہ شادی کرسکتے تھے . شری ویدیہ کہتے ھیں' "سادھارن طور سے راجپوت یا ھندستان کے شاسک کلوں‡ نے ( 1100 عیسوی کے قریب ) جو شدھ چھتریہ تھے' ان راجیہ گھرانوں کو ملاکر اپنے کو ایک اُپجاتی میں بانٹ لیا . پنجاب چونکہ اس سمے مسلمان حکومت میں تھا' اس لئے قدرتی تھا کہ وہ اِس شرینی میں شامل نہ کیا جاتا. دوسری وجہوں سے ھمالیہ ورتی کل......اِس میں شامل نہیں کئے گئے . دکھن بھارت کے شاسک کل بھی اِس میں شامل نہیں کئے گئے' کیونکہ وے شدھ آریہ جاتی اور چھتریہ گھرانے کے نہیں مانے جاتے تھے . مہاراشٹر کے چھتریہ گھرانے شامل کر لئے گئے' کیونکہ اُتری

†—Vaidya—History of Mediaeval Hindu India, Vol. III PP. 383-384.
‡—Vaidya, Vol. III PP. 383-384, 385.

# राजपूतों का दौर

**डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त**

हर्षवर्धन की मौत के बाद के जमाने से मुहम्मद बिन ग़ोरी के सन 1192 ई० के हमले तक, राजपूतों का दौर हिन्दुस्तान के सामाजिक इतिहास का एक दिलचस्प अध्याय है. पालों, गुर्जर-प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों की शक्ति के कमज़ोर होने के बाद हमें बहुत से ऐसे क़बीले मिलते हैं, जो अपने को क्षत्रिय कहते थे. ये सारे उत्तरी हिन्दुस्तान में छोटे छोटे राज क़ायम कर रहे थे. ये क़बीले नस्ली झगड़ों और नस्ली सम्बन्धों के रिवाज को मानते थे. सम्मान, पद और उपाधियों को इनमें ख़ास गुन माना जाता था, फिर—जन्म और जाति के गर्व की भावना भी उनके अन्दर बहुत मज़बूत थी. एक तानाशाह शासक क़बीले का राजा होता था और हर एक सिपाही लुटेरों की तरह का होता था और हर एक क़बीले के ख़ान्दानी भाट-घराने हुआ करते थे, जो उनकी वीरता के गीत गाया करते. थोड़े में प्राचीन क़बीलों का ज़माना वापस आ गया था. आगे चलकर राजपूत अपने साथ निखरा हुआ सामन्तवाद भी ले आये.* उनकी सामन्तवादी राजनीति और उनके लगातार क़बाइली झगड़ों ने उनका एक हो जाना और एक क़ौम बन जाना नामुमकिन कर दिया. इसलिये मुसलमानों के हमले के साथ-साथ एक एक करके राजपूत रियासतों का ख़ात्मा हो गया. उनके ख़ात्मे के साथ ही उत्तरी हिन्दुस्तान के हिन्दुओं की आज़ादी भी चली गई.

प्राचीन भारतीय साहित्य (अदब) में राजपूत नाम नहीं मिलता. हमने देखा है कि वैदिक काल में "राजन्य" लफ़्ज़ का प्रयोग होता था. बाद में वर्ण बताने के लिये क्षत्रिय शब्द का इस्तेमाल होने लगा था. लेकिन इसी समय से हम राजपूतों का नाम सुनने लगते हैं. "राजपूत" संस्कृत के "राजपुत्र"—राजा का लड़का—लफ़्ज़ का बोला जाने वाला रूप है. इसलिये इसका भी अर्थ वही है जो वैदिक शब्द "राजन्य" का है. लेकिन यह और "क्षत्रिय" के लिये बोला जाने वाला "क्षत्री" शब्द एक नहीं हैं. एक राजपूत क्षत्री अथवा "क्षत्रिय" तो है, लेकिन साथ ही वह कुछ और भी है. वह बिलकुल साफ़ और दूसरों से अलग एक समाज का सदस्य भी है. वह चन्दराजरासौ में वर्णित 36 कुलों का है. इसका मतलब यह हुआ कि इस पुस्तक में जिन 36 कुलों को गिनाया गया है वही सच्चे राजपूत हैं और उन्हीं में आपस में शादी-ब्याह हो सकता है. इन कुलों के बाहर भी बहुत

# راجپوتوں کا دور

**ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت**

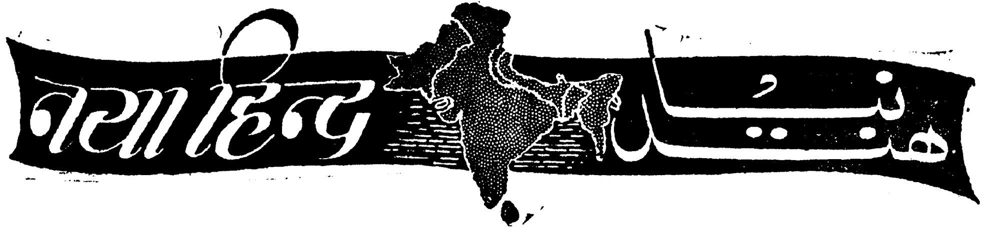
ھرش وردھن کی موت کے بعد کے زمانے سے محمد بن غوری کے سن 1192 عیسوی کے حملے تک، راجپوتوں کا دور ھندستان کے سماجک اِتہاس کا ایک دلچسپ ادھیائے ھے. پالوں، گوجر پرتیہاروں اور راشٹرکوٹوں کی شکتی کے کمزور ھونے کے بعد ھمیں بہت سے ایسے قبیلے ملتے ھیں، جو اپنے کو چھتریہ کہتے تھے. یہ سارے اُتری ھندستان میں چھوٹے چھوٹے راج قایم کررھے تھے. یہ قبیلے نسلی جھگڑوں اور نسلی سمبندھوں کے رواج کو مانتے تھے. سمان، پد اور اُپادھیوں کو اِن میں خاص گن مانا جاتا تھا، پھر—جنم اور جاتی کے گرو کی بھاونا بھی اُن کے اندر بہت مضبوط تھی. ایک تانا شاہ شاسک قبیلے کا راجہ ھوتا تھا اور ھر ایک سپاھی لٹیروں کی طرح کا ھوتا تھا اور ھر ایک قبیلے کے خاندانی بھاٹ - گھرانے ھوا کرتے تھے، جو اُن کی ویرتا کے گیت گایا کرتے. تھوڑے میں پراچین قبیلوں کا زمانہ واپس آگیا تھا. آگے چل کر راجپوت اپنے ساتھ نکھرا ھوا سامنت واد بھی لے آئے.* اُن کی سامنت وادی راج نیتی اور ان کے لگاتار قبایلی جھگڑوں نے ان کا ایک ھوجانا اور ایک قوم بن جانا ناممکن کردیا. اس لئے مسلمانوں کے حملے کے ساتھ ساتھ ایک ایک کرکے راجپوت ریاستوں کا خاتمہ ھوگیا. اُن کے خاتمے کے ساتھ ھی اُتری ھندستان کے ھندوؤں کی آزادی بھی چلی گئی.

پراچین بھارتیہ ساھتیہ ( ادب ) میں راجپوت نام نہیں ملتا. ھم نے دیکھا ھے کہ ویدک کال میں "راجنیہ" لفظ کا پریوگ ھوتا تھا. بعد میں ورن بتانے کے لئے چھتریہ شبد کا استعمال ھونے لگا تھا. لیکن اِسی سمے سے ھم راجپوتوں کا نام سننے لگتے ھیں. "راجپوت" سنسکرت کے "راج پتر"—راجہ کا لڑکا—لفظ کا بولا جانے والا روپ ھے. اس لئے اِس کا بھی ارتھ وھی ھے جو ویدک شبد "راجنیہ" کا ھے. لیکن یہ اور "چھتریہ" کے لئے بولا جانے والا "چھتری" شبد ایک نہیں ھے. ایک راجپوت چھتری اتھوا "چھتریہ" تو ھے، لیکن ساتھ ھی وہ کچھ اور بھی ھے. وہ بالکل صاف اور دوسروں سے الگ ایک سماج کا سدسیہ بھی ھے. وہ چندراج راسو میں ورنت 36 کلوں کا ھے. اس کا مطلب یہ ھوا کہ اِس پستک میں جن 36 کلوں کو گنایا گیا ھے وھی سچے راجپوت ھیں اور انھیں میں آپس میں شادی بیاہ ھوسکتا ھے. ان کلوں کے باھر بھی بہت

*—P. N. Banerjee-'Public Administration in Ancient India,' P. 52.

# मई 1955 مئی


| या किस से | सफ़ा صفحہ | کیا کس سے |
|---|---|---|
| 1. राजपूतों का दौर<br>—डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त | 281 | 1. راجپوتوں کا دور<br>—ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت |
| 2. अमन और प्रेम का एक ही रास्ता<br>—डाक्टर भगवानदास | 293 | 2. امن اور پریم کا ایک ھی راستہ<br>—ڈاکٹر بھگوان داس |
| 3. डर की छाया और आशा की एक किरन<br>—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा | 300 | 3. ڈر کی چھایا اور آشا کی ایک کرن<br>—ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا |
| 4. राष्ट्रभाषा का स्वरूप<br>—भाई मिश्रीलाल जैन | 305 | 4. راشٹر بھاشا کا سروپ<br>—بھائی مشری لعل جین |
| 5. उर्दू हिन्दी को क्या कुछ दे सकती है<br>—नज्मुद्दीन अहमद एम. ए. | 324 | 5. اردو ھندی کو کیا کچھ دے سکتی ھے<br>—نجم‌الدین احمد ایم . اے . |
| 6. ख़ैरात ( दान ) के बारे में मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें<br>—अनुवादक—मुजीब रिज़वी | 329 | 6. خیرات ( دان ) کے بارے میں محمد صاحب کی کچھ حدیثیں<br>—انوادک—مجیب رضوی |
| 7. आजकल की कुछ छोटी चीनी कहानियां<br>—अनुवादक—मुजीब रिज़वी | 334 | 7. آجکل کی کچھ چھوٹی چینی کہانیاں<br>—انوادک—مجیب رضوی |
| 8. प्रेमचन्द की भाषा<br>—राम किशोर 'पाशां' | 339 | 8. پریم چند کی بھاشا<br>—رام کشور ' پاشاں ' |
| 9. कुछ किताबें | 344 | 9. کچھ کتابیں |
| 10. हमारी राय—<br>अल्बर्ट आइन्स्टीन—विश्वम्भरनाथ पांडे; अन्धों की मसीहा—हेलेन केलर—विश्वम्भरनाथ पांडे; बान्दुंग सम्मेलन—विश्वम्भरनाथ पांडे; हिन्दू कोड बिल—विश्वम्भरनाथ पांडे. | 318 | 10. ھماری رائے—<br>البرٹ آئنٹیسن—وشمبھر ناتھ پانڈے؛ اندھوں کی مسیحا—ھیلین کیلر—وشومبھر ناتھ پانڈے؛ بادنگ سمیلن—وشومبھر ناتھ پانڈے؛ ھندو کوڈ بل—وشومبھر ناتھ پانڈے . |




जिल्द 19 جلد नम्बर 5 نمبر

# मई 1955 مئی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद ‏145، مٹھی گنج، الہ آباد

# नया हिन्द
# نیا ہند



## इस नम्बर के ख़ास लेख
## اِس نمبر کے خاص لیکھ

राजपूतों का दौर — راجپوتوں کا دور
—डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त — —ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

अमन और प्रेम का एक ही रास्ता — امن اور پریم کا ایک ہی راستہ
—डाक्टर भगवानदास — —ڈاکٹر بھگوان داس

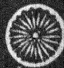
डर की छाया और आशा की एक किरण — ڈر کی چھایا اور آشا کی ایک کرن
—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा — —ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا

राष्ट्रभाषा का स्वरूप — راشٹر بھاشا کا سروپ
—भाई मिश्रीलाल जैन — —بھائی مشری لعل جین

ख़ैरात (दान) के बारे में कुछ हदीसें — خیرات (دان) کے بارے میں کچھ حدیثیں
—अनुवादक – मुजीब रिज़वी — —انوواد ک — مجیب رضوی

**इसके अलावा** — **اسکے علاوہ**

कहानी, स्केच, समालोचना, हमारी राय आदि
کہانی، اسکیچ، سمالوچنا، ہماری رائے آدی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद  ہندستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

मई 1955 مئی

# हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें

# ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं.

نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں .

| | नाम किताब | लेखक | दाम | لیکھک | نام کتاب | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | शेर-ओ-शायरी | श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय | 8 0 0 | شری ایودھیا پرساد گوئلیہ | شعر و شاعری | .1 |
| 2. | शेर-ओ-सुख़न | ,, | 8 0 0 | ,, | شعر و سخن | .2 |
| 3. | गहरे पानी पैठ | ,, | 2 8 0 | ,, | گہرے پانی پیٹھ | .3 |
| 4. | हमारे आराध्य | श्री बनारसीदास चतुर्वेदी | 3 0 0 | شری بنارسی داس چترویدی | ہمارے آرادھیہ | .4 |
| 5. | संस्मरण | ,, | 3 0 0 | ,, | سنسمرن | .5 |
| 6. | दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां | श्री जगदीशचन्द्र जैन | 3 0 0 | شری جگدیش چندر جین | دو ہزار ورش پرانی کہانیاں | .6 |
| 7. | ज्ञान गंगा | श्री नारायण साद जैन | 6 0 0 | شری نارائن پرساد جین | گیان گنگا | .7 |
| 8. | पथ चिन्ह | श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी | 2 0 0 | شری شانتی پریہ دویدی | پتھ چنہ | .8 |
| 9 | पंच प्रदीप | शान्ति एम. ए. | 2 0 0 | شانتی ایم . اے | پنچ پردیپ | .9 |
| 10. | आकाश के तारे धरती के फूल | श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर | 2 0 0 | شری کنھیالال مشر پربھاکر | آکاش کے تارے دھرتی کے پھول | .10 |
| 11. | मुक्ति दूत | श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए. | 0 0 | شری ویریندر کمار جین ایم . اے | مکتی دوت | .11 |
| 12 | मिलन यामिनी | श्री बच्चन | 4 0 0 | شری بچن | ملن یامنی | .12 |
| 13. | रजत रश्मि | डाक्टर रामकुमार वर्मा | 2 8 0 | ڈاکٹر رام کمار ورما | رجت رشمی | .13 |
| 14 | मेरे बापू | श्री तन्मय बुख़ारिया | 2 8 0 | شری تنمے بخاریا | میرے باپو | .14 |
| 15. | विश्व संघ की ओर | पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला | 3 0 0 | پنڈت سندر لال' بھگوان داس کیلا | وشو سنگھ کی اور | .15 |
| 16. | भारतीय अर्थशास्त्र | श्री भगवानदास केला | 0 0 | شری بھگوان داس کیلا' | بھارتیہ ارتھ شاستر | .16 |
| 17. | भारतीय शासन | ,, | 3 0 0 | ,, | بھارتیہ شاسن | .17 |
| 18. | नागरिक शास्त्र | ,, | 2 4 0 | ,, | ناگرک شاستر | .18 |
| 19. | साम्राज्य और उनका पतन | ,, | 2 8 0 | ,, | سامراج اور ان کا پتن | .19 |
| 20. | भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन | ,, | 1 4 0 | ,, | بھارتیہ سوادھینتا آندولن | .20 |
| 21. | सर्वोदय अर्थ व्यवस्था | ,, | 1 8 0 | ,, | سروودے ارتھ ویوستھا | .21 |
| 22. | हमारी आदिम जातियां | श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय | 3 8 0 | شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے | ہماری آدم جاتیاں | .22 |
| 23. | अर्थशास्त्र शब्दावली | श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. श्री गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, श्री भगवानदास केला | 2 0 0 | شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا | ارتھ شاستر شبداولی | .23 |
| 24. | नागरिक शिक्षा | श्री भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे | 1 8 0 | شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے | ناگرک شکشا | .24 |
| 25. | राष्ट्र मंडल शासन | श्री दयाशंकर दुबे | 1 8 0 | دیا شنکر دوبے | راشٹر منڈل شاسن | .25 |
| 26 | जवानी | महात्मा भगवानदीन | 3 0 0 | مہاتما بھگوان دین | جوانی | .26 |
| 27. | मारने की हिम्मत ! | ,, | 1 0 0 | ,, | مارنے کی ہمت ! | .27 |
| 28. | सलोना सच | | 0 8 0 | ,, | سلونا سچ | .28 |
| 29. | मेरे साथी | ,, | 1 0 0 | ,, | میرے ساتھی | .29 |

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ—
منیجر 'نیا ہند'
145' مٹھی گنج' الہ آباد-3

अपनी भूल की सज़ा कभी कभी खुद ही दे लेता है. शीर्षासन में सिर नीचे होता है और पांव ऊपर.

'सर्वोदयवादी' जब यह कहता है कि वह राजा और रंक दोनों का उदय चाहता है, तब वह यही बताता है कि उसका राजा, रंक में से ही एक हुआ करता है, फिर 'सर्वोदय समाज' वर्गहीन हुआ या नहीं ?

'सर्वोदयवादी' उस वक़्त वर्ग सहित भी है जब वह राजा का जलूस निकालता है और रंक के कंधों पर उसके सिंहासन का भार रखता है. पर वह क्या करे ? प्रकृति ने आदमी का सिर, आदमी के कन्धों पर बनाया है.

रही शासन की बात. तो वह शासन, शासन नहीं, जो शासितों को अखरता न हो. सिर का शासन किसी अंग को नहीं अखरता. आदमी जब सिर से कोई भूल कर बैठता है तो अपने हाथों से अपना सिर पीट लेता है.

सर्वोदय वादियों का आध्यात्मिक शासन ऐसा ही होगा. वह किसी को अखरेगा नहीं.

'कुमारी जी' ने भगवान को लेकर अनोखी बातें कह डाली हैं. बेचारा भगवान आजकल सभी का शिकार बना हुआ है. भगवान को समझदारों का शिकार बनने की जरूरत नहीं. भगवान के हज़ारों नाम पहिले से ही हैं. बीसवीं सदी ने उसी भगवान को कुछ और नाम दिये हैं. बीसवीं सदी कहती है, गर्मी ईश्वर है, गति ईश्वर है, आकार ईश्वर है, शून्य तो बहुत पहिले से ही ईश्वर है. बीसवीं सदी के विचारक कहते हैं, ईमानदारी ईश्वर है. सर्वोदयवादियों के गुरु जी का कहना है, सत्य ही 'ईश्वर' है. अब अगर भगवान की जगह 'सत्य' लिख दिया जाये तो 'कुमारी जी' को कोई शिकायत नहीं रहनी चाहिये.

## मार कर खा जाते हैं

शङ्का :—लाल बुझक्कड़, राज-पुरोहित, राजगद्दी, यह सब 'कुमारी जी' की अपनी सूझ है. हम इन्हें ठीक माने लेते हैं.

समाधान :—राजगद्दी का दिया जाना कोई बड़ी बात नहीं और सरकार के दृष्टिकोण से बहुत अच्छी चीज़ और जरूरी चीज़ है. पर यह गद्दी विनोबा जी ने स्वीकार कब की ? कर भी लेते तो बुरा क्या था ? गिरी जी अब तक 'लेबर' की गद्दी सम्भाले हुए थे. जब देखा कि वे 'लेबर' का भला नहीं कर सकते तब गद्दी छोड़ दी. उनके साथी अब तक गद्दी से चिपके हुए हैं. जो चिपके हुए हैं वे बुरा कर रहे हैं. अहिंसावादी और सर्वोदयवादी उसूल ही यह है कि हर एक से मदद ले लेना अगर वह उसके उसूलों के अनुसार मदद दें. कम्युनिस्ट बेरिया से मदद लेते रहे. उसे गद्दी भी दे रखी थी. पर जब उसूलों से गिरा तब गद्दी छीन ली गई और वहां भेज दिया गया जहां से लौट कर आना नहीं होता.

—म. भगवानदीन



اپنی بھول کی سزا کبھی کبھی خود ھی دے لیتا ھے ۔ شیرشاسن میں سر نیچے ھوتا ھے اور پاؤں اوپر ۔

' سرودے وادی ' جب یہ کہتا ھے کہ وہ راجا اور رنک دونوں کا اودے چاھتا ھے' تب وہ یہی بتاتا ھے کہ اُس کا راجا' رنک میں سےھی ایک ھوا کرتا ھے' پھر 'سرودےسماج' ورگ‌ھین ھوا یا نہیں ؟

'سرودئے وادی' اُس وقت ورگ سہت بھی ھے جب وہ راجا کا جلوس نکالتا ھے اور رنک کے کندھوں پر اُس کے سنگھاسن کا بھار رکھتا ھے ۔ پر وہ کیا کرے ؟ پرکرتی نے آدمی کا سر' آدمی کے کندھوں پر بنایا ھے ۔

رھی شاسن کی بات ۔ تو رہ شاسن' شاسن نہیں' جو شاستوں کو اکھرتا نہ ھو. سر کا شاسن کسی انگ کو نہیں اکھرتا. آدمی جب سر سے کوئی بھول کر بیٹھتا ھے تو اپنے ھاتھوں سے اپنا سر پیٹ لیتا ھے ۔

سرودئے وادیوں کا آدھیاتمک شاسن ایسا ھی ھوگا ۔ وہ کسی کو اکھریگا نہیں ۔

'کماری جی' نے بھگوان کو لیکر انوکھی باتیں کہ ڈالی ھیں ۔ بیچارہ بھگوان آجکل سبھی کا شکار بنا ھوا ھے ۔ بھگوان کو سمجھداروں کا شکار بننے کی ضرورت نہیں ۔ بھگوان کے ھزاروں نام پہلے سے ھی ھیں ۔ بیسویں صدی نے اُسی بھگوان کو کچھ اور نام دئے ھیں ۔ بیسویں صدی کہتی ھے' گرمی ایشور ھے' گتی ایشور ھے' آکار ایشور ھے' شونیہ تو بہت پہلے سے ھی ایشور ھے ۔ بیسویں صدی کے وچارک کہتے ھیں' ایمانداری ایشور ھے ۔ سرودئے وادیوں کے گروجی کا کہنا ھے' ستیہ ھی 'ایشور' ھے ۔ اب اگر بھگوان کی جگہ 'ستیہ' لکھ دیا جائے تو 'کماری جی' کو کوئی شکایت نہیں رھنی چاھئے ۔

## مارکر کھا جاتے ھیں

شنکا :—'لال بجھکڑ' راج پروھت' راج گدی' یہ سب 'کماری جی' کی اپنی سوجھ ھے ۔ ھم اِنھیں ٹھیک مانے لیتے ھیں ۔

سمادھان :—راج گدی کا دیا جانا کوئی بڑی بات نہیں اور سرکار کے درشٹی‌کون سے بہت اچھی چیز اور ضروری چیز ھے. پر یہ گدی ونوباجی نے سویکار کب کی کر بھی لیتے تو برا کیا تھا ؟ گری جی اب تک 'لیبر' کی گدی سنبھالے ھوئے تھے ۔ جب دیکھا کہ وے 'لیبر' کا بھلا نہیں کرسکتے تب گدی چھوڑ دی ۔ اُن کے ساتھی اب تک گدی سے چپکے ھوئے ھیں ۔ جو چپکے ھوئے ھیں وے برا کر رھے ھیں ۔ اھنساوادی اور سرودئے وادی اُصول ھی یہ ھے کہ ھر ایک سے مدد لے لینا اگر وہ اُن کے اصولوں کے انوسار مدد دیں ۔ کمیونسٹ بیریا سے مدد لیتے رھے ۔ اُسے گدی بھی دے رکھی تھی ۔ پر جب اُصولوں سے گرا تب گدی چھین لی گئی اور وھاں بھیج دیا گیا جہاں سے لوٹ کر آنا نہیں ھوتا ۔

—ایم ۔ بھگوان دین

लिये कमरबस्ता है. अगर फ़ारमोसा से अमरीका अपनी फ़ौजें हटा ले तो सब संकट आज ही दूर हो सकते हैं.

पंडित नेहरू कोरिया और इन्डो-चाइना में विराम संधि क़ायम करने का यश कमा चुके हैं. आशा है कि इस मामले में वे बहुत सोच समझ कर क़दम उठायेंगे और कोई बात ऐसी न होने देंगे जिससे फ़ारमोसा पर अमरीकी सेनाओं का क़ब्ज़ा क़ुबूल कर लिया जाये.—डाक्टर जगदीशचन्द्र जैन

## 'सर्वोदय, भूदान और हृदय परिवर्तन'

सितम्बर के 'नया हिन्द' में 'कुमारी सरोज अग्रवाल' के नाम से एक लेख था जिसका शीर्षक यही था जो ऊपर दिया हुआ है. इस लेख का .ख़ुलासा देते हुए संगम के एडीटर ने अपनी तरफ़ से कुछ शब्द जोड़े हैं. 'नया हिन्द' का हम से सम्बन्ध है, इसलिये इस सिलसिले में हमें कुछ लिखना पड़ रहा है.

'कुमारी जी' का कहना है, 'सर्वोदय दर्शन वाले सबका उदय चाहते हैं. सब में 'राजा' 'रंक' दोनों शामिल हैं. उन्हीं का यह कहना है कि 'सर्वोदय' वाले कहते हैं, कि उनके समाज में न कोई वर्ग होगा न शासन, ये पूर्वापरविरोध कैसा ?

पूर्वापरविरोध को तर्क शास्त्र ने 'दूषण' माना है. पर गांधी जी उसे भूषण मानते थे. गांधी जी की तरह हम भी इसे 'भूषण' मानते हैं.

इन दो बातों में (1) हम राजा और रंक सब का उदय चाहते हैं, (2) हमारे समाज में न वर्ग होगा न शासन, हमें कोई ऐसी बात नहीं मालूम होती, जो एक दूसरे से बेमेल हो.

'कुमारी जी' का लेख कहता है कि उनका झुकाव 'कम्युनिज़्म' की तरफ़ है. 'सर्वोदय' की तरह 'कम्युनिज़्म' भी यही कहता है कि न उसमें वर्ग होंगे न शासन. पर क्या 'रूस' और 'चीन' का राज्य 'वर्ग' और 'शासन' नहीं है ?

इस प्रतिशंका का जवाब 'समाजवादी' यानी 'कम्युनिस्ट इस प्रकार देता है कि यह उनका 'आदर्श' है. वह अभी बीच की अवस्था में से गुज़र रहे हैं, इसलिये वहां वर्ग और शासन हैं. कम्युनिस्ट यही जवाब 'विनोबा जी' की तरफ़ से क्यों नहीं सोच लेता कि 'सर्वोदय' भी अभी बीच की अवस्था से गुज़र रहा है. बीच की क्या वह शुरू की अवस्था से गुज़र रहा है. फिर उसमें यह कमी रहना ही चाहिये.

राजा, रंक, राजकाजी देह के दो अंग हैं. सिर पैर आदमी की देह के दो अंग हैं. जैसे सिर पैर में वर्ग की कल्पना थोथी है, वैसे ही राजा और रंक की कल्पना थोथी है.

सिर अगर पैर की ओर से बेपरवाही करता है और पैर को कुछ हो जाता है, तो सिर को भी तकलीफ़ उठानी पड़ती है. राजा भी रंक की तरफ़ से बेपरवाह होकर तकलीफ़ से नहीं बच सकता. समय समय पर राजा अपने किये का दन्ड भोगते रहे हैं. ठोकर पांव खाता है, फूटता है सिर. सिर





لئے کمربستہ ھے ۔ اگر فارموسا سے امریکہ اپنی فوجیں ھٹالے تو سب سنکٹ آج ھی دور ھو سکتے ھیں ۔

پنڈت نہرو کوریا اور انڈو - چائنا میں ورام سندھی قائم کرنے کا یش کما چکے ھیں ۔ آشا ھے کہ اِس معاملے میں وے بہت سوچ سمجھکر قدم اُٹھائیں گے اور کوئی بات ایسی نہ ھونے دیں گے جس سے فارموسا پر امریکی سیناؤں کا قبضہ قبول کر لیا جائے ۔ —ڈاکٹر جگدیش چندر جین

## 'سرودے' بھودان اور ھردے پریورتن'

ستمبر کے ' نیا ھند ' میں ' کماری سروج اگروال ' کے نام سے ایک لیکھ تھا جس کا شیرشک یہی تھا جو اوپر دیا ھوا ھے ۔ اِس لیکھ کا خلاصہ دیتے ھوئے سنگم کے ایڈیٹر نے اپنی طرف سے کچھ شبد جوڑے ھیں ۔ ' نیا ھند ' کا ھم سے سمبندھ ھے' اِس لئے اِس سلسلے میں ھمیں کچھ لکھنا پڑ رھا ھے ۔

' کماری جی ' کا کہنا ھے' 'سرودے درشن والے سب کا اُدے چاھتے ھیں ۔ سب میں ' راجا ' رنک' دونوں شامل ھیں ۔ اُنھیں کا یہ کہنا ھے کہ 'سرودے' والے کہتے ھیں' کہ اُن کے سماج میں نہ کوئی ورگ ھوگا نہ شاسن' یہ پوروا پر ورودھ کیسا ؟

پوروا پر ورودھ کو ترک شاستر نے 'دوشن' مانا ھے ۔ پر گاندھی جی اُسے بھوشن مانتے تھے ۔ گاندھی جی کی طرح ھم بھی اِسے ' بھوشن ' مانتے ھیں ۔

اِن دو باتوں میں ( 1 ) 'ھم راجا اور رنک سب کا اُدے چاھتے ھیں' ( 2 ) 'ھمارے سماج میں نہ ورگ ھوگا نہ شاسن' ھمیں کوئی ایسی بات نہیں معلوم ھوتی جو ایک دوسرے سے بے میل ھو ۔

'کماری جی' کا لیکھ کہتا ھے کہ اُن کا جھکاؤ ' کمیونزم ' کی طرف ھے ۔ ' سرودے ' کی طرح ' کمیونزم ' بھی یہی کہتا ھے کہ نہ اُس میں ورگ ھونگے نہ شاسن ۔ پر کیا ' روس ' اور ' چین ' کا راجیہ ' ورگ ' اور شاسن نہیں ھے ؟

اِس پرتی شنکا کا جواب ' سماج وادی ' یعنی 'کمیونسٹ' اِس پرکار دیتا ھے کہ یہ اُن کا ' آدرش' ھے ۔ وہ ابھی بیچ کی اوستھا میں سے گذر رھے ھیں' اِس لئے وھاں ورگ اور شاسن ھیں ۔ کمیونسٹ یہی جواب ' ونوباجی ' کی طرف سے کیوں نہیں سوچ لیتا کہ ' سرودے ' بھی ابھی بیچ کی اوستھا سے گذر رھا ھے ۔ بیچ کی کیا وہ شروع کی اوستھا گذر رھا ھے ۔ پھر اس میں یہ کمی رھنا ھی چاھئے ۔

راجا' رنک' راجکاجی دیہہ کے دوانگ ھیں ۔ سر پیر آدمی کے دیہ کے دوانگ ھیں ۔ جیسے سر' پیر میں ورگ کی کلپنا تھوتھی ھے' ویسے ھی راجا اور رنک کی کلپنا تھوتھی ھے ۔

سر اگر پیر کی اور سے بے پرواہی کرتا ھے اور پیر کو کچھ ھو جاتا ھے' تو سر کو بھی تکلیف اُٹھانی پڑتی ھے ۔ راجا بھی رنک کی طرف سے بے پرواہ ھو کر تکلیف سے نہیں بچ سکتا ۔ سمئے سمئے پر راجا اپنے کئے کا دنڈ بھوگتے رھے ھیں ۔ ٹھوکر پاؤں کھاتا ھے' پھوٹتا ھے سر ۔ سر

को चीन से अलग मानने का ऐलान कर दिया है. ब्रिटिश विदेश मंत्री ईडेन ने पार्लिमेन्ट में कह दिया कि इस सदी में फ़ारमूसा पर चीन का अधिकार कभी नहीं रहा. प्रधान-मंत्री चर्चिल ने भी ऐलान किया है कि इन टापुओं पर चीन का असर कभी नहीं माना गया. यह भी समाचार प्रकाशित हुआ है कि ब्रिटेन चीन से आग्रह कर रहा है कि अगर वह सुरक्षा परिषद् की दावत क़बूल कर ले और युद्ध बन्द कर दे तो अमरीका से कह सुनकर वह उसे क्वेमाय और मात्सु आदि तटवर्ती द्वीपों को दिलाने की कोशिश करेगा. इस प्रकार ब्रिटेन अपने सभी दाव-पेंच खेल रहा है.

## अन्दरूनी मामलों में दख़ल

चीन का कहना है कि अमरीकी सैनिकों की छत्र छाया में जो आये दिन च्यांग-काई-शेक की फ़ौज चीन की मुख्य भूमि पर हमले करती रहती हैं, तथा फ़ारमूसा में अपनी सेनाओं को तैनात करके अमरीका जो चीन के आन्तरिक मामलों में दख़ल दे रहा है उसके बारे में यू. एन. ओ. उंगली तक नहीं उठाता, जबकि अपनी भूमि की हिफ़ाज़त के लिये यदि चीनी सेनायें फ़ारमूसा की ओर क़दम रखती हैं तो चीन को हमलावर ऐलान करने की कोशिश की जाती है. 5 हज़ार मील दूर के टापुओं पर चीन का क़ब्ज़ा हो जाने से अगर अमरीका अपनी सुरक्षा ख़तरे में समझता है तो चीन की मुख्य भूमि से कुछ ही मील दूर के टापुओं पर अमरीका का क़ब्ज़ा होना क्या चीन के लिये ख़तरनाक नहीं कहा जायेगा ?

## अमरीका विषम स्थिति में

दरअसल फ़ारमोसा के सबब ख़ुद अमरीका बड़े संकट में फंस गया है. उसे उम्मीद थी कि उसके मित्र राष्ट्र इस सिलसिले में उसकी मदद करेंगे, लेकिन वह सफल नहीं हुई, और अकेले युद्ध करने के लिये वह किसी हालत में तैयार नहीं. फ़ारमूसा के सम्बन्ध में अमरीका की इस ढुलमुल नीति को देखकर ही शायद फ़ारमूसा की कुमिंगतांग पार्टी के पत्र ने यहां तक लिख दिया है—"हमें अमरीकियों पर बहुत ज़्यादा ऐतबार नहीं करना चाहिये."

## फ़ारमोसा चीन का अंग

पिछले दिनों जेनेवा में जो कान्फ़रेन्स हुई थी उससे साफ़ हो चुका है कि चीन शान्ति चाहता है, जंग नहीं. अगर वह युद्ध के लिये लालायित होता तो वह किसी भी हालत में अमरीका की फ़ौजों को अपने समुद्री तट के पास नहीं आने देता—चाहे फिर वह कुमिंग तांग सेना को स्थानांतरित करने के बहाने ही हो, फ़ारमोसा पर चीन का उतना ही हक़ है जितना कि गोआ पर हिन्दुस्तान का. जैसे हिन्दुस्तान की जनता गोआ को आज़ाद करने का फ़ैसला कर चुकी है, उसी प्रकार चीनी जनता फ़ारमोसा को मुक्त करने के



کو چین سے الگ ماننے کا اعلان کر دیا ھے . برٹش ودیش منتری ایڈن نے پارلیمینٹ میں کہہ دیا کہ اِس صدی میں فارموسا پر چین کا ادھیکار کبھی نہیں رہا . پردھان منتری چرچل نے بھی اعلان کیا ھے کہ اِن ٹاپوؤں پر چین کا اثر کبھی نہیں مانا گیا . یہ بھی سماچار پرکاشت ہوا ھے کہ برٹین چین سے آگرہ کر رہا ھے کہ اگر وہ سورکشا پریشد کی دعوت قبول کر لے اور یدھ بند کر دے تو امریکہ سے کہہ سن کر وہ اُسے کوئیموئے اور ماتسو آدی تٹ ورتی دیپوں کو دلانے کی کوشش کرے گا . اِس پرکار برٹین اپنے سبھی داؤں پیچ کھیل رہا ھے .

## اندرونی معاملوں میں دخل

چین کا کہنا ھے کہ امریکی سینکوں کی چھتر چھایا میں جو آئے دن کومنتانگ کی فوجیں چین کی مکھیہ بھومی پر حملے کرتی رہتی ھیں، تتھا فارموسا میں اپنی سیناؤں کو تعینات کر کے امریکہ جو چین کے انترک معاملوں میں دخل دے رہا ھے اِس کے بارے میں یو . این . او انگلی تک نہیں اُٹھاتا، جب کہ اپنی بھومی کی حفاظت کے لئے یدی چینی سینائیں فارموسا کی اُور قدم رکھتی ھیں تو چین کو حملہ آور اعلان کرنے کی کوشش کی جاتی ھے . 5 ہزار میل دور کے ٹاپوؤں پر چین کا قبضہ ھو جانے سے اگر امریکہ اپنی سورکشا خطرے میں سمجھتا ھے تو چین کی مکھیہ بھومی سے کچھ ھی میل دور کے ٹاپوؤں پر امریکہ کا قبضہ ہونا کیا چین کے لئے خطرناک نہیں کہا جائیگا ؟

## امریکہ وشم استھتی میں

دراصل فارموسا کے سبب خود امریکہ بڑے سنکٹ میں پھنس گیا ھے . اُسے اُمید تھی کہ اُس کے متر راشٹر اِس سلسلے میں اُس کی مدد کریں گے، لیکن وہ سپھل نہیں ھوئیں اور اکیلے یدھ کرنے کے لئے وہ کسی حالت میں تیار نہیں . فارموسا کے سمبندھ میں امریکہ کی اِس ڈھل مل نیتی کو دیکھ کر ھی شاید فارموسا کی کومنتانگ پارٹی کے پتر نے یہاں تک لکھ دیا ھے—" ھمیں امریکیوں پر بہت زیادہ اعتبار نہیں کرنا چاھئے."

## فارموسا چین کا انگ

پچھلے دنوں جنیوا میں جو کانفرنس ھوئی تھی اُس سے صاف ھو چکا ھے کہ چین شانتی چاھتا ھے، جنگ نہیں . اگر وہ یدھ کے لئے لالائت ہوتا تو وہ کسی بھی حالت میں امریکہ کی فوجوں کو اپنے سمدری تٹ کے پاس نہیں آنے دیتا—چاھئے پھر وہ کومنتانگ سینا کو استھانانترت کرنے کے بہانے ھی ھو . فارموسا پر چین کا اتنا ھی حق ھے جتنا کہ گوا پر ھندستان کا . جیسے ھندستان کی جنتا گوا کو آزاد کرانے کا فیصلہ کر چکی ھے اُسی پرکار چینی جنتا فارموسا کو مکت کرانے کے

**सुंयुक्त राष्ट्र संघ में चीन की 60 करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व फ़ारमूसा की मुट्ठी भर सरकार कर रही है !**

## मित्र राष्ट्रों से आशा

अमरीका को यह भी उम्मीद थी कि ज़रूरत पड़ने पर ब्रिटेन, फ्रान्स आदि मित्र राष्ट्र फ़ारमूसा की रक्षा में उसकी मदद करेंगे, लेकिन चीनी तट के नज़दीकी टापुओं की ओर चीन को बढ़ता देख जब चांग ने अमरीका से ख़ास मदद की अपील की तो ब्रिटेन आदि अमरीका के दोस्त मुल्कों ने साफ़ इन्कार कर दिया कि कोरिया की भांति अब वे अपनी सेनाओं को युद्ध में कटने के लिये नहीं भेजेंगे. अभी हाल में अमरीका के ज्वाइन्ट चीफ़ स्टाफ़ के सदर एडमिरल आर्थर रेडफ़ोर्ड तथा अमरीका के दूर पूर्व के कमान्डर जनरल जान हल को ब्रिटेन ने कह दिया है कि फ़ारमूसा में लड़ाई छिड़ जाने पर सातवें बेड़े को युद्ध-सामग्री आदि के लिये हांग-कांग पर निर्भर नहीं रहना चाहिये. हांग-कांग के "मार्निंग पोस्ट" ने लिखा है "अमरीका की निगाह कम्युनिज़्म पर नहीं बल्कि एशिया पर है", तथा "समुद्री तटों के द्वीपों और फ़ारमूसा पर चीनी हमले का ऐलान करना अमरीका का एक भद्दा प्रोपेगेन्डा है." इन सब बातों से पता चलता है कि ब्रिटेन अमरीका की नीयत पर शुबहा करने लगा है. अभी हाल में चांग-काई-शेक ने जो फ़ारमूसा में 'युद्ध स्थिति' का ऐलान किया है उसकी नुक़्ता-चीनी करते हुए हांग-कांग के ब्रिटिश अधिकारियों ने कहा है—"फ़ारमूसा को तटस्थ घोषित करने से पहले अमरीका को चाहिये कि चांग-काई-शेक को तटस्थ घोषित करे." ( टाइम्स आफ़ इन्डिया, न्यू सर्विस, हांग-कांग' 5 फ़रवरी 1955 का समाचार ).

## 'सीटो' सम्मेलन

दक्षिण-पूर्वी एशिया को उपनिवेश बनाये रखने के तौर-तरीक़ों के बारे में साम्राजियों में जो मतभेद हो गये हैं उन्हें सुलझाने के लिये 23 फ़रवरी, 1955 को बैंकाक में 'सीटो' सम्मेलन बुलाया गया है. इसी प्रकार 'नीटो' सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है जिससे दक्षिण वियतनाम, लाओस, कम्बोडिया, थाईलैन्ड आदि देशों के साथ जापान और दक्षिण कोरिया को भी शामिल करके चीन के ख़िलाफ़ कोई संयुक्त मोरचा तैयार किया जा सके. शायद इसीलिये अमरीका फ़ारमोसा युद्ध सम्बन्धी मामले को टलाता जा रहा है.

## ब्रिटेन की दुरंगी चाल

ब्रिटेन हमेशा की तरह अपनी दुरंगी चाल चल रहा है. वह युद्ध में अमरीका का साथ देने से डरता है, लेकिन साथ ही अमरीका को ख़ुश करने के लिये उसने फ़ारमूसा



**سنیکت راشٹر سنگھ میں چین کی 60 کروڑ جنتا کا پرتی- ندھتو فارموسا کی مٹھی بھر سرکار کر رہی ہے !**

## متر راشٹروں سے آشا

امریکہ کو یہ بھی امید تھی کہ ضرورت پڑنے پر برٹین' فرانس آدی متر راشٹر فارموسا کی رکھشا میں اس کی مدد کریں گے' لیکن چینی تٹ کے نزدیکی ٹاپوں کی اور چین کو بڑھتے دیکھ جب چانگ نے امریکہ سے خاص مدد کی اپیل کی تو برٹین آدی امریکہ کے دوست ملکوں نے صاف انکار کر دیا کہ کوریا کی بھانتی اب وے اپنی سیناؤں کو یدھ میں کٹنے کے لئے نہیں بھیجیں گے . ابھی حال میں امریکہ کے جوائنٹ چیف اسٹاف کے صدر ایڈمیرل آرتھر ریڈ فورڈ تتھا امریکہ کے دور پورو کے کمانڈر جنرل جان ہل کو برٹین نے کہہ دیا ہے کہ فارموسا میں لڑائی چھڑ جانے پر ساتویں بیڑے کو یدھ سامگری آدی کے لئے ہانگ کانگ پر نربھر نہیں رہنا چاہئے . ہانگ کانگ کے " مارننگ پوسٹ " نے لکھا ہے - " امریکہ کی نگاہ کمیونزم پر نہیں بلکہ ایشیا پر ہے " تتھا " سمدری تٹوں کے دیپوں اور فارموسا پر چینی حملے کا اعلان کرنا امریکہ کا ایک بھدا پروپیگنڈا ہے ." ان سب باتوں سے پتہ چلتا ہے کہ برٹین امریکہ کی نیت پر شبہ کرنے لگا ہے . ابھی حال میں چانگ کائی - شیک نے جو فارموسا میں 'یدھ استھتی' کا اعلان کیا ہے اس کی نقطہ چینی کرتے ہوئے ہانگ کانگ کے برٹش ادھیکاریوں نے کہا ہے—"فارموسا کو تٹستھ گھوشت کرنے سے پہلے امریکہ کو چاہئے کہ چانگ - کائی - شیک کو تٹستھ گھوشت کرے" ( ٹائمس آف انڈیا نیوز سروس' ہانگ کانگ' 5 فروری 1955 کا سماچار ) .

## ' سیٹو ' سمیلن

دکھن - پوربی ایشیا کو اپنیویش بنائے رکھنے کے طور طریقوں کے بارے میں سامراجیوں میں جو مت بھید ہوگئے ہیں انہیں سلجھانے کے لئے 23 فروری' 1955 کو بینکاک میں ' سیٹو ' سمیلن بلایا گیا ہے اسی پر کار 'نیٹو' سمیلن کا بھی آیوجن کیا جا رہا ہے جس سے دکھن ویت نام' لاؤس' کمبوڈیا' تھائی لینڈ آدی دیشوں کے ساتھ جاپان اور دکھن کوریا کو بھی شامل کر کے چین کے خلاف کوئی سنیکت مورچہ تیار کیا جا سکے . شاید اسی لئے امریکہ فارموسا یدھ سمبندھی معاملے کو ٹالتا جا رہا ہے .

## برٹین کی دورنگی چال

برٹین ہمیشہ کی طرح اپنی دورنگی چال چل رہا ہے . وہ یدھ میں امریکہ کا ساتھ دینے سے ڈرتا ہے' لیکن ساتھ ہی امریکہ کو خوش کرنے کے لئے اس نے فارموسا

पर जा पहुंचा है और इस तरह चांग की सेनाओं को हटाने में मदद देने के बहाने वह काफ़ी समय तक चीनी समुद्र तट पर चक्कर काट सकता है !

## क्वेमोय की रक्षा

अभी हाल में चांग-काई-शेक ने चीन की मुख्य भूमि पर हमला करने को फिर से धमकी देते हुए ताचेन से हटाई हुई सेनाओं को क्वेमोय और मात्सु में लाकर रखने की जो ख़ाहिश ज़ाहिर की है उससे हालत और भी गंभीर हो जाती है. उस हालत में अमरीका की फ़ौजें चीन की मुख्य भूमि से सिर्फ़ पांच मील के फ़ासले पर रह जायेंगी (क्वेमाय द्वीप समूह अमोय प्रान्त से सिर्फ़ पांच मील दूर है). नानची द्वीप समूह की रक्षा के लिये भी चांग ने अमरीका से मांग की है. राष्ट्रपति आइज़न हावर ने इतमीनान दिलाया है कि यदि ताचेन, नानची और मात्सु द्वीप समूहों की नहीं तो कुछ ख़ास हालतों में अमरीका को क्वेमोय की हिफ़ाज़त तो करनी होगी.

## विराम-संधि की मांग

ईक्यांगशान नामक द्वीप पर चीनियों के अधिकार हो जाने से वाशिंगटन में काफ़ी प्रतिक्रिया हुई जान पड़ती है. डलेस और आइज़न हावर ने अपने बयानों में यू. एन. ओ. के मातहत फ़ारमूसा युद्ध में विराम-संधि की मांग की है. इस सम्बन्ध में न्यूज़ीलैन्ड ने सुरक्षा परिषद् में प्रस्ताव रखा है कि चीन और फ़ारमूसा में युद्ध बन्द कराने पर विचार किया जाये और इस विचार विनिमय में भाग लेने के लिये चीन को भी दावत दी जाये. लेकिन सोवियत रूस ने इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा है कि चीन ने जो अपनी भूमि पर अमरीकी हमले की शिकायत की है, पहले उसकी सुनवाई की जाये. अपने प्रति-प्रस्ताव में उसने बताया है कि चीनी समुद्र में से चीनी सेनाओं के अतिरिक्त अन्य सब सेनायें हटा ली जायें. चीन के प्रधान-मंत्री चाऊ-एन-लाई ने न्यूज़ीलैन्ड के प्रस्ताव पर विचार-विनिमय के लिये अपना प्रतिनिधि भेजने से इन्कार कर सोवियत रूस के ही प्रस्ताव का समर्थन किया है और वह भी तब जबकि चांग-काई-शेक के प्रतिनिधि को सुरक्षा परिषद् में से हटा दिया जाये.

## चीन का प्रतिनिधित्व क्यों नहीं ?

दरअसल चीन से चांग-काई-शेक के भाग कर आने पर भी अमरीका समझता रहा कि फ़ारमूसा में बैठे बैठे चांग अमरीकी सहायता से चीन पर फिर से क़ब्ज़ा कर सकेगा. इसी आशा से अमरीका उसे काफ़ी मदद देता रहा और उसने चीन की पीकिंग सरकार को मान्यता नहीं दी. अन्य राष्ट्रों से भी उसने यही अनुरोध किया कि वे चांग की सरकार को ही 'क़ानून द्वारा स्थापित' सरकार मानें. इसीलिए



پر جا پہونچا ہے اور اس طرح چانگ کی سیناؤں کو ہٹانے میں مدد دینے کے بہانے وہ کافی سمے تک چینی سمدر تٹ پر چکر کاٹ سکتا ہے !

## کوئیموے کی رکچھا

ابھی حال میں چانگ - کائی - شیک نے چین کی مکھیہ بھومی پر حملہ کرنے کی پھر سے دھمکی دیتے ہوئے تاچین سے ہٹائی ہوئی سیناؤں کو کوئیموے اور ماتسو میں لا کر رکھنے کی جو خواہش ظاہر کی ہے اُس سے حالت اور بھی گمبھیر ہو جاتی ہے . اُس حالت میں امریکہ کی فوجیں چین کی مکھیہ بھومی سے صرف پانچ میل کے فاصلے پر رہ جائیں گی (کوئیموے دیپ سموہ اموئے پرانت سے صرف پانچ میل دور ہے) . نانچی دیپ سموہ کی رکچھا کے لئے بھی چانگ نے امریکہ سے مانگ کی ہے . راشٹرپتی آئزن ہاور نے اطمینان دلایا ہے کہ یدی تاچین، نانچی اور ماتسو دیپ سموہوں کی نہیں تو کچھ خاص حالتوں میں امریکہ کوئیموے کی حفاظت تو کرنی ہوگی .

## ورام سندھی کی مانگ

ایکیانگ شان نامک دیپ پر چینیوں کے ادھیکار ہو جانے سے واشنگٹن میں کافی پرتی کریا ہوئی جان پڑتی ہے . ڈلیس اور آئزن ہاور نے اپنے بیانوں میں یو . این . او . کے ماتحت فارموسا یدھ میں ورام سندھی کی مانگ کی ہے . اس سمبندھ میں نیوزیلینڈ نے سورکچھا پریشد میں پرستاؤ رکھا ہے کہ چین اور فارموسا میں یدھ بند کرانے پر وچار کیا جائے اور اس وچار ونمئے میں بھاگ لینے کے لئے چین کو بھی دعوت دی جائے . لیکن سوویت روس نے اس پرستاؤ کا ورودھ کرتے ہوئے کہا ہے کہ چین نے جو اپنی بھومی پر امریکی حملے کی شکایت کی ہے، پہلے اُس کی سنوائی کی جائے . اپنے پرتی پرستاؤ میں اس نے بتایا ہے کہ چین سمدر میں سے چینی سیناؤں کے اتیرکت انیہ سب سینائیں ہٹا لی جائیں . چین کے پردھان منتری چاؤ . این . لائی نے نیوزی لینڈ کے پرستاؤ پر وچار ونمئے کے لئے اپنا پرتی ندھی بھیجنے سے انکار کر سوویت روس کے ہی پرستاؤ کا سمرتھن کیا ہے اور وہ بھی تب جب کہ چانگ - کائی - شیک کے پرتی ندھی کو سورکچھا پریشد میں سے ہٹا دیا جائے .

## چین کا پرتی ندھتو کیوں نہیں ؟

دراصل چین سے چانگ کائی - شیک کے بھاگ کر آنے پر بھی امریکہ سمجھتا رہا کہ فارموسا میں بیٹھے بیٹھے چانگ امریکی سہایتا سے چین پر پھر سے قبضہ کر سکے گا . اسی آشا سے امریکہ اُسے کافی مدد دیتا رہا ہے اور اُس نے چین کی پیکنگ سرکار کو مانیتا نہیں دی . انیہ راشٹروں سے بھی اُس نے یہی انورودھ کیا کہ وے چانگ کی سرکار کو ہی 'قانون دوارا استھاپت سرکار' مانیں . اسی لئے

लोगों का चीन में स्वागत किया जायेगा जो उसके साथ तैवान चले गये थे. चीन इस बात को बार-बार कहता आया है कि अमरीका 'एशिया एशिया के खिलाफ़' अपनी युद्ध नीति को अमल में लाने के लिये फ़ारमोसा का अड्डा बनाकर दूर पूरब के देशों पर हमला करके एशिया की शान्ति को ख़तरे में डालना चाहता है, इसीलिये उसने चीनी समुद्र तट पर अपना सातवां बेड़ा तैनात किया है. 1950 से लेकर अब तक वह युद्ध-विमान जलपात आदि फ़ौजी सहायता के रूप में चांग-काई-शेक को 1 अरब डालर की मदद दे चुका है. इसके सिवाय अमरीकी हवाई जहाज़ों ने चीन के ख़िलाफ़ बमबारियां की हैं; फूकिन, क्वांग तुंग और चेकियांग प्रान्तों में कोमिंगतांग सेनाओं ने कई हमले किये हैं. इसी प्रकार अमरीकी जल सेना ने ग़ैर क़ानूनी ढंग से ब्रिटेन, डेनमार्क, नार्वे आदि देशों के जहाज़ों को पकड़ लिया है.

## अन्य द्वीप समूह

फ़ारमोसा ( तैवान ) और पैसकाडोर्स ( पेंगहु ) द्वीपों के अलावा चीनी समुद्र तट के पास और भी छोटे-मोटे द्वीप समूह हैं. इनमें ताचेन, नानची, मात्सु और क्वेमाय द्वीप समूहों की मौजूदा जंगी ख़तरे के नुक़्ते नज़र से ख़ास अहमियत है. चीनी समुद्र तट से सटे हुए ये द्वीप समूह 400 मील में फैले हुए हैं. फ़ारमोसा की हिफ़ाज़त के लिये इनका कोई ख़ास महत्त्व नहीं है लेकिन इन प्रदेशों से चीन की मुख्य भूमि पर बड़ी आसानी से हमला किया जा सकता है.

## ताचेन द्वीप समूह

18 जनवरी, 1955 को चीनी सेनाओं ने जिस ईक्यांग शान द्वीप पर क़ब्ज़ा किया है वह ताचेन द्वीप समूहों का ही एक अंग है. ताचेन सात छोटे-छोटे द्वीपों का समूह है जो चेकियांग प्रान्त से 12-15 मील के फ़ासले पर है. यहां कुमिंगतांग की फ़ौजें तैनात हैं और अमरीकी रैडर लगे हुए हैं जिससे कि शंघाई और हैंगचौ की चीनी सेनाओं की गतिविधि का अन्दाज़ा लगया जा सके. लेकिन ईक्यांग शान, जो ताचेन से सिर्फ़ सात मील की दूरी पर है, की विजय के बाद कुमिंगतांग फ़ौजों का ताचेन पर दख़ल बनाये रखना नामुमकिन हो गया है. इसलिये जैसा कि अभी हाल के समाचारों से मालूम होता है इस द्वीप समूह को अमरीकी बेड़े की संरक्षता में ख़ाली किया जा रहा है. आपसी सुरक्षा संधि के मुताबिक़ देखा जाय तो अमरीका सिर्फ़ फ़ारमूसा और पैसकाडोर्स द्वीपों की रक्षा का ही ज़िम्मेवार है, लेकिन अब इस तरह वह अपने बेड़े को चीनी समुद्र में उतार कर चीन की मुख्य भूमि के इतने नज़दीक पहुंच चीन को चुनौती दे रहा है. अब तक तो वह डालर तथा अस्त्र शास्त्रों से ही चांग की मदद करता आया है लेकिन अब वह ख़ुद अपनी सेनाओं से सज्जित हो, चीनी समुद्र तट







لوگوں کا چین میں سواگت کیا جائیگا جو اُس کے ساتھ تیوان چلے گئے تھے. چین اِس بات کو بار بار کہتا آیا ھے کہ امریکہ 'ایشیا ایشیا کے خلاف' اپنی یدھ نیتی کو عمل میں لانے کے لئے فارموسا کو اڈا بناکر دور پورب کے دیشوں پر حملہ کرکے ایشیا کی شانتی کو خطرے میں ڈالنا چاھتا ھے' اسی لئے اس نے چینی سمندر تٹ پر اپنا ساتواں بیڑا تعنات کیا ھے. 1950 سے لےکر اب تک وہ یدھ وماں جل پوت آدی فوجی سہائتا کے روپ میں چانگ- کائی- شیک کو ا ارب ڈالر کی مدد دے چکا ھے. اِس کے سوائے امریکی ھوائی جہازوں نے چین کے خلاف بمباریاں کی ھیں؛ فوکن' کوانگ چین اور چیکیانگ پرانتوں میں کومنگتانگ سیناؤں نے کئی حملے کئے ھیں. اِس پرکار امریکی جل سیناؤں نے غیر قانونی ڈھنگ سے برٹین' ڈنمارک' ناروے آدی دیشوں کے جہازوں کو پکڑ لیا ھے.

## انیہ دیپ سموہ

فارموسا (تیوان) اور پیکاڈورس کومنگتانگ (پینگھو) دیپوں کے علاوہ چینی سمدر تٹ کے پاس اور بھی چھوٹے موٹے دیپ سموہ ھیں. اِن میں تاچین' نان‌چی' ماتسو اور کوماے دیپ سموھوں کی موجودہ جنگی خطرے کے نقطۂ نظر سے خاص اھمیت ھے. چینی سمدر تٹ سے سٹے ھوئے یہ دیپ سموہ 400 میل میں پھیلے ھوئے ھیں. فارموسا کی حفاظت کے لئے اِن کا کوئی خاص مہتو نہیں ھے. لیکن اُن پردیشوں سے چین کی مکھیہ بھومی پر بڑی آسانی سے حملہ کیا جاسکتا ھے.

## تاچین دیپ سموہ

18 جنوری سن 1955 کو چینی سیناؤں نے جس ایکیانگ شان دیپ پر قبضہ کیا ھے وہ تاچین دیپ سموھوں کا ھی ایک انگ ھے. تاچین سات چھوٹے چھوٹے دیپوں کا سموہ ھے جو چیکیانگ پرانت سے 12-15 میل کے فاصلے پر ھے. یہاں کومنتانگ کی فوجیں تعینات ھیں اور امریکی ریڈر لگے ھوئے ھیں جس سے کہ شنگھائی اور ھینگ چو کی چینی سیناؤں کی گیتی ودھی کا اندازہ لگایا جا سکے. لیکن ایکیانگ شان' جو تاچین سے صرف سات میل کی دوری پر ھے' کی وجئے کے بعد کومنگتانگ فوجوں کا تاچین پر دخل بنائے رکھنا ناممکن ھوگیا ھے. اِس لئے جیسا کہ ابھی حال کے سماچاروں سے معلوم ھوتا ھے اِس دیپ سموہ کو امریکی بیڑے کی سنرکچھتا میں خالی کیا جا رھا ھے. آپسی سورکچھا سندھی کے مطابق دیکھا جائے تو امریکہ صرف فارموسا اور پیکاڈورس دیپوں کی رکچھا کا ھی ذمہ‌وار ھے' لیکن اب اِس طرح وہ اپنے بیڑے کو چینی سمدر میں اُتار کر چین کی مکھیہ بھومی کے اتنے نزدیک پہونچ چین کو چنوتی دے رھا ھے. اب تک تو وہ ڈالر تتھا استر- شستروں سے ھی چانگ کی مدد کرتا آیا ھے لیکن اب وہ خود اپنی سیناؤں سے سجت ھو چینی سمدر تٹ

मंचूरिया, तैवान और पैसका डोस टापू—उनको चीन को लौटा दिया जायगा. सन 1945 में पोट्सडम-ऐलान पर दस्तख़त करते हुए सोवियत संघ ने भी इस समझौते को माना.

## चांग फ़ारमोसा में

1949 में चीन को मुक्ति-युद्ध ( जंगे निजात ) में कामयाबी मिलने के बाद दुनिया का नक़्शा ही बदल गया. चांग-काई-शेक को भागकर फ़ारमोसा में शरन लेनी पड़ी. यहां की जनता को वह विश्वास दिलाता रहा कि शीघ्र ही वह चीन की मुख्य भूमि पर फ़तह हासिल कर उसका स्वामी बनेगा.

## अमरीका का फ़ारमोसा पर अधिकार

5 जनवरी, 1950 को अमरीकी राष्ट्रपति ट्रूमन ने बयान दिया था—"26 जुलाई, 1945 के पोट्सडम ऐलान पर अमरीका ने भी दस्तख़त किये थे जिसमें यह ऐलान किया गया था कि क़ाहिरा के ऐलान की शर्तों पर अमल किया जायेगा. इस ऐलान की शर्तों को जापान ने हथियार रखने के समय माना था.......गत चार वर्षों से अमरीका और मित्र राष्ट्र इस द्वीप पर चीन की सत्ता को मंज़ूर करते आये हैं." लेकिन फिर भी 27 जून, 1950 को फ़ारमोसा की रक्षा के बहाने अमरीका ने वहाँ अपना सातवां बेड़ा उतार दिया. मैक आर्थर ने तो साफ़ कह दिया—तैवान एक न डूबनेवाला हवाई जहाज़ों और पनडुब्बियों का अड्डा है, जिसके बल पर अमरीका अपनी जल और हवाई सेनाओं की मदद से ब्लाडीवोस्टक से लेकर सिंगापुर तक एशिया के हर एक बन्दरगाह पर अपना असर क़ायम कर सकता है." आगे चलकर 1953 के शुरू में अमरीकी राष्ट्रपति आइज़न हावर ने यहां तक कह दिया कि अमरीका चांग-काई-शेक के चीन की मुख्य भूमि पर हमला करने में कोई बाधा न डालेगा. अमरीका मानता है—

ताइवान को संयुक्त राष्ट्र के हवाले कर दिया जाय; या
उसे तटस्थ रखा जाय; या
उसकी आज़ाद हस्ती मंज़ूर कर ली जाये.

साफ़ है कि अमरीका अब फ़ारमोसा पर चीन की सत्ता मंज़ूर नहीं करना चाहता जिसको वह अब तक मानता आया है. दर असल फ़ारमोसा का सवाल चीन का निजी सवाल है, उसमें राष्ट्र संघ या किसी दूसरे मुल्क को दख़ल देने का क्या हक़ है ?

## फ़ारमोसा की आज़ादी का ऐलान

22 अगस्त, 1954 को चीन के सभी राजनीतिक दलों, जन-संगठनों और जनता की सलाहकार समिति ने फ़ारमोसा को आज़ाद करने का ऐलान किया है. इस ऐलान में कहा गया है कि 'सिर्फ़ एक चांग-काई-शेक को छोड़कर' उन सभी



منچوریا، تیوان اور پیکا ڈورس ٹاپو—اُن کو چین کو لوٹا دیا جائیگا. سن 1945 میں پوٹسڈم - اعلان پر دستخط کرتے ہوئے سویت سنگھ نے بھی اِس سمجھوتے کو مانا .

## چانگ فارموسا میں

سن 1949 میں چین کو مکتی یدھ ( جنگ نجات ) میں کامیابی ملنے کے بعد دنیا کا نقشہ ہی بدل گیا . چانگ - کائی - شیک کو بھاگ کر فارموسا میں شرن لینی پڑی. یہاں کی جنتاکو وہ وشواس دلاتا رہا کہ شیگھر ہی وہ چین کی مکھیہ بھومی پر فتح حاصل کر اُس کا سوامی بنے گا .

## امریکہ کا فارموسا پر ادھیکار

5 جنوری، 1950 کو امریکی راشٹرپتی ٹرومن نے بیان دیا تھا—"26 جولائی 1945 کی پوٹسڈم اعلان پر امریکہ نے بھی دستخط کئے تھے جس میں یہ اعلان کیا گیا تھا کہ قاہرہ کے اعلان کی شرطوں پر عمل کیا جائیگا . اِس اعلان کی شرطوں کو جاپان نے ہتھیار رکھنے کے سمے مانا تھا...گت چار ورشوں سے امریکہ اور متر راشٹر اِس دیپ پر چین کی ستہ کو منظور کرتے آئے ہیں ." لیکن پھر بھی 27 جون، 1950 کو فارموسا کی رکچھا کے بہانے امریکہ نے وہاں اپنا ساتواں بیڑا اُتار دیا . میک آرتھر نے صاف کہہ دیا—تیوان ایک نہ ڈوبنے والا ہوائی جہازوں اور پنڈبیوں کا اڈا ھے، جس کے بل پر امریکہ اپنی جل اور ہوائی سیناؤں کی مدد سے ولاڈی واسٹک سے لیکر سنگاپور تک ایشیا کے ھر ایک بندرگاہ پر اپنا اثر قائم کرسکتا ھے." آگے چل کر 1953 کے شروع میں امریکی راشٹرپتی آئزن ہاور نے یہاں تک کہہ دیا کہ امریکہ چانگ - کائی - شیک کے چین کی مکھیہ بھومی پر حملہ کرنے میں کوئی بادھا نہ ڈالے گا . امریکہ مانتا ھے—

تائیوان کو سنیکت راشٹر کے حوالے کردیا جائے؛ یا
اُسے تٹستھ رکھا جائے؛ یا
اُس کی آزاد ہستی منظور کرلی جائے .

صاف ھے کہ امریکہ اب فارموسا پر چین کی ستہ منظور نہیں کرنا چاہتا جس کو وہ اب تک مانتا آیا ھے . دراصل فارموسا کا سوال چین کا نجی سوال ھے، اس میں راشٹر سنگھ یا کسی دوسرے ملک کو دخل دینے کا کیا حق ھے ؟

## فارموسا کی آزادی کا اعلان

22 اگست 1954 کو چین کے سبھی راجنیتک دلوں، جن سنگٹھنوں اور جنتا کی صلاحکار سمیتی نے فارموسا کو آزاد کرنے کا اعلان کیا ھے. اس اعلان میں کہا گیا ھے کہ صرف ایک چانگ کائی - شیک کو چھوڑ کر' اُن سبھی

और कपूर के तेल की मांग यहां से पूरी होती है. इसके सिवाय, यहां कोयला, तेल, गंधक सोने आदि की खानें हैं. कीलुंग और काओशिंग यहां के बन्दरगाह हैं जो व्यापार के बड़े केन्द्र हैं.

## जनसंख्या

फ़ारमोसा की जनसंख्या 80 लाख है. इनमें 90% चीनी हैं जिनके पूर्वज समय समय पर फ़ूकिन और क्वांगतुंग प्रान्तों से यहां आते रहे हैं. बाक़ी 3% काशोआन नामक अल्प-संख्यक जातियों के लोग बसते हैं जो क्वांगतुंग, हैनान, सुमात्रा, बोरनिओ, फ़िलिपाइन्स आदि स्थानों से आकर यहां बस गये थे.

## प्राचीन इतिहास

इतिहास से मालूम होता है कि ईसवी सन की तीसरी सदी में चीन के लोग फ़ारमोसा पहुंच चुके थे. थांग काल ( सन 618-705 ) का मशहूर विद्वान् शिह धीयेन वू अपने समस्त परिवार के साथ यहां आकर रहने लगा था. इस विद्वान् ने अपने काव्य में फ़ारमोसा का सुन्दर वर्नन किया है.

सत्रहवीं सदी के शुरू में योरप वालों की निगाह इस द्वीप पर पड़ी. सन 1626 में स्पेन की सेनाओं ने उत्तर पूर्वी फ़ारमोसा पर क़ब्ज़ा कर लिया और 16 वर्ष तक उनका राज्य क़ायम रहा. इस समय से फ़ारमोसा तैवान के नाम से पुकारा जाने लगा. इन्हीं दिनों फ़ूकिन का निवासी छेंग-चीह-लुंग अपने 3,000 सगे संबंधियों को लेकर यहां रहने लगा. आगे चलकर जब मंचु राजाओं ने चीन पर हमला किया तो उसके पुत्र ने बड़ी वीरता से शत्रु सेनाओं का समाना किया.

## जापानी हमला

सन 1874 में फ़ारमोसा पर जापानी सेना का हमला हुआ. उसके बाद सन 1894 में जब जापान ने चीन पर धावा किया तो चीन के युद्ध में हार जाने के कारन फ़ारमोसा जापानियों के हाथ में पहुंच गया. धीरे-धीरे इस द्वीप पर जापानियों का असर बढ़ता गया और सन 1895 से 1945 के बीच जापानियों की तादाद यहां 3,20,000 तक पहुंच गई! पचास वर्ष के इस लम्बे दौर में फ़ारमोसा की जनता ने जापानी हाकिमों के ख़िलाफ़ कई बग़ावतें कीं लेकिन सब को कुचल दिया गया.

## दूसरे युद्ध के बाद

दूसरे युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय हालतें बदल गईं. 3 सितम्बर, 1943 को जापान के आत्म समर्पण के बाद 1 दिसम्बर 1946 के काहिरा के ऐलान में-जिस पर चीन, अमरीका और ब्रिटेन ने दस्तख़त किये थे—यह मंजूर किया गया कि चीन के जिन हिस्सों को जापान ने हड़प लिया है—यानी



اور کپور کے تیل کی مانگ یہاں سے پوری ہوتی ہے . اِس کے سوائے' یہاں کوئلہ' تیل' گندھک' سونے آدی کی کھانیں ہیں . کلنگ اور کاؤشنگ یہاں کے بندرگاہ ہیں جو ویاپار کے بڑے کیندر ہیں .

## جن-سنکھیا

فارموسا کی جن سنکھیا 80 لاکھ ہے . اِن میں 90% چینی ہیں جن کے پوروج سمے سمے پر فوکن اور کوانگ تنگ پرانتوں سے یہاں آتے رہے ہیں . باقی 3% کاشوآن نامک الپ سنکھیک جاتیوں کے لوگ بستے ہیں جو کوان تنگ' ہینان' سوماترا' بورنیو' فلپائن آدی استھانوں سے آکر یہاں بس گئے تھے .

## پراچین اتیہاس

اتیہاس سے معلوم ہوتا ہے کہ عیسوی سن کی تیسری صدی میں چین کے لوگ فارموسا پہونچ چکے تھے . تھانگ کال ( سن 618-705 ) کا مشہور ودوان شیہ چھیین وو اپنے سمست پریوار کے ساتھ یہاں آکر رہنے لگا تھا . اِس ودوان نے اپنے کاویہ میں فارموسا کا سندر ورنن کیا ہے .

سترھویں صدی کے شروع میں یورپ والوں کی نگاہ اس دیپ پر پڑی . سن 1626 میں اسپین سیناؤں نے اُتر پوربی فارموسا پر قبضہ کرلیا اور 16 ورش تک اُن کا راجیہ قائم رہا . اس سمے سے فارموسا تیوان کے نام سے پکارا جانے لگا . انہی دنوں فوکن کا نواسی چھنگ چیھ لونگ اپنے 3,000 سگے سمبندھیوں کو لےکر یہاں رہنے لگا. آگے چل‌کر جب منچو راجاؤں نے چین پر حملہ کیا تو اُس کے پتر نے بڑی ویرتا سے شترو سیناؤں کا سامنا کیا .

## جاپانی حملہ

سن 1874 میں فارموسا پر جاپانی سینا کا حملہ ہوا . اُس کے بعد سن 1894 میں جب جاپان نے چین پردھاوا کیا تو چین کے یدھ میں ہار جانے کے کارن فارموسا جاپانیوں کے ہاتھ میں پہونچ گیا . دھیرے دھیرے اس دیپ پر جاپانیوں کا اثر بڑھتا گیا اور سن 1895 سے 1945 کے بیچ جاپانیوں کی تعداد یہاں 3,20,000 تک پہونچ گئی ! پچاس ورش کے اِس لمبے دور میں فارموسا کی جنتا نے جاپانی حاکموں کے خلاف کئی بغاوتیں کیں لیکن سب کو کچل دیا گیا .

## دوسرے یدھ کے بعد

دوسرے یدھ کے بعد انتر راشٹریہ حالتیں بدل گئیں . 3 ستمبر 1945 کو جاپان کے آتم سمرپن کے بعد 1 دسمبر' 1946 کو قاہرہ کے اِعلان میں—جس پر چین' امریکہ اور برٹین نے دستخط کئے تھے—یہ منظور کیا گیا کہ چین کے جن حصوں کو جاپان نے ہڑپ لیا ہے—یعنی

# फ़ारमोसा में जंगी घटायें

सारी दुनिया की आंखें आज फ़ारमोसा पर लगी हुई हैं. सैगांव, हांगकांग, मनीला वग़ैरा दूर पूरब के नगरों में जंगी घटायें उमड़ रही हैं. गली-मुहल्लों और सड़कों पर इकट्ठा डरी हुई जनता सोच रही है—क्या तीसरा विश्व युद्ध होगा? क्या इस युद्ध में एटम बमों का इस्तेमाल किया जायेगा? क्या इस विश्व संहारकारी युद्ध-संकट को किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता? इस संकट के लिये कौन जिम्मेवार है?

## अमरीका की तैयारियाँ

पिछले साल इन्डो-चाइना के डीन-बीन-फ़ू-जंग को फ़तह करने के लिये संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने बड़े बड़े जंगी जहाज़ टांगकिंग की खाड़ी में उतार दिये थे. लेकिन इस बार और भी भयंकर तैयारियां की जा रही हैं. हांगकांग के 'टाइम्स ऑफ़ इन्डिया' के संवाददाता के मुताबिक़ अनुशक्ति तथा जंग के दूसरे ख़ौफ़नाक हथियारों से लैस 100 अमरीकी जंगी जहाज़ों का विशाल बेड़ा फ़ारमोसा की हिफ़ाज़त के लिये चीन के समुद्र तट पर आ पहुंचा है. इसके सिवाय पांच विमानवाही पोत 400 से अधिक बममार हवाई जहाज़, 6 क्रूज़र, 500 ध्वंसक जहाज़ तथा अनेकों तारपीडो नौकायें और पनडुब्बियां आदि बहुत-सी सामग्री एकत्रित की जा चुकी हैं. ओकिनावा और फिलिपाइन्स से जल और हवाइ सेनायें भी फ़ारमोसा आ गई हैं.

## अवसरवादी चांग-काई-शेक

अमरीकी फ़ौजी ताक़त पर जीवित रहने वाला चांग इस अवसर की ताक में है कि किसी तरह अमरीका और कम्युनिस्ट चीन की सेनाओं में किसी तरह ठन जाये, लेकिन अमरीकी सेनापति कोरिया युद्ध में चीनी सिपाहियों का रण-कौशल देख चुके हैं, इसलिये अब की बार वे इतनी जल्दी उनसे उलझना नहीं चाहते.

## फ़ारमोसा का महत्व

फ़ारमोसा (तैवान) दक्षिण-पूर्वी चीन में मुख्य भूमि से 150 मील दूर पर चीन का सबसे बड़ा द्वीप और सब से छोटा प्रान्त है. फ़ूकिन प्रान्त से यहां की सुन्दर पर्वत शृङ्खलायें दिखाई देती हैं जो उत्तर से दक्षिण तक 236 मील तक फैली हुई हैं. 14,000 वर्ग मील में फैला हुआ यह टापू अपने क़ुदरती रूप और हरे-भरे प्रदेशों के सबब मशहूर है. इसीलिये सन 1590 में पोर्चुगीज़ लोगों ने इसे इल्हा फ़ारमोसा (सुन्दर द्वीप) नाम दिया था. यहां की भूमि में चावल, गन्ना, चाय, अनन्नास, केला और शकरक़न्द बहुतायत से पैदा होते हैं. यहां के जंगलों में कपूर और देवदार आदि के वृक्ष उगते हैं. दुनिया की 70% कपूर



# فارموسا میں جنگی گھٹائیں

سار‌ی دنیا کی آنکھیں آج فارموسا پر لگی ہوئی ہیں. سیگاؤں، ہانگ کانگ، منیلا وغیرہ دور پورب کے نگروں میں جنگی گھٹائیں اُمڑ رہی ہیں. گلی محلّوں اور سڑکوں پر اکٹھا ڈری ہوئی جنتا سوچ رہی ہے—کیا تیسرا وشویدھ ہوگا؟ کیا اِس یدھ میں ایٹم بموں کا استعمال کیا جائیگا؟ کیا اِس وشو سنگھارکاری یدھ سنکٹ کو کسی پرکار ٹالا نہیں جاسکتا؟ اِس سنکٹ کے لئے کون ذمہ‌وار ہے؟

## امریکہ کی تیاریاں

پچھلے سال انڈو چائنا کے ڈین - بین - فو جنگ کو فتح کرنے لئے سنیکت راشٹر امریکہ نے بڑے بڑے جنگلی جہاز ٹانگ کنگ کی کھاڑی میں اُتار دیئے تھے. لیکن اِس بار اور بھی بھینکر تیاریاں کی جا رہی ہیں. ہانگ کانگ کے 'ٹائمس آف انڈیا' کے سنوادداتا کے مطابق انوشکتی تتھا جنگ کے دوسرے خوفناک ہتیاروں سے لیس 100 امریکی جنگی جہازوں کا وشال بیڑا فارموسا کی حفاظت کے لئے چین کے سمندر تٹ پر آپہونچا ہے. اِس کے سوائے پانچ ویمان واہی پوت' 400 سے ادھک بمبار ہوائی جہاز' 6 کروزر' 500 دھونسک جہاز تتھا انیکوں تارپیڈو نوکائیں اور پنڈبیاں آدی بہت سی سامگری ایکترت کی جا چکی ہیں. اوکی‌ناوا اور فلپائنس سے جل اور ہوائی سینائیں بھی فارموسا آ گئی ہیں.

## اوسروادی چانگ کائی شیک

امریکی فوجی طاقت پر جیوت رہنے والا چانگ اِس اوسر کی تاک میں ہے کہ کسی طرح امریکہ اور کمیونسٹ چین کی سیناؤں میں کسی طرح ٹھن جائے' لیکن امریکی سیناپتی کوریا یدھ میں چینی سپاہیوں کا رن کوشل دیکھ چکے ہیں' اس لئے اب کی بار وے اتنی جلدی ان سے اُلجھنا نہیں چاہتے.

## فارموسا کا مہتو

فارموسا (تیوان) دکچھنی پوربی چین میں مکھیہ بھومی سے 150 میل دور پر چین کا سب سے بڑا دیپ اور سب سے چھوٹا پرانت ہے. فوکن پرانت سے یہاں کی سندر پروت شرنکھلائیں دکھائی دیتی ہیں جو اُتر سے دکچھن تک 236 میل تک پھیلی ہوئی ہیں. 14,000 ورگ میل میں پھیلا ہوا یہ ٹاپو اپنے قدرتی روپ اور ہرے بھرے پردیشوں کے سبب مشہور ہے. اِس لئے سن 1590 میں پرتگیز لوگوں نے اِسے الہا فارموسا (سندر دیپ) نام دیا تھا. یہاں کی بھومی میں چاول' گنا' چائے' انناس' کیلا اور شکرقند بہتایت سے پیدا ہوتے ہیں. یہاں کے جنگلوں میں کپور اور دیودار آدی کے ورکچھ اُگتے ہیں. دنیا کی 70% کپور

र मुझे कितनी चोट लगती है जब मैं देखता हूं कि मेरे लिये लोगों की जानें जाती हैं ! जब मैं यह देखता हूं कि जो लोग मुझे प्यार करते हैं वह उसी प्यार के नाम पर जंग के लिये हथियार तैयार करते हैं तो मैं शरमा जाता हूं और मुझे महसूस होता है कि मैं कितना तुच्छ और निकम्मा हूं !

अभी बहुत सी बातें हैं जिन्हें देखकर मुझे अंदाज़ा होता है कि अभी कितना काम करने का बाक़ी है—स्कूलों में सब लड़कों लड़कियों के लिये काफ़ी जगह तक नहीं है ! गिरजे ख़ाली और सूने पड़े हुए हैं ! घरेलू जीवन टुकड़े टुकड़े है !

जब मैं किसी जगह पर यह साइनबोर्ड देखता हूं कि—"केवल गोरे रंग के लोगों के लिये" या जब मैं किसी घर में घर की इन्जील पर गर्द जमी हुई देखता हूं तो मैं कांप उठता हूं !

तब मैं हैरान हो जाता हूं कि मैं लोगों को यह किस तरह समझाऊं कि मैं कोई दस्ताना नहीं हूं जिसे ठंडे हाथ पर पहना जा सके. या मैं कोई बिजली का सुइच नहीं हूं जिसे आदमी जब चाहे दबा कर बुझा दे और फिर जब चाहे जला ले. इसके ख़िलाफ़ मैं तभी तक जिन्दा रह सकता हूं जब तक कि आदमियों में यह सच्ची लगन हो कि वह अपने सब पड़ोसियों के साथ सुख और शान्ति से रह सकें !

फिर भी मैं बार बार ख़ुशी और आशा से भर जाता हूं!

लाखों नौजवान रोज़ खड़े होकर अपने क़ौमी झंडे, अपने देश और अपने भगवान की वफ़ादारी की प्रतिज्ञा करते हैं.

गलियों के कोनों में, नाई की दूकानों पर और मकानों के पिछवाड़े लोग दो दो, तीन तीन के गिरोहों में जमा होकर आज़ादी के साथ मुल्क की राजनीति पर और हकूमत के बारे में अपने विचार प्रगट करते हैं और खुली बहसें करते हैं.

छै करोड़ दस लाख आदमी चुनाव के दिनों में जमा होते हैं और अपने विचारों और अपनी राय के अनुसार वोट देते हैं.

तब मैं महसूस करता हूं कि अभी निराश होने का कोई कारन नहीं. मैं देखता हूं कि दुनिया का भविष्य धरती के ऊपर एक काले बादल की तरह नहीं छा रहा है. मैं जानता हूं कि लोग अमन और ख़ुशहाली के साथ मिलकर रहेंगे और एक न एक दिन यह दुनिया सचमुच 'एक' होगी.

क्योंकि मैं लोगों की जिन्दगी का एक हिस्सा बन गया हूं, और जब तक लोगों के दिल हैं, दिमाग़ हैं और उनमें रूहें हैं तब तक मैं जिन्दा रहूंगा, क्योंकि मैं जन राज हूं !

सोलह बरस के अमरीकी लड़के फ़िलिप एम. मैकाय की इस आवाज़ को हम अमरीकी क़ौम के दिल की आवाज़ समझते हैं, और उस पर ख़ुशी से 'तथास्तु !' कहते हैं. ओ३म् ! ऐमन ! आमीन !

14. 3. '55 —सुन्दरलाल



پر مجھے کتنی چوٹ لگتی ہے جب میں دیکھتا ہوں کہ میرے لئے لوگوں کی جانیں جاتی ہیں ! جب میں یہ دیکھتا ہوں کہ جو لوگ مجھے پیار کرتے ہیں وہ اُسی پیار کے نام پر جنگ کے لئے ہتھیار تیار کرتے ہیں تو میں شرما جاتا ہوں اور مجھے محسوس ہوتا ہے کہ میں کتنا تچھ اور نکما ہوں !

ابھی بہت سی باتیں ہیں جنھیں دیکھ کر مجھے اندازہ ہوتا ہے کہ ابھی کتنا کام کرنے کو باقی ہے—اسکولوں میں سب لڑکوں لڑکیوں کے لئے کافی جگہ تک نہیں ہے! گرجے خالی اور سونے پڑے ہوئے ہیں ! گھریلو جیون ٹکڑے ٹکڑے ہے !

جب میں کسی جگہ پر یہ سائنبورڈ دیکھتا ہوں کہ—"کیول گورے رنگ کے لوگوں کے لئے" یا جب میں کسی گھر میں گھر کی انجیل پر گرد جمی ہوئی دیکھتا ہوں تو میں کانپ اُٹھتا ہوں !

تب میں حیران ہو جاتا ہوں کہ میں لوگوں کو یہ کس طرح سمجھاؤں کہ میں کوئی دستانہ نہیں ہوں جسے ٹھنڈے ہاتھ پر پہنا جاسکے. یا میں کوئی بجلی کا سوئچ نہیں ہوں جسے آدمی جب چاہے دباکر بجھادے اور پھر جب چاہے جلا لے . اِس کے خلاف میں تبھی تک زندہ رہ سکتا ہوں جب تک کہ آدمیوں میں یہ سچی لگن ہو کہ وہ اپنے سب پڑوسیوں کے ساتھ سکھ اور شانتی سے رہ سکیں !

پھر بھی میں بار بار خوشی اور آشا سے بھر جاتا ہوں !

لاکھوں نوجوان روز کھڑے ہوکر اپنے قومی جھنڈے' اپنے دیش اور اپنے بھگوان کی وفاداری کی پرتگیا کرتے ہیں .

گلیوں کے کونوں میں' نائی کی دوکانوں پر اور مکانوں کے پچھواڑے لوگ دو دو' تین تین کے گروہوں میں جمع ہوکر آزادی کے ساتھ ملک کی راج نیتی پر اور حکومت کے بارے میں اپنے وچار پرکٹ کرتے ہیں اور کھلی بحثیں کرتے ہیں .

چھ کروڑ دس لاکھ آدمی چناؤ کے دنوں میں جمع ہوتے ہیں اور اپنے وچاروں اور اپنی رائے کے انوسار ووٹ دیتے ہیں .

تب میں محسوس کرتا ہوں کہ ابھی نراش ہونے کا کوئی کارن نہیں . میں دیکھتا ہوں کہ دنیا کا بھوشیہ دھرتی کے اُوپر ایک کالے بادل کی طرح نہیں چھا رہا ہے . میں جانتا ہوں کہ لوگ اَمن اور خوشحالی کے ساتھ ملکر رہینگے اور ایک نہ ایک دن یہ دنیا سچ مچ 'ایک' ہوگی .

کیونکہ میں لوگوں کی زندگی کا ایک حصہ بن گیا ہوں' اور جب تک لوگوں کے دل ہیں' دماغ ہیں اور اُن میں روحیں ہیں تب تک میں زندہ رہونگا' کیونکہ میں جن راج ہوں !

سولہ برس کے امریکی لڑکے فلپ ایم. میکائے کی اِس آواز کو ہم امریکی قوم کے دل کی آواز سمجھتے ہیں' اور اُس پر خوشی سے 'تتھاستو !' کہتے ہیں . اُوم ! ایمن ! آمین !

—سندر لال 14 . 3 . '55

## हमारी राय

**अहिंसा, एकता, सच्ची आज़ादी और सबकी ख़ुशहाली की तरफ़ बढ़ रही है.**

अमरीकी लड़के का लेख यह है :—

मैं जनराज (डेमोक्रैसी) यानी जनता राज की तरफ़ से बोल रहा हूं.

मैं जनराज यानी जनता का राज हूं. स्वयं भगवान ने लोगों के दिलों में मेरा बीज बाया था. धीरे धीरे मुझ में अकुवा फूटा. दुनिया में जब जुल्म और दुख फैले हुए थे तब मुझ में शाखें निकलीं.

कुछ लोगों ने मुझे केवल एक थोड़े दिनों का वहम समझा. लेकिन दूसरों के दिमाग़ों में मैं एक सपना बन गया. उन्हें मेरी धुन लग गई.

यूनान में एथेन्स के लोगों ने मुझे परखा. अफ़लातून और अरस्तू ने मुझ पर अपनी अक़ल दौड़ाई. राम के सम्राटों (सीज़र्स) ने मुझे मिटाना चाहा. यूराप के बीच के ज़माने के बादशाहों और सामन्ती सरदारों ने मुझे पैरों तले रौंदा !

अठारहवीं सदी ईस्वी में एक नौआबाद नौजवान देश (अमरीका) में, जहां लाग सच्ची आज़ादी की खाज में थे और उसके लिये हाथ पैर मार रहे थे, मैं अमली शकल में दिखाई देने लगा.

पौने दो सौ बरस से यह देश मेरा गहवारा है.

वाशिंगटन (डी० सी०) की ऊंची ऊंची शानदार इमारतों में और मिसिसिपी नदी के किनारे किनारे उन छाटी छाटी किश्तियों में जिनमें से हर एक में एक एक कुनबा रहता है मैं रह रहा हूं. हर अमरीकी स्कूल के कमरों में मैं फूलता फलता रहा हूं. मैं उन सुन्दर हरे भरे पार्कों में रहता हूं जिन में कुनबे के कुनबे आज़ादी के साथ आराम करते हैं और खेलते हैं. मैं अख़बारों के उन दफ़्तरों में रहता हूं जहां एडिटर लोग अपने आए दिन के सम्पादकी लेख तैयार करते हैं. मैं चुनावों के उन स्थानों में रहता हूं जहां लाग वाट देकर ख़ुद अपने नेता चुनते हैं.

मैं पुरानी बदबूदार किताबों के पन्नों के अन्दर बन्द नहीं रह सका, और न मैं किसी बन्द शीशे के केस के अन्दर फीके पड़े हुए काग़ज़ पर चिपटकर रह सका.

जहां कहीं वह इनसान हैं जो मुझे खोजते हैं वहां मैं अवश्य होता हूं.

लेकिन जिन लोगों की मैं सेवा करता हूं उनकी अमली ज़िन्दगियों का अगर मैं अंग न बन सकूं तो मैं केवल एक निकम्मा शब्द बनकर रह जाऊंगा !

दुनिया भर में लोग आए दिन मेरे लिये बड़ी बड़ी क़ुरबानियां करते हैं. बहुत बार लागों ने अपनी जानें क़ुरबान कर दी हैं इसलिये कि मैं जिन्दा रह सकूं.

## ہماری رائے

**اھنسا، ایکتا، سچی آزادی اور سب کی خوشحالی کی طرف بڑھ رہی ھے .**

امریکی لڑکے کا لیکھ یہ ھے :—

میں جن راج ( ڈیموکریسی ) یعنی جنتا راج کی طرف سے بول رہا ھوں .

میں جن راج یعنی جنتا کا راج ھوں . سویم بھگوان نے لوگوں کے دلوں میں میرا بیج بویا تھا . دھیرے دھیرے مجھ میں اکوا پھوٹا . دنیا میں جب ظلم اور دکھ پھیلے ھوئے تھے تب مجھ میں شاخیں نکلیں .

کچھ لوگوں نے مجھے کیول ایک تھوڑے دنوں کا وھم سمجھا . لیکن دوسروں کے دماغوں میں میں ایک سپنا بن گیا . انھیں میری دھن لگ گئی .

یونان میں ایتھنس کے لوگوں نے مجھے پرکھا . افلاطون اور ارسطو نے مجھ پر اپنی عقل دوڑائی . روم کے سمراٹوں ( سیزرس ) نے مجھے مٹانا چاھا . یورپ کے بیچ کے زمانے کے بادشاھوں اور سامنتی سرداروں نے مجھے پیروں تلے روندا !

اٹھارھویں صدی عیسوی میں ایک نوآباد نوجوان دیش ( امریکہ ) میں، جہاں لوگ سچی آزادی کی کھوج میں تھے اور اس کے لئے ھاتھ پیر مار رھے تھے، میں عملی شکل میں دکھائی دینے لگا .

پونے دو سو برس سے یہ دیش میرا گہوارہ ھے .

واشنگٹن ( ڈی. سی. ) کی اونچی اونچی شاندار عمارتوں میں اور مسی سپی ندی کے کنارے کنارے ان چھوٹی چھوٹی کشتیوں میں جن میں سے ھر ایک میں ایک ایک کنبہ رھتا ھے میں رہ رھا ھوں. ھر امریکی اسکول کے کمروں میں میں پھولتا پھلتا رھا ھوں. میں ان سندر ھرے بھرے پارکوں میں رھتا ھوں جن میں کنبے کے کنبے آزادی کے ساتھ آرام کرتے ھیں اور کھیلتے ھیں . میں اخباروں کے ان دفتروں میں رھتا ھوں جہاں ایڈیٹر لوگ اپنے آئے دن کے سمپادکی لیکھ تیار کرتے ھیں . میں چناؤں کے ان استھانوں میں رھتا ھوں جہاں لوگ ووٹ دے کر خود اپنے نیتا چنتے ھیں .

میں پرانی بدبودار کتابوں کے پنوں کے اندر بند نہیں رہ سکا، اور نہ میں کسی بند شیشے کے کیس کے اندر پھیکے پڑے ھوئے کاغذ پر چپٹ کر رہ سکا .

جہاں کہیں وہ انسان ھیں جو مجھے کھوجتے ھیں وھاں میں اوشیہ ھوتا ھوں .

لیکن جن لوگوں کی میں سیوا کرتا ھوں ان کی عملی زندگیوں کا اگر میں انگ نہ بن سکوں تو میں کیول ایک نکما شبد بن کر رہ جاؤنگا !

دنیا بھر میں لوگ آئے دن میرے لئے بڑی بڑی قربانیاں کرتے ھیں . بہت بار لوگوں نے اپنی جانیں قربان کردی ھیں اس لئے کہ میں زندہ رہ سکوں .

## हमारी राय

## ہماری رائے

## अमरीकी जनता का दिल

अमरीका में देश भर के हाई स्कूलों के लड़कों और लड़कियों का हर साल एक 'मुक़ाबला' होता है, जिस में लाखों लड़के और लड़कियां निबन्ध लिख कर भेजते हैं और सबसे अच्छे निबन्ध लिखने वालों को इनाम दिये जाते हैं. यह 'मुक़ाबला' उस देश की कुछ सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से कराया जाता है. सन 1954 में इस मुक़ाबले में दस लाख से ऊपर लड़कों और लड़कियों ने निबन्ध लिखकर भेजे थे. उनमें से चार को पांच पांच सौ डालर का इनाम दिया गया था. मज़मून था--"मैं जनराज (डेमोक्रैसी) की तरफ़ से बोलता हूं." जिन चार निबन्धों पर इनाम दिया गया उनमें से एक का हिन्दी में अनुवाद हम नीचे दे रहे हैं. अनुवाद जहां तक हो सका लफ़्ज़ी किया गया है. यह लेख अमरीका की कनसास रियासत के किसी हाई स्कूल के एक सोलह बरस के लड़के 'फ़िलिप एम० मेकाय' का लिखा हुआ है. इस निबन्ध को हम बड़ी ख़ुशी के साथ "नया हिन्द" में केवल इसलिये दे रहे हैं क्योंकि इस से पता चलता है कि अमरीकी सरकार के नेता कुछ भी कहें या करें अमरीकी जनता का दिल वैसा ही साफ़, बड़ा और मानव प्रेम से भरा हुआ है जैसा दुनिया के दूसरे देशों की जनता का दिल. दुनिया के साम्राज प्रेमी समझे जाने वाले देशों में भी—और ऐसे देश एक दो उंगलियों पर गिने जा सकते हैं—ऐसे लोगों की गिनती बहुत ही कम है और घटती जा रही है जो ठीक बेठीक यह समझते हैं कि उनका नफ़ा नुक़सान दूसरे देशों के नफ़े नुक़सान से बिलकुल अलग है और दोनों में वह टक्कर है जिसे दूर नहीं किया जा सकता. दुनिया भर के अन्दर आम जनता अपनी एकता को तेज़ी के साथ अनुभव करती जा रही है. उसे सबके फ़ायदे में अपना फ़ायदा और सबके नुक़सान में अपना नुक़सान दिखाई देने लगा है. उसे काले गोरे का भेद बुरा लगता है, वह जंग और जंग की तैयारियों के ख़िलाफ़ है. इसमें कोई संदेह नहीं कि आजकल के काले बादल छटने वाले हैं और दुनिया काफ़ी तेज़ी के साथ और पक्के तौर पर अमन,

## امریکی جنتا کا دل

امریکہ میں دیش بھر کے ھائی اسکولوں کے لڑکوں اور لڑکیوں کا ھر سال ایک ' مقابلہ ' ھوتا ھے' جس میں لاکھوں لڑکے اور لڑکیاں نبندھ لکھکر بھیجتے ھیں اور سب سے اچھے نبندھ لکھنے والوں کو انعام دیئے جاتے ھیں . یہ ' مقابلہ ' اُس دیش کی کچھ سارو جنک سنستھاؤں کی اور سے کرایا جاتا ھے . سن 1954 میں اس مقابلے میں دس لاکھ سے اوپر لڑکوں اور لڑکیوں نے نبندھ لکھ کر بھیجے تھے . اُن میں سے چار کو پانچ پانچ سو ڈالر کا انعام دیا گیا تھا . مضمون تھا—" میں جن راج ( ڈیموکریسی ) کی طرف سے بولتا ھوں ." جن چار نبندھوں پر انعام دیا گیا اُن میں سے ایک کا ھندی انوواد ھم نیچے دے رھے ھیں . انوواد جہاں تک ھو سکا لفظی کیا گیا ھے . یہ لیکھ امریکہ کی کنساس ریاست کے کسی ھائی اسکول کے ایک سولہ برس کے لڑکے ' فلپ ایم . میکائے ' کا لکھا ھوا ھے . اِس نبندھ کو ھم بڑی خوشی کے ساتھ " نیا ھند " میں کیول اِس لئے دے رھے ھیں کیونکہ اِس سے پتہ چلتا ھے کہ امریکی سرکار کے نیتا کچھ بھی کہیں یا کریں امریکی جنتا کا دل ویسا ھی صاف' بڑا اور مانو پریم سے بھرا ھوا ھے جیسا دنیا کے دوسرے دیشوں کی جنتا کا دل . دنیا کے سامراج پریمی سمجھے جانے والے دیشوں میں بھی—اور ایسے دیش ایک دو انگلیوں پر گنے جا سکتے ھیں—ایسے لوگوں کی گنتی بہت ھی کم ھے اور گھٹتی جا رھی ھے جو ٹھیک بے ٹھیک سمجھتے ھیں کہ اُن کا نفع نقصان دوسرے دیشوں کے لوگوں کے نفع نقصان سے بالکل الگ ھے اور دونوں میں وہ ٹکر ھے جسے دور نہیں کیا جا سکتا . دنیا بھر کے اندر عام جنتا اپنی ایکتا کو تیزی کے ساتھ انوبھو کرتی جا رھی ھے . اُسے سب کے فائدے میں اپنا فائدہ اور سب کے نقصان میں اپنا نقصان دکھائی دینے لگا ھے . اُسے کالے گورے کا بھید برا لگتا ھے' وہ جنگ اور جنگ کی تیاریوں کے خلاف ھے . اِس میں کوئی سندیہ نہیں کہ آجکل کے کالے بادل چھٹنے والے ھیں اور دنیا کافی تیزی کے ساتھ اور پکے طور پر امن'

देश की आज़ादी के लिये उनकी कोशिशों, हिन्दुओं को मुसलमानों से और मुसलमानों को हिन्दुओं से लड़ाने, हिन्दुस्तानियों के कैरेक्टर को बरबाद करने और सारी हिन्दुस्तानी क़ौम को नीचा दिखाने की अंगरेज़ी चालों, अंगरेज़ों के ज़रिये हिन्दुस्तान की खुली लूट, ईस्ट इन्डिया कम्पनी का असली रूप, अंगरेज़ों के आने से पहले हिन्दुस्तान की सनअती, माली, तिजारती, राजकाजी, समाजी, मज़हबी और तालीमी हालत, और डेढ़ सौ बरस की अंगरेज़ी हकूमत में एक प्लैन के साथ इन सब चीज़ों की बरबादी, क़दम क़दम पर अंगरेज़ों का अपनी संधियों और अहदनामों को तोड़ना, इस देश में आज़ादी की तहरीक का श्रीगणेश और शुरू से आख़ीर तक उस तहरीक का इतिहास, सन 1857 के स्वाधीन्ता संग्राम के दिलचस्प पहलू, इन्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना, दूसरे देशों में अंगरेज़ों की साज़िशें, ख़िलाफ़त की तहरीक, रेशमी ख़तों की तहरीक, रूस, तुर्की अफ़ग़ानिस्तान और हिन्दुस्तान के पुराने सम्बन्ध, हिन्दुस्तानी देश भक्तों के दूसरे देशों में कारनामे, अमीर अमानुल्ला का असली कैरेक्टर, रौलट रिपोर्ट, महात्मा गांधी की तहरीक के अजीब अजीब पहलू, अंगरेज़ी ख़ुफ़िया पुलिस की करतूतें वग़ैरा वग़ैरा सैकड़ों अत्यन्त दिलचस्प और शिक्षाप्रद विषयों पर एक किताब के अन्दर सामग्री चाहते हैं तो शायद इससे बढ़कर किताब नहीं मिल सकती. बीस अलग अलग किताबों के पढ़ने से आपको जो जानकारी मिल सकती है वह इस एक किताब के पढ़ने से मिल जायगी. इस पर तारीफ़ यह कि हर बात बेलाग होकर, सचाई, इन्साफ़ और सनद के साथ कही गई है. हमारी राय में कोई ऐसा उर्दू पढ़ा हिन्दुस्तानी नहीं होना चाहिये जो अपने देश के बारे में कुछ भी जानना चाहता हो और जो इस किताब को न पढ़े. देश की कोई लाइब्रेरी नहीं होनी चाहिये जिसमें यह किताब न हो. भाषा अगर इससे आसान और आम फ़हम होती तो किताब कहीं अधिक लोगों को फ़ायदा पहुंचा सकती थी.

मिलने का पता :—अलजमीयत बुक डिपो—दफ़्तर जमीयत उलमाए हिन्द, गली क़ासिम जान; देहली-6 या क़ौमी किताब घर देवबन्द, ज़िला सहारनपुर.

17. 3. '55 सुन्दरलाल

---

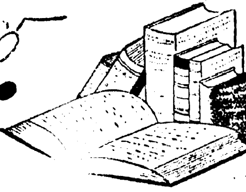


دیش کی آزادی کے لئے اُن کی کوششوں، هندؤں کو مسلمانوں سے اور مسلمانوں کو هندؤں سے لڑانے، هندستانیوں کے کیرکٹر کو برباد کرنے اور ساری هندستانی قوم کو نیچا دکھانے کی انگریزی چالوں، انگریزوں کے ذریعہ هندستان کی کھلی لوٹ، ایسٹ اِنڈیا کمپنی کا اصلی روپ، انگریزوں کے آنے سے پہلے هندستان کی صنعتی، مالی، تجارتی، راج کاجی، سماجی، مذهبی اور تعلیمی حالت، اور ڈیڑھ سو برس کی انگریزی حکومت میں ایک پلین کے ساتھ اِن سب چیزوں کی بربادی، قدم قدم پر انگریزوں کا اپنی سندھیوں اور عهد ناموں کو توڑنا، اِس دیش میں آزادی کی تحریک کا شری گنیش اور شروع سے آخر تک اُس تحریک کا اتہاس، سن 1857 کے سوادهینتا سنگرام کے دلچسپ پہلو، اِنڈین نیشنل کانگریس کی استھاپنا، دوسرے دیشوں میں انگریزوں کی سازشیں، خلافت کی تحریک، ریشمی خطوں کی تحریک، روس، ترکی، افغانستان اور هندستان کے پرانے سمبندھ، هندستانی دیش بھکتوں کے دوسرے دیشوں میں کارنامے، امیر امان اللہ کا اصلی کیرکٹر، رولٹ رپورٹ، مہاتما گاندھی کی تحریک کے عجیب عجیب پہلو، انگریزی خفیہ پولیس کی کرتوتیں وغیرہ وغیرہ سیکڑوں اتینت دلچسپ اور شکشا پرد وشیوں پر ایک کتاب کے اندر سامگری چاهتے هیں تو شاید اِس سے بڑھ کر کتاب نہیں مل سکتی. بیس الگ الگ کتابوں کے پڑھنے سے آپ کو جو جانکاری مل سکتی هے وہ اِس ایک کتاب کے پڑھنے سے مل جائے گی. اِس پر تعریف یہ کہ هر بات بےلاگ هو کر، سچائی، انصاف اور سند کے ساتھ کہی گئی هے. همارے رائے میں کوئی ایسا اُردو پڑھا هندستانی نہیں هونا چاهئے جو اپنے دیش کے بارے میں کچھ بھی جاننا چاهتا هو اور جو اس کتاب کو نہ پڑھے. دیش کی کوئی لائبریری نہیں هونی چاهئے جس میں یہ کتاب نہ هو. بھاشا اگر اس سے آسان اور عام فہم هوتی تو کتاب کہیں ادهک لوگوں کو فائدہ پہونچا سکتی تھی.

ملنے کا پتہ :— الجمعۃ بک ڈپو. دفتر جمیعۃ علماء هند، گلی قاسم جان دهلی - 6 یا قومی کتاب گھر دیو بند، ضلع سہارن پور.

—سندر لال 17 . 3 . '55

# कुछ किताबें



# کچھ کتابیں

## "नक़्शे हयात"

लेखक—मौलाना हुसैन अहमद मदनी; लिपि और भाषा—उरदू; दो जिल्द; रायल अठपेजी; कुल सफ़े—लगभग सात सौ; जिल्दें कपड़े की सुन्दर और मज़बूत; काग़ज, लिखाई, छपाई बहुत अच्छी; क़ीमत दोनों जिल्दों की-साढ़े दस रुपया.

जमीयत उलमा के सदर मौलाना हुसैन अहमद मदनी का नाम देश भर में मशहूर है. हिन्दुस्तान की आज़ादी की जंग में शुरू से आख़ीर तक उन्होंने आगे आगे हिस्सा लिया और हर तरह की मुसीबतें झेलीं. सन 1942 में नैनी सेन्ट्रल जेल के अन्दर वह और हम साथ साथ थे. वह आज़ादी के उन परखे हुए बहादुर सिपाहियों में से हैं जो जितनी बार आग में डाले गए उतनी बार ही खरे सोने की तरह दमकते हुए बाहर आए. फ़िरक़ेवाराना ज़हनियत के ज़बरदस्त दुश्मन, हिन्दू मुसलिम इत्तहाद के पक्के हामी, सच्चे मुहिब्बे वतन, देश की आज़ादी के दिलदादा मौलाना हुसैन अहमद मदनी ने जब से होश संभाला तब से लेकर देश के आज़ाद होने तक उनके जीवन की एक एक घड़ी मानवता की सेवा और देश की आज़ादी की कोशिशों में ही बीती. यह किताब उनके अपने हाथ से लिखी अब तक की जीवन कहानी है. ऐसे आदमी की जीवन कहानी का यूं भी दिलचस्प और शिक्षाप्रद होना लाज़मी था. पर इस किताब का इस से भी बढ़कर पहलू यह है कि जैसा जमीयत उलमा के सेक्रेटरी मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान ने किताब के शुरू में लिखा है—"यह किताब केवल विद्वान लेखक की जीवन कहानी ही नहीं है बल्कि हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों के आने से लेकर अंग्रेज़ी राज के अन्त होने तक सब ख़ास ख़ास घटनाओं का संग्रह है. अंग्रेज़ी राज की उन पोलीटिकल चालों और राज-काजी छल फ़रेबों का यह इनसाइक्लोपीडिया है जिन्होंने इस देश को एक बार तबाह कर डाला था."

अगर आप एक सच्चे, विश्वासी मुसलमान घराने में पैदा हुए आदमी की शुरू से शिक्षा दीक्षा, इसलाम की असली रूह, मक्के और मदीने के दिलचस्प हालात, मुसलमान आलिमों का शुरू से अंगरेज़ी राज की तरफ़ रुख़,

## "نقش حیات"

لیکھک—مولانا حسین احمد مدنی؛ لپی اور بھاشا—اُردو . دو جلد؛ رایل آٹھ پیجی؛ کل صفحے—لگ بھگ سات سو؛ جلدیں کپڑے کی سندر اور مضبوط؛ کاغذ، لکھائی، چھپائی بہت اچھی؛ قیمت دونوں جلدوں کی—ساڑھے دس روپیہ .

جمعیۃ علماء کے صدر مولانا حسین احمد مدنی کا نام دیش بھر میں مشہور ھے . ھندستان کی آزادی کی جنگ میں شروع سے آخیر تک اُنھوں نے آگے آگے حصہ لیا اور ھر طرح کی مصیبتیں جھیلیں . سن 1942 میں نینی سنٹرل جیل کے اندر وہ اور ھم ساتھ ساتھ تھے. وہ آزادی کے اُن پرکھے ھوئے بہادر سپاھیوں میں سے ھیں جو جتنی بار آگ میں ڈالے گئے اُتنی بار ھی کھرے سونے کی طرح دمکتے ھوئے باھر آئے . فرقہ وارانہ ذھنیت کے زبردست دشمن، ھندو مسلم اِتحاد کے پکے حامی، سچے محب وطن، دیش کی آزادی کے دلدادہ مولانا حسین احمد مدنی نے جب سے ھوش سنبھالا تب سے لےکر دیش کے آزاد ھونے تک اُن کے جیون کی ایک ایک گھڑی مانوتا کی سیوا اور دیش کی آزادی کی کوششوں میں ھی بیتی. یہ کتاب اُن کے اپنے ھاتھ سے لکھی اب تک کی جیون کہانی ھے . ایسے آدمی کی جیون کہانی کا یوں بھی دلچسپ اور شکشا پرد ھونا لازمی تھا . پر اِس کتاب کا اِس سے بھی بڑھ کر پہلو یہ ھے کہ جیسا جمعیۃ علماء کے سکریٹری مولانا حفظ الرحمان نے کتاب کے شروع میں لکھا ھے—"یہ کتاب کیول ودوان لیکھک کی جیون کہانی ھی نہیں ھے بلکہ ھندستان میں انگریزوں کے آنے سے لےکر انگریزی راج کے انت ھونے تک سب خاص خاص گھٹناؤں کا سنگرہ ھے . انگریزی راج کی اُن پولیٹیکل چالوں اور راج کاجی چھل فریبوں کا یہ اِنسائیکلو پیڈیا ھے جنھوں نے اِس دیش کو ایک بار تباہ کر ڈالا تھا ."

اگر آپ ایک سچے، وشواسی مسلمان گھرانے میں پیدا ھوئے آدمی کی شروع سے شکشا دیکشا، اِسلام کی اصلی روح، مکہ اور مدینہ کے دلچسپ حالات، مسلمان عالموں کا شروع سے انگریزی راج کی طرف رخ،

व आखिर में कैसी खतरनाक साबित हुईं, उस नुक़्ते नज़र से भी यह एक समझने जैसी तारीखी घटना है. उस समय तो सर सैयद अहमद के मन में सिर्फ़ अपनी धर्मजाति की पिछड़ी हुई दशा दूर करने का सेवा भाव था. लेकिन बाद के ज़माने में नई पीढ़ी के नये भाव आये, नये कारण मिले, नई नीतियां चलीं. इनके साथ सारा चित्र पलट गया. यह बात आज आज़ादी के दौर में कई तरह से महसूस हो रही है. लेकिन यह सब असर 1857-युग के दौर में नहीं आता. लेकिन यह लिखना चाहिये कि उसके जन्माक्षर इस समय लिखे गये.

**राज्यक्षेत्र विचार**

आखिर में राज्यक्षेत्र भी नये असर के नीचे आया. मुग़लों के दरबारी ढंग की राज्य प्रणाली के बदले नये अंग्रेज़ी ढंग की राज्यनीति निखरने लगी. पार्लियामेन्ट, लोकमत इत्यादि विचार पैदा हुये.

सरकारी नौकरियों में देश के लोग समान दर्जे से जायेंगे तो बड़ा भारी फ़ायदा होगा, और हमारे लोगों के राज्य सम्बन्धी कार्य अच्छे और अधिक ज्ञान पूर्वक और प्रेम से कर सकेंगे ऐसा ख़याल उत्पन्न हुआ. नौकरियों का स्वदेशी-करन—एक ज्ञान पूर्वक मांगने जैसी राजकीय बात प्रतीत हुई. उस समय आई. सी. एस. होना यह भी एक देश भक्ति जैसी चीज़ महसूस हुई हो तो उसमें ताज्जुब की बात नहीं है.

क़ौमियत का एक नया मज़हब बना. लोगों की शिक्षा देश के प्रश्नों के बारे में होनी चाहिये, अंग्रेज़ों को उसके बारे में समझाकर राज्य कारोबार में सुधार कराने चाहियें, ये ख़याल नये अंग्रेज़ी पढ़े हुये देश प्रेमी युवकों में पैदा हुए. राज्यकारोबार पर नज़र रखने का कार्य वे देश सेवा समझ कर अपने आप करने लगे. यह सब चिंतन प्रजा के सामने रखने के लिये भिन्न भिन्न संस्थाओं और अखबार वग़ैरा की स्थापना होने लगी. संक्षेप में कहें तो नये राजकीय दौर को समझने की कोशिशें अपने आप शुरू हुईं.

1857 से 1885 के युग की इन सब बातों को संमग्र रूप से देखते हुए, एक बात यह साबित होती है कि देश में नया दौर शुरू हुआ. उसके साथ क़दम मिलाने के लिये प्रजा ने भी नया नज़रिया और नई ताक़त हासिल की. क़ौमियत के नये बीज लगे और फ़ौरन इन बीजों ने दरख़्तों का रूप ले लिया. 1857 से 1885 के युग की अव्यवस्था तथा नीति ऐक्य का अभाव दूर हुआ और नई नीति के पहलुओं को क़ुबूल किया जाने लगा.

इस दौर की छानबीन और अध्ययन का विचार अब हमारे देश में खूब होना चाहिये. देश की नई ज़िन्दगी का यह सवेरा था. उसके संविधायक बल और उसके पुरस्कर्ता हमारे लिये बड़ी भारी पूंजी हैं. नई पीढ़ी के लिये वह शक्ति का स्रोता है. इसकी छानबीन और अध्ययन की दृष्टि शुद्ध एवं सात्विक ज़रूर होनी चाहिये.

---



وے آخر میں کیسی خطرناک ثابت ہوئیں؛ اُس نقطۂ نظر سے بھی یہ ایک سمجھنے جیسی تاریخی گھٹنا ھے. اُس سمے تو سر سید احمد کے من میں صرف اپنی دھرم جاتی کی پچھڑی ہوئی دشا دور کرنے کا سیوا بھاؤ تھا. لیکن بعد کے زمانے میں نئی پیڑھی کے نئے بھاؤ آئے، نئے کارن ملے، نئی نیتیاں چلیں. اِن کے ساتھ سارا چتر پلٹ گیا. یہ بات آج آزادی کے دور میں کئی طرح سے محسوس ہو رہی ھے. لیکن یہ سب اثر 1857 یگ کے دور میں نہیں آتا. لیکن یہ لکھنا چاھئیے کہ اُس کے جنماکچھر اِس سمے لکھے گئے.

**راجیہ چھیتر وچار**

آخر میں راجیہ چھیتر بھی نئے اثر کے نیچے آیا. مغلوں کے درباری ڈھنگ کی راجیہ پرنالی کے بدلے نئے انگریزی ڈھنگ کی راجیہ نیتی نکھرنے لگی. پارلیامنٹ، لوک مت اتیادی وچار پیدا ہوئے.

سرکاری نوکریوں میں دیش کے لوگ سمان درجے سے جائینگے تو بڑا بھاری فائدہ ہوگا، اور ھمارے لوگوں کے راجیہ سمبندھی کاریہ اچھے اور ادھک گیان پوروک اور پریم سے کرسکیں گے ایسا خیال اُتپن ھوا. نوکریوں کا سودیشی کرن—ایک گیان پوروک مانگنے جیسی راجکیہ بات پرتیت ھوئی. اُس سمے آئی. سی. ایس. ھونا یہ بھی ایک دیش بھکتی جیسی چیز محسوس ھوئی ھو تو اُس میں تعجب کی بات نہیں ھے.

قومیت کا ایک نیا مذھب بنا. لوگوں کی شکشا دیش کے پرشنوں کے بارے میں ھونی چاھئیے، انگریزوں کو اُس کے بارے میں سمجھاکر راجیہ کاروبار میں سدھار کرانے چاھئیں، یہ خیال نئے انگریزی پڑھے ھوئے دیش پریمی یوکوں میں پیدا ھوئے. راجیہ کاروبار پر نظر رکھنے کا کاریہ وے دیش سیوا سمجھ کر اپنے آپ کرنے لگے. یہ سب چنتن پرجا کے سامنے رکھنے کے لئے بھن بھن سنستھاؤں اور اخبار وغیرہ کی استھاپنا ھونے لگی. سنچھیپ میں کہیں تو نئے راجکیہ دور کو سمجھنے کی کوشیشیں اپنے آپ شروع ھوئیں.

1857 سے 1885 کے یگ کی اِن سب باتوں کو سمگر روپ سے دیکھتے ھوئے، ایک بات یہ ثابت ھوتی ھے کہ دیش میں نیا دور شروع ھوا. اُس کے ساتھ قدم ملانے کے لئے پرجا نے بھی نیا نظریہ اور نئی طاقت حاصل کی. قومیت کے نئے بیج لگے اور فوراً اِن بیجوں نے درختوں کا روپ لے لیا. 1857 سے 1885 کے یگ کی اویوستھا تتھا نیتی ایکیہ کا ابھاؤ دور ھوا اور نئی نیتی کے پہلوؤں کو قبول کیا جانے لگا.

اِس دور کی چھان بین اور ادھین کا وچار اب ھمارے دیش میں خوب ھونا چاھئیے دیش کی نئی زندگی کا یہ سویرا تھا. اُس کے سمودھایک بل اور اس کے پرسکرتا ھمارے لئے بڑی بھاری پونجی ھیں. نئی پیڑھی کے لئے وہ شکتی کا سوتا ھے. اِس کی چھان بین اور ادھین کی درشٹی شدھ ایوم ساتوک ضرور ھونی چاھئیے.

जाति पांति के भेद भावों का त्याग, इत्यादि अनेक चीज़ें इस महापुरुष के जीवन में सहज गंगा के समान पैदा हुईं; और उनकी महान शक्ति और तेज इतना ज्यादा था कि जिन्होंने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की थी ऐसे विवेकानन्द को भी परमहंस ने अपनी तरफ़ खींचा. बंगाल में केशवचन्द्र सेन, देवेन्द्र नाथ वग़ैरा ब्रह्म समाजवादियों के जमाने में भी इस महा गंगा का प्रवाह पूर्ण रूप से आगे बढ़ा, और देश में सब जगह उसके जल से सिंचाई होने लगी. इन दिनों प्रवाहों का असर समाज क्षेत्र में भारी था.

उद्योग और आर्थिक क्षेत्र के मुआफ़िक़, इस क्षेत्र में भी 1885 के बाद के युग में, अखिल भारतीय सामाजिक परिषद् जैसी संस्था ने जन्म लिया.

## विद्या क्षेत्र

विद्या क्षेत्र में भी ध्यान देने योग्य सुधार होते जाते थे. युनिवर्सिटियों में अंग्रेज़ी की पढ़ाई तो होती थी. उसके साथ प्राचीन भाषाओं का अभ्यास भी शुरू हुआ. संस्कृत, फ़ारसी अरबी नये ढंग से पढ़ी जाने लगीं. पुरानी शास्त्रीपद्धति और पाठशालाओं का महत्त्व कम होने लगा. इसका असर देश की भाषाओं पर पड़ने लगा. सादी देशी भाषाओं में इन प्राचीन भाषाओं के शब्दों और प्रयोगों की भरमार होने लगी. दूसरी ओर अंग्रेज़ी ने भी असर डालना शुरू किया.

पढ़ाई से नौकरियां हासिल करने की क़ाबलियत भी आने लगी. विद्याभ्यास करने के लिये विलायत जाना शुरू हुआ. नई विद्याओं के पंडित भी तैयार होने लगे. उनकी नामावली भी देखनी चाहिये. ख़ास तौर पर तीन प्रांत—बम्बई, मद्रास, बंगाल—जहां पहली युनिवर्सिटियां क़ायम हुईं, वहां यह ख़ास तौर पर देखने को मिलता है.

## अलीगढ़ की मुसलिम हलचल

जमाने के इस दौर में सर सैयद अहमद खां ने अलीगढ़ को मरकज बनाकर मुसलमानों की तालीम में एक नई धारा बहाई. बलवे में मुसलमानों पर अंग्रेजों को शुबहा हुआ कि यह क़ौम तूफ़ानी है. इस शुबहे को दूर करने के लिये सर सैयद ने ख़ास कोशिश की. दूसरी ओर उन्होंने मुसलमानों की क़दीम जड़ प्रथाओं को दूर किया, और नई अंग्रेज़ी तालीम दाख़िल करने की कोशिश शुरू की. अलीगढ़ युनिवर्सिटी उसी का नतीजा है.

इस तख़य्युल के आजू-बाजू उर्दू जबान का भी विकास होता गया. हाली, इक़बाल, शिबली आदि लेखक इस सिलसिले में याद आते हैं. इस विचारधारा का अध्ययन और उसकी छानबीन करनी चाहिये.

इस दौर में फ़िरक़ेवाराना ख़याल का जहरीला बीज नहीं था यह ठीक है; लेकिन एक छोटी सी भिन्नता को लेकर आगे बढ़ने से, एक सोते से जो दो अलग अलग धारायें निकलीं





جاتی پانتی کے بھید بھاؤں کا تیاگ، اتیادی انیک چیزیں ان اس مہاپرش کے جیون میں سہج گنگا کے سمان پیدا ہوئیں؛ اور اُن کی مہان شکتی اور تیج اتنا زیادہ تھا کہ جنہوں نے آدھونک شکشا پراپت کی تھی ایسے وویکانند کو بھی پرمھنس نے اپنی طرف کھینچا. بنگال میں کیشو چندر سین، دیویندر ناتھ وغیرہ برھم سماج وادیوں کے زمانے میں بھی اِس مہا گنگا کا پرواہ پورن روپ سے آگے بڑھا، اور دیش میں سب جگہ اُس کے جل سے سنچائی ہونے لگی. اِن دونوں پرواھوں کا اثر سماج چھیتر میں بھاری تھا.

اُدیوگ اور آرتھک چھیتر کے موافق اِس چھیتر میں بھی 1885 کے بعد کے یگ میں، اکھل بھارتیہ ساماجک پریشد جیسی سنستھا نے جنم لیا.

## ودیا چھیتر

ودیا چھیتر میں بھی دھیان دینے یوگیہ سدھار ہوتے جاتے تھے. یونیورسٹیوں میں انگریزی کی پڑھائی تو ہوتی تھی. اُس کے ساتھ پراچین بھاشاؤں کا ابھیاس بھی شروع ہوا. سنسکرت، فارسی، عربی نئے ڈھنگ سے پڑھائی جانے لگیں. پرانی شاستری پدھتی اور پاٹھ شالاؤں کا مہتو کم ہونے لگا. اِس کا اثر دیش کی بھاشاؤں پر پڑنے لگا. سادی دیشی بھاشاؤں میں اِن پراچین بھاشاؤں کے شبدوں اور پریوگوں کی بھرمار ہونے لگی. دوسری اُور انگریزی نے بھی اثر ڈالنا شروع کیا.

پڑھائی سے نوکریاں حاصل کرنے کی قابلیت بھی آنے لگی. ودیابھیاس کرنے کے لئے ولایت جانا شروع ہوا. نئی ودیاؤں کے پنڈت بھی تیار ہونے لگے. اُن کی ناماولی بھی دیکھنی چاھئے. خاص طور پر تین پرانت—بمبئی، مدراس، بنگال—جہاں پہلی یونیورسٹیاں قائم ہوئیں، وہاں یہ خاص طور پر دیکھنے کو ملتا ھے.

## علیگڈھ کی مسلم ھلچل

زمانے کے اُس دور میں سر سید احمد خاں نے علیگڈھ کو مرکز بناکر مسلمانوں میں تعلیم کی ایک نئی دھارا بہائی. بلوے میں مسلمانوں پر انگریزوں کو شبہ ہوا کہ یہ قوم طوفانی ھے. اُس شبہے کو دور کرنے کے لئے سر سید نے خاص کوشش کی. دوسری اُور انھوں نے مسلمانوں کی قدیم جڑ پرتھاؤں کو دور کیا، اور نئی انگریزی تعلیم داخل کرنے کی کوشش شروع کی علیگڈھ یونیورسٹی اُسی کا نتیجہ ھے.

اِس تخیل کے آزوبازو اُردو زبان کا بھی وکاس ہوتا گیا. حالی، اقبال، شبلی آدی لیکھک اس سلسلہ میں یاد آتے ھیں، اس وچار دھارا کا ادھین اور اُس کی چھان بین کرنی چاھئے.

اِس دور میں فرقہ وارانہ خیال کا زھریلا بیج نہیں تھا یہ ٹھیک ھے؛ لیکن ایک چھوٹی سی بھنتا کو لیکر آگے بڑھنے سے، ایک سوتے سے جو دو الگ الگ دھارائیں نکلیں

इस महाप्रयाण का असर जीवन के सभी अंगों पर पहुंचा. किसी नये रास्ते पर जाना है, ऐसा भाव प्रजा की ऊंच्च श्रेणी के लोगों में पैदा होने लगा. उनके ज़रिये अपनी रुचि, क़ाबलियत और ताक़त के मुताबिक़ नये विचारों को सेया जाने लगा. जैसा कि—

## आर्थिक क्षेत्र में नये विचार

आर्थिक क्षेत्र में देखें. श्री रमेशचंद्र दत्त, दादाभाई नवरोजी, तथा न्यायमूर्ति रानाडे ने इसके बारे में गहराई से सोचना शुरू किया. 'ड्रेईन' वाद--अपने देश की संपत्ति अंग्रेज़ राज्यनीति के कारन कम होती जा रही है, और उसकी उल्टी धारा बह रही है—यह विचार इस युग में हमारे नेताओं ने पेश किया रेल आयी. लेकिन खेती और क़हत के बारे में दुख का अनुभव हुआ.

देश के उद्योग धन्दे मरने लगे और भुखमरी तथा ग़रीबी अपने पैर जमाने लगी.

ये ख़याल लम्बे और गहरे सोच विचार के नतीजे की शक्ल में पेश हुए और आज वे पुस्तकाकार में देखने को मिलते हैं. ख़ास बात तो यह है कि नये ज़माने के नये उद्योगों की नींव डालने वाले हिम्मत वाले उद्योगवादी भी पैदा हुए. देश का वस्त्र-उद्योग इस काल में शुरू हुआ. श्री जमशेद जी टाटा, और रणछोड़ भाई 'रेंटियावाला' इस युग के मशहूर और नुमायां हस्तियां हैं.

इन विचारों से ही इस युग के अन्त में ईसवी 1885 के बाद कुल हिन्द उद्योग और आर्थिक परिषद जैसी संस्था की रचना हुई.

## समाज सुधार क्षेत्र

इस फ़ेहरिस्त में लेने के क़ाबिल एक और सामाजिक क्षेत्र है. नये मज़हबी विचार ने हिन्दू समाज में कई एक उदार भावों को प्रेरणा दी. जैसे कि जाति प्रथा की कूप मंडूकता, छुआछूत की अधार्मिकता, औरतों की इज़्ज़त का भाव, विवाह-शादी आदि प्रथाओं में सुधार की भावना वग़ैरा. परदेश गमन, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, छुआछूत का नाश, जातियों का त्याग, इत्यादि समाज सुधार इस युग में पैदा हुए. इस क्षेत्र में आर्य समाज ने बहुत काम किया.

देश का हित सोचने वाले हर एक महान पुरुष ने इस युग में ऐसा महसूस किया कि हिन्दुस्तान में नये विचारों को दाख़िल करने की ज़रूरत है. यह विचार ख़ास तौर पर अंग्रेज़ी विद्याओं से पैदा हुआ. लेकिन आ समाज ने हिन्दू धर्म से प्रेरना ली यह ध्यान देने योग्य बात है. परमहंस की बात भी ऐसी ही थी. दयानन्द सरस्वती के मुक़ाबले में परमहंस कुछ पढ़े नहीं थे. हमारे देश की जनता में जो परम उदार धर्म दृष्टि और जीवन भावना थी, वह उनके द्वारा प्रगट हुई. सर्वधर्म समभाव, सेवा के ज़रिये साधना, स्त्री सम्मान,



اِس مہاپریان کا اثر جیون کے سبھی انگوں پر پہونچا. کسی نئے راستے پر جانا ھے' ایسا بھاؤ پرجا کی اُوچ شرینی کے لوگوں میں پیدا ھونے لگا. ان کے ذریعے اپنی رچی' قابلیت اور طاقت کے مطابق نئے وچاروں کو سیپا جانے لگا. جیسا کہ—

## آرتھک چھیتر میں نئے وچار

آرتھک چھیتر میں دیکھیں. شری رمیش چندر دت' دادا بھائی نورو جی' تتھا نیائےمورتی راناڈے نے اس کے بارے میں گھرائی سے سوچنا شروع کیا. ڈرئین واد—اپنے دیش کی سمپتی انگریز راج نیتی کے کارن کم ھوتی جارھی ھے' اور اُس کی اُلٹی دھارا بہ رھی ھے—یہ وچار اُس یگ میں ھمارے نیتاؤں نے پیش کیا. ریل آئی لیکن کھیتی اور قحط کے بارے میں دکھ کا انوبھو ھوا.

دیش کے اُدیوگ دھندے مرنے لگے اور بھکمری تتھا غریبی اپنے پیر جمانے لگی.

یہ خیال لمبے اور گہرے سوچ وچار کے نتیجے کی شکل میں پیش ھوئے اور آج وے پستکاکار دیکھنے کو ملتے ھیں. خاص بات تو یہ ھے کہ نئے زمانے کے نئے اُدیوگوں کی نیو ڈالنے والے ھمت والے ادیوگ وادی بھی پیدا ھوئے. دیش کا وستر اُدیوگ اِس کال میں شروع ھوا. شری جمشید جی ٹاٹا' اور رنچھوڑ بھائی رینٹیا والا' اِس یگ کے مشہور اور نمایاں ھستیاں ھیں.

اِن وچاروں سے ھی اِس یگ کے انت میں عیسوی 1885 کے بعد کل ھند اُدیوگ اور آرتھک پریشد جیسی سنستھا کی رچنا ھوئی تھی.

## سماج سدھار چھیتر

اِس فہرست میں لینے کے قابل ایک اور ساماجک چھیتر ھے. نئے مذھبی وچار نے ھندو سماج میں کئی ایک اُداربھاؤں کو پریرنا دی. جیسے کہ جاتی پرتھا کی کوپ منڈوکتا' چھواچھوت کی ادھارمکتا' عورتوں کی عزت کا بھاؤ' وواہ-شادی آدی پرتھاؤں میں سدھار کی بھاؤنا وغیرہ. پردیش گمن' ودھوا وواہ' استری شکشا' چھواچھوت کا ناش' جاتیوں کا تیاگ اتیادی سماج سدھار اِس یگ میں پیدا ھوئے. اِس چھیتر میں آریہ سماج نے بہت کام کیا.

دیش کا ھت سوچنے والے ھر ایک مہان پرش نے اِس یگ میں ایسا محسوس کیا کہ ھندستان میں نئے وچاروں کو داخل کرنے کی ضرورت ھے. یہ وچار خاص طور پر انگریزی ودیاؤں سے پیدا ھوئے. لیکن آریہ سماج نے ھندو دھرم سے پریرنا لی یہ دھیان دینے یوگیہ بات ھے. پرم ھنس کی بات بھی ایسی ھی تھی. دیانند سرسوتی کے مقابلے میں پرم ھنس کچھ پڑھے نہیں تھے. ھمارے دیش کی جنتا میں جو پرم اُدار دھرم درشٹی اور جیون بھاؤنا تھی' وہ اُن کے دوارا پرگٹ ھوئی سرودھرم سم بھاؤ' سیوا کے ذریعے سادھنا' استری سمان'

इन सब प्रवृत्तियों में नया तत्व यह था कि ये जिन्दगी के मजहबी नजरिये का पुनरुद्धार करके, उसके जरिये पूरी जिन्दगी में नयी शक्ति को संचारित करके इनक़लाब पैदा करना चाहती थीं और उसका स्वरूप व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामुदायिक और सामाजिक था. सिर्फ़ स्वर्ग या मोक्ष की परंपरागत दृष्टि गौण होती जाती थी. और सामुदायिक जीवन के तरफ़ भी व्यक्ति की जिम्मेदारी है, और वह भी सेवा की पात्र है, यह भाव मुख्य होता जाता था.

और दूसरी बात यह है कि ख़ास करके अमुक विस्तार में ही पैदा हुईं और वहीं शक्तिशाली हुईं, फिर भी वे स्थानिक नहीं थीं, बल्कि समग्र भारतीय प्रजा में उनका विस्तार हो ऐसी संकल्प वाली थीं.

इनमें अमुक ख़ास प्रकार के भाव जरूर थे. जैसे कि ये सब प्रवृत्तियां विशेषतया हिन्दू धर्म के बारे में होने से, हिन्दू जाति से—जो कि अधिक संख्या में थी—सम्बन्धित थीं; लेकिन बाद के समय में जिस धार्मिक कर्मवाद को पैदा होते हमने देखा वह ज्ञानपूर्वक उसमें नहीं था. आर्य-समाज को इनमें से अपवाद स्वरूप मानना चाहिये. उसमें कट्टर हिन्दूवाद—और वह भी वेदवाद के रूप में—था. तत्कालीन हिन्दू समाज में धार्मिक और सामाजिक सुधार करने के लिये उसका जन्म हुआ, लेकिन साथ साथ ईसाई या मुसलिम धर्म के प्रति ख़ास कट्टर भाव को लेकर उसने जन्म लिया. धर्मवाद उग्र राष्ट्रवाद के लक्षण उसमें थे, जो कि बाद के युग में और आज भी राजकीय हिन्दूवाद के पोशक बने हैं.

प्रार्थना समाज, ब्रह्म समाज, थियोसोफ़ी इत्यादि प्रवृत्तियों में अंग्रेजी युग के असर का एक ख़ास भाव था. उनका माध्यम अंग्रेज़ी भाषा थी, जबकि आर्यसमाज ने ज्ञानपूर्वक हिन्दी को अपना माध्यम रखा था. यहां यह लिखना चाहिये कि प्रार्थना समाज में श्री भंडारकर ने मराठी को और गुजरात में श्री महीपतराम ने गुजराती को अपनाया था. इस वजह से ये प्रवृत्तियां नये, अंग्रेज़ी पढ़े हुए लोगों तक ही महदूद रहीं. वह उन लोगों के सिवा बाहर न फैल सकीं.

इस क्षेत्र के ज्योतिधर ये हैं :—

| | |
|---|---|
| केशवचंद्र सेन | ( 1838—1884 ) |
| देवेन्द्रनाथ ठाकुर | ( 1818—1905 ) |
| दयानंद सरस्वती | ( 1824—1883 ) |
| रामकृष्ण परमहंस | ( 1834—1886 ) |
| महादेव गोविन्द रानाडे | ( 1842—1901 ) |
| रामकृष्ण गोपाल भंडारकर | ( 1837—1925 ) |
| लेवेहस्की | ( 1831—1891 ) |
| कर्नल आल्कोट | ( 1832—1907 ) |
| मिसेज़ बेसेंट | ( 1874—1933 ) |



اِن سب پرورتیوں میں نیا تتو یہ تھا کہ یہ زندگی کے مذھبی نظریہ کا پنردھار کر کے، اُس کے ذریعہ پوری زندگی میں نئی شکتی کو سنچارت کر کے انقلاب پیدا کرنا چاھتی تھیں اور اُس کا سوروپ ویکتی گت نہیں بلکہ سامودائک اور ساماجک تھا ۔ صرف سورگ یا موکچھ کی پرمپراگت درشٹی گونڑ ھوتی جاتی تھی اور سامودائک جیون کے طرف بھی ویکتی کی زمہ‌داری ھے، اور وہ بھی سیوا کی پاتر ھے، یہ بھاؤ مکھیہ ھوتا جاتا تھا ۔

اور دوسری بات یہ ھے کہ خاص کر کے امک وستار میں ھی پیدا ھوئیں اور وھیں شکتشالی ھوئیں ۔ پھر بھی وے استھانک نہیں تھیں، بلکہ سمگر بھارتیہ پرجا میں اُن کا وستار ھو ایسی سنکلپ والی تھیں ۔

اِن میں امک خاص پرکار کے بھاؤ ضرور تھے ۔ جیسے کہ یہ سب پرورتیاں وشیشتیا ھندو دھرم کے بارے میں ھونے سے، ھندو جاتی سے—جو کہ ادھک سنکھیا میں تھی—سمبندھت تھیں؛ لیکن بعد کے سمے میں جس دھارمک کرمواد کو پیدا ھوتے ھم نے دیکھا وہ گیان پوروک اُس میں نہیں تھا ۔ آریہ سماج کو اِن میں سے اپواد سوروپ ماننا چاھئیے ۔ اُس میں کٹر ھندو واد—اور وہ بھی ویدواد کے روپ میں—تھا ۔ تت کالین ھندو سماج میں دھارمک اور ساماجک سدھار کرنے کے لئے اُس کا جنم ھوا، لیکن ساتھ ساتھ عیسائی یا مسلم دھرم کے پرتی خاص کٹر بھاؤ لے کر اُس نے جنم لیا ۔ دھرم واد اُگر راشٹرواد کے لچھن اُس میں تھے، جو بعد کے یگ میں اور آج بھی راجکیہ ھندو واد کے پوشک بنے ھیں ۔

پرارتھنا سماج، برھم سماج، تھیوسوفی اتیادی پرورتیوں میں انگریزی یگ کے اثر کا ایک خاص بھاؤ تھا ۔ اُن کا مادھیم انگریزی بھاشا تھی، جبکہ آریہ سماج نے گیان پوروک ھندی کو اپنا مادھیم رکھا تھا ۔ یہاں یہ لکھنا چاھئیے کہ پرارتھنا سماج میں شری بھنڈارکر نے مراٹھی کو اور گجرات میں شری مھیپت رام نے گجراتی کو اپنایا تھا ۔ اِس وجہ سے یہ پرورتیاں نئے انگریزی پڑھے ھوئے لوگوں تک ھی محدود رھیں ۔ وہ اُن لوگوں کے سوا باھر نہ پھیل سکیں ۔

اِس چھیتر کے جیوتی دھر یہ ھیں :—

| | |
|---|---|
| کیشو چندر سین | ( 1838 - 1884 ) |
| دیویندر ناتھ ٹھاکر | ( 1818—1905 ) |
| دیانند سرسوتی | ( 1824—1883 ) |
| رام کرشن پرمھنس | ( 1834—1886 ) |
| مہادیو گووند رانا ڈے | ( 1842—1901 ) |
| رام کرشن گوپال بھنڈارکر | ( 1837—1925 ) |
| لیوے ھسکی | ( 1831—1891 ) |
| کرنل آل کوٹ | ( 1832—1907 ) |
| مسیز بیسنٹ | ( 1874—1933 ) |

# राजा राममोहन राय से गांधी जी

## (1857-1885)

श्री मगनभाई देसाई

अनुवादक—श्री कनुभाई ना. पटेल

### नई जिन्दगी का सवेरा

एक तरह से देखें तो यह जमाना आज़ादी की बुनियादी नींव का जमाना माना जा सकता है. उस समय जो मनोमंथन हुआ, उसके नवनीत स्वरूप सन 1885 में राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस का जन्म हुआ. हमारी क़ौमी जिन्दगी के सब सीग़ों में यह मनोमंथन हुए थे, और उसके मंथन कारों के नाम हमारे मौजूदा जमाने के महान राष्ट्र पुरुषों की हैसियत से इतिहास में दर्ज हैं.

इस युग की शुरूआत अंग्रेज हुक्मरानों ने एक ओर से हथियारबन्दी का क़ानून बनाकर और दूसरी ओर से अंग्रेजी विश्वविद्यालयों को क़ायम करके किया. नये कर लगाये गये और नयी राज्य व्यवस्था भी क़ायम की गई. और उसके साथ साथ—कौन जानता है कि रियाया हिन्द कब क्या कर बैठे—ऐसा एक डर भी अपने मन में जमा लिया. इस वजह से बेऐतबारी और बंदोबस्त का राज्य-मानस नयी नीति की तमहीद की शक्ल में बना ऐसा कहा जा सकता है.

### रचनात्मक ( तामीरी ) सुधारवाद का जन्म

फ़ौरन उस समय के लिये तो क्रान्ति की बलवती भावना दब गई. दबी हुई आग जैसा हुआ होगा उसे भी उभरने में समय लगा. हिंसक क्रान्ति के इस मानस को 1885 के युग में साफ़ गिनने की जरूरत हो, ऐसा जाहिर नहीं होता.

लेकिन जिसे रचनात्मक सुधारवाद कहा जा सके वह नवविधान देश के विविध क्षेत्रों में पैदा हुआ. उसके पराक्रमी पुरस्कर्ता इस जमाने के मशहूर नेता हैं, जिनकी समग्र विचार सृष्टि इस रचनात्मक सुधारवाद को जन्म देने वाली साबित हुई.

### मजहबी दायरे में नई तामीर

मजहबी दायरे में देखें तो (1) ब्रह्म समाज का विकास तथा प्रार्थना समाज का उदय (ईसवी 18 0), (2) आर्य समाज का उदय(ईसवी 1875) तथा विकास, (3) थियोसाफ़ी और हिन्दू धर्म की तरफ़ नया नजरिया, तथा (4) रामकृष्ण परमहंस की जीवन दृष्टि. ये सब जोरदार कोशिशें उस जमाने की हैं.

# راجا رام موھن رائے سے گاندھی جی

## (1857-1885)

شری مگن بھائی دیسائی

انوواد ک——شری کنو بھائی نا . پٹیل

### نئی زندگی کا سویرا

ایک طرح سے دیکھیں تو یہ زمانہ زندگی کی بنیادی نیو کا زمانہ مانا جا سکتا ھے . اُس سمے جو منومنتھن ھوا' اس کے نونیت سروپ سن 1885 میں راشٹریہ مہاسبھا کانگریس کا جنم ھوا . ھماری قومی زندگی کےسب صیغوں میں یہ منومنتھن ھوئے تھے' اور اُس کے منتھن کاروں کے نام ھمارے موجودہ زمانے کے مہان راشٹر پرشوں کی حیثیت سے اِتہاس میں درج ھیں .

اِس یگ کی شروعات انگریز حکمرانوں نے ایک اُور سے ھتھیار بندی کا قانون بنا کر اور دوسری اُور سے انگریزی وشوودیالوں کو قائم کر کے کیا . نئے کر لگائے گئے اور نئی راج ویوستھا بھی قائم کی گئی . اور اُس کے ساتھ ساتھ—کون جانتا ھے کہ رعایا ھند کب کیا کر بیٹھے—ایسا ایک ڈر بھی اپنے من میں جما لیا . اِس وجہ سے بےاعتباری اور بندوبست کا راجیہ مانس نئی نیتی کی تمہید کی شکل میں بنا ایسا کہا جا سکتا ھے .

### رچناتمک ( تعمیری ) سدھار واد کا جنم

فوراً اُس سمے کے لئے تو کرانتی کی بلوتی بھاؤنا دب گئی . دبی ھوئی آگ جیسا کچھ ھوا ھوگا اُسے بھی ابھرنے میں سمے لگا . ھنسک کرانتی کے اِس مانس کو سن 1885 کے یگ میں صاف گننے کی ضرورت ھو' ایسا ظاھر نہیں ھوتا .

لیکن جسے رچناتمک سدھارواد کہا جا سکے وہ نوودھان دیش کے وودھ چھیتروں میں پیدا ھوا . اُس کے پراکرمی پرسکرتا اِس زمانے کے مشہور نیتا ھیں' جن کی سمگر وچار سرشٹی اِس رچناتمک سدھار واد کو جنم دینے والی ثابت ھوئی .

### مذھبی دائرے میں نئی تعمیر

مذھبی دائرے میں دیکھیں تو ( 1 ) برھم سماج کا وکاس تتھا پرارتھنا سماج کا اودیے (عیسوی 1860 )' ( 2 ) آریہ سماج کا اودیے ( عیسوی 1875 ) تتھا وکاس' ( 3 ) تھیوسفی اور ھندو دھرم کی طرف نیا نظریہ' تتھا ( 4 ) رام کرشن پرم ھنس کی جیون درشٹی یہ سب زوردار کوششیں اُس زمانے کی ھیں .

हो सके और आला अफ़सरों में उनकी रसाई हो सके. कुछ लोग परदे के गुणों के क़ायल नहीं हैं लेकिन परदादारों से वे डरते हैं और महज़ ऐसी जगह परदा हटाते हैं जहां उनकी ज्यादा नुक़्ताचीनी न हो. नये और पुराने विचारों में सामञ्जस्य पैदा करने में जो झिझक होती है वही झिझक आज परदे का आधार बनी हुई है. पुरानी हालतों में परवरिश पाये हुये मर्द और औरतें आज अपने को नई विचार-धारा में मजबूरन बहते पा रहे हैं. नई आज़ादी के फ़र्ज़ों से नावाक़िफ़ वे अपने को अजीब-ओ-ग़रीब कैफ़ियत में पाते हैं. नये विचारों के लिये उनके पास शिक्षा-दीक्षा की तय्यारी नहीं है. नतीजा यह है कि बाज वक़्त नये सुधारों के प्रयोग नाकाम और विफल हो जाते हैं, घर में प्रेम का धागा टूट जाता है और पति-पत्नी में मनोमालिन्य की रेखा खिंच जाती है.

जहां तक मर्दों और औरतों का साधारण सम्बन्ध है उस पर इन असफल प्रयोगों का और भी बुरा असर पड़ता है. ऐसे मर्द, जिनकी औरतें पर्दे में रहती हैं और जिनका यह विश्वास है कि पर्दे के भीतर ही स्त्री का सतीत्व सुरक्षित रह सकता है, जिन मर्दों के अपने अन्दर आत्म-संयम का कोई निश्चित स्टैन्डर्ड नहीं है, जब वे ऐसी औरतों से मिलते हैं जिन्होंने पर्दे से बाहर निकल कर अपनी आज़ादी हासिल कर ली है, तो वे उनके सम्बन्ध में अपने शक और शुबहे की कहानियां हज़ार कानों में दुहराते फिरते हैं. अपनी बीवियों को पर्दे में रखनेवाले मर्द कभी भी आज़ाद औरतों की सच्ची इज़्ज़त नहीं कर सकते. बहरहाल औरतों को इस तरह के मर्दों की आलोचना और उनकी फैलाई हुई बदनामियों का मुक़ाबला करना पड़ेगा. हर सूरत में आज़ादी अपनी क़ीमत तो मांगती ही है.

---

एक ग़ुलाम जिसे अपनी ग़ुलामी का इल्म है और वह अपनी ग़ुलामी की जंजीरों के तोड़ने की कोशिश नहीं करता तो वह जानवर के समान है.

—गांधी

---



ہوسکے اور اعلی افسروں میں ان کی رسائی ہو سکے. کچھ لوگ پردے کے گنڑوں کے قائل نہیں ہیں لیکن پردہ داروں سے وے ڈرتے ہیں اور محض ایسی جگہ وے پردہ ہٹاتے ہیں جہاں اُن کی زیادہ نقطہ چینی نہ ہو. نئے اور پرانے وچاروں میں سامنجسیہ پیدا کرنے میں جو جھجھک ہوتی ہے وہی جھجھک آج پردے کا آدھار بنی ہوئی ہے. پرانی حالتوں میں پرورش پائے ہوئے مرد اور عورتیں آج اپنے کو نئی وچار دھارا میں مجبوراً بہتے پا رہے ہیں. نئی آزادی کے فرضوں سے ناواقف وے اپنے کو عجیب و غریب کیفیت میں پاتے ہیں. نئے وچاروں کے لئے اِن کے پاس شکشا - دیکشا کی تیاری نہیں ہے. نتیجہ یہ ہے کہ بعض وقت نئے سدھاروں کے پریوگ ناکام اور وپھل ہوجاتے ہیں، گھر میں پریم کا دھاگا ٹوٹ جاتا ہے اور پتی پتنی میں منومالنیہ کی ریکھا کھنچ جاتی ہے.

جہاں تک مردوں اور عورتوں کا سادھارن سمبندھ ہے اِس پر اِن اسپھل پریوگوں کا اور بھی برا اثر پڑتا ہے. ایسے مرد، جن کی عورتیں پردے میں رہتی ہیں اور جن کا یہ وشواس ہے کہ پردے کے بھیتر ہی استری کا استیتو سورکشت رہ سکتا ہے، جن مردوں میں اپنے اندر آتم سینیم کا کوئی نشچت اسٹینڈرڈ نہیں ہے، جب وے ایسی عورتوں سے ملتے ہیں جنھوں نے پردے سے باہر نکل کر اپنی آزادی حاصل کر لی ہے، تو وے ان کے سمبندھ میں اپنے شک اور شبہے کی کہانیاں ہزار کانوں میں دہراتے پھرتے ہیں. اپنی بیویوں کو پردے میں رکھنے والے مرد کبھی بھی آزاد عورتوں کی سچی عزت نہیں کر سکتے. بہر حال عورتوں کو اِس طرح کے مردوں کی آلوچنا اور اُن کی پھیلائی ہوئی بدنامیوں کا مقابلہ کرنا پڑے گا. ہر صورت میں آزادی اپنی قیمت تو مانگتی ہی ہے.

---

ایک غلام جسے اپنی غلامی کا علم ہے اور وہ اپنی غلامی کی زنجیروں کو توڑنے کی کوشش نہیں کرتا تو وہ جانور کے سمان ہے.

— گاندھی

---

के लिये ठोस विश्वासों की जरूरत है. बाहरी बचाव के ऐसे साधन पैदा करने चाहियें जिसमें यह कह सकना मुमकिन हो—"मरदों की इस पीढ़ी ने अपनी सामाजिक सत्ता से अपने पैसों के ज़ोर पर अपनी ज़िन्दगी में किसी औरत को अपनी असमत बेचने के लिये मजबूर नहीं किया और औरतों की यह पीढ़ी है जिसने सिवाय प्रेम के और किसी कारन वश किसी मर्द के निकट कभी भी अपने जीवन में आत्म समर्पण नहीं किया."

परदा प्रथा के जारी रहने की चाहे जो वजह हों, रिवाज और मज़हब चाहे जितना उसका समर्थन करते हों, सवाल उठता है कि क्या उसका किसी भी शक्ल में जारी रखना मुनासिब और जायज़ है ? परदे से चूंकि नैतिक समस्याएं हल नहीं हुई हैं लिहाज़ा वह नैतिक दृष्टि से किसी तरह जायज़ नहीं हो सकता. परदे ने समाज की दुनियावी तरक़्क़ी को भी रोका है, लिहाज़ा वह दुनियावी नुक़्ते नज़र से भी जायज़ नहीं है. हमें यह बताया जाता है कि बाज़ समाजों में जहां परदा नहीं है वहां के व्यक्तियों का कितना भयंकर पतन हुआ है. मगर हमें यह नहीं बताया जाता कि अधिकांश परदा-रहित समाजों में लोगों ने अभूतपूर्व उन्नति की है जो परदे के सबब मुमकिन न हो सकती थी.

सभ्य दुनिया ने परदे की सख़्त मुख़ालफ़त की है. हिन्दुस्तान के अन्दर की फ़िज़ा भी परदे के ख़िलाफ़ है. आज-कल की दुनिया में कोई मुल्क अपने को और अपने विचारों को दुनिया से अलग करके नहीं रह सकता.

हिन्दुस्तान के मर्दों के दिमाग़ों ने यहां की औरतों की निस्बत बाहरी दुनिया के आन्दोलनों से कहीं ज्यादा असर क़ुबूल किया है. मर्द ही एक तरह से औरतों की आज़ादी के प्रचारक हैं. चाहे पच्छिम हो और चाहे पूरब हो जब तक औरतें रोटी-कपड़ों के लिये मरदों पर निर्भर हैं तब तक उन्हें मर्दों के स्टैन्डर्ड से ही रहना पड़ेगा. मौजूदा ज़माने के मर्दों को महज़ इस बात से सन्तोश नहीं है कि उनकी बीवियां उनकी पाशविक वासनाओं को तृप्त करती हैं और उनकी जायज़ औलादों की मां बनती हैं. लिहाज़ा औरतों को ज्यादा उदार शिक्षा दी जा रही है कि वे बेहतर क़िस्म की बीवियां बन सकें और उनके अन्दर आकर्षण भी हो और वे लाजशीला भी हों और साथ ही साथ वे बेहतर मांयें भी बन सकें. कुछ बहादुर बहनों ने शिक्षा की वास्तविक भावना से प्रेरित होकर अपने अन्दर व्यक्तिगत क्षमता पैदा की है और आज वे स्त्री-पुरुष के अन्दर सच्ची समता का प्रचार और संगठन कर रही हैं.

इन बाहरी हमलों से परदे का नैतिक ढांचा ख़स्ता हो रहा है. परदे के कुछ बहुत बड़े हामी इसलिये परदा छोड़ रहे हैं ताकि नये समाज में उन्हें महत्व और रुतबा हासिल



کے لئے ٹھوس وشواسوں کی ضرورت ھے. باھری بچاؤ کے ایسے سادھن پیدا کرنے چاھئے جس میں یہ کہ سکنا مشکل ھو—"مردوں کی اِس پیڑھی نے اپنی سماجک ستا سے اپنے پیسوں کے زور پر اپنی زندگی میں کسی عورت کو اپنی عصمت بیچنے کے لئے مجبور نہیں کیا اور عورتوں کی یہ پیڑھی ھے جس نے سوائے پریم کے اور کسی کارن وش کسی مرد کے نکٹ کبھی بھی اپنے جیون میں آتم سمرپن نہیں کیا ."

پردہ پرتھا کی جاری رھنے کی چاھے جو وجہ ھوں، رواج اور مذھب چاھے جتنا اِس کا سمرتھن کرتے ھوں، سوال اُٹھتا ھے کہ کیا اس کا کسی بھی شکل میں جاری رکھنا مناسب اور جائز ھے ؟ پردے سے چونکہ نیتک سمسیائیں حل نہیں ھوئی ھیں لہذا وہ نیتک درشٹی سے کسی طرح جائز نہیں ھوسکتا . پردے نے سماج کی دنیاوی ترقی کو بھی روکا ھے لہذا وہ دنیاوی نقطہ نظر سے بھی جائز نہیں ھے . ھمیں یہ بتایا جاتا ھے کہ بعض سماجوں میں جہاں پردہ نہیں ھے وھاں کے ویکتیوں کا کتنا بھینکر پتن ھوا ھے . مگر ھمیں یہ نہیں بتایا جاتا کہ ادھیکانش پردہ - رھت سماجوں میں لوگوں نے ابھوت پورو انتی کی ھے جو پردے کے سبب ممکن نہ ھو سکتی تھی .

سبھیہ دنیا نے پردے کی سخت مخالفت کی ھے . ھندستان کے اندر کی فضا بھی پردے کے خلاف ھے . آجکل کی دنیا میں کوئی ملک اپنے کو اور اپنے وچاروں کو دنیا سے الگ کر کے نہیں رہ سکتا .

ھندستان کے مردوں کے دماغوں نے یہاں کی عورتوں کی نسبت باھری دنیا کے آندولنوں سے کہیں زیادہ اثر قبول کیا ھے . مرد ھی ایک طرح سے عورتوں کی آزادی کے پرچارک ھیں . چاھے پچھم ھو اور چاھے پورب ھو جب تک عورتیں روٹی کپڑوں کے لئے مردوں پر نربھر ھیں تب تک انہیں مردوں کے اسٹینڈرڈ سے ھی رھنا پڑے گا . موجودہ زمانے کے مردوں کو محض اِس بات سے سنتوش نہیں ھے کہ اُن کی بیویاں پاشوک واسناؤں کو ترپت کرتی ھیں اور اِن کی جائز اولادوں کی ماں بنتی ھیں . لہذا عورتوں کو زیادہ اُدار شکشا دی جا رھی ھے کہ وہ بہتر قسم کی بیویاں بن سکیں اور ان کے اندر آکرشن بھی ھو اور وے لاج شیلا بھی ھوں اور ساتھ ھی ساتھ وے بہتر مائیں بھی بن سکیں . کچھ بہادر بہنوں نے شکشا کی واستوک بھاؤنا سے پریرت ھو کر اپنے اندر ویکتی گت شمتا پیدا کی ھے اور آج وے استری پورش کے اندر سچی سمتا کا پرچار اور سنگٹھن کر رھی ھیں .

اِن باھری حملوں سے پردے کا نیتک ڈھانچہ خستہ ھو رھا ھے . پردے کے کچھ بہت بڑے حامی اِس لئے پردا چھوڑ رھے ھیں تاکہ نئے سماج میں اِنھیں مہتو اور رتبہ حاصل

में चढ़ सकें. फिर शादियों में लड़कियों की अपनी पसन्द का कोई सवाल नहीं. शादी को तो वालदैन एक जरूरी गुनाह समझते हैं. जिनका परदे में एतक़ाद है वे औरतों को यदि गुनाहे मुजस्समा न समझेंगे तो और क्या समझेंगे? औरतों के साथ जो भी सम्पर्क हो और चाहे जिस शक्ल में हो खुदापरस्त मर्दों के नजदीक वह शर्मनाक है. शरीफ़ मर्द कहीं अपने मुंह से शादी की बात कह सकते हैं और शादी के बाद उनके गुनाहों का नतीजा जो औलाद होती हैं, कहीं उनका जिक्र कर सकते हैं!

इनसानी जज़बात का कहां तक खून किया जा सकता है? औरतों को जबरदस्ती इस तरह दबाने का नतीजा यह है कि हमारी सन्तानें दिमाग़ी तौर पर आज कमजोर हैं, जिस्मानी तौर पर बीमारियों का घर हैं, न उनके अन्दर कोई अनुशासन है, न बच्चों का लालन-पालन ही वैज्ञानिक ढंग से होता है, और न घरों के अन्दर सौन्दर्य और एकरसता है. आजकल के घर तो भद्दे रिवाजों और दक़ियानूसी परम्पराओं के अड्डे हैं.

नतीजा यह है कि सारे वातावरण में फ़ालिज का सा असर है. मरदों के हाथ में पैसा है, लिहाज़ा उन्होंने इस जहरीली हवा से अपने को बचाने का रास्ता निकाल लिया है. उन्होंने औरतों को दो वर्गों में बांट दिया है. एक वर्ग में उनकी बीवियां, माएं और बेटियां हैं जिनकी हुर्मत की पहरेदारी करना वे अपना पाक फ़र्ज़ समझते हैं. और दूसरे वर्ग में जमाने की ठुकराई हुई वे ग़रीब अबलाएं हैं, जिनके मर्द पैसों से हुस्न और असमत ख़रीदते हैं और जिनसे अपने पाप की ज्वाला को सुलगाते हैं. यह परदे का कितना भीषण रूप है जिसने वेश्याओं को समाज के मरदों की संस्कृति का पैमाना बना रखा है.

मरदों की इस घोर अनैतिकता, उनके पाप और उनके गुनाहों पर तहज़ीब का मुलम्मा फेर दिया गया है. मरदों के गुनाहों को—"ऊंह! इसमें क्या रखा है, यह तो सब मर्द करते ही हैं" कहकर टाल दिया जाता है, या बर्दाश्त किया जाता है लेकिन औरतें यदि वही गुनाह करती हैं तो उनके लिये वह एक भयंकर जुर्म हो जाता है; जिसके लिये न सिर्फ़ उन्हें क़ानूनी सज़ा मिलनी चाहिये बल्कि समाज का फ़र्ज़ है कि वह उन्हें लात मारकर बाहर निकाल दे. मरदों को किसी "नतीजे" से डरने की जरूरत नहीं है और दुनिया उसी गुनाह को गुनाह समझती है जिस गुनाह का कोई 'नतीजा' होता है.

सदाचार के इसी झूठे रवय्ये ने परदे के झन्डे को ऊंचा खड़ा कर रखा है और यही परदा प्रथा की नैतिक कमज़ोरी है. झूठे विश्वास सदाचार का आधार नहीं बन सकते, न नकारात्मक विश्वास ही उसका आधार बन सकते हैं. सदाचार



میں چڑھ سکیں. پھر شادیوں میں لڑکیوں کی اپنی پسند کا کوئی سوال نہیں۔ شادی کو تو والدین ایک ضروری گناہ سمجھتے ہیں۔ جن کا پردے میں اعتقاد ہے وے عورتوں کو یدی گناہ مجسمہ نہ سمجھیں گے تو اور کیا سمجھیں گے؟ عورتوں کے ساتھ جو بھی سمپرک ہو اور چاہے جس شکل میں ہو خدا پرست مردوں کے نزدیک وہ شرمناک ہے۔ شریف مرد کہیں اپنے منھ سے شادی کی بات کہ سکتے ہیں اور شادی کے بعد ان کے گناہوں کا نتیجہ جو اولاد ہوتی ہے، کہیں اِن کا ذکر کر سکتے ہیں!

اِنسانی جذبات کا کہاں تک خون کیا جا سکتا ہے؟ عورتوں کو زبردستی اِس طرح دبانے کا نتیجہ یہ ہے کہ ہماری سنتانیں دماغی طور پر آج کمزور ہیں، جسمانی طور پر بیماریوں کا گھر ہیں، نہ اِن کے اندر کوئی انوشاسن ہے، نہ بچوں کا لالن پالن ہی ویگیانک ڈھنگ سے ہوتا ہے، اور نہ گھروں کے اندر سوندریہ اور ایک ایکرستا ہے۔ آجکل کے گھر تو بھدے رواجوں اور دقیانوسی پرمپراؤں کے اڈے ہیں۔

نتیجہ یہ ہے کہ سارے وتاورن میں فالج کا سا اثر ہے۔ مردوں کے ہاتھ میں پیسہ ہے، لہذا اُنھوں نے اِس زہریلی ہوا سے اپنے کو بچانے کا راستہ نکال لیا ہے۔ اُنھوں نے عورتوں کو دو ورگوں میں بانٹ دیا ہے۔ ایک ورگ میں اُن کی بیویاں، مائیں اور بیٹیاں ہیں جن کی حرمت کی پہریداری کرنا وے اپنا پاک فرض سمجھتے ہیں۔ اور دوسرے ورگ میں زمانے کی ٹھکرائی ہوئی وے غریب ابلائیں ہیں، جن کے مرد پیسوں سے حسن اور عصمت خریدتے ہیں اور جن سے اپنے پاپ کی جوالا سلگاتے ہیں۔ یہ پردے کا کتنا بھیشنتر روپ ہے جس نے ویشیاؤں کو سماج کے مردوں کی سنسکرتی کا پیمانہ بنا رکھا ہے۔

مردوں کی اِس گھور انیتکتا، اُن کے پاپ اور ان کے گناہوں پر تہذیب کا ملمع پھیر دیا گیا ہے۔ مردوں کے گناہوں کو—" اونھ! اس میں کیا رکھا ہے، یہ تو سب مرد کرتے ہی ہیں" کہکر ٹال دیا جاتا ہے، یا برداشت کیا جاتا ہے لیکن عورتیں یدی وہی گناہ کرتی ہیں تو اِن کے لئے وہ ایک بھینکر جرم ہو جاتا ہے؛ جس کے لئے نہ صرف انھیں قانونی سزا ملنی چاہئے بلکہ سماج کا فرض ہے کہ وہ اِنھیں لات مار کر باہر نکال دے۔ مردوں کو کسی " نتیجے " سے ڈرنے کی ضرورت نہیں ہے اور دنیا اُسی گناہ کو گناہ سمجھتی ہے جس گناہ کا کوئی نتیجہ ہوتا ہے۔

سداچار کے اِسی جھوٹے رویے نے پردے کے جھنڈے کو اونچا کھڑا کر رکھا ہے اور یہی پردہ پرتھا کی نیتک کمزوری ہے۔ جھوٹے وشواس سداچار کا ادھار نہیں بن سکتے نہ نکارانمک وشواس ہی اِس کا ادھار بن سکتے ہیں۔ سداچار

भी उस वक़्त तक मां बाप पर भार होती हैं जब तक उन्हें किसी ख़ाविन्द के सुपुर्द नहीं कर दिया जाता.

बहुत से लोग इस बात की मुख़ालिफ़त करते हैं कि औरतें आर्थिक क्षेत्र में मरदों के साथ होड़ लगायें. इसकी जो कुछ प्रतिक्रिया पच्छिम के मुल्कों में हुई है उसकी हमारे सामने वे मिसाल पेश करते हैं. हिन्दुस्तान में अभी अरसए-दराज़ तक इस होड़ की गुञ्जाइश नहीं है चूंकि यहां औरतों और मरदों के कार्य क्षेत्र अलग अलग हैं. पच्छिम में भी इस होड़ के कोई मानी नहीं हैं क्योंकि वहां औरतों और मरदों की मज़दूरी में बेहद फ़र्क़ है. हां इससे वहां औरतों और मर्द मज़दूरों के बीच में काफ़ी ईर्षा और लड़ाई झगड़े रहते हैं. औरतों के काम करने के विरोधी सदियों पुरानी और सड़ी हुई दक़ियानूसी दलीलों को निकाल कर हमारे सामने पेश करते हैं कि औरतें तो जनानख़ाने की शोभा हैं और उनका कार्य-क्षेत्र घर-गिरस्ती है. फ़ासिस्ट इटली और नात्सी जर्मनी ने तो औरतों को ज़बर्दस्ती घर के अन्दर ढकेल दिया था लेकिन इससे इन मुल्कों में भी बेकारी की समस्या हल नहीं हुई. इससे कोई बड़ा फ़र्क़ नहीं पड़ता कि बेकारों में औरतें हैं या मर्द.

ग़रीबी और मुफ़लिसी ने परदे की बुराइयों को और ज्यादा नुमायां कर दिया है. अमीर अपनी औरतों को जनानख़ाने में बन्द रखकर भी उन्हें ताज़ा हवा खिला सकते हैं मगर उन शरीफ़ ग़रीबों का क्या हो जो बिलों में रहते हैं ? हिन्दुस्तानी शहरों की तंग गलियों की अंधेरी कोठरियों में रहना और फिर ऊपर से परदे की सजा ! अमीरों की नक़ल करने में इन ग़रीब औरतों को अपनी सेहत, अपनी तन्दुरुस्ती और अपनी ज़िन्दगी तक क़ीमतन देनी पड़ती है. परदे की इस दर्दनाक क़ीमत का तख़मीना सरकारी रिपोर्टों में आप देख लीजिये. अमीरों और ग़रीबों के लिये ज़िन्दगी यकसां नहीं है. यहां तक कि दोनों के लिये नेकचलनी तक के क़ायदे भी दो तरह के हैं.

परदे की वजह से राजनीति और आर्थिक क्षेत्र में औरतों का कोई महत्व नहीं रह गया. उनकी चहल-पहल का दायरा महज़ घर गिरस्ती ही रह गया है. लेकिन घर गिरस्ती में भी औरतें अपने आपको ख़ुद मुख़तार नहीं समझ सकतीं. इसकी दो वजहें हैं—( 1 ) औरतें आर्थिक नज़र से मरदों का मुंह जोहती हैं और (2) पूरबी विचारधारा के अनुसार हर मर्द अपने आपको औरतों से कहीं ज्यादा बेहतर समझता है. बचपन से ही औरतों के दिमाग़ में यह चीज़ भर दी जाती है कि उन्हें मर्द तभी अच्छा समझेंगे जब वे अपने आपको नेक बेटी, नेक बीवी और नेक मां साबित करेंगी. लड़कियों को महज़ इसलिये अहमियत दी जाती है जिसमें वे आसानी से शादी के बाज़ार



بھی اُس وقت تک ماں باپ پر بھار ہوتی ہیں جب تک انہیں کسی خاوند کے سپرد نہیں کردیا جاتا ۔

بہت سے لوگ اِس بات کی مخالفت کرتے ہیں کہ عورتیں آرتھک چھیتر میں مردوں کے ساتھ ہوڑ لگائیں ۔ اِس کی جو کچھ پرتیکریا پچھم کے ملکوں میں ہوئی ہے اُس کی ہمارے سامنے وے مثال پیش کرتے ہیں۔ ہندستان میں ابھی عرصہ‌دراز تک اِس ہوڑ کی گنجائش نہیں ہے چونکہ یہاں عورتوں اور مردوں کے کاریہ چھیتر الگ الگ ہیں ۔ پچھم میں بھی اِس ہوڑ کے کوئی معنی نہیں ہیں کیونکہ وہاں عورتوں اور مردوں کی مزدوری میں بےحد فرق ہے۔ ہاں اِس سے وہاں عورتوں اور مرد مزدوروں کے بیچ میں کافی ایرشا اور لڑائی جھگڑے رہتے ہیں ۔ عورتوں کے کام کرنے کے ورودھی صدیوں پرانی اور سڑی ہوئی دقیانوسی دلیلوں کو نکال کر ہمارے سامنے پیش کرتے ہیں کہ عورتیں تو زنانخانے کی شوبھا ہیں اور ان کا کاریہ چھیتر گھر گرھستی ہے ۔ فاسسٹ اِٹلی اور نازیسی جرمنی نے تو عورتوں کو زبردستی گھر کے اندر ڈھکیل دیا تھا، لیکن اس سے اِن ملکوں میں بھی بےکاری کی سمسیا حل نہیں ہوئی ۔ اس سے کوئی بڑا فرق نہیں پڑتا کہ بیکاروں میں عورتیں ہیں یا مرد ۔

غریبی اور مفلسی نے پردے کی برائیوں کو اور زیادہ نمایاں کر دیا ہے ۔ امیر اپنی عورتوں کو زنانخانے میں بند رکھ کر بھی تازہ ہوا کھلا سکتے ہیں مگر اُن شریف غریبوں کا کیا ہو جو بلوں میں رہتے ہیں ؟ ہندستانی شہروں کی تنگ گلیوں کی اندھیری کوٹھریوں میں رہنا اور پھر اوپر سے پردے کی سزا ! امیروں کی نقل کرنے میں اِن غریب عورتوں کو اپنی صحت، اپنی تندرستی اور اپنی زندگی تک قیمتاً دینی پڑتی ہے ۔ پردے کی اِس دردناک قیمت کا تخمینہ سرکاری رپورٹوں میں آپ دیکھ لیجئے ۔ امیروں اور غریبوں کے لئے زندگی یکساں نہیں ہے ۔ یہاں تک کہ دونوں کے لئے نیک چلنی تک کے قاعدے بھی دو طرح کے ہیں ۔

پردے کی وجہ سے راج نیتی اور آرتھک چھیتر میں عورتوں کا کوئی مہتو نہیں رہ گیا ۔ اُن کی چہل پہل کا دائرہ محض گھر گرھستی ہی رہ گیا ہے ۔ لیکن گھر گرھستی میں بھی عورتیں اپنے کو خود مختار نہیں سمجھ سکتیں ۔ اِس کی دو وجہیں ہیں—(1) عورتیں آرتھک نظر سے مردوں کا منہ جوہتی ہیں اور (2) پوربی وچار دھارا کے انوسار ہر مرد اپنے آپ کو عورتوں سے کہیں زیادہ بہتر سمجھتا ہے ۔ بچپن سے ہی عورتوں کے دماغ میں یہ چیز بھر دی جاتی ہے کہ اُنہیں مرد تب ہی اچھا سمجھیں گے جب وہ اپنے آپ کو نیک بیٹی، نیک بیوی اور نیک ماں ثابت کرینگی ۔ لڑکیوں کو محض اس لئے اہمیت دی جاتی ہے جس میں وے آسانی سے شادی کے بازار

परदा हिन्दुस्तान की औरतों की राजनैतिक तरक़्क़ी में सब में बड़ी रुकावट रहा है. नये विधान में उन्हें मरदों के बराबर राजनैतिक अधिकार दिये गये हैं. इन अधिकारों की उस समय तक कोई क़ीमत नहीं जब तक औरतें अमली राजनीति से अलहदा हैं और जब तक वे नागरिकता के फ़र्ज़ और अपने हक़ूक़ से बेख़बर हैं. महज़ वोट देने का हक़ मिल जाने से उन्हें राजनैतिक अधिकार नहीं मिल गये. वोट की अहमियत तब है जब उसे ख़ुदमुख़्तार तरीक़े से और आज़ादी से इस्तेमाल किया जाय. जनतन्त्र राजनैतिक तालीम को जरूरी समझता है और परदे में रहने वाली औरतों को राजनैतिक तालीम नहीं मिल सकती. परदे की वजह से महज़ चन्द औरतें राजनैतिक संस्थाओं और धारा सभाओं में करोड़ों औरतों की नुमाइन्दगी का तमाशा कर रही हैं.

पर्दानशीन औरतों के वोट का तरीक़ा भी ऐसा है जिसमें बेहद वक़्त और रुपया ख़राब होता है. चारों तरफ़ की आबो-हवा और वोट के तरीक़े का नतीजा यह होता है कि औरतें संकुचित राजनैतिक वातावरण में फंस जाती हैं और स्थानीय और जाती मामलों से ऊपर नहीं उठ पातीं. आजकल के जमाने में इससे ज्यादा बदतर चीज और क्या हो सकती है? वैज्ञानिक खोजों और यातायात के साधनों के सबब आजकल छोटी से छोटी बात भी विश्वव्यापी अहमियत अख़्तियार कर लेती है. इसीलिये आजकल के राजनैतिक उसूलों में एक अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण होता है और आजकल की राजनीति समाज के समूचे ढांचे को फिर से गढ़ने का प्रोग्राम लेकर चलती है.

औरतों की हाल की जाग्रति ने परदे को और उनकी अलहदगी को बहुत कुछ कम किया है. सत्याग्रह आन्दोलनों का सब में नुमायां नज़्ज़ारा यह रहा है कि हिन्दुस्तानी औरतों ने जनानख़ाने से बाहर निकल कर अपने मरदों के साथ उसमें साहसपूर्ण हिस्सा लिया है. इन बहनों ने दुनिया को यह दिखा दिया कि औरतें भी अमली राजनीति में कितनी पुरअसर हो सकती हैं.

आर्थिक नुक़्ते-नज़र से परदे ने हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी का स्तर काफ़ी नीचा कर रखा है. परदे की वजह से एक बहुत बड़ी जनसंख्या, जो मरदों को कमाने में मदद दे सकती थी, बेकार और निकम्मी है. मज़दूर औरतों को छोड़कर, जो परदा नहीं रखतीं, औरतों को अपनी रोज़ी कमाने का कोई ज़रिया नहीं, सिवाय इसके कि वे या तो घरेलू नौकरानी का काम करें, या धायों का काम करें और या शिक्षिकाओं का काम करें. फिर इन पेशों के अन्दर बेशुमार गुञ्जाइश भी नहीं है. इसलिये ज्यादातर औरतें अपने मरदों के ऊपर एक आर्थिक भार हैं. ख़ानदानी औरतें, अगर वे अमीर हैं तो काम करने को हिक़ारत की नज़र से देखती हैं. वे



پردہ ہندستان کی عورتوں کی راج نیتک ترقی میں سب میں بڑی رکاوٹ رہا ہے ۔ نئے ودھان میں انہیں مردوں کے برابر راج نیتک ادھیکار دیئے گئے ہیں ۔ اِن ادھیکاروں کی اُس سمے تک کوئی قیمت نہیں جب تک عورتیں عملی راج نیتی سے علیحدہ ہیں اور جب تک وے ناگرکتا کے فرض اور اپنے حقوق سے بےخبر ہیں ۔ محض ووٹ دینے کا حق مل جانے سے اُنہیں راج نیتک ادھیکار نہیں مل گئے ۔ ووٹ کی اہمیت تب ہے جب اُسے خود مختار طریقے سے اور آزادی سے استعمال کیا جائے ۔ جن تنتر راج نیتک تعلیم کو ضروری سمجھتا ہے اور پردے میں رہنے والی عورتوں کو راج نیتک تعلیم نہیں مل سکتی ۔ پردے کی وجہ سے محض چند عورتیں راج نیتک سنستھاؤں اور دھارا سبھاؤں میں کروڑوں عورتوں کی نمائندگی کا تماشہ کر رہی ہیں۔

پردہ نشین عورتوں کے ووٹ کا طریقہ بھی ایسا ہے جس میں بےحد وقت اور روپیہ خراب ہوتا ہے۔ چاروں طرف کی آب و ہوا اور ووٹ کے طریقے کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ عورتیں سنکوچت راج نیتک وتاورن میں پھنس جاتی ہیں اور استھانیہ اور ذاتی معاملوں سے اُوپر نہیں اُٹھ پاتیں ۔ آجکل کے زمانے میں اس سے زیادہ بدتر چیز اور کیا ہوسکتی ہے ؟ ویگیانک کھوجوں اور یاتایات کے سادھنوں کے سبب آجکل چھوٹی سے چھوٹی بات بھی وشوویاپی اہمیت اختیار کرلیتی ہے۔ اسی لئے آجکل کے راج نیتک اصولوں میں ایک انترراشٹریہ درشٹی کونڑ ہوتا ہے اور آجکل کی راج نیتی سماج کے سموچے ڈھانچے کو پھر سے گڑھنے کا پروگرام لیکر چلتی ہے ۔

عورتوں کی حال کی جاگرتی نے پردے کو اور اُن کی علیحدگی کو بہت کچھ کم کیا ہے ۔ ستیاگرہ آندولنوں کا سب میں نمایاں نظارہ یہ رہا ہے کہ ہندستانی عورتوں نے زنانخانے سے باہر نکل کر اپنے مردوں کے ساتھ اس میں ساہس پورن حصہ لیا ہے ۔ اِن بہنوں نے دنیا کو یہ دکھا دیا کہ عورتیں بھی عملی راج نیتی میں کتنی پراثر ہوسکتی ہیں ۔

آرتھک نقطہ نظر سے پردے نے ہندستانی زندگی کا استر کافی نیچا کر رکھا ہے ۔ پردے کی وجہ سے ایک بہت بڑی جن سنکھیا' جو مردوں کو کمانے میں مدد دے سکتی تھی' بےکار اور نکمی ہے ۔ مزدور عورتوں کو چھوڑکر' جو پردہ نہیں رکھتیں' عورتوں کو اپنی روزی کمانے کا کوئی ذریعہ نہیں' سوائے اِس کے کہ وے یا تو گھریلو نوکرانی کا کام کریں' یا دھائیوں کا کام کریں اور یا شکشکاؤں کا کام کریں۔ پھر اِن پیشوں کے اندر بےشمار گنجائش بھی نہیں ہے ۔ اس لئے زیادہتر عورتیں اپنے مردوں کے اُوپر ایک آرتھک بھار ہیں ۔ خاندانی عورتیں' اگر وے امیر ہیں تو کام کرنے کو حقارت کی نظر سے دیکھتی ہیں ۔ وے

उसी तरह मंझले ज़माने के केन्द्र बने हुये हैं. नतीजा यह है कि समाज में आज भी कोई औरत अपने को महफ़ूज़ नहीं समझती. जो समाज क़ानून की बन्दिशों में चलता है उसमें इस बात की ज़रूरत ही क्या कि औरत की ख़ास तौर पर हिफ़ाज़त की जाय. ज़माने की आबोहवा में लोगों की चेतना परवरिश पाती है. इस चेतना के अन्दर जितना भी नैतिक ( इख़लाक़ी ) और अध्यात्मिक ( रूहानी ) अंश है उसी के बल पर समाज में औरतों की सब में अच्छी हिफ़ाज़त हो सकती है.

इसलाम के जिन सामाजिक और धार्मिक क़ायदों ने परदे को मज़हबन् जायज़ क़रार दिया वे इस मध्य कालीन ज़माने के क़ायदे हैं जब समाज की समस्याएं दूसरे क़िस्म की थीं. ज़माने की रविश को देखते हुए वक़्तन-फ़-वक़्तन मुख़्तलिफ़ उलमाओं ने इसलामी हिदायतों पर अपनी अपनी राय दी है. नतीजा यह है कि क़ुरान की एक ही आयत पर एक दूसरे के ख़िलाफ़ अनेक रायें हैं. सब में ज़्यादा दक़ियानूसी राय के मुताबिक़ परदे का अर्थ है मरदों और औरतों की क़तई अलहदगी. इन लोगों की राय के मुताबिक़ औरतों का महज़ उन्हीं मर्द रिश्तेदारों के आगे निकलना जायज़ है जिनसे शरीयत की रू से उनकी शादी क़तई नामुमकिन है. कुछ लोगों की राय में औरतें जनानख़ाने से बाहर निकल सकती हैं बशर्तेकि वे पूरी तरह से ढकी मुंदी हों. कुछ मौलवी साहबान उन्हें हाथ पैर और मुंह खुला रखने की इजाज़त देते हैं. ये मुख़्तलिफ़ रायें यह ज़ाहिर करती हैं कि वक़्तन-फ़वक़्तन औरतों की तरफ़ मरदों के कमोबेश कितने बुराई के भाव रहे हैं. ये मरदों की नैतिक शक्ति ( इख़लाक़ी ताक़त ) के पैमाने हैं.

लेकिन परदे के चलन में आर्थिक ( इक़्तसादी ) स्थिति का भी निर्णायक हाथ रहा है. जहां जहां यह महसूस हुआ है कि औरतें मरदों की तरह ही आर्थिक लाभ की हेतु बन सकती हैं वहां वहां उनमें परदे का रिवाज नहीं है. औरतें बाहर निकल कर कमाई करती हैं और घर गिरस्ती का आधा भार बंटाती हैं। लेकिन परदे का रिवाज उन औरतें के बावजूद प्रचलित हुआ. ग़रीब मज़दूर औरतों का समाज में कोई ख़ास असर तो होता नहीं.

सामन्तशाही समाज में परदे का रिवाज क्यों फैला यह बात समझी जा सकती है. औरतों की समाज में कोई अहमियत न थी और न जनता की राय की ही कोई क़द्र थी. लेकिन जो मुल्क जनतन्त्र ( जम्हूरियत ) का दावा करते हैं उनमें परदे का रिवाज एक मुअम्मा है. परदा मानव समाज के आधे हिस्से की आज़ादी और उनके हक़ूक़ छीन लेता है. मौजूदा हुकूमतें नागरिकों से बनती हैं, वे जुदागाना हितों वाली औरतों और मरदों से नहीं बनतीं.



اسی طرح منجھلے زمانے کے کیندر بنے ہوئے ہیں ۔ نتیجہ یہ ہے کہ سماج میں آج بھی کوئی عورت اپنے کو محفوظ نہیں سمجھتی۔ جو سماج قانون کی بندشوں میں چلتا ہے اُس میں اِس بات کی ضرورت ہی کیا کہ عورتوں کی خاص طور پر حفاظت کی جائے ۔ زمانے کی آب و ہوا میں لوگوں کی چیتنا پرورش پاتی ہے ۔ اِس چیتنا کے اندر جتنا بھی نیتک ( اخلاقی ) اور ادھیاتمک ( روحانی ) انش ہے اُسی کے بل پر سماج میں عورتوں کی سب میں اچھی حفاظت ہوسکتی ہے ۔

اِسلام کے جن ساماجک اور دھارمک قاعدوں نے پردے کو مذہباً جائز قرار دیا وے اِس مدھیہ کالین زمانے کے قاعدے ہیں جب سماج کی سمسیائیں دوسرے قسم کی تھیں' زمانے کی روش کو دیکھتے ہوئے وقتاً فوقتاً مختلف علماؤں نے اِسلامی ہدایتوں پر اپنی اپنی رائے دی ہے ۔ نتیجہ یہ ہے کہ قرآن کی ایک ہی آیت پر ایک دوسرے کے خلاف انیک رایں ہیں ۔ سب میں زیادہ دقیانوسی رائے کے مطابق پردے کا ارتھ ہے مردوں اور عورتوں کی قطعی علیحدگی ۔ اِن لوگوں کی رائے کے مطابق عورتوں کا محض انہیں مرد رشتہداروں کے آگے نکلنا جائز ہے جن سے شریعت کی رو سے اُن کی شادی قطعی ناممکن ہے ۔ کچھ لوگوں کی رائے میں عورتیں زنانخانے سے باہر نکل سکتی ہیں بشرطیکہ وے پوری طرح سے ڈھکی مندی ہوں ۔ کچھ مولوی صاحبان اُنہیں ہاتھ پیر اور منھ کھلا رکھنے کی اجازت دیتے ہیں ۔ یہ مختلف رائیں یہ ظاہر کرتی ہیں کہ وقتاً فوقتاً عورتوں کی طرف مردوں کے کم و بیش کتنے برائی کے بھاؤ رہے ہیں ۔ یہ مردوں کی نیتک شکتی ( اخلاقی طاقت ) کے پیمانے ہیں ۔

لیکن پردے کے چلن میں آرتھک ( اقتصادی ) استھتی کا بھی نرنایک ہاتھ رہا ہے ۔ جہاں جہاں یہ محسوس ہوا ہے کہ عورتیں مردوں کی طرح ہی آرتھک لابھ کی ہیتو بن سکتی ہیں وہاں وہاں اُن میں پردے کا رواج نہیں ہے ۔ عورتیں باہر نکل کر کمائی کرتی ہیں اور گھر گرہستی کا آدھا بار بنٹاتی ہیں ۔ لیکن پردے کا رواج اُن عورتوں کے باوجود پرچلت ہوا ۔ غریب مزدور عورتوں کا سماج میں کوئی خاص اثر تو ہوتا نہیں ۔

سامنت شاہی سماج میں پردے کا رواج کیوں پھیلا یہ بات سمجھی جاسکتی ہے ۔ عورتوں کی سماج میں کوئی اہمیت نہ تھی اور نہ جنتا کی رائے کی ہی کوئی قدر تھی ۔ لیکن جو ملک جن تنتر (جمہوریت) کا دعویٰ کرتے ہیں اس میں پردے کا رواج ایک معمہ ہے ۔ پردہ مانو سماج کے آدھے حصے کی آزادی اور ان کے حقوق چھین لیتا ہے ۔ موجودہ حکومتیں ناگرکوں سے بنتی ہیں' وے جداگانہ ہتوں والی عورتوں اور مردوں سے نہیں بنتیں ۔

हैं. अरब लय पर जोर देते हैं, तुर्क और ईरानी स्वरमाधुर्य पर जोर देते हैं और प्रोफ़ैसर शूस्तरी के अनुसार—"उत्तर भारत की हिन्दू संगीत प्रणाली इन सब पर जोर देती है और वह अरब, ईरानी और मध्य एशियाई संगीत प्रणालियों की समन्वय है. वह व्यापक भारतीय संस्कृति की जबर्दस्त मेल करने वाली प्रवृत्ति की परिचायक है. अल-ग़ज़ाली के मुताबिक़ संगीत अपने स्पर्श से इनसान की दिली ख़ाहिशों और सोती हुई भावनाओं को जगा देता है. वह थके हुये दिमाग़ को चेतना और मुरझाई हुई नसों को उत्तेजना देता है और यही कैफ़ियत इन्सान का ग़ैब से परिचय कराती है और अज्ञेय को उसके निकट ज्ञेय बनाती है.*

ہیں۔ عرب لے پر زور دیتے ہیں، ترک اور ایرانی سور مادھوریہ پر زور دیتے ہیں اور پروفیسر شوستری کے انوسار—"اُتر بھارت کی ہندی سنگیت پرنالی اِن سب پر زور دیتی ہے اور وہ عرب، ایرانی اور مدھیہ ایشیائی سنگیت پرنالیوں کی سمنوئے ہے۔ وہ ویاپک بھارتیہ سنسکرتی کی زبردست میل کرنے والی پرورتی کی پریچایک ہے۔ الغزالی کے مطابق سنگیت اپنے اسپرش سے اِنسان کی دلی خواہشوں اور سوتی ہوئی بھاوناؤں کو جگا دیتا ہے۔ وہ تھکے ہوئے دماغ کو چیتنا اور مرجھائی ہوئی نسوں کو اُتیجنا دیتا ہے اور یہی کیفیت اِنسان کا غیب سے پریچے کراتی ہے اور اگیئیہ کو اُس کے نکٹ گیئہ بناتی ہے۔"*

# ज़नानख़ाने की .क़ैदी

# زنانخانے کی قیدی

श्रीमती अत्तिया हबीबुल्ला

شریمتی عطیہ حبیب اللہ

चारों ओर इस बात की कोशिशें हो रही हैं कि हिन्दुस्तान को मंझले ज़माने की हालतों से निकाल कर यहां नये ज़माने की फ़िज़ा पैदा की जाय. इस क़ैफ़ियत को पैदा करने में सब में बड़ी रुकावट औरतों का परदा और अलहदगी है.

शिकारियों, लड़ाकुओं और ख़ानाबदोश क़बीलों में औरतों की अहमियत सिर्फ़ इतनी थी कि वे ज्यादा से ज्यादा तादाद में लड़कों को पैदा करें और अपने मरदों के आराम आसाइश का ख़याल रखें. वे क़ीमती असबाब की तरह समझी जाती थीं और डाकुओं से उनकी होशियारी से हिफ़ाज़त की जाती थी. बाद में पूरब के मुल्कों में स्वेच्छाचारी शासकों और सामन्तशाही समाज के सबब एक से ज्यादा शादियों का रिवाज पड़ा. शादियों के अलावा औरतों को खेल बनाकर रखने का भी रिवाज चला. इन दोनों वजहों से इस बात की ज़रूरत महसूस हुई कि औरतों को हिफ़ाज़तन् कहीं अलग रखा जाय. औरतों की इसी अलहदगी की भावना ने बाद में परदे की वह कठोर सूरत अख़्तियार की जो आज हमारे सामने है.

बावजूद नये ज़माने की तालीम के मरदों के अन्दर से वह स्वेच्छाचारी वृत्ति कम नहीं हुई है. वे दिमाग़ी तौर से

چاروں اُور اِس بات کی کوششیں ہو رہی ہیں کہ ہندستان کو منجھلے زمانے کی حالتوں سے نکال کر یہاں نئے زمانے کی فضا پیدا کی جائے۔ اِس کیفیت کو پیدا کرنے میں سب میں بڑی روکاوٹ عورتوں کا پردہ اور علیحدگی ہے۔

شکاریوں، لڑاکوں اور خانہ بدوش قبیلوں میں عورتوں کی اہمیت صرف اتنی تھی کہ وے زیادہ سے زیادہ تعداد میں لڑکوں کو پیدا کریں اور اپنے مردوں کی آرام آسایش کا خیال رکھیں۔ وے قیمتی اسباب کی طرح سمجھی جاتی تھیں اور ڈاکوؤں سے اُن کی ہوشیاری سے حفاظت کی جاتی تھی۔ بعد میں پورب کے ملکوں میں سویچھاچاری شاسکوں اور سامنت شاہی سماج کے سبب ایک سے زیادہ شادیوں کا رواج پڑا۔ شادیوں کے علاوہ عورتوں کو کھیل بناکر رکھنے کا بھی رواج چلا۔ اِن دونوں وجہوں سے اِس بات کی ضرورت محسوس ہوئی کہ عورتوں کو حفاظتاً کہیں الگ رکھا جائے۔ عورتوں کی اِسی علیحدگی کی بھاونا نے بعد میں پردے کی وہ کٹھور صورت اختیار کی جو آج ہمارے سامنے ہے۔

باوجود نئے زمانے کی تعلیم کے مردوں کے اندر سے وہ سویچھاچاری ورتی کم نہیں ہوئی ہے۔ وے دماغی طور سے

*—Ibid, Vol. 1.

रोगों की दवा बताया है और संगीत के तिब्बी पहलू पर विस्तार से लिखा है.‡

यूरोपीय संगीत पर अरबी संगीत ने काफ़ी असर डाला है. अरबी में संगीत का वैज्ञानिक नाम 'म्यूज़िकी' है और इसी से अंग्रेज़ी का 'म्यूज़िक' लफ़्ज़ बना है. मशहूर दार्शनिक राजर बेकन ( मौत 1280 ईस्वी ) ने यूरोपीय संगीत पर अरब संगीत का क़र्ज़ स्वीकार किया है.*

संगीत की ईरानी, अरबी और तूरानी मिलावट मुसलमानों के साथ साथ भारत आयी. मुस्लिम काल में भारतीय संगीत पर इस नये आये हुये संगीत का काफ़ी असर पड़ा. के दरबार में विविध रागों का क्रम और स्थान मुक़र्रर हुआ. 'भैरों', 'सरस राग', 'भैरवी', 'परच', 'कलंगड़ा', 'साहनी', 'सिन्ध', 'पीलू', आदि राग धार्मिक भजनों के लिये बरते जाने लगे और 'दरबारी', 'मालकोष', 'सहामा', 'मल्हार' 'दुर्गा', आदि राग दरबार में गाये जाने लगे. अरबी ईरानी और भारतीय संगीत के समन्वय से ही मौजूदा भारतीय संगीत का जन्म हुआ. मुग़लों के समय में ही उत्तर और दक्षिण भारत के संगीत का मेल हुआ. सम्राट अकबर और बीजापुर के सुलतान इब्राहीम आदिल शाह दानों संगीत क धनी थे और दानों का संगीत की बारीकियों का ख़ूब ज्ञान था. अकबर ने क़रीब 200 इरानी रागों का तालबद्ध करवाया और आदिलशाह ने कई नये राग निकाले. संगीत पर लिखी हुई आदिलशाह की 'नौरस' नामक पुस्तक प्रसिद्ध है. कर्नाटकी संगीत पर आदिलशाह का बेहद असर पड़ा. उसके अनेक रागों को कर्नाटक के संगीतज्ञों ने अपना लिया. ग्वालियर का रहने वाला प्रसिद्ध गायक तानसेन अकबर के नौरत्नों में से था. तानसेन और सूरदास गहरे दोस्तों में से थे. अकबर के दरबार में अनेक अरब, ईरानी, तुर्क और हिन्दू गवय्ये थे. अकबर और आदिलशाह दानों के दरबार भारतीय दरबार थे. आदिलशाह ख़ुद विद्यादायिनी मां सरस्वती का पुजारी था.❀

विविध देशों के सप्तकों या Notations पर इन दरबारों में अनेक रागों का तरतीब देने की कोशिश की गई. ये विविध सप्तक इस प्रकार हैं—

भारतीय—स, रे, ग, म, प, ध, नी,
यूरोपीय—डो, रे, मी, फ, साल, ला, सि,
ईरानी—यक, दो, से, चार, पंज, शष, हफ़्त,
अरबी—मीम, फ़े, साद, लाम, सीन, दाल, रे.

अरबी संगीत में अलाप के तीव्र स्वर को 'आली', मध्यम स्वर को 'वस्ति' और मन्द स्वर को 'सअलि' कहते



روگوں کی دوا بتایا هے اور سنگیت کے طبی پہلو پر وستار سے لکھا هے .‡

یوروپیه سنگیت پر عربی سنگیت نے کافی اثر ڈالا هے . عربی میں سنگیت کا ویگیانک نام 'میوزکی' هے اور اِسی سے انگریزی کا 'میوزک' لفظ بنا هے. مشہور دارشنک راجر بیکن ( موت 1280 عیسوی ) نے یوروپیه سنگیت پر عرب سنگیت کا قرض سوئیکار کیا هے .*

سنگیت کی ایرانی' عربی اور تورانی ملاوٹ مسلمانوں کے ساتھ ساتھ بھارت آئی. مسلم کال میں بھارتیه سنگیت پر اِس نئے آئے هوئے سنگیت کا کافی اثر پڑا. اکبر کے دربار میں وودھ راگوں کا کرم اور استھان مقرر هوا . 'بھیروں' 'سرس راگ' 'بھیروی' 'پرچ' 'کلنگڑا' 'سوهنی' 'سندھ' 'پیلو' آدی راگ دھارمک بھجنوں کے لئے برتے جانے لگے اور 'درباری' 'مالکوش' 'سهاما' 'ملہار' 'درگا' آدی راگ دربار میں گائے جانے لگے . عربی' ایرانی اور بھارتیه سنگیت کے سمنوئے سے هی موجودہ بھارتیه سنگیت کا جنم هوا . مغلوں کے سمے میں هی اُتر اور دکشن بھارت کے سنگیت کا میل هوا . سمراٹ اکبر اور بیجاپور کے سلطان ابراهیم عادل شاہ دونوں سنگیت کے دهنی تھے اور دونوں کو سنگیت کی باریکیوں کا خوب گیان تھا . اکبر نے قریب 200 ایرانی راگوں کو تال بدھ کروایا اور عادل شاہ نے کئی نئے راگ نکالے . سنگیت پر لکھی هوئی عادل شاہ کی 'نورس' نامک پستک پرسدھ هے . کرناٹکی سنگیت پر عادل شاہ کا بے حد اثر پڑا . اُس کے انیک راگوں کو کرناٹک کے سنگیتگیوں نے اپنا لیا . گوالیر کا رهنے والا پرسدھ گایک تان سین اکبر کے نورتنوں میں سے تھا . تان‌سین اور سورداس گہرے دوستوں میں سے تھے . اکبر کے دربار میں انیک عرب' ایرانی' ترک اور هندو گویئے تھے . اکبر اور عادل شاہ دونوں کے دربار بھارتیه دربار تھے . عادل شاہ خود ودیا داینی ماں سرسوتی کا پجاری تھا .❀

وودھ دیشوں کے سپتکوں یا Notations پر اِن درباروں میں انیک راگوں کو ترتیب دینے کی کوشش کی گئی. یه وودھ سپتک اس پرکار هیں—

بھارتیه—سا - رے - گا - ما - پا - دھا - نی'
یوروپیه—ڈو - رے - می - پھا - سول - لا - سی'
ایرانی—یک - دو - سه - چہار - پنج - شش - هفت'
عربی—م - ف - ص - ل - س - د - ر.

عربی سنگیت میں الاپ کے تیبر سور کو 'عالی' مدھیم سور کو 'وسطی' اور مند سور کو صعیل کہتے

‡—The Extreme Need, by Al-Nuwairi ( Translation ).

*—History of Islamic Culture, p. 390.

❀—Outlines of Islamic Culture, by A. M. A. Shushtery, Vol. 1.

पांचवीं या आठवीं टूट पर लय को दोहराते थे और इस तरीक़े को वे 'तक़रीब' कहते थे. गाने के साथ साथ जो बाजे होते थे, उनमें 'अल-ऊद' ( सितार के क़िस्म का एक बाजा ), 'तंबूर' ( तम्बूरे की तरह का बाजा ), 'क़ानून' ( सरोद की तरह का बाजा, जो अंगुश्त मिज़राब से बजाया जाता था ), 'क़सबा' ( बांसुरी ), 'तब्ल', 'डफ़' और 'क़दीब' ख़ास थे. इनके अलावा और भी बहुत से बाजे होते थे, लेकिन वे गाने के पहले या गाने के बाद बजाये जाते थे. अरबी ज़बान में बेशुमार बाजों का ज़िक्र है. उनमें से थोड़ों की भी चर्चा यहां मुमकिन नहीं. बाजों के बनाने में अरबों की योग्यता कला की सीमा तक पहुंच गई थी. इस सम्बन्ध में अरबी में बहुत से ग्रन्थ हैं. सबील जैसे कई शहर अपने बाजों के लिये मशहूर थे.❀

इसलाम से पहले हिरा और ग़स्सान के दरबारों में अरबी संगीत पर ईरानी और यूनानी संगीत की छाप साफ़ दिखाई देती है. यूनान के मशहूर वैज्ञानिक पाइथागोर का बनाया हुआ 'स्वरलय' इ दरबारों में और अल-हिजाज़ में इस्तेमाल किया जाता था. सातवीं सदी के आख़ीर में अरबों ने प्रसिद्ध संगीतज्ञ इब्न मिसजाह की बनाई हुई संगीत की नई प्रणाली अमल में लानी शुरू की. इस प्रणाली में अरब, यूनानी और ईरानी, तीनों, प्रणालियों का सम्मिश्रण था. इसके सम्बन्ध में डाक्टर जे० पी० एन० लैन्ड लिखते हैं—"ईरानी और यूनानी संगीत प्रणालियों ने अरबों की राष्ट्रीय संगीत प्रणाली को नष्ट नहीं किया, बल्कि अरब संगीत की ख़ासियत को क़ायम रखकर ये उस पर क़लम की तरह लग गईं. संगीत की यह प्रणाली बग़दाद के पतन तक बराबर चलती रही. दूसरी ओर अरब संगीत ने यूनानी और ईरानी संगीत प्रणालियों पर असर डाला."*

कट्टर मुसलमान गीत को शरई लिहाज से अनुचित समझते हैं, लेकिन सूफ़ियों और दरवेशों की सम्प्रदायें संगीत को ध्यान का साधन समझती हैं. संगीत से ही 'हाल' (भक्ति-उन्माद) पैदा होता है और 'हाल' अगम्य में गति देता है. प्रसिद्ध अरब दार्शनिक अल-ग़ज़ाली लिखता है—"हाल मन की वह हालत है जो संगीत सुनकर पैदा होती है."‡ ग़ज़ाली ने लिखा है कि क़ुरान पढ़कर नहीं बल्कि संगीत से 'हाल' पैदा होता है और इसके लिये उसने सात वजहें गिनाई हैं.‡‡ अलकिन्दी लिखता है—"कुछ लोगों के लिये संगीत शराब की तरह है और कुछ के लिये ग़िज़ा की तरह."† विश्वविख्यात हकीम इब्न सीना ने संगीत को अनेक



پانچویں یا آٹھویں ٹوٹ پر لے کو دوھراتے تھے اور اس طریقے کو وے ' تقریب ' کہتے تھے . گانے کے ساتھ ساتھ جو باجے ھوتے تھے' اُن میں ' العود ' ( ستار کے قسم کا ایک باجا )' 'طنبور' ( تمبورے کی طرح کا باجا )' 'قانون' ( سرود کی طرح کا باجا' جو انگشت مضراب سے بجایا جاتا تھا )' قصبہ' (بانسری)' 'طبل' 'دف' اور 'قدیب' خاص تھے . اِن کے علاوہ اور بھی بہت سے باجے ھوتے تھے' لیکن وے گانے کے پہلے یا گانے کے بعد بجائے جاتے تھے . عربی زبان میں بےشمار باجوں کا ذکر ھے . اُن میں سے تھوڑوں کی بھی چرچا یہاں ممکن نہیں . باجوں کے بنانے میں عربوں کی یوگتا کلا کی سیما تک پہونچ گئی تھی . اِس سمبندھ میں عربی میں بہت سے گرنتھ ھیں . صبیل جیسے کئی شہر اپنے باجوں کے لئے مشہور تھے . ❀

اسلام سے پہلے ھیرا اور غسان کے درباروں میں عربی سنگیت پر ایرانی اور یونانی سنگیت کی چھاپ صاف دکھائی دیتی ھے . یونان کے مشہور ویگیانک پائیتھا گور کا بنایا ھوا 'سور لے' ان درباروں میں اور الحجاز میں استعمال کیا جاتا تھا . ساتویں صدی کے آخیر میں عربوں نے پرسدھ سنگیتگیہ ابن مسجاہ کی بنائی ھوئی سنگیت کی نئی پرنالی عمل میں لانی شروع کی . اِس پرنالی میں عرب' یونانی اور ایرانی' تینوں پرنالیوں کا سمشرن تھا . اس کے سمبندھ میں ڈاکٹر جے . پی . این . لینڈ لکھتے ھیں—" ایرانی اور یونانی سنگیت پرنالیوں نے عربوں کی راشٹریہ سنگیت پرنالی کو نشٹ نہیں کیا' بلکہ عرب سنگیت کی خاصیت کو قائم رکھکر یہ اُس پر قلم کی طرح لگ گئیں . سنگیت کی یہ پرنالی بغداد کے پتن تک برابر چلتی رھی . دوسری اُور عرب سنگیت نے یونانی اور ایرانی سنگیت پرنالیوں پر اثر ڈالا ." *

کٹر مسلمان سنگیت کو شرعی لحاظ سے انوچت سمجھتے ھیں' لیکن صوفیوں اور درویشوں کی سمپردائیں سنگیت کو دھیان کا سادھن سمجھتی ھیں . سنگیت سے ھی 'حال' ( بھکتی اُنماد ) پیدا ھوتا ھے اور 'حال' اگمیہ میں گتی دیتا ھے. پرسدھ عرب دارشنک الغزالی لکھتا ھے—"حال من کی وہ حالت ھے جو سنگیت سنکر پیدا ھوتی ھے ."‡ غزالی نے لکھا ھے کہ قرآن پڑھکر نہیں بلکہ سنگیت سے 'حال' پیدا ھوتا ھے اور اس کے لئے اُس نے سات وجہیں گنائی ھیں.‡‡ الکندی لکھتا ھے—"کچھ لوگوں کے لئے سنگیت شراب کی طرح ھے اور کچھ کے لئے غذا کی طرح ."† وشووکھیات حکیم ابن سینا نے سنگیت کو انیک

❀—Meadows of Gold—Al-Isfahani (Translation).
*—Arab Music—Dr G. P. N. Land, P. 169.
‡—Al-Ghazzali, Vol. II.
‡‡—Ibid, Vol. II.
†—The Essentials of Knowledge in Music, P. 384.

# अरबी गान-विद्या और हिन्दुस्तान

विश्वम्भरनाथ पांडे

गान-विद्या पर अरबी भाषा में सैकड़ों ही किताबें लिखी गई हैं. अरबी किताबों में संगीत के हर पहलू पर रोशनी डाली गई है-संगीत का इतिहास, गीतों का संकलन (मजमुआ), बाजों की क़िस्में, संगीत का शरई पहलू, संगीत का रूहानी पहलू, मशहूर गवैयों के जीवन चरित आदि.* संगीत पर अरबी के सब से महान लेखकों में अलमसूदी ( मौत 957 ईसवी ) और अल-इस्फ़हानी ( मौत 967 ईसवी ) समझे जाते हैं. अलमसूदी ने अरब संगीत की शुरू की हालत और दूसरे देशों के संगीत के इतिहास पर अपने ग्रन्थों में काफ़ी रोशनी डाली है और अल-इस्फ़हानी ने 21 जिल्दों में अरबी गीतों का संग्रह निकाला है. इब्न ख़ालदून इन जिल्दों को अरबों का 'दीवान' ( कविता संग्रह ) कहता है. इस्फ़हानी ने इस संग्रह के अलावा संगीत पर और कई किताबें लिखी हैं.❀ एक दूसरे लेखक मुहम्मद इब्न इसहाक़ अल-वर्राक़ (मौत 995 ईसवी) ने संगीत के उसूलों और अमल, संगीतकी वैज्ञानिकता और संगीत के सर्वप्रिय (सबको पसन्द) पहलुओं पर विस्तार से लेख लिखा है. सन 1258 में बग़दाद के पतन के बाद संगीत पर फिर कोई अच्छा लिखने वाला पैदा नहीं हुआ. आठवीं से लेकर दसवीं सदी तक संगीत पर कई यूनानी ग्रन्थों का अरबी में तरजुमा किया गया.†

यूं तो अरब में गाने और बजाने दोनों ही का प्रचार था, लेकिन अरब जनता ख़ाली बाजे से गाने को ज्यादा पसन्द करती थी और समझ सकती थी. इसकी एक वजह यह भी हो सकती है कि कविता से उन्हें सदा से जबर्दस्त प्रेम था और बाजे शरई नुक़्ते नज़र से ज्यादा इज़्ज़त से नहीं देखे जाते थे. गानों में 'क़सीदा' बहुत आम फ़हम था. क़सीदे के छोटे छोटे रूप भी थे, जिन्हें 'क़िता' कहा जाता था. क़िता के अलावा 'ग़ज़ल' ( प्रेम-गीत ) और 'मवाल' भी थे. बाद में 'ज़ज्ल' और 'मुवाश शाह' का भी प्रचार हुआ‡ गीत के स्वरों को लय के साथ सप्तक में गूंथा जाता था. इस सप्तक को अरबी में 'आइक़ा' कहा जाता था. लेकिन आजकल संगीत में जो स्वर और ताल की एकता है, उससे अरब गवय्ये वाक़िफ़ न थे. तालैक्य की जगह वे चौथी,

# عربی گان ودیا اور ھندستان

وشومبھر ناتھ پانڈے

گان ودیا پر عربی بھاشا میں سیکڑوں ھی کتابیں لکھی گئی ھیں. عربی کتابوں میں سنگیت کے ھر پہلو پر روشنی ڈالی گئی ھے. سنگیت کا اِتہاس' گیتوں کا سنکلن (مجموعہ)' باجوں کی قسمیں' سنگیت کا شرعی پہلو' سنگیت کا روحانی پہلو' مشہور گویوں کے جیون چرت آدی. * سنگیت پر عربی کے سب سے مہان لیکھکوں میں المصعودی ( موت 957 عیسوی ) اور الاصفہانی ( موت 967 عیسوی ) سمجھے جاتے ھیں. المصعودی نے عرب سنگیت کی شروع کی حالت اور دوسرے دیشوں کے سنگیت کے اِتہاس پر اپنے گرنتھوں میں کافی روشنی ڈالی ھے اور الاصفہانی نے 21 جلدوں میں عربی گیتوں کا سنگرہ نکالا ھے. ابن خالدون اِن جلدوں کو عربوں کا 'دیوان' ( کویتا سنگرہ ) کہتا ھے. اصفہانی نے اِس سنگرہ کے علاوہ سنگیت پر اور کئی کتابیں لکھی ھیں. ❀ ایک دوسرے لیکھک محمد ابن اسحاق الوراق ( موت 995 عیسوی ) نے سنگیت کے اصولوں اور عمل' سنگیت کی ویگیانکتا اور سنگیت کے سروپریہ (سب کو پسند) پہلوؤں پر وستار سے لیکھ لکھا ھے. سن 1258 میں بغداد کے پتن کے بعد سنگیت پر پھر کوئی اچھا لکھنے والا پیدا نہیں ھوا. آٹھویں سے لے کر دسویں صدی تک سنگیت پر کئی یونانی گرنتھوں کا عربی میں ترجمہ کیا گیا †

یوں تو عرب میں گانے اور بجانے دونوں ھی کا پرچار تھا' لیکن عرب جنتا خالی باجے سے گانے کو زیادہ پسند کرتی تھی اور سمجھ سکتی تھی. اِس کی ایک وجہ یہ بھی ھوسکتی ھے کہ کویتا سے اُنھیں سدا سے زبردست پریم تھا اور باجے شرعی نقطہ نظر سے زیادہ عزت سے نہیں دیکھے جاتے تھے. گانوں میں 'قصیدہ' بہت عام فہم تھا. قصیدے کے چھوٹے چھوٹے روپ تھے' جنھیں 'قطعہ' کہا جاتا تھا. قطعہ کے علاوہ 'غزل' ( پریم گیت ) اور 'موال' بھی تھے. بعد میں 'زجل' اور 'مواش شاہ' کا بھی پرچار ھوا. ‡ گیت کے سوروں کو لے کے ساتھ سپتک میں گونتھا جاتا تھا. اِس سپتک کو عربی میں 'عائیقہ' کہا جاتا تھا. لیکن آجکل سنگیت میں جو سور اور تال کی ایکتا ھے' اُس سے عرب گویئے واقف نہ تھے. تالیکیہ کی جگہ وے چوتھی'

*—Music—by H. G. Farmer, P. 7.
❀—Great Book of Songs, (Translation) Al-Isfahani ( Introduction ).
†—Unique Necklace—Ibn Abd Rabbihi.
‡—Legacy of Islam—Edited by Sir T. W. Arnold; p. 358-59.

कारण थे, जिनमें 550-600 ईस्वी के बीच में तुर्कों और सासानियों के हाथों सफ़ेद हूणों की हार, श्री हर्ष के पिता प्रभाकर वर्धन की वे जो फ़तहें उन्होंने हूणों, गान्धार, सिन्ध, गुर्जर और मालवा के राजाओं पर हासिल कीं और खुद श्री हर्ष के 20 बरस के सैनिक हमले थे, जिनसे बौद्ध सक प्रवासियों की एक भीड़ जावा पहुंची. अगर इन कारनों में हम नीचे लिखे कारन और जोड़ दें, तो सिन्ध और गुजरात से जावा प्रवास की बात और ज्यादा साफ़ हो जाती है—

(1) सातवीं सदी के दौरान में तुर्कों और अरबों के हमले.❀

(2) मगध से बामियां तक सन् 645-650 में तिब्बती और नैपाली फ़ौजों की कामयाबी.

(3) सिन्ध के बौद्ध सहराई को गद्दी से उतारकर उसके ब्राह्मन मन्त्री छछ का गद्दी पर बैठना और जाटों के साथ उसका ज़ालिमाना बर्ताव.

आठवीं सदी ईसवी में बंगाल से भी प्रवासियों की एक बहुत बड़ी तादाद इसलिये जावा पहुंची चूंकि तिब्बती सेना ने बंगाल को विजय कर लिया था. नवीं सदी में बहुत से भारतीय बौद्धों ने भी जावा में जाकर शरन ली. जावा के प्रवासी भारतीयों की कहानी जावा-भारतीय कलाकारों ने संगतराश की छेनी की मदद से पत्थरों पर नक़्श कर दी है, जो हमेशा जिन्दा रहेगी और हम में आत्माभिमान पैदा करती रहेगी. पत्थर की इन रेखाओं में गुजराती राजकुमार के जहाज़ी सफ़र के बड़े सुन्दर और साफ़ चित्र खुदे हुये हैं. सिंहल से चलनेवाले एक भारतीय जहाज़ में ही चौथी सदी के अन्त और पांचवीं सदी ईसवी के शुरू में मशहूर चीनी यात्री फ़ाहियान ने दूसरे 200 यात्रियों के साथ जावा तक यात्रा की थी.* फ़िलेडेल्फ़िया के म्यूज़िअम में भी जावा के भारतीय जहाज़ों के बड़े सुन्दर चित्र मौजूद हैं.

---



کارن تھے' جن میں 550-600 عیسوی کے بیچ میں ترکوں اور ساسانیوں کے ھاتھوں سفید ھنوں کی ھار' شری ھرش کے پتا پربھاکر وردھن کی وے فتحیں جو انھوں نے ھنوں' گاندھار' سندھ' گرجر اور مالوہ کے راجاؤں پر حاصل کیں اور خود شری ھرش کے 20 برس کے سینک حملے تھے' جن سے بودھ سک پرواسیوں کی ایک بھیڑ جاوا پہونچی . اگر ان کارنوں میں ھم نیچے لکھے کارن اور جوڑ دیں' تو سندھ اور گجرات سے جاوا پرواس کی بات اور زیادہ صاف ھوجاتی ھے—

(1) ساتویں صدی کے دوران میں ترکوں اور عربوں کے حملے.❀

(2) مگدھ سے بامیاں تک سن 645-650 میں تبتی اور نیپالی فوجوں کی کامیابی .

(3) سندھ کے بودھ صحرائی کو گدی سے اُتارکر اس کے براھمن منتری چھچھ کا گدی پر بیٹھنا اور جاٹوں کے ساتھ اُس کا ظالمانہ برتاو .

آٹھویں صدی عیسوی میں بنگال سے بھی پرواسیوں کی ایک بہت بڑی تعداد اس لئے جاوا پہونچی چونکہ تبتی سینا نے بنگال کو فتح کرلیا تھا . نویں صدی میں بہت سے بھارتیہ بودھوں نے بھی جاوا میں جاکر شرن لی . جاوا کے پرواسی بھارتیوں کی کہانی جاوا - بھارتیہ کلاکاروں نے سنگ‌تراش کی چھینی کی مدد سے پتھروں پر نقش کردی ھے' جو ھمیشہ زندہ رھیگی اور ھم میں آتمابھیمان پیدا کرتی رھےگی . پتھر کی اِن ریکھاؤں میں گجراتی راجکمار کے جہازی سفر کے بڑے سندر اور صاف چتر کھدے ھوئے ھیں . سنگھل سے چلنے والے ایک بھارتیہ جہاز میں ھی چوتھی صدی کے انت اور پانچویں صدی عیسوی کے شروع میں مشہور چینی یاتری فاھیان نے دوسرے 200 یاتریوں کے ساتھ جاوا تک یاترا کی تھی.* فلیڈلفیا کے میوزیم میں بھی جاوا کے بھارتیہ جہازوں کے بڑے سندر چتر موجود ھیں .

---

❀—Reinand's-Memoire Sur L' Inde, 170, 176.

*—Beal, Buddhist Records, Vol. II, p. 269.

बसाया."❀ टैवर्नियर लिखता है—"बंगाल की खाड़ी में मछलीपटनम् ही ऐसी जगह है जहां से भारतीय जहाज़ पूर्व की ओर बंगाल, अराकान, पगु, सियाम, सुमात्रा, कोचिन, चीन और मनिल्ला और पश्चिम की ओर होरमुज़, मोखा और मडागास्कर जाते थे."† जावा के उल्लेखों से भी कलिंग और जावा के सम्बन्ध का पता चलता है.‡ डाक्टर भन्डारकर भी इसकी तसदीक़ करते हैं.*

जावा की प्राचीन किंबदन्तियों के मुताबिक़ भारत के पश्चिमी तट से यानी गुजरात से भी लोग वहां जाकर बसे. इस किंबदन्ति के अनुसार अजीसक नामक गुजरात का एक शक्तिशाली राजा सन 75 ईसवी में जावा पहुंचा, लेकिन किसी महामारी के सबब उसे शीघ्र ही वापस लौट आना पड़ा. सम्भव है यह कहानी उत्तर भारत के सक राजाओं के साथ जावा के प्राचीन राजवंश का सम्बन्ध जोड़ने के लिये गढ़ी गई हो. जावा के इतिहास में एक दूसरी कामयाब गुजराती कोशिश का ज़िक्र मिलता है, जब सन 603 ईसवी में गुजरात के एक राजा ने अपने बेटे को 5000 लोगों के साथ जिनमें किसान, कारीगर, वैद्य और लेखक शामिल थे, 6 बड़े जहाज़ों और 100 छोटे जहाज़ों में भरकर जावा भेजा.** यह गुजराती बेड़ा जावा के पश्चिमी तट पर उतरा और वहां उन्होंने 'मेंदांग कामुलन' नामक नगर बसाया. बेटे ने और आदमी भेजने के लिये लिखा. इस बार राजा ने 2000 आदमी भेजे, जिनमें संगतराश और पीतल का काम करने वाले शामिल थे. शीघ्र ही गुजरात और दूसरे देशों के साथ जावा की ज़बरदस्त तिजारत शुरू हो गयी. इन गुजरातियों ने वहां मन्दिरों की नींव रखी, जो बाद में 'प्राणबानम' और 'बोरोबुदुर' मन्दिर के नाम से मशहूर हुये. एशियाई बौद्ध कला के ये सुन्दरतम नमूने हैं.

गुजरात के ये बौद्ध सक, ज़ाहिर है, उस समय गुजरात छोड़कर जावा में जाकर बसे जब चन्द्रगुप्त दूसरे ने सौराष्ट्र और काठियावाड़ पर क़ब्ज़ा करके बौद्ध धर्म की जगह ब्राह्मण धर्म की स्थापना की.†† सक प्रवासियों के साथ बौद्ध-कला भी अपनी खूबियां लेकर जावा पहुंची, जहां बोरोबुदुर की तामीरीकला में वह अपने सुन्दरतम रूप में ज़ाहिर हुई.‡‡ उत्तर भारतीयों के इस जावा प्रवास की और भी कई



بسایا ."❀ ٹیورنیر لکھتا ھے—"بنگال کی کھاڑی میں مچھلی پٹنم ھی ایسی جگہ ھے جہاں سے بھارتیہ جہاز پورو کی اور بنگال' اراکان' پگو' سیام' سوماترا' کوچین' چین اور منیلا اور پچھم کی اور ھورموز' موروا اور میڈاگاسکر جاتے تھے ."† جاوا کے اُللیکھوں سے بھی کلنگ اور جاوا کے سمبندھ کا پتہ چلتا ھے . ‡ ڈاکٹر بھنڈارکر بھی اس کی تصدیق کرتے ھیں .*

جاوا کی پراچین کبدنتیوں کے مطابق بھارت کے پچھمی تٹ سے یعنی گجرات سے بھی لوگ وھاں جا کر بسے . اس کبدنتی کے انوسار اجیسک نامک گجرات کا ایک شکتشالی راجا سن 75 عیسوی میں جاوا پہونچا' لیکن کسی مہاماری کے سبب اُسے شیگھر ھی واپس لوٹ آنا پڑا . سمبھو ھے یہ کہانی اُتر بھارت کے سک راجاؤں کے ساتھ جاوا کے پراچین راجونش کا سمبندھ جوڑنے کے لئے گڑھی گئی ھو . جاوا کے اتہاس میں ایک دوسری کامیاب گجراتی کوشش کا ذکر ملتا ھے' جب سن 603 عیسوی میں گجرات کے ایک راجہ نے اپنے بیٹے کو 5000 لوگوں کے ساتھ جن میں کسان' کاریگر' ویدیہ اور لیکھک شامل تھے' 6 بڑے جہازوں اور 100 چھوٹے جہازوں میں بھر کر جاوا بھیجا.** یہ گجراتی بیڑا جاوا کے پچھمی تٹ پر اُترا اور وھاں انھوں نے 'میندانگ کامولن' نامک نگر بسایا . بیٹے نے اور آدمی بھیجنے کے لئے لکھا . اِس بار راجہ نے 2000 آدمی بھیجے' جن میں سنگتراش اور پیتل کا کام کرنے والے شامل تھے . جلد ھی گجرات اور دوسرے دیشوں کے ساتھ جاوا کی زبردست تجارت شروع ھوگیا . اِن گجراتیوں نے وھاں مندروں کی نیو رکھی' جو بعد میں 'پرانبانم' اور 'بوروبودور' مندر کے نام سے مشہور ھوئے . ایشیائی بودھ کلا کے یہ سندرتم نمونے ھیں .

گجرات کے یہ بودھ سک' ظاھر ھے' اس سمے گجرات چھوڑکر جاوا میں جاکر بسے جب چندرگپت دوسرے نے سوراشٹر اور کاتھیاواڑ پر قبضہ کرکے بودھ دھرم کی جگہ براھمن دھرم کی استھاپنا کی.†† سک پرواسیوں کے ساتھ بودھ کلا بھی اپنی خوبیاں لیکر جاوا پہونچی' جہاں بوروبودور کی تعمیری کلا میں وہ اپنے سندرتم روپ میں ظاھر ھوئی. ‡‡ اُتر بھارتیوں کے اس جاوا پرواس کی اور بھی کئی

❀—Indian Architecture, p. 103.
†—Ball's Translation, 1, 174.
‡—Indian Antiquary, V. 314; VI, 356.
*—Journal of Bombay Branch of R. A. S. XVII.
**—History of Java—by Sir Stamford Raffles, Vol. II, p. 82.
†† Early History of India—by V. A. Smith pp. 186-87.
‡‡—Indian Sculpture and Painting—by E. B. Havell, p. 113.

# जावा : प्राचीन भारत का उपनिवेश

डाक्टर राधाकुमुद मुकर्जी, एम० ए०, पी-एच० डी०

बंगाल की खाड़ी से परे बृहत्तर ( वसीअ ) भारत के फैलाव का श्रेय छोटे से कलिंग देश को है. कलिंग के प्राचीन इतिहास को बहुत कम लोग जानते हैं. वास्तव में भारत के क़ौमी कारनामों में जावा का उपनिवेश (नवाबादी) एक बड़ी अहम घटना है और यह कितने दुख की बात है कि भारतीय इतिहास में इस महत्वपूर्ण घटना की कोई चर्चा नहीं मिलती.

ईस्वी सदी के 75 वें बरस में कलिंग देश से हिन्दू मल्लाहों का एक जत्था निकला और बंगाल की खाड़ी को पार कर हिम्मत के साथ बेअन्त हिन्द महासागर को चीरता हुआ जावा के टापू पर जा लगा. वहां इन नाविकों ने भारतीय उपनिवेश की स्थापना की, नगर और शहर बसाये और अपनी मातृभूमि के साथ व्यापार सम्बन्ध क़ायम किया, जो सदियों तक चलता रहा. जावा के इस भारतीय उपनिवेश के सम्बन्ध में इतिहास लेखक एलफ़िन्सटन लिखता है—

"जावा का इतिहास इस बात की साफ़ गवाही देता है कि कलिंग देश के हिन्दू इस द्वीप में आकर उतरे, यहां के निवासियों को सभ्य बनाया और ईसा के 75 वें साल से अपना पहला सम्वत् सन शुरू करके अपने आने की तिथि निश्चित की. जावा के असंख्य खन्डहर इस घटना की तसदीक़ करते हैं. हालांकि जावा की बोलचाल की ज़बान मलाया है, फिर भी धार्मिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक ग्रन्थ और अनेक उल्लेखों की ज़बान संस्कृत की ही एक बेटी है. चौथी सदी ईसवी के एक प्रसिद्ध चीनी यात्री फ़ाहियान ने लिखा है कि उस समय जावा के निवासी सब हिन्दू थे और यह यात्री जिन जहाज़ों से गंगा से सिंहल और सिंहल से जावा और जावा से चीन गया, उसके सब मल्लाह हिन्दू धर्म के अनुयायी थे.*"

फ़र्ग्यूसन लिखता है—"अमरावती के शानदार खन्डहरों से यह ज़ाहिर होता है कि कृष्णा और गोदावरी के मुहानों से आकर उत्तर और पश्चिमोत्तर भारत के बौद्धों ने पगु, कम्बोज और आख़िर में जावा के टापू को आ कर

# جاوا: پراچین بھارت کا اپنیویش

ڈاکٹر رادھا کمد مکر جی، ایم . اے .، پی ایچ - ڈی.

بنگال کی کھاڑی سے پرے ورھتر (وسیع) بھارت کے پھیلاؤ کا شریے چھوٹے سے کلنگ دیش کو ھے . کلنگ کے پراچین اتہاس کو بہت کم لوگ جانتے ھیں . واستو میں بھارت کے قومی کارناموں میں جاوا کا اپنیویش ایک بڑی اھم گھٹنا ھے اور یہ کتنے دکھ کی بات ھے کہ بھارتیہ اتہاس میں اس مہتوپورن گھٹنا کی کوئی چرچا نہیں ملتی .

عیسوی صدی کے 75 ویں برس میں کلنگ دیش سے هندو ملاحوں کا ایک جتھا نکلا اور بنگال کی کھاڑی کو پار کر همت کے ساتھ بے انت هند مها ساگر کو چیرتا هوا جاوا کے ٹاپو پر جا لگا . وهاں ان ناوکوں نے بھارتیہ اپنیویش کی استھاپنا کی، نگر اور شہر بسائے اور اپنی ماتربھومی کے ساتھ ویاپار سمبندھ قائم کیا، جو صدیوں تک چلتا رھا . جاوا کے اس بھارتیہ اپنیویش کے سمبندھ میں اتہاس لیکھک ایلفنسٹن لکھتا ھے—

" جاوا کا اتہاس اس بات کی صاف گواھی دیتا ھے کہ کلنگ دیش کے هندو اس دویپ میں آ کر اترے، یہاں کے نواسیوں کو سبھیہ بنایا اور عیسیٰ کے 75ویں سال سے اپنا پہلا سمبت سن شروع کر کے اپنے آنے کی تتھی نشچت کی . جاوا کے اسنکھیہ کھنڈر اس گھٹنا کی تصدیق کرتے ھیں . حالانکہ جاوا کی بول چال کی زبان ملایا ھے، پھر بھی دھارمک، راجنیتک اور ایتہاسک گرنتھ اور انیک الیکھوں کی زبان سنسکرت کی ھی ایک بیٹی ھے . چوتھی صدی عیسوی کے ایک پرسدھ چینی یاتری فاھیان نے لکھا ھے کہ اس سمے جاوا کے نواسی سب هندو تھے اور یہ یاتری جن جہازوں سے گنگا سے سنگھل اور سنگھل سے جاوا اور جاوا سے چین گیا، اس کے سب ملاح هندو دھرم کے انویائی تھے ."*

فرگیوسن لکھتا ھے—" امراوتی کے شاندار کھنڈروں سے یہ ظاھر ھوتا ھے کہ کرشنا اور گوداوری کے موھانوں سے آ کر اتر اور پشچم اتر بھارت کے بودھوں نے پگو، کمبوج اور آخر میں جاوا کے ٹاپو کو آ کر

*—History of India—Cowells edition, p. 185.

अनुसार ग़लत है. टाड के समय से यह ग़लतफ़हमी चली आती है. भूरी आंखों वाले और लाल डाढ़ी वाले असी या यूएची लोग जो तुख़ारियों के शासक वर्ग थे सांवले रंग के जाटों के बाप दादा नहीं थे. हम ऊपर देख चुके हैं कि नामों के उच्चारन में भी किस तरह ग़लतियां हुई हैं. जाट लोग असी क़ौम से नहीं हैं, न लम्बी खोपड़ी वाले, छोटी नाक वाले और गेहुआं रंग वाले गूजर तातार ख़ुजरों की औलाद हैं, और न राजपूत लोगों का निकास शक क़ौम से है. इन क़ौमों के निकास की खोज हमें हिन्दुस्तान ही में करनी होगी. इसमें शक नहीं कि मध्य एशिया से इनसनों के जो गिरोह हिन्दुस्तान में आकर बसते गये वे यहां की हिन्दू आबादी में रल-मिल कर एक हो गये. लेकिन इनकी तादाद यहां के लोगों के मुक़ाबले में बहुत ही कम थी. दरअसल शक और कुशन क़ौम के लोग शकस्तान यानी शीस्तान और अफ़ग़ानिस्तान में ही बस गये थे. आजकल के अफ़ग़ानों में से बहुतों के चेहरे मोहरे ज़ाहिर करते हैं कि वे शक और कुशन क़ौमों से हैं. मशहूर विद्वान हालोमी ने शक क़ौम के एक हिस्से को बलीताई नाम दिया है. अन्दाज़ा लगाया जाता है कि बलतिस्तान के बल्ती लोग वही बलताई क़ौम के हैं.❀



انوسار غلط ھے. ٹاڈ کے سمے سے یہ غلط فہمی چلی آتی ھے. بھوری آنکھوں والے اور لال ڈاڑھی والے ارسی یا یوایچی لوگ جو تخاریوں کے شاسک ورگ تھے سانولے رنگ کے جاٹوں کے باپ دادا نہیں تھے. ھم اوپر دیکھ چکے ھیں کہ ناموں کے اُچارن میں بھی کس طرح غلطیاں ھوئی ھیں. جاٹ لوگ ارسی قوم سے نہیں ھیں، نہ لمبی کھوپڑی والے، چھوٹی ناک والے اور گیہواں رنگ والے گوجرتاتار خوجروں کی اولاد ھیں، اور نہ راجپوت لوگوں کا نکاس شک قوم سے ھے. اِن قوموں کے نکاس کی کھوج ھمیں ھندستان ھی میں کرنی ھوگی. اِس میں شک نہیں کہ مدھیہ ایشیا سے اِنسانوں کے جو گروہ ھندستان میں آکر بستے گئے وے یہاں کی ھندو آبادی میں رل مل کر ایک ھوگئے. لیکن اِن کی تعداد یہاں کے لوگوں کے مقابلے میں بہت ھی کم تھی. دراصل شک اور کشن قوم کے لوگ شکستان یعنی شیستان اور افغانستان میں ھی بس گئے تھے. آجکل کے افغانوں میں سے بہتوں کے چہرے مہرے ظاھر کرتے ھیں کہ وے شک اور کشن قوموں سے ھیں. مشہور ودوان ھالومی نے شک قوم کے ایک حصے کو بلیتوئی نام دیا ھے. اندازہ لگایا جاتا ھے کہ بلتستان کے بلتی لوگ وھی بلتوئی قوم کے ھیں. ❀

❀—Haddon, Races of Man, pp. 114-1[illegible].

फैले.‡ गिफ़रीडा रगेरी ने यह भी लिखा है कि "आजकल के पामीर इलाक़े के चौड़ी खोपड़ी वाले लोगों में यूरोपियन चेहरे मोहरे के लोग काफ़ी मिलते हैं और तक्ल मकन के रेगिस्तान में जो पुराने बाशिन्दे अभी तक मौजूद हैं उनमें भी इसी ढंग के लोग हैं" और आगे चल कर वही विद्वान लिखता है कि "इन चीज़ों को अगर ग़ैरजानिब हो कर देखा जाये तो कहना पड़ता है कि एशिया के गोरे रंग के लोग वैसे ही पूरे पूरे आर्य नसल के हैं जैसे यूरोप के गोरे लोग और प्राचीन समय में शायद इससे भी ज्यादह थे."Ψ

इस तरह यह बात साफ़ जाहिर है कि मध्य एशिया के सब से पुराने बाशिन्दे उसी नसल के थे जिस नसल की दूसरी इन्डो-यूरोपियन क़ौमें हैं. मशहूर विद्वान ज्वायस ( Joyce ) ने लिखा है कि पूर्वी तुर्किस्तान में तक्ल की मकन में रहने वाली क़ौम यानी वहां के पुराने बाशिन्दे अभी तक ईरानी नसल के हैं. इसके बाद पूरब से तातारियों का हमला हुआ. उइजर ( Uiger ) तुर्कों ने सब से पहले एशिया के इस हिस्से पर तुर्कों का प्रभाव जमाया. उसके बाद मुसलमान अरबों ने इस देश पर हमला किया. तुर्क लोग मुसलमान हो गये. तुर्कों का असर और ज्यादा बढ़ गया. नतीजा यह हुआ कि पुराने लोग जो मिली हुई यूनानी भारतीय सभ्यता को मानने वाले थे और जो आर्य भाषा बोलते थे मिटते चले गये. सब से अन्त में चंगेज़ ख़ां का हमला हुआ जिसने एक बार इस सारे देश को वीरान कर दिया.

सारांश यह कि मानव जाति विज्ञान के अधिकांश विद्वानों की यह राय है कि मध्य एशिया ही इन्डो-यूरोपियन भाषायें या आर्य भाषायें बोलने वाली क़ौमों का आदि स्थान है. यहीं से पैदा होकर ये लोग सब देशों में फैले. हम यह भी देख चुके हैं कि इस इलाक़े के सब से पुराने बाशिन्दे लम्बी खोपड़ी वाले थे और बाद में पूरब से आकर चौड़ी खोपड़ी वाले लोग यहां बसने लगे और पुराने बाशिन्दों में रल मिल गये. आजकल एशिया के इस हिस्से में ज्यादह-तर चौड़ी खोपड़ी वाले लोग ही रहते हैं, जिनमें कुछ ईरानी हैं और कुछ तुर्कमान यानी तुर्क हैं. फिर उज़्वालफ़ी और फ़िचेन्को इन दोनों विद्वानों ने नाप कर बताया है कि ईरानी भाषा बोलने वाले ताजिक लोगों में भी अभी तक लम्बी खोपड़ी वाले लोग मौजूद हैं. लेकिन उइजर तुर्कों के समय में मध्य एशिया में तुर्की क़ौम का असर ही ज्यादा है.

अन्त में हम यह कह देना चाहते हैं कि कुछ लोगों का यह कहना कि "हिन्दुस्तान के राजपूतों, गूजरों और जाटों का निकास मध्य एशिया से है" मानव जाति-विज्ञान के

پھیلے.‡ گفریڈا رگیری نے یہ بھی لکھا ھے کہ "آجکل کے پامیر علاقے کے چوڑی کھوپڑی والے لوگوں میں یوروپین چہرے مہرے کے لوگ کافی ملتے ھیں اور تکل مکن کے ریگستان میں جو پرانے باشندے ابھی تک موجود ھیں اُن میں بھی اِسی ڈھنگ کے لوگ ھیں" اور آگے چل کر وھی ودوان لکھتا ھے کہ "اِن چیزوں کو اگر غیر جانب ھوکر دیکھا جائے تو کہنا پڑتا ھے کہ ایشیا کے گورے رنگ کے لوگ ویسے ھی پورے پورے آریہ نسل کے ھیں جیسے یورپ کے گورے لوگ اور پراچین سمے میں شاید اِس سے بھی زیادہ تھے."Ψ

اِس طرح یہ بات صاف ظاھر ھے کہ مدھیہ ایشیا کے سب سے پرانے باشندے اُسی نسل کے تھے جس نسل کی دوسری اِنڈوروپین قومیں ھیں. مشہور ودوان جوایس (Joyce) نے لکھا ھے کہ پوربی ترکستان میں تکل کی مکن میں رھنے والی قوم یعنی وھاں کے پرانے باشندے ابھی تک ایرانی نسل کے ھیں. اِس کے بعد پورب سے تاتاریوں کا حملہ ھوا. یوئیجر (Uiger) ترکوں نے سب سے پہلے ایشیا کے اِس حصے پر ترکوں کا پربھاؤ جمایا. اُس کے بعد مسلمان عربوں نے اِس دیش پر حملہ کیا. ترک لوگ مسلمان ھوگئے. ترکوں کا اثر اور زیادہ بڑھ گیا. نتیجہ یہ ھوا کہ پرانے لوگ جو ملی ھوئی یونانی بھارتیہ سبھیتا کو ماننے والے تھے اور جو آریہ بھاشا بولتے تھے مٹتے چلے گئے. سب سے انت میں چنگیز خاں کا حملہ ھوا جس نے ایک بار اِس سارے دیش کو ویران کردیا.

سارانش یہ کہ مانو جاتی وگیان کے اِدھیکانش ودوانوں کی یہ رائے ھے کہ مدھیہ ایشیا ھی اِنڈویوروپین بھاشائیں یا آریہ بھاشائیں بولنے والی قوموں کا آدی استھان ھے. یہیں سے پیدا ھوکر یہ لوگ سب دیشوں میں پھیلے. ھم یہ بھی دیکھ چکے ھیں کہ اِس علاقے کے سب سے پرانے باشندے لمبی کھوپڑی والے تھے اور بعد میں پورب سے آکر چوڑی کھوپڑی والے لوگ یہاں بسنے لگے اور پرانے باشندوں میں رل مل گئے' آجکل ایشیا کے اِس حصے میں زیادہ‌تر چوڑی کھوپڑی والے لوگ ھی رھتے ھیں' جن میں کچھ ایرانی ھیں اور کچھ ترکمان یعنی ترک ھیں. پھر آزوالفی اور فچینکو اِن دونوں ودوانوں نے ناپ کر بتایا ھے کہ ایرانی بھاشا بولنے والے تازک لوگوں میں بھی ابھی تک لمبی کھوپڑی والے لوگ موجود ھیں. لیکن اوئیزر ترکوں کے سمے میں مدھیہ ایشیا میں ترکی قوم کا اثر ھی زیادہ ھے.

انت میں ھم یہ کہہ دینا چاھتے ھیں کہ کچھ لوگوں کا یہ کہنا کہ "ھندستان کے راجپوتوں' گوجروں اور جاٹوں کا نکاس مدھیہ ایشیا سے ھے" مانو جاتی وگیان کے

‡—Eickstedt, op. cit., Gulffrida Ruggeri, The First Outline of a Systematic Anthropology translated by H. Chakladar.

Ψ—Gulffrida Ruggeri, op. cit., pp. 33-35, Ibid, op. cit.

**लेकिन इन सब विद्वानों का जवाब एक ही बात से दिया जा सकता है. वह यह कि इतिहास में कहीं भी इसका जिक्र नहीं मिलता कि यूरोप के कोई लोग कभी मध्य एशिया में आकर बसे हों. न इस ओर उनकी किसी यात्रा का कहीं हाल मिलता है. इसके खिलाफ़ इतिहास में बार बार इस बात का जिक्र आता है कि समय समय पर इनसानों के गिरोहों ने एशिया से जा जाकर यूरोप के मुख़्तलिफ़ देशों पर हमला किया और उन्हें आबाद किया. मशहूर इतिहास लेखक एडवर्ड मेयर, मानव जाति विज्ञान विशारद ईक्सटेट और भाषा विज्ञान शास्त्री फीस्ट सब इस बात पर एक राय हैं.❀**

**क़ुदरती तौर पर अब यह सवाल पैदा होता है कि मध्य एशिया में यह गोरे रंग के लोग यानी गोरे रंग के सुनहरी या बहुत हलके रंग के बालों वाले और भूरी या नीली आंखों वाले लोग कहां से आकर बसे ? यूआङ्ग च्वांग ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि उसे अपनी यात्रा में मध्य एशाया में इस तरह के लोग मिले थे. आजकल के विद्वान यात्री भी लिखते हैं कि ठीक यूरोपियन चेहरे मोहरे वाले इसी तरह के लोग मध्य एशिया के इस इलाक़े में अब भी रहते हैं. जर्मन वैज्ञानिक श्वार्ज़ ने लिखा है कि इस इलाक़े के ईरानी बोलने वाले लोग ठीक इसी तरह के गोरे हैं. इसी बिना पर श्वार्ज़ ने यह राय ज़ाहिर की है कि मध्य एशाया आर्य नसल के लोगों का आदि स्थान यानी असली वतन है.***

**इसके अलावा उज़वाल्फ़ी, औरेलस्टीन इत्यादि बहुत से विद्वान खोजियों ने बयान किया है कि इस तरह के रंग और इसी तरह के बालों और आंखों वाले लोग तमाम मध्य एशिया में मिलते हैं, और साइबीरिया की कुछ तातार क़ौमों में भी इसी तरह के लोग पाये जाते हैं. पिछले महायुद्ध के बाद जाकेल्सन ब्राडस्की ने जो बड़ी बड़ी खोजें की हैं उनसे मालूम हुआ है कि दक्खिन पच्छमी साइबीरिया में भी इसी रंग ढंग की एक तातारी क़ौम रहती है. येनुस्सी तातारी भी इसी रंग ढंग और चेहरे मोहरे के हैं. डेनिकर ने लिखा है कि साइबीरिया के सब से शुरू के बाशिन्दे लम्बी खोपड़ी वाले यूरोपियन चेहरे मोहरे के थे.† इस सब से ईक्सटेड और गिफ़ीडा रगेरी जैसे विद्वान वैज्ञानिकों ने यह नतीजा निकाला है कि इस तरह के गोरे रंग के आदमी शुरू में उत्तर पच्छमी एशिया ही में पैदा हुए और वहीं से सब जगह**



لیکن اِن سب ودوانوں کا جواب ایک ھی بات سے دیا جا سکتا ھے . وہ یہ کہ اِتہاس میں کہیں بھی اِس کا ذکر نہیں ملتا کہ یورپ کے کوئی لوگ کبھی مدھیہ ایشیا میں آکر بسے ھوں. نہ اِس اور اُن کی کسی یاترا کا کہیں حال ملتا ھے. اِس کے خلاف اتہاس میں بار بار اِس بات کا ذکر آتا ھے کہ سمے سمے پر اِنسانوں کے گروہ نے ایشیا سے جا جاکر یورپ کے مختلف دیشوں پر حملہ کیا اور اُنھیں آباد کیا . مشہور اتہاس لیکھک ایڈورڈ میئر، مانوجاتی وگیان وشارد ایکسٹیٹ اور بھاشا وگیان شاستری فیسٹ سب اِس بات پر ایک رائے ھیں .❀

قدرتی طور پر اب یہ سوال پیدا ھوتا ھے کہ مدھیہ ایشیا میں یہ گورے رنگ کے لوگ یعنی گورے رنگ کے سنہری یا بہت ھلکے رنگ کے بالوں والے اور بھوری یا نیلی آنکھوں والے لوگ کہاں سے آکر بسے ؟ یوان چوانگ نے اپنی پستک میں لکھا ھے کہ اُسے اپنی یاترا میں مدھیہ ایشیا میں اِس طرح کے لوگ ملے تھے . آجکل کے ودوان یاتری بھی لکھتے ھیں کہ ٹھیک یوروپین چہرے مہرے والے اِسی طرح کے لوگ مدھیہ ایشیا کے اِس علاقے میں اب بھی رہتے ھیں . جرمن ویگیانک شوراز نے لکھا ھے کہ اِس علاقے کے ایرانی بولنے والے لوگ ٹھیک اِسی طرح کے گورے ھیں . اِسی بنا پر شوراز نے یہ رائے ظاھر کی ھے کہ مدھیہ ایشیا آریہ نسل کے لوگوں کا آدی استھان یعنی اصل وطن ھے .*

اِس کے علاوہ اُزوالفی، اوریلسٹین اِتیادی بہت سے ودوان کھوجیوں نے بیان کیا ھے کہ اِس طرح کے رنگ اور اِسی طرح کے بالوں اور آنکھوں والے لوگ تمام مدھیہ ایشیا میں ملتے ھیں، اور سائبیریا کی کچھ تاتار قوموں میں بھی اِسی طرح کے لوگ پائے جاتے ھیں . پچھلے مہایدھ کے بعد جاکیلسن براڈسکی نے جو بڑی بڑی کھوجیں کی ھیں اُن سے معلوم ھوا ھے کہ دکھن پچھمی سائبیریا میں بھی اِسی رنگ ڈھنگ کی ایک تاتاری قوم رہتی ھے . ینسی تاتاری بھی اِسی رنگ ڈھنگ اور چہرے مہرے کے ھیں . ڈینکر نے لکھا ھے کہ سائبیریا کے سب سے شروع کے باشندے لمبی کھوپڑی والے یوروپین چہرے مہرے کے تھے .† اِس سب سے ایکسٹیڈ اور گفیڈا رگیری جیسے ودوان ویگیانکوں نے یہ نتیجہ نکالا ھے کہ اِس طرح کے گورے رنگ کے آدمی شروع میں اُتر پچھمی ایشیا ھی میں پیدا ھوئے اور وھیں سے سب جگہ

❀—Mayer, Geschichtedes, Altertums, pp. 861-890 Eickstedt, Rassenkunde und Rassengeschichte der Menschheit, pp. 167-281 Feist, Indo-Germanon und Germanen, p. 1 1.

*—F. O. Schwarz, "Turkesten", die wiege der Indo-germanen voelker.

†—Deniker, Les Races etles Puples de la Terre, p. 424.

पच्छिमी सरहद् से खदेड़ कर बाहर कर दिया और ये लोग वहां से निकल कर अन्त में फ़रग़ाना में आकर बसे और वहां इन्होंने तहिया क़ौम के लोगों पर फ़तह हासिल की.

ये तहिया ही तुखारी क़ौम के लोग थे. इनमें से थोड़े सेकियांग के इलाक़े में बस गये और छोटी यूएची क़ौम कहलाए. हो सकता है कि तुखारिस्तान में सब से पुराना राज्य इन्हीं का क़ायम हुआ हो. इसके अलावा मालूम होता है कि कुशन लोग गान्धार और काबुल के इलाक़े में रहते थे. ये कुशन ही क्युशन या कुशी या कुशू भी कहलाते थे. तहिया या तुखारी लोगों ने इन्हें पूरबी तुरकिस्तान के उत्तर से खदेड़ कर निकाल दिया. वहां से निकल कर ये लोग उत्तर पच्छमी भारत में घुस आए. इस तरह गिरोह के गिरोह पीछे से खदेड़े जाते रहे और हिन्दुस्तान की उत्तर पच्छमी सरहद् के अन्दर या ख़ुरासान के रास्ते ईरान में और या यूरोप की तरफ़ बढ़ते रहे. इस तरह एक दूसरे के बाद अलग अलग क़ौमें तेज़ी के साथ हिन्दुस्तान की सरहद् के अन्दर घुसती गईं. हिन्दुस्तानी विद्वानों को उनकी असल नसल की छान बीन का मौक़ा न मिल सका. कोई आश्चर्य नहीं कि आगे चल कर हिन्दुस्तान के लोगों ने मध्य एशिया की सभी क़ौमों को एक 'तुरुस्क' (Turusk) नाम से पुकारना शुरू कर दिया.

कुशी या कुशू क़ौम की बाबत अभी तक कुछ ठीक ठीक पता नहीं चल सका. भारतीय पुराणों में 'शक द्वीप' और 'कुश द्वीप' दोनों का ज़िक्र आता है. मुमकिन है यह वही कुशी हो.

एक यह सवाल उठता है कि इस भूरी आंखों वाली और लाल डाढ़ियों वाली यूएची या अरसी क़ौम का निकास कहां से है यानी वे किस नसल के थे ? प्रो० फ्रेन्के का कहना है कि मध्य एशिया के कुशन या कुसन लोग जिनका चीनी किताबों में ज़िक्र आता है गोरे रंग के न थे. चीनी किताबों में यह नहीं लिखा कि उनकी आंखें भूरी थीं और उनके बाल लाल या सुनहरे थे. लेकिन कुछ यूरोपियन विद्वानों का कहना है कि ये कुशन लोग गोरे रंग के थे और उत्तर यूरोप ही से आये थे, और यही यूएची कहलाते थे. उपसला यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर कारपेन्टियर का कहना है कि ये कुशन लोग चौड़ी खोपड़ी वाले सेल्ट्स थे जो गाल लोगों के हमले के वक़्त यूरोप से भाग कर इधर चले आए थे. पोकोरनी का कहना है कि ये लोग थरेसा (यूनान) और फ़ीजिया की क़ौमों में से थे.$ कारपेन्टियर का यह भी ख़याल है कि पामीर की वह पहाड़ी क़ौमें जिनकी रूसी विद्वानों ने खोज की है असल में 'यूरोप' के एल्प्स पहाड़ की रहने वाली थीं.



پچھمی سرحد سے کھدیڑ کر باہر کردیا اور یہ لوگ وہاں سے نکل کر انت میں فرغانہ میں آکر بسے اور وہاں اِنہوں نے تہیا قوم کے لوگوں پر فتح حاصل کی ۔

یہ تہیا ہی تخاری قوم کے لوگ تھے ۔ اِن میں سے تھوڑے کیانگ کے علاقے میں بس گئے اور چھوٹی یوایچی قوم کہلائے ۔ ہوسکتا ھے کہ تخارستان میں سب سے پرانا راجیہ اِنھیں کا قایم ہوا ہو ۔ اِس کے علاوہ معلوم ہوتا ھے کہ کشن لوگ گاندھار اور کابل کے علاقے میں رھتے تھے ۔ یہ کشن ھی کیوشن یا کوشی یا کوشو بھی کہلاتے تھے ۔ تہیا یا تخاری لوگوں نے اِنھیں پوربی ترکستان کے اُتر سے کھدیڑ کر نکال دیا ۔ وہاں سے نکل کر یہ لوگ اُتر پچھمی بھارت میں گھس آئے ۔ اِس طرح گروہ کے گروہ پیچھے سے کھدیڑے جاتے رھے اور ھندستان کی اُتر پچھمی سرحد کے اندر یا خراسان کے راستے ایران میں اور یا یورپ کی طرف بڑھتے رھے ۔ اِس طرح ایک دوسرے کے بعد الگ الگ قومیں تیزی کے ساتھ ھندستان کی سرحد کے اندر گھستی گئیں ۔ ھندستانی ودوانوں کو اُن کی اصل نسل کی چھان بین کا موقع نہ مل سکا ۔ کوئی آشچریہ نہیں کہ آگے چل کر ھندستان کے لوگوں نے مدھیہ ایشیا کی سبھی قوموں کو ایک 'تورسک' (Tursuk) نام سے پکارنا شروع کردیا ۔

کوشی یا کوشو قوم کی بابت ابھی تک کچھ ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں چل سکا ۔ بھارتیہ پرانوں میں 'شک دویپ' اور 'کش دویپ' دونوں کا ذکر آتا ھے ۔ ممکن ھے یہ وھی کوشی ھو۔

ایک یہ سوال اُٹھتا ھے کہ اِس بھوری آنکھوں والی اور لال داڑھیوں والی یوایچی یا ارسی قوم کا نکاس کہاں سے ھے یعنی وے کس نسل کے تھے ؟ پرو. فرینکے کا کہنا ھے کہ مدھیہ ایشیا کے کشن یا کسن لوگ جن کا چینی کتابوں میں ذکر آتا ھے گورے رنگ کے نہ تھے ۔ چینی کتابوں میں یہ نہیں لکھا کہ اُن کی آنکھیں بھوری تھیں اور اُن کے بال لال یا سنہرے تھے ۔ لیکن کچھ یورپین ودوانوں کا کہنا ھے کہ یہ کشن لوگ گورے رنگ کے تھے اور اُتر یورپ ھی سے آئے تھے' اور یہی یوایچی کہلاتے تھے ۔ اُپسلا یونیورسٹی کے پروفیسر کارپینٹیر کا کہنا ھے کہ یہ کشن لوگ چوڑی کھوپڑی والے سیلٹس تھے جو گال لوگوں کے حملے کے وقت یورپ سے بھاگ کر اِدھر چلے آئے تھے ۔ پوکورنی کا کہنا ھے کہ یہ لوگ تھریسا ( یونان ) اور فریزیا کی قوموں میں سے تھے .$ کارپینٹیر کا یہ بھی خیال ھے کہ پامیر کی وہ پہاڑی قومیں جنکی روسی ودوانوں نے کھوج کی ھے اصل میں 'یورپ' کے ایلپس پہاڑ کی رہنے والی تھی ۔

$—J. Charpentier in F. D. M. G., Vol· Lxxi, p.347.

आजकल की चीन की राजधानी पीकिंग के अन्दर 'यूएची' पढ़ा जाता है, दो हज़ार साल पहले उसी शब्द-चिन्ह का उच्चारन (तलफ़्फ़ुज़) बिलकुल दूसरा था. जे० मारकार्ट की राय है कि इस शब्द-चिन्ह का सब से पुराना उच्चारन 'जेतसी' या 'ज्योयतसी' था. उसका यह भी ख़्याल है कि इसी नाम को स्ट्रेबो‡ ने 'असी ओई' और पाम्पियसट्रागस ने 'असिअन' लिखा है. जापानी उसे जेतसु या ज्वात्सु कहते थे. ओ .फ्रेन्के की राय है कि इसका पुराना उच्चारन 'नेजुएत्सी' था. इसी तरह बदलते बदलते यह विद्वान आजकल के यूएची लफ़्ज़ को यूनानी 'सीदियन' के साथ जा मिलाते हैं. यह लफ़्ज़ आम तौर पर मध्य एशिया की उस ज़माने की सब जातियों के लिए इस्तेमाल किया जाता है.

असि नाम का पता हाल में प्रोफ़ैसर सीज ने लगाया है. एफ़० डबल्यू० म्यूलर की राय है कि जिस चीनी शब्द को आजकल 'यूएची' पढ़ा जाता है उसे ही दो हज़ार साल पहले असी पढ़ा जाता था. ओटो .फ्रेन्के चीनी ज़बान के एक दूसरे बहुत बड़े विद्वान हैं. उनकी भी यही राय है कि यूएची और असी एक ही शब्द हैं और एक ही क़ौम को जाहिर करते हैं.§ अगर हम चीनी भाषा के इन विद्वानों की बात ठीक मान लें तो इससे तुख़ारियों की समस्या, इन्डो-यूरोपियन समस्या, और एक दर्जे तक भारतीय समस्या को हल करने में बड़ी मदद मिलती है और उस पर नई रोशनी पड़ जाती है.

अब सवाल यह रह जाता है कि तुख़ारी क़ौम और क्युसन क़ौम में क्या ताल्लुक़ है? चीनी इतिहासज्ञ म्यूलर का कहना है कि पुराने तुर्क जिस भाषा को तौक्सरी भाषा कहा करते थे उसी को आजकल के विद्वान तुख़ारी 'अ' कहते हैं. इन पुराने तुर्कों को डईजर भी कहते हैं. तुर्फ़ान में डईजर क़ौम की एक हाथ की लिखी चीज मिली है जिस में एक दूसरी किताब 'दस कर्म बुद्ध अवदान माला' के बारे में लिखा है कि उसका क्युसन भाषा से तुख़ारी में अनुवाद किया गया और तुख़ारी से तुर्की में. इससे पता चलता है कि यह किताब क्युसन सरहद से तुख़ारिस्तान गई, और वहां से तुर्कों के पास गई. यहां पर यह साफ़ दिखाई देता है कि तुख़ारी लोग दूसरे थे और क्यूसन लोग दूसरे थे. इन क्यूसन लोगों को ही भारत में 'कुशन' कहा गया है. म्यूलर का कहना है कि कुशन लोगों के देश का नाम क्यूसन था और वह देश गान्धार और काबुल का इलाक़ा था. स्टैनलीनो की यह भी राय है कि गान्धार ही कुशन क़ौम की राजधानी थी. इस सब से हमें पता चलता है कि हूण लोगों ने यूएची क़ौम के लोगों को चीन की

آجکل کی چین کی راجدھانی پیکنگ کے اندر 'یوایچی' پڑھا جاتا ھے' دو ھزار سال پہلے اُسی شبد چنھ کا اُچارن بالکل دوسرا تھا. جے مارکارٹ کی رائے ھے کہ اس شبد چنھ کا سب سے پرانا اُچارن (تلفظ) 'جیتسی' یا 'جیویتسی' تھا. اُس کا یہ بھی خیال ھے کہ اِسی نام کو اِسٹریبو‡ نے 'اسی اُوئی' اور پامپیسٹراگس نے 'اسیین' لکھا ھے. جاپانی اُسے جیتسو یا جواتسو کہتے تھے. اُو فرینکو کی رائے ھے کہ اِس کا پرانا اُچارن 'نیجویتسی' تھا. اسی طرح بدلتے بدلتے یہ ودوان آجکل کے یوایچی لفظ کو یونانی 'سیدین' کے ساتھ جا ملاتے ھیں. یہ لفظ عام طور پر مدھیہ ایشیا کی اُس زمانے کی سب جاتیوں کے لئے اِستعمال کیا جاتا ھے.

ارسی نام کا پتہ حال میں پروفیسر سیج نے لگایا ھے. ایف. ڈبلو. میولر کی رائے ھے کہ جس چینی شبد کو آجکل یوایچی پڑھا جاتا ھے اُسے ھی دو ھزار سال پہلے ارسی پڑھا جاتا تھا. اوٹو فرینکے چینی زبان کے ایک دوسرے بہت بڑے ودوان ھیں. اُن کی بھی یہی رائے ھے کہ یوایچی اور ارسی ایک ھی شبد ھیں اور ایک ھی قوم کو ظاھر کرتے ھیں.§ اگر ھم چینی بھاشا کے اِن ودوانوں کی بات ٹھیک مان لیں تو اِس سے تخاریوں کی سمسیا' اِنڈو یوروپین سمسیا' اور یک درجے تک بھارتیہ سمسیا کو حل کرنے میں بڑی مدد ملتی ھے اور اُس پر نئی روشنی پڑ جاتی ھے.

اب سوال یہ رہ جاتا ھے کہ تخاری قوم اور کیوسن قوم میں کیا تعلق ھے؟ چینی اِتہاسگیہ میولر کا کہنا ھے کہ پرانے ترک جس بھاشا کو توکسری بھاشا کہا کرتے تھے اُسی کو آجکل کے ودوان تخاری 'انگ' کہتے ھیں. ان پرانے ترکوں کو ڈئیجر بھی کہتے ھیں. ترفان میں ڈئیجر قوم کی ایک ھاتھ کی لکھی چیز ملی ھے جس میں ایک دوسری کتاب 'دس کرم بدھ اودان مالا' کے بارے میں لکھا ھے کہ اُس کا کیوسن بھاشا سے تخاری میں انوواد کیا گیا اور تخاری سے ترکی میں. اِس سے پتہ چلتا ھے کہ یہ کتاب کیوسن سرحد سے تخارستان گئی' اور وھاں سے ترکوں کے پاس گئی. یہاں پر یہ صاف دکھائی دیتا ھے کہ تخاری لوگ دوسرے تھے اور کیوسن لوگ دوسرے تھے. اِن کیوسن لوگوں کو ھی بھارت میں 'کشن' کہا گیا ھے. میولر کا کہنا ھے کہ کشن لوگوں کے دیش کا نام کیوسن تھا اور وہ دیش گاندھار اور کابل کا علاقہ تھا. اسٹینلینو کی یہ بھی رائے ھے کہ گندھار ھی کشن قوم کی راجدھانی تھی. اِس سب سے ھمیں پتہ چلتا ھے کہ ھن لوگوں نے یوایچی قوم کے لوگوں کو چین کی

‡—Eranshahr, p. 206.

§—O. Francke, op. cit, p. 23 f.

हम बयान कर चुके हैं. अब हम उनके शासक वर्ग की कुछ खोज करना चाहते हैं. उनके शासक वर्ग के लोग अर्सी (Arsi) कहलाते थे. मालूम होता है इन्हीं को यूनानी इतिहास लेखक स्ट्रैबो असियानी या असीई कह कर पुकारता है. जर्मनी के कुछ विद्वानों का ख़याल है कि यह अर्सी लोग इन्डो-यूरोपियन थे. चीनी इतिहास की पुस्तकों में जिस क़ौम का यूएची कहा गया है बहुत दिनों तक वे और तुखारी एक ही क़ौम समझे जाते रहे. चीनी ग्रन्थ शीकी (Schike)‡ में लिखा है "हियुङ्गनु (हूण) क़ौम के राजा मोदक (मकतुर) ने सन 379 ईसवी पूर्व में चीन के सम्राट को सूचना दी कि मैंने यूएची क़ौम को मिटा दिया है. हूण राजा लौशवाङ्ग ने यूएची क़ौम के राजा को मार कर उसकी खोपड़ी का पीने का प्याला बना रक्खा था. शुरू में यूएची क़ौम के लोग चीन की पच्छिमी सरहद पर तुनहुआङ्ग और कीलीन पहाड़ों के बीच में रहते थे. हियुङ्गनु की इस विजय के बाद ये लोग आजकल रूसी तुर्किस्तान में फ़र्ग़ाना नामक इलाक़े के उस पार जाकर बस गये और अधिक पच्छिम में बढ़ कर उन्होंने तहिया क़ौम के लोगों का विजय किया और उन्हें अपनी प्रजा बना लिया. इस समय से वे आक्सस नदी के उत्तर में रहते रहे और वहां उनकी राजधानी थी. इनमें से थोड़े से लोग जो आगे न बढ़ पाए थे दक्खिन के पहाड़ों में कि-आङ्ग इलाक़े में बस गये थे. ये लोग बाद में 'छोटी यूएची' के नाम से मशहूर हुए. ये लोग तुनहुआङ्ग के दक्खिन से लेकर पामीर तक की पहाड़ियों में दूसरी तिब्बती क़ौमों के साथ रहते थे. मालूम होता है कि ज़्यादा क़दीम तुखारी राज्य के क़ायम करने वाले यही लोग थे.§ विन्सेन्ट स्मिथ और स्टेनकोनो के अनुसार इस छोटी यूएची क़ौम के लोगों ने ही गन्धार देश के अन्दर जिसे आजकल क़न्धार कहते हैं पुरुषपुर में अपनी राजधानी क़ायम की थी. पुरुषपुर ही आजकल पेशावर कहलाता है.

कुछ विद्वानों का यह ख़याल है कि तुखारी लोग और तहिआ क़ौम के लोग जिन्हें यूएची ने विजय किया एक ही थे. अगर यह बात सच है तो यूएची क़ौम की बाबत हमें कुछ नई खोज करनी पड़ेगी.† इसके लिए हमें चीनी भाशा की ख़ासियत को ध्यान में रखना होगा. वह यह कि चीनी लिपी में अक्षर नहीं हैं बल्कि कई हज़ार शब्द-चिन्ह हैं. इसलिए अभी तक एक ही चीनी लिखावट को चीन के अलग अलग सूबों में अलग अलग तरह पढ़ा जाता है. चीनी लिपि के विद्वान हमें बताते हैं कि जिस चिन्ह को



هم بیان کرچکے هیں. اب هم اُن کے شاسک ورگ کی کچھ کھوج کرنا چاهتے هیں. اُن کے شاسک ورگ کے لوگ ارسی (Arsi) کہلاتے تھے . معلوم هوتا هے اِنهیں کو یونانی اِتهاس لیکھک استرینبو اسیانی یا اسیئی کہکر پکارتا هے . جرمنی کے کچھ ودوانوں کا خیال هے کہ یہ ارسی لوگ انڈو یوروپین تھے . چینی اِتہاس کی پستکوں میں جس قوم کو یوایچی کہا گیا هے بہت دنوں تک وے اور تخاری ایک هی قوم سمجھے جاتے رهے . چینی گرنتھ شیکی (Schike) ‡ میں لکھا هے—هینگنو (هن) قوم کے راجا مودک (مکتور) نے سن 379 عیسیٰ پورو میں چین کے سمراٹ کو سوچنا دی کہ میں نے یوایچی قوم کو مٹا دیا هے . هن راجہ لوشوانگ نے یوایچی قوم کے راجہ کو مارکر اُس کی کھوپڑی کا پینے کا پیالہ بنا رکھا تھا . شروع میں یوایچی قوم کے لوگ چین کی پچھمی سرحد پر تنہوآنگ اور کیلین پہاڑوں کے بیچ میں رهتے تھے. هینگنو کی اِس وجئے کے بعد یہ لوگ آجکل روسی ترکستان میں فرغانہ نامک علاقے کے اُس پار جاکر بس گئے اور ادھک پچھم میں بڑھ کر اُنھوں نے تہیا قوم کے لوگوں کو وجئے کیا اور اُنھیں اپنی پرجا بنا لیا. اِس سمے سے وے آکسس ندی کے اُتر میں رهتے رهے اور وهیں اُن کی راجدھانی تھی . اِن میں سے تھوڑے سے لوگ جو آگے نہ بڑھ پائے تھے دکھن کے پہاڑوں میں کیانگ علاقے میں بس گئے تھے. یہ لوگ بعد میں 'چھوٹی یوایچی' کے نام سے مشہور هوئے . یہ لوگ تنہوانگ کے دکھن سے لیکر پامیر تک کی پہاڑیوں میں دوسری تبتی قوموں کے ساتھ رهتے تھے . معلوم هوتا هے کہ زیادہ قدیم تخاری راجیہ کے قایم کرنے والے یہی لوگ تھے .§ ونسینٹ اِسمتھ اور اِستین کونو کے انوسار اِس چھوٹی یوایچی قوم کے لوگوں نے هی گندھار دیش کے اندر جسے آجکل قندھار کہتے هیں پرشپور میں اپنی راجدھانی قایم کی تھی. پرشپور هی آجکل پیشاور کہلاتا هے.

کچھ ودوانوں کا یہ خیال هے کہ تخاری لوگ اور تہیا قوم کے لوگ جنھیں یوایچی نے وجئے کیا ایک هی تھے . اگر یہ بات سچ هے تو یوایچی قوم کی بابت همیں کچھ نئی کھوج کرنی پڑیگی .† اِس کے لئے همیں چینی بھاشا کی خاصیت کو دھیان میں رکھنا هوگا. وہ یہ کہ چینی لپی میں اکشر نہیں هیں بلکہ کئی هزار شبد چنھ هیں. اِس لئے ابھی تک ایک هی چینی لکھاوٹ کو چین کے الگ الگ صوبوں میں الگ الگ طرح پڑھا جاتا هے . چینی لپی کے ودوان همیں بتاتے هیں کہ جس چنھ کو

‡—F. W. K. Mueller द्वारा अनुवादित دوارا انووادت Toxri and Kuisan p. 571.

§—Feist, op. cit., p. 119.

†—Smith E 1'1 4, 264 Know Corpus 11, 1 lxxvi.

**हैं, इसलिए तुखारी क़ौम** के लोग मध्य यूरोप या उत्तर यूरोप से चलकर कारपेथियन पहाड़ को पार करके मध्य एशिया में पहुंचे होंगे. लेकिन हमें यह याद रखना चाहिये कि तुखारी भाषा में एक बहुत बड़ी तादाद ऐसी भाषाओं के शब्दों की भी है, जिनका इन्डो-यूरोपियन भाषाओं से सम्बन्ध नहीं है.$ यह बात थोड़ी बहुत सब इन्डो-यूरोपियन भाषाओं के बारे में कही जा सकती है. इससे लोगों ने यह नतीजा निकाला है कि तुखारी लोगों के सफ़र के दिनों में तक्ल मकान ( Takla Makan ) के रेगिस्तान में उनके आबाद होने से पहिले बहुत सी दूसरी क़ौमों के लोग उनमें रल मिल कर खप गये होंगे, क्योंकि इस सफ़र में भी उन्हें बहुत बड़ा समय बीत गया होगा. चीनी इतिहास में तुखारी लोगों का ज़िक्र पहले पहल 'वेई' ( Wei ) राजकुल के दिनों में छठी सदी ईसवी में मिलता है.* चीनी भाषा में इन लोगों को तू-हुक-लो ( Tu-Huc-Lo ), कोरियन भाषा में तोहारा ( Tohora ) और जापानी में तोकारा ( Tokara ) कहते थे. उनका मुल्क तुखारिस्तान त्यानशान पहाड़ के ऊपर तारिम नामक जगह के उत्तर में चीन से पच्छिम की ओर था. इसी पहाड़ के पास यूरोप के खोजियों को तुखारी ज़बान की हाथ की लिखी किताबें मिली हैं. लेकिन उसमें भी पहले का तुखारिस्तान तारिम के दक्खिन में था और उस खोतन नामक जगह के पूरब में था, जिसमें होकर चीनी यात्री यूआन च्वाङ्ग वहां पहुंचा था. यूआन च्वाङ्ग ने अपनी किताब 'सी-युए-की' ( दिनचर्या की रिपोर्ट ) में लिखा है कि कभी पहले जबकि रेगिस्तान इन लोगों के शहरों की दीवारों तक बढ़ता चला गया तो ये लोग उस इलाक़े को छोड़कर पास के दूसरे इलाक़े में जा बसे.❀ मालूम होता है कि पानी के सूख जाने की वजह से ये लोग कई सौ साल पहले ठेठ उत्तर की तरफ़ चले गये थे. पुरानी चीनी किताबों में इन लोगों का ज़िक्र ताहिया या ताहा क़ौम के साथ किया जाता है. चीनियों के मुताबिक़ ताहिया क़ौम के लोग डरपोक और व्यापारी लोग थे और उनके शहरों के अलग अलग सरदार या राजा होते थे जो उन पर हुकूमत करते थे. पूर्वी तुर्किस्तान के उत्तर में इन लोगों ने वहां के ज्यादह पुराने बाशिन्दों 'कुशी' या 'कुशू' का वहां से खदेड़कर उनकी जगह ले ली थी.†

तुखारी क़ौम की एक शाख की जीवन यात्रा का हाल



ہیں، اِس لئے تخاری قوم کے لوگ مدھیہ یورپ یا اُتر یورپ سے چلکر کارپیتھین پہاڑ کو پار کر کے مدھیہ ایشیا میں پہونچے ہونگے۔ لیکن ہمیں یہ یاد رکھنا چاہئے کہ تخاری بھاشا میں ایک بہت بڑی تعداد ایسی بھاشاؤں کے شبدوں کی بھی ہے، جن کا انڈو یوروپین بھاشاؤں سے سمبندھ نہیں ہے۔ $ یہ بات تھوڑی بہت سب انڈو یوروپین بھاشاؤں کے بارے میں کہی جا سکتی ہے۔ اِس سے لوگوں نے یہ نتیجہ نکالا ہے کہ تخاری لوگوں کے سفر کے دنوں میں تکل مکان (Takla Makan) کے ریگستان میں اُن کے آباد ہونے سے پہلے بہت سی دوسری قوموں کے لوگ اُن میں رل مل کر کھپ گئے ہونگے، کیونکہ اِس سفر میں بھی اُنہیں بہت بڑا سمے بیت گیا ہوگا۔ چینی اتہاس میں تخاری لوگوں کا ذکر پہلے پہل 'ویئی' (Wei) راج کل کے دنوں میں چھٹی صدی عیسوی میں ملتا ہے۔* چینی بھاشا میں اِن لوگوں کو تو ۔ ھک ۔ لو (Tu-Huc-Lo)، کورین بھاشا میں تہورا (Tohora) اور جاپانی میں توکارا (Tokora) کہتے تھے۔ اُن کا ملک تخارستان تیانشان پہاڑ کے اُوپر تارم نامک جگہ کے اُتر میں چین سے پچھم کی اور تھا۔ اِسی پہاڑ کے پاس یورپ کے کھوجیوں کو تخاری زبان کی ہاتھ کی لکھی کتابیں ملی ہیں۔ لیکن اُس سے بھی پہلے کا تخارستان تارم کے دکہن میں تھا اور اُس ختن نامی جگہ کے پورب میں تھا جس سے ہوکر چینی یاتری یوآن چوانگ وہاں پہونچا تھا۔ یوآن چوانگ نے اپنی کتاب 'سی ۔ جوئے ۔ کی' (دن چریا کی رپورٹ) میں لکھا ہے کہ کبھی پہلے جبکہ ریگستان اِن لوگوں کے شہروں کی دیواروں تک بڑھتا چلا گیا تو یہ لوگ اُس علاقے کو چھوڑکر پاس کے دوسرے علاقے میں جا بسے۔❀ معلوم ہوتا ہے کہ پانی کے سوکھ جانے کی وجہ سے یہ لوگ کئی سو سال پہلے ٹھیٹھ اُتر کی طرف چلے گئے تھے۔ پرانی چینی کتابوں میں اِن لوگوں کا ذکر تاھیا یا تاھا قوم کے ساتھ کیا جاتا ہے۔ چینیوں کے مطابق تاھیا قوم کے لوگ ڈرپوک اور بیوپاری لوگ تھے اور اُن کے شہروں کے الگ الگ سردار یا راجا ہوتے تھے جو اُن پر حکومت کرتے تھے۔ پوربی ترکستان کے اُتر میں اِن لوگوں نے وہاں کے زیادہ پرانے باشندوں 'کوشی' یا 'کوشو' کو وہاں سے کھدیڑ کر اُن کی جگہ لے لی تھی۔†

تخاری قوم کی ایک شاخ کی جیون یاترا کا حال

$—Feist, op. cit.

*—J. Marquart, Eranshahr p. 200.

❀—O. Francke, Zur Kenntnis der Tuerkvoelker und Skythen Zentralasiens p. 28.

†—J. Marquart, Voelkstum der Komanen, p. 641 f.

जो खोतान में बोली जाती थी. जर्मनी के कुछ खोजियों को वहां पर संस्कृत के तन्त्र व्याकरण का एक पन्ना तक मिला है जो इस समय बरलिन के एथनालाजिकल अजायब घर में रक्खा हुआ है. उसकी लिपि बंगला लिपि से बहुत मिलती हुई है. बौद्ध धर्म के अलावा 'मानी' धर्म और ईसाई धर्मके माननेवालेभी वहां मौजूद थे. यहूदी धर्म के मानने वाले भी थे. रूसी मध्य एशिया में अभी तक बहुत से यहूदी मौजूद हैं. उस इलाक़ेकी खुदाई में जो चीजें मिली हैं उनसे साबित है कि वे लोग चित्रकला इत्यादि में बहुत ऊंचे दर्जे की तरक़्क़ी कर चुके थे (The publications of Professor Gruenwede of Berlin). भारतीय किताबों से पता चलता है कि सम्राट अशोक ने अपने यहां के उन विद्रोहियों को, जिन्होंने अशोक के पुत्र कुनाल की आंखें निकाल ली थीं, जलावतन करके मध्य एशिया भेज दिया था.† यूआन च्वांग के सफ़रनामा‡ में लिखा है कि सातवीं सदी ईसवी में साक्य कुल के राजा उस देश के कुछ हिस्सों में शासन करते थे. इन सब से ज़ाहिर है कि पुराने ज़माने में एशिया के उस हिस्से में हिन्दुस्तानियों की काफ़ी बड़ी बस्ती आबाद थी.❀ पूर्वीय तुर्किस्तान के इन बेहद तहज़ीबयाफ़्ता लोगों के बारे में अभी बहुत खोज की जरूरत है. तुर्फ़ान में उनकी कुछ हाथ की लिखी किताबें भी मिली हैं. यूराप के विद्वान इन किताबों की छान बीन कर रहे हैं. उम्मीद है कि एक न एक दिन इन किताबों से एशिया के हिस्से की खोई हुई संस्कृति और उसके साथ ही साथ तिब्बत के लामा धर्म दोनों पर नई रोशनी पड़ेगी.

हम ऊपर कह चुके हैं कि एशिया के बीच के इस हिस्से को तौक्सरिस्तान या तुख़ारिस्तान कहा जाता था और वहीं के लोगों को तौक्सरी क़ौम या तुख़ारिस्तानी क़ौम या तुख़ारी कहते थे. हम यह भी कह चुके हैं कि तौक्सरी भाषा पच्छमी यूरोप की भाषाओं से या इन्डो यूरोपियन भाषाओं से मिलती हुई है. इस भाषा के दो रूप हैं—तुख़ारी अ, तुख़ारी ब. इनके कुछ शब्द हम यहां देते हैं. तुख़ारी उन में सौ को कौन्त (Koont) कहते हैं, और तुख़ारी ब में कैन्त (Kaent) लातीनी में सेन्तम (Centum) यूनानी में इक्सातीन और पुरानी हिन्दुस्तानी जबान में शतम. सालमन मछली को तुख़ारी बमी लक्स (Laks) कहते हैं और जर्मन भाषा में लैक्स (Lacks). इससे जर्मनी के कुछ विद्वानों ने, जैसे पोकोनी और एफ़० डब्ल्यू० के० म्यूलर, यह राय क़ायम की है कि चूंकि सालमन मछली उन नदियों में मिलती है जो यूरोप के उत्तरी समुद्र में गिरती

†—श्री जयचन्द्र नारङ्ग, भारतीय इतिहास की रूप रेखा जिल्द 2 सफ़्हे 132-561.



جو ختن میں بولی جاتی تھی. جرمنی کے کچھ کھوجیوں کو وھاں پر سنسکرت کے تنتر ویاکرن کا ایک پنا تک ملا ھے جو اِس سمے برلن کے ایتھنالاجیکل عجائب گھر میں رکھا ھوا ھے. اُس کی لپی بنگلا لپی سے بہت ملتی ھوئی ھے. بودھ دھرم کے علاوہ 'مانی' دھرم اور عیسائی دھرم کے ماننے والے بھی وھاں موجود تھے. یہودی دھرم کے ماننے والے بھی تھے. روسی مدھیہ ایشیا میں ابھی تک بہت سے یہودی موجود ھیں. اُس علاقے کی کھدائی میں جو چیزیں ملی ھیں اُن سے ثابت ھے کہ وے لوگ چترکلا اِتیادی میں بہت اُونچے درجے کی ترقی کر چکے تھے (The publications of Professor Gruenwede of Berlin). بھارتیہ کتابوں سے پتہ چلتا ھے کہ سمراٹ اشوک نے اپنے یہاں کے اُن ودروھیوں کو، جنھوں نے اشوک کے پتر کونال کی آنکھیں نکال لی تھیں، جلا وطن کرکے مدھیہ ایشیا بھیج دیا تھا. † یوآن چوانگ کے سفرنامہ ‡ میں لکھا ھے کہ ساتویں صدی عیسوی میں ساکیہ کل کے راجہ اُس دیش کے کچھ حصوں میں شاسن کرتے تھے. اِن سب سے ظاہر ھے کہ پرانے زمانے میں ایشیا کے اُس حصے میں ھندستانیوں کی کافی بڑی بستی آباد تھی. ❀ پوروِیہ ترکستان کے اِن بےحد تہذیب یافتہ لوگوں کے بارے میں ابھی بہت کھوج کی ضرورت ھے. ترفان میں اُن کی کچھ ھاتھ کی لکھی کتابیں بھی ملی ھیں. یورپ کے ودوان اِن کتابوں کی چھان بین کر رھے ھیں. اُمید ھے کہ ایک نہ ایک دن اِن کتابوں سے ایشیا کے حصے کی کھوئی ھوئی سنسکرتی اور اُس کے ساتھ ھی ساتھ تبت کے لاما دھرم دونوں پر نئی روشنی پڑے گی.

ھم اوپر کہہ چکے ھیں کہ ایشیا کے بیچ کے اِس حصے کو توکسرستان یا تخارستان کہا جاتا تھا اور وھیں کے لوگوں کو توکسری قوم یا تخارستانی قوم یا تخاری کہتے تھے. ھم یہ بھی کہہ چکے ھیں کہ توکسری بھاشا پچھمی یورپ کی بھاشاؤں سے یا اِنڈو یوروپین بھاشاؤں سے ملتی ھوئی ھے. اِس بھاشا کے دو روپ ھیں— تخاری الف، تخاری ب. اِن کے کچھ شبد ھم یہاں دیتے ھیں. تخاری اُن میں سو کو کونت (Koont) کہتے ھیں، اور تخاری ب میں کینت (Kaent) لاطانی میں سینتم (Centum) یونانی میں اِکساتین اور پرانی ھندستانی زبان میں شتم. سالمن مچھلی کو تخاری بمی لکس (Laks) کہتے ھیں اور جرمن بھاشا میں لیکس (Lacks). اِس سے جرمنی کے کچھ ودوانوں نے، جیسے پوکونی اور ایف. ڈبلیو. کے. میولر، یہ رائے قائم کی ھے کہ چونکہ سالمن مچھلی اُن ندیوں میں ملتی ھے جو یورپ کے اُتری سمندر میں گرتی

شری جے چندر نارنگ، بھارتیہ اتہاس کی روپ ریکھا جلد 2 صفحے 132-561.

‡—Yuan-chwang's travels, translated by Watters, 1905.

❀—Jayachandra Narong, Ibid.

थे और इसी बात का साफ़ साफ़ समर्थन तुर्फ़ान की उन ज्यादहतर खोपड़ियों से भी होता है, जो साफ़ मिली जुली नसल की खोपड़ियां हैं.☫ बरलिन के एथनालाजिकल अजायब घर में यूएची क़ौम के लोगों के जो चित्र रक्खे हैं उनसे पता चलता है कि ये लोग मोटे ताज़े शरीर के और तोते की सी लम्बी नाक वाले थे.

उनकी आंखें भूरी थीं लेकिन आंखों की बनावट मंगोलियन थी और डाढ़ी के बाल लाल रंग के थे. गर्ग संहिता के गोलक खंड में कालयवन की बाबत लिखा है कि उसकी डाढ़ी के बाल लाल थे. इस तरह हमें, सीदियन क़ौम और यूएची क़ौम दोनों की खोपड़ियां आदि से यही पता चलता है कि ये सब लोग मिली जुली नसल के लोग थे.

लेकिन इन लोगों की बोली इन्डो-यूरोपियन बोली थी, यानी उसी तरह की बोली थी जिस तरह की यूनानी, लातीनी, सेल्टिक और ट्यूटनिक भाषाएं हैं, और जिन्हें सेन्टम ग्रुप की ( Centum group ) भाषाएं कहा जाता है. इससे धोके में पड़कर कुछ विद्वानों ने, जो इस बात के पक्षपाती हैं कि आर्य लोग पूर्व ऐतिहासिक समय में जर्मनी और उसके आस पास के प्रदेश से निकल कर सारे यूरोप और एशिया में फैले, यह अनुमान कर लिया कि ताक्सरी क़ौम के लोग भी शुरू में जर्मनी ही के रहने वाले थे जो किसी बहुत प्राचीन समय में यूरोप से आकर चीन की सरहद पर मध्य एशिया में बस गये थे. लेकिन बाद की खोजों से पता चलता है कि यद्यपि ताक्सरी भाषा और सेन्टम ग्रुप की भाषाओं की बुनियाद एक ही थी, फिर भी ताक्सरी लोगों की भाषा उनकी नसल की तरह एक बहुत ही मिली जुली भाषा थी और बहुत सी भाषाओं के मेल से बनी थी.❀

इन लोगों की बाबत और जिन जिन बातों का पता चला है उनमें एक यह है कि उनमें शासक वर्ग के लोग अर्सी (Arsi) कहलाते थे (संस्कृत किताबों में उन्हें रिसिक कहा गया है*) और उनका मज़हब बौद्ध था. वे बौद्ध धर्म की महायान सम्प्रदाय के मानने वाले थे. भारतीय, चीनी, और ईरानी-यूनानी संस्कृतियों का यह देश संगम स्थान था. इसीलिए उस ज़माने के ताक्सरिस्तान ( मध्य एशिया ) के रहने वाले बहुत ही ऊंचे दर्जे के सुसभ्य और संस्कृत लोग थे. पता चला है कि इस देश में उस ज़माने में बहुत सी भाषायें बोली जाती थीं, जिनमें एक ख़ास हिन्दुस्तानी भाषा भी थी,



تھے اور اِسی بات کا صاف صاف سمرتھن ترفان کی اُن زیادہ تر کھوپڑیوں سے بھی ھوتا ھے، جو صاف ملی جلی نسل کی کھوپڑیاں ھیں . ☫ برلن کے ایتھنالاجیکل عجائب گھر میں یوایچی قوم کے لوگوں کے جو چتر رکھے ھیں اُن سے پتہ چلتا ھے کہ یہ لوگ موٹے تازے شریر کے اور طوطے کی سی لمبی ناک والے تھے .

اُن کی آنکھیں بھوری تھیں لیکن آنکھوں کی بناوٹ منگولین تھی اور داڑھی کے بال لال رنگ کے تھے . گرگ سنہتا کے گولک کھنڈ میں کال یون کی بابت لکھا ھے کہ اُس کی داڑھی کے بال لال تھے . اِس طرح ھمیں، سیدین قوم اور یوایچی قوم دونوں کی کھوپڑیوں آدی سے یہی پتہ چلتا ھے کہ سب لوگ ملی جلی نسل کے لوگ تھے .

لیکن اِن لوگوں کی بولی انڈو یوروپین بولی تھی، یعنی اُسی طرح کی بولی تھی جس طرح کی یونانی، لاطونی، سیلٹک اور ٹیوٹنک بھاشائیں ھیں، اور جنھیں سینٹم گروپ کی (Centum group) بھاشائیں کہا جاتا ھے . اِس سے دھوکے میں پڑ کر کچھ ودوانوں نے، جو اِس بات کے پکشپاتی ھیں کہ آریہ لوگ پورو ایتہاسک سمے میں جرمنی اور اُس کے آس پاس کے پردیش سے نکل کر سارے یورپ اور ایشیا میں پھیلے، یہ انومان کر لیا کہ تاکسری قوم کے لوگ بھی شروع میں جرمنی ھی کے رھنے والے تھے جو کسی بہت پراچین سمے میں یورپ سے آکر چین کی سرحد پر مدھیہ ایشیا میں بس گئے تھے . لیکن بعد کی کھوجوں سے پتہ چلتا ھے کہ یدیپی تاکسری بھاشا اور سینٹم گروپ کی بھاشاؤں کی بنیاد ایک ھی تھی، پھر بھی تاکسری لوگوں کی بھاشا اُن کی نسل کی طرح ایک بہت ھی ملی جلی بھاشا تھی اور بہت سی بھاشاؤں کے میل سے بنی تھی . ❀

اِن لوگوں کی بابت اور جن جن باتوں کا پتہ چلا ھے اُن میں ایک یہ ھے کہ اُن میں شاسک ورگ کے لوگ ارسی (Arsi) کہلاتے تھے ( سنسکرت کتابوں میں اُنھیں رسک کہا گیا ھے *) اور اُن کا مذھب بودھ تھا . وے بودھ دھرم کی مہایان سمپردائے کے ماننے والے تھے . بھارتیہ، چینی، اور ایرانی یونانی سنسکرتیوں کا یہ دیش سنگم استھان تھا . اِسی لئے اُس زمانے کے تاکسرستان ( مدھیہ ایشیا ) کے رھنے والے بہت ھی اونچے درجے کے سوسبھیہ اور سنسکرت لوگ تھے . پتہ چلا ھے کہ اس دیش میں اُس زمانے میں بہت سی بھاشائیں بولی جاتی تھیں، جن میں ایک خاص ھندستانی بھاشا بھی تھی،

☫—Klaatsch, Morphologische, Studien zur Rassen Diagnistik der Turfan Schsedel pp. 1-47.

❀—Peist, Indermanund Germanen.

*—श्री जयचन्द नारङ्ग, भारतीय इतिहास की रूप रेखा जिल्द हिन्दी.

شری جے چند نارنگ، بھارتیہ اتہاس کی روپ ریکھا جلد ھندی .

II, 1895, P. 5 ).§ इस तरह जिस्म की बनावट के लिहाज़ से पुराने ज़माने की सीदियन क़ौम के लोग एक मिली जुली क़ौम थे. लेकिन उनकी बोली के बारे में सब विद्वानों की यही राय है कि वे ईरानी ज़बान ही बोलते थे.$ ईरान के सभ्य और स्थाई बाशिन्दे इन ख़ानाबदोश ईरानियों को ही 'शक' कहते थे, ठीक उसी तरह जिस तरह वैदिक साहित्य में उन ख़ानाबदोश लोगों को जो ब्राह्मणों के आचार विचार का पालन न करते थे 'व्रात्य' ( Vratya ) कहा जाता था.

इसी इलाक़े में पच्छमी त्यानशान के अन्दर 'इस्सीकुल' के पास पुराने ज़माने की कुछ और खोपड़ियां मिली हैं, जो पहली सदी ईसा पूर्व या दूसरी सदी ईसा पूर्व की समझी जाती हैं. आईबेनोव्सकी ने सन 1890 में इन खोपड़ियों का हाल लिखा है. यह खोपड़ियां ज़्यादातर चौड़े ढांचे की हैं.

इसके बाद उन क़ौमों का ज़माना आता है जिन्हें हम ताक्सीस्तान के ऐतिहासिक बाशिन्दे कह सकते हैं. पूर्वी तुर्किस्तान में, जिसे आजकल सिन्क्याङ्ग कहते हैं, एक जगह तुर्फ़ान ( Turfan ) है. किसी ज़माने में इस इलाक़े के लोग बौद्ध थे. जर्मनी के कुछ इतिहासखोजी उन पुरानी बौद्ध बस्तियों के खंडहरों और बचे खुचे निशानों की खोज में वहां पहुंचे. ये लोग वहां से बहुत सी चीज़ें लाये जिनमें कुछ आदमियों की खोपड़ियां भी हैं. बेस्लौ विश्वविद्यालय के स्वर्गीय प्रोफ़ेसर क्लाश ने इन खोपड़ियों का इम्तहान किया है. उन्होंने लिखा है कि—"भावों से भरे हुये जो ख़ज़ाने हमें यहां मिले हैं उनके चहरे मोहरे और ढांचे से साफ़ मालूम होता है कि उस ज़माने की यहां की आबादी मिली जुली नसलों और क़ौमों की आबादी थी. इनमें कहीं कहीं साफ़ मंगोल क़ौम के से चेहरे मोहरे मिलते हैं, और कहीं कहीं उन्हीं के पास और उन्हीं में हिले मिले सुन्दर सुहावने गोरे रंग और सुनहरे बालों वाले लोगों के चेहरे मोहरे मिलते हैं, जिनकी लम्बी नाकें थीं और जिनकी आंखों में चिन्तन की गम्भीरता मौजूद थी. ......तुर्फ़ान में जो चीज़ें मिली हैं उनकी वैज्ञानिक परीक्षा से साफ़ पता चलता है कि वहां की आबादी में और लोगों की नसल में तरह तरह का मेल था. इनमें कई तरह की अलामतें बिलकुल साफ़ अलग अलग दिखाई देती हैं और कुछ एक दूसरे में मिल जुल गई हैं." अन्त में उन्होंने लिखा है कि "ऐतिहासिक चीज़ों की खोज से मुझे यह पता चलता है कि यहां के लोग मिली जुली नसल के

('II 1395 P. 5) § اِس طرح جسم کی بناوٹ کے لحاظ سے پرانے زمانے کی سیدین قوم کے لوگ ایک ملی جلی قوم تھے . لیکن اُن کی بولی کے بارے میں سب ودوانوں کی یہی رائے ھے کہ وے ایرانی زبان ھی بولتے تھے . $ ایران کے سبھیہ اور استھائی باشندے اِن خانہ بدوش ایرانیوں کو ھی 'شک' کہتے تھے' ٹھیک اُسی طرح جس طرح ویدک ساھتیہ میں اُن خانہ بدوش لوگوں کو جو براھمنوں کے آچار وچار کا پالن نہ کرتے تھے 'وراتیہ' (Vratya) کہا جاتا تھا .

اِسی علاقے میں پچھمی تیانشان کے اندر 'اِسیکل' کے پاس پرانے زمانے کی کچھ اور کھوپڑیاں ملی ھیں' جو پہلی صدی عیسوی پورو یا دوسری صدی عیسوی پورو کی سمجھی جاتی ھیں . آئیبینوبسکی نے سن 1890 میں اِن کھوپڑیوں کا حال لکھا ھے . یہ کھوپڑیاں زیادہ تر چوڑے ڈھانچے کی ھیں .

اِس کے بعد اُن قوموں کا زمانہ آتا ھے جنھیں ھم تاکسیستان کے ایتہاسک باشندے کہہ سکتے ھیں . پوروی ترکستان میں' جسے آجکل سنکیانگ کہتے ھیں' ایک جگہ ترفان (Turfan) ھے . کسی زمانے میں اس علاقے کے لوگ بودھ تھے . جرمنی کے کچھ اِتہاس کھوجی اُن پرانی بودھ بستیوں کے کھنڈروں اور بچے کھچے نشانوں کی کھوج میں وھاں پہونچے . یہ لوگ وھاں سے بہت سی چیزیں لائے جن میں کچھ آدمیوں کی کھوپڑیاں بھی ھیں . بیسلو وشودیالیہ کے سورگیہ پروفیسر کلاش نے اِن کھوپڑیوں کا امتحان کیا ھے . اُنھوں نے لکھا ھے کہ— "بھاؤں سے بھرے ھوئے جو خزانے ھمیں یہاں ملے ھیں اُن کے چہرے مہرے اور ڈھانچے سے صاف معلوم ھوتا ھے کہ اُس زمانے کی یہاں کی آبادی ملی جلی نسلوں اور قوموں کی آبادی تھی . اِن میں کہیں کہیں صاف منگول قوم کے سے چہرے مہرے ملتے ھیں' اور کہیں کہیں اُنھیں کے پاس اور اُنھیں میں ھلے ملے سندر سہاو نے گورے رنگ اور سنہرے بالوں والے لوگوں کے چہرے مہرے ملتے ھیں' جن کی لمبی ناکیں تھیں اور جن کی آنکھوں میں چنتن کی گمبھیرتا موجود تھی . . . . ترفان میں جو چیزیں ملی ھیں اُن کی ویگیانک پریکشا سے صاف پتہ چلتا ھے کہ وھاں کی آبادی میں اور لوگوں کی نسل میں طرح طرح کا میل تھا . اِن میں کئی طرح کی علامتیں بالکل صاف الگ الگ دکھائی دیتی ھیں اور کچھ ایک دوسرے میں مل جل گئی ھیں ." انت میں انھوں نے لکھا ھے کہ "ایتہاسک چیزوں کی کھوج سے مجھے یہ پتہ چلتا ھے کہ یہاں کے لوگ ملی جلی نسل کے

§—G. Nagy, The Nationality of the Scyths; E. H. Minns, Scythians and Greeks, pp. 46-47.

$—Encyclopaedia Britanica, Vol. XVII, p. 565, 1929.

प्रोफ़ेसर सरगी के मुताबिक़ लम्बी खोपड़ियां हैं. लम्बी खोपड़ियां पुराने जमाने में उन क़ौमों की होती थीं, जो बहरेरूम यानी भूमध्य सागर के आस पास रहती थीं. इससे मालूम होता है कि उसी बहरेरूम वाली और लम्बी खोपड़ी वाली नसल के लोग बहुत पुराने जमाने में मध्य एशिया के इस इलाक़े में रहते थे. बच्चों के घड़े में बन्द करके दफ़न किये जाने का रिवाज भी बहरेरूम के आस पास कई पुरानी क़ौमों में मिलता है, मसलन मिनोवन‡ क़ौम के लोगों में और पुराने यूनानियों यानी एथेन्स के लोगों में. इस मज़मून का लेखक सन 1914 में ख़ुद यूनान में मौजूद था और उसके सामने एथेन्स नगर में एक पुराने शहर की खुदाई के समय एक घड़े के अन्दर दफ़न किया हुआ बच्चे का पिंजर मिला था. हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों में भी हमें हिन्दुओं में यह रिवाज मिलता है कि छै बरस तक की उम्र के बच्चे जलाए नहीं जाते, बल्कि या तो ज़मीन में दफ़न कर दिये जाते हैं और या घड़े में बन्द करके गाड़ दिये जाते हैं.

इसके बाद वह जमाना आता है जिसे हम एशिया का ऐतिहासिक जमाना कह सकते हैं. मध्य एशिया में रहने वाले ख़ानाबदोश लोगों को उस जमाने के ईरानी 'शक' कहते थे और यूनानी 'सीदियन' कहते थे. इन शुरू के सीदियन लोगों की खोपड़ियों के बारे में ई० एच० मिन्स लिखता है कि उनमें अलग अलग लोगों की अलग अलग तरह की खोपड़ियां मिलती हैं. और ये सब सीदियन क़ौम ही के थे. सब से आख़िर के दिनों में चरतौम्बक नामक जगह पर पांच खोपड़ियां मिली हैं, जिन पर के० ई० वौन बेयर (K.E. Von Beer in A. S. H.) ने बहस की है. इन पांच खोपड़ियों में से दो चौड़ी क़िस्म की हैं, दो लम्बी क़िस्म की और एक मंझाले क़िस्म की है. इसी तरह काउन्ट बावरिन्स कोज़ ने अपनी किताब 'स्मीला' में कुछ खोपड़ियों की तसवीरें दी हैं, जो मंगोलियन शकल की मालूम होती हैं, और कुछ ऐसी हैं, जो साफ़ यूरोपियन क़ौमों की सी खोपड़ियां हैं. (Som II brig XXVI, XXX) प्रोफ़ेसर अनातोन बोगदानो भी इसी नतीजे पर पहुंचे हैं. उनका कहना है कि सीदियन क़ौम की क़ब्रों में ज़्यादातर खोपड़ियां लम्बे ढङ्ग की मिलती हैं और कभी कभी कोई कोई खोपड़ी मंगोलियन ढङ्ग की मिलती है. उनकी यह भी राय है कि शक क़ौम के ज़माने में वहां के लोगों की खोपड़ियां दिन पर दिन आम तौर पर छोटी और चौड़ी होती जा रही थीं यानी उनकी लम्बाई और चौड़ाई क़रीब क़रीब बराबर होती जा रही थी (Congress International Anthropologie,



پروفیسر سرگی کے مطابق لمبی کھوپڑیاں ھیں . لمبی کھوپڑیاں پرانے زمانے میں اُن قوموں کی ھوتی تھیں' جو بحیرۂ روم یعنی بھو مدھیہ ساگر کے آس پاس رھتی تھیں . اِس سے معلوم ھوتا ھے کہ اُسی بحیرۂ روم والی اور لمبی کھوپڑی والی نسل کے لوگ بہت پرانے زمانے میں مدھیہ ایشیا کے اِس علاقے میں رھتے تھے . بچوں کے گھڑے میں بند کر کے دفن کئے جانے کا رواج بھی بحیرۂ روم کے آس پاس کئی پرانی قوموں میں ملتا ھے' مثلاً منوین ‡ قوم کے لوگوں میں اور پرانے یونانیوں یعنی ایتھنس کے لوگوں میں . اِس مضمون کا لیکھک سن 1914 میں خود یونان میں موجود تھا اور اس کے سامنے ایتھنس نگر میں ایک پرانے شہر کی کھدائی کے سمے ایک گھڑے کے اندر دفن کیا ھوا بچے کا پنجر ملا تھا . ھندستان کے کچھ حصوں میں بھی ھمیں ھندؤں میں یہ رواج ملتا ھے کہ چھ برس تک کی عمر کے بچے جلائے نہیں جاتے' بلکہ یا تو زمین میں دفن کر دئے جاتے ھیں اور یا گھڑے میں بند کر کے گاڑ دئے جاتے ھیں .

اِس کے بعد وہ زمانہ آتا ھے جسے ھم ایشیا کا ایتہاسک زمانہ کہہ سکتے ھیں . مدھیہ ایشیا میں رھنے والے خانہ بدوش لوگوں کو اُس زمانے کے ایرانی ' شک ' کہتے تھے اور یونانی ' سیدین ' کہتے تھے . اِن شروع کے سیدین لوگوں کی کھوپڑیوں کے بارے میں ای . ایچ . منس لکھتا ھے کہ اُن میں الگ الگ لوگوں کی الگ الگ طرح کی کھوپڑیاں ملتی ھیں . اور یہ سب سیدین قوم ھی کے تھے . سب سے آخر کے دنوں میں چرتومبک نامک جگہ پر پانچ کھوپڑیاں ملی ھیں' جن پر کے . ای . وون بیئر (K. E. Von Beer in A.S.H.) نے بحث کی ھے . اِن پانچ کھوپڑیوں میں سے دو چوڑی قسم کی ھیں' دو لمبی قسم کی اور ایک منجھولے قسم کی ھے. اِسی طرح کاؤنٹ باورنس دوز نے اپنی کتاب ' اسمیلا ' میں کچھ کھوپڑیوں کی تصویریں دی ھیں' جو منگولین شکل کی معلوم ھوتی ھیں' اور کچھ ایسی ھیں' جو صاف یورپین قوموں کی سی کھوپڑیاں ھیں . (Som II brig XXVI, XXX) پروفیسر اناتون بعدانوں بھی اِسی نتیجے پر پہونچے ھیں . اِن کا کہنا ھے کہ سیدین قوم کی قبروں میں زیادہ تر کھوپڑیاں لمبے ڈھنگ کی ملتی ھیں اور کبھی کبھی کوئی کھوپڑی منگولین ڈھنگ کی ملتی ھے . اُن کی یہ بھی رائے ھے کہ شک قوم کے زمانے میں وھاں کے لوگوں کی کھوپڑیاں دن پر دن عام طور پر چھوٹی اور چوڑی ھوتی جا رھی تھیں یعنی اُن کی لمبائی اور چوڑائی قریب قریب برابر ھوتی جا رھی تھی . ( Congress International Anthropologie,

‡—Burroughs' Discoveries in Crete, P. 168.

मुसलिम संसार आज तक नहीं पनप पाया. सब से अन्त में मध्य एशिया पर रूसियों का हमला हुआ. इस हमले की वजह से उस देश के रहने वालों के विचारों और तरीक़ों में इस समय भी फिर एक ख़ास तरह का परिवर्तन हो रहा है. इन सब नई नई क़ौमों के आने, बसने और हमलों की पूरी छाप मध्य एशिया के बाशिन्दों की ज़िन्दगी पर पड़ती रही है.

हाल के ज़माने तक यह एक फ़ैशन रहा है कि मध्य एशिया के सब लोगों को 'तुर्क' कहा जाता है और समझा जाता है कि ये सब लोग तातारी क़ौम के हैं. बीच के ज़माने में हमारे देश में एशिया के इस हिस्से के हर बाशिन्दे को 'तुरुक' कहा जाता था. उन्नीसवीं सदी ईसवी के शुरू के यूरोपियन विद्वानों ने भी यही ग़लती की. इन लोगों ने सीदियन यानी शक क़ौम के लोगों को, यूएची क़ौम के लोगों को, ऐतिहासिक यानी असली तुर्कों को, और मुग़लों को, सब को ही तुर्क समझा, और इसी ग़लतफ़हमी में हिन्दुस्तान के बाशिन्दों की नसल और निकास का भी फ़ैसला कर डाला. इसी ग़लतफ़हमी में वे राजपूतों को 'शक' समझे, जाटों को 'यूएची समझे, और गूजरों को 'हज़र' समझे. यही ग़लती हिन्दुस्तानियों के दिमाग़ों में भी घर कर गई है और हमारे देश के विद्वान वेद-वाक्य समझकर इसे तोते की तरह दोहराते रहे हैं.

मध्य एशिया की क़ौमों की असल नसल को ठीक ठीक समझने के लिए हमें उनके जिस्मों की बनावट और पुराने इतिहास की खोज दोनों से मदद लेनी होगी. इस सिलसिले में अभी तक बहुत ही कम खोज हुई है, फिर भी जो कुछ हुई है उसका सार हम यहां दे देते हैं. मध्य एशिया के अनाऊ इलाक़े में कई पुराने शहरों के खंडहर मिले हैं, जो शायद ईसा से दो या तीन हज़ार साल पहले के हैं. इन खंडहरों की डाक्टर पम्पेली ने बहुत खोज की है और उस पर "एक्सप्लोरेशन्स इन तुर्किस्तान" नाम की किताबें लिखी हैं. इन खोजों और किताबों की मदद से विद्वानों ने यह अन्दाज़ा लगाया है कि जो सभ्यताएं उस देश में फल फूल चुकी हैं उनमें सब से पुरानी सभ्यता उस ज़माने की है जबकि आदमी लोहे की जगह पत्थर के औज़ार इस्तेमाल किया करता था. इस पुरानी सभ्यता का सम्बन्ध एशिया कोचक की ऐतिहासिक समय से पहले की कोबन, तैरेक, और कुबन की सभ्यता से था. अनाऊ में जो चीज़ें मिली हैं, उनमें प्रोफ़ेसर सरगी को एक दुधमुंहे बच्चे का पिंजर मिला है जिसे घड़े में बन्द करके दफ़न किया गया था.† उसी के साथ कुछ और बच्चों की खोपड़ियां मिली हैं जो



مسلم سنسار آج تک نہیں پنپ پایا . سب سے انت میں مدھیہ ایشیا پر روسیوں کا حملہ ہوا . اس حملے کی وجہ سے اُس دیش کے رہنے والوں کے وچاروں اور طریقوں میں اس سمے بھی پھر ایک خاص طرح کا پریورتن ہو رہا ہے . اِن سب نئی نئی قوموں کے آنے' بسنے اور حملوں کی پوری چھاپ مدھیہ ایشیا کے باشندوں کی زندگی پر پڑتی رہی ہے .

حال کے زمانے تک یہ ایک فیشن رہا ہے کہ مدھیہ ایشیا کے سب لوگوں کو ' ترک ' کہا جاتا ہے اور سمجھا جاتا ہے کہ یہ سب لوگ تاتاری قوم کے ہیں . بیچ کے زمانے میں ہمارے دیش میں ایشیا کے اِس حصے کے ہر باشندے کو ' ترک ' کہا جاتا تھا. اُنیسویں صدی عیسوی کے شروع کے یوروپین ودوانوں نے بھی یہی غلطی کی . اِن لوگوں نے سیدین یعنی شک قوم کے لوگوں کو' یوایچی قوم کے لوگوں کو' ایتہاسک یعنی اصلی ترکوں کو' اور مغلوں کو' سب کو ہی ترک سمجھا' اور اِسی غلط فہمی میں ہندستان کے باشندوں کی نسل اور نکاس کا بھی فیصلہ کر ڈالا . اِسی غلط فہمی میں وے راجپوتوں کو ' شک ' سمجھے' جاٹوں کو ' یوایچی ' سمجھے' اور گوجروں کو ' حضر ' سمجھے . یہی غلطی ہندستانیوں کے دماغوں میں بھی گھر کر گئی ہے اور ہمارے دیش کے ودوان ویدواکیہ سمجھکر اِسے طوطے کی طرح دوھراتے رہے ہیں .

مدھیہ ایشیا کی قوموں کی اصل نسل کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کے لئے ہمیں اُن کے جسموں کی بناوٹ اور پرانے اتہاس کی کھوج دونوں سے مدد لینی ہوگی . اس سلسلے میں ابھی تک بہت ہی کم کھوج ہوئی ہے' پھر بھی جو کچھ ہوئی ہے اُس کا سار ہم یہاں دے دیتے ہیں. مدھیہ ایشیا کے عناؤ علاقے میں کئی پرانے شہروں کے کھنڈر ملے ہیں' جو شاید عیسیٰ سے دو یا تین ہزار سال پہلے کے ہیں . اِن کھنڈروں کی ڈاکٹر پمپیلی نے بہت کھوج کی ہے اور اُس پر " ایکسپلوریشنس اِن ترکستان " نام کی کتابیں لکھی ہیں . اِن کھوجوں اور کتابوں کی مدد سے ودوانوں نے یہ اندازہ لگایا ہے کہ جو سبھیتائیں اس دیش میں پھل پھول چکی ہیں اُن میں سب سے پرانی سبھیتا اُس زمانے کی ہے جبکہ آدمی لوہے کی جگہ پتھر کے اوزار استعمال کیا کرتا تھا . اِس پرانی سبھیتا کا سمبندھ ایشیا کوچک کی ایتہاسک سمے سے پہلے کی کوبن' تیریک' اور کبن کی سبھیتا سے تھا . عناؤ میں جو چیزیں ملی ہیں' اُن میں پروفیسر سرگی کو ایک دودھ موںہے بچے کا پنجر ملا ہے جسے گھڑے میں بند کرکے دفن کیا گیا تھا.† اُسی کے ساتھ کچھ اور بچوں کی کھوپڑیاں ملی ہیں جو

†—Sergi in Pumpelly's Explorations in Turkistan, Carnegie Publications, No. 73.

# हिन्दुस्तान के बाशिन्दों का निकास

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

जब तक हम यह न समझलें कि एशिया के बीच के और पच्छमी हिस्से की रहने वाली क़ौमों का निकास कहां से है तब तक हम हिन्दुस्तान के रहने वालों की नसलों और निकास को ठीक ठीक न समझ सकेंगे. इसलिए हम पहले मध्य एशिया की बात करते हैं. मध्य एशिया की आबादी हमेशा बदलती रही है. एशिया के इस हिस्से का नाम भी समय समय पर बदलता रहा है. प्राचीन हख़ामनीषी (Achaemenidan) काल के ईरानी इसे शक लोगों की भूमि कहते थे. यह 'शक' ईरानी ज़बान बोलते थे और उठाऊ चूल्हा यानी ख़ानाबदोश लोग थे. वे ईरान ख़ास से बाहर रहते थे. ईरानी उन्हें 'दाहा' भी कहते थे. बाज़ विद्वानों का ख़याल है कि इस 'दाहा' ही से वैदिक शब्द 'दस्यु' और 'दास' बने हैं और ये शब्द आर्यों के साथ साथ भारत में आए.* बहुत दिनों बाद जब पूरब से आकर यूएची क़ौम (Yuechi) के लोग मध्य एशिया के इस हिस्से में बसने और हुकूमत करने लगे, तो इस इलाक़े के पूरबी हिस्से का नाम ताक्सरिस्तान पड़ गया. संस्कृत में यहां के लोगों को 'तुख़ार' या 'तुषार' कहते थे. उस वक़्त से लेकर जब तक कि पूरब ही से आकर तुर्कों ने इस देश पर हमला नहीं किया, तब तक इस देश का यही नाम रहा. महमूद ग़ज़नवी के समय में भी इसका यही नाम था. महमूद अपने ताक्सरी दुश्मनों को क़ाबू में करने के लिए यहां से अपनी फ़ौज के हिन्दुस्तानी सिपाही भेजा करता था. पन्द्रहवीं सदी ईसवी तक इस ताक्सरी क़ौम के लोगों का पूरबी तुर्किस्तान में अपना अलग अस्तित्व (वजूद) था और अपनी अलग संस्कृति थी. पूरबी तुर्किस्तान के तुर्फ़ान नामक शहर में बौद्ध चित्रकारी और बौद्ध कला के बहुत से नमूने मिले हैं, जो इस समय जर्मनी में बरलिन के ऐथनालाजिकल अजायबघर और यूरप के कुछ और अजायबघरों में रख दिये गये हैं. इसके बाद मुसलमान अरबों ने ईरान से आकर इस देश पर हमला किया. तुर्क मुसलमान हो गये और मध्य एशिया और वहां के रहने वालों का सारा रंग ढङ्ग बदल गया. तब से ये सब लोग तुर्क कहलाने लगे और इनकी पुरानी सभ्यता बरबाद हो गई. इसके बाद मुग़ल चंगेज़ ख़ां का वह भयंकर हमला हुआ जिसकी लूटमार और बरबादियों से

# ھندستان کے باشندوں کا نکاس

ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

جب تک ہم یہ نہ سمجھ لیں کہ ایشیا کے بیچ کے اور پچھمی حصے کی رہنے والی قوموں کا نکاس کہاں سے ہے تب تک ہم ھندستان کے رہنے والوں کی نسلوں اور نکاس کو ٹھیک ٹھیک نہ سمجھ سکینگے. اس لئے ہم پہلے مدھیہ ایشیا کی بات کرتے ھیں. مدھیہ ایشیا کی آبادی ھمیشہ بدلتی رہی ھے. ایشیا کے اس حصے کا نام بھی سمے سمے پر بدلتا رہا ھے. پراچین ہخامنیشی (Achaemenidan) کال کے ایرانی اسی شک لوگوں کی بھومی کہتے تھے. یہ 'شک' ایرانی زبان بولتے تھے اور اُٹھاؤ چولھا یعنی خانہ بدوش لوگ تھے. وے ایران خاص سے باھر رہتے تھے. ایرانی انھیں 'داھا' بھی کہتے تھے. بعض ودوانوں کا خیال ھے کہ اس 'داھا' ھی سے ویدک شبد 'دسیو' اور 'داس' بنے ھیں اور یہ شبد آریوں کے ساتھ ساتھ بھارت میں آئے.* بہت دنوں بعد جب پورب سے آکر یوایچی قوم (Yuechi) کے لوگ مدھیہ ایشیا کے اس حصے میں بسنے اور حکومت کرنے لگے' تو اس علاقے کے پوربی حصے کا نام تاکسرستان پڑ گیا. سنسکرت میں یہاں کے لوگوں کو 'تخار' یا 'توشار' کہتے تھے. اُس وقت سے لے کر جب تک کہ پورب ھی سے آکر ترکوں نے اس دیش پر حملہ نہیں کیا' تب تک اس دیش کا یہی نام رہا. محمود غزنوی کے سمے میں بھی اس کا یہی نام تھا. محمود اپنے تاکسری دشمنوں کو قابو میں کرنے کے لئے یہاں سے اپنی فوج کے ھندستانی سپاہی بھیجا کرتا تھا. 15 ویں صدی عیسوی تک اس تاکسری قوم کے لوگوں کا پوربی ترکستان میں اپنا الگ استتو (وجود) تھا اور اپنی الگ سنسکرتی تھی. پوربی ترکستان کے ترفان نامک شہر میں بودھ چترکاری اور بودھ کلا کے بہت سے نمونے ملے ھیں' جو اس سمے جرمنی میں برلن کے ایتھنالاجیکل عجائب گھر اور یورپ کے کچھ اور عجائب گھروں میں رکھ دیئے گئے ھیں. اس کے بعد مسلمان عربوں نے ایران سے آکر اس دیش پر حملہ کیا. ترک مسلمان ھوگئے اور مدھیہ ایشیا اور وھاں کے رہنے والوں کا سارا رنگ ڈھنگ بدل گیا. تب سے یہ سب لوگ ترک کہلانے لگے اور اُن کی پرانی سبھیتا برباد ھو گئی. اس کے بعد مغل چنگیز خاں کا وہ بھینکر حملہ ھوا جس کی لوٹ مار اور بربادیوں سے

*—Fimmer, Alt-Indisches Leben.

गुलाब जल की सुराहियां आदि. ईरान की कुदरती फ्रेस्को तसवीरों को ताज और शाहजहांनी महलों में पच्चीकारी के रूप में ज्यों का त्यों उतार दिया गया है. पच्चीकारी की ईरानी और अरबी स्टाइल यहां पहले से जारी थीं और इटालियनों से हिन्दुस्तानियों को पच्चीकारी का तरीक़ा सीखने की कोई जरूरत न थी. रहा दिल्ली के दीवान-ए-आम में फ्लोरेन्स की पच्चीकारी का नमूना—हैवेल की राय में वह पेनल पूरा का पूरा इटली से बनकर आया और स्थानीय कारीगरों ने उसे ज्यों का त्यों दीवार में बैठा दिया. आरफ़िअस की अकेली तसवीर अपने आप कोई बात साबित नहीं करती. मुमकिन है वह सम्राट ने ख़रीदी हो. फिर पच्चीकारी की डिज़ाइन हरगिज़ इटालियन नहीं है. वह साफ़ ईरानी है. ये हो सकता है कि विदेशी कारीगर पच्चीकारी के लिये क़ीमती पत्थर काटने के वास्ते मुक़र्रर किये गये हों. लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि इटालियनों ने कोई नई कला दाख़िल की हो. इटालियन संगतराशों का जड़िया होना जरूरी नहीं है. जब तक इस बात के कोई निश्चित उल्लेख न हों इसे स्वीकार करना तर्कपूर्ण नहीं है.

शाहजहां के वक़्त में पच्चीकारी की कला ख़ास तौर पर आगरा, दिल्ली और लाहौर में इतने व्यापक रूप में फैली हुई थी कि यह विश्वास करना कठिन है कि मुट्ठी भर इटालियनों ने भारत भर में फैली हुई पच्चीकारी की उस सब कला को डिज़ाइन किया हो और अपनी देखरेख में बनवाया हो. अंगूरी बाग़ की डिज़ाइन भी ईरानी है. ईरान में भी अंगूर बहुतायत से होते हैं. मुग़लों के ज़माने में ईरानी कला का बेहद प्रचार भी था.

शाहजहां सार्वभौमिक रुचि का था. यह हो सकता है कि इटालियन कलाकारों ने भी पच्चीकारी की कुछ डिज़ाइनें बनाई हों और वे इसलिये बुरी नहीं समझी गई होंगी कि वे यूरोपीय डिज़ाइनें हैं. यह सम्भव है कि इनमें से कुछ डिज़ाइनों को भारतीय कारीगरों ने भी पसन्द कर लिया हो. हैवेल भी इस सम्बन्ध में इसी दलील को स्वीकार करता है.

———

उपयोगी कलाओं की जननी है आवश्यकता,
ललित कलाओं की है विलासिता. पहली पैदा हुई
बुद्धि से और दूसरी प्रतिभा से.

—शोपेनहोर

———



گلاب جل کی صراحیاں آدی ۔ ایران کی قدرتی فریسکو تصویروں کو تاج اور شاھجہانی محلوں میں پچی کاری کے روپ میں جیوں کا تیوں اُتار دیا گیا ھے ۔ پچی کاری کی ایرانی اور عربی اِستائل یہاں پہلے سے جاری تھیں اور اِتالینوں سے ھندستانیوں کو پچی‌کاری کا طریقہ سیکھنے کی کوئی ضرورت نہ تھی۔ رھا دلی کے دیوان عام میں فلورینس کی پچی‌کاری کا نمونہ—ھیویل کی رائے میں وہ پینل پورا کا پورا اِتلی سے بنکر آیا اور استھانیہ کاریگروں نے اُسے جیوں کا تیوں دیوار میں بیٹھا دیا ۔ عارفیس کی اکیلی تصویر اپنے آپ کوئی بات ثابت نہیں کرتی ۔ ممکن ھے وہ سمراٹ نے خریدی ھو ۔ پھر پچی‌کاری کی ڈیزائن ھرگز اِتالین نہیں ھے۔ وہ صاف ایرانی ھے ۔ یہ ھو سکتا ھے کہ ودیشی کاریگر پچی‌کاری کے لئے قیمتی پتھر کاٹنے کے واسطے مقرر کئے گئے ھوں ۔ لیکن اس سے یہ ثابت نہیں ھوتا کہ اِتالینوں نے کوئی نئی کلا داخل کی ھو ۔ اِتالین سنگتراشوں کا جڑیا ھونا ضروری نہیں ھے ۔ جب تک اس بات کے کوئی نشچت اُلیکھ نہ ھوں اِسے سوئیکار کرنا ترک پورن نہیں ھے ۔

شاھجہاں کے وقت میں پچی‌کاری کی کلا خاص طور پر آگرہ، دلی اور لاھور میں اِتنے ویاپک روپ میں پھیلی ھوئی تھی کہ یہ وشواس کرنا کٹھن ھے کہ مٹھی بھر اِتالینوں نے بھارت بھر میں پھیلی‌ھوئی پچی‌کاری کی اُس سب کلا کو ڈیزائن کیا ھو اور اپنی دیکھ ریکھ میں بنوایا ھو ۔ انگوری باغ کی ڈیزائن بھی ایرانی ھے ۔ ایران میں بھی انگور بہوتایت سے ھوتے ھیں ۔ مغلوں کے زمانے میں ایرانی کلا کا بےحد پرچار بھی تھا ۔

شاھجہاں سارو بھومک روچی کا تھا ۔ یہ ھوسکتا ھے کہ اِتالین کلاکاروں نے بھی پچی‌کاری کی کچھ ڈیزائینیں بنائی ھوں اور وے اِس لئے بری نہیں سمجھی گئی ھونگی کہ وے یوروپیہ ڈیزائینیں ھیں ۔ یہ سمبھو ھے کہ اِن میں سے کچھ ڈیزائنوں کو بھارتیہ کاریگروں نے بھی پسند کر لیا ھو ۔ ھیویل بھی اِس سمبندھ میں اِسی دلیل کو سوئیکار کرتا ھے ۔

———

اُپیوگی کلاؤں کی جننی ھے آوشیکتا ۔ للت کلاؤں
کی ھے ولاستا ۔ پہلی پیدا ھوئی بدھی سے اور دوسری
پرتیبھا سے ۔

—شوپین ھور

———

का कहना है कि 'अंगूरी बाग़' की कल्पना इटालियन कल्पना है और वह लिखता है—"दिल्ली में शाहजहां की अंगूरी बाग़ की पच्चीकारी और आगरा और लाहौर की इसी तरह की पच्चीकारी का ताल्लुक़ इटली के अंगूरों के साथ कौन नहीं जोड़ना चाहेगा ?"* यह भी कहा जाता है कि यदि पच्चीकारी भारत की पुरानी कला होती तो इस पर कुछ पुरानी हिदायतें होतीं. इन हिदायतों का अभाव यह ज़ाहिर करता है कि यह विदेशी कला है. यह दलील दी जाती है कि पच्चीकारी की कला भारत में यकायक ईजाद होकर इतनी जल्द इतनी तरक़्क़ी नहीं कर सकती थी.

बर्नियर ताज के बारे में लिखता है कि शाहजहां फ़्लोरेन्स की कला को मात करना चाहता था.§ टैवर्नियर लिखता है कि शाहजहां की मन्शा थी कि दिल्ली के दीवाने ख़ास का मोज़ेक का काम उतना ही क़ीमती और ख़ूबसूरत हो जितना इटली में ग्रैन्ड ड्यूक के गिरजे का है.‡

ज़ाहिरा सुनने में ये दलीलें, जो यहां संक्षेप में दी गई हैं, बड़ी ज़ोरदार मालूम होती हैं और इस बात को ज़ाहिर करती हैं कि पच्चीकारी की कला इटालियनों द्वारा भारत में शुरू की गई. लेकिन इन दलीलों का एक दूसरा पहलू भी है.

मुग़ल काल का जो ऐतिहासिक लेखा मौजूद है उसमें कहीं इस बात का ज़िक्र नहीं है कि ताज और दूसरी जगहों का पच्चीकारी का काम विदेशियों के ज़रिये कराया गया है. इसके ख़िलाफ़ चिरञ्जीलील, छोटेलाल, मन्नूलाल, मनोहर-सिंह आदि हिन्दू पच्चीकारों, जड़ियों और कारीगरों के नाम मुग़ल उल्लेखों में दर्ज हैं जो बड़ी बड़ी तनख़्वाहों पर ताज बनाने के लिये मुक़र्रर थे.

यह फ़र्ज़ करना बिलकुल ग़लत होगा कि पच्चीकारी और पत्थरों की नक़्क़ाशी मुग़लों से पहले भारत में थी ही नहीं. हैवल 15वीं सदी के चित्तौड़ के एक जैन मन्दिर का ज़िक्र करता है जिसमें अक़ीक़ की पच्चीकारी का काम मौजूद था. सर जान मार्शल मांडो में इससे भी पहले की पच्चीकारी का ज़िक्र करते हैं.❋ उदयपुर में शहज़ादे ख़ुर्रम के लिये सन 1623 में जो जगमन्दिर महल बनाया गया उसमें भी ख़ूबसूरत पच्चीकारी का काम किया गया था.

मुग़ल तामीरी कला में पच्चीकारी का काम दरअस्ल मूल रूप से ईरानी है. उसमें इटालियन असर की बात ढूंढ़ना एक दूर की सूझ है. इस नक़्क़ाशी की पार्श्वभूमि सब ईरानी है—सरो के पेड़, फूलों के गमले, फल, शराब के प्याले,



کا کہنا ھے کہ 'انگوری باغ' کی کلپنا اِتالین کلپنا ھے اور وہ لکھتا ھے—" دلی میں شاھجہاں کی انگوری باغ کی پچیکاری اور آگرہ اور لاھور کی اِسی طرح کی پچی کاری کا تعلق اِٹلی کے انگوروں کے ساتھ کون نہیں جوڑنا چاھے گا ؟"* یہ بھی کہا جاتا ھے کہ یدی پچی‌کاری بھارت کی پرانی کلا ھوتی تو اِس پر کچھ پرانی ھدائتیں ھوتیں . اِن ھدائتوں کا ابھاؤ یہ ظاھر کرتا ھے کہ یہ ودیشی کلا ھے . یہ دلیل دی جاتی ھے کہ پچی‌کاری کی کلا بھارت میں یکایک ایجاد ھو کر اِتنی جلد اِتنی ترقی نہیں کر سکتی تھی .

برنیئر تاج کے بارے میں لکھتا ھے کہ شاھجہاں فلورینس کی کلا کو مات کرنا چاھتا تھا .§ ٹیورنیئر لکھتا ھے کہ شاھجہاں کی منشا تھی کہ دلی کے دیوان خاص کا موزیک کا کام اُتنا ھی قیمتی اور خوبصورت ھو جتنا اِٹلی میں گرینڈ ڈیوک کے گرجے کا ھے .‡

ظاھرا سننے میں یہ دلیلیں' جو یہاں سنکچھیپ میں دی گئی ھیں' بڑی زوردار معلوم ھوتی ھیں اور اِس بات کو ظاھر کرتی ھیں کہ پچی‌کاری کی کلا اِٹالینوں دوارا بھارت میں شروع کی گئی . لیکن اِن دلیلوں کا ایک دوسرا پہلو بھی ھے .

مغل کال کا جو ایتہاسک لیکھا موجود ھے اُس میں کہیں اِس بات کا ذکر نہیں ھے کہ تاج اور دوسری جگہوں کا پچی‌کاری کا کام ودیشیوں کے ذریعے کرایا گیا ھے . اس کے خلاف چرنجی لال' چھوٹے لال' منو لال' منوھر سنگھ آدی ھندو پچی‌کاروں' جڑیوں اور کاریگروں کے نام مغل اُلیکھوں میں درج ھیں جو بڑی بڑی تنخواھوں پر تاج بنانے کے لئے مقرر تھے .

یہ فرض کرنا بالکل غلط ھوگا کہ پچی‌کاری اور پتھروں کی نقاشی مغلوں سے پہلے بھارت میں تھی ھی نہیں . ھیول 15ویں صدی کے چتوڑ کے ایک جین مندر کا ذکر کرتا ھے جس میں عقیق کی پچی‌کاری کا کام موجود تھا . سرجان مارشل مانڈو میں اِس سے بھی پہلے کی پچی‌کاری کا ذکر کرتے ھیں .❋ اُودےپور میں شہزادہ خرم کے لئے سن 1623 میں جو جگ مندر محل بنایا گیا اُس میں بھی خوبصورت پچی‌کاری کا کام کیا گیا تھا .

مغل تعمیری کلا میں پچی‌کاری کا کام دراصل مول روپ سے ایرانی ھے . اُس میں اِٹالین اثر کی بات ڈھونڈھنا ایک دور کی سوجھ ھے . اِس نقاشی کی پاشرو بھومی سب ایرانی ھے—سرو کے پیڑ' پھولوں کے گملے' پھل' شراب کے پیالے'

*—J. U. P. H. S. 111, p. 157.
§—Bernier : Travels, p. 298.
‡—Tavernier : Travels, 1, 98-99.
❋—Annual Report A. S. India 1904-05, p. 5.

कारीगरी है उसके बारे में सर सैयद लिखते हैं—"यह मोजेक कारीगरी इस बात को साबित करती है कि इसकी तामीर में होशियार इटालियन कारीगरों को तैनात किया गया होगा."

ताज में कई जगह जो पत्थर के कटे हुये गमले हैं वे युट्रस्कन कला के नमूने हैं और कहा जाता है कि वे इस बात को साबित करते हैं कि इनकी डिज़ाइन बनाने वाले इटालियन कारीगर थे.

इसके अलावा यह भी एक तय शुदा सचाई की तरह कहा जाता है कि मुग़ल काल में आगरा और दिल्ली में मुग़ल बादशाहों के यहां अनेक इटालियन कलाकार और कारीगर नौकर थे. यह हो सकता है कि इन लोगों ने इटली की फ्लोरेन्टाइन कला टेकनीक हिन्दुस्तानी कारीगरों को सिखाई हो. रेवरेन्ड ई० टेरी, जो सर टामस रो के साथ क़रीब तीन बरस तक जहांगीर के दरबार में रहा है, लिखता है—"इस मुल्क में जेज़ुएट ईसाई बहुत थोड़े हैं. इनमें कुछ इटालियन हैं जो मुग़ल दरबार में बड़ी बड़ी तनख़ाहों पर हीरे और क़ीमती पत्थर काटने के लिये मुक़र्रर हैं."* टेरी के इस बयान को लेकर दलील दी जाती है कि यहां इटालियन जवाहरात-तराश पच्चीकारी करने वाले भी थे.

मनूशी लिखता है कि मुग़ल दरबार में बहुत बड़ी तादाद में यूरोपियन संगतराश, इनैमेल करने वाले, सुनार, सर्जन और तोपची थे.† होस्टन का कहना है कि इनैमेल करने वालों की सूची में ही इटालियन पच्चीकार शामिल थे. होस्टन के मुताबिक़ पुर्तगाली शब्द 'एस्मेल्टर' का अर्थ 'इनैमेल करने वाले' और 'रंग बिरंगी पच्चीकारी करने वाले' होता है.

होस्टन के मुताबिक़ मुग़ल दरबार में हीरा काटने वाले और इनैमेल करने वाले इटालियन ठीक उस समय मौजूद थे जब भारत में पच्चकारी की कला ख़ूब फैल रही थी और इससे पच्चकारी पर इटैलियन असर की ताईद होती है.‡

कात्रू दिल्ली की जिस सब से ख़ूबसूरत पच्चकारी की मिसाल देता है बदक़िस्मती से अब वह मौजूद नहीं है. उसके बयान से यह मालूम होता है कि यह पच्चीकारी एक अंगूरीबेल की थी जिसमें बड़ी साइज़ के क़ीमती पत्थर लगाये गये थे. इसमें पत्तियां मरकत की थीं और गुच्छों में लटके हुये अंगूर हीरों और लालों के थे.❋ कात्रू के इस बयान का समर्थन जेन्टिल ने भी किया है.♆ होस्टन



کاریگری ھے اُس کے بارے میں سر سید لکھتے ھیں—"یہ موزیک کاریگری اِس بات کو ثابت کرتی ھے کہ اِس کی تعمیر میں ھوشیار اِٹالین کاریگروں کو تعنات کیا گیا ھوگا."

تاج میں کئی جگہ جو پتھر کے کٹے ھوئے گملے ھیں وےیوٹرسکن کلا کے نمونے ھیں اور کہا جاتا ھے کہ وے اِس بات کو ثابت کرتے ھیں کہ اِن کی ڈیزائن بنانے والے اِٹالین کاریگر تھے.

اِس کے علاوہ یہ بھی ایک طےشدہ سچائی کی طرح کہا جاتا ھے کہ مغل کال میں آگرہ اور دلی میں مغل بادشاھوں کے یہاں انیک اِٹالین کلاکار اور کاریگر نوکر تھے یہ ھوسکتا ھے کہ اِن لوگوں نے اِٹلی کی فلورینٹائن کلا ٹیکنیک ھندستانی کاریگروں کو سکھائی ھو. ریورینڈ ای. ٹیری، جو سر ٹامس رو کے ساتھ قریب تین برس تک جہانگیر کے دربار میں رھا ھے، لکھتا ھے—"اِس ملک میں جیزوئٹ عیسائی بہت تھوڑے ھیں. اِن میں کچھ اِٹالین ھیں جو مغل دربار میں بڑی بڑی تنخواھوں پر ھیرے اور قیمتی پتھر کاٹنے کے لئے مقرر ھیں."* ٹیری کے اِس بیان کو لیکر دلیل دی جاتی ھے کہ یہاں اِٹالین جواھرات-تراش پچی‌کاری کرنے والے بھی تھے.

منوشی لکھتا ھے کہ مغل دربار میں بہت بڑی تعداد میں یوروپین سنگتراش، انیمل کرنے والے، سونار، سرجن اور توپچی تھے.† ھوسٹن کا کہنا ھے کہ انیمل کرنے والوں کی سوچی میں ھی اِٹالین پچی‌کار شامل تھے. ھوسٹن کے مطابق پرتگالی شبد 'ایسمیلٹر' کا ارتھ 'انیمل کرنے والے' اور 'رنگ برنگی پچی‌کاری کرنے والے' ھوتا ھے.

ھوسٹن کے مطابق مغل دربار میں ھیرا کاٹنے والے اور انیمل کرنے والے اِٹالین ٹھیک اُس سمے موجود تھے جب بھارت میں پچی‌کاری کی کلا خوب پھیل رھی تھی اور اِس سے پچی‌کاری پر اٹیلین اثر کی تائید ھوتی ھے.‡

کاترو دلی کی جس سب سے خوبصورت پچی‌کاری کی مثال دیتا ھے بدقسمتی سے اب وہ موجود نہیں ھے. اُس کے بیان سے یہ معلوم ھوتا ھے کہ یہ پچی‌کاری ایک انگوری بیل کی تھی جس میں بڑی سائز کے قیمتی پتھر لگائے گئے تھے. اِس میں پتیاں مرکت کی تھیں اور گچھوں میں لٹکے ھوئے انگور ھیروں اور لعلوں کے تھے.❋ کاترو کے اِس بیان کا سمرتھن جینٹل نے بھی کیا ھے♆ ھوسٹن

*—Terry : A Voyage to East Indies.

†—Manucci : Storia de Mogor.

‡—Annual Report of the Jesuits for 1 97 J. A. S. B. 1896.

❋—Catrou: The General History of the Mogal Empire, pp. 22 -28.

♆—Gentil : Memoirs, pp. 173-74.

# मुग़लों की इमारत बनाने की कला

डाक्टर नन्दलाल चैटर्जी, एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट०

'क्या मुग़ल निर्माण (तामीर) कला पर इटली का असर पड़ा था?' इसके पक्ष और विपक्ष में अकसर ऐतिहासिक बहस उठाई जाती है. स्मिथ, बर्गेस, फ़र्गुसन, रेवरेन्ड एच० हॉस्टेन और कई दूसरे इतिहासज्ञों का कहना है कि मुग़ल इमारतों में पच्चीकारी की कला की शुरूआत मुग़ल दरबार में रहने वाले इटालियन कलाकारों ने की.

कहा जाता है कि आगरा और दिल्ली की पच्चीकारी की कुछ डिजाइनें उस जमाने की फ़्लोरेन्स की कला से मिलती जुलती हैं. इसलिये यह अन्दाज़ा लगाया जाता है कि इन्हें फ़्लोरेन्स के कलाकारों ने बनाया होगा. विन-सेन्ट ए० स्मिथ लिखता है—"ताजमहल के अन्दर जो जालीदार रेलिंग है (ऊपर की नक़ली क़ब्र के चारों तरफ़) वह शाहजहां के समय की कला का सबसे उम्दा नमूना है. इस कला का पैटर्न एशियाई कला के मुक़ाबले में इटली की नवजागरण-कला से ज्यादा मिलता है."* सर जान मार्शल भी, जो इस दलील के खिलाफ़ हैं कि ताज का नक़्शा इटालियनों का बनाया हुआ है, इस राय के हैं कि इस जालीदार रेलिंग की पैटर्न पर फ़्लोरेन्टाइन कला का असर दिखाई देता है.

दिल्ली में (दीवाने आम में) आरफ़िअस (प्राचीन यूनान का एक अद्भुत गायक) की वायलेन बजाती हुई और पशु पक्षियों से घिरी हुई जो तसवीर है, वह भी इटालियन चित्रकार की बनाई हुई बताई जाती है और यह समझा जाता है कि अमर इटालियन चित्रकार रफ़ाएल की इस अपूर्व तसवीर को चित्रित करने के लिये कुछ इटालियन कलाकार मुक़र्रर किये गये थे. चित्रों के इस पेनल में आरफ़िअस की यूनानी और रोमी कहानी चित्रित है. इसलिये इसे भारतीय निर्माण कला पर इटालियन असर का जबर-दस्त सबूत कहकर पेश किया जाता है. यहां तक कि सर सय्यद अहमद ख़ां ने भी अपनी किताब 'असरे सनादीद' में यह क़ुबूल किया है—"चूंकि सिर्फ़ यूरोपियन ही इस चित्र से परिचित थे इसलिये बिलाशक इस बात को कहा जा सकता है कि शाहजहानी क़िले के तय्यार करने में जो कारीगर लगे हुए थे उनमें इटली से आये हुए यूरोपियन कारीगर भी थे." महल के अन्दर हमामों में जो मोजेक

# مغلوں کی عمارت بنانے کی کلا

ڈاکٹر نندلال چٹرجی، ایم. اے.، پی . ایچ . ڈی.، ڈی . لٹ .

'کیا مغل نرمانڑ (تعمیر) کلا پر اِٹلی کا اثر پڑا تھا؟' اِس کے پکش اور وپکش میں اکثر ایتہاسک بحث اُٹھائی جاتی ھے. اِسمتھ، برگیس، فرگوسن، ریورینڈ ایچ . ھوسٹین اور کئی دوسرے اِتہاسگیوں کا کہنا ھے کہ مغل عمارتوں میں پچی‌کاری کی کلا کی شروعات مغل دربار میں رھنے والے اِٹالین کلاکاروں نے کی .

کہا جاتا ھے کہ آگرہ اور دلی کی پچی‌کاری کی کچھ ڈیزائنیں اُس زمانے کی فلورینس کی کلا سے ملتی جلتی ھیں. اِس لئے یہ اندازہ لگایا جاتا ھے کہ اِنھیں فلورینس کے کلاکاروں نے بنایا ھوگا . ونسینٹ اے . اِسمتھ لکھتا ھے—"تاج محل کے اندر جو جالیدار ریلنگ ھے (اُوپر کی نقلی قبر کے چاروں طرف) وہ شاھجہاں کے سمئے کی کلا کا سب سے عمدہ نمونہ ھے . اُس کلا کا پیٹرن ایشائی کلا کے مقابلے میں اِٹلی کی نوجاگرنڑ کلا سے زیادہ ملتا ھے."* سر جان مارشل بھی، جو اِس دلیل کے خلاف ھیں کہ تاج کا نقشہ اِٹالینوں کا بنایا ھوا ھے، اِس رائے کے ھیں کہ اِس جالیدار ریلنگ کی پیٹرن پر فلورینٹائن کلا کا اثر دکھائی دیتا ھے .

دلی میں (دیوان عام میں) عارفیس (پراچین یونان کا ایک ادبھت گایک) کی وائلین بجاتی ھوئی اور پشوپکشیوں سے گھری ھوئی جو تصویر ھے، وہ بھی اِٹالین چترکار کی بنائی ھوئی بتائی جاتی ھے اور یہ سمجھا جاتا ھے کہ امر اِٹالین چترکار ریفائل کی اِس اپورو تصویر کو چترت کرنے کے لئے کچھ اِٹالین کلاکار مقرر کئے گئے تھے . چتروں کے اس پینل میں عارفیس کی یونانی اور رومی کہانی چترت ھے . اِس لئے اِسے بھارتیہ نرمانڑ کلا پر اِٹالین اثر کا زبردست ثبوت کہکر پیش کیا جاتا ھے . یہاں تک کہ سر سید احمد خاں نے بھی اپنی کتاب 'آثارالصنادید' میں یہ قبول کیا ھے—"چونکہ صرف یوروپین ھی اِس چتر سے پریچت تھے اس لئے بلاشک اِس بات کو کہا جاسکتا ھے کہ شاھجہانی قلعے کے تیار کرنے میں جو کاریگر لگے ھوئے تھے اُن میں اِٹلی سے آئے ھوئے یوروپین کاریگر بھی تھے." محل کے اندر حماموں میں جو موزیک

* -History of Art in India and Ceylon, p. 437.

हमारे परशुरामों को इस नई आवाज़ की क़दर करनी चाहिये. अगर यह उनकी समझ में नहीं आती तो भृगुराज परशुराम की तरह मैदान से कृपापूर्वक हट जायें और राम को मौक़ा दें कि वह नया समाज रचे. न लक्ष्मणों को ही यह शोभा देगा कि दूसरों पर सदा उंगली उठाते रहें. उन्हें समझना होगा कि परशुरामों ने बहुत ही शानदार और लाजवाब काम किया है. यह काम इतिहास भूल नहीं सकता. उसी के आधार पर हम आगे का नक़शा बना सकते हैं. श्रद्धापूर्वक हमें उनके आगे नत-मस्तक होना चाहिये और जो भी वह दें ख़ुशी ख़ुशी लेना चाहिये. लेकिन उनसे कोई लालसा नहीं रखनी चाहिये. जो भी वह दें सो सर आंखों पर क़ुबूल हो. जो न दें, उसकी शिकायत कैसी? और हमको अपना काम ईमानदारी से, लगातार, सच्चाई से करते रहना है. जिन मान्यताओं को हम सही समझते हैं उन पर सीधे बढ़ते ही जाना है.

अपने मां-बाप की और बाबा-दादी की बलिहारी जिन्होंने अंग्रेज़ी राज को हिन्दुस्तान से साफ़ कर दिया. उनको हमारे बार-बार प्रणाम हैं. उनका जो गहरा अनुभव है वह हमारे लिये अनमोल धरोहर है. उसे हम संभालें. वह धनुष का काम देगा. और हमारी जवानी, हमारा उत्साह, हमारा ज़ोर काम देगा तीर का. इन दोनों के मेल से ही हम ऊंचे से ऊंचा, दूर से दूर का निशाना पा सकेंगे.

बुज़ुर्गों का अनुभव और जवानों का ख़ून, इन दोनों से मिलकर ही हिन्दुस्तान का सांचा बदलेगा. तभी नया देश बनेगा. तभी नया इन्सान बनेगा.



همارے پرشراموں کو اِس نئی آواز کی قدر کرنی چاهئے. اگر یہ اُن کی سمجھ میں نہیں آتی تو بھریگوراج پرشرام کی طرح میدان سے کرپا پوروک هٹ جائیں اور رام کو موقعہ دیں کہ وہ نیا سماج رچے. نہ لکشمنوں کو هی یہ شوبھا دیگا کہ دوسروں پر سدا اُنگلی اُٹھاتے رهیں. اُنهیں سمجھنا هوگا کہ پرشراموں نے بہت هی جاندار اور لاجواب کام کیا هے. یہ کام اتیهاس بھول نہیں سکتے. اُسی کے آدھار پر هم آگے کا نقشہ بنا سکتے هیں. شردھا پوروک همیں اُن کے آگے نت مستک هونا چاهئے اور جو بھی وہ دیں خوشی خوشی لینا چاهئے. لیکن اُن سے کوئی لالسا نہیں رکھنی چاهئے. جو بھی وہ دیں سو سر آنکھوں پر قبول هو. جو نہ دیں' اُس کی شکایت کیسی؟ اور همکو اپنا کام ایمانداری سے' لگاتار' سچائی سے کرتے رهنا هے. جن مانیتاؤں کو هم صحیح سمجھتے هیں اُن پر سیدھے بڑھتے هی جانا هے.

اپنے ماں باپ کی اور بابا دادی کی بلہاری جنہوں نے انگریزی راج کو هندستان سے صاف کردیا. اُن کو همارے بار بار پرنام هیں. اُن کا جو گہرا انوبھو هے وہ همارے لئے انمول دھروهر هے. اُسے هم سنبھالیں. وہ دھنشیہ کا کام دیگا. اور هماری جوانی' همارا اُتساہ' همارا زور کام دیگا تیر کا. اِن دونوں کے میل سے هی هم اُونچے سے اُونچا' دور سے دور کا نشانہ پاسکینگے.

بزرگوں کا انوبھو اور جوانوں کا خون' اِن دونوں سے ملکر هی هندستان کا سانچہ بدلیگا. تبھی نیا دیش بنیگا. تبھی نیا اِنسان بنیگا.

---

एक कर्मकान्डी यात्री को चलते चलते चमारों के गांव में रात हो गई. भूक के मारे पेट में चूहे कबड्डी खेल रहे थे मगर चमारों के यहां खाने से हिचकते थे. आख़िर चमारों के अनुरोध पर दलिया स्वयं पका कर खा लेना मंज़ूर कर लिया. दलिया पका कर एक लकड़ी की छीपटी से खाने लगे तो किसी ने पूछा—

"महाराज! हाथ से न खाकर छीपटी से क्यों खा रहे हैं?"

कर्मकान्डी गरम होकर बोले—"अरे अन्धे, जानता नहीं कि यह दलिया चमारिन के हाथ का कूटा हुआ है. इसे हाथ से छूकर धर्म भ्रष्ट थोड़े ही होना है!"

—गहरे पानी पैठ से

ایک کرمکانڈی یاتری کو چلتے چلتے چماروں کے گاؤں میں رات هوگئی. بھوک کے مارے پیٹ میں چوھے کبڈی کھیل رهے تھے مگر چماروں کے یہاں کھانے سے هچکتے تھے. آخر چماروں کے انورودھ پر دلیا سویم پکاکر کھالینا منظور کرلیا. دلیا پکاکر ایک لکڑی کی چھیپٹی سے کھانے لگے تو کسی نے پوچھا—

"مہاراج! هاتھ سے نہ کھا کر چھیپٹی سے کیوں کھا رهے هیں؟"

کرمکانڈی گرم هوکر بولے—"ارے' اندھے' جانتا نہیں کہ یہ دلیا چمارن کے هاتھ کا کوٹا هوا هے. اِسے هاتھ سے چھوکر دھرم بھرشٹ تھوڑے هی هونا هے!"

—گہرے پانی پیٹھ سے

---

याद भी नहीं आती. 1948-49 के तिलंगाना किसान विद्रोह ने सिखाया: हर काश्तकार का जमीन पर हक़ है. लेकिन हमारे परशुराम पड़े हैं सीलिंगें बनाने के फेर में—वह भी बीस-बीस एकड़ की—सो भी ऐसे उपजाऊ इलाक़े में जैसे गोदावरी और कृष्णा का डेल्टा—जिससे कि बे-जमीन को तो तिल भर भी जमीन नहीं मिल सकती. इस तरह पर सब परशुराम—चाहे वह किसी भी ख्याल के क्यों न हों—अपना ही रंग जमाना चाहते हैं, और हमेशा के लिये गद्दी पर बरक़रार रहना चाहते हैं.

भला लक्ष्मणों को यह कैसे बर्दाश्त हो ? जरा देखिये तो हमारी यूनिवर्सिटियों को. अगर हमारे वाइस चांसलरों और प्रोफ़ेसरों का बस चले तो जन्म जन्म तक अंग्रेजी में ही पढ़ें पढ़ायें, ज्यादा से ज्यादा तनख्वाह लेकर कम से कम घंटे लैक्चर दें और शरीर श्रम के तौर पर सुई में डोरा भी न डालें. 1947 के बाद से देश का पटवारी, पुलिस सिपाही और किसान पहले के मुक़ाबले आगे बढ़ा है, लेकिन यह विद्वान मंडली इंच भर भी खिसकने को राजी नहीं है. देश के जीवन में दक़ियानूसी और लकीर की फ़क़ीरी करने वाले हिस्से का अजीब नमूना हैं. वह पढ़ायेंगे गुलीवर्ज़ ट्रैविल्स और बासवैल्ज़ जानसन, लेकिन न कबीर, न बंकिमचंद्र, न ज्ञानदेव, न तिरूकुरल. अंग्रेजी साहित्य के महत्व को हम कम नहीं करते, उसकी क़दर हम खूब करते हैं, लेकिन क्या वह मातृभाषा के साहित्य की जगह ले सकता है ? न लेना चाहिये, न ले ही सकता है.

आजकल के जमाने में जब सारे आलम में शरीर-श्रम की इज्जत पर जोर दिया जा रहा है, तब भी हमारी यूनिवर्सिटियों और कालिजों में शरीर-श्रम ही नहीं सिखलाया जाता. फिर वाइस चांसलर हो या प्रिंसपिल-चाहे वह कुंवारा है या उस पर थोड़ा ही बोझ है—ऐसे हर प्रोफ़ेसर या टीचर से—चाहे प्रोफ़ेसरों और टीचरों के बड़े बड़े कुटुम्ब हों और कितनी भी जिम्मेदारी उन पर क्यों न हो—ऊंची तलब दी जाती है. हमारे यह ऊंचे ऊंचे विद्यालय क्या हैं ?—मानो आर्थिक विषमता के, शरीर-श्रम-हीनता के और मातृ-भाषा-वैर के सनातन अड्डे हैं. ऐसी हालत में अगर हमारे लक्ष्मणों को तैश आजाये और यह सब बर्दाश्त न हो सके तो क्या ताज्जुब है ? हमें ताज्जुब तो सचमुच यह है कि किस धीरज से वह पेश आ रहे हैं. किसी और देश की बात होती तो या तो शिक्षकों को रास्ता दिखाते या शिक्षा संस्था को ही आग लगा देते. लेकिन वह ऐसा नहीं करके, जब्त खा रहे हैं. यह देश की पुरानी आध्यत्मिक संस्कृति का, अपनी खानदानी का नतीजा है जो इन पर ब्रेक लगाये हुए है.

यही रंग दूसरे दायरों में है. लोगों की सेहत जितनी ज्यादा सुधरती है, डाक्टर उतना ही घबड़ाते हैं. लोग आपस



یاد بھی نہیں آتی ۔ 1948-49 کے تیلنگانا کسان ودروہ نے سکھایا : ہر کاشتکار کا زمین پر حق ھے ۔ لیکن ھمارے پرشرام پڑے ھیں سیلنگیں بنانے کے پھیر میں—وہ بھی بیس بیس ایکڑ کی—سو بھی ایسے اُپجاؤ علاقے میں جیسے گوداوری اور کرشنا کا ڈیلٹا—جس سے کہ بےزمین کو تو تل بھر بھی زمین نہیں مل سکتی ۔ اِس طرح پر سب پرشرام—چاھے وہ کسی بھی خیال کے کیوں نہ ھوں—اپنا ھی رنگ جمانا چاھتے ھیں' اور ھمیشہ کے لئے گدی پر برقرار رھنا چاھتے ھیں ۔

بھلا لکشمنوں کو یہ کیسے برداشت ہو ؟ ذرا دیکھئے تو ھماری یونیورسٹیوں کو ۔ اگر ھمارے وائس چانسلروں اور پروفیسروں کا بس چلے تو جنم جنم تک انگریزی میں ھی پڑھیں پڑھائیں' زیادہ سے زیادہ تنخواہ لے کر کم سے کم گھنٹے لیکچر دیں اور شریر شرم کے طور پر سوئی میں ڈورا بھی نہ ڈالیں ۔ 1947 سے بعد سے دیش کا پٹواری' پولس' سپاھی اور کسان پہلے کے مقابلے آگے بڑھا ھے' لیکن یہ ودوان منڈلی انچ بھر بھی کھسکنے کو راضی نہیں ھے ۔ دیش کے جیون میں دقیانوسی اور لکیر کی فقیری کرنے والے حصے کا عجیب نمونہ ھیں ۔ وہ پڑھائینگے گلیورز ٹریولس اور باسویلز جانسن' لیکن نہ کبیر' نہ بنکم چندر' نہ گیان دیو' نہ ترروکورل. انگریزی ساھتیہ کے مہتو کو ھم کم نہیں کرتے' اُس کی قدر ھم خوب کرتے ھیں' لیکن کیا وہ ماتر بھاشا کے ساھتیہ کی جگہ لے سکتا ھے ؟ نہ لینا چاھئے' نہ لے ھی سکتا ھے ۔

آجکل کے زمانے میں جب سارے عالم میں شریر شرم کی عزت پر زور دیا جا رہا ھے' تب بھی ھماری یونیورسٹیوں اور کالجوں میں شریر شرم ھی نہیں سکھلایا جاتا. پھر وائس چانسلر ھو یا پرنسپل--چاھے وہ کنوارا ھے یا اُس پر تھوڑا ھی بوجھ ھے --اُسے ھر پروفیسر یا ٹیچر سے --چاھے پروفیسروں اور ٹیچروں کے بڑے بڑے کٹمب ھوں اور کتنی بھی ذمہ‌داری اُن پر کیوں نہ ھو—اُونچی طلب دی جاتی ھے ۔ ھمارے یہ اُونچے اُونچے ودیالیہ کیا ھیں ؟—مانو اُرتھک وشمتا کے' شریر شرم ھینتا کے اور ماتر بھاشا بیر کے سناتن اڈے ھیں ۔ ایسی حالت میں اگر ھمارے لکشمنوں کو طیش آجائے اور یہ سب برداشت نہ ھوسکے تو کیا تعجب ھے ؟ ھمیں تعجب تو سچ مچ یہ ھے کہ کس دھیرج سے وہ پیش آرھے ھیں ۔ کسی اور دیش کی بات ھوتی تو یا تو شکشکوں کو راستہ دکھاتے یا شکشا سنستھا کو ھی آگ لگا دیتے ۔ لیکن وہ ایسا نہیں کرکے' ضبط کھا رھے ھیں. یہ دیش کی پرانی ادھیاتمک سنسکرتی کا' اپنی خاندانی کا نتیجہ ھے جو اُن پر بریک لگائے ھوئے ھے ۔

یہی رنگ دوسرے دایروں میں ھے ۔ لوگوں کی صحت جتنی زیادہ سدھرتی ھے' ڈاکٹر اُتنا ھی گھبراتے ھیں. لوگ آپس

एक सच्चे क्रान्ति दर्शी की तरह. तुलसीदास राम से कहलाते हैं :

राम मात्र लघु नाम हमारा
परसु सहित बड़ नाम तोहारा

यह तो हद हो गई. परशुराम दोनों का मानो ख़ात्मा ही कर देंगे. राम को दया आती है और ठंडे वचन कह कर परशुराम का गुस्सा शान्त किया. एकदम से परशुराम की आंखें खुल गईं. वह राम को प्रणाम करते हैं और चुपचाप चले जाते हैं.

अब यह परशुराम कौन ? बीते युग या जाने वाले ज़माने के नेता या अवतार ! यह लक्ष्मण कौन ? आधुनिक विश्वविद्यालय का एक नौजवान जिसे मौजूदा हालत से भयानक असंतोष है ! और राम कौन ? नये युग या आने वाले ज़माने के नेता या अवतार ! परशुराम के गुस्से का कारण यह था कि वह नये युग या नये नेता को नहीं पहचान रहे थे. वह इसी घमंड में थे कि मेरा ही ज़माना सतत चल रहा है. लेकिन जिस पल पर उन्हें होश आया, उनका लक्ष्मण के साथ व्यवहार बदल गया और वह नौ-दो-ग्यारह हो गये.

ठीक यही सूरत आज है. हमारे नेता, पदाधिकारी, राज्यकर्त्ता या सत्ताधारी अभी अपनी पुरानी दुनिया में ही हैं. वह यह नहीं देख रहे हैं कि वह ज़माना ख़त्म हुआ और नया आया है. इसी वजह से वह पुरानी, गई-गुज़री और निकम्मी मान्यताओं से चिपके हुए हैं. ऊपर से यह भी चाहते हैं कि हमारे लक्ष्मण भी उन्हीं से चिपके रहें. मगर ज़माने की धारा तो तेज़ी से आगे बढ़ती जा रही है, और उस धारा के साथ लक्ष्मणों को बहना चाहिये, और वह बह भी रहे हैं. इस पर हमारे परशुराम बुज़ुर्ग और भी नाराज़ होते हैं और ऐसी आंखें दिखाते हैं मानो सब लक्ष्मणों को ही नेस्त नाबूद कर देंगे.

कौन कौन सी हैं वह मान्यतायें जिनको हमारे पुराने परशुराम छोड़ते नहीं ?—चाहे वह कांग्रेस में हों या प्रजा समाजवादी पार्टी में या कम्यूनिस्ट या जनसंघ या किसी भी पार्टी में ? हम यह जाहिर करना चाहेंगे कि यह परशुराम हमें हर एक पार्टी में मिलते हैं. फ़्रांस की क्रान्ति ने एक मंत्र सिखाया: भाईचारा, बराबरी और आज़ादी. लेकिन इन परशुरामों के जीवन में यह तीनों ही गायब हैं. रूस की क्रान्ति ने दूसरा मंत्र सिखाया: मज़दूरों का हो राज. लेकिन यह परशुराम अपनी ही तानाशाही बघारते हैं और अपनी पार्टी या देश पर अपना ही रोब जमाना चाहते हैं. हिन्दुस्तान का इतिहास ज़रा लें. कराची कांग्रेस ने एक मंत्र दिया: बुनियादी अधिकार सबको और ऊंची से ऊंची तनख़्वाह पांच सौ. लेकिन हमारे परशुरामों को इसकी मानो



ایک سچے کرانتی درشی کی طرح . تلسی داس رام سے کہلاتے ہیں :

رام ماتر لگھو نام ھمارا
پرسو سہت بڑنام تہارا

یہ تو حد ھوگئی . پرشرام دونوں کا مانو خاتمہ ھی کر دینگے . رام کو دیا آتی ھے اور ٹھنڈے وچن کہکر پرشرام کا غصہ شانت کیا . ایکدم سے پرشرام کی آنکھیں کھل گئیں . وہ رام کو پرنام کرتے ھیں اور چپ چاپ چلے جاتے ھیں .

اب یہ پرشرام کون ؟ بیتے یگ یا جانے والے زمانے کے نیتا یا اوتار ! یہ لکشمن کون ؟ آدھونک وشوودیالیہ کا ایک نوجوان جسے موجودہ حالت سے بھیانک اسنتوش ھے ! اور رام کون ؟ نئے یگ یا آنے والے زمانے کے نیتا یا اوتار ! پرشرام کے غصے کا کارن یہ تھا کہ وہ نئے یگ یا نئے نیتا کو نہیں پہچان رھے تھے . وہ اِسی گھمنڈ میں تھے کہ میرا ھی زمانہ ستت چل رھا ھے . لیکن جس پل پر اُنھیں ھوش آیا' اُن کا لکشمن کے ساتھ ویوھار بدل گیا اور وہ نو دو گیارہ ھوگئے .

ٹھیک یہی صورت آج ھے . ھمارے نیتا' پدادھیکاری' راجیہ کرتا یا ستتا دھاری ابھی اپنی پرانی دنیا میں ھی ھیں . وہ یہ نہیں دیکھ رھے ھیں کہ وہ زمانہ ختم ھوا اور نیا آیا ھے. اِسی وجہ سے وہ پرانی' گئی گذری اور نکمی مانیتاؤں سے چپکے ھوئے ھیں. اوپر سے یہ بھی چاھتے ھیں کہ ھمارے لکشمن بھی اُنھیں سے چپکے رھیں . مگر زمانے کی دھارا تو تیزی سے آگے بڑھتی جا رھی ھے' اور اُس دھارا کے ساتھ لکشمنوں کو بہنا چاھئے' اور وہ بہ بھی رھے ھیں . اِس پر ھمارے پرشرام بزرگ اور بھی ناراض ھوتے ھیں اور ایسی آنکھیں دکھاتے ھیں مانو سب لکشمنوں کو ھی نیست نابود کر دینگے .

کون کون سی ھیں وہ مانیتائیں جن کو ھمارے پرانے پرشرام چھوڑتے نہیں ؟ — چاھے وہ کانگریس میں ھوں یا پرجا سماجوادی پارٹی میں یا کمیونسٹ یا جن سنگھ یا کسی بھی پارٹی میں ؟ ھم یہ ظاھر کرنا چاھینگے کہ یہ پرشرام ھمیں ھر ایک پارٹی میں ملتے ھیں . فرانس کی کرانتی نے ایک منتر سکھایا : بھائی چارا' برابری اور آزادی . لیکن اِن پرشراموں کے جیون میں یہ تینوں ھی غائب ھیں . روس کی کرانتی نے دوسرا منتر سکھایا : مزدوروں کا ھو راج . لیکن یہ پرشرام اپنی ھی تانا شاھی بگھارتے ھیں اور اپنی پارٹی یا دیش پہ اپنا ھی رعب جمانا چاھتے ھیں . ھندستان کا اِتہاس ذرا لیں. کراچی کانگریس نے ایک منتر دیا : بنیادی ادھیکار سب کو اور اونچی سے اونچی تنخواہ پانچ سو . لیکن ھمارے پرشراموں کو اِس کی مانو

# नौजवान और बुज़ुर्ग

सुरेश रामभाई

जब से हमारे देश से अंग्रेज़ गये, हमारे बुज़ुर्ग लोग हमारे नौजवान भाई बहनों पर बहुत ख़फ़ा रहते हैं. कहते हैं कि इनमें कोई 'व्यवस्था' नहीं है, कोई 'संयम' नहीं है और कोई 'अनुशासन' नहीं है. शिक्षा विभाग के ऊंचे से ऊंचे अधिकारी भी इस तरह का लांछन लगाया करते हैं. शायद इनकी बातों से ऐसा झलकता है कि कोई जादू नौजवानों पर चढ़ गया है. 15 अगस्त सन 1947 तक जो नेक, सीधे सादे, आज्ञाकारी थे, 16 अगस्त सन 1947 से वह ऐसे बदल गये कि पहचाने नहीं जाते. नतीजा यह है कि हमारे बुज़ुर्गों की अज्ञानता बढ़ रही है. उन्हें तकलीफ़ भी ज्यादा होती है. नौजवान उनसे दूर भगाता है, और दोनों के बीच एक खाई सी बनती चली जा रही है. कुल मिला कर परिणाम यह होता है कि देश की तरक़्क़ी रुकती है. ज़िन्दगी का मज़ा और शान ख़तम हो रही है. भारत की शकल भयानक लगती है.

लेकिन इस हालत के लिये ज़िम्मेदार कौन हैं—नौजवान या बुज़ुर्ग ? पर हम इस सवाल को इस तरह से देखना ग़लत मानते हैं, क्योंकि आज के बुज़ुर्ग कल के नौजवान हैं और आज के नौजवान कल के बुज़ुर्ग हैं. अपने ही साथ खिलवाड़ करना कौन पसन्द करेगा ? दूसरे, यह चीज़ कोई नई या अनोखी नहीं है.

एक मिसाल लें. राजा जनक के उस मन्डप में शिव जी का धनुश टूटा पड़ा है. अचानक पहुंचे परशुराम. धनुष पर निगाह पड़ी कि आपे से बाहर हो गये. लक्ष्मण लगा बनाने उनका मज़ाक़ :

बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं ।
कबहुं न असि रिस कीन्हि गोसाईं ॥

तब तो परशुराम के ग़ुस्से का ठिकाना नहीं रहा. लक्ष्मण हंसे और बोले :

पुनि पुनि मोहि देखाय कुठारू
चहत उड़ावन फूंकि पहारू

अब तो लक्ष्मण की ख़ैरियत नहीं है. परशुराम मानो उसका काम ही तमाम कर देंगे. लेकिन जितना ही परशुराम बिगड़ते हैं उतना ही लक्ष्मण उनको तंग करता है और राम भी मन ही मन मुस्कराते हुए यह नाटक देख रहे हैं. आख़िर उनसे भी न रहा गया और उन्होंने भी चुटकी ली

# نوجوان اور بزرگ

سریش رام بھائی

جب سے ھمارے دیش سے انگریز گئے' ھمارے بزرگ لوگ ھمارے نوجوان بھائی بہنوں پر بہت خفا رھتے ھیں . کہتے ھیں کہ اِن میں کوئی ' ویوستھا ' نہیں ھے ' کوئی ' سنیم ' نہیں ھے ' اور کوئی ' انوشاسن ' نہیں ھے . شکشا وبھاگ کے اُونچے سے اُونچے ادھیکاری بھی اِس طرح کا لانچھن لگایا کرتے ھیں . شاید انکی باتوں سے ایسا جھلکتا ھے کہ کوئی جادو نوجوانوں پر چڑھ گیا ھے. 15 اگست سن 1947 تک جو نیک' سیدھے سادے' آگیاں کاری تھے' 16 اگست سن 1947 سے وہ ایسے بدل گئے کہ پہچانے نہیں جاتے . نتیجہ یہ ھے کہ ھمارے بزرگوں کی اگیانتا بڑھ رھی ھے . اُنھیں تکلیف بھی زیادہ ھوتی ھے . نوجوان اُن سے دور بھاگتا ھے' اور دونوں کے بیچ ایک کھائی سی بنتی چلی جا رھی ھے . کل ملا کر پرینام یہ ھوتا ھے کہ دیش کی ترقی رکتی ھے. زندگی کا مزا اور شان ختم ھورھی ھے . بھارت کی شکل بھیانک لگتی ھے .

لیکن اس حالت کے لئے ذمہ دار کون ھیں—نوجوان یا بزرگ ؟ پر ھم اس سوال کو اِس طرح سے دیکھنا غلط مانتے ھیں' کیونکہ آج کے بزرگ کل کے نوجوان ھیں اور آج کے نوجوان کل کے بزرگ ھیں . اپنے ھی ساتھ کھلواڑ کرنا کون پسند کرے گا ؟ دوسرے' یہ چیز کوئی نئی یا انوکھی نہیں ھے .

ایک مثال لیں . راجہ جنک کے اُس منڈپ میں شیوجی کا دھنش ٹوٹا پڑا ھے . اچانک پہونچے پرشرام . دھنش پر نگاہ پڑی کہ آپے سے باھر ھوگئے . لکشمن لگا بنانے اُن کا مذاق :

بہو دھنوھیں توریں لرکائیں
کبہوں نہ اسی رس کینھ گوسائیں

تب تو پرشرام کے غصے کا ٹھکانہ نہیں رھا . لکشمن ھنسے اور بولے :

پونی پونی موھی دکھایہ کوٹھارو
چہت اُڑاون پھونک پہارو

اب تو لکشمن کی خیریت نہیں ھے . پرشرام مانو اُس کا کام ھی تمام کر دینگے . لیکن جتنا ھی پرشرام بگڑتے ھیں اُتنا ھی لکشمن اُن کو تنگ کرتا ھے اور رام بھی من ھی من مسکراتے ھوئے یہ ناٹک دیکھ رھے ھیں . آخر اُن سے بھی نہ رھا گیا اور اُنھوں نے بھی چٹکی لی

वह है 'खुद शनासी' यानी अपने को पहचानना. हम भंवर की तरह उसकी तलाश में अपने चारों तरफ़ चक्कर लगाते रहते हैं."

"यह जिस्म एक दरिया है. इसके अन्दर दिल एक सीपी है. हक़ उस सीपी के अन्दर का मोती है. बहादुर वही है जो इस दरिया में गोता लगाकर उसमें से उस मोती को निकाल लावे."

"अपने होंटों को बन्द करो, अपनी आंखों को बन्द करो, अपने कानों को बन्द करो, अगर फिर भी तुम्हें अपने अन्दर हक़ की सूरत दिखाई न दे तो हम पर हंस लेना."

दुनिया के शोर गुल से अपने को अन्दर खींचना ही अपने दिल की गुफाओं में अल्लाह को खोजना और उसका दीदार हासिल करना है.

योग सूत्रों में लिखा है :—

"जब आदमी की सब इन्द्रियां यानी उसके सब हवास बाहर की तमाम चीजों से अपने को खींच लेते हैं तब इन सब इन्द्रियों के पीछे आदमी का जो चित्त यानी होश है वह अपने अन्दर की तरफ़ मुड़ता है, यानी जब आदमी के मन की सब हरकतें बन्द हो जाती हैं और मन पूरी तरह शान्त और निश्चल हो जाता है तब उसकी आत्मा अपने को देख पाती है. तब वह देखती है कि सब कुछ वही वह है और कुछ कहीं है ही नहीं. देश और काल यानी मकान और ज़मान तब मिट जाते हैं, हरकत खत्म हो जाती है, और आदमी की आत्मा सब की आत्मा यानी परम आत्मा या रूहेकुल के साथ मिलकर एक हो जाती है. तब कोई ग़ैर नहीं रह जाता."



وہ ہے ' خود شناسی ' یعنی اپنے کو پہچاننا . ہم بھنور کی طرح اُس کی تلاش میں اپنے چاروں طرف چکر لگاتے رہتے ہیں ."

" یہ جسم ایک دریا ہے. اِس کے اندر دل ایک سیپی ہے. حق اُس سیپی کے اندر کا موتی ہے . بہادر وہی ہے جو اِس دریا میں غوطہ لگا کر اِس میں سے اُس موتی کو نکال لاوے ."

" اپنے ھونٹوں کو بند کرو' اپنی آنکھوں کو بند کرو' اپنے کانوں کو بند کرو' اگر پھر بھی تمہیں اپنے اندر حق کی صورت دکھائی نہ دے تو ہم پر ھنس لینا ."

دنیا کے شور و غل سے اپنے کو اندر کھینچنا ہی اپنے دل کی گپھاؤں میں اللہ کو کھوجنا اور اُس کا دیدار حاصل کرنا ہے .

یوگ سوتروں میں لکھا ہے :—

" جب آدمی کی سب اِندریاں یعنی اُس کے سب حواس باہر کی تمام چیزوں سے اپنے کو کھینچ لیتے ہیں تب اِن سب اِندریوں کے پیچھے آدمی کا جو چت یعنی ہوش ہے وہ اپنے اندر کی طرف مڑتا ہے' یعنی جب آدمی کے من کی سب حرکتیں بند ہو جاتی ہیں اور من پوری طرح شانت اور نشچل ہو جاتا ہے تب اُس کی آتما اپنے کو دیکھ پاتی ہے . تب وہ دیکھتی ہے کہ سب کچھ وہی وہ ہے اور کچھ کہیں ہے ہی نہیں . دیش اور کال یعنی مکان اور زمان تب مٹ جاتے ہیں' حرکت ختم ہو جاتی ہے' اور آدمی کی آتما سب کی آتما یعنی پرم آتما یا روح کل کے ساتھ ملکر ایک ہو جاتی ہے . تب کوئی غیر نہیں رہ جاتا."

———

इनसान धर्म के लिये ज़ोर शोर की चर्चा करेगा, गीत गायेगा, नाचेगा, धर्म पर बड़ी बड़ी पुस्तकें लिखेगा, लेख लिखेगा, धर्म के लिये जनूनी लड़ाइयां लड़ेगा, मरेगा, मारेगा, सब कुछ करेगा मगर जीवन में धर्म उतार कर स्वयं धार्मिक पुरुष—धर्मात्मा—न बनेगा !

—सत्यभक्त

اِنسان دھرم کے لئے زور شور کی چرچا کرے گا' گیت گائے گا' ناچے گا' دھرم پر بڑی بڑی پستکیں لکھے گا' لیکھ لکھیگا دھرم کے لئے جنونی لڑائیاں لڑے گا' مرے گا' مارے گا' سب کچھ کرے گا مگر جیون میں دھرم اُتار کر سویم دھارمک پورش— دھرماتما—نہ بنے گا !

—ستیہ بھکت

———

मकाशफ़ा, मुशाहेदा, हाल, दीदार, वज्द, मुश्रायना वग़ैरा. जिसे हम ध्यान या मुराक़बा कहते हैं उसी को चीनी बौद्ध मजहब में 'चान' और जापान में 'जेन' कहते हैं.

योग सूत्रों में लिखा है कि आदमी जिस चीज़ का ध्यान करता है, जिस पर दिल लगाता है, वही वह हो जाता है.

आख़ीर में सब मजहब यही कहते हैं कि जो कुछ है वही है. 'हमा ओस्त' और 'सर्वम् खलु इदम् ब्रह्म' दोनों के यही मानी हैं. अब चूंकि इन्सान अपनी असल हक़ीक़त में उसी अल्लाह से है और वही है इसीलिये इन्सानी समाज की ख़िदमत ही भगवान की सेवा है और यही अल्लाह की इबादत है.

इन्जील में लिखा है :—

"जो नेकी तुमने किसी छोटे से छोटे जानदार के साथ की है वह तुम ने अल्लाह के साथ की.

भागवत में लिखा है :—

"जो नेक इन्सान हैं वह हमेशा दूसरे प्राणियों के दुख से दुखी रहते हैं, उनके दुख को अपना दुख समझते हैं. यही उनकी ईश्वर आराधना है. यही उस ईश्वर की सबसे अच्छी पूजा है जो सब के घट के अन्दर मौजूद है."

"येन केन प्रकारेण—यस्य कस्यापि जन्तुन:

"सन्तोषम् जनयेत् धीमान्—तदेव ईश्वर पूजनम्"

यानी—जिस तरह भी हो सके समझदार आदमी को चाहिये कि जिस प्राणी के भी दिल को हो सके संतोष यानी तसल्ली पहुंचावे. यही ईश्वर की पूजा है.

सूफ़ी कहता है :—

"अगर तू अल्लाह का दीदार हासिल करना चाहता है तो इन्सान की सूरत को देख, उसके अन्दर तुझे अल्लाह यानी हक़ की जात साफ़ हंसती हुई दिखाई देगी."

एक और सूफ़ी कहता है :—

"शक्ले इन्सां में ख़ुदा था मुझे मालूम न था
चांद बादल में छिपा था मुझे मालूम न था"

भागवत में लिखा है :—

"ईश्वर ने अपने रहने के लिये एक दूसरे के बाद बहुत से घर बनाए जैसे धात, पत्थर, पौदे, कीड़े, मछली, रेंगने वाले जानदार, उड़ने वाले पंछी और बड़े बड़े दरिन्दे. पर ईश्वर के लिये यह काफ़ी न हुआ. आख़िरकार उसने आदमी का रूप बनाया. इस रूप में आकर उसने ख़ुद अपने को जाना. इन्सान का जिस्म ही ईश्वर का सबसे बड़ा घर है."

सूफ़ी कहता है :—

"वजूद के इस समन्दर में सिर्फ़ एक ही मोती है और



مکاشفہ، مشاہدہ، حال، دیدار، وجد، معائنہ وغیرہ . جسے ہم دھیان یا مراقبہ کہتے ہیں اُسی کو چینی بودھ مذہب میں ' چان ' اور جاپان میں ' زین ' کہتے ہیں .

یوگ سوتروں میں لکھا ہے کہ آدمی جس چیز کا دھیان کرتا ہے، جس پر دل لگاتا ہے، وہی وہ ہوجاتا ہے .

آخیر میں سب مذہب یہی کہتے ہیں کہ جو کچھ ہے وہی ہے، 'ہمہ اوست' اور سروم کھلو ادم برہمہ، دونوں کے یہی معنی ہیں . اب چونکہ انسان اپنی اصل حقیقت میں اُسی اللہ سے ہے اور وہی ہے اِسی لئے انسانی سماج کی خدمت ہی بھگوان کی سیوا ہے اور یہی اللہ کی عبادت ہے .

اِنجیل میں لکھا ہے :—

" جو نیکی تم نے کسی چھوٹے سے چھوٹے جاندار کے ساتھ کی ہے وہ تم نے اللہ کے ساتھ کی ."

بھاگوت میں لکھا ہے :—

" جو نیک اِنسان ہیں وہ ہمیشہ دوسرے پرانیوں کے دکھ سے دکھی رہتے ہیں، اُن کے دکھ کو اپنا دکھ سمجھتے ہیں . یہی اُن کی ایشور آرادھنا ہے . یہی اُس ایشور کی سب سے اچھی پوجا ہے جو سب کے گھٹ کے اندر موجود ہے ."

" ییِن کین پرکارین—یسیہ کسیاپی جنتنہ
"سنتوشم جنییت دھیمان—تدیو ایشور پوجنم "

یعنی—جس طرح بھی ہوسکے سمجھدار آدمی کو چاہئے کہ جس پرانی کے بھی دل کو ہوسکے سنتوش یعنی تسلی پہنچاوے . یہی ایشور کی پوجا ہے .

صوفی کہتا ہے :—

" اگر تو اللہ کا دیدار حاصل کرنا چاہتا ہے تو اِنسان کی صورت کو دیکھ، اُس کے اندر تجھے اللہ یعنی حق کی ذات صاف ہنستی ہوئی دکھائی دے گی ."

ایک اور صوفی کہتا ہے :—

' شکل اِنسان میں خدا تھا مجھے معلوم نہ تھا
چاند بادل میں چھپا تھا مجھے معلوم نہ تھا "

بھاگوت میں لکھا ہے :—

" ایشور نے اپنے رہنے کے لئے ایک دوسرے کے بعد بہت سے گھر بنائے جیسے دھات، پتھر، پودے، کیڑے، مچھلی، رینگنے والے جاندار، اُڑنے والے پنچھی، اور بڑے بڑے درندے . پر ایشور کے لئے یہ کافی نہ ہوا . آخرکار اُس نے آدمی کا روپ بنایا . اِس روپ میں آکر اُس نے خود اپنے کو جانا . انسان کا جسم ہی ایشور کا سب سے بڑا گھر ہے ."

صوفی کہتا ہے :—

" وجود کے اِس سمندر میں صرف ایک ہی موتی ہے اور

पर अपने फ़र्ज़ से इनसान ग़ाफ़िल नहीं हो सकता. मुहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"कोशिश करना मेरा काम है, कामयाबी नाकामयाबी अल्लाह के हाथ है."

सूफ़ी कहता है :—

"तेरे कामों का असल करने वाला तेरे इस कारख़ाने के अन्दर छिपा हुआ है, तू अगर कारख़ाने के अन्दर जाए तो उसे साफ़ देख लेगा. वही तेरे काम बनाने वाला है. वह तेरे सब कामों में मौजूद है. इसलिये अपने कामों के नतीजों की बाबत तेरा फ़िक्र करना केवल तेरी एक बीमारी है."

गीता में लिखा है :—

"बेलाग होकर तू हमेशा अपने फ़र्ज़ को पूरा करने में लगा रह. इस तरह अगर तू ईश्वर के हाथों में केवल एक औज़ार का काम देता रहेगा तो तू उस परम पुरुष परम आत्मा को पाजायगा."

सब मज़हब हमें यह बताते हैं कि वह ईश्वर जो सब आत्माओं की आत्मा है और जो सब के घट में मौजूद है वही हक़ है, वही सुन्दर और प्यारा है और वही सारी नेकी है. हिन्दू किताबों में 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' के यही मानी हैं. उस 'हक़' को हमें जानना और पहचानना चाहिये. उस 'सुन्दर' और प्यारे की तरफ़ हमें अपने दिल को लगाना चाहिये. उसके नज़दीक पहुंचने के लिये हमें हर तरह से दूसरों के साथ 'नेकी' करनी चाहिये. सत्यम्, शिवम्, और सुन्दरम्, को ही सत्यम्, हितम् और प्रियम् भी कहते हैं. सूफ़ी लोग इन ही तीनों को 'मौजूद' माबूद और मक़सूद' कहते हैं. सूफ़ी कहता है—"ला मौजूद, इल्लाहू, ला माबूद इल्लाहू, ला मक़सूद इल्लाहू." यानी उस एक के सिवा न कोई हक़ है न कोई प्यारा है और न कोई पूजा इबादत का हक़दार है.

इस तरह हम देखते हैं कि सब मज़हबों का सार यानी सब की असल हक़ीक़त एक है. वह हक़ीक़त उसी एक ईश्वर अल्लाह से है और उसके मुताबिक़ चलकर ही इन्सान फिर अल्लाह तक पहुंच सकता है. इसी रास्ते का नाम "योग" यानी "सलूक" है. अलग अलग मज़हबों में इस रास्ते को अलग अलग नाम दिये गए हैं. पर रास्ता एक है. हिन्दुओं की सन्ध्या और उपासना में, मुसलमानों की नमाज़ में और ईसाइयों की दुआ में सबमें इस रास्ते के बीज मौजूद हैं. इस रास्ते के बहुत से निशान हैं. इन निशानों को मुक़ाम भी कहते हैं. इन में कुछ यह हैं :—यम, नियम, तप, चित्त प्रसादन, चित्त परिक्रम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, निर्विकल्प, समाधी—या सूफ़ी शब्दों में तहज़ीबुन्नफ़्स, तसफ़ीयए दिल, नफ़्स कुशी, रियाज़त, तनक़ीयए क़ल्ब, ज़िक्र, फ़िक्र, मुजाहेदा, अशग़ाल, हब्सदम, मुराक़बा,



پر اپنے فرض سے اِنسان غافل نہیں ہوسکتا . محمد صاحب کی ایک حدیث ھے :—

" کوشش کرنا میرا کام ھے' کامیابی ناکامیابی اللہ کے ھاتھ ھے ."

صوفی کہتا ھے :—

" تیرے کاموں کا اصل کرنے والا تیرے اس کارخانے کے اندر چھپا ھوا ھے' تو اگر کارخانے کے اندر جائے تو اُسے صاف دیکھ لے گا . وھی تیرے کام بنانے والا ھے . وہ تیرے سب کاموں میں موجود ھے . اِس لئے اپنے کاموں کے نتیجوں کی بابت تیرا فکر کرنا کیول تیری ایک بیماری ھے ."

گیتا میں لکھا ھے :—

" بےلاگ ھو کر تو ھمیشہ اپنے فرض کو پورا کرنے میں لگا رہ . اِس طرح اگر تو ایشور کے ھاتھوں میں کیول ایک اوزار کا کام دیتا رھے گا تو تو اُس پرم پرش پرم آتما کو پاجائیگا ."

سب مذھب ھمیں یہ بتاتے ھیں کہ وہ ایشور جو سب آتماؤں کی آتما ھے اور جو سب کے گھٹ میں موجود ھے وھی حق ھے' وھی سندر اور پیارا ھے اور وھی ساری نیکی ھے . ھندو کتابوں میں ' ستیم ' ' شیوم ' ' سندرم ' کے یہی معنی ھیں . اُس ' حق ' کو ھمیں جاننا اور پہچاننا چاھئے . اُس ' سندر ' اور پیارے کی طرف ھمیں اپنے دل کو لگانا چاھئے . اُس کے نزدیک پہونچنے کے لئے ھمیں ھر طرح سے دوسروں کے ساتھ ' نیکی ' کرنی چاھئے . ستیم' شیوم اور سندرم کو ھی ستیم' ھتم اور پریم بھی کہتے ھیں . صوفی لوگ اِن ھی تینوں کو ' موجود' ,معبود' اور ' مقصود ' کہتے ھیں . صوفی کہتا ھے کہ—" لا موجود اللہ ھو' لامعبود اللہ ھو' لامقصود اللہ ھو." یعنی اُس ایک کے سوا نہ کوئی حق ھے نہ کوئی پیارا ھے اور نہ کوئی پوجا عبادت کا حقدار ھے .

اِسی طرح ھم دیکھتے ھیں کہ سب مذھبوں کا سار یعنی سب کی اصل حقیقت ایک ھے . وہ حقیقت اُسی ایک ایشور اللہ سے ھے اور اُس کے مطابق چل کر ھی اِنسان پھر اللہ تک پہونچ سکتا ھے . اِسی راستے کا نام " یوگ " یعنی " سلوک " ھے . الگ الگ مذھبوں میں اِس راستے کو الگ الگ نام دیئے گئے ھیں . پر راستہ ایک ھے . ھندوؤں کی سندھیا اور اُپاسنا میں' مسلمانوں کی نماز میں اور عیسائیوں کی دعا میں سب میں اِس راستے کے بیج موجود ھیں . اس راستے کے بہت سے نشان ھیں . اِن نشانوں کو مقام بھی کہتے ھیں . اِن میں کچھ یہ ھیں :—یم' نیم' تپ' چت پرسادن' چت پریکرم' آسن' پرانایام' پرتیاھار' دھیان' دھارنا' نروکلپ' سمادھی— یا صوفی شبدوں میں تہذیب النفس' تصفیۂ دل' نفس کشی' ریاضت' تنقیۂ قلب' ذکر' فکر' مجاھدہ' اشغال' حبس دم' مراقبہ'

सूफ़ी कहता है :—

"जो अपने को जागा हुआ समझता है वह सचमुच सोया हुआ है. उसका जागना उसके सोने से बदतर है. अपनी छोटी ख़ुदी से सोना ही असली जागना और असली होशियारी है. इस होश का समझने वाला वही हो सकता है जो अपनी ख़ुदी की तरफ़ से बेहोश है. लेकिन ज़बान की बात समझे वह जिसके कान हों."

"बरसों मेरा दिल मुझ से ज्ञान के प्याले की मांग करता रहा. ग़ैर से उस चीज़ की ख़्वाहिश करता रहा जो ख़ुद उसके अन्दर मौजूद थी."

"इन्साने कामिल वही है जो मालिक होते हुए सबकी ग़ुलामी करता है और सब की सेवा में लगा रहता है. इसी में आदमी का कमाल है."

मुहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"अफ़ज़लुल अशग़ाल ख़िदमतुन्नास."

यानी—सब से बढ़कर शग़ल ( योग ) आदमी की सेवा है.

सब धर्मों के मानने वाले कभी कभी यह समझ कर अपने को धोका देते रहते हैं कि हमने अपने को पूरी तरह ईश्वर अल्लाह पर छोड़ रक्खा है, जो कुछ करता है वही करता है, हम ईश्वर के हाथ में केवल एक कठपुतली हैं. यह समझकर वह बुरे से बुरे कामों में पड़े रहते हैं. अपने असली फ़र्ज़ और असली दीन धर्म की तरफ़ से बेपरवाह और ग़ाफ़िल रहते हैं. यह धोका बड़ा ज़बरदस्त धोका है. हर काम एक कारण यानी सबब है और हर कारण का कार्य यानी हर सबब का नतीजा होना लाज़मी है. हम में से कोई अपने कामों के नतीजे से नहीं बच सकता. अगर हम कोई काम करने पर मजबूर हैं तो हमें उस काम का नतीजा भुगतने के लिये भी मजबूर होना पड़ेगा. सब धर्मों ने हमें इस धोके से बचाने की कोशिश की है. जब किसी काम के करते समय हमें पल भर के लिये भी यह महसूस हो कि हम वह करें या न करें या यह करें या वह करें तो हमें अपने फ़ैसले के नतीजे को भुगतने के लिये भी तैयार रहना चाहिये.

इन्जील में लिखा है :—

"कल की मत सोचो, जो फ़र्ज़ आज इस समय तुम्हारे सामने है उसे अपनी पूरी शक्ति लगाकर पूरा करो."

गीता में लिखा है :—

"ईश्वर सब जानदारों के दिलों के अन्दर बैठा हुआ है. वही सब को चला रहा है ......ऐ अर्जुन ! तू अपने किसी फ़र्ज़ से ग़ाफ़िल न हो. केवल अपने कामों के नतीजे की परवाह न कर."

लगभग इन्हीं शब्दों में क़ुरान में कहा गया है :—

"सब जानदारों के दिल उस रहमान की उंगलियों पर हैं."



صوفی کہتا ھے :—

" جو اپنے کو جاگا ھوا سمجھتا ھے وہ سچ مچ سویا ھوا ھے . اُس کا جاگنا اُس کے سونے سے بدتر ھے . اپنی چھوٹی خودی سے سونا ھی اصلی جاگنا اور اصلی ھوشیاری ھے . اِس ھوش کا سمجھنے والا وھی ھو سکتا ھے جو اپنی خودی کی طرف سے بےھوش ھے . لیکن زبان کی بات سمجھے وہ جس کے کان ھوں ."

" برسوں میرا دل مجھ سے گیان کے پیالے کی مانگ کرتا رھا . غیر سے اُس چیز کی خواھش کرتا رھا جو خود اُس کے اندر موجود تھی ."

" اِنسان کامل وھی ھے جو مالک ھوتے ھوئے سب کی غلامی کرتا ھے اور سب کی سیوا میں لگا رھتا ھے . اِسی میں آدمی کا کمال ھے ."

محمد صاحب کی ایک حدیث ھے :—

" افضل الاشغال خدمت الناس "

یعنی سب سے بڑھ کر شغل ( یوگ ) آدمی کی سیوا ھے .

سب دھرموں کے ماننے والے کبھی کبھی یہ سمجھکر اپنے کو دھوکہ دیتے رھتے ھیں کہ ھم نے اپنے کو پوری طرح ایشور اللہ پر چھوڑ رکھا ھے' جو کچھ کرتا ھے وھی کرتا ھے' ھم ایشور کے ھاتھ میں کیول ایک کٹھ پتلی ھیں. یہ سمجھکر وہ برے سے برے کاموں میں پڑے رھتے ھیں . اپنے اصلی فرض اور اصلی دین دھرم کی طرف سے بے پرواہ اور غافل رھتے ھیں . یہ دھوکہ بڑا زبردست دھوکہ ھے . ھر کام ایک کارن یعنی سبب ھے اور ھر کارن کا کاریہ یعنی ھر سبب کا نتیجہ ھونا لازمی ھے . ھم میں سے کوئی اپنے کاموں کے نتیجے سے نہیں بچ سکتا . اگر ھم کوئی کام کرنے پر مجبور ھیں تو ھمیں اُس کام کا نتیجہ بھگتنے کے لئے بھی مجبور ھونا پڑے گا . سب دھرموں نے ھمیں اِس دھوکے سے بچانے کی کوشش کی ھے . جب کسی کام کے کرتے سمے ھمیں پل بھر کے لئے بھی یہ محسوس ھو کہ ھم وہ کریں یا نہ کریں یا وہ کریں تو ھمیں اپنے فیصلہ کے نتیجہ کو بھگتنے کے لئے بھی تیار رھنا چاھئے .

اِنجیل میں لکھا ھے :—

"کل کی مت سوچو' جو فرض آج اس سمے تمہارے سامنے ھے اُسے اپنی پوری شکتی لگا کر پورا کرو ."

گیتا میں لکھا ھے :—

" ایشور سب جانداروں کے دلوں کے اندر بیٹھا ھوا ھے . وھی سب کو چلا رھا ھے ..... اے ارجن ! تو اپنے کسی فرض سے غافل نہ ھو . کیول اپنے کاموں کے نتیجے کی پرواہ نہ کر ."

لگ بھگ اِنھیں شبدوں میں قرآن میں کہا گیا ھے :—

" سب جانداروں کے دل اُس رحمان کی اُنگلیوں پر ھیں ."

"हज्ज को जाना क्या है ? अपनी ख़ुदी से दूर भागना. और जाना कहां है ? उस रूहेकुल की तरफ़ जो सबके अन्दर और सब रहनुमाओं की रहनुमा है."

भागवत में लिखा है :—

"दरियाओं के पानी से तीर्थ नहीं होता और न मिट्टी पत्थर के देवता देवता हैं. इनके जरिये तेरे दिल की सफ़ाई में एक जमाना बीत जायगा. पर जो नेक लोग हैं उनके दर्शन करने से ही तू पाक हो जायगा क्योंकि उनका दिल ही भगवान का सिंहासन है."

बौद्ध किताब धम्मपद में लिखा है :—

"आत्मा ही आत्मा का मालिक और रक्षक है, और कोई रक्षक नहीं है. जिस किसी ने अपनी आत्मा को पा लिया उसे वह रक्षक मिल गया जिससे बढ़कर फिर कोई रक्षक नहीं."

गीता में ईश्वर कहता है :—

"नासमझ लोग मेरे उस वजूद की तरफ़ से बेपरवाही करते हैं जो सब आदमियों के जिस्म के अन्दर है. वह यह नहीं जानते कि मैं ही सब प्राणियों के अन्दर और सबकी जान हूं"

"आदमी को चाहिये कि अपनी आत्मा से अपनी आत्मा का उद्धार करे यानी अपनी छोटी ख़ुदी को ऊपर उठाकर सर्व आत्मा यानी सबके आपे में फ़ना कर दे. अपनी आत्मा को गिरने न दे. सबका आपा ही सारे देवता हैं. जो कुछ है सब इसी बड़े आपे के अन्दर है." (गीता और मनुस्मृति)

कहा जाता है कि बुद्ध भगवान के मुंह से जो आख़री शब्द निकले वह यह थे :—

"तुम्हारी आत्मा के अन्दर जो रोशनी है उसी रोशनी में चलो. अपने से बाहर कोई और रोशनी तलाश न करो. आत्मा की ही शरण में आओ और किसी की शरण न ढूंढ़ो. और जितने बाहर के देवता आदि हैं वह सब आने जाने हैं. अमर केवल तुम्हारे अन्दर का सर्वआत्मा है. इसे याद रक्खो और होशियारी और सावधानी के साथ अपने अन्दर के उस अमर रहनुमा के पीछे चलो."

कबीर साहब ने इसी ख़याल को अपने शब्दों में यूं प्रकट किया है :—

"घट घट रमता राम रमैया, कटुक बचन मत बोल रे ! तोहे राम मिलेंगे.

"रंग महल में (यानी अपने अन्दर) दीप बरत है. आसन से मत डोल रे तोहे राम मिलेंगे."

गीता में कहा गया है :—

"और सब प्राणियों के लिये जो रात है संयमी यानी बाहोश आदमी उसी में जागता है और जिसमें सब प्राणी जागते हैं वह साहबे नजर मुनि के लिये रात है."



"حج کو جانا کیا ھے ؟ اپنی خودی سے دور بھاگنا . اور جانا کہاں ھے ؟ اس روح کل کی طرف جو سب کے اندر اور سب رھنماؤں کی رھنما ھے ."

بھاگوت میں لکھا ھے :—

"دریاؤں کے پانی سے تیرتھ نہیں ہوتا اور نہ مٹی پتھر کے دیوتا دیوتا ھیں . ان کے ذریعہ تیرے دل کی صفائی میں ایک زمانہ بیت جائیگا . پر جو نیک لوگ ھیں اُن کے درشن کرنے سے ھی تو پاک ھوجائیگا کیونکہ اُنکا دل ھی بھگوان کا سنگھاسن ھے ."

بودھ کتاب دھمپد میں لکھا ھے :—

"آتما ھی آتما کا مالک اور رکشک ھے' اور کوئی رکشک نہیں ھے . جس کسی نے اپنی آتما کو پالیا اُسے وہ رکشک مل گیا جس سے بڑھ کر پھر کوئی رکشک نہیں ."

گیتا میں ایشور کہتا ھے :—

"ناسمجھ لوگ میرے اس وجود کی طرف سے بے پرواھی کرتے ھیں جو سب آدمیوں کے جسم کے اندر ھے . وہ یہ نہیں جانتے کہ میں ھی سب پرانیوں کے اندر اور سب کی جان ھوں ."

" آدمی کو چاھئے کہ اپنی آتما سے اپنی آتما کا اُدھار کرے یعنی اپنی چھوٹی خودی کو اوپر اٹھا کر سروآتما یعنی سب کے آپے میں فنا کر دے . اپنی آتما کو گرنے نہ دے . سب کا آپا ھی سارے دیوتا ھیں . جو کچھ ھے سب اِسی بڑے آپے کے اندر ھے ." ( گیتا اور منوسمرتی ) .

کہا جاتا ھے کہ بدھ بھگوان کے منہ سے جو آخری شبد نکلے وہ یہ تھے :—

" تمہاری آتما کے اندر جو روشنی ھے اُسی روشنی میں چلو . اپنے سے باھر کوئی اور روشنی تلاش نہ کرو . آتما کی ھی شرن میں آؤ اور کسی کی شرن نہ ڈھونڈھو . اور جتنے باھر کے دیوتا آدی ھیں وہ سب آنے جانے ھیں . امر کیول تمہارے اندر کا سرو آتما ھے . اِسے یاد رکھو اور ھوشیاری اور ساودھانی کے ساتھ اپنے اندر کے اُس امر رھنما کے پیچھے چلو ."

کبیر صاحب نے اِسی خیال کو اپنے شبدوں میں یوں پرگٹ کیا ھے :—

" گھٹ گھٹ رمتا رام رمیا . کٹک بچن مت بول رے ! توھے رام ملیں گے .

رنگ محل میں ( یعنی اپنے اندر ) دیپ برت ھے . آسن سے مت ڈول رے توھے رام ملیں گے ."

گیتا میں کہا گیا ھے :—

" اور سب پرانیوں کے لئے جو رات ھے سنیمی یعنی باھوش آدمی اُسی میں جاگتا ھے اور جس میں سب پرانی جاگتے ھیں وہ صاحب نظر منی کے لئے رات ھے ."

मनुस्मृति में लिखा है :—

"जो आदमी दुनिया के मोह को छोड़ देता है और यह अहद कर लेता है कि वह किसी के दिल में अपने से डर पैदा होने नहीं देगा, उसको भी फिर किसी चीज़ का डर नहीं रह सकता. सब लोक यानी सारे आलम फिर अपनी पूरी शान के साथ उसके सामने खुल जाते हैं."

गीता में लिखा है :—

"जिस आदमी से दुनिया में कोई डर नहीं खाता और जो ख़ुद किसी से डर नहीं खाता, जो घमंड, डर, घबराहट तीनों से ऊपर है वही भगवान का प्यारा है."

प्राचीन मिस्र के मज़हब का अब कोई मानने वाला नहीं रहा. उस पुराने मज़हब की पाक किताब "परलोक वासियों की किताब" (दि बुक आफ़ दी डेड) में लिखा है कि आदमी के मरने के बाद जब उसकी रूह यमराज के सामने जाती है तो उसे यह कहने के क़ाबिल होना चाहिये कि—"मैंने कभी किसी को नहीं रुलाया.'

सूफ़ी कहता है :—

"नमाज़े ज़ाहिदां क़द्दो सुजूद अस्त
नमाज़े आशिक़ां तरके वजूद अस्त."

यानी—ज़ाहिदों (रीत रिवाज के मानने वालों) की नमाज़ खड़े होना और सिजदे में गिरना है, और आशिक़ों की नमाज़ अपनी ख़ुदी को मिटाना है.

इन्जील में लिखा है :—

"और जब तुम दुआ मांगो तो उन पाखण्डियों की तरह न करो जो आम पूजा घरों में और गलियों के कोनों में खड़े होकर दुआ मांगना पसन्द करते हैं ताकि लोग उन्हें देखें.. ...तुम जब दुआ मांगो तो नासमझ लोगों की तरह फ़िज़ूल के फ़िक़रे न दुहराओ. वह लोग समझते हैं कि वह अगर बहुत बोलेंगे तो उनकी बात ज़रूर सुनी जायगी........तुम अपनी कोठरी में जाओ और जब दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लो तब अकेले में उस परम पिता परमात्मा से दुआ मांगो जो दिलों के अन्दर रहता है......."

"न कुछ ख़तना कराने में है और न कुछ ख़तना न कराने में है. सब कुछ इसी में है कि दूसरों के साथ बरताव करने में तुम ईश्वर की आज्ञाओं को मानो."

सूफ़ी कहता है :—

"ऐ दिल ! दूसरों के दिलों का तवाफ़ (परिक्रमा) कर क्योंकि इन दिलों के अन्दर एक काबा छिपा हुआ है. वह जो पत्थर का काबा है उसे तो हज़रत इब्राहीम ने बनाया था और यह जो दिलों के अन्दर का काबा है इसे ख़ुद ख़ुदा ने बनाया है."



منوسمرتی میں لکھا ھے :—

"جو آدمی دنیا کے موہ کو چھوڑ دیتا ھے اور یہ عہد کرلیتا ھے کہ وہ کسی کے دل میں اپنے سے ڈر پیدا ھونے نہیں دیگا، اُس کو بھی پھر کسی چیز کا ڈر نہیں رہ سکتا. سب لوک یعنی سارے عالم پھر اپنی پوری شان کے ساتھ اُس کے سامنے کھل جاتے ھیں."

گیتا میں لکھا ھے :—

"جس آدمی سے دنیا میں کوئی ڈر نہیں کھاتا اور جو خود کسی سے ڈر نہیں کھاتا، جو گھمنڈ، ڈر، گھبراھٹ تینوں سے اُوپر ھے وھی بھگوان کو پیارا ھے."

پراچین مصر کے مذھب کا اب کوئی ماننے والا نہیں رھا. اُس پرانے مذھب کی پاک کتاب "پرلوک واسیوں کی کتاب" (دی بک آف دی ڈیڈ) میں لکھا ھے کہ آدمی کے مرنے کے بعد جب اس کی روح یم راج کے سامنے جاتی ھے تو اُسے یہ کہنے کے قابل ھونا چاھئے، کہ "میں نے کبھی کسی کو نہیں رلایا."

صوفی کہتا ھے :—

"نماز زاھداں قد و سجود است
نماز عاشقاں ترک وجود است"

یعنی—زاھدوں (ریت رواج کے ماننے والوں) کی نماز کھڑے ھونا اور سجدے میں گرنا ھے، اور عاشقوں کی نماز اپنی خودی کو مٹانا ھے.

اِنجیل میں لکھا ھے :—

"اور جب تم دعا مانگو تو اُن پاکھنڈیوں کی طرح نہ کرو جو عام پوجا گھروں میں اور گلیوں کے کونوں میں کھڑے ھوکر دعا مانگنا پسند کرتے ھیں تاکہ لوگ اُنھیں دیکھیں... تم جب دعا مانگو تو ناسمجھ لوگوں کی طرح فضول کے فقرے نہ دھراؤ. وہ لوگ سمجھتے ھیں وہ اگر بہت بولینگے تو اُن کی بات ضرور سنی جائیگی... تم اپنی کوٹھری میں جاؤ اور جب دروازہ اندر سے بند کرلو تب اکیلے میں اُس پرم پتا پرماتما سے دعا مانگو جو دلوں کے اندر رھتا ھے......"

"نہ کچھ ختنہ کرانے میں ھے اور نہ کچھ ختنہ نہ کرانے میں ھے. سب کچھ اِسی میں ھے کہ دوسروں کے ساتھ برتاؤ کرنے میں تم ایشور کی آگیاؤں کو مانو."

صوفی کہتا ھے :—

"آے دل! دوسروں کے دلوں کا طواف (پریکرما) کر کیونکہ اِن دلوں کے اندر ایک کعبہ چھپا ھوا ھے. وہ جو پتھر کا کعبہ ھے اُسے تو حضرت ابراھیم نے بنایا تھا اور یہ جو دلوں کے اندر کا کعبہ اِسے خود خدا نے بنایا ھے."

"सैकड़ों किताबों और सैकड़ों वरक़ों को आग में डाल दे और अपनी जान और अपने दिल को अपने दिलदार यानी प्रीतम की तरफ़ लगा दे."

"सच यह है कि खुद तू ही सब किताबों की मां है, अपने अन्दर की आयतों को खुद अपने अन्दर पढ़. तेरा दिल खुद एक मानी से भरी हुई 'लौहे महफ़ूज़' ( सुरक्षित पाटी ) है जो कुछ भी तू चाहता है वह तुझे उस पाटी से मिल सकता है."

उपनिषद में लिखा है :—

"सब विद्याओं का भंडार आदमी का दिल है."

मनुस्मृति में लिखा है :—

"अपने अन्दर ध्यान से देखो ! सब दुरुस्ती और सब ग़लती तुम्हारे ही अन्दर है. जो आदमी सब कुछ अपने ही अन्दर देख लेता है वह फिर अधर्म यानी बुराई नहीं करता. सब देवता तुम्हारे ही अन्दर हैं. जो कुछ हो तुम ही हो. सब तुम में है."

"जो आदमी सब प्राणियों की सेवा करके सबकी आत्मा को अपनी आत्मा, अपने अन्दर सबको और सबके अन्दर अपने को देख लेता है, उसका दुई का परदा हट जाता है और वह शुद्ध अद्वैत ( यानी तौहीदे ज़ाती ), भाव अद्वैत ( यानी तौहीदे सिफ़ाती ) और क्रिया अद्वैत ( यानी तौहीदे अफ़आली ) तीनों तरह की तौहीद की हक़ीक़त को जान जाता है."

'लौहेमहफ़ूज़' अल्लाह का वह हाफ़ज़ा यानी स्मृति है जिस में भूत, भविश्य, और वर्तमान तीनों हमेशा के लिये मौजूद हैं. इसी को संस्कृत में चित्रगुप्त कहते हैं. जो अल्क़ाबिज़ है वही यम है. जो अलशकूर है वही अन्तरयामी है. महत् बुद्धि के जो मानी हैं वही अक़्लेकुल के हैं. नए नए इल्म हम इसीलिये ईजाद कर सकते हैं क्योंकि हमारी आत्मा के अन्दर वह सब पहले से और हमेशा से मौजूद हैं. अपने अन्दर के उसी समन्दर में से हम कंकरियां और जवाहर निकाल निकाल कर बाहर फेंकते रहते हैं. इसीलिये ज्ञान यानी मारफ़त का रास्ता और भक्ति यानी इश्क़ का रास्ता और कर्म ( नेक आमाल ) यानी ख़िदमते ख़ल्क़ का रास्ता सब एक दूसरे में बन्धे हुए हैं और सब एक हैं.

क़ुरआन में लिखा है :—

"सब से बढ़कर 'ईमान' यह है कि सब आदमी तुम्हारे हाथों में अपने को सुरक्षित ( महफ़ूज़ ) महसूस करें. सब से आला 'इसलाम' यह है कि तुम्हारी ज़बान और तुम्हारे हाथों से सब बे खटके और सलामत रहें."

इन्जील में लिखा है :—

"सच्चा और कामिल प्रेम डर को दिल से निकाल कर बाहर फेंक देता है."



"سیکڑوں کتابوں اور سیکڑوں ورقوں کو آگ میں ڈال دے اور اپنی جان اور اپنے دل کو اپنے دلدار یعنی پریتم کی طرف لگا دے."

"سچ یہ ہے کہ خود تو ہی سب کتابوں کی ماں ہے، اپنے اندر کی آیتوں کو خود اپنے اندر پڑھ. تیرا دل خود ایک معنی سے بھری ہوئی 'لوح محفوظ' ( سرکشت پاٹی ) ہے. جو کچھ بھی تو چاہتا ہے وہ تجھے اُس پاٹی سے مل سکتا ہے."

اُپنشد میں لکھا ہے :—

"سب ودیاؤں کا بھنڈار آدمی کا دل ہے."

منوسمرتی میں لکھا ہے :—

"اپنے اندر دھیان سے دیکھو ! سب درستی اور سب غلطی تمہارے ہی اندر ہے. جو آدمی سب کچھ اپنے ہی اندر دیکھ لیتا ہے وہ پھر ادھرم یعنی برائی نہیں کرتا. سب دیوتا تمہارے ہی اندر ہیں. جو کچھ ہو تم ہی ہو. سب تم میں ہے."

"جو آدمی سب پرانیوں کی سیوا کرکے سب کی آتما کو اپنی آتما، اپنے اندر سب کو اور سب کے اندر اپنے کو دیکھ لیتا ہے، اُس کا دوئی کا پردہ ہٹ جاتا ہے اور وہ شدھ ادویت ( یعنی توحید ذاتی )، بھاؤ ادویت ( یعنی توحید صفاتی ) اور کریا ادویت ( یعنی توحید افعالی ) تینوں طرح کی توحید کی حقیقت کو جان جاتا ہے."

'لوح محفوظ' اللہ کا وہ حافظہ یعنی سمرتی ہے جس میں بھوت، بھوشیہ اور ورتمان تینوں ہمیشہ کے لئے موجود ہیں. اِسی کو سنسکرت میں چترگپت کہتے ہیں. جو القابض ہے وہی یم ہے. جو الشکور ہے وہی انتریامی ہے. مہت بدھی کے جو معنی ہیں وہی عقل کل کے ہیں. نئے نئے علم ہم اِسی لئے ایجاد کرسکتے ہیں کیونکہ ہماری آتما کے اندر وہ سب پہلے سے اور ہمیشہ سے موجود ہیں. اپنے اندر کے اُسی سمندر میں سے ہم کنکریاں اور جواہر نکال نکال کر باہر پھینکتے رہتے ہیں. اِسی لئے گیان یعنی معرفت کا راستہ اور بھکتی یعنی عشق کا راستہ اور کرم ( نیک اعمال ) یعنی خدمت خلق کا راستہ سب ایک دوسرے میں بندھے ہوئے ہیں اور سب ایک ہیں.

قرآن میں لکھا ہے :—

"سب سے بڑھکر ایمان یہ ہے کہ سب آدمی تمہارے ہاتھوں میں اپنے کو سرکشت ( محفوظ ) محسوس کریں. سب سے اعلیٰ 'اِسلام' یہ ہے کہ تمہاری زبان اور تمہارے ہاتھوں سے سب بے کھٹکے اور سلامت رہیں."

اِنجیل میں لکھا ہے :—

"سچا اور کامل پریم ڈر کو دل سے نکال کر باہر پھینک دیتا ہے."

होता है दाने को भूसे से अलग करके भूसे को दूर फेंक देता है."

मौलाना रूम ने कहा है :—

"अगर तू मारफ़त यानी ज्ञान के राज़ (रहस्य) को जानना चाहता है तो तुझे चाहिये कि लफ़्ज़ों को छोड़ कर मानी की तरफ़ जा."

एक और जगह मौलाना रूम ने कहा है :—

"तू अगर क़ुरआन को इसी तरह पढ़ता रहेगा और इसी तरह मतलब करता रहेगा तो तू इसलाम की सारी रौनक़ को मिटा डालेगा."

मौलाना रूम का एक और मशहूर शेर है :—

"मैंने क़ुरआन में से मग्ज़ निकाल लिया है और हड्डियां कुत्तों के सामने फेंक दी हैं."

महाभारत में लिखा है :—

"वेदों को दुनिया के इतिहास और पुराण यानी अब तक के परम्परागत ज्ञान की रोशनी में पढ़ना चाहिये. कम-समझ आदमी से वेद भी यह सोचकर डरता है कि यह आदमी मेरे असली मतलब को ख़ब्त कर देगा."

"व्याकरण यानी (ग्रामर) जानने वालों को चाहिये कि समझदार बड़े लोगों की बातों का बहुत बारीकी के साथ अर्थ न करें. जो लोग समझदार हैं वह शब्दों पर इतना ध्यान नहीं देते जितना उनके अन्दर छिपे हुए विचार और अर्थ पर."

हमें यह भी बार बार बताया गया है कि सब सच्चे ज्ञान का असली सोता हमारे अपने अन्दर है. धर्म की किताबों को वही ठीक ठीक समझ सकता है जिसे अपने अन्दर का वह सोता मिल गया हो. इस अन्दर के सोते को अलग अलग मज़हबों ने अलग अलग शब्दों में बयान किया है, जैसे—प्रतिभा यानी इशराक़, दिव्य दृष्टि यानी चश्मेबातिनी, योगिकज्ञान यानी इल्मेहुज़ूरी, अन्तरप्रकाश यानी रोशनज़मीरी, मन्त्रदर्शन यानी कश्फ़, वग़ैरा वग़ैरा. जो आदमी शब्दों में फसा हुआ है वह इसके ख़िलाफ़ तर्क यानी दलील और अनुमान यानी इल्मेहुसूली की तरफ़ जाता है.

एक सूफ़ी कहता है :—

"है अपने सीने में उससे ज़ायद
जो बात वाइज़ किताब में है."

दूसरे सूफ़ियों का कहना है :—

"तू किताबों और रसमों में ख़ुदा को नहीं पा सकता. अपने दिल की किताब को पढ़ क्योंकि इससे बढ़कर कोई किताब नहीं है."



ھوتا ھے دانے کو بھوسے سے الگ کرکے بھوسے کو دور پھینک دیتا ھے ."

مولانا روم نے کہا ھے :—

"اگر تو معرفت یعنی گیان کے راز ( رھسیہ ) کو جاننا چاھتا ھے تو تجھے چاھئے کہ لفظوں کو چھوڑ کر معنی کی طرف جا ."

ایک اور جگہ مولانا روم نے کہا ھے :—

"تو اگر قرآن کو اِسی طرح پڑھتا رھےگا اور اِسی طرح مطلب کرتا رھےگا تو تو اِسلام کی ساری رونق کو مٹا ڈالےگا ."

مولانا روم کا ایک اور مشہور شعر ھے :—

"میں نے قرآن میں سے مغز نکال لیا ھے اور ھڈیاں کتوں کے سامنے پھینک دی ھیں ."

مہابھارت میں لکھا ھے :—

"ویدوں کو دنیا کے اتہاس اور پورانڑ یعنی اب تک کے پرمپراگت گیان کی روشنی میں پڑھنا چاھئے . کم سمجھ آدمی سے وید بھی یہ سوچ کر ڈرتا ھے کہ یہ آدمی میرے اصلی مطلب کو خبط کردےگا ."

"ویاکرن یعنی ( گرامر ) جاننے والوں کو چاھئے کہ سمجھدار بڑے لوگوں کی باتوں کا بہت باریکی کے ساتھ ارتھ نہ کریں . جو لوگ سمجھدار ھیں وہ شبدوں پر اِتنا دھیان نہیں دیتے جتنا اُن کے اندر چھپے ھوئے وچار اور ارتھ پر ."

ھمیں یہ بھی بار بار بتایا گیا ھے کہ سب سچے گیان کا اصلی سوتا ھمارے اپنے اندر ھے . دھرم کی کتابوں کو وھی ٹھیک ٹھیک سمجھ سکتا ھے جسے اپنے اندر کا وہ سوتا مل گیا ھو . اِس اندر کے سوتے کو الگ الگ مذھبوں نے الگ الگ شبدوں میں بیان کیا ھے' جیسے—پرتبھا یعنی اشراق' دویہ درشٹی یعنی چشمِ باطنی' 'یوگک گیان یعنی علم حضوری' انتر پرکاش یعنی روشن ضمیری' منتردرشن یعنی کشف' وغیرہ وغیرہ . جو آدمی شبدوں میں پھنسا ھوا ھے وہ اس کے خلاف ترک یعنی دلیل اور انومان یعنی علم حصولی کی طرف جاتا ھے .

ایک صوفی کہتا ھے :—

"ھے اپنے سینے میں اُس سے زائد
جو بات واعظ کتاب میں ھے ."

دوسرے صوفیوں کا کہنا ھے :—

"تو کتابوں اور رسموں میں خدا کو نہیں پاسکتا . اپنے دل کی کتاب کو پڑھ کیونکہ اِس سے بڑھکر کوئی کتاب نہیں ھے ."

# किताबों के शब्दों में न उलझो, असल मतलब की तरफ़ जाओ



डाक्टर भगवानदास

हर मज़हब में कम-समझ और स्वार्थी आदमी हमेशा ऊपरी रीत रिवाजों और तरह तरह की रसमों पर ही ज़ोर देते रहते हैं और इन्हें बढ़ाते रहते हैं. यह लोग अपनी मज़हबी किताबों का भी इसी तरह मतलब लगाते हैं और उनके अजीब अजीब मानी करते हैं. दुनिया के सब महा-पुरुषों और मज़हबी रहनुमाओं ने इस तरह के ग़लत मानी करने वालों और ग़लत मतलब निकालने वालों से लोगों को आगाह किया है और कहा है कि हमें किसी भी किताब के केवल शब्दों की तरफ़ नहीं उसकी रूह की तरफ़ जाना चाहिये. क़ुरआन में लिखा है :—

"इस किताब में कुछ आयतें ऐसी हैं जो 'मोहकमात' यानी बुनियादी और साफ़ साफ़ हुकुम हैं. वही इस किताब की जड़ हैं. बाक़ी आयतें 'मुतशाबेहात' यानी बतौर तशबीह या मिसाल के कही गई हैं. लेकिन जिन लोगों के दिलों में कजी है वह उसी हिस्से पर चलते हैं जो तशबीह के तौर पर कहा गया है, उससे फ़ितने यानी झगड़े खड़े करते हैं और तरह तरह से उसकी तावील करते हैं, यानी उसके छिपे हुए मानी निकालते हैं. लेकिन उसके छिपे हुए मानी सिवा अल्लाह के और कोई नहीं जानता." (3-7)

गीता में लिखा है :—

"जो लोग वेदों के रीत रिवाजों और रसमों में ही लगे रहते हैं, उसी की बात करते हैं और कहते हैं कि यही सब कुछ है और इसके सिवा कुछ है ही नहीं वह सचमुच कुछ नहीं जानते."

उपनिषद् में लिखा है :—

"समझदार आदमी को चाहिये कि उस एक सच्चाई की खोज करे जिससे असली ज्ञान मिलता है, और बहुत से शब्दों के जन्जाल में न पड़े क्योंकि यह शब्दों का जन्जाल केवल अपनी ज़बान को थकाना है."

एक और जगह उपनिशद में लिखा है :—

"जो आदमी सच्चे ज्ञान विज्ञान की खोज में हो उसको चाहिये कि समझ के साथ शास्त्रों को पढ़े. लेकिन एक बार शास्त्रों को पढ़कर और उनके असली मतलब को समझकर उनके गुथे हुए शब्दों को इस तरह एक एक कर दूर फेंक दे जिस तरह वह आदमी जो नाज के दाने की तलाश में

# کتابوں کے شبدوں میں نہ اُلجھو' اصل مطلب کی طرف جاؤ

ڈاکٹر بھگوان داس

ہر مذھب میں کم سمجھ اور سوارتھی آدمی ھمیشہ اُوپری ریت رواجوں اور طرح طرح کی رسموں پر ھی زور دیتے رھتے ھیں اور اِنھیں بڑھاتے رھتے ھیں ۔ یہ لوگ اپنی مذھبی کتابوں کا بھی اِسی طرح مطلب لگاتے ھیں اور اُن کے عجیب عجیب معنی کرتے ھیں ۔ دنیا کے سب مہاپرشوں اور مذھبی رھنماؤں نے اِس طرح کے غلط معنی کرنے والوں اور غلط مطلب نکالنے والوں سے لوگوں کو آگاہ کیا ھے اور کہا ھے کہ ھمیں کسی بھی کتاب کے کیول شبدوں کی طرف نہیں اُس کی روح کی طرف جانا چاھئے ۔ قرآن میں لکھا ھے :—

"اِس کتاب میں کچھ آیتیں ایسی ھیں جو 'محکمات' یعنی بنیادی اور صاف صاف حکم ھیں ۔ وھی اِس کتاب کی جڑ ھیں ۔ باقی آیتیں 'متشابہات' یعنی بطور تشبیہ یا مثال کے کہی گئی ھیں ۔ لیکن جن لوگوں کے دلوں میں کجی ھے وہ اُسی حصے پر چلتے ھیں جو تشبیہ کے طور پر کہا گیا ھے' اُس سے فتنے یعنی جھگڑے کھڑے کرتے ھیں اور طرح طرح سے اُس کی تاویل کرتے ھیں' یعنی اُس کے چھپے ھوئے معنی نکالتے ھیں ۔ لیکن اُس کے چھپے ھوئے معنی سوا اللہ کے اور کوئی نہیں جانتا ۔" ( 3-7 )

گیتا میں لکھا ھے :—

"جو لوگ ویدوں کے ریت رواجوں اور رسموں میں ھی لگے رھتے ھیں' اُسی کی بات کرتے ھیں اور کہتے ھیں کہ یہی سب کچھ ھے اور اِس کے سوا کچھ ھے ھی نہیں وہ سچ مچ کچھ نہیں جانتے ۔"

اُپنشد میں لکھا ھے :—

"سمجھدار آدمی کو چاھئے کہ اُس ایک سچائی کی کھوج کرے جس سے اصلی گیان ملتا ھے' اور بہت سے شبدوں کے جنجال میں نہ پڑے کیونکہ یہ شبدوں کا جنجال کیول اپنی زبان کو تھکانا ھے ۔"

ایک اور جگہ اُپنشد میں لکھا ھے :—

"جو آدمی سچے گیان وگیان کی کھوج میں ھو اُس کو چاھئے کہ سمجھ کے ساتھ شاستروں کو پڑھے ۔ لیکن ایک بار شاستروں کو پڑھکر اور اُن کے اصلی مطلب کو سمجھ کر اُن کے گتھے ھوئے شبدوں کو اِس طرح ایک ایک کر دور پھینک دے جس طرح وہ آدمی جو ناج کے دانے کی تلاش میں

## अप्रैल 1955 اپریل

क्या किस से | सफ़ा صفحہ

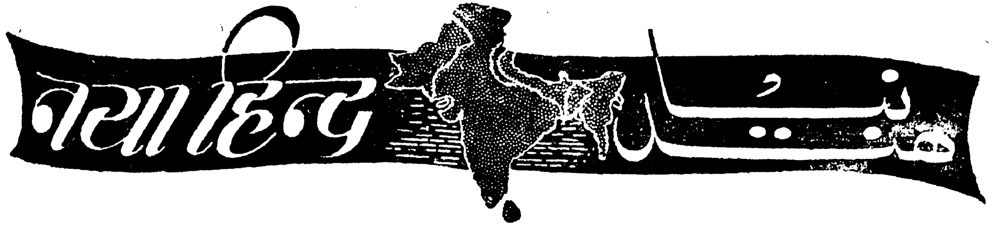

1. क़िताबों के शब्दों में न उलझो, असल मतलब की तरफ़ जाओ
   —डाक्टर भगवानदास — 217
2. नौजवान और बुज़ुर्ग
   —सुरेश राम भाई — 226
3. मुग़लों की इमारत बनाने की कला
   —डाक्टर नन्दलाल चैटर्जी एम. ए. पी-एच. डी., डी. लिट. — 231
4. हिन्दुस्तान के बाशिन्दों का निकास
   —डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त — 235
5. जावा : प्राचीन भारत का उपनिवेश
   —डाक्टर राधाकुमुद मुकर्जी एम. ए. पी-एच. डी. — 248
6. अरबी गान-विद्या और हिन्दुस्तान
   —विश्वम्भरनाथ पांडे — 251
7. ज़नानख़ाने की क़ैदी
   —श्रीमती अत्तिया हबीबुल्ला — 254
8. राजा राममोहन राय से गांधी जी (1857-1885)
   —श्री मगन भाई देसाई — 261
9. कुछ किताबें — 266
10. हमारी राय— — 268

   अमरीकी जनता का दिल—पन्डित सुन्दरलाल; फ़ारमोसा में जंगी घटायें—श्री जगदीशचन्द्र जैन; सर्वोदय, भूदान और हृदय परिवर्तन—श्री एम. भगवानदीन.


کیا کس سے


1. کتابوں کے شبدوں میں نہ اُلجھو، اصل مطلب کی طرف جاؤ
   —ڈاکٹر بھگوان داس
2. نوجوان اور بزرگ
   —سریش رام بھائی
3. مغلوں کی عمارت بنانے کی کلا
   —ڈاکٹر نندلال چٹرجی، ایم . اے.، پی-ایچ. ڈی.، ڈی. لٹ .
4. ھندستان کے باشندوں کا نکاس
   —ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت
5. جاوا : پراچین بھارت کا اُپنیویش
   —ڈاکٹر رادھا کمد مکرجی، ایم . اے. پی - ایچ . ڈی
6. عربی گان ودیا اور ھندستان
   —وشومبھر ناتھ پانڈے
7. زنانخانے کی قیدی
   —شریمتی عطیہ حبیب اللہ
8. راجا رام موھن رائے سے گاندھی جی (1857-1885)
   —شری مگن بھائی دیسائی
9. کچھ کتابیں
10. ھماری رائے—

   امریکی جنتا کا دل—پنڈت سندرلال؛ فارموسا میں جنگی گھٹائیں—شری جگدیش چندر جین؛ سرودے، بھودان اور ھردے پریورتن—شری ایم . بھگوان دین .




जिल्द 19 جلد नम्बर 4 نمبر

अप्रैल 1955 اپریل

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद ۱۴۵، مٹھی گنج، الہ آباد

# नया हिन्द
# نیا ھند



## इस नम्बर के ख़ास लेख
## اِس نمبر کے خاص لیکھ

किताबों के शब्दों में...
—डाक्टर भगवान दास

کتابوں کے شبدوں میں...
—ڈاکٹر بھگوان داس

मुग़लों की इमारत बनाने की कला
—डाक्टर नन्दलाल चैटर्जी

مغلوں کی عمارت بنانے کی کلا
—ڈاکٹر نند لال چیٹر جی

जावा : प्राचीन भारत का उपनिवेश
—डाक्टर राधाकुमुद मुकर्जी

جاوا : پراچین بھارت کا اُپنیویش
—ڈاکٹر رادھا کمد مکر جی

अरबी गान-विद्या और हिन्दुस्तान
—विश्वम्भरनाथ पांडे

عربی گان ودیا اور ھندستان
—وشومبھر ناتھ پانڈے

राजा राम मोहन राय से गांधी जी
—श्री मगन भाई देसाई

راجا رام موھن رائے سے گاندھی جی
—شری مگن بھائی دیسائی

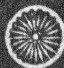
इसके अलावा

اِسکے علاوہ

कहानी, स्केच, समालोचना, हमारी राय आदि

کہانی، اسکیچ، سمالوچنا، ھماری رائے آدی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद



ھندستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

अप्रैल 1955 اپریل

# हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें ہمارے یہاں ملنےوالی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं.

نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں .

| नाम किताब | लेखक | दाम | لیکھک | نام کتاب |
|---|---|---|---|---|
| 1 शेर ओ शायरी | श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय | 8 0 0 | شری ایودھیا پرساد گوئیلی | 1. شعر و شاعری |
| 2. शेर ओ सुख़न | ,, | 8 0 0 | ,, | 2. شعر و سخن |
| 3. गहरे पानी पैठ | ,, | 2 8 0 | ,, | 3. گہرے پانی پیٹھ |
| 4. हमारे आराध्य | श्री बनारसीदास चतुर्वेदी | 3 0 0 | شری بنارسی داس چترویدی | 4. ہمارے آرادھیہ |
| 5. संस्मरण | ,, | 3 0 0 | ,, | 5. سنسمرن |
| 6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां | श्री जगदीशचन्द्र जैन | 3 0 0 | شری جگدیش چندر جین | 6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں |
| 7. ज्ञान गंगा | श्री नारायण  साद जैन | 6 0 0 | شری نارائن پرساد جین | 7. گیان گنگا |
| 8. पथ चिन्ह | श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी | 2 0 0 | شری شانتی پریہ دویدی | 8. پتھ چنھ |
| 9. पंथ प्रदीप | शान्ति एम. प. | 2 0 0 | شانتی ایم . اے | 9. پنتھ پردیپ |
| 10. आकाश के तारे धरती के फूल | श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर | 2 0 0 | شری کنھیالال مشر پربھاکر | 10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول |
| 11. मुक्ति दूत | श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. प. | 0 0 | شری ویریندر کمار جین ایم . اے | 11. مکتی دوت |
| 12. मिलन यामिनी | श्री बच्चन | 4 0 0 | شری بچن | 12. ملن یامنی |
| 13. रजत रश्मि | डाक्टर रामकुमार वर्मा | 2 8 0 | ڈاکٹر رام کمار ورما | 13. رجت رشمی |
| 14. मेरे बापू | श्री तन्मय बुख़ारिया | 2 8 0 | شری تنمے بخاریا | 14. میرے باپو |
| 15. विश्व संघ की ओर | पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला | 3 0 0 | پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا | 15. وشو سنگھ کی اور |
| 16. भारतीय अर्थशास्त्र | श्री भगवानदास केला | 0 0 | شری بھگوان داس کیلا | 16. بھارتیہ ارتھ شاستر |
| 17. भारतीय शासन | ,, | 3 0 0 | ,, | 17. بھارتیہ شاسن |
| 18. नागरिक शास्त्र | ,, | 2 4 0 | ,, | 18. ناگرک شاستر |
| 19. साम्राज्य और उनका पतन | ,, | 2 8 0 | ,, | 19. سامراج اور ان کا پتن |
| 20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन | ,, | 1 4 0 | ,, | 20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن |
| 21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था | ,, | 1 8 0 | ,, | 21. سروودے ارتھ ویوستھا |
| 22. हमारी आदिम जातियां | श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय | 3 8 0 | شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے | 22. ہماری آدم جاتیاں |
| 23. अर्थशास्त्र शब्दावली | श्री दया शंकर दुबे, एम. प. एल. एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला | 2 0 0 | شری دیا شنکر دوبے ایم . اے . ایل ایل . بی . گجادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا | 23. ارتھ شاستر شبداولی |
| 24. नागरिक शिक्षा | भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे | 1 8 0 | شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے | 24. ناگرک شکشا |
| 25. राष्ट्र मंडल शासन | श्री दयाशंकर दुबे | 1 8 0 | دیا شنکر دوبے | 25. راشٹر منڈل شاسن |
| 26. जवानी | महात्मा भगवानदीन | 3 0 0 | مہاتما بھگوان دین | 26. جوانی |
| 27. मारने की हिम्मत ! | ,, | 1 0 0 | ,, | 27. مارنے کی ہمت |
| 28. सलोना सच | ,, | 0 8 0 | ,, | 28. سلونا سچ |
| 29. मेरे साथी | ,, | 1 0 0 | ,, | 29. میرے ساتھی |

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ
مینیجر 'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

रेलवे बजट के आंकड़ों और दूसरी बातों में हम नहीं जायेंगे. इतना साफ़ है कि अगर रेलवे की आमदनी जिस रफ़्तार से बढ़ रही है, ख़र्च उससे कहीं ज्यादा रफ़्तार से बढ़ रहा है. यानी रेलवे का बजट बनाने वाले उसके इन्तज़ाम पर पूरी तरह हावी नहीं हैं और चीज़ उनके क़ाबू के बाहर खिसक रही है. 1952-53 में रेलवे की आमदनी और ख़र्च में जहां 5.5 का अनुपात था, 1953-54 में वह घटकर 4.2 रह गया. यह एक ख़तरनाक पहलू है जिसपर सरकार को ध्यान देना चाहिये.

जैसा हमने शुरू में ही कहा हम नहीं जानते कि "सोशलिस्टिक पैटर्न" का पूरा मतलब क्या है. लेकिन ऊपर जो कहा है उससे यह ज़रूर साफ़ है कि श्री लालबहादुर शास्त्री जैसे कोमल-दिल और तरक़्क़ी-पसन्द मिनिस्टर के बजट से दुखिया और सुखिया को नुक़सान होगा और फ़ायदा होगा सुखिया का. और सुखिया को जो फ़ायदा होगा सो हवा में से नहीं दुखिया और भुखिया के पेट काट कोट कर. क्या हमारी सरकार समाजवादी ढांचे ऐसे ही आधार पर—ग़रीबों को नोच-नोच कर और अमीरों को सहला-सहला कर—खड़ा करने जा रही है ?

7. 3. '55 —सुरेश रामभाई

---

همارى رائے

ريلوے بجٹ کے آنکڑوں اور دوسری باتوں میں ہم نہیں جائینگے . اِتنا صاف ھے کہ اگر ریلوے کی آمدنی جس رفتار سے بڑھ رہی ھے' خرچ اُس سے کہیں زیادہ رفتار سے بڑھ رہا ھے. یعنی ریلوے کا بجٹ بنانے والے اُس کے اِنتظام پر پوری طرح حاوی نہیں ہیں اور چیز اُن کے قابو کے باہر کھسک رہی ھے. 1952-53 میں ریلوے کے آمدنی اور خرچ میں جہاں 5·5 کا انوپات تھا' 1953-54 میں وہ گھٹکر 4·2 رہ گیا . یہ ایک خطرناک پہلو ھے جس پر سرکار کو دھیان دینا چاھئے .

جیسا ہم نے شروع میں ہی کہا ہم نہیں جانتے کہ "سوشلسٹک پیٹرن" کا پورا مطلب کیا ھے . لیکن اُوپر جو کہا ھے اُس سے یہ ضرور صاف ھے کہ شری لال بہادر شاستری جیسے کومل دل اور ترقی پسند منسٹر کے بجٹ سے دکھیا اور سکھیا کو نقصان ہوگا اور فائدہ ہوگا سکھیا کا . اور سکھیا کو جو فائدہ ہوگا سو ہوا میں سے نہیں دکھیا اور بھکیا کے پیٹ کاٹ کر . کیا ہماری سرکار سماج وادی ڈھانچے ایسے ہی آدھار پر— غریبوں کو نوچ نوچ کر اور امیروں کو سہلا سہلا کر—کھڑا کرنے جارہی ھے ؟

—سریش رام بھائی 7 . 3 . '55

---

ठेठ पूंजीवादी मनोवृत्ति है. इससे जबरदस्त चोट पहुंचेगी छोटे छोटे उद्योग धन्धों पर छोटे कारीगरों या कारखानों या व्यापारियों पर.

सवारी गाड़ी के किराये पर हम फिर आयें. ऐसा बहुत कम होता है कि लम्बे मुसाफ़िर को पूरा टिकट शुरू में ही मिल जाये. हां, अगर कलकत्ता, बम्बई, मद्रास या दिल्ली जाना हो या इन शहरों से जाना हो तब तो बात दूसरी है. लेकिन हमें यक़ीन है कि बिहार के चेम्पारन जिले के चकिया स्टेशन से कोई आदमी ट्रावनकोर के क्वीलन जिले में पोनेलूर का टिकट मांगे तो बाबू इन्कार कर देगा. मुज़फ़्फ़र का ही टिकट देगा या बहुत हुआ तो मद्रास का. इसके माने हैं कि मुसाफ़िर को दूसरा टिकट फिर आगे ख़रीदना होगा और लम्बे फ़ासले की जो रियायत है उससे वह महरूम रह जायेगा.

इस सिलसिले में हम एक आपबीती सुनाते हैं. इसी फ़र्वरी के चौथे हफ़्ते में हमें इलाहाबाद से जाना था जाजपुर रोड जो उड़ीसा के कटक जिले में है. बाबू ने कहा कि खड़गपुर तक का टिकट मिलेगा. हमने कहा कि हमारे पास ईस्टर्न रेलवे टाइमटेबिल है, आप उससे फ़ासला देखकर जाजपुर रोड तक का टिकट बना दीजिये. इस पर उन्होंने कहा कि रेलवे टाइमटेबिल के मीलों में हमें यक़ीन नहीं. हम यह सुनकर दंग रह गये. पर हमने इसरार जारी रक्खा. बाबू ने एक न सुनी. झक मारकर हमको खड़गपुर तक का टिकट लेना पड़ा वरना गाड़ी भी नहीं मिलने वाली थी. जब यह हालत हमको भुगतनी पड़ी तो मामूली लम्बे मुसाफ़िर की क्या दुर्गत होगी, हम अच्छी तरह समझ सकते हैं.

रेलवे मिनिस्टर ने यह भी कहा बताया जाता है कि किराये पर महसूल में जो यह फ़र्क़ उन्होंने किया तो विशिश्ठ डेलीगेशन के सुझाव पर जो रूस आदि गया था. कहां रूस और अमरीका और कहां हम! इन दोनों मुल्कों में ही जमीन ज्यादा है और आबादी कम. हिन्दुस्तान में ठीक उल्टी सूरत है—जमीन कम और आबादी ज्यादा. लेकिन हमारे विशेषज्ञ लोग इस बुनियादी बात को ही भूल जाते हैं और रूस या अमरीका का तर्ज़ या वहां का अर्थशास्त्र हम पर लादना चाहते हैं. बजाये इसके कि पश्चिम की नक़ल करें, रेलवे मिनिस्टर सीदा-साधा रास्ता इख़्तियार कर सकते हैं कि मील मील का किराया एक. हम जानते हैं कि वह रेलवे मिनिस्टर बड़ा दूरदर्शी और हिम्मतवाला होगा जो यह कह सके कि अब तीसरे दर्जे के किराये में कमी कर दी गई है और किराये की दर एकसी रहेगी. हमारा ख़्याल है कि उससे आमदरफ़्त भी बढ़ेगी और आमदनी भी बढ़ेगी. लेकिन हमारे रेलवे मिनिस्टर ने यह कुछ न करके वही पुराना दक़्यानूसी, पूंजीवादी तरीक़ा अपनाया कि दुखिया और सुखिया पर ही चोट करो.





ٹھیٹھ پونجی‌وادی منوورتی ھے . اِس سے زبردست چوٹ پہونچےگی چھوٹے چھوٹے اُدیوگ دھندھوں پر اور چھوٹے کاریگروں یا کارخانوں یا ویاپاریوں پر .

سواری گاڑی کے کرائے پر ہم پھر آئیں . ایسا بہت کم ھوتا ھے کہ لمبے مسافر کو پورا ٹکٹ شروع میں ھی مل جائے . ھاں' اگر کلکتہ' بمبئی' مدراس یا دلی جانا ھو یا اِن شہروں سے جانا ھو تب تو بات دوسری ھے . لیکن ھمیں یقین ھے کہ بہار کے چمپارن ضلعے کے چکیہ اسٹیشن سے کوئی آدمی ٹراونکور کے کویلن ضلعے میں پونےلور کا ٹکٹ مانگے تو بابو اِنکار کر دیگا. مظفر کا ھی ٹکٹ دیگا یا بہت ھوا تو مدراس کا . اِس کے معنی ھیں کہ مسافر کو دوسرا ٹکٹ پھر آگے خریدنا ھوگا اور لمبے فاصلے کی جو رعایت ھے اُس سے وہ محروم رہ جائیگا .

اِس سلسلے میں ھم ایک آپ بیتی سناتے ھیں . اِسی فروری کے چوتھے ھفتے میں ھمیں الہ‌آباد سے جانا تھا جاجپور روڈ جو اُڑیسہ کے کٹک ضلع میں ھے . بابو نے کہا کہ کھڑگپور تک کا ٹکٹ ملیگا . ھم نے کہا کہ ھمارے پاس اِیسٹرن ریلوے ٹائم ٹیبل ھے' آپ اُس سے فاصلہ دیکھکر جاجپور روڈ تک کا ٹکٹ بنا دیجئے . اِس پر اُنھوں نے کہا کہ ریلوے ٹائم ٹیبل کے میلوں میں ھمیں یقین نہیں . ھم یہ سن کر دنگ رہ گئے . پر ھم نے اِسرار جاری رکھا. بابو نے ایک نہ سنی . جھک مارکر ھمکو کھڑگپور تک کا ٹکٹ لینا پڑا ورنہ گاڑی بھی نہیں ملنے والی تھی. جب یہ حالت ھم کو بھگتنی پڑی تو معمولی لمبے مسافر کی کیا درگت ھوگی' ھم اچھی طرح سمجھ سکتے ھیں .

ریلوے منسٹر نے یہ بھی کہا بتایا جاتا ھے کہ کرائے پر محصول میں جو یہ فرق اُنھوں نے کیا تو وششٹھ ڈیلیگیشن کے سجھاؤ پر جو روس آدی گیا تھا. کہاں روس اور امریکہ اور کہاں ھم! اِن دونوں ملکوں میں ھی زمین زیادہ ھے اور آبادی کم . ھندستان میں ٹھیک اُلٹی صورت ھے—زمین کم اور آبادی زیادہ . لیکن ھمارے وشیشگیہ لوگ اِس بنیادی بات کو ھی بھول جاتے ھیں اور روس یا امریکہ کا طرز یا وھاں کا آرتھ شاستر ھم پر لادنا چاھتے ھیں . بجائے اِس کے کہ پچھم کی نقل کریں' ریلوے منسٹر سیدھا سادا راستہ اختیار کرسکتے ھیں کہ میل میل کا کرایہ ایک . ھم جانتے ھیں کہ وہ ریلوے منسٹر بڑا دوردرشی اور ھمت والا ھوگا جو یہ کہ سکے کہ اب تیسرے درجے کے کرائے میں کمی کردی گئی ھے اور کرائے کی در ایکسی رھیگی . ھمارا خیال ھے کہ اُس سے آمد رفت بھی بڑھیگی اور آمدنی بھی بڑھیگی . لیکن ھمارے ریلوے منسٹر نے یہ کچھ نہ کرکے وھی پرانا' دقیانوسی' پونجی وادی طریقہ اپنایا کہ دکھیا اور سکھیا پر ھی چوٹ کرو .

तीसरे दर्जे वाले मुसाफ़िर लाखों ऐसे हैं जो 'स्वागत' या 'विदाई' के विलास में नहीं पड़ते. हमारे कहने का मतलब यह है कि अपने नये सुझाव सोचते वक़्त रेलवे मिनिस्टर ने दुखिया और दुखिया का ध्यान नहीं रखकर सुखिया का ज्यादा ध्यान रखा.

जब हम मालगाड़ी के नये किरायों को देखते हैं तब तो हमारा यह ख़याल एकदम पक्का हो जाता है. कौन नहीं जानता कि मामूली काश्तकार या कारीगर या छोटे व्यापारी को अपना माल नजदीक ही भेजना रहता है—तीन सौ मील से कम. सो अब उसे ज्यादा किराया चुकाना पड़ेगा. मिसाल के तौर पर फ़ैज़ाबाद में जुलाहे लोग कपड़ा बुनते हैं. वह कपड़ा आस पास बिका करता है—इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ, बनारस, वग़ैरा. यह सब जगहें फ़ैज़ाबाद से तीन सौ मील से कम पर हैं. लिहाज़ा महसूल ज्यादा लगेगा और बुनकर का माल मंहगा हो जायेगा. मिल के मुक़ाबले में आज वह वैसे ही नहीं टिक पाता है कल और नहीं ठहर सकेगा. यही नहीं, रेलवे मिनिस्टर ने एक कमाल यह किया है कि बीस मन से कम के बोझ पर सरचार्ज दो आना रुपया बढ़ा दिया ! और कम से कम महसूल एक रुपये की बजाये डेढ़ रुपया कर दिया !! ज़ाहिर है कि मिलें या बड़े व्यापारी जब अपना माल भेजते हैं तो टनों में होता है, लेकिन छोटे लोगों का तो मन, पांच मन, दस मन, हद बीस मन. पर इनके ऊपर ही सरचार्ज लगा दिया गया. अगर कुल माल पर—चाहे वह बीस मन का हो या बीस टन का—सरचार्ज लगता तब तो समझ में कुछ आता कि भाई ! रेलवे आमदनी बढ़ाने की ग़रज़ से ऐसा कर रही है. लेकिन बीस मन से कम पर सरचार्ज लगाना एकदम ज्यादती है, नाइन्साफ़ी है.

इस तरह हम देखते हैं कि अगर नज़दीक—300 मील के अन्दर—कहीं जाना हो तो सवारी गाड़ी का किराया ज्यादा हो गया, मालगाड़ी का महसूल भी ज्यादा हो गया. इसे हम सरकार का पक्षपात के अलावा क्या समझ सकते हैं ? इसका मतलब यही होता है कि चुनार के आदमी को अपने बरतन मिर्ज़ापुर—अपने जिले में ही—भेजना है तो ज्यादा ख़र्च करना पड़ेगा, लेकिन अहमदाबाद की मिल वालों को अपना कपड़ा चुनार भेजना हो तो कम ख़र्च पड़ेगा. रईस के साथ तरफ़दारी और ग़रीब के साथ यह बैर क्यों ? फिर, यह तो स्वदेशी धर्म की भावना के भी ख़िलाफ़ है कि मैं पड़ोसी की ख़िदमत करना चाहूं तो घाटा उठाना पड़े और दूर—बहुत दूर—रहने वाले की ख़िदमत करूं तो नफ़ा रहे ! दूसरा लाज़मी नतीजा यह होगा कि जो चीज जहां पैदा होती है उसके आस पास में वह महंगी होगी, दूर सस्ती होगी. यह



تیسرے درجے والے مسافر لاکھوں ایسے ھیں جو 'سواگت' یا 'ودائی' کے ولاس میں نہیں پڑتے . ھمارے کہنے کا مطلب یہ ھے کہ اپنے نئے سجھاؤ سوچتے وقت ریلوے منسٹر نے بھوکھیا اور دکھیا کا دھیان نہیں رکھ کر سکھیا کا زیادہ دھیان رکھا .

جب ھم مال گاڑی کے نئے کرایوں کو دیکھتے ھیں تب تو ھمارا یہ خیال ایک دم پکا ھو جاتا ھے . کون نہیں جانتا کہ معمولی کاشتکار یا کاریگر یا چھوٹے ویاپاری کو اپنا مال نزدیک ھی بھیجنا رھتا ھے—تین سو میل سے کم . سو اب اُسے زیادہ کرایہ چکانا پڑیگا . مثال کے طور پر فیض آباد میں جلاھے لوگ کپڑا بنتے ھیں . وہ کپڑا آس پاس بکا کرتا ھے—الہ آباد' کانپور' لکھنؤ' بنارس' وغیرہ . یہ سب جگہیں فیض آباد سے تین سو میل سے کم پر ھیں . لہذا محصول زیادہ لگیگا اور بنکر کا مال مہنگا ھو جائیگا . مل کے مقابلے میں آج وہ ویسے ھی نہیں ٹک پاتا ھے کل اور نہیں ٹھہر سکیگا . یہی نہیں' ریلوے منسٹر نے ایک کمال یہ کیا ھے کہ بیس من سے کم کے بوجھ پر سرچارج دو آنہ روپیہ بڑھا دیا ! اور کم سے کم محصول ایک روپئے کی بجائے ڈیڑھ روپیہ کردیا !! ظاھر ھے کہ ملیں یا بڑے ویاپاری جب اپنا مال بھیجتے ھیں تو ٹنوں میں ھوتا ھے' لیکن چھوٹے لوگوں کا تو من' پانچ من' دس من' حد بیس من ! پر ان کے اُوپر ھی سر چارج لگا دیا گیا . اگر کل مال پر—چاھے وہ بیس من کا ھو یا بیس ٹن کا—سر چارج لگتا تب تو سمجھ میں کچھ آتا کہ بھائی ! ریلوے آمدنی بڑھانے کی غرض سے ایسا کر رھی ھے . لیکن بیس من سے کم پر سر چارج لگانا ایک دم زیادتی ھے' ناانصافی ھے .

اِس طرح ھم دیکھتے ھیں کہ اگر نزدیک—300 میل کے اندر—کہیں جانا ھو تو سواری گاڑی کا کرایہ زیادہ ھو گیا' مال گاڑی کا محصول بھی زیادہ ھو گیا . اِسے ھم سرکار کا پکشپات کے علاوہ کیا سمجھ سکتے ھیں ؟ اِس کا مطلب یہی ھوتا ھے کہ چنار کے آدمی کو اپنے برتن مرزاپور—اپنے ضلعے میں ھی—بھیجنا ھے تو زیادہ خرچ کرنا پڑیگا' لیکن احمدآباد کی مل والوں کو اپنا کپڑا چنار بھیجنا ھو تو کم خرچ پڑیگا . رئیس کے ساتھ طرفداری اور غریب کے ساتھ یہ بیر کیوں ؟ پھر' یہ تو سودیشی دھرم کی بھاونا کے بھی خلاف ھے کہ میں پڑوسی کی خدمت کرنا چاھوں تو گھاٹا اُٹھانا پڑے اور دور—بہت دور—رھنے والے کی خدمت کروں تو نفع رھے ! دوسرا لازمی نتیجہ یہ ھوگا کہ جو چیز یہاں پیدا ھوتی ھے اُس کے آس پاس میں وہ مہنگی ھوگی' دور سستی ھوگی ! یہ

है. उस लम्बाई के आगे फिर ठीक दीखता है. रेलवे मिनिस्टर का यह फ़ोकस डेढ़ मील लम्बा है. इसलिये डेढ़ सौ मील से कम सफ़र करने वाले को ज्यादा किराया देना पड़ेगा. 150 से 300 मील तक जो जायेगा उससे कोई बेशी किराया नहीं लिया जायगा लेकिन डेढ़ सौ मील का किराया तो ज्यादा देना ही होगा. मगर 300 मील से ऊपर जो सफ़र करेंगे उन्हें मामूली सवारी गाड़ी पर किराये में आधे पाई फ़ी मील की और डाक गाड़ी पर एक पाई फ़ी मील की छूट दी जायेगी. लेकिन चूंकि डेढ़ सौ मील का बेशी दाम देना ही होगा, इसलिये किराये में कमी 340 मील (डाक या एक्सप्रेस गाड़ी) या 310 मील (मामूली गाड़ी) से मिल सकेगी.

रेलवे के काग़ज़ ख़ुद बताते हैं कि रेलवे के मुसाफ़िरों का औसत सफ़र तीस मील का होता है. आज 30 मील के पंद्रह-सोला आने देना पड़ते हैं. लेकिन पहली अप्रैल से आठ पाई यानी तीन पैसे और देना पड़ेगा. दूसरे लफ़्ज़ों में तीन पैसे रुपये के सेल-टैक्स की बजाय रेल-टैक्स लग गया ! और इस बेशी किराये का असर लगभग नब्बे प्रतिशत मुसाफ़िरों पर पड़ेगा. इस तरह रेलवे मिनिस्टर ने भुखिया और दुखिया को सहूलियत देने के बजाय उल्टे नई चोट की.

अब ज़रा सुखिया को लें. यह बड़े लोग या तो हवा-फांस डब्बे में चला करते हैं या पहले दूसरे दर्जों में. बताया गया है कि हवा-फांस डब्बे वालों को अब 300 मील तक के सफ़र के लिये चार पाई फ़ी मील और 300 मील के ऊपर दो पाई फ़ी मील बेशी देना पड़ेगा. लेकिन सोने वाली सीट के जो पांच रुपये लिये जाते थे वह छोड़ दिये गये. यानी 300 मील के सफ़र के लिये 1200 पाई बेशी न लेकर महज़ 240 पाई ज्यादा ली जायेगी—यानी एक पाई फ़ी मील भी बढ़ोत्तरी सुखिया पर नहीं की गई. फिर, यह कौन नहीं जानता कि हवा-फांस और पहले दर्जे के डिब्बों में सफ़र करने वाले ज्यादातर लोग ऐसे होते हैं जिनको सफ़र का ख़र्चा या तो सरकार से मिलता है, या किसी कम्पनी से या किसी सार्वजनिक संस्था से. हमें शुब्हा है कि पांच फ़ी सदी से भी ज्यादा लोग इन ऊंचे वाले दर्जों में अपने निजी ख़र्चे से चलते हैं. हमें यह यक़ीन है कि अगर रेलवे इन हवा-फांस और पहले दर्जे का किराया दुगना कर दे, तब भी यह लोग इनमें चलेंगे ही. अगर रेलवे मिनिस्टर ऐसा करने की हिम्मत करें तो सहज उनकी आमदनी बहुत काफ़ी बढ़ सकती है. हां, हो सकता है कि हवा-बांध डब्बे में न चलकर कुछ लोग हवाई जहाज़ से चलने लगें. लेकिन उसके दाम में भी तो फ़र्क़ की काफ़ी गुंजाइश है.

प्लैटफ़ार्म टिकट का दाम दो आने से घटकर एक आना हुआ करेगा. कहने की ज़रूरत नहीं कि प्लैटफ़ार्म टिकट एक शग़ल है सुखिया लोगों का या कुछ लोगों का फ़ैशन है.



ھے . اُس لمبائی کے آگے پھر ٹھیک دیکھتا ھے . ریلوے منسٹر کا یہ فوکس ڈیڑھ میل لمبا ھے . اِس لئے ڈیڑھ سو میل سے کم سفر کرنے والے کو زیادہ کرایہ دینا پڑیگا . 150 سے 300 میل تک جو جائیگا اُس سے کوئی بیشی کرایہ نہیں لیا جائیگا لیکن ڈیڑھ سو میل کا کرایہ تو زیادہ دینا ھی ھوگا . مگر 300 میل سے اُوپر جو سفر کرینگے اُنھیں معمولی سواری گاڑی پر کرائے میں آدھی پائی فی میل کی اور ڈاک گاڑی پر ایک پائی فی میل کی چھوٹ دی جائیگی . لیکن چونکہ ڈیڑھ سو میل کا بیشی دام دینا ھی ھوگا' اِس لئے کرائے میں کمی 340 میل (ڈاک یا ایکسپریس گاڑی) یا 310 میل (معمولی گاڑی) سے مل سکیگی .

ریلوے کے کاغذ خود بتاتے ھیں کہ ریلوے کے مسافروں کا اَوسط سفر تیس میل کا ھوتا ھے . آج 30 میل کے پندرہ سولہ آنے دینا پڑتے ھیں. لیکن پہلی اپریل سے آٹھ پائی یعنی تین پیسے اور دینا پڑیگا. دوسرے لفظوں میں تین پیسے روپئے کے سیل ٹیکس کی بجائے ریل ٹیکس لگ گیا ! اور اِس بیشی کرائے کا اثر لگ بھگ نوے پرتی شت مسافروں پر پڑیگا . اِس طرح ریلوے منسٹر نے بھوکھیا اور دکھیا کو سہولیت دینے کے بجائے اُلٹے نئی چوٹ کی .

اب ذرا سکھیا کو لیں . یہ بڑے لوگ یا تو ھوا پھانس ڈبے میں چلا کرتے ھیں یا پہلے دوسرے درجوں میں . بتایا گیا ھے کہ ھوا پھانس ڈبے والوں کو اب 300 میل تک کے سفر کے لئے چار پائی فی میل اور 300 میل کے اُوپر دو پائی فی میل بیشی دینا پڑیگا . لیکن سونے والی سیٹ کے جو پانچ روپے لئے جاتے تھے وہ چھوڑ دئے گئے . یعنی 300 میل کے سفر کے لئے 1200 پائی بیشی نہ لیکر محض 240 پائی زیادہ لی جائیگی—یعنی ایک پائی فی میل بھی بڑھوتری سکھیا پر نہیں کی گئی . پھر' یہ کون نہیں جانتا کہ ھوا پھانس اور پہلے درجے کے ڈبوں میں سفر کرنے والے زیادہ تر لوگ ایسے ھوتے ھیں جن کو سفر کا خرچا یا تو سرکار سے ملتا ھے' یا کسی کمپنی سے یا کسی ساروجنک سنستھا سے . ھمیں شبہ ھے کہ پانچ فیصدی سے بھی زیادہ لوگ اِن اُونچے والے درجوں میں اپنے نجی خرچ سے چلتے ھیں . ھمیں یہ یقین ھے کہ اگر ریلوے اِن ھوا پھانس اور پہلے درجے کا کرایہ دگنا کردے' تب بھی یہ لوگ اِن میں چلیں گے ھی . اگر ریلوے منسٹر ایسا کرنے کی ھمت کریں تو سہج اُن کی آمدنی بہت کافی بڑھ سکتی ھے . ھاں' ھوسکتا ھے کہ ھوا باندھ ڈبے میں نہ چلکر کچھ لوگ ھوائی جہاز سے چلنے لگیں . لیکن اُس کے دام میں بھی تو فرق کی کافی گنجائش ھے .

پلیٹفارم ٹکٹ کا دام دو آنے سے گھٹکر ایک آنہ ھوا کریگا . کہنے کی ضرورت نہیں کہ پلیٹفارم ٹکٹ ایک شغل ھے سکھیا لوگوں کا یا کچھ لوگوں کا فیشن ھے .

रूस के साथ साथ भी ऐटमी हथियारों को खत्म करने पर तैयार नहीं है. आज अमरीका की सारी पालिसी का आधार ऐटम बम है. वह ऐटम बम को ही अपनी शक्ति समझता है और समझता है कि ऐटम बम के बल बूते पर वह रूस को झुका लेगा. दुनिया की मासूम जनता का क्या हाल होगा इसकी उसे परवाह नहीं. योरप में यह ख्याल भी ज़ोर पकड़ रहा है कि ऐटमी लड़ाई में रूस का नुक़सान कम होगा लेकिन बरतानिया, फ्रांस, हालैंड और बेलजियम जैसे देशों का तख्ता उलट जाएगा. इंगलैंड के वैज्ञानिकों का कहना है कि दो नहीं तो ज्यादा से ज्यादा छै ऐटम बम इंगलैंड को सदा के लिये खत्म कर देंगे. योरप की जनता इसीलिये बहुत बेचैन है. आशा है कि अमरीकी जनता भी ऐटम बम की भयानकता को महसूस करेगी और हर सूरत से अपनी सरकार को मजबूर करेगी कि वह ऐटमी हथियारों को बिलकुल खत्म कर दे, दूसरे हथियारों में कमी करे, दुनिया भर में फैले अपनी फ़ौजी अड्डों को तोड़ दे, और संसार में फैली अपनी फ़ौजों का वापस बुला ले. इसीमें दुनिया का कल्यान है और ख़ुद अमरीका का भी भला है.

1-3-'55 —मुजीब रिज़वी

## रेलवे बजट पर एक नज़र

आजकल सरकारी हलक़ों में अंग्रेजी के तीन लफ्ज़ बहुत चले है: development यानी विकास, Welfare State यानी कल्यानकारी राज्य और socialistic pattern यानी समाजवादी ढांचा. अब यह लफ़्ज़ अंग्रेज़ी के हैं इसलिये बारीकी के साथ इनका सोलह आना और सही मतलब वही समझ सकते हैं जिनकी मात्र भाषा अंग्रेजी है या बहुत हद तक अंग्रेजी है. हम जैसे लोग तो महज़ अन्दाज़ा लगा सकते हैं. लेकिन एक बात हम अच्छी तरह जानते हैं. वह यह कि जैसे मकान जब बनता है तो बुनियाद यानी नीचे से ही बनाता है, उसी तरह 'विकास' हो या कल्यानकारी राज्य' हो या 'समाजवादि ढांचा' हो, उसमें पहली परवाह नीचे के लोगों की यानी ग़रीबों की होनी चाहिये. हमारे यहां कहावत भी है—पहले भुखिया, फिर दुखिया और पाछे सुखिया. इस नजर से हम ज़रा रेलवे बजट को देखना चाहते हैं जो 19 फ़रवरी को पार्लियामेन्ट में रेलवे मिनिस्टर श्री लालबहादुर शास्त्री ने पेश किया.

अपनी बजट स्पीच में रेलवे मिनिस्टर ने कहा कि आज जो चालू किराया मुसाफ़िर-गाड़ी और माल-गाड़ी का है उसमें दूरबीन के ढंग पर फ़र्क़ किया जायेगा. दूरबीन की खूबी है कि बहुत नजदीक का उसे नहीं दीखता. एक ख़ास लम्बाई होती है—जिसे फ़ोकस कहते हैं—जब उसे साफ़ दीखता



روس کے ساتھ ساتھ بھی ایٹمی ہتیاروں کو ختم کرنے پر تیار نہیں ھے. آج امریکہ کی ساری پالیسی کا آدھار ایٹم بم ھے. وہ ایٹم بم کو ھی اپنی شکتی سمجھتا ھے اور سمجھتا ھے کہ ایٹم بم کے بل بوتے پر وہ روس کو جھکا لے گا. دنیا کی معصوم جنتا کا کیا حال ھوگا اِس کی اُسے پرواہ نہیں. یورپ میں یہ خیال بھی زور پکڑ رہا ھے کہ ایٹمی لڑائی میں روس کا نقصان کم ھوگا لیکن برطانیہ' فرانس' ھالینڈ اور بلجیم جیسے دیشوں کا تختہ اُلٹ جائے گا. انگلینڈ کے ویگیانکوں کا کہنا ھے کہ دو نہیں تو زیادہ سے زیادہ چھ ایٹم بم انگلینڈ کو سدا کے لئے ختم کر دینگے. یورپ کی جنتا اِسی لئے بہت بےچین ھے. آشا ھے کہ امریکی جنتا بھی ایٹم بم کی بھیانکتا کو محسوس کرے گی اور ھر صورت سے اپنی سرکار کو مجبور کرے گی کہ وہ ایٹمی ہتیاروں کو بالکل ختم کر دے' دوسرے ہتیاروں میں کمی کرے' دنیا بھر میں پھیلے اپنے فوجی اڈوں کو توڑ دے' اور سنسار میں پھیلی اپنی فوجوں کو واپس بلا لے. اِسی میں دنیا کا کلیان ھے اور خود امریکہ کا بھی بھلا ھے.

—مجیب رضوی .1 .3 '55

## ریلوے بجٹ پر ایک نظر

آجکل سرکاری حلقوں میں انگریزی کے تین لفظ بہت چلے ھیں : development یعنی وکاس' Welfare State یعنی کلیان کاری راجیہ اور socialistic pattern یعنی سماجوادی ڈھانچہ. اب یہ لفظ انگریزی کے ھیں اِس لئے باریکی کے ساتھ اِنکا سولہ آنا اور صحیح مطلب وھی سمجھ سکتے ھیں جنکی ماتر بھاشا انگریزی ھے یا بہت حد تک انگریزی ھے. ھم جیسے لوگ تو محض اندازہ لگا سکتے ھیں. لیکن ایک بات ھم اچھی طرح جانتے ھیں. وہ یہ کہ جیسے مکان جب بنتا ھے تو بنیاد سے یعنی نیچے سے ھی بنتا ھے' اُسی طرح 'وکاس' ھو یا 'کلیان کاری راجیہ' ھو یا 'سماجوادی ڈھانچہ' ھو' اُس میں پہلی پرواہ نیچے کے لوگوں کی یعنی غریبوں کی ھونی چاہئے. ھمارے یہاں کہاوت بھی ھے—پہلے بھوکھیا' پھر دکھیا اور پاچھے سکھیا. اِس نظر سے ھم ذرا ریلوے بجٹ کو دیکھنا چاھتے ھیں جو 19 فروری کو پارلیامنٹ میں ریلوے منسٹر شری لال بہادر شاستری نے پیش کیا.

اپنی بجٹ اسپیچ میں ریلوے منسٹر نے کہا کہ آج جو چالو کرایہ مسافر گاڑی اور مال گاڑی کا ھے اُس میں دوربین کے ڈھنگ پر فرق کیا جائیگا. دوربین کی خوبی ھے کہ بہت نزدیک کا اُسے نہیں دیکھتا. ایک خاص لمبائی ھوتی ھے—جسے فوکس کہتے ھیں—جب اُسے صاف دیکھتا

इतना मिला जुला है कि उनको अलग अलग करना बहुत मुशकिल है. जो हथियार मारने के काम आते हैं वह ज्यादातर बचाव के काम भी आ जाते हैं. सवाल उठता है कि ऐटमी हथियार किस तरह के हथियार हैं ? बचाव के हो ही नहीं सकते, क्योंकि अगर रूस के जहाज़ वाशिंगटन पर हमला कर दें तो अमरीकी सरकार अपनी रक्षा के लिये उनपर ऐटम बम नहीं बरसाएगी. ऐटमी हथियार सिर्फ़ मारने के काम ही आते हैं, हिफ़ाज़त का काम उनसे नहीं होता. ऐटमी हथियारों को दूसरे हथियारों के बराबर मानना अमरीका की हट धर्मी के सिवा कुछ नहीं है.

## लन्दन की बैठक

यू. ऐन. ओ. की पिछली बैठक में रूस ने ऐटमी हथियारों पर रोक लगाने का सुझाव रखा था. लेकिन अमरीका और उसके साथियों ने रूस की बात नहीं सुनी. इंगलैन्ड और फ़्रांस ने अपने अपने सुझाव रखे. उनके सुझाव का सार था कि हम निश्चय कर लें कि ऐटमी हथियारों का इस्तेमाल उस समय तक नहीं करेंगे जब तक हम पर हमला न हो. रूस का कहना था कि बिना किसी शर्त के ऐटमी हथियारों के इस्तेमाल की मुमानिअत कर दी जाए. जब रूस की बात नहीं मानी गई तो उसने फ़्रांस और इंगलैंड की बात को यह कह कर मान लिया कि ऐटमी हथियारों पर रोक लगाने की तरफ़ यह कम से कम एक क़दम है. यू. ऐन. ओ. ने तब एक सब-कमेटी बनादी ताकि वह तमाम सुझावों को नज़र में रखकर एक ऐसा सुझाव यू. ऐन. ओ. के सामने रख सके जिसे सब मान लें. इस कमेटी के मेम्बर अमरीका, रूस, इंगलैंड, फ़्रांस और कनाडा हैं. रूस ने चाहा कि इस कमेटी में हिन्दुस्तान, चैकोसलावेकिया और चीन को भी शामिल कर लिया जाए. लेकिन यह सुझाव नहीं माना गया. इन हथियारों से एशिया ही को ज्यादा ख़तरा है और एशिया का कोई प्रतिनिधि इस कमेटी में नहीं है.

इस कमेटी की बैठक लन्दन में मई जून में हो चुकी है. 26 फ़रवरी से फिर इस कमेटी की बैठक इंगलैंड की राज-धानी में हो रही है. दुनिया की नज़रें लन्दन की तरफ़ लगी हैं. लेकिन अख़बारों की ख़बर पढ़ पढ़ कर ऐसा लगता है कि कोई नतीजा निकलने वाला नहीं है.

## श्री राजागोपालाचारी की अमरीका को सलाह

श्री राजागोपालाचारी हमारे देश के जाने माने नेता हैं. वह अमरीका का बुरा चाहते हैं, यह दोष उनपर नहीं लगाया जा सकता. उन्होंने अमरीका को ठीक राय दी है कि एक बार वह आगे बढ़कर एलान कर दे कि उसने अपने ऐटमी हथियार समुन्दर में फेंक दिये हैं. आगे बढ़कर समुन्दर में ऐटमी हथियार डबोने की कौन कहे अमरीका तो



اتنا ملا جلا ھے کہ اُن کو الگ کرنا بہت مشکل ھے . جو هتیار مارنے کے کام آتے هیں وہ زیادہ تر بچاؤ کے کام بھی آجاتے هیں . سوال اُٹھتا ھے کہ ایٹمی هتیار کس طرح کے هتیار هیں ؟ بچاؤ کے هو هی نہیں سکتے' کیونکہ اگر روس کے جہاز واشنگٹن پر حملہ کر دیں تو امریکی سرکار اپنی رکشا کے لئے اُن پر ایٹم بم نہیں برسائے گی . ایٹمی هتیار طرف مارنے کے کام هی آتے هیں' حفاظت کا کام اُن سے نہیں هوتا . ایٹمی هتیاروں کو دوسرے هتیاروں کے برابر ماننا امریکہ کی هٹ دھرمی کے سوا کچھ نہیں ھے .

## لندن کی بیٹھک

یو . این . او کی پچھلی بیٹھک میں روس نے ایٹمی هتیاروں پر روک لگانے کا سجھاؤ رکھا تھا . لیکن امریکہ اور اُس کے ساتھیوں نے روس کی بات نہیں سنی . اِنگلینڈ اور فرانس نے اپنے اپنے سجھاؤ رکھے . اُن کے سجھاؤ کا سار تھا کہ هم نشچے کر لیں کہ ایٹمی هتیاروں کا استعمال اُس سمے تک نہیں کریں گے جب تک هم پر حملہ نہ هو . روس کا کہنا تھا کہ بنا کسی شرط کے ایٹمی هتیاروں کے استعمال کی ممانعت کر دی جائے . جب روس کی بات نہیں مانی گئی تو اُس نے فرانس اور انگلینڈ کی بات کو یہ کہکر مان لیا کہ ایٹمی هتیاروں پر روک لگانے کی طرف یہ کم سے کم ایک قدم ھے . یو . این . او نے تب ایک سب-کمیٹی بنا دی تاکہ وہ تمام سجھاؤں کو نظر میں رکھ کر ایک ایسا سجھاؤ یو - نو کے سامنے رکھ سکے جسے سب مان لیں . اِس کمیٹی کے ممبر امریکہ' روس' اِنگلینڈ' فرانس اور کناڈا هیں . روس نے چاها کہ اِس کمیٹی میں هندستان' چیکوسلاویکیا اور چین کو بھی شامل کر لیا جائے . لیکن یہ سجھاؤ نہیں مانا گیا . اِن هتیاروں سے ایشیا هی کو زیادہ خطرہ ھے اور ایشیا کا کوئی پرتینیدھی اِس کمیٹی میں نہیں ھے .

اِس کمیٹی کی بیٹھک لندن میں مئی جون میں هو چکی ھے - 26 فروری سے پھر اِس کمیٹی کی بیٹھک انگلینڈ کی راجدھانی میں هو رهی ھے . دنیا کی نظریں لندن کی طرف لگی هیں . لیکن اخباروں کی خبر پڑھ پڑھ کر ایسا لگتا ھے کہ کوئی نتیجہ نکلنے والا نہیں ھے .

## شری راج گوپالاچاری کی امریکہ کو صلاح

شری راجاگوپالاچاری همارے دیش کے جانے مانے نیتا هیں . وہ امریکہ کا بُرا چاهتے هیں' یہ دوش اُن پر نہیں لگایا جا سکتا . اُنھوں نے امریکہ کو ٹھیک رائے دی ھے کہ ایک بار وہ آگے بڑھ کر اعلان کر دے کہ اُس نے اپنے ایٹمی هتیار سمندر میں پھینک دیئے هیں . آگے بڑھکر سمندر میں ایٹمی هتیار ڈبونے کی کون کہے امریکہ تو

उसमें अमरीकी सरकार की पालिसी को हर तरह मदद देगा और उसके लिये काम करेगा.

## दूर पूरब और अमरीका

26 फ़रवरी को डलेस साहब ने स्याम की राजधानी बंगकाक में कहा है कि :—

"दूर पूरब में अमरीका के चार सौ समुन्दरी बेड़े हैं, तीन लाख समुन्दरी फ़ौज है, तीन लाख थल सेना है और हवाई जहाज़ के तीस स्क्वाडरन हैं."

28 फ़रवरी के अख़बारों मे ख़बर छपी है कि दूर पूरब की अपनी फ़ौजों को अमरीका ने ऐटमी हथियारों से लैस कर दिया है. अब वह ऐटमी हथियारों को तोप बन्दूक़, मामूली गोलों जैसा ही हथियार समझता है.

साथ ही यह ख़बर आई है :—वाशिंगटन में आइज़न हावर से अख़बार वालों ने पूछा कि ऐटमी हथियार के तजुरबे क्या बन्द कर दिये जाएंगे ? उन्होंने साफ़ कहा कि "हरगिज़ नहीं." ऐटमी हथियारों और दूसरे हथियारों में हम कोई फ़रक़ नहीं करते. अगर पूरे हथियारों पर रोक लगाई जाएगी तो ऐटमी हथियार पर भी रोक लगेगी, नहीं तो नहीं.

ऐसी सूरत में ऐटमी हथियारों का मसला कैसे हल होगा ? इसके हल न होने की ज़िम्मेदारी किस पर होगी, यह दुनिया के सामने साफ़ है.

## क्या ऐटमी हथियार मामूली हथियारों जैसे ही हैं ?

क्या ऐटमी हथियारों और दूसरे हथियारों में सचमुच फ़रक़ नहीं है ? यू. एन. ओ. में अमरीकी नुमाइन्दे लाज साहब का यह तर्क क्या ठीक है कि आदमी चाहे बन्दूक़ की गोली से मरे और चाहे ऐटम बम से, बात एक ही है ? वैज्ञानिकों की बात अगर सही है और जिन ख़तरों की तरफ़ वह जनता का ध्यान दिलाते हैं अगर वह सही हैं तो फिर यह मानना ही पड़ेगा कि ऐटम बम दूसरे हथियारों से बिलकुल अलग है. ऐसे भी ऐटमी हथियार और दूसरे हथियारों का फ़रक़ साफ़ है. दूसरे हथियारों का काम थोड़े से लोगों की जान लेने पर ख़त्म हो जाता है लेकिन ऐटमी हथियार अनगिनत बेगुनाह लोगों की जान भी लेते हैं और अपना असर पीढ़ियों तक के लिये छोड़ जाते हैं.

हथियार तीन तरह के होते हैं. एक वह जो सिर्फ़ बचाव के काम आते हैं जैसे ढाल वग़ैरा, दूसरे वह जो मारने के काम आते हैं जैसे तारपीडो या बन्दूक़ वग़ैरा और तीसरे वह हथियार जो मारने के काम भी आते हैं और बचाव के काम भी आते हैं जैसे तलवार, जहाज़ या और दूसरे इसी तरह के हथियार. मारने और बचाव के हथियारों का काम



اُس میں امریکی سرکار کی پالیسی کو ہر طرح مدد دے گا اور اُس کے لئے کام کرے گا .

## دور پورب اور امریکہ

26 فروری کو ڈلس صاحب نے سیام کی راجدھانی بنککاک میں کہا ھے کہ :—

" دور پورب میں امریکہ کے چار سو سمندری بیڑے ھیں' تین لاکھ سمندری فوج ھے' تین لاکھ تھل سینا ھے اور ھوائی جہاز کے تیس اسکویڈرن ھیں ."

28 فروری کے اخباروں میں خبر چھپی ھے کہ دور پورب کی اپنی فوجوں کو امریکہ نے ایٹمی ھتیاروں سے لیس کر دیا ھے . اب وہ ایٹمی ھتیاروں کو توپ بندوق' معمولی گولوں جیسا ھی ھتیار سمجھتا ھے .

ساتھ ھی یہ خبر آئی ھے :—واشنگٹن میں آئزن‌ھاور سے اخباروالوں نے پوچھا ھے کہ ایٹمی ھتیار کے تجربے کیا بند کر دئے جائیں گے ؟ اُنھوں نے صاف کہا کہ " ھرگز نہیں ." ایٹمی ھتیاروں اور دوسرے ھتیاروں میں ھم کوئی فرق نہیں کرتے . اگر پورے ھتیاروں پر روک لگائی جائے گی تو ایٹمی ھتیار پر بھی روک لگے گی' نہیں تو نہیں .

ایسی صورت میں ایٹمی ھتیاروں کا مسئلہ کیسے حل ھوگا ؟ اِس کے حل نہ ھونے کی ذمہ‌داری کس پر ھوگی' یہ دنیا کے سامنے صاف ھے .

## کیا ایٹمی ھتیار معمولی ھتیاروں جیسے ھی ھیں

کیا ایٹمی ھتیاروں اور دوسرے ھتیاروں میں سچ مچ فرق نہیں ھے ؟ یو . این . او میں امریکی نمائندے لاج صاحب کا یہ ترک کیا ٹھیک ھے کہ آدمی چاھے بندوق کی گولی سے مرے اور چاھے ایٹم بم سے' بات ایک ھی ھے ؟ وگیانکوں کی بات اگر صحیح ھے اور جن خطروں کی طرف وہ جنتا کا دھیان دلاتے ھیں اگر وہ صحیح ھیں تو پھر یہ ماننا ھی پڑے گا کہ ایٹم بم دوسرے ھتیاروں سے بالکل الگ ھے . ایسے بھی ایٹمی ھتیار اور دوسرے ھتیاروں کا فرق صاف ھے . دوسرے ھتیاروں کا کام تھوڑے سے لوگوں کی جان لینے پر ختم ھو جاتا ھے لیکن ایٹمی ھتیار انگنت بےگناہ لوگوں کی جان بھی لیتے ھیں اور اپنا اثر پیڑھیوں تک کے لئے چھوڑ جاتے ھیں .

ھتیار تین طرح کے ھوتے ھیں . ایک وہ جو صرف بچاؤ کے کام آتے ھیں جیسے ڈھال وغیرہ' دوسرے وہ جو مارنے کے کام آتے ھیں جیسے تارپیڈو یا بندوق وغیرہ اور تیسرے وہ ھتیار جو مارنے کے کام بھی آتے ھیں اور بچاؤ کے کام بھی آتے ھیں جیسے تلوار' جہاز یا اور دوسرے اِسی طرح کے ھتیار . مارنے اور بچاؤ کے ھتیاروں کا کام

निन्नानवे हज़ार डालर सालाना अमरीका खर्च करता है. इन अड्डों पर अमरीका की तेरह लाख सत्तर हज़ार फ़ौज मौजूद है. अमरीका के अन्दर भी सोलह लाख दो हज़ार फ़ौज मौजूद है. इन दोनों गिनतियों का फ़रक़ ध्यान देने की चीज़ है. फ़ौजी सिपाहियों के अलावा एक लाख सरसठ हज़ार ग़ैर फ़ौजी अमरीकन दूसरे मुलकों में काम करते हैं. इनके अलावा दो लाख अट्ठारह हज़ार ऐसे अमरीकन हैं जो दूसरी सरकारों के अधीन विदेशों में काम करते हैं. अमरीका एक लाख चौबीस हज़ार जरमनों को जरमन सिक्के में तनख्वाह देता है. इस तरह हम देखते हैं कि घर से ज्यादा बाहर अपने देश की "रक्षा" के लिये अमरीकन काम कर रहे हैं.

## विदेशों में अमरीकी जासूस

आखिर यह ग़ैर फ़ौजी अमरीकी विदेशों में क्या करते हैं ? ऐसे तो ब्योपार, धर्म प्रचार, शिक्षा विस्तार वग़ैरा का बाना यह धारन किये रहते हैं पर इनमें से ज्यादातर का ख़ास काम जासूसी है. इंगलैंड में एक "आबज़रवर सरविस" है. उसकी एक ख़बर 27 फ़रवरी के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में छपी है. फ़ारमूसा में "वेस्टर्न इन्टर प्राइज़ इनकारपोरेशन" नाम की एक संस्था है. इसके मालिक अमरीकी हैं और इस का दफ़्तर चियांग-काई-शेक के निवास स्थान से मिला हुआ है. कहा जाता है कि यहां से चियांग-काई-शेक पर नज़र रखी जाती है कि कहीं वह कम्युनिस्टों से मिल न जाएं. इस संस्था को हाल में दो सौ पियानो लाने का लाइसेंस मिला था. एक चीनी अफ़सर की समझ में यह बात नहीं आई. वह जानता था कि पूरे फ़ारमूसा में भी दो सौ पियानो नहीं हैं, फिर इतने पियानों के लाने की इजाज़त क्यों दी गई ? उसने कुछ शोर मचाया. नतीजा यह हुआ कि एक दिन चुपके से वह नौकरी से अलग कर दिया गया. इस संस्था ने तामसुई नामी जगह पर 'सबोताज' यानी तोड़ फोड़ सिखाने के लिये एक स्कूल खोल रखा है. अब इस संस्था का भेद खुल गया है. अमरीकी जासूसी जाल का यह एक हिस्सा है. कहते हैं इसको अमरीकी पूंजीपतियों से इस सारे काम के लिये रुपया मिलता था. अब यह संस्था खुल्लम खुल्ला अमरीकी नेवी कमांड के अधीन कर ली गई है.

दूसरे देशों में अमरीकी सरकार की जासूसी की हद यहां तक पहुंच गई है कि ईसाई धर्म प्रचार के माथे पर भी वह एक कलंक का टीका बन गई है. पंडित सुन्दरलाल जी की हाल की योरप यात्रा में एक बहुत ही जिम्मेदार अमरीकी ईसाई पादरी ने उनसे कहा कि आजकल किसी अमरीकी ईसाई मिशनरी को विदेश जाने के लिये पासपोर्ट उस वक्त तक नहीं दिया जाता जब तक कि वह इस मज़मून के अहदनामे पर दस्तख़त न कर दे कि जिस मुल्क में वह जाएगा



ننانوے ہزار ڈالر سالانہ امریکہ خرچ کرتا ہے ۔ اِن اڈوں پر امریکہ کی تیرہ لاکھ ستر ہزار فوج موجود ہے۔ امریکہ کے اندر بھی سولہ لاکھ دو ہزار فوج موجود ہے۔ اِن دونوں گنتیوں کا فرق دھیان دینے کی چیز ہے۔ فوجی سپاہیوں کے علاوہ ایک لاکھ سرسٹھ ہزار غیر فوجی امریکن دوسرے ملکوں میں کام کرتے ہیں ۔ اِن کے علاوہ دو لاکھ اٹھارہ ہزار ایسے امریکن ہیں جو دوسری سرکاروں کے ادھین ودیشوں میں کام کرتے ہیں ۔ امریکہ ایک لاکھ چوبیس ہزار جرمنوں کو جرمن سکے میں تنخواہ دیتا ہے ۔ اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ گھر سے زیادہ باہر اپنے دیش کی "رکشا" کے لئے امریکن کام کر رہے ہیں ۔

## ودیشوں میں امریکی جاسوس

آخر یہ غیر فوجی امریکی ودیشوں میں کیا کرتے ہیں ؟ ایسے تو بیوپار' دھرم پرچار' شکشا وستار وغیرہ کا بانا یہ دھارن کئے رہتے ہیں پر اِن میں سے زیادہ تر کا خاص کام جاسوسی ہے ۔ انگلینڈ میں ایک " آبزرور سروس " ہے ۔ اُس کی ایک خبر 27 فروری کے ' ہندستان ٹائمس ' میں چھپی ہے ۔ فارموسا میں " وسٹرن انٹر پرائز انکارپوریشن " نام کی ایک سنستھا ہے ۔ اِس کے مالک امریکی ہیں اور اُس کا دفتر چانگ - کائی - شیک کے نواس استھان سے ملا ہوا ہے ۔ کہا جاتا ہے کہ یہاں سے چانگ - کائی - شیک پر نظر رکھی جاتی ہے کہ کہیں وہ کمیونسٹوں سے مل نہ جائیں ۔ اِس سنستھا کو حال میں دو سو پیانو لانے کا لائیسنس ملا تھا۔ ایک چینی افسر کی سمجھ میں یہ بات نہیں آئی۔ وہ جانتا تھا کہ پورے فارموسا میں بھی دو سو پیانو نہیں ہیں' پھر اتنے پیانو کی لانے کی اِجازت کیوں دی گئی ؟ اُس نے کچھ شور مچایا ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ایک دن چپکے سے وہ نوکری سے الگ کر دیا گیا ۔ اِس سنستھا نے تام سوئی نامی جگہ پر ' سبوتاج ' یعنی توڑ پھوڑ سکھانے کے لئے ایک اسکول کھول رکھا ہے ۔ اب اِس سنستھا کا بھید کھل گیا ہے ۔ امریکی جاسوسی جال کا یہ ایک حصہ ہے ۔ کہتے ہیں اِس کو امریکی پونجی پتیوں سے اِس سارے کام کے لئے روپیہ ملتا تھا ۔ اب یہ سنستھا کھلم کھلا امریکی نیوی کمانڈ کے ادھین کر لی گئی ہے ۔

دوسرے دیشوں میں امریکی سرکار کی جاسوسی کی حد یہاں تک پہونچ گئی ہے کہ عیسائی دھرم پرچار کے ماتھے پر بھی وہ ایک کلنک کا ٹیکا بن گئی ہے ۔ پنڈت سندر لال جی کی حال کی یورپ یاترا میں ایک بہت ہی ذمہ‌دار امریکی عیسائی پادری نے اُن سے کہا کہ آجکل کسی امریکی عیسائی مشنری کو ودیش جانے کے لئے پاسپورٹ اُس وقت تک نہیں دیا جاتا جب تک کہ وہ اِس مضمون کے عہدنامے پر دستخط نہ کر دے کہ جس ملک میں وہ جائے گا

सोवियत रूस के सुझाव पर तरह तरह की बातें कही गई हैं. बरतानिया वालों ने कहा कि इस सुझाव में कोई नई बात नहीं कही गई. रूस यह सब बातें पहले भी कह चुका है. सिर्फ़ एक नई बात है और वह यह कि इस बार एक ख़ास तारीख़ दे दी गई है कि उस दिन जितनी फ़ौज और जितने हथियार हैं वह आख़िरी माने जायं.

## रूस के सुझाव पर अमरीकियों की राय

अमरीका के बड़े बड़े राजकाजियों और बड़े बड़े अख़बारों की राय का निचोड़ यह है :

1—रूस का यह केवल प्रोपेगेन्डा है. इसमें कोई जान नहीं है.

2—अमरीका के पास ऐटमी हथियार बहुत ज्यादा हैं. इसीलिये रूस डरता है. अगर लड़ाई अब तक नहीं छिड़ी तो इसका कारन यह है कि अमरीका के पास ऐटमी हथियारों की ताक़त है. अगर यह हथियार ख़त्म हुए तो रूस हमला कर देगा.

3—रूस चाहता है कि पच्छिमी जरमनी की फ़ौजी ताक़त न बढ़ने पाए. अगर हमने रूस के सुझाव को मान लिया तो हम जरमनी को हथियार से लैस नहीं कर पाएंगे. इसीलिये रूस ने आख़री तारीख़ पहली जनवरी रखी है क्योंकि अभी तक पेरिस समझौते को सब राश्ट्रों ने मान्यता नहीं दी और जरमनी को हथियार मुहैया नहीं किये जा सके.

4—ऐटम हथियार ख़त्म होने पर हम कमज़ोर हो जाएंगे. ग़ैर ऐटमी लड़ाई में जीत या हार बहुत कुछ फ़ौजों की तादाद पर निरभर होती है. उस में हम रूस और चीन का मुक़ाबला नहीं कर सकते.

प्रश्न उठता है कि किस को किस से ख़तरा है. अमरीकी सरकार कहती है कि रूस योरप और अमरीका को हड़प कर जाएगा. इस डर से हम अपने हथियार बढ़ा रहे हैं. रूस वाले कहते हैं कि अमरीका वाले हमारे चारों तरफ़ फ़ौजी जाल बिछाए हुए हैं, हमें इनसे ख़तरा है. अगर यह फ़ौजी जाल हट जाएं तो हम इतमीनान से रचनात्मक कामों में लग सकें. क्या रूस की फ़ौजें अमरीका और इगलैंड या फ़ांस के चारों तरफ़ पड़ी हैं ? क्या रूस ने चारों तरफ़ फ़ौजी अड्डे क़ायम कर रखे हैं ?

## विदेशों में अमरीकी फ़ौजी जाल

कोई भी अमरीकी रूस पर यह दोष नहीं लगाता. लेकिन दूसरी तरफ़ अमरीका वाले ख़ुद अपनी फ़ौजी ताक़त का प्रचार करते हैं और रूस के ख़तरे को सच साबित करते हैं. अभी हाल में 'न्यूयार्क टाइम्स' में नीचे दिया ब्योरा छपा है :—

अपने देश से बाहर दुनिया भर में अमरीका के 950 फ़ौजी अड्डे हैं. इन अड्डों पर साठ करोड़, सोलह लाख,



سوویٹ روس کے سجھاؤ پر طرح طرح کی باتیں کہی گئی ہیں ۔ برطانیہ والوں نے کہا کہ اِس سجھاؤ میں کوئی نئی بات نہیں کہی گئی ۔ روس یہ سب باتیں پہلے ہی کہہ چکا ہے ۔ صرف ایک نئی بات ہے اور وہ یہ کہ اِس بار ایک خاص تاریخ دے دی گئی ہے کہ اُس دن جتنی فوج اور جتنے ہتیار ہیں وہ آخری مانے جائیں ۔

## روس کے سجھاؤ پر امریکیوں کی رائے

امریکہ کے بڑے بڑے راج کاجیوں اور بڑے بڑے اخباروں کی رائے کا نچوڑ یہ ہے :

1—روس کا یہ کیول پروپگنڈہ ہے ۔ اس میں کوئی جان نہیں ہے ۔

2—امریکہ کے پاس ایٹمی ہتیار بہت زیادہ ہیں ۔ اِسی لئے روس ڈرتا ہے ۔ اگر لڑائی اب تک نہیں چھڑی تو اُس کا کارن یہ ہے کہ امریکہ کے پاس ایٹمی ہتیاروں کی طاقت ہے ۔ اگر یہ ہتیار ختم ہوئے تو روس حملہ کردےگا ۔

3—روس چاہتا ہے کہ پچھمی جرمنی کی فوجی طاقت نہ بڑھنے پائے ۔ اگر ہم نے روس کے سجھاؤ کو مان لیا تو ہم جرمنی کو ہتیار سے لیس نہیں کرپائیں گے ۔ اسی لئے روس نے آخری تاریخ پہلی جنوری رکھی ہے کیونکہ ابھی تک پیرس سمجھوتے کو سب راشٹروں نے مانتا نہیں دی اور جرمنی کو ہتیار مہیا نہیں کئے جاسکے ۔

4—ایٹمی ہتیار ختم ہونے پر ہم کمزور ہوجاوینگے ۔ غیر ایٹمی لڑائی میں جیت یا ہار بہت کچھ فوجوں کی تعداد پر نربھر ہوتی ہے اُس میں ہم روس اور چین کا مقابلہ نہیں کرسکتے ۔

پرشن اُٹھتا ہے کہ کس کو کس سے خطرہ ہے ۔ امریکی سرکار کہتی ہے کہ روس یورپ اور امریکہ کو ہڑپ کرجائےگا ۔ اِس ڈر سے ہم اپنے ہتیار بڑھا رہے ہیں ۔ روس والے کہتے ہیں کہ امریکہ والے ہمارے چاروں طرف فوجی جال بچھائے ہوئے ہیں ، ہمیں اِن سے خطرہ ہے ۔ اگر یہ فوجی جال ہٹ جائیں تو ہم اطمینان سے رچناتمک کاموں میں لگ سکیں ۔ کیا روس کی فوجیں امریکہ اور انگلینڈ یا فرانس کے چاروں طرف پڑی ہیں ؟ کیا روس نے چاروں طرف فوجی اڈے قائم کر رکھے ہیں ؟

## ودیشوں میں امریکی فوجی جال

کوئی بھی امریکی روس پر یہ دوش نہیں لگاتا ۔ لیکن دوسری طرف امریکہ والے خود اپنی فوجی طاقت کا پرچار کرتے ہیں اور روس کے خطرے کو سچ ثابت کرتے ہیں ۔ ابھی حال میں 'نیویارک ٹائمس' میں نیچے دیا بیورا چھپا ہے :—

اپنے دیش سے باہر دنیا بھر میں امریکہ کے 950 فوجی اڈے ہیں ۔ اِن اڈوں پر ساٹھ کروڑ ، سولہ لاکھ ،

सात हज़ार वर्ग मील में रेडियो-ऐकटिव लहरें फैल जाती हैं. यही नहीं, बल्कि रेडियो ऐकटिव लहरें हवा में मिलकर विस्फोट की जगह से हज़ारों मील की यात्रा तै करती हैं और सारे वायुमन्डल को विशैला बनाती हैं. दूसरी तरफ़ कहा गया है कि एक इनसान जितनी रेडियो ऐकटिव लहरें बर्दाश्त कर सकता है उससे कम रेडियो ऐकटिव लहरें इन तजुरबों से पैदा होती हैं. पता नहीं कि अमरीकी सरकार के हाथ के यह कठपुतली वैज्ञानिक ख़ुद धोके में हैं या जान बूझ कर जनता को धोके में रखना चाहते हैं !

एक तरफ़ ऐटमी हथियारों को ख़तम करने की बात हो रही है और दूसरी तरफ़ बरतानिया ने 17 फ़रवरी को ऐलान किया है कि वह भी ऐटम और हाइडरोजन बम तैयार कराएगा. रही सही उम्मीद को एक ठेस और लगी.

## ऐटम बम के ख़ातमे के लिये रूस का सुझाव

19 फ़रवरी को रूसी रेडियो ने रूसी सरकार की तरफ़ से नीचे लिखे सुझाव रखे :

1—जितने भी ऐटम या हाइडरोजन बम किसी भी राष्ट्र के पास हों, उन सबको बरबाद कर दिया जाए. ऐटमी शक्ति सिर्फ़ रचनात्मक कामों में लगाई जाए.

2—1 जनवरी सन 1955 को जिस राष्ट्र के पास जितनी फ़ौज थी और उसके पास जितने हथियार थे, उससे ज्यादा फ़ौज या हथियार किसी देश में न बढ़ाए जाएं. सन 1955 के फ़ौजी बजट को आख़िरी मान लिया जाए और फ़ौजी ख़र्च कहीं भी इस से ज्यादा न किया जाए.

3—इन फ़ैसलों पर देख रेख करने और अमल कराने का काम एक अन्तर्राष्ट्री कमीशन के सुपुर्द किया जाए.

4—दुनिया की तमाम जनता को ऐटमी हथियारों से ख़तरा है. दुनिया के सब लोग चाहते हैं कि हथियारों और फ़ौजों में कमी हो. इसलिये दुनिया भर के राष्ट्रों की एक कानफ़रेन्स की जाए जिसका उद्देश्य हो सब तरह के हथियारों में कमी करना और उनपर रोक लगाना. इस कानफ़रेन्स को यू. एन. ओ. के मेम्बर राष्ट्रों तक ही सीमित न रखा जाए बल्कि दुनिया के हर राष्ट्र को इसमें बुलाया जाए.

एक तरफ़ रूस के यह सुझाव हैं और दूसरी तरफ़ अमरीका के सेक्रेटरी डलेस साहब को संधियों और अहदनामों पर विश्वास ही नहीं है. 17 फ़रवरी को एक सभा में उन्होंने कहा :—

"यह समझ लेना ख़तरनाक है कि सिर्फ़ संधियां और अहदनामे ही हमारी उस भारी जिम्मेदारी को हलका कर देंगे जो शान्ति क़ायम करने के सम्बन्ध में हमारे कन्धों पर आ पड़ी है."



سات ہزار ورگ میل میں ریڈیو ایکٹو لہریں پھیل جاتی ہیں. یہی نہیں، بلکہ ریڈیو ایکٹو لہریں ہوا میں مل‌کر وسپھوٹ کی جگہ سے ہزاروں میل کی یاترا طے کرتی ہیں اور سارے وایو منڈل کو وشیلا بناتی ہیں. دوسری طرف کہا گیا ہے کہ ایک انسان جتنی ریڈیو ایکٹو لہریں برداشت کرسکتا ہے اُس سے کم ریڈیو ایکٹو لہریں اِن تجربوں سے پیدا ہوتی ہیں . پتہ نہیں کہ امریکی سرکار کے ہاتھ کے یہ کٹھپتلی ویگیانک خود دھوکے میں ہیں یا جان بوجھ کر جنتا کو دھوکے میں رکھنا چاہتے ہیں !

ایک طرف ایٹمی ہتیاروں کو ختم کرنے کی بات ہو رہی ہے اور دوسری طرف برطانیہ نے 17 فروری کو اعلان کیا ہے کہ وہ بھی ایٹم اور ہائڈروجن بم تیار کرائے گا . رہی سہی اُمید کو ایک ٹھیس اور لگی .

## ایٹم بم کے خاتمے کے لئے روس کا سجھاؤ

19 فروری کو روسی ریڈیو نے روسی سرکار کی طرف سے نیچے لکھے سجھاؤ رکھے :

1—جتنے بھی ایٹم یا ہائڈروجن بم کسی بھی راشٹر کے پاس ہوں، اُن سب کو برباد کردیا جائے . ایٹمی شکتی صرف رچناتمک کاموں میں لگائی جائے .

2—پہلی جنوری سن 1955 کو جس راشٹر کے پاس جتنی فوج تھی اور اُس کے پاس جتنے ہتیار تھے، اُس سے زیادہ فوج یا ہتیار کسی دیش میں نہ بڑھائے جائیں. سن 1955 کے فوجی بجٹ کو آخری مان لیا جائے اور فوجی خرچ کہیں بھی اِس سے زیادہ نہ کیا جائے .

3—اِن فیصلوں پر دیکھ ریکھ کرنے اور عمل کرانے کا کام ایک انتر راشٹری کمیشن کے سپرد کیا جائے .

4—دنیا کی تمام جنتا کو ایٹمی ہتیاروں سے خطرہ ہے . دنیا کے سب لوگ چاہتے ہیں کہ ہتیاروں اور فوجوں میں کمی ہو . اِس لئے دنیا بھر کے راشٹروں کی ایک کانفرنس کی جائے جس کا اُدیش ہو سب طرح کے ہتیاروں میں کمی کرنا اور اُن پر روک لگانا . اِس کانفرنس کو یو . این . او . کے ممبر راشٹروں تک ہی سیمت نہ رکھا جائے بلکہ دنیا کے ہر راشٹر کو اِس میں بلایا جائے .

ایک طرف روس کے یہ سجھاؤ ہیں اور دوسری طرف امریکہ کے سکریٹری ڈلاس صاحب کو سندھیوں اور عہدناموں پر وشواس ہی نہیں ہے . 17 فروری کو ایک سبھا میں اُنھوں نے کہا :—

"یہ سمجھ لینا خطرناک ہے کہ صرف سندھیاں اور عہدنامے ہی ہماری اُس بھاری ذمہ‌داری کو ہلکا کردیں‌گے جو شانتی قائم کرنے کے سمبندھ میں ہمارے کندھوں پر آپڑی ہے ."

# अमरीका और ऐटमी हथियार

9 फ़रवरी सन 1955 को रूस की सुप्रीम सोवियत ने अपनी सरकार को आदेश दिया कि वह ऐटमी हथियारों पर उन्हें रोक लगाने, फ़ौजी ताक़त को कम करने और ऐटमी शक्ति को रचनात्मक कामों में लगाने के सम्बन्ध में दूसरे राष्ट्रों से बात चीत करे और, इस मामले में समझौता करने पर उन्हें राज़ी करे. रूस की तरफ़ से इस तरह के सुझाव पहले भी आते रहे हैं. यू. एन. ओ. की नवीं जनरल असम्बली के सामने भी रूस ने इस तरह के सुझाव रखे थे लेकिन उनका कोई नतीजा नहीं निकला.

## अमरीका में ऐटम बम के तजुरबे

दुनिया की जनता आशा भरी निगाहों से बड़े राष्ट्रों की तरफ़ देखने लगी. उम्मीद थी कि इस बार ज़रूर कोई न कोई समझौता हो जाएगा. लेकिन 13 रवरी को अमरीका ने ऐलान किया कि वह नवादा में नए ऐटमी तजुरबे करने जा रहा है. इसी बयान में कहा गया कि अमरीका अब तक 32 ऐटम बम तजुरबे के तौर पर फेंक चुका है. तैंतीसवां बम निवादा में फेंका जाएगा और चार महीने तक यह तजुरबे चलते रहेंगे. इन चार महीने में ग्यारा दफ़ा तजुरबा किया जाएगा.

दुनिया की जनता में आम तौर से और अमरीकी जनता में ख़ास तौर से इस ऐलान से बेचैनी की लहर दौड़ गई. इसी ऐलान के साथ साथ अमरीका के ऐटमी शक्ति कमीशन के अध्यक्ष की रिपोर्ट भी जनता के सामने आई. इस रिपोर्ट के अनुसार तजुरबे के तौर पर जो ऐटम और हाइडरोजन बम छुड़ाए जाते हैं उनका इनसान और जानवरों दोनों पर भयानक असर पड़ता है. ख़ास तौर से नए पैदा होने वाले बच्चों की तन्दुरुस्ती और उनके जिस्मों पर इसका प्रभाव गहरा होता है. इस तरह की रिपोर्टें जनता के लिये नहीं होतीं और न ही इन्हें जनता की जानकारी के लिये छापा जाता है. लेकिन जनता के अन्दर बेचैनी इस हद तक बढ़ गई कि अमरीकी सरकार के स ने दो ही रास्ते रह गए. एक यह कि ऐटम बम का तजुरबा बन्द कर दिया जाए, या दूसरे यह कि किसी तरह जनता की बेचैनी और डर ख़तम किया जाए. ऐटम बम के तजुरबे को छोड़ना सरकार 'को उचित नहीं मालूम हुआ. उसने जनता को बहलाने की कोशिश शुरू की. आइज़न हावर ने अपने बयान में कहा कि हम इस रिपोर्ट को इसलिये छपवा रहे हैं ताकि जनता के दिल में जो डर बैठ गया है वह दूर हो जाए. इस रिपोर्ट में एक तरफ़ भयानक असरों का ज़िक्र है और दूसरी तरफ़ जनता को न डरने का उपदेश दिया गया है. एक तरफ़ यह कहा गया है कि एक ऐटम बम के फटने से



# امریکہ اور ایٹمی ہتیار

9 فروری سن 1955 کو روس کی سپریم سوویت نے اپنی سرکار کو آدیش دیا کہ وہ ایٹمی ہتیاروں پر روک لگانے' فوجی طاقت کو کم کرنے اور ایٹمی شکتی کو رچناتمک کاموں میں لگانے کے سمبندھ میں دوسرے راشٹروں سے بات چیت کرے اور اِس معاملے میں سمجھوتہ کرنے پر اُنھیں راضی کرے۔ روس کی طرف سے اِس طرح کے سجھاؤ پہلے بھی آتے رہے ھیں۔ یو۔ این۔ اُو۔ کی نویں جنرل اسمبلی کے سامنے بھی روس نے اِس طرح کے سجھاؤ رکھے تھے لیکن اُن کا کوئی نتیجہ نہیں نکلا۔

## امریکہ میں ایٹم بم کے تجربے

دنیا کی جنتا آشا بھری نگاھوں سے بڑے راشٹروں کی طرف دیکھنے لگی۔ اُمید تھی کہ اس بار ضرور کوئی نہ کوئی سمجھوتہ ہو جائےگا۔ لیکن 13 فروری کو امریکہ نے اعلان کیا کہ وہ نوادا میں نئے ایٹمی تجربے کرنے جا رہا ھے. اِسی بیان میں کہا گیا کہ امریکہ اب تک 32 ایٹم بم تجربے کے طور پر پھینک چکا ھے۔ تینتیسواں بم نوادا میں پھینکا جائےگا اور چار مہینے تک یہ تجربے چلتے رھیں گے۔ اِن چار مہینے میں گیارہ دفعہ تجربہ کیا جائےگا۔

دنیا کی جنتا میں عام طور سے اور امریکی جنتا میں خاص طور سے اس اعلان سے بےچینی کی لہر دوڑ گئی۔ اُسی اعلان کے ساتھ ساتھ امریکہ کے ایٹمی شکتی کمیشن کے ادھیکش کی رپورٹ بھی جنتا کے سامنے آئی۔ اِسی رپورٹ کے انوسار تجربے کے طور پر جو ایٹم اور ھائڈروجن بم چھڑائے جاتے ھیں اُن کا انسان اور جانوروں دونوں پر بھیانک اثر پڑتا ھے۔ خاص طور سے نئے پیدا ھونے والے بچوں کی تندرستی اور اُن کے جسموں پر اِس کا پربھاؤ گہرا ھوتا ھے۔ اِس طرح کی رپورٹیں جنتا کے لئے نہیں ھوتیں اور نہ ھی انھیں جنتا کی جانکاری کے لئے چھاپا جاتا ھے. لیکن جنتا کے اندر بےچینی اِس حد تک بڑھ گئی کہ امریکی سرکار کے سامنے دو ھی راستے رہ گئے. ایک یہ کہ ایٹم بم کا تجربہ بند کردیا جائے' یا دوسرے یہ کہ کسی طرح جنتا کی بےچینی اور ڈر ختم کیا جائے۔ ایٹم بم کے تجربہ کو چھوڑنا سرکار کو اچت نہیں معلوم ھوا۔ اُس نے جنتا کو بہلانے کی کوشش شروع کی۔ آئزن‌ھاور نے اپنے بیان میں کہا کہ ھم اِس رپورٹ کو اِس لئے چھپوا رھے ھیں تاکہ جنتا کے دل میں جو ڈر بیٹھ گیا ھے وہ دور ھو جائے۔ اس رپورٹ میں ایک طرف بھیانک اثروں کا ذکر ھے اور دوسری طرف جنتا کو نہ ڈرنے کا اُپدیش دیا گیا ھے۔ ایک طرف یہ کہا گیا ھے کہ ایک ایٹم بم کے پھٹنے سے

और रंग रोग़न पर उनकी क़ीमत के हिसाब से 10 फ़ीसदी पैदावार टैक्स लगाया गया है. सस्ती सिगरेटों को छूट देकर मंहगी सिगरेटों को और भी मंहगा बनाया गया है. कपड़े के बाहर जाने के टैक्स को कम करके चाय का महसूल बढ़ा दिया गया है. विवाहितों को राहत दी गई है तो अविवाहितों पर टैक्स का भार बढ़ाया गया है, चार आदमियों के परिवार को राहत देकर 7500 रुपैया सालाना से अधिक आमदनी वालों पर टैक्स का भार बढ़ाया गया है. इस तरह कतरब्योंत करके आम जनता की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश की गई है.

टैक्सों की यह बढ़ती इस बजट के साथ समाप्त होने वाली नहीं है. श्री देशमुख ने ये बहुत साफ़ शब्दों में कह दिया है कि इन्हें इतना समय नहीं मिल सका कि वे मथाई कमीशन की सारी सिफ़ारिशों पर ग़ौर करके टैक्सों के बढ़ाने का पूरा इन्तज़ाम कर सकते. जल्दी ही उन पर ग़ौर करके, इन पर अमल करने और टैक्सों को और अधिक बढ़ाने की बात भी साफ़ शब्दों में कह दी गई है. इसलिये ग़रीब लोगों को और अधिक टैक्सों के नये भार को उठाने के लिये अभी से तैयार रहना चाहिये. सारे बजट को देखने से यह साफ़ हो जाता है कि बजट जनता बजट नहीं पूंजीपति बजट है. बजट तैयार करने वालों की निगाह में गांव के लोगों या आम ग़रीब जनता का हित इतना नहीं है जितना बड़े लोगों, पूंजीपतियों और मिल मालिकों का हित और सरकार की आमदनी बढ़ाना.

## समाजवादी आदर्श की हत्या

आवदी में कांग्रेस ने जिस समाजवादी आदर्श को इतने अधिक उत्साह के साथ मंजूर किया है उसकी इन दोनों ही बजटों में और सूबों के बजटों में कहीं गन्ध भी दीख नहीं पड़ती. समाजवादी आदर्श का मतलब जो भी किया जाता हो, लेकिन यह माना जाता है कि इसमें ग़रीब और आम जनता को टक्सों के भार से अधिक से अधिक राहत दी जानी चाहिये और राश्ट्र की सम्पत्ति का उसको अधिक से अधिक लाभ मिलना चाहिये. ऐसा इनमें से किसी भी बजट में नहीं किया गया है. दोनों ही बजटों में ग़रीब की की हुई पीठ पर और भी अधिक भार लाद दिया गया है.

श्री देशमुख ने माना है कि खेती और कारख़ानों की पैदावार बढ़ने से भी पहली पंचसाला योजना से बेरोज़गारी पर कुछ भी क़ाबू नहीं पाया जा सका है. उन्होंने कहा है कि उसके लिये दूसरी पंचसाला योजना में कोशिश की जायगी. इतनी ही ग़नीमत है कि इस नाकामयाबी को अपने मुंह से ख़ुद ही स्वीकार कर लिया गया है. यदि कांग्रेस ने सचाई और ईमानदारी से इस आदर्श को स्वीकार किया है तो उसका कुछ तो आभास सूबों के और केन्द्र के इन बजटों से अवश्य मिलना चाहिये था.

2-3-'55 स्यदेव विद्यालंकार



اور رنگ روغن پر اُن کی قیمت کے حساب سے 10 فی صدی پیداوار ٹیکس لگایا گیا ھے. سستی سگریٹوں کو چھوٹ دےکر مہنگی سگریٹوں کو اور بھی مہنگا بنایا گیا ھے . کپڑے کے باھر جانے کے ٹیکس کو کم کرکے چائے کا محصول بڑھا دیا گیا ھے . وواھتوں کو راحت دی گئی ھے تو اَوواھتوں پر ٹیکس کا بھار بڑھایا گیا ھے . چار آدمیوں کے پریوار کو راحت دےکر 7500 روپیہ سالانہ سے ادھک آمدنی والوں پر ٹیکس کا بھار بڑھایا گیا ھے . اِس طرح کتربیونت کرکے عام جنتا کی آنکھوں میں دھول جھونکنے کی کوشش کی گئی ھے .

ٹیکسوں کی یہ بڑھتی اِس بجٹ کے ساتھ سماپت ھونے والی نہیں ھے . شری دیش مکھ نے یہ بہت صاف شبدوں میں کہ دیا ھے کہ اُنہیں اتنا سمے نہیں مل سکا کہ وہ متھائی کمیشن کی ساری سفارشوں پر غور کرکے ٹیکسوں کے بڑھانے کا پورا انتظام کرسکتے. جلدی ھی اُن پر غور کرکے' اِن پر عمل کرنے اور ٹیکسوں کو اور ادھک بڑھانے کی بات بھی صاف شبدوں میں کہ دی گئی ھے . اس لئے غریب لوگوں کو اور ادھک ٹیکسوں کے نئے بھار کو اُٹھانے کے لئے ابھی سے تیار رھنا چاھئے . سارے بجٹ کو دیکھنے سے یہ صاف ھو جاتا ھے کہ بجٹ جنتا بجٹ نہیں پونجی پتی بجٹ ھے. بجٹ تیار کرنے والوں کی نگاہ میں گاؤں کے لوگوں یا عام غریب جنتا کا ھت اتنا نہیں ھے جتنا بڑے لوگوں' پونجی پتیوں اور مل مالکوں کا ھت اور سرکار کی آمدنی بڑھانا .

## سماج وادی آدرش کی ھتیا

آودی میں کانگریس نے جس سماج وادی آدرش کو اتنے ادھک اُتساہ کے ساتھ منظور کیا ھے اُس کی ان دونوں ھی بجٹوں میں اور صوبوں کے بجٹوں میں کہیں گندھ بھی دیکھ نہیں پڑتی . سماج وادی آدرش کا مطلب جو بھی کیا جاتا ھو' لیکن یہ مانا جاتا ھے کہ اِس میں غریب اور عام جنتا کو ٹیکسوں کے بھار سے ادھک سے ادھک راحت دی جانی چاھئے اور راشٹر کی سمپتی کا اُس کو ادھک سے ادھک لابھ ملنا چاھئے . ایسا اِن میں سے کسی بھی بجٹ میں نہیں کیا گیا ھے . دونوں ھی بجٹوں میں غریب کی جھکی ھوئی پیٹھ پر اور بھی ادھک بھار لاد دیا گیا ھے .

شری دیش مکھ نے مانا ھے کہ کھیتی اور کارخانوں کی پیداوار بڑھنے سے بھی پہلی پنچسالہ یوجنا سے بےروزگاری پر کچھ بھی قابو نہیں پایا جاسکا ھے . انھوں نے کہا ھے کہ اُس کے لئے دوسری پنچسالہ یوجنا میں کوشش کی جائےگی . اتنی ھی غنیمت ھے کہ اِس ناکامیابی کو اپنے منہ سے خود ھی سویکار کرلیا گیا ھے . یدی کانگریس نے سچائی اور ایمانداری سے اِس آدرش کو سویکار کیا ھے تو اُس کا کچھ تو آبھاس صوبوں کے اور کیندر کے اِن بجٹوں سے اوشیہ ملنا چاھئے تھا .

—ستیہ دیو ودیالنکار 2 . 3 . '55

करते होंगे. अधिकतर ग़रीब जनता छोटे सफ़र करने वाली ही होती है. 151 से 300 मील तक या अधिक सफ़र करने वाले ज़्यादातर मध्य वर्ग के और धनी वर्ग के ही लोग होते हैं. इस तरह राहत तो मिलेगी बड़े लोगों को और धनी वर्ग को और किराये की दर में बढ़ती का भार पड़ेगा ग़रीब जनता पर. इसी तरह माल की ढुलाई में पूरे वैगन पर खाने के सामान और केमिकल खादों पर और लम्बी दूरी पर छूट का फ़ायदा भी किसी ग़रीब किसान या मज़दूर को न मिलकर अमीर और मिल मालिकों या व्यापारियों को ही मिलेगा. आम जनता के लिये छोटे पारसलों पर कम से कम महसूल एक रुपये से डेढ़ रुपया कर दिया गया है और मामूली दर में दो आना रुपया बढ़ा दिया गया है. इस बढ़ौती का सारा बोझ भी आम ग़रीब जनता पर ही अधिक पड़ेगा.

प्लेटफ़ार्म टिकट दो आने से एक आना कर दिया गया है. उसका चलन आम तौर पर उन बड़े स्टेशनों पर ही है जहां पढ़े लिखे लोग या बड़े लोग अधिक रहते हैं. छोटे स्टेशनों पर इनका चलन नहीं है. इसलिये इस छूट का लाभ भी पढ़े लिखे लोगों या बड़े लोगों को ही अधिक मिलेगा. गांव की जनता को इससे कोई लाभ नहीं. रेलवे बजट की दूसरी रियायतें भी इसी तरह की हैं. ये बिलकुल साफ़ है कि रेलवे का बजट आम जनता को सामने न रखकर केवल शहरियों, बड़े लोगों और पूंजीपतियों को सामने रखकर, उनके ख़र्च को कम करने और सरकार की आमदनी को बढ़ाने के विचार से ही तैयार किया गया है.

आम बजट में भी ऐसा ही किया गया है और आड़ ली गई है उस कमीशन की जो पिछले अर्थमंत्री डाक्टर जान मथाई की सदारत में टैक्सों के बारे में छानबीन करने के लिये क़ायम किया गया था, उसकी रिपोर्ट बजट के साथ ही शाया की गई है. उसने जो रास्ता बना दिया उसपर श्री चिन्तामणि देशमुख ने पैर बढ़ाया है. इस यही ज़ाहिर होता है कि कमीशन टैक्स बढ़ाने की तजवीज़ें सोचने के मतलब से ही बिठलाया गया था और जो कुछ भी किया गया है वह सोच विचार कर बनाई हुई योजना के तहत किया गया है.

कृषिमंत्री ने दो ही दिन पहले चीनी के भाव घटाने की आशा दिलाई थी, पर अर्थमंत्री ने विदेशी चीनी पर महसूल बढ़ाकर और देशी चीनी की पैदावार पर नया टैक्स बिठाकर चीनी का भाव दो पैसे सेर बढ़ा दिया. इसी तरह टैक्स बढ़ाकर कपड़े की क़ीमत भी दो पैसा गज़ बढ़ा दी. कुछ चीज़ों पर से टैक्सों में कमी करके ऊनी कपड़े, सीने की मशीनें, बिजली के पंखे, बिजली के लट्टू, बिजली की ट्यूब, बिजली की स्टोरज बेटरियां, बिजली की ड्राई बेटरियां, अख़बारी काग़ज़ के अलावा दूसरे काग़ज़, गत्ते



کرتے ہونگے۔ ادھک تر غریب جنتا چھوٹے سفر کرنے والی ہی ہوتی ہے۔ 151 سے 300 میل تک یا ادھک سفر کرنے والے زیادہ تر مدھیہ ورگ کے اور دھنی ورگ کے ہی لوگ ہوتے ہیں۔ اس طرح راحت تو ملے گی بڑے لوگوں کو اور دھنی ورگ کو اور کرائے کی در میں بڑھتی کا بھار پڑے گا غریب جنتا پر۔ اسی طرح مال کی ڈھلائی میں پورے ویگن پر کھانے کے سامان اور کیمیکل کھادوں پر اور لمبی دوری پر چھوٹ کا فائدہ بھی کسی غریب کسان یا مزدور کو نہ مل کر امیر اور مل مالکوں یا بیوپاریوں کو ہی ملے گا۔ عام جنتا کے لئے چھوٹے پارسلوں پر کم سے کم محصول ایک روپیہ سے ڈیڑھ روپیہ کر دیا گیا ہے اور معمولی در میں دو آنہ روپیہ بڑھا دیا گیا ہے۔ اس بڑھوتی کا سارا بوجھ بھی عام غریب جنتا پر ہی ادھک پڑیگا۔

پلیٹ فارم ٹکٹ دو آنے سے ایک آنہ کردیا گیا ہے۔ اُس کا چلن عام طور پر اُن بڑے اسٹیشنوں پر ہی ہے جہاں پڑھے لکھے لوگ یا بڑے لوگ ادھک رہتے ہیں۔ چھوٹے اسٹیشنوں پر ان کا چلن نہیں ہے۔ اس لئے اس چھوٹ کا لابھ بھی پڑھے لکھے لوگوں یا بڑے لوگوں کو ہی ادھک ملیگا۔ گاؤں کی جنتا کو اس سے کوئی لابھ نہیں۔ ریلوے بجٹ کی دوسری رعائتیں بھی اسی طرح کی ہیں۔ یہ بالکل صاف ہے کہ ریلوے کا بجٹ عام جنتا کو سامنے نہ رکھکر کیول شہریوں، بڑے لوگوں اور پونجی پتیوں کو سامنے رکھکر، اُن کے خرچ کو کم کرنے اور سرکار کی آمدنی کو بڑھانے کے وچار سے ہی تیار کیا گیا ہے۔

عام بجٹ میں بھی ایسا ہی کیا گیا ہے اور آڑ لی گئی ہے اُس کمیشن کی جو پچھلے ارتھ منتری ڈاکٹر جان متھائی کی صدارت میں ٹیکسوں کے بارے میں چھان بین کرنے کے لئے قائم کیا گیا تھا، اُس کی رپورٹ بجٹ کے ساتھ ہی شائع کی گئی ہے۔ اُس نے جو راستہ بنادیا اُس پر شری چنتا منی دیشمکھ نے پیر بڑھایا ہے۔ اس سے یہی ظاہر ہوتا ہے کہ کمیشن ٹیکس بڑھانے کی تجویزیں سوچنے کے مطلب سے ہی بٹھلایا گیا تھا اور جو کچھ بھی کیا گیا ہے وہ سوچ وچار کر بنائی ہوئی یوجنا کے تحت کیا گیا ہے۔

کرشی منتری نے دو ہی دن پہلے چینی کے بھاؤ گھٹانے کی آشا دلائی تھی، پر ارتھ منتری نے ودیشی چینی پر محصول بڑھاکر اور دیشی چینی کی پیداوار پر نیا ٹیکس بٹھاکر چینی کا بھاؤ دو پیسے سیر بڑھا دیا۔ اسی طرح ٹیکس بڑھاکر کپڑے کی قیمت بھی دو پیسہ گز بڑھا دی۔ کچھ چیزوں پر سے ٹیکسوں میں کمی کرکے اُونی کپڑے، سینے کی مشینیں، بجلی کے پنکھے، بجلی کے لٹو، بجلی کی ٹیوب، بجلی کی اسٹورج بیٹریاں، بجلی کی ڈرائی بیٹریاں، اخباری کاغذ کے علاوہ دوسرے کاغذ، گتے

घाटा ही घाटा दिखायागया है. सब सूबों को मिला कर इस साल में विकास योजनाओं पर दो अरब से कुछ ज्यादा खर्च किया जा रहा है.

भारत सरकार के रेलवे बजट में साल की कुल आमदनी 292 करोड़ से ऊपर कूती गई है. इसमें से रेलवे का कुल खर्च 214 करोड़ निकाल कर और बाक़ी में से 35 करोड़ टूट फूट फंड में डालकर रेलवे को 43 करोड़ से ऊपर की बचत होती है. इस 43 करोड़ में से 36 करोड़ भारत सरकार के खर्च के लिये देने के बाद भी रेलवे के पास लगभग 8 करोड़ फ़ालतू बचे रहते हैं. खर्च जो बेतहाशा बढ़ा है वह अलग रहा.

आम बजट में 30 करोड़ का घाटा दिखाकर इक्कीस बाईस करोड़ का घाटा नये टैक्स लगा कर पूरा कर लिया गया है. 54-55 के बजट में आमदनी चार अरब, इक्यावन करोड़, तिहत्तर लाख; खर्च चार अरब सरसठ करोड़ नौ लाख, घाटा पन्द्रह करोड़ छत्तीस लाख कूता गया था. उसमें अब पन्द्रह करोड़ की जगह केवल पांच करोड़ घाटा होने की उम्मीद है. एक ही साल में चार अरब सरसठ करोड़ का खर्च क़रीब क़रीब पांच अरब तक पहुंच गया. 55-56 के बजट में आमदनी चार अरब इक्यावन करोड़ से बढ़कर चार अरब अड़सठ करोड़ तक पहुंच गई है. लेकिन खर्च के बढ़ जाने से तीस करोड़ सत्तरह लाख का घाटा रह जाने का अन्दाज़ा किया गया है. उसके लिये नये टैक्स लगा कर लगभग बाईस करोड़ की नई आमदनी का इन्तज़ाम कर लिया गया है. फिर भी आठ करोड़ सैंतालीस लाख का घाटा पूरा किये बिना ही बजट को छोड़ दिया गया है.

## नये टैक्स

रेलवे बजट और आम बजट दोनों में ही नये टैक्स लगाये गये हैं और पुराने टैक्सों में कतरब्योंत भी की गई है. इस कतरब्योंत की वजह से ही दोनों बजटों को जादूगरों का खेल कहना चाहिये. रेलवे बजट यदि छोटे जादूगर का छोटा खेल है, तो आम बजट बड़े जादूगर का बड़ा खेल. अफ़सोस तो यह है कि रेलवे बजट में रेलवे के टिकट और भाड़े की दरों में बढ़ती करके भी यह दिखाने की कोशिश की गई है कि जनता पर कोई भार नहीं डाला गया. रेलवे सफ़र और माल भेजने की दूरी को तीन भागों में बांटा गया है. 150 मील तक सफ़र करने वालों के लिये रेलवे के टिकट की दर बढ़ा दी गई है. 151 से 300 मील तक सफ़र करने वालों के लिये किराये की दर पुरानी ही रहने दी गई है. 300 मील से ऊपर सफ़र करने वालों के लिये किराये की दर कम कर दी गई है. हम यह नहीं भूल सकते कि हमारे ग़रीब मुल्क में ज्यादातर रोज़ाना सफ़र करने वाले वे ग़रीब लोग हैं जो मुश्किल से कभी डेढ़ सौ या उससे अधिक मील का सफ़र



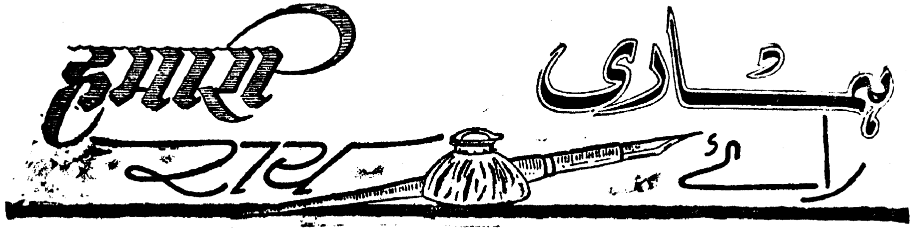
گھاٹا ہی گھاٹا دکھایا گیا ہے ۔ سب صوبوں کو ملا کر اس سال میں وکاس یوجناؤں پر دو ارب سے کچھ زیادہ خرچ کیا جا رہا ہے ۔

بھارت سرکار کے ریلوے بجٹ میں سال کی کل آمدنی 292 کروڑ سے اوپر کوتی گئی ہے ۔ اس میں سے ریلوے کا کل خرچ 214 کروڑ نکال کر اور باقی میں سے 35 کروڑ ٹوٹ پھوٹ فنڈ میں ڈال کر ریلوے کو 43 کروڑ سے اوپر کی بچت ہوتی ہے ۔ اس 43 کروڑ میں سے 36 کروڑ بھارت سرکار کے خرچ کے لئے دینے کے بعد بھی ریلوے کے پاس لگ بھگ 8 کروڑ فالتو بچے رہتے ہیں ۔ خرچ جو بے تحاشا بڑھا ہے وہ الگ رہا ۔

عام بجٹ میں 30 کروڑ کا گھاٹا دکھا کر اکیس بائیس کروڑ کا گھاٹا نئے ٹیکس لگا کر پورا کر لیا گیا ہے ۔ 54-55 کے بجٹ میں آمدنی چار ارب، اکیاون کروڑ، تہتر لاکھ؛ خرچ چار ارب سرسٹھ کروڑ، نو لاکھ؛ گھاٹا پندرہ کروڑ چھتیس لاکھ کوتا گیا تھا ۔ اس میں اب پندرہ کروڑ کی جگہ کیول پانچ کروڑ گھاٹا ہونے کی امید ہے ۔ ایک ہی سال میں چار ارب سرسٹھ کروڑ کا خرچ قریب قریب پانچ ارب تک پہونچ گیا ۔ 55-56 کے بجٹ میں آمدنی چار ارب اکیاون کروڑ سے بڑھ کر چار ارب اڑسٹھ کروڑ تک پہونچ گئی ہے ۔ لیکن خرچ کے بڑھ جانے سے تیس کروڑ سترہ لاکھ کا گھاٹا رہ جانے کا اندازہ کیا گیا ہے ۔ اس کے لئے نئے ٹیکس لگا کر لگ بھگ بائیس کروڑ کی نئی آمدنی کا انتظام کر لیا گیا ہے ۔ پھر بھی آٹھ کروڑ سینتالیس لاکھ کا گھاٹا پورا کئے بنا ہی بجٹ کو چھوڑ دیا گیا ہے ۔

## نئے ٹیکس

ریلوے بجٹ اور عام بجٹ دونوں میں ہی نئے ٹیکس لگائے گئے ہیں اور پرانے ٹیکسوں میں کتربیونت بھی کی گئی ہے ۔ اس کتربیونت کی وجہ سے ہی دونوں بجٹوں کو جادوگروں کا کھیل کہنا چاہئے ۔ ریلوے بجٹ یدی چھوٹے جادوگر کا چھوٹا کھیل ہے، تو عام بجٹ بڑے جادوگر کا بڑا کھیل ۔ افسوس تو یہ ہے کہ ریلوے بجٹ میں ریلوے کے ٹکٹ اور بھاڑے کی دروں میں بڑھتی کر کے بھی یہ دکھانے کی کوشش کی گئی ہے کہ جنتا پر کوئی بھار نہیں ڈالا گیا ۔ ریلوے سفر اور مال بھیجنے کی دوری کو تین بھاگوں میں بانٹا گیا ہے ۔ 150 میل تک سفر کرنے والوں کے لئے ریلوے کے ٹکٹ کی در بڑھا دی گئی ہے ۔ 151 سے 300 میل تک سفر کرنے والوں کے لئے کرائے کی در پرانی ہی رہنے دی گئی ہے ۔ 300 میل سے اوپر سفر کرنے والوں کے لئے کرائے کی در کم کر دی گئی ہے ۔ ہم یہ نہیں بھول سکتے کہ ہمارے غریب ملک میں زیادہ تر روزانہ سفر کرنے والے وے غریب لوگ ہیں جو مشکل سے کبھی ڈیڑھ سو یا اس سے ادھک میل کا سفر




## घाटे के बजट

फ़रवरी के महीने में सूबों की सरकारों और भारत सरकार के बजट पेश किये जाते हैं. बहुत से सूबों के और भारत सरकार के बजट पेश किये जा चुके हैं. बाक़ी बजट भी अगले 15 दिनों में पेश कर दिये जायेंगे. अब तक के बजटों में बम्बई सूबे के अलावा बाक़ी सभी सूबों के और केन्द्र के बजट में भी घाटा दिखाया गया है. घाटा जिस शकल में दिखाया गया है, उससे ऐसा मालूम होता है जैसे कि वह किसी ख़ास मक़सद से दिखलाया गया हो. यह घाटा इतना भी नहीं है जिसको आसानी से पूरा नहीं किया जा सकता था. अधिकतर सूबों में घाटे को पूरा करने की कोई ख़ास कोशिश नहीं की गई है और यह यक़ीन दिलाया गया है कि ख़र्च में कमी करके उसको साल के आख़िर में बराबर कर दिया जायगा. किसी भी सूबे में इसी वजह से कोई नये टैक्स नहीं लगाये गये. केवल मद्रास में घाटे को पूरा करने के लिये लगान पर दो आना रुपया सरचार्ज, तम्बाकू पर बिक्री टैक्स और इनके सिवा कुछ दूसरे टैक्स भी लगाये गये हैं. किसी भी सूबे में जनता को कोई रिआयत या राहत नहीं दी गई है, सिवाय इसके कि मद्रास में मिडल तक की पढ़ाई उन बच्चों के लिये मुफ़्त कर दी गई है जिनके मां बाप की आमदनी सालाना 1200 रुपया या इससे कम है और मध्य भारत में लड़कियों की पढ़ाई हाई स्कूल तक मुफ़्त कर दी गई है. मध्य भारत में रोडवेज़ के किराये में भी डेढ़ पाई फ़ी मील की कमी की गई है.

आजकल के अर्थशास्त्री घाटे का बजट पेश करने में ही कामयाबी मानते हैं. हमारे देश में पंचसाला योजना के कारन भी घाटे का बजट पेश करना अधिक मुनासिब समझा गया है. इसकी एक वजह यह भी है कि बजट में घाटा दिखाकर ही विकास योजनाओं पर अधिक से अधिक ख़र्च किया जा सकता है और उस ख़र्च की आलोचना करने वालों का मुंह बन्द किया जा सकता है. यह पंचसाला योजना का पांचवा साल है. इसलिये भी सब बजटों में

## گھاٹے کے بجٹ

فروری کے مہینے میں صوبوں کی سرکاروں اور بھارت سرکار کے بجٹ پیش کئے جاتے ھیں . بہت سے صوبوں کے اور بھارت سرکار کے بجٹ پیش کئے جا چکے ھیں . باقی بجٹ بھی اگلے 15 دنوں میں پیش کر دیئے جائیں گے . اب تک کے بجٹوں میں بمبئی صوبے کے علاوہ باقی سبھی صوبوں کے اور کیندر کے بجٹ میں بھی گھاٹا دکھایا گیا ھے . گھاٹا جس شکل میں دکھایا گیا ھے، اُس سے ایسا معلوم ھوتا ھے جیسے کہ وہ کسی خاص مقصد سے دکھلایا گیا ھو . یہ گھاٹا اتنا بھی نہیں ھے جس کو آسانی سے پورا نہیں کیا جا سکتا تھا . ادھک تر صوبوں میں گھاٹے کو پورا کرنے کی کوئی خاص کوشش نہیں کی گئی ھے اور یہ یقین دلایا گیا ھے کہ خرچ میں کمی کر کے اُس کو سال کے آخر میں برابر کر دیا جائے گا . کسی بھی صوبے میں اِسی وجہ سے کوئی نئے ٹیکس نہیں لگائے گئے . کیول مدراس میں گھاٹے کو پورا کرنے کے لئے لگان پر دو آنہ روپیہ سرچارج، تمباکو پر بکری ٹیکس اور اِن کے سوا کچھ دوسرے ٹیکس بھی لگائے گئے ھیں . کسی بھی صوبے میں جنتا کو کوئی رعائت یا راحت نہیں دی گئی ھے، سوائے اِس کے کہ مدراس میں مڈل تک کی پڑھائی اُن بچوں کے لئے مفت کر دی گئی ھے جن کے ماں باپ کی آمدنی سالانہ 1200 روپیہ یا اس سے کم ھے . اور مدھیہ بھارت میں لڑکیوں کی پڑھائی ھائی اِسکول تک مفت کر دی گئی ھے . مدھیہ بھارت میں روڈویز کے کرائے میں بھی ڈیڑھ پائی فی میل کی کمی کی گئی ھے .

آجکل کے ارتھ شاستری گھاٹے کا بجٹ پیش کرنے میں ھی کامیابی مانتے ھیں . ھمارے دیش میں پنچسالہ یوجنا کے کارن بھی گھاٹے کا بجٹ پیش کرنا ادھک مناسب سمجھا گیا ھے . اِس کی ایک وجہ یہ بھی ھے کہ بجٹ میں گھاٹا دکھا کر ھی وکاس یوجناؤں پر ادھک سے ادھک خرچ کیا جاسکتا ھے اور اُس خرچ کی آلوچنا کرنے والوں کا منہ بند کیا جا سکتا ھے. یہ پانچسالہ یوجنا کا پانچواں سال ھے . اِس لئے بھی سب بجٹوں میں

पास आया. उसके पास एक दरी थी और उसके हाथ में कोई चीज़ थी जिसे उसने दरी से ढक रक्खा था. उसने कहा—'ऐ अल्लाह के रसूल ! जब मैं आपके पास आ रहा था तो पेड़ों के एक झुन्ड के बीच से मैं गुज़रा. मुझे वहां चिड़ियों के बच्चों की आवाज़ सुनाई दी. मैंने उन्हें पकड़ लिया. बच्चों की मां मेरे चारों तरफ़ फड़फड़ाने लगी. मैंने बच्चों पर से दरी हटा दी और मां उनके पास आकर बैठ गई. तब मैंने उन सब को अपनी दरी में लपेट लिया. जिन बच्चों को मैंने पकड़ा है वह यह हैं.' पैग़म्बर ने कहा—'इन्हें तुम नीचे उतारो.' उसने उन बच्चों को नीचे रख दिया. मां बच्चों के साथ रही और किसी तरह उनसे अलग न हुई. पैग़म्बर ने अपने सहाबियों से कहा—'अपने बच्चों के साथ मां का यह प्रेम देखकर क्या तुम लोगों को आश्चर्य हो रहा है?' उन्होंने कहा—'हां ऐ अल्लाह के रसूल!' पैग़म्बर ने कहा—'क़सम उस ज़ात पाक की जिसने मेरे घट में सच्चाई को जगह दी है! इन बच्चों की मां से कहीं ज़्यादा अल्लाह अपने बन्दों से प्रेम करता है. इन सबको लेकर तुम उसी जगह वापिस जाओ और उन्हें वहीं छोड़ दो जहां से तुमने उन्हें पकड़ा है. इनकी मां को भी साथ ले जाओ और वहीं छोड़ दो.' तब वह आदमी उन सबको लेकर वापिस चला गया." (अबूदाऊद)

एक और हदीस है कि :—

"एक चिड़िया के घोंसले से किसी ने कुछ अन्डे चुरा लिये. इस पर मुहम्मद साहब ने उन अन्डों को घोंसले में वापिस रखवा दिया." (बुख़ारी)

बुख़ारी, मुसलिम, अबूदाऊद और नसाई में अबू हुरैरा के हवाले से यह हदीस दर्ज है, मुहम्मद साहब ने एक बार कहा कि :—

"पिछले पैग़म्बरों में से एक को किसी चींटी ने काट लिया. इस पर उस पैग़म्बर ने उन चींटियों के घर यानी बिल को जला देने का हुकुम दे दिया. अल्लाह ने उस पैग़म्बर पर 'वही' भेजी यानी उसे अपने घट में अल्लाह की यह आवाज़ सुनाई दी कि—'अगर एक चींटी ने तुम्हें काट लिया तो तुम ने उनकी क़ौम की क़ौम को जला डाला! उनमें भी तुम्हारी ही तरह जान थी. वह भी तुम्हारी ही तरह अपने अल्लाह की हम्द यानी स्तुति गाते थे!"

जाबिर ने बयान किया है कि :—

"मुहम्मद साहब के पास से एक आदमी एक गधा लिये गुज़रा. उस गधे का मुंह दाग़ा हुआ था. पैग़म्बर ने यह देख कर कहा—'ख़ुदा का क़हर (शाप) उस पर जिसने इस गधे को दाग़ा है!' मुहम्मद साहब ने किसी भी जानवर के मुंह पर मारने या उसे दाग़ने से मना किया है." (मुसलिम, अबुदाऊद, तिरमिज़ी)



پاس آیا ۔ اُس کے پاس ایک دری تھی اور اُس کے ھاتھ میں کوئی چیز تھی جسے اُس نے دری سے تھک رکھا تھا ۔ اُس نے کہا —'اے اللہ کے رسول ! جب میں آپ کے پاس آ رہا تھا تو پیڑوں کے ایک جھنڈ کے بیچ سے میں گزرا ۔ مجھے وھاں چڑیوں کے بچوں کی آواز سنائی دی ۔ میں نے اُنھیں پکڑ لیا ۔ بچوں کی ماں میرے چاروں طرف پھڑپھڑانے لگی ۔ میں نے بچوں پر سے دری ھٹا دی اور ماں اُن کے پاس آ کر بیٹھ گئی ۔ تب میں نے اُن سب کو اپنی دری میں لپیٹ لیا ۔ جن بچوں کو میں نے پکڑا ھے وہ یہ ھیں ۔' پیغمبر نے کہا —' اِنھیں تم نیچے اُتارو ۔' اُس نے اُن بچوں کو نیچے رکھ دیا ۔ ماں بچوں کے ساتھ رھی اور کسی طرح اُن سے الگ نہ ھوئی ۔ پیغمبر نے اپنے صحابیوں سے کہا —' اپنے بچوں کے ساتھ ماں کا یہ پریم دیکھکر کیا تم لوگوں کو آشچریہ ھو رھا ھے ؟' اُنھوں نے کہا —' ھاں اے اللہ کے رسول !' پیغمبر نے کہا —' قسم اُس ذات پاک کی جس نے میرے گھٹ میں سچائی کو جگہ دی ھے ! اِن بچوں کی ماں سے کہیں زیادہ اللہ اپنے بندوں سے پریم کرتا ھے ۔ اِن سب کو لے کر تم اُسی جگہ واپس جاؤ اور اُنھیں وھیں چھوڑ دو جہاں سے تم نے اُنھیں پکڑا ھے ۔ اِن کی ماں کو بھی ساتھ لے جاؤ اور وھیں چھوڑ دو' ۔ تب وہ آدمی اُن سب کو لے کر واپس چلا گیا ۔" ( ابوداؤد )

ایک اور حدیث ھے کہ :—

" ایک چڑیا کے گھونسلے سے کسی نے کچھ انڈے چرا لئے ۔ اِس پر محمد صاحب نے اُن انڈوں کو گھونسلے میں واپس رکھوا دیا ۔" ( بخاری )

' بخاری' مسلم' ابوداؤد اور نسائی میں ابو ھریرہ کے حوالے سے یہ حدیث درج ھے' محمد صاحب نے ایک بار کہا کہ :—

" پچھلے پیغمبروں میں سے ایک کو کسی چیونٹی نے کاٹ لیا ۔ اِس پر اُس پیغمبر نے اُن چیونٹیوں کے گھر یعنی بل کو جلا دینے کا حکم دے دیا ۔ اللہ نے اُس پیغمبر پر وحی بھیجی یعنی اُسے اپنے گھٹ میں اللہ کی یہ آواز سنائی دی کہ —'اگر ایک چیونٹی نے تمھیں کاٹ لیا تو تم نے اُن کی قوم کی قوم کو جلا ڈالا ! اُن میں بھی تمھاری ھی طرح جان تھی ۔ وہ بھی تمھاری ھی طرح اپنے اللہ کی حمد یعنی اِستتی گاتے تھے !'"

جابر نے بیان کیا ھے کہ :—

" محمد صاحب کے پاس سے ایک آدمی ایک گدھا لئے گزرا ۔ اُس گدھے کا منہ داغا ھوا تھا ۔ پیغمبر نے یہ دیکھکر کہا — خدا کا قہر ( شاپ ) اُس پر جس نے اِس گدھے کو داغا ھے !' محمد صاحب نے کسی بھی جانور کے منہ پر مارنے یا اُسے داغنے سے منع کیا ھے ۔" ( مسلم' ابوداؤد' ترمذی )

मुहम्मद साहब ने फिर कहा कि :—'इस जानवर के साथ जिसका ख़ुदा ने तुम्हें मालिक बनाया है बुरा सलूक करते हुए क्या तुम ख़ुदा के ख़ौफ़ से नहीं डरते ? यह ऊंट मुझसे शिकायत कर रहा है कि तुम इसको सताते हो और इतना काम लेते हो कि इसे थका देते हो." (अबूदाऊद)

यात्रा में जानवरों को आराम पहुंचाने और उनके खाने पीने का ठीक ठीक प्रबन्ध करने पर मुहम्मद साहब बहुत जोर दिया करते थे. ख़ालिद बिन मदन का बयान है कि मुहम्मद साहब ने एक दिन लोगों से कहा :—

"सचमुच अल्लाह दयालु है और वह उससे प्रेम करता है जो दूसरों पर दया करता है, अल्लाह ऐसे ही आदमी से ख़ुश होता है और उसी की सहायता करता है. अल्लाह ज़ुल्म करने वालों की मदद नहीं करता. इसलिये जब तुम बेज़बान जानवरों पर सवारी करो तो जहां वह रुकना चाहें वहां ही उन्हें रोक दो. और अगर तुम्हारा रास्ता कंकरीली और बंजर ज़मीन पर से हो तो अपने साथ जानवरों के लिये काफ़ी चारा लेकर चलो. और तुम्हें चाहिये कि रात को सफ़र करो क्योंकि दिन के मुक़ाबले रात को तुम दोनों ज़्यादा आराम से सफ़र कर सकते हो." (मालिक)

अबू हुरैरा का बयान है कि मुहम्मद साहब ने एक बार लोगों से कहा कि—"अपने जानवरों की पीठ को खड़ा होने के लिये चबूतरा न बनाओ. अल्लाह ने उन्हें तुम्हारी मदद के लिये पैदा किया है ताकि तुम दूर दूर के देशों में जा सको जहां बग़ैर इन जानवरों की सहायता के पहुंचने में तुम्हें बड़ी मुशकिलें झेलनी पड़तीं." (अबूदाऊद)

चिड़ियों के पकड़ने, उनको सताने, उनके अन्डे घोंसलों से उठाने और उनके बच्चों को पकड़ने को मुहम्मद साहब ने मना किया है. अबदुर्रहमान का बयान है कि उसका बाप अबदुल्ला कहा करता था कि :—

"हम लोग एक दिन मुहम्मद साहब के साथ सफ़र कर रहे थे. एक छोटी सी चिड़िया पर हमारी निगाह गई. उसके साथ दो बच्चे थे. हमने दोनों बच्चों को पकड़ लिया. उनकी मां चारों तरफ़ फड़फड़ाने लगी. इतने में मुहम्मद साहब आ गए. उन्होंने यह देखकर कहा :—'इसके बच्चों को पकड़ कर इसे किसने दुख पहुंचाया है ? इसके बच्चों को इसे लौटा दो.' हमने चींटियों के एक बिल को भी आग लगा दी थी. मुहम्मद साहब ने जब उसे देखा तो पूछा कि :— 'इसे किसने जलाया है ?' हमने कहा :—'यह काम हम लोगों ने किया है.' पैग़म्बर ने कहा :—'उस अल्लाह के सिवा जो आग का मालिक है किसी को यह हक़ नहीं है कि किसी दूसरे को आग में जलने की सज़ा दे." (अबूदाऊद)

आमिर का एक बयान है जो अबूदाऊद में मुहम्मद बिन इसहाक़ की ज़बानी दर्ज है. आमिर कहता है कि :—

"हम लोग पैग़म्बर के साथ थे जब एक आदमी उनके



محمد صاحب نے پھر کہا کہ :—' اِس جانور کے ساتھ جس کا خدا نے تمھیں مالک بنایا ھے برا سلوک کرتے ھوئے کیا تم خدا کے خوف سے نہیں ڈرتے ؟ یہ اونٹ مجھ سے شکایت کر رھا ھے کہ تم اِس کو ستاتے ھو اور اتنا کام لیتے ھو کہ اِسے تھکا دیتے ھو ." ( ابوداؤد )

یاترا میں جانوروں کو آرام پہونچانے اور اُن کے کھانے پینے کا ٹھیک ٹھیک پربندھ کرنے پر محمد صاحب بہت زور دیا کرتے تھے. خالد بن معدن کا بیان ھے کہ محمد صاحب نے ایک دن لوگوں سے کہا :—

" سچ مچ اللہ دیالو ھے اور وہ اُس سے پریم کرتا ھے جو دوسروں پر دیا کرتا ھے' اللہ ایسے ھی آدمی سے خوش ھوتا ھے اور اُسی کی سہائتا کرتا ھے . اللہ ظلم کرنے والوں کی مدد نہیں کرتا . اِس لئے جب تم بے زبان جانوروں پر سواری کرو تو جہاں وہ رکنا چاھیں وھاں ھی اُنہیں روک دو . اور اگر تمہارا راستہ کنکریلی اور بنجر زمین پر سے ھو تو اپنے ساتھ جانوروں کے لئے کافی چارا لے کر چلو . اور تمھیں چاھئے کہ رات کو سفر کرو کیونکہ دن کے مقابلے رات کو تم دونوں زیادہ آرام سے سفر کر سکتے ھو ." ( مالک )

ابو ھریرہ کا بیان ھے کہ محمد صاحب نے ایک بار لوگوں سے کہا کہ :—" اپنے جانوروں کی پیٹھ کو کھڑا ھونے کے لئے چبوترہ نہ بناؤ . اللہ نے اُنھیں تمھاری مدد کے لئے پیدا کیا ھے تاکہ تم دور دور کے دیشوں میں جا سکو جہاں بغیر اِن جانوروں کی سہائتا کے پہونچنے میں تمھیں بڑی مشکلیں جھیلنی پڑتیں ." ( ابو داؤد ) .

چڑیوں کے پکڑنے' اُن کو ستانے' اُن کے انڈے گھونسلوں سے اُٹھانے اور اُن کے بچوں کو پکڑنے کو محمد صاحب نے منع کیا ھے. عبدالرحمن کا بیان ھے کہ اُس کا باپ عبداللہ کہا کرتا تھا کہ :—

" ھم لوگ ایک دن محمد صاحب کے ساتھ سفر کر رھے تھے . ایک چھوٹی سی چڑیا پر ھماری نگاہ گئی . اُس کے ساتھ دو بچے تھے . ھم نے دونوں بچوں کو پکڑ لیا . اُن کی ماں چاروں طرف پھڑ پھڑانے لگی . اتنے میں محمد صاحب آ گئے . اُنھوں نے یہ دیکھ کر کہا :—' اِس کے بچوں کو پکڑ کر اِسے کس نے دکھ پہونچایا ھے ؟ اِس کے بچوں کو اِسے لوٹا دو .' ھم نے چیونٹیوں کے ایک بل کو بھی آگ لگا دی تھی . محمد صاحب نے جب اُسے دیکھا تو پوچھا کہ :—' اِسے کس نے جلایا ھے ؟' ھم نے کہا :—' یہ کام ھم لوگوں نے کیا ھے .' پیغمبر نے کہا :— ' اُس اللہ کے سوا جو آگ کا مالک ھے کسی کو یہ حق نہیں ھے کہ وہ کسی دوسرے کو آگ میں جلنے کی سزا دے ." ( ابو داؤد )

عامر کا ایک بیان ھے جو ابوداؤد میں محمد بن اسحاق کی زبانی درج ھے . عامر کہتا ھے کہ :—

" ھم لوگ پیغمبر کے ساتھ تھے جب ایک آدمی اُن کے

अपने मन में कहा—'जिस तरह की प्यास मुझे सता रही थी उसी तरह की प्यास से बेचैन होकर यह कुत्ता भी पानी के इस सोते के पास आया है'. वह आदमी दोबारा कुवें में घुसा और अपने जूते में पानी भरकर जूते को मुंह से थामे हुए बाहर निकला और उसने उस कुत्ते को पानी पिलाया. मुहम्मद साहब ने यह सुनकर कहा कि—'उस आदमी के इस काम से ख़ुश होकर अल्लाह ने उसके गुनाह माफ़ कर दिये.' लोगों ने पूछा कि—'ऐ रसूल ! क्या हमारे उस सलूक का भी इनाम मिलेगा जो हम पशुओं के साथ करते हैं ?' पैग़म्बर ने कहा कि—'हमारी हर उस नेकी का इनाम मिलेगा जो हम किसी भी जानदार के साथ करते हैं'." ('बुख़ारी' 'मुसलिम' 'अबूदाऊद' 'मालिक')

मुहम्मद साहब घोड़ों से बहुत प्यार करते थे. अबू हुरैरा की एक हदीस है कि :—

"घोड़ियों को भी मुहम्मद साहब प्यार से घोड़ा कहा करते थे." (अबू दाऊद)

उतबा बिन अब्दुस्सलमी ने लिखा है कि मुहम्मद साहब ने लोगों से कहा कि :—

"घोड़े की चोटी मत काटो क्योंकि उससे घोड़े की शोभा है, और न उसकी अयाल काटो क्योंकि इस से घोड़ा अपनी रक्षा करता है, न उसकी दुम काटो क्योंकि उससे वह अपनी मक्खियां उड़ाता है." (अबू दाऊद)

यहिया बिन सईद का कहना है कि :—

"एक दिन लोगों ने देखा कि मुहम्मद साहब अपनी चादर से अपने घोड़े का मुंह पोंछ रहे हैं. जब लोगों ने उनसे वजह पूछी तो वह कहने लगे कि :—'अल्लाह ने रात मेरे घोड़े के सम्बन्ध में मुझे तंबीह की है'." (मालिक)

अरब में घोड़ा कम लोग रखते थे लेकिन ऊंट आम तरीक़े से सब लोगों के पास होते थे. मुहम्मद साहब की पत्नी आयशा का बयान है :—

"मैं एक दिन एक अड़ियल ऊंट पर सवार थी. उसे क़ाबू में करने के लिये मैंने उसकी नकेल ज़ोर से खींची. इस पर पैग़म्बर ने मुझसे कहा कि—'तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम जानवर के साथ मुहब्बत से पेश आओ."

अबदुल्ला बिन जाफ़र ने बयान किया है कि :—

"एक बार मुहम्मद साहब एक अनसारी के बाग़ में ठहरे हुए थे. एक ऊंट मुहम्मद साहब के पास आकर बुरी तरह सिसकने लगा. ऊंट की आंखों से आंसू टपक रहे थे. मुहम्मद साहब ऊंट के पास गए और उन्होंने उसके सर को थपथपाया. ऊंट को ढारस हुई. पैग़म्बर ने पूछा कि—'इस ऊंट का मालिक कौन है ?' एक नौजवान अनसारी ने जवाब दिया—'ऐ अल्लाह के रसूल ! यह ऊंट मेरा है.'



اپنے من میں کہا :—'جس طرح کی پیاس مجھے ستا رہی تھی اُسی طرح کی پیاس سے بےچین ہوکر یہ کتا بھی پانی کے اِس سوتے کے پاس آیا ہے.' وہ آدمی دوبارہ کنویں میں گھسا اور اپنے جوتے میں پانی بھرکر جوتے کو منہ سے تھامے ہوئے باہر نکلا اور اُس نے اُس کتے کو پانی پلایا . محمد صاحب نے یہ سن کر کہا کہ—'اُس آدمی کے اِس کام سے خوش ہوکر اللہ نے اُس کے گناہ معاف کردئے.' لوگوں نے پوچھا کہ—'اے رسول ! کیا ہمارے اُس سلوک کا بھی انعام ملےگا جو ہم پشوؤں کے ساتھ کرتے ہیں ؟' پیغمبر نے کہا کہ—'ہماری ہر اُس نیکی کا اِنعام ملے گا جو ہم کسی بھی جاندار کے ساتھ کرتے ہیں ." ('بخاری' 'مسلم' 'ابوداؤد' 'مالک')

محمد صاحب گھوڑوں سے بہت پیار کرتے تھے . ابو ہریرہ کی ایک حدیث ہے کہ :—

"گھوڑیوں کو بھی محمد صاحب پیار سے گھوڑا کہا کرتے تھے." (ابوداؤد)

اُتبہ بن عبدالسلمی نے لکھا ہے کہ محمد صاحب نے لوگوں سے کہا کہ :—

"گھوڑے کی چوٹی مت کاٹو کیونکہ اُس سے گھوڑے کی شوبھا ہے' اور نہ اُس کی ایال کاٹو کیونکہ اِس سے گھوڑا اپنی رکشا کرتا ہے' نہ اُس کی دم کاٹو کیونکہ اُس سے وہ اپنی مکھیاں اُڑاتا ہے ." (ابوداؤد)

یحییٰ بن سعید کا کہنا ہے کہ :—

"ایک دن لوگوں نے دیکھا کہ محمد صاحب اپنی چادر سے اپنے گھوڑے کا منہ پونچھ رہے ہیں . جب لوگوں نے اُن سے وجہ پوچھی تو وہ کہنے لگے کہ :—'اللہ نے رات میرے گھوڑے کے سمبندھ میں مجھے تنبیہ کی ہے ." (مالک)

عرب میں گھوڑا کم لوگ رکھتے تھے لیکن اُونٹ عام طریقے سے سب لوگوں کے پاس ہوتے تھے . محمد صاحب کی پتنی عائشہ کا بیان ہے :—

"میں ایک دن ایک اڑیل اونٹ پر سوار تھی . اُسے قابو میں کرنے کے لئے میں نے اُس کی نکیل زور سے کھینچی . اِس پر پیغمبر نے مجھ سے کہا کہ—' تمہارا فرض ہے کہ تم جانور کے ساتھ محبت سے پیش آؤ ."

عبداللہ بن جعفر نے بیان کیا ہے کہ :—

"ایک بار محمد صاحب ایک انصاری کے باغ میں ٹھہرے ہوئے تھے . ایک اونٹ محمد صاحب کے پاس آکر بری طرح سسکنے لگا . اونٹ کی آنکھوں سے آنسو ٹپک رہے تھے . محمد صاحب اونٹ کے پاس گئے اور اُنہوں نے اُس کے سر کو تھپتھپایا . اونٹ کو ڈھارس ہوئی . پیغمبر نے پوچھا کہ—'اِس اونٹ کا مالک کون ہے ؟' ایک نوجوان انصاری نے جواب دیا—' اے اللہ کے رسول ! یہ اونٹ میرا ہے'

यह देखकर उनसे कहा—'बेज़बान पशुओं को घायल मत करो."

इब्न अब्बास का बयान है कि मुहम्मद साहब ने एक जगह कहा कि :—

"उन चीज़ों को अपने तीरों का निशाना न बनाओ जो जानदार हैं." ( मुसलिम, तिरमिज़ी, नसाई )

इब्न उमर और अबू हुरैरा का बयान है कि :—

"किसी औरत ने एक बिल्ली को बांध दिया यहां तक कि वह बंधे बंधे भूक से मर गई. न तो उसने उसे खाना दिया और न ही उसे खोला कि वह कीड़े मकोड़े खाकर अपना पेट भर सकती. मुहम्मद साहब को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने उस औरत को अल्लाह के अज़ाब से डराया." ( बुख़ारी, मुसलिम )

जाबिर ने बयान किया है कि :—

"किसी भी जानदार को बांध कर मारने से मुहम्मद साहब ने मना किया है." ( मुसलिम )

इब्न अब्बास का बयान है कि :—

"बेज़बान पशुओं को एक दूसरे से लड़ाना मुहम्मद साहब ने सख़्त मना किया है." (अबूदाऊद और तिरमज़ी)

अबू हुरैरा के हवाले से मुहम्मद साहब की एक हदीस है कि :—

"एक औरत बदचलनी में पकड़ी गई. उसे सज़ा मिलने वाली थी. इतने में वह एक कुवें के पास से जा रही थी. वहां उसने एक कुत्ते को देखा. कुत्ता प्यास से तड़प रहा था. उसकी ज़बान बाहर निकल आई थी. मारे प्यास के वह मरने के क़रीब था. यह देखकर उस औरत ने अपना छोटा सा जूता उतारा और उसे अपनी चादर से बांधकर कुवें में लटकाया. इस तरह कुवें से पानी निकाल कर उसने उस कुत्ते को पिलाया और उस की जान बचाई. मुहम्मद साहब को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने उस का पहला क़सूर माफ़ कर दिया. किसी ने पूछा—'ऐ पैग़म्बर ! तो क्या जानवरों के साथ जो हम सलूक करेंगे उसका भी बदला हमें मिलेगा ?' मुहम्मद साहब ने जवाब दिया—'उन सब के साथ नेकी करने का हमें बदला मिलेगा जिन में दिल है और जो सुख दुख महसूस करते हैं'." ( बुख़ारी, मुसलिम )

इसी तरह की एक दूसरी हदीस अबू हुरैरा की ज़बानी यह मिलती है :—

"एक बार एक आदमी को चलते चलते सख़्त प्यास लगी. उसको एक कुआं मिला जिस में उतर कर उसने अपनी प्यास बुझाई. बाहर आने पर उसने देखा कि एक कुत्ता ज़बान निकाले प्यास से मिट्टी चाट रहा है. उस आदमी ने



یہ دیکھکر اُن سے کہا—'بے زبان پشوؤں کو گھائل مت کرو ."

ابن عباس کا بیان ھے کہ محمد صاحب نے ایک جگہ کہا کہ :—

"اُن چیزوں کو اپنے تیروں کا نشانہ نہ بناؤ جو جاندار ھیں ." ( مسلم، ترمذی، نسائی )

ابن عمر اور ابو ھریرہ کا بیان ھے کہ :—

"کسی عورت نے ایک بلی کو باندھ دیا یہاں تک کہ وہ بندھے بندھے بھوک سے مر گئی . نہ تو اُس نے اُسے کھانا دیا اور نہ ھی اُسے کھولا کہ وہ کیڑے مکوڑے کھاکر اپنا پیٹ بھر سکتی . محمد صاحب کو جب یہ معلوم ھوا تو اُنھوں نے اُس عورت کو اللہ کے عذاب سے ڈرایا ." ( بخاری، مسلم )

جابر نے بیان کیا ھے کہ :—

"کسی بھی جاندار کو باندھ کر مارنے سے محمد صاحب نے منع کیا ھے ." ( مسلم )

ابن عباس کا بیان ھے کہ :—

"بے زبان پشوؤں کو ایک دوسرے سے لڑانا محمد صاحب نے سخت منع کیا ھے ." ( ابوداؤد اور ترمذی )

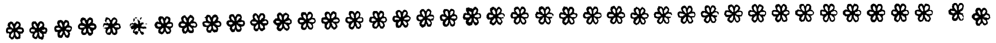
ابو ھریرہ کے حوالے سے محمد صاحب کی ایک حدیث ھے کہ :—

"ایک عورت بدچلنی میں پکڑی گئی . اُسے سزا ملنے والی تھی . اِتنے میں وہ ایک کنویں کے پاس سے جا رھی تھی . وھاں اُس نے ایک کتے کو دیکھا . کتا پیاس سے تڑپ رھا تھا . اُس کی زبان باھر نکل آئی تھی . مارے پیاس کے وہ مرنے کے قریب تھا . یہ دیکھکر اُس عورت نے اپنا چھوٹا سا جوتا اُتارا اور اُسے اپنی چادر سے باندھ کر کنویں میں لٹکایا . اِس طرح کنویں سے پانی نکال کر اُس نے اُس کتے کو پلایا اور اُس کی جان بچائی . محمد صاحب کو جب یہ معلوم ھوا تو اُنھوں نے اُس کا پہلا قصور معاف کردیا . کسی نے پوچھا—'اے پیغمبر ! تو کیا جانوروں کے ساتھ جو ھم سلوک کریں گے اُس کا بھی بدلہ ھمیں ملےگا ؟' محمد صاحب نے جواب دیا —'اُن سب کے ساتھ نیکی کرنے کا ھمیں بدلہ ملےگا جن میں دل ھے اور جو سکھ دکھ محسوس کرتے ھیں ." ( بخاری، مسلم )

اِسی طرح کی ایک دوسری حدیث ابو ھریرہ کی زبانی یہ ملتی ھے :—

"ایک بار ایک آدمی کو چلتے چلتے سخت پیاس لگی . اُس کو ایک کنواں ملا جس میں اُتر کر اُس نے اپنی پیاس بجھائی . باھر آنے پر اُس نے دیکھا کہ ایک کتا زبان نکالے پیاس سے مٹی چاٹ رھا ھے . اُس آدمی نے

# मुहम्मद साहब का जानवरों से प्रेम



श्री मुजीब रिज़वी

मुहम्मद साहब के जीवन की घटनाएं जो किताबों में लिखी हुई मिलती हैं हदीसें कहलाती हैं. इन किताबों में छै ख़ास तौर पर मुस्तनद यानी प्रमाणिक मानी जाती हैं :— बुख़ारी, मुसलिम, अबूदाऊद, तिरमिज़ी, नसाई और अबू अब्दुल्ला. नीचे की हदीसें अधिकतर इन्हीं में से ली गई हैं.

अबुहुरैरा का बयान है कि :—

"लोगों ने एक दिन मुहम्मद साहब से पूछा-'ऐ रसूल ! क्या हमारे उस सलूक का हमें कोई बदला मिलेगा जो हम पशुओं के साथ करते हैं ?' पैग़म्बर ने जवाब दिया—'हां ! हमारी हर उस नेकी का बदला हमको मिलता है जो हम किसी भी जानदार के साथ करते हैं'" ( 'बुख़ारी', 'मुसलिम', 'अबूदाऊद', 'मालिक' )

बार बार मुहम्मद साहब से पूछा जाता था और बार बार वह लोगों को समझाते थे कि आदमी को सब जानदारों के साथ प्रेम का बरताव करना चाहिये. अबुहुरैरा ही से एक दूसरी हदीस है :—

"किसी ने पूछा कि—'जानवरों के साथ अच्छा सलूक करने का क्या हमें बदला मिलेगा ?' पैग़म्बर ने कहा :— 'हमारे हर उस सलूक का बदला मिलता है जो हम किसी भी उस चीज़ के साथ करते हैं जिसमें जान है." ('बुख़ारी' 'मुसलिम' )

शुरैद बिन सुवैद का बयान है कि मुहम्मद साहब ने एक मरतबा कहा कि :—

"जो आदमी ख़ाह मख़ाह किसी गौरैया को मारता है, क़यामत के दिन गौरैया ख़ुदा के सामने ऊंची आवाज़ से इन शब्दों में उसकी शिकायत करेगी :—'ऐ मेरे मालिक ! इस आदमी ने ख़ाहमख़ाह मुझे मार डाला. मुझे मारने से इसे कोई फ़ायदा नहीं हुआ'." ( नसाई )

इब्न उमर का बयान है कि मुहम्मद साहब ने एक मर्तबा कहा कि :—

"जो आदमी किसी गौरैया को मारता है या किसी उससे भी छोटे जानदार को मारता है, अल्लाह उस से जवाब तलब करेगा !"

अब्दुल्ला बिन जाफ़र से रिवायत है कि :—

"कुछ लोग एक दुम्बे को निशाना बनाकर उस पर तीर चला रहे थे. मुहम्मद साहब पास से निकले. उन्होंने

# محمد صاحب کا جانوروں سے پریم

شری مجیب رضوی

محمد صاحب کے جیون کی گھٹنائیں جو کتابوں میں لکھی ہوئی ملتی ہیں حدیثیں کہلاتی ہیں۔ اِن کتابوں میں چھ خاص طور پر مستند یعنی پرمانک مانی جاتی ہیں :— بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی، نسائی اور ابو عبداللہ۔ نیچے کی حدیثیں ادھک‌تر انہیں میں سے لی گئی ہیں۔

ابوہریرہ کا بیان ہے کہ :—

"لوگوں نے ایک دن محمد صاحب سے پوچھا—'اے رسول! کیا ہمارے اُس سلوک کا ہمیں کوئی بدلہ ملے گا جو ہم پشوؤں کے ساتھ کرتے ہیں؟' پیغمبر نے جواب دیا—'ہاں! ہماری ہر اُس نیکی کا بدلہ ہم کو ملتا ہے جو ہم کسی بھی جاندار کے ساتھ کرتے ہیں۔'" ('بخاری'، 'مسلم'، 'ابوداؤد'، 'مالک')

بار بار محمد صاحب سے پوچھا جاتا تھا اور بار بار وہ لوگوں کو سمجھاتے تھے کہ آدمی کو سب جانداروں کے ساتھ پریم کا برتاؤ کرنا چاہئے۔ ابوہریرہ ہی سے ایک دوسری حدیث ہے :—

"کسی نے پوچھا کہ—'جانوروں کے ساتھ اچھا سلوک کرنے کا کیا ہمیں بدلہ ملے گا؟' پیغمبر نے کہا :—'ہمارے ہر اُس سلوک کا بدلہ ملتا ہے جو ہم کسی بھی اُس چیز کے ساتھ کرتے ہیں جس میں جان ہے۔'" ('بخاری'، 'مسلم')

شرید بن سوید کا بیان ہے کہ محمد صاحب نے ایک مرتبہ کہا کہ :—

"جو آدمی خواہ‌مخواہ کسی گوریا کو مارتا ہے، قیامت کے دن وہ گوریا خدا کے سامنے اُونچی آواز سے اِن شبدوں میں اُس کی شکائت کرے گی :—'اے میرے مالک! اِس آدمی نے خواہ‌مخواہ مجھے مار ڈالا۔ مجھے مارنے سے اِسے کوئی فائدہ نہیں ہوا۔'" (نسائی)

ابن عمر کا بیان ہے کہ محمد صاحب نے ایک مرتبہ کہا کہ :—

"جو آدمی کسی گوریا کو مارتا ہے یا کسی اُس سے بڑی چھوٹے جاندار کو مارتا ہے، اللہ اُس سے جواب طلب کرے گا!"

عبداللہ بن جعفر سے روائت ہے کہ :—

"کچھ لوگ ایک دنبے کو نشانہ بناکر اُس پر تیر چلا رہے تھے۔ محمد صاحب پاس سے نکلے۔ انہوں نے

जब कोई आस पास न रहा तो बन्दर ने एक तख़्ता लेकर दरिया में बहा दिया और उसके पीछे ख़ुद पानी में कूद पड़ा. लेकिन दरिया बहुत गहरा था और धारा भी तेज़ थी, और वह कोई अच्छा तैराक भी न था. वह तख़्ते से चिपट गया और किनारे लगने की कोशिश में हाथ पैर मारने लगा. बीच धारे में पड़कर तख़्ता और वह दोनों साथ साथ बहने लगे. कभी वह ऊपर होता और कभी तख़्ता ऊपर होता. दोनों बारी बारी डूबते उतराते रहे. सारी कोशिशों के बाद भी किनारे तक पहुंचने का उसे कोई रास्ता न मिला. चूंकि वह पानी बहुत पी गया था इसलिये अन्त में उसने तख़्ते को छोड़ दिया. वह तह में बैठ गया और मर गया.

इससे मुझे याद आ गया कि सारे साम्राजवादी अपनी चालबाजियों पर जबरदस्त भरोसा रखते हैं. जिस देश में वह घुसने का इरादा करते हैं उसे पानी में ढकेल देते हैं और फिर पानी से निकाल लाने के लिये कोशिश शुरू करते हैं. वह सोचते हैं कि इस चाल से वह उस देश पर क़ब्ज़ा कर लेंगे. पर बहुत सी जबरदस्त और कठिन कोशिशों के बाद उन्हें उस देश को छोड़ना पड़ता है और कभी कभी वह उसे ख़ुद छोड़ भी नहीं पाते बल्कि ख़ुद ही फंसकर डूब मरते हैं.

( 5 )

## भेड़िया और लकड़हारा

एक भेड़िये ने सुना कि कोई लकड़हारा पहाड़ पर आ रहा है. उसने एक कविता बनाई जिसमें उसने अपनी नीति का वर्नन किया :—

"इस बार मैं दिमाग़ी लड़ाई लड़ूंगा, केवल ताक़त के बल पर युद्ध नहीं करूंगा.

"क्योंकि मैं विद्वान भेड़िया हूं,

"पहले मैं उसके हथियार रखवा लूंगा,

"और फिर मैं उसका सफ़ाया कर दूंगा."

इसलिये वह अपने कूल्हों के बल मूर्ति बनकर इस तरह बैठ गया जैसे कोई लकड़ी का बड़ा कुन्दा हो और मौक़े की ताक में रहा.

जल्दी ही लकड़हारा वहां आ पहुंचा. उसने पहाड़ पर एक निगाह डाली और एक फ़िलबदीह गीत यानी आशु कविता रच डाली :—

"अहा हा ! वहां जो एक लकड़ी का कुन्दा है

"दूर से वह कुन्दे जैसा मालूम होता है

"और नज़दीक से भी कुन्दा दिखाई पड़ता है

"क्या अच्छा हो कि अपनी कुल्हाड़ी से मैं इसे चीर डालूं !

"और उसकी चैलियों को इधर उधर छिटकने दूं !"

जब भेड़िये ने यह गीत सुना तो वह भाग निकला.

दुशमन की चाल का भांडा फोड़ देना ही उसकी चालों को निकम्मा कर देना है.



جب کوئی آس پاس نہ رہا تو بندر نے ایک تختہ لیکر دریا میں بہا دیا اور اُس کے پیچھے خود پانی میں کود پڑا. لیکن دریا بہت گہرا تھا اور دھارا بھی تیز تھی' اور وہ کوئی اچھا تیراک بھی نہ تھا. وہ تختے سے چپٹ گیا اور کنارے لگنے کی کوشش میں ہاتھ پیر مارنے لگا. بیچ دھارے میں پڑکر تختہ اور وہ دونوں ساتھ ساتھ بہنے لگے. کبھی وہ اُوپر ہوتا اور کبھی تختہ اُوپر ہوتا. دونوں باری باری ڈوبتے اُتراتے رہے. ساری کوششوں کے بعد بھی کنارے تک پہونچنے کا اُسے کوئی راستہ نہ ملا. چونکہ وہ پانی بہت پی گیا تھا اِس لئے انت میں اُس نے تختے کو چھوڑ دیا. وہ تہ میں بیٹھ گیا اور مرگیا.

اِس سے مجھے یاد آگیا کہ سارے سامراج وادی اپنی چال بازیوں پر زبردست بھروسہ رکھتے ھیں. جس دیش میں وہ گھسنے کا ارادہ کرتے ھیں اُسے پانی میں ڈھکیل دیتے ھیں اور پھر پانی سے نکال لانے کے لئے کوشش شروع کرتے ھیں. وہ سوچتے ھیں کہ اِس چال سے وہ اُس دیش پر قبضہ کرلیں گے. پر بہت سی زبردست اور کٹھن کوششوں کے بعد اُنھیں اُس دیش کو چھوڑنا پڑتا ھے اور کبھی کبھی وہ اُسے خود چھوڑ بھی نہیں پاتے بلکہ خود ھی پھنسکر ڈوب مرتے ھیں.

( 5 )

## بھیڑیا اور لکڑھارا

ایک بھیڑیئے نے سنا کہ کوئی لکڑھارا پہاڑ پر آرھا ھے. اُس نے ایک کویتا بنائی جس میں اُس نے اپنی نیتی کا ورنن کیا :—

"اِس بار میں دماغی لڑائی لڑوں گا' کیول طاقت کے بل پر یدھ نہیں کروں گا.

"کیونکہ میں ودوان بھیڑیا ھوں'

"پہلے میں اُس کے ھتیار رکھوا لوں گا'

"اور پھر میں اُس کا صفایا کردونگا."

اِس لئے وہ اپنے کولھوں کے بل مورتی بن کر اِس طرح بیٹھ گیا جیسے کوئی لکڑی کا بڑا کندہ ھو اور موقعہ کی تاک میں رھا.

جلدی ھی لکڑھارا وھاں آ پہونچا. اُس نے پہاڑ پر ایک نگاہ ڈالی اور ایک فی البدیہہ گیت یعنی آشو کویتا رچ ڈالی :—

"اھا ھا ! وھاں جو ایک لکڑی کا کندا ھے

"دور سے وہ کندے جیسا معلوم ھوتا ھے

"اور نزدیک سے بھی کندہ دکھائی پڑتا ھے

"کیا اچھا ھو کہ اپنی کلھاڑی سے میں اِسے چیر ڈالوں !

"اور اُس کی چیلیوں کو اِدھر اُدھر چھٹکنے دوں !"

جب بھیڑئیے نے یہ گیت سنا تو وہ بھاگ نکلا.

دشمن کی چال کا بھنڈا پھوڑ دینا ھی اُس کی چالوں کو نکما کردینا ھے.

शुरू कर दिया और बेगार करके राजा की सेवा की. भेड़ियों का राजा अपने साथ बिस्तरा भी नहीं लाया था. और न ही उसके पास बदलने के लिये कपड़े थे, इसलिये खरगोशों ने भारी मात्रा में खालें और समूर इकट्ठा करके राजा को भेंट कीं. खाने पीने का भी कोई प्रबन्ध करके राजा वहां नहीं आए थे. लेकिन खुशक़िस्मती से खरगोशों के मांस की वहां हर साल बहुतायत रहती थी. खड़े खड़े वहीं मांस भी हासिल कर लिया गया. पैसा देने की जरूरत नहीं थी, ढुलाई का खर्च भी बच गया.

थोड़े ही दिनों में हालत बदल गई. स्वागत के नारों की जगह दिल को छूने वाली सिसकियां सुनाई पड़ने लगीं. खरगोशों की तादाद भयानक रूप से कम होने लगी, और उनकी नसल के मिट जाने का खतरा पैदा हो गया. नौबत यहां तक पहुंची कि उनके बड़े बड़े क़ाबिल प्रतिनिधि भी न बच सके. लेकिन थे यह लोग बहुत सूझ बूझ के. उन्होंने अपने अपने कान खड़े किये और बहुत तोबा तिल्ला कर के कहा :—

"इतने होशियार होकर भी हम लोगों ने पहले से समझ से क्यों न काम लिया ?"

मुझे सचमुच इन क़ाबिल खरगोशों से हमदर्दी है. वास्तव में यह बदक़िस्मती थी कि यह पुराना और सीधा सादा असूल वक़्त पर उनकी समझ में न आया :—

जो मान और प्रतिष्ठा जालिमों और हमलावरों से मिलती है उसके बदले जनता को दुख ही दुख भोगना पड़ता है.

( 4 )

## बन्दर और तख़्ता

किसी दरिया के किनारे तख़्तों का ढेर लगा हुआ था. उन्हें बिकरी के लिये शहर तक ले जाने के वास्ते एक नाव की प्रतीक्षा हो रही थी. एक बन्दर के दिल में उमंग उठी कि एक तख़्ता हथियाकर उसे तरह तरह से काम में लाऊं. उसने सोचा कि एक तख़्ता किसी तरह उड़ाया जाय. वह बोला—"मैं एक तख़्ता तो नहीं चुराऊंगा, क्योंकि उसके लिये ख़तरा मोल लेना ठीक नहीं. मैं आसानी से एक तख़्ता उड़ा सकता हूं लेकिन लोग मुझे चोर कहेंगे, और यह कुछ अच्छा नहीं मालूम होता. अच्छा यह होगा कि मैं उस समय की प्रतीक्षा करूं जब इधर उधर कोई आदमी न रह जाय, और तब एक तख़्ता खींचकर दरया में फेंक दूं. फिर उसे पकड़ने के लिये पानी में कूद पड़ूं और निकाल लाऊं. ज़ाहिर है कि इस तरह तख़्ता एक ऐसी चीज़ समझी जायगी जिसे मैंने ख़ुद दरिया से निकाला है और कोई भी कुछ कह सुन न सकेगा. ऐसा करना आसान भी होगा और उचित भी !"



شروع کر دیا اور بیگار کر کے راجا کی سیوا کی ۔ بھیڑیوں کا راجا اپنے ساتھ بستره بھی نہیں لایا تھا. اور نہ ھی اُس کے پاس بدلنے کے لئے کپڑے تھے' اِس لئے خرگوشوں نے بھاری ماترا میں کھالیں اور سمور اکٹھا کر کے راجا کو بھینٹ کیں ۔ کھانے پینے کا بھی کوئی پربندھ کر کے راجا وھاں نہیں آئے تھے ۔ لیکن خوش‌قسمتی سے خرگوشوں کے مانس کی وھاں ھر سال بہوتائت رھتی تھی ۔ کھڑے کھڑے وھیں مانس بھی حاصل کر لیا گیا ۔ پیسہ دینے کی ضرورت نہیں تھی' ڈھلائی کا خرچ بھی بچ گیا ۔

تھوڑے ھی دنوں میں حالت بدل گئی ۔ سواگت کے نعروں کی جگہ دل کو چھونے والی سسکیاں سنائی پڑنے لگیں. خرگوشوں کی تعداد بھیانک روپ سے کم ھونے لگی' اور اُن کی نسل کے مٹ جانے کا خطرہ پیدا ھوگیا ۔ نوبت یہاں تک پہونچی کہ اُن کے بڑے بڑے قابل پرتینِدھی بھی نہ بچ سکے ۔ لیکن تھے یہ لوگ بہت سوجھ بوجھ کے ۔ اُنھوں نے اپنے اپنے کان کھڑے کئے اور بہت توبہ تلا کر کے کہا :—

"اِتنے ھوشیار ھوکر بھی ھم لوگوں نے پہلے سے سمجھ سے کیوں نہ کام لیا ؟"

مجھے سچ مچ اِن قابل خرگوشوں سے ھمدردی ھے ۔ واستو میں یہ بدقسمتی تھی کہ یہ پرانا اور سیدھا سادا اُصول وقت پر اُن کی سمجھ میں نہ آیا :—

جو مان اور پرتشٹھا ظالموں اور حملہ آوروں سے ملتی ھے اُس کے بدلے جنتا کو دکھ ھی دکھ بھوگنا پڑتا ھے ۔

( 4 )

## بندر اور تختہ

کسی دریا کے کنارے تختوں کا ڈھیر لگا ھوا تھا ۔ اُنھیں بکری کے لئے شہر تک لے جانے کے واسطے ایک ناؤ کی پرتیکشا ھو رھی تھی ۔ ایک بندر کے دل میں اُمنگ اُٹھی کہ ایک تختہ ھتیاکر اُسے طرح طرح سے کام میں لاؤں ۔ اُس نے سوچا کہ ایک تختہ کسی طرح اُڑایا جائے ۔ وہ بولا—"میں ایک تختہ تو نہیں چراؤں گا' کیونکہ اُس کے لئے خطرہ مول لینا ٹھیک نہیں. میں آسانی سے ایک تختہ اُڑا سکتا ھوں لیکن لوگ مجھے چور کہیں گے' اور یہ کچھ اچھا نہیں معلوم ھوتا ۔ اچھا یہ ھوگا کہ میں اُس سمے کی پرتیکشا کروں جب اِدھر اُدھر کوئی آدمی نہ رہ جائے' اور تب ایک تختہ کھینچ کر دریا میں پھینک دوں ۔ پھر اُسے پکڑنے کے لئے پانی میں کود پڑوں اور نکال لاؤں ۔ ظاھر ھے کہ اِس طرح تختہ ایک ایسی چیز سمجھی جائے گی جسے میں نے خود دریا سے نکالا ھے اور کوئی بھی کچھ کہہ سن نہ سکے گا ۔ ایسا کرنا آسان بھی ھوگا اور اُچت بھی !"

और पूरी ताक़त से टर टर करने लगा. मेंडक की टर टर से सांप की हिम्मत बंधी, ग़ुस्से से तमतमाकर वह आगे बढ़ा और बीच सड़क पर लेट गया ताकि गाड़ी का रास्ता रोक ले और उसे बढ़ने न दे. बदक़िस्मती से देखते देखते सांप गाड़ी के नीचे आ गया और कुचल कर मर गया. लेकिन मेंडक को इसका पता न चला और वह पूरी ताक़त से टर टर करता ही रहा.

यहां तक कि चिड़ियों का एक झुन्ड वहां उतरा और सांप को चट कर गया. रन भूमि साफ़ हो गई. फिर भी मेंडक टर टर करता ही रहा. चिड़ियां जितना जितना इस टर टर को सुनती थीं उतना ही उनका ग़ुस्सा बढ़ता था. उन्होंने सोचा—"आओ अब इसे भी हड़प कर जायं, यह शैतान ख़ाहमख़ाह शोर मचा रहा है!" चिड़ियां मेंडक को ज़िन्दा ही खा गईं. उन्होंने मेंडक को कोई जंगी मुजरिम ठहरा कर ऐसा नहीं किया. बल्कि केवल इस क़ुदरती उसूल पर अमल किया कि :—

इन्साफ़ को ठुकरा कर चलने वाले ज़ालिमों के साथ साथ सब शैतानी शोर ग़ौग़े और उनकी तारीफ़ी शायरी का भी अन्त होना चाहिये.

( 3 )

## ख़रगोश

एक पहाड़ी पर कुछ ख़रगोश रहते थे. उन्होंने एक दिन सुना कि भेड़ियों के पहाड़ का राजा उनके यहां आने वाला है. वह ख़ुशी से नाचने लगे. किसी राजा का उनके यहां आना उनके लिये बड़ी इज़्ज़त की बात थी.

वह अपने अपने बिलों से निकल आए ताकि यह ख़ुशख़बरी एक दूसरे को सुनाएं, राजा के लिये शाहाना स्वागत की तैयारी करें और उसकी शान में ऐसा उत्सव करें जैसा इससे पहले कभी न हुआ हो. उनका कहना था कि—"यह इतिहासिक अवसर है, और हमारे बाल बच्चों के लिये यह अनन्त आनन्द के द्वार खोल देगा!"

सचमुच भेड़ियों का राजा वहां आया. अपने बूढ़ों को सहारा दिये और बच्चों को गोद में लिये सबके सब ख़रगोश रास्ते के दोनों तरफ़ पैर जमा कर खड़े हो गए. उन्होंने राजा को दुआएं दीं और ख़ुशी के आंसुओं से छलछलाती आंखें उन्होंने राजा के रास्ते में बिछा दीं. राजा ने भी सर के इशारे से उनका अभिवादन किया और उनका डर दूर करने के लिये एक ऐलान जारी किया.

पर जब स्वागत की सारी रसमें अदा हो चुकीं तो भेड़ियों के राजा ने ऐलान किया कि "मैं यहां अपने ठहरने के लिये एक बंगला बनवाना चाहता हूं क्योंकि यह जगह बहुत अच्छी है." फ़ौरन ख़रगोशों ने अपने घरों को उजाड़ना



اور پوری طاقت سے ٹر ٹر کرنے لگا ۔ مینڈک کی ٹر ٹر سے سانپ کی ہمت بندھی ، غصے سے تمتما کر وہ آگے بڑھا اور بیچ سڑک پر لیٹ گیا تاکہ گاڑی کا راستہ روک لے اور اُسے بڑھنے نہ دے ۔ بدقسمتی سے دیکھتے دیکھتے سانپ گاڑی کے نیچے آ گیا اور کچل کر مر گیا ۔ لیکن مینڈک کو اِس کا پتہ نہ چلا اور وہ پوری طاقت سے ٹرٹر کرتا ہی رہا ۔

یہاں تک کہ چڑیوں کا ایک جھنڈ وہاں اُترا اور سانپ کو چٹ کر گیا ۔ رن بھومی صاف ہوگئی ۔ پھر بھی مینڈک ٹرٹر کرتا ہی رہا ۔ چڑیاں جتنا جتنا اِس ٹرٹر کو سنتی تھیں اتنا ہی اُن کا غصہ بڑھتا تھا ۔ اُنہوں نے سوچا—" آؤ اب اِسے بھی ہڑپ کر جائیں ، یہ شیطان خواہ مخواہ شور مچا رہا ہے !" چڑیاں مینڈک کو زندہ ہی کھا گئیں ۔ اُنہوں نے مینڈک کو کوئی جنگی مجرم ٹھہرا کر ایسا نہیں کیا ۔ بلکہ کیول اِس قدرتی اصول پر عمل کیا کہ :—

اِنصاف کو ٹھکرا کر چلنے والے ظالموں کے ساتھ ساتھ سب شیطانی شور غوغے اور اُن کی تعریفی شاعری کا بھی انت ہونا چاہئے ۔

( 3 )

## خرگوش

ایک پہاڑی پر کچھ خرگوش رہتے تھے ۔ اُنہوں نے ایک دن سنا کہ بھیڑیوں کے پہاڑ کا راجا اُن کے یہاں آنے والا ہے ۔ وہ خوشی سے ناچنے لگے ۔ کسی راجا کا اُن کے یہاں آنا اُن کے لئے بڑی عزت کی بات تھی ۔

وہ اپنے اپنے بلوں سے نکل آئے تاکہ یہ خوشخبری ایک دوسرے کو سنائیں ، راجا کے لئے شاہانہ سواگت کی تیاری کریں اور اُس کی شان میں ایسا اُتسو کریں جیسا اِس سے پہلے کبھی نہ ہوا ہو ۔ اُن کا کہنا تھا کہ—" یہ اِتہاسک اَوسر ہے ، اور ہمارے بال بچوں کے لئے یہ اننت آنند کے دوار کھول دیگا !"

سچ مچ بھیڑیوں کا راجا وہاں آیا ۔ اپنے بوڑھوں کو سہارا دیئے اور بچوں کو گود میں لئے سب کے سب خرگوش راستے کے دونوں طرف پیر جما کر کھڑے ہوگئے ۔ اُنہوں نے راجا کو دعائیں دیں اور خوشی کے آنسوؤں سے چھلچھلاتی آنکھیں اُنہوں نے راجا کے راستے میں بچھا دیں ۔ راجا نے بھی سر کے اِشارے سے اُن کا ابھیوادن کیا اور اُن کا ڈر دور کرنے کے لئے ایک اعلان جاری کیا ۔

پر جب سواگت کی ساری رسمیں ادا ہو چکیں تو بھیڑیوں کے راجا نے اعلان کیا کہ " میں یہاں اپنے ٹھہرنے کے لئے ایک بنگلہ بنوانا چاہتا ہوں کیونکہ یہ جگہ بہت اچھی ہے ۔" فوراً خرگوشوں نے اپنے گھروں کو اُجاڑنا

# आजकल की कुछ छोटी चीनी कहानियां



अनुवादक—मुजीब रिज़वी

( 1 )

## कुंआ और दरिया

वह दिन लद गए जब कुंवां दरिया के मामलों में दख़ल नहीं दे सकता था! एक दरिया के पास ही एक कुंवा था. कुवें ने दरिया पर बोली कसनी शुरू की :

"तुम इधर से उधर तक कीचड़ में लतपत हो और तुम्हारे जीवन की बाग तुम्हारे हाथों में नहीं है, दिन भर बड़बड़ाते रहते हो, और बहते चले जाते हो—यह भी कोई जिन्दगी है! मेरी तरह तुम्हें गम्भीर, अचल और रेत कीचड़ से बिलकुल पाक होना चाहिये. मैं सारे दिन एक खिड़की से नीले आकाश पर आंखें जमाए रहता हूं और दुनिया के रहस्य का ज्ञान पराप्त किया करता हूं—जीवन का यही एक ठीक मार्ग है."

अब वह दिन भी नहीं रहे जब दरिया कुंवें के मामलों में दख़ल नहीं दे सकता था. कीचड़ भरे दरिया ने सर उठाया और आकाश की तरफ़ ऊपर बड़ता चला गया. यहां तक कि गरज गरज कर उसने किनारों को तोड़ दिया और आस पास के सारे इलाक़े को पानी से भर दिया. कुंवें की लकड़ी की जुगत को भी वह बहा ले गया. बस, कुवां अपने गम्भीर और अडिग वजूद को लेकर दरिया की बढ़ती हुई बाढ़ की भेंट चढ़ गया.

( 2 )

## नक़्क़ारची मेंडक

माल से लदी एक गाड़ी सड़क से गुज़रने वाली थी. एक सांप ने उसका रास्ता रोकना चाहा. पर लदी गाड़ी को रोकना कोई आसान काम न था. इसलिये सांप ने एक मेंडक से सहयोग की प्राथना की और कहा :—"यह मोरचा जबरदस्त है, चुप चाप इसका सर कर लेना मुमकिन नहीं है. इसलिये तुम जैसे एक होशियार नक़्क़ारची की मुझे ज़रूरत है."

मेंडक बहुत ख़ुश हुआ. जब गाड़ी नज़दीक पहुंची तो मेंडक जितना अपने को फुला सकता था उसने फुला लिया

# آجکل کی کچھ چھوٹی چینی کہانیاں

انوواد ک—مجیب رضوی

( 1 )

## کنواں اور دریا

وہ دن لد گئے جب کنواں دریا کے معاملوں میں دخل نہیں دے سکتا تھا! ایک دریا کے پاس ھی ایک کنواں تھا. کنویں نے دریا پر بولی کسنی شروع کی:

"تم اِدھر سے اُدھر تک کیچڑ میں لت پت ھو اور تمہارے جیون کی باگ تمہارے ھاتھوں میں نہیں ھے، دن بھر بڑبڑاتے رھتے ھو، بہتے چلے جاتے ھو—یہ بھی کوئی زندگی ھے! میری طرح تمہیں گمبھیر، اچل اور ریت کیچڑ سے بالکل پاک ھونا چاھئے. میں سارے دن ایک کھڑکی سے نیلے آکاش پر آنکھیں جمائے رھتا ھوں اور دنیا کے رھسیہ کا گیان پراپت کیا کرتا ھوں—جیون کا یہی ایک ٹھیک مارگ ھے."

اب وہ دن بھی نہیں رھے جب دریا کنویں کے معاملوں میں دخل نہیں دے سکتا تھا. کیچڑ بھرے دریا نے سر اُٹھایا اور آکاش کی طرف اوپر کو بڑھتا چلا گیا. یہاں تک کہ گرج گرج کر اُس نے کناروں کو توڑ دیا اور آس پاس کے سارے علاقے کو پانی سے بھر دیا. کنویں کی لکڑی کی جگت کو بھی وہ بہالے گیا. بس کنواں اپنے گمبھیر اور اڈگ وجود کو لے کر دریا کی بڑھتی ھوئی باڑھ کی بھینٹ چڑھ گیا.

( 2 )

## نقارچی مینڈک

مال سے لدی ایک گاڑی سڑک سے گذرنے والی تھی. ایک سانپ نے اُس کا راستہ روکنا چاھا. پر لدی گاڑی کو روکنا کوئی آسان کام نہ تھا. اِس لئے سانپ نے ایک مینڈک سے سہیوگ کی پرارتھنا کی اور کہا:—"یہ مورچہ زبردست ھے، چپ چاپ اِس کا سر کر لینا ممکن نہیں ھے. اِس لئے تم جیسے ایک ھوشیار نقارچی کی مجھے ضرورت ھے."

مینڈک بہت خوش ھوا. جب گاڑی نزدیک پہونچی تو مینڈک جتنا اپنے کو پھلا سکتا تھا اس نے پھلا لیا

थी और वह यह है कि चीनी हर छोटी बड़ी चीज़ का इस्तेमाल अपनी दस्तकारियों में करते हैं. अगर यह कहा जाए कि वह मिट्टी को अपनी कला से सोना बना देते हैं तो बेजा न होगा.

चीन में भारी उद्योग धन्दे बढ़ रहे हैं. हाथ की जगह मशीन ले रही है. लेकिन ख़ुशी की बात है कि चीन की सरकार अपनी पुरानी दस्तकारियों की तरफ़ भी पूरा ध्यान दे रही है. सरकार कला और शिल्प को बढ़ाने में तरह तरह से सहायता देती है :—

1) बड़े उद्योगों में जो चित्र और रंग इस्तेमाल होते हैं उनके जानकार इन कलावन्तों और दस्तकारों को सलाह मशविरा देते हैं जिससे हाथ की कला का रंग रूप निखरता है और नई नई तकनीक और नए नए चित्रों का इस्तेमाल होने लगता है.

(2) चीन की नई सरकार अपने कलावन्तों और दस्कारों की धन से भी सहायता करती है.

(3) सरकार इस बात की व्यवस्था करती है कि जरूरत का कच्चा माल इन कारीगरों और कलावन्तों को आसानी से मिल सके.

(4) इन कलावन्तों और दस्तकारों की बनाई हुई चीज़ों को बढ़ाने और उनके लिये बाज़ार पैदा करने की ज़िम्मेदारी भी सरकार पर है और वह उसे हर तरह से पूरा करती है. कलावन्तों ने अब जगह जगह अपने कोआपरेटिव भी खोल लिये हैं. सरकार इस तरह की संस्थाओं को दिल खोल कर मदद देती है.

नुमाइश छै फ़रवरी से पन्दरह फ़रवरी तक रही. रोज़ मर्द औरतों की भीड़ लगी रहती थी. एक एक दिन में चार हज़ार आदमी तक इस नुमाइश को देखने आए. इस भीड़ को देखकर एक बात जरूर खटकती थी : वाह वाह करने वाले तो बहुत थे, लेकिन हमारे देश के उन कारीगरों का वहां पता नहीं था जो ख़ुद ऐसी चीज़ें बनाते हैं और जो इन चीज़ों को देखकर बहुत कुछ सीख सकते थे. हमारी सरकार को चाहिये कि वह अपने यहां के कारीगरों को बुलावा कर ऐसी नुमाइशें दिखलाए और ऐसी नुमाइशें उन इलाक़ों में अकसर करवाती रहे जहां पर हमारे कारीगर अच्छी ख़ासी तादाद में बसते हों.

———



تھی اور وہ یہ ھے کہ چینی ھر چھوٹی بڑی چیز کا استعمال اپنی دستکاریوں میں کرتے ھیں . اگر یہ کہا جائے کہ وہ مٹی کو اپنی کلا سے سونا بنا دیتے ھیں تو بیجا نہ ھوگا .

چین میں بھاری اُدیوگ دھندے بڑھ رھے ھیں . ھاتھ کی جگہ مشین لے رھی ھے . لیکن خوشی کی بات ھے کہ چین کی سرکار اپنی پرانی دستکاریوں کی طرف بھی پورا دھیان دے رھی ھے . سرکار کلا اور شلپ کو بڑھانے میں طرح طرح سے سہائتا دیتی ھے :—

(1) بڑے اُدیوگوں میں جو چتر اور رنگ استعمال ھوتے ھیں اُن کے جانکار اِن کلاونتوں اور دستکاروں کو صلاح مشورہ دیتے ھیں جس سے ھاتھ کی کلا کا رنگ روپ نکھرتا ھے اور نئی نئی تکنیک اور نئے نئے چتروں کا استعمال ھونے لگتا ھے .

(2) چین کی نئی سرکار اپنے کلاونتوں اور دستکاروں کی دھن سے بھی سہائتا کرتی ھے .

(3) سرکار اِس بات کی ویوستھا کرتی ھے کہ ضرورت کا کچا مال اِن کاریگروں اور کلاونتوں کو آسانی سے مل سکے .

(4) ان کلاونتوں اور دستکاروں کی بنائی ھوئی چیزوں کو بڑھانے اور اُس کے لئے بازار پیدا کرنے کی ذمہداری بھی سرکار پر ھے اور وہ اُسے ھر طرح سے پورا کرتی ھے . کلاونتوں نے اب جگہ جگہ اپنے کوآپریٹو بھی کھول لئے ھیں . سرکار اِس طرح کی سنستھاؤں کو دل کھول کر مدد دیتی ھے .

نمائش چھ فروری سے پندرہ فروری تک رھی . روز مرد عورتوں کی بھیڑ لگی رھتی تھی . ایک ایک دن میں چار ھزار آدمی تک اِس نمائش کو دیکھنے آئے . اِس بھیڑ کو دیکھکر ایک بات ضرور کھٹکتی تھی : واہ واہ کرنے والے تو بہت تھے لیکن ھمارے دیش کے اُن کاریگروں کا وھاں پتہ نہ تھا جو خود ایسی چیزیں بناتے ھیں اور جو اُن چیزوں کو دیکھکر بہت کچھ سیکھ سکتے تھے. ھماری سرکار کو چاھئے کہ وہ اپنے یہاں کے کاریگروں کو بلواکر ایسی نمائشیں دکھلائے اور ایسی نمائش اُن علاقوں میں اکثر کرواتی رھے جہاں پر ھمارے کاریگر اچھی خاصی تعداد میں بستے ھوں .

———

सदी में चीन की यह कला बहुत मशहूर हुई. हाथीदांत पर नक़्क़ाशी अपनी नज़ाकत और तफ़सील के लिये मशहूर है. छोटी छोटी तफ़सील पर नक़्क़ाश का ध्यान रहता है. नुमाइश में हाथीदांत की एक किश्ती थी. इस किश्ती में छोटी से छोटी तफ़सील दिखाई गई है. क़रीब ढाई फ़ुट की लम्बी किश्ती पर 108 आदमी बैठे दिखाई पड़ते हैं. नक़्क़ाशी बेहद बारीक है. पीकिंग, कैन्टन और शंघाई इस तरह की नक़्क़ाशी के केन्द्र हैं. हाथीदांत की नक़्क़ाशी पर चीनी रंग भी भरते हैं. रंग और पालिश का ऐसा मेल बैठाते हैं कि बिलकुल असल मालूम होते हैं.

## मिट्टी के खिलौने

गावों में किसान जब काम से खाली होते हैं तो मिट्टी के खिलौने बनाते हैं. इन खिलौनों को वह रंगते भी हैं. क़ुदरत से रंग मिला देना चीनियों का ही हिस्सा है. मिट्टी के खिलौने हमारे यहां भी बनते हैं लेकिन उनका रंग शायद इतना अच्छा नहीं हो पाता. खिलौनों को देखकर चीनी जनता की चेतना का पता चलता है. वह अपने पुराने कवियों, अपने वीरों और देश-भक्तों की मूर्तियां मिट्टी से बनाते हैं. नुमाइश में एक लड़की की मूर्ति थी जिसका नाम 'ली-हो-लान' है. इसे जापानियों ने मौत के घाट उतार दिया था. इस मूर्ति के भाव को देखकर लगता है कि वह मौत से बिल्कुल नहीं डरी.

नुमाइश में मिट्टी की बनी एक कवि की भी मूर्ति थी जिसका नाम 'ली-पाई' था. यह रोमानी कवि था लेकिन देश भक्ति उसमें कूट कूट कर भरी थी. उसकी कविता की कुछ पंक्तियों का अनुवाद यह है :

"चांद को इशारा करके, मैं शराब के प्याले को उसकी तरफ़ बढ़ाता हूं. यहां हम तीन हैं जो साथ साथ इसका आनन्द ले रहे हैं—चांद, कवि और प्याले में कवि की परछाई"

## और चीज़ें

आटे और चावल से गुड़िया बनाने का चीन में बहुत रिवाज है. इन गुड़ियों को तरह तरह से सजाया जाता है. इन गुड़ियों का आधार कोई न कोई लोक कथा होती है. इन गुड़ियों को बनाने के लिये हड्डी के एक पिन और एक छोटे से बुरुश की जरूरत पड़ती है. बच्चों के खेलने के लिये यह गुड्डे गुड़ियां तैयार किये जाते हैं.

सोने चांदी के बरतनों पर नक़्क़ाशी होती है. लेकिन नुमाइश में जड़ाई का काम दिखाई नहीं पड़ा.

इन चीज़ों को बनाने वाले दो तरह के हैं. एक वह जो पीढ़ियों से यही काम करते आए हैं. उनकी जीविका केवल दस्तकारी पर निरभर है. दूसरे वह मर्द और औरतें जो गांव में रहते हैं और फ़ुरसत के समय ऐसी चीज़ें बनाया करते हैं. नुमाइश देखकर एक बात साफ़ दिखाई पड़ती



صدی میں چین کی یہ کلا بہت مشہور ہوئی ۔ ھاتھی دانت پر نقاشی اپنی نزاکت اور تفصیل کے لئے مشہور ھے ۔ چھوٹی چھوٹی تفصیل پر نقاش کا دھیان رھتا ھے۔ نمائش میں ھاتھی دانت کی ایک کشتی تھی ۔ اِس کشتی میں چھوٹی سے چھوٹی تفصیل دکھائی گئی ھے ۔ قریب ڈھائی فٹ لمبی کشتی پر 108 آدمی بیٹھے دکھائی پڑتے ھیں ۔ نقاشی بےحد باریک ھے ۔ پیکنگ، کینٹن اور شنگھائی اِس طرح کی نقاشی کے کیندر ھیں ۔ ھاتھی دانت کی نقاشی پر چینی رنگ بھی بھرتے ھیں ۔ رنگ اور پالش کا ایسا میل بیٹھاتے ھیں کہ بالکل اصل معلوم ھوتے ھیں ۔

## مٹی کے کھلونے

گاؤں میں کسان جب کام سے خالی ھوتے ھیں تو مٹی کے کھلونے بناتے ھیں ۔ اِن کھلونوں کو وہ رنگتے بھی ھیں ۔ قدرت سے رنگ ملا دینا چینیوں کا ھی حصہ ھے ۔ مٹی کے کھلو ھمارے یہاں بھی بنتے ھیں لیکن اُن کا رنگ شاید اتنا اچھا نہیں ھو پاتا ۔ کھلونوں کو دیکھکر چینی جنتا کی چیتنا کا پتہ چلتا ھے ۔ وہ اپنے پرانے کویوں، اپنے ویروں اور دیش بھکتوں کی مورتیاں مٹی سے بناتے ھیں ۔ نمائش میں ایک لڑکی کی مورتی تھی جس کا نام 'لی ہو لان ھے' اِسے جاپانیوں نے موت کے گھاٹ اُتار دیا تھا ۔ اِس مورتی کے بھاؤ کو دیکھکر لگتا ھے کہ وہ موت سے بالکل نہیں ڈری ۔

نمائش میں مٹی کی بنی ایک کوی کی بھی مورتی تھی جس کا نام 'لی - پائی' تھا ۔ یہ رومانی کوی تھا لیکن دیش بھکتی اُس میں کوٹ کوٹ کر بھری تھی ۔ اُس کی کویتا کی کچھ پنکتیوں کا انوواد یہ ھے :

"چاند کو اشارہ کرکے میں، شراب کے پیالے کو اُس کی طرف بڑھاتا ھوں ۔ یہاں ھم تین ھیں جو ساتھ ساتھ اِس کا آنند لے رھے ھیں—چاند، کوی اور پیالے میں کوی کی پرچھائیں ۔"

## اور چیزیں

آٹے اور چاول سے گڑیا بنانے کا چین میں بہت رواج ھے ۔ اِن گڑیوں کو طرح طرح سے سجایا جاتا ھے ۔ اِن گڑیوں کا آدھار کوئی نہ کوئی لوک کتھا ھوتی ھے ۔ اِن گڑیوں کو بنانے کے لئے ھڈی کے ایک پن اور ایک چھوٹے سے برش کی ضرورت پڑتی ھے ۔ بچوں کے کھیلنے کے لئے یہ گڈے گڑیاں تیار کئے جاتے ھیں ۔

سونے چاندی کے برتنوں پر نقاشی ھوتی ھے ۔ لیکن نمائش میں جڑائی کا کام دکھائی نہیں پڑا ۔

اِن چیزوں کو بنانے والے دو طرح کے ھیں ۔ ایک وہ جو پیڑھیوں سے یہی کام کرتے آئے ھیں ۔ اُن کی جیوکا کیول دستکاری پر نربھر ھے ۔ دوسرے وہ مرد اور عورتیں جو گاؤں میں رھتے ھیں اور فرصت کے سمے ایسی چیزیں بنایا کرتے ھیں ۔ نمائش دیکھکر ایک بات صاف دکھائی پڑتی

प्रदर्शन हर जगह और हर तरह से करते हैं. नुमाइश में इस तरह की बुनाई के बहुत से नमूने थे. यह चीजें रोजमर्रा के इस्तेमाल की थीं. इन की बारीक बुनाई और इन पर तरह तरह के रंग सुन्दरता को बढ़ा देते हैं और देखते ही मन चाहने लगता है कि आदमी इन मामूली चीजों से घर सजा ले. टोकरियां थीं, थैले थे, डलवे थे और बहुत सी चीजें थीं. उन सब चीज़ों के बीच पंखों की कमी खलती थी. हिन्दुस्तान में पंखे बहुत अच्छे अच्छे बुने जाते हैं. चीन में पंखे का रिवाज न हो यह बात नहीं है. हाथी दांत और सन्दल के बारीक कारीगरी के चीनी पंखे दुनिया भर में मशहूर हैं, फिर न जाने चीन में हमारे यहां की तरह के पंखे बुने क्यों नहीं जाते ?

इस नुमाइश में एक चीज़ नई थी. हिन्दुस्तान में सींकों से चप्पलें नहीं बुनी जातीं. यह कला चीनियों से सीखने की है. यह सुन्दर की सुन्दर होती हैं और मजबूत की मजबूत.

## खुदाई

चीन में लकड़ी पर खुदाई होती है, .फीरोज़े पर खुदाई होती है, पत्थर पर खुदाई होती है और हाथी दांत पर खुदाई होती है. लकड़ी पर खुदाई करके लोग अपने घरों को सजाते हैं. लकड़ी पर बहुत बारीक खुदाई होती है. आम तौर पर चिड़ियों, जानवरों और आदमियों की शक्लें लकड़ी पर खोदी जाती हैं, घर भी बनाए जाते हैं और कभी कभी किसी लोक कथा को भी लकड़ी की छाती पर खोद दिया जाता है. नुमाइश में इस तरह की खुदाई का एक बड़ा अच्छा नमूना मौजूद था. इसकी तफ़सील और जिस खूबी से खुदाई की गई थी उसका सम्बन्ध देखने से ही है.

.फीरोज़े पर खुदाई करने का ख़ास केन्द्र पीकिंग है. नरम और उम्दा पत्थर की छाती पर कलाकार अपनी कल्पना उतार के रख देता है. खुदाई बहुत बारीक की जाती है. इस पर ज्यादातर फूल पत्तियां बनाई जाती हैं.

ईसा से हज़ार साल पहले से चीन में पत्थर पर खुदाई की जाती है. तरह तरह के पत्थरों पर खुदाई करने में चीनी बहुत होशियार हैं. तीन तरह की नक़्क़ाशी पत्थरों पर की जाती है—एक पत्थर की तह के अन्दर, दूसरी कुछ पत्थर के बाहर कुछ पत्थर के अन्दर, तीसरी केवल ऊपर उभरी हुई. पत्थरों पर भी शक्लें और फूल पत्ती बनाने का रिवाज है. नुमाइश में एक फूलदान था जो समूचा एक पत्थर का टुकड़ा था. इसको गोला करके बरतन को शकल दी गई थी. उस बरतन पर नक़्क़ाशी की गई थी. पत्थर पर नक़्क़ाशी करते समय प्रकृति से मिलते जुलते रंग वाले पत्थरों को काम में लाया जाता है.

ईसा से पन्द्रह सोलह सौ साल पहले से चीन में हाथी-दांत और हड्डी पर नक़्क़ाशी करने का रिवाज है. अठारहवीं



پردرشن هرجگه اور هر طرح سے کرتے هیں. نمائش میں اِس طرح کی بنائی کے بہت سے نمونے تھے. یہ چیزیں روزمرہ کے استعمال کی تھیں. اِن کی باریک بنائی اور اِن پر طرح طرح کے رنگ سندرتا کو بڑھا دیتے هیں اور دیکھتے هی من چاهنے لگتا هے کہ آدمی اِن معمولی چیزوں سے گھر سجا لے. ٹوکریاں تھیں' تھیلے تھے' ڈلوے تھے اور بہت سی چیزیں تھیں. اِن سب چیزوں کے بیچ پنکھوں کی کمی کھلتی تھی. هندستان میں پنکھے بہت اچھے اچھے بنے جاتے هیں. چین میں پنکھے کا رواج نہ هو یہ بات نہیں هے. هاتھی دانت اور صندل کے باریک کاریگری کے چینی پنکھے دنیا بھر میں مشہور هیں' پھر نہ جانے چین میں همارے یہاں کی طرح کے پنکھے بنے کیوں نہیں جاتے ؟

اِس نمائش میں ایک چیز نئی تھی. هندستان میں سینکوں سے چپلیں نہیں بنی جاتیں. یہ کلا چینیوں سے سیکھنے کی هے. یہ سندر کی سندر هوتی هیں اور مضبوط کی مضبوط.

## کھدائی

چین میں لکڑی پر کھدائی هوتی هے' فیروزے پر کھدائی هوتی هے' پتھر پر کھدائی هوتی هے اور هاتھی دانت پر کھدائی هوتی هے. لکڑی پر کھدائی کرکے لوگ اپنے گھروں کو سجاتے هیں. لکڑی پر بہت باریک کھدائی هوتی هے. عام طور پر چڑیوں' جانوروں اور آدمیوں کی شکلیں لکڑی پر کھودی جاتی هیں' گھر بھی بنائے جاتے هیں اور کبھی کبھی کسی لوک کتھا کو بھی لکڑی کی چھاتی پر کھود دیا جاتا هے نمائش میں اِس طرح کی کھدائی کا ایک بڑا اچھا نمونہ موجود تھا. اِس کی تفصیل اور جس خوبی سے کھدائی کی گئی تھی اُس کا سمبندھ دیکھنے سے هی هے.

فیروزے پر کھدائی کرنے کا خاص کیندر پیکنگ هے. نرم اور عمدہ پتھر کی چھاتی پر کلاکار اپنی کلپنا اُتار کے رکھ دیتا هے. کھدائی بہت باریک کی جاتی هے. اِس پر زیادہتر پھول پتیاں بنائی جاتی هیں.

عیسیٰ سے هزار سال پہلے سے چین میں پتھر پر کھدائی کی جاتی هے. طرح طرح کے پتھروں پر کھدائی کرنے میں چینی بہت هوشیار هیں. تین طرح کی نقاشی پتھروں پر کی جاتی هے— ایک پتھر کی تہ کے اندر' دوسری کچھ پتھر کے باهر کچھ پتھر کے اندر' تیسری کیول اوپر اُبھری هوئی. پتھروں پر بھی شکلیں اور پھول پتی بنانے کا رواج هے. نمائش میں ایک پھول دان تھا جو سموچا ایک پتھر کا ٹکڑا تھا. اِس کو گولا کرکے برتن کی شکل دی گئی تھی. اُس برتن پر نقاشی کی گئی تھی. پتھر پر نقاشی کرتے سمے پرکرتی سے ملتے جلتے رنگ والے پتھروں کو کام میں لایا جاتا هے.

عیسیٰ سے پندرہ سولہ سو سال پہلے سے چین میں هاتھی دانت اور هڈی پر نقاشی کرنے کا رواج هے. اٹھارهویں

था कि शायद हिन्दुस्तान इस मैदान में चीन से आगे है. मक्खी, मछली, चिड़ियां और रोज़मर्रा दिखाई पड़ने वाली चीज़ों के ठप्पे छपाई के लिये इस्तेमाल होते हैं. रज़ाई और सर पर बांधने के लिये परखन्डों वग़ैरा के लिये यह कपड़े काम में आते हैं.

## क़ालीन

पीकिंग और तेन्तसिन में बहुत अच्छे क़ालीन बनते हैं. इन दो जगहों के अलावा शेन्शी, सिन्कियांग, मंगोलिया और तिब्बत में भी क़ालीन बनते हैं. क़ालीन दो तरह से बुने जाते हैं—एक हाथ के करघे से और दूसरे क्रूशिया से. करघे से जो क़ालीन बनते हैं वह ज़्यादा चलते हैं, उनकी बुनाई बहुत गठी होती है. क्रूशिया से जो क़ालीन बनते हैं उनमें मेहनत कम लगती है और कच्चा माल कम ख़र्च होता है.

## लाख और मुलम्मे का काम

23 सौ साल पहले भी चीन में लाख से ख़ूबसूरत चीज़ें बनती थीं. इनमें आम तौर पर काले पर लाल रंग से नक़्क़ाशी की जाती है और लाल पर काले रंग से. पहले लाख से महात्मा बुद्ध की मूर्तियां बनाई जाती थीं. बारहवीं और सोलहवीं सदी के बीच लाख पर सोने चांदी के तारों से नक़्क़ाशी करने का रिवाज ज़ोर पकड़ गया. लाख की चीज़ें इस तरह बनती हैं—पहले एक ढांचा तैयार किया जाता है. ढांचा मिट्टी का, या लकड़ी का, या लोहे का, या पीतल का होता है. इस ढांचे पर लाख की कई तह चढ़ाई जाती हैं. उसके बाद इस पर बारीक नक़्क़ाशी की जाती है. नक़्क़ाशी उस समय की जाती है जब लाख पूरी तरह सूखी न हो. नुमाइश में एक लम्बा चौड़ा फूलदान था. उस पर लाल रंग से नक़्क़ाशी की गई थी. नक़्क़ाशी इतनी बारीक थी कि देखकर ताज्जुब होता था.

नुमाइश में एक टी सेट भी था. यह लाख का और इसीलिये बहुत ही हलका था. यह टी सेट देखने की चीज़ थी. इसके बनाने का तरीक़ा यह है: पहले मिट्टी का ढांचा बनाया जाता है, उस ढांचे पर लाख पोती जाती है. फिर इस पर रेशम या पेटवे के कपड़े लपेटे जाते हैं. कपड़े तब तक लपेटते जाते हैं जब तक कि लाख में कड़ाई नहीं आ जाती और वह ढांचे के रूप को अपना नहीं लेती. तब ढांचे को निकाल लिया जाता है और फिर लाख की कई तह उसके अन्दर और बाहर चढ़ाई जाती हैं. आख़ीर में इस पर नक़्क़ाशी की जाती है और पालिश चढ़ाई जाती है. यह काम बहुत मेहनत का और बहुत नाज़ुक है.

## बुनाई

चीनियों के हाथ जो चीज़ भी लग जाती है उससे वह सुन्दर चीज़ें बना लेते हैं, चाहे बांस हो और चाहे फूस, चाहे घास के तिनके हों और चाहे मूंज, वह अपनी कला का



تھا کہ شاید ہندستان اِس میدان میں چین سے آگے ھے ۔ مکھی' مچھلی' چڑیاں اور روزمرہ دکھائی پڑنے والی چیزوں کے ٹھپے چھپائی کے لئے استعمال ھوتے ھیں ۔ رضائی اور سر پر باندھنے کے لئے پرکھنڈوں وغیرہ کے لئے یہ کپڑے کام میں آتے ھیں ۔

## قالین

پیکنگ اور تینت-سن میں بہت اچھے قالین بنتے ھیں ۔ اِن دونوں جگہوں کے علاوہ شینشی' سن-کیانگ' منگولیا اور تبت میں بھی قالین بنتے ھیں ۔ قالین دو طرح سے بنے جاتے ھیں— ایک ھاتھ کے کرگھے سے اور دوسرے کروشیا سے ۔ کرگھے سے جو قالین بنتے ھیں وہ زیادہ چلتے ھیں ۔ اُن کی بنائی بہت گھٹی ھوتی ھے ۔ کروشیا سے جو قالین بنتے ھیں اُن میں محنت کم لگتی ھے اور کچا مال کم خرچ ھوتا ھے ۔

## لاکھ اور ملمع کا کام

تیئیس سو سال پہلے بھی چین میں لاکھ سے خوبصورت چیزیں بنتی تھیں ۔ اِن میں عام طور پر کالے پر لال رنگ سے نقاشی کی جاتی ھے اور لال پر کالے رنگ سے ۔ پہلے لاکھ سے مہاتما بدھ کی مورتیاں بنائی جاتی تھیں ۔ بارھویں اور سولھویں صدی کے بیچ لاکھ پر سونے چاندی کے تاروں سے نقاشی کرنے کا رواج زور پکڑ گیا ۔ لاکھ کی چیزیں اِس طرح بنتی ھیں—پہلے ایک ڈھانچہ تیار کیا جاتا ھے ۔ ڈھانچہ مٹی کا' یا لکڑی کا' یا لوھے کا' یا پیتل کا ھوتا ھے ۔ اِس ڈھانچہ پر لاکھ کی کئی تہ چڑھائی جاتی ھیں ۔ اُس کے بعد اِس پر باریک نقاشی کی جاتی ھے ۔ نقاشی اُس سمے کی جاتی ھے جب لاکھ پوری طرح سوکھی نہ ھو ۔ نمائش میں ایک لمبا چوڑا پھول دان تھا ۔ اِس پر لال رنگ سے نقاشی کی گئی تھی ۔ نقاشی اتنی باریک تھی کہ دیکھکر تعجب ھوتا تھا ۔

نمائش میں ٹی سیٹ بھی تھا ۔ یہ لاکھ کا تھا اور اِسی لئے بہت ھی ھلکا تھا ۔ یہ ٹی سیٹ دیکھنے کی چیز تھی ۔ اِس کے بنانے کا طریقہ یہ ھے : پہلے مٹی کا ڈھانچہ بنایا جاتا ھے' اُس ڈھانچہ پر لاکھ پوتی جاتی ھے ۔ پھر اِس پر ریشم یا پٹوے کے کپڑے لپیٹے جاتے ھیں ۔ کپڑے تب تک لپیٹے جاتے ھیں جب تک کہ لاکھ میں کڑائی نہیں آ جاتی اور وہ ڈھانچے کے روپ کو اپنا نہیں لیتی ۔ تب ڈھانچے کو نکال لیا جاتا ھے اور پھر لاکھ کی کئی تہ اُس کے اندر اور باھر چڑھائی جاتی ھیں ۔ آخیر میں اِس پر نقاشی کی جاتی ھے اور پالش چڑھائی جاتی ھے ۔ یہ کام بہت محنت کا اور بہت نازک ھے ۔

## بنائی

چینیوں کے ھاتھ جو چیز بھی لگ جاتی ھے اُس سے وہ سندر چیزیں بنالیتے ھیں ۔ چاھے بانس ھو اور چاھے پھوس' چاھے گھاس کے تنکے ھوں اور چاھے مونج' وہ اپنی کلا کا

हरा रंग यहां की बनी चीजों में सुन्दरता पैदा कर देता है. फूलदान और शीशे की दूसरी चीजें भी बनती हैं और उन पर ख़ूबसूरत नक़्क़ाशी की जाती है.

**रेशम**

माना जाता है कि चीन दुनिया का पहला देश है जहां रेशम के कीड़े पाले गए और रेशम के धागों की घुन्डी बनाई गई. पुरानी खुदाइयों में कमख़ाब के टुकड़े अकसर मिलते हैं. हांगचाव, सुचाव, नानकिन, चेंगतु ऐसे इलाक़े हैं जहां कमख़ाब तैयार किया जाता है. यहां के रंग बिरंगे रेशमी थान नुमाइश की शोभा बढ़ा रहे थे.

**रेशमी ग़ालीचे**

चीनी ग़ालीचे हाथ के बुने रेशम के छोटे छोटे टुकड़े मालूम होते हैं. इन ग़ालीचों में ताने की जगह सफ़ेद रेशम के धागे इस्तेमाल होते हैं, बाने में कई कई रंग के धागे लगाए जाते हैं. छोटी छोटी ढिरकियों की मदद से तरह तरह के छाप बुने जाते हैं. इस ग़ालीचों की एक विशेषता यह है कि ये दोनों तरफ़ से एक ही से दिखाई देते हैं. इनमें उलटा सीधा नहीं होता. ग़ालीचे पहले पहल होपी प्रान्त के तिंगशेन नामी स्थान पर बनने शुरू हुए थे. आजकल सुचाव ग़ालीचे की बुनाई का सब से बड़ा केन्द्र है. इन ग़ालीचों पर बने चित्र और उनका रंग आंखों को आकर्शित किये बिना नहीं रहता. यह चित्र रोज़मर्रा के जीवन के होते हैं और उनमें क़ुदरती रंग भरे जाते हैं.

**कशीदाकारी**

चीनी महिलाएं कशीदाकारी में बहुत होशियार होती हैं. सातवीं सदी में ही कपड़ों पर कढ़ाई का रिवाज शुरू हो गया था. गयारहवीं सदी के बाद कशीदाकारी दो तरह से बढ़ी—एक तो तोशकों, लिहाफ़ों, पहेनने के कपड़ों, तकिये के गिलाफ़ों पर कढ़ाई के रूप में और दूसरे मशहूर आदमियों वग़ैरा के चित्रों को धागे और सुई की मदद से कपड़े पर उतारने के रूप में. इस तरह का काम चांगशा और सुचाव में होता है. सुचाव में कशीदाकारों की बहुत बड़ी आबादी है और वहां इस तरह की चीजें बेहद बनती हैं. इस नुमाइश में कई तसवीरें थीं जो हाथ से काढ़ी गई थीं. यह कला शायद अभी हमारे देश में नहीं है.

**ठप्पे का काम**

हमारे देश में हज़ारों कारीगर ठप्पे से छपाई करते हैं, वह छीपे कहलाते हैं. इसी तरह चीन में भी होता है. पहले लकड़ी पर ख़ाका खोदा जाता है और फिर उस ठप्पे से कपड़ा छापा जाता है. चीन में दो तरह की छपाई होती है—एक सफ़ेद कपड़े पर नीली छपाई और दूसरे नीले कपड़े पर सफ़ेद छपाई. हिन्दुस्तान में तरह तरह की छपाई की जाती है. इस नुमाइश में ठप्पों के कामों को देखकर मालूम होता



ھرا رنگ یہاں کی بنی چیزوں میں سندرتا پیدا کر دیتا ھے ۔ پھول دان اور شیشے کی دوسری چیزیں بھی بنتی ھیں اور اُن پر خوبصورت نقاشی کی جاتی ھے ۔

**ریشم**

مانا جاتا ھے کہ چین دنیا کا پہلا دیش ھے جہاں ریشم کے کیڑے پالے گئے اور ریشم کے دھاگوں کی گھنڈی بنائی گئی ۔ پرانی کھدائیوں میں کمخواب کے ٹکڑے اکثر ملتے ھیں ۔ ھانگ - چاؤ' سوچاؤ' نانکن' چینگتو ایسے علاقے ھیں جہاں کمخواب تیار کیا جاتا ھے ۔ یہاں کے رنگ برنگے ریشمی تھان نمائش کی شوبھا بڑھا رھے تھے ۔

**ریشمی غالیچے**

چینی غالیچے ھاتھ کے بنے ریشم کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑے معلوم ھوتے ھیں ۔ اِن غالیچوں میں تانے کی جگہ سفید ریشم کے دھاگے استعمال ھوتے ھیں ۔ بانے میں کئی کئی رنگ کے دھاگے لگائے جاتے ھیں ۔ چھوٹی چھوٹی ڈھرکیوں کی مدد سے طرح طرح کے چھاپ بنے جاتے ھیں ۔ اِن غالیچوں کی ایک وشیشتا یہ ھے کہ یہ دونوں طرف سے ایک ھی سے دکھائی دیتے ھیں ۔ اِن میں اُلٹا سیدھا نہیں ھوتا ۔ غالیچے پہلے پہل ھوپی پرانت کے تنگ شین نامی استھان پر بننے شروع ھوئے تھے ۔ آجکل سوچاؤ غالیچے کی بنائی کا سب سے بڑا کیندر ھے ۔ اِن غالیچوں پر بنے چتر اور ان کا رنگ آنکھوں کو آکرشت کئے بنا نہیں رھتا ۔ یہ چتر روزمرہ کے جیون کے ھوتے ھیں اور اُن میں قدرتی رنگ بھرے جاتے ھیں ۔

**کشیدہ کاری**

چینی مہیلائیں کشیدہ کاری میں بہت ھوشیار ھوتی ھیں ۔ ساتویں صدی میں ھی کپڑوں پر کڑھائی کا رواج شروع ھوگیا تھا ۔ گیارھویں صدی کے بعد کشیدہ کاری دو طرح سے بڑھی—ایک تو توشکوں' لحافوں' پہننے کے کپڑوں' تکئے کے غلافوں پر کڑھائی کے روپ میں اور دوسرے مشہور آدمیوں وغیرہ کے چتروں کو دھاگے اور سوئی کی مدد سے کپڑے پر اُتارنے کے روپ میں ۔ اِس طرح کا کام چانگ - شا اور سوچاؤ میں ھوتا ھے ۔ سوچاؤ میں کشیدہ کاروں کی بہت بڑی آبادی ھے اور وھاں اِس طرح کی چیزیں بے حد بنتی ھیں ۔ اِس نمائش میں کئی تصویریں تھیں جو ھاتھ سے کاڑھی گئی تھیں ۔ یہ کلا شاید ابھی ھمارے دیش میں نہیں ھے ۔

**ٹھپے کا کام**

ھمارے دیش میں ھزاروں کاریگر ٹھپے سے چھپائی کرتے ھیں' وہ چھیپے کہلاتے ھیں ۔ اِسی طرح چین میں بھی ھوتا ھے ۔ پہلے لکڑی پر خاکہ کھودا جاتا ھے اور پھر اُس ٹھپے سے کپڑا چھاپا جاتا ھے ۔ چین میں دو طرح کی چھپائی ھوتی ھے—ایک سفید کپڑے پر نیلی چھپائی اور دوسری نیلے کپڑے پر سفید چھپائی ۔ ھندستان میں طرح طرح کی چھپائی کی جاتی ھے ۔ اِس نمائش میں ٹھپوں کے کاموں کو دیکھکر معلوم ھوتا

से इस मिट्टी की चीज़ें बन रही हैं. चौदहवीं सदी से यह जगह मूर्ति कला के लिये बहुत मशहूर है. इन मूर्तियों में वेश भूशा और भाव भंगिमा जिस ख़ूबी से दिखाए जाते हैं उसकी जितनी सराहना की जाए कम है. नज़ाकत के साथ शान भी इन मूर्तियों से टपकती है. यहां की मूर्तियों पर रंग नहीं होता, यह बिल्कुल सफ़ेद होती हैं, लेकिन इन पर पालिश बहुत अच्छी होती है. नुमाइश में कई मूर्तियों के बीच एक मूर्ति "देव कन्या" की थी. देव कन्या हाथों में फूल लेकर चारों तरफ़ बिखरा रही है. उसके कपड़ों के एक एक मोड़ को बहुत सफ़ाई से ज़ाहिर किया गया है. इस तरह की ख़ूबसूरत मूर्तियां हिन्दुस्तान में कम मिलती हैं. यहां भी नई चीनी सरकार ने दो सरकारी फ़ैक्टरियां खोल दी हैं ताकि कलाकारों को काम मिले और कला की तरक़्क़ी हो.

बीच चीन के हुनान प्रान्त में योशीन नामी जगह पर भी चीनी मिट्टी की चीज़ें बनती हैं. आसमानी रंग पर लाल रंग के चित्र यहां की चीज़ों पर दिखाई पड़ते हैं. नुमाइश में यहां की छोटी छोटी मूर्तियां, खिलौने, मिट्टी के जानवर और चिड़ियां मौजूद थीं. कला के लिये यह जगह बारहवीं सदी से मशहूर है.

## कुम्भकारी

नुमाइश में मिट्टी के बरतनों को देखकर दो बातें दरशकों का ध्यान अपनी तरफ़ खींचती थीं: एक रंग, दूसरे चित्रकारी. चित्र, फूल पत्ती और जानवरों के हैं, रंग इस ख़ूबी से भरे गए हैं कि चीज़ें हू बहू क़ुदरती मालूम होती हैं. बटेरों का एक जोड़ा इस नुमाइश में प्रदर्शित किया गया था जिसके रूप और रंग को देखकर ऐसा लगता था जैसे सचमुच के बटेरों की ममी बना कर रख दी गई हो. घड़ों पर लकीरों से चित्र बनाने और ख़ास कर पौरानिक कथाओं के चित्र बनाने का भी रिवाज है.

शेन-शुई नाम की जगह पर ज़रा सख़्त मिट्टी मिलती है. यह जगह दक्खिन चीन में है. इस मिट्टी के बने बरतनों को ठोंकने पर धात की सी झंकार पैदा होती है. यहां बरतनों पर चित्र उतारने का तरीक़ा यह है: पहले तरह तरह के रंगों के बरतन बना लिये जाते हैं, फिर उन पर चित्र बनाए जाते हैं और ऊपर से पालिश कर दी जाती है. पालिश से चित्रों में चमक आजाती है.

दक्खिन चीन के शान्तुंग प्रान्त में एक जगह पोशान है. यहां की कुम्भकारी सदियों से मशहूर है. यहां ज़्यादातर रोज़मर्रा के इस्तेमाल के बरतन बनते हैं. यहां के रंगों में बड़ी चमक होती है. पन्द्रहवीं सदी से यहां शीशे की चीज़ें बन रही हैं. खिलौने और छोटी बड़ी मूर्तियां भी बनती हैं. उन पर रंग भी किया जाता है. गहरा बादामी, नीला और



سے اُس مٹی کی چیزیں بن رہی ہیں. چودھویں صدی سے یہ جگہ مورتی کلا کے لئے بہت مشہور ہے. اِن مورتیوں میں ویش بھوشا اور بھاؤ بھنگما جس خوبی سے دکھائے جاتے ہیں اُس کی جتنی سراہنا کی جائے کم ہے. نزاکت کے ساتھ شان بھی اِن مورتیوں سے ٹپکتی ہے. یہاں کی مورتیوں پر رنگ نہیں ہوتا. یہ بالکل سفید ہوتی ہیں. لیکن ان پر پالش بہت اچھی ہوتی ہے. نمائش میں کئی مورتیوں کے بیچ ایک مورتی ''دیوکنیا'' کی تھی. دیوکنیا ہاتھوں میں پھول لےکر چاروں طرف بکھرا رہی ہے. اُس کے کپڑوں کے ایک ایک موڑ کو بہت صفائی سے ظاہر کیا گیا ہے. اِس طرح کی خوبصورت مورتیاں ہندستان میں کم ملتی ہیں. یہاں بھی نئی چینی سرکار نے دو سرکاری فیکٹریاں کھول دی ہیں تاکہ کلاکاروں کو کام ملے اور کلا کی ترقی ہو.

بیچ چین کے ہونان پرانت میں یوشین نامی جگہ پر بھی چینی مٹی کی چیزیں بنتی ہیں. آسمانی رنگ پر لال رنگ کے چتر یہاں کی چیزوں پر دکھائی پڑتے ہیں. نمائش میں یہاں کی چھوٹی چھوٹی مورتیاں، کھلونے، مٹی کے جانور اور چڑیاں موجود تھیں. کلا کے لئے یہ جگہ بارھویں صدی سے مشہور ہے.

## کمبھ کاری

نمائش میں مٹی کے برتنوں کو دیکھکر دو باتیں درشکوں کا دھیان اپنی طرف کھینچتی تھیں: ایک رنگ، دوسرے چترکاری. چتر، پھول پتی اور جانوروں کے ہیں، رنگ اِس خوبی سے بھرے گئے ہیں کہ چیزیں ہو بہو قدرتی معلوم ہوتی ہیں. بٹیروں کا ایک جوڑا اِس نمائش میں پردرشت کیا گیا تھا جس کے روپ اور رنگ کو دیکھکر ایسا لگتا تھا جیسے سچ مچ کے بٹیروں کی ممی بنا کر رکھ دی گئی ہو. گھڑوں پر لکیروں سے چتر بنانے اور خاص کر پورانک کتھاؤں کے چتر بنانے کا بھی رواج ہے.

شین-شوئی نام کی جگہ پر ذرا سخت مٹی ملتی ہے. یہ جگہ دکھن چین میں ہے. اِس مٹی کے بنے برتنوں کو ٹھونکنے پر دھات کی سی جھنکار پیدا ہوتی ہے. یہاں برتنوں پر چتر اُتارنے کا طریقہ یہ ہے: پہلے طرح طرح کے رنگوں کے برتن بنا لئے جاتے ہیں، پھر اُن پر چتر بنائے جاتے ہیں اور اوپر سے پالش کر دی جاتی ہے. پالش سے چتروں میں چمک آ جاتی ہے.

دکھن چین کے شانتنگ پرانت میں ایک جگہ پوشان ہے. یہاں کی کمبھکاری صدیوں سے مشہور ہے. یہاں زیادہ تر روزمرہ کے استعمال کے برتن بنتے ہیں. یہاں کے رنگوں میں بڑی چمک ہوتی ہے. پندرھویں صدی سے یہاں شیشے کی چیزیں بن رہی ہیں. کھلونے اور چھوٹی بڑی مورتیاں بھی بنتی ہیں. اُن پر رنگ بھی کیا جاتا ہے. گہرا بادامی، نیلا اور

सब नई यानी हाल की बनी हुई थीं पर उनमें वही पुरानी आत्मा झलक रही थीं. चीन ने दूसरे देशों से सीखा जरूर है लेकिन अपनी परम्परा में उस सीख को ढाल लिया है. सारी नुमाइश को देखकर यह असर पड़ता था कि शिल्प के मैदान में चीन और हिन्दुस्तान बहुत मिलते जुलते हैं. दोनों की कला में पौरानिक कथाओं का पुट साफ़ दिखाई पड़ता है. जंगल, पहाड़, दरिया और जंगली जानवरों को रंगों और तागों की मदद से तरह तरह के रूप में ढालना दोनों जगह की कला का प्रधान अंग है. दोनों में इतना मेल है कि हंगरी की एक महिला दरशक को दिल्ली में यह कहना पड़ा :—"अगर मुझे यह पता न होता कि यह चीनी नुमाइश है और यहां दो एक मूर्तियां चीनी शकल सूरत की दिखाई न पड़तीं तो मैं इस नुमाइश को यक़ीनन हिन्दुस्तानी शिल्प कला की नुमाइश समझ बैठती."

## चीनी मिट्टी की चीज़ें

चार हज़ार साल पहले चीन में चीनी मिट्टी के ऐसे बरतन बनते थे जिनपर रंग किया जाता था और फिर काले और लाल रंग से लकीरें खींचकर उनको खूबसूरत बनाया जाता था. ईसा से डेढ़ हज़ार बरस पहले चीन में ऐसे बरतन बनने लगे थे जिनका रंग हरयाली लिये या हलका पीला होता था. इसके बाद बरतन बनाने की कला में और तरक़्क़ी हुई. सेवर ताव के बजाए बरतनों को खर ताव देकर कड़ा बनाया जाने लगा. ईसा के जन्म के बाद बरतनों पर नीले रंग का रिवाज चला. सातवीं सदी ईसवी के बाद सफ़ेद पालिश के बरतन बनने लगे. चीनी मिट्टी की चीज़ों की तिजारत दसवीं सदी ईसवी में बहुत बढ़ी. चीन से यह सामान ईरान, हिन्दुस्तान, जापान और कुछ योरपी देशों को भी भेजा जाता था.

चीन के अलग अलग हिस्सों में अलग अलग तरह की चीजें बनती हैं. बीच चीन के क्यांगसी सूबे में एक जगह चिंग-ते-चिन है. यहां सन 1004 ईसवी में चीनी मिट्टी की चीजें बननी शुरू हुईं. किसी जमाने में चीन में सब से अच्छा चीनी मिट्टी का सामान यहीं बनता था. यहां तरह तरह की पालिशें ईजाद हुईं और तरह तरह के रंग एक साथ इस्तेमाल किये जाने लगे. आजकल की सरकार ने यहां दो नई फ़ैक्टरियां खोली हैं जिन में कलावन्तों और कारीगरों को बुला बुला कर एक साथ रखा गया जिस से उन्हें एक दूसरे से सलाह करने और अपनी अपनी कला को तरक़्क़ी देने का एक नया और अनोखा मौक़ा मिला. ज्ञान और काम मिल कर ही आगे बढ़ते हैं और दुनिया का भला करते हैं. इस पर चीन में काफ़ी ध्यान दिया जाता है.

दक्खिन चीन के फ़ोकिन प्रान्त में एक जगह थोवा है. यहां तीन तरह की चीनी मिट्टी होती है. यहां नौ सौ साल



سب نئی یعنی حال کی بنی ہوئی تھیں پر اُن میں وہی پرانی آتما جھلک رہی تھی. چین نے دوسرے دیشوں سے سیکھا ضرور ہے لیکن اپنی پرمپرا میں اُس سیکھ کو ڈھال لیا ہے . ساری نمائش کو دیکھ کر یہ اثر پڑتا تھا کہ شلپ کے میدان میں چین اور ہندستان بہت ملتے جلتے ہیں. دونوں کی کلا میں پورانک کتھاؤں کا پٹ صاف دکھائی پڑتا ہے . جنگل، پہاڑ، دریا اور جنگلی جانوروں کو رنگوں اور تاگوں کی مدد سے طرح طرح کے روپ میں ڈھالنا دونوں جگہ کی کلا کا پردھان انگ ہے . دونوں میں اتنا میل ہے کہ ہنگری کی ایک مہیلا درشک کو دلی میں یہ کہنا پڑا :—"اگر مجھے یہ پتہ نہ ہوتا کہ یہ چینی نمائش ہے اور یہاں دو ایک مورتیاں چینی شکل صورت کی دکھائی نہ پڑتیں تو میں اِس نمائش کو یقیناً ہندستانی شلپ کلا کی نمائش سمجھ بیٹھتی ."

## چینی مٹی کی چیزیں

چار ہزار سال پہلے چین میں چینی مٹی کے ایسے برتن بنتے تھے جن پر رنگ کیا جاتا تھا اور پھر کالے اور لال رنگ سے لکیریں کھینچ کر اُن کو خوبصورت بنایا جاتا تھا . عیسیٰ سے ڈیڑھ ہزار برس پہلے چین میں ایسے برتن بننے لگے تھے جن کا رنگ ہریالی لئے یا ہلکا پیلا ہوتا تھا . اِس کے بعد برتن بنانے کی کلا میں اور ترقی ہوئی . سیور تاؤ کے بجائے برتنوں کو کھرتاؤ دے کر کڑا بنایا جانے لگا . عیسیٰ کے جنم کے بعد برتنوں پر نیلے رنگ کا رواج چلا . ساتویں صدی عیسوی کے بعد سفید پالش کے برتن بننے لگے. چینی مٹی کی چیزوں کی تجارت دسویں صدی عیسوی میں بہت بڑھی . چین سے یہ سامان ایران، ہندستان، جاپان اور کچھ یورپی دیشوں کو بھی بھیجا جاتا تھا .

چین کے الگ الگ حصوں میں الگ الگ طرح کی چیزیں بنتی ہیں. بیچ چین کے کیانگسی صوبے میں ایک جگہ چنگ - تے - چن ہے. یہاں سن 1004 عیسوی میں چینی مٹی کی چیزیں بننی شروع ہوئیں . کسی زمانے میں چین میں سب سے اچھا چینی مٹی کا سامان یہیں بنتا تھا . یہاں طرح طرح کی پالشیں ایجاد ہوئیں اور طرح طرح کے رنگ ایک ساتھ استعمال کئے جانے لگے . آجکل کی سرکار نے یہاں دو نئی فیکٹریاں کھولی ہیں جن میں کلاونتوں اور کاریگروں کو بلا بلا کر ایک ساتھ رکھا گیا جس سے اُنہیں ایک دوسرے سے صلاح کرنے اور اپنی اپنی کلا کو ترقی دینے کا ایک نیا اور انوکھا موقعہ ملا . گیان اور کام مل کر ہی آگے بڑھتے ہیں اور دنیا کا بھلا کرتے ہیں . اِس پر چین میں کافی دھیان دیا جاتا ہے .

دکھن چین کے فوکن پرانت میں ایک جگہ تھووا ہے . یہاں تین طرح کی چینی مٹی ہوتی ہے . یہاں نو سو سال

सोसायटी) की दावत पर की थी. आल इन्डिया फ़ाइन आर्ट ऐन्ड क्राफ़्ट्स सोसायटी ने अपने मकान में इसका इन्तज़ाम किया. प्रदर्शनी में सजावट का काम चीनी दूतावास के कर्मचारियों ने किया. बाहर रंग बिरंगे रेशमी झंडे लकड़ी की सफ़ेद बल्लियों पर लहरा रहे थे. उनमें सुनहरी किरचें लगी हुई थीं जो उनकी शोभा बढ़ाती थीं. हवा में जब यह झंडे अपनी बल्लियों की धुरी पर फड़फड़ाते थे तो रंगों का मेल देखकर आंखें हंस पड़ती थीं. सामने एक प्लेटफ़ार्म था जिसकी छत चीनी ढंग से बनी थी. इस प्लेटफ़ार्म के एक तरफ़ लाल कपड़े पर पांच सितारे चमक रहे थे और दूसरी तरफ़ केसरी, सफ़ेद और हरी पट्टियों पर अशोक चक्र था. रात की बिजली की रोशनी यहां समां बांध देती थी.

अन्दर घुसते ही मोटे मोटे सुनहरे अक्षरों में पंडित जवाहरलाल नेहरू का यह शुभ सन्देश पढ़ने को मिलता था :—"मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि आल इन्डिया फ़ाइन आर्ट ऐन्ड क्राफ़्ट्स सोसायटी चीनी कला और शिल्प की प्रदर्शनी कर रही है. बहुत पहलुओं से इसका स्वागत होना चाहिये. चीनी कला की परम्परा बड़ी महान है. चीन की बहुत सी कलाकृतियों को देखकर बेहद ख़ुशी होती है और हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं. यह जानकर खास तौर से दिलचस्पी बढ़ जाती है कि पिछले बरसों में चीनी सरकार ने वहां की कला और शिल्प को बहुत प्रोत्साहन दिया है. इस तरह की नुमाइश के कलात्मक मूल्य के अलावा इसका स्वागत हम इसलिये भी करते हैं क्योंकि इससे भारत और चीन की जनता के बीच दोस्ती बढ़ती है. मेरी कामना है कि यह नुमाइश पूरी तरह कामयाब हो और मुझे आशा है कि बहुत से लोग उसे देखने जाएंगे."

चार बड़े बड़े कमरों में लगभग एक हज़ार चीज़ें सजी हुई थीं. चीनी मिट्टी के बरतन, चीनी मिट्टी की दूसरी चीज़ें मूर्तियां, आटे की बहुरंगी गुड़ियां, मिट्टी के पुतले, घड़े, फूलदान, शीशे के खिलौने, रेशम के रंग बिरंगे फूल, चिड़ियां और जानवर, सुन्दर रेशमी कपड़े, हाथ के कशीदे, क्रूशिया की बुनाई, झालर, ठप्पे का काम, क़ालीन, मुलम्मा और लाख का काम, बांस, मूंज और सींकों से बनी रोज़मर्रा के इस्तेमाल की चीज़ें, लकड़ी, फ़ीरोज़े, पत्थर और हाथी-दान्त की खुदाई, चान्दी सोने के बरतन और गहने, लकड़ी पर सोने चांदी के तारों का काम वग़ैरह वग़ैरह: यह सारी चीज़ें एक साथ देखने को मिलती थीं. चीज़ें चीन के अलग अलग भागों से इकट्ठा की गई थीं और सब मिलकर चीनी कला और शिल्प की तसवीर पूरी कर देती थीं.

चीनी कला और शिल्प का इतिहास बहुत पुराना है. लगभग चार हज़ार साल से चीन में कला तरक़्क़ी करती जा रही है. इस नुमाइश में जो चीज़ें दिखाई गई थीं वह



سوسائٹی) کی دعوت پر کی تھی۔ آل انڈیا فائن آرٹ اینڈ کرافٹس سوسائٹی نے اپنے مکان میں اِس کا انتظام کیا۔ پردرشنی میں سجاوٹ کا کام چینی دوتاواس کے کرمچاریوں نے کیا۔ باہر رنگ برنگے ریشمی جھنڈے لکڑی کی سفید بلیوں پر لہرا رہے تھے۔ اُن میں سنہری کرچیں لگی ہوئی تھیں جو اُن کی شوبھا بڑھاتی تھیں۔ ہوا میں جب یہ جھنڈے اپنی بلیوں کی دھری پر پھڑپھڑاتے تھے تو رنگوں کا میل دیکھکر آنکھیں ہنس پڑتی تھیں۔ سامنے ایک پلیٹ فارم تھا جس کی چھت چینی ڈھنگ سے بنی تھی۔ اِس پلیٹ فارم کے ایک طرف لال کپڑے پر پانچ ستارے چمک رہے تھے اور دوسری طرف کیسری، سفید اور ہری پٹیوں پر اشوک چکر تھا۔ رات کو بجلی کی روشنی یہاں سماں باندھ دیتی تھی۔

اندر گھستے ہی موٹے موٹے سنہرے اکشروں میں پنڈت جواہر لال نہرو کا یہ شبھ سندیش پڑھنے کو ملتا تھا :—"مجھے یہ جان کر خوشی ہوئی کہ آل انڈیا فائن آرٹ اینڈ کرافٹس سوسائٹی چینی کلا اور شلپ کی پردرشنی کر رہی ہے۔ بہت پہلوؤں سے اُس کا سواگت ہونا چاہئیے۔ چینی کلا کی پرمپرا بڑی مہان ہے۔ چین کی بہت سی کلا کرتیوں کو دیکھ کر بےحد خوشی ہوتی ہے اور ہم اُن سے بہت کچھ سیکھ سکتے ہیں۔ یہ جان کر خاص طور سے دلچسپی بڑھ جاتی ہے کہ پچھلے برسوں میں چینی سرکار نے وہاں کی کلا اور شلپ کو بہت پروتساہن دیا ہے۔ اِس طرح کی نمائش کے کلاتمک مولیہ کے علاوہ اِس کا سواگت ہم اِس لئے بھی کرتے ہیں کیونکہ اِس سے بھارت اور چین کی جنتا کے بیچ دوستی بڑھتی ہے۔ میری کامنا ہے کہ یہ نمائش پوری طرح کامیاب ہو اور مجھے آشا ہے کہ بہت سے لوگ اُسے دیکھنے جائینگے۔"

چار بڑے بڑے کمروں میں لگ بھگ ایک ہزار چیزیں سجی ہوئی تھیں۔ چینی مٹی کے برتن، چینی مٹی کی دوسری چیزیں، مورتیاں، آٹے کی بہورنگی گڑیاں، مٹی کے پتلے، گھڑے، پھولدان، شیشے کے کھلونے، ریشم کے رنگ برنگے پھول، چڑیاں اور جانور، سندر ریشمی کپڑے، ہاتھ کے کشیدے، کروشیا کی بنائی، جھالر، ٹھپے کا کام، قالین، ملمع اور لاکھ کا کام، بانس، مونج اور سینکوں سے بنی روزمرہ کے استعمال کی چیزیں، لکڑی، فیروزے، پتھر اور ہاتھی دانت کی کھدائی، چاندی، سونے کے برتن اور گہنے، لکڑی پر سونے چاندی کے تاروں کا کام وغیرہ وغیرہ : یہ ساری چیزیں ایک ساتھ دیکھنے کو ملتی تھیں : چیزیں چین کے الگ الگ بھاگوں سے اِکٹھا کی گئی تھیں اور سب مل کر چینی کلا اور شلپ کی تصویر پوری کردیتی تھیں۔

چینی کلا اور شلپ کا اِتہاس بہت پرانا ہے۔ لگ بھگ چار ہزار سال سے چین میں کلا ترقی کرتی جارہی ہے۔ اِس نمائش میں جو چیزیں دکھائی گئی تھیں وہ

# दिल्ली में चीनी कला की नुमाइश

श्री मुजीब रिजवी

पांच फ़रवरी की शाम को दिल्ली में चीनी कला और शिल्प की नुमाइश का उद्घाटन करते हुए उपराष्ट्रपति डाक्टर राधाकृशनन ने कहा—"विद्या की क़दर, कला से प्रेम, और आजादी की चाह: यह तीनों संस्कृति का निचोड़ हैं. फौजी और राजकाजी ढांचे और शासन व्यवस्था इसी बुनियादी और असल 'संस्कृति' की केवल रक्षा के लिये होते हैं." उन्होंने इस विचार का समर्थन करते हुए बताया—"पहली लड़ाई के समय आक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी के एक प्रोफ़ेसर से लोगों ने पूछा—"आक्सफ़ोर्ड में बैठे आप क्या कर रहे हैं जब कि कला और संस्कृति के लिये फ़्रांस में लोग लड़ रहे हैं?" उसने जवाब दिया: 'मैं ही वह संस्कृति हूं जिस के लिये वह वहां लड़ रहे हैं और जानें दे रहे हैं." अपने अन्दर और बाहर दोनों को सुन्दर बनाना संस्कृति है. अगर मनुश्य को अन्दर से सुन्दर बनाने का सेहरा धर्मों, पैग़म्बरों और औतारों को दिया जा सकता है तो जीवन के बाहरी रूप को सुघड़ और सुन्दर बनाने का श्रेय कला और कलावन्तों को है. जब हम दुनिया के कलावन्तों की देन को आंकेंगे तो चीनी कलावन्त कला के हर मैदान में हमें पेश पेश दिखाई पड़ेंगे. चीनी कला की परम्परा बहुत पुरानी है. उसका आधार है: जीवन रूपी गुलदस्ते को नए नए ख़ूबसूरत फूलों से सजाना और मनुश्य की बुद्धि का निरंतर विकास करना. चीन ने अपनी इस परम्परा को बहुत से तूफ़ानों से बचाया है और आज यह देखकर ख़ुशी होती है कि चीनी कला का टिमटिमाता हुआ दिया नई चीनी सरकार की छत्र छाया में फिर पूरी शान से जगमगाने लगा है.

राजकाजी और फौजी दोस्ती एक बुलबुला है. आज के दोस्त कल के दुशमन हो जाते हैं. लेकिन जो दोस्ती कला और संस्कृति के आदान प्रदान पर क़ायम होती है वह बहुत देर में टूटती है. डाक्टर राधाकृशनन ने कहा—"लोग उन तरीक़ों की चरचा करते हैं जिन पर अमरीका और कनाडा जैसे दो आज़ाद मुल्कों का सम्बन्ध क़ायम है. पर यहां दोस्ती की उससे कहीं बड़ी मिसाल मौजूद है. यह दोस्ती सदियों से चली आ रही है."

दूसरे देशों से कलचरी सम्बन्ध क़ायम करने के लिये चीन में एक सोसायटी है जिसने यह नुमाइश आल इन्डिया फ़ाइन आर्ट ऐन्ड क्राफ़्ट्स सोसायटी (कुल हिन्द कला शिल्प

# دلی میں چینی کلا کی نمائش

شری مجیب رضوی

پانچ فروری کی شام کو دلی میں چینی کلا اور شلپ کی نمائش کا اُدگھاٹن کرتے ہوئے اُپ راشٹر پتی ڈاکٹر رادھا کرشنن نے کہا—" ودیا کی قدر، کلا سے پریم اور آزادی کی چاہ : یہ تینوں سنسکرتی کا نچوڑ ہیں . فوجی اور راج کاجی ڈھانچے اور شاسن ویوستھا اِسی بنیادی اور اصل ' سنسکرتی ' کی کیول رکشا کے لئے ہوتے ہیں ." اُنہوں نے اِس وچار کا سمرتھن کرتے ہوئے بتایا—"پہلی لڑائی کے سمے آکسفورڈ یونیورسٹی کے ایک پروفیسر سے لوگوں نے پوچھا—" آکسفورڈ میں بیٹھے آپ کیا کر رہے ہیں جبکہ کلا اور سنسکرتی کے لئے فرانس میں لوگ لڑ رہے ہیں ؟" اُس نے جواب دیا : " میں ہی وہ سنسکرتی ہوں جس کے لئے وہ وہاں لڑ رہے ہیں اور جانیں دے رہے ہیں ." اپنے اندر اور باہر دونوں کو سندر بنانا سنسکرتی ہے . اگر منشیہ کو اندر سے سندر بنانے کا سہرا دھرموں، پیغمبروں اور اوتاروں کو دیا جا سکتا ہے تو جیون کے باہری روپ کو سگھڑ اور سندر بنانے کا شریئے کلا اور کلاونتوں کو ہے . جب ہم دنیا کے کلاونتوں کی دین کو آنکینگے تو چینی کلاونت کلا کے ہر میدان میں ہمیں پیش پیش دکھائی پڑینگے . چینی کلا کی پرمپرا بہت پرانی ہے . اُس کا آدھار ہے : جیون روپی گلدستے کو نئے نئے خوبصورت پھولوں سے سجانا اور منشیہ کی بدھی کا نرنتر وکاس کرنا . چین نے اپنی اِس پرمپرا کو بہت سے طوفانوں سے بچایا ہے اور آج یہ دیکھکر خوشی ہوتی ہے کہ چینی کلا کا ٹمٹماتا ہوا دیا نئی چینی سرکار کی چھتر چھایا میں پھر پوری شان سے جگمگانے لگا ہے .

راج کاجی اور فوجی دوستی ایک بلبلا ہے . آج کے دوست کل کے دشمن ہو جاتے ہیں . لیکن جو دوستی کلا اور سنسکرتی کے آدان پردان پر قائم ہوتی ہے وہ بہت دیر میں ٹوٹتی ہے . ڈاکٹر رادھا کرشنن نے کہا ہے—" لوگ اُن طریقوں کی چرچا کرتے ہیں جن پر امریکہ اور کناڈا جیسے دو آزاد ملکوں کا سمبندھ قائم ہے . پر یہاں دوستی کی اُس سے کہیں بڑی مثال موجود ہے . یہ دوستی صدیوں سے چلی آ رہی ہے ."

دوسرے دیشوں سے کلچری سمبندھ قائم کرنے کے لئے چین میں ایک سوسائٹی ہے جس نے یہ نمائش آل انڈیا فائن آرٹ اینڈ کرافٹس سوسائٹی ( کل ہند کلا شلپ

के परिमानों की दृश्टि से श्रेश्ठ मीनारें हैं. चीन में मसजिदों में केवल मुअज़्ज़िन के लिये एक छोटी मीनार होती है. चौदहवीं और पन्द्रहवीं सदी की क़ाहिरा की मीनारों ने इटली की रेनासां डिज़ाइनों को और यूरोप के, बाद में निर्मित टावरों और रैम्पर्टों पर काफ़ी असर डाला.

एलिज़बेथ के समय से और उसके बाद भी इङ्गलिस्तान की इमारतों में कोर्निस के पास या कमरों के निचले हिस्सों में जो लेस की पैटर्न के बेल-बूटों का इस्तेमाल शुरू हुआ, अङ्गरेज़ी में उसे 'अरेबेस्क़' ( Arabesque ) कहते हैं. इस एक चीज़ से पता चलता है कि मध्य युग के अरबों ने इङ्गलिस्तान की निर्मान-कला को सुन्दर बनाने में ज़ाहिरा हिस्सा लिया.

यूरोप में और दुनिया के दूसरे हिस्सों में जिस नोकीली मेहराब ( Pointed arch ) का रिवाज शुरू हुआ यह कहने के लिये काफ़ी प्रमान हैं कि इसका उद्‌गम शाम और दूसरे मुल्कों की इसलामी इमारतों से है. यूरोप की 'ओगी' मेहराबें और 'ट्यूडर' मेहराबें तो साफ़ साफ़ मुसलिम मेहराबों की नक़लें हैं. अर्ध चन्द्राकार और पंखुड़ियांदार मेहराबें गो इसलाम को भारत की देन हैं ताहम यूरोप ने इनकी नक़ल इसलामी इमारतों से ही की. खिड़कियों के आस पास और फ़र्श पर ज्यामिति की रेखायें बनाने का रिवाज भी यूरोप में इसलामी निर्मान-कला के प्रभाव से फैला. आधुनिक इमारतों में कमरों की सीलिंग में जो थालीनुमा गोल डिज़ाइन होती है और ज्यामिति की शकलों के रूप में जो कटी हुई जालियां बनाई जाती हैं वे भी शुरू की मसजिदों की यादगार हैं. गाथिक इमारतों में स्तम्भों के कोनों के पास जो जुड़े हुये बान के आकार की धन्नियां इस्तेमाल की जाती हैं और जो गाथिक निर्मान कला के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्न समझी जाती हैं आठवीं और नवीं सदी की मुसलिम इमारतों की नक़ल हैं.❀ दीवारों पर बेल बूटे और उभरी हुई कोर्निस का रिवाज इराक़ में प्रचलित था. यही चीज़ें बाद में गाथिक निर्मान कला का एक ख़ास अङ्ग बन गईं.

लकड़ी के जालीदार परदे जिन्हें अरबी में 'मशराबिया' कहते हैं, मकानों में ज़नानख़ाने के परदे के काम में या मसजिदों में परदे के तौर पर इस्तेमाल किये जाते थे. बाद में इङ्गलिस्तान में इनकी ख़ूब नक़लें शुरू हुईं.

अरबों ने ज्यामिति के अपने अथाह ज्ञान के कारन, दुनिया के अनेक प्राचीन देशों के संसर्ग में आने के कारन और अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारन निर्मान-कला का एक ऐसा सुन्दर और उपयोगी समन्वय तैयार किया जिसकी छाप आम तौर पर आधुनिक निर्मान-कला पर और विशेशकर यूरोप की निर्मान-कला पर हमें स्पश्ट दिखाई देती है.



کے پریمانوں کی درشٹی سے شریشٹھ میناریں هیں ۔ چین میں مسجدوں میں کیول موذن کے لئے ایک چھوٹی مینار هوتی هے. چودهویں اور پندرهویں صدی کی قاهره کی میناروں نے اٹلی کی ریناساں ڈیزائنوں کو اور یورپ کے، بعد میں نرمت ٹاوروں اور ریمپرٹو پر کافی اثر ڈالا ۔

ایلیزبیتھ کے سمے سے اور اُس کے بعد بھی انگلستان کی عمارتوں میں کورنس کے پاس یا کمروں کے نچلے حصوں میں جو لیس کی پیٹرن کے بیل بوٹوں کا استعمال شروع هوا، انگریزی میں اُسے 'اریبیسق' (Arabesque) کہتے هیں. اِس ایک چیز سے پتہ چلتا هے که مدھیہ یگ کے عربوں نے انگلستان کی نرمان کلا کو سندر بنانے میں ظاهرا حصه لیا ۔

یورپ میں اور دنیا کے دوسرے حصوں میں جس نوکیلی محراب (Pointed arch) کا رواج شروع هوا یہ کہنے کے لئے کافی پرمان هیں که اس کا اُدگم شام اور دوسرے ملکوں کی اسلامی عمارتوں سے هے ۔ یورپ کی 'اوگی' محرابیں اور 'ٹیوڈر' محرابیں تو صاف صاف مسلم محرابوں کی نقلیں هیں ۔ اردھ چندراکار اور پنکھڑیاں‌دار محرابیں گو اِسلام کو بھارت کی دین هیں تاهم یورپ نے اِن کی نقل اِسلامی عمارتوں سے هی کی ۔ کھڑکیوں کے آس پاس اور فرش پر جیامتی کی ریکھائیں بنانے کا رواج بھی یورپ میں اِسلامی نرمان کلا کے پربھاؤ سے پھیلا ۔ آدھونک عمارتوں میں کمروں کی سیلنگ میں جو تھالی نما گول ڈزائن هوتی هے اور جیامتی کی شکلوں کے روپ میں جو کٹی هوئی جالیاں بنائی جاتی هیں وے بھی شروع کی مسجدوں کی یادگار هیں گاتھک عمارتوں میں استمبھوں کے کونوں کے پاس جو جڑے هوئے بان کے آکار کی دھنیاں استعمال کی جاتی هیں اور جو گاتھک نرمان کلا کے اتہاس میں اتینت مہتو پورن سمجھی جاتی هیں آٹھویں اور نویں صدی کی مسلم عمارتوں کی نقل هیں ۔ ❀ دیواروں پر بیل بوٹے اور اُبھری هوئی کورنس کا رواج عراق میں پرچلت تھا ۔ یہی چیزیں بعد میں گاتھک نرمان کلا کا ایک خاص انگ بن گئیں ۔

لکڑی کے جالی‌دار پردے جنھیں عربی میں 'مشرابیه' کہتے هیں، مکانوں میں زنانخانے کے پردے کے کام میں یا مسجدوں میں پردے کے طور پر استعمال کئے جاتے تھے ۔ بعد میں اِنگلستان میں اِن کی خوب نقلیں شروع هوئیں ۔

عربوں نے جیامتی کے اپنے اتھاہ گیان کے کارن، دنیا کے انیک پراچین دیشوں کے سنسرگ میں آنے کے کارن اور اپنی جگیاسو پرورتی کے کارن نرمان کلا کا ایک ایسا سندر اور اُپیوگی سمنوے تیار کیا جس کی چھاپ عام طور پر آدھونک نرمان کلا پر اور وشیش کر یورپ کی نرمان کلا پر همیں اسپشٹ دکھائی دیتی هے ۔

---

❀ Martin S. Briggs' European Architecture.

(4) तुर्की तामीर-कला और
(5) भारतीय पठान-मुग़ल तामीर-कला.

किसी भी देश की भौगोलिक हालतों से निर्मान-कला का रूहानी ताल्लुक़ होता है. धर्म एक हद तक ही उसपर असर डालता है. उसमें जीवन और रूप रंग भरने वाली देश की .क़ुदरती हालत ही है. भारत घने बनों, फूल-पत्तियों, पर्वतों, नदियों, घाटियों और वादियों का देश है, इसीलिये यहां की निर्मान-कला में विशालता के साथ साथ बाहुल्यता और विविधता भी है. मन्दिर का कोना कोना आपको मूर्तियों, फूल पत्तियों और कंगूरे से लदा मिलेगा. इसके विपरीत अरब एक रेगिस्तान है, जिधर देखो उधर विस्तृत नीला आसमान और असीम रेगिस्तान. मसजिदों की निर्मान-कल्पना पर भी इसी भौगोलिक स्थिति का असर साफ़ दिखाई देता है. मरुस्थल की छाप मसजिद की साफ़ सपाट लेकिन व्यापक असर डालने वाली बनावट पर आपको मिलेगी.

इसलाम दुनिया के अनेकों सभ्य से सभ्य और उन्नत देशों में गया. अपने साथ साथ वह निर्मान-कला के बुनियादी उसूल भी ले गया. यह भी सही है कि दुनिया के विविध देशों में इसलामी तामीरों में एक व्यापक एकता और साम्य भी दिखाई देता है; किन्तु यह सब होते हुए भी मिस्र की इसलामी निर्मान-कला, ईरान की इसलामी निर्मान-कला और भारत की इसलामी निर्मान-कला मूल रूप से मिस्री, ईरानी, स्पेनी, चीनी और भारतीय है. इन समस्त देशों की बुनियादी निर्मान-कलाओं ने इसलामी निर्मान-कला पर बेहद असर डाला. निर्मान-कला की स्थानीय परम्परायें इसलामी तामीरों पर पूरी तरह हावी हो गईं.

शुरू शुरू में सीधी सादी जामा मसजिदों का रिवाज चला. उसके बाद गुम्बद वाली मसजिदें बननी शुरू हुईं. इसके बाद बारहवीं सदी में क्यूनिफ़ार्म शकल की मदरसा मसजिदों का काफ़ी प्रचार हुआ. बाद में गुम्बद मुसलिम निर्मान-कला का एक दिलचस्प और ज़रूरी अङ्ग बन गया. क़ाहिरा में उभरे हुये गुम्बद, ईरान और तुर्किस्तान में गोल गुम्बद और क़ुस्तुनतुनिया की मसजिदों में बाइज़नटाइन शकल के नीचे गुम्बदों का रिवाज था. गुम्बदों की बाहरी सजावट का तरीक़ा भी जगह जगह भिन्न भिन्न प्रकार का था. 1 वीं सदी में मिस्र की पत्थर की गुम्बदों पर लेस के पैटर्न की खुदाई और पच्चीकारी होती थी. ईरानी गुम्बदों के ऊपर चमकदार टाइलें लगाई जाती थीं.

इसलामी मीनारों की बनावट में भी बेहद ख़ूबसूरती बढ़ी. क़ुतुब मीनार भारतीय निर्मान कला के समन्वय के कारन संसार की सब से शानदार मीनार समझी जाती है. लाहौर की शाही मसजिद की मीनारें, दिल्ली की जामा मसजिद की मीनारें, औरङ्गाबाद की मीनारें और आगरे की मोती मसजिद की मीनारें कला, सौन्दर्य और ज्यामिति



4) ترکی تعمیر کلا اور
(5) بھارتیہ پٹھان مغل تعمیر کلا .

کسی بھی دیش کی بھوگولک حالتوں سے نرمان کلا کا روحانی تعلق ہوتا ھے . دھرم ایک حد تک ھی اِس پر اثر ڈالتا ھے . اس میں جیون اور روپ رنگ بھرنے والی دیش کی قدرتی حالت ھی ھے . بھارت گھنے بنوں، پھول پتیوں، پروتوں، ندیوں، گھاٹیوں، اور وادیوں کا دیش ھے، اِسی لئے یہاں کی نرمان کلا میں وشالتا کے ساتھ ساتھ باھولیتا اور وودھتا بھی ھے . مندر کا کونہ کونہ آپ کو مورتیوں، پھول پتیوں اور کنگورے سے لدا ملے گا. اِس کے وپریت عرب ایک ریگستان ھے، جدھر دیکھو ادھر وسترت نیلا آسمان اور اسیم ریگستان . مسجدوں کی نرمان کلپنا پر بھی اِسی بھوگولک استھتی کا اثر صاف دکھائی دیتا ھے. مروستھل کی چھاپ مسجد کی صاف سپاٹ لیکن ویاپک اثر ڈالنے والی بناوٹ پر آپ کو ملے گی .

اسلام دنیا کے انیکوں سبھیہ سے سبھیہ اور اُنت دیشوں میں گیا. اپنے ساتھ ساتھ وہ نرمان کلا کے بنیادی اُصول بھی لے گیا . یہ بھی صحیح ھے کہ دنیا کے وودھ دیشوں میں اسلامی تعمیروں میں ایک ویاپک ایکتا اور سامیہ بھی دکھائی دیتا ھے، کنتو یہ سب ھوتے ھوئے بھی مصر کی اسلامی نرمان کلا، ایران کی اِسلامی نرمان کلا اور بھارت کی اِسلامی نرمان کلا مول روپ سے مصری، ایرانی، اسپینی، چینی اور بھارتیہ ھے . اِن سمست دیشوں کی بنیادی نرمان کلاؤں نے اسلامی نرمان کلا پر بےحد اثر ڈالا . نرمان کلا کی استھانیہ پرمپرائیں اسلامی تعمیروں پر پوری طرح حاوی ھو گئیں .

شروع شروع میں سیدھی سادی جامع مسجدوں کا رواج چلا . اِس کے بعد گنبد والی مسجدیں بننی شروع ھوئیں . اِس کے بعد بارھویں صدی میں کیونی فارم شکل کی مدرسہ مسجدوں کا کافی پرچار ھوا . بعد میں گنبد مسلم نرمان کلا کا ایک دلچسپ اور ضروری انگ بن گیا. قاھرہ میں ابھرے ھوئے گنبد، ایران اور ترکستان میں گول گنبد اور قسطنطنیہ کی مسجدوں میں بائیزنٹائن شکل کے نیچے گنبدوں کا رواج تھا . گنبدوں کی باھری سجاوٹ کا طریقہ بھی جگہ جگہ بھن بھن پرکار کا تھا . 15ویں صدی میں مصر کی پتھر کی گنبدوں پر لیس کے پیٹرن کی کھدائی اور پچکاری ھوتی تھی . ایرانی گنبدوں کے اوپر چمکدار ٹائیلیں لگائی جاتی تھیں .

اِسلامی میناروں کی بناوٹ میں بھی بےحد خوبصورتی بڑھی. قطب مینار بھارتیہ نرمان کلا کے سمنویے کے کارن سنسار کی سب سے شاندار مینار سمجھی جاتی ھے . لاھور کی شاھی مسجد کی میناریں، دلی کی جامع مسجد کی میناریں، اورنگ آباد کی میناریں اور آگرہ کی موتی مسجد کی میناریں کلا، سوندریہ اور جیامتی

में तामीर हुई. यू' तो इसलाम के पहले की इमारतों में भी नाल नुमा मेहराबों का रिवाज था लेकिन बाद में वह ख़ास इसलामी चीज़ बन गई.

मसजिद में पहले पहल मीनार की तामीर मुअज़्ज़िन के ऊंची जगह से अज़ान देने के ख़्याल से शुरू हुई. शुरू शुरू की मसजिदों में सिर्फ़ एक ही छोटी मीनार होती थी. ऊंची ऊंची चार मीनारों का रिवाज तो बहुत बाद में पड़ा. सबमें पुरानी मीनार तूनस के क़रीब 'क़यरवान' की मसजिद की मीनार है. यह मसजिद ख़लीफ़ा हिशाम (सन 724-743) के वक़्त में बनी थी. स्पेन में कारडोबा की बड़ी मीनारों वाली मसजिद की तामीर सन 786 में शुरू हुई.

सामरो की मसजिद भी बहुत बड़ी और तारीख़ी अहमियत रखती है. इसमें बहुत बड़ा सहन, मक्के की तरफ़ क़िबला और एक बहुत चौड़ा बरामदा है. सहन के तीनों ओर काफ़ी चौड़े पोर्टिको हैं. मसजिद के बाहर, चारों तरफ़ जो ईंटों का घेरा है, उसमें चारों कोनों में गोल टावर हैं. मसजिद की दक्खिनी दीवार में छोटी छोटी खिड़कियों की एक क़तार है. इन खिड़कियों के ऊपर का हिस्सा आधे चांद की शकल का है. कई खिड़कियां फूल की पंखुड़ियों की शकल की हैं. निर्मान-कला के यह नमूने कारडोबा की मसजिद में भी मिलते हैं. मशहूर कला-पारखी ई. बी. हैवल के मुताबिक़ इसलाम को यह कला के नमूने बौद्ध भारत की देन हैं.*

तुलन की मसजिद की तामीर सन 876 में शुरू हुई. मसजिद की बाहर की दीवारें बहुत ऊंची और बेहद चौड़ी हैं. ये दीवारें असुरियन क़िले की दीवारों से बहुत मिलती जुलती हैं. 1500 बरस बाद असुरियन निर्मान-कला के इस असर को देखकर इनसान हैरत में पड़ जाता है.

शाम और मिस्र की सैनिक निर्मान-कला ने भी इसलामी निर्मान-कला पर काफ़ी असर डाला. इनमें क़िले का समकोन प्रवेश मार्ग मुख्य था. दुशमन के फाटक के भीतर घुस आने पर भी समकोन प्रवेश मार्ग होने के सबब वह क़िले के भीतरी हिस्से में सीधा गोलाबारी न कर सकता था. रोमन या बाइज़नटाइन सैनिक विशेशज्ञों को इस तरह के प्रवेश मार्गों का ज्ञान न था. इन दिनों के क़िलों के तमाम फाटक एक ही सीध में होते थे. इन फाटकों के बीच की ज़मीन 'प्रापुगनाकुलम' कहलाती थी. इस तरह के प्रवेश मार्गों की तामीर पहले पहले बग़दाद में आठवीं सदी में शुरू हुई. बग़दाद के क़िलों की दीवारों और प्रवेश मार्गों की नक़ल बाद में वैनिस के महलों में भी हुई.

इसलामी तामीर-कला को हम पांच ख़ास हिस्सों में बांट सकते हैं—

(1) शाम और मिस्री तामीर-कला,
(2) स्पेन और मोरक्को की तामीर-कला,
(3) ईरानी तामीर-कला,



میں تعمیر ہوئی ۔ یوں تو اسلام کے پہلے کی عمارتوں میں بھی نال نما محرابوں کا رواج تھا لیکن بعد میں وہ خاص اِسلامی چیز بن گئی ۔

مسجد میں پہلے پہل مینار کی تعمیر موذن کے اُونچی جگہ سے اذان دینے کے خیال سے شروع ہوئی ۔ شروع شروع کی مسجدوں میں صرف ایک ہی چھوٹی مینار ہوتی تھی ۔ اُونچی اُونچی چار میناروں کا رواج تو بہت بعد میں پڑا ۔ سب میں پرانی مینار تیونس کے قریب 'قعروان' کی مسجد کی مینار ہے ۔ یہ مسجد خلیفہ حشام ( سن 724-743 ) کے وقت میں بنی تھی ۔ اسپین میں کارڈوبا کی بڑی میناروں والی مسجد کی تعمیر سن 786 میں شروع ہوئی ۔

سامرا کی مسجد بھی بہت بڑی اور تاریخی اہمیت رکھتی ہے ۔ اس میں بہت بڑا صحن' مکے کی طرف قبلہ اور ایک بہت چوڑا برآمدہ ہے ۔ صحن کے تینوں اور کافی چوڑے پورٹیکو ہیں ۔ مسجد کے باہر' چاروں طرف جو اینٹوں کا گھیرا ہے' اُس میں چاروں کونوں میں گول ٹاور ہیں ۔ مسجد کی دکھنی دیوار میں چھوٹی چھوٹی کھڑکیوں کی ایک قطار ہے ۔ ان کھڑکیوں کے اُوپر کا حصہ آدھے چاند کی شکل کا ہے ۔ کئی کھڑکیاں پھول کی پنکھڑیوں کی شکل کی ہیں ۔ نرمان کلا کے یہ نمونے کارڈوبا کی مسجد میں بھی ملتے ہیں ۔ مشہور کلا پارکھی - ای - بی - ھیول کے مطابق اِسلام کو کلا کے یہ نمونے بودھ بھارت کی دین ہیں ۔ *

طولن کی مسجد کی تعمیر سن 876 میں شروع ہوئی ۔ مسجد کی باہر کی دیواریں بہت اُونچی اور بے حد چوڑی ہیں۔ یہ دیواریں اسورین قلعے کی دیواروں سے بہت ملتی جلتی ہیں ۔ 1500 برس بعد اسورین نرمان کلا کے اس اثر کو دیکھ کر اِنسان حیرت میں پڑ جاتا ہے ۔

شام اور مصر کی سینک نرمان کلا نے بھی اِسلامی نرمان کلا پر کافی اثر ڈالا ۔ اِن میں قلعے کا سمکون پرویش مارگ مکھیہ تھا ۔ دشمن کے پھاٹک کے بھیتر گھس آنے پر بھی سمکون پرویش مارگ ہونے کے سبب وہ قلعے کے بھیتری حصے میں سیدھا گولہ باری نہ کر سکتا تھا ۔ روم یا بائیزنٹائن سینک وشیشگیوں کو اِس طرح کے پرویش مارگوں کا گیان نہ تھا ۔ اِن دنوں کے قلعوں کے تمام پھاٹک ایک ہی سیدھ میں ہوتے تھے ۔ اِن پھاٹکوں کے بیچ کی زمین ' پراپوگنا کلم ' کہلاتی تھی ۔ اِس طرح کے پرویش مارگوں کی تعمیر پہلے پہلے بغداد میں آٹھویں صدی میں شروع ہوئی۔ بغداد کے قلعوں کی دیواروں اور پرویش مارگوں کی نقل بعد میں وینس کے محلوں میں بھی ہوئی ۔

اِسلامی تعمیر کلا کو ہم پانچ خاص حصوں میں بانٹ سکتے ہیں—

(1) شام اور مصری تعمیر کلا'
(2) اسپین اور مراکو کی تعمیر کلا'
(3) ایرانی تعمیر کلا'

---

* E. B. Havell—Indian Architecture, 2 nd. Edition, London 1927, pp. 85—6.

सीढ़ियों के ऊपर एक चौकोर चबूतरा बनाया गया जो तीनों ओर से लकड़ी के कटघरे से घिरा हुआ था. यही मिम्बर था. अब तक इमाम क़तार के पास ही खड़ा होकर नमाज़ पढ़ाया करता था. मिम्बर के ऊपर उसके सब से ऊंचा खड़े होने पर नुक्ताचीनियां हुईं. यह खबर मदीने में खलीफ़ा हज़रत उमर के पास पहुंची. अम्र से जवाब तलबी हुई. अम्र ने अपनी वकालत में कहा कि दुश्मनों के मुल्क में क़ातिलों के खंजर से अपनी हिफ़ाज़त के लिये ही यह कटघरा बनाया गया है और अगर खलीफ़ा को नामंज़ूर हो तो इसे गिरा दिया जाय. बात उमर की समझ में आगई और उसने मिम्बर की इजाज़त दे दी. और अब तो मिम्बर हिफ़ाज़त के लिये खास चीज़ नहीं बल्कि मसजिदों का एक ज़रूरी ज़ुज़ बन गया है.

शुरू की मसजिदों में मीनारें न होती थीं. कहा जाता है मीनारों का रिवाज सातवीं सदी के आखीर में शुरू हुआ. शुरू शुरू में मसजिद में क़िबले को खास तौर पर इंगित करने वाली मेहराब भी न होती थी. मेहराब का रिवाज भी बहुत बाद में पड़ा. इस तरह मदीने की पहली मसजिद की तामीर के 80-90 बरस के अन्दर अनेकों चीज़ें जुड़कर मसजिदों का ज़रूरी ज़ुज़ बन गईं. इसी समय के क़रीब अल-ईवान का भी निर्मान होने लगा. सहन के पास वुज़ू करने के लिये जो पानी की जगह होती है उसे अल-ईवान कहते हैं. सातवीं सदी से लेकर अब तक मसजिद की निर्मान-कला की यही चन्द ज़रूरी चीज़ें रही हैं.

सन 639 ईसवी में फ़िलस्तीन पर अरबों का क़ब्ज़ा हुआ. यरुसलम के ईसाई पादरी की प्रार्थना पर खुद उमर के नेतृत्व में अरब फ़ौजें यरुसलम में दाखिल हुईं. इस खास काम के लिये उमर मदीने से चलकर यरुसलम आये थे. यरुसलम में उमर ने जिस जगह नमाज़ पढ़ी थी उमर की यादगार में उस जगह बाद में एक मसजिद बन गई. सातवीं सदी के आखरी बरसों में इसी मसजिद के पास एक नई शानदार मसजिद बनाई गई. अब तक की बनी हुई तमाम मसजिदों में यह मसजिद सब में आलीशान और सब में विशाल थी. इसे लोग 'चट्टानी गुम्बद' ( Dome of the Rock ) भी कहते थे. अरबी में इस मसजिद को 'क़ुब्बत-उल-सखराह' कहा जाता था. यह ठोस पत्थर की बनी हुई एक महान इमारत थी. इसलामी इतिहास के मुताबिक़ यह मसजिद 'मशहद' यानी साक्षी की जगह है. अपनी पैग़म्बरी के दिनों में इसी जगह से हज़रत मुहम्मद ने 'मेराज' यानी स्वर्ग की सदेह यात्रा की थी. श्रद्धालु यात्री यहां आकर इस मसजिद की परिक्रमा करते हैं.

इसलामी तामीरी कला के इतिहास में इस मसजिद के बाद ही गुम्बदों और घोड़े की नाल की शक्ल की मेहराबों का रिवाज चला. 'क़ुब्बत-उल-सखराह' की मसिजिद के बाद आठवीं सदी के शुरू में एक दूसरी विशाल मसजिद दमिश्क़



سیڑھیوں کے اُوپر ایک چوکور چبوترہ بنایا گیا جو تینوں اُور سے لکڑی کے کٹگھرے سے گھرا ہوا تھا. یہی ممبر تھا. اب تک امام قطار کے پاس ہی کھڑا ہوکر نماز پڑھایا کرتا تھا. ممبر کے اُوپر اُس کے سب سے اُونچا کھڑے ہونے پر نکتہ‌چینیاں ہوئیں. یہ خبر مدینے میں خلیفہ حضرت عمر کے پاس پہونچی. امر سے جواب طلبی ہوئی. امر نے اپنی وکالت میں کہا کہ دشمنوں کے ملک میں قاتلوں کے خنجر سے اپنی حفاظت کے لئے ہی یہ کٹگھرا بنایا گیا ھے اور اگر خلیفہ کو نامنظور ہو تو اِسے گرا دیا جائے. بات عمر کی سمجھ میں آگئی اور اس نے ممبر کی اِجازت دے دی. اور اب تو ممبر حفاظت کے لئے خاص چیز نہیں بلکہ مسجدوں کا ایک ضروری جز بن گیا ھے.

شروع کی مسجدوں میں میناریں نہ ہوتی تھیں. کہا جاتا ھے میناروں کا رواج ساتویں صدی کے آخیر میں شروع ہوا. شروع شروع میں مسجد میں قبلہ کو خاص طور پر انگت کرنے والی محراب بھی نہ ہوتی تھی. محراب کا رواج بھی بہت بعد میں پڑا. اِس طرح مدینے کی پہلی مسجد کی تعمیر کے 80-90 برس کے اندر انیکوں چیزیں جڑ کر مسجدوں کا ضروری جز بن گئیں. اِسی سمے کے قریب الایوان کا بھی نرمان ہونے لگا. صحن کے پاس وضو کرنے کے لئے جو پانی کی جگہ ہوتی ھے اُسے الایوان کہتے ھیں. ساتویں صدی سے لےکر اب تک مسجد کی نرمان کلا کی یہی چند ضروری چیزیں رہی ھیں.

سن 639 عیسوی میں فلسطین پر عربوں کا قبضہ ہوا. یروسلم کے عیسائی پادری کی پرارتھنا پر خود عمر کے نیترتو میں عرب فوجیں یروسلم میں داخل ہوئیں. اِس خاص کام کے لئے عمر مدینے سے چل‌کر یروسلم آئے تھے. یروسلم میں عمر نے جس جگہ نماز پڑھی تھی عمر کی یادگار میں اُس جگہ بعد میں ایک مسجد بن گئی. ساتویں صدی کے آخری برسوں میں اِسی مسجد کے پاس ایک نئی شاندار مسجد بنائی گئی. اب تک کی بنی ہوئی تمام مسجدوں میں یہ مسجد سب میں عالیشان اور سب میں وشال تھی. اسے لوگ 'چٹانی گنبد' (Dome of the Rock) بھی کہتے تھے. عربی میں اِس مسجد کو 'قوۃالسخراہ' کہا جاتا تھا. یہ ٹھوس پتھر کی بنی ہوئی ایک مہان عمارت تھی. اِسلامی اِتہاس کے مطابق یہ مسجد 'مشہد' یعنی ساکشی کی جگہ ھے. اپنی پیغمبری کے دنوں میں اِسی جگہ سے حضرت محمد نے 'معراج' یعنی سورگ کی سدیہ یاترا کی تھی. شردھالو یاتری یہاں آکر اس مسجد کی پریکرما کرتے ھیں.

اِسلامی تعمیری کلا کے اتہاس میں اِس مسجد کے بعد ھی گنبدوں اور گھوڑے کی نال کی شکل کی محرابوں کا رواج چلا. 'قوۃالسخراہ' کی مسجد کے بعد آٹھویں صدی کے شروع میں ایک دوسری وشال مسجد دمشق

# इसलामी तामीरी कला के उसूल

विश्वम्भरनाथ पांडे

इसलाम के नाम पर निर्मान-कला का सब में पहला नमूना वह मसजिद् थी जो सन 622 ईस्वी में हज़रत मुहम्मद ने मदीने में बनवाई थी. यही मसजिद दुनिया की सब से पहली मसजिद मानी जाती है और इसी को नमूना मानकर बाद में सारी मसजिदें बनीं. यह मसजिद क्या थी एक चौकोर घिरा हुआ सहन था जिसकी दीवारें ईंट और पत्थर की बनी हुई थीं. इसकी छत खजूर के तनों और टहनियों पर मिट्टी पाट कर बनाई गई थी. जब तक मुहम्मद साहब जिन्दा रहे उन्होंने मदीने के आस-पास कोई मसजिद नहीं बनने दी. उन्हें बिना इत्तला दिये मदीने शहर के बाहर लोगों ने जब एक मसजिद बना ली तो वे नाराज़ हुये और उस मसजिद को गिरवा दिया. उनका हुक्म था कि एक मसजिद के होते हुये आस-पास दूसरी मसजिद नहीं बननी चाहिये.

इराक़ में कूफ़ा का शहर अरब मुसलमानों की नौआबादी था. वहां के मुसलमानों को जमाअत की नमाज़ के लिये एक मसजिद की ज़रूरत महसूस हुई. इस समय तक अरबों ने ईरान में ख़ुसरो की बादशाहत को उलट-पलट दिया था. ईरानी सम्राटों के संगमरमर के महल विजेताओं के क़दमों पर दुज़ानू पड़े थे. लोगों का ख़याल हुआ कि कूफ़ा की मसजिद विजेताओं की शान के मुताबिक़ ही बननी चाहिये. फिर मसजिद महज़ नमाज़ अदा करने की ही जगह न थी, वह हुकूमत करने का केन्द्र होती थी; राजनैतिक मामलों का वहीं बैठकर फ़ैसला किया जाता था; बच्चों के पढ़ने का मदरसा भी वहीं होता था और नैतिक और इख़लाक़ी विषयों की चर्चा भी वहीं हुआ करती थी. ग़रज़ यह कि मसजिद इसलामी जीवन का केन्द्र होती थी. जब सन 639 ईस्वी में कूफ़ा की मसजिद बनी तो इसकी छत धवल संगमरमर के सतूनों पर खड़ी की गई. यह संगमरमर हिरा शहर के ईरानी राजाओं के महलों से लाया गया था.

इसी ज़रूरत को पूरा करने के ख़याल से एक मसजिद सन 642 ईस्वी में फ़ुस्तात ( मिस्र ) में बनाई गई. विजेता अरबों की अपराजित सेनाओं ने अम्र के सेनापतित्व में मिस्र से रोमन सत्ता को उखाड़ कर वहां अरब झण्डा फहराया था. यह मसजिद चौकोर थी मगर इसमें सहन न था. अब तक किसी मसजिद में इमाम के लिये मिम्बर न होता था. पहली दफ़ा फ़ुस्तात की मसजिद में मिम्बर बनाया गया. नमाज़ियों की क़तारों से थोड़ा आगे छोटा-सा तीन

# اسلامی تعمیری کلا کے اصول

وشومبھر ناتھ پانڈے

اِسلام کے نام پر نرمان کلا کا سب میں پہلا نمونہ وہ مسجد تھی جو سن 622 عیسوی میں حضرت محمد نے مدینے میں بنوائی تھی. یہی مسجد دنیا کی سب سے پہلی مسجد مانی جاتی ھے اور اِسی کو نمونہ مان کر بعد میں ساری مسجدیں بنیں. یہ مسجد کیا تھی ایک چوکور گھرا ھوا صحن تھا جس کی دواریں اینٹ اور پتھر کی بنی ھوئی تھیں. اِس کی چھت کھجور کے تنوں اور ٹہنیوں پر مٹی پاٹ کر بنائی گئی تھی. جب تک محمد صاحب زندہ رھے انہوں نے مدینے کے آس پاس کوئی مسجد نہیں بننے دی. انھیں بنا اطلاع دیئے مدینے شہر کے باھر لوگوں نے جب ایک مسجد بنالی تو وے ناراض ھوئے اور اس مسجد کو گروا دیا. ان کا حکم تھا کہ ایک مسجد کے ھوتے ھوئے آس پاس دوسری مسجد نہیں بننی چاھئے.

عراق میں کوفہ کا شہر عرب مسلمانوں کی نوآبادی تھا. وھاں کے مسلمانوں کو جماعت کی نماز کے لئے ایک مسجد کی ضرورت محسوس ھوئی. اِس سمے تک عربوں نے ایران میں خسرو کی بادشاھت کو اُلٹ پلٹ دیا تھا. ایرانی سمراٹ کے سنگ مرمر کے محل وجیتاؤں کے قدموں پر دوزانو پڑے تھے. لوگوں کا خیال ھوا کہ کوفہ کی مسجد وجیتاؤں کی شان کے مطابق ھی بننی چاھئے. پھر مسجد محض نماز ادا کرنے ھی کی جگہ نہ تھی، وہ حکومت کرنے کا کیندر ھوتی تھی؛ راج نیتک معاملوں کا وھیں بیٹھکر فیصلہ کیا جاتا تھا، بچوں کے پڑھنے کا مدرسہ بھی وھیں ھوتا تھا اور نیتک اور اخلاقی وشیوں کی چرچا بھی وھیں ھوا کرتی تھی. غرض یہ کہ مسجد اِسلامی جیون کا کیندر ھوتی تھی. جب سن 639 عیسوی میں کوفہ کی مسجد بنی تو اِس کی چھت دھول سنگ مرمر کے ستونوں پر کھڑی کی گئی. یہ سنگ مرمر ھیرا شہر کے ایرانی راجاؤں کے محلوں سے لایا گیا تھا.

اِسی ضرورت کو پورا کرنے کے خیال سے ایک مسجد سن 642 عیسوی میں فوستات (مصر) میں بنائی گئی. وجیتا عربوں کی اپراجت سیناؤں نے امر کے سینا پتتو میں مصر سے رومن ستہ کو اُکھاڑ کر وھاں عرب جھنڈا پھرایا تھا. یہ مسجد چوکور تھی مگر اِس میں صحن نہ تھا. اب تک کسی مسجد میں امام کے لئے ممبر نہ ھوتا تھا. پہلی دفعہ فوستات کی مسجد میں ممبر بنایا گیا. نمازیوں کی قطاروں سے تھوڑا آگے چھوٹا سا تین

जिनकी कुल सम्पत्ति दो सौ दिरहम या इससे कम हो कोई जज़िया नहीं लिया जाता था. एक दिरहम क़रीब पांच आने के बराबर होता था.

हिन्दुस्तान में भी जो ग़ैर मुसलिम मुसलमान बादशाहों की फ़ौजों मे भरती हो जाते थे उनसे कभी जज़िया नहीं लिया जाता था.

[ किताबुलख़िराज के अनुसार जज़िया आम तौर पर इस हिसाब से लिया जाता था—अमीरों से 48 दिरहम, यानी क़रीब 15 रुपया सालाना, औसत दरजे के लोगों से 24 दिरहम, यानी क़रीब साढ़े सात रुपया और बाक़ी लोगों से जैसे कारीगर वग़ैरा से 12 दिरहम, यानी पौने चार रुपया सालाना. जज़िया में नक़द के बजाय तिजारत का सामान, मवेशी और सुइयां जैसी चीजें भी ली जा सकती थीं, सिर्फ़ सूअर, शराब और मुरदा जानवर देने की मुमानियत थी. किसी भी धर्म के पुरोहितों और महन्तों से जज़िया नहीं लिया जाता था. अबु यूसुफ़ लिखता है कि जज़िया जमा करने वाले अफ़सरों को ख़ास हिदायत थी कि उसकी वसूली में किसी से किसी क़िस्म की सख़्ती न करें. इसके अलावा यद्यपि आम तौर पर जज़िया मुसलमानों से नहीं लिया जाता था लेकिन फिर भी मुसलिम इतिहास में दोनों तरह की मिसालें काफ़ी मिलती हैं—एक इस बात की जो ग़ैर मुसलिम फ़ौजी ख़िदमत से इनकार नहीं करते थे उनसे कभी जज़िया नहीं लिया जाता था और दूसरी इस बात की कि जो मुसलमान फ़ौजी ख़िदमत से इनकार करते थे उनसे भी उसी तरह जज़िया वसूल किया जाता था जिस तरह ग़ैर मुसलमानों से. मिसाल के तौर पर मिस्र में वहां के मुसलमानों ने फ़ौजी ख़िदमत से बरी किये जाने की दरख़्वास्त की तो उनसे बजाय फ़ौजी ख़िदमत के जज़िया वसूल किया जाने लगा. इस तरह की मिसालें भी मिलती हैं जिनमें ग़ैर मुसलमानों ने मुसलिम फ़ौज की सिर्फ़ इस तरह की कोई ख़िदमत की, जैसे उन्हें पानी पहुंचाना, तो उनसे जज़िया नहीं लिया जाता था.

हमें यह भी याद रखना चाहिये कि इस वक़्त तक संयुक्त राष्ट्र अमरीका की कई रियासतें ऐसी हैं जिनमें सब बालिग़ मरदों के लिये फ़ौजी ख़िदमत लाज़मी है, और जो लोग इस ख़िदमत से बरी होना चाहते हैं उनसे फ़ौज के ख़र्च के लिये फ़ी आदमी कुछ सालाना टैक्स ले लिया जाता है.

—सम्पादक ]



جن کی کل سمپتی دو سو درہم یا اس سے کم ہو کوئی جزیہ نہیں لیا جاتا تھا . ایک درہم قریب پانچ آنے کے برابر ہوتا تھا .

ہندستان میں بھی جو غیر مسلم مسلمان بادشاہوں کی فوجوں میں بھرتی ہو جاتے تھے ان سے کبھی جزیہ نہیں لیا جاتا تھا .

[ کتاب الخراج کے انوسار جزیہ عام طور پر اس حساب سے لیا جاتا تھا—امیروں سے 48 درہم' یعنی قریب 15 روپیہ سالانہ' اوسط درجے کے لوگوں سے 24 درہم' یعنی قریب ساڑھے سات روپے اور باقی لوگوں سے جیسے کاریگر وغیرہ سے 12 درہم' یعنی پونے چار روپیہ سالانہ. جزیہ میں نقد کے بجائے تجارت کا سامان' مویشی اور سوئیاں جیسی چیزیں بھی لی جا سکتی تھیں' صرف سور' شراب اور مردہ جانور دینے کی ممانعت تھی . کسی بھی دھرم کے پروہتوں اور مہنتوں سے جزیہ نہیں لیا جاتا تھا . ابو یوسف لکھتا ہے کہ جزیہ جمع کرنے والے افسروں کو خاص ہدایت تھی کہ اس کی وصولی میں کسی سے کسی قسم کی سختی نہ کریں . اس کے علاوہ یدپی عام طور پر جزیہ مسلمانوں سے نہیں لیا جاتا تھا لیکن پھر بھی مسلم اتہاس میں دونوں طرح کی مثالیں کافی ملتی ہیں—ایک اس بات کی جو غیر مسلم فوجی خدمت سے انکار نہیں کرتے تھے ان سے کبھی جزیہ نہیں لیا جاتا تھا اور دوسری اس بات کی کہ جو مسلمان فوجی خدمت سے انکار کرتے تھے اُن سے بھی اُسی طرح جزیہ وصول کیا جاتا تھا جس طرح غیر مسلمانوں سے . مثال کے طور پر مصر میں وہاں کے مسلمانوں نے فوجی خدمت سے بری کئے جانے کی درخواست کی تو اُن سے بجائے فوجی خدمت کے جزیہ وصول کیا جانے لگا . اس طرح کی مثالیں بھی ملتی ہیں کہ جن میں غیر مسلمانوں نے مسلم فوج کی صرف اس طرح کی کوئی خدمت کی' جیسے انہیں پانی پہونچانا' تو ان سے جزیہ نہیں لیا جاتا تھا .

ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ اس وقت تک سنیوکت راشٹر امریکہ کی کئی ریاستیں ایسی ہیں جن میں سب بالغ مردوں کے لئے فوجی خدمت لازمی ہے' اور جو لوگ اس خدمت سے بری ہونا چاہتے ہیں اُن سے فوج کے خرچ کے لئے فی آدمی کچھ سالانہ ٹیکس لے لیا جاتا ہے .

—سمپادک ]

* De La gonquiere-p. 14.

बहुत दिनों बाद ख़लीफ़ा वासिक़ बिल्ला अब्बासी के ज़माने में ग़लती से उन पर जज़िया लगा दिया गया. उन्होंने ख़लीफ़ा से शिकायत की. फिर से .फ़ौरन उनका जज़िया हटा दिया गया. ख़लीफ़ा उमर के ज़माने में भी जो ज़िम्मी यानी ग़ैर मुसलिम .फ़ौज में काम करना मंज़ूर कर लेते थे उनसे जज़िया नहीं लिया जाता था. ख़लीफ़ा उमर ही के ज़माने में आरमीनिया के ग़ैर मुसलिम सेनापति के साथ यह सन्धि की गई थी–"इस शर्त के ऊपर सुलह की जाती है—जब कभी किसी से जंग होगी या और कोई ज़रूरत होगी तो आप मुसलमानों का साथ देंगे. इस शर्त पर आप से जज़िया नहीं लिया जायगा. लेकिन जो कोई भी घर पर रहना चाहे वह आज़रबाइजान के लोगों की तरह अपने घर पर रहे और और जज़िया दे दे." जार्जिया और दूसरे देशों के ग़ैर मुसलमानों के साथ जो सन्धियां की गईं उनमें लिखा है—"अगर हम किसी ज़िम्मी ( ग़ैर मुसलिम ) से लड़ाई में मदद लेंगे तो उससे जज़िया नहीं लिया जायगा......जिनसे जज़िया लिया जाता है उसके बदले में हम उनकी भीतर और बाहर के शत्रुओं से हिफ़ाज़त करने के लिये ज़िम्मेवार होंगे. अगर हम तुम्हारी हिफ़ाज़त नहीं कर सकेंगे तो जज़िया का धन तुम्हें वापस कर दिया जावेगा. जो लोग .फ़ौज में भरती होने को तय्यार हैं वे हमेशा जज़िया देने से बरी रहेंगे."

अल्लामा शिबली ने लिखा है कि जज़िये से जो कुछ रुपया वसूल होता था वह .फ़ौज के लिये सामान ख़रीदने में, सरहदों की हिफ़ाज़त में और क़िलेबन्दी करने में ख़र्च होता था. अगर कुछ इनसे बचता तो वह पुलों, नहरों और मदरसों पर ख़र्च होता था.

जज़िये की बाबत एक और टैक्स था जिसे 'सदक़ा' कहते थे. 'सदक़ा' सिर्फ़ मुसलमानों से लिया जाता था, ग़ैर मुसलमानों से नहीं. इसके सदक़े का रुपया ग़रीबों और मुहताजों पर ख़र्च किया जाता था. इन ग़रीबों और मुहताजों में मुसलिम और ग़ैर मुसलिम का .फ़र्क़ नहीं किया जाता था.*

हज़रत शिबली ने दिखाया है कि जज़िया आम तौर पर हर आदमी से ढाई .फ़्रैंक सालाना से लेकर नौ .फ़्रैंक सालाना तक लिया जाता और मुसलिम इतिहास भर में कभी भी किसी से तीस .फ़्रैंक सालाना से ज़्यादा जज़िया नहीं लिया गया. किसी भी लखपती या करोड़पति से भी कभी इससे ज़्यादा नहीं लिया जाता था. एक .फ़्रैंक आजकल के क़रीब क़रीब दस आने के बराबर होता है. औरतों से, 20 बरस से नीची उम्र के और 50 बरस से ऊपर उम्र के आदमियों से, अपाहिजों, लंगड़ों, लूलों, पागलों, अन्धों और उन ग़रीब लोगों से

* 'किताबुल-ख़िराज'—लेखक इमाम अबु यूसुफ़; पृष्ठ 72.





بہت دنوں بعد خلیفہ واثق بلا عباسی کے زمانے میں غلطی سے اُن پر جزیہ لگا دیا گیا. اُنہوں نے خلیفہ سے شکایت کی. پھر سے فوراً اِن کا جزیہ ھٹا دیا گیا. خلیفہ عمر کے زمانے میں بھی جو ضمی یعنی غیر مسلم فوج میں کام کرنا منظور کر لیتےتھے اُن سے جزیہ نہیں لیا جاتا تھا . خلیفہ عمر ھی کے زمانے میں آرمینیہ کے غیر مسلم سیناپتی کے ساتھ یہ سندھی کی گئی تھی—" اس شرط کے اوپر صلح کی جاتی ھے—جب کبھی کسی سے جنگ ھوگی یا اور کوئی ضرورت ھوگی تو آپ مسلمانوں کا ساتھ دینگے . اِس شرط پر آپ سے جزیہ نہیں لیا جائے گا . لیکن جو کوئی بھی گھر پر رھنا چاھے وہ آذربائیجان کے لوگوں کی طرح اپنے گھر پر رھے اور جزیہ دیدے ." جارجیہ اور دوسرے دیشوں کے غیر مسلمانوں کے ساتھ جو سندھیاں کی گئیں اُن میں لکھا ھے—" اگر ھم کسی ضمی ( غیر مسلم ) سے لڑائی میں مدد لینگے تو اس سے جزیہ نہیں لیا جائے گا .....جن سے جزیہ لیا جاتا ھے اس کے بدلے میں ھم اُن کی بھیتر اور باھر کے شترؤں سے حفاظت کرنے کے لئے زمہوار ھونگے . اگر ھم تمہاری حفاظت نہیں کر سکیں گے تو جزیہ کا دھن تمہیں واپس کر دیا جاوے گا . جو لوگ فوج میں بھرتی ھونے کو تیار ھیں وے ھمیشہ جزیہ دینے سے بری رھینگے ."

علامہ شبلی نے لکھا ھے کہ جزیے سے جو کچھ روپیہ وصول ھوتا تھا وہ فوج کے لئے سامان خریدنے میں' سرحدوں کی حفاظت میں اور قلعہبندی کرنے میں خرچ ھوتا تھا . اگر کچھ اِن سے بچتا تھا تو وہ پلوں' نہروں' اور مدرسوں پر خرچ ھوتا تھا .

جزیے کی بابت ایک اور ٹیکس تھا جسے ' صدقہ ' کہتے تھے . ' صدقہ ' صرف مسلمانوں سے لیا جاتا تھا' غیر مسلمانوں سے نہیں . اِس کے صدقے کا روپیہ غریبوں اور محتاجوں پر خرچ کیا جاتا تھا. اِن غریبوں اور محتاجوں میں مسلم اور غیر مسلم کا فرق نہیں کیا جاتا تھا . *

حضرت شبلی نے دکھایا ھے کہ جزیہ عام طور پر ھر آدمی سے ڈھائی فرینک سالانہ سے لے کر نو فرینک سالانہ تک لیا جاتا تھا اور مسلم اتہاس بھر میں کبھی بھی کسی سے تیس فرینک سالانہ سے زیادہ جزیہ نہیں لیا گیا . کسی بھی لکھپتی یا کروڑ پتی سے بھی کبھی اِس سے زیادہ نہیں لیا جاتا تھا. ایک فرینک آجکل کے قریب قریب دس آنے کے برابر ھوتا ھے . عورتوں سے' 20 برس سے نیچی عمر کے اور 50 برس سے اوپر عمر کے آدمیوں سے' اپاھجوں' لنگڑوں' لولوں' پاگلوں' اندھوں اور اُن غریب لوگوں سے

* 'کتاب الخراج'—لیکھک اِمام ابو یوسف؛ پرشٹھ 72 .

एक सन्धि में इराक़ के लोगों ने लिखा है—"हमने ख़ालिद से जिस जज़िये को देने का वादा किया था उसे हमने अदा कर दिया है इस शर्त पर कि अगर कोई मुसलमान भी या किसी दूसरी क़ौम के लोग हमें किसी तरह का नुक़सान पहुंचाना चाहेंगे तो मुसलमान जमात और उनके अफ़सर हमारी इस सलामती के लिये ज़िम्मेवार होंगे."

ये अहदनामे और समझौते बिलकुल साफ़ हैं. उस ज़माने के इतिहास से साफ़ पता चलता है कि इस तरह के अहदनामे और आपसी समझौते महज़ रद्दी के टोकरे की चीज़ें नहीं समझे जाते थे बल्कि दोनों पक्ष उन पर सच्चाई से अमल करते थे.

इस सच्चाई की शाम (सीरिया) के इतिहास में एक बड़ी सुन्दर मिसाल मिलती है. दो मुसलमान सेनापति अबु ओबैदा और जर्राह रोमी सेनाओं के मुक़ाबले में मुल्क पर मुल्क जीतते चले जा रहे थे. रोम के सम्राट् हरकुल ने एक बहुत बड़ी नई सेना जमा करके मुसलमानों पर हमला किया. दोनों मुसलमान सेनापतियों ने रोम की इस नई सेना का मुक़ाबला करने में अपने को असमर्थ पाया. उन्होंने जितना धन उस वक़्त तक वहां के ग़ैर मुसलमानों से बतौर जज़िये के वसूल किया था उसकी एक एक पाई उन्हें वापस कर दी. मुसलमान सेनापतियों के फ़रमानों में ये शब्द आते हैं—"जब कभी जो कुछ जज़िया और ख़िराज वसूल किया गया है वह जिनसे लिया गया है उन्हें तुरन्त वापस कर दिया जावेगा. उन्हें कह दिया जावे कि हमने यह धन तुमसे इस शर्त पर लिया था कि हम तुम्हारे शत्रुओं से तुम्हारी हिफ़ाज़त करेंगे. लेकिन अब हालात ऐसे हैं कि हम तुम्हारी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेवारी अपने ऊपर नहीं ले सकते."

उस देश के ग़ैर मुसलमान, जो अधिकतर ईसाई थे बहुत ख़ुश थे और उन्होंने अपने इन मुसलिम हाकिमों को आशीर्वाद देते हुये उनसे कहा—"ईश्वर करे कि हमारे नगरों का शासन फिर से आप ही के हाथों में आजावे. अगर आपकी जगह रोम वाले होते तो वे कभी हमें एक पैसा भी वापस न देते, बल्कि जो कुछ हमारे पास रहा सहा है वह उसे भी हमसे छीन लेते."

यह बात भी याद रखनी चाहिये कि जो ग़ैर मुसलमान अपने मुसलिम शासकों के मातहत फ़ौज में भरती होना स्वीकार कर लेते थे उन्हें जज़िये से उसी तरह बरी रखा जाता था जिस तरह मुसलमानों को. इसकी कुछ मिसालें यहां दी जाती हैं. ख़लीफ़ा हज़रत उसमान के ज़माने में हबीब बिन मुसलेमा ने जरा जिमाह के देश को फ़तह किया. वहां की ग़ैर मुसलिम रिआया ने फ़ौज में भरती होना स्वीकार कर लिया. उनसे किसी तरह का जज़िया नहीं लिया गया.



ایک سندھی میں عراق کے لوگوں نے لکھا ھے—"ھم نے خالد سے جس جزیے کو دینے کا وعدہ کیا تھا اُسے ھم نے ادا کردیا ھے اِس شرط پر کہ اگر کوئی مسلمان بھی یا کسی دوسری قوم کے لوگ ھمیں کسی طرح کا نقصان پہونچانا چاھینگے تو مسلمان جماعت اور اُن کے افسر ھماری اِس سلامتی کے لئے ذمہ وار ھونگے."

یہ عہدنامے اور سمجھوتے بالکل صاف ھیں. اُس زمانے کے اِتہاس سے صاف پتہ چلتا ھے کہ اِس طرح کے عہدنامے اور آپسی سمجھوتے محض ردی کے ٹوکرے کی چیزیں نہیں سمجھے جاتے تھے بلکہ دونوں پکش ان پر سچائی سے عمل کرتے تھے.

اِس سچائی کی شام (سیریا) کے اِتہاس میں ایک بڑی سندر مثال ملتی ھے. دو مسلمان سیناپتی ابو ابیدہ اور جراح رومی سیناؤں کے مقابلے میں ملک پر ملک جیتتے چلے جا رھے تھے. روم کے سمراٹ ھرکل نے ایک بہت بڑی نئی سینا جمع کر کے مسلمانوں پر حملہ کیا. دونوں مسلمان سینا پتیوں نے روم کی اِس نئی سینا کا مقابلہ کرنے میں اپنے کو اسمرتھ پایا. انھوں نے جتنا دھن اس وقت تک وھاں کے غیر مسلمانوں سے بطور جزیہ کے وصول کیا تھا اس کی ایک ایک پائی اُنھیں واپس کر دی. مسلمان سینا پتیوں کے فرمانوں میں یہ شبد آتے ھیں—"جب کبھی جو کچھ جزیہ اور خراج وصول کیا گیا ھے وہ جن سے لیا گیا ھے انھیں ترنت واپس کر دیا جاوے گا. اِنھیں کہ دیا جاوے کہ ھم نے یہ دھن تم سے اِس شرط پر لیا تھا کہ ھم تمہارے شترؤں سے تمہاری حفاظت کریں گے. لیکن اب حالات ایسے ھیں کہ ھم تمہاری حفاظت کی ذمہ واری اپنے اوپر نہیں لے سکتے."

اُس دیش کے غیر مسلمان، جو ادھکتر عیسائی تھے بہت خوش تھے اور انھوں نے اپنے اِن مسلم حاکموں کو آشیرواد دیتے ھوئے ان سے کہا—"ایشور کرے کہ ھمارے نگروں کا شاسن پھر سے آپ ھی کے ھاتھوں میں آجاوے. اگر آپ کی جگہ روم والے ھوتے تو وے کبھی ھمیں ایک پیسہ بھی واپس نہ دیتے، بلکہ جو کچھ ھمارے پاس رھا سہا ھے وہ اُسے بھی ھم سے چھین لیتے."

یہ بات بھی یاد رکھنی چاھئے کہ جو غیر مسلمان اپنے مسلم شاسکوں کے ماتحت فوج میں بھرتی ھونا سویکار کر لیتے تھے انھیں جزیے سے اُسی طرح بری رکھا جاتا تھا جس طرح مسلمانوں کو. اِس کی کچھ مثالیں یہاں دی جاتی ھیں. خلیفہ حضرت عثمان کے زمانے میں حدیب بن مسلمہ نے ذراجماح کے دیش کو فتح کیا. وھاں کی غیر مسلم رعایا نے فوج میں بھرتی ھونا سویکار کر لیا. اُن سے کسی طرح کا جزیہ نہیں لیا گیا.

पढ़ने पर .फौज में भरती होने के लिये तय्यार हो जाते थे उनसे जज़िया नाम का कोई टैक्स नहीं लिया जाता था. मशहूर मुसलिम विद्वान शिबली ने जज़िये पर एक छोटी सी किताब लिखी है जिस में उन्होंने जज़िया शब्द की व्युत्पत्ति और उसके इतिहास पर ख़ासी अच्छी बहस की है.

हज़रत मुहम्मद और पहले चार ख़लीफ़ाओं ने जिन्हें 'ख़ुलफ़ाये राशिदीन' कहा जाता है ग़ैर मुसलिम रियासतों के साथ जो जो सन्धियां कीं उनमें यह साफ़ लिखा है कि ग़ैर मुसलिम रिआया या ग़ैर मुसलिम रियासतों से उनके जान माल की हिफ़ाज़त के बदले में जज़िया लिया जावेगा. हज़रत मुहम्मद ने मुसलमान बादशाहों की ग़ैर मुसलिम रिआया के बारे में जो .फरमान लिखे हैं, उनमें ये शब्द साफ़ आते हैं—"उनकी हिफ़ाज़त करना मुसलमानों का .फ़र्ज़ है. उनके दुश्मनों से उन्हें बचाना हमारा .फ़र्ज़ है." ख़लीफ़ा उमर ने अपनी मृत्यु से पहले जो हिदायतें मुसलमानों को दीं उनमें एक यह थी कि ग़ैर मुसलिम रिआया के जान माल की हिफ़ाज़त मुसलमानों का फ़र्ज़ है. अल्लामा शिबली ने अपनी किताब में मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों के बीच इस तरह की बहुत सी सन्धियों की नक़ल दी है जिनमें मुसलमानों के इस फ़र्ज़ और उसके बदले में उनके जज़िया वसूल करने के हक़ इन दोनों का ज़िक्र है. सन 12 हिजरी में ख़ालिद इब्न वलीद ने ग़ैर मुसलमानों के साथ जो सन्धि की उसमें ये शब्द आते हैं—"सलूबा बिन नस्तोमा और आपके क़बीले वालों के साथ मैंने जज़िया लेने और आपकी हिफ़ाज़त करने का अहदनामा किया है. इसलिये आपकी हिफ़ाज़त करना और आपके जान माल की सलामती हमारा फ़र्ज़ है. जब तक हम अपने इस फ़र्ज़ को पूरा करेंगे तब तक ही हमें जज़िया लेने का हक़ है. अगर हम यह फ़र्ज़ पूरा न कर सकेंगे तो हमें जज़िया लेने का कोई हक़ न होगा."*

अरब और इराक़ के बहुत से मुसलिम हाकिमों ने वहां के ग़ैर मुसलमानों के साथ समय समय पर बहुत से अहदनामे किये. पैग़म्बर-ए-इसलाम के कई एक साथियों ने भी जो सहाबा कहलाते हैं इस तरह के अहदनामों पर दस्तख़त किये. इन अहदनामों में साफ़ लिखा है, 'जब तक जज़िया बराबर लिया जाता रहेगा ग़ैर मुसलमानों की हर तरह से हिफ़ाज़त की ज़िम्मेवारी मुसलमानों पर होगी.' इन अहदनामों में एक बात और भी बढ़कर है. इनमें लिखा है कि अगर वहां के ग़ैर मुसलमान बाहर की किसी क़ौम के साथ कोई समझौता करेंगे तो मुसलमान हाकिम उन समझौतों को मानेंगे और बाहर की जिन क़ौमों को भी यह ग़ैर मुसलमान मदद देना चाहेंगे या उनकी रक्षा करना चाहेंगे मुसलिम हाकिम अपने देश में उन्हें पनाह देंगे.



پڑنے پر فوج میں بھرتی ہونے کے لئے تیار ہو جاتے تھے اُن سے جزیہ نام کا کوئی ٹیکس نہیں لیا جاتا تھا ۔ مشہور مسلم ودوان شبلی نے جزیے پر ایک چھوٹی سی کتاب لکھی ہے جس میں انہوں نے جزیہ شبد کی ویتپتی اور اس کے اتہاس پر خاصی اچھی بحث کی ہے ۔

حضرت محمد اور پہلے چار خلیفاؤں نے جنہیں 'خلفاءراشدین' کہا جاتا ہے غیر مسلم ریاستوں کے ساتھ جو جو سندھیاں کیں اُن میں یہ صاف لکھا ہے کہ غیر مسلم رعایا یا غیر مسلم ریاستوں سے ان کے جان مال کی حفاظت کے بدلے میں جزیہ لیا جاوے گا ۔ حضرت محمد نے مسلمان بادشاہوں کی غیر مسلم رعایا کے بارے میں جو فرمان لکھے ہیں اُن میں یہ شبد صاف آتے ہیں—"اُن کی حفاظت کرنا مسلمانوں کا فرض ہے." اُن کے دشمنوں سے اُنہیں بچانا ہمارا فرض ہے ." خلیفہ عمر نے اپنی مرتیو سے پہلے جو ہدائتیں مسلمانوں کو دیں اُن میں ایک یہ تھی کہ غیر مسلم رعایا کے جان مال کی حفاظت مسلمانوں کا فرض ہے۔ علامہ شبلی نے اپنی کتاب میں مسلمانوں اور غیر مسلمانوں کے بیچ اِس طرح کی بہت سی سندھیوں کی نقل دی ہے جن میں مسلمانوں کے اِس فرض اور اُس کے بدلے میں اُن کے جزیہ وصول کرنے کے حق اِن دونوں کا ذکر ہے ۔ سن 12 ہجری میں خالدابن ولید نے غیر مسلمانوں کے ساتھ جو سندھی کی اُس میں یہ شبد آتے ہیں—"سلوبابن نستوما اور آپ کے قبیلے والوں کے ساتھ میں نے جزیہ لینے اور آپ کی حفاظت کرنے کا عہدنامہ کیا ہے۔ اِس لئے آپ کی حفاظت کرنا اور آپ کے جان و مال کی سلامتی ہمارا فرض ہے ۔ جب تک ہم اپنے اِس فرض کو پورا کرینگے تب تک ہی ہمیں جزیہ لینے کا حق ہے ۔ اگر ہم یہ فرض پورا نہ کرسکینگے تو ہمیں جزیہ لینے کا کوئی حق نہ ہوگا."*

عرب اور عراق کے بہت سے مسلم حاکموں نے وہاں کے غیر مسلمانوں کے ساتھ سمے سمے پر بہت سے عہدنامے کئے ۔ پیغمبر اِسلام کے کئی ایک ساتھیوں نے بھی جو صحابہ کہلاتے ہیں اس طرح کے عہدناموں پر دستخط کئے ۔ ان عہدناموں میں صاف لکھا ہے، 'جب تک جزیہ برابر لیا جاتا رہیگا غیر مسلمانوں کی ہر طرح سے حفاظت کی ذمہ واری مسلمانوں پر ہوگی .' اِن عہدناموں میں ایک بات اور بھی بڑھکر ہے ۔ ان میں لکھا ہے کہ اگر وہاں کے غیر مسلمان باہر کی کسی قوم کے ساتھ کوئی سمجھوتا کریں گے تو مسلمان حاکم اُن سمجھوتوں کو مانیں گے اور باہر کی جن قوموں کو بھی یہ غیر مسلمان مدد دینا چاہینگے یا ان کی رکشا کرنا چاہیں گے مسلم حاکم اپنے دیش میں انہیں پناہ دیں گے۔

* Vide Tabain Annals—Edited by Rosegarten Vol. II. P. 48.

# जज़िया : इतिहास और असलियत

**श्री हमीद हसन बी० ए० एल-एल० बी०**

आम तौर पर समझा जाता है कि जज़िया एक जाबिराना टैक्स था जो मुसलिम राज में ग़ैर मुसलमानों से जबरदस्ती लिया जाता था. ग़ैर मुसलमानों के ऊपर इस्लाम का यह एक अन्याय था. लेकिन न परदे का रिवाज, जिसे आजकल इतना बुरा भला कहा जाता है, इसलाम के साथ दुनिया में आया और न जज़िया पहले पहल इसलाम ने वसूल किया.

इसलाम की पैदायश से बहुत पहले ईरान की उन्नति के दिनों में जज़िया नाम का टैक्स उस देश में मौजूद था. ईरान के मशहूर बादशाह नौशेरवां आदिल के ज़माने में जो ज़रतुश्तरी धर्म का मानने वाला था और उससे पहले भी जज़िये का ईरान में आम रिवाज था. नौशेरवां ने अपनी फ़ौज के अफ़सरों और सिपाहियों को जज़िया माफ़ कर दिया था. जज़िया अरबी शब्द नहीं है. यह एक ईरानी शब्द है जो बाद में अरबी भाषा में भी शामिल हो गया. इसका मतलब यह था कि ज़रूरत पड़ने पर अपने देश की रक्षा के लिये फ़ौज में भरती होना हर मज़बूत जिस्म वाले आदमी का फ़र्ज़ है. जो .फ़ौज में भरती हो जाते थे उनसे जज़िया नहीं लिया जाता था. लेकिन जो भरती होने से इनकार करते थे उनसे इस सेवा के बदले में कुछ नियत सालाना टैक्स ले लिया जाता था. इसी टैक्स का नाम ईरान में जज़िया था. इसलाम की पैदाइश के दिनों में मुहम्मद साहब ने यह नियम बना दिया कि देश की रक्षा के लिये कभी भी ज़रूरत पड़ने पर .फ़ोज में भरती होना हर मुसलमान का.फ़र्ज़ है. सिर्फ़ मुसलिम मदरसों के अध्यापक और कुछ ख़ास ख़ास पेशेवाले इससे बरी थे. जो ग़ैर मुसलिम लोग मुसलमानों के राज में रहते थे उनकी जान माल की हिफ़ाज़त करना मुसलिम बादशाह का .फ़र्ज़ माना जाता था. लेकिन उन्हें जबरदस्ती .फ़ौज में भरती करने की इसलाम ने कभी इजाज़त नहीं दी. अक्सर ग़ैर मुसलिम क़बीलों के लोग मुसलमान बादशाहों की .फ़ौजों में भरती होना पसन्द भी नहीं करते थे. इसलिये क़ुदरती तौर पर जो ग़ैर मुसलिम ज़रूरत पड़ने पर भी .फ़ौज में भरती होने से इनकार करते थे उनसे उनकी रक्षा के बदले में थोड़ा सा मुक़र्रिरा टैक्स ले लिया जाता था जिसे जज़िया कहते थे. मुसलमान बादशाहों ने जज़िये का शब्द और उसका रिवाज दोनों ज़रतुश्तरी ईरानियों से सीखे. इसके साथ ही जो ग़ैर मुसलिम क़बीले भी ज़रूरत

# جزیہ : اتہاس اور اصلیت

شری حمید حسن بی . اے . ایل ایل . بی .

عام طور پر سمجھا جاتا ھے کہ جزیہ ایک جابرانہ ٹیکس تھا جو مسلم راج میں غیر مسلمانوں سے زبردستی لیا جاتا تھا . غیر مسلمانوں کے اُوپر اِسلام کا یہ ایک انیائے تھا . لیکن نہ پردے کا رواج، جسے آجکل اتنا برا بھلا کہا جاتا ھے، اِسلام کے ساتھ دنیا میں آیا اور نہ جزیہ پہلے پہل اِسلام نے وصول کیا .

اِسلام کی پیدائش سے بہت پہلے ایران کی اُنتی کے دنوں میں جزیہ نام کا ٹیکس اُس دیش میں موجود تھا . ایران کے مشہور بادشاہ نوشیرواں عادل کے زمانے میں جو زرتشتری دھرم کا ماننے والا تھا اور اُس سے پہلے بھی جزیے کا ایران میں عام رواج تھا . نوشیرواں نے اپنی فوج کے افسروں اور سپاھیوں کو جزیہ معاف کردیا تھا . جزیہ عربی شبد نہیں ھے . یہ ایک ایرانی شبد ھے جو بعد میں عربی بھاشا میں بھی شامل ھوگیا . اس کا مطلب یہ تھا کہ ضرورت پڑنے پر اپنے دیش کی رکشا کے لئے فوج میں بھرتی ھونا ھر مضبوط جسم والے آدمی کا فرض ھے. جو فوج میں بھرتی ھو جاتے تھے اُن سے جزیہ نہیں لیا جاتا تھا . لیکن جو بھرتی ھونے سے انکار کرتے تھے اُن سے اِس سیوا کے بدلے میں کچھ نیت سالانہ ٹیکس لے لیا جاتا تھا . اِسی ٹیکس کا نام ایران میں جزیہ تھا. اِسلام کی پیدائش کے دنوں میں محمد صاحب نے یہ نیم بنا دیا کہ دیش کی رکشا کے لئے کبھی بھی ضرورت پڑنے پر فوج میں بھرتی ھونا ھر مسلمان کا فرض ھے . صرف مسلم مدرسوں کے ادھیاپک اور کچھ خاص خاص پیشے والے اس سے بری تھے. جو غیر مسلم لوگ مسلمانوں کے راج میں رھتے تھے ان کی جان مال کی حفاظت کرنا مسلم بادشاہ کا فرض مانا جاتا تھا . لیکن انھیں زبردستی فوج میں بھرتی کرنے کی اِسلام نے کبھی اجازت نہیں دی . اکثر غیر مسلم قبیلوں کے لوگ مسلمان بادشاھوں کی فوجوں میں بھرتی ھونا پسند بھی نہیں کرتے تھے . اس لئے قدرتی طور پر جو غیر مسلم ضرورت پڑنے پر بھی فوج میں بھرتی ھونے سے انکار کرتے تھے اُن سے ان کی رکشا کے بدلے میں تھوڑا سا مقررہ ٹیکس لے لیا جاتا تھا جسے جزیہ کہتے تھے. مسلمان بادشاھوں نے جزیہ کا شبد اور اُس کا رواج دونوں زرتشتری ایرانیوں سے سیکھے . اِس کے ساتھ ھی جو غیر مسلم قبیلے بھی ضرورت

ने रूहानी इत्तहाद के विचार जाहिर किए. मिसाल के तौर पर हम उनमें से कुछ यहां देते हैं. 'गुलशने-राज़' के लेखक शाहाबुद्दीन मुहम्मद शबिस्तरी, जिनकी 1320 ईस्वी में मौत हुई, मूर्तिपूजा और इसलाम के फ़र्क़ को बतलाते हुए कहते हैं :—

बुत ईंजा मज़हरे इश्क़ अस्तो वहदत,
बूअद ज़ुन्नार बस्तन अक़्दे ख़िदमत।
चूं कुफ़्रो दीं बुअद क़ायम ब हस्ती,
शवद तौहीद ऐने बुत परस्ती।
चूं अशिया हस्त हस्ती रा मज़ाहिर
अज़ां जुमला यके बुत बाशद आख़िर।
मुसलमां गर बिदानिस्ते कि बुत चीस्त,
बिदानिस्ते कि दीं दर बुत परस्तीस्त।
वगर मुश्रिक ज़िबुत आगाह गश्ते
कुजा दर दीने ख़ुद गुमराह गुश्ते।
नदीद ऊ अज़ बुत इल्ला ख़ल्क़े ज़ाहिर,
बदीं इल्लत शुद अन्दर शिर्के काफ़िर।
तू हम गर अज़ू न बीनी हक़्क़े पिनहां,
बा शरअ अन्दर न ख़्वानंदत मुसलमां।

मूर्ति इस दुनिया में प्रेम और अद्वैत को प्रगट करने वाली है. और जनेऊ बांधने का मतलब सेवा का प्रन करना है. चूंकि कुफ़्र और दीन (हिन्दू और मुसलिम धर्म) दोनों ही दुनिया के अस्तित्व धर्म पर क़ायम हैं इसलिए तौहीद (अद्वैत धर्म) मूर्तिपूजन का असली तत्व है. चूंकि जगत की सारी वस्तुएं अस्तित्व को प्रगट करती हैं, इन सब ही वस्तुओं में मूर्ति भी एक वस्तु है. अगर मुसलमान जानता कि मूर्ति सचमुच क्या है, तो समझ जाता कि मूर्तिपूजा ही धर्म है. और अगर मूर्ति पूजने वाला मूर्ति की असलियत जानता तो वह अपने धर्म से न बिचलता. उसने मूर्ति में केवल बाहरी क़ुदरत को देखा और इस सबब उसने ईश्वर को न पहचाना और काफ़िर हुआ. तू भी अगर उसमें सत्य को छिपा हुआ नहीं देखता तो तुझेभी शरअ (धर्म शास्त्र) के हिसाब से मुसलमान नहीं कहेंगे.

मिर्ज़ा जान जानान मज़हर जिनका जन्म 1699 ईस्वी में हुआ अपने एक पत्र में हिन्दू धर्म के बारे में यूं लिखते हैं :—

बुत परस्ती व ईं अमल मुशाबहत ब ज़िक्रे राब्ता दारद कि मा ले सूफ़िया अस्त, व ईं मानी मुनासिबत. व अक़ीदए कुफ़्फ़ार अरब न दारद कि आंहा बुतां रा मुतसर्रिफ़ बिलज़ात गुफ़्तन्द न आला-ए-तसर्रुफ़े इलाही.

मूर्तिपूजा उस प्रयोग से समानता रखती है जिसे ज़िक्रे राबता (मिलाने वाला ध्यान) कहते हैं. यह प्रयोग सूफ़ियों का मामूल (अभ्यास) है. इस अर्थ में मूर्तिपूजा का कोई सम्बन्ध काफ़िर अरबों के मत से नहीं है क्योंकि अरब मूर्तियों को ख़ुद शक्तिमान मानते थे न कि ईश्वर की शक्ति के ज़रिये.



نے روحانی اتحاد کے وچار ظاہر کئے۔ مثال کے طور پر ہم ان میں سے کچھ یہاں دیتے ہیں۔ 'گلشن راز' کے لیکھک شہاب الدین محمد شبستری' جن کی 1320 عیسوی میں موت ہوئی' مورتی پوجا اور اسلام کے فرق کو بتلاتے ہوئے کہتے ہیں :—

بت اینجا مظہر عشق اوست وحدت
بود زنار بستن عقد خدمت
چوں کفر و دیں بود قائم بہ ہستی
شود توحید عین بت پرستی
چوں اشیا ہست ہستی را مظاہر
ازاں جملہ یکے بت باشد آخر
مسلماں گر بدانستے کہ بت چیست
بدانستے کہ دیں در بت پرستیست
وگر مشرک ز بت آگاہ گشتے
کجا در دین خود گمراہ گشتے
ندید او از بت الا خلق ظاہر
بدیں علت شد اندر شرک کافر
تو ہم گر از و نہ بینی حق پنہاں
با شرع اندر نہ خوانندت مسلماں

مورتی اس دنیا میں پریم اور ادویت کو پرگٹ کرنے والی ہے۔ اور جنیؤ باندھنے کا مطلب سیوا کا پرن کرنا ہے۔ چونکہ کفر اور دین ( ہندو اور مسلم دھرم ) دونوں ہی دنیا کے استتو دھرم پر قائم ہیں اس لئے توحید ( ادویت دھرم ) مورتی پوجن کا اصلی تتو ہے۔ چونکہ جگت کی ساری وستوئیں استتو کو پرگٹ کرتی ہیں' ان سب ہی وستوؤں میں مورتی بھی ایک وستو ہے۔ اگر مسلمان جانتا کہ مورتی سچ مچ کیا ہے' تو سمجھ جاتا کہ مورتی پوجا ہی دھرم ہے۔ اور اگر مورتی پوجنے والا مورتی کی اصلیت جانتا تو وہ اپنے دھرم سے نہ بچلتا۔ اس نے مورتی میں کیول باہری قدرت کو دیکھا اور اس سبب اس نے ایشور کو نہ پہچانا اور کافر ہوا۔ تو بھی اگر اس میں ستیہ کو چھپا ہوا نہیں دیکھتا تو تجھے بھی شرع ( دھرم شاستر ) کے حساب سے مسلمان نہیں کہیں گے۔

مرزا جان جاناں مظہر جن کا جنم 1699 عیسوی میں ہوا اپنے ایک پتر میں ہندو دھرم کے بارے میں یوں لکھتے ہیں :—

بت پرستی و ایں عمل مشابہت بہ ذکر رابطہ دارد کہ معمول صوفیہ است' و ایں معنی مناسبت۔ بہ عقیدۂ کفار عرب نہ دارد کہ آنہا بتاں را متصرف بلذات گفتند نہ آلائے تصرف الٰہی۔

مورتی پوجا اس پریوگ سے سمانتا رکھتی ہے جسے ذکر رابطہ ( ملانے والا دھیان ) کہتے ہیں۔ یہ پریوگ صوفیوں کا معمول ( ابھیاس ) ہے۔ اس ارتھ میں مورتی پوجا کا کوئی سمبندھ کافر عربوں کے مت سے نہیں ہے کیونکہ عرب مورتیوں کو خود شکتیمان مانتے تھے نہ کہ ایشور کی شکتی کے ذریعہ۔

फ़रमाते हैं 'परम प्रकाशित सत्य का तत्व न इल्म से पाया जा सकता है और न दृश्टि से.'

"हक़ीक़ते हक़्क़े सुबहान न दर इल्म गुंजद व न दर अयान."

दोनों ही ब्रह्म के जगत-रूप में बदलने को विकार कहते हैं और इसकी कई सीढ़ियां मानते हैं. इस क्रम का लक्षन उस गूढ़ अद्वैत में नाम और रूप या इस्म और सिफ़ात का पैदा हो जाना है. दोनों ही मानते हैं कि जगत का बाहुल्य उसकी इच्छा का फल है. उपनिशद में आया है:—

'उसने सोचा कि अब मुझे जगत की रचना करना चाहिए.'

हदीस में आया है, "कुन्तो कनज़न मख़फ़ीयन फ़ाहबबतो अन उरिफ़ो फ़ख़लक़्तो अल ख़ल्क़ो."

'मैं एक छिपा हुआ ख़ज़ाना था, फिर मैंने इच्छा की कि लोग मुझे जानें. इसलिये मैंने सृश्टि की रचना की.'

वेदान्त और तसव्वुफ़ दोनों ही इनसान को परमेश्वर का ख़ास कृपापात्र मानते हैं, क्योंकि उन दोनों के मुताबिक़ इनसान की बुद्धि या क़ल्ब चेतन (ख़ुदा) और जड़ (प्रकृति, दुनिया) के मिलने की जगह है. जहां हिन्दू मनो-वैज्ञानिक इस प्रकृति में सत्व, रजस और तमस तीन गुन पाते हैं वहां ग़ज़ाली भी उसमें इद्राक (सत्व), क़ुदरत (रजस्), और शहवत-ओ-ग़ज़ब (तमस) यह तीन तत्व बतलाते हैं.

इसी तरह रूह के फिर ख़ुदा में फ़ना हो जाने के बारे में दोनों सम्प्रदायों के एक से विचार हैं. एक ही रास्ते से दोनों एक ही मंजिल पर पहुंचते हैं. दोनों ही में समान संयम है, समान गुनों की जरूरत है, और दोनों के अनुभव एकसां हैं. रास्ते की मंजिलें और अवस्थाएं एक ही हैं. सिर्फ़ नामों का फ़र्क़ है. मामूली से मामूली आदमी से यह बात नहीं छिप सकती कि दोनों सम्प्रदायों के विचार और मक़सद एक हैं. अगर परमात्मा की कृपा और प्रसाद की एक तरफ़ जरूरत है तो दूसरी तरफ़ भी उतना ही जरूरी है कि उसका फ़ैज़ और लुत्फ़ हो. न तो हिन्दू बिना गुरू के इस पवित्र यात्रा को पूरा कर सकता है और न मुसलिम पीर या मुरशिद के बग़ैर; और दोनों ही दशाओं में शिश्य या मुरीद का गुरू पर पूरा पूरा आसरा होना चाहिये. परमार्थतः प्रेम या इश्क़े हक़ीक़ी की ताक़त ही दोनों को रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती है.

जब तसव्वुफ़ और वेदान्त हिन्दुस्तान की ज़मीन पर मिले तो इन्होंने दोनों हिन्दू और मुसलमानों में, ईश्वर की तलाश करने वाले लोगों के दिलों में जोश भरा. दोनों में इतनी साफ़ साफ़ समानताएं थीं कि दोनों ही ने उन्हें पहिचान कर अपना लिया. दोनों सूफ़ी और सन्तों ने मालूम कर लिया कि उनके मक़सद और साधन एकसां हैं. आपस के इसी मिलाप से विचार की वह गहरी धारा बह निकली, जो मंझले ज़माने के हिन्दुस्तान की कलचर की बुनियाद बनी, इस ज़माने के अनेकों मज़हबी नेताओं और सुधारकों



فرماتے ھیں 'پرم پرکاشت ستیہ کا تتو نہ علم سے پایا جا سکتا ھے اور نہ درشٹی سے.'

" حقیقت حق سبحان نہ در علم گنجد و نہ در عیان ."

دونوں ھی برھم کے جگت روپ میں بدلنے کو وکار کہتے ھیں اور اس کی کئی سیڑھیاں مانتے ھیں . اِس کرم کا لکشن اُس گوڑھ ادویت میں نام اور روپ یا اِسم اور صفات کا پیدا ھو جانا ھے . دونوں ھی مانتے ھیں کہ جگت کا باھولیہ اُسکی اِچھا کا پھل ھے . اُپنشد میں آیا ھے :—

' اُس نے سوچا کہ اب مجھے جگت کی رچنا کرنا چاھئے .'

حدیث میں آیا ھے' " کنتو کنزن مخفیں فاحبتو عم اوریفو فاخلقتو عم خالقو ."

'میں ایک چھپا ھوا خزانہ تھا' پھر میں نے اِچھا کی کہ لوگ مجھے جانیں . اِسی لئے میں نے سرشٹی کی رچنا کی .'

ویدانت اور تصوف دونوں ھی اِنسان کو پرمیشور کا خاص کرپا پاتر مانتے ھیں' کیونکہ اُن دونوں کے مطابق اِنسان کی بدھی یا قلب چیتن ( خدا ) اور جڑ ( پرکرتی' دنیا ) کے ملنے کی جگہ ھے . جہاں ھندو منو ویگیانک اِس پرکرتی میں ستو' رجس اور تمس تین گن پاتے ھیں وھاں غزالی بھی اُس میں ادراک ( ستو )' قدرت ( رجس )' اور شہوت و غضب (تمس) یہ تین تتو بتلاتے ھیں .

اِسی طرح روح کے پھر خدا میں فنا ھو جانے کے بارے میں دونوں سمپردایوں کے ایک سے وچار ھیں . ایک ھی راستے سے دونوں ایک ھی منزل پر پہونچتے ھیں . دونوں ھی میں سمان سنیم ھے' سمان گنوں کی ضرورت ھے' اور دونوں کے انوبھو یکساں ھیں . راستے کی منزلیں اور اوستھائیں ایک ھی ھیں صرف ناموں کا فرق ھے . معمولی سے معمولی آدمی سے یہ بات نہیں چھپ سکتی کہ دونوں سمپردایوں کے وچار اور مقصد ایک ھیں . اگر پرماتما کی کرپا اور پرساد کی ایک طرف ضرورت ھے تو دوسری طرف بھی اُتنا ھی ضروری ھے کہ اُس کا فیض اور لطف ھو. نہ تو ھندو بنا گرو کے اِس پوتر یاترا کو پورا کر سکتا ھے اور نہ مسلم پیر یا مرشد کے بغیر؛ اور دونوں ھی دشاؤں میں شِشیہ یا مرید کا گرو پر پورا پورا آسرا ھونا چاھئے . پرمارتھتہ پریم یا عشق حقیقی کی طاقت ھی دونوں کو راستے پر چلنے کے لئے پریرت کرتی ھے .

جب تصوف اور ویدانت ھندستان کی زمین پر ملے تو اِنہوں نے دونوں ھندو اور مسلمانوں میں' ایشور کی تلاش کرنے والے لوگوں کے دلوں میں جوش بھرا . دونوں میں اِتنی صاف صاف سمانتائیں تھیں کہ دونوں ھی نے اُنھیں پہچان کر اپنا لیا . دونوں صوفی اور سنتوں نے معلوم کر لیا کہ اُن کے مقصد اور سادھن یکساں ھیں . آپس کے اِسی ملاپ سے وچار کی وہ گہری دھارا بہ نکلی' جو منجھلے زمانے کے ھندستان کی کلچر کی بنیاد بنی . اِس زمانے کے انیکوں مذھبی نیتاؤں اور سدھارکوں

रूह परमात्मा को पहुंच जाती है और उसकी यात्रा पूरी हो जाती है.

यही यात्रा जिसे 'तरीक़ा' कहते हैं एक संयम है, जिसके दो हिस्से हैं. पहिले हिस्से को 'मुजाहिदा' ( अभ्यास ) और दूसरे को 'मराक़बा' ( ध्यान ) कहते हैं. मुजाहिदा या अभ्यास का ध्येय दिल की सफ़ाई ( तज़कियाए नफ़्स ) है और इसमें शरियत के नियमों, विधि और निशेधों को मानना है. दूसरे हिस्से के अन्दर जिस्मानी और दिमाग़ी क्रियायें हैं जिन्हें ज़िक्र ( ध्यान ) कहते हैं. ज़िक्र ( ध्यान ) की कई क़िस्में हैं, इनमें जली ख़फ़ी बहुत मशहूर हैं. इन क्रियाओं के लिए ख़ास ख़ास आसन हैं और इनके साथ साथ प्राणायाम ( हब्से दम ) भी किया जाता है जिसमें ईश्वर का परम नाम 'ला इला इल-अल्लाह' जपा जाता है. यह क्रियाएं एक गूढ़ प्रभाव पैदा करती हैं जिसमें अनदेखे रङ्ग और अनसुने शब्द दिखाई और सुनाई देते हैं. मौलाना रूम इसी की तरफ़ इशारा करते हैं और कहते हैं—"दर लबश क़ुफ़्लस्त व दर दिल आवाज़ए. लब ख़मोश व दिल पुर अज़ आवाज़ए" होंट पर ताला लगा है, और दिल में एक नाद है, होंट चुपचाप हैं लेकिन दिल नाद से भरा है.

इसलामी रहस्यवाद के विकास का बयान यहीं ख़त्म हो जाना चाहिये. 'क्योंकि इसके बाद वाले इतिहास में हमें इससे आगे और कोई नए विचार नहीं मिलते. इसलिए अब यहां पर वेदान्त और तसव्वुफ़ दोनों में क्या समानता है है यह जानने के लिये दोनों की तुलना करना चाहिये. सब से पहिले हम ज्ञान के उसूलों को लें . वेदान्त और तसव्वुफ़ दोनों ही मानते हैं कि विद्या दो प्रकार की होती है, एक का विशय सत्य है दूसरी का जगत. एक अपरा है और दूसरी परा, एक दीनी और दूसरी दुनियावी. पहली तरह की विद्या का मक़सद अपने को जानना, आत्म-प्राप्ति है यानी 'साक्षात्कार' या 'मुशाहदा,' 'अनुभव'—'समाधि' 'वज्द' 'जमा-उल-जमा'—यानी परमानन्दमय अनुभव इसके साधन हैं. 'अभ्यास' या 'रियाज़त' 'योग' या 'ज़िक्र' 'संयम' और 'ध्यान' या 'मुजाहदा' और 'मराक़बा' आदि दिमाग़ी साधन इसके रास्ते हैं.

दोनों ही मत उस पूर्न 'तद्' 'हू' 'धातु' 'ज़ात' को एकसां मानते हैं. हिन्दू और मुसलमान दोनों की दृश्टि से वह दूर से दूर और पास से पास है. वह परम या मुतलक़; सत्यस्य सत्यम या हक़ीक़त-उल-हक़ायक़, ज्योतिषम-ज्योति या नूरुन-अला-नूरिन; सर्व व्यापी या मुहीत है. दोनों मानते हैं कि सिर्फ़ बुद्धि या अक़्ल के ज़रिए इसका बोध नहीं हो सकता. जहां एक ओर उपनिशद् कहते हैं कि "वह न मन से, न वाणी से और न आंखों से पाया जा सकता है, 'न तत्र चक्षु गच्छति न वाग्गच्छति नो मना' वहां जामी साहब







روح پرماتما کو پہونچ جاتی ھے اور اُسکی یاترا پوری هوجاتی ھے .

یہی یاترا جیسے 'طریقہ' کہتے هیں ایک سنیم ھے' جس کے دو حصے هیں . پہلے حصے کو 'مجاهدہ' ( ابھیاس ) اور دوسرے کو 'مراقبہ' ( دھیان ) کہتے هیں . مجاهدہ یا ابھیاس کا دھیئہ دل کی صفائی ( تذکیائے نفس ) ھے اور اِس میں شریعت کے نیموں' ودھی اور نشیدھوں' کو ماننا ھے . دوسرے حصے کے اندر جسمانی اور دماغی کریائں هیں جنھیں ذکر ( دھیان ) کہتے هیں. ذکر ( دھیان ) کی کئی قسمیں هیں- اِن میں جلی خفی بہت مشہور هیں. اِن کریاؤں کے لئے خاص خاص آسن هیں اور اِن کے ساتھ ساتھ پراںایام ( حبس دم ) بھی کیا جاتا ھے حبس میں ایشور کا پرم نام 'لاالاالله' جپا جاتا ھے . یہ کریائیں ایک گوڑھ پربھاؤ پیدا کرتی هیں جس میں ان دیکھے رنگ اور ان سنے شبد دکھائی اور سنائی دیتے هیں . مولانا روم اِسی کی طرف اِشارہ کرتے هیں اور کہتے هیں—" درلبش قفل است و دردل آوازئے . لب خموش و دل پر از آوازئے" هونٹ پر تالا لگا ھے' اور دل میں ایک ناد ھے' هونٹ چپ چاپ هیں لیکن دل ناد سے بھرا ھے .

اِسلامی رهسیہ واد کے وکاس کا بیان یہں ختم هوجانا چاهئے. کیونکہ اِس کے بعد والے اِتہاس میں همیں اِس سے آگے اور کوئی نئے وچار نہیں ملتے . اِس لئے اب یہاں پر ویدانت اور تصوف دونوں میں کیا سمانتا ھے یہ جاننے کے لئے دونوں کی تلنا کرنا چاهئے . سب سے پہلے هم گیان کے اُصولوں کو لیں . ویدانت اور تصوف دونوں هی مانتے هیں کہ ودیا دو پرکار کی هوتی ھے' ایک کا وشئے ستیہ ھے دوسری کا جگت . ایک اپرا ھے' اور دوسری پرا' ایک دینی اور دوسری دنیاوی . پہلی طرح کی ودیا کا مقصد اپنے کو جاننا' آتم پراپتی ھے یعنی 'ساکشا تکار' یا 'مشاهدہ' 'انوبھو'—'سمادھی' 'وجد' 'جمع الجمع'—یعنی پرمانند مئے انوبھو اِس کے سادھن هیں . 'ابھیاس' یا 'ریاضت' 'یوگ' یا 'ذکر' 'سنیم' اور 'دھیان' یا 'مجاهدہ' اور 'مراقبہ' آدی دماغی سادھن اِس کے راستے هیں .

دونوں هی مت اُس پورن 'تد' 'هو' 'دھاتو' 'ذات' کو یکساں مانتے هیں . هندو اور مسلمان دونوں کی درشٹی سے وہ دور سے دور اور پاس سے پاس ھے . وہ پرم یا مطلق؛ ستسیہ ستیم یا حقیقت الحقائق' جیوتشم جیوتی یا نورن الانورن؛ سرووياپی یا محیط ھے . دونوں مانتے هیں کہ صرف بدھی یا عقل کے ذریعے اِس کا بودھ نہیں هو سکتا . جہاں ایک اور اُپشند کہتے هیں کہ " وہ نہ من سے' نہ وانی سے اور نہ آنکھوں سے پایا جا سکتا ھے' نہ تتر چکشورگچھتی نہ واگگچھتی نو منا' وهاں جامی صاحب

का था, 14 वीं सदी के आख़री हिस्से में फ़ारस में रहता था. ऐसा मालूम होता है कि उसने जवानी में हिन्दुस्तान की यात्रा की थी. उसका फ़लसफ़ा ज्यादातर इब्न अरबी के ही उसूलों से मिलता जुलता है, इसलिए उसके यहां बयान करने की कोई जरूरत नहीं. जहां तक पूर्न ब्रह्म का अपने शुद्ध अन्तर्जगत से जिसे जीली काला बादल (अल-अमा) कहता है, बाहरी दुनिया के अनगिनत रूपों में बदलने (अवतरण) का विशय है, जीली और इब्न अरबी के मत यक्सां हैं. लेकिन गुनों वाली दुनिया किस तरह फिर शुद्ध और सरल तत्व में लौट जाती है—इस पर भी जीली विचार प्रकट करता है, और सत असत के चक्र को पूरा करता है. इस चक्र के बीचों बीच आदमी की जगह है, क्योंकि उसकी आत्मा एक ओर ब्रह्म और दूसरी ओर क़ुदरत से मिल जाती है.

आदमी सत और असत के बीच में पुल बांधता है. आत्मा में सत्ता के सारे गुन एक हो जाते हैं इसीलिए उसके ज़रिये बहुत्व में फंसा हुआ एक अपने एकत्व के बारे में सचेत हो जाता है. जिस मनुश्य में इस एकत्व के ज्ञान का उदय हो जाता है वह इन्साने कामिल, पूर्न पुरुश (परम हंस) कहलाता है. इस ज्ञान के उदय की तीन अवस्थाएं हैं—नाम की ज्योति, गुनों की ज्योति और तत्व की ज्योति. यह अवस्थाएं ब्रह्म के प्रकृति में उतरने की तीन मंजिलें हैं. इन्हें अहदिय्यत (एकता), हुविय्यत (तदीयता) और अनिय्यत (अस्मदीयता) के नामों से पुकारते हैं.

बाद के सूफ़ी लेखकों ने इन अवस्थाओं के दूसरे नाम रखे हैं. जैसे साधारन चेतना की अवस्था को नासूत कहते हैं और इससे आगे वाली तीन अवस्थाओं को मलकूत, जब्रूत और लाहूत नाम देते हैं. मलकूत अवस्था में जो चेतना होती है उसकी सपने से तुलना की गई है. इसको सूक्ष्म जगत और अमिट रूपों का जगत भी मानते हैं. दूसरी अवस्था बेख़ुदी या तल्लीनता की है जो सुषुप्ति के समान है. यह वह गहरी नींद है जिसमें सपने नहीं दिखाई देते. सब से ऊंची अवस्था सत्य, तत्व और एकत्व की अवस्था है. इन हालतों की मनोवैज्ञानिक विशेशताओं की जांच करें तो मालूम होता है कि मन के विशयों का धीरे धीरे इस तरह नाश होता है कि आख़िर में एक हालत ऐसी आ जाती है जब चेतना में कोई भी दूसरी वस्तु न रहकर वह अकेली रह जाती है. पहली अवस्था वह है जिसमें विशयी, विशय और उन दोनों के आपस के सम्बन्ध मौजूद रहते हैं; दूसरी वह है जिसमें विशयी और विशय रह जाते हैं, सम्बन्ध टूट जाते हैं, और आख़िरी वह है जिसमें सिर्फ़ विशयी ही रह जाता है, विशयों का अन्त हो जाता है. यह फ़ना (मोक्ष) की मुख़्तलिफ़ सीढ़ियां हैं जिन पर चढ़कर



کا تھا، 14 ویں صدی کے آخری حصے میں فارس میں رہتا تھا. ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اُس نے جوانی میں ہندستان کی یاترا کی تھی. اُس کا فلسفہ زیادہ تر ابن عربی کے ہی اُصولوں سے ملتا جلتا ہے، اِسی لئے اُس کے یہاں بیان کرنے کی کوئی ضرورت نہیں. جہاں تک پورن برہم کا اپنے شدھ انتر جگت سے جسے جیلی کالا بادل (العماء) کہتا ہے، باہری دنیا کے انگنت روپوں میں بدلنے (اوترن) کا وشئے ہے، جیلی اور ابن عربی کے مت یکساں ہیں. لیکن گنوں والی دنیا کس طرح پھر شدھ اور سرل تتو میں لوٹ جاتی ہے—اِس پر بھی جیلی وچار پرکٹ کرتا ہے، اور ست اَست کے چکر کو پورا کرتا ہے. اِس چکر کے بیچوں بیچ آدمی کی جگہ ہے کیونکہ، اُس کی آتما ایک اور برہم اور دوسری اُور قدرت سے مل جاتی ہے.

آدمی ست اور اَست کے بیچ میں پل باندھتا ہے. آتما میں ستتا کے سارے گن ایک ہو جاتے ہیں اِس لئے اُسی کے ذریعہ بہتو میں پھنسا ہوا ایک اپنے ایکتو کے بارے میں سچیت ہو جاتا ہے. جس منشیہ میں اِس ایکتو کے گیان کا اُودے ہو جاتا ہے وہ اِنسان کامل، پورن پروش (پرم ہنس) کہلاتا ہے. اِس گیان کے اودے کی تین اوستھائیں ہیں—نام کی جیوتی، گنوں کی جیوتی اور تتو کی جیوتی. یہ اوستھائیں برہم کے پرکرتی میں اُترنے کی تین منزلیں ہیں. اِنھیں عہدیت (ایکتا)، حویت (تدئیتا) اور انیئت (اِسمدیتا) کے ناموں سے پکارتے ہیں.

بعد کے صوفی لیکھکوں نے اِن اوستھاؤں کے دوسرے نام رکھے ہیں. جیسے سادھارن چیتنا کی اوستھا کو ناسوت کہتے ہیں اور اِس سے آگے والی تین اوستھاؤں کو ملکوت، جبروت اور لاہوت نام دیتے ہیں. ملکوت اوستھا میں جو چیتنا ہوتی ہے اُس کی سپنے سے تولنا کی گئی ہے. اُس کو سوکشم جگت اور امٹ روپوں کا جگت بھی مانتے ہیں. دوسری اوستھا بےخودی یا تلینتا کی ہے جو سوشپتی کے سمان ہے. یہ وہ گہری نیند ہے جس میں سپنے نہیں دکھائی دیتے. سب سے اونچی اوستھا ستیہ، تتو اور ایکتو کی اوستھا ہے. اِن حالتوں کی منوویگیانک وشیشتاؤں کی جانچ کریں تو معلوم ہوتا ہے کہ من کے وشیوں کا دھیرے دھیرے اِس طرح ناش ہوتا ہے کہ آخر میں ایک حالت ایسی آجاتی ہے جب چیتنا میں کوئی بھی دوسری وستو نہ رہ کر وہ اکیلی رہ جاتی ہے. پہلی اوستھا وہ ہے جس میں وشیئی، وشئے اور اُن دونوں کے آپس کے سمبندھ موجود رہتے ہیں، دوسری وہ ہے جس میں وشیئی اور وشئے رہ جاتے ہیں، سمبندھ ٹوٹ جاتے ہیں، اور آخری وہ ہے جس میں صرف وشیئی ہی رہ جاتا ہے، وشیوں کا انت ہو جاتا ہے. یہ فنا (موکش) کی مختلف سیڑھیاں ہیں جن پر چڑھکر

मालूम हो जाए कि वही सत्य है.' जबकि यह कहा जाता है कि "उसके समान कोई चीज़ नहीं है", तो उसके तन्ज़ीह या परा रूप से मतलब है, और जब कहा जाता है कि 'वही सुनने और देखने वाला है' 'हू उल उस्समी हू उल बसीर' तो उसकी 'तशबीह' या अन्तर्व्यापी अवस्था से मतलब है. जहां एक ओर वह अक़्ल के परे है वहां दूसरी ओर वह अपने को हब्ल्-उल-वरीद यानी गरदन की नाड़ी से भी पास बताता है.

इसीलिए परम सत का बयान सिर्फ़ ऐसे ही लफ़्ज़ों में किया जा सकता है जो आपस में विरोधी ( मुतज़ाद ) हों. लेकिन अगर वह परम सत संपूर्न है तो उसका मुक़र्रर ( नियत ) रूप भी होना चाहिये. ब्रह्मांड का विकास इसी नियत रूप से सम्बन्ध रखता है.

प्रवृत्ति का सिद्धान्त ईश्वर के नियत रूप से बंधा है. इससे सृश्टि के विकास-क्रम का पता चलता है. इस विकास की पांच हालतें हैं. पहली हालत वहदत यानी पूर्न ऐक्य या अद्वैत की है जिसमें बाह्य जगत और अन्तर्जगत बिलकुल एक होते हैं. दूसरी हालत वह है जिसमें ऐक्य टूट जाता है और अन्तर्जगत ( बुतून ) और एकत्व का सामना होता है. इसको वहदियत कहते हैं. इसके बाद अहदियत यानी बहुत्व में एकत्व वाली हालत आती है, इस हालत में गुनों ( सिफ़ात ) में तत्व और तत्व में गुन प्रकट हो जाते हैं. चौथी हालत वह है जब विचार ( एयान ) उत्पन्न होते हैं और आख़िरी वह जबकि रूप ( अजसाम ) पैदा होते हैं. मनुश्यों, चीज़ों और जगत के इस बहुत्व के पीछे, दर असल, एक ही तत्व है, जैसा कि क़ुरान में कहा गया है, "ऐ लोगो अपने रब का आदर करो, जिसने एक प्रान से सारी ख़लक़त को पैदा किया." "या ऐयहा उन्नास उत्तिक़ू रब्बिकुं अल्लज़ी ख़लक़कुं मन नफ़सहि वाहिदतुन."

बाहरी जगत के स्वभाव के बारे में इब्न अरबी ने अजीब विचार ज़ाहिर किए हैं. 'फ़ुसूस्-उल-हिकम' में वह कहते हैं कि इनसान और ख़ुदा का ताल्लुक़ पदार्थ और उसकी परछांई का सा है, और इनसान की ज़िन्दगी सपने के समान है. और भी कई विशयों पर इब्न अरबी के विचार बिलकुल मौलिक थे. मिसाल के तौर पर मूर्ति पूजा के बारे में उनका विरोध साधारन रूप से कहे जाने वाले मतों से भिन्न विचारों पर मुनहसर था. वह कहते थे कि हर पूजा की चीज़ में, चाहे वह पत्थर, पेड़ या कुछ भी क्यों न हो, ईश्वर या उसके गुनों का प्रकाश होता है, लेकिन उपासना के यह साधन ईश्वर को एक ही वस्तु में महदूद कर देते हैं और उसकी असली सम्पूर्नता और एकत्व निकाल देते हैं जो ठीक नहीं. ( फ़स्से-रूहानी )

अब्दुल करीम जीली जो इब्न अरबी के ही सम्प्रदाय



معوم هوجائے که وهی ستیه هے؛ جبکه یه کہا جاتا هے که "اُس کے سمان کوئی چیز نہیں هے" تو اُس کے طنزیہ یا پرا روپ سے مطلب هے' اور جب کہا جاتا هے که وهی سننے اور دیکھنے والا هے' هوالسمی هوالبصیر' تو اس کی 'تشبیہ' یا انتر ویاپی اوستھا سے مطلب هے. جہاں ایک اور وہ عقل کے پرے هے وهاں دوسری اور وه اپنے کو حبل الورید یعنی گردن کی نازی سے بھی پاس بتاتا هے .

اِس لئے پرم ست کا بیان صرف ایسےهی لفظوں میں کیا جا سکتا هے جو آپس میں وررودهی ( متزاد ) هوں. لیکن اگر وہ پرم ست سمپورن هے تو اُس کا مقرر (نیت) روپ بھی هونا چاهئیے . برهما نڈ کا وکاس اِسی نیت روپ سے سمبندھ رکھتا هے .

پرورتی کا سدھانت ایشور کے نیت روپ سے بندھا هے . س سے سرشٹی کے وکاس کرم کا پتہ چلتا هے . اِس وکاس کی پانچ حالتیں هیں . پہلی حالت وحدت یعنی پورن ایکیه یا ادویت کی هے جس میں باهیه جگت اور انترجگت بالکل ایک هوتے هیں . دوسری حالت وہ هے جس میں ایکیه ٹوٹ جاتا هے اور انتر جگت ( بطون ) اور ایکتو کا سامنا هوتا هے . اِس کو وحدیت کہتے هیں . اِس کے بعد عهدیت یعنی بہتو میں ایکتو والی حالت آتی هے' اس حالت میں گنوں (صفات) میں تتو اور تتو میں گن پرکٹ هو جاتے هیں . چوتھی حالت وہ هے جب وچار ( عیان ) اُتپن هوتے هیں اور آخری وہ جبکه روپ ( اجسام ) پیدا هوتے هیں . منشیوں' چیزوں اور جگت کے اِس بہتو کے پیچھے' دراصل' ایک هی تتو هے' جیسا که قرآن میں کہا گیا هے' " اے لوگو اپنے رب کا آدر کرو' جس نے ایک پران سے ساری خلقت کو پیدا کیا ." " یا ایحاالناس أتقیکو ربکم' الزی خاققم من نفسہی واحدۃ ."

باهری جگت کے سوبھاؤ کے بارے میں ابن عربی نے عجیب وچار ظاهر کئے هیں . ' فسوس الحکم ' میں وہ کہتے هیں که اِنسان اور خدا کا تعلق پدارتھ اور اس کی پرچھائیں کا سا هے' اور اِنسان کی زندگی سپنے کے سمان هے . اور بھی کئی وشیوں پر ابن عربی کے وچار بالکل مولک تھے . مثال کے طور پر مورتی پوجا کے بارے میں اُن کا وررودھ سادھارن روپ سے کہے جانے والے متوں سے بھن وچاروں پر منحصر تھا . وہ کہتے تھے که هر پوجا کی چیز میں' چاهے وہ پتھر' پیڑ یا کچھ بھی کیوں نه هو' ایشور یا اُس کے گنوں کا پرکاش هوتا هے' لیکن اُپاسنا کے یه سادھن ایشور کو ایک هی وستو میں محدود کر دیتے هیں اور اُس کی اصلی سمپورنتا اور ایکتو نکال دیتے هیں جو ٹھیک نہیں . ( فص روحانی ) .

عبدالکریم جیلی جو ابن عربی کے هی سمپردائے

'इन्सानी गुणों के बादलों को हटा कर, ऊंचे और विशुद्ध ईश्वर के परम सत्य रूपी सूरज को प्रकाश करना ही तजल्ली (आत्मा की ज्योति) है. यह प्रकाश तीन प्रकार का है—(1)—तजल्ली-ए-ज़ात—ईश्वर के तत्व का प्रकाश—(2)—तजल्ली-ए-सिफ़ात—उसके गुनों का प्रकाश और (3)—तजल्ली-ए-अफ़आल-उसके कार्यों का प्रकाश. पहली अवस्था को मुशाहदा, दूसरी को मुकाशफ़ा, और तीसरी का मुहाज़रा कहते हैं. मुशाहदा की सबसे ऊंची अवस्था वह है जब कि देखने वाला (द्रष्टा) देखी गई वस्तु (दृष्ट) में अपने को मिला देता है.

परमात्मा और मनुश्य के सम्बन्ध को बतला कर सुहरावर्दी सूफ़ियों के रीति रिवाज, शिश्टाचार और आदर सत्कार पर अपने विचार ज़ाहिर करते हैं. इसके बाद वह उनके फ़रायज़ों और सद्गुण को बतलाते हैं, अख़ीर में आख़री मक़सद तक पहुंचने के लिये रास्ते की मंज़िलें और अवस्थाएं बयान करते हैं. उनके मत के मुताबिक़ यह बहुत ज़रूरी है कि शरियत धर्म) में बताए गए नियत कर्म (विधि) किए जाएं और जिन कामों को करने से मना किया गया है (निषेध) वे न किए जाएं. मसलन पांच फ़र्ज़ अवश्य करने चाहिये. सद्गुणों में वे सच, धीरज, विनय, उदारता, मित्रता, क्षमा, स्नेह और प्रेम पर ज़ोर देते हैं. पश्चात्ताप, तप, त्याग, दीनता, समर्पण, कृतज्ञता, भय, आशा, ईश्वर में विश्वास और उसकी इच्छा का पालन—यह सब उस राह की मंज़िलें हैं. इन सब सिफ़ातों से युक्त सूफ़ी ईश्वर प्रेम और आकर्षण की मुख़्तलिफ़ अवस्थाओं का तजरुबा करता है और आख़ीर में फ़ना व बक़ा (मोक्ष) के मंज़िले मक़सूद पर पहुंच जाता है.

इब्न अरबी जो 'शेख़-उल-अकबर' के नाम से मशहूर हैं, सुहरावर्दी से छोटे लेकिन उनके समकालीन थे. उनका जन्म स्पेन देश के मुरचिया स्थान में सन 1165 ईस्वी में हुआ लेकिन वह अपने जीवन को बिताने के लिये पूर्वी देशों में आये और कई मुल्कों का सफ़र करते हुए दमिश्क़ में बस गए. सन 1240 ईस्वी में उन्होंने चोला छोड़ा.

ईश्वरी तत्त्व की खोज के साथ उनका फ़लसफ़ा शुरू होता है. उनका विचार है कि ईश्वर को न तो केवल सबके परे (तन्ज़ीह) और न सिर्फ़ सबके अन्दर (तशबीह) माना जा सकता है, क्योंकि वह दोनों ही है. क़ुरान का कहना है "हुउल अव्वल हुउल आख़िर हुउल बातिन हुउल ज़ाहिर."

'वह सबसे पहिला और सब के आख़िर है; वह अन्दर वाला है, और बाहर वाला भी. यह भी कहा गया है "सनरीहुम आयतना फ़िलाफ़ाक़ि व अन्फ़ुसहुं हत्ता यतबीन लहुं इन्नहुलहक़्क़े" 'मैं आसमान में और उनके प्रानों में अपने चिह्नों को ज़ाहिर करूंगा ताकि उनको साफ़ साफ़



'انسانی گنوں کے بادلوں کو ھٹاکر' اُونچے اور وشدھ ایشور کے پرم ستیہ روپی سورج کو پرکاش کرنا ھی تجلی (آتما کی جیوتی) ھے. یہ پرکاش تین پرکار کا ھے—(1)—تجلی ذات—ایشور کے تتو کا پرکاش—(2)—تجلی صفات—اس کے گنوں کا پرکاش اور (3)—تجلی افعال—اُس کے کاریوں کا پرکاش. پہلی اوستھا کو مشاھدہ' دوسری کو مکاشفہ' اور تیسری کو محاضرا کہتے ھیں. مشاھدہ کی سب سے اُونچی اوستھا وہ ھے جب کہ دیکھنے والا (درشٹا) دیکھی گئی وستو (درشٹ) میں اپنے کو ملا دیتا ھے.

پرماتما اور منشیہ کے سمبندھ کو بتلاکر سہراوردی صوفیوں کے ریتی رواج' ششٹاچار اور آدر ستکار پر اپنے وچار ظاھر کرتے ھیں. اِس کے بعد وہ اُن کے فرایضوں اور سدگن کو بتلاتے ھیں' آخیر میں آخری مقصد تک پہونچنے کے لئے راستے کی منزلیں اور اوستھائیں بیان کرتے ھیں. اُن کے مت کے مطابق یہ بہت ضروری ھے کہ شریعت (دھرم) میں بتائے گئے نیت کرم (ودھی) کئے جائیں اور جن کاموں کو کرنے سے منع کیا گیا ھے (نشیدھ) وے نہ کئے جائیں. مثلاً پانچ فرض اوشیہ کرنے چاھئے. سدگنوں میں وے سچ' دھیرج' ونئے' اُدارتا' مترتا' چھما' سنیہ اور پریم پر زور دیتے ھیں. پشچاتاپ' تپ' تیاگ' دینتا' سمرپن' کرتگیتا' بھئے' آشا' ایشور میں وشواس اور اُس کی اچھا کا پالن—یہ سب راہ کی منزلیں ھیں. اِن سب صفاتوں سے یکت صوفی ایشور پریم اور آکرشن کی مختلف اوستھاؤں کا تجربہ کرتا ھے اور آخیر میں فنا و بقا (موکش) کے منزل مقصود پر پہونچ جاتا ھے.

ابن عربی جو 'شیخ الاکبر' کے نام سے مشہور ھیں' سہراوردی سے چھوٹے لیکن اُن کے سمکالین تھے. اُن کا جنم اسپین دیش کے مرچیا استھان میں سن 1165 عیسوی میں ھوا لیکن وہ اپنے جیون کو بتانے کے لئے پوروی دیشوں میں آئے اور کئی ملکوں کا سفر کرتے ھوئے دمشق میں بس گئے. سن 1240 عیسوی میں اُنھوں نے چولا چھوڑا.

ایشوری تتو کی کھوج کے ساتھ اُن کا فلسفہ شروع ھوتا ھے. اُن کا وچار ھے کہ ایشور کو نہ تو کیول سب کے پرے (طنزیہ) اور نہ صرف سب کے اندر (تشبیہ) مانا جاسکتا ھے' کیونکہ وہ دونوں ھی ھے' قرآن کا کہنا ھے "ھوالاول ھوالاخر ھوالباطن ھوالظاھر."

'وہ سب سے پہلا اور سب کے آخر ھے؛ وہ اندر والا ھے' اور باھر والا بھی. یہ بھی کہا گیا ھے سنریہم آیا تنا فلافاقی و انفسھم حتیٰ یتبین لھم انہ الحق' 'میں آسمان میں اور اُن کے پرانوں میں اپنے چنھوں کو ظاھر کرونگا تاکہ اُن کو صاف صاف

है कि इन्द्रियों और अक़्ल से हासिल ( इद्राकी, हिस्सी, अक़्ली ) तजरुबा इल्म या ज्ञान से जुदा है. इस अनुभव के दो पहलू हैं—एक अक़्ले हिदायत यानी बनाने वाले के बारे में जानकारी और दूसरा अक़्ले मआश, बनाई हुई चीज़ों की जानकारी. इल्म तीन तरह का है—( 1 )—इल्मे-तौहीद, यह ज्ञान कि ईश्वर एक है, ( 2 )—इल्मे मआरिफ़त—ख़ुदा के कामों का ज्ञान; और ( 3 )—इल्मे-शरियत—ख़ुदा के हुक्मों का ज्ञान. लेकिन इस इल्म के भी परे एक भीतरी दीठ है जिसे मआरिफ़त कहते हैं "मआरिफ़त इबादत अज़ बाज़ शिनाख़तने उलूमे मुजमिल दर सूरते तफ़ासील." ( दीठ उस जानने का नाम है जो ज्ञानों में मामूली और ग़ैर मामूली की पहचान से हासिल होती है ). वह बतलाते हैं कि भीतरी दीठ ( मारिफ़त ) समाधि ( वज्द ) से मिलती है, और इसीलिये ज़बान में ताक़त नहीं कि वह इसे बयान कर सके. तजरुबा और ज्ञान इसके लिये केवल भूमिका ( दीबाचे ) के समान हैं. इसलिए इल्म के बग़ैर दीठ (मारिफ़त) नामुमकिन है, और इल्म दीठ के बिना एक बोझा है. सबसे ऊंची दीठ ( मारिफ़त ), मारिफ़ते इलाही ( ईश्वर की दीठ ) है, जो आत्मा की पहचान पर निर्भर करती है. कहा है—"मन अरफ़ा नफ़सहि अरफ़ा रब्बिहि."

"जो आत्मा में दीठ रखता है वही परमात्मा को पहचानता है."

ईश्वर क्या है, उसका मनुश्य से क्या सम्बन्ध है—इस पर सुहरावर्दी के विचार उनके इल्म और मारिफ़त ( ज्ञान और दीठ) के सिद्धान्तों में शामिल हैं. उनके विचार से ख़ुदा पूर्न सत् और शुद्ध तत्व है जो गुन और तारीफ़ों से परे है. "अल्लाह, अहद, समद, मुनज़्ज़ा अज़ वालिदो वलद, व मऊनतो मदद, व मुक़द्दस अज़ शबीहो नज़ीरो वज़ीरो मशीर."

ख़ुदा एक और सनातन है. उसका न कोई पैदा करने वाला है और न ख़ुद उससे ही कोई पैदा होता है. उसको न कोई मदद देता है और न वह किसी की मदद चाहता है. न उसका कोई सानी है, न कोई उसके समान है, न कोई उसका सहायता देने वाला वज़ीर है और न कोई सलाह देने वाला मन्त्री ! देश, काल, गुण, आकार, संख्या, परिमाण वग़ैरा से उसे कोई सम्बन्ध नहीं. वह दलील, तजुरबे इन्द्रिय-ज्ञान, और क़यास आदि से अप्राप्य उनसे दूर और आज़ाद है. "हरचि दर अक़्लो फ़हमो हवासो क़यास गुंजद ज़ाते ख़ुदावंदे सुबहान अज़ां मुनज़्ज़हो मुक़द्दस अस्त."

लेकिन यह पूर्न चेतना वह चमकता दमकता तेज है जो हमेशा के लिये छिपा नहीं रह सकता. सुहरावर्दी का बयान है—"मुराद अज़ तज्जली इन्कशाफ़े शम्से हक़ीक़ते हक़ अस्त, तआला व तक़द्दुस अज़ ग़यूमे सिफ़ाते बशरी व ग़ैबते आं."



ہے کہ اِندریوں اور عقل سے حاصل (ادراکی، حسی، عقلی) تجربہ علم یا گیان سے جدا ہے ۔ اِس انوبھو کے دو پہلو ہیں—ایک عقل ہدایت یعنی بنانے والے کے بارے میں جانکاری اور دوسرا عقل معاش، بنائی ہوئی چیزوں کی جانکاری۔ علم تین طرح کا ہے—(1) علم توحید، یہ گیان کہ ایشور ایک ہے، (2) علم معارفت—خدا کے کاموں کا گیان؛ اور (3)—علم شریعت—خدا کے حکموں کا گیان. لیکن اِس علم کے بھی پرے ایک بھیتری دیٹھ ہے جسے معارفت کہتے ہیں "معارفت عبادت ازباز شناختن علوم مجمل درصورت تفاصیل." (دیٹھ اُس جاننے کا نام ہے جو گیانوں میں معمولی اور غیر معمولی کی پہچان سے حاصل ہوتی ہے). وہ بتلاتے ہیں کہ بھیتری دیٹھ (معرفت) سمادھی (وجد) سے ملتی ہے، اور اِسی لئے زبان میں طاقت نہیں کہ وہ اُسے بیان کرسکے ۔ تجربہ اور گیان اِس کے لئے کیول بھومکا (دیباچے) کے سمان ہیں. اِس لئے علم کے بغیر دیٹھ (معرفت) ناممکن ہے، اور علم دیٹھ کے بنا ایک بوجھا ہے ۔ سب سے اونچی دیٹھ (معرفت)، معرفت الٰہی (ایشور کی دیٹھ) ہے، جو آتما کی پہچان پر نربھر کرتی ہے ۔ کہا ہے—"من عرف نفسہ عرف ربہ."

"جو آتما میں دیٹھ رکھتا ہے وہی پرماتما کو پہچانتا ہے."

ایشور کیا ہے، اُس کا منشیہ سے کیا سمبندھ ہے—اِس پر سہراوردی کے وچار اُن کے علم اور معرفت (گیان اور دیٹھ) کے سدھانتوں میں شامل ہیں ۔ اُن کے وچار سے خدا پورن ست اور شدھ تتو ہے جو گن اور تعریفوں سے پرے ہے ۔ "اللہ، احد، صمد، منزہ از والدو ولد، و معونت و مدد، و مقدس از شبیہہ و نظیر و وزیر و مشیر."

خدا ایک اور سناتن ہے ۔ اُس کا نہ کوئی پیدا کرنے والا ہے اور نہ خود اُس سے ہی کوئی پیدا ہوتا ہے ۔ اُس کو نہ کوئی مدد دیتا ہے اور نہ وہ کسی کی مدد چاہتا ہے. نہ اُس کا کوئی ثانی ہے، نہ کوئی اُس کے سمان ہے، نہ کوئی اُس کا سہائتا دینے والا وزیر ہے اور نہ کوئی صلاح دینے والا منتری ! دیش، کال، گن، آکار، سنکھیا، پریمان وغیرہ سے اُسے کوئی سمبندھ نہیں ۔ وہ دلیل، تجربے، اِندریہ گیان، اور قیاس آدی سے اپراپیہ اُن سے دور اور آزاد ہے ۔ "ہرچہ در عقل و فہم و حواس و قیاس گنجد ذات خداوند سبحان ازاں منزہ و مقدس است."

لیکن یہ پورن چیتنا وہ چمکتا دمکتا تیج ہے جو ہمیشہ کے لئے چھپا نہیں رہ سکتا ۔ سہراوردی کا بیان ہے—"مراد از تجلی انکشاف شمس حقیقت حق است، تعلیٰ و تقدس از غیوم صفات بشری و غیبت آں."

सकता है. एक तो ज़मीन की सतह पर नालियां खोदकर किसी दूसरे कुंड से इसमें पानी लाया जा सकता है या फिर उसी कुंए की तह की ज़मीन को इतना और खोदा जाय कि अन्दुरूनी सोते से ख़ुद बख़ुद फूटकर पानी ऊपर आ जाए. दूसरी तरह का आया हुआ पानी पहिली तरह से आए हुए पानी के मुक़ाबले में ज़्यादा साफ़ और ज़्यादा अटूट होगा. ठीक इसी तरह इनसान का मन ( क़ल्ब ) एक कुआं है, नालियां पांच इन्द्रियां, और उनके द्वारा लाया गया पानी, तजरुबे (प्रत्यक्ष ज्ञान) पर आश्रित ज्ञान की तरह है. लेकिन दूसरे तरह का ज्ञान वह है जो छिपे हुए सोते से कुएं की तह की मट्टी के हट जाने पर अपने आप निकल आता है. यह वह सीधा ज्ञान है जो लौहे-महफ़ूज़ ( सुरक्षित पट्टी ) पर लिखा हुआ है, और यह उस दैवी सत् का ज्ञान है जो ईश्वर की दया से खोजने वाले की आत्मा को रोशन करता है.

दूसरी मिसाल—एक राजा से कहा गया कि रोमन और चीनी बड़े अच्छे चित्रकार हैं. उन दोनों की चतुराई की तुलना करने की ग़रज़ से राजा ने अपने कमरे की एक दीवार चीनी कलाकारों और सामने वाली रोमन कलाकारों को दी. दोनों के बीच में एक पर्दा डाल दिया गया. रोमन लोगों ने तरह तरह के रङ्ग इकट्ठे किए. लेकिन चीनियों ने बिला किसी रंग के ही अपना काम शुरू किया. जब दोनों ने अपना काम ख़तम कर लिया तो उनकी चित्रकारी का मुआयना करने के लिए राजा बुलाया गया. रोमन लोगों की सुन्दर तस्वीरों को देखकर राजा बहुत ही ख़ुश हुआ और फिर चीनियों की दीवार की ओर मुड़ा जिस पर कोई भी रंग इस्तेमाल नहीं किया गया था. राजा ने अचरज से पूछा 'तस्वीर कहां है ?' तब चीनियों ने बीच का पर्दा हटा दिया और रोमन चित्र की सारी सुन्दरता की परछाईं उस चीनी दीवार पर पड़ी. इतना ही नहीं बल्कि चीनियों ने अपनी दीवार पर ऐसी अद्भुत पालिश की थी कि परछाईं असली तस्वीर से भी कहीं ख़ूबसूरत लगी और उसकी जगमगाहट के सामने असली तस्वीर फीकी पड़ गई.

ईश्वर के भक्त इन चीनियों की तरह से ही हैं. वे अपने दिल के आईने को इस तरह शुद्ध और निर्मल कर लेते हैं कि सनातन सत्य उसमें अपने पूरे प्रकाश के साथ चमकने लगता है, लेकिन पोथी पढ़ने वाले पन्डित रोम वालों की तरह से हैं; उनका ध्यान सिर्फ़ बाहरी दुनिया की शोभा तक ही सीमित ( महदूद ) रहता है.

इस्लामी रहस्यवाद के फ़लसफ़े की तरक़्क़ी में शहाबुद्दीन सुहरावर्दी ( 1145—1234 ईस्वी ) ने बड़ा भारी हिस्सा लिया. इस विषय पर उनकी लिखी हुई पुस्तक 'अवारिफ़ुल मआरिफ़' एक मुकम्मिल ग्रन्थ है. सुहरावर्दी ने इल्मों के फ़र्क़ को और भी भली भांति से जांचा है. उन्होंने बतलाया



سکتا ھے . ایک تو زمین کی سطح پر نالیاں کھود کر کسی دوسرے کنڈ سے اِس میں پانی لایا جاسکتا ھے یا پھر اُسی کنوئیں کی تہ کی زمین کو اِتنا اور کھودا جائے کہ اندرونی سوتے سے خود بخود پھوٹ کر پانی اُوپر آجائے . دوسری طرح کا آیا ھوا پانی پہلی طرح سے آئے ھوئے پانی کے مقابلے میں زیادہ صاف اور زیادہ اٹوٹ ھوگا. ٹھیک اِسی طرح اِنسان کا من ( قلب ) ایک کنواں ھے' نالیاں پانچ اِندریاں' اور اُن کے دوارا لایا گیا پانی' تجربے ( پرتیکش گیان ) پر آشرت گیان کی طرح ھے . لیکن دوسرے طرح کا گیان وہ ھے جو چھپے ھوئے سوتے سے کنوئیں کی تہ کی متی کے ھٹ جانے پر اپنے آپ نکل آتا ھے . یہ وہ سیدھا گیان ھے جو لوح محفوظ ( سرکشت پٹی ) پر لکھا ھوا ھے' اور یہ اُس دیوی ست کا گیان ھے جو ایشور کی دیا سے کھوجنے والے کی آتما کو روشن کرتا ھے .

دوسری مثال—ایک راجہ سے کہا گیا کہ رومن اور چینی بڑے اچھے چترکار ھیں . اُن دونوں کی چترائی کی تلنا کرنے کی غرض سے راجہ نے اپنے کمرے کی ایک دیوار چینی کلا کاروں اور سامنے والی رومن کلا کاروں کو دی . دونوں کے بیچ میں ایک پردہ ڈال دیا گیا . رومن لوگوں نے طرح طرح کے رنگ اِکٹھے کئے . لیکن چینیوں نے بلا کسی رنگ کے ھی اپنا کام شروع کیا. جب دونوں نے اپنا کام ختم کرلیا تو اُن کی چترکاری کا معائنہ کرنے کے لئے راجہ بلایا گیا . رومن لوگوں کی سندر تصویروں کو دیکھکر راجہ بہت ھی خوش ھوا اور پھر چینیوں کی دیوار کی اور مڑا جس پر کوئی بھی رنگ اِستعمال نہیں کیا گیا تھا . راجہ نے اچرج سے پوچھا 'تصویر کہاں ھے ؟' تب چینیوں نے بیچ کا پردہ ھٹا دیا اور رومن چتر کی ساری سندرتا کی پرچھائیں اُس چینی دیوار پر پڑی . اِتنا ھی نہیں بلکہ چینیوں نے اپنی دیوار پر ایسی ادبھت پالش کی تھی کہ پرچھائیں اصلی تصویر سے بھی کہیں خوبصورت لگی اور اُس کی جگمگاھٹ کے سامنے اصلی تصویر پھیکی پڑگئی .

ایشور کے بھکت اِن چینیوں کی طرح سے ھی ھیں . وے اپنے دل کے آئینے کو اِس طرح شدھ اور نرمل کرلیتے ھیں کہ سناتن ستیہ اُس میں اپنے پورے پرکاش کے ساتھ چمکنے لگتا ھے' لیکن پوتھی پڑھنے والے پنڈت روم والوں کی طرح سے ھیں؛ اُن کا دھیان صرف باھری دنیا کی شوبھا تک ھی سیمت ( محدود ) رھتا ھے .

اِسلامی رھسیہ واد کے فلسفے کی ترقی میں شہاب الدین سہراوردی ( 1145—1234 عیسوی ) نے بڑا بھاری حصہ لیا . اِس وشئے پر اُن کی لکھی ھوئی پستک 'عوارف المعارف' ایک مکمل گرنتھ ھے . سہراوردی نے علموں کے فرق کو اور بھی بھلی بھانتی سے جانچا ھے . اُنھوں نے بتلایا

विचार-धारा पर काफ़ी सोच विचार किया था, उनको अरब के दार्शनिकों में सबसे मौलिक मानता है. इन्होंने इसलामी फ़लसफ़े पर यूनान का जो असर पड़ा था उसको इस तरह से उखाड़ कर फेंक दिया कि वह पूरब में फिर न पनप सका.

ग़ज़ाली का जन्म 1066 ईस्वी में तूस नामक जगह में हुआ था, उन्होंने अपना जीवन एक धर्मशास्त्री और भाष्यकार की हैसियत से शुरू किया लेकिन बाद में फ़लसफ़े की ओर उनका मन झुका. बग़दाद के मशहूर निज़ामिया कालिज के वह प्रोफ़ेसर मुक़र्रर किए गये. कुछ समय के बाद उनके दिमाग़ में एक इन्क़लाब हुआ और उनकी आत्मा में उथल पुथल मची. फ़लसफ़े की तरफ़ से विश्वास हट गया और वह नास्तिक हो गए. अपनी जगह से इस्तीफ़ा देकर उन्होंने तपस्या के द्वारा शान्ति हासिल की. मक्का आदि तीर्थ स्थानों की यात्रा करके उन्होंने ध्यान ( ज़िक्र ) में मन लगाया. आख़िरकार उनकी परेशान आत्मा को शान्ति मिली. वह नेशापुर वापिस आए और वहां कालिज में पढ़ाने लगे. इसके थोड़े ही समय बाद वह अपने जन्म स्थान तूस लौटे जहां सन 1111 ईस्वी में उनका देहान्त हो गया.

'इह्या-उल-उलूम' ग़ज़ाली का सब से उत्तम रचनात्मक ग्रंथ है. इसमें उन्होंने धर्म और फ़लसफ़ा सम्बन्धी सब मसलों पर ग़ौर किया है. ज्ञान या इल्म के बारे में उनका कहना है कि यह दो प्रकार का है—अक़्ली यानी अक़्ल या बुद्धि से सम्बन्ध रखने वाला और दीनी यानी रूह से सम्बन्ध रखने वाला. पहिले तरह का इल्म वैज्ञानिक इल्म है और आंखों देखे सबूत, दलील और अध्ययन इसके हासिल करने के साधन हैं. एक ओर औषधिशास्त्र ( तिब ), गणित ज्योमेट्री, ज्योतिश शास्त्र और दूसरी ओर धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा व्याकरण आदि इसकी शाखाएं हैं. दूसरी तरह का ज्ञान इल्मे मकाशिफ़ा यानी आत्मा के साक्षात्कार का ज्ञान है. इसका मक़सद उस ईश्वर को हासिल करना है जिसके सिवा सब असत् है. यह मनुश्य को सारे फंदों से छुड़कर सत् का साक्षात्कार कराता है. मन ( ख़ातिर ) में चञ्चलता पैदा करने वाली इन्द्रियों को स्थिर करना, हृदय की शुद्धि ( तजकिया-ए-नफ़्स ) और गूढ़ तत्वों पर चिंतन ( मराक़बा और मकाशफ़ा ) इसके लिए पहली शर्त है. पहली तरह के दुनियावी इल्म की सचाई अनिश्चित है, लेकिन आत्मिक ज्ञान की निश्चित, क्योंकि यह सचमुच ईश्वर ही का सामना करा देता है. पहिली तरह का ज्ञान दूसरी तरह के ज्ञान से नीचे दर्जे का है, इसलिए जब तक यह दूसरे तरह के ज्ञान के विकास में साधक है तब तक तो ठीक है वरना बिल्कुल बेकार.

इन दोनों प्रकार के ज्ञानों के बीच में फ़र्क़ दिखलाने के लिए ग़ज़ाली ने दो मिसालें दी हैं. पहिली—किसी खेत में एक कुआं खोदा गया. इसमें पानी दो तरह से भरा जा



وچار دھارا پر کافی سوچ وچار کیا تھا، اُن کو عرب کے دارشنکوں میں سب سے مولک مانتا ہے ۔ اُنھوں نے اِسلامی فلسفے پر یونان کا جو اثر پڑا تھا اُس کو اِس طرح سے اُکھاڑ پھینک دیا کہ وہ پورب میں پھر نہ پنپ سکا ۔

غزالی کا جنم 1066 عیسوی میں طوس نامک جگہ میں ہوا تھا، اُنھوں نے اپنا جیون ایک دھرم شاستری اور بھاشیہ‌کار کی حیثیت سے شروع کیا لیکن بعد میں فلسفے کی اُور اُن کا من جُھکا ۔ بغداد کے مشہور نظامیہ کالج کے وہ پروفیسر مقرر کئے گئے ۔ کچھ سمے کے بعد اُن کے دماغ میں ایک اِنقلاب ہوا اور اُن کی آتما میں اُتھل پتھل مچی ۔ فلسفے کی طرف سے وشواس ہٹ گیا اور وہ ناستک ہوگئے ۔ اپنی جگہ سے استیفیٰ دیکر اُنھوں نے تپسیا کے دوارا شانتی حاصل کی ۔ مکہ آدی تیرتھ استھانوں کی یاترا کرکے اُنھوں نے دھیان ( ذکر ) میں من لگایا ۔ آخرکار اُن کی پریشان آتما کو شانتی ملی ۔ وہ نیشاپور واپس آئے اور وہاں کالج میں پڑھانے لگے ۔ اِس کے تھوڑے ھی سمے بعد وہ اپنے جنم استھان طوس لوٹے جہاں سن 1111 عیسوی میں اُن کا دیہانت ہوگیا ۔

'یحییٰ العلوم' غزالی کا سب سے اُتم رچناتمک گرنتھ ہے ۔ اِس میں اُنھوں نے دھرم اور فلسفہ سمبندھی سب مسلوں پر غور کیا ہے ۔ گیان یا علم کے بارے میں اُن کا کہنا ہے کہ یہ دو پرکار کا ہے—عقلی یعنی عقل یا بدھی سے سمبندھ رکھنے والا اور دینی یعنی روح سے سمبندھ رکھنے والا ۔ پہلی طرح کا علم ویگیانک علم ہے اور آنکھوں دیکھے ثبوت، دلیل اور ادھیین اِس کے حاصل کرنے کے سادھن ہیں ۔ ایک اُور اوشدھی شاستر ( طب )، گنت، جیومیٹری، جیوتش شاستر اور دوسری اُور دھرم شاستر، نیتی شاستر تتھا ویاکرن آدی اِس کی شاکھائیں ہیں ۔ دوسری طرح کا گیان علم مکاشفہ یعنی آتما کے ساکشاتکار کا گیان ہے ۔ اِس کا مقصد اُس ایشور کو حاصل کرنا ہے جس کے سوا سب اَست ہے ۔ یہ منشیہ کو سارے پھندوں سے چھڑا کر ست کا ساکشاتکار کراتا ہے ۔ من ( خاطر ) میں چنچلتا پیدا کرنے والی اِندریوں کو استھِر کرنا، ہردے کی شدھی ( تذکیۂ نفس ) اور گوڑھ تتوں پر چنتن ( مراقبہ اور مکاشفہ ) اِس کے لئے پہلی شرط ہے ۔ پہلی طرح کے دنیاوی علم کی سچائی انشچت ہے، لیکن آتمک گیان کی نشچت، کیونکہ یہ سچ مچ ایشور ہی کا سامنا کرادیتا ہے ۔ پہلی طرح کا گیان دوسری طرح کے گیان سے نیچے درجے کا ہے، اِس لئے جب تک یہ دوسرے طرح کے گیان کے وکاس میں سادھک ہے تب تک تو ٹھیک ہے ورنہ بالکل بیکار ۔

اِن دونوں پرکار کے گیانوں کے بیچ میں فرق دکھلانے کے لئے غزالی نے دو مثالیں دی ہیں ۔ پہلی—کسی کھیت میں ایک کنواں کھودا گیا ۔ اِس میں پانی دو طرح سے بھرا جا

# वेदान्त और तसव्वुफ़

लेखक—डाक्टर ताराचन्द

अनुवादक—विश्वम्भरनाथ पांडे

रामानुज का समय हमें अपने इतिहास के उस जमाने में ले आता है जबकि उत्तरी हिन्दुस्तान इसलाम के असर में आ चुकता है और हिन्दू धर्म में इसलामी विचार और संस्कार मिलने लगते हैं. लेकिन इसके साथ ही साथ इसलाम धर्म भी हिन्दू-शास्त्र और दर्शन के तरीक़ों और ख्यालों को जज्ब करता है जिससे दोनों एक दूसरे के क़रीब आ जाते हैं. इसलिए, इन दोनों का मेल जोल किस तरह शुरू हुआ यह जानना बहुत जरूरी है.

तसव्वुफ़ या इसलामी रहस्यवाद की नींव क़ुरान के उपदेशों पर ही रखी गई है. सूफ़ी सम्प्रदाय अपने सिद्धों की चरितावली हज़रत मुहम्मद से ही शुरू करते हैं और उनमें से बहुत से हज़रत अली को उनका पहला ख़लीफ़ा मानते हैं. यहां पर सूफ़ी धर्म के शुरू जमाने के चर्चे की कोई जरूरत नहीं, लेकिन मन्सूर-ऊल-हल्लाज, जिनका जन्म 858 ईस्वी में ईरान में इस्तख़ के पास तूर नामक गांव में हुआ था, के बारे में कुछ कहना जरूरी है. उनकी जीवनी से मालूम होता है कि वह हिन्दुस्तान में आकर गुजरात और काश्मीर में ठहरे थे और फिर उसके बाद ख़ुरासान गए. अख़ीर में बग़दाद जाकर रहने लगे और वहीं पर उपदेश देने लगे. इनके विचार पुराने ख्यालवाले लोगों को पसन्द न आए और इब्न दाऊद-उल-इस्फ़हानी ने जो जाहिरिया सम्प्रदाय के आलिम थे उनके ख़िलाफ़ फ़तवा दे दिया. वज़ीर के सामने मुक़द्दमा हुआ और 922 ईस्वी में उनको फांसी दी गई. मन्सूर के इस ऐलान से कि 'मैं' और 'हक़' एक ही है (अनलहक़) उस वक़्त भी जनता पर काफ़ी असर पड़ा. इसी के साथ उनकी राय, कि हज वग़ैरा पांचों फ़रज़ों की जगह और संस्कार ले सकते हैं, बड़ी बहस-मुबाहिसा का सबब बनी. मन्सूर की शिक्षा थी कि ईश्वर (ख़ुदा) सृष्टि की सारी सीमाओं के परे है और ईश्वर और आदमी की रूह दोनों अख़ीर में एक हो जाते हैं. इस उसूल को 'हुलूले लाहूत फ़ी अन्नासूत' कहते हैं.

मन्सूर के 200 साल बाद इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली हुए. उनको 'हुज्जतू-उल-इसलाम' यानी 'इसलाम का सबूत' कहा जाता है और वे मुसलमानों में सबसे ऊंचे दर्जे के पंडित समझे जाते हैं. फ़्रांसीसी लेखक रेनां, जिसने मुसलिम

# ویدانت اور تصوف

لیکھک—ڈاکٹر تارا چند

انوواک—وشومبھر ناتھ پانڈے

رامانج کا سمے ھمیں اپنے اتہاس کے اُس زمانے میں لے آتا ھے جبکہ اُتری ھندستان اسلام کے اثر میں آچکتا ھے اور ھندو دھرم میں اسلامی وچار اور سنسکار ملنے لگتے ھیں. لیکن اس کے ساتھ ھی ساتھ اسلام دھرم بھی ھندو شاستر اور درشن کے طریقوں اور خیالوں کو جذب کرتا ھے جس سے دونوں ایک دوسرے کے قریب آجاتے ھیں. اس لئے' ان دونوں کا میل جول کس طرح شروع ھوا یہ جاننا بہت ضروری ھے.

تصوف یا اسلامی رھسیہ واد کی نیو قرآن کے اُپدیشوں پر ھی رکھی گئی ھے. صوفی سمپردائے اپنے سدھوں کی چریتاولی حضرت محمد سے ھی شروع کرتے ھیں اور اُن میں سے بہت سے حضرت علی کو اُن کا پہلا خلیفہ مانتے ھیں. یہاں پر صوفی دھرم کے شروع زمانے کے چرچے کی کوئی ضرورت نہیں' لیکن منصورالحلاج' جنکا جنم 858 عیسوی میں ایران میں اِستخر کے پاس طور نامک گاؤں میں ھوا تھا' کے بارے میں کچھ کہنا ضروری ھے. اُن کی جیونی سے معلوم ھوتا ھے کہ وہ ھندستان میں آکر گجرات اور کاشمیر میں ٹھہرے تھے اور پھر اُس کے بعد خراسان گئے. آخیر میں بغداد جاکر رھنے لگے اور وھیں پر اُپدیش دینے لگے. ان کے وچار پرانے خیال والے لوگوں کو پسند نہ آئے اور ابن داؤد الاصفہانی نے جو ظاھریہ سمپردائے کے عالم تھے اُن کے خلاف فتویٰ دے دیا. وزیر کے سامنے مقدمہ ھوا اور 922 عیسوی میں اُن کو پھانسی دی گئی. منصور کے اس اعلان سے کہ "میں" اور "حق" ایک ھی ھیں (اناالحق) اُس وقت بھی جنتا پر کافی اثر پڑا. اسی کے ساتھ اُن کی رائے' کہ حج وغیرہ پانچوں فرضوں کی جگہ اور سنسکار لے سکتے ھیں' بڑی بحث مباحثہ کا سبب بنی. منصور کی شکشا تھی کہ ایشور (خدا) سرشٹی کی ساری سیماؤں کے پرے ھے اور ایشور اور آدمی کی روح دونوں آخیر میں ایک ھوجاتے ھیں. اس اُصول کو 'حلول لاھوت فی اناسوت' کہتے ھیں.

منصور کے 200 سال بعد امام محمد غزالی ھوئے. اُن کو 'حجت الاسلام' یعنی 'اسلام کا ثبوت' کہا جاتا ھے اور وے مسلمانوں میں سب سے اُونچے درجہ کے پنڈت سمجھے جاتے ھیں. فرانسیسی لیکھک رینا' جس نے مسلم

सकता. सन्यास से भी आदमी सिद्धि यानी कमाल हासिल नहीं कर सकता. असली ब्रह्म की शान्ति उन्हीं को हासिल होती है जो हमेशा सबकी भलाई के कामों में लगे रहते हैं."

पारसी धर्म की किताब "पतीत पशेमानी" में एक सच्चा दीनदार आदमी ईश्वर से प्रार्थना करता है कि :—

"अगर मैंने इनसानी समाज के भाईचारे के ख़िलाफ़ अपने बाप, अपनी मां, अपनी बहन, अपने भाई, अपनी स्त्री या अपने बच्चों के साथ कोई गुनाह किया हो, या अपने 'गुरू', अपने 'माग दर्शक', अपने किसी रिश्तेदार या अपने किसी जान पहचान वाले के साथ कोई ग़लत बरताव किया हो, या अपने शहर वालों, अपने साझीदारों, अपने पड़ोसियों, अपने गांव वालों या अपने नौकरों किसी के साथ भी ग़लत बरताव किया हो तो मुझे उसका दुख और पछतावा है और मैं ऐ ईश्वर ! तुझसे प्रार्थना करता हूं कि तू मुझे माफ़ करदे."

आख़ीर में हम सूफ़ी साहित्य से "अबु बिन अधम" नाम की मशहूर सुन्दर कविता का अनुवाद नीचे देते हैं :—

"अधम का बेटा अबु—उल्लाह उसकी नसल को बढ़ावे !

"एक दिन रात को शान्ति के गहरे सपने से चौंक कर उठा !

"उसके कमरे में चान्दनी छिटकी हुई थी.

"वह चान्दनी कमरे की शोभा को इस तरह बढ़ा रही थी जिस तरह खिले हुए नरगिस के फूल.

"उस चान्दनी में अबु ने देखा कि एक फ़रिश्ता सोने की एक किताब लिये उसमें कुछ लिख रहा है.

"मन की सच्ची शान्ति ने अधम के बेटे को निडर बना दिया था.

"उसने उस फ़रिश्ते से पूछा—'तुम क्या लिख रहे हो ?'

"फ़रिश्ते ने अपना सिर उठाया और बड़े मिठास से अबु की तरफ़ देख कर जवाब दिया.

"मैं उन सब के नाम लिख रहा हूं जो ईश्वर से प्रेम करते हैं.'

"अबु ने फिर पूछा—'क्या मेरा नाम उनमें है ?'

"फ़रिश्ते ने जवाब दिया—'नहीं ! तुम्हारा नाम उनमें नहीं है.'

"अबु ने फिर धीरे से लेकिन ख़ूब ख़ुश होकर कहा—'तब मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि मेरा नाम उन लोगों में लिख लो जो अपने भाई इनसानों से प्रेम करते हैं.'

"फ़रिश्ते ने लिख लिया और वह गुम हो गया.

"अगली रात फ़रिश्ता फिर आया और उसके नूर से अबु फिर जाग उठा.

"फ़रिश्ते ने अबु को अब उन लोगों के नाम लिखे हुए दिखाए जो ईश्वर से प्रेम करते हैं और जिन्हें ईश्वर की बरकतें हासिल हैं.

"अब ! अबु बिन अधम का नाम उनमें सब से ऊपर था."



سکتا. سنیاس سے بھی آدمی سدھی یعنی کمال حاصل نہیں کر سکتا. اصلی برھم کی شانتی اُنہیں کو حاصل ھوتی ھے جو ھمیشہ سب کی بھلائی کے کاموں میں لگے رھتے ھیں ."

پارسی دھرم کی کتاب " پتیت پشیمانی " میں ایک سچا دیندار آدمی ایشور سے پرارتھنا کرتا ھے کہ :—

" اگر میں نے اِنسانی سماج کے بھائی چارے کے خلاف اپنے باپ، اپنی ماں، اپنی بہن، اپنے بھائی اپنی اِستری، یا اپنے بچوں کے ساتھ کوئی گناہ کیا ھو، یا اپنے گرو، اپنے 'مارگ درشک'، اپنے کسی رشتہ دار یا اپنے کسی جان پہچان والے کے ساتھ کوئی غلط برتاؤ کیا ھو، یا اپنے شہر والوں، اپنے ساجھی داروں، اپنے پڑوسیوں، اپنے گاؤں والوں یا اپنے نوکروں کسی کے ساتھ بھی غلط برتاؤ کیا ھو تو مجھے اُس کا دکھ اور پچھتاوا ھے اور میں اے ایشور ! تجھ سے پرارتھنا کرتا ھوں کہ تو مجھے معاف کر دے ."

آخیر میں ھم صوفی ساھتیہ سے " ابو بن ادھم " نام کی مشہور سندر کویتا کا انواد نیچے دیتے ھیں :—

" ادھم کا بیٹا ابو—اللہ اُس کی نسل کو بڑھاوے !

" ایک دن رات کو شانتی کے گہرے سپنے سے چونک کر اُٹھا .

" اُس کے کمرے میں چاندنی چھٹکی ھوئی تھی .

" وہ چاندنی کمرے کی شوبھا کو اِس طرح بڑھا رھی تھی جس طرح کھلے ھوئے نرگس کے پھول .

" اُس چاندنی میں ابو نے دیکھا کہ ایک فرشتہ سونے کی ایک کتاب لئے اُس میں کچھ لکھ رھا ھے .

" من کی سچی شانتی نے ادھم کے بیٹے کو نڈر بنا دیا تھا .

" اُس نے اُس فرشتے سے پوچھا—' تم کیا لکھ رھے ھو ؟'

" فرشتے نے اپنا سر اُٹھایا اور بڑے مٹھاس سے ابو کی طرف دیکھ کر جواب دیا .

" میں اُن سب کے نام لکھ رھا ھوں جو ایشور سے پریم کرتے ھیں ."

" ابو نے پھر پوچھا—' کیا میرا نام اُن میں ھے ؟'

" فرشتے نے جواب دیا—' نہیں! تمہارا نام اُن میں نہیں ھے .'

" ابو نے پھر دھیرے سے لیکن خوب خوش ھو کر کہا—'تب میں تم سے پرارتھنا کرتا ھوں کہ میرا نام اُن لوگوں میں لکھ لو جو اپنے بھائی اِنسانوں سے پریم کرتے ھیں .'

" فرشتے نے لکھ لیا اور وہ گم ھوگیا .

" اگلی رات فرشتہ پھر آیا اور اُس کے نور سے ابو پھر جاگ اُٹھا .

" فرشتے نے ابو کو اب اُن لوگوں کے نام لکھے ھوئے دکھائے جو ایشور سے پریم کرتے ھیں اور جنھیں ایشور کی برکتیں حاصل ھیں.

" اب ! ابو بن ادھم کا نام اُن میں سب سے اوپر تھا ."

## "हज़ारों काबों से एक दिल बेहतर है"

पारसी किताब गाथा में लिखा है :—

"दूसरों की तरफ़ अपना फ़र्ज़ पूरा करने और नेक काम करने के रास्ते को पकड़ो. जो आदमी दूसरों के साथ नेकी करना छोड़ देता है वह धोके में है. उसका अपना भला कभी नहीं हो सकता."

यहूदी किताब मिशना में लिखा है :—

"आदमी के लिये असली चीज़ किताबें पढ़ना नहीं है. असली चीज़ है दूसरों के साथ नेकी करना."

कबीर साहब ने कहा है :—

"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय
ढाई अच्छर "प्रेम" के पढ़े सो पंडित होय

इन्जील में ईश्वर कहता है :—

"जो आदमी अपने फ़र्ज़ की तरफ़ से अपने कान बन्द कर लेता है उसकी प्रार्थना भी नफ़रत की चीज़ है....... जब तुम अपने हाथ प्रार्थना के लिये फैलाओगे तो मैं तुम्हारी तरफ़ से अपनी आंखें फेर लूंगा, और जब तुम बार बार प्रार्थना करोगे तो मैं कान बन्द कर लूंगा, इसलिये कि तुम्हारे हाथ अपने भाइयों के ख़ून से रंगे हुए हैं."

हिन्दू पुराण में लिखा है कि :—

"रुद्राक्ष के दाने या तुलसी की माला पहरना या माथे पर तीन रंग का तिलक लगाना, शरीर पर भस्म का मलना, तीर्थों की यात्रा करना, बड़ी बड़ी नदियों में स्नान करना, आग में हवन और यज्ञ करना, जप करना और मन्दिरों में जाकर देवता के दर्शन करना, यह सब मिलकर भी आदमी को पाक नहीं कर सकते, जिस तरह कि दूसरे प्राणियों की सेवा और दूसरों की भलाई के कामों में लगा रहना उसे पाक करता है."

इन्जील में लिखा है :—

"हर वह आदमी जो ईश्वर ईश्वर चिल्लाता रहता है स्वर्ग के राज में दाख़िल नहीं हो सकता, ईश्वर के राज में वही दाख़िल होगा जो उस पिता परमेश्वर का हुकुम मानता है......ईश्वर कहता है कि जो लोग दूसरों पर ज़ुल्म करते हैं उनसे मैं यह कहूंगा कि जाओ मुझसे दूर रहो, मैं तुम्हें नहीं जानता."

सूफ़ी कहता है कि :—

"अगर मैं यह देखूं कि एक अन्धा बेचारा जा रहा है और कुआं सामने है और फिर मैं ख़ामोश बैठा रहूं तो मैं गुनहगार हूं."

चीनी ताओ धर्म की किताब में लिखा है कि :—

"अपनी अक़्ल और अपने ज्ञान से दूसरों को फ़ायदा पहुंचाना ही सच्ची अक़्लमन्दी है, अपनी दौलत दूसरे ज़रूरतमन्दों में बांटना एक नेक काम है."

गीता में लिखा है :—

"दुनिया में काम न करने से आदमी ऊंचा नहीं उठ

## "ہزاروں کعبوں سے ایک دل بہتر ہے"

پارسی کتاب گاتھا میں لکھا ہے :—

" دوسروں کی طرف اپنا فرض پورا کرنے اور نیک کام کرنے کے راستے کو پکڑو ۔ جو آدمی دوسروں کے ساتھ نیکی کرنا چھوڑ دیتا ہے وہ دھوکے میں ہے ۔ اُس کا اپنا بھلا کبھی نہیں ہو سکتا ۔"

یہودی کتاب مشنا میں لکھا ہے :—

" آدمی کے لئے اصلی چیز کتابیں پڑھنا نہیں ہے ۔ اصلی چیز ہے دوسروں کے ساتھ نیکی کرنا ۔"

کبیر صاحب نے کہا ہے :—

" پوتھی پڑھ پڑھ جگ موا پنڈت بھیا نہ کوئے
" ڈھائی اکچھر " پریم " کے پڑھے سو پنڈت ہوئے

اِنجیل میں ایشور کہتا ہے :—

" جو آدمی اپنے فرض کی طرف سے اپنے کان بند کر لیتا ہے اُس کی پرارتھنا بھی نفرت کی چیز ہے ......جب تم اپنے ہاتھ پرارتھنا کے لئے پھیلاؤگے تو میں تمہاری طرف سے اپنی آنکھیں پھیر لونگا، اور جب تم بار بار پرارتھنا کروگے تو میں کان بند کر لونگا، اِس لئے کہ تمہارے ہاتھ اپنے بھائیوں کے خون سے رنگے ہوئے ہیں ۔"

ہندو پران میں لکھا ہے کہ :—

" رُدراکش کے دانے یا تلسی کی مالا پہرنا یا ماتھے پر تین رنگ کا تلک لگانا، شریر پر بھسم کا ملنا، تیرتھوں کی یاترا کرنا، بڑی بڑی ندیوں میں اسنان کرنا، آگ میں ہون اور یگیہ کرنا، جپ کرنا اور مندروں میں جا کر دیوتا کے درشن کرنا، یہ سب مل کر بھی آدمی کو پاک نہیں کر سکتے، جس طرح کہ دوسرے پرانیوں کی سیوا اور دوسروں کی بھلائی کے کاموں میں لگا رہنا اُسے پاک کرتا ہے ۔"

اِنجیل میں لکھا ہے :—

" ہر وہ آدمی جو ایشور ایشور چلاتا رہتا ہے سورگ کے راج میں داخل نہیں ہو سکتا، ایشور کے راج میں وہی داخل ہوگا جو اُس پتا پرمیشور کا حکم مانتا ہے......ایشور کہتا ہے کہ جو لوگ دوسروں پر ظلم کرتے ہیں اُن سے میں یہ کہوں گا کہ جاؤ مجھ سے دور رہو میں تمہیں نہیں جانتا ۔"

صوفی کہتا ہے کہ :—

" اگر میں یہ دیکھوں کہ ایک اندھا بیچارا جا رہا ہے اور کنواں سامنے ہے اور پھر میں خاموش بیٹھا رہوں تو میں گنہگار ہوں ۔"

چینی تاؤ دھرم کی کتاب میں لکھا ہے کہ :—

" اپنی عقل اور اپنے گیان سے دوسروں کو فائدہ پہنچانا ہی سچی عقلمندی ہے، اپنی دولت دوسرے ضرورتمندوں میں بانٹنا ایک نیک کام ہے ۔"

گیتا میں لکھا ہے :—

" دنیا میں کام نہ کرنے سے آدمی اُونچا نہیں اُٹھ

वेदों में भी सारे इनसानी समाज को एक जिस्म बताया गया है और कहा गया है कि :—

"जो लोग विद्या पढ़ते पढ़ाते हैं वह सब इस एक जिस्म का मुंह हैं, जो दूसरों की रक्षा करते हैं वह इस जिस्म के बाजू हैं, जो अपने और सब के लिये धन कमाते हैं वह धड़ हैं और जो केवल सेवा के कामों में लगे हैं वह इस जिस्म के पैर हैं."

सूफ़ी कहता है :—

"बनी आदम आज़ाए यक दीगर अन्द
कि दर आफ़रीनश ज़ यक जौहर अन्द
चूं उज़वे ब दर्द आवरद रोज़गार
दिगर उज़्वहा रा न मानद क़रार
तू कज़ मेहनते दीगरां बेग़मी
न शायद कि नामत निहन्द आदमी."

यानी—आदम की औलाद यानी सब इनसान एक जिस्म हैं और सब एक दूसरे के हाथ पैर हैं, क्योंकि सब की पैदाइश एक ही अस्ल से है. अगर बदन के एक अंग में दर्द हो तो बाक़ी हिस्से आराम से नहीं रह सकते. जो आदमी दूसरों के दुख दर्द से दुखी नहीं होता और उन्हें आराम पहुंचाने की कोशिश नहीं करता वह इनसान कहलाने का हक़दार नहीं है."

एक और सूफ़ी ने लिखा है :—

"एक फ़क़ीर किसी ख़ानक़ाह में दूसरे फ़क़ीरों के साथ रहता था. पर वह दिल वाला था. ख़ानक़ाह के क़ायदों को तोड़कर वह ख़ानक़ाह से निकल पड़ा और एक मदरसे में जाकर बच्चों को पढ़ाने लगा. मैंने उससे पूछा कि अल्लाह की इबादत करने वालों और लड़के पढ़ाने वालों में तुमने क्या फ़र्क़ देखा कि तुमने उस तरीक़े को छोड़कर यह काम अख़तियार कर लिया ? उसने जवाब दिया कि जब समन्दर में बाढ़ आती है तो ख़ानक़ाह के रहने वाले अपने अपने कम्बलों को बचाने की कोशिश करते हैं और यह बच्चे पढ़ाने वाले डूबते हुए इनसानों को बचाने की कोशिश करते हैं."

एक और सूफ़ी ने कहा है :—

"अल्लाह तक पहुंचने का रास्ता सिवाए ख़िदमते ख़ल्क़ के यानी लोगों की सेवा के और कोई नहीं है. माला लेकर अल्लाह का नाम रटने से या नमाज़ पढ़ने से या गुदड़ी ओढ़ लेने से अल्लाह नहीं मिलता.

मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है :—

"केवल कोशिश करना मेरा काम है कामयाबी नाकामयाबी अल्लाह के हाथ है."

यही विचार इन्हीं शब्दों में बार बार गीता के अन्दर आया है.



ویدوں میں بھی سارے اِنسانی سماج کو ایک جسم بتایا گیا ھے اور کہا گیا ھے کہ :—

" جو لوگ ودیا پڑھتے پڑھاتے ھیں وہ سب اِس ایک جسم کا منہ ھیں' جو دوسروں کی رکشا کرتے ھیں وہ اِس جسم کے بازو ھیں' جو اپنے اور سب کے لئے دھن کماتے ھیں وہ دھڑ ھیں اور جو کیول سیوا کے کاموں میں لگے ھیں وہ اِس جسم کے پیر ھیں ."

صوفی کہتا ھے :—

" بنی آدم اعضاء یک دیگر اند
کہ در آفرینش ز یک جوھر اند
چوں عضوے بہ درد آورد روزگار
دیگر عضوھا را نہ ماند قرار
تو کز محنت دیگراں بے غمی
نہ شعد کہ نامت نہند آدمی"

یعنی—آدم کی اولاد یعنی سب اِنسان ایک جسم ھیں اور سب ایک دوسرے کے ھاتھ پیر ھیں' کیونکہ سب کی پیدائش ایک ھی اصل سے ھے . اگر بدن کے ایک انگ میں درد ھو تو باقی حصے آرام سے نہیں رہ سکتے . جو آدمی دوسروں کے دکھ درد سے دکھی نہیں ھوتا اور اُنھیں آرام پہونچانے کی کوشش نہیں کرتا وہ اِنسان کہلانے کا حقدار نہیں ھے ."

ایک اور صوفی نے لکھا ھے :—

"ایک فقیر کسی خانقاہ میں دوسرے فقیروں کے ساتھ رھتا تھا. پر وہ دل والا تھا. خانقاہ کے قاعدوں کو توڑ کر وہ خانقاہ سے نکل پڑا اور ایک مدرسہ میں جا کر بچوں کو پڑھانے لگا. میں نے اُس سے پوچھا کہ اللہ کی عبادت کرنے والوں اور لڑکے پڑھانے والوں میں تم نے کیا فرق دیکھا کہ تم نے اُس طریقے کو چھوڑ کر یہ کام اختیار کر لیا ؟ اُس نے جواب دیا کہ جب سمندر میں باڑھ آتی ھے تو خانقاہ کے رھنے والے اپنے اپنے کمبلوں کو بچانے کی کوشش کرتے ھیں اور یہ بچے پڑھانے والے ڈوبتے ھوئے اِنسانوں کو بچانے کی کوشش کرتے ھیں ."

ایک اور صوفی نے کہا ھے :—

" اللہ تک پہنچنے کا راستہ سوائے خدمت خلق کے یعنی لوگوں کی سیوا کے اور کوئی نہیں ھے . مالا لے کر اللہ کا نام رٹنے سے یا نماز پڑھنے سے یا گدڑی اوڑھ لینے سے اللہ نہیں ملتا ."

محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ھے :—

" کیول کوشش کرنا میرا کام ھے کامیابی ناکامیابی اللہ کے ھاتھ ھے ."

یہی وچار اِنھیں شبدوں میں بار بار گیتا کے اندر آیا ھے .

यह है कि तुम यतीमों और बेवाओं के पास जाकर उनके दुख को दूर करो और अपने को दुनिया की बुराइयों से बचाए रखो. ऐ मेरे भाइयो ! जो आदमी यह कहे कि मैं ईश्वर में और धर्म में विश्वास रखता हूं, पर उसके काम अच्छे न हों उसे उस विश्वास से क्या फ़ायदा ! उसका विश्वास उसे नहीं बचा सकेगा. विश्वास कामों से पूरा होता है. जिस तरह शरीर बिना आत्मा के मुर्दा है इसी तरह विश्वास बिना अच्छे कामों के मुर्दा है."

यहूदियों में ख़तने का रिवाज था. इस रिवाज की तरफ़ इशारा करते हुए इन्जील में लिखा है कि:—

"ख़तना कराना या न कराना कोई बात नहीं. बात असली यही है कि ईश्वर की आज्ञाओं को माना जावे."

"जो नेकी मैं करना चाहता हूं वह नहीं कर पाता और जिस बुराई से मैं बचना चाहता हूं वह मैं कर डालता हूं."

इसी से मिलता हुआ विचार महाभारत में यूं प्रगट किया गया है :—

"मैं जानता हूं कि मेरा धर्म क्या है, फिर भी मैं उसकी तरफ़ नहीं जा पाता. मैं जानता हूं कि अधर्म क्या है, फिर भी मैं उधर को झुकता हूं !!

इन्जील में लिखा है :—

"क्या हम सब का बनाने वाला एक ही ईश्वर नहीं है ? तब फिर कोई आदमी अपने भाई दूसरे आदमी के साथ दग़ा कैसे कर सकता है......जिस तरह जिस्म एक होता है और उसके अलग अलग अंग यानी हाथ पैर वग़ैरह होते हैं इसी तरह हम सब एक जिस्म हैं और हम सब उसी जिस्म के अलग अलग अंग हैं, चाहे यहूदी हों या ग़ैर यहूदी, चाहे ग़ुलाम हों या आज़ाद. जिस्म के अलग अलग अंगों से अलग अलग काम भी लिया जाता है. ईश्वर एक है और हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार काम लेता है. ईश्वर एक है. आत्मा एक है. वही घट घट में मौजूद है. एक का दुख सबका दुख है. एक का मान सब का मान है. यही ईश्वर की आज्ञा है कि जो कोई ईश्वर से प्रेम करे वह अपने भाई आदमी से प्रेम करे."

बौद्ध धर्म के एक ग्रन्थ में लिखा है :—

"जो कोई अपने बाएं हाथ को मैले से गन्दा होने देता है और उसे अपने दाहने हाथ की मदद से ठीक ठीक नहीं धोता वह बहुत जल्दी अपने शरीर के सब अंगों को नापाक कर लेगा. सब अंग मिल कर ही तो शरीर हैं. हम सब इनसान कुल इनसानी शरीर के अंग हैं. हर अंग को चाहिये कि वह हर दूसरे अंग का ध्यान रखे और उसकी सेवा करता रहे."

चीनी ग्रन्थ 'ली-की' में लिखा है :—

"हमें अपने जीवन में दूसरों के काम आना चाहिये."



یہ ھے کہ تم یتیموں اور بیواؤں کے پاس جا کر اُن کے دکھ کو دور کرو اور اپنے کو دنیا کی برائیوں سے بچائے رکھو. اَے میرے بھائیو! جو آدمی یہ کہے کہ میں ایشور میں اور دھرم میں وشواس رکھتا ھوں' پر اُس کے کام اچھے نہ ھوں اُسے اُس وشواس سے کیا فائدہ ! اُس کا وشواس اُسے نہیں بچا سکے گا. وشواس کاموں سے پورا ھوتا ھے. جس طرح شریر بنا آتما کے مردہ ھے اِسی طرح وشواس بنا اچھے کاموں کے مردہ ھے."

یہودیوں میں خطنہ کا رواج تھا. اِس رواج کی طرف اِشارہ کرتے ھوئے اِنجیل میں لکھا ھے کہ :—

" خطنہ کرانا یا نہ کرانا کوئی بات نہیں. بات اصلی یہی ھے کہ ایشور کی آگیاؤں کو مانا جاوے."

" جو نیکی میں کرنا چاھتا ھوں وہ نہیں کر پاتا اور جس برائی سے میں بچنا چاھتا ھوں وہ میں کر ڈالتا ھوں."

اِسی سے ملتا ھوا وچار مہابھارت میں یوں پرگٹ کیا گیا ھے :—

" میں جانتا ھوں کہ میرا دھرم کیا ھے' پھر بھی میں اُس کی طرف نہیں جا پاتا. میں جانتا ھوں کہ ادھرم کیا ھے' پھر بھی میں اُدھر کو جھکتا ھوں."

اِنجیل میں لکھا ھے :—

" کیا ھم سب کا بنانے والا ایک ھی ایشور نہیں ھے ؟ تب پھر کوئی آدمی اپنے بھائی دوسرے آدمی کے ساتھ دغا کیسے کر سکتا ھے..... جس طرح جسم ایک ھوتا ھے اور اُس کے الگ الگ انگ یعنی ھاتھ پیر وغیرہ ھوتے ھیں اِسی طرح ھم سب ایک جسم ھیں اور ھم سب اُسی جسم کے الگ الگ انگ ھیں' چاھے یہودی ھوں یا غیر یہودی' چاھے غلام ھوں یا آزاد. جسم کے الگ الگ انگوں سے الگ الگ کام بھی لیا جاتا ھے. ایشور ایک ھے اور ھر ایک سے اُس کی یوگتا کے انوسار کام لیتا ھے. ایشور ایک ھے. آتما ایک ھے. وھی گھٹ گھٹ میں موجود ھے. ایک کا دکھ سب کا دکھ ھے. ایک کا مان سب کا مان ھے. یہی ایشور کی آگیاں ھے کہ جو کوئی ایشور سے پریم کرے وہ اپنے بھائی آدمی سے پریم کرے."

بردھ دھرم کے ایک گرنتھ میں لکھا ھے :—

" جو کوئی اپنے بائیں ھاتھ کو میلے سے گندہ ھونے دیتا ھے اور اُسے اپنے داھنے ھاتھ کی مدد سے ٹھیک ٹھیک نہیں دھوتا وہ بہت جلدی اپنے شریر کے سب انگوں کو ناپاک کر لے گا. سب انگ مل کر ھی تو شریر ھیں. ھم سب انسان کل اِنسانی شریر کے انگ ھیں. ھر انگ کو چاھئے کہ وہ ھر دوسرے انگ کا دھیان رکھے اور اُسکی سیوا کرتا رھے."

چینی گرنتھ لی - کی میں لکھا ھے :—

" ھمیں اپنے جیون میں دوسروں کے کام آنا چاھئے."

महाभारत में लिखा है :—

"तपस् तीर्थम् क्षमा तीर्थम् तीर्थमि इन्द्रिय निग्रह:
"सर्व भूत दया तीर्थम् ध्यानम् तीर्थम अनुत्तमम्
"एतानिपंच तीर्थानि सत्यम् शष्ठम् प्रकीर्तितम्
"देहे तिष्ठन्ति सर्वस्य तेषु स्नानम् समाचरेत्
"दानम् तीर्थम् दमस्तीर्थम् सन्तोषस्तीर्थम उच्यते
"ब्रह्मचर्यम् परम् तीर्थम् तीर्थम् च प्रियवादिता
"ज्ञानम् तीर्थम् धृतिस्तीर्थम् तपस्तीर्थम मुदाहृतम्
"तीर्थानामपि तत्तीर्थम् विशुद्धिर्मनस: परा."

यानी—तप यानी रियाज़त एक तीर्थ है, क्षमा यानी दूसरों के क़सूरों को माफ़ कर देना एक तीर्थ है, अपनी इन्द्रियों को क़ाबू में रखना एक तीर्थ है, सब प्रानियों पर दया करना तीर्थ है, ईश्वर में ध्यान लगाना बहुत अच्छा तीर्थ है, यह पांचों पांच तीर्थ हैं और सच बोलना छटा तीर्थ है. यह सब तीर्थ सब आदमियों के जिस्म के अन्दर मौजूद हैं. आदमी को इन्हीं तीर्थों में अच्छी तरह नहाना चाहिये. दूसरों को दान देना तीर्थ है, दम यानी अपने नफ़्स पर क़ाबू रखना तीर्थ है, संतोश यानी क़नाअत करना तीर्थ है, ब्रह्मचर्य यानी नेक चलन रहना बहुत बड़ा तीर्थ है, सबसे मीठे बोलना तीर्थ है, ज्ञान यानी मार्फ़त तीर्थ है, धीरज रखना यानी सब्र करना तीथ है. और इन सब तीर्थों का भी तीर्थ यह है कि आदमी अपने मन को पाक रक्खे.

बौद्ध धर्म की किताब धम्म पद में लिखा है :—

"नंगे रहना, सिर पर लम्बी लम्बी जटाएं रखना, बदन पर मिट्टी और भभूत मलना, बड़े बड़े उपवास करना, चट्टानों पर सोना और तरह तरह से अपने बदन को तकलीफ़ें देना, यह सब चीज़ें ऐ दोस्त! तुझे पाक नहीं कर सकतीं जब तक कि तू अपने दिल को सब नापाक ख़ाहिशों से ख़ाली न कर ले, जटाओं से और मृगछाला ओढ़ने से क्या लाभ, जबकि तेरे अन्दर पापों ने घर बना रखा है. तू बाहर के शरीर को पाक करने की कोशिश करता है, धर्म का असली रास्ता यह नहीं है, धर्म का असली रास्ता है अपने दिल को पापों और बुरी इच्छाओं से पाक रखना."

मनुस्मृति में लिखा है :—

"वेदों का पढ़ना, तपस्या करना, यज्ञ करना, त्याग करना, यम और नियमों का पालन करना, दान देना, इनमें से कोई काम उस आदमी का भला नहीं कर सकता जिसके दिल के अन्दर बुराई मौजूद है."

इन्जील में लिखा है :—

"मुबारक है वह आदमी जो लोभ और मोह के क़ाबू में नहीं आता, क्योंकि जब वह ईश्वर के सामने जाएगा तो उसे जीवन का वह ताज मिलेगा जिसका ईश्वर ने अपने प्रेमियों से वादा किया है, पाक धर्म जो ईश्वर को प्यारा है



مہابھارت میں لکھا ہے :—

"تپس تیرتھم شما تیرتھم تیرتھم اِندریہ نگرہ
"سرو بھوت دیا تیرتھم دھیانم تیرتھم انوتمم
"اِیتانی پنچ تیرتھانی ستیم ششٹھم پرکیرتیتم
"دیہہ تشٹھنتی سروسیہ تیشو سنانم سماچریت
"دانم تیرتھم دمس تیرتھم سنتوشس تیرتھم اُچیتے
"برہمچریم پرم تیرتھم تیرتھم چہ پریہ‌وادتا
"گیانم تیرتھم دھرتیس‌تیرتھم تپس تیرتھم مداھریتم
"تیرتھا نامابی تت تیرتھم وشدھرمن‌سہ پرا"

یعنی—تپ یعنی ریاضت ایک تیرتھ ہے، شما یعنی دوسروں کے قصوروں کو معاف کر دینا ایک تیرتھ ہے، اپنی اندریوں کو قابو میں رکھنا ایک تیرتھ ہے، سب پرانیوں پر دیا کرنا تیرتھ ہے، ایشور میں دھیان لگانا بہت اچھا تیرتھ ہے، یہ پانچوں پانچ تیرتھ ہیں اور سچ بولنا چھٹا تیرتھ ہے. یہ سب تیرتھ سب آدمیوں کے جسم کے اندر موجود ہیں. آدمیوں کو انہیں تیرتھوں میں اچھی طرح نہانا چاہئے. دوسروں کو دان دینا تیرتھ ہے، دم یعنی اپنے نفس پر قابو رکھنا تیرتھ ہے، سنتوش یعنی قناعت کرنا تیرتھ ہے، برہمچریہ یعنی نیک چلن رہنا بہت بڑا تیرتھ ہے، سب سے میٹھے بولنا تیرتھ ہے، گیان یعنی معرفت تیرتھ ہے، دھیرج رکھنا یعنی صبر کرنا تیرتھ ہے، اور اِن سب تیرتھوں کا بھی تیرتھ ہے کہ آدمی اپنے من کو پاک رکھے.

بودھ دھرم کی کتاب دھم پد میں لکھا ہے :—

"ننگے رہنا، سر پر لمبی لمبی جٹائیں رکھنا، بدن پر مٹی اور بھبھوت ملنا، بڑے بڑے اُپواس کرنا، چٹانوں پر سونا اور طرح طرح سے اپنے بدن کو تکلیفیں دینا، یہ سب چیزیں اے دوست! تجھے پاک نہیں کر سکتیں جب تک کہ تو اپنے دل کو سب ناپاک خواہشوں سے خالی نہ کر لے، جٹاؤں سے اور مرگ چھالا اوڑھنے سے کیا لابھ، جبکہ تیرے اندر پاپوں نے گھر بنا رکھا ہے. تو باہر کے شریر کو پاک کرنے کی کوشش کرتا ہے دھرم کا اصلی راستہ یہ نہیں ہے، دھرم کا اصلی راستہ ہے اپنے دل کو پاپوں اور بری اِچھاؤں سے پاک رکھنا."

منوسمرتی میں لکھا ہے :—

"ویدوں کا پڑھنا، تپسیا کرنا، یگیہ کرنا، تیاگ کرنا، یم اور نیموں کا پالن کرنا، دان دینا، اِن میں سے کوئی کام اُس آدمی کا بھلا نہیں کر سکتا جس کے دل کے اندر برائی موجود ہے."

اِنجیل میں لکھا ہے :—

"مبارک ہے وہ آدمی جو لوبھ اور موہ کے قابو میں نہیں آتا، کیونکہ جب وہ ایشور کے سامنے جائیگا تو اُسے جیون کا وہ تاج ملے گا جس کا ایشور نے اپنے پریمیوں سے وعدہ کیا ہے. پاک دھرم جو ایشور کو پیارا ہے

## "हज़ारों काबों से एक दिल बेहतर है"

मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है :—

"सय्यदुल क़ौम ख़ादिमुल क़ौम" यानी—क़ौम का सरदार वही है जो क़ौम की सब से जियादा ख़िदमत करता है.

चीनी ग्रन्थ ताओ-तेह्-किंग में लिखा है :—

"जो लोग बड़ा बनना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि सबसे छोटे बनकर रहें और सब की सेवा करें."

इन्जील में लिखा है :—

"जो लोग दीन यानी मुन्कसिर मिज़ाज हैं वही धरती के मालिक होंगे, स्वर्ग का राज उन्हीं को मिलेगा......तुम में से जो कोई सरदार बनना चाहे उसे चाहिये कि सब की सेवा करे, जो कोई तुम में बड़ा बनना चाहता है उसे चाहिये कि सब की ख़िदमत करे......जो कोई अपने को ऊंचा मानेगा वह नीचे गिरेगा और जो कोई अपने को नीचा करके चलेगा उसे ऊंचा उठाया जायगा......तुम में जो सब से बड़ा है वही तुम सब का सेवक होगा......जो तुम में सब से बड़ा है उसे चाहिये कि सब से छोटा होकर रहे, और जो सरदार है उसे चाहिये कि सब का सेवक बनकर रहे."

क़ुरआन में लिखा है :—

"अल्लाह के स से नज़दीक और उसकी निगाह में सबसे बड़ा वही है जो तुम सब में दूसरों के साथ सब से ज्यादा नेकी करता है."

मनुस्मृति में लिखा है :—

"सच्चा ब्राह्मन आदर सम्मान से हमेशा इस तरह भागता है जिस तरह ज़हर के कांटे से और अपमान और निरादर का इस तरह स्वागत करता है जिस तरह अमृत का."

सूफ़ी कहता है :—

"ब एहसान आसूदा करदन दिले
बेह अज़ अल्फ़ रकअत बहर मंज़िले
दल बदस्त आवर कि हज्जे अकबर अस्त
अज़ हज़ारां काबा यक दिल बेहतर अस्त
दिल गुज़रगाहे जलीले अकबर अस्त
काबा बुतगाहे ख़लीले आज़र अस्त."

यानी—किसी एक आदमी के साथ भी नेकी करके उसके दिल को ख़ुश करना ज्यादा अच्छा है बनिस्बत इसके कि आदमी काबे की हज्ज को जाए और हर मंज़िल पर एक एक हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ता जाए. दूसरे के दिल को अपने हाथ में ले क्योंकि यही सब से बड़ा हज्ज है, हज़ारों काबों से एक दिल बढ़कर है. आदमी का दिल ख़ुद अल्लाह के आने जाने की जगह है जब कि वह पत्थर का काबा केवल आज़र के बेटे ख़लील यानी हज़रत इबराहीम का बनाया हुआ है.

## "ہزاروں کعبوں سے ایک دل بہتر ہے"

محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے :—

"سیدالقوم خادم‌القوم" یعنی—قوم کا سردار وہی ہے جو قوم کی سب سے زیادہ خدمت کرتا ہے."

چینی گرنتھ تاؤ - تہ - کنگ میں لکھا ہے :—

"جو لوگ بڑا بننا چاہتے ہیں اُنہیں چاہئے کہ سب سے چھوٹے بن‌کر رہیں اور سب کی سیوا کریں."

انجیل میں لکھا ہے :—

"جو لوگ دین یعنی منکسرمزاج ہیں وہی دھرتی کے مالک ہونگے' سورگ کا راج اُنہیں کو ملےگا.. ...تم میں سے جو کوئی سردار بننا چاہے اُسے چاہئے کہ سب کی سیوا کرے' جو کوئی تم میں بڑا بننا چاہتا ہے اُسے چاہئے کہ سب کی خدمت کرے ......جو کوئی اپنے کو اُونچا مانے گا وہ نیچے گرے گا اور جو کوئی اپنے کو نیچا کرکے چلےگا اُسے اُونچا اُٹھایا جائےگا......تم میں جو سب سے بڑا ہے وہی تم سب کا سیوک ہوگا......جو تم میں سب سے بڑا ہے اُسے چاہئے کہ سب سے چھوٹا ہوکر رہے' اور جو سردار ہے اُسے چاہئے کہ سب کا سیوک بنکر رہے."

قرآن میں لکھا ہے :—

"اللہ کے سب سے نزدیک اور اُس کی نگاہ میں سب سے بڑا وہی ہے جو تم سب میں دوسروں کے ساتھ سب سے زیادہ نیکی کرتا ہے."

منوسمرتی میں لکھا ہے :—

"سچا براہمن آدر سمان سے ہمیشہ اِس طرح بھاگتا ہے جس طرح زہر کے کانٹے سے' اور اَپمان اور نرادر کا اِس طرح سواگت کرتا ہے جس طرح اَمرت کا."

صوفی کہتا ہے :—

"بہ اِحسان آسودہ کردن دلے
بہ از اَلف رکعت بہ ہر منزلے
دل بدست آور کہ حج اکبراست
ازہزاراں کعبہ یک دل بہتراست
دل گذرگاہ جلیل اکبراست
کعبہ بتگاہ خلیل آزر آست"

یعنی—کسی ایک آدمی کے ساتھ بھی نیکی کرکے اُس کے دل کو خوش کرنا زیادہ اَچھا ہے بنسبت اِس کے کہ آدمی کعبہ کی حج کو جائے اور ہر منزل پر ایک ایک ہزار رکعت نماز پڑھتا جائے. دوسرے کے دل کو اپنے ہاتھ میں لے کیونکہ یہی سب سے بڑا حج ہے' ہزاروں کعبوں سے ایک دل بڑھکر ہے. آدمی کا دل خود اللہ کے آنے جانے کی جگہ ہے جب کہ وہ پتھر کا کعبہ کیول آزر کے بیٹے خلیل یعنی حضرت ابراھیم کا بنایا ہوا ہے.

हिन्दू किताब निरुक्त में लिखा है :—

"जिस आदमी को सब वेद ज़बानी याद हैं पर जो उनके अर्थों को नहीं जानता वह एक लकड़ी के कुन्दे की तरह है जिसपर बोझ लदा हुआ है. और जो अर्थ को भी जानता है और अपने उस ज्ञान के अनुसार नेक काम करता है वह उन पापों से बचता हुआ जो आत्मा को बान्धते और नीचे घसीटते हैं स्वर्ग को प्राप्त करता है."

वशिष्ठ स्मृति में लिखा है :—

"सब वेदों को उनके छयों अंगों समेत यदि कोई आदमी बड़ी मेहनत के साथ भी पढ़ ले पर उसके काम अच्छे न हों तो वेद उसे नहीं बचा सकते. मरने के समय वेद उसे इस तरह छोड़कर चले जाएंगे जिस तरह चिड़िया के बच्चे बड़े होने पर घोंसले को छोड़कर चले जाते हैं."

गीता में लिखा है :—

"जीवन के उस चक्र को जो ईश्वर ने चला दिया है जो आदमी ठीक ठीक चलने में मदद नहीं देता यानी दूसरों के साथ नेकी नहीं करता, हे अर्जुन ! वह पाप करता है और उसका जीना बेकार है.

बौद्ध ग्रन्थ धम्मपद में लिखा है:—

"जो आदमी विद्वानों की सी बातें बहुत करता है, पर दूसरों के साथ नेकी नहीं करता वह उस नासमझ आदमी की तरह है जो दूसरे की गायों को बार बार गिनता है, लेकिन जिसे एक घूंट दूध भी पीने को नहीं मिलता."

मनुस्मृति में लिखा है :—

"नेक काम करना ही सब से बड़ा धर्म है. सब वेदों और स्मृतियों की यही तालीम है. इसलिये समझदार आदमी को चाहिये कि अपने को ठीक रखते हुए हमेशा नेक काम करता रहे. जो ब्राह्मन नेक कामों से हटा हुआ है उसे वेद नहीं बचा सकते, और जो नेक काम करता रहता है उसे जीवन के सब अच्छे फल मिलते हैं."

महाभारत में लिखा है :—

"वह पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले और सब लोग जो बड़ी बड़ी किताबों के केवल शब्द पढ़ते रहते हैं और उन्हीं पर बहस करते रहते हैं वह सब एक बुरी आदत में फंसे हुए और मूर्ख हैं. पंडित वही है जो दूसरों के साथ नेकी करता है."

सूफ़ी कहता है कि :—

"चाहे तुमने कितना भी इल्म पढ़ा हो अगर तुम्हारे काम नेक नहीं हैं तो तुम जाहिल हो. तब तुम एक ऐसे जानवर की तरह हो जिस पर किताबों का बोझ लदा हुआ है, पर जो न सच्चाई को जानता है और न कुछ समझता है."



ھندو کتاب نرکت میں لکھا ھے :—

"جس آدمی کو سب وید زبانی یاد ھیں پر جو اُن کے ارتھوں کو نہیں جانتا وہ ایک لکڑی کے کندے کی طرح ھے جس پر بوجھ لدا ھوا ھے . اور جو ارتھ کو بھی جانتا ھے اور اپنے اُس گیان کے انوسار نیک کام کرتا ھے وہ اُن پاپوں سے بچتا ھوا جو آتما کو باندھتے اور نیچے گھسیٹتے ھیں سورگ کو پراپت کرتا ھے."

وششٹھ سمرتی میں لکھا ھے :—

"سب ویدوں کو اُن کے چھیوں انگوں سمیت یدی کوئی آدمی بڑی محنت کے ساتھ بھی پڑھ لے پر اُس کے کام اچھے نہ ھوں تو وید اُسے نہیں بچاسکتے . مرنے کے سمے وید اُسے اِس طرح چھوڑکر چلے جائینگے جس طرح چڑیا کے بچے بڑے ھونے پر گھونسلے کو چھوڑکر چلے جاتے ھیں ."

گیتا میں لکھا ھے :—

"جیون کے اُس چکر کو جو ایشور نے چلا دیا ھے جو آدمی ٹھیک ٹھیک چلنے میں مدد نہیں دیتا یعنی دوسروں کے ساتھ نیکی نہیں کرتا، ھے ارجن ! وہ پاپ کرتا ھے اور اُس کا جینا بے کار ھے ."

بودھ گرنتھ دھم پد میں لکھا ھے :—

"جو آدمی ودوانوں کی سی باتیں بہت کرتا ھے، پر دوسروں کے ساتھ نیکی نہیں کرتا وہ اُس ناسمجھ آدمی کی طرح ھے جو دوسرے کی گایوں کو بار بار گنتا ھے، لیکن جسے ایک گھونٹ دودھ بھی پینے کو نہیں ملتا ."

منوسمرتی میں لکھا ھے :—

"نیک کام کرنا ھی سب سے بڑا دھرم ھے . سب ویدوں اور سمرتیوں کی یہی تعلیم ھے ، اِس لئے سمجھدار آدمی کو چاھئے کہ اپنے کو ٹھیک رکھتے ھوئے ھمیشہ نیک کام کرتا رھے . جو براھمن نیک کاموں سے ھٹا ھوا ھے اُسے وید نہیں بچاسکتے، اور جو نیک کام کرتا رھتا ھے اُسے جیون کے سب اچھے پھل ملتے ھیں ."

مہابھارت میں لکھا ھے :—

"وہ پڑھنے والے اور پڑھانے والے اور سب لوگ جو بڑی بڑی کتابوں کے کیول شبد پڑھتے رھتے ھیں اور اُنھیں پر بحث کرتے رھتے ھیں وہ سب ایک بری عادت میں پھنسے ھوئے اور مورکھ ھیں . پنڈت وھی ھے جو دوسروں کے ساتھ نیکی کرتا ھے ."

صوفی کہتا ھے کہ :—

"چاھے تم نے کتنا بھی علم پڑھا ھو اگر تمہارے کام نیک نہیں ھیں تو تم جاھل ھو . تب تم ایک ایسے جانور کی طرح ھو جس پر کتابوں کا بوجھ لدا ھوا ھے، پر جو نہ سچائی کو جانتا ھے اور نہ کچھ سمجھتا ھے ."

जो शब्द भी मेरे मुंह से निकले वही उसका नाम है, जो कुछ भी मैं सुनूं वही सुमिरन यानी उसकी याद है, जो कुछ मैं खाऊं पियूं वह सब उसी की पूजा यानी इबादत है, घर और जंगल दोनों को मैं एक बराबर देखता हूं, दुई का ख़्याल ही मैंने अपने दिल से निकाल दिया है.

पुराने मिस्री धर्म में मौत के देवता को 'औसीरस' कहा गया है. हिन्दुओं में उसे यमराज कहते हैं. क़ुरआन में अल्लाह के उसी रूप का नाम अल्क़ाबिज़ है. जो रूहें बेगुनाह और पाक होती हैं उन्हें भी मौत के बाद औसीरस नाम से पुकारा जाता है. प्राचीन मिस्र की मशहूर किताब 'बुक आफ़ दी डेड' में लिखा है :—

"औसीरस को जाने दो. तुम देख रहे हो कि वह बेगुनाह है......वह ज़मीन पर सच्चाई से रहा, उसने सच्चा ही खाना खाया......इसीलिये ईश्वर ने उसका स्वागत किया......उसने अल्लाह के भूकों को खाना खिलाया, अल्लाह के प्यासों को पानी पिलाया और अल्लाह के नंगों को कपड़ा पहनाया."

'पात्रेदानम' यानी हक़दार को दान देना, 'अन्नदानम' यानी भूकों को खाना खिलाना, 'विद्यादानम्' यानी बेपढ़ों को पढ़ाना, इन तीनों कामों की भारत के धर्म ग्रन्थों में बार बार तारीफ़ की गई है और यह सब के लिये फ़र्ज़ बताए गए हैं.

अल्लाह के इश्क़ यानी भक्ति का आनन्द लेना और अपने आप को ईश्वर के अर्पण कर देना ही काफ़ी नहीं है. जो आदमी ख़ुद आज़ाद हो गया हो उसका यह भी फ़र्ज़ है कि वह उन लोगों के लिये जो अभी तक ग़ुलाम हैं यानी तरह तरह की दुनियवी इच्छाओं की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं उनके लिये ख़ादिम की तरह काम करे. उसे अपने रात दिन के कामों में इस बात को समझना और इस पर अमल करना चाहिये कि सारी मानव जाति बल्कि सब जानदार एक ही बहुत बड़ी बिरादरी हैं जिसका कोई अन्त नहीं. सच्चा ज्ञान और सच्ची भक्ति दोनों पति पत्नि की तरह हैं. पर यदि इन दोनों से अच्छे कामों यानी नेक आमाल के बच्चे पैदा न हों तो यह दोनों निकम्मे और बांझ हैं. धार्मिक विश्वास और साइन्सी अक़्ल बिना नेक कामों के निकम्मे ही नहीं बुरे हैं. नेक काम ही आदमी के धार्मिक विश्वास के गवाह होते हैं. आदमी के दिल का अक़ीदा वही है जिस के अनुसार वह काम करता है. असली विश्वास शब्दों से साबित नहीं होता कामों से साबित होता है. विश्वास का सबूत शहीदों का ख़ून होता है, वही विश्वास का असल बीज होता है.

इन्जील में लिखा है :—

"तुम उन्हें उनके फलों यानी कामों से पहचानोगे."



جو شبد بھی میرے منھ سے نکلے وھی اُس کا نام ھے' جو کچھ بھی میں سنوں وھی سمیرن یعنی اُس کی یاد ھے' جو کچھ بھی میں کھاؤں پیوں وہ سب اُسی کی پوجا یعنی عبادت ھے' گھر اور جنگل دونوں کو میں ایک برابر دیکھتا ھوں' دوئی کا خیال ھی میں نے اپنے دل سے نکال دیا ھے۔

پرانے مصری دھرم میں موت کے دیوتا کو 'آوسیرس' کہا گیا ھے۔ ھندؤں میں اُسے یمراج کہتے ھیں۔ قرآن میں اللہ کے اُسی روپ کا نام اَلقابض ھے۔ جو روحیں بےگناہ اور پاک ھوتی ھیں اُنھیں بھی موت کے بعد اوسیرس نام سے پکارا جاتا ھے۔ پراچین مصر کی مشہور کتاب 'بک آف دی ڈیڈ' میں لکھا ھے :—

"اوسیرس کو جانے دو. تم دیکھ رھے ھو کہ وہ بےگناہ ھے...... وہ زمین پر سچائی سے رھا' اُس نے سچا ھی کھانا کھایا...... اِسیلئے ایشور نے اُس کا سواگت کیا......اُس نے اللہ کے بھوکوں کو کھانا کھلایا' اللہ کے پیاسوں کو پانی پلایا اور اللہ کے ننگوں کو کپڑا پہنایا."

'پاترے دانم' یعنی حقدار کو دان دینا' 'ان دانم' یعنی بھوکوں کو کھانا کھلانا' 'ودیا دانم' یعنی بےپڑھوں کو پڑھانا' اِن تینوں کاموں کی بھارت کے دھرم گرنتھوں میں بار بار تعریف کی گئی ھے اور یہ سب کے لئے فرض بتائے گئے ھیں۔

اللہ کے عشق یعنی بھکتی کا آنند لینا اور اپنے آپ کو ایشور کے آرپن کردینا ھی کافی نہیں ھے۔ جو آدمی خود آزاد ھوگیا ھو اُس کا یہ بھی فرض ھے کہ وہ اُن لوگوں کے لئے جو ابھی تک غلام ھیں یعنی طرح طرح کی دنیوی اِچھاؤں کی بیڑیوں میں جکڑے ھوئے ھیں اُن کے لئے خادم کی طرح کام کرے۔ اُسے اپنے رات دن کے کاموں میں اِس بات کو سمجھنا اور اِس پر عمل کرنا چاھئے کہ ساری مانو جاتی بلکہ سب جاندار ایک ھی بہت بڑی برادری ھیں جس کا کوئی انت نہیں۔ سچا گیان اور سچی بھکتی دونوں پتی پتنی کی طرح ھیں۔ پر یدی اِن دونوں سے اچھے کاموں یعنی نیک اعمال کے بچے پیدا نہ ھوں تو یہ دونوں نکمے اور بانجھ ھیں. دھارمک وشواس اور سائنسی عقل بنا نیک کاموں کے نکمے ھی نہیں برے ھیں۔ نیک کام ھی آدمی کے دھارمک وشواس کے گواہ ھوتے ھیں۔ آدمی کے دل کا عقیدہ وھی ھے جس کے انوسار وہ کام کرتا ھے. اصلی وشواس شبدوں سے ثابت نہیں ھوتا کاموں سے ثابت ھوتا ھے۔ وشواس کا ثبوت شہیدوں کا خون ھوتا ھے' وھی وشواس کا اصل بیج ھوتا ھے.

اِنجیل میں لکھا ھے :—

"تم اُنھیں اُن کے پھلوں یعنی کاموں سے پہچانو گے."

बचालूंगा, तू फ़िक्र मत कर, हे अर्जुन ! अच्छी तरह समझ ले कि मेरा भक्त कभी नष्ट नहीं होता."

"तू जो कुछ करे, जो कुछ खावे, जो कुछ आहुति दे, जो कुछ दान दे, जो कुछ तपस्या करे, ऐ अर्जुन ! सब मुझे अर्पण कर."

इन्जील में लिखा है :—

"ऐ वह सब लोगो जो थक गए हो और जिन के दिलों पर चिन्ताओं का बोझ है, मेरे पास आओ. मैं तुम्हें आराम पहुंचाऊंगा......पूरे दिल से ईश्वर से प्रेम करो......हम जियें तो ईश्वर के लिये और मरें तो ईश्वर के लिये, इसलिये हम चाहे जियें और चाहे मरें हम ईश्वर के हैं......तुम चाहे खाओ और चाहे पियो और चाहे कुछ भी काम करो, जो करो सब ईश्वर के लिये और उसी की शान के लिये करो."

हज़रत ईसा ने कहा है कि :—

"ऐ वह लोगो जिन पर मेरे पिता की बरकतें हैं, ईश्वर के राज के वारिस बनो......क्योंकि जब मैं भूका था तुम ने मुझे खाना दिया, जब मैं प्यासा था तुम ने मुझे पानी दिया......मैं नंगा था और तुमने मुझे कपड़े पहनाए." ( मत्ती की इन्जील )

चीन के मशहूर महात्मा लाओ-त्से ने लिखा है :—

"ताओ यानी धर्म का रास्ता यही है कि हम अपने लिये या अपने को सामने रखकर कोई काम न करें, हम जो काम करें उनमें नतीजों की चिन्ता न करें, खावें और सवाद की फ़िक्र न करें, छोटी चीज़ को बड़ी और बड़ी को छोटी समझें, और कोई हमें नुक़सान पहुंचावे तो उसका बदला नेकी से दे" ( लाओ-त्से-किंग )

पारसी धर्म की किताब गाथा में लिखा है :—

"ऐ मज़दा यानी ईश्वर ! ज़रतुश्त अपना तन और अपनी आत्मा तुझे अर्पण करता है......नेक काम करने वाला जो कुछ भी करता है, ऐ ईश्वर ! सब तेरे ही लिये करता है."

कबीर साहब ने इस हालत को "सहज समाधि" कहा है और इसे इन शब्दों मे बयान किया है :—

"जहं जहं डोलौं सो परिकरमा, जो कछु करौं सो सेवा
जब सोवौं तब करौं दन्डवत, पूजौं और न देवा
कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन खावौं पियौं सो पूजा
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं भाव मिटावौं दूजा."

यानी—मैं जहां जहां भी चलूं वही भगवान की परिक्रमा यानी तवाफ़ है, मैं जो कुछ भी करूं वही ईश्वर की सेवा यानी ख़िदमत है, मैं जब भी सोऊं मेरा सोना उसकी दंडवत यानी सिजदा है, मैं किसी और देवी देवता को नहीं पूजता.



بچا لوں گا' تو فکر مت کر' ھے آرجن ! اچھی طرح سمجھ لے کہ میرا بھگت کبھی نشٹ نہیں ھوتا ."

"تو جو کچھ کرے' جو کچھ کھاوے' جو کچھ آھوتی دے' جو کچھ دان دے' جو کچھ تپسیا کرے' اے آرجن ! سب مجھے آرپن کر ."

اِنجیل میں کہا ھے :—

"اے وہ سب لوگو جو تھک گئے ھو اور جن کے دلوں پر چنتاؤں کا بوجھ ھے' میرے پاس آؤ . میں تمھیں آرام پہونچاؤنگا . . . . پورے دل سے ایشور سے پریم کرو . . . . . ھم جئیں تو ایشور کے لئے اور مریں تو ایشور کے لئے' اِس لئے ھم چاھے جئیں اور چاھے مریں ھم ایشور کے ھیں. . . . . تم چاھے کھاؤ اور چاھے پیو اور چاھے کچھ بھی کام کرو جو کرو سب ایشور کے لئے اور اُسی کی شان کے لئے کرو ."

حضرت عیسیٰ نے کہا ھے کہ :—

"اَے وہ لوگو جن پر میرے پتا کی برکتیں ھیں' ایشور کے راج کے وارث بنو. . . . .کیونکہ جب میں بھوکا تھا تم نے مجھے کھانا دیا' جب میں پیاسا تھا تم نے مجھے پانی دیا. . . . .میں ننگا تھا اور تم نے مجھے کپڑے پہنائے ." ( متی کی اِنجیل )

چین کے مشہور مہاتما لاؤ - تسے نے لکھا ھے :—

"تاؤ یعنی دھرم کا راستہ یہی ھے کہ ھم اپنے لئے یا اپنے کو سامنے رکھ کر کوئی کام نہ کریں' ھم جو کام کریں اُن میں نتیجوں کی چنتا نہ کریں' کھاویں اور سواد کی فکر نہ کریں' چھوٹی چیز کو بڑی اور بڑی کو چھوٹی سمجھیں' اور کوئی ھمیں نقصان پہونچاوے تو اُس کا بدلا نیکی سے دیں ." ( لاؤتسے کنگ )

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا میں لکھا ھے :—

"اَے مزدہ یعنی ایشور ! زرتشت اپنا تن اور اپنی آتما تجھے ارپن کرتا ھے. . . . .نیک کام کرنے والا جو کچھ بھی کرتا ھے' اے ایشور ! سب تیرے ھی لئے کرتا ھے ."

کبیر صاحب نے اِس حالت کو "سہج سمادھی" کہا ھے اور اِسے اِن شبدوں میں بیان کیا ھے :—

"جہیں جہیں ڈولوں سو پریکرما جو کچھو کروں سو سیوا
جب سوؤں تب کروں دنڈوت پوجوں اور نہ دیوا
کہوں سو نام سنوں سو سمرن کھاؤں پیؤں سو پوجا
گرہ اُجاڑ ایک سم لیکھوں بھاؤ مٹاؤں دوجا."

یعنی—میں جہاں بھی جہاں چلوں وھی بھگوان کی پریکرما یعنی طواف ھے' میں جو کچھ بھی کروں وھی ایشور کی سیوا یعنی خدمت ھے' میں جب بھی سوؤں میرا سونا اس کی دنڈوت یعنی سجدہ ھے' میں کسی اور دیوی دیوتا کو نہیں پوجتا .

# "हज़ारों काबों से एक दिल बेहतर है"

### डाक्टर भगवानदास

इससे पहले के एक लेख में हम कह चुके हैं कि अलग अलग धर्मों की ख़ास ख़ास किताबों को अगर हम असल ज़बान में एक दूसरे से मिलाकर पढ़ें तो हमें उन सब के अन्दर एक ही से विचार और एक ही प्रीतम का प्यारा मुखड़ा दिखाई देगा. बुतपरस्ती आदमी की आत्मा पर बेड़ियों का काम करती है. पर बुत परस्ती से भी अधिक ख़तरनाक बेड़ियां वेद परस्ती, क़ुरआन-परस्ती और इंजील-परस्ती हैं. धर्म के मामले में मेरा तेरा और अहंकार यानी ख़ुदी वैसी ही बुरी और ख़तरनाक हैं जैसी हमारे आए दिन के बरताव में.

इस ख़ुदी से ऊपर उठने का एक तरीक़ा दुनिया के बड़े से बड़े महापुरुषों ने हमें यह बताया है कि हम सब काम उस रूहेकुल यानी परम-आत्मा के नाम पर उसी की राह में और उसी को अर्पण करके करें जो सब के अन्दर है. यह मानकर करें कि जो कुछ हम कर रहे हैं उसी की मरज़ी है, उसी की आज्ञा है. तब ही हज़रत ईसा का यह वाक्य—"ईश्वर! तेरी इच्छा पूरी हो, मेरी नहीं" धीरे धीरे हमारे जीवन का आवश्यक अंग बन सकता है. केवल इसी तरह हम अपनी आत्मा को उस परमआत्मा के साथ मिलाकर एक कर सकेंगे. और यह एकता हमारे प्रेम, हमारी इबादत और हमारे सब छोटे बड़े कामों में चमक उठेगी. तब ही हमारे अन्दर हक़ का जहूर होगा.

क़ुरआन में लिखा है कि:—

"ग़रीबों, यतीमों और क़ैदियों को केवल अल्लाह के लिये और उसी की मुहब्बत के नाम पर खाना दो. अपने लिये किसी तरह का इनाम या बदला न चाहो, शुक्रिये की भी इच्छा न करो."

और लिखा है कि:—

"मेरी सब दुआएं, मेरी क़ुरबानियां, मेरा जीवन और मेरी मौत सब उसी अल्लाह के लिये हैं जो सब दुनियाओं का मालिक है."

"हम पूरे दिल से उसी अल्लाह पर भरोसा करते हैं, वही हमारी सब से अच्छी पनाह, हमारा आश्रय है."

गीता में ईश्वर ने कहा है:—

"मुझमें अपने मन को लगा, मुझ से प्रेम कर, मेरे ही लिये क़ुरबानी कर, मुझे नमस्कार कर, मैं तुझे सब पापों से

# "ہزاروں کعبوں سے ایک دل بہتر ہے"

### ڈاکٹر بھگوان داس

اِس سے پہلے کے ایک لیکھ میں ہم کہہ چکے ہیں کہ الگ الگ دھرموں کی خاص خاص کتابوں کو اگر ہم اصل زبان میں ایک دوسرے سے ملاکر پڑھیں تو ہمیں اُن سب کے اندر ایک ہی سے وچار اور ایک ہی پریتم کا پیارا مکھڑا دکھائی دے گا۔ بت‌پرستی آدمی کی آتما پر بیڑیوں کا کام کرتی ہے۔ پر بت‌پرستی سے بھی ادھک خطرناک بیڑیاں وید پرستی، قرآن پرستی، اور اِنجیل پرستی ہیں۔ دھرم کے معاملے میں میرا تیرا اور اہنکار یعنی خودی ویسی ہی بری اور خطرناک ہیں جیسی ہمارے آئے دن کے برتاؤ میں۔

اِس خودی سے اُوپر اُٹھنے کا ایک طریقہ دنیا کے بڑے سے بڑے مہاپرشوں نے ہمیں یہ بتایا ہے کہ ہم سب کام اُس روح کل یعنی پرم آتما کے نام پر اُسی کی راہ میں اور اُسی کو اَرپن کرکے کریں جو سب کے اندر ہے۔ یہ مان کر کریں کہ جو کچھ ہم کر رہے ہیں اُسی کی مرضی ہے، اُسی کی آگیاں ہے۔ تب ہی حضرت عیسیٰ کا یہ واکیہ—"ایشور! تیری اچھا پوری ہو، میری نہیں" دھیرے دھیرے ہمارے جیون کا آوشیک اَنگ بن سکتا ہے۔ کیول اِسی طرح ہم اپنی آتما کو اُس پرم آتما کے ساتھ ملاکر ایک کرسکیں گے۔ اور یہ ایکتا ہمارے پریم، ہماری عبادت اور ہمارے سب چھوٹے بڑے کاموں میں چمک اُٹھے گی۔ تب ہی ہمارے اندر حق کا ظہور ہوگا۔

قرآن میں لکھا ہے کہ:—

"غریبوں، یتیموں اور قیدیوں کو کیول اللہ کے لئے اور اُسی کی محبت کے نام پر کھانا دو۔ اپنے لئے کسی طرح کا انعام یا بدلا نہ چاہو، شکریہ کی بھی اِچھا نہ کرو۔"

اور لکھا ہے کہ:—

"میری سب دعائیں، میری قربانیاں، میرا جیون اور میری موت سب اُسی اللہ کے لئے ہیں جو سب دنیاؤں کا مالک ہے۔"

"ہم پورے دل سے اُسی اللہ پر بھروسہ کرتے ہیں، وہی ہماری سب سے اچھی پناہ، ہمارا آشرے ہے۔"

گیتا میں ایشور نے کہا ہے:—

"مجھ میں اپنے من کو لگا، مجھ سے پریم کر، میرے ہی لئے قربانی کر، مجھے نمسکار کر، میں تجھے سب پاپوں سے

## मार्च 1955 مارچ

| क्या किस से | सफ़ा صفحہ |
|---|---|
| 1. हज़ारों काबों से एक दिल बेहतर है<br>—डाक्टर भगवानदास | 153 |
| 2. वेदान्त और तसव्वुफ़<br>—लेखक डाक्टर ताराचन्द;<br>—अनुवादक विश्वम्भरनाथ पांडे | 163 |
| 3. जज़िया : इतिहास और असलियत<br>—श्री हमीद हसन बी० ए० एल-एल० बी० | 173 |
| 4. इसलामी तामीरी कला के उसूल<br>—विश्वम्भरनाथ पांडे | 178 |
| 5. दिल्ली में चीनी कला की नुमाइश<br>—श्री मुजीब रिजवी | 183 |
| 6. आजकल की कुछ छोटी चीनी कहानियां<br>—अनुवादक श्री मुजीब रिजवी | 192 |
| 7. मुहम्मद साहब का जानवरों से प्रेम<br>—श्री मुजीब रिजवी | 196 |
| 8. हमारी राय—<br>घाटे के बजट--सत्यदेव विद्यालंकार; अमरीका और ऐटमी हथियार-मुजीब रिज़वी, रेलवे बजट पर एक नजर—सुरेश रामभाई. | 201 |

کیا کس سے

1. ہزاروں کعبوں سے ایک دل بہتر ہے
—ڈاکٹر بھگوان داس
2. ویدانت اور تصوف
—لیکھک ڈاکٹر تارا چند
—انووادک وشومبھر ناتھ پانڈے
3. جزیہ : اِتہاس اور اصلیت
—شری حمید حسن بی. اے. ایل.ایل. بی.
4. اِسلامی تعمیری کلا کے اُصول
—وشومبھر ناتھ پانڈے
5. دلی میں چینی کلا کی نمائش
—شری مجیب رضوی
6. آجکل کی کچھ چھوٹی چینی کہانیاں
—انووادک شری مجیب رضوی
7. محمد صاحب کا جانوروں سے پریم
شری مجیب رضوی
8. ہماری رائے—
گھاٹے کے بجٹ—ستیہ دیوودیالنکار؛ امریکہ اور ایٹمی ہتیار—مجیب رضوی؛ ریلوے بجٹ پر ایک نظر—سریش رام بھائی ۔




जिल्द 19 جلد    नम्बर 3 نمبر

# मार्च 1955 مارچ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद    145، مٹھی گنج، الہ آباد

NAYA HIND

*Monthly Journal of the Hindustani Culture Society*



Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

Can be had from

**Manager, NAYA HIND**

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

# नया हिन्द

# نیا ھند



## इस नम्बर के ख़ास लेख | اِس نمبر کے خاص لیکھ

"हज़ारों काबों से एक दिल बेहतर है" | "ہزاروں کعبوں سے ایک دل بہتر ھے"
—डाक्टर भगवानदास | —ڈاکٹر بھگوان داس

वेदान्त और तसव्वुफ़ | ویدانت اور تصوف
—विश्वम्भरनाथ पांडे | —وشومبھر ناتھ پانڈے

जज़िया : इतिहास और असलियत | جزیہ : اِتہاس اور اصلیت
—श्री हमीद हसन | —شری حمید حسن

आजकल की कुछ छोटी चीनी कहानियां | آجکل کی کچھ چھوٹی چینی کہانیاں
—अनुवाद—मुजीब रिज़वी | انوواد—مجیب رضوی

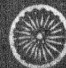
मोहम्मद साहब का जानवरों से प्रेम | محمد صاحب کا جانوروں سے پریم
—श्री मुजीब रिज़वी | —شری مجیب رضوی

इसके अलावा | اِسکے علاوہ

**कहानी, स्केच, समालोचना, हमारी राय आदि**

کہانی، اسکیچ، سمالوچنا، ہماری رائے آدی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद



ہندستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

मार्च 1955 مارچ

# हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ہمارے یہاں ملنےوالی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं. — نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

| | नाम किताब | लेखक | दाम | | | لیکھک | نام کتاب | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | शेर ओ शायरी | श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय | 8 | 0 | 0 | شری ایودھیا پرساد گوئیلی | شعر و شاعری | .1 |
| 2. | शेर ओ सुखन | ,, | 8 | 0 | 0 | ,, | شعر و سخن | .2 |
| 3. | गहरे पानी पैठ | ,, | 2 | 8 | 0 | ,, | گہرے پانی پیٹھ | .3 |
| 4. | हमारे आराध्य | श्री बनारसीदास चतुर्वेदी | 3 | 0 | 0 | شری بنارسی داس چترویدی | ہمارے آرادھیے | .4 |
| 5 | संस्मरण | ,, | 3 | 0 | 0 | ,, | سنس مرن | .5 |
| 6. | दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां | श्री जगदीशचन्द्र जैन | 3 | 0 | 0 | شری جگدیش چندر جین | دو ہزار ورش پرانی کہانیاں | .6 |
| 7. | ज्ञान गंगा | श्री नारायण साद जैन | 6 | 0 | 0 | شری نارائن پرساد جین | گیان گنگا | .7 |
| 8. | पथ चिन्ह | श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी | 2 | 0 | 0 | شری شانتی پریہ دویدی | پتھ چنہ | .8 |
| 9. | पंच प्रदीप | शान्ति एम. ए. | 2 | 0 | 0 | شانتی ایم . اے | پنچ پردیپ | .9 |
| 10. | आकाश के तारे धरती के फूल | श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर | 2 | 0 | 0 | شری کنھیالال مشر پربھاکر | آکاش کے تارے دھرتی کے پھول | .10 |
| 11. | मुक्ति दूत | श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम ए. | | 0 | 0 | شری ویریندر کمار جین ایم . اے | مکتی دوت | .11 |
| 12. | मिलन यामिनी | श्री बच्चन | 4 | 0 | 0 | شری بچن | ملن یامنی | .12 |
| 13. | रजत रश्मि | डाक्टर रामकुमार वर्मा | 2 | 8 | 0 | ڈاکٹر رام کمار ورما | رجت رشمی | .13 |
| 14. | मेरे बापू | श्री तन्मय बुखारिया | 2 | 8 | 0 | شری تنمے بخاریا | میرے باپو | .14 |
| 15. | विश्व संघ की ओर | पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला | 3 | 0 | 0 | پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا | وشو سنگھ کی اور | .15 |
| 16. | भारतीय अर्थशास्त्र | श्री भगवानदास केला | | 0 | 0 | شری بھگوان داس کیلا | بھارتیہ ارتھ شاستر | .16 |
| 17. | भारतीय शासन | ,, | 3 | 0 | 0 | ,, | بھارتیہ شاسن | .17 |
| 18. | नागरिक शास्त्र | ,, | 2 | 4 | 0 | ,, | ناگرک شاستر | .18 |
| 19. | साम्राज्य और उनका पतन | ,, | 2 | 8 | 0 | ,, | سامراج اور اُن کا پتن | .19 |
| 20. | भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन | ,, | 1 | 4 | 0 | ,, | بھارتیہ سوادھینتا آندولن | .20 |
| 21. | सर्वोदय अर्थ व्यवस्था | ,, | 1 | 8 | 0 | ,, | سرووَدے ارتھ ویوستھا | .21 |
| 22. | हमारी आदिम जातियां | श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय | 3 | 8 | 0 | شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے | ہماری آدم جاتیاں | .22 |
| 23. | अर्थशास्त्र शब्दावली | श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला | 2 | 0 | 0 | شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا | ارتھ شاستر شبداولی | .23 |
| 24. | नागरिक शिक्षा | भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे | 1 | 8 | 0 | شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے | ناگرک شکشا | .24 |
| 25. | राष्ट्र मंडल शासन | श्री दयाशंकर दुबे | 1 | 8 | 0 | دیا شنکر دوبے | راشٹر منڈل شاسن | .25 |
| 26. | जवानो | महात्मा भगवानदीन | 3 | 0 | 0 | مہاتما بھگوان دین | جوانو | .26 |
| 27. | मारने की हिम्मत ! | ,, | 1 | 0 | 0 | ,, | مارنے کی ہمت | .27 |
| 28. | सलौना सच | ,, | 0 | 8 | 0 | ,, | سلونا سچ | .28 |
| 29. | मेरे साथी | ,, | 1 | 0 | 0 | ,, | میرے ساتھی | .29 |

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
149, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ
منیجر 'نیا ہند'
149' مٹھی گنج' الہٰ آباد 3

के बाहर रहने की पूरी आज़ादी हो. इस विधान के मुताबिक़ विश्व राज्य के मातहत सिर्फ़ एक जल, स्थल और हवाई सेना होगी. मुख़्तलिफ़ देशों की भीतरी सुरक्षा के लिये पुलिस के छोटे छोटे दस्ते भी रहेंगे लेकिन उनके हथियार मामूली दरजे के होंगे. विश्व राज्य राजनैतिक इकाई के आदर्श पर चलेगा. जब तक हमारा मक़सद जंग को रोकना है तब तक यह बात मामूली है कि सेना की इकाई एक देश की है अथवा देशों के समूह की है, या विश्व व्यापी संघ की है. उसका ख़ास मक़सद संसार को भावी महायुद्ध से बचाना होगा.

सवाल उठ सकता है कि क्या इस सरकार के मनमाना करने का ख़तरा है ? हां, है लेकिन भावी युद्ध के ख़तरे के सामने इस ख़तरे की कोई क़ीमत नहीं है. ऐटम बम के ख़तरे के आगे विश्व सरकार की मनमानी का ख़तरा कोई बड़ा ख़तरा नहीं रहता. अगर समझौते से इस तरह की विश्व सरकार बन जाती है तो वह दुनिया के लिये बहुत ही फ़ायदेमन्द साबित होगी. वरना हर जंग से एक ख़ास मुल्क ताक़तवर बन जाता है और वह अपनी हैवानी ताक़त से दुनिया की एक बड़ी आबादी को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ चलने को मजबूर करता है. आज मानव समस्याओं को विश्व सरकार के ही ज़रिये हल किया जा सकता है. यह तसल्ली की बात है कि विचारवान लोग विश्व सरकार की योजना को मानव तरक़्क़ी का आला मक़सद मानते हैं.

बहुत से लोग विश्व सरकार के ऊपर उसकी अन्तर-राष्ट्रीय सैनिक इकाई के ऊपर इस नुक़्तेनज़र से एतराज़ कर सकते हैं कि भविश्य में उसके फ़ासिस्त बन जाने का ख़तरा है. बेशक यह ख़तरा है ही, लेकिन अगर इसमें ख़तरा है तो यह उस ख़तरे के सामने कुछ भी नहीं है जो अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता क़ायम रहने से पैदा होगा.

किन्तु विश्व राज्य की स्थापना तभी मुमकिन हो सकती है जब मुख़्तलिफ़ मुल्क अपना क़ौमी ग़ुरूर, अपने लोभ, अपने शक को जीत सकें. अगर दुनिया के मुल्क ऐसा करने में कामयाब नहीं होते तो मानव इतिहास में वैज्ञानिक युग का दौर बहुत छोटा समझा जायेगा और मानव को फिर से अपने आदिम युग के पुरखों के समान कन्द मूल फल खा कर गुफाओं में रहना पड़ेगा.

इस समय इनसान तरक़्क़ी और बरबादी के चौराहे पर खड़ा है. उसे दो में से एक रास्ता चुनना है—महान सुख का रास्ता या भयंकर सर्वनाश का रास्ता. यह उसके ऊपर है कि वह कौन सा रास्ता चुने !

—विश्वम्भरनाथ पांडे

---



کے باھر رھنے کی پوری آزادی ھو . اِس ودھان کے مطابق وشو راجیہ کے ماتحت صرف ایک جل، استھل اورھوائی سینا ھوگی . مختلف دیشوں کی بھیتری سورکشا کے لئے پولس کے چھوٹے چھوٹے دستے بھی رھینگے، لیکن اُن کے ھتیار معمولی درجے کے ھونگے . وشو راجیہ راجنیتک اِکائی کے آدرش پر چلے گا . جب تک ھمارا مقصد جنگ کو روکنا ھے تب تک یہ بات معمولی ھے کہ سینا کی اِکائی ایک دیش کی ھے، اتھوا دیشوں کے سموہ کی ھے یا وشو ویاپی سنگھ کی ھے . اُس کا خاص مقصد سنسار کو بھاوی مہا یدھ سے بچانا ھوگا .

سوال اُٹھ سکتا ھے کہ کیا اِس سرکار کے منمانا کرنے کا خطرہ ھے ؟ ھاں، ھے لیکن بھاوی یدھ کے خطرے کے سامنے اِس خطرے کی کوئی قیمت نہیں ھے . ایٹم بم کے خطرے کے آگے وشو سرکار کی منمانی کا خطرہ کوئی بڑا خطرہ نہیں رھتا . اگر سمجھوتے سے اس طرح کی وشو سرکار بن جاتی ھے تو وہ دنیا کے لئے بہت ھی فائدے مند ثابت ھوگی . ورنہ ھر جنگ سے ایک خاص ملک طاقتور بن جاتا ھے اور وہ اپنی حیوانی طاقت سے دنیا کی ایک بڑی آبادی کو اپنی مرضی کے مطابق چلنے کو مجبور کرتا ھے . آج مانو سمسیاؤں کو وشو سرکار کے ھی ذریعے حل کیا جا سکتا ھے . یہ تسلی کی بات ھے کہ وچاروان لوگ وشو سرکار کی یوجنا کو مانو ترقی کا اعلیٰ مقصد مانتے ھیں .

بہت سے لوگ وشو سرکار کے اوپر اور اُس کی انترراشٹریہ سینک اِکائی کے اوپر اِس نقطہ نظر سے اعتراض کر سکتے ھیں کہ بھوشیہ میں اُس کے فاسسٹ بن جانے کا خطرہ ھے . بیشک یہ خطرہ ھے ھی، لیکن اگر اِس میں خطرہ ھے تو یہ اُس خطرے کے سامنے کچھ بھی نہیں ھے جو انترراشٹریہ اراجکتا قائم رھنے سے پیدا ھوگا .

کنتو وشو راجیہ کی استھاپنا تبھی ممکن ھو سکتی ھے جب مختلف ملک اپنا قومی غرور، اپنے لوبھ، اپنے شک کو جیت سکیں . اگر دنیا کے ملک ایسا کرنے میں کامیاب نہیں ھوتے تو مانو اِتہاس میں ویگیانک یگ کا دور بہت چھوٹا سمجھا جائیگا اور مانو کو پھر سے اپنے آدم یگ کے پرکھوں کے سمان کند مول پھل کھا کر گپھاؤں میں رھنا پڑے گا .

اِس سمے اِنسان ترقی اور بربادی کے چوراھے پر کھڑا ھے . اُسے دو میں سے ایک راستہ چننا ھے—مہان سکھ کا راستہ یا بھینکر سروناش کا راستہ . یہ اُس کے اوپر ھے کہ وہ کون سا راستہ چنے !

—وشومبھر ناتھ پانڈے

की गई, लेकिन किसी संतोशजनक नतीजे पर नहीं पहुंचे. आज राजनिविज्ञयों के मुरझाये चेहरे इसे क़ुबूल कर रहे हैं कि जंग को रोकने के लिये अबतक कोई तरीक़ा नहीं निकाला जा सका. इनसानी भूलों और बेवक़ूफ़ियों का जो लम्बा लेखा जोखा उनके सामने है उसे देखते हुये वह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि तीसरी जंग होकर ही रहेगी. हां, यह दूसरी बात है कि वह कब हो. महान शक्तियों के बीच युद्ध रोकने की काग़ज़ी योजना तैयार कर देना बहुत आसान है. यह बड़े दुख की बात है कि दुनिया की राजनीति आज जिन लोगों के हाथों में है, वे मर जाना पसन्द करेंगे लेकिन अक़्ल के साथ जीना पसन्द नहीं करेंगे. विश्व शान्ति के रास्ते में आज सब से बड़ी रुकावट राष्ट्रीयता साबित हो रही है और इस रुकावट को ऐटम बम का ख़तरा भी ख़त्म नहीं कर पाया.

तीसरा महायुद्ध ऐटम बम को लेकर लड़ा जाता है तो संसार में जो कुछ भी क़ीमती है, वह सब बरबाद हो जायेगा. संगठित सरकारें भी सम्भवत: क़ायम न रह सकेंगी. वैज्ञानिक और वैज्ञानिकों की अनुसंधान शालाएं सब से पहले बरबाद की जायेंगी और अन्त में ऐटम बम बनाने वाला या किसी प्रकार का वैज्ञानिक युद्ध लड़ने वाला कोई इनसान जीवित न बच पायेगा. इस तीसरे महायुद्ध के बाद सम्भवत: कुछ सदियों तक हमें असभ्य, लेकिन मुक़ाबलेतन कहीं ज़्यादा शान्तिपूर्न ज़िन्दगी बिताने का मौक़ा मिले.

प्रोफ़ेसर अलबर्ट आइनस्टीन ने अपने एक बयान में हाल में कहा है : अगर ऐटम बम की लड़ाई हुई तो दुनिया के दो-तिहाई इनसान काल के गाल में चले जायेंगे. ऐसी हालत में एक ही तरीक़ा है जो दुनिया को सर्वनाश से बचा सकता है और वह है विश्व सरकार की स्थापना. संसार के सभी देशों को और ख़ासकर अमरीका, सोवियत यूनियन और इंगलैंड को अपनी सैनिक व्यवस्था और अस्त्र शस्त्र और अपनी सेनाएं इस विश्व राज्य के सुपुर्द कर देनी होंगी. जिन देशों के पास अणु बम बनाने का भेद है उन्हें यह भेद भी इस अखिल विश्व सरकार के हवाले कर देना होगा. सोवियत यूनियन, अमरीका और भारत के एक एक प्रतिनिधि लेकर एक विधान परिषद बनाई जा सकती है. भारत का प्रतिनिधि इसलिये ज़रूरी है कि भारत शान्ति का अखंड उपासक है. इन तीनों देशों के विचार धाराओं के समन्वय से ही विश्व सरकार का सर्वमान्य विधान बन सकता है. जब ये तीन बड़े देश क़ाबिल सहायकों की मदद से इस तरह विश्व सरकार का विधान बना लें तब इन छोटे छोटे मुल्कों को शामिल होने का न्योता दें. शामिल करने में उनके ऊपर किसी तरह का दबाव न डाला जाये. अगर वे न शामिल होना चाहें तब भी अपने को पूरी तरह सुरक्षित और हर सुविधा का अधिकारी समझें. उन्हें विश्व सरकार



کی گئی' لیکن کسی سنتوش جنک نتیجے پر نہیں پہونچے. آج راجنیتکیوں کے مرجھائے چہرے اِسے قبول کر رہے ہیں کہ جنگ کو روکنے کے لئے اب تک کوئی طریقہ نہیں نکالا جا سکا. اِنسانی بھولوں اور بیوقوفیوں کا جو لمبا لیکھا جوکھا اُن کے سامنے ہے اُسے دیکھتے ہوئے وے نشچت روپ سے کہہ سکتے ہیں کہ تیسری جنگ ہو کر ہی رہے گی. ہاں' یہ دوسری بات ہے کہ وہ کب ہو. مہان شکتیوں کے بیچ یدھ روکنے کی کاغذی یوجنا تیار کر دینا بہت آسان ہے. یہ بڑے دکھ کی بات ہے کہ دنیا کی راجنیتی آج جن لوگوں کے ہاتھوں میں ہے' وے مر جانا پسند کرینگے لیکن عقل کے ساتھ جینا پسند نہیں کرینگے. وشو شانتی کے راستے میں آج سب سے بڑی رکاوٹ راشٹریتا ثابت ہو رہی ہے اور اِس رکاوٹ کو ایٹم بم کا خطرہ بھی ختم نہیں کر پایا.

تیسرا مہایدھ ایٹم بم کو لے کر لڑا جاتا ہے تو سنسار میں جو کچھ بھی قیمتی ہے' وہ سب برباد ہو جائے گا. سنگٹھت سرکاریں بھی سمبھوتہ قائم نہ رہ سکینگی. ویگیانک اور ویگیانکوں کی انوسندھان شالائیں سب سے پہلے برباد کی جائینگی اور انت میں ایٹم بم بنانے والا یا کسی پرکار کا ویگیانک یدھ لڑنے والا کوئی اِنسان جیوت نہ بچ پائے گا. اِس تیسرے مہایدھ کے بعد سمبھوتہ کچھ صدیوں تک ہمیں اسبھیہ' لیکن مقابلےتن کہیں زیادہ شانتی پورن زندگی بتانے کا موقعہ ملے.

پروفیسر البرٹ آئن اسٹین نے اپنے ایک بیان میں حال میں کہا ہے : اگر ایٹم بم کی لڑائی ہوئی تو دنیا کے دو-تہائی اِنسان کال کے گال میں چلے جائینگے. ایسی حالت میں ایک ہی طریقہ ہے جو دنیا کو سروناش سے بچا سکتا ہے اور وہ ہے وشو سرکار کی استھاپنا. سنسار کے سبھی دیشوں کو اور خاص کر امریکہ' سوویت یونین اور اِنگلینڈ کو اپنی سینک ویوستھا اور استر شستر اور اپنی سینائیں اِس وشو راجیہ کے سپرد کر دینی ہونگی. جن دیشوں کے پاس انو بم بنانے کا بھید ہے اُنہیں یہ بھید بھی اِس اکھل وشو سرکار کے حوالے کر دینا ہوگا. سوویت یونین' امریکہ اور بھارت کے ایک ایک پرتیندھی لے کر ایک ودھان پریشد بنائی جا سکتی ہے. بھارت کا پرتیندھی اِس لئے ضروری ہے کہ بھارت شانتی کا اکھنڈ اُپاسک ہے. اِن تینوں دیشوں کے وچار دھاراؤں کے سمنوے سے ہی وشو سرکار کا سرو مانیہ ودھان بن سکتا ہے. جب یہ تین بڑے دیش قابل سہائکوں کی مدد سے اِس طرح وشو سرکار کا ودھان بنا لیں تب اِن چھوٹے چھوٹے ملکوں کو شامل ہونے کا نیوتا دیں. شامل کرنے میں اُن کے اوپر کسی طرح کا دباؤ نہ ڈالا جائے. اگر وہ نہ شامل ہونا چاہیں تب بھی اپنے کو پوری طرح سورکشت اور ہر سویدھا کا ادھیکاری سمجھیں. اُنہیں وشو سرکار

के बाहर रहने की पूरी आज़ादी हो. इस विधान के मुताबिक़ विश्व राज्य के मातहत सिर्फ़ एक जल, स्थल और हवाई सेना होगी. मुख़्तलिफ़ देशों की भीतरी सुरक्षा के लिये पुलिस के छोटे छोटे दस्ते भी रहेंगे लेकिन उनके हथियार मामूली दरजे के होंगे. विश्व राज्य राजनैतिक इकाई के आदर्श पर चलेगा. जब तक हमारा मक़सद जंग को रोकना है तब तक यह बात मामूली है कि सेना की इकाई एक देश की है अथवा देशों के समूह की है, या विश्व व्यापी संघ की है. उसका ख़ास मक़सद संसार को भावी महायुद्ध से बचाना होगा.

सवाल उठ सकता है कि क्या इस सरकार के मनमाना करने का ख़तरा है ? हां, है लेकिन भावी युद्ध के ख़तरे के सामने इस ख़तरे की कोई क़ीमत नहीं है. ऐटम बम के ख़तरे के आगे विश्व सरकार की मनमानी का ख़तरा कोई बड़ा ख़तरा नहीं रहता. अगर समझौते से इस तरह की विश्व सरकार बन जाती है तो वह दुनिया के लिये बहुत ही फ़ायदेमन्द साबित होगी. वरना हर जंग से एक ख़ास मुल्क ताक़तवर बन जाता है और वह अपनी हैवानी ताक़त से दुनिया की एक बड़ी आबादी को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ चलने को मजबूर करता है. आज मानव समस्याओं को विश्व सरकार के ही ज़रिये हल किया जा सकता है. यह तसल्ली की बात है कि विचारवान लोग विश्व सरकार की योजना को मानव तरक़्क़ी का आला मक़सद मानते हैं.

बहुत से लोग विश्व सरकार के ऊपर उसकी अन्तर-राष्ट्रीय सैनिक इकाई के ऊपर इस नुक़्तेनज़र से एतराज़ कर सकते हैं कि भविश्य में उसके फ़ासिस्त बन जाने का ख़तरा है. बेशक यह ख़तरा है ही, लेकिन अगर इसमें ख़तरा है तो यह उस ख़तरे के सामने कुछ भी नहीं है जो अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता क़ायम रहने से पैदा होगा.

किन्तु विश्व राज्य की स्थापना तभी मुमकिन हो सकती है जब मुख़्तलिफ़ मुल्क अपना क़ौमी ग़ुरूर, अपने लोभ, अपने शक को जीत सकें. अगर दुनिया के मुल्क ऐसा करने में कामयाब नहीं होते तो मानव इतिहास में वैज्ञानिक युग का दौर बहुत छोटा समझा जायेगा और मानव को फिर से अपने आदिम युग के पुरखों के समान कन्द मूल फल खा कर गुफाओं में रहना पड़ेगा.

इस समय इनसान तरक़्क़ी और बरबादी के चौराहे पर खड़ा है. उसे दो में से एक रास्ता चुनना है—महान सुख का रास्ता या भयंकर सर्वनाश का रास्ता. यह उसके ऊपर है कि वह कौन सा रास्ता चुने !

—विश्वम्भरनाथ पांडे

---



کے باھر رھنے کی پوری آزادی ھو . اِس ودھان کے مطابق وشو راجیہ کے ماتحت صرف ایک جل، استھل اورھوائی سینا ھوگی . مختلف دیشوں کی بھیتری سورکشا کے لئے پولس کے چھوٹے چھوٹے دستے بھی رھینگے، لیکن اُن کے ھتیار معمولی درجے کے ھونگے . وشو راجیہ راجنیتک اِکائی کے آدرش پر چلے گا . جب تک ھمارا مقصد جنگ کو روکنا ھے تب تک یہ بات معمولی ھے کہ سینا کی اِکائی ایک دیش کی ھے، اتھوا دیشوں کے سموہ کی ھے یا وشو ویاپی سنگھ کی ھے . اُس کا خاص مقصد سنسار کو بھاوی مہا یدھ سے بچانا ھوگا .

سوال اُٹھ سکتا ھے کہ کیا اِس سرکار کے منمانا کرنے کا خطرہ ھے ؟ ھاں، ھے لیکن بھاوی یدھ کے خطرے کے سامنے اِس خطرے کی کوئی قیمت نہیں ھے . ایٹم بم کے خطرے کے آگے وشو سرکار کی منمانی کا خطرہ کوئی بڑا خطرہ نہیں رھتا . اگر سمجھوتے سے اُس طرح کی وشو سرکار بن جاتی ھے تو وہ دنیا کے لئے بہت ھی فائدے مند ثابت ھوگی . ورنہ ھر جنگ سے ایک خاص ملک طاقتور بن جاتا ھے اور وہ اپنی حیوانی طاقت سے دنیا کی ایک بڑی آبادی کو اپنی مرضی کے مطابق چلنے کو مجبور کرتا ھے . آج مانو سمسیاؤں کو وشو سرکار کے ھی ذریعے حل کیا جا سکتا ھے . یہ تسلی کی بات ھے کہ وچاروان لوگ وشو سرکار کی یوجنا کو مانو ترقی کا اعلیٰ مقصد مانتے ھیں .

بہت سے لوگ وشو سرکار کے اوپر اور اُس کی انترراشٹریہ سینک اِکائی کے اوپر اِس نقطہ نظر سے اعتراض کر سکتے ھیں کہ بھوشیہ میں اُس کے فاسسٹ بن جانے کا خطرہ ھے . بیشک یہ خطرہ ھے ھی، لیکن اگر اِس میں خطرہ ھے تو یہ اُس خطرے کے سامنے کچھ بھی نہیں ھے جو انترراشٹریہ آراجکتا قائم رھنے سے پیدا ھوگا .

کنتو وشو راجیہ کی استھاپنا تبھی ممکن ھو سکتی ھے جب مختلف ملک اپنا قومی غرور، اپنے لوبھ، اپنے شک کو جیت سکیں . اگر دنیا کے ملک ایسا کرنے میں کامیاب نہیں ھوتے تو مانو اتہاس میں ویگیانک یگ کا دور بہت چھوٹا سمجھا جائیگا اور مانو کو پھر سے اپنے آدم یگ کے پرکھوں کے سمان کند مول پھل کھا کر گپھاؤں میں رھنا پڑے گا .

اِس سمے اِنسان ترقی اور بربادی کے چوراھے پر کھڑا ھے . اُسے دو میں سے ایک راستہ چننا ھے—مہان سکھ کا راستہ یا بھینکر سروناش کا راستہ . یہ اُس کے اوپر ھے کہ وہ کون سا راستہ چنے !

—وشومبھرناتھ پانڈے

की गई, लेकिन किसी संतोशजनक नतीजे पर नहीं पहुंचे. आज राजनितिज्ञयों के मुरझाये चेहरे इसे क़बूल कर रहे हैं कि जंग को रोकने के लिये अबतक कोई तरीक़ा नहीं निकाला जा सका. इनसानी भूलों और बेवक़ूफ़ियों का जो लम्बा लेखा जोखा उनके सामने है उसे देखते हुये वह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि तीसरी जंग होकर ही रहेगी. हां, यह दूसरी बात है कि वह कब हो. महान शक्तियों के बीच युद्ध रोकने की काग़ज़ी योजना तैयार कर देना बहुत आसान है. यह बड़े दुख की बात है कि दुनिया की राजनीति आज जिन लोगों के हाथों में है, वे मर जाना पसन्द करेंगे लेकिन अक़्ल के साथ जीना पसन्द नहीं करेंगे. विश्व शान्ति के रास्ते में आज सब से बड़ी रुकावट राष्ट्रीयता साबित हो रही है और इस रुकावट को ऐटम बम का ख़तरा भी ख़त्म नहीं कर पाया.

तीसरा महायुद्ध ऐटम बम को लेकर लड़ा जाता है तो संसार में जो कुछ भी क़ीमती है, वह सब बरबाद हो जायेगा. संगठित सरकारें भी सम्भवत: क़ायम न रह सकेंगी. वैज्ञानिक और वैज्ञानिकों की अनुसंधान शालाएं सब से पहले बरबाद की जायेंगी और अन्त में ऐटम बम बनाने वाला या किसी प्रकार का वैज्ञानिक युद्ध लड़ने वाला कोई इनसान जीवित न बच पायेगा. इस तीसरे महायुद्ध के बाद सम्भवत: कुछ सदियों तक हमें असभ्य, लेकिन मुक़ाबलेतन कहीं ज्यादा शान्तिपूर्न ज़िन्दगी बिताने का मौक़ा मिले.

प्रोफ़ेसर अलबर्ट आइनस्टीन ने अपने एक बयान में हाल में कहा है : अगर ऐटम बम की लड़ाई हुई तो दुनिया के दो-तिहाई इनसान काल के गाल में चले जायेंगे. ऐसी हालत में एक ही तरीक़ा है जो दुनिया को सर्वनाश से बचा सकता है और वह है विश्व सरकार की स्थापना. संसार के सभी देशों को और ख़ासकर अमरीका, सोवियत यूनियन और इंगलैंड को अपनी सैनिक व्यवस्था और अस्त्र शस्त्र और अपनी सेनाएं इस विश्व राज्य के सुपुर्द कर देनी होंगी. जिन देशों के पास अणु बम बनाने का भेद है उन्हें यह भेद भी इस अखिल विश्व सरकार के हवाले कर देना होगा. सोवियत यूनियन, अमरीका और भारत के एक एक प्रतिनिधि लेकर एक विधान परिषद बनाई जा सकती है. भारत का प्रतिनिधि इसलिये जरूरी है कि भारत शान्ति का अखंड उपासक है. इन तीनों देशों के विचार धाराओं के समन्वय से ही विश्व सरकार का सर्वमान्य विधान बन सकता है. जब ये तीन बड़े देश क़ाबिल सहायकों की मदद से इस तरह विश्व सरकार का विधान बना लें तब इन छोटे छोटे मुल्कों को शामिल होने का न्योता दें. शामिल करने में उनके ऊपर किसी तरह का दबाव न डाला जाये. अगर वे न शामिल होना चाहें तब भी अपने को पूरी तरह सुरक्षित और हर सुविधा का अधिकारी समझें. उन्हें विश्व सरकार



کی گئی، لیکن کسی سنتوش جنک نتیجے پر نہیں پہونچے. آج راجنیتگیوں کے مرجھائے چہرے اسے قبول کر رہے ہیں کہ جنگ کو روکنے کے لئے اب تک کوئی طریقہ نہیں نکالا جا سکا. اِنسانی بھولوں اور بیوقوفیوں کا جو لمبا لیکھا جوکھا اُن کے سامنے ہے اُسے دیکھتے ہوئے وے نشچت روپ سے کہہ سکتے ہیں کہ تیسری جنگ ہو کر ہی رہے گی. ہاں، یہ دوسری بات ہے کہ وہ کب ہو. مہان شکتیوں کے بیچ یدھ روکنے کی کاغذی یوجنا تیار کر دینا بہت آسان ہے. یہ بڑے دکھ کی بات ہے کہ دنیا کی راجنیتی آج جن لوگوں کے ہاتھوں میں ہے، وے مر جانا پسند کرینگے لیکن عقل کے ساتھ جینا پسند نہیں کرینگے. وشو شانتی کے راستے میں آج سب سے بڑی رکاوٹ راشٹریتا ثابت ہو رہی ہے اور اِس رکاوٹ کو ایٹم بم کا خطرہ بھی ختم نہیں کر پایا.

تیسرا مہایدھ ایٹم بم کو لے کر لڑا جاتا ہے تو سنسار میں جو کچھ بھی قیمتی ہے، وہ سب برباد ہو جائے گا. سنگٹھت سرکاریں بھی سمبھوتہ قائم نہ رہ سکینگی. ویگیانک اور ویگیانکوں کی انوسندھان شالائیں سب سے پہلے برباد کی جائینگی اور انت میں ایٹم بم بنانے والا یا کسی پرکار کا ویگیانک یدھ لڑنے والا کوئی اِنسان جیوت نہ بچ پائے گا. اِس تیسرے مہایدھ کے بعد سمبھوتہ کچھ صدیوں تک ہمیں اسبھیہ، لیکن مقابلےتن کہیں زیادہ شانتی پورن زندگی بتانے کا موقعہ ملے.

پروفیسر البرٹ آئن اسٹین نے اپنے ایک بیان میں حال میں کہا ہے : اگر ایٹم بم کی لڑائی ہوئی تو دنیا کے دو-تہائی اِنسان کال کے گال میں چلے جائینگے. ایسی حالت میں ایک ہی طریقہ ہے جو دنیا کو سروناش سے بچا سکتا ہے اور وہ ہے وشو سرکار کی استھاپنا. سنسار کے سبھی دیشوں کو اور خاص کر امریکہ، سوویت یونین اور اِنگلینڈ کو اپنی سینک ویوستھا اور استر شستر اور اپنی سینائیں اِس وشو راجیہ کے سپرد کر دینی ہونگی. جن دیشوں کے پاس انو بم بنانے کا بھید ہے اُنہیں یہ بھید بھی اِس اکھل وشو سرکار کے حوالے کر دینا ہوگا. سوویت یونین، امریکہ اور بھارت کے ایک ایک پرتیندھی لے کر ایک ودھان پریشد بنائی جا سکتی ہے. بھارت کا پرتیندھی اِس لئے ضروری ہے کہ بھارت شانتی کا اکھنڈ اُپاسک ہے. اِن تینوں دیشوں کے وچار دھاراؤں کے سمنوے سے ہی وشو سرکار کا سرو مانیہ ودھان بن سکتا ہے. جب یہ تین بڑے دیش قابل سہائکوں کی مدد سے اِس طرح وشو سرکار کا ودھان بنا لیں تب اِن چھوٹے چھوٹے ملکوں کو شامل ہونے کا نیوتا دیں. شامل کرنے میں اُن کے اُوپر کسی طرح کا دباؤ نہ ڈالا جائے. اگر وہ نہ شامل ہونا چاہیں تب بھی اپنے کو پوری طرح سورکشت اور ہر سویدھا کا ادھیکاری سمجھیں. اُنہیں وشو سرکار

आज हर मुल्क के विचारवान व्यक्ति तीसरी जंग के भयंकर नतीजों से पूरी तरह वाक़िफ़ हो चुके हैं. ऐटम और हाइड्रोजन बम क़यामत की शक्ल में सारी दुनिया की ओर देख रहे हैं लेकिन दुनिया को इससे बचाने के लिये जितने शीघ्र हमें अपने राजनैतिक ढांचे में तब्दीली करना चाहिये उतने शीघ्र हम वह तब्दीली नहीं कर रहे हैं. इस सम्बन्ध में आज तरह तरह के सुझाव लोगों के सामने पेश किये जा रहे हैं. कुछ लोग यह कहते हैं कि एक इस तरह का समझौता होना चाहिये कि जिन देशों के पास ऐटम और हाइड्रोजन बम हैं वे युद्ध के समय उनका इस्तेमाल न करें लेकिन क्या यह मुमकिन है ! क्या अमरीका ने नाटो ताक़तों को ऐटम बम नहीं दे दिया है ? जिस समय महायुद्ध शुरू होगा इन बमों को इस्तेमाल करने का लालच लोग रोक न सकेंगे. एक दूसरा सुझाव है कि इन बमों को अधिक से अधिक भयंकर बनाने के बारे में जो वैज्ञानिक छानबीन जारी है उन्हें रोक दिया जाय लेकिन क्या यह मुमकिन है ? यह एक निश्चित सत्य है कि हिरोशिमा और नागासाकी के ऊपर जो ऐटम बम फेंके गये थे उनसे पच्चीस हज़ार गुना ज़्यादा ख़तरनाक बम बनाये जा चुके हैं और कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय समझौता इन भयंकर बमों की तैयारी को नहीं रोक सकता.

कुछ लोगों को यह उम्मीद है कि भविष्य में युद्ध को इसलिये रोका जा सकेगा कि लोगों का ख़्याल है कि इन बमों से संसार की तहज़ीब और कल्चर का नाश हो जायगा. लेकिन हमारा पिछला तजरुबा हम में कोई ऐसी उम्मीद पैदा नहीं करता. बारूद की ईजाद से लेकर ऐटम बम की ईजाद तक जब जब भी नये नये ख़ौफ़नाक अस्त्र शस्त्र बने कुछ न कुछ नासमझ आदमियों ने इसलिये उनका स्वागत किया कि इससे युद्ध की सम्भावना कम हो जायगी, लेकिन क्या कभी इन भोले आदमियों की उम्मीद सच साबित हुई ? इस के विपरीत युद्ध में अधिक से अधिक भयंकरता ही आती गई.

कुछ लोगों की राय है कि युद्ध को रोकने की सिर्फ़ एक ही तरकीब हो सकती है और वह यह कि कोई एक दल बेहद ताक़तवर हो जाये.लेकिन क्या यह ऐटम बम के ज़माने में मुमकिन है ? अभी कुछ दिन पहले अमरीका को इस बात का दावा था कि उसके पास हाइड्रोजन बमों का एक ज़ख़ीरा है लेकिन अभी सुप्रीम सोवियत पार्लिमेन्ट में फ़ारेन मिनिस्टर मोलोतोव ने ऐलान किया कि रूस के पास अमरीका के मुक़ाबले में हाइड्रोजन बम का कहीं बड़ा ज़ख़ीरा है.

दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद यू. एन. ओ. ने जंग को रोकने की काफ़ी कोशिशें की हैं. कई बार विदेश मन्त्रियों का सम्मेलन किया गया, स्थाई समझौतों पर बहस



آج ہر ملک کے وچاروان ویکتی تیسری جنگ کے بھینکر نتیجوں سے پوری طرح واقف ہوچکے ہیں ۔ ایٹم اور هائڈروجن بم قیامت کی شکل میں ساری دنیا کی اور دیکھ رہے ہیں لیکن دنیا کو اِس سے بچانے کے لئے جتنے شیگھر ہمیں اپنے راجنیتک ڈھانچے میں تبدیلی کرنا چاہئے اُتنے شیگھر ہم وہ تبدیلی نہیں کر رہے ہیں ۔ اِس سمبندھ میں آج طرح طرح کے سجھاؤ لوگوں کے سامنے پیش کئے جا رہے ہیں ۔ کچھ لوگ یہ کہتے ہیں کہ اِس طرح کا ایک سمجھوتہ ہونا چاہئے کہ جن دیشوں کے پاس ایٹم اور هائڈروجن بم ہیں وے یدھ کے سمے اُن کا استعمال نہ کریں لیکن کیا یہ ممکن ہے ؟ کیا امریکہ نے ناٹو طاقتوں کا ایٹم بم نہیں دے دیا ہے ؟ جس سمے مہایدھ شروع ہوگا اِن بموں کا استعمال کرنے کا لالچ لوگ روک نہ سکیں گے ۔ ایک دوسرا سجھاؤ ہے کہ اِن بموں کو ادھک بھینکر بنانے کے بارے میں جو ویگیانک چھان بین جاری ہے اُنہیں روک دیا جائے ۔ لیکن کیا یہ ممکن ہے ؟ یہ ایک نشچے ستیہ ہے کہ ہیروشما اور ناگا ساکی کے اُوپر جو ایٹم بم پھینکے گئے تھے اُن سے پچیس ہزار گنا زیادہ خطرناک بم بنائے جا چکے ہیں اور کوئی بھی اَنتر راشٹریہ سمجھوتہ اِن بھینکر بموں کی تیاری کو نہیں روک سکتا ۔

کچھ لوگوں کو یہ اُمید ہے کہ بھوشیہ میں یدھ کو اِس لئے روکا جا سکیگا کہ لوگوں کا خیال ہے کہ اِن بموں سے سنسار کی تہذیب اور کلچر کا ناش ہو جائیگا ۔ لیکن ہمارا پچھلا تجربہ ہم میں ایسی اُمید پیدا نہیں کرتا ۔ بارود کی اِیجاد سے لیکر ایٹم بم کی اِیجاد تک جب بھی نئے نئے خوفناک استر شستر بنے کچھ نہ کچھ ناسمجھ آدمیوں نے اِس لئے اُن کا سواگت کیا کہ اِس سے یدھ کی سمبھاونا کم ہو جائیگی‘ لیکن کیا کبھی اِن بھولے آدمیوں کی اُمید سچ ثابت ہوئی ؟ اِس کے وپریت یدھ میں ادھک سے ادھک بھینکرتا ہی آتی گئی ۔

کچھ لوگوں کی رائے ہے کہ یدھ کو روکنے کی صرف ایک ہی ترکیب ہو سکتی ہے اور وہ یہ کہ کوئی ایک دل بےحد طاقتور ہو جائے ۔ لیکن کیا یہ ایٹم بم کے زمانے میں ممکن ہے ؟ ابھی کچھ دن پہلے امریکہ کو اِس بات کا دعویٰ تھا کہ اُس کے پاس هائڈروجن بموں کا ایک ذخیرہ ہے‘ لیکن ابھی سوپریم سوویت پارلیمینٹ میں فارین منسٹر مولوتوو نے اعلان کیا کہ روس کے پاس امریکہ کے مقابلے میں هائڈروجن بم کا کہیں بڑا ذخیرہ ہے ۔

دوسرے مہایدھ کی سماپتی کے بعد یو. این. او. نے جنگ کو روکنے کی کافی کوششیں کی ہیں ۔ کئی بار ودیش منتریوں کا سمیلن کیا ۔ استھائی سمجھوتوں پر بحث

देने वालों के लिये अथवा हजारों बेगुनाह नागरिकों के वध करने वालों के लिये कोई सज़ा नहीं है. विचार जगत में इस झूठे दर्शन सिद्धान्त को हमें पराजित करना है. इतिहास के दौर में नात्सीवाद या फ़ासिस्तवाद कोई यकबयक घटना नहीं है. यदि ऐसा होता तो, हिटलर, मुसोलनी और तोजो की मौत पर हम शान्तिमय जीवन की आशा कर सकते थे. सचाई यह है कि जब तक दुनिया में जंग को मज़हबी फ़र्ज़ समझा जायगा, तब तक शान्ति का क़ायम होना मुमकिन नहीं दिखाई देता.

दूसरी जंग के ख़त्म होते ही, दूरन्देशों ने तीसरी लड़ाई की आवाजें सुननी शुरू कर दी थीं. पहले यह आवाज हल्की थी, फिर धीरे धीरे इसकी तेज़ी से आसमान गूंज उठा और घने काले बादलों की छाया बढ़ती जा रही है. आज दुनिया का हर शख्स अपने दिल में यह सोचता है कि क्या सचमुच तीसरी लड़ाई के नगाड़े बजने वाले हैं. यू. एन. ओ. के ऊपर अब भी सारी दुनिया को कुछ न कुछ आशा बंधी हुई है. इसीलिये भारत जैसे देश जो उससे निराश हो चुके हैं, फिर भी उसका पल्ला थामे हुये हैं. डूबती हुई दुनिया के लिये तिनका भी एक सहारा बन सकता है. यह भी आशा लगी है कि संसार के देशों के बीच में एशिया और अफ्रीक़ा के देशों को एक बाइज़्ज़त जगह मिलेगी और दुनिया से साम्राज्यवाद का ख़ात्मा होगा और साम्राज्यवाद के मिटते ही लड़ाई का लालच भी मिट जायगा. लेकिन जैसी हालत इस समय है और जिस तरह बड़ी ताक़तें अपनी सैनिक तैयारियां कर रही हैं और जिस ढर्रे पर चल रही है और जिस तरह वहां युद्ध देवता की पूजा हो रही है उससे एक ही नतीजा समझ में आता है कि तीसरा महायुद्ध भी कुछ समय के लिये टल सकता है, लेकिन देर सवेर तीसरे महायुद्ध के बादल बिना बरसे छटेंगे नहीं.

इस विचारधारा के लोगों का कहना है कि दुनिया को स्थायी शान्ति की स्थापना को दृष्टि में रखते हुये यह ऐलान करना ही पड़ेगा, कि जंग एक हैवानी और जालिमाना वहशत है. आसमान के सातों परदों पर उसका इतिहास ख़ून और आग से लिखा गया है. मानव सभ्यता के लिये एक अपमान है. जंग का मतलब घायलों की कराहें, बमबाजी से घायल मासूम औरतों और बच्चों की चीखें और बरसों के बाद जंग के ख़ात्मे पर हजारों सैनिकों और उड़ाकों का अंधे, लूले, लंगड़े और फेफड़ों से ख़ून थूकते हुये, पागलख़ानों की दीवारों से सर टकराते हुये दिखाई देना. आज मासूम इन्सानियत की आत्मा को साम्राज्यवादी राजनीतिज्ञों के बन्धन से छूटकर इस बात का ऐलान करना होगा कि दुनिया के सब जुर्मों में युद्ध एक सबसे ख़ौफ़नाक जुर्म है.



دینے والوں کے لئے اتھوا ہزاروں بے گناہ ناگرکوں کے ودھ کرنے والوں کے لئے کوئی سزا نہیں ہے۔ وچار جگت میں اِس جھوٹے درشن سدھانت کو ہمیں پراجت کرنا ہے۔ اِتیہاس کے دور میں نات سیواد یا فاسستواد کوئی یک بیک گھٹنا نہیں ہے۔ یدی ایسا ہوتا تو، ہٹلر، مسولنی اور توجو کی موت پر ہم شانتی مے جیون کی آشا کرسکتے تھے۔ سچائی یہ ہے کہ جب تک دنیا میں جنگ کو مذہبی فرض سمجھا جائیگا، تب تک شانتی کا قائم ہونا ممکن نہیں دکھائی دیتا۔

دوسری جنگ کے ختم ہوتے ہی، دور اندیشوں نے تیسری لڑائی کی آوازیں سننی شروع کردی تھیں۔ پہلے یہ آواز ہلکی تھی، پھر دھیرے دھیرے اِس کی تیزی سے آسمان گونج اُٹھا اور گھنے کالے بادلوں کی چھایا بڑھتی جا رہی ہے۔ آج دنیا کا ہر شخص اپنے دل میں یہ سوچتا ہے کی کیا سچ مچ تیسری لڑائی کے نگاڑے بجنے والے ہیں۔ یو۔ این۔ او۔ کے اوپر اب بھی ساری دنیا کو کچھ نہ کچھ آشا بندھی ہوئی ہے۔ اِسی لئے بھارت جیسے دیش جو اُس سے نراش ہوچکے ہیں، پھر بھی اُس کا پلہ تھامے ہوئے ہیں۔ ڈوبتی ہوئی دنیا کے لئے تنکا بھی ایک سہارا بن سکتا ہے۔ یہ بھی آشا لگی ہے کہ سنسار کے دیشوں کے بیچ میں ایشیا اور افریقہ کے دیشوں کو ایک باعزت جگہ ملیگی اور دنیا سے سامراجیہواد کا خاتمہ ہوگا اور سامراجیہواد کے مٹتے ہی لڑائی کا لالچ بھی مٹ جائیگا۔ لیکن جیسی حالت اِس سمے ہے اور جس طرح بڑی طاقتیں اپنی سینک تیاریاں کر رہی ہے اور جس ڈھرے پر چل رہی ہیں اور جس طرح وہاں یدھ دیوتا کی پوجا ہو رہی ہے اُس سے ایک ہی نتیجہ سمجھ میں آتا ہے کہ تیسرا مہایدھ بھی کچھ سمے کے لئے ٹل سکتا ہے، لیکن دیر سویر تیسرے مہایدھ کے بادل بنا برسے چھٹینگے نہیں۔

اِس وچار دھارا کے لوگوں کا کہنا ہے کہ دنیا کو استھائی شانتی کی استھاپنا کو درشٹی میں رکھتے ہوئے یہ اعلان کرنا ہی پڑیگا کہ جنگ ایک حیوانی اور ظالمانہ وحشت ہے۔ آسمان کے ساتوں پردوں پر اُس کا اِتیہاس خون اور آگ سے لکھا گیا ہے۔ مانو سبھیتا کے لئے ایک اپمان ہے۔ جنگ کا مطلب ہے گھائلوں کی کراہیں، بمباری سے گھایل معصوم عورتوں اور بچوں کی چیخیں اور برسوں کے بعد جنگ کے خاتمے پر ہزاروں سینکوں اور اُڑاکوں کا اندھے، لولے، لنگڑے اور پھیپھڑوں سے خون تھوکتے ہوئے، پاگل خانوں کی دیواروں سے سر ٹکراتے ہوئے دکھائی دینا۔ آج معصوم انسانیت کی آتما کو سامراجیہوادی راجنیتگیوں کے بندھن سے چھوٹکر اِس بات کا اعلان کرنا ہوگا کہ دنیا کے سب جرموں میں یدھ ایک سب سے خوفناک جرم ہے۔

जिसमें किसी बाहर वाले को दख़ल देने का किसी तरह का कोई हक़ नहीं है.

( 3 ) अमरीकी सरकार को चाहिये कि अपना जहाज़ी बेड़ा और अपनी फ़ौजें फ़ौरन फ़ारमूसा से हटा ले ताकि चीन की सरकार और वहां की जनता आज़ादी के साथ बिना किसी तरह की बाहर की मदाख़लत के अपने घरेलू झगड़े को जिस तरह चाहे तै कर सके.

हमें पूरा विश्वास है कि हिन्दुस्तान की जनता बिना भेद भाव के इन दोनों सवालों पर जब और जहां मौक़ा होगा अपनी साफ़ साफ़ आवाज़ ऊंची करेगी. एक यह कि जहां तक मुमकिन हो जंग न हो, और अगर हो भी तो उस में ऐटमी हथियारों का इस्तेमाल न होने पावे, और दूसरी यह कि अमरीका की सरकार फ़ारमूसा से अपनी फ़ौजों को हटा ले और आइन्दा कोई किसी दूसरे के घरेलू मामले में दख़ल न दे.

6. 2. 55 — सुन्दरलाल

# ऐटम बम और विश्व सरकार

यूनाइटेड नेशन्स की असेम्बली विश्व शान्ति के लिये जो कोशिशें कर रही है उसके नतीजों के बारे में दुनिया के विचारवान लोगों के दिलों में एक संदेह सा पैदा हो गया है. मित्र राष्ट्रों के युद्ध में जीतने की जितनी सम्भावना थी उससे कहीं कम आज शान्ति की सम्भावना दिखाई दे रही है. दुनिया के हित चिन्तकों को युद्ध के नतीजे की जितनी चिन्ता न थी उतनी उन्हें शान्ति के नतीजे की चिन्ता हो उठी है. आज की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के तीनों प्रधान केन्द्रों—वाशिंगटन, लन्दन और मास्को—में यह शुबहे की भावना व्याप्त है. एक दूसरे की तरफ़ संदेह होने के सबब आज दुनिया के बड़े बड़े मुल्क सिर से पैर तक अपने को हथियार से लाद रहे हैं. उनके दिल एक दूसरे की तरफ़ ख़ौफ़नाक शुबहे और नफ़रत से भर गये हैं. दुनिया के सभी मर्द, औरत और बच्चों को एक भयंकर आफ़त अपने सामने दिखाई दे रही है. अंधी शान, बड़प्पन के झूठे अभिमान और आर्थिक हानि के भय ने लगभग हर मुल्क के शासकों के दिमाग़ में घर कर लिया है. जीवन का ऐसा दर्शन, जो विजय और अधिकार में भेद को बढ़ाता है, जो युद्ध को धर्म बना देता है, जो डकैती को सैनिक पोशाक में सजाकर उसे देशभक्त कहता है और जो क़त्ल और ज़ुल्म को पवित्र और उदार कर्त्तव्य बताता है, इस समय उन्नति कर रहा है. आज उन लोगों के लिये तो क़ानूनी शिकंजे हैं जो किसी व्यक्ति के घर में आग लगा दें या किसी व्यक्ति को क़त्ल कर दें, लेकिन शहर के शहर जला



جس میں کسی باہر والے کو دخل دینے کا کسی طرح کا کوئی حق نہیں ہے ۔

( 3 ) امریکی سرکار کو چاہئے کہ اپنا جہازی بیڑا اور اپنی فوجیں فوراً فارموسا سے ہٹا لے تاکہ چین کی سرکار اور وہاں کی جنتا آزادی کے ساتھ بنا کسی طرح کی باہر کی مداخلت کے اپنے گھریلو جھگڑے کو جس طرح چاہے طے کر سکے۔

ہمیں پورا وشواس ہے کہ ہندستان کی جنتا بنا بھید بھاؤ کے اِن دونوں سوالوں پر جب اور جہاں موقعہ ہوگا اپنی صاف صاف آواز اُونچی کرے گی ۔ ایک یہ کہ جہاں تک ممکن ہو جنگ نہ ہو اور اگر ہو تو اُس میں ایٹمی ہتھیاروں کا استعمال نہ ہونے پاوے اور دوسری یہ کہ امریکہ کی سرکار فارموسا سے اپنی فوجوں کو ہٹالے اور آئندہ کوئی کسی دوسرے کے گھریلو معاملے میں دخل نہ دے ۔

6. 2. '55 — سندرلال

# ایٹم بم اور وشو سرکار

یونائیٹیڈ نیشنس کی اسمبلی وشو شانتی کے لئے جو کوششیں کر رہی ہے اُس کے نتیجوں کے بارے میں دنیا کے وچاروان لوگوں کے دلوں میں ایک سندیہ سا پیدا ہوگیا ہے ۔ متر راشٹروں کے یدھ میں جیتنے کی جتنی سمبھاونا تھی اُس سے کہیں کم آج شانتی کی سمبھاونا دکھائی دے رہی ہے ۔ دنیا کے ہت چنتکوں کو یدھ کے نتیجے کی جتنی چنتا نہ تھی اُتنی اُنہیں شانتی کے نتیجے کی چنتا ہو اُٹھی ہے ۔ آج کی انتر راشٹریہ راجنیتی کے تینوں پردھان کیندروں—واشنگٹن، لندن اور ماسکو—میں یہ شبہے کی بھاونا ویاپت ہے ۔ ایک دوسرے کی طرف سندیہ ہونے کے سبب آج دنیا کے بڑے بڑے ملک سر سے پیر تک اپنے کو ہتھیار سے لاد رہے ہیں ۔ اُن کے دل ایک دوسرے کی طرف خوفناک شبہے اور نفرت سے بھر گئے ہیں ۔ دنیا کے سبھی مرد، عورت اور بچوں کو ایک بھینکر آفت اپنے سامنے دکھائی دے رہی ہے ۔ اندھی شان، بڑپن کے جھوٹے ابھیمان اور آرتھک ہانی کے بھے نے لگ بھگ ہر ملک کے شاسکوں کے دماغ میں گھر کر لیا ہے ۔ جیون کا ایسا درشن، جو وجے اور ادھیکار میں بھید کو بڑھاتا ہے، جو یدھ کو دھرم بنا دیتا ہے، جو ڈکیتی کو سینک پوشاک میں سجاکر اُسے دیش بھکت کہتا ہے اور جو قتل اور ظلم کو پوتر اور اُدار کرتویہ بتاتا ہے، اِس سمے اُنتی کر رہا ہے ۔ آج اُن لوگوں کے لئے تو قانونی شکنجے ہیں جو کسی ویکتی کے گھر میں آگ لگادیں یا کسی ویکتی کو قتل کردیں، لیکن شہر کے شہر جلا

कहलाती थीं पूरी हमदर्दी रखती थी. एक एक गांव ने इस आज़ाद चीन फ़ौज का स्वागत किया और उसका साथ दिया. तीन बरस की उस आज़ादी की जंग की तारीख़ दुनिया भर के देश भक्तों के लिये ग़ौर से पढ़ने की चीज़ है. पीछे हटते हटते च्यांग-काई-शेक और उसकी बची खुची फ़ौज ने फ़ारमूसा के टापू में पनाह ली. अमरीकी जल सेना यहां देशघातक च्यांक-काई-शेक की रक्षा और सहायता के लिये पहुंच गई. माओ-त्से-तुंग की फ़ौज के पास अभी इतनी जल सेना नहीं थी कि वह हाथ के हाथ फ़ारमूसा को भी च्यांग-काई-शेक से छुड़ा ले. उन्हें चीन के बाक़ी देश को भी फिर से आबाद करना था. इन छै बरस के अन्दर जिस तरह माओ-त्से-तुंग और उनकी सरकार ने अपने से पहले के वीरान और ग़ुलाम चीन को आज़ाद और फिर से आबाद करके ख़ुशहाल बनाया है उसकी कहानी अब दुनिया भर में फैल चुकी है. लेकिन इस तमाम समय में नए चीन की सरकार बराबर यह महसूस करती रही कि ग़ैरों के हाथों में फ़ारमूसा चीन की छाती पर हमेशा के लिये एक ख़ंजर की तरह है. हाल में उन्होंने एक एक कर फ़ारमूसा के आस पास के टापुओं पर क़ब्ज़ा करना शुरू कर दिया. कई छोटे बड़े टापू वह ले भी चुके हैं. पर वह ख़ाहमख़ाह अमरीका से लड़ना नहीं चाहते. इसलिये उन्होंने अमरीका से मांग की है कि वह अपनी फ़ौजें फ़ारमूसा और उसके आस पास से हटा ले. अमरीकी सरकार इससे इन्कार कर रही है. मामला ठीक इस समय यहीं पर अटका हुआ है. ठीक आज के दिन फ़ारमूसा दुनिया भर में सब से बड़ी ख़तरे की जगह दिखाई देता है. कल क्या होगा कौन जाने. हम ऊपर कह चुके हैं कि हमें अच्छे से अच्छे नतीजों की आशा रखते हुए बुरे से बुरे नतीजों के लिये तैयार रहना चाहिये. हमें यह भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि फ़ारमूसा में अमरीकी जहाज़ी बेड़े और अमरीकी फ़ौजों का रहना केवल नए चीन ही की छाती पर नहीं भारत की छाती पर और सारे एशिया की छाती के ऊपर एक ख़ंजर की तरह है. एक की ग़ुलामी में हम सबकी ग़ुलामी और एक की आज़ादी में हम सबकी आज़ादी है. ख़ासकर इस मामले में अपने पुराने और प्यारे पड़ोसी चीन की ग़ुलामी में हमारी ग़ुलामी और चीन की आज़ादी में हमारी आज़ादी है. यह शब्द हम बहुत तोल कर और पूरी ज़िम्मेदारी के साथ चारों तरफ़ के हालात को देखकर कह रहे हैं.

फ़ारमूसा के मामले में हमारी स्थिति बिल्कुल साफ़ है और वह यह है :—

(1) फ़ारमूसा और उसके आस पास के सब टापू चीन का हिस्सा हैं, चीनी क़ौमी जिस्म के अंग हैं.

(2) नए चीन की सरकार और च्यांग-काई-शेक के गिरोह के बीच का झगड़ा चीन का एक घरेलू झगड़ा है



کہلاتی تھیں پوری ہمدردی رکھتی تھی. ایک ایک گاؤں نے اِس آزاد چین فوج کا سواگت کیا اور اُس کا ساتھ دیا . تین برس کی اُس آزادی کی جنگ کی تاریخ دنیا بھر کے دیش بھکتوں کے لئے غور سے پڑھنے کی چیز ھے . پیچھے ھٹتے ھٹتے چیانگ - کائی - شیک اور اُس کی بچی کھچی فوج نے فارموسا کے ٹاپو میں پناہ لی . امریکی جل سینا یہاں دیش گھاتک چیانگ - کائی - شیک کی رکشا اور سہائتا کے لئے پہنچ گئی . ماؤتسے تنگ کی فوج کے پاس ابھی اتنی جل سینا نہیں تھی کہ وہ ھاتھ کے ھاتھ فارموسا کو بھی چیانگ - کائی - شیک سے چھڑا لے . اُنھیں چین کے باقی دیش کو بھی پھر سے آباد کرنا تھا . اِن چھ برس کے اندر جس طرح ماؤ - تسے- تنگ اور اُن کی سرکار نے اپنے سے پہلے کے ویران اور غلام چین کو آزاد اور پھر سے آباد کر کے خوشحال بنایا ھے اُس کی کہانی اب دنیا بھر میں پھیل چکی ھے . لیکن اِس تمام سمے میں نئے چین کی سرکار برابر یہ محسوس کرتی رھی کہ غیروں کے ھاتھوں میں فارموسا چین کی چھاتی پر ھمیشہ کے لئے ایک خنجر کی طرح ھے . حال میں اُنھوں نے ایک ایک کر فارموسا کے آس پاس کے ٹاپوؤں پر قبضہ کرنا شروع کر دیا . کئی چھوٹے بڑے ٹاپو وہ لے بھی چکے ھیں . پر وہ خوامخواہ امریکہ سے لڑنا نہیں چاھتے . اس لئے اُنھوں نے امریکہ سے مانگ کی ھے کہ وہ اپنی فوجیں فارموسا اور اُس کے آس پاس سے ھٹا لے . امریکی سرکار اِس سے اِنکار کر رھی ھے . معاملہ ٹھیک اِس سمے یہیں پر اٹکا ھوا ھے . ٹھیک آج کے دن فارموسا دنیا بھر میں سب سے بڑی خطرے کی جگہ دکھائی دیتا ھے . کل کیا ھوگا کون جانے . ھم اوپر کہہ چکے ھے کہ ھمیں اچھے سے اچھے نتیجوں کی آشا رکھتے ھوئے برے سے برے نتیجوں کے لئے تیار رھنا چاھئے . ھمیں یہ بھی اچھی طرح سمجھ لینا چاھئے کہ فارموسا میں امریکی جہازی بیڑے اور امریکی فوجوں کا رھنا کیول نئے چین ھی کی چھاتی پر نہیں بھارت کی چھاتی پر اور سارے ایشیا کی چھاتی کے اوپر ایک خنجر کی طرح ھے . ایک کی غلامی میں ھم سب کی غلامی اور ایک کی آزادی میں ھم سب کی آزادی ھے. خاص کر اس معاملے میں اپنے پرانے اور پیارے پڑوسی چین کی غلامی میں ھماری غلامی اور چین کی آزادی میں ھماری آزادی ھے . یہ شبد ھم بہت تول کر اور پوری ذمہ داری کے ساتھ چاروں طرف کے حالات کو دیکھکر کہہ رھے ھیں .

فارموسا کے معاملے میں ھماری اِستھتی بالکل صاف ھے اور وہ یہ ھے :—

( 1 ) فارموسا اور اُس کے آس پاس کے سب ٹاپو چین کا حصہ ھیں، چینی قومی جسم کے انگ ھیں .

( 2 ) نئے چین کی سرکار اور چیانگ - کائی - شیک کے گروہ کے بیچ کا جھگڑا چین کا ایک گھریلو جھگڑا ھے .

एक मवाद कभी जरमनों को जरमनों से और पच्छिमी यूरोप के लोगों को पूरबी यूरोप के लोगों से लड़ाने की सोचता है, कभी इन्डोचाइना में फ़िसाद खड़े करता है, कभी कोई बहाना लेकर ब्रिटिश ग्युगाइना के लोगों की आज़ादी छीनना चाहता है, कभी गोटेमाला के धन पर क़ब्ज़ा करना चाहता है, कभी दक्खिन कोरिया को उत्तर कोरिया से लड़ाकर उत्तर कोरिया की कानों को हथियाना चाहता है, कभी फ़ारमोसा को चीन से अलग करके देशघातक च्यांग-काई-शेक की आड़ में जब मौक़ा मिल सके चीन को फिर से ग़ुलाम बनाने की सोचता है, कभी गिलगिट में अपने फ़ौजी अड्डे बनाना चाहता है, कभी अफ़रीक़ा में वहां के पुराने असली बाशिन्दों को अपने ढोर चराने के लिये जिन्दा रखकर उस महाद्वीप की धन सम्पत्ति को हमेशा के लिये अपने क़ाबू में करना चाहता है वग़ैरह वग़ैरह. ज़ाहिर है कि यह मवाद कहीं भी फोड़े की शकल में नमूदार हो और कहीं भी फूटे, जब तक पूरी दुनिया का जिस्म इस मवाद से पाक नहीं होता, तब तक दुनिया का कोई मुल्क और किसी मुल्क की जनता इस ख़तरे से बची नहीं कही जासकती. अपनी ताक़त को बढ़ाने का ख़ास ज़रिया इन लोगों के लिये जंग है. दुनिया दो बड़ी बड़ी जंगों की बरबादी को देख चुकी है. तीसरी जंग से जो बरबादी हो सकती है उसका गुमान करके भी दिल कांप उठता है, इसीलिये ज़रूरत है कि दुनिया के सब मुल्कों की जनता मिलकर जहांतक मुमकिन हो सके जंग न होने दे, और अगर सारी कोशिश करने पर भी जंग हो ही जावे तो अपने दिलों को उस मुसीबत का सामना करने के लिये मज़बूत कर ले. वियेना की सभा में चीनी नुमाइन्दे ने बड़ी सुन्दरता के साथ कहा था कि—हमारी स्थिति तीन बातों में है. पहली यह कि हम जंग नहीं चाहते, दूसरी यह कि हम जंग से नहीं डरते, तीसरी यह कि हम सबको मिलकर रहना है.

ठीक इस समय जब हम यह नोट लिख रहे हैं इनसानी क़ौम के जिस्म के इस ज़हरीले मवाद का सब से अधिक ज़ोर हमारी उत्तर पूरबी सीमा के उस पार फ़ारमूसा के टापू पर दिखाई देता है. चीनी लोग फ़ारमूसा को 'ताइवान' कहते हैं. फ़ारमूसा और उसके आस पास के सब टापू चीन का अंग हैं. सन 1946 से लेकर 1949 तक तीन बरस जब माओ-त्से-तुंग के अधीन चीन की कम्युनिस्ट फ़ौज और च्यांग-काई-शेक की फ़ौज में जंग रही अमरीका की सरकार ने ज़बरदस्ती हर तरह से च्यांग-काई-शेक को मदद दी. बावजूद इस मदद के च्यांग-काई-शेक की फ़ौजें बराबर हारती और पीछे हटती चली गईं. कारन बिलकुल साफ़ था. च्यांग-काई-शेक की फ़ौजों ने विदेशियों के साथ मिलकर मुल्क को वीरान कर रखा था. देश की सारी जनता उन कम्युनिस्ट फ़ौजों के साथ जो "आज़ाद चीन फ़ौज"



ایک مواد کبھی جرمنوں کو جرمنوں سے اور پچھمی یورپ کے لوگوں کو پوربی یورپ کے لوگوں سے لڑانے کی سوچتا ھے، کبھی انڈو چائنا میں فساد کھڑے کرتا ھے، کبھی کوئی بہانا لے کر برٹش نیوگائنا کے لوگوں کی آزادی چھیننا چاھتا ھے، کبھی گوٹے مالا کے دھن پر قبضہ کرنا چاھتا ھے، کبھی دکھن کوریا کو اُتر کوریا سے لڑا کر اُتر کوریا کی کانوں کو ھتھیانا چاھتا ھے، کبھی فارموسا کو چین سے الگ کر کے دیش گھاتک چیانگ - کائی - شیک کی آڑ میں جب موقعہ مل سکے چین کو پھر سے غلام بنانے کی سوچتا ھے، کبھی گلگت میں اپنے فوجی اڈے بنانا چاھتا ھے، کبھی افریقہ میں وھاں کے پرانے اصلی باشندوں کو اپنے ڈھور چرانے کے لئے زندہ رکھ کر اُس مہادیپ کی دھن سمپتی کو ھمیشہ کے لئے اپنے قابو میں کرنا چاھتا ھے وغیرہ وغیرہ۔ ظاھر ھے کہ یہ مواد کہیں بھی پھوڑے کی شکل میں نمودار ھو اور کہیں بھی پھوٹے، جب تک پوری دنیا کا جسم اِس مواد سے پاک نہیں ھوتا، تب تک دنیا کا کوئی ملک اور کسی ملک کی جنتا اِس خطرے سے بچی نہیں کہی جا سکتی۔ اپنی طاقت کو بڑھانے کا خاص ذریعہ اِن لوگوں کے لئے جنگ ھے۔ دنیا دو بڑی بڑی جنگوں کی بربادی کو دیکھ چکی ھے۔ تیسری جنگ سے جو بربادی ھو سکتی ھے اُس کا گمان کر کے بھی دل کانپ اُٹھتا ھے، اِسی لئے ضرورت ھے کہ دنیا کے سب ملکوں کی جنتا ملکر جہاں تک ممکن ھو سکے جنگ نہ ھونے دے، اور اگر ساری کوشش کرنے پر بھی جنگ ھو ھی جاوے تو اپنے دلوں کو اُس مصیبت کا سامنا کرنے کے لئے مضبوط کر لے۔ وئینا کی سبھا میں چینی نمائندے نے بڑی سندرتا کے ساتھ کہا تھا کہ—ھماری استھتی تین باتوں میں ھے۔ پہلی یہ کہ ھم جنگ نہیں چاھتے، دوسری یہ کہ ھم جنگ سے نہیں ڈرتے، تیسری یہ کہ ھم سب کو ملکر رھنا ھے۔

ٹھیک اِس سمے جب ھم یہ نوٹ لکھ رھے ھیں اِنسانی قوم کے جسم کے اِس زھریلے مواد کا سب سے ادھک زور ھماری اُتر پوربی سیما کے اُس پار فارموسا کے ٹاپو پر دکھائی دیتا ھے۔ چینی لوگ فارموسا کو 'تائیوان' کہتے ھیں۔ فارموسا اور اس کے آس پاس کے سب ٹاپو چین کا انگ ھیں۔ سن 1946 سے لے کر سن 1949 تک تین برس جب ماؤ تسے تنگ کے ادھین چین کی کمیونسٹ فوج اور چیانگ - کائی - شیک کی فوج میں جنگ رھی امریکہ کی سرکار نے زبردستی ھر طرح سے چیانگ - کائی - شیک کو مدد دی۔ باوجود اِس مدد کے چیانگ - کائی - شیک کی فوجیں برابر ھارتی اور پیچھے ھٹتی چلی گئیں۔ کارن بالکل صاف تھا۔ چیانگ - کائی - شیک کی فوجوں نے ودیشیوں کے ساتھ ملکر ملک کو ویران کر رکھا تھا۔ دیش کی ساری جنتا اُن کمیونسٹ فوجوں کے ساتھ جو "آزاد چین فوج"

हमारे सामने काम यह है कि जो मुसीबतें, जो तबाही और जो बरबादी ऐटमी जंग से पैदा हो सकती हैं उनसे दुनिया को बचाया जावे और दुनिया की सब क़ौमों को अपनी अपनी आज़ाद ज़िन्दगी बसर करने, अपने अपने देश के धन दौलत को बढ़ाने और मिलकर सबकी सलामती और सबकी ख़ुशहाली में एक दूसरे को मदद देने का पूरा पूरा मौक़ा दिया जावे."

सभा ने एक ख़ास अपील यूरोप की जनता के नाम जारी की जिसमें जरमनी के दो टुकड़े किये जाने, पच्छिम जरमनी के ग़ैरों के हाथों हथियारबन्द किये जाने और ऐटमी हथियारों के इस्तेमाल का कड़ा विरोध किया गया, और साफ़ ऐलान कर दिया गया कि "यूरोप के लोग इस गुनाह को हरगिज़ होने नहीं देंगे." इस अपील में यह भी साफ़ कह दिया गया है कि ख़ुद पच्छिम जरमनी की जनता इस तरह हथियारों से लैस किये जाने के ख़िलाफ़ है और जरमनी के दोनों हिस्सों की आम जनता मिलना चाहती है और फिर से अपने सारे मुल्क को एक करके दुनिया के सारे मुल्कों की जनता के साथ शान्ति से रहना चाहती है.

## पच्छिमी यूरोप को जंग से ख़तरा

इंगलैंड, फ्रांस, बेलजियम और हालैंड की जनता और एक दरजे तक इन चारों देशों की सरकारें भी जहां तक हो सके जंग से और ख़ासकर ऐटमी जंग से बचना चाह रही हैं. इसकी वजह साफ़ है. 3 जनवरी सन 1955 के इंगलैंड के अख़बार "लन्दन टाइम्स" में एक लेख में निकला था :—

"इंगलैंड के उद्योग धन्दों के बड़े से बड़े केन्द्र सब एक दूसरे के पास पास हैं. इन सब बड़े बड़े केन्द्रों को बिलकुल मिटा देने के लिये पांच या अधिक से अधिक दस बम बिलकुल काफ़ी होंगे. इनके साथ साथ इंगलैंड की आधी आबादी ख़तम हो जाएगी. फ्रांस के बड़े बड़े केन्द्रों और बेलजियम और हालैंड के बड़े बड़े केन्द्रों को ख़तम कर देने के लिये इस से भी कम बमों की जरूरत पड़ेगी. बाक़ी बचे हुए लोगों के दिलों और दिमाग़ों पर इस आफ़त का जो असर होगा वह अलग रहा."

## फ़ारमूसा

साम्राज प्रेमी दल को जब यूरोप वालों को यूरोप वालों से लड़ाना और यूरोप में आग लगाना भी इतना आसान दिखाई न दिया तो मालूम होता है निगाहें फिर एक बार एशिया की तरफ़ गईं. सच्ची बात यह है कि मानव समाज के शरीर में साम्राज प्रेम का यह एक ही ज़हरीला मवाद है जो कभी एक जगह फोड़े की शकल में दिखाई देता है और कभी दूसरी जगह फूटता हुआ नज़र आता है. यही



ھمارے سامنے کام یہ ھے کہ جو مصیبتیں' جو تباھی اور جو بربادی ایٹمی جنگ سے پیدا ھوسکتی ھیں اُن سے دنیا کو بچایا جاوے اور دنیا کی سب قوموں کو اپنی اپنی آزاد زندگی بسر کرنے' اپنے اپنے دیش کے دھن دولت کو بڑھانے اور ملکر سب کی سلامتی اور سب کی خوشحالی میں ایک دوسرے کو مدد دینے کا پورا پورا موقع دیا جاوے ."

سبھا نے ایک خاص اپیل یورپ کی جنتا کے نام جاری کی جس میں جرمنی کے دو ٹکڑے کئے جانے' پچھم جرمنی کے غیروں کے ھاتھوں ھتیار بند کئے جانے اور ایٹمی ھتیاروں کے اِستعمال کا کڑا وررودھ کیا گیا' اور صاف اعلان کر دیا گیا کہ " یورپ کے لوگ اِس گناہ کو ھرگز ھونے نہیں دینگے ." اِس اپیل میں یہ بھی صاف کہہ دیا گیا ھے کہ خود پچھم جرمنی کی جنتا اِس طرح ھتیاروں سے لیس کئے جانے کے خلاف ھے اور جرمنی کے دونوں حصوں کی عام جنتا ملنا چاھتی ھے اور پھر سے اپنے سارے ملک کو ایک کر کے دنیا کے سارے ملکوں کی جنتا کے ساتھ شانتی سے رھنا چاھتی ھے .

## پچھمی یورپ کو جنگ سے خطرہ

اِنگلینڈ' فرانس' بلجیم اور ھالینڈ کی جنتا اور ایک درجہ تک اِن چاروں دیشوں کی سرکاریں بھی جہاں تک ھو سکے جنگ سے اور خاص کر ایٹمی جنگ سے بچنا چاہ رھی ھیں . اِس کی وجہ صاف ھے . 3 جنوری سن 1955 کے انگلینڈ کے اخبار " لنڈن ٹائمس " میں ایک لیکھ میں نکلا تھا :—

"اِنگلینڈ کے ادیوگ دھندوں کے بڑے سے بڑے کیندر سب ایک دوسرے کے پاس پاس ھیں . اِن سب بڑے بڑے کیندروں کو بالکل مٹا دینے کے لئے پانچ یا ادھک سے ادھک دس بم بالکل کافی ھونگے . اِن کے ساتھ ساتھ اِنگلینڈ کی آدھی آبادی ختم ھو جائے گی . فرانس کے بڑے بڑے کیندروں اور بلجیم اور ھالینڈ کے بڑے بڑے کیندروں کو ختم کر دینے کے لئے اس سے بھی کم بموں کی ضرورت پڑے گی . باقی بچے ھوئے لوگوں کے دلوں اور دماغوں پر اِس آفت کا جو اثر ھوگا وہ الگ رھا ."

## فارموسا

سامراج پریمی دل کو جب یورپ والوں کو یورپ والوں سے لڑانا اور یورپ میں آگ لگانا بھی اتنا آسان دکھائی نہ دیا تو معلوم ھوتا ھے نگاھیں پھر ایک بار ایشیا کی طرف گئیں. سچی بات یہ ھے کہ مانو سماج کے شریر میں سامراج پریم کا یہ ایک ھی زھریلا مواد ھے جو کبھی ایک جگہ پھوڑے کی شکل میں دکھائی دیتا ھے اور کبھی دوسری جگہ پھوٹتا ھوا نظر آتا ھے . یہی

उसूलों की रक्षा के लिये चीन और रूस दोनों के साथ हिन्दुस्तान कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है और खड़ा रहेगा."

आख़ीर में हमने कहा कि :—"भारत को विश्वास है कि आजकल के बादल छटेंगे और आपकी यह शानदार सभा अपना ऊंचा उद्देश पूरा करेगी, दुनिया की शान्ति, तरक़्क़ी और ख़ुशहाली क़ायम रहेगी और उसी के ज़रिये दुनिया की सब क़ौमों की एकता चमक उठेगी. हिन्दुस्तान दिल से चाहता है कि ऐटम बम जैसे इनसानी क़त्लेआम के हथियारों का इस्तेमाल बन्द कर दिया जावे और जहांतक मुमकिन हो दुनिया जंग से बची रहे. पर इसके साथ ही अगर दुनिया को इस अग्नि परीक्षा में से निकलना ही पड़े तो हिन्दुस्तान ज़रा भी इससे भयभीत नहीं है. आप सबके साथ वह इस आज़माइश का मुक़ाबला करने के लिये तैयार है, क्योंकि हिन्दुस्तान को विश्वास है कि दुनिया की जनता की शक्ति के सामने आख़ीर में कोई हथियार या कोई ज़ुल्म नहीं ठहर सकता. हम इस मुसीबत से बचने और दुनिया को बचाने की भरसक कोशिश करेंगे. लेकिन अगर हमें इस मुसीबत से गुज़रना ही पड़ा तो हमें यह भी विश्वास है कि दुनिया की जनता इस आज़माइश में से उसी तरह चमकती हुई बाहर आएगी जिस तरह आग में से सोना, ज़ुल्मों में से सचाई या सलीब पर से हज़रत ईसा."

## वियना के कुछ प्रस्ताव

वियना की सभा ने जो प्रस्ताव अपनी 19 तारीख़ की बैठक में पास किये उनमें और बातों के साथ कहा गया है कि :—

"दुनिया की जनता पिछले तजरबे से अच्छी तरह जानती है कि दुनिया को दो अखाड़ों ( Blocs ) में बान्ट देने, अपना अपना बल और अपनी अपनी छावनियां बढ़ाने और अपने अन्तर्राष्ट्रीय अरमानों को पूरा करने के लिये जंग करने की इस पालिसी का नतीजा केवल यही हो सकता है कि माली अराजकता, बरबादी, ग़रीबी और लड़ाई झगड़े बढ़ें. दुनिया की यह अमन तहरीक दुनिया की जनता से अपील करती है कि वह इन नए ख़तरों की अहमियत को समझे और जिस तरह भी हो अपने को उनसे बचाने की कोशिश करे. दुनिया के लोग अगर मिलकर कोशिश करेंगे तो वह इन अलग अलग अखाड़ों की पालिसी को ख़त्म कर सकेंगे. वह दोनों तरफ़ की सरकारों को मजबूर कर सकते हैं कि वह शान्ति के साथ एक दूसरे से बातचीत करें, हथियारों को अलग कर दें और ऐटम की नई शक्ति को केवल दुनिया के रचनात्मक कामों और सबकी भलाई के लिये इस्तेमाल करें. मानव समाज चुपचाप ऐटमी ज़ंग की आग में ढकेला जाना गवारा नहीं करेगा....



اُصولوں کی رکشا کے لئے چین اور روس دونوں کے ساتھ ھندستان کندھے سے کندھا ملا کر کھڑا ھے اور کھڑا رھے گا."

آخیر میں ھم نے کہا کہ :—" بھارت کو وشواس ھے کہ آجکل کے بادل چھٹینگے اور آپ کی یہ شاندار سبھا اپنا اونچا اُدیش پورا کرے گی، دنیا کی شانتی، ترقی اور خوشحالی قائم رھےگی اور اُسی کے ذریعہ دنیا کی سب قوموں کی ایکتا چمک اُٹھے گی. ھندستان دل سے چاھتا ھے کہ ایٹم بم جیسے اِنسانی قتل عام کے ھتیاروں کا استعمال بند کر دیا جاوے اور جہاں تک ممکن ھو دنیا جنگ سے بچی رھے. پر اِس کے ساتھ ھی اگر دنیا کو اِس اگنی پریکشا میں سے نکلنا ھی پڑے تو ھندستان ذرا بھی اِس سے بھےبھیت نہیں ھے. آپ سب کے ساتھ وہ اِس آزمائش کا مقابلہ کرنے کے لئے تیار ھے، کیونکہ ھندستان کو وشواس ھے کہ دنیا کی جنتا کی شکتی کے سامنے آخیر میں کوئی ھتیار یا کوئی ظلم نہیں ٹھہر سکتا. ھم اِس مصیبت سے بچنے اور دنیا کو بچانے کی بھرسک کوشش کرینگے. لیکن اگر ھمیں اِس مصیبت سے گزرنا ھی پڑا تو ھمیں یہ بھی وشواس ھے کہ دنیا کی جنتا اِس آزمائش میں سے اُسی طرح چمکتی ھوئی باھر آئے گی جس طرح آگ میں سے سونا، ظلموں میں سے سچائی یا صلیب پر سے حضرت عیسیٰ."

## وئینا کے کچھ پرستاؤ

وئینا کی سبھا نے جو پرستاؤ اپنی 19 تاریخ کی بیٹھک میں پاس کئے اُن میں اور باتوں کے ساتھ کہا گیا ھے کہ :—

" دنیا کی جنتا پچھلے تجربے سے اچھی طرح جانتی ھے کہ دنیا کو دو اکھاڑوں ( Blocs ) میں بانٹ دینے، اپنا اپنا بل اور اپنی اپنی چھاؤنیاں بڑھانے، اور اپنے انتر راشٹریہ ارمانوں کو پورا کرنے کے لئے جنگ کرنے کی اِس پالیسی کا نتیجہ کیول یہی ھو سکتا ھے کہ مالی اراجکتا، بربادی، غریبی اور لڑائی جھگڑے بڑھیں. دنیا کی یہ امن تحریک دنیا کی جنتا سے اپیل کرتی ھے کہ وہ اِن نئے خطروں کی اھمیت کو سمجھے اور جس طرح بھی ھو اپنے کو اُن سے بچانے کی کوشش کرے. دنیا کے لوگ اگر مل کر کوشش کرینگے تو وہ اِن الگ الگ اکھاڑوں کی پالیسی کو ختم کر سکیں گے. وہ دونوں طرف کی سرکاروں کو مجبور کر سکتے ھیں کہ وہ شانتی کے ساتھ ایک دوسرے سے بات چیت کریں، ھتیاروں کو الگ کر دیں اور ایٹم کی نئی شکتی کو کیول دنیا کے رچناتمک کاموں اور سب کی بھلائی کے لئے استعمال کریں. مانو سماج چپ چاپ ایٹمی جنگ کی آگ میں ڈھکیلا جانا گوارا نہیں کرے گا......

'फ़ज़ूलख़र्च बेटे की कहानी' और 'खोई हुई भेड़ की कहानी' हिन्दुस्तानियों को अच्छी लगती हैं और उनके दिलों और दिमाग़ों में एक ख़ास असर पैदा करती हैं. यह बात ध्यान देने की है कि अंग्रेज़ी राज के ख़िलाफ़ लड़ने के दिनों में और जब से हमने आज़ादी हासिल की है तब से अब तक हिन्दुस्तानियों और अंग्रेज़ों के बीच एक दूसरे से नफ़रत या एक दूसरे की बुराई इतनी कम दिखाई दी है. हम अंग्रेज़ी राज से नफ़रत करते थे. हम उसे शैतानी राज मानते थे. पर इसके बावजूद हम अंग्रेज़ों से प्यार करते हैं और अंग्रेज़ क़ौम में जो बहुत से अच्छे अच्छे गुण हैं उनकी हमारे दिल में क़द्र है और हमेशा रहेगी."

आजकल की समस्याओं की चरचा करते हुए हमने कहा कि :—

'हथियारबन्द लड़ाई में भी चीज़ों की कुछ हद होती है. हमारे सारे इतिहास में उन सब हथियारबन्द लड़ाइयों में जिनमें हिन्दुस्तान ने हिस्सा लिया आपको सैकड़ों और हज़ारों मिसालें मिलेंगी जिनमें अगर दोनों लड़ने वालों में से एक के हाथ से तलवार गिर गई तो सामने के बहादुर ने उस समय तक के लिये अपना हाथ रोक लिया जबतक कि पहले सिपाही ने अपनी तलवार फिर से न संभाल ली. निहत्थे और बेगुनाह लोगों पर हमला करना हम कायरता समझते हैं. हमें उसमें नीचता और दुष्टता की गन्ध आती है. हर हिन्दुस्तानी समझता है कि जो लोग ठन्डे ठन्डे बैठ कर बेगुनाह और निहत्थे मरदों, औरतों और बच्चों, यहांतक कि चारपाइयों पर लेटे हुए बीमारों और माओं की गोद में हुमकते हुए बच्चों को क़तल करने की तजवीज़ें कर सकते हैं वह मुहज़्ज़ब यानी सभ्य कहलाने या इनसान समझे जाने के भी हक़दार नहीं हैं. आदमी के अन्दर इस तरह के शैतानी रुजहानों को देखकर भारत के लोग दुख और ग़ैरत से भर जाते हैं. मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं कि जो भी नेक कोशिशें आप इनसानी ख़ुदकुशी के इन रुजहानों को रोकने और दुनिया की शान्ति और ख़ुशहाली को बचाए रखने के लिये कर रहे हैं और करेंगे उन कोशिशों में समूचा भारत आप के साथ है और सदा आप के साथ रहेगा."

भारत, चीन और रूस के बढ़ते हुए सम्बन्धों और दोनों तरफ़ से डेलीगेशनों के आने जाने की चर्चा करते हुए हमने कहा कि :—

"हमें पूरा विश्वास है कि चीन और रूस दोनों अमन चाहते हैं, जंग नहीं चाहते. हमें विश्वास है कि वह दोनों उन देशों के साथ जिन का राजकाजी या माली संगठन उनसे नहीं मिलता, अमन से रहना चाहते हैं. वह किसी दूसरे के मामले में ज़बरदस्ती दख़ल देना नहीं चाहते. इसलिये इन ऊंचे



فضول خرچ بیٹے کی کہانی' اور کھوئی ہوئی بھیڑ کی کہانی' ہندستانیوں کو اچھی لگتی ہیں اور اُن کے دلوں اور دماغوں میں ایک خاص اثر پیدا کرتی ہیں۔ یہ بات دھیان دینے کی ہے کہ انگریزی راج کے خلاف لڑنے کے دنوں میں اور جب سے ہم نے آزادی حاصل کی ہے تب سے اب تک ہندستانیوں اور انگریزوں کے بیچ ایک دوسرے سے نفرت یا ایک دوسرے کی برائی اتنی کم دکھائی دی ہے۔ ہم انگریزی راج سے نفرت کرتے تھے۔ ہم اُسے شیطانی راج مانتے تھے۔ پر اِس کے باوجود ہم انگریزوں سے پیار کرتے ہیں اور انگریز قوم میں جو بہت سے اچھے اچھے گن ہیں اُن کی ہمارے دل میں قدر ہے اور ہمیشہ رہےگی۔''

آج کل کی سمسیاؤں کی چرچا کرتے ہوئے ہم نے کہا کہ:—

'' ہتھیار بند لڑائی میں بھی چیزوں کی کچھ حد ہوتی ہے۔ ہمارے سارے اِتہاس میں اُن سب ہتھیار بند لڑائیوں میں جن میں ہندستان نے حصہ لیا آپ کو سیکڑوں اور ہزاروں مثالیں ملیں گی جن میں اگر دونوں لڑنے والوں میں سے ایک کے ہاتھ سے تلوار گر گئی تو سامنے کے بہادر نے اُس سمے تک کے لئے اپنا ہاتھ روک لیا جب تک کہ پہلے سپاہی نے اپنی تلوار پھر سے نہ سنبھال لی۔ نہتھے اور بےگناہ لوگوں پر حملہ کرنا ہم کایرتا سمجھتے ہیں۔ ہمیں اُس میں نیچتا اور دشٹتا کی گندھ آتی ہے۔ ہر ہندستانی سمجھتا ہے کہ جو لوگ ٹھنڈے ٹھنڈے بیٹھکر بےگناہ اور نہتھے مردوں' عورتوں اور بچوں' یہاں تک کہ چارپائیوں پر لیٹے ہوئے بیماروں اور ماؤں کی گود میں ہمکتے ہوئے بچوں کو قتل کرنے کی تجویزیں کر سکتے ہیں وہ مہذب یعنی سبھیہ کہلانے یا اِنسان سمجھے جانے کے بھی حقدار نہیں ہیں۔ آدمی کے اندر اِس طرح کے شیطانی رجحانوں کو دیکھکر بھارت کے لوگ دکھ اور غیرت سے بھر جاتے ہیں۔ میں آپ کو یقین دلاتا ہوں کہ جو بھی نیک کوششیں آپ اِنسانی خود کشی کے اِن رجحانوں کو روکنے اور دنیا کی شانتی اور خوشحالی کو بچائے رکھنے کے لئے کر رہے ہیں اور کرینگے اُن کوششوں میں سموچا بھارت آپ کے ساتھ ہے اور سدا آپ کے ساتھ رہے گا۔''

بھارت' چین اور روس کے بڑھتے ہوئے سمبندھوں اور دونوں طرف سے ڈیلیگیشنوں کے آنے جانے کی چرچا کرتے ہوئے ہم نے کہا کہ:—

'' ہمیں پورا وشواس ہے کہ چین اور روس دونوں امن چاہتے ہیں' جنگ نہیں چاہتے۔ ہمیں وشواس ہے کہ وہ دونوں اُن دیشوں کے ساتھ جن کا راج کاجی یا مالی سنگٹھن اُن سے نہیں ملتا' امن سے رہنا چاہتے ہیں۔ وہ کسی دوسرے کے معاملے میں زبردستی دخل دینا نہیں چاہتے۔ اِس لئے اِن اونچے

देते हैं—पहला यह है कि सारा मानव समाज एक कुनबा है (वसुधैव कुटुम्बकं) और हम सब को एक दूसरे के साथ वैसा ही बरताव करना चाहिये जैसा एक कुनबे के लोग एक दूसरे के साथ करते हैं. हमारे पुराने ऋषियों ने सारे इनसानी समाज की तुलना एक शरीर यानी एक जिस्म के साथ की है जिसके हम सब हाथ पैर वगैरा हैं. जाहिर है कि अगर हाथ या पैर में दर्द हो तो सर आराम से नहीं रह सकता. हमारा दूसरा उसूल यह है, और यह पहले उसूल से ही साफ़ निकलता है, कि हमें किसी दूसरे को तकलीफ़ नहीं देनी चाहिये (अहिंसा). इस सदी के शुरू में हमारे महान नेता महात्मा गांधी का सामने आना और हिन्दुस्तान का उनकी अनोखी रहनुमाई में अहिन्सा के जरिये विदेशी राज से आज़ादी के लिये लड़ना कोई अचानक बातें नहीं थीं. इनकी जड़ें हमारे इतिहास में, हमारी ऊंची से ऊंची परम्पराओं में और हमारे जीवन में गहरी गई हुई थीं. मैं बड़ी नम्रता के साथ अपील करना चाहता हूं कि दूसरे देशों के हमारे साथी हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई के इतिहास को बिना पहले से राय क़ायम किये और हमदर्दी के साथ पढ़ने और समझने की कोशिश करें. क़ुदरती तौर पर हिन्दुस्तान जंग को पसन्द नहीं करता. हम यूं भी जंग के खिलाफ़ हैं और मुल्कों मुल्कों के बीच के झगड़े तय करने के लिये हम जंग को हरगिज़ अच्छा तरीक़ा नहीं मानते."

भारत सरकार की उन कोशिशों का ज़िक्र करते हुए जो वह मुल्कों मुल्कों के बीच के झगड़ों को आपसी बातचीत से तय कराने के लिये करती रही है हमने कहा कि—

"भारत को इस । का पक्का बिश्वास है कि दुनिया के सब झगड़े चाहे वह राजकाजी हों, माली हों या कोई और शान्ति के साथ बातचीत करके तय किये जा सकते हैं, बशर्तेकि हम में काफ़ी सब्र हो और हमारे दिलों में नेकी हो."

हमने यह भी कहा कि :—

"मैंने हिन्दुस्तान की जो राय आपके सामने रक्खी है उससे एक और नतीजा अपने आप निकलता है और वह बहुत अहम है. हम बुराई और बुराई करने वाले में साफ़ फ़रक़ करते हैं. हमें बुराई से नफ़रत है पर बुराई करने वाले से हम प्यार करते हैं. हमें इसमें कोई बात अनोखी या परस्पर बिरोधी दिखाई नहीं देती. हमारे कुनबे का अगर कोई आदमी जिस्मानी तौर पर बीमार पड़ जाता है तो हम में से कोई उस से नफ़रत नहीं करता. इसके विपरीत उसके रोग के कारन हम उसे और भी अधिक प्यार करते हैं, उसकी सेवा करते हैं और उसकी तीमारदारी करते हैं. तब फिर अगर कोई हमारा भाई किसी नैतिक यानी इख़लाक़ी बीमारी का शिकार हो जाय तो हम उसके साथ दूसरी तरह का बरताव क्यों करें? इन्जील के अन्दर



دیتے ہیں—پہلا یہ ہے کہ سارا مانو سماج ایک کنبہ ہے (وسو دھیو کٹمبکم) اور ہم سب کو ایک دوسرے کے ساتھ ویسا ہی برتاؤ کرنا چاہئے جیسا ایک کنبے کے لوگ ایک دوسرے کے ساتھ کرتے ہیں. ہمارے پرانے رشیوں نے سارے انسانی سماج کی تولنا ایک شریر یعنی ایک جسم کے ساتھ کی ہے جس کے ہم سب ہاتھ پیر وغیرہ ہیں. ظاہر ہے کہ اگر ہاتھ یا پیر میں درد ہو تو سر آرام سے نہیں رہ سکتا. ہمارا دوسرا اُصول یہ ہے، اور یہ پہلے اُصول سے ہی صاف نکلتا ہے، کہ ہمیں کسی دوسرے کو تکلیف نہیں دینی چاہئے (اہنسا). اِس صدی کے شروع میں ہمارے مہان نیتا مہاتما گاندھی کا سامنے آنا اور ہندستان کا اُن کی انوکھی رہنمائی میں اہنسا کے ذریعہ ودیشی راج سے آزادی کے لئے لڑنا کوئی اچانک باتیں نہیں تھیں. اِن کی جڑیں ہمارے اتیہاس میں، ہماری اُونچی سے اُونچی پرمپراؤں میں اور ہمارے جیون میں گہری گئی ہوئی تھیں. میں بڑی نمرتا کے ساتھ اپیل کرنا چاہتا ہوں کہ دوسرے دیشوں کے ہمارے ساتھی ہندستان کی آزادی کی لڑائی کے اتیہاس کو بنا پہلے سے رائے قائم کئے اور ہمدردی کے ساتھ پڑھنے اور سمجھنے کی کوشش کریں. قدرتی طور پر ہندستان جنگ کو پسند نہیں کرتا. ہم یوں بھی جنگ کے خلاف ہیں اور ملکوں ملکوں کے بیچ کے جھگڑے طے کرنے کے لئے ہم جنگ کو ہرگز اچھا طریقہ نہیں مانتے."

بھارت سرکار کی اُن کوششوں کا ذکر کرتے ہوئے جو وہ ملکوں ملکوں کے بیچ کے جھگڑوں کو آپسی بات چیت سے طے کرانے کے لئے کرتی رہی ہے ہم نے کہا کہ—"بھارت کو اِس بات کا پکا وشواس ہے کہ دنیا کے سب جھگڑے چاہے وہ راجکاجی ہوں، مالی ہوں یا کوئی اور شانتی کے ساتھ بات چیت کرکے طے کئے جاسکتے ہیں، بشرطیکہ ہم میں کافی صبر ہو اور ہمارے دلوں میں نیکی ہو."

ہم نے یہ بھی کہا کہ :—

"میں نے ہندستان کی جو رائے آپ کے سامنے رکھی ہے اُس سے ایک اور نتیجہ اپنے آپ نکلتا ہے اور وہ بہت اہم ہے. ہم برائی اور برائی کرنے والے میں صاف فرق کرتے ہیں. ہمیں برائی سے نفرت ہے پر برائی کرنے والے سے ہم پیار کرتے ہیں. ہمیں اِس میں کوئی بات انوکھی یا پرسپر وِرودھی دکھائی نہیں دیتی. ہمارے کنبہ کا اگر کوئی آدمی جسمانی طور پر بیمار پڑ جاتا ہے تو ہم میں سے کوئی اُس سے نفرت نہیں کرتا. اِس کے وپریت اُس کے روگ کے کارن ہم اُسے اور بھی ادھک پیار کرتے ہیں، اُس کی سیوا کرتے ہیں اور اس کی تیمارداری کرتے ہیں. تب پھر اگر کوئی ہمارا بھائی کسی نیتک یعنی اخلاقی بیماری کا شکار ہو جائے تو ہم اُس کے ساتھ دوسری طرح کا برتاؤ کیوں کریں؟ انجیل کے اندر

भाशन में नाटो कौन्सिल के उस फ़ैसले की तरफ़ बैठक का ध्यान दिलाया और दुनिया के लोगों से अपील की कि वह इस ख़तरे से मानव जाति को बचाने के लिये अपनी आवाज़ बुलन्द करें.

बैठक में सब फ़ैसले एक राय से किये गए. 19 जनवरी की बैठक में इन पंक्तियों के लेखक की सदारत में यह तय हुआ कि नीचे लिखी अपील के ऊपर सब मुल्कों के अधिक से अधिक आदमियों के दस्तख़त कराए जायें ताकि दुनिया के करोड़ों बेगुनाह इनसानों को इस आफ़त से बचाने के लिये हवा तय्यार हो सके और साम्राज प्रेमियों का दिल बदल सके. अपील का मसौदा यह है :—

## "ऐटमी लड़ाई की तय्यारियों के ख़िलाफ़ अपील"

"आज कुछ सरकारें ऐटम बमों की लड़ाई छेड़ देने की तय्यारियां कर रही हैं.

"वह लोगों से यह मनवाने की कोशिश कर रही हैं कि ऐटम बमों की लड़ाई ज़रूरी है.

"इस तरह के हथियारों के उपयोग का नतीजा आख़ीर में एक दूसरे को मिटा डालना होगा.

"हम ऐलान करते हैं कि जो सरकार ऐटमी हथियारों की लड़ाई छेड़ेगी उस पर से लोगों का ऐतबार बिल्कुल जाता रहेगा और दुनिया के सब लोग और सब क़ौमें उस पर लानत भेजेंगी.

"अब और हमेशा हम उनका विरोध करेंगे जो ऐटमी लड़ाई की तय्यारी और उसकी व्यवस्था करेंगे.

"हम ज़ोरों के साथ यह मांग करते हैं कि ऐटमी हथियारों के जितने अम्बार जहां भी मौजूद हों उन सब को नष्ट कर दिया जावे और आगे के लिये इस तरह के हथियारों का बनाया जाना एकदम बन्द कर दिया जाये."

वीयना की बैठक में यह भी तय हुआ कि मई सन 1955 में फ़िनलैन्ड की राजधानी हिलसिनकी में तमाम मुल्कों के और हर राजकाजी विचार के इस तरह के लोगों की एक बहुत बड़ी सभा ( World Assembly ) की जावे जो जंग के ख़िलाफ़ और शान्ति के हक़ में हों, ताकि सब मिलकर इस सारी हालत पर ग़ौर करें और दुनिया को ऐटमी जंग के भयंकर नतीजों से बचाने की कोशिश करें.

## भारत की स्थिति

19 जनवरी की बैठक में इस मामले पर अपने देश की स्थिति को बताते हुए हमने अपने भाशन में कहा कि :—

"भारत परम्परा से शान्ति का उपासक है. हमारे हज़ारों बरस के इतिहास में, हमारे सारे जीवन और सारे साहित्य में, दो उसूल सबसे अधिक चमकते हुए दिखाई



بھاشن میں ناٹو کونسل کے اُس فیصلے کی طرف بیٹھک کا دھیان دلایا اور دنیا کے لوگوں سے اپیل کی کہ وہ اِس خطرے سے مانو جاتی کو بچانے کے لئے اپنی آواز بلند کریں ۔

بیٹھک میں سب فیصلے ایک رائے سے کئے گئے. 19 جنوری کی بیٹھک میں اِن پنکتیوں کے لیکھک کی صدارت میں یہ طے ہوا کہ نیچے لکھی اپیل کے اُوپر سب ملکوں کے ادھک سے ادھک آدمیوں کے دستخط کرائے جائیں تاکہ دنیا کے کروڑوں بےگناہ انسانوں کو اِس آفت سے بچانے کے لئے ہوا تیار ہوسکے اور سامراج پریمیوں کا دل بدل سکے . اپیل کا مسودہ یہ ہے :—

## "ایٹمی لڑائی کی تیاریوں کے خلاف اپیل"

"آج کچھ سرکاریں ایٹم بموں کی لڑائی چھیڑ دینے کی تیاریاں کررہی ہیں ۔

"وہ لوگوں سے یہ منوانے کی کوشش کررہی ہیں کہ ایٹم بموں کی لڑائی ضروری ہے ۔

"اِس طرح کے ہتھیاروں کے اُپیوگ کا نتیجہ آخیر میں ایک دوسرے کو مٹا ڈالنا ہوگا ۔

"ہم اعلان کرتے ہیں کہ جو سرکار ایٹمی ہتھیاروں کی لڑائی چھیڑے گی اُس پر سے لوگوں کا اعتبار بالکل جاتا رہےگا اور دنیا کے سب لوگ اور سب قومیں اُس پر لعنت بھیجیں گی ۔

"اب اور ہمیشہ ہم اُن کا ورودھ کرینگے جو ایٹمی لڑائی کی تیاری اور اُس کی ویوستھا کرینگے ۔

"ہم زوروں کے ساتھ یہ مانگ کرتے ہیں کہ ایٹمی ہتھیاروں کے جتنے انبار جہاں بھی موجود ہوں اُن سب کو نشٹ کردیا جاوے اور آگے کے لئے اِس طرح کے ہتھیاروں کا بنایا جانا ایک‌دم بند کردیا جائے ."

وئینا کی بیٹھک میں یہ بھی طے ہوا کہ مئی سن 1955 میں فن‌لینڈ کی راجدھانی ہلسنکی میں تمام ملکوں کے اور ہر راج‌کاجی وچار کے اِس طرح کے لوگوں کی ایک بہت بڑی سبھا (World Assembly) کی جاوے جو جنگ کے خلاف اور شانتی کے حق میں ہوں، تاکہ سب ملکر اِس ساری حالت پر غور کریں اور دنیا کو ایٹمی جنگ کے بھینکر نتیجوں سے بچانے کی کوشش کریں ۔

## بھارت کی استھتی

19 جنوری کی بیٹھک میں اِس معاملے پر اپنے دیش کی استھتی کو بتاتے ہوئے ہم نے اپنے بھاشن میں کہا کہ :—

"بھارت پرمپرا سے شانتی کا اُپاسک ہے . ہمارے ہزاروں برس کے اتیہاس میں، ہمارے سارے جیون اور سارے ساہتیہ میں، دو اصول سب سے ادھک چمکتے ہوئے دکھائی

तय हुआ कि यूरोप में या एशिया में ऐटम बम और हाइड्रोजिन बम की लड़ाई छेड़ देने के लिये अमरीका की सरकार को अपने दूसरे साथियों यानी इंगलैन्ड, फ़ांस वग़ैरा की सरकारों से सलाह करने की ज़रूरत न होगी. अमरीका की सरकार को पूरा अधिकार है कि दुनिया में जब जहां ठीक समझे इस तरह के बमों की लड़ाई शुरू कर दे.

इसके साफ़ मानी यह हैं कि अगर एशिया के लोगों को एशिया के लोगों से आसानी के साथ नहीं लड़ाया जा सकता तो यूरोप के लोगों को यूरोप के लोगों से लड़ाकर ही अपना मतलब पूरा किया जाय.

## वियना की शान्ति सभा

इस पर यूरोप के अमनपसन्द लोगों के अन्दर जिन्हें अपने बाल बच्चे और घरबार प्यारे हैं एक तहलका मच गया. 17, 18 और 19 जनवरी सन 1955 को आस्ट्रिया की राजधानी वियना में वर्ल्ड कौन्सिल आफ़ पीस ( दुनिया भर के क़ौमों की अमन कौन्सिल ) की ब्युरो यानी वरकिंग कमेटी की एक ज़रूरी बैठक बुलाई गई. उस बैठक में इंगलैन्ड, फ़्रांस, इटली, पच्छिमी जरमनी, पूरबी जरमनी, बेलजियम, हालैन्ड, सुइज़रलैन्ड जैसे यूरोप के देशों के अलावा रूस, चीन, भारत, जापान, इन्डोनीशिया, ब्रह्मा, टरकी, ईरान, कैनेडा, आस्ट्रेलिया, दक्खिन अमरीका के देश, वग़ैरा वग़ैरा यानी एक अमरीका को छोड़कर दुनिया के लगभग सब देशों के नुमाइन्दे मौजूद थे. इन पंक्तियों का लेखक भी वियना की उस बैठक में मौजूद था.

वियना की बैठक में इस बात पर ग़ौर किया गया कि ऐटम बमों की उस लड़ाई के नतीजे जिसकी यह साम्राज प्रेमी तजवीज़ कर रहे हैं कितने भयंकर हो सकते हैं. इस तरह के ख़तरनाक बम दोनों दलों के पास काफ़ी तादाद में मौजूद हैं. इनमें से कुछ नए बम ऐसे हैं जो उस बम के मुक़ाबले में, जो दस साल पहले जापान के शहर हीरोशिमा पर फेंका गया था, पच्चीस हज़ार गुना ज्यादा ताक़तवर हैं. सब मुल्कों के बड़े से बड़े साइन्सदानों की राय है कि अगर इस तरह की लड़ाई एक बार छिड़ गई तो वह "दोनों तरफ़ से आत्महत्या" ( Mutual Suicide ) की लड़ाई होगी, और मुमकिन है कि उसके नतीजे की शकल में तमाम इनसानी नसल दुनिया से नेस्त नाबूद हो जावे. यह भी मुमकिन है कि ऐसी लड़ाई से हमारी इस धरती टुकड़े हो जावें और कोई जानदार इस पर न बच सके.

वर्ल्ड कौन्सिल आफ़ पीस के प्रेसीडेन्ट प्रोफ़ेसर जूलियो क्यूरी ने, जो इस समय दुनिया की पाक से पाक और महान से महान आत्माओं में से हैं, जिनका दिल मानव जाति के प्रेम से लबाबल भरा हुआ है, और जो ख़ुद दुनिया के बड़े से बड़े साइन्सदानों में गिने जाते हैं, अपने शुरू के



طے ھوا کہ یورپ میں یا ایشیا میں ایٹم بم اور ھائڈروجن بم کی لڑائی چھیڑ دینے کے لئے امریکہ کی سرکار کو اپنے دوسرے ساتھیوں یعنی انگلینڈ' فرانس وغیرہ کی سرکاروں سے صلاح کرنے کی ضرورت نہ ھوگی ۔ امریکہ کی سرکار کو پورا ادھیکار ھے کہ دنیا میں جب جہاں ٹھیک سمجھے اس طرح کے بموں کی لڑائی شروع کردے ۔

اِس کے صاف معنی یہ ھیں کہ اگر ایشیا کے لوگوں کو ایشیا کے لوگوں سے آسانی کے ساتھ نہیں لڑایا جاسکتا تو یورپ کے لوگوں کو یورپ کے لوگوں سے لڑاکر ھی اپنا مطلب پورا کیا جائے

## وئینا کی شانتی سبھا

اِس پر یورپ کے امن پسند لوگوں کے اندر جنھیں اپنے بال بچے اور گھر بار پیارے ھیں اِک تہلکہ مچ گیا. 17' 18 اور 19 جنوری سن 1955 کو آسٹریا کی راجدھانی وئینا میں ورلڈ کونسل آف پیس ( دنیا بھر کے قوموں کی امن کونسل ) کی بیورو یعنی ورکنگ کمیٹی کی ایک ضروری بیٹھک بلائی گئی. اِس بیٹھک میں انگلینڈ' فرانس' اِٹلی' پچھمی جرمنی' پوربی جرمنی' بلجیم' ھالینڈ' سوئزرلینڈ جیسے یورپ کے دیشوں کے علاوہ روس' چین' بھارت' جاپان' انڈونیشیا' برھما' ترکی' ایران' کنیڈا' آسٹریلیا' دکھن امریکہ کے دیش وغیرہ وغیرہ یعنی ایک امریکہ کو چھوڑ کر دنیا کے لگ بھگ سب دیشوں کے نمائندے موجود تھے. اِن پنکتیوں کا لیکھک بھی وئینا کی اُس بیٹھک میں موجود تھا ۔

وئینا کی بیٹھک میں اِس بات پر غور کیا گیا کہ ایٹم بموں کی اُس لڑائی کے نتیجے جس کی یہ سامراج پریمی تجویز کررھے ھیں کتنے بھینکر ھوسکتے ھیں ۔ اِس طرح کے خطرناک بم دونوں دلوں کے پاس کافی تعداد میں موجود ھیں ۔ اِن میں سے کچھ نئے بم ایسے ھیں جو اُس بم کے مقابلے میں' جو دس سال پہلے جاپان کے شہر ھیروشما پر پھینکا گیا تھا' پچیس ھزار گنا زیادہ طاقتور ھیں ۔ سب ملکوں کے بڑے سے بڑے سائنس دانوں کی رائے ھے کہ اگر اِس طرح کی لڑائی ایک بار چھڑ گئی تو وہ "دونوں طرف سے آتم ھتیا" (Mutual Suicide) کی لڑائی ھوگی' اور ممکن ھے کہ اُس کے نتیجے کی شکل میں تمام انسانی نسل دنیا سے نیست نابود ھو جاوے ۔ یہ بھی ممکن ھے کہ ایسی لڑائی سے ھماری اِس دھرتی کے ٹکڑے ھو جاویں اور کوئی جاندار اِس پر نہ بچ سکے ۔

ورلڈ کونسل آف پیس کے پریسیڈنٹ پروفیسر جولیو کیوری نے' جو اِس سمے دنیا کی پاک سے پاک اور مہان سے مہان آتماؤں میں سے ھیں' جن کا دل مانو جاتی کے پریم سے لبالب بھرا ھوا ھے' اور جو خود دنیا کے بڑے سے بڑے سائنس دانوں میں گنے جاتے ھیں' اپنے شروع کے

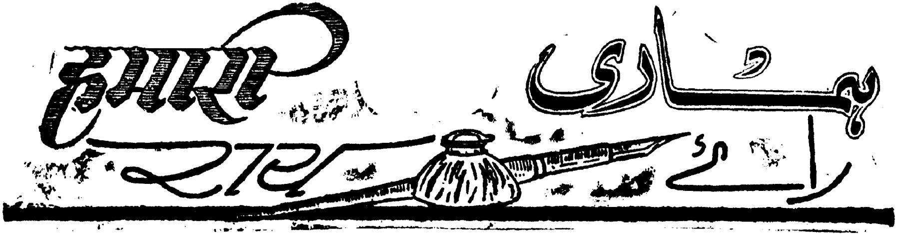
अभी चार दिन हुए एशिया के कुछ देशों खासकर फ़ारमोसा, कोरिया, जापान, फ़िलिप्पाइन, न्युज़ीलैन्ड, और आस्ट्रेलिया के साथ अलग फ़ौजी समझौते करके अमरीका की सरकार ने इस महाद्वीप के अन्दर अपना एक ज़बरदस्त फ़ौजी संगठन खड़ा करने की कोशिश शुरू की. वह कोशिश बराबर जारी है. ज़िम्मेदार अमरीकी हाकिमों ने खुले शब्दों में कहना शुरू किया कि हम "एशिया वालों को एशिया वालों से लड़ाकर" अपना मतलब पूरा करेंगे. चाल बहुत पुरानी है. पर अब ज़माना तेज़ी से बदल रहा है. इस खुली आवाज़ के सुनाई देते ही एशिया के लोग चौकन्ने हो गए. एशियाई क़ौमों की कानफ़्रेन्सें हुईं, हो रही हैं और होने जा रही हैं. हिन्दुस्तान और चीन ने एकता के पांच सुनहरे उसूलों का एलान करके आपस में दोस्ती का समझौता किया. यह पांच उसूल बहुत सीधे साधे हैं :—एक दूसरे की आज़ादी और सलामती का आदर करना, एक दूसरे के अन्दर के मामलों में किसी तरह का दख़ल न देना, मिलकर रहना, दूसरे पर हमला न करना और आपसी तिजारत वग़ैरा में वह तरीक़ा बरतना जो दोनों को मन्ज़ूर हो और जिस से दोनों का फ़ायदा हो. इन्हीं उसूलों पर एशिया की सब क़ौमें एक होती जा रही हैं. यह उसूल दुनिया के सब मुल्कों के लिये मिलकर अमन से रहने के बुनियादी और सबके भले के उसूल हैं. दिखाई देने लगा कि एशिया के लोगों को एशिया के लोगों से लड़ाना अब इतना आसान नहीं है.

साम्राज प्रेमियों ने अब दूसरी तरफ़ ध्यान दिया. जिस तरह का फ़ौजी संगठन इस गुट ने कुछ एशियाई देशों के साथ समझौते करके खड़ा किया है जिसे "सीटो" (S.E.A.T.O.), कहा जाता है उसी तरह का एक दूसरा फ़ौजी संगठन उन्होंने पच्छिमी यूरोप और अमरीका के कुछ मुल्कों को मिलाकर खड़ा किया है जिसे "नाटो" (N.A.T.O.) कहा जाता है. इस नाटो कौन्सिल की एक बैठक दिसम्बर सन 1954 में पैरिस में हुई. जरमनी के दो टुकड़े किये जा चुके हैं—एक पच्छिमी जरमनी जिसमें अमरीका का बोलबाला है और दूसरा पूरबी जरमनी जो रूस के असर में है. पैरिस की कौन्सिल ने तय किया कि पच्छिमी जरमनी को अच्छी तरह हथियारों और फ़ौजों से लैस किया जावे, और नाटो संगठन के अन्दर जिन जिन मुल्कों की फ़ौजें शामिल हैं उन सब को अधिकार दिया जावे कि वह ऐटम बम और हाइड्रोजिन बम लड़ाई में इस्तेमाल करने के लिये तैयार हो जाएं. यह भी तय हुआ कि इन सब फ़ौजों को ऐटम बम और हाइड्रोजिन बम मुहय्या कर दिये जावें. मालूम हुआ कि यूरोप और एशिया में दोनों जगह, यहां तक कि फ़ारमोसा, कोरिया और जापान में अमरीकी फ़ौजों के पास इस तरह के ख़तरनाक हथियार काफ़ी तादाद में पहुंच चुके हैं. यह भी



ابھی چار دن ہوئے ایشیا کے کچھ دیشوں خاص کر فارموسا، کوریا، جاپان، فلپائن، نیوزیلینڈ اور آسٹریلیا کے ساتھ الگ فوجی سمجھوتے کرکے امریکہ کی سرکار نے اِس مہادیپ کے اندر اپنا ایک زبردست فوجی سنگٹھن کھڑا کرنے کی کوشش شروع کی. یہ کوشش برابر جاری ہے. ذمہدار امریکی حاکموں نے کھلے شبدوں میں کہنا شروع کیا کہ ہم "ایشیا والوں کو ایشیا والوں سے لڑا کر" اپنا مطلب پورا کرینگے. چال بہت پرانی ہے. پر اب زمانہ تیزی سے بدل رہا ہے. اِس کھلی آواز کے سنائی دیتے ہی ایشیا کے لوگ چوکنے ہوگئے. ایشیائی قوموں کی کانفرنسیں ہوئیں، ہو رہی ہیں اور ہونے جارہی ہیں. ہندستان اور چین نے ایکتا کے پانچ سنہرے اُصولوں کا اعلان کرکے آپس میں دوستی کا سمجھوتا کیا. یہ پانچ اصول بہت سیدھے سادھے ہیں :— ایک دوسرے کی آزادی اور سلامتی کا آدر کرنا، ایک دوسرے کے اندر کے معاملوں میں کسی طرح کا دخل نہ دینا، مل کر رہنا، دوسرے پر حملہ نہ کرنا اور آپسی تجارت وغیرہ میں وہ طریقہ برتنا جو دونوں کو منظور ہو اور جس سے دونوں کا فائدہ ہو. اِنہیں اُصولوں پر ایشیا کی سب قومیں ایک ہوتی جارہی ہیں. یہ اصول دنیا کے سب ملکوں کے لئے ملکر امن سے رہنے کے بنیادی اور سب کے بھلے کے اصول ہیں. دکھائی دینے لگا کہ ایشیا کے لوگوں کوایشیا کے لوگوں سے سے لڑانا اب اتنا آسان نہیں ہے.

سامراج پریمیوں نے اب دوسری طرف دھیان دیا. جس طرح کا فوجی سنگٹھن اس گٹ نے کچھ ایشیائی دیشوں کے ساتھ سمجھوتے کرکے کھڑا کیا ہے جیسے "سیٹو" (S.E.A.T.O.)' کہا جاتا ہے اُسی طرح کا ایک دوسرا فوجی سنگٹھن اِنہوں نے پچھمی یورپ اور امریکہ کے کچھ ملکوں کو ملاکر کھڑا کیا ہے جسے "ناٹو" (N.A.T.O.) کہا جاتا ہے. اِس ناٹو کونسل کی ایک بیٹھک دسمبر سن 1954 میں پیرس میں ہوئی. جرمنی کے دو ٹکڑے کئے جا چکے ہیں—ایک پچھمی جرمنی جس میں امریکہ کا بول بالا ہے اور دوسرا پوربی جرمنی جو روس کے اثر میں ہے. پیرس کی کونسل نے طے کیا کہ پچھمی جرمنی کو اچھی طرح ہتیاروں اور فوجوں سے لیس کیا جاوے، اور ناٹو سنگٹھن کے اندر جن جن ملکوں کی فوجیں شامل ہیں اُن سب کو ادھیکار دیا جاوے کہ وہ ایٹم بم اور ہائڈروجن بم لڑائی میں استعمال کرنے کے لئے تیار ہو جائیں. یہ بھی طے ہوا کہ اِن سب فوجوں کو ایٹم بم اور ہائڈروجن بم مہیا کردئے جاویں. معلوم ہوا کہ یورپ اور ایشیا میں دونوں جگہ یہاں تک کہ فارموسا، کوریا اور جاپان میں امریکی فوجوں کے پاس اِس طرح کے خطرناک ہتیار کافی تعداد میں پہونچ چکے ہیں. یہ بھی




## साम्राज प्रेमी दल और उसकी चालें

एक तरफ़ एशिया और अफ़रीका की पुरानी क़ौमें और वह दूसरी क़ौमें जो कुछ अरसे से ग़ैरों की राजकाजी या तिजारती गुलामी में दबी हुई थीं आज़ाद होने और फलने फूलने की कोशिशों में लगी हुई हैं, और दूसरी तरफ़ पच्छिम की कुछ क़ौमों के कुछ पूंजीपति दल जिनकी साम्राज की प्यास अभी बुझी नहीं है या जिनकी दूसरों को चूसकर मोटा होने की लालसा अभी मिटी नहीं है जगह जगह अपनी इस लालसा को पूरा करने की कोशिश में हैं. यह है थोड़े से शब्दों में इस वक़्त की दुनिया की हालत का निचोड़.

साम्राज प्रेमी दल में इस समय सब से आगे अमरीका की सरकार और वहां के वह फ़ौजी और तिजारती गिरोह हैं जिन के हाथों में वहां की हकूमत है. इनके साथ इंगलैन्ड, फ़्रांस, इटली, हालैन्ड, और बेलजियम जैसे कुछ देशों के पूंजीपति गिरोह भी शामिल हैं. इनकी कोशिशें दुनिया के अनेक हिस्सों में तरह तरह से जारी हैं.

रोमन साम्राज के समय से आज तक दुनिया के साम्राज प्रेमियों का एक ख़ास ढंग यह रहा है कि जिन देशों पर वह अपना राज जमाना चाहते हैं उनमें फूट पैदा करें और हो सके तो उनके टुकड़े कर डालें. आयरलैन्ड में अल्सटर के निवासियों को बाक़ी आइरिश लोगों से फाड़ कर आयरलैन्ड के दो टुकड़े करना, मिस्र में सूडान को बाक़ी मिस्र से अलग करना, फ़िलस्तीन में दूर दूर से लाकर यहूदियों को बसाना और अरबों और यहूदियों को एक दूसरे से लड़ाना, लगभग एक पीढ़ी पहले तक उत्तर ईरान को दक्खिन ईरान से अलग करना, हाल में जरमनी की दो और आस्ट्रिया की चार फांकें करना, चलते चलते हिन्दुस्तान को तीन हिस्सों में काट देना, कोरिया को उत्तर कोरिया और दक्खिन कोरिया में बांट देना, फ़ारमोसा को चीन से अलग करके वहां एक अलग सरकार बनाए रखने की कोशिश करना वग़ैरा वग़ैरा सब इसी फूट नीति के अनेक रूप हैं.

## سامراج پریمی دل اور اُس کی چالیں

ایک طرف ایشیا اور افریقہ کی پرانی قومیں اور وہ دوسری قومیں جو کچھ عرصے سے غیروں کی راج کاجی یا تجارتی غلامی میں دبی ہوئی تھیں آزاد ہونے اور پھلنے پھولنے کی کوششوں میں لگی ہوئی ہیں، اور دوسری طرف پچھم کی کچھ قوموں کے کچھ پونجی پتی دل جن کی سامراج کی پیاس ابھی بجھی نہیں ہے یا جن کی دوسروں کو چوس کر موٹا ہونے کی لالسا ابھی مٹی نہیں ہے جگہ جگہ اپنی اِس لالسا کو پورا کرنے کی کوشش میں ہیں. یہ ہے تھوڑے سے شبدوں میں اِس وقت کی دنیا کی حالت کا نچوڑ.

سامراج پریمی دل میں اِس سمے سب سے آگے امریکہ کی سرکار اور وہاں کے وہ فوجی اور تجارتی گروہ ہیں جن کے ہاتھوں میں وہاں کی حکومت ہے. اِن کے ساتھ انگلینڈ، فرانس، اِٹلی، ہالینڈ اور بلجیم جیسے کچھ دیشوں کے پونجی پتی گروہ بھی شامل ہیں. ان کی کوششیں دنیا کے انیک حصوں میں طرح طرح سے جاری ہیں.

رومن سامراج کے سمے سے آج تک دنیا کے سامراج پریمیوں کا ایک خاص ڈھنگ یہ رہا ہے کہ جن دیشوں پر وہ اپنا راج جمانا چاہتے ہیں اُن میں پھوٹ پیدا کریں اور ہوسکے تو اُن کے ٹکڑے کرڈالیں. آئرلینڈ میں السٹر کے نواسیوں کو باقی آئرش لوگوں سے پھاڑکر آئرلینڈ کے دو ٹکڑے کرنا، مصر میں سوڈان کو باقی مصر سے الگ کرنا، فلسطین میں دور دور سے لاکر یہودیوں کو بسانا اور عربوں اور یہودیوں کو ایک دوسرے سے لڑانا، لگ بھگ ایک پیڑھی پہلے تک اُتر ایران کو دکھن ایران سے الگ کرنا، حال میں جرمنی کی دو اور آسٹیریا کی چار پھانکیں کرنا، چلتے چلتے ہندستان کو تین حصوں میں کاٹ دینا، کوریا کو اُتر کوریا اور دکھن کوریا میں بانٹ دینا، فارموسا کو چین سے الگ کرکے وہاں ایک الگ سرکار بنائے رکھنے کی کوشش کرنا وغیرہ وغیرہ سب اِسی پھوٹ نیتی کے انیک روپ ہیں.

सुन्दर नमूने हमें इसमें मिलते हैं. शाही सैनिकों, मिनिस्टरों, सरकारी अफ़सरों, सबके चरित्र पर सुन्दर रोशनी पड़ती है.

'दि गोल्डन खिंगन माउन्टेन्स' पुनसेक का लिखा है. इसमें क्रान्ति विरोधी शक्तियों का किस तरह दमन किया गया यह चित्रित किया गया है. 'व्हीट' ( गेहूं ) और 'दि ओल्ड शेफ़र्ड' (बूढ़ा चरवाहा) बड़े सुन्दर रेखाचित्र हैं. सम्पादकीय केवल दो सफ़े का है और लेखों का परिचय देता है.

इसी नम्बर में कुछ सुन्दर चित्र भी हैं. 'आन दि वे होम ( वापस घर जाते हुये ) और 'फ़ारेस्ट' ( वन ) सुन्दर और भावपूर्न तिरंगे चित्र हैं. 'याकों का क़ाफ़ला' यकरंगा लेकिन पुरअसर चित्र है.

चाइनीज़ लिटरेचर अंग्रेज़ी भाशा भाशियों को आधुनिक और पुरातन दोनों तरह के साहित्य और चित्रों से परिचय कराने का उत्तम माध्यम है. हमें उम्मीद है इसका स्टैन्डर्ड बराबर इसी तरह ऊंचा रहेगा.

—विश्वम्भरनाथ पांडे



سندر نمونے ھمیں اِس میں ملتے ھیں. شاھی سینکوں، منستروں، سرکاری افسروں، سب کے چرتر پر سندر روشنی پڑتی ھے.

' دی گولڈن کھنگن مارنٹینس' پن سیک کا لکھا ھے. اِس میں کرانتی ورودھی شکتیوں کا کس طرح دمن کیا گیا یہ چترت کیا گیا ھے. ' وھیٹ ' ( گیہوں ) اور ' دی اُولڈ شیفرڈ' ( بوڑھا چرواھا ) بڑے سندر ریکھا چتر ھیں. سمپادکیہ کیول دو صفحے کا ھے اور لیکھوں کا پریچے دیتا ھے.

اِسی نمبر میں کچھ سندر چتر بھی ھیں. 'آن دی وے ھوم' ( واپس گھر جاتے ھوئے ) اور فاریسٹ' ( ون ) سندر اور بھاؤپورن ترنگے چتر ھیں. ' یاکوں کا قافلہ' یکرنگا لیکن پراثر چتر ھیں.

چائنیز لٹریچر انگریزی بھاشا بھاشیوں کو آدھونک اور پراتن دونوں طرح کے ساھتیہ اور چتروں سے پریچے کرانے کا اُتم مادھیم ھے. ھمیں اُمید ھے اِس کا اِسٹینڈرڈ برابر اِسی طرح اُونچا رھے گا.

—— وشومبھر ناتھ پانڈے

---

हज़रत अयूब मुसलमानों के एक बहुत माने हुए वली हुए हैं. वह बड़े दयालु थे. उनके सीने में ज़ख्म हो गये थे और उनमें कीड़े पड़ गये थे. एक रोज़ आप मदीने में एक स्थान पर खड़े हुए थे कि चन्द कीड़े ज़ख्म से निकलकर ज़मीन पर गिर पड़े. तब आपने उन कीड़ों को ज़मीन से उठाकर दुबारा अपने ज़ख्म में रख लिया. लोगों के पूछने पर हज़रत ने फ़रमाया—"क़ुदरत ने इन कीड़ों की ख़ूराक यही दी है, अलहदा होने पर मर जायेंगे. जब हम किसी में जान नहीं डाल सकते, तब हमें उनकी जान लेने का क्या हक़ है ?"

حضرت ایوب مسلمانوں کے ایک بہت مانے ہوئے ولی ہوئے ھیں. وہ بڑے دیالو تھے. اُن کے سینے میں زخم ہوگئے تھے اور اُن میں کیڑے پڑگئے تھے. ایک روز آپ مدینے میں ایک استھان پر کھڑے ہوئے تھے کہ چند کیڑے زخم سے نکل کر زمین پر گر پڑے. تب آپ نے اُن کیڑوں کو زمین سے اُٹھاکر دوبارہ اپنے زخم میں رکھ لیا. لوگوں کے پوچھنے پر حضرت نے فرمایا—"قدرت نے اِن کیڑوں کی خوراک یہیں دی ھے، علیحدہ ہونے پر مر جائینگے. جب ہم کسی میں جان نہیں ڈال سکتے، تب ھمیں اُن کی جان لینے کا کیا حق ھے ؟"

---

# कुछ किताबें

# کچھ کتابیں

## चाइनीज़ लिटरेचर ( 4-1954 )

अंगरेज़ी ज़बान का चीनी तिमाही. एडीशन माओ तुन; सफ़े—205; मिलने का पता—फ़ारेन लैंग्वेज प्रेस, 26 कुओ-हुइ-चीह, पीकिंग, चाइना; क़ीमत—लिखी नहीं.

अंगरेज़ी ज़बान में इस चीनी तिमाही रिसाले का चौथा नम्बर हमारे सामने है. छपाई सफ़ाई इसकी बेहद सुन्दर है. काग़ज़ उम्दा लगाया गया है.

इस नम्बर में 'दी लाइफ़ आफ़ दी स्कालर्स' ( विद्वानों की ज़िन्दगी ) और 'दि पैलेस आफ़ इटर्नल यूथ' ( अमर यौवन का महल ) क्रमशः वु-चिङ्ग-त्जु और हुङ्ग-शेङ्ग के लिखे हुये हैं. सन 1954 में पहले लेखक की 200 वीं और दूसरी की 250 वीं मृत्यु तिथि मनाई गई. दोनों लेखकों का जन्म उस समय हुआ जब मांचू-शासन के अन्दर जनता पर तरह तरह के ज़ुल्म और अत्याचार हो रहे थे. राज्य द्वारा बनाये हुये नियम विद्वानों के लिये एक शिकञ्जे का काम दे रहे थे. असली विद्वत्ता की कोई क़ीमत न थी. विद्वानों का आत्म सम्मान घुट घुट कर ख़त्म हो रहा था. नक़ली विद्वत्ता का मुलम्मा चढ़ा कर जाहिल पेश पेश थे. महलों में ऐशो इशरत का बोलबाला था. चारों ओर हास-विलास चलते थे. राज्य भर की सुन्दरियां, अच्छे से अच्छे कुलों की दासी के रूप में महल में लाई जाती थीं. सम्राट की कृपादृष्टि जिस पर हो जाती थी उसे 'रखेल' (Concubine ) का रुतबा दिया जाता था. इसके लिये वह ख़ुद और उसका परिवार सम्राट की कृतज्ञता जताता था. इसे सम्राट का 'महान प्रेम' कहकर वर्नन किया गया है. किन्तु इन रचनाओं में कला है. उस ज़माने के चीनी सामाजिक रीत रिवाजों की झांकियां इनमें मिलती हैं. पैलेस आफ़ दि इटर्नल यूथ के लेखक में ऊंचे दरजे की कवित्व शक्ति है. कविता के कुछ

## چائنیز لٹریچر ( 4-1954 )

انگریزی زبان کا چینی تماھی . ایڈیٹر ماؤ تن؛ صفحے—205؛ ملنے کا پتہ—فارین لنگوئیج پریس' 26 کوؤ-ھوئی-چیھہ' پیکنگ' چائنا؛ قیمت—لکھی نہیں .

انگریزی زبان میں اِس چینی تماھی رسالے کا چوتھا نمبر ھمارے سامنے ھے . چھپائی صفائی اِس کی بیحد سندر ھے . کاغذ عمدہ لگایا گیا ھے .

اِس نمبر میں 'دی لائف آف دی اسکالرس' ( ودوانوں کی زندگی ) اور ' دی پیلیس آف اِٹرنل یوتھ ' ( امر یوون کا محل ) کرمشہ أو . چنگ . تزو اور ھونگ - شینگ کے لکھے ھوئے ھیں . سن 1954 میں پہلے لیکھک کی 200 ویں اور دوسری کی 250 ویں مرتیو تتھی منائی گئی . دونوں لیکھکوں کا جنم اُس سمے ھوا جب مانچو - شاسن کے اندر جنتا پر طرح طرح کے ظلم اور اتیاچار ھو رھے تھے . راجیہ دوارا بنائے ھوئے نیم ودوانوں کے لئے ایک شکنجے کا کام دے رھے تھے . اصلی ودوتا کی کوئی قیمت نہ تھی . ودوانوں کا آتم سمان گھٹ گھٹ کر ختم ھو رھا تھا . نقلی ودوتا کا ملمع چڑھا کر جاھل پیش پیش تھے . محلوں میں عیش و عشرت کا بول بالا تھا . چاروں اور ھاس ولاس چلتے تھے . راجیہ بھر کی سندریاں' اچھے سے اچھے کلوں کی داسی کے روپ میں محل میں لائی جاتی تھیں . سمراٹ کی کرپا درشٹی جس پر ھو جاتی تھی اُسے ' رکھیل ' ( Concubine ) کا رتبہ دیا جاتا تھا . اِس کے لئے وہ خود اور اُس کا پریوار سمراٹ کی کرتیگتا جتاتا تھا . اِسے سمراٹ کا ' مہان پریم' کہ کر ورنن کیا گیا ھے . کنتو اِن رچناؤں میں کلا ھے . اُس زمانے کے چینی سماجک ریتی رواجوں کی جھانکیاں اِن میں ملتی ھیں . پیلیس آف دی اِٹرنل یوتھ کے لیکھک میں اونچے درجے کی کوتو شکتی ھے . کویتا کے کچھ

मदद के दिन लद गये. जिस तरह परिवार के मामले हम परिवार के अन्दर ही तय कर लेते हैं उसी तरह राष्ट्र राष्ट्र के झगड़े आपस में मिल बैठकर तय होने चाहियें. अगर ऐसा नहीं करके हम चालू रवैये से ही चिपके रहते हैं तो यह उसी तरह की नासमझी होगी जैसे कि गर्मी आजाने पर भी जाड़े के ऊनी कपड़े पहने रहने में होगी. इसी तरह केन्द्रीकरन के भी दिन लद गये. सरकार रहेगी लेकिन दबाने वाली या शोषक शक्ति की नहीं बल्कि फूलों को एक दूसरे से जोड़वाले धागे की तरह रहेगी. माला की खूबी इसी में है कि धागा दीखे नहीं. उसी तरह समाज रचना की खूबी यह होगी कि सरकार दीखेगी नहीं.

इसी को ईसा ईश्वर की हुकूमत कहते थे. इसी को गांधी जी ने रामराज्य कहा. इसी को विनोबा जी शासनमुक्त समाज कहते हैं. इस समाज की तरफ़ हम जितना ज्यादा बढ़ते हैं उतनी ही विश्वशान्ति मज़बूत और क़ायम का रूप लेती है, और विश्वशान्ति के लिये जो नया समाज मन्दिर बनेगा उस की दीवारें ग्रामोद्योग की ही हो सकती हैं.

مدد کے دن لد گئے. جس طرح پریوار کے معاملے ہم پریوار کے اندر ہی طے کرلیتے ہیں اسی طرح راشٹر راشٹر کے جھگڑے آپس میں مل بیٹھ کر طے ہونے چاہئیں. اگر ایسا نہیں کرکے ہم چالو رویہ سے ہی چپکے رہتے ہیں تو یہ اسی طرح کی ناسمجھی ہوگی جیسے کہ گرمی آ جانے پر بھی جاڑے کے اونی کپڑے پہنے رہنے میں ہوگی. اسی طرح کیندریکرن کے بھی دن لد گئے. سرکار رہے گی لیکن دبانے والی یا شوشک شکتی کی نہیں بلکہ پھولوں کو ایک دوسرے سے جوڑنے والے دھاگے کی طرح رہے گی. مالا کی خوبی اسی میں ہے کہ دھاگا دیکھے نہیں. اسی طرح سماج رچنا کی خوبی یہ ہوگی کہ سرکار دیکھیگی نہیں.

اسی کو عیسیٰ ایشور کی حکومت کہتے تھے. اسی کو گاندھی جی نے رام راجیہ کہا. اسی کو ونوبا جی شاسن مکت سماج کہتے ہیں. اس سماج کی طرف جتنا ہم زیادہ بڑھتے ہیں اتنی ہی وشوشانتی مضبوط اور قائم کا روپ لیتی ہے اور وشوشانتی کے لئے جو نیا سماج مندر بنے گا اس کی دیواریں گرامودیوگ کی ہی ہو سکتی ہیں.

---

एक बार एक परोपकारी बन्धु के पास रात के वक़्त एक फ़रिश्ता आया और नोटबुक दिखाकर बोला—"मैं इसमें उन बड़े लोगों का नाम लिख रहा हूं जो सच्चे दिल से ईश्वर की सेवा करते हैं. कहिये, इसमें आपका नाम लिखूं या नहीं?" परोपकारी बन्धु ने नम्रतापूर्वक कहा—"क्षमा कीजिये महाशय, मेरा नाम इस डायरी में न लिखें. मैं तो ईश्वर के बन्दों की सेवा करता हूं, यदि मनुश्य सेवकों की कोई डायरी आपके पास हो, तब सहर्ष उसमें मेरा नाम लिख सकते हैं, क्योंकि—

खुदा के बन्दे तो हैं हजारों बनों में फिरते हैं मारे मारे<br>
मैं उनका बन्दा बनूंगा जिनको खुदा के बन्दों से प्यार होगा

सुबह उठकर देखा तो सब से पहले सुनहरे हर्फ़ों में उसी का नाम डायरी में दर्ज था!

ایک بار ایک پروپکاری بندھو کے پاس رات کے وقت ایک فرشتہ آیا اور نوٹ بک دکھا کر بولا— "میں اس میں ان بڑے لوگوں کا نام لکھ رہا ہوں جو سچے دل سے ایشور کی سیوا کرتے ہیں. کہئے اس میں آپ کا نام لکھ لوں یا نہیں؟" پروپکاری بندھو نے نمرتا پوروک کہا— "چھما کیجئے مہاشئے میرا نام اس ڈائری میں نہ لکھیں. میں تو ایشور کے بندوں کی سیوا کرتا ہوں، یدی منشیہ سیوکوں کی کوئی ڈائری آپ کے پاس ہو، تب سہرش اس میں میرا نام لکھ سکتے ہیں، کیونکہ—

خدا کے بندے تو ہیں ہزاروں بنوں میں پھرتے ہیں مارے مارے<br>
میں اُن کا بندہ بنونگا جن کو خدا کے بندوں سے پیار ہوگا

صبح اٹھکر دیکھا تو سب سے پہلے سنہرے حرفوں میں اسی کا نام ڈائری میں درج تھا!

---

है. उसी चीज़ को महात्मा गान्धी जी ने ट्रस्टीशिप या थातीदारी के सिद्धान्त के तौर पर पेश किया. उस चीज़ को अमली जामा पहनाने के लिये सन्त विनोबा ने भूदान-यज्ञ का कार्यक्रम हमारे सामने रखा है. जमीन हो या सम्पत्ति, इन पर निजी मालकियत अब किसी एक व्यक्ति की नहीं रहनी चाहिये, न सरकार की ही रहनी चाहिये. चीजों पर मालकियत समाज की हो, और सम्पत्ति फुटबाल की गेन्द की तरह समाज में लुढ़कती रहे, एक हाथ से दूसरे हाथ में आती जाती रहे. यानी जिस तरह परिवार के अन्दर सम्पत्ति की मालकियत नहीं होती, उसी तरह समाज के अन्दर भी सम्पत्ति की निजी मालकियत नहीं रहनी चाहिये. जो चीज है वह समाज की. व्यक्ति अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ एक ट्रस्टी के तौर पर उसका इस्तेमाल कर सकता है.

ग्रामोद्योग और विश्वशान्ति का चोली और दामन का साथ है, लेकिन आज ज़रूरत न होने पर आगे के लिये उसका संग्रह नहीं करेगा. संग्रह समाज में होगा, व्यक्ति में नहीं. इसके लिये फिर यह ज़रूरी होगा कि हर व्यक्ति मेहनत करे. यह नहीं कि कुछ लोग मेहनत ही करते रहें और कुछ लोग उस मेहनत का मज़ा लेते रहें. सभी मेहनत करेंगे और सभी उसका मज़ा लेंगे. चाहे प्रोफ़ैसर हो, चाहे वैज्ञानिक, चाहे जज, चाहे राज्यकर्ता, चाहे सार्वजनिक कार्यकर्ता, हर किसी को उत्पादक शरीर श्रम फ़र्ज़ समझकर करना होगा. शरीर श्रम को एक सामाजिक नित्य कर्म का रूप मिलेगा. वह समाज धर्म बनेगा. व्यक्ति श्रम परायण होगा और उसकी सारी सेवा समाज के लिये अर्पित होगी. प्रसाद के रूप में जो कुछ समाज से उसे मिलेगा, वह उसे ग्रहन करेगा. अगर यह नहीं होता है तो दुखी दुखी ही रहेंगे और अशान्ति बढ़ती जायगी.

निजी मालकियत ख़तम हो और हर कोई कुछ न कुछ उत्पादक श्रम करे, दूसरे शब्दों में अपनी बुनियादी ज़रूरतों में हर आदमी जहां तक हो सके ख़ुद मुख़्तार हो. हर घर या हर गांव स्वावलम्बी हो, दूसरों का कम से कम मोहताज हो. जितना स्वावलम्बन बढ़ेगा उतनी ही शान्ति बढ़ेगी. जब गांव गांव अपने पैरों पर खड़े होंगे तो खाना कपड़ा जैसी बुनयादी चीज़ों के लिये बड़े बड़े कारख़ानों की ज़रूरत नहीं रहेगी. हर गांव इसमें ख़ुद काफ़ी होगा. यह बिना ग्रामोद्योग के नामुमकिन है. अब तक ग्रामोद्योग बहुत कुछ लाचारी के रूप में दुनिया में चले. लेकिन विज्ञान बता रहा है कि आगे ग्रामोद्योग इसलिये चलने चाहियें कि दुनिया में शान्ति क़ायम हो और मनुश्य जिन्दा रह सके. बुनियादी ज़रूरतों के लिये बड़े बड़े कारख़ानों के दिन लद गये. हथियारबन्दी के दिन लद गये. हिफ़ाज़त के लिये फ़ौजी



ھے. اُسی چیز کو مہاتما گاندھی جی نے ٹرسٹیشپ یا تھاتی‌داری کے سدھانت کے طور پر پیش کیا. اُس چیز کو عملی جامہ پہنانے کے لئے سنت ونوبا نے بھودان یگیہ کا کاریہ‌کرم ھمارے سامنے رکھا ھے. زمین ھو یا سمپتی، اِن پر نجی مالکیت اب کسی ایک ویکتی کی نہیں رھنی چاھئے، نہ سرکار کی ھی رھنی چاھئے. چیزوں پر مالکیت سماج کی ھو، اور سمپتی فٹ بال کی گیند کی طرح سماج میں لڑھکتی رھے، ایک ھاتھ سے دوسرے ھاتھ میں آتی جاتی رھے. یعنی جس طرح پریوار کے اندر سمپتی کی مالکیت نہیں ھوتی، اُسی طرح سماج کے اندر بھی سمپتی کی نجی مالکیت نہیں رھنی چاھئے. جو چیز ھے وہ سماج کی. ویکتی اپنی ضرورت کے مطابق ایک ٹرسٹی کے طور پر اُس کا استعمال کر سکتا ھے.

گرامودیوگ اور وشو شانتی کا چولی اور دامن کا ساتھ ھے، لیکن آج ضرورت نہ ھونے پر آگے کے لئے اُس کا سنگرہ نہیں کرے گا. سنگرہ سماج میں ھوگا، ویکتی میں نہیں. اس کے لئے پھر یہ ضروری ھوگا کہ ھر ویکتی محنت کرے. یہ نہیں کہ کچھ لوگ محنت ھی کرتے رھیں اور کچھ لوگ اُس محنت کا مزا لیتے رھیں. سبھی محنت کرینگے اور سبھی اُس کا مزا لینگے. چاھے پروفیسر ھو، چاھے ویگیانک، چاھے جج، چاھے راجیہ کرتا، چاھے ساروجنک کاریہ‌کرتا، ھر کسی کو اتپادک شریر شرم فرض سمجھکر کرنا ھوگا. شریر شرم کو ایک سماجک نتیہ کرم کا روپ ملے گا. وہ سماج دھرم بنے گا. ویکتی شرم پراین ھوگا اور اُس کی ساری سیوا سماج کے لئے ارپت ھوگی. پرساد کے روپ میں جو کچھ سماج سے اُسے ملے گا، وہ اُسے گرھن کرے گا. اگر یہ نہیں ھوتا ھے تو دوکھی دوکھی ھی رھیں گے اور اشانتی بڑھتی جائے گی.

نجی مالکیت ختم ھو اور ھر کوئی کچھ نہ کچھ اُتپادک شرم کرے، دوسرے شبدوں میں اپنی بنیادی ضرورتوں میں ھر آدمی جہاں تک ھو سکے خود مختار ھو. ھر گھر یا ھر گاؤں سواولمبی ھو، دوسروں کا کم سے کم محتاج ھو. جتنا سواولمبن بڑھے گا اُتنی ھی شانتی بڑھے گی. جب گاؤں گاؤں اپنے پیروں پر کھڑے ھونگے تو کھانا کپڑا جیسی بنیادی چیزوں کے لئے بڑے بڑے کارخانوں کی ضرورت نہیں رھے گی. ھر گاؤں اِس میں خود کافی ھوگا. یہ بنا گرامودیوگ کے ناممکن ھے. اب تک گرامودیوگ بہت کچھ لاچاری کے روپ میں دنیا میں چلے. لیکن وگیان بتا رھا ھے کہ آگے گرامودیوگ اِس لئے چلنے چاھئیں کہ دنیا میں شانتی قائم ھو اور منشیہ زندہ رہ سکے. بنیادی ضرورتوں کے لئے بڑے بڑے کارخانوں کے دن لد گئے. ھتیاربندی کے دن لد گئے. حفاظت کے لئے فوجی

उद्योग अब खतम कर दिये जायें ? या विज्ञान जो तरक़्क़ी कर रहा है उससे मुंह मोड़कर पीछे की ओर हटा जाये. पीछे की तरफ़ न हटने की जरूरत है न हटाया जा सकता है. विज्ञान डंके की चोट पर बता रहा है कि जब भौगोलिक रूप से दुनिया एक परिवार बनी है तो सामाजिक रूप से भी दुनिया को एक परिवार बनना चाहिये. इसलिये जो गुण और मूल्य परिवार के अन्दर मान्य हैं उनको समाज के अन्दर भी मान्यता मिलनी चाहिये. अगर उन गुणों और मूल्यों से परिवार के अन्दर आनन्द रहता है तो फिर समाज के अन्दर क्यों नहीं रहेगा ?

परिवार की दो खास खूबियां हैं. एक तो यह कि परिवार के अन्दर निजी मालकियत नहीं होती. परिवार में सुख और दुख बांट लिया जाता है. परिवार में किसी भी सदस्य की कमाई क्यों न हो उसमें सब सदस्य शरीक होते हैं. दूसरी यह है कि परिवार में हर कोई दूसरे की ख़ातिर मर मिटना चाहता है. यह भावना काम करती है कि घर में दूसरे को पहले मिल जाये पीछे मुझे मिले. माता घर में सब से ज्यादा काम करती है लेकिन सबसे बाद में खाती है. बच्चे सबसे कम कमाई करते है लेकिन सबसे पहले खाते हैं. बाप की भी यही कोशिश रहती है कि किस तरह बच्चे मुझसे ज्यादा बढ़ चढ़ जायें. परिवार के अन्दर हर चीज़ सब के लिये है. ऐसा नहीं होता कि अगर उसमें आठ आदमी हैं तो छै खा पी लें और दो को उस वक़्त तक भूका रखा जाये जब तक पैदावार या आमदनी काफ़ी न हो. अगर कम है तो सब लोग कम खायेंगे. अगर ज्यादा है तो सब लोग ज्यादा खायेंगे. लेकिन घर के बाहर आकर समाज के अन्दर हम क्या देखते हैं ? बिल्कुल उलटा नक़्शा है. हर चीज़ पर मालकियत का रोब जमाया जाता है. हर किसी की यह कोशिश रहती है कि मुझे पहले मिले, और दूसरों को बाद में. इसी का नतीजा है कि विज्ञान जितने सुख और वैभव का अविष्कार करता जाता है, उतने ही वह चन्द गिने चुने लोगों के हाथ में पहुंचता जाता है, और ज्यादा से ज्यादा लोग उससे वंचित होते जाते हैं, और देश देश की सरकारें दूसरे देशों को तरह तरह की चीज़ों के लिये तरसाना और अपने पर आधारित रखवाना चाहती हैं. इस तरह विज्ञान सत्ता के बस में खेल रहा है, और दुनिया में ग़रीबी और अशान्ति फैल रही है.

यह हालत अगर ज्यादा दिनों चलती रही तो विज्ञान मनुश्य जाति को ही मिटा डालेगा. हिन्सा और विज्ञान के संयोग से दुनिया का नाश ही होने वाला है. समय आ गया है कि इस पर गहराई से विचार किया जाय और ठीक रास्ते की तरफ़ दुनिया चले. वह रास्ता वही है जो सब धर्मों के सन्तों, साधुओं और पैग़म्बरों ने हमेशा से बताया. जो बात उन्होंने बताई उसी की तरफ़ विज्ञान इशारा कर रहा



اُدیوگ اب ختم کردئے جائیں ؟ یا وگیان جو ترقی کررہا ہے اُس سے منہ موڑکر پیچھے کی اور ہٹا جائے؟ پیچھے کی طرف نہ ہٹنے کی ضرورت ہے نہ ہٹایا جاسکتا ہے. وگیان ڈنکے کی چوٹ پر بتا رہا ہے کہ جب بھوگولک روپ سے دنیا ایک پریوار بنی ہے تو سماجک روپ سے بھی دنیا کو ایک پریوار بننا چاہئے. اِس لئے جو گن اور مولیہ پریوار کے اندر مانیہ ہیں اُن کو سماج کے اندر بھی مانتا ملنی چاہئے. اگر اُن گنوں اور مولیوں سے پریوار کے اندر آنند رہتا ہے تو پھر سماج کے اندر کیوں نہیں رہیگا ؟

پریوار کی دو خاص خوبیاں ہیں. ایک تو یہ کہ پریوار کے اندر نجی مالکیت نہیں ہوتی. پریوار میں سکھ اور دکھ بانٹ لیا جاتا ہے. پریوار میں کسی بھی سدسیہ کی کمائی کیوں نہ ہو اُس میں سب سدسیہ شریک ہوتے ہیں. دوسری یہ ہے کہ پریوار میں ہر کوئی دوسرے کی خاطر مرمٹنا چاہتا ہے. یہ بھاؤنا کام کرتی ہے کہ گھر میں دوسرے کو پہلے مل جائے پیچھے مجھے ملے. ماتا گھر میں سب سے زیادہ کام کرتی ہے لیکن سب سے بعد میں کھاتی ہے. بچے سب سے کم کمائی کرتے ہیں لیکن سب سے پہلے کھاتے ہیں. باپ کی بھی یہی کوشش رہتی ہے کہ کس طرح بچے مجھ سے زیادہ بڑھ چڑھ جائیں. پریوار کے اندر ہر چیز سب کے لئے ہے. ایسا نہیں ہوتا کہ اگر اُس میں آٹھ آدمی ہیں تو چھ کھا پی لیں اور دو کو اُس وقت تک بھوکا رکھا جائے جب تک پیداوار یا آمدنی کافی نہ ہو. اگر کم ہے تو سب لوگ کم کھائینگے. اگر زیادہ ہے تو سب لوگ زیادہ کھائینگے. لیکن گھر کے باہر آ کر سماج کے اندر ہم کیا دیکھتے ہیں ؟ بالکل اُلٹا نقشہ ہے. ہر چیز پر مالکیت کا رعب جمایا جاتا ہے. ہر کسی کی یہ کوشش رہتی ہے کہ مجھے پہلے ملے' اور دوسرے کو بعد میں. اِسی کا نتیجہ ہے کہ وگیان جتنے سکھ اور ویبھو کا اوشکار کرتا جاتا ہے' اُتنے ہی وہ چند گنے چنے لوگوں کے ہاتھ میں پہونچتا جاتا ہے اور زیادہ سے زیادہ لوگ اُس سے ونچت ہوتے جاتے ہیں' اور دیش دیش کی سرکاریں دوسرے دیشوں کو طرح طرح کی چیزوں کے لئے ترسانا اور اپنے پر آدھارت رکھوانا چاہتی ہیں. اِس طرح وگیان ستتا کے بس میں کھیل رہا ہے' اور دنیا میں غریبی اور اشانتی پھیل رہی ہے.

یہ حالت اگر زیادہ دنوں چلتی رہی تو وگیان منشیہ جاتی کو ہی مٹا ڈالے گا. ہنسا اور وگیان کے سنیوگ سے دنیا کا ناش ہی ہونے والا ہے. سمے آ گیا ہے کہ اِس پر گہرائی سے وچار کیا جائے اور ٹھیک راستے کی طرف دنیا چلے. وہ راستہ وہی ہے جو سب دھرموں کے سنتوں' سادھوؤں اور پیغمبروں نے ہمیشہ سے بتایا. جو بات اُنھوں نے بتائی اُسی کی طرف وگیان اِشارہ کر رہا

रही है, फ़ौज पर ख़र्चा बढ़ रहा है. साधारण नागरिक को फ़ौजी तालीम देने की कोशिश हो रही है. बल्कि एक सूरत में देखें तो हमारी हालत और भी गई बीती है. पिछले तीन सौ, चार सौ बरस से इंगलैन्ड के अन्दर देश के अन्दरूनी मामलों में कभी भी वहां की सरकार को गोली नहीं चलानी पड़ी है. लेकिन हिन्दुस्तान को आज़ाद हुये अभी आठ बरस भी पूरे नहीं हुये हैं. मगर हर साल ही कहीं न कहीं, किसी न किसी मामले पर पुलिस को गोली चलानी पड़ती है. इसलिये बुनियादी तौर पर हिन्दुस्तान की सरकार भी हथियार की ताक़त की पाबन्द बनी हुई है.

हथियार जब बढ़ते हैं तब केन्द्रीय सरकार की ताक़त और भी मज़बूत हो जाती है. हथियारों के नाम पर सरकारें समान्य जीवन के अनेक पहलुओं पर ज्यादा से ज्यादा क़बज़ा जमा लेती हैं. दुनिया भर में आज हर देश के अन्दर वहां की सरकार, वहां की जनता पर पहले से कहीं ज्यादा हावी है. जब केन्द्र के हाथ में दिन दुगुनी रात चौगुनी सत्ता आती जाती है तो देश के आर्थिक मामलों में इसका नियंत्रण अपने आप ही बढ़ता जाता है. वहां के उद्योग, वहां के कल कारख़ाने, वहां की अनाज की पैदावार और उसका बंटवारा, वहां का खानपान तक सरकार के हाथ में आजाता है. आज अगर अमरीका की सरकार चाहे तो अपने लोगों को एक प्याला चाय या रोटी के टुकड़े के लिये तरसा सकती है. इंगलैन्ड की सरकार चाहे तो अपने यहां के लोगों को एक एक इंच कपड़े के लिये हैरान कर सकती है. ख़ुशक़िस्मती से हिन्दुस्तान में हालत अभी इस दर्जे तक नहीं गिरी है. जब सरकार के हाथ में देश का व्यापार और उद्योग धन्दे आते हैं तो उसका लाज़मी नतीजा यह होता है कि घर घर और गांव गांव चलने वाले धन्दे ख़तम हो जाते हैं. छोटे छोटे, अपने बल पर खड़े होने वाले कारीगर बेकार हो जाते हैं. उन्हें या तो बड़े बड़े कारख़ानों में काम करना होता है जहां उन्हें बैल से ऊंचा दरजा नहीं मिलता, या फिर अपने घर बेकार, मुहताज पड़े रहते हैं. इसलिये दुनिया में जितना ज्यादा केन्द्रीकरण होता जाता है उतना ही उद्योगीकरण बढ़ता जाता है, और उतने ही ग्रामोद्योग नष्ट होते जाते हैं. हम कह सकते हैं कि जिस मात्रा में ग्रामोद्योग मिटते हैं उतना केन्द्रीकरण बढ़ता है और उस मात्रा में विश्व शान्ति के लिये ख़तरा बढ़ता है और डर फैलता जाता है.

यह दर्दनाक दृश्य हर मुल्क में देखने को मिलता है. आज वही देश कुछ थोड़े सुखी हैं जहां बड़े बड़े उद्योग कम तादाद में हैं. उन्हीं देशों के लोगों के दिल में कुछ शान्ति है जो अपने उद्योग ख़ुद कर लेते हैं और बाहरवालों का मुंह नहीं ताकते. तो सवाल पैदा होता है कि क्या बड़े



رهی هے' فوج پر خرچه بڑھ رها هے . سادهارن ناگرک کو فوجی تعلیم دینے کی کوشش هو رهی هے . بلکه ایک صورت میں دیکھیں تو هماری حالت اور بهی گئی بیتی هے . پچھلے تین سو' چار سو برس سے اِنگلینڈ کے اندر دیش کے اندرونی معاملوں میں کبھی بھی وهاں کی سرکار کو گولی نهیں چلانی پڑی هے . لیکن هندستان کو آزاد هوئے ابهی آٹھ برس بهی پورے نهیں هوئے هیں. مگر هر سال هی کہیں نه کہیں' کسی نه کسی معاملے پر پولس کو گولی چلانی پڑتی هے . اِس لئے بنیادی طور پر هندستان کی سرکار بهی هتیار کی طاقت کی پابند بنی هوئی هے .

هتیار جب بڑھتے هیں تب کیندریه سرکار کی طاقت اور بهی مضبوط هوجاتی هے . هتیاروں کے نام پر سرکاریں سامانیه جیون کے انیک پہلوؤں پر زیادہ سے زیادہ قبضه جما لیتی هیں . دنیا بهر میں آج هر دیش کے اندر وهاں کی سرکار' وهاں کی جنتا پر پہلے سے کہیں زیادہ حاوی هے . جب کیندر کے هاتھ میں دن دوگنی رات چوگنی ستتا آتی جاتی هے تو دیش کے آرتھک معاملوں میں اِس کا نینترن اپنے آپ هی بڑھتا جاتا هے. وهاں کے اُدیوگ' وهاں کے کل کارخانے' وهاں کی اناج کی پیداوار اور اُس کا بٹوارہ' وهاں کا کھان پان تک سرکار کے هاتھ میں آجاتا هے. آج اگر امریکه کی سرکار چاهے تو اپنے لوگوں کو ایک پیاله چائے یا روٹی کے ٹکڑے کے لئے ترسا سکتی هے . انگلینڈ کی سرکار چاهے تو اپنے یہاں کے لوگوں کو ایک ایک انچ کپڑے کے لئے حیران کرسکتی هے . خوش قسمتی سے هندستان میں حالت ابهی اِس درجه تک نهیں گری هے . جب سرکار کے هاتھ میں دیش کا ویاپار اور اُدیوگ دهندے آتے هیں تو اُس کا لازمی نتیجه یه هوتا هے که گھر گھر اور گاؤں گاؤں چلنے والے دهندے ختم هو جاتے هیں . چھوٹے چھوٹے' اپنے بل پر کھڑے هونے والے کاریگر بیکار هو جاتے هیں. اُنهیں یا تو بڑے بڑے کارخانوں میں کام کرنا هوتا هے جهاں انهیں بیل سے اُونچا درجه نهیں ملتا' یا پهر اپنے گھر بیکار' محتاج پڑے رهتے هیں. اِس لئے دنیا میں جتنا زیادہ کیندریکرن هوتا جاتا هے اُتنا هی اُدیوگیکرن بڑھتا جاتا هے' اور اُتنے هی گرامودیوگ نشٹ هوتے جاتے هیں . هم کہ سکتے هیں که جس ماترا میں گرامودیوگ مٹتے هیں اُتنا کیندریکرن بڑھتا هے اور اُس ماترا میں وشوشانتی کے لئے خطرہ بڑھتا هے اور ڈر پهیلتا جاتا هے .

یه دردناک درشیه هر ملک میں دیکھنے کو ملتا هے . آج وهی دیش کچھ تهوڑے سکھی هیں جهاں بڑے بڑے اُدیوگ کم تعداد میں هیں . اُنهیں دیشوں کے لوگوں کے دل میں کچھ شانتی هے جو اپنے اُدیوگ خود کرلیتے هیں اور باهر والوں کا منه نهیں تاکتے . تو سوال پیدا هوتا هے که کیا بڑے

था ? अगर था तो यह सोचकर कुछ सन्तोष होता है कि अगरचे बौद्ध धर्म के धार्मिक पहलू को ब्राह्मणों के कर्ममान्ड और रूढ़ियों के जंगल में चारों तरफ़ से ढक दिया था फिर भी राजनैतिक चेत्र में बौद्ध धर्म की जड़ें दूर दूर तक गहरी पहुंच गई थीं. बौद्ध धर्म ने हिन्दू समाज में इनसानियत पैदा की. बौद्ध धर्म ने भारतीय राजनीति से कौटिल्य की कुबुद्धि को इस तरह बाहर कर दिया, जिस तरह किसी का भूत झाड़ा जाता है. लेकिन राजनीति में कौटिल्य बार बार पैदा होते रहते हैं और दिखाई देते रहते हैं. यूरोप में कौटिल्य ने मैशियेवैली के रूप में जन्म लिया, विज्ञान के सूक्ष्म परों के ऊपर इसी भावना ने फिर से एशिया में प्रवेश किया. कौटिल्य की भावना फिर हमारे राजनैतिक जीवन पर क़ाबू हासिल कर रही है और करेगी, जब तक कि बुद्ध जैसी ही कोई महान आत्मा आकर हमारी उससे रक्षा न करे.

تھا؟ اگر تھا تو یہ سوچ کر کچھ سنتوش ہوتا ہے کہ اگرچہ بودھ دھرم کے دھارمک پہلو کو براہمنوں کے کرم کانڈ اور روڑھیوں کے جنگل میں چاروں طرف سے ڈھک دیا تھا پھر بھی راجنیتک چھیتر میں بودھ دھرم کی جڑیں دور دور تک گہری پہونچ گئی تھیں۔ بودھ دھرم نے ہندو سماج میں اِنسانیت پیدا کی۔ بودھ دھرم نے بھارتیہ راج نیتی سے کوتیلہ کی کوبدھی کو اِس طرح باہر کر دیا' جس طرح کسی کا بھوت جھاڑا جاتا ہے۔ لیکن راج نیتی میں کوتیلہ بار بار پیدا ہوتے رہتے ہیں اور دکھائی دیتے رہتے ہیں۔ یورپ میں کوتیلہ نے میشیے ویلی کے روپ میں جنم لیا' وگیان کے سوکشم پروں کے اوپر اِسی بھاؤنا نے پھر سے ایشیا میں پرویش کیا۔ کوتلیہ کی بھاونا پھر ہمارے راجنیتک جیون پر قابو حاصل کر رہی ہے اور کرے گی' جب تک کہ بدھ جیسی ہی کوئی مہان آتما آ کر ہماری اُس سے رکشا نہ کرے۔

---

## ग्रामोद्योग और विश्वशान्ति

## گرامودیوگ اور وشوشانتی

श्री सुरेशराम भाई

شری سریش رام بھائی

विज्ञान ने इस धरती को एक परिवार बना दिया है. बहत्तर घंटे के अन्दर हम किसी सिरे से दूसरे सिरे तक पहुंच सकते हैं. लेकिन फिर भी आपस में एक दूसरे का डर बना है. शायद इतिहास भर में दुनिया में कभी भी इतना डर नहीं छाया हुआ था जितना कि आज है. बड़ी अजीब बात है. विज्ञान ने एक से एक बढ़कर करामातें दिखाई हैं. खाना, कपड़ा और जीवन के दूसरे साधन जितने आज हासिल हैं उतने कभी नहीं थे. फिर भी इतना डर ! इतनी बे ऐतबारी ! यही सबब है कि सभी देशों में ज़ोरों से हथियार बढ़ाये जा रहे हैं. जितना बड़ा देश उतनी बड़ी हथियारबन्दी. जो छोटे देश हैं वह भी ज़रूरत से ज़्यादा हथियार रखने की तमन्ना रखते हैं. अगर ख़ुद हथियार बना नहीं पाते तो दूसरे देशों से मांगते हैं. इस तरह दुनिया बड़े बड़े गुटों में बंट गई है. सभी छोटे बड़े राष्ट्र इन दो में से एक गुट में शामिल हो गये हैं. हां, कुछ हिन्दुस्तान जैसे भी हैं जो इनसे अलग रहकर एक तीसरा हलक़ा बनाना चाहते हैं जो लड़ाई से दूर रहे. लेकिन हिन्दुस्तान में भी दूसरे देशों की तरह हथियारबन्दी बढ़

وگیان نے اِس دھرتی کو ایک پریوار بنا دیا ہے۔ بہتر گھنٹے کے اندر ہم کسی سرے سے دوسرے سرے تک پہونچ سکتے ہیں۔ لیکن پھر بھی آپس میں ایک دوسرے کا ڈر بنا ہے۔ شاید اِتہاس بھر میں دنیا میں کبھی بھی اتنا ڈر نہیں چھایا ہوا تھا جتنا کہ آج ہے۔ بڑی عجیب بات ہے۔ وگیان نے ایک سے ایک بڑھکر کراماتیں دکھائی ہیں۔ کھانا' کپڑا اور جیون کے دوسرے سادھن جتنے آج حاصل ہیں اُتنے کبھی نہیں تھے۔ پھر بھی اتنا ڈر! اتنی بے اعتباری! یہی سبب ہے کہ سبھی دیشوں میں زوروں سے ہتیار بڑھائے جا رہے ہیں۔ جتنا بڑا دیش اُتنی بڑی ہتیار بندی۔ جو چھوٹے دیش ہیں وہ بھی ضرورت سے زیادہ ہتیار رکھنے کی تمنا رکھتے ہیں۔ اگر خود ہتیار بنا نہیں پاتے تو دوسرے دیشوں سے مانگتے ہیں۔ اِس طرح دنیا بڑے بڑے گٹوں میں بٹ گئی ہے۔ سبھی چھوٹے بڑے راشٹر اِن دو میں سے ایک گٹ میں شامل ہوگئے ہیں۔ ہاں' کچھ ہندستان جیسے بھی ہیں جو اِن سے الگ رہ کر ایک تیسرا حلقہ بنانا چاہتے ہیں جو لڑائی سے دور رہے۔ لیکن ہندستان میں بھی دوسرے دیشوں کی طرح ہتیار بندی بڑھ

समय से दिखाई देना शुरू हो गया. इन चीज़ों के होते हुये फ़ाहियान की पुस्तक में हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म के कोई आपसी झगड़े दिखाई नहीं देते तो क्या आश्चर्य है. क्योंकि उस समय तक बौद्ध धर्म इतना बदल गया था कि वह हिन्दू धर्म ही का एक ऐसा विचित्र और अप्राकृतिक रूप रह गया था जिसे देखकर हिन्दू धर्म के पुनरुद्धार के समय में भी ब्राह्मण लोग हंसते थे और नफ़रत दिखाते थे.

अन्धविश्वासों का जो घना जंगल शुरू के बोधिवृक्ष के चारों तरफ़ उग खड़ा हुआ था, उससे बाहर निकलकर उस स्वतन्त्र वायुमन्डल में प्रवेश करना, जिसका ख़ाका फ़ाहियान ने खींचा है, बड़ा सुखद मालूम होता है. गुप्त सम्राटों के ज़माने में राजनैतिक जीवन की जो सब से ख़ास चीज़ मालूम होती है आज़ादी थी. फ़ाहियान का अपना बयान इतना चमकता हुआ है कि उसे उसी के शब्दों में देना ठीक होगा. वह लिखता है—"लोग सुखी और ख़ुशहाल हैं. न किसी की रजिस्ट्री होती है और न राज की तरफ़ से किसी तरह की रोक थाम है. सिर्फ़ जो लोग राजा की ज़मीन जोतते हैं वे जो कुछ उस ज़मीन से मुनाफ़ा कमाते हैं उस पर लगान अदा कर देते हैं. जो जाना चाहते हैं जा सकते हैं. जो ठहरना चाहें ठहर सकते हैं. राजा की तरफ़ से किसी को शारीरिक दन्ड नहीं दिया जाता. मुजरिमों पर उनके जुर्म के अनुसार केवल जुर्माना ले लिया जाता है, यहां तक कि राज के ख़िलाफ़ बग़ावत करने वाले से भी. अगर वह दूसरी बार वही जुर्म करे तब सिर्फ़ दाहिना हाथ काट लिया जाता है. देश भर में कोई किसी जानदार की हिंसा नहीं करता, न कोई शराब पीता है, न कोई प्याज़ या लहसुन खाता है. लेकिन चांडालों को बस्ती से अलग रखा जाता है. चांडाल एक तरह के पतित लोग होते हैं." वास्तव में वह एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था थी, जिसमें एक मात्र कलंक की चीज़ चांडालों का अस्तित्व था. इस शान और क़रीब क़रीब आदर्श शासन की उस फ़ौलादी स्वेच्छा शासन के साथ तुलना करनी चाहिये जिसका कौटिल्य ने समर्थन किया है. इस तरह की तुलना से हमें समाजवाद और व्यक्तिवाद का वह भेद जो युगों से चला आ रहा है साफ़ दिखाई देने लगता है. कौटिल्य एक ऐसे समाज का चित्र हमारे सामने पेश करता है "जनता को पीस देने वाली नौकरशाही के प्राणनाशक फ़ौलादी पंजे के अन्दर जिसका दम घुट रहा था." पांच सदियां गुज़र जाने के बाद एक ऐसी शासन पद्धति देखने को मिलती है जहां ज़्यादा से ज़्यादा राजनैतिक क्षमता और उसके साथ व्यक्ति की स्वतन्त्रता में कम से कम हस्तक्षेप दोनों मिले हुये दिखाई देते हैं. क्या वह बौद्ध धर्म जो राजर्षि अशोक ने इतनी दया के साथ दुनिया के सामने रखा इस तब्दीली की वजह नहीं



سمے سے دکھائی دینا شروع ہوگیا. اِن چیزوں کے ہوتے ہوئے فاہیان کی پستک میں ہندو دھرم اور بودھ دھرم کے کوئی آپسی جھگڑے دکھائی نہیں دیتے تو کیا اشچریہ ہے. کیونکہ اُس سمے تک بودھ دھرم اتنا بدل گیا تھا کہ وہ ہندو دھرم ہی کا ایک ایسا وچتر اور اپراکرتک روپ رہ گیا تھا جسے دیکھکر ہندو دھرم کے پنررودھار کے سمے میں بھی براہمن لوگ ہنستے تھے اور نفرت دکھاتے تھے.

اندھ وشواسوں کا جو گھنا جنگل شروع کے بودھی ورکچھ کے چاروں طرف اُگ کھڑا ہوا تھا، اُس سے باہر نکل کر اُس سوتنتر وایومنڈل میں پرویش کرنا، جسکا خاکہ فاہیان نے کھینچا ہے، بڑا سوکھد معلوم ہوتا ہے. گپت سمراٹوں کے زمانے میں راجنیتک جیون کی جو سب سے خاص چیز معلوم ہوتی ہے آزادی تھی. فاہیان کا اپنا بیان اتنا چمکتا ہوا ہے کہ اُسے اُسی کے شبدوں میں دینا ٹھیک ہوگا. وہ لکھتا ہے — "لوگ سکھی اور خوشحال ہیں. نہ کسی کی رجسٹری ہوتی ہے اور نہ راج کی طرف سے کسی طرح کی روک تھام ہے. صرف جو لوگ راجہ کی زمین جوتتے ہیں وے جو کچھ اُس زمین سے منافع کماتے ہیں اِس پر لگان ادا کر دیتے ہیں. جو جانا چاہتے ہیں جا سکتے ہیں. جو ٹھہرنا چاہیں ٹھہر سکتے ہیں. راجہ کی طرف سے کسی کو شاریرک دنڈ نہیں دیا جاتا. مجرموں پر اُن کے جرم کے انوسار کیول جرمانہ لےلیا جاتا ہے. یہاں تک کہ راج کے خلاف بغاوت کرنے والے سے بھی. اگر وہ دوسری بار وہی جرم کرے تب صرف داہنا ہاتھ کاٹ لیا جاتا ہے. دیش بھر میں کوئی کسی جاندار کی ہنسا نہیں کرتا، نہ کوئی شراب پیتا ہے، نہ کوئی پیاز یا لہسن کھاتا ہے. لیکن چانڈالوں کو بستی سے الگ رکھا جاتا ہے. چانڈال ایک طرح کے پتت لوگ ہوتے ہیں." واستو میں وہ ایک آدرش سماجک ویوستھا تھی، جس میں ایک ماتر کلنک کی چیز چانڈالوں کا استتو تھا. اِس شان اور قریب قریب آدرش شاسن کی اُس فولادی سویچھا شاسن کے ساتھ تولنا کرنی چاہئے جس کا کوتلیہ نے سمرتھن کیا ہے. اِس طرح کی تولنا سے ہمیں سماج واد اور ویکتی واد کا وہ بھید جو یگوں سے چلا آ رہا ہے صاف دکھائی دینے لگتا ہے. کوتیلہ ایک ایسے سماج کا چتر ہمارے سامنے پیش کرتا ہے "جنتا کو پیس دینے والی نوکر شاہی کے پران ناشک فولادی پنجے کے اندر جس کا دم گھٹ رہا تھا." پانچ صدیاں گذر جانے کے بعد ایک ایسی شاسن پدھتی دیکھنے کو ملتی ہے جہاں زیادہ سے زیادہ راجنیتک چھمتا اور اُس کے ساتھ ویکتی کی سوتنترتا میں کم سے کم ہستکشیپ دونوں ملے ہوئے دکھائی دیتے ہیں. کیا وہ بودھ دھرم جو راجرشی اشوک نے اِتنی دیا کے ساتھ دنیا کے سامنے رکھا اِس تبدیلی کی وجہ نہیں

इस तरह के धार्मिक साम्राज्य का रहस्य जानने के लिये भी हमें दूर जाने की जरूरत नहीं है. फ़ाहियान के अपने बयानों से ही हमें इसका पता चल जाता है. बौद्ध धर्म के अन्दर यह चीज़ क़ुदरती और मौलिक थी. भगवान बुद्ध ने जो सब से बड़ा काम किया वह यही था कि उन्होंने अपने भीतरी ज्ञान की नई मदिरा को हिन्दू धर्म की पुरानी बोतलों में ढाला. लेकिन यह मदिरा इतनी तेज़ थी, इसका असर इतना जादू भरा था कि उसने अन्ध विश्वासों और रूढ़ियों के उस सब रहे सहे कचरे को जो सदियों के ब्राह्मण-प्रभुत्व ने उन बोतलों में जमा कर दिया था बाहर निकाल कर फेंक दिया. दूसरे शब्दों में बुद्ध ने हिन्दू धर्म का बहैसियत एक धर्म के विरोध नहीं किया, बल्कि ब्राह्मणों ने जिस धर्म को अपना पेशा बना रखा था उसका विरोध किया. ब्राह्मणों ने भी इसका बदला लिया. धीरे धीरे उन्होंने बौद्ध धर्म पर वार किया. उसे अपने क़ाबू में किया, उसके अन्दर मूर्ति पूजा और उसके साथ चलने वाली भावना को दाख़िल कराया, बौद्ध धर्म के शुद्ध प्रारम्भिक तेज को रूढ़ियों के बादल से ढक दिया, उसे इतनी चतुराई के साथ तोड़ा और मरोड़ा कि फ़ाहियान के समय का बौद्ध धर्म सनातन हिन्दू धर्म के सब बाह्याडम्बरों से घिरा हुआ दिखाई देता था, यहां तक कि स्वयं बुद्ध भगवान हिन्दू देवताओं में से एक दिखाई देने लगते हैं जिन्हें ब्रह्मा ने अपना सन्देश देकर दुनिया में भेजा था. बौद्ध धर्म का रूप कहां से कहां पहुंचा. समय ने उससे किस तरह बदला लिया. बुद्ध ने बिलकुल साफ़ साफ़ शब्दों में—"जादू टोने, शकुन परीक्षा, फलित, देवताओं के नाम पर बलि, जन्तर मन्तर" जैसी चीज़ों की ज़बरदस्त मनाही की थी. लेकिन फ़ाहियान जिस बौद्ध धर्म का हमें हाल सुनाता है उसमें यह सब चमत्कार भरे हुये हैं. स्वयं बौद्ध के पद चिन्हों के, उनकी खोपड़ी की, उनके दांतों की, उनके पीकदान की, उनके दन्ड कमन्डल की, सबकी पूजा होती थी. जहां कहीं बुद्ध भगवान ने अपने गीले कपड़े सुखाये या अपने केश मुंडवाये या पैर के नाख़ून कटवाये वहीं एक स्तूप खड़ा हो गया. चीनी भाशा में तक्षशिला का अर्थ "सिर मुंडवाना" है. तक्षशिला का नाम तक्षशिला इसलिये पड़ा क्योंकि कहा जाता था कि वहां पर बुद्ध ने एक भूखे बाघ को आहार पहुंचाने के लिये अपना शरीर दे दिया था! बुद्ध भगवान अपनी माता को, जो मर चुकी थीं, अपना धर्म समझाने के लिये तीन महीने स्वर्ग में जाकर रहे थे. जब वहां से उतरे तो पहले पहल कपिशा में क़दम रखा; इसलिये वह एक तीर्थ बन गया. अयोध्या के बाहर एक जगह है जहां बुद्ध भगवान ने दतून करके उसे ज़मीन में गाड़ दिया था और वह दतून उसी क्षण एक दस फ़ुट ऊंचा दरख़्त बन गई. बनारस में बुद्ध ने जिन लोगों को अपना धर्म समझाया, उसमें से पांच सौ अन्धों को उसी



اِس طرح کے دھارمک سامراجیہ کا رھسیہ جاننے کے لئے بھی ھمیں دور جانے کی ضرورت نہیں ھے. فاھیان کے اپنے بیانوں سے ھی ھمیں اِس کا پتہ چل جاتا ھے. بودھ دھرم کے اندر یہ چیز قدرتی اور مولک تھی. بھگوان بدھ نے جو سب سے بڑا کام کیا وہ یہی تھا کہ اُنھوں نے اپنے بھیتری گیان کی نئی مدرا کو ھندو دھرم کی پرانی بوتلوں میں ڈھالا. لیکن یہ مدرا اتنی تیز تھی، اِس کا اثر اتنا جادو بھرا تھا کہ اِس نے اندھ وشواسوں اور روڑھیوں کے اُس سب رھے سہے کچرے کو جو صدیوں کے براھمن - پربھتو نے اِن بوتلوں میں جمع کر دیا تھا باھر نکال کر پھینک دیا. دوسرے شبدوں میں بدھ نے ھندو دھرم کا بحیثیت ایک دھرم کے وِرودھ نہیں کیا، بلکہ براھمنوں نے جس دھرم کو اپنا پیشہ بنا رکھا تھا اُس کا وِرودھ کیا. براھمنوں نے بھی اِس کا بدلہ لیا. دھیرے دھیرے اُنھوں نے بودھ دھرم پر وار کیا. اُسے اپنے قابو میں کیا، اُس کے اندر مورتی پوجا اور اُس کے ساتھ چلنے والی بھاؤنا کو داخل کرایا، بودھ دھرم کے شدھ پرارمبھک تیج کو روڑھیوں کے بادل سے ڈھک دیا، اُسے اتنی چترائی کے ساتھ توڑا اور مروڑا کہ فاھیان کے سمے کا بودھ دھرم سناتن ھندو دھرم کے سب واھیہ آڈمبروں سے گھرا ھوا دکھائی دیتا تھا، یہاں تک کہ سویم بدھ بھگوان ھندو دیوتاؤں میں سے ایک دکھائی دینے لگتے ھیں جنھیں برھما نے اپنا سندیش دےکر دنیا میں بھیجا تھا. بودھ دھرم کا روپ کہاں سے کہاں پہنچا. سمے نے اُس سے کس طرح بدلہ لیا. بدھ نے بالکل صاف صاف شبدوں میں—" جادو ٹونے، شگن، پریکشا، پھلت، دیوتاؤں کے نام پر بلی، جنتر منتر " جیسی چیزوں کی زبردست مناھی کی تھی. لیکن فاھیان جس بودھ دھرم کا ھمیں حال سناتا ھے اُس میں یہ سب چمتکار بھرے ھوئے ھیں. سویم بدھ کے پد چنھوں کے، اُن کے کھوپڑی کی، ان کے دانتوں کی، اُن کے پیکدان کی، اُن کے دنڈ کمنڈل کی، سب کی پوجا ھوتی تھی. جہاں کہیں بدھ بھگوان نے اپنے گیلے کپڑے سکھائے یا اپنے کیش منڈوائے یا پیر کے ناخون کٹوائے وھیں ایک استوپ کھڑا ھو گیا. چینی بھاشا میں تکشلا کا ارتھ " سر منڈوانا " ھے. تکشلا کا نام تکشلا اِس لئے پڑا کیونکہ کہا جاتا تھا کہ وھاں پر بدھ نے ایک بھوکے باگھ کو آھار پہونچانے کے لئے اپنا شریر دے دیا تھا! بدھ بھگوان اپنی ماتا کو، جو مر چکی تھیں، اپنا دھرم سمجھانے کے لئے تین مہینے سورگ میں جا کر رھے تھے. جب وھاں سے اترے تو پہلے پہل کپیشا میں قدم رکھا؛ اِس لئے وہ ایک تیرتھ بن گیا. ایودھیا کے باھر ایک جگہ ھے جہاں بدھ بھگوان نے دتون کر کے اُسے زمین میں گاڑ دیا تھا اور وہ دتون اُسی چھن ایک دس فٹ اونچا درخت بن گئی. بنارس میں بدھ نے جن لوگوں کو اپنا دھرم سمجھایا، اس میں سے پانچ سو اندھوں کو اُسی

का आचार-व्यवहार और बौद्ध धर्म का जनता पर सुन्दर प्रभाव था. अगर आचार-व्यवहार से मनुश्य योग्य और उत्तम होता है, तो इन चीजों ने जरूर ही पुरातन भारत के भिक्खुओं और सन्यासियों को क़ाबिल और उत्तम बनाया था. फ़ाहियान लिखता है—"गोमति के विहार में भिक्खुओं का आचार व्यवहार बहुत गम्भीर रहता है. वे अपनी पूजा और ध्यान में मग्न रहते हैं. वे निश्चित क्रम के मुताबिक़ व्यवस्था के साथ बैठते हैं. वे ज़रा भी शोरग़ुल नहीं करते. ज़्यादातर वक़्त मौन रहते हैं. वे अपने भिक्षापात्र को नहीं भरते न परोसने वालों से ज़्यादा खाना मांगते हैं. जब किसी चीज़ की ज़रूरत होती है तो हाथ के इशारे से मांगते हैं." राजाओं का आचार-व्यहावर, उनके तौर तरीक़े उस ज़माने में उतने ही निर्दोष समझे जाते थे, जितने साधुओं और भिक्खुओं के. फ़ाहियान को यह देखकर बड़ी ही तसल्ली हुई कि राजा लोग साधुओं और भिक्खुओं की बड़ी इज़्ज़त करते थे. "जब ये लोग बौद्ध भिक्खुओं को कोई चीज भेंट करते हैं, तो अपने मुकुट सर से उतार लेते हैं और जब उन्हें खाना खिलाते हैं, तो अपने बाल बच्चों और ख़ास ख़ास दरबारियों समेत सामने खड़े रहते हैं. खाना हो चुकने के बाद वे ज़मीन पर ख़ुद फ़र्श बिछा कर प्रधान भिक्खु की तरफ़ मुंह करके बैठ जाते हैं. इन लोगों के सामने वे चौकियों या किसी ऊंची चीज़ पर बैठने का साहस नहीं कर सकते." बौद्धकाल का यह बयान इसलिये और भी महत्व का है क्योंकि फ़ाहियान गुप्त साम्राज्य के समय भारत आया था. अङ्गरेज़ इतिहासकार बड़े ख़ुश होकर उस काल को—"हिन्दू प्रतिक्रिया का समय कहते हैं." कम से कम जहां तक फ़ाहियान के लिखे हुये बयानों का सम्बन्ध है न हमें किसी प्रतिक्रिया की कोई निशानी मिलती है और न बौद्ध धर्मावलम्बियों को किसी तरह की तकलीफ़ें दिये जाने का ज़िक्र मिलता है." फ़ाहियान यह भी साफ़ लिखता है कि उन दिनों अयोध्या में और उसके आस पास कट्टर हिन्दू धर्म के मानने वाले मौजूद थे. एक जगह उसने लिखा है कि—"यहां पर 96 अबौद्ध सम्प्रदायों के लोग मौजूद हैं जो सब के सब भौतिक संसार ( माद्दी दुनिया ) को सत्य मानते हैं." लेकिन एक ऐसे ईश्वर की कल्पना जो एक ख़ास सम्प्रदाय के लोगों से बाहर दूसरी सम्प्रदायों के इष्ट-देवों को ईर्षा की दृष्टि से देखता हो, जिसे अङ्गरेज़ी में "A jealous god" कहते हैं, इस तरह की कोई कल्पना ही वास्तव में पाश्चात्य कल्पना है. इस तरह की कोई कल्पना या मज़हबी तंगनज़री हमें समुद्रगुप्त और विक्रमादित्य के उन शासनकालों में भी बिलकुल दिखाई नहीं देती, जिन शासनकालों में हमें उत्तर भारत के अन्दर हिन्दू कला और हिन्दू संस्कृति का आश्चर्यजनक पुनरुद्धार देखने को मिलता है.



کا اچار ویوھار اور بودھ دھرم کا جنتا پر سندر پربھاؤ تھا . اگر آچار ویوھار سے منشیہ یوگیہ اور اُتم ھوتا ھے' تو اِن چیزوں نے ضرور ھی پراتن بھارت کے بھکشوؤں اور سنیاسیوں کو قابل اور اُتم بنایا تھا . فاهیان لکھتا ھے—"گومتی کے وھار میں بھکشوؤں کا اچار ویوھار بہت گمبھیر رھتا ھے . وے اپنی پوجا اور دھیان میں مگن رھتے ھیں . وے نشچت کرم کے مطابق ویوستھا کے ساتھ بیٹھتے ھیں . وے ذرا بھی شور غل نہیں کرتے . زیادہ‌تر وقت مون رھتے ھیں . وے اپنے بھکشاپاتر کو نہیں بھرتے' نہ پروسنے والوں سے زیادہ کھانا مانگتے ھیں ." جب کسی چیز کی ضرورت ھوتی ھے تو ھاتھ کے اشارے سے مانگتے ھیں." راجاؤں کا آچار ویوھار' ان کے طور طریقے اُس زمانے میں اتنے ھی نردوش سمجھے جاتے تھے جتنے سادھوؤں اور بھکشوؤں کے . فاهیان کو یہ دیکھ کر بڑی ھی تسلی ھوئی کہ راجا لوگ سادھوؤں اور بھکشوؤں کی بڑی عزت کرتے تھے . "جب یہ لوگ بودھ بھکشوؤں کو کوئی چیز بھینٹ کرتے ھیں' تو اپنے مکٹ سر سے اُتار لیتے ھیں اور جب انھیں کھانا کھلاتے ھیں' تو اپنے بال بچوں اور خاص خاص درباریوں سمیت سامنے کھڑے رھتے ھیں . کھانا ھو چکنے کے بعد وے زمین پر خود فرش بچھا کر پردھان بھکشو کی طرف منھ کر کے بیٹھ جاتے ھیں . اِن لوگوں کے سامنے وے چوکیوں یا کسی اونچی چیز پر بیٹھنے کا ساھس نہیں کر سکتے ." بودھ کال کا یہ بیان اِس لئے اور بھی مہتو کا ھے کیونکہ فاهیان گپت سامراجیہ کے سمے بھارت آیا تھا . انگریز اتہاسکار بڑے خوش ھو کر اُس کال کو— "ھندو پرتیکریا کا سمے کہتے ھیں ." کم سے کم جہاں تک فاهیان کے لکھے ھوئے بیانوں کا سمبندھ ھے نہ ھمیں کسی پرتی‌کریا کی کوئی نشانی ملتی ھے اور نہ بودھ دھرماولمبیوں کو کسی طرح کی تکلیفیں دئے جانے کا ذکر ملتا ھے ." فاهیان یہ بھی صاف لکھتا ھے کہ اُن دنوں ایودھیا میں اور اُس کے آس پاس کٹر ھندو دھرم کے ماننے والے موجود تھے . ایک جگہ اُس نے لکھا ھے کہ—" یہاں پر 96 ابودھ سمپردایوں کے لوگ موجود ھیں جو سب کے سب بھوتک سنسار (مادی دنیا ) کو ستیہ مانتے ھیں ." لیکن ایسے ایشور کی کلپنا جو ایک خاص سمپردائے کے لوگوں سے باھر دوسری سمپردایوں کے اشٹ دیوں کی ایرشا کی درشٹی سے دیکھتا ھو' جسے انگریزی میں "A jealous god" کہتے ھیں' اِس طرح کی کوئی کلپنا ھی واستو میں پاشچاتیہ کلپنا ھے . اِس طرح کی کوئی کلپنا یا مذھبی تنگ نظری ھمیں سمدر گپت اور وکرمادتیہ کے اُن شاسن کالوں میں بھی بالکل دکھائی نہیں دیتی' جن شاسن کالوں میں ھمیں اتر بھارت کے اندر ھندو کلا اور ھندو سنسکرتی کا آشچریہ جنک پنرودھار دیکھنے کو ملتا ھے .

सूखी हड्डियों के अलावा कोई रास्ता दिखाने वाला न मिलता;" चाहे हिन्दुकुश पहाड़ की बरफ़ीली चोटियां होतीं "जहां अगला क़दम रखने की जगह न होती और आंखों में अंधेरा छा जाता," और चाहे समुद्र की लहरें होतीं "जो गरजती हुई उठकर एक दूसरे से टकरातीं और फेन छोड़तीं, जिन में बड़े बड़े घड़ियाल और समुद्री जीव-जन्तु किलोलें करते." इन सब आफ़तों में फ़ाहियान के सामने एक ही मक़सद होता कि ज्ञान की मशाल को और धर्म की सच्ची भावना को उसे अपने देश "बाहरी दुनिया" में यानी चीन ले जाना है. "उसकी आत्मा की भीतरी ज्योति ही उदास घड़ियों में उसे ढारस बंधाती और उसे रास्ता दिखाती थी."

फ़ाहियान के लिये चीन वास्तव में "बाहरी दुनिया" था. भारत में बौद्ध धर्म का जो गौरव था और जो प्रतिमा थी उसकी तुलना में चीन बाहरी दुनिया ही था. अफ़ग़ानिस्तान से लेकर गंगा के दहाने तक, जहां फ़ाहियान दो बरस तक बौद्ध सूत्रों का अध्ययन और बौद्ध मूर्तियों का रेखांकन करता रहा, सारा देश बौद्ध मठों और विहारों के जाल से गुंथा पड़ा था. बौद्ध धर्म के कुछ पुराने केन्द्र (मरकज़) ज़रूर फीके पड़ गये थे. मिसाल के तौर पर बुद्ध की जन्मभूमि कपिलवस्तु के सम्बन्ध में फ़ाहियान लिखता है—"कपिलवस्तु में न राजा रह गया है न जनता. सारी नगरी खंडहर और वीरान हो गई है, महज़ कुछ पुजारी और क़रीब दस परिवार वहां रहते हैं. रास्ते में शेर और जंगली हाथियों के हमले का ख़ौफ़ रहता है." फ़ाहियान लिखता है—"कपिलवस्तु जाने वाले यात्रियों को ख़तरे से बहुत बचकर जाना चाहिये." कुशीनगर, जहां भगवान बुद्ध निर्वान को प्राप्त हुये, इसी तरह वीरान पड़ा था. ऐसा मालूम होता है कि अशोक के बाद की सदियों में बौद्ध धर्म धीरे धीरे अपनी जन्मभूमि छोड़कर अधिक उत्तर में केन्द्रीभूत हो गया था. अफ़ग़ानिस्तान में उस समय कम से कम तीन हज़ार बौद्ध भिक्खु रहे होंगे. सरहद में बन्नू का ज़िला बौद्ध धर्म का केन्द्र था, जहां बौद्ध मठों और विहारों में हज़ारों बौद्ध भिक्खु और सन्यासी रहते थे. ये सब के सब 'हीनयान के मानने वाले थे. ख़ुतन में 'गोमति' नाम का एक बहुत बड़ा विहार था. पेशावर में सम्राट कनिष्क का एक पगोदा (बुद्ध-मन्दिर) था जो "चार सौ फ़ुट ऊंचा था जिसमें तरह तरह के बेल बूटे पच्चीकारी और सुनहला काम बना हुआ था." यह पगोदा यात्रियों के लिये बड़ा दिल खींचने वाली चीज़ थी. फ़ाहियान के मुताबिक़—"दुनिया के सब पगोदाओं में पेशावर का यह पगोदा सब में बड़ा और सब में आलीशान है." लेकिन जिस चीज़ ने फ़ाहियान को सब से अधिक खींचा वह यह मठ, विहार और मन्दिर नहीं थे बल्कि बौद्ध भिक्खुओं का ऊंचे दरजे



سوکھی ہڈیوں کے علاوہ کوئی راستہ دکھانے والا نہ ملتا ؛" چاہے ہندوکش پہاڑ کی برفیلی چوٹیاں ہوتیں "جہاں اگلا قدم رکھنے کی جگہ نہ ہوتی اور آنکھوں میں اندھیرا چھا جاتا" اور چاہے سمندر کی لہریں ہوتیں "جو گرجتی ہوئی اٹھ کر ایک دوسرے سے ٹکراتیں اور پھین چھوڑتیں' جن میں بڑے بڑے گھڑیال اور سمدری جیو جنتو کلولیں کرتے." ان سب آفتوں میں فاہیان کے سامنے ایک ہی مقصد ہوتا کہ گیان کی مشعل کو اور دھرم کی سچی بھاؤنا کو اُسے اپنے دیش "باہری دنیا" میں یعنی چین لے جانا ہے. "اُس کی آتما کی بھیتری جیوتی ہی اداس گھڑیوں میں اُسے ڈھارس بندھاتی اور راستہ دکھاتی تھی."

فاہیان کے لئے چین واستو میں "باہری دنیا" تھا. بھارت میں بودھ دھرم کا جو گورو تھا اور جو پرتما تھی اُس کی تولنا میں چین باہری دنیا ہی تھا. افغانستان سے لےکر گنگا کے دہانے تک' جہاں فاہیان دو برس تک بودھ سوتروں کا ادھین اور بودھ مورتیوں کا ریکھانکن کرتا رہا' سارا دیش بودھ مٹھوں اور وہاروں کے جال سے گونتھا پڑا تھا. بودھ دھرم کے کچھ پرانے کیندر (مرکز) ضرور پھیکے پڑگئے تھے. مثال کے طور پر بدھ کی جنم بھومی کپل وستو کے سمبندھ میں فاہیان لکھتا ہے—"کپل وستو میں نہ راجہ رہ گیا ہے نہ جنتا. ساری نگری کھنڈر اور ویران ہوگئی ہے' محض کچھ پجاری اور قریب دس پریوار وہاں رہتے ہیں. راستے میں شیر اور جنگلی ہاتھیوں کے حملے کا خوف رہتا ہے." فاہیان لکھتا ہے—"کپل وستو جانے والے یاتریوں کو خطرے سے بہت بچ کر جانا چاہئے." کوشی نگر جہاں بھگوان بدھ نروان کو پراپت ہوئے اسی طرح ویران پڑا تھا. ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اشوک کے بعد کی صدیوں میں بودھ دھرم دھیرے دھیرے اپنی جنم بھومی چھوڑکر ادھک اُتر میں کیندری بھوت ہوگیا تھا. افغانستان میں اس سمے کم سے کم تین ہزار بودھ بھکھو رہے ہونگے. سرحد میں بنو کا ضلع بودھ دھرم کا کیندر تھا' جہاں بودھ مٹھوں اور وہاروں میں ہزاروں بودھ بھکشو اور سنیاسی رہتے تھے. یہ سب کے سب 'ہینیان' کے ماننے والے تھے. ختن میں 'گومتی' نامک ایک بہت بڑا وہار تھا. پیشاور میں سمراٹ کنشک کا ایک پگودا (بودھ مندر) تھا جو "چار سو فٹ اُونچا تھا جس میں طرح طرح کے بیل بوٹے' پچی کاری اور سنہلا کام بنا ہوا تھا." یہ پگودا یاتریوں کے لئے بڑا دل کھینچنے والی چیز تھی. فاہیان کے مطابق—"دنیا کے سب پگوداؤں میں پیشاور کا یہ پگودا سب میں بڑا اور سب میں عالیشان ہے." لیکن جس چیز نے فاہیان کو سب میں ادھک کھینچا وہ یہ مٹھ' وہار اور مندر نہیں تھے بلکہ بودھ بھکشوؤں کا اُونچے درجے

जो वह अपनी उस पुरातन ( क़दीम ) यात्रा में बांस की पत्तियों और रेशम पर लिखकर छोड़ गया है, जिसकी उस यात्रा के सामने आज की बग़ैर रुके अटलांटिक की हवाई यात्रा फीकी और मामूली मालूम होती है. फ़हियान की वह यात्रा हमें आज की अपनी जल्दबाज़ी की उपयोगिता पर सोचने को मजबूर करती है.

फ़ाहियान के यात्रा व न से ऐसा मालूम होता है कि यात्रा के शुरू में उसके साथ कुछ थोड़े से साथी भी थे. कम से कम उनका कारा शहर तक साथ रहा. कारा शहर रूसी तुर्किस्तान के पास कहीं रहा होगा. वहां के बाशिन्दे "तबियतों के ख़ूंख़ार और अजनबियों के तरफ़ अपने बर्ताव में इतने कमीने" थे कि फ़ाहियान के तीन साथियों ने वापस चीन लौट जाने का फ़ैसला किया. हुइ-चिंग नाम का एक चौथा साथी 'सफ़ेद कोह' की बरफ़ीली चोटियों पर फ़ाहियान के हाथों में ही मौत का शिकार हुआ. वहां इतनी ठन्ड थी "कि दांत कटकटाते थे और सारा बदन थर थर कांपता था." सिर्फ़ एक साथी फ़ाहियान के साथ भारत पहुंचा; लेकिन यहां आकर जो उसने बौद्ध धर्म की शान देखी और उसकी तुलना में उसे अपने देश में बौद्ध धर्म की हालत इतनी हेच मालूम हुई कि उसने भारत में रहकर ही निर्वान हासि करने की साधना का फ़ैसला किया. फ़ाहियान के सामने एक महान मिशन था. बड़ी से बड़ी आफ़तें और बड़े से बड़े आकर्षन उसे अपने मक़सद से डिगा न सकते थे. उसे तो वापस चीन पहुंच कर अपने देश में बौद्ध धम की बुनियादों को मज़बूत करना था. उसके रास्ते में ज़बरदस्त रुकावटें थीं. यात्रा के शुरू में ही गोबी के हज़ारों मील लम्बे चौड़े रेगिस्तान को पार करने का सवाल था. फ़ाहियान लिखता है—"गोबी के रेगिस्तान में न आसमान में परिन्दे थे न धरती पर जानवर. गरम गरम हवा चारों ओर भूत की तरह भनभनाती फिरती थी, जिसके मुक़ाबले के मानी थे—मौत !"

उत्तर भारत के बरफ़ीले पहाड़ गोबी के रेगिस्तान से कुछ कम ख़तरनाक न थे, बारहों महीने, सर्दी और गर्मी में जिनकी चोटियां फ़ुटों बरफ़ से ढकी रहती हैं. फ़ाहियान का ऐसा विश्वास था कि उन चोटियों पर—"ख़ौफ़नाक जन्तु रहते हैं जो ज़रा से छेड़ने पर ज़हरीली हवा की फुंकार मारते हैं और जिनके नथनों से बारिश, बरफ़ और पत्थर बरसने लगते हैं." फ़ाहियान लिखता है—"इन जन्तुओं से दस हज़ार आदमियों में से कहीं एक बचकर निकल पाता है." फ़हियान बचकर निकल आया, लेकिन वह ऐसा वैसा यात्री तो नहीं था. उसके दिल में विश्वास की एक ऐसी ज़बर्दस्त आग थी जो पहाड़ों को हिला सकती थी, चाहे पथहीन रेगिस्तान होता—"जहां भूले भटके यात्रियों की



جو وہ اپنی اُس پراتن (قدیم) یاترا میں بانس کی پتیوں اور ریشم پر لکھ کر چھوڑ گیا ھے، جس کی اُس یاترا کے سامنے آج کی بغیر رکے اٹلانٹک کی ھوائی یاترا پھیکی اور معمولی معلوم ھوتی ھے. فاهین کی وہ یاترا همیں آج کی اپنی جلدبازی کی اُپیوگتا پر سوچنے کو مجبور کرتی ھے.

فاهیان کی یاترا ورنن سے ایسا معلوم ھوتا ھے کہ یاترا کے شروع میں اس کے ساتھ کچھ تھوڑے سے ساتھی بھی تھے. کم سے کم اُن کا کارا شہر تک ساتھ رھا. کارا شہر روسی ترکستان کے پاس کہیں رھا ھوگا. وھاں کے باشندے "طبیعتوں کے خونخوار اور اجنبیوں کے طرف اپنے برتاؤ میں اتنے کمینے" تھے کہ فاهیان کے تین ساتھیوں نے واپس چین لوٹ جانے کا فیصلہ کیا. ھوئی چنگ نام کا ایک چوتھا ساتھی 'سفید کوہ' کی برفیلی چوٹیوں پر فاهیان کے ھاتھوں میں ھی موت کا شکار ھوا. وھاں اتنی ٹھنڈ تھی "کہ دانت کٹ کٹاتے تھے اور سارا بدن تھرتھر کانپتا تھا." صرف ایک ساتھی فاهیان کے ساتھ بھارت پہونچا؛ لیکن یہاں آکر جو اس نے بودھ دھرم کی شان دیکھی اور اُس کی تولنا میں اُسے اپنے دیش میں بودھ دھرم کی حالت اتنی ھیچ معلوم ھوئی کہ اُس نے بھارت میں رہ کر ھی نروان حاصل کرنے کی سادھنا کا فیصلہ کیا. فاهیان کے سامنے ایک مہان مشن تھا. بڑی سے بڑی آفتیں اور بڑے سے بڑے آکرشن اُسے اپنے مقصد سے ڈگا نہ سکتے تھے. اُسے تو واپس چین پہونچ کر اپنے دیش میں بودھ دھرم کی بنیادوں کو مضبوط کرنا تھا. اس کے راستے میں زبردست رکاوٹیں تھیں. یاترا کے شروع میں ھی گوبی کے ھزاروں میل لمبے چوڑے ریگستان کو پار کرنے کا سوال تھا. فاهیان لکھتا ھے—"گوبی کے ریگستان میں نہ آسمان میں پرندے تھے نہ دھرتی پر جانور. گرم گرم ھوا چاروں اور بھوت کی طرح بھنبھناتی پھرتی تھی، جس کے مقابلے کے معنی تھے—موت!"

اتر بھارت کے برفیلے پہاڑ گوبی کے ریگستان سے کچھ کم خطرناک نہ تھے، بارھوں مہینے، سردی اور گرمی میں جن کی چوٹیاں فٹوں برف سے ڈھکی رھتی ھیں. فاهیان کا ایسا وشواس تھا کہ اُن چوٹیوں پر—"خوفناک جنتو رھتے ھیں جو ذرا سے چھیڑنے پر زهریلی ھوا کی پھنکار مارتے ھیں اور جن کے نتھنوں سے بارش، برف اور پتھر برسنے لگتے ھیں." فاهیان لکھتا ھے—"اِن جنتوؤں سے دس ھزار آدمیوں میں سے کہیں ایک بچ کر نکل پاتا ھے." فاهیان بچ کر نکل آیا، لیکن وہ ایسا ویسا یاتری تو نہیں تھا. اس کے دل میں وشواس کی ایک ایسی زبردست آگ تھی جو پہاڑوں کو ھلا سکتی تھی، چاھے پتھہین ریگستان ھوتا—"جہاں بھولے بھٹکے یاتریوں کی

# फ़ाहियान की भारत यात्रा

श्री के० पी० एस० मेनन, आइ० सी० एस०

भाप और पेट्रोल से चलने वाली सवारियों के जमाने में आज बेचारे घोड़े की कोई क़द्र ही नहीं रह गई. रेलवे ट्रेन और मोटरकार भी अब पुरानी पड़ने लगीं. हवाई उड़ान का अब जमाना आ गया है. पलक मारते सैकड़ों मील की दूरी नाप ली जाती है. इस तेज़ रफ़्तार जमाने में जब हम महान चीनी यात्री फ़ाहियान की यात्रा के वर्क़ उलटते हैं तो हमें हैरत होती है कि दस हजार मील की यात्रा, और वह भी पैदल, कैसे पूरी की गई होगी! फ़ाहियान चौथी सदी का एक मशहूर चीनी बौद्ध भिक्षु था. उसकी भारत-यात्रा की वजह चीनी बौद्धों के लिये यहां से बौद्ध धम ग्रन्थों का ले जाना था. उसकी महान यात्रा ज्ञान की खोज और सत्य की शोध में थी. मध्य चीन से वह पैदल रवाना हुआ. गोबी के ख़ौफ़नाक रेगिस्तान और हिन्दुकुश की बर्फ़ीली पर्वत-श्रेनियों को पार करता हुआ वह पैदल बङ्गाल की खाड़ी तक आया और वहां से जहाज़ द्वारा लंका और जावा की यात्रा करते हुये वह वापस चीन पहुंचा. उसकी समुद्र-यात्रा पैदल यात्रा से भी कहीं ज्यादा ख़तरनाक साबित हुई. फ़ाहियान की इस यात्रा में 15 बरस लगे, जिनमें से 9 बरस चलने में बीते और बाक़ी पढ़ने में. वह अपनी यात्रा में कम से कम तीस मुल्कों के बीच से होकर गुज़रा. वह अपनी यात्रा की सख़्ती और अकेलेपन के बारे में लिखता है—"यात्रा में हमें सिर्फ़ अपनी ही परछाईं दिखाई देती थी और जिसे देखकर हमारा दिल उदासी से भर जाता था." अपने देश की टीस उसके इन शब्दों से ज़ाहिर होती है—"जब मैंने लंका में देखा कि एक व्यापारी रेशमी चीनी पंखा भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर भेंट चढ़ा रहा है, तो मेरा दिल भर आया और मेरी आंखें आंसुओं से भर गईं." अगर फ़ाहियान आज इस बीसवीं सदी में पैदा हुआ होता, तो उसने अपनी यात्रा और ही तरह से की होती. वह नाश्ता करने के बाद अपने घर चांगान से हवाई जहाज़ से रवाना हुआ होता, आसाम के किसी हवाई अड्डे पर उसने दोपहर को भोजन किया होता और रात के खाने के वक़्त कलकत्ते पहुंच गया होता. उसने अमरीकन तरीक़े से अपनी भारत-यात्रा पर एक पुस्तक भी लिखी होती जिसे हम 'माडर्न यात्रा' वनन कह सकते थे. लेकिन उसका यह वर्नन उस वर्नन से कितना भिन्न होता

# فاهیان کی بھارت یاترا

شری کے . پی . ایس . مینن، آئی . سی . ایس .

بھاپ اور پیٹرول سے چلنے والی سواریوں کے زمانے میں آج بیچارے گھوڑے کی کوئی قدر ہی نہیں رہ گئی . ریلوے ٹرین اور موٹرکار بھی اب پرانی پڑنے لگیں . ہوائی اڑان کا اب زمانہ آگیا ہے . پلک مارتے سیکڑوں میل کی دوری ناپ لی جاتی ہے. اِس تیز رفتار زمانے میں جب ہم مہان چینی یاتری فاهیان کی یاترا کے ورق اُلٹتے ہیں تو ہمیں حیرت ہوتی ہے کہ دس ہزار میل کی یاترا، اور وہ بھی پیدل، کیسے پوری کی گئی ہوگی! فاهیان چوتھی صدی کا مشہور چینی بودھ بھکشو تھا . اس کی بھارت یاترا کی وجہ چینی بودھوں کے لئے یہاں سے بودھ دھرم گرنتھوں کا لے جانا تھا . اُس کی مہان یاترا گیان کی کھوج اور ستیہ کی شودھ میں تھی . مدھیہ چین سے وہ پیدل روانہ ہوا . گوبی کے خوفناک ریگستان اور هندوکش کی برفیلی پروت شرینیوں کو پار کرتا ہوا وہ پیدل بنگال کی کھاڑی تک آیا اور وہاں سے جہاز دوارا لنکا اور جاوا کی یاترا کرتے ہوئے وہ واپس چین پہنچا . اُس کی سمدر یاترا پیدل یاترا سے بھی کہیں زیادہ خطرناک ثابت ہوئی . فاهیان کی اِس یاترا میں 15 برس لگے، جن میں سے 9 برس چلنے میں بیتے اور باقی پڑھنے میں . وہ اپنی یاترا میں کم سے کم تیس ملکوں کے بیچ سے ہوکر گذرا . وہ اپنی یاترا کی سختی اور اکیلے پن کے بارے میں لکھتا ہے—"یاترا میں ہمیں صرف اپنی ہی پرچھائیں دکھائی دیتی تھی اور جسے دیکھ کر ہمارا دل اُداسی سے بھر جاتا تھا ." اپنے دیش کی ٹیس اس کے اِن شبدوں سے ظاہر ہوتی ہے— "جب میں نے لنکا میں دیکھا کہ ایک ویاپاری ریشمی چینی پنکھا بھگوان بودھ کی پرتیما پر بھینٹ چڑھا رہا ہے' تو میرا دل بھر آیا اور میری آنکھیں آنسوؤں سے بھر گئیں ." اگر فاهیان آج اِس بیسویں صدی میں پیدا ہوا ہوتا' تو اُس نے اپنی یاترا اور ہی طرح سے کی ہوتی . وہ ناشتہ کرنے کے بعد اپنے گھر چانگان سے ہوائی جہاز سے روانہ ہوا ہوتا' آسام کے کسی ہوائی اڈے پر اُس نے دوپہر کو بھوجن کیا ہوتا اور رات کے کھانے کے وقت کلکتے پہونچ گیا ہوتا. اُس نے امریکن طریقہ سے اپنی بھارت یاترا پر ایک پستک بھی لکھی ہوتی جسے ہم 'ماڈرن یاترا' ورنن کہہ سکتے تھے . لیکن اُس کا یہ ورنن اُس ورنن سے کتنا بھن ہوتا

रहा हूं. मेरा घोड़ा कुछ इस अन्दाज़ से चलता और मुड़ता था कि मानो उसे पता था कि मुझे कहां जाना है. धीरे धीरे धुएं का एक गुबार नज़र आने लगा. उसके बाद धीमे पड़ते हुए अंगारों की लौ मुझे दिखाई दी. मैंने देखा कि एक शख्स अलाव के पास लेटा है. हालांकि मुझे उसकी शक्ल नहीं दिखाई दे रही थी फिर भी मुझे विश्वास था कि यही हमारा शिकार है. बड़ी सतर्कता से मैंने आगे बढ़ना शुरू किया. जब अलाव सिर्फ़ सौ गज़ रह गया तो मैंने देखा कि वह शख्स आग की ओर पैर किये ज़मीन पर दाहिनी करवट लेटा है. उसका घोड़ा पास ही खड़ा था. मैं कह रहा हूं कि मैंने उस शख्स को देखा पर वास्तव में मैं सपना देख रहा था. सपने में ही घोड़े से उतर कर मैं उस शख्स की ओर पैदल दबे पांव बढ़ा. फिर मुझे यह ख़याल हुआ कि कहीं आहट पा कर वह भाग न जाय. मैंने राइफ़ल सम्हाली और उसे निशाना बना कर घोड़ा दबाया. 'धांय' की आवाज़ चारों ओर गूंज गई. मैं चौंक पड़ा और मेरा सपना टूट गया. तब से मैं खुद हैरान हूं कि मैं कैसे यहां आ पहुंचा."

"बात अभी मैंने ख़त्म ही की थी कि मेरे साथियों की निगाहें ठन्डे पड़ते हुये अलाव की ओर गईं. आंखों के सामने सचमुच एक आग की ढेरी जल रही थी और धीमी पड़ती हुई ज्वाला की बुझती लौ में वहां सचमुच एक आदमी की आकृति लेटी हुई दिखाई दे रही थी. साथियों ने फुरती से आगे बढ़कर उसे घेर लिया. लेकिन आहट पाकर भी वह आदमी टस से मस नहीं हुआ. राइफ़लें सम्हाले लोग उसके बिलकुल पास जाकर खड़े हो गये. उस व्यक्ति की छाती पर कुछ काला सा धब्बा दिखाई दे रहा था. लोगों ने जब फीकी पड़ती हुई चांदनी की तरफ़ उसका मुंह किया तो उन्हें मालूम हुआ कि वह बेजान है. उसके दिल पर बुलेट ने जो प्रवेश मार्ग खुला छोड़ दिया था उसी से लाल झरने की रवानी के साथ उसके प्रान बह चुके थे.

"मैं उस शख्स को पहचानता नहीं था लेकिन मेरे दूसरे साथी उस गोरे मुजरिम से पूरी तरह वाक़िफ़ थे. और जैसी मुझे उम्मीद थी दरअस्ल उस शख्स की खोपड़ी मेरे वैज्ञानिक प्रयोगों में बहुत कारगर साबित हुई."

---

गुलाम और आज़ाद में यही फ़र्क़ है कि गुलाम मरने के लिये जीता है और आज़ाद जीने के लिये मरता है, गुलाम की जिन्दगी मौत के बराबर है मगर आज़ाद की मौत भी जिन्दगी है.

—अज्ञात

---



رھاھوں. میرا گھوڑا کچھ اِس انداز سے چلتا اور مڑتا تھا کہ مانو اُسے پتہ تھا کہ مجھے کہاں جانا ھے . دھیرے دھیرے دھوئیں کا ایک غبار نظر آنے لگا. اِس کے بعد دھیمے پڑتے ھوئے انگاروں کی لو مجھے دکھائی دی . میں نے دیکھا کہ ایک شخص الاؤ کے پاس لیٹا ھے . حالانکہ مجھے اُس کی شکل نہیں دکھائی دے رھی تھی پھر بھی مجھے وشواس تھا کہ یہی ھمارا شکار ھے . بڑی سترکتا سے میں نے آگے بڑھنا شروع کیا . جب الاؤ صرف سو گز رہ گیا تو میں نے دیکھا کہ وہ شخص آگ کی اُور پیر کئے زمین پر داھنی کروٹ لیٹا ھے . اُس کا گھوڑا پاس ھی کھڑا تھا . میں کہہ رھا ھوں کہ میں نے اس شخص کو دیکھا پر واستو میں میں سپنا دیکھ رھا تھا . سپنے میں ھی گھوڑے سے اُتر کر میں اُس شخص کی اور پیدل دبے پاؤں بڑھا . پھر مجھے یہ خیال ھوا کہ کہیں آھٹ پا کر وہ بھاگ نہ جائے . میں نے رائفل سنبھالی اور اُسے نشانہ بنا کر گھوڑا دبایا . ' دھائیں ' کی آواز چاروں اُور گونج گئی . میں چونک پڑا اور میرا سپنا ٹوٹ گیا . تب سے میں خود حیران ھوں کہ میں کیسے یہاں آ پہونچا ."

" بات ابھی میں نے ختم ھی کی تھی کہ میرے ساتھیوں کی نگاھیں ٹھنڈے پڑتے ھوئے الاؤ کی اور گئیں . آنکھوں کے سامنے سچ مچ ایک آگ کی ڈھیری جل رھی تھی اور دھیمی پڑتی ھوئی جوالا کی بجھتی لو میں وھاں سچ مچ ایک آدمی کی آکرتی لیٹی ھوئی دکھائی دے رھی تھی . ساتھیوں نے پھرتی سے آگے بڑھکر اُسے گھیر لیا . لیکن آھٹ پا کر بھی وہ آدمی ٹس سے مس نہیں ھوا . رائفلیں سنبھالے لوگ اُس کے بالکل پاس جا کر کھڑے ھوگئے . اس ویکتی کی چھاتی پر کچھ کالا سا دھبہ دکھائی دے رھا تھا . لوگوں نے جب پھیکی پڑتی ھوئی چاندنی کی طرف اس کا منہ کیا تو اُنہیں معلوم ھوا کہ وہ بےجان ھے . اس کے دل پر بولیٹ نے جو پرویش مارگ کھلا چھوڑ دیا تھا اُسی سے لال جھرنے کی روانی کے ساتھ اُس کے پران بہہ چکے تھے ."

" میں اُس شخص کو پہچانتا نہیں تھا لیکن میرے دوسرے ساتھی اس گورے مجرم سے پوری طرح واقف تھے . اور جیسی مجھے اُمید تھی دراصل اُس شخص کی کھوپڑی میرے ویگیانک پریوگوں میں بہت کارگر ثابت ھوئی ."

---

غلام اور آزاد میں یہی فرق ھے کہ غلام مرنے کے لئے جیتا ھے اور آزاد جینے کے لئے مرتا ھے' غلام کی زندگی موت کے برابر ھے مگر آزاد کی موت بھی زندگی ھے .

— اگیات

---

"नाच समारोह में मेरे इस तरह ऊल जलूल दाखिल होने से महिलाओं को ख़ासी दिली चोट पहुंची. बाद में मुझे बताया गया कि कई महिलायें चीख़ पड़ीं और एक या दो को तो ग़श आ गया. लोकाचार के विरुद्ध मेरा आचरन देखकर साथी हैरत में थे. उनका कुछ समय तो महिलाओं की ज़ख़्मी भावनाओं को शान्त करने में गया और उसके बाद उन्हें मेरी फ़िक्र हुई. इतने में किसी ने घोड़े की टाप सुनी. मेरे साथी फ़ौरन अस्तबल की ओर लपके. उन्हें मामला नाज़ुक मालूम होने लगा.

"और मेरा कहीं पता न था. अस्तबल का दरवाज़ा खुला हुआ था. न वहां मेरा घोड़ा था, न उसकी जीन और न लगाम. साथियों ने जल्दी जल्दी अपने अपने घोड़े कसे. उन्हें परेशानी यह थी कि मुझे खोजने वे किधर जाते. माना मैं राइफ़ल से लैस था फिर भी आस्ट्रेलिया की घनी झाड़ियों की भूल भुलइयों में फंसकर निकल सकना मज़ाक़ न था. मेरी मुमकिन बदक़िस्मती की कल्पना करके साथी फ़िक्र से भर उठे.

"चतुर्दशी का चांद चारों ओर अपनी ज्योत्स्ना बिखेर रहा था. हवा ज्यों ही क़ुदरत का दुपट्टा उड़ाने की कोशिश करती बादल के दो एक टुकड़े चांद के सामने इस तरह आ जाते मानो क़ुदरत शर्मा कर खिड़कियों पर पर्दे डाल रही हो. अगर और दूसरा मौक़ा होता तो यह घुड़सैर ख़ासी मज़ेदार रहती; किन्तु इस बेसिर पैर की ढूंढ़ खोज से साथियों को बेहद परेशानी थी. वे परेशान से थे कि अचानक उन्हें पास ही से कहीं राइफ़ल छूटने की आवाज़ सुनाई दी. आवाज़ को अन्दाज़ करके घोड़े के मुंह उन्होंने उधर ही फेर दिये. एड़ लगी और घोड़े हवा में तैरने लगे. थोड़ी दूर पर उन्हें हलका धुंआ आसमान की ओर उठता हुआ दिखाई दिया. साथी उसी ओर बढ़े. थोड़ी दूर और चलकर उन्हें बुझती हुई आग की फीकी लौ दरख़्तों के झुरमुट में आंख मिचौनी खेलती दिखाई दी. साथियों ने सतर्क होकर आगे बढ़ना शुरू किया. इतने में मैं उन्हें नंगे पैर अपने सफ़ेद स्लीपिंग सूट में खड़ा दिखाई दिया. मेरा घोड़ा भी पास ही खड़ा था. मेरी आंखें चौपट खुली हुई थीं और मेरी राइफ़ल से धुएं की आख़री सांसें निकल रही थीं. आग की ढेरी और मुझमें क़रीब 60 गज़ का फ़ासला था.

"साथियों ने मुझे घेर कर एक साथ सवाल करने शुरू कर दिये. जो कुछ मैं जानता था मैंने उन्हें सुनाना शुरू कर दिया—'रात जल्दी ही मैं सोने चला गया था. दिन भर का थका था इसलिये नींद ने फ़ौरन ही मुझे अपने दामन में समेट लिया. इसके बाद मैंने एक सपना देखना शुरू किया. दिमाग़ उसी गोरे के ख़याल से भरा हुआ था. सपने में मैंने देखा कि चांदनी रात में मैं घोड़े पर उसका पीछा कर



" ناچ سماروہ میں میرے اِس طرح اُول جلول داخل ہونے سے مہلاؤں کو خاصی دلی چوٹ پہونچی ۔ بعد میں مجھے بتایا گیا کہ کئی مہلائیں چیخ پڑیں اور ایک یا دو کو تو غش آ گیا ۔ لوکاچار کے وِرودھ میرا آچرن دیکھکر ساتھی حیرت میں تھے ۔ اِن کا کچھ سمے تو مہلاؤں کی زخمی بھاؤناؤں کو شانت کرنے میں گیا اور اُسکے بعد انہیں میری فکر ہوئی ۔ اتنے میں کسی نے گھوڑے کی ٹاپ سنی ۔ میرے ساتھی فوراً اصطبل کے اور لپکے ۔ اِنھیں معاملہ نازک معلوم ہونے لگا ۔

" اور میرا کہیں پتہ نہیں تھا ۔ اصطبل کا دروازہ کھلا ہوا تھا ۔ نہ وہاں میرا گھوڑا تھا، نہ اُس کی زین اور نہ لگام ۔ ساتھیوں نے جلدی جلدی اپنے اپنے گھوڑے کسے ۔ اِنھیں پریشانی یہ تھی کہ مجھے کھوجنے وے کدھر جاتے ۔ مانا میں رائفل سے لیس تھا پھر بھی آسٹریلیا کی گھنی جھاڑیوں کی بھول بھلیوں میں پھنس کر نکل سکنا مذاق نہ تھا ۔ میری ممکن بدقسمتی کی کلپنا کر کے ساتھی فکر سے بھر اُٹھے ۔

" چتردشی کا چاند چاروں اُور اپنی جیوتسنا بکھیر رہا تھا ۔ ہوا جیوں ہی قدرت کا ڈوپٹہ اڑانے کی کوشش کرتی بادل کے دو ایک ٹکڑے چاند کے سامنے اِس طرح آ جاتے مانو قدرت شرما کر کھڑکیوں پر پردے ڈال رہی ہو ۔ اگر اور دوسرا موقع ہوتا تو یہ گھوڑ سیر خاصی مزیدار رہتی، کنتو اِس بے سر پیر کی ڈھونڈھ کھوج سے ساتھیوں کو بے حد پریشانی تھی ۔ وے پریشان سے تھے کہ اچانک انہیں پاس ہی سے کہیں رائفل چھوٹنے کی آواز سنائی دی ۔ آواز کو انداز کر کے گھوڑے کے منھ انھوں نے ادھر ہی پھیر دئیے ۔ ایڑ لگی اور گھوڑے ہوا میں تیرنے لگے ۔ تھوڑی دور پر انہیں ہلکا دھواں آسمان کی اور اٹھتا ہوا دکھائی دیا ۔ ساتھی اُسی اور بڑھے ۔ تھوڑی دور اور چل کر انہیں بجھتی ہوئی آگ کی پھیکی لو درختوں کے جھرمٹ میں آنکھ مچولی کھیلتی دکھائی دی ۔ ساتھیوں نے سترک ہو کر آگے بڑھنا شروع کیا ۔ اتنے میں میں انہیں ننگے پیر اپنے سفید سلیپنگ سوٹ میں کھڑا دکھائی دیا ۔ میرا گھوڑا بھی پاس ہی کھڑا تھا ۔ میری آنکھیں بالکل کھلی ہوئی تھیں اور میری رائفل سے دھوئیں کی آخری سانسیں نکل رہی تھیں ۔ آگ کی ڈھیری اور مجھ میں قریب 60 گز کا فاصلہ تھا ۔

" ساتھیوں نے مجھے گھیر کر ایک ساتھ سوال کرنے شروع کر دیئے ۔ جو کچھ میں جانتا تھا میں نے انہیں سنانا شروع کر دیا — ' رات جلدی ہی میں سونے چلا گیا تھا ۔ دن بھر کا تھکا تھا اس لئے نیند نے فوراً ہی مجھے اپنے دامن میں سمیٹ لیا ۔ اس کے بعد میں نے ایک سپنا دیکھنا شروع کیا ۔ دماغ اُسی گورے کے خیال سے بھرا ہوا تھا ۔ سپنے میں میں نے دیکھا کہ چاندنی رات میں میں گھوڑے پر اس کا پیچھا کر

परेशान हो गई और आम लोगों के दिल दहल गये. इस पर कुछ बहादुर और साहसी लोगों ने फ़ैसला किया कि एक दल संगठित करके इस नाहनजार गोरे को, ज़िन्दा या मुर्दा, किसी तरह पकड़ कर लाया जाय. मेरे दिल में उस अंग्रेज़ की खोपड़ी पाने का कोई ख़ास लालच न था; हालांकि अनुसन्धान में ऐसी खोपड़ी बड़ी क़ीमती और काम की साबित हो सकती थी. इसलिये कुछ तो दिल बहलाव के ख़्याल से और कुछ वैज्ञानिक प्रयोग के उद्देश्य से मैं भी स्वयंसेवकों के इस दल में भरती हो गया.

"और वह गोरा भी ख़ासा मुजरिम था. उसने हमें ख़ूब ही छकाया. बाल बाल वह हमारे पंजे से बचकर निकल जाता. वहां के जंगलों और पहाड़ों से वह पूरी तरह वाक़िफ़ था. घुड़सवारी और निशानेबाज़ी में सचमुच उसका कोई सानी न था. अजब कैफ़ियत थी उसकी—यह आया और वह गया और हम मुंह ताकते रह जाते थे. वह सारी कहानी सुनाकर मैं तुम्हें बेज़ार न करूंगा. उस मानव नाटक के अन्तिम दृश्य का ही ज़िक्र करूंगा.

"ज्यों ही हमें उसके पते की सूचना मिलती हम फ़ौरन उसकी तलाश में रवाना होते. हफ़्तों हमने एक दिन से ज़्यादा किसी जगह आराम नहीं किया. जिस शहर में हम ठहरते वहां के धनी मानी हमारी दावतें करते और अपने बढ़िया घोड़े हमारे हवाले कर देते. पीछा करते हुये एक दिन हम ऐलिसस्प्रिंग नामक एक पहाड़ी नगर में पहुंचे. नगर के मेयर की आलीशान कोठी के सामने हमारे घोड़े रुके. कोठी के भीतर किसी सिलसिले में मेहमानों की ख़ातिर तवाज़ो हो रही थी. हालांकि हम लोग काफ़ी तादाद में थे फिर भी घर की मालकिन ने दिल से हमारा स्वागत किया. रात के भोजन के बाद नाच और संगीत का समां बंधा. मुझे ख़ुद नाच से कोई शौक़ नहीं. मेरी सारी ज़िन्दगी प्रकृति की उपासना में ही बीती है और मैंने क़ुदरत के खुले सफ़े पढ़ने में ही उम्र काटी है. गृहस्वामी से छुट्टी लेकर मैं सोने चला गया. सारा दिन घोड़े की पीठ पर ही कटा था. जैसे ही लेटा, गहरी नींद तारी हो गई.

"इसके बाद जो कुछ मैंने अपने साथियों से सुना, वही तुम्हें सुना रहा हूं. लोग नाच रंग और शराब में डूबे हुए थे. पियानो की मधुर गति बिठोवन के एक गीत पर ताल भर रही थी. नवयुवक और युवतियां कमर में हाथ डाले कोरस दुहरा रहे थे कि सहसा स्लीपिंग ड्रेस में ही मैं उस मजमे में हाथ में राइफ़ल लिये दाख़िल हुआ और कमरे से निकल मकान के पीछे अस्तबल की ओर गया. सर मेरा पीछे की ओर झुका हुआ था और आंखें उस तरह खुली हुई थीं कि मानो पास की चीज़ों से बेख़बर मैं बहुत दूर ग़ैब की कोई चीज़ देख रहा हूं.



پریشان ہوگئی اور عام لوگوں کے دل دہل گئے. اس پر کچھ بہادر اور ساہسی لوگوں نے فیصلہ کیا کہ ایک دل سنگٹھت کر کے اس ناہنجار گورے کو، زندہ یا مردہ، کسی طرح پکڑ کر لایا جائے. میرے دل میں اُس انگریز کی کھوپڑی پانے کا کوئی خاص لالچ نہ تھا، حالانکہ انوسندھان میں ایسی کھوپڑی بڑی قیمتی اور کام کی ثابت ہو سکتی تھی. اِس لئے کچھ تو دل بہلاؤ کے خیال سے اور کچھ وگیانک پریوگ کے اُدیش سے میں بھی سویم سیوکوں کے اِس دل میں بھرتی ہوگیا.

" اور وہ گورا بھی خاصہ مجرم تھا. اِس نے ہمیں خوب ہی چھکایا. بال بال وہ ہمارے پنجے سے بچ کر نکل جاتا. وہاں کے جنگلوں اور پہاڑوں سے وہ پوری طرح واقف تھا. گھوڑ سواری اور نشانہ بازی میں سچ مچ اس کا کوئی ثانی نہ تھا. عجب کیفیت تھی اس کی— یہ آیا اور وہ گیا اور ہم منہ تاکتے رہ جاتے تھے. وہ ساری کہانی سنا کر میں تمھیں بیزار نہ کروں گا. اُس مانو ناٹک کے انتم درشیہ کا ہی ذکر کرونگا.

" جیوں ہی ہمیں اُن کے پتے کی سوچنا ملتی ہم فوراً اُس کی تلاش میں روانہ ہوتے. ہفتوں ہم نے ایک دن سے زیادہ کسی جگہ آرام نہیں کیا. جس شہر میں ہم ٹھہرتے وہاں کے دھنی مانی ہماری دعوتیں کرتے اور اپنے بڑھیا گھوڑے ہمارے حوالے کر دیتے. پیچھا کرتے ہوئے ایک دن ہم ایلس اسپرنگ نامک ایک پہاڑی نگر میں پہونچے. نگر کے میئر کی عالیشان کوٹھی کے سامنے ہمارے گھوڑے رکے. کوٹھی کے بھیتر کسی سلسلے میں مہمانوں کی خاطر تواضع ہورہی تھی. حالانکہ ہم لوگ کافی تعداد میں تھے پھر بھی گھر کی مالکن نے دل سے ہمارا سواگت کیا. رات کے بھوجن کے بعد ناچ اور سنگیت کا سماں بندھا. مجھے خود ناچ سے کوئی شوق نہیں. میری ساری زندگی پرکرتی کی اُپاسنا میں ہی بیتی ہے اور میں نے قدرت کے کھلے صفحے پڑھنے میں ہی عمر کاٹی ہے. گرہ سوامی سے چھٹی لے کر میں سونے چلا گیا. سارا دن گھوڑے کی پیٹھ پر ہی کٹا تھا. جیسے ہی لیٹا، گہری نیند طاری ہو گئی.

" اس کے بعد جو کچھ میں نے اپنے ساتھیوں سے سنا، وہی تمھیں سنا رہا ہوں. لوگ ناچ رنگ اور شراب میں ڈوبے ہوئے تھے. پیانو کی مدھر گتی بتھوون کے ایک گیت پر تال بھر رہی تھی. نویوک اور یوتیاں کمر میں ہاتھ ڈالے کورس دہرا رہے تھے کہ سہسا سلیپنگ ڈریس میں ہی میں اِس مجمع میں ہاتھ میں رائفل لئے داخل ہوا اور کمرے سے نکل مکان کے پیچھے اصطبل کی اور گیا. سر میرا پیچھے کی اُور جھکا ہوا تھا اور آنکھیں اس طرح کھلی ہوئی تھیں کہ مانو پاس کی چیزوں سے بےخبر میں بہت دور غیب کی کوئی چیز دیکھ رہا ہوں.

बाने बुनते रहते थे. कभी कभी अपवाद की तरह अन्धड़ और तूफ़ान नाशाइस्तगी बरतने लगते थे वरना पूरे बरस भर मन्द मन्द वायु झील के जल को गुदगुदी करती रहती थी. लहरें जलवायु को गलबांही देने के लिये भुजायें फैलाती थीं तो वायु बल खाती हुई किनारे की ओर सघन कुंजों में भाग जाती थी. झील का नीला जल किनारे के चारों ओर पीली पीली रेत के फैलाव में ऐसा लगता था मानो पुखराज के बीचों बीच किसी ने नीलम जड़ दिया हो. झील के एक किनारे गहरे लाल पत्थर की पहाड़ियां धब्बों की तरह फैली हुई थीं और इन पहाड़ियों के पास कास के सफ़ेद घने उगे फूल ऐसे लगते थे मानो क़ुदरत के महावर लगे पैरों में पायज़ेब पड़ी हों. सूर्य की पहली किरनों के मंजुल प्रभात में हज़ारों जलचर तट की रेत पर संख, सीपी और घोंघों का कवच पहने इस तरह फिरते थे मानों झील की रानी के बाडीगार्ड पैरेड कर रहे हों.

"झील के चारों ओर फैले हुये हरे भरे जंगल झील से कुछ कम सुहावने न थे. शोभनीय वृक्ष, कुसुमित झाड़ियां, फूलों के भार से लदी लतायें और नाज़ुक फ़र्म अपने बिखरे हुये रूप में भी बेहद सुन्दर लगते थे. मैगनोलिया के सफ़ेद फूल सुनहले रङ्ग के बड़े बड़े सूरजमुखी, ख़ुशबू से तर मेरोज़ा, तारिकाओं की तरह खिली हुई यूथिका और मनहर नील गुम्फा आस्ट्रेलिया के इस मर्मस्थल को मदविभोर किये रहते थे. हवा के ज़र्रे ज़र्रे में ख़ुशबू समाई रहती थी. इन सघन कुंजों के पीछे बादाम और अख़रोट, सेब और नाशपाती, नारियल और साबूदाने के दरख़्त बेतरतीब खड़े हुये थे और इनसे परे छोटी छोटी पहाड़ियां घावड़ा, सागवन और शीशम के दरख़्तों का भार लादे बोझिल पड़ी हुई थीं.

"जाने कैसे क़ुदरत का यह मनोरम प्राणस्थल सुबह के टूटे हुये सपने की तरह यकायक मिट गया. दानव रेगिस्तान सारी हरियाली निगल कर तीन हज़ार मील के फैलाव की यह अटूट जल राशि पी गया. इस रेगिस्तान की छान बीन करते हुये मुझे कई आश्चर्यजनक तजरुबे हुये. अपनी इसी खोज में आबादी से क़रीब एक हज़ार मील दूर मैं एक दुर्घटना में फंस गया. एक बीहड़ और ख़तरनाक पहाड़ी से उतरते हुये खड में गिर कर मैंने अपनी दोनों टांगें तोड़ लीं. बदक़िस्मती से मैं बिलकुल अकेला था. मुझे अपना खाना भी जुटाना पड़ता और अपनी टूटी टांगों को भी अपने पीछे घसीटना पड़ता. ख़ुदा जाने कैसे सारा रास्ता तय करके मैं वापस आबादी में पहुंचा. पूरी तरह ठीक होने में मुझे महीनों लग गये. अच्छा होकर जी बहलाने के लिये मैं सामाजिक राग रंग में लग गया.

"इसी समय एक गोरे मुजरिम के कारनामों से आस्ट्रेलिया में तहलका मचा हुआ था. सरकार और पुलिस दोनों



بانے بنتے رہتے تھے ۔ کبھی کبھی اپواد کی طرح اندھڑ اور طوفان ناشائستگی برتنے لگتے تھے ورنہ پورے برس بھر مند مند وایو جھیل کے جل کو گدگدی کرتی رہتی تھی ۔ لہریں جل وایو کو گل باہیں دینے کے لئے بھجائیں پھیلاتی تھیں تو وایو بل کھاتی ہوئی کنارے کی اور سگھن کنجوں میں بھاگ جاتی تھی ۔ جھیل کا نیلا جل کنارے کے چاروں اور پیلی پیلی ریت کے پھیلاؤ میں ایسا لگتا تھا مانو پکھراج کے بیچوں بیچ کسی نے نیلم جڑ دیا ہو ۔ جھیل کے ایک کنارے گہرے لال پتھر کی پہاڑیاں دھبوں کی طرح پھیلی ہوئی تھیں اور ان پہاڑیوں کے پاس کاس کے سفید گھنے اگے پھول ایسے لگتے تھے مانو قدرت کے مہاور لگے پیروں میں پائزیب پڑی ہوں ۔ سوریہ کی پہلی کرنوں کے منجل پربھات میں ہزاروں جلچر تٹ کی ریت پر سنکھ، سیپی اور گھونگھوں کا کوچ پہنے اس طرح پھرتے تھے مانو جھیل کی رانی کے باڈی گارڈ پریڈ کر رہے ہوں ۔

"جھیل کے چاروں اور پھیلے ہوئے ہرے بھرے جنگل جھیل سے کچھ کم سہاونے نہ تھے ۔ شوبھنیہ ورکچھ، کسمت جھاڑیاں، پھولوں کے بھار سے لدی لتائیں اور نازک فرم اپنے بکھرے ہوئے روپ میں بھی بیحد سندر لگتے تھے ۔ میگنولیا کے سفید پھول سنہلے رنگ کے بڑے بڑے سورج مکھی، خوشبو سے تر میروزا، تاریکاؤں کی طرح کھلی ہوئی یوتھیکا اور منہر نیل گمفا آسٹریلیا کے اس مرم استھل کو مد وبھور کئے رہتے تھے ۔ ہوا کے ذرے ذرے میں خوشبو سمائی رہتی تھی ۔ ان سگھن کنجوں کے پیچھے بادام اور اخروٹ، سیب اور ناشپاتی، ناریل اور سابودانے کے درخت بےترتیب کھڑے ہوئے تھے اور ان سے پرے چھوٹی چھوٹی پہاڑیاں گھاوڑا، ساگون اور شیشم کے درختوں کا بھار لادے بوجھل پڑی ہوئی تھیں ۔

"جانے کیسے قدرت کا یہ منورم پران استھل صبح کے ٹوٹے ہوئے سپنے کی طرح یکایک مٹ گیا ۔ دانو ریگستان ساری ہریالی نگل کر تین ہزار میل کے پھیلاؤ کی یہ اٹوٹ جل راشی پی گیا ۔ اس ریگستان کی چھان بین کرتے ہوئے مجھے کئی آشچریہ جنک تجربے ہوئے ۔ اپنی اسی کھوج میں آبادی سے قریب ایک ہزار میل دور میں ایک درگھٹنا میں پھنس گیا ۔ ایک بیہڑ اور خطرناک پہاڑی سے اترتے ہوئے کھڈ میں گر کر میں نے اپنی دونوں ٹانگیں توڑ لیں ۔ بدقسمتی سے میں بالکل اکیلا تھا ۔ مجھے اپنا کھانا بھی جٹانا پڑتا اور اپنی ٹوٹی ٹانگوں کو بھی اپنے پیچھے گھسیٹنا پڑتا ۔ خدا جانے کیسے سارا راستہ طے کر کے میں واپس آبادی میں پہونچا ۔ پوری طرح ٹھیک ہونے میں مجھے مہینوں لگ گئے ۔ اچھا ہو کر جی بہلانے کے لئے میں سماجک راگ رنگ میں لگ گیا ۔

"اسی سمے ایک گورے مجرم کے کارناموں سے آسٹریلیا میں تہلکہ مچا ہوا تھا ۔ سرکار اور پولس دونوں

और पापुआ की जातियों का मूल निकास मैलेनेशिया के टापुओं से हुआ है और अस्ल में दक्खिनी समुद्र की सारी जातियों का मूल सोता उसी तरह एक है जिस तरह यूरोप और एशिया में फैली हुई आर्य जातियों का.

इसी सिलसिले में प्रोफ़ैसर अकसर अपनी स्पेन यात्रा का भी ज़िक्र करते थे. वहां कादिज़ में एक स्पेनिअर्ड की खोपड़ी ने उन्हें बेहद लुभाया था. विकसित खोपड़ियों को जीवित देह से जुदा देखने की ख्वाहिश के पीछे प्रोफ़ैसर की कोई कापालिक भावना न थी. वह तो मानव जाति शास्त्र के विशेषज्ञ थे और कौन जाने किसी आदिम काल में कापालिकों के बलिगृह में ही इस शास्त्र की नींव पड़ी हो. उस स्पेनिअर्ड की तन्दुरुस्ती दिनों दिन बिगड़ती जा रही थी. प्रोफ़ैसर के पास इतना वक़्त न था कि वह ज्यादा दिनों तक वहां ठहर सकते! वह इस परेशानी में थे कि मौत की धीमी चाल को उसके प्राणों में किस तरह तेज़ किया जाय. प्रोफ़ैसर को पता चला कि उस खोपड़ी के मालिक का एक ऐयाश और दुराचारी भतीजा है. प्रोफ़ैसर ने उसके साथ अपनी दोस्ती बढ़ाई और बातों बातों में उसे समझाया कि उसके चचा की हालत बहुत नाज़ुक है और उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है. अपने बारे में उन्होंने उसे बताया कि वे इनसानों की भलाई के लिये वैज्ञानिक छानबीन में लगे हुये हैं. भतीजे के साथ यह सौदा तय हुआ कि चचा के मरने पर उसे चार सौ रुपये दिये जायंगे और इसके एवज़ में भतीजा अपने चचा की खोपड़ी प्रोफ़ैसर के हवाले कर देगा. इस सौदे के बाद एक दिन सुना गया कि चचा की अचानक मौत हो गई. वादे के मुताबिक़ भतीजे को सारी रक़म चुका दी गई. मगर वह, जो भतीता था, ज़िन्दगी में उसके कोई उसूल ही न थे. रक़म लेकर उसने प्रोफ़ैसर को अंगूठा दिखाया और अपने चचा को दफ़ना दिया.

किस तरह अपनी रक़म की पाई पाई प्रोफ़ैसर ने उससे वसूल कर ली यह भी एक दिलचस्प क़िस्सा है. मगर इस समय मैं एक दूसरी ही घटना तुम्हें सुनाने बैठा था. प्रोफ़ैसर की ही यह कही हुई है और उन्हीं के शब्दों में तुम्हें ज्यों की त्यों मैं इसे सुना रहा हूं—

"मैं उस समय उन बची खुची जातियों का पता लगाने में मसरूफ़ था जो मिटती जा रही हैं. आज आस्ट्रेलिया के ठीक मर्मस्थल में हज़ारों मील लम्बा चौड़ा रेगिस्तान है. लेकिन किसी ज़माने में यहीं तीन हज़ार मील के फैलाव में मीठे पानी की एक बेहद खुशनुमा झील थी. उसके चारों ओर लाखों पेड़ थे जिन पर करोड़ों परिन्द कलरव करते रहते थे. ऊपर साफ़ नीला आसमान का चंदोवा तना रहता था और सूर्य भगवान दिन में 16 घन्टे अपनी किरनों के ताने



اور پاپوآ کی جاتیوں کا مول نکاس میلےنیشیا کے ٹاپوؤں سے ہوا ہے اور اصل میں دکھنی سمدر کی ساری جاتیوں کا مول سوتا اسی طرح ایک ہے جس طرح یورپ اور ایشیا میں پھیلی ہوئی آریہ جاتیوں کا .

اِسی سلسلے میں پروفیسر اکثر اپنی اسپین یاترا کا بھی ذکر کرتے تھے . وہاں کادز میں ایک اسپینیرڈ کی کھوپڑی نے انہیں بیحد لبھایا تھا . وکست کھوپڑیوں کو جیوت دیہ سے جدا دیکھنے کی خواہش کے پیچھے پروفیسر کی کوئی کاپالک بھاؤنا نہ تھی. وہ تو مانو جاتی شاستر کے وشیشگیہ تھے اور کون جانے کسی آدم کال میں کپالکوں کے بیلگرہ میں ہی اِس شاستر کی نیو پڑی ہو. اُس اسپینیرڈ کی تندرستی دنوں دن بگڑتی جارہی تھی. پروفیسر کے پاس اتنا وقت نہ تھا کہ وہ زیادہ دنوں تک وہاں ٹھہر سکتے ! وہ اِس پریشانی میں تھے کہ موت کی دھیمی چال کو اُس کے پرانوں میں کس طرح تیز کیا جائے . پروفیسر کو پتہ چلا کہ اس کھوپڑی کے مالک کا ایک عیاش اور دوراچاری بھتیجا ہے . پروفیسر نے اُس کے ساتھ اپنی دوستی بڑھائی اور باتوں باتوں میں اُسے سمجھایا کہ اُس کے چچا کی حالت بہت نازک ہے اور اس کے بچنے کی کوئی امید نہیں ہے . اپنے بارے میں انہوں نے اُسے بتایا کہ وے انسانوں کی بھلائی کے لئے ویگیانک چھان بین میں لگے ہوئے ہیں. بھتیجے کے ساتھ یہ سودا طے ہوا کہ چچا کے مرنے پر اسے چار سو روپئے دیئے جائینگے اور اس کے عیوض میں بھتیجا اپنے چچا کی کھوپڑی پروفیسر کے حوالے کردےگا . اس سودے کے بعد ایک دن سنا گیا کہ چچا کی اچانک موت ہوگئی . وعدے کے مطابق بھتیجے کو ساری رقم چکادی گئی . مگر وہ، جو بھتیجا تھا، زندگی میں اس کے کوئی اصول ہی نہ تھے . رقم لےکر اس نے پروفیسر کو انگوٹھا دکھایا اور اپنے چچا کو دفنا دیا .

کس طرح اپنی رقم کی پائی پائی پروفیسر نے اُس سے وصول کرلی یہ بھی ایک دلچسپ قصہ ہے . مگر اس سمے میں ایک دوسری ہی گھٹنا تمہیں سنانے بیٹھا تھا. پروفیسر کی ہی یہ کہی ہوئی ہے اور انہیں کے شبدوں میں تمہیں جیوں کی تیوں میں اِسے سنا رہا ہوں—

"میں اس سمے اُن بچی کھچی جاتیوں کا پتہ لگانے میں مصروف تھا جو مٹتی جارہی ہیں . آج اسٹریلیا کے ٹھیک مرم استھل میں ہزاروں میل لمبا چوڑا ریگستان ہے . لیکن کسی زمانے میں یہیں تین ہزار میل کے پھیلاؤ میں میٹھے پانی کی ایک بیحد خوشنما جھیل تھی. اُس کے چاروں اور لاکھوں پیڑ تھے جن پر کروڑوں پرند کلرو کرتے رہتے تھے. اوپر صاف نیلے آسمان کا چندوبا تنا رہتا تھا اور سوریہ بھگوان دن میں 16 گھنٹے اپنی کرنوں کے تانے

# महज़ क़यास

## محض قیاس

विश्वम्भरनाथ पांडे

जो वाक़या मैं तुम्हें सुनाने जा रहा हूं उसकी सच्चाई का मैं ज़िम्मा नहीं लेता. न यह मेरी गढ़ी हुई है और न मैंने इसे सीधा इसके गढ़ने वाले से ही सुना है. मुमकिन है यह गंगा-जमुनी बनकर मेरे पास पहुंची हो. इसके मूल रचयिता एक वैज्ञानिक थे जो अपने गम्भीर अनुसन्धानों के बीच जी बहलाने के लिये कभी कभी गप झाड़ लिया करते थे. क़ुदरत के सनातन तत्व सदा ही उनकी आंखों के सामने रहते थे और इसलिये उनके यह छोटे मोटे गप जीवन की अटपटी यात्रा के महज़ विराम चिह्न थे. उनकी कल्पना रोमांस के तारों को छू कर, अचरज भरे राग और ऐसे ऐसे असर पैदा करती थी जो सम्भावना ( मुमकिनात ) से परे होते थे.

लोग प्रोफ़ैसर को ख़ब्ती समझते; लेकिन अपने क़िस्म के ख़ब्तियों में भी प्रोफ़ैसर का दरजा बहुत ऊंचा था. कहां के वे असली रहने वाले हैं, इसका किसी को पता न था. और उससे कुछ पूछना भी फ़िज़ूल था. उनके जवाब सत्या-सत्य की विभाजक रेखा पर झूमते हुये उतरते थे. उनके चारों ओर सन्देह की लकीर बराबर बढ़ती ही जाती थी. कैसे, कहां से, और क्यों आस्ट्रेलिया में आकर वे रहे, इस पर बीते हुये ज़माने की गहरी परत पड़ चुकी थी. हां, यह बात सभी जानते थे कि प्रोफ़ैसर मानव जाति शास्त्र (anthropology) के विशेषज्ञ थे.

जब मैं उनसे पहली बार मिला उस वक़्त उनके साथ एक पापुअन लड़का रहता था. इतना काला था वह कि कोयले के टुकड़े से उस पर सफ़ेद निशान बनाया जा सकता था. प्रोफ़ेसर बड़े प्यार से उस बच्चे के सर पर हाथ फेरते और उसे तन्दुरुस्त और बड़े होने का अशीर्वाद देते थे. लड़का होशियार था और वे समझते थे कि पचीसा लांघकर उसकी खोपड़ी पूरी तरह विकसित हो जायगी. प्रोफ़ैसर को उस दिन का इन्तज़ार था जब इस पापुअन की विकसित खोपड़ी हाथ में लेकर वह उसकी अन्दर बाहर से जांच कर सकेंगे.

उनके अनुसन्धान घर में टेबुल पर आस्ट्रेलिया, न्यूगिनि, मलाया और सुमात्रा के आदिमवासियों की कई खोपड़ियां रखी थीं. इस लड़के की खोपड़ी से उनकी तुलना करके प्रोफ़ैसर यह साबित करना चाहते थे कि इन देशों

وشومبھر ناتھ پانڈے

جو واقعہ میں تمہیں سنانے جارہا ہوں اُس کی سچائی کا میں ذمہ نہیں لیتا. نہ یہ میری گڑھی ہوئی ہے اور نہ میں نے اسے سیدھا اس کے گڑھنے والے سے ہی سنا ہے . ممکن ہے یہ گنگا جمنی بن‌کر میرے پاس پہونچی ہو . اس کے مول رچیتا ایک ویگیانک تھے جو اپنے گمبھیر انوسندھانوں کے بیچ جی بہلانے کے لئے کبھی کبھی جھاڑ لگا لیا کرتے تھے . قدرت کے سناتن تتو سدا ہی ان کی آنکھوں کے سامنے رہتے تھے اور اس لئے اُن کے یہ چھوٹے موٹے گپ‌جیوں کی اٹپٹی یاترا کے محض ورام چنھ تھے . ان کی کلپنا رومانس کے تاروں کو چھوکر' اچرج بھرے راگ اور ایسے ایسے اثر پیدا کرتی تھی جو سمبھاونا ( ممکنات ) سے پرے ہوتے تھے .

لوگ پروفیسر کو خبطی سمجھتے؛ لیکن اپنے قسم کے خبطیوں میں بھی پروفیسر کا درجہ بہت اُونچا تھا . کہاں کے وے اصلی رہنے والے ہیں' اس کا کسی کو پتہ نہ تھا . اور ان سے کچھ پوچھنا بھی فضول تھا. ان کے جواب ستیاستیہ کی وبھاجک ریکھا پر جھومتے ہوئے اُترتے تھے. ان کے چاروں اور سندیہ کی لکیر برابر بڑھتی ہی جاتی تھی. کیسے' کہاں سے' اور کیوں اسٹریلیا میں آکر وے رہے' اس پر بیتے ہوئے زمانے کا گہری پرت پڑچکی تھی . ہاں' یہ بات سبھی جانتے تھے کہ پروفیسر مانو جاتی شاستر (anthropology) کے وشیشگیہ تھے .

جب میں اُن سے پہلی بار ملا اس وقت ان کے ساتھ ایک پاپون لڑکا رہتا تھا . اتنا کالا تھا وہ کہ کوئلے کے ٹکڑے سے اس پر سفید نشان بنایا جاسکتا تھا . پروفیسر بڑے پیار سے اُس بچے کے سر پر ہاتھ پھیرتے اور اُسے تندرست اور بڑے ہونے کا آشیرواد دیتے تھے. لڑکا ہوشیار تھا اور وے سمجھتے تھے کہ پچیسا لانگھ کر اُس کی کھوپڑی پوری طرح وکست ہوجایگی' پروفیسر کو اُس دن کا انتظار تھا جب اِس پاپون کی وکست کھوپڑی ہاتھ میں لےکر وے اُس کی اندر باہر سے جانچ کرسکیں گے .

اُن کے انوسندھان گھر میں ٹیبل پر آسٹریلیا' نیوگنی' ملایا اور سوماترا کے آدیواسیوں کی کئی کھوپڑیاں رکھی تھیں . اس لڑکے کی کھوپڑی سے اُن کی تولنا کرکے پروفیسر یہ ثابت کرنا چاہتے تھے کہ ان دیشوں

कितना सुन्दर विचार और पहचान है! मुसलमानों के लिए 'पराए' 'विदेशी' आदि शब्दों को लगा कर उन्हें दूसरा मानने की कल्पना भी नहीं उठ सकती! मन को मूस कर यानी मस कर (वश में कर), और साहिब के रुख—(आत्मोन्मुख) होकर, जो ज्ञान मुसल्ला गह—(केवल ज्ञान को प्राप्त कर), टिक जाता है—सिद्ध हो जाता है, वही मुसलमान है. हिन्दू मुसलिम भेद पर वे कहते हैं—

"मन की द्विविधा मान कर, भये एक सों दोय!"

बनारसीदास जी की नज़र में हिन्दू और मुसलमानों की लड़ाई उन दो भाइयों के समान थी जो अपने खेत में अलसी और जवस बोने के लिए लड़ रहे थे, पर वस्तु वास्तव में एक ही थी. वह लड़ाई ज्ञानी 'द्विभाशिया' के मिलने पर तत्काल शान्त हो गई.

बनारसीदास हिन्दू मुसलिम विभेद पर कहते हैं—

एक रूप हिन्दू तुरुक, दूजी दशा न कोय।<br>
मन की द्विविधा मान कर, भये एक सों दोय॥

दोऊ भूले भरम में, करें वचन की टेक।<br>
'राम-राम' हिन्दू कहें, तुर्क 'सलामालेक'॥

इनके पुस्तक बांचिये, वेहू पढ़ें कितेब।<br>
एक वस्तु के नाम द्वय, जैसे शोभा, ज़ेब॥

तिन को द्विविधा-जे लखें, रंग विरंगी चाम।<br>
मेरे नैनन देखिये, घट-घट अन्तर राम॥

आज यदि लोग बनारसीदास जी की आंखों से देखने की तकलीफ़ करें तो, उन्हें साफ़ दिखाई देगा कि यह सब भेदाभेद 'मन की द्विविधा मान कर' ही पैदा हुआ और उसी के चक्कर में फंस मनुश्य भ्रम में भूल कर भेद-भाव पर अड़ा हुआ है.

———

कवि लिखने के लिये तब तक क़लम नहीं उठाता जब तक उसकी स्याही प्रेम की आहों से शराबोर नहीं हो जाती.

—शेक्सपियर

———



کتنا سندر وچار اور پہچان ھے! مسلمانوں کے لئے 'پرائے' 'ودیشی' آدی شبدوں کو لگا کر اُنھیں دوسرا ماننے کی کلپنا بھی نہیں اُٹھ سکتی! من کو موس کر یعنی مس کر (وش میں کر)' اور صاحب کے رخ (آتمون مکھ) ھو کر' جو گیان مسلا گہ—(کیول گیان کو پراپت کر)' ٹک جاتا ھے—سدھ ھو جاتا ھے' وھی مسلمان ھے. ھندو مسلم بھید پر وے کہتے ھیں—

"من کی دویدھا مان کر' بھئے ایک سوں دوئے!"

بنارسی داس جی کی نظر میں ھندو اور مسلمانوں کی لڑائی اُن دو بھائیوں کے سمان تھی جو اپنے کھیت میں السی اور جوس بونے کے لئے لڑ رھے تھے' پر وستو واستو میں ایک ھی تھی. وہ لڑائی گیان 'دوئی بھاشیا' کے ملنے پر تتکال شانت ھوگئی.

بنارسی داس ھندو مسلم وبھید پر کہتے ھیں—

ایک روپ ھندو تورک' دوجی دشا نہ کوئے<br>
من کی دویدھا مان کر' بھئے ایک سوں دوئے.

دووُں بھولے بھرم میں' کریں وچن کی ٹیک'<br>
'رام رام' ھندو کہیں 'ترک' سلام عالیک.

اِن کے پستک بانچئے' ویھو پڑھیں کتیب'<br>
ایک وستو کے نام دوئے' جیسے شوبھا' زیب.

تن کوں دویدھا جے لکھیں' رنگ برنگی چام'<br>
میرے نینن دیکھئے' گھٹ گھٹ انتر رام.

آج یدی لوگ بنارسی داس جی کی آنکھوں سے دیکھنے کی تکلیف کریں تو' اُنہیں صاف دکھائی دے گا کہ یہ سب بھیدابھید 'من کی دویدھا مان کر' ھی پیدا ھوا ھے اور اُسی کے چکر میں پھنس منشیہ بھرم میں بھول کر بھید بھاؤ پر اَڑا ھوا ھے.

———

کوی لکھنے کے لئے تب تک قلم نہیں اُٹھاتا جب تک اُس کی سیاھی پریم کی آھوں سے شرابور نہیں ھوجاتی.

—شیکسپیر

———

# अकबर के समकालीन जैन कवि बनारसीदास

श्री जमनालाल जैन

कवि शेखर बनारसीदास जी ने भी अपने ढंग से हिन्दू मुसलमान समस्या पर धार्मिक निगाह से रोशनी डाली है. बनारसीदास जी जिस जमाने में जीवित थे, उस समय सम्राट अकबर का शासन सूर्य चमक रहा था. सम्राट अकबर से उन्हें बेहद प्रेम था. जब संवत् 1662 विक्रम में अकबर की मौत हुई तब उस समाचार को सुन बनारसीदास सुधिहीन होकर गिर पड़े और लहूलुहान हो गए थे—

> अकसमात बानारसी, सुनि 'अकबर कौ काल,
> सीढ़ी परि बैठ्यो हुतो, भयौ भरमचित चाल.
>
> आइ तबाला गिरि परयौ, सक्यौ न आपा राखि,
> फूटि भाल लोहू चल्यौ, कह्यौ 'देव' मुख भाखि.
>
> लागी चोट पखान की, भयौ गृहांगन लाल,
> हाइ ! हाइ ! सब करि उठे, मात तात बेहाल.

'प्रेम की पीर' का सच्चा अनुभव करने वाले ऐसे ही लोग हुआ करते हैं जो अपने जीवन को भी संकट में डाल देते हैं ! प्रेम की पीर का जिक्र करना कुछ और है और उसको अमल में उतार कर अनुभव करना कुछ और ! पहिली कला है, दूसरी सजीव पीड़ा !

हिन्दी-साहित्य के लिए यह बड़े गौरव की बात है कि कवि बनारसीदास ने भी अपने विचार हिन्दू मुस्लिम समन्वय पर जाहिर किए हैं. अगरचे उन्होंने बहुत ही थोड़े में—अति संक्षेप में—अपने विचारों को लिखा है, परन्तु उनमें जो गहरा मतलब, ऊंची भावनाएं और जो गहरी सचाई छिपी हुई है, वह सिर्फ अनुभव करने की ही चीज है. फिर, उनके सम्बन्ध में इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि वे एक शुद्ध 'जैन' कवि थे. जैन कवि यद्यपि शुद्ध मानवता और नैतिकता के कवि रहे हैं, तथापि वे साम्प्रदायिकता के लिए अति से अधिक बदनाम भी रहे हैं और हैं. ऐसी हालत में यदि बनारसीदास जैसे फक्कड़ शिरोमणि कवि राष्ट्रीय समस्या पर 'कुछ भी' कहता है तो, वह गौरव की वस्तु हो जाती है. कविवर ने मुसलमान की पहचान बताते हुए कहा है कि—

> जो मन मूसै आपनो, साहिब के रुख होय,
> ज्ञान मुसल्ला गह टिकै, मुसलमान है सोय.

# اکبر کے سمکالین جین کوی بنارسی داس

شری جمنالال جین

کوی شیکھر بنارسی داس جی نے بھی اپنے ڈھنگ سے ہندو مسلمان سمسیا پر دھارمک نگاہ سے روشنی ڈالی ہے ۔ بنارسی داس جی جس زمانے میں جیوت تھے، اس سمے سمراٹ اکبر کا شاسن سوریہ چمک رہا تھا ۔ سمراٹ اکبر سے انہیں بےحد پریم تھا۔ جب سموت 1662 وکرم میں اکبر کی موت ہوئی تب اس سماچار کو سن بنارسی داس سدھی ہین ہوکر گر پڑے اور لہولہان ہوگئے تھے—

> اکسمات بانارسی، سنی اکبر کو کال،
> سیڑھی پر بیٹھیو ہوتو، بھئیو بھرمچت چال ۔
> آئی تبالہ گر پرئیو، سکیو نہ آپا راکھ،
> پھوٹی بھال لوھو چلیو، کہیو 'دیو' مکھ بھاکھ ۔
> لاگی چوٹ پکھان کی، بھیو گرھانگن لال،
> ھائے ! ھائے ! سب کری اٹھے، مات تات بےحال ۔

'پریم کی پیر' کا سچا انوبھو کرنے والے ایسے ھی لوگ ھوا کرتے ھیں جو اپنے جیون کو بھی سنکٹ میں ڈال دیتے ھیں ! پریم کی پیر کا ذکر کرنا کچھ اور ھے اور اس کو عمل میں اتارکر انوبھو کرنا کچھ اور ۔ پہلی کلا ھے، دوسری سجیو پیڑا !

ھندی ساھتیہ کے لئے یہ بڑے گورو کی بات ھے کہ کوی بنارسی داس نے بھی اپنے وچار ھندو مسلم سنوئے پر ظاہر کئے ھیں ۔ اگرچہ انھوں نے بہت ھی تھوڑے میں—اتی سنکچھیپ میں—اپنے وچاروں کو لکھا ھے، پرنتو ان میں جو گہرا مطلب، اونچی بھاؤنائیں اور جو گہری سچائی چھپی ہوئی ھے، وہ صرف انوبھو کرنے کی ھی چیز ھے ۔ پھر، ان کے سمبندھ میں اس بات کو نہیں بھولنا چاھئے کہ وے ایک شدھ 'جین' کوی تھے ۔ جین کوی یدیپی شدھ مانوتا اور نیتکتا کے کوی رھے ھیں، تتھاپی وے سامپردائکتا کے لئے اتی سے ادھک بدنام بھی رھے ھیں اور ھیں ۔ ایسی حالت میں یدی بنارسی داس جیسا پھکڑ شرومنی کوی راشٹریہ سمسیا پر 'کچھ بھی' کہتا ھے تو، وہ گورو کی وستو ھو جاتی ھے ۔ کویر نے مسلمان کی پہچان بتاتے ہوئے کہا ھے کہ—

> جو من موسے آپنو، صاحب کے رکھ ھوئے،
> گیان موسلا گہ ٹکے، مسلمان ھے سوئے ۔

सागर ( सागर ), रावत ( राजपूत ), पायक ( पियादा ), धानुक ( तीर-अंदाज़ ), बसीढ ( एलची ), सेवती, मौलस्री आदि.

तारीख़ फ़ीरोज़शाही में, जो चौदहवीं सदी में लिखी गयी थी, हिन्दी शब्दों की भरमार है. इनमें से चन्द एक सुन लीजिये : मंदा ( मंडी ) सौंधार ( उधार ), लादी ( सामान ढोने वाला ), सुख-आसन ( पालकी ), मंडल ( जलसा ).

सैरुल-औलिया में, जो इसी ज़माने की किताब है, हिन्दी के कई शब्द आये हैं, जैसे : लांघन, भागसी ( क़ैदख़ाना ).

यह फ़ेहरिस्त इतनी लम्बी हो सकती है कि पाठक पढ़ते पढ़ते उकता जायेंगे. मतलब यह है कि फ़ारसी और हिन्दी में शासक-शासित का नाता न था. दोनों ने एक दूसरे का असर क़ुबूल किया; हां, इससे पहले शब्दों को अपने अपने सांचों में ढाल लिया. हिन्दी जिस तरह ज़, ख़, और क़ को हज़म न कर सकती थी, फ़ारसी 'ट' 'ड' 'ड़' की ताब न ला सकती थी.

मुग़ल बादशाहों के ज़माने में तो हिन्दुस्तानी फ़ारसी पर हिन्दी का रंग रच गया था. शाहजहां के दरबारी कवि अबू तालिब कलीम के कुछ मिसरों में हिन्दी की घुलावट देखिये :

मना बर बादए तंबोलियां दिल...
ज़ हुस्ने शुस्तए धोबी चे गोयम...
बुताने राजपूतो शेख़ज़ादा...
चे चंबर शोलए शमअस्त बेदूद...
के वस्फ़े मौलस्री रा बर निगारम...

फ़ारसी व्याकरण का अटल नियम है कि संधि केवल फ़ारसी शब्दों में ही हो सकती है. पर 'झरोकए दर्शन' जैसी तरकीबें भी देखने में आती हैं. बहुत से हिन्दी मुहावरे भी फ़ारसी में घुल मिल गये, जैसे : बीड़ा तंबूल गिरफ़्तन ( बीड़ा उठाना ).



ساغر (ساگر)، راوت ( راجپوت )، پایک ( پیادہ )، دھانک ( تیرانداز )، بسیڈھ ( ایلچی ) سیوتی، مولسری آدی ۔

تاریخ فیروز شاہی میں، جو چودھویں صدی میں لکھی گئی تھی، ہندی شبدوں کی بھر مار ھے ۔ ان میں سے چند ایک سن لیجئے : مندا ( منڈی )، سوندھار ( اُدھار )، لادی ( سامان ڈھونے والا )، سکھ آسن ( پالکی )، منڈل ( جلسہ ).

سیرالاولیا میں، جو اسی زمانے کی کتاب ھے، ھندی کے کئی شبد آئے ھیں، جیسے : لانگھن، بھاگسی ( قیدخانہ )

یہ فہرست اتنی لمبی ھو سکتی ھے کہ پاٹھک پڑھتے پڑھتے اُکتا جائینگے ۔ مطلب یہ ھے کہ فارسی اور ھندی میں شاسک شاست کا ناتا نہ تھا ۔ دونوں نے ایک دوسرے کا اثر قبول کیا، ھاں، اِس سے پہلے شبدوں کو اپنے اپنے سانچوں میں ڈھال لیا ۔ ھندی جس طرح ز، خ، اور ق کو ھضم نہ کر سکتی تھی، فارسی 'ٹ'، 'ڈ'، 'ڑ' کی تاب نہ لا سکتی تھی ۔

مغل بادشاھوں کے زمانے میں تو ھندستانی فارسی پر ھندی کا رنگ رچ گیا تھا ۔ شاھجہاں کے درباری کوی ابوطالب کلیم کے کچھ مصرعوں میں ھندی کی گھلاوٹ دیکھئے :

منا بر بادۂ تمبولیاں دل...
زحسن شستۂ دھوبی چہ گویم ..
بتان راجپوت و شیخ زادہ...
چہ چمبر شعلۂ شمع ست بیدود...
کے وصف مولسری را برنگارم...

فارسی ویا کرن کا اٹل نیم ھے کہ سندھی کیول فارسی شبدوں میں ھی ھو سکتی ھے ۔ پر 'جھروکۂ درشن' جیسی ترکیبیں بھی دیکھنے میں آتی ھیں ۔ بہت سے ھندی محاورے بھی فارسی میں گھل مل گئے، جیسے ۔ بیڑا تمبول گرفتن ( بیڑا اُٹھانا )

---

अल्ला अला रे हस्तिये शायर
क़ल्ब ग़ुन्चे का आंख शबनम की

—जिगर

اللہ اللہ رے ھستئی شاعر
قلب غنچہ کا آنکھ شبنم کی

—جگر

विज्ञान और नये नये कल कारखाने दुनिया की शक्ल को इस तरह बदल रहे हैं कि सारी दुनिया तेज़ी के साथ एक आर्थिक इकाई बनती जा रही है. मानव जाति का भविश्य तभी सुन्दर और ज्योतिर्मय हो सकता है जबकि हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के पाठ को—सम्पूर्ण मानव जाति की एकता की सच्चाई को—पूरी तरह दिल में उतार लें.

وگیان اور نئے نئے کل کارخانے دنیا کی شکل کو اِس طرح بدل رہے ھیں کہ ساری دنیا تیزی کے ساتھ ایک ارتھک اکائی بنتی جارھی ھے ۔ مانوجاتی کا بھوشیہ تب ھی سندر اور جیوتر مئے ھو سکتا ھے. جبکہ ھم ' وسودھیو کٹمبکم ' کے پاٹھ کو—سمپورن مانو جاتی کی ایکتا کی سچائی کو—پوری طرح دل میں اُتار لیں ۔

—

# फ़ारसी पर हिन्दी का असर

# فارسی پر ھندی کا اثر

मौलवी सिराजुद्दीन आज़र

مولوی سراج الدین آذر

तुर्क और मुग़ल जब हिन्दुस्तान में आये तो ऐसा मालूम होता था कि उनके और हिन्दुस्तानियों के कलचर में कोई समानता नहीं है. दोनों बोल-चाल, रंग-ढंग, रहन-सहन में एक दूसरे से बिलकुल अलग थे. फिर भी धीरे धीरे उन्होंने एक दूसरे पर जैसा गहरा असर डाला, वह इस बात की दलील है कि क़ौमें अपनी ख़ासियतों को अलग अलग ख़ानों में नहीं बन्द कर सकतीं. इस आपसी लेन-देन की एक मिसाल हिन्दी पर फ़ारसी का और फ़ारसी पर हिन्दी का असर है.

फ़ारसी में हिन्दी शब्दों की मिलावट महमूद ग़ज़नवी के ज़माने से शुरू हो गयी थी. उस युग के बड़े बड़े कवियों और लेखकों—जैसे फ़िरदौसी, उन्सरी, फ़र्रुख़ी, असदी और सनाई—ने इन हिन्दी शब्दों का इस्तेमाल किया है :

कोतवाल, नौबहार ( विहार ), लगन, कतारा (कटार) चन्दन और पानी.

ग़ज़नवी घराने के शाह मसूद के समकालीन कवि रूनी ने दंद ( दंत ), जौहर और जत ( जाट ) का इस्तेमाल किया है.

मसूद साद सुलेमान के यहां हिन्दी के यह शब्द मिलते हैं—कत ( तख़्त ), मारामार, बर्शगाल (वर्शा-काल).

ताजुद्दीन रेज़ा ने 'सेर' और 'मन' का प्रयोग किया है.

तबक़ात नासरी तेरहवीं सदी ईस्वी में लिखी गयी थी. उसमें हिन्दी के यह शब्द मिलते हैं : सील ( शिला ) लक ( लाख ).

अमीर ख़ुसरो की फ़ारसी में हिन्दी की पुट मिलना कोई अजीब बात नहीं. इनमें से कुछ की बानगी देखिये :

ترک اور مغل جب ھندستان میں آئے تو ایسا معلوم ھوتا تھا کہ اُن کے اور ھندستانیوں کے کلچر میں کوئی سمانتا نہیں ھے ۔ دونوں بول چال، رنگ ڈھنگ، رھن سہن میں ایک دوسرے سے بالکل الگ تھے ۔ پھر بھی دھیرے دھیرے اُنھوں نے ایک دوسرے پر جیسا گہرا اثر ڈالا، وہ اِس بات کی دلیل ھے کہ قومیں اپنی خاصیتوں کو الگ الگ خانوں میں نہیں بند کرسکتیں ۔ اِس آپسی لین دین کی ایک مثال ھندی پر فارسی کا ارر فارسی پر ھندی کا اثر ھے ۔

فارسی میں ھندی شبدوں کی ملاوٹ محمود غزنوی کے زمانے سے شروع ھوگئی تھی ۔ اُس یگ کے بڑے بڑے کویوں اور لیکھکوں—جیسے فردوسی، عنصری، فروخی، اسدی اور صناعی— نے اِن ھندی شبدوں کا استعمال کیا ھے :

کوتوال، نوبہار ( وھار ) لگن، کتارا ( کٹار ) چندن ارر پانی.

غزنوی گھرانے کے شاہ مصعود کے سمکالین کوی رونی نے دند ( دنت )، جوھر اور جت ( جاٹ ) کا استعمال کیا ھے ۔

مصعود سعد سلیمان کے یہاں ھندی کے یہ شبد ملتے ھیں— کت ( تخت )، مارامار، برشگال ( ورشا کال ) ۔

تاج الدین رضا نے 'سیر' اور 'من' کا پریوگ کیا ھے ۔

طبقات ناصری تیرھویں صدی عیسوی میں لکھی گئی تھی. اُس میں ھندی کے یہ شبد ملتے ھیں : سیل ( شلا ) لک ( لاکھ ) ۔

امیر خسرو کی فارسی میں ھندی کی پٹ ملنا کوئی عجیب بات نہیں ۔ اِن میں سے کچھ کی بانگی دیکھئے :

किया जा रहा है. दुनिया के बड़े से बड़े वैज्ञानिक मस्तिष्क इसमें लगे हुये हैं. इस खोज का नतीजा भावी युद्धों पर कितना भयंकर पड़ सकता है इसकी कल्पना करते हुए अमरीका की कारनेगी इन्स्टिट्यूट के प्रेज़िडेन्ट ने हाल में कहा था—"अणु की छिपी हुई शक्ति इन क्षुद्र-दृष्टि राजनीतिज्ञों के हाथों में सभ्यता के लिये नरक की आग साबित होगी."

इन बातों से पता चलता है कि मनुश्य शायद प्रकृति की रोशनी में बढ़ने और उस 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' के प्रेम में अपनी आत्मा को विकसित करने के बजाय फिर हज़ारों वर्ष पहले की जंगली हालत को लौटना चाहता है. केवल यह कहने से काम न चलेगा कि विज्ञान का उपयोग भलाई और बुराई दोनों के लिये किया जा सकता है. हर समझदार मनुश्य को बड़ी गहराई से इस बात पर विचार करना होगा कि विज्ञान के ज़रिये सभ्यता की उन्नति बजाय बढ़ने के रुक क्यों गई ? वैज्ञानिक लोग इन बुरे नतीजों की ज़िम्मेवारी से बच नहीं सकते. हर देश के शिक्षितों को अब यह समझ लेना होगा कि—"मानव जाति को केवल उन्नति के साधन दे देना ही काफ़ी नहीं है, इससे कहीं ज्यादा ज़रूरी यह है कि उन्हें इन साधनों का ठीक ठीक इस्तेमाल करना सिखाया जावे."

हमारी पीढ़ी तक के आदमी बुरी तरह नाकामयाब रहे. 25 साल के अन्दर दो महायुद्ध हो चुके. अभी तीसरे की सम्भावना है या नहीं, यह कौन कह सकता है ? इस छोटी सी पृथ्वी की सारी आबादी एक भयंकर तूफ़ान में फंसी हुई है. विवेक और बुद्धिमत्ता संसार से मिटती हुई दिखाई दे रही हैं. इनसान दिन पर दिन फिर से दरिन्दा होता जा रहा है. इस आफ़त का कोई न कोई हल निकालना होगा. हिन्दुस्तान में महात्मा गान्धी ने इस आफ़त से निकलने के एक रास्ते की तरफ़ संकेत किया है. उनका कहना है कि अहिंसात्मक रह कर, जान बूझ कर अपने ऊपर कष्ट लेना और कष्ट सहना ही इस आफ़त से बचने का एक मात्र उपाय है. इस तरह के कष्ट सहन द्वारा ही दुनिया के सब आदमियों और सब क़ौमों में सामाजिक और राजनैतिक समता और न्याय क़ायम हो सकता है. दूसरे लोग हमें दूसरी तरह के हल भी सुझा रहे हैं.

लड़ाई के बाद दुनिया के पुनर्निर्माण की तजवीज़ें बन रही हैं. किन्तु इन तजवीज़ों से उस समय तक कोई लाभ नहीं हो सकता जब तक हमारे व्यवहार के उसूल बजाय सारी मनुश्य जाति की भलाई के अपने अपने राष्ट्र का हित और अपना अपना लाभ हैं, या जब तक कि हमारी मुख्य संचालक शक्ति ख़ुदग़रज़ी है. एक देश से दूसरे देश के आने जाने के साधन कितनी तेज़ी के साथ बढ़ते जा रहे हैं,



کیا جا رہا ھے . دنیا کے بڑے سے بڑے ویگیانک مستشک اِس میں لگے ہوئے ھیں . اِس کھوج کا نتیجہ بھاوی یدھوں پر کتنا بھینکر پڑ سکتا ھے اِس کی کلپنا کرتے ہوئے امریکہ کی کارنیگی انسٹیٹیوٹ کے پریزیڈنٹ نے حال میں کہا تھا—" انو کی چھپی ہوئی شکتی اِن چھدر درشٹی راجنیتیگیوں کے ھاتھوں میں سبھیتا کے لئے نرک کی آگ ثابت ھوگی ."

اِن باتوں سے پتہ چلتا ھے کہ منشیہ شاید پرکرتی کی روشنی میں بڑھنے اور اس ' ستیم شوم سندرم ' کے پریم میں اپنی آتما کو وکست کرنے کے بجائے پھر ھزاروں ورش پہلے کی جنگلی حالت کو لوٹنا چاھتا ھے . کیول یہ کہنے سے کام نہ چلے گا کہ وگیان کا اپیوگ بھلائی اور برائی دونوں کے لئے کیا جا سکتا ھے . ھر سمجھدار منشیہ کو بڑی گہرائی سے اِس بات پر وچار کرنا ھوگا کہ وگیان کے ذریعہ سبھیتا کی اُنتی بجائے بڑھنے کے رک کیوں گئی ویگیانک لوگ اِن برے نتیجوں کی ذمہ واری سے بچ نہیں سکتے . ھر دیش کے شکشتوں کو اب یہ سمجھ لینا ھوگا کہ—" مانو جاتی کو کیول اُنتی کے سادھن دے دینا ہی کافی نہیں ھے' اِس سے کہیں زیادہ ضروری یہ ھے کہ اُنہیں اِن سادھنوں کا ٹھیک ٹھیک اِستعمال کرنا سکھایا جاوے ."

ھماری پیڑھی تک کے آدمی بری طرح ناکامیاب رھے . 25 سال کے اندر دو مہایدھ ھو چکے . ابھی تیسرے کی سمبھاونا ھے یا نہیں' یہ کون کہہ سکتا ھے ؟ اِس چھوٹی سی پرتھوی کی ساری آبادی ایک بھینکر طوفان میں پھنسی ھوئی ھے . وویک اور بدھیمتا سنسار سے مٹتی ھوئی دکھائی دے رھی ھیں . اِنسان دن پر دن پھر سے درندہ ھوتا جا رھا ھے . اِس آفت کا کوئی نہ کوئی حل نکالنا ھوگا . ھندستان میں مہاتما گاندھی نے اِس آفت سے نکلنے کے ایک راستے کی طرف سنکیت کیا ھے . اُن کا کہنا ھے کہ اھنساتمک رہ کر' جان بوجھ کر اپنے اوپر کشٹ لینا اور کشٹ سہنا ھی اِس آفت سے بچنے کا ایک ماتر اُپائے ھے . اِس طرح کے کشٹ سہن دوارا ھی دنیا کے سب آدمیوں اور سب قوموں میں سماجک اور راجنیتک سمتا اور نیائے قائم ھوسکتا ھے . دوسرے لوگ ھمیں دوسری طرح کے حل بھی سجھا رھے ھیں .

لڑائی کے بعد دنیا کے پونر نرمان کی تجویزیں بن رھی ھیں . کنتو اِن تجویزوں سے اُس سمے تک کوئی لابھ نہیں ھو سکتا جب تک ھمارے ویوھار کے اصول بجائے ساری منشیہ جاتی کی بھلائی کے اپنے اپنے راشٹر کا ھت اور اپنا اپنا لابھ ھیں' یا جب تک کہ ھماری مکھیہ سنچالک شکتی خود غرضی ھے . ایک دیش سے دوسرے دیش کے آنے جانے کے سادھن کتنی تیزی کے ساتھ بڑھتے جا رھے ھیں'

लिया. इस हिस्से का नाम अब 'सल्फ़ेनिलामाइड' पड़ा. इसके बाद लन्दन के एक अस्पताल ने औरतों की कई तरह की बीमारियों पर 'सल्फ़ेनिलामाइड' को आज़माया. जापे के बाद जो आम तौर पर औरतों को बुख़ार हो जाता है उसमें यह दवा बहुत मुफ़ीद साबित हुई. इस बीमारी से मौतों की तादाद एकदम 25 फ़ीसदी घट गई. फिर कई मुल्कों में और जगह जगह की मेडिकल संस्थाओं ने तरह तरह से इस दवा के तजरुबे किये. नतीजा यह है कि आज डाक्टर मे और डाक्टर बेकर के आख़री तजरुबों के नतीजे की शक्ल में हमें इसी से निमोनिया के लिये एक बहुत अच्छी और अपूर्व दवा मिल गई है. बम्बई की हैफ़किन इन्स्टिट्यूट के कर्नल सोखे और डाक्टर दीक्षित ने इसी से 'सल्फ़ियाज़ोल' नाम की एक अचूक दवा प्लेग के बीमारों के लिये खोज निकाली है. अमरीका में 'बैसिलरी' पेचिश के लिए, इसी से 'सल्फ़गौनीडाइन' नाम की एक बहुत कारगर दवा तैयार की गई है. इन सब बातों से साबित है कि विज्ञान की नज़र और उसका सारा काम अन्तर्राश्ट्रीय है. भूगोल, जाति, नसल, धर्म और सम्प्रदायों की सब दीवारों को तोड़ने में विज्ञान हमें सब से ज़्यादा मदद देता है.

लेकिन यह सब तसवीर का सिर्फ़ एक पहलू है. आज दुनिया के बहुत से लोग यह देखकर कि विज्ञान की शक्ति और उसके ज़बर्दस्त हथियार लाखों और करोड़ों आदमियों का क़त्लेआम करने और उन्हें ग़ुलाम बनाने के लिये काम में लाये जा सकते हैं, विज्ञान पर बड़े बड़े आक्षेप कर रहे हैं और उसकी और अधिक तरक़्क़ी से भयभीत हैं. उनके डर बहुत दरजे तक सच्चे हैं. लोगों का विश्वास है कि विज्ञान ने सभ्यता के साथ विश्वासघात किया है. पिछले महायुद्ध के बाद ही संसार के शासकों ने इस बात को महसूस कर लिया था कि आगे के युद्धों में विजय बड़ी बड़ी सेनाओं पर निर्भर नहीं है बल्कि इस बात पर निर्भर है कि किसके पास कितने ज़्यादा मानव हत्या के वैज्ञानिक साधन हैं. हर देश में यह आवाज़ सुनाई देने लगी है कि विज्ञान का सब से बड़ा काम लड़ाई जीतने में मदद देना है. नतीजा हुआ ज़हरीली गैसों और तरह तरह के नये बमों की ईजाद और ऐसी तोपें जो 90 मील के फ़ासले से कई कई टन के भयङ्कर गोले फेंक सकती हैं. सन 1919 की सन्धि से किसी को सन्तोश न हुआ. हर मुल्क में नये युद्ध की तैयारी होने लगी. सैकड़ों और हज़ारों वैज्ञानिक तरह तरह की युद्ध की सामग्री तैयार करने में लग गये. आजकल की सेना मनुश्यों की सेना के बजाय मशीनों की सेना दिखाई देती है. अभी इस समय जैसा मैं ऊपर दिखा चुका हूं एक छोटे से अणु के अन्दर जो अपार शक्ति छिपी हुई है उसे बाहर निकालने और उससे काम लेने की कोशिश में अथाह धन ख़र्च



لیا۔ اِس حصے کا نام اب 'سلفےنلامائڈ' پڑا۔ اِس کے بعد لندن کے ایک اسپتال نے عورتوں کی کئی طرح کی بیماریوں پر 'سلفے نلامائڈ' کو آزمایا. جاپے کے بعد جو عام طور پر عورتوں کو بخار ھو جاتا ھے اُس میں یہ دوا بہت مفید ثابت ھوئی۔ اِس بیماری سے موتوں کی تعداد ایک دم 25 فیصدی گھٹ گئی. پھر کئی ملکوں میں اور جگہ جگہ کی میڈیکل سنستھاؤں نے طرح طرح سے اِس دوا کے تجربے کئے۔ نتیجہ یہ ھے کہ آج ڈاکٹر مے اور ڈاکٹر بیکر کے آخری تجربوں کے نتیجے کی شکل میں ھمیں اِسی سے نیمونیا کے لئے ایک بہت اچھی اور اپورو دوا مل گئی ھے۔ بمبئی کی حیفکن انسٹیٹیوٹ کے کرنل سوکھے اور ڈاکٹر دکھشت نے اِسی سے 'سلفیازول' نام کی ایک اچوک دوا پلیگ کے بیماروں کے لئے کھوج نکالی ھے۔ امریکہ میں 'بیسیلری' پیچش کے لئے اِسی سے 'سلفگونیڈائن' نام کی ایک بہت کارگر دوا تیار کی گئی ھے۔ اِن سب باتوں سے ثابت ھے کہ وگیان کی نظر اور اِس کا سارا کام انترراشٹریہ ھے۔ بھوگول' جاتی' نسل' دھرم اور سمپردایوں کی سب دیواروں کو توڑنے میں وگیان ھمیں سب سے زیادہ مدد دیتا ھے۔

لیکن یہ سب تصویر کا صرف ایک پہلو ھے۔ آج دنیا کے بہت سے لوگ یہ دیکھکر کہ وگیان کی شکتی اور اُسکے زبردست ھتیار لاکھوں اور کروڑوں آدمیوں کا قتل عام کرنے اور اُنھیں غلام بنانے کے لئے کام میں لائے جا سکتے ھیں' وگیان پر بڑے بڑے آکشیپ کر رھے ھیں اور اس کی اور ادھک ترقی سے بھئے بھیت ھیں۔ اُن کے ڈر بہت درجے تک سچے ھیں۔ لوگوں کا وشواس ھے کہ وگیان نے سبھیتا کے ساتھ وشواسگھات کیا ھے۔ پچھلے مہایدھ کے بعد ھی سنسار کے شاسکوں نے اِس بات کو محسوس کر لیا تھا کہ آگے کے یدھوں میں وجے بڑی بڑی سیناؤں پر نربھر نہیں ھے بلکہ اِس بات پر نربھر ھے کہ کس کے پاس کتنے زیادہ مانو ھتیا کے ویگیانک سادھن ھیں۔ ھر دیش میں یہ آواز سنائی دینے لگی ھے کہ وگیان کا سب سے بڑا کام لڑائی جیتنے میں مدد دینا ھے۔ نتیجہ ھوا زھریلی گیسوں اور طرح طرح کے نئے بموں کی ایجاد اور ایسی توپیں جو 90 میل کے فاصلے سے کئی کئی ٹن کے بھینکر گولے پھینک سکتی ھیں۔ سن 1919 کی سندھی سے کسی کو سنتوش نہ ھوا۔ ھر ملک میں نئے یدھ کی تیاری ھونے لگی۔ سیکڑوں اور ھزاروں ویگیانک طرح طرح کی یدھ کی سامگری تیار کرنے میں لگ گئے. آجکل کی سینا منشیوں کی سینا کے بجائے مشینوں کی سینا دکھائی دیتی ھے۔ ابھی اِس سمے جیسا میں اوپر دکھا چکا ھوں ایک چھوٹے سے انو کے اندر جو اپار شکتی چھپی ھوئی ھے اُسے باھر نکالنے اور اُسی سے کام لینے کی کوشش میں اتھاہ دھن خرچ

बराबर तेज़ी के साथ गर्दिश करता रहता है. उस केन्द्र के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को जो ताक़तें इकट्ठा किये रखती हैं और उसी के अन्दर की जो विद्युत शक्तियां उन हिस्सों को एक दूसरे से दूर फेंकने की कोशिश करती रहती हैं, इन दोनों तरह की शक्तियों में बराबर कशमकश जारी रहती है. नतीजा यह हुआ कि जब बाहर से बड़े तेज़ी के साथ न्यूट्रान को इस केन्द्र में धंसाया गया तो वह बन्दूक़ के घोड़े का सा काम करता है और इस नन्हे से केन्द्र के एक वज़न के दो टुकड़े कर डालता है. इनमें एक टुकड़ा बैरिअम और लैन्थनम की तरह का होता है और एक दूसरी तरह का. इसके बाद यह सब बातें अतलन्तिक समुद्र को पार करके अमरीका पहुंचीं. कोलम्बिया विश्वविद्यालय में और प्रोफ़ेसर लारेन्स की उस प्रयोगशाला में, जो 'साइक्लोट्रान' की ईजाद के लिये दुनिया भर में मशहूर है, यह तजरुबे नये सिरे से दोहराये गये और आगे बढ़ाये गये. इस सारी खोज से अभी तक सबसे अधिक विचित्र बात यह निकली कि यूरेनियम के अणु के टूटने से कितनी ज़बरदस्त शक्ति पैदा हो सकती है और इसे तोड़ना और इस शक्ति से काम लेना आदमी के बस की बात है. एक ग्राम यूरेनियम को इस तरह तोड़ने से ठीक उतनी शक्ति पैदा हो सकती है और आदमी के काम आ सकती है जितनी दो टन कोयला जलाने से.

इसी तरह से एक दूसरी मिसाल इस दस बरस के अन्दर की उस हैरतअंगेज़ दवा की ईजाद है जिसे 'सलफ़ेनिलामाइड' कहते हैं. यह दवा, जो इनसानी क़ौम के लिये एक बरकत साबित हुई है, जिस तरह से ईजाद हुई है, उसमें देशों की अलग अलग सरहदों और उनके अलग अलग झन्डों का सारा फ़र्क़ मिट गया. सब से पहले इसका पता जर्मनी में लगा और वह भी एक बड़े अजीब ढङ्ग से, रंगों के उद्योग धन्धे और उनके तजरुबों के सम्बन्ध में. वहां इस दवा को 'प्रोन्टोसिल' नाम दिया गया. सन 1935 में जर्मन वैज्ञानिक डाक्टर डोमाग ने बड़ी होशियारी के साथ चूहों पर इसके तजरुबे किये. डाक्टर डोमाग ने अपने तजरुबों के नतीजों को प्रकाशित किया. उनसे पता चला कि खाल की सूजन की उस बीमारी में, जिसे 'एरीसिपेलास' कहते हैं, प्रोन्टोसिल ग़ज़ब के काम की चीज़ है और उस बीमारी का बड़ा पक्का इलाज है. इसी पर डाक्टर डोमाग को मेडिसन में नोबल पुरस्कार मिला. वह इसके पूरी तरह हक़दार थे. इसके बाद पैरिस इन्स्टिट्यूट ने इस मामले को अपने हाथ में ले लिया. उन्होंने ख़ूब खोज करके और तरह तरह के तजरुबे करके पता लगाया कि प्रोन्टोसिल का सारा अच्छा असर उसके केवल एक ख़ास हिस्से में सीमित है, उन्होंने इस हिस्से को बाक़ी प्रोन्टोसिल से अलग कर



برابر تیزی کے ساتھ گردش کرتا رہتا ہے۔ اس کیندر کے مختلف حصوں کو جو طاقتیں اکٹھا کئے رکھتی ہیں اور اسی کے اندر کی جو ودیت شکتیاں ان حصوں کو ایک دوسرے سے دور پھینکنے کی کوشش کرتی رہتی ہیں، اِن دونوں طرح کی شکتیوں میں برابر کشمکش جاری رہتی ہے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ جب باہر سے بڑی تیزی کے ساتھ نیوٹران کو اِس کیندر میں دھنسایا گیا تو وہ بندوق کے گھوڑے کا سا کام کرتا ہے اور اِس ننھے سے کیندر کے ایک وزن کے دو ٹکڑے کر ڈالتا ہے۔ اِن میں ایک ٹکڑا بیریم اور لینتھنم کی طرح کا ہوتا ہے اور ایک دوسری طرح کا۔ اِس کے بعد یہ سب باتیں اٹلانٹک سمدر کو پار کر کے امریکہ پہونچیں۔ کولمبیا وشو ودیالے میں اور پروفیسر لارنس کی اُس پریوگ شالا میں، جو 'سائیکلو ٹران' کی ایجاد کے لئے دنیا بھر میں مشہور ہے، یہ تجربے نئے سرے سے دہرائے گئے اور آگے بڑھائے گئے۔ اِس ساری کھوج سے ابھی تک سب سے ادھک وچتر بات یہ نکلی کہ یورینیم کے انو کے ٹوٹنے سے کتنی زبردست شکتی پیدا ہو سکتی ہے اور اِسے توڑنا اور اِس شکتی سے کام لینا آدمی کے بس کی بات ہے۔ ایک گرام یورینیم کو اِس طرح توڑنے سے ٹھیک اُتنی شکتی پیدا ہو سکتی ہے اور آدمی کے کام آ سکتی ہے جتنی دو ٹن کوئلہ جلانے سے۔

اِسی طرح سے ایک دوسری مثال اِس دس برس کے اندر کی اُس حیرت انگیز دوا کی ایجاد ہے جسے 'سلیفےنیلامائڈ' کہتے ہیں۔ یہ دوا، جو اِنسانی قوم کے لئے ایک برکت ثابت ہوئی ہے، جس طرح سے ایجاد ہوئی ہے اُس میں دیشوں کی الگ الگ سرحدوں اور اُن کے الگ الگ جھنڈوں کا سارا فرق مٹ گیا۔ سب سے پہلے اِس کا پتہ جرمنی میں لگا اور وہ بھی بڑے ایک عجیب ڈھنگ سے، رنگوں کے ادیوگ دھندے اور اُن کے تجربوں کے سمبندھ میں۔ وہاں اِس دوا کو 'پرونٹوسل' نام دیا گیا۔ سن 1935 میں جرمن ویگیانک ڈاکٹر ڈوماگ نے بڑی ہوشیاری کے ساتھ چوہوں پر اِس کے تجربے کئے۔ ڈاکٹر ڈوماگ نے اپنے تجربوں کے نتیجوں کو پرکاشت کیا۔ اُن سے پتہ چلا کہ کھال کی سوجن کی اُس بیماری میں، جسے 'ایری سپلس' کہتے ہیں، پرونٹوسل غضب کے کام کی چیز ہے اور اُس بیماری کا بڑا پکا علاج ہے۔ اِسی پر ڈاکٹر ڈوماگ کو میڈیسن میں نوبل پرسکار ملا۔ وہ اِس کے پوری طرح حقدار تھے۔ اِس کے بعد پیرس انسٹیٹیوٹ نے اِس معاملے کو اپنے ہاتھ میں لے لیا۔ اُنھوں نے خوب کھوج کر کے اور طرح طرح کے تجربے کرکے پتہ لگایا کہ پرونٹوسل کا سارا اچھا اثر اُس کے کیول ایک خاص حصے میں سیمت ہے، اُنھوں نے اِس حصے کو باقی پرونٹوسل سے الگ کر

फ़र्क़ कर सकता है और न एक लाख वोल्ट की बिजली की शक्ति. उन अणुओं का टूटना अपने ही ढंग से और ख़ुद बख़ुद होता है. इसलिये जो शक्ति उनके टूटने से पैदा होती है उसे हम इनसान अभी अपने किसी काम में नहीं ला सकते या बहुत ही कम और मुशिकल से ला सकते हैं. सन 1938 में यह देखा गया कि ये भारी अणु एक नई तरह से भी तोड़े जा सकते हैं. रोम के विज्ञान वेत्ता फ़र्मी ने इस पर सोचा और तजरुबे किये. यूरेनियम का अणु प्रकृति में सब से भारी अणु समझा जाता था. उसका एटेमिक वज़न 238 था. फ़र्मी ने बिजली का एक और अणु जिसे हम 'न्यूट्रान' कहते हैं यूरेनियम के अणु के अन्दर धंसाने की कोशिश की विज्ञान की अब तक की ईजादों ने फ़र्मी के लिये रास्ता खोल दिया. विज्ञान में जिन्हें हम अणु कहते हैं और जो आंख से दिखाई नहीं दे सकते उनमें से एक एक अणु पूरे एक एक सौर जगत के समान होता है. जिस तरह एक सौर जगत के अन्दर बीच में एक बड़ा सूर्य है जिसमें गरम ( Positive ) बिजली होती है, उसके चारों तरफ़ एक तरह की हवा होती है जिसमें पृथ्वी चांद जैसे नरम ( Negative ) बिजली वाले छोटे छोटे ग्रह होते हैं, उसी तरह हर अदृश्ट अणु के अन्दर बीच में एक बड़ी चीज़ गरम बिजली वाली और उसके चारों तरफ़ हवा में अनेक छोटी छोटी चीज़ें नरम बिजली वाली होती हैं. विशाल सौर जगत और अदृश्ट अणु दोनों का रूप बिलकुल एक है. दोनों एक दूसरे की नक़ल हैं. दोनों में हवा की नरमी भारी केन्द्र की गरमी का सन्तुलन करती रहती है. इस तरह पर वह न्यूट्रान जो बड़ी तेज़ी के साथ धंसाया गया यूरेनियम के केन्द्र में समा गया. फ़र्मी ने अपने प्रयोगों से मालूम किया कि इस क्रिया के अन्दर ऐसे नये नये ढङ्ग के अणु बन गये जो यूरेनियम के अणु से भारी थे. फ़र्मी यहीं तक जा सका. फ़र्मी के बाद बर्लिन के विज्ञान वेत्ता हैन ( Hahn ) ने आगे के तजरुबे किये. हैन शायद दुनिया का इस ख़ास विषय में सब से बड़ा विज्ञान वेत्ता है. हैन के तजरुबों से पता लगा कि यूरेनिअम के अणु को तोड़ने की इस क्रिया में बैरिअम की तरह की धातु के अणु बन जाते हैं. इसके बाद पैरिस की प्रसिद्ध वैज्ञानिक मैडम क्यूरी ने हमें यह दिखलाया कि लैन्थनम नामक एक नादिर क़िस्म की मिट्टी में जो ख़ासियतें हैं वे बैरिअम से बहुत मिलती जुलती हैं. इसके बाद कापेन-हेगेन ( डेनमाक ) के वैज्ञानिक डाक्टर बोर ने फिर इस बात की खोज शुरू की कि गणित के हिसाब से रेनियम का अणु कहां तक अचल है. उन्होंने अब तक की मानता को ग़लत साबित करते हुये हमें पहली बार यह बताया कि यूरेनियम के अणु का भारी केन्द्र अचल होने के बजाय



فرق کرسکتا ھے نہ ایک لاکھ وولٹ کی بجلی کی شکتی۔ ان انوؤں کا ٹوٹنا اپنے ھی ڈھنگ سے اور خود بخود ھوتا ھے۔ اس لئے جو شکتی ان کے ٹوٹنے سے پیدا ھوتی ھے اُسے ھم انسان ابھی اپنے کسی کام میں نہیں لا سکتے یا بہت ھی کم اور مشکل سے لا سکتے ھیں۔ سن 1938 میں یہ دیکھا گیا کہ یہ بھاری انو ایک نئی طرح سے بھی توڑے جاسکتے ھیں۔ روم کے وگیان ویتا فرمی نے اِس پر سوچا اور تجربے کئے۔ یورینیم کا انو پرکرتی میں سب سے بھاری انو سمجھا جاتا تھا۔ اس کا ایٹیمک وزن 238 تھا۔ فرمی نے بجلی کا ایک اور انو جسے ھم 'نیوٹران' کہتے ھیں یورینیم کے انو کے اندر دھنسانے کی کوشش کی۔ وگیان کی اب تک کی ایجادوں نے فرمی کے لئے راستہ کھول دیا۔ وگیان میں جنہیں ھم انو کہتے ھیں اور جو آنکھ سے دکھائی نہیں دے سکتے ان میں سے ایک ایک انو پورے ایک ایک سورجگت کے سمان ھوتا ھے۔ جس طرح ایک سورجگت کے اندر بیچ میں ایک بڑا سوریہ ھے جس میں گرم (Positive) بجلی ھوتی ھے، اُس کے چاروں طرف ایک طرح کی ھوا ھوتی ھے جس میں پرتھوی، چاند جیسے نرم (Negative) بجلی والے چھوٹے چھوٹے گرہ ھوتے ھیں، اسی طرح ھر ادرشٹ انو کے اندر بیچ میں ایک بڑی چیز گرم بجلی والی اور اس کے چاروں طرف ھوا میں انیک چھوٹی چھوٹی چیزیں نرم بجلی والی ھوتی ھیں۔ وشال سورجگت اور ادرشٹ انو دونوں کا روپ بالکل ایک ھے۔ دونوں ایک دوسرے کی نقل ھیں۔ دونوں میں ھوا کی نرمی بھاری کیندر کی گرمی کا سنتولن کرتی رھتی ھے۔ اِس طرح پر وہ نیوٹران جو بڑی تیزی کے ساتھ دھنسایا گیا یورینیم کے کیندر میں سما گیا۔ فرمی نے اپنے پریوگوں سے معلوم کیا کہ اِس کریا کے اندر ایسے نئے نئے ڈھنگ کے انو بن گئے جو یورینیم کے انو سے بھاری تھے۔ فرمی کے بعد برلن کے وگیان ویتا ھین (Hahn) نے آگے کے تجربے کئے۔ ھین شاید دنیا کا اِس خاص وشئے میں سب سے بڑا وگیان ویتا ھے۔ ھین کے تجربوں سے پتہ لگا کہ یورینیم کے انو کو توڑنے کی اِس کریا میں بیریم کی طرح کی دھاتو کے انو بن جاتے ھیں۔ اِس کے بعد پیرس کی پرسدھ ویگیانک میڈم کیوری نے ھمیں یہ دکھلایا کہ لینتھنم نامک ایک نادر قسم کی مٹی میں جو خاصیتیں ھیں وے بیریم سے بہت ملتی جلتی ھیں۔ اس کے بعد کاپین ھیگن (ڈنمارک) کے ویگیانک ڈاکٹر بور نے پھر اِس بات کی کھوج شروع کی کہ گنت کے حساب سے یورینیم کا انو کہاں تک اچل ھے۔ انھوں نے اب تک کی مانتا کو غلط ثابت کرتے ھوئے ھمیں پہلی بار یہ بتایا کہ یورینیم کے انو کا بھاری کیندر اچل ھونے کے بجائے

मौत सत्य की होती है. विज्ञान हमें यह सिखाता है कि युद्ध के ज़माने में भी मानसिक ईमानदारी का पालन न करना एक बहुत बड़ा जुर्म है. विज्ञान हमें धीरज सिखाता है, हमें पक्षपात रहित बनाता है. वह हमें झट से नतीजे पर पहुंचने से रोकता है. वह कल्पना और सन्देह दोनों को क़ीमती समझता है और दोनों के महत्व पर ज़ोर देता है. भावुकता और पक्षपात से भरी इस दुनिया में वह हमें प्रमानों को तौलना सिखाता है. वह दुनिया को गुमराह करने वाले प्रचार के ख़िलाफ़ एक गारन्टी है. विज्ञान ही इस तरह का न्याय-युक्त जनमत तय्यार कर सकता है जो हमारी राजनैतिक और सामाजिक सब बुराइयों को दूर कर सके. वैज्ञानिक वृत्ति के ऊपर ही जनतन्त्र का भविश्य निर्भर है.

और दूसरी बातों की अपेक्षा विज्ञान की उन्नति ने इस बात को सब से अधिक साफ़ किया है कि बौद्धिक जीवन की एकता में ही आधुनिक सभ्यता की एकता है, और अपने नाश की क़ीमत पर ही इस बौद्धिक जीवन की एकता के हम टुकड़े टुकड़े कर सकते हैं. विज्ञान ने आज जो कुछ भी तरक़्क़ी की है वह एक देश या एक व्यक्ति के कारन नहीं बल्कि अनेक देशों के उन अनेक व्यक्तियों के कारन की है जो अपने बुद्धिमत्तापूर्न खोज और लगातार प्रयोगों द्वारा मनुश्य को सब के भले और सब के फ़ायदे की ओर ले जाना चाहते हैं. आदमी की सिरजन भावना को हम स्थानीय और राश्ट्रीय हदों के अन्दर नहीं बांध सकते. विचार जब घेरों के अन्दर बन्द कर दिये जाते हैं तो वे मुरझा जाते हैं लेकिन जब दुनिया के अलग अलग हिस्सों के उपजाऊ दिमाग़ों में उनके बीज पड़ते हैं तो उनसे आश्चर्यजनक फल पैदा होते हैं. विज्ञान के महाग्रंथ के एक पूरे अध्याय की रचना भी किसी एक व्यक्ति के वश की बात नहीं. आम तौर पर शुरूआत एक अकेली डरती हुई आवाज़ से होती है जो दिमाग़ में एक सवाल पैदा करके चुप हो जाती है. फिर इसी आवाज़ की गूंज विज्ञान के मुख़तलिफ़ मैदानों में सुनाई देती है और फिर अनेक प्रयोग-शालाओं में इस गूंज को रूप और आकार मिलता है.

हाल में विज्ञान के अन्दर जो सब से बड़ी बड़ी खोजें की गई हैं उनमें से कुछ की मिसाल देकर मैं यह दिखाऊंगा कि इस मैदान में सब देशों के मिलकर काम करने और एक दूसरे को सहयोग देने की कितनी सख़्त ज़रूरत पड़ती है. यूरेनियम, थोरियम और रेडिअम जैसी नई नई धातुओं के भारी अणु जब टूट टूट कर छोटे अणु बनने लगते हैं तो उस टूटने की क्रिया में उनके अन्दर से बेहद शक्ति पैदा होती है. उन भारी अणुओं के जल्दी जल्दी टूटने या धीरे धीरे टूटने पर यानी उनकी गति पर हम कोई असर नहीं डाल सकते. न दस हज़ार डिगरी का तापमान इसमें कोई



موت ستیہ کی ہوتی ہے۔ وگیان ہمیں یہ سکھاتا ہے کہ یدھ کے زمانے میں بھی مانسک ایمانداری کا پالن نہ کرنا ایک بہت بڑا جرم ہے. وگیان ہمیں دھیرج سکھاتا ہے، ہمیں پکشپات رہت بناتا ہے۔ وہ ہمیں جھٹ سے نتیجہ پر پہونچنے سے روکتا ہے. وہ کلپنا اور سندیہ دونوں کو قیمتی سمجھتا ہے اور دونوں کے مہتو پر زور دیتا ہے. بھاؤکتا اور پکشپات سے بھری اِس دنیا میں وہ ہمیں پرمانوں کو تولنا سکھاتا ہے۔ وہ دنیا کو گمراہ کرنے والے پرچار کے خلاف ایک گارنٹی ہے۔ وگیان ہی اِس طرح کا نیائے یکت جنمت تیار کرسکتا ہے جو ہماری راج‌نیتک اور سماجک سب برائیوں کو دور کرسکے۔ وگیانک ورتی کے اُوپر ہی جن‌تنتر کا بھوشیہ نربھر ہے۔

اور دوسری باتوں کی اپیکچھا وگیان کی اننتی نے اِس بات کو سب سے ادھک صاف کیا ہے کہ بودھک جیون کی ایکتا میں ہی آدھونک سبھیتا کی ایکتا ہے، اور اپنے ناش کی قیمت پر ہی اِس بودھک جیون کی ایکتا کے ہم ٹکڑے ٹکڑے کرسکتے ہیں۔ وگیان نے آج جو کچھ بھی ترقی کی ہے وہ ایک دیش یا ایک ویکتی کے کارن نہیں بلکہ انیک دیشوں کے اُن انیک ویکتیوں کے کارن کی ہے جو اپنے بدھیمتاپورن کھوج اور لگاتار پریوگوں دوارا منش کو سب کے بھلے اور سب کے فائدے کی اور لے جانا چاہتے ہیں۔ آدمی کی سرجن بھاونا کو ہم استھانیہ اور راشٹریہ حدوں کے اندر نہیں باندھ سکتے۔ وچار جب گھیروں کے اندر بند کردئے جاتے ہیں تو وے مرجھا جاتے ہیں لیکن جب دنیا کے الگ الگ حصوں کے اُپجاؤ دماغوں میں ان کے بیج پڑتے ہیں تو اُن سے آشچریہ‌جنک پھل پیدا ہوتے ہیں۔ وگیان کے مہاگرنتھ کے ایک پورے ادھیائے کی رچنا بھی کسی ایک ویکتی کے وش کی بات نہیں. عام طور پر شروعات ایک اکیلی ڈرتی ہوئی آواز سے ہوتی ہے جو دماغ میں ایک سوال پیدا کرکے چپ ہو جاتی ہے۔ پھر اِسی آواز کی گونج وگیان کے مختلف میدانوں میں سنائی دیتی ہے اور پھر انیک پریوگ شالاؤں میں اِس گونج کو روپ اور آکار ملتا ہے۔

حال میں وگیان کے اندر جو بڑی بڑی کھوجیں کی گئی ہیں اُن میں سے کچھ کی مثال دےکر میں یہ دکھاؤنگا کہ اِس میدان میں سب دیشوں کے مل‌کر کام کرنے اور ایک دوسرے کو سہیوگ دینے کی کتنی سخت ضرورت پڑتی ہے۔ یورینیم، تھوریم اور ریڈیم جیسی نئی نئی دھاتوں کے بھاری انو جب ٹوٹ ٹوٹ کر چھوٹے انو بننے لگتے ہیں تو اس ٹوٹنے کی کریا میں ان کے اندر سے بےحد شکتی پیدا ہوتی ہے۔ اُن بھاری انوؤں کے جلدی جلدی ٹوٹنے یا دھیرے دھیرے ٹوٹنے پر یعنی ان کی گتی پر ہم کوئی اثر نہیں ڈال سکتے. نہ دس ہزار ڈگری کا تاپمان اِس میں کوئی

# विज्ञान और आधुनिक जीवन

डाक्टर सर ज्ञानचन्द्र घोष डी. एस-सी., एफ़. एन. आइ.

आज दुनिया में साइन्स की जो तरक़्क़ी दिखाई दे रही है उसके पीछे आदमी की अन्यतम सृजन-बुद्धि और उसका अपार श्रम है. विज्ञान एक पद्धति है, एक विश्वास (एतक़ाद) है, एक सिद्धांत ( उसूल ) है. वह ऐसी नपी तुली देख भाल, खोजों और तजरुबों का एक तरीक़ा और एक सिलसिला है जो पूरी ईमानदारी के साथ दर्ज किये जाते हैं. विज्ञान को यह विश्वास है कि सत्य की खोज की जा सकती है और सत्य खोज करने योग्य है.

मानव समस्याओं के हल करने में विज्ञान का यह पहलू अकसर नज़र अन्दाज़ कर दिया जाता है. विज्ञान का अपना एक टेकनीक है, एक तरीक़ा है और उसकी अपनी बेहतरीन मर्यादाएं हैं. अगर इन्सान के व्यवहार के दूसरे मैदानों में कठिनाइयों के हल करने के लिए इस वैज्ञानिक टेकनीक को काम में लाया जाने लगे तो दुनिया की हालत बहुत बेहतर हो सकती है. किसी भी समस्या के सामने आ जाने पर वैज्ञानिक करता क्या है ? वह उस समस्या से ताल्लुक़ रखने वाली तमाम युक्तिपूर्न ( मुदल्लल ) बातों की फ़ेहरिस्त बनाता है. उसमें वह हर दलील के गुण और दोषों की छानबीन करता है. बड़े धीरज के साथ वह उन सब दलीलों की छान बीन और उनका वर्गीकरन करता है. इसी वर्गीकरन में वह उनमें आपसी ताल्लुक़ खोजता है. इसके बाद उन सब बातों में एक सिलसिला जोड़ने के लिए वह एक निर्देशक सिद्धांत फ़र्ज़ कर लेता है. फिर नये नये प्रयोग करके वह इस सिद्धांत की सच्चाई की जांच करता है और नई हक़ीक़तों की रोशनी में वह इस काल्पनिक सिद्धांत में तब्दीली करता है या उसे बेकार समझ कर छोड़ देता है. उसके सारे प्रयोगों का सार यह है कि जब तक नई नई सच्चाइयां खुलती रहें वह नतीजे पर पहुंचने से रुका रहता है और मानसिक ईमानदारी के साथ लगातार अपनी दलीलों की छान बीन और परख करता रहता है, और उन्हें सत्य की कसौटी पर कसता रहता है.

वैज्ञानिक खोज मनुष्य में एक तरह का मानसिक अनुशासन पैदा करती है. उससे आदमी को पक्षपात छोड़ कर ईमानदारी के साथ खोज करने की आदत पड़ती है. आज दुनिया को भ्रम में डालने वाली जो अनेक समस्याएं खड़ी हो गई हैं उनके हल करने में यह मानसिक अनुशासन बहुत कुछ मदद दे सकता है. लोग कहते हैं कि युद्ध में पहली

# وگیان اور آدھونک جیون

ڈاکٹر سر گیان چندر گھوش ڈی. ایس. سی، ایف. این. آئی.

آج دنیا میں سائنس کی جو ترقی دکھائی دے رہی ھے اس کے پیچھے آدمی کی انیتم سرجن بدھی اور اس کا اپار شرم ھے. وگیان ایک پدھتی ھے، ایک وشواس ( اعتقاد ) ھے، ایک سدھانت ( اصول ) ھے. وہ ایسی نپی تلی دیکھ بھال، کھوجوں اور تجربوں کا ایک طریقہ اور ایک سلسلہ ھے جو پوری ایمانداری کے ساتھ درج کئے جاتے ھیں. وگیان کو یہ وشواس ھے کہ ستیہ کی کھوج کی جاسکتی ھے اور ستیہ کھوج کرنے یوگیہ ھے.

مانو سمسیاؤں کو حل کرنے میں وگیان کا یہ پہلو اکثر نظرانداز کردیا جاتا ھے. وگیان کا اپنا ایک ٹیکنیک ھے، ایک طریقہ ھے اور اس کی اپنی بہترین مریادائیں ھیں. اگر انسان کے ویوھار کے دوسرے میدانوں میں کٹھنائیوں کے حل کرنے کے لئے اس ویگیانک ٹیکنیک کو کام میں لیا جانے لگے تو دنیا کی حالت بہت بہتر ھوسکتی ھے. کسی بھی سمسیا کے سامنے آجانے پر ویگیانک کرتا کیا ھے ؟ وہ اس سمسیا سے تعلق رکھنے والی تمام یکتی پورن ( مدلل ) باتوں کی فہرست بناتا ھے. اس میں وہ ھر دلیل کے گن اور دوشوں کی چھان بین کرتا ھے. بڑے دھیرج کے ساتھ وہ ان سب دلیلوں کی چھان بین اور ان کا ورگی کرن کرتا ھے. اسی ورگی کرن میں وہ ان میں آپسی تعلق کھوجتا ھے. اس کے بعد ان سب باتوں میں ایک سلسلہ جوڑنے کے لئے وہ ایک نردیشک سدھانت فرض کرلیتا ھے. پھر نئے نئے پریوگ کرکے وہ اس سدھانت کی سچائی کی جانچ کرتا ھے اور نئی حقیقتوں کی روشنی میں وہ اس کالپنک سدھانت میں تبدیلی کرتا ھے یا اسے بیکار سمجھ کر چھوڑ دیتا ھے. اس کے سارے پریوگوں کا سار یہ ھے کہ جب تک نئی نئی سچائیاں کھلتی رھیں وہ نتیجے پر پہونچنے سے رکا رھتا ھے اور مانسک ایمانداری کے ساتھ لگاتار اپنی دلیلوں کی چھان بین اور پرکھ کرتا رھتا ھے، اور انھیں ستیہ کی کسوٹی پر کستا رھتا ھے.

ویگیانک کھوج منشیہ میں ایک طرح کا مانسک انوشاسن پیدا کرتی ھے. اس سے آدمی کو پکشپات چھوڑکر ایمانداری کے ساتھ کھوج کرنے کی عادت پڑتی ھے. آج دنیا کو بھرم میں ڈالنے والی جو انیک سمسیائیں کھڑی ھوگئی ھیں ان کے حل کرنے میں یہ مانسک انوشاسن بہت کچھ مدد دے سکتا ھے. لوگ کہتے ھیں کہ یدھ میں پہلی

पढ़ें तब हमें अपने आप अलग अलग चेहरों के अन्दर एक ही दोस्त का प्यारा चेहरा दिखाई दे जायगा. फ़ारसी की मशहूर किताब मामुक़ीमा में बार बार बड़े सुन्दर शब्दों में कहा गया है—

कि बचश्माने दिल मबीं जुज़ दोस्त
हरचे बीनी बिदां कि मज़हरे ओस्त

यानी अपने दिल की आंख से सिवाय दोस्त के और कुछ मत देख. जो भी तुझे दिखाई देता है उसे जान ले कि वह उसी एक प्यारे का रूप है.

پڑھیں تب ہمیں اپنے آپ الگ الگ چہروں کے اندر ایک ہی دوست کا پیارا چہرہ دکھائی دے جائے گا. فارسی کی مشہور کتاب مامقیمہ میں بار بار سندر شبدوں میں کہا گیا ہے—

کہ بہ چشمان دل مبیں جز دوست
ہرچہ بینی بدان کہ مظہر اوست

یعنی اپنے دل کی آنکھ سے سوائے دوست کے اور کچھ مت دیکھ. جو بھی تجھے دکھائی دیتا ہے اُسے جان لے کہ وہ اُسی ایک پیارے کا روپ ہے.

---

झगड़ते रहते हैं. मामूली जनता के दिलों में उस एक घट घट व्यापी आत्मा की जोत अक्सर इतनी अच्छी चमकती है कि जनता ख़ुद बड़ी आसानी से यह तै कर लेती है कि किस रीत रिवाज को ओढ़े रहे और किस को उतार फेंके. जनता यह भी अधिक अच्छी तरह समझ लेती है कि आख़िरकार सब रीत रिवाजों के पीछे आत्मा एक ही है और जिसका मन साफ़ हो उसे ऊपरी रीत रिवाजों के फ़र्क़ में पड़ने की ज़रूरत नहीं है.

शब्दों और नाम रूपों को चिपटे रहने से जो अन्याय और अनर्थ होता है उसे देखकर ही दुनिया को उस से बचाने के लिये दुनिया में हमेशा नये नये राह दिखाने वाले आते रहे हैं. ईसाई धर्म में प्रोटेस्टेन्ट धर्म की बुनियाद इसी तरह पड़ी. वैदिक धर्म की इसी गिरावट की वजह से बौद्ध धर्म पैदा हुआ. जैन धर्म, शंकर का अद्वैत्य, रामानन्द, चेतन और तुलसीदास की भक्ति, कबीर साहब का प्रेम धर्म, गुरु नानक का सिक्ख मत और स्वामी दयानन्द की आर्य समाज सब बुनियादें इसी तरह की लहरें थीं. इस्लाम में भी सैकड़ों सूफ़ी, वहाबी, बहाई, क़ादयानी वग़ैरा वग़ैरा असल में हमें इस ख़तरे से आगाह करते रहे हैं. योग सूत्रों में शब्द और अर्थ का फ़र्क़ करने पर बहुत अधिक ज़ोर दिया गया है. सुक़रात ने भी अपनी किताबों में यही तालीम दी है. वह लोगों से बार बार सवाल करके यही जानने और बताने की कोशिश किया करता था कि उनके शब्दों के पीछे मतलब क्या है. वह उन्हें समझाता था कि लोग अक्सर शब्दों के मानी या तो उल्टे करने लगते हैं और या उनके दिमाग़ों में केवल शब्द ही शब्द रह जाते हैं, मानी कोई रहते ही नहीं.

इंजील में लिखा है—"शब्दों पर मत चिपको, शब्द आदमी को मार डालते हैं, मानी की तरफ़ जाओ, उसी से तुम्हें अमर जीवन मिलेगा.

"हाड़ मांस की चीज़ों को आत्मा यानी रूह की आंखों से देखो, यह न करो कि उल्टा आत्मा की चीज़ों को हाड़ मांस की आंखों से देखो."

इस नेक और क़ीमती सलाह पर हम चलें तो हम एक दूसरे से नफ़रत करना छोड़ दें और उसकी जगह एक दूसरे से प्यार करना सीख लें. यह प्यार करना ही सब मज़हबों का असल उसूल और सब का असली मक़सद है. दुनिया के शीशे के अन्दर से हमें रूहानी चीज़ों के अक्स को देखने की कोशिश करनी चाहिये. शब्दों की पूजा या किसी एक ज़बान के शब्दों की पूजा बुतपरस्ती से भी ज़्यादा ख़तरनाक है. उससे बचने का एक अच्छा तरीक़ा यह भी है कि हम कई कई मज़हबी ज़बानों को सीखें और अलग अलग मज़हबी किताबों को सामने रखकर एक दूसरे से मिलाते हुए उन्हें



جھگڑتے رہتے ھیں ۔ معمولی جنتا کے دلوں میں اُس ایک گھٹ گھٹ ویاپی آتما کی جوت اکثر اتنی اچھی چمکتی ھے کہ جنتا خود بڑی آسانی سے یہ طے کر لیتی ھے کہ کس ریت رواج کو اوڑھے رھے اور کس کو اُتار پھینکے ۔ جنتا یہ بھی ادھک اچھی طرح سمجھ لیتی ھے کہ آخرکار سب ریت رواجوں کے پیچھے آتما ایک ھی ھے اور جس کا من صاف ھو اُسے اوپری ریت رواجوں کے فرق میں پڑنے کی ضرورت نہیں ھے ۔

شبدوں اور نام روپوں کو چپٹے رہنے سے جو انیائے اور انرتھ ھوتا ھے اُسے دیکھ کر ھی دنیا کو اُس سے بچانے کے لئے دنیا میں ھمیشہ نئے نئے راہ دکھانے والے آتے رھے ھیں ۔ عیسائی دھرم میں پروٹسٹنٹ دھرم کی بنیاد اِسی طرح پڑی ۔ ویدک دھرم کی اِسی گراوٹ کی وجہ سے بودھ دھرم پیدا ھوا ۔ جین دھرم، شنکر کا ادوتیہ، رامانند، چیتن اور تلسی داس کی بھکتی، کبیر صاحب کا پریم دھرم، گرو نانک کا سکھ مت اور سوامی دیانند کی آریہ سماج سب بنیادیں اِسی طرح کی لہریں تھیں ۔ اِسلام میں بھی سیکڑوں صوفی، وھابی، بہائی، قادیانی وغیرہ وغیرہ اصل میں ھمیں اِسی خطرے سے آگاہ کرتے رھے ھیں ۔ یوگ سوتروں میں شبد اور ارتھ کا فرق کرنے پر بہت ادھک زور دیا گیا ھے ۔ سقراط نے بھی اپنی کتابوں میں یہی تعلیم دی ھے ۔ وہ لوگوں سے بار بار سوال کر کے یہی جاننے اور بتانے کی کوشش کیا کرتا تھا کہ ان کے شبدوں کے پیچھے مطلب کیا ھے ۔ وہ اُنھیں سمجھاتا تھا کہ لوگ اکثر شبدوں کے معنی یا تو اُلٹے کرنے لگتے ھیں اور یا اُن کے دماغوں میں کیول شبد ھی شبد رہ جاتے ھیں، معنی کوئی رھتے ھی نہیں ۔

اِنجیل میں لکھا ھے—" شبدوں پر مت چپکو، شبد آدمی کو مار ڈالتے ھیں، معنی کی طرف جاؤ، اُسی سے تمہیں امر جیون ملے گا ۔"

" ھاڑمانس کی چیزوں کو آتما یعنی روح کی آنکھوں سے دیکھو، یہ نہ کرو کہ اُلٹا آتما کی چیزوں کو ھاڑ مانس کی آنکھوں سے دیکھو ۔"

اِس نیک اور قیمتی صلاح پر ھم چلیں تو ھم ایک دوسرے سے نفرت کرنا چھوڑ دیں اور اُس کی جگہ ایک دوسرے سے پیار کرنا سیکھ لیں ۔ یہ پیار کرنا ھی سب مذھبوں کا اصل اصول اور سب کا اصلی مقصد ھے ۔ دنیا کے شیشے کے اندر سے ھمیں روحانی چیزوں کے عکس کو دیکھنے کی کوشش کرنی چاھئے ۔ شبدوں کی پوجا یا کسی ایک زبان کے شبدوں کی پوجا بت پرستی سے بھی زیادہ خطرناک ھے ۔ اِس سے بچنے کا ایک اچھا طریقہ یہ بھی ھے کہ ھم کئی کئی مذھبی زبانوں کو سیکھیں اور الگ الگ مذھبی کتابوں کو سامنے رکھ کر ایک دوسرے سے ملاتے ھوئے اُنھیں

खुद अपने को मिटाती रहती हैं. कभी तो अलग अलग लोग अलग अलग शब्दों का उपयोग करते हैं पर उन शब्दों से उनका मतलब एक ही होता है. केवल वह एक दूसरे को समझ नहीं पाते या दिलों में जिद्दें पैदा हो जाने से यानी उनके दिलों पर शैतान का ग़ल्बा पैदा हो जाने से ज़बरदस्ती एक दूसरे को उल्टा समझते रहते हैं. दुनिया में जितने झगड़े और फ़िसाद होते हैं लगभग सबकी वजह यही होती है कि हम शब्दों के पीछे या शब्दों से आगे बढ़कर असलियत को या तो समझ नहीं पाते या समझने के लिये तैयार नहीं होते. मौलाना रूम ने अपनी मशहूर किताब मसनवी में बार बार कहा है—"लफ़्ज़ों में मत फंस, मानी की तरफ़ जा." राजनीति में भी जब जब लोग कामयाबी के साथ मिल जुल कर झगड़ों को तै करना चाहते हैं और शान्ति या अमन क़ायम करना चाहते हैं तब तब उन्हें यही करना पड़ता है कि बार बार बैठकर मेहनत के साथ एक दूसरे की बात सुनें और एक दूसरे के मतलब समझें और समझावें. ग़लत समझने का मतलब ही न समझना है. ग़लत समझने से ही आदमी एक दूसरे का दुश्मन बनता है. फिर हर वह आदमी जिसकी बोली या ढंग हमसे अलग है हमें अपना दुश्मन दिखाई देने लगता है.

यही हाल उन लोगों का है जो दुनिया के जिस्मानी रोगों को अच्छा करने का दावा करते हैं. दुनिया के रूहानी डाक्टरों की तरह यह जिस्मानी डाक्टर भी एक दूसरे से लड़ते रहते हैं और अधिकतर केवल शब्दों पर लड़ते रहते हैं और एक दूसरे को नफ़रत की निगाह से देखते हैं. इनमें से अक्सर में भी रोगी को अच्छा करने की इच्छा इतना जोरदार नहीं होती जितनी अपने अपने ढंग और अपने अपने इलाज के तरीक़े को चिपटे रहने की ज़िद. हर एक के अपने अपने शब्द होते हैं. ऐलोपैथिक डाक्टर अपने शब्द बोलता है, होम्योपैथ अपने शब्द, हकीम अपने शब्द और वैद्‌ अपने. हर एक को अपने ही शब्द ठीक मालूम होते हैं और वही प्यारे मालूम होते हैं. पर जबकि यह अपने मोटे मोटे शब्दों के जाल में फंसे रहते हैं और उन्हीं पर लड़ते रहते हैं, मामूली अनपढ़ आदमी भी यह जान जाता है कि उसे किस डाक्टर, हकीम या वैद से फ़ायादा होगा. वह बेहतर जानता है कि कौन अधिक अच्छा करता है और कौन अधिक मारता है. वह उनके शब्दों के धोके में नहीं आता. वह यह भी जानता है कि किस रोग में उसे किस से अधिक फ़ायदा हो सकता है और सब से फ़ायदा उठा लेता है. आख़िरकार डाक्टर, हकीम या वैद सब उसी मामूली आदमी की ही तो पैदाइश हैं. वही उन्हें खिलाता, पिलाता और चलाता है. इसी तरह धर्म मजहब के मामलों में शब्दों के जंजाल में फंसे हुए मौलवी, पंडित और पादरी



خود اپنے کو مٹاتی رہتی ہیں. کبھی تو الگ الگ لوگ الگ الگ شبدوں کا اُپیوگ کرتے ہیں پر اُن شبدوں سے اُن کا مطلب ایک ہی ہوتا ہے . کیول وہ ایک دوسرے کو سمجھ نہیں پاتے یا دلوں میں ضدیں پیدا ہو جانے سے یعنی اُن کے دلوں پر شیطان کا غلبہ پیدا ہو جانے سے زبردستی ایک دوسرے کو اُلٹا سمجھتے رہتے ہیں. دنیا میں جتنے جھگڑے اور فساد ہوتے ہیں لگ بھگ سب کی وجہ یہی ہوتی ہے کہ ہم شبدوں کے پیچھے یا شبدوں سے آگے بڑھ کر اصلیت کو یا تو سمجھ نہیں پاتے یا سمجھنے کے لئے تیار نہیں ہوتے . مولانا روم نے اپنی مشہور کتاب مثنوی میں بار بار کہا ہے—" لفظوں میں مت پھنس' معنی کی طرف جا ." راج نیتی میں بھی جب جب لوگ کامیابی کے ساتھ مل جل کر جھگڑوں کو طے کرنا چاہتے ہیں اور شانتی یا امن قائم کرنا چاہتے ہیں تب تب اُنھیں یہی کرنا پڑتا ہے کہ بار بار بیٹھ کر محنت کے ساتھ ایک دوسرے کی بات سنیں اور ایک دوسرے کا مطلب سمجھیں اور سمجھاویں. غلط سمجھنے کا مطلب ہی نہ سمجھنا ہے . غلط سمجھنے سے ہی آدمی ایک دوسرے کا دشمن بنتا ہے . پھر ہر وہ آدمی جس کی بولی یا ڈھنگ ہم سے الگ ہے ہمیں اپنا دشمن دکھائی دینے لگتا ہے .

یہی حال اُن لوگوں کا ہے جو دنیا کے جسمانی روگوں کو اچھا کرنے کا دعوا کرتے ہیں . دنیا کے روحانی ڈاکٹروں کی طرح یہ جسمانی ڈاکٹر بھی ایک دوسرے سے لڑتے رہتے ہیں اور ادھکتر کیول شبدوں پر لڑتے رہتے ہیں اور ایک دوسرے کو نفرت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں . اِن میں سے اکثر میں بھی روگی کو اچھا کرنے کی اچھا اتنی زوردار نہیں ہوتی جتنی اپنے اپنے ڈھنگ اور اپنے اپنے علاج کے طریقے کو چپٹے رہنے کی ضد . ہر ایک کے اپنے اپنے شبد ہوتے ہیں . ایلوپیتھک ڈاکٹر اپنے شبد بولتا ہے' ہومیوپیتھ اپنے شبد' حکیم اپنے شبد اور وید اپنے . ہر ایک کو اپنے ہی شبد ٹھیک معلوم ہوتے ہیں اور وہی پیارے معلوم ہوتے ہیں . پر جبکہ یہ اپنے اپنے موٹے موٹے شبدوں کے جال میں پھنسے رہتے ہیں اور اُنہیں پر لڑتے رہتے ہیں' معمولی اَن پڑھ آدمی بھی یہ جان جاتا ہے کہ اُسے کس ڈاکٹر' حکیم یا وید سے فائدہ ہوگا . وہ بہتر جانتا ہے کہ کون ادھک اچھا کرتا ہے اور کون ادھک مارتا ہے . وہ ان کے شبدوں کے دھوکے میں نہیں آتا . وہ یہ بھی جانتا ہے کہ کس روگ میں اُسے کس سے ادھک فائدہ ہو سکتا ہے اور سب سے فائدہ اُٹھا لیتا ہے . آخرکار ڈاکٹر' حکیم یا وید سب اُسی معمولی آدمی کی ہی تو پیدائش ہیں . وہی اِنھیں کھلاتا' پلاتا اور چلاتا ہے . اِسی طرح دھرم مذہب کے معاملوں میں شبدوں کے جنجال میں پھنسے ہوئے مولوی' پنڈت اور پادری

झूट, नेकी और बदी या उजाला और अंधेरा. हमारे अंदर की खुदी के इस तरह के फैलाव बड़े बड़े देशों की सामाजिक और नैतिक हवा को गन्दा कर देते हैं और क़ौमों के दिलों और दिमाग़ों को कुन्द और लकीर के फ़क़ीर बना देते हैं. हैमरी टामस ने अपनी किताब 'दी इस्टोरी आफ़ हियूमन रेस' में लिखा है कि केवल ईसाई पादरियों की आज्ञा पर एक करोड़ से ज़्यादा इन्सान समय समय पर ज़िन्दा जला दिये गये. यह करतूत केवल एक मज़हब के नाम पर हुई. दूसरे मज़हबों के नाम पर जो इस तरह के पाप हुए हैं, और कम या ज़्यादा सब मज़हबों के नाम पर हुए हैं, उनका हिसाब किसी ने नहीं लगाया.

इस तरह वह सुन्दर और संजीदा रीत रिवाज जो आदमी के दिल को दुनिया से खींच कर एक अल्लाह में लगा देने के लिये बनाये गये थे वही रिवाज एक दूसरे के ख़िलाफ़ तलवारें खींचने का कारन बन जाते हैं और आदमी को आदमी से क़त्ल करवाते हैं जब कि हर मज़हब में और उन मज़हबों में भी जो सब से अधिक कट्टर समझे जाते हैं, मज़हब के मामले में हर तरह की ज़बरदस्ती को साफ़ साफ़ शब्दों में मना किया गया है.

क़ुरान में साफ़ लिखा है :—

"ला इक्राह फ़िउद्दीन"

यानी दीन के मामले में किसी के साथ किसी तरह की ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिये.

क़ुरान में लिखा है—"तुम्हारा दीन तुम्हारे लिये और मेरा दीन मेरे लिये."

क़ुरान में ईमान वालों को हिदायत की गई है कि—

"लोगों को अपने रब के रास्ते पर लाओ, समझदारी के शब्दों के साथ और नरम और मीठी बातों के साथ."

क़ुरान में यह चीज़ भी साफ़ साफ़ और बार बार कही गई है कि—

"हर क़ौम के लिये हमने अलग अलग श्रेय और मिनहाज यानी अलग अलग रीत रिवाज बना दिये हैं जिन पर चलकर वह अल्लाह तक पहुंच सकते हैं. अल्लाह अगर चाहता तो सब को एक उम्मत यानी एक क़ौम बना देता. पर उसने ऐसा नहीं किया. इसलिये सब लोगों को चाहिये कि जो रास्ता उन्हें बता दिया गया है उसी पर चलें और नेकी के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करें. कोई दूसरे पर हंसे नहीं क्योंकि हो सकता है कि जिस पर तुम हंस रहे हो वह तुम से अच्छा हो."

शब्दों की माया अपार है. शब्दों और तरह तरह के नारों से बड़े बड़े नेक काम भी हो जाते हैं और बड़े बड़े गुनाह यानी पाप भी. बड़े बड़े बलवे, दंगे, फ़साद और जंग शब्दों से ही होते हैं. ग़लत नारों से क़ौमें की क़ौमें पीढ़ियों तक धोके में पड़ी रहती हैं और एक दूसरे को और



جھوٹ، نیکی اور بدی یا اُجالا اور اندھیرا ۔ ھمارے اندر کی خودی کے اس طرح کے پھیلاؤ بڑے بڑے دیشوں کی سماجک اور نیتک ھوا کو گندہ کردیتے ھیں اور قوموں کے دلوں اور دماغوں کو کند اور لکیر کے فقیر بنا دیتے ھیں۔ ھنری ٹامس نے اپنی کتاب 'دی اسٹوری آف ھیومن ریس' میں لکھا ھے کہ کیول عیسائی پادریوں کی آگیاں پر ایک کروڑ سے اوپر انسان سمے سمے پر زندہ جلا دئے گئے ۔ یہ کرتوت کیول ایک مذھب کے نام پر ھوئی ۔ دوسرے مذھبوں کے نام پر جو اس طرح کے پاپ ھوئے ھیں' اور کم یا زیادہ سب مذھبوں کے نام پر ھوئے ھیں' اُن کا حساب کسی نے نہیں لگایا ۔

اس طرح وہ سندر اور سنجیدہ ریت رواج جو آدمی کے دل کو دنیا سے کھینچ کر ایک اللہ میں لگا دینے کے لئے بنائے گئے تھے وھی رواج ایک دوسرے کے خلاف تلواریں کھینچنے کا کارن بن جاتے ھیں اور آدمی کو آدمی سے قتل کرواتے ھیں جبکہ ھر مذھب میں اور اُن مذھبوں میں بھی جو سب سے ادھک کٹر سمجھے جاتے ھیں' مذھب کے معاملے میں ھر طرح کی زبردستی کو صاف صاف شبدوں میں منع کیا گیا ھے ۔

قرآن میں صاف لکھا ھے :—

"لااکراہ فی الدین"

یعنی دین کے معاملے میں کسی کے ساتھ کسی طرح کی زبردستی نہیں ھونی چاھئے ۔

قرآن میں لکھا ھے :—"تمہارا دین تمہارے لئے اور میرا دین میرے لئے ۔"

قرآن میں ایمان والوں کو ھدایت کی گئی ھے کہ—

"لوگوں کو اپنے رب کے راستے پر لاؤ' سمجھداری کے شبدوں کے ساتھ اور نرم اور میٹھی باتوں کے ساتھ ۔"

قرآن میں یہ چیز بھی صاف صاف اور بار بار کہی گئی ھے کہ—

ھر قوم کے لئے ھم نے الگ الگ شرع اور منہاج یعنی الگ الگ ریت رواج بنا دئے ھیں جن پر چل کر وہ اللہ تک پہونچ سکتے ھیں ۔ اللہ اگر چاھتا تو سب کو ایک اُمت یعنی ایک قوم بنا دیتا ۔ پر اُس نے ایسا نہیں کیا ۔ اس لئے سب لوگوں کو چاھئے کہ جو راستہ اُنھیں بتا دیا گیا ھے اُسی پر چلیں اور نیکی کے کاموں میں ایک دوسرے سے بڑھنے کی کوشش کریں ۔ کوئی دوسرے پر ھنسے نہیں کیونکہ ھوسکتا ھے کہ جس پر تم ھنس رھے ھو وہ تم سے اچھا ھو ۔"

شبدوں کی مایا اپار ھے ۔ شبدوں اور طرح طرح کے نعروں سے بڑے بڑے نیک کام بھی ھوجاتے ھیں اور بڑے بڑے گناہ یعنی پاپ بھی ۔ بڑے بڑے بلوے' دنگے' فساد اور جنگ شبدوں سے ھی ھوتے ھیں ۔ غلط نعروں سے قومیں کی قومیں پیڑھیوں تک دھوکے میں پڑی رھتی ھیں اور ایک دوسرے کو اور

# शब्द और अर्थ

डाक्टर भगवानदास

पिछले एक लेख में हम दिखा चुके हैं कि ज्ञान यानी मार्फ़त के रास्ते पर चलने वालों की राह में सब से बड़ा ख़तरा यह होता है कि वह अपने छोटे से आपे को यानी अपनी निजी आत्मा को ही असल आत्मा समझ बैठते हैं और यह भूल जाते हैं कि यह उनकी आत्मा एक छोटी सी आत्मा है, केवल एक धोका है. और असल आत्मा यानी असली आपा वही सर्व आत्मा यानी रूहे कुल है जो घट घट के अन्दर और सब के अन्दर है. इसी तरह जो लोग भक्ति यानी इश्क़ के रास्ते पर चलते हैं उन से सब से बड़ी ग़लती यह होती है कि वह अपने से बाहर किसी एक पीर, मुर्शिद, गुरु, आचार्य, पोप, या किसी एक छोटे से देवी देवता को ही परम आत्मा या कुल मालिक समझ बैठते हैं. बेअन्त या अनन्त को हर सीमित यानी महदूद वजूद के अन्दर देखने की कोशिश करना बिल्कुल ठीक और सराहनीय है लेकिन महदूद को बेहद या बेअन्त समझ बैठना ग़लती और धोका है. इसी तरह जो लोग कर्मकान्ड की राह पर चलते हैं यानी जो श्रेय और मिनहाज पर चलकर अपने दीनी फ़र्ज़ को पूरा करना चाहते हैं उनसे सबसे बड़ी ग़लती यह होती है कि वह अक्सर अपनी ख़ास तरह की रस्मों, अपनी ख़ास पूजा विधि, अपने संस्कारों और अपने रीत रिवाजों को ही सबके लिये सब जगह और सब हालतों में ठीक और ज़रूरी मान बैठते हैं. वह अपने रीत रिवाजों से इस बुरी तरह चिपकते हैं कि उन्हें अपने ही रिवाज ठीक और सबके रिवाज ग़लत दिखाई देने लगते हैं. असलियत से भटक कर वह नाम रूप में फंस जाते हैं.

ग़ौर से देखा जाये तो इन तीनों रास्तों की यह तीनों तरह की ग़लतियां एक ही जड़ से पैदा होती हैं. वह जड़ है हमारे अन्दर की ख़ुदी, हमारा अहंकार. यह अहंकार ही सब शैतानों का बादशाह है. हमारी यह तीनों तरह की ग़लतियां इसी के तीन रूप हैं. जबरदस्ती दूसरों को अपने मज़हब में लाना, अन्धी तबलीग़ और अन्धी शुद्धि दूसरी तरह के रीत रिवाजों के मानने वालों को हैरिटिक, काफ़िर या मलेच्छ कहकर मार डालना, या जिन्दा जला देना और धर्म मज़हब के नाम पर जंग हमारे अन्दर की इसी शैतानियत के नतीजे हैं. हम अगर समझें तो धर्म और युद्ध यानी मज़हब और जंग इनमें कोई वास्ता ही नहीं हो सकता. यह एक दूसरे के वैसे ही विरुद्ध होते हैं जैसे सच और

# شبد اور ارتھ

ڈاکٹر بھگوان داس

پچھلے ایک لیکھ میں ہم دکھا چکے ہیں کہ گیان یعنی معرفت کے راستے پر چلنے والوں کی راہ میں سب سے بڑا خطرہ یہ ہوتا ہے کہ وہ اپنے چھوٹے سے آپے کو یعنی اپنی نجی آتما کو ہی اصل آتما سمجھ بیٹھتے ہیں اور یہ بھول جاتے ہیں کہ یہ اُن کی آتما ایک چھوٹی سی آتما ہے، کیول ایک دھوکا ہے. اور اصل آتما یعنی اصلی آپا وہی سروآتما یعنی روحِ کل ہے جو گھٹ گھٹ کے اندر اور سب کے اندر ہے . اسی طرح جو لوگ بھکتی یعنی عشق کے راستے پر چلتے ہیں اُن سے سب سے بڑی غلطی یہ ہوتی ہے کہ وہ اپنے سے باہر کسی ایک پیر، مرشد، گرو، آچاریہ، پوپ، یا کسی ایک چھوٹے سے دیوی دیوتا کو ہی پرم آتما یا کل مالک سمجھ بیٹھتے ہیں . بے انت یا اننت کو ہر سیمت یعنی محدود وجود کے اندر دیکھنے کی کوشش کرنا بالکل ٹھیک اور سراہنیہ ہے لیکن محدود کو بےحد یا بےانت سمجھ بیٹھنا غلطی اور دھوکا ہے . اسی طرح جو لوگ کرم کانڈ کی راہ پر چلتے ہیں یعنی جو شرع اور منہاج پر چل کر اپنے دینی فرض کو پورا کرنا چاہتے ہیں اُن سے سب سے بڑی غلطی یہ ہوتی ہے کہ وہ اکثر اپنی خاص طرح کی رسموں، اپنی خاص پوجا ودھی، اپنے سنسکاروں اور اپنے ریت رواجوں کو ہی سب کے لئے سب جگہ اور سب حالتوں میں ٹھیک اور ضروری مان بیٹھتے ہیں . وہ اپنے ریت رواجوں سے اس بری طرح چپکتے ہیں کہ انہیں اپنے ہی رواج ٹھیک اور سب کے رواج غلط دکھائی دینے لگتے ہیں. اصلیت سے بھٹک کر وہ نام روپ میں پھنس جاتے ہیں .

غور سے دیکھا جائے تو اِن تینوں راستوں کی یہ تینوں طرح کی غلطیاں ایک ہی جڑ سے پیدا ہوتی ہیں . وہ جڑ ہے ہمارے اندر کی خودی، ہمارا اہنکار . یہ اہنکار ہی سب شیطانوں کا بادشاہ ہے . ہماری یہ تینوں طرح کی غلطیاں اسی کے تین روپ ہیں . زبردستی دوسروں کو اپنے مذہب میں لانا، اندھی تبلیغ اور اندھی شدھی، دوسری طرح کے ریت رواجوں کے ماننے والوں کو ہیریٹک، کافر یا ملیچھ کہہ کر مار ڈالنا، یا زندہ جلا دینا اور دھرم مذہب کے نام پر جنگ ہمارے اندر کی اسی شیطانیت کے نتیجے ہیں . ہم اگر سمجھیں تو دھرم اور یدھ یعنی مذہب اور جنگ اِن میں کوئی واسطہ ہی نہیں ہوسکتا . یہ ایک دوسرے کے ویسے ہی وِرودھ ہوتے ہیں جیسے سچ اور

मुरदा रूढ़ियों और कर्मकान्ड से घबरा कर हाफ़िज़ ने कहा है—

फ़ाश मी गोयमो अज़ गुफ़्तए ख़ुद दिल शादम
बन्दए इश्क़मो अज़ हर्दो जहां आज़ादम
नेस्त बर लौहे दिलम जुज़ अलिफ़े क़ामते यार
चे कुनम हर्फ़े दिगर याद नदाद उस्तादम

यानी—मैं साफ़ साफ़ कहता हूं और अपनी बात के कहने से मेरा दिल ख़ुश है, मैं इश्क़ का बन्दा हूं और दोनों जहान से आज़ाद हूं, मेरे दिल की तख़्ती पर सिवाय मेरे प्रियतम के चिन्ह रूप 'अलिफ़'* के और कोई अक्षर लिखा हुआ नहीं है, मैं क्या करूं मेरे उस्ताद ने और कोई अक्षर सिखाया ही नहीं!

इस तरह की कविताओं का अनेक बार ख़ास ख़ास सुनने वालों के दिलों पर चमत्कारिक असर हुआ है. कभी कभी केवल एक शेर सुनकर लोगों की मौतें भी हो गई हैं† और जिन लोगों पर इन लोगों के असर हुये हैं वे हमेशा कोई कमज़ोर दिल या कमज़ोर दिमाग़ के इनसान भी न थे. मैं केवल एक मिसाल दूंगा. ईरान के मशहूर सन्त शेख़ अली हज़ीम ने अपने जीवन चरित्र में लिखा है—

"एक दिन रात को मैं कुछ दोस्तों के साथ बाग़ में बैठा हुआ था. अचानक मुझे गहरा 'हाल' आ गया. सारी रात मेरी उसी में गुज़र गई. उस हालत को बयान कर सकना नामुमकिन है. वह हालत क़रीब क़रीब मौत की हालत से मिलती हुई थी. मेरी यह हालत उन दोस्तों में से एक के मुंह से यह शेर सुनकर हुई थी—

"इमशब बेया ता दर चमन साज़ेम पुर पैमाना रा
तू शमो गुल रा दाग़ कुन, मन बुलबुला परवाना रा

यानी—"ऐ मेरे प्रीतम (परमात्मा) आज की रात आ ताकि बाग़ में चलकर हम प्रेम के पैमाने को लबालब भर सकें, तू शमा और गुल को जला डाल और मैं बुलबुल और परवाने को शर्मा दूं."

---

* स्वामी रामतीर्थ एक उर्दू मासिक पत्रिका निकाला करते थे जिसका नाम 'अलिफ़' था और जिसके टाइटल पेज पर लिखा रहता था—'इक्को अलिफ़ तेरे दरकार', यानी सिवाय एक अलिफ़ के तुझे किसी की ज़रूरत नहीं है.

—सम्पादक

† इलाहाबाद के मशहूर सूफ़ी मौलाना मोहम्मद हुसैन की मौत अजमेर में उर्स के मौक़े पर क़व्वाली का एक शेर सुनते सुनते ही हुई थी.

—सम्पादक



مردہ روڑھیوں اور کرم کانڈ سے گھبرا کر حافظ نے کہا ہے—

فاش می گویم و از گفتۂ خود دل شادم
بندۂ عشقم و از ہر دو جہاں آزادم
نیست بر لوح دلم جز الف قامت یار
چہ کنم حرف دگر یاد نداد اُستادم

یعنی—میں صاف صاف کہتا ہوں اور اپنی بات کے کہنے سے میرا دل خوش ہے، میں عشق کا بندہ ہوں اور دونوں جہان سے آزاد ہوں، میرے دل کی تختی پر سوائے میرے پریتم کے چنھ روپ 'الف' * کے اور کوئی اکشر لکھا ہوا نہیں ہے، میں کیا کروں میرے اُستاد نے اور کوئی اکشر سکھایا ہی نہیں!

اِس طرح کی کویتاؤں کا انیک بار خاص خاص سننے والوں کے دلوں پر چمتکارک اثر ہوا ہے. کبھی کبھی کیول ایک شعر سن کر لوگوں کی موتیں بھی ہوگئی ہیں † اور جن لوگوں پر اِن لوگوں کے اثر ہوئے ہیں وے ہمیشہ کوئی کمزور دل یا کمزور دماغ کے اِنسان بھی نہ تھے. میں کیول ایک مثال دونگا. ایران کے مشہور سنت شیخ علی حزیم نے اپنے جیون چرتر میں لکھا ہے—

" ایک دن رات کو میں کچھ دوستوں کے ساتھ باغ میں بیٹھا ہوا تھا. اچانک مجھے گہرا ' حال ' آ گیا. ساری رات میری اُسی میں گذر گئی. اُس حالت کو بیان کر سکنا ناممکن ہے. وہ حالت قریب قریب موت کی حالت سے ملتی ہوئی تھی. میری یہ حالت اُن دوستوں میں سے ایک کے منھ سے یہ شعر سن کر ہوئی تھی—

اِمشب بیا تا در چمن سازیم پر پیمانہ را
تو شمع و گل را داغ کن، من بلبل و پروانہ را

یعنی—" اے میرے پریتم ( پرماتما ) آج کی رات آ تاکہ باغ میں چل کر ہم پریم کے پیمانہ کو لبالب بھر سکیں، تو شمع اور گل کو جلا ڈال اور میں بلبل اور پروانے کو شرما دوں."

---

* سوامی رام‌تیرتھ ایک اردو ماسک پترکا نکالا کرتے تھے جس کا نام ' الف ' تھا اور جس کے ٹائٹل پیج پر لکھا رہتا تھا—' اِکو الف تیرے درکار ' یعنی سوائے ایک الف کے تجھے کسی کی ضرورت نہیں ہے.

—سمپادک.

† الہ‌آباد کے مشہور صوفی مولانا محمد حسین کی موت اجمیر میں عرس کے موقع پر قوالی کا ایک شعر سنتے سنتے ہی ہوئی تھی.

—سمپادک.

यानी—कारीगर अपने कारख़ाने के अन्दर छुपा हुआ है, तू कारख़ाने के अन्दर जा तो तू उसे साफ़ साफ़ देख लेगा !

हकीम सनाई का उपदेश है—

'तलब' ऐ आशिक़ाने ख़ुश रफ़्तार !
तलब ऐ शाहिदाने शीरींकार !
दर जहां शाहिदे व मा फ़ारिग़ !
दर क़दह जर्रए व मा हुशियार !
ख़ेज़ ता ज़ा-बरूए बेनिशीनम,
बादे ईं ख़ाकतूदए ग़द्दार !
पसब जारोबे 'ला' फ़रो रूबम,
कौकब अज़ सक़्फ़े गुम्बदे दव्वार !
ता ज़ ख़ुद बिशनवद न अज़ मनो तो
'लैयमन इल्मल्को !' वाहिद उल क़हहार

अर्थात्—ऐ नेक चलन प्रेमियो, ढूंढ़ो ! ऐ मीठे स्वर वाले प्रीतमो, ख़ुशी मनाओ ! हमारा प्रीतम इसी जहान में मौजूद है और हमारे दिल सूने पड़े हैं ! प्याले में शराब का घूंट मौजूद है, और हमारा होश क़ायम है ! उठो और अपने मुंह के पानी ( अहम भाव ) से ख़ाक के इस ग़द्दार ढेर ( पृथ्वी ) को दबा दो ! 'नेस्ती' ( ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं ) की झाड़ लेकर, आसमान के इस घूमने वाले गुम्बद की छत से सब तारों को बुहार फेंको ! ताकि वह एकमेवाद्वितीयम, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ख़ुद अपने कानों से यह आवाज़ सुने—'इस सबका मालिक कौन है ?'❀ मेरे और तुम्हारे कानों से नहीं !

ईरान का मशहूर सन्त कवि हाफ़िज़ इन शब्दों में मृत्यु का आह्वान करता है—

ख़ुर्रम आं रोज़ कज़ीं मंज़िले वीरां बेरवम
राहते जां तलबम वज़ पए जानां बेरवम
ब हवादारिये ऊ ज़र्रा सिफ़त रक़्स कुनम
न लबे चश्मए ख़ुर्शीदे दरख़्शां बेरवम

यानी—मुबारिक वह दिन होगा जिस दिन मैं इस उजड़ी हुई सराय से जाऊंगा, उस दिन मैं रूहानी सुख की खोज करता हुआ अपने प्रीतम को ढूढूंगा. हवा के अन्दर एक ज़र्रे की तरह नाचता हुआ, मैं उस चमकते हुए सूर्य के प्रेम की रोशनी में नाचता हुआ, अपने उस प्रीतम तक जा पहुंचूंगा !

---

❀ आख़री लाइन में क़ुरान के इस वाक्य की ओर इशारा है कि प्रलय के बाद जब सब सृष्टि मिट जायगी तो ग़ैब से आवाज़ आयेगी—'इस सबका मालिक कौन है.

—लेखक.



یعنی—کاریگر اپنے کارخانہ کے اندر چھپا ہوا ھے' تو کارخانے کے اندر جا تو تو اُسے صاف صاف دیکھ لیگا !

حکیم صنائی کا اُپدیش ھے—

' طلب ' اے عاشقان خوش رفتار !
طلب اے شاھدان شیریں کار !
در جہاں شاھدے و ما فارغ !
در قدح جرئے و ما ھشیار !
خیز تا زا بروئے بنشینم'
باد ایں خاک تودۂ غدار
پسب جاروب ' لا ' فرو روبم'
کوکب از شنق گمبد دوار
تا ز خرد بشنود نه از من و تو
' لیمن الملکو ! ' واحدالقہار

ارتھات—اے نیک چلن پریمیو' ڈھونڈھو ! اے میٹھے سور والے پریتمو' خوشی مناؤ ! ھمارا پریتم اِسی جہان میں موجود ھے اور ھمارے دل سونے پڑے ھیں ! پیالے میں شراب کا گھونٹ موجود ھے اور ھمارا ھوش قائم ھے ! اُٹھو اور اپنے منھ کے پانی ( اھم بھاؤ ) سے خاک کے اِس غدار ڈھیر ( پرتھوی ) کو دبا دو ! ' نیستی ' ( ایشور کے اترکت اور کچھ ھے ھی نہیں ) کی جھاڑو لے کر' آسمان کے اِس گھومنے والے گمبد کی چھت سے سب تاروں کو بہار پھینکو ! تاکہ وہ ایکمیوا دوئیتیم' سروشکتیمان پرمیشور خود اپنے کانوں سے یہ آواز سنے—' اِس سب کا مالک کون ھے ؟ '❀ میرے اور تمہارے کانوں سے نہیں !

ایران کا مشہور سنت کوی حافظ اِن سب شبدوں میں مرتیو کا آھوان کرتا ھے—

خرم آں روز کزیں منزل ویراں بروم
راحت جاں طلبم و ز پئے جاناں بروم
با ھوا دارئی او ذرہ صفت رقص کنم
نہ لب چشمۂ خورشید درخشاں بروم

یعنی—مبارک وہ دن ھوگا جس دن میں اِس اُجڑی ھوئی سرائے سے جاؤں گا' اُس دن میں روحانی سکھ کی کھوج کرتا ھوا اپنے پریتم کو ڈھونڈھوں گا . ھوا کے اندر ایک ذرہ کی طرح ناچتا ھوا' میں اُس چمکتے ھوئے سوریہ کے پریم کی روشنی میں ناچتا ھوا' اپنے اُس پریتم تک جا پھونچونگا !

---

❀ آخری لائن میں قرآن کے اِس واکیہ کی اور اِشارہ ھے کہ پرلے کے بعد جب سب سرشٹی مٹ جائے گی تو غیب سے آواز آئیگی—' اِس سب کا مالک کون ھے.

—لیکھک .

मौलना जलालुद्दीन रूमी जब अपनी सत्ता और कीर्ति के शिखर पर थे, उस समय उन्होंने सूफ़ियों के शब्दों में "दुनिया को लात मार दी थी." हकीम सनाई की बाबत लिखा है कि ग़ज़नी के बादशाह सुलतान बहराम शाह ने हकीम सनाई की क़ाबलियत और धार्मिकता का क़ायल होकर अपनी बहिन से उनकी शादी करनी चाही और उसके साथ उन्हें बहुतसा धन, ख़िताब और दरबार में ऊंचा ओहदा देना चाहा. हकीम सनाई छोटी उम्र में ही दुनिया छोड़ चुके थे. उन्होंने सुलतान की इस तजवीज़ का जवाब दिया—

मन न मरदे ज़नो ज़रो जाहम
बाख़ुदा गर कुनम वगर ख़ाहम
गर तु ताजम देही व एहसानम
बा सरे तो के ताज नस्तानम

यानी—मैं वह मर्द नहीं हूं कि स्त्री से या धन से, या पदवी से कोई सम्बन्ध रखूं! ख़ुदा की क़सम! मुझे इनमें से किसी की ज़रूरत नहीं है, अगर तुम मुझे अपना ताज भी दे दो और मुझ पर अहसान करो, तो तुम्हारे सर की क़सम मैं हरगिज़ न लूंगा.

एक ख़ास बात यह है कि इस तरह के कवियों ने कभी भी किसी दुनयवी आदमी की तारीफ़ या निन्दा में कविता नहीं लिखी. इनकी कवितायें दार्शनिक विचारों और रूहानी तजरुबों का एक ख़ज़ाना हैं. जिस तरह संगीत को समझने के लिये आदमी को अपना कान सिधाना पड़ता है इसी तरह इन सूफ़ी कवियों को समझने और उनका पूरा आनन्द लेने के लिये मनुश्य को अपनी रूह और अपने दिल को ख़ास तरह से साधना पड़ता है.

हज़रत अली ने एक जगह लिखा है—

दवाओका फ़ीका व मा तशअरू
व दाओका मिनका व मा तप्सेरू
व तज़अमू अन्नका जिर्मुन सग़ीरो
व फ़ीकन तवा आलन-उल-अकबरू
व अन्त किताब-उल-मुबीन-उल-लज़ी
बे अहरुफ़ेही यज़हर-उल मुज़मरू

यानी—ऐ इनसान! तेरा इलाज तेरे ही अन्दर है और तुझे नहीं मालूम! तेरी बीमारी की जड़ें तेरे ही अन्दर हैं और तुझे दिखाई नहीं देतीं! और क्या तू यह समझता है कि तू इस दुनिया में एक छोटी सी चीज है? लेकिन तेरे अन्दर ये महान दुनिया लिपटी हुई पड़ी है. तू एक खुली हुई किताब है, जिसके अच्छरों को पढ़कर सब छुपे हुये रहस्य खुल जाते हैं!

मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने कहा है—

कारकुन दर कारगह बाशद निहां
तू बिरो दर कारगह बीनश अयां!



مولانا جلال الدین رومی جب اپنی ستتا اور کیرتی کے شکھر پر تھے، اُس سمے اُنھوں نے صوفیوں کے شبدوں میں "دنیا کو لات مار دی تھی." حکیم صناعی کی بابت لکھا ھے کہ غزنی کے بادشاہ سلطان بہرام شاہ نے حکیم صناعی کی قابلیت اور دھارمکتا کا قایل ھوکر اپنی بہن سے اُن کی شادی کرنی چاہی اور اُس کے ساتھ اُنھیں بہت سا دھن، خطاب اور دربار میں اُونچا عہدہ دینا چاھا . حکیم صناعی چھوٹی عمر میں ھی دنیا چھوڑ چکے تھے . اُنھوں نے سلطان کی اِس تجویز کا جواب دیا—

من نہ مردے زن و زر و جاھم
با خدا گر کنم وگر خواھم
گر تو تاجم دھی و احسانم
با سر تو کے تاج نستانم

یعنی—میں وہ مرد نہیں ھوں کہ استری سے یا دھن سے، یا پدوی سے کوئی سمبندھ رکھوں ! خدا کی قسم ! مجھے اِن میں سے کسی کی ضرورت نہیں ھے، اگر تم مجھے اپنا تاج بھی دے دو اور مجھ پر احسان کرو، تو تمھارے سر کی قسم میں ھرگز نہ لونگا .

ایک خاص بات یہ ھے کہ اِس طرح کے کویوں نے کبھی بھی کسی دنیوی آدمی کی تعریف یا نندا میں کویتا نہیں لکھی . اِن کی کویتائیں دارشنک وچاروں اور روحانی تجربوں کا ایک خزانہ ھیں . جس طرح سنگیت کو سمجھنے کے لئے آدمی کو اپنا کان سدھانا پڑتا ھے اِسی طرح اِن صوفی کویوں کو سمجھنے اور اُن کا پورا آنند لینے کے لئے منشیہ کو اپنی روح اور اپنے دل کو خاص طرح سے سادھنا پڑتا ھے .

حضرت علی نے ایک جگہ لکھا ھے—

دواؤکی فیکا و ماتشعر
دواؤکی منکا و ما تبصر
وتجز امواندکی جرمل صغیر
وفیاً توا عالم اکبر
وانت کتابب المبعین الذی
بے آہ روفیہی یزھرال مضمر

یعنی—اے اِنسان ! تیرا علاج تیرے ھی اندر ھے اور تجھے نہیں معلوم ! تیری بیماری کی جڑیں تیرے ھی اندر ھیں اور تجھے دکھائی نہیں دیتیں ! اور کیا تو یہ سمجھتا ھے کہ تو اِس دنیا میں ایک چھوٹی سی چیز ھے ؟ لیکن تیرے اندر یہ مہان دنیا لپٹی ھوئی پڑی ھے . تو ایک کھلی ھوئی کتاب ھے، جس کے اکشروں کو پڑھ کر سب چھپے ھوئے رھسیہ کھل جاتے ھیں !

مولانا جلال الدین رومی نے کہا ھے—

کارکن در کارگہ باشد نہاں
تو برو در کارگہ بینش عیاں

सौन्दर्य तो रहता ही है; लेकिन उसके साथ साथ सीप को भी रगड़ रगड़ कर इतना चमका दिया जाता है कि सीप भी .ख़ुद मोती दिखाई देने लगती है. इटली के कवि दान्ते का नरक का चित्र, और बहिश्त की वह तसवीर, जिसमें सुन्दर सुन्दर बाग़ लगे हुए हैं, नहरें बह रही हैं और बड़ी बड़ी काली काली आंखों वाले स्त्री और पुरुश बसते हैं, जिनकी जवानी कभी ख़त्म नहीं हो सकती; ये सब कविता की इसी दूसरी अवस्था के नमूने हैं. दुनिया के ज्यादातर कवि इसी अवस्था के कवि हैं. अरबी और फ़ारसी में भी इसके नमूने भरे पड़े हैं. मैं सिर्फ़ एक मिसाल दूंगा. ईरानी कवि सलमान सावजी लिखता है—

> दर दुर्जे दुर अक़ीक़े लबत नक़्दे जां निहाद
> जिनसे अज़ीज़ याफ़्त बजाये निहां निहाद
> क़ुफ़्ले ज़लाल बर दरे आं दुर्जे ज़द लबत
> ख़ालत ज़े अम्बर आमद-ओ-मोहरे बरां निहाद

यानी—तेरे लाल होठों ने जान के ख़ज़ाने को मोतियों ( दांतों ) के पिटारे के अन्दर हिफ़ाज़त से रख दिया है. इतने क़ीमती जौहर को इसी तरह छिपाकर रखना चाहिये. उस पिटारे के ढक्कन पर तेरे लबों ने लालों का एक ताला लगा दिया है और तेरे अम्बरी तिल ने उस ताले पर एक छोटी सी मुहर लगादी है.

इसी तरह की मिसालें एक ज़माने की अरबी कविता में से भी दी जा सकती हैं.

इसके बाद कविता का तीसरा ज़माना आता है. यह ज़माना कविता की प्रौढ़ावस्था का है और कला की दृश्टि से सब से ज्यादा अहमियत का है.

इस अवस्था में कविता शब्दों और अलंकारों से ऊपर उठ जाती है. मालूम होता है उसने अपने आदर्श को प्राप्त कर लिया. कविता अब इनसान की इस छोटी सी .ख़ूबी और सांसारिक जीवन से ऊपर उठ जाती है. वह रूहानियत में ग़ोते लगाने लगती है. बहिश्त के सुख उसे अब तुच्छ और निकम्मे मालूम होने लगते हैं. .क़ुदरती तौर पर रूढ़ियों, कर्मकान्डों और अन्ध परम्पराओं से उसे अब नफ़रत होने लगती है. दुनिया शायर पर तरह तरह के इलज़ाम लगाती है लेकिन शायर इसकी ख़ाक परवाह नहीं करता. वह अब महज़ शायर नहीं है. वह द्रश्टा है, सन्त है. कविता उसके दिल से निकलती है, दिमाग़ से नहीं. उसमें बिजली की सी ताक़त होती है. लोग उसे समझते कम हैं, लेकिन पसन्द सब करते हैं. हज़रत मोहम्मद साहब के दामाद हज़रत अली, शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी, हाफ़िज़, शम्स तबरेज़, मौलाना जलालुद्दीन रूमी, हकीम सनाई, जामी, फ़रीदुद्दीन अत्तार सब इसी श्रेनी के कवि हैं. इन लोगों के बेलौस और पाक जीवन ने लाखों को इनका गिरवीदा बना रखा था.



سوندریہ تو رہتا ہی ہے؛ لیکن اُس کے ساتھ ساتھ سیپ کو بھی رگڑ رگڑ کر اتنا چمکا دیا جاتا ہے کہ سیپ بھی خود موتی دکھائی دینے لگتی ہے۔ اِٹلی کے کوی دانتے کا نرک کا چتر، اور بہشت کی وہ تصویر، جس میں سندر سندر باغ لگے ہوئے ہیں، نہریں بہ رہی ہیں اور بڑی بڑی کالی کالی آنکھوں والے استری اور پورش بستے ہیں، جن کی جوانی کبھی ختم نہیں ہوسکتی؛ یہ سب کویتا کی اِسی دوسری اوستھا کے نمونے ہیں۔ دنیا کے زیادہ‌تر کوی اِسی اوستھا کے کوی ہیں۔ عربی اور فارسی میں بھی اِس کے نمونے بھرے پڑے ہیں۔ میں صرف ایک مثال دونگا۔ ایرانی کوی سلمان ساؤجی لکھتا ہے—

> در درج در عقیق لبت نقد جاں نہاد
> جنس عزیز یافت بجائے نہاں نہاد
> قفل زلال بر در آں درج زد لبت
> خالت ز عنبر آمد و مہرے براں نہاد

یعنی—تیرے لال ہونٹھوں نے جان کے خزانے کو موتیوں (دانتوں) کے پٹارے کے اندر حفاظت سے رکھ دیا ہے۔ اِتنے قیمتی جوہر کو اِسی طرح چھپاکر رکھنا چاہئے۔ اُس پٹارے کے ڈھکن پر تیرے لبوں نے لالوں کا ایک تالا لگا دیا ہے اور تیرے عنبری تل نے اُس تالے پر ایک چھوٹی سی مہر لگا دی ہے۔

اِسی طرح کی مثالیں ایک زمانے کی عربی کویتا میں سے بھی دی جاسکتی ہیں۔

اِس کے بعد کویتا کا تیسرا زمانہ آتا ہے۔ یہ زمانہ کویتا کی پروڑھاوستھا کا ہے اور کلا کی درشٹی سے سب سے زیادہ اہمیت کا ہے۔

اِس اوستھا میں کویتا شبدوں اور النکاروں سے اُوپر اُٹھ جاتی ہے. معلوم ہوتا ہے اُس نے اپنے آدرش کو پراپت کرلیا۔ کویتا اب اِنسان کی اِس چھوٹی سی خوبی اور سانسارک جیون سے اُوپر اُٹھ جاتی ہے۔ وہ روحانیت میں غوطے لگانے لگتی ہے۔ بہشت کے سکھ اُسے اب تچھ اور نکمے معلوم ہونے لگتے ہیں۔ قدرتی طور پر روڑھیوں، کرم کانڈوں اور اندھ پرمپراؤں سے اُسے اب نفرت ہونے لگتی ہے۔ دنیا شاعر پر طرح طرح کے الزام لگاتی ہے لیکن شاعر اِس کی خاک پرواہ نہیں کرتا۔ وہ اب محض شاعر نہیں ہے۔ وہ درشٹا ہے، سنت ہے۔ کویتا اُس کے دل سے نکلتی ہے، دماغ سے نہیں. اُس میں بجلی کی سی طاقت ہوتی ہے. لوگ اُسے سمجھتے کم ہیں، لیکن پسند سب کرتے ہیں. حضرت محمد صاحب کے داماد حضرت علی، شیخ عبدالقادر جیلانی، حافظ، شمس طبریز، مولانا جلال الدین رومی، حکیم سنائی، جامی، فریدالدین عطار سب اِسی شرینی کے کوی ہیں۔ اِن لوگوں کے بےلوث اور پاک جیون نے لاکھوں کو اِن کا گرویدہ بنا رکھا تھا۔

# अरबी और फ़ारसी शायरी की एक झलक

डाक्टर मुस्तफ़ा इस्माइल अली एम० ए०, पी-एच० डी०

ब नमूदमे निशाने ज़ जमाले दोस्त लेकिन
दो जहां बहम बरआयद सरे शोरोशर नदारम

यानी—मैं अपने प्रीतम के रूप की एक झलक दूसरों को दिखा देता. लेकिन डर यह है कि एक झलक ही से दोनों जहान दरहम बरहम हो जावेंगे और वह शोरोशर उठेगा कि जिसका कोई अन्त न होगा.

चित्रकारी, मूर्ति-गढ़ने, घर बनाने और संगीत की तरह शायरी में भी आदमी का दिमाग़ पूरी साधुता और पूरी सुन्दरता के आदर्श को चित्रित करने और साक्षात् करने की कोशिश करता है. जिस तरह आदमी की ज़िन्दगी की तीन ख़ास हालतें होती हैं—बचपन, जवानी और अधेड़-पन—उसी तरह आदमी के आदर्श की भी तीन हालतें होती हैं. हर देश की शायरी को इन तीनों हालतों में से होकर निकलना पड़ता है.

पहली अवस्था में शायरी बहुत सीधी सादी होती है. कवि अपने समय के नैतिक आदर्शों को चित्रित करने की कोशिश करता है—जैसे बहादुरी फ़ैयाज़ी, धीरज, बुद्धिमत्ता वग़ैरा. इसलाम से पहिले के कुछ अरब कवि और ईरान के फ़िरदौसी, अनसारी वग़ैरा इसी तरह के कवि थे. इन कवियों की कविताएं बिलकुल सीधी सादी हैं. उनमें किसी तरह की बनावट नहीं. जो कवि के दिल में है वही उसकी क़लम से निकलता है. फ़िरदौसी की नीचे लिखी लाइन इसकी एक मिसाल है—

ख़ुदावन्दे बाला व पस्ती तुई
नदानम चे ई हरचे हस्ती तुई

यानी—हे ईश्वर इस लोक का और स्वर्ग लोक का तू ही मालिक है, मुझे नहीं मालूम कि तू क्या है, लेकिन जो कुछ भी तू हो, तू है ज़रूर.

दूसरी अवस्था कविता की जवानी की अवस्था है. कविता में अब पेचीदगी आने लगती है. उसकी ख़ूबसूरती बढ़ती है. उसमें ख़ुदी उभरने लगती है. चुने चुने शब्द, चुने चुने वाक्य, उपमायें, अलंकार और इस्तआरे, इन सब की, भरमार होने लगती है. इस अवस्था में कवि सब से ज़्यादा प्रेम के गीत गाता है, कोई सूक्ष्म प्रेम नहीं, बल्कि क़ुदरत और उसके ठोस पदार्थों के साथ जीता जागता प्रेम. इस अवस्था में इख़लाक़ी मयार (नैतिक आदर्श) यानी मोती का

# عربی اور فارسی شاعری کی ایک جھلک

ڈاکٹر مصطفیٰ اسمعیل علی ایم . اے.' پی . ایچ . ڈی.

به نمودمے نشانے ز جمال دوست لیکن
دو جہاں بہم برآید سر شور و شر ندارم

یعنی—میں اپنے پریتم کے روپ کی ایک جھلک دوسروں کو دکھا دیتا . لیکن ڈر یہ ھے کہ ایک جھلک ھی سے دونوں جہان درہم برہم ھوجاوینگے اور وہ شور و شر اُٹھیگا کہ جس کا کوئی انت نہ ھوگا .

چترکاری' مورتی گڑھنے' گھر بنانے اور سنگیت کی طرح شاعری میں بھی آدمی کا دماغ پوری سادھوتا اور پوری سندرتا کے آدرش کو چترت کرنے اور ساکشات کرنے کی کوشش کرتا ھے . جس طرح آدمی کی زندگی تین خاص حالتیں ھوتی ھیں—بچپن' جوانی اور ادھیڑپن—اُسی طرح آدمی کے آدرش کی بھی تین حالتیں ھوتی ھیں . ھر دیش کی شاعری کو اِن تینوں حالتوں میں سے ھوکر نکلنا پڑتا ھے .

پہلی اوستھا میں شاعری بہت سیدھی سادی ھوتی ھے. کوی اپنے سمے کے نیتک آدرشوں کو چترت کرنے کی کوشش کرتا ھے— جیسے بہادری' فیاضی' دھیرج' بدھیمتا وغیرہ . اسلام سے پہلے کے کچھ عرب کوی اور ایران کے فردوسی' انصاری وغیرہ اِسی طرح کے کوی تھے . اِن کویوں کی کویتائیں بالکل سیدھی سادی ھیں . اِن میں کسی طرح کی بناوٹ نہیں . جو کوی کے دل میں ھے وھی اُس کی قلم سے نکلتا ھے . فردوسی کی نیچے لکھی لائن اِس کی ایک مثال ھے—

خداوند بالا و پستی توئی
ندانم چہ ای' هرچہ هستی توئی

یعنی—ھے ایشور اِس لوک کا اور سورگ لوک کا تو ھی مالک ھے' مجھے نہیں معلوم کہ تو کیا ھے' لیکن جو کچھ بھی تو ھو' تو ھے ضرور .

دوسری اوستھا کویتا کی جوانی کی اوستھا ھے . کویتا میں اب پیچیدگی آنے لگتی ھے . اُس کی خوبصورتی بڑھتی ھے . اُس میں خودی اُبھرنے لگتی ھے . چنے چنے شبد' چنے چنے واکیہ' اُپمائیں' النکار اور استعارے' ان سب کی' بھرمار ھونے لگتی ھے . اِس اوستھا میں کوی سب سے زیادہ پریم کے گیت گاتا ھے' کوئی سوکشم پریم نہیں' بلکہ قدرت اور اُس کے ٹھوس پدارتھوں کے ساتھ جیتا جاگتا پریم . اِس اوستھا میں اخلاقی معیار ( نیتک آدرش ) یعنی موتی کا

"इस इमेन्सिपेशन ऐक्ट के मुताबिक़ कैथोलिक सम्प्रदाय के लोगों को पार्लिमेन्ट के दोनों हाउसों के मेम्बर चुने जाने की, और बहुत थोड़े से ओहदों को छोड़कर और सब मुक़ामों और देशी ओहदों पर मुक़र्रर होने की इजाज़त हो गई. इस तरफ़ अब बहुत कम काम बाक़ी रह गया. लेकिन यहूदियों को सन 1858 तक पार्लिमेन्ट के मेम्बर होने की इजाज़त न थी, और न 1871 तक सिवाय इंगलैन्ड की प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के दूसरी किसी सम्प्रदाय के लोग यूनिवर्सिटियों में उसी आज़ादी से भरती हो सकते थे.

फ़्रान्स के एक फ़िलासफ़र ने अपनी पुस्तक "मारकस औरीलियस" में बिल्कुल ठीक लिखा है—

"रोमन साम्राज्य से बड़ा साम्राज्य अब तक कोई नहीं हुआ. उस साम्राज्य के दो बड़े बड़े और प्रशंसा के पात्र सम्राट ऐन्टोनिनस पायस और मारकस औरीलियस थे. संसार के इतिहास में इतने योग्य और बुद्धिमान सम्राटों की सिर्फ़ एक ही मिसाल और मिलती है, जिसमें शाही तख़्त पर बैठने वाले आदमियों को भी बुद्धिमानी विरसे में मिली थी. यह मिसाल तीन महान मुग़ल सम्राटों की है—बाबर, हुमायूं और अकबर. इनमें से आख़री सम्राट अकबर में और मारकस औरीलियस में अनेक बातों में आश्चर्यजनक समानता थी.❀



"اِس ایمینسیپیشن ایکٹ کے مطابق کیتھولک سمپردائے کے لوگوں کو پارلیمنٹ کے دونوں ہاؤسوں کے میمبر چنے جانے کی، اور بہت تھوڑے سے عہدوں کو چھوڑ کر اور سب مقاموں اور دیشی عہدوں پر مقرر ہونے کی اِجازت ہو گئی. اِس طرف اب بہت کم کام باقی رہ گیا. لیکن یہودیوں کو سن 1858 تک پارلیمنٹ کے میمبر ہونے کی اِجازت نہ تھی، اور نہ سن 1871 تک سوائے اِنگلینڈ کی پروٹیسٹینٹ سمپردائے کے دوسری کسی سمپردائے کے لوگ یونیورسٹیوں میں اُسی آزادی سے بھرتی ہو سکتے تھے.

فرانس کے ایک فلاسفر نے اپنی پستک "مارکس اوریلیس" میں بالکل ٹھیک لکھا ہے—

"رومن سامراجیہ سے بڑا سامراجیہ اب تک کوئی نہیں ہوا. اُس سامراجیہ کے دو بڑے بڑے اور پرشنسا کے پاتر سمراٹ اینٹونینس پایس اور مارکس اوریلیس تھے. سنسار کے اِتہاس میں اِتنے یوگیہ اور بدھیمان سمراٹوں کی صرف ایک ہی مثال اور ملتی ہے، جس میں شاہی تخت پر بیٹھنے والے آدمیوں کو بھی بدھیمانی ورثہ میں ملی تھی. یہ مثال تین مہان مغل سمراٹوں کی ہے—بابر، ہمایوں اور اکبر. اِن میں سے آخری سمراٹ اکبر میں اور مارکس اوریلیس میں انیک باتوں میں اشچریہ جنک سمانتا تھی.*

---

जो आश्यकता से अधिक दौलत इकट्ठा करता है वह चोरी करता है और चोरी का धन कच्चा पारा है. वह पच नहीं सकता. अन्त में वह चोरी की मिल्कियत न रहेगी. ऐसा विश्वास रख अपने अहिंसक उपाय हमें करते ही जाना चाहिये.

—गांधी

جو آوشیکتا سے ادھک دولت اِکٹھا کرتا ہے وہ چوری کرتا ہے اور چوری کا دھن کچا پارہ ہے. وہ پچ نہیں سکتا. انت میں وہ چوری کی ملکیت نہ رہیگی. ایسا وشواس رکھ اپنے اہنسک اُپائے ہمیں کرتے ہی جانا چاہئے.

—گاندھی

---

❀ यह लेख लेखक की पुस्तक "Life and Experiences" की दूसरी जिल्द के एक अध्याय का अंश है—सम्पादक.

* یہ لیکھ لیکھک کی پستک "Life and Experinces" کی دوسری جلد کے ایک ادھیائے کا انش ہے—سمپادک.

"कुछ लोग सुधारकों के सम्प्रदाय में शामिल होना चाहते थे. बहुत से शामिल हो भी गए. इस पर बादशाह फ़िलिप ( 1556-98 ) ने उनके साथ बड़ी जालिमाना जंग शुरू कर दी, जो तीस बरस तक जारी रही. फ़िलिप ने नए सम्प्रदाय को मिटा देने का फ़ैसला कर लिया और मरते वक्त तक इस जंग को जारी रखा. उसने हुकुम दे दिया कि जो आदमी भी नए सम्प्रदाय के असूलों को ग़लत कहने और न मानने से इनकार कर दे उसे ज़िन्दा जला दिया जावे. इस बात का ठीक ठीक पता नहीं चलता कि लोकन्ट्रीज़ में इस हुकुम के मुताबिक़ कितने जलाए गए. लेकिन ड्यूक आफ़ ऐल्बा ने एक बार बड़े घमन्ड के साथ कहा था कि अपने शासन के पांच या छै बरस के अन्दर मैंने ख़ुद अट्ठारह हजार से ऊपर आदमियों को इस तरह शान्ति के साथ जलवा दिया."

इस भयंकर परिस्थिति के मुक़ाबले में हिन्दुस्तान की हालत बहुत ज्यादा अच्छी और बेहतर मालूम होती है. मलाबार के समुद्र तट पर मुसलमानों के हमले का असर नहीं हो सका. वहां के हिन्दू राजा की उदारता की हम तारीफ़ किये बिना नहीं रह सकते. ईसा की पहली या दूसरी सदी में सीरिया से कुछ ईसाई कोचिन और त्रावणकोर में आकर उतरे. वहां के हिन्दू राजा ने उनका स्वागत किया, उनकी महमांनवाज़ी की और उन्हें बिना किसी तरह की रोक टोक के अपने धर्म को मानने और उस पर चलते रहने की पूरी इजाज़त दी.

इसके ख़िलाफ़ इसी समय इंगलैन्ड में न सिर्फ़ रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के लोगों को बल्कि उन प्रोटेस्टैन्टों तक को, जो ख़ास ख़ास धार्मिक असूलों को मानने से इन्कार करते थे, ख़ास ख़ास ओहदों और अधिकारों से क़ानूनन वंचित रखा जाता था, जिससे उन्हें ख़ासी असुविधा सहनी पड़ती थी.

जार्ज बर्टन ऐडेम्स की "कान्सटीट्यूशनल हिस्ट्री आफ़ इंगलैन्ड" ( 1931 ) में लिखा है—

चार्ल्स दूसरे के ज़माने में जो 'टैस्ट ऐक्ट' पास हुआ, उसका मक़सद यह था कि कोई रोमन कैथोलिक किसी सरकारी ओहदे पर न रह सके. इसके लिए एक ऐसी कसौटी मुक़र्रर की गई, जिससे कोई बच न सकता था. इसका नतीजा यह था कि कोई भी सरकारी ओहदेदार अगर छिपा छिपाया रोमन कैथोलिक होता था, तो उसे खुले तौर पर ऐलान करना पड़ जाता था.

आख़िरकार सन 1828 में "टैस्ट ऐक्ट" रद्द किया गया. अगले साल 'कैथोलिक इमेन्सिपेशन ऐक्ट' पास किया गया जो और भी ज्यादा महत्व का था.



" کچھ لوگ سدھارکوں کے سمپردائے میں شامل ہونا چاہتے تھے . بہت سے شامل ہو بھی گئے . اِس پر بادشاہ فلپ ( 1556-98 ) نے اُن کے ساتھ بڑی ظالمانہ جنگ شروع کر دی، جو تیس برس تک جاری رہی . فلپ نے نئے سمپردائے کو مٹا دینے کا فیصلہ کر لیا اور مرتے وقت تک اِس جنگ کو جاری رکھا . اُس نے حکم دے دیا کہ جو آدمی بھی نئے سمپردائے کے اُصولوں کو غلط کہنے اور نہ ماننے سے اِنکار کر دے اُسے زندہ جلا دیا جاوے . اِس بات کا ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں چلتا کہ لوکنٹریز میں اِس حکم کے مطابق کتنے جلائے گئے . لیکن ڈیوک آف ایلبا نے ایک بار بڑے گھمنڈ کے ساتھ کہا تھا کہ اپنے شاسن کے پانچ یا چھ برس کے اندر میں نے خود اٹھارہ ہزار سے اوپر آدمیوں کو اِس طرح شانتی کے ساتھ جلوا دیا ."

اِس بھینکر پرستھتی کے مقابلہ میں هندستان کی حالت بہت زیادہ اچھی اور بہتر معلوم هوتی هے . ملابار کے سمدرتٹ پر مسلمانوں کے حملے کا اثر نہیں هو سکا . وهاں کے هندو راجا کی اُدارتا کی هم تعریف کئے بنا نہیں رہ سکتے . عیسیٰ کی پہلی یا دوسری صدی میں سیریا سے کچھ عیسائی کوچن اور تراونکور میں آ کر اُترے . وهاں کے هندو راجا نے اُن کا سواگت کیا، ان کی مہماں نوازی کی اور اُنھیں بنا کسی طرح کی روک ٹوک کے اپنے دھرم کو ماننے اور اُس پر چلتے رہنے کی پوری اِجازت دی .

اِس کے خلاف اِسی سمے اِنگلینڈ میں نہ صرف رومن کیتھولک سمپردائے کے لوگوں کو بلکہ اُن پروٹیسٹینٹوں تک کو، جو خاص خاص دھارمک اُصولوں کو ماننے سے انکار کرتے تھے، خاص خاص عہدوں اور ادھیکاروں سے قانوناً ونچت رکھا جاتا تھا، جس سے اُنھیں خاصی اسودھا سہنی پڑتی تھی .

جارج برٹن ایڈمس کی " کانسٹی ٹیوشنل هسٹری آف اِنگلینڈ " ( 1931 ) میں لکھا هے —

" چارلس دوسرے کے زمانے میں جو 'ٹیسٹ ایکٹ' پاس هوا، اُس کا مقصد یہ تھا کہ کوئی رومن کیتھولک کسی سرکاری عہدے پر نہ رہ سکے . اِس کے لئے ایک ایسی کسوٹی مقرر کی گئی، جس سے کوئی بچ نہ سکتا تھا . اِس کا نتیجہ یہ تھا کہ کوئی بھی سرکاری عہدیدار اگر چھپا چھپایا رومن کیتھولک هوتا تھا، تو اُسے کھلے طور پر اِس کا اعلان کرنا پڑ جاتا تھا .

آخرکار سن 1828 میں " ٹیسٹ ایکٹ " رد کیا گیا . اگلے سال ' کیتھولک ایمینسیپیشن ایکٹ ' پاس کیا گیا جو اور بھی زیادہ مہتو کا تھا .

गट्ठा धान सीधे अपने खेत से लाकर चढ़ा देता है. सुख दुख दोनों में इस सन्त की समाधि का लोगों के जीवन के साथ एक खास और गहरा ताल्लुक़ रहता है."

टेलर अपनी पुस्तक "टोपीग्रैफ़ी आफ़ ढाका" ( 1840, सफ़ा 2.7 ) में लिखता है—"मज़हबी झगड़े हिन्दू और मुसलमानों में शायद ही कभी देखने में आते हों. दोनों धर्मों के लोग पूरे प्रेम और मेल जोल के साथ रहते हैं. ज़्यादातर हिन्दू और मुसलमान भेद भाव से इतना ऊपर उठ गए हैं कि वह एक ही हुक़्क़े से पीते हैं."

धार्मिक उदारता के मामले में हिन्दुस्तान और यूरोप का मुक़ाबला बहुत ही आंखें खोलने वाला है. थोड़े दिनों पहले तक का यूरोप का सारा इतिहास मज़हब के नाम पर निस्सन्देह बहुत ही शर्मनाक क़िस्म के अन्यायों का इतिहास है. सलीबी ( क्रूसेड ) लड़ाइयों में पीटर दी हरमिट जैसे पोपों और पादरियों के फ़तवों और आग उगलने वाले शापों से जोश में आकर लाखों यूरोपियन क्रूसेडरों ने अपने घरों और बाल बच्चों से सदा के लिए अलग होकर उन दिनों के सफ़र की नाक़ाबिले बयान मुसीबतों को सहते हुए हज़रत ईसा की क़ब्र को उन मुसलमानों से बचाने की कोशिश की जिन्हें वह 'इन्फ़िडल' या नास्तिक कहते थे; इतना ही नहीं, सिर्फ़ धार्मिक विश्वासों के फ़रक़ के कारन यूरोप भर में सदियों वह भयंकर आपसी लड़ाइयां जारी रहीं, जिनमें देश के देश वीरान हो गए और यूरोप का सारा नक़शा ख़ून से रंग गया. आइये यूरोप के बादशाहों का ठीक उसी ज़माने के हिन्दुस्तान के बादशाहों के साथ मुक़ाबला करें.

बकल अपनी किताब "हिस्ट्री आफ़ सिविलीज़ेशन" में लिखता है—

"अपनी हुकूमत के आख़री दिनों में चार्ल्स पांचवां बड़े घमन्ड के साथ यह कहा करता था कि मैंने अपने देश के मुक़ाबले में हमेशा अपने धर्म को तरजीह दी और मेरी सब से पहली और सब से ज़बरदस्त ख़्वाहिश हमेशा यही रही कि ईसाई धम के हितों को क़ायम रखा जावे. लोकन्ट्रीज़ में दूसरी सम्प्रदायों के लोगों के ख़िलाफ़ उसने जो जो कारवाइयां कीं, उनसे ज़ाहिर होता है कि वह अपने धर्म को फैलाने के लिए कितने जोश के साथ काम करता था. उस ज़माने के विश्वस्त लेखकों के मुताबिक़ उसके शासन-काल में नीदरलैन्ड्स के अन्दर पचास हज़ार से लेकर एक लाख आदमी तक सिर्फ़ अपने मज़हबी एतक़ादों ( धार्मिक विचारों ) के कारन मारे गए. 1520 और 1550 के बीच में उसने बहुत से नए क़ानून इस मतलब से जारी किये कि जिन लोगों पर यह जुर्म साबित हो जावे कि वह बादशाह के मज़हबी उसूलों को नहीं मानते, उन्हें या तो क़तल कर दिया जावे, या ज़िन्दा जला दिया जावे और या ज़िन्दा ज़मीन में गाड़ दिया जावे."



گٹھا دھان سیدھے اپنے کھیت سے لاکر چڑھا دیتا ھے . سکھ دکھ دونوں میں اس سنت کی سمادھی کا لوگوں کے جیون کے ساتھ ایک خاص اور گہرا تعلق رھتا ھے ."

ٹیلر اپنی پستک "ٹوپوگریفی آف ڈھاکا" (1840' صفحہ 2.7) میں لکھتا ھے—"مذھبی جھگڑے ھندو اور مسلمانوں میں شاید ھی کبھی دیکھنے میں آتے ھوں . دونوں دھرموں کے لوگ پورے پریم اور میل جول کے ساتھ رھتے ھیں . زیادہ تر ھندو اور مسلمان بھید بھاؤ سے اِتنا اوپر اُٹھ گئے ھیں کہ وہ ایک ھی حقہ سے پیتے ھیں ."

دھارمک اُدارتا کے معاملہ میں ھندستان اور یورپ کا مقابلہ بہت ھی آنکھیں کھولنے والا ھے . تھوڑے دنوں پہلے تک کا یورپ کا سارا اِتہاس مذھب کے نام پر نسندیہہ بہت ھی شرمناک قسم کے انیایوں کا اِتہاس ھے . صلیبی ( کروسیڈ ) لڑائیوں میں پیٹر دی ھرمٹ جیسے پوپوں اور پادریوں کے فتوں اور آگ اگلنے والے شاپوں سے جوش میں آکر لاکھوں یوروپین کروسیڈروں نے اپنے گھروں اور بال بچوں سے سدا کے لئے الگ ھو کر اُن دنوں کے سفر کی ناقابل بیان مصیبتوں کو سہتے ھوئے حضرت عیسیٰ کی قبر کو اُن مسلمانوں سے بچانے کی کوشش کی جنھیں وہ ' انفڈل ' یا ناستک کہتے تھے' اِتنا ھی نہیں' صرف دھارمک وشواسوں کے فرق کے کارن یورپ بھر میں صدیوں وہ بھینکر آپسی لڑائیاں جاری رھیں' جن میں دیش کے دیش ویران ھوگئے اور یورپ کا سارا نقشہ خون سے رنگ گیا . آیئے یورپ کے بادشاھوں کا ٹھیک اُسی زمانے کے ھندستان کے بادشاھوں کے ساتھ مقابلہ کریں .

بکل اپنی کتاب " ھسٹری آف سولیزیشن " میں لکھتا ھے—

" اپنی حکومت کے آخری دنوں میں چارلس پانچواں بڑے گھمنڈ کے ساتھ یہ کہا کرتا تھا کہ میں نے اپنے دیش کے مقابلہ میں ھمیشہ اپنے دھرم کو ترجیح دی اور میری سب سے پہلی اور سب سے زبردست خواھش یہی رھی کہ عیسائی دھرم کے ھتوں کو قائم رکھا جاوے . لوکنٹریز میں دوسری سمپرداؤں کے لوگوں کے خلاف اُس نے جو جو کارروائیاں کیں' اُن سے ظاھر ھوتا ھے کہ وہ اپنے دھرم کو پھیلانے کے لئے کتنے جوش کے ساتھ کام کرتا تھا . اُس زمانے کے وشوست لیکھکوں کے مطابق اُس کے شاسن کال میں نیدرلینڈس کے اندر پچاس ھزار سے لے کر ایک لاکھ آدمی تک صرف اپنے مذھبی اعتقادوں (دھارمک وچاروں ) کے کارن مارے گئے . 1520 اور 1550 کے بیچ میں اُس نے بہت سے نئے قانون اِس مطلب سے جاری کئے کہ جن لوگوں پر یہ جرم ثابت ھو جاوے کہ وہ بادشاہ کے مذھبی اُصولوں کو نہیں مانتے' اُنھیں یا تو قتل کر دیا جاوے' یا زندہ جلا دیا جاوے اور یا زندہ زمین میں گاڑ دیا جاوے ."

और जात पांत के कठोर बन्धनों से ऊपर उठकर कुल इनसानों की समता और मानव प्रानी की महत्ता का उपदेश दिया. रामानुज का अनुयायी रामानन्द ऊंची जाति का ब्राह्मन था. उसने हिन्दी में सब जातों के लोगों को—यहां तक कि चमारों और अन्त्यजों को भी—राम की भक्ति का उपदेश दिया. उनके शागिर्दों में सब से महान रैदास और कबीर थे. कबीर जाति का जुलाहा था. कबीर ने उपदेश दिया कि हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों का ख़ुदा एक है. राम और रहीम में कोई अन्तर नहीं है और असल में सब धर्म बराबर हैं. महाराष्ट्र में नामदेव ने मराठी भाशा में उपदेश दिया कि हिन्दुओं का ईश्वर और मुसलमानों का अल्लाह एक ही है. नामदेव और ब्राह्मन सन्त एकनाथ दोनों पूरी आज़ादी के साथ अन्त्यजों से मिलते जुलते थे और मनुश्य मात्र की पवित्रता और महत्ता का उपदेश देते थे. बंगाल के बाउल जगह जगह घूमकर यह उपदेश दे रहे थे कि मनुश्य मनुश्य है और सब जाति भेदों और धर्म भेदों से ऊपर है. चैतन्य ने नदिया और बंगाल भर में भक्ति के सोते बहाये, और मनुश्य की समता का उपदेश दिया. चैतन्य के शागिर्दों में अनेक मुसलमान थे. उत्तर भारत में वल्लभाचार्य ने वैश्नव सम्प्रदाय क़ायम की. नानक ने उपदेश दिया कि इसलाम और हिन्दू धर्म दोनों में सत्य एक बराबर मिल सकता है. नानक ने जात पांत के भेदों को तोड़ा और सब के साथ प्रेम और उदारता का प्रचार किया. नानक के चेलों में भी बहुत से मुसलमान थे."

सच यह है कि हिन्दू मुसलिम भेद भाव हाल ही की गढ़ी हुई या पैदा की हुई चीज है. उन्नीसवीं सदी में इसका पता न था. मेरे अपने लड़कपन की बात है कि हमारे यहां जब दुर्गा पूजा होती थी तो मेरे बाप, मेरे बाबा और मेरे परबाबा गदैपुर के क़ाज़ियों को यात्राओं में शामिल होने के लिए दावत दिया करते थे, और वे लोग हमेशा हमारे निमंत्रन पर आते थे और दुर्गा की यात्राओं में शरीक होते थे. गदैपुर का गांव हमारे अपने गांव के पास था. यही हाल बंगाल भर में सब जगह था. दोनों बड़े बड़े धर्मों के लोगों में पूरी तरह मेल जोल और प्रेम का ताल्लुक़ था.

ब्रेडले-बर्ट ने अपनी पुस्तक "दी रोमान्स आफ़ ऐन ईस्टर्न कैपिटल" में सन 1906 के आपसी प्रेम को इन शब्दों में बयान किया है—

"शेख़ मुहम्मद यूसुफ़ की समाधि पर हिन्दू भी सिर नवाते हैं. यदि किसी रय्यत को अपनी फ़सल के अच्छे न होने का डर होता है तो वह मुट्ठी भर नाज लाकर चढ़ाता है. किसी का बच्चा बीमार होता है या डंगर बीमार होता है तो वह समाधि पर आकर मन्नत मानता है. यदि फ़सल खूब अच्छी होती है तो किसान शुक्रिये के तौर पर एक



اور جات پانت کے کٹھور بندھنوں سے اوپر اٹھ کر کل اِنسانوں کی سمتا اور مانو پرانی کی مہتا کا اُپدیش دیا. رامانج کا انویائی رامانند اونچی جاتی کا براهمن تھا. اُس نے هندی میں سب ذاتوں کے لوگوں کو—یہاں تک کہ چماروں اور انتیجوں کو بھی—رام کی بھکتی کا اپدیش دیا. اُن کے شاگردوں میں سب سے مہان ریداس اور کبیر تھے. کبیر جاتی کا جولاها تھا. کبیر نے اُپدیش دیا کہ هندوؤں اور مسلمانوں دونوں کا خدا ایک هے. رام اور رحیم میں کوئی انتر نہیں هے اور اصل میں سب دھرم برابر هیں. مہاراشٹر میں نام دیو نے مراٹھی بھاشا میں اپدیش دیا کہ هندوؤں کا ایشور اور مسلمانوں کا اللہ ایک هی هے. نام دیو اور براهمن سنت ایکناتھ دونوں پوری آزادی کے ساتھ انتیجوں سے ملتے جلتے تھے اور منشیہ ماتر کی پوترتا اور مہتا کا اُپدیش دیتے تھے. بنگال کے باؤل جگہ جگہ گھوم کر یہ اُپدیش دے رهے تھے کہ منشیہ منشیہ هے اور سب جاتی بھیدوں اور دھرم بھیدوں سے اوپر هے. چیتینہ نے ندیا میں اور بنگال بھر میں بھکتی کے سوتے بہائے' اور منشیہ کی سمتا کا اُپدیش دیا. چیتینہ کے شاگردوں میں انیک مسلمان تھے. اُتر بھارت میں ولبھاچاریہ نے ویشنو سمپردائے قایم کی. نانک نے اُپدیش دیا کہ اِسلام اور هندو دھرم دونوں میں ستیہ ایک برابر مل سکتا هے. نانک نے جات پانت کے بھیدوں کو توڑا اور سب کے ساتھ پریم اور اُدارتا کا پرچار کیا. نانک کے چیلوں میں بھی بہت سے مسلمان تھے."

سچ یہ هے کہ هندو مسلم بھید بھاؤ حال هی کی گڑھی هوئی یا پیدا کی هوئی چیز هے. اُنیسویں صدی میں اِس کا پتہ نہ تھا. میرے اپنے لڑکپن کی بات هے کہ همارے یہاں جب درگا پوجا هوتی تھی تو میرے باپ' میرے بابا اور میرے پردادا گدے پور کے قاضیوں کو یاتراؤں میں شامل هونے کے لئے دعوت دیا کرتے تھے' اور وے لوگ همیشہ همارے نمنترن پر آتے تھے اور درگا کی یاتراؤں میں شریک هوتے تھے. گدے پور کا گاؤں همارے اپنے گاؤں کے پاس تھا. یہی حال بنگال بھر میں سب جگہ تھا. دونوں بڑے بڑے دھرموں کے لوگوں میں پوری طرح میل جول اور پریم کا تعلق تھا.

بریڈلے برٹ نے اپنی پستک "دی رومانس آف این ایسٹرن کیپیٹل" میں سن 1906 کے آپسی پریم کو اِن شبدوں میں بیان کیا هے—

"شیخ محمد یوسف کی سمادھی پر هندو بھی سر نواتے هیں. یدی کسی رعیت کو اپنے فصل کے اچھے نہ هونے کا ڈر هوتا هے تو مٹھی بھر ناج لا کر چڑھاتا هے. کسی کا بچہ بیمار هوتا هے یا ڈنگر بیمار هوتا هے تو وہ سمادھی پر آکر منت مانتا هے. یدی فصل خوب اچھی هوتی هے تو کسان شکریہ کے طور پر ایک

ही धार्मिक उदारता की नीति का पालन किया और अपनी सल्तनत के कारोबार में हिन्दुओं के सहयोग की क़द्र की. लेकिन यह दिखाया जा चुका है कि अलाउद्दीन खिलजी के जमाने से लेकर कभी किसी भी हिन्दू को अपने धार्मिक विश्वासों के कारन किसी तरह की हानि नहीं सहनी पड़ी, न उसके नागरिक अधिकारों में फ़रक़ पड़ा.

हिन्दुस्तान पर शुरू जमाने से विदेशी हमले होते रहे थे, लेकिन अक्सर होता यह था कि विदेशी हमलावर पूरी तरह हिन्दू समाज के अन्दर रल मिल कर एक हो जाते थे. यही हाल शकों का हुआ, लेकिन मुसलमान हमलावर इस तरह मिलकर एक न हो सकते थे. इसकी वजह बयान करते हुये के० पी० मित्र ने अपनी "इन्डियन हिस्ट्री फ़ार मैट्रिकुलेशन" ( सफ़ा 115-16 ) में लिखा है कि—

"मुसलिम सभ्यता एक अलग और अपने ही ढंग की चीज़ थी, वह जल्दी से हिन्दू सभ्यता में मिलकर एक न हो सकती थी. मुसलमान बादशाह अपनी लड़ाइयों को जेहाद समझते थे, उन्होंने मन्दिरों को तोड़ा, हिन्दुओं को मुसलमान बनाया और उनको सताया. लेकिन धीरे धीरे दोनों मज़हबों के लोगों में उदारता और प्रेम के भाव जागने लगे. मुसलिम बादशाहों ने हिन्दुओं को अपना वज़ीर बनाया, हिन्दू सरदारों की मदद ली, हिन्दू स्त्रियों से शादियां कीं और हिन्दू साहित्य ख़ासकर देशी भाशाओं के साहित्य का संरक्षन किया और उसे तरक़्क़ी दी. विजयनगर के हिन्दू राजाओं ने मुसलिम सिपाहियों को अपनी सेनाओं में भर्ती किया; उन्हें जागीरें दीं, उनके लिये मसजिदें बनवाईं और उनके धार्मिक विश्वासों का मान रखा. इसी तरह मुसलिम सुलतानों ने हिन्दू सिपाहियों को अपनी फ़ौजों में नौकर रखा. लड़ाई के मैदानों में हिन्दुओं और मुसलमानों के मेल जोल से दोनों की ज़बानें भी मिलती चली गईं; इसी मेल जोल से उर्दू ज़बान पैदा हुई. कशमीर के मुसलमान बादशाह ज़ैनुल आबदीन ने अपने राज के बड़े बड़े ओहदों पर हिन्दुओं को मुक़र्रर किया और धार्मिक उदारता से काम लिया. इसी तरह बंगाल का हुसेनशाह भी उदार विचारों का शासक था. इन सब लोगों ने देशी भाशाओं को ख़ूब बढ़ाया. संस्कृत व्याकरन के बन्धनों से मुक्त होकर बङ्गला भाशा का स्वतन्त्रता के साथ बढ़ना और फलना फूलना एक बड़े दर्जे तक हुसेन शाह और नसरत शाह के संरक्षन का नतीजा है. वर्तमान बंगला उनकी ऋणी है. कृत्तिवास की बंगला रामायन और काशीदास का महाभारत बंगालियों के घर घर में मिलते हैं. विद्यापति और चंडीदास जैसे कवियों ने उन्हीं के संरक्षन में अपने गीत-काव्य गाये.

"विश्व प्रेम के पुजारी सुधारकों ने सब धर्म मज़हबों के सार का प्रचार किया और धर्म की सड़ी गली रूढ़ियों



ھی دھارمک اُدارتا کی نیتی کا پالن کیا اور اپنی سلطنت کے کاروبار میں ھندؤں کے سہیوگ کی قدر کی. لیکن یہ دکھایا جا چکا ھے کہ علاوالدین خلجی کے زمانے سے لے کر کبھی کسی بھی ھندو کو اپنے دھارمک وشواسوں کے کارن کسی طرح کی ھانی نہیں سہنی پڑی، نہ اُس کے ناگرک ادھکاروں میں فرق پڑا .

ھندستان پر شروع زمانے سے ودیشی حملے ھوتے رھے تھے، لیکن اکثر ھوتا یہ تھا کہ ودیشی حملہآور پوری طرح ھندو سماج کے اندر رل مل کر ایک ھو جاتے تھے . یہی حال شکوں کا ھوا، لیکن مسلمان حملہآور اِس طرح مل کر ایک نہ ھو سکتے تھے . اِس کی وجہ بیان کرتے ھوئے کے . پی . متر نے اپنی "اِنڈین ھسٹری فار میٹریکولیشن" ( صفحہ 115-16 ) میں لکھا ھے کہ—

"مسلم سبھیتا ایک الگ اور اپنے ھی ڈھنگ کی چیز تھی، وہ جلدی سے ھندو سبھیتا میں مل کر ایک نہ ھو سکتی تھی . مسلمان بادشاہ اپنی لڑائیوں کو جہاد سمجھتے تھے، اُنھوں نے مندروں کو توڑا، ھندؤں کو مسلمان بنایا اور اُن کو ستایا . لیکن دھیرے دھیرے دونوں مذھبوں کے لوگوں میں اُدارتا اور پریم کے بھاؤ جاگنے لگے . مسلم بادشاھوں نے ھندؤں کو اپنا وزیر بنایا، ھندو سرداروں کی مدد لی، ھندو اِستریوں سے شادیاں کیں اور ھندو ساھتیہ خاص کر دیشی بھاشاؤں کے ساھتیہ کا سنرکشن کیا اور اُسے ترقی دی . وجے نگر کے ھندو راجاؤں نے مسلم سپاھیوں کو اپنی سیناؤں میں بھرتی کیا؛ اُنھیں جاگیریں دیں، اُن کے لئے مسجدیں بنوائیں اور ان کے دھارمک وشواسوں کا مان رکھا . اِسی طرح مسلم سلطانوں نے ھندو سپاھیوں کو اپنی فوجوں میں نوکر رکھا . لڑائی کے میدانوں میں ھندؤں اور مسلمانوں کے میل جول سے دونوں کی زبانیں بھی ملتی چلی گئیں؛ اِسی میل جول سے اُردو زبان پیدا ھوئی . کشمیر کے مسلمان بادشاہ زین‌العابدین نے اپنے راج کے بڑے بڑے عہدوں پر ھندؤں کو مقرر کیا اور دھارمک اُدارتا سے کام لیا . اِسی طرح بنگال کا حسین شاہ بھی اُدار وچاروں کا شاسک تھا . اِن سب لوگوں نے دیشی بھاشاؤں کو خوب بڑھایا . سنسکرت ویاکرن کے بندھنوں سے مکت ھو کر بنگلا بھاشا کا سوتنترتا کے ساتھ بڑھنا اور پھلنا پھولنا ایک بڑے درجہ تک حسین شاہ اور نصرت شاہ کے سنرکشن کا نتیجہ ھے . ورتمان بنگلا اُن کی رنری ھے . کرتی‌واس کی بنگلا راماین اور کاشی داس کا مہابھارت بنگالیوں کے گھر گھر میں ملتے ھیں . ودیا پتی اور چنڈی‌داس جیسے کویوں نے اُنھیں کے سنرکشن میں اپنے گیت کاویہ گائے .

"وشوپریم کے پجاری سدھارکوں نے سب دھرم مذھبوں کے سار کا پرچار کیا اور دھرم کی سڑی گلی روڑھیوں

नन्दलाल सूबे का सबसे बड़ा सेनापति था. राजा जानकी राम अलीवर्दी ख़ां का सबसे एतबारी मन्त्री था. उसके दोनों लड़के राजा दुर्लभराम और राजा रामनरायण उतने ही ऊंचे ऊंचे पदों पर मुक़र्रर थे. माल के मोहकमों में चिम्मनराय, वीरुदत्त, कीर्तिचन्द, अमृतराय, चिन्तामणि दास और गोकुलचन्द सर्वोच्च पदों पर थे. कुछ दिनों बाद ढाका का राजा राजवल्लभ बहुत छोटी सी हैसियत से तरक़्क़ी करते करते नायब सूबेदार के ओहदे पर पहुंच गया. दूसरे हुक्मरानों के साथ पत्र व्यवहार या बातचीत करने के लिये राजाराम को पूरे अख़्तियार मिले हुए थे. दीवान मानिकचन्द और उम्मेदराम दोनों दरबार के स्तम्भ थे. केवल माल और ख़ज़ाने के मोहकमों में ही नहीं, बल्कि सेनापतियों की हैसियत से भी हिन्दुओं का बड़ा मान था. दुर्लभराम, मानिकचन्द, मोहनलाल और श्यामसुन्दर ने लड़ाई के मैदानों में बड़ी बड़ी वीरता दिखलाई. मैलकम ने अपनी पुस्तक 'क्लाइव', ( जिल्द 1 सफ़ा 254 ) में लिखा है कि जिस समय मीर जाफ़र अपनी बहुत बड़ी सेना सहित सिराजुद्दौला को छोड़कर हट जाने के लिये राज़ी हो गया; उस विपदा के समय एक बङ्गाली हिन्दू मोहनलाल और एक बंगाली मुसलमान मीर मदन ने आख़ीर दम तक सिराजुद्दौला का साथ न छोड़ा. दोनों अपनी अपनी सेनाओं सहित वीरता के साथ अन्त तक लड़ते रहे, अगरचे इन सब से भी सिराजुद्दौला की क़िस्मत न पलट सकी.

सच यह है कि नवाब अलीवर्दी ख़ां को जितनी मुसीबतें बर्दाश्त करनी पड़ीं वह सब अपने मुसलमान अमीरों के विश्वासघात और उनकी दग़ा के सबब झेलनी पड़ीं. यह मुसलमान सरदार मराठों के साथ मिलकर अलीवर्दी ख़ां को धोखा देने में जरा भी संकोच न करते थे. यह बिलकुल सच्ची घटना है कि उस ज़माने के बंगाल में फ़िरक़ापरस्ती या धार्मिक भेद-भाव का कहीं निशान भी ढूंढ़े से नहीं मिलता. लोग सिर्फ़ अपने निजी हानि लाभ को ही देखते थे और उसी के मुताबिक़ चलते थे.

इतिहास से साफ़ पता चलता है कि 13 वीं सदी ईस्वी से लेकर प्लासी की लड़ाई तक मुसलिम शासन काल में बंगाल के हिन्दुओं को कभी भी यह महसूस करने का मौक़ा नहीं मिला कि उनके ऊपर किसी विदेशी की हकूमत थी. यह भी एक ख़ास बात है कि सिर्फ़ एक वीरभूम के राजा को छोड़कर बंगाल के और सब बड़े बड़े ज़मींदार हिन्दू थे. बंगला ग्रन्थ के "नवाबी अमल" का लेखक काली प्रसन्न बैनर्जी लिखता है कि कुल ज़मींदारियों का सिर्फ़ 16 वां हिस्सा मुसलमानों के हाथों में था.

भारत के इतिहास को सरसरी निगाह से देखने वाला आदमी यह समझता होगा कि सिर्फ़ शहन्शाह अकबर ने



نند لال صوبے کا سب سے بڑا سیناپتی تھا ۔ راجہ جانکی رام علی وردی خاں کا سب سے اعتباری منتری تھا ۔ اُس کے دونوں لڑکے راجہ درلبھ رام اور راجہ رام نراین اُتنے ہی اونچے اونچے پدوں پر مقرر تھے ۔ مال کے محکموں میں چمن رائے، ویرودت، کیرتی چند، امرت رائے، چنتا منتری داس اور گوکل چند سرووچ پدوں پر تھے ۔ کچھ دنوں بعد ڈھاکہ کا راجہ راج ولبھ بہت چھوٹی سے حیثیت سے ترقی کرتے کرتے نایب صوبے دار کے عہدے پر پہونچ گیا ۔ دوسرے حکمرانوں کے ساتھ پتر ویوھار یا بات چیت کرنے کے لئے راجارام کو پورے اختیار ملے ہوئے تھے ۔ دیوان مانک چند اور اُمیدرام دونوں دربار کے اِستمبھ تھے ۔ کیول مال اور خزانے کے محکموں میں ہی نہیں، بلکہ سیناپتیوں کی حیثیت سے بھی ہندؤں کا بڑا مان تھا ۔ درلبھ رام، مانک چند، موہن لال اور شیام سندر نے لڑائی کے میدانوں میں بڑی بڑی ویرتا دکھلائی ۔ میلکم نے اپنی پستک " کلایو " ( جلد 1 صفحہ 254 ) میں لکھا ہے کہ جس سمے میر جعفر اپنی بہت بڑی سینا سہت سراج الدولہ کو چھوڑ کر ہٹ جانے کے لئے راضی ہوگیا، اُس وپدا کے سمے ایک بنگالی ہندو موہن لال اور ایک بنگالی مسلمان میر مدن نے آخیر دم تک سراج الدولہ کا ساتھ نہ چھوڑا ۔ دونوں اپنی اپنی سیناؤں سہت ویرتا کے ساتھ انت تک لڑتے رہے، اگرچہ اِن سب سے بھی سراج الدولہ کی قسمت نہ پلٹ سکی ۔

سچ یہ ہے کہ نواب علی وردی خاں کو جتنی مصیبتیں برداشت کرنی پڑیں وہ سب اپنے مسلمان امیروں کے وشواس گھات اور اُن کی دغا کے سبب جھیلنی پڑیں ۔ یہ مسلمان سردار مراٹھوں کے ساتھ مل کر علی وردی خاں کو دھوکا دینے میں ذرا بھی سنکوچ نہ کرتے تھے ۔ یہ بالکل سچی گھٹنا ہے کہ اُس زمانے کے بنگال میں فرقہ پرستی یا دھارمک بھید بھاؤ کا کہیں نشان بھی ڈھونڈھے سے نہیں ملتا ۔ لوگ صرف اپنے نجی ہانی لابھ کو ہی دیکھتے تھے اور اُسی کے مطابق چلتے تھے ۔

اِتہاس سے صاف پتہ چلتا ہے کہ 13ویں صدی عیسوی سے لے کر پلاسی کی لڑائی تک مسلم شاسن کال میں بنگال کے ہندؤں کو کبھی بھی یہ محسوس کرنے کا موقع نہیں ملا کہ اُن کے اوپر کسی ودیشی کی حکومت تھی ۔ یہ بھی ایک خاص بات ہے کہ صرف ایک ویربھوم کے راجہ کو چھوڑ کر بنگال کے اور سب بڑے بڑے زمیندار ہندو تھے ۔ بنگلا گرنتھ کے " نوابی عمل " کا لیکھک کالی پرسن بینر جی لکھتا ہے کہ کل زمینداروں کا صرف 16واں حصہ مسلمانوں کے ہاتھوں میں تھا ۔

بھارت کے اِتہاس کو سرسری نگاہ سے دیکھنے والا آدمی یہ سمجھتا ہوگا کہ صرف شہنشاہ اکبر نے

लिये मुसलमान बादशाह इन सबके खिलाफ़ हिन्दुओं से काम लेते थे. ये भाव दिल्ली के बड़े से बड़े शक्तिशाली सम्राटों से लेकर छोटे से छोटे मुसलमान सरदारों तक सब में मौजूद था. इसी के साथ साथ हिन्दुओं का धन और उनकी क़ाबलियत भी अपना असर डालती थी. बहुत दर्जे तक इन्हीं कारनों से हिन्दुस्तान में मुसलिम हुकूमत आसानी से क़ायम हो सकी और इतने दिनों तक चलती रही. राज के बदल जाने से सिवाय हिन्दू महाराजाओं और उनके ख़ास ख़ास आदमियों के और किसी पर कोई ख़ास असर न पड़ता था. छोटे छोटे राजे और सरदार हिन्दू महाराजा की जगह मुसलमान बादशाह को अपना अधिराज मानने लगे थे और ख़िराज देने लगे थे. अपनी छोटी छोटी रियासतों के अन्दर उनकी हैसियत और उनके सब अधिकार क़रीब क़रीब ज्यों के त्यों बने रहते थे.

"हिन्दू वज़ीरों और अफ़सरों को अपने हिन्दू अधिराज की सेवा में रहने से शायद उतना फ़ायदा न था, जितना किसी निकम्मे और विलासी मुग़ल अधिराज की सेवा में रहने से. धार्मिक मामलों में सबको पूरी आज़ादी थी. हिन्दुओं के प्राचीन रिवाजों में, जिनकी वे बड़ी क़द्र करते थे, बहुत कम दख़ल दिया जाता था, बल्कि बिलकुल दख़ल नहीं दिया जाता था. दूसरी बातों में ये लोग आपस में इतने बढ़े हुए थे, इनकी इतनी अलग अलग जातें और बिरादरियां थीं कि ये अपने विजेताओं को बाहर निकालने के लिए मिलकर कोशिश न करते थे और मुसलमान विजेताओं ने कई वजहों और तरह तरह के मतलब से सिवाय नाम मात्र के अधिराज होने के हुकूमत के क़रीब क़रीब सब अधिकार उन्हीं के हाथों में रहने दिये."

मुरशिद क़ुली ख़ां ने, जिस ज़माने में वह बंगाल के अन्दर औरंगज़ेब का वायसराय था, अपने माल के सब अफ़सर और वज़ीर विश्वस्त हिन्दू ही मुक़र्रर किये. वह सब बातों में अपने इन हिन्दू सलाहकारों की राय से ही काम करता था. इनमें ख़ास दर्पनारायण, भूपतिराय, किशोरराय, जसवन्तराय और रघुनन्दन थे. ब्रेडले बर्ट ने लिखा है कि मुर्शिद क़ुली ख़ां का वज़ीर जसवन्तराय बहुत बुद्धिमान शासक था और माल और ख़ज़ाने के मोहकमों का बहुत ज़बर्दस्त जानकार था, देश की तिजारत को बढ़ाने की उसने अपनी शक्ति भर कोशिश की. मुर्शिद क़ुली ख़ां ने ऊंचे से ऊंचे फ़ौजी ओहदे भी हिन्दुओं ही को दे रखे थे. लाहौरीमल और दुलीपसिंह उसके मशहूर ज़बर्दस्त सेनापति थे. ज़मीन्दारों में से रामजीवन, दयाराम और रघुराम समय समय पर बहुत ज़िम्मेवारी के सैनिक ओहदों पर रह चुके थे.

नवाब अलीवर्दी ख़ां के शुरू के ज़माने में एक हिन्दू



لئے مسلمان بادشاہ اِن سب کے خلاف ہندوؤں سے کام لیتے تھے۔ یہ بھاؤ دلی کے بڑے سے بڑے شکتی‌شالی سمراٹوں سے لیکر چھوٹے سے چھوٹے مسلمان سرداروں تک سب میں موجود تھا۔ اِسی کے ساتھ ساتھ ہندوؤں کا دھن اور اُن کی قابلیت بھی اپنا اثر ڈالتی تھی۔ بہت درجہ تک اِنھیں کارنوں سے ہندستان میں مسلم حکومت آسانی سے قایم ہوسکی اور اتنے دنوں تک چلتی رہی۔ راج کے بدل جانے سے سوائے ہندو مہاراجاؤں اور اُن کے خاص خاص آدمیوں کے اور کسی پر کوئی خاص اثر نہ پڑتا تھا۔ چھوٹے چھوٹے راجے اور سردار ہندو مہاراجہ کی جگہ مسلمان بادشاہ کو اپنا ادھیراج ماننے لگے تھے اور خراج دینے لگے تھے۔ اپنی چھوٹی چھوٹی ریاستوں کے اندر اُن کی حیثیت اور اُن کے سب ادھیکار قریب قریب جیوں کے تیوں بنے رہتے تھے۔

"ہندو وزیروں اور افسروں کو اپنے ہندو ادھیراج کی سیوا میں رہنے سے شاید اُتنا فایدہ نہ تھا، جتنا کسی نکمے اور ولاسی مغل ادھیراج کی سیوا میں رہنے سے۔ دھارمک معاملوں میں سب کو پوری آزادی تھی۔ ہندوؤں کے پراچین رواجوں میں، جن کی وے بڑی قدر کرتے تھے، بہت کم دخل دیا جاتا تھا، بلکہ بالکل دخل نہیں دیا جاتا تھا۔ دوسری باتوں میں یہ لوگ آپس میں اِتنے بڑھے ہوئے تھے، اِن کی اِتنی الگ الگ ذاتیں اور برادریاں تھیں کہ یہ اپنے وجیتاؤں کو باہر نکالنے کے لئے ملکر کوشش نہ کرتے تھے اور مسلمان وجیتاؤں نے کئی وجہوں اور طرح طرح کے مطلب سے سوائے نام ماتر کے ادھیراج ہونے کے حکومت کے قریب قریب سب ادھیکار اُنھیں کے ہاتھوں میں رہنے دئے۔"

مرشد قلی خاں نے، جس زمانہ میں وہ بنگال کے اندر اورنگزیب کا وایسرائے تھا، اپنے مال کے سب افسر اور وزیر وشوست ہندو ہی مقرر کئے۔ وہ سب باتوں میں اپنے اِن ہندو صلاحکاروں کی رائے سے ہی کام کرتا تھا۔ اِن میں خاص درپناراین، بھوپتی رائے، کشور رائے، جسونت رائے اور رگھونندن تھے۔ بریڈلے برٹ نے لکھا ہے کہ مرشد قلی خاں کا وزیر جسونت رائے بہت بدھمان شاسک تھا اور مال اور خزانے کے محکموں کا بہت زبردست جانکار تھا، دیش کی تجارت کو بڑھانے کی اس نے اپنی شکتی بھر کوشش کی۔ مرشد قلی خاں نے اونچے سے اونچے فوجی عہدے بھی ہندوؤں ہی کو دے رکھے تھے۔ لاھوری مل اور دلیپ سنگھ اُس کے مشہور زبردست سیناپتی تھے۔ زمینداروں میں سے رام جیون، دیا رام اور رگھو رام سمے سمے پر بہت ذمہ‌واری کے سینک عہدوں پر رہ چکے تھے۔

نواب علی وردی خاں کے شروع کے زمانے میں ایک ہندو

बड़े संरक्षक थे. विद्यापति ने अपने अमर काव्य में इनमें से एक का यश-गान किया है. बंगाल में उन दिनों ज़मीन्दारों की क़रीब क़रीब वही हालत थी जो मंझले ज़माने के यूरोप में वहां के फ़्यूडल सामन्तों की. मुसलमान बादशाहों ने बंगाल के मशहूर "बारह भुनियों" से नियत सालाना ख़िराज लेकर उन्हें बिलकुल आज़ाद छोड़ रखा था और जब कभी मुग़ल या पठान हुकूमत में कोई कमज़ोरी आती थी, तो यह ख़िराज भी बन्द हो जाता था. देश के भीतरी शासन में इन 12 बंगाली सामन्तों के साथ किसी तरह का दख़ल नहीं किया जाता था.

लोगों में जो आपसी झगड़े या मुक़दमे होते थे, वे ज़्यादातर दोनों फ़रीक़ के चुने हुए पंचों के ज़रिये तै कर दिये जाते थे. बहुत छोटे छोटे मुक़दमे गांव की पंचायत के सामने पेश हो जाते थे और पंचायत का फ़ैसला आख़िरी होता था.

इन 12 सामन्तों में से ज़्यादातर हिन्दू थे. मेजर जनरल सर जान मैलकम ने अपनी पुस्तक "दी लाइफ़ आफ़ रॉबर्ट क्लाइव" ( 1836, जिल्द 1 ) में लिखा है—

"जब इन हिन्दू राजाओं के अधिकार मुसलमान बादशाहों के हाथों में आगए, तो दीवानी और माल के मोहकमों का पूरा इन्तज़ाम और देश के भीतरी शासन की वे सब बारीकियां और छोटे मोटे इन्तज़ाम, जिन पर हुकूमत की मशीन का ठीक ठीक चलना हमेशा मुनहसिर होता है, क़रीब क़रीब सब उन्हीं लोगों के हाथों में रहे, जिनके हाथों में मुसलमानों के आने के पहले रह चुके थे. ख़ज़ाने का सबसे बड़ा हाकिम कोई न कोई हिन्दू होता था, जो कभी वज़ीर कहलाता था और कभी नायब. इस वज़ीर या नायब का ही देश के अमीर से अमीर साहूकारों और धनवान हिन्दुओं से सम्बन्ध होता था.

"एक बहुत होशियार और हाज़िरजवाब मुसलमान बादशाह से पूछा गया कि आप अपने हम-मज़हब मुसलमानों के मुक़ाबले में हिन्दू अफ़सरों और मैनेजरों को क्यों इतना ज़्यादा पसन्द करते हैं ? उसने जवाब दिया—'मुसलमान छलनी की तरह होता है, उसमें जो चीज़ डाली जाय, ज़्यादातर फ़ौरन बाहर निकल आती है. हिन्दू स्पंज की तरह होता है, उसमें जो डाला जाय सब समा जाता है और ज़रूरत के वक़्त दबाने से फिर निकल आता है.

"और भी बातें थीं, जिनके सबब से मुसलमान बादशाह और नवाब अपने दरबार में और अपनी फ़ौजों में दोनों जगह हिन्दुओं को मुक़र्रर करते थे और उन्हें बढ़ाते थे. इन बादशाहों और नवाबों के अपने रिश्तेदार ख़ुदपरस्त होते थे और बग़ावत करते रहते थे. यही हाल मुसलमान सरदारों और उनके अनुयायियों का था. इन सबको दबाये रखने के







بڑے سنرکشک تھے. ودیاپتی نے اپنے امرکاویہ میں اِن میں سے ایک کا یش گان کیا ھے. بنگال میں اُن دنوں زمینداروں کی قریب قریب وھی حالت تھی جو منجھلے زمانے کے یورپ میں وھاں کے فیوڈل سامنتوں کی. مسلمان بادشاھوں نے بنگال کے مشہور "بارہ منیوں" سے نیت سالانہ خراج لیکر اُنھیں بالکل آزاد چھوڑ رکھا تھا اور جب کبھی مغل یا پٹھان حکومت میں کوئی کمزوری آتی تھی' تو یہ خراج بھی بند ھو جاتا تھا. دیش کے بھیتری شاسن میں اِن 12 بنگالی سامنتوں کے ساتھ کسی طرح کا دخل نہیں کیا جاتا تھا.

لوگوں میں جو آپسی جھگڑے یا مقدمے ھوتے تھے' وے زیادہتر دونوں فریق کے چنے ھوئے پنچوں کے ذریعہ طے کردئے جاتے تھے. بہت چھوٹے چھوٹے مقدمے گاؤں کی پنچایت کے سامنے پیش ھو جاتے تھے اور پنچایت کا فیصلہ آخری ھوتا تھا.

اِن 12 سامنتوں میں سے زیادہ‌تر ھندو تھے. میجر جنرل سر جان میلکم نے اپنی پستک "دی لائف آف رابرٹ کلایو" ( 1836' جلد 1 ) میں لکھا ھے—

"جب اِن ھندو راجاؤں کے ادھیکار مسلمان بادشاھوں کے ھاتھوں میں آگئے' تو دیوانی اور مال کے محکموں کا پورا انتظام اور دیش کے بھیتری شاسن کی وے سب باریکیاں اور چھوٹے موٹے انتظام' جن پر حکومت کی مشین کا ٹھیک ٹھیک چلنا ھمیشہ منحصر ھوتا ھے' قریب قریب سب اُنھیں لوگوں کے ھاتھوں میں رھے' جن کے ھاتھوں میں مسلمانوں کے آنے کے پہلے رہ چکے تھے. خزانہ کا سب سے بڑا حاکم کوئی نہ کوئی ھندو ھوتا تھا' جو کبھی وزیر کہلاتا تھا' اور کبھی نایب. اِس وزیر یا نایب کا ھی دیش کے امیر سے امیر ساھوکاروں اور دھنوان ھندوؤں سے سمبندھ ھوتا تھا.

ایک بہت ھوشیار اور حاضر جواب مسلمان بادشاہ سے پوچھا گیا کہ آپ اپنے ھم مذھب مسلمانوں کے مقابلہ میں ھندو افسروں اور مینیجروں کو کیوں اِتنا زیادہ پسند کرتے ھیں؟ اُس نے جواب دیا—"مسلمان چھلنی کی طرح ھوتا ھے' اُس میں جو چیز ڈالی جائے' زیادہتر فوراً باھر نکل آتی ھے. ھندو اِسپنج کی طرح ھوتا ھے' اُس میں جو ڈالا جائے سب سما جاتا ھے اور ضرورت کے وقت دبانے سے پھر نکل آتا ھے."

اور بھی باتیں تھیں' جن کے سبب سے مسلمان بادشاہ اور نواب اپنے دربار میں اور اپنی فوجوں میں دونوں جگہ ھندوؤں کو مقرر کرتے تھے اور اُنھیں بڑھاتے تھے. اُن بادشاھوں اور نوابوں کے اپنے رشتہدار خدپرست ھوتے تھے اور بغاوت کرتے رھتے تھے. یہی حال مسلمان سرداروں اور اُن کے انویائیوں کا تھا. اِن سب کو دبائے رکھنے کے

कभी दिलेर ख़ां को इन राजपूतों के पीछे पीछे रवाना किया. लेकिन जितनी बेएतबारी उसे इन हिन्दू सरदारों की थी, उससे ज्यादा बेएतबारी शहज़ादे मोअज़्ज़म, अकबर और अपने दूसरे बेटों की थी. वह हमेशा इस बात से डरता रहता था कि उसके बेटे कहीं उसी की नक़ल न कर बैठें. औरंगज़ेब के मरने के बाद मोग़ल बादशाहत तेज़ी के साथ टुकड़े टुकड़े होने लगी और उसी तेज़ी के साथ स्वाधीन राजाओं की हैसियत या मुसलमान हुक्मरानों के मातहत सेनापतियों की हैसियत से, देश के शासन में हिन्दुओं का बल बढ़ता चला गया.

हिन्दुओं की उदारता की एक मिसाल हम पारसियों की दे सकते हैं. ये लोग उन पुराने ईरानियों की औलाद हैं, जो आठवीं सदी ईस्वी में, जब अरबों ने ईरान को जीत लिया तो हिन्दुस्तान में जाकर बस गए. ये लोग सबसे पहले गुजरात के समुद्र तट पर संजन नामक जगह पर आकर ठहरे थे. वहां के हिन्दू राजाओं ने इनका बड़े मान और इज़्ज़त के साथ स्वागत किया.

हिन्दुओं की बहादुराना उदारता की बहुत सी मिसालें दी जा सकती हैं. उनमें से एक यह है—औरङ्गज़ेब के लड़के मुहम्मद अकबर ने अपने बाप के ख़िलाफ़ बग़ावत करके राजपूतों की मदद से तख़्त पर क़ब्ज़ा करना चाहा. उसकी कोशिश नाकाम रही, लेकिन राजपूत सरदार दुर्गादास अपने को तरह तरह के ख़तरों में डालकर भी उस अभागे शहज़ादे को बड़ी बहादुरी के साथ राजा शम्भू जी मरहठे के दरबार तक अपने साथ ले गया. औरंगज़ेब अपने पोते और अपनी पोती दोनों को अपने पास बुला लेना चाहता था, उसे दुर्गादास से समझौता करना पड़ा. जदुनाथ सरकार ने अपनी पुस्तक 'औरंगज़ेब' (जिल्द 5, सफ़ा 281-2 ) में इस घटना को इन साफ़ साफ़ शब्दों में बयान किया है—

"मोहम्मद अकबर का दुधमुहां बेटा बुलन्द अख़्तर और उसकी बेटी सफ़ीयतुन्निसा दोनों मारवाड़ में अकबर के राठौर दोस्तों के पास रह गए थे. ये दोनो बच्चे इतने कम उमर थे कि भाग दौड़ की तकलीफ़ों को बर्दाश्त न कर सकते थे, इसलिये दुर्गादास ने सन 1681 में उन्हें एक ऐसी बेनाम जगह में, जहां किसी का भी पहुंचना मुश्किल था, गिरधर जोशी नामक एक ब्राह्मन के सुपुर्द कर दिया. सन 1681 से सन 1696 तक ये दोनों बालक वहीं रहते रहे और न सिर्फ़ उनकी तन्दुरुस्ती और उनके सदाचार का ही पूरा पूरा ख़्याल रखा गया, बल्कि इसलाम मज़हब की भी उन्हें पूरी पूरी तालीम दी जाती रही."

अपने घर के नज़दीक बंगाल में हम देखते हैं कि यहां भी उस ज़माने में फ़िरक़ापरस्ती देखने को नहीं मिलती. बंगाल के ख़ुदमुख़्तार पठान सुलतान बंगला भाषा के बहुत



کبھی دلیر خاں کو اِن راجپوتوں کے پیچھے پیچھے روانہ کیا. لیکن جتنی بےاعتباری اُسے اِن ھندو سرداروں کی تھی، اُس سے زیادہ بےاعتباری شہزادے معظم، اکبر اور اپنے دوسرے بیٹوں کی تھی. وہ ھمیشہ اس بات سے ڈرتا رھتا تھا کہ اُس کے بیٹے کہیں اُسی کی نقل نہ کر بیٹھیں. اورنگزیب کے مرنے کے بعد مغل بادشاہت تیزی کے ساتھ ٹکڑے ٹکڑے ھونے لگی اور اُسی تیزی کے ساتھ سوادھین راجاؤں کی حیثیت یا مسلمان حکمرانوں کے ماتحت سیناپتیوں کی حیثیت سے، دیش کے شاسن میں ھندوؤں کا بل بڑھتا چلا گیا.

ھندوؤں کی اُدارتا کی ایک مثال ھم پارسیوں کی دے سکتے ھیں. یہ لوگ اُن پرانے ایرانیوں کی اولاد ھیں، جو آٹھویں صدی عیسوی میں، جب عربوں نے ایران کو جیت لیا تو ھندستان میں جاکر بس گئے. یہ لوگ سب سے پہلے گجرات کے سمدرتٹ پر سانجن نامک جگہ پر آکر ٹھہرے تھے. وھاں کے ھندو راجاؤں نے اِن کا بڑے مان اور عزت کے ساتھ سواگت کیا.

ھندوؤں کی بہادرانہ اُدارتا کی بہت سی مثالیں دی جاسکتی ھیں. اُن میں سے ایک یہ ھے—اورنگزیب کے لڑکے محمد اکبر نے اپنے باپ کے خلاف بغاوت کرکے راجپوتوں کی مدد سے تخت پر قبضہ کرنا چاھا. اُس کی کوشش ناکام رھی، لیکن راجپوت سردار درگا داس اپنے کو طرح طرح کے خطروں میں ڈالکر بھی اس ابھاگے شہزادے کو بڑی بہادری کے ساتھ راجہ شمبھو جی مرھٹے کے دربار تک اپنے ساتھ لے گیا. اورنگزیب اپنے پوتے اور اپنی پوتی دونوں کو اپنے پاس بلا لینا چاھتا تھا، اُسے درگا داس سے سمجھوتہ کرنا پڑا. جدوناتھ سرکار نے اپنی پستک "اورنگزیب" (جلد 5، صفحہ 281-2) میں اِس گھٹنا کو اِن صاف صاف شبدوں میں بیان کیا ھے—

"محمد اکبر کا دودھ مونہا بیٹا بلند اختر اور اُس کی بیٹی صفیۃ النساء دونوں مارواڑ میں اکبر کے راٹھور دوستوں کے پاس رہ گئے تھے. یہ دونوں بچے اتنے کم عمر تھے کہ بھاگ دوڑ کی تکلیفوں کو برداشت نہ کرسکتے تھے، اِس لئے درگا داس نے سن 1681 میں اُنھیں ایک ایسی بےنام جگہ میں، جہاں کسی کا بھی پہونچنا مشکل تھا، گردھر جوشی نامک ایک براھمن کے سپرد کردیا. سن 1681 سے سن 1696 تک یہ دونوں بالک وھیں رھتے رھے اور نہ صرف اُن کی تندرستی اور اُن کے سداچار کا ھی پورا پورا خیال رکھا گیا، بلکہ اِسلام مذھب کی بھی اُنھیں پوری پوری تعلیم دی جاتی رھی."

اپنے گھر کے نزدیک بنگال میں ھم دیکھتے ھیں کہ یہاں بھی اُس زمانہ میں فرقہ‌پرستی دیکھنے کو نہیں ملتی. بنگال کے خود مختار پٹھان سلطان بنگلا بھاشا کے بہت

उसके ज़ुल्मों के होते हुए भी हेमू ने सल्तनत को टुकड़े टुकड़े होने से रोके रखा."

सम्राट औरंगज़ेब 1659 ई० से 1707 ई० तक दिल्ली के तख़्त पर रहा. औरंगज़ेब के ज़माने में भी साम्राज्य के अन्दर बड़ी बड़ी ज़िम्मेवारी के ओहदे हिन्दुओं को मिले हुए थे. बङ्गाल में मुर्शिद क़ुली ख़ां औरंगज़ेब का वायसराय था. मुर्शिद क़ुली ख़ां के मातहत दीवानी के मोहकमे के तमाम बड़े बड़े ओहदे सिर्फ़ हिन्दुओं ही के हाथों में थे. हिन्दुओं का उन पर एकाधिपत्य था. बड़े बड़े फ़ौजी ओहदे भी हिन्दुओं को मिले हुए थे. अगर मुग़ल सम्राट की प्रकृति के अन्दर हिन्दुओं से नफ़रत होती, तो वह अपने वायसराय को इससे रोक देता, बल्कि ऐसा करने के लिये उसे डांटता. दिल्ली दरबार के अन्दर भी माल के मोहकमे का असली कर्ता धर्ता और सब से बड़ा अफ़सर हिन्दू था.

जदुनाथ सरकार ने अपनी किताब "औरंगज़ेब" ( जिल्द 3 पृश्ठ 72 ) में लिखा है—

"इस पर भी जब जाफ़र ख़ां वज़ीर आज़म बनाया गया, और जब तक तख़्त के लिये लड़ाइयां होती रहीं वही वज़ीर आज़म रहा, उस तमाम समय में माल के मोहकमे की असली हुकूमत और सारा इन्तज़ाम बूढ़े और तजुरबेकार नायब दीवान रघुनाथ खत्री के हाथों में रहा. दीवान रघुनाथ 'राम-ए-रायां' कहलाता था. तख़्त पर बैठने के बाद औरंगज़ेब ने दीवानी के इस आरज़ी इन्तज़ाम को जारी रखा और 15 जून सन 1658 को दीवान रघुनाथ को राजा का ख़िताब देकर दरबार के अमीरों में शामिल कर लिया. राजा रघुनाथ निहायत ईमानदार, मेहनती, अपने कारोबार में होशियार और राज के कारोबार के लिये असाधारन योग्यता रखने वाला आदमी था."

आम तौर पर यह कहा जाता है कि औरंगज़ेब ने अपने तास्सुब और अपनी अनुदारता से अपनी हिन्दू रिआया को नाराज़ कर लिया. लेकिन एलफिंस्टन ने अपनी "हिस्ट्री आफ़ इन्डिया" में लिखा है कि औरंगज़ेब की हुकूमत में भी—

"यह पता नहीं चलता कि किसी एक हिन्दू को भी अपने मज़हब की वजह से मौत की सज़ा या क़ैद की सज़ा या माली सज़ा बर्दाश्त करनी पड़ी हो, या किसी एक शख़्स से भी कभी अपने पुरखों के मज़हब पर खुले अमल करने के लिए जवाब तलब किया गया हो."

औरंगज़ेब को जब शिवाजी के ख़िलाफ़ फ़ौज भेजनी पड़ी तो उसने राजपूत सरदार जसवन्त सिंह और उसके बाद जय सिंह को इस काम के लिए भेजा. यह भी सच है कि औरंगज़ेब अविश्वासी स्वभाव का था और उसने कभी



اُس کے ظلموں کے ھوتے ھوئے بھی ھیموں نے سلطنت کو ٹکڑے ٹکڑے ھونے سے روکے رکھا ."

سمراٹ اورنگزیب 1659 عیسوی سے 1707 عیسوی تک دلی کے تخت پر رھا . اورنگزیب کے زمانے میں بھی سامراجیہ کے اندر بڑی بڑی ذمہ‌واری کے عہدے ھندؤں کو ملے ھوئے تھے . بنگال میں مرشد قلی خاں اورنگزیب کا وائسرائے تھا . مرشد قلی خاں کے ماتحت دیوانی کے محکمے کے تمام بڑے بڑے عہدے صرف ھندؤں ھی کے ھاتھوں میں تھے. ھندؤں کا اُن پر ایکادھیپتیہ تھا . بڑے بڑے فوجی عہدے بھی ھندؤں کو ملے ھوئے تھے . اگر مغل سمراٹ کی پرکرتی کے اندر ھندؤں سے نفرت ھوتی' تو وہ اپنے وائسرائے کو اِس سے روک دیتا' بلکہ ایسا کرنے کے لئے اُسے ڈانٹتا . دلی دربار کے اندر بھی مال کے محکمے کا اصلی کرتا دھرتا اور سب سے بڑا افسر ھندو تھا .

جدو ناتھ سرکار نے اپنی کتاب "اورنگزیب" (جلد 3 پرشٹھ 72 ) میں لکھا ھے—

"اِس پر بھی جب جعفر خاں وزیرآعظم بنایا گیا' اور جب تک تخت کے لئے لڑائیاں ھوتی رھیں وھی وزیرآعظم رھا' اُس تمام سمے میں مال کے محکمہ کی اصلی حکومت اور سارا انتظام بوڑھے اور تجربہ‌کار نایب دیوان رگھوناتھ کھتری کے ھاتھوں میں رھا . دیوان رگھوناتھ 'رام - اے - رایاں' کہلاتا تھا . تخت پر بیٹھنے کے بعد اورنگزیب نے دیوانی کے اِس عارضی انتظام کو جاری رکھا اور 15 جون سن 1658 کو دیوان رگھوناتھ کو راجا کا خطاب دیکر دربار کے امیروں میں شامل کرلیا . راجا رگھوناتھ نہایت ایماندار' محنتی' اپنے کاروبار میں ھوشیار اور راج کے کاروبار کے لئے اسادھارن یوگتا رکھنے والا آدمی تھا ."

عام طور پر یہ کہا جاتا ھے کہ اورنگزیب نے اپنے تعصب اور اپنی انودارتا سے اپنی ھندو رعایا کو ناراض کرلیا . لیکن الفنسٹن نے اپنی "ھسٹری آف اِنڈیا" میں لکھا ھے کہ اورنگزیب کی حکومت میں بھی—

"یہ پتہ نہیں چلتا کہ کسی ایک ھندو کو بھی اپنے مذھب کی وجہ سے موت کی سزا یا قید کی سزا یا مالی سزا برداشت کرنی پڑی ھو' یا کسی ایک شخص سے بھی کبھی اپنے پرکھوں کے مذھب پر کھلے عمل کرنے کے لئے جواب طلب کیا گیا ھو ."

"اورنگزیب کو جب شواجی کے خلاف فوج بھیجنی پڑی تو اُس نے راجپوت سردار جسونت سنگھ اور اُس کے بعد جے سنگھ کو اِس کام کے لئے بھیجا . یہ بھی سچ ھے کہ اورنگزیب اوشواسی سوبھاؤ کا تھا اور اُس نے کبھی

**अजीब मालूम होगी, लेकिन बात यही है कि साम्प्रदायिकता अभी हाल की पैदावार है और राजनैतिक ग़रज़ को पूरा करने के लिये उसे बढ़ाया गया.**

एलफ़िंसटन ने अपनी 'हिस्ट्री आफ़ इन्डिया' में लिखा है—

"हिन्दुओं को कुछ नाचीज़ समझा जाता था, लेकिन उन्हें दुश्मन नहीं समझा जाता था. उन्हें जज़िया देना होता था और उनसे कुछ और भेद भाव भी था, लेकिन उनके अपने धर्म के पालन करने में किसी तरह की रुकावट नहीं थी, न उन्हें इसके लिये कोई तकलीफ़ दी जाती थी. बहुत से हिन्दुओं का ज़िक्र फ़ौजी सेनापतियों की हैसियत से आता है. ये लोग शायद ज़मींदार होते थे, जो अपने अपने यहां की फ़ौजों के नायक बनकर आते थे, मुमकिन है कि वे बादशाह के मुक़र्रिर किये हुए अफ़सर न रहे हों; लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि दीवानी के मोहकमों में और ख़ासकर माल और ख़ज़ाने के मोहकमों में बहुत से हिन्दू बड़े बड़े ओहदों पर मुक़र्रर थे...मुबारक ख़िलजी ने सन 1317 से सन 1321 तक हुकूमत की. उसके ज़माने में दरबार और हुकूमत का सारा रंग ढंग ही हिन्दू था.

"शेरशाह की फ़ौज में हिन्दुओं को बड़े बड़े ओहदे दिये जाते थे. शेरशाह की यह नीति उसके शुरू के दिनों से ही चली आती थी. उसके अच्छे से अच्छे सेनापतियों में से एक ब्रह्मजीत गौड़ था. चौसा और बिलग्राम की लड़ाई के बाद ब्रह्मजीत गौड़ को हुमायूं का पीछा करने के लिये भेजा गया था. इतिहास से पता चलता है कि इससे बहुत पहले हिन्दू महमूद ग़ज़नी के ज़माने में भी मुसलमान सेना के अफ़सर मुक़र्रर किये जाते थे.

"शेरशाह पहला आदमी था, जिसने एक ऐसा भारतीय साम्राज्य क़ायम करने की कोशिश की जो सारी भारतीय जनता की हमदर्दी के सहारे क़ायम था." इतिहास लेखक कीन लिखता है कि "इस पठान की हुकूमत से जितनी बुद्धिमत्ता प्रकट होती है, उतनी किसी भी दूसरी हुकूमत में ज़ाहिर नहीं होती. अंग्रेज़ी हुकूमत में भी उतनी बुद्धिमत्ता दिखाई नहीं देती."

"मोहम्मद आदिलशाह ने (1553 ई०) अपनी हुकूमत का सारा कारोबार हेमू नाम के एक हिन्दू को सौंप रखा था. हेमू किसी समय एक छोटा सा दूकानदार रह चुका था और कहा जाता है कि देखने में वह और भी ज़्यादा छोटा और मामूली सा मालूम होता था. लेकिन इन सब बाहरी कमियों के होते हुए भी हेमू में वह योग्यता थी और उसके दिमाग़ में इतनी ताक़त थी कि दरबार के अभिमानी और युद्ध प्रेमी सरदारों और अमीरों के बीच में वह अपने बड़प्पन को क़ायम रख सकता था, और बादशाह की बेवक़ूफ़ियों और



عجیب معلوم ہوگی، لیکن بات یہی ہے کہ سامپردایکتا ابھی حال کی پیداوار ہے اور راجنیتک غرض کو پورا کرنے کے لئے اُسے بڑھایا گیا .

الفنسٹن نے اپنی ہسٹری آف اِنڈیا' میں لکھا ہے—

"ہندوؤں کو کچھ ناچیز سمجھا جاتا تھا' لیکن اُنہیں دشمن نہیں سمجھا جاتا تھا . اُنہیں جزیہ دینا ہوتا تھا اور اُن سے کچھ اور بھید بھاؤ بھی تھا' لیکن اُن کے اپنے دھرم کے پالن کرنے میں کسی طرح کی رکاوٹ نہیں تھی' نہ اُنہیں اِس کے لئے کوئی تکلیف دی جاتی تھی . بہت سے ہندوؤں کا ذکر فوجی سیناپتیوں کی حیثیت سے آتا ہے . یہ لوگ شاید زمیندار ہوتے تھے' جو اپنے اپنے یہاں کی فوجوں کے نایک بنکر آتے تھے' ممکن ہے کہ وے بادشاہ کے مقرر کئے ہوئے افسر نہ رہے ہوں' لیکن اِس میں کوئی شک نہیں کہ دیوانی کے محکموں میں اور خاصکر مال اور خزانے کے محکموں میں بہت سے ہندو بڑے بڑے عہدوں پر مقرر تھے .... مبارک خلجی نے سن 1317 سے سن 1321 تک حکومت کی . اُس کے زمانے میں دربار اور حکومت کا سارا رنگ ڈھنگ ہی ہندو تھا .

"شیر شاہ کی فوج میں ہندوؤں کو بڑے بڑے عہدے دیئے جاتے تھے . شیر شاہ کی یہ نیتی اُس کے شروع کے دنوں سے ہی چلی آتی تھی . اُس کے اچھے سے اچھے سیناپتیوں میں سے ایک برہمجیت گوڑ تھا. چونسہ اور بلگرام کی لڑائی کے بعد برہمجیت گوڑ کو ہمایوں کا پیچھا کرنے کے لئے بھیجا گیا تھا . اِتہاس سے پتہ چلتا ہے کہ اِس سے بہت پہلے ہندو محمود غزنی کے زمانے میں بھی مسلمان سینا کے افسر مقرر کئے جاتے تھے .

"شیر شاہ پہلا آدمی تھا' جس نے ایک ایسا بھارتیہ سامراجیہ قایم کرنے کی کوشش کی جو ساری بھارتیہ جنتا کی ہمدردی کے سہارے قایم تھا ." اِتہاس لیکھک کین لکھتا ہے کہ "اِس پٹھان کی حکومت سے جتنی بدھیمتا پرکٹ ہوتی ہے' اُتنی کسی بھی دوسری حکومت میں ظاہر نہیں ہوتی. انگریزی حکومت میں بھی اُتنی بدھیمتا دکھائی نہیں دیتی ."

"محمد عادل شاہ نے (1553 عیسوی) اپنی حکومت کا سارا کاروبار ہیموں نام کے ایک ہندو کو سونپ رکھا تھا . ہیموں کسی سمے ایک چھوٹا سا دوکاندار رہ چکا تھا اور کہا جاتا ہے کہ دیکھنے میں وہ اور بھی زیادہ چھوٹا اور معمولی سا معلوم ہوتا تھا . لیکن اِن سب باہری کمیوں کے ہوتے ہوئے بھی ہیموں میں وہ یوگتا تھی اور اُس کے دماغ میں اتنی طاقت تھی کہ دربار کے ابھیمانی اور یدھ پریمی سرداروں اور امیروں کے بیچ میں وہ اپنے بڑپن کو قایم رکھ سکتا تھا' اور بادشاہ کی بیوقوفیوں اور

# बीसवीं सदी से पहले का भारत



स्वर्गीय आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय

एलफिन्स्टन अपनी पुस्तक में लिखता है—

"अलाउद्दीन ख़िलजी 1295 ई० से 1314 ई० तक दिल्ली का सुलतान था. वह कहा करता था कि मज़हब का मुल्क की हुकूमत के साथ कोई ताल्लुक़ नहीं. मज़हब सिर्फ़ आदमी की निजी ज़िन्दगी की चीज़ है, बल्कि सच पूछिये तो घर में बैठकर मनबहलाव की चीज़ है."

छै सौ बरस बाद बीसवीं सदी के शुरू में लेनिन कहा करता था—"मज़हब लोगों की अफ़ीम है." कमालपाशा की राय थी कि—"जिस तरह ज्वालामुखी पहाड़ से निकला हुआ राख का ढेर ख़ूब मोटा और कड़ा होकर नीचे की धधकती हुई आग को ढंक देता है, उसी तरह मज़हब सारी क़ौम की धधकती हुई आत्मा को ढंके और दबाये रखता है."—("ग्रे वुल्फ़" आर्मस्ट्रांग सफ़ा 241.)

के० क़ानूनगो ने अपनी पुस्तक "शेरशाह" में लिखा है—"शेरशाह (1542-45) का मक़सद यह था कि सल्तनत का सारा कारोबार मज़हब को बिलकुल अलग रखकर चलाया जावे, हुकूमत का मज़हब से कोई सम्बन्ध न रहे. वह समझता था कि मज़हब का लोगों के सामाजिक या सार्वजनिक जीवन से कोई ताल्लुक़ नहीं, मज़हब हर आदमी की अपनी चीज़ है, जिसका ताल्लुक़ सिर्फ़ उसकी निजी ज़िन्दगी से है."

ग्रांट डफ़ ने अपनी "हिस्ट्री आफ़ दी मरहट्टाज़" में लिखा है कि—"सन 1739 में जब नादिरशाह का हमला हुआ तो पेशवा बाजीराव ने अपने राज बढ़ाने आदि की सब तजवीज़ों को रोक दिया और कहा कि 'हमारे आपसी झगड़े अब सब बेमाइने हैं, हिन्दुस्तान भर में सिर्फ़ एक ही दुशमन है......हिन्दुओं और मुसलमानों सब को, दक्खिन की सब ताक़तों को, एक जगह मिल जाना चाहिये."

चौदहवीं सदी ईस्वी तक मुसलमानों की हुकूमत न सिर्फ़ उत्तर भारत में बल्कि दक्खिन में भी ख़ासी अच्छी तरह जम गई थी. उस समय से लेकर बीसवीं सदी के शुरू तक 600 बरस के हिन्दुस्तान के इतिहास से यह ज़ाहिर है कि उस तमाम समय में इस देश के अन्दर साम्प्रदायिकता या फ़िरक़ापरस्ती का कहीं शायद नाम भी न था. यह बात

# بیسویں صدی سے پہلے کا بھارت

سورگیہ آچاریہ پرپھلہ چندر رائے

الفنسٹن اپنی پستک میں لکھتا ھے—

"علاؤالدین خلجی 1295 عیسوی سے 1314 عیسوی تک دلی کا سلطان تھا. وہ کہا کرتا تھا کہ مذہب کا ملک کی حکومت کے ساتھ کوئی تعلق نہیں. مذہب صرف آدمی کی نجی زندگی کی چیز ھے بلکہ سچ پوچھئے تو گھر میں بیٹھکر من بہلاؤ کی چیز ھے."

چھ سو برس بعد بیسویں صدی کے شروع میں لینن کہا کرتا تھا—"مذہب لوگوں کی افیم ھے." کمال پاشا کی رائے تھی کہ—"جس طرح جوالامکھی پہاڑ سے نکلا ھوا راکھ کا ڈھیر خوب موٹا اور کڑا ھوکر نیچے کی دھدھکتی ھوئی آگ کو ڈھانک دیتا ھے اُسی طرح مذہب ساری قوم کی دھدھکتی ھوئی آتما کو ڈھنکے اور دبائے رکھتا ھے."—("گرے والف" آرم اسٹرانگ صفحہ 241.)

کے. قانونگو نے اپنی پستک "شیر شاہ" میں لکھا ھے—"شیر شاہ (1542-45) کا مقصد یہ تھا کہ سلطنت کا سارا کاروبار مذہب کو بالکل الگ رکھکر چلایا جاوے' حکومت کا مذہب سے کوئی سمبندھ نہ رھے. وہ سمجھتا تھا کہ مذہب کا لوگوں کے سماجک یا ساروجنک جیون سے کوئی تعلق نہیں' مذہب ھر آدمی کی اپنی چیز ھے' جس کا تعلق صرف اُس کی نجی زندگی سے ھے."

گرانٹ ڈف نے اپنی "ھسٹری آف دی مرھٹاز" میں لکھا ھے کہ—"سن 1739 میں جب نادر شاہ کا حملہ ھوا تو پیشوا باجی راؤ نے اپنے راج بڑھانے آدی کی سب تجویزوں کو روک دیا اور کہا کہ 'ھمارے آپسی جھگڑے اب سب بے معنے ھیں' ھندستان بھر میں صرف ایک ھی دشمن ھے......ھندوؤں اور مسلمانوں سب کو دکھن کی سب طاقتوں کو' ایک جگہ مل جانا چاھئیے"

چودھویں صدی عیسوی تک مسلمانوں کی حکومت نہ صرف اُتر بھارت میں بلکہ دکھن میں بھی خاصی اچھی طرح جم گئی تھی. اُس سمے سے لیکر بیسویں صدی کے شروع تک 600 برس کے ھندستان کے اِتہاس سے یہ ظاھر ھے کہ اُس تمام سمے میں اِس دیش کے اندر سامپردایکتا یا فرقہ پرستی کا کہیں شاید نام بھی نہ تھا. یہ بات

अब रहा पूरे शरीर को दफ़न करने का रिवाज सो यह रिवाज भी वैदिक आर्यों में एक समय मौजूद था. शतपथ ब्राह्मन में क़ब्र के इस्तेमाल के बारे में लिखा है—"यह बिल्कुल ठीक आदमी जितनी लम्बी बनानी चाहिए, ताकि उसमें किसी दूसरे के लिये जगह न रहे, ऊपर मिट्टी से ढंक कर दोनों तरफ़ किनारा बना लेना चाहिए. फिर उसे पत्थरों से घेर देना चाहिए." ( 13. 8. 1, 2. 9, 12 ) इतिहास से पता चलता है कि और बहुत से देशों और दूसरी सभ्यताओं में भी पहले गाड़ने का रिवाज रहा है और फिर धीरे धीरे जलाने का रिवाज पड़ा है."

मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा की खुदाई की और चीज़ों का ज़िक्र भी वेदों में मिलता है; उदाहरन के लिये ऋग्वेद में 'अट्टालिका' यानी' ईंट की हवेली का ज़िक्र आता है. सिन्धु नदी की सभ्यता के दूसरे धार्मिक रिवाजों के बारे में ख़ुद सर जान मार्शल ने लिखा है—"इनमें से बहुत से मजहबी एतक़ाद वैदिक काल के पिछले हिस्से में और वेदों के बाद के संस्कृत साहित्य में मिलते हैं. मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा में जितनी धार्मिक ढंग की चीज़ें मिली हैं, वह ख़ास तौर पर हिन्दुस्तानी मालूम होती हैं." आजकल आम लोग जिसे हिन्दू धर्म कहते हैं, उसकी क़रीब क़रीब सब बातें सिन्धु नदी की सभ्यता में मिलती हैं. 'स्वस्तिका' का चिन्ह दोनों जगह मिलता है. वैदिक देवताओं सूर्य, अग्नि, सोम और अदिति की पूजा से सम्बन्ध रखने वाली सब क्रियाएं और रूढ़ियां इस नई सभ्यता में मिली हैं.

मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा में मनुश्यों की जो खोपड़ियां मिली हैं, उन तक के बारे में विद्वानों और विशेशज्ञों का मत है कि ठीक उसी तरह की खोपड़ियां हम आजकल के हिन्दुस्तान के रहने वाले अपने कन्धों के ऊपर लिये फिरते हैं.

सारांश यह कि वैदिक काल की संस्कृति और सिन्धु नदी के किनारे के लोगों की संस्कृति और आजकल की हिन्दुस्तानी संस्कृति तीनों कोई अलग अलग एक दूसरे से बेसिलसिला चीज़ें नहीं हैं; बल्कि वह संस्कृति की एक ही धारा है, जो हजारों बरस पहले से लेकर आज तक बहती चली आ रही है और जिस में समय और परिस्थिति के फेर के मुताबिक़ संसार की और सब चीज़ों की तरह तब्दीलियां होती रही हैं और होती रहेंगी.

---



اب رہا پورے شریر کو دفن کرنے کا رواج سو یہ رواج بھی ویدک آریوں میں ایک سمے موجود تھا . شتپتھ براھمن میں قبر کے استعمال کے بارے میں لکھا ھے —" یہ بالکل ٹھیک آدمی جتنی لمبی بنانی چاھئیے' تاکہ اِس میں کسی دوسرے کے لئے جگہ نہ رھے' اوپر مٹی سے ڈھنک کر دونوں طرف کنارا بنا لینا چاھئے . پھر اُسے پتھروں سے گھیر دینا چاھئے ." ( 13.8.1,2,9,12 ) اتہاس سے پتہ چلتا ھے کہ اور بہت سے دیشوں اور دوسری سبھیتاؤں میں بھی پہلے گاڑنے کا رواج رھا ھے اور پھر دھیرے دھیرے جلانے کا رواج پڑا ھے . "

موھن جو-دڑو . اور ھڑپہ کی کھدائی اور چیزوں کا ذکر بھی ویدوں میں ملتا ھے . اُداھرن کے لئے رگ وید میں ' اٹالکا ' یعنی اینٹ کی حویلی کا ذکر آتا ھے . سندھو ندی کی سبھیتا کے دوسرے دھارمک رواجوں کے بارے میں خود سرجان مارشل نے لکھا ھے —" اِن میں سے بہت سے مذھبی اعتقاد ویدک کال کے پچھلے حصے میں اور ویدوں کے بعد کے سنسکرت ساھتیہ میں ملتے ھیں . موھن . جو-دڑو اور ھڑپہ میں جتنی دھارمک ڈھنگ کی چیزیں ملی ھیں' وہ خاص طور پر ھندستانی معلوم ھوتی ھیں ." آجکل عام لوگ جسے ھندو دھرم کہتے ھیں' اُس کی قریب قریب سب باتیں سندھو ندی کی سبھیتا میں ملتی ھیں . ' سوستیکا ' کا چنھ دونوں جگہ ملتا ھے . ویدک دیوتاؤں سوریہ' اگنی' سوم اور ادیتی کی پوجا سے سمبندھ رکھنے والی سب کریائیں اور روڑھیاں اِس نئی سبھیتا میں ملی ھیں.

موھن-جو-دڑو اور ھڑپہ میں منشیوں کی جو کھوپڑیاں ملی ھیں' ان تک کے بارے میں ودوانوں اور وشیشگیوں کا مت ھے کہ ٹھیک اُسی طرح کی کھوپڑیاں ھم آج کل کے ھندستان کے رھنے والے اپنے کندھوں کے اوپر لئے پھرتے ھیں .

سارانش یہ کہ ویدک کال کی سنسکرتی اور سندھو ندی کے کنارے کے لوگوں کی سنسکرتی اور آجکل کی ھندستانی سنسکرتی تینوں کوئی الگ الگ ایک دوسرے سے بے سلسلہ چیزیں نہیں ھیں؛ بلکہ وہ سنسکرتی کا ایک ھی دھارا ھے' جو ھزاروں برس پہلے سے لے کر آج تک بہتی چلی آ رہی ھے اور جس میں سمے اور پرستھتی کے پھیر کے مطابق سنسار کی اور سب چیزوں کی طرح تبدیلیاں ھوتی رھی ھیں اور ھوتی رھیں گی .

हुए हैं इत्यादि. श्री के० एन० दीक्षित ने अपनी पुस्तक "दी हिस्टारिक सिवलीजेशन आफ़ दी इन्डस वैली" में लिखा है कि इस चित्रकारी में यह दिखाया गया है कि उस जमाने के विश्वासों ( एतक़ादों ) के मुताबिक़ मरने के बाद मनुश्य की क्या क्या गति होती थी. ऋग्वेद के अनुसार मौत के देवता यम के साथ दो कुत्ते रहते हैं ( ऋग्वेद 10. 16, 10-12 ). ऋग्वेद ही से यह भी पता चलता है कि वैदिक काल में मुर्दे के पास तीर और कमान रख देने का रिवाज था. ( ऋग्वेद 10,18.9 ). वैदिक काल में लोगों को विश्वास था कि—"ज़िन्दा इनसानों का फ़र्ज़ है कि वे मुरदा मनुश्यों के लिये दूसरी दुनिया में रास्ता तैयार कर दें, यम के राज्य में उनकी महान यात्रा के लिये खाने पीने का सामान उनके साथ रख दें और रास्ते की नदियों को पार करने का उनके लिये इन्तज़ाम कर दें. 'उत्क्रान्ति' या 'वैतरनी' गाय से यह काम लिया जाता था. लोग अकसर मरने से पहले खुद ब्राह्मन को गाय दान दे देते थे या उनके पुत्र दे देते थे. यही काम 'अनुस्तरनी गाय' से लिया जाता था. यह गाय अर्थी के साथ साथ ले जाई जाती थी. फिर उसके अंग अंग अलग कर के मुर्दे के अंगों पर रख दिये जाते थे. उसके गुर्दे मुर्दे के हाथों में दे दिये जाते थे और कह दिया जाता था कि यह गुर्दे यम के कुत्तों के खाने के लिये हैं" वग़ैरा.

हड़प्पा के बर्तनों पर जो बैलों की सी शक्लें हैं, वह मालूम होता है 'वैतरनी' और 'अनुस्तरनी' हैं. 'ऋग्वेद' ( 10. 16. 7 ) में, 'अश्वलायन गृह्य सूत्र' ( 4. 3 ) में, 'ऐतरेय ब्राह्मन' ( 3. 8 ) में और 'कात्यायन स्रोत सूत्र' ( 25. 7. 30 ), इन सब में अनुस्तरनी गाय का ज़िक्र आता है. और रामायन ( 4. 44. 65 ) में, महाभारत ( 2. 373; 3. 6054, 4148 ) और हरिवंश ( 7736, 9511 ) में वैतरनी का ज़िक्र आता है. ऋग्वेद में "इस सम्बन्ध में अग्नि का आह्वान करते हुए लिखा है—

"हे जात वेदस् यह बकरा तुम्हारा भाग है, इसे जला दो. तुम्हारी तेज़ लपट, तुम्हारी चमक दमक इसे जला डाले, और इस मुरदा आदमी को पवित्र आत्माओं के लोक तक पहुंचा दो." ( 10, 16. 4 ).

इस बकरे के भी अंग अंग अलग करके लाश के ऊपर रख दिये जाते थे. ऋग्वेद के इसी मंडल के दूसरे मन्त्रों में अन्त्येष्टि क्रिया की और सब तफ़सीलें दी हुई हैं.

हड़प्पा के कुछ बर्तनों में बहुत छोटे बच्चों की लाशें भी मिली हैं. हिन्दुओं में आज तक कहीं कहीं छोटे बच्चों को हांडी में बन्द करके दफ़न करने का रिवाज मौजूद है. मध्य एशिया की खुदाइयों में भी इस तरह का रिवाज मिला है.



ہوئے ہیں اتیادی. شری کے. این. دکچھت نے اپنی پستک " دی ہسٹارک سولائزیشن آف دی انڈس ویلی " میں لکھا ہے کہ اِس چترکاری میں یہ دکھایا گیا ہے کہ اُس زمانے کے وشواسوں ( اعتقادوں ) کے مطابق مرنے کے بعد منشیہ کی کیا کیا گتی ہوتی تھی. رگ وید کے انوسار موت کے دیوتا یم کے ساتھ دو کتے رہتے ہیں ( رگ وید 12-10-16 .10) رگ وید ہی سے یہ بھی پتہ چلتا ہے کہ ویدک کال میں مردے کے پاس تیر اور کمان رکھ دینے کا رواج تھا. (رگ وید 10,18.9) ویدک کال میں لوگوں کو وشواس تھا کہ—" زندہ انسانوں کا فرض ہے کہ وے مردہ منشیوں کے لئے دوسری دنیا میں راستہ تیار کر دیں، یم کے راجیہ میں اُن کی مہان یاترا کے لئے کھانے پینے کا سامان ان کے ساتھ رکھ دیں اور راستے کی ندیوں کو پار کرنے کا ان کے لئے انتظام کر دیں. ' اتکرانتی ' یا ' ویترنی ' گائے سے یہ کام لیا جاتا تھا. لوگ اکثر مرنے سے پہلے خود براہمن کو گائے دان دے دیتے تھے یا اُن کے پتر دے دیتے تھے. یہی کام ' انسترنی گائے ' سے لیا جاتا تھا. یہ گائے ارتھی کے ساتھ ساتھ لے جائی جاتی تھی. پھر اُس کے انگ انگ الگ کر کے مردے کے انگوں پر رکھ دیئے جاتے تھے. اِس کے گردے مردے کے ہاتھوں میں دے دیئے جاتے تھے اور کہہ دیا جاتا تھا کہ یہ گردے یم کے کتوں کے کھانے کے لئے ہیں" وغیرہ.

ہڑپہ کے برتنوں پر جو بیلوں کی سی شکلیں ہیں، وہ معلوم ہوتا ہے ' ویترنی ' اور انسترنی ہیں. ' رگ وید ' (10.16.7) میں ' اشولاین گرہ سوتر ' (4.3) میں، ایتریہ براہمن ' ( 3.8 ) میں اور ' کاتیاین ستروت سوتر ' (25.7.30) اِن سب میں انوسترنی گائے کا ذکر آتا ہے. اور رامائن ( 4.44.65 ) میں، مہابھارت ( 2.373,3.6054,4148 ) اور ہری ونش ( 7736,9511 ) میں ویترنی کا ذکر آتا ہے. رگ وید میں " اِس سمبندھ میں اگنی کا آہوان کرتے ہوئے لکھا ہے—

" ہے جات ویدس یہ بکرا تمہارا بھاگ ہے، اسے جلا دو. تمہاری تیز لپٹ، تماری چمک دمک اِسے جلا ڈالے، اور اِس مردہ آدمی کو پوتر آتماؤں کے لوک تک پہنچا دو." (10,16.4).

اِس بکرے کے بھی انگ انگ الگ کر کے لاش کے اوپر رکھ دیئے جاتے تھے. رگ وید کے اِسی منڈل کے دوسرے منتروں میں انتیشٹ کریا کی اور سب تفصیلیں دی ہوئی ہیں.

ہڑپہ کے کچھ برتنوں میں بہت چھوٹے بچوں کی لاشیں بھی ملی ہیں. ہندوں میں آج تک کہیں کہیں چھوٹے بچوں کو ہانڈی میں بند کر کے دفن کرنے کا رواج موجود ہے. مدھیہ ایشیا کی کھدائیوں میں بھی اِس طرح کا رواج ملا ہے.

"उद्दीत:" अर्थात् मुर्दे को बाहर छोड़ देना और जानवरों को खाने देना ( 18. 2. 34 ).

'बृहदारन्यक उपनिशद्' में याज्ञवल्क्य ने साकल से बात करते हुए कहा है—"हे अहर्ल्लिक, जब दिल हमारे जिस्म को छोड़कर कहीं और चला जाता है, तब समझ रक्खो कि कुत्ते उस शरीर को खाते हैं, पक्षी उसके टुकड़े टुकड़े करते हैं, हृदय के न होने के कारन शरीर का यह अन्त होता है." ( अध्याय 3 ब्राह्मन, 10, 25 ). जाहिर है कि उस जमाने में मुरदा शरीर को पशुओं और पक्षियों के खाने के लिए छोड़ देने का रिवाज भी था, और उसके कुछ दिनों बाद बची हुई हड्डियों को जमा करके दफ़न कर देने का रिवाज पड़ा. उसी उपनिशद् में लिखा है कि जब याज्ञ-वल्क्य ने साकल को हरा दिया और साकल का सिर कटकर गिर पड़ा, तो साकल के शागिर्द साकल की हड्डियां जमा करके अन्त्येष्टि क्रिया के लिए ले गये रास्ते में 'दस्युओं' ने उन पर हमला किया और उन हड्डियों को 'रत्न' समझ कर छीन ले गये. ( 309, 26 ).

'कौशीतकी अरन्यक' में और 'अथर्ववेद, में (18.2.19) दोनों में अन्त्येष्टि क्रिया के मन्त्र दिये हुए हैं और सारी विधि मौजूद है. एक मन्त्र ( 80.3 ) उस समय पढ़ा जाता था, जब मरने वाले मनुश्य को चारपाई से उतार कर ज़मीन पर रखते थे. दूसरा मन्त्र ( 80.38 ) उस समय पढ़ा जाता था, जब लाश को गाड़ी या अर्थी से उतार कर चिता पर रखते थे, और तीसरा मन्त्र ( 82-33 ) उस समय पढ़ा जाता था, जब बची हुई हड्डियों वाला बर्तन ज़मीन में गाड़ा जाता था. इस तरह जिन रिवाजों का पता सिन्धु में चलता है, वह ही सब रिवाज वैदिक काल में मौजूद थे.

मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा की खुदाइयों से पता चलता है कि वहां धातुओं में सबसे ज्यादा तांबे का उपयोग होता था. ऋग्वेद में भी तांबे के बर्तनों का काफ़ी ज़िक्र मिलता है, खासकर यज्ञ के लिए तांबे के बर्तन ही सबसे पवित्र समझे जाते थे, और यह विचार हिन्दुओं में आज तक चला आता है.

हड़प्पा में कुछ बर्तन ऐसे भी मिले हैं, जिनमें दोनों तरफ़ कुछ चित्र बने हुए हैं. इन चित्रों में बीच में बैल की सी शक्ल के जानवर हैं. एक आदमी बैल के गले में रस्सी डाले हुये है. रस्सी का एक सिरा उसके हाथ में है और दूसरा पांव के नीचे. आदमी के बायें हाथ में तीर कमान है. यह बर्तन वे हैं, जिनमें रखकर मुर्दों की हड्डियां गाड़ी गई थीं. एक तरफ़ एक कुत्ता है, जो एक जानवर की दुम अपने मुंह में पकड़े हुये है......एक और तरफ़ एक बड़ा बकरा बना हुआ है, जिसके बड़े बड़े सींगों पर त्रिशूल बने



"اُدیت" ارتھات مردے کو باہر چھوڑ دینا اور جانوروں کو کھانے دینا (18 . 2 . 34).

'ورہدارنیک اپنشد' میں یاگیہ ولکیہ نے ساکل سے بات کرتے ہوئے کہا ہے—"ہے آہلرک' جب دل ہمارے جسم کو چھوڑکر کہیں اور چلا جاتا ہے' تب سمجھ رکھو کہ کتے اُس شریر کو کھاتے ہیں' پنچھی اُس کے ٹکڑے ٹکڑے کرتے ہیں' ہردے کے نہ ہونے کے کارن شریر کا یہ انت ہوتا ہے." ( ادھیائے 3 براھمن' 10, 25 ) . ظاہر ہے کہ اُس زمانے میں مردہ شریر کو پشوؤں اور پنچھیوں کے کھانے کے لئے چھوڑ دینے کا رواج بھی تھا' اور اِس کے کچھ دنوں بعد بچی ہوئی ھڈیوں کو جمع کرکے دفن کردینے کا رواج پڑا . اُسی اپنیشد میں لکھا ہے کہ جب یاگیہ والکیہ نے ساکل کو ھرادیا اور ساکل کا سر کٹ کر گر پڑا' تو ساکل کے شاگرد ساکل کی ھڈیاں جمع کرکے انتیشٹ کریا کے لئے لے گئے . راستے میں 'دسیوں' نے اُن پر حملہ کیا اور اُن ھڈیوں کو 'رتن' سمجھ کر چھین لے گئے (309, 26) .

' کوشتکی ارنیک' میں اور ' اتھرووید' میں (19. 2. 18) دونوں میں انتیشٹ کریا کے منتر دیئے ہوئے ہیں اور ساری ودھی موجود ہے . ایک منتر ( 80.3 ) اُس سمے پڑھا جاتا تھا' جب مرنے والے منشیہ کو چارپائی سے اُتار کر زمین پر رکھتے تھے . دوسرا منتر ( 80.38 ) اِس سمے پڑھا جاتا تھا' جب لاش کو گاڑی یا ارتھی سے اُتار کر چتا پر رکھتے تھے' اور تیسرا منتر (82-33) اس سمے پڑھا جاتا تھا جب بچی ہوئی ھڈیوں والا برتن زمین میں گاڑا جاتا تھا . اِس طرح جن رواجوں کا پتہ سندھو میں چلتا ہے' وہ ہی سب رواج ویدک کال میں موجود تھے .

موھن - جو - دڑو اور ھڑپہ کی کھدائیوں سے پتہ چلتا ہے کہ وھاں دھاتوؤں میں سب سے زیادہ تانبے کا اُپیوگ ھوتا تھا . رگ وید میں بھی تانبے کے برتنوں کا کافی ذکر ملتا ہے' خاص کر یگیہ کے لئے تانبے کے برتن ھی سب سے پوتر سمجھے جاتے تھے' اور یہ وچار ھندؤں میں آج تک چلا آتا ہے .

ھڑپہ میں کچھ برتن ایسے بھی ملے ھیں' جن میں دونوں طرف کچھ چتر بنے ھوئے ھیں . اِن چتروں میں بیچ میں بیل کی سی شکل کے جانور ھیں . ایک آدمی بیل کے گلے میں رسی ڈالے ھوئے ہے . رسی کا ایک سرا اِس کے ھاتھ میں ہے اور دوسرا پاؤں کے نیچے . آدمی کے بائیں ھاتھ میں تیر کمان ہے . یہ برتن وے ھیں' جن میں رکھ کر مردوں کی ھڈیاں گاڑی گئی تھیں . ایک طرف ایک کتا ہے' جو ایک جانور کی دم اپنے منھ میں پکڑے ھوئے ہے . . . . . . ایک اور طرف ایک بڑا بکرا بنا ھوا ہے' جس کے بڑے بڑے سینگوں پر ترشول بنے

की उस सभ्यता में चलता है, उन्हीं का पता वेदों में भी चलता है, और ये दोनों सभ्यतायें अलग अलग नहीं बल्कि एक थीं. बुद्ध के शरीर के साथ भी यही किया गया था, पहले दाह कर्म और पीछे जगह जगह हड्डियों का बर्तनों में रख कर गाड़ा जाना.

'अग्नि पुरान' में लिखा है कि मुर्दे को पूरा नहीं जलाना चाहिए. हड्डियां बच जानी चाहिएँ और ब्राह्मनों को चाहिए कि चौथे दिन क्षत्री, पांचवें दिन वैश्य, सातवें दिन शूद्र, नवें दिन अस्थियों को जमा करके बर्तन में रखकर गाड़ दें ( अग्नि पुरान 158-18, 50 ).

बंगाल में अभी तक कहीं कहीं जहां 'रघुनन्दन स्मृति' नहीं चलती, यही किया जाता है और कुछ पूजा पाठ के साथ चौथे दिन अस्थियां गाड़ी जाती हैं.

हड़प्पा में आदमियों की हड्डियों के साथ जानवरों की भी हड्डियां मिली हैं. ऋग्वेद में लिखा है—

अजो भागस्तपसा तं तपस्व तं ते शोचि-
स्तपतु तं ते अर्चिः। यास्ते शिवास्तु न्यो
जातवेद स्ताभि य हैनं सुकृतासुलोकम्
—ऋग्वेद 10. 16. 4

इससे मालूम होता है कि बकरा परलोक में मनुश्य को रास्ता दिखाने के लिये साथ साथ जला दिया जाता था. अथर्ववेद में लिखा है कि सवारी का एक बैल मृत मनुश्य के साथ इसलिये जला दिया जाता था कि परलोक में मनुश्य उस पर सवार हो कर जा सके ( Vedic Index Vol. 1 p. 9 ).

सारांश यह कि हड़प्पा में मुर्दे की हड्डियों के साथ साथ कुछ जानवरों की हड्डियों का मिलना कोई अचरज की बात नहीं है और न इससे यह दो तहज़ीबें अलग अलग तहज़ीबें साबित होती हैं.

मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा में मुर्दों की हड्डियों के साथ साथ कुछ छोटे छोटे बर्तन, चिड़ियां, मछलियां, माला के दाने, हाथ के कड़े, चमचे, मिट्टी के बर्तन, पानी का घड़ा आदि भी मिले हैं. अथर्ववेद में अन्त्येश्टि क्रिया के सम्बन्ध में लिखा है—"देवता लोग और ऋतुयें इस यज्ञ की आहुति को, भोजन को, चमचों को, और यज्ञ के बर्तनों और औज़ारों को ठीक कर लें, और हे मृत मनुश्य तुम इनके साथ उन रास्तों से जाओ, जिनसे देवता जाते हैं, और जिनसे यज्ञ करने वाले स्वर्ग को जाते हैं."

मार्शल साहब ने लिखा है कि सिंधु में मृत शरीर को जंगली जानवरों के सामने छोड़ देने और फिर बचे हुए अंगों को दफ़न कर देने का भी रिवाज था. अथर्ववेद में भी अन्त्येश्टि के दो और विधान हैं. एक "परोप्त" और दूसरा



کی اُس سبھیتا میں چلتا ھے' انھیں کا پتہ ویدوں میں بھی چلتا ھے' اور یہ دونوں سبھتائیں الگ الگ نہیں بلکہ ایک تھیں . بدھ کے شریر کے ساتھ بھی یہی کیا گیا تھا' پہلے داہ کرم اور پیچھے جگہ جگہ ھڈیوں کا برتنوں میں رکھ کر گاڑا جانا .

'اگنی پران' میں لکھا ھے کہ مردے کو پورا نہیں جلانا چاھئے. ھڈیاں بچ جانی چاھئے اور براھمنوں کو چاھئے کہ چوتھے دن چھتری' پانچویں دن ویشیہ' ساتویں دن شودر' نویں دن آستھیوں کو جمع کرکے برتن میں رکھ کر گاڑ دیں ( اگنی پران 158-18,50 ) .

بنگال میں ابھی تک کہیں کہیں جہاں 'رگھونندن اسمرتی' نہیں چلتی' یہی کیا جاتا ھے اور کچھ پوجا پاٹھ کے ساتھ چوتھے دن استھیاں گاڑی جاتی ھیں .

ھڑپہ میں آدمیوں کی ھڈیوں کے ساتھ جانوروں کی بھی ھڈیاں ملی ھیں . رگ وید میں لکھا ھے—

اجو بھاگست پسا تم تپسوتم تے شوچستپتو تم تے ارچی . یاستے شواستو نیوجات وید استابھی یہ ھینں سوکرتا سولوکم—رگ وید 10. 16.4.

اس سے معلوم ھوتا ھے کہ بکرا پرلوک میں منشیہ کو راستہ دکھانے کے لئے ساتھ ساتھ جلا دیا جاتا تھا . اتھرو وید میں لکھا ھے کہ سواری کا ایک بیل مرت منشیہ کے ساتھ اِس لئے جلا دیا جاتا تھا کہ پرلوک میں منشیہ اُس پر سوار ھوکر جاسکے (Vedic Index Vol. 1. p. 9) .

سارانش یہ کی ھڑپہ میں مردے کی ھڈیوں کے ساتھ ساتھ کچھ جانوروں کی ھڈیوں کا ملنا کوئی اچرج کی بات نہیں ھے اور نہ اِس سے یہ دو تہذیبیں الگ الگ تہذیبیں ثابت ھوتی ھیں .

موھن-جو-دڑو اور ھڑپا میں مردوں کی ھڈیوں کے ساتھ ساتھ کچھ چھوٹے چھوٹے برتن' چڑیاں' مچھلیاں' مالا کے دانے' ھاتھ کے کڑے' چمچے' مٹی کے برتن' پانی کا گھڑا آدی بھی ملے ھیں. اتھرو وید میں انتیشٹ کریا کے سمبندھ میں لکھا ھے—"دیوتا لوگ اور رتوئیں اس یگیہ کی آھوتی کو' بھوجن کو' چمچوں کو' اور یگیہ کے برتنوں اور اوزاروں کو ٹھیک کرلیں' اور ھے مرت منشیہ تم اِن کے ساتھ اُن راستوں سے جاؤ' جن سے دیوتا جاتے ھیں' اور جن سے یگیہ کرنے والے سورگ کو جاتے ھیں ."

مارشل صاحب نے لکھا ھے کہ سندھو میں مرت شریر کو جنگلی جانوروں کے سامنے چھوڑ دینے اور پھر بچے ھوئے انگوں کو دفن کر دینے کا بھی رواج تھا . اتھرو وید میں بھی انتیشٹ کے دو اور ودھان ھیں . ایک " پروپت " اور دوسرا

नेत्वां धृष्णु इरमा जहृषाणो दधृशिवक्ष्यन पर्य्यङ्कायते.—ऋग्वेद 10. 16. 7

यानी—हे, मृत मनुश्य ! गाय की खाल को आग की लपटों से बचने के लिये कवच की तरह ओढ़े रहो. बहुत काफ़ी चरबी तुम्हारे ऊपर लपेट दी गई है, इसकी वजह से प्रचन्ड अग्नि, जो तुम्हें जबरदस्ती जला डालना चाहती है, सब अंगों को नहीं लपेट पायेगी.

इस ऋचा से दोनों रिवाजों का पता चलता है, एक यह कि मुर्दे को जलाने से पहले गाय की खाल में लपेट दिया जाता था और दूसरा यह कि सारे शरीर को जला कर राख नहीं किया जाता था.

इसी से अगली ऋचा में लिखा है—"हे अग्नि, इस चमचे को खराब न करना, सोम पीने वाले देवता इससे प्रसन्न होंगे. देवताओं के पीने के लिये यह चमचा रख दिया गया है." इससे पता चलता है कि चिता के अन्दर दूसरी दुनिया में मृत मनुश्य के काम आने के लिए बर्तन और दूसरी चीजें भी रख दी जाती थीं. चिता के पास ही एक और आग जला दी जाती थी, जिसमें होम किया जाता था और पत्र के जरिये देवताओं और पितरों तक खाना पहुंचाया जाता था ( 10. 6, 9. 12 ).

अथर्ववेद में लिखा है—"हे अग्नि, मृत मनुस्य पर दया करते हुए इसे जलाना, बहुत अधिक न जला डालना, शरीर को जलाकर ख़त्म न कर देना" (अथर्ववेद 18, 6).

अथर्ववेद में मुर्दे के साथ बकरे के जलाये जाने का भी जिक्र आता है. लिखा है—"यह बकरा तपस का हिस्सा है, इसे जला देना" ( 18. 2. 8 ).

'अश्वलायन गृह्य सूत्रों में अन्त्येश्टि की पूरी तफ़सील दी हुई है और लिखा है कि मरने के दसवें दिन एक बर्तन के अन्दर हड्डियां जमा कर ली जाती थीं, मर्द की एक तरह के बर्तन में और स्त्री की दूसरी तरह के बर्तन में. और लिखा है कि—"हड्डियों को अंगूठे और चौथी उंगली से एक एक करके उठाना चाहिए और एक एक करके बर्तन में इस तरह रखना चाहिए कि आवाज न होने पावे. पहले पैरों की हड्डियां रखनी चाहिए और आखिर में सिर की. अच्छी तरह जमा करके और छाज से फटक कर हड्डियों के बर्तन को एक गढ़े में गाड़ देना चाहिए और उस पर यह मन्त्र पढ़ना चाहिए......बर्तन को ढंककर उस पर मिट्टी डालकर फिर यह मन्त्र पढ़ना चाहिए......फिर बिना पीछे मुड़कर देखे चला आना चाहिए और जल में नहा कर मृत मनुस्य का श्राद्ध करना चाहिए (4. 5. 1, 2, 5-10).

मोहन-जो-दड़ो में भी जो बर्तन मिले हैं, उनमें मुर्दों की जली हुई हड्डियां ही हैं, बिना जला शरीर नहीं. जाहिर है कि अन्त्येश्टि क्रिया के जिन जिन रिवाजों का पता सिन्धु



نیتوام گھرشنو ارما جرھرشانو دھرشوکشین پریمکایتے—رگ وید 10. 16. 7

یعنی—ھے مرت منشیہ! گائے کی کھال کو آگ کی لپٹوں سے بچنے کے لئے کوچ کی طرح اوڑھے رھو. بہت کافی چربی تمہارے اوپر لپیٹ دی گئی ھے' اِس کی وجہ سے پرچنڈ اگنی' جو تمہیں زبردستی جلا ڈالنا چاھتی ھے' سب انگوں کو نہیں لپیٹ پائے گی.

اِس رچا سے دونوں رواجوں کا پتہ چلتا ھے' ایک یہ کہ مردے کو جلانے سے پہلے گائے کی کھال میں لپیٹ دیا جاتا تھا اور دوسرا یہ کہ سارے شریر کو جلا کر راکھ نہیں کیا جاتا تھا.

اِسی سے اگلی رچا میں لکھا ھے—"ھے اگنی' اِس چمچے کو خراب نہ کرنا' سوم پینے والے دیوتا اِس سے پرسن ھونگے. دیوتاؤں کے پینے کے لئے یہ چمچہ رکھ دیا گیا ھے." اِس سے پتہ چلتا ھے کہ چتا کے اندر دوسری دنیا میں مرت منشیہ کے کام آنے کے لئے برتن اور دوسری چیزیں بھی رکھ دی جاتی تھیں. چتا کے پاس ھی ایک اور آگ جلا دی جاتی تھی' جس میں ھوم کیا جاتا تھا اور پتر کے ذریعہ دیوتاؤں اور پتروں تک کھانا پہونچایا جاتا تھا ( 0 . 16, 9.12 ).

ارتھرو وید میں لکھا ھے—"ھے اگنی مرت منشیہ پر دیا کرتے ھوئے اسے جلانا' بہت ادھک نہ جلا ڈالنا' شریر کو جلاکر ختم نہ کردینا" ( اتھرو وید 18,6 ).

اتھرو وید میں مردے کے ساتھ بکرے کے جلائے جانے کا بھی ذکر آتا ھے. لکھا ھے—"یہ بکرا تپس کا حصہ ھے' اسے جلا دینا." ( 18 . 2.8 ).

'اشولاین گرھیہ سوتروں میں انتیشٹ کی پوری تفصیل دی ھوئی ھے اور لکھا ھے کہ مرنے کے دسویں دن ایک برتن کے اندر ھڈیاں جمع کرلی جاتی تھیں' مرد کی ایک طرح کے برتن میں اور استری کی دوسری طرح کے برتن میں. اور لکھا ھے کہ —"ھڈیوں کو انگوٹھے اور چوتھی انگلی سے ایک ایک کرکے اٹھانا چاھئے اور ایک ایک کرکے برتن میں اِس طرح رکھنا چاھئے کہ آواز نہ ھونے پائے. پہلے پیروں کی ھڈیاں رکھنی چاھئے اور آخر میں سر کی. اچھی طرح جمع کرکے اور چھاج سے پھٹک کر ھڈیوں کے برتن کو ایک گڈھے میں گاڑ دینا چاھئے اور اُس پر یہ منتر پڑھنا چاھئے...... برتن کو ڈھنک کر اُس پر مٹی ڈال کر پھر یہ منتر پڑھنا چاھئے...... پھر بنا پیچھے مڑکر دیکھے چلا آنا چاھئے اور جل میں نہاکر مرت منشیہ کا شرادھ کرنا چاھئے (4. 5. 1, 2, 5-10).

موھن - جو - دڑو میں بھی جو برتن ملے ھیں' اُن میں مردوں کی جلی ھوئی ھڈیاں ھی ھیں' بنا جلا شریر نہیں. ظاھر ھے کہ انتیشٹ کریا کے جن جن رواجوں کا پتہ سندھو

मिले हैं, जिनमें आदमी की जली हुई हड्डियां और राख मौजूद हैं, और उसके साथ साथ कुछ बर्तनों में जली हुई या वे जली हुई चीजें हैं, या और ऐसी चीजें हैं, जिनकी बाबत यह समझा जाता था कि वे अगली दुनिया में मरे हुए आदमी के काम आयेंगी.* मार्शल साहब ने लिखा है कि—"कहीं कहीं यह भी रिवाज था कि मुर्दे को पहले जंगली जानवरों के सामने रख दिया जाता था, और फिर उनके खाने से जो कुछ बच जाता था उसे गाड़ दिया जाता था. हड़प्पा में शरीर के सिर्फ़ कुछ हिस्से दफ़न किये हुए ही मिले हैं. कुछ मिसालें पूरे शरीर के दफ़न करने की भी मिली हैं, लेकिन बहुत ही कम.

अब हमें यह देखना है कि वैदिक काल में मुर्दे की अन्त्येश्टि क्रिया के क्या क्या रिवाज थे. ऋग्वेद से पता चलता है कि उस जमाने में दोनों रिवाज थे 'अन अग्नि दग्ध' और 'अग्नि दग्ध'. पूरे शरीर को बिना जलाये जमीन में गाड़ देने का रिवाज भी ऋग्वेद में मिलता है. (ऋग्वेद 10, 18. 11) 'शतपथ ब्राह्मन से पता चलता है कि ब्राह्मन ग्रन्थों के समय भी यह रिवाज मौजूद था (13.8. 1.9) ऋग्वेद की एक ऋचा है—"हे पृथ्वी इस मुर्दे को इस तरह अपने अन्दर लपेट लो जिस तरह माता अपने बच्चे को अपने आंचल में लपेट लेती है,...हे मृत पुरुश मैंने तुम्हारे चारों तरफ़ मिट्टी डाल दी है, तुम्हें इससे चोट न लगे. इसमें मैंने पत्थर का बर्तन खाने के लिए रख दिया है" (ऋग्वेद 10, 18. 10-13) ऋग्वेद में मुर्दे को जलाने के भी रिवाज का जिक्र आता है. एक जगह लिखा है—

मैनमग्ने विदहो माभि शोचो मास्य त्वच विक्षिपो मा शारीरम्। यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽ थेमेमं प्रहिनुता पितृभ्य:.—ऋग्वेद 10. 16. 1

यानी—हे अग्नि! इसे जलाकर बिलकुल ही खतम न कर देना, न इसे तकलीफ़ देना, और न इसकी त्वचा या शरीर के टुकड़ों को इधर उधर बखेरना.

इस तरह ऋग्वेद में गाड़ने और जलाने दोनों के रिवाज मिलते हैं. पहले शुरू में गाड़ने का रिवाज था और बाद में जलाने का रिवाज चल पड़ा. यह भी साफ़ पता चलता है कि पूरा शरीर नहीं जला डाला जाता था. विन्टरनीत्ज़ ने भी लिखा है कि अधिक पुराने समय में हिन्दुस्तान में गाड़ने का रिवाज ही आम था. आजकल हिन्दुओं में सिर्फ़ सन्यासियों को और बहुत छोटे बच्चों को गाड़ा जाता है. किसी किसी बीमारी में जैसे चेचक की बीमारी में भी गाड़ने का रिवाज है. ऋग्वेद का एक और मन्त्र है—

अनेवर्म परि ग्रोभिर्व्ययस्व संप्रेर्णु स्व पी व सा मेदसा च



ملے ہیں، جن میں آدمیوں کی جلی ہوئی ہڈیاں اور راکھ موجود ہیں، اور اس کے ساتھ ساتھ کچھ برتنوں میں جلی ہوئی یا بے جلی ہوئی چیزیں ہیں، یا اور ایسی چیزیں ہیں جن کی بابت یہ سمجھا جاتا تھا کہ وے اگلی دنیا میں مرے ہوئے آدمی کے کام آئیں گی* مارشل صاحب نے لکھا ہے کہ—"کہیں کہیں یہ بھی رواج تھا کہ مردے کو پہلے جنگلی جانوروں کے سامنے رکھ دیا جاتا تھا، اور پھر ان کے کھانے سے جو کچھ بچ جاتا تھا اُسے گاڑ دیا جاتا تھا. ہڑپا میں شریر کے صرف کچھ حصے دفن کئے ہوئے ہی ملے ہیں. کچھ مثالیں پورے شریر کے دفن کرنے کی بھی ملی ہیں، لیکن بہت ہی کم.

اب ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ ویدک کال میں مردے کی انتیشٹ کریا کے کیا کیا رواج تھے. رگ وید سے پتہ چلتا ہے کہ اُس زمانے میں دونوں رواج تھے 'ان اگنی دگدھ' اور 'اگنی دگدھ'. پورے شریر کو بنا جلائے زمین میں گاڑ دینے کا رواج بھی رگ وید میں ملتا ہے. (رگ وید 11. 10'18) 'شت پتھ براہمن سے پتہ چلتا ہے کہ براہمن گرنتھوں کے سمے بھی یہی رواج موجود تھا. (1.9 .13.8) رگ وید کی ایک رچا ہے—" ہے پرتھوی اِس مردے کو اِس طرح اپنے اندر لپیٹ لو جس طرح ماتا اپنے بچے کو اپنے آنچل میں لپیٹ لیتی ہے'......ہے مرت پرش میں نے تمہارے چاروں طرف مٹی ڈال دی ہے' تمہیں اِس سے چوٹ نہ لگے. اِس میں میں نے پتھر کا برتن کھانے کے لئے رکھ دیا ہے" (رگ وید 10-18.10.13) رگ وید میں مردے کو جلانے کے بھی رواج کا ذکر آتا ہے. ایک جگہ لکھا ہے—

مین مگنے ودھو مابھی شوچو ماسیہ توچ وکچھپو ما شریرم. یدا شرتنت کرنوو جات وید تھےمن پرھنوتا پتربھیہ:—رگ وید 10 . 16 . 1

یعنی—ہے اگنی! اِسے جلا کر بالکل ہی ختم نہ کر دینا' نہ اِسے تکلیف دینا' اور نہ اِس کی توچا یا شریر کے ٹکڑوں کو اِدھر اُدھر بکھیرنا.

اِس طرح رگ وید میں گاڑنے اور جلانے دونوں کے رواج ملتے ہیں. پہلے شروع میں گاڑنے کا رواج تھا اور بعد میں جلانے کا رواج چل پڑا. یہ بھی صاف پتہ چلتا ہے کہ پورا شریر نہیں جلا ڈالا جاتا تھا. ونٹر نیتز نے بھی لکھا ہے کہ ادھک پرانے سمے میں ہندستان میں گاڑنے کا رواج ہی عام تھا. آجکل ہندؤں میں صرف سنیاسیوں کو اور بہت چھوٹے بچوں کو گاڑا جاتا ہے. کسی کسی بیماری میں جیسے چیچک کی بیماری میں بھی گاڑنے کا رواج ہے. رگ وید کا ایک اور منتر ہے—

انیرومم پریشو بھیم مرلیسو سمپرورنس پی وسا میدسا چہ

* Sir John Marshall. Vol. 1 pp. 79-81, 89-90 etc.

( 9. 112. 2 ). उस ज़माने के लोग खाने पीने के लिए भी लकड़ी और पत्थर के बर्तन काम में लाते थे ( ऋग्वेद् 965.6;10.75.3;10.101.10 ). उस ज़माने के वैदिक आर्य लोहे का इस्तेमाल नहीं जानते थे. 'तैत्तरेय ब्राह्मन' बाद का लिखा हुआ है. उसमें भी हजामत बनाने के लिये तांबे के उस्तुरे का ज़िक्र आता है ( 10.5 ) ऋग्वेद् की छान बीन करने से पता चलता है कि उस ज़माने में पत्थर, लकड़ी तांबा, कांसा और चमड़े के बर्तन और औज़ार ही काम में आते थे. कम से कम ऋग्वेद् का ज़माना लोहे के इस्तेमाल का ज़माना नहीं था.

दूसरा सवाल दोनों सभ्यताओं के समय का है. सिन्धु की सभ्यता के समय का अन्दाज़ा ईसा से तीन चार हज़ार साल पहले का किया जाता है. मैक्समूलर का अन्दाज़ा था कि ऋग्वेद् का समय ईसा से 1500 साल पहले का था. लेकिन मैक्समूलर ने ख़ुद साफ़ साफ़ लिखा है कि यह महज़ अन्दाज़ा है जो ग़लत हो सकता है ( मैक्समूलर—ए हिस्ट्री आफ़ एनशियन्ट संस्कृत लिटरेचर, सफ़ा 434,435). और कुछ दिनों की खोज के बाद एक दूसरे विद्वान विन्टर-नीत्ज़ ने राय दी है कि—"कोई पक्के तौर पर यह नहीं कह सकता कि वेदों की ऋचायें ईसा से 1000 साल पहले लिखी गई थीं या 1500 साल पहले, या 2000 साल पहले या 3,000 साल पहले.* बाल गंगाधर तिलक ने गणित के हिसाब से साबित करने की कोशिश की कि कम से कम कुछ वैदिक ऋचायें ईसा से 6000 साल पहले की हैं. जैकोबी ने ईसा से 4500 साल पहले वैदिक सभ्यता का ज़माना बताया है. इस सब से यह साबित होता है कि मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा की सभ्यता का समय वैदिक सभ्यता से पहले का नहीं है. कम से कम दोनों का एक ही ज़माना है.

तीसरी बात, जिससे सिन्धु की उस सभ्यता और वैदिक सभ्यता के एक होने या अलग अलग होने का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, वह दोनों में मुर्दे की अन्त्येष्टि क्रिया का ढङ्ग है. मार्शल साहब का कहना है कि दोनों के ढङ्ग बिलकुल अलग अलग थे; लेकिन असलियत इस के ख़िलाफ़ है. मार्शल साहब ही के मुताबिक़ सिंधु की सभ्यता में हमें तीन तरह की अन्त्येष्टि क्रिया मिलती है. ( 1 ) पूरा शरीर ज़मीन में गाड़ देना, ( 2 ) शरीर का कुछ हिस्सा ज़मीन में गाड़ देना और ( 3 ) लाश को पहले जलाकर फिर बचे खुचे हिस्से को गाड़ देना. मार्शल साहब लिखते हैं कि—"जहां तक पता चला है, वहां तक यही मालूम होता है कि सिंधु की सभ्यता की तरक़्क़ी के दिनों में सब से ज़्यादा आम रिवाज जलाने का था. खुदाई में इस तरह के बड़े बड़े बर्तन



(9 . 112 . 2) . اس زمانے کے لوگ کھانے پینے کے لئے بھی لکڑی اور پتھر کے برتن کام میں لاتے تھے . (رگ وید 10 . 101 . 10 ; 3 . 75 . 10 ; 6 . 965) . اُس زمانے کے ویدک آریہ لوھے کا استعمال نہیں جانتے تھے . 'تیتریہ براھمن' بعد کا لکھا ھوا ھے . اس میں بھی حجامت بنانے کے لئے تانبے کے استرے کا ذکر آتا ھے (10 .5) . رگ وید کی چھان بین کرنے سے پتہ چلتا ھے کہ اُس زمانے میں پتھر' لکڑی' تانبہ' کانسہ اور چمڑے کے برتن اور اوزار ھی کام میں آتے تھے . کم سے کم رگ وید کا زمانہ لوھے کے استعمال کا زمانہ نہیں تھا .

دوسرا سوال دونوں سبھیتاؤں کے سمے کا ھے . سندھو کی سبھیتا کا اندازہ عیسیٰ سے تین چار ھزار سال پہلے کا کیا جاتا ھے . میکس ملر کا اندازہ تھا کہ رگ وید کا سمے عیسیٰ سے 1500 سال پہلے کا تھا . لیکن میکس ملر نے خود صاف صاف لکھا ھے کہ یہ محض اندازہ ھے جو غلط ھو سکتا ھے (میکس ملر—اے ھسٹری آف اینشینٹ سنسکرت لٹریچر' صفحہ 435 , 434). اور کچھ دنوں کی کھوج کے بعد ایک دوسرے ودوان ونٹر نٹز نے رائے دی ھے کہ—"کوئی پکے طور پر یہ نہیں کہہ سکتا کہ ویدوں کی رچائیں عیسیٰ سے 1000 سال پہلے لکھیں گئی تھیں یا 1500 سال پہلے' یا 2000 سال پہلے یا 3000 سال پہلے* بال گنگا دھر تلک نے گنت کے حساب سے ثابت کرنیکی کوشش کی کہ کم سے کم کچھ ویدک رچائیں عیسیٰ سے 6000 سال پہلے کی ھیں . جیکوبی نے عیسیٰ سے 4500 سال پہلے ویدک سبھیتا کا زمانہ بتایا ھے . اِس سب سے یہ ثابت ھوتا ھے کہ موھن-جو-دڑو اور ھڑپا کی سبھیتا کا سمے ویدک سبھیتا سے پہلے کا نہیں ھے. کم سے کم دونوں کا ایک ھی زمانہ ھے .

تیسری بات' جس سے سندھو کی اُس سبھیتا اور ویدک سبھیتا کے ایک ھونے یا الگ الگ ھونے کا اندازہ لگایا جاسکتا ھے' وہ دونوں میں مردے کی انتیشٹ کریا کا ڈھنگ ھے . مارشل صاحب کا کہنا ھے کہ دونوں کے ڈھنگ بالکل الگ الگ تھے؛ لیکن اصلیت اِس کے خلاف ھے . مارشل صاحب ھی کے مطابق سندھو کی سبھیتا میں ھمیں تین طرح کی انتیشٹ کریا ملتی ھے . (1) پورا شریر زمین میں گاڑ دینا' (2) شریر کا کچھ حصہ زمین میں گاڑ دینا اور (3) لاش کو پہلے جلاکر پھر بچے کھچے حصے کو گاڑ دینا . مارشل صاحب لکھتے ھیں کہ—"جہاں تک پتہ چلا ھے' وھاں تک یہی معلوم ھوتا ھے کہ سندھو کی سبھیتا کی ترقی کے دنوں میں سب سے زیادہ عام رواج جلانے کا تھا . کھدائی میں اس طرح کے بڑے بڑے برتن

* Winter Nitz—Oeschisehteder Mdischen Literature, pp. 249-50.

में अवैदिक विचारों और सम्प्रदायों का जोर था. इसी के साथ साथ बौद्ध और जैन प्रचारकों ने उसी देश के लोगों को आर्य कहकर बयान किया है. इससे साबित है कि 'आर्य' शब्द ख़ास गुनों या ख़ास संस्कृति का नाम था, जाति का नहीं.

बौद्धों ने तो इस शब्द को और भी ऊंचा पहुंचाया. उसे सांस्कृतिक (कल्चरी) से बढ़ा कर अध्यात्मिक (रूहानी) कर दिया. बौद्ध ग्रन्थों और शिला लेखों के मुताबिक़ "आर्य वह है, जो अपनी वासनाओं या देश की रूढ़ियों और रस्म रिवाजों का दास नहीं है और जो अपने को ख़ुद समझ कर चलता है. *

सम्राट चन्द्रगुप्त के प्रधान मन्त्री कौटिल्य ने अपने अर्थ-शास्त्र में आर्य शब्द को राजनैतिक (सियासी) अर्थों में इस्तेमाल किया है. शूद्र को उसने 'आर्यप्रान' अर्थात् जन्म से आर्य कहा है. ( अध्याय 13-181 ) वह लिखता है कि—"जो आदमी किसी दास को धोखा देकर उसका धन लेगा या एक आर्य की हैसियत से उस दास के जो हक़ हैं, उनसे उसे वंचित (महरूम) करेगा (आर्य भाव अपहरन्ता) उस पर उससे आधा जुर्माना किया जायगा, जितना उस आदमी पर जो किसी आर्य की स्वतन्त्रता छीने." ( अध्याय 13-182 ). और आगे चलकर "जो आदमी अपने को बेचकर किसी का दास बन जायगा, उसकी सन्तान आर्य ही होगी." और "कोई दास अगर अपनी दासता की क़ीमत अदा कर देगा, तो उसी समय से वह फिर आर्य हो जायगा ( अर्थ शास्त्र सफ़ा 222-224, डाक्टर शाम शास्त्री का अनुवाद ). यहां पर यह बात साफ़ है कि आर्य शब्द 'श्रेष्ठ' और 'सभ्य' ( मुहज़्ज़ब ) के अर्थों में उपयोग होते होते राजनैतिक अर्थों में भी आने लगा, क़रीब क़रीब उन्हीं अर्थों में, जिनमें अंग्रेज़ी शब्द 'सिटीज़न' आता है.

सर जान मार्शल की राय है कि ईसा से तीन चार हज़ार साल पहले की सिन्धु की सभ्यता वैदिक सभ्यता से ऊंचे दर्जे की और बिलकुल एक अलग सभ्यता थी. लेकिन मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा की खुदाई में जो चीज़ें निकली हैं, उनका अगर ऋग्वेद के समय की सभ्यता से मुक़ाबला किया जावे, तो दोनों में काफ़ी समानता दिखाई देती है. दोनों एक मालूम होती हैं. हम यहां एक दो मोटी मोटी बातें बयान करेंगे.

सिन्धु की सभ्यता के बारे में अभी तक पता चला है है कि वह लोग लोहे का इस्तेमाल नहीं जानते थे और ज्यादातर लकड़ी, पत्थर, कांसा वग़ैरह के औज़ार ही काम में लाते थे. ऋग्वेद में उन दिनों पत्थर के नोकदार तीरों के इस्तेमाल होने का साफ़ ज़िक्र मिलता है



میں اویدک وچاروں اور سمپردایوں کا زور تھا. اِسی کے ساتھ ساتھ بودھ اور جین پرچارکوں نے اُسی دیش کے لوگوں کو آریہ کہ کر بیان کیا ھے. اِس سے ثابت ھے کہ 'اریہ' شبد خاص گنوں یا خاص سنسکرتی کا نام تھا' جاتی کا نہیں.

بودھوں نے تو اِس شبد کو اور بھی اُونچا پہونچایا. اُسے سانسکرتک ( کلچری ) سے بڑھاکر ادھیاتمک ( روحانی ) کردیا. بودھ گرنتھوں اور شلا لیکھوں کے مطابق 'آریہ وہ ھے' جو اپنی واسناؤں یا دیش کی روڑھیوں اور رسم رواجوں کا داس نہیں ھے اور جو اپنے کو خود سمجھ کر چلتا ھے. *

سمراٹ چندرگپت کے پردھان منتری کوٹلیہ نے اپنے ارتھ شاستر میں اریہ شبد کو راج نیتک (سیاسی) ارتھوں میں استعمال کیا ھے. شودر کو اُس نے 'اریہ پران' ارتھات جنم سے آریہ کہا ھے. ( ادھیائے 181 - 13 ) وہ لکھتا ھے کہ—"جو آدمی کسی داس کو دھوکا دےکر اس کا دھن لیگا یا ایک آریہ کی حیثیت سے اُس داس کے جو حق ھیں' اُن سے اُسے ونچت ( محروم ) کریگا ( اریہ بھاؤ اپہرنتا ) اس پر اُس سے آدھا جرمانہ کیا جائیگا' جتنا اس آدمی پر جو کسی آریہ کی سوتنترتا چھینے." ( ادھیائے 182 - 13 ). اور آگے چل کر "جو آدمی اپنے کو بیچ کر کسی کا داس بن جائیگا' اُس کی سنتان آریہ ھی ھوگی." اور "کوئی داس اگر اپنی داستا کی قیمت ادا کردے گا' تو اُسی سمے سے وہ پھر آریہ ھوجائیگا ( ارتھ شاستر' صفحہ 222,224' ڈاکٹر شام شاستری کا انواد). یہاں پر یہ بات صاف ھے کہ آریہ شبد 'شریشٹھ اور 'سبھیہ' ( مہذب ) کے ارتھوں میں اُپیوگ ھوتے ھوتے راج نیتک ارتھوں میں بھی آنے لگا' قریب قریب انھیں ارتھوں میں' جن میں انگریزی شبد 'سٹیزن' آتا ھے.

سر جان مارشل کی رائے ھے کہ عیسیٰ سے تین چار ھزار سال پہلے کی سندھو کی سبھیتا ویدک سبھیتا سے اُونچے درجے کی اور بالکل ایک الگ سبھیتا تھی. لیکن موھن-جو-دڑو اور ھڑپا کی کھدائی میں جو چیزیں نکلی ھیں' ان کا اگر رگ وید کے سمے کی سبھیتا سے مقابلہ کیا جاوے' تو دونوں میں کافی سمانتا دکھائی دیتی ھے. دونوں ایک معلوم ھوتی ھیں. ھم یہاں ایک دو موٹی موٹی باتیں بیان کریں گے.

سندھو کی سبھیتا کے بارے میں ابھی تک پتہ چلا ھے کہ وے لوگ لوھے کا استعمال نہیں جانتے تھے اور زیادہ‌تر لکڑی' پتھر' کانسہ وغیرہ کے اوزار ھی کام میں لاتے تھے. رگ وید میں اُن دنوں پتھر کے نوک‌دار تیروں کے استعمال ھونے کا صاف ذکر ملتا ھے

* B. M. Barua and G. Sinha Bharhut Inscriptions, p. 6 ( 1926 ).

महाभारत के द्रोन पर्व में दुर्योधन ने सिन्धराज की बात न मानने पर अपने को 'अनाय' कहकर धिक्कारा है. सभा पर्व में द्रौपदी ने यह शिकायत की है कि 'अनार्य' लोगों ने युधिश्ठिर को बहका कर उससे जुआ खिलवा दिया. गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन की कमज़ोरी को 'अनार्य' कह कर बुरा कहा है. संस्कृत नाटकों में छोटे छोटे लोग बड़े बड़े लोगों को 'आर्य' कहकर पुकारते हैं, पत्नि अपने पति को 'आर्य पुत्र' कहकर पुकारती है. ब्राह्मन लोग अपने धर्म को सदा 'आर्य धर्म' कहते थे. बौद्ध लोग अपने धर्म को 'आर्य पथ' कहते थे.

वेदों के समय में अलग अलग कुलों या क़बीलों के अलग अलग नाम थे. लेकिन सब कुलों के समूह का कोई एक नाम नहीं था. आर्य शब्द तो इस जाति या समूह के अर्थों में आता ही नहीं था. जैसे भरत कुल के लोगों को ऋग्वेद में 'भरतम् जनम्' ( 3.53. 12 ) कहा है. सिकन्दर के हमले के समय तक इस देश में यही रिवाज था. अफ़ग़ानिस्तान और पंजाब के रहने वालों को मिलाकर यूनानी लेखकों ने 'इन्डियन' कहकर पुकारा है. इन्डियन या हिन्दू इन दोनों में से कोई भी लफ़्ज़ इस देश का नहीं है. ईरानी सम्राट दारा के शिला लेख में सिन्धु नदी के आस पास के बाशिन्दों को 'हिन्दु' लिखा है. ईरानी लोग सिन्धु नदी के इलाक़े को 'हिन्द' कहा करते थे, इसी से बाद में 'हिन्दु' बना. आज तक अरब लोग हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमानों सब को 'हिन्दी' कहकर पुकारते हैं और तुर्क लोग 'हिन्दली' कहकर पुकारते हैं. ईरानी हिन्द से यूनानी इन्ड और इन्डिया बने. उसी से अंग्रेज़ी इन्डियन ( Indian ), जर्मन इन्डिएन ( Indien ) फ्रेन्च हिन्दू (Hindou) और आजकल के यूनानियों का इन्दु ( Indou ) शब्द बने.

इस तरह अफ़ग़ानिस्तान से लेकर उत्तर भारत के मैदानों तक के सब रहने वालों का उस समय तक कोई एक नाम नहीं था. मौर्य साम्राज्य के बाद 'मानव धर्म शास्त्र' में हिमालय से लेकर बिन्ध्या तक के सारे देश का नाम 'आर्यावर्त' रक्खा गया. पुरानों में इस देश का नाम भरत के नाम पर भारतवर्ष मिलता है. पुरानों में और बौद्ध पुस्तकों में इस देश का जम्बु द्वीप नाम भी मिलता है. जम्बु वृक्ष का नाम है. लेकिन पुरानों के लिखे जाने के समय का ठीक ठीक पता नहीं चलता. स्मृतियों में आर्यावर्त उस देश को कहा गया है, जिसमें ब्राह्मन लोग बे रोक टोक वर्नाश्रम धर्म का पालन कर सकते हैं.

आर्य शब्द का अर्थ कभी भी कोई ख़ास जाति नहीं लिया गया, इसका पता इस बात से भी चलता है कि यास्क ने 'निरुक्त' में मगध के राज्य को 'अनार्य जनपद' कहा है, क्योंकि महावीर और बुद्ध वग़ैरह के पहले से मगध



مہابھارت کے درونر پرو میں دریودھن نے سندھ راج کی بات نہ ماننے پر اپنے کو 'اناریہ' کہہ کر دھکارا ھے. سبھا پرو میں دروپدی نے یہ شکایت کی ھے کہ 'اناریہ' لوگوں نے یودھیشٹھر کو بہکاکر اُس سے جوا کھلوا دیا. گیتا میں شری کرشن نے ارجن کی کمزوری کو 'اناریہ' کہہ کر برا کہا ھے. سنسکرت ناٹکوں میں چھوٹے چھوٹے لوگ بڑے بڑے لوگوں کو 'اریہ' کہہ کر پکارتے ھیں، پتنی اپنی پتی کو 'اریہ پتر' کہہ کر پکارتی ھے. براھمن لوگ اپنے دھرم کو سدا 'اریہ دھرم' کہتے تھے. بودھ لوگ اپنے دھرم کو 'اریہ پتھ' کہتے تھے.

ویدوں کے سمے میں الگ الگ کلوں یا قبیلوں کے الگ الگ نام تھے. لیکن سب کلوں کے سموہ کا کوئی ایک نام نہیں تھا. اریہ شبد تو اِس جاتی یا سموہ کے ارتھوں میں آتا ھی نہیں تھا. جیسے بھرت کل کے لوگوں کو رگ وید میں 'بھرتم جنم' (3 . 53 . 12) کہا ھے. سکندر کے حملے کے سمے تک اِس دیش میں یہی رواج تھا. افغانستان اور پنجاب کے رھنے والوں کو ملاکر یونانی لیکھکوں نے 'انڈین' کہہ کر پکارا ھے. انڈین یا ھندو اِن دونوں میں سے کوئی بھی لفظ اِس دیش کا نہیں ھے. ایرانی سمراٹ دارا کے شلا لیکھ میں سندھو ندی کے آس پاس کے باشندوں کو 'ھندو' لکھا ھے. ایرانی لوگ سندھو ندی کے علاقے کو 'ھند' کہا کرتے تھے، اِسی سے بعد میں 'ھندو' بنا. آج تک عرب لوگ ھندستان کے ھندو اور مسلمانوں سب کو 'ھندی' کہہ کر پکارتے ھیں اور ترک لوگ 'ھندلی' کہہ کر پکارتے ھیں. ایرانی ھند سے یونانی اِنڈ اور اِنڈیا بنے. اُسی سے انگریزی اِنڈین (Indian)، جرمن اِنڈئین (Indien) فرنچ ھندو (Hindou) اور آجکل کے یونانیوں کا اندو (Indou) شبد بنے.

اِس طرح افغانستان سے لے کر اتر بھارت کے میدانوں تک کے سب رھنے والوں کا اُس سمے تک کوئی ایک نام نہیں تھا. موریہ سامراجیہ کے بعد 'مانو دھرم شاستر' میں ھمالے سے لیکر وندھیا تک کے سارے دیش کا نام 'آریہ ورت' رکھا گیا. پرانوں میں اس دیش کا نام بھرت کے نام پر بھارت ورش ملتا ھے. پرانوں میں اور بودھ پستکوں میں اِس دیش کا جمبو دیپ نام بھی ملتا ھے. جمبو ورکچھ کا نام ھے. لیکن پرانوں کے لکھے جانے کے سمے کا ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں چلتا. اسمرتیوں میں آریہ ورت اُس دیش کو کہا گیا ھے، جس میں براھمن لوگ بے روک ٹوک ورنا شرم دھرم کا پالن کرسکتے ھیں.

اریہ شبد کا ارتھ کبھی بھی کوئی خاص جاتی نہیں لیا گیا، اس کا پتہ اِس بات سے بھی چلتا ھے کہ یاسک نے 'نروکتی' میں مگدھ کے راجیہ کو 'اناریہ جن پد' کہا ھے، کیونکہ مہاویر اور بدھ وغیرہ کے پہلے سے مگدھ

वैदिक साहित्य (अदब) में या संस्कृत साहित्य में 'आर्य' किसी ख़ास नसल या जाति का नाम नहीं है. यूरोप वालों के मुताबिक़ 'आर्य' क़ौम के लोगों के बाल सुनहरे रंग के होते थे. लेकिन वैदिक साहित्य में जगह जगह उस समय के ब्राह्मनों के 'काले बालों' का ज़िक्र आता है. सच यह है कि जिन लोगों को आर्य कहा जाता है, वे अगर कहीं बाहर से भी इस देश में आए तब भी वे जिन देशों में होकर आए, वहां के पुराने बाशिन्दों से मिलते जुलते और उनसे ब्याह-शादी करते हुए आये. जब वे यहां पहुंचे तो वे दुनिया की और जातियों से अलग कोई एक ख़ास जाति नहीं रह गये थे. सर जान मार्शल ने भी लिखा है कि—"जहां तक इतिहास से पता चलता है सिन्ध और पंजाब के लोगों में बहुत सी जातियां मिली हुई थीं, और हमें यह मानने के लिये कोई सबब नहीं दिखाई देता कि इससे पहले के ज़माने में भी यहां के सब लोग किसी एक अलग नसल के रहे हों." असल में 'आर्य' शब्द से मुराद एक ख़ास सभ्यता या एक ख़ास संस्कृति से है, किसी ख़ास जाति से नहीं. इस तरह की हर सभ्यता में कई अलग अलग जातियों के लोग सामाजिक और आर्थिक वजहों से मिल कर रहने लगते हैं और फिर रल मिल कर एक हो जाते हैं. यही हाल आर्यों का था. एक सभ्यता, एक संस्कृति या एक ज़बान होना अलग बात है, और एक नसल या जाति होना दूसरी बात है. इसके अलावा जहां जहां पुराने आर्यों की हड्डियां मिली हैं, उनमें लम्बी खोपड़ी वाले और चौड़ी खोपड़ी वाले दोनों तरह के लोग मिलते हैं और इनके बीच के मिले जुले भी मिलते हैं.

अब हम यह देखेंगे कि पुराने संस्कृत साहित्य में 'आर्य' शब्द किन अर्थों में आया है. मेरा कहना है कि जाति के अर्थों में यह शब्द कहीं आया ही नहीं. यह शब्द जहां भी आया है 'सभ्य', 'शिष्ट', 'श्रेष्ठ', 'उदार' आदि माइनों में आया है. महीधर के मुताबिक़ आर्य शब्द का अर्थ पहले वैश्य होता था. 'वाजसनेय संहिता' और 'शतपथ ब्राह्मन' में भी यह शब्द इन्हीं अर्थों में इस्तेमाल हुआ है. और अधिक शुरू में आर्य शब्द का अर्थ 'किसान' होता था. इन्हीं अर्थों में वेदों में 'शूद्रार्यो' समास आता है. ऋग्वेद में ( 1.51.8 ) ऊपर के तीन वर्नों के लोगों को 'आर्य' कहा गया है. आर्य का उलटा 'दास' है ( 1.51.89 ). कहीं कहीं यह शब्द सिर्फ़ वैश्य के लिये भी आया है. आम तौर पर ऋग्वेद में आर्य शब्द का अर्थ होता है 'ईमानदार', 'दयावान', 'नेक', 'स्वामी', 'सभ्य', ( ऋग्वेद 1.13.8. 4.30.18.3;34.9 ). वेदों के बाद संस्कृत साहित्य में भी यह शब्द इसी तरह के अर्थों में आता है, ख़ास जाति के अर्थ में कहीं नहीं आता. रामायन में राक्षस इन्द्रजीत ने जहां अपने चचा विभीखन को उसकी दग़ा के लिये मज़म्मत ( ताड़ना ) की है, वहां उसे 'अनार्य' कहा गया है.



ویدک ساھتیہ ( ادب ) میں یا سنسکرت ساھتیہ میں 'آریہ' کسی خاص نسل یا جاتی کا نام نہیں ھے . یورپ والوں کے مطابق ' آریہ ' قوم کے لوگوں کے بال سنہرے رنگ کے ھوتے تھے . لیکن ویدک ساھتیہ میں جگہ جگہ اُس سمے کے براھمنوں کے ' کالے بالوں ' کا ذکر آتا ھے . سچ یہ ھے کہ جن لوگوں کو آریہ کہا جاتا ھے' وے اگر کہیں باھر سے بھی اِس دیش میں آئے تب بھی وہ جن دیشوں میں ھو کر آئے' وھاں کے پرانے باشندوں سے ملتے جلتے اور ان سے بیاہ شادی کرتے ھوئے آئے . جب وے یہاں پہنچے تو وے دنیا کی اور جاتیوں سے الگ کوئی ایک خاص جاتی نہیں رہ گئے تھے . سرجان مارشل نے بھی لکھا ھے کہ—" جہاں تک اتہاس سے پتہ چلتا ھے سندھ اور پنجاب کے لوگوں میں بہت سی جاتیاں ملی ھوئی تھیں' اور ھمیں یہ ماننے کے لئے کوئی سبب نہیں دکھائی دیتا کہ اِس سے پہلے کے زمانے میں بھی یہاں کے سب لوگ کسی ایک الگ نسل کے رھے ھوں ." اصل میں ' آریہ ' شبد سے مراد ایک خاص سبھیتا یا ایک خاص سنسکرتی سے ھے ' کسی خاص جاتی سے نہیں . اِس طرح کی ھر سبھیتا میں کئی الگ الگ جاتیوں کے لوگ سماجک اور آرتھک وجھوں سے مل کر رھنے لگتے ھیں اور پھر رل مل کر ایک ھو جاتے ھیں . یہی حال آریوں کا تھا . ایک سبھیتا' ایک سنسکرتی یا ایک زبان ھونا الگ بات ھے' اور ایک نسل یا جاتی ھونا دوسری بات ھے . اِس کے علاوہ جہاں جہاں پرانے آریوں کی ھڈیاں ملی ھیں' اُن میں لمبی کھوپڑی والے اور چوڑی کھوپڑی والے دونوں طرح کے لوگ ملتے ھیں اور اِن کے بیچ کے ملے جلے بھی ملتے ھیں .

اب ھم یہ دیکھیں گے کہ پرانے سنسکرت ساھتیہ میں ' آریہ ' شبد کن ارتھوں میں آیا ھے . میرا کہنا ھے کہ جاتی کے ارتھوں میں یہ شبد کہیں آیا ھی نہیں . یہ شبد جہاں بھی آیا ھے ' سبھیہ ' ششٹ' شرشٹھ' ' اُدار آدی معنوں میں آیا ھے . مہیدھر کے مطابق آریہ شبد کا ارتھ پہلے ویشیہ ھوتا تھا . ' واج سنئے سنہتا ' اور شتپتھ براھمن' میں بھی یہ شبد انھیں ارتھوں میں استعمال ھوا ھے . اور آدھک شروع میں آریہ شبد کا ارتھ ' کسان ' ھوتا تھا . انھیں ارتھوں میں ویدوں میں 'شودر آریو سماس آتا ھے . رگ وید میں ( 1. 51 . 8 ) اوپر کے تین ورنوں کے لوگوں کو ' آریہ ' کہا گیا ھے . آریہ کا الٹا 'داس' ھے ( 1 . 51 . 89 ) کہیں کہیں یہ شبد صرف ویش کے لئے بھی آیا ھے . عام طور پر رگ وید میں آریہ شبد کا ارتھ ھوتا ھے ' ایماندار ' ' دیاوان ' نیک' 'سوامی' ' سبھیہ ' ( رگ وید 1 13. 8. 4. 30. 18. 3;34.9. ). ویدوں کے بعد کے سنسکرت ساھتیہ میں بھی یہ شبد اِسی طرح کے ارتھوں میں آتا ھے' خاص جاتی کے ارتھ میں کہیں نہیں آتا . رامائن میں راکشش اندرجیت نے جہاں اپنے چچا ویبھکھن کو اُس کی دغا کے لئے مذمت ( تاڑنا ) کی ھے ' وھاں اسے ' اناریہ ' کہا گیا ھے .

# सिन्धु सभ्यता बनाम वैदिक सभ्यता

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

सिन्ध के अन्दर मोहन-जो-दड़ो में और पंजाब के अंदर हड़प्पा में जो नई खुदाइयां हुई हैं, उनसे हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता और संस्कृति पर नई रोशनी पड़ी है. दुनिया के विद्वान अन्त में किन नतीजों पर पहुंचेंगे, यह अभी नहीं कहा जा सकता. सर जान मार्शल ने, जो इस विद्या के सब से बड़े जानकार समझे जाते हैं, अपनी पुस्तक 'मोहन-जो-दड़ो ऐन्ड इन्डस वैली सिविलिज़ेशन' में लिखा है कि इस इलाक़े में आर्यों के आने से पहले, यानी ईसा से तीन चार हज़ार साल पहले, जो लोग रहते थे उनकी सभ्यता और उनकी संस्कृति बहुत ही ऊंचे दर्जे की थी. उनके मकान पक्की ईंटों के और कई कई मंजिले होते थे, उनकी गलियां, बाज़ार और शहर बड़े ख़ूबसूरत बने हुए थे, शहरों में तन्दुरुस्ती और सफ़ाई का बहुत अच्छा इन्तज़ाम था वग़ैरह. उसके बाद जो आर्य लोग वहां पहुंचे, उनकी संस्कृति इनसे बहुत कम दर्जे की थी, यहां तक कि शुरू में इनके मकान कच्चे गारे के होते थे वग़ैरा; और सिन्धु की पुरानी सभ्यता और आर्य सभ्यता यह दोनों दो अलग अलग सभ्यतायें थीं.

सर जान मार्शल की इस राय का एक ख़ास असर यह हुआ कि दुनिया के जो लोग, ख़ास कर यूरोप के जो लोग, अपने को आर्य जाति कहकर और दुनिया को सबसे पहले सभ्य बनाने वाला बता कर, इसका घमंड किया करते थे, उनका घमंड कुछ हलका पड़ गया. यूरोप के विद्वानों में यह ख़ब्त इतना बढ़ गया था और अभी तक इतना बढ़ा हुआ है कि इङ्गलिस्तान, जर्मनी, फ़्रान्स, इटली आदि अलग अलग देशों के विद्वान यह साबित करने की कोशिशों में लगे हुये थे कि आर्य जाति के लोग सब से पहले उन्हीं के देश में पैदा हुए और वहीं से दुनिया भर में फैल कर उन्होंने दुनिया को सभ्य बनाया. गो कि दुनिया के ज्यादातर विद्वानों का यही मत है कि आर्य जाति के लोग पहले पहल मध्य एशिया में पैदा हुये और वहां से सब जगह फैले.

जो हो, हम यहां यह दिखाना चाहते हैं कि 'आर्य' शब्द किसी ख़ास नसल के लोगों या किसी ख़ास जाति का वाचक नहीं है और न किसी ख़ास नसल के लोगों को इस बात का घमंड हो सकता है कि उन्होंने ही दुनिया को सब से पहले सभ्य बनाया.

# سندھو سبھیتا بنام ویدک سبھتا

ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

سندھ کے اندر موھن. جو. دڑو میں اور پنجاب کے اندر ھڑپا میں جو نئی کھدائیاں ھوئی ھیں' اُن سے ھندستان کی پرانی سبھیتا اور سنسکرتی پر نئی روشنی پڑی ھے . دنیا کے ودوان انت میں کن نتیجوں پر پہونچینگے' یہ ابھی نہیں کہا جا سکتا . سرجان مارشل نے' جو اِس ودیا کے سب سے بڑے جانکار سمجھے جاتے ھیں' اپنی پستک' موھن . جو . دڑو اینڈ انڈس ویلی سولیزیشن' میں لکھا ھے کہ اِس علاقے میں آریوں کے آنے سے پہلے' یعنی عیسیٰ سے تین چار ھزار سال پہلے' جو لوگ رھتے تھے ان کی سبھیتا اور اُن کی سنسکرتی بہت ھی اونچے درجے کی تھی . اُن کے مکان پکی اینٹوں کے اور کئی کئی منزلے ھوتے تھے' اُن کی گلیاں' بازار اور شہر بڑے خوبصورت بنے ھوئے تھے' شہروں میں تندرستی اور صفائی کا بہت اچھا انتظام تھا وغیرہ . اِس کے بعد جو آریہ لوگ وھاں پہنچے' ان کی سنسکرتی اِن سے بہت کم درجے کی تھی' یہاں تک کی شروع میں اِن کے مکان کچے گارے کے ھوتے تھے وغیرہ ؛ اور سندھو کی پرانی سبھیتا اور آریہ سبھیتا یہ دونوں دو الگ الگ سبھیتائیں تھیں .

سرجان مارشل کی اِس رائے کا ایک خاص اثر یہ ھوا کہ دنیا کے جو لوگ' خاص کر یورپ کے جو لوگ' اپنے کو آریہ جاتی کہہ کر اور دنیا کو سب سے پہلے سبھیہ بنانے والا بتا کر' اِس کا گھمنڈ کیا کرتے تھے' اُنکا گھمنڈ کچھ ھلکا پڑ گیا. یورپ کے ودوانوں میں یہ خبط اتنا بڑھ گیا تھا اور ابھی تک اتنا بڑھا ھوا ھے کہ انگلستان' جرمنی' فرانس' اٹلی آدی الگ الگ دیشوں کے ودوان یہ ثابت کرنے کی کوششوں میں لگے ھوئے تھے کہ آریہ جاتی کے لوگ سب سے پہلے انہیں کے دیش میں پیدا ھوئے اور وھیں سے دنیا بھر میں پھیل کر اُنھوں نے دنیا کو سبھیہ بنایا . گوکہ دنیا کے زیادہ‌تر ودوانوں کا یہی مت ھے کہ آریہ جاتی کے لوگ پہلے پہل مدھیہ ایشیا میں پیدا ھوئے اور وھاں سے سب جگہ پھیلے .

جو ھو' ھم یہاں یہ دکھانا چاھتے ھیں کہ ' آریہ ' شبد کسی خاص نسل کے لوگوں یا کسی خاص جاتی کا واچک نہیں ھے اور نہ کسی خاص نسل کے لوگوں کو اس بات کا گھمنڈ ھو سکتا ھے کہ اُنہوں نے ھی دنیا کو سب سے پہلے سبھیہ بنایا .

# फ़रवरी 1955 فروری

**क्या किस से** — **सफ़ा صفحہ**


1. सिन्धु सभ्यता बनाम वैदिक सभ्यता
   —डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त 75
2. बीसवीं सदी से पहले का भारत
   —स्वर्गीय आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय 86
3. अरबी और फ़ारसी शायरी की एक झलक
   —डा. मुस्तफ़ा इस्माईल अली एम. ए., पी. एच-डी. 98
4. शब्द और अर्थ
   —डाक्टर भगवानदास 103
5. विज्ञान और आधुनिक जीवन
   —डा. सर ज्ञानचन्द्र घोष डी.एस.सी., एफ़.एन.आई 108
6. फ़ारसी पर हिन्दी का असर
   —मौलवी सिराजुद्दीन आज़र 114
7. अकबर के समकालीन जैन कवि बनारसीदास
   —श्री जमनालाल जैन 116
8. महज़ क़यास ( कहानी )
   —विश्वम्भरनाथ पांडे 118
9. फ़ाहियान की भारत यात्रा
   —श्री के. पी. ऐस. मैनन, आई. सी. एस. 124
10. ग्रामोद्योग और विश्व शान्ति
    —सुरेशराम भाई 130
11. कुछ किताबें 135
12. हमारी राय— 137
    साम्राज प्रेमी दल और उसकी चालें—पंडित सुन्दरलाल; ऐटम बम और विश्व सरकार —विश्वम्भरनाथ पांडे.


**کیا کس سے**


1. سندھو سبھیتا بنام ویدک سبھیتا
   —ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت
2. بیسویں صدی سے پہلے کا بھارت
   —سورگیہ آچاریہ پرپھلہ چندر رائے
3. عربی اور فارسی شاعری کی ایک جھلک
   —ڈاکٹر مصطفیٰ اسمعیل علی ایم. اے.، پی - ایچ. ڈی.
4. شبد اور ارتھ
   —ڈاکٹر بھگوان داس
5. وگیان اور آدھونک جیون
   —ڈاکٹر سر گیان چندر گھوش ڈی.ایس.سی.،ایف.این.آئی.
6. فارسی پر ھندی کا اثر
   —مولوی سراج الدین آذر
7. اکبر کے سمکالین جین کوی بنارسی داس
   —شری جمنا لال جین
8. محض قیاس ( کہانی )
   —وشومبھر ناتھ پانڈے
9. فاھیان کی بھارت یاترا
   —شری کے . پی . ایس مینن، آئی . سی . ایس
10. گرامودیوگ اور وشو شانتی
    —سریش رام بھائی
11. کچھ کتابیں
12. ھماری رائے—
    سامراج پریمی دل اور اُس کی چالیں— پنڈت سندر لال؛ ایٹم بم اور وشو سرکار—وشومبھر ناتھ پانڈے .




जिल्द 19 جلد नम्बर 2 نمبر

# फरवरी 1955 فروری

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145، مٹھی گنج، الہ آباد

# NAYA HIND

*Monthly Journal of the Hindustani Culture Society*





Annual Subscription

Inland Rs. 6/-

Foreign Rs. 10/-

Single Copy As. /10/- only

Can be had from

**Manager, NAYA HIND**

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

# नया हिन्द
# نیا ہند



## इस नम्बर के ख़ास लेख

सिंधु सभ्यता बनाम वैदिक सभ्यता
—डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

बीसवीं सदी से पहले का भारत
—स्व० आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय

अरबी और फ़ारसी शायरी की एक झलक
—डाक्टर मुस्तफ़ा इस्माईल अली

शब्द और अर्थ
—डाक्टर भगवानदास

फ़ारसी पर हिन्दी का असर
—मौलवी सिराजउद्दीन आज़र

अकबर के समकालीन जैन कवि बनारसीदास
—श्री जमना लाल जैन

इसके अलावा

कहानी, स्केच, समालोचना, हमारी राय आदि

## اِس نبمر کے خاص لیکھ

سندھو سبھیتا بنام ویدک سبھیتا
—ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

بیسویں صدی سے پہلے کا بھارت
—سورگیہ آچاریہ پرفلہ‌چندر رائے

عربی اور فارسی شاعری کی ایک جھلک
—ڈاکٹر مصطفیٰ اسمعیل علی

شبد اور ارتھ
—ڈاکٹر بھگوان داس

فارسی پر ھندی کا اثر
—مولوی سراج الدین آذر

اکبر کے سمکالین جین کوی بنارسی داس
—شری جمنا لال جین

اِسکے علاوہ

کہانی، اسکیچ، سماوچنا، ھماری رائے آدی

...नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद
...ندستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ‌آباد

फ़रवरी 1955 فروری

इसके मुताल्लिक़ बहुत कुछ बुनियादी काम हिस्ट्री रिकार्ड कमीशन और उसकी रीजनल अनुसन्धान कमेटियों ने कर लिया है. पुरातत्त्व से भी हमें भारत के प्राचीन और मध्य-युग का इतिहास समझने में काफ़ी सहायता मिलती है. पुरातत्त्व ( archaeology ) इतिहास का लंगोटिया साथी है. तारीख़ी वाक़यात पुरातत्त्व की रोशनी में ज़्यादा साफ़ दिखाई देने लगते हैं. पुरातत्त्व के सिलसिले में अभी बेश-क़ीमत छानबीन बाक़ी है. अभी तक हम मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा के शिलालेख तक पढ़ने में कामयाब नहीं हो सके. चित्रकला, निर्मानकला और मूर्तिकला से इतिहास लिखने में जो मदद मिल सकती है वह पूरी तरह नहीं ली गई. मानव विज्ञान शास्त्र, नृवंश विद्या, पौरानिक कहानियां और मानव शास्त्र के अध्ययन से भी इतिहास लिखने में बहुत बड़ी सहायता मिलती है.

हमारे मुल्क में इस सिलसिले में कई संस्थायें बड़ा क़ीमती काम कर रही हैं. इनमें रायल एशियाटिक सोसाइटी, भारत इतिहासिक संशोधक मन्डल, भन्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टिट्यूट, बिहार, उड़ीसा, आन्ध्र और करनाटक की हिस्टारिकल रिसर्च सोसाइटीज़, उत्तरप्रदेश, पंजाब, महाकोशल और कलकत्ते की हिस्ट्री सोसाइटीज़, कामरूप अनुसन्धान समिति, बंगीय साहित्य परिषद्, वारीन्द्र रिसर्च सोसाइटी, महाबोध सोसाइटी, इन्डियन सोसाइटी आफ़ ओरियन्टल आर्ट, इन्डियन रिसर्च इन्स्टिट्यूट, रामकृष्ण मिशन इन्स्टिट्यूट आफ़ कल्चर, वेंकटेश्वर ओरियन्टल इन्स्टिट्यूट, न्युमेसमैटिक सोसाइटी, भारतीय इतिहास परिषद्, इन्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, इन्डियन हिस्टारिकल-रिकार्डस कमीशन, गांधी संस्कृति केन्द्र आदि संस्थायें प्रमुख हैं.

—विश्वम्भरनाथ पांडे



اِس کے متعلق بہت کچھ بنیادی کام ھسٹری ریکارڈ کمیشن اور اُس کی ریجنل انوسندھان کمیٹیوں نے کر لیا ھے ۔ پراتتو سے بھی ھمیں بھارت کے پراچین اور مدھیہ یگ کا اِتیہاس سمجھنے میں کافی سہائتا ملتی ھے ۔ پراتتو (archaeology) اِتیہاس کا لنگوٹیا ساتھی ھے ۔ تاریخی واقعات پراتتو کی روشنی میں زیادہ صاف دکھائی دینے لگتے ھیں ۔ پراتتو کے سلسلے میں ابھی بیش قیمت چھان بین کافی ھے ۔ ابھی تک ھم موھن - جو - دڑو اور ھڑپا کے شلالیکھ تک پڑھنے میں کامیاب نہیں ھوسکے ۔ چتر کلا' نرمان کلا اور مورتی کلا سے اِتیہاس لکھنے میں جو مدد مل سکتی ھے وہ پوری طرح نہیں لی گئی ۔ مانو وگیان شاستر' نرونش ودیا' پوراک کہانیاں' اور مانو شاستر کے ادھیں سے بھی اِتیہاس لکھنے میں بہت بڑی سہائتا ملتی ھے ۔

ھمارے ملک میں اِس سلسلے میں کئی سنستھائیں بڑا قیمتی کام کر رھی ھیں ۔ اِن میں رایل ایشیاٹک سوسائٹی' بھارت اِتیہاسک سنشودھک منڈل' بھنڈارکر اورینٹل ریسرچ اِنسٹیٹیوٹ' بہار' اڑیسہ' آندھر اور کرناٹک کی ھسٹاریکل ریسرچ سوسائٹیز' اُترپردیش' پنجاب' مہاکوشل اور کلکتہ کی ھسٹری سوسائٹیز' کامروپ' انوسندھان سمیتی' بنگیہ ساھتیہ پریشد' ویریندر ریسرچ سوسائٹی' مہابودھ سوسائٹی' اِنڈین سوسائٹی آف اورینٹل آرٹ' اِنڈین ریسرچ اِنسٹیٹیوٹ' رام کرشن مشن اِنسٹیٹیوٹ آف کلچر' وینکٹیشور اورینٹل اِنسٹیٹیوٹ' نیومیسمیٹک سوسائٹی' بھارتیہ اِتیہاس پریشد' اِنڈین ھسٹری کانگریس' اِنڈین ھسٹاریکل ریکارڈس کمیشن' گاندھی سنسکرتی کیندر آدی سنستھائیں پرمکھ ھیں ۔

—وشومبھر ناتھ پانڈے

इस धरती पर जानदार चीजें रहती हैं. आदमी की नसल को यहां रहते हुये क़रीब तीस हज़ार बरस हो गये. सर जेम्स जीन्स की यह भी राय है कि हमारी यह धरती अभी दस लाख बरस और चल सकती है.

हमारी हिस्ट्री का यही अनोखापन है कि हम, जहां तक हमसे हो सकता है, पीछे जाने की कोशिश करते हैं क्योंकि जितनी तब्दीलियां और उलटफेर दुनिया में हुये हैं हम उन सब को समझना चाहते हैं. हमारे ज़माने की सबसे बड़ी और सबसे चमकती हुई बात तब्दीली है. पुराने ज़माने की बाबत जो कुछ सामग्री हमारे पास मौजूद है उससे पता चलता है कि उस ज़माने में और भी बड़ी बड़ी तब्दीलियां हुई हैं. पर इन सब तब्दीलियों के अन्दर से हमें इतिहास की एक लगातार धारा, एक अटूट सिलसिला साफ़ नज़र आता है जिससे हमारा और पिछले ज़माने के लोगों का नाता जुड़ जाता है. उसी अटूटपन की वजह से हम उन लोगों के दिलों और दिमाग़ों को थोड़ा बहुत समझ सकते हैं. उनकी दुनिया हमारी दुनिया से अलग दुनिया थी. फिर भी अलग अलग ज़मानों की यह सब दुनियायें एक डोर में बंधी हुई हैं. हिस्ट्री की कुंजी इन्हीं दो लफ़्ज़ों में है—तब्दीली और अटूटपन.

आज सवाल यह है कि हम अपने मुल्क की नई हिस्ट्री की शुरूआत कहां से करें. तारीख़ के विद्वान उसे अलग-अलग हिस्सों से शुरू करते हैं—Ancient, Mediaeval और Modern. हम जिस हिन्दुस्तान को जानते हैं वह हमारे ज़माने का है. जिन लोगों को हम अच्छी तरह जानते हैं वह हम ख़ुद हैं. हम जो हिस्ट्री बना सकते हैं वह इसी सामग्री और इन्हीं काग़ज़ों, सिक्कों, इमारतों, हड्डियों और दूसरी पुरानी चीज़ों से बना सकते हैं जो हम तक पहुंच पाई हैं. जिसे हम बीता ज़माना कहते हैं उसका सब मसाला और गवाहियां आज हमारे चारों तरफ़ जमा हैं. ऐसी हालत में सब से अच्छा यही मालूम होता है कि हम अपने इस ज़माने से शुरू करके पीछे को हटते हुये हिस्ट्री के शुरू तक पहुंचने की कोशिश करें.

जहां तक इतिहास की सामग्री का सवाल है नैशनल आर्चीज़, नैशनल लाइब्रेरी, मुख़्तलिफ़ सूबों में सरकारी रिकार्ड, देशी राजाओं और मठों में एकत्रित सामग्री महत्व-पूर्ण हैं. विदेशों की बहुत सी लाइब्रेरियों में बेशक़ीमत भारतीय रिकार्ड मौजूद हैं. लेकिन ग़ैर सरकारी रिकार्ड, जिनका थोड़ा सा हिस्सा हमारे सामने आया है, सरकारी रिकार्डों से भी ज़्यादा क़ीमती साबित हो सकते हैं. सरकारी रिकार्डों में बहुत सी घटनाओं का अधूरा बयान मिलता है जो निजी रोज़नामचों, चिट्ठी पत्रियों, बयानों या दूसरे निजी काग़ज़ातों से पूरा हो सकता है.



اِس دھرتی پر جاندار چیزیں رہتی ہیں ۔ آدمی کی نسل کو یہاں رہتے ہوئے قریب تیس ہزار برس ہو گئے ۔ سر جیمس جینس کی یہ بھی رائے ہے کہ ہماری یہ دھرتی ابھی دس لاکھ برس اور چل سکتی ہے ۔

ہماری ہسٹری کا یہی انوکھاپن ہے کہ ہم، جہاں تک ہم سے ہو سکتا ہے، پیچھے جانے کی کوشش کرتے ہیں کیونکہ جتنی تبدیلیاں اور اُلٹ پھیر دنیا میں ہوئے ہیں ہم اُن سب کو سمجھنا چاہتے ہیں ۔ ہمارے زمانے کی سب سے بڑی اور سب سے چمکتی ہوئی بات تبدیلی ہے ۔ پرانے زمانے کی بابت جو کچھ سامگری ہمارے پاس موجود ہے اُس سے پتہ چلتا ہے کہ اُس زمانے میں اور بھی بڑی بڑی تبدیلیاں ہوئی ہیں ۔ پر اِن سب تبدیلیوں کے اندر سے ہمیں اِتہاس کی ایک لگاتار دھارا، ایک اٹوٹ سلسلہ صاف نظر آتا ہے جس سے ہمارا اور پچھلے زمانے کے لوگوں کا ناتا جڑ جاتا ہے ۔ اُسی اٹوٹ پن کی وجہ سے ہم اُن لوگوں کے دلوں اور دماغوں کو تھوڑا بہت سمجھ سکتے ہیں ۔ اُن کی دنیا ہماری دنیا سے الگ دنیا تھی ۔ پھر بھی الگ الگ زمانوں کی یہ سب دنیائیں ایک ڈور میں بندھی ہوئی ہیں ۔ ہسٹری کی کنجی اِنہیں دو لفظوں میں ہے — تبدیلی اور اٹوٹ پن ۔

آج سوال یہ ہے کہ ہم اپنے ملک کی نئی ہسٹری کی شروعات کہاں سے کریں ۔ تاریخ کے ودوان اُسے الگ الگ حصوں سے شروعات کرتے ہیں — Ancient, Mediaeval اور Modern. ہم جس ہندستان کو جانتے ہیں وہ ہمارے زمانے کا ہے ۔ جن لوگوں کو ہم اچھی طرح جانتے ہیں وہ ہم خود ہیں ۔ ہم جو ہسٹری بنا سکتے ہیں وہ اِسی سامگری اور اِنہیں کاغذوں، سکوں، عمارتوں، ہڈیوں اور دوسری پرانی چیزوں سے بنا سکتے ہیں جو ہم تک پہونچ پائی ہیں ۔ جسے ہم بیتا زمانہ کہتے ہیں اُس کا سب مصالحہ اور گواہیاں آج ہمارے چاروں طرف جمع ہیں ۔ ایسی حالت میں سب سے اچھا یہی معلوم ہوتا ہے کہ ہم اپنے اِس زمانے سے شروع کرکے پیچھے کو ہٹتے ہوئے ہسٹری کے شروع تک پہونچنے کی کوشش کریں ۔

جہاں تک اِتیہاس کی سامگری کا سوال ہے نیشنل آرچیوز، نیشنل لائبریری، مختلف صوبوں میں سرکاری ریکارڈ، دیشی راجاؤں اور مٹھوں میں ایکترت سامگری مہتوپورن ہیں ۔ ودیشوں کی بہت سی لائبریریوں میں بیش قیمت بھارتیہ ریکارڈ موجود ہیں ۔ لیکن غیر سرکاری ریکارڈ جن کا تھوڑا سا حصہ ہمارے سامنے آیا ہے سرکاری ریکارڈوں سے بھی زیادہ قیمتی ثابت ہوسکتے ہیں ۔ سرکاری ریکارڈوں میں بہت سی گھٹناؤں کا ادھورا بیان ملتا ہے جو نجی روزنامچوں، چٹھی پتریوں، بیانوں یا دوسرے نجی کاغذاتوں سے پورا ہوسکتا ہے ۔

सिफ़र बनने के लिये नहीं. हमें अफ़सोस है जब हम गान्धी जी के असूलों पर लोगों को कसकर देखते हैं तो अभी तक चारों ओर महज़ सिफ़र ही सिफ़र नज़र आते हैं. लेकिन मायूस होने की बात नहीं. गान्धी जी के अर्थों में विनोबा जैसे समाजवादी अपनी ताक़त को दसियों, सैकड़ों और हज़ारों गुना बढ़ाते हुये भारत में सच्चे समाजवाद की दाग़बेल डालते हुये आगे बढ़ रहे हैं.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

## इतिहास की नई सामग्री

पिछले महीने अहमदाबाद में कुल हिन्द हिस्ट्री कांग्रेस का इजलास हुआ था. और बातों के साथ उसने इतिहास (तारीख़) के अध्ययन के लिये इतिहास की सामग्री के दायरे को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने पर जोर दिया ताकि तारीख़ी छान बीन के काम में आसानी हो.

हिस्ट्री कांग्रेस के ये इजलास हर साल होते हैं जिनमें इतिहास की छानबीन पर हर साल नई रोशनी डाली जाती है. हमारे देश के इतिहास के विद्वान पिछली चौथाई सदी से इस बात की जोरदार कोशिश कर रहे हैं कि हमारे देश के इतिहास की—पुराने इतिहास की, मंझले ज़माने के इतिहास की और मौजूदा इतिहास की सिलसिलेवार कड़ियां इकट्ठा की जायं. इस ज़माने के अन्दर पिछले इतिहास की सामग्री इतनी तेज़ी के साथ बढ़ी है कि जैसी पहले कभी नहीं बढ़ी थी. आज से 50 बरस पहले इतिहास के ऐसे विद्वान थे जो समझते थे कि कुल इतिहास हज़रत ईसा से चार हज़ार बरस पहले शुरू होता था. पर अब यह ज़माना बड़ा लम्बा होता जाता है. क़रीब क़रीब हर साल पुराने इतिहास की खोज करने वाले किसी न किसी ऐसी पुरानी सभ्यता को खोदकर हमारे सामने रख देते हैं कि जिसका पहले से हमें गुमान भी नहीं रहता. इन पुराने शहरों और पुरानी सभ्यताओं को खोदकर निकालने वालों के अलावा जब हम ज़मीन के अन्दर की चीज़ों का पता लगाने वालों, आदमियों और जानवरों की पुरानी नसलों का पता लगाने वालों और दूसरे तरह तरह के साइन्स वालों की खोजों और ईजादों पर निगाह डालते हैं तो पहले हमें पता चलता है कि हमारी हिस्ट्री हज़ारों बरस पहले से शुरू होनी चाहिये और फिर हम धीरे धीरे लाखों बरस पीछे तक पहुंच जाते हैं, यहांतक कि हमारा सिर चकराने लगता है. हमें पता चलता है कि जितना हम समझे थे हिस्ट्री उससे कहीं लम्बी और पुरानी चीज़ है.

हिस्ट्री में हम कितना पीछे जा सकते हैं ? हमारी इस ज़मीन की उमर का अन्दाज़ा क़रीब क़रीब दो अरब बरस किया जाता है. कहा जाता है कि क़रीब 30 करोड़ बरस मे

صفر بننے کے لئے نہیں . ہمیں افسوس ہے جب ہم گاندھی جی کے اصولوں پر لوگوں کو کس کر دیکھتے ہیں تو ابھی تک چاروں اور محض صفر ہی صفر نظر آتے ہیں . لیکن مایوس ہونے کی بات نہیں . گاندھی جی کے ارتھوں میں ونوبا جیسے سماج وادی اپنی طاقت کو دسیوں ' سیکڑوں اور ہزاروں گنا بڑھاتے ہوئے بھارت میں سچے سماج واد کی داغ بیل ڈالتے ہوئے آگے بڑھ رہے ہیں .

—وشومبھر ناتھ پانڈے

## اِتہاس کی نئی سامگری

پچھلے مہینے احمدآباد میں کل ہند ہسٹری کانگریس کا اِجلاس ہوا تھا . اور باتوں کے ساتھ اُس نے اتہاس ( تاریخ ) کے ادھین کے لئے اتہاس کی سامگری کے دائرے کو زیادہ سے زیادہ بڑھانے پر زور دیا تاکہ تاریخی چھان بین کے کام میں آسانی ہو.

ہسٹری کانگریس کے یہ اجلاس ہر سال ہوتے ہیں جن میں اتہاس کی چھان بین پر ہر سال نئی روشنی ڈالی جاتی ہے . ہمارے دیش کے اتہاس کے ودوان پچھلی چوتھائی صدی سے اِس بات کی زوردار کوشش کر رہے ہیں کہ ہمارے دیش کے اتہاس کی—پرانے اتہاس کی ' منجھلے زمانے کے اتہاس کی اور موجودہ اِتہاس کی سلسلہ وار کڑیاں اِکٹھا کی جائیں . اِس زمانے کے اندر پچھلے اِتہاس کی سامگری اِتنی تیزی کے ساتھ بڑھی ہے کہ جیسی پہلے کبھی نہیں بڑھی تھی . آج سے 50 برس پہلے اِتہاس کے ایسے ودوان تھے جو سمجھتے تھے کہ کل اِتہاس حضرت عیسیٰ سے چار ہزار برس پہلے شروع ہوتا تھا . پر اب یہ زمانہ بڑا لمبا ہوتا جاتا ہے . قریب قریب ہر سال پرانے اِتہاس کی کھوج کرنے والے کسی نہ کسی ایسی پرانی سبھیتا کو کھود کر ہمارے سامنے رکھ دیتے ہیں کہ جس کا پہلے سے ہمیں گمان بھی نہیں رہتا . اِن پرانے شہروں اور پرانی سبھیتا کو کھود کر نکالنے والوں کے علاوہ جب ہم زمین کے اندر کی چیزوں کا پتہ لگانے والوں' آدمیوں اور جانوروں کی پرانی نسلوں کا پتہ لگانے والوں اور دوسرے طرح طرح کے سائنس والوں کی کھوجوں اور ایجادوں پر نگاہ ڈالتے ہیں تو پہلے ہمیں پتہ چلتا ہے کہ ہماری ہسٹری ہزاروں برس پہلے سے شروع ہونی چاہئے اور پھر ہم دھیرے دھیرے لاکھوں برس پیچھے تک پہونچ جاتے ہیں' یہاں تک کہ ہمارا سر چکرانے لگتا ہے . ہمیں پتہ چلتا ہے کہ جتنا ہم سمجھے تھے ہسٹری اُس سے کہیں لمبی اور پرانی چیز ہے .

ہسٹری میں ہم کتنا پیچھے جا سکتے ہیں ؟ ہماری اِس زمین کی عمر کا اندازہ قریب قریب دو ارب برس کیا جاتا ہے . کہا جاتا ہے کہ قریب 80 کروڑ برس سے

"कोई असत्य से सत्य को नहीं पा सकता. सत्य को पाने के लिये हमेशा सत्य का आचरन करना ही होगा. क्या अहिंसा और सत्य की जोड़ी है ? नहीं. सत्य में अहिंसा छिपी हुई है और अहिंसा में सत्य. इसीलिये मैंने कहा है कि अहिंसा और सत्य एक ही सिक्के के दो रुख हैं. दोनों की क़ीमत एक ही है. केवल पढ़ने में ही फ़र्क़ है. एक तरफ़ अहिंसा है दूसरी तरफ़ सत्य. जहां तक मैं जानता हूं दुनिया में कोई भी ऐसा देश नहीं है जो पूरी तरह समाजवादी हो. मेरे बताये हुये साधनों के बिना ऐसा समाज क़ायम करना नामुमकिन है."

हम गान्धी जी के ये विचार बड़ी विनम्रता के साथ कांग्रेस जनों के सोचने-विचारने के लिये पेश करते हैं. समाजवाद का सिर्फ़ प्रस्ताव पास कर देने से मुल्क में समाजवाद की बुनियाद नहीं पड़ जायगी. वह तभी पड़ेगी जब रास्ता दिखानेवाले अगुआ अपनी जिन्दगी में उसके उसूलों पर अमल करने लगें तभी हर सिफ़र के साथ उनकी क़ीमत दस गुनी बढ़ती जायगी. सुनहली वर्दीधारी अरदलियों, प्राइवेट सेक्रेटरियों, डीलक्स कारों, सैलूनों और हवाई सफ़रों की तड़क भड़क के बीच में ठीक किस जगह समाजवाद शुरू होगा यह हम नहीं समझ रहे. सन 1938 में गान्धी जी ने कांग्रेस के वज़ीरों को हिदायत देते हुये लिखा था कि उन्हें तीसरे दरजे में सफ़र करना चाहिये ताकि वे जनता के सम्पर्क में रहें. उन्हें सरकारी मोटरों को सिर्फ़ सरकारी कामों के लिये इस्तेमाल करना चाहिये. ग़ैर सरकारी काम के वक़्त उन्हें किराये की सवारियां इस्तेमाल करना चाहिये. उन्हें कोई भी ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे उनके और जनता के बीच में एक दीवार खड़ी हो जाय.

हमें ख़ुशी है कि कांग्रेस ने एक सादगी कमेटी मुक़र्रर की थी जिसने ये सुझाव दिये हैं कि वज़ीरों की ज़िन्दगी में जो तड़क भड़क आ गई है उससे जनता और उनकी ज़िन्दगी में एक खाई सी पैदा हो गई है. इस खाई को भरने के लिये फिर से सादगी के मयार क़ायम करने की ज़रूरत है. सुझावों में तनख़्वाह कम करने, बढ़िया मोटरें न इस्तेमाल करने और सादगी लाने पर ज़ोर दिया गया है.

जहां एक ओर कांग्रेस वालों से हमारा यह सवाल है वहां दूसरी ओर वामपक्षी दलों से भी हमारा अनुरोध है कि समाजवाद या साम्यवाद को उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में कितना उतारा ? वे ख़ुद एक हुये या महज़ सिफ़र ही हैं ? उनके जीवन में सादगी, सचाई और अहिंसा ने कितना घर बनाया है ? वे एक क़दम आगे बढ़कर देशवासियों को उमीदें दिला रहे हैं मगर गान्धी जी की बताई हुई कसौटी पर जनता उन्हें कस कर देखेगी और तब उनके साथ क़ीमत को दस गुना करने की ख़्वाहिश लेकर साथ होगी महज़



"کوئی استیہ سے ستیہ کو نہیں پاسکتا ۔ ستیہ کو پانے کے لئے ہمیشہ ستیہ کا آچرن کرنا ہی ہوگا ۔ کیا اہنسا اور ستیہ کی جوڑی ہے ؟ نہیں ۔ ستیہ میں اہنسا چھپی ہوئی ہے اور اہنسا میں ستیہ ۔ اِسی لئے میں نے کہا ہے کہ اہنسا اور ستیہ ایک ہی سکے کے دو رخ ہیں ۔ دونوں کی قیمت ایک ہی ہے ۔ کیول پڑھنے میں ہی فرق ہے ۔ ایک طرف اہنسا ہے دوسری طرف ستیہ ۔ جہاں تک میں جانتا ہوں دنیا میں کوئی بھی ایسا دیش نہیں ہے جو پوری طرح سماجوادی ہو ۔ میرے بتائے ہوئے سادھنوں کے بنا ایسا سماج قائم کرنا ناممکن ہے ۔"

ہم گاندھی جی کے یہ وچار بڑی ونمرتا کے ساتھ کانگریس جنوں کے سوچنے وچارنے کے لئے پیش کرتے ہیں ۔ سماجواد کا صرف پرستاؤ پاس کردینے سے ملک میں سماجواد کی بنیاد نہیں پڑ جائیگی ۔ وہ تبھی پڑیگی جب راستہ دکھانے والے اگوا اپنی زندگی میں اُس کے اصولوں پر عمل کرنے لگیں تبھی ہر صفر کے ساتھ اُن کی قیمت دس گنی بڑھتی جائیگی ۔ سنہلی وردی دھاری اردلیوں' پرائیویٹ سکریٹریوں' ڈی لکس کاروں' سیلونوں اور ہوائی سفروں کی تڑک بھڑک کے بیچ میں ٹھیک کس جگہ سماجواد شروع ہوگا یہ ہم نہیں سمجھ رہے ۔ سن 1938 میں گاندھی جی نے کانگریس کے وزیروں کو ہدایت دیتے ہوئے لکھا تھا کہ اُنہیں تیسرے درجے میں صفر کرنا چاہئے تاکہ وے جنتا کے سمپرک میں رہیں ۔ اُنہیں سرکاری موٹروں کو صرف سرکاری کاموں کے لئے استعمال کرنا چاہئے ۔ غیر سرکاری کام کے وقت اُنہیں کرائے کی سواریاں استعمال کرنا چاہئے ۔ اُنہیں کوئی بھی ایسا کام نہیں کرنا چاہئے جس سے اُن کے اور جنتا کے بیچ میں ایک دیوار کھڑی ہو جائے ۔

ہمیں خوشی ہے کہ کانگریس نے ایک سادگی کمیٹی مقرر کی تھی جس نے یہ سجھاؤ دئے ہیں کہ وزیروں کی زندگی میں جو تڑک بھڑک آگئی ہے اُس سے جنتا اور اُن کی زندگی میں ایک کھائی سی پیدا ہوگئی ہے ۔ اِس کھائی کو بھرنے کے لئے پھر سے سادگی کے معیار قائم کرنے کی ضرورت ہے ۔ سجھاؤں میں تنخواہ کم کرنے' بڑھیا موٹریں نہ استعمال کرنے اور سادگی لانے پر زور دیا گیا ہے ۔

جہاں ایک اور کانگریس والوں سے ہمارا یہ سوال ہے وہاں دوسری اور وامپکشی دلوں سے بھی ہمارا انورودھ ہے کہ سماجواد یا سامیہواد کو اُنہوں نے اپنی زندگی میں کتنا اُتارا ؟ وے خود ایک ہوئے یا محض صفر ہی ہیں ؟ اُن کے جیون میں سادگی' سچائی اور اہنسا نے کتنا گھر بنایا ہے ؟ وے ایک قدم آگے بڑھکر دیش واسیوں کو اُمیدیں دلا رہے ہیں مگر گاندھی جی کی بتائی ہوئی کسوٹی پر جنتا اُنہیں کس کر دیکھے گی اور تب اُن کے ساتھ قیمت کو دس گنا کرنے کی خواہش لیکر ساتھ ہوگی محض

हम यहां हरिजन के सम्पादक और कांग्रेस के नेताओं और कार्यकर्ताओं का ध्यान पूज्य महात्मा गांधी की समाजवादी की व्याख्या की ओर दिलाना चाहते हैं. गांधी जी ने 6 जुलाई सन '47 को दिल्ली से 'समाजवादी कौन' सुर्खी से लिखा था :—

"समाजवाद एक सुन्दर शब्द है. जहां तक मैं जानता हूं समाजवाद में समाज के सारे मेम्बर बराबर होते हैं, न कोई नीचा और न कोई ऊंचा. किसी आदमी के शरीर में सिर इसलिये ऊंचा नहीं है कि वह सब से ऊपर है और पांव के तलवे इसलिये नीचे नहीं हैं कि वह जमीन को छूते हैं. जिस तरह इनसान के जिस्म के तमाम हिस्से बराबर हैं उसी तरह समाज रूपी शरीर के सभी अंग बराबर हैं. यही समाजवाद है.

"इस वाद में राजा और प्रजा, धनी और ग़रीब, मालिक और मजदूर सब बराबर हैं. इस तरह समाजवाद यानी अद्वैतवाद. उसमें दुई या भेदभाव की गुंजाइश ही नहीं है.

"सारी दुनिया के समाज पर नजर डालें तो हम देखेंगे कि हर जगह दुई है. एकता या अद्वैत कहीं नाम को भी नहीं दिखाई देता. यह आदमी ऊंचा है, वह आदमी नीचा है. यह हिन्दू है वह मुसलमान है, तीसरा ईसाई है, चौथा पारसी है, पांचवां सिख है, छठा यहूदी है. इनमें भी बहुत सी उपजातियां हैं. मेरे अद्वैतवाद में यह सब एक हो जाते हैं, एकता में समा जाते हैं.

"इस वाद तक पहुंचने के लिये हम एक दूसरे की तरफ़ ताकते न बैठें. जब तक सारे लोग समाजवादी न बन जायें, तब तक हम कोई हलचल न करें, अपनी जिन्दगी में फेर-फार करके हम महज तक़रीर देते रहें, पार्टियां बनाते रहें और बाज पक्षी की तरह जहां शिकार मिल जाय वहां उस पर टूट पड़ें, यह समाजवाद हरगिज नहीं है. समाजवाद जैसी शानदार चीज झड़प मारने से हम से दूर हो जाने वाली है.

"समाजवाद की शुरूआत पहले समाजवादी से होती है. अगर एक भी ऐसा समाजवादी हो, तो उस पर सिफ़र बढ़ाये जा सकते हैं. पहले सिफ़र से उसकी क़ीमत दस गुनी हो जायगी. इसके बाद बढ़ाया जाने वाला हर सिफ़र पहले की तादाद को दस गुनी बढ़ाता जायगा. लेकिन अगर पहला सिफ़र ही हो तो उसके आगे कितने ही सिफ़र क्यों न बढ़ाये जायें उनकी क़ीमत सिफ़र ही रहेगी. 'सिफ़रों के लिखने में मेहनत और काग़ज की बरबादी ही होगी.

"यह समाजवाद बड़ी शुद्ध चीज है. राजा को मार कर राजा और प्रजा एक से नहीं बन सकेंगे. मालिक का सिर काट कर मजदूर मालिक नहीं हो सकेंगे. यही बात सब पर लागू की जा सकती है.



ہم یہاں ہریجن کے سمپادک اور کانگریس کے نیتاؤں اور کاریہ‌کرتاؤں کا دھیان پوجیہ مہاتما گاندھی کی سماج‌وادی کی ویاکھیا کی اور دلانا چاہتے ہیں . گاندھی جی نے 6 جولائی سن 47' کو دلی سے ' سماج وادی کون ' سرخی سے لکھا تھا :—

" سماج واد ایک سندر شبد ہے . جہاں تک میں جانتا ہوں سماج‌واد میں سماج کے سارے میمبر برابر ہوتے ہیں' نہ کوئی نیچا اور نہ کوئی اونچا . کسی آدمی کے شریر میں سر اس لئے اونچا نہیں ہے کہ وہ سب سے اوپر ہے اور پاؤں کے تلوے اِس لئے نیچے نہیں ہیں کہ وہ زمین کو چھوتے ہیں. جس طرح انسان کے جسم کے تمام حصے برابر ہیں اُسی طرح سماج روپی شریر کے سبھی انگ برابر ہیں . یہی سماج‌واد ہے .

" اِس واد میں راجا اور پرجا' دھنی اور غریب' مالک اور مزدور سب برابر ہیں . اِس طرح سماج واد یعنی ادویت واد . اُس میں دوئی یا بھید بھاؤ کی گنجائش ہی نہیں ہے .

" ساری دنیا کے سماج پر نظر ڈالیں تو ہم دیکھیں گے کہ ہر جگہ دوئی ہے . ایکتا یا ادویت کہیں نام کو بھی نہیں دکھائی دیتا . یہ آدمی اونچا ہے' وہ آدمی نیچا ہے . یہ ہندو ہے وہ مسلمان ہے' تیسرا عیسائی ہے' چوتھا پارسی ہے' پانچواں سکھ ہے' چھٹا یہودی ہے . اِن میں بھی بہت سی اُپجاتیاں ہیں . میرے ادویت واد میں سب ایک ہو جاتے ہیں ' ایکتا میں سما جاتے ہیں .

" اِس واد تک پہونچنے کے لئے ہم ایک دوسرے کی طرف تاکتے نہ بیٹھیں . جب تک سارے لوگ سماج‌وادی نہ بن جائیں' تب تک ہم کوئی ہل چل نہ کریں' اپنی زندگی میں پھیر پھار کر کے ہم محض تقریر دیتے رہیں' پارٹیاں بناتے رہیں اور باز پکشی کی طرح جہاں شکار مل جائے وہاں اُس پر ٹوٹ پڑیں' یہ سماج واد ہرگز نہیں ہے . سماج واد جیسی شاندار چیز جھپٹ مارنے سے ہم سے دور ہو جانے والی ہے .

" سماج واد کی شروعات پہلے سماج وادی سے ہوتی ہے . اگر ایک بھی ایسا سماج‌وادی ہو' تو اُس پر صفر بڑھائے جا سکتے ہیں . پہلے صفر سے اُس کی قیمت دس گنی ہو جائے گی . اِس کے بعد بڑھایا جانے والا ہر صفر پہلے کی تعداد کو دس گنی بڑھاتا جائے گا . لیکن اگر پہلا صفر ہی ہو تو اُس کے آگے کتنے ہی صفر کیوں نہ بڑھائے جائیں اُس کی قیمت صفر ہی رہے گی . صفروں کے لکھنے میں محنت اور کاغذ کی بربادی ہی ہوگی .

" یہ سماج‌واد بڑی شدھ چیز ہے . راجا کو مار کر راجا اور پرجا ایک سے نہیں بن سکیں گے . مالک کا سر کاٹ کر مزدور مالک نہیں ہو سکیں گے . یہی بات سب پر لاگو کی جا سکتی ہے .

हमें खुशी है कि सिवाय फ़िलिप्पाइन के सभी मुल्क हमदर्दी के साथ इस दावतनामे पर ग़ौर कर रहे हैं. एशिया और अफ़रीक़ा के ये 25 मुल्क, जिनकी आबादी दुनिया की दो-तिहाई होती है, एक जबरदस्त शान्ति मोरचे का काम देंगे. चीन, हिन्देशिया, हिन्द-चीन, और जापान एक तरफ़, ईरान, मिस्र, इराक़, सऊदी अरब और यमन दूसरी तरफ़ यूरोप और अमरीका की साम्राज्यवादी नीति से सताये हुये हैं. एशिया और यूरोप की करोड़हा करोड़ जनता साम्राज्यवादियों की नीति के कारन आज अशिक्षा, भूक, नंग, बीमारी और बेकारी का शिकार है. आज इन दोनों महाद्वीपों के नेताओं का फ़र्ज़ है कि वह डेढ़ अरब से ज्यादा इनसान के बच्चों का स्तर ऊंचा उठायें, उन्हें नंग और भूक से बचायें और इनसानी ज़िन्दगी की ज़रूरी नियामतें उनके लिये भी मोहय्या करें.

इस नुक़्तेनज़र से यह एफ़रेशियन कान्फ्रेंस पिछड़े हुये खित्ते को आगे बढ़ाने का एक जबरदस्त अमली क़दम है. दूसरी ओर अगर यह मुल्क यह भी फ़ैसला करें कि उन्हें शाहनशाहतों की खौफ़नाक जंगों से अपने को अलहदा रखना है तो इसमें किसी को हैरानी न होनी चाहिये. तीसरी जंग को रोकने का इससे जबरदस्त तरीक़ा कोई दूसरा नहीं है कि एशिया और अफ़रीक़ा के निवासी गोरे साम्राज्यवादियों से साफ़ साफ़ यह कह दें कि हम तुम्हारी किसी लड़ाई में जंगी-चारे ( Cannon-fodder ) का काम न देंगे.

खुशी की बात है कि पंडित जवाहर लाल के बयान के मुताबिक़, निमंत्रित मुल्कों में से ज्यादातर के कान्फ्रेन्स में शामिल होने के लिये रज़ामन्दी देने वाले जवाब आ चुके हैं. सारी दुनिया दिलचस्पी के साथ इस कान्फ्रेन्स के फ़ैसलों का रास्ता देखेगी.

—विश्वम्भरनाथ पांडे



ہمیں خوشی ہے کہ سوائے فلپائن کے سبھی ملک ہمدردی کے ساتھ اِس دعوت نامہ پر غور کر رہے ہیں۔ ایشیا اور افریقہ کے یہ 25 ملک جن کی آبادی دنیا کی دو - تہائی ہوتی ہے' ایک زبردست شانتی مورچے کا کام دیں گے۔ چین' ہند- ایشیا' ہند - چین' اور جاپان ایک طرف' ایران' مصر' عراق' سعودی عرب اور یمن دوسری طرف یورپ اور امریکہ کی سامراجیہ وادی نیتی سے ستائے ہوئے ہیں۔ ایشیا اور یورپ کی کروڑھا کروڑ جنتا سامراجیہ وادیوں کی نیتی کے کارن آج اشکشا' بھوک' ننگ' بیماری اور بیکاری کا شکار ہے۔ آج اِن دونوں مہادویپوں کے نیتاؤں کا فرض ہے کہ وہ ڈیڑھ ارب سے زیادہ اِنسان کے بچوں کا استر اُونچا اُٹھائیں' اُنھیں ننگ اور بھوک سے بچائیں اور اِنسانی زندگی کی ضروری نعمتیں اُن کے لئے بھی مہیا کریں۔

اِس نقطہ نظر سے یہ ایفریشین کانفرنس پچھڑے ہوئے خطہ کو آگے بڑھانے کا ایک زبردست عملی قدم ہے۔ دوسری اور اگر یہ ملک یہ بھی فیصلہ کریں کہ اُنھیں شہنشاہتوں کی خوفناک جنگوں سے اپنے کو علیحدہ رکھنا ہے تو اِس میں کسی کو حیرانی نہ ہونی چاہئے۔ تیسری جنگ کو روکنے کا اِس سے زبردست طریقہ کوئی دوسرا نہیں ہے کہ ایشیا اور افریقہ کے نواسی گورے سامراجیہ وادیوں سے صاف صاف یہ کہہ دیں کہ ہم تمہاری کسی لڑائی میں جنگی - چارے (Cannon-fodder) کا کام نہ دینگے۔

خوشی کی بات ہے کہ پنڈت جواہر لال کے بیان کے مطابق نمنترت ملکوں میں سے زیادہتر کے کانفرنس میں شامل ہونے کے لئے رضامندی دینے والے جواب آچکے ہیں۔ ساری دنیا دلچسپی کے ساتھ اِس کانفرنس کے فیصلوں کا راستہ دیکھے گی۔

—وشمبھر ناتھ پانڈے

## समाजवादी व्यवस्था की ओर

कांग्रेस के अवाड़ी ( मद्रास ) इजलास ने लोक कल्याणकारी राज व्यवस्था की जगह अपना मक़सद बदल कर समाजवादी व्यवस्था कर लिया. महात्मा गांधी द्वारा संस्थापित पत्र 'हरिजन' ने इस पर शुरू में ही नुक़्ताचीनी करते हुये लिखा था कि अपने लक्ष्य को इस सस्ते तरीक़े से कांग्रेस को नहीं बदलना चाहिये. दो-एक तरमीमें, जो कांग्रेस का लक्ष्य 'सर्वोदय' रखना चाहती थीं गिर गईं. मौलाना आज़ाद ने तक़रीर करते हुये यह कहा कि बज़ात खुद लफ़्ज़ों की कोई अहमियत नहीं होती. समाजवाद के अन्दर सर्वोदय की भी पूरी गुंजाइश है.

## سماجوادی ویوستھا کی اور

کانگریس کی اوازی ( مدراس ) اِجلاس نے لوک کلیانکاری راج ویوستھا کی جگہ اپنا مقصد بدل کر سماجوادی ویوستھا کر لیا۔ مہاتما گاندھی دوارا سنستھاپت پتر ' ہریجن ' نے اِس پر شروع میں ہی نقطہ چینی کرتے ہوئے لکھا تھا کہ اپنے لکش کو اِس سستے طریقے سے کانگریس کو نہیں بدلنا چاہئے۔ دو - ایک ترمیمیں' جو کانگریس کا لکش ' سرودے ' رکھنا چاہتی تھیں گر گئیں۔ مولانا آزاد نے تقریر کرتے ہوئے یہ کہا کہ بذات خود لفظوں کی کوئی اہمیت نہیں ہوتی۔ سماجواد کے اندر سرودے کی بھی پوری گنجائش ہے۔

साम्राज्यवादी हुक्मरां और पूंजीशाह अपनी ख़ुदग़र्ज़ियों की पूर्ति में आज दुनिया को मौत की ख़न्दक़ में ढकेलना चाहते हैं. एक जमाना था जब जनता इनके बहकावे में आकर जंग को 'मुनासिब और सिर्फ़ एक रास्ता' समझती थी. आज शान्ति का मोरचा सारी दुनिया में बुलन्दी पकड़ रहा है. चारों ओर से शान्ति के जयगीत सुनाई देते हैं. दुनिया समझ गई है कि थैलीशाह और साम्राज्यशाह उसकी भावनाओं को उकसा कर उन्हें 'लड़ाई के चारे' की तरह इस्तेमाल करते थे.

सच तो यह है कि हज़रत ईसा की वह सीख आज पूरी अहमीयत के साथ हमारे सामने है कि जो लोग तलवार से जीतेंगे वह तलवार से ही मिट जावेंगे. क्या भगवान बुद्ध ने ही दूसरे लफ़्ज़ों में इसे नहीं कहा कि—

नफ़रत नफ़रत से शान्त न होगी !<br>
गुस्सा गुस्से से शान्त न होगा !<br>
दुशमनी दुशमनी से शान्त न होगी !<br>
नफ़रत, गुस्सा और दुशमनी प्रेम से ही शान्त होंगी.

गान्धी जी ने भी हमें जोरदार और अमली तरीक़े से इसी बात की तालीम दी. आज शान्ति का मोरचा हमें प्रेम और अहिंसात्मक तरीक़े से मज़बूत करना है ताकि जंग-बाज़ भी इस बात की शिकायत न कर सकें कि शान्तिवादियों के शान्ति के नारे के पीछे नफ़रत और हिंसा है.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

## एफ़्रो-एशियन कान्फ्रेंस

दिसम्बर के आख़री हफ़्ते में इन्डोनीशिया की राजधानी जाकार्ता के क़रीब बोगोर में हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, लंका, बर्मा और इन्डोनीशिया के प्रधानमंत्रियों का एक सम्मेलन हुआ. पांचों प्राइम मिनिस्टरों ने एशिया और अफ़रीक़ा की बेहतरी, भलाई और फ़ायदे के लिहाज़ से इस बात पर ग़ौर किया कि क्यों न अफ़रीक़ा और एशिया के 25 मुल्कों का एक बड़ा सम्मेलन बुलाया जाय जिसमें अफ़रीक़ा और एशियाई मुल्कों की आज़ादी और उनकी समस्याओं पर विचार किया जाय. यह तजवीज़ पांचों मुल्कों के प्राइम-मिनिस्टरों ने एक राय से मंज़ूर की. यह भी फ़ैसला किया कि चीन, जापान, मिस्र, अरब मुल्क, फ़िलिप्पाइन, नैपाल वग़ैरह सब मुल्कों को इस सम्मेलन में शामिल होने की दावत दी जाय. निमंत्रित मुल्कों में सिर्फ़ फ़िलस्तीन की यहूदी रियासत छोड़ दी गई है और दक्खिन अफ़रीक़ा को भी फ़ेहरिस्त में शामिल नहीं किया गया. दोनों मुल्कों को दावत न देने की वजहें बिलकुल साफ़ हैं. दक्खिन अफ़रीक़ा की गोरी हकूमत को एशिया और अफ़रीक़ा के गेहुंये, पीले और सांवले रंग से सख़्त नफ़रत है और यहूदी राज के जिस तरह के ताल्लुक़ात सभी अरब मुल्कों से हैं उससे उसे दावत देने में एक उलझन पैदा होती.



سامراجیہ‌وادی حکمراں اور پونجی‌شاہ اپنی خودغرضیوں کی پورتی میں آج دنیا کو موت کی خندق میں ڈھکیلنا چاہتے ہیں . ایک زمانہ تھا جب جنتا اِن کے بہکاوے میں آکر جنگ کو 'مناسب اور صرف ایک راستہ' سمجھتی تھی . آج شانتی کا مورچہ ساری دنیا میں بلندی پکڑ رہا ہے . چاروں اور سے شانتی کے جئے گیت سنائی دیتے ہیں . دنیا سمجھ گئی ہے کہ تھیلی شاہ اور سامراجیہ شاہ اُس کی بھاؤناؤں کو اُکسا کر اُنہیں 'لڑائی کے چارے' کی طرح اِستعمال کرتے تھے .

سچ تو یہ ہے کہ حضرت عیسیٰ کی وہ سیکھ آج پوری اہمیت کے ساتھ ہمارے سامنے ہے کہ جو لوگ تلوار سے جیتیں گے وہ تلوار سے ہی مٹ جاویں گے . کیا بھگوان بدھ نے ہی دوسرے لفظوں میں اِسے نہیں کہا کہ—

نفرت نفرت سے شانت نہ ہوگی .<br>
غصہ غصے سے شانت نہ ہوگا .<br>
دشمنی دشمنی سے شانت نہ ہوگی .<br>
نفرت، غصہ اور دشمنی پریم سے ہی شانت ہونگی.

گاندھی جی نے بھی ہمیں زوردار اور عملی طریقے سے اِسی بات کی تعلیم دی . آج شانتی کا مورچہ ہمیں پریم اور اہنساتمک طریقے سے مضبوط کرنا ہے تاکہ جنگ باز بھی اِس بات کی شکایت نہ کرسکیں کہ شانتی‌وادیوں کے شانتی کے نعرے کے پیچھے نفرت اور ہنسا ہے .

—وشومبھر ناتھ پانڈے

## ایفرو-ایشین کانفرنس

دسمبر کے آخری ہفتے میں انڈونیشیا کی راجدھانی جاکارتا کے قریب بوگور میں ہندستان، پاکستان، لنکا، برما اور انڈونیشیا کے پردھان منتریوں کا ایک سمیلن ہوا . پانچوں پرائم منسٹروں نے ایشیا اور افریقہ کی بہتری، بھلائی اور فایدہ کے لحاظ سے اِس بات پر غور کیا کہ کیوں نہ افریقہ اور ایشیا کے 25 ملکوں کا ایک بڑا سمیلن بلایا جائے جس میں افریقہ اور ایشیائی ملکوں کی آزادی اور اُن کی سمسیاؤں پر وچار کیا جائے . یہ تجویز پانچوں ملکوں کے پرائم منسٹروں نے ایک رائے سے منظور کی . یہ بھی فیصلہ کیا کہ چین، جاپان، مصر، عرب ملک، فلپائن، نیپال وغیرہ سب ملکوں کو اِس سمیلن میں شامل ہونے کی دعوت دی جائے . نمنترت ملکوں میں صرف فلسطین کی یہودی ریاست چھوڑ دی گئی ہے اور دکھن افریقہ کو بھی فہرست میں شامل نہیں کیا گیا . دونوں ملکوں کو دعوت نہ دینے کی وجہیں بالکل صاف ہیں . دکھن افریقہ کی گوری حکومت کو ایشیا اور افریقہ کے گیہوئے، پیلے اور سانولے رنگ سے سخت نفرت ہے اور یہودی راج کے جس طرح کے تعلقات سبھی عرب ملکوں سے ہیں اِس سے اُسے دعوت دینے میں ایک اُلجھن پیدا ہوتی .

ही दुनिया के सब हवाई जहाज़ निकलते हैं और इन देशों में तेल और पेट्रोल के सागर भरे पड़े हैं. अमरीका ने सऊदी अरब से पेट्रोल का ठेका लिया है. फ़लस्तीन में वह यहूदियों को पूरी तरह बसाना चाहता है. तुर्की और यूनान को क़र्ज़ देकर, ईरान और पाकिस्तान को रुपया देकर अमरीका अपना हाथ इन रियासतों पर रखना चाहता है जिससे वहां रूस का असर न हो सके. रूस भी कब चुप बैठ सकता है. उसकी बचत इसी में है कि इस हिस्से में उसके बैरी का असर न हो. प्रशान्त में भी इस समय जो क़िलेबन्दी हो रही है, जिस तरह अमरीका प्रशान्त के जज़ीरों में अपना असर जमा रहा है, उससे शान्ति और सुलह के आसार कम और आगे आने वाली कलह, लड़ाई और मारकाट के लक्षन ज़्यादा दीख रहे हैं.

इस तरह अगर हम अपने चारों तरफ़ निगाह दौड़ायें तो हम को जान पड़ेगा कि अमरीकी शहनशाहियत आज हमलावर तरीक़ों से दुनिया की शान्ति को बरबाद करना चाहती है. दूसरी ओर अफ़रीक़ा और सुदूरपूर्व की क़ौमें आज अपनी आज़ादी को प्राप्त करने के लिये हर मुमकिन कोशिश कर रही हैं. लेकिन अब तक जिन बड़ी ताक़तों ने उनको अपने पैरों तले कुचल रखा है और जो उन ग़रीबों की ग़रीबी से ही अमीर बनी बैठी हैं, वह उनको आज़ाद नहीं होने देना चाहतीं. साम्राज्य की प्यास और आज़ादी की भूख की टक्कर लड़ाई के जन्म का पहला कारन है.

आज जंग रोकने की कुछ शर्तें ये हैं—

( 1 ) तरह तरह के ढंग से हुकूमत चलाने वाले मुल्क इस बात पर राज़ी हों कि किसी दूसरे मुल्क की राजकाजी नीति में किसी दूसरे मुल्क को दख़ल देने का कोई हक़ नहीं. एक दूसरे के ख़िलाफ़ समाजी ज़िन्दगी के तरीक़े वाले भी दुनिया में अमन से रह सकते हैं.

( 2 ) अफ़रीक़ा और एशिया के ग़ुलाम मुल्कों को पूरी तरह आज़ाद किया जाय और पिछड़े हुये मुल्कों की आर्थिक और समाजी बेहतरी के लिये सब मुल्क मिल कर मदद दें.

( 3 ) हर मुल्क की जनता में इस बात का ज़ोरदार प्रचार किया जाय कि आधुनिक लड़ाइयों में सब में ज़्यादा मरन और बरबादी बेगुनाह जनता की ही होती है. लड़ाई के नतीजे में किसी मुल्क को भी फ़ायदा नहीं पहुंचता. चुनांचे जंगी मोरचों के मुक़ाबले में शान्ति के मोरचों को मज़बूत बनाने में जनता पूरी पूरी मदद दे.

( 4 ) मुल्कों को इस बात का फ़ैसला करना है कि वह किसी भी सूरत में आपसी फ़ैसले की कसौटी जंग को न बनायेंगे.

( 5 ) हाईड्रोजन और एटम बम बनाने पर देर सबेर बन्दिश.



ھی دنیا کے سب ہوائی جہاز نکلتے ھیں اور اِن دیشوں میں تیل اور پٹرول کے ساگر بھرے پڑے ھیں . امریکہ نے سعودی عرب سے پٹرول کا ٹھیکا لیا ھے . فلسطین میں وہ یہودیوں کو پوری طرح بسانا چاھتا ھے . ترکی اور یونان کو قرض دے کر، ایران اور پاکستان کو روپیہ دے کر امریکہ اپنا ھاتھ اِن ریاستوں پر رکھنا چاھتا ھے جس سے وھاں روس کا اثر نہ ھو سکے . روس بھی کب چپ بیٹھ سکتا ھے . اُس کی بچت اِسی میں ھے کہ اِس حصے میں اُس کے بیری کا اثر نہ ھو . پرشانت میں بھی اِس سمے جو قلعہ بندی ھو رھی ھے، جس طرح امریکہ پرشانت کے جزیروں میں اپنا اثر جما رھا ھے، اس سے شانتی اور صلح کے آثار کم اور آگے آنے والی کلہ لڑائی اور مارکاٹ کے لکچھن زیادہ دیکھ رھے ھیں .

اِس طرح اگر ھم اپنے چاروں طرف نگاہ دوڑائیں تو ھم کو جان پڑے گا کہ امریکی شہنشاھیت آج حملہ آور طریقوں سے دنیا کی شانتی کو برباد کرنا چاھتی ھے . دوسری اور افریقہ اور سودور پورو کی قومیں آج اپنی آزادی کو پراپت کرنے کے لئے ھر ممکن کوشش کر رھی ھیں . لیکن اب تک جن بڑی طاقتوں نے اُن کو اپنے پیروں تلے کچل رکھا ھے اور جو اُن غریبوں کی غریبی سے ھی امیر بنی بیٹھی ھیں، وہ اُن کو آزاد نہیں ھونے دینا چاھتیں . سامراجیہ کی پیاس اور آزادی کی بھوکھ کی ٹکر لڑائی کے جنم کا پہلا کارن ھے .

آج جنگ روکنے کی کچھ شرطیں یہ ھیں—

(1) طرح طرح کے ڈھنگ سے حکومت چلانے والے ملک اِس بات پر راضی ھوں کہ کسی دوسرے ملک کی راجکاجی نیتی میں کسی دوسرے ملک کو دخل دینے کا کوئی حق نہیں . ایک دوسرے کے خلاف سماجی زندگی کے طریقے والے بھی دنیا میں امن سے رہ سکتے ھیں .

(2) افریقہ اور ایشیا کے غلام ملکوں کو پوری طرح آزاد کیا جائے اور پچھڑے ھوئے ملکوں کی آرتھک اور سماجی بہتری کے لئے سب ملک مل کر مدد دیں .

(3) ھر ملک کی جنتا میں اِس بات کا زوردار پرچار کیا جائے کہ آدھونک لڑائیوں میں سب میں زیادہ مرن اور بربادی بےگناہ جنتا کی ھی ھوتی ھے . لڑائی کے نتیجے میں کسی ملک کو بھی فائدہ نہیں پہونچتا . چنانچہ جنگی مورچوں کے مقابلے میں شانتی کے مورچوں کو مضبوط بنانے میں جنتا پوری پوری مدد دے .

(4) ملکوں کو اِس بات کا فیصلہ کرنا ھے کہ وہ کسی بھی صورت میں آپسی فیصلے کی کسوٹی جنگ کو نہ بنائینگے .

(5) ھائڈروجن اور ایٹم بم بنانے پر دیر سویر بندش .

आस लगाये हुये थी कि यह नई कमेटी लड़ाई को हमेशा के लिये मिटा देगी और दो आदमियों के झगड़ों की तरह सल्तनतों के झगड़ों को भी क़ानून से तै करने का सिलसिला पड़ जायेगा. यह भी आस लगी है कि शहंशाहियत यानी साम्राज्यवाद और पूंजीवाद का दम टूटने वाला है और इनका ख़ात्मा होते ही लड़ाई का लालच ही मिट जायेगा. इस तरह के सोचने वाले सुनहरे सपने देखने लगे हैं. कुछ लोग यह भी ख़्याल करने लगे हैं कि अब एटम की ताक़त के इस्तेमाल पर रोक लग जायेगी. हथियारों का बनना और रखना बन्द हो जायेगा. दुनिया में अमन होगा और लड़ाई सदा के लिये मिट जायेगी.

जबकि एक ओर यह सपने देखे जा रहे हैं, दूसरी ओर तीसरी लड़ाई के लिये ख़ौफ़नाक से ख़ौफ़नाक हथियार ईजाद किये जा रहे हैं. एटम बमों का ज़ख़ीरा इकट्ठा होता जा रहा है जिनकी भयंकरता इस क़दर बढ़ गई है कि वैज्ञानिकों को तीसरी लड़ाई के नतीजे में सिवाय इनसानी क़ौम की बरबादी के और कुछ नहीं दिखाई देता.

छोटी रियासतों के झगड़े ही लड़ाई का हीला होते हैं और यह रियासतें बड़ी ताक़तों के लिये टट्टी की आड़ का काम देती हैं. असली कारन बड़ी रियासतों की धन-धरती की प्यास और उनके आपसी बैर होते हैं. आज की दुनिया में यह बात साफ़ नज़र आ रही है. लड़ाई में भले ही सोवियत रूस, अमरीका और इंगलैन्ड एक ही तरफ़ से लड़े और एक दूसरे में दोस्ती थी पर अमरीका का पूंजीवाद सांप सोवियत के कम्यूनिज़्म को अपने लिये नेवला सा बैरी समझता है. लड़ाई ख़त्म होते ही एक दूसरे के डर ने ज़ोर पकड़ा. अमरीका और इंगलैन्ड के शाही लुटेरों को सोवियत और चीन के भूत ने सताना शुरू किया. पहली लड़ाई के बाद भी रूस के साथ ऐसा ही बर्ताव किया गया था. सोवियत रूस ने इंगलैन्ड से दोस्ती करनी चाही, फिर भी चर्चिल पार्टी ने और मज़दूर पार्टी के बड़े वज़ीर मैकडोनल्ड ने रूस के साथ दुशमनी और बेईमानी का बर्ताव किया. दूसरी लड़ाई के बाद ही फिर इंगलैन्ड और अमरीका ने रूस के ख़िलाफ़ अपनी कूटनीतिक साज़िशें शुरू कर दीं. आज उन्होंने पूर्वी यूरोप के ख़िलाफ़ एक तरह का घेरा सा डाल रखा है. सिर्फ़ फ़र्क़ इतना है कि आज सोवियत रूस कमज़ोर नहीं है. हर देश में सोवियत की दोस्ताना पार्टियां काम कर रही हैं. अगर शान्ति चाहिये तो अमरीका को यह घेरेबन्दी का रास्ता छोड़ना होगा. पर अमरीका से इसकी उम्मीद करना बेकार है.

मिडिल ईस्ट में भी यही कशमकश जारी है. अमरीका इस हिस्से पर क़ाबू पाने के लिये बेचैन है. वह यहां अपना साम्राज्य चाहता है और इङ्गलैंड कब यहां से दूर होना पसन्द करेगा? ख़ासकर जब इस हिस्से के ऊपर से होकर

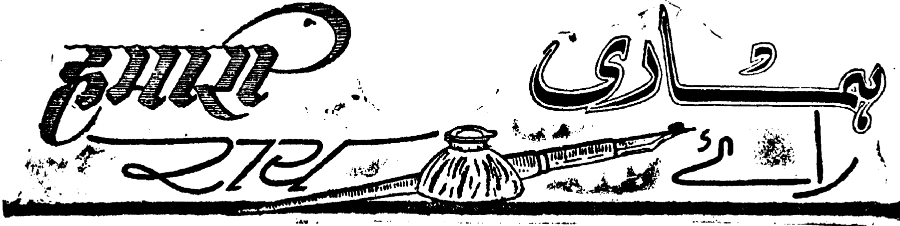


آس لگائے ہوئے تھی کہ یہ نئی کمیٹی لڑائی کو ہمیشہ کے لئے مٹا دیگی اور دو آدمیوں کے جھگڑوں کی طرح سلطنتوں کے جھگڑوں کو بھی قانون سے طے کرنے کا سلسلہ پڑ جائیگا . یہ بھی آس لگی ہے کہ شہنشاہیت یعنی سامراجیہواد اور پونجی‌واد کا دم ٹوٹنے والا ہے اور اِن کا خاتمہ ہوتے ہی لڑائی کا لالچ ہی مٹ جائیگا . اِس طرح کے سوچنے والے سنہرے سپنے دیکھنے لگے ہیں . کچھ لوگ یہ بھی خیال کرنے لگے ہیں کہ اب ایٹم کی طاقت کے استعمال پر روک لگ جائیگی . ہتھیاروں کا بننا اور رکھنا بند ہو جائیگا . دنیا میں امن ہوگا اور لڑائی سدا کے لئے مٹ جائیگی .

جب کہ ایک اُور یہ سپنے دیکھے جا رہے ہیں، دوسری اُور تیسری لڑائی کے لئے خوفناک سے خوفناک ہتھیار اِیجاد کئے جا رہے ہیں . ایٹم بموں کا ذخیرا اِکٹھا ہوتا جا رہا ہے جن کی بھینکرتا اِس قدر بڑھ گئی ہے کہ ویگیانکوں کو تیسری لڑائی کے نتیجے میں سوائے اِنسانی قوم کی بربادی کے اور کچھ نہیں دکھائی دیتا .

چھوٹی ریاستوں کے جھگڑے ہی لڑائی کا حیلہ ہوتے ہیں اور یہ ریاستیں بڑی طاقتوں کے لئے ٹٹی کی آڑ کا کام دیتی ہیں . اصلی کارن بڑی ریاستوں کی دھن دھرتی کی پیاس اور اُن کے آپسی بیر ہوتے ہیں . آج کی دنیا میں یہ بات صاف نظر آرہی ہے . لڑائی میں بھلے ہی سوویت روس، امریکہ اور اِنگلینڈ ایک ہی طرف سے لڑے اور ایک دوسرے میں دوستی تھی پر امریکہ کا پونجی‌واد سانپ سوویت کے کمیونزم کو اپنے لئے نیولا سا بیری سمجھتا ہے . لڑائی ختم ہوتے ہی ایک دوسرے کے ڈر نے زور پکڑا . امریکہ اور اِنگلینڈ کے شاہی لٹیروں کو سوویت اور چین کے بھوت نے ستانا شروع کیا . پہلی لڑائی کے بعد بھی روس کے ساتھ ایسا ہی برتاؤ کیا گیا تھا . سوویت روس نے اِنگلینڈ سے دوستی کرنی چاہی، پھر بھی چرچل پارٹی نے اور مزدور پارٹی کے بڑے وزیر میکڈونلڈ نے روس کے ساتھ دشمنی اور بےایمانی کا برتاؤ کیا . دوسری لڑائی کے بعد ہی پھر اِنگلینڈ اور امریکہ نے روس کے خلاف اپنی کوٹنیتک سازشیں شروع کردیں. آج اُنھوں نے پوربی یورپ کے خلاف ایک طرح کا گھیرا سا ڈال رکھا ہے. صرف فرق اِتنا ہے کہ آج سوویت روس کمزور نہیں ہے . ہر دیش میں سوویت کی دوستانہ پارٹیاں کام کر رہی ہیں . اگر شانتی چاہئے تو امریکہ کو یہ گھیرےبندی کا راستہ چھوڑنا ہوگا. پر امریکہ سے اِس کی اُمید کرنا بیکار ہے .

مڈل ایسٹ میں بھی یہی کشمکش جاری ہے . امریکہ اِس حصے پر قابو پانے کے لئے بیچین ہے . وہ یہاں اپنا سامراجیہ چاہتا ہے اور اِنگلینڈ کب یہاں سے دور ہونا پسند کرے گا؟ خاص کر جب اِس حصے کے اوپر سے ہو کر




## एटम और हाइड्रोजन बम बनाम शान्ति मोरचा

30 दिसम्बर को जाकार्ता से बोलते हुये पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एटम और हाइड्रोजन बमों के ख़तरे से दुनिया को आगाह करते हुये कहा—"अगर एटम और हाइड्रोजन बमों के फूटने के प्रयोग बन्द न किये गये तो आसमान ज़हरीली हवाओं से भर जायगा और सबकी जिन्दगी ख़तरे में हो जायगी. हम जानते हैं कि जंगों के मुताल्लिक़ आजकल साइन्स वाले क्या कहते हैं? फ़्रान्स के फ़िज़िक्स के नोबुल इनाम पाने वाले प्रिन्स लुइ दे ब्रागी ने दूसरे वैज्ञानिकों की राय को दोहराते हुये कहा है कि छै या सात एटम बमों के फूटने से हवायें ज़हरीली हो जायगी और दुनिया के रहने वालों के लिये नुक़सानदह साबित होंगी." पंडित नेहरू ने आगे कहा कि "रेडियो एक्टिव किरनें दुनिया के वातावरन को ज़हरीला कर देंगी और उसका नतीजा यह भी हो सकता है कि इनसानी क़ौम नेस्त नाबूद हो जाय."

उसी दिन हुबली में बोलते हुये हिन्दुस्तान के मशहूर साइन्सदां डाक्टर चन्द्रशेखर व्यंकट रमन ने कहा कि "अगर वह सब ताक़तें जिनके पास एटम बम हैं एटम की लड़ाई से एक दूसरे को नेस्त नाबूद कर दें तो दुनिया की इसमें बेहतरी हो जाय. हां दुनिया को दोबारा जन्म लेना पड़ेगा."

पहली लड़ाई के ख़त्म होते ही दूरन्देशों ने दूसरी लड़ाई का साया देखना शुरू कर दिया था. यह बात किसी से छिपी न थी कि वरसाई के सुलहनामे में ही अगली लड़ाई के बीज मौजूद थे. अब दूसरी लड़ाई की तोपों की आवाज अभी मुशकिल से धीमी हो पाई है कि फिर तीसरी लड़ाई के नगाड़े लोगों को बजते सुनाई देने लगे हैं. वैसे इस बात पर एतबार नहीं होता कि हिरोशिमा और स्टालिनग्राड के बाद इतनी जल्दी आदमी का कलेजा पत्थर का हो जायेगा कि वह तीसरी लड़ाई की तैयारी करने लगे. यू. एन. ओ. को बने भी आठ बरस बीत चुके. सारी दुनिया उस पर

## ایٹم اور ھائڈروجن بم بنام شانتی مورچہ

30 دسمبر کو جاکارتا سے بولتے ہوئے پنڈت جواھر لال نہرو نے ایٹم اور ھائڈروجن بموں کے خطرے سے دنیا کو آگاہ کرتے ہوئے کہا—"اگر ایٹم اور ھائڈروجن بموں کے پھوٹنے کے پریوگ بند نہ کئے گئے تو آسمان زھریلی ھواؤں سے بھر جائیگا اور سب کی زندگی خطرے میں ھوجائیگی۔ ھم جانتے ھیں کہ جنگوں کے متعلق آجکل سائنس والے کیا کہتے ھیں؟ فرانس کے فزکس کے نوبل اِنعام پانے والے پرنس لوئی دے براگی نے دوسرے ویگیانکوں کی رائے کو دھراتے ھوئے کہا ھے کہ چھ یا سات ایٹم بموں کے پھوٹنے سے ھوائیں زھریلی ھو جائینگی اور دنیا کے رھنے والوں کے لئے نقصان دہ ثابت ھونگی۔" پنڈت نہرو نے آگے کہا کہ "ریڈیو ایکٹو کرنیں دنیا کے واتاورن کو زھریلا کردینگی اور اُس کا نتیجہ یہ بھی ھو سکتا ھے کہ اِنسانی قوم نیست نابود ھو جائے۔"

اُسی دن ھبلی میں بولتے ھوئے ھندستان کے مشہور سائنسداں ڈاکٹر چندر شیکھر وینکٹ رمن نے کہا کہ "اگر وہ سب طاقتیں جن کے پاس ایٹم بم ھیں ایٹم کی لڑائی سے ایک دوسرے کو نیست نابود کردیں تو دنیا کی اِس میں بہتری ھوجائے۔ ھاں دنیا کو دو بارہ جنم لینا پڑیگا۔"

پہلی لڑائی کے ختم ھوتے ھی دوراندیشوں نے دوسری لڑائی کا سایہ دیکھنا شروع کردیا تھا۔ یہ بات کسی سے چھپی نہ تھی کہ ورسائی کے صلحنامے میں ھی اگلی لڑائی کے بیج موجود تھے۔ اب دوسری لڑائی کی توپوں کی آواز ابھی مشکل سے دھیمی ھو پائی ھے کہ پھر تیسری لڑائی کے نگاڑے لوگوں کو بجتے سنائی دینے لگے ھیں۔ ویسے اِس بات پر اعتبار نہیں ھوتا کہ ھیروشیما اور استالن‌گراڈ کے بعد اِتنی جلدی آدمی کا کلیجہ پتھر کا ھو جائیگا کہ وہ تیسری لڑائی کی تیاری کرنے لگے۔ یو۔ این۔ او۔ کو بنے بھی آٹھ برس بیت چکے۔ ساری دنیا اُس پر



अमरीका और इंगलिस्तान ने जर्मनी को फिर से हथियार बन्द करने का फ़ैसला किया है।

امریکہ اور انگلستان نے جرمنی کو پھر سے ہتھیار بند کرنے کا فیصلہ کیا ہے

उसे सख्त से सख्त जिस्मानी तकलीफ़ें देते हैं मगर उफ़ करने के लिये उसके लब मानो बने ही नहीं. उसके जिस्म से खून रिस रिस कर बह सकता है मगर फ़ौलादी आत्मा से आह् नहीं निकल सकती.

मौक़ा पाकर साथियों की मदद से तेह्-फ़ु अपने घायल जिस्म को घसीटता हुआ भागता है. साथियों से मिलता है और काम करने वालों की अगली क़तार में फिर से शामिल होता है.

पूरा उपन्यास एक 'वार डायरी' के ताने बाने में बुना गया है. बदलती हुई हालतों में चीनी किसान किस तरह अपने को नई हालतों और नये ख्यालों के मुताबिक़ ढालते हैं, किस तरह क्रान्ति को कामयाब बनाने में वह रसद से माओ की सेना को मदद देते हैं, किस तरह बदलती हुई परिस्थितियां चीन के समाजी जीवन पर अपना असर डालती हैं और किस तरह एक से एक बढ़कर क़ुरबानियों की मिसालें पेश होती हैं—यह सब उपन्यासकार ने अपने सीधे-साधे किन्तु सहज तर्ज़ पर बयान किया है.

पूरा उपन्यास नये चीन की उभरती हुई ज़िन्दगी पर एक सर्चलाइट डालता है. उपन्यास में उन हालतों का ज़िक्र है जब सफल क्रान्ति के लिये संघर्श चल रहा था. कुओमिनताङ्ग अपनी आख़री लड़ाई लड़ रहा था. लेकिन उपन्यास के उस चित्रन में ही क्रान्ति की कामयाबी की एक निश्चित उम्मीद छिपी हुई थी. लेखक ने क्रान्ति की सफलता पर और भी अफ़साने लिखे हैं. इस अफ़साने से उसकी मंशा यह दिखाने की है कि माओ की कामयाबी के पीछे चीन की करोड़ों जनता का, चीन के किसानों का त्याग और बलिदान है जिसकी वजह से क्रान्ति सफल हुई.

उपन्यास दिलचस्प है और उसमें एक रवानी है. छपाई सफ़ाई बहुत उम्दा है.

—विश्वम्भरनाथ पांडे



اسے سخت سے سخت جسمانی تکلیفیں دیتے ہیں مگر اُف کرنے کے لئے اُس کے لب مانو بنے ہی نہیں ۔ اس کے جسم سے خون رس رس کر بہ سکتا ہے مگر فولادی آتما سے آہ نہیں نکل سکتی ۔

موقع پاکر ساتھیوں کی مدد سے تہ - فو اپنے گھایل جسم کو گھسیٹتا ہوا بھاگتا ہے ۔ ساتھیوں سے ملتا ہے اور کام کرنے والوں کی اگلی قطار میں پھر سے شامل ہوتا ہے ۔

پورا اُپنیاس ایک 'وار ڈایری' کے تانے بانے میں بنا گیا ہے ۔ بدلتی ہوئی حالتوں میں چینی کسان کس طرح اپنے کو نئی حالتوں اور نئے خیالوں کے مطابق ڈھالتے ہیں' کس طرح کرانتی کو کامیاب بنانے میں وہ رسد سے ماؤ کی سینا کو مدد دیتے ہیں' کس طرح بدلتی ہوئی پرستھتیاں چین کے سماجی جیون پر اپنا اثر ڈالتی ہیں اور کس طرح ایک سے ایک بڑھ کر قربانیوں کی مثالیں پیش ہوتی ہیں—یہ سب اُپنیاسکار نے اپنے سیدھے سادھے کنتو سہج طرز پر بیان کیا ہے ۔

پورا اُپنیاس نئے چین کی اُبھرتی ہوئی زندگی پر ایک سرچ لائٹ ڈالتا ہے ۔ اُپنیاس میں اُن حالتوں کا ذکر ہے جب سپھل کرانتی کے لئے سنگھرش چل رہا تھا ۔ کوومنتانگ اپنی آخری لڑائی لڑ رہا تھا ۔ لیکن اُپنیاس کے اِس چترن میں ہی کرانتی کی کامیابی کی ایک نشچت اُمید چھپی ہوئی تھی ۔ لیکھک نے کرانتی کی سپھلتا پر اور بھی افسانے لکھے ہیں ۔ اس افسانے سے اُس کی منشا یہ دکھانے کی ہے کہ ماؤ کی کامیابی کے پیچھے چین کی کروڑوں جنتا کا' چین کے کسانوں کا تیاگ اور بلیدان ہے جس کی وجہ سے کرانتی سپھل ہوئی ۔

اُپنیاس دلچسپ ہے اور اُس میں ایک روانی ہے ۔ چھپائی صفائی بہت عمدہ ہے ۔

—وشومبھر ناتھ پانڈے

# कुछ किताबें

# کچھ کتابیں

## वाल आफ़ ब्रांज़ह

अंग्रेज़ी ज़बान में लिखा हुआ उपन्यास (अफ़साना)—लिखने वाले ल्यु-चिंग; छापने वाले—फ़ारेन लैंग्वेज प्रेस, पीकिंग, 1954; सफ़े 283 डिमाई साइज़.

मूल उपन्यास चीनी ज़बान में लिखा गया था. यह उसका अंग्रेज़ी तर्जुमा सिडनी शैपिरो का किया हुआ है. वाल आफ़ ब्रांज़्ह का हिन्दी में तर्जुमा होगा—कांसे की दीवार. कांसे की दीवार की सफ़ाई देते हुये चीन के प्रेज़ीडेन्ट माओ ने कहा था—"साथियो, कांसे की असली दीवार क्या है ? वह जनता है, करोड़ों की तादाद में, जो दिल से और सचमुच क्रान्ति की क़न्द्र करते हैं. वही कांसे की असली दीवार है. कोई ताक़त इस दीवार को नहीं तोड़ सकती. यह अभेद्य दीवार है. प्रतिक्रान्ति भी इसे नहीं तोड़ सकती......"

लेखक ने माओ की इस तक़रीर से ही अपने अफ़साने का नाम 'वाल आफ़ ब्रांज़्ह' कांसे की दीवार चुना. उपन्यास का मुख्य नायक शिह-तेह-फ़ु एक कम्युनिस्ट नौजवान है. वह मशहूर कम्यूनिस्ट सेना एट्थ रूट आर्मी में घायलों को उठाने का काम करता है. अफ़सरों ने उसकी जांफ़िशानी से काम करने की तारीफ़ की और उसे इनाम दिये. कम्युनिस्ट और कुओमिनतांग सेनाओं का युद्ध चलता है. कुओमिनतांग सेना रसद चाहती है. वह गांवों पर धावे बोलती है. गांव वाले कम्युनिस्ट सेना को रसद पहुंचाते हैं. उनके बड़े बड़े क़ाफ़िले निकलते हैं. तेह-फ़ु उन्हें रास्ता दिखाता और दुश्मनों की बमबारी से आगाह करता हुआ चलता है. वह एक आदर्श जांबाज़ कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ता है. न वह मौत से डरता है न ज़ुल्मों से. वह किसानों को आगाह करने में अपनी जान से खेलता है. अन्त में दुशमन उसे गिरफ़्तार करते हैं.

## وال آف برانزھ

انگریزی زبان میں لکھا ہوا اُپنیاس ( افسانہ )—لکھنے والے لیو چنگ؛ چھاپنے والے—فارین لینگویج پریس' پیکنگ' 1954؛ صفحے 283 ڈمائی سائز .

مول اُپنیاس چینی زبان میں لکھا گیا تھا . یہ اُس کا انگریزی ترجمہ سڈنی شیپیرو کا کیا ہوا ھے . وال آف برانزھ کا ھندی ترجمہ ہوگا—کانسے کی دیوار . کانسے کی دیوار کی صفائی دیتے ھوئے چین کے پریزیڈینٹ ماؤ نے کہا تھا—" ساتھیو' کانسے کی اصلی دیوار کیا ھے ؟ وہ جنتا ھے' کروڑوں کی تعداد میں جو دل سے اور سچ مچ کرانتی کی قدر کرتے ھیں . وھی کانسے کی اصلی دیوار ھیں . کوئی طاقت اِس دیوار کو نہیں توڑ سکتی . یہ ابھیدیہ دیوار ھے . پرتی کرانتی بھی اِسے نہیں توڑ سکتی......"

لیکھک نے ماؤ کی اِس تقریر سے ھی اپنے افسانے کا نام ' وال آف برانزھ ' کانسے کی دیوار چنا . اُپنیاس کا مکھیہ نایک شھ - تیھ - فو ایک کمیونسٹ نوجوان ھے . وہ مشہور کمیونسٹ سینا ایٹتھ روٹ آرمی میں گھایلوں کو اُٹھانے کا کام کرتا ھے . افسروں نے اس کی جانفشانی سے کام کرنے کی تعریف کی اور اُسے اِنعام دیئے . کمیونسٹ اور کوؤمنتانگ سیناؤں کا یدھ چلتا ھے . کوؤمنتانگ سینا رسد چاھتی ھے . وہ گاؤں پر دھاوے بولتی ھے . گاؤں والے کمیونسٹ سینا کو رسد پہونچاتے ھیں . اُن کے بڑے بڑے قافلے نکلتے ھیں . تہ - فو اُنھیں راستہ دکھاتا اور دشمنوں کی بمباری سے آگاہ کرتا ہوا چلتا ھے . وہ ایک آدرش جوانباز کمیونسٹ کاریہ کرتا ھے . نہ وہ موت سے ڈرتا ھے نہ ظلموں سے . وہ کسانوں کو آگاہ کرنے میں اپنی جان سے کھیلتا ھے . انت میں دشمن اُسے گرفتار کرتے ھیں .

अवध के शौक़ीनों ने इसे और शोख़ किया. कुछ नादान दोस्तों और कुछ दाना दुश्मनों ने अफ़रातफ़री से फ़ायदा उठाया और ज़बान का एक दूसरा ही तर्ज़ ईजाद कर डाला. नतीजा यह हुआ कि एक ज़बान के दो ढङ्ग चल पड़े और इनमें आपस में खींच तान होने लगी. तारीख़ के पुराने और नये दौरों पर ध्यान दीजिए और इनसे सीख लीजिये. हर ज़माने में दो शक्तियों का अमल दिखाई देता है—एक तरफ़ फ़िरक़ों, नस्लों, रस्मों और रिवाजों की बहुतायत है तो दूसरी तरफ़ एकता की ताक़त, जो इन्हें मिलाकर एक सभ्यता पैदा करती है. हर दौर में यही अमल जारी रहा है. कसरत में वहदत का तमाशा होता नज़र आता है. आज भी वही कशमकश है. हिन्दुस्तान रक़बा और आबादी में एक बहुत बड़ा देस है. इसमें कई नस्लों के आदमी बसते हैं, कितने ही मज़हब हैं, कुछ की जन्म भूमि हिन्दुस्तान है, कुछ की बाहर के देस. इनकी रीतें और रस्में अलग हैं, रवायतें जुदा हैं, ज़ाती क़ानून, धर्म के ठिकाने न्यारे हैं. लेकिन यह सब कुछ होते हुए भी एक तारीख़ी क़ूवत है जो कड़ियों को जोड़ कर एक मज़बूत ज़ंजीर ढाल रही है, मालूम नहीं कब से, लेकिन तारीख़ के ज़माने से बहुत पहले से, क़िस्मत का यही फ़ैसला है.

दुनिया में न किसी ज़माने में, न किसी मुल्क में कोई भी राज बहुत दिन चला है, जो एक समाज की बुनियादों पर न खड़ा हो. एक समाज का आसरा हमारे दिलों का मेल मिलाप है. दिलों में मुहब्बत एक दूसरे के तरीक़ों, ख़्यालों और भावों की इज़्ज़त से, अपने में सब देश वालों को और सब देशवालों में अपने को देखने से पैदा होती है. यही वजह है कि हमारा समाज मिलवां होगा, जिसमें हिन्दुस्तान के कुल बाशिन्दे साझी होंगे. इस मिलवां समाज से जो तहज़ीब पैदा होगी वह एक मुश्तरका ख़ान्दान की मुश्तरका जायदाद होगी. इस नये समाज, नई सभ्यता की ज़रूरतों को एक मिलवां ज़बान ही पूरा कर सकती है. यह वही ज़बान हो सकती है जो अपने पुरखों का आदर और मेहमानों का स्वागत करती है. इसका देस की किसी बोली से बैर नहीं, लेकिन इस पर किसी ख़ास फ़िरक़े का टीका नहीं है. यह ज़बान पुरानी भी है, नई भी. इसमें वह ध्वनियां भी हैं जिन्हें हमारे कान वैदिक काल से सुनते चले आये हैं और वह भी जिन्हें हमारे भाई तारीख़ के तीसरे दौर में अपने साथ लाये. पर इसके क़ानून क़ायदे अपने हैं और यह कभी दूसरी ज़बान की हुकूमत मानने को तैयार नहीं. यह ज़बान भूकी नंगी नहीं, क्योंकि यह लफ़्ज़ों के लिये संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, सभी से ख़िराज ले सकती है. इसके साहित्य का भन्डार भरा है. पर इसके आने वाले साहित्य के सामने इसके पुराने कारनामे ऐसे ही फीके दिखाई देंगे जैसे सूरज के सामने सवेरे के तारे.



اودھ کے شوقینوں نے اِسے اور شوخ کیا. کچھ نادان دوستوں اور کچھ دانا دشمنوں نے افراتفری سے فائدہ اُٹھایا اور زبان کا ایک دوسرا ھی طرز اِیجاد کرڈالا. نتیجہ یہ ھوا کہ ایک زبان کے دو ڈھنگ چل پڑے اور اِن میں آپس میں کھینچ تان ھونے لگی. تاریخ کے پرانے اور نئے دوروں پر دھیان دیجئے اور اِن سے سیکھ لیجئے. ھر زمانے میں دو شکتیوں کا عمل دکھائی دیتا ھے— ایک طرف فرقوں، نسلوں، رسموں اور رواجوں کی بہتایت ھے تو دوسری طرف ایکتا کی طاقت، جو انھیں ملاکر ایک سبھیتا پیدا کرتی ھے. ھر دور میں یہی عمل جاری رھا ھے. کثرت میں وحدت کا تماشہ ھوتا نظر آتا ھے. آج بھی وھی کشمکش ھے. ھندستان رقبہ اور آبادی میں ایک بہت بڑا دیس ھے. اِس میں کئی نسلوں کے آدمی بستے ھیں، کتنے ھی مذھب ھیں، کچھ کی جنم بھومی ھندستان ھے، کچھ کی باھر کے دیس. ان کی ریتیں اور رسمیں الگ ھیں، روایتیں جدا ھیں، ذاتی قانون، دھرم کے ٹھکانے نیارے ھیں. لیکن یہ سب کچھ ھوتے ھوئے بھی ایک تاریخی قوت ھے جو کڑیوں کو جوڑ کر ایک مضبوط زنجیر ڈھال رھی ھے، معلوم نہیں کب سے، لیکن تاریخ کے زمانے سے بہت پہلے سے، قسمت کا یہی فیصلہ ھے.

دنیا میں نہ کسی زمانے میں، نہ کسی ملک میں کوئی بھی راج بہت دن چلا ھے، جو ایک سماج کی بنیادوں پر نہ کھڑا ھو. ایک سماج کا آسرا ھمارے دلوں کا میل ملاپ ھے. دلوں میں محبت ایک دوسرے کے طریقوں، خیالوں اور بھاؤں کی عزت سے، اپنے میں سب دیش والوں کو اور سب دیش والوں میں اپنے کو دیکھنے سے پیدا ھوتی ھے. یہی وجہ ھے کہ ھمارا سماج ملواں ھوگا، جسمیں ھندستان کے کل باشندے ساجھی ھونگے. اِس ملواں سماج سے جو تہذیب پیدا ھوگی وہ ایک مشترکہ خاندان کی مشترکہ جائداد ھوگی. اِس نئے سماج، نئی سبھیتا کی ضرورتوں کو ایک ملواں زبان ھی پورا کرسکتی ھے. یہ وھی زبان ھوسکتی ھے جو اپنے پرکھوں کا آدر اور مہمانوں کا سواگت کرتی ھے. اِسکا دیس کی کسی بولی سے بیر نہیں، لیکن اِس پر کسی خاص فرقے کا ٹیکا نہیں ھے. یہ زبان پرانی بھی ھے، نئی بھی. اِس میں وہ دھونیاں بھی ھیں جنھیں ھمارے کان ویدک کال سے سنتے چلے آئے ھیں اور وہ بھی جنھیں ھمارے بھائی تاریخ کے تیسرے دور میں اپنے ساتھ لائے. پر اس کے قانون قائدے اپنے ھیں اور یہ کبھی دوسری زبان کی حکومت ماننے کو تیار نہیں. یہ زبان بھوکی ننگی نہیں، کیونکہ یہ لفظوں کے لئے سنسکرت، عربی، فارسی، انگریزی، سبھی سے خراج لے سکتی ھے. اِس کے ساھتیہ کا بھنڈار بھرا ھے. پر اس کے آنیوالے ساھتیہ کے سامنے اِس کے پرانے کارنامے ایسے ھی پھیکے دکھائی دیں گے جیسے سورج کے سامنے سویرے کے تارے.

जबानों का रिवाज था. एक जबान ऊंचे दरजे के लोगों और पढ़े लिखों की होती थी और दूसरी आम लोगों, गांव वालों की. पहले दौर के पन्डितों और दरबानों की जबान संस्कृत थी, लेकिन साधारन आदमी देस के जुदा जुदा इलाक़ों में अलग अलग बोलियां बोलते थे जो सीधी सादी और आसान थीं. दूसरे दौर में मजहबी प्रचार के लिए पाली और अर्ध मागधी काम में आने लगीं और कुछ महाराजाओं ने पाली को सरकारी काम में भी इस्तेमाल किया, लेकिन बाद में संस्कृत का बोलबाला हुआ और प्राकृतें बोली-ठोली होकर रहीं. कहीं मराठी प्राकृत बोली जाती थी तो कहीं सूरसेनी और कहीं मगधी. तीसरा दौरा आया तो दिल्ली के तुर्क और मुग़ल सम्राटों ने फ़ारसी को दफ़्तरी जबान ठहराया. उन्नीसवीं सदी तक यही हालत रही. पढ़ने लिखने में अरबी, फ़ारसी और संस्कृत काम में आती थीं. पर हिन्दुस्तानियों की बहुत बड़ी तादाद हिन्दुस्तानी, ब्रज, अवधी, बंगला, गुजराती, मराठी वग़ैरा भाशायें बोलती थीं. इनकी रुचि और स्वभाव का यही तक़ाज़ा था कि वे अपने भाव और विचारों को इन्हीं के ज़रिये ज़ाहिर करें. इसलिए इस जमाने में हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल कर इन भाशाओं का साहित्य बनाते रहे.

उन्नीसवी सदी से तारीख़ का नया दौर शुरू हुआ. पहले पहल तो इस जमाने में भी पुरानी लकीरों पर काम चला. लेकिन फ़ारसी और संस्कृत की जगह अंग्रेजी जबान ने ली. पर जैसे जैसे स्वदेशी और स्वराज का जोर बढ़ा परदेसी भाशा की तरफ़ से जी हटने लगा. अब यह सवाल पैदा हुआ कि देश की कौन सी भाशा इस लायक़ है कि उसे कुल हिन्द की बोली माना जाय. इसमें एक यह पेच था कि आज़ादी और बराबरी के जमाने में आम और ख़ास की बोली और भाशा में फ़र्क़ नहीं हो सकता था इसलिए फ़ारसी, संस्कृत न पढ़ाई का ज़रिया और न सरकार दरबार के कामों के लिए कुल देश की भाशा मानी जा सकती थी. यह मरतबा किसी देसी बोली को ही दिया जा सकता है. देखा तो हर सूबे की अपनी जबान है और इसमें अच्छा ख़ासा अदब है. लेकिन इन सूबाई जबानों में एक ऐसी है जिसका फैलाव सबसे ज्यादा है, जिसकी सेवा उत्तर में ही नहीं दक्खिन में भी है. यह जबान बहुत पुरानी है. चौदहवीं सदी से आज तक लगातार इसमें साहित्य तैयार होता रहा है. हिन्दुस्तान के सभी मजहबों ने इसमें प्रचार किया है और सब ने इसकी तरक़्क़ी में हिस्सा लिया है. अठारहवीं सदी के शुरू तक यह जबान जिस तरह बोली और लिखी जाती थी वह एक मिला जुला तर्ज़ था. इसमें ठेठ हिन्दी का ठाठ भी था और फ़ारसी का भी चटख़ारा. लेकिन जब मुहम्मदशाही दरबार का असर पड़ा तो इसके तर्ज़ में नया रंग पैदा हो गया. ईरानी, तूरानी, नये पुराने विलायती अमीरों को यह रंग ऐसा भाया कि उन्होंने पुरानी जबान को बदल डाला.



زبانوں کا رواج تھا. ایک زبان اُونچے درجے کے لوگوں اور پڑھے لکھوں کی ھوتی تھی اور دوسری عام لوگوں' گاؤں والوں کی. پہلے دور کے پنڈتوں اور دربانوں کی زبان سنسکرت تھی . لیکن سادھارن آدمی دیس کے جدا جدا علاقوں میں الگ الگ بولیاں بولتے تھے جو سیدھی سادی اور آسان تھیں. دوسرے دور میں مذھبی پرچار کے لئے پالی اور اردھ ماگدھی کام میں آنے لگیں اور کچھ مہاراجاؤں نے پالی کو سرکاری کام میں بھی اِستعمال کیا' لیکن بعد میں سنسکرت کا بول بالا ھوا اور پراکرتیں بولی ٹھولی ھوکر رھیں . کہیں مراٹھی پراکرت بولی جاتی تھی تو کہیں سورسینی اور کہیں مگدھی . تیسرا دور آیا تو دلی کے ترک اور مغل سمراٹوں نے فارسی کو دفتری زبان ٹھہرایا . اُنیسویں صدی تک یہی حالت رہی . پڑھنے لکھنے میں عربی' فارسی اور سنسکرت کام میں آتی تھیں . پر ھندستانیوں کی بہت بڑی تعداد ھندستانی' برج' اودھی' بنگلا' گجراتی' مراٹھی وغیرہ بھاشائیں بولتی تھیں. ان کی روچی اور سوبھاؤ کا یہی تقاضہ تھا کہ وے اپنے بھاؤ اور وچاروں کو اِنھیں کے ذریعے ظاھر کریں . اس لئے اِس زمانے میں ھندو اور مسلمان دونوں مل کر اِن بھاشاؤں کا ساھتیہ بناتے رھے .

اُنیسویں صدی سے تاریخ کا نیا دور شروع ھوا . پہلے پہل تو اِس زمانے میں بھی پرانی لکیروں پر کام چلا . لیکن فارسی اور سنسکرت کی جگہ انگریزی زبان نے لی . پر جیسے جیسے سودیشی اور سوراج کا زور بڑھا پردیسی بھاشا کی طرف سے جی ھٹنے لگا . اب یہ سوال پیدا ھوا کہ دیش کی کونسی بھاشا اِس لائق ھے کہ اُسے کل ھند کی بولی مانا جائے . اِس میں ایک یہ پیچ تھا کہ آزادی اور برابری کے زمانے میں عام اور خاص کی بولی اور بھاشا میں فرق نہیں ھوسکتا تھا اِس لئے فارسی' سنسکرت نہ پڑھائی کا ذریعہ اور نہ سرکار دربار کے کاموں کے لئے کل دیش کی بھاشا مانی جاسکتی تھی . یہ مرتبہ کسی دیسی بولی کو ھی دیا جاسکتا ھے . دیکھا تو ھر صوبے کی اپنی زبان ھے اور اس میں اچھا خاصا ادب ھے . لیکن اِن صوبائی زبانوں میں ایک ایسی ھے جس کا پھیلاؤ سب سے زیادہ ھے' جس کی سیوا اُتر ھی نہیں دکھن میں بھی ھے . یہ زبان بہت پرانی ھے . چودھویں صدی سے آج تک لگاتار اس میں ساھتیہ تیار ھوتا رھا ھے . ھندستان کے سبھی مذھبوں نے اِس میں پرچار کیا ھے اور سب نے اِس کی ترقی میں حصہ لیا ھے . اٹھارھویں صدی کے شروع تک یہ زبان جس طرح بولی اور لکھی جاتی تھی وہ ایک ملا جلا طرز تھا . اِس میں ٹھیٹھ ھندی کا ٹھاٹھ بھی تھا اور فارسی کا بھی چٹخارا . لیکن جب محمد شاھی دربار کا اثر پڑا تو اِس کے طرز میں نیا رنگ پیدا ھوگیا . ایرانی' تورانی' نئے پرانے ولایتی امیروں کو یہ رنگ ایسا بھایا کہ انھوں نے پرانی زبان کو بدل ڈالا .

करता था, उसकी पैदावार उसके लिए काफ़ी थी, उसकी ज़रूरतें कम और इनमें तब्दीलियां नहीं होती थीं, अब काफ़ी नहीं. अब तमाम हिन्दुस्तान की एक मंडी है, जिस में दूर और पास के सब गांव लेन देन करते हैं. सारे देश का ब्यौपार एक साख पर क़ायम है और कुल कारोबार हुन्डी पर्चे पर चलता है. क़ुदरत ने मुल्क में अपनी नियामतें इस तरह फैलाई हैं कि कोई हिस्सा बिना दूसरे हिस्सों की मदद के ख़ुशहाल नहीं रह सकता—कहीं गेहूं उगता है तो कहीं चावल, कहीं नमक मिलता है तो कहीं लकड़ी, कोयला; कहीं लोहा निकलता है तो कहीं सोना; और सब मिलकर ही एक दूसरे की ज़रूरतों को पूरा कर सकते हैं.

समाजी ज़िन्दगी में भी इन्क़लाब है. ज़ात-पांत का ज़ोर घट रहा है. क़बीलों और फ़िर्क़ों की तक़सीम तो ग़ायब ही हो गई ! आज कौन शरीफ़ है, कौन रज़ील ? समाज में इज़्ज़त और सरकार में ओहदे पाने के लिए न ब्राह्मन क्षत्री होने की ज़रूरत है, न सैयद और पठान. जनम और ख़ानदान से कोई ऊंच नीच नहीं बनता. बराबरी का ज़माना है. क़ानून के सामने सब यकसां हैं. मर्द ही नहीं औरतों में भी बराबरी की तलब है. रहने सहने के तरीक़े बदल रहे हैं. हम एक से मकानों और बंगलों में रहते हैं, एकसां फ़र्नीचर इस्तेमाल करते हैं, एकसा लिबास पहनते हैं, एक ढंग से मेज़ कुर्सी पर कांटे छुरी की आदत डाल रहे हैं, चाय पीने में मक्खन तोश का नाश्ता करते हैं. बाहर ही नहीं, हमारे अन्दर का फ़र्नीचर भी यकसां है. योरप की विद्याओं ने एशियाई इल्मों की जगह ले ली है. सोचने के ढंग गौतम और कनाद, इब्न रुश्द और इब्न सीना से नहीं, कान्ट और हैगेल, न्यूटन और आइन्सटाइन से सीखते हैं. हम मनु और अबु हनीफ़ा की कतरब्यौंत करते हैं.

यह ज़रूर है कि अभी हमारे मनों में अपनी तरफ़ से दुविधा है, अपने ऊपर पूरा भरोसा नहीं. हिन्दुस्तान के कुल बाशिन्दों को कन्धे मिलाकर खड़ा होना है. इनमें से किसी ने कंधा डाल दिया तो सब का काम बिगड़ जायगा.

आने वाले ज़माने का तमद्दुन इन्हीं ज़रूरतों और बुनियादों पर खड़ा होगा. यह बारह खंभा जिन सुतूनों के सहारे दुनिया की तेज़ और तुन्द आंधियों का सामना करेगा वह इस मुल्क के रहने वालों की जमाअतें हैं जो इस वक़्त बिखरी हुई और उदास दिखाई देती हैं—लेकिन जल्द मिलेंगी और अपनी ताक़त को पहचानेंगी. वह सभ्यता की ऐसी इमारत बनायेंगी जिसके मुक़ाबले में पुराने महल मंद पड़ जायंगे. ज़माना इस नये तमद्दुन का बेचैनी के साथ इन्तज़ार कर रहा है.

इस नये समाज और नये तमद्दुन की ज़बान क्या होगी ? आइए तारीख़ से मश्विरा करें. यह एक बड़े अचम्भे की बात है कि हमारे देश की तारीख़ के हर दौर में दो तरह की



کرتا تھا، اُس کی پیدوار اس کے لئے کافی تھی، اس کی ضرورتیں کم اور اِن میں تبدیلیاں نہیں ہوتی تھیں، اب کافی نہیں ۔ اب تمام ھندستان کی ایک منڈی ھے، جس میں دور اور پاس کے سب گاؤں لین دین کرتے ھیں ۔ سارے دیش کا بیوپار ایک ساکھ پر قائم ھے اور کل کاروبار ھنڈی پرچے پر چلتا ھے ۔ قدرت نے ملک میں اپنی نعمتیں اِس طرح پھیلائی ھیں کہ کوئی حصہ بنا دوسرے حصوں کی مدد کے خوشحال نہیں رہ سکتا—کہیں گیہوں اُگتا ھے تو کہیں چاول، کہیں نمک ملتا ھے تو کہیں لکڑی، کوئلہ؛ کہیں لوھا نکلتا ھے تو کہیں سونا؛ اور سب مل کر ھی ایک دوسرے کی ضرورتوں کو پورا کرسکتے ھیں ۔

سماجی زندگی میں بھی اِنقلاب ھے ۔ ذات پانت کا زور گھٹ رھا ھے ۔ قبیلوں اور فرقوں کی تقسیم تو غائب ھی ھوگئی ! آج کون شریف ھے، کون رذیل ؟ سماج میں عزت اور سرکار میں عہدے پانے کے لئے نہ براھمن چھتری ھونے کی ضرورت ھے، نہ سید اور پٹھان ۔ جنم اور خاندان سے کوئی اُونچ نیچ نہیں بنتا ۔ برابری کا زمانہ ھے ۔ قانون کے سامنے سب یکساں ھیں ۔ مرد ھی نہیں عورتوں میں بھی برابری کی طلب ھے ۔ رھنے سہنے کے طریقے بدل رھے ھیں ۔ ھم ایک سے مکانوں اور بنگلوں میں رھتے ھیں، ایک سا فرنیچر اِستعمال کرتے ھیں، ایک سا لباس پہنتے ھیں، ایک ڈھنگ سے میز کرسی پر کانٹے چھری کی عادت ڈال رھے ھیں، چائے پینے میں مکھن توش کا ناشتہ کرتے ھیں ۔ باھر ھی نہیں، ھمارے اندر کا فرنیچر بھی یکساں ھے ۔ یورپ کی ودیاؤں نے ایشیائی علموں کی جگہ لے لی ھے ۔ سوچنے کے ڈھنگ گوتم اور کناد، اِبن رشد اور اِبن سینا سے نہیں، کانٹ اور ھیگل، نیوٹن اور آئنسٹائن سے سیکھتے ھیں ۔ ھم منو اور ابوحنیفہ کی کتربیونت کرتے ھیں ۔

یہ ضرور ھے کہ ابھی ھمارے منوں میں اپنی طرف سے دویدھا ھے، اپنے اُوپر پورا بھروسہ نہیں ۔ ھندستان کے کل باشندوں کو کندھے ملاکر کھڑا ھونا ھے ۔ اِن میں سے کسی نے کندھا ڈال دیا تو سب کا کام بگڑ جائیگا ۔

آنے والے زمانے کا تمدن انھیں ضرورتوں اور بنیادوں پر کھڑا ھوگا ۔ یہ بارہ کھمبا جن ستونوں کے سہارے دنیا کی تیز اور تند آندھیوں کا سامنا کریگا وہ اِس ملک کے رھنے والوں کی جماعتیں ھیں جو اِس وقت بکھری ھوئی اور اُداس دکھائی دیتی ھیں—لیکن جلد ملیں گی اور اپنی طاقت کو پہچانیں گی ۔ وہ سبھیتا کی ایسی عمارت بنائینگی جس کے مقابلے میں پرانے محل مند پڑجائینگے ۔ زمانہ اِس نئے تمدن کا بےچینی کے ساتھ اِنتظار کر رھا ھے ۔

اِس نئے سماج اور نئے تمدن کی زبان کیا ھوگی ؟ آئیے تاریخ سے مشورہ کریں ۔ یہ ایک بڑے اچنبھے کی بات ھے کہ ھمارے دیش کی تاریخ کے ھر دور میں دو طرح کی

मौलवी और पंडितों, सरकारी दरबारी उहदादारों को छोड़ कर जो संस्कृत, फ़ारसी और अरबी सीखते थे, बाक़ी सभी हिन्दू मुसलमान हिन्दी बोलियां बोलते थे और इन्हीं में अपने विचार और भाव जाहिर करते थे. उर्दू, ब्रज, अवधी, बंगला, पंजाबी बोलियों में सैकड़ों हिन्दू मुसलमान शायर हुए जिनके कारनामों से इनके ख़ज़ाने मालामाल हैं.

भाशा, साहित्य और कला में किसी क़ौम की आत्मा का परतव दिखाई देता है. इससे इसके गुनों का और इसकी असलियत का पता लगता है. इनकी यकसानियत क़ौमी आत्मा की एकता को ज़ाहिर करती है. यह एकता जिन्दगी के और अंगों में भी दिखाई देती है—मसलन् चाल चलन के उसूलों और सचाई के रास्तों की तलाश में. इन पर ग़ौर करें तो बावजूद मज़हबी फ़रक़ों के एक गहरी समानता पाई जाती है. दुनिया की ख़्वाहिशों से दिल हटाना, जो कुछ मिल गया उस पर सब्र करना, आदमी आदमी से मुहब्बत करना—अल्लाह से लौ लगाना, जिन्होंने दुनिया को तज दिया है और अन्दरूनी शक्ति को पा लिया है उनका सत्संग करना, गुरु या पीर को राह दिखानेवाला मानना और उसकी इज़्ज़त करना—यह ऐसे ख़्याल थे जो हिन्दुस्तान के सभी लोगों में मुश्तरिक थे. साधू-सन्तों और सूफ़ी दरवेशों ने इस इश्क़ के मज़हब, प्रेम के धर्म का प्रचार किया और कुल हिन्दुस्तान को भाईचारे के रिश्तों में बांध दिया. इनके दिलों में कैसी सफ़ाई और हिम्मत थी. मुहम्मद अली क़ुतुब-शाह, जो गोलकंडा के बादशाह और अकबर के हमअसर थे, यों बेधड़क बयान करते हैं—कुफ़्र रीति क्या हूर इस्लाम रीति—हर एक रीति में इश्क़ का राज है. यह था इन चन्द सौ सालों में हाकिमों के तबक़े और ग़ैर मज़हब के लोगों की तबीयतों का मिलन. कबीर, नानक, दादू, तुकाराम, मुईउद्दीन, बाबा फ़रीद, रज्जब, और बहुतेरे हिन्दू और मुसलमानों ने इन्हीं विचारों को फैलाया है. इस तबियत से ख़ूबसूरती के वे पुतले तैयार हुए जिनको देखकर आज भी हमारी रगों का ख़ून तेज़ी से बहने लगता है. इसी दिल से वे जज़्बे पैदा हुए जिन्होंने हिन्दुस्तान से कुछ दिनों के लिए दुई को मिटा दिया.

अठारहवीं सदी के पूरे होते होते इस तमद्दुन ने भी दम तोड़ा. तारीख़ के तीन दौर ख़तम हो चुके थे. उन्नीसवीं सदी ने चौथे दौर का डौल डाला. आज हम तारीख़ के इस दौर में से गुज़र रहे हैं. लेकिन अभी तो मंज़िल की पहली सीढ़ियों पर ही हैं. इस भूल भुलइयां में आगे क्या है इसकी जांच उस धुंधले ख़ाके से हो सकती है जो इस वक़्त हमारी आंखों के सामने है. आज हिन्दुस्तान की आर्थिक ज़िन्दगी एक नये ढङ्ग पर चल रही है. दस्तकारी की जगह कारख़ाने ले रहे हैं. गांव की शान्त और सादा रविश ख़तम हो चुकी. वह हालत जिसमें हर एक गांव अपने ऊपर आप भरोसा



مولوی اور پنڈتوں، سرکاری درباری عہدہ داروں کو چھوڑ کر جو سنسکرت، فارسی اور عربی سیکھتے تھے، باقی سبھی ہندو مسلمان ہندی بولیاں بولتے تھے اور اِنھیں میں اپنے وچار اور بھاؤ ظاہر کرتے تھے، اردو، برج، اودھی، بنگلہ، پنجابی بولیوں میں سیکڑوں ہندو مسلمان شاعر ہوئے جن کے کارناموں سے اِن کے خزانے مالا مال ہیں۔

بھاشا، ساہتیہ اور کلا میں کسی قوم کی آتما کا پرتو دکھائی دیتا ہے۔ اِس سے اس کے گنوں کا اور اِس کی اصلیت کا پتہ لگتا ہے۔ اِن کی یکسانیت قومی آتما کی ایکتا کو ظاہر کرتی ہے۔ یہ ایکتا زندگی کے اور انگوں میں بھی دکھائی دیتی ہے — مثلاً چال چلن کے اصولوں اور سچائی کے راستوں کی تلاش میں۔ اِن پر غور کریں تو باوجود مذہبی فرقوں کے ایک گہری سمانتا پائی جاتی ہے۔ دنیا کی خواہشوں سے دل ہٹانا، جو کچھ مل گیا اُس پر صبر کرنا، آدمی آدمی سے محبت کرنا — اللہ سے لو لگانا، جنھوں نے دنیا کو تج دیا ہے اور اندرونی شکتی کو پالیا ہے اِن کا ست سنگ کرنا، گرو یا پیر کو راہ دکھانے والا ماننا اور اُس کی عزت کرنا — یہ ایسے خیال تھے جو ہندستان کے سبھی لوگوں میں مشترک تھے۔ سادھو سنتوں اور صوفی درویشوں نے اِس عشق کے مذہب، پریم کے دھرم کا پرچار کیا اور کل ہندستان کو بھائی چارے کے رشتوں سے باندھ دیا۔ اِن کے دلوں میں کیسی صفائی اور ہمت تھی۔ محمد علی قطب شاہ، جو گولکنڈا کے بادشاہ اور اکبر کے ہمعصر تھے، یوں بےدھڑک بیان کرتے ہیں — کفر ریتی کیا حور اِسلام ریتی — ہر ایک ریتی میں عشق کا راز ہے۔ یہ تھا اِن چند سو سالوں میں حاکموں کا طبقہ اور غیر مذہب کے لوگوں کی طبیعتوں کا ملن۔ کبیر، نانک، دادو، تکارام، معین الدین، بابا فرید، رجب، اور بہتیرے ہندو اور مسلمانوں نے انھیں وچاروں کو پھیلایا ہے۔ اِس طبیعت سے خوبصورتی کے وے پتلے تیار ہوئے جن کو دیکھ کر آج بھی ہماری رگوں کا خون تیزی سے بہنے لگتا ہے۔ اِسی دل سے وے جذبے پیدا ہوئے جنھوں نے ہندستان سے کچھ دنوں کے لئے دوئی کو مٹا دیا۔

اٹھارھویں صدی کے پورے ہوتے ہوتے اِس تمدن نے بھی دم توڑا۔ تاریخ کے تین دور ختم ہوچکے تھے۔ اُنیسویں صدی نے چوتھے دور کا ڈول ڈالا۔ آج ہم تاریخ کے اِس دور میں سے گذر رہے ہیں۔ لیکن ابھی تو منزل کی پہلی سیڑھیوں پر ہی ہیں۔ اِس بھول بھلیاں میں آگے کیا ہے اِس کی جانچ اُس دھندلے خاکے سے ہوسکتی ہے جو اِس وقت ہماری آنکھوں کے سامنے ہے۔ آج ہندستان کی آرتھک زندگی ایک نئے ڈھنگ پر چل رہی ہے۔ دستکاری کی جگہ کارخانے لے رہے ہیں۔ گاؤں کی شانت اور سادہ روش ختم ہوچکی۔ وہ حالت جس میں ہر ایک گاؤں اپنے اُوپر آپ بھروسہ

करना है. हिन्दुस्तान में इस्लाम को फैलाने वाले इतने बादशाह और फ़ौजी कमान्दार नहीं थे जितने दरवेश, सूफ़ी, मस्तक़लन्दर थे जिन्हें राज दरबारों से सरोकार न था. यह अल्लाहवाले प्रेम के मतवाले, ग़रीबों, बेकसों और दीन दुखियों के साथी और हमदर्द थे. इनके आपस के बर्ताव का असर हाकिमों पर भी पड़ा और इस तरह मार धाड़ और डराने धमकाने की जगह अच्छे रिश्ते क़ायम हुए. दुश्मनी दोस्ती में बदली. तुर्क अपने साथ अपनी सभ्यता लाये. इनके समाज का ढांचा और राज का तरीक़ा राजपूतों से कुछ ज्यादा मुख़्तलिफ़ न था. लेकिन धर्मों का फ़र्क़ और ज़बानें जुदा जुदा थीं. अब तक जितनी क़ौमें हिन्दुस्तान में आई थीं, उनके मज़हब कुछ अहमियत न रखते थे. इसलिये उन्होंने हिन्दू मज़हब अख़्तियार कर लिये. लेकिन इस्लाम की हैसियत इनसे बिल्कुल अलग थी. इसके उसूल, पूजा पाठ के तरीक़े, क़ानून, रस्में और रिवाज ख़ास थे. और मुसलमानों की ज़िन्दगी पर इनका गहरा असर था. यह आसान नहीं था कि इस्लाम दूसरे मज़हबों में घुल जाता या उनके दबाव को क़बूल करता. लेकिन हिन्दुस्तान की सृष्टि ही में मेल जोल का गुन है. यह कैसे हो सकता था कि दो तहज़ीबें हिन्दुस्तान में एक साथ रहें, और बिल्कुल एक दूसरे से अलग अलग रहें ? हिन्दू और इस्लामी तहज़ीब ने एक दूसरे की देखा देखी रंग बदला. हिन्दुओं के पुराने तरीक़े पलटे और मुसलमानों ने हिन्दू तरीक़ों को अपनाया. हिन्दू और मुसलमानी ज़ेहनों का मेल हुआ. दो अलहदा दुनियायें एक में समो गईं. एक नया तमद्दुन तैयार हुआ. इसके दुनियावी और रूहानी पहलुओं पर ध्यान दें तो इसकी यकसानियत का कुछ अन्दाज़ा हो सकता है.

ज़िन्दगी में हमारी सब से पहली ज़रूरत खाने पीने, कपड़ा पहनने और घर ठिकाने की है. इस ज़रूरत को पूरा करने ही के लिये हम खेती बाड़ी, धन्दे, दस्तकारी, बनिज-ब्योपार करते हैं. अगर हम इस छः सौ वर्ष की तारीख़ पर नज़र डालें जो तेरहवीं सदी से शुरू होकर उन्नीसवीं तक ख़तम होती है तो मालूम होता है कि इस ज़माने में हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के तरीक़े हिन्दू मुसलमानों में यकसां थे. हम एक तरह से रहते थे, एक से कपड़े पहनते थे, एक से खाने खाते थे. हमारे खेल कूद, दिल्लगी, चहल पहल के सामान यकसां थे. ज़िन्दगी की मंज़िलों को एक साथ काटते थे और एक ही तरह निभाते थे. बच्चों के जनम, लड़के लड़कियों की ब्याह शादी, मरने के बाद शोक मनाने के तरीक़े मिलते जुलते थे. इस ज़माने में हिन्दू और मुसलमानों ने जो तसवीरें खींचीं, महल, मक़बरे, मन्दिर और मस्जिदें तामीर कीं, राग रागनियां अलापीं, बाजे ईजाद किये, इनमें हिन्दू मुसलमान का कोई फ़र्क़ न था. इने गिने



کرنا ہے ۔ ہندستان میں اسلام کو پھیلانے والے اِتنے بادشاہ اور فوجی کمانڈار نہیں تھے جتنے درویش، صوفی، مست قلندر تھے جنھیں راج دربارو‌ں سے سروکار نہ تھا۔ یہ اللہ والے پریم کے متوالے، غریبوں بیکسوں اور دین دکھیوں کے ساتھی اور ہمدرد تھے۔ اِن کے آپس کے برتاؤ کا اثر حاکموں پر بھی پڑا اور اِس طرح مار دھاڑ اور ڈرانے دھمکانے کی جگہ اچھے رشتے قائم ہوئے ۔ دشمنی دوستی میں بدلی ۔ ترک اپنے ساتھ اپنی سبھیتا لائے ۔ اِن کے سماج کا ڈھانچہ اور راج کا طریقہ راجپوتوں سے کچھ زیادہ مختلف نہ تھا ۔ لیکن دھرموں کا فرق اور زبانیں جدا جدا تھیں ۔ اب تک جتنی قومیں ہندستان میں آئی تھیں، اِن کے مذہب کچھ اہمیت نہ رکھتے تھے ۔ اِس لئے انھوں نے ہندو مذہب اختیار کر لئے ۔ لیکن اسلام کی حیثیت اُن سے بالکل الگ تھی ۔ اِس کے اصول، پوجا پاٹ کے طریقے، قانون، رسمیں اور رواج خاص تھے ۔ اور مسلمانوں کی زندگی پر اِن کا گہرا اثر تھا ۔ یہ آسان نہیں تھا کہ اسلام دوسرے مذہبوں میں گھل جاتا یا اُن کے دباؤ کو قبول کرتا ۔ لیکن ہندستان کی سرشٹی ہی میں میل جول کا گن ہے ۔ یہ کیسے ہو سکتا تھا کہ دو تہذیبیں ہندستان میں ایک ساتھ رہیں، اور بالکل ایک دوسرے سے الگ الگ رہیں ؟ ہندو اور اسلامی تہذیب نے ایک دوسرے کی دیکھا دیکھی رنگ بدلا ۔ ہندوؤں کے پرانے طریقے پلٹے اور مسلمانوں نے ہندو طریقوں کو اپنایا ۔ ہندو اور مسلمانی ذہنوں کا میل ہوا ۔ دو علیحدہ دنیائیں ایک میں سمو گئیں۔ ایک نیا تمدن تیار ہوا ۔ اِس کے دنیاوی اور روحانی پہلوؤں پر دھیان دیں تو اِس کی یکسانیت کا کچھ اندازہ ہو سکتا ہے ۔

زندگی میں ہماری سب سے پہلی ضرورت کھانے پینے، کپڑا پہننے اور گھر ٹھکانے کی ہے ۔ اِس ضرورت کو پورا کرنے ہی کے لئے ہم کھیتی باڑی، دھندے، دستکاری، بنج بیوپار کرتے ہیں ۔ اگر ہم اِس چھ سو ورش کی تاریخ پر نظر ڈالیں جو تیرہویں صدی سے شروع ہو کر اُنیسویں تک ختم ہوتی ہے تو معلوم ہوتا ہے کہ اِس زمانے میں ہماری ضرورتوں کو پورا کرنے کے طریقے ہندو مسلمانوں میں یکساں تھے ۔ ہم ایک طرح سے رہتے تھے، ایک سے کپڑے پہنتے تھے، ایک سے کھانے کھاتے تھے ۔ ہمارے کھیل کود، دلگی، چہل پہل کے سامان یکساں تھے ۔ زندگی کی منزلوں کو ایک ساتھ کاٹتے تھے اور ایک ہی طرح نبھاتے تھے ۔ بچوں کے جنم، لڑکے لڑکیوں کی بیاہ شادی، مرنے کے بعد شوک منانے کے طریقے ملتے جلتے تھے ۔ اِس زمانے میں ہندو اور مسلمانوں نے جو تصویریں کھینچیں، محل، مقبرے، مندر اور مسجدیں تعمیر کیں، راگ راگنیاں الاپیں، باجے ایجاد کئے، اِن میں ہندو مسلمان کا کوئی فرق نہ تھا ۔ اِنے گنے

और क़बीलों की जड़ें मजबूत. एक समाज के जन्म के लिये अभी इन्तज़ार की ज़रूरत थी.

तौभी फ़िरक़ों की कड़ियां ढीली हो चुकी थीं और मुल्क के बड़े बड़े इलाक़ों को एक ही इन्तज़ाम के सिलसिलों में गठे रहने की आदत पड़ रही थी. अमन और शान्ति का दायरा बढ़ गया था. धन दौलत और कारीगरी में अनोखी तरक़्क़ी हुई थी. ब्योपार की मंडियां और साहूकारी की साख कुल देस में ही नहीं, परदेसों में फैल रही थी. कला और साहित्य, फ़न और अदब ख़ूब चमक रहे थे. आज भी इनकी आबो ताब हमारी आंखों को चौंधियाती हैं. अजंता की तस्वीरों, एल्यूरा के मन्दिरों, सांची और सारनाथ, भरहुत और अमरावती की मूर्तियों, अशोक की लाटों की कारीगरी के सामने दुनिया की कला पानी भरती है. इस ज़माने के गुनी, कलावंत और पंडित चीन से रूम और मिस्र तक अपना जवाब नहीं रखते थे. फ़लसफ़ा और अदब में इनके कारनामे सदा के लिये ज़िन्दा हैं. दर्शन, इतिहास, क़ानून, साइन्स और मज़हब के ऐसे धुरन्धर आलिम पैदा हुये, जिनका इस दिन तक इल्म की दुनिया में डंका बजता है. जब तक आदमी के दिल में अदब की क़दर है, तब तक कालिदास का नाम जीता है. हिन्दू तमद्दुन के सूरज को चढ़ने और आसमान की छत तक पहुंचने में 12 सदियां लगीं. इसकी रोशनी से हिन्दुस्तान में जगमगाहट और पड़ोस के देशों में नूर फैला. पर दुनिया का क़ायदा है कि ज्वार के बाद भाटा, बढ़ने के बाद घटने का वक़्त आता है. उतार में भी समय लगता है. 600 वर्ष तक हिन्दू सभ्यता को राजपूतों ने जीता रक्खा. लेकिन आख़िर में राजपूतों की फ़िरक़ाबंदियों ने राज की बुनियादों को खोखला कर दिया. ज़ात पांत के भेद इतने बढ़ गये और कट्टर हो गये कि समाज में शक्ति बाक़ी नहीं रही. मतों के बखेड़ों और करमकांड के जंजाल से आदमी घबरा उठे. बौद्ध और जैन, वैशनव, शैव और शाक्त के पुजारी एक दूसरे के बैरी हो गये. तारीख़ ने हिन्दू सभ्यता का वर्क़ उलट दिया और हिन्दुस्तान में एक नये दौर की शुरूआत हुई.

पहले तो अरबों ने सिन्ध की वादी में हिन्दू तहज़ीब की क़ूवत को आज़माया. पर अब भी इसमें जान बाक़ी थी. इसने कुछ जगह तो छोड़ी लेकिन अरबों को बहुत आगे न बढ़ने दिया. 300 वर्ष बाद अफ़ग़ानिस्तान की तरफ़ से तुर्कों के हमले शुरू हुए और बारहवीं सदी के आख़ीर तक उत्तरी हिन्दुस्तान राजपूतों के हाथों से निकल गया. नये क़बीलों, नये धर्म और नये तमद्दुन का हिन्दुस्तान में दाख़िला हुआ. राजपाट की लालच ने अमीरों और सरदारों, राजाओं और सामन्तों में लड़ाइयां कराईं. लेकिन इसे इस्लाम और हिन्दू धर्म की लड़ाई समझना बड़ी ग़लती



اور قبیلوں کی جڑیں مضبوط ۔ ایک سماج کے جنم کے لئے ابھی انتظار کی ضرورت تھی ۔

تو بھی فرقوں کی کڑیاں ڈھیلی ہو چکی تھیں اور ملک کے بڑے بڑے علاقوں کو ایک ہی انتظام کے سلسلوں میں گتھے رہنے کی عادت پڑ رہی تھی ۔ امن اور شانتی کا دایرہ بڑھ گیا تھا ۔ دھن دولت اور کاریگری میں انوکھی ترقی ہوئی تھی ۔ بیوپار کی منڈیاں اور ساہوکاری کی ساکھ کل دیس میں ہی نہیں، پردیسوں میں پھیل رہی تھی ۔ کلا اور ساہتیہ، فن اور ادب خوب چمک رہے تھے ۔ آج بھی اُن کی آب و تاب ہماری آنکھوں کی چوندھیاتی ہیں ۔ اجنتا کی تصویروں، ایلورا کے مندروں، سانچی اور سارناتھ، بھرہت اور امراوتی کی مورتیوں، آشوک کی لاٹوں کی کاریگری کے سامنے دنیا کی کلا پانی بھرتی ھے ۔ اِس زمانے کے گنی، کلاونت اور پنڈت چین سے روم اور مصر تک اپنا جواب نہیں رکھتے تھے ۔ فلسفہ اور ادب میں اِن کے کارنامے سدا کے لئے زندہ ھیں ۔ درشن، اِتہاس، قانون، سائنس اور مذھب کے ایسے دھرندھر عالم پیدا ھوئے، جن کا اِس دن تک علم کی دنیا میں ڈنکا بجتا ھے ۔ جب تک آدمی کے دل میں ادب کی قدر ھے، تب تک کالیداس کا نام جیتا ھے ۔ ھندو تمدن کے سورج کو چڑھنے اور آسمان کی چھت تک پہنچنے میں 12 صدیاں لگیں ۔ اس کی روشنی سے ھندستان میں جگمگاہٹ اور پڑوس کے دیشوں میں نور پھیلا ۔ پر دنیا کا قاعدہ ھے کہ جوار کے بعد بھاٹا، بڑھنے کے بعد گھٹنے کا وقت آتا ھے ۔ اتار میں بھی سمے لگتا ھے ۔ 600 ورش تک ھندو سبھیتا کو راجپوتوں نے جیتا رکھا ۔ لیکن آخر میں راجپوتوں کی فرقہ‌بندیوں نے راج کی بنیادوں کو کھوکھلا کر دیا ۔ ذات پانت کے بھید اتنے بڑھ گئے اور کٹر ھوگئے کہ سماج میں شکتی باقی نہیں رھی ۔ متوں کے بکھیڑوں اور کرم‌کانڈ کے جنجال سے آدمی گھبرا اٹھے ۔ بودھ اور جین، ویشنو، شیو اور شاکت کے پجاری ایک دوسرے کے بیری ھوگئے ۔ تاریخ نے ھندو سبھیتا کا ورق اُلٹ دیا اور ھندستان میں ایک نئے دور کی شروعات ھوئی ۔

پہلے تو عربوں نے سندھ کی وادی میں ھندو تہذیب کی قوت کو آزمایا ۔ پر اب بھی اِس میں جان باقی تھی ۔ اِس نے کچھ جگہ تو چھوڑی لیکن عربوں کو بہت آگے نہ بڑھنے دیا ۔ 300 ورش بعد افغانستان کی طرف سے ترکوں کے حملے شروع ھوئے اور بارھویں صدی کے آخیر تک اتری ھندستان راجپوتوں کے ھاتھوں سے نکل گیا ۔ نئے قبیلوں، نئے دھرم اور نئے تمدن کا ھندستان میں داخلہ ھوا ۔ راج پاٹ کی لالچ نے امیروں اور سرداروں، راجاؤں اور سامنتوں میں لڑائیاں کرائیں ۔ لیکن اِسے اسلام اور ھندو دھرم کی لڑائی سمجھنا بڑی غلطی

अन्दर की सैर की तरफ़ झुकी थीं. सांस को रोक, ध्यान बांध, इन्द्रियों को क़ाबू में कर, कर्मों के अटल क़ानून, आवागमन के अटूट चक्कर से छुटकारा पाना, इसमें आदमी की ख़ैर समझते थे. इनकी ज़बान मुंह में क़लाबाज़ियां खाती थी, मुड़ती, तालु की छत को छूती, लहराती, अनोखी धुनें निकालती थी.

इन दोनों धारों के मिलने से जो सभ्यता पैदा हुई इसका वेदों और ब्राह्मनों में परछांवां दिखाई देता है. उसकी बुनियाद वह समाज थी, जो ज़ातों में बंटी हुई थी. उत्तरी हिन्दुस्तान में इस क़िस्म की कितनी ही समाजें थीं. हर एक का इन्तिज़ाम और राज अलग था और इनमें आपस में लाग डांट रहती थी. इन राज्यों में सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजे हुकूमत करते थे. इन फ़िरक़ों में कौशलों और पौरवों का नाम सब से ज़्यादा मशहूर था. अयोध्या और हस्तिनापुर इनके तमद्दुन के गहवारे थे. राम और कृश्न, जिन्हें आज भी हम प्रेम और भक्ति के साथ याद करते हैं, इस सभ्यता के आदर्श थे. इसकी कोख से दर्शन, फ़लसफ़ा के वह जवाहिर निकले जो उपनिशदों के अमर उपदेशों में जमा हैं और जिनकी ज्योति से हमारे दिलों में रोशनी है.

हज़ार डेढ़ हज़ार वर्ष तक यह नदी बड़े जोश ख़रोश के साथ बहती रही. फिर इसकी चाल मद्धिम पड़ी, इसका निर्मल जल गन्दा होने लगा. महाभारत की भयानक लड़ाई के बाद इसकी तह घास फूस से भर गई. अब निराई की ज़रूरत हुई. वह लोग जिन्होंने इस तमद्दुन को तरक़्क़ी दी थी, पूरब और दक्खिन में फैल चुके थे. इनमें नये ख़ूनों की शुरूआत हो चुकी थी. पुरानी समाजें ज़माने की टक्करों से घिस चुकी थीं. पुराने राज मिट चुके थे. हिन्दुस्तान इन्क़लाब के लिये तैयार था. महावीर और गौतम बुद्ध ने पुरानी दुनिया को पलट दिया और उस नई दुनिया का सन्देश दिया, जिसकी ज़मीन नई और आसमान नया था. ईसा से 600 वर्ष पहले वैदिक बुनियादों पर नई सभ्यता की इमारत बननी शुरू हुई. इसके हर खंड में नये और पुराने का मेल था. इसका मसाला एशिया और योरुप से इकट्ठा हुआ. ईरान, यूनान, और रोम, चीन, तूरान और ख़ुरासान से ईंट और चूना, लकड़ी और लोहा आया. इन सब मुल्कों से आदमियों के गिरोह के गिरोह ठट के ठट हिन्दुस्तान में आये, और यहां आकर बसे. हून और शक, कुशान और बख़्तरी, जाट और गूजर सब ने यहां पनाह ली. इनसे हिन्दुस्तानी क़बीलों की खींचतान हुई जिसका फल हिन्दू तहज़ीब के रूप में दिखाई दिया. इस ज़माने में मौर्यों, सतवाहनों और गुप्तों के साम्राज क़ायम हुए. पहली मर्तबा यह कोशिश हुई कि सारे देस को एक छत्र की छाया में लाया जाय. लेकिन देस का फैलाव बहुत था और फ़िरक़ों



اندر کی سیر کی طرف جھکی تھیں، سانس کو روک، دھیان باندھ، اندریوں کو قابو میں کر، کرموں کے اٹل قانون، آوا گمن کے اٹوٹ چکر سے چھٹکارا پانا، اِس میں آدمی کی خیر سمجھتے تھے. اِن کی زبان منہ میں قلابازیاں کھاتی تھی، مڑتی تالو کی چھت کو چھوتی، لہراتی، انوکھی دھنیں نکالتی تھی .

اِن دونوں دھاروں کے ملنے سے جو سبھیتا پیدا ہوئی اِس کا ویدوں اور براھمنوں میں پرچھاواں دکھائی دیتا ھے . اِس کی بنیاد وہ سماج تھی، جو ذاتوں میں بنٹی ہوئی تھی . اتری ھندستان میں اِس قسم کی کتنی ھی سماجیں تھیں . ھر ایک کا انتظام اور راج الگ تھا . اور اِن میں آپس میں لاگ ڈانٹ رھتی تھی . اِن راجیوں میں سوریہ ونشی اور چندرونشی راجے حکومت کرتے تھے . اِن فرقوں میں کوشلوں اور پورووں کا نام سب سے زیادہ مشہور تھا . ایودھیا اور ھستناپور اِن کے تمدن کے گہوارے تھے . رام اور کرشن، جنھیں آج بھی ھم پریم اور بھکتی سے یاد کرتے ھیں، اِس سبھیتا کے آدرش تھے . اِسکی کوکھ سے درشن، فلسفہ کے وہ جواھر نکلے جو اُپنشدوں کے امر اُپدیشوں میں جمع ھیں اور جن کی جیوتی سے ھمارے دلوں میں روشنی ھے .

ھزار ڈیڑھ ھزار ورش تک یہ ندی بڑے جوش خروش کے ساتھ بہتی رھی . پھر اِسکی چال مدھم پڑی، اِسکا نرمل جل گندا ھونے لگا . مہا بھارت کی بھیانک لڑائی کے بعد اِس کی تہ گھاس پھوس سے بھر گئی . اب نرائی کی ضرورت ھوئی . وہ لوگ جنھوں نے اِس تمدن کو ترقی دی تھی، پورب اور دکھن میں پھیل چکے تھے . اِن میں نئے خونوں کی شروعات ھو چکی تھی . پرانی سماجیں زمانے کی ٹکڑوں سے گھس چکی تھیں . پرانے راج مٹ چکے تھے . ھندستان اِنقلاب کے لئے تیار تھا . مہاویر اور گوتم بدھ نے پرانی دنیا کو پلٹ دیا اور اس نئی دنیا کا سندیش دیا، جسکی زمین نئی اور آسمان نیا تھا . عیسیٰ سے 600 ورش پہلے ویدک بنیادوں پر نئی سبھیتا کی عمارت بننی شروع ھوئی . اِس کے ھر کھنڈ میں نئے اور پرانے کا میل تھا . اِس کا مصالحہ ایشیا اور یورپ سے اکٹھا ھوا . ایران، یونان، اور روم، چین، توران اور خراسان سے اینٹ اور چونا، لکڑی اور لوھا آیا . اِن سب ملکوں سے آدمیوں کے گروہ کے گروہ ٹھٹ کے ٹھٹ ھندستان میں آئے، اور یہاں آ کر بسے . ھن اور شک، کوشان اور بختری، جاٹ اور گوجر سب نے یہاں پناہ لی . اِن سے ھندستانی قبیلوں کی کھینچ تان ھوئی جس کا پھل ھندو تہذیب کے روپ میں دکھائی دیا . اِس زمانے میں موریوں، ست واھنوں اور گپتوں کے سامراج قائم ھوئے . پہلی مرتبہ یہ کوشش ھوئی کہ سارے دیس کو ایک چھتر کی چھایا میں لایا جائے . لیکن دیس کا پھیلاؤ بہت تھا اور فرقوں

# हिन्दुस्तानी कलचर और नया समाज

# ہندستانی کلچر اور نیا سماج

डाक्टर ताराचन्द एम. ए., डी. फिल. ( आक्सन )

हमारा देश पुरानी लकीरों को छोड़ कर नये रास्तों पर चल रहा है. यह राहें किधर जाती हैं, और हमें कहां ले जांयगी, हर एक के दिल में इसके समझने और जानने की ख्वाहिश है. पर हम अपने देश के आने वाले रूप को इस तरह जान सकते हैं जब गये ज़माने की तब्दीलियों को जानें. हमारे जीवन का झुकाव किस तरफ़ है, हमारे समाज का कैसा संगठन बनने वाला है, और इस समाज की सभ्यता किस ढङ्ग की होगी, इस सभ्यता की भाशा का कैसा रूप रंग होगा, इसके जानने के लिये हमें गुज़रे ज़माने की जांच करनी चाहिये.

आइये हिन्दुस्तान की तारीख़ के पन्नों पर निगाह डालें. पहले सफ़े पर हम देखते हैं कि आर्य क़बीले उत्तर पच्छिम की घाटियों से इस देश में घुस रहे हैं. वह पंजाब की नदियों के किनारे बस्तियां बसाते हैं, और गङ्गा, जमुना और सरस्वती की वादियों में फैल जाते हैं. उत्तरी हिन्दुस्तान में इनकी समाजें और राज क़ायम होते हैं. आर्यों और हिन्दुस्तान के पुराने निवासियों में लड़ाइयां होती हैं. लेकिन आख़िर में आर्य, द्राविड़ और मुन्डा नस्लें एक दूसरे में घुल मिल जाती हैं और इससे हिन्दुस्तान के पहले तमद्दुन की दाग़-बेल पड़ती है.

इस तमद्दुन की ख़ूबी यह है कि इसमें सभ्यता की दो धारें इस तरह से मिल गयी हैं, जैसे गङ्गा और जमुना की नदियां. आर्यों की निगाह दुनिया के बाहरी रंग रूप पर मोहित थी—धन दौलत, दूध पूत की चाह इनकी तबीयतों को गुदगुदाती थी. यह मनचले बहादुर और लड़ाके लोग सच्चाई और निडरता को आदमी का असली जौहर मानते थे. गल्लाबानों की ज़िन्दगी बसर करते थे. दिल चौंचाल थे. हिम्मतें बढ़ी हुई थीं. यह न देवताओं से डरते थे, न आदमियों से दबते थे; हंसमुख, खुले दिल और आज़ाद थे. नाच गाने के शौक़ीन थे. देवी देवताओं के भजन और गीत बनाते और गाते थे. इनकी भाशा करारी पर लचकदार और रसीली थी. इनके ख्याल में गहराई और दिलेरी थी.

हिन्दुस्तान के पुराने निवासी खेती का पेशा करते थे. इनके मिज़ाज में नरमी और ज़माने के थप्पड़ों को सहने की आदत थी. इस दुखभरी दुनिया से मुंह मोड़, आंखें

ڈاکٹر تارا چند ایم . اے.' ڈی . فل. ( آکسن )

ہمارا دیش پرانی لکیروں کو چھوڑ کو نئے راستوں پر چل رہا ھے . یہ راھیں کدھر جاتی ھیں' اور ھمیں کہاں لے جائیں گی' ھر ایک کے دل میں اِس کے سمجھنے اور جاننے کی خواہش ھے . پر ھم اپنے دیش کے آنے والے روپ کو اِس طرح جان سکتے ھیں جب گئے زمانے کی تبدیلیوں کو جانیں . ھمارے جیون کا جھکاؤ کس طرف ھے' ھمارے سماج کا کیسا سنگٹھن بننے والا ھے' اور اِس سماج کی سبھیتا کس ڈھنگ کی ھوگی ' اِس سبھیتا کی بھاشا کا کیسا روپ رنگ ھوگا' اِس کے جاننے کے لئے ھمیں گذرے زمانے کی جانچ کرنی چاھئے .

آیئے ھندستان کی تاریخ کے پننوں پر نگاہ ڈالیں . پہلے صفحے پر ھم دیکھتے ھیں کہ آریہ قبیلے اتر پچھم کی گھاٹیوں سے اس دیش میں گھس رھے ھیں . وہ پنجاب کی ندیوں کے کنارے بستیاں بساتے ھیں' اور گنگا' جمنا اور سرسوتی کی وادیوں میں پھیل جاتے ھیں . اتری ھندستان میں اِن کی سماجیں اور راج قائم ھوتے ھیں . آریوں اور ھندستان کے پرانے نواسیوں میں لڑائیاں ھوتی ھیں . لیکن آخر میں آریہ' دراوڑ اور منڈا نسلیں ایک دوسرے میں گھل مل جاتی ھیں اور اس سے ھندستان کے پہلے تمدن کی داغ بیل پڑتی ھے .

اِس تمدن کی خوبی یہ ھے کہ اِس میں سبھیتا کی دو دھاریں اِس طرح سے مل گئی ھیں' جیسے گنگا اور جمنا کی ندیاں . آریوں کی نگاہ دنیا کے باھری رنگ روپ پر موھت تھی—دھن دولت' دودھ پوت کی چاہ ان کی طبیعتوں کو گدگداتی تھی . یہ منچلے بہادر اور لڑاکے لوگ سچائی اور نڈرتا کو آدمی کا اصلی جوھر مانتے تھے . گلہ بانوں کی زندگی بسر کرتے تھے . دل چونچال تھے . ھمتیں بڑھی ھوئی تھیں . یہ نہ دیوتاؤں سے ڈرتے تھے' نہ آدمیوں سے دبتے تھے؛ ھنس مکھ' کھلے دل اور آزاد تھے . ناچ گانے کے شوقین تھے . دیوی دیوتاؤں کے بھجن اور گیت بناتے اور گاتے تھے. اِن کی بھاشا کراری پر لچک دار اور رسیلی تھی . اِن کے خیال میں گہرائی اور دلیری تھی .

ھندستان کے پرانے نواسی کھیتی کا پیشہ کرتے تھے . اِن کے مزاج میں نرمی اور زمانے کے تھپیڑوں کو سہنے کی عادت تھی . اِس دکھ بھری دنیا سے منھ موڑ' آنکھیں

है. उस बेअन्त से इन्कार का नाम ही नास्तिकता है. यही हमारी महदूद हस्ती है.

यूरोप के एक विद्वान ने कहा है कि :—

"किसी मजहब के अनोखेपन या खुसूसियत को समझना हो तो उन चीजों से नहीं समझना चाहिये जो इस मजहब में दूसरे मजहबों से मिलती हुई हैं. बल्कि उस चीज से समझना चाहिये जो उन मिलती जुलती चीजों के ऊपर उस मजहब की अपनी खास मुहर है." बात सच है और जाहिर है. अगर हम हर मजहब के अनोखेपन को ही समझना चाहें तो सचमुच हमें सब मजहबों को टटोलकर देखना चाहिये और मजहब मजहब के फ़र्क़ पर ही जोर देना चाहिये, एक सी बातों पर नहीं. पर क्या सचमुच हमें इसकी जरूरत है ? क्या यह अच्छा है ? क्या इससे फ़ायदा है ? क्या इससे दुनिया का भला हो सकता है ? हर आदमी का रूप रंग हर दूसरे आदमी से अलग होता है. उठना बैठना और सोचने के तरीक़े भी अलग अलग होते हैं. हर कुनबे का अपना अपना ढंग होता है—हर क़ौम का, हर क़बीले का. बहुत सी बातों में सब एक दूसरे से अलग अलग होते हैं. पर क्या इन अलग अलग बातों पर जोर देना जरूरी है और मुफ़ीद है ? क्या यह काफ़ी नहीं है कि हम इन अलग अलग फ़र्क़ों को सिर्फ़ समझ लें और गवारा कर लें ? हर आदमी की आवाज अलग होती है जिस से वह अंधेरे में भी पहचाना जा सकता है. इसलिये अगर दो आदमी एक ही बात कहें तो क्या हम उनकी आवाजों के फ़र्क़ की वजह से इस बात को मानने से इन्कार कर दें कि उन दोनों का मतलब एक ही है ? दुनिया की आजकल की हालत में क्या इसकी जरूरत नहीं है कि हम फ़र्क़ों को बिल्कुल मिटाने की कोशिश किये बग़ैर उन्हें जहां तक हो सके नर्म करने की कोशिश करें. बिल्कुल मिटाने की कोशिश करना तो क़ुदरत के भी खिलाफ़ होगा क्योंकि क़ुदरत के अन्दर कसरत में वहदत और अनेकता में ही एकता है. पर क्या मैं और तू, मेरा कुनबा, मेरी नस्ल, मेरा क़बीला, मेरी क़ौम और मेरे रंग के लोग, यह सब आवाजें हद से ज्यादा नहीं बढ़ चुकी हैं ? क्या अब इस बात की जरूरत नहीं है कि हम अपनी मुश्तरका इन्सानियत पर जोर दें, यह समझें कि हम सब इन्सान हैं, सब आदम की औलाद हैं ? कसरत में वहदत देखने का यही एक तरीक़ा है. इसी निगाह को जगाने और बढ़ाने से समाज, समाजी जिन्दगी, सच्चा समाजवाद और इन्सानी भाईचारा मुमकिन हो सकते हैं. सूफ़ी कहता है :—

"जिस किसी के दिल में सच्चा कुफ़ पैदा हो गया वह फिर इस ऊपर के इस्लाम से बेजार हो गया. उसे उसकी जरूरत नहीं रही."

---



هے . اس بے انت سے انکار کا نام هی ناستکتا هے . یہی هماری محدود هستی هے .

یورپ کے ایک ودوان نے کہا هے کہ :—

" کسی مذهب کے انوکھے پن یا خصوصیت کو سمجھنا هو تو ان چیزوں سے نہیں سمجھنا چاهئے جو اس مذهب میں دوسرے مذهبوں سے ملتی هوئی هیں . بلکہ اس چیز سے سمجھنا چاهئے جو ان ملتی جلتی چیزوں کے اوپر اس مذهب کی اپنی خاص مہر هے ." بات سچ هے اور ظاهر هے . اگر هم هر مذهب کے انوکھے پن کو هی سمجھنا چاهیں تو سچ مچ همیں سب مذهبوں کو ٹٹول کر دیکھنا چاهئے اور مذهب مذهب کے فرق پر هی زور دینا چاهئے' ایک سی باتوں پر نہیں . پر کیا سچ مچ همیں اس کی ضرورت هے ؟ کیا یہ اچھا هے ؟ کیا اس سے فائدہ هے ؟ کیا اس سے دنیا کا بھلا هو سکتا هے ؟ هر آدمی کا روپ رنگ هر دوسرے آدمی سے الگ هوتا هے . اٹھنا بیٹھنا اور سوچنے کے طریقے بھی الگ الگ هوتے هیں . هر کنبے کا اپنا اپنا ڈھنگ هوتا هے—هر قوم کا' هر قبیلے کا . بہت سی باتوں میں سب ایک دوسرے سے الگ الگ هوتے هیں . پر کیا ان الگ الگ باتوں پر زور دینا ضروری هے اور مفید هے ؟ کیا یہ کافی نہیں هے کہ هم ان الگ الگ فرقوں کو صرف سمجھ لیں اور گوارا کر لیں ؟ هر آدمی کی آواز الگ هوتی هے جس سے وہ اندھیرے میں بھی پہچانا جا سکتا هے . اس لئے اگر دو آدمی ایک هی بات کہیں تو کیا هم ان کی آوازوں کے فرق کی وجہ سے اس بات کو ماننے سے انکار کر دیں کہ ان دونوں کا مطلب ایک هی هے ؟ دنیا کی آج کل کی حالت میں کیا اس کی ضرورت نہیں هے کہ هم فرقوں کو بالکل مٹانے کی کوشش کئے بغیر انہیں جہاں تک هو سکے نرم کرنے کی کوشش کریں . بالکل مٹانے کی کوشش کرنا تو قدرت کے بھی خلاف هوگا کیونکہ قدرت کے اندر کثرت میں وحدت اور انیکتا میں هی ایکتا هے . پر کیا میں اور تو' میرا کنبہ' میری نسل' میرا قبیلہ' میری قوم اور میرے رنگ کے لوگ' یہ سب آوازیں حد سے زیادہ نہیں بڑھ چکی هیں ؟ کیا اب اس بات کی ضرورت نہیں هے کہ هم اپنی مشترکہ انسانیت پر زور دیں' یہ سمجھیں کہ هم سب انسان هیں' سب آدم کی اولاد هیں ؟ کثرت میں وحدت دیکھنے کا یہی ایک طریقہ هے . اسی نگاہ کو جگانے اور بڑھانے سے سماج' سماجی زندگی' سچا سماج واد اور انسانی بھائی چارہ ممکن هو سکتے هیں . صوفی کہتا هے :—

" جس کسی کے دل میں سچا کفر پیدا هو گیا وہ پھر اس اوپر کے اسلام سے بیزار هوگیا . اوسے اس کی ضرورت نہیں رهی ."

---

यह फ़रेब ठीक उलटा है इस ऊंची सच्चाई का, इस बुलन्द ख़्याली का कि सब सच्चाई, सब नेकी और सब सुन्दरता उसी एक आत्मा, परम आत्मा या रूहे कुल में हैं जो असल 'मैं' हूं. सचमुच यह असल "मैं" ही दुनिया को बचा सकता है. इस ऊंची घट घट व्यापी "मैं" का मज़हब ही अकेला सच्चा मज़हब है. लेकिन यह "मैं" और यह मज़हब तो सब मज़हबों के अन्दर फैला हुआ है. सब इसी से क़ायम हैं. इसी के कारन यह सब मज़हब आदमी के मददगार बन सकते हैं. यही सब में सुलह कराने वाली चीज़ है. यही सब को बांधने वाला सुनहरा धागा है. यह न हो तो सब टुकड़े टुकड़े हो जावें. इसी को तो जगाना और जानना है. घट घट के अन्दर व्यापक आत्मा से बड़ी और कौन चीज़ हो सकती है. यही तो "मैं" है. यही तो "मैं" हूं. इसी के अन्दर तो सारी दुनिया है. हमारी इस छोटी ख़ुदी से ज़्यादा छोटी कौन सी चीज़ हो सकती है जो मन दो मन हाड़ मांस तक महदूद है और बराबर जन्म, मरन, जवानी और बुढ़ापा, सेहत और बीमारी के चक्करों में फंसी रहती है. फिर भी यह छोटी सी ख़ुदी उस बेअन्त लामहदूद आत्मा को अपनी बालिश्त से नापने की कोशिश करती है! उसकी यह कोशिश भी ठीक ही तो है क्योंकि आख़िर असलियत में यह वही है.

हमारी आत्मा हमारे सब अलग अलग मज़हबों से ऊपर और बड़ी है. यह इस बात से भी साबित है कि हर आदमी चाहे वह बड़ा विद्वान हो और चाहे बिल्कुल अनपढ़, जब चाहे अपनी अन्दर की आवाज़ पर अपना ऊपरी मज़हब बदल सकता है और बदलता रहता है और उसकी जगह जिस मज़हब को चाहे अख़्तयार कर सकता है. इस से ज़ाहिर है कि उसके अन्दर कोई चीज़ ऐसी है जो सब अलग अलग मज़हबों से ऊंची और बालातर है. एक सूफ़ी ने कहा है :—

चूं हक़ीक़त रा मुजव्वज़ हम तुई
ऐन हक़ ईनस्त ऐनुलहक़ तुई

यानी—चूंकि असलियत को पहचानने वाला तुही है इसलिये ऐन सच यही है कि असली सच्चाई भी तुही है.

सूफ़ी कहता है कि "उम्मुलकिताब" यानी "सब किताबों की वह मां जो अल्लाह के पास बताई जाती है आदमी की रूह ही है."

असल असलियत को समझने में यानी असल आत्मा को पहचानने में आदमी ग़लती इसलिये करता है कि उसने अपने को इस धोके में डाल रक्खा है कि वह यही मुट्ठी भर हाड़, मांस और ख़ून की पोटली है. बेअन्त यानी लामहदूद को महदूद बनाकर वह महदूद को लामहदूद बनाने की कोशिश करता है. ख़ुदा का उल्टा ही ख़ुदी यानी शैतान है. ब्रह्म से इन्कार ही जीव है. सच्चाई की घटिया नक़ल झूट



یہ فریب ٹھیک اُلٹا ھے اِس اُونچی سچائی کا' اِس بلند خیالی کا کہ سب سچائی' سب نیکی اور سب سندرتا اُسی ایک آتما' پرم آتما یا روح کل میں ھیں جو اصل 'میں' ھوں. سچ مچ یہ اصل "میں" ھی دنیا کو بچا سکتا ھے. اِس اُونچی گھٹ گھٹ ویاپی "میں" کا مذھب ھی اکیلا سچا مذھب ھے. لیکن یہ "میں" اور یہ مذھب تو سب مذھبوں کے اندر پھیلا ھوا ھے. سب اِسی سے قائم ھیں. اِسی کے کارن یہ سب مذھب آدمی کے مددگار بن سکتے ھیں. یہی سب میں صلح کرانے والی چیز ھے. یہی سب کو باندھنے والا سنہرا دھاگا ھے. یہ نہ ھو تو سب ٹکڑے ٹکڑے ھوجاویں. اِسی کو تو جگانا اور جاننا ھے. گھٹ گھٹ کے اندر ویاپک آتما سے بڑی اور کون چیز ھو سکتی ھے. یہی تو "میں" ھے. یہی تو "میں" ھوں. اِسی کے اندر تو ساری دنیا ھے. ھماری اُس چھوٹی خودی سے زیادہ چھوٹی کون سی چیز ھو سکتی ھے جو من دو من ھاڑ مانس تک محدود ھے اور برابر جنم' مرن' جوانی اور بڑھاپا' صحت اور بیماری کے چکروں میں پھنسی رہتی ھے. پھر بھی یہ چھوٹی سی خودی اُس بےانت لامحدود آتما کو اپنی بالشت سے ناپنے کی کوشش کرتی ھے! اُسکی یہ کوشش بھی ٹھیک ھی تو ھے کیونکہ آخر اصلیت میں یہ وھی ھے.

ھماری آتما ھمارے سب الگ الگ مذھبوں سے اوپر اور بڑی ھے. یہ اس بات سے بھی ثابت ھے کہ ھر آدمی چاھے وہ بڑا ودوان ھو اور چاھے بالکل اَن پڑھ' جب چاھے اپنی اندر کی آواز پر اپنا اوپری مذھب بدل سکتا ھے اور بدلتا رھتا ھے اور اُسکی جگہ جس مذھب کو چاھے اختیار کر سکتا ھے. اِس سے ظاھر ھے کہ اُس کے اندر کوئی چیز ایسی ھے جو سب الگ الگ مذھبوں سے اونچی اور بالاتر ھے. ایک صوفی نے کہا ھے :—

چوں حقیقت را مجوز ھم توئی
عین حق اینست عین الحق توئی

یعنی—چونکہ اصلیت کو پہچاننے والا تو ھی ھے اِس لئے عین سچ یہی ھے کہ اصلی سچائی بھی تو ھی ھے.

صوفی کہتا ھے کہ "اُم الکتاب" یعنی "سب کتابوں کی وہ ماں جو اللہ کے پاس بتائی جاتی ھے آدمی کی روح ھی ھے."

اصل اصلیت کو سمجھنے میں یعنی اصل آتما کو پہچاننے میں آدمی غلطی اس لئے کرتا ھے کہ اس نے اپنے کو اس دھوکے میں ڈال رکھا ھے کہ وہ یہی مٹھی بھر ھاڑ' مانس اور خون کی پوٹلی ھے. بے انت یعنی لامحدود کو محدود بناکر وہ محدود کو لامحدود بنانے کی کوشش کرتا ھے. خدا کا الٹا ھی خودی یعنی شیطان ھے. برھم سے انکار ھی جیو ھے. سچائی کی گھٹیا نقل جھوٹ

सब को दबाना या मिटाना जरूरी है !" यह लोग इस खुली सच्चाई को भूल जाते हैं कि सबके जिस्म एक प्रकृति या माद्दे के बने हुए हैं और सब की आत्माएं या रूहें एक ही परम आत्मा या रूहे कुल से निकली हैं.

अलग अलग मज़हबों के मानने वालों के इस झूटे दावे के पीछे एक गहरी सच्चाई छिपी है. हर मज़हब में कुछ आम बुनियादी बातें होती हैं और कुछ न कुछ ख़ास बात भी होती है. हर मज़हब किसी न किसी एक ख़ास सच्चाई या एक ख़ास नेकी या ख़ास तरह के नेक काम पर जोर देता है और दूसरी सच्चाइयों, दूसरी नेकियों और दूसरे अच्छे कामों की निस्बत उसे बढ़ कर बताता है. यह बात आम तौर पर उस ख़ास देश, उस ख़स ज़माने या उन ख़ास हालात की वजह से होती है जिनमें वह मज़हब जन्म लेता है. मिसाल के लिये वैदिक धर्म में घट घट में रहने वाली एक आत्मा, और अलग अलग लोगों के अलग अलग फ़र्जों के अनुसार समाज का संगठन करने पर जोर दिया गया है. यहूदी धर्म में ईश्वर के कड़े इन्साफ़ और ईश्वर में विश्वास करने वाले लोगों की रक्षा पर जोर दिया गया है. पारसी धर्म में पाकीज़गी, सच्चाई और ईमान्दारी पर जोर दिया गया है. बौद्ध धर्म में त्याग और दया पर, ईसाई धर्म में बुराई का बदला बुराई से न देने पर, और दूसरों के लिये अपने को क़ुर्बान करने पर, इसलाम में सब इन्सानों की बराबरी और भाईचारे पर और जुल्म का मुक़ाबिला करने पर वग़ैरा वग़ैरा. लेकिन धीरे धीरे सब मज़हबों की यह ख़ास बातें एक अजीब शकल अख्तयार कर लेती हैं और हर मज़हब के लोग यह मानने लगते हैं कि उनके मज़हब को क़ायम करने वाला महापुरुश ही आदमी और ख़ुदा के बीच में सिफ़ारिश करने वाला या नाता जोड़ने वाला हो सकता है. जिस आदमी की वह सिफ़ारिश करदे वही निजात पायेगा और कोई निजात नहीं पा सकता और न कोई सिफ़ारिश कर सकता है.

जब आदमी "मेरा मज़हब" कहता है तो उसके इस कहने में एक और सच्चाई छिपी होती है जिसे अगर वह जान जावे तो वह सच्चाई ही उसके तांबे को पारस की तरह छू कर सोना कर दे. आपसी झगड़े की जगह आदमी फिर बड़ी से बड़ी शान्ति के मैदान में पहुंच जावे. "मेरा मज़हब" का मतलब है "मैं का मज़हब, आत्मा का मज़हब, उसी आत्मा का जो सबके अन्दर है, यानी परम आत्मा का या रूहे कुल का मज़हब."

"मेरा मज़हब ही अकेला सच्चा मज़हब है, जोमैं मानता हूं वही ठीक है, जो मैं करता हूं वही ठीक अमल है," मामूली तौर पर यह ज़बरदस्त धोका, यह झूटा घमन्ड, यह पागलपन, आदमी की छोटी ख़ुदी का यह माया जाल,



سب کو دبانا یا مٹانا ضروری ہے !" یہ لوگ اِس کھلی سچائی کو بھول جاتے ہیں کہ سب کے جسم ایک پرکرتی یا مادے کے بنے ہوئے ہیں اور سب کی آتمائیں یا روحیں ایک ہی پرم آتما یا روح کل سے نکلی ہیں .

الگ الگ مذہبوں کے ماننے والوں کے اِس جھوٹے دعوی کے پیچھے ایک گہری سچائی چھپی ہے . ہر مذہب میں کچھ عام بنیادی باتیں ہوتی ہیں اور کچھ نہ کچھ خاص بات بھی ہوتی ہے . ہر مذہب کسی نہ کسی ایک خاص سچائی یا ایک خاص نیکی یا خاص طرح کے نیک کام پر زور دیتا ہے اور دوسری سچائیوں' دوسری نیکیوں اور دوسرے اچھے کاموں کی نسبت اُسے بڑھکر بتاتا ہے. یہ بات عام طور پر اُس خاص دیش' اُس خاص زمانے یا اُن خاص حالات کی وجہ سے ہوتی ہے جن میں وہ مذہب جنم لیتا ہے . مثال کے لئے ویدک دھرم میں گھٹ گھٹ میں رہنے والی ایک آتما' اور الگ الگ لوگوں کے الگ الگ فرضوں کے انوسار سماج کا سنگٹھن کرنے پر زور دیا گیا ہے . یہودی دھرم میں ایشور کے کڑے اِنصاف' اور ایشور میں وشواس کرنے والے لوگوں کی رکشا پر زور دیا گیا ہے . پارسی دھرم میں پاکیزگی' سچائی اور ایمانداری پر زور دیا گیا ہے . بودھ دھرم میں تیاگ اور دیا پر' عیسائی دھرم میں برائی کا بدلہ برائی سے نہ دینے پر' اور دوسروں کے لئے اپنے کو قربان کرنے پر' اِسلام میں سب اِنسانوں کی برابری اور بھائی چارے پر اور ظلم کا مقابلہ کرنے پر وغیرہ وغیرہ . لیکن دھیرے دھیرے سب مذہبوں کی یہ خاص باتیں ایک عجیب شکل اختیار کرلیتی ہیں اور ہر مذہب کے لوگ یہ ماننے لگتے ہیں کہ اُن کے مذہب کو قائم کرنے والا مہاپرش ہی آدمی اور خدا کے بیچ میں سفارش کرنے والا یا ناتا جوڑنے والا ہوسکتا ہے . جس آدمی کی وہ سفارش کردے وہی نجات پائےگا اور کوئی نجات نہیں پاسکتا اور نہ کوئی سفارش کرسکتا ہے .

جب آدمی "میرا مذہب" کہتا ہے تو اُس کے اِس کہنے میں ایک اور سچائی چھپی ہوتی ہے جسے اگر وہ جان جاوے تو وہ سچائی ہی اُس کے تانبے کو پارس کی طرح چھوکر سونا کردے . آپسی جھگڑے کی جگہ آدمی پھر بڑی سے بڑی شانتی کے میدان میں پہونچ جاوے . "میرا مذہب" کا مطلب ہے "میں کا مذہب' آتما کا مذہب' اُسی آتما کا جو سب کے اندر ہے' یعنی پرم آتما کا یا روح کل کا مذہب ."

"میرا مذہب ہی اکیلا سچا مذہب ہے' جو میں مانتا ہوں وہی ٹھیک ہے' جو میں کرتا ہوں وہی ٹھیک عمل ہے ." معمولی طور پر یہ زبردست دھوکا' یہ جھوٹا گھمنڈ' یہ پاگل پن' آدمی کی چھوٹی خودی کا یہ مایا جال'

# इन्सानी भाईचारे का असली रास्ता

# انسانی بھائی چارے کا اصلی راستہ

डाक्टर भगवानदास

पिछले लेखों में हम दिखा चुके हैं कि दुनिया के अलग अलग मजहबों में बहुत सी बुनियादी बातें एक सी हैं. मजहबों की इन मिलती जुलती बातों में अच्छी बातें भी हैं और बुरी बातें भी. अच्छी बातों की बहुत सी मिसालें हम दे चुके हैं. बुरी बातों की एक खास मिसाल यह है कि हर मजहब कुछ दिनों चल कर सैकड़ों फ़िरक़ों, साम्प्रदायों और जमाअतों में बंट जाता है. इस का कारन आदमी के अन्दर की वह कमजोरी है जिसे हम 'खुदी' कहते हैं और जो धर्म मजहब में भी अपना रंग लाए बिना नहीं रहती. हर एक अपनी ही राय को ठीक समझता है. लोगों के आपसी झगड़े भी इन फ़िरक़ों और साम्प्रदायों के बनने में बहुत बड़ा हिस्सा लेते हैं. इससे भी अधिक बुरी एक बात यह है कि हर मजहब के अन्दर तरह तरह के गुप्त यानी खुफ़िया फ़िरक़े इस तरह के भी पैदा हो जाते हैं जिन्हें जादू, वाम मार्ग और शैतानी ताक़तों की पूजा कहकर बयान किया जा सकता है और किया जाता है. इस तरह की साम्प्रदायों में कहीं कहीं गंदी रस्में भी चल पड़ी हैं. यहां तक कि देवी देवताओं के नाम पर आदमी की क़ुर्बानी और मासूम बच्चों का क़त्ल तक होने लगता है. इस तरह के फ़िरक़ों और रिवाजों की तरफ़ हमें बराबर निगाह रखनी चाहिये और उनसे लड़ना चाहिये. हर रोशनी के पीछे कहीं न कहीं गहरा साया भी होता है. सुन्दर से सुन्दर आदमी या जानवर अपने जिस्म से गंदगी और मल मूत्र भी निकालता है. अच्छी से अच्छी मशीन कहीं न कहीं राख, फ़ुजुला और गंदगी भी बाहर फेंकती है. इस तरह की चीजों को हमेशा साफ़ करते रहने, पोंछते रहने और धोते रहने की जरूरत होती है.

हर मजहब जब अपनी असल ऊंचाई से गिर जाता है और झूटे मुल्ला, पुरोहितों और गुमराह करने वाले खुदग़र्ज रहनुमाओं के हाथों में पड़ जाता है तो उसके मानने वालों में से हर एक यह कहने लगता है कि:—"एक मेरा मजहब ही सच्चा मजहब है, यही एक असली और पुराना धर्म है. कम से कम मेरा यह धर्म और सब से कहीं अच्छा है. मेरे मजहब के मानने वाले ही धरमात्मा और मोमिन हैं और धर्मों के मानने वाले मलेच्छ, काफ़िर और पेगन हैं, और उन

ڈاکٹر بھگوان داس

پچھلے لیکھوں میں ہم دیکھا چکے ھیں کہ دنیا کے الگ الگ مذھبوں میں بہت سی بنیادی باتیں ایک سی ھیں۔ مذھبوں کی اِن ملتی جلتی باتوں میں اچھی باتیں بھی ھیں اور بری باتیں بھی۔ اچھی باتوں کی بہت سی مثالیں ھم دے چکے ھیں۔ بری باتوں کی ایک خاص مثال یہ ھے کہ ھر مذھب کچھ دنوں چل کر سیکڑوں فرقوں، سامپردایوں اور جماعتوں میں بنٹ جاتا ھے۔ اِس کا کارن آدمی کے اندر کی وہ کمزوری ھے جسے ھم 'خودی' کہتے ھیں اور جو دھرم مذھب میں بھی اپنا رنگ لائے بنا نہیں رھتی۔ ھر ایک اپنی ھی رائے کو ٹھیک سمجھتا ھے۔ لوگوں کے آپسی جھگڑے بھی اِن فرقوں اور سامپردایوں کے بننے میں بہت بڑا حصہ لیتے ھیں۔ اِس سے بھی آدھک بری ایک بات یہ ھے کہ ھر مذھب کے اندر طرح طرح کے گپت یعنی خفیہ فرقے اِس طرح کے بھی پیدا ھوجاتے ھیں جنھیں جادو، وام مارگ اور شیطانی طاقتوں کی پوجا کہکر بیان کیا جاسکتا ھے اور کیا جاتا ھے۔ اِس طرح کے سامپردایوں میں کہیں کہیں گندی رسمیں بھی چل پڑی ھیں۔ یہاں تک کہ دیوی دیوتاؤں کے نام پر آدمی کی قربانی اور معصوم بچوں کا قتل تک ھونے لگتا ھے۔ اِس طرح کے فرقوں اور رواجوں کی طرف ھمیں برابر نگاہ رکھنی چاھئے اور اُن سے لڑنا چاھئے۔ ھر روشنی کے پیچھے کہیں نہ کہیں گہرا سایہ بھی ھوتا ھے۔ سندر سے سندر آدمی یا جانور اپنے جسم سے گندگی اور مل موتر بھی نکالتا ھے۔ اچھی سے اچھی مشین کہیں نہ کہیں راکھ، فضلہ اور گندگی بھی باھر پھینکتی ھے۔ اِس طرح کی چیزوں کو ھمیشہ صاف کرتے رھنے، پونچھتے رھنے اور دھوتے رھنے کی ضرورت ھوتی ھے۔

ھر مذھب جب اپنی اصل اُونچائی سے گر جاتا ھے اور جھوٹے ملا، پروھتوں اور گمراہ کرنے والے خودغرض رھنماؤں کے ھاتھوں میں پڑجاتا ھے تو اُس کے ماننے والوں میں سے ھر ایک یہ کہنے لگتا ھے کہ :—"ایک میرا مذھب ھی سچا مذھب ھے، یہی ایک اصلی اور پرانا دھرم ھے۔ کم سے کم میرا یہ دھرم اور سب سے کہیں اچھا ھے۔ میرے مذھب کے ماننے والے ھی دھرماتما اور مومن ھیں اور دھرموں کے ماننے والے ملیچھ، کافر اور پیگن ھیں۔ اور اُن

आवाज धीमी पड़ी और वह धीमे धीमे बोलता रहा, पर इतने धीमे नहीं कि लोग सुन न सकें:

"मेरे बच्चों ने जो चीज शुरू की, उसको पूरा करना मेरा कर्त्तव्य है. उनको हरगिज यह बात पसंद न होती कि मैं अपने दर्द को लेकर एक कोने में मुंह छिपाये पड़ा रहूं. इस चीज के लिये उन्होंने जान नहीं दी. उनके मर जाने से जो कमी हो गई है, अब तक मैंने उस कमी को पूरा करने की कोशिश नहीं की है. मगर हमारे नेता लेनिन की मृत्यु से हमारी आंखें खुल गई हैं. मुझको अपने पिछले जमाने की जवाबदेही करने के लिये न कहो. आज से हमारी नई जिन्दगी शुरू होती है."

जखार के दिल में दर्द से भरी हुई यादें घुमड़ रही थीं, उसके चेहरे पर मानो बादल सा छा गया था, मगर उसका चेहरा कठोर था. लेकिन जब उसको पार्टी में लेने के समर्थन में हाथों का एक समुन्दर लहराया तो उसकी आंखें चमकने लगीं और उसका पके बालों वाला सिर गर्व से तन गया.

नये लोगों को पार्टी में लेने की यह कार्रवाई बहुत रात गये तक चलती रही. सब से अच्छे और ऐसे लोग ही लिये गये, जिन्हें सब लोग जानते थे और जिनकी जिन्दगियों में कहीं कोई धब्बा न था.

लेनिन की मृत्यु ने लाखों मजदूरों को बोलशेविक बनाया. नेता चला गया मगर पार्टी बदस्तूर क़ायम रही, उसमें कहीं कोई कमजोरी नहीं आई. कोई दरख्त जिसकी विशाल जड़ें धरती में मजबूती के साथ गड़ी होती हैं, उसके सिरे को अगर काट भी दिया जाय, तब भी वह मरता नहीं.

---

हे मेरी आत्मा ! तू इस तरह मत जी, जिस तरह अब तक प्रशंसारहित होकर जीती रही है और हे आत्मा ! जब तू मरे, तब इस तरह मरे, मानो मरी ही नहीं.

—मुतनब्बी

---



آواز دھیمی پڑی اور وہ دھیمے دھیمے بولتا رہا' پر اِتنے دھیمے نہیں کہ لوگ سن نہ سکیں :

"میرے بچوں نے جو چیز شروع کی' اُس کو پورا کرنا میرا کرتیویہ ھے . اُن کو ھرگز یہ بات پسند نہ ھوتی کہ میں اپنے درد کو لے کر ایک کونے میں منھ چھپائے پڑا رھوں . اِس چیز کے لئے انھوں نے جان نہیں دی . ان کے مر جانے سے جو کمی ھوگئی ھے' اب تک میں نے اس کمی کو پورا کرنے کی کوشش نہیں کی ھے . مگر ھمارے نیتا لینن کی مرتیو سے ھماری آنکھیں کھل گئی ھیں . مجھ کو اپنے پچھلے زمانے کی جوابدھی کرنے کے لئے نہ کہو . آج سے ھماری نئی زندگی شروع ھوتی ھے ."

ذخار کے دل میں درد سے بھری ھوئی یادیں گھمڑ رھی تھیں' اُس کے چہرے پر مانو بادل سا چھا گیا تھا . مگر اُس کا چہرہ کٹھور تھا . لیکن جب اُس کو پارٹی میں لینے کے سمرتھن میں ھاتھوں کا ایک سمندر لہرایا تو اس کی آنکھیں چمکنے لگیں اور اُس کا پکے بالوں والا سر گرو سے تن گیا .

نئے لوگوں کو پارٹی میں لینے کی یہ کارروائی بہت رات گئے تک چلتی رھی . سب سے اچھے اور ایسے لوگ ھی لئے گئے' جنھیں سب لوگ جانتے تھے اور جن کی زندگیوں میں کہیں کوئی دھبہ نہ تھا .

لینن کی مرتیو نے لاکھوں مزدوروں کو بولشیوک بنایا . نیتا چلا گیا مگر پارٹی بدستور قایم رھی' اس میں کہیں کوئی کمزوری نہیں آئی . کوئی درخت جس کی وشال جڑیں دھرتی میں مضبوطی کے ساتھ گڑی ھوتی ھیں' اُس کے سرے کو اگر کاٹ بھی دیا جائے' تب بھی وہ مرتا نہیں .

---

ھے میری آتما ! تو اِس طرح مت جی' جس طرح اب تک پرشنسا رہت ھو کر جیتی رھی ھے اور ھے آتما ! جب تو مرے' تب اُس طرح مرے' مانو مری ھی نہیں .

—متنبی

---

"कोई सवाल ?" सिरोतेंको की आवाज़ ने शान्ति को भंग किया.

उपस्थित लोगों में खलबली सी मची, मगर किसी ने पहिले सभापति की बात का जवाब नहीं दिया. तब एक फ़ायरमैन, जो सीधे अपने इंजिन से चला आ रहा था और कालिख की तरह काला हो रहा था, निश्चयात्मक स्वर में बोला:

"पूछने को क्या है ? हम उसे जानते नहीं क्या ? उसे पार्टी में ले लो और क्या !"

लुहार गिलिया का चेहरा गर्मी और आवेश से लाल हो रहा था. उसने अपनी फटी हुई आवाज़ से चिल्ला कर कहा:

"यह बिलकुल ठीक ढंग का कामरेड है, कभी ग़द्दारी नहीं करेगा. तुम उस पर भरोसा कर सकते हो. वोट ले लो सिरोतेंको !"

हाल के पिछले हिस्से में से, जहां कोमसोमोल बैठे हुये थे, और जो उस अंधेरे में दिखाई नहीं दे रहा था, कोई उठा और बोला:

"कामरेड कोर्चागिन बतलायें कि उन्होंने क्यों किसानी जीवन अपनाया है और कैसे उसका मेल मज़दूर मनोवृत्ति के साथ बिठाते हैं ?"

हाल में नाराज़गी की एक हलकी सी भुनाभुनाहट पैदा हुई और किसी ने ऐतराज़ करते हुये कहा:

"तुम ऐसे क्यों नहीं बोलते जिससे सीधे सादे लोग भी तुम्हारी बात समझ सकें ? ख़ूब वक़्त चुना तुमने भी क़ाबलियत बघारने के लिये......"

मगर आर्तेम ने जवाब देना शुरू कर दिया था:

"यह बिलकुल ठीक बात उसने पूछी है कामरेड. उसने बिलकुल ठीक कहा है कि मैंने किसानी जीवन अपना लिया है. मगर मैं कहना चाहता हूं कि मैंने अपने मज़दूर विवेक के साथ विश्वासघात नहीं किया है. बहरहाल आज से वह चीज़ ख़त्म भी हो गई. मैं अपने परिवार को रेलवे यार्ड के पास और ले आ रहा हूं, यही ज्यादा अच्छा रहेगा. वह मनहूस खेत बहुत दिनों से मेरे गले में फंसता रहा है."

एक बार फिर आर्तेम का दिल कांपा जब उसने अपने समर्थन में उठे हुये हाथों के उस जंगल को देखा, और सिर ऊंचा करके जब वह आकर अपनी सीट पर बैठा तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उड़ा जा रहा हो. अपने पीछे उसने सिरोतेंको को ऐलान करते सुना: "सर्व सम्मति से पास."

मंच पर खड़ा होने वाला तीसरा आदमी पोलेनतावस्की का पहिले का मददगार ज़खार ब्रुज़ाक था. वह ख़ामोश तबियत का बुड्ढा आदमी ख़ुद बहुत दिनों से इंजिन ड्राइवर था. उसने जब अपनी मेहनत की जिन्दगी का वर्नन ख़त्म किया और कहानी को उस दिन तक ले आया, तो उसकी



"کوئی سوال؟" سروتینکو کی آواز نے شانتی کو بھنگ کیا۔

اُپستھت لوگوں میں کھلبلی سی مچی، مگر کسی نے پہلے سبھاپتی کی بات کا جواب نہیں دیا۔ تب ایک فائرمین، جو سیدھے اپنے انجن سے چلا آرہا تھا اور کالکھ کی طرح کالا ہو رہا تھا، نشچاتمک سور میں بولا:

"پوچھنے کو کیا ھے؟ ہم اُسے جانتے نہیں کیا؟ اُسے پارٹی میں لے لو اور کیا!"

لوہار گلیا کا چہرہ گرمی اور آویش سے لال ہو رہا تھا۔ اس نے اپنی پھٹی ہوئی آواز سے چلاکر کہا:

"یہ بالکل ٹھیک ڈھنگ کا کامریڈ ھے، کبھی غداری نہیں کرےگا۔ تم اُس پر بھروسہ کرسکتے ہو۔ ووٹ لے لو سیروتینکو!"

ہال کے پچھلے حصے میں سے، جہاں کوم سومول بیٹھے ہوئے تھے، اور جو اُس اندھیرے میں دکھلائی نہیں دے رہا تھا، کوئی اُٹھا اور بولا:

"کامریڈ کورچاگن بتلائیں کہ انہوں نے کیوں کسانی جیون اپنایا ھے اور کیسے اس کا میل مزدور منوورتی کے ساتھ بٹھاتے ہیں؟"

ہال میں ناراضگی کی ایک ہلکی سی بھنبھناہٹ پیدا ہوئی اور کسی نے اعتراض کرتے ہوئے کہا:

"تم ایسے کیوں نہیں بولتے جس سے سیدھے سادے لوگ بھی تمہاری بات سمجھ سکیں؟ خوب وقت چنا تم نے بھی قابلیت بگھارنے کے لئے......"

مگر آرتیم نے جواب دینا شروع کردیا تھا:

"یہ بالکل ٹھیک بات اُس نے پوچھی ھے کامریڈ۔ اُس نے بالکل ٹھیک کہا ھے کہ میں نے کسانی جیون اپنا لیا ھے۔ مگر میں کہنا چاہتا ہوں کہ میں نے اپنے مزدور وویک کے ساتھ وشواس گھات نہیں کیا ھے۔ بہر حال آج سے وہ چیز ختم بھی ہوگئی۔ میں اپنے پریوار کو ریلوے یارڈ کے پاس اور لے آرہا ہوں۔ یہی زیادہ اچھا رہیگا۔ وہ منحوس کھیت بہت دنوں سے میرے گلے میں پھنستا رہا ھے۔"

ایک بار پھر آرتیم کا دل کانپا جب اس نے اپنے سمرتھن میں اُٹھے ہوئے ہاتھوں کے اُس جنگل کو دیکھا، اور سر اُونچا کرکے جب وہ آکر اپنی سیٹ پر بیٹھا تو اُسے ایسا لگ رہا تھا جیسے اُڑا جا رہا ہو۔ اپنے پیچھے اُس نے سیروتینکو کو اعلان کرتے ہوئے سنا: "سرو سمتی سے پاس۔"

منچ پر کھڑا ہونے والا تیسرا آدمی پولینتاوسکی کا پہلے کا مددگار زخار برذاک تھا۔ یہ خاموش طبیعت کا بوڑھا آدمی خود بہت دنوں سے انجن ڈرائیور تھا۔ اس نے جب اپنی محنت کی زندگی کا ورنن ختم کیا اور کہانی کو اس دن تک لے آیا، تو اُس کی

सत्रह साल का समझा और इस तरह मुझे एक मैकेनिक के मददगार का काम मिल गया. जहां तक मेरे मौजूदा काम का ताल्लुक़ है, मैं आठ साल से यहां काम कर रहा हूं. अपनी पिछली जिन्दगी के बारे में मुझे इससे ज्यादा कुछ नहीं कहना है. यहां की मेरी जिन्दगी के बारे में आप सब जानते ही हैं."

आर्तेम ने अपनी टोपी से माथा पोंछा और एक लम्बी सांस ली. अभी तक उसने ख़ास बात नहीं कही थी. और इसी को कहना सब से कठिन काम था, मगर कहना तो था ही. और कोई वह अनिवार्य सवाल पूछ बैठे, इससे पहिले ही कहना था. लिहाज़ा अपनी घनी भवों में बल डालते हुए, उसने अपनी कहानी को जारी रक्खा:

"तुम सबको मुझसे यह सवाल पूछने का हक़ है कि मैं क्रांति के पहिले दिनों में बोलशेविक पार्टी में क्यों नहीं शरीक हुआ ? आप मुझसे यह सवाल पूछ सकते हैं. मगर मैं इसका क्या जवाब दूं ? अभी मैं बुड्ढा तो हुआ नहीं, तब नहीं तो अब सही. मगर सवाल यह है कि अब तक मुझे यह रास्ता क्यों नहीं दिखाई दिया ? मैं सीधे सीधे बात करूंगा क्योंकि मेरे पास छिपाने को कुछ नहीं. वह रास्ता हमें दिखाई नहीं दिया और यह हमारी ही ग़लती थी. हमें 1918 में ही इस रास्ते को पकड़ना चाहिये था जब हमने जर्मनों के ख़िलाफ़ बग़ावत की थी. मल्लाह जुखराई ने बहुत बार हम से यही बात कही. 1920 में आ कर ही मैंने पहिली बार राइफ़ल उठाई. तूफ़ान के ख़त्म होने पर और श्वेत रूसियों को काले सागर में ढकेल कर हम लोग घर लौट आये. उसके बाद फिर परिवार, बच्चे...... मैं घर गिरस्ती में एक दम उलझ गया. मगर अब जबकि कामरेड लेनिन नहीं हैं और पार्टी ने हमको पुकारा है, तो मैंने पीछे मुड़ कर अपनी जिन्दगी को देखा है और समझ रहा हूं कि उसमें किस चीज़ की कमी थी. अपने राज की हिफ़ाज़त करना ही काफ़ी नहीं है, हमें लेनिन की जगह एक बड़े परिवार की तरह एकता की मज़बूत डोर में बंध कर रहना है ताकि सोवियत राज फ़ौलाद के पहाड़ की तरह मज़बूती से खड़ा रहे और उसे कोई हिला नहीं सके. हमको बोलशेविक बनना ही है. यही हमारी पार्टी है, या मैं झूट कहता हूं ?"

इन्हीं सीधे सादे शब्दों में मगर गहरी ईमानदारी से मैकेनिक आर्तेम ने अपनी बात कही और जब उसकी बात ख़त्म हुई तो जहां उसे थोड़ी थोड़ी लाज भी लग रही थी कि कैसे वह यों धारा प्रवाह बोलता गया, वहां उसे यह भी महसूस हुआ कि जैसे उसके कंधे पर से कोई भारी बोझ उतर गया और अच्छी तरह तनकर खड़े होते हुये वह आने वाले सवालों का इन्तज़ार करने लगा.





سترہ سال کا سمجھا اور اِس طرح مجھے ایک مکینک کے مددگار کا کام مل گیا ۔ جہاں تک میرے موجودہ کام کا تعلق ہے، میں آٹھ سال سے یہاں کام کر رہا ہوں ۔ اپنی پچھلی زندگی کے بارے میں مجھے اِس سے زیادہ کچھ نہیں کہنا ہے ۔ یہاں کی میری زندگی کے بارے میں آپ سب جانتے ہی ہیں ۔

آرتیم نے اپنی ٹوپی سے ماتھا پونچھا اور ایک لمبی سانس لی۔ ابھی تک اُس نے خاص بات نہیں کہی تھی ۔ اور اسی کو کہنا سب سے کٹھن کام تھا، مگر کہنا تو تھا ہی ۔ اور کوئی وہ انیواریہ سوال پوچھ بیٹھے، اِس کے پہلے ہی کہنا تھا ۔ لہذا اپنی گھنی بھوؤں میں بل ڈالتے ہوئے، اُس نے اپنی کہانی کو جاری رکھا :

"تم سب کو مجھ سے یہ سوال پوچھنے کا حق ہے کہ میں کرانتی کے پہلے دنوں میں بولشیوک پارٹی میں کیوں نہیں شریک ہوا ؟ آپ مجھ سے یہ سوال پوچھ سکتے ہیں ۔ مگر میں اِس کا کیا جواب دوں ؟ ابھی میں بوڑھا تو ہوا نہیں، تب نہیں تو اب سہی ۔ مگر سوال یہ ہے کہ اب تک مجھے یہ راستہ کیوں نہیں دکھائی دیا ؟ میں سیدھے سیدھے بات کروں گا کیونکہ میرے پاس چھپانے کو کچھ نہیں ۔ وہ راستہ ہمیں دکھائی نہیں دیا اور یہ ہماری ہی غلطی تھی ۔ ہمیں 1918 میں ہی اِس راستے کو پکڑنا چاہئے تھا جب ہم نے جرمنوں کے خلاف بغاوت کی تھی۔ ملاح جوکھرائی نے بہت بار ہم سے یہی بات کہی ۔ 1920 میں آکر ہی میں نے پہلی بار رائفل اٹھائی ۔ طوفان کے ختم ہونے پر اور شویت روسیوں کو کالے ساگر میں ڈھکیل کر ہم لوگ گھر لوٹ آئے ۔ اُس کے بعد پھر پریوار، بچے...... میں گھر گرہستی میں ایکدم الجھ گیا ۔ مگر اب جبکہ کامریڈ لینن نہیں ہیں اور پارٹی نے ہم کو پکارا ہے، تو میں نے پیچھے مڑکر اپنی زندگی کو دیکھا ہے اور سمجھ رہا ہوں کہ اُس میں کس چیز کی کمی تھی ۔ اپنے راج کی حفاظت کرنا ہی کافی نہیں ہے، ہمیں لینن کی جگہ ایک بڑے پریوار کی طرح ایکتا کی مضبوط ڈور میں بندھ کر رہنا ہے تاکہ سوویت راج فولاد کے پہاڑ کی طرح مضبوطی سے کھڑا رہے اور اُسے کوئی ہلا نہیں سکے ۔ ہم کو بولشیوک بننا ہی ہے ۔ یہی ہماری پارٹی ہے، یا میں جھوٹ کہتا ہوں ؟"

انہیں سیدھے سادے شبدوں میں مگر گہری ایمانداری سے مکینک آرتیم نے اپنی بات کہی اور جب اُس کی بات ختم ہوئی تو جہاں اُسے تھوڑی تھوڑی لاج بھی لگ رہی تھی کہ وہ کیسے وہ یوں دھارا پرواہ بولتا گیا، وہاں اُسے یہ بھی محسوس ہوا کہ جیسے اُس کے کندھے پر سے کوئی بھاری بوجھ اتر گیا اور اچھی طرح تن کے کھڑے ہوتے ہوئے وہ آنے والے سوالوں کا اِنتظار کرنے لگا۔

साल बढ़ा कर बताई थी. तीन साल तक मैंने उस जर्मन के लिये काम किया मगर कोई काम न सीख सका क्योंकि मुझे घर की सेवा टहल के काम करने पड़ते थे और दौड़ दौड़ कर वोडका लानी पड़ती थी. मेरा मालिक बुरी तरह पीता था.........वह मुझे कोयला और लोहा लाने के लिये भी भेजता !......मालिकन ने तो मुझे बिलकुल गुलाम ही बना दिया था: मुझे आलू छीलने पड़ते, बर्तन धोने पड़ते. अक्सर मार पड़ती और ख्वाहमख़ाह, क्योंकि उनको मारने की आदत पड़ी हुई थी. अगर मैं अपनी मालकिन को ख़ुश न कर सकता तो वह कस कर मेरे मुंह पर थप्पड़ मारती और उसकी हालत यह थी कि अपने पति के पीने के कारन वह हमेशा ग़ुस्से में भरी बैठी रहती थी. मैं उससे भाग कर सड़क पर पहुंच जाता, मगर कहां जाता, किससे शिकायत करता ? मेरी मां चालीस मील दूर थी और फिर मुझे वह अपने पास रख भी तो नहीं सकती थी........और कारख़ाने में भी तो हालत कुछ बेहतर न थी. मालिक के भाई उसके इंचार्ज थे. बड़ा सूअर था वह आदमी. उसे मुझको तंग करने में मज़ा आता था. कभी वह मुझसे कहता, "ऐ छोकरे, वह वाशर तो उठाला', और कोने में भट्टी की तरफ़ इशारा करता. मैं दौड़ कर जाता और वाशर को उठा लेता और ज़ोर से चीख़ पड़ता क्योंकि वह ताज़ा ताज़ा भट्टी से निकल कर पड़ा होता, और गोकि ज़मीन पर पड़ा हुआ वह काला नज़र आता, मगर छूते ही आग लग जाती और तब मैं तो दर्द से चीख़ता पड़ा होता और उसके पेट में हंसते हंसते बल पड़ जाते. मैं यह तकलीफ़ और बरदाश्त न कर सका और भाग कर अपने घर मां के पास चला गया. मगर वह समझ नहीं पाती थी कि मेरा वह क्या बन्दोबस्त करे, लिहाज़ा वह मुझे फिर उसी जर्मन के यहां ले गई. मुझे याद है, वह पूरे रास्ते रोती गई. कहीं तीसरे साल जाकर उन्होंने मुझे कुछ कुछ काम सिखलाना शुरू किया, मगर मार पीट बदस्तूर चलती रही. मैं फिर भाग गया और इस बार स्तारो कोन्स्तान्तिनोव पहुंचा. वहां मुझे एक सासेज के करख़ाने में काम मिल गया और मैंने डेढ़ साल डिब्बे ढोने के पीछे बर्बाद किये. फिर हमारे मालिक ने जुए के पीछे कारख़ाने को तबाह कर दिया, चार महीने तक हमें एक कौड़ी भी न दी और ग़ायब हो गया. इस तरह मैं उस ख़ंदक़ में से निकला. तब मैंने ज़मेरिका की गाड़ी पकड़ी और वहां काम ढूंढने निकला. संयोग से वहांपर मुझे एक रेलवे मज़दूर मिला जिसे मुझ पर दया आई. जब मैंने उसको बतलाया कि मैं थोड़ा बहुत मैकेनिक का काम जानता हूं, तो वह मुझको अपने मालिक के पास ले गया और बोला कि यह मेरा भतीजा है और मुझे काम देने की सिफ़ारिश की. मेरा डील डौल ऐसा था कि उन्होंने मुझे



سال بڑھاکر بتائی تھی ۔ تین سال تک میں نے اُس جرمن کے لئے کام کیا مگر کوئی کام نہ سیکھ سکا کیونکہ مجھے گھر کی سیوا ٹہل کے کام کرنے پڑتے تھے اور دوڑ دوڑ کر ووڈکا لانی پڑتی تھی ۔ میرا مالک بری طرح پیتا تھا..... وہ مجھے کوئلہ اور لوہا لانے کے لئے بھی بھیجتا !......مالکن نے تو مجھے بالکل غلام ھی بنا دیا تھا : مجھے آلو چھیلنے پڑتے' برتن دھونے پڑتے ۔ اکثر مار پڑتی اور خواہمخواہ' کیونکہ ان کو مارنے کی عادت پڑی ہوئی تھی ۔ اگر میں اپنی مالکن کو خوش نہ کرسکتا تو وہ کس کر میرے منھ پر تھپڑ مارتی اور اُس کی حالت یہ تھی کہ اپنے پتی کے پینے کے کارن وہ ھمیشہ غصے میں بھری بیٹھی رھتی تھی ۔ میں اُس سے بھاگ کر سڑک پر پہونچ جاتا' مگر کہاں جاتا' کس سے شکایت کرتا ؟ میری ماں چالیس میل دور تھی اور پھر مجھے وہ اپنے پاس رکھ بھی تو نہیں سکتی تھی..... اور کارخانے میں بھی تو حالت کچھ بہتر نہ تھی ۔ مالک کے بھائی اُس کے اِنچارج تھے ۔ بڑا سور تھا وہ آدمی ۔ اُسے مجھکو تنگ کرنے میں مزا آتا تھا ۔ کبھی وہ مجھسے کہتا' اے چھوکرے' وہ واشرتو اُٹھالا' اور کونے میں بھٹی کی طرف اشارہ کرتا ۔ میں دوڑکر جاتا اور واشرکو اُٹھا لیتا اور زور سے چیخ پڑتا کیونکہ وہ تازہ تازہ بھٹی سے نکل کر پڑا ھوتا' اور گو کہ زمین پر پڑا ھوا وہ کالا نظر آتا' مگر چھوتے ھی آگ لگ جاتی اور تب میں تو درد سے چیختا پڑا ھوتا اور اُس کے پیٹ میں ھنستے ھنستے بل پڑ جاتے ۔ میں یہ تکلیف اور برداشت نہ کرسکا اور بھاگ کر اپنے گھر ماں کے پاس چلا گیا ۔ مگر وہ سمجھ نہیں پاتی تھی کہ میرا وہ کیا بندوبست کرے' لہذا وہ مجھے پھر اُسی جرمن کے یہاں لے گئی ۔ مجھے یاد ھے' وہ پورے راستے روتی گئی ۔ کہیں تیسرے سال جاکر انھوں نے مجھے کچھ کچھ کام سکھلانا شروع کیا' مگر مارپیٹ بدستور چلتی رھی ۔ میں پھر بھاگ گیا اور اِس بار ستارو کونستانتینوو پہونچا. وھاں مجھے ایک ساسیج کے کارخانے میں کام مل گیا اور میں نے ڈیڑھ سال ڈبے ڈھونے کے پیچھے برباد کئے ۔ پھر ھمارے مالک نے جوئے کے پیچھے کارخانے کو برباد کردیا' چار مہینے تک ھمیں ایک کوڑی بھی نہ دی اور غائب ھوگیا ۔ اِس طرح میں اُس خندق میں سے نکلا ۔ تب میں نے زمیریکا کی گاڑی پکڑی اور وھاں کام ڈھونڈ نے نکلا ۔ سنیوگ سے وھاں پر مجھے ایک ریلوے مزدور ملا جسے مجھ پر دیا آئی ۔ جب میں نے اس کو بتلایا کہ میں تھوڑا بہت مکینک کا کام جانتا ھوں' تو وہ مجھ کو اپنے مالک کے پاس لے گیا اور بولا کہ یہ میرا بھتیجا ھے اور مجھے کام دینے کی سفارش کی. میرا ڈیل ڈول ایسا تھا کہ انھوں نے مجھے

जिससे उसकी आकृति बड़ी चुस्त-दुरुस्त नज़र आ रही थी, जैसी छुट्टी के दिन अच्छे अच्छे कपड़ों के पहनने पर नज़र आती है. आर्तेम हाल की ओर मुड़ा और उसे एक परीचित स्त्री के चेहरे की झलक मिली. यह राजगीर की लड़की गालिना थी जो अपनी दर्ज़िन साथियों के साथ वहां बैठी हुई थी. वह उसे सहानूभूतिपूर्न मुस्कराहट की आंखों से देख रही थी और उस मुस्कराहट में आर्तेम ने समर्थन पाया, और और भी कुछ, जिसे शब्दों में रख सकना उसके लिये सम्भव न था.

उसने सिरोतेंको को कहते सुना, "लोगों को अपने बारे में बतलाओ आर्तेम !"

मगर आर्तेम के लिये अपनी कहानी शुरू करना आसान न था. ऐसी बड़ी सभा में बोलने का वह आदी न था और उसने यकायक महसूस किया कि जिन्दगी ने जो कुछ उसके अन्दर भर दिया था, उन सब को व्यक्त करना उसकी शक्ति के बाहर था. शब्दों के लिये वह अटक रहा था और अपनी घबराहट के कारन ही बोलने में उसे और भी मुश्किल हो रही थी. इसके पहले उसने कभी ऐसा नहीं महसूस किया था. उसको इस बात की तीक्षन चेतना थी कि वह किसी बड़े परिवर्तन के मोड़ पर खड़ा है, कि वह एक ऐसा क़दम उठाने जा रहा है जो उसकी कठोर ऐंठी हुई, घुटी हुई जिन्दगी में गरमाहट भर देगा और उसकी जिन्दगी फिर बेमानी न रह जायेगी.

आर्तेम ने शुरू किया, "हम लोग चार आदमी थे."

हाल में शान्ति थी. छः सौ लोग उत्सुकता से हुए इस टेढ़ी नाक वाले लम्बे मजदूर को सुन रहे थे, जिसकी आंखें घनी भवों के नीचे छिपीं हुई थीं.

"मेरी मां अमीर लोगों के घरों में रसोई पकाया करती थी. मुझे अपने बाप की कुछ ख़ास याद नहीं है, उसमें और मेरी मां में नहीं बनती थी. वह बहुत ज्यादा शराब पीता था. इसलिये मेरी मां को ही हम बच्चों की देख भाल करनी पड़ती थी. इतने लोगों के खाने का इन्तज़ाम करना उसके लिये आसान न था. सवेरे से लेकर रात तक वह बैल की तरह काम में जुटी रहती थी और इसके लिये उसे महीने में चार रूबल और खाना मिलता था. मैं इतना ख़ुश-क़िस्मत था कि मुझे दो साल स्कूल में पढ़ने का मौक़ा मिला. उन्होंने मुझे पढ़ना लिखना सिखाया. मगर जब मैं नौ साल का हुआ तो मेरी मां के सामने इसके अलावा नोई रास्ता न था कि मुझे ले जाकर एक करख़ाने में भर्ती करा दे. तीन साल तक मैंने सिर्फ़ खाने पर काम किया......उस कारख़ाने का मालिक फ़ेस्टर नाम का एक जर्मन था. पहिले वह मुझे लेना न चाहता था क्योंकि मैं बहुत छोटा था. मगर मैं बहुत तगड़ा था और फिर मेरी मां ने मेरी उम्र दो

جس سے اُس کی آکرتی بڑی چست - درست نظر آ رہی تھی، جیسی چھٹی کے دن اچھے اچھے کپڑوں کے پہننے پر نظر آتی ھے ۔ آرتیم ھال کی اور مڑا اور اُسے ایک پرچت استری کے چہرے کی جھلک ملی ۔ یہ راج گیر کی لڑکی گالینا تھی جو اپنی درزن ساتھیوں کے ساتھ وھاں بیٹھی ھوئی تھی ۔ وہ اُسے سہانبھوتی پورن مسکراھٹ کی آنکھوں سے دیکھ رھی تھی اور اُس مسکراھٹ میں آرتیم نے سمرتھن پایا، اور اور بھی کچھ، جسے شبدوں میں رکھ سکنا اُس کے لئے سمبھو نہ تھا ۔

اُس نے سروتینکو کو کہتے سنا، "لوگوں کو اپنے بارے میں بتلاؤ آرتیم !"

مگر آرتیم کے لئے اپنی کہانی شروع کرنا آسان نہ تھا ۔ ایسی بڑی سبھا میں بولنے کا وہ عادی نہ تھا اور اُس نے یکایک محسوس کیا کہ زندگی نے جو کچھ اُس کے اندر بھر دیا تھا، ان سب کو ویکت کرنا اُس کی شکتی کے باھر تھا ۔ شبدوں کے لئے وہ اٹک رھا تھا اور اپنی گھبراھٹ کے کارن ھی بولنے میں اُسے اور بھی مشکل ھو رھی تھی ۔ اِس کے پہلے اُس نے کبھی ایسا نہیں محسوس کیا تھا ۔ اُس کو اِس بات کی تیکشن چیتنا تھی کہ وہ کسی بڑے پریورتن کے موڑ پر کھڑا ھے، کہ وہ ایک ایسا قدم اُٹھانے جا رھا ھے جو اُس کی کٹھور، اینٹھی ھوئی، گھوٹی ھوئی زندگی میں گرماھٹ بھردے گا اور اس کی زندگی پھر بے معنی نہ رہ جائے گی ۔

آرتیم نے شروع کیا، "ھم لوگ چار آدمی تھے ۔"

ھال میں شانتی تھی ۔ چھ سو لوگ اُتسکتا سے اِس ٹیڑھی ناک والے لمبے مزدور کو سن رھے تھے، جس کی آنکھیں گھنی بھوؤں کے نیچے چھپی ھوئی تھیں ۔

"میری ماں امیر لوگوں کے گھروں میں رسوئی پکایا کرتی تھی ۔ مجھے اپنے باپ کی کچھ خاص یاد نہیں ھے، اس میں اور میری ماں میں نہیں بنتی تھی ۔ وہ بہت زیادہ شراب پیتا تھا ۔ اِس لئے میری ماں کو ھی ھم بچوں کی دیکھ بھال کرنی پڑتی تھی ۔ اتنے لوگوں کے کھانے کا اِنتظام کرنا اُس کے لئے آسان نہ تھا ۔ سویرے سے لیکر رات تک وہ بیل کی طرح کام میں جٹی رھتی تھی اور اُس کے لئے اُسے مہینے میں چار روبل اور کھانا ملتا تھا ۔ میں اتنا خوش قسمت تھا کہ مجھے دو سال اسکول میں پڑھنے کا موقع ملا ۔ انہوں نے مجھے پڑھنا لکھنا سکھایا ۔ مگر جب میں نو سال کا ھوا تو میری ماں کے سامنے اس کے علاوہ کوئی راستہ نہ تھا کہ مجھے لے جاکر ایک کارخانے میں بھرتی کرادے ۔ تین سال تک میں نے صرف کھانے پر کام کیا... اُس کارخانے کا مالک فیسٹر نام کا ایک جرمن تھا ۔ پہلے وہ مجھے لینا نہ چاھتا تھا کیونکہ میں بہت چھوٹا تھا ۔ مگر میں بہت تگڑا تھا اور پھر میری ماں نے میری عمر دو

मगर फिर शान्ति छा गई जब पोलेनतावस्की, जिसका नाम सूची में सब से पहले था, आकर सभा के सामने खड़ा हुआ.

अपनी ज़िन्दगी की कहानी सुनाते समय उसके मन में जो उद्वेग था, उसको वह बुड्ढा इंजन ड्राइवर छिपा नहीं सक.

"......मैं आपको क्या बतलाऊं साथियो! आप सभी जानते हैं कि उन दिनों में हम मजदूरों की ज़िन्दगी कैसी थी. मैंने ज़िन्दगी भर ग़ुलाम की तरह मेहनत की, फिर भी बुढ़ापे में आकर मैं भिखमंगा ही रहा. जब क्रान्ति आई तो मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि मैं अपने को गृहस्ती की परेशानियों के बोझ से दबा हुआ एक बुड्ढा आदमी समझता रहा और पार्टी के अन्दर नहीं आया. और गोकि मैंने कभी दुश्मन का साथ नहीं दिया, फिर भी ख़ुद संघर्ष में मैंने कम ही भाग लिया. 1905 में मैं वार्सा में मोटर के करख़ाने में हड़ताल कमेटी का मेम्बर था और बोल्शेविकों के साथ था. तब मैं जवान था और मुझ में लड़ने की शक्ति थी. मगर अब उन बीती बातों को याद करने से क्या फ़ायदा? इलिच के मरने से मेरे दिल पर भारी धक्का सा लगा है, हमने अपना दोस्त और साथी खो दिया है और आज यह आख़िरी बार मैं अपने बुड्ढे होने की बात कह रहा हूं. मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि कैसे अपनी बात कहूं क्योंकि मुझे कभी भाशन देना नहीं आया. मगर मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूं कि मेरा रास्ता बोल्शेविकों का रास्ता है, दूसरा कोई रास्ता नहीं है.

उस इंजन ड्राइवर ने अपने पके बालों वाले सर को झटका दिया और उसकी सफ़ेद भवों के नीचे उसकी आंखें श्रोताओं को दृढ़ता से देखती रहीं जैसे उनके फ़ैसले का इन्तज़ार कर रही हों.

उस छोटे से पके बालों वाले आदमी की अर्ज़ी के ख़िलाफ़ विरोध की एक भी आवाज़ नहीं उठी और सब लोगों ने वोट दिया. इस वोट में ग़ैर पार्टी के लोगों को भी शरीक किया गया.

पोलेनतावस्की जब सभापति मन्डली की मेज़ से हटा तो वह कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर था.

हर आदमी समझ रहा था कि कोई ऐतिहासिक बात हो रही है. अब उस इंजन ड्राइवर की जगह विशालकाय आर्तेम खड़ा था. उस मैकेनिक की समझ में नहीं आ रहा था कि अपने हाथों का क्या करे, लिहाज़ा वह बार बार अपनी ख़ूब बालों वाली फ़र की टोपी को तान रहा था. उसकी भेड़ की खाल की जाकट, जिसके सिरे एकदम घिस गए थे, खुली हुई थी. मगर उसकी भूरी फ़ौजी वर्दी के गले तक पहुंचने वाले कालर में पीतल के दो बटन लगे हुए थे,



مگر پھر شانتی چھا گئی جب پولینتاوسکی، جس کا نام سوچی میں سب سے پہلے تھا، آکر سبھا کے سامنے کھڑا ہوا.

اپنی زندگی کی کہانی سناتے سمے اس کے من میں جو ادویگ تھا، اسکو وہ بوڑھا انجن ڈرائیور چھپا نہیں سکا.

"..... میں آپ کو کیا بتلاؤں ساتھیو! آپ سبھی جانتے ہیں کہ ان دنوں میں ہم مزدوروں کی زندگی کیسی تھی. میں نے زندگی بھر غلام کی طرح محنت کی، پھر بھی بڑھاپے میں آکر میں بھکمنگے کا بھکمنگا ہی رہا. جب کرانتی آئی تو مجھے یہ کہنے میں سنکوچ نہیں ہے کہ میں اپنے کو گرہستی کی پریشانیوں کے بوجھ سے دبا ہوا ایک بوڑھا آدمی سمجھتا رہا اور پارٹی کے اندر نہیں آیا. اور گو کہ میں نے کبھی دشمن کا ساتھ نہیں دیا، پھر بھی خود سنگھرش میں میں نے کم ہی بھاگ لیا. 1905 میں میں وارسا میں موٹر کے کارخانے میں ہڑتال کمیٹی کا ممبر تھا اور بولشیوکوں کے ساتھ تھا. تب میں جوان تھا اور مجھ میں لڑنے کی شکتی تھی. مگر اب ان بیتی باتوں کو یاد کرنے سے کیا فائدہ؟ الیچ کے مرنے سے میرے دل پر بھاری دھکا لگا ہے، ہم نے اپنا دوست اور ساتھی کھو دیا ہے اور آج یہ آخری بار میں اپنے بوڑھے ہونے کی بات کہہ رہا ہوں. میں سمجھ نہیں پا رہا ہوں کہ کیسے اپنی بات کہوں کیونکہ مجھے کبھی بھاشن دینا نہیں آیا. مگر میں صرف اتنا کہنا چاہتا ہوں کہ میرا راستہ بولشیوکوں کا راستہ ہے، دوسرا کوئی راستہ نہیں ہے."

اس انجن ڈرائیور نے اپنے پکے بالوں والے سر کو جھٹکا دیا اور اس کی سفید بھوؤں کے نیچے اس کی آنکھیں شروتاؤں کو دڑھتا سے دیکھتی رہیں جیسے ان کے فیصلے کا انتظار کر رہی ہوں.

اس چھوٹے سے پکے بالوں والے آدمی کی عرضی کے خلاف ورودھ کی ایک بھی آواز نہیں اٹھی اور سب لوگوں نے ووٹ دیا. اس ووٹ میں غیر پارٹی لوگوں کو بھی شریک کیا گیا.

پولینتاوسکی جب سبھاپتی منڈلی کی میز سے ہٹا تو وہ کمیونسٹ پارٹی کا ممبر تھا.

ہر آدمی سمجھ رہا تھا کہ کوئی ایتہاسک بات ہو رہی ہے. اب اس انجن ڈرائیور کی جگہ وشالکایہ آرتیم کھڑا تھا. اس مکینک کی سمجھ میں نہیں آرہا تھا کہ اپنے ہاتھوں کا کیا کرے، لہذا وہ بار بار اپنی خوب بالوں والی فر کی ٹوپی کو تان رہا تھا. اس کی بھیڑ کی کھال کی جاکٹ، جس کے سرے ایکدم گھس گئے تھے، کھلی ہوئی تھی. مگر اس کی بھوری فوجی وردی کے گلے تک پہونچنے والے کالر میں پیتل کے دو بٹن لگے ہوئے تھے،

थी, हाल के दरवाजे के पास खड़े हुए दो लम्बे लम्बे फ़र के दरख्त बर्फ़ का लबादा पहने खड़े थे. मगर हाल के अन्दर अंगीठियों और छ: सौ लोगों की सांसों के कारन घुटन महसूस हो रही थी. ये छ: सौ लोग पार्टी द्वारा बुलाई हुई इस शोक सभा में आये थे.

हाल में कहीं बात चीत की भुनभुनाहट नहीं थी. गहरे दर्द ने लोगों की आवाजें रूंध दी थीं और वे एक दूसरे से धीरे धीरे फ़ुसफ़ुसा कर बातें कर रहे थे और उन तमाम सैकड़ों लोगों की आंखों में दुख और चिन्ता के भाव थे. वे एक ऐसी किश्ती के मल्लाह थे जिसकी पतवार चलाने वाला तूफ़ान में ही उनसे बिछड़ गया था.

ब्यूरो के मेम्बरों ने शान्ति से मंच पर आसन ग्रहन किया. मोटे तगड़े सिरोतेंको ने सावधानी से घंटी उठाई, धीरे से उसको बजाया और वापिस मेज़ पर रख दिया. इतने ही से हाल में शान्ति छा गई.

मुख्य भाशन के बाद पार्टी संगठन का मन्त्री सिरोतेंको बोलने के लिए उठा. और यद्यपि उसने जो घोशना की, वह शोक सभा के लिए कुछ असाधारन ही थी, मगर किसी को उससे आश्चर्य नहीं हुआ.

उसने कहा, "कई मजदूरों ने इस सभा से मांग की है कि वह पार्टी की मेम्बरी की अर्ज़ी पर विचार करें. इस अर्ज़ी पर सैंतीस साथियों के हस्ताक्षर हैं." और उसने वह अर्ज़ी पढ़ कर सुना दी:

"दक्षिन पश्चिम रेलवे शेपेतोवका स्टेशन की बोल्शेविक पार्टी के रेलवे संगठन की सेवा में.

"हमारे नेता की मृत्यु हमारे लिए पुकार है कि हम बोल्शेविक पार्टी में शामिल हों. और हम इस सभा से अनुरोध करते हैं कि वह इस बात पर विचार करें कि हम लेनिन की पार्टी के सदस्य होने के योग्य हैं या नहीं."

इस छोटे से वक्तव्य पर दो कालम भर कर हस्ताक्षर थे.

सिरोतेंको ने उन्हें पढ़ कर सुना दिया और हर नाम के बाद वह थोड़ी देर के लिए रुक जाता था ताकि श्रोताओं को वह नाम याद हो जाय.

स्तानिकाव ज़िग्मन्डोविच पोलेनतावस्की, इंजन ड्राईवर, छत्तीस साल की सर्विस."

हाल में समर्थन की ध्वनि गूंज गई.

"आर्तेम आन्द्रीएविच कोर्चागिन, मेकेनिक, सत्रह साल की सर्विस.

"ज़खार फ़िलिप्पोविच ब्रुज़ाक़, इंजन ड्राइवर, इक्कीस साल की सर्विस."

मंच पर बैठा हुआ वह आदमी जैसे जैसे गठीले हाथों वाले और रेलवे मजदूरों की बिरादरी के पुराने तपे हुए लोगों का नाम पुकारता जाता था, वैसे वैसे हाल में शोर बढ़ता जाता था.



تھی، ھال کے دروازے کے پاس کھڑے ھوئے دو لمبے لمبے فر کے درخت برف کا لبادہ پہنے کھڑے تھے ۔ مگر ھال کے اندر انگیٹھیوں اور چھ سو لوگوں کی سانسوں کے کارن گھٹن محسوس ھو رھی تھی ۔ یہ چھ سو لوگ پارٹی دوارا بلائی ھوئی اس شوک سبھا میں آئے تھے ۔

ھال میں کہیں بات چیت کی بھنبھناھٹ نہیں تھی ۔ گہرے درد نے لوگوں کی آوازیں روندھ دی تھیں ۔ اور وے ایک دوسرے سے دھیرے دھیرے پھس پھسا کر باتیں کر رھے تھے اور اُن تمام سیکڑوں لوگوں کی آنکھوں میں دکھ اور چنتا کے بھاؤ تھے ۔ وے ایک ایسی کشتی کے ملاح تھے جسکی پتوار چلانے والا طوفان میں ھی اُن سے بچھڑ گیا تھا ۔

بیورو کے ممبروں نے شانتی سے منچ پر آسن گرھن کیا ۔ موٹے تگڑے سروتینکو نے ساودھانی سے گھنٹی اٹھائی، دھیرے سے اس کو بجایا اور واپس میز پر رکھ دیا ۔ اتنے ھی سے ھال میں شانتی چھا گئی ۔

مکھیہ بھاشن کے بعد پارٹی سنگٹھن کا منتری سروتینکو بولنے کے لئے اٹھا ۔ اور یدیپی اس نے جو گھوشنا کی، وہ شوک سبھا کے لئے کچھ اسادھارن ھی تھی، مگر کسی کو اس سے آشچریہ نہیں ھوا ۔

اس نے کہا، "کئی مزدوروں نے اس سبھا سے مانگ کی ھے کہ وہ پارٹی کی ممبری کی عرضی پر وچار کریں ۔ اس عرضی پر سینتیس ساتھیوں کے ھستاکشر ھیں ۔" اور اس نے وہ عرضی پڑھکر سنادی:

" دکچھن پچھم ریلوے شیپیتوکا اسٹیشن کی بولشیوک پارٹی کے ریلوے سنگٹھن کی سیوا میں ۔

" ھمارے نیتا کی مرتیو ھمارے لئے پکار ھے کہ ھم بولشیوک پارٹی میں شامل ھوں ۔ اور ھم اس سبھا سے انرودھ کرتے ھیں کہ وہ اس بات پر وچار کریں کہ ھم لینن کی پارٹی کے سدسیہ ھونے کے یوگیہ ھیں یا نہیں ۔"

اس چھوٹے سے وکتویہ پر دو کالم بھر کر ھستاکشر تھے ۔

سروتینکو نے انھیں پڑھ کر سنا دیا اور ھر نام کے بعد وہ تھوڑی دیر کے لئے رک جاتا تھا تاکہ شروتاؤں کو وہ نام یاد ھو جائے ۔

" استانکاو زگمنڈووچ پولینتاوسکی، انجن ڈرائیور، چھتیس سال کی سروس ۔"

ھال میں سمرتھن کی دھونی گونج گئی ۔

" آرتیم اندرایوچ کورچاگن، مکینک، سترہ سال کی سروس ۔"

" زخار فلپووچ بروزاک، انجن ڈرائیور، اکیس سال کی سروس ۔"

منچ پر بیٹھا ھوا وہ آدمی جیسے جیسے گٹھیلے ھاتھوں والے اور ریلوے مزدوروں کی برادری کے پرانے تپے ھوئے لوگوں کا نام پکارتا جاتا تھا، ویسے ویسے ھال میں شور بڑھتا جاتا تھا ۔

सही होगी. कुछ देर बाद उसने इस आदमी को पहचाना. यह स्थानीय पार्टी संगठन का मन्त्री था.

इंजन की मरम्मत करने वाले मजदूर पिट में से कूद कर बाहर आये और उन्होंने मौन होकर उस आदमी की मौत की खबर सुनी जिसका नाम सारी दुनिया में गूंज रहा था.

फाटक के बाहर कहीं एक इंजन सीटी दे रहा था, जिसे सुनकर ये लोग कांप गये. इंजन की इस दर्द में डूबी हुई आवाज के बाद वैसी ही आवाज दूर पर एक और इंजन ने की, उसके बाद एक और ने. उनकी इस आवाज में बिजली घर के साइरेन ने योग दिया. साइरेन की आवाज बुलन्द और बम के उड़ते हुए छर्रों की तरह तेज और चुभने वाली थी. फिर ये आवाजें ज़रा देर बाद कीव के लिए रवाना होने वाली मुसाफ़िर गाड़ी के ख़ूबसूरत "एस" इंजन की भारी गूंजती हुई आवाज़ में डूब गईं.

ख़ुफ़िया का आदमी चौंक गया जब शेपेतोवका-वार्सा एक्सप्रेस के पोलिश इंजन के ड्राइवर ने इंजनों की इन सीटियों का कारन जानने पर कान लगाकर उसको सुना और फिर धीरे धीरे अपना हाथ उठाकर सीटी की रस्सी को खींचा. वह जनता था कि यह आख़री बार उसको ऐसा करने का मौक़ा मिल रहा है, इसके बाद उसे फिर कभी यह गाड़ी चलाने को न मिलेगी. मगर उसके हाथ ने सीटी के तार को न छोड़ा और उसके इंजन की चीख़ ने पोलिश दूतों और कूट-नीतिज्ञों को चौंका कर उन्हें अपने नरम कोचों से उठा दिया.

रेलवे के अहाते में लोगों की भीड़ जमा थी. वे तमाम फाटकों के अन्दर चले आ रहे थे और जब वह विशाल इमारत ठसाठस भर गई, तो शोक सभा निस्तब्ध शान्ति के वातावरन में आरम्भ हुई. पार्टी की शेपेतोवका एरिया कमेटी के मन्त्री, पुराने बोल्शेविक शराब्रिन ने तक़रीर की.

"साथियो ! लेनिन, दुनिया भर के मजदूरों के नेता लेनिन मर गये. पार्टी की अपूर्णीय क्षति हुई है, क्योंकि वह आदमी उठ गया जिसने बोल्शेविक पार्टी का निर्मान किया और उसको दुश्मनों के प्रति निर्मम होना सिखलाया.... हमारी पार्टी और हमारे वर्ग के नेता की मृत्यु मजदूर वर्ग की सर्वोत्तम सन्तानों के लिए एक पुकार है कि वे आकर हमारी पार्टी में शामिल हों....."

शोक संगीत की धुनें गूंज उठीं. वहां पर उपस्थित उन सैकड़ों लोगों ने अपनी टोपियां उतार लीं और वह आर्तेम जो पन्द्रह बरस से नहीं रोया था, उसको लगा कि जैसे दर्द से उसका गला घुट रहा है और उसके वे मजबूत चौड़े कन्धे हिल उठे.

आदमियों की भीड़ के दबाव से रेलवे मजदूरों के क्लब की दीवारें भी मानो कराह रही थीं. बाहर बडी सख्त सर्दी



صحیح ھوگی ۔ کچھ دیر بعد اس نے اس آدمی کو پہچانا ۔ یہ استھانیہ پارٹی سنگٹھن کا منتری تھا ۔

انجن کی مرمت کرنے والے مزدور پٹ میں سے کود کر باھر آئے اور اُنھوں نے مون ھو کر اُس آدمی کی موت کی خبر سنی جس کا نام ساری دنیا میں گونج رھا تھا ۔

پھاٹک کے باھر کہیں ایک انجن سیٹی دے رھا تھا' جسے سن کر یہ لوگ کانپ گئے ۔ انجن کی اس درد میں ڈوبی ھوئی آواز کے بعد ویسی ھی آواز دور پر ایک اور انجن نے کی' اس کے بعد ایک اور نے ۔ ان کے اِس آواز میں بجلی گھر کے سائرن نے یوگ دیا ۔ سائرن کی آواز بلند اور بم کے اڑتے ھوئے چھروں کی طرح تیز اور چبھنے والی تھی ۔ پھر یہ آوازیں ذرا دیر بعد کیو کے لئے روانہ ھونے والی مسافر گاڑی کے خوبصورت " ایس " انجن کی بھاری گونجتی ھوئی آواز میں ڈوب گئیں۔

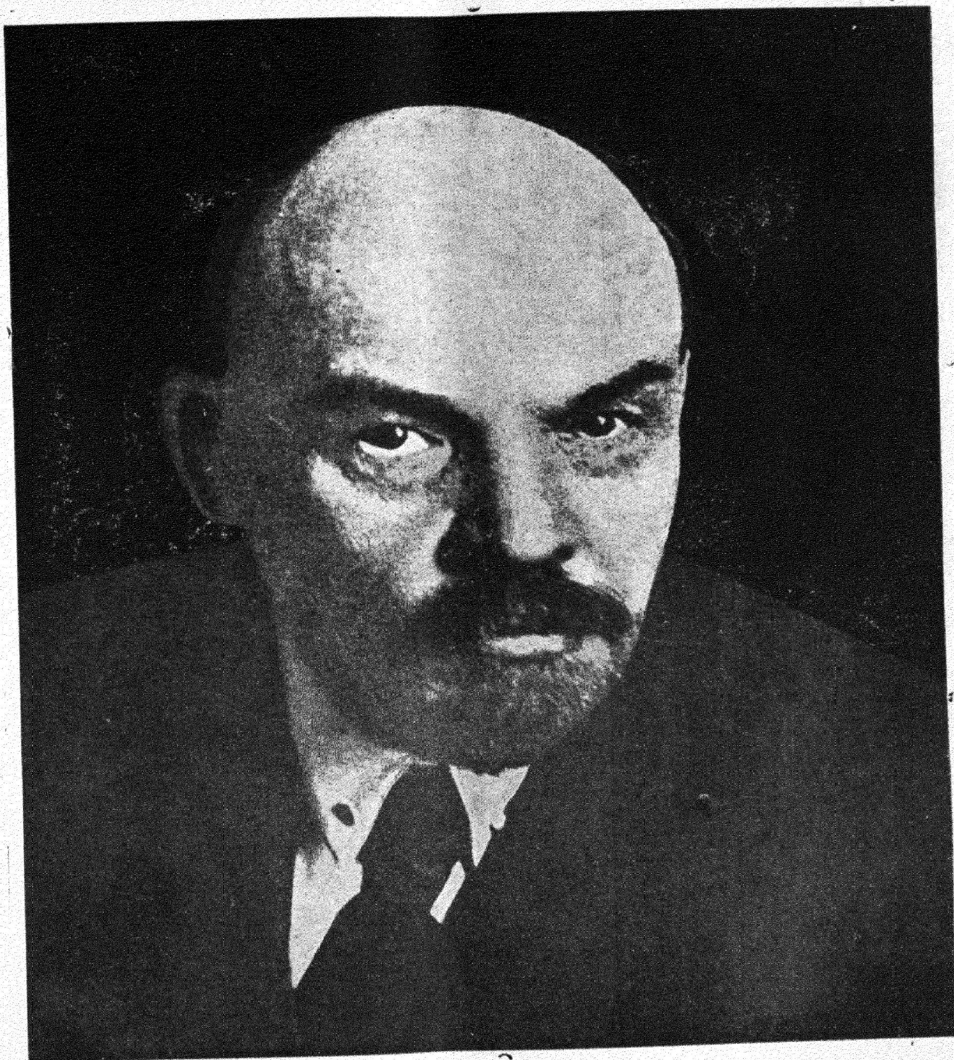
خفیہ کا آدمی چونک گیا جب شےپیتیوکا ۔ وارسا اکسپریس کے پولش انجن کے ڈرائیور نے انجنوں کی ان سیٹیوں کا کارن جاننے پر' کان لگا کر اس کو سنا اور پھر دھیرے دھیرے اپنا ھاتھ اٹھا کر سیٹی کی رسی کو کھینچا ۔ وہ جانتا تھا کہ یہ آخری بار اس کو ایسا کرنے کا موقع مل رھا ھے' اس کے بعد اُسے پھر کبھی یہ گاڑی چلانے کو نہ ملے گی ۔ مگر اس کے ھاتھ نے سیٹی کے تار کو نہ چھوڑا اور اس کے انجن کی چیخ نے پولش دوتوں اور کوٹ نیتگیوں کو چونکا کر انھیں اپنے نرم کوچوں سے اٹھا دیا ۔

ریلوے کے احاطے میں لوگوں کی بھیڑ جمع تھی ۔ وے تمام پھاٹکوں کے اندر چلے آ رھے تھے اور جب وہ وشال عمارت ٹھساٹھس بھر گئی' تو شوک سبھا نستبدھ شانتی کے واتاورن میں آرمبھ ھوئی۔ پارٹی کی شےپیتوکا ایریا کمیٹی کے منتری' پرانے بولشیویک شرابرن نے تقریر کی ۔

" ساتھیو ! لینن' دنیا بھر کے مزدوروں کے نیتا لینن مر گئے ۔ پارٹی کی اپورنیہ چھتی ھوئی ھے' کیونکہ وہ آدمی اٹھ گیا جس نے بولشیوک پارٹی کا نرمان کیا اور اس کو دشمنوں کے پرتی نرمم ھونا سکھلایا...... ھماری پارٹی اور ھمارے ورگ کے نیتا کی مرتیو مزدور ورگ کی سروتم سنتانوں کے لئے ایک پکار ھے کہ وے آ کر ھماری پارٹی میں شامل ھوں ......"

شوک سنگیت کی دھنیں گونج اٹھیں ۔ وھاں پر اُپستھت سیکڑوں لوگوں نے اپنی ٹوپیاں اتار لیں اور وہ آرتیم جو پندرہ برس سے نہیں رویا تھا' اُس کو لگا کہ جیسے درد سے اُسکا گلا گھٹ رھا ھے اور اُس کے وے مضبوط چوڑے کندھے ھل اٹھے ۔

آدمیوں کی بھیڑ کے دباؤ سے ریلوے مزدوروں کے کلب کی دیواریں بھی مانو کراہ رھی تھیں ۔ باھر بڑی سخت سردی



सोवियत् रूस के जन्म दाता : लेनिन

سوویت روس کے جنم داتا لینن

*

इलिच लेनिन की मृत्यु हो गई." बुड्ढा उठकर खड़ा हो गया, उसने फ़ीते को उठा लिया और उसको ऐसे घूरने लगा जैसे उसमें छेद कर देगा. जिस बात का विश्वास करने से वह इनकार कर रहा था, उस पर काग़ज़ के उस टुकड़े ने तसदीक़ की मुहर लगा दी थी. उसका चेहरा ऐसा ज़र्द पड़ गया जैसे उसमें जान ही बाक़ी न हो. वह अपने दूसरे साथियों की तरफ़ मुड़ा और उसकी चीख़ उनके कानों में पड़ी : "लेनिन मर गए ?"

इस भयानक मृत्यु की ख़बर तारघर के खुले हुए दरवाज़े में से निकली और आंधी की तरह स्टेशन में फैल गई और तूफ़ान के डैनों पर सवार होकर रेल की पटरियां और स्विचों से जाकर टकराई और बर्फ़ के तूफ़ान के साथ साथ रेलवे वर्कशाप के बर्फ़ से ढके हुए फाटकों को चीरती हुई अन्दर घुस गई.

मरम्मत करने वाले कुछ मज़दूर पहले से ही पिट पर खड़े हुए एक इन्जन की मरम्मत कर रहे थे. बूढ़ा पोलेनतावस्की ख़ुद अपने इंजन के नीचे घुसकर उन जगहों को बतला रहा था जिनमें गड़बड़ी थी. ज़ख़ार, बुज़ाख़ और आर्तेम आतिशदान की मुड़ी हुई लोहों की सुलाख़ों को सीधा कर रहे थे. ज़ख़ार उसको निहाई पर रखे हुए था और आर्तेम हथौड़ा चला रहा था.

ज़ख़ार अधेड़ हो गया था. पिछले कुछ सालों ने उसके माथे पर गहरी झुर्रियां डाल दी थीं और उसकी कनपटी के बाल सफ़ेद हो चले थे. उसकी कमर झुक गई थी और उसकी गढ़े में धंसी हुई आंखों में स्याही थी.

दरवाज़े में खड़े हुए किसी आदमी की छायाकृति क्षन भर के लिए दिखाई दी और फिर रात का अंधेरा उसका निगल गया. लोहे पर हथौड़ों की चोटों ने उसकी पहली चीख़ को डुबो दिया, मगर जब वह इंजन पर काम करते हुए आदमियों के पास पहुंचा तो आर्तेम के हाथ का हथौड़ा उठा का उठा रह गया.

"साथियो ! लेनिन मर गये !"

हथौड़ा धीरे धीरे आर्तेम के कन्धे से नीचे आ गया और उसके हाथों ने ख़ामोशी से उसको नीचे कंकरीट के फ़र्श पर रख दिया.

"क्या हुआ ? तुमने क्या कहा ?" कहते हुए आर्तेम ने यह भयानक ख़बर लाने वाले आदमी की चमड़े की जाकट को पागल की तरह झटके से पकड़ लिया.

और उसने हांफते हुए, बर्फ़ से ढके हुए, अपनी धीमी, टूटी हुई आवाज़ में दुहराया :

"हां साथियो, लेनिन मर गये !"

और चूंकि उस आदमी ने बात धीरे से कही थी, इसलिए आर्तेम ने समझ लिया कि यह भयानक ख़बर ज़रूर



الیچ لینن کی مرتیو ہو گئی ." بوڑھا اچھل کر کھڑا ہو گیا، اس نے فیتے کو اٹھا لیا اور اس کو ایسے گھورنے لگا جیسے اس میں چھید کر دیگا . جس بات کا وشواس کرنے سے وہ انکار کر رہا تھا، اس پر کاغذ کے اس ٹکڑے نے تصدیق کی مہر لگا دی تھی . اس کا چہرہ ایسا زرد پڑ گیا جیسے اس میں جان ہی باقی نہ ہو . وہ اپنے دوسرے ساتھیوں کی طرف مڑا اور اس کی چینخ ان کے کانوں میں پڑی : " لینن مر گئے ! "

اس بھیانک مرتیو کی خبر تار گھر کے کھلے ہوئے دروازے میں سے نکلی اور آندھی کی طرح اسٹیشن میں پھیل گئی اور طوفان کے ڈینوں پر سوار ہو کر ریل کی پٹریوں اور سوئچوں سے جا کر ٹکرائی اور برف کے طوفان کے ساتھ ساتھ ریلوے ورک شاپ کے برف سے ڈھکے ہوئے پھاٹکوں کو چیرتی ہوئی اندر گھس گئی .

مرمت کرنے والے کچھ مزدور پہلے سے ہی پٹ پر کھڑے ہوئے ایک انجن کی مرمت کر رہے تھے . بوڑھا پولینتاوسکی خود اپنے انجن کے نیچے گھس کر اُن جگہوں کو بتلا رہا تھا جن میں گڑبڑی تھی . زخار، بروزاخ اور آرتیم آتشدان کی مڑی ہوئی لوہے کی سلاخوں کو سیدھا کر رہے تھے . زخار اُس کو نہائی پر رکھے ہوئے تھا اور ارتم ہتھوڑا چلا رہا تھا .

زخار ادھیڑ ہو گیا تھا . پچھلے کچھ سالوں نے اُس کے ماتھے پر گہری جھریاں ڈال دی تھیں اور اُس کی کنپٹی کے بال کچھ سفید ہو چلے تھے . اس کی کمر جھک گئی تھی اور اس کی گڈھے میں دھنسی ہوئی آنکھوں میں سیاہی تھی .

دروازے میں کھڑے ہوئے کسی آدمی کی چھایاکرتی چھن بھر کے لئے دکھلائی دی اور پھر رات کا اندھیرا اس کو نگل گیا . لوہے پر ہتھوڑوں کی چوٹوں نے اس کی پہلی چینخ کو ڈبو دیا، مگر جب وہ انجن پر کام کرتے ہوئے آدمیوں کے پاس پہونچا تو آرتیم کے ہاتھ کا ہتھوڑا اٹھا کا اٹھا رہ گیا .

" ساتھیوں ! لینن مر گئے ! "

ہتھوڑا دھیرے دھیرے آرتیم کے کندھے سے نیچے آ گیا اور اس کے ہاتھوں نے خاموشی سے اس کو نیچے کنکریٹ کے فرش پر رکھ دیا .

" کیا ہوا ؟ تم نے کیا کہا ؟ " کہتے ہوئے آرتیم نے یہ بھیانک خبر لانے والے آدمی کی چمڑے کی جاکٹ کو پاگل کی طرح جھٹکے سے پکڑ لیا .

اور اس نے ہانپتے ہوئے، برف سے ڈھکے ہوئے، اپنی دھیمی، ٹوٹی ہوئی آواز میں دہرایا :

" ہاں ساتھیو، لینن مر گئے ! "

اور چونکہ اس آدمی نے بات دھیرے سے کہی تھی، س لئے آرتیم نے سمجھ لیا کہ یہ بھیانک خبر ضرور

पढ़ने के लिए, जिन्हें उसने बीच में ही छोड़ दिया था, फ़ीते की तरफ़ हाथ बढ़ाया.

तार की मशीन ने ये शब्द लिखे थे :

"21 जनवरी की शाम को छः बजकर पचास मिनट पर......"

तार बाबू ने जल्दी जल्दी ये शब्द लिखे, फ़ीते को नीचे रख दिया और अपने सिर को हाथ पर टिका कर आगे की बात सुनने लगा.

"कल गोर्की में मृत्यु हो गई......" धीरे धीरे उसने ये शब्द कागज़ पर उतार दिये. अपनी लम्बी ज़िन्दगी में उसने न जाने कितने सन्देश लिखे थे, ख़ुशी के सन्देश और ग़म के संदेश; कितनी बार दूसरों के दर्द और दूसरों की ख़ुशी की ख़बर उसी ने सबसे पहले सुनी थी ! अपने काम के सिलसिले में उसने न जाने कब से तार के उन छोटे संदेशों के अर्थ पर ध्यान देना छोड़ दिया था, उसका तो काम बस इतना था कि ध्वनियों को पकड़े और मशीन की तरह उनको कागज़ पर उतार दे.

यह भी किसी की मौत की ख़बर थी और किसी को इसकी सूचना दी जा रही थी. तार बाबू के शुरू के वह शब्द "सब के लिए, सब के लिए, सब के लिए" भूल गये. मशीन ने टिक टिक करके व्लाडीमीर इलिच" लिखा और बुड्ढे तार बाबू ने उसको अक्षरों में उतार दिया. उसके ऊपर कोई असर नहीं हुआ, बस थोड़ी-सी थकान मालूम हुई. व्लाडीमीर इलिच के नाम का आदमी कहीं मर गया था और किसी को दुख की यह ख़बर मिलेगी, दर्द की एक चीख़ किसी के सीने से निकलेगी मगर उसको इससे क्या ? मशीन डेश-डाट-डेश-डाट बोलती जा रही थी. अपनी उस सुपरिचित ध्वनि में से तार बाबू ने पहला अक्षर पकड़ा और उसे तार के फ़ारम पर लिखा. यह अंगरेज़ी का "एल" था. फिर दूसरा अक्षर आया "ई". उसके बाद ही उसने लिखा "एन", फिर जल्दी ही जोड़ा "आई". फिर आख़िरी अक्षर लिखा "एन".

इसके बाद मशीन ने विरम दिया और क्षन भर के लिए तार बाबू की आंखें अपने लिखे हुए शब्द "लेनिन" पर ठहर गईं.

मशीन टपटपाती रही मगर अब वह परिचित नाम तार बाबू की चेतना में दाख़िल हुआ. उसने एक फिर उस संदेश के आख़िरी शब्द पर निगाह डाली "लेनिन". क्या ? लेनिन ? तार की सारी इबारत उसके मन में बिजली की तरह कौंध गई. वह तार के फ़ारम को घूरता हुआ बैठा रहा और अपने काम की बत्तीस बरस की ज़िन्दगी में वह पहली बार अपने लिखे हुए शब्दों का विश्वास नहीं कर सका.

उसने तीन बार उस लाइन पर जल्दी जल्दी निगाह दौड़ाई, मगर वे शब्द ज़रा भी नहीं बदले : "व्लाडीमीर





پڑھنے کے لئے، جنہیں اس نے بیچ میں ھی چھوڑ دیا تھا، فیتے کی طرف ھاتھ بڑھایا ۔

تار کی مشین نے یہ شبد لکھے تھے :

"21 جنوری کی شام کو چھ بجے کر پچاس منٹ پر .....،،

تار بابو نے جلدی جلدی یہ شبد لکھے، فیتے کو نیچے رکھ دیا اور اپنے سر کو ھاتھ پر ٹکا کر آگے کی بات سننے لگا ۔

" کل گورکی میں مرتیو ھو گئی.....،، دھیرے دھیرے اُسنے یہ شبد کاغذ پر اُتار دیئے ۔ اپنی لمبی زندگی میں اُسنے نہ جانے کتنے سندیش لکھے تھے، خوشی کے سندیش اور غم کے سندیش؛ کتنی بار دوسروں کے درد اور دوسروں کی خوشی کی خبر اُسی نے سب سے پہلے سنی تھی ! اپنے کام کے سلسلے میں اس نے نہ جانے کب سے تار کے اُن چھوٹے سندیشوں کے ارتھ پر دھیان دینا چھوڑ دیا تھا، اُس کا تو کام بس اتنا تھا کہ دھونیوں کو پکڑے اور مشین کی طرح اُن کو کاغذ پر اُتار دے ۔

یہ بھی کسی کی موت کی خبر تھی اور کسی کو اِس کی سوچنا دی جا رھی تھی ۔ تار بابو کو شروع کے وہ شبد " سب کے لئے، سب کے لئے، سب کے لئے،، بھول گئے ۔ مشین نے ٹک ٹک کر کے " ولادی میر ایلچ،، لکھا اور بوڑھے تار بابو نے اس کو اکشروں میں اُتار دیا ۔ اُس کے اوپر کوئی اثر نہیں ھوا؛ بس تھوڑی سی تھکان معلوم ھوئی ۔ ولادی میرایلچ کے نام کا آدمی کہیں مر گیا اور کسی کو دکھ کی یہ خبر ملے گی، درد کی ایک چیخ کسی کے سینے سے نکلے گی؛ مگر اُس کو اس سے کیا ؟ مشین ڈیش - ڈاٹ - ڈیش - ڈاٹ بولتی جا رھی تھی ۔ اپنی اُس سوپرچت دھونی میں سے تار بابو نے پہلا اکشر پکڑا اور اُسے تار کے فارم پر لکھا ۔ یہ انگریزی کا " ایل ،، تھا ۔ پھر دوسرا اکشر آیا " ای ،، ۔ اُس کے بعد ھی اس نے لکھا " این ،، پھر جلدی ھی جوڑا " آئی ،، ۔ پھر آخر اکشر لکھا " این ،، ۔

اُس کے بعد مشین نے ورام دیا اور چھن بھر کے لئے تار بابو کی آنکھیں اپنے لکھے ھوئے شبد " لینن ،، پر ٹھہر گئیں ۔

مشین ٹپٹپاتی رھی مگر اب وہ پرچت نام تار بابو کی چیتنا میں داخل ھوا ۔ اس نے ایکبار پھر اُس سندیش کے آخری شبد پر نگاہ ڈالی " لینن ،، ۔ کیا ؟ لینن ؟ تار کی ساری عبارت اس کے من میں بجلی کی طرح کوندھ گئی ۔ وہ تار کے فارم کو گھورتا ھوا بیٹھا رھا اور اپنے کام کی بتیس برس کی زندگی میں وہ پہلی بار اپنے لکھے ھوئے شبدوں کا وشواس نہیں کر سکا ۔

اس نے تین بار اس لائن پر جلدی جلدی نگاہ دوڑائی، مگر وے شبد ذرا بھی نہیں بدلے : " ولادی میر

# जब लेनिन की मौत का ऐलान हुआ

# جب لینن کی موت کا اعلان ہوا

लेखक—निकोलाई आस्त्रोवस्की; अनुवादक—अमृतराय

لیکھک—نکولائی آسترووسکی ؛ انوواڈک—امرت رائے

बड़ी सख्त और बेदर्द सर्दी से सन 1924 की शुरूआत हुई. जनवरी का बर्फ़ानी पंजा बर्फ़ से ढकी हुई धरती पर जमा हुआ था और महीने के दूसरे पखवारे में आंधी और तूफ़ान का ज़बरदस्त ज़ोर था.

दक्षिन-पश्चिमी रेलवे लाइनें बर्फ़ से ढकी हुई थीं. आदमी पगलाई हुई प्राकृतिक शक्तियों से लड़ रहे थे. बर्फ़ की सफ़ाई करने वाले फावड़े बर्फ़ को काट काट कर रेलगाड़ियों के लिए रास्ता बना रहे थे. टेलीग्राफ़ के तार बर्फ़ के बोझ से आंधी और तूफ़ान के कारन टूटे जा रहे थे और बारह लाइनों में से कुल तीन काम कर रही थीं—एक इंडो यूरोपियन और दो सरकारी लाइनें.

शेपेतोव्का स्टेशन के तार घर में तीन आले अनवरत खटखटा रहे थे, मगर उनकी भाशा ऐसी थी जो सिर्फ़ जानकार आदमी की ही समझ में आ सकती थी.

आपरेटर लड़कियां अभी जवान थीं, मगर अभी उन्होंने बीस किलोमीटर से ज्यादा फ़ीता न टपटपाया होगा जब कि उनके बग़ल का बुड्ढा तार बाबू दो सौ किलोमीटर से ज्यादा कर चुका था. अपने नौजवान साथियों की तरह उस बुड्ढे को तार से भेजा गया सन्देश समझने के लिए उस फ़ीते को पढ़ना नहीं पड़ता था, न वह मुश्किल शब्दों और वाक्यांशों की ही पहेली में उलझता था, और न उसके माथे पर झुर्रियां ही पड़ती थीं. उसका ढंग यह था कि शब्द पढ़ता जा रहा था और मशीन उसको टपटपाती जा रही थी. तभी उसके कान में शब्द पड़े, "सब के लिये, सब के लिए !"

"बर्फ़ साफ़ करने के बारे में कोई दूसरा सरकुलर होगा", बुड्ढे तार बाबू ने उन शब्दों को लिखते हुए अपने मन में कहा. बाहर बर्फ़ का तूफ़ान ज़ोरों से चल रहा था जिससे बड़ी बड़ी बर्फ़ आकर खिड़की से टकराती थी. तार बाबू ने सोचा कि खिड़की पर कोई दस्तक दे रहा है. उसकी आंखें आवाज़ की ओर मुड़ गईं और वह क्षन भर के लिए खिड़की के शीशे पर बर्फ़ से बनी हुई आकृतियों को देखने लगा. कोई भी नक़्क़ाश पत्ती की ऐसी अच्छी नक़्क़ाशी न कर सकता था.

उसके विचार इधर उधर बहने लगे और थोड़ी देर के लिए उसने तार के आले को सुनना बन्द कर दिया. मगर थोड़ी ही देर बाद उसने निगाह नीची की और उन शब्दों को

بڑی سخت اور بے درد سردی سے سن 1924 کی شروعات ہوئی . جنوری کا برفانی پنجہ برف سے ڈھکی ہوئی دھرتی پر جما ہوا تھا اور مہینے کے دوسرے پکھوارے میں آندھی اور طوفان کا زبردست زور تھا .

دکچھن - پچھمی ریلوے لائینیں برف سے ڈھکی ہوئی تھیں . آدمی پگلائی ہوئی پراکرتک شکتیوں سے لڑ رہے تھے . برف کی صفائی کرنے والے پھاوڑے برف کو کاٹ کاٹ کر ریل گاڑیوں کے لئے راستہ بنا رہے تھے . ٹیلگراف کے تار برف کے بوجھ سے آندھی اور طوفان کے کارن ٹوٹے جا رہے تھے اور بارہ لائنوں میں سے کل تین کام کر رہی تھیں—ایک انڈو یوروپین اور دو سرکاری لائنیں .

شیپیتووکا اسٹیشن کے تارگھر میں تین آلے انورت کھٹکھٹا رہے تھے، مگر اُن کی بھاشا ایسی تھی جو صرف جانکار آدمی کی ہی سمجھ میں آ سکتی تھی .

آپریٹر لڑکیاں ابھی جوان تھیں، مگر ابھی انھوں نے بیس کیلومیٹر سے زیادہ فیتہ نہ ٹپ ٹپایا ہوگا جبکہ اُن کے بغل کا بوڑھا تار بابو دو سو کیلومیٹر سے زیادہ کر چکا تھا . اپنے نوجوان ساتھیوں کی طرح اُس بڑھے کو تار سے بھیجا گیا سندیش سمجھنے کے لئے اُس فیتے کو پڑھنا نہیں پڑتا تھا، نہ وہ مشکل شبدوں اور واکیانشوں کی ہی پہیلی میں الجھتا تھا، اور نہ اُس کے ماتھے پر جھریاں ہی پڑتی تھیں . اس کا ڈھنگ یہ تھا کہ شبد پڑھتا جا رہا تھا اور مشین اُس کو ٹپٹپاتی جا رہی تھی . تبھی اُس کے کان میں شبد پڑے، "سب کے لئے، سب کے لئے !"

"برف صاف کرنے کے بارے میں دوسرا سرکار ہوگا" بڑھے تار بابو نے اُن شبدوں کو لکھتے ہوئے اپنے من میں کہا . باہر برف کا طوفان زوروں سے چل رہا تھا جس سے بڑی بڑی برف آکر کھڑکیوں سے ٹکراتی تھی. تار بابو نے سوچا کہ کھڑکی پر کوئی دستک دے رہا ہے . اُس کی آنکھیں آواز کی اور مڑ گئیں اور وہ چھن بھر کے لئے کھڑکی کے شیشے پر برف سے بنی ہوئی آکرتیوں کو دیکھنے لگا . کوئی بھی نقاش پتی کی ایسی اچھی نقاشی نہ کر سکتا تھا .

اُس کے وچار اِدھر اُدھر بہنے لگے اور تھوڑی دیر کے لئے اس نے تار کے آلے کو سننا بند کر دیا . مگر تھوڑی ہی دیر بعد اس نے نگاہ نیچی کی اور ان شبدوں کو

( 14 )

( बौद्ध मन्दिरों में रिवाज है कि पूजा के वक़्त लोग तीन तरह की 'पनाह' लेते हैं और कहते हैं:—"मैं बुद्ध की शरन ( पनाह ) लेता हूं, मैं धर्म की शरन लेता हूं और मैं संघ ( जमाअत ) की शरन लेता हूं." चीनी बौद्ध मन्दिरों में लोग यह बात अपनी तरफ़ से भी कहते हैं और जानवरों की तरफ़ से भी कहते हैं, और यह कहकर कुछ पकड़े हुए जानवरों और पंछियों को रिहा कर देते हैं. इस रस्म में साफ़ पानी और किसी दरख़्त की हरी शाखें काम में लाई जाती हैं. )

### "रिहाई की रस्म"

"साफ़ पानी की बूंदें
"हरी शाखों से टपकती हुई
"कितनी अच्छी और ठंडी लगती हैं !
"सब सब तरह के दुखों से छुटकारा पाजाएं !
"सब ज्ञान ( मारफ़त ) के राजा बुद्ध की शरन में आ जाएं !"

---

इस संग्रह में ऐसी बहुत सी कविताएं हैं जो संस्कृत साहित्य की कविताओं से या जिनकी कहानी संस्कृत कहानियों से मिलती हुई हैं. एक कविता में रेशम का कपड़ा पहनने को भी रेशम के कीड़ों की हिंसा की वजह से बुरा कहा गया है. अहिंसा के सवाल पर भारत और चीन के विचारों की समता की दृष्टि से यह संग्रह बहुत ही अच्छा और क़ीमती है. हम चाहते हैं कि देश की हर अच्छी लाइब्रेरी में यह किताब रखी जाये.

—सुन्दरलाल

---

अहिंसा धर्म का तक़ाज़ा है कि हम दूसरों को अधिक से अधिक सुविधाएं प्राप्त करा देने के लिये स्वयं अधिक से अधिक असुविधाएं सहें—यहां तक कि अपनी जान भी जोखम में डाल दें.

—महात्मा गांधी

---



( 14 )

(بودھ مندروں میں رواج ھے کہ پوجا کے وقت لوگ تین طرح کی ' پناہ ' لیتے ھیں اور کہتےھیں : —" میں بدھ کی شرن (پناہ) لیتا ھوں' میں دھرم کی شرن لیتا ھوں اور میں سنگھ (جماعت) کی شرن لیتا ھوں ." چینی بودھ مندروں میں لوگ یہ بات اپنی طرف سے بھی کہتے ھیں اور جانوروں کی طرف سے بھی کہتے ھیں' اور اور یہ کہ کر کچھ پکڑے ھوئے جانوروں اور پنچھیوں کو رھا کر دیتے ھیں . اِس رسم میں صاف پانی اور کسی درخت کی ھری شاخیں کام میں لائی جاتی ھیں . )

### " رھائی کی رسم "

" صاف پانی کی بوندیں
" ھری شاخوں سے ٹپکتی ھوئیں
" کتنی اچھی اور ٹھنڈی لگتی ھیں !
" سب سب طرح کے دکھوں سے چھٹکارا پا جائیں !
" سب گیان ( معرفت ) کے راجا بدھ کی شرن میں آ جائیں !"

---

اِس سنگرہ میں ایسی بہت سی کویتائیں ھیں جو سنسکرت ساھتیہ کی کویتاؤں سے یا جن کی کہانی سنسکرت کہانیوں سے ملتی ھوئی ھیں . ایک کویتا میں ریشم کا کپڑا پہننے کو بھی ریشم کے کیڑوں کی ھنسا کی وجہ سے برا کہا گیا ھے. اھنسا کےسوال پر بھارت اور چین کے وچاروں کی سمتا کی درشٹی سے یہ سنگرہ بہت ھی اچھا اور قیمتی ھے . ھم چاھتے ھیں کہ دیش کی ھر اچھی لائبریری میں یہ کتاب رکھی جائے .

سندرلال

---

اھنسا دھرم کا تقاضا ھے کہ ھم دوسروں کو ادھک سے ادھک سویدھائیں پراپت کرا دینے کے لئے سویم ادھک سے ادھک اسویدھائیں سہیں—یہاں تک کہ اپنی جان بھی جوکھم میں ڈال دیں .

—مہاتما گاندھی

---

"जान हर वक़्त ख़तरे में है.
"क्योंकि दिल सबके चीते के दिल हैं.
"मत कहो कि दूसरों का मांस चरबीला और ताक़तवर होता है,
"कि उससे तुम्हारे बदन में ताक़त आ जायगी !
"जिन्दगी आनी जानी है जैसे सुबह की ओस !
"हमारे दिलों में सबके लिये दया होनी चाहिये.
"आदमियों में और जानवरों में किसी में भी चीते का दिल नहीं होना चाहिये.
"छोटे और बड़े सब जानदारों की तरफ़ अपने अन्दर अहिंसा की ऊंची भावना पैदा करो."

---

( 12 )

"फ़ुसला कर भगा ले जाना"

"जिसमें जान है उसमें जीने की ख़्वाहिश भी है.
"इस में आदमी और जानवरों में कोई फ़रक़ नहीं.
"किसी की जान लेना सब से बड़ा अन्याय है.
"किसी जिन्दा जानवर को काटना सबसे अधिक दर्दनाक है.
"किसी पंछी को पकड़ लो और अभी मारो मत
"तब भी वह सहमकर अधमरा हो जाता है.
"जब उसका गला काटा जाता है तब वह दर्द से तड़पता है.
"आदमी जब इस बात पर सोचे
"तो किसका दिल गवारा कर सकता है कि वह मांस खाए."

---

( 13 )

"खाना पकाने की पाक जगह और जानवरों का क़त्ल"

"जिन्दा ग़रीब जानवरों को सताया जाता है और काटा जाता है.
"वह फड़फड़ाते हैं, तड़पते हैं और आख़ीर सांस तक जान बचाने की कोशिश करते हैं.
"फिर उनके टुकड़े टुकड़े किये जाते हैं.
"इसके बाद उन्हें पकाया जाता है, देगची में भूना जाता है.
"आदमी केवल अपनी दावत के मजे के लिये उन पर यह जुल्म ढाता है.
"और फिर आदमी कहता है कि इसमें कोई गुनाह नहीं !
"तो फिर भगवान जाने कि गुनाह है क्या चीज़ !"

---



" جان ھر وقت خطرے میں ھے .
" کیونکہ دل سب کے چیتے کے دل ھیں .
" مت کہو کہ دوسروں کا مانس چربیلا اور طاقتور ھوتا ھے،
کہ اُس سے تمہارے بدن میں طاقت آ جائے گی !
" زندگی آنی جانی ھے جیسے صبح کی اُوس !
" ھمارے دلوں میں سب کے لئے دیا ھونی چاھئے .
" آدمیوں میں اور جانوروں میں کسی میں بھی چیتے کا دل نہیں ھونا چاھئے .
" چھوٹے اور بڑے سب جانوروں کی طرف اپنے اندر اھنسا کی اونچی بھاؤنا پیدا کرو ."

---

( 12 )

" پھسلا کر بھگا لے جانا "

" جس میں جان ھے اُس میں جینے کی خواھش بھی ھے .
" اِس میں آدمی اور جانوروں میں کوئی فرق نہیں .
" کسی کی جان لینا سب سے بڑا انیائے ھے .
" کسی زندہ جانور کو کاٹنا سب سے ادھک دردناک ھے .
" کسی پنچھی کو پکڑ لو اور ابھی مارو مت
" تب بھی وہ سہم کر ادھ مرا ھو جاتا ھے .
" جب اُس کا گلا کاٹا جاتا ھے تب وہ درد سے تڑپتا ھے .
" آدمی جب اِس بات پر سوچے
" تو کس کا دل گوارا کر سکتا ھے کہ وہ مانس کھائے ."

---

( 13 )

" کھانا پکانے کی پاک جگہ اور جانوروں کا قتل "

" زندہ غریب جانوروں کو ستایا جاتا ھے اور کاٹا جاتا ھے .
" وہ پھڑپھڑاتے ھیں، تڑپتے ھیں اور آخیر سانس تک جان بچانے کی کوشش کرتے ھیں .
" پھر اُن کے ٹکڑے ٹکڑے کئے جاتے ھیں .
" اس کے بعد انھیں پکایا جاتا ھے، دیگچی میں بھونا جاتا ھے .
" آدمی کیول اپنی دعوت کے مزے کے لئے اُن پر یہ ظلم ڈھاتا ھے .
" اور پھر آدمی کہتا ھے کہ اِس میں کوئی گناہ نہیں !
" تو پھر بھگوان جانے کہ گناہ ھے کیا چیز !"

---

( 9 )

## "लालच देकर मारना"

"वह आदमी पानी के किनारे फ़ुरसत से बैठा हुआ मछलियां फंसा रहा है.
"उसकी ख़ुशी दूसरों की जान लेने में है !
"अपने दिल में वह यह महसूस नहीं करता
"कि मैं दूसरों का गला काट रहा हूं.

---

( 10 )

## "जानवर को काटना"

"जब किसी की उंगली पकड़ कर खौलते पानी में डबो दी जाय
"तो उसे ऐसा लगता है कि उसका सारा बदन जल रहा है.
"जब किसी के कहीं सुई चुभो दी जाय
"तो उसे ऐसा लगता है कि उसका सारा बदन टुकड़े टुकड़े हुआ जा रहा है.
"जब कोई आदमी किसी जिन्दा मछली को काटने लगता है तो वह मछली आदमी से रहम की दरख़्वास्त करती है !
"छुरी की तेज़ धार को देखकर मुर्ग़ी का बच्चा सहम जाता है !
"ज़ाहिर है उन्हें भी तकलीफ़ होती है.
"पर बेरहम इन्सान यह सब देखता है और परवाह नहीं करता !"

---

( 11 )

## "मारने की कला"

"आदमी का सिर ऊपर को और आंखें दाएं बाएं को होती हैं.
"जानवरों की आंखें नीचे को देखती हैं और उनके बदन पीछे को होते हैं.
"आदमी बड़े बड़े हथियारों से बहादुरी के साथ लड़ाइयां लड़ता है.
"जानवर केवल अपने दांतों और पंजों से लड़ते हैं.
"अफ़सोस ! यही दुनिया है.
"जीवन में अमन आमान कहीं नहीं !
"बस्ती में चीता आ जाता है तो लोग डर के मारे भागने लगते हैं.



( 9 )

## " لالچ دے کر مارنا "

" وہ آدمی پانی کے کنارے فرصت سے بیٹھا ہوا مچھلیاں پھنسا رہا ہے .
" اُس کی خوشی دوسروں کی جان لینے میں ہے !
" اپنے دل میں وہ یہ محسوس نہیں کرتا
" کہ میں دوسروں کا گلا کاٹ رہا ہوں ."

---

( 10 )

## " جانور کو کاٹنا "

" جب کسی کی اُنگلی پکڑ کر کھولتے پانی میں ڈبو دی جائے
" تو اُسے ایسا لگتا ہے کہ اُس کا سارا بدن جل رہا ہے .
" جب کسی کے کہیں سوئی چبھو دی جائے
" تو اُسے ایسا لگتا ہے کہ اُس کا سارا بدن ٹکڑے ٹکڑے ہوا جا رہا ہے .
" جب کوئی آدمی کسی زندہ مچھلی کو کاٹنے لگتا ہے تو وہ مچھلی آدمی سے رحم کی درخواست کرتی ہے !
" چھری کی تیز دھار کو دیکھ کر مرغی کا بچہ سہم جاتا ہے !
" ظاہر ہے اُنہیں بھی تکلیف ہوتی ہے .
" پر بے رحم انسان یہ سب دیکھتا ہے اور پرواہ نہیں کرتا ! "

---

( 11 )

## " مارنے کی کلا "

" آدمی کا سر اوپر کو اور آنکھیں دائیں بائیں کو ہوتی ہیں .
" جانوروں کی آنکھیں نیچے کو دیکھتی ہیں اور ان کے بدن پیچھے کو ہوتے ہیں .
" آدمی بڑے بڑے ہتھیاروں سے بہادری کے ساتھ لڑائیاں لڑتا ہے .
" جانور کیول اپنے دانتوں اور پنجوں سے لڑتے ہیں .
" افسوس ! یہی دنیا ہے .
" جیون میں امن آمان کہیں نہیں !
" بستی میں چیتا آ جاتا ہے تو لوگ ڈر کے مارے بھاگنے لگتے ہیں .

( 6 )

## "जंगों का कारन"

"हमारे दिलों में नफ़रत का समन्दर हिलोरें ले रहा है!
"हम पीढ़ी दर पीढ़ी एक दूसरे को पके हुए मांस के प्याले खाते खिलाते देखते हैं!
"अगर तुम दुनिया की जंगों का कारन जानना चाहते हो,
"तो आधी रात के वक्त जानवर कटने की जगह जाकर उनकी दर्दनाक आवाज़ों को सुनो."

———

( 7 )

## "क़ैदी चिड़िया"

"किसी आदमी को पकड़कर क़ैद कर दिया जाय
"तो वह दिन भर दुखी और उदास रहता है,
"तब फिर वह पंछी जिसे
"पिंजरे में बन्द कर दिया गया है
"दिन भर क्या महसूस करता होगा ?
"अगर आदमी पिंजरे के पंछी की आवाज़ों को प्रेम से और ध्यान लगाकर सुन सके,
"तो उसका दिल चूर चूर हो जावे.
"इसलिये उस पंछी को छोड़ दो और जहां वह चाहे आज़ादी के साथ उड़ने दो."

———

( 8 )

## "सबको अपनी जान प्यारी है"

"अगर तुम बहुत दिनों जीना चाहते हो तो मेरी बात ध्यान से सुनो.
"जब भी कोई काम करो तो अच्छी तरह सोच विचार कर करो.
"अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है तो तुम्हें चाहिये कि दूसरों की जान की भी हिफ़ाज़त करो.
"यही एक दूसरे की तरफ़ हमारा सच्चा धम यानी फ़र्ज़ है.
"अगर तुम दूसरों की मुसीबत में उनके काम आओ
"तो दूसरे भी तुम्हारे काम आवेंगे."

———



( 6 )

## "جنگوں کا کارن"

"ہمارے دلوں میں نفرت کا سمندر ہلوریں لے رہا ہے !
"ہم پیڑھی در پیڑھی ایک دوسرے کو پکے ہوئے مانس کے پیالے کھاتے کہلاتے دیکھتے ہیں
"گر تم دنیا کی جنگوں کا کارن جاننا چاہتے ہو'
"تو آدھی رات کے وقت جانور کٹنے کی جگہ جاکر اُن کی دردناک آوازوں کو سنو ."

———

( 7 )

## " قیدی چڑیا "

" کسی آدمی کو پکڑ کر قید کر دیا جائے
" تو وہ دن بھر دکھی اور اُداس رہتا ہے'
" تب پھر وہ پنچھی جسے
" پنجرے میں بند کر دیا گیا ہے
" دن بھر کیا محسوس کرتا ہوگا ؟
" اگر آدمی پنجرے کے پنچھی کی آوازوں کو پریم سے اور دھیان لگا کر سن سکے'
" تو اس کا دل چور چور ہو جاوے .
" اِس لئے اس پنچھی کو چھوڑ دو اور جہاں وہ چاہے آزادی کے ساتھ اُڑنے دو ."

———

( 8 )

## "سب کو اپنی جان پیاری ہے"

" اگر تم بہت دنوں جینا چاہتے ہو تو میری بات دھیان سے سنو .
" جب بھی کوئی کام کرو تو اچھی طرح سوچ وچار کر کرو .
" اگر تمھیں اپنی جان پیاری ہے تو تمہیں چاہئے کہ دوسروں کی جان کی بھی حفاظت کرو .
" یہی ایک دوسرے کی طرف ہمارا سچا دھرم یعنی فرض ہے .
" اگر تم دوسروں کی مصیبت میں اُن کے کام آؤ
" تو دوسرے بھی تمہارے کام آوینگے ."

———

"इन बेज़बान जानवरों को अपने प्यारों से बिछड़ने का वैसा ही दुख होता है जैसा आदमी को.
"पर आदमी को अपना रोना दिखाई देता है, उनका नहीं दिखाई देता !"

---

( 3 )

## "सबज़ी में ताक़त"

"मुबारक हैं वह लोग जो साग सबज़ी खाकर रहते हैं.
"क्योंकि उन्हें खाना भी अच्छा मिलता है और उनका ज़मीर यानी अन्तर आत्मा भी गुनाह से पाक रहती है.
"बरसात के बाद की ओस जब खेतों में भर जाती है
"तरह तरह की साग सबज़ियां फूलती और फलती हैं,
"हम पेट भरकर खा सकते हैं.
"हैरान हूं कि लोग जानवरों का मांस क्यों खाते हैं !"

---

( 4 )

## "चिड़ियों का शिकार"

"कौन कहता है कि जानवरों में जान दूसरी तरह की है ?
"उनकी हड्डियां, उनका मांस और उनकी खाल सब वैसी ही हैं जैसी हमारी.
"इसलिये हमें चाहिये कि दरख्तों के ऊपर बैठी चिड़ियों का शिकार न करें.
"उनके घोंसलों के अन्दर उनके बच्चे अपनी माओं के लौटने का इन्तज़ार कर रहे हैं."

---

( 5 )

( एक आदमी एक भेड़ को काटने के लिये खींचकर ले जा रहा है. भेड़ के बच्चे जो बाड़े में बंद हैं कवि के शब्दों में मां से कुछ कहते हैं. )

## "मां ! हमें छोड़कर मत जाओ."

"दुनिया में सबसे दर्दनाक चीज है
"मां का बच्चों से अलग किया जाना.
"मां बड़े दुख भरे दिल से बच्चों से अलग होती है
"और कहती है :—
"बच्चो ! मैं अब हमेशा के लिये तुम्हें छोड़कर जा रही हूं."

---



"ان بے زبان جانوروں کو اپنے پیاروں سے بچھڑنے کا ویسا هی دکھ هوتا هے جیسا آدمی کو .
"پر آدمی کو اپنا رونا دکھائی دیتا هے' اُن کا نهیں دکھائی دیتا !"

---

( 3 )

## "سبزی میں طاقت"

"مبارک هیں وہ لوگ جو ساگ سبزی کھاکر رهتے هیں .
"کیونکہ اُنهیں کھانا بھی اچھا ملتا هے اور اُن کا ضمیر یعنی آنتر آتما بھی گناہ سے پاک رهتی هے .
"برسات کے بعد کی اُوس جب کھیتوں میں بھر جاتی هے
"طرح طرح کی ساگ سبزیاں پھولتی اور پھلتی هیں'
"هم پیٹ بھرکر کھا سکتے هیں .
"حیران هوں کہ لوگ جانوروں کا مانس کیوں کھاتے هیں!"

---

( 4 )

## "چڑیوں کا شکار"

"کون کہتا هے کہ جانوروں میں جان دوسری طرح کی هے؟
"اُن کی هڈیاں' اُن کا مانس اور اُن کی کھال سب ویسی هی هیں جیسی هماری .
"اِس لئے همیں چاهئے کہ درختوں کے اُوپر بیٹھی چڑیوں کا شکار نہ کریں .
"اُن کے گھونسلوں کے اندر اُن کے بچے اپنی ماؤں کے لوٹنے کا اِنتظار کررهے هیں ."

---

( 5 )

( ایک آدمی ایک بھیڑ کو کاٹنے کے لئے کھینچ کر لے جا رها هے . بھیڑ کے بچے جو باڑے میں بند هیں کوی کے شبدوں میں ماں سے کچھ کہتے هیں )

## "ماں ! همیں چھوڑکر مت جاؤ"

"دنیا میں سب سے دردناک چیز هے
"ماں کا بچوں سے الگ کیا جانا .
"ماں بڑے دکھ بھرے دل سے بچوں سے الگ هوتی هے
"اور کہتی هے :—
"بچو ! میں اب همیشہ کے لئے تمهیں چھوڑکر جارهی هوں."

---

परहेज़ करने वाले मिलते हैं. शायद इसकी वजह यही है कि वहां आम तौर पर सब जानवरों का मांस मिला जुला रहता है और मुसलमानों को एक ख़ास जानवर के मांस से परहेज़ है.

डाक्टर रघुवीर की इस विद्वत्तापूर्न किताब से मालूम होता है कि बौद्ध धर्म के दूसरे विचारों के साथ साथ अहिंसा का विचार यानी निरामिष भोजन या मांस से परहेज़ करने का विचार भी भारत से चीन पहुंचा और वहां के कुछ लोगों, ख़ासकर वहां के लेखकों और कवियों, पर इसका ख़ासा असर पड़ा. अब हम इस किताब की कविताओं में से नमूने के तौर पर कुछ का हिन्दुस्तानी अनुवाद नीचे देते हैं.

❀ ❀ ❀

( 1 )

( लोग कुछ सूअर काटने के लिये ले जा रहे हैं. उन्हें देखकर यह कविता लिखी गई है. )

### "हमारे मांस का मांस"

"इन सूअरों के भी जान है.
"इन के बदन भी उन्हीं पांच तत्त्वों (पानी, मिट्टी, आग, हवा और प्रकाश ) से बने हैं जिन से हमारे बदन बने हैं.
"इनके दुख और इनकी बेबसी को देखकर,
"दिल दया से पानी पानी होने लगता है.
"अपनी बेज़बान भाशा में
"यह आदमी से चिल्ला चिल्ला कर कह रहे हैं—
"दूसरे जानदारों की जान बचाओ. उन्हें मारो मत !
"आदमी अगर जानवरों का मांस न खावे
"तो आदमी आदमी में प्रेम बढ़ाने के लिये भी यह एक बहुत बड़ा क़दम होगा."

———

( 2 )

### "दुखिया मां"

"जानरों में भी मां और बच्चों में प्रेम होता है.
"कुतिया अपने बच्चों की किस तरह हिफ़ाज़त करती है.
"गाय अपने बछड़े को कैसा चाहती है.
"मुर्ग़ी अपने बच्चों की किस तरह देख भाल करती है.
"मछली अपने बच्चों को रात दिन ख़तरे से बचाती रहती है.
"पर आदमी केवल अपनी ज़बान के सवाद के लिये
"बच्चों को मार कर मां से और मां को मारकर बच्चों से जुदा कर देता है.



پرھیز کرنے والے ملتے ھیں. شاید اِس کی وجہ یہی ھے کہ وھاں عام طور پر سب جانوروں کا مانس ملا جلا رھتا ھے اور مسلمانوں کو ایک خاص جانور کے مانس سے پرھیز ھے.

ڈاکٹر رگھوویر کی اِس ودوتاپورن کتاب سے معلوم ھوتا ھے کہ بودھ دھرم کے دوسرے وچاروں کے ساتھ ساتھ اھنسا کا وچار یعنی نرامش بھوجن یا مانس سے پرھیز کرنے کا وچار بھی بھارت سے چین پہونچا اور وھاں کے کچھ لوگوں، خاص کر وھاں کے لیکھکوں اور کویوں، پر اِس کا خاصہ اثر پڑا. اب ھم اِس کتاب کی کویتاؤں میں سے نمونے کے طور پر کچھ کا ھندستانی انوواد نیچے دیتے ھیں.

❀ ❀ ❀

( 1 )

( لوگ کچھ سور کاٹنے کے لئے لے جارھے ھیں. اُنھیں دیکھ کر یہ کویتا لکھی گئی ھے. )

### "ھمارے مانس کا مانس"

"اِن سوروں کے بھی جان ھے.
"اِن کے بدن بھی اُنھیں پانچ تتوں (پانی، مٹی، آگ، ھوا اور پرکاش) سے بنے ھیں جن سے ھمارے بدن بنے ھیں.
"اِن کے دکھ اور اِن کی بےبسی کو دیکھ کر،
"دل دیا سے پانی پانی ھونے لگتا ھے.
"اپنی بے زبان بھاشا میں
"یہ آدمی سے چلا چلا کر کہہ رھے ھیں—
"دوسرے جانداروں کی جان بچاؤ. اُنھیں مارو مت !
"آدمی اگر جانوروں کا مانس نہ کھاوے
"تو آدمی آدمی میں پریم بڑھانے کے لئے بھی یہ ایک بہت بڑا قدم ھوگا."

———

( 2 )

### "دکھیا ماں"

"جانوروں میں بھی ماں اور بچوں میں پریم ھوتا ھے.
"کتیا اپنے بچوں کی کس طرح حفاظت کرتی ھے.
"گائے اپنے بچھڑے کو کیسا چاھتی ھے.
"مرغی اپنے بچوں کی کس طرح دیکھ بھال کرتی ھے.
"مچھلی اپنے بچوں کو رات دن خطرے سے بچاتی رھتی ھے.
"پر آدمی کیول اپنی زبان کے سواد کے لئے
"بچوں کو مارکر ماں سے اور ماں کو مارکر بچوں سے جدا کردیتا ھے.

# "अहिंसा पर चीनी कविताएं और तसवीरें"

# "اهنسا پر چینی کویتائیں اور تصویریں"

सुन्दरलाल

سندر لال

नागपुर की इन्टरनेशनल एकेडमी आफ़ इन्डियन कलचर ने "चाइनीज़ पोएम्स ऐंड पिकचर्स आन अहिंसा" (अहिंसा पर चीनी कविताएं और तसवीरें) नाम से एक बड़े काम की और बड़ी सुन्दर किताब हाल में निकाली है. इस किताब में अहिंसा पर पचास चीनी कविताएं चीनी भाषा और सुन्दर चीनी अक्षरों में छपी हुई हैं. हर कविता के सामने वाले पन्ने पर उस कविता से सम्बन्ध रखने वाली एक तसवीर है. तसवीर भी चीनी चित्रकार की खींची हुई है. साथ साथ हर कविता का अंग्रेजी अनुवाद और संस्कृत अनुवाद भी दिया गया है. दोनों अनुवाद मशहूर विद्वान डाक्टर रघुवीर के किये हुए और बहुत ही अच्छे हैं. जिल्द बहुत सुन्दर है.

चीन के लोग आम तौर पर मांस खाते हैं और किसी ख़ास जानवर के मांस से भी परहेज़ नहीं करते. मांस से परहेज़ करने वाले और केवल साग सबज़ी पर गुज़ारा करने वाले लोग भी वहां हैं. ख़ासकर बौद्ध पुरोहितों और महंतों में इस तरह के लोग बहुत मिलते हैं. इनमें कुछ ऐसे भी हैं जो दूध को मांस में शुमार करते हैं और इसीलिये दूध और दूध से बनी चीजों से भी परहेज़ करते हैं. लेकिन इस तरह के लोगों की तादाद चीन भर में बहुत कम है. शायद हज़ारों में इक्का दुक्का होगी. हमारे देश में भी कुल मिलाकर मांस खाने वालों की तादाद न खाने वालों से बहुत ज्यादा है. पर चीन के मुक़ाबले में हमारे देश में मांस से परहेज़ करने वालों की तादाद भी बहुत ज्यादा है. चीन में बहुत से लोग ऐसे ज़रूर हैं जो कभी कभी मांस खाना छोड़ देते हैं या ख़ास ख़ास दिनों में मांस नहीं खाते. बहुत से लोग अपनी सालग्रह के दिन मांस नहीं खाते. बहुत से पूर्नमाशी के दिन मांस नहीं खाते. बहुत से और ख़ास ख़ास मौक़ों और त्योहारों पर नहीं खाते. शंघाई में और पीकिंग में दोनों जगह इस तरह के भोजनालय और होटल मौजूद हैं जहां मांस नहीं पकता और बिना मांस का खाना आसानी से मिल सकता है. वहां आम तौर पर जिस जानवर से देश के किसी सूबे में खेती का काम लिया जाता है उसका मांस उस सूबे में नहीं खाया जाता. इस तरह पर कहीं गाय बैल के मांस से परहेज़ किया जाता है, कहीं भैंस के मांस से और कहीं ऊंट के मांस से वग़ैरा. उस देश में यह एक अजीब बात है कि वहां बहुत से मुसलमान मर्द और औरतें निरामिष भोजी यानी मांस से

ناگپور کی اِنٹرنیشنل اِکیڈمی آف اِنڈین کلچر نے "چائنیز پوئمس اینڈ پکچرس آن اهنسا" (اهنسا پر چینی کویتائیں اور تصویریں) نام سے ایک بڑے کام کی اور بڑی سندر کتاب حال میں نکالی هے . اِس کتاب میں اهنسا پر پچاس چینی کویتائیں چینی بهاشا اور سندر چینی اکشروں میں چھپی هوئی هیں . هر کویتا کے سامنے والے پنے پر اُس کویتا سے سمبندھ رکھنے والی ایک تصویر هے . تصویر بهی چینی چترکار کی کھینچی هوئی هے . ساتھ ساتھ هر کویتا کا انگریزی انوواد اور سنسکرت انوواد بهی دیا گیا هے . دونوں انوواد مشهور ودوان ڈاکٹر رگهوویر کے کئے هوئے اور بہت هی اچھے هیں . جلد بہت سندر هے .

چین کے لوگ عام طور پر مانس کهاتے هیں اور کسی خاص جانور کے مانس سے بهی پرهیز نہیں کرتے . مانس سے پرهیز کرنے والے اور کیول ساگ سبزی پر گزارہ کرنے والے لوگ بهی وهاں هیں . خاص کر بودھ پروهتوں اور مہنتوں میں اِس طرح کے لوگ بہت ملتے هیں . اِن میں کچھ ایسے بهی هیں جو دودھ کو مانس میں شمار کرتے هیں اور اِسی لئے دودھ اور دودھ سے بنی چیزوں سے بهی پرهیز کرتے هیں . لیکن اِس طرح کے لوگوں کی تعداد چین بهر میں بہت کم هے . شاید هزاروں میں اِکا دکا هوگی . همارے دیش میں بهی کل ملاکر مانس کهانے والوں کی تعداد نہ کهانے والوں سے بہت زیادہ هے . پر چین کے مقابلے میں همارے دیش میں مانس سے پرهیز کرنے والوں کی تعداد بهی بہت زیادہ هے . چین میں بہت سے لوگ ایسے ضرور هیں جو کبهی کبهی مانس کهانا چهوڑ دیتے هیں یا خاص خاص دنوں میں مانس نہیں کهاتے . بہت سے لوگ اپنی سالگرہ کے دن مانس نہیں کهاتے . بہت سے پورن ماشی کے دن مانس نہیں کهاتے . بہت سے اور خاص خاص موقعوں اور تیوهاروں پر نہیں کهاتے . شنگهائی میں اور پیکنگ میں دونوں جگہ اِس طرح کے بهوجنالیہ اور هوٹل موجود هیں جہاں مانس نہیں پکتا اور بنا مانس کا کهانا آسانی سے مل سکتا هے . وهاں عام طور پر جس جانور سے دیش کے کسی صوبے میں کهیتی کا کام لیا جاتا هے اُس کا مانس اُس صوبے میں نہیں کهایا جاتا . اِس طرح پر کہیں گائے بیل کے مانس سے پرهیز کیا جاتا هے، کہیں بهینس کے مانس سے اور کہیں اُونٹ کے مانس سے وغیرہ . اُس دیش میں یہ ایک عجیب بات هے کہ وهاں بہت سے مسلمان مرد اور عورتیں نرامش بهوجی یعنی مانس سے

ऊपर तेज़ सूरज तड़क रहा था और उसके माथे का पसीना चू चू कर लाल मिट्टी पर कीच के लेसड़ बना रहा था.

मैं घबराकर कटीले घेरे से बाहर निकला लेकिन भर्राई हुई आवाज़ में प्रभु ईसा के चरनों में उसकी याचना की प्रतिध्वनि बराबर मेरे कानों में गूंजती रही.

अगले रविवार को सवेरे बेनब्रिज से ब्लैक्ले जाने वाली बस में मैं सवार हुआ. सुबह की ताजा हवा फ़र्र-फ़र्र करके मोटर बस की खिड़कियां चीर कर निकल जाती थी. मोटर समतल चौड़ी सड़क पर भन्नाटे के साथ दौड़ रही थी.

बस में मेरी बग़ल में ही एक दया-मूर्ति पादरी बैठे हुये थे जो अगले पड़ाव पर अपना धर्मोपदेश देने जा रहे थे.

"क्या यह सही है" मैंने उनसे पूछा "कि इन उम्दा सड़कों को निग्रो क़ैदियों की चेन-गैंगों ने बनाया है और क्या आप बता सकते हैं इन गैंगों के साथ कैसा सलूक किया जाता है ?"

उसने हैरत भरी निगाहों से मेरी तरफ़ देखा.

"मुझे सचमुच नहीं मालूम" उसने आजिजी से भरी मुस्कराहट के साथ कहा "क्योंकि मुझे यहां रहते अभी सिर्फ़ छै बरस ही तो हुये हैं !❀

---

❀लेख के चित्रों और सामग्री के लिये मैं श्री जे० एल० स्पाइवाक का अहसानमंद हूं—लेखक.

---

# ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.
अनुवादक—सुरेश रामभाई.

„ इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता.
मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.



اوپر تیز سورج تڑک رھا تھا اور اس کے ماتھے کا پسینہ چو چو کر لال مٹی پر کیچ کے لیسڑ بنا رھا تھا ۔

میں گھبرا کر کٹیلے گھیرے سے باھر نکلا لیکن بھرائی ہوئی آواز میں پربھو عیسیٰ کے چرنوں میں اس کی یاچنا کی پرتی دھونی برابر میرے کانوں میں گونجتی رھی ۔

اگلے رویوار کو سویرے بین برج سے بلیکلے جانے والی بس میں میں سوار ھوا ۔ صبح کی تازہ ھوا فر - فر کرکے موٹر بس کی کھڑکیاں چیر کر نکل جاتی تھی ۔ موٹر سمتل چوڑی سڑک پر بھنناٹے کے ساتھ دوڑ رھی تھی ۔

بس میں میری بغل میں ھی ایک دیامورتی پادری بیٹھے ھوئے تھے جو اگلے پڑاؤ پر اپنا دھرم اپدیش دینے جا رھے تھے ۔

" کیا یہ صحیح ھے " میں نے اُن سے پوچھا " کہ اِن عمدہ سڑکوں کو نیگرو قیدیوں کے چین گینگوں نے بنایا ھے اور کیا آپ بتا سکتے ھیں اِن گینگوں کے ساتھ کیسا سلوک کیا جاتا ھے ؟ "

اُس نے حیرت بھری نگاھوں سے میری طرف دیکھا ۔

" مجھے سچ مچ نہیں معلوم " اُس نے عاجزی سے بھری مسکراھٹ کے ساتھ کہا " کیونکہ مجھے یہاں رھتے ابھی صرف چھ برس ھی تو ھوئے ھیں ! "

---

❀ لیکھ کے چتروں اور سامگری کے لئے میں شری جے. ایل اسپائی واک کا احسانمند ھوں—لیکھک ۔

---

# عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے . سی . کماریپا .
انوواڈک—سریش رام بھائی .

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ھے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ھے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابر بھائی چارے، پریم اور اھنسا پر کتنا زور دیا ھے ۔

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ھے کہ

"ھر آستک سے، چاھے وہ عیسائی ھو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ھو، میری سفارش ھے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ ۔

ملنے کا پتہ ۔
مینیجر، 'نیا ھند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد ۔

मैंने लड़के के पास जाकर देखा, वह आंख मूंदे धीमी आवाज़ में कह रहा था—"हे प्रभु ! देख तेरे बच्चों के साथ ये लोग किस तरह का सलूक कर रहे हैं !!"

ज़मीन से तीन इञ्च ऊपर उसकी कमर लटक रही थी. हाथ पैरों की नसें सूज गई थीं और ख़ून का दौर रुक गया था. उसकी देह का बोझ उसकी रीढ़ की हड्डी को मानो फाड़े डाल रहा था.

पसीना धारोंधार माथे से चू रहा था और आंसुओं की बूंदें टप टप उसकी आंखों से ढुलक रही थीं.

मैंने पूछा—"कब तक आप इन्हें इस तरह 'स्टाक' में रखते हैं ?

वार्डन जे० डी० विलियम्स ने जवाब दिया—"एक वक़्त में एक घंटे से ज्यादा नहीं. जब ये बेहोश हो जाते हैं तब हम इन्हें खोल देते हैं. जब ये होश में आकर ज़रा स्वस्थ होते हैं तो हम इन्हें फिर इसी तरह कस देते हैं."

"और इसने क़ुसूर क्या किया था ?" मैंने पूछा.

"यह खाने के लिये नख़रे कर रहा था"—वार्डन ने तैश में जवाब दिया.

"क्या बेतों की सज़ा इससे ज्यादा बारहम नहीं है ?" —मैंने पूछा. विलियम्स ने जवाब दिया—"मुझे पता नहीं ! अब जो कड़ी से कड़ी सज़ा हम दे सकते हैं वह "रैक" में इन्हें ज़रा 'तान' देते हैं."

मैं सोचने लगा यह "रैक" में "तानना" क्या बला है !

जार्जिया की पागल कर देने वाली गर्मी में सुबह से शाम तक अथक परिश्रम करने से कभी कभी ये निग्रो क़ैदी पहरेदारों के हुक्म की नुक्ताचीनी कर बैठते हैं. मेरे सामने एक इसी तरह की घटना घटी और उस 'बदतमीज़' क़ैदी के हाथों में हथकड़ी पहना दी गई और हथकड़ी में रस्सी बांध कर उसे "रैक" के खम्भे के पास लाया गया. उसे टख़नों से कमर तक रस्सियों से कस कर उस खम्भे में जकड़ कर बांध दिया गया और गोरे वार्डन के हुक्म से हथकड़ी से बंधी रस्सी ख़ूब खींच तान कर सामने के दूसरे खम्भे में बांध दी गई.

क़ैदी का धड़ आगे खिंचता चला गया और उसके दोनों हाथ कस गये. वह तकलीफ़ के मारे चीख़ने लगा !

उसके दोनों फैले हुये हाथों के बीच में उसका सिर लटक गया !

उधर उसके हाथ, गर्दन और चेहरे पर पसीने की बूंदें उभर आईं और इधर मेरे सारे बदन में सिहरन दौड़ गई.

उसके हाथ मानो कंधों पर से उखड़े जा रहे थे.

बदक़िस्मत क़ैदी भर्राई आवाज में "लार्ड जीजज़ क्राइस्ट !" की टेर लगाने लगा.



میں نے لڑکے کے پاس جا کر دیکھا، وہ آنکھ موندے دھیمی آواز میں کہہ رہا تھا—" ھے پربھو ! دیکھو تیرے بچوں کے ساتھ یہ لوگ کس طرح کا سلوک کر رہے ھیں !!"

زمین سے تین انچ اوپر اس کی کمر لٹک رہی تھی . ھاتھ پیروں کی نسیں سوج گئی تھیں اور خون کا دور رک گیا تھا . اُس کی دیہہ کا بوجھ اُس کی ریڑھ کی ھڈی کو مانو پھاڑے ڈال رھا تھا .

پسینہ دھاروں دھار ماتھے سے چو رھا تھا اور آنسوؤں کی بوندیں ٹپ ٹپ اس کی آنکھوں سے ڈھلک رہی تھیں .

میں نے پوچھا—" کب تک آپ انھیں اس طرح 'اسٹاک' میں رکھتے ھیں ؟

وارڈن جے . ڈی . ولیمس نے جواب دیا—" ایک وقت میں ایک گھنٹہ سے زیادہ نہیں . جب یہ بےھوش ھو جاتے ھیں تب ھم انھیں کھول دیتے ھیں . جب یہ ھوش میں آکر ذرا سوستھ ھوتے ھیں تو ھم انھیں پھر اِسی طرح کس دیتے ھیں ."

" اور اِس نے قصور کیا کیا تھا ؟ " میں نے پوچھا .

" یہ کھانے کے لئے نخرے کر رھا تھا "—وارڈن نے طیش میں جواب دیا .

" کیا بیتوں کی سزا اس سے زیادہ بارحم نہیں ھے ؟ " —میں نے پوچھا. ولیمس نے جواب دیا—"مجھے پتہ نہیں ! اب جو کڑی سے کڑی سزا ھم دے سکتے ھیں وہ ' ریک ' میں اِنھیں ذرا ' تان دیتے ھیں ."

میں سوچنے لگا یہ " ریک " میں " تاننا " کیا بلا ھے !

جارجیا کی پاگل کر دینے والی گرمی میں صبح سے شام تک اتھک پریشرم کرنے سے کبھی کبھی یہ نیگرو قیدی پہریداروں کے حکم کی نکتہ چینی کر بیٹھتے ھیں . میرے سامنے ایک اِسی طرح کی گھٹنا گھٹی اور اُس ' بدتمیز ' قیدی کے ھاتھوں میں ھتھکڑی پہنا دی گئی اور ھتھکڑی میں رسی باندھ کر اُسے " ریک " کے کھمبے کے پاس لایا گیا . اُسے ٹخنوں سے کمر تک رسیوں سے کس کر اُس کھمبے میں جکڑ کر باندھ دیا گیا اور گورے وارڈن کے حکم سے ھتکڑی سے بندھی رسی خوب کھینچ تان کر سامنے کے دوسرے کھمبے میں باندھ دی گئی .

قیدی کا دھڑ آگے کھنچتا چلا گیا اور اُس کے دونوں ھاتھ کس گئے . وہ تکلیف کے مارے چیخنے لگا !

اُس کے دونوں پھیلے ھوئے ھاتھوں کے بیچ میں اُس کا سر لٹک گیا !

ادھر اُس کے ھاتھ، گردن اور چہرے پر پسینے کی بوندیں اُبھر آئیں اور ادھر میرے سارے بدن میں سہرن دوڑ گئی .

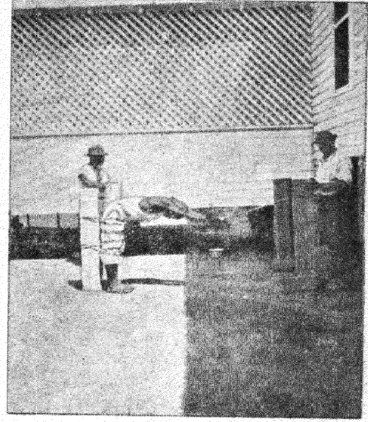
اُس کے ھاتھ مانو کندھوں پر سے اکھڑے جا رہے تھے .

بدقسمت قیدی بھرائی آواز میں " لارڈ جیجز کرائسٹ ! " کی ٹیر لگانے لگا .



निग्रो युवक के हाथ पैर बांध कर कड़ी धूप में जलती रेत पर डाल दिया गया है

نیگرو یووک کے ہاتھ پیر باندھ کر کڑی دھوپ میں جلتی ریت پر ڈال دیا گیا ہے



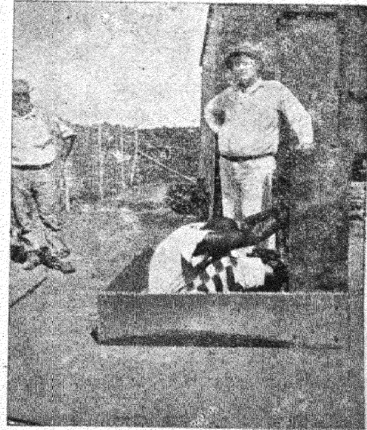
स्टाक की सज़ा दी जा रही है

سٹاک کی سزا دی جا رہی ہے



एक निग्रो बन्धु को न्यूयार्क में पेड़ पर लिंच किया गया था

ایک نیگرو بندھو کو نیویارک میں پیڑ پر لنچ کیا گیا تھا



रैक के शिकंजे में ताना जा रहा है

ریک کے شکنجے میں تانا جا رہا ہے

( 4 )

कई सप्ताह बाद मैं सेमिनल काउन्टी कैम्प के स्टाकेड ( कटीले बाड़े ) में था. गरमी से तपी हुई हवा हुमस बनकर मौसम का दम घोंट रही थी. टीन की छत और लकड़ी के तख्तों की दीवारें तेज़ सूरज की तपिश से तप कर बैरकों को भट्टी में तब्दील कर रही थीं. टूटी हुई जाली के भीतर भोजनालय मे थक की थक मक्खियां भिनभिना रही थीं और ज़ंग लगे कटीले बाड़ों की चहारदीवारी अपनी बारीक परछाइं लाल मिट्टी पर फेंक रही थी कि जिसके दायरे में धूप की झुलस से बचने के लिये दुर्गा चीटियों की क़तारें बिल तलाश कर रही थीं.

इसी कड़कड़ाती धूप में हाथ पैर बंधा हुआ 16-17 बरस का एक बालक क़ैदी खम्भे से जकड़ा हुआ पड़ा था. उसकी आंखें बन्द थीं और उसका सर जमीन पर इस तरह लटक गया था मानो गर्दन की हड्डी टूट गई हो.

मैंने उसके पास जाकर पूछा—"बच्चे ! तुम्हें बहुत तकलीफ़ है ?"

प्यास से जले होंठों को सूखी ज़बान से चाटकर गीला करते हुये उसने धीरे से आंखें खोलीं और फिर मींच लीं. मैंने वार्डन से पूछा—"इस लड़के ने क्या क़ुसूर किया था ?"

वार्डन ने कहा—"इसने उलटकर पहरेदार की बात का जवाब दिया था. आप यक़ीन रखिये," वार्डन ने ज़ोर देकर कहा, "जब ये लड़के बेहोश हो जाते हैं तो हम इन्हें खोल देते हैं."

मैंने पूछा—"इन लोगों को सजा देने का क्या यही तरीक़ा है ?"

"नहीं, और दूसरी सज़ायें 'स्टाक' और 'रैक' की भी हैं," वार्डन ने इत्तला के तौर पर कहा.

मैं मन में सोचने लगा तीन सौ बरस पहले मज़हबी ख़ूंरेज़ियों के दिनों में यह "स्टाक" की सज़ा दी जाती थी. लकड़ी के फ्रेम में मुजरिम के दोनों हाथ और दोनों पैर डाल कर कस दिये जाते थे. वह उसमें लटके लटके बेहोश हो जाता था. लेकिन वेब्स्टर डिक्शनरी तक में लिखा है कि यह ख़ौफ़नाक सज़ा सौ बरस पहले हमेशा के लिये बन्द हो चुकी है. पर जब अरली काउन्टी स्टाकेड में मैंने एक 19 बरस के निग्रो लड़के को "स्टाक" में लटके देखा तो मेरे अचरज का ठिकाना न रहा. तीन सौ बरस पहले कम से कम मुजरिम को एक तख़्ते पर बैठाकर स्टाक में कसा जाता था. पर तीन सौ बरस बाद इस सज़ा में इतनी तब्दीली हुई है कि हाथ पैर कस कर नीचे से तख़्ता खींच लिया जाता है और क़ैदी अधर में लटकता रहता है !



( 4 )

کئی سپتاہ بعد میں سیمینل کاؤنٹی کیمپ کے اسٹاکیڈ ( کٹیلے باڑے ) میں تھا . گرمی سے تپی ہوئی ھوا ھمس بنکر موسم کا دم گھونٹ رھی تھی . ٹین کی چھت اور لکڑی کے تختوں کی دیواریں تیز سورج کی تپش سے تپ کر بیرکوں کو بھٹی میں تبدیل کر رھی تھیں . ٹوٹی ھوئی جالی کے بھیتر بھوجنالیہ میں تھک کی تھک مکھیاں بھنبھنا رھی تھیں اور زنگ لگے کٹیلے باڑوں کی چھاردیواری اپنی باریک پرچھائیں لال مٹی پر پھینک رھی تھی کہ جس کے دائرے میں دھوپ کی جھلس سے بچنے کے لئے دُگا چیٹیوں کی قطاریں بل تلاش کر رھی تھیں .

اِسی کڑکڑاتی دھوپ میں ھاتھ پیر بندھا ھوا 16-17 برس کا ایک بالک قیدی کھمبے سے جکڑا ھوا پڑا تھا . اُس کی آنکھیں بند تھیں اور اُس کا سر زمین پر اِس طرح لٹک گیا تھا مانو گردن کی ھڈی ٹوٹ گئی ھو .

میں نے اُس کے پاس جا کر پوچھا—" بچے ! تمھیں بہت تکلیف ھے ؟ "

پیاس سے جلے ھونٹھوں کو سوکھی زبان سے چاٹ کر گیلا کرتے ھوئے اُس نے دھیرے سے آنکھیں کھولیں اور پھر میچ لیں . میں نے وارڈن سے پوچھا—" اس لڑکے نے کیا قصور کیا تھا ؟ "

وارڈن نے کہا—" اِس نے اُلٹ کر پھریدار کی بات کا جواب دیا تھا . آپ یقین رکھئے " وارڈن نے زور دے کر کہا " جب یہ لڑکے بیھوش ھو جاتے ھیں تو ھم اِنھیں کھول دیتے ھیں . "

میں نے پوچھا—" اِن لوگوں کو سزا دینے کا کیا یہی طریقہ ھے ؟ "

" نہیں ' اور دوسری سزائیں ' اسٹاک ' اور ' ریک ' کی بھی ھیں " وارڈن نے اطلاع کے طور پر کہا .

میں من میں سوچنے لگا تین سو برس پہلے مذھبی خونریزیوں کے دنوں میں یہ " اسٹاک " کی سزا دی جاتی تھی . لکڑی کے فریم میں مجرم کے دونوں ھاتھ اور دونوں پیر ڈال کر کس دیے جاتے تھے . وہ اس میں لٹکے لٹکے بیھوش ھو جاتا تھا . لیکن ویبسٹر ڈکشنری تک میں لکھا ھے کہ یہ خوفناک سزا سو برس پہلے ھمیشہ کے لئے بند ھو چکی ھے . پر جب ارلی کاؤنٹی اسٹاکیڈ میں میں نے ایک 19 برس کے نیگرو لڑکے کو " اسٹاک " میں لٹکے دیکھا تو میرے اچرج کا ٹھکانا نہ رھا . تین سو برس پہلے کم سے کم مجرم کو ایک تختے پر بیٹھا کر اسٹاک میں کسا جاتا تھا پر تین سو برس بعد اس سزا میں اتنی تبدیلی ھوئی ھے کہ ھاتھ پیر کس کر نیچے سے تختہ کھینچ لیا جاتا ھے اور قیدی ادھر میں لٹکتا رھتا ھے !

बस—करो ! बस—करो ! बस—करो ! या ख़ुदा !

हर "बस" पर बेलचा मिट्टी के अन्दर धंस जाता था और हर "करो" पर ठेले के भीतर पहुंच जाता था.

इन बदक़िस्मतों के इस गीत में, कि जिन्हें मौत या निजात तक झुकने और उठने की सज़ा मिली थी—एक ऐसी कसक और दिल को पिघला देने वाली एक ऐसी टीस थी कि जो बरबस प्रानों में घुसकर कलेजे में अटक कर रह जाती थी—

हे—प्रभू ! हे—प्रभू ! बस—करो ! हे—प्रभू !
बस—करो ! हे—प्रभू ! हे—प्रभू ! बस—करो !
जिस्म—हुआ ! चूर—चूर ! चूर—चूर ! जिस्म—हुआ !
हे—प्रभू ! बस—करो ! हे—प्रभू ! बस—करो !

वार्डन वीठले ने हंसी का ठहाका लगाकर कहा—"कम्बख़्तो ! क्या तुम लोग इससे और अधिक जल्दी जल्दी गीत नहीं दोहरा सकते ताकि काम ज़्यादा हो सके ?"

× × ×

अटलान्टा के दफ़्तर में जो डाक्टरी रिपोर्टें पड़ी हुई थीं उनमें दर्ज था—

( 1 ) क्लार्क काउन्टी कैम्प स्टाकेड का निग्रो क़ैदी बिल हैरिस 13 जून, सन 1931 को चार घंटे की बीमारी के बाद पांच बजे शाम को मिरगी के दौरे से मर गया. ( मैं अचम्भे से सोच रहा था कि जलती दोपहरी में सुबह से लेकर शाम तक बिना आराम काम करने की बीमारी का नाम ही क्या मिरगी है !!! ).

( 2 ) जार्जिया की सड़क बनाते हुये जार्ज जॉनसन नामक निग्रो क़ैदी, उम्र 27 वर्श, ऊंचाई 5 फ़ुट 10½ इंच, वज़न 161 पौंड, 23 फ़रवरी, सन 1931 को तीन बजे सुबह तपेदिक़ से मर गया !

( 3 ) चैथम काउन्टी चेन-गैंग का जार्ज नील, उम्र 20 वर्श, तेज़ाब, तारपीन और साबुन मिलाकर पीने से मर गया ! ( मैं सोचने लगा इन ज़ंजीरी टोलियों में काम करने की बनिस्बत मौत का ख़्याल इन लोगों को कितना अच्छा लगता होगा ! ).

अटलांटा के दफ़्तर में क़ैदियों की मौत के ढेरों सर्टिफ़िकेट ख़ूबसूरत मोटे लिफ़ाफ़ों में लाल फ़ीतों से बंधे हुये और क़रीने से तहाये हुये रखे थे, जिनमें मिरगी, तपेदिक़, हार्टफ़ेल, लू और इसी तरह की कई बीमारियों की ख़ानापुरी से लैस, कोड़ों से भी गई बीती मौत की कहानियां दर्ज पड़ी थीं ! और देश के कोनों कतरों में काले रंग की कुछ अभागी मांयें, बहनें और बीवियां रो रोकर अपनी आंखें सुजा रही थीं !



بس—کرو ! بس—کرو ! بس کرو ! یا خدا .

هر "بس" پر بیلچہ مٹی کے اندر دھنس جاتا تھا اور هر "کرو" پر ٹھیلے کے بھیتر پہونچ جاتا تھا .

اِن بدقسمتوں کے اِس گیت میں' کہ جنھیں موت یا نجات تک جھکنے اور اُٹھنے' کی سزا ملی تھی—ایک ایسی کسک اور دل کو پگھلا دینے والی ایک ایسی ٹیس تھی کہ جو بربس پرانوں میں گھس کر کلیجے میں اٹک کر رہ جاتی تھی—

ھے—پربھو ! ھے—پربھو ! بس—کرو ! ھے—پربھو !
بس—کرو ! ھے—پربھو ! ھے—پربھو ! بس—کرو !
جسم—ھوا ! چور—چور ! چور—چور ! جسم—ھوا !
ھے—پربھو ! بس—کرو ! ھے—پربھو ! بس—کرو !

وارڈن وھیٹلے نے ھنسی کا ٹھاکا لگاکر کہا—"کمبختو ! کیا تم لوگ اِس سے اور ادھک جلدی جلدی گیت نہیں دوھرا سکتے تاکہ کام زیادہ ھوسکے؟"

× × ×

اٹلانٹا کے دفتر میں جو ڈاکٹری رپورٹیں پڑی ھوئی تھیں ان میں درج تھا—

(1) کلارک کاؤنٹی کیمپ اسٹاکیڈ کا نیگرو قیدی بل هیرس 13 جون' 1931 کو چار گھنٹے کی بیماری کے بعد پانچ بجے شام کو مرگی کے دورے سے مرگیا . (میں اچنبھے سے سوچ رہا تھا کہ جلتی دوپہری میں صبح سے لیکر شام تک بنا آرام کام کرنے کی بیماری کا نام ھی کیا مرگی ھے !!!).

(2) جارجیا کی سڑک بناتے ھوئے جارج جانسن نامک نیگرو قیدی' عمر 27 ورش' اونچائی 5 فٹ 10½ انچ' وزن 161 پونڈ' 23 فروری' سن 1931 کو تین بجے صبح تپ دق سے مر گیا !

(3) چیتھم کاؤنٹی چین - گینگ کا جارج نیل' عمر 20 ورش' تیزاب' تارپین اور صابن ملا کر پینے سے مر گیا ! ( میں سوچنے لگا اِن زنجیری ٹولیوں میں کام کرنے کی بنسبت موت کا خیال اِن لوگوں کو کتنا اچھا لگتا ھوگا ! ) .

اٹلانٹا کے دفتر میں قیدیوں کی موت کے ڈھیروں سرٹیفکیٹ خوبصورت موٹے لفافوں میں لال فیتوں سے بندھے ھوئے اور قرینے سے تہائے ھوئے رکھے تھے' جن میں مرگی' تپ دق' هارٹ فیل' لو اور اِسی طرح کی کئی بیماریوں کی خانہ پوری سے لیس' کیڑوں سے بھی گئی بیتی موت کی کہانیاں درج پڑی تھیں ! اور دیش کے کونوں کتروں میں کالے رنگ کی کچھ ابھاگی مائیں' بھنیں اور بیویاں رو رو کر اپنی آنکھیں سجا رھی تھیں !

भरी पड़ी हैं ? क्या इन काग़ज़ों में बीमारियों, चोटों और मौतों पर डाक्टरों की लम्बी लम्बी रिपोर्टें नहीं हैं ? क्या इन धूल से ढकी हुई फ़ाइलों के भीतर निराश ज़िन्दगियों की अनेक दर्दनाक कहानियां नहीं बन्द पड़ी हैं ?"

कमिश्नर ज़रा नरम होकर बोला—"हमारे पास पैसा कहां है ! सरकार हमें इतना कम पैसा देती है कि हमारे लिये सब कैम्पों की जांच पड़ताल कर सकना नामुमकिन है. हमारे दफ़्तर में क़ैदियों के पास से शिकायतें आती हैं लेकिन पैसों की कमी से हम उनकी छानबीन नहीं कर सकते !"

मैंने कहा—"मैं आपके कैम्पों को देखना चाहता हूं. क्या आप मुझे इसकी इजाज़त देंगे ?"

कमिश्नर ने मुझे अनुमति-पत्र देते हुये कहा—"आप शौक़ से जाइये पर आप को हैवानी ज़ुल्म देखने को न मिलेंगे !"

( 3 )

इसके कई दिनों बाद मैं जार्जिया की एक सड़क दुरुस्त करते हुए एक चेन-गैङ्ग के सामने खड़ा था. इस गैंग का वार्डन कालिज का निकला हुआ सी० एच० वीटले नामक एक नौजवान था. सड़क जगह जगह से टूटी हुई थी और उसके दोनों किनारों पर लाल कंकरीली मिट्टी के बहुत से ढेर लगे हुये थे, जिसे बेलचों से ठेलों में भर कर सड़क की टूटनों में गिराया जा रहा था. सारे बेलचे एक साथ ही मिट्टी के भीतर धंसते थे और एक साथ ही उठकर ठेलों के भीतर गिरते थे. एक सुर ताल के साथ क़ैदियों की कमर झुकती थी और उठती थी. क़ैदियों में से ही एक कामदार "हे जवान !" की धुन लगा रहा था और उसी की आवाज़ पर बेलचे उठते और गिरते थे. सूरज की तेज़ किरनें उनके नंगे बदन को भेद रही थीं और कभी कभी उन्हें मुंह खोल-कर सांस लेने की कोशिश करनी पड़ती थी. उनके माथे और उनकी पीठ से पसीने की धारें बह रही थीं. उनका धारीदार जांघिया गीला होकर बदन से चिपक गया था. वह झुकते और उठते थे; एक मिनिट में चौदह बार झुकते और उठते थे. मिनिट के बाद मिनिट और घन्टे के बाद घन्टे गुज़रते थे और वे उसी तरह जलती दोपहरी में, सुबह से शाम तक झुकते और उठते थे, मिनिट में चौदह बार झुकते और उठते थे.

धूल उड़ उड़कर बादल बनकर हवा में छा रही थी और उनके नथनों, फेफड़ों और कानों में चादर की तहों की तरह लिपटी जा रही थी.

मेरे कानों में रह रहकर क़ैदियों के पुरदर्द गीत की धुन पड़ रही थी.



بھری پڑی ہیں؟ کیا اِن کاغذوں میں بیماریوں، چوٹوں اور موتوں پر ڈاکٹروں کی لمبی لمبی رپورٹیں نہیں ہیں؟ کیا ان دھول سے ڈھکی ہوئی فائلوں کے بھیتر نراش زندگیوں کی انیک دردناک کہانیاں نہیں بند پڑی ہیں؟"

کمشنر ذرا نرم ہوکر بولا—"ہمارے پاس پیسہ کہاں ہے! سرکار ہمیں اتنا کم پیسہ دیتی ہے کہ ہمارے لئے سب کیمپوں کی جانچ پڑتال کرسکنا ناممکن ہے. ہمارے دفتر میں قیدیوں کے پاس سے شکایتیں آتی ہیں لیکن پیسوں کی کمی سے ہم اُن کی چھان بین نہیں کرسکتے!"

میں نے کہا—"میں آپ کے کیمپوں کو دیکھنا چاہتا ہوں. کیا آپ مجھے اِس کی اِجازت دینگے؟"

کمشنر نے مجھے انومتی پتر دیتے ہوئے کہا—"آپ شوق سے جائیے پر آپ کو حیوانی ظلم دیکھنے کو نہ ملیں گے!"

( 3 )

اِس کے کئی دنوں بعد میں جارجیا کی ایک سڑک درست کرتے ہوئے ایک چین - گینگ کے سامنے کھڑا تھا. اِس گینگ کا وارڈن کالج کا نکلا ہوا سی. ایچ. وھیٹلے نامک ایک نوجوان تھا. سڑک جگہ جگہ سے ٹوٹی ہوئی تھی اور اُس کے دونوں کناروں پر لال کنکریلی مٹی کے بہت سے ڈھیر لگے ہوئے تھے، جسے بیلچوں سے ٹھیلوں میں بھرکر سڑک کی ٹوٹنوں میں گرایا جا رہا تھا. سارے بیلچے ایک ساتھ ہی مٹی کے بھیتر دھنستے تھے اور ایک ساتھ ہی اُٹھ کر ٹھیلوں کے بھیتر گرتے تھے. ایک سر تال کے ساتھ قیدیوں کی کمر جھکتی تھی اور اُٹھتی تھی. قیدیوں میں سے ہی ایک کامدار "ہے جوان!" کی دھن لگا رہا تھا اور اسی کی آواز پر بیلچے اُٹھتے اور گرتے تھے. سورج کی تیز کرنیں اُن کے ننگے بدن کو بھید رہی تھیں اور کبھی کبھی اُنھیں منھ کھولکر سانس لینے کی کوشش کرنی پڑتی تھی. اُن کے ماتھے اور اُن کی پیٹھ سے پسینے کی دھاریں بہ رہی تھیں. اُن کا دھاریدار جانگھیا گیلا ہوکر بدن سے چپک گیا تھا. وے جھکتے اور اُٹھتے تھے؛ ایک منٹ میں چودہ بار جھکتے اور اُٹھتے تھے. منٹ کے بعد منٹ اور گھنٹے کے بعد گھنٹے گزرتے تھے اور وے اُسی طرح جلتی دوپہری میں، صبح سے شام تک جھکتے اور اُٹھتے تھے، منٹ میں چودہ بار جھکتے اور اُٹھتے تھے.

دھول اُڑ اُڑ کر بادل بن کر ہوا میں چھا رہی تھی اور اُن کے نتھنوں، پھیپھڑوں اور کانوں میں چادر کی تہوں کی طرح لپٹی جا رہی تھی.

میں نے کانوں میں رہ رہ کر قیدیوں کے پردرد گیت کی دھن پڑ رہی تھی.

मैं उठकर सामने के बैरक के दरवाज़े के पास आया. दरवाज़े के पास रखे हुये पेशाब के टब से उठती हुई भयङ्कर सड़ायन हवा के झोंके के साथ मेरे दिमाग़ में घुस गई. मैं हटकर बैरक के बग़ल में टहलने लगा. धारीदार जांघिया पहने हुये निग्रो क़ैदियों की एक क़तार ज़मीन पर चटाइयों पर लेटी हुई थी. फीकी रोशनी में पसीने की बूंदें रह रहकर उनकी नंगी छातियों पर चमक उठती थीं.

एक क़ैदी ने थके हुये हाथों से अपनी जांघ खुजलाई, दूसरे ने कन्धे पर काटते हुये खटमल को हथेली से मसल दिया और एक, जिसकी आंखों में नींद नहीं थी, कोहनी पर सर रखे हुये उदास आंखों से शून्य में देख रहा था.

मैंने पहरेदार से पूछा—"आख़िर इन लोगों ने ऐसा क्या क़ुसूर किया है जो इस तरह जंजीर में कसकर कटघरे में बन्द किये गये हैं ?"

"यह कुछ न पूछिये ! आवारागर्दी से लेकर ये लोग क़त्ल तक के मुजरिम हैं !"

तीस दिन और तीस बरस के सज़ायाफ़्तों में कोई फ़र्क़ नहीं किया गया था. एक लड़का जो मुशकिल से 17 बरस का था अपने गरम माथे को बेड़ियों के ठंडे लोहे से सेहला रहा था; उसके बग़ल में रह रहकर दमे से खोंखता हुआ एक दुबला पतला बूढ़ा पड़ा हुआ था जो पचासे को पार कर चुका था.

पहरेदार ने कहा—"यह क़ातिल है !"

( 2 )

अमरीका में क़ैदियों के इन कैम्पों का इन्तज़ाम स्टेट प्रिज़न कमीशन के द्वारा मुक़र्रर वार्डन करते हैं. इस कमीशन में तीन मेम्बर होते हैं जिन्हें छै बरस के लिये जनता चुनती है. कमीशन का हैड क्वार्टर अटलान्टा शहर में है जहां बहुत सी फ़ाइलों और ख़तों के ढेर के बीच कमिश्नर विवियन ई० स्टेनली बाज़ाब्ता आफ़िस के समय बैठते हैं.

मिलने पर कहने लगे—"ये चेन-गैङ्ग (ज़ंजीरी टोलियां) अच्छी भी हैं और बुरी भी हैं. हम कोशिश कर रहे हैं कि बुरे क़ैदियों से जल्द से जल्द हमारा पिंड छूट जाये."

मैंने पूछा—"सुना है क़ैदी बहुधा जान से मार डाले जाते हैं. हैबतनाक जुल्मों के क़ुसूर में कभी कभी वार्डरों को भी बर्ख़ास्त कर दिया जाता है ?"

कमिश्नर स्टेनली ने ग़ुस्से से भरकर जवाब दिया—"आपको इन सब बातों से मतलब ? अपने क़ैदियों की देखभाल का काम हमारा है."

मैंने आजिज़ी से कहा—"लेकिन क्या आपकी इन फ़ाइलों में हैवानी जुल्मों के लिये क़ैदियों की शिकायतें नहीं



میں اُٹھکر سامنے کے بیرک کے دروازے کے پاس آیا. دروازے کے پاس رکھے ہوئے پیشاب کے ٹب سے اُٹھتی ہوئی بھینکر سڑائن ہوا کے جھونکے کے ساتھ میرے دماغ میں گھس گئی. میں ہٹ کر بیرک کے بغل میں ٹہلنے لگا. دھاریدار جانگھیا پہنے ہوئے نیگرو قیدیوں کی ایک قطار زمین پر چٹائیوں پر لیٹی ہوئی تھی. پھیکی روشنی میں پسینے کی بوندیں رہ رہ کر ان کی ننگی چھاتیوں پر چمک اُٹھتی تھیں.

ایک قیدی نے تھکے ہوئے ہاتھوں سے اپنی جانگھ کھجلائی، دوسرے نے کندھے پر کاٹتے ہوئے کھٹمل کو ہتھیلی سے مسل دیا اور ایک، جس کی آنکھوں میں نیند نہیں تھی، کہنی پر سر رکھے ہوئے اُداس آنکھوں سے شونیہ میں دیکھ رہا تھا.

میں نے پہریدار سے پوچھا—"آخر اِن لوگوں نے ایسا کیا قصور کیا ہے جو اِس طرح زنجیر میں کس کر کٹگھرے میں بند کئے گئے ہیں؟"

"یہ کچھ نہ پوچھئے! آوارہ گردی سے لیکر یہ لوگ قتل تک کے مجرم ہیں!"

تیس دن اور تیس برس کے سزا یافتوں میں کوئی فرق نہیں کیا گیا تھا. ایک لڑکا جو مشکل سے 17 برس کا تھا اپنے گرم ماتھے کو بیڑیوں کے ٹھنڈے لوہے سے سہلا رہا تھا؛ اُس کے بغل میں رہ رہ کر دمہ سے کھونکھتا ہوا ایک دبلا پتلا بوڑھا پڑا ہوا تھا جو پچاسے کو پار کرچکا تھا.

پہریدار نے کہا—"یہ قاتل ہے!"

( 2 )

امریکہ میں قیدیوں کے اِن کیمپوں کا اِنتظام اِسٹیٹ پریزن کمیشن کے دوارا مقرر وارڈن کرتے ہیں. اِس کمیشن میں تین ممبر ہوتے ہیں جنہیں چھ برس کے لئے جنتا چنتی ہے. کمیشن کا ہیڈ کوارٹر اٹلانٹا شہر میں ہے جہاں بہت سی فائلوں اور خطوں کے ڈھیر کے بیچ کمشنر وویَن ای. اسٹینلی باضابطہ آفس کے سمے بیٹھتے ہیں.

ملنے پر کہنے لگے—"یہ چین گینگ (زنجیری ٹولیاں) اچھی بھی ہیں اور بری بھی ہیں. ہم کوشش کر رہے ہیں کہ برے قیدیوں سے جلد سے جلد ہمارا پنڈ چھوٹ جائے."

میں نے پوچھا—"سنا ہے قیدی بہودھا جان سے مار ڈالے جاتے ہیں. ہیبتناک ظلموں کے قصور میں کبھی کبھی وارڈروں کو بھی برخاست کردیا جاتا ہے؟"

کمشنر اسٹینلی نے غصے سے بھرکر جواب دیا—"آپ کو اِن سب باتوں سے مطلب؟ اپنے قیدیوں کی دیکھ بھال کا کام ہمارا ہے."

میں نے عاجزی سے کہا—"لیکن کیا آپ کی اِن فائلوں میں حیوانی ظلموں کے لئے قیدیوں کی شکائتیں نہیں

पेश करता था जब कि बौद्ध तर्क-शास्त्री क़ुरान और हदीस दोनों से इनकार करता था. इसके बाद बहस ख़ुदापरस्ती पर शुरू हो गई और बौद्ध लाजवाब होने लगा और उसने हार की शर्म से बचने के लिये, कहते हैं, एक दिन उस मुसलमान विद्वान को जहर देकर मरवा डाला. लेकिन इस नाख़ुशगवार वाक़्ये से यह धर्म-चर्चा रुकी नहीं और उस जमाने की किताबों में इनके ऐसे जिक्र मिलते हैं जिन से जाहिर होता है कि हिन्दू मुसलमानों की मिली जुली धर्म-चर्चा बराबर चलती रहती थी.*

پیش کرتا تھا جب کہ بودھ ترک شاستری قرآن اور حدیث دونوں سے انکار کرتا تھا ۔ اس کے بعد بحث خدا پرستی پر شروع ہوگئی اور بودھ لاجواب ہونے لگا اور اس نے ہار کی شرم سے بچنے کے لئے، کہتے ہیں، ایک دن اس مسلمان ودوان کو زہر دیکر مروا ڈالا ۔ لیکن ناخوشگوار واقعہ سے یہ دھرم چرچا رکی نہیں اور اس زمانے کی کتابوں میں ان کے ایسے ذکر ملتے ہیں جن سے ظاہر ہوتا ہے کہ ہندو مسلمانوں کی ملی جلی دھرم چرچا چلتی رہتی تھی ۔*

---

## चेन-गैङ्ग !

## چین گینگ !

विश्वम्भरनाथ पांडे

وشومبھر ناتھ پانڈے

बारिश का चांद रह रहकर कुहासे की चादर हटाने की कोशिश कर रहा था. चांदनी ओस की बूंदों से अलसाई आंखों को धोकर कटीले तारों से घिरी हुई दुनिया की एक दजन बैरकों पर कभी कभी अपनी उदास निगाह डाल लेती थी !

एक बैरक के आगे लकड़ी की ख़स्ता सीढ़ियों पर बैठे हुये हम धीमे सुरों में बातें कर रहे थे. रात की ख़ामोशी जब तब बैरक के भीतर से उठते हुये ख़र्राटों से टूट जाती थी. ऐसा लगता था मानो कटघरों में बन्द जंगली जानवर गुर्रा रहे हों. बैरक की धन्नियों में लटकी हुई दो कलूटी लालटेनें अपने पजमुर्दा चेहरों से फीकी पीली रोशनी चारों ओर फेंक रही थीं !

ख़र्राटों के कोरस को एक हलकी सी झंकार इस तरह सुर ताल में बांधने की कोशिश कर रही थी, मानो बांसों की झाड़ियों से रगड़ खाता हुआ कोई बनैला पशु जा रहा हो !

"यह क्या है ?" मैंने पूछा.

"ये मूंज की चटाइयां हैं" पहरेदार ने जवाब दिया. "जब ये लोग करवट बदलते हैं तो....आप समझे ?"

"हां", मैंने कहा, और यह झंकार ?"

"ये उनकी बेड़ियों में पड़ी हुई जंजीरें हैं."

एक मच्छर भुनभुना कर मेरी गर्दन पर बैठ गया. मैंने हथेली से उसे दबोच दिया. एक मक्खी भिनभिना कर मेरी नाक के चारों ओर घूमने लगी !

بارش کا چاند رہ رہ کر کوہاسے کی چادر ہٹانے کی کوشش کر رہا تھا۔ چاندنی اوس کی بوندوں سے السائی آنکھوں کو دھوکر کٹیلے تاروں سے گھری ہوئی دنیا کی ایک درجن بیرکوں پر کبھی کبھی اپنی اداس نگاہ ڈال لیتی تھی !

ایک بیرک کے آگے لکڑی کی خستہ سیڑھیوں پر بیٹھے ہوئے ہم دھیمے سروں میں باتیں کر رہے تھے ۔ رات کی خاموشی جب تب بیرک کے بھیتر سے اٹھتے ہوئے خراٹوں سے ٹوٹ جاتی تھی۔ ایسا لگتا تھا مانو کٹگھروں میں بند جنگلی جانور غرا رہے ہوں ۔ بیرک کی دھنیوں میں لٹکی ہوئی دو کلوٹی لالٹینیں اپنے پژمردہ چہرے سے پھیکی پیلی روشنی چاروں اور پھینک رہی تھیں !

خراٹوں کے کورس کو ایک ہلکی سی جھنکار اس طرح سرتال میں باندھنے کی کوشش کر رہی تھی، مانو بانسوں کی جھاڑیوں سے رگڑ کھاتا ہوا کوئی بنیلا پشو جا رہا ہو !

"یہ کیا ہے؟" میں نے پوچھا ۔

"یہ مونج کی چٹائیاں ہیں" پہریدار نے جواب دیا ۔ "جب یہ لوگ کروٹ بدلتے ہیں تو.... آپ سمجھے؟"

"ہاں" میں نے کہا "اور یہ جھنکار؟"

"یہ ان کی بیڑیوں میں پڑی ہوئی زنجیریں ہیں ۔"

ایک مچھر بھنبھناکر میری گردن پر بیٹھ گیا ۔ میں نے ہتھیلی سے اسے دبوچ دیا ۔ ایک مکھی بھنبھناکر میری ناک کے چاروں اور گھومنے لگی !

---

* इस लेख के लिखने में स्व० मौलवी जियाउद्दीन की अप्रकाशित पुस्तक से मदद ली गई है.—लेखक

اس لیکھ کے لکھنے میں سورگیہ مولوی ضیاالدین کی اپرکاشت پستک سے مدد لی گئی ہے ۔—لیکھک

के दरबार में ज्योतिश और वैद्यक के सब से ऊंचे पदों पर हिन्दू पंडित ही मुक़र्रर थे. मुसलमानों के दिलों में हिन्दुस्तान के ज्ञान की रहस्यमय गहराई की थाह लेने की, ज्ञानी, ध्यानी और सृजनशील भारत को जानने की बेहद जिज्ञासा पैदा हुई. अरब के विद्वान ज्ञान के सच्चे उपासक थे और अनगिनत तादाद में अरब यात्री, विद्वान, मुवर्रिख़ और भौगोलिक भारत में आ आकर ज्ञान के इस अटूट भंडार से मालामाल होने लगे. हारूं-अर-रशीद के वज़ीर यहया बरमकी ने एक विद्वान को इस बात के लिये मुक़र्रर किया कि वह हिन्दुस्तान में प्रचलित विविध धर्मों, और हिन्दुस्तान की जड़ी बूटियों के बारे में अपनी मुफ़स्सिल रिपोर्ट पेश करे. इब्न अन-नज़ीम का कहना है कि उसने बतारीख़ 349 हिजरी की अलकिन्दी के हाथ की लिखी हुई इस रिपोर्ट की एक कापी देखी है. इब्न अन-नज़ीम के मुताबिक़ इस रिपोर्ट में वल्लभराय की राजधानी महानगर के देव मन्दिरों और मुलतान और भारत के विविध धर्मों और मतमतान्तरों का भी बयान था. इब्न अन-नज़ीम ने पूरी किताब का ख़ुलासा भी दिया है. जिन मत मतान्तरों का इसमें बयान है उनमें से कुछ यह हैं—महाकालिया, आदित्यभक्तिया, चन्द्रभक्तिया, वक्रान्तिया (जिसके अनुयायी ज़ंजीर पहनते थे), गंगायात्रिया, राजपुत्रिया और एक और फ़िरक़ा जिसके मानने वाले लम्बे बाल रखते थे, शराब से परहेज़ करते थे, और औरतों से बचते थे.*

हिन्दुस्तान के पश्चिमी किनारे में जगह जगह हिन्दू मुसलमानों की जिस तरह की मिली जुली आबादियां उस समय बस गई थीं और जिस तरह दोनों फ़िरक़े एक दूसरे में दिलचस्पी ले रहे थे उससे साफ़ है कि दोनों एक दूसरे के धर्म की अध्यात्मिक और नैतिक गहराइयों में ग़ोता लगाने की कोशिश कर रहे थे. उनकी यह जिज्ञासा आपस के गहरे ताल्लुक़ात और मेल जोल से ही पूरी हो सकती थी.‡

उस समय के एक राजा की बाबत लिखा है कि उसने ख़लीफ़ा हारूं-अर-रशीद को ख़त लिख कर किसी ऐसे मुसलिम विद्वान को भेजने की दरख़्वास्त की जो राजा के हिन्दू पंडितों से मज़हबी बहस कर सके. इसी घटना का एक दूसरा बयान यह है कि राजा ने मुसलमान विद्वान को इसलिये बुलाया ताकि वह एक बौद्ध तर्कशास्त्री से तर्क कर सके. यह सही भी हो सकता है. बहरहाल वह मुसलिम विद्वान भारत आया, लेकिन उस बौद्ध तर्क-शास्त्री के सामने उसकी एक न चली. कई दिन तक बहस होती रही. मुसलमान तार्किक क़ुरान और हदीस को आख़री सनद कह कर

ہندو مسلمانوں کے کلچری میل جول

کے دربار میں جیوتش اور ویدیک کے سب سے اونچے پدوں پر ہندو پنڈت ہی مقرر تھے. مسلمانوں کے دلوں میں ہندستان کے گیان کی رہسیہ مئے گہرائی کی تھاہ لینے کی، گیانی، دھیانی اور سرجن شیل بھارت کو جاننے کی بیحد جگیاسا پیدا ہوئی. عرب کے ودوان گیان کے سچے اُپاسک تھے اور انگنت تعداد میں عرب یاتری، ودوان، مورخ اور بھوگولک بھارت میں آ آ کر گیان کے اِس اٹوٹ بھنڈار سے مالا مال ہونے لگے. ہاروں الرشید کے وزیر یحیٰی برمکی نے ایک ودوان کو اِس بات کے لئے مقرر کیا کہ وہ ہندستان میں پرچلت وودھ دھرموں، اور ہندستان کی جڑی بوٹیوں کے بارے میں اپنی مفصل رپورٹ پیش کرے. ابن انظیم کا کہنا ہے کہ اُس نے بتاریخ 349 ہجری کی الکندی کے ہاتھ کی لکھی ہوئی اِس رپورٹ کی ایک کاپی دیکھی ہے. ابن انظیم کے مطابق اِس رپورٹ میں ولبھ رائے کی راجدھانی مہانگر کے دیومندروں اور ملتان اور بھارت کے وودھ دھرموں اور مت متانتروں کا بھی بیان تھا. ابن انظیم نے پوری کتاب کا خلاصہ بھی دیا ہے. جن مت متانتروں کا اِس میں بیان ہے اُن میں سے کچھ یہ ہیں—مہاکالیا، آدتیہ بھکتیا، چاندر بھکتیا، وکرانتیا (جس کے انویائی زنجیر پہنتے تھے)، گنگا یاتریا، راج پتریا اور ایک اور فرقہ جس کے ماننے والے لمبے بال رکھتے تھے، شراب سے پرہیز کرتے تھے، اور عورتوں سے بچتے تھے.*

ہندستان کے پچھمی کنارے میں جگہ جگہ ہندو مسلمانوں کی جس طرح کی ملی جلی آبادیاں اُس سمئے بس گئیں تھیں اور جس طرح دونوں فرقے ایک دوسرے میں دلچسپی لے رہے تھے اُس سے صاف ہے کہ دونوں ایک دوسرے کے دھرم کی آدھیاتمک اور نیتک گہرائیوں میں غوطہ لگانے کی کوشش کر رہے تھے. اُن کی یہ جگیاسا آپس کے گہرے تعلقات اور میل جول سے ہی پوری ہوسکتی تھی.‡

اُس سمئے کے ایک راجا کی بابت لکھا ہے کہ اُس نے خلیفہ ہاروں الرشید کو خط لکھکر کسی ایسے مسلم ودوان کو بھیجنے کی درخواست کی جو راجا کے ہندو پنڈتوں سے مذہبی بحث کر سکے. اِسی گھٹنا کا ایک دوسرا بیان یہ ہے کہ راجا نے مسلمان ودوان کو اِس لئے بلایا تاکہ وہ ایک بودھ ترک شاستری سے ترک کرسکے. یہ صحیح بھی ہوسکتا ہے. بہر حال وہ مسلم ودوان بھارت آیا، لیکن اُس بودھ ترک شاستری کے سامنے اُس کی ایک نہ چلی. کئی دن تک بحث ہوتی رہی. مسلمان تارکک قرآن اور حدیث کو آخری سند کہ کر

* Fihrist, pp. 355-359.

‡ अरब और हिन्द के ताल्लुक़ात. عرب اور ہند کے تعلقات .

से प्रेम करने और एक दूसरे के धर्म का ज़्यादा से ज़्यादा ज्ञान हासिल करने की ख्वाहिश भी बढ़ी. मिसाल के तौर पर मसूदी लिखता है—"खम्भात का राजा मुसलमानों और दूसरे मज़हब वालों के साथ, जो उसके दरबार में आते थे, धार्मिक विचारों का आदान प्रदान करता था."*

इसी तरह से बुज़ुर्ग बिन शहरयार लिखता है कि अलौर के राजा महरुग ने, जिसका राज्य उपरले और निचले काशमीर के बीच में था, मनसूरा के राजा को लिखा कि वह किसी ऐसे आदमी को भेजे जो हिन्दवी भाशा में इसलाम के उसूलों को उसे समझा सके. मनसूरा के शासक ने अब्दुल्ला नामी एक क़ाबिल शख्स को, जो तीन बरस तक मन्सूरा में रह चुका था, अलौर भेजा. उसने क़ुरान का हिन्दी में तर्जुमा करके रोज़ राजा को सुनाना शुरू किया. राजा पर उसका गहरा असर पड़ा.† इस तरह के असर पड़ने उस वक़्त क़ुदरती थे. इसके बाद मुसलिम देशों में हिन्दुओं की आमद रफ़्त शुरू हुई और दोनों के बीच के सामाजिक ताल्लुक़ात और अधिक गहरे और दिलचस्प होते गये. सुलेमान लिखता है—

"इराक़ के बन्दरगाह सैराफ़ में बहुत से हिन्दू रहते हैं और जब कोई अरब सौदागर उनकी दावत करता है तो उनकी तादाद सौ तक पहुंच जाती है. उनमें से हर शख्स का खाना अलग अलग रकाबियों में परसा जाता है क्योंकि एक ही रकाबी में कोई एक दूसरे के साथ नहीं खाता.‡ इन्हीं हिन्दुओं के मुताल्लिक़ बुज़ुर्ग बिन शहरयार कहता है—

"ये लोग बोल चाल की अरबी इस क़दर सफ़ाई से और धारा-प्रवाह (फ़साहत से) बोलते हैं कि हमारे आलिम फ़ाज़िल मौलवी दंग और हैरान रह जाते हैं. इन लोगों में आम तौर पर सिन्धी, गुजराती और मुलतानी हैं जो अनन्त काल से हमारे मुल्कों के साथ तिजारत करते आ रहे हैं."§

इस तिजारती सम्बन्ध से हिन्दुस्तान मुसलिम मुल्कों के गहरे ताल्लुक़ में आया और इसलामी दुनिया पर अपने ज्ञान (इल्म), विज्ञान (साइन्स), अध्यात्म और धर्म का असर डाल पाया. अरब और ईरानी सौदागर हिन्दुस्तान से तिजारती माल के साथ साथ कला और विज्ञान के खेवे भी ले जाते थे.

दूसरी तरफ़ अब्बासी खलीफ़ाओं के दरबार की मानसिक उदारता और धार्मिक मेल जोल से खिंचकर हिन्दू पंडित बड़ी तादाद में बग़दाद में इकट्ठा होने लगे. खलीफ़ा



سے پریم کرنے اور ایک دوسرے کے دھرم کا زیادہ سے زیادہ گیان حاصل کرنے کی خواہش بھی بڑھی ۔ مثال کے طور پر مسعودی لکھتا ہے—"کھمبات کا راجا مسلمانوں اور دوسرے مذہب والوں کے ساتھ، جو اُس کے دربار میں آتے تھے، دھارمک وچاروں کا آدان پردان کرتا تھا ۔"*

اِس طرح سے بزرگ بن شہریار لکھتا ھے کہ الور کے راجا مہروگ نے، جس کا راجیہ اُپرلے اور نچلے کاشمیر کے بیچ میں تھا، منصورہ کے راجا کو لکھا کہ وہ کسی ایسے آدمی کو بھیجے جو ھندوی بھاشا میں اِسلام کے اُصولوں کو اُسے سمجھا سکے ۔ منصورہ کے شاسک نے عبداللہ نامی ایک قابل شخص کو، جو تین برس تک منصورہ میں رہ چکا تھا، الور بھیجا ۔ اس نے قرآن کا ھندی میں ترجمہ کرکے روز راجا کو سنانا شروع کیا ۔ راجا پر اُس کا گہرا اثر پڑا ۔† اس طرح کے اثر پڑنے اُس وقت قدرتی تھے ۔ اِس کے بعد مسلم دیشوں میں ھندؤں کی آمدرفت شروع ھوئی اور دونوں کے بیچ کے سماجک تعلقات اور ادھک گہرے اور دلچسپ ھوتے گئے ۔ سلیمان لکھتا ھے—

"عراق کے بندرگاہ سیراف میں بہت سے ھندو رھتے ھیں اور جب کوئی عرب سوداگر اُن کی دعوت کرتا ھے تو اُن کی تعداد سو تک پہونچ جاتی ھے ۔ اُن میں سے ھر شخص کا کھانا الگ الگ رکابیوں میں پرسا جاتا ھے کیونکہ ایک ھی رکابی میں کوئی ایک دوسرے کے ساتھ نہیں کھاتا ۔"‡ اِنھیں ھندؤں کے متعلق بزرگ بن شہریار کہتا ھے—

"یہ لوگ بول چال کی عربی اس قدر صفائی سے اور دھارا پرواہ (فصاحت سے) بولتے ھیں کہ ھمارے عالم فاضل مولوی دنگ اور حیران رہ جاتے ھیں ۔ اِن لوگوں میں عام طور پر سندھی، گجراتی اور ملتانی ھیں جو اننت کال سے ھمارے ملکوں کے ساتھ تجارت کرتے آرھے ھیں ۔"§

اِس تجارتی سمبندھ سے ھندستان مسلم ملکوں کے گہرے تعلق میں آیا اور اِسلامی دنیا پر اپنے گیان (علم)، وگیان (سائنس)، ادھیاتم اور دھرم کا اثر ڈال پایا ۔ عرب اور ایرانی سوداگر ھندستان سے تجارتی مال کے ساتھ ساتھ کلا اور وگیان کے کھیوے بھی لے جاتے تھے ۔

دوسری طرف عباسی خلیفاؤں کے دربار کی مانسک اُدارتا اور دھارمک میل جول سے کھنچ کر ھندو پنڈت بڑی تعداد میں بغداد میں اِکٹھا ھونے لگے ۔ خلیفہ

* Muruj-uz-Zahab ( Paris ), Vol 1. pp. 253-54.

† Ajaib al-Hind, pp. 2-3.

‡ Voyage du Merchand Arb ( Frrand ), p. 139.

§ Ajaib-al-Hind, p.147.

है और गुरूर उसे छू तक नहीं गया. शहरयार लिखता है—"यही वजह है कि बौद्ध मुसलमानों से इतना प्रेम करते हैं और उनके साथ इतनी हमदर्दी रखते हैं."* सुलेमान सौदागर लिखता है—"राजा बल्हर की तरह राजा गुज्र भी अरबों के तरफ़ दोस्ताना बर्ताव रखता है."†

अस्तखरी 951 ईसवी में हिन्दुस्तान आया था. उसके भूगोल के ग्रन्थ में हिन्दुस्तान का बयान है. अस्तखरी ने सबसे पहले हिन्दुस्तान के एक सूबे सिन्ध का नक़शा तैयार किया. अस्तखरी के वक़्त तक ख़ास ख़ास शहरों में हिन्दू-मुसलिम तिजारत के केन्द्र क़ायम हो चुके थे. एक मुसलिम लेखक के मुताबिक़ इन केन्द्रों में हिन्दू और मुसलमानों के सामाजिक मेलजोल के नतीजे में मिले जुले रस्म रिवाज और व्यवहार के क़ायदे बनते जा रहे थे. इब्न हौक़ल लिखता है—"मुलतान में हिन्दू और मुसलमान एक ही सी पोशाक पहनते हैं और एक ही फ़ैशन के बाल संवारते हैं. मनसूरा और मुलतान और आस पास के शहरों में दोनों यकसां अरबी और सिन्धी ज़बान बोलते हैं."‡ बिसहरी लिखता है कि—"सिन्ध में अरबी, फ़ारसी और सिन्धी तीनों यकसां समझी जाती हैं."§ अस्तखरी और इब्न हौक़ल लिखते हैं कि हिन्दू इलाक़ों में मुसलमान जगह जगह बस गये थे और उन्होंने इबादत के लिये मसजिदें तामीर करली थीं. सुलेमान सौदागर सिंहल के सम्बन्ध में लिखता है कि "सिंहल में विभिन्न धर्मों के अनुयायी बसते हैं और सिंहल का राजा इन मुख़्तलिफ़ धर्मावलम्बियों को अपने अपने धर्म के पालन करने की इजाज़त देता है."$

यह साफ़ है कि व्यापार के केन्द्र कलचरी आदान प्रदान के भी केन्द्र थे. इनमें ख़ास शहर ख़ुज़दार, महफ़ूज़ जाह, मन्सूरह और जन्दौर आदि थे. जो मुसलमान इन शहरों में बस गये थे वह क़ौम के अरब थे. वह भारतीयों में इस दरजे मिल जुल गये कि कुछ पीढ़ियों बाद उनका पहचाना जाना भी नामुमकिन हो गया.

इन के तर्ज़ तरीक़े, आचार विचार बिलकुल हिन्दुओं जैसे हो गये. इन लोगों की एक अलग ही जमात बन गई जो पूरे दक्षिण भारत में फैल गई. इनमें से एक जमात अली को शिव का अवतार समझकर पूजा करती थी.

तिजारती सम्बन्ध के साथ साथ ज्यों ज्यों सांस्कृतिक (कलचरी) आदान प्रदान बढ़ा त्यों त्यों भारतीयों और अरबों में एक दूसरे को जानने, समझने और एक दूसरे



ھے اور غرور اُسے چھو تک نہیں گیا. شہریار لکھتا ھے—"یہی وجہ ھے کہ بردھ مسلمانوں سے اتنا پریم کرتے ھیں اور اُن کے ساتھ اتنی ھمدردی رکھتے ھیں."* سلیمان سوداگر لکھتا ھے—"راجا بلھر کی طرح راجا گجر بھی عربوں کے طرف دوستانہ برتاؤ رکھتا ھے."†

استاخری 951 عیسوی میں ھندستان آیا تھا. اُس کے بھوگول کے گرنتھ میں ھندستان کا بیان ھے. استاخری نے سب سے پہلے ھندستان کے ایک صوبہ سندھ کا نقشہ تیار کیا. استاخری کے وقت تک خاص خاص شہروں میں ھندو مسلم تجارت کے کیندر قایم ھوچکے تھے. ایک مسلم لیکھک کے مطابق اِن کیندروں میں اور ھندو اور مسلمانوں کے ساماجک میل جول کے نتیجہ میں ملے جلے رسم رواج اور ویوھار کے قاعدے بنتے جا رھے تھے. ابن ھوقل لکھتا ھے—"ملتان میں ھندو اور مسلمان ایک ھی سی پوشاک پہنتے ھیں اور ایک ھی فیشن کے بال سنوارتے ھیں. منصورہ اور ملتان اور آس پاس کے شہروں میں دونوں یکساں عربی اور سندھی زبان بولتے ھیں."‡ بسہری لکھتا ھے کہ—"سندھ میں عربی، فارسی اور سندھی تینوں یکساں سمجھی جاتی ھیں."§ استاخری اور ابن ھوقل لکھتے ھیں کہ ھندو علاقوں میں مسلمان جگہ جگہ بس گئے تھے اور انہوں نے عبادت کے لئے مسجدیں تعمیر کرلی تھیں. سلیمان سوداگر سنگل کے سمبندھ میں لکھتا ھے کہ "سنگل میں وبھن دھرموں کے انویائی بستے ھیں اور سنگل کا راجا اِن مختلف دھرماولمبیوں کو اپنے اپنے دھرم کے پالن کرنے کی اِجازت دیتا ھے."$

یہ صاف ھے کہ ویاپار کے کیندر کلچری آدان پردان کے بھی کیندر تھے. اِن میں خاص شہر خزدار، محفوظ جاہ، منصورہ اور جندور آدی تھے. جو مسلمان اِن شہروں میں بس گئے تھے وہ قوم کے عرب تھے. وے بھارتیوں میں اِس درجہ مل جل گئے کہ کچھ پیڑھیوں بعد اُن کا پہچانا جانا بھی ناممکن ھوگیا.

اِن کے طرز طریقے، آچار وچار بالکل ھندوؤں جیسے ھوگئے. اِن لوگوں کی ایک الگ ھی جماعت بن گئی جو پورے دکچھن بھارت میں پھیل گئی. اِن میں سے ایک جماعت علی کو شو کا اوتار سمجھکر پوجا کرتی تھی.

تجارتی سمبندھ کے ساتھ ساتھ جیوں جیوں سانسکرتک (کلچری) آدان پردان بڑھا تیوں تیوں بھارتیوں اور عربوں میں ایک دوسرے کو جاننے، سمجھنے اور ایک دوسرے

---

* Ibid, p. 481.

† Voyage du Merchant Sulayman (Paris), p. 119.

‡ Ibn Hauqal (de Goeje), p. 232.

§ Ahsan ut-Taqasim, p. 482.

$ Voyage du Merchant Sulayman (Paris), p. 119.

अंगरेज़ इतिहासकार (मुवर्रिख़) सर विलियम म्यूर अफ़सोस के साथ लिखता है—

"यह बात याद रखनी चाहिये कि अरब विजेता (फ़ातेह) जो रवय्या मातहत क़ौमों के साथ बरतते थे वह हिन्दुस्तान में जाकर बिलकुल उलट गया. मन्दिरों को ज्यों का त्यों महफ़ूज़ छोड़ दिया गया और मूर्ति-पूजा की कोई मनाही नहीं की गई. जैसा कि वेल ने लिखा है 'हिन्दुस्तान की लड़ाई धर्म युद्ध या जेहाद नहीं रह गई क्योंकि वहां धर्म बदलने का सवाल ही नहीं उठाया गया.' सिन्ध में अल्लाह की परिस्तिश के साथ साथ मूर्तियों की पूजा की भी इजाज़त हो गई......और इस तरह बावजूद इसलामी हुकूमत के भारत एक मूर्ति-पूजक मुल्क बना रह गया."*

जर्मन विद्वान वान क्रेमर लिखता है—

"सिन्ध में अबुल क़ासिम की हुकूमत में और उसके बाद भी ब्राह्मनों का आदर और मान ज्यों का त्यों क़ायम रहा. जमीन की मालुगुज़ारी भी 3 फ़ीसदी ज्यों की त्यों जारी रखी गई. हिन्दुओं को खुली इजाज़त थी कि वह मन-माने मन्दिर बनवायें, मुसलमानों के साथ व्यापार करें और निडर होकर अपनी बढ़ती के लिये जो कुछ मुनासिब समझें करें."†

इस पर आसानी से यक़ीन किया जा सकता है कि इन हालतों के अन्दर दोनों मज़हब एक दूसरे की तरफ़ बहुत दरजे तक उदार हो गये होंगे और दोनों में संस्कृतिक सम्बन्ध क़ायम हुआ होगा. लेकिन सिन्ध ही अकेला ऐसा सूबा नहीं था जहां दोनों फ़िरक़ों के बीच दोस्ताना सामाजिक व्यवहार चल रहा था. भारत के तमाम पश्चिमी किनारे के मुसलमान हिन्दुओं के साथ मिल जुल कर प्रेम पूर्वक रह रहे थे. मुसलिम यात्रियों के मुताबिक़ मुसलमानों और भारतीय बौद्धों में बेहद भाई चारा हो गया था. बुज़ुर्ग बिन शहरयार नवीं सदी के भारत के पश्चिमी तट के बारे में अपने निजी तजुरबों के बल पर लिखता है—"बिकुर या भिक्खुओं का फ़िरक़ा सिंहल का रहने वाला है. इन्हें मुसलमानों से मोहब्बत है और मुसलमानों की तरफ़ यह बेहद उदार हैं."‡ इन भिक्खुओं ने इसलाम के बारे में जानकारी हासिल करने के लिये अपना एक प्रतिनिधि अरब भेजा. यह प्रतिनिधि ख़लीफ़ा उमर के समय अरब पहुंचा. वापस लौटते हुए मकरान में उसकी मौत हो गई लेकिन उसका एक साथी सही सलामत सिंहल पहुंचा और वहां उसने इसलाम के बारे में अपनी जानकारी लोगों को बताई. उसने बताया कि मुसलमानों का ख़लीफ़ा निहायत सादा ज़िन्दगी बसर करता



انگریز اِتہاسکار ( مورخ ) سر ولیم میور افسوس کے ساتھ لکھتا ھے—

"یہ بات یاد رکھنی چاھئے کہ عرب وجیتا ( فاتح ) جو رویہ ماتحت قوموں کے ساتھ برتتے تھے وہ ھندستان میں جاکر بالکل اُلٹ گیا ۔ مندروں کو جیوں کا تیوں محفوظ چھوڑ دیا گیا اور مورتی پوجا کی کوئی مناھی نہیں کی گئی ۔ جیسا کہ ویل نے لکھا ھے 'ھندستان کی لڑائی دھرم یدھ یا جہاد نہیں رہ گئی کیونکہ وھاں دھرم بدلنے کا سوال ھی نہیں اُٹھایا گیا ۔' سندھ میں اللہ کی پرستش کے ساتھ ساتھ مورتیوں کی پوجا کی بھی اِجازت ھوگئی۔۔۔اور اِس طرح باوجود اِسلامی حکومت کے بھارت ایک مورتی پوجک ملک بنا رہ گیا ۔"*

جرمن ودوان وان کریمر لکھتا ھے—

سندھ میں ابوالقاسم کی حکومت میں اور اُس کے بعد بھی براھمنوں کا آدر اور مان جیوں کا تیوں قایم رھا ۔ زمین کی مالگذاری بھی 3 فیصدی جیوں کی تیوں جاری رکھی گئی ۔ ھندؤں کو کھلی اجازت تھی کہ وے منمانے مندر بنوائیں' مسلمانوں کے ساتھ ویاپار کریں اور نڈر ھوکر اپنی بڑھتی کے لئے جو کچھ مناسب سمجھیں کریں ۔"†

اِس پر آسانی سے یقین کیا جاسکتا ھے کہ اِن حالتوں کے اندر دونوں مذھب ایک دوسرے کی طرف بہت درجہ تک اُدار ھوگئے ھونگے اور دونوں میں سانسکرتک سمبندھ قایم ھوا ھوگا ۔ لیکن سندھ ھی اکیلا ایسا صوبہ نہیں تھا جہاں دونوں فرقوں کے بیچ دوستانہ ساماجک ویوھار چل رھا تھا ۔ بھارت کے تمام پچھمی کنارے کے مسلمان ھندؤں کے ساتھ مل جل کر پریم پوروک رہ رھے تھے ۔ مسلم یاتریوں کے مطابق مسلمانوں اور بھارتیہ بودھوں میں بیحد بھائی چارا ھوگیا تھا ۔ بزرگ بن شہریار نویں صدی کے بھارت کے پچھمی تٹ کے بارے میں اپنے نجی تجربوں کے بل پر لکھتا ھے—"بیکور یا بھکھوؤں کا فرقہ سنگھل کا رھنے والا ھے ۔ اِنھیں مسلمانوں سے محبت ھے اور مسلمانوں کی طرف یہ بیحد اُدار ھیں ۔"‡ اِن بھکھوؤں نے اِسلام کے بارے میں جانکاری حاصل کرنے کے لئے اپنا ایک پرتیندھی عرب بھیجا ۔ یہ پرتیندھی خلیفہ عمر کے سمئے عرب پہونچا ۔ واپس لوٹتے ھوئے مکران میں اُس کی موت ھوگئی لیکن اُس کا ایک ساتھی صحیح سلامت سنگھل پہونچا اور وھاں اُس نے اِسلام کے بارے میں اپنی جانکاری لوگوں کو بتائی ۔ اُس نے بتایا کہ مسلمانوں کا خلیفہ نہایت سادہ زندگی بسر کرتا

* The Caliphate it Rise, Decline and Fall, by W. Muir, pp. 354-3:5
† Islamic Culture, Vol. 1, No. 2, p. 205.
‡ Ajaib al-Hind (ed. P. A. Von Der Lith), p. 155.

( 951 ईसवी ), मसूदी ( 945 ईसवी ), मुताहर इब्न ताहिर, अल बेरूनी ( 999 ईसवी ), इब्न बतूता ( 943 ईसवी ), हमदुल्ला मुस्तफ़ी और बाद के दूसरे मुसलिम इतिहासकारों ने उस जमाने के हिन्दुस्तान के बारे में बहुत क़ीमती तारीख़ी, तिजारती, भौगोलिक और सामाजिक जानकारी की बातें अपनी पुस्तकों में दर्ज की हैं.

अब्बासियों के जमाने की अरबी संस्कृति ने यूनानी और भारतीय आर्य-संस्कृति से ही जन्म लिया है. अरब-अब्बासी संस्कृति का बाहरी रूप हालांकि सेमेटिक और ईरानी था लेकिन उसका वैज्ञानिक और आध्यात्मिक ज्ञान, उसकी वैद्यक और फ़िलासफ़ी पर गहरा भारतीय और बाद में यूनानी असर पड़ा. उसके अरबी ढांचे में भारतीय आत्मा रौशन हो रही थी. सिन्ध की फ़तह के बाद भारत की माली दौलत के साथ साथ भारत की अध्यात्मिक दौलत भी ख़लीफ़ा के दरबार में पहुंची. भारतीय विश्वविद्यालयों में तक्षशिला में ज़रूर मुसलिम विद्यार्थी रहे होंगे. काशमीर उस ज़माने में संस्कृति का ख़ास केन्द्र था जहां ईरानी-बौद्ध विद्यार्थी तालीम हासिल करने आया करते थे. अब्बासी कल्चर को ख़लीफ़ा के बरमकी ( बौद्ध ) वज़ीरों ने जो बढ़ावा और चेतना दी वह बिला शक तारीफ़ के क़ाबिल है. क़ानून और न्याय के मन्त्रियों की हैसियत से और कल्चरी रोशनी की हैसियत से कोई भी ईरानी या अरब राजकुल उनका मुक़ाबला नहीं कर सकता. यह बरमकी उस समय बौद्ध धर्म से इसलाम में दाख़िल हुये थे और इन्हीं की कोशिश से अरबों और भारतीयों में गहरा सांस्कृतिक सम्बंध क़ायम हुआ था. इन्हीं की कोशिशों से इसलामी संस्कृति ने खुले दिल से भारतीय संस्कृति की देन को दोनों हाथों से स्वीकार किया.

जब मुसलानों ने सन 707 ईसवी में सिन्ध विजय किया तो उन्होंने देखा कि देश बौद्धों और ब्राह्मन शासकों में बंटा हुआ है और ब्राह्मन धीरे धीरे बौद्धों को पछाड़ते जा रहे हैं. ब्राह्मनों और अरबों के संघर्ष में बौद्धों ने अरबों का साथ दिया और इस तरह अरबों की सिन्ध विजय को आसान बना दिया. सिन्ध विजय करने के बाद अबुल क़ासिम ने ऐलान किया कि "भारतवासी भी एक अल्लाह की परिस्तिश करते हैं और उनके मन्दिर भी ईसाइयों के गिरजों, यहूदियों के सिनागागों और मागियों के आतिशकदों की तरह हैं और उसी तरह से यह लोग अहले किताब हैं जिस तरह से ईसाई और यहूदी."* सिन्ध विजय के बाद से ही अरबों और भारतीयों में एक ऐसी मज़बूत प्रेम भावना क़ायम हो गई जिसमें ख़लीफ़ा तक ने सिन्ध में मन्दिरों को गिराने या इसलाम के प्रचार की इजाज़त नहीं दी.

* ( Balazuri, p. 439 )



( 951ع ) مسودی ( 945ع )، مطاہر ابن طاہر، البرونی ( 999ع )، ابن بطوطہ (943 عیسوی)، حمداللہ مصطفی اس زمانے کے اور بعد کے دوسرے مسلم اِتہاسکاروں نے اُس زمانے کے ھندستان کے بارے میں بہت قیمتی تاریخی، تجارتی، بھوگولک اور سماجک جانکاری کی باتیں اپنی پستکوں میں درج کی ھیں .

عباسیوں کے زمانے کی عربی سنسکرتی نے یونانی اور بھارتیہ آریہ سنسکرتی سے ھی جنم لیا ھے . عرب عباسی سنسکرتی کا باھری روپ حالانکہ سیمیٹک اور ایرانی تھا لیکن اُس کا ویگیانک اور آدھیاتمک گیان، اُس کی ویدیک اور اُس کی فلاسفی پر گہرا بھارتیہ اور بعد میں یونانی اثر پڑا . اُس کے عربی ڈھانچہ میں بھارتیہ آتما روشن ھو رھی تھی . سندھ کی فتح کے بعد بھارت کی مالی دولت کے ساتھ ساتھ بھارت کی آدھیاتمک دولت بھی خلیفہ کے دربار میں پہونچی . بھارتیہ وشودیالوں میں تکشلا میں ضرور مسلم ودیارتھی رھے ھونگے . کاشمیر اُس زمانہ میں سنسکرتی کا خاص کیندر تھا جہاں ایرانی بودھ ودیارتھی تعلیم حاصل کرنے آیا کرتے تھے . عباسی کلچر کو خلیفہ کے برمکی ( بودھ ) وزیروں نے جو بڑھاوا اور چیتنا دی وہ بلا شک تعریف کے قابل ھے . قانون اور نیائے کے منتریوں کی حیثیت سے اور کلچری روشنی کی حیثیت سے کوئی بھی ایرانی یا عرب راج کل اُن کا مقابلہ نہیں کرسکتا . یہ برمکی اُس سمئے بودھ دھرم سے اِسلام میں داخل ھوئے تھے اور اِنھیں کی کوشش سے عربوں اور بھارتیوں میں گہرا سانسکرتک سمبندھ قایم ھوا تھا . اِنھیں کی کوششوں سے اِسلامی سنسکرتی نے کھلے دل سے بھارتیہ سنسکرتی کی دین کو دونوں ھاتھوں سے سویکار کیا .

جب مسلمانوں نے سن 707 عیسوی میں سندھ وجئے کیا تو اُنھوں نے دیکھا کہ دیش بودھوں اور براھمن شاسکوں میں بٹا ھوا ھے اور براھمن دھیرے دھیرے بودھوں کو پچھاڑتے جا رھے ھیں . براھمنوں اور عربوں کے سنگھرش میں بودھوں نے عربوں کا ساتھ دیا اور اِس طرح عربوں کی سندھ وجئے کو آسان بنا دیا . سندھ وجئے کرنے کے بعد ابوالقاسم نے اعلان کیا کہ "بھارتواسی بھی ایک اللہ کی پرستش کرتے ھیں اور اُن کے مندر بھی عیسائیوں کے گرجوں، یہودیوں سناگاگوں اور ماگیوں کے آتشکدوں کی طرح ھیں اور اُسی طرح سے یہ لوگ اھل کتاب ھیں جس طرح سے عیسائی اور یہودی ." سندھ وجئے کے بعد سے ھی عربوں اور بھارتیوں میں ایک ایسی مضبوط پریم بھاونا قایم ھوگئی جس میں خلیفہ تک نے سندھ میں مندروں کو گرانے یا اِسلام کے پرچار کی اِجازت نہیں دی .

तरह पेश की जाती थीं. इन बातों से मुसलमान हिन्दुस्तान के और ज्यादा क़रीब आते थे और उसे अपना पाक मुल्क समझकर उससे मुहब्बत करने लगते थे. लोग उस वक़्त तक दन्त कथायें नहीं गढ़ा करते जब तक कि उसके पीछे कोई ख़ास वजह न हो.

इसी तरह हिन्दू भी मुसलमानों के काबे को अपना ही धर्म मन्दिर समझते थे. एक जमाने में काबा, अरब और अरब के आस पास रहने वाले, सभी धर्म मज़हब वालों का एक पाक मरक़ज था. नीचे के बयान को नामुमकिन मानते हुये भी हमें उससे हैरत में नहीं आना चाहिये. बर्टन लिखता है—

"हिन्दू पन्डित इस बात को दावे के साथ कहते हैं कि मक्के में शिव और पार्वती 'कपोतेश्वर' और 'कपोतेश्वरी' के रूप में विराजमान हैं...कुछ लेखकों का कहना है कि हज़रत मुहम्मद के समय मक्का के देवी देवताओं में लकड़ी में खुदी हुई कपोतेश्वर और कपोतेश्वरी की मूर्तियां थीं जिन्हें हज़रत अली ने पैग़म्बर के कन्धों पर चढ़कर नीचे गिरा दिया था."*

बिलफ़ोर्ड लिखता है—

"हिन्दू कहते हैं कि मक्का अथवा 'मोक्षेश' या 'मोक्ष-स्थान' में जो काला पत्थर अथवा 'संग-ए-अस्वद' है वह 'मोक्षेश्वर' भगवान शिव के अवतार का प्रतीक है. भगवान शिव और पार्वती ने अल-हेजाज के अपने भक्तों की तपस्या से ख़ुश होकर मोक्षेश्वर के रूप में मक्का में अवतार लिया था."†

उस जमाने के मुसलमान यात्रियों और मुसन्निफ़ों ने भारत की उस समय की हालत को अपने ग्रंथों में दर्ज किया है. सिंध के इतिहास पर पहला ग्रंथ 'छछ-नामा' है, जो मूल रूप में अरबी में लिखा गया. वह मुसलिम इतिहासकारों की हिन्दुस्तान पर पहली इतिहास की पुस्तक है. 'छछ-नामा' के बाद इब्न ख़ुरदादबीह ने सन 845 ईसवी में हिन्दुस्तान के भूगोल पर एक पुस्तक लिखी. एक दूसरी पुस्तक अबु ज़ाहिद ने सन 916 ईसवी में लिखी जिसमें सुलेमान सौदागर की भारत और चीन की यात्राओं का बयान दर्ज है. इसमें हिन्दुस्तान की मज़हबी और सामाजिक हालतों पर बहुत काफ़ी रोशनी डाली गई है. इसी ज़माने का एक दूसरा इतिहासकार अबु ज़ाहिद अलबलख़ी (934 ईसवी) है जिसने हिन्दुस्तान के इतिहास पर बहुत मुस्तनद और तफ़सील से लिखा है और जिसका बाद के लेखकों ने भी सनद के तौर पर हवाला दिया है. इनके अतिरिक्त इब्न रिस्ताह (903 ईसवी), अबु जल्फ़(943 ईसवी), अस्ताख़री



طرح پیش کی جاتی تھیں . ان باتوں سے مسلمان ھندستان کے اور زیادہ قریب آتے تھے اور اُسے اپنا پاک ملک سمجھکر اُس سے محبت کرنے لگتے تھے . لوگ اُس وقت تک دنت کتھائیں نہیں گڑھا کرتے جب تک کہ اُس کے پیچھے کوئی خاص وجہ نہ ھو .

اسی طرح ھندو بھی مسلمانوں کے کعبہ کو اپنا ھی دھرم مندر سمجھتے تھے . ایک زمانہ میں کعبہ' عرب اور عرب کے آس پاس رھنے والے' سبھی دھرم مذھب والوں کا ایک پاک مرکز تھا . نیچے کے بیان کو ناممکن مانتے ھوئے بھی ھمیں اُس سے حیرت میں نہیں آنا چاھئیے . برٹن لکھتا ھے—

" ھندو پنڈت اس بات کو دعوی کے ساتھ کہتے ھیں کہ مکہ میں شو اور پاروتی ' کپوتیشور ' اور ' کپو تیشوری ' کے روپ میں وراجمان ھیں... کچھ لیکھکوں کا کہنا ھے کہ حضرت محمد کے سمے مکہ کے دیوی دیوتاؤں میں لکڑی میں کھدی ھوئی کپوتیشور اور کپوتیشوری کی مورتیاں تھیں جنھیں حضرت علی نے پیغمبر کے کندھوں پر چڑھ کر نیچے گرا دیا تھا . "*

ولفورڈ لکھتا ھے—

" ھندو کہتے ھیں کہ مکہ اتھوا ' موکشیش ' یا ' موکش استھان ' میں جو کالا پتھر اتھوا ' سنگ اسود ' ھے وہ 'موکشیشور' بھگوان شو کے اوتار کا پرتیک ھے. بھگوان شو اور پاروتی نے الحجاز کے اپنے بھکتوں کی تپسیا سے خوش ھو کر موکشیشور کے روپ میں مکہ میں اوتار لیا تھا . "†

اُس زمانے کے مسلمان یاتریوں اور مصنفوں نے بھارت کی اُس سمے کی حالت کو اپنے گرنتھوں میں درج کیا ھے . سندھ کے اِتہاس پر پہلا گرنتھ ' چھچھ - نامہ ' ھے' جو مول روپ میں عربی میں لکھا گیا . وہ مسلم اتہاسکاروں کی ھندستان پر پہلی اِتہاس کی پستک ھے ' چھچھ - نامہ ' کے بعد ابن خرداد بیہ نے سن 845 عیسوی میں ھندستان کے بھوگول پر ایک پستک لکھی . ایک دوسری پستک ابوزاھد نے سن 916 عیسوی میں لکھی جس میں سلیمان سوداگر کی بھارت اور چین کی یاتراؤں کا بیان درج ھے . اِس میں ھندستان کی مذھبی اور سماجک حالتوں پر بہت کافی روشنی ڈالی گئی ھے. اِسی زمانہ کا ایک دوسرا اِتہاسکار ابوزاھد البلخی ( 934 عیسوی ) ھے جس نے ھندستان کے اِتہاس پر بہت مستند اور تفصیل سے لکھا ھے اور جس کا بعد کے لیکھکوں نے بھی سند کے طور پر حوالہ دیا ھے. ان کے اترکت ابن رستاح (903ع)' ابوزلف (943 عیسوی)' استاخری

* Burton's Pilgrimage to Al-Madinah, Vol. II, p. 174.
† AS. Soc. Vols. III and IV.

**वापस लौटते हुये रास्ते में उसकी मौत हो गई. मरते समय चेरूमन ने मुसलमानों को शाही फ़रमान के ज़रिये मसजिदें बनाने की इजाज़त दे दी. उसी के मुताबिक़ मलाबार में कई** जगह मसजिदें बनाई गईं. **बलाज़ूरी भी सन 842 ईसवी के क़रीब पश्चिमोत्तर भारत के एक राजा के इसलाम क़ुबूल करने की घटना सुनाता है.* बुज़र्ग बिन शहरयार और सौदागर सुलेमान, जो नवीं सदी में हिन्दुस्तान आये थे, लिखते हैं कि हिन्दुस्तान के राजाओं के दिलों में मुसलमानों की तरफ़ से बेहद सद्‌भावना मौजूद थी.**

**पता नहीं कैसे मुसलमानों के दिलों में यह विश्वास घर कर गया है कि इनसानी क़ौम के पहले पैग़म्बर और पहले इनसान हज़रत आदम बहिश्त से निकाले जाने के बाद हिन्दुस्तान में सिंहलद्वीप में आकर उतरे. हिन्दुस्तान में जो ख़ुशबूदार फूल और जड़ी बूटी भरी पड़ी हैं वह हज़रत आदम ही बहिश्त के नन्दनवन से यहां लाये थे. जिस पत्थर पर हज़रत आदम उतरे उस पर उनके क़दमों का निशान आज तक मौजूद है. इसी पत्थर के निशान को सिंहल के बौद्ध भगवान बुद्ध के क़दमों का निशान समझकर ताज़ीम करते हैं. बाद के मुसलिम लेखकों ने दूसरे देशों के मुक़ाबले में भारत के बड़प्पन पर इस बिना पर और ज्यादा ज़ोर दिया है कि हज़रत आदम मानव जाति के पहले पैग़म्बर थे और अल्लाह ने अपना हुक्म सब से पहले उन्हीं को सुनाया और आदम चूंकि उस वक़्त हिन्दुस्तान में थे इसलिये हिन्दुस्तान ही को सब से पहले अल्लाह का हुक्म सुनने का फ़ख़्र हो सकता है. मुमकिन है कि शायद इसीलिये इसलाम के पैग़म्बर ने फ़रमाया है—"मैं हिन्दुस्तान से बहकर आई हुई अल्लाह के ज्ञान की मन्द मन्द सुगन्ध सूंघ रहा हूं." आम मुसलमानों के लिये हिन्दुस्तान की सरज़मीन की पाकीज़गी की यह आख़िरी और ज़बर्दस्त दलील है. इस तरह की कहानियां क्यों शुरू हुईं इसकी मैं वजह नहीं खोज सका लेकिन फिर भी ये भारत के मुसलमानों के आम विश्वास का जुज़ बनी हुई हैं. पढ़े लिखे और समझदार लोग भी इन दन्त कथाओं को लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ सच मानते हैं.**

**इब्न बतूता ( 1377 ईसवी ) ने भी हज़रत आदम के इस पवित्र चरन-चिन्ह की ज़ियारत ( यात्रा ) की थी. इस चिन्ह को देखकर उसने लिखा है—"हज़रत आदम का यह पवित्र चर-चिन्ह एक ऊंचे काले पत्थर पर नक़्श है. यह चिन्ह पत्थर पर इतना अंदर धंस गया है कि अब तक ज्यों का त्यों क़ायम है. यह निशान सवा आठ फ़ुट लम्बा है."† इस सच्चाई को साबित करने के लिये कि हिन्दुस्तान सब देशों का सिरमौर है इस तरह की दलीलें आख़री सबूत की**



واپس لوٹتے ھوئے راستہ میں اس کی موت ھوگئی . مرتے سمے چیرومن نے مسلمانوں کو شاھی فرمان کے ذریعہ مسجدیں بنانے کی اجازت دے دی. اُسی کے مطابق ملابار میں کئی جگہ مسجدیں بنائی گئیں . بلاجوری بھی سن 812 عیسوی کے قریب پچھموتر بھارت کے ایک راجا کے اسلام قبول کرنے کی گھٹنا سناتا ھے .* بزرگ بن شہریار اور سوداگر سلیمان جو نویں صدی میں ھندستان آئے تھے، لکھتے ھیں کہ ھندستان کے راجاؤں کے دلوں میں مسلمانوں کی طرف سے بیحد سدبھاونا موجود تھی .

پتہ نہیں کیسے مسلمانوں کے دلوں میں یہ وشواس گھر کر گیا کہ انسانی قوم کے پہلے پیغمبر اور پہلے انسان حضرت آدم بہشت سے نکالے جانے کے بعد ھندستان میں سنگل دیپ میں آ کر اُترے . ھندستان میں جو خوشبودار پھول اور جڑی بوٹی بھری پڑی ھیں وہ حضرت آدم ھی بہشت کے نندن بن سے یہاں لائے تھے . جس پتھر پر حضرت آدم اُترے اس پر ان کے قدموں کا نشان آج تک موجود ھے . اِسی پتھر کے نشان کو سنگھل کے بودھ بھگوان بدھ کے قدموں کا نشان سمجھ کر تعظیم کرتے ھیں . بعد کے مسلم لیکھکوں نے دوسرے دیشوں کے مقابلہ میں بھارت کے بڑپن پر اِس بنا پر اور زیادہ زور دیا ھے کہ حضرت آدم مانو جاتی کے پہلے پیغمبر تھے اور اللہ نے اپنا حکم سب سے پہلے انہیں کو سنایا اور آدم چونکہ اُس وقت ھندستان میں تھے اِس لئے ھندستان ھی کو سب سے پہلے اللہ کا حکم سننے کا فخر ھو سکتا ھے . ممکن ھے کہ شاید اِسی لئے اسلام کے پیغمبر نے فرمایا ھے—" میں ھندستان سے بہ کر آئی ھوئی اللہ کے گیان کی مند مند سگندھ سونگھ رھا ھوں ." عام مسلمانوں کے لئے ھندستان کی سر زمین کی پاکیزگی کی یہ آخری اور زبردست دلیل ھے . اِس طرح کی کہانیاں کیوں شروع ھوئیں اِس کی میں وجہ نہیں کھوج سکا لیکن پھر بھی یہ بھارت کے مسلمانوں کے عام وشواس کی جز بنی ھوئی ھیں . پڑھے لکھے اور سمجھدار لوگ بھی ان دنت کتھاؤں کو لفظ - بہ - لفظ سچ مانتے ھیں .

ابن بطوطہ ( 1377 عیسوی ) نے بھی حضرت آدم کے اِس پوتر چرن-چنھ کی زیارت ( یاترا ) کی تھی . اِس چنھ کو دیکھ کر اُس نے لکھا ھے—" حضرت آدم کا یہ پوتر چرن - چنھ ایک اونچے کالے پتھر پر نقش ھے . یہ چنھ پتھر پر اتنا اندر دھنس گیا ھے کہ اب تک جیوں کا تیوں قائم ھے . یہ نشان سوا آٹھ فٹ لمبا ھے."† اِس سچائی کو ثابت کرنے کے لئے کہ ھندستان سب دیشوں کا سرمور ھے اِس طرح کی دلیلیں آخری ثبوت کی

* फ़ुतूह अल—बलदान (लेडेन) पृश्ठ—446.

* فتوح البلدان ( لیڈن ) پرشٹھ—446.

† Ibn Batuta (H. A. R. Gibb p. 295.

तैयार करके ख़लीफ़ा की ख़िदमत में पेश की.* इस बात के भी बहुत से सुबूत मिलते हैं कि सातवीं सदी ईसवी के शुरू में ईरान से लगे हुये हिन्दुस्तान के सूबों के साथ अरब व्यापारियों का तिजारती सम्बन्ध क़ायम था और वे जाटों और मद्रों से परिचित थे. चूंकि हिन्दुस्तान के इन हिस्सों पर एक समय ईरानियों की हुकूमत थी इसलिये इन हिस्सों के हिन्दुस्तानी क़बीलों और ईरानियों के बीच नज़दीकी ताल्लुक़ात रहे होंगे. जब ईरान ने इसलाम क़बूल किया तो तिजारती सम्बन्ध के साथ साथ यह नज़दीकी और ज्यादा बढ़ी होगी. एक बात हमें और ध्यान में रखनी चाहिये कि एक ज़माने में ख़ुरासान, और तुर्किस्तान तथा ईरान में बौद्ध धर्म का बेहद प्रचार था और बौद्ध धर्म के अनुयायी इराक़, मोसल और शाम की सरहद तक फैले हुये थे. इन देशों के निवासियों ने हालांकि बौद्ध धर्म की जगह इसलाम स्वीकार कर लिया था फिर भी उनके दिलों में हिन्दुस्तान के लिए एक मुहब्बत और इज्ज़त की भावना ज़रूर रही होगी.

जबकि आपस के ताल्लुक़ात बहुत थोड़े थे तब भी मुसलमान हिन्दुस्तान को दुनिया का सब में अधिक तहज़ीब-याफ़्ता मुल्क समझकर उसकी बेहद क़द्र और इज्ज़त करने लगे थे. प्रमान के तौर पर हिन्दुस्तान की तारीफ़ में इसलाम के पैग़म्बर और उनके मशहूर अनुयाइयों की रवायतें लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ पेश की जाती थीं. इस तरह की रिवायतों पर थोड़ा बहुत मतभेद हो सकता है लेकिन यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि शुरू ज़माने के इसलाम के साहित्य में हिन्दुस्तान की बेहद तारीफ़ें भरी पड़ी हैं.

उस समय के अरब सौदागरों ने गुजरात के बल्हर राजाओं और मलाबार के सामुरी राजाओं को अपनी तरफ़ बेहद मेहरबान और दोस्ती से भरा हुआ पाया. समुद्र के किनारे किनारे उन्हें अपनी बस्तियां बसाने और मसजिदें बनाने की इजाज़त थी. इन मुसलमानों ने हिन्दू लड़कियों से ही शादी की जिनकी मिली जुली औलादें मलाबार में 'मोक़ला' और कोंकण में 'हटिया' के नाम से मशहूर हुईं. यदि हम मलाबार के राजा चेरूमन पेरूमल के इसलाम क़ुबूल करने की आम फ़हम कहानी स्वीकार कर लें तो हमें हिन्दुस्तान की मुसलिम नौआबादियों का समय पैग़म्बर की ज़िन्दगी के ही क़रीब मानना पड़ेगा. कहानी यह है कि अरब सौदागरों का एक जत्था सिंहलद्वीप में 'आदम की चोटी' की यात्रा करने के लिये रवाना हुआ. क्रैंगानोर के बन्दरगाह में राजा चेरूमल पेरूमल ने इन सौदागरों का स्वागत किया. सौदागरों ने पैग़म्बर मोहम्मद द्वारा चांद के टुकड़े किये जाने की कहानी राजा को सुनाई. राजा ने इसलाम स्वीकार कर लिया और चुपचाप इन सौदागरों के साथ मदीने की यात्रा की.



تیار کر کے خلیفہ کی خدمت میں پیش کی.* اِس بات کے بھی بہت سے ثبوت ملتے ہیں کہ ساتویں صدی عیسوی کے شروع میں ایران سے لگے ہوئے ہندستان کے صوبوں کے ساتھ عرب وپاپاریوں کا تجارتی سمبندھ قائم تھا اور وے جاٹوں اور مدروں سے پریچت تھے. چونکہ ہندستان کے اِن حصوں پر ایک سمے ایرانیوں کی حکومت تھی اِس لئے اِن حصوں کے ہندستانی قبیلوں اور ایرانیوں کے بیچ نزدیکی تعلقات رہے ہونگے. جب ایران نے اسلام قبول کیا تو تجارتی سمبندھ کے ساتھ ساتھ یہ نزدیکی اور زیادہ بڑھی ہوگی. ایک بات ہمیں اور دھیان میں رکھنی چاہئے کہ ایک زمانے میں خراسان' اور ترکستان تتھا ایران میں بودھ دھرم کا بیحد پرچار تھا اور بودھ دھرم کے انویائی عراق' موصل اور شام کی سرحد تک پھیلے ہوئے تھے. اِن دیشوں کے نواسیوں نے حالانکہ بودھ دھرم کی جگہ اسلام سویکار کر لیا تھا پھر بھی اُن کے دلوں میں ہندستان کے لئے ایک محبت اور عزت کی بھاونا ضرور رہی ہوگی.

جبکہ آپس کے تعلقات بہت تھوڑے تھے تب بھی مسلمان ہندستان کو دنیا کا سب میں ادھک تہذیب یافتہ ملک سمجھ کر اُس کی بیحد قدر اور عزت کرنے لگے تھے. پرمان کے طور پر ہندستان کی تعریف میں اسلام کے پیغمبر اور اُن کے مشہور انویائیوں کی روایتیں لفظ بہ-لفظ پیش کی جاتی تھیں. اِس طرح کی روایتوں پر تھوڑا بہت مت بھید ہو سکتا ہے لیکن یہ بات دعوی کے ساتھ کہی جا سکتی ہے کہ شروع زمانے کے اسلام کے ساہتیہ میں ہندستان کی بیحد تعریفیں بھری پڑی ہیں.

اُس سمے کے عرب سوداگروں نے گجرات کے بلہر راجاؤں اور مالابار کے سامری راجاؤں کو اپنی طرف بیحد مہربان اور دوستی سے بھرا ہوا پایا. سمدر کے کنارے کنارے اُنہیں اپنی بستیاں بسانے اور مسجدیں بنانے کی اجازت تھی. اِن مسلمانوں نے ہندو لڑکیوں سے ہی شادی کی جن کی ملی جلی اولادیں مالابار میں 'موپلہ' اور کوکن میں 'ہٹیا' کے نام سے مشہور ہوئیں. یدی ہم مالابار کے راجا چیرومن پیرومل کے اسلام قبول کرنے کی عام فہم کہانی سویکار کرلیں تو ہمیں ہندستان کی مسلم نو آبادیوں کا سمے پیغمبر کی زندگی کے ہی قریب ماننا پڑیگا. کہانی یہ ہے کہ عرب سوداگروں کا ایک جتھا سنگھل دیپ میں 'آدم کی چوٹی' کی یاترا کرنے کے لئے روانہ ہوا. کرینگانور کے بندرگاہ میں راجا چیرومن پیرومل نے اِن سوداگروں کا سواگت کیا. سوداگروں نے پیغمبر محمد دوارا چاند کے ٹکڑے کئے جانے کی کہانی راجا کو سنائی. راجا نے اِسلام سویکار کر لیا اور چپ چاپ اِن سوداگروں کے ساتھ مدینے کی یاترا کی.

* Islami Culture Vol. 1, No. 2, pp. 190-91.

उम्मीदों के लिये जगाकर तैयार कर दिया. ये परिवर्तन अपने आप में फ़ायदेमन्द या नुक़सानदह हैं इसका फ़ैसला मैं नहीं कर सकता, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि इस तब्दीली ने भारत की समाजी बुनियादों को ही बदल दिया. आर्यों के आगमन ने भारत की समाजी ज़िन्दगी को जिस तरह जड़ से हिला दिया था तुर्कों का हमला उससे थोड़ा ही कुछ कम रहा. लेकिन तूफ़ान के बाद शान्ति लाज़मी है. भूकम्प के बाद तामीर ज़रूरी है. जब नदियों का सङ्गम होता है तो दोनों नदियों की धारायें गुज़रते हुये टकराती हैं लेकिन फ़ौरन ही वे शान्ति होकर रल मिलकर एक धारा में बहने लग जाती हैं. प्रयाग के बाद गंगा जमुना की धारा में कोई फ़र्क़ नहीं रह जाता. उसी तरह हिन्दू और मुसलमान आपस में टकरा कर मुहब्बत के एक इनसानी संगम में मिले थे और फिर उनकी संस्कृतियां रल मिल कर भारतीय संस्कृति की अखन्ड धारा बनकर बहने लगी थीं कि जिस ने सनअत और हिरफ़त, कला और विज्ञान, साहित्य और कविता, चित्रकला और मूर्तिकला सभी को सरसब्ज़ और हरा भरा कर दिया था. लेकिन हम कलचरी मेल जोल की, उस अखन्ड धारा को खन्ड खन्ड करने की, जमुना की धारा को गंगा की धारा से अलहदा करने की शर्मनाक कोशिश करने लगे.

भारत में तुर्कों के हमलों के तीन सौ बरस पहले मुसलमानों में भारत की महान सभ्यता और उसके ज्ञान के अगाध भन्डार को समझने और उसके तरफ़ आदर प्रकट करने की लगातार कोशिश हो रही थीं. भारत और अरब के बीच बहुत पुराने ज़माने से तिजारती ताल्लुक़ात चले आ रहे थे लेकिन मौजूदा ताल्लुक़ात का सिरा हम उसी वक़्त से जोड़ सकते हैं जब अरबों ने अपने पूर्वी साम्राज्य में तहज़ीब के नये नये मरकज़ क़ायम किये. ख़लीफ़ा उमर के ज़माने तक इसलामी दुनिया को हिन्दुस्तान के बारे में बहुत कम सच्ची जानकारी थी. हिन्दुस्तान के समुद्री किनारों के बारे में अरब और ईरानी मल्लाहों को थोड़ी बहुत वाक़फ़ीयत थी और वे हिन्दुस्तान की तिजारती दौलत की तारीफ़ के गीत गाया करते थे. जब ख़लीफ़ा उमर ने एक अरब मल्लाह से हिन्दुस्तान के बारे में पूछा तो वह तारीफ़ के पुल बांधने लगा कि—"हिन्दुस्तान के दरिया मोतियों से भरे हैं और उसके पहाड़ों में हीरे जवाहरातों की खानें हैं और उसके पेड़ पौधे ख़ुशबुओं से मुअत्तर हैं." लेकिन हिन्दुस्तान के बारे में सही सही जानकारी हासिल करने की पहली कोशिश शायद ख़लीफ़ा उसमान के ज़माने में की गई. उसमान ने 624 और 664 ईसवी के बीच हकीम बिन जबाला को मुक़र्रर किया कि वह पता लगाकर हिन्दुस्तान के बारे में सही सही ख़बरें ख़लीफ़ा को दे. जबाला ने हिन्दुस्तान आ कर यहां के बारे में एक रिपोर्ट ( Thaghar-al-Hind )



اُمیدوں کے لئے جگا کر تیار کر دیا ۔ یہ پریورتن اپنے آپ میں فایدہ مند یا نقصان دہ ھیں اِس کا فیصلہ میں نہیں کر سکتا' لیکن اِس میں کوئی شک نہیں کہ اِس تبدیلی نے بھارت کی سماجی بنیادوں کو ھی بدل دیا۔ آریوں کے آگمن نے بھارت کی سماجی زندگی کو جس طرح جڑ سے ھلا دیا تھا ترکوں کا حملہ اُس سے تھوڑا ھی کچھ کم رھا ۔ لیکن طوفان کے بعد شانتی لازمی ھے ۔ بھوکمپ کے بعد تعمیر ضروری ھے ۔ جب ندیوں کا سنگم ھوتا ھے تو دونوں ندیوں کی دھارائیں گزرتے ھوئے ٹکراتی ھیں لیکن فوراً ھی وے شانت ھو کر رل مل کر ایک دھارا میں بہنے لگ جاتی ھیں ۔ پریاگ کے بعد گنگا جمنا کی دھارا میں کوئی فرق نہیں رہ جاتا ۔ اُسی طرح ھندو اور مسلمان آپس میں ٹکرا کر محبت کے ایک اِنسانی سنگم میں ملے تھے اور پھر اُن کی سنسکرتیاں رل مل کر بھارتیہ سنسکرتی کی اکھنڈ دھارا بن کر بہنے لگی تھیں کہ جس نے صنعت اور حرفت' کلا اور وگیان' ساھتیہ اور کویتا' چتر کلا اور مورتی کلا سبھی کو سرسبز اور ھرا بھرا کر دیا تھا ۔ لیکن ھم کلچری میل جول کی' اُس اکھنڈ دھارا کو کھنڈ کھنڈ کرنے کی' یمونا کی دھارا کو گنگا کی دھارا سے علیحدہ کرنے کی شرمناک کوشش کرنے لگے ۔

بھارت میں ترکوں کے حملوں کے تین سو برس پہلے سے مسلمانوں میں بھارت کی مہان سبھیتا اور اُس کے گیان کے اگادھ بھنڈار کو سمجھنے اور اُس کے طرف آدر پرکٹ کرنے کی لگاتار کوشش ھو رھی تھیں۔ بھارت اور عرب کے بیچ بہت پرانے زمانے سے تجارتی تعلقات چلے آ رھے تھے لیکن موجودہ تعلقات کا سرا ھم اسی وقت سے جوڑ سکتے ھیں جب عربوں نے اپنے پوروی سامراجیہ میں تہذیب کے نئے نئے مرکز قائم کئے۔ خلیفہ عمر کے زمانے تک اسلامی دنیا کو ھندستان کے بارے میں بہت کم سچی جانکاری تھی ۔ ھندستان کے سمدری کناروں کے بارے میں عرب اور ایرانی ملاحوں کو تھوڑی بہت واقفیت تھی اور وے ھندستان کی تجارتی دولت کی تعریف کے گیت گایا کرتے تھے ۔ جب خلیفہ عمر نے ایک عرب ملاح سے ھندستان کے بارے میں پوچھا تو وہ تعریف کے پل باندھنے لگا کہ—"ھندستان کے دریا موتیوں سے بھرے ھیں اور اُس کے پہاڑوں میں ھیرے جواھراتوں کی کانیں ھیں اور اُس کے پیڑ پودھے خوشبوؤں سے معطر ھیں ۔" لیکن ھندستان کے بارے میں صحیح صحیح جانکاری حاصل کرنے کی پہلی کوشش شاید خلیفہ عثمان کے زمانے میں کی گئی ۔ عثمان نے 624 اور 664 عیسوی کے بیچ حکیم بن جبالہ کو مقرر کیا کہ وہ پتا لگا کر ھندستان کے بارے میں صحیح صحیح خبریں خلیفہ کو دے ۔ جبالہ نے ھندستان آکر یہاں کے بارے میں ایک رپورٹ ( Thaghar-al-Hind )

# हिन्दू-मुसलमानों के कलचरी मेल-जोल की शुरूआत

डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी एम० ए०, डी०, फ़िल०

तुर्कों के पंजाब आने के एक सदी बाद ही हिन्दू और मुसलमानों के कलचरी मेल जोल की पहली दाग़बेल मिली-जुली बोली के रूप में पड़ी. हिन्दी और फ़ारसी ने मिलकर उर्दू बोली को जन्म दिया. मिली जुली बोली की पैदायश इस बात को जाहिर करती है कि उस वक़्त तक हिन्दू और मुसलमानों में मेल-जोल की एक ख़्वाहिश हमारी सामाजिक, नैतिक, और दिमाग़ी जिन्दगी के हर ख़ित्ते में गहराई के साथ प्रवेश कर रही थी. इस मिली जुली चेतना ने कलचरी मेल जोल की गहरी छाप हमरी कला, हमारे साहित्य और हमारे धर्म के ऊपर छोड़ी है.

भारत में इस कलचरी मेल जोल की छानबीन की अब तक बहुत थोड़ी कोशिश की गई है. इस सम्बन्ध में जो चन्द पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उनमें मौलवी सैयद सुलेमान नदवी की 'अरब और हिन्द के ताल्लुक़ात', डाक्टर डी० आर० भन्डारकर की The Slow Progress of Islam in India, डाक्टर ताराचन्द की The Influence of Islam on Indian Culture और एक यूरोपीय विद्वान की पुस्तक Scriptorum Arabum de Rebus Iudicis loci et Opuscula Inedita आदि मुख्य हैं. पिछले सैकड़ों बरस में अनेक मुसलमान सन्तों, राजनीतिज्ञों और विद्वानों ने हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमानों के मिलने से जो समस्यायें पैदा हो गई थीं उनके प्रेम पूर्न हल खोजने में बहुत सा चिन्तन और मनन किया है. भारतीय विद्वानों द्वारा इन कोशिशों को जितना महत्व दिया जाना चाहिये उतना महत्व नहीं दिया गया. महत्व देना तो दूर रहा दोनों सम्प्रदायों के विद्वान अनैतिहासिक और भ्रान्त दलीलों द्वारा मिली जुली भारतीय संस्कृति को खन्ड खन्ड करने के और हिन्दू और मुसलमानों के दिलों को एक दूसरे से फाड़ने की कोशिश कर रहे थे. हिन्दू और मुसलमानों ने सैकड़ों बरस तक जिस भारतीय संस्कृति को इतना समृद्ध बनाया है उन्हीं की औलाद आज शर्मनाक तरीक़ों से उसकी धज्जियां उड़ाने में मशग़ूल हैं.

तुर्कों का हिन्दुस्तान में आना एक उतना ही अजीब-ओ-ग़रीब क़ुदरती वाक़या है जितना तूफ़ानों का एक जगह से दूसरी जगह मंडराना ! तुर्कों ने आकर हिन्दुस्तान को उसकी जड़ों तक हिला दिया और लोगों को झकझोर कर नई

# ھندو مسلمانوں کے کلچری میل جول کی شروعات

ڈاکٹر لطیف دفتری اے . ایم .، ڈی .، فل .

ترکوں کے پنجاب آنے کے ایک صدی بعد ھی ھندو اور مسلمانوں کے کلچری میل جول کی پہلی داغ بیل ملی جلی بولی کے روپ میں پڑی . ھندی اور فارسی نے ملکر اردو بولی کو جنم دیا . ملی جلی بولی کی پیدائش اِس بات کو ظاھر کرتی ھے کہ اُس وقت تک ھندو اور مسلمانوں میں میل-جول کی خواھش ھماری سماجک، نیتک اور دماغی زندگی کے ھر خطہ میں گہرائی کے ساتھ پرویش کر رھی تھی . اِس ملی جلی چیتنا نے کلچری میل جول کی گہری چھاپ ھماری کلا، ھمارے ساھتیہ اور ھمارے دھرم کے اوپر چھوڑی ھے .

بھارت میں اِس کلچری میل جول کی چھان بین کی اب تک بہت تھوڑی کوشش کی گئی ھے . اِس سمبندھ میں جو چند پستکیں پرکاشت ھوئی ھیں اُن میں مولوی سید سلیمان ندوی کی 'عرب اور ھند کے تعلقات' ڈاکٹر ڈی . آر . بھنڈارکر کی The Slow Progress of Islam in India, ڈاکٹر تارا چند کی The Influence of Islam on Indian Culture اور ایک یوروپین ودوان کی پستک Scriptorum Arabum de Rebns Indicis loci et Opuscula Inedita آدی مکھیہ ھیں . پچھلے سیکڑوں برس میں انیک مسلمان سنتوں، راجنیتگیوں اور ودوانوں نے ھندستان میں ھندو اور مسلمانوں کے ملنے سے جو سمسیائیں پیدا ھوگئی تھیں اُن کے پریم پورن حل کھوجنے میں بہت سا چنتن اور منن کیا ھے . بھارتیہ ودوانوں دوارا اِن کوششوں کو جتنا مہتو دیا جانا چاھئے اتنا مہتو نہیں دیا گیا. مہتو دینا تو دور رھا دونوں سمپردایوں کے ودوان انیتہاسک اور بھرانت دلیلوں دوارا ملی جلی بھارتیہ سنسکرتی کو کھنڈ کھنڈ کرنے کے اور ھندو اور مسلمانوں کے دلوں کو ایک دوسرے سے پھاڑنے کی کوشش کر رھے تھے . ھندو اور مسلمانوں نے سیکڑوں برس تک جس بھارتیہ سنسکرتی کو اتنا سمردھ بنایا ھے اُنھیں کی اولاد آج شرمناک طریقوں سے اُس کی دھجیاں اُڑانے میں مشغول ھیں .

ترکوں کا ھندستان میں آنا ایک اُتنا ھی عجیب و غریب قدرتی واقعہ ھے جتنا طوفانوں کا ایک جگہ سے دوسری جگہ منڈرانا ! ترکوں نے آکر ھندستان کو اُس کی جڑوں تک ھلا دیا اور لوگوں کو جھنجھوڑ کر نئی

थे उन्होंने पहले महायुद्ध के पहले भारत की यात्रा भी की थी. एक बार भारत के विशय में बातचीत होते समय हम ने सुझाया कि ऐसा मालूम होता है कि ब्रिटिश सरकार की मन्शा भारतीय ईसाइयों की मदद से एक तीसरी अल्पसंख्यक जनता की समस्या खड़ी करने की है. उन्होंने कहा कि यह सच है, तथा उस समय के भाग्य-विधाताओं ने, उनसे कहा कि उनकी यह योजना कि वह इन आदिम जातियों को ईसाई बना कर हिन्दुओं और मुसलमानों के मुक़ाबले में इन्हें तीसरी अल्प-संख्यक जनता बनाकर पेश करेंगे. जो लोग ईसाई हो गये वह रोमन लिपि में अपनी भाशा लिखना सीखते हैं तथा प्रत्येक प्रकार से अभारतीय बनते हैं. इनकी समस्या भविश्य के लिये एक जटिल समस्या है. अब समय आ गया है कि हमारे समाज शास्त्री, इतिहासज्ञ और राजनीतिज्ञ परिस्थति पर संजीदगी से विचार करें. निश्चय ही इन जातियों के लिये एक मात्र उपाय यही है कि वह अपने पड़ोसियों की भांति भारतीय नागरिक बन जायें. वे किसी भी धर्म को चुन लें, इसकी अपेक्षा नहीं, किन्तु भारत की सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक उन्नति से उनका संबन्ध जोड़ना बहुत जरूरी है.

---



تھے انھوں نے پہلے مہایدھ کے پہلے بھارت کی یاترا بھی کی تھی. ایک بار بھارت کے وشے میں بات چیت ھوتے سمے' ھم نے سجھایا کہ ایسا معلوم ھوتا ھے کہ برٹش سرکار کی منشا بھارتیہ عیسائیوں کی مدد سے ایک تیسری الپ سنکھیک جنتا کی سمسیا کھڑی کرنے کی ھے. اُنھوں نے کہا کہ یہ سچ ھے' تتھا اُس سمے کے بھاگیہ ودھاتاؤں نے' ان سے کہا کہ ان کی یہ یوجنا ھے کہ وہ اِن آدم جاتیوں کو عیسائی بنا کر ھندؤں اور مسلمانوں کے مقابلے میں انہیں تیسری الپ - سنکھیک جنتا بنا کر پیش کریں گے. جو لوگ عیسائی ھو گئے وہ رومن لپی میں اپنی بھاشا لکھنا سیکھتے ھیں تتھا پرتئیک پرکار سے ابھارتیہ بنتے ھیں. اِن کی سمسیا بھوشیہ کے لئے ایک جٹل سمسیا ھے. اب سمے آ گیا ھے کہ ھمارے سماج شاستری' اتہاسگیہ اور راج نیتگیہ پرستھتی پر سنجیدگی سے وچار کریں. نشچے ھی ان جاتیوں کے لئے ایک ماتر اپائے یہی ھے کہ وہ اپنے پڑوسیوں کی بھانتی بھارتیہ ناگرک بن جائیں. وے کسی بھی دھرم کو چن لیں' اس کی اپیکچھا نہیں' کنتو بھارت کی سانسکرتک تتھا ایتہاسک اُنتی سے اُن کا سمبندھ جوڑنا بہت ضروری ھے.

---

**रहा है. वहां पर भी इन आदिम जातियों को बाड़ों में जिन्हें 'जाति क्षेत्र' कहते हैं, बन्द रखा जाता है और गोरी जातियों की सभ्यता और धर्म स्वीकार कर लेने पर भी उन्हें बड़ा** दुखी जीवन बिताना पड़ता है. लेखक ने अमरीका में कनेडा की 'ओजीबवा' ( Ogibwa ) जाति के समान दुखी जाति दूसरी कोई नहीं देखी. उस जाति के मन्त्री ने लेखक को बताया कि उन्हें जीवन में कोई दूसरा मौक़ा ही नहीं दिया जाता. जबकि अमरीका की औद्योगिक सभ्यता तेज़ी से आगे बढ़ रही है, और उनके पड़ोसी समृद्धि के सागर में गोते लगा रहे हैं, और आधुनिक सभ्यता की सारी नियामतों का उपभोग कर रहे हैं, उन्हें अमरीका के बीते हुए युग के चिन्ह स्वरूप उसी अवस्था में रखा जा रहा है.

लेकिन भारतवर्ष की इन 'आदिम' कही जाने वाली जातियों की समस्या इससे अलग है. वह भारतीय जाति की ही एक अंश हैं. वह उन जातियों की निशानी है जो अभी तक भारतीय सभ्यता के नाम से प्रसिद्ध सांस्कृतिक समन्वय में मिलाई नहीं जा सकीं. इन जातियों के लोग सुसंस्कृत भारतीय राष्ट्र के पिछड़े हुए अंग हैं. अगर भारतीय इतिहास के परदे पर अंगरेज़ों का आगमन न होता, तो यह लोग अब तक हिन्दू समाज में मिल गये होते. प्रो० घूरे उन्हें 'पिछड़े हुए' हिन्दू कहते हैं.

## मुख़्तलिफ़ ताक़तें

ऐसा महसूस होता है कि इस तरह के बंटवारे के लिये अलग अलग ताक़तें काम कर रही हैं. ख़ुद हम में से बहुत से लोग तथा हमारे विदेशी शुभचिन्तक उन्हें उन बाड़ों में जिन्हें 'राष्ट्रीय पार्क' कहा जायगा बन्द रखना चाहते हैं. लेकिन हम पहले ही अमरीकन आदिम जातियों की बुरी दशा का हवाला दे चुके हैं. वह वहीं सड़ रहे हैं. उत्तरी अमरीका में इस प्रकार के मानव दुख का नज़ारा रोमांचकारी हैं इस तरह से भारत की इन 'आदिम' कही जाने वाली जातियों को 'राष्ट्रीय पार्क' नाम के बाड़ों में बन्द कर देने से, जहां वह प्राचीन भारत की यादगार और विदेशियों की उत्सुक आंखों का निशाना बन कर रहें, उनकी कोई भलाई नहीं होगी. प्रो० गैडगिल इस तरह आदिम जातियों की इस बनाई गई समस्या में "नवीन उपायों से देश के शोशन" का उद्देश्य देखते हैं, जो कि पश्चिम का आविस्कार है. और यह तो गोरी जातियों की प्रसार नीति तथा सारे संसार में औद्योगिक क्रान्ति के प्रचार के फलस्वरूप उत्पन्न बहुत सी समस्याओं में से सिर्फ़ एक है. (घूरे की पुस्तक की भूमिका). बहुत दिन पहले जब लेखक जर्मनी में विद्यार्थी था, तो डा० ओटो से उसका परिचय हुआ, जो पहले गाटिंजन Gottengin) और फिर मारबर्ग (Marburg) विश्वविद्यालय में 'उदार ईसाई दर्शन' के अध्यापक थे. वह भारत के मित्र



رہا ہے۔ وہاں پر بھی ان آدم جاتیوں کو باڑوں میں جنہیں 'جاتی-چھیتر' کہتے ہیں، بند رکھا جاتا ہے اور گوری جاتیوں کی سبھیتا اور دھرم سویکار کر لینے پر بھی انہیں بڑا دکھی جیون بتانا پڑتا ہے۔ لیکھک نے امریکہ میں کنیڈا کی 'اوجیبوا' (Ogibwa) جاتی کے سمان دکھی جاتی دوسری کوئی نہیں دیکھی۔ اُس جاتی کے منتری نے لیکھک کو بتایا کہ انہیں جیون میں کوئی دوسرا موقعہ ہی نہیں دیا جاتا۔ جب کہ امریکہ کی اودیوگک سبھیتا تیزی سے آگے بڑھ رہی ہے، اور اُن کے پڑوسی سمردھی کے ساگر میں غوطے لگا رہے ہیں، اور آدھونک سبھیتا کی ساری نعمتوں کا اُپ بھوگ کر رہے ہیں، انہیں امریکہ کے بیتے ہوئے یگ کے چنہ سوروپ اُسی اوستھا میں رکھا جا رہا ہے۔

لیکن بھارت ورش کی ان 'آدم' کہی جانے والی جاتیوں کی سمسیا اس سے الگ ہے۔ وے بھارتیہ جاتی کی ہی ایک انش ہے۔ وے اُن جاتیوں کی نشانی ہے جو ابھی تک بھارتیہ سبھیتا کے نام سے پرسدھ سانسکرتک سمنوے میں ملائی نہیں جا سکیں۔ ان جاتیوں کے لوگ سوسنسکرت بھارتیہ راشٹر کے پچھڑے ہوئے انگ ہیں۔ اگر بھارتیہ اتہاس کے پردے پر انگریزوں کا آگمن نہ ہوتا تو یہ لوگ اب تک ہندو سماج میں مل گئے ہوتے۔ پروفیسر گھورے انہیں 'پچھڑے ہوئے' ہندو کہتے ہیں۔

## مختلف طاقتیں

ایسا محسوس ہوتا ہے کہ اس طرح کے بٹوارے کے لئے الگ الگ طاقتیں کام کر رہی ہیں۔ خود ہم میں سے بہت سے لوگ تتھا ہمارے ودیشی شبھ چنتک انہیں اُن باڑوں میں جنہیں 'راشٹریہ پارک' کہا جائے گا بند رکھنا چاہتے ہیں۔ لیکن ہم پہلے ہی امریکن آدم جاتیوں کی بری دشا کا حوالہ دے چکے ہیں۔ وے وہیں سڑ رہے ہیں اُتری امریکہ میں اس پرکار کے مانو دکھ کا نظارہ رومانچکاری ہے۔ اس طرح سے بھارت کی ان 'آدم' کہی جانے والی جاتیوں کو 'راشٹریہ پارک' نام کے باڑوں میں بند کر دینے سے، جہاں وہ پراچین بھارت کی یادگار اور ودیشیوں کی اُتسک آنکھوں کا نشانہ بن کر رہیں، اُن کی کوئی بھلائی نہیں ہوگی۔ پروفیسر گیڈگل اس طرح آدم جاتیوں کی اس بنائی گئی سمسیا میں "نوین اپایوں سے دیش کے شوشن" کا ادیش دیکھتے ہیں، جو کہ پچھم کا اوشکار ہے۔ اور یہ تو گوری جاتیوں کی پرسار نیتی تتھا سارے سنسار میں اودیوگک کرانتی کے پرچار کے پھل سوروپ اتپن بہت سی سمسیاؤں میں سے صرف ایک ہے۔ ( گھورے کی پستک کی بھومکا )۔ بہت دن پہلے جب لیکھک جرمنی میں ودیارتھی تھا، تو ڈاکٹر اوٹو سے اُس کا پریچے ہوا، جو پہلے گاٹینجن (Gottengin) اور پھر ماربرگ ( Marburg ) وشودیالیہ میں 'ادار عیسائی درشن' کے ادھیاپک تھے۔ وے بھارت کے متر

हिन्दू तथा अहिन्दू जातियों के अन्तर को घातक समझते थे. ( रिपोर्ट पृ० 158 ). सर हर्बर्ट रिजले ने कहा था "हिन्दुत्व और पिछड़ी जातियों के धर्म के बीच कोई बारीक बंटवारे की रेखा नहीं खींची जा सकती. दोनों एक दूसरे में मिल गये हैं." ( दि पीपुल आफ़ इण्डिया सेकण्ड ऐडीशन पृश्ठ 218, 133, 145 ). सर ई० ए० गेट ने कहा था "यह कहना बहुत ही कठिन है कि किसी स्टेज पर किसी आदमी को हिन्दू कहा जाय." ( सेन्सस आफ़ इण्डिया 1911—जिल्द 1, भाग 1, पृ० 129-30 ). बिहार और उड़ीसा की 1921 की मर्दुमशुमारी के सुपरिनटेण्डेण्ट मि० टेलेन्ट्स ने एक animist तथा एक हिन्दू के बीच फ़रक़ स्थापित करने में इस कठिनाई को मंज़ूर किया था. ( सेन्सस आफ़ इण्डिया 1921—बिहार एन्ड उड़ीसा रिपोर्ट, पृ० 125 ). बम्बई की 1921 की मर्दुमशुमारी के सुपरिनटेन्डेन्ट मि० सिजविक ने कहा था—

"अगली मर्दुमशुमारी में वह सब जो अभी animists में रखे गये हैं, हिन्दुओं के साथ मिला दिये जायें." ( बम्बई रिपोर्ट, पृ० 67 ). सन 1931 में सेन्सस कमिश्नर डा० जे० ए० हटन ने कहा था "हिन्दू धम तथा इन क़बीलों के धर्मों के बीच बंटवारे की रेखा खींचना मुश्किल है, किन्तु इन परवर्ती लोगों को हिन्दुत्व में मिला लेना सरल है." (सेन्सस 1931, पृ० 391-417). इस तरह यह साफ़ देख पड़ता है कि ऐसा एक ताक़तवर मत है, जो इन असभ्य कही जाने वाली जातियों तथा हिन्दू समाज को कुछ गिरोहों में यकजाइयत स्थापित करता है, और इन दोनों के बीच खींची गई किसी भी सीमा विभाजक रेखा को बिल्कुल कृत्रिम मानता है.

## ग़लत नामकरन

ऊपर की दलील को मानते हुए हमें यह महसूस होता है कि, 'जाति' शब्द से किया गया नामकरन ही ग़लत है. हम यह कह सकते हैं कि यह आदिम कहे जाने वाले वह भारतीय हैं जो पिछड़े रह गये हैं. यह उन मानवों के निशान हैं, जिन्हें आर्य नहीं बनाया गया था. यह कहना ग़लत है कि वह एक 'भिन्न जाति' की सन्तान हैं और इसलिये उन्हें सौतेली मां के से दुलार भरे बरताव की ज़रूरत है. दूसरी ओर उन्हें 'जाति क्षेत्रों' के बाड़ों में बन्द करके, उनके साथ अन्याय किया जा रहा है क्योंकि उन्हें अपने पड़ोसियों की सभ्यता सीखने का मौक़ा नहीं दिया जाता. यह विचित्र बात है कि उनमें से जो ईसाई या मुसलमान बन जाते हैं उन्हें अपने पैतृक-गृह को छोड़ने का मौक़ा मिल जाता है, तथा शरीयत क़ानून और देश के क़ानूनों से फ़ायदा उठाने की सुविधा भी मिल जाती है.

ऐसा मालूम होता है उत्तरी अमरीका की तरह यहां भारत में भी उसी तरह की प्रनाली का व्यवहार किया जा



ھندو تتھا اھندو جاتیوں کے انتر کو گھاتک سمجھتے تھے . ( رپورٹ پرشٹھ 158 ) . سرھربرٹ رزلے نے کہا تھا "ھندتو اور پچھڑی جاتیوں کے دھرم کے بیچ کوئی باریک بٹوارے کی ریکھا نہیں کھینچی جا سکتی . دونوں ایک دوسرے میں مل گئے ھیں ." ( دی پیپل آف انڈیا سکینڈ ایڈیشن' پرشٹھ 218، 133، 145 ) . سر ای . اے گیٹ نے کہا تھا "یہ کہنا بہت ھی کٹھن ھے کہ کسی اسٹیج پر کسی آدمی کو ھندو کہا جائے ." ( سینسس آف انڈیا 1911—جلد 1' بھاگ 1' پرشٹھ 129-30 ) . بہار اور اڑیسہ کی 1921 کی مردم‌شماری کے سپرنٹینڈینٹ مسٹر ٹیلینٹس نے ایک Animist تتھا ایک ھندو کے بیچ فرق استھاپت کرنے میں اس کٹھنائی کو منظور کیا تھا . ( سینسس آف انڈیا 1921—بہار اینڈ اڑیسہ رپورٹ' پرشٹھ 125 ) . بمبئی کی 1921 کی مردم شماری کے سپرنٹینڈینٹ مسٹر سجوک نے کہا تھا—

" اگلی مردم شماری میں وہ سب جو ابھی Animists میں رکھے گئے ھیں' ھندؤں کے ساتھ ملا دئے جائیں ." (بمبئی رپورٹ' پرشٹھ 67 ). سن 1931 میں سینسس کمشنر ڈاکٹر . جے . اے . ھٹن نے کہا تھا " ھندو دھرم اور ان قبیلوں کے دھرموں کے بیچ بٹوارے کی ریکھا کھینچنا مشکل ھے' کنتو ان پرورتی لوگوں کو ھندتو میں لینا سرل ھے ." ( سینسس 1931' پرشٹھ 391-417 ) . اس طرح یہ صاف دیکھ پڑتا ھے کہ ایسا ایک طاقتور مت ھے' جو ان اسبھیہ کہی جانے والی جاتیوں تتھا ھندو سماج کو کچھ گروھوں میں یکجائیت استھاپت کرتا ھے' اور ان دونوں کے بیچ کھینچی گئی کسی بھی سیما وبھاجک ریکھا کو بالکل کرترم مانتا ھے .

## غلط نام کرن

اوپر کی دلیل کو مانتے ھوئے ھمیں یہ محسوس ھوتا ھے کہ "جاتی' شبد سے کیا گیا نام کرن ھی غلط ھے . ھم یہ کہہ سکتے ھیں کہ یہ آدم کہے جانے والے وہ بھارتیہ ھیں جو پچھڑے رہ گئے ھیں . یہ اُن مانوں کے نشان ھیں' جنھیں آریہ نہیں بنایا گیا تھا . یہ کہنا غلط ھے کہ وہ ایک ' بھن جاتی ' کی سنتان ھیں اور اس لئے اُنھیں سوتیلی ماں کے سے دلار بھرے برتاؤ کی ضرورت ھے . دوسری اور اُنھیں ' جاتی چھیتروں ' کے باڑوں میں بند کر کے' ان کے ساتھ انیایہ کیا جا رھا ھے کیونکہ انھیں اپنے پڑوسیوں کی سبھیتا سیکھنے کا موقع نہیں دیا جاتا . یہ وچتر بات ھے کہ اُن میں سے جو عیسائی یا مسلمان بن جاتے ھیں انھیں اپنے پیترک - گرہ کو چھوڑنے کا موقع مل جاتا ھے' تتھا شریعت قانون اور دیش کے قانون سے فائدہ اٹھانے کی سویدھا بھی مل جاتی ھے .

ایسا معلوم ھوتا ھے اُتری امریکہ کی طرح یہاں بھارت میں بھی اُسی طرح کی پرنالی کا ویوھار کیا جا

दस अश्वमेध यज्ञ किये थे. दूसरों को इन लेखों में 'वाकाटक' कहा गया है जो पहले दक्षिण में रहा करते थे. यह राजा अपने आप को क्षत्रिय या ब्रह्म-क्षत्रिय कहते थे तथा उनके शासन में शैवमत का प्रचार हुआ. इसी प्रकार हम देखते हैं कि सात वाहन-साम्राज्य के पतन के बाद दक्षिन में 'काहष्मत' नाम की एक द्राविड़ जाति शक्तिशाली हो गई ( देखो—डी० एन० सरकार—सकसेसर्स आफ़ दी सातवाहन, पृश्ठ 216 ), तथा स्मृतियों के मुताबिक़ दूसरी ऐसी ही जातियां ( जरनल हिस्टारिकल क्वारटरली—सितम्बर 1940, पृश्ठ 566 ) मिलती हैं. आज भी हम छोटा नागपुर में नागवंशी राजपूतों को पाते हैं, जो अपना निकास ऐतिहासिक नवनाग तथा गोवंशी राजपूतों से बतलाते हैं. उनके संदिग्ध पुरखों की छाया उनके नामों और उनकी पैदाइश की परम्परा में छिपी है. आज भी उसी प्रदेश में असभ्य भुइयां तथा 'भूमिज' जातियां भी अपने आपको क्षत्रिय कहती हैं ( देखो—रिजले—ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ़ बंगाल ).

## ब्रिटिश राज्य में

किन्तु उस प्रदेश में ब्रिटिश राज्य के स्थापित होते ही शूद्र जातियों के विकास और सामाजिक उन्नति का रास्ता रुक गया. वर्ग संघर्ष की वह क़ुदरती ताक़त जो उन्हें आगे बढ़ा रही थी और जिसने उन्हें सामाजिक परम्परा में ऊंची जगह दिलाई थी, अब बेजान हो गई. आजकल उन्हें मध्य भारत की जंगली जातियां क़रार दे दिया गया है और उनके बारे में बहुत सी मनुष्य जाति-विज्ञान सम्बन्धी तथा सामाजिक कल्पनाएं गढ़ ली गई हैं. यह कहा जाता है कि वह हिन्दुओं के असर से दबी हुई हैं और उनकी जातियां ख़त्म होती जा रही हैं. इसलिये इन आदिम जातियों की, जिनका अपने पड़ोसियों से कोई ताल्लुक़ नहीं है, जरूर हिफ़ाज़त की जानी चाहिये. इस कारन अब उन्हें बाड़ों में बन्द किया जा रहा है जिन्हें 'जाति-क्षेत्र ( Tribal Area ) कहा जाता है, ( छोटा नागपुर का कोल्हन ज़िला इसकी मिसाल है ), जहां वह अपनी आज़ाद ज़िन्दगी बिता सकें. उनमें किसी बाहरी आदमी को घुसने नहीं दिया जाता था. बहुत से स्थानों में हिन्दू कार्यकर्ताओं को जाने नहीं दिया जाता था. दूसरी ओर, उनकी एक बहुत बड़ी तादाद पहले हिन्दू बन चुकी है और आज भी बन रही है, और उन्हें क्षत्रियों की पदवी हासिल है, जैसा कि प्रो० घूरे ने भी साक्षी दी है ( देखो—दि एबारजिनीज सो काल्ड, एण्ड देअर फ़्यूचर ).

सरकार उनके साथ जिस प्रकार का व्यवहार करती है, उसके विशय में बहुत से वाद विवाद प्रचलित हैं. सन 1881 में भारत की मुर्दमशुमारी के कमिश्नर मि० जे० बेन्स इन



دس اشومیدھ یگیہ کئے تھے ۔ دوسروں کو اِن لیکھوں میں 'وکاتک' کہا گیا ھے جو پہلے دکھچن میں رھا کرتے تھے. یہ راجا اپنے آپ کو چھتریہ یا برھم - چھتریہ کہتے تھے تتھا اُن کے شاسن میں شیومت کا پرچار ھوا. اِسی پرکار ھم دیکھتے ھیں کہ سات واھن سامراجیہ کے پتن کے بعد دکچھن میں 'کاھشمت' نام کی ایک دراوڑ جاتی شکتی شالی ھوگئی ( دیکھو—ڈی - این - سرکار—سکسیسرس آف دی سات واھن' پرشٹھ 216 )' تتھا اسمرتیوں کے مطابق دوسری ایسی ھی جاتیاں ( جنرل ھستاریکل کوارٹرلی—ستمبر 1940' پرشٹھ 566 ) ملتی ھیں ۔ آج بھی ھم چھوٹا ناگپور میں ناگونشی راجپوتوں کو پاتے ھیں' جو اپنا نکاس اتہاسک نوناگ تتھا گو ونشی راجپوتوں سے بتلاتے ھیں ۔ اُن کے سندگدھ پرکھوں کی چھایا اُن کے ناموں اور اُن کی پیدائش کی پرمپرا میں چھپی ھے ۔ آج بھی اُسی پردیش میں آسبھیہ بھوئیاں تتھا 'بھومج' جاتیاں بھی اپنے آپ کو چھتریہ کہتی ھیں ( دیکھو—رزلے—ٹرائبس اینڈ کاسٹس آف بنگال ) ۔

## برٹش ، راجیہ میں

کنتو اِس پردیش میں برٹش راجیہ کے استھاپت ھوتے ھی شودر جاتیوں کے وکاس اور ساماجک اُنتی کا راستہ رک گیا ۔ ورگ سنگھرش کی وہ قدرتی طاقت جو اُنھیں آگے بڑھا رھی تھی اور جس نے اُنھیں ساماجک پرمپرا میں اونچی جگہ دلائی تھی' اب بے جان ھوگئی ۔ آجکل اِنھیں مدھیہ بھارت کی جنگلی جاتیاں قرار دے دیا گیا ھے اور اُن کے بارے میں بہت سی منشیہ جاتی - وگیان سمبندھی تتھا ساماجک کلپنائیں گڑھ لی گئیں ھیں ۔ یہ کہا جاتا ھے کہ وہ ھندؤں کے اثر سے دبی ھوئی ھیں اور اُنکی جاتیاں ختم ھوتی جا رھی ھیں ۔ اِس لئے ان آدم جاتیوں کی' جن کا اپنے پڑوسیوں سے کوئی تعلق نہیں ھے' ضرور حفاظت کی جانی چاھئے ۔ اِس کارن اب اِنھیں باڑوں میں بند کیا جا رھا ھے جنھیں ' جاتی-چھیتر' (Tribal Area) کہا جاتا ھے' ( چھوٹا ناگپور کا کولھن ضلع اِس کی مثال ھے )' جہاں وے اپنی آزاد زندگی بتا سکیں ۔ اُن میں کسی باھری آدمی کو گھسنے نہیں دیا جاتا تھا. بہت سے استھانوں میں ھندو کاریہ کرتاؤں کو جانے نہیں دیا جاتا تھا ۔ دوسری اور' اُن کی ایک بہت بڑی تعداد پہلے ھندو بن چکی ھے اور آج بھی بن رھی ھے' اور اِنھیں چھتریوں کی پدوی حاصل ھے' جیسا کہ پروفیسر گھورے نے بھی ساکچھی دی ھے ( دیکھو—دی ایبارجنیز سوکالڈ' اینڈ دیئر فیوچر ).

سرکار اُن کے ساتھ جس پرکار کا بیوھار کرتی ھے' اُس کے وشئے میں بہت سا واد - وواد پرچلت ھے ۔ سن 1881 میں بھارت کی مردم شماری کے کمشنر مسٹر ۔ جے ۔ بینس اِن

कोटि को lift हासिल करना था. अगरचे इस समय में उनको ब्राह्मनों के समान कर्मकाण्ड के हक़ हासिल नहीं थे, फिर भी जाति के मुताबिक़ यह नियम बदलते रहते थे. बागही लोगों में भी ब्राह्मन हैं. बंगाल के बूनो और संथाल जातियों को भी ब्राह्मन पुरोहित-पुजारी मिलते हैं, और इसी तरह छोटा नागपुर के कुलीन कालों (होस) को भी! इससे आगे की तरक़्क़ी उन्हें मिलती है, जब कि उन्हें असत्-शूद्रों की कोटि में मान लिया गया, और वे वर्णाश्रम-व्यवस्था में शामिल कर लिये गये. इस समय उनको ब्राह्मन-वर्न के समान कर्मकाण्ड के हक़ हासिल हो गये. लेकिन इससे भी ज्यादा तरक़्क़ी उन्हें 'सत्-शूद्र' बन जाने पर मिली. इसके आगे की सीढ़ी तो फिर जाति की राजनैतिक और सामाजिक शक्ति के मुताबिक़ उनके क्षत्रिय या ब्राह्मन माने जाने पर मुनहसिर थी. कोई भी निश्पक्ष विचारक इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि तरक़्क़ी का यह तरीक़ा अनादि काल से हिन्दू समाज में चला आ रहा है. इस तरह हिन्दू-धर्म वर्णाश्रम समाज के बाहर से भी लोगों को क़ुबूल करता रहा है और मध्य भारत के जंगल तो प्राचीन समय से इस प्रकार के धर्म-परिवर्तन का स्थान रहे हैं. हिन्दू समाज के संकट काल में वे अन्त्यज और निम्न कोटि के शूद्र ही उसे बचाने के लिये आगे आये थे. जब यह लोग इस प्रकार शिखर पर पहुंच गये, तो क़ुदरतन उन्होंने ब्राह्मनों के सारे आचार अपना लिये, और पुरोहितों ने महाकाव्यों से उनकी वंशावली भी खोज निकाली. इस प्रकार हिन्दू समाज के 'चन्द्र वंशी' और 'सूर्य वंशी' क्षत्रिय राज्यों का इतिहास के मध्य-युग में निर्मान हुआ.

किन्तु बाहर के हमलों ने इस क़ुदरती तरक़्क़ी के तरीक़े में बाधा दी. शरीर-विज्ञान शास्त्री इबटसन ने जाटों तथा राजपूतों के रक्त-सम्बन्धों के बारे में कहा है कि पहले तो किसी कुटुम्ब या क़बीले का सरदार अपने बाहुबल से या और किसी तरह से राजत्व के सिंहासन पर क़बज़ा करता था, और फिर उसके कुटुम्ब के लोग भी उसके साथ उस ऊंची श्रेनी में पहुंच जाते थे. लेकिन मुसलमानों के आक्रमणों के समय से राजत्व के इस तरीक़े में रुकावट हो गई (सिर्फ़ उत्तर भारत में ही). इसलिये और अधिक क्षत्रियों या राजपूतों का विकास नहीं हुआ. लेकिन मध्य और दक्षिणी भारत में हमें ऐसी बहुत सी जातियां मिलती हैं जिनकी पैदाइश संदिग्ध है और जिनमें अनार्य रक्त की मिलावट भी साफ़ है, जिन्होंने सातवाहनों के साम्राज्य के पतन के बाद राजत्व की सत्ता हासिल की. विश्णुपुरान में इस प्रदेश के नवनाग तथा विंध्यशक्ति कुलों का ज़िक्र है. उनमें से पहले का ज़िक्र एपीग्राफ़िक रेकार्ड्स में भी और शिलालेखों पर भी मिलता है, जिसमें उन्हें 'भारशिव' नाम दिया गया है, जिन्होंने गङ्गा की घाटी को जीत कर



کوٹی کو lift حاصل کرنا تھا. اگرچہ اس سمے میں اُن کو براھمنوں کے سمان کرم کانڈ کے حق حاصل نہیں تھے' پھر بھی جاتی کے مطابق یہ نیم بدلتے رہتے تھے. باگہی لوگوں میں بھی براھمن ھیں. بنگال کے برنو اور سنتھال جاتیوں کو بھی براھمن پروہت— پجاری ملتے ھیں' اور اِسی طرح چھوٹا ناگپور کے کلین کالوں (ھوس) کو بھی! اِس سے آگے کی ترقی انہیں ملتی ھے' جبکہ انہیں است. شودروں کی کوٹی میں مان لیا گیا' اور وے ورنا شرم ویوستھا میں شامل کر لئے گئے. اِس سمے اُن کو براھمن-ورن کے سمان کرم کانڈ کے حق حاصل ھوگئے. لیکن اِس سے بھی زیادہ ترقی انہیں 'ست-شودر' بن جانے پر ملی. اِس کے آگے کی سیڑھی تو پھر جاتی کی راج نیتک اور سماجک شکتی کے مطابق اُن کے چھتریہ یا براھمن مانے جانے پر منحصر تھی. کوئی بھی نشپکچھ وچارک اِس بات سے اِنکار نہیں کر سکتا کہ ترقی کا یہ طریقہ انادی کال سے ھندو سماج میں چلا آ رھا ھے. اِس طرح ھندو-دھرم ورنا آشرم سماج کے باھر سے بھی لوگوں کو قبول کرتا رھا ھے اور مدھیہ بھارت کے جنگل تو پراچین سمے سے اس پرکار کے دھرم-پریورتن کا استھان رھے ھیں. ھندو سماج کے سنکٹ کال میں وے انتیج اور نمن کوٹی کے شودر ھی اُسے بچانے کے لئے آگے آئے تھے. جب یہ لوگ اس پرکار شکھر پر پہونچ گئے' تو قدرتاً اُنھوں نے براھمنوں کے سارے آچار اپنا لئے' اور پروھتوں نے مہاکاریوں سے اُن کی ونشاولی بھی کھوج نکالی. اِس پرکار ھندو سماج کے 'چندر ونشی' اور 'سوریہ ونشی' چھتریہ راجیوں کا اتہاس کے مدھیہ-یگ میں نرمان ھوا.

کنتو باھر کے حملوں نے اس قدرتی ترقی کے طریقے میں بادھا دی. شریر-وگیان شاستری ابٹ سن نے جاٹوں تتھا راجپوتوں کے رکت سمبندھوں کے بارے میں کہا ھے کہ پہلے تو کسی کٹمب یا قبیلے کا سردار اپنے باھوبل سے یا اور کسی طرح سے راجتو کے سنگھاسن پر قبضہ کرتا تھا' اور پھر اُس کے کٹمب کے لوگ بھی اُس کے ساتھ اُس اونچی شرینی میں پہونچ جاتے تھے. لیکن مسلمانوں کے آکرمنوں (حملوں) کے سمے سے راجتو کے اِس طریقے میں رکاوٹ ھوگئی (صرف اُتر بھارت میں ھی). اِس لئے اور ادھک چھتریوں یا راجپوتوں کا وکاس نہیں ھوا. لیکن مدھیہ اور دکچھنی بھارت میں ھمیں ایسی بہت سی جاتیاں ملتیں ھیں جن کی پیدایش سندگدھ ھے اور جن میں اناریہ رکت کی ملاوٹ بھی صاف ھے' جنھوں نے ساتواھنوں کے سامراجیہ کے پتن کے بعد راجتو کی ستا حاصل کی. وشنوپران میں اِس پردیش کے نوناگ تتھا وندھیہ شکتی کلوں کا ذکر ھے. اُن میں سے پہلے کا ذکر ایپگرافک رکارڈس میں بھی اور شیلا لیکھوں پر بھی ملتا ھے' جس میں انھیں 'بھارشیو' نام دیا گیا ھے' جنہوں نے گنگا کی گھاٹی کو جیت کر

फ़ैसला है. यह साम्राज्यवादी ताक़तों तथा औपनिवेशिक नीति की हां में हां मिलाने वाला नहीं है. इसलिये हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि इनसानों का एक ख़ास गिरोह, जो अपने आपको प्राचीन क़बीलों के अन्ध-विश्वासों और जंगली रिवाजों के पंजे से मुक्त करके नये वातावरन और नई उत्तेजना से असर लेने में समर्थ हो सकता है वह उन दूसरे गिरोहों से जो मानव जाति के आगे चलने वाले गिरोह के साथ क़दम मिलाकर चल नहीं सकते ज़रूर ही ज़्यादा तरक़्क़ी कर जाता है. इसी सबब से, यह कहा जा सकता है कि कुछ लोग अधिक तरक़्क़ी कर जाते हैं जब कि बाक़ी लोग पिछड़े ही रहते हैं.

जाति या क़बीलों के बारे में यह साधारन मत बना लेने के बाद हमें भारत के इतिहास पर इसको परखना चाहिये. यह तो प्राचीन भारतीय साहित्य से अपने आप ज़ाहिर है कि हमारे पूर्वज जानते थे कि अलग अलग तरह की संस्कृति के लोग देश में हैं. इसी कारन से याज्ञवल्क्य जैसे स्मृतिकारों ने राजाओं को जीती हुई जातियों के आचारों ( देशाचार, लोकाचार ) पर हमला करने की सलाह दी. इसी सूत्र को पकड़ कर शुक्र ने कहा कि मुक़ामी रीति रिवाजों का सम्मान करना चाहिये. जब कि उसके पहले गौतम जैसे स्मृतिकार ने यह भी कह दिया था कि मुक़ामी आचार ( देश धर्म ), क़बीले अथवा जाति-गत आचार ( जाति-धर्म ) और कुटुम्ब के आचार ( कुल धर्म ) को प्रमान रूप में क़ुबूल कर लेना चाहिये, यदि वे वेद-विरुद्ध न हों. ( वैदिक रूल्स 9/20 ).

इस तरह संस्कृति की क़ानून की पोथियों,—स्मृतियों को देखते हुए हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि ब्राह्मनों ने हमेशा मिलावट और संयोग (दूसरों को अपने में मिलाने) की नीति का पालन किया. वे अलग अलग वंश-गत गिरोहों के आचारों को जबरन नश्ट करने के हक़ में नहीं थे. इसका नतीजा यह हुआ कि हिन्दुओं के आचारों में अलहदगी बनी रही, जो आज भी एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में जाने पर मिलती है. इसी सूत्र के आधार को लेकर, स्मृतियों तथा शास्त्रों ने 'वर्णाश्रम-धर्म' के मुताबिक़ समाज को चार वर्नों में बांटा तथा 'अन्त्यजों' को बाहर ही रहने दिया. यही मेदस ( Medes or Made's ) या मेदास ( मनु और यम संहिता ) तथा भील ( Bhillas ) ( ब्रह्म वैवर्त्त पुराण ) हैं. इस तरह वह लोग आज के आदिम निवासियों से भी अपरिचित नहीं थे. शास्त्रों के मुताबिक़ सामाजिक परम्परा का सिलसिला इस प्रकार है—द्विज, सत्-शूद्र, असत्-शूद्र, अन्त्यज. हिन्दू समाज के इस निरन्तर विकास की छान बीन करने पर हमें मालूम होता है कि हिन्दू समाज में अन्त्यजों को जो पहली तरक़्क़ी हासिल हुई, वह उनका 'असत्' शूद्रों की सब से नीची



فیصلہ ھے . یہ سامراجیہوادی طاقتوں تتھا اپنویشک نیتی کی ھاں میں ھاں ملانے والا نہیں ھے . اس لئے ھم اِس نتیجہ پر پہونچتے ھیں کہ اِنسانوں کا ایک خاص گروہ‘ جو اپنے آپ کو پراچین قبیلوں کے آندھ وشواسوں اور جنگلی رواجوں کے پنجے سے مکت کرکے نئے واتاورن اور نئی اُتیجنا سے اثر لینے میں سمرتھ ھوسکتا ھے وہ اُن دوسرے گروھوں سے جو مانو جاتی کے آگے چلنے والے گروہ کے ساتھ قدم ملاکر چل نہیں سکتے ضرور ھی زیادہ ترقی کر جاتا ھے . اِسی سبب سے‘ یہ کہا جا سکتا ھے کہ کچھ لوگ آدھک ترقی کر جاتے ھیں جب کہ باقی لوگ پچھڑے ھی رھتے ھیں .

جاتی یا قبیلوں کے بارے میں یہ سادھارن مت بنا لینے کے بعد ھمیں بھارت کے اِتہاس پر اِس کو پرکھنا چاھئیے . یہ تو پراچین بھارتیہ ساھتیہ سے اپنے آپ ظاھر ھے کہ ھمارے پوروج جانتے تھے کہ الگ الگ طرح کی سنسکرتی کے لوگ دیش میں ھیں. اِسی کارن سے یاگیہ والک جیسے اسمرتکاروں نے راجاؤں کو جیتی ھوئی جاتیوں کے آچاروں ( دیشاچار‘ لوکاچار ) پر حملہ کرنے کی صلاح دی. اِسی سوتر کو پکڑ کر شکر نے کہا کہ مقامی ریتی رواجوں کا سمان کرنا چاھئیے. جب کہ اس کے پہلے گوتم جیسے اسمرتکار نے یہ بھی کہدیا تھا کہ مقامی آچار ( دیش دھرم )‘ قبیلے اتھوا جاتی - گت آچار ( جاتی - دھرم ) اور کٹمب کے آچار ( کل دھرم ) کو پرمان روپ میں قبول کرلینا چاھئیے‘ یدی وے وید وردھ نہ ھوں . ( ویدک رولس 9/20 ).

اِس طرح سنسکرتی کی قانون کی پوتھیوں‘—اسمرتیوں کو دیکھتے ھوئے ھم اِس نتیجے پر پہونچتے ھیں کہ براھمنوں نے ھمیشہ ملاوٹ اور سنیوگ ( دوسروں کو اپنے میں ملانے ) کی نیتی کا پالن کیا. وے الگ الگ ونش گت گروھوں کے آچاروں کو جبرن نشٹ کرنے کے حق میں نہیں تھے . اِس کا نتیجہ یہ ھوا کہ ھندوؤں کے آچاروں میں علیحدگی بنی رھی‘ جو آج بھی ایک پرانت سے دوسرے پرانت میں جانے پر ملتی ھے . اِسی سوتر کے آدھار کو لےکر‘ اسمرتیوں تتھا شاستروں نے 'ورناشرم دھرم' کے مطابق سماج کو چار ورنوں میں بانٹا تتھا انتیجوں' کو باھر ھی رھنے دیا . یہی میدس (Medes or Made's) یا میداس ( منو اور یم سہنیتا ) تتھا بھیل (Bhillas) ( برھم ویورت پران ) ھیں . اِس طرح وہ لوگ آج کے آدم نواسیوں سے بھی اپرچت نہیں تھے. شاستروں کے مطابق سماجک پرمپرا کا سلسلہ اِس پرکار ھے—دوج‘ ست - شودر‘ است شودر‘ انتیج . ھندو سماج کے اِس نرنتر وکاس کی چھان بین کرنے پر ھمیں معلوم ھوتا ھے کہ ھندو سماج میں انتیجوں کو جو پہلی ترقی حاصل ھوئی‘ وہ اُن کا 'است' شودروں کی سب سے نیچی

ऐसे धमनी शिरा-केन्द्र हैं जो, ऐसा जाहिर होता है कि उन्हें अगर क़ुदरत ने सब के लिये कुछ ख़ासियतों से सम्पन्न किया था, फिर भी कृत्रिम रूप से दबाव डालकर उन से दूसरे काम भी लिये जा सकते हैं. इससे हमने यह सिद्ध कर दिया कि कोई भी ऐसी बिल्कुल न बदलने वाली शिरा-शक्तियां नहीं हैं, और वे सिर्फ़ सम्बन्ध क्रम से ही स्थिर हैं. यह मनोरंजक बात है कि बरसों की महत्वपूर्न खोज के ये नतीजे, एक निर्वासित जर्मन प्रोफ़ेसर ईचेन द्वारा इस जाति-सिद्धान्त की खोखली सत्ता के दिखावे के लिये लिखी हुई एक पुस्तक में इकट्ठा हैं. ( "मास्को न्यूज़", जून 4, 1943 ). इस खोज ने मनुश्य की बनावट में वातावरन के प्रभाव पर ज़ोर दिया है. बर्लिन यूनिवर्सिटी के मनुश्य जाति-विज्ञान के स्वर्गीय ( मरहूम ) प्रो० वान लुशेन ने भी इस बात पर ज़ोर दिया था कि वातावरन ही जाति को ढालता है. अमेरिकन समाज-विज्ञान के पिता प्रो० लेस्टर एफ़० वार्ड ने कहा है कि दुनिया के नज़रिये में होने वाली तब्दीली एक जाति को भी बदल देती है. ( देखो—एपलाइड सोशियालाजी ). इस सबका मतलब यह है कि एक ख़ास गिरोह यानी 'जाति', अगर उसे वस्तुओं के नये मान दिये जायं और उसके जीवन सम्बन्धी विचारों में तब्दीली कर दी जाय, तो वह अपने आपको बदल देती है. दूसरे शब्दों में, यों कहिए कि, किसी जाति के मनोविज्ञान को बदला जा सकता है. इतिहास ने इस बात की बार बार साक्षी दी है. इस तरह की सबसे अहम तब्दीली आजकल यूरोप और एशिया के सोवियत यूनियन की जातियों में हो रही है.

इसलिये यह साफ़ है कि मनुश्यों के एक ख़ास गिरोह में जिसे जाति के नाम से पुकारा जाता है, कोई अपरिवर्त्तन-शील परम्परागत विशेशताएं नहीं होतीं. 'जाति' की परिभाशा इस प्रकार की जा सकती है कि "मानवों का वह ख़ास गिरोह जो एक ही प्रकार के भाशा सम्बन्धी तथा सांस्कृतिक बन्धनों से बंधा है" यानी एक ख़ानदानी इकाई है. गिरोह के भीतर भले ही अलग-अलग ( Biotypes ) यानी जातीय ख़सियतें हो सकती हैं. वंश क्रम से पूरी तरह से विशुद्ध लोगों का कोई गिरोह, यानी जिस में एक प्रकार का रक्त-मिश्रन ( Biotype ) हो, इस इनसानी दुनिया में मुशकिल है.

## अन्तर्जातीय सम्बन्धों का तरीक़ा

आजकल के सोवियत के वंश-विज्ञान-शास्त्री कहते हैं कि मौजूदा जातियों, (यानी मानव गिरोह), प्राचीन क़बीलों के आपसी अन्तर्जातीय सम्बन्धों, ख़ून की मिलावट तथा आपसी सांस्कृतिक असरों से बनी हैं. उन्होंने साफ़ कहा है कि कोई भी जाति 'ऊंची' या 'नीची' नहीं है. ( "मास्को-न्यूज़"—12, जनवरी 1944 ). यह निश्पक्ष विज्ञान का



ایسے دھمنی شرا - کیندر ھیں جو، ایسا ظاھر ھوتا ھے کہ انہیں اگر قدرت نے سب کے لئے کچھ خاصیتوں سے سمپن کیا تھا، پھر بھی کرترم روپ سے دباؤ ڈالکر اُن سے دوسرے کام بھی لئے جاسکتے ھیں . اِس سے ھم نے یہ سدھ کر دیا کہ کوئی بھی ایسی بالکل نہ بدلنے والی شرا - شکتیاں نہیں ھیں، اور وے صرف سمبندھ کرم سے ھی استھر ھیں . یہ منورنجک بات ھے کہ برسوں کی مہتوپورن کھوج کے یہ نتیجے ایک نرواست جرمن پروفیسر ایچین دوارا اِس جاتی - سدھانت کی کھوکھلی ستتا کے دکھاوے کے لئے لکھی ھوئی ایک پستک میں اکٹھا ھیں . ( "ماسکو نیوز" جون 4، 1943 ). اِس کھوج نے منشیہ کی بناوٹ میں واتاورن کے پربھاؤ پر زور دیا ھے . برلن یونیورسٹی کے منشیہ جاتی - وگیان کے سورگیہ ( مرحوم ) پروفیسر وان لوشین نے بھی اِس بات پر زور دیا تھا کہ واتاورن ھی جاتی کو ڈھالتا ھے. امریکن سماج - وگیان کے پتا پروفیسر لیسٹر ایف وارڈ نے کہا ھے کہ دنیا کے نظریہ میں ھونے والی تبدیلی ایک جاتی کو بھی بدل دیتی ھے ( دیکھو—اپلائڈ شوشیالاجی ). اِس سب کا مطلب یہ ھے کہ ایک خاص گروہ یعنی 'جاتی' اگر اسے وستوؤں کے نئے مان دیئے جائیں اور اُس کے جیون سمبندھی وچاروں میں تبدیلی کردی جائے، تو وہ اپنے آپ کو بدل دیتی ھے . دوسرے شبدوں میں، یوں کہئے کہ، کسی جاتی کے منوگیان کو بدلا جاسکتا ھے . اِتہاس نے اِس بات کی بار بار ساکشی دی ھے . اِس طرح کی سب سے اھم تبدیلی آجکل یورپ اور ایشیا کے سویت یونین کی جاتیوں میں ھو رھی ھے .

اِس لئے یہ صاف ھے کہ منشیوں کے ایک خاص گروہ میں جسے جاتی کے نام سے پکارا جاتا ھے، کوئی اپریورتن شیل پرمپراگت وشیشتائیں نہیں ھوتیں . 'جاتی' کی پری بھاشا اِس پرکار کی جاسکتی ھے کہ "مانوں کا وہ خاص گروہ جو ایک ھی پرکار کے بھاشا سمبندھی تتھا سانسکرتک بندھنوں سے بندھا ھے" یعنی ایک خاندانی اکائی ھے . گروہ کے بھیتر بھلے ھی الگ الگ (Biotypes) یعنی جاتیہ خاصیتیں ھوسکتی ھیں. ونش کرم سے پوری طرح سے وشدھ لوگوں کا کوئی گروہ، یعنی جس میں ایک ھی پرکار کا رکت مشرن (Biotype) ھو، اِس اِنسانی دنیا میں مشکل ھے .

## انتر جاتیہ سمبندھوں کا طریقہ

آجکل کے سوویت کے ونش - وگیان - شاستری کہتے ھیں کہ موجودہ جاتیوں، ( یعنی مانو گروہ )، پراچین قبیلوں کے آپسی انتر جاتیہ سمبندھوں، خون کی ملاوٹ تتھا آپسی سانسکرتک اثروں سے بنی ھیں . انہوں نے صاف کہا ھے کہ کوئی بھی جاتی 'اُونچی' یا 'نیچی' نہیں ھے . ( "ماسکو نیوز"—1944، جنوری 12 ). یہ نشپکش وگیان کا

## भारत पर असर

अब हमें देखना चाहिये कि इन साम्राज्यवादी विचार-धाराओं का भारत पर क्या असर पड़ा. हम अपना इतिहास, समाज-विज्ञान और मनुश्य-जाति-विज्ञान सब कुछ अंगरेज़ वैज्ञानिकों की आंखों से देखते और पढ़ते हैं. हमें यह मानने पर मजबूर किया जाता है कि "वैदिक काल के लोग गोरी जातियों की एक शाखा थे जो इस गर्म महाद्वीप में कहीं दूर से आये थे. आजकल हमको सिखाया जा रहा है कि वेदों की यह गोरी जाति, उत्तरी यूरोप की नारडिक जाति या दूसरी किसी ठन्डे प्रदेश में निवास करने वाली जाति थी. फिर हमें यह मानने पर मजबूर किया जाता है कि हम प्राचीन भारत के यूरेशियन (वर्नसंकर जाति) हैं—जिसका जन्म नारडिक जाति तथा भारत की काली जातियों की मिलावट से हुआ है. नारडिक लोगों के अलावा, इसके फलस्वरूप, आज के भारतीयों के मातृवंश से सम्बन्ध रखने वाले निग्रो लोगों की खोज सारे भारत में की जा रही है. साम्राज्यवादी और उनके ऐजेन्ट विज्ञान का मुलम्मा चढ़ा कर इन बातों को कहते हैं, और हम हैरान होकर 'ठीक है' कह देते हैं.

इस तरह हमारे पूर्वजों ने अपने लिये जो कुछ कहा है उसको हमारे दिमाग़ से उखाड़ फेंकने की कोशिश की जाती है. बचपन से ही हमें वैज्ञानिक सत्य के इस ज़हर को पीने और पचाने पर मजबूर किया जाता है, और आज कुछ पीढ़ियां बीतते ही हम उन्हें भारत के सामाजिक इतिहास की ठीक शुरूआत मान बैठे हैं. लेकिन मौजूदा ज़माने में कुछ विरोधी स्वर भी सुनाई पड़ रहे हैं. कुछ लोग वैदिक आर्यों के इस नारडिक-मूल की तरफ़ सन्देह करने लगे हैं; वे गुर्जर-प्रतिहारों का मूल खिज़र-तुर्कों को, राजपूत तथा जाटों का मूल सकों को, तथा सिन्धु-घाटी की सभ्यता के मूल को अवैदिक मानने में संकोच करने लगे हैं.

## जातिगत विशुद्धता

दूसरी ओर ख़ुद यूरोप के विद्वान आज वैज्ञानिक जातियों की जन्म गत विशुद्धता में सन्देह करने लगे हैं. फिर वह नया सिद्धान्त, कि (Glandular Secretion) ग्रन्थि-रस खोपड़ी की हड्डियों की बनावट पर असर डालते हैं, मनुश्य-शरीर विज्ञान की परम्परागत मान्यता को चुनौती दे रहा है तथा आख़री तौर पर लेनिनग्राद के पावलोव इन्सटीट्यूट के वैज्ञानिकों ने शरीर की धमनियों और शिरा-जाल की ख़ासियत (अर्थात् अपने को मौक़े के मुताबिक़ ढाल लेने की ताक़त) सम्बन्धी बरसों की खोज के बल पर ऐसे नतीजे निकाले हैं, जिनके बारे में शरीर-विज्ञान के आचार्य प्रो० पीटर अनोखिन का कहना है कि—"इस सवाल पर खोज करने से हमें यह यक़ीन हो गया है कि कुछ

## بھارت پر اثر

اب ھمیں دیکھنا چاھئے کہ اِن سامراجیہ وادی وچار - دھاراؤں کا بھارت پر کیا اثر پڑا ۔ ھم اپنا اِتہاس، سماج - وگیان اور منشیہ - جاتی - وگیان سب کچھ انگریز ویگیانکوں کی آنکھوں سے دیکھتے اور پڑھتے ھیں ۔ ھمیں یہ ماننے پر مجبور کیا جاتا ھے کہ "ویدک کال کے لوگ گوری جاتیوں کی ایک شاکھا تھے جو اِس گرم مہادیپ میں کہیں دور سے آئے تھے ۔ آجکل ھمکو سکھایا جا رھا ھے کہ ویدوں کا یہ گوری جاتی، اُتری یورپ کی نارڈک جاتی یا دوسری کسی ٹھنڈے پردیش میں نواس کرنے والی جاتی تھی ۔ پھر ھمیں یہ ماننے پر مجبور کیا جاتا ھے کہ ھم پراچین بھارت کے یوریشین (ورن سنکر جاتی) ھیں—جس کا جنم نارڈک جاتی تتھا بھارت کی کالی جاتیوں کے ملاوٹ سے ھوا ھے ۔ نارڈک لوگوں کے علاوہ، اِس کے پھل سروپ، آج کے بھارتیوں کے ماترونش سے سمبندھ رکھنے والے نیگرو لوگوں کی کھوج سارے بھارت میں کی جا رھی ھے۔ سامراجیہ وادی اور اُن کے ایجنٹ وگیان کا ملمع چڑھاکر اِن باتوں کو کہتے ھیں، اور ھم حیران ھوکر 'ٹھیک ھے' کہہ دیتے ھیں ۔

اِس طرح ھمارے پوروجوں نے اپنے لئے جو کچھ کہا ھے اُس کو ھمارے دماغ سے اُکھاڑ پھینکنے کی کوشش کی جاتی ھے ۔ بچپن سے ھی ھمیں ویگیانک ستیہ کے اِس زھر کو پینے اور پچانے پر مجبور کیا جاتا ھے، اور آج کچھ پیڑھیاں بیتتے ھی ھم انھیں بھارت کے سماجک اِتہاس کی ٹھیک شروعات مان بیٹھے ھیں ۔ لیکن موجودہ زمانے میں کچھ ورودھی سور بھی سنائی پڑ رھے ھیں ۔ کچھ لوگ ویدک آریوں کے اِس نارڈک مول کی طرف سندیہ کرنے لگے ھیں؛ وے گرجر - پرتیھاروں کا مول خضر ترکوں کو راجپوت تتھا جاٹوں کا مول سکوں کو تتھا سندھ گھاٹی کی سبھیتا کے مول کو آویدک ماننے میں سنکوچ کرنے لگے ھیں ۔

## جاتی گت وشدھتا

دوسری اور خود یورپ کے ودوان آج ویگیانک جاتیوں کی جنم گت وشدھتا میں سندیہ کرنے لگے ھیں۔ پھر وہ نیا سدھانت، کہ (Glandular Secretion) گرنتھ - رس کھوپڑی کی ھڈیوں کی بناوٹ پر اثر ڈالتے ھیں، منشیہ - شریر وگیان کی پرمپراگت مانیتا کو چنوتی دے رھا ھے تتھا آخری طور پر لینن گراد کے پاؤلوو انسٹیٹیوٹ کے وگیانکوں نے شریر کی دھمنیوں اور شراجال کی خاصیت (ارتھات اپنے کو موقع کے مطابق ڈھال لینے کی طاقت) سمبندھی برسوں کی کھوج کے بل پر ایسے نتیجے نکالے ھیں، جن کے بارے میں شریر - وگیان کے آچاریہ پروفیسر پیٹر انوکھن کا کہنا ھے کہ—"اِس سوال پر کھوج کرنے سے ھمیں یہ یقین ھوگیا ھے کہ کچھ

भाशा-विभागों में बंटते ही, यूरोप की जातियां अलग अलग राष्ट्रों के रूप में दिखाई देने लगीं. फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति ने तो यूरोप की सामन्तशाही सभ्यता के कफ़न में आखरी कील का काम किया. इस महान क्रान्ति के नारे थे मानव की समानता और आज़ादी. जाति, धर्म और वर्ग का कोई भेद इसमें माना नहीं गया. फ्रान्स की राज्य क्रान्ति का असर समूचे यूरोप पर पड़ा, और उन्नीसवीं सदी के राष्ट्रीय यूरोप का उदय उसी का नतीजा था. लेकिन उन्नीसवीं सदी के शुरू से ही कुछ देश अपने महाद्वीप के बाहर नवाबादियां बनाने लग गये थे. इस युग के पहले भी हालेन्ड, इन्गलैन्ड तथा फ्रान्स ने अमरीका, एशिया तथा दूसरे स्थानों में उपनिवेश बनाये थे. लेकिन नेपोलियन के युद्धों के बाद तो आर्थिक ज़रूरतों ने यूरोप के देशों के पूंजीवादी वर्ग में यह भूमि की भूख तेज़ी से जगादी और दूसरी औद्योगिक क्रान्ति के बाद उद्योगवाद के उदय के साथ, तो उस महाद्वीप की, आर्थिक नुक़्ते नज़र से उन्नत जातियों में, उपनिवेशों के लिये छीना झपटी और खींचातानी शुरू हो गई.

इस औद्योगिक पूंजीवादी श्रेनी के उसूलों ने यूरोपीय चेतना का नज़रिया ही बदल दिया. वह पश्चिमी यूरोप, जो अब तक मानव जाति की आज़ादी के लिये क्रान्तियों का घर था, उसकी विचार धारा पूंजीवाद से प्रभावित होकर साम्राज्यवाद से जकड़ गई. इस प्रकार औपनिवेशिक साम्राज्यों के उदय के साथ, इस औपनिवेशीय साम्राज्यवाद की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये नये विचारों की परम्पराएं गढ़ी गईं. इन नई राजनैतिक तथा सामाजिक विचार धाराओं का मूल-मन्त्र था 'क़ौम' का सवाल. अब लोगों की पहचान उनके चमड़े, बालों, आंखों, रंग, सिर तथा नाक की बनावट से की जाने लगी. इसका नतीजा यह हुआ कि कुछ जातियां ऊंची मान ली गईं तथा कुछ हीन और पिछड़ी हुई क़रार दे दी गईं. इसके अलावा उपनिवेशों के पराधीन लोगों को सदा क़ाबू में रखने के लिये और बहुत से सिद्धान्त गढ़े जाने लगे, जैसे "क़ौमी क़ाबलियत" "गोरी जातियों का बोझ", "जाति की परम्परागत पूंजी" वग़ैरा.

उन्नीसवीं सदी का आखरी हिस्सा इसी तरह के साम्राज्यवादी हथियारों के प्रचार का काल था, जो वैज्ञानिक सच्चाइयों की शक्ल में हमारे सामने रखे जाते थे. आख़ीर में, हेगेल का यह विचार कि जर्मन जाति ही इनसानों में सबसे ऊंची है, मोर्चे पर लाया गया. इस सिद्धान्त के मुताबिक़ जर्मन जाति, यानी प्राचीन टयूटानिक ( Teutonic ) की औलाद ही, प्राचीन आर्यों के उत्तराधिकारी और मानव जाति में सब से ऊंचे थे. इस 'जर्मनवाद' ने ही बाद में 'नारडिकवाद' का रूप लिया, जिसने बाद में 'हेरेनवाल्क'—अर्थात स्वामी-जाति-सिद्धान्त का जामा पहना है.



بھاشا- وبھاگوں میں بنٹتے ھی' یورپ کی جاتیاں الگ الگ راشٹروں کے روپ میں دکھائی دینے لگیں . فرانس کی راجیہ - کرانتی نے تو یورپ کی سامنت شاھی سبھیتا کے کفن میں آخری کیل کا کام کیا. اِس مہان کرانتی کے نعرے تھے مانو کی سمانتا اور آزادی. جاتی' دھرم اور ورگ کا کوئی بھید اس میں مانا نہیں گیا . فرانس کی راجیہ کرانتی کا اثر سمرچے یورپ پر پڑا' اور اُنیسویں صدی کے راشٹریہ یورپ کا اُدے اُسی کا نتیجہ تھا . لیکن انیسویں صدی کے شروع سے ھی کچھ دیش اپنے مہادیپ کے باھر نوابادیاں بنانے لگ گئے تھے. اِس یگ کے پہلے بھی ھالینڈ' انگلینڈ' تتھا فرانس نے امریکہ' ایشیا تتھا دوسرے استھانوں میں اپنویش بنائے تھے . لیکن نیپولین کے یدھوں کے بعد تو آرتھک ضرورتوں نے یورپ کے دیشوں کے پونجی وادی ورگ میں یہ بھومی کی بھوکھ تیزی سے جگا دی اور دوسری ادیوگک کرانتی کے بعد اُدیوگ واد کے اُدے کے ساتھ' تو اُس مہادیپ کی' آرتھک نقطہ نظر سے اُنت جاتیوں میں' اپنویشوں کے لئے چھیناجھپٹی اور کھینچاتانی شروع ھوگئی .

اِس ادیوگک پونجی وادی شرینی کے اصولوں نے یوروپیہ چیتنا کا نظریہ ھی بدل دیا . وہ پچھمی یورپ' جو اب تک مانو جاتی کی آزادی کے لئے کرانتیوں کا گھر تھا' اُس کی وچار دھارا پونجی واد سے پربھاوت ھوکر سامراجیہ واد سے جکڑ گئی. اِس پرکار اوپنویشک سامراجیوں کے ادے کے ساتھ' اِس اپنویشیہ سامراجیہ واد کی ضرورتوں کو پورا کرنے کے لئے نئے وچاروں کی پرمپرائیں گڑھی گئیں . اِن نئی راج نیتک تتھا سماجک وچار دھاراؤں کا مول منتر تھا 'قوم' کا سوال. اب لوگوں کی پہچان اُن کے چمڑے' بالوں' آنکھوں' رنگ' سر تتھا ناک کی بناوٹ سے کی جانے لگی . اِس کا نتیجہ یہ ھوا کہ کچھ جاتیاں اُونچی مان لی گئیں . تتھا کچھ ھین اور پچھڑی ھوئی قرار دے دی گئیں . اِس کے علاوہ اپنویشوں کے پرادھین لوگوں کو سدا قابو میں رکھنے کے لئے ور بہت سے سدھانت گڑھے جانے لگے' جیسے "قومی قابلیت" "گوری جاتیوں کا بوجھ" "جاتی کی پرمپراگت پونجی" وغیرہ.

اُنیسویں صدی کا آخری حصہ اِسی طرح کے سامراجیہ وادی ھتھیاروں کے پرچار کا کال تھا' جو ویگیانک سچائیوں کی شکل میں ھمارے سامنے رکھے جاتے تھے . آخیر میں' ھیگل کا یہ وچار کہ جرمن جاتی ھی اِنسانوں میں سب سے اُونچی ھے' مورچے پر لایا گیا . اِس سدھانت کے مطابق جرمن جاتی' یعنی پراچین ٹیوٹانک (Teutonic) کی اولاد ھی' پراچین آریوں کے اُتر ادھیکاری اور مانو جاتی میں سب سے اُونچے تھے . اِس 'جرمن واد' نے ھی بعد میں 'نارڈک واد' کا روپ لیا' جس نے بعد میں 'ھیرین والک'—ارتھات سوامی - جاتی - سدھانت کا جامہ پہنا ھے .

# भारत की पिछड़ी हुई जातियों का सवाल

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

इनसानी नस्लों की साइन्स से पता चलता है कि आदिम मानव जातियों को जब अपने क़बीले के बाहर के अनजान आदमियों से काम पड़ता था तो उनको उन आदमियों के बारे में सिर्फ़ इतना ही जानने की ज़रूरत होती थी कि वह उनके अपने क़बीले का है या नहीं.

इसी समाजी तथा मनोवैज्ञानिक ख़याल ने प्राचीन हिन्दुओं को अपने क़ौमी समाज को दूसरों से अलहदा करने के लिये अपने को 'आर्य' नाम से ज़ाहिर करने का विचार दिया. प्राचीन पारसी लोगों ने भी अपने तथा ईरान के बाहर रहने वाले दूसरे लोगों के बीच इसी तरह का एक अन्तर रखा और उन्हें 'दाहल' ( Dahal ) और 'साकल' ( Sacal ) नाम से पुकारा. इसी तरह प्राचीन यहूदियों ने अपने आपको अपने फ़िरके या समाज से बाहर वाले लोगों से जो 'जेन्टाइल्स' ( Gentiles ) के नाम से पुकारे जाते थे, अलग रखा. और इसी ढंग से प्राचीन ग्रीक-निवासियों में हेलेन के ख़ानदान वाले अपने को 'हेलेनीज़' और दूसरों को 'बर्बर' ( Barbarians ) कहते थे.

किसी अजनबी को अपने फ़िरक़े से बाहर समझने की यह भावना आज तक मौजूद है; और इसमें सन्देह नहीं कि उनकी ज्यादातर मुसीबतों का सबब यही अपने समुदाय के बाहर के लोगों को अजनबी समझने की भावना है.

इसी भावना के सबब पुराने धर्मों के अलग अलग क़ौमी आधार बन गये हैं. सिर्फ़ उस काल में जाकर जबकि संसार में बौद्ध, ईसाई तथा इसलाम जैसे सार्वभौम धर्मों का जन्म हुआ, तब उनकी सब को मिलाने और आत्मसात करने की ताक़त ही उनके भक्तों या पैराकारों की इस 'मेरे' 'तेरे' की भावना को कुछ सीमा तक कम कर सकी. इस तरह की चिन्ता-धारा के फलस्वरूप धर्म क़ौमियत का आधार बन गया. इसने लोगों को दूसरों को अपना भाई मानना सिखाया, लेकिन सिर्फ़ उसी दशा में जब कि वे एक ही धर्म के मानने वाले हों. पच्छिमी एशिया में यह भावना अब तक मौजूद है, और कुछ हद तक पूर्वी यूरोप में भी. एक धर्म के ज़रिये एकता की इस भावना को लेकर मंझले ज़माने में और आज भी युद्ध और क़त्लेआम हुए हैं और हो रहे हैं.

## राष्ट्र

लेकिन यूरोपियन संस्कृति के नये जनम और क्रान्ति के युग के साथ, तथा जातियों के मुख़्तलिफ़ राज्यों और

# بھارت کی پچھڑی ھوئی جاتیوں کا سوال

ڈاکٹر بھوپیندرناتھ دت

اِنسانی نسلوں کی سائنس سے پتہ چلتا ھے کہ آدم مانو جاتیوں کو جب اپنے قبیلے کے باھر کے انجان آدمیوں سے کام پڑتا تھا تو اُن کو اُن آدمیوں کے بارے میں صرف اتنا ھی جاننے کی ضرورت ھوتی تھی کہ وہ اُن کے اپنے قبیلے کا ھے یا نہیں .

اِسی سماجی تتھا منووگیانک خیال نے پراچین ھندؤں کو اپنے قومی سماج کو دوسروں سے علیحدہ کرنے کے لئے اپنے کو 'آریہ' نام سے ظاھر کرنے کا وچار دیا . پراچین پارسی لوگوں نے بھی اپنے تتھا ایران کے باھر رھنے والے دوسرے لوگوں کے بیچ اسی طرح کا ایک انتر رکھا اور انھیں 'داھل' (Dahal) اور 'ساکل' (Sacal) نام سے پکارا . اِسی طرح پراچین یہودیوں نے اپنے آپ کو اپنے فرقے یا سماج سے باھر والے لوگوں سے جو 'جینٹائلس' (Gentiles) کے نام سے پکارے جاتے تھے' الگ رکھا . اور اِسی ڈھنگ سے پراچین گریک - نواسیوں میں ھیلین کے خاندان والے اپنے کو 'ھیلینیز' اور دوسروں کو 'بربر' (Barbarians) کہتے تھے .

کسی اجنبی کو اپنے فرقے سے باھر سمجھنے کی یہ بھاؤنا آج تک موجود ھے؛ اور اس میں سندیہہ نہیں کہ اُن کی زیادہتر مصیبتوں کا سبب یہی اپنے سمودائے کے باھر کے لوگوں کو اجنبی سمجھنے کی بھاؤنا ھے .

اِسی بھاؤنا کے سبب پرانے دھرموں کے الگ الگ قومی آدھار بن گئے ھیں . صرف اُس کال میں جاکر جب کہ سنسار میں بودھ' عیسائی تتھا اِسلام جیسے ساروبھوم دھرموں کا جنم ھوا' تب اُن کی سب کو ملانے اور آتمسات کرنے کی طاقت ھی اُن کے بھکتوں یا پیروکاروں کی اِس 'میرے' - 'تیرے' کی بھاؤنا کو کچھ سیما تک کم کرسکی . اِس طرح کی چنتا - دھارا کے پھل سروپ دھرم قومیت کا آدھار بن گیا . اُس نے لوگوں کو دوسروں کو اپنا بھائی ماننا سکھایا' لیکن صرف اُسی دشا میں جب کہ وے ایک ھی دھرم کے ماننے والے ھوں. پچھمی ایشیا میں یہ بھاؤنا اب تک موجود ھے' اور کچھ حد تک پوربی یورپ میں بھی . ایک دھرم کے ذریعہ ایکتا کی اِس بھاؤنا کو لیکر منجھلے زمانے میں اور آج بھی یدھ اور قتل عام ھوئے ھیں اور ھورھے ھیں .

## راشٹر

لیکن یوروپین سنسکرتی کے نئے جنم اور کرانتی کے یگ کے ساتھ' تتھا جاتیوں کے مختلف راجیوں اور

सरमद का तीसरा अक़ीदा यह था कि इस सर्वोच्च धर्म तक पहुंचने के लिये रूढ़ियों और परम्पराओं के बन्धनों को तोड़ना जरूरी है जो इनसान को अपने सड़े गले मज़हबों से बांध रखती हैं और इसीलिये वे कहते हैं—

तर्क करद्म चाराहाए जुमला अज़ मावाए ख़ेश
नूरे हक़ रा दीदाअब अज़ ज़ेर ता बालाए ख़ेश
गर तु मी ख्वाही चुनी हमशां जुदा अज़ जाए .खुद
ता बबीनी मज़हरे हक़ जुम्ला सर ता पाए .ख़ेश

यानी—

"मैं सब रूढ़ियों के साथ अपने सम्बन्ध का त्याग करता हूं;
मैं अपने सर से पैर तक सत्य की रोशनी को देख रहा हूं;
अगर तू मेरी ही तरह हो जाना चाहता है तो अपनी जगह छोड़ दे;
ताकि तू सत्य के ज़हूर को मेरी ही तरह देख सके."

सरमद का चौथी अक़ीदा यह था कि पैग़म्बरों, अवतारों, और सब धर्मों के संस्थापकों के लिये उनके दिल में यकसां इज्ज़त थी. उन्होंने कृष्ण और मोहम्मद, राम और लछमन की यकसां तारीफ़ के गीत गये हैं, क्योंकि इन महापुरुषों ने एक ही सच्चाई का प्रचार किया है. सत्य एक ही है अगरचे वह अलग अलग नाम रूपों में ज़ाहिर हुआ है. वे ढोंगी मुल्लाओं, पुरोहितों, पंडितों और उपाध्यायों के खि़लाफ़ थे जो जनता की धार्मिक भावनाओं से बेजा फ़ायदा उठाते हैं. इनके बारे में सरमद कहते हैं—

यारां चे क़दर राहे दोरंगी दारन्द
मसहफ़ ब बग़ल दीने फ़िरंगी दारन्द
पैवस्ता बहम चो माहरहाए शतरंज
दर दिलहम फ़िक्र ख़ाना जंगी दारन्द

यानी—

"यार लोग किस क़दर दोरंगी चाल चलते हैं!
बग़ल में .क़ुरान है और मज़हब फ़िरंगियों का है!
हमेशा शतरञ्ज के मोहरों की तरह
ये लोगों को लड़ाने की तरकीबें सोचते रहते हैं."

सरमद आने वाले ज़माने को देख सकते थे. उस समय का भारत उनकी शिक्षा पर चलने में लाचार था और शायद आज का भारत भी उनकी शिक्षा पर चलने में मजबूर है लेकिन मज़हबे इन्सानियत यानी प्रेम धर्म के जिन उसूलों का सरमद ऐलान कर गये हैं उन उसूलों की पाक त्रिवेनी में आज स्नान करके ही इनसानी दुनिया को निजात मिल सकती है.

---



سرمد کا تیسرا عقیدہ یہ تھا یہ اِس سروچ دھرم تک پہنچنے کے لئے روڑھیوں اور پرمپراؤں کے بندھنوں کو توڑنا ضروری ہے جو اِنسان کو اپنے سڑے گلے مذہبوں سے باندھ رکھتی ہیں اور اس لئے وے کہتے ہیں—

ترک کردم چارہ ہائے جملہ از ماوائے خویش
نور حق را دیدہ ام از زیرتا بالائے خویش
گر تو می خواہی چنیں ہم شاں جدا از جائے خود
تابہ بینی مظہر حق جملہ سر تا پائے خویش

یعنی—

"میں روڑھیوں کے ساتھ اپنے سمبندھ کا تیاگ کرتا ہوں؛
میں اپنے سر سے پیر تک ستیہ کی روشنی کو دیکھ رہا ہوں؛
اگر تو میری ہی طرح ہونا چاہتا ہے تو اپنی جگہ چھوڑ دے؛
تاکہ تو ستیہ کے ظہور کو میری ہی طرح دیکھ سکے."

سرمد کا چوتھا عقیدہ یہ تھا کہ سب پیغمبروں، اوتاروں اور سب دھرموں کے سنستھاپکوں کے لئے اُن کے دل میں یکساں عزت تھی. انھوں نے کرشن اور محمد، رام اور لچھمن کی یکساں تعریف کے گیت گائے ہیں، کیونکہ اِن مہاپرشوں نے ایک ہی سچائی کا پرچار کیا ہے. ستیہ ایک ہی ہے اگرچہ وہ الگ الگ نام روپوں میں ظاہر ہوا ہے. وے ڈھونگی ملاؤں پروہتوں، پنڈتوں اور اپادھیایوں کے خلاف تھے جو جنتا کی دھارمک بھاؤناؤں سے بیجا فائدہ اُٹھاتے ہیں. اِن کے بارے میں سرمد کہتے ہیں—

یاراں چہ قدر راہ دو رنگی دارند
مصحف بہ بغل دین فرنگی دارند
پیوستہ بہم چو مہرہائے شطرنج
در دلہم فکر خانہ جنگی دارند

یعنی—

"یار لوگ کس قدر دو رنگی چال چلتے ہیں!
بغل میں قرآن ہے اور مذہب فرنگیوں کا ہے!
ہمیشہ شطرنج کے مہروں کی طرح
یہ لوگوں کو لڑانے کی ترکیبیں سوچتے رہتے ہیں."

سرمد آنے والے زمانے کو دیکھ سکتے تھے. اس سمے کا بھارت اُن کی شکشا پر چلنے میں لاچار تھا اور شاید آج کا بھارت بھی اُن کی شکشا پر چلنے میں مجبور ہے لیکن مذہب اِنسانیت یعنی پریم دھرم کے جن اصولوں کا سرمد اعلان کر گئے ہیں اُن اصولوں کی پاک تروینی میں آج اسنان کرکے ہی انسانی دنیا کو نجات مل سکتی ہے.

**हमवारा चिरा दर पये ओ मी गरदी**
**सरमद अगर ओ ख़ुदास्त ख़ुद मी आयद**

यानी—

"ऐ सरमद ! अगर उस में वफ़ा है तो वह ख़ुद आयेगा,
और अगर उसका आना मुनासिब है तो वह ख़ुद आयेगा,
तुम रात-दिन इसे खोजते क्यों भटकते फिरते हो ?
ऐ सरमद ! अगर वह ख़ुदा है तो वह ख़ुद आयेगा."

सरमद की इस ऊपर की रुबाई में तमाम धर्म मज़हबों का सार निचुड़ कर इकट्ठा हो गया है. हिन्दू धर्म का विश्वास है कि भक्त के इशारे पर भगवान नाचते हैं, यही इसलाम की स्पिरिट है और ईसाई धर्म की इसी भावना को मशहूर अंग्रेज़ रहस्यवादी कवि टामसन ने अपनी पुस्तक 'Hound of Heaven' में ज़ाहिर किया है. अपने अन्दर ही ख़ुदा के नूर को देखना सब से ऊंचा मज़हब है.

सरमद उसूली आदमी थे. वे सच्चे अर्थों में सर्वधर्म समभावी थे. अगर धर्म ऊंची भावनाओं का नाम है तो वे सर से पैर तक धार्मिक थे. अकबर की तरह वे हिकमते अमल नहीं जानते थे. उनकी कोशिशों की क़ीमत महज़ ऐतिहासिक नहीं है. उनकी क़ीमत आध्यात्मिक ( इख़लाक़ी ) है और भारत के फ़िरक़ापरस्ती के सवाल के हल करने में उनके धार्मिक सिद्धान्तों का आज भी सफलतापूर्वक उपयोग हो सकता है. इस नुक़्ते नज़र से उनके यह दो सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्ण हैं.

( 1 ) उनकी धार्मिक उदारता पन्थों और फ़िरक़ों के झगड़ों से ऊपर उठकर सभी धर्मों में एक समान सच्चाई के दर्शन करती है. सरमद "एक साथ ही अपने को आतिश-परस्त, यहूदी, ईसाई, बुतपरस्त और मुसलमान कहते थे." उन्होंने सभी धर्मों की मौलिक सच्चाई को देख लिया था.

( 2 ) उन्हें सब धर्म मज़हबों की एकता में विश्वास था. उन्हें ईश्वर की एकता में विश्वास था और वे सब धर्मों में उसी एक ईश्वर का ज़हूर देखते थे.

धर्मों के गोरखधन्धे की छानबीन करते हुए सरमद कहते हैं—

आशिक़ो इश्क़ बुतो बुतगरो अय्यारे कीस्त
काबओ दैरो मसजिद हमाजा तारीकीस्त
गर दर आई ब चमन वहदते यकरंगी बीं
ग़ौर कुन आशिक़ो माशूक़ो गुलोख़ार यकीस्त

यानी—

"प्रियतम और प्रेम, मूर्ति और मूर्ति गढ़ने वाला कौन है ?
काबा, बुतख़ाना और मसजिद सब जगह अंधेरा है !
अगर तू ख़ुदाई एकता के चमन में आकर देखे;
तो तू पायेगा कि प्रियतम और प्रियतमा, फूल और कांटे सब एक ही हैं.



ھموارہ چرا در پئے او می گردی
سرمد اگر او خداست خود می آید

یعنی—

" اے سرمد ! اگر اُس میں وفا ھے تو وہ خود آئے گا،
اور اگر اُس کا آنا مناسب ھے تو وہ خود آئے گا،
تم رات دن اُسے کھوجتے کیوں بھٹکتے پھرتے ھو ؟
اے سرمد ! اگر وہ خدا ھے تو خود آئے گا ."

سرمد کی اِس اوپر کی رباعی میں تمام دھرم مذھبوں کا سار نچوڑ کر اکٹھا ھوگیا ھے . ھندو دھرم کا وشواس ھے کہ بھکت کے اِشارے پر بھگوان ناچتے ھیں، یہی اِسلام کی اِسپرٹ ھے اور عیسائی دھرم کی اِسی بھاؤنا کو مشہور انگریز رھسیہ وادی کوی ٹامسن نے اپنی پستک "Hound of Heaven" میں ظاھر کیا ھے . اپنے اندر ھی خدا کے نور کو دیکھنا سب سے اونچا مذھب ھے .

سرمد اصولی آدمی تھے . وے سچے ارتھوں میں سرودھرم سمبھاوی تھے . اگر دھرم اونچی بھاؤناؤں کا نام ھے تو وہ سر سے پیر تک دھارمک تھے . اکبر کی طرح وہ حکمت عمل نہیں جانتے تھے . اُن کی کوششوں کی قیمت محض اَیتہاسک نہیں ھے . اُن کی قیمت ادھیاتمک ( اخلاقی ) ھے اور بھارت کے فرقہ پرستی کے سوال کے حل کرنے میں اُن کے دھارمک سدھانتوں کا آج بھی سپھلتا پوروک اُپیوگ ھو سکتا ھے . اِس نقطہ نظر سے اُن کے یہ دو سدھانت بہت مہتو پورن ھے—

(1) اُن کی دھارمک اُدارتا پنتھوں اور فرقوں کے جھگڑوں سے اوپر اُٹھکر سبھی دھرموں میں ایک سمان سچائی کے درشن کرتی ھے . سرمد " ایک ساتھ ھی اپنے کو آتش پرست، یہودی، عیسائی، بت پرست اور مسلمان کہتے تھے ." انھوں نے سبھی دھرموں کی مولک سچائی کو دیکھ لیا تھا .

(2) انھیں سب دھرم مذھبوں کی ایکتا میں وشواس تھا . اِنھیں ایشور کی ایکتا میں وشواس تھا اور وے سب دھرموں میں اُسی ایک ایشور کا ظہور دیکھتے تھے .

دھرموں کے گورکھ دھندھے کی چھان بین کرتے ھوئے سرمد کہتے ھیں—

عاشق و عشق بت و بتگر و عیارے کیست
کعبہ و دیر و مسجد ھمہ جا تاریکیست
گر در آئی بہ چمن وحدت یکرنگی بیں
غورکن عاشق و معشوق و گل و خار یکیست

یعنی—

"پریتم اور پریم، مورتی اور موتی گڑھنے والا کون ھے ؟
کعبہ، بت خانہ اور مسجد سب جگہ اندھیرا ھے !
اگر تو خدائی ایکتا کے چمن میں آ کر دیکھے،
تو تو پائے گا کہ پریتم اور پریتما، پھول اور کانٹے سب ایک ھی ھیں.

था और जन्नत की बादशाहत हासिल करना था. दुनिया की इस नाशमान बादशाहत से वह बहुत ऊंचा उठ गया था. काश सरमद की पेशीनगोई पूरी हो गई होती तो भारत की इन तीन सदियों का इतिहास सुनहरे हरफ़ों में लिखा गया होता. भारतीय राष्ट्रीयता ने दारा के पतन के बाद सरमद की शहादत से जो ज़बरदस्त नुक़सान उठया उसका तख़मीना आसानी से नहीं लगाया जा सकता. औरङ्गजेब ने मुल्लाओं के फ़तवे पर ज़ाहिरा इस विना पर सरमद को मौत की सज़ा दी कि "वह इसलाम छोड़ कर दिगम्बर मुनि हो गये थे" पर दरअसल दारा के प्रति सरमद का प्रेम ही औरंगज़ेब की आंखों में खटक रहा था.

सरमद अनासक्त थे और सच्चे अर्थों में अपरिग्रही थे. जिसने लखूखा रुपयों की जायदाद ग़रीबों में तक़सीम करवा दी हो उसे फिर चार गिरह लंगोटी से कोई लगाव रह सकता था ? जिसकी भावनायें बच्चों की तरह निर्मल हो गई हों उसमें कहीं इन्द्रिय-जनित जिन्सी वासनायें बाक़ी रह सकती हैं ? जिसने प्रेम का चोला पहन लिया हो क्या उसे फिर तन ढकने के लिये कपड़ों की जरूरत रह जाती है ? सरमद के हृदय में देह-जनित शर्म की कोई गुञ्जाइश ही न रह गई थी और तभी वह औरंगज़ेब के सवाल करने पर गर्व के साथ अपने दिगम्बर वेश पर कहते हैं—

आंकस कि तुरा ताजे जहांबानी दाद
मारा हमां असबाबे परीशानी दाद
पोशां लिबास हर केरा ऐबे दाद
बेऐब रा लिबासे उरियानी दाद

यानी—

"जिसने कि तुझे बादशाहत का ताज बख़्शा
उसी ने हमें परेशानियां बख़्शीं;
जिस में उसने कुछ ऐब देखे उसे कपड़े पहनाये
और बे ऐबों को उसने दिगम्बरी का लिबास दिया."

यों तो सरमद ने इसलाम की तारीफ़ में भी बहुत कुछ कहा है लेकिन उनकी सब से सुन्दर रुबाइयां वही हैं जिस में उन्होंने इसलाम और हिन्दू धर्म का मेल जोल किया है. दोनों धर्मों की रूढ़ियों और कर्म कान्डों को छोड़कर उन्होंने दोनों धर्मों के बुनियादी उसूलों की मिलावट पर जोर दिया है. उन्हीं तत्वों के अन्दर उन्होंने अल्लाह के ज़हूर का दर्शन किया है. अल्लाह की दिखावटी परिस्तिश के बजाये अल्लाह की राह में साधना करने में ही उनका ऐतक़ाद था. अपनी राह की सच्चाई में इन्हें इतना असीम विश्वास था कि वे समझते थे कि ईश्वर अपने आप उनकी ख़बर लेगा. वे अपनी एक रुबाई में कहते हैं—

सरमद अगरश वफ़ास्त ख़ुद मी आयद
वर आमदनश बजास्त ख़ुद मी आयद





تھا اور جنت کی بادشاہت حاصل کرنا تھا . دنیا کی اِس ناشمان بادشاہت سے وہ بہت اُونچا اُٹھ گیا تھا . کاش سرمد کی پیشینگوئی پوری ہوگئی ہوتی تو بھارت کی اِن تین صدیوں کا اِتہاس سنہرے حرفوں میں لکھا گیا ہوتا . بھارتیہ راشٹریتا نے دارا کے پتن کے بعد سرمد کی شہادت سے جو زبردست نقصان اُٹھایا اُس کا تخمینہ آسانی سے نہیں لگایا جاسکتا . اورنگزیب نے مسلمانوں کے فتوؤں پر ظاہرہ اِس بنا پر سرمد کو موت کی سزادی کہ "وہ اِسلام چھوڑکر دگمبرمنی ہوگئے تھے" پر دراصل دارا کے پرتی سرمد کا پریم ہی اورنگزیب کی آنکھوں میں کھٹک رہا تھا .

سرمد آناسکت تھے اور سچے ارتھوں میں اپریگرہی تھے . جس نے لکھوکھا روپیوں کی جائداد غریبوں میں تقسیم کروادی ہو اُسے پھر چار گرہ لنگوٹی سے لگاؤ رہ سکتا تھا؟ جس کی بھاؤنائیں بچوں کی طرح نرمل ہوگئیں ہوں اُس میں کہیں اندریہ - جنت (جنسی) واسنائیں باقی رہ سکتی ہیں؟ جس نے پریم کا چولا پہن لیا ہو کیا اُسے پھر تن ڈھکنے کے لئے کپڑوں کی ضرورت رہ جاتی ہے؟ سرمد کے ہردے میں دیہہ جنت شرم کی کوئی گنجائش ہی نہ رہ گئی تھی اور تبھی وہ اورنگزیب کے سوال کرنے پر گرو کے ساتھ اپنے دگمبر ویش پر کہتے ہیں—

آنکس کہ ترا تاج جہانبانی داد
مارا ہمہ اسباب پریشانی داد
پوشاں لباس ہرکرا عیبے داد
بےعیب را لباس عریانی داد

یعنی—

"جس نے کہ تجھے باشاہت کا تاج بخشا
اُسی نے ہمیں پریشانیاں بخشیں .
جس میں اُس نے کچھ عیب دیکھے اُسے کپڑے پہنائے
اور بے عیبوں کو اُس نے دگمبری کا لباس دیا ."

یوں تو سرمد نے اسلام کی تعریف میں بھی بہت کچھ کہا ہے لیکن اُن کی سب سے سندر رباعیاں وہی ہیں جن میں اُنہوں نے اسلام اور ہندو دھرم کا میل جول کیا ہے . دونوں دھرموں کی روڑھیوں اور کرم کانڈوں کو چھوڑ کر اُنہوں نے دونوں دھرموں کے بنیادی اُصولوں کی ملاوٹ پر زور دیا ہے . انہیں تتوں کے اندر اُنہوں نے اللہ کے ظہور کا درشن کیا ہے . اللہ کی دکھاوٹی پرستش کے بجائے اللہ کی راہ میں سادھنا کرنے میں ہی اُن کا اعتقاد تھا . اپنی راہ کی سچائی میں اُنہیں اتنا آسیم وشواس تھا کہ وے سمجھتے تھے کہ ایشور اپنے آپ اُن کی خبر لے گا . وے اپنی ایک رباعی میں کہتے ہیں—

سرمد اگرش وفاست خود می آید
ور آمدنش بجاست خود می آید

सरमद के इस सवाल से बहुत से रूढ़िवादी मुसलमानों ने सरमद पर मूर्ति पूजक होने का इलज़ाम लगाकर उनकी निन्दा की है और सरमद के बहुत से हिन्दू प्रशंसकों ने उन्हें हिन्दू समझ कर उनकी तारीफ़ की है. लेकिन असलियत यह है कि वह निन्दा-स्तुति दोनों से बहुत ऊंचे उठ गये थे. हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के बुनियादी उसूल उनके रोम-रोम में पैवस्त थे. उन्हें अल्लाह और रसूल में सचमुच कोई ख़ता नहीं दिखाई दी थी क्योंकि उन्होंने सदा रसूल की तारीफ़ ही की है. ऊपर की रुबाई में आज़ादख़याली की वही झलक है जो ईरान के सूफ़ियों और मशहूर अङ्गरेज़ी कवि शैली की कविताओं में हमें मिलती है. रूढ़ियों में जकड़ी हुई दुनिया जिस चीज़ को धर्म कहती है उसके मुक़ाबले में इन लोगों ने अपने आज़ाद मानव धर्म को 'कुफ़्र' कहकर पुकारा है. इनका धर्म रूढ़ियों से बोझिल नहीं, प्रेम का धर्म है. जब मौलवियों ने सरमद पर 'दिगम्बर मुनि' होने का इलज़ाम लगाया तो सरमद ने जवाब दिया—

शाहे शाहानेम ज़ाहिद चूं तो उरियां नेस्तम
ज़ौक़ो शौक़ो शोरिशम लेकिन परीशां नेस्तम
बुतपरस्तम काफ़िरम अज़ अहले ईमां नेस्तम
सूए मसजिद भी रवम अम्मा मुसलमां नेस्तम

यानी—

"ऐ ज़ाहिद मैं राज राजेश्वर हूं, मैं तेरी तरह नङ्गा नहीं हूं;
मैं ज़ौक़, शौक़ और शोरिश हूं, पर तेरी तरह परेशान नहीं हूं;
मैं मूर्ति पूजक हूं, काफ़िर हूं और ईमान वालों में से नहीं हूं
मैं मसजिद की तरफ़ जा रहा हूं पर मैं मुसलमान नहीं हूं!"

सरमद नङ्गे-भिखमङ्गों के बीच जामा मसजिद की सीढ़ियों को ही अपना घर बनाये हुये थे पर फिर भी वह रूढ़ि-अर्थों में मुसलमान नहीं थे. वह जामा मसजिद में भी अपनी बुतपरस्ती ले जाना चाहते थे.

दिल्ली में युवराज दाराशिकोह ने सरमद का प्रेम पूर्वक स्वागत किया. दारा उनकी "बेहद इज़्ज़त करते थे" और "अकसर इस दिगम्बर मुनि की सेवा में हाज़िर होते थे." सरमद और सरमद के मशहूर हिन्दू योगी दोस्त लालदास का दारा पर बेइन्तहा असर पड़ा जिसकी बदौलत दारा की नज़रों से हिन्दू और मुसलमान का फ़र्क़ मिट गया और दारा के हृदय से मानव प्रेम, मज़हबे इश्क़ की वह धारा फूटी जिसने भारत के समाजी आसमान को यकरङ्गी बना दिया. दारा ने अपनी मशहूर किताब "मज्मा-उल-बहरैन" (दो समुन्दरों के सङ्गम) में इसलामी सूफ़ीवाद और वेदान्ती रहस्यवाद का सुन्दर मेल जोल किया है. सरमद ने पेशीनगोई की थी कि शाहजहां के बाद दारा हिन्दुस्तान का बादशाह होगा पर दारा को तो शहीदों का बादशाह बनना था, मज़हबे इन्सानियत का रहबर बनना



سرمد کے اِس سوال سے بہت سے روڑھی وادی مسلمانوں نے سرمد پر مورتی پوجک ھونے کا الزام لگاکر اُن کی نندا کی ھے اور سرمد کے بہت سے ھندو پرشنسکوں نے انھیں ھندو سمجھ کر اُن کی تعریف کی ھے. لیکن اصلیت یہ ھے کہ وے نندا - استوتی دونوں سے بہت اُونچے اُٹھ گئے تھے . ھندو دھرم اور اِسلام دونوں کے بنیادی اصول اُن کے روم روم میں پیوست تھے . انھیں اللہ اور رسول میں سچ مچ کوئی خطا نہیں دکھائی دی تھی کیونکہ انھوں نے سدا رسول کی تعریف ھی کی ھے. اُوپر کی رباعی میں آزاد خیالی کی وھی جھلک ھے جو ایران کے صوفیوں اور مشہور انگریزی کوی شیلی کی کویتاؤں میں ھمیں ملتی ھے . روڑھیوں میں جکڑی ھوئی دنیا جس چیز کو دھرم کہتی ھے اُس کے مقابلے میں اِن لوگوں نے اپنے آزاد مانو دھرم کو 'کفر' کہہ کر پکارا ھے . اِن کا دھرم روڑھیوں سے بوجھل نہیں' پریم کا دھرم ھے . جب مولویوں نے سرمد پر 'دگمبر منی' ھونے الزام لگایا تو سرمد نے جواب دیا —

شاہ شاھاں نیم زاھد چوں تو عریاں نیستم
ذوق و شوق و شورشم لیکن پریشاں نیستم
بت پرستم کافرم از اہل ایماں نیستم
سوئے مسجد می روم اما مسلماں نیستم

یعنی —

"اے زاھد میں راج راجیشور ھوں' میں تیری طرح ننگا نہیں ھوں؛
میں ذوق' شوق اور شورش ھوں' پر تیری طرح پریشان نہیں ھوں؛
میں مورتی پوجک ھوں' کافر ھوں اور ایمان والوں میں سے نہیں ھوں؛
میں مسجد کی طرف جا رھا ھوں پر میں مسلمان نہیں ھوں!"

سرمد ننگے بھکمنگوں کے بیچ جامع مسجد کی سیڑھیوں کو ھی اپنا گھر بنائے ھوئے تھے پر پھر بھی وہ روڑھی - ارتھوں میں مسلمان نہیں تھے . وے جامع مسجد میں بھی اپنی بت پرستی لے جانا چاھتے تھے .

دلی میں یوراج داراشکوہ نے سرمد کا پریم پوروک سواگت کیا . دارا اُن کی "بےحد عزت کرتے تھے" اور "اکثر اِس دگمبر منی کی سیوا میں حاضر ھوتے تھے ." سرمد اور سرمد کے مشہور ھندو یوگی دوست لال داس کا دارا پر بے اِنتہا اثر پڑا جس کی بدولت دارا کی نظروں سے ھندو اور مسلمان کا فرق مٹ گیا اور دارا کے ھردے سے مانو پریم' مذھب عشق کی وہ دھارا پھوٹی جس نے بھارت کے سماجی آسمان کو یکرنگی بنادیا . دارا نے اپنی مشہور کتاب "مجمع البحرین" (دو سمندروں کے سنگم) میں اِسلامی صوفی واد اور ویدانتی رھسیہ واد کا سندر میل جول کیا ھے . سرمد نے پیشینگوئی کی تھی کہ شاھجہاں کے بعد دارا ھندستان کا بادشاہ ھوگا پر دارا کو تو شہیدوں کا بادشاہ بننا تھا' مذھب اِنسانیت کا رھبر بننا

# प्रेम-योगी सरमद    پریم-یوگی سرمد

प्रो० मोहम्मद अहसान फ़ारूक़ी एम० ए०

सरमद इसलाम के एक मशहूर और बहुत बड़े सन्त हुए हैं. शहन्शाह अकबर ने जिस 'मज़हबे इनसानी' (मानव धर्म) की बुनियादें रक्खीं, जिस हिन्दू-मुसलिम एकता का प्रचार किया और मुख़्तलिफ़ संस्कृतियों को जिस एक हिन्दुस्तानी कल्चर के सांचे में ढाला, कला की दुनिया में उसकी सब में सुन्दर मिसाल ताजमहल के रूप में है. उसी युग में जब हिन्दू-मुसलिम एकता की पुख़्ता बुनियादें पड़ रही थीं एक चमकते हुए सितारे की तरह हिन्दुस्तान के आसमान में सन्त सरमद का उदय हुआ.

सरमद जन्म से यहूदी थे. इसलाम क़ुबूल करने के बाद एक सौदागर की हैसियत से वह एक धनी तिजारती क़ाफ़िले के साथ हिन्दुस्तान आये. सिन्ध में ठट्टा का शहर उस ज़माने में अरब मुल्कों के साथ हिन्दुस्तान की तिजारत का एक बहुत बड़ा मरकज़ था. जिन दिनों सरमद ठट्टा में ठहरे हुए थे उन्हीं दिनों उनकी एक नौजवान जैन मुनि अभयचन्द के साथ भेंट हुई. अभयचन्द के उपदेशों का उन पर इतना गहरा असर पड़ा कि उन्होंने अपनी तमाम जायदाद ग़रीबों में बांट दी और ख़ुद कपड़ों तक को त्याग कर नग्न दिगम्बर मुनि बनकर हिन्दू और जैन शास्त्रों की गहरी छानबीन और खोज करने में लग गये. सरमद बचपन से ही सत्य के खोजी थे. यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इसलाम और ईरान के सूफ़ी धर्म की उन्होंने गहरी छानबीन की थी लेकिन किसी से भी उनकी आत्मा को तसल्ली नहीं मिली. भारतीय और जैन दर्शन के अध्ययन ने सरमद के दिल में ज्ञान की ज्वाला जला दी. वह साकार और निराकार, कुफ़्र और इसलाम, पैग़म्बर और लछमनो-राम का सारा भेद भाव भूल गये. उनका हृदय प्रेम के धर्म में शराबोर हो गया. वह हैरान होकर ख़ुद अपने से पूछने लगे—

> सरमद बजहां बसे निको नाम शुदी
> अज़ मज़हबे कुफ़्र सूए इसलाम शुदी
> आख़िर चे ख़ता दीदी ब अल्लाहो रसूल
> सरगश्ता मुरीद लछमनो-राम शुदी

यानी—

"सरमद तूने दुनिया में बहुत नाम कमाया,
मज़हबे-कुफ़्र छोड़कर इसलाम की तरफ़ आया,
आख़िर तूने अल्लाह और रसूल में क्या ख़ता देखी,
कि उन्हें छोड़कर राम और लछमन का भक्त हो गया ?"

پروفیسر محمد احسان فاروقی ایم۔ اے۔

سرمد اِسلام کے ایک مشہور اور بہت بڑے سنت ہوئے ہیں۔ شہنشاہ اکبر نے جس 'مذہب اِنسانی' (مانو دھرم) کی بنیادیں رکھیں' جس ہندو - مسلم ایکتا کا پرچار کیا اور مختلف سنسکرتیوں کو جس ایک ہندستانی کلچر کے سانچے میں ڈھالا' کلا کی دنیا میں اُس کی سب میں سندر مثال تاج محل کے روپ میں ہے۔ اُسی یگ میں جب ہندو - مسلم ایکتا کی پختہ بنیادیں پڑ رہی تھیں ایک چمکتے ہوئے ستارے کی طرح ہندستان کے آسمان میں سنت سرمد کا اُدے ہوا۔

سرمد جنم سے یہودی تھے۔ اِسلام قبول کرنے کے بعد ایک سوداگر کی حیثیت سے وہ ایک دھنی تجارتی قافلے کے ساتھ ہندستان آئے۔ سندھ میں ٹھٹّا کا شہر اُس زمانہ میں عرب ملکوں کے ساتھ ہندستان کی تجارت کا ایک بہت بڑا مرکز تھا۔ جن دنوں سرمد ٹھٹّا میں ٹھہرے ہوئے تھے اُنہیں دنوں اُن کی ایک نوجوان جین منی ابھےچند کے ساتھ بھینٹ ہوئی۔ ابھےچند کے اُپدیشوں کا اُن پر اتنا گہرا اثر پڑا کہ اُنھوں نے اپنی تمام جائداد غریبوں میں بانٹ دی اور خود کپڑوں تک کو تیاگ کر ننگ دگمبر منی بنکر ہندو اور جین شاستروں کی گہری چھان بین اور کھوج کرنے میں لگ گئے۔ سرمد بچپن سے ہی ستیہ کے کھوجی تھے۔ یہودی دھرم' عیسائی دھرم' اِسلام اور ایران کے صوفی دھرم کی اُنھوں نے گہری چھان بین کی تھی لیکن کسی سے بھی اُن کی آتما کو تسلی نہیں ملی۔ بھارتیہ اور جین - درشن کے ادھین نے سرمد کے دل میں گیان کی جوالا جلا دی۔ وہ ساکار اور نراکار' کفر اور اِسلام' پیغمبر اور لچھمن و رام کا سارا بھید - بھاؤ بھول گئے۔ اُن کا ہردے پریم کے دھرم میں شرابور ہوگیا۔ وہ حیران ہوکر خود اپنے سے پوچھنے لگے—

> سرمد بہ جہاں بسے نکو نام شدی
> از مذہب کفر سوئے اِسلام شدی
> آخر چہ خطا دیدی بہ اللہ و رسول
> سرگشتہ مرید لچھمن و رام شدی

یعنی—

"سرمد تونے دنیا میں بہت نام کمایا'
مذہب کفر چھوڑکر اِسلام کی طرف آیا'
آخر تونے اللہ اور رسول میں کیا خطا دیکھی'
کہ اُنھیں چھوڑکر رام اور لچھمن کا بھکت ہوگیا؟"



भगवान बुद्ध की शान्ति की अपील पर लड़ने वाले राजा अपने अपने हथियार डाल रहे हैं.

بھگوان بدھ کی شانتی کی اپیل پر لڑنے والے راجا اپنے اپنے ھتھیار ڈال رھے ھیں

# जनवरी 1955 جنوری

क्या किस से　　　　सफ़ा صفحہ　　　　کیا کس سے


1. प्रेम-योगी सरमद
—प्रोफ़ेसर मोहम्मद अहसान फ़ारूक़ी एम० ए० 1

2. भारत की पिछड़ी हुई जातियों का सवाल
—डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त 6

3. हिन्दू मुसलमानों के कल्चरी मेल जोल की शुरूआत
—डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी एम० ए०, डी० फ़िल० 16

4. चेन गैङ्ग (कहानी)
—विश्वम्भरनाथ पांडे 26

5. अहिंसा पर चीनी कवितायें और तसवीरें
—सुन्दरलाल 33

6. जब लेनिन की मौत का ऐलान हुआ
—निकोलाई आस्त्रोवस्की 40

7. इनसानी भाईचारे का असली रास्ता
—डाक्टर भगवानदास 51

8. हिन्दुस्तानी कल्चर और नया समाज
—डाक्टर ताराचन्द 55

9. कुछ किताबें
—विश्वम्भरनाथ पांडे 63

10. हमारी राय— 65

एटम और हाइड्रोजन बम बनाम शान्ति मोरचा—विश्वम्भरनाथ पांडे; एफ्रो-एशियन कान्फ्रेन्स—विश्वम्भरनाथ पांडे; समाजवादी व्यवस्था की ओर—विश्वम्भरनाथ पांडे, इतिहास की नई सामग्री—विश्वम्भरनाथ पांडे.

1. پریم یوگی سرمد
—پروفیسر محمد احسان فاروقی ایم. اے.

2. بھارت کی پچھڑی ہوئی جاتیوں کا سوال
—ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

3. ھندو مسلمانوں کے کلچری میل جول کی شروعات
—ڈاکٹر لطیف دفتری ایم. اے. ڈی. فل

4. چین گینگ (کہانی)
—وشومبھر ناتھ پانڈے

5. اَھنسا پر چینی کویتائیں اور تصویریں
—سندر لال

6. جب لینن کی موت کا اعلان ھوا—
—نکولائی آستروسکی

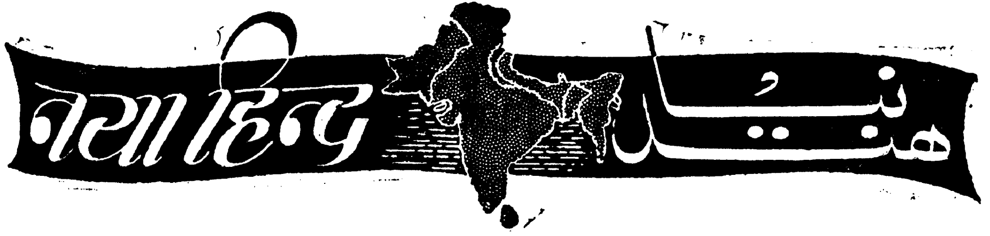
7. اِنسانی بھائی‌چارے کا اصلی راستہ
—ڈاکٹر بھگوان داس

8. ھندستانی کلچر اور نیا سماج
—ڈاکٹر تاراچند

9. کچھ کتابیں—
—وشومبھر ناتھ پانڈے

10. ھماری رائے—

اِیٹم اور ھائڈروجن بم بنام شانتی مورچا—وشومبھر ناتھ پانڈے؛ ایفرو - ایشین کانفرنس—وشومبھر ناتھ پانڈے؛ سماجوادی ویوستھا کی اور—وشومبھر ناتھ پانڈے؛ اِتیہاس کی نئی سامگری—وشومبھر ناتھ پانڈے.




जिल्द 19 جلد   नम्बर 1 نمبر

## जनवरी 1955 جنوری

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145، مٹھی گنج، الہ آباد

# نیا ہند




| इस नम्बर के ख़ास लेख | اس نمبر کے خاص لیکھ |
|---|---|
| प्रेम योगी सरमद | پریم یوگی سرمد |
| —प्रो. मो. अ. फ़ारूक़ी | —پرو. مو. ا. فاروقی |
| भारत की पिछड़ी हुई जातियां | بھارت کی پچھڑی ہوئی جاتیاں |
| —डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त | —ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت |
| हिन्दू मुसलमानों का कलचरी मेल ... | ہندو مسلمانوں کا کلچری میل ... |
| —डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी | —ڈاکٹر لطیف دفتری |
| इनसानी भाई चारे का असली रास्ता | انسانی بھائی چارے کا اصلی راستہ |
| —डाक्टर भगवानदास | —ڈاکٹر بھگوان داس |
| हिन्दुस्तानी कलचर और नया समाज | ہندستانی کلچر اور نیا سماج |
| —डाक्टर तारा चन्द | —ڈاکٹر تارا چند |
| इसके अलावा | اس کے علاوہ |
| कहानी, स्केच, कविताये वग़ैरह | کہانی، اسکیچ، کویتائیں وغیرہ |




हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद



ہندستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

# गंगा से गोमती तक

……'मुजीब की कहानियों की विशेषता उनकी शैली भी है. मामूली पढ़ा लिखा आदमी इन्हें बिना किसी की मदद के समझ सकता है. सरलता के साथ भाषा में व्यंग और ज़िन्दादिली इस तरह है जिस तरह ऊँचे पाए के लेखकों में मिलती है.

इन कहानियों में हास्य भी है, करुणा भी है. कहीं हँसते हँसते पेट में बल पड़ेंगे, तो कहीं पढ़ते-पढ़ते आप [illegible] रह जाएंगे. मुजीब की कहानियाँ हमारी कोमल भावनाएं जगाती हैं, हमें अच्छा इनसान बनाती हैं."

—डाक्टर राम विलास शर्मा

……'वह (मुजीब) मार्ग साफ़ करना चाहते हैं, समाज को सम्भालना चाहते हैं. इसलिये वह कला को [illegible] चाहते हैं और ऐसी नुकीली कि धार करती चली जाए… यह कहानियाँ जगह जगह हमारा ध्यान समाज [illegible] होने वाले अन्यायों और अत्याचारों की तरफ़ खींचती हैं. संग्रह की कहानियों में एक सीधी अकृत्रिमता है, जो अच्छी लगती है."

—जैनेन्द्र कुमार

लगभग हिन्दी के सभी बड़े लेखकों ने "गंगा से गोमती" को सराहा है.

"गंगा से गोमती तक" में १८० सफ़े हैं, तिरंगा सुन्दर कवर, बढ़िया जिल्द, दाम केवल दो रुपया. जल्दी आर्डर भेजिये.

—मैनेजर नया हिन्द

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.



# گنگا سے گومتی تک

... "مجیب کی کہانیوں کی خصوصیت انکی شیلی بھی ہے ۔ معمولی پڑھا لکھا آدمی انھیں بنا کسی کی مدد کے سمجھ سکتا ہے۔ سرلتا کے ساتھ بھاشا میں ویَنگ اور زندہ دلی اس طرح ہے جس طرح اونچے پائے کے لیکھکوں میں ملتی ہے ۔

ان کہانیوں میں ہاسیہ بھی ہے' کرونا بھی ہے۔ کہیں ہنستے ہنستے پیٹ میں بل پڑینگے' تو کہیں پڑھتے پڑھتے آپ دکھ سے اسکتبھت رہ جائینگے۔ مجیب کی کہانیاں ہماری کومل بھاونائیں جگاتی ہیں' ہمیں اچھا انسان بناتی ہیں ۔"

—ڈاکٹر رام بلاس شرما

... ..." وہ (مجیب) مارگ صاف کرنا چاہتے ہیں' سماج کو سنبھالنا چاہتے ہیں۔ اسلئے وہ کلا کو کام کاجی چاہتے ہیں۔ اور ایسی نوکیلی کہ دھار کرتی چلی جائے ...یہ کہانیاں جگہ جگہ ہمارا دھیان سماج میں ہونے والے انیایوں اور اتیاچاروں کی طرف کھینچتی ہیں... سنگرہ کی کہانیوں میں ایک سیدھی اکرترمتا ہے' جو اچھی لگتی ہے ۔"

—جینیندر کمار

لگ بھگ ہندی کے سبھی بڑے لیکھکوں نے "گنگا سے گومتی" کو سراہا ہے ۔

"گنگا سے گومتی تک" میں 180 صفحے ہیں' ترنگا سندر کور' بڑھیا جلد' دام کیول دو روپیہ ۔ جلدی آرڈر بھیجئے ۔

—مینیجر نیا ہند

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند ' 145 مٹھی گنج الہ آباد ۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

**मक़सद—**

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

**गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—**

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

# ہندستانی کلچر سوسائٹی

**مقصد —**

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈینٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈینٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈینٹ — ڈاکٹر بھگوان داس سکریٹری — پنڈت سندرلال ۔

**گورننگ باڈی کے اور ممبر —**

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر مظفر علی سوختہ، شری بی۔ جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے ۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے ۔

## हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोट:—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं.　　　نوٹ :— یہ کتابیں صرف ھندی میں ھیں .

| नाम किताब | लेखक | दाम | | | لیکھک | نام کتاب |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 शेर ओ शायरी | श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय | 8 | 0 | 0 | شری ایودھیا پرساد گوئیلی | 1. شعر و شاعری |
| 2. शेर ओ सुख़न | ,, | 8 | 0 | 0 | ,, | 2. شعر و سخن |
| 3. गहरे पानी पैठ | ,, | 2 | 8 | 0 | ,, | 3. گہرے پانی پیٹھ |
| 4. हमारे आराध्य | श्री बनारसीदास चतुर्वेदी | 3 | 0 | 0 | شری بنارسی داس چترویدی | 4 ہمارے آرادھیہ |
| 5 संस्मरण | ,, | 3 | 0 | 0 | ,, | 5. سنسمرن |
| 6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां | श्री जगदीशचन्द्र जैन | 3 | 0 | 0 | شری جگدیش چندر جین | 6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں |
| 7. ज्ञान गंगा | श्री नारायण साद जैन | 6 | 0 | 0 | شری نارائن پرساد جین | 7. گیان گنگا |
| 8. पथ चिन्ह | श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी | 2 | 0 | 0 | شری شانتی پریہ دویدی | 8. پتھ چنھ |
| 9 पंच प्रदीप | शान्ति एम. ए. | 2 | 0 | 0 | شانتی ایم . اے | 9. پنچ پردیپ |
| 10. आकाश के तारे धरती के फूल | श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर | 2 | 0 | 0 | شری کنہیالال مشر پربھاکر | 10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول |
| 11. मुक्ति दूत | श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम ए. | 5 | 0 | 0 | شری ویریندر کمار جین ایم . اے | 11. مکتی دوت |
| 12. मिलन यामिनी | श्री बच्चन | 4 | 0 | 0 | شری بچن | 12. ملن یامنی |
| 13. रजत रश्मि | डाक्टर रामकुमार वर्मा | 2 | 8 | 0 | ڈاکٹر رام کمار ورما | 13. رجت رشمی |
| 14 मेरे बापू | श्री तन्मय बुख़ारिया | 2 | 8 | 0 | شری تنمے بخاریا | 14. میرے باپو |
| 15. विश्व संघ की ओर | पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला | 3 | 0 | 0 | پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا | 15. وشو سنگھ کی اور |
| 16. भारतीय अर्थशास्त्र | श्री भगवानदास केला | 5 | 0 | 0 | شری بھگوان داس کیلا | 16. بھارتیہ ارتھ شاستر |
| 17. भारतीय शासन | ,, | 3 | 0 | 0 | ,, | 17. بھارتیہ شاسن |
| 18. नागरिक शास्त्र | ,, | 2 | 4 | 0 | ,, | 18. ناگرک شاستر |
| 19. साम्राज्य और उनका पतन | ,, | 2 | 8 | 0 | ,, | 19. سامراج اور اُن کا پتن |
| 20. भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन | ,, | 1 | 4 | 0 | ,, | 20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن |
| 21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था | ,, | 1 | 6 | 0 | ,, | 21. سروودے ارتھ ویوستھا |
| 22. हमारी आदिम जातियां | श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय | 3 | 8 | 0 | شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے | 22. ہماری آدم جاتیاں |
| 23. अर्थशास्त्र शब्दावली | श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला | 2 | 0 | 0 | شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا | 23. ارتھ شاستر شبداولی |
| 24. नागरिक शिक्षा | भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे | 1 | 8 | 0 | شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے | 24. ناگرک شکشا |
| 25. राष्ट्र मंडल शासन | श्री दयाशंकर दुबे | 1 | 8 | 0 | دیا شنکر دوبے | 25. راشٹر منڈل شاسن |
| 26. जवानी | महात्मा भगवानदीन | 3 | 0 | 0 | مہاتما بھگوان دین | 26. جوانی |
| 27. मारने की हिम्मत ! | ,, | 1 | 0 | 0 | ,, | 27. مارنے کی ہمت |
| 28. सलोना सच | ,, | 0 | 8 | 0 | ,, | 28. سلونا سچ |
| 29. मेरे साथी | ,, | 1 | 0 | 0 | ,, | 29. میرے ساتھی |

मिलने का पता—　　　ملنے کا پتہ

मैनेजर 'नया हिन्द'　　　مینیجر 'نیا ہند'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3　　　145' مٹھی گنج' الہ آباد 3

# झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप ए ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और इनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चित है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, उम्दा छपाई, दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ी सदी कमीशन.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

# جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے. آج کی اردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے' اب آپ کو اردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی. غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی.

" اِن کویتاؤں میں نتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزآنہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاؤ کا سمبندھ ہے کویتائیں اچ استر کی ہیں."

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

" جھنکار میں پرکاشت 72 اردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں."

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اِسنیہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا آنند لینگے اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے' یہ نشچت ہے."

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

" ہم اُن کی ( کویتاؤں کی ) شکتی' تازگی اور سوتر کے قائل ہیں. وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے. کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے."

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

" جھنکار' کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے."—' نیا سماج ' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا. سندر جلد' بڑھیا کاغذ. عمدہ چھپائی. دام صرف تین روپیہ . دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن.

ملنے کا پتہ—
منیجر ' نیا ہند ' 145' مٹھی گنج الہ آباد .

# महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

# अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

# आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

# मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—
मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

# مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور سکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے .

# اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک--شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لایا جا سکتا ہے .

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے .

# آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

# مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .
قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

ملنے کا پتہ—
مینیجر ' نیا ہند ' 145 ' مٹھی گنج ' الہ آباد

# गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने ( क़ुदसिया ज़ैदी ने ) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

# گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی۔ ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں۔ اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور ان کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں۔ بیگم قدسیہ زیدی نے، جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں، اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور ان کا ستیہ، اہنسا، پریم اور تیاگ کا اپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اترتا چلا جاتا ہے۔ ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے۔ اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اٹھانے والے اپدیش بھی۔

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "انہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے۔ وہ اسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں۔ ان کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے.....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے۔"

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے۔

---

# भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

**मैनेजर, 'नया हिन्द'**

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

# بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اس کتاب میں آپ کو ملے گی۔ راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی۔

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ۔

ملنے کا پتہ—

**مینیجر 'نیا ہند'**

145 مٹھی گنج، الہ آباد۔

# गीता और क़ुरान

## लेखक–पंडित सुन्दरलाल

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन. गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

## हिन्दू मुस्लिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

## महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

## पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइ उन का दर्दनाक आंखों देखा बनन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

## बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

---

मिलने का पता—/

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

# گیتا اور قرآن

## لیکھک—پنڈت سندر لال

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آئتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے ۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے ۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ ۔

## ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے

سو صفحے کی کتاب ۔ قیمت صرف بارہ آنے ۔

## مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذہبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج. اسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا ۔

قیمت بارہ آنے ۔

## پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن ۔ اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں ۔ قیمت چار آنے ۔

## بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے ۔ قیمت صرف دو آنے ۔

---

ملنے کا پتہ--

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد

मन में मैल था, वे गाली देने के अन्दाज़ में बात कर रहे थे......क्या दुशमनों के अलावा कोई ऐसी बात कह सकता है ?.....जब तक मैं मैकेनिक हूं, तब तक ठीक. अगर कल के रोज़ मैं.....मन्त्री हो जाऊं तो 'तानाशाह' और 'कुरसी तोड़ने वाला' हो जाऊंगा.....देखने में यह आता है कि वे तमाम लोग जिन्हें पार्टी ने सज़ा दी है, पार्टी से लड़ने के लिये एक हो गये हैं."

लेखक ने एक तारबाबू का चित्रन बड़ा सुन्दर किया है—धीरे धीरे उसने ये शब्द काग़ज़ पर उतार दिये. अपनी लम्बी ज़िन्दगी में उसने न जाने कितने सन्देश लिखे थे, ख़ुशी के सन्देश और ग़म के सन्देश, कितनी बार दूसरों के दर्द और दूसरों की ख़ुशी की ख़बर उसी ने सब से पहले सुनी थी. अपने काम के सिलसिले में उसने न जाने कबसे तार के उन छोटे सन्देशों के अर्थ पर ध्यान देना छोड़ दिया था, उसका काम तो बस इतना था कि ध्वनियों को पकड़े और मशीन की तरह उनको काग़ज़ पर उतार दे."

सार्वजनिक काम करने वाले अपनी सेहत की परवाह नहीं करते. ऐसे लोगों के लिये बड़े काम की नसीहत है. कार्चागिन अपने भाई को लिखता है—"मेरे भाई अब तुम अपनी सेहत की फ़िक्र करो. बूते से बाहर अपनी ताक़त को ख़र्च न करो क्योंकि सेहत की मरम्मत की भारी क़ीमत पार्टी को चुकानी पड़ती है."

ख़ुदकुशी के बारे में लिखा है—"पिस्तौल को रख दो और कभी इसकी बात किसी से न कहना. जीवन जब नाक़ाबिले बर्दाश्त हो उठे, तब भी जीने की कला सीखो."

पुस्तक एक और सुन्दर नसीहत काम करने वालों को देती है—"हम लोग कभी कभी अपनी शक्तियों को बुरी तरह बरबाद करते हैं, जिसका हमें कोई हक़ नहीं. अब मैं इस बात को समझ गया हूं कि यह वीरता की उतनी निशानी नहीं है जितनी नाक़ाबलियत और ग़ैरज़िम्मेवारी की. अब मैं समझने लगा हूं कि मुझे अपनी तन्दुरुस्ती के बारे में इतनी लापरवाही बरतने का हक़ न था."

बग़ैर उसूली लिहाज़ के हर चिन्तनशील पाठक को यह उपन्यास ज़रूर पढ़ना चाहिये. अनुवाद की ज़बान सहल और मुहावरेदार है. छपाई, सफ़ाई भी उम्दा है.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

---



من میں میل تھا' وہ گالی دینے کے انداز میں بات کر رہے تھے..... کیا دشمنوں کے علاوہ کوئی ایسی بات کہہ سکتا ہے؟..... جب تک میں میکینک ہوں' تب تک ٹھیک. اگر کل کے روز میں.....منتری ہوجاؤں تو 'تانا شاہ' اور 'کرسی توڑنے والا' ہوجاؤں گا..... دیکھنے میں یہ آتا ہے کہ وے تمام لوگ جنھیں پارٹی نے سزا دی ہے' پارٹی سے لڑنے کے لئے ایک ہوگئے ہیں."

لیکھک نے ایک تار بابو کا چترن بڑا سندر کیا ہے— دھیرے دھیرے اُس نے یہ شبد کاغذ پر اُتار دیئے. اپنی لمبی زندگی میں اُس نے نہ جانے کتنے سندیش لکھے تھے' خوشی کے سندیش اور غم کے سندیش' کتنی بار دوسروں کے درد اور دوسروں کی خوشی کی خبر اُسی نے سب سے پہلے سنی تھی. اپنے کام کے سلسلے میں اُس نے نہ جانے کب سے تار کے اُن چھوٹے سندیشوں کے ارتھ پر دھیان دینا چھوڑ دیا تھا' اُس کا کام تو بس اتنا تھا کہ دھونیوں کو پکڑے اور مشین کی طرح اُن کو کاغذ پر اُتار دے."

سارو جنک کام کرنے والے اپنی صحت کی پرواہ نہیں کرتے. ایسے لوگوں کے لئے بڑے کام کی نصیحت ہے. کورچاگن اپنے بھائی کو لکھتا ہے—"میرے بھائی اب تم اپنی صحت کی فکر کرو. بوتے سے باہر اپنی طاقت کو خرچ نہ کرو کیونکہ صحت کی مرمت کی بھاری قیمت پارٹی کو چکانی پڑتی ہے."

خودکشی کے بارے میں لکھا ہے—"پستول کو رکھ دو اور کبھی اُس کی بات کسی سے نہ کہنا. جیون جب ناقابل برداشت ہو اُٹھے' تب بھی جینے کی کلا سیکھو."

پستک ایک اور سندر نصیحت کام کرنے والوں کو دیتی ہے—" ہم لوگ کبھی کبھی اپنی شکتیوں کو بری طرح برباد کرتے ہیں' جس کا ہمیں کوئی حق نہیں. اب میں اِس بات کو سمجھ گیا ہوں کہ یہ ویرتا کی اتنی نشانی نہیں ہے جتنی ناقابلیت اور غیر ذمہ واری کی. اب میں سمجھنے لگا ہوں کہ مجھے اپنی تندرستی کے بارے میں اتنی لاپرواہی برتنے کا حق نہ تھا."

بغیر اُصولی لحاظ کے ہر چنتن شیل پاٹھک کو یہ اُپنیاس ضرور پڑھنا چاہئیے. انوواد کی زبان سہل اور محاورہ‌دار ہے. چھپائی' صفائی بھی عمدہ ہے.

—وشومبھر ناتھ پانڈے

से छुड़ाता है, ख़ुद एक अमीर पोलिश लड़के की साज़िश से गिरफ़्तार होता है, छूटता है और फिर रूसी कम्यूनिस्ट नौजवानों की टोली में भरती होता है, लड़ाई में हिस्सा लेता है, ज़ख्मी होता है, फिर हिस्सा लेता है, बोल्शेविक क्रान्ति सफल होती है. अब तामीरी कामों की बारी आती है. उसूली समझ-बूझ और समाजी रहन सहन को चालने ढालने का वक़्त आता है. नौजवान कोर्चागिन बढ़कर हिस्सा लेता है. कोर्चागिन और उसके दोस्त एक ऊंची इख़लाक़ी नैतिक ज़िन्दगी बसर करते हैं. समाज को सुखी बनाने के वे ऊंचे से ऊंचे ख़्वाब देखते हैं. इनक़लाबी जंग में वे जिस तरह मर मिटने को तैयार रहते हैं उसी तरह तामीरी कामों में, रेल की पटरियां बिछाने में, रेल यार्ड की सफ़ाई करने में. उनके लिये क्रान्ति जिस तरह जंगी चीज़ है उसी तरह तामीरी भी.

उपन्यास के नारी पात्रों में तोनिया, रिता, ताया, आना बोहार्ट, लिदिया पोलेविख़ का चित्रन ऊंची सतह पर किया गया है. उनके बयान में एक चरित्र की ऊंचाई मिलती है.

कोर्चागिन ज़िन्दगी की पुकार को सुनता है और आग और धुएं से होकर निकलता है, उसका जिस्म छलनी छलनी हो जाता है मगर लेखक कहता है—"लोहा इसी तरह आग में तपकर फ़ौलाद बनता है."

कोर्चागिन एक बहुत ऊंचे उसूलों का कम्यूनिस्ट नौजवान है. जिस कम्यूनिस्ट समाज का वह सपना देखता है उस पर ख़ुद पाबन्दी के साथ अमल करता है. वह सबसे पहले ख़ुद अपने साथ बेरहमी से पेश आता है. सबसे पहले तोनिया नामक एक अमीरज़ादी से उसकी मुहब्बत होती है. दोनों एक दूसरे के क़रीब आते हैं. लेकिन जब शादी का सवाल आता है तो कोर्चागिन अपना फ़ैसला बदल देता है. वह कहता है—तुम ग़रीब से मुहब्बत कर सकती हो लेकिन ग़रीबी से मुहब्बत नहीं. आख़ीर में वह ताया से शादी करता है मगर जिन्सी ख़्वाहिश के लिये नहीं बल्कि एक वफ़ादार साथी के लिये.

पुस्तक नई पीढ़ी की विचारधारा पर काफ़ी रोशनी डालती है. पार्टी के भीतर बहुमत और अल्पमत का सवाल आता है तो साथी तुफ़्ता कहता है—

"अगर आप बहुमत दल संगठित कर सकते हैं तो हमको भी अधिकार है कि हम अल्पमत दल संगठित करें."

तब जवाब मिलता है—"रूसी कम्यूनिस्ट पार्टी कोई पार्लिमेन्ट नहीं है."

हिन्दुस्तान की विरोधी पार्टियों के सीखने के लिये पुस्तक में बड़े काम की बातें हैं. पांकातोव कहता है—" वे लोग. .. हमारे साथियों की तरह, संग संग लड़ने वालों की तरह नहीं बोल रहे थे. उनकी तक़रीरें दुशमनों जैसी थीं, उनके



سے چھڑاتا ھے' خود ایک امیر پولش لڑکے کی سازش سے گرفتار ھوتا ھے' چھوٹتا ھے اور پھر روسی کمیونسٹ نوجوانوں کی ٹولی میں بھرتی ھوتا ھے' لڑائی میں حصہ لیتا ھے' زخمی ھوتا ھے' پھر حصہ لیتا ھے' بولشیوک کرانتی سپھل ھوتی ھے. اب تعمیری کاموں کی باری آتی ھے. اصولی سمجھ بوجھ اور سماجی رھن سھن کو چالنے ڈھالنے کا وقت آتا ھے. نوجوان کورچاگن بڑھکر حصہ لیتا ھے' کورچاگن اور اس کے دوست ایک اُونچی اخلاقی نیتک زندگی بسر کرتے ھیں. سماج کو سکھی بنانے کے وے اُونچے سے اُونچے خواب دیکھتے ھیں. اِنقلابی جنگ میں وے جس طرح مرمٹنے کو تیار رھتے ھیں اُسی طرح تعمیری کاموں میں' ریل کی پٹریاں بچھانے میں' ریل یارڈ کی صفائی کرنے میں. اُن کے لئے کرانتی جس طرح جنگی چیز ھے اُسی طرح تعمیری بھی.

اُپنیاس کے ناری پاتروں میں تونیا' ریتا' تایا' آنابوھارٹ لدیا' پولیوخ کا چترن اُونچی سطح پر کیا گیا ھے. اُن کے بیان میں ایک چرتر کی اُونچائی ملتی ھے.

کورچاگن زندگی کی پکار کو سنتا ھے اور آگ اور دھوئیں سے ھوکر نکلتا ھے' اُس کا جسم چھلنی چھلنی ھوجاتا ھے مگر لیکھک کہتا ھے—"لوھا اسی طرح آگ میں تپ کر فولاد بنتا ھے."

کورچاگن ایک بہت اونچے اُصولوں کا کمیونسٹ نوجوان ھے. جس کمیونسٹ سماج کا وہ سپنا دیکھتا ھے اس پر خود پابندی کے ساتھ عمل کرتا ھے. وہ سب سے پہلے خود اپنے ساتھ بیرحمی سے پیش آتا ھے. سب سے پہلے تونیا نامک ایک امیرزادی سے اُس کی محبت ھوتی ھے. دونوں ایک دوسرے کے قریب آتے ھیں. لیکن جب شادی کا سوال آتا ھے تو کورچاگن اپنا فیصلہ بدل دیتا ھے. وہ کہتا ھے—تم غریب سے محبت کر سکتی ھو لیکن غریبی سے محبت نہیں. آخیر میں وہ تایا سے شادی کرتا ھے. مگر جنسی خواھش کے لئے نہیں بلکہ ایک وفادار ساتھی کے لئے.

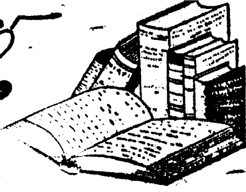
پستک نئی پیڑھی کی وچار دھارا پر کافی روشنی ڈالتی ھے. پارٹی کے بھیتر بہومت اور الپمت کا سوال آتا ھے تو ساتھی تفتا کہتا ھے—

"اگر آپ بہومت دل سنگٹھت کر سکتے ھیں تو ھم کو بھی ادھیکار ھے کہ ھم الپمت دل سنگٹھت کریں."

تب جواب ملتا ھے—"روسی کمیونسٹ پارٹی کوئی پارلیمنٹ نہیں ھے."

ھندستان کے ورودھی پارٹیوں کے سیکھنے کے لئے پستک میں بڑے کام کی باتیں ھیں. پانکراتو کہتا ھے—"وے لوگ..... ھمارے ساتھیوں کی طرح' سنگ سنگ لڑنے والوں کی طرح نہیں بول رھے تھے. اُن کی تقریریں دشمنوں جیسی تھیں' اُن کے

# कुछ किताबें



# کچھ کتابیں

## अग्नि दीक्षा

रूसी ज़बान में लिखने वाले—निकोलाई आस्त्रोवस्कं; तर्जुमा करने वाले—अमृत राय; छापने वाले—पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस लिमिटेड, आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली; क़ीमत—चार रुपया; सफ़े—47?.

यह उपन्यास रूसी लेखक निकोलाई आस्त्रोवस्की का एक मशहूर उपन्यास है. लेखक सन 19?4 में पैदा हुआ और 1936 में, सिर्फ़ 32 बरस की उम्र में उसकी मौत हुई. रूसी क्रान्ति में 13-14 बरस की उम्र में वह शामिल हुआ और समझदार बहादुर लड़के की हैसियत से वह नई पीढ़ी के आगे आगे चला. लड़ाई में वह जितना बहादुर निकला उससे ज्यादा बहादुर वह तामीरी और रचनात्मक कामों में साबित हुआ. गोलियों के ज़ख्म और रचनात्मक कामों की हड्डी तोड़ मेहनत ने उसे गठिया, लक़वा और लम्बी बीमारी का शिकार बना दिया. सन 1930 में 26 बरस की उम्र में वह बिल्कुल अन्धा हो गया. महज़ इस ख्याल ने कि वह जिस्मानी बेबसी से अब रचनात्मक काम करने वालों की क़तार से हट गया उसे बेचैन कर दिया. वह बहादुर अन्धा लड़का अब शिक्षक और लेखक बना. उसका मौजूदा उपन्यास न सिर्फ़ सोवियत रूस को उसकी महान देन है बल्कि सारी दुनिया की नई पीढ़ी के निर्माताओं के लिये वह एक रास्ता दिखाने वाली रोशनी का काम देगा. सोवियत देश ने अपने इस बहादुर अन्धे पथ-प्रदर्शक को इस उपन्यास के लिये 'आर्डर आफ़ लेनिन' का तमग़ा भेंट किया और इस तरह सारे देश का अहसान जताया. मौजूदा उपन्यास के पढ़ने से यह पता चलेगा कि एक मामूली हैसियत का बालक किस तरह अपनी ग़ैर मामूली शख्सीयत बनाता है और अपने मुल्क के बड़प्पन को चार चांद लगाता है.

उपन्यास की कहानी में कोई ख़ास पेचीदगी नहीं. सारी कहानी मुख्य नायक कोर्चागिन के इर्द गिर्द घूमती है. एक ग़रीब विधवा का छोटा बेटा, होटल में जूठी तश्तरी मांजने वाला, सिर्फ़ दो जमात पढ़ा हुआ कोर्चागिन क्रान्ति का पहला पाठ पढ़ता है, अपने साथी और नेता को पुलिस के चुंगल

## اگنی دیکچھا

روسی زبان میں لکھنے والے—نکولائی استروسکی؛ ترجمہ کرنے والے—امرت رائے؛ چھاپنے والے—پیپلس پبلشنگ ہاؤس لمیٹیڈ، آصف علی روڈ، نئی دلی؛ قیمت—چار روپئے—صفحے 472 .

یہ اُپنیاس روسی لیکھک نکولائی استرواسکی کا ایک مشہور اُپنیاس ھے. لیکھک سن 1904 میں پیدا ھوا اور 1936 میں، صرف 32 برس کی عمر میں اُس کی موت ھوئی. روسی کرانتی میں 13-14 برس کی عمر میں وہ شامل ھوا اور سمجھدار بہادر لڑکے کی حیثیت سے وہ نئی پیڑھی کے آگے آگے چلا. لڑائی میں وہ جتنا بہادر نکلا اُس سے زیادہ بہادر وہ تعمیری اور رچناتمک کاموں میں ثابت ھوا . گولیوں کے زخم اور رچناتمک کاموں کی ھڈی توڑ محنت نے اُسے گٹھیا، لقوہ اور لمبی بیماری کا شکار بنا دیا . سن 1930 میں 26 برس کی عمر میں وہ بالکل اندھا ھوگیا . محض اس خیال نے کہ وہ جسمانی بےبسی سے اب رچناتمک کام کرنیوالوں کی قطار سے ھٹ گیا اُسے بےچین کردیا . وہ بہادر اندھا لڑکا اب شکشک اور لیکھک بنا . اس کا موجودہ اُپنیاس نہ صرف سوویت روس کو اُس کی مہان دین ھے بلکہ ساری دنیا کی نئی پیڑھی کے نرماتاؤں کے لئے وہ ایک راستہ دکھانے والی روشنی کا کام دےگا . سوویت دیش نے اپنے اِس بہادر اندھے پتھ پردرشک کو اس اُپنیاس کے لئے 'آرڈر آف لینن' کا تمغہ بھینٹ کیا. اور اِس طرح سارے دیش کا احسان جتایا . موجودہ اُپنیاس کے پڑھنے سے یہ پتہ چلےگا کہ ایک معمولی حیثیت کا بالک کس طرح اپنی غیر معمولی شخصیت بناتا ھے اور اپنے ملک کے بڑپن کو چار چاند لگاتا ھے .

اُپنیاس کی کہانی میں کوئی خاص پیچیدگی نہیں . ساری کہانی مکھیہ نایک کورچاگن کے ارد گرد گھومتی ھے . ایک غریب ودھوا کا چھوٹا بیٹا، ھوٹل میں جوٹھی تشتری مانجنے والا، صرف دو جماعت پڑھا ھوا کورچاگن کرانتی کا پہلا پاٹھ پڑھتا ھے، اپنے ساتھی اور نیتا کو پولس کے چنگل

बाक़िआत उन्हें अपने तर्ज़ में फ़र्क़ करने पर मजबूर कर रहे हैं.

आख़िर में एक अर्ज़ और भी है. साइन्स वाले महज़ दिमाग़ी काम करते हैं और उन्हें जिस्मानी काम से ज्यादा क़ीमती और आला समझते हैं. शायद वह यह मानते हैं कि जिस्मानी काम करने वाला इन्सान उनके मुक़ाबिले में कहीं ज्यादा गया गुज़रा है. यह ख़याल ग़लत है. साइन्स वालों को अपनी विद्या या तालीम तो लगानी होगी मगर साइन्स का मोल पैसे में करने के मानी हैं उसे चन्द लोगों के हाथों में सौंप कर दुनिया की नव्वे फ़ीसदी आबादी को उससे महरूम रखना. यह नाइन्साफ़ी है. अगर साइन्स वाले की आह सरकार के ख़िलाफ़ जाती है, तो आम आदमी की आह साइन्स वालों के ख़िलाफ़ जाती है. अवाम से उनका ताल्लुक़ टूटता है. मजबूर होकर उन्हें सरकार का मुंह देखना पड़ता है, जो मन मानी शर्तों पर उन्हें रखती है. हमारे हिन्दुस्तान के साइन्स वालों को तो इस तरफ़ ख़ास तौर से ध्यान देना चाहिये.

29. 11. '54 —सुरेश रामभाई

---

## राजकुमारी अमृत कौर और सन्तति-नियमन

नीचे का पत्र हम बड़ी तसल्ली और ख़ुशी के साथ ज्यों का त्यों छाप रहे हैं. हमें दुख है कि दैनिक पत्रों की रिपोर्टों के कारन यह ग़लतफ़हमी पैदा हुई.

23. 12. 54 सुन्दरलाल

नई दिल्ली
20 दिसम्बर, 1954

प्रिय महोदय,

श्री अमृतलाल नानावटी जी ने 'नया हिन्द' के नवम्बर अङ्क में प्रकाशित 'अमरीका में मिस्टर मुहम्मद अली और राजकुमारी अमृत कौर' लेख की ओर राजकुमारी जी का ध्यान आकर्शित किया है. उन्होंने बताया कि अमरीका में राजकुमारी जी ने Mechanical Constraceptives के पक्ष में विचार व्यक्त किये ऐसा इस लेख में है. मन्त्रिणी जी को यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा कि अगर इस तरह की रिपोर्ट उनके बारे में आपके पत्र में छपी है तो वह बिल्कुल निराधार है—उसमें कोई सचाई नहीं. वह सन्तति नियमन के लिये हमेशा पूज्य बापू का बताया हुआ संयम का मार्ग अपनाने को कहती हैं.

आपका
जयानन्द शर्मा
पर्सनल असिस्टेन्ट



واقعات انہیں اپنے طرز میں فرق کرنے پر مجبور کر رہے ہیں ۔

آخر میں ایک عرض اور بھی ہے ۔ سائنس والے محض دماغی کام کرتے ہیں اور اسے جسمانی کام سے زیادہ قیمتی اور اعلیٰ سمجھتے ہیں ۔ شاید وہ یہ مانتے ہیں کہ جسمانی کام کرنے والا انسان ان کے مقابلہ میں کہیں زیادہ گیا گزرا ہے ۔ یہ خیال غلط ہے ۔ سائنس والوں کو اپنی ودیا یا تعلیم تو لگانی ہوگی مگر سائنس کا مول پیسہ میں کرنے کے معنی ہیں اسے چند لوگوں کے ہاتھ میں سونپ کر دنیا کی نوے فیصدی آبادی کو اس سے محروم رکھنا ۔ یہ ناانصافی ہے ۔ اگر سائنس والے کی آہ سرکار کے خلاف جاتی ہے، تو عام آدمی کی آہ سائنس والوں کے خلاف جاتی ہے ۔ عوام سے ان کا تعلق ٹوٹتا ہے ۔ مجبور ہوکر انہیں سرکار کا منہ دیکھنا پڑتا ہے جو منمانی شرطوں پر انہیں رکھتی ہے ۔ ہمارے ہندستان کے سائنس والوں کو تو اس طرف خاص طور سے دھیان دینا چاہئے ۔

—سریش رام بھائی 29 . 11 . '54

---

## راج کماری امرت کور اور سنتیتی نیمن

نیچے کا پتر ہم بڑی تسلی اور خوشی کے ساتھ جیوں کا تیوں چھاپ رہے ہیں ۔ ہمیں دکھ ہے کہ دینک پتروں کی رپورٹوں کے کارن یہ غلط فہمی پیدا ہوئی ۔

—سندرلال 23 . 12 . '54

نئی دلی
20 دسمبر سن 1954ع

پریہ مہودے،

شری امرت لال ناناوتی جی نے 'نیا ہند' کے نومبر انک میں پرکاشت 'امریکہ میں مسٹر محمد علی اور راج کماری امرت کور' لیکھ کی اور راج کماری جی کا دھیان آکرشت کیا ہے ۔ انہوں نے بتایا کہ امریکہ میں راج کماری جی نے Mechanical constraceptIves کے پکش میں وچار ویکت کئے ایسا اس لیکھ میں ہے ۔ منترنی جی کو یہ جان کر بڑا آشچریہ ہوا اور انہوں نے کہا کہ اگر اس طرح کی رپورٹ ان کے بارے میں آپ کے پتر میں چھپی ہے تو وہ بالکل نرادھار ہے—اس میں کوئی سچائی نہیں ۔ وے سنتتی نیمن کے لئے ہمیشہ پوجیہ باپو کا بتایا ہوا سنیم کا مارگ اپنانے کو کہتی ہیں ۔

آپ کا
جیانند شرما
پرسنل اسسٹنٹ

खिलाफ़ इलजाम लगाया गया लेकिन सबूत में वह बेगुनाह ठहराए गये और इसलिये बरी हो गये. लेकिन इसके बाद भी उनपर निगरानी रखी जाती है. इस तरह सारा वातावरन जहरीला हो गया है. अमरीका की सरकार और शायद दूसरी सरकारें भी यह सोचती हैं कि साइंस वालों को दबाकर अपना ताबेदार रखा जा सकता है और क़ौम के नाम पर, कुछ पैसे का लालच देकर, उनसे जो चाहो कराया जा सकता है. हो सकता है कि कुछ साइन्स वाले इस तरह दबाकर क़ाबू में रखे जा सकें, मगर दुनिया उनको साइन्स के मन्दिर का पुजारी मानने से इन्कार करेगी. वह साइन्सदां नहीं पैसाख़ोर कहलायेंगे. जो असली और सच्चा साइन्सदां होगा वह बिला किसी डर के अपनी बात कहेगा और उसके लिये हर मुसीबत सहने को तैयार होगा.

मगर सरकारें भी धोके में हैं. वह इस गुमान में हैं कि साइन्स वालों से मनमाना काम लेकर अपने अपने मुल्क को मज़बूत बना लेंगी. लेकिन जैसा कि कप्तान हार्ट ने कहा है आज दुनिया के सामने सवाल दूसरा ही है :

"हमारी हिफ़ाजत के लिये बुनियादी चीज़ है ठंडा दिल, सब्र और शान्ति के साथ मसलों पर सोचने की लियाक़त. हमारी हिफ़ाजत के लिये बुनियादी सतरें भी तीन हैं—ग़ुस्सा, घबड़ा जाना और जल्दबाज़ी. इन तीनों के मिलने से ऐसा धमाका हो सकता है जो क्या क्या तबाह न करदे."

आज दुनिया की राजधानियों के सेक्रेट्रियों में, मुसद्दियों के घरों में ठंडे दिल, सब्र और शान्ति की ही कमी है. ग़ुस्सा उनकी नाक पर ही चढ़ा है मानो, घबराये और डरे हुए तो वह हैं ही, और जल्दबाज़ी की तो कोई इन्तहा ही नहीं है. अगर इसकी रोक थाम नहीं होती है तो जो हो जाये थोड़ा है.

लेकिन इससे बचने का रास्ता सिर्फ़ एक ही है. विज्ञान तो ताक़त है जिससे अच्छे और बुरे दोनों तरह के काम लिये जा सकते हैं. जरूरत है इससे अच्छा काम लेने वालों की. अच्छा काम ले कौन ? वही ले सकते हैं जिनके दिल में ठंडक है, जिनमें सब्र है और जो शान्त हों. साइन्स या विज्ञान रूपी हाथी पर आत्म ज्ञान का अंकुश रहे नहीं वह क़ाबू में नहीं आ सकता. विज्ञान इन्सान की रफ्तार बढ़ा सकता है मगर किस तरफ़ बढ़ा जाये, यानी दिशा दिखलाने का काम, आत्मज्ञान ही करेगा. लिहाज़ा इन दोनों का मेल ही मौजूदा हालत से, मौजूदा ख़तरे से, दुनिया को मुक्त कर सकता है.

इसके लिये बड़ी भारी ज़िम्मेदारी साइन्स वालों पर आती है. आज वह ख़ुद विज्ञान के नशे में चूर हैं और आत्मज्ञान का मानो वजूद तक नहीं क़ुबूल करते. लेकिन ख़ुशी की बात है कि साइन्स की खोजें और दुनिया के



خلاف الزام لگایا گیا' لیکن ثبوت میں وہ بےگناہ ٹھہرائے گئے اور اس لئے بری ہوگئے. لیکن اس کے بعد بھی ان پر نگرانی رکھی جاتی ھے. اس طرح سارا واتاورن زھریلا ہوگیا ھے. امریکہ کی سرکار اور شاید دوسری سرکاریں بھی یہ سوچتی ھیں کہ سائنس والوں کو دباکر اپنا تابعدار رکھا جاسکتا ھے اور قوم کے نام پر' کچھ پیسے کا لالچ دیکر' ان سے جو چاھو کرایا جاسکتا ھے. ھوسکتا ھے کہ کچھ سائنس والے اس طرح دباکر قابو میں رکھے جاسکیں' مگر دنیا ان کو سائنس کے مندر کا پجاری ماننے سے انکار کریگی. وہ سائنس داں نہیں پیسہ خور کہلائینگے. جو اصلی اور سچا سائنس داں ھوگا وہ بلا کسی ڈر کے اپنی بات کہیگا اور اس کے لئے ھر مصیبت سہنے کو تیار ھوگا.

مگر سرکاریں بھی دھوکے میں ھیں. وہ اس گمان میں ھیں کہ سائنس والوں سے من مانا کام لیکر اپنے اپنے ملک کو مضبوط بنا لینگی. لیکن جیسا کہ کپتان ھارٹ نے کہا ھے آج دنیا کے سامنے سوال دوسرا ھی ھے :

"ھماری حفاظت کے لئے بنیادی چیز ھے ٹھنڈا دل' صبر اور شانتی کے ساتھ مسئلوں پر سوچنے کی لیاقت. ھماری حفاظت کے لئے بنیادی سطریں بھی تین ھیں—غصہ' گھبرا جانا اور جلدبازی. ان تینوں کے ملنے سے ایسا دھماکا ھوسکتا ھے جو کیا کیا تباہ نہ کردے."

آج دنیا کی راجدھانیوں کے سیکریٹریوں میں' مسدیوں کے گھروں میں ٹھنڈے دل' صبر اور شانتی کی ھی کمی ھے. غصہ ان کی ناک پر ھی چڑھا ھے مانو' گھبرائے ھوئے اور ڈرے ھوئے تو وہ ھیں ھی' اور جلدبازی کی تو کوئی انتہا ھی نہیں ھے. اگر اس کی روک تھام نہیں ھوتی ھے تو جو ھو جائے تھوڑا ھے.

لیکن اس سے بچنے کا راستہ صرف ایک ھی ھے. وگیان تو طاقت ھے جس سے اچھے اور برے دونوں طرح کے کام لئے جاسکتے ھیں. ضرورت ھے اس سے اچھا کام لینے والوں کی. اچھا کام لے کون؟ وھی لے سکتے ھیں جن کے دل میں ٹھنڈک ھے' جن میں صبر ھے اور جو شانت ھوں. سائنس یا وگیان روپی ھاتھی پر آتم گیان کا انکوش رھے نہیں وہ قابو میں نہیں آسکتا. وگیان انسان کی رفتار بڑھا سکتا ھے مگر کس طرف بڑھا جائے' یعنی دشا دکھلانے کا کام' آتم گیان ھی کریگا. لہذا ان دونوں کا میل ھی موجودہ حالت سے' موجودہ خطرہ سے دنیا کو مکت کرسکتا ھے.

اس کے لئے بڑی بھاری ذمہداری سائنس والوں پر آتی ھے. آج وہ خود وگیان کے نشہ میں چور ھیں اور آتم گیان کا مانو وجود تک نہیں قبول کرتے. لیکن خوشی کی بات ھے کہ سائنس کی کھوجیں اور دنیا کے

किया जा रहा हो. वह इतनी हद को पहुंच गई कि किसी भी आबूदार इन्सान को उनका बरदाश्त करना ही नामुमकिन हो गया. और एक मर्तबा प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन को यहां तक इशारा करना पड़ा कि अमरीकन सिनेट की इन्टरनल सिक्यारिटी कमेटी (Internal Security Committee) या इस तरह की दूसरी कमेटी के सामने किसी भी दिमाग़दार आदमी को बयान देने से इन्कार कर देना चाहिये.

थोड़ा अर्सा पहले जिस यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन पढ़ाते थे वहां की साइन्स इन्सटीट्यूट के डाइरेक्टर डाक्टर राबर्ट आपनहाइमर थे. उनकी सेवाओं से खुश होकर अमरीकन सरकार ने उन्हें एटामिक इनर्जी कमीशन (Atomic Energy Commission) का ख़ास मशीर मुक़र्रर किया. लेकिन जब हाइड्रोजन बम बना तो उनसे सलाह ली गई कि इसके इस्तेमाल के बारे में उनकी क्या राय है. उन्होंने उसके इस्तेमाल के खिलाफ़ राय दी और कहा कि वह बहुत ही खतरनाक व तबाहकुन है. उनकी यह राय अमरीका सरकार को पसन्द नहीं आई और उसने उन्हें कमीशन के मशीर पर से हटा दिया. लेकिन आज बड़े बड़े फ़ौजी जनरल और साइन्सदां डाक्टर आपनहाइमर की राय से इत्तफ़ाक़ करते हैं. इंगलैन्ड के सरनाम अफ़सर कप्तान लिडेल हार्ट (Capt. Liddle Hart) का कहना है कि हाइड्रोजन बम के बाद "मुकम्मिल लड़ाई" और "जीत" लफ़्ज़ बेमानी हो जाते हैं. अगर अब कोई "लड़ाई जीतने" के ख्वाब देखता है या इस तरह की बात करता है तो "मुहमिल से बदतर बात करता है. इससे उसके अपने मुल्क का और कुल इन्सानी क़ौम का ख़तरा है." हाल ही में जापान के नज़दीक जो हाइड्रोजन बम का तजुर्बा किया गया उससे न्यूज़ीलेन्ड के लोग तक डर गये हैं और कहते हैं कि इस तरह के तजुर्बों से हमारी जान व माल को अन्देशा है.

हाइड्रोजन बम से कहीं ज्यादा ख़तरनाक चीज़ यह है कि हाइड्रोजन बम के बारे में साइन्स वालों को राय देने का मौक़ा न दिया जाये या सच्ची राय देने पर उनके खिलाफ़ कार्रवाई की जाये. अमरीका में फ़ैडरेशन आफ़ अमरीकन साइनटिस्ट्स नाम की जो जमाअत है उस तक ने प्रेज़ीडेन्ट आईजनहावर को लिखा है कि किसी वफ़ादार साइन्सदां को दिली राय जाहिर करने पर निकाल बाहर कर देना अपनी क़ौम के लिये ख़तरनाक है. अमरीका में साइन्सदांनों को कहां तक दबाया जा रहा है इसका पता उस सलाह से मिलता है जो प्रोफ़ेसर लाइन्स पालिंग ने अपने दोस्तों को दी. उन्होंने कहा है कि "आप इस बात की एहतियात रखें कि आप कोई ज्यादा ऊंची या महत्वपूर्न खोज न करलें". अमरीका में मिस्टर ओवन लातिमूर के साथ जो सलूक किया गया उससे भी यही बात जाहिर होती है. प्रोफ़ेसर लातिमूर के



کیا جا رھا ھو . وہ اتنی حد کو پہونچ گئی کہ کسی بھی آبرودار اِنسان کو ان کا برداشت کرنا ھی نامکن ھوگیا . اور ایک مرتبہ پروفیسر آئنسٹائن کو یہاں تک اِشارہ کرنا پڑا کہ امریکن سینیٹ کی انٹرنل سکیورٹی کمیٹی (Internal Security Committee) یا اِس طرح کی دوسری کمیٹی کے سامنے کسی بھی دماغدار آدمی کو بیان دینے سے اِنکار کر دینا چاھئے .

تھوڑا عرصہ پہلے جس یونیورسٹی میں پروفیسر آئنسٹائن پڑھاتے تھے وھاں کی سائنس انسٹیچوٹ کے ڈائرکٹر ڈاکٹر رابرٹ اوپن‌ھائیمر تھے . اُن کی سیواؤں سے خوش ھو کر امریکی سرکار نے انھیں ایٹامک انرجی کمیشن (Atomic Energy Commission) کا خاص مشیر مقرر کیا . لیکن جب ھائڈروجن بم بنا تو ان سے صلاح لی گئی کہ اِس کے اِستعمال کے بارے میں اُن کی کیا رائے ھے . اُنھوں نے اس کے اِستعمال کے خلاف رائے دی اور کہا کہ وہ بہت ھی خطرناک و تباہ‌کن ھے . اُن کی یہ رائے امریکی سرکار کو پسند نہیں آئی اور اس نے اُنھیں کمیشن کے مشیر پر سے ھٹا دیا . لیکن آج بڑے بڑے فوجی جنرل اور سائنس داں ڈاکٹر اوپن‌ھائیمر کی رائے سے اتفاق کرتے ھیں . انگلینڈ کے سرنام افسر کپتان لڈل ھارٹ (Capt. Liddle Hart) کا کہنا ھے کہ ھائڈروجن بم کے بعد " مکمل لڑائی " اور " جیت " لفظ بے معنی ھو جاتے ھیں . اگر اب کوئی " لڑائی جیتنے " کے خواب دیکھتا ھے یا اِس طرح کی بات کرتا ھے تو " مہمل سے بدتر بات کرتا ھے . اِس سے اس کے اپنے ملک کو اور کل اِنسانی قوم کو خطرہ ھے ." حال ھی میں جاپان کے نزدیک جو ھائڈروجن بم کا تجربہ کیا گیا اِس سے نیوزیلینڈ تک کے لوگ ڈر گئے ھیں اور کہتے ھیں کہ اِس طرح کے تجربوں سے ھماری جان و مال کو اندیشہ ھے .

ھائڈروجن بم سے کہیں زیادہ خطرناک چیز یہ ھے کہ ھائڈروجن بم کے بارے میں سائنس والوں کو رائے دینے کا موقع نہ دیا جائے یا سچی رائے دینے پر اُن کے خلاف کارروائی کی جائے . امریکہ میں فیڈریشن آف امریکن سائنٹسٹس نام کی جو جماعت ھے اس تک نے پریزیڈینٹ آئزن‌ھاور کو لکھا ھے کہ کسی وفادار سائنس داں کو دلی رائے ظاھر کرنے پر نکال باھر کر دینا اپنی قوم کے لئے خطرناک ھے . امریکہ میں سائنس دانوں کو کہاں تک دبایا جا رھا ھے اِس کا پتہ اُس صلاح سے ملتا ھے جو پروفیسر لائنس پالنگ نے اپنے دوستوں کو دی . انھوں نے کہا ھے کہ "آپ اس بات کی احتیاط رکھیں کہ آپ کوئی زیادہ اُونچی یا مہتوپورن کھوج نہ کرلیں . امریکہ میں مسٹر اُوون لاتی‌مور کے ساتھ جو سلوک کیا گیا اس سے بھی یہی بات ظاھر ھوتی ھے . پروفیسر لاتی‌مور کے

# एक वैज्ञानिक का आह !

आइन्सटाइन आज विज्ञान या साइन्स की दुनिया में सब से नुमायां सितारे समझे जाते हैं. और केवल वैज्ञानिक ही नहीं, बहुत ऊंचे इखलाक़ और नैतिकता वाली हस्ती हैं. हाल ही में एक अखबार नवीस ने उनसे मुलाक़ात की और पूछा कि साइन्स वालों या दूसरे दिमाग़दार लोगों के साथ अमरीका में जिस तरह पेश आया जा रहा है उस पर आपकी क्या राय है. प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन चुप रहे और फिर कहा कि "अगर मुझे फिर से जवानी हासिल हो तब मैं अपनी रोज़ी कमाने के लिये वैज्ञानिक या टीचर या प्रोफ़ेसर होना पसन्द नहीं करूंगा, बल्कि एक मज़दूर होना चाहूंगा ताकि आजकल की हालत में जितनी भी थोड़ी बहुत आज़ादी हासिल है उसका अनुभव कर सकूं."

इन चन्द लफ़्ज़ों से प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन के दिल का दर्द साफ़ साफ़ पता चलता है. उन्होंने देख लिया कि आज की दुनिया में और ख़ासकर अमरीका में वह ख़याली व दिमाग़ी आज़ादी हासिल नहीं है जिसकी उन्हें उम्मीद थी या जिसकी किसी शरीफ़ आदमी को उम्मीद होनी चाहिये. आज से क़रीब बीस बरस पहले प्रोफ़ेसर आइन्सटाइन अपनी जन्म भूमि जर्मनी से अमरीका आये थे. जब हिटलर का जर्मनी में बोलबाला हुआ और किसी भी यहूदी का वहां रहना नामुमकिन हो गया तब उन्होंने अपना मुल्क छोड़ा था और अमरीका की प्रिन्सटन यूनीवर्सिटी में आकर बसे थे.

कैसी ख़ुशी की बात है कि आज दुनिया के किसी हिस्से में लड़ाई नहीं चल रही है, किसी की फ़ौज दूसरे मुल्क के ख़िलाफ़ मार्च नहीं कर रही है. लेकिन कैसी बदक़िस्मती है कि आज दुनिया में जितना डर छाया हुआ है उतना शायद तारीख़ के किसी ज़माने में नहीं था. अमरीका और रूस में भगवान की कृपा से हर तरह की दौलत मौजूद है, लेकिन वहां की आबादियां एक दूसरे से बहुत डरती हैं और दोनों की सरकारें एक दूसरे के ख़िलाफ़ प्रचार करती हैं कि एक की वजह से दूसरे को ख़तरा है. इस तरह सारा यूरोप, अमरीका और उत्तरी व पच्छिमी एशिया पर डर हावी है. यही वजह है कि अमरीका में आज आज़ादख़्याली मानो रह ही नहीं गई है और हर किसी को शक की निगाह से देखा जाता है. यहां तक नौबत आ गई है कि वहां की हुकूमत की जो चुपचाप, जा हो या बेजा, ताबेदारी नहीं करता, तो उसका मुल्क में रहना ही मुश्किल हो जाता है. इस आफ़त का शिकार अमरीका के साइनटिस्टों को ख़ास तौर से होना पड़ा है. उनसे तरह तरह की सफ़ाई ली जाती है, और इस तरह ली जाती है मानो किसी चोर या डाकू से जवाब तलब



# ایک ویگیانک کی آہ !

آئنسٹائن آج وگیان یا سائنس کی دنیا میں سب سے نمایاں ستارے سمجھے جاتے ہیں ۔ اور وہ کیول ویگیانک ہی نہیں، بہت اونچے اخلاق اور نیتکتا والی ہستی ہیں ۔ حال ہی میں ایک اخبار نویس نے ان سے ملاقات کی اور پوچھا کہ سائنس والوں یا دوسرے دماغدار لوگوں کے ساتھ امریکہ میں جس طرح پیش آیا جا رہا ہے اس پر آپ کی کیا رائے ہے ؟ پروفیسر آینٹس ٹائن چپ رہے اور پھر کہا کہ " اگر مجھے پھر سے جوانی حاصل ہو تب میں اپنی روزی کمانے کے لئے ویگیانک یا ٹیچر یا پروفیسر ہونا پسند نہیں کروں گا" بلکہ ایک مزدور ہونا چاہوں گا تاکہ آجکل کی حالت میں جتنی بھی تھوڑی بہت آزادی حاصل ہے اس کا انوبھو کر سکوں ۔"

ان چند لفظوں سے پروفیسر آینٹس ٹائن کے دل کا درد صاف صاف پتہ چلتا ہے ۔ اُنہوں نے دیکھ لیا کہ آج کی دنیا میں اور خاص کر امریکہ میں وہ خیالی و دماغی آزادی حاصل نہیں ہے جس کی اُنہیں اُمید تھی یا جس کی کسی شریف آدمی کو اُمید ہونی چاہئے ۔ آج سے قریب بیس برس پہلے پروفیسر آینٹس ٹائن اپنی جنم بھومی جرمنی سے امریکہ آئے تھے ۔ جب ہٹلر کا جرمنی میں بول بالا ہوا اور کسی بھی یہودی کا وہاں رہنا ناممکن ہوگیا تب اُنہوں نے اپنا ملک چھوڑا تھا اور امریکہ کی پرنسٹن یونیورسٹی میں آکر بسے تھے ۔

کیسی خوشی کی بات ہے کہ آج دنیا کے کسی حصہ میں لڑائی نہیں چل رہی ہے، کسی کی فوج دوسرے ملک کے خلاف مارچ نہیں کر رہی ہے ۔ لیکن کیسی بدقسمتی ہے کہ آج دنیا میں جتنا ڈر چھایا ہوا ہے اتنا شاید تاریخ کے کسی زمانہ میں نہیں تھا ۔ امریکہ اور روس میں بھگوان کی کرپا سے ہر طرح کی دولت موجود ہے، لیکن وہاں کی آبادیاں ایک دوسرے سے بہت ڈرتی ہیں اور دونوں کی سرکاریں ایک دوسرے کے خلاف پرچار کرتی ہیں کہ ایک کی وجہ سے دوسرے کو خطرہ ہے ۔ اس طرح سارا یورپ، امریکہ اور اتری و پچھمی ایشیا پر ڈر حاوی ہے ۔ یہی وجہ ہے کہ امریکہ میں آج آزاد خیالی مانو رہ ہی نہیں گئی ہے اور ہر کسی کو شک کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے ۔ یہاں تک نوبت آ گئی ہے کہ وہاں کی حکومت کی جو چپ چاپ، جا ہو یا بیجا، تابعداری نہیں کرتا، تو اُس کا ملک میں رہنا ہی مشکل ہو جاتا ہے ۔ اس آفت کا شکار امریکہ کے سائنٹسٹوں کو خاص طور سے ہونا پڑا ہے ۔ اُن سے طرح طرح کی صفائی لی جاتی ہے، اور اس طرح لی جاتی ہے مانو کسی چور یا ڈاکو سے جواب طلب

अपनी मिलों की बनी चीनी दूसरे अपने से ज्यादा पिछड़े हुए देशों में बेचकर पैसे कमाने के नापाक साम्राजी प्रलोभन को भी हमें जीतना चाहिये.

(8) चाय के बाग़ीचे जल्दी से जल्दी विदेशियों के हाथों से ले लेना हम भारत सरकार का फ़र्ज़ समझते हैं. हम डाक्टर लोहिया से सहमत हैं कि अगर मुआवज़े के रूप में या किसी रूप में कुछ धन देना भी पड़ जावे तो कोई हर्ज नहीं. हमें यह भी मालूम है कि अंग्रेजों का जितना धन इन चाय के बाग़ीचों में लगा है वह सब भारत ही से बल्कि भारत की लूट से कमाया हुआ धन है. हम उन पुराने ज़ख़्मों को छेड़ना नहीं चाहते. पर इस ग़रीब देश से इस तरह धन का बहना और उसकी ग़रीब जनता के साथ यह बदसलूकी अब बन्द होनी चाहिये.

इस धन्दे को आगे के लिये चलाने के दो ही ढंग हो सकते हैं. एक तो हर किसान अपनी छोटी सी निजी ज़मीन पर चाय के पौधे अच्छी तरह लगा सकता है और बिलकुल घरेलू ढंग से चाय तैयार करके बाज़ार में बेच सकता है. दूसरे आजकल की सूरत में यह सारा धन्दा इस तरह की कलेक्टिव फ़ारमिंग यानी मुशतरका खेती की शकल में बड़ी सुन्दरता से चल सकता है जिसका नमूना हमने रूस के कलेक्टिव फ़ारमों में अच्छी तरह देखा है. जो लोग फ़ारम में काम करें वही उसके मालिक, वही उसका सारा प्रबन्ध करने वाले और वही मुनाफ़े के हक़दार. सरकार का काम केवल उनकी ज़रूरत के अनुसार उनके कहने पर उनकी मदद कर देना है. यही रास्ता है जिस पर धीरे धीरे हमें अपने बहुत से धन्दों को ले जाना है.

## सरकार नाम की चीज़ का दुनिया से ख़तम होना

दुनिया की अधिकतर सरकारें आज इस कोशिश में हैं कि अधिक से अधिक धन्दे, अधिक से अधिक व्योपार और अधिक से अधिक शक्ति उनके हाथों में रहे. यह ढंग जनता के लिये बहुत ख़तरनाक ढंग है. जिस तरह पैसे की शक्ति कहीं भी एक जगह जमा होने के बजाय सब आदमियों में बराबर की बंटी रहे इसी में दुनिया का भला है, वैसे ही दूसरी सब शक्तियां भी ज्यादा से ज्यादा लोगों में बंटी रहें यही अच्छा है. जिन ख़ास सूरतों में किसी शक्ति का एक जगह जमा होना ज़रूरी होता है वह भी, जैसा हमने ऊपर कहा है, पंचायती ढंग से जनता के हाथों में ही रहनी चाहियें. सरकार सबसे अच्छी वही है जिसके हाथों में सब से कम अधिकार हों, यानी जिसे सबसे कम शासन करना पड़े. जनता को ताक़तवर बनाने का यही तरीक़ा है. जिस आदर्श की तरफ़ दुनिया को जाना है वह सरकारों की ताक़त को बढ़ाना नहीं है, उसे धीरे धीरे कम करके सरकार नाम की चीज़ को दुनिया से ख़तम करना है.

15. 12. '54 —सुन्दरलाल



اپنی ملوں کی بنی چینی دوسرے اپنے سے زیادہ پچھڑے ہوئے دیشوں میں بیچ کر پیسے کمانے کے ناپاک سامراجی پرلوبھن کو بھی ھمیں جیتنا چاھئے .

(8) چائے کے باغیچے جلدی سے جلدی ودیشیوں کے ھاتھوں سے لے لینا ھم بھارت سرکار کا فرض سمجھتے ھیں . ھم ڈاکٹر لوھیا سے سہمت ھیں کہ اگر معاوضے کے روپ میں یا کسی روپ میں کچھ دھن دینا بھی پڑ جاوے تو کوئی ھرج نہیں . ھمیں یہ بھی معلوم ھے کہ انگریزوں کا جتنا دھن ان چائے کے باغیچوں میں لگا ھے وہ سب بھارت ھی سے بلکہ بھارت کی لوٹ سے کمایا ھوا دھن ھے . ھم اُن پرانے زخموں کو چھیڑنا نہیں چاھتے . پر اِس غریب دیش سے اِس طرح دھن کا بہنا اور اُس کی غریب جنتا کے ساتھ یہ بدسلوکی اب بند ھونی چاھئے .

اِس دھندے کو آگے کے لئے چلانے کے دو ھی ڈھنگ ھوسکتے ھیں . ایک تو ھر کسان اپنی چھوٹی سی نجی زمین پر چائے کے پودھے اچھی طرح لگا سکتا ھے اور بالکل گھریلو ڈھنگ سے چائے تیار کرکے بازار میں بیچ سکتا ھے . دوسرے آجکل کی صورت میں یہ سارا دھندا اِس طرح کی کلکٹیو فارمنگ یعنی مشترکہ کھیتی کی شکل میں بڑی سندرتا سے چل سکتا ھے جس کا نمونہ ھم نے روس کے کلکٹیو فارموں میں اچھی طرح دیکھا ھے . جو لوگ فارم میں کام کریں وھی اُس کے مالک، وھی اُس کا سارا پربندھ کرنے والے اور وھی منافع کے حقدار . سرکار کا کام کیول اُن کی ضرورت کے انوسار اُن کے کہنے پر اُن کی مدد کردینا ھے . یہی راستہ ھے جس پر دھیرے دھیرے ھمیں اپنے بہت سے دھندوں کو لیجانا ھے .

## سرکار نام کی چیز کا دنیا سے ختم ھونا

دنیا کی ادھکتر سرکاریں آج اِس کوشش میں ھیں کہ ادھک سے ادھک دھندے، ادھک سے ادھک بیوپار اور ادھک سے ادھک شکتی اُن کے ھاتھوں میں رھے . یہ ڈھنگ جنتا کے لئے بہت خطرناک ڈھنگ ھے . جس طرح پیسے کی شکتی کہیں بھی ایک جگہ جمع ھونے کے بجائے سب آدمیوں میں برابر کی بنٹی رھے اسی میں دنیا کا بھلا ھے، ویسے ھی دوسری سب شکتیاں بھی زیادہ سے زیادہ لوگوں میں بنٹی رھیں یہی اچھا ھے . جن خاص صورتوں میں کسی شکتی کا ایک جگہ جمع ھونا ضروری ھوتا ھے وہ بھی، جیسا ھم نے اوپر کہا ھے، پنچائتی ڈھنگ سے جنتا کے ھاتھوں میں ھی رھنی چاھئیں . سرکار سب سے اچھی وھی ھے جس کے ھاتھوں میں سب سے کم ادھیکار ھوں، یعنی جسے سب سے کم شاسن کرنا پڑے . جنتا کو طاقتور بنانے کا یہی طریقہ ھے . جس آدرش کی طرف دنیا کو جانا ھے وہ سرکاروں کی طاقت کو بڑھانا نہیں ھے، اُسے دھیرے دھیرے کم کرکے سرکار نام کی چیز کو دنیا سے ختم کرنا ھے .

15 . 12 . '54 —سندر لال

में हमेशा इस तरह की दुर्घटनाओं की सम्भावना रहेगी जैसी अभी 10 दिसम्बर को मध्य प्रदेश की न्यूटन चिकली खदान में मालिकों या मैनेजरों की लापरवाही के कारन हो चुकी है, जिसमें कहा जाता है पैंसठ बेगुनाह मजदूरों की मुफ़्त में जान गई. कोयले के धंदे को चलाने के दो ही ढंग हो सकते हैं. या तो यह कि देश की सरकार इसे चलावे और या जो अधिक अच्छा है कि पंचायती ढंग से जितने आदमी इंजीनियरों और माहिरों से लेकर मामूली मजदूर तक उसमें काम करते हों उन सब की ही वह मिलकियत हो, उन्हीं का सारा प्रबन्ध हो और वही उसके मुनाफ़े के हक़दार हों. यही ढंग असली ढंग है. इसी में देश और जनता का असली भला है. जब तक सरकार इस तरह के धंदे को चलावे तब तक भी यह मुनासिब है कि चीन की तरह खदान का सारा इन्तज़ाम करने वाली कमेटी में आधे आदमी सरकार के हों और आधे खदान में काम करने वालों के चुने हुए नुमाइन्दे.

(2) चीनी तैयार करने का धंदा उन धंदों में से है जिन्हें हम गांव गांव में घरेलू ढंग से ही चलाना ठीक समझते हैं. जो लोग हमारे गांव की ज़िन्दगी से वाक़िफ़ हैं उन्हें मालूम है कि चीनी की मिलों ने हमारे गांव गांव के कोल्हुओं के ब्योपार को किस तरह बरबाद कर दिया और लाखों आदमियों को बेकार कर दिया. सैकड़ों पच्छिमी डाक्टरों तक की राय है कि आदमी की तन्दुरुस्ती के लिये हाथ की बनी हुई चीनी मिल की बनी चीनी से कहीं अच्छी होती है. हमने लन्दन शहर के अन्दर इस तरह के रेस्टोरां देखे हैं जिनमें तन्दुरुस्ती के ख़याल से मिल की चीनी काम में नहीं लाई जाती और उसकी जगह गुड़, हाथ की चीनी और राब तक खाने के लिये दी जाती है. राब और गुड़ मिल की सफ़ेद चीनी के मुक़ाबले में कितनी अधिक मुफ़ीद चीज़ें हैं इस पर काफ़ी अमरीकी डाक्टरों की किताबें बाज़ार में पढ़ने को मिल सकती हैं. लेकिन हम ऊपर कह चुके हैं कि साइन्सी अंधविश्वास धार्मिक अंधविश्वासों से ज़्यादा ख़तरनाक होते हैं. चीनी की मिलों ने हमारे लाखों गांव वालों का एक मात्र पौष्टिक आहार उनसे छीन लिया और गन्ना पैदा करने वाले लाखों किसानों को मिल मालिकों का आश्रित और गुलाम बना डाला. गन्ना पैदा करने वाले किसानों की आजकल की मुसीबतों पर किताबें लिखी जा सकती हैं. चीनी की मिलें और बनस्पति घी (?) की मिलें दोनों अक्सर साथ साथ चलती हैं. हमारे आजकल के हाकिम और उनके तनख़्वाहदार साइन्टिस्ट कुछ भी कहें हम इन दोनों को जनता के लिये बरबादी की चीज़ें मानते हैं. हमारी यह साफ़ राय है कि चीनी बनाने का काम गांव गांव में कोल्हुओं और खेंचियों के जरिये ही होना चाहिये.



میں ہمیشہ اِس طرح کی درگھٹناؤں کی سمبھاونا رہے گی جیسی ابھی 10 دسمبر کو مدھیہ پردیش کی نیوٹن چکلی کھدان میں مالکوں یا مینیجروں کی لاپرواہی کے کارن ہوچکی ہے، جس میں کہا جاتا ہے پینسٹھ بےگناہ مزدوروں کی مفت میں جان گئی ۔ کوئلہ کے دھندے کو چلانے کے دو ہی ڈھنگ ہوسکتے ہیں ۔ یا تو یہ کہ دیش کی سرکار اِسے چلاوے اور یا جو ادھک اچھا ہے کہ پنچائتی ڈھنگ سے جتنے آدمی انجینیروں اور ماہروں سے لیکر معمولی مزدور تک اُس میں کام کرتے ہوں اُن سب کی ہی وہ ملکیت ہو، اُنہیں کا سارا پربندھ ہو اور وہی اُس کے منافعے کے حقدار ہوں ۔ یہی ڈھنگ اصلی ڈھنگ ہے ۔ اِسی میں دیش اور جنتا کا اصلی بھلا ہے ۔ جب تک سرکار اِس طرح کے دھندے کو چلاوے تب تک بھی یہ مناسب ہے کہ چین کی طرح کھدان کا سارا اِنتظام کرنے والی کمیٹی میں آدھے آدمی سرکار کے ہوں اور آدھے کھدان میں کام کرنے والوں کے چنے ہوئے نمائندے ۔

(2) چینی تیار کرنے کا دھندا اُن دھندوں میں سے ہے جنہیں ہم گاؤں گاؤں میں گھریلو ڈھنگ سے ہی چلانا ٹھیک سمجھتے ہیں ۔ جو لوگ ہمارے گاؤں کی زندگی سے واقف ہیں اُنہیں معلوم ہے کہ چینی کی ملوں نے ہمارے گاؤں گاؤں کے کولہوؤں کے بیاپار کو کس طرح برباد کردیا اور لاکھوں آدمیوں کو بیکار کردیا ۔ سیکڑوں پچھمی ڈاکٹروں تک کی رائے ہے کہ آدمی کی تندرستی کے لئے ہاتھ کی بنی ہوئی چینی مل کی بنی چینی سے کہیں اچھی ہوتی ہے ۔ ہم نے لندن شہر کے اندر اِس طرح کے رستوراں دیکھے ہیں جن میں تندرستی کے خیال سے مل کی چینی کام میں نہیں لائی جاتی اور اُس کی جگہ گڑ، ہاتھ کی چینی اور راب تک کھانے کے لئے دی جاتی ہے ۔ راب اور گڑ مل کی سفید چینی کے مقابلے میں کتنی ادھک مفید چیزیں ہیں اِس پر کافی امریکی ڈاکٹروں کی کتابیں بازار میں پڑھنے کو مل سکتی ہیں ۔ لیکن ہم اُوپر کہہ چکے ہیں کہ سائنسی اندھ وشواس دھارمک اندھ وشواسوں سے زیادہ خطرناک ہوتے ہیں ۔ چینی کی ملوں نے ہمارے لاکھوں گاؤں والوں کا ایک ماتر پوشٹک آہار اُن سے چھین لیا اور گنا پیدا کرنے والے لاکھوں کسانوں کو مل مالکوں کا آشرت اور غلام بنا ڈالا ۔ گنا پیدا کرنے والے کسانوں کی آجکل کی مصیبتوں پر کتابیں لکھی جاسکتی ہیں ۔ چینی کی ملیں اور بنسپتی گھی (؟) کی ملیں دونوں اکثر ساتھ ساتھ چلتی ہیں ۔ ہمارے آجکل کے حاکم اور اُن کے تنخواہ دار سائنٹسٹ کچھ بھی کہیں ہم اِن دونوں کو جنتا کے لئے بربادی کی چیزیں مانتے ہیں ۔ ہماری یہ صاف رائے ہے کہ چینی بنانے کا کام گاؤں گاؤں میں کولہوؤں اور کھینچیوں کے ذریعہ ہی ہونا چاہئے ۔

के लिये काग़ज़ का प्रबन्ध करने. उन्होंने पूछा क्या इलाहाबाद में काग़ज़ नहीं मिलता ? हमने जवाब दिया—मिलता है लेकिन मिल का बना हुआ, मैं हाथ के बने काग़ज़ का प्रबन्ध करने आया हूं. गांधी जी ने जवाब दिया—"काग़ज़ तो मिल में ही बनना चाहिये. कुमारप्पा यहां कुछ काग़ज़ हाथ से बनाते हैं. मैं उसे बुरा नहीं कहता. पर काग़ज़ तो मिल से ही बनना चाहिये, तुम मिल ही का काग़ज़ अपनी किताब में लगाओ." थोड़ी सी और बात चीत के बाद हम उनकी बात समझ गए और "भारत में अंग्रेजी राज" में मिल का ही काग़ज़ लगाया गया.

यह हमने केवल एक मिसाल दी है. हाथ से जितना काग़ज़ बन सके और जितना अच्छा बन सके गांधी जी उसे पसन्द करते थे. पर काग़ज़ की आम मांग या आम ज़रूरत वह मिलों से ही पूरा करना चाहते थे. चीन में भी काग़ज़ की बड़ी बड़ी मिलें हमने देखीं, सरकारी भी और ग़ैर सरकारी भी. लेकिन इसके साथ साथ नए चीन में हाथ का काग़ज़ इतना अधिक और इतना अच्छा बनता और खपता है कि शायद उसका दसवां हिस्सा भी भारत में नहीं बनता. शंघाई के बाजार में चिट्ठी लिखने के काग़ज़ के पैड अधिकतर और बढ़िया से बढ़िया हमने हाथ के काग़ज़ के ही देखे. उन्होंने अपनी घरेलू उद्योगों की एक नुमाइश में भी बढ़िया से बढ़िया और तरह तरह के हाथ के बने काग़ज़ों के अंबार हमें दिखाए. गांधी जी मिल के धंदे और हाथ के धंदे दोनों में एक समतोल यानी समझदारी का बैलेन्स रखना चाहते थे. ख़ासकर खाने और कपड़े से सम्बन्ध रखने वाले सब जरूरी धंदे वह अधिकतर घरेलू ढंग से ही चलाना चाहते थे. हमारे आजकल के शासकों के इसके ख़िलाफ़ चलने की कोशिशों का नतीजा हमें अपने घरेलू धंदों की बरबादी और करोड़ों आदमियों की बढ़ती हुई बेकारी और फ़ाक़ाकशी की सूरत में साफ़ दिखाई दे रहा है.

गांधी जी की ज़िन्दगी में उनके ट्रस्टी के उसूल के नाकाम होने का सवाल ही पैदा नहीं होता. कोई ट्रस्टी अपना फ़र्ज़ पूरा न भी करे तो उससे उसूल नहीं बदल जाता. रहा विनोबा जी का सम्पत्तिदान वह केवल एक दिलों को बदलने की कोशिश है. वह उस से देश को बदलने का दावा नहीं करते.

## कोयला, चीनी और चाय के धंदों पर हमारी राय

जिन तीन धंदों की डाक्टर लोहिया ने चर्चा की है —कोयला, चीनी और चाय—उनकी बाबत हमारी राय यह है—

(1) कोयले की खदान का धंदा बड़ा नाज़ुक और ख़तरनाक धंदा है. यह एक दो आदमियों के बस की चीज़ नहीं है. इसे बहुत से लोग मिलकर ही चला सकते हैं. पूंजी-पतियों की निजी देख रेख में यह धंदा चलाया जायगा तो उस



کے لئے کاغذ کا پربندھ کرنے ۔ اُنہوں نے پوچھا کیا الہ آباد میں کاغذ نہیں ملتا ؟ ہم نے جواب دیا—ملتا ہے لیکن مل کا بنا ہوا' میں ہاتھ کے بنے کاغذ کا پربندھ کرنے آیا ہوں ۔ گاندھی جی نے جواب دیا—"کاغذ تو مل میں ہی بننا چاہئے ۔ کمارپا یہاں کچھ کاغذ ہاتھ سے بناتے ہیں ۔ میں اُسے برا نہیں کہتا ۔ پر کاغذ تو مل سے ہی بننا چاہئے ۔ تم مل ہی کا کاغذ اپنی کتاب میں لگاؤ ۔" تھوڑی سی اور بات چیت کے بعد ہم اُن کی بات سمجھ گئے اور "بھارت میں انگریزی راج" میں مل کا ہی کاغذ لگایا گیا ۔

یہ ہم نے کیول ایک مثال دی ہے ۔ ہاتھ سے جتنا کاغذ بن سکے اور جتنا اچھا بن سکے گاندھی جی اُسے پسند کرتے تھے ۔ پر کاغذ کی عام مانگ یا عام ضرورت وہ ملوں سے ہی پورا کرنا چاہتے تھے ۔ چین میں بھی کاغذ کی بڑی بڑی ملیں ہم نے دیکھیں' سرکاری بھی اور غیر سرکاری بھی ۔ لیکن اِس کے ساتھ ساتھ نئے چین میں ہاتھ کا کاغذ اتنا ادھک اور اتنا اچھا بنتا اور کھپتا ہے کہ شاید اُس کا دسواں حصہ بھی بھارت میں نہیں بنتا ۔ شنگھائی کے بازار میں چٹھی لکھنے کے کاغذ کے پیڈ ادھکتر اور بڑھیا سے بڑھیا ہم نے ہاتھ کے کاغذ کے ہی دیکھے ۔ اُنہوں نے اپنی گھریلو اُدیوگوں کی ایک نمائش میں بھی بڑھیا سے بڑھیا اور طرح طرح کے ہاتھ کے بنے کاغذوں کے انبار ہمیں دکھائے ۔ گاندھی جی مل کے دھندے اور ہاتھ کے دھندے دونوں میں ایک سمتول یعنی سمجھداری کا بیلینس رکھنا چاہتے تھے ۔ خاص کر کھانے اور کپڑے سے سمبندھ رکھنے والے سب ضروری دھندے وہ ادھکتر گھریلو ڈھنگ سے ہی چلانا چاہتے تھے ۔ ہمارے آج کل کے شاسکوں کے اِس کے خلاف چلنے کی کوششوں کا نتیجہ ہمیں اپنے گھریلو دھندوں کی بربادی اور کروڑوں آدمیوں کی بڑھتی ہوئی بیکاری اور فاقہ کشی کی صورت میں صاف دکھائی دے رہا ہے ۔

گاندھی جی کی زندگی میں اُن کے ٹرسٹی کے اصول کے ناکام ہونے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا ۔ کوئی ٹرسٹی اپنا فرض پورا نہ بھی کرے تو اُس سے اُصول نہیں بدل جاتا ۔ رہا ونوبا جی کا سمپتی‌دان وہ کیول ایک دلوں کو بدلنے کی کوشش ہے ۔ وہ اُس سے دیش کو بدلنے کا دعویٰ نہیں کرتے ۔

## کوئلے' چینی اور چائے کے دھندوں پر ہماری رائے

جن تین دھندوں کی ڈاکٹر لوہیا نے چرچا کی ہے—کوئلہ' چینی اور چائے اُن کی بابت ہماری رائے یہ ہے—

(1) کوئلے کی کھدان کا دھندا بڑا نازک اور خطرناک دھندا ہے ۔ یہ ایک دو آدمیوں کے بس کی چیز نہیں ہے ۔ اِسے بہت سے لوگ مل کر ہی چلا سکتے ہیں ۔ پونجی پتیوں کی نجی دیکھ ریکھ میں یہ دھندا چلایا جائے گا تو اُس

को बड़ी बड़ी मशीनें तरक़्क़ी की सब से बड़ी अलामतें दिखाई देती हैं और गांव की या घरेलू दस्तकारियां उन्हें केवल एक पिछड़े हुए असभ्य या अर्ध सभ्य जमाने की यादगार नजर आती हैं. उनका बस चले और अगर मुमकिन हो तो वह अपने बच्चों को पांव चलना पीछे सिखावें और साइकिल चलाना पहले. हम यह बात बढ़ाकर नहीं कह रहे हैं. योरप के एक बहुत बड़े साइन्सदां की पेशीन गोई है कि—"आजकल की मशीनी सभ्यता यदि इसी रफ़्तार से बढ़ती रही तो दो हज़ार बरस के बाद जो इन्सान पैदा होंगे उनके पैरों में उंगलियां नहीं होंगी, उनके सर पर जिन्दगी भर बाल या मुंह में जिन्दगी भर दांत नहीं निकलेंगे, उनकी आंखें शुरू से शीशों की मदद से देखेंगी और उनके हाथ पैर चलने फिरने के काम के न होंगे." हम हर तरह की मशीनों के ख़िलाफ़ नहीं हैं.

साइन्स की तरक़्क़ी की हमारे दिल में दूसरों से कम क़दर नहीं. हम चाहते हैं कि साइन्स दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी करे, हमें चांद और तारों तक उड़ा कर ले जावे और सारे विश्व को एक करने में, समझने में और उस पर क़ाबू हासिल करने में हमें मदद दे. पर आसमान में उड़ते हुए भी हम जमीन से अपना सम्पर्क तोड़ना नहीं चाहते. साइन्स की तरक़्क़ी के लिये हज़ारों रास्ते खुले हुए हैं. लेकिन हम उसे उस रास्ते पर चलने देना नहीं चाहते जिस पर वह आदमी के हाथों आदमी के क़तल के हथियारों का अंबार लगा दे. हम यह नहीं चाहते कि साइन्स आदमी की स्वाभाविक स्वतंत्रता, उस की आत्म निर्भरता, प्रकृति के साथ उसके सम्पर्क और उसकी क़ुदरती शक्तियों को बर्बाद करके आगे बढ़े. हम साइन्स को आदमी का ग़ुलाम बनाकर रखना चाहते हैं, आदमी को साइन्स का ग़ुलाम बनने देना नहीं चाहते. हमें अफ़सोस है जैसे और बहुत मामलों में उसी तरह इस मामले में भी मुल्क के पढ़े लिखे लोग गांधी जी को ठीक नहीं समझ पाए. गांधी जी कभी भी हर तरह की मिलों या मशीनों के ख़िलाफ़ नहीं थे. वह मिलों और मशीनों की बाबत हमारे पढ़े लिखे लोगों के अंध विश्वास को तोड़ना चाहते थे. यह साइन्सी अन्ध-विश्वास धार्मिक अन्ध विश्वासों से भी ज्यादा ख़तरनाक हो सकते हैं और होते हैं. इस सम्बन्ध में गांधीजी के विचारों का हमें काफ़ी अनुभव है.

हमारी किताब "भारत में अंग्रेज़ी राज" का दूसरा एडिशन 30 हज़ार जिल्दों का छप रहा था. पहला एडिशन चार हज़ार जिल्दों का पहले निकल चुका था. पहले एडिशन में जिल्द खद्दर की थी लेकिन काग़ज मिल का. दूसरे एडिशन के लिये हमने सोचा कि काग़ज भी हाथ का लगाया जावे. हम काग़ज का प्रबन्ध करने के लिये वर्धा पहुंचे. गांधी जी से बात चीत हुई. उन्होंने पूछा कैसे आए ? हमने जवाब दिया भारत में अंग्रेज़ी राज की तीस हज़ार जिल्दों



کو بڑی بڑی مشینیں ترقی کی سب سے بڑی علامتیں دکھائی دیتی ہیں اور گاؤں کی یا گھریلو دستکاریاں اُنہیں کیول ایک پچھڑے ہوئے اسبھیہ یا اردھ سبھیہ زمانے کی یادگار نظر آتی ہیں. اُن کا بس چلے اور اگر ممکن ہو تو وہ اپنے بچوں کو پاؤں چلنا پیچھے سکھاویں اور سائیکل چلانا پہلے . ہم یہ بات بڑھا کر نہیں کہہ رہے ہیں . یورپ کے ایک بہت بڑے سائنس داں کی پیشین گوئی ہے کہ—" آج کل کی مشینی سبھیتا یدی اِسی رفتار سے بڑھتی رہی تو دو ہزار برس کے بعد جو اِنسان پیدا ہونگے اُن کے پیروں میں انگلیاں نہیں ہوں گی، اُن کے سر پر زندگی بھر بال یا منھ میں زندگی بھر دانت نہیں نکلیں گے، اُن کی آنکھیں شروع سے شیشوں کی مدد سے دیکھیں گی اور اُن کے ہاتھ پیر چلنے پھرنے کے کام کے نہ ہوں گے ." ہم ہر طرح کی مشینوں کے خلاف نہیں ہیں .

سائنس کی ترقی کی ہمارے دل میں دوسروں سے کم قدر نہیں . ہم چاہتے ہیں کہ سائنس دن دونی رات چوگنی ترقی کرے، ہمیں چاند اور تاروں تک اُڑا کر لے جاوے اور سارے وشو کو ایک کرنے میں، سمجھنے میں اور اُس پر قابو حاصل کرنے میں ہمیں مدد دے . پر آسمان میں اُڑتے ہوئے بھی ہم زمین سے اپنا سمپرک توڑنا نہیں چاہتے . سائنس کی ترقی کے لئے ہزاروں راستے کھلے ہوئے ہیں . لیکن ہم اُسے اُس راستے پر چلنے دینا نہیں چاہتے جس پر وہ آدمی کے ہاتھوں آدمی کے قتل کے ہتھیاروں کا انبار لگا دے . ہم یہ نہیں چاہتے کہ سائنس آدمی کی سوابھاوک سوتنترتا، اُس کی آتم نربھرتا، پرکرتی کے ساتھ اُس کے سمپرک اور اُس کی قدرتی شکتیوں کو برباد کر کے آگے بڑھے . ہم سائنس کو آدمی کا غلام بنا کر رکھنا چاہتے ہیں، آدمی کو سائنس کا غلام بننے دینا نہیں چاہتے . ہمیں افسوس ہے جیسے اور بہت سے معاملوں میں اُسی طرح اِس معاملے میں بھی ملک کے پڑھے لکھے لوگ گاندھی جی کو ٹھیک نہیں سمجھ پائے . گاندھی جی کبھی بھی ہر طرح کی ملوں اور مشینوں کے خلاف نہیں تھے . وہ ملوں اور مشینوں کی بابت ہمارے پڑھے لکھے لوگوں کے اندھ وشواس کو توڑنا چاہتے تھے . یہ سائنسی اندھ وشواس دھارمک اندھ وشواسوں سے بھی زیادہ خطرناک ہو سکتے ہیں اور ہوتے ہیں . اِس سمبندھ میں گاندھی جی کے وچاروں کا ہمیں کافی انوبھو ہے .

ہماری کتاب " بھارت میں انگریزی راج " کا دوسرا ایڈیشن 30 ہزار جلدوں کا چھپ رہا تھا . پہلا ایڈیشن چار ہزار جلدوں کا پہلے نکل چکا تھا . پہلے ایڈیشن میں جلد کھدر کی تھی لیکن کاغذ مل کا . دوسرے ایڈیشن کے لئے ہم نے سوچا کہ کاغذ بھی ہاتھ کا لگایا جاوے . ہم کاغذ کا پربندھ کرنے کے لئے وردھا پہونچے . گاندھی جی سے بات چیت ہوئی . اُنھوں نے پوچھا کیسے آئے ؟ ہم نے جواب دیا بھارت میں انگریزی راج کی تیس ہزار جلدوں

गांधीजी उन सब लोगों को जिनके पास बड़ी बड़ी पूंजियां, जमीनें या कारखाने थे इन सब चीजों का "ट्रस्टी" कहते थे. तो फिर वह उनका मालिक किसे मानते थे? जाहिर है वह मालिक मानते थे देश की जनता को. ट्रस्टी मालिक नहीं होता. असल मालिक ज्यों ही बालिग हो जावे या हालात बदल जावें उसे हक़ है कि अपनी चीज ट्रस्टी से वापिस ले ले और खुद उसका इन्तजाम करे. गांधीजी के इस असूल के मुताबिक़ जमींदार को या मिल मालिक कहलाने वाले को मुआवजा दिये जाने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता. ट्रस्टी की हैसियत से उसे ज्यादा से ज्यादा यह हक़ था कि जब तक चीज उसके ट्रस्ट में यानी उसके सिपुर्द थी तब तक उसके मुनाफ़े में से अपनी जरूरत के मुताबिक़ ले ले. साथ ही उसका यह भी फ़र्ज़ है कि जब असल मालिक चाहे और हालात इजाजत दें तो वह चीज बिना बिगाड़े या कम किये असल मालिक के सिपुर्द कर दे.

गांधीजी ने जिस समय ट्रस्टी का उसूल देश के सामने रक्खा था उस समय देश की जनता बिदेशी शासकों के खिलाफ़ आजादी की लड़ाई में लगी हुई थी. उस लड़ाई के खतम होने के बाद जनता को पूरा हक़ था और है कि अपनी चीज ट्रस्टी से वापिस लेकर जिस तरह ठीक समझे उसका इन्तजाम करे. जमींदारों से जमीनों के लेने में या बड़े बड़े उद्योगों पर क़ब्ज़ा करने में हमें जो मुआवजे की या दूसरी दिक़्क़तें पड़ रही हैं उसकी वजह सिर्फ़ यह है कि देश के नेताओं ने गांधीजी के ट्रस्टी के उसूल को नहीं समझा या नहीं माना. कम्यूनिस्ट कहलाने वाले देशों ने अपने यहां के हालात में से ही इस उसूल को ज्यादा अच्छी तरह समझा और उस पर अमल किया है. इसी लिये वह अपने अपने यहां की जनता के दुखों को ज्यादा आसानी से दूर कर सके और उनकी जरूरतों को पूरा कर सके.

## शक्ति का बटवारा

इसके अलावा हम इन बातों में पैसे की शक्ति हो, या राज की शक्ति, या माल पैदा करने की शक्ति, किसी का भी थोड़े से हाथों में जमा कर देने के हक़ में नहीं हैं. बड़े बड़े कल कारखानों का यानी इंडस्ट्रीयलाइजेशन का खब्त एक हद से बढ़कर हमें इस गड्ढे में लाकर पटक देता है. अगर दुनिया की करोड़ों और अरबों जनता को चुसने से बचाना है और उन्हें सचमुच आजाद और खुशहाल देखना है तो हमें इन सब तरह की शक्तियों को ज्यादा दूर तक फैला देना होगा.

## मशीनों और घरेलू धंदों पर गांधीजी

यह सवाल हमें बड़े बड़े कल कारखानों और घरेलू उद्योग धंदों के सवाल की तरफ़ ले आता है. देश के अधिकतर पढ़े लिखे लोगों और हमारे अधिकतर शासकों



گاندھی جی اُن سب لوگوں کو جن کے پاس بڑی بڑی پونجیاں، زمینیں یا کارخانے تھے اِن سب چیزوں کا "ٹرسٹی" کہتے تھے. تو پھر وہ اُن کا مالک کسے مانتے تھے؟ ظاھر ھے وہ مالک مانتے تھے دیش کی جنتا کو. ٹرسٹی مالک نہیں ھوتا. اصل مالک جیوں ھی بالغ ھوجاوے یا حالات بدل جاویں اُسے حق ھے کہ اپنی چیز ٹرسٹی سے واپس لے لے اور خود اُس کا انتظام کرے. گاندھی جی کے اِس اصول کے مطابق زمیندار کو یا مل مالک کہلانے والے کو معاوضہ دئے جانے کا کوئی سوال ھی پیدا نہیں ھوتا. ٹرسٹی کی حیثیت سے اُسے زیادہ سے زیادہ یہ حق تھا کہ جب تک چیز اُس کے ٹرسٹ میں یعنی اُس کے سپرد تھی تب تک اُس کے منافع میں سے اپنی ضرورت کے مطابق لے لے. ساتھ ھی اُس کا یہ بھی فرض ھے کہ جب اصل مالک چاھے اور حالات اِجازت دیں تو وہ چیز بنا بگاڑے یا کم کئے اصل مالک کے سپرد کردے.

گاندھی جی نے جس سمے ٹرسٹی کا اصول دیش کے سامنے رکھا تھا اُس سمے دیش کی جنتا ودیشی شاسکوں کے خلاف آزادی کی لڑائی میں لگی ھوئی تھی. اُس لڑائی کے ختم ھونے کے بعد جنتا کو پورا حق تھا اور ھے کہ اپنی چیز ٹرسٹی سے واپس لیکر جس طرح ٹھیک سمجھے اُس کا اِنتظام کرے. زمینداروں سے زمینوں کے لینے میں یا بڑے بڑے اُدیوگوں پر قبضہ کرنے میں ھمیں جو معاوضے کی یا دوسری دقتیں پڑ رھی ھیں اُس کی وجہ صرف یہ ھے کہ دیش کے نیتاؤں نے گاندھی جی کے ٹرسٹی کے اصول کو نہیں سمجھا یا نہیں مانا. کمیونسٹ کہلانے والے دیشوں نے اپنے یہاں کے حالات میں سے ھی اِس اصول کو زیادہ اچھی طرح سمجھا اور اُس پر عمل کیا ھے. اِسی لئے وہ اپنے اپنے یہاں کی جنتا کے دکھوں کو زیادہ آسانی سے دور کرسکے اور اُن کی ضرورتوں کو پورا کرسکے.

## شکتی کا بٹوارا

اِس کے علاوہ ھم اِن باتوں میں پیسے کی شکتی ھو، یا راج کی شکتی، یا مال پیدا کرنے کی شکتی، کسی کو بھی تھوڑے سے ھاتھوں میں جمع کردینے کے حق میں نہیں ھیں. بڑے بڑے کل کارخانوں کا یعنی اِنڈسٹریلائیزیشن کا خبط ایک حد سے بڑھ کر ھمیں اِسی گڈھے میں لاکر پٹک دیتا ھے. اگر دنیا کی کروڑوں اور اربوں جنتا کو چسنے سے بچانا ھے اور اُنھیں سچ مچ آزاد اور خوشحال دیکھنا ھے تو ھمیں اِن سب طرح کی شکتیوں کو زیادہ سے زیادہ دور تک پھیلا دینا ھوگا.

## مشینوں اور گھریلو دھندوں پر گاندھی جی

یہ سوال ھمیں بڑے بڑے کل کارخانوں اور گھریلو اُدیوگ دھندوں کے سوال کی طرف لے آتا ھے. دیش کے ادھکتر پڑھے لکھے لوگوں اور ھمارے ادھکتر شاسکوں

## नेशनेलाइज़ करना टिकाऊ इलाज नहीं है

डाक्टर लोहिया ने इस सारी स्थिति का जो इलाज बताया है जिसे वह नेशनेलाइज करना कहते हैं वह हमारी राय में इस रोग का कोई टिकाऊ इलाज नहीं हो सकता. इस तरह की बातों में हम अक्सर शब्दों के जंजाल में फंस जाते हैं और शब्द भी वह जो हमने योरप की कुछ किताबों से ले लिये हैं, चाहे वह हमारे देश की इस समय की हालत से ठीक बैठते हों या न बैठते हों.

ख़ुद अपने प्रान्त के अन्दर हमें मालूम है कि पुराने ज़मींदारों की जगह सरकार के आजाने से किसानों और खेत मजदूरों की मुसीबतें घटी नहीं हैं, बढ़ गई हैं. बक़ाया की अदायगी में किसान को खेती के बैल बेचने की जरूरत पहले कभी न होती थी. अब उसे वह भी करना पड़ जाता है. हमारे जो जो व्यापार या धंदे लोगों के हाथों से निकलकर सरकार के हाथों में आ गए हैं उन में आम तौर पर लोगों की तकलीफें और शिकायतें बढ़ी हैं. हम आज मानें या कल, इन बातों में देश की जनता के दुख तब तक दूर नहीं हो सकते जब तक हमारा शासन नीचे से ऊपर तक ऐसे लोगों के हाथों में न हो जो कम तनख्वाहें लेकर सादा जिन्दगी बसर कर सकें, आम लोगों की तरह रह सकें और हर तरह के भ्रश्टाचार से ऊपर हों. महात्मा गांधी जब हमारे वज़ीरों और हाकिमों के सामने ख़लीफ़ा उमर का आदर्श पेश करते थे तो उनका यही मतलब था. पर हमारे इन शासकों को गांधी जी की बातें अमल के क़ाबिल मालूम नहीं होती थीं और आज भी ऐसी ही लगती हैं. नतीजा आंखों के सामने है. इलाज फिर वही है जो गांधी जी कहा करते थे.

## गांधीजी का ट्रस्टी का उसूल

हमें दुख है कि गांधीजी के ट्रस्टी के असूल के सम्बन्ध में हमारे बहुत से पढ़े लिखे भाई गांधीजी को ठीक नहीं समझ पाए.

बात बहुत सीधी है. कोई "ट्रस्टी" उस चीज़ का या उस जायदाद का जिसका वह ट्रस्टी है मालिक नहीं होता. ट्रस्टी के मानी ही यह हैं कि मालिक कोई दूसरा है और उस दूसरे के नाबालिग़ होने की वजह से या किसी और वजह से मुल्क के क़ानून ने या ख़ुद उस मालिक ने उस चीज या जायदाद का इन्तज़ाम कुछ दिनों के लिये किसी दूसरे के सिपुर्द कर दिया है जिसे "ट्रस्टी" यानी सिपुर्ददार कहा जाता है. दुनिया के किसी मुल्क के क़ानून को भी हम देखें, ट्रस्टी के मानी सिवाय इसके और कुछ नहीं होते. वह चीज ट्रस्टी के पास और उसके इन्तज़ाम में तब तक ही रह सकती है जब तक असली मालिक बालिग़ न हो, या जब तक वह चाहे, या जब तक वह हालात न बदल जाएं जिनकी वजह से ट्रस्टी मुक़र्रर किया गया था.



## نیشنلائز کرنا ٹکاؤ علاج نہیں ھے

ڈاکٹر لوھیا نے اِس ساری اِستھتی کا جو علاج بتایا ھے جسے وہ نیشنلائز کرنا کہتے ھیں وہ ھماری رائے میں اس روگ کا کوئی ٹکاؤ علاج نہیں ھوسکتا. اس طرح کی باتوں میں ھم اکثر شبدوں کے جنجال میں پھنس جاتے ھیں اور شبد بھی وہ جو ھم نے یورپ کی کچھ کتابوں سے لے لئے ھیں' چاھے وہ ھمارے دیش کی اس سمے کی حالت سے ٹھیک بیٹھتے ھوں یا نہ بیٹھتے ھوں۔

خود اپنے پرانت کے اندر ھمیں معلوم ھے کہ پرانے زمینداروں کی جگہ سرکار کے آجانے سے کسانوں اور کھیت مزدوروں کی مصیبتیں گھٹی نہیں ھیں' بڑھ گئی ھیں. بقایا کی ادائیگی میں کسان کو کھیتی کے بیل بیچنے کی ضرورت پہلے کبھی نہ ھوتی تھی. اب اسے وہ بھی کرنا پڑ جاتا ھے۔ ھمارے جو جو بیوپار یا دھندے لوگوں کے ھاتھوں سے نکل کر سرکار کے ھاتھوں میں آگئے ھیں اُن میں عام طور پر لوگوں کی تکلیفیں اور شکایتیں بڑھی ھیں۔ ھم آج مانیں یا کل' اِن باتوں میں دیش کی جنتا کے دکھ تب تک دور نہیں ھوسکتے جب تک ھمارا شاسن نیچے سے اوپر تک ایسے لوگوں کے ھاتھوں میں نہ ھو جو کم تنخواھیں لیکر سادہ زندگی بسر کرسکیں' عام لوگوں کی طرح رہ سکیں اور ھر طرح کے بھرشٹاچار سے اوپر ھوں۔ مہاتما گاندھی جب ھمارے وزیروں اور حاکموں کے سامنے خلیفہ عمر کا آدرش پیش کرتے تھے تو اُن کا یہی مطلب تھا۔ پر ھمارے اِن شاسکوں کو گاندھی جی کی باتیں عمل کے قابل معلوم نہیں ھوتی تھیں اور آج بھی ایسی ھی لگتی ھیں۔ نتیجہ آنکھوں کے سامنے ھے۔ علاج پھر وھی ھے جو گاندھی جی کہا کرتے تھے۔

## گاندھی جی کا ٹرسٹی کا اصول

ھمیں دکھ ھے کہ گاندھی جی کے ٹرسٹی کے اصول کے سمبندھ میں ھمارے بہت سے پڑھے لکھے بھائی گاندھی جی کو ٹھیک نہیں سمجھ پائے۔

بات بہت سیدھی ھے۔ "کوئی ٹرسٹی" اُس چیز کا یا اُس جائیداد کا جس کا وہ "ٹرسٹی" ھے مالک نہیں ھوتا۔ ٹرسٹی کے معنی ھی یہ ھیں کہ مالک کوئی دوسرا ھے اور اُس دوسرے کے نابالغ ھونے کی وجہ سے یا کسی اور وجہ سے ملک کے قانون نے یا خود اُس مالک نے اُس چیز یا جائیداد کا انتظام کچھ دنوں کے لئے کسی دوسرے کے سپرد کردیا ھے جسے "ٹرسٹی" یعنی سپردار کہا جاتا ھے۔ دنیا کے کسی ملک کے قانون کو بھی ھم دیکھیں' ٹرسٹی کے معنی سوائے اِس کے اور کچھ نہیں ھوتے۔ وہ چیز ٹرسٹی کے پاس اور اس کے اِنتظام میں تب تک ھی رہ سکتی ھے جب تک اصلی مالک بالغ نہ ھو' یا جب تک وہ چاھے' یا جب تک وہ حالات نہ بدل جائیں جن کی وجہ سے ٹرسٹی مقرر کیا گیا تھا۔

के जागरूक से जागरूक, सच्चे और त्यागी सेवकों में से हैं. हमारी कोयले की खदानों, चीनी के कारखानों और चाय के बाग़ीचों की जो हालत उन्होंने बताई है उसपर हमें संजीदगी से विचार करना चाहिये. जो बात डाक्टर लोहिया ने राजनीतिक पार्टियों की बाबत कही है वही हमारी आजकल की सरकार के बारे में कही जा सकती है. भारत सरकार के ख़र्च का बहुत बड़ा हिस्सा मिल मालिकों की जेबों से आता है. सरकार का किसी न किसी दर्जे तक इन मिल मालिकों के असर में रहना इसका क़ुदरती और लाज़मी नतीजा है. सबूत हमें क़दम क़दम पर मिलते रहते हैं. देश के हाथ के करघों की तरफ़ सरकार का जो बुनियादी रुख़ है वह इसी असर का नतीजा है. हाल में बैंक मुलाज़िमों के एवार्ड का बदला जाना भी उसी का एक नतीजा है. डाक्टर लोहिया चाहते हैं कि हमारी राजनीतिक पार्टियां आम जनता के पैसे से चलें, पूंजीपतियों के पैसों से नहीं. हम उनसे पूरी तरह सहमत हैं. साथ ही यह भी ज़रूरी है कि हमारी सारी हकूमत आम जनता की गाढ़ी कमाई के पैसों से चले, पूंजीपतियों के मुनाफ़ों की हिस्से रसदी से नहीं. इसके यह मानी नहीं कि हम पूंजीपतियों को मन चाहे मुनाफ़े कमाने के लिये और अधिक आज़ाद कर दें और ग़रीब जनता पर बोझ और बढ़ा दें. इसके यह मानी हैं कि हम अपनी हकूमत का सारा ढांचा, अपनी सारी राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था को इस तरह बदलें कि हमारी हकूमत और सारी मुल्की ज़िन्दगी जनता के हाथों में और उसी के असर में हो.

## कोयला, चीनी और चाय के धंदे

हमारी कोयले की खदानों में मज़दूरों की जो गत होती है और चीनी के कारख़ानों में गन्ना पैदा करने वाले ग़रीब किसानों के साथ जो बुरा सलूक होता है, जिसमें मिल मालिकों के और हकूमत के दोनों के नुमाइन्दे शामिल रहते हैं, उसकी तफ़सील में हम यहां जाना नहीं चाहते.

आसाम के चाय के बाग़ीचों की हालत हमने वहां जा कर अपनी आंखों से देखी है. वहां मज़दूरों के साथ जो सलूक किया जाता है वह किसी सभ्य देश में जानवरों के साथ भी नहीं होना चाहिये. हमने वहां के मज़दूरों के कारटरों में कोढ़ के बढ़े हुए रोगियों को दूसरे मज़दूर औरतों और बच्चों के साथ एक ही कोठरी में रक्खे जाते देखा है. जब हमने वहां के बंगाली डाक्टर से इसकी शिकायत की तो उसने हमारे एतराज़ को ठीक मानते हुये भी अपनी मजबूरी ज़ाहिर की. आसाम के चाय के बाग़ीचों में जाकर मालूम ही नहीं होता कि भारत का राज अंग्रेज़ों के हाथों से निकल कर हिन्दुस्तानियों के हाथों में आ गया है.



کے جاگروک سے جاگروک، سچے اور تیاگی سیوکوں میں سے ہیں۔ ہماری کوئلے کی کھدانوں، چینی کے کارخانوں اور چائے کے باغیچوں کی جو حالت اُنہوں نے بتائی ہے اُس پر ہمیں سنجیدگی سے وچار کرنا چاہئے۔ جو بات ڈاکٹر لوہیا نے راجنیتک پارٹیوں کی بابت کہی ہے وہی ہماری آجکل کی سرکار کے بارے میں کہی جا سکتی ہے۔ بھارت سرکار کے خرچ کا بہت بڑا حصہ مل مالکوں کی جیبوں سے آتا ہے۔ سرکار کا کسی نہ کسی درجہ تک اِن مل مالکوں کے اثر میں رہنا اِس کا قدرتی اور لازمی نتیجہ ہے۔ ثبوت ہمیں قدم قدم پر ملتے رہتے ہیں۔ دیش کے ہاتھ کے کرگھوں کی طرف سرکار کا جو بنیادی رخ ہے وہ اِسی اثر کا نتیجہ ہے۔ حال میں بینک ملازموں کے ایوارڈ کا بدلا جانا بھی اُسی کا ایک نتیجہ ہے۔ ڈاکٹر لوہیا چاہتے ہیں کہ ہماری راجنیتک پارٹیاں عام جنتا کے پیسے سے چلیں، پونجی پتیوں کے پیسوں سے نہیں۔ ہم اُن سے پوری طرح سہمت ہیں۔ ساتھ ہی یہ بھی ضروری ہے کہ ہماری ساری حکومت عام جنتا کی گاڑھی کمائی کے پیسوں سے چلے، پونجی پتیوں کے منافعوں کی حصہ رسدی سے نہیں۔ اِس کے یہ معنی نہیں کہ ہم پونجی پتیوں کو من چاہے منافعے کمانے کے لئے اور ادھک آزاد کر دیں اور غریب جنتا پر بوجھ اور بڑھا دیں۔ اِس کے یہ معنی ہیں کہ ہم اپنی حکومت کا سارا ڈھانچا، اپنی ساری راجنیتک اور آرتھک ویوستھا کو اِس طرح بدلیں کہ ہماری حکومت اور ساری ملکی زندگی جنتا کے ہاتھوں میں اور اُسی کے اثر میں ہو۔

## کوئلہ، چینی اور چائے کے دھندے

ہماری کوئلے کی کھدانوں میں مزدوروں کی جو گت ہوتی ہے اور چینی کے کارخانوں میں گنا پیدا کرنے والے غریب کسانوں کے ساتھ جو برا سلوک ہوتا ہے، جس میں مل مالکوں کے اور حکومت کے دونوں کے نمائندے شامل رہتے ہیں، اُس کی تفصیل میں ہم یہاں جانا نہیں چاہتے۔

آسام کے چائے کے باغیچوں کی حالت ہم نے وہاں جاکر اپنی آنکھوں سے دیکھی ہے۔ وہاں مزدوروں کے ساتھ جو سلوک کیا جاتا ہے وہ کسی سبھیہ دیش میں جانوروں کے ساتھ بھی نہیں ہونا چاہئے۔ ہم نے وہاں کے مزدوروں کے کوارٹروں میں کوڑھ کے بڑھے ہوئے روگیوں کو دوسرے مزدور عورتوں اور بچوں کے ساتھ ایک ہی کوٹھری میں رکھے جاتے دیکھا ہے۔ جب ہم نے وہاں کے بنگالی ڈاکٹر سے اِس کی شکایت کی تو اُس نے ہمارے اعتراض کو ٹھیک مانتے ہوئے بھی اپنی مجبوری ظاہر کی۔ آسام کے چائے کے باغیچوں میں جاکر یہ معلوم ہی نہیں ہوتا کہ بھارت کا راج انگریزوں کے ہاتھوں سے نکل کر ہندستانیوں کے ہاتھوں میں آگیا ہے۔

डाक्टर राम मनोहर लोहिया ने कहा कि यही हाल कोयले की खदानों का है. हमारी कोयले की खदानों से लगभग साढ़े तीन करोड़ टन कोयला हर साल पैदा होता है, जिस पर लगभग वही पन्द्रह करोड़ रुपया सालाना खदानों के मालिकों को मुनाफ़ा होता है.

चाय के बाग़ीचों का ज़िक्र करते हुए डाक्टर लोहिया ने बताया कि हमारे देश के चाय के तीन-चौथाई बाग़ीचों के मालिक अभी तक अंग्रेज़ हैं. वही उनका इन्तज़ाम करते हैं. देश में हर साल लगभग 75 लाख मन चाय पैदा होती है. इन बाग़ीचों में कुल पूंजी लगभग तीस करोड़ रुपया लगी हुई है, और इस पूंजी पर मुनाफ़ा हर साल लगभग सौ करोड़ यानी एक अरब रुपये होता है. इस मुनाफ़े का बहुत बड़ा हिस्सा हर साल इंगलिस्तान चला जाता है. मुलाज़िमों और दूसरे लोगों के रखने में जो तरफ़दारियां और रू-रियायतें की जाती हैं वह अलग.

इस सब हालत का इलाज वह यह बताते हैं कि यह सब धंदे 'नेशनेलाइज़' कर लिये जावें. नेशनेलाइज़ करने के मानी हैं 'क़ौमियाना' यानी यह कि इन सब खदानों, कारख़ानों और बाग़ीचों पर क़ौम (राष्ट्र) का यानी देश की सरकार का क़बज़ा हो जावे और सरकार ही उन्हें चलावे.

डाक्टर लोहिया ने यह भी कहा कि नेशनेलाइज़ करने में सबसे बड़ी रुकावट मुआवज़े का सवाल है और बड़ी बड़ी रक़में मुआवज़े में देकर नेशनेलाइज़ करना बेमानी है.

डाक्टर लोहिया की राय है कि इनमें से जो जो धंदे विदेशियों के हाथों में हैं उनके हिस्से सरकार को खुले बाज़ार में ख़रीद लेने चाहियें, या "कुछ मुनासिब मुआवज़ा" देकर भी इन धंदों को विदेशियों के हाथों से ले लेना चाहिये. बाक़ी धंदों की बाबत उनकी राय है कि जिन थोड़े से बीच के तबक़े के लोगों की रोज़ी पर नेशनेलाइज़ करने से असर पड़े उनको थोड़ा बहुत मुआवज़ा दिया जावे, औरों को मुआवज़ा देने की ज़रूरत नहीं है.

डाक्टर लोहिया ने यह भी कहा कि हम समाजवाद के जिस आदर्श की तरफ़ बढ़ना चाहते हैं उस तक गांधी जी के ट्रस्टीपन के उसूल या विनोबा जी के सम्पत्तिदान के उसूल से हम कभी नहीं पहुंच सकते. डाक्टर लोहिया का कहना है कि गांधी जी भी ट्रस्टीपन के तजुर्बे में नाकाम रहे. डाक्टर लोहिया की राय में ट्रस्टीपन और सम्पत्तिदान से वह अधूरे नतीजे पैदा होते हैं जिनसे सोशलिस्ट तहरीक को फ़ायदे की जगह नुक़सान होता है.

## देश की राजनीति पर पूंजीपतियों का क़ब्ज़ा

डाक्टर राम मनोहर लोहिया की किसी राय से हम सहमत हों या न हों इसमें संदेह नहीं कि डाक्टर लोहिया देश



ڈاکٹر رام منوہر لوھیا نے کہا کہ یہی حال کوئلے کی کھدانوں کا ھے ۔ ھماری کوئلے کی کھدانوں سے لگ بھگ ساڑھے تین کروڑ ٹن کوئلہ ھر سال پیدا ھوتا ھے' جس پر لگ بھگ وھی پندرہ کروڑ روپیہ سالانہ کھدانوں کے مالکوں کو منافع ھوتا ھے ۔

چائے کے باغیچوں کا ذکر کرتے ھوئے ڈاکٹر لوھیا نے بتایا کہ ھمارے دیش کے چائے کے تین چوتھائی باغیچوں کے مالک ابھی تک انگریز ھیں ۔ وھی اُن کا انتظام کرتے ھیں ۔ دیش میں ھر سال لگ بھگ 75 لاکھ من چائے پیدا ھوتی ھے ۔ ان باغیچوں میں کل پونجی لگ بھگ تیس کروڑ روپیہ لگی ھوئی ھے' اور اِس پونجی پر منافع ھر سال لگ بھگ سو کروڑ یعنی ایک ارب روپئے ھوتا ھے ۔ اِس منافع کا بہت بڑا حصہ ھر سال انگلستان چلا جاتا ھے ۔ ملازموں اور دوسرے لوگوں کے رکھنے میں جو طرفداریاں اور رو رعایتیں کی جاتی ھیں وہ الگ ۔

اِس سب حالت کا علاج وہ یہ بتاتے ھیں کہ یہ سب دھندے ' نیشنلائز ' کر لئے جاویں ۔ نیشنلائز کرنے کے معنی ھیں 'قومیانا' یعنی یہ کہ اِن سب کھدانوں' کارخانوں اور باغیچوں پر قوم ( راشٹر ) کا یعنی دیش کی سرکار کا قبضہ ھو جاوے اور سرکار ھی اُنھیں چلاوے ۔

ڈاکٹر لوھیا نے یہ بھی کہا ھے کہ نیشنلائز کرنے میں سب سے بڑی رکاوٹ معاوضے کا سوال ھے اور بڑی بڑی رقمیں معاوضے میں دے کر نیشنلائز کرنا بےمعنی ھے ۔

ڈاکٹر لوھیا کی رائے ھے کہ اِن میں سے جو جو دھندے ودیشیوں کے ھاتھوں میں ھیں اُن کے حصے سرکار کو کھلے بازار میں خرید لینے چاھئیں' یا " کچھ مناسب معاوضہ " دے کر بھی اِن دھندوں کو ودیشیوں کے ھاتھوں سے لے لینا چاھئے ۔ باقی دھندوں کی بابت اُن کی رائے ھے کہ جن تھوڑے سے بیچ کے طبقے کے لوگوں کی روزی پر نیشنلائز کرنے سے اثر پڑے اُن کو تھوڑا بہت معاوضہ دیا جاوے' اوروں کو معاوضہ دینے کی ضرورت نہیں ھے ۔

ڈاکٹر لوھیا نے یہ بھی کہا کہ ھم سماج واد کے جس آدرش کی طرف بڑھنا چاھتے ھیں اُس تک گاندھی جی کے ٹرسٹی پن کے اصول یا ونوبا جی کے سمپتی دان کے اصول سے ھم کبھی نہیں پہونچ سکتے ۔ ڈاکٹر لوھیا کا کہنا ھے کہ گاندھی جی بھی ٹرسٹی پن کے تجربے میں ناکام رھے ۔ ڈاکٹر لوھیا کی رائے میں ٹرسٹی پن اور سمپتی دان سے وہ ادھورے نتیجے پیدا ھوتے ھیں جن سے سوشلسٹ تحریک کو فائدے کی جگہ نقصان ھوتا ھے ۔

## دیش کی راجنیتی پر پونجی پتیوں کا قبضہ

ڈاکٹر رام منوہر لوھیا کی کسی رائے سے ھم سہمت ھوں یا نہ ھوں اِس میں سندیہہ نہیں کہ ڈاکٹر لوھیا دیش

# हमारी राय / ہماری رائے

## डाक्टर राम मनोहर लोहिया का भाशन

सोशलिस्ट पार्टी के मशहूर नेता डाक्टर राम मनोहर लोहिया ने 10 दिसम्बर सन 1954 को हैदराबाद (दकन) में एक भाशन दिया जिसकी कुछ बातें अखबारों में छपी हैं और बहुत काम की हैं. उन्होंने कहा कि हमारे देश की राजनीतिक पार्टियां पूंजीपतियों के पैसे से चलती हैं. उन्होंने लोगों से एक ऐसी राजनीतिक पार्टी बनाने की अपील की जो आम जनता के पैसे से चल सके. सोशलिस्ट पार्टी की बाबत उन्होंने कहा कि बाक़ी दुनिया भर की सोशलिस्ट पार्टियां अपने मेम्बरों के चन्दे से या आम जनता के पैसों से काम करती हैं, लेकिन भारत में सोशलिस्ट पार्टी के खर्च के लिये पैसा "नीचे के लोगों से जमा नहीं किया जाता बल्कि ऊपर से नीचे वालों में बांटा जाता है." उन्होंने यह भी कहा कि भारत में कोयले की खदानों, चीनी के कारखानों और चाय के बाग़ीचों के मालिक हर साल इतने बड़े बड़े मुनाफ़े कमा रहे हैं कि वह बड़ी आसानी से राजनीतिक पारटियों और ट्रेड यूनियनों को चन्द लाख रुपये सालाना दे सकते हैं ताकि उनके बाक़ी मुनाफ़ों पर आंच न आने पाए. डाक्टर लोहिया ने बताया कि चीनी के मिल मालिकों का मुनाफ़ा मोटे तौर पर पन्द्रह करोड़ रुपया सालाना है. दो साल हुए भारत सरकार ने यह तय किया था कि गन्ने और चीनी दोनों के दाम घटा दिये जावें. गन्ने के दाम घटा दिये गए पर चीनी के दाम न घटाए गए. नतीजा यह हुआ कि मिल मालिकों का मुनाफ़ा और बढ़ गया, गन्ना पैदा करने वाले किसानों को पहले से भी कम पैसे मिले और चीनी खाने वाली जनता को हर सेर चीनी पीछे एक आना दाम अधिक देना पड़ा. इस पर किसानों में आन्दोलन हुआ. सरकार ने एक कमेटी बैठाई. फ़ैसला हुआ कि मिल मालिकों के मुनाफ़े में से एक हिस्सा गन्ना पैदा करने वाले किसानों को दिया जाय. पर इसके बाद भी मिल मालिकों के सन 1952-53 के मुनाफ़े में से किसानों को कुछ नहीं मिला. सन 1953-54 के मुनाफ़े का हिसाब लगना अभी बाक़ी है.

## ڈاکٹر رام منوہر لوھیا کا بھاشن

سوشلسٹ پارٹی کے مشہور نیتا ڈاکٹر رام منوہر لوھیا نے 10 دسمبر سن 1954 کو حیدرآباد (دکن) میں ایک بھاشن دیا جس کی کچھ باتیں اخباروں میں چھپی ھیں اور بہت کام کی ھیں. اُنھوں نے کہا کہ ھمارے دیش کی راجنیتک پارٹیاں پونجی پتیوں کے پیسے سے چلتی ھیں. اُنھوں نے لوگوں سے ایک ایسی راجنیتک پارٹی بنانے کی اپیل کی جو عام جنتا کے پیسے سے چل سکے. سوشلسٹ پارٹی کی بابت اُنھوں نے کہا کہ باقی دنیا بھر کی سوشلسٹ پارٹیاں اپنے ممبروں کے چندے سے یا عام جنتا کے پیسوں سے کام کرتی ھیں، لیکن بھارت میں سوشلسٹ پارٹی کے خرچ کے لئے پیسہ "نیچے کے لوگوں سے جمع نہیں کیا جاتا بلکہ اوپر سے نیچے والوں میں بانٹا جاتا ھے." اُنھوں نے یہ بھی کہا کہ بھارت میں کوئلے کی کھدانوں، چینی کے کارخانوں اور چائے کے باغیچوں کے مالک ھر سال اِتنے بڑے بڑے منافعے کما رھے ھیں کہ وہ بڑی آسانی سے راجنیتک پارٹیوں اور ٹریڈ یونینوں کو چند لاکھ روپئے سالانہ دے سکتے ھیں تاکہ اُن کے باقی منافعوں پر آنچ نہ آنے پائے. ڈاکٹر لوھیا نے بتایا کہ چینی کے مل مالکوں کا منافع موٹے طور پر پندرہ کروڑ روپیہ سالانہ ھے. دو سال ھوئے بھارت سرکار نے یہ طے کیا تھا کہ گنے اور چینی دونوں کے دام گھٹا دیئے جاویں. گنے کے دام گھٹا دیئے گئے پر چینی کے دام نہ گھٹائے گئے. نتیجہ یہ ھوا کہ مل مالکوں کا منافع اور بڑھ گیا، گنا پیدا کرنے والے کسانوں کو پہلے سے بھی کم پیسے ملے اور چینی کھانے والی جنتا کو ھر سیر چینی پیچھے ایک آنہ دام ادھک دینا پڑا. اِس پر کسانوں میں آندولن ھوا. سرکار نے ایک کمیٹی بیٹھائی. فیصلہ ھوا کہ مل مالکوں کے منافع میں سے ایک حصہ گنا پیدا کرنے والے کسانوں کو دیا جائے. پر اِس کے بعد بھی مل مالکوں کے سن 1952-53 کے منافع میں سے کسانوں کو کچھ نہیں ملا. سن 1953-54 کے منافعے کا حساب لگنا ابھی باقی ھے.

उन्होंने कहा कि हमारे पास पहाड़ी इलाक़े में भी दस बीघा जमीन है. उसका भी छठा हिस्सा भर लीजिये. हम दोनों पर अंगूठा एक साथ लगाएंगे, कार्यकर्ता ने दूसरा दानपत्र भरा. दोनों पर व्योवृद्ध ने अंगूठे लगाये. फिर ख़ुशी ख़ुशी अपने घर चले गये. कार्यकर्ता ने रात को वह दानपत्र हमें लाकर दिखाये.

× × ×

[ दो रोज़ बाद—यही आदिबासियों का केन्द्र—पड़ाव बोरिया ]

प्रार्थना प्रवचन के बाद बस्ती के कुछ मुसलमान भाइयों ने बाबा से कुछ विशेश सुनना चाहा. बाबा ने बड़ी ख़ुशी ख़ुशी उनकी बात मंज़ूर की. नज़दीक में ही एक भाई का घर था. उनके सहन में बाबा को ले जाया गया. वहां वह दस मिनट बोले. वहां से लौटकर पड़ाव पर आ रहे थे. रास्ते में संथाली भाई खड़े थे. उनमें से एक ने दोनों हाथ उठाकर कहा—

बाबा, जमीन लो, जमीन लो. हम जमीन देंगे.

बाबा दो क़दम आगे बढ़े कि दूसरे संथाली ने कहा—

जमीन लो, जमीन लो, बाबा जमीन लो.

बाबा ने कहा लाओ लाओ. सब मिल कर जमीन बांट लो. बटोरना बन्द करो, बांटना शुरू करो. साथ में चलनेवाले एक भाई से कहा कि इनके दानपत्र भरवा लिये जायें.

× × ×

जमीन दो, जमीन दो इससे शुरूआत हुई. जमीन लो, जमीन लो अब यह सूरत आ गई. इससे ज्यादा और क्या हो सकता है ? अब सिर्फ़ हमारा और आपका, कार्यकर्ताओं का काम रह जाता है. कार्यकर्ता नहीं, हम यज्ञकर्ता कहेंगे. यज्ञकर्ता एक बार उठ खड़े हों तो देखते देखते यह यज्ञ सफल हो जाय. सारे देश में से जमीन की मिलकियत मिट जायगी. हर कहीं खेत गांव का और खेती किसान की हो. जब खेत गांव का और खेती किसान की हो गई, इस तरह प्रेम से हो गई, तब फिर कौन ऐसा सवाल है जो हम प्रेम की ताक़त से, अपनी स्वतंत्र लोकशक्ति से, अपने देश में हल नहीं कर लेंगे ? तभी सच्चा स्वराज्य होगा, ग्रामराज्य होगा, राम राज्य होगा.



انھوں نے کہا ھمارے پاس پہاڑی علاقے میں بھی دس بیگھا زمین ھے . اُس کا بھی چھٹا حصہ بھر لیجئے . ھم دونوں پر انگوٹھا ایک ساتھ لگائیں گے . کاریہ‌کرتا نے دوسرا دان‌پتر بھرا . دونوں پر ویوبردھ نے انگوٹھے لگائے . پھر خوشی خوشی اپنے گھر چلے گئے . کاریہ‌کرتا نے رات کو وہ دان‌پتر ھمیں لاکر دکھائے .

× × ×

[ دو روز بعد—یہی آدی واسیوں کا کیندر—پڑاؤ بوریا ]

پرارتھنا پرروچن کے بعد بستی کے کچھ مسلمان بھائیوں نے بابا سے کچھ وشیش سننا چاھا. بابا نے بڑی خوشی‌خوشی اُن کی بات منظور کی. نزدیک میں ھی ایک بھائی کا گھر تھا. اُن کے صحن میں بابا کو لے جایا گیا . وھاں وہ دس منٹ بولے . وھاں سے لوٹ‌کر پڑاؤ پر آرھے تھے . راستے میں سنتھالی بھائی کھڑے تھے . اُن میں سے ایک نے ھاتھ اُٹھاکر کہا—

بابا، زمین لو، ھم زمین دینگے .

بابا دو قدم آگے بڑھے کہ دوسرے سنتھالی نے کہا—

زمین لو، زمین لو، بابا زمین لو .

بابا نے کہا لاؤ لاؤ . سب ملکر زمین بانٹ لو . بٹورنا بند کرو، بانٹنا شروع کرو . ساتھ میں چلنے والے ایک بھائی سے کہا کہ اِن کے دان‌پتر بھروا لئے جائیں .

× × ×

زمین دو، زمین دو اِس سے شروعات ھوئی . زمین لو، زمین لو اب یہ صورت آگئی . اِس سے زیادہ اور کیا ھوسکتا ھے؟ اب صرف ھمارا اور آپ کا، کاریہ‌کرتاؤں کا کام رہ جاتا ھے. کاریہ‌کرتا نہیں، ھم یگیہ کرتا کہیں گے. یگیہ‌کرتا ایک بار اُٹھ کھڑے ھوں تو دیکھتے دیکھتے یہ یگیہ سپھل ھوجائے . سارے دیش میں زمین کی ملکیت مٹ جائیگی. ھر کہیں کھیت گاؤں کا اور کھیتی کسان کی ھو. جب کھیت گاؤں کا اور کھیتی کسان کی ھوگئی، اِس طرح پریم سے ھوگئی، تب پھر کون ایسا سوال ھے جو ھم پریم کی طاقت سے، اپنی سوتنتر لوک شکتی سے، اپنے دیش میں حل نہیں کرلینگے؟ تب ھی سچا سوراجیہ ھوگا، گرام راجیہ ھوگا، رام راجیہ ھوگا .

## बिहार के दिल की गहराई में

सीता के साथ भूमिदान और राधा के साथ सम्पत्ति दान जोड़ना बहुत ही जंचने वाली बात है. कार्यकर्ताओं ने भी इस भजन को पकड़ लिया और अब यह जगह जगह सुनाई देता है. हमें नहीं मालूम कि देश के किसी और हिस्से में राम का नाम और भूमिदान का काम इस तरह भजन के रूप में बोले जाते हों. बिहार के पूर्निया जिले में जनता जनार्दन की तरफ़ से ही इस भजन का गाया जाना साफ़ साफ़ बताता है कि भूदान का मंत्र किस गहराई तक बिहार की धरती में जा पहुंचा है.

❀ ❀ ❀

[संथाल परगना जिला—आदिवासियों का इलाक़ा—पड़ाव लोहनडीया—तारीख़ 27 नवम्बर]

दोपहर के दो बजे के क़रीब कुछ कार्यकर्ता बाबा से मिले. उन्होंने बताया कि यहां आदिवासी भाई ज्यादातर रहते हैं. उनसे जमीन बहुत कम मिल रही है. उनको यह डर है कि हमारी जमीन लेकर पहाड़ियों में या दूसरे लोगों में बांट दी जायगी. बाबा ने कहा कि इसका मतलब है कि आप उन तक हमारा सन्देश ठीक से नहीं पहुंचा सके. हम नहीं समझते कि आदिवासी भाई इस चीज के ख़िलाफ़ क्यों जायेंगे. विचारों को ठीक ठीक समझाने की जरूरत है.

प्रार्थना हुई. उसके बाद बाबा ने बताया कि हम एक बीघा, दो बीघा, जमीन नहीं चाहते. बल्कि जमीन की मिलकियत ही मिटाना चाहते हैं. गांव में जितनी जमीन है वह गांव की समझी जाय. जैसे घर के अन्दर की हर चीज किसी एक व्यक्ति की न होकर सारे घर की मानी जाती है और सब घरवाले उसका इस्तेमाल करते हैं, इसी तरह से जमीन किसी एक व्यक्ति की न होकर सारे गांव की मानी जाय और गांव के लोग मिलकर, जैसो जिसकी जरूरत हो, उसी लिहाज़ से बांट दें. अब जमीन उसे ही मिलेगी जो खेती करेगा. हम यह भी चाहते हैं कि गांव के झगड़े गांव के बाहर नहीं जायें. जैसे घर के झगड़े गांव के बाहर नहीं जाते. अपने गांव के मामले में किसी बाहर वाले का दख़ल नहीं होना चाहिये.

इस तरह क़रीब आधे घंटे तक बाबा का प्रवचन हुआ. जब वह सभा ख़त्म हो गई तो बाबा पड़ाव के स्थान पर लौट आये. इस बीच मंच के पास एक वयोवृद्ध संथाल पहुंचा. वहां एक कार्यकर्ता कुछ साहित्य बेच रहे थे. उनसे उन वृद्ध ने पूछा कि क्या तुम्हारे पास दानपत्र है? हम दान लिखाना चाहते हैं. वह कार्यकर्ता दानपत्र भरने लगा. बूढ़े सज्जन ने बताया कि हमारे पास इस इलाक़े में 12 बीघा जमीन है, उसमें से दो बीघा लिख लीजिये. जब यह दानपत्र भर गया और वह अपना अंगूठा लगाने लगे तो ज़रा ठहरे.

## بہار کے دل کی گہرائی میں

سیتا کے ساتھ بھومی دان اور رادھا کے ساتھ سمپتی دان جوڑنا بہت ھی جنچنے والی بات ھے . کاریہ کرتاؤں نے بھی اِس بھجن کو پکڑ لیا اور اب یہ جگہ جگہ سنائی دیتا ھے . ھمیں نہیں معلوم کہ دیش کے کسی اور حصے میں رام کا نام اور بھومی دان کا کام اِس طرح بھجن کے روپ میں بولے جاتے ھوں . بہار کے پورنیہ ضلع میں جنتا جناردن کی طرف سے ھی اِس بھجن کا گایا جانا صاف صاف بتاتا ھے کہ بھودان کا منتر کس گہرائی تک بہار کی دھرتی میں جا پہونچا ھے .

❀ ❀ ❀

[ سنتھال پرگنہ ضلع—ادی واسیوں کا علاقہ—پڑاؤ لوھن ڈیا—تاریخ 27 نومبر ]

دوپہر کے دو بجے کے قریب کچھ کاریہ کرتا بابا سے ملے . اُنہوں نے بتایا کہ یہاں آدی واسی بھائی زیادہ تر رھتے ھیں . اُن سے زمین بہت کم مل رھی ھے . اُن کو یہ ڈر ھے کہ ھماری زمین لے کر پہاڑیوں میں یا دوسرے لوگوں میں بانٹ دی جائے گی . بابا نے کہا کہ اِس کا مطلب ھے کہ آپ ان تک ھمارا سندیش ٹھیک سے نہیں پہونچا سکے . ھم نہیں سمجھتے کہ ادی واسی بھائی اس چیز کے خلاف کیوں جائیں گے . وچاروں کو ٹھیک ٹھیک سمجھانے کی ضرورت ھے .

پرارتھنا ھوئی . اُس کے بعد بابا نے بتایا کہ ھم ایک بیگھا، دو بیگھا زمین نہیں چاھتے . بلکہ زمین کی ملکیت ھی مٹانا چاھتے ھیں . گاؤں میں جتنی زمین ھے وہ گاؤں کی سمجھی جائے . جیسے گھر کے اندر کی ھر چیز کسی ایک ویکتی کی نہ ھوکر سارے گھر کی مانی جاتی ھے اور سب گھر والے اُس کا اِستعمال کرتے ھیں، اِسی طرح سے زمین کسی ایک ویکتی کی نہ ھوکر سارے گاؤں کی مانی جائے اور گاؤں کے لوگ ملکر، جیسی جس کی ضرورت ھو اُسی لحاظ سے بانٹ دیں . اب زمین اُسے ھی ملےگی جو کھیتی کریگا . ھم یہ بھی چاھتے ھیں کہ گاؤں کے جھگڑے گاؤں کے باھر نہیں جائیں . جیسے گھر کے جھگڑے گاؤں کے باھر نہیں جاتے . اپنے گاؤں کے معاملے میں کسی باھر والے کا دخل نہیں ھونا چاھئے .

اِس طرح قریب آدھے گھنٹے تک بابا کا پروچن ھوا . جب وہ سبھا ختم ھوگئی تو بابا پڑاؤ کے استھان پر لوٹ آئے . اِس بیچ منچ کے پاس ایک ویووردھ سنتھال پہنچا . وھاں ایک کاریہ کرتا کچھ ساھتیہ بیچ رھے تھے . اُن سے اُن بردھ نے پوچھا کہ کیا تمہارے پاس دان پتر ھے ؟ ھم دان لکھانا چاھتے ھیں . وہ کاریہ کرتا دان پتر بھرنے لگا . بوڑھے سجن نے بتایا کہ ھمارے پاس اِسی علاقہ میں 12 بیگھا زمین ھے . اُس میں سے دو بیگھا لکھ لیجئے . جب یہ دان پتر بھر گیا اور وہ اپنا انگوٹھا لگانے لگے تو ذرا ٹھہرے .

[पूर्निया जिला—किशनगंज का पड़ाव, तारीख 6 नवम्बर]

एक रईस और शरीफ़ घराने के मुसलमान भाई बाबा से मिलने आये. बाबा ने अपनी मांग उनके सामने रखी.

उन्होंने ग़ैर मज़रूआ ख़ास कुल की कुल देना मंजूर किया—लगभग पांच हजार एकड़. बाबा ने कहा कि जोत की जमीन का हमें छठा हिस्सा चाहिये.

वह भाई कहने लगे कि हमारे यहां मुसलमानों में बहनों का भी हक़ होता है. हम पांच भाई और दो बहनें हैं.

तो हम आठवें हो जाते हैं और आप हमें आठवां हिस्सा दीजिए. हमारा हक़ आप को मंजूर है न ?

जी हां, यह कहकर उन्होंने जोत की जमीन का आठवां हिस्से का दानपत्र भर दिया. इसके बाद कहने लगे कि आपने जो काम उठाया है हमारे इस्लाम में तो यह फ़र्ज़ माना गया है. आपकी मांग हक़ की मांग है और इनशा अल्लाह, मुल्क से आपने जो मांग की है वह जरूर पूरी होगी.

× × ×

[ तारीख़ 9 नवम्बर—सुबह का समय. ]

बाबा पूर्निया जिले में ही यात्रा कर रहे थे. नवाबगंज पौखरिया गांव से कल्यान गांव के पड़ाव पर जा रहे थे' रास्ते में जगह जगह गांव वालों ने स्वागत किया. एक जगह हारमोनियम और ढोलक पर कुछ भाई एक अनोखा भजन गा रहे थे —

सीता सीता राम बोलो,  
सब कोई भूमिदान दे दो,  
सीता सीता राम बोलो,  
राधे राधे श्याम बोलो,  
सब कोई भूमिदान दे दो,  
सब कोई सम्पत्ति दान दे दो,  
सीता सीता राम बोलो.

बाबा यह भजन सुनकर बहुत ही ख़ुश हुए. पड़ाव पर पहुंच कर कहने लगे कि शास्त्र में कहा गया है कि हम जो मनुष्य देह लेकर आये हैं उनको दो ही काम करने हैं—एक तो भगवान का नाम लिया जाये, दूसरा समाज के लिये दान दिया जाये. यह भजन सतत जारी रहना चाहिये. यह भजन हमेशा ही चलना चाहिये. सतत देते ही रहना चाहिये. जैसे खाना रोज खाते हैं, वैसे देना भी रोज चाहिये.

उसके बाद से यह भजन जगह जगह सुनाई पड़ने लगा और एक जगह इसने यह रूप लिया —

सीता सीता राम बोलो,  
सब कोई भूमिदान दे दो,  
राधे राधे श्याम बोलो,  
सब कोई सम्पत्ति दान दे दो.



[ پورنیه ضلع—کشن گنج کا پڑاؤ—تاریخ 6 نومبر ]

ایک رئیس اور شریف گھرانے کے مسلمان بھائی بابا سے ملنے آئے. بابا نے اپنی مانگ اُن کے سامنے رکھی.

اُنھوں نے غیرمزروعہ خاص کل کی کل دینا منظور کیا—لگ بھگ پانچ ہزار ایکڑ. بابا نے کہا کہ جوت کی زمین کا ہمیں چھٹا حصہ چاهئے.

وہ بھائی بولے کہ ہمارے یہاں مسلمانوں میں بہنوں کا بھی حق ھے. ہم پانچ بھائی اور دو بہنیں ہیں.

تم ہم آٹھویں ہو جاتے ہیں اور آپ ہمیں آٹھواں حصہ دیجئے. ہمارا حق آپ کو منظور ھے نا ؟

جی ہاں' یہ کہ کر اُنھوں نے جوت کی زمین کا آٹھواں حصے کا دان پتر بھر دیا. اِس کے بعد کہنے لگے کہ آپ نے جو کام اُٹھایا ھے ہمارے اِسلام میں تو یہ فرض مانا گیا ھے. آپ کی مانگ حق کی مانگ ھے اور انشا اللہ' ملک سے آپ نے جو مانگ کی ھے وہ ضرور پوری ہوگی.

× × ×

[ تاریخ 9 نومبر صبح کا سمے ]

بابا پورنیہ ضلع ہی میں یاترا کر رہے تھے. نواب گنج پوکھریا گاؤں سے کلیان گاؤں کے پڑاؤ پر جا رہے تھے. راستے میں جگہ جگہ گاؤں والوں نے سواگت کیا. ایک جگہ ہارمونیم اور ڈھولک پر کچھ بھائی ایک انوکھا بھجن گا رہے تھے—

سیتا سیتا رام بولو'  
سب کوئی بھومی دان دے دو'  
سیتا سیتا رام بولو.  
رادھے رادھے شیام بولو'  
سب کوئی بھومی دان دے دو'  
سب کوئی سمپتی دان دے دو'  
سیتا سیتا رام بولو.

بابا یہ بھجن سن کر بہت ہی خوش ہوئے. پڑاؤ پر پہونچ کر کہنے لگے کہ شاستر میں کہا گیا ھے کہ ہم جو منش دیہ لے کر آئے ہیں اُن کو دو ہی کام کرنے ہیں—ایک تو بھگوان کا نام لیا جائے' دوسرا سماج کے لئے دان دیا جائے. یہ بھجن ستت جاری رہنا چاهئے' یہ بھجن ہمیشہ ہی چلنا چاهئے' ستت دیتے ہی رہنا چاهئے. جیسے کھانا روز کھاتے ہیں' ویسے دینا بھی روز چاهئے.

اُس کے بعد سے یہ بھجن جگہ جگہ سنائی پڑنے لگا اور ایک جگہ اِس نے یہ روپ لیا—

سیتا سیتا رام بولو'  
سب کوئی بھومی دان دے دو.  
رادھے رادھے شیام بولو'  
سب کوئی سمپتی دان دے دو.

एक भाई बोले कि बिहार यूनिवर्सिटी वाला गणित ता बताया ही नहीं ?

कांग्रेसी महोदय कहने लगे कि बाबा के मुख से अब क्या क्या सुनना चाहते हो ? जो देना हो दो.

वकील साहब ने कहा कि हमारे लड़कों और हमारे हिस्से की जो जमीन है उसमें से कुल का छठा हिस्सा आपको देंगे. यह हम तीनों भाई, जो एक ही खान्दान के हैं, अलग अलग देंगे.

बाबा ने मुस्कराते हुए कहा कि हमें तो कुल परिवार का कम से कम छठा हिस्सा चाहिए. लेकिन आपने यह बिहार यूनिवर्सिटी का गणित लगा ही लिया. बाक़ी परिवार का छटा हिस्सा हमें कब मिलेगा ?

कांग्रेसी भाई ने जवाब दिया कि वह तो बाबूजी और चाचा जी सलाह करेंगे, सब घर के लोग बैठेंगे और तब जैसी राय होगी वैसा किया जायेगा. इस वक़्त तो हमने अपने अपने हिस्से का छटा हिस्सा दिया है.

अच्छी बात है, बाबा ने कहा. हम उम्मीद करेंगे कि जब आपने छटा दिया है तो अपने बड़े बूढ़ों से बात करके कुल परिवार का छठा हिस्सा तो जरूर दिलायेंगे. लेकिन यह इस वक़्त जो आप जमीन दे रहे हैं वह सब जोतवाली है न ?

समाजवादी नौजवान ने कहा कि अब तो हमने आपको अपना भाई मान कर आपका हक़ दिया है. जब हक़ मिलता है तब तो अच्छी बुरी सब तरह की चीजें लेनी होंगी.

बाबा मुस्कराए और कहने लगे कि चलिये, आपने हमें घर में जगह तो दी. आपने हमारा हक़ तो मंजूर किया. लेकिन हम इन्साफ़ चाहते हैं. आप यह तो देखिये कि जिस ग़रीब भाई को जमीन देते हैं उसको भी आपकी ही तरह अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये. तो जमीन के अलावा घर की दूसरी चीजों में से भी उसे हिस्सा मिलना चाहिये. हम आपके सबसे कमजोर और सबसे छोटे भाई हैं. छोटे भाई का दावा तो और भी ज्यादा होता है.

यह सुनकर कांग्रेसी भाई कुछ हैरान से नजर आए. कहने लगे कि बाबा आप तो धीरे धीरे आगे ही बढ़ते हैं.

आप ही बताइये कि हम क्या कोई अन्याय की बात कह रहे हैं ? आपको क्या यह बरदाश्त होगा कि आप अच्छी तरह खाते पीते हों और आपका भाई गई गुज़री हालत में रहे ? हम कम से कम यह तो जरूर उम्मीद करेंगे कि आप जो हमें परती जमीन देते हैं वह एक बार तुड़वा कर देंगे.

बाबा की यह मांग उन भाइयों ने मंजूर की.

इस तरह क़रीब सवा घंटे तक यह सत्संग रहा और हक़ के तौर पर बाबा को छठा हिस्सा जमीन दी गई.

× × ×



ایک بھائی بولے کہ یونیورسٹی والا گنت تو بتایا ہی نہیں ؟

کانگریسی مہودے کہنے لگے کہ بابا کے مکھ سے اب کیا کیا سننا چاہتے ہو ؟ جو دینا ہو دو .

وکیل صاحب نے کہا کہ ہمارے لڑکوں اور ہمارے حصے کی جو زمین ہے اس میں سے کل کا چھٹا حصہ آپ کو دینگے . یہ ہم تینوں بھائی، جو ایک ہی خاندان کے ہیں، الگ الگ دینگے .

بابا نے مسکراتے ہوئے کہا کہ ہمیں تو کل پریوار کا کم سے کم چھٹا حصہ چاہئے . لیکن آپ نے یہ بہار یونیورسٹی کا گنت لگا ہی لیا . باقی پریوار کا چھٹا حصہ ہمیں کب ملے گا ؟

کانگریسی بھائی نے جواب دیا وہ تو بابوجی اور چاچا جی صلاح کرینگے، سب گھر کے لوگ بیٹھیں گے اور تب جیسی رائے ہوگی ویسا کیا جائیگا . اِس وقت تو ہم نے اپنے اپنے حصے کا چھٹا حصہ دیا ہے .

اچھی بات ہے، بابا نے کہا . ہم اُمید کریں گے کہ جب آپ نے چھٹا دیا ہے تو اپنے بڑے بزرگوں سے بات کرکے کل پریوار کا چھٹا حصہ تو ضرور دلاینگے . لیکن یہ اِس وقت جو آپ زمین دے رہے ہیں وہ سب جوت والی ہے نا ؟

سماج وادی نوجوان نے کہا کہ اب تو ہم نے آپ کو اپنا بھائی مان کر آپ کا حق دیا ہے . جب حق ملتا ہے تب تو اچھی بری سب چیزیں لینی ہونگی .

بابا مسکرائے اور کہنے لگے کہ چلئے، آپ نے ہمیں گھر میں جگہ تو دی . آپ نے ہمارا حق تو منظور کیا . لیکن ہم اِنصاف چاہتے ہیں . آپ یہ تو دیکھئے کہ جس غریب بھائی کو زمین دیتے ہیں اس کو بھی آپ کی ہی طرح اپنے پیروں پر کھڑا ہونا چاہئے . تو زمین کے علاوہ گھر کی دوسری چیزوں میں بھی اُسے حصہ ملنا چاہئے . ہم آپ کے سب سے کمزور اور سب سے چھوٹے بھائی ہیں . چھوٹے بھائی کا دعویٰ تو اور بھی زیادہ ہوتا ہے .

یہ سن کر کانگریسی بھائی کچھ حیران سے نظر آئے . کہنے لگے کہ بابا آپ تو دھیرے دھیرے آگے ہی بڑھتے جاتے ہیں .

آپ ہی بتائیے کہ ہم کیا کوئی انیائے کی بات کہ رہے ہیں ؟ آپ کو کیا یہ برداشت ہوگا کہ آپ اچھی طرح کھاتے پیتے ہوں اور آپ کا بھائی گئی گذری حالت میں رہے ؟ ہم کم سے کم یہ تو ضرور اُمید کریں گے کہ آپ جو ہمیں پرتی زمین دیتے ہیں وہ ایک بار تڑوا کر دیں گے .

بابا کی یہ مانگ اُن بھائیوں نے منظور کی .

اِس طرح قریب سوا گھنٹے تک یہ ست سنگ رہا اور حق کے طور پر بابا کو چھٹا حصہ زمین دیگئی .

× × ×

वह सबकी सब आप हमें क्यों नहीं ले देते ? आपके पास बेकार पड़ी है, हमारे काम आजायेगी. हम तो यही कहते हैं कि ग़ैरमज़रुआ ख़ास, अपनी कुल की कुल दे दीजिये और जोत के ज़मीन में से घर के भाई के नाते हमारा हक़ दे दीजिये.

कांग्रेसी भाई बोले कि आप उस परती ज़मीन को लेकर क्या कीजियेगा ? कहीं दरिया है, कहीं रेत है, कहीं कुछ.

आप हमें वह सब दे तो दीजिये. जैसा होगा हम संभाल लेंगे.

वह तो नये क़ानून के मुताबिक अपने हाथ से चली जाने वाली है.

जब चली जाने वाली है, तब भी आप नहीं देते !

धीमी आवाज़ से वकील साहब बोले कि उसका मुआवज़ा......

बाबा ने कहा—यह आपने अब अपना दिल खोला. उसके मुआवज़े में रुपया मिलेगा. इसी वजह से उस परती ज़मीन को भी पकड़े हुये हैं. ऐसा क्यों नहीं करते कि ग़ैर-मज़रुआ ख़ास का जो मुआवज़ा आपको मिले वह हमें दे दीजिये. ऐसा कई श्रीमानों ने किया भी है.

कांग्रेसी सज्जन बोले कि वह तो बड़े आदमी हैं. न हमारी उतनी हस्ती है और न घर वालों की ही इजाज़त है.

यह आप जानिये. लेकिन ग़ैरमज़रुआ ख़ास अगर आप दे देते हैं तो इसमें आपका कोई नुक़सान नहीं होता.

इसके बाद थोड़ी देर सभी चुप रहे. वे लोग आपस में कुछ सलाह सी करने लगे. एक भाई बोले कि बाबा हम चारों अपने अपने हिस्से का छटा हिस्सा देने को राज़ी हैं.

बाबा इस पर हंसे और कहा आपका कौन सा गणित है ? पटना यूनिवर्सिटी का या बिहार यूनिवर्सिटी का ? यह सुनकर सब को अचरज हुआ और उनमें से एक ने पूछा कि यह दोनों गणित कौन कौन से हैं ?

बाबा ने बताया कि पटना यूनिवर्सिटी के पढ़े हुए एक वकील साहब हमें एक जगह मिले. उन्होंने हमें एक बीघा ज़मीन दान में दी और कहा कि छटे हिस्से से ज्यादा होती है. हमने उनसे पूछा कि यह कैसे ? तो कहने लगे कि हमारे घर में कुल 100 बीघा ज़मीन है. हम अपने पिता जी के चार लड़के हैं. हमारे पिता जी अभी जीवित हैं. तो हमारे कुल के हिस्से में 20 बीघा पड़ा. अब हमारे ख़ुद के तीन लड़के हैं—एक हम और तीन वह. इस तरह हमारे हिस्से के भी चार हिस्से हो गए. हमारे पल्ले पांच बीघा ही ज़मीन पड़ी. उसमें का छठा हिस्सा न दे कर कुछ ज्यादा ही दिया.

यह सुन कर सभी लोग हंस पड़े.

बाबा बोले कि यह है आपका पटना यूनिवर्सिटी का गणित— 00 बीघा का छठा हिस्सा एक बीघा. तो बताइये कि आप हमें किस हिसाब से दे रहे हैं ?



وہ سب کی سب آپ ہمیں کیوں نہیں لے دیتے ؟ آپ کے پاس بےکار پڑی ہے، ہمارے کام آجائے گی. ہم تو یہی کہتے ہیں کہ غیر مزروعہ خاص، اپنی کل کی کل دے دیجئے اور جوت کے زمین میں سے گھر کے بھائی کے ناتے ہمارا حق دے دیجئے .

کانگریسی بھائی بولے کہ آپ اُس پرتی زمین کو لے کر کیا کیجئے گا ؟ نہیں دریا ہے کہیں ریت، کہیں کچھ .

آپ ہمیں وہ سب دے تو دیجئے . جیسا ہوگا ہم سنبھال لیں گے .

وہ تو نئے قانون کے مطابق اپنے ہاتھ سے چلی جانے والی ہے .

جب چلی جانے والی ہے، تب بھی آپ نہیں دیتے !

دھیمی آواز سے وکیل صاحب بولے اُس کا معاوضہ......

بابا نے کہا—یہ آپ نے اب اپنا دل کھولا . اُس کے معاوضے میں روپیہ ملے گا . اسی وجہ سے اِس پرتی زمین کو بھی پکڑے ہوئے ہیں . ایسا کیوں نہیں کرتے کہ غیر مزروعہ خاص کا جو معاوضہ آپ کو ملے وہ ہمیں دے دیجئے . ایسا کئی شریمانوں نے کیا بھی ہے .

کانگریسی سجن بولے وہ تو بڑے آدمی ہیں . نہ ہماری اتنی ہستی ہے اور نہ گھر والوں ہی کی اِجازت ہے .

یہ آپ جانئے . لیکن غیرمزروعہ خاص اگر آپ دے دیتے ہیں تو اُس میں آپ کا کوئی نقصان نہیں ہوتا .

اِس کے بعد تھوڑی دیر تک سبھی چپ رہے . وہ لوگ آخر میں کچھ صلاح سی کرنے لگے . ایک بھائی بولے کی بابا ہم چاروں اپنے حصہ کا چھٹا حصہ دینے کو تیار ہیں .

بابا اِس پر ہنسے اور کہا آپ کا کونسا گنت ہے ؟ پٹنہ یونیورسٹی کا یا بہار یونیورسٹی کا ؟ یہ سنکر سب کو اچرج ہوا اور ان میں سے ایک نے پوچھا یہ دونوں گنت کون کون سے ہیں؟

بابا نے بتایا کے پٹنہ یونیورسٹی کے پڑھے ہوئے ایک وکیل صاحب ہمیں ایک جگہ ملے . انھوں نے ہمیں ایک بیگھا زمین دان میں دی اور کہا کہ چھٹے حصے سے زیادہ ہوتی ہے . ہم نے اُن سے پوچھا کی یہ کیسے؟ کہنے لگے کہ ہمارے گھر میں کل 100 بیگھا زمین ہے. ہم اپنے پتا جی کے چار لڑکے ہیں. ہمارے پتا جی ابھی جیوت ہیں . تو ہمارے کل کے حصے میں 20 بیگھا پڑا . اب ہمارے خود کے تین لڑکے ہیں—ایک ہم اور تین وہ . اِس طرح ہمارے حصے کے بھی چار حصے ہوگئے . ہمارے پلے پانچ بیگھا ہی زمین پڑی . اُس میں کا چھٹا حصہ نہ دے کر کچھ زیادہ ہی دیا .

یہ سنکر سب ہی لوگ ہنس پڑے .

بابا بولے کہ یہ ہے آپ کی پٹنہ یونیورسٹی کا گنت—100 بیگھے کا چھٹا حصہ ایک بیگھا . تو بتائیے کہ آپ ہمیں کس حساب سے دے رہے ہیں ؟

जमीन उसी के पास अब रहेगी जो खेती खुद करेगा. किताब उसी के पास रहेगी जो खुद पढ़ेगा. हम जानते हैं कि आप में से सब लोग आज खुद काम करने की हालत में नहीं हैं. हम आपको मुहलत देने को तैयार हैं. ज्यादा नहीं, चार पांच बरस की. इस बीच आप अपने लड़कों को तैयार कीजिये ताकि वह और खटने वाले मजदूरों के लड़के एक साथ मिल कर काम करें. फिर हम आपसे पूछना चाहते हैं कि जब आप वकालत करते हैं तो जमीन रख कर क्या कीजियेगा ?

बाबा की बात को टालते हुए वकील साहब ने कहा कि अभी लोग समझे नहीं हैं.

कांग्रेसी भाई कहने लगे कि बाबा हम देने को राजी भी हों, लेकिन घर के बुजुर्ग कहां मानते हैं. अपनी ऐड़ी चोटी एक करके उन्होंने जमीन हासिल की है. अब उसे कैसे जाने दें ?

बाबा बोले कि हम इस बात में नहीं पड़ेंगे कि आपके पास जमीनें किस तरह आयीं ? हम पिछली बातों में नहीं जाते. उससे न आपको फ़ायदा है न किसी और को. लेकिन हम आप से तो यह जानना चाहेंगे कि आपकी प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी ने 32 लाख एकड़ के लिये एक प्रस्ताव पास किया है, उसे दोहराया, तब आपका क्या फ़र्ज़ हो जाता है?

इस पर समाजवादी नौजवान बोले कि यों सरकुलर तो आया ही करते हैं.

बाबा ने उनकी तरफ़ देखकर कहा कि आपके पार्टीवाले तो कहते हैं कि बाबा ने हमारा ही काम उठाया है. तो हम कहते हैं कि हमारे उठाने पर क्या आपने अपना काम बन्द कर दिया ? आप लोग तो बड़े विचित्र हैं. आपके नेता जय प्रकाश बाबू ने इस काम के लिये अपील की. लेकिन आप जैसे अनुयायी हैं कि अपने नेता की बात सुनी अनसुनी कर देते हैं.

ग्रेजुएट भाई बोले कि बाबा यह तो होगा ही. क्योंकि आपकी इस मांग से तो पहले अपने घर ही हाथ साफ़ करना पड़ता है.

हां, बाबा ने बड़े जोर से कहा. यह बात है. अगर खुद देना नहीं होता तो इनको भी कांग्रेस का प्रस्ताव मंजूर था और इनको भी प्रजा पार्टी का प्रस्ताव मंजूर था. यही हमारे काम और दूसरे के कामों में फ़र्क़ है.

वकील साहब ने कहा कि अच्छा, आज तो हमारा दानपत्र क़बूल कर लीजिये, छठा हिस्सा बाद में पूरा करेंगे.

जब आप छठा हिस्सा देने को राजी हैं तो "शुभस्य शीघ्रम्." कब दोबारा आपके गांव में हमारा आना होगा और कब आपसे भेंट होगी ?

यों वैसे तो जमीन बहुतेरी बेकार पड़ी है, न उसका कोई हिसाब है न किताब.



زمین اُسی کے پاس اب رہے گی جو کھیتی خود کرے گا۔ کتاب اُسی کے پاس رہے گی جو خود پڑھے گا۔ ہم جانتے ہیں کہ آپ میں سے سب لوگ آج خود کام کرنے کی حالت میں نہیں ہیں۔ ہم آپ کو مہلت دینے کو تیار ہیں۔ زیادہ نہیں، چار پانچ برس کی۔ اِس بیچ آپ اپنے لڑکوں کو تیار کیجئے تاکہ وہ اور کھٹنے والے مزدوروں کے لڑکے ایک ساتھ مل کر کام کریں۔ پھر ہم آپ سے پوچھنا چاہتے ہیں کہ جب آپ وکالت کرتے ہیں تو زمین رکھ کر کیا کیجئے گا؟

بابا کی بات کو ٹالتے ہوئے وکیل صاحب نے کہا کہ ابھی لوگ سمجھے نہیں ہیں۔

کانگریس بھائی کہنے لگے کہ بابا ہم دینے کو راضی بھی ہوں، لیکن گھر کے بزرگ کہاں مانتے ہیں۔ اپنی ایڑی چوٹی ایک کر کے اُنہوں نے زمین حاصل کی ہے۔ اب اُسے کیسے جانے دیں؟

بابا بولے کہ ہم اِس بات میں نہیں پڑیں گے کہ آپ کے پاس زمینیں کس طرح آئیں؟ ہم پچھلی باتوں میں نہیں جاتے۔ اُس سے نہ آپ کو فائدہ ہے نہ کسی اور کو۔ لیکن ہم آپ سے تو یہ جاننا چاہیں گے کہ جب آپ کی پرادیشک کانگریس کمیٹی نے 32 لاکھ ایکڑ کے لئے ایک پرستاؤ پاس کیا، اُسے دہرایا، تب آپ کا کیا فرض ہو جاتا ہے؟

اِس پر سماج وادی نوجوان بولے کی یوں سرکلر تو آیا ہی کرتے ہیں۔

بابا نے اُن کی طرف دیکھ کر کہا کہ آپ کے پارٹی والے تو کہتے ہیں کہ بابا نے ہمارا ہی کام اُٹھایا ہے۔ تو ہم کہتے ہیں کہ ہمارے اُٹھانے پر کیا آپ نے اپنا کام بند کر دیا؟ آپ لوگ تو بڑے وچتر ہیں۔ آپ کے نیتا جے پرکاش بابو نے اِس کام کے لئے اپیل کی۔ لیکن آپ ایسے انویائی ہیں کہ اپنے نیتا کی بات سنی اَن سنی کر دیتے ہیں۔

گریجویٹ بھائی بولے کہ بابا یہ تو ہوگا ہی۔ کیونکہ آپ کی اِس مانگ سے تو پہلے اپنے پر ہی ہاتھ صاف کرنا پڑتا ہے۔

ہاں، بابا نے بڑے زور سے کہا۔ یہ بات ہے۔ اگر خود دینا نہیں ہوتا تو اِن کو بھی کانگریس کا پرستاؤ منظور تھا اور اُن کو بھی پرجا پارٹی کا پرستاؤ منظور تھا۔ یہی ہمارے کام اور دوسرے کے کاموں میں فرق ہے۔

وکیل صاحب نے کہا کہ اچھا آج تو ہمارا دان پتر قبول کر لیجئے، چھٹا حصہ بعد میں پورا کرینگے۔

جب آپ چھٹا حصہ دینے کو راضی ہیں تو "شوبھسیہ شیگھرم۔" کب دوبارہ آپ کے گاؤں میں ہمارا آنا ہوگا اور کب آپ سے بھینٹ ہوگی؟

یوں ویسے تو زمین بہتیری بیکار پڑی ہے، نہ اُس کا کوئی حساب ہے نہ کتاب۔

मेरे यहां यह कोई अदालत नहीं है जहां एक दूसरे की निन्दा की जाये. यह तो प्रेम का सत्संग है जहां हम अपने दिल की बात कहते हैं, अपने अपने दिल का मैल सब जाहिर करते हैं. मैं आपके सामने बहुत सी ऐसी मिसालें पेश कर सकता हूं जिन्होंने छटे की तो बात ही क्या, चौथा हिस्सा दिया है, आधा हिस्सा दिया है और बीसियों ऐसी मिसालें हैं जिन्होंने सब का सब दे दिया है. आप नीचे गिराने वाली मिसालों का ही अनुकरन क्यों करें ?

हमारा निवेदन है कि आज जो हमने दिया है वह क़बूल किया जाये. बाक़ी आगे दिया जायेगा.

बाबा बोले हम चाहते हैं कि आप हमारी बात समझ लें. आप हमें अपने घर में दरिद्रनारायन के प्रतिनिधि के तौर पर जगह दीजिये. अगर आप घर में पांच भाई हैं तो हमें छठा हिस्सा दीजिये, तीन है तो चौथा, सात हैं तो आठवां, अकेले हैं तो बराबर का. लड़के बच्चों का हम शुमार नहीं करते, क्योंकि लड़के बच्चे सभी के होते हैं. यह हमारी धर्म की मांग है.

यह सुनकर वकील साहब ज़रा ख़ामोश हुए और कुछ सोचने लगे. ग्रैजुएट बाबू ने कहा कि हमारा ख़ुद का ही काम नहीं चलता, उधर सरकार भी तंग करने जा रही है.

उनकी बात पर जोर देते हुए वकील साहब कहने लगे कि अभी सिलींग बनने जा रहा है. सिलींग बनने पर आपको ज़मीन कौन दे देगा ?

बाबा ने कहा यह तो हम जानते हैं. और आपकी अक़्ल सरकारी क़ानून को बेकार बनाने में लगी हुई है. हैदराबाद का क़िस्सा है कि जब हम वहां घूमते थे वहां सरकार सिलींग बनाने की सोचती थी. वह सोचती रही. इस बीच वहां के ज़मींदारों ने अपने लड़के, भाई, भतीजों के नाम ज़मीनें लिखा दीं. अब वहां शायद सौ सवा सौ एकड़ का क़ानून बना है. इसका बनना न बनना बराबर है. आपके बिहार में भी सम्मिलित परिवारों को तोड़ा जा रहा है. घरवाले रिश्तेदारों के नाम से ज़मीनें लिखा रहे हैं. दो साल बाद या जब भी क़ानून आये तब सब ज़मीनें बंटी हुई मिलेंगी और उस क़ानून की एक नहीं चलेगी.

तो इसके यह माने हैं कि सरकार क़ानून फ़िज़ूल में बना रही है.

यह तो आप हमसे ज्यादा बेहतर जानते होंगे. बाबा के लफ़्ज़ सुन कर सब हंस पड़े. फिर बाबा ने कहा कि हमारी मांग की असलियत आप समझे नहीं. हम तो जमीन की मिलकियत ही मिटा देना चाहते हैं. ज़मीन पर मालकी का दावा करना ग़लत है. ईश्वर के क़ानून के ख़िलाफ़ है. यही बात समझाने के लिये हम गांव गांव घूमते हैं. जैसे हवा, पानी और सूरज की रोशनी तो किसी की मिलकियत नहीं, वैसे ही ज़मीन पर किसी की मिलकियत नहीं रह सकती.



میرے یہاں یہ کوئی عدالت نہیں ہے جہاں ایک دوسرے کی نندا کی جائے . یہ تو پریم کا ست سنگ ہے جہاں ہم اپنی دل کی بات کہتے ہیں' اپنے اپنے دل کا میل سب ظاہر کرتے ہیں . میں آپ کے سامنے ایسی بہت سی مثالیں پیش کر سکتا ہوں جنھوں نے چھٹے کی تو بات ہی کیا' چوتھا حصہ دیا ہے' آدھا حصہ دیا ہے اور بیسیوں ایسی مثالیں ہیں جنھوں نے سب کا سب دے دیا ہے . آپ نیچے گرانے ہی والی باتوں کا انوکرن کیوں کریں ؟

ہمارا نویدن ہے کہ آج جو ہم نے دیا ہے وہ قبول کیا جائے . باقی آگے دیا جائے گا .

بابا بولے کہ ہم چاہتے ہیں کہ آپ ہماری بات سمجھ لیں . آپ ہمیں اپنے گھر میں دردرنرائن کے پرتی ندھی کے طور پر جگہ دے دیجئے . اگر آپ گھر میں پانچ بھائی ہیں تو ہمیں چھٹا حصہ دیجئے' تین ہیں تو چوتھا' سات ہیں تو آٹھواں' اکیلے ہیں تو برابر کا . لڑکے بچوں کا ہم شمار نہیں کرتے' کیونکہ لڑکے بچے سبھی کے ہوتے ہیں . یہ ہماری دھرم کی مانگ ہے .

یہ سن کر وکیل صاحب ذرا خاموش ہوئے اور کچھ سوچنے لگے . گریجویٹ بابو نے کہا کہ ہمارا خود کا ہی کام نہیں چلتا' ادھر سرکار بھی تنگ کرنے جا رہی ہے .

اُن کی بات پر زور دیتے ہوئے وکیل صاحب کہنے لگے کہ ابھی سلنگ بننے جا رہا ہے . سلنگ بنے پر آپ کو زمین کون دے دے گا ؟

بابا نے کہا یہ تو ہم جانتے ہیں . اور آپ کی عقل سرکاری قانون کو بیکار بنانے میں لگی ہوئی ہے . حیدرآباد کا قصہ ہے کہ جب ہم وہاں گھومتے تھے وہاں سرکار سلنگ بنانے کی سوچتی تھی . وہ سوچتی رہی . اِس بیچ وہاں کے زمینداروں نے اپنے لڑکے' بھائی' بھتیجوں کے نام زمینیں لکھا دیں . اب وہاں شاید سو سوا سو ایکڑ کا قانون بنا ہے . اِس کا بننا نہ بننا برابر ہے . آپ کے بہار میں بھی سملت پریواروں کو توڑا جا رہا ہے . گھر والے رشتہ داروں کے نام سے زمین لکھا رہے ہیں . دو سال بعد یا جب بھی قانون آئے تب سب زمینیں بنٹی ہوئی ملیں گی اور اُس قانون کی ایک نہیں چلے گی .

تو اِس کے یہ معنی ہیں کہ سرکار قانون فضول میں بنا رہی ہے .

یہ تو آپ ہم سے زیادہ بہتر جانتے ہوں گے . بابا کے یہ لفظ سن کر سب ہنس پڑے . پھر بابا نے کہا کہ ہماری مانگ کی اصلیت آپ سمجھے نہیں . ہم تو زمین کی ملکیت ہی مٹا دینا چاہتے ہیں . زمین پر مالکی کا دعویٰ کرنا غلط ہے . ایشور کے قانون کے خلاف ہے . یہی بات سمجھانے کے لئے ہم گاؤں گاؤں گھومتے ہیں . جیسے ہوا' پانی اور سورج کی روشنی پر کسی کی ملکیت نہیں' ویسے ہی زمین پر کسی کی ملکیت نہیں رہ سکتی .

कि धर्म के चार चरन में से एक चरन, श्रद्धा तो अब भी हमारे देश में बलवान है. लेकिन बाक़ी तीनों—प्रेम, त्याग और श्रम—लुप्त प्राय हो रहे हैं. इसी वजह से हम अधर्म को धर्म समझने लगे हैं. और आनन्द स्वरूप सृष्टा, आनन्द स्वरूप सृष्टि होते हुए भी देश में दुख बढ़ा है. इसलिये हमें अपने धर्म को पूरी तौर पर पहचानना चाहिये.

प्रार्थना प्रवचन के बाद बाबा घूमने को निकलने वाले ही थे कि तीसरे पहर वाले भाई उनके पास आ पहुंचे. हाथ जोड़कर उन्होंने कहा कि हम आपसे कुछ कहना चाहते हैं. बाबा बोले कि कहिये, आप तो हमसे मिले भी थे.

जी हां, उस समय आपके दर्शन किये थे. आपका व्याख्यान सुनने के बाद मैं अब पांचवा हिस्सा पूरा कर देना चाहता हूं. हमारे घर में हम चार हैं, आप पांचवे हो जाते हैं. छः बीघे का दान हम भर चुके हैं. दो बीघे का यह दानपत्र हाज़िर है.

वह दानपत्र उन्होंने बाबा के हाथ में दे दिया. बाबा ने उसे प्रेम पूर्वक स्वीकार किया. हंसते हुए बोले कि हमें उम्मीद है कि अब आप हमारे कार्यकर्ता हो गये. जिस निश्ठा से आप ने हमें दान दिया है आप दूसरों से भी दान हासिल करेंगे. उन भाई ने प्रनाम किया और चले गये. बाबा घूमने को निकल गये.

× × ×

[ नवम्बर का महीना—सहरसा का ज़िला—एक छोटा लेकिन बड़ा समृद्ध गांव ]

उस गांव की दो हजार बीघा ज़मीन में से क़रीब 3/4 दो परिवार में और बाक़ी गांव के दूसरे लोगों के पास थी. उस परिवार वालों में से क़रीब 60 बीघे का दानपत्र भरा गया. बाबा के आदेश के अनुसार वह दानपत्र उनको वापिस कर दिया गया. रात को प्रार्थना के बाद वह भाई लोग बाबा के पास आये. उनमें से एक भाई ग्रैजुएट थे. दूसरे वकील थे. तीसरे कांग्रेस के अच्छे कार्यकर्ता थे. चौथे की प्रजा समाजवादी पार्टी में बड़ी श्रद्धा थी. उन्होंने एक लिखित पत्र बाबा को दिया जिसमें कहा कि हमारा दानपत्र वापस करके इस गांव की जनता का अपमान किया गया है. दूसरे कार्यकर्ता भी मौजूद थे.

बाबा ने कहा कि सबसे पहले हम आप से कहना चाहते हैं कि हम किसी की बदनामी नहीं चाहते. हमें किसी की आबरू गिराना पसन्द नहीं. हम ऐसा काम चाहते हैं कि जिसमें प्रेम भाव पैदा हो और दिल जुड़े.

वकील भाई बोले कि हम भी यह चाहते हैं. लेकिन हमें दुख है कि हमारा दानपत्र वापिस कर दिया गया. मगर दूसरे के दानपत्र जो छठे हिस्से से कम के हैं, वह रख लिये गये हैं.



کہ دھرم کے چارچرن میں سے ایک چرن، شردھا تو اب بھی ہمارے دیش میں بلوان ہے. لیکن باقی تینوں—پریم، تیاگ اور شرم—لپت پرایہ ہو رہے ہیں. اِسی وجہ سے ہم دھرم کو ادھرم سمجھنے لگے ہیں. اور آنند سروپ سرشٹھا آنند سروپ سرشٹی ہوتے ہوئے بھی دیش میں دکھ بڑھا ہے. اِس لئے ہمیں اپنے دھرم کو پوری طور پر پہچاننا چاہئے.

پرارتھنا پروچن کے بعد بابا گھومنے کو نکلنے والے ہی تھے کہ تیسرے پہر والے بھائی اُن کے پاس آ پہونچے. ہاتھ جوڑ کر اُنھوں نے کہا کہ ہم آپ سے کچھ کہنا چاہتے ہیں. بابا بولے کہ کہئے، آپ تو ہم سے ملے بھی تھے.

جی ہاں، اُس سمے آپ کے درشن کئے تھے. آپ کا ویاکھیان سننے کے بعد میں اب پانچواں حصہ پورا کردینا چاہتا ہوں. ہمارے گھر میں ہم چار ہیں، آپ پانچویں ہوجاتے ہیں. چھ بیگھے کا دان ہم بھر چکے ہیں. دو بیگھے کا یہ دان پتر حاضر ہے.

وہ دان پتر اُنھوں نے بابا کے ہاتھ میں دے دیا. بابا نے اُسے پریم پوروک سویکار کیا. ہنستے ہوئے بولے کہ ہمیں اُمید ہے کہ آپ ہمارے کاریہ‌کرتا ہوگئے. جس نشٹھا سے آپ نے ہمیں دان دیا ہے آپ دوسروں سے بھی دان حاصل کریں گے. اُن بھائی نے پرنام کیا اور چلے گئے. بابا گھومنے کو نکل گئے.

× × ×

[ نومبر کا مہینہ—سہرسا کا ضلع—ایک چھوٹا لیکن بڑا سمردھ گاؤں ]

اُس گاؤں کی دو ہزار بیگھا زمین میں سے قریب 3/4 دو پریوار میں اور باقی گاؤں کے دوسرے لوگوں کے پاس تھی. اُس پریوار والوں میں سے قریب 60 بیگھے کا دان پتر بھرا گیا. بابا کے آدیش کے انوسار وہ دان‌پتر اُن کو واپس کر دیا گیا. رات کو پرارتھنا کے بعد وہ بھائی لوگ بابا کے پاس آئے. اُن میں سے ایک بھائی گریجوئیٹ تھے. دوسرے وکیل تھے. تیسرے کانگریس کے اچھے کاریہ‌کرتا تھے. چوتھے کی پرجا سماج وادی پارٹی میں بڑی شردھا تھی. اُنھوں نے ایک لکھت پتر بابا کو دیا جس میں کہا کہ ہمارا دان پتر واپس کر کے اِس گاؤں کی جنتا کا اپمان کیا گیا ہے. دوسرے کاریہ‌کرتا بھی موجود تھے.

بابا نے کہا کہ سب سے پہلے ہم آپ سے کہنا چاہتے ہیں کہ ہم کسی کی بدنامی نہیں چاہتے. ہمیں کسی کی آبرو گرانا پسند نہیں. ہم ایسا کام چاہتے ہیں کہ جس میں پریم بھاؤ پیدا ہو اور دل سے دل جڑیں.

وکیل بھائی بولے کہ ہم بھی یہ چاہتے ہیں. لیکن ہمیں دکھ ہے کہ ہمارا دان‌پتر ہمیں واپس کردیا گیا. مگر دوسروں کے دان پتر جو چھٹے حصے سے کم کے ہیں، وہ رکھ لئے گئے ہیں.

बड़े भाई ने कहा कि सवा बीघा दे चुके हैं, डेढ़ ले लीजिये.

बाबा मुस्कराये और कहा कि यह तो आपने सब्ज़ी का सा बाजार बना दिया. इस पर सभी हंस पड़े.

कार्यकर्ता भाई ने कहा कि अब यह डेढ़ दो क्या करते हैं ? छठा हिस्सा पूरा कीजिये और जनता जनार्दन का आशीर्वाद हासिल कीजिये.

उन भाई ने कहा कि अच्छा दो बीघा लेकर ख़तम कीजिये. उन्होंने दानपत्र बाबा के आगे बढ़ाया और उठने लगे.

बाबा ने दानपत्र उन्हीं को लौटाते हुये कहा कि आप कुशल सौदागर दिखाई पड़ते है. लेकिन हमें तो यह आपका सत्संग मिला है. हम ऐसी इसमें कोई बात नहीं करना चाहते हैं जो आपकी शान के खिलाफ़ हो.

कमरे में फिर ख़ामोशी रही. कार्यकर्ता भाई बोले कि आप श्रीमान हैं और अब आधे बीघे की बात ही क्या है ? लेकिन वह दोनों टस से मस नहीं हुये. पर उनके चेहरे पर बहुत उदासी थी. दुख से गला भरा हुआ था. बाबा भी आंखें मून्द कर मानो समाधिस्थ बैठे हों.

थोड़ी देर बाद बड़े भाई ने कहा कि बाबा आप दानपत्र नहीं लेते हैं, हम घर क्या मुंह लेकर जायेंगे ? और भरी हुई आवाज से कहने लगे कि अब नहीं सहा जाता है. आप यह दो बीघे की भेंट ले ही लीजिये.

बाबा शान्त रहे और कुछ नहीं बोले. कार्यकर्ता भाई ने कहा कि अब जब आप इतने दुखी हैं तो जरा उन दुखियों का ध्यान कीजिये जिनका कोई पूछनहार नहीं.

बड़े भाई ने एक हिचकी सी ली और आंखों के तले कपड़े से मोती की बूंद पोंछते हुए कहा कि अच्छा भगवन छठा हिस्सा आपको समर्पित है.

बाबा ने आंखें खोलीं और कहा कि ईश्वर आपको बल दे और दीन दुखियों की सेवा की सतत प्रेरना दे.

इस प्रकार बड़े भाई ने, फिर छोटे भाई ने अपने अपने छटे हिस्से का दान कर दिया और बाबा से विदा ली.

क़रीब एक महीने बाद बाबा दरभंगा जिले के उत्तरी हिस्से में घूम रहे थे. चालीस एकड़वाले एक श्रीमान ने छै एकड़ का दानपत्र भरा. तीन बजे के क़रीब बाबा से मिलने आये. कहा कि मैंने आपका गीता प्रवचन पढ़ा है. मुझे उससे बहुत प्रेरना हुई है. आज मैंने अपने लगभग छठे हिस्से का दानपत्र भरकर आपके कार्यालय में दे दिया है. बाबा ने जय जय कहकर उनके प्रमान स्वीकार किये. साढ़े तीन बजे प्रार्थना हुई. उसके बाद बाबा का प्रवचन हुआ. बाबा ने उस प्रवचन में चतुरपाद धर्म की व्याख्या की. उन्होंने कहा



بڑے بھائی نے کہا کہ سوا بیگھا دے چکے ھیں' ڈیڑھ لے لیجئے .

بابا مسکرائے اور کہا کہ یہ تو آپ نے سبزی کا سا بازار بنا دیا . اِس پر سبھی ھنس پڑے .

کاریہ‌کرتا بھائی نے کہا کہ آپ یہ ڈیڑھ دو کیا کرتے ھیں؟ چھٹا حصہ پورا کیجئے اور جنتا جنادرن کا آشیرباد حاصل کیجئے .

اُن بھائی نے کہا کہ اچھا دو بیگھا لیکر ختم کیجئے . انہوں نے دان‌پتر بابا کے آگے بڑھایا اور اُٹھنے لگے .

بابا نے دان‌پتر انہیں لوٹاتے ھوئے کہا کہ آپ کشل سوداگر دکھائی پڑتے ھیں . لیکن ھمیں تو یہ آپ کا ست سنگ ملا ھے . ھم ایسی اِس میں کوئی بات نہیں کرنا چاھتے ھیں جو آپ کی شان کے خلاف ھو .

کمرے میں پھر خاموشی رھی . کاریہ‌کرتا بھائی بولے کہ آپ شریمان ھیں اور اب آدھے بیگھے کی بات ھی کیا ھے؟ لیکن وہ دونوں ٹس سے مس نہیں ھوئے . پر اُن کے چہرے پر اُداسی تھی . دکھ سے گلا بھرا ھوا تھا . بابا بھی آنکھیں موند کر مانو سمادھسٹ بیٹھے ھوں .

تھوڑی دیر بعد بڑے بھائی نے کہا کہ بابا آپ دان‌پتر نہیں لیتے ھیں' ھم گھر کیا منھ لیکر جائیں‌گے ؟ اور بھری ھوئی آواز سے کہنے لگے کہ اب نہیں سہا جاتا ھے . آپ یہ دو بیگھے کی بھینٹ لے ھی لیجئے .

بابا شانت رھے اور کچھ نہیں بولے . کاریہ‌کرتا بھائی نے کہا کہ اب جب آپ اِتنے دکھی ھیں تو ذرا اُس دکھیا کا دھیان کیجئے جن کا کوئی پوچھن‌ھار نہیں .

چھوٹے بھائی نے ایک ھچکی سی لی اور آنکھوں تلے کپڑے سے موتی کی بوند پونچھتے ھوئے کہا کہ اچھا بھگون چھٹا حصہ آپ کو سمرپت ھے .

بابا نے آنکھیں کھولیں اور کہا کہ اِیشور آپ کو بل دے اور دین دکھیوں کی سیوا کی ستت پریرنا دے .

اِس پرکار بڑے بھائی نے' پھر چھوٹے بھائی نے اپنے اپنے چھٹے حصے کا دان کردیا اور بابا سے بدا لی .

قریب ایک مہینہ بعد بابا دربھنگہ ضلع کے اُتری حصہ میں گھوم رھے تھے . چالیس ایکڑ والے ایک شریمان نے چھ ایکڑ کا دان‌پتر بھرا . تین بجے کے قریب بابا سے ملنے آئے . کہا کہ میں نے آپ کا گیتا پرووچن پڑھا ھے . مجھے اُس سے بہت پریرنا ھوئی ھے . آج میں نے اپنے لگ بھگ چھٹے حصے کا دان‌پتر بھرکر آپ کے کاریالیہ میں دے دیا ھے . بابا نے جے - جے کہہ کر اُن کے پرمان سویکار کئے . ساڑھے تین بجے پرارتھنا ھوئی . اِس کے بعد بابا کا پرووچن ھوا . بابا نے اُس پرووچن میں چترپد دھرم کی ویاکھیا کی . انہوں نے کہا

लोग यही कहेंगे कि फ़लाने बाबू साहब ने बाबा को ठग लिया. 15 बीघा ज़मीन थी, उसमें से सिर्फ़ सवा एकड़ दिया. हम नहीं चाहते कि इस तरह आपकी चर्चा हो. आपकी बेइज़्ज़ती हमें मंज़ूर नहीं. हम चाहते हैं कि आप इस पर सोचें और फिर अपनी हस्ती के मुताबिक़ दान दें.

थोड़ी देर तक कमरे में ख़ामोशी रही. वह दोनों भाई, दूसरे श्रीमान और कार्यकर्ता सभी चुप थे. तब बाबा ने उन दोनों भाइयों की तरफ़ देखकर कहा कि पहले यह बताइये कि आप दोनों अलग अलग क्यों हो गये ?

उन भाइयों के चेहरे पर मानो हवाई सी उड़ गई. धीमे स्वर में एक ने कहा कि घर में नहीं बनती थी.

बाबा बोले कि हम जानते हैं कि आजकल ऐसा बहुत होता है. लेकिन जब आप दोनों का दिल एक था तो अपने घर में भी समझा सकते थे. यह कुनबा तोड़ने से क्या फ़ायदा ?

दोनों भाइयों की आंखों से बस आंसू गिरने की ही कसर रह गई. कमरे में सन्नाटा और भी बढ़ गया.

उस सन्नाटे को बेधते हुए बाबा ने बड़े भाई से पूछा कि आप घर में कितने प्रानी हैं ?

मैं, मेरी स्त्री, और एक लड़का जिसकी उम्र 16 बरस की है.

तो हम आपके घर में चौथे हो जाते हैं. इसलिये हमें चौथा हिस्सा मिलना चाहिये. क्या आप हमें अपने घर में भाई के तौर पर नहीं लेंगे ?

उन भाई ने हाथ जोड़कर सिर झुकाया और कहा कि इससे कौन इनकार करेगा ? लेकिन मोह नहीं छुटता. इसलिये इस वक़्त इतना स्वीकार करें, फिर आगे देखा जायेगा.

बाबा बोले कि हमें तो अपना हक़ चाहिये. अगर आप हमें अपने घर में जगह नहीं देते तो हम ज़बरदस्ती कैसे कर सकते हैं ?

फिर वे दूसरे भाई की तरफ़ मुख़ातिब हुये और पूछा कि आपके घर में कितने लोग हैं ?

मैं अकेला ही हूं.

तब तो आप और हम दो भाई हो जाते हैं और हमें आधा हिस्सा मिलना चाहिये.

बड़े भाई की तरफ़ इशारा करते हुये छोटे ने जवाब दिया कि जो ये देंगे वही हम देंगे.

बाबा ने कहा बहुत अच्छी बात है. हम चाहते हैं कि आप दोनों एक हो जाइये. फिर अपनी तीस बीघा ज़मीन में से हमें पांचवा हिस्सा दे दीजिये.

यह सुनकर दोनों भाईयों की आंखें नीची हो गईं और कुछ नहीं बोले. बाबा ने कहा कि हमने आपके सामने इन्साफ़ की बात रख दी. अब आपको जैसा मंज़ूर हो करें.



لوگ یہی کہیں گے کہ فلانے بابو صاحب نے بابا کو ٹھگ لیا ۔ 15 بیگھا زمین تھی، اُس میں سے صرف سوا ایکڑ دیا ۔ ہم نہیں چاہتے کہ اِس طرح آپ کی چرچا ہو ۔ آپ کی بےعزتی ہمیں منظور نہیں ۔ ہم چاہتے ہیں کہ آپ اِس پر سوچیں اور پھر اپنی ہستی کے مطابق دان دیں ۔

تھوڑی دیر تک کمرے میں خاموشی رہی ۔ وہ دونوں بھائی، دوسرے شریمان اور کاریہ‌کرتا سب ہی چپ تھے ۔ تب بابا نے اُن دونوں بھائیوں کی طرف دیکھ کر کہا کہ پہلے یہ بتائیے کہ آپ دونوں الگ الگ کیوں ہوگئے ؟

اُن بھائیوں کے چہرے پر ہوائی سی اڑ گئی ۔ دھیمے سور میں ایک نے کہا کہ گھر میں نہیں بنتی تھی ۔

بابا بولے کہ ہم جانتے ہیں کہ آجکل ایسا بہت ہوتا ہے ۔ لیکن جب آپ دونوں کا دل ایک تھا تو اپنے گھر میں بھی سمجھا سکتے تھے ۔ یہ کنبہ توڑنے سے کیا فائدہ ؟

دونوں بھائیوں کی آنکھوں سے بس آنسو گرنے کی ہی کسر رہ گئی ۔ کمرے میں سنناٹا اور بھی بڑھ گیا ۔

اُس سنناٹے کو بیدھتے ہوئے بابا نے بڑے بھائی سے پوچھا کہ آپ گھر میں کتنے پرانی ہیں ؟

میں، میری استری اور ایک لڑکا جس کی عمر 16 برس کی ہے ۔

تو ہم آپ کے گھر میں چوتھے ہوجاتے ہیں ۔ اِس لئے ہمیں چوتھا حصہ ملنا چاہئے ۔ کیا آپ ہمیں اپنے گھر میں بھائی کے طور پر نہیں لینگے؟

اُن بھائی نے ہاتھ جوڑکر سر جھکایا اور کہا کہ اِس سے کون اِنکار کریگا؟ لیکن موہ نہیں چھٹتا ۔ اِس لئے اِس وقت اتنا سوکار کریں، پھر آگے دیکھا جائیگا ۔

بابا بولے کہ ہمیں تو اپنا حق چاہئے ۔ اگر آپ ہمیں اپنے گھر میں جگہ نہیں دیتے تو ہم زبردستی کیسے کرسکتے ہیں؟

پھر وے دوسرے بھائی کی طرف مخاطب ہوئے اور پوچھا کہ آپ کے گھر میں کتنے لوگ ہیں ؟

میں اکیلا ہی ہوں ۔

تب تو آپ اور ہم دو بھائی ہوجاتے ہیں اور ہمیں آدھا حصہ ملنا چاہئے ۔

بڑے بھائی کی طرف اشارہ کرتے ہوئے چھوٹے نے جواب دیا کہ جو یہ دینگے وہی ہم دینگے ۔

بابا نے کہا کہ بہت اچھی بات ہے ۔ ہم چاہتے ہیں کہ آپ دونوں ایک ہوجائیے ۔ پھر اپنی تیس بیگھا زمین میں سے ہمیں پانچواں حصہ دیدیجئے ۔

یہ سنکر دونوں بھائیوں کی آنکھیں نیچی ہوگئیں اور کچھ نہیں بولے ۔ بابا نےکہا کہ ہم نے آپ کے آگے اِنصاف کی بات رکھ دی ۔ اب آپ کو جیسا منظور ہو کریں ۔

श्रीमान ने एक नाम पेश किया. दूसरी तरफ़ वालों को वह मंजूर था. वह भाई भी वहीं बैठे थे. बाबा ने उनसे कहा कि जब दोनों पक्षवाले आपको पसन्द करते हैं तो हमें कोई ऐतराज़ नहीं. आप इस मामले की जांच करें और जब यह फ़ैसला आप देंगे कि इन भाई (श्रीमान) ने अन्याय नहीं किया है तभी इनका दानपत्र क़ुबूल होगा. फ़िलहाल इनका दानपत्र आप अपने पास सम्भाल कर रख लीजिये.

वह दानपत्र उन भाई ने पंच के हवाले कर दिया, मानो सिर पर लदा हुआ मनों बोझ उतर गया.

❀ ❀ ❀

[ सितम्बर का महीना—मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले का एक गांव ]

सुबह के दस बजे के क़रीब एक कार्यकर्ता ने डरते डरते बाबा के सामने पांच बीघा जमीन का एक दानपत्र रखा. दाता के पास 100 बीघा जमीन थी. उस भाई ने पूछा कि इस पर क्या आज्ञा है ?

पल भर के लिये बाबा शान्त रहे. फिर वह दानपत्र ले लिया. अपनी क़लम उठाई. उस दानपत्र के पीछे यह लिखा —

"यह दान मालिक के पास जो जमीन है उस हिसाब से बहुत ही कम है. इसलिये अस्वीकृत किया जाता है.

—विनोबा"

यह लिख कर वह दानपत्र उन भाई के हवाले कर दिया. वह उसे लेकर लौट गए और दाता के पास पहुंचा दिया. हमारे कैम्प में एक सनसनी सी फैल गई कि बाबा ने आज से दानपत्र वापिस करना शुरू कर दिया.

दूसरे दिन 15-15 बीघा रखने वाले दो भाइयों ने सवा-सवा बीघे के दानपत्र भरे. वह दानपत्र वह दोनों भाई ख़ुद ही लेकर पड़ाव पर आए थे. कार्यकर्ता को शंका उठी और उन्होंने दोनों दाताओं से कह दिया कि आपके पास 15-15 बीघा जमीन है. ईश्वर की आपके ऊपर कृपा भी है. इसलिये हम आपसे ज्यादा की आशा करते हैं. छटे हिस्से से कम लेने से हम मजबूर हैं. और वह दानपत्र वापिस कर दिये. इस तरह के कई एक मामले और थे. उन दाताओं को बड़ी तकलीफ़ हुई कि उनके दानपत्र वापिस क्यों कर दिये गए. उनकी भेंट क्यों ठुकरा दी गई. उन्होंने इच्छा जाहिर की कि हम बाबा से मिलना चाहते हैं. दो बजे का समय तय हुआ. कई श्रीमान लोगों से बाबा मिले.

उन दो भाइयों में से छोटे ने कहा कि महाराज हमने फूल पत्ती आपकी सेवा में अर्पित की थी. लेकिन हमें बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि वह स्वीकार नहीं की गई. बाबा ने कहा कि हमें आपसे ज्यादा तकलीफ़ है. लेकिन हम आपसे कहना चाहते हैं कि अगर हम आपकी यह भेंट मंजूर कर लेते हैं, आपका यह प्रेम का दान रख लेते हैं तो



شریمان نے ایک نام پیش کیا ۔ دوسری طرف والوں کو وہ منظور تھا ۔ وہ بھائی بھی وھیں بیٹھے تھے ۔ بابا نے اُن سے کہا کہ جب دونوں پکش والے آپ کو پسند کرتے ھیں تو ھمیں کوئی اعتراض نہیں ۔ آپ اِس معاملے کی جانچ کر لیں اور جب یہ فیصلہ آپ دیں گے کہ اِن بھائی (شریمان) نے انیائے نہیں کیا ھے تب ھی اِن کا دان پتر قبول ھوگا ۔ فی الحال اِن کا دان پتر آپ اپنے پاس سبنھال کر رکھ لیجئے ۔

وہ دان پتر اُن بھائی نے پنچ کے حوالے کر دیا؛ مانو سر پر لدا ھوا منوں بوجھ اُتر گیا ۔

❀ ❀ ❀

[ستمبر کا مہینہ—مظفرپور ضلع کا ایک گاؤں]

صبح کے دس بجے کے قریب ایک کاریہ‌کرتا نے ڈرتے ڈرتے بابا کے سامنے پانچ بیگھا زمین کا ایک دان پتر رکھا ۔ داتا کے پاس سو بیگھا زمین تھی ۔ اُس بھائی نے پوچھا کہ اِس پر کیا آگیاں ھے ؟

پل بھر کے لئے بابا شانت رھے ۔ پھر وہ دان پتر لے لیا ۔ اپنی قلم اُٹھائی ۔ اُس دان پتر کے پیچھے یہ لکھا—

" یہ دان مالک کے پاس جو زمین ھے بہت ھی کم ھے اِس لئے اسویکرت کیا جاتا ھے ۔

—ونوبا "

یہ لکھ کر وہ دان پتر اُن بھائی کے حوالے کر دیا ۔ وہ اُسے لے کر لوٹ گئے اور داتا کے پاس پہونچا دیا ۔ ھمارے کیمپ میں ایک سنسنی سی پھیل گئی کہ بابا نے آج سے دان پتر واپس کرنا شروع کر دیا ۔

دوسرے دن 15-15 بیگھا رکھنے والے دو بھائیوں نے سوا—سوا بیگھے کے دان پتر بھرے ۔ وہ دان پتر وہ دونوں بھائی خود ھی لے کر پڑاؤ پر آئے تھے ۔ کاریہ‌کرتا کو شنکا اُٹھی ۔ اُنھوں نے دونوں داتاؤں سے کہہ دیا کہ آپ کے پاس 15-15 بیگھا زمین ھے ۔ ایشور کی آپ کے اوپر کرپا بھی ھے ۔ اِس لئے ھم آپ سے زیادہ جائداد کی آشا کرتے ھیں ۔ چھٹے حصے سے کم لینے سے ھم مجبور ھیں ۔ اور وہ دان پتر واپس کر دیئے ۔ اِس طرح کے کئی ایک اور معاملے تھے ۔ ان داتاؤں کو بڑی تکلیف ھوئی کہ اُن کے دان پتر کیوں واپس کر دیئے گئے ۔ اُن کی بھینٹ کیوں ٹھکرا دی گئی ۔ اُنھوں نے اِچھا ظاھر کی کہ ھم بابا سے ملنا چاھتے ھیں ۔ دو بجے کا سمے طے ھوا ۔ کئی شریمان لوگوں سے بابا ملے ۔

اُن دو بھائیوں میں سے چھوٹے نے کہا کہ مہاراج ھم نے پھول پتی آپ کی سیوا میں ارپت کی تھی ۔ لیکن ھمیں بڑے دکھ کے ساتھ کہنا پڑتا ھے کہ وہ سونیکار نہیں کی گئی ۔ بابا نے کہا کہ ھمیں آپ سے زیادہ تکلیف ھے ۔ ھم آپ سے کہنا چاھتے ھیں کہ اگر ھم آپ کی یہ بھینٹ منظور کر لیتے ھیں، آپ کا یہ پریم کا دان رکھ لیتے ھیں تو

और बाबा को दानपत्र पेश करने लगे. बाबा ने कहा कि हमें मालूम हुआ है कि आपने कुछ बेदख़लियां की हैं. ऐसी हालत में हम आपसे दानपत्र कैसे लें ? वह कहने लगे कि नहीं हुजूर, यह सब ग़लत बात है. आप किसी से भी दरियाफ़्त करा सकते हैं. बाबा ने कहा कि अब तो हम पड़ाव पर चल ही रहे हैं, यहां रास्ते में किस से पूछें ? इसलिये पड़ाव पर जाकर ही पूछ ताछ की जायेगी, और उसके बाद ही हम आपका दानपत्र ले सकेंगे.

दस बजे के क़रीब हम लोग हथौड़ी पहुंचे. नाव से उतरकर बाबा ने ख़ुश्की पर क़दम रखा ही था कि वह भाई कहने लगे—सरकार ! मेरा दानपत्र ले लिया जाये. बाबा ने उनके कंधे पर हाथ रखकर कहा कि देखिये हमने आपसे कह दिया कि आप के मामले में जानकारी हासिल करनी होगी. उसके बग़ैर आपका दानपत्र हम लेने से मजबूर हैं.

तो जब हुक्म हो मैं आपके पास अपनी बात बताने आ जाऊं.

हम चाहते हैं कि जिनको आपके ख़िलाफ़ शिकायत हैं वह भी मौजूद रहें. इसलिये आप दोनों फ़रीक़ शाम को साढ़े छै बजे प्रार्थना के बाद हमसे मिलें.

जिन भाई ने उन श्रीमान के बारे में शिकायत की थी उनसे भी यह कह दिया गया.

दिन में कई बार हमने देखा कि वह श्रीमान अपना दानपत्र लिए हुए इधर उधर घूमते थे. हमने उनको समझाया कि आप धीरज से काम लें, घबड़ाने की कोई बात नहीं. शाम को तो बाबा के सामने सब बात चीत हो ही जायेगी.

किसी तरह दिन बीता और शाम को साढ़े छै बजने आये. दोनों तरफ़ वाले भाई बाबा के पास पहुंच गये. बाबा ने कहा कि यह कोई क़ानून की अदालत नहीं है जिसमें एक दूसरे के ख़िलाफ़ आप शिकायत करें. यह प्रेम की सभा है, प्रेम की अदालत है जिसमें दोनों पक्षों को अपनी अपनी तरफ़ से जो ग़लती हुई हो उसे क़ुबूल करना है.

वह श्रीमान कहने लगे कि बाबा मेरे ख़िलाफ़ आरोप ग़लत है. बाबा ने उनको टोकते हुए कहा कि हमने आपसे पहले ही कह दिया कि आपको सिर्फ़ अपनी ग़लती जो आपने की है वह सच्चे दिल से बता देनी है.

लेकिन दोनों तरफ़ वाले एक दूसरे की ही शिकायत करते थे. बाबा ने कहा कि तब तो आप का इन्साफ़ हम नहीं कर सकते. आख़िर सभा का रंग बदला और दोनों ने अपनी अपनी करनी बयान की. यह सुनने के बाद बाबा ने कहा कि इसमें दोनों पक्षों की तरफ़ से ही थोड़ी थोड़ी ग़लती हुई है. हम चाहते हैं कि आप किसी आदमी को पंच मुक़र्रर कर लें जो ख़ास मौक़े पर जाकर पूरी तहक़ीक़ात कर ले. उसका फ़ैसला आप दोनों को मान्य होना चाहिये.



اور بابا کو دان پتر پیش کرنے لگے. بابا نے کہا کہ ہمیں معلوم ہوا ہے کہ آپ نے کچھ بیدخلیاں کی ہیں. ایسی حالت میں ہم آپ سے دان پتر کیسے لیں؟ وہ کہنے لگے کہ نہیں حضور، یہ سب غلط بات ہے. آپ کسی سے بھی دریافت کرا سکتے ہیں. بابا نے کہا کہ اب تو ہم پڑاؤ پر چل ہی رہے ہیں، یہاں راستے میں کس سے پوچھیں؟ اس لئے پڑاؤ پر آکر ہی پوچھ تاچھ کی جائےگی، اور اس کے بعد ہی ہم آپ کا دان پتر لے سکیں گے.

دس بجے کے قریب ہم لوگ ہتھوڑی پہونچے. ناؤ سے اُترکر بابا نے خشکی پر قدم رکھا ہی تھا کہ وہ بھائی کہنے لگے—سرکار! میرا دان پتر لے لیا جائے. بابا نے اُن کے کندھے پر ہاتھ رکھکر کہا کہ دیکھئے ہم نے آپ سے کہہ دیا کہ آپ کے معاملے میں جانکاری حاصل کرنی ہوگی. اس کے بغیر آپ کا دان پتر ہم لینے سے مجبور ہیں.

تو جب حکم ہو میں آپ کے پاس اپنی بات بتانے آجاؤں.

ہم چاہتے ہیں کہ جن کو آپ کے خلاف شکایت ہیں وہ بھی موجود رہیں. اس لئے آپ دونوں فریق شام کو ساڑھے چھ بجے پرارتھنا کے بعد ہم سے ملیں.

جن بھائی نے اُن شریمان کے بارے میں شکایت کی تھی اُن سے بھی یہ کہہ دیا گیا.

دن میں کئی بار ہم نے دیکھا کہ وہ شریمان اپنا دان پتر لئے ہوئے اِدھر اُدھر گھومتے تھے. ہم نے اُن کو سمجھایا کہ آپ دھیرج سے کام لیں، گھبرانے کی کوئی بات نہیں. شام کو تو بابا کے سامنے سب بات چیت ہو ہی جائیگی.

کسی طرح دن بیتا اور شام کو ساڑھے چھ بجنے آئے. دونوں طرف والے بھائی بابا کے پاس پہونچ گئے. بابا نے کہا کہ یہ کوئی قانون کی عدالت نہیں ہے جس میں ایک دوسرے کے خلاف آپ شکایت کریں. یہ پریم کی سبھا ہے، پریم کی عدالت ہے جس میں دونوں پکشوں کو اپنی اپنی طرف سے جو غلطی ہوئی ہو اُسے قبول کرنا ہے.

وہ شریمان کہنے لگے کہ بابا میرے خلاف آروپ غلط ہے. بابا نے اُن کو ٹوکتے ہوئے کہا کہ ہم نے آپ سے پہلے ہی کہہ دیا کہ آپ کو صرف اپنی غلطی جو اپنے کی ہے وہ سچے دل سے بتا دینی ہے.

لیکن دونوں طرف والے ایک دوسرے کی ہی شکایت کرتے تھے. بابا نے کہا تب تو آپ کا اِنصاف ہم نہیں کر سکتے. آخر سبھا کا رنگ بدلا اور دونوں نے اپنی اپنی کرنی بیان کی. یہ سننے کے بعد بابا نے کہا کہ اِس میں دونوں پکشوں کی طرف سے ہی تھوڑی تھوڑی غلطی ہوئی ہے. ہم چاہتے ہیں کہ آپ کسی آدمی کو پنچ مقرر کر لیں جو خاص موقع پر جا کر پوری تحقیقات کر لے. اُسی کا فیصلہ آپ دونوں کو مانیہ ہونا چاہئے.

# बिहार के दिल की गहराई में

**( लेखक—सुरेश रामभाई )**

14 सितम्बर सन 1952 को सन्त विनोबा ने बिहार प्रदेश में भूदान-यज्ञ का मंत्र लेकर प्रवेश किया और आने वाली पहली जनवरी 1955 को वह बिहार से बिदा होकर बंगाल में प्रवेश करेंगे. बंगाल में 25 दिन बिताने के बाद उड़ीसा की भूमि पर क़दम रखेंगे. इस तरह बिहार में उनका प्रवास दो साल और साढ़े तीन महीने का हो रहा है. शायद ही आधुनिक इतिहास में कोई ऐसी मिसालें मिलें जब किसी भारत वासी ने बिहार में इस तरह पैदल घूम घूम कर युग धर्म का सन्देश सुनाया हो. हमें याद आ रही है कि बुद्ध भगवान की और महावीर स्वामी की जिन्होंने बिहार में दिव्य ज्योति का साक्षात्कार किया था और फिर अपने धर्म का प्रचार किया. उनके बाद जगत गुरू शंकराचार्य सुदूर केरल से आये और अद्वैत ज्ञान का डङ्का बजाया. लेकिन उनके बाद से अब तक, ख़ासकर विज्ञान की प्रगति के इस ज़माने में, इस तरह निरन्तर घूम घूम कर सतत प्रचार करने की दूसरी मिसाल नहीं मिलती. इसका बिहार के मानस पर अजीब ग़रीब असर पड़ा है. लोक मानस के अन्दर बहुत गहराई तक वह पहुंच गया है. किसी भी आंकड़े से इसकी पैमाइश नहीं की जा सकती. लेकिन कुछ दिलदार और अनोखी घटनायें पिछले छै महीने में ऐसी हुई हैं जिससे उसका कुछ अन्दाजा किया जा सकता है. वैसे सच तो यह है कि इसका पूरा प्रभाव तो बरसों के बाद ही मालूम होगा.

अगस्त का महीना था और बाबा ज़िले के समस्तीपुर सबडिवीज़न के बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में घूम रहे थे. ऐसे ऐसे इलाक़ों में जाना हुआ जहां कोई भी सरकारी पदाधिकारी या सार्वजनिक कार्यकर्ता नहीं पहुंचा था. कोसी की भयानक बाढ़ ने जो तूफ़ान ढाया था उसके मुक़ाबले की चीज़ पिछले पचास साठ बरस में नहीं हुई थी. हमारी यात्रा कभी पैदल होती थी, कभी नाव में. अकसर तो पानी में घूमना पड़ता था. एक दिन सुबह के समय नाव में बैठे हुये बाबा हथौड़ी नाम के मुक़ाम को जा रहे थे. रास्ते में एक गांव पड़ा. वहां के एक श्रीमान भाई दानपत्र देना चाहते थे. हमारी नाव में एक दूसरे भाई भी बैठे थे. उन्होंने बताया कि इन ज़मीन्दार ने अपने इलाक़े में बहुत ज्यादती की है. कई किसानों को बेदख़ल किया है. कई किसानों के घर उजाड़ डाले हैं. बाबा यह चुपचाप सुनते रहे. थोड़ी देर बाद अपनी नाव में वह श्रीमान भी हमारी नाव के पास आ पहुंचे. बड़े उतावलेपन के साथ हमारी नाव में आ गये

# بہار کے دل کی گہرائی میں

**( لیکھک—سریش رامبھائی )**

14 ستمبر سن 1952 کو سنت ونوبا نے بہار پردیش میں بھودان - یگیہ کا منتر لیکر پرویش کیا اور آنے والی پہلی جنوری 1955 کو وہ بہار سے بدا ہوکر بنگال میں پرویش کرینگے ۔ بنگال میں 25 دن بتانے کے بعد اُڑیسہ کی بھومی پر قدم رکھیں گے ۔ اِس طرح بہار میں اُن کا پرباس دو سال اور ساڑھے تین مہینے کا ہو رہا ہے ۔ شاید ہی آدھونک اِتہاس میں کوئی ایسی مثال ملے جب کسی بھارت واسی نے بہار میں اِس طرح پیدل گھوم گھوم کر یگ دھرم کا سندیش سنایا ہو. ہمیں یاد آرہی ہے کہ بدھ بھگوان کی اور مہابیر سوامی کی جنھوں نے بہار میں دبیہ جیوت ساکشاتکار کیا تھا اور پھر اپنے دھرم کا پرچار کیا. اُن کے بعد جگت گرو شنکراچاریہ سدورکیرل سے آئے اور اَدویت گیان کا ڈنکا بجایا ۔ لیکن اُن کے بعد سے اب تک، خاص کر وگیان کی پرگتی کے اِس زمانے میں، اِس طرح نرنتر گھوم گھوم کر ستت پرچار کرنے کی دوسری مثال نہیں ملتی ۔ اِس کا بہار کے مانس پر عجیب غریب اثر پڑا ہے ۔ لوک مانس کے اندر بہت گہرائی تک وہ پہونچ گیا ہے ۔ کسی بھی آنکڑے سے اس کی پیمائش نہیں کی جاسکتی ۔ لیکن کچھ دلدار اور انوکھی گھٹنائیں پچھلے چھ مہینے میں ایسی ہوئی ہیں جس سے اس کا کچھ اندازہ کیا جاسکتا ہے ۔ ویسے سچ تو یہ ہے کہ اِس کا پورا پربھاؤ تو برسوں کے بعد ہی معلوم ہوگا ۔

اگست کا مہینہ تھا اور بابا دربھنگہ ضلع کے سمستی پور سب ڈیویزن کے باڑھ پیڑت چھیتر میں گھوم رہے تھے ۔ ایسے ایسے علاقوں میں جانا ہوا جہاں کوئی بھی سرکاری پداد ھیکاری یا سارو جنک کاریہ کرتا نہیں پہونچا تھا ۔ کوسی کی بھیانک باڑھ نے جو طوفان ڈھایا تھا اس کے مقابلے کی چیز پچھلے پچاس ساٹھ برس میں نہیں ہوئی تھی ۔ ہماری یاترا کبھی پیدل ہوتی تھی کبھی ناؤ میں ۔ اکثر تو پانی میں گھومنا پڑتا تھا ۔ ایک دن صبح کے سمے ناؤ میں بیٹھے ہوئے بابا ہتھوڑی نام کے مقام کو جا رہے تھے ۔ راستے میں ایک گاؤں پڑا ۔ وہاں کے ایک شریمان بھائی دان پتر دینا چاہتے تھے ۔ ہماری ناؤ میں ایک دوسرے بھائی بھی بیٹھے تھے ۔ انھوں نے بتایا کہ اِن زمیندار نے اپنے علاقے میں بہت زیادتی کی ہے ۔ کئی کسانوں کو بیدخل کیا ہے ۔ کئی کسانوں کے گھر اُجاڑ ڈالے ہیں ۔ بابا یہ چپ چاپ سنتے رہے ۔ تھوڑی دیر بعد اپنی ناؤ میں وہ شریمان بھی ہمارے ناؤ کے پاس آ پہونچے ۔ بڑے اُتاولےپن کے ساتھ ہماری ناؤ میں آئے

करता हुआ वहां से निकला. इस शोर शर को देखकर वह बहुत बिगड़ा और कहने लगा —

"अव्वल तो इस तरह का सारा काम बड़ी मूर्खता का है. किसी बुद्धिमान नीतिज्ञ ने कहा है कि जो देश हमेशा शोर व ग़ुल मचाते रहते हैं उनमें शान्ति नहीं रह सकती. यह या तो विदेशियों की बेजा मदाख़लत और शरारत है और या देश के अन्दर घरेलू जंग है और या कम से कम चाय के प्याले में तूफ़ान है. जो हो, बहुत ही बेवक़ूफ़ी की बात है !

"दूसरी बात यह है कि बहुत से लोगों के इस तरह एक साथ मिलकर काम करने की यह आदत बड़ी गन्दी आदत है ! मालूम होता है तुम्हारी सबकी गाड़ी पटरी से उतर गई है. सब शान्ति भंग हो गई है. शहर के सब लोग बाग़ी हो गए हैं. कोई ऐसा नहीं है जो सब की नुमाइन्दगी कर सके ! मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकता."

वह सांप ख़ुद अपने को एक अन्तर्राश्ट्रीय पुलिसवाला समझता था. राजनीति के अलावा वह समझता था कि धर्म और इंजील का प्रचार करना भी उसी का फ़र्ज़ है. वह फ़ौरन उस दरख़्त पर चढ़ गया. उसने तय कर लिया कि सबसे पहले इस छत्ते को तोड़ दिया जाय जो शहद की मक्खियां बना रही थीं.

पर एकदम वह सांप फिर पीछे को लौटा और गिरता पड़ता, फिसलता जमीन पर आ टपका. शहद की मक्खियां भी उसके पीछे पड़ी हुई थीं. सांप को मजबूर होकर जल्दी से एक घनी कांटेदार झाड़ी में घुस जाना पड़ा.

लोग आम तौर पर यह कहते हैं कि यह जमाना बेशक साम्राजवादी ज्यादतियों का जमाना है. पर यह वह जमाना भी है जब साम्राजवादियों को चारों तरफ़ उलटी क़लाबाज़ी खानी पड़ रही है.

---



کرتا ھوا وھاں سے نکلا . اِس شور و شر کو دیکھکر بہت بگڑا اور کہنے لگا —

"اَول تو اِس طرح کا سارا کام بڑی مورکھتا کا ھے . کسی بدھیمان نیتگیہ نے کہا ھے کہ جو دیش ھمیشہ شور و غل مچاتے رھتے ھیں اُن میں شانتی نہیں رہ سکتی . یہ یا تو ودیشیوں کی بیجا مداخلت اور شرارت ھے اور یا دیش کے اندر گھریلو جنگ ھے اور یا کم سے کم چائے کے پیالے میں طوفان ھے . جو ھو' بہت ھی بیوقوفی کی بات ھے !

"دوسری بات یہ ھے کہ بہت سے لوگوں کے اِس طرح ایک ساتھ ملکر کام کرنے کی یہ عادت بڑی گندی عادت ھے ! معلوم ھوتا ھے تمہاری سب کی گاڑی پٹری سے اُتر گئی ھے . سب شانتی بھنگ ھوگئی ھے . شہر کے سب لوگ باغی ھوگئے ھیں . کوئی ایسا نہیں ھے جو سب کی نمائندگی کرسکے ! میں اِسے برداشت نہیں کرسکتا ."

وہ سانپ خود اپنے کو انترراشٹریہ پولیس والا سمجھتا تھا . راج نیتی کے علاوہ وہ سمجھتا تھا کہ دھرم اور انجیل کا پرچار کرنا بھی اُسی کا فرض ھے . وہ فوراً اُس درخت پر چڑھ گیا . اُس نے طے کرلیا کہ سب سے پہلے اِس چھتے کو توڑ دیا جائے جو شہد کی مکھیاں بنا رھی تھیں .

پر ایکدم وہ سانپ پھر پیچھے کو لوٹا اور گرتا' پڑتا' پھسلتا زمین پر آٹپکا . شہد کی مکھیاں وھاں بھی اُس کے پیچھے پڑی ھوئی تھیں . سانپ کو مجبور ھوکر جلدی سے ایک گھنی کانٹےدار جھاڑی میں گھس جانا پڑا .

لوگ عام طور پر کہتے ھیں کہ یہ زمانہ بےروک سامراج وادی زیادتیوں کا زمانہ ھے . پر وہ یہ زمانہ بھی ھے جب سامراج وادیوں کو چاروں طرف اُلٹی قلابازی کھانی پڑ رھی ھے .

---

नेता को कोई निजी महत्त्वाकांक्षा नहीं रखनी चाहिये. वह अपने लिये कुछ न चाहे; न तो धन, न अधिकार, न पद, भोग, न उपभोग. और वह ईश्वर को दिन में चौबीस घंटे याद रखे.

—गांधी

نیتا کو کوئی نجی مہتواکانشا نہیں رکھنی چاھئے . وہ اپنے لئے کچھ نہ چاھے' نہ دھن' نہ ادھکار' نہ پد' نہ بھوگ' نہ اُپبھوگ . اور وہ ایشور کو دن میں چوبیس گھنٹے یاد رکھے .

—گاندھی

---

की सारी खुशी—उस लड़की की जो समन्दर को प्यार करती थी और जिसे समन्दर प्यार करता था—और किसी ने नहीं उसी समन्दर ने छीन ली. एक दिन अपने उस प्यारे मछियारे से भेंट होने के बाद जब वह खुश खुश खड़ी मुस्करा रही थी, वह नौजवान मछियारा अपनी डोंगी लेकर समन्दर में जा रहा था और लड़की उसे खड़ी देख रही थी, यकायक समन्दर की लहरों ने छलांग लगाई और देखते देखते समन्दर की एक लहर उस नौजवान मछियारे को निगल गई.

लड़की अब दुख में डूब गई. उसकी सारी खुशी मिट्टी हो गई. जिस समन्दर को देखकर उसे खुशी होती थी उसी को देखकर अब उसे दुख और रंज होने लगा. उसकी नजरों में समन्दर की वह सब चमक दमक और सुन्दरता अब फीकी पड़ गई. समन्दर उसे अब अनमना और दुखी दिखाई देने लगा.

इस पर भी अजीब बात यह थी कि अब भी वह रोज समन्दर को देखने जाती. अपने दुख के कारन उसने समन्दर को कोसा, समन्दर से उसे नफ़रत हुई, फिर भी वह समन्दर को छोड़ न सकी. सच यह है कि जो मुसीबत उस पर टूटी थी उसके कारन समन्दर उसे अब और भी प्यारा लगने लगा.

आख़िरकार एक दिन समन्दर की तरफ़ देखते देखते उसने कहा—"ऐ समन्दर! तुम कैसे देव की तरह हो! कितने विशाल हो! मैं तुम ही से क्यों न भिड़ूं! देखूं हममें कौन जीतता है!" यह कहकर वह एक डोंगी लेकर समन्दर में कूद पड़ी. यहां तक कि कुछ दिनों के अन्दर ही वह एक मज़बूत पक्के सांवले रंग की मछियारिन बन गई.

अब जब वह जवान लड़की वह सारे काम मेहनत के साथ करने लगी जो नौजवान मछियारा किया करता था और खारी, तूफ़ानी समन्दर के अन्दर प्रचन्ड लहरों पर सवारी कसने लगी तो उसे समन्दर के साथ वह अनोखा प्यार महसूस होने लगा जो पहले कभी नहीं हुआ था. उसे अब अपने उस प्यारे नौजवान मछियारे के लिये भी, जो उससे छिन चुका था, वह अनोखा प्यार महसूस होने लगा जो पहले कभी नहीं हुआ था.

( 5 )

## शहद की मक्खियां और सांप

जंगली शहद की मक्खियों का एक झुन्ड एक दरख़्त के ऊपर रहने के लिये अपना छत्ता बना रहा था. दरख़्त की शाख़ों में मक्खियां इधर से उधर उधर से इधर तेज़ी से आ जा रही थीं. काफ़ी शोर और जोश था. सब भिनभिना रही थीं. जंगल की शान्ति भंग हो रही थी. एक सांप जंगल का मुआइना



کی ساری خوشی—اُس لڑکی کی جو سمندر کو پیار کرتی تھی اور جسے سمندر پیار کرتا تھا—اور کسی نے نہیں اُسی سمندر نے چھین لی . ایک دن اپنے اُس پیارے مچھیارے سے بھینٹ ہونے کے بعد جب وہ خوش خوش مسکرا رہی تھی، وہ نوجوان مچھیارا اپنی ڈونگی لیکر سمندر میں جا رہا تھا اور لڑکی اُسے کھڑی دیکھ رہی تھی، یکایک سمندر کی لہروں نے چھلانگ لگائی اور دیکھتے دیکھتے سمندر کی ایک لہر اُس نوجوان مچھیارے کو نگل گئی .

لڑکی اب دکھ میں ڈوب گئی . اُس کی ساری خوشی مٹی ہوگئی . جس سمندر کو دیکھکر اُسے خوشی ہوتی تھی اُسی کو دیکھکر اب اُسے دکھ اور رنج ہونے لگا . اُس کی نظروں میں سمندر کی وہ سب چمک دمک اور سندرتا اب پھیکی پڑگئی . سمندر اسے اب اَن‌منا اور دکھی دکھائی دینے لگا .

اِس پر بھی عجیب بات یہ تھی کہ اب بھی وہ روز سمندر کو دیکھنے جاتی . اپنے دکھ کے کارن اُس نے سمندر کو کوسا، سمندر سے اُسے نفرت ہوئی پھر بھی وہ سمندر کو چھوڑ نہ سکی . سچ یہ ہے کہ جو مصیبت اُس پر ٹوٹی تھی اُس کے کارن سمندر اُسے اب اور بھی پیارا لگنے لگا .

آخرکار ایک دن سمندر کی طرف دیکھتے دیکھتے اُس نے کہا—"اے سمندر ! تم کیسے دیو کی طرح ہو ! کتنے وشال ہو ! میں تم ہی سے کیوں نہ بھڑوں ! دیکھوں ہم میں کون جیتتا ہے !" یہ کہکر وہ ایک ڈونگی لیکر سمندر میں کود پڑی، یہاں تک کہ کچھ دنوں کے اندر ہی وہ ایک مضبوط، پکے سانولے رنگ کی مچھیارن بن گئی .

اب جب وہ جوان لڑکی وہ سارے کام محنت کے ساتھ کرنے لگی جو نوجوان مچھیارا کیا کرتا تھا اور کھاری، طوفانی سمندر کے اندر پرچنڈ لہروں پر سواری کسنے لگی تو اُسے سمندر کے ساتھ وہ انوکھا پیار محسوس ہونے لگا جو پہلے کبھی نہیں ہوا تھا . اُسے اب اپنے اُس پیارے نوجوان مچھیارے کے لئے بھی، جو اُس سے چھن چکا تھا، وہ انوکھا پیار محسوس ہونے لگا جو پہلے کبھی نہیں ہوا تھا .

( 5 )

## شہد کی مکھیاں اور سانپ

جنگلی شہد کی مکھیوں کا ایک جھنڈ ایک درخت کے اوپر رہنے کے لئے اپنا چھتا بنا رہا تھا . درخت کی شاخوں میں مکھیاں اِدھر، سے اُدھر، اُدھر سے اِدھر تیزی سے آجا رہی تھیں . کافی شور اور جوش تھا . سب بھنبھنا رہی تھیں . جنگل کی شانتی بھنگ ہو رہی تھی . ایک سانپ جنگل کا معائنہ

वालों के नशे में पीले पीले समन्दर जैसे खेत भी इसी तरह के राग गाते सुनाई देते हैं. उस लड़की को इस गाने में बड़ा आनन्द आता था. उसे इसमें कोमलता, उदारता और विशालता तीनों दिखाई देती थीं. शाम के समन्दर के इस गाने को सुनकर उसकी सब चिन्ताएं काफ़ूर हो जाती थीं. जब आसमान साफ़, खुला और शान्ति होता तो समन्दर इतना सुन्दर लगता और इतना चमकता कि उसे देख उस लड़की को किसी सुन्दर प्यारे मुखड़े की ख़ुशी भरी मुसकराहट याद आजाती और वह स्वयं सुन्दर और ख़ुश दिखाई देने लगती. और जब तूफ़ान आते तो समन्दर के प्रचन्ड शोर से उसे ज़रा भी डर न लगता. उस समय भी वह उसी तरह किनारे पर खड़ी समन्दर के कोप में आनन्द लेती रहती. मालूम होता था कि समन्दरी तूफ़ानों का उसे उतना ही शौक़ था जितना बाज़ लड़कियों को तूफ़ानी प्रेम का होता है.

सारांश यह कि कोई भी समय हो और कैसा भी मौसम हो समन्दर को देखकर उस लड़की को सदा बड़ा आनन्द आता.

पर इसका एक और भी कारन था और वह कारन क़ुदरती था और ज़ाहिर था. सबसे अधिक समन्दर इस बात को समझता था कि लड़की के दिल में एक राज़ छिपा हुआ था. वह लड़की एक नौजवान मछियारे लड़के से प्यार करती थी. वह लड़का एक मज़बूत भुजाओं और चौड़ी छाती वाला नौजवान था जिसका चेहरा सांवला और जिसके होंट लाल रहते थे. उसके सारे बदन से समन्दर के खारी पानी और समन्दर की गड़गड़ाहट की सुगन्ध आती थी. वह एक पक्का समन्दरी मल्लाह था. वह लड़की उसे प्यार करती थी.

लड़का उसे रोज़ समन्दर के किनारे मिला करता था. वह दोनों समन्दर की ख़ूब बातें करते और समन्दर की तारीफ़ें करते, बिल्कुल इसी तरह मानो एक दूसरे के साथ अपने प्रेम की बातें कर रहे हैं और उसी प्रेम की तारीफ़ें कर रहे हैं. वह बिलकुल इस तरह जिस तरह कोई बड़े राज़ नियाज़ की बातें आपस में कर रहे हों. एक दूसरे से वे कहते—"देखो, देखो, समन्दर कैसा प्यारा लगता है, किस तरह मुस्करा रहा है, गा रहा है और क़लाबाज़ियां खा रहा है."

बात का निचोड़ यह कि वह दोनों समन्दर से भी प्यार करते थे और एक दूसरे को भी प्यार करते थे. लड़की भी ख़ूब ख़ुश थी, वह नौजवान मछियारा भी ख़ूब ख़ुश था, और समन्दर भी ख़ूब ख़ुश था.

पर न जाने क्या बात है जिसे देख कर हमें ख़ूब ख़ुशी होती है वही अकसर हमारी ख़ुशी का चोर साबित होता है. थोड़े ही दिनों के अन्दर इस भोली ईमानदार लड़की



بالوں کے نشے میں پیلے پیلے' سمندر جیسے کھیت بھی اسی طرح کے راگ گاتے سنائی دیتے ہیں. اُس لڑکی کو اِس گانے میں بڑا آنند آتا تھا. اُسے اِس میں کوملتا' اُدارتا اور وشالتا تینوں دکھائی دیتی تھیں. شام کے سمندر کے اِس گانے کو سنکر اُس کی سب چنتائیں کافور ہوجاتی تھیں. جب آسمان صاف' کھلا اور شانت ہوتا تو سمندر اتنا سندر لگتا اور اتنا چمکتا کہ اُسے دیکھ اُس لڑکی کو کسی سندر پیارے مکھڑے کی خوشی بھری مسکراہٹ یاد آجاتی اور وہ سویم سندر اور خوش دکھائی دینے لگتی. اور جب طوفان آتے تو سمندر کے پرچنڈ شور سے اُسے ذرا بھی ڈر نہ لگتا. اُس سمے بھی وہ اُسی طرح کنارے پر کھڑی سمندر کے کوپ میں آنند لیتی رہتی. معلوم ہوتا تھا کہ سمندری طوفانوں کا اُسے اتنا ہی شوق تھا جتنا بعض لڑکیوں کو طوفانی پریم کا ہوتا ہے.

سارانش یہ کہ کوئی بھی سمے ہو اور کیسا بھی موسم ہو سمندر کو دیکھکر اُس لڑکی کو سدا بڑا آنند آتا.

پر اِس کا ایک اور بھی کارن تھا اور وہ کارن قدرتی تھا اور ظاہر تھا. سب سے ادھک سمندر اِس بات کو سمجھتا تھا کہ لڑکی کے دل میں ایک راز چھپا ہوا تھا. وہ لڑکی ایک نوجوان مچھیارے لڑکے سے پیار کرتی تھی. وہ لڑکا ایک مضبوط بھجاؤں اور چوڑی چھاتی والا نوجوان تھا جس کا چہرہ سانولا اور جس کے ہونٹ لال رہتے تھے. اُس کے سارے بدن سے سمندر کے کھاری پانی اور سمندر کی گڑگڑاہٹ کی سگندھ آتی تھی. وہ ایک پکا سمندری ملاح تھا. وہ لڑکی اُسے پیار کرتی تھی.

لڑکا اُسے روز سمندر کے کنارے ملا کرتا تھا. وہ دونوں سمندر کی تعریفیں کرتے' بالکل اِسی طرح مانو ایک دوسرے کے ساتھ اپنے پریم کی باتیں کر رہے ہیں اور اُسی پریم کی تعریفیں کررہے ہیں. وہ بالکل اِس طرح جس طرح کوئی بڑے راز نیاز کی باتیں آپس میں کر رہے ہوں. وے ایک دوسرے سے کہتے:—"دیکھو دیکھو' سمندر کیسا پیارا لگتا ہے' کس طرح مسکرا رہا ہے' گا رہا ہے اور قلابازیاں کھا رہا ہے!"

بات کا نچوڑ یہ کہ وہ دونوں سمندر سے بھی پیار کرتے تھے اور ایک دوسرے کو بھی پیار کرتے تھے. لڑکی بھی خوب خوش تھی' وہ نوجوان مچھیارا بھی خوب خوش تھا' اور سمندر بھی خوب خوش تھا.

پر نہ جانے کیا بات ہے کہ جسے دیکھکر ہمیں خوب خوشی ہوتی ہے وہی اکثر ہماری خوشی کا چور ثابت ہوتا ہے. تھوڑے دنوں کے اندر اِس بھولی ایماندار لڑکی

लगी—"मेरा बदन सचमुच थक गया है. अब मैं आराम करूंगी." पर देर तक आराम करने के बाद भी उसमें फिर से ताक़त न आई. वह अब अपने को निढाल महसूस करने लगी. उसका बेटा मज़बूत और जवान उक़ाब था. वह दूर से उड़ कर आया. मां का यह हाल देखकर नीचे उतरा, और मां की देख भाल और रक्षा के लिये उसके पास रहने लगा. अब वह मां को छोड़ कर कहीं न जाता. अजीब बात यह हुई कि बेटे को अपने पास देख कर मां और भी कमज़ोरी महसूस करने लगी. उसने अपने बेटे से कहा—"बेटा! यह ढंग ठीक नहीं, तुम जितने प्रेम से मेरी देख भाल में लगे रहते हो उससे मुझे और भी अधिक कमज़ोरी और थकान मालूम होती है. अब बेटा, दूसरा ढंग आज़मा कर देखो. तुम आसमान में उड़ो और ख़ूब ऊंचे मंडलाओ. मैं तुम्हें मंडलाते देखूं तो मेरी हिम्मत खुले."

इस पर उसका बेटा, वह जवान उक़ाब, ख़ूब ऊंचे जा कर आज़ादी और बहादुरी के साथ आसमान में मंडलाने लगा. मां कुछ देर तक शौक़ के साथ उसे देखती रही. फिर किसी न किसी तरह वह उठ खड़ी हुई और ख़ुद उड़ने लगी, और उतने ही ज़ोर से उड़ने लगी जितने ज़ोर से उसका बेटा उड़ रहा था.

अगर कोई बूढ़ा आदमी चलना फिरना भूल गया हो तो सब से आसान तरीक़ा यह है कि नौजवानों को चलते फिरते देखे. फिर उस बूढ़े के दोनों पैर अपने आप चलने लगेंगे. इसी तरह जवानों की बहादुरी के क़िस्से सुनना भी बूढ़े लोगों की तन्दुरुस्ती के लिये बहुत अच्छा होता है. नौजवान आपके आस पास हों तो बुढ़ापे से क्या डर? बुढ़ापे से डर तो तबही है जब आप नौजवानों से बचते हों, उन्हें नापसन्द करते हों और उन्हें अपने से दूर रखते हों.

( 4 )

## एक मछियारिन लड़की और समन्दर

एक जवान मछियारिन लड़की समन्दर के किनारे रहती थी. वह समन्दर को बहुत प्यार करती थी. रोज़ समन्दर के किनारे खड़ी होकर देर तक समन्दर को देखती रहती. कभी बहुत सवेरे समन्दर में उथल पुथल शुरू होने से पहले वह किनारे पर खड़ी दिखाई देती. उसके सामने सूरज की शुरू की किरनों में हंसते हंसते समन्दर अपनी आंखें खोलता. लड़की को समन्दर की यह हंसी बहुत प्यारी लगती. उसे बिलकुल ऐसा लगता कि कोई हाल में पैदा हुआ फूल सा सुन्दर बच्चा पालने में अपनी आंखें खोल रहा है. कभी शाम को समन्दर अपनी छोटी छोटी चमकती हुई सुनहरी लहरों के नशे में इस तरह गुनगुनाता सुनाई देता जिस तरह अकसर लोग नशे की हालत में गुनगुनाते हैं. बड़े बड़े खेतों की फ़सल जब बिलकुल पक जाती है तो अपनी सुनहरी



لگی. "میرا بدن سچ مچ تھک گیا ھے . اب میں آرام کرونگی ."
پر دیر تک آرام کرنے کے بعد بھی اُس میں پھر سے طاقت نہ آئی.
وہ اب اپنے کو نڈھال محسوس کرنے لگی . اُس کا بیٹا مضبوط
اور جوان عقاب تھا . وہ دور سے اُڑ کر آیا . ماں کا یہ حال
دیکھکر نیچے اُترا، اور ماں کی دیکھ بھال اور رکشا کے لئے اُس کے
پاس رھنے لگا . اب وہ ماں کو چھوڑکر کہیں نہ جاتا . عجیب
بات یہ ھوئی کہ بیٹے کو اپنے پاس دیکھکر ماں اور بھی کمزوری
محسوس کرنے لگی . اُس نے اپنے بیٹے سے کہا—"بیٹا ! یہ
ڈھنگ ٹھیک نہیں، تم جتنے پریم سے میری دیکھ بھال میں لگے
رھتے ھو اُس سے مجھے اور بھی اَدھک کمزوری اور تھکان معلوم
ھوتی ھے . اب بیٹا، دوسرا ڈھنگ آزماکر دیکھو . تم آسمان میں
اُڑو اور خوب اُونچے منڈلاؤ . میں تمہیں منڈلاتے دیکھوں تو
میری ھمت کھلے ."

اِس پر اُس کا بیٹا، وہ جوان عقاب، خوب اُونچے آزادی اور
بہادری کے ساتھ آسمان میں منڈلانے لگا . ماں کچھ دیر تک
شوق کے ساتھ اُسے دیکھتی رھی . پھر کسی نہ کسی طرح وہ اُٹھ
کھڑی ھوئی اور خود اُڑنے لگی، اور اُتنے ھی زور سے اڑنے لگی جتنے
زور سے اُس کا بیٹا اُڑ رھا تھا .

اگر کوئی بوڑھا آدمی چلنا پھرنا بھول گیا ھو تو سب سے
آسان طریقہ یہ ھے کہ نوجوانوں کو چلتے پھرتے دیکھے. پھر اُس بوڑھے
کے دونوں پیر اپنے آپ چلنے لگیں گے . اِسی طرح جوانوں کی
بہادری کے قصے سننا بھی بوڑھے لوگوں کی تندرستی کے لئے بہت
اچھا ھوتا ھے . نوجوان آپ کے آس پاس ھوں تو بڑھاپے سے کیا
ڈر؟ بڑھاپے سے ڈر تو تب ھی ھے جب آپ نوجوانوں سے
بچتے ھوں، اُنھیں ناپسند کرتے ھوں اور اُنھیں اپنے سے دور
رکھتے ھوں .

( 4 )

## ایک مچھیارن لڑکی اور سمندر

ایک جوان مچھیارن لڑکی سمندر کے کنارے رھتی تھی . وہ
سمندر کو بہت پیار کرتی تھی . روز سمندر کے کنارے کھڑی ھوکر
دیر تک سمندر کو دیکھتی رھتی. کبھی بہت سویرے سمندر میں
اُتھل پتھل شروع ھونے سے پہلے وہ کنارے پر کھڑی دکھائی دیتی .
اُس کے سامنے سورج کی شروع کی کرنوں میں ھنستے ھنستے
سمندر اپنی آنکھیں کھولتا . لڑکی کو سمندر کی یہ ھنسی بہت
پیاری لگتی . اُسے بالکل ایسا لگتا کہ کوئی حال میں پیدا ھوا
پھول سا سندر بچہ پالنے میں اپنی آنکھیں کھول رھا ھے . کبھی
شام کو سمندر اپنی چھوٹی چھوٹی چمکتی ھوئی سنہری لہروں
کے نشے میں اِس طرح گن گناتا سنائی دیتا جس طرح
اکثر لوگ نشے کی حالت میں گن گناتے ھیں . بڑے بڑے
کھیتوں کی فصل جب بالکل پک جاتی ھے تو اپنی سنہری

बड़ी बहादुरी के साथ उसने एक खम्बे को अपने ऊपर संभाले रखा जिससे उसके बहुत से साथियों की जान बच गई, पर वह खुद वहीं दब कर मर गया.

बूढ़े बाप का दुख अब बहुत ही बढ़ गया. एक रात भर के अन्दर वह हद से ज्यादा कमजोर और निढाल दिखाई देने लगा. पर अभी उसके एक बेटा और था. इसी से उसे कुछ तसल्ली थी. बूढ़े बाप के विचार अब कुछ बदले. उसने पक्का इरादा कर लिया कि—"अब मैं अपने इस सबसे छोटे बेटे को इस तरह बहादुर और निडर न बनने दूंगा. अब इस आखरी बेटे को खो बैठने का रंज मेरी बरदाश्त से बाहर की चीज़ है."

उसने ठंडी सांस भरकर कहा—"मेरा यह बेटा कायर और निकम्मा रह जाय तो अच्छा, बजाय इसके कि उसकी बहादुरी और उसके 'गुनों के कारन मैं उस से भी हाथ धो बैठूं."

इसलिये बुड्ढे ने उस आखरी बेटे को अपने साथ रखकर खुद तालीम देना शुरू किया. उसने उसे इस तरह रखा जिस तरह शायद कोई बूढ़ी औरत अपनी छोटीसी पोती को भी न रखती हो. वह लड़का सचमुच बाप का आज्ञाकारी निकला. जैसा बाप चाहता था वैसा ही वह हो गया—डरपोक, स्वार्थी और निकम्मा. पर एक अजीब बात यह हुई कि अब थोड़े ही दिनों बाद उस बुड्ढे बाप को इतना दुख हुआ और इतनी ग्लानि होने लगी जितनी उसे जीवन में पहले कभी नहीं हुई थी. अपनी ग़लती पर वह बार बार पछताता था. अपने उस बेटे से उसे नफ़रत होने लगी और उसे उस पर दया आने लगी. बूढ़े ने कहा.

"इस निकम्मेपन से, इस सड़ियलपन से मुझे हमेशा चिढ़ रही है. पर अब स्वार्थ और मोह के वश में आकर मैंने खुद इस तीसरे बेटे का यह हाल कर डाला! उसके जीने से क्या फ़ायदा, जिसे न समन्दर डुबो सके न पहाड़ कुचल सके?"

अब बूढ़े बाप के लिये सचमुच अपने उस बेटे से प्यार करना नामुमकिन हो गया, क्योंकि उसका प्यार केवल जबरदस्त लहरों वाले समन्दर, या ऊंचे अडिग पहाड़ और अपने दोनों बड़े बेटों जैसे साहसी आदमियों की तरफ़ ही जा सकता था. बूढ़े बाप के दिल में अब रंज और ग्लानि की कोई सीमा न रही. यह उसे आखरी दिनों के अपने ग़लत विचारों और अपने हाथों अपने सब से छोटे बेटे को बिगाड़ देने की सजा थी.

( 3 )

## एक बूढ़ी चिड़िया और उसका बेटा

एक जवान उक़ाब पक्षी और उसकी मां एक साथ रहते थे. मां बहुत बूढ़ी हो गई थी. एक दिन कुछ देर तक उड़ने के बाद वह पहाड़ की एक कगर पर बैठ गई और कहने



بڑی بہادری کے ساتھ اس نے ایک کھمبے کو اپنے اوپر سنبھالے رکھا جس سے اُس کے بہت سے ساتھیوں کی جان بچ گئی . پر وہ خود وہیں دب کر مر گیا .

بوڑھے باپ کا دکھ اب بہت ھی بڑھ گیا . ایک رات بھر کے اندر وہ حد سے زیادہ کمزور اور نڈھال دکھائی دینے لگا . پر بھی اُس کے ایک بیٹا اور تھا . اِسی سے اُسے کچھ تسلی تھی . بوڑھے باپ کے وچار اب کچھ بدلے . اُس نے پکا اِرادہ کر لیا کہ " اب میں اپنے اِس سب سے چھوٹے بیٹے کو اِس طرح بہادر اور نڈر نہ بننے دوں گا . اب اِس آخری بیٹے کو کھو بیٹھنے کا رنج میری برداشت سے باہر کی چیز ھے ."

اُس نے ٹھنڈی سانس بھر کر کہا—" میرا یہ بیٹا کائر اور نکما رہ جائے تو اچھا' بجائے اِس کے کہ اُس کی بہادری اور اُس کے گنوں کے کارن میں اُس سے بھی ھاتھ دھو بیٹھوں ."

اِس لئے بڈھے نے اُس آخری بیٹے کو اپنے ساتھ رکھ کر خود تعلیم دینا شروع کیا . اُس نے اُسے اِس طرح رکھا جس طرح شاید کوئی بوڑھی عورت اپنی چھوٹی سی پوتی کو بھی نہ رکھتی ھو . وہ لڑکا سچ مچ 'باپ کا آگیاں کاری نکلا . جیسا باپ چاھتا تھا ویسا ھی وہ ھوگیا—'ڈرپوک' سوارتھی اور نکما . پر ایک عجیب بات یہ ھوئی کہ اب تھوڑے ھی دنوں بعد اُس بڈھے باپ کو اتنا دکھ ھوا اور اتنی گلانی ھونے لگی جتنی اُسے جیون میں پہلے کبھی نہیں ھوئی تھی . اپنی غلطی پر وہ بار بار پچھتاتا تھا . اپنے اُس بیٹے سے اُسے اب نفرت ھونے لگی اور اُسے اُس پر دیا آنے لگی . بوڑھے نے کہا :—

" اِس نکمے پن سے' اِس سڑیل پن سے مجھے ھمیشہ چڑھ رھی ھے . پر اب سوارتھ اور موہ کے بس میں آ کر میں نے خود اِس تیسرے بیٹے کا یہ حال کر ڈالا ! اُس کے جینے سے کیا فائدہ' جسے نہ سمندر ڈبو سکے اور نہ پہاڑ کچل سکے ؟"

اب بوڑھے باپ کے لئے سچ مچ اپنے اُس بیٹے سے پیار کرنا ناممکن ھوگیا کیونکہ اُس کا پیار کیول زبردست لہروں والے سمندر یا اُونچے اڈگ پہاڑ اور اپنے دونوں بڑے بیٹوں جیسے ساھسی آدمیوں کی طرف ھی جاسکتا تھا . بوڑھے باپ کے دل میں اب رنج اور گلانی کی کوئی سیما نہ رھی . یہ اُسے آخری دنوں کے اپنے غلط وچاروں اور اپنے ھاتھوں اپنے سب سے چھوٹے بیٹے کو بگاڑ دینے کی سزا تھی .

( 3 )

## ایک بوڑھی چڑیا اور اُس کا بیٹا

ایک جوان عقاب پکشی اور اُس کی ماں ایک ساتھ رھتے تھے . ماں بہت بوڑھی ھوگئی تھی . ایک دن کچھ دیر تک اُڑنے کے بعد وہ پہاڑ کی ایک کگر پر بیٹھ گئی اور کہنے

कि दरख़्त जल्दी ही ख़तम हो जायगा. पर जब उसने दरख़्त की तरफ़ देखा तो दरख़्त वैसा का वैसा ही खड़ा था. सांप को क्रोध आया. उसने और अधिक ज़ोर के साथ दरख़्त को कसना शुरू किया. फिर जब उसने दरख़्त को देखा तो दरख़्त फिर वैसा का वैसा ही खड़ा था.

सांप को अब इतना अधिक क्रोध आया कि दरख़्त को श्राप देते हुए उसने कहा—"तुम समझते हो कि तुम्हारे इस तरह खड़े रहने से और यह समझने से कि आख़िर मैं थक जाऊंगा तुम्हें कोई लाभ होगा ?"

सांप ने तय कर लिया कि अपनी चाल में डटे रहकर दरख़्त को घोटकर मार ही देना है चाहे कितनी भी देर क्यों न लगे. उसने दरख़्त को और कसा और पल भर के लिये भी कहीं ढील आने नहीं दी. अब उसे बहुत अधिक देर तक इन्तजार करना न पड़ा. या तो शायद आख़िरकार सांप ही ने थक कर यह तय कर लिया कि जो थोड़ी सी शक्ति मुझ में बाक़ी रह गई है उसे अब अपनी ही रीढ़ की हड्डी तोड़ने में ख़र्च कर डालूं, और या शायद दरख़्त का तना यकायक और मोटा हो गया और उसने सांप के टुकड़े कर दिये. जो भी हुआ हो, थोड़ी ही देर में वह सांप एक सड़ी हुई रस्सी की तरह टुकड़े टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर पड़ा.

( 2 )

## बूढ़ा आदमी और उसके तीन बेटे

एक बूढ़े आदमी के तीन बेटे थे. सबसे बड़ा बेटा बहुत अच्छा मल्लाह था, हिम्मती, बहादुर, इरादेका पक्का और जो फ़र्ज़ सामने हो उसे पूरा करने के लिए जोखम की परवाह न करने वाला. बाप उसे बहुत प्यार करता था. वह अपने उस बेटे पर फूला नहीं समाता था. उसे अपने घर की आन समझता था. पर एक दिन तूफ़ान आया और समुन्दर की तुन्द लहरें उस निडर बहादुर बेटे को निगल गईं.

दूसरा बेटा एक कोयले की खान में काम करता था. वह अथक और मेहनती था. अपने साथियों से वह कहीं ज्यादा मज़बूत और हिम्मती था. वह ईमानदार और सच्चा था. अपने साथियों या मित्रों की मदद करने में उसे हमेशा आनन्द आता था. इसीलिये खान के सब मंज़दूर और ख़ासकर नौजवान उसे बहुत चाहते थे और उसकी मित्रता की बड़ी क़द्र करते थे. बाप भी उसे बहुत प्यार करता था. सबसे बड़े बेटे के मरने के बाद से इस दूसरे बेटे की तरफ़ बाप का प्यार और बढ़ गया था. बाप के मन को उसे देखकर बड़ी शान्ति मिलती थी. उसे वह अब अपने लिये भगवान की सबसे बड़ी देन समझता था. पर थोड़े ही दिनों में अपनी बहादुरी और अपने सेवा भाव के कारन ही यह दूसरा बेटा भी चल बसा. उस दिन वह खान में काम कर रहा था कि एक खम्बा गिर गया और खान की ज़मीन नीचे को धसने लगी.



کہ درخت جلدی ہی ختم ہو جائے گا . پر جب اُس نے درخت کی طرف دیکھا تو درخت ویسا کا ویسا ہی کھڑا تھا . سانپ کو کرودھ آیا . اُس نے اور ادھک زور کے ساتھ درخت کو کسنا شروع کیا . پھر جب اُس نے درخت کو دیکھا تو درخت پھر ویسا کا ویسا ہی کھڑا تھا .

سانپ کو اب اتنا ادھک کرودھ آیا کہ درخت کو شراپ دیتے ہوئے اُس نے کہا—" تم سمجھتے ہو کہ تمہارے اِس طرح کھڑے رہنے سے اور یہ سمجھنے سے کہ آخر میں تھک جاؤں گا تمہیں کوئی لابھ ہوگا ؟ "

سانپ نے طے کر لیا کہ اپنی چال میں ڈٹے رہ کر درخت کو گھوٹ کر مار ہی دینا ہے چاہے کتنی بھی دیر کیوں نہ لگے . اُس نے درخت کو اور کسا اور پل بھر کے لئے بھی کہیں ڈھیل آنے نہیں دی . اب اُسے بہت ادھک دیر تک انتظار کرنا نہ پڑا . یا تو شاید آخرکار سانپ ہی نے تھک کر یہ طے کر لیا کہ جو تھوڑی سی شکتی مجھ میں باقی رہ گئی ہے اُسے اب اپنی ہی ریڑھ کی ہڈی توڑنے میں خرچ کر ڈالوں' اور یا شاید درخت کا تنا یکایک اور موٹا ہوگیا اور اُس نے سانپ کے ٹکڑے کر دیئے . جو بھی ہوا ہو' تھوڑی ہی دیر میں وہ سانپ ایک سڑی ہوئی رسی کی طرح ٹکڑے ٹکڑے ہو کر زمین پر گر پڑا .

( 2 )

## بوڑھا آدمی اور اُسی کے تین بیٹے

ایک بوڑھے آدمی کے تین بیٹے تھے. سب سے بڑا بیٹا بہت اچھا ملاح تھا' ہمتی' بہادر' ارادے کا پکا اور جو فرض سامنے ہو اُسے پورا کرنے کے لئے جوکھم کی پرواہ نہ کرنے والا . باپ اُسے بہت پیار کرتا تھا . وہ اپنے اُس بیٹے پر پھولا نہیں سماتا تھا . اُسے اپنے گھر کی آن سمجھتا تھا . پر ایک دن طوفان آیا اور سمندر کی تند لہریں اُس نڈر بہادر بیٹے کو نگل گئیں .

دوسرا بیٹا ایک کوئلے کی کھان میں کام کرتا تھا . وہ اتھک اور محنتی تھا . اپنے ساتھیوں سے وہ کہیں زیادہ مضبوط اور ہمتی تھا . اپنے ساتھیوں یا متروں کی مدد کرنے میں اُسے ہمیشہ آنند آتا تھا . اِسی لئے کھان کے سب مزدور اور خاص کر نوجوان اُسے بہت چاہتے تھے اور اُس کی مترتا کی بڑی قدر کرتے تھے . باپ بھی اُسے بہت پیار کرتا تھا . سب سے بڑے بیٹے کے مرنے کے بعد سے اِس دوسرے بیٹے کی طرف باپ کا پیار اور بڑھ گیا تھا . باپ کے من کو اُسے دیکھ کر بڑی شانتی ملتی تھی . اُسے وہ اب اپنے لئے بھگوان کی سب سے بڑی دین سمجھتا تھا . پر تھوڑے ہی دنوں میں اپنی بہادری اور اپنے سیوا بھاؤ کے کارن ہی یہ دوسرا بیٹا بھی چل بسا. اُس دن وہ کھان میں کام کر رہا تھا کہ ایک کھمبا گر گیا اور کھان کی زمین نیچے کو دھسنے لگی.

और कहानियां लिखीं. सन 1953 में वह 'वेन यी पाओ' (Wen Yi Pao) नाम की पत्रिका का एडीटर था. 'वेन' का अर्थ है साहित्य, 'यी' का अर्थ है कला और 'पाओ' का अर्थ है पत्रिका या गजट. फ़ेंग की कविताएं, कहानियां, ड्रामे, निबन्ध, संस्मरन और टीकाएं चीन में काफ़ी प्रसिद्ध हैं.

यहां जो पांच कहानियां हम दे रहे हैं उनमें पहली "सांप की दरख़्त को घोटकर मार डालने की कोशिश" सब से हाल की लिखी हुई है. अमरीका और कुछ साम्राज प्रेमी ताक़तों की तरफ़ से लाल चीन का जो ब्लाकेड यानी तिजारती वहिश्कार जारी है, यह कहानी उस ब्लाकेड पर लिखी गई है. "बुड्ढा आदमी और उसके तीन बेटे" और "एक बूढ़ी चिड़िया और उसका बेटा" दोनों कहानियां चीनी जनता में दम फूंकने वाली और उन्हें जीवन के नए आदर्शों की तरफ़ ले जाने वाली कहानियां हैं. "एक बूढ़ी चिड़िया और उसका बेटा" नाम की कहानी में ख़ास कर बूढ़े लोगों को कर्मठ जीवन की तरफ़ लाने की कोशिश की गई है, तो "एक मछियारिन लड़की और समन्दर" में नौजवानों को जीवन का आदर्श बताया गया है. इस छोटी सी कहानी में नौजवानों के दिलों की क़ुदरती उमंगों के साथ साथ प्रकृति के प्रेम और जीवन की कर्मठता का ख़ासा सुन्दर बयान है. "शहद की मक्खियां और सांप" भी आज की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से सम्बन्ध रखती है. इन छोटी छोटी कहानियों से नए चीन की जनता की उमंगों और उनके आत्म विश्वास पर ख़ासी रोशनी पड़ती है. इन कहानियों का अनुवाद चीनी से अंग्रेज़ी में और अंग्रेज़ी से हिन्दुस्तानी में किया गया है.]

❀ ❀ ❀

( 1 )

## सांप की दरख़्त को घोटकर मार डालने की कोशिश

एक सांप एक दरख़्त को मार डालना चाहता था. ख़ूब सोचकर उसने एक नई और ज़बरदस्त चाल निकाल ली. सांप बड़ा विद्वान था. उसकी विद्या इस मामले में उसके बड़े काम आई. उसने देख रखा था कि बहुत से दरख़्तों पर जब बेलें लिपट जाती हैं तो दरख़्त निकम्मा होकर मर जाता है.

सांप ने सोचा—"उन बेलों से मैं कहीं अधिक मोटा और मज़बूत हूं. इसलिये अगर मैं इस दरख़्त पर चारों तरफ़ से लिपट कर उसे ख़ूब कस लूं तो यह दरख़्त एकदम घुट कर नहीं मरेगा तो कम से कम धीरे धीरे सूख कर तो मर ही जायगा."

यह सोचकर वह सांप उस दरख़्त पर चढ़ा. दरख़्त के तने पर चारों तरफ़ से लिपट कर उसने उसे ज़ोरों से कस लिया. वह उसे और ज्यादा से ज्यादा कसता गया, इस उम्मीद में



اور کہانیاں لکھیں. سن 1953 میں وہ 'وین یی پاؤ' (Wen Yi Pao) نام کی پتریکا کا اڈیٹر تھا. 'وین' کا ارتھ ھے ساھتیہ' 'یی' کا ارتھ ھے کلا اور 'پاؤ' کا ارتھ ھے پتریکا یا گزٹ. فینگ کی کویتائیں' کہانیاں' ڈرامے' نبندھ' سنسمرن اور ٹیکائیں چین میں کافی پرسدھ ھیں.

یہاں جو پانچ کہانیاں ھم دے رھے ھیں اُن میں پہلی "سانپ کی درخت کو گھوٹ کر مار ڈالنے کی کوشش" سب سے حال کی لکھی ھوئی ھے. امریکہ اور کچھ سامراج پریمی طاقتوں کی طرف سے نئے چین کا جو بلاکیڈ یعنی تجارتی وہشکار جاری ھے' یہ کہانی اُس بلاکیڈ پر لکھی گئی ھے. "بڈھا آدمی اور اُس کے تین بیٹے" اور "ایک بوڑھی چڑیا اور اُس کا بیٹا" دونوں کہانیاں چینی جنتا میں دم پھونکنے والی اور اُنھیں جیون کے نئے آدرشوں کی طرف لے جانے والی کہانیاں ھیں. "ایک بوڑھی چڑیا اور اُس کا بیٹا" نام کی کہانی میں خاص کر بوڑھے لوگوں کو کرمٹھ جیون کی طرف لانے کی کوشش کی گئی ھے' تو "ایک مچھیارن لڑکی اور سمندر" میں نوجوانوں کو جیون کا آدرش بتایا گیا ھے. اِس چھوٹی سی کہانی میں نوجوانوں کے دلوں کی قدرتی اُمنگوں کے ساتھ ساتھ پرکرتی کے پریم اور جیون کی کرمٹھتا کا خاصہ سندر بیان ھے. "شہد کی مکھیاں اور سانپ" بھی آج کی انتر راشٹریہ راج نیتی سے سمبندھ رکھتی ھے. اِن چھوٹی چھوٹی کہانیوں سے نئے چین کی جنتا کی اُمنگوں اور ان کے آتم وشواس پر خاص روشنی پڑتی ھے. اِن کہانیوں کا انوواد چینی سے انگریزی میں اور انگریزی سے ھندستانی میں کیا گیا ھے.]

❀ ❀ ❀

( 1 )

## سانپ کی درخت کو گھوٹ کر مار ڈالنے کی کوشش

ایک سانپ ایک درخت کو مار ڈالنا چاھتا تھا. خوب سوچ کر اُس نے ایک نئی اور زبردست چال نکال لی. سانپ بڑا ودوان تھا. اُس کی ودیا اِس معاملے میں اُس کے بڑے کام آئی. اُس نے دیکھ رکھا تھا کہ بہت سے درختوں پر جب بیلیں لپٹ جاتی ھیں تو درخت نکما ھو کر مر جاتا ھے.

سانپ نے سوچا—"اُن بیلوں سے میں کہیں ادھک موٹا اور مضبوط ھوں. اِس لئے اگر میں اِس درخت پر چاروں طرف سے لپٹ کر اُسے خوب کس لوں تو یہ درخت ایک دم گھٹ کر نہیں مرے گا تو کم سے کم دھیرے دھیرے سوکھ کر تو مر ھی جائے گا."

یہ سوچ کر وہ سانپ اُس درخت پر چڑھا. درخت کے تنے پر چاروں طرف سے لپٹ کر اُس نے اُسے زوروں سے کس لیا. وہ اُسے اور زیادہ سے زیادہ کستا گیا' اِس اُمید میں

# कुछ चीनी छोटी कहानियां

(लेखक — फ़ेङ्ग शुए-फ़ेङ्ग; अनुवादक — सुन्दरलाल)

[छोटी छोटी कहानियों के जरिये लोगों को शिक्षा देने का ढंग बहुत पुराना ढंग है. हज़ारों बरस से इस तरह की सैकड़ों ही सुन्दर कहानियां एशिया के सब देशों में चली आ रही हैं. चीन में भी यह रिवाज बहुत पुराना रिवाज है. नए चीन की तामीर करने वालों ने इस से पूरा पूरा फ़ायदा उठाया. यहां हम नए चीन के एक चोटी के साहित्यकार फ़ेंग शुए-फ़ेंग की इस तरह की पांच कहानियां दे रहे हैं.

फ़ेंग शुए-फ़ेंग सन 1903 में चेकिआंग सूबे के यीवू इलाक़े के एक गांव में पैदा हुआ था. वह अनपढ़ किसान मां बाप का लड़का था. दस बरस की उम्र से सोलह बरस की उम्र तक वह गांव के स्कूल में पढ़ता रहा और खाली समय में अपने मां बाप के साथ खेत में काम करता रहा. इसके बाद वह एक टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल में पढ़ने लगा. विद्यार्थियों के एक आन्दोलन में भाग लेने के कारन वह ट्रेनिंग स्कूल से निकाल दिया गया. थोड़े दिनों बाद वह फिर हांगचाओ के एक नारमल स्कूल में भरती हो गया.

कुछ दिनों वह प्राइमरी स्कूल में पढ़ाता रहा. पर अधिकतर अपने आज़ाद क्रान्तिकारी विचारों के कारन उसे बेकारी में दिन बिताने पड़े. वह जगह जगह घूमता रहा. उसका गुज़ारा कुछ मित्रों की सहायता से चलता था. लगभग बीस बरस की उम्र में उसने कुछ कविताएं लिखीं. सन 19[illegible] में वह पीकिंग आ गया और प्राइवेट बच्चे पढ़ा कर अपना काम चलाता रहा. यहां उसने जापानी भाषा सीखी और सावियत कला और साहित्य पर कुछ पुस्तकों का जापानी से चीनी में अनुवाद किया.

अब उसका ध्यान कम्युनिस्ट साहित्य की तरफ़ जाने लगा. लू शून जैसे चीन के बड़े से बड़े लेखकों के साथ मिल कर उसने कई साहित्य संस्थाओं के क़ायम करने में हिस्सा लिया. धीरे धीरे वह पूरी तरह देश की आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ा और 'लाल सेना' के इतिहास प्रसिद्ध 'लम्बे कूच' ( लांग मार्च ) में उस सेना के साथ था. जब वह फिर उस इलाक़े में आया जो अभी कुओमिनतांग पार्टी के अधीन था तो सन 1941 में पकड़ कर जेल में डाल दिया गया. जेल में भी उसने कई कविताएं लिखीं हैं जिन में उसने कुओमिनतांग के शासकों के अत्याचारों और उनके विदेशियों के हाथों में खेलने की तरफ़ अपने देश वासियों का ध्यान दिलाया. सन 1943 में वह जेल से छूटा. इसके बाद उसने जनता में अपने विचार फैलाने के लिये बहुत से निबन्ध

# کچھ چینی چھوٹی کہانیاں

(لیکھک — فینگ شوئے فینگ' انوواد‌ک — سندرلال)

[چھوٹی چھوٹی کہانیوں کے ذریعہ لوگوں کو شکشا دینے کا ڈھنگ بہت پرانا ڈھنگ ہے۔ ہزاروں برس سے اس طرح کی سیکڑوں ہی سندر کہانیاں ایشیا کے سب دیشوں میں چلی آ رہی ہیں۔ چین میں بھی یہ رواج بہت پرانا رواج ہے۔ نئے چین کی تعمیر کرنے والوں نے اِس سے پورا پورا فائدہ اُٹھایا ہے۔ یہاں ہم نئے چین کے ایک چوٹی کے ساہتیہ کار فینگ شوئے - فینگ کی اِس طرح کی پانچ کہانیاں دے رہے ہیں۔

فینگ شوئے فینگ سن 1903 میں چیکیانگ صوبے کے یی‌وو علاقے کے ایک گاؤں میں پیدا ہوا تھا۔ وہ اَن‌پڑھ کسان ماں باپ کا لڑکا تھا۔ دس برس کی عمر سے سولہ برس کی عمر تک وہ گاؤں کے اِسکول میں پڑھتا رہا اور خالی سمے میں اپنے ماں باپ کے ساتھ کھیت میں کام کرتا رہا۔ اِس کے بعد وہ ایک ٹیچرس ٹریننگ اِسکول میں پڑھنے لگا۔ ودیارتھیوں کے ایک آندولن میں بھاگ لینے کے کارن وہ ٹریننگ اِسکول سے نکال دیا گیا۔ تھوڑے دنوں بعد وہ پھر ہانگ چاؤ کے ایک نارمل اِسکول میں بھرتی ہوگیا۔

کچھ دنوں وہ پرائمری اِسکول میں پڑھاتا رہا۔ پر ادھکتر اپنے آزاد کرانتی کاری وچاروں کے کارن اُسے بیکاری میں دن بتانے پڑے۔ وہ جگہ جگہ گھومتا رہا۔ اُس کا گذارا کچھ متروں کی سہائتا سے چلتا تھا۔ لگ بھگ بیس برس کی عمر میں اِس نے کچھ کویتائیں لکھیں۔ سن 1925 میں پیکنگ آ گیا اور پرائیویٹ بچے پڑھا کر اپنا کام چلاتا رہا۔ یہاں اس نے جاپانی بھاشا سیکھی اور سوویت کلا اور ساہتیہ پر کچھ پستکوں کا جاپانی سے چینی میں انوواد کیا۔

اب اُس کا دھیان کمیونسٹ ساہتیہ کی طرف جانے لگا۔ لوشون جیسے چین کے بڑے سے بڑے لیکھکوں کے ساتھ مل کر اُس نے کئی ساہتیہ سنستھاؤں کے قائم کرنے میں حصہ لیا۔ دھیرے دھیرے وہ پوری طرح دیش کی آزادی کی لڑائی میں کود پڑا اور ' لال سینا ' کے اِتہاس پرسدھ 'لمبے کوچ' ( لانگ مارچ ) میں اُس سینا کے ساتھ تھا۔ جب وہ پھر اس علاقے میں آیا جو ابھی کوؤمن تانگ پارٹی کے ادھین تھا تو سن 1941 میں پکڑ کر جیل میں ڈال دیا گیا۔ جیل میں بھی اُس نے کئی کویتائیں لکھی ہیں جن میں اُس نے کوؤمن تانگ شاسکوں کے اتیاچاروں اور اُن کے ودیشیوں کے ہاتھوں میں کھیلنے کی طرف اپنے دیش واسیوں کا دھیان دلایا۔ سن 1943 میں وہ جیل سے چھوٹا۔ اِس کے بعد اُس نے جنتا میں اپنے وچار پھیلانے کے لئے بہت سے نبندھ

## दान की अर्थ नीति

महात्मा गांधी के शब्दों में—"दर अस्ल चुराया हुआ न होने पर भी बेकार का संग्रह चोरी का सा माल हो जाता है. परिग्रह का मतलब है संयम या इकट्ठा करना. परमात्मा परिग्रह नहीं करता. वह जरूरी चीज़ रोज़ की रोज़ पैदा करता है. रोज़ के काम भर का रोज़ पैदा करने के ईश्वरी नियम का हम पालन नहीं करते. इसीलिये दुनिया में विक्षमता और उससे होने वाले दुख भागते हैं. अमीरों के यहां चीज़ें ख़राब होती रहती हैं, दूसरी ओर उनकी तंगी में करोड़ों इन्सान भटकते फिरते हैं. अगर सब लोग अपनी ज़रूरत भर को ही इकट्ठा करें तो किसी को तंगी न हो और सबको तसल्ली रहे. आज तो करोड़पति अरबपति होने को छटपटाता है, उसे तसल्ली नहीं. अगर आज धनी अपना बेहद परिग्रह छोड़ दें तो समाज का भेद भाव दूर हो जाय."

विनोबा कहते हैं कि "आज जो धन कमाता है, वह उसके साथ रोग और फ़िक्र भी कमाता है. वह धन कमा कर बाल बच्चों, दोस्तों और पड़ोसियों के प्रेम को खो देता है. इसी से वह दुखी भी है. आज समाज में श्रीमान और ग़रीब दोनों दुखी हैं. इसलिये यह समाज रचना हमें बदलनी ही होगी और इसके लिये हमें दान और अपरिग्रह के दायरे को ज्यादा से ज्यादा फैलाना होगा."

आज तो माटीवाद ( माद्दा परस्ती ) का असर हमारी आंखों पर पड़ा है. सारी जिन्दगी का विकार, विशय और मजबूरी से भरी हुई है. रोटी का सवाल आज की सबसे बड़ी समस्या है. दान आज रास्ता भूल कर बेजान पड़ा है. सायनाचार्य ने रुद्र की व्याख्या ( तशरीह ) की है—

बुभुक्षमाणः रुद्ररूपेण अवतिष्ठते—

यानी भूखे लोग रुद्र ही के अवतार हैं. उनकी भूख बुझाने के लिये तरह तरह के फ़लसफ़े और तरह तरह के राजनैतिक उसूल बन गये हैं. तरह तरह के वाद इसी रोटी की समस्या को सुलझाने के लिये भगीरथ के समान कोशिशें कर रहे हैं. संसार के धर्मों, उपनिशदों और गीता ने इसका एक ही इलाज बताया है और वह है 'ईश्वरार्पण योग'—यानी सब श्रम और सब धन ईश्वर अल्लाह के नाम पर हो, सब जनता के फ़ायदे के लिये हो, समाज के फ़ायदे के लिये हो, व्यक्तिगत यानी ज़ाती फ़ायदे के लिये नहीं.

—————

## دان کی ارتھ نیتی

مہاتما گاندھی کے شبدوں میں—" دراصل چرایا ہوا نہ ہونے پر بھی بیکار کا سنگرہ چوری کا سا مال ہو جاتا ھے. پرگرہ کا مطلب ھے سنیم یا اکٹھا کرنا. پرماتما پریگرہ نہیں کرتا. وہ ضروری چیزیں روز کی روز پیدا کرتا ھے. روز کے کام بھر کا روز پیدا کرنے کے ایشوری نیم کا ہم پالن نہیں کرتے. اسی لیے دنیا میں وشمتا اور اُس سے ہونے والے دکھ بھوگتے ہیں. امیروں کے یہاں چیزیں خراب ہوتی رہتی ہیں' دوسری اور اُن کی تنگی میں کروڑوں اِنسان بھٹکتے پھرتے ہیں. اگر سب لوگ اپنی ضرورت بھر کو ہی اکٹھا کریں تو کسی کو تنگی نہ ہو اور سب کو تسلی رہے. آج تو کروڑ پتی ارب پتی ہونے کو چھٹپٹاتا ھے. اُسے تسلی نہیں. اگر آج دھنی اپنا بےحد پریگرہ چھوڑ دیں تو سماج کا بھید بھاؤ دور ہو جائے."

ونوبا کہتے ہیں کہ " آج جو دھن کماتا ھے' وہ اُس کے ساتھ روگ اور فکر بھی کماتا ھے. وہ دھن کما کر بال بچوں' دوستوں اور پڑوسیوں کے پریم کو کھو دیتا ھے. اِسی سے وہ دکھی بھی ھے. آج سماج میں شریمان اور غریب دونوں دکھی ہیں. اِس لئے یہ سماج رچنا ہمیں بدلنی ہی ہوگی اور اس کے لئے ہمیں دان اور اپریگرہ کے گھیروں کو زیادہ سے زیادہ پھیلانا ہوگا."

آج تو ماٹی واد ( مادہ پرستی ) کا اثر ہماری آنکھوں پر پڑا ھے. ساری زندگی وکار' وشے اور مجبوری سے بھری ہوئی ھے. روٹی کا سوال آج کی سب سے بڑی سمسیا ھے. دان آج راستہ بھول کر بے جان پڑا ھے. ساینا چاریہ نے رودر کی ویاکھیا ( تشریح ) کی ھے—

بوبھوکشمانڑا رودر روپینڑ اوتشٹھتے—

یعنی بھوکھے لوگ رودر کے ہی اوتار ہیں. اُن کی بھوکھ بجھانے کے لئے طرح طرح کے فلسفے اور طرح طرح کے راجنیتک اصول بن گئے ہیں. طرح طرح کے واد اِسی روٹی کی سمسیا کو سلجھانے کے لئے بھگیرتھ کے سمان کوششیں کر رہے ہیں. سنسار کے دھرموں' اُپنشدوں اور گیتا نے اِس کا ایک ہی علاج بتایا ھے اور وہ ھے ' ایشوراپرن یوگ '—یعنی سب شرم اور سب دھن ایشور اللہ کے نام پر ہو' سب جنتا کے فائدے کے لئے ہو' سماج کے فائدے کے لئے ہو' ویکتی ذاتی گت یعنی فائدے کے لئے نہیں.

—————

धनावानों और दीनहीनों के बीच सिर्फ़ दान ही एक जोड़ने वाला पुल रह गया है. आज दीन बनाने के बाद ही दान मुमकिन रह गया है. एक दार्शनिक के शब्दों में—"अगर ग़रीबी मुनासिब बात नहीं है तो दान को भी बढ़ावा नहीं देना होगा. ग़रीबी को अगर दूर करना है तो दान की संस्था को भी हमें इतना पाक साफ़ करना होगा कि उसमें दया भाव के लिये गुंजाइश न रह जाये. यह दिल का ऐसा सहज और लाज़मी धर्म हो जाये जैसे बादलों का जलदान. आज तो देने वाला ग़रीबपरवर है और लेने वाला हक़ीर है. ग़रीबी और दान का यह ताल्लुक़ इन्सान की शान को नहीं बढ़ाता. इससे उलझन बढ़ती है और मैल बढ़ता है. इसलिये दान को उस सतह पर पहुंचाना होगा जहां देने वाले को अपने को दाता मानने के ग़ुरूर से छुटकारा मिले."

इसी विचार को मशहूर सीरियन दार्शनिक ख़लील जिब्रान ने दूसरे शब्दों में लिखा है. वे भिखारी से कहते हैं—"भिखारी ! तुम दीन हीन बन कर भीख क्यों मांगते हो ? दानी की उदारता को इतनी अहमियत क्यों देते हो ? तुम्हारी ग़रीबी में बनावट नहीं बेबसी है. तुम मजबूर हो. जिस दान के धन को तुम क़बूल करते हो वह देने वाले का नहीं है. वह तो उसके पास सिर्फ़ धरोहर है. तुम्हें भीख इसलिये मांगनी पड़ती है जिसमें उसके फ़र्ज़ का बोझ हल्का हो जाय. तुम योग्यता-अयोग्यता, सत्पात्र-कुपात्र की कसौटी पर इसलिये नहीं कसे जा सकते कि तुम्हारा अभाव क़ुदरती है. तुम दान लेकर दानी पर उपकार करते हो चूंकि तुम उसे कर्तव्य का रास्ता दिखाते हो. उसे धरोहर हड़प लेने से बचाने का उपकार तुम्हारा है. इसलिये ऐ भिखारी ! तुम क्यों शर्म के बोझ से दबे जा रहे हो ? क्यों अपने को दीन हीन मानते हो ? ऐसा करके क्या तुम दानी को अभिमानी बनाने और उसे पतित होने का मौक़ा नहीं देते ? इसलिये हे भिखारी ! दानी से फ़र्ज़ समझकर दान लो ! शाइस्तगी के ख़्याल से अहसान भले ही ज़ाहिर करो पर उपकार के बोझ से परेशान न हो !"

जिस तरह हम यज्ञ में आहुति देते समय कहते हैं कि—"इन्द्राय इदं, न ममः"—यह मेरा नहीं है, इन्द्र के लिये है. उसी तरह आज जो हम उत्पादन करते हैं, चाहे वह खेती में हो, चाहे फ़ैक्ट्री में, उसके बारे में हमें कहना चाहिये कि—"समाजाय इदं, समिश्टाय इदम्, राश्ट्राय इदम्, न ममः". यह सब मेरे लिये नहीं है, समाज के लिये है, समश्टि के लिये है, राष्ट्र के लिये है. अपने पास जो कुछ है वह सब समाज के हवाले कर देना चाहिये. फिर समाज की ओर से अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ जो कुछ मिलेगा वह अमृत होगा.



دھنوانوں اور دین ہینوں کے بیچ صرف دان ہی ایک جوڑنے والا پل رہ گیا ہے ۔ آج دین بنانے کے بعد ہی دان ممکن رہ گیا ہے ۔ ایک دارشنک کے شبدوں میں—" اگر غریبی مناسب بات نہیں ہے تو دان کو بھی بڑھاوا نہیں دینا ہوگا ۔ غریبی کو اگر دور کرنا ہے تو دان کی سنستھا کو بھی ہمیں اتنا پاک صاف کرنا ہوگا کہ اُس میں دیا بھاو کے لئے گنجائش نہ رہ جائے ۔ یہ دل کا ایسا سہج اور لازمی دھرم ہو جائے جیسے بادلوں کا جل دان ۔ آج تو دینے والا غریب پرور ہے اور لینے والا حقیر ہے ۔ غریبی اور دان کا یہ تعلق اِنسان کی شان کو نہیں بڑھاتا ۔ اُس سے اُلجھن بڑھتی ہے اور میل بڑھتا ہے ۔ اِس لئے دان کو اُس سطح پر پہونچانا ہوگا جہاں دینے والے کو اپنے کو داتا ماننے کے غرور سے چھٹکارا ملے ۔"

اِسی وچار کو مشہور سیرین دارشنک خلیل جبران نے دوسرے شبدوں میں لکھا ہے ۔ وہ بھکاری سے کہتے ہیں — " بھکاری ! تم دین ہین بنکر بھیکھ کیوں مانگتے ہو ؟ دانی کی اُدارتا کو اتنی اہمیت کیوں دیتے ہو ؟ تمہاری غریبی میں بناوٹ نہیں بےبسی ہے ۔ تم مجبور ہو ۔ جس دان کے دھن کو تم قبول کرتے ہو وہ دینے والے کا نہیں ہے ۔ وہ تو اُس کے پاس صرف دھروھر ہے ۔ تمہیں بھیک اِس لئے مانگنی پڑتی ہے جس میں اُس کے فرض کا بوجھ ھلکا ہو جائے ۔ تم یوگتا ۔ ایوگتا، ست پاتر ۔ کو پاتر کی کسوٹی پر اِس لئے نہیں کسے جا سکتے کہ تمہارا ابھاؤ قدرتی ہے ۔ تم دان لیکر دانی پر اُپکار کرتے ہو چونکہ تم اُسے کرتویہ کا راستہ دکھاتے ہو ۔ اُسے دھروھر ھڑپ لینے سے بچانے کا اُپکار تمہارا ہے ۔ اِس لئے اے بھکاری ! تم کیوں شرم کے بوجھ سے دبے جا رہے ہو ؟ کیوں اپنے کو دین ہین مانتے ہو ؟ ایسا کر کے کیا تم دانی کو ابھیمانی بنانے اور اُسے پتت ہونے کا موقع نہیں دیتے ؟ اِس لئے ہے بھکاری ! دانی سے فرض سمجھ کر دان لو ! شائستگی کے خیال سے احسان بھلے ہی ظاہر کرو پر اُپکار کے بوجھ سے پریشان نہ ہو !"

جس طرح ہم یگیہ میں آہوتی دیتے سمے کہتے ہیں کہ— " اندرائے اِدن نہ مم" —یہ میرا نہیں ہے، اِندر کے لئے ہے ۔ اِس طرح آج جو ہم اُتپادن کرتے ہیں، چاہے وہ کھیتی میں ہو، چاہے فیکٹری میں، اُس کے بارے میں ہمیں کہنا چاہئے کہ— " سماجائے اِدن، سمشٹائے اِدم، راشٹرائے اِدم، نہ مم ." یہ سب میرے لئے نہیں ہے، سماج کے لئے ہے، سمشٹی کے لئے ہے، راشٹر کے لئے ہے ۔ اپنے پاس جو کچھ ہے وہ سب سماج کے حوالے کر دینا چاہئے ۔ پھر سماج کی اور سے اپنی ضرورت کے مطابق جو کچھ ملے گا وہ امرت ہوگا ۔

**अर्थात्**—जगत में जो कुछ जीवन है, वह ईश्वर का बसाया हुआ है. इसलिये उसके नाम से त्याग करके, तू यथा प्राप्त भोगता जा. किसी के भी धन की तरफ़ वासना न रख.

तुलसीदास जी ने इसी को दूसरे शब्दों में कहा है—'सम्पति सब रघुबर की आही'. और सम्पत्ति जब सब रघुवर की ही है अर्थात समाज के फ़ायदे के लिये है तो सम्पत्ति की मिलकियत सिर्फ़ एक ट्रस्टी के रूप में ही रह जाती है और वह सम्पत्ति—"सब जन हिताय, सब जन सुखाय" के लिये ही ख़र्च की जा सकती है. महान पारसी सम्राट अनुशीरवां ने हिदायत दी थी कि मौत के बाद जब उसकी अर्थी ले जाई जाय तो उसके दोनों हाथ अर्थी के बाहर निकले रहें ताकि जनता देख ले कि इतना बड़ा सम्राट भी अनन्त यात्रा में ख़ाली हाथ जा रहा है.

पैदावार सब मेहनत से ही होती है. इनसान साधन, सामग्री और श्रम के मेल से ज़िन्दगी की ज़रूरतों की तरह तरह की चीज़ों को पैदा करता है. श्रम और पैदावार के मेल के लिये सिक्के का जनम होता है. सिक्के को इसलिये लाया जाता है कि वह श्रम का वफ़ादार चाकर होकर रहे, लेकिन हालतों के उलटफेर की वजह से श्रम ही सिक्के का ताबेदार बन जाता है. जो बेशुमार कच्चा माल धरती का बेटा अपने पसीने के बल खेतों में उपजाता है, खानों से निकालता है, कारख़ानों में तैयार करता है उस पर बजाय श्रमिक का अधिकार होने के लक्ष्मीपुत्रों का अधिकार हो जाता है. नतीजा यह होता है कि समाज अमीरों और ग़रीबों में बंट जाता है. अनाज की खत्तियों में अनाज पड़े पड़े घुनता रहता है और करोड़ों इन्सान दाने दाने को मोहताज रहते हैं. गोदामों में कपड़े की लाखों गांठें पड़ी सड़ती रहती हैं और करोड़ों इन्सान ठन्ड से ठिठुरते रहते हैं. दिन बदिन नंगों और भिखमंगों की अनगिनत क़तारें बढ़ती जाती हैं. आज दुनिया में लोभ और परिग्रह का राज है. परिग्रह की हिफ़ाज़त के लिये राज तरह तरह के क़ानून बनाते हैं. उपनिशद की एक कहानी में राजा कहता है कि "मेरे राज में न तो कोई चोर है और न कंजूस. धन संग्रह ही चोरी को उकसावा देता है. दरअस्ल कंजूस ही चोर का पिता है." उपनिशद का यह राजा बड़े पते की बात कहता है. लेकिन आज क्या हो रहा है? चोर को तो हम जेल भेजते हैं, लेकिन चोरों के पिता पूंजीशाह को हम मुक्त रखते हैं. वे तहज़ीबयाफ़्ता शरीफ़ की शक्ल में समाज में घूमते हैं, उनकी औरतें अपनी दौलत का, अपने जगमग जवाहरातों का दरिद्र नारायनों के बीच में नंगा प्रदर्शन करते हैं! यह कैसा न्याय है? गीता ने भी परिग्रही (धनवाले) को ही चोर कहा है, लेकिन आज लोग गीता को भी नहीं मानते.



ارتھات، جگت میں جو کچھ جیون ہے، وہ ایشور کا بسایا ہوا ہے. اِس لئے اُس کے نام سے تیاگ کر کے، تو یتھا پراپت بھوگتا جا. کسی کے بھی دھن کی طرف واسنا نہ رکھ.

تلسی داس جی نے اُسی کو دوسرے شبدوں میں کہا ہے—' سمپتی سب رگھوور کی آہی. اور سمپتی جب سب رگھوور کی ہی ہے ارتھات سماج کے فائدہ کے لئے ہے تو سمپتی کی ملکیت صرف ایک ٹرسٹی کے روپ میں ہی رہ جاتی ہے اور وہ سمپتی—" سب جن ہتائے، سب جن سوکھائے " کے لئے ہی خرچ کی جا سکتی ہے. مہان پارسی سمراٹ انوشیرواں نے ہدایت دی تھی کہ موت کے بعد جب اُس کی ارتھی لے جائی جائے تو اُس کے دونوں ہاتھ ارتھی کے باہر نکلے رہیں تاکہ جنتا دیکھ لے کہ اتنا بڑا سمراٹ بھی اننت یاترا میں خالی ہاتھ جا رہا ہے.

پیداوار سب محنت سے ہی ہوتی ہے. اِنسان سادھن، سامگری اور شرم کے میل سے زندگی کی ضرورتوں کی طرح طرح کی چیزوں کو پیدا کرتا ہے. شرم اور پیداوار کے میل کے لئے سکے کا جنم ہوتا ہے. سکے کو اِس لئے لایا جاتا ہے کہ وہ شرم کا وفادار چاکر ہوکر رہے، لیکن حالتوں کے اُلٹ پھیر کی وجہ سے شرم ہی سکے کا تابعدار بن جاتا ہے. جو بے شمار کچا مال دھرتی کا بیٹا اپنے پسینے کے بل کھیتوں میں اُپجاتا، کانوں سے نکالتا ہے، کارخانوں میں تیار کرتا ہے اُس پر بجائے شرمک کا ادھیکار ہونے کے لکشمی پتروں کا ادھیکار ہو جاتا ہے. نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ سماج امیروں اور غریبوں میں بانٹ جاتا ہے. اناج کی کھتیوں میں اناج پڑے پڑے گھنتا رہتا ہے اور کروڑوں انسان دانے دانے کو محتاج رہتے ہیں. گوداموں میں کپڑے کی لاکھوں گانٹھیں پڑی سڑتی رہتی ہیں اور کروڑوں اِنسان ٹھنڈ سے ٹھٹھرتے رہتے ہیں. دن بدن ننگوں اور بھکمنگوں کی انگنت قطاریں بڑھتی جاتی ہیں. آج دنیا میں لوبھ اور پریگرہ کا راج ہے. پریگرہ کی حفاظت کے لئے راج طرح طرح کے قانون بناتے ہیں. اپنشد کی ایک کہانی میں راجا کہتا ہے کہ " میرے راج میں نہ تو کوئی چور ہے اور نہ کنجوس. دھن سنگرہ ہی چوری کو اُکساوا دیتا ہے. دراصل کنجوس ہی چور کا پتا ہے." اپنشد کا یہ راجا بڑے پتے کی بات کہتا ہے. لیکن آج کیا ہو رہا ہے؟ چور کو تو ہم جیل بھیجتے ہیں، لیکن چوروں کے پتا پونجی شاہ کو ہم مکت رکھتے ہیں. وہ تہذیب یافتہ شریف کی شکل میں سماج میں گھومتے ہیں، اُن کی عورتیں اپنی دولت کا، اپنے جگمگ جواہراتوں کا دردر نارائنوں کے بیچ میں ننگا پردرشن کرتی ہیں! یہ کیسا نیائے ہے؟ گیتا نے بھی پریگرہ (دھن والے) کو ہی چور کہا ہے، لیکن آج تو لوگ گیتا کو بھی نہیں مانتے.

तू उसे खाना देता तो मुझे उसके साथ देखता? मेरे एक बन्दे ने तुझसे पानी मांगा और तूने उसे पानी नहीं दिया. अगर तू उसे पानी दे देता तो सचमुच मुझे उसके पास पाता!"

क़ुरान में लिखा है कि—"धर्म या नेकी इसमें नहीं है कि तुमने अपने मुंह नमाज़ के वक़्त पूरब के तरफ़ कर लिये या पच्छिम की तरफ़. धर्म यह है कि आदमी अल्लाह को माने, कर्मों के फल को माने, फ़रिश्तों को माने, सब मज़हबी किताबों और सब नबियों या रसूलों को माने, अल्लाह के प्रेम के नाते यानी उसके नाम पर अपने माल और दौलत में से अपने नातेदारों को, यतीमों को, ज़रूरतमन्दों को, रास्ता चलतों को और याचकों को दान दे और ग़ुलामों को आज़ाद कराने में अपनी दौलत ख़र्च करे, अल्लाह से दुआ मांगता रहे, ज़कात यानी अपने कुल माल का कम से कम चालीसवां हिस्सा हर साल अल्लाह के नाम पर ग़रीबों को ख़ैरात देता रहे" आदि.

एक बार मुहम्मद साहब सफ़र से लौट कर मदीने आये. वह सीधे अपनी बेटी फ़ातमा से मिलने उसके घर गये. मकान में दो चीज़ें नई थीं—एक दरवाज़े पर लटका हुआ रेशमी परदा और फ़ातमा के हाथों में चांदी के कड़े. देखते ही मुहम्मद साहब उल्टे पांव लौट आये और मसजिद में बैठकर रोने लगे. फ़ातमा ने अपने बेटे हसन को यह पूछने के लिये भेजा कि नाना इतनी जल्दी क्यों लौट गये. मोहम्मद साहब ने नवासे से कहा कि "मैं यह देख कर शरमा गया कि मसजिद में लोग भूखे बैठे हों और मेरी बेटी चांदी के कड़े पहने और रेशम के परदे लटकाये." हसन ने मां से जाकर कहा. फ़ातमा ने तुरन्त कड़ों को तोड़कर उसी रेशम के टुकड़े में बांध कर बाप के पास भेज दिया. मुहम्मद साहब ने ख़ुश होकर उन्हें बेचकर रोटियां मंगाईं और ग़रीबों में बांट दीं. फिर फ़ातमा के पास जाकर कहा कि "अब तू सचमुच मेरी बेटी है."

पुरानों में अनेकों दानवीरों का ज़िक्र आता है जिन्होंने अपनी सारी दौलत दान में देकर अपरिग्रह का व्रत लिया. सम्राट हर्ष हर पांचवें साल प्रयाग आकर त्रिवेनी के तट पर अपने शाही ख़ज़ाने का एक एक पैसा ग़रीबों में बांट दिया करते थे. आख़ीर में सिर्फ़ एक कोपीन रह जाती थी. तब अपनी बहन राज्यश्री से अंगोछा दान मांग कर वह कोपीन भी दान कर देते थे. समाज की सम्पत्ति इस तरह फिर समाज में वापस चली जाती थी.

पुराने ज़माने के मज़हबी लोग अगर सम्पत्ति का भोग भी करते थे तो वह बेलौस होकर ईश्वर प्रसाद की तरह. ईशावास्योपनिशद में इसी भाव को उपनिशदकार ने बड़े सुन्दर ढंग से कहा है—

ईसावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
त्येन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्वद्धनम्॥



تو اُسے کھانا دیتا تو مجھے اُس کے ساتھ دیکھتا ؟ میرے ایک بندے نے تجھ سے پانی مانگا اور تو نے اُسے پانی نہیں دیا ! اگر تو اُسے پانی دے دیتا تو سچ مچ مجھے اُس کے پاس پاتا !"

قرآن میں لکھا ھے کہ—"دھرم یا نیکی اُس میں نہیں ھے کہ تم نے اپنے منھ نماز کے وقت پورب کے طرف کرائے یا پچھم کی طرف ۔ دھرم یہ ھے کہ آدمی اللہ کو مانے' کرموں کے پھل کو مانے' فرشتوں کو مانے' سب مذھبی کتابوں اور سب نبیوں یا رسولوں کو مانے' اللہ کے پریم کے ناتے یعنی اُس کے نام پر اپنے مال اور دولت میں سے اپنے ناتےداروں کو' یتیموں کو' ضرورتمندوں کو' راستہ چلتوں کو اور یاچکوں کو دان دے اور غلاموں کو آزاد کرانے میں اپنی دولت خرچ کرے' اللہ سے دعا مانگتا رھے' ذکاۃ یعنی اپنے کل مال کا کم سے کم چالیسواں حصہ ھر سال اللہ کے نام پر غریبوں کو خیرات دیتا رھے" آدی ۔

ایک بار محمد صاحب سفر سے لوٹ کر مدینے آئے ۔ وہ سیدھے اپنی بیٹی فاطمہ سے ملنے اُس کے گھر گئے ۔ مکان میں دو چیزیں نئی تھیں—ایک دروازے پر لٹکا ھوا ریشمی پردہ اور فاطمہ کے ھاتھوں میں چاندی کے کڑے ۔ دیکھتے ھی محمد صاحب اُلٹے پاؤں لوٹے آئے اور مسجد میں بیٹھکر رونے لگے ۔ فاطمہ نے اپنے بیٹے حسن کو یہ پوچھنے کے لئے بھیجا کہ نانا اتنی جلدی کیوں لوٹ گئے ۔ محمد صاحب نے نواسے سے کہا کہ "میں یہ دیکھکر شرما گیا کہ مسجد میں لوگ بھوکے بیٹھے ھوں اور میری بیٹی چاندی کے کڑے پہنے اور ریشم کے پردے لٹکائے ۔" حسن نے ماں سے جاکر کہا ۔ فاطمہ نے ترنت کڑوں کو توڑکر اُسی ریشم کے ٹکڑے میں باندھ کر باپ کے پاس بھیج دیا ۔ محمد صاحب نے خوش ھوکر اُنھیں بیچ کر روٹیاں منگائیں اور غریبوں میں بانٹ دیں ۔ پھر فاطمہ کے پاس جاکر کہا کہ "اب تو سچ مچ میری بیٹی ھے ۔"

پرانوں میں انیکوں دان ویروں کا ذکر آتا ھے جنھوں نے اپنی ساری دولت دان میں دےکر آپریگرہ کا ورت لیا ۔ سمراٹ ھرش ھر پانچویں سال پریاگ آکر تریبینی کے تٹ پر اپنے شاھی خزانے کا ایک ایک پیسہ غریبوں میں بانٹ دیا کرتے تھے ۔ آخر میں صرف ایک کوپین رہ جاتی تھی ۔ تب اپنی بہن راجشری سے انگوچھا دان میں مانگ کر وہ کوپین بھی دان کردیتے تھے ۔ سماج کی سمپتی اِس طرح پھر سماج میں واپس چلی جاتی تھی ۔

پرانے زمانے کے مذھبی لوگ اگر سمپتی کا بھوگ بھی کرتے تھے تو وہ بے لوث ھوکر ایشور پرساد کی طرح ۔ ایشواسیوپنشد میں اِسی بھاؤ کو اُپنشدکار نے بڑے سندر ڈھنگ سے کہا ھے—

ایساواسیہ میدم سروم یتکنچ جگتیام جگت
تین تیکتین بھنجیتھا ما گردہ کسیہ سویدھنم

सहज है पर धनवानों का ईश्वर के राज में दाखिल होना नामुमकिन है."

जैनों के चौबीसवें तीर्थङ्कर भगवान महावीर दीक्षित होना चाहते थे. लेकिन उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि करोड़ों और अरबों की दौलत की उनकी मिलकियत उनकी दीक्षा में सबसे बड़ी रुकावट है. आचारांग सूत्र के मुताबिक़, उन्होंने मुनि-दीक्षा के खयाल को एक साल के लिये मुलतवी कर दिया. उस एक बरस में उन्होंने अपना सब धन और दौलत दरिद्रनारायनों में बांट दिया और तब दीक्षा ली. दीक्षा लेने के बाद भी उनके दिल में दया की धारा बहती रहती थी. एक ग़रीब ब्राह्मन के दुःख से भरकर वे उसे अपनी एक बची खुची चादर भी दे डालते हैं.

इसलाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद भी अपरिग्रह की जीती जागती मिसाल थे. अपनी मौत से एक दिन पहले उन्होंने अपनी बीवी हज़रत आयशा से कहा—"अपने पास बिलकुल पैसा न रखो, जो कुछ कहीं बचा कर रख छोड़ा हो तो उसे ग़रीबों में बांट दो." आयशा ने कहीं से किसी वक़्त के लिये छै सोने के दीनार अपने पास चुपके से बचा कर रख छोड़े थे. थोड़ी देर बाद मुहम्मद साहब ने फिर कहा कि जो कुछ हो मुझे दे दो." आयशा ने वही छै सोने के दीनार मुहम्मद साहब के हाथ पर लाकर गिन दिये. मुहम्मद साहब ने उसी दम हुक्म दिया कि उन्हें कुछ ग़रीब कुटुम्बों में बांट दिया जाय. ऐसा ही किया गया. इस पर मुहम्मद साहब ने कहा—"अब मुझे शान्ति मिली. सचमुच अच्छा नहीं था कि मैं अपने अल्लाह से मिलने जाऊं और यह सोना मेरी मिलकियत रहे."

इस्लाम के मुताबिक़ मरने के बाद अल्लाह पूछेगा—"ऐ आदमी के बेटे ! मैं बीमार था और तू मुझे देखने नहीं आया ?" आदमी कहेगा—"ऐ मेरे रब्ब ! मैं तुझे देखने के लिये कैसे आ सकता था, तू तो सारे जहान का मालिक है." अल्लाह फिर पूछेगा—"ऐ आदमी के बेटे मैंने तुझसे खाना मांगा था और तूने मुझे खाना नहीं दिया ?" आदमी कहेगा—"ऐ मेरे रब्ब ! तू तो सारे जहान का पालनहार है मैं तुझे खाना कैसे दे सकता था ?" अल्लाह पूछेगा—"ऐ आदमी के बेटे ! मैंने तुझसे पानी मांगा और तूने मुझे पानी नहीं दिया ?" आदमी कहेगा—"ऐ मेरे रब्ब ! मैं तुझे कैसे पानी दे सकता था तू तो सारी दुनिया का मालिक है."

और तब अल्लाह जवाब देगा—"क्या तुझे मालूम नहीं था कि मेरा एक बन्दा बीमार था, तू उसे देखने नहीं गया ! क्या तुझे यह मालूम नहीं था कि अगर तू उसे देखने जाता तो सचमुच मुझे उसके पास पाता ! क्या तुझे मालूम नहीं था कि मेरे एक बन्दे ने तुझसे खाना मांगा था और तूने उसे खाना नहीं दिया ? क्या तू नहीं जानता था कि अगर



سہج ھے پر دھنوانوں کا ایشور کے راج میں داخل ھونا ناممکن ھے ."

جینوں کے چوبیسویں تیرتھنکر بھگوان مہاویر دیکچھت ھونا چاھتے تھے . لیکن اُنہیں محسوس ھوا کہ کروڑوں اور اربوں کی دولت کی اُن کی ملکیت اُن کی دیکچھا میں سب سے بڑی رکاوٹ ھے . آچارانگ سوتر کے مطابق' منی اُنھوں نے دیکچھا کے خیال کو ایک سال کے لئے ملتوی کردیا . اُس ایک برس میں انہوں نے اپنا سب دھن اور دولت دردر نراینوں میں بانٹ دیا اور تب دیکچھا لی . دیکچھا لینے کے بعد بھی اُن کے دل میں دیا کی دھارا بہتی رھتی تھی . ایک غریب براھمن کے دکھ سے بھرکر وے اُسے اپنی ایک بچی کھچی چادر بھی دے ڈالتے ھیں .

اِسلام کے پیغمبر حضرت محمد بھی اپریگرہ کی جیتی جاگتی مثال تھے . اپنی موت سے ایک دن پہلے انھوں نے اپنی بی بی حضرت عائشہ سے کہا—"اپنے پاس بالکل پیسہ نہ رکھو' جو کچھ کہیں بچاکر رکھ چھوڑا ھو تو اُسے غریبوں میں بانٹ دو ." عائشہ نے کہیں سے کسی وقت کے لئے چھ سونے کے دینار اپنے پاس چپکے سے بچاکر رکھ چھوڑے تھے . تھوڑی دیر بعد محمد صاحب نے پھر کہا کہ جو کچھ ھو مجھے دے دو." عائشہ نے وھی چھ سونے کے دینار محمد صاحب کے ھاتھ پر لاکر گن دیئے . محمد صاحب نے اُسی دم حکم دیا کہ انہیں کچھ غریب کٹمبوں میں بانٹ دیا جائے . ایسا ھی کیا گیا . اِس پر محمد صاحب نے کہا—"اب مجھے شانتی ملی . سچ مچ اچھا نہیں تھا کہ میں اپنے اللہ سے ملنے جاؤں اور یہ سونا میری ملکیت رھے ."

اِسلام کے مطابق مرنے کے بعد اللہ پوچھےگا—"اے آدمی کے بیٹے ! میں بیمار تھا اور تو مجھے دیکھنے نہیں آیا ؟" آدمی کہےگا—"اے میرے رب ! میں تجھے دیکھنے کے لئے کیسے آسکتا تھا' تو تو سارے جہان کا مالک ھے ." اللہ پھر پوچھےگا—"اے آدمی کے بیٹے میں نے تجھ سے کھانا مانگا تھا اور تو نے مجھے کھانا نہیں دیا ؟" آدمی کہےگا—"اے میرے رب ! تو تو سارے جہان کا پالنہار ھے میں تجھے کھانا کیسے دے سکتا تھا ؟" اللہ پوچھےگا—اے آدمی کے بیٹے ! میں نے تجھ سے پانی مانگا اور تو نے مجھے پانی نہیں دیا ؟" آدمی کہیگا—"اے میرے رب ! میں تجھے کیسے پانی دے سکتا تھا تو تو سارے دنیا کا مالک ھے ."

اور تب اللہ جواب دیگا—"کیا تجھے معلوم نہیں تھا کہ میرا ایک بندہ بیمار تھا' تو اُسے دیکھنے نہیں گیا ! کیا تجھے یہ معلوم نہیں تھا کہ اگر تو اُسے دیکھنے جاتا تو سچ مچ مجھے اُس کے پاس پاتا! کیا تجھے معلوم نہیں تھا کہ میرے ایک بندے نے تجھ سے کھانا مانگا تھا اور تو نے اُسے کھانا نہیں دیا ! کیا تو نہیں جانتا تھا کہ اگر

# दान की अर्थ नीति

( विश्वम्भरनाथ पांडे )

आज देश में चारों ओर तरह तरह के दानों की चर्चा सुनाई देती है—आत्मदान, विद्यादान, श्रमदान, भूदान, सम्पत्तिदान और जीवनदान आदि. जिस समाज में अमीर ग़रीब का बोलबाला हो, दान की वहां एक ख़ास अहमियत होती है. दौलत के असम बंटवारे को दान के ज़रिये बराबर करने की कोशिश की जाती है.

दान की यह परम्परा कोई नई नहीं है. हर धर्म ने उसे मुक्ति (निजात) की ज़रूरी शर्त बताया है. पानी की तरह धन भी अगर एक जगह इकट्ठा रहेगा तो वह सड़ान पैदा करेगा—रूहानी सड़ान. धर्म गुरुओं ने उपदेश दिया कि जिस तरह आसमान सूरज की तपिश से पृथ्वी का जल इकट्ठा करता है और फिर बादलों के ज़रिये बारिश से उस जल को फिर से पृथ्वी को वापस कर देता है उसी तरह समाज में भी अलग अलग आदमियों के ज़रिये कमाई हुई पूंजी को दान द्वारा फिर सब के हित में बांट देना चाहिये. मज़हबी पैग़म्बरों ने हमें बताया है कि आत्मा का परमात्मा में मिलना ही ज़िन्दगी का सब से बड़ा मक़सद है और इस मक़सद के हासिल करने में सबसे बड़ी बाधा धन है.

एक बार हज़रत ईसा के पास एक नौजवान धनी आया और बोला—"सद् गुरु ! निजात हासिल करने के लिये मुझे किस तरह का व्योहार करना चाहिये ?" हज़रत ईसा ने जवाब दिया—"तुम मुझे सद् गुरु क्यों कहते हो ? सिर्फ़ एक ईश्वर ही सत्य है; लेकिन अगर तुम ज़िन्दगी में सत्य का दर्शन करना ही चाहते हो तो ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करो ?" इस पर नौजवान ने पूछा—"ईश्वर की वे आज्ञायें कौन सी हैं ?" हज़रत ईसा ने जवाब दिया—"क़त्ल न करना, व्यभिचार न करना, मां बाप की इज्ज़त करना, और पड़ोसी से मुहब्बत करना." इस पर नौजवान ने कहा—"मैं इन सब नियमों का पालन बचपन से ही करता आया हूं. अब मुझ में किस बात की कमी है ?" हज़रत ईसा ने जवाब दिया—"अगर तुम बेदाग़ होना चाहते हो तो जाकर अपनी सारी दौलत बेचकर उसे ग़रीबों में दान कर दो. ऐसा करने से तुम्हें अल्लाह का ख़ज़ाना मिलेगा. तब मेरे पास आकर मेरे चेले बनना." हज़रत ईसा की यह बात सुनकर वह नौजवान नाउम्मीद होकर वहां से चला गया. उसका मन धन दौलत में रमा हुआ था. तब हज़रत ईसा ने अपने चेलों से कहा—"मैं कहता हूं कि धनवानों का जन्नत में दाख़िल होना मुश्किल है. ऊंट का सुई के नाके से निकल सकना

# دان کی ارتھ نیتی

( وشومبھرناتھ پانڈے )

آج دیش میں چاروں اُور طرح طرح کے دانوں کی چرچا سنائی دیتی ھے—آتم‌دان، ودیادان، شرم‌دان، بھو‌دان، سمپتی‌دان اور جیون دان آدی ۔ جس سماج میں امیر غریب کا بول بالا ھو، دان کی وھاں ایک خاص اھمیت ھوتی ھے ۔ دولت کے اسم بنٹوارے کو دان کے ذریعہ برابر کرنے کی کوشش کی جاتی ھے.

دان کی یہ پرمپرا کوئی نئی نہیں ھے ۔ ھر دھرم نے اِسے مکتی ( نجات ) کی ضروری شرط بتایا ھے ۔ پانی کی طرح دھن بھی اگر ایک جگہ اکٹھا رھےگا تو وہ سڑان پیدا کریگا—روحانی سڑان ۔ دھرم گروؤں نے اُپدیش دیا کی جس طرح آسمان سورج کی تپش سے پرتھوی کا جل اکٹھا کرتا ھے اور پھر بادلوں کے ذریعہ بارش سے اُس جل کو پھر سے پرتھوی کو واپس کردیتا ھے اُسی طرح سماج میں بھی الگ الگ آدمیوں کے ذریعہ کمائی ھوئی پونجی کو دان دوارا پھر سب کے ھت میں بانٹ دینا چاھئیے ۔ مذھبی پیغمبروں نے ھمیں بتایا ھے کہ آتما کا پرماتما میں ملن ھی زندگی کا سب سے بڑا مقصد ھے اور اُس مقصد کے حاصل کرنے میں سب سے بڑی بادھا دھن ھے ۔

ایک بار حضرت عیسیٰ کے پاس ایک نوجوان دھنی آیا اور بولا—"سد گرو! نجات حاصل کرنے کے لئے مجھے کس طرح کا بیوھار کرنا چاھئیے؟" حضرت عیسیٰ نے جواب دیا ۔ "مجھے سد گرو کیوں کہتے ھو ؟ صرف ایک اِیشور ھی ستیہ ھے؛ لیکن اگر تم زندگی میں ستیہ کا درشن کرنا ھی چاھتے ھو تو اِیشور کی آگیاؤں کا پالن کرو۔" اِس پر نوجوان نے پوچھا—"اِیشور کی وے آگیائیں کون سی ھیں؟" حضرت عیسیٰ نے جواب دیا—"قتل نہ کرنا، وبھیچار نہ کرنا، ماں باپ کی عزت کرنا، اور پڑوسی سے محبت کرنا۔" اس پر نوجوان نے کہا—"میں اِن سب نیموں کا پالن بچپن ھی سے کرتا آیا ھوں. اب مجھ میں کس بات کی کمی ھے؟" حضرت عیسیٰ نے جواب دیا—"اگر تم بے داغ ھونا چاھتے ھو تو جاکر اپنی ساری دولت بیچ‌کر اُسے غریبوں میں دان کردو ۔ ایسا کرنے سے تمہیں اللہ کا خزانہ ملےگا ۔ تب میرے پاس آکر میرے چیلے بننا ۔ حضرت عیسیٰ کی یہ بات سن‌کر وہ نوجوان نااُمید ھوکر وھاں سے چلا گیا ۔ اُس کا من دھن دولت میں رما ھوا تھا ۔ تب حضرت عیسیٰ نے اپنے چیلوں سے کہا—"میں کہتا ھوں کہ دھنوانوں کا جنت میں داخل ھونا مشکل ھے ۔ اُونٹ کا سوئی کے ناکے سے نِکل سکنا

ड़

बोली तामिल और मलयालम से ज़्यादा द्रावड़ी रंग लिये हुए है तो उसके मानी यह ज़रूरी नहीं निकलते कि हम में द्रावड़ी ख़ून भी ज़्यादा है. साथ ही यह भी मानना पड़ता है कि ख़ून का थोड़ा बहुत असर बोली पर पड़ ही जाता है. मुझे कोई मद्रासी बोली नहीं आती और न मुझे असल द्रावड़ी ज़बान का इल्म है. इसलिये मेरे पास एक ही माप रह जाता है जिससे अंदाज़ा लगाया जा सके कि खड़ी बोली द्रावड़ी ज़्यादा है या तामिल. यह माप ड़ है. यह मैं मानता हूं कि यह माप कुछ बहुत अच्छा नहीं, लेकिन जो है उसे इस्तेमाल तो करना चहिये. मेरे ख़्याल में जितने लफ़्ज़ आम घरों की खड़ी बोली में ड़ वाले हैं और किसी बोली में नहीं. पंजाबी, सिंधी, राजस्थानी, ब्रज, अवधी, गुजराती, मरहटी, बिहारी, बंगाली की बाबत तो मैं अपने इल्म से कह सकता हूं. तामिल, कन्नड़, मलयालम वग़ैरा का इल्म नहीं. उन से मुक़ाबिला करने के लिये मैंने यह लम्बी फ़ेहरिस्त तैयार की है ताकि वह अपनी ज़बान की ऐसी फ़ेहरिस्त बनाएं और जांच सकें.

---

ڑ

بولی تامل اور ملیالم سے زیادہ دراوڑی رنگ لئے ہوئے ہے تو اس کے معنی یہ ضروری نہیں نکلتے کہ ہم میں دراوڑی خون بھی زیادہ ہے. ساتھ ہی یہ بھی ماننا پڑتا ہے کہ خون کا تھوڑا بہت اثر بولی پر پڑ ہی جاتا ہے مجھے کوئی مدراسی بولی نہیں آتی اور نہ مجھے اصل دراوڑی زبان کا علم ہے. اس لئے میرے پاس ایک ہی ماپ رہ جاتا ہے جس سے اندازہ لگایا جا سکے کہ کھڑی بولی دراوڑی زیادہ ہے یا تامل. یہ ماپ ہے ڑ. یہ میں مانتا ہوں کہ یہ ماپ کچھ بہت اچھا نہیں لیکن جو ہے اسے استعمال تو کرنا چاہئے. میرے خیال میں جتنے لفظ عام گھروں کی کھڑی بولی میں ڑ والے ہیں اور کسی بولی میں نہیں. پنجابی سندھی، راجستھانی، برج، اودھی، گجراتی، مرہٹی، بہاری، بنگالی کی بابت تو میں اپنے علم سے کہہ سکتا ہوں. تامل، کناڈ، ملیالم وغیرہ کا علم نہیں. ان سے مقابلہ کرنے کے لئے میں نے یہ لمبی فہرست تیار کی ہے تاکہ وہ اپنی اپنی زبان کی ایسی فہرست بنائیں اور جانچ سکیں.

---

(आत्मा) कहा जाता है और उस आत्मा के अनुसार ही हमारा विधान कहता है कि हमारी बोली उभारी जाये.

गुम्बदी उन लफ़्ज़ों को कहा जाता है जो किसी आवाज़ की नक़ल में बने हों. खड़ी बोली में यह एक अनोखी बात है कि जितने गुम्बदी लफ़्ज़ उसमें ऐसे हैं जहां और बोलियों में र आती हो हमारी बोली में ड़ आयेगी-जैसे चिड़िया, ककड़ी, खड़का, धाड़, धड़क, धड़ाका, धड़ाधड़, गुलगपाड़ा, बड़बड़ कड़कड़ाता जाड़ा, खड़खड़ा और ऐसे बीसों और लफ़्ज़ हैं. बच्चों की कहानियों में तो ऐसे लफ़्ज़ बच्चों को बहुत प्यारे होते हैं जैसे—सार सब्बड़ सड़ बरसों, हांडी धोई खड़बड़ क्यों. ऐसी प्यारी आवाज़ को सिर्फ़ संस्कृती पंडित ही दोहरा सकते हैं. ख़ूबी यह कि संस्कृत इस द्रावड़ी आवाज़ से बच न सकी, लेकिन उसे अपनाने की संस्कृत को हिम्मत न पड़ी. करती तो चोरी पकड़ी जाती. संस्कृत बनाने वालों की यह कोशिश थी कि संस्कृत शुद्ध आर्य भाशा समझी जाये और इसलिये वह संस्कृत के द्रावड़ीपने को छिपाना चाहते थे. संस्कृती पंडित अब भी इसी कोशिश में हैं.

जब तक कोई विद्वान यह फ़ैसला न करे कि संस्कृत में कौन से लफ़्ज़ आर्य भाशा के हैं और कौन से द्रावड़ी और दूसरी देसी बोलियों के हैं तब तक यह भी फ़ैसला नहीं होता कि खड़ी बोली में कितने लफ़्ज़ द्रावड़ी और कितने आर्य भाशा के हैं. आवाज़ और ग्रामर के हिसाब से तो खड़ी बोली साफ़ द्रावड़ी ज़बान है. उसे आर्य भाशा कहना नादानी है.

मिस्टर हेरास (Heras) जो प्राचीन हिन्दी इतिहास के माहिर समझे जाते हैं उनकी 17 बरस खोज करने के बाद यह राय है कि पंजाबी और हिन्दुस्तानी बोलने वालों में द्रावड़ी ख़ून बहुत ज़्यादा है बनिस्बत तामिल, तेलेगू या मलयालम के बोलने वालों के. हमें यह बात बुरी मालूम होती है क्योंकि हज़ारों बरस से संस्कृत वाले एक ज़बान होकर इस बात पर बड़ा ज़ोर देते हैं कि आर्य बहुत शिक्षित और महापुरुश लोग थे और उन दिनों यहां के असली बासी जंगली, कपटी और कमीने थे. यह सच है कि उन किताबों के लिखे जाने के बाद मोहनजेदारो भी निकला, हड़प्पा भी निकला और इस क़िस्म के बहुत से खंडरात एराक़ वग़ैरा में भी निकले, जिनसे साफ़ ज़ाहिर है कि इस मामले में हमारी संस्कृत की किताबें सच्ची नहीं. लेकिन हम पर तो उनका कुछ ऐसा जादू चला हुआ है कि हम उन्हें ठीक ही समझते हैं.

यह मैं जानता हूं कि बोली का नसल से सम्बन्ध ज़रूरी नहीं. यह मुमकिन है कि दो लोग जिनका आपस में ख़ून का कोई रिश्ता नहीं एक ही बोली बोलते हों और यह भी मुमकिन है कि एक बाप के दो बेटों की बोली बिलकुल जुदा हो. इसलिये अगर यह भी मान लिया जाये कि खड़ी



(آتما) کہا جاتا ہے اور اس آتما کے انوسار ہی ہمارا ودھان کہتا ہے کہ ہماری بولی ابھاری جائے۔

گمبدی ان لفظوں کو کہا جاتا ہے جو کسی آواز کی نقل میں بنے ہوں۔ کھڑی بولی میں یہ ایک انوکھی بات ہے کہ جتنے گمبدی لفظ اس میں ایسے ہیں جہاں اور بولیوں میں ر آتی ہو ہماری بولی میں ڑ آئے گی—جیسے چڑیا، ککڑی، کھڑکا، دھاڑ، دھڑک، دھڑاکا، دھڑادھڑ، گل گپاڑا، بڑبڑ، کڑکڑاتا جاڑا، کھڑکھڑا اور ایسے بیسوں اور لفظ ہیں—بچوں کی کہانیوں میں تو ایسے لفظ بچوں کو بہت پیارے ہوتے ہیں جیسے سار سربڑ سڑبرسوں، ہانڈی دھوئی کھڑبڑ کیوں۔ ایسی پیاری آواز کو صرف سنسکرتی پنڈت ہی دوہرا سکتے ہیں۔ خوبی یہ کہ سنسکرت اس دراوڑی آواز سے بچ نہ سکی، لیکن اسے اپنانے کی سنسکرت کو ہمت نہ پڑی، کرتی تو چوری پکڑی جاتی۔ سنسکرت بنانے والوں کی یہ کوشش تھی کہ سنسکرت شدھ آریہ بھاشا سمجھی جائے اور اس لئے وہ سنسکرت کے دراوڑی پنے کو چھپانا چاہتے تھے۔ سنسکرتی پنڈت اب بھی اسی کوشش میں ہیں۔

جب تک کوئی ودوان یہ فیصلہ نہ کرے کہ سنسکرت میں کون سے لفظ آریہ بھاشا کے ہیں اور کون سے دراوڑی اور دوسری دیسی بولیوں کے ہیں تب تک یہ بھی فیصلہ نہیں ہوتا کہ کھڑی بولی میں کتنے لفظ دراوڑی اور کتنے آریہ بھاشا کے ہیں۔ آواز اور گرامر کے حساب سے تو کھڑی بولی صاف دراوڑی زبان ہے۔ اسے آریہ بھاشا کہنا نادانی ہے۔

مسٹر ہراس (Heras) جو پراچین ہندی اتہاس کے ماہر سمجھے جاتے ہیں ان کی 17 برس کھوج کرنے کے بعد یہ رائے ہے کہ پنجابی اور ہندستانی بولنے والوں میں دراوڑی خون بہت زیادہ ہے بنسبت تامل، تیلیگو یا ملائم کے بولنے والوں کے۔ ہمیں یہ بات بری معلوم ہوتی ہے کیونکہ ہزاروں برس سے سنسکرت والے ایک زبان ہو کر اس بات پر بڑا زور دیتے ہیں کہ آریہ بہت شکشت اور مہا پرش لوگ تھے اور ان دنوں کے یہاں کے اصلی باسی جنگلی، کپٹی اور کمینے تھے۔ یہ سچ ہے کہ ان کتابوں کے لکھے جانے کے بعد موہن جے دھارو بھی نکلا، ہڑپا بھی نکلا اور اس قسم کے بہت سے کھنڈرات عراق وغیرہ میں بھی نکلے جن سے صاف ظاہر ہے کہ اس معاملہ میں ہماری سنسکرت کی کتابیں سچی نہیں۔ لیکن ہم پر تو ان کا کچھ ایسا جادو چلا ہوا ہے کہ ہم انہیں ٹھیک ہی سمجھتے ہیں۔

یہ میں جانتا ہوں کہ بولی کا نسل سے سمبندھ ضروری نہیں۔ یہ ممکن ہے کہ دو لوگ جن کا آپس میں خون کا کوئی رشتہ نہیں ایک ہی بولی بولتے ہوں اور یہ بھی ممکن ہے کہ ایک باپ کے دو بیٹوں کی بولی بالکل جدا ہو۔ اس لئے اگر یہ مان بھی لیا جائے کہ کھڑی

ड़

लफ़्ज़ हैं तो भी यह अम्र कि हमारी बोली में पांच एक सौ लफ़्ज़ ड़ के आम बाजारू हैं ड़ का सिक्का जमाने के लिये काफ़ी है.

ड़ से कोई लफ़्ज़ शुरू नहीं होता लेकिन अगर पहला लफ़्ज़ र हो और आख़िरी ड़ तो पहली र भी ड़ की आवाज़ अख़्तियार करने लगती है—जैसे ड़बड़, ड़बड़ी, ड़ेवढ़ी, ड़ीढ़, ड़ोढ़ी, ड़ौरा. कुछ ऐसे लफ़्ज़ भी हैं जिनकी बीच की र भी धीरे धीरे ड़ की आवाज़ पकड़ने लगी है. यह एक अजीब मामला है क्योंकि दो भेदरू आवाज़ें आपस में नहीं बदलतीं. भेदरू उन दो आवाज़ों को कहते हैं जिनके बदलने से बहुत लफ़्ज़ों के माने बदल जाते हैं—जैसे त और ट आपस में भेदरू हैं. तीन, बात, पात की त की जगह अगर हम ट कहेंगे तो टीन, बाट, पाट और ही लफ़्ज़ हो जाते हैं. र और ड़ आपस में बहुत थोड़े लफ़्ज़ों में भेद करती है—जैसे सरक और सड़क, सर और सड़, पर और पड़. चूंकि ऐसे लफ़्ज़ों की गिनती बहुत कम है इसलिये र और ड़ आपस में भेदरू नहीं हैं. यह ही हाल ड और ड़ का है. फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि कुछ लफ़्ज़ों में पढ़े हुए र कहते हैं, अनपढ़ ड़. और कुछ लफ़्ज़ों में अनपढ़ ड और पढ़े हुए ड़ करते हैं—जैसे बुड्ढा, बूढ़ा, मुड्ढा, मूढ़ा. ऐसा मालूम होता है कि पंजाबी का रंग अनपढ़ों पर ज़्यादा चढ़ा है. सुनने में ल और ड़ की आवाज़ में बहुत भेद है लेकिन कुछ ज़िलों में ल भी ड़ की आवाज़ ले लेता है—जैसे हाली होड़ी, बावला बावड़ा, बाउली बाउड़ी. क्यों? मुझे नहीं मालूम.

आजकल के बोली के सारे विद्वानों की यह राय है कि जितनी कम आवाज़ें किसी बोली में हों, यानी जितने अक्षर (हर्फ़) किसी बोली में ज़रूरी हों उतनी ही वह बोली अच्छी, जितने हर्फ़ ज़्यादा हों, उतनी ही वह बोली गंदी. इन विद्वानों का यह भी कहना है कि अक्षर सिर्फ़ उन ही आवाज़ों के लिये बनाने चाहियें जो इस बोली में भेदरू हों. यह ड़ भेदरू नहीं, इसलिये अगर हम किसी तरह उसे निकाल सकें तो हम अपनी बोली को सुधार सकते हैं. मुश्किल यह है कि इन विद्वानों की यह भी राय है कि किसी बोली में कोई भी सुधार या अदल बदल और ख़ासकर उसकी आवाज़ों में सोच समझ जान बूझ कर नहीं किया जा सकता. ज़बानें बदलती हैं और उनकी आवाज़ें भी थोड़ी बहुत बदलती हैं, लेकिन इन सब तबदीलियों की जड़ में ऐसी ताक़तें होती हैं जो बेसुध अचेत होती हैं. ड़ का ही हाल देख लो. यह बढ़ रही है. एकड़, रबड़, बूचड़ तीनों लफ़्ज़ अंग्रेज़ी से हमने लिये, लेकिन अंग्रेज़ी र को द्राविड़ी ड़ से बदलकर. क्यों? कोई नहीं जानता. किसने? कोई जान नहीं सकता, क्योंकि एक का काम नहीं. करोड़ों नहीं तो लाखों का काम है. बिला सोचे समझे. बोली की इन बेसुध अचेत ताक़तों को ही बोली की genius

ڑ

لفظ ھیں تو بھی یہ امر کہ ھماری بولی میں پانچ ایک سو لفظ ڑ کے عام بازارو ھیں ڑ کا سکہ جمانے کے لئے کافی ھے۔

ڑ سے کوئی لفظ شروع نہیں ھوتا لیکن اگر پہلا حرف ر ھو اور آخری ڑ تو پہلی ر بھی ڑ کی آواز اختیار کرنے لگتی ھے جیسے ڑبڑ، ڑبڑی، ڑیوڑی، ڑیڑھ، ڑوڑھی، ڑاڑ وغیرہ۔ کچھ ایسے لفظ بھی ھیں جن کی بیچ کی ر بھی دھیرے دھیرے ڑ کی آواز پکڑنے لگی ھے۔ یہ ایک عجیب معاملہ ھے کیونکہ دو بھیدرو آوازیں آپس میں نہیں بدلتیں۔ بھیدرو ان دو آوازوں کو کہتے ھیں جن کے بدلنے سے بہت لفظوں کے معنے بدل جاتے ھیں۔ جیسے ت اور ٹ آپس میں بھیدرو ھیں۔ تین، بات، پات، کی ت کی جگہ اگر ھم ٹ کہیں تو ٹین، باٹ، پاٹ اور ھی لفظ ھوجاتے ھیں۔ ر اور ڑ آپس میں بہت تھوڑے لفظوں میں بھید کرتی ھیں۔ جیسے سرک اور سڑک، سر اور سڑ، پر اور پڑ۔ چونکہ ایسے لفظوں کی گنتی بہت کم ھے اس لئے ر اور ڑ آپس میں بھیدرو نہیں۔ یہ ھی حال ڈ اور ڑ کا ھے۔ فرق صرف اتنا ھے کہ کچھ لفظوں میں پڑھے ھوئے ر کہتے ھیں انپڑھ ڑ۔ اور کچھ لفظوں میں انپڑھ ڈ اور پڑھے ہوئے ڑ کہتے ھیں۔ جیسے بڈھا، بوڑھا، مڈھا، موڑھا۔ ایسا معلوم ھوتا ھے کہ پنجابی کا رنگ انپڑھوں پر زیادہ چڑھا ھے۔ سننے میں ل اور ڑ کی آواز میں بہت بھید ھے لیکن کچھ ضلعوں میں ل بھی ڑ کی آواز لےلیتا ھے جیسے ھالی ھوڑی، باولا باوڑا، باؤلی باوڑی، کیوں؟ مجھے نہیں معلوم۔

آجکل کے بولی کے سارے ودوانوں کی یہ رائے ھے کہ جتنی کم آوازیں کسی بولی میں ھوں، یعنی جتنے کم اکشر (حرف) کسی بولی میں ضروری ھوں اتنی ھی وہ اچھی، جتنے حرف زیادہ ھوں اتنی ھی وہ بولی گندی۔ ان ودوانوں کا یہ بھی کہنا ھے کہ اکشر صرف ان ھی آوازوں کے لئے بنانے چاھیں جو اس بولی میں بھیدرو ھوں۔ یہ ڑ بھیدرو نہیں اس لئے اگر ھم کسی طرح اسے نکال سکیں تو ھم اپنی بولی کو سدھار سکتے ھیں۔ مشکل یہ ھے کہ ان ودوانوں کی یہ بھی رائے ھے کہ کسی بولی میں کوئی بھی سدھار یا ادل بدل اور خاصکر اس کی آوازوں میں سوچ سمجھ جان بوجھ کر نہیں کیا جاسکتا۔ زبانیں بدلتی ھیں اور ان کی آوازیں بھی تھوڑی بہت بدلتی ھیں لیکن ان سب تبدیلیوں کی جڑ میں ایسی طاقتیں ھوتی ھیں جو بے سدھ اچیت ھوتی ھیں۔ ڑ کا ھی حال دیکھ لو۔ یہ بڑھ رھی ھے۔ ایکڑ، ربڑ، بوچڑ تینوں لفظ انگریزی سے ھم نے لئے، لیکن انگریزی ر کو دراوڑی ڑ سے بدل کر۔ کیوں؟ کوئی نہیں جانتا۔ کس نے؟ کوئی جان نہیں سکتا، کیونکہ ایک کا کام نہیں۔ کروڑوں نہیں تو لاکھوں کا کام ھے۔ بلا سوچے سمجھے۔ بولی کی ان بے سدھ اچیت طاقتوں کو ھی بولی کی genius

खड़खड़िया ( पालकी ), खंगड़ ( ईंट ), खेड़ा, खंगड़ी, खंगड़ (उजड्ड) खीड़ी ( लोहा ) केड़ा ( कौन सा ), कड़ियल जवान, कड़क.

लंगड़ा※, लोचड़, लकड़ी※, लकड़हारा, लघ्घड़, लड़ जैसे एक लड़ी दो लड़ी, लड़, (पल्ला ), लड़का※, लड़कौरी, लड़बावला, लाड़ी, लासड़ी ( ज़ेवर और गरसल ), लपड़ा या लबड़ा, लबड़ी ( कपड़ा लत्ता ), लोढ़ा ( बट्टा ), लोथड़ा, लमछड़ या लमतड़ंग, लोड़ ( ज़रूरत ), लगड़ी ( ओढ़नी ), लगुड़ी ( शराब ), लप्पड़, लेढ़ा ( रेवड़ ).

मोड़※, मौड़, मूढ़, मुड़मुरे, मंगेतड़, मरोड़ ( पेचिश, ग़ुस्सा, जलन ), मढ़ी, मूढ़ा, मीढ़, जली मुराड़ी मसूड़े मुडभेड़.

नाड़ा (इज़ारबन्द ), नाड़ा ( नाला ), नाड़, नाड़ी, नाड़ ( गर्दन ), नुक्कड़, निगोड़ी, निवाड़, निचोड़, नकछिढ़ा, नकतुड़ा, नगाड़ा, ओढ़ना, ओढ़नी.

पेड़ा, पेड़ी आटे की ), पेड़ी ( धड़ ) परौड़ और परौढ़ता, पूड़ना, परौढ़ा, फक्कड़, फड़क, फड़ (दूकान), फड़ ( जुआ ), फड़िया ( जुवारी ), फड़िया ( छोटा दूकानदार ) फकड़ा, फेपड़ा※, फोड़, फोड़ा※, पटड़ी, पटड़ा, पीहड़, पटड़ी ( चलने के लिये ), पाड़, पाड़, पकड़ धकड़, पीढ़ी ( नसल ) पीढ़ा और पीढ़ी, फुआर या फुवाड़, पैंतड़ा, पौड़ी, पहाड़, पगड़ी, पुड़ा, पुड़ी※, फड़, पीड़ ( दर्द ) पूतड़ा, पिछवाड़ी, पिछवाड़ा, पपड़ी, पलंगड़ी.

रिड़ या राड़ ( ज़िद ), राड़ (डरपोक) ड़ाढ़, रीढ़, ड़ीढ़ी, रूड़, रोड़ा, रूढ़, रूढ़ी (रिवाज), रूढ़ी (ख़ाली ज़मीन) रेवड़, रेवड़ी, रोकड़, रोकड़ बही, रूड़ा, रबड़, रखड़ी, राजवाड़ा.

सड़क, साढ़ी※, साड़ा, सड़ी या सड़ियल, सड़बड़, सकेड़, साड़ी (हाड़ी) सीढ़ी, सुघड़, साड़ू, सिंघाड़ा, सुघड़ी, स्योड़ा, सोहड़, सिलखड़ी.

थोड़ी※, ठोड़※ी, टीढ़ी, तपड़, थप्पड़※, तकराड़, तकड़ा, तकड़ी, टुकड़ा, टड़, टड़ा, तड़, तड़के, थड़ा, तोड़, तोड़ा, तड़प, तुड़प, तोबड़ा, थोबड़ा, तुक्कड़, तूंबड़ी, तामड़ा, तांतड़ी. ( तांत ) तिलड़ा, टंगड़ी, टिकड़ा, टेड़मेढ़, टुक्कड़, ठाढ़ा, टुक्कर तोड, तड़ाका, तड़ या धड़बन्दी, तागाड़ी, थड़ा, उड़द, उड़दू, उड़ान, उड़ी.

मुझे अफ़सोस है कि इस फ़ेहरिस्त की वजह से यह मज़मून लम्बा ही नहीं बेढंगा सा हो गया है लेकिन इसके बग़ैर मैं ड़ की बड़ाई ठीक जता नहीं सकता था. इस फ़ेहरिस्त में 700 से ऊपर लफ़्ज़ हैं. मैं जानता हूं कि मेरे पढ़े हुए भाई उनमें से कुछ लफ़्ज़ों में ड़ की जगह र ठीक समझते हैं लेकिन चूंकि मेरा यह ख़्याल है कि मेरी बोली की बाग-डोर मेरे बड़े भाई अनपढ़ों के हाथ में है इसलिये बोली के मामले में उनका लोहा ज़्यादा मानता हूं. अगर यह मान भी लिया जावे कि इनमें से सौ या दो सौ भी भरती के



کھڑکھڑیا ( پالکی ) کھنگڑ ( اینٹ ) کھیڑا، کھنگڑی، کھنگڑ ( اُجڈ ) کھیڑی ( لوھا ) کھیڑا ( کونسا ) کڑیل جوان، کڑک .

لنگڑا *، لیچڑ، لکڑی *، لکڑھارا، لگھڑ، لڑ جیسے ایک لڑی دولڑی، لڑ ( پلا ) لڑکا، لوکیلا، لڑکوری، لڑباولا، لاڑی، لالڑی ( زیور ) اور گرسل لپڑا یا لبڑا، لبڑی ( کپڑا لتا ) لوڑھا بٹہ ) لوتھڑا، لمچھڑ یا لم تڑنگ، لوڑ ( ضرورت ) لگڑی ( اوڑھنی ) لگڑی ( شراب ) لپڑ، لیڑھا ( ریوڑ )

موڑ *، موڑ، موڑھ، مڑمرے، منگیتڑ، مروڑ ) پیچش، غصہ، جلن مڑھی، موڑھا، میڑھ، جلی مراڑی، مسوڑے، مڈبھیڑ .

ناڑا * ( ازار بند ) ناڑا ( نالا ) ناڑ، ناڑی، ناڑ ) گردن ( نکڑ، نگوڑی، نواڑ، نچوڑ، نک چڑھا، نک توڑا، نگاڑا . اوڑھنا، اوڑھنی .

پیڑا، پیڑی ( آٹے کی پیڑی ( دھڑ ) پروڑ اور پروڑھتا، پوڑنا، پروڑھا، پھکڑ، پھڑک، پھڑ ( دکان ) پھڑیا ( جواری ) پھڑیا چھوٹا دوکاندار، پھسکڑا، پھیپڑا *، پھوڑ، پھوڑ، پھوڑا *، پٹڑی، پٹڑا، پیہڑ، پٹڑی ( چلنے کے لئے ) پاڑ، پاڑ، پکڑدھکڑ، پیڑھی ( نسل ) پیڑھا اور پیڑھی پھوار یا پھواڑ، پینترا، پوڑی، پہاڑ، پگڑی، پڑا، پڑی، پھڑ پیڑ ( درد ) پوتڑا، پچھواڑی، پچھواڑا، پپڑی، پلنگڑی .

رڑیا راڑ ( ضد ) راڑ ( ڈرپوک ) ڑاڑھ، ریڑھ، ڑیڑھی، روڑ، روڑا، روڑھ، روڑھی ( رواج ) روڑھی ( خالی زمین ) ریوڑ، ریوڑی، روکڑ، روکڑ بہی، روڑا، ربڑ، رکھڑی، راج واڑا .

سڑک، ساڑھی *، ساڑا، سڑی یا سڑیل، سڑبڑ، سکیڑ، ساڑی ( ھاڑی ) سیڑھی، سگھڑ، ساڑو، سنگھاڑا، سوگھڑی، سیوڑا، سوھڑ، سلکھڑی .

تھوڑی *، تھوڑی *، ٹیڑھی، تپڑ، تھپڑ *، تکراڑ، تکڑا، تکڑی، ٹکڑا *، ٹڑ، ٹڑا، تڑ، تڑکے، تھاڑ، توڑ، توڑا، تڑپ، تڑپ، توبڑا، تھوبڑا، تکڑ، تونبڑی، تامڑا تانتڑی ( تانت ) تلڑا، ٹنگڑی، ٹکڑا، ٹیڑھ میڑھ، ٹکڑ، ٹھاڑا، ٹکرتوڑ، تڑاکا، تڑ یا دھڑبندی، تاگڑی، تھڑا . اُڑد، اُڑدو، اُڑان، اُڑی .

مجھے افسوس ھے کہ اس فہرست کی وجہ سے یہ مضمون لمبا ہی نہیں بےڈھنگا سا ھو گیا ھے لیکن اس کے بغیر میں ڑ کی بڑائی ٹھیک جتا نہیں سکتا تھا . اس فہرست میں 700 سے اُوپر لفظ ھیں. میں جانتا ھوں کہ میرے پڑھے ھوئے بھائی ان میں سے کچھ لفظوں میں ڑ کی جگہ ر ٹھیک سمجھتے ھیں لیکن چونکہ میرا یہ خیال ھے کہ میری بولی کی باگ ڈور میرے بڑے بھائی ان پڑھوں کے ھاتھ میں ھے اس لئے بولی کے معاملہ میں میں ان کا لوھا زیادہ مانتا ھوں . اگر یہ مان بھی لیا جائے کہ ان میں سے سو یا دو سو بھی بھرتی کے

बाड़*, बाढ़*, बारह खड़ी, बाढ़ी या बढ़ई, बड़ा, बड़ाई, बेड़, ( किश्ती ) बीड़ा, बेड़, ( जंजीर ), बिगाड़, बिछोड़ा, भूड़ा, बनड़ा*, बेड़, बेंड़ा, बढ़ापा, बूढ़ा*, बढ़ौती, बोड़ा ( दांत टूटा ), ब्योड़ा, बौछाड़, भंगड़, भड़क, भड़भड़, भड़ि, भड़भूंजा, बेड़नी ( नटनी ) बूचड़, बूचड़ खाना, भड़वा, भड़ास, भाड़ा, भड़ैत, भीड़ भड़क्का, मुक्कड़, भूक हड़ताल, भगोड़, बखेड़ा, बजड़ा ( किश्ती ) बजड़ा, ( बाजरा ), बंसवाड़ी, बड़भाग, बड़बोल, बढ़न, बड़हार, बड़ीमाता ( सीतला ), बढ़िया, बढ़ावा, बढ़ोतरी या बढ़ती ( तरक़्क़ी ), बढ़ती ( ज़्यादा वज़न ) बांकड़ी, बांड़ा, बिगड़े दिल, बैढ़ ( नास ) बसोड़ा.

छड़, छड़ी, छड़ा ( अकेला ), छड़ा ( ज़ेवर ) चड़, छकड़ा, चड़चड़, छप्पड़, छप्पड़ ( तालाब ), चौड़ा*, चूड़ा, चूड़ा, ( ज़ेवर ), चूड़ी, चूढ़ा*, चूतड़, चौपड़, चुड़ैल, चीथड़े, चढ़ावा, चपड़ा, चचड़ी, चिड़चिड़ा, चींचपड़, चीड़फाड़, चिकनी चुपड़ी, चुनड़ी, चूड़ा करन, चूड़ा पाश, चौकड़, ( हिरन की ), चोकड़ा ( ज़ेवर ) चौघड़ा, चौगोड़िया, छाबड़ी, छाबड़ी वाला, चम ा, छुवाड़ा, छेड़ छाड़, छीचड़ा, चावड़ी बाज़ार.

धड़*, धड़ंग, धड़क, धड़कन, धड़का, धड़ा, धड़ाका, धड़ाधड़, धड़ा बन्दी, धड़ाम, धड़ी, धाड़, धुलेंड़ी, दौड़*, घुड़दौड़.

घड़ा*, घड़ोंची, घड़ी*, घड़ी, गठड़ी, गाढ़ा, गाढ़ा, गड़बड़ गाड़ी, गढ़, घोड़ा*, घाड़ा ( बन्दूक़ का ), गुड़िया, गोढ़ा, गुड़ई, गढ़, घुड़की, गोबड़, गादड़, गड़ासी, गुदड़ी, गुदड़ी बाज़ार, गुलगपाड़ा, गौड़ ( जात और देस ) घुड़चढ़ा, घुड़चढ़ी, घोड़ी ( राग ), घुमड़ी, गूगड़.

हड़ ( बाड़ ), हड़ ( ज़ेवर ), हड़कम्प, हंसोड़, हड़क, हड़काया, हड़ताल*, हड़बड़, हड़बड़ी, हरीड़ा, हतोड़ा*, हीजड़ा*, हुड़कना, हड़धंग, हुल्लड़, हेकड़ी, हांड़ि या होड़ा होड़ी, हाड़ ( असाढ़ ), हाड़ी ( मेवा ), हाड़ी ( फ़सल ).

जाड़ा*, जड़*, जड़ ( बुद्धू ), जखीड़ा ( ज़ख़ीरा ), जड़याया, जोड़ी, जड़िया, जबड़ा या जबाड़ा, जोड़न, जौहड़, झाड़क, झाड़, झाड़न, झड़, पतझड़, झगड़ा, जोड़ा (लिबास का ), झाड़ू.

कड़ा*, कड़ी ( छत की ), कड़ी और कड़ीदार ( चेन ), कड़ी ( सख़्त ), कुड़ी या कड़वी, कटड़ा ( मोहल्ला ), कढ़ाई ( मज़दूरी ), कढ़ाई, कथक्कड़, कनपीड़ा, कड़कड़, कड़कड़ाता जाड़ा, कढ़ैया, किरकड़ा, कड़क, किड़क, खिड़की, ककड़ी, कूड़ा, खड़ाऊं*, कपड़ा*, कीड़ा ( सख़्त ), कबाड़, कुबड़ा, कांगड़ी, कारूड़ा, कुड़कुड़ी, कड़ल, कीचड़*, कुकड़ी ( सूत की ), करोड़पति, कुड़क ( कुर्की ), कुड़यक ( ज़रा सा ), कोढ़, कुड़िया, कूड़ा करकट, खड़िया मिट्टी, खड़ग, खरबड़ी, कांगड़ी, खलड़ी, खिलवाड़, खेती बाड़ी, खड़खड़ा ( गाड़ी ),



باڑ*، باڑھ*، بارہ کھڑی، باڑھی یا بڑھئی*، بڑا*، بڑائی، بیڑی*، ( کشتی )، بیڑا، بیڑی ( زنجیر )، بگاڑ، بچھوڑا، بکڑا*، بیڑ، بینڈرا، بڑھاپا، بوڑھا*، بڑھوتی، بوڑا ( دانت ٹوٹا )، بیوڑا، بوچھاڑ، بھنگڑ، بھڑک، بھڑبھڑ، بھاڑ، بھڑبھونجا، بیڑنی ( نٹنی ) بوچڑ، بوچڑ کھانا، بھڑوا، بھڑاس، بھاڑا، بھڑیت، بھیڑ، بھیڑ بھڑکا، ٹکڑ، بھوک ہڑتال، بھگوڑ، بکھیڑا، بجڑا ( کشتی )، بجڑا ( باجرہ )، بنس واڑی، بڑبھاگ، بڑبول، بڑھن، بڑھار، بڑی ماتا ( سیتلا )، بڑھیا، بڑھاوا، بڑھوتری یا بڑھتی ( ترقی )، بڑھتی ( زیادہ وزن )، بانکڑی، بانڈا، بگڑے دل، بیڑھ ( ناس ) بسوڑا۔

چھڑ، چھڑی*، چھڑا ( اکیلا )، چھڑا ( زیور )، چڑ، چھکڑا، چڑ چڑ، چھپڑ، چھپڑ ( تالاب ) چوڑا* چوڑا* چوڑا ( زیور ) چوڑی، چوڑھا*، چوتڑ*، چوپڑ، چڑیل، چیتھڑے، چڑھاوا، چپڑا، چچڑی، چڑچڑا، چیں چپڑ، چیرپھاڑ، چکنی چپڑی، چنڑی، چوڑا کرن، چوڑا پاش، چوکڑی ( ہرن کی )، چوکڑا ( زیور )، چوگھڑا، چوگوڑیا، چھابڑی، چھابڑی والا، چمڑا، چھواڑا، چھیڑ چھاڑ، چھیچھڑا، چاوڑی بازار۔

دھڑ*، دھڑنگ، دھڑک، دھڑکن، دھڑکا، دھڑا، دھڑاکا، دھڑادھڑ، دھڑا بندی، دھڑام، دھڑی، دھاڑ، دھولیڑی، دوڑ* گھڑ دوڑ*۔

گھڑا*، گھڑونچی، گھڑی*، گھڑی، گٹھڑی، گاڑھا، گاڑھا، گڑبڑ، گاڑی، گڑھا، گھوڑا*، گھوڑا ( بندوق کا ) گڑیا*، گوڑھا، گڑوئی، گڑھ، گھڑکی، گوبڑ، گادڑ، گڑاسی، گدڑی، گدڑی بازار، گل گپاڑا، گوڑ ( ذات اور دیس ) گھڑچڑھا، گھڑچڑھی گھوڑی ( راگ ) گھمڑی، گرگڑ۔

ہڑ ( باڑ )، ہڑ ( زیور )، ہڑکمپ، ہنسوڑ، ہڑک، ہڑکایا، ہڑتال*، ہڑبڑ، ہڑبڑی، ہریڑا، ہتوڑا*، ہیجڑا*، ہڑکنا، ہڑدھنگ، ہلڑ، ہیکڑی، ہوڑیا ہوڑاہوڑی، ہاڑ ( اساڑھ )، ہاڑی ( میوہ )، ہاڑی ( فصل )

جاڑا*، جڑ*، جڑ ( بدھو ) جکھیڑا ( ذخیرہ ) جڑیایا جڑی، جڑیا، جبڑا یا جباڑا، جڑن، جوہڑ، جھڑک جھاڑ، جھاڑن، جھڑ، پت جھڑ، جھگڑا، جوڑا ( لباس کا ) جھاڑو۔

کڑا*، کڑی* ( چھت کی ) کڑی اور کڑیدار ( چین ) کڑی ( سخت ) کوڑی یا کڑوی، کٹڑا ( محلہ ) کڑھائی ( مزدوری ) کڑھائی، کتھکڑ، کن پیڑا، کڑکڑ، کڑکڑاتا جاڑا، کڑھیا، کرکڑا، کڑک، کڑک، کھڑکی، ککڑی کوڑا، کھڑاؤں*، کپڑ*، کیڑا ( سخت ) کباڑ، کبڑا، کانگڑی، کاروڑا، کڑکڑی، کڑل، کیچڑ، ککڑی ( سوت کی ) کروڑپتی، کڑک ( قرقی ) کڑیک ( ذرا سا ) کوڑھ، کوڑیا، کوڑا، کوڑاکرکٹ، کھڑیا مٹی، کھڑگ، کھربڑی، کانگڑی، کھلڑی کھلواڑ، کھیتی باڑی، کھڑکھڑا ( گاڑی )

कटहड़ा, खपड़ैल*, खपड़ा, छप्पड़, पेड़ी या सीढ़ी* या पोड़ी, थड़ा, मढ़ी, बाड़ी, राजबाड़ी, चबूतड़ा, बेढ़ा, ड्योढ़ी, बढ़ाव, बाड़जा, बाड़ा, फलवाड़ी, फुलवाड़ी, अड़ोस-पड़ोस, बगड़ जो शायद बग़ल से निकला है.

## ( 5 ) जानवर

कीड़ा, कीड़ी*, मकोड़ा*, मकड़ी* उड़ने वाली, मकड़ी* जाले वाली, चचवड़, चम चड़ा, भिड़ी, बछड़ा, बछेड़ा, कटड़ा, गीदड़ी लोमड़ी, लकड़बग्घा· या लकड़ बगड़, बघियाड़, बागड़बिल्ला, केकड़ा, घड़ियाल, सिंघाड़ा.

उड़ने वाले जानवरों का आम नाम चिड़िया*, चिड़ी*, चिमगादड़, गरुड़, गरसल या गड़सल को लासड़ी भी कहते हैं, भटियाड़न, भड़भूंजा, खट बढ़ई, टटीढ़ी, गगन भेड़. पालतू जानवरों में से भेड़ और घोड़ा, घोड़े को मैंने जानकर आख़िरी रखा क्योंकि यह लफ़्ज़ तवारीख़ी है और जताता है कि हममें और आर्यों में कितनी शुरू में चाह थी. और देसों में तो अश्व अस्प या हार्स हो गया, हिन्दुस्तान ने उसे बिलकुल नहीं क़बूला.

## ( 6 ) बनस्पति

बनस्पति के आम नाम हैं :—पेड़, झाड़, झाड़ी. दरख़्त या दरख़त कम ही कहते हैं और वृक्ष कोई भूल कर भी नहीं कहता. रुख जिसको फेर कर संस्कृत वालों ने वृक्ष गढ़ा था वह भी अब सिसकियां ले रहा है. जिन छोटे पौदों का नाम न आता हो उनका आम नाम जड़ी बूटी* है. हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा पेड़ बड़* और उसके ज़ात भाई बोड़ी, गूलढ़, रबड़ और रींड़ी, चील या चीड़, पनगड़ा या चिड़ियों का दरख़्त. तोम्बड़े को पंजाब वाले खड़कना और दिल्ली वाले झाड़ फ़ानूस का दरख़्त कहते हैं. पापड़ी को ही पितपापड़ा या पितपावड़ा और दरख़्त है, इसका मुझे इल्म नहीं. बरना या बड़ना, लिसाड़ा, आमड़ा, आड़, भंगड़ा, क्योड़ा, करोंदा या कड़ोंदा, केकर या केकड़ी, हड़, बहेड़ा, बड़बेर, या झड़बेरी. मैं शहरी हूं इसलिये मुझे पेड़ों के नाम कम ही आते हैं. बहुत से बहुत पचास पेड़ों के नाम आते होंगे. उनमें से पंद्रह एक ऐसे होंगे जिनमें ड़ आती है. एक सोचने वाली बात है. यही हाल जानवरों के नाम का है.

## ( 7 ) मुतफ़र्रिक़

आड़, अड़ा, आड़, ( दौलत ) आड़े आना, अड़ी, आंकड़ी, आंकड़े, आंखड़ी, आढ़त*, आढ़तिया, उखड़, अजड़, अड़ंगा, अंगड़ खंगड़, अंगड़ाई, अखाड़ा*, उखड़ेत, अगाड़ी, अनाड़ी, अड़, या अड़ियल, उड़ान, उड़ार, अड़, ( मुसीबत ), अल्लढ़, अधेड़, अनघड़, अधड़ा, अक़ल दाढ़, अरांड़े, अड़बंग, अकड़ू.



کٹھڑا، کھپڑیل*، کھپڑا، چھپڑ، پیڑی یا سیڑی* یا پوڑی، تھڑا، مڑھی، باڑی، راج باڑی، چبوترا، بیڑھا، ڈیوڑی، بڑھاؤ، باڑجا، باڑا، پھلواڑی، پھلواڑی، اڑوس پڑوس، بگڑ جو شاید بغل میں سے نکلا ھے.

## (5) جانور

کیڑا*، کیڑی*، مکوڑا*، مکڑی اڑنے والی، مکڑی*، جالے والی، چچڑ، چم چچڑ، بھڑ، بچھڑا، بچھیڑا، کٹڑا، گیدڑ، لومڑی لکڑ بگھا یا لکڑ بگڑ، بگھیاڑ، باگڑ بلا، کیکڑا، گھڑیال، سنگھاڑا.

اُڑنے والے جانوروں کا عام نام چڑیا*، چڑی*، چمگادڑ، گرڑ، گرسل یا گڑسل کو لاسڑی بھی کہتے ھیں. بٹھیاڑن، بھڑبھونجا، کھٹ بڑھئی، ٹٹیڑی، گگن بھیڑ. پالتو جانوروں میں سے بھیڑ اور گھوڑا. گھوڑے کو میں نے جان کر آخری رکھا کیونکہ یہ لفظ تواریخی ھے اور جتاتا ھے کہ ھم میں اور آریوں میں کتنی شروع میں چاہ تھی. اور دیسوں میں تو اشو اسپ یا ھارس ھو گیا مگر ھندستان نے اِسے بالکل نہیں قبولا.

## (6) بنسپتی

بنسپتی کے عام نام ھیں:—پیڑ*، جھاڑ*، جھاڑی*، درخت یا درکھت کم ھی کہتے ھیں اور ورکش کوئی بھول کر بھی نہیں کہتا. رکھ جس کو پھیر کر سنسکرت والوں نے ورکش گڑھا تھا وہ بھی اب سسکیاں لے رھا ھے. جن چھوٹے پودوں کا نام نہ آتا ھو اُن کا عام نام جڑی بوٹی ھے. ھندستان کا سب سے بڑا پیڑ بڑ* اور اِسی کے ذات بھائی بوڑی، گولھڑ، ربڑ اور ریڑی، چیل یا چیڑ، پنگڑا یا چڑیوں کا درخت، تومبڑے کو پنجاب والے کھڑکنا اور دلی والے جھاڑ فانوس کا درخت کہتے ھیں. پاپڑی کو ھی پت پاپڑا کہتے ھیں یا پت پاپڑا اور درخت ھے، اِس کا مجھے علم نہیں، برنا یا بڑنا، لسوڑا، آمڑا، آڑو، بھنگڑا، کیوڑا، کروندا یا کڑوندا، کیکر یا کیکڑی، ھڑ، بہیڑا، بڑبیری یا جھڑ بیری. میں شہری ھوں اِس لئے مجھے پیڑوں کے نام کم ھی آتے ھیں. بہت سے بہت پچاس پیڑوں کے نام آتے ھوں گے، اِن میں سے پندرہ ایک ایسے ھوں گے جن میں ڑ آتی ھے. یہ ایک سوچنے والی بات ھے. یہی حال جانوروں کے نام کا ھے.

## (7) متفرق

آڑ، آڑا، آڑی ( دولت ) آڑے آنا، اڑی، انکڑی، آنکڑے، انکھڑی، آڑھت*، آڑھتیا، اُکھڑ، اجڑ، اڑنگا، انگڑکھنگڑ انگڑائی، اکھاڑا، اُکھڑیت، اگاڑی، اناڑی، اڑی یا اڑیل، اُڑان، اُڑار، اڑی ( مصیبت ) الھڑ، ادھیڑ، ان گھڑ، ادھڑ، عقل داڑھ، اروڑے، اڑبنگ، اکڑوں.

कुड़कना, खड़ा होना⁂, खड़कना खड़काना या खड़खड़ाना, खदेड़ना, लड़ना⁂, लड़ाना, लड़खड़ाना, लंगड़ाना, लताड़ना, लथेड़ना, लिबड़ना, लड़ना ( काटना ), लुड़कना, लोढ़ना ( चुनना, ढूंढना ), लुढ़कना मुड़ना⁂, मोड़ना, मरोड़ना, निचोड़ना, निबेड़ना, ओढ़ना, पड़ना⁂, पढ़ना⁂, पढ़ाना, पकड़ना⁂, पूड़ना ( तैरना ), पोढ़ना, ( झूलना ), पिछड़ना, पछाड़ना, पछोड़ना, फाड़ना⁂, फड़कना, फड़फड़ाना, फाड़ना, रिड़कना, रिढ़ना, रगड़ना, रबड़ना, सड़ना⁂, सुकड़ना, सोड़ना ( मारना ), ताड़ना⁂, तोड़ना⁂, तड़पना, तड़कना, थड़कना, तुड़ाना ( भान लेना ), तुड़ाना, थपड़ना, उड़ना, उड़ाना, उधड़ना⁂, उधेड़ना, उभेड़ना, उभड़ना, उगाढ़ना, उगड़ना, उखड़ना, उखेड़ना, उचड़ना, उजड़ना, उजाड़ना, उभाड़ना, उमड़ना, उड़कना.

## ( 2 ) हिसाब

गिनती के लफ़्ज़ों को आंकड़े कहा जाता है. हमारे बच्चे 'अक्कड़ दक्कड़ पूरे सौ' का खेल खेलते हैं और अगरचे एक को इक्कड़ नहीं कहते, दुकड़ी, तिकड़ी चौकड़ी आम बोले जाते हैं. डेढ़⁂, अढ़ाई⁂, और तीन से आगे साढ़े⁂, जोड़ा, जुड़वां, जोड़ी ( जानवरों की, तबले की, मुगदर की ), अड़तीस, अड़तालीस, अड़सठ. जोड़⁂ जमा को ही नहीं कहते उसके फल को भी जोड़, जोड़ने बचाने वाला और शायद जोरू का लफ़्ज़ भी जोड़ से निकला हो क्योंकि बीवियां ही अक्सर जोड़ती हैं. पहाड़े ( गुने ), पैसे का सबसे छोटा भाग कौड़ी⁂ और चौथा हिस्सा दमड़ी, अढ़ैया अढ़ाई सेर और धड़ी पांच सेर, कोड़ी ( बीस ), हज़ार का थैला तोड़ा और सौ लाख का करोड़, तकड़ी ( तराज़ू ), उसके दो पलड़े, हाड़ा और धड़ा.

## ( 3 ) खाना पीना

दिल्ली में दो दालें ज़्यादा खाई जाती हैं, उड़द और अरहड़ या अड़हक, लिखने में ड़ की जगह र लेकिन अक्सर बोलते ड़ से ही हैं. जैसे लिखने में तो उर्दू बोलने में उड़दू, आड़, आमड़ा, लसोड़ा, कढ़ी, खिचड़ी, कढ़ा ( हलवा ), कढ़ाई गुड़, गंदूड़ा, टिकड़ा और टिकड़ी ( बड़ी और छोटी रोटी ), टुकड़ा, चुपड़ी, अंगकड़ी जो निरे कोयलों पर सिके, परांवठा या पड़ांवठा, पूड़ी, कचौड़ी, ख़स्ताकचौड़ी, बीढ़ी या बीड़ी, पूड़ा, चिलड़ा, बड़ा बड़ियां, चिड़वा, मुरमुड़ा, मरड़ा, रबड़ी, पेड़ा, पकौड़ी, पकौड़े, पापड़⁂, पापड़ी, पेढ़ी, मंगौड़ी, स्योड़ा, बीड़ा, बीड़ी, गुरगुड़ी, खोपड़ा, ताड़ी, सगड़ी, सिंघाड़ा.

## ( 4 ) घर

पाड़ मकान बनाने के लिये और उसमें चोरी करने के लिये, किवाड़⁂, जोड़ी, खिड़की⁂, पड़छती, कड़ियां⁂,



کڑکنا، کھڑا ہونا*، کھڑکنا، کھڑکانا یا کھڑکھڑانا، کھدیڑنا، لڑنا*، لڑانا، لڑکھڑانا، لنگڑانا، لتاڑنا، لتھیڑنا، لبڑنا، لڑنا ( کاٹنا )، لڑکنا، لوڑنا ( چننا، ڈھونڈنا )، لڑھکنا، مڑنا*، موڑنا، مروڑنا، مڑکنا، نچوڑنا، نبیڑنا، اوڑھنا، پڑنا*، پڑھنا*، پڑھانا، پکڑنا*، پوڑنا ( تیرنا )، پوڑھنا ( جھولنا )، پچھڑنا، پچھاڑنا، پچھوڑنا، پھاڑنا*، پھڑکنا، پھڑپھڑانا، پھوڑنا، رڑکنا، رڑھنا، رگڑنا، ربڑنا، سڑنا*، سکڑنا، سوڑنا ( مارنا )، تاڑنا*، توڑنا*، تڑپنا، تڑکنا، تھڑکنا، تڑانا ( بھان لینا )، تڑانا، تھپڑنا، اُڑنا*، اُڑانا، اُدھڑنا*، اُدھیڑنا، اُبھیڑنا، اُگاڑھنا، اُگڑھنا اُکھڑنا، اُکھیڑنا، اُچڑنا، اُجڑنا، اُجاڑنا، اُبھاڑنا، اُمڑنا، اُڑکنا.

## ( 2 ) حساب

گنتی کے لفظوں کو آنکڑے کہا جاتا ہے. ہمارے بچے 'اکڑ دکڑ پورا سو' کا کھیل کھیلتے ہیں اور اگرچہ ایک کو اکڑ نہیں کہتے دکڑی، تکڑی، چوکڑی عام بولے جاتے ہیں. ڈیڑھ*، اڑھائی*، اور تین سے آگے ساڑھے*، جوڑا*، جڑواں*، جوڑی* ( جانوروں کی، طبلہ کی مگدر کی )، اڑتیس، اڑتالیس، اڑسٹھ. جوڑ* جمع کو ہی نہیں کہتے اس کے پھل کو بھی. جوڑ، جوڑنے بچانے والا اور شاید جورو کا لفظ بھی جوڑ سے نکلا ہو کیونکہ بیویاں ہی اکثر جوڑتی ہیں. پہاڑے* ( گنے )، پیسے کا سب سے چھوٹا حصہ دمڑی، اڑھیا اڑھائی سیر اور دھڑی پانچ سیر، کوڑی ( بیس )، ہزار کا تھیلا توڑا اور سو لاکھ کا کروڑ*، تکڑی ( ترازو ) اس کے دو پلڑے، ہاڑا اور دھڑا.

## (3) کھانا پینا

دلی میں دو دالیں زیادہ کھائی جاتی ہیں اُڑد اور ارھڑ یا اڑھک، لکھنے میں ڑ کی جگہ ر لیکن اکثر بولتے ڑ سے ہی ہیں، جیسے لکھنے میں تو اردو بولنے میں اڑدو. آڑو، آمڑا، لسوڑا، کڑھی*، کھچڑی*، کڑھا ( حلوا )، کڑھائی، گڑ*، گندوڑا، ٹکڑا اور ٹکڑی ( بڑی اور چھوٹی روٹی )، ٹکڑا، چپڑی، انگ کڑی جو نرے کوئلوں پر سکے، پرانوٹھا یا پڑانوٹھا، پوڑی، کچوڑی، خستہ کچوڑی، بیڑھی یا بیڑی، پوڑا، چلڑا، بڑا، بڑیاں، چڑوا، مرمڑا، مرڑا، ربڑی، پیڑا، پکوڑی، پکوڑے، پاپڑ، پاپڑی، پیڑی، منگوڑی، سیوڑا، بیڑا، بیڑی، گرگڑی، کھوپڑا، تاڑی، سگڑی، سنگھاڑا.

## (4) گھر

پاڑ*، مکان بنانے کے لئے اور اس میں چوری کرنے کے لئے، کواڑ*، جوڑی، کھڑکی*، پڑچھتی، کڑیاں*،

यह जताने के लिये कि ड़ हमारे लिये कितनी होन्हार और प्यारी आवाज़ है मैं नीचे कुछ ऐसे लफ़्ज़ों को लिखता हूं जिनमें ड़ आती है. डिक्शनरी में तो ऐसे और भी बहुत से लफ़्ज़ हैं लेकिन मैं सिर्फ़ उनको ही लेता हूं जो मामूली घरों की बोल चाल में रोज़ बरते जाते हैं. बहुत से तो उनमें ऐसे हैं जिनका तोड़ ही नहीं. मेहरबानी से उन लफ़्ज़ों की तरफ़ ज़्यादा ध्यान दें जिन पर निशान है. मेरे विचार में यह लफ़्ज़ हमारी बोली के बुनियादी पत्थर हैं. बुनियादी अंग्रेज़ी में सिर्फ़ 850 लफ़्ज़ हैं. अगर कभी हमें अक़्ल आई और हमने भी अपनी बुनियादी बोली बनाई तो उसमें बहुत से बहुत 1000 लफ़्ज़ होंगे. अगर जैसा इस फ़ेहरिस्त से दिखाई देता है सौ लफ़्ज़ उनमें ऐसे हैं जिनमें ड़ आती है तो ड़ का राज साफ़ है. अगर आपकी राय में ऐसे पचास लफ़्ज़ भी ड़ वाले हैं तो ड़ की प्रधानता में शक नहीं रहता. देवनागरी में 33 व्यंजन हैं. मेरे विचार में ऐसा कोई व्यंजन देवनागरी का नहीं जो खड़ी बोली के बुनियादी लफ़्ज़ों में ड़ जितना आता हो. अगर मेरा यह ख़्याल ठीक है तो सोचो तो सही कि कितने कितने लायक़ हैं वह लोग जो खड़ी बोली की लिपि बनाएं और उसमें वह आवाज़ जिसका हमारी बोली में सब से बड़ा महत्व ( मान ) हो उसे अपनी लिपि में जगह न दें. यह ड़ लफ़्ज़ खड़ी बोली में है. जिस देस में खड़ी बोली ने जन्म लिया उसे बांगड़ू कहते हैं. यह बांगड़ू में भी विराजमान है. हिन्दुस्तान के और भी देसों के नाम में पाई जाती है—जैसे कांगड़ा, मारवाड़, मैवाड़, उड़िया, राढ़ी उत्तर बंगाल.

## क्रिया ( फ़ेल )

मैं शुरू क्रिया के लफ़्ज़ों से करता हूं क्योंकि क्रिया के लफ़्ज़ों को हर बोली में ज़्यादा मान दिया जाता है.

अड़ना❋, अड़ाना❋, अड़ूसना, अड़कना, अंड़ाना, अड़ालना या उड़ेलना, अबड़ना या उभेड़ना ( बढ़ना ), अलोड़ना, बाड़❋, बड़❋, बढ़, बढ़ाना❋ ( दूकान बढ़ानी, चूड़ियां बढ़ानी, दया बढ़ाना ), बिगड़ना❋, बिगाड़ना❋, बड़बड़ाना, बिछड़ना, भिड़ना, भिड़ना या भेड़ना, भड़कना और भड़काना, बिसोड़ना, चिढ़❋, चिढ़ाना, चिड़ना, चिड़ाना, चीड़ना❋, छेड़ना❋, छेड़ना ( शुरू करना ) चिचोड़ना, छिड़कना, चपड़ना, छोड़ना, छुड़ाना, दौड़ना, धड़कना, दाढ़ना ( जलाना ) दहाड़ना, गाड़ना❋, गड़ना, घड़ना, घुड़कना, गिड़गिड़ाना, गुड़गुड़ाना, गेड़ना ( घेरना ), गीड़ना ( कुंआ चलाना ), गाड़ना❋, गोढ़ना, घुसेड़ना, हाड़ना, हड़पना, हुड़कना, जड़ना❋, जोड़ना❋, जुड़ना, भड़ना, भाड़ना, भगड़ना, जकड़ना, भिड़कना, भिंभाड़ना, कड़कना ( बिजली का ), कड़कड़ाना, काढ़ना ( निकालना, उबालना ) कढ़वाना या कढ़लाना, कुढ़ना, कुढ़ाना, ककड़ना,



یہ جتانے کے لئے کہ ڑ همارے لئے کتنی هونہار اور پیاری آواز هے میں نیچے کچھ ایسے لفظوں کو لکھتا هوں جن میں ڑ آتی هے. ڈکشنری میں تو ایسے اور بھی بہت سے لفظ هیں لیکن میں صرف اُن کو هی لیتا هوں جو معمولی گھروں کی بول چال میں روز برتے جاتے هیں . بہت سے تو ان میں ایسے هیں کہ جنکا توڑ هی نہیں . مہربانی سے اُن لفظوں کی طرف زیادہ دھیان دیں جن پر نشان هے . میرے وچار میں یہ لفظ هماری بولی کے بنیادی پتھر هیں . بنیادی انگریزی میں صرف 850 لفظ هیں. اگر کبھی همیں عقل آئی اور هم نے بھی اپنی بنیادی بولی بنائی تو اس میں بہت سے بہت 1000 لفظ هونگے . اگر جیسا اس فہرست سے دکھائی دیتا هے سو لفظ ان میں ایسے هیں جن میں ڑ آتی هے تو ڑ کا راج صاف هے . اگر آپکی رائے میں ایسے پچاس لفظ بھی ڑ والے هیں تو ڑ کی پردھانتا میں شک نہیں رهتا . دیوناگری میں 33 وینجن هیں . میرے وچار میں ایسا کوئی وینجن دیوناگری کا نہیں جو کھڑی بولی کے بنیادی لفظوں میں ڑ جتنا آتا هو . اگر میرا یہ خیال ٹھیک هے تو سوچو تو سہی کہ کتنے لائق هیں وہ لوگ جو کھڑی بولی کی لپی بنائیں اور اس میں وہ آواز جس کا هماری بولی میں سب سے بڑا مہتو ( مان ) هو اِسے وہ اپنی لپی میں جگہ نہ دیں . یہ ڑ لفظ کھڑی بولی میں هے . جس دیس میں کھڑی بولی نے جنم لیا اِسے بانگڑو کہتے هیں . یہ بانگڑو میں بھی براجمان هے . هندستان کے اور بھی دیسوں کے نام میں پائی جاتی هے—جیسے کانگڑہ، مارواڑ، میواڑ، اُڑیا، راڑھی اُتر بنگال .

## (1) کریا ( فعل )

میں شروع کریا کے لفظوں سے کرتا هوں کیونکہ کریا کے لفظوں کو هر بولی میں زیادہ مان دیا جاتا هے .

اڑنا *، اڑانا *، اڑوسنا، اڑکنا، انگڑانا، اڑالنا یا اُڑیلنا، ابڑنا یا اُبھیڑنا ( بڑھنا )، الوڑنا، باڑ *، بڑ *، بڑھ، بڑھانا * ( دوکان بڑھانی، چوڑیاں بڑھانی، دیا بڑھانا )، بگڑنا *، بگاڑنا *، بڑبڑانا، بچھڑنا، بھڑنا، بھیڑنا، یا بھیڑنا، بھڑکنا اور بھڑکانا بسوڑنا، چڑھ *، چڑھانا، چڑنا، چڑانا، چیڑنا *، چھیڑنا *، چھیڑنا ( شروع کرنا )، چچوڑنا، چھڑکنا، چپڑنا، چھوڑنا، چھڑانا، دوڑنا، دھڑکنا، داڑھنا ( جلانا )، دھاڑنا، گاڑنا *، گڑنا، گھڑنا *، گھڑکنا گڑگڑانا، گڑگڑانا، گیڑنا ( گھیرنا )، گیڑنا ( کنواں چلانا )، گوڑنا *، گوڑھنا، گھسیڑنا، هاڑنا، هڑپنا، هڑکنا، جڑنا *، جوڑنا *، جڑنا ، جھڑنا ، جھاڑنا ، جھگڑنا، جکڑنا، جھڑکنا، جھنجھوڑنا، کڑکنا ( بجلی کا )، کڑکڑانا، کاڑھنا * ( نکالنا، ابالنا )، کڑھوانا یا کڑھلانا، کڑھنا، کڑھانا، ککڑنا،

# ड़

( मदन गोपाल )

यह 'ड़' एक अजीब चीज़ है. शायद सिवाय हिन्दुस्तान के और कहीं नहीं पाई जाती. आर्य भाशा यानी वह बोली जो आर्य हिन्दुस्तान आने से पहले बोला करते थे उसमें गो और बहुत विचित्र आवाज़ें थीं जैसे ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ङ, ञ, ण, ष, ग़, फ़, क़ और ख़, उसमें ड़ का साया भी न था. चन्द इल्मे ज़बान ( भाशा विज्ञान ) के माहिरों की यह राय है कि जब आठ दस हज़ार बरस हुए द्रावड़ी यूरोप से तुर्की, एराक़ और समुन्दर के रास्ते हिन्दुस्तान में आये तो उनकी मुठभेड़ यहां कुछ ऐसी क़ौम या क़ौमों से हुई जो या र या ल या र और ल दोनों नहीं बोल सकते थे. द्राविड़यों और उन लोगों के मिलाप से पैदा हुई यह ड़. यानी यह कि अगर हम किसी आवाज़ की बाबत कह सकते हैं कि वह हमारे देस की हमारी ख़ास अपनी है तो वह है ड़. अजब तमाशा है कि हमारे पन्डित तो उसे प्रदेसी जताकर निकालना चाहते हैं और यह फिर भी घटने की जगह बढ़ रही है.

इस ड़ से कुछ अजब सवाल पैदा होते हैं जिन पर विचार करना शायद नामुनासिब न हो. ( 1 ) पहला सवाल तो यह है कि यह ड़े है या ड़ ? ( 2 ) क्या ड़ हमारी बोली की जड़ है और उसका बढ़ना मुनासिब है ? ( 3 ) हमारी बोली द्रावड़ी है या आर्य भाशा ? ( 4 ) हमारी बोली असली द्रावड़ी बोली से ज्यादा मिलती है या मद्रास की बोलियों से ? (5) क्या हम द्रावड़ियों की नसल में से हैं या आर्यों की ?

त का मोरधवी है ट और द का मोरधवी है ड. ड़ भी ट और ड की तरह मोरधवी है लेकिन र का बोलने में जो हेर फेर त और ट के कहने में किया जाता है ठीक वही हेर फेर र और ड़ के कहने में. देवनागरी में बिन्दी निरी उन आवाज़ों को जताने के लिये होती है जो हमारे देस की नहीं हैं—जैसे क़, ख़, ग़, फ़, ज़. ड को बिन्दी लगाकर ड़ की आवाज संस्कृती पंडित ही जता सकते हैं. पंडिती हिन्दुस्तान में यह अचरज की बात नहीं कि देवनागरी लिपी सुधारने के बड़े बड़े विद्वानों की कमेटियां बनीं लेकिन कभी किसी भलेमानुस को यह नहीं सूझा कि वह ड़ को अपनाले. अपने घर के प्यारे होन्हार बच्चे को तो बिसरादें और दूसरों के ऐसे बच्चों को जिनकी हम शकल ( आवाज़ ) से वाक़िफ़ नहीं उन्हें अपनाएं. मसलन ऋ, ष. ऌ. क़ुर्बान जाइये इस पंडिताई पर !

# ڑ

( مدن گوپال )

یہ 'ڑ' ایک عجیب چیز ہے ۔ شاید سوائے ہندستان کے اور کہیں نہیں پائی جاتی ۔ آریہ بھاشا یعنی وہ بولی جو آریہ ہندستان آنے سے پہلے بولا کرتے تھے اس میں گو اور بہت وچتر آوازیں تھیں جیسے رر، رری، لر، لری، انگا، یان، ازاں، شا، غ، ف، ق اور خ اس میں ڑ کا سایہ بھی نہ تھا ۔ چند علم زبان ( بھاشا وگیان ) کے ماہروں کی یہ رائے ہے کہ جب آٹھ دس ہزار برس ہوئے دراوڑی یورپ سے ترکی، عراق اور سمندر کے راستے ہندستان میں آئے تو ان کی مڈ بھیڑ یہاں کچھ ایسی قوم یا قوموں سے ہوئی جو یا ر یا ل یا ر اور ل دونوں نہیں بول سکتے تھے ۔ دراوڑیوں اور ان لوگوں کے ملاپ سے پیدا ہوئی یہ ڑ ۔ یعنی یہ کہ اگر ہم کسی آواز کی بابت کہہ سکتے ہیں کہ وہ ہمارے دیس کی ہماری خاص اپنی ہے تو وہ ہے ڑ ۔ عجب تماشا ہے کہ ہمارے پنڈت تو اسے پردیسی جتاکر نکالنا چاہتے ہیں اور یہ پھر بھی گھٹنے کی جگہ بڑھ رہی ہے ۔

اس ڑ سے کچھ عجب سوال پیدا ہوتے ہیں جن پر وچار کرنا شاید نامناسب نہ ہو ۔ ( 1 ) پہلا سوال تو یہ ہے کہ یہ ڑ ہے یا ڑا ؟ ( 2 ) کیا ڑ ہماری بولی کی جڑ ہے اور اس کا بڑھنا مناسب ہے ؟ ( 3 ) ہماری بولی دراوڑی ہے یا آریہ بھاشا ؟ ( 4 ) ہماری بولی اصلی دراوڑی بولی سے زیادہ ملتی ہے یا مدراس کی بولیوں سے ؟ ( 5 ) کیا ہم دراوڑیوں کی نسل میں سے ہیں یا آریوں کی ؟

ت کا مورد بھی ہے ٹ اور د کا مورد بھی ہے ڈ ۔ ڑ بھی ٹ اور ڈ کی طرح موردبھی ہے لیکن ر کا بولنے میں جو ہیر پھیر ت اور ٹ کے کہنے میں کیا جاتا ہے ٹھیک وہی ہیر پھیر ر اور ڑ کے کہنے میں ۔ دیوناگری میں بندی نری ان آواز کو جتانے کے لئے ہوتی ہے جو ہمارے دیس کی نہیں ہیں—جیسے ق، خ، غ، ف، ز ۔ ڈ کو بندی لگاکر ڑ کی آواز سنسکرتی پنڈت ہی جتاسکتے ہیں ۔ پنڈتی ہندستان میں یہ اچرج کی بات نہیں کہ دیوناگری لپی سدھارنے کے لئے بڑے بڑے ودوانوں کی کمیٹیاں بنیں لیکن کبھی کسی بھلے مانس کو یہ نہیں سوجھا کہ وہ ڑ کو اپنالے ۔ اپنے گھر کے پیارے ہونہار بچے کو تو ہم بسرادیں اور دوسروں کے ایسے بچوں کو جن کی ہم شکل ( آواز ) سے واقف نہیں انہیں اپنائیں ۔ مثلاً رر، شا، لر ۔ قربان جائیے اس پنڈتائی پر !

शौक़ दिखाएगा और इस काम में लग जायगा वह ब्राह्मन गिना जायगा. अपने रुझान, अपनी तबियत और अपनी क़ाबलियत के अनुसार एक वर्न से दूसरे वर्न में जाना सबके लिये खुला होगा. हिन्दुओं की सैकड़ों हज़ारों जातें, उपजातें और बिरादरियां सब तोड़ दी जावेंगी और हमेशा के लिये ख़त्म हो जावेंगी. छुआछूत मिट जावेगी.

सारे समाज की इस तरह की व्यवस्था धीरे धीरे बिना किसी के साथ ज़बरदस्ती किये हमें अलग अलग धर्मों और सम्प्रदायों से ऊपर उठा कर उस एक मज़हबे इन्सानियत, मानव धर्म, प्रेम धर्म यानी मज़हबे इश्क़ की तरफ़ ले जावेगी जो सब अलग अलग धर्मों की बुनियाद और सबमें एक बराबर है. वही सच्चा इस्लाम है, वही क़ुरान का "दीनुल क़य्यमा" है, वही इस देश का सत्य सनातन धर्म है. यही समाजी निज़ाम सारी दुनिया में फैल सकता है और दुनिया को एक कर सकता है. आपसी आपाधापी और देशों देशों के बीच के अंधे स्वार्थ को ख़त्म करने का यह एक उपाय है.

## वर्नाश्रम धर्म और कम्युनिज़्म

नए चीन के विधान में केवल किसानों और मज़दूरों को राज का अधिकारी माना गया है. पर नए चीन के विधान के अनुसार अपने दिमाग़ से काम करने वाले लोग और दिल और दिमाग़ दोनों को मिला कर कला और साहित्य की सेवा में लगन से काम करने वाले प्रोफ़ेसर, साहित्यकार और चित्रकार सब "वर्कर" यानी मज़दूरों में शामिल हैं और सब एक बराबर आदर के हक़दार. ऐसी सूरत में चीनी कम्युनिस्ट विचारधारा के साथ ऊपर की व्यवस्था का कोई विरोध नहीं. सब काम करें, सब अपना अपना काम करें और समाज में सबके एक बराबर हक़ और सबका एक बराबर मान हो.

## दुनिया को अमन के लिये संगठित करना

अगर सब देशों और सब क़ौमों के कुछ बड़े दिल वाले और समझदार आदमी मिलकर सब क़ौमों और सब धर्मों की एक सच्ची लीग बनाकर बैठें और गम्भीरता के साथ सारी इन्सानी क़ौम के लिये इस तरह के समाजी संगठन पर विचार करें और फिर या तो उसे मन्ज़ूर करें और आगे की नसलों को उसके उसूलों की तालीम दें और या कोई इससे बेहतर दूसरा ढंग निकालें, तब ही दुनिया से आदमी आदमी और क़ौमों क़ौमों के बीच की आपाधापी मिट सकती है और दुनिया के लोग सुख चैन से जीवन बिता सकते हैं और इस धरती पर स्वर्ग ला सकते हैं. दुनिया को जंग के ख़िलाफ़ "अमन के लिये" टिकाऊ तौर पर संगठित या मुनज़्ज़म करने का यही एक तरीक़ा है.

---



شوق دکھائے گا اور اِس کام میں لگ جائے گا وہ براھمن گنا جائے گا . اپنے رجحان، اپنی طبیعت اور اپنی قابلیت کے انوسار ایک ورن سے دوسرے ورن میں جانا سب کے لئے کھلا ہوگا . ھندؤں کی سیکڑوں هزاروں جاتیں، اُپ جاتیں اور برادریاں سب توڑ دی جاویں گی اور همیشہ کے لئے ختم ہو جاویں گی . چھواچھوت مٹ جاوے گی .

سارے سماج کی اس طرح کی ویوستھا دھیرے دھیرے بنا کسی کے ساتھ زبردستی کئے همیں الگ الگ دھرموں اور سمپرداٸیوں سے اوپر اُٹھاکر اُس ایک مذھب انسانیت، مانو دھرم، پریم دھرم یعنی مذھب عشق کی طرف لے جاوے گی جو سب الگ الگ دھرموں کی بنیاد اور سب میں ایک برابر ھے . وھی سچا اسلام ھے، وھی قرآن کا " دین القیمہ " ھے وھی اِس دیش کا ستیہ سناتن دھرم ھے . یہی سماجی نظام ساری دنیا میں پھیل سکتا ھے اور دنیا کو ایک کر سکتا ھے . آپسی آپادھاپی اور دیشوں دیشوں کے بیچ کے اندھے سوارتھ کو ختم کرنے کا یہ ایک اُپائے ھے .

## ورن آشرم دھرم اور کمیونزم

نئے چین کے ودھان میں کیول کسانوں اور مزدوروں کو راج کا ادھکاری مانا گیا ھے . پر نئے چین کے ودھان کے انوسار اپنے دماغ سے کام کرنے والے لوگ اور دل اور دماغ دونوں کو ملا کر کلا اور ساھتیہ کی سیوا میں لگن سے کام کرنے والے پروفیسر، ساھتیہ کار اور چترکار سب " ورکر " یعنی مزدوروں میں شامل هیں اور سب ایک برابر آدر کے حقدار . ایسی صورت میں چینی کمیونسٹ وچار دھارا کے ساتھ اوپر کی ویوستھا کا کوئی ورودھ نہیں. سب کام کریں، سب اپنا اپنا کام کریں اور سماج میں سب کے ایک برابر حق اور سب کا ایک برابر مان ھو .

## دنیا کو امن کے لئے سنگٹھت کرنا

اگر سب دیشوں اور سب قوموں کے کچھ بڑے دل والے اور سمجھدار آدمی مل کر سب قوموں اور سب دھرموں کی ایک سچی لیگ بنا کر بیٹھیں اور گمبھیرتا کے ساتھ ساری انسانی قوم کے لئے اس طرح کے سماجی سنگٹھن پر وچار کریں اور پھر یا تو اُسے منظور کریں اور آگے کی نسلوں کو اس کے اُصولوں کی تعلیم دیں اور یا کوئی اِس سے بہتر دوسرا ڈھنگ نکالیں، تب ھی دنیا سے آدمی آدمی اور قوموں قوموں کے بیچ کی آپادھاپی مٹ سکتی ھے اور دنیا کے لوگ سکھ چین سے جیون بتا سکتے هیں اور اِس دھرتی پر سورگ لا سکتے هیں. دنیا کو جنگ کے خلاف " امن کے لئے " ٹکاؤ طور پر سنگٹھت یا منظم کرنے کا یہی ایک طریقہ ھے .

मदद मिलती है. इस संगठन में मुल्क, क़ौम या नस्ल का कोई फ़रक़ नहीं. यह निज़ाम सब इंसानों के लिये एक सा है चाहे वह किसी मुल्क या किसी नस्ल के क्यों न हों. यह निज़ाम साइन्स के ऐन अनुकूल है. इसमें जब तजुरबेकार अधेड़ या बूढ़े लोग रुपये कमाने के धंदे को छोड़कर बिना तनख़ाह जनता की सेवा करेंगे तो नौजवानों के लिये मैदान खुला होगा और उन्हें राह दिखाने और सलाह देने के लिये बराबर तजुरबेकार, निस्वार्थ जन सेवक मिलते रहेंगे. सब को जिन्दगी में आनन्द मिलेगा और सबके दिल और दिमाग़ उनके क़ाबू में रहेंगे. सब सुखी रहेंगे.

## सब धर्मों को मिलाने का तरीक़ा

इन्सानी समाज के इस तरह के संगठन का किसी ख़ास धर्म या धार्मिक विश्वास से भी कोई सम्बन्ध नहीं. हिन्दुस्तान अगर इस तरह के संगठन को अपनाले तो वह केवल उन लोगों का ही संगठन नहीं होगा जो अपने को हिन्दू कहते हैं. इसमें मौलाना अबुलकलाम आज़ाद सच्चे ब्राह्मन गिने जाएंगे. जमीयतुलउलमा के सब मेम्बर, स्कूलों और कालिजों के सब अध्यापक और पुरोफ़ेसर चाहे वह हिन्दू हों या मुसलमान, ईसाई हों या पारसी या कुछ भी हों, ब्राह्मन माने जाएंगे. जिस किसी को भी विद्या पढ़ने पढ़ाने का शौक़ हो या ज्ञान ध्यान में आनन्द मिलता हो वह ब्राह्मन. उसे फिर लम्बी तनख़ाह या दुनिया की टीपटाप या राज शक्ति अपने हाथ में लेने की चिन्ता न होगी. उसका आदर्श मशहूर अंग्रेजी कहावत के अनुसार "सादा जीवन बिताना और ऊंचा सोचना" होगा. इसी तरह जो भी फ़ौजी सिपाही या फ़ौजी अफ़सर का काम करता है वह चाहे किसी भी धर्म का मानने वाला हो क्षत्री है. हम मौलाना शौक़त अली को उनके स्वभाव और बहादुरी के कारन हमेशा क्षत्री मानते थे. बम्बई के मुसलमान बोहरे और पारसी सौदागर सब वैश्य गिने जावेंगे. किसान चाहे किसी भी धर्म का मानने वाला हो धरती से धन पैदा करने के कारन वैश्य गिना जावेगा. गीता में खेती का काम वैश्यों का काम बताया गया है. देश भर के केवल शरीर से काम करने वाले सब लोग शूद्र गिने जावेंगे.

पर इसमें ऊंचा नीचा कोई नहीं होगा. ब्राह्मन ऊंचा और शूद्र नीचा यह ग़लत ख्याल स्वार्थी लोगों ने देश की गिरावट के दिनों में पैदा कर लिया है. सब समाज के एक बराबर अंग, सबके राजकाज आदि में एक बराबर हक़, सबको बराबर के मौक़े, एक बार ब्राह्मन होकर भी जो विद्या में रस लेना छोड़ देगा या कम कर देगा और धन बटोरने की फ़िक्र में अधिक रहेगा वह फिर वैश्य कहलावेगा. तिजारत करने वाला जन्म से चाहे कुछ भी हो वैश्य गिना जावेगा. जो मेहनत मजदूरी करते करते विद्या सीखने सिखाने का



مدد ملتی هے. اِس سنگٹھن میں ملک، قوم یا نسل کا کوئی فرق نہیں. یہ نظام سب اِنسانوں کے لئے ایک سا هے چاهے وہ کسی ملک یا کسی نسل کے کیوں نہ هوں. یہ نظام سائنس کے عین آنوکول هے. اِس میں جب تجربہ‌کار ادهیڑ یا بوڑهے لوگ روپیہ کمانے کے دهندے کو چهوڑکر بنا تنخواہ جنتا کی سیوا کرینگے تو نوجوانوں کے لئے میدان کهلا هوگا اور اُنهیں راہ دکهانے اور صلاح دینے کے لئے برابر تجربہ‌کار، نسوارتھ جن سیوک ملتے رهیں گے. سب کو زندگی میں آنند ملے‌گا اور سب کے دل اور دماغ اُن کے قابو میں رهینگے. سب سکهی رهینگے.

## سب دهرموں کو ملانے کا طریقہ

اِنسانی سماج کے اِس طرح کے سنگٹهن کا کسی خاص دهرم یا دهارمک وشواس سے بهی کوئی سمبندھ نہیں. هندستان اگر اِس طرح کے سنگٹهن کو اپنا لے تو وہ کیول اُن لوگوں کا هی سنگٹهن نہیں هوگا جو اپنے هندو کہتے هیں. اِس میں مولانا ابوالکلام آزاد سچے براهمن گنے جائینگے. جمیعت‌العلما کے سب ممبر، اسکولوں اور کالجوں کے سب آدهیاپک اور پروفیسر چاهے وہ هندو هوں یا مسلمان، عیسائی هوں یا پارسی یا کچھ بهی هوں، براهمن مانے جائینگے. جس کسی کو بهی ودیا پڑهنے پڑهانے کا شوق هو یا گیان دهیان میں آنند ملتا هو وہ براهمن. اُسے پهر لمبی تنخواہ یا دنیا کی ٹیپ ٹاپ یا راج شکتی اپنے هاتھ میں لینے کی چنتا نہ هوگی. اُس کا آدرش مشہور انگریزی کہاوت کے انوسار "سادہ جیون بتانا اور اُونچا سوچنا" هوگا. اِسی طرح جو بهی فوجی سپاهی یا فوجی افسر کا کام کرتا هے وہ چاهے کسی بهی دهرم کا ماننے والا هو چهتری هے. هم مولانا شوکت علی کو اُن کے سوبهاؤ اور بہادری کے کارن همیشہ چهتری مانتے تهے. بمبئی کے مسلمان بوهرے اور پارسی سوداگر سب ویش گنے جاوینگے. کسان چاهے کسی بهی دهرم کا ماننے والا هو دهرتی سے دهن پیدا کرنے کے کارن ویش گنا جاوے گا. گیتا میں کهیتی کا کام ویشیوں کا کام بتایا گیا هے. دیش بهر کے کیول شریر سے کام کرنے والے سب لوگ شودر گنے جاوینگے.

پر اِس میں اُونچا نیچا کوئی نہیں هوگا. براهمن اونچا اور شودر نیچا یہ غلط خیال سوارتهی لوگوں نے دیش کی گراوٹ کے دنوں میں پیدا کر لیا هے. سب سماج کے ایک برابر آنگ، سب کے راج کاج آدی میں ایک برابر حق، سب کو برابر کے موقعے، ایک بار براهمن هو کر بهی جو ودیا میں رس لینا چهوڑ دے گا یا کم کر دے گا اور دهن بٹورنے کی فکر میں ادهک رهے گا وہ پهر ویش کہا جاوے گا. تجارت کرنے والا جنم سے چاهے کچھ بهی هو ویش گنا جاوے گا. جو محنت مزدوری کرتے کرتے ودیا سیکهنے سکهانے کا

में इच्छा का ). जिन लोगों की तबियत और उनके काम सत्व की तरफ़ जाते हैं वह ब्राह्मन कहलाते हैं. जिनकी तबियत रजस की तरफ़ जाती है वह क्षत्री कहलाते हैं. जिन की तमस की तरफ़ जाती है वह वैश्य कहलाते हैं. जिनके अन्दर तीनों गुन सोए हुए से हों वह शूद्र कहलाते हैं."

जब तक आदमी के अन्दर सिर, बाज़ू, धड़ और टांगें अलग अलग हैं और इन्हीं के मुताबिक़ अलग अलग तबियतें दिखाई देती हैं तब तक सब मुल्कों और सब देशों में यह चार तरह के लोग दिखाई देंगे. जो समाज इस उसूल के ऊपर अपना ठीक ठीक संगठन कर ले और उसी उसूल पर सबके फ़र्ज और सबके अधिकार तय कर दे उसी समाज का संगठन "अमन यानी शान्ति के लिये है." वही समाज ख़ुशहाल रहेगा. उसे किसी दूसरे से डर नहीं होगा. वह दूसरों के लिये भी अमन की मिसाल क़ायम करेगा और उन्हें इसमें हर तरह मदद देगा. दुनिया की सब क़ौमों का मिलाकर इस तरह संगठन हो जावे तो अपने आप आदमी आदमी में बेजा होड़, डाह, जलन, लोभ, लालच और आपा धापी दुनिया से मिट जावें. सब अपने अपने पैरों पर खड़े हो सकें. किसी को किसी पर हमला करने का कोई सबब न रहे और सब के भले के कामों में आसानी से लग सकें.

## ज़िन्दगी के चार हिस्से

दुनिया में अमन क़ायम करने के लिये यह भी जरूरी है कि हर आदमी उम्र के मुताबिक़ ब्रह्मचर्य का पालन करे, अपने को रोके, अपनी तबियत को अपने क़ाबू में रक्खे, ख़ुद तबियत के क़ाबू में न हो जावे. इसीलिये हर आदमी की उम्र के चार हिस्से किये गए हैं, जिन्हें चार आश्रम कहते हैं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बान प्रस्थ और सन्यास. इस मामले में अगर लोगों ने इस तरह अपनी तबियत को न रोका तो यह कमज़ोरी उनकी और दुनिया की सबसे बड़ी दुश्मन साबित होगी. ज़िन्दगी के तीसरे और चौथे हिस्सों में तो आदमी को अपने को बिल्कुल ही रोक कर रखना चाहिये. कोई चीज़ अगर दुनिया से जंगों को ख़तम कर सकती है तो इस तरह का नैतिक संगठन यानी इख़लाक़ी निज़ाम ही कर सकता है. इसके साथ साथ हमें क़ुदरत की ताक़तों को भी जहां तक हो सके अपने क़ाबू में करके उनसे काम लेना चाहिये. समाज के अन्दर की यह इख़लाक़ी जंग जितनी कामयाब होगी बाहर की जंगें उतनी ही कम होंगी.

समाज के इस तरह के संगठन में हर काम के अन्दर एक सुनहरा दरमियानापन रहता है, न किसी चीज़ की ज्यादती न किसी चीज़ की कमी. सब को अपनी अपनी तरह बढ़ने का मौक़ा मिलता है. सब की कमज़ोरियों का भी ध्यान रखा जाता है और उन्हें अपनी कमज़ोरियों पर क़ाबू हासिल करने में



میں اچھا کا). جن لوگوں کی طبیعت اور اُن کے کام ستو کی طرف جاتے ہیں وہ براہمن کہلاتے ہیں۔ جن کی طبیعت رجس کی طرف جاتی ہے وہ چھتری کہلاتے ہیں۔ جن کی تمس کی طرف جاتی ہے وہ ویش کہلاتے ہیں۔ جن کے اندر تینوں گن سوئے ہوئے سے ہوں وہ شودر کہلاتے ہیں۔"

جب تک آدمی کے اندر سر، بازو، دھڑ اور ٹانگیں الگ الگ ہیں اور اِنہیں کے مطابق الگ الگ طبیعتیں دکھائی دیتی ہیں تب تک سب ملکوں اور سب دیشوں میں یہ چار طرح کے لوگ دکھائی دینگے۔ جو سماج اِس اصول کے اوپر اپنا ٹھیک ٹھیک سنگٹھن کرلے اور اِسی اصول پر سب کے فرض اور سب کے ادھکار طے کردے اُسی سماج کا سنگٹھن "امن یعنی شانتی کے لئے ہے۔" وہی سماج خوشحال رہیگا۔ اُسے کسی دوسرے سے ڈر نہیں ہوگا۔ وہ دوسروں کے لئے بھی امن کی مثال قائم کریگا اور انہیں اِس میں ہر طرح مدد دیگا۔ دنیا کی سب قوموں کا ملاکر اِس طرح سنگٹھن ہو جاوے تو اپنے آپ آدمی آدمی میں بیجا ہوڑ، ڈاہ، جلن، لوبھ، لالچ اور آپادھاپی دنیا سے مٹ جاویں۔ سب اپنے اپنے پیروں پر کھڑے ہوسکیں۔ کسی کو کسی پر حملہ کرنے کا کوئی سبب نہ رہے اور سب سب کے بھلے کے کاموں میں آسانی سے لگ سکیں۔

## زندگی کے چار حصے

دنیا میں امن قائم کرنے کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ ہر آدمی عمر کے مطابق برہمچریہ کا پالن کرے، اپنے کو روکے، اپنی طبیعت کو اپنے قابو میں رکھے، خود طبیعت کے قابو میں نہ ہو جاوے۔ اِسی لئے ہر آدمی کی عمر کے چار حصے کئے گئے ہیں، جنھیں چار آشرم کہتے ہیں—برہمچریہ، گرہستھ، بان پرستھ اور سنیاس۔ اِس معاملے میں اگر لوگوں نے اس طرح اپنی طبیعت کو نہ روکا تو یہ کمزوری اُن کی اور دنیا کی سب سے بڑی دشمن ثابت ہوگی۔ زندگی کے تیسرے اور چوتھے حصوں میں تو آدمی کو اپنے کو بالکل ہی روک کر رکھنا چاہئے۔ کوئی چیز اگر دنیا سے جنگوں کو ختم کرسکتی ہے تو اِس طرح کا نیتک سنگٹھن یعنی اخلاقی نظام ہی کرسکتا ہے۔ اِس کے ساتھ ساتھ ہمیں قدرت کی طاقتوں کو بھی جہاں تک ہوسکے اپنے قابو میں کرکے اُن سے کام لینا چاہئے۔ سماج کے اندر کی یہ اخلاقی جنگ جتنی کامیاب ہوگی باہر کی جنگیں اُتنی ہی کم ہونگی۔

سماج کے اِس طرح کے سنگٹھن میں ہر کام کے اندر ایک سنہرا درمیانہ‌پن رہتا ہے، نہ کسی چیز کی زیادتی نہ کسی چیز کی کمی۔ سب کو اپنی اپنی طرح بڑھنے کا موقع ملتا ہے۔ سب کی کمزوریوں کا بھی دھیان رکھا جاتا ہے اور اُنھیں اپنی کمزوریوں پر قابو حاصل کرنے میں

जिसके अन्दर क्षमा यानी माफ़ी की ज़बर्दस्त शक्ति है, उसी को सच्चा ब्राह्मन कहना चाहिये. केवल जन्म से न कोई ब्राह्मन होता है और न कोई शूद्र होता है. हर आदमी अपने कामों से और अपने रहन सहन के ढंग से ब्राह्मन या शूद्र होता है. सूरज निकलता है तो दिन हो जाता है. रात होती है तो चांद निकलता है. बहादुरी और उदारता से आदमी क्षत्री होता है. बुद्धिमत्ता और विचार शीलता से ब्राह्मन होता है."

महात्मा बुद्ध ने इन चार तरह के लोगों और पेशों का साफ़ साफ़ ज़िक्र किया है, इस फ़र्क़ को माना है, और सच्चे ब्राह्मन की जगह जगह ख़ूब तारीफ़ की है. लेकिन वह जन्म से जात को नहीं मानते थे. जो लोग जन्म से जाति और उसके आधार पर अपने को ऊंचा नीचा या ख़ास चीज़ों का हक़दार मानते हैं उन्हें बुद्ध ने बुरा कहा है. उनकी राय है कि हर आदमी के गुन कर्म, उसकी क़ाबलियत, उसके दिल और दिमाग़ की हालत और उसकी तबियत के अनुसार उसका पेशा तय होना चाहिये, और फिर चारों में से किसी एक वर्न में उसे गिना जाना चाहिये.

जैन धर्म इस मामले में इससे भी ज्यादा साफ़ है. जैन सूत्रों में लिखा है कि :—

"मनुश्य जाति सब एक है. लोगों की वृत्ति यानी उनके रहन सहन और काम के फ़र्क़ से चार जातियां दिखाई देती हैं. जो लोग नेक और पाक ज़िन्दगी की प्रतिज्ञाएं करके उन्हें पूरा करते हैं वह ब्राह्मन हैं. जो दूसरों की रक्षा के लिये हथियार धारन करते हैं वह क्षत्री हैं. जो सच्चा और उचित व्यापार करके धन कमाते हैं वह वैश्य हैं. और जो दूसरों की सेवा करके मज़दूरी से गुज़ारा करते हैं वह शूद्र. आदमी अपने कामों से ब्राह्मन होता है, अपने कामों से क्षत्री, अपने कामों से वैश्य और अपने कामों से शूद्र. किसी का जन्म उसके चेहरे पर नहीं लिखा रहता. उसके काम सब को दिखाई देते हैं."

हिन्दू धर्म ग्रन्थों में भी यही उसूल बताया गया है. महाभारत में लिखा है :—

"दुनिया के सब आदमी ब्रह्मा की औलाद हैं, इस लिये सब ब्राह्मन हैं और एक बाप की औलाद होने के नाते सब भाई भाई हैं. शुरू में उनमें कोई फ़र्क़ नहीं था. सब का पेशा भी लगभग एक ही था. धीरे धीरे अलग अलग पेशे और अलग अलग काम पैदा हो गए जिस से चार वर्न बन गए."

गीता में श्री कृश्न ने कहा है :—

"ईश्वर ने चार वर्न लोगों में गुन और कर्म के फ़र्क़ से बनाए हैं. हर आदमी अपने कामों से और अपने स्वभाव के गुनों से इस वर्न या उस वर्न में होता है."

भविश्य पुरान में लिखा है :—

"तीन तरह के गुन होते हैं—सत्व, रजस और तमस (सत्व में ज्ञान का जोर होता है, रजस में काम का और तमस



جسکے اندر چھما یعنی معافی کی زبردست شکتی ہے' اُسی کو سچا براھمن کہنا چاھئے. کیول جنم سے نہ کوئی براھمن ھوتا ھے اور نہ کوئی شودر ھوتا ھے. ھر آدمی اپنے کاموں سے اور اپنے رھن سہن کے ڈھنگ سے براھمن یا شودر ھوتا ھے. سورج نکلتا ھے تو دن ھو جاتا ھے. رات ھوتی ھے تو چاند نکلتا ھے. بہادری اور اُدارتا سے آدمی چھتری ھوتا ھے. بدھمتا اور وچار شیلتا سے براھمن ھوتا ھے."

مہاتما بدھ نے اِن چار طرح کے لوگوں اور پیشوں کا صاف صاف ذکر کیا ھے' اِس فرق کو مانا ھے اور سچے براھمن کی جگہ جگہ خوب تعریف کی ھے. لیکن وہ جنم سے جات کو نہیں مانتے تھے. جو لوگ جنم سے جاتی اور اُس کے آدھار پر اپنے کو اونچا نیچا یا خاص چیزوں کا حقدار مانتے ھیں اُنھیں بدھ نے برا کہا ھے. اُن کی رائے ھے کہ ھر آدمی کے گن کرم' اُس کی قابلیت' اُس کے دل اور دماغ کی حالت اور اُس کی طبیعت کے انوسار اُس کا پیشہ طے ھونا چاھئے اور پھر چاروں میں سے کسی ایک ورن میں اُسے گنا جانا چاھئے.

جین دھرم اِس معاملے میں اِس سے بھی زیادہ صاف ھے. جین سوتروں میں لکھا ھے کہ :—

"منشیہ جاتی سب ایک ھے. لوگوں کی ورتی یعنی اُن کے رھن سہن اور کام کے فرق سے چار جاتیاں دکھائی دیتی ھیں. جو لوگ نیک اور پاک زندگی کی پرتگیائیں کر کے اُنھیں پورا کرتے ھیں وہ براھمن ھیں. جو دوسروں کی رکشا کے لئے ھتھیار دھارن کرتے ھیں وہ چھتری ھیں. جو سچا اور اُچت ویاپار کر کے دھن کماتے ھیں وہ ویش ھیں. اور جو دوسروں کی سیوا کر کے مزدوری سے گذارا کرتے ھیں وہ شودر. آدمی اپنے کاموں سے براھمن ھوتا ھے' اپنے کاموں سے چھتری' اپنے کاموں سے ویش اور اپنے کاموں سے شودر. کسی کا جنم اُس کے چہرے پر نہیں لکھا رھتا. اُس کے کام سب کو دکھائی دیتے ھیں."

ھندو دھرم گرنتھوں میں بھی یہی اصول بتایا گیا ھے. مہابھارت میں لکھا ھے :—

"دنیا کے سب آدمی برھما کی آولاد ھیں' اِس لئے سب براھمن ھیں اور ایک باپ کی آولاد ھونے کے ناتے سب بھائی بھائی ھیں. شروع میں اُن میں کوئی فرق نہیں تھا. سب کا پیشہ بھی لگ بھگ ایک ھی تھا. دھیرے دھیرے الگ الگ پیشے اور الگ الگ کام پیدا ھوگئے جس سے چار ورن بن گئے."

گیتا میں شری کرشن نے کہا ھے :—

"ایشور نے چار ورن لوگوں میں گن اور کرم کے فرق سے بنائے ھیں. ھر آدمی اپنے کاموں سے اور اپنے سوبھاؤ کے گنوں سے اِس ورن یا اُس ورن میں ھوتا ھے."

بھوشیہ پران میں لکھا ھے :—

"تین طرح کے گن ھوتے ھیں—ستو' رجس اور تمس (ستو میں گیان کا زور ھوتا ھے' رجس میں کام کا اور تمس

पादरी सब लोगों को धोका देकर अपनी छोटी खुदग़रज़ियों को पूरा करने के चक्कर में पड़ जाते हैं. मज़हब को भी नया जामा पहनाने की ज़रूरत पड़ती है. राजकाजी इन्क़लाब और मज़हबी इन्क़लाब दोनों में गहरा सम्बन्ध है. जब दोनों को नया रूप दिया जाता है तब एक नई सभ्यता जन्म लेती है. आदमी बीमार पड़ता है तो हकीम डाक्टर की ज़रूरत होती है. जब किसी सारी क़ौम की आत्मा बिगड़ जाती है तो उसमें नई ईश्वरी रूह फूंकने की ज़रूरत पड़ती है. कोई न कोई 'खुदा का बेटा', 'अवतार', 'मसीह', 'रसूल' या 'तीर्थंकर' उस क़ौम का इलाज करने के लिये आता है, उसे नया जन्म देता है, नया जिस्म देता है, और सारे समाज का नए सिरे से संगठन करता है. जब तक किसी समाज का ठीक तरह से संगठन नहीं होगा अच्छे से अच्छे रूहानी और इख़लाक़ी असूल भी बेकार रहेंगे, चाहे राज पादरी पुरोहितों के हाथों में हो, चाहे फ़ौजी सरदारों के, चाहे पूंजीपतियों के और चाहे आम जनता के. देश का इख़लाक़ यानी सदाचार तब ही ऊंचा जा सकता है जब आदमी के चारों तरह के रुझानों को ठीक ठीक समझा जावे और उनके अनुसार कामों का ठीक ठीक बंटवारा किया जावे.

## असली इलाज

महात्मा बुद्ध ने और जैन धर्म के क़ायम करने वाले महावीर स्वामी ने इस उसूल को अच्छी तरह समझा था. उन्होंने जन्म की जातों को तोड़कर इस क़ुदरती उसूल पर समाज को चलाने की कोशिश की थी. बहुत दरजे तक उन्हें कामयाबी भी हुई. इसीलिये जो नई सभ्यता उन्होंने क़ायम की वह लगभग बारह सौ बरस तक ख़ूब चली. उस ज़माने में साहित्य और साइन्स दोनों ने ख़ूब तरक़्क़ी की, बड़ी बड़ी सल्तनतें क़ायम हुईं जो अपने ज़माने की रोमी, यूनानी, ईरानी और चीनी सल्तनतों से किसी तरह कम न थीं. बदक़िस्मती से हमारे अन्दर की अविद्या यानी जहालत और हमारी बुराई की शक्तियां फिर ऊपर आ गईं. हमारा सारा शीराज़ा फिर बिखर गया.

बौद्ध ग्रंथ "धम्मपद" में एक पूरा चैप्टर है जिसमें यह बताया गया है कि सच्चा ब्राह्मन कौन है. लिखा है :—

"लम्बी जटाएं रख लेने से, या किसी ख़ास घर में पैदा हो जाने से, या किसी ख़ास स्त्री के पेट से पैदा होने के कारन कोई ब्राह्मन नहीं बन जाता. जो कोई सच्चाई पर क़ायम रहता है और अपना धर्म यानी फ़र्ज़ पूरा करता है, वही पाक है और वही ब्राह्मन है. जो तन से, मन से और बचन से कोई बुराई नहीं करता, जो अपने लिये माल असबाब या पैसा जमा नहीं करता, जो सब्र और धीरज के साथ दूसरों के कड़वे शब्दों, बदसलूकी और मार तक को बरदाश्त कर लेता है, जो अपने मन में ग़ुस्से को पैदा नहीं होने देता,



پادری سب لوگوں کو دھوکا دیکر اپنی چھوٹی خود غرضیوں کو پورا کرنے کے چکر میں پڑ جاتے ھیں. مذھب کو بھی نیا جامہ پہنانے کی ضرورت پڑتی ھے . راج کاجی انقلاب اور مذھبی انقلاب دونوں میں گھرا سمبندھ ھے . جب دونوں کو نیا روپ دیا جاتا ھے تب ایک نئی سبھیتا جنم لیتی ھے. آدمی بیمار پڑتا ھے تو حکیم ڈاکٹر کی ضرورت ھوتی ھے . جب کسی ساری قوم کی آتما بگڑ جاتی ھے تو اُس میں نئی ایشوری روح پھونکنے کی ضرورت پڑتی ھے . کوئی نہ کوئی 'خدا کا بیٹا' 'اوتار' 'مسیح' 'رسول' یا 'تیرتھنکر' اُس قوم کا علاج کرنے کے لئے آتا ھے' اُسے نیا جنم دیتا ھے' نیا جسم دیتا ھے' اور سارے سماج کا نئے سرے سے سنگٹھن کرتا ھے. جب تک کسی سماج کا ٹھیک طرح سے سنگٹھن نہیں ھوگا اچھے سے اچھے روحانی اور اخلاقی اصول بھی بیکار رھیں گے' چاھے راج پادری پروھتوں کے ھاتھوں میں ھو' چاھے فوجی سرداروں کے' چاھے پونجی پتیوں کے اور چاھے عام جنتا کے . دیش کا اخلاق یعنی سداچار تب ھی اُونچا جا سکتا ھے جب آدمی کے چاروں طرح کے رجحانوں کو ٹھیک ٹھیک سمجھا جاوے اور اُن کے انوسار کاموں کا ٹھیک ٹھیک بٹوارہ کیا جاوے .

## اصلی علاج

مہاتما بدھ نے اور جین دھرم کے قائم کرنے والے مہاویر سوامی نے اِس اصول کو اچھی طرح سمجھا تھا . اُنھوں نے جنم کی جاتوں کو توڑ کر اِس قدرتی اصول پر سماج کو چلانے کی کوشش کی تھی. بہت درجے تک اُنھیں کامیابی بھی ھوئی . اِسی لئے جو نئی سبھیتا اُنھوں نے قائم کی وہ لگ بھگ بارہ سو برس تک خوب چلی . اُس زمانے میں ساھتیہ اور سائنس دونوں نے خوب ترقی کی' بڑی بڑی سلطنتیں قائم ھوئیں جو اپنے زمانے کی رومی' یونانی' ایرانی اور چینی سلطنتوں سے کسی طرح کم نہ تھیں . بدقسمتی سے ھمارے اندر کی اودیا یعنی جہالت اور ھماری برائی کی شکتیاں پھر اوپر آ گئیں . ھمارا سارا شیرازہ پھر بکھر گیا .

بودھ گرنتھ " دھم پد " میں ایک پورا چیپٹر ھے جس میں یہ بتایا گیا ھے کہ براھمن کون ھے . لکھا ھے :—

" لمبی جٹائیں رکھ لینے سے' یا کسی خاص گھر میں پیدا ھو جانے سے' یا کسی خاص اِستری کے پیٹ سے پیدا ھونے کے کارن کوئی براھمن نہیں بن جاتا . جو کوئی سچائی پر قائم رھتا ھے اور اپنا دھرم یعنی فرض پورا کرتا ھے' وھی پاک ھے اور وھی براھمن ھے . جو تن سے' من سے اور بچن سے کوئی برائی نہیں کرتا' جو اپنے لئے مال اسباب یا پیسہ جمع نہیں کرتا' جو صبر اور دھیرج کے ساتھ دوسروں کے کڑوے شبدوں' بدسلوکی اور مار تک کو برداشت کر لیتا ھے' جو اپنے من میں غصے کو پیدا نہیں ھونے دیتا'

धर्म यानी मजहबी इन्सानियत की कुछ चिनगारियाँ हम में अभी तक बाक़ी हैं.

यहां यह बता देना भी जरूरी है कि बावजूद मौरूसीपन पर इतना अधिक जोर होने के यहां जातों का अदल बदल बराबर होता रहा है. इक्का दुक्का लोग ही नहीं गिरोहों के गिरोह हमेशा अपने को नीचे की जातों से उठाकर ब्राह्मन या क्षत्री नाम देते रहे हैं और आज कोई उनसे वह नाम छीन नहीं सकता. लेकिन जो एक सुन्दर साइन्सी ढंग से सबका आदर मान रखते हुए शुरू का संगठन था वह जाता रहा.

## योरप से मुक़ाबला

इस मामले में योरप हमसे अच्छा नहीं रहा. हमारे यहां मौरूसीपन पर बेजा जोर दिया गया और योरप में इसके ख़िलाफ़ आदमी आदमी के स्वार्थों की टक्कर और उनके बीच बेजा अन्धे मुक़ाबले पर जोर दिया गया. सच यह है कि योरप में अभी तक कोई समाज संगठन हो ही नहीं पाया. एक दरजे तक मौरूसीपन भी सब जगह चलता है और क़ुदरती है. योरप में भी लाखों करोड़ों आदमी अपने बाप दादा के ही पेशों में लगे रहते हैं. लेकिन यह एक बड़ी अच्छी निशानी है कि योरप के अधिक उन्नत देशों में बच्चों को तालीम देने वालों का ध्यान तेज़ी से इस तरफ़ जा रहा है कि छोटी उम्र से ही हर बच्चे के क़ुदरती रुझान और उसकी क़ाबलियत को समझने की कोशिश की जावे और उसी के अनुसार जीवन में उसे काम धन्दा देने की कोशिश की जावे. कुछ देशों में तो इस विद्या के ख़ास विद्वान या माहिर स्कूलों में रखे गए हैं. कहीं भी अगर समाज का टिकाऊ संगठन किया जावेगा तो मौरूसीपन और आज़ाद अदल बदल दोनों को ध्यान में रखना होगा. हां, हर बच्चे का पेशा तय करने में उसकी आज़ाद तबियत और निजी पसन्द का अधिक लिहाज़ रखा जायेगा.

## सुधार की ज़रूरत

जैसे हमारी राजकाजी और माली जिन्दगी में रक्षक भक्षक बन जाते हैं, 'लीडर' ( रहबर ) 'मिस लीडर' यानी गुमराह करने वाले हो जाते हैं, 'ट्रस्टी' अपने को "बैनीफ़िशयरी' बना बैठते हैं, दूसरों को खिलाने वाले ख़ुद उन दूसरों को निगलने लगते हैं, जनता के नौकर जनता के मालिक और अफ़सर बन बैठते हैं, जिससे लगातार बलवे, इन्क़लाब और क्रान्तियां होती रहती हैं, और फिर जो असली 'बैनीफ़िशयरी' हैं यानी आम जनता के लोग वह फिर से अपने नए ट्रस्टी मुक़र्रर करते हैं, ठीक उसी तरह मजहब के मामले में भी होता है. मजहबी गुरु दुनयवी ताक़त छीनने के चक्कर में पड़ जाते हैं और हकूमत की ताक़त वाले धार्मिक गुरु बन जाने की फ़िक्र में रहते हैं. पुरोहित, पंडे, मुल्ला और



دھرم یعنی مذہب انسانیت کی کچھ چنگاریاں ہم میں ابھی تک باقی ہیں ۔

یہاں یہ بتا دینا بھی ضروری ہے کہ باوجود موروثی پن پر اتنا ادھک زور ہونے کے یہاں جاتوں کا ادل بدل برابر ہوتا رہا ہے ۔ اکا دکا لوگ ہی نہیں گروہوں کے گروہ ہمیشہ اپنے کو نیچے کی جاتوں سے اُٹھاکر براہمن یا چھتری نام دیتے رہے ہیں اور آج کوئی اُن سے وہ نام چھین نہیں سکتا ۔ لیکن جو ایک سندر سائنسی ڈھنگ سے سب کا آدر مان رکھتے ہوئے شروع کا سنگٹھن تھا وہ جاتا رہا ۔

## یورپ سے مقابلہ

اس معاملے میں یورپ ہم سے اچھا نہیں رہا ۔ ہمارے یہاں موروثی پن پر بیجا زور دیا گیا اور یورپ میں اِس کے خلاف آدمی آدمی کے سوارتھوں کی ٹکر اور اُن کے بیچ بیجا اندھے مقابلے پر زور دیا گیا. سچ یہ ہے کہ یورپ میں ابھی تک کوئی سماج سنگٹھن ہو ہی نہیں پایا ۔ ایک درجے تک موروثی پن بھی سب جگہ چلتا ہے اور قدرتی ہے ۔ یورپ میں بھی لاکھوں کروڑوں آدمی اپنے باپ دادا کے ہی پیشوں میں لگے رہتے ہیں ۔ لیکن یہ ایک بڑی اچھی نشانی ہے کہ یورپ کے ادھک انت دیشوں میں بچوں کو تعلیم دینے والوں کا دھیان تیزی سے اِس طرف جا رہا ہے کہ چھوٹی عمر سے ہی ہر بچے کے قدرتی رجحان اور اُس کی قابلیت کو سمجھنے کی کوشش کی جاوے اور اُسی کے انوسار جیون میں اُسے کام دھندا دینے کی کوشش کی جاوے ۔ کچھ دیشوں میں تو اِس ودیا کے خاص ودوان یا ماہر اسکولوں میں رکھے گئے ہیں ۔ کہیں بھی اگر سماج کا ٹکاؤ سنگٹھن کیا جاوےگا تو موروثی پن اور آزاد ادل بدل دونوں کو دھیان میں رکھنا ہوگا. ہاں، بچے کا پیشہ طے کرنے میں اُس کی آزاد طبیعت اور نجی پسند کا ادھک لحاظ رکھا جائےگا.

## سدھار کی ضرورت

جیسے ہماری راج کاجی اور مالی زندگی میں رکشک بھکشک بن جاتے ہیں، ' لیڈر ' ( رہبر ) ' مس لیڈر ' یعنی گمراہ کرنے والے ہو جاتے ہیں، ٹرسٹی اپنے کو ' بینی فیشیری ' بنا بیٹھتے ہیں، دوسروں کو کھلانے والے خود اُن دوسروں کو نگلنے لگتے ہیں، جنتا کے نوکر جنتا کے مالک اور افسر بن بیٹھتے ہیں، جس سے لگاتار بلوے، انقلاب اور کرانتیاں ہوتی رہتی ہیں اور پھر جو اصلی ' بینی فیشیری ' ہیں یعنی عام جنتا کے لوگ وہ پھر سے اپنے نئے ٹرسٹی مقرر کرتے ہیں، ٹھیک اِسی طرح مذہب کے معاملے میں بھی ہوتا ہے ۔ مذہبی گرو دنیوی طاقت چھیننے کے چکر میں پڑ جاتے ہیں اور حکومت کی طاقت والے دھارمک گرو بن جانے کی فکر میں رہتے ہیں ۔ ' پروہت ' ' پنڈے ' ملا اور

होता है. हर नतीजा अपने सबब के अन्दर बीज रूप में मौजूद होता है. सब हमेशा और हर जगह हैं, क्योंकि वह एक जिस के अन्दर यह सब हैं हर जगह है.

आजकल की बायोलोजी की साइन्स में और हमारे देश के पुराने आयुर्वेद में दोनों में विस्तार के साथ बयान किया गया है कि मां बाप के दिलों और दिमाग़ों की उस वक़्त की हालतें और आस पास की माद्दी हालतें सब मिल कर किस तरह बच्चे के ऊपर असर डालती हैं और किस तरह एक बच्चे से दूसरे बच्चे में अनगिनत फ़र्क़ पैदा होते चले जाते हैं. जब यह हालात एक से होते हैं तो बच्चों के रूप रंग और दिमाग़ भी एक से होते हैं. यह बात जुड़वां बच्चों में ख़ूब दिखाई देती है. हिन्दुस्तान की ज्योतिश विद्या से भी हमें इस मामले में बहुत सी बातों का पता चलता है, जैसे यह कि किस वक़्त के और कैसे वक़्त के मर्द और औरत के मेल से कैसी औलाद पैदा होनी चाहिये.

हर बच्चा दो इन्सानों से पैदा होता है और उन दोनों में से भी हर एक दो दो से पैदा हुआ है. इस तरह अगर हम पीछे को चलते रहें तो इस बेअन्त सिलसिले में हमें आगे की सारी सृष्टि के बीज और उसके सबब मिल जावेंगे. दुनिया में कोई चीज नई नहीं है. सब एक में हैं और सब में एक है. इसलिये मौरूसीपन और लगातार तबदीली दोनों एक ही सिक्के के दो रुख़ हैं.

दुनिया की नई और पुरानी सब तहज़ीबों ने किसी न किसी हद तक इन चार क़िस्म के आदमियों और क़ुदरत के इन दोनों क़ानूनों को निगाह में रख कर ही समाज का संगठन किया है. अगर हम ध्यान से देखें तो जहां तक इन उसूलों को निगाह में रख कर समाज का संगठन किया गया है वहां तक ही वह तहज़ीबें कामयाब और ख़ुशहाल रही हैं. हिन्दुस्तान की पुरानी तहज़ीब ने इस उसूल को अच्छी तरह समझा था और उस पर अमल करने की कोशिश की थी. शायद इसीलिये हिन्दुस्तान की पुरानी तहज़ीब, एक चीनी तहज़ीब को छोड़ कर, शायद सबसे ज्यादा दिनों तक ज़िन्दा और फलती फूलती रही. पर जबसे हमारी इस तहज़ीब के अगुवा, उसके रक्षक और शिक्षक अधिक स्वार्थी और ख़ुदग़रज़ हो गए और उन्होंने आपस के फ़र्क़ों को हद से ज्यादा बढ़ाना शुरू कर दिया, अपने को ऊंचा और दूसरों को नीचा कहने लगे, मौरूसीपन के उसूल से ग़लत फ़ायदा उठा कर अपने को सदा ऊंचा और नीचे वालों को सदा नीचा ठहराने लगे और शख़्सी आज़ादी और बदलाव के उसूलों को जबरदस्ती दबाने की कोशिश करने लगे तब ही से हिन्दुस्तानी सभ्यता में गिरावट आने लगी. हमारी सभ्यता अभी तक बिलकुल मरी नहीं है. इसका कारन शायद यह है कि पुरानी रूहानियत और बुनियादी मानव



ہوتا ہے ۔ ہر نتیجہ اپنے سبب کے اندر بیج روپ میں موجود ہوتا ہے ۔ سب ہمیشہ اور ہر جگہ ہیں کیونکہ وہ ایک جس کے اندر یہ سب ہیں ہر جگہ ہے ۔

آجکل کی بایولوجی کی سائنس میں اور ہمارے دیش کے پرانے آیروید میں دونوں میں وستار کے ساتھ بیان کیا گیا ہے کہ ماں باپ کے دلوں اور دماغوں کی اُس وقت کی حالتیں اور آس پاس کی مادی حالتیں سب ملکر کس طرح بچے کے اوپر اثر ڈالتی ہیں اور کس طرح ایک بچے سے دوسرے بچے میں انگنت فرق پیدا ہوتے چلے جاتے ہیں ۔ جب یہ حالات ایک سے ہوتے ہیں تو بچوں کے روپ رنگ اور دماغ بھی ایک سے ہوتے ہیں ۔ یہ بات جوڑواں بچوں میں خوب دکھائی دیتی ہے ۔ ہندستان کی جوتش ودیا سے بھی ہمیں اِس معاملے میں بہت سی باتوں کا پتہ چلتا ہے، جیسے یہ کہ کس وقت کے اور کیسے وقت کے مرد اور عورت کے میل سے کیسی اولاد پیدا ہونی چاہئے۔

ہر بچہ دو اِنسانوں سے پیدا ہوتا ہے اور اُن دونوں میں سے بھی ہر ایک دو دو سے پیدا ہوا ہے ۔ اِس طرح اگر ہم پیچھے کو چلتے رہیں تو اِس بےانت سلسلے میں ہمیں آگے کی ساری سرشٹی کے بیج اور اُس کے سبب مل جاوینگے ۔ دنیا میں کوئی چیز نئی نہیں ہے ۔ سب ایک میں ہیں اور سب میں ایک ہے ۔ اِس لئے موروثی پن اور لگاتار تبدیلی دونوں ایک ہی سکے کے دو رخ ہیں ۔

دنیا کی نئی اور پرانی سب تہذیبوں نے کسی نہ کسی حدتک اِن چار قسم کے آدمیوں اور قدرت کے ان دونوں قانونوں کو نگاہ میں رکھکر ہی سماج کا سنگٹھن کیا ہے ۔ اگر ہم دھیان سے دیکھیں تو جہاں تک اِن اصولوں کو نگاہ میں رکھکر سماج کا سنگٹھن کیا گیا ہے وہاں تک ہی وہ تہذیبیں کامیاب اور خوشحال رہی ہیں ۔ ہندستان کی پرانی تہذیب نے اِس اصول کو اچھی طرح سمجھا تھا اور اُس پر عمل کرنے کی کوشش کی تھی ۔ شاید اِس لئے ہندستان کی پرانی تہذیب، ایک چینی تہذیب کو چھوڑکر، شاید سب سے زیادہ دنوں تک زندہ اور پھلتی پھولتی رہی۔ پر جب سے ہماری اِس تہذیب کے آگوا، اُس کے رکشک اور شکشک ادھک سوارتھی اور خودغرض ہوگئے اور انہوں نے آپس کے فرقوں کو حد سے زیادہ بڑھانا شروع کردیا، اپنے کو اُونچا اور دوسروں کو نیچا کہنے لگے، موروثی پن کے اصول سے غلط فائدہ اُٹھاکر اپنے کو سدا اُونچا اور نیچے والوں کو سدا نیچا ٹھہرانے لگے اور شخصی آزادی اور بدلاؤ کے اصولوں کو زبردستی دبانے کی کوشش کرنے لگے تب ہی سے ہندستانی سبھیتا میں گراوٹ آنے لگی ۔ ہماری سبھیتا ابھی تک بالکل مری نہیں ہے ۔ اِس کا کارن شاید یہ ہے کہ پرانی روحانیت اور بنیادی مانو

दरख्तों, पहाड़ों, नदियों जैसी चीज़ों की पूजा लोगों के दिमाग़ों को कुन्द कर देती है, उनकी इरादे की शक्ति को कमज़ोर कर देती है, उनके अन्दर समझ के ख़िलाफ़ अन्ध विश्वास भर देती है, और क़ौमों को उन्नति की जगह अवनति और बरबादी की तरफ़ ले जाती है.

इंजील के ऊपर के शब्दों में जो "किसी और देवता" की चरचा की गई है उससे मतलब केवल पत्थर की मूर्तियों से ही नहीं है, और ईश्वर के "हुकुम" की जो चरचा की गई है उससे मतलब केवल इस तरह की मूर्तियों की पूजा के खिलाफ़ हुकुम से ही नहीं है. और सब दूसरे देवताओं से कहीं बुरे दो देवता हैं जिन्हें यूनानी 'बैक्कस' और 'प्राइपस' कहा करते थे. इनमें बैक्कस शराब का और बुरे खाने का देवता है, और प्राइपस जिन्सी बदचलनी (काम-वासना) का देवता है. यह दोनों देवता नहीं सबसे बड़े शैतान हैं. इन दोनों की पूजा से जो बुराइयां और गन्दी बीमारियां पैदा होती हैं वह "तीसरी या चौथी पीढ़ी तक" ही नहीं इससे कहीं ज्यादा पीढ़ियों तक फलती रहती हैं. जिन्सी बदचलनी से तो दिमाग़ और जिस्म दोनों की तरह तरह की कमज़ोरियां और बीमारियां बाप से बेटे को और उससे उसके बेटे को मिलती रहती हैं. इसलिये सब धर्मों में इन दोनों बुराइयों से बचने का "हुकुम" दिया गया है. इन हुकुमों में सब से बड़े हुकुम वैद्यक यानी डाक्टरी के हुकुम हैं. यह "हुकुम" क़ुदरत के अटल क़ानून हैं. क़ुदरत ख़ुदा की क़ुदरत है. इसलिये क़ुदरत के क़ानून ख़ुदा के हुकुम हैं. ईश्वर से "प्रेम" करने या उससे "नफ़रत" करने का मतलब इन्हीं क़ुदरत के अटल क़ानूनों से प्रेम करना या उनसे नफ़रत करना है, जिस का मतलब है इन क़ानूनों को मानना या उनकी तरफ़ से बे परवाही बरतना, क्योंकि दुनिया की सब चीज़ें और सब क़ायदे क़ानून अल्लाह ही से हैं.

## मौरूसीपन और हर एक का अपना अपना उठान

इस सबके लिये समाज को एक ऐसे संगठन या निज़ाम की ज़रूरत है जो मज़बूत भी हो और साथ ही लचीला भी हो. ऊपर बयान किये हुए चारों तरह के इन्सान क़ुदरत के दो क़ानूनों के अधीन होते हैं—पहला मौरूसीपन का क़ानून और दूसरा हर एक की आज़ाद निजी उठान या बदलाव का क़ानून. आत्मा यानी रूह एक है, इसलिये हममें कुछ मौरूसी गुनों का होना स्वाभाविक है. अनात्मा यानी माद्दा तरह तरह का है इसलिये सब के अलग अलग रूप होना और उन रूपों का बदलते रहना भी उतना ही क़ुदरती है. दर्शन शास्त्र यानी फ़लसफ़े में यह दोनों क़ानून एक दूसरे में आ जाते हैं. सब बच्चे मां बाप के अन्दर मौजूद होते हैं, और हर मां या बाप ख़ुद अनगिनत पुरखों की औलाद



درختوں، پہاڑوں، ندیوں جیسی چیزوں کی پوجا لوگوں کے دماغوں کو کند کردیتی ہے، اُن کی اِرادے کی شکتی کو کمزور کردیتی ہے، اُن کے اندر سمجھ کے خلاف اندھ وشواس بھر دیتی ہے، اور قوموں کو اُنتی کی جگہ اَونتی اور بربادی کی طرف لے جاتی ہے۔

اِنجیل کے اُوپر کے شبدوں میں جو "کسی اور دیوتا" کی چرچا کی گئی ہے اُس سے مطلب کیول پتھر کی مورتیوں سے ہی نہیں ہے، اور اِیشور کے "حکم" کی جو چرچا کی گئی ہے اُس سے مطلب کیول اِس طرح کی مورتیوں کی پوجا کے خلاف حکم سے ہی نہیں ہے۔ اور سب دوسرے دیوتاؤں سے کہیں برے دو دیوتا ہیں جنہیں یونانی 'بیککس' اور 'پرائپس' کہا کرتے تھے۔ ان میں بیککس شراب کا اور برے کھانے کا دیوتا ہے، اور پرائپس جنسی بدچلنی (کامواسنا) کا دیوتا ہے۔ یہ دونوں دیوتا نہیں سب سے بڑے شیطان ہیں۔ اِن دونوں کی پوجا سے جو برائیاں اور گندی بیماریاں پیدا ہوتی ہیں وہ "تیسری یا چوتھی پیڑھی تک" ہی نہیں اِس سے کہیں زیادہ پیڑھیوں تک پھلتی رہتی ہیں۔ جنسی بدچلنی سے تو دماغ اور جسم دونوں کی طرح طرح کی کمزوریاں اور بیماریاں باپ سے بیٹے کو اور اس سے اس کے بیٹے کو ملتی رہتی ہیں۔ اِسی لئے سب دھرموں میں اِن دونوں برائیوں سے بچنے کا "حکم" دیا گیا ہے۔ اِن حکموں میں سب سے بڑے حکم ویدک یعنی ڈاکٹری کے حکم ہیں۔ یہ "حکم" قدرت کے اٹل قانون ہیں۔ قدرت خدا کی قدرت ہے۔ اِس لئے قدرت کے قانون خدا کے حکم ہیں۔ ایشور سے "پریم" کرنے یا اُس سے "نفرت" کرنے کا مطلب انہیں قدرت کے اٹل قانونوں سے پریم کرنا یا اُن سے نفرت کرنا ہے، جس کا مطلب ہے ان قانونوں کو ماننا یا اُن کی طرف سے بےپرواہی برتنا، کیونکہ دنیا کی سب چیزیں اور سب قاعدے قانون اللہ ہی سے ہیں۔

## موروثی پن اور ہر ایک کا اپنا اپنا اُٹھان

اِس سب کے لئے سماج کو ایک ایسے سنگٹھن یا نظام کی ضرورت ہے جو مضبوط بھی ہو اور ساتھ ہی لچیلا بھی ہو۔ اُوپر بیان کئے ہوئے چاروں طرح کے اِنسان قدرت کے دو قانونوں کے آدھین ہوتے ہیں—پہلا موروثی پن کا قانون اور دوسرا ہر ایک کی آزاد نجی اُٹھان یا بدلاؤ کا قانون۔ آتما یعنی روح ایک ہے، اِس لئے ہم میں کچھ موروثی گنوں کا ہونا سوابھاوک ہے۔ اناتما یعنی مادہ طرح طرح کا ہے اِس لئے سب کے الگ الگ روپ ہونا اور اُن روپوں کا بدلتے رہنا بھی اُتنا ہی قدرتی ہے۔ درشن شاستر یعنی فلسفہ میں یہ دونوں قانون ایک دوسرے میں آجاتے ہیں۔ سب بچے ماں باپ کے اندر موجود ہوتے ہیں، اور ہر ماں یا باپ خود اَنگنت پرکھوں کی اَولاد

पर अपना असर डालती हैं वह मामूली इन्सानों की सूझ-बूझ के लिये ऐटम और उसकी ताक़त के काम करने के तरीक़ों से कहीं ज्यादा बारीक और मुश्किल चीज़ हैं. लेकिन इन ताक़तों का असर बहुत गहरा, ज़बरदस्त और व्यापक होता है.

गीता में लिखा है :—

"आदमी के नेक कामों और क़ुरबानी ( यज्ञ यानी त्याग ) से बारिश होती है. उसी से नाज पैदा होता है, नाज से सब जानदारों को ख़ूराक मिलती है,......जिन्सी बदचलनी ( संकर ) उस बदचलनी से सम्बन्ध रखने वाले सबको नरक में पहुंचा देती है."

मौलाना रूम ने लिखा है :—

"जब लोग ज़कात यानी ख़ैरात देना बन्द कर देते हैं तो बादल आने बन्द हो जाते हैं और जब लोग शहवत के पीछे पड़कर बदचलन हो जाते हैं तब मुसीबतें उन्हें चारों तरफ़ से घेर लेती हैं."

इंजील में बड़े ज़ोरदार शब्दों में आदमी को हिदायत की गई है कि :—

"सिवाय एक अल्लाह के किसी और को अपना देवता न बनाना. तुम किसी तरह की मूर्ति या बुत बना कर न रखना, चाहे वह बुत हवा में उड़ने वाली किसी चीज़ की शकल में हो, चाहे धरती पर चलने वाले किसी जानदार के रूप में और चाहे पानी में रहने वाले किसी प्रानी की शकल में. तुम ऐसे किसी बुत के सामने सर न झुकाना और न उनकी पूजा सेवा करना, क्योंकि मैं तुम्हारा ईश्वर इस मामले में बहुत डाह करने वाला हूं. जो लोग गुनाह करते हैं मैं तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी औलाद को, उन लोगों को जो मुझसे नफ़रत करते हैं, सज़ा देता हूं और उन पर जो मुझसे प्रेम करते हैं और मेरे हुकुम मानते हैं दया दिखलाता हूं." (इंजील; 20 Exodus ).

इंजील की यह हिदायत ध्यान से समझने की चीज़ है. यह सच है कि कभी कभी मूर्तियों के पूजने वालों में भी किसी उपासक की गहरी श्रद्धा, उसका ज़बरदस्त विश्वास उसमें इस तरह के भाव जगा देता है कि उसका दिल और दिमाग़ उसी पत्थर की मूर्ति के अन्दर हाथ पैर देखने लगता है. वह मूर्ति उसे जानदार मालूम होने लगती है, उससे बोलने लगती है, और थोड़ी देर के लिये उसकी अपनी दिल की हालत के अनुसार उसके लिये सच्चा फ़रिश्ता या सच्चा शैतान बन जाती है. यह कोई अनोखी बात नहीं है. आख़िर आत्मा सबके अन्दर है. ख़ुदा हर चीज़ में है. बुत के अन्दर भी है. आदमी की कल्पना शक्ति उसे क्या क्या नहीं दिखा सकती, पर जिस तरह की मूर्ति पूजा आज, दुनिया में फैली हुई है, या उससे मिलती जुलती



پر اپنا اثر ڈالتی ہیں وہ معمولی اِنسانوں کی سوجھ بوجھ کے لئے ایٹم اور اُس کی طاقت کے کام کرنے کے طریقوں سے کہیں زیادہ باریک اور مشکل چیز ہیں. لیکن ان طاقتوں کا اثر بہت گہرا' زبردست اور ویاپک ہوتا ہے.

گیتا میں لکھا ہے :—

"آدمی کے نیک کاموں اور قربانی ( یگیہ یعنی تیاگ ) سے بارش ہوتی ہے. اُسی سے ناج پیدا ہوتا ہے' ناج سے سب جانداروں کو خوراک ملتی ہے'......جنسی بدچلنی ( سنکر ) اُس بدچلنی سے سمبندھ رکھنے والے سب کو نرک میں پہونچا دیتی ہے."

مولانا روم نے لکھا ہے :—

"جب لوگ زکات یعنی خیرات دینا بند کردیتے ہیں تو بادل آنے بند ہوجاتے ہیں اور جب لوگ شہوت کے پیچھے پڑکر بدچلن ہوجاتے ہیں تب مصیبتیں اُنہیں چاروں طرف سے گھیر لیتی ہیں."

اِنجیل میں بڑے زوردار شبدوں میں آدمی کو ہدایت کی گئی ہے کہ :—

"سوائے ایک اللہ کے کسی اور کو اپنا دیوتا نہ بنانا. تم کسی طرح کی مورتی یا بت بناکر نہ رکھنا' چاہے وہ بت ہوا میں اُڑنے والی کسی چیز کی شکل میں ہو' چاہے دھرتی پر چلنے والے کسی جاندار کے روپ میں اور چاہے پانی میں رہنے والے کسی پرانی کی شکل میں. تم ایسے کسی بت کے سامنے سر نہ جھکانا اور نہ اُن کی پوجا سیوا کرنا' کیونکہ میں تمہارا اِیشور اِس معاملے میں بہت ڈاہ کرنے والا ہوں. جو لوگ گناہ کرتے ہیں میں تیسری اور چوتھی پیڑھی تک اُن کی اولاد کو' اُن لوگوں کو جو مجھ سے نفرت کرتے ہیں' سزا دیتا ہوں اور اُن پر جو مجھ سے پریم کرتے ہیں اور میرے حکم مانتے ہیں' دیا دکھلاتا ہوں." ( اِنجیل' 20 Exodus )

اِنجیل کی یہ ہدایت دھیان سے سمجھنے کی چیز ہے. یہ سچ ہے کہ کبھی کبھی مورتیوں کے پوجنے والوں میں بھی کسی اُپاسک کی گہری شردھا' اُس کا زبردست وشواس' اُس میں اِس طرح کے بھاؤ جگا دیتا ہے کہ اُس کا دل اور دماغ اُسی پتھر کی مورتی کے اندر ہاتھ پیر دیکھنے لگتا ہے. وہ مورتی اُسے جاندار معلوم ہونے لگتی ہے' اُس سے بولنے لگتی ہے' اور تھوڑی دیر کے لئے اُس کی اپنی دل کی حالت کے انوسار اُس کے لئے سچا فرشتہ یا سچا شیطان بن جاتی ہے. یہ کوئی انوکھی بات نہیں ہے. آخر آتما سب کے اندر ہے. خدا ہر چیز میں ہے. بت کے اندر بھی ہے. آدمی کی کلپنا شکتی اُسے کیا کیا نہیں دکھا سکتی. پر جس طرح کی مورتی پوجا آج دنیا میں پھیلی ہوئی ہے' یا اُس سے ملتی جلتی

ट्रेड गिल्ड करती हैं. पर हमारे यहां थोड़े ही दिनों के अन्दर पेशे या काम से उनका कोई सम्बन्ध नहीं रह गया. यहां तक कि आजकल सिवाय एक पुरोहिताई के काम के बाक़ी सब काम सब जातियों के लोग बिना किसी फ़र्क़ के करते हैं. केवल एक पुरोहिताई का काम अब ऐसा रह गया है जिस पर ब्राह्मन जाति में पैदा हुए लोगों का इजारा चला आता है. वह इजारा भी अब धीरे धीरे खत्म हो रहा है.

नई पीढ़ी के लोग नई रोशनी और नई ज़रूरतों के असर में देश की इस बुराई को समझते जा रहे हैं. देश से बाहर की हवाएं भी अपना काम कर रही हैं. पुराने बन्धन टूट रहे हैं, पर अभी बहुत धीरे. इन बन्धनों के तोड़ने में हमारे सामने लक्ष्य या मक़सद, बेलगाम छूट या केवल भोग विलास नहीं होना चाहिये. हमारे सबके सामने लक्ष्य होना चाहिये समाज की और सब की असली और टिकाऊ भलाई.

इसका यह मतलब नहीं कि हमारा देश दुनिया के और देशों से अधिक गिरा हुआ है. कोई देश किसी एक बात में गिरा हुआ है तो कोई किसी दूसरी बात में. इस मामले में सब जगह सुधार की ज़रूरत और गुन्जाइश है. इन मामलों में टिकाऊ सुधार तब ही हो सकता है जब दुनिया के बच्चों को शिक्षा देने वाले हर लड़के और लड़की के स्वाभाविक 'रुझान' उसकी तबियत और क़ाबलियत को ठीक ठीक समझ कर उसी के अनुसार हर एक को तालीम दें और उसी के अनुसार शुरू से हर एक का पेशा और काम तय किया जावे और शिक्षा खतम होने पर उन्हें वैसा ही काम सौंपा जावे. इसके लिये खास समाजी संगठन की ज़रूरत है.

## रोटी का सवाल और जिन्सी सवाल

रोटी का सवाल और जिन्सी सवाल इन दो पर ही आदमी की सारी जिन्दगी चलती है. इन्हें ठीक ठीक हल करना और ठीक क़ाबू में रखना हर देश के रहने वालों के लिये ज़रूरी है. इसके लिये मुनासिब नियम और क़ानून होने चाहियें जिनका तोड़ना सबसे बड़ा जुर्म समझा जावे. मां का दिल और मां का शरीर इन्सानी समाज की सबसे पाक चीज़ है. यही विधाता का सबसे बड़ा मन्दिर है. जो देश इस मन्दिर को गन्दा करने की या दुख पहुंचाने की अपने लोगों को इजाज़त देता है उस पर मनु के शब्दों में—"ईश्वर की तरफ़ से बिजली गिरती है." यह बिजली या तो दिलों और दिमाग़ों के बिगड़ने की शकल में दिखाई देती है या बीमारियों, महामारियों, जंगों, भूचालों, बाढ़ों, अकालों और ज्वालामुखियों के फूटने की शकल में दिखाई देती है. इनमें से कई तरह की आफ़तों का सम्बन्ध आदमी के कामों से ज़ाहिरा दिखाई नहीं देता. लेकिन इस सम्बन्ध से इनकार नहीं किया जा सकता. इख़लाक़ी और रूहानी लहरें जिस तरह काम करती है और माद्दी दुनिया



ٹریڈ گلڈ کرتی ھیں. پر ھمارے یہاں تھوڑے ھی دنوں کے اندر پیشے یا کام سے اُن کا کوئی سمبندھ نہیں رہ گیا. یہاں تک کہ آجکل سوائے ایک پروھتائی کے کام کے باقی سب کام سب جاتیوں کے لوگ بنا کسی فرق کے کرتے ھیں. کیول ایک پروھتائی کا کام اب ایسا رہ گیا ھے جس پر براھمن جاتی میں پیدا ھوئے لوگوں کا اِجارا چلا آتا ھے. وہ اِجارا بھی اب دھیرے دھیرے ختم ھو رھا ھے.

نئی پیڑھی کے لوگ نئی روشنی اور نئی ضرورتوں کے اثر میں دیش کی اِس برائی کو سمجھتے جا رھے ھیں. دیش سے باھر کی ھوائیں بھی اپنا کام کر رھی ھیں. پرانے بندھن ٹوٹ رھے ھیں، پر ابھی بہت دھیرے. اِن بندھنوں کے توڑنے میں ھمارے سامنے لکش یا مقصد، بے لگام چھوٹ یا کیول بھوگ ولاس نہیں ھونا چاھئے. ھمارے سب کے سامنے لکش ھونا چاھئے سماج کی اور سب کی اصلی اور ٹکاؤ بھلائی.

اِس کا یہ مطلب نہیں کہ ھمارا دیش دنیا کے اور دیشوں سے ادھک گرا ھوا ھے. کوئی دیش کسی ایک بات میں گرا ھوا ھے تو کوئی کسی دوسری بات میں. اِس معاملے میں سب جگہ سدھار کی ضرورت اور گنجائش ھے. اِن معاملوں میں ٹکاؤ سدھار تب ھی ھو سکتا ھے جب دنیا کے بچوں کو شکشا دینے والے ھر لڑکے اور لڑکی کے سوابھاوک 'رجحان' اس کی طبیعت اور قابلیت کو ٹھیک ٹھیک سمجھ کر اسی کے انوسار ھر ایک کو تعلیم دیں اور اسی کے انوسار شروع سے ھر ایک کا پیشہ اور کام طے کیا جاوے اور شکشا ختم ھونے پر اُنھیں ویسا ھی کام سونپا جاوے. اِس کے لئے خاص سماجی سنگٹھن کی ضرورت ھے.

## روٹی کا سوال اور جنسی سوال

روٹی کا سوال اور جنسی سوال اِن دو پر ھی آدمی کی ساری زندگی چلتی ھے. اِنھیں ٹھیک ٹھیک حل کرنا اور ٹھیک قابو میں رکھنا ھر دیش کے رھنے والوں کے لئے ضروری ھے. اِس کے لئے مناسب نیم اور قانون ھونے چاھئیں جن کا توڑنا سب سے بڑا جرم سمجھا جاوے. ماں کا دل اور ماں کا شریر اِنسانی سماج کی سب سے پاک چیز ھے. یہی ودھاتا کا سب سے بڑا مندر ھے. جو دیش اِس مندر کو گندا کرنے کی یا دکھ پہونچانے کی اپنے لوگوں کو اِجازت دیتا ھے اُس پر منو کے شبدوں میں— "ایشور کی طرف سے بجلی گرتی ھے." یہ بجلی یا تو دلوں اور دماغوں کے بگڑنے کی شکل میں دکھائی دیتی ھے یا بیماریوں، مہاماریوں، جنگوں، بھونچالوں، باڑھوں، اکالوں اور جوالامکھیوں کے پھوٹنے کی شکل میں دکھائی دیتی ھے. اِن میں سے کئی طرح کی آفتوں کا سمبندھ آدمی کے کاموں سے ظاھرا دکھائی نہیں دیتا. لیکن اِس سمبندھ سے اِنکار نہیں کیا جاسکتا. اِخلاقی اور روحانی لہریں جس طرح کام کرتی ھیں اور مادی دنیا

रखना है तो पाक साफ़ खाना खाना चाहिये, शुद्ध जल पीना चाहिये, ऐसे लोगों के साथ बैठकर खाना पीना चाहिये जिन की आदतें अच्छी और जिन से हमारी तबियतें मिलती हों. विवाह भी ऐसे लोगों में ही होना चाहिये जिन के स्वभाव, विचार, शौक़ और तबियतें मिलती हों. पर यह बात नासमझ और स्वार्थी लोगों के हाथों में उलटी हो जाती है. समय के साथ साथ पुरानी अच्छी से अच्छी चीज़ भी सड़ जाती है और नुक़सान करने लगती है.

दूसरे देशों में तो लोगों ने केवल अपने एक राजा या एक पुरोहित के बारे में यह विचार बना लिया कि उसे ईश्वरी अधिकार मिला हुआ है. हमने इस देश में लाखों आदमियों की एक पूरी जाति के बारे में यह मान लिया कि भगवान ने जन्म से ही उन्हें दूसरों से ऊंचा और दूसरों पर हुकुम चलाने का हक़दार बना दिया है. और जब यह लोग जन्म से ऊंचे हो गए तो बाक़ी लाखों करोड़ों लोग जन्म से ही नीच समझे जाने लगे. हमने मान लिया कि उन्हें भगवान ने इन ऊपर वालों की सेवा करने और उनका हुकुम मानने के लिये ही बनाया है. दस्तकारों, किसानों, मज़दूरों सब की हमने यही दुर्गत कर डाली. यहां तक कि अमरीका के हबशी गुलामों की तरह हमने देश के लाखों और करोड़ों मर्द औरतों को और पीढ़ी दर पीढ़ी उनकी औलाद को हमेशा के लिये शूद्र, अछूत और अन्त्यज क़रारा दे दिया. नतीजा यह हुआ कि साइन्स और समझ की जगह हम कहीं अधिक अन्ध विश्वासों, नासमझी और गन्दगी में फंसते चले गए.

हम गन्दे और बीमार लोगों के हाथों का पका हुआ नापाक खाना खाते हैं केवल इसलिये क्योंकि पकाने वाला उसी जाति का है जिसके हम हैं. हमारे यहां रोज़ बेमेल और बेतुकी शादियां होती रहती हैं क्योंकि लड़का और लड़की दोनों की जात का नाम एक है. हम इस तरह की शादियों को 'सवर्न' कहते हैं जिसका मतलब यह है कि लड़का और लड़की दोनों एक वर्न के हैं. असल में यह सब शादियां अधिकतर 'अवर्न' होती हैं. संस्कृत क़ायदे से 'वर्न' शब्द के तीन मानी हैं :—एक वह चीज़ जो समाज के अन्दर किसी आदमी की रोज़ी, उसके पेशे या उसकी जगह को बयान करे, दूसरे वह चीज़ जिसे कोई आदमी खुद अपने लिये चुने या पसन्द करे. इसमें पेशा भी आ सकता है, तीसरे वह चीज़ जो किसी आदमी को ढके हो, जैसे उसका रंग वग़ैरा. 'वर्न' शब्द के मानी किसी तरह भी जन्म की जात नहीं होते.

अधिकतर जातों और उपजातों के नाम, पेशों और धंदों पर हैं. हो सकता है शुरू में इस तरह की जातों ने वह काम किया हो जो आजकल दुनिया में ट्रेड यूनियननें या



رکھنا ھے تو پاک صاف کھانا کھانا چاھئیے' شدھ جل پینا چاھئیے' ایسے لوگوں کے ساتھ بیٹھ کر کھانا پینا چاھئیے جن کی عادتیں اچھی اور جن سے ھماری طبیعتیں ملتی ھوں ۔ وواہ بھی ایسے لوگوں میں ھی ھونا چاھئیے جن کے سربھاؤ' وچار' شوق اور طبیعتیں ملتی ھوں ۔ پر یہ بات ناسمجھ اور سوارتھی لوگوں کے ھاتھوں میں اُلٹی ھو جاتی ھے ۔ سمے کے ساتھ ساتھ پرانی اچھی سے اچھی چیز بھی سڑ جاتی ھے اور نقصان کرنے لگتی ھے ۔

دوسرے دیشوں میں تو لوگوں نے کیول اپنے ایک راجا یا ایک پروھت کے بارے میں یہ وچار بنا لیا کہ اُسے ایشوری ادھکار ملا ھوا ھے ۔ ھم نے اِس دیش میں لاکھوں آدمیوں کی ایک پوری جاتی کے بارے میں یہ مان لیا کہ بھگوان نے جنم سے ھی اُنھیں دوسروں سے اونچا اور دوسروں پر حکم چلانے کا حقدار بنا دیا ھے ۔ اور جب یہ لوگ جنم سے اُونچے ھو گئے تو باقی لاکھوں کروڑوں لوگ جنم سے ھی نیچ سمجھے جانے لگے ۔ ھم نے مان لیا کہ اُنھیں بھگوان نے اِن اوپر والوں کی سیوا کرنے اور اُن کا حکم ماننے کے لئے ھی بنایا ھے ۔ دستکاروں' کسانوں' مزدوروں سب کی ھم نے یہی درگت کر ڈالی ۔ یہاں تک کہ امریکہ کے حبشی غلاموں کی طرح ھم نے دیش کے لاکھوں اور کروڑوں مرد عورتوں کو اور پیڑھی در پیڑھی اُن کی اولاد کو ھمیشہ کے لئے شودر' اچھوت اور انتیج قرار دے دیا ۔ نتیجہ یہ ھوا کہ سائنس اور سمجھ کی جگہ ھم کہیں ادھک اندھ وشواسوں' ناسمجھی اور گندگی میں پھنستے چلے گئے ۔

ھم گندے اور بیمار لوگوں کے ھاتھوں کا پکا ھوا ناپاک کھانا کھاتے ھیں کیول اِس لئے کیونکہ پکانے والا اسی جاتی کا ھے جس کے ھم ھیں ۔ ھمارے یہاں روز بے میل اور بے تکی شادیاں ھوتی رھتی ھیں کیونکہ لڑکا اور لڑکی دونوں کی جات کا نام ایک ھے ۔ ھم اِس طرح کی شادیوں کو 'سورن' کہتے ھیں جس کا مطلب یہ ھے کہ لڑکا اور لڑکی دونوں ایک ورن کے ھیں ۔ اصل میں یہ سب شادیاں ادھک تر 'اسورن' ھوتی ھیں ۔ سنسکرت قاعدے سے 'ورن' شبد کے تین معنی ھیں :—ایک وہ چیز جو سماج کے اندر کسی آدمی کی روزی' اُس کے پیشے یا اُس کی جگہ کو بیان کرے ' دوسرے وہ چیز جسے کوئی آدمی خود اپنے لئے چنے یا پسند کرے ۔ اِس میں پیشہ بھی آ سکتا ھے' تیسرے وہ چیز جو کسی آدمی کو ڈھکے ھو' جیسے اُس کا رنگ وغیرہ ۔ 'ورن' شبد کے معنی کسی طرح بھی جنم کی جات نہیں ھوتے ۔

ادھک تر جاتوں اور اُپ جاتوں کے نام' پیشوں اور دھندوں پر ھیں ۔ ھو سکتا ھے شروع میں اِس طرح کی جاتوں نے وہ کام کیا ھو جو آج کل دنیا میں ٹریڈ یونینیں یا

हुआ कि इस तरह के विवाहों की औलाद की और नई नई जातें बनती चली गईं. इन जातों, उप-जातों और उप-जातों के अन्दर उप-जातों की गिनती बढ़ती गई. इस तरह देश में हज़ारों जातें बन गईं. सब एक दूसरे से अलग, जिनमें न एक से दूसरी में रोटी बेटी का सम्बन्ध हो सकता था और न कोई एक से दूसरी में आ जा सकता था. यही हाल अब तक जारी है. इन सब को एक डोर में बांधने वाला केवल एक शब्द 'हिन्दू' रह गया है जिसका अब सिवाय हिन्दुस्तानी या हिन्द वासी के और कुछ अर्थ हो ही नहीं सकता. जात या उपजात के आजकल केवल वह मानी रह गए हैं कि कुछ घरानों का एक गिरोह है जो केवल एक दूसरे के हाथ का खाते हैं और एक दूसरे के साथ ही शादी विवाह करते हैं. दूसरी जात वालों के साथ न खाते हैं और न उनके साथ शादी विवाह करते हैं. यहां तक कि दूसरी जात या उपजात वालों के हाथ का छुआ हुआ भोजन भी उनके लिये नापाक है. इस छुआछूत का कारन शुरू में कुछ भी रहा हो—हो सकता है यह छुआछूत इस डर से शुरू हुई हो कि कोई किसी को ज़हर न दे दे—पर अब इस रिवाज में कोई समझ या भलाई की बात नहीं रह गई है. हमारे देश के आगे बढ़ने में इस समय यह सारी गिरोह बन्दी सब से बड़ी रुकावट है.

## आजकल की जात पात

सन 1891 की मरदुमशुमारी के अनुसार हिन्दुओं के अन्दर कुल जातियों और उपजातियों की तादाद दो हज़ार तीन सौ अठत्तर थी. उसके बाद भी कुछ जातियां टूट कर और टुकड़े होती गईं और कुछ एक दूसरे में मिलती गईं. सन 1931 की मरदुमशुमारी में सब जातियों और उपजातियों की ठीक ठीक गिनती देने की कोशिश ही नहीं की गई. राजकाजी चुनावों तक पर इसका गहरा और बहुत बुरा असर पड़ा है. देश में सच्ची एकता पैदा नहीं हो पाती. ईमानदारी और क़ाबलियत को ऊपर आने का मौक़ा नहीं मिलता. बेईमानी और गन्दी गुटबन्दी बढ़ती जा रही है. देश सेवकों का ध्यान इस बुराई की तरफ़ जाने लगा है, पर अभी बहुत कम. लेखक ने सन 1936 में जब वह हिन्दुस्तान की मरकज़ी क़ानून सभा का मेम्बर था एक क़ानून अलग अलग जातियों में विवाह शादी जायज़ क़रार दिये जाने का पेश किया था. उस समय वह पास न हो सका. पर उसके बाद इस तरह के क़ानून पास हो चुके हैं और कुछ रास्ते खुलते जा रहे हैं. ज़ाहिर है कि इस जात पात के बिना मिटे देश एकता और उन्नति की राह पर आगे नहीं बढ़ सकता.

साइन्स और समझ दोनों की यह मांग है कि हम हर कोई चीज़ हर किसी के हाथ से न खावें और न हर किसी के साथ ब्याह शादी करें. इस सम्बन्ध में समझदारी और विवेक से काम लेना ज़रूरी है. हमें समाज को तन्दुरुस्त



هوا که اس طرح کے وواهوں کی اولاد کی اور نئی نئی جاتیں بنتی چلی گئیں. ان جاتوں، اُپ جاتوں اور اُپ جاتوں کے اندر اُپ جاتوں کی گنتی بڑھتی گئی. اِس طرح دیش میں هزاروں جاتیں بن گئیں، سب ایک دوسرے سے الگ، جن میں نه ایک سے دوسری میں روٹی بیٹی کا سمبندھ هو سکتا تھا اور نه کوئی ایک سے دوسری میں آ جا سکتا تھا. یہی حال اب تک جاری ہے. اِن سب کو ایک ڈور میں باندھنے والا کیول ایک شبد 'هندو' رہ گیا هے جس کا اب سوائے هندستانی یا هندواسی کے اور کچھ ارتھ هو هی نہیں سکتا. جات یا اُپ جات کے آجکل کیول یہ معنی رہ گئے هیں که کچھ گھرانوں کا ایک گروہ هے جو کیول ایک دوسرے کے هاتھ کا کھاتے هیں اور ایک دوسرے کے ساتھ هی شادی وواہ کرتے هیں. دوسری جات والوں کے ساتھ نه کھاتے هیں اور نه اُن کے ساتھ شادی وواہ کرتے هیں. یہاں تک که دوسری جات یا اُپ جات والوں کے هاتھ کا چھوا هوا بھوجن بھی اُن کے لئے ناپاک هے. اِس چھواچھوت کا کارن شروع میں کچھ بھی رها هو—هو سکتا هے یه چھواچھوت اِس ڈر سے شروع هوئی هو که کوئی کسی کو زهر نه دے دے—پر اب اس رواج میں کوئی سمجھ یا بھلائی کی بات نہیں رہ گئی هے. همارے دیش کے آگے بڑھنے میں اِس سمے یه ساری گروہ بندی سب سے بڑی رکاوٹ هے.

## آجکل کی جات پات

سن 1891 کی مردمشماری کے انوسار هندؤں کے اندر کل جاتیوں اور اُپ جاتیوں کی تعداد دو هزار تین سو اٹھتر تھی. اُس کے بعد بھی کچھ جاتیاں ٹوٹ کر اور ٹکڑے هوتی گئیں اور کچھ ایک دوسرے میں ملتی گئیں. سن 1931 کی مردم شماری میں سب جاتیوں اور اُپ جاتیوں کی ٹھیک ٹھیک گنتی دینے کی کوشش هی نہیں کی گئی. راج کاجی چناؤں تک پر اِس کا گہرا اور بہت برا اثر پڑا هے. دیش میں سچی ایکتا پیدا نہیں هو پاتی. ایمانداری اور قابلیت کو اوپر آنے کا موقع نہیں ملتا. بے ایمانی اور گندی گٹ بندی بڑھتی جا رهی هے. دیش سیوکوں کا دھیان اِس برائی کی طرف جانے لگا هے، پر ابھی بہت کم. لیکھک نے سن 1936 میں جب وہ هندستان کی مرکزی قانون سبھا کا ممبر تھا ایک قانون الگ الگ جاتیوں میں وواہ شادی جائز قرار دیئے جانے کا پیش کیا تھا. اُس سمے وہ پاس نه هو سکا. پر اُس کے بعد اس طرح کے قانون پاس هو چکے هیں اور کچھ راستے کھلتے جا رهے هیں. ظاهر هے که اِس جات پات کے بنا مٹے دیش ایکتا اور اُنتی کی راہ پر آگے نہیں بڑھ سکتا.

سائنس اور سمجھ دونوں کی یه مانگ هے که هم هر کوئی چیز هر کسی کے هاتھ سے نه کھاویں اور نه هر کسی کے ساتھ بیاہ شادی کریں. اِس سمبندھ میں سمجھداری اور وویک سے کام لینا ضروری هے. همیں سماج کو تندرست

## खुदग़रज़ी और बिगाड़

इन्सानी समाज की चार तरह की शक्तियों की चरचा हम ऊपर कर चुके हैं—विद्या शक्ति, राज शक्ति, धन शक्ति और श्रम यानी मेहनत मजदूरी की शक्ति. इन्सानी समाज की अधिकतर मुसीबतें इसीलिये पैदा होती हैं कि हम इन चार तरह की शक्तियों में समतोल यानी तवाजुन क़ायम नहीं रख सकते. विद्या यानी इल्म की शक्ति ही अक्सर धर्म मजहब की शक्ति होती है. पर जब विद्वान लोग जो सब को राह दिखाने वाले होते हैं स्वार्थ में पड़ कर धन बटोरने या खुद राज सत्ता हथियाने की सोचने लगते हैं या अत्याचारी राजाओं के हाथ के साधन बन जाते हैं या उन के लिये साधन तैयार करने लगते हैं, तो यह शक्ति समाज के लिये बरकत होने की जगह लानत बन जाती है. आज साइन्स और साइन्सदानों की भी यही दुर्गत हो रही है. ग़लत इस्तेमाल से और समतोल न रहने से यही हाल दूसरी शक्तियों का होता है.

अधिकतर देशों में सदियों से दो तरह के लोगों में खींचातानी और लड़ाई होती रही है—एक राजा दुनियावी हाकिम और दूसरे धार्मिक गुरु या पंडे पुरोहित. योरप के बीच के जमाने भर में राज शक्ति और धार्मिक शक्ति के बीच की यह खींचा तानी जारी रही. यह योरप के ब्राह्मनों और क्षत्रियों की लड़ाई थी. लेकिन आज दुनिया में पैसे की शक्ति ने विद्या या धर्म और राज या हथियार दोनों को क़ाबू में कर लिया है. आज दुनिया के ब्राह्मन और क्षत्री दोनों वैश्य के चंगुल में हैं. साइन्स और राजनीति दोनों अर्थ नीति की ग़ुलाम हैं. और अब ऐसा मालूम होता है कि मजदूरी की ताक़त पैसे की ताक़त को भी अपने क़ाबू में करती जा रही है. आगे की दुनिया में सब से बड़ी शक्ति जो साइन्स, बहादुरी, राजकाज और पैसा सब पर हावी होगी वह मेहनत मजदूरी की शक्ति है.

इससे साफ़ मालूम होता है कि इन चार तरह की शक्तियों में हम ठीक ठीक बैठ बिठाव नहीं कर पाए, हर एक को अपनी अपनी जगह नहीं दे सके, यानी उनमें समतोल या तवाजुन क़ायम नहीं रख सके. हमारे देश में भी सैकड़ों बरस से स्वार्थी विद्वानों और आचार्यों ने आदमी से उसकी निजी आजादी छीन कर एक काम से दूसरे काम या एक पेशे से दूसरे पेशे में जाने के दरवाजे बिलकुल बन्द कर दिये. नतीजा यह हुआ कि यह चारों जमाअतें इस तरह मौरूसी यानी जन्म की जातें हो गईं जिस तरह दुनिया में और कहीं नहीं हैं.

एक और बुरी बात हुई. क़ुदरती तौर पर बावजूद रोक थाम के समय समय पर एक वर्न से दूसरे में विवाह भी जब तब होते रहे. उधर मौरूसीपन का उसूल आ ही चुका था. नतीजा यह



## خود غرضی اور بگاڑ

انسانی سماج کی چار طرح کی شکتیوں کی چرچا ہم اوپر کر چکے ہیں—ودیا شکتی، راج شکتی، دھن شکتی اور شرم یعنی محنت مزدوری کی شکتی ۔ انسانی سماج کی ادھک تر مصیبتیں اسی لئے پیدا ہوتی ہیں کہ ہم ان چار طرح کی شکتیوں میں سمتول یعنی توازن قائم نہیں رکھ سکتے ۔ ودیا یعنی علم کی شکتی ہی اکثر دھرم مذہب کی شکتی ہوتی ہے ۔ پر جب ودوان لوگ جو سب کو راہ دکھانے والے ہوتے ہیں سوارتھ میں پڑ کر دھن بٹورنے یا خود راج ستا ہتھیانے کی سوچنے لگتے ہیں یا اتیاچاری راجاؤں کے ہاتھ کے سادھن بن جاتے ہیں یا اُن کے لئے سادھن تیار کرنے لگتے ہیں، تو یہ شکتی سماج کے لئے برکت ہونے کی جگہ لعنت بن جاتی ہے ۔ آج سائنس اور سائنس دانوں کی بھی درگت ہو رہی ہے ۔ غلط استعمال سے اور سمتول نہ رہنے سے یہی حال دوسری شکتیوں کا ہوتا ہے ۔

ادھک تر دیشوں میں صدیوں سے دو طرح کے لوگوں میں کھینچا تانی اور لڑائی ہوتی رہی ہے—ایک راجا یا دنیاوی حاکم اور دوسرے دھارمک گورو یا پنڈے پروہت ۔ یورپ کے بیچ کے زمانے بھر میں راج شکتی اور دھارمک شکتی کے بیچ کی یہ کھینچا تانی جاری رہی ۔ یہ یورپ کے براہمنوں اور چھتریوں کی لڑائی تھی ۔ لیکن آج دنیا میں پیسے کی شکتی نے ودیا یا دھرم اور راج یا ہتھیار دونوں کو قابو میں کر لیا ہے ۔ آج دنیا کے براہمن اور چھتری دونوں ویش کے چنگل میں ہیں ۔ سائنس اور راج نیتی دونوں ارتھ نیتی کی غلام ہیں ۔ اور اب ایسا معلوم ہوتا ہے کہ مزدوری کی طاقت پیسے کی طاقت کو بھی اپنے قابو میں کرتی جا رہی ہے ۔ آگے کی دنیا میں سب سے بڑی شکتی جو سائنس، بہادری، راج کاج اور پیسہ سب پر بھاری ہوگی وہ محنت مزدوری کی شکتی ہے ۔

اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ ان چار طرح کی شکتیوں میں ہم ٹھیک ٹھیک بیٹھ بٹھاؤ نہیں کر پائے، ہر ایک کو اپنی اپنی جگہ نہیں دے سکے، یعنی اُن میں سمتول یا توازن قائم نہیں رکھ سکے ۔ ہمارے دیش میں بھی سیکڑوں برس سے سوارتھی ودوانوں اور آچاریوں نے آدمی سے اُس کی نجی آزادی چھین کر ایک کام سے دوسرے کام یا ایک پیشے سے دوسرے پیشے میں جانے کے دروازے بالکل بند کر دئیے ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ یہ چاروں جماعتیں اس طرح موروثی یعنی جنم کی جاتیں ہوگئیں جس طرح دنیا میں اور کہیں نہیں ہیں۔

ایک اور بری بات ہوئی ۔ قدرتی طور پر باوجود روک تھام کے سمے سمے پر ایک ورن سے دوسرے میں وواہ بھی جب تب ہوتے رہے ۔ اُدھر موروثی پن کا اصول آ ہی چکا تھا ۔ نتیجہ یہ

अच्छी निगाह से नहीं देखते. यह भी एक ख़ास बात और बड़ी अच्छी बात है कि चीन में यह अलग अलग जमाअतें कभी भी जन्म से यानी पैतृक नहीं समझी गईं. इसी वजह से भारत की सी जात पात का बुरा रिवाज चीन में कभी नहीं रहा.

## वेदों में जाति भेद का शुरू का रूप

अब हम यह देखें कि हिन्दू धर्म में जातों की तक़सीम का रूप शुरू में यानी वेदों के ज़माने में क्या था.

ऋग् वेद में लिखा है :—

"यह जो विश्व रूप महान पुरुश यानी सारा इन्सानी समाज है इसका सिर और मुंह क्या है, इसकी भुजाएं क्या हैं, इसका धड़ और इसकी जांघें क्या हैं और इसके पैर क्या हैं? जिस आदमी के अन्दर ब्राह्मन ज्ञान यानी इल्म और हिकमत है वह इसका सिर और मुंह है और ब्राह्मन कहलाता है. जो अपनी बहादुरी से दूसरों की रक्षा करने के कारन चमकता है वह इसकी भुजाएं हैं और राजा या क्षत्री कहलाता है. जो धरती के ऊपर जमकर उससे नाज और धन दौलत पैदा करता है वह इसका धड़ और जांघें है और वैश्य कहलाता है. जो और सबकी सेवा में लगा रहता और दौड़ता फिरता है वह इसकी टांगें हैं और शूद्र कहलाता है. यह पूरा मनुश्य समाज इन्हीं चार से बना हुआ है. यही था, यही है और यही होगा. इस समाज की व्यापक आत्मा सारी दुनिया को घेरे हुए और अपने अन्दर लिये हुए है और फिर भी सबसे बाहर है."

यजुर्वेद में लिखा है :—

"ऐ परमेश्वर, सबके मालिक! हम सबके दिलों में यानी हमारे ब्राह्मनों, हमारे क्षत्रियों, हमारे वैश्यों और हमारे शूद्रों के दिलों में एक दूसरे के लिये प्रेम पैदा कर ताकि हम एक दूसरे को सुख पहुंचा सकें. हम एक दूसरे से सदा मीठी बातें करें, सबके साथ नम्रता का बरताव करें, सब एक दूसरे का भला करें और एक दूसरे की सेवा करें."

अथर्व वेद में लिखा है :—

"ऐ ईश्वर! जो इस सारे विश्व के सब हिस्सों को चला रहा है और सब के अन्दर की जान है! हम सब को एक दूसरे के साथ प्रेम के मज़बूत धागों में बांध दे. हमारे ब्राह्मनों, क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों को और उन सब को जो हमारे मित्र हैं प्रेम के मज़बूत धागों में बांध दे. और जो हमारे शत्रु हैं उन्हें भी हमारा मित्र बना दे."

अब देखना यह है कि शुरू के चार तरह के लोगों की यह क़ुदरती तक़सीम जो समाज के काम की आसानी के लिये थी बिगड़ कर और गिर कर सैकड़ों जन्म की जातों में कैसे बदल गई.



اچھی نگاہ سے نہیں دیکھتے . یہ بھی ایک خاص بات اور بڑی اچھی بات ھے کہ چین میں یہ لگ بھگ جماعتیں کبھی بھی جنم سے یعنی پیترک نہیں سمجھی گئیں . اِسی وجہ سے بھارت کی سی جات پات کا برا رواج چین میں کبھی نہیں رہا .

## ویدوں میں جاتی بھید کا شروع کا روپ

اب ہم یہ دیکھیں کہ ہندو دھرم میں جاتوں کی تقسیم کا روپ شروع میں یعنی ویدوں کے زمانے میں کیا تھا .

رگ وید میں لکھا ھے :—

"یہ جو وشو روپ مہان پرش یعنی سارا اِنسانی سماج ھے اِس کا سر اور منھ کیا ھے، اِس کی بھجائیں کیا ھیں، اِس کا دھڑ اور اِس کی جانگھیں کیا ھیں اور اِس کے پیر کیا ھیں ؟ جس آدمی کے اندر برہم گیان یعنی علم اور حکمت ھے وہ اِس کا سر اور منھ ھے اور براھمن کہلاتا ھے . جو اپنی بہادری سے دوسروں کی رکشا کرنے کے کارن چمکتا ھے وہ اِس کی بھجائیں ھے اور راجا یا چھتری کہلاتا ھے . جو دھرتی کے اُوپر جمکر اُس سے ناج اور دھن دولت پیدا کرتا ھے وہ اِس کا دھڑ اور جانگھیں ھے اور ویش کہلاتا ھے . جو اور سب کی سیوا میں لگا رھتا اور دوڑتا پھرتا ھے وہ اِس کی ٹانگیں ھے اور شودر کہلاتا ھے . یہ پورا منشیہ سماج اِنھیں چار سے بنا ہوا ھے . یہی تھا یہی ھے اور یہی ہوگا . اِس سماج کی واپک آتما ساری دنیا کو گھیرے ھوئے اور اپنے اندر لئے ھوئے ھے اور پھر بھی سب سے باھر ھے ."

یجر وید میں لکھا ھے :—

"اے پرمیشور، سب کے مالک ! ہم سب کے دلوں میں یعنی ھمارے براھمنوں، ھمارے چھتریوں، ھمارے ویشیوں اور شودروں کے دلوں میں ایک دوسرے کے لئے پریم پیدا کر تاکہ ہم ایک دوسرے کو سکھ پہونچا سکیں . ہم ایک دوسرے سے سدا میٹھی باتیں کریں، سب کے ساتھ نمرتا کا برتاؤ کریں، سب ایک دوسرے کا بھلا کریں اور ایک دوسرے کی سیوا کریں ."

اَتھرو وید میں لکھا ھے :—

"اے ایشور ! جو اِس سارے وشو کے سب حصوں کو چلا رہا ھے اَور سب کے اندر کی جان ھے ! ہم سب کو ایک دوسرے کے ساتھ پریم کے مضبوط دھاگوں میں باندھ دے . ہمارے براھمنوں، چھتریوں، ویشیوں اور شودروں کو اور اُن سب کو جو ہمارے متر ھیں پریم کے مضبوط دھاگوں میں باندھ دے . اور جو ھمارے شترو ھیں اُنھیں بھی ہمارا متر بنا دے ."

اب دیکھنا یہ ھے کہ شروع کے چار طرح کے لوگوں کی یہ قدرتی تقسیم جو سماج کے کام کی آسانی کے لئے تھی بگڑ کر اور گر کر سیکڑوں جنم کی جاتوں میں کیسے بدل گئی .

वेदों में जिन्हें ब्राह्मन, क्षत्री और वैश्य कहा गया है अरबी में उन्हीं को 'उलुलइल्म,' 'उलुलअम्र' और 'ज़र्राअ' कहा गया है. यह तीनों नाम क़ुरान में भी आये हैं. चौथी तरह के लोगों को अरबी और फ़ारसी में 'मज़दूर' कहा जाता है. इन्हीं चारों को आलिम, आमिल (या आमिर या अमीर)' ताजिर और मज़दूर भी कहा जाता है. पारसी धर्म में इन चारों को 'ऐर्यम्ना', 'वीरेजिन,' 'ख़ायतुश,' और 'गोवास्त्रा' कहते हैं. इन चारों पारसी शब्दों के संस्कृत रूप हैं अर्यमा, वीर्यवान, क्षतीश और गोवासी.

पारसी धर्म की किताबों में इन चारों के और और नाम भी आते हैं. पारसी धर्म ग्रन्थ 'गाथा' में इन चारों की चरचा करते हुए लिखा है :—

"वैश्य, ब्राह्मन और क्षत्री तीनों दुनिया के सुख भोगों में पड़ जाते हैं. ईश्वर करे हमारे वैश्य कभी सुस्त या काहिल न हों, हमारे क्षत्री कभी अधिक ख़ूंख़ार या तुन्द न हों, हमारे ब्राह्मन कभी अनपढ़ और जाहिल न हों, हमारे शूद्र जो सबकी सेवा करते हैं कभी हिम्मत न हारें. बुरे वक़्तों में जब दुशमन हमला करता है तो हमारे ब्राह्मन या हमारे वैश्य क्या कर सकते हैं ? उस समय हमारे क्षत्री ही भगवान की मदद से हमारी रक्षा कर सकते हैं."

इंगलैन्ड में अभी थोड़े दिन पहले तक वहां के लोग अपने देश के लोगों की तीन जमाअतें गिनाया करते थे—एक क्लरजी यानी पादरी, दूसरे नोबिलिटी यानी लार्ड ख़ान्दान के लोग, तीसरे कामन्स यानी आम लोग. अब इनमें एक चौथी जमाअत और जुड़ गई है, वह है प्रोलिटेरियट यानी मज़दूरों और दस्तकारों की जमाअत.

योरप के दूसरे मुल्कों में भी आबादी के लगभग इसी तरह के बंटवारे हैं.

जापान में कुछ दिनों पहले तक चार जमाअतें गिनी जाती थीं—एक 'क्यूगे' यानी सम्राट के ख़ान्दान के लोग और दरबारी अमीर उमरा, दूसरे 'बूशी' और 'सामुराई' यानी क्षत्री और सिपहगिरी पेशे के लोग, तीसरे 'हीमिन' यानी आम लोग और चौथे 'ईता' और 'हीनिन' यानी वह लोग जो बिलकुल भारत के अछूतों जैसे समझे जाते थे.

चीन में भी कुछ दिनों पहले तक चार जमाअतें गिनी जाती थीं. वहां सबसे ऊपर विद्वान लोग थे जिनमें दरबारी अफ़सर भी शामिल थे, दूसरे दरजे पर किसान, तीसरे दरजे पर दस्तकार और चौथे दरजे पर सौदागर व्यापारी. यह एक अजीब बात है कि पुराने चीन में सिपाहियों की कोई ख़ास जगह नहीं थी. चीन में सिपाहियों को हमेशा एक हलकी और 'अन्त्यज' जमाअत की तरह समझा गया है. चीन जापान की लड़ाई, ने जो बहुत दिनों जारी रही, वहां सिपाही की क़दर को बढ़ा दिया. फिर भी शायद यही वजह है कि चीनी लोग स्वभाव से अमन पसन्द हैं और लड़ाई को



ویدوں میں جنھیں براھمن' چھتری' اور ویش کہا گیا ھے عربی میں اُنھیں کو 'اُولواالعلم' 'اولواالامر' اور زراع' کہا گیا ھے . یہ تینوں نام قرآن میں بھی آئے ھیں . چوتھی طرح کے لوگوں کو عربی ا ر فارسی میں 'مزدور' کہا جاتا ھے . اِنھیں چاروں کو عالم' عامل ( یا آمر یا امیر )' تاجر اور مزدور بھی کہا جاتا ھے . پارسی دھرم میں اِن چاروں کو 'آیریمنا' 'ویریجن' 'خائیتش' اور 'گوواسترا' کہتے ھیں . اِن چاروں پارسی شبدوں کے سنسکرت روپ ھیں آریما' ویریوان' چھتیش اور گوواسی .

پارسی دھرم کی کتابوں میں اِن چاروں کے اور اور نام بھی آتے ھیں . پارسی دھرم گرنتھ 'گاتھا' میں اِن چاروں کی چرچا کرتے ھوئے لکھا ھے :—

"ویش' براھمن اور چھتری تینوں دنیا کے سکھ بھوگوں میں پڑ جاتے ھیں . اِیشور کرے ھمارے ویش کبھی سست یا کاھل نہ ھوں' ھمارے چھتری کبھی آدھک خونخوار یا تند نہ ھوں' ھمارے براھمن کبھی اَنپڑھ اور جاھل نہ ھوں' ھمارے شودر جو سب کی سیوا کرتے ھیں کبھی ھمت نہ ھاریں . برے وقتوں میں جب دشمن حملہ کرتا ھے تو ھمارے براھمن یا ھمارے ویش کیا کرسکتے ھیں ؟ اُس سمے ھمارے چھتری ھی بھگوان کی مدد سے ھماری رکشا کرسکتے ھیں ."

اِنگلینڈ میں ابھی تھوڑے دن پہلے تک وھاں کے لوگ اپنے دیش کے لوگوں کی تین جماعتیں گنایا کرتے تھے—ایک کلرجی یعنی پادری' دوسرے نوبیلیٹی یعنی لارڈ خاندان کے لوگ' تیسرے کامنس یعنی عام لوگ . اب ان میں ایک چوتھی جماعت اور جڑ گئی ھے' وہ ھے پرولیٹیرئیٹ یعنی مزدوروں اور دستکاروں کی جماعت .

یورپ کے دوسرے ملکوں میں بھی آبادی کے لگ بھگ اسی طرح کے بٹوارے ھیں .

جاپان میں کچھ دنوں پہلے تک چار جماعتیں گنی جاتی تھیں—ایک 'کیوگے' یعنی سمراٹ کے خاندان کے لوگ اور درباری امیر امرا' دوسرے 'بوشی' اور 'ساموارئی' یعنی چھتری اور سپہ گیری پیشے کے لوگ' تیسرے 'ھی من' یعنی عام لوگ اور چوتھے 'اِیتا' اور 'ھی نن' یعنی وہ لوگ جو بالکل بھارت کے اچھوتوں جیسے سمجھے جاتے تھے .

چین میں بھی کچھ دنوں پہلے تک چار جماعتیں گنی جاتی تھیں . وھاں سب سے اُوپر ودوان لوگ تھے جن میں درباری افسر بھی شامل تھے' دوسرے درجے پر کسان' تیسرے درجہ پر دستکار اور چوتھے درجہ پر سوداگر ویاپاری . یہ ایک عجیب بات ھے کہ پرانے چین میں سپاھیوں کی کوئی خاص جگہ نہیں تھی . چین میں سپاھیوں کو ھمیشہ ایک ھلکی اور 'اِنتیج' جماعت کی طرح سمجھا گیا ھے . چین جاپان کی لڑائی نے' جو بہت دنوں جاری رھی' وھاں سپاھی کی قدر کو بڑھا دیا . پھر بھی شاید یہی وجہ ھے کہ چینی لوگ سوبھاؤ سے امن پسند ھیں اور لڑائی کو

कम हों, आस पास का पानी और हवा साफ़ रहे, बीमारियां कम हों, मैला और गन्दगी खाद के काम आवे और इसी तरह के सब के भलाई के काम, यही इस जमाने में देवताओं का क़र्ज़ा अदा करने के काम हैं. दूसरा क़र्ज़ा अदा करने का तरीक़ा है अच्छे बच्चे पैदा करना और उन्हें पालना और अच्छी तालीम देना. तीसरा क़र्ज़ा अदा करने के लिये हमें इल्म यानी विद्या का दूसरों को दान देना चाहिये और आलिमों को इस बात में मदद देनी चाहिये कि वह दूसरों को इल्म सिखा सकें. हमारा यह भी फ़र्ज़ है कि दुनिया के इस वक़्त तक के इल्म और ज्ञान को बढ़ाने में मदद दें. चौथा क़र्ज़ा अदा करने के लिये ख़ास उम्र आने के बाद हमें मामूली दुनियादारी और कुनबा परवरी से अलग होकर आत्मा में ध्यान लगाना चाहिये, सब की आत्मा को अपनी आत्मा समझना चाहिये और पूरे दिल से लगातार सब का भला चेतना और चाहना चाहिये.

ऊपर जो कई तरह की चौकड़ियां गिनाई गई हैं उनमें से हर चार एक दूसरे से जुड़ी हुई और एक दूसरे पर निर्भर हैं. उनमें एक दूसरे के साथ वैसा ही सम्बन्ध है जैसा हमारे बदन के अन्दर सिर, हाथ, धड़ और टांगों में. चारों को मिला कर एक पूरा आदमी बनता है. ऐसे ही पूरा समाज इन सब को मिला कर बनता है. इसी तरह इन चारों में से हर एक की बहुत सी शाख़ें हैं और बहुत बार तो किसी पेशे या काम की बाबत यह तय करना भी मुशकिल हो जाता है कि उसे चारों में से किस के अन्दर गिना जावे. हम इस तरह के जितने बंटवारे करते हैं वह सब केवल इसलिये कर लेते हैं ताकि समाज का काम आसानी से चल सके.

थोड़े से शब्दों में वैदिक जाति भेद की यही असलियत है और यही उसकी बुनियाद है. वेदों में इसे वर्णाश्रम धर्म कहा गया है, यानी यह कि इन्सानी समाज में चार वर्न होते हैं यानी चार तरह के काम और चार तरह के काम करने वाले—ब्राह्मन, क्षत्री, वैश्य और शूद्र, और हर आदमी के जीवन के चार हिस्से होते हैं—ब्रह्मचारी यानी तालिब-इल्म, गृहस्थ यानी ख़ानेदार, वान प्रस्थ यानी बिना तनख़ाह का दुनिया का ख़ादिम, और सन्यासी या तारिकुद्दुनिया यानी सब को दुआए ख़ैर और नेक उपदेश देने वाला.

## दूसरे देशों में इस तरह की तक़सीम

दूसरे सब धर्मों और देशों में भी इससे मिलते जुलते विचार मौजूद हैं. सबने अपने यहां के इन्सानों की इसी तरह की तक़सीमें की हैं. फ़र्क़ यह है कि किसी ने एक तरह और किसी ने दूसरी तरह. किसी ने एक पेशे वाले को ज्यादा जरूरी और ऊंचा माना है और किसी ने दूसरे पेशे वाले को. किसी ने लोगों को एक जमाअत या एक पेशे से दूसरी जमाअत या दूसरे पेशे में जाने की खुली इजाजत दी है, किसी ने नहीं दी वग़ैरा.



کم ھوں' آس پاس کا پانی اور ہوا صاف رھے' بیماریاں کم ھوں' میلا اور گندگی کھاد کے کام آوے اور اِسی طرح کے سب کے بھلائی کے کام' یہی اِس زمانے میں دیوتاؤں کا قرضہ ادا کرنے کے کام ھیں. دوسرا قرضہ ادا کرنے کا طریقہ ھے اچھے بچے پیدا کرنا اور اُنھیں پالنا اور اچھی تعلیم دینا. تیسرا قرضہ ادا کرنے کے لئے ھمیں علم یعنی ودیا کا دوسروں کو دان دینا چاھئے اور عالموں کو اِس بات میں مدد دینی چاھئے کہ وہ دوسروں کو علم سکھاسکیں. ھمارا یہ بھی فرض ھے کہ دنیا کے اِس وقت تک کے علم اور گیان کو بڑھانے میں مدد دیں. چوتھا قرضہ ادا کرنے کے لئے خاص عمر آنے کے بعد ھمیں معمولی دنیاداری اور کنبہ پروری سے الگ ھو کر آتما میں دھیان لگانا چاھئے' سب کی آتما کو اپنی آتما سمجھنا چاھئے اور پورے دل سے لگاتار سب کا بھلا چیتنا اور چاھنا چاھئے.

اوپر جو کئی طرح کی چوکڑیاں گنائی گئی ھیں اُن میں سے ھر چار ایک دوسرے سے جڑی ھوئی اور ایک دوسرے پر نربھر ھیں. اُن میں ایک دوسرے کے ساتھ ویسا ھی سمبندھ ھے جیسا ھمارے بدن کے اندر سر' ھاتھ' دھڑ اور ٹانگوں میں. چاروں کو ملا کر ایک پورا آدمی بنتا ھے. ایسے ھی پورا سماج اِن سب کو ملا کر بنتا ھے. اِسی طرح اِن چاروں میں سے ھر ایک کی بہت سی شاخیں ھیں اور بہت بار تو کسی پیشے یا کام کی بابت یہ طے کرنا بھی مشکل ھو جاتا ھے کہ اُسے چاروں میں سے کس کے اندر گنا جاوے. ھم اِس طرح کے جتنے بٹوارے کرتے ھیں وہ سب کیول اِس لئے کر لیتے ھیں تاکہ سماج کا کام آسانی سے چل سکے.

تھوڑے سے شبدوں میں ویدک جاتی بھید کی یہی اصلیت ھے اور یہی اُس کی بنیاد ھے. ویدوں میں اِسے ورن آشرم دھرم کہا گیا ھے' یعنی یہ کہ اِنسانی سماج میں چار ورن ھوتے ھیں یعنی چار طرح کے کام اور چار طرح کے کام کرنے والے—براھمن' چھتری' ویش اور شودر' اور ھر آدمی کے جیون کے چار حصے ھوتے ھیں—برھمچاری یعنی طالب علم' گرہستھ یعنی خانہ دار' وان پرستھ یعنی بنا تنخواہ کا دنیا کا خادم' اور سنیاسی یا تارک الدنیا یعنی سب کو دعائے خیر اور نیک اُپدیش دینے والا.

## دوسرے دیشوں میں اِس طرح کی تقسیم

دوسرے سب دھرموں اور دیشوں میں بھی اس سے ملتے جلتے وچار موجود ھیں. سب نے اپنے اپنے یہاں کے اِنسانوں کی اِسی طرح کی تقسیمیں کی ھیں. فرق یہ ھے کہ کسی نے ایک طرح اور کسی نے دوسری طرح. کسی نے ایک پیشے والے کو زیادہ ضروری اور اونچا مانا ھے اور کسی نے دوسرے پیشے والے کو. کسی نے لوگوں کو ایک جماعت یا ایک پیشے سے دوسری جماعت یا دوسرے پیشے میں جانے کی کھلی اِجازت دیتی ھے' کسی نے نہیں دی وغیرہ.

चौथे सब की सेवा और मदद करना और उसके बदले में ठीक ठीक मजदूरी और मनोरंजन और तालीम के मौक़े पाना.

इन अलग अलग अधिकारों के अलावा कुछ अधिकार ऐसे भी हैं जो सबके एक बराबर अधिकार हैं. सब की जीवन की आवश्यकताएं पूरी होनी चाहियें और सब को अपनी अपनी योग्यता के अनुसार समाज की तरफ़ अपना फ़र्ज़ पूरा करने के लिये साधन मिलने चहियें. यह अधिकार हर आदमी के जन्म के अधिकार हैं.

( 9 ) बूढ़े लोगों के छोटी उम्र के लोगों की तरफ़ और राज की प्रजा की तरफ़ चार ख़ास फ़र्ज़ हैं—पहला फ़र्ज़ है सब को तालीम देना, दूसरा सब की हिफ़ाज़त यानी रक्षा करना, तीसरा सब का पेट पालना और सब को खाना, कपड़ा और घर देना और चौथा सब तरह से सब की मदद करना. थोड़े से शब्दों में तालीम, हिफ़ाज़त, खाना और सेवा इन चारों का सब को हक़ है.

( 10 ) चार ही तरह के संगठन हर देश या राज के अन्दर ज़रूरी हैं जिन से मिल कर एक अच्छा राज बनता है. यह चारों एक दूसरे पर भी निर्भर हैं—पहला तालीम का संगठन, दूसरा राजकाजी और फ़ौजी संगठन, तीसरा आर्थिक संगठन और चौथा उद्योग धन्दों का संगठन.

( 11 ) हर आदमी चार तरह का क़र्ज़ा अपने ऊपर लेकर पैदा होता है. इन में सब से पहला क़र्ज़ा हम पर देवताओं यानी क़ुदरत की शक्तियों का है. क़ुदरत की यह शक्तियां ही हमारे सामने उस दुनिया को पेश करती हैं जिन पर हमारी सारी ज़िन्दगी और हमारा सारा तजुर्बा निर्भर है. दूसरा क़र्ज़ा हमारे उन पुरखों का क़र्ज़ा है जिन्होंने हमें पैदा किया और यह जिस्म दिया. तीसरा क़र्ज़ा पिछले ज़माने के उन सब सन्तों, महात्माओं और विद्वानों का क़र्ज़ा है जिन्होंने हमारे लिये ज्ञान का वह भन्डार छोड़ा जो हमें दूसरे जानदारों से अलग करता है और हमारे जीवन को रौनक़ देता है. चौथा क़र्ज़ा उस परमात्मा परमेश्वर का क़र्ज़ा है जिससे हमें जीवन की वह चिनगारी मिली जिसे हम रूह या आत्मा कहते हैं.

( 12 ) इन चारों क़र्ज़ों को अदा करने के चार तरीक़े हैं—पहला क़र्ज़ा अदा होता है सब के भले के इस तरह के काम करने से जैसे दरख़्त लगाना, ज़मीनों में फिर से जंगल लगाना, कुएं, तालाब या नहरें खुदवाना, काम के जानवरों और सुन्दर पशु पक्षियों की रक्षा करना और उन्हें बढ़ाना, हवा को साफ़ रखना, ख़ुशबूदार चीज़ें जलाना, पाक और अच्छी अच्छी किताबें पढ़ना. इन सब बातों से क़ुदरत का वह सब भन्डार फिर से भरता है जिसे हम काम में लाते हैं. हमारी दिमाग़ी ताक़तें इससे बढ़ती हैं. हमारी तबियत फिर से ताज़ा होती है. आजकल के हालात में ऐसी तरकीबें करना जिनसे धुएं की मुसीबत कम हो, शहरों के शोर व शर



چوتھے سب کی سیوا اور مدد کرنا اور اُس کے بدلے میں ٹھیک ٹھیک مزدوری اور منورنجن اور تعلیم کے موقعے پانا ۔

اِن الگ الگ ادھکاروں کے علاوہ کچھ ادھکار ایسے بھی ھیں جو سب کے ایک برابر ادھکار ھیں ۔ سب کی جیون کی آوشیکتائیں پوری ھونی چاھئیں اور سب کو اپنی اپنی یوگتا کے انوسار سماج کی طرف اپنا فرض پورا کرنے کے لئے سادھن ملنے چاھئیں ۔ یہ ادھکار ھر آدمی کے جنم کے ادھکار ھیں ۔

(9) بوڑھے لوگوں کے چھوٹی عمر کے لوگوں کی طرف اور راج کی پرجا کی طرف چار خاص فرض ھیں—پہلا فرض ھے سب کو تعلیم دینا، دوسرا سب کی حفاظت یعنی رکشا کرنا، تیسرا سب کا پیٹ پالنا اور سب کو کھانا، کپڑا اور گھر دینا اور چوتھا سب طرح سے سب کی مدد کرنا ۔ تھوڑے سے شبدوں میں تعلیم، حفاظت، کھانا اور سیوا اِن چاروں کا سب کو حق ھے ۔

(10) چار ھی طرح کے سنگٹھن ھر دیش یا راج کے اندر ضروری ھیں جن سے مل کر ایک اچھا راج بنتا ھے ۔ یہ چاروں ایک دوسرے پر بھی نربھر ھیں—پہلا تعلیم کا سنگٹھن، دوسرا راج کاجی اور فوجی سنگٹھن، تیسرا آرتھک سنگٹھن اور چوتھا اُدیوگ دھندوں کا سنگٹھن ۔

(11) ھر آدمی چار طرح کا قرضہ اپنے اوپر لے کر پیدا ھوتا ھے ۔ اِن میں سب سے پہلا قرضہ ھم پر دیوتاؤں یعنی قدرت کی شکتیوں کا ھے ۔ قدرت کی یہ شکتیاں ھی ھمارے سامنے اُس دنیا کو پیش کرتی ھیں جن پر ھماری ساری زندگی اور ھمارا سارا تجربہ نربھر ھے ۔ دوسرا قرضہ ھمارے اُن پرکھوں کا قرضہ ھے جنھوں نے ھمیں پیدا کیا اور یہ جسم دیا ۔ تیسرا قرضہ پچھلے زمانے کے ان سب سنتوں، مہاتماؤں اور ودوانوں کا قرضہ ھے جنھوں نے ھمارے لئے گیان کا وہ بھنڈار چھوڑا جو ھمیں دوسرے جانداروں سے الگ کرتا ھے اور ھمارے جیون کو رونق دیتا ھے ۔ چوتھا قرضہ اُس پرماتما پرمیشور کا قرضہ ھے جس سے ھمیں جیون کی وہ چنگاری ملی جسے ھم روح یا آتما کہتے ھیں ۔

(12) اِن چاروں قرضوں کو ادا کرنے کے چار طریقے ھیں—پہلا قرضہ ادا ھوتا ھے سب کے بھلے کے اِس طرح کے کام کرنے سے جیسے درخت لگانا، زمینوں میں پھر سے جنگل لگانا، کنویں، تالاب یا نہریں کھدوانا، کام کے جانوروں اور سندر پشو پکشیوں کی رکشا کرنا اور اُنھیں بڑھانا، ھوا کو صاف رکھنا، خوشبودار چیزیں جلانا، پاک اور اچھی اچھی کتابیں پڑھنا ۔ اِن سب باتوں سے قدرت کا وہ سب بھنڈار پھر سے بھرتا ھے جسے ھم کام میں لاتے ھیں ۔ ھماری دماغی طاقتیں اِس سے بڑھتی ھیں ۔ ھماری طبیعت پھر سے تازہ ھوتی ھے ۔ آج کل کے حالات میں ایسی ترکیبیں کرنا جن سے دھوئیں کی مصیبت کم ھو، شہروں کے شور و شر

(5) हर आदमी में चार तरह की ही भूक होती है—एक मामूली खाने पीने की भूक, दूसरी धन दौलत जमा करने की भूक, तीसरी जिन्सी भूक (काम वासना) और चौथी खेल तमाशे और मनोरंजन की भूक.

इन्हीं चारों के मातहत अलग अलग चार तरह की ख़ूराक भी होती है—एक उन लोगों के लिये जो रूहानी, दिमाग़ी या इल्मी काम में या साइन्स की खोजों में लगे हुए हैं, बिना गोश्त की, हलकी, जल्दी हज़म होने वाली, अधिकतर फलों और दूध वाली ख़ूराक जो उनके मन को अधिक चन्चल न होने दे, दूसरी ताक़त और जोश दिलाने वाली ख़ूराक उन लोगों के लिये जिन्हें हकूमत करनी हो, इन्तज़ाम करना हो, जल्दी फ़ैसले और जल्दी अमल करना हो, यहां तक कि सिपाहियों के लिये एक हद के अन्दर गोश्त भी हो सकता है, तीसरे व्यपारियों के लिये पेट में देर तक ठहरने वाले नाज और दूध की चीज़ें और चौथे मज़दूरों के लिये भारी खाने जिनमें काफ़ी नाइट्रोजन हो ताकि आदमी देर तक मेहनत कर सके.

इन चारों के लिये चार तरह के अलग अलग सामान की भी ज़रूरत पड़ती है—जैसे पहली तरह के लोगों के लिये किताबें और साइन्सी खोज का सामान, दूसरी तरह के लोगों लिये हथियार और उसी तरह का सामान, तीसरी तरह के लोगों के लिये मशीनें, कारख़ाने और पैदावार और तिजारत के साधन और चौथी तरह के लोगों के लिये मेहनत मज़दूरी के औज़ार.

यूं तो हर आदमी में यह चारों तरह की भूक होती है लेकिन किसी में एक चीज़ का ज़ोर होता है, किसी में दूसरी चीज़ का. इसीलिये एक प्रोफ़ेसर बन जाता है, दूसरा फ़ौजी कप्तान, तीसरा साहूकार और चौथा चरवाहा या मिल मज़दूर.

(6) लोगों में चार तरह की ही इच्छाएं होती हैं—एक दूसरों से आदर मान की इच्छा, हकूमत की शक्ति या अधिकार की इच्छा, तीसरे धन दौलत की इच्छा और चौथे केवल अपने शरीर के लिये सुख की इच्छा.

(7) हर देश में चार तरह की शक्तियां होती हैं—एक साइन्स की शक्ति, दूसरे फ़ौज की शक्ति, तीसरे धन की शक्ति और चौथे मेहनत मज़दूरी की शक्ति.

8) चार तरह के ही कर्तव्य यानी फ़र्ज़ और उनके मुक़ाबले के चार तरह के अधिकार यानी हक़ होते हैं—पहला फ़र्ज़ विद्या हासिल करना और विद्या फैलाना और उसके मुक़ाबले का अधिकार, इज़्ज़त और मान पाना, दूसरा फ़र्ज़ सब की हिफ़ाज़त करना, देश में अमन शान्ति क़ायम रखना और उसके मुक़ाबले का हक़ हकूमत का अधिकार पाना, तीसरे सब तरह के माल की पैदावार और उसके बंटवारे का प्रबन्ध करना और उसके मुक़ाबले में देश के क़ानूनों के अन्दर रहते हुए माल की क़ीमत लेना और मुनासिब नफ़ा कमाना,



(5) ھر آدمی میں چار طرح کی ھی بھوک ھوتی ھے—ایک معمولی کھانے پینے کی بھوک، دوسری دھن دولت جمع کرنے کی بھوک، تیسری جنسی بھوک (کام‌واسنا) اور چوتھی کھیل تماشے اور منورنجن کی بھوک۔

اِنھیں چاروں کے ماتحت الگ الگ چار طرح کی خوراک بھی ھوتی ھے—ایک اُن لوگوں کے لئے جو روحانی، دماغی یا علمی کام میں یا سائنس کی کھوجوں میں لگے ھوئے ھیں، بنا گوشت کی، ھلکی، جلدی ھضم ھونے والی، ادھکتر پھلوں اور دودھ والی خوراک جو اُن کے من کو ادھک چنچل نہ ھونے دے، دوسری طاقت اور جوش دلانے والی خوراک اُن لوگوں کے لئے جنھیں حکومت کرنی ھو، انتظام کرنا ھو، جلدی فیصلے اور جلدی عمل کرنا ھو، یہاں تک کہ سپاھیوں کے لئے ایک حد کے اندر گوشت بھی ھو سکتا ھے، تیسرے ویاپاریوں کے لئے پیٹ میں دیر تک ٹھہرنے والے ناج اور دودھ کی چیزیں اور چوتھے مزدوروں کے لئے بھاری کھانے جن میں کافی نائٹروجن ھو تاکہ آدمی دیر تک محنت کر سکے۔

اِن چاروں کے لئے چار طرح کے الگ الگ سامان کی بھی ضرورت پڑتی ھے—جیسے پہلی طرح کے لوگوں کے لئے کتابیں اور سائنسی کھوج کا سامان، دوسری طرح کے لوگوں کے لئے ھتھیار اور اُسی طرح کا سامان، تیسری طرح کے لوگوں کے لئے مشینیں، کارخانے اور پیداوار اور تجارت کے سادھن اور چوتھی طرح کے لوگوں کے لئے محنت مزدوری کے اوزار۔

یوں تو ھر آدمی میں یہ چاروں طرح کی بھوک ھوتی ھے لیکن کسی میں ایک چیز کا زور ھوتا ھے، کسی میں دوسری چیز کا۔ اِسی لئے ایک پروفیسر بن جاتا ھے، دوسرا فوجی کپتان، تیسرا ساھوکار اور چوتھا چرواھا یا مل مزدور۔

(6) لوگوں میں چار طرح کی ھی اچھائیں ھوتی ھیں—ایک دوسروں سے ادر مان کی اِچھا، حکومت کی شکتی یا ادھکار کی اِچھا، تیسرے دھن دولت کی اِچھا اور چوتھے کیول اپنے شریر کے لئے سکھ کی اِچھا۔

(7) ھر دیش میں چار طرح کی شکتیاں ھوتی ھیں—ایک سائنس کی شکتی، دوسرے فوج کی شکتی، تیسرے دھن کی شکتی اور چوتھے محنت مزدوری کی شکتی۔

(8) چار طرح کے ھی کرتویہ یعنی فرض اور اُن کے مقابلے کے چار طرح کے ادھکار یعنی حق ھوتے ھیں—پہلا فرض ودیا حاصل کرنا اور ودیا پھیلانا اور اُس کے مقابلے کا ادھکار، عزت اور مان پانا، دوسرا فرض سب کی حفاظت کرنا، دیش میں امن شانتی قائم رکھنا اور اُس کے مقابلے کا حق حکومت کا ادھکار پانا، تیسرے سب طرح کے مال کی پیداوار اور اُس کے بٹوارے کا پربندھ کرنا اور اُس کے مقابلے میں دیش کے قانونوں کے اندر رھتے ھوئے مال کی قیمت لینا اور مناسب نفع کمانا،

अपनी अपनी तरक़्क़ी का मौक़ा मिल सके, सब समाज की सेवा कर सकें, सब के अन्दर स्वार्थ और परमार्थ दोनों पूरे हो सकें, सब अति से बच कर बीच की सलामती की राह चल सकें, सब अपने अपने कर्तव्यों और अधिकारों को समझ सकें, और जहां तक हो सकता है सबका सब तरह भला हो. लेखक ने अपनी कुछ अंग्रेज़ी किताबों में जैसे—( 1 ) एनशियन्ट वरसेज़ मार्डन सांइन्टिफ़िक सोशलइज़्म, ( 2 ) दी साइन्स आफ़ दी सेल्फ़, ( 3 ) दी साइन्स आफ़ सोशल आरगेनीज़ेशन में समाज संगठन के इस ढंग को तफ़सील से बयान किया है. उसके मोटे मोटे बुनियादी उसूल नीचे दिये जाते हैं :—

## चार तरह के आदमी और चार चार की चौकड़ियां

( 1 ) दुनिया में अपने अपने स्वभाव, तबियत और क़ाबलियत के अनुसार चार तरह के आदमी होते हैं. वह अलग अलग चार तरह के ही कामों के क़ाबिल होते हैं. इनमें पहले वह लोग हैं जिनमें विद्या और ज्ञान की अधिक चाह होती है. दूसरे वह लोग हैं जिन्हें हकूमत या इन्तज़ाम करने का ज्यादा शौक़ होता है. तीसरे वह जो कमाना और जमा करना ज्यादा चाहते हैं. चौथे वह भोले और सीधे लोग जो आम मेहनत मज़दूरी के क़ाबिल होते हैं और उसी में आनन्द ले सकते हैं.

( 2 ) चार तरह के ही पेशे और काम होते हैं—एक विद्या और इल्म से सम्बन्ध रखने वाले पेशे, दूसरे इन्तज़ाम और शासन से सम्बन्ध रखने वाले, तीसरे तिजारत व्यापार से सम्बन्ध रखने वाले, चौथे मेहनत मज़दूरी से सम्बन्ध रखने वाले. इन चारों की फिर अलग अलग बहुत सी शाख़ें हैं.

( 3 ) मोटे तौर पर चार तरह की ही आमदनी या जीविका होती है—एक हदिया, पुरस्कार या भेंट रूप, दूसरे टैक्स, ख़िराज और तनख़ाह के रूप में, तीसरी तिजारती नफ़े के रूप में, चौथी मज़दूरी के रूप में.

( 4 ) हर आदमी की जिन्दगी के भी चार हिस्से होते हैं—पहला तालिबइल्म यानी विद्यार्थी होने का ज़माना. दूसरा ख़ानेदार यानी गृहस्थ का, तीसरा निस्वार्थ जनता की सेवा का, चौथा यानी आख़री हिस्सा दुनिया से अलग रहकर एकान्त चिन्तन और मनन का यानी तारिकुद्दुनिया होकर ग़ौरो ख़ौज़ का. इन में पहले दो हिस्सों में आदमी की निजी इच्छाएं मुनासिब हदों के अन्दर जागनी, बढ़नी और पूरी होनी चाहियें, और दूसरे दोनों हिस्सों में आदमी की समाजी यानी परोपकार की भावनाएं बढ़नी, खिलनी और अमल में आनी चाहिएं. इस तरह हर आदमी की जिन्दगी का आख़री हिस्सा समाज की सेवा में ख़र्च हो सकता है.



اپنی اپنی ترقی کا موقع مل سکے' سب سماج کی سیوا کر سکیں' سب کے اندر سوارتھ اور پرمارتھ دونوں پورے ہوسکیں' سب آتی سے بچکر بیچ کی سلامتی کی راہ چل سکیں' سب اپنے اپنے کرتویوں اور ادھیکاروں کو سمجھ سکیں' اور جہاں تک ہوسکتا ھے سب کا سب طرح بھلا ہو. لیکھک نے اپنی کچھ انگریزی کتابوں میں جیسے—( 1 ) اینشینٹ ورسز ماڈرن سائنٹفک سوشلزم' ( 2 ) دی سائنس آف دی سیلف' ( 3 ) دی سائنس آف سوشل آرگینیزیشن میں سماج سنگٹھن کے اس ڈھنگ کو تفصیل سے بیان کیا ھے . اُس کے موٹے موٹے بنیادی اصول نیچے دیئے جاتے ھیں :—

## چار طرح کے آدمی اور چار چار کی چوکڑیاں

( 1 ) دنیا میں اپنے اپنے سوبھاؤ' طبیعت اور قابلیت کے انوسار چار طرح کے آدمی ھوتے ھیں. وہ الگ الگ چار طرح کے ھی کاموں کے قابل ھوتے ھیں. اِن میں پہلے وہ لوگ ھیں جن میں ودیا اور گیان کی ادھک چاہ ھوتی ھے . دوسرے وہ لوگ ھیں جنھیں حکومت یا انتظام کرنے کا زیادہ شوق ھوتا ھے. تیسرے وہ جو کمانا اور جمع کرنا زیادہ چاھتے ھیں. چوتھے وہ بھولے اور سیدھے لوگ جو عام محنت مزدوری کے قابل ھوتے ھیں اور اُسی میں آنند لے سکتے ھیں .

(2) چار طرح کے ھی پیشے اور کام ھوتے ھیں—ایک ودیا اور علم سے سمبندھ رکھنے والے پیشے' دوسرے انتظام اور شاسن سے سمبندھ رکھنے والے' تیسرے تجارت ویاپار سے سمبندھ رکھنے والے' چوتھے محنت مزدوری سے سمبندھ رکھنے والے . اِن چاروں کی پھر الگ الگ بہت سے شاخیں ھیں .

(3) موٹے طور پر چار طرح کی ھی آمدنی یا جیوکا ھوتی ھے—ایک ھدیہ' پرسکار یا بھینٹ روپ' دوسرے ٹیکس' خراج اور تنخواہ کے روپ میں' تیسری تجارتی نفع کے روپ میں' چوتھی مزدوری کے روپ میں .

(4) ھر آدمی کی زندگی کے بھی چار حصے ھوتے ھیں—پہلا طالب علم یعنی ودیارتھی ھونے کا زمانہ' دوسرا خانہ دار یعنی گرھستھ کا' تیسرا نسوارتھ جنتا کی سیوا کا' چوتھا یعنی آخری حصہ دنیا سے الگ رہ کر ایکانت چنتن اور منن کا یعنی تارک الدنیا ھو کر غور و خوض کا . ان میں پہلے دو حصوں میں آدمی کی نجی اِچھائیں مناسب حدوں کے اندر جاگنی' بڑھنی اور پوری ھونی چاھئیں' اور دوسرے دونوں حصوں میں آدمی کی سماجی یعنی پروپکار کی بھاؤنائیں بڑھنی' کھلنی اور عمل میں آنی چاھئیں . اِس طرح ھر آدمی کی زندگی کا آخری حصہ سماج کی سیوا میں خرچ ھو سکتا ھے .

जीवन का मतलब क्या है, दुनिया किधर जा रही है और इन्सान और इन्सानी समाज दोनों के जीवन में 'ईश्वर की इच्छा' क्या है. तब हम समझ सकते हैं कि दुनिया में आदमी का फ़र्ज़ क्या है और इन्सानी समाज को किस तरह संभालना, संवारना, रूप देना और चलाना चाहिये. और समाज में और अलग अलग इन इन्सानों में किस तरह का नाता होना चाहिये, किस किस के क्या क्या फ़र्ज़ होने चाहियें और किस किस को क्या क्या अधिकार मिलने चाहियें, ताकि हर आदमी हर हालत में अपने फ़र्ज़ को समझ सके और पूरा कर सके और सब को रूहानी और जिस्मानी ख़ूराक ठीक ठीक मिल सके. तब ही जीवन का उद्देश्य और ईश्वर की इच्छा पूरी हो सकती है.

कोई आदमी दुनिया में अकेला नहीं होता. वह किसी घर में पैदा होता है और उसका घर किसी न किसी देश या समाज के अन्दर होता है जिसमें उस जैसे बहुत से घर होते हैं. हर आदमी के सुख दुख दूसरों के सुख दुख के साथ बंधे होते हैं. कोई आदमी अपने जीवन में न ईश्वर की इच्छा पूरी कर सकता है, न सुनहरे उसूल पर अमल कर सकता है, और न अपना फ़र्ज़ पूरा कर सकता है, जब तक कि वह घर या वह समाज जिसमें वह रहता सहता है इस तरह न बना हो कि दुनिया में अमन रहे और सब सुखी और ख़ुशहाल रहें. यह भी जरूरी है कि हर आदमी की जिन्दगी इस तरह नपी और बंटी हुई हो कि हर आदमी अपने स्वभाव, अपनी योग्यता और अपनी तबियत के अनुसार अपना भला और समाज की सेवा दोनों कर सके, उसे ठीक ठीक तालीम मिल सके, तालीम के बाद उसे और उसके घर वालों को ठीक ठीक काम और ठीक ठीक रोज़ी मिल सके, एक ख़ास उम्र होने पर वह रोज़ी कमाने की मेहनत से छुट्टी पा सके और सबके भले का कोई ऐसा काम मुफ़्त कर सके जो उसकी तबियत और क़ाबलियत दोनों के अनुसार हो, और इस सबके बाद अपनी जिन्दगी के आख़ीर दिनों में, ज्ञान ध्यान में, सारी दुनिया का भला चेतने में और सबको सबके भले के कामों में लगाए रखने में अपने समय को लगा सके जिससे उसकी आत्मा को शान्ति और दुनिया को उससे लाभ मिले. धर्म वही है जो इस दुनिया में और इसके बाद भी आदमी को सुखी रहने में मदद दे. अब हम यह देखें कि वैदिक धर्म इस जरूरत को किस तरह पूरा करता है.

वैदिक धर्म समाज के संगठन का एक ऐसा ढंग पेश करता है जो बिना धर्म, मजहब, क़ौम, नसल या किसी तरह के भेद भाव के दुनिया के सब लोगों और सारी मानव जाति पर लग सके, जिसमें सब तरह के आदमी खप सकें, सबको अपने अपने स्वभाव और अपनी अपनी योग्यता के अनुसार काम मिल सके, सबकी जरूरतें पूरी हो सकें, सबको



جیون کا مطلب کیا ھے' دنیا کدھر جا رھی ھے اور اِنسان اور اِنسانی سماج دونوں کے جیون میں 'اِیشور کی اچھا' کیا ھے. تب ھم سمجھ سکتے ھیں کہ دنیا میں آدمی کا فرض کیا ھے اور انسانی سماج کو کس طرح سنبھالنا' سنوارنا' روپ دینا اور چلانا چاھئیے' اور سماج میں اور الگ الگ اِن انسانوں میں کس طرح کا ناتا ھونا چاھئیے' کس کس کے کیا کیا فرض ھونے چاھئیں اور کس کس کو کیا کیا ادھیکار ملنے چاھئیں' تاکہ ھر آدمی ھر حالت میں اپنے فرض کو سمجھ سکے اور پورا کرسکے اور سب کو روحانی اور جسمانی خوراک ٹھیک ٹھیک مل سکے. تب ھی جیون کا اُدیش اور ایشور کی اچھا پوری ھو سکتی ھے.

کوئی آدمی دنیا میں اکیلا نہیں ھوتا. وہ کسی گھر میں پیدا ھوتا ھے اور اُس کا گھر کسی نہ کسی دیش یا سماج کے اندر ھوتا ھے جس میں اُس جیسے بہت سے گھر ھوتے ھیں. ھر آدمی کے سکھ دکھ دوسروں کے سکھ دکھ کے ساتھ بندھے ھوتے ھیں. کوئی آدمی اپنے جیون میں نہ ایشور کی اچھا پوری کرسکتا ھے' نہ سنہرے اصول پر عمل کرسکتا ھے' اور نہ اپنا فرض پورا کرسکتا ھے' جب تک کہ وہ گھر یا وہ سماج جس میں وہ رھتا سہتا ھے اِس طرح نہ بنا ھو کہ دنیا میں امن رھے اور سب سکھی اور خوشحال رھیں. یہ بھی ضروری ھے کہ ھر آدمی کی زندگی اس طرح نپی اور بنٹی ھوئی ھو کہ ھر آدمی اپنے سوبھاؤ' اپنی یوگتا اور اپنی طبیعت کے انوسار اپنا بھلا اور سماج کی سیوا دونوں کرسکے' اُسے ٹھیک ٹھیک تعلیم مل سکے' تعلیم کے بعد اُسے اور اُس کے گھر والوں کو ٹھیک ٹھیک کام اور ٹھیک ٹھیک روزی مل سکے' ایک خاص عمر ھونے پر وہ روزی کمانے کی محنت سے چھٹی پاسکے اور سب کے بھلے کا کوئی ایسا کام مفت کرسکے جو اُس کی طبیعت اور قابلیت دونوں کے انوسار ھو' اور اِس سب کے بعد اپنی زندگی کے آخیر دنوں میں' گیان دھیان میں' ساری دنیا کا بھلا چیتنے میں اور سب کو سب کے بھلے کے کاموں میں لگائے رکھنے میں اپنے سمے کو لگاسکے جس سے اُس کی آتما کو شانتی اور دنیا کو اُس سے لابھ ملے. دھرم وھی ھے جو اِس دنیا میں اور اِس کے بعد بھی آدمی کو سکھی رھنے میں مدد دے. اب ھم یہ دیکھیں کہ ویدک دھرم اِس ضرورت کو کس طرح پورا کرتا ھے.

ویدک دھرم سماج کے سنگٹھن کا ایک ایسا ڈھنگ پیش کرتا ھے جو بنا دھرم' مذھب' قوم' نسل یا کسی طرح کے بھید بھاؤ کے دنیا کے سب لوگوں اور ساری مانو جاتی پر لگ سکے' جس میں سب طرح کے آدمی کھپ سکیں' سب کو اپنے اپنے سوبھاؤ اور اپنی اپنی یوگتا کے انوسار کام مل سکے' سب کی ضرورتیں پوری ھوسکیں' سب کو

सवाल यही रहा है कि यह दोनों तरह की ख़ूराकें सब आदमियों को ठीक ठीक और ज़रूरत के मुताबिक़ कैसे मिलें. सब धर्मों ने इस सवाल को हल करने की कोशिश की है. पर जब किसी धर्म के ठेकेदारों और आचार्यों में ख़ुदग़रज़ी बढ़ जाती है तो उस धर्म वालों का अमल इस बारे में बिगड़ जाता है और वह धर्म गिरने लगता है. हर उस चीज़ में जो पैदा हुई है और बढ़ती है चढ़ाव के बाद उतार आना ज़रूरी है. फिर एक न एक दिन उसकी मौत भी आवेगी ही, और उसी काम को अधिक अच्छी तरह पूरा करने के लिये उस चीज़ की जगह कोई नई चीज़ पैदा होगी. आत्मा या विचार या उसूल वही रहता है, केवल ऊपर का शरीर, ढांचा या रूप बदल जाता है. यही हालत धर्मों की होती है. धर्म की आत्मा अमर है. पर सब धर्मों के ढांचे हालात के अनुसार बदलते रहते हैं. हमारा यह ज़माना साइन्स और मशीनों का ज़माना है, लोकशाही और समाजवाद का ज़माना है, दिल के मुक़ाबले में यह दिमाग़ की तरक़्क़ी का ज़माना है. इसी के अनुसार आजकल का धर्म और आजकल के सब क़ायदे क़ानून होने चाहियें.

केवल यह दुआ करना काफ़ी नहीं है कि 'ईश्वर की इच्छा पूरी हो.' हमें उस इच्छा के पूरा होने में मदद देने के लिये यह जानने और समझने की भी कोशिश करनी चाहिये कि हमारे ख़ास ज़माने और ख़ास हालात में ईश्वर की इच्छा क्या है. हम दुनिया में अपना फ़र्ज़ पूरा कर सकें. इसके लिये केवल हमारा फ़र्ज़ पूरा करने के लिये तैयार रहना ही ज़रूरी नहीं है. यह भी ज़रूरी है कि हम जानें और समझें कि हमारा फ़र्ज़ क्या है. यह मशहूर "सुनहरा उसूल" है कि 'दूसरों के साथ वैसा ही सलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें.' बात बहुत अच्छी है. पर इसके लिये यह जानना भी ज़रूरी है कि वह सलूक क्या होना चाहिये. हमें यह समझना चाहिये कि ख़ास हालत में हमें अपने लिये और दूसरों के लिये क्या चाहना चाहिये और क्या नहीं चाहना चाहिये. हम इस तरह सोच समझ कर नहीं चलेंगे तो अच्छी से अच्छी नीयत रखते हुए भी दुनिया में बदअमनी और गड़बड़ पैदा कर देंगे.

यह समझ पूरी पूरी हमें दो जगह से मिलती है. एक दुनिया के उन धर्म ग्रन्थों से जो समय समय के नेक, दूरदर्शी, बुद्धिमान और सब का भला चाहने वाले अवतारों, ऋषियों, नबियों, रसूलों और महात्माओं से हमें मिले हैं, यानी उन लोगों से मिले हैं जिनके अन्दर ईश्वरी जोत जग रही थी और जिनके अन्दर तरह तरह की असाधारन शक्तियां मौजूद थीं, और दूसरे उन ज्ञानियों, आलिमों और साइन्सदानों से मिलती है जिनकी असाधारन बुद्धि क़ुदरत के बड़े से बड़े भेदों को फोड़ कर उन्हें आदमी की सेवा में लगा देती है. इन दोनों से हमें पता चलता है कि इन्सानी



سوال یہی رہا ہے کہ یہ دونوں طرح کی خوراکیں سب آدمیوں کو ٹھیک ٹھیک اور ضرورت کے مطابق کیسے ملیں ۔ سب دھرموں نے اِس سوال کو حل کرنے کی کوشش کی ہے ۔ پر جب کسی دھرم کے ٹھیکیداروں اور آچاریوں میں خودغرضی بڑھ جاتی ہے تو اُس دھرم والوں کا عمل اس بارے میں بگڑ جاتا ہے اور وہ دھرم گرنے لگتا ہے۔ ہر اُس چیز میں جو پیدا ہوئی ہے اور بڑھتی ہے چڑھاؤ کے بعد اُتار آنا ضروری ہے۔ پھر ایک نہ ایک دن اُس کی موت بھی آویگی ہی، اور اُسی کام کو ادھک اچھی طرح پورا کرنے کے لئے اُس چیز کی جگہ کوئی نئی چیز پیدا ہوگی ۔ آتما یا وچار یا اصول وہی رہتا ہے، کیول اُوپر کا شریر، ڈھانچہ یا روپ بدل جاتا ہے ۔ یہی حالت دھرموں کی ہوتی ہے ۔ دھرم کی آتما اَمر ہے ۔ پر سب دھرموں کے ڈھانچے حالات کے انوسار بدلتے رہتے ہیں ۔ ہمارا یہ زمانہ سائنس اور مشینوں کا زمانہ ہے، لوک شاہی اور سماج واد کا زمانہ ہے، دل کے مقابلے میں یہ دماغ کی ترقی کا زمانہ ہے ۔ اِسی کے انوسار آجکل کا دھرم اور آجکل کے سب قاعدے قانون ہونے چاہئیں ۔

کیول یہ دعا کرنا کافی نہیں ہے کہ 'ایشور کی اچھا پوری ہو' ہمیں اُس اچھا کے پورا ہونے میں مدد دینے کے لئے یہ جاننے اور سمجھنے کی بھی کوشش کرنی چاہئے کہ ہمارے خاص زمانے اور خاص حالات میں ایشور کی اچھا کیا ہے ۔ ہم دنیا میں اپنا فرض پورا کرسکیں اِس کے لئے کیول ہمارا فرض پورا کرنے کے لئے تیار رہنا ہی ضروری نہیں ہے ۔ یہ بھی ضروری ہے کہ ہم جانیں اور سمجھیں کہ ہمارا فرض کیا ہے ۔ یہ مشہور "سنہرا اصول" ہے کہ 'دوسروں کے ساتھ ویسا ہی سلوک کرو جیسا تم چاہتے ہو کہ وہ تمہارے ساتھ کریں۔' بات بہت اچھی ہے۔ پر اِس کے لئے یہ جاننا بھی ضروری ہے کہ وہ سلوک کیا ہونا چاہئے ۔ ہمیں یہ سمجھنا چاہئے کہ خاص حالت میں ہمیں اپنے لئے اور دوسروں کے لئے کیا چاہنا چاہئے اور کیا نہیں چاہنا چاہئے ۔ ہم اِس طرح سوچ سمجھکر نہیں چلیں گے تو اچھی سے اچھی نیت رکھتے ہوئے بھی دنیا میں بدامنی اور گڑبڑ پیدا کردیں گے ۔

یہ سمجھ پوری پوری ہمیں دو جگہ سے ملتی ہے ۔ ایک دنیا کے اُن گرنتھوں سے جو سمے سمے کے نیک، دور درشی، بدھیمان اور سب کا بھلا چاہنے والے اوتاروں، رشیوں، نبیوں، رسولوں اور مہاتماؤں سے ہمیں ملے ہیں، یعنی اُن لوگوں سے ملے ہیں جن کے اندر ایشوری جوت جگ رہی تھی اور جن کے اندر طرح طرح کی اسادھارن شکتیاں موجود تھیں، اور دوسرے اُن گیانیوں، عالموں اور سائنس دانوں سے ملتی ہے جن کی اسادھارن بدھی قدرت کے بڑے سے بڑے بھیدوں کو پھوڑ کر اُنہیں آدمی کی سیوا میں لگا دیتی ہے ۔ اِن دونوں سے ہمیں پتہ چلتا ہے کہ اِنسانی

नया हिन्द

نیا هند

जिल्द ~~18~~ 17 दिसम्बर सन '54 नम्बर 6

نمبر 6 دسمبر سن '54 جلد ~~18~~ 17

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ھے' ھندستانی بولی'
'نیا ھند' پہنچے گا گھر - گھر لئے پریم کی جھولی .

# हिन्दू जात पात की असलियत, उसका बुरा रूप और इलाज

( डाक्टर भगवानदास )

## जाति भेद की बुनियाद

हिन्दुओं में एक खास रिवाज जाति भेद यानी जातों की तक़सीम का है. समझा जाता है कि किसी दूसरे धर्म में इस तरह की कोई चीज नहीं है. यह बात एक दरजे तक ठीक है और एक दरजे तक ग़लत. दुनिया की हर सभ्यता का किसी न किसी धर्म से सम्बन्ध रहा है और हर सभ्यता में जाति भेद के बीज और उसकी कुछ न कुछ अलामतें मिलती हैं. क्योंकि इस तरह की तक़सीम इन्सान के स्वभाव में शामिल है. हिन्दू धर्म में इसी चीज़ ने एक साफ़ साफ़ और खास रूप धारन कर लिया. लोगों के माल जायदाद के लिये, घरेलू जीवन को ठीक ठीक चलाने के लिये, लोगों की रक्षा के लिये, आदमी आदमी के बीच इन्साफ़ के लिये और सारे समाज को ठीक रास्ते पर रखने के लिये सब धर्मों में कुछ न कुछ क़ायदे क़ानून या नियम रहे हैं और हर धर्म ने उन पर अपने लोगों से अमल कराया है. इन्हीं से तरह तरह के रीत रिवाज पैदा होते हैं. इसी काम के लिये वैदिक धर्म ने समाज का एक ऐसा ढांचा तैयार कर दिया जिसमें इन्सान और समाज दोनों की यह सब जरूरतें पूरी हो सकें. यही ढांचा हिन्दुओं का जाति भेद है.

यह मजमून इतना गहरा है कि इसे जरा और विस्तार से देखना होगा. इन्सानी समाज को शुरू से सबसे बड़ी जरूरत ख़ुराक की होती है. ख़ुराक दो तरह की—एक रूहानी यानी आत्मा की ख़ुराक और दूसरी जिस्मानी यानी शरीर की ख़ुराक. समाज के सामने हमेशा सबसे बड़ा

# ھندو جات پات کی اصلیت' اُس کا برا روپ اور علاج

( ڈاکٹر بھگوان داس )

## جاتی بھید کی بنیاد

ھندؤں میں ایک خاص رواج جاتی بھید یعنی جاتوں کی تقسیم کا ھے . سمجھا جاتا ھے کہ کسی دوسرے دھرم میں اس طرح کی کوئی چیز نہیں ھے . یہ بات ایک درجے تک ٹھیک ھے اور ایک درجے تک غلط . دنیا کی ھر سبھیتا کا کسی نہ کسی دھرم سے سمبندھ رھا ھے اور ھر سبھیتا میں جاتی بھید کے بیج اور اُس کی کچھ نہ کچھ علامتیں ملتی ھیں . کیونکہ اِس طرح کی تقسیم اِنسان کے سوبھاؤ میں شامل ھے . ھندو دھرم میں اسی چیز نے ایک صاف صاف اور خاص روپ دھارن کرلیا . لوگوں کے مال جایداد کے لئے' گھریلو جیون کو ٹھیک ٹھیک چلانے کے لئے' لوگوں کی رکشا کے لئے' آدمی آدمی کے بیچ انصاف کے لئے اور سارے سماج کو ٹھیک راستے پر رکھنے کے لئے سب دھرموں میں کچھ نہ کچھ قاعدے قانون یا نیم رھے ھیں اور ھر دھرم نے اُن پر اپنے لوگوں سے عمل کرایا ھے . اِنھیں سے طرح طرح کے ریت رواج پیدا ھوتے ھیں . اسی کام کے لئے ویدک دھرم نے سماج کا ایک ایسا ڈھانچہ تیار کردیا جس میں اِنسان اور سماج دونوں کی یہ سب ضرورتیں پوری ھوسکیں . یہی ڈھانچہ ھندؤں کا جاتی بھید ھے .

یہ مضمون اتنا گہرا ھے کہ اِسے ذرا اور وستار سے دیکھنا ھوگا . اِنسانی سماج کو شروع سے سب سے بڑی ضرورت خوراک کی ھوتی ھے . خوراک دو طرح کی—ایک روحانی یعنی آتما کی خوراک اور دوسری جسمانی یعنی شریر کی خوراک . سماج کے سامنے ھمیشہ سب سے بڑا

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
# ھندستانی کلچر سوسائٹی

का

## माहवारी परचा
## ماھواری پرچا

### दिसम्बर 1954 دسمبر


| क्या किस से | सफ़ा صفحہ | کیا کس سے |
|---|---|---|
| 1. हिन्दू जात पात की असलियत, उसका बुरा रूप और इलाज—डाक्टर भगवानदास | 263 | ھندو جات پات کی اصلیت، اُس کا برا روپ اور علاج —ڈاکٹر بھگوان داس |
| 2. ड़—मदन गोपाल | 285 | ڑ—مدن گوپال |
| 3. दान की अर्थ नीति—विश्वम्भरनाथ पांडे | 294 | دان کی ارتھ نیتی—وشومبھر ناتھ پانڈے |
| 4. कुछ चीनी छोटी कहानियां—लेखक फ़ैंग शूए फ़ैंग; अनुवादक—सुन्दरलाल | 300 | کچھ چینی چھوٹی کہانیاں—لیکھک فینگ شوئے فینگ؛ انوواد ک—سندر لال |
| 5. बिहार के दिल की गहराई में—सुरेशराम भाई | 308 | بہار کے دل کی گہرائی میں—سریش رام بھائی |
| 6. हमारी राय— | 321 | ھماری رائے— |
| डाक्टर राम मनोहर लोहिया का भाशन—सुन्दरलाल | | ڈاکٹر رام منوھر لوھیا کا بھاشن—سندرلال |
| एक वैज्ञानिक की आह—सुरेशराम भाई. | | ایک ویگیانک کی آہ—سریش رام بھائی |
| 7. कुछ किताबें | 334 | کچھ کتابیں |



क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने.

قیمت—ھندستان میں چھہ روپیہ سال، باھر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے ،

मैनेजर
'नया हिन्द'
146, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद–3

مینیجر
'نیا ھند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

# नया हिन्द  نیا ہند



एडीटर— ताराचंद, भगवानदीन, सैयद महमूद, विश्वम्भरनाथ पांडे, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، سید محمود، وشومبھر ناتھ پانڈے، سندرلال

नायब एडीटर— सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़्वी

نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی



❀ ❀ ❀

## इस नम्बर के ख़ास लेख

★ जात पात की असलियत, उसका बुरा रूप और इलाज—डाक्टर भगवानदास

★ दान की अर्थ नीति—विश्वम्भरनाथ पांडे

★ कुछ चीनी छोटी कहानियां—लेखक फ़ैंग शूए फ़ैंग; अनुवादक—सुन्दरलाल

★ बिहार के दिल की गहराई में—सुरेश रामभाई

**हमारी राय**

★ डाक्टर राम मनोहर लोहिया का भाशन—सुन्दरलाल

## اِس نمبر کے خاص لیکھ

★ ہندی جات پات کی اصلیت، اُس کا برا روپ اور علاج —ڈاکٹر بھگوان داس

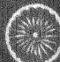
★ دان کی ارتھ نیتی—وشومبھر ناتھ پانڈے

★ کچھ چینی چھوٹی کہانیاں—لیکھک فینگ شوئے فینگ؛ انوادک—سندر لال

★ بہار کے دل کی گہرائی میں—سریش رام بھائی

**ہماری رائے**

★ ڈاکٹر رام منوہر لوھیا کا بھاشن—سندر لال

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद  ہندستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

दिसम्बर 1954 دسمبر

क़ीमत दस आना قیمت دس آنہ

## हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं. — نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

| नाम किताब | लेखक | दाम | لیکھک | نام کتاب |
|---|---|---|---|---|
| 1. शेर ओ शायरी | श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय | 8 0 0 | شری ایودھیا پرساد گوئیلی | 1. شعر و شاعری |
| 2. शेर ओ सुखन | ,, | 8 0 0 | ,, | 2. شعر و سخن |
| 3. गहरे पानी पैठ | ,, | 2 8 0 | ,, | 3. گہرے پانی پیٹھ |
| 4. हमारे आराध्य | श्री बनारसीदास चतुर्वेदी | 3 0 0 | شری بنارسی داس چترویدی | 4. ہمارے آرادھیہ |
| 5. संस्मरण | ,, | 3 0 0 | ,, | 5. سنسمرن |
| 6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां | श्री जगदीशचन्द्र जैन | 3 0 0 | شری جگدیش چندر جین | 6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں |
| 7. ज्ञान गंगा | श्री नारायण प्रसाद जैन | 6 0 0 | شری نارائن پرساد جین | 7. گیان گنگا |
| 8. पथ चिन्ह | श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी | 2 0 0 | شری شانتی پریہ دویدی | 8. پتھ چنھ |
| 9. पंच प्रदीप | शान्ति एम. ए. | 2 0 0 | شانتی ایم . اے | 9. پنچ پردیپ |
| 10. आकाश के तारे धरती के फूल | श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर | 2 0 0 | شری کنھیالال مشر پربھاکر | 10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول |
| 11. मुक्ति दूत | श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए. | 5 0 0 | شری ویریندر کمار جین ایم . اے | 11. مکتی دوت |
| 12. मिलन यामिनी | श्री बच्चन | 4 0 0 | شری بچن | 12. ملن یامنی |
| 13. रजत रश्मि | डाक्टर रामकुमार वर्मा | 2 8 0 | ڈاکٹر رام کمار ورما | 13. رجت رشمی |
| 14. मेरे बापू | श्री तन्मय बुखारिया | 2 8 0 | شری تنمے بخاریا | 14. میرے باپو |
| 15. विश्व संघ की ओर | पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला | 3 0 0 | پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا | 15. وشو سنگھ کی اور |
| 16. भारतीय अर्थशास्त्र | श्री भगवानदास केला | 5 0 0 | شری بھگوان داس کیلا | 16. بھارتیہ ارتھ شاستر |
| 17. भारतीय शासन | ,, | 3 0 0 | ,, | 17. بھارتیہ شاسن |
| 18. नागरिक शास्त्र | ,, | 2 4 0 | ,, | 18. ناگرک شاستر |
| 19. साम्राज्य और उनका पतन | ,, | 2 8 0 | ,, | 19. سامراج اور ان کا پتن |
| 20. भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन | ,, | 1 4 0 | ,, | 20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن |
| 21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था | ,, | 1 8 0 | ,, | 21. سروودے ارتھ ویوستھا |
| 22. हमारी आदिम जातियां | श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय | 3 8 0 | شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے | 22. ہماری آدم جاتیاں |
| 23. अर्थशास्त्र शब्दावली | श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला | 2 0 0 | شری دیا شنکر دوبے ایم . اے . ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا | 23. ارتھ شاستر شبداولی |
| 24. नागरिक शिक्षा | भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे | 1 8 0 | شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے | 24. ناگرک شکشا |
| 25. राष्ट्र मंडल शासन | श्री दयाशंकर दुबे | 1 8 0 | دیا شنکر دوبے | 25. راشٹر منڈل شاسن |
| 26. जवानो | महात्मा भगवानदीन | 3 0 0 | مہاتما بھگوان دین | 26. جوانو |
| 27. मारने की हिम्मत ! | ,, | 1 0 0 | ,, | 27. مارنے کی ہمت |
| 28. सलोना सच | ,, | 0 8 0 | ,, | 28. سلونا سچ |
| 29. मेरे साथी | ,, | 1 0 0 | ,, | 29. میرے ساتھی |

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ
مینیجر 'نیا ہند'
145' مٹھی گنج' الہ آباد-3.

सफ़ाई को देखते हुये इस किताब का यह जनता एडीशन काफ़ी सस्ता है हालांकि यह उतना सस्ता नहीं जितने सस्ते दूसरे मुल्कों की सरकारें अपने प्रकाशन बेचती हैं.

—वि० ना०

## परम गीता

लिखने वाले स्वामी दयाल आत्मदर्शी, पठान कोट, ई.पी; निकालने वाले—वही; दाम—दो रुपया; सफ़े—142.

यह किताब इस मुद्दे को लेकर लिखी गई है कि ईश्वर की सिफ़ात की परिभाशा करना ईश्वर से इनकार करना है, 'मगर पूरी पुस्तक में उसी ईश्वर के नाम और रूपों का वनन किया गया है.

छपाई के लिहाज़ से किताब के दाम ज़्यादा हैं.

—वि० ना०

## बच्चों की देख भाल

लिखने वाले—श्री बहादुरमल एम. ए.; छापने वाले—श्री विश्वेश्वरानन्द प्रकाशन, होशियारपुर; सफ़े—140; दाम—एक रुपया बारह आना; लिखावट—हिन्दी.

डेढ़ साल के बच्चों से लेकर बारह साल की उम्र तक के बच्चों के पालने पोसने, उनकी देख भाल, उनकी बीमारी और तीमारदारी और उनकी शिक्षा दीक्षा पर यह एक बहुत अच्छे ढंग से लिखी हुई किताब है. मां बाप को किस तरह समझ बूझ के साथ अपने बच्चों की देख भाल करनी चाहिये इस पर इस किताब में ख़ास ज़ोर दिया गया है. बच्चों के बारे में मां बाप की तालीम में यह किताब मददगार होगी.

—वि० ना०



صفائی کو دیکھتے ہوئے اِس کتاب کا یہ جنتا ایڈیشن کافی سستا ھے حالانکہ یہ اتنا سستا نہیں جتنے سستے دوسرے ملکوں کی سرکاریں اپنے پرکاشن بیچتی ھیں ۔

—وی ۔ نا ۔

## پرم گیتا

لکھنے والے—سوامی دیال آتم درشی، پٹھان کوٹ ای ۔ پی؛ نکالنے والے—وھی؛ دام—دو روپیہ؛ صفحے—142 ۔

یہ کتاب اِس مدے کو لے کر لکھی گئی ھے کہ ایشور کی صفات کی پریبھاشا کرنا ایشور سے انکار کرنا ھے، مگر پوری پستک میں اُسی ایشور کے نام اور روپوں کا ورنن کیا گیا ھے ۔

چھپائی کے لحاظ سے کتاب کے دام زیادہ ھیں ۔

—وی ۔ نا ۔

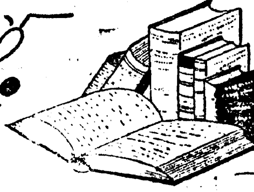
## بچوں کی دیکھ بھال

لکھنے والے—شری بہادر مل ایم ۔ اے؛ چھاپنے والے—شری وشویشورا نند پرکاشن؛ ھوشیار پور؛ صفحے—140؛ دام—ایک روپیہ بارہ آنے؛ لکھاوٹ ھندی ۔

ڈیڑھ سال کے بچوں سے لے کر بارہ سال کی عمر تک کے بچوں کے پالنے پوسنے، اُن کی دیکھ بھال، اُن کی بیماری اور تیمارداری اور اُن کی شکشا دیکشا پر یہ ایک بہت اچھے ڈھنگ سے لکھی ہوئی کتاب ھے ۔ ماں باپ کو کس طرح سمجھ بوجھ کے ساتھ اپنے بچوں کی دیکھ بھال کرنی چاھئے اِس پر اِس کتاب میں خاص زور دیا گیا ھے ۔ بچوں کے بارے میں ماں باپ کی تعلیم میں یہ کتاب مددگار ھوگی ۔

—وی ۔ نا ۔

# कुछ किताबें



# کچھ کتابیں

## हज़रत मुहम्मद अने इस्लाम

लिखने वाले—पंडित सुन्दरलाल; निकालने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; लिखावट—गुजराती; दाम—सवा रुपया.

पंडित सुन्दरलाल जी की मशहूर किताब हज़रत मुहम्मद और इस्लाम के गुजराती अनुवाद का यह दूसरा एडीशन है. इसका आमुख श्री किशोरलाल मशरूवाला का लिखा हुआ है. हिन्दुस्तान के सभी आलिमों और विद्वानों ने इस किताब को हिन्दुस्तान में इस क़िस्म की अब तक की छपी किताबों में सबसे उम्दा माना है. हम हर एक गुजराती पढ़ने वाले भाई इस किताब को ख़ास तौर पर पढ़ने की अपील करते हैं.

—वि० ना०

## निर्माण

लिखने वाले—नवल भाई शाह; निकालने वाले—लक्ष्मी चंद जवेरचन्द संघवी, महावीर साहित्य प्रकाशन मन्दिर, हठी भाई नी वाड़ी, अहमदाबाद; लिखावट—गुजराती, सफ़े 212, दाम—एक रुपया बारह आना.

नवल भाई शाह की यह नवल कथा स्वराज्य हासिल करने के बाद हमें अपने देश को किस तरह बनाना और संवारना है इस पर रोशनी डालती है. निर्माण, जैसा कि इस किताब का नाम है, अमली बुनियादों पर नया देश गढ़ने के मक़सद से लिखी गई है.

—वि० ना०

## पहला पंजसाला प्लान

निकालने वाले—पब्लिकेशन डिवीजन, नई दिल्ली; सफ़े—376, बहुत सी तसवीरें और नक़्शे, लिखावट—उर्दू; क़ीमत—दो रुपया.

आजकल जिस पांच साला प्लानिंग की बेहद चरचा है उसी का ख़ाका इस सरकारी किताब में दिया हुआ है. छपाई

## حضرت محمد انے اسلام

لکھنے والے—پنڈت سندر لال؛ نکالنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ لکھاوٹ—گجراتی؛ دام—سوا روپیہ .

پنڈت سندر لال جی کی مشہور کتاب حضرت محمد اور اسلام کے گجراتی انوواد کا یہ دوسرا ایڈیشن ھے . اِس کا آمکھ شری کشورلال مشروواﻻ کا لکھا ھوا ھے . ھندستان کے سبھی عالموں اور ودوانوں نے اِس کتاب کو ھندستان میں اِس قسم کی اب تک کی چھپی کتابوں میں سب سے عمدہ مانا ھے. ھم ھر ایک گجراتی پڑھنے والے بھائی سے اِس کتاب کو خاص طور پر پڑھنے کی اپیل کرتے ھیں .

—وی . نا .

## نرمان

لکھنے والے—نول بھائی شاہ؛ نکالنے والے—لکشمی چند زویر چند سنگھوی، مہاویر ساھتیہ پرکاشن مندر، ھٹی بھائی نی واڑی احمدآباد؛ لکھاوٹ—گجراتی؛ صفحے 212؛ دام—ایک روپیہ بارہ آنہ .

نول بھائی شاہ کی یہ نول کتھا سوراجیہ حاصل کرنے کے بعد ھمیں اپنے دیش کو کس طرح بنانا اور سنوارنا ھے اِس پر روشنی ڈالتی ھے . نرمان جیسا کہ اِس کتاب کا نام ھے عملی بنیادوں پر نیا دیش گڑھنے کے مقصد سے لکھی گئی ھے .

—وی . نا .

## پہلا پنج سالہ پلان

نکالنے والے—پبلیکیشن ڈویزن، نئی دلی، صفحے—376، بہت سی تصویریں اور نقشے؛ لکھاوٹ—اُردو؛ قیمت—دو روپیہ.

آجکل جس پانچ سال پلاننگ کی بےحد چرچا ھے اُسی کا خاکہ اِس سرکاری کتاب میں دیا ھوا ھے . چھپائی

जवाहरलाल आज पैंसठ बरस के जवान हैं और इस अरसे में हुकूमत या पदों का काफ़ी तजुर्बा हासिल कर चुके हैं. अब वक्त आया है कि वह इस तरह की ज़िम्मेदारियों से अलग हों और उन सबसे कहीं ज्यादा ऊंची और बड़ी ज़िम्मेदारी को संभालें—वह है समाज को धर्म सिखाना, यानी समाज में अपने पैरों पर खड़े होने की ताक़त पैदा करना, भाई चारा बढ़ाना और इन्सान की शान को बुलन्द करना. यह ज़िम्मेदारी उनकी आज की छोटी या हलकी ज़िम्मेदारियों के मुक़ाबिले कहीं ज्यादा बड़ी और ठोस है. मालिक ने उनको इतनी सामर्थ्य दी है कि वह इस ज़िम्मेदारी को ख़ूबी के साथ उठा लें.

सिरजनहार से हम प्रार्थना करते हैं कि पंडित जवाहरलाल जी को हमारे शास्त्रों के मुताबिक़ सवा सौ साल की पूरी उम्र दें और प्रेम शक्ति की बिना पर मुल्क की नई रहनुमाई करने की ताक़त और हिम्मत दें.

30. 10. '54 —सुरेशराम भाई



جواھر لال آج پیلسٹھ برس کے جوان ھیں اور اس عرصے میں حکومت یا پدوں کا کافی تجربہ حاصل کرچکے ھیں . اب وقت آیا ھے کہ وہ اس طرح کی ذمہ‌داریوں سے الگ ھوں اور ان سب سے کہیں زیادہ اونچی اور بڑی ذمہ‌داری کو سنبھالیں—وہ ھے سماج کو دھرم سکھانا یعنی سماج میں اپنے پیروں پر کھڑے ھونے کی طاقت پیدا کرنا، بھائی چارا بڑھانا اور انسان کی شان کو بلند کرنا . یہ ذمہ‌داری ان کی آج کی چھوٹی یا ھلکی ذمہ‌داریوں کے مقابلہ کہیں زیادہ بڑی اور ٹھوس ھے . مالک نے ان کو اتنی سامرتھیہ دی ھے کہ وہ اس ذمہ‌داری کو خوبی کے ساتھ اٹھالیں :

سرجنہار سے ھم پرارتھنا کرتے ھیں کہ پنڈت جواھرلال جی کو ھمارے شاستروں کے مطابق سوا سو سال کی پوری عمر دیں اور پریم شکتی کی بنا پر ملک کی نئی رھنمائی کرنے کی طاقت اور ھمت دیں .

30 . 10 . '54 —سریش رام بھائی

---

## ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता.

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

---

## عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے . سی . کمارپا.

انووادک—سریش رام بھائی.

اس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے دی گئی ھے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ھے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابر بھائی چارے، پریم اور اھنسا پر کتنا زور دیا ھے .

مہاتما گاندھی نے اس کتاب کے بارے میں کہا ھے کہ

"ھر آستک سے، چاھے وہ عیسائی ھو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ھو، میری سفارش ھے کہ اسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ .

ملنے کا پتہ .

مینیجر، 'نیا ھند'، 145 مٹھی گنج، الہ‌آباد .

आज मुल्क की पहली मांग यह है कि उसकी जड़ मज़बूत की जावे. वह जड़ किसी इमारत, सड़क या पैदावार के ज़रिये नहीं, बल्कि दिलों को नज़दीक लाने, आपस के भेद भाव मिटाने और प्रेम शक्ति को बुलन्द करने पर ही होगी. और यह इस मुल्क की ही मांग नहीं, सारे आलम की मांग है. अर्सा दराज़ से दुनिया ने तलवार, क़ानून और पैसे की ताक़तों के तजुर्बे करके देख लिये. उनसे बम, ऐटम बम और हाइड्रोजन बम हम तक पहुंचे और इन्सान की हस्ती ही ख़तरे में डाल दी. वक्त बता रहा है कि अब दूसरे तजुरबे करें और प्रेम शक्ति को आज़मायें और उसकी बिना पर अपने समाज की तामीर करें जिस के अन्दर निज़ामे हकूमत भी शामिल है.

इस प्रेम शक्ति का एक पायदार, सही और सच्चा नमूना महात्मा गांधी ने हमारे सामने पेश भी किया है. वह शक्ति हम हिन्द वाले पूरी तरह अमल में न ला सके. लेकिन उसके जो भी तजुर्बे हमने कये उसका नतीजा सारी दुनिया आज जानती है और इसी वजह से इस चीज़ की क़दर करती है, उसका लोहा मानती है. ज़रूरत है कि इस शक्ति के ज़्यादा से ज़्यादा, बड़े और गहरे पैमाने पर तजुर्बे किये जायें. इसी रोशनी में हम पंडित जवाहरलाल के उस सरनाम ख़त का स्वागत करते हैं. जैसा कि उनका ख़्याल है कि उनको अभी इस दुनिया में बहुत काम करना है, वह हम भी मानते हैं. हम यक़ीन रखते हैं कि हमारा जो अलमबर्दार, प्रेम शक्ति की मदद से महात्मा गांधी की रहनुमाई में अंग्रेज़ी ताक़त से लड़ा था वह अब उसी प्रेम शक्ति की मदद से हिन्दुस्तान की ग़रीबी और जेहालत से लड़ेगा, ज़माने से लड़ेगा और क्या हिन्दुस्तान को, क्या दुनिया को सच्ची आज़ादी की ओर असली शान्ति का रास्ता दिखाएगा.

जहां तक मुल्क का काम चलने की बात है हम यही मानते हैं कि पंडित जी हकूमत या कांग्रेस की सदारत से अलग रह कर मुल्क की जो ख़िदमत अंजाम दे सकते हैं वह अन्दर रह कर नहीं. तन्त्र में फंसकर आदमी मंत्री न रह कर तंत्री बन जाता है और उसके दिमाग़ के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं. जब किसी मुल्क के ऊंचे से ऊंचे आदमी अपने को तन्त्र में फंसा लेते हैं तो उस मुल्क की तबाही रोके नहीं रुक सकती. हमारी राय तो यह है कि न सिर्फ़ पंडित जवाहरलाल जी बल्कि मरकज़ी और सूबे की सरकारों के वह सब मिनिस्टर या ओहदेदार जो छः साल से ज़्यादा इस तन्त्र में रह चुके हैं वह अब बाहर आजायें, दूसरों को अपनी जगह भेजें और बाहर से उनको राह दिखाते रहें.

आख़िर में एक अर्ज़ और है. हमारे मुल्क का पुराना और शानदार दस्तूर है कि एक उम्र के बाद आदमी घर की या राज पाट की सब झंझटों से सब तरह बरी होकर जन सम्पर्क और जनता जर्नादन की भक्ति व सेवा में लगे. पंडित



آج ملک کی پہلی مانگ یہ ھے کہ اس کی جڑ مضبوط کی جاوے . وہ جڑ کسی عمارت، سڑک یا پیداوار کے ذریعہ نہیں، بلکہ دلوں کو نزدیک لانے، آپس کے بھید بھاو مٹانے اور پریم شکتی کو بلند کرنے پر ھی ھوگی . اور یہ اس ملک کی ھی مانگ نہیں، سارے عالم کی مانگ ھے. عرصہ‌دراز سے دنیا نے تلوار، قانون اور پیسہ کی طاقتوں کے تجربے کرکے دیکھ لئے . ان سے بم، ایٹم‌بم اور ھائڈروجن بم ھم تک پہونچے اور انسان کی ھستی ھی خطرہ میں ڈال دی . وقت بتا رھا ھے کہ اب دوسرے تجربے کریں اور پریم شکتی کو آزمائیں اور اس کی بنا پر اپنے سماج کی تعمیر کریں جس کے اندر نظام حکومت بھی شامل ھے .

اس پریم شکتی کا ایک پائدار، صحیح اور سچا نمونہ مہاتما گاندھی نے ھمارے سامنے پیش بھی کیا ھے . وہ شکتی ھم ھند والے پوری طرح عمل میں نہ لا سکے . لیکن اس کے جو بھی تجربے ھم نے کئے اس کا نتیجہ ساری دنیا آج جانتی ھے اور اسی وجہ سے اس چیز کی قدر کرتی ھے، اس کا لوھا مانتی ھے . ضرورت ھے کہ اس شکتی کے زیادہ سے زیادہ، بڑے اور گہرے پیمانے پر تجربے کئے جائیں . اسی روشنی میں ھم پنڈت جواھر لال کے اُس سرنام خط کا سواگت کرتے ھیں. جیسا کہ ان کا خیال ھے کہ ان کو ابھی اس دنیا میں بہت کام کرنا ھے، وہ ھم بھی مانتے ھیں . ھم یقین رکھتے ھیں کہ ھمارا جو علمبردار، پریم شکتی کی مدد سے مہاتما گاندھی کی رھنمائی میں انگریزی طاقت سے لڑا تھا وہ اب اسی پریم شکتی کی مدد سے ھندستان کی غریبی اور جہالت سے لڑیگا، زمانہ سے لڑیگا اور کیا ھندستان کو، کیا دنیا کو سچی آزادی کی اور اصلی شانتی کا راستہ دکھائیگا .

جہاں تک ملک کا کام چلنے کی بات ھے ھم یہی مانتے ھیں کہ پنڈت جی حکومت یا کانگریس کی صدارت سے الگ رہ کر ملک کی جو خدمت انجام دے سکتے ھیں وہ اندر رہ کر نہیں. تنتر میں پھنس‌کر آدمی منتری نہ رہ کر تنتری بن جاتا ھے اور اس کے دماغ کے دروازے بند ھوجاتے ھیں . جب کسی ملک کے اُونچے سے اُونچے آدمی اپنے کو تنتر میں پھنسا لیتے ھیں تو اس ملک کی تباھی روکے نہیں رک سکتی . ھماری رائے تو یہ ھے کہ نہ صرف پنڈت جواھر لال جی بلکہ مرکزی اور صوبے کی سرکاروں کے وہ سب منسٹر یا عہدےدار جو چھ سال سے زیادہ اُس تنتر میں رہ چکے ھیں وہ اب باھر آجائیں، دوسروں کو اپنی جگہ بھیجیں اور باھر سے ان کو راہ دکھاتے رھیں .

آخر میں ایک عرض اور ھے . ھمارے ملک کا پرانا اور شاندار دستور ھے کہ ایک عمر کے بعد آدمی گھر کی یا راج پاٹ کی سب جھنجھٹوں سے سب طرح بری ھوکر جن سمپرک اور جنتا جناردن کی بھکتی و سیوا میں لگے . پنڈت

क़िस्मत का फ़ैसला बन्द कमरे में बैठे बैठे कर देती है. हिन्दुस्तान के प्राइम मिनिस्टर के नाते पंडित जवाहरलाल आज हिन्दुस्तान भर की तलवार की ताक़त और क़ानून की ताक़त के बुलन्द नुमाइन्दा व सिपहसालार हैं. लेकिन इस सब के अलावा एक ताक़त और भी है-वह है प्रेम की ताक़त जिसे नैतिक या इखलाक़ी ताक़त भी कह सकते हैं, जिसकी तालीम हर बच्चे को जन्म से ही मिलती है और जिस पर यह दुनिया टिकी है. आज हकूमतें इस ताक़त को नजरअन्दाज कर रही हैं और तलवार, क़ानून, पैसा व दिमाग़ की ताक़तों के बल पर फूल सी रही हैं. लेकिन ज़माना साफ़ बता रहा है कि अगर वह अपनी रविश को नहीं बदलती हैं और प्रेम की ताक़त की बिना पर समाज की नई रचना नहीं होती है तो इन्सान की जात के ही ख़त्म होने का अन्देशा है. प्राइम मिनिस्ट्री के शिकंजे में जकड़ जाने के कारन पंडित जवाहरलाल इस ताक़त से अछूते रह रहे हैं. दूसरे शब्दों में जनता से अछूते रह रहे हैं. यही वजह है कि उनको बासीपन महसूस होता है और पढ़ने या सोचने के लिये, बुनियादी सवालों पर ग़ौर और सलाह करने के लिये उनमें तड़प पैदा होती है.

इस सिलसिले में एक महत्वपूर्न बात यह है कि आज हमारे मुल्क में एक चीज की ख़ास कमी नजर आती है. हम क़बूल करते हैं कि आज़ादी के बाद हिन्दुस्तान में खेती की पैदावार बढ़ी है. यहां की मिलों में ज्यादा माल तैयार हो गया है. यहां की नदियों पर पुल व पुलियां बंधे हैं, नई सड़कें, रेलें और आमद-रफ़्त के रास्ते खुले हैं. लेकिन इस सबके बावजूद मुल्क में इस ताक़त का एहसास नहीं होता जो ऐसी हालत में होना चाहिये. वजह यह है कि हमारे दिल टूट रहे हैं. आपस का फ़र्क़ बढ़ रहा है. जात पात और छुआ छूत का जहर ज्यादा गहरा घुस रहा है. इनसान की आबरू की क़दर कम हो रही है. अपने पैरों पर खड़े होने की ताक़त गिर रही है और मुल्क कमजोर पड़ रहा है. एक लाचारी सी दिखाई पड़ती है और ख़ुद करने लायक काम भी न करके लोग आम तौर से सरकार का मुंह ताकते हैं. आज़ादी के बाद जो एक जोश और हौसला सब को आना चाहिये था वह ग़ायब है. मस्ती के बजाय सुस्ती है. फ़र्क़ दिखलाई नहीं पड़ता. नतीजा यह है कि समाज का जो ग़रीब और कमजोर हिस्सा है वह दिन दुगुना रात चौगुना ग़रीब और कमजोर होता जा रहा है. और उसी के आधार पर हम, हिन्दुस्तान का आलीशान महल खड़ा करने के ख़्वाब देखते हैं. जाहिर है कि जिस महल की बुनियादें कमजोर होंगी वह बाहर की हवा से क्या, अन्दर की हवा के भी झोंके बरदाश्त नहीं कर सकेगा. हमारा मानना है कि अगर मुल्क की यही रफ़्तार जारी रही और तलवार, पैसा, क़ानून की ताक़तों के सहारे ही हम ख़ाली बैठे रहे तो हमारा भविश्य अच्छा नहीं है.



قسمت کا فیصلہ بند کمرے میں بیٹھے بیٹھے کر دیتی ہے۔ ہندستان کے پرایم منسٹر کے ناتے پنڈت جواہر لال آج ہندستان بھر کی تلوار کی طاقت اور قانون کی طاقت کے بلند نمائندہ و سپہ سالار ہیں۔ لیکن ان سب کے علاوہ ایک طاقت اور بھی ہے—وہ ہے پریم کی طاقت جسے نیتک یا اخلاقی طاقت بھی کہہ سکتے ہیں، جس کی تعلیم ہر بچہ کو جنم سے ہی ملتی ہے اور جس پر یہ دنیا ٹکی ہے۔ آج حکومتیں اِس طاقت کو نظر انداز کر رہی ہیں اور تلوار، قانون، پیسہ و دماغ کی طاقتوں کے بل پر پھول سی رہی ہیں۔ لیکن زمانہ صاف بتا رہا ہے کہ اگر وہ اپنی روش کو نہیں بدلتی ہیں اور پریم کی طاقت کی بنا پر سماج کی نئی رچنا نہیں ہوتی ہے تو انسان کی ذات کے ہی ختم ہونے کا اندیشہ ہے۔ پرایم منسٹری کے شکنجے میں جکڑ جانے کے کارن پنڈت جواہر لال اِس طاقت سے اچھوتے رہ رہے ہیں۔ دوسرے شبدوں میں جنتا سے اچھوتے رہ رہے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ اُن کو باسی پن محسوس ہوتا ہے اور پڑھنے یا سوچنے کے لئے، بنیادی سوالوں پر غور اور صلاح کرنے کے لئے اِن میں تڑپ پیدا ہوتی ہے۔

اسی سلسلہ میں ایک مہتوپورن بات یہ ہے کہ آج ہمارے ملک میں ایک چیز کی خاص کمی نظر آتی ہے۔ ہم قبول کرتے ہیں کہ آزادی کے بعد ہندستان میں کھیتی کی پیداوار بڑھی ہے۔ یہاں کی ملوں میں زیادہ مال تیار ہوگیا ہے۔ یہاں کی ندیوں پر پل و پلیاں بندھے ہیں، نئی سڑکیں، ریلیں اور آمدورفت کے راستے کھلے ہیں۔ لیکن اس سب کے باوجود ملک میں اس طاقت کا احساس نہیں ہوتا جو ایسی حالت میں ہونا چاہئے۔ وجہ یہ ہے کہ ہمارے دل ٹوٹ رہے ہیں۔ آپس کا فرق بڑھ رہا ہے۔ جات پات اور چھواچھوت کا زہر زیادہ گہرا گھس رہا ہے۔ انسان کی آبرو کی قدر کم ہو رہی ہے۔ اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کی طاقت گر رہی ہے اور ملک کمزور پڑ رہا ہے۔ ایک لاچاری سی دکھائی پڑتی ہے اور خود کرنے لائق کام بھی نہ کرکے لوگ عام طور سے سرکار کا منہ تاکتے ہیں۔ آزادی کے بعد جو ایک جوش اور حوصلہ سب کو آنا چاہئے تھا وہ غائب ہے۔ مستی کی بجائے سستی ہے۔ فرق دکھلائی نہیں پڑتا۔ نتیجہ یہ ہے کہ سماج کا جو غریب اور کمزور حصہ ہے وہ دن دگنا رات چوگنا غریب اور کمزور ہوتا جا رہا ہے۔ اور اسی کے آدھار پر ہم ہندستان کا عالی شان محل کھڑا کرنے کے خواب دیکھتے ہیں۔ ظاہر ہے کہ جس محل کی بنیادیں کمزور ہونگی وہ باہر کی ہوا سے کیا، اندر کی ہوا کے بھی جھونکے برداشت نہیں کرسکیگا۔ ہمارا ماننا ہے کہ اگر ملک کی یہی رفتار جاری رہی اور تلوار، پیسہ، قانون کی طاقتوں کے سہارے ہی ہم خالی بیٹھے رہے تو ہمارا بھوشیہ اچھا نہیں ہے۔

(iii) एक चीज़ अक्सर लोग पूछते हैं और अख़बार वाले लिखते भी हैं जिससे मुझे बड़ी चिढ़ होती है—वह यह कि "नेहरू के बाद क्या ?" "नेहरू का वारिस कौन होगा ?" यह सवाल ही मेरे लिये और क़ौम के लिये एक चुनौती हो जाता है. यह सोचना तो बड़ी भोंडी बात है कि कोई बड़ी क़ौम किसी एक या दो आदमियों पर मुनहसिर रहे. इस सवाल का असर मुझ पर यही पड़ता है कि इस चुनौती को मन्ज़ूर करूं. मुझे यक़ीन है कि जो कुछ भी होगा अच्छा ही होगा."

पन्डित जवाहरलाल का यह ख़त पढ़कर हमें इन्तहाई ख़ुशी हुई और उन पुराने जवाहरलाल की याद हो आई जो इलाहाबाद, रायबरेली और परताबगढ़ के गांवों में सन23-24 में आज़ादी और ख़ुद-मुख़तारी का पैग़ाम लेकर घूमते थे, उन जवाहरलाल की याद हो आई जिन्होंने 1929 में पूर्न आज़ादी का बिगुल बजाया था, उन जवाहरलाल की याद हो आई जिन्होंने सन 1942 में गांधी जी की रहनुमाई पर अंग्रेज़ों को हिन्दुस्तान से चले जाने के लिये ललकारा था. यह ख़त उनकी अनोखी आन और ऊंची शान का आला नमूना है. यह उन ही की बुलन्द हस्ती है जो इस तरह सोच सकती है और इस तरह अपने दिल की बात मुल्क के सामने रख सकती है. अपने इस लाजवाब ख़त के ज़रिये उन्होंने मुल्क के आगे एक नई मिसाल पेश की है—ऐसी मिसाल जिसकी सख़्त ज़रूरत थी और ऐसी मिसाल जो उनके सिवा कोई दूसरा नहीं पेश कर सकता था.

हम अच्छी तरह जानते हैं कि हमारी इस ख़ुशी में बहुत से लोग—समझदार और असरदार लोग—शरीक न होंगे. अख़बारों में जो बयानात और मज़मून निकले हैं उनकी धुन यही है कि इस वक़्त तो जवाहरलाल जी को किसी हालत में मुल्क की प्राइम मिनिस्ट्री से अलग नहीं होना चाहिये और अपनी बात पर ज़िद नहीं करनी चाहिये. हम उनमें नहीं हैं. हम इस ख़्याल के क़ायल नहीं कि अगर जवाहरलाल जी के अलावा कोई दूसरा भाई या बहन प्राइम मिनिस्ट्री के ताज को संभाल लेगा तो मुल्क की नाव के डूबने का ख़तरा है. और न हम यही मानते हैं कि जवाहरलाल जी या उनकी जैसी कोई और शख़सियत मुल्क और दुनिया की सब में बेहतरीन ख़िदमत प्राइम मिनिस्ट्री के ओहदे पर रह कर ही कर सकती है.

आज दुनिया में कई तरह की ताक़तें काम कर रही हैं—जैसे तलवार की ताक़त जिसने आज ऐटम और हाइड्रोजन बम की शकल ले ली है, पैसे की ताक़त जिसने बड़े बड़े बैंकों और सरमायेदारों की शकल ले ली है, दिमाग़ की ताक़त जो आज एक मुल्क के आगे दूसरे को पस्त करने में चूर है और क़ानून की ताक़त जो बड़ी बड़ी आबादियों की



(iii)ایک چیز اکثر لوگ پوچھتے ہیں اور اخبار والے لکھتے بھی ہیں جس سے مجھے بڑی چڑھ ہوتی ہے—وہ یہ کہ "نہرو کے بعد کیا ؟" "نہرو کا وارث کون ہوگا ؟" یہ سوال ہی میرے لئے اور قوم کے لئے ایک چنوتی ہو جاتا ہے . یہ سوچنا تو بڑی بھونڈی بات ہے کہ کوئی بڑی قوم کسی ایک یا دو آدمیوں پر منحصر رہے . اِس سوال کا اثر مجھ پر یہی پڑتا ہے کہ اِس چنوتی کو منظور کروں . مجھے یقین ہے کہ جو کچھ بھی ہوگا اچھا ہی ہوگا ."

پنڈت جواہر لال کا یہ خط پڑھ کر ہمیں انتہائی خوشی ہوئی اور اِن پرانے جواہر لال کی یاد ہو آئی جو الہ آباد' رائے بریلی اور پرتاب گڑھ کے گاؤں میں سن 23-24 میں آزادی اور خود مختاری کا پیغام لے کر گھومتے تھے' اِن جواہر لال کی یاد ہو آئی جنھوں نے 1929 میں پورن آزادی کا بگل بجایا تھا' اِن جواہر لال کی یاد ہو آئی جنھوں نے سن 1942 میں گاندھی جی کی رہنمائی پر انگریزوں کو ہندوستان سے چلے جانے کے لئے للکارا تھا . یہ خط اِن کی انوکھی آن اور اونچی شان کا اعلیٰ نمونہ ہے . یہ اِنھیں کی بلند ہستی ہے جو اِس طرح سوچ سکتی ہے اور اِس طرح اپنے دل کی بات ملک کے سامنے رکھ سکتی ہے . اپنے اِس لاجواب خط کے ذریعہ اُنھوں نے ملک کے آگے ایک نئی مثال پیش کی ہے—ایسی مثال جس کی سخت ضرورت تھی اور ایسی مثال جو اِن کے سوا کوئی دوسرا نہیں پیش کر سکتا تھا .

ہم اچھی طرح جانتے ہیں کہ ہماری اِس خوشی میں بہت سے لوگ—سمجھدار اور اثر دار لوگ—شریک نہ ہونگے . اخباروں میں جو بیانات اور مضمون نکلے ہیں ان کی دھن یہی ہے کہ اِس وقت تو جواہر لال جی کو کسی حالت میں ملک کی پرائم منسٹری سے الگ نہیں ہونا چاہئے اور اپنی بات ضد نہیں کرنا چاہئے . ہم اُن میں نہیں ہیں . ہم اِس خیال کے قائل نہیں کہ اگر جواہر لال جی کے علاوہ کوئی دوسرا بھائی یا بہن پرائم منسٹری کے تاج کو سنبھال لےگا تو ملک کی ناؤ کو ڈوبنے کا خطرہ ہے. اور نہ ہم یہی مانتے ہیں کہ جواہر لال جی یا اِن کی جیسی کوئی اور شخصیت ملک اور دنیا کی سب میں بہترین خدمت پرائم منسٹری کے عہدہ پر رہ کر ہی کر سکتی ہے .

آج دنیا میں کئی طرح کی طاقتیں کام کر رہی ہیں—جیسے تلوار کی طاقت جس نے آج ایٹم اور ہائڈروجن بم کی شکل لے لی ہے' پیسہ کی طاقت جس نے بڑے بڑے بینکوں اور سرمایہداروں کی شکل لے لی ہے' دماغ کی طاقت جو آج ایک ملک کے آگے دوسرے کو پست کرنے میں چور ہے اور قانون کی طاقت جو بڑی بڑی آبادیوں کی

# जवाहरलाल जी और हिन्दुस्तान का भविश्य

अक्तूबर के दूसरे हफ़ते में पंडित जवाहरलाल नेहरू का एक गश्ती ख़त अख़बारों में छपा जो उन्होंने मुल्क भर की सूबों की कांग्रेस कमेटियों के सदर साहिबान के नाम भेजा है. उस महत्वपूर्न चिट्ठी में उन्होंने यह ख़्वाहिश जाहिर की है कि जनवरी में कांग्रेस का जो सालाना जलसा होने जा रहा है उसकी सदारत वह न करें और साथ ही साथ हकूमते हिन्द की प्राइम मिनिस्ट्री के काम से कुछ अरसे के लिये हट जायें. उन्होंने इतमीनान दिलाया है कि उनके इस ख़याल के पीछे बुढ़ापा या सेहत की कमज़ोरी का कोई डर काम नहीं कर रहा है. वह फ़रमाते हैं:

"मुझे महसूस होता है कि अपने इस मुल्क में मुझे अभी और बहुत से काम करने हैं और मेरा निश्चय है कि इस मक़सद के लिये मैं अपने को तन्दुरुस्त रखूंगा. न मैं काम या ज़िम्मेदारी ही से भागता हूं और न मेरा कोई इरादा जंगल में चले जाने या पहाड़ों की राह पकड़ने का है. मुझे लगता है कि मुझे कुछ चीज अन्जाम देनी है और जब तक किसी को इस तरह महसूस होता है, तब तक उसे काम करने की और डटे रहने की तमन्ना बनी रहती है. मेरे अन्दर वह ज़ोरदार तमन्ना है." आगे चलकर उनका कहना है :

"आज़ादी के बाद से पिछले सात सालों में हमने जो कुछ किया है उस पर मुझे कोई नाउम्मेदी या असंतोश भी नहीं है. बल्कि मुझे ऐसा महसूस होता है कि न सिर्फ़ मैंने जाती तौर पर बल्कि सारे मुल्क ने कामयाबी हासिल की है और आगे बढ़ा है. सच तो यह है कि अपने कामकाज में फ़र्क़ करना मैं इसी वजह से जरूरी मानता हूं क्योंकि मैं सोचता हूं कि हमारे मुल्क ने अच्छा काम किया है और उसकी तरक़्क़ी के लिये अच्छी और मज़बूत बुनियाद क़ायम हो गई है. मैं डट कर काम करना चाहता हूं."

लेकिन फिर भी वह हटना क्यों चाहते हैं ? इसकी कई वजह हैं :—

"(i) बासीपन ( Staleness ) का कुछ एहसास होता है जो मशीन की तरह काम करने वाले को लाज़मी तौर पर आ ही जाता है.

(ii) मैं कुछ फ़ुर्सत चाहता हूं ताकि कुछ पढ़ सकूं और सोच सकूं. हम लोग जो सरकारी या इस तरह के दूसरे कामों में फंसे रहते हैं उनके साथ एक बड़ी दिक़्क़त यह हो जाती है कि उन्हें पढ़ने और सोचने के लिये वक़्त नहीं मिलता और न बुनियादी मामलों पर एक दूसरे से बात करने का ही मौक़ा मिलता है.



# جواھر لال جی اور ھندستان کا بھوشیہ

اکتوبر کے دوسرے ھفتہ میں پنڈت جواھر لال نہرو کا ایک گشتی خط اخباروں میں چھپا جو اُنھوں نے ملک بھر کی صوبے کی کانگریس کمیٹیوں کے صدر صاحبان کے نام بھیجا ھے . اِس مہتوپورن چٹھی میں اُنھوں نے یہ خواھش ظاھر کی ھے کہ جنوری میں کانگریس کا جو سالانہ جلسہ ھونے جا رھا ھے اِس کی صدارت وہ نہ کریں اور ساتھ ھی ساتھ حکومت ھند کی پرائم منسٹری کے کام سے کچھ عرصہ کے لئے ھٹ جائیں . اُنھوں نے اطمینان دلایا ھے کہ ان کے اِس خیال کے پیچھے بڑھاپا یا صحت کی کمزوری کا کوئی ڈر کام نہیں کر رھا ھے . وہ فرماتے ھیں :

" مجھے محسوس ھوتا ھے کہ اپنے اِس ملک میں مجھے ابھی اور بہت سے کام کرنے ھیں اور میرا نشچے ھے کہ اِس مقصد کے لئے میں اپنے کو تندرست رکھونگا . نہ میں کام یا ذمہ داری سے ھی بھاگتا ھوں اور نہ میرا کوئی ارادہ جنگل میں چلے جانے یا پہاڑوں کی راہ پکڑنے کا ھے . مجھے لگتا ھے کہ مجھے کچھ چیز انجام دینی ھے اور جب تک کسی کو اِس طرح محسوس ھوتا ھے، تب تک اسے کام کرنے کی اور ڈٹے رھنے کی تمنا بنی رھتی ھے . میرے اندر وہ زوردار تمنا ھے ." آگے چل کر ان کا کہنا ھے :

" آزادی کے بعد سے پچھلے سات سالوں میں ھم نے جو کچھ کیا ھے اِس پر مجھے کوئی نااُمیدی یا اسنتوش بھی نہیں ھے . بلکہ مجھے ایسا محسوس ھوتا ھے کہ نہ صرف میں نے ذاتی طور پر بلکہ سارے ملک نے کامیابی حاصل کی ھے اور آگے بڑھا ھے . سچ تو یہ ھے کہ اپنے کام کاج میں فرق کرنا میں اِسی وجہ سے ضروری مانتا ھوں کیونکہ میں سوچتا ھوں کہ ھمارے ملک نے اچھا کام کیا ھے اور اِس کی ترقی کے لئے اچھی اور مضبوط بنیاد قائم ھوگئی ھے . میں ڈٹ کر کام کرنا چاھتا ھوں ."

لیکن پھر بھی وہ ھٹنا کیوں چاھتے ھیں ؟ اِسکی کئی وجہ ھیں :—

"(i) باسی پن (Staleness) کا کچھ احساس ھوتا ھے جو مشین کی طرح کام کرنے والے کو لازمی طور پر آ ھی جاتا ھے .

(ii) میں کچھ فرصت چاھتا ھوں تاکہ کچھ پڑھ سکوں اور سوچ سکوں . ھم لوگ جو سرکاری یا اِس طرح کے دوسرے کاموں میں پھنسے رھتے ھیں ان کے ساتھ ایک بڑی دقت یہ ھو جاتی ھے کہ اُنھیں پڑھنے اور سوچنے کے لئے وقت نہیں ملتا اور نہ بنیادی معاملوں پر ایک دوسرے سے بات کرنے کا ھی موقع ملتا ھے .

रही है और उसके रोकने की कोई कोशिश नहीं की जाती. और अगर रुकावटें हैं जिनकी वजह से इस तालीम के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं है तो फिर इस तालीम को नाहक़ क्यों कोसा जाता है. इस का बहुत ख़राब असर उन लोगों पर पड़ता है जो आज यह तालीम हासिल करते हैं या कराते हैं. हम यह नहीं मानते कि पंडित नेहरू ने इस तरह की बात केवल जज़बे या गुस्से में आ कर कह दी होगी, क्योंकि वह बोलने की ख़ातिर कभी नहीं बोलते हैं. मगर दुनिया में एक चीज होती है जिस का नाम है "मजबूरी" जिसकी वजह से आदमी एक बात को सही समझ कर भी नहीं कर पाता और दूसरी बात को ग़लत जानते हुए भी करता है. ऐसे के लिये हम भगवान से यही दुआ करते हैं कि इसके विचार और अमल में जो फ़ासला है उसे दूर कर और जल्द से जल्द उसके अमल को उसके विचार की राह पर ला दे.

बहुत सोचने पर ऐसा लगता है कि आज की तालीम है तो निकम्मी पर आज जो मुल्क का समाजी आर्थिक ढांचा है उसका आईना है. आज हमारे समाज में हाथ से काम करने वाले की कोई इज्ज़त नहीं, आबरू नहीं, कम काम करके, ज्यादा तनख़्वाह पाने वाले का मान है, वग़ैरा वग़ैरा. सरकारी मुहकमों को लीजिये, व्यापारी दायरों को देखिये, आम जनता में देखिये सब में यही पैमाना क़ायम है. और यही ख़ूबी इस तालीम की भी है कि इसको हासिल करके काम से नफ़रत पैदा हो जाती है, ऊंची तनख़्वाह पाने की तमन्ना होने लगती है और बिना काम किये खाने को जी चाहता है. इसलिये जब तक समाज के पैमाने नहीं बदलते और सरकार के नज़रिये में फ़रक़ नहीं आता तब तक इस तालीम को बदलना उसी तरह नामुमकिन है जैसे बबूल बोकर गुलाब पाने की उम्मीद रखना. अगर तालीम निकम्मी है तो इसका मतलब यह है कि इस तालीम को चलाने वाली सरकार निकम्मी है. होना तो यही चाहिये था कि पुराने राज के साथ पुरानी तालीम को भी रुख़सत कर देना था और नये राज के साथ नई तालीम लाना था. लेकिन मद्रास में राजा जी ने अगर कुछ तबदीली करने की कोशिश भी की तो नई सरकार ने उसे ख़तम कर के पुराना ढर्रा फिर जारी कर दिया ! नया राज, पुरानी तालीम !

इसलिये हम अपने देश के शासकों से अपील करना चाहते हैं कि अगर उन्हें सचमुच आजकल की तालीम से नफ़रत है तो उसके बदलने के लिये मुल्क के मौजूदा सियासी और आर्थिक ढांचे को बदलना चाहिये. यह ढांचा ही निकम्मा है. उसके तबदील होने पर तालीम आप से आप तबदील हो जायगी.

28. 10. '54 —सुरेशराम भाई



رہی ہے اور اس کے روکنے کی کوئی کوشش نہیں کی جاتی . اور اگر رکاوٹیں ہیں جنکی وجہ سے اِس تعلیم کے علاوہ کوئی دوسرا چارہ نہیں ہے تو پھر اس تعلیم کو ناحق کیوں کوسا جاتا ہے . اِس کا بہت خراب اثر اُن لوگوں پر پڑتا ہے جو آج یہ تعلیم حاصل کرتے ہیں یا کراتے ہیں. ہم یہ نہیں مانتے کہ پنڈت نہرو نے اِس طرح کی بات کیول جزبہ یا غصہ میں آکر کہدی ہوگی' کیونکہ وہ بولنے کی خاطر کبھی نہیں بولتے ہیں . مگر دنیا میں ایک چیز ہوتی ہے جس کا نام ہے "مجبوری" جس کی وجہ سے آدمی ایک بات کو صحیح سمجھکر بھی نہیں کرپاتا اور دوسری بات کو غلط جانتے ہوئے بھی کرتا ہے . ایسے کے لئے ہم بھگوان سے یہی دعا کرتے ہیں کہ اس کے وچار اور عمل میں جو فاصلہ ہے اسے دور کر اور جلد سے جلد اس کے عمل کو اس کے وچار کی راہ پر لا دے.

بہت سوچنے پر ایسا لگتا ہے کہ آج کی تعلیم ہے تو نکمی پر آج جو ملک کا سماجی اور آرتھک ڈھانچہ ہے اُس کا آئینہ ہے . آج ہمارے سماج میں ہاتھ سے کام کرنے والے کی کوئی عزت نہیں' آبرو نہیں' کم کام کرکے زیادہ تنخواہ پانے والے کا مان ہے' وغیرہ وغیرہ . سرکاری محکموں کو لیجئے' ویاپاری دائروں کو دیکھئے' عام جنتا میں دیکھئے' سب میں یہی پیمانہ قائم ہے . اور یہی خوبی اس تعلیم کی بھی ہے کہ اِس کو حاصل کرکے کام سے نفرت پیدا ہو جاتی ہے' اونچی تنخواہ پانے کی تمنا ہونے لگتی ہے اور بنا کام کئے کھانے کو جی چاہتا ہے . اس لئے جب تک سماج کے پیمانے نہیں بدلتے اور سرکار کے نظریہ میں فرق نہیں آتا تب تک اس تعلیم کو بدلنا اسی طرح ناممکن ہے جیسے ببول بوکر گلاب پانے کی اُمید رکھنا . اگر تعلیم نکمی ہے تو اس کا مطلب یہ ہے کہ اِس تعلیم کو چلانے والی سرکار نکمی ہے . ہونا تو یہی چاہئے تھا کہ پرانے راج کے ساتھ پرانی تعلیم کو بھی رخصت کردینا تھا اور نئے راج کے ساتھ نئی تعلیم لانا تھا . لیکن مدراس میں راجا جی نے اگر کچھ تبدیلی کرنے کی کوشش بھی کی تو نئی سرکار نے اُسے ختم کر کے پرانا ڈھرا پھر جاری کردیا ! نیا راج' پرانی تعلیم !

اس لئے ہم اپنے دیش کے شاسکوں سے اپیل کرنا چاہتے ہیں کہ اگر اُنہیں سچ مچ آجکل کی تعلیم سے نفرت ہے تو اس کے بدلنے کے لئے ملک کے موجودہ سیاسی اور آرتھک ڈھانچے کو بدلنا چاہئے . یہ ڈھانچہ ہی نکما ہے . اس کے تبدیل ہونے پر تعلیم آپ سے آپ تبدیل ہوجائیگی .

—— سریش رام بھائی 28 . 10 . '54

लिये पढ़ाई के दरजे और आम जनता के लिये पढ़कर सुनाने के दरजे चलाये जायें.

2. पंचायतों को मुल्क की पैदावार बढ़ानी चाहिये. जब तक देश की पैदावार नहीं बढ़ती और बेकारी मिटाने की योजनायें नहीं की जातीं तब तक लोगों को उत्साह नहीं आयेगा. हम सुनते हैं कि यहां की पंचायत वाले सड़कें बनाने में लगे हैं जिनमें लोगों को उत्साह नहीं आता. सड़कों का नतीजा यही निकलता है कि शहर वाले गांव वालों को जा कर लूटें.

3. पंचायत वालों को गांव की बेकारी हटानी चाहिये. जैसे स्वराज्य के लिये विदेशी माल का बाईकाट किया गया था उसी तरह गांव में स्वराज्य लाने के लिये शहर से आने वाले मशीन पर बने माल का बाईकाट करना होगा.

4. पैदावार का आधार जमीन है. इस वास्ते कुल जमीन गांव वालों की होनी चाहिये. गांव की जमीन का दोबारा बंटवारा हो और गांव में कोई भी आदमी बेज़मीन न रहे.

5. गांव की पंचायतों की ताक़त लोक शक्ति ही है. गांव वालों की मर्ज़ी के मुताबिक़ और गांव वालों की निगरानी में पंचायतें चलनी चाहियें. सरकारी मान्यता मिले या न मिले, इसकी चिंता नहीं. लोग अपनी ताक़त से काम करें. फिर सरकार की जो मदद मिलेगी सो मिलेगी.

सरकारी हाकिम या कारकुन और सार्वजनिक कार्य-कर्ता, हर एक से हमारी अर्ज़ है कि विनोबा जी के इन सुझावों पर गहराई से विचार करके अमल करें और मुल्क की ताक़त को मज़बूत बनायें.

28. 10. 54 —सुरेश रामभाई

## "एकदम निकम्मी"

हाल ही में मिरज़ापूर ज़िले में विद्यार्थियों के सामने तक़रीर करते हुए प्रधान मन्त्री पन्डित जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि यह तालीम जो आजकल दी जा रही है "एकदम निकम्मी" है. जहां तक हमें याद पड़ता है पन्डित जी ने इस तरह की राय पहली बार नहीं दी है, इसके पेशतर बीसयों दफ़ा वह यही चीज़ दूसरे शब्दों में कह चुके हैं और जहां तक हमें याद है राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने भी और उनके अलावा दूसरे ज़िम्मेदार लोगों ने भी इस तरह के ख़्याल ज़ाहिर किये हैं. सरदार पटेल भी यही कहा करते थे. मगर अक़्ल हैरान है कि जब ऊपर से लेकर नीचे तक सब ही इस तरह की बात कहते हैं तो फिर कौन ऐसी रुकावट है कि वही "एकदम निकम्मी" तालीम अभी तक चल रही है, बढ़



لئے پڑھائی کے درجے اور عام جنتا کے لئے پڑھ کر سنانے کے درجے چلائے جائیں ۔

2. پنچایتوں کو ملک کی پیداوار بڑھانی چاہئے ۔ جب تک دیش کی پیداوار نہیں بڑھتی اور بیکاری مٹانے کی یوجنائیں نہیں کی جاتیں تب تک لوگوں کو اُتساہ نہیں آئے گا ۔ ہم سنتے ہیں کہ یہاں کی پنچایت والے سڑکیں بنانے میں لگے ہیں جن میں لوگوں کو اُتساہ نہیں آتا ۔ سڑکوں کا نتیجہ یہی نکلتا ہے کہ شہر والے گاؤں والوں کو جا کر لوٹیں ۔

3. پنچایت والوں کو گاؤں کی بیکاری ہٹانی چاہئے ۔ جیسے سوراجیہ کے لئے ودیشی مال کا بائیکاٹ کیا گیا تھا اُسی طرح گاؤں میں سوراجیہ لانے کے لئے شہر سے آنے والے مشین پر بنے مال کا بائیکاٹ کرنا ہوگا ۔

4. پیداوار کا آدھار زمین ہے ۔ اِس واسطے کل زمین گاؤں والوں کی ہونی چاہئے۔ گاؤں کی زمین کا دوبارہ بٹوارہ ہو اور گاؤں میں کوئی بھی آدمی بے زمین نہ رہے ۔

5. گاؤں کی پنچایتوں کی طاقت لوک شکتی ہی ہے ۔ گاؤں والوں کی مرضی کے مطابق اور گاؤں والوں کی نگرانی میں پنچایتیں چلنی چاہئیں ۔ سرکاری مانیتا ملے یا نہ ملے' اِس کی چنتا نہیں ۔ لوگ اپنی طاقت سے کام کریں ۔ پھر سرکار کی جو مدد ملے سو ملے گی ۔

سرکاری حاکم یا کارکن اور ساروجنک کاریہ‌کرتا' ہر ایک سے ہماری عرض ہے کہ ونوبا جی کے اِن سجھاؤں پر گہرائی سے وچار کرکے عمل کریں اور ملک کی طاقت کو مضبوط بنائیں ۔

28. 10. '54 —سریش رام‌بھائی

## "ایکدم نکمی"

حال ہی میں مرزاپور ضلعے میں ودیارتھیوں کے سامنے تقریر کرتے ہوئے ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو نے کہا کہ یہ تعلیم جو آجکل دی جارہی ہے "ایکدم نکمی" ہے ۔ جہاں تک ہمیں یاد پڑتا ہے پنڈت جی نے اس طرح کی رائے پہلی بار نہیں دی ہے' اِس کے پیشتر بیسیوں دفعہ یہی چیز دوسرے شبدوں میں کہہ چکے ہیں اور جہاں تک ہمیں یاد ہے راشٹرپتی بابو راجیندر پرشاد نے بھی اور ان کے علاوہ دوسرے ذمہ‌دار لوگوں نے بھی اِس طرح کے خیال ظاہر کئے ہیں ۔ سردار پٹیل بھی یہی کہا کرتے تھے ۔ مگر ہماری عقل حیران ہے کہ جب اُوپر سے لیکر نیچے تک سب ہی اس طرح کی بات کہتے ہیں تو پھر کون ایسی رکاوٹ ہے کہ وہی "ایکدم نکمی" تعلیم ابھی تک چل رہی ہے' بڑھ

के लिये पुलिस की इम्दाद लेने की ताक़त मिल जायेगी. नतीजा यह होने वाला है कि आज जो गांव के अन्दर भाई-चारा या प्रेम और ईमान बाक़ी है वह भी मिट जाएगा और आज जिस तरह लखनऊ या दिल्ली में नेताओं में रस्साकशी चलती है उसी तरह गांव गांव में भी चलने लगेगी, बल्कि कहीं ज्यादा बदतर और शर्मनाक सूरत में. आखिर इसकी वजह क्या है ? सरकारी या कांग्रेसी नज़रिये में कहां चूक है ? जैसा हमने अभी कहा, इनकी निगाह में पंचायत हाकिम है, न कि सेवक. दूसरे शब्दों में, आप पंचायतों को सियासी व क़ानूनी आज़ादी जितनी चाहे दे दीजिये लेकिन अगर उसी दरजे तक आर्थिक आज़ादी नहीं देते हैं तो उनकी वही हालत होगी जैसे कि बिना बुनियाद वाले मकान की होती है. वह ढह जाता है और उसमें जो रहता है उसको भी दबा कर ख़तम कर देता है.

इसलिये हमारी साफ़ राय है कि जब तक गांव गांव को आर्थिक आज़ादी नहीं दी जाती तब तक यह सारी कोशिशें बेकार ही साबित होने वाली हैं. आर्थिक आज़ादी से हमारा मतलब यह है कि गांव की बुनियादी जरूरत की चीज़ें, जैसे कपड़ा, गुड़, शक्कर, तेल, जूता, दवा दारू, तालीम वग़ैरा में हर गांव अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये और गांव सभा को यह आज़ादी हासिल हो कि अगर इस तरह का माल बाहर से आए तो उसको आने से रोक दे. अगर गांव में माल बाहर से आता चला जाता है तो गांव में बेरोज़गारी बनी रहेगी, चोरी डकैती चलेगी और आपसी फ़र्क़ बढ़ेंगे. इसके अलावा गांव की तालीम पर भी कोई ध्यान नहीं दिया जाता. तालीम से हमारी मन्शा किताबी पढ़ाई से नहीं है बल्कि सदाचार और लोक मरयादा की तालीम से है. पुराने ज़माने में संतों और साधुओं ने जो घूम घूम कर ज्ञान फैलाया और जिसे गांव वालों ने कान के ज़रिये हासिल किया उससे जो उनके समझ का माद्दा बढ़ा है उसका मुक़ाबला शहर वाले अभी भी नहीं कर सकते हैं. लेकिन इधर दो सौ साल से वह तालीम बंद सी हो गई है और कोई नया ज्ञान वहां नहीं पहुंच रहा है. न पुराना ही ताज़ा कराया जा रहा है. इस तरह नैतिक और आर्थिक दोनों बाजुओं की तरफ़ जब तक हमारी सरकारें या पंचायतें तवज्जह नहीं देंगी तब तक वह गांव की बेहतरी उड़द के ऊपर सफ़ेदी बराबर भी नहीं कर सकतीं.

हम आचार्या विनोबा जी के उन सुझावों को यहां देते हैं जो उन्होंने चम्पारन ज़िला के सगोली मुक़ाम पर पिछले जून में पंचायत के कारकुनों के आगे रक्खे थे. इनका कहना है :—

1. जगह जगह अभ्यास मंडल यानी पढ़ाई घर होने चाहियें जिसमें इस ज़माने के नए विचार भी बताए जाएं और सर्वोदय व गांधी साहित्य और कुछ धार्मिक किताबों की तालीम भी दी जाये. ख़ासकर छोटी उमर वालों के



کے لئے پولیس کی امداد لینے کی طاقت مل جائے گی . نتیجہ یہ ہونے والا ہے کہ آج جو گاؤں کے اندر بھائی چارا یا پریم اور ایمان باقی ہے وہ بھی مٹ جائے گا اور آج جس طرح لکھنؤ یا دلی میں نیتاؤں میں رساکشی چلتی ہے اسی طرح گاؤں گاؤں میں بھی چلنے لگے گی، بلکہ کہیں زیادہ بدتر اور شرمناک صورت میں . آخر اس کی وجہ کیا ہے ؟ سرکاری یا کانگریسی نظریہ میں کہاں چوک ہے ؟ جیسا ہم نے ابھی کہا، ان کی نگاہ میں پنچایت حاکم ہے نہ کہ سیوک . دوسرے شبدوں میں، آپ پنچایتوں کو سیاسی و قانونی آزادی جتنی چاہے دے دیجئے، لیکن اگر اسی درجے تک آرتھک آزادی نہیں دیتے ہیں تو ان کی وہی حالت ہوگی جیسے کہ بنا بنیاد والے مکان کی ہوتی ہے . وہ ڈہ جاتا ہے اور اس میں جو رہتا ہے اس کو بھی دبا کر ختم کر دیتا ہے .

اس لئے ہماری صاف رائے ہے کہ جب تک گاؤں گاؤں کو آرتھک آزادی نہیں دی جاتی تب تک یہ ساری کوششیں بیکار ہی ثابت ہونے والی ہیں . آرتھک آزادی سے ہمارا مطلب یہ ہے کہ گاؤں کی بنیادی ضرورت کی چیزیں، جیسے کپڑا، گڑ، شکر، تیل، جوتا، دوا دارو، تعلیم وغیرہ میں ہر گاؤں اپنے پیروں پر کھڑا ہونا چاہئے اور گاؤں سبھا کو یہ آزادی حاصل ہو کہ اگر اس طرح کا مال باہر سے آئے تو اس کو آنے سے روک دے . اگر گاؤں میں مال باہر سے آتا چلا جاتا ہے تو گاؤں میں بےروزگاری بنی رہے گی، چوری ڈکیتی چلیں گی اور آپسی فرق بڑھیں گے . اس کے علاوہ گاؤں کی تعلیم پر بھی کوئی دھیان نہیں دیا جاتا . تعلیم سے ہماری منشا کتابی پڑھائی سے نہیں ہے بلکہ سداچار اور لوک مریادا کی تعلیم سے ہے . پرانے زمانے میں سنتوں اور سادھوؤں نے جو گھوم گھوم کر گیان پھیلایا اور جسے گاؤں والوں نے کان کے ذریعہ حاصل کیا اس سے جو ان کے سمجھ کا مادہ بڑھا ہے اس کا مقابلہ شہر والے ابھی بھی نہیں کر سکتے ہیں . لیکن ادھر دو سو سال سے وہ تعلیم بند سی ہوگئی ہے اور کوئی نیا گیان وہاں نہیں پہونچ رہا ہے نہ پرانا ہی تازہ کرایا جا رہا ہے . اس طرح نیتک اور آرتھک دونوں بازؤں کی طرف جب تک ہماری سرکاریں یا پنچایتیں توجہ نہیں دیں گی تب تک وہ گاؤں کی بہتری اڑد کے اوپر سفیدی برابر بھی نہیں کر سکتیں .

ہم آچاریہ ونوبا جی کے ان سجھاؤں کو یہاں دیتے ہیں جو انہوں نے چمپارن ضلع کے سگولی مقام پر پچھلے جون میں پنچایت کے کارکنوں کے آگے رکھے تھے . ان کا کہنا ہے :—

1. جگہ جگہ ابھیاس منڈل یعنی پڑھائی گھر ہونا چاہئیں جس میں اس زمانہ کے نئے وچار بھی بتائے جائیں اور سرودے و گاندھی ساہتیہ اور کچھ دھارمک کتابوں کی تعلیم بھی دی جائے . خاص کر چھوٹی عمر والوں کے

गांव हैं. यू. पी. पंचायत राज एकट 1947 के मुताबिक़ आज यू० पी० में 36,139 ग्राम पंचायतें और 8,543 अदालत पंचायत हैं. गांव के इन्तज़ाम में गांव सभा के अधिकारों में से कुछ ख़ास ख़ास यह हैं :—

1. सड़कों की रखवाली और मरम्मत, रोशनी, दवा-दारू, तालीम, सफ़ाई और मेलों का इन्तज़ाम.

2. पेड़ लगाना, गांव की हिफ़ाज़त के लिये चौकीदार या दूसरे लोगों का बन्दोबस्त करना, नये पुल और पुलियां बनवाना.

3. अपने काम के लिये कोई भी ज़मीन हासिल कर लेना.

4. लगान व दूसरे सरकारी टैक्स वसूल करना, गांव के लोगों पर नये तरह से नये टैक्स लगाना.

5. प्रदेश की सरकार से ज़रूरत पड़ने पर रुपया लेना और उसके साथ अपने काम के बढ़ाने के सिलसिले में कोई मुआहिदा करना या ठेका लेना.

इस तरह, कहीं ज़्यादा, कहीं कम, दूसरी रियासतों में भी क़दम उठाये गये हैं. लेकिन जैसा हमारे प्रेमी पाठक जानते हैं इन पंचायतों या गांव सभाओं की वजह से न तो गांव के झगड़े कम हुये, न उनमें अमन हुआ न ख़ुशहाली आई. उलटे गांव के रोज़गार और भी ठंडे पड़ गये, चोरी वग़ैरा बुरे काम भी ज़्यादा होने लगे और सबसे दर्दनाक बात जो हुई वह यह कि देहात के लोगों के दिलों में आपस में दरारें और ज़्यादा पैदा हो गईं—

मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की

लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि पंचायत नाम की वह अज़मत है कि रह रह कर हर सरकार उसकी दुहाई देती है और उसके ऊपर अपने को क़ुर्बान करने की हामी भरती है. इस सिलसिले में हिन्दुस्तान के कुल प्रदेशों के उन मिनिस्टरों की जिनका पंचायत से वास्ता है, एक कान्फ्रेंस 25, 26, 27 जून को शिमला में हुई. इधर कांग्रेस वरकिंग कमेटी ने भी एक कमेटी पंचायतों की मौजूदा हालत की जांच करने और आगे के लिये सुझाव देने के लिये बनाई. इन तमाम कान्फ्रेन्सों और कमेटियों में हसबे मामूल बातचीत हुई. कमेटी की रिपोर्ट भी निकल चुकी है. लेकिन इन सब में एक ही जज़बा काम करता दिखता है या कहना चाहिये एक ही चीज़ पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है. वह यह कि पंचायत किस तरह से गांव की बेहतर से बेहतर हाकिम बने यानी गांव को दबाकर अपने क़बज़े में रखे. लेकिन दूसरे पहलू पर कि वह गांव के लोगों की सच्ची से सच्ची ख़िदमतगार किस तरह बने, कोई ध्यान नहीं दिया जाता. सूरत यह नज़र आती है कि जल्द ही हमारे देहात की पंचायतों या गांव सभाओं को बन्दूक़ व हथियार रखने की एक तरफ़ से और ज़्यादा से ज़्यादा टैक्स लगाने की और उसे वसूल करने



گاؤں ہیں۔ یو - پی پنچایت راج ایکٹ 1947 کے مطابق آج یو۔ پی۔ میں 36,139 گرام پنچایتیں اور 8,543 عدالت پنچایت ہیں۔ گاؤں کے انتظام میں گاؤں سبھا کے ادھیکاروں میں سے کچھ خاص خاص یہ ہیں :—

1. سڑکوں کی رکھوالی اور مرمت، روشنی، دوا دارو، تعلیم، صفائی اور میلوں کا انتظام۔

2. پیڑ لگانا، گاؤں کی حفاظت کے لئے چوکیدار یا دوسرے لوگوں کا بندوبست کرنا، نئے پل اور پلیاں بنوانا۔

3. اپنے کام کے لئے کوئی بھی زمین حاصل کرلینا۔

4. لگان و دوسرے سرکاری ٹیکس وصول کرنا، گاؤں کے لوگوں پر نئے طرح سے نئے ٹیکس لگانا۔

5. پردیش کی سرکار سے ضرورت پڑنے پر روپیہ لینا اور اس کے ساتھ اپنے کام کے بڑھانے کے سلسلہ میں کوئی معاہدہ کرنا یا ٹھیکا لینا۔

اس طرح، کہیں زیادہ، کہیں کم، دوسری ریاستوں میں بھی قدم اٹھائے گئے ہیں۔ لیکن جیسا ہمارے پریمی پاٹھک جانتے ہیں ان پنچائتوں یا گاؤں سبھاؤں کی وجہ سے نہ تو گاؤں کے جھگڑے کم ہوئے، نہ ان میں امن ہوا اور نہ خوشحالی آئی۔ الٹے گاؤں کے روزگار اور بھی ٹھنڈے پڑ گئے، چوری وغیرہ برے کام بھی زیادہ ہونے لگے اور سب سے دردناک بات جو ہوئی وہ یہ کہ دیہات کے لوگوں کے دلوں میں آپس میں دراریں اور زیادہ پیدا ہوگئیں—

مرض بڑھتا گیا جوں جوں دوا کی

لیکن اس سے انکار نہیں کیا جا سکتا کہ پنچایت نام کی وہ عظمت ہے کہ رہ رہ کر ہر سرکار اس کی دہائی دیتی ہے اور اس کے اوپر اپنے کو قربان کرنے کی حامی بھرتی ہے۔ اس سلسلہ میں ہندستان کے کل پردیشوں کے ان منسٹروں کی جن کا پنچایت سے واسطہ ہے، ایک کانفرنس 25, 26, 27 جون کو شملہ میں ہوئی۔ ادھر کانگریس ورکنگ کمیٹی نے بھی ایک کمیٹی پنچایتوں کی موجودہ حالت کی جانچ کرنے اور آگے کے لئے سجھاؤ دینے کے لئے بنائی۔ ان تمام کانفرنسوں اور کمیٹیوں میں حسب معمول بات چیت ہوئیں۔ کمیٹی کی رپورٹ بھی نکل چکی ہے۔ لیکن ان سب میں ایک ہی جذبہ کام کرتا دکھتا ہے یا کہنا چاہئے ایک ہی چیز پر زیادہ زور دیا گیا ہے۔ وہ یہ کہ پنچایت کسی طرح سے گاؤں کی بہتر سے بہتر حاکم بنے یعنی گاؤں کو دبا کر اپنے قبضہ میں رکھے۔ لیکن دوسرے پہلو پر کہ وہ گاؤں کے لوگوں کی سچی سے سچی خدمتگار کس طرح بنے، کوئی دھیان نہیں دیا جاتا۔ صورت یہ نظر آتی ہے کہ جلد ہی ہمارے دیہات کی پنچایتیں یا گاؤں سبھاؤں کو بندوق و ہتھیار رکھنے کی ایک طرف سے اور زیادہ سے زیادہ ٹیکس لگانے کی اور اسے وصول کرنے

रास्ता है. पर मैनदे फ़्रान्स मालूम होता है महात्मा गांधी की तरह अपने देश को बाहर के और अन्दर के दोनों तरह के पापों से छुड़ाना चाहते हैं. इसमें सन्देह नहीं मैनदे फ़्रांस इस समय की दुनिया के बड़े से बड़े आदमियों में से हैं.

यह सच है कि फ़्रान्स अभी तक साम्राजशाही के पाप से मुक्त नहीं हुआ है. इस नोट के लिखे जाने के समय तक फ़्रान्स की तरफ़ से अफ़रीक़ा के देश भक्तों पर जुल्म हो रहे हैं. फिर भी हम फ़्रान्स को श्री मैनदे फ़्रांस के सामने आने पर दिल से बधाई देते हैं और उनकी कोशिशों की कामयाबी के लिये दुआ करते हैं.

11. 11. '54 —सुन्दरलाल

## पंचायतों की आज़ादी

एक जमाना था जब हमारे पुरखे कहा करते थे कि "कोई नृप होय हमें क्या हानी." इसका मतलब यह था कि राजा कोई भी क्यों न हो, जनता का अपना काम अपने ढंग से चलता था. हर गांव काफ़ी हद तक ख़ुदमुख़्तार था और बाहर वाले उसकी आज़ादी में दख़ल नहीं डाल पाते थे. उस जमाने की ख़ास बात यह थी कि गांव गांव न केवल खेती बल्कि दस्तकारियां भी चलती थीं, गांव की ज़रूरत का माल—जैसे कपड़ा, तेल, दवा दारू वग़ैरा—गांव में ही तैयार हो जाता था. दूसरी ख़ास बात यह थी कि गांव के लोगों के झगड़े गांव के अन्दर ही मिल बैठकर तय हो जाते थे, रात को गांव की पंचायत लगती थी और एक मत से जो उसका फ़ैसला होता था वह सब को मंजूर होता था. लेकिन धीरे धीरे पैसे का चलन बढ़ा, गांव में बाहर का माल आना जाना शुरू हुआ और गांव की ख़ुदमुख़्तारी ख़तम होने लगी. अंग्रेज़ों के जमाने में गांव की इन दोनों ख़ासियतों को सख़्त चोट पहुंची और हमारे गांव तबाह हो गये. उनका धन्दा ख़तम हो गया, दस्तकारी मानो मिट ही गई और पंचायतों की भी वह शान न रही. गांव वालों के झगड़े शहर की अदालतों में आने लगे और पंच परमेश्वर नाम भर के लिये रह गये. जिन दिनों हम आज़ादी के लिये अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ते थे उन दिनों गांव गांव जाकर कहते थे कि आज़ादी हासिल होने पर गांव की सनअत बढ़ाई जायेगी और यहां की पंचायतों को केवल चलाया ही नहीं जायेगा उन्हें पूरी आज़ादी भी दी जायगी ताकि हमारे गांव अपनी तरक़्क़ी और अपनी बेहतरी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ कर सकें.

अंग्रेज़ों के जाने के बाद देहली में और सूबों में, सब जगह कांग्रेस की अपनी हुकूमत क़ायम हुई तो उसने पंचायत का सवाल भी हाथ में उठाया. हम यहां उत्तर प्रदेश की मिसाल सामने रखेंगे. उत्तर प्रदेश में एक लाख से कुछ ऊपर (1,01,500)



راستہ ھے . پر میندے فرانس معلوم ھوتا ھے مہاتما گاندھی کی طرح اپنے دیش کو باھر کے اور اندر کے دونوں طرح کے پاپوں سے چھڑانا چاھتے ھیں . اِس میں سندیہہ نہیں میندے فرانس اِس سمے کی دنیا کے بڑے سے بڑے آدمیوں میں سے ھیں .

یہ سچ ھے کہ فرانس ابھی تک سامراج‌شاھی کے پاپ سے مکت نہیں ھوا ھے . اِس نوٹ کے لکھے جانے کے سمے تک فرانس کی طرف سے افریقہ کے دیش بھگتوں پر ظلم ھو رھے ھیں . پھر بھی ھم فرانس کو شری میندے فرانس کے سامنے آنے پر دل سے بدھائی دیتے ھیں اور اُن کی کوششوں کی کامیابی کے لئے دعا کرتے ھیں .

—سندر لال 11. 11. '54

## پنچایتوں کی آزادی

ایک زمانہ تھا جب ھمارے پرکھے لوگ کہا کرتے تھے کہ ''کوئی نرپ ھوئے ھمیں کیا ھانی.'' اِس کا مطلب یہ تھا کہ راجا کوئی بھی کیوں نہ ھو' جنتا کا اپنا کام اپنے ڈھنگ سے چلتا تھا . ھر گاؤں کافی حد تک خود مختار تھا اور باھر والے اس کی آزادی میں دخل نہیں ڈال پاتے تھے. اس زمانہ کی خاص بات یہ تھی کہ گاؤں گاؤں نہ کیول کھیتی بلکہ دستکاریاں بھی چلتی تھیں' گاؤں کی ضرورت کا مال—جیسے کپڑا' تیل' دوا دارو وغیرہ گاؤں میں ھی تیار ھو جاتا تھا. دوسری خاص بات یہ تھی کہ گاؤں کے لوگوں کے جھگڑے گاؤں کے اندر ھی مل بیٹھ کر طے ھوجاتے تھے' رات کو گاؤں کی پنچایت لگتی تھی اور ایک مت سے جو اس کا فیصلہ ھوتا تھا وہ سب کو منظور ھوتا تھا . لیکن دھیرے دھیرے پیسے کا چلن بڑھا' گاؤں میں باھر کا مال آنا جانا شروع ھوا اور گاؤں کی خود مختاری ختم ھونے لگی . انگریزوں کے زمانہ میں گاؤں کی اِن دونوں خاصیتوں کو سخت چوٹ پہونچی اور ھمارے گاؤں تباہ ھوگئے . اُن کا دھندھا ختم ھوگیا' دستکاری مانو مٹ ھی گئی اور پنچایتوں کی بھی وہ شان نہ رھی . گاؤں والوں کے جھگڑے شہر کی عدالتوں میں آنے لگے اور پنچ پرمیشور نام بھر کے لئے رہ گئے . جن دنوں ھم آزادی کے لئے انگریزوں کے خلاف لڑتے تھے اُن دنوں گاؤں گاؤں جاکر کہتے تھے کہ آزادی حاصل ھونے پر گاؤں کی صنعت بڑھائی جائیگی اور یہاں کی پنچایتوں کو کیول چلایا ھی نہیں جائیگا' انہیں پوری آزادی بھی دی جائیگی تاکہ ھمارے گاؤں اپنی ترقی اور اپنی بہتری اپنی مرضی کے مطابق کرسکیں .

انگریزوں کے جانے کے بعد جب دھلی میں اور صوبوں میں' سب جگہ کانگریس کی اپنی حکومت قائم ھوئی تو اُس نے پنچایت کا سوال بھی ھاتھ میں اُٹھایا. ھم یہاں اُترپردیش کی مثال سامنے رکھینگے . اُترپردیش میں ایک لاکھ سے کچھ اُوپر (1,01,500)

गए थे कि पांच दिन के अन्दर यानी अमुक तारीख़ के बारह बजे रात तक या इस सवाल का फ़ैसला कर दूंगा या अपने ओहदे से इस्तीफ़ा दे दूंगा. दुनिया की कुछ बड़ी बड़ी राज-शक्तियों ने, जिनका असली मामले से कोई सम्बन्ध तक नहीं था, बड़ी बड़ी रुकावटें डालीं. दुनिया हैरान थी कि पांच दिन में क्या हो सकेगा. पर मैनदे फ्रान्स ने समय के अन्दर फ़ैसला करा कर ही छोड़ा और फ़ैसला भी वह जो हिन्द चीन की जनता के हक़ में और दुनिया की शान्ति के हक़ में था. बात पुरानी हो चुकी. पर हम यहां इसे इसलिये दुहरा रहे हैं कि किसी भी साम्राजवादी देश का, और फ्रान्स अभी तक साम्राजवादी देशों में गिना जाता है और है, इस तरह पक्के इरादे के साथ अपने अधीन देशों को आज़ाद होने में मदद देना कोई मामूली बात नहीं है. इस नेक काम का सेहरा सब से ज्यादा मैनदे फ्रान्स ही के सर है.

हमारे देश के अन्दर फ्रान्स के जो पुराने क़बजे चले आ रहे थे उनका इस शान्ति और सुन्दरता के साथ आज़ाद किया जाना और भारत में मिलाया जाना भी उन नेक कामों में से है जिनका काफ़ी यश मैनदे फ्रान्स को मिलना चाहिये.

हाल में अख़बारों में एक और ख़बर छपी है जो ऊपर की दोनों बातों से किसी तरह कम महत्व की नहीं है. योरप के देशों में शराब का आम और खुला चलन है. उन सब देशों में इने गिने शराब न पीने वाले भी हैं, पर गिनती की निगाह से दाल में नमक जितने भी नहीं. मैन्दे फ्रान्स ने पहले ख़ुद शराब की जगह दूध पीना शुरू किया. उसके बाद उन्होंने अपने देश के अन्दर शराब पर रोक लगाने का बीड़ा उठाया.

कहते हैं पिछले जंग के बाद से शराब का व्योहार फ्रांस में बहुत बढ़ गया है. उस छोटे से देश के अन्दर तीस लाख से ऊपर शराब की भट्ठियां हैं. कहते हैं पिछले साल वहां पन्द्रह हज़ार आदमी जिगर की ऐसी बीमारियों से मरे जो अधिक शराब पीने से होती हैं. सड़कों की दुर्घटनाओं में जितने आदमी उस साल मरे उन में साठ फ़ीसदी शराब के नशे में थे. सन 1900 में जितनी शराब फ्रान्स में बनी थी उससे पिछले साल पन्द्रह गुना ज्यादा तैयार हुई. मैनदे फ्रान्स की तजवीज़ है कि शराब की भट्ठियों की तादाद बहुत कम कर दी जावे, शराब की तैयारी और बिकरी पर टैक्स बढ़ा दिया जावे, शराब के भबकों पर मीटर लगा दिये जावें, शराब की दूकानें कम कर दी जावें, हफ़्ते के कुछ दिन ऐसे तय कर दिये जावें जब देश में कोई शराब न पी सके, शराब पी कर फिरने वालों को कड़ी सज़ाएं दी जावें, वग़ैरह वग़ैरह.

देश भर में मैनदे फ्रान्स की इन तजवीज़ों का ज़बरदस्त विरोध शुरू हो गया है. आज तक योरप के शायद ही किसी शासक को इस तरह की बात सूझी हो. इसकी हिम्मत कर बैठना और भी बड़ी बात है. सुधार का रास्ता बहुत कठिन



گئے تھے کہ پانچ دن کے اندر یعنی امک تاریخ کے بارہ بجے رات تک یا اِس سوال کا فیصلہ کردونگا یا اپنے عہدے سے اِستعفیٰ دے دونگا. دنیا کی کچھ بڑی بڑی راج شکتیوں نے، جن کا اصلی معاملے سے کوئی سمبندھ تک نہیں تھا، بڑی بڑی رکاوٹیں ڈالیں. دنیا حیران تھی کہ پانچ دن میں کیا ہوسکے گا. پر مینڈے فرانس نے سمے کے اندر فیصلہ کرا کر ہی چھوڑا اور فیصلہ بھی وہ جو ہند چین کی جنتا کے حق میں اور دنیا کی شانتی کے حق میں تھا. بات پرانی ہوچکی. پر ہم یہاں اِسے اِس لئے دہرا رہے ہیں کہ کسی بھی سامراج وادی دیش کا، اور فرانس ابھی تک سامراج وادی دیشوں میں گنا جاتا ہے اور ہے، اِس طرح پکے ارادے کے ساتھ اپنے آدھین دیشوں کو آزاد ہونے میں مدد دینا کوئی معمولی بات نہیں ہے. اِس نیک کام کا سہرا سب سے زیادہ مینڈے فرانس ہی کے سر ہے.

ہمارے دیش کے اندر فرانس کے جو پرانے قبضے چلے آرہے تھے اُن کا اِس شانتی اور سندرتا کے ساتھ آزاد کیا جانا اور بھارت میں ملایا جانا بھی اُن نیک کاموں میں سے ہے جن کا کافی یش مینڈے فرانس کو ملنا چاہئے.

حال میں اخباروں میں ایک اور خبر چھپی ہے جو اوپر کی دونوں باتوں سے کسی طرح کم مہتو کی نہیں ہے. یورپ کے دیشوں میں شراب کا عام اور کھلا چلن ہے. اُن سب دیشوں میں اِنے گنے شراب نہ پینے والے بھی ہیں، پر گنتی کی نگاہ سے دال میں نمک جتنے بھی نہیں. مینڈے فرانس نے پہلے خود شراب کی جگہ دودھ پینا شروع کیا. اُس کے بعد اُنھوں نے اپنے دیش کے اندر شراب پر روک لگانے کا بیڑا اُٹھایا.

کہتے ہیں پچھلے جنگ کے بعد سے شراب کا بیوہار فرانس میں بہت بڑھ گیا ہے. اُس چھوٹے سے دیش کے اندر تیس لاکھ سے اوپر شراب کی بھٹیاں ہیں. کہتے ہیں پچھلے سال وہاں پندرہ ہزار آدمی جگر کی ایسی بیماریوں سے مرے جو ادھک شراب پینے سے ہوتی ہیں. سڑکوں کی درگھٹناؤں میں جتنے آدمی اُس سال مرے اُن میں ساٹھ فی صدی شراب کے نشے میں تھے. سن 1900 میں جتنی شراب فرانس میں بنی تھی اُس سے پچھلے سال پندرہ گنا زیادہ تیار ہوئی. مینڈے فرانس کی تجویز ہے کہ شراب کی بھٹیوں کی تعداد بہت کم کر دی جاوے، شراب کی تیاری اور بکری پر ٹیکس بڑھا دیا جاوے، شراب کی بھبکوں پر میٹر لگا دئے جاویں، شراب کی دوکانیں کم کر دی جاویں، ہفتے کے کچھ دن ایسے طے کر دئے جاویں جب دیش میں کوئی شراب نہ پی سکے، شراب پی کر پھرنے والوں کو کڑی سزائیں دی جاویں، وغیرہ وغیرہ.

دیش بھر میں مینڈے فرانس کی اِن تجویزوں کا زبردست ورودھ شروع ہوگیا ہے. آج تک یورپ کے شاید ہی کسی شاسک کو اِس طرح کی بات سوجھی ہو. اِس کی ہمت کر بیٹھنا اور بھی بڑی بات ہے. سدھار کا راستہ بہت کٹھن

किया जाता है. हाल में रूस के एक बड़े साइन्टिस्ट ने कहा है कि यदि योजनाओं के साथ दुनिया का ठीक ठीक प्रबन्ध किया जावे तो छै: अरब से ऊपर इन्सान इस धरती पर अच्छी तरह और आराम से रह सकते हैं. इस समय धरती की कुल आबादी सवा दो अरब के लगभग है. बुराई अधिक बच्चे पैदा होने में नहीं, बुराई हमारी उन 'योजनाओं' में है जिन पर हमें बड़ा नाज़ है, बुराई हमारी आर्थिक व्यवस्था में है.

हमारा हरगिज़ यह मतलब नहीं कि हर आदमी अधिक से अधिक बच्चे पैदा करने में लग जावे. इस मामले में मर्द या औरत जो भी जितना अपने को रोक सके हम उसकी उतनी ही तारीफ़ करेंगे. पर यह रोक थाम अपने अन्दर की होनी चाहिये, नैतिक ( इख़लाक़ी ) होनी चाहिये, दवाओं, शीशियों और खुली काम तृप्ति की नहीं. इस दूसरी तरह की रोक थाम को हम दीनी निगाह से पाप और दुनिया की निगाह से जुर्म मानते हैं. महात्मा गांधी ने बच्चे पैदा होने पर दवाओं के ज़रिये इस तरह की रोक थाम को पाप बताते हुए अपने एक लेख में इसे "मारल बैङ्करप्टसी" यानी "इख़लाक़ी दिवालियापन" या "सदाचार का दिवालियापन" कहा था. राजकुमारी अमृत कौर बरसों महात्मा गांधी के साथ रह चुकी हैं. अब भी हमारे दूसरे शासकों की तरह वह महात्मा गांधी के नाम की दुहाई देती रहती हैं. अमरीका में भी उन्होंने महात्मा गांधी के और अपने सम्बन्ध की चरचा की है. हम इससे अधिक क्या कहें. यदि मिस्टर मुहम्मद अली की बात उस तरफ़ के राजकाजी दिवालियेपन का सबूत है तो राजकुमारी अमृत कौर की बात इस ओर के नैतिक दिवालियापन को साबित करती है. भगवान हम दोनों को और दोनों जगह की आम जनता को इन दोनों तरह के दिवालियेपन से बचावे.

5. 11. '54 —सुन्दरलाल

## एक नेक फ्रान्सीसी नेता

आजकल के फ्रान्स के बड़े वज़ीर मौंशियर मैनदे फ्रान्स इस समय दुनिया के नेक से नेक और बड़े से बड़े आदमियों में से हैं. उन्हें अपने देश के शासन की बाग डोर संभाले अभी छै महीने भी नहीं हुए. इस थोड़े से समय में उन्होंने अपनी नेकी और हिम्मत दोनों से दुनिया को चकित कर दिया है और अपने समय की राजनीति पर भी गहरा असर डाला है. हिन्दचीन में फ्रान्स ही की हुकूमत थी और फ्रान्स की हुकूमत के ख़िलाफ़ ही वहां के देश भक्तों ने लड़ाई लड़ी थी. फिर भी सारी दुनिया आज इस बात को जानती है कि जनेवा में हिन्दचीन के मामले पर जो अन्तर राष्ट्रीय कानफ़्रेन्स हुई थी उसमें मैनदे फ्रान्स यह क़सम खाकर



یا جاتا ھے. حال میں روس کے ایک بڑے سائنٹسٹ نے کہا ھے کہ یدی یوجناؤں کے ساتھ دنیا کا ٹھیک ٹھیک پربندھ کیا جاوے تو چھ ارب سے اوپر انسان اِس دھرتی پر اچھی طرح اور آرام سے رہ سکتے ھیں . اِس سمے دھرتی کی کل آبادی سوا دو ارب کے لگ بھگ ھے. برائی ادھک بچے پیدا کرنے میں نہیں' برائی ہماری ان 'یوجناؤں' میں ھے جن پر ھمیں بڑا ناز ھے' برائی ھماری آرتھک ویوستھا میں ھے .

ھمارا ھرگز یہ مطلب نہیں کہ ھر آدمی ادھک سے ادھک بچے پیدا کرنے میں لگ جاوے . اِس معاملے میں مرد یا عورت جو بھی جتنا اپنے کو روک سکے ھم اُس کی اتنی ھی تعریف کرینگے . پر یہ روک تھام اپنے اندر کی ھونی چاھئے' نیتک (اخلاقی) ھونی چاھئے' دواؤں' شیشیوں اور کھلی کام ترپتی کی نہیں. اُس دوسری طرح کی روک تھام کو ھم دینی نگاہ سے پاپ اور دنیا کی نگاہ میں جرم مانتے ھیں. مہاتما گاندھی نے بچے پیدا ھونے پر دواؤں کے ذریعہ اِس طرح کی روک تھام کو پاپ بتاتے ھوئے اپنے ایک لیکھ میں اِسے "مارل بینک رپٹسی" یعنی "اخلاقی دیوالیہ پن" یا "سداچار کا دیوالیہ پن" کہا تھا. راج کماری امرت کور برسوں مہاتما گاندھی کے ساتھ رہ چکی ھیں . اب بھی ھمارے دوسرے شاسکوں کی طرح وہ مہاتما گاندھی کے نام کی دھائی دیتی رھتی ھیں. امریکہ میں بھی اُنھوں نے مہاتما گاندھی کے اور اپنے سمبندھ کی چرچا کی ھے. ھم اِس سے ادھک کیا کہیں. یدی مسٹر محمد علی کی بات اُس طرف کے راج کاجی دیوالیہ پن کا ثبوت ھے تو راج کماری امرت کور کی بات اِس اور کے نیتک دیوالیہ پن کو ثابت کرتی ھے . بھگوان ھم دونوں کو اور دونوں جگہ کی عام جنتا کو اِن دونوں طرح کے دیوالیہ پن سے بچاوے .

5 . 11 . '54 — سندر لال

## ایک نیک فرانسیسی نیتا

آجکل کے فرانس کے بڑے وزیر مونشیر مینڈے فرانس اِس سمے دنیا کے نیک سے نیک اور بڑے سے بڑے آدمیوں میں سے ھیں . انہیں اپنے دیش کے شاسن کی باگ ڈور سنبھالے ابھی چھ مہینے بھی نہیں ھوئے . اِس تھوڑے سے سمے میں اُنھوں نے اپنی نیکی اور ہمت دونوں سے دنیا کو چکت کر دیا ھے اور اپنے سمے کی راجنیتی پر بھی گہرا اثر ڈالا ھے . ھند چین میں فرانس ھی کی حکومت تھی اور فرانس کی حکومت کے خلاف ھی وہاں کے دیش بھکتوں نے لڑائی لڑی تھی . پھر بھی ساری دنیا آج اس بات کو جانتی ھے کہ جینیوا میں ھند چین کے معاملے پر جو انتر راشٹریہ کانفرنس ھوئی تھی اُس میں مینڈے فرانس یہ قسم کھاکر

के पहाड़ खड़े कर लेना न उनके देश की माली हालत को बहुत अच्छा साबित करता है, न हमें मसावात या बराबरी की तरफ़ ले जा सकता है और न दूसरे देशों के लिये लाभ-दायक हो सकता है. पर हम फिर यही कहेंगे कि रूस अपनी जगह ख़ुश रहे, अमरीका अपनी जगह ख़ुश रहे और सब अपनी अपनी जगह ख़ुश रहें और कोई किसी को मिटाने की चिन्ता में न पड़े. इस तरह की कोशिश करना भगवान की इच्छा से लड़ना है और किसी भी देश को किसी तरह फल नहीं सकता.

राजकुमारी अमृत कौर ने जो कुछ कहा वह भी कोई नई बात नहीं. हमने बड़े दुख और लज्जा के साथ पढ़ा था कि भारत के मर्दुमशुमारी कमिश्नर ने अपनी रिपोर्ट में यह साफ़ लिखा है कि अगर साइन्सी तरीक़ों और दवाओं से बच्चों के पैदा होने को न रोका गया तो भारत की आबादी थोड़े ही दिनों में इतनी बढ़ जाएगी कि सरकार के लिये सब को रोज़ी दे सकना नामुमकिन होगा. उन्होंने भारत सरकार से सिफ़ारिश की थी कि वह इन तरीक़ों का अधिक से अधिक प्रचार करे. हमारी सरकार इसका ख़ूब और खुले प्रचार कर भी रही है. बहुत सी चीज़ों के बाहर के देशों से आने पर यहां रोक थाम है. उन्हें बाहर से लाने के लिये ख़ास परमिट लेने पड़ते हैं. पर हमने बम्बई में अपने व्यापारी दोस्तों से सुना था कि बच्चों की पैदाइश रोकने का सामान उन चीज़ों में से है जो यहां बाहर के देशों से फ़्री जनरल लाइसेन्स यानी खुले आम हर कोई जितना चाहे बिना किसी रोक थाम के मंगा सकता है. इस लज्जाजनक विषय पर हम अधिक नहीं लिखना चाहते. पैदाइश रोकने के इन तरीक़ों से करोड़ों रुपये की दवाएं और गन्दी चीज़ें हर साल देश में बिकने के साथ साथ लोगों को बदचलनी और काम तृप्ति का भी खुला मैदान मिलता है. इस मामले में हमारी भगवान से प्रार्थना है कि हमारे देश के लोग ख़ासकर हमारे गांव के लोग भले ही राजकुमारी के शब्दों में अन्ध विश्वासी बने रहें, पर इस नई तहज़ीब के गन्दे जाल में फंस कर अपने और अपनी नसलों के बदन, चलन और पैसे तीनों को बरबाद न करें.

चीन हम से बड़ा देश है. वहां की आबादी इस समय सत्तर करोड़ है. वहां की कम्युनिस्ट सरकार पैदाइश रोकने का इस तरह का सामान एक पैसे का भी कहीं से नहीं आने देती और न वहां देश में इस तरह का सामान बनता है. वहां की सरकार इस तरह बच्चों की पैदाइश रोकने के बजाय उन माओं का ख़ास आदर करती है और उन्हें इनाम और वज़ीफ़े देती है जिन के बहुत बच्चे हों. दस या बारह बच्चों की मां को वहां देश भर में बड़े आदर की निगाह से देखा जाता है. रूस में भी बहुत बच्चों वाली माओं का इसी तरह का आदर होता है और उनके साथ इसी तरह का व्यवहार



کے پہاڑ کھڑے کرلینا نہ اُن کے دیش کی مالی حالت کو بہت اچھا ثابت کرتا ھے' نہ ھمیں مساوات یا برابری کی طرف لے جاسکتا ھے اور نہ دوسرے دیشوں کے لئے لابھ دایک ھوسکتا ھے ۔ پر ھم پھر یہی کہینگے کہ روس اپنی جگہ خوش رھے' امریکہ اپنی جگہ خوش رھے اور سب اپنی اپنی جگہ خوش رھیں اور کوئی کسی کو مٹانے کی چنتا میں نہ پڑے. اِس طرح کی کوشش کرنا بھگوان کی اِچھا سے لڑنا ھے اور کسی بھی دیش کو کسی طرح پھل نہیں سکتا .

راج کماری امرت کور نے جو کچھ کہا وہ بھی کوئی نئی بات نہیں. ھم نے بڑے دکھ اور لجا کے ساتھ پڑھا تھا کہ بھارت کے مردم شماری کمشنر نے اپنی رپورٹ میں یہ صاف لکھا ھے کہ اگر سائنسی طریقوں اور دواؤں سے بچوں کے پیدا ھونے کو نہ روکا گیا تو بھارت کی آبادی تھوڑے ھی دنوں میں اتنی بڑھ جائیگی کہ سرکار کے لئے سب کو روزی دے سکنا ناممکن ھوگا . اُنھوں نے بھارت سرکار سے سفارش کی تھی کہ وہ اُن طریقوں کا ادھک سے ادھک پرچار کرے . ھماری سرکار اِس کا خوب اور کھلے پرچار کر بھی رھی ھے . بہت سی چیزوں کے باھر کے دیشوں سے آنے پر یہاں روک تھام ھے . اُنھیں باھر سے لانے کے لئے خاص پرمٹ لینے پڑتے ھیں . پر ھم نے بمبئی میں اپنے ویاپاری دوستوں سے سنا تھا کہ بچوں کی پیدائش روکنے کا سامان اُن چیزوں میں سے ھے جو یہاں باھر کے دیشوں سے فری جنرل لائیسنس یعنی کھلے عام ھر کوئی جتنا چاھے بنا کسی روک تھام کے منگا سکتا ھے . اِس اپمانجنک وشے پر ھم ادھک نہیں لکھنا چاھتے . پیدائش روکنے کے اِن طریقوں سے کروڑوں روپئے کی دوائیں اور گندی چیزیں ھر سال دیش میں بکنے کے ساتھ ساتھ لوگوں کو بدچلنی اور کام ترپتی کا بھی کھلا میدان ملتا ھے . اِس معاملے میں ھماری بھگوان سے پرارتھنا ھے کہ ھمارے دیش کے لوگ خاصکر ھمارے گاؤں کے لوگ بھلے ھی راج کماری کے شبدوں میں اندھ وشواسی بنے رھیں' پر اِس نئی تہذیب کے گندے جال میں پھنسکر اپنے اور اپنی نسلوں کے بدن' چلن اور پیسے تینوں کو برباد نہ کریں .

چین ھم سے بڑا دیش ھے . وھاں کی آبادی اِس سمے ستر کروڑ ھے . وھاں کی کمیونسٹ سرکار پیدائش روکنے کا اِس طرح کا سامان ایک پیسہ کا بھی کہیں سے نہیں آنے دیتی اور نہ وھاں دیش میں اِس طرح کا سامان بنتا ھے . وھاں کی سرکار اِس طرح بچوں کی پیدائش روکنے کے بجائے اُن ماؤں کا خاص آدر کرتی ھے اور اُنھیں اِنعام اور وظیفے دیتی ھے جن کے بہت بچے ھوں . دس یا بارہ بچوں کی ماں کو وھاں دیش بھر میں بڑے آدر کی نگاہ سے دیکھا جاتا ھے . روس میں بھی بہت بچوں والی ماؤں کا اسی طرح کا آدر ھوتا ھے اور اُن کے ساتھ اسی طرح کا ویوھار

मुसलमान समझे जाने वाले लोगों से ज्यादा सच्चे मुस्लिम और सच्चे मोमिन साबित होंगे.

जहां तक मजहबी आजादी का सवाल है ताशक़न्द की एक बड़ी मसजिद में—और उस शहर में बहुत सी सुन्दर मसजिदें हैं—इमाम के ठीक पीछे खड़े होकर हमने ख़ुद ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी है. सैकड़ों मुसलमान हमारे पीछे थे. मसजिद का सहन ठसाठस भरा हुआ था. हमने उनकी अरबी लायब्रेरी देखी, स्कूल देखा, मजहबी तालीम देखी. हम कह सकते हैं कि इस वक़्त अगर कहीं दुनिया में कामिल मजहबी आज़ादी है तो सोवियत रूस और कम्युनिस्ट चीन में है. अंग्रेज़ों के क़ायम किये कालिजों से निकले हुए बहुत से मुसलमान बाबुओं के इस्लाम के मुक़ाबले में उनका इस्लाम कहीं ज्यादा मुस्तहकिम है.

हम यहां रूस और अमरीका का मुक़ाबला करने नहीं बैठे, न हमें इस मुक़ाबले से कोई मतलब है. हम चाहते हैं कि रूस अपनी जगह ख़ुश रहे और अमरीका अपनी जगह ख़ुश रहे और दुनिया के सब देश अपनी अपनी जगह ख़ुश रहें, और अपनी अपनी चाल चलें, जो उन्हें पसन्द हो. कोई दूसरे के काम में दख़ल न दे. कोई किसी के साथ ज़बरदस्ती न करे. यही सच्ची आज़ादी का मतलब है. यही इनसानी बराबरी की बुनियाद हो सकती है. इसी में सब का भला है. इस के ख़िलाफ़ जो लोग भारत में या पाकिस्तान में अमरीका की मदद से कम्युनिस्ट देशों को मिटाना चाहते हैं उन्हें यह भी याद रखना चाहिये कि भले ही अमरीका में बहुत से मजदूरों के पास दो दो मोटरें हों, जबकि रूस में बहुत सों के पास एक भी मोटर नहीं, लेकिन रूस में शायद ढूंढने से भी कोई बेकार इनसान न मिल सकेगा और अमरीका में वहां की सरकारी रिपोर्टों के अनुसार बेकारों की तादाद जिन्हें सरकारी टुकड़ों पर पालना पड़ता है और जिनके पास कोई काम करने के लिये नहीं है इस समय पचास लाख से ऊपर है. अब अगर हम इक़्तसादी मसावात यानी आर्थिक या माली बराबरी की निगाह से देखें तो कम्युनिस्ट देश इस समय दुनिया में सब से आगे हैं. रूस में भी ग़रीब और अमीर का फ़रक़ अभी तक है, पर कम, चीन में उससे भी कम, और अमरीका में सब से ज्यादा. कोई ग़रीब रूसी या चीनी अगर अपने अमीर देश भाई की तरफ़ देखना चाहे तो उसे अपनी टोपी पीछे गिर जाने का डर नहीं हो सकता, जब कि एक अमरीकी ग़रीब अमरीकी अमीर की तरफ़ बिना टोपी पीछे गिराये देख ही नहीं सकता. हमारे हिसाब से मोटे तौर पर चीन के अन्दर कम से कम मजदूरी और बड़ी से बड़ी तनख़ाह का औसत एक और सात का है, रूस में एक और सतरह और अमरीका में एक और कई सौ. जगह जगह का कच्चा माल हथिया कर और दुनिया की मंडियों पर क़ब्ज़ा करके किसी देश के थोड़े से आदमियों का अपने यहां सोने



مسلمان سمجھے جانے والے لوگوں سے زیادہ سچے مسلم اور سچے مومن ثابت ہونگے۔

جہاں تک مذہبی آزادی کا سوال ہے تاشقند کی ایک بڑی مسجد میں—اور اُس شہر میں بہت سی سندر مسجدیں ہیں—امام کے ٹھیک پیچھے کھڑے ہوکر ہم نے خود ظہر کی نماز پڑھی ہے . سیکڑوں مسلمان ہمارے پیچھے تھے . مسجد کا صحن ٹھساٹھس بھرا ہوا تھا . ہم نے اُن کی عربی لائبریری دیکھی' اسکول دیکھا' مذہبی تعلیم دیکھی . ہم کہہ سکتے ہیں کہ اِس وقت اگر کہیں دنیا میں کامل مذہبی آزادی ہے تو سوویت روس اور کمیونسٹ چین میں ہے . انگریزوں کے قائم کئے کالجوں سے نکلے ہوئے بہت سے مسلمان بابوؤں کے اِسلام کے مقابلے میں اُن کا اِسلام کہیں زیادہ مستحکم ہے .

ہم یہاں روس اور امریکہ کا مقابلہ کرنے نہیں بیٹھے' نہ ہمیں اِس مقابلے سے کوئی مطلب ہے . ہم چاہتے ہیں کہ روس اپنی جگہ خوش رہے اور امریکہ اپنی جگہ خوش رہے اور دنیا کے سب دیش اپنی اپنی جگہ خوش رہیں' اور اپنی اپنی چال چلیں جو اُنھیں پسند ہو . کوئی دوسرے کے کام میں دخل نہ دے . کوئی کسی کے ساتھ زبردستی نہ کرے. یہی سچی آزادی کا مطلب ہے. یہی اِنسانی برابری کی بنیاد ہوسکتی ہے. اِسی میں سب کا بھلا ہے. اِس کے خلاف جو لوگ بھارت میں یا پاکستان میں امریکہ کی مدد سے کمیونسٹ دیشوں کو مٹانا چاہتے ہیں اُنھیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ بھلے ہی امریکہ میں بہت سے مزدوروں کے پاس دو دو موٹریں ہوں' جب کہ روس میں بہت سوں کے پاس ایک بھی موٹر نہیں' لیکن روس میں شاید ڈھونڈنے سے بھی کوئی بیکار اِنسان نہ مل سکے گا اور امریکہ میں وہاں کی سرکاری رپورٹوں کے انوسار بیکاروں کی تعداد جنھیں سرکاری ٹکڑوں پر پالنا پڑتا ہے اور جن کے پاس کوئی کام کرنے کے لئے نہیں ہے اِس سمے پچاس لاکھ سے اُوپر ہے . اب اگر ہم اقتصادی مساوات یعنی آرتھک یا مالی برابری کی نگاہ سے دیکھیں تو کمیونسٹ دیش اِس سمے دنیا میں سب سے آگے ہیں . روس میں بھی غریب اور امیر کا فرق ابھی تک ہے پر کم' چین میں اُس سے بھی کم' اور امریکہ میں سب سے زیادہ . کوئی غریب روسی یا چینی اگر اپنے امیر دیش بھائی کی طرف دیکھنا چاہے تو اُسے اپنی ٹوپی پیچھے گر جانے کا ڈر نہیں ہوسکتا' جب کہ ایک امریکی غریب امریکی امیر کی طرف بنا ٹوپی پیچھے گرائے دیکھ ہی نہیں سکتا. ہمارے حساب سے موٹے طور پر چین کے اندر کم سے کم مزدوری اور بڑی سے بڑی تنخواہ کا اوسط ایک اور سات کا ہے' روس میں ایک اور سترہ اور امریکہ میں ایک اور کئی سو . جگہ جگہ کا کچا مال ہتھیا کر اور دنیا کی منڈیوں پر قبضہ کرکے کسی دیش کے تھوڑے سے آدمیوں کا اپنے یہاں سونے

अपना घर बना हुआ है, जिस पर उनकी दूध देने वाली सुन्दर और तन्दुरुस्त गाएं हैं या दूसरे जानवर पले हुए हैं और जिस पर उनकी अलग छोटी सी खेती बाड़ी और अंगूर की टट्टी है, इस सबकी आमदनी अलग. हमने हिसाब लगा कर देखा कि उज़बेकिस्तान के अन्दर चार पांच आदमियों के एक छोटे से किसान कुनबे की आमदनी किसी तरह हमारे सिक्कों में दो हज़ार रुपये माहवार से कम नहीं होती, और खाने पीने की चीज़ें मोटे तौर पर दिल्ली या लाहौर से ज़्यादा मंहगी नहीं हैं. इन खाने पीने की चीज़ों की बहुतायत तो वहां है ही. उज़बेकिस्तान के मुसलमान किसानों के घरों में घुस घुसकर हमने अपनी आंखों से उनकी हालत को देखा है. घंटों उनके मर्दों, औरतों और बच्चों से बातें की हैं. उनके साथ खाना खाया है. हम पूरी ज़िम्मेदारी के साथ कह सकते हैं कि उज़बेकिस्तान के वह मुसलमान किसान भारत या पाकिस्तान के एक हज़ार रुपये माहवार तनख़्वाह पाने वाले बाबुओं से कहीं ज़्यादा ख़ुश और ख़ुशहाल हैं. उज़बेकिस्तान में रुई अधिक होती है. सारे रूस को रुई वहीं से जाती है. हमने उनके खेतों में पैदा हुए रुई के डोडों को देखा. हम देख कर दंग रह गए. उनका एक डोडा भारत या पाकिस्तान के अच्छे से अच्छे रुई के डोडों से कम से कम बारह गुना बड़ा तो होता ही है. हमें नहीं मालूम कि मिस्टर मुहम्मद अली और उनके हम-ख़याल लोग किस कम्युनिज़्म को मिटाना चाहते हैं, क्यों मिटाना चाहते हैं और किस बिरते पर मिटाना चाहते हैं. पैसे और तलवार ने आज तक दुनिया में न तारीख़ी ताक़तों यानी इतिहासिक शक्तियों की बाढ़ को रोका और न वह रोक सकते हैं.

हम यहां रूस की, उज़बेकिस्तान की या चीन की तालीम, वहां के बच्चों की देख रेख, वहां के घरेलू धंदों और वहां की कारीगरियों, दस्तकारियों और कारख़ानों की चरचा करके इस नोट को लम्बा करना नहीं चाहते. उज़बेकिस्तान के किसानों की हालत को भी हमने केवल नमूने के तौर पर बयान किया है. हमें आंख खोल कर दुनिया को देखना चाहिये और बड़े दिल से सबको समझने की कोशिश करनी चाहिये.

अब रही मज़हब की बात. रसूले करीम से सैकड़ों बार पूछा गया कि 'इसलाम' किसे कहते हैं, 'मुसलिम' कौन है, 'ईमान' का क्या मतलब है और 'मोमिन' की क्या तारीफ़ है? इस तरह की हदीसें सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में भरी पड़ी हैं. हमें यक़ीन है कि हमारे यह कहते ही इस तरह की पचासों हदीसें हर पढ़े लिखे मुसलमान को याद आजाएंगी. यहां उन्हें दुहराने की ज़रूरत नहीं है. हम बड़ी नम्रता और इनकिसार के साथ कहना चाहते हैं कि अगर किसी इनसान के मुस्लिम या मोमिन होने का फ़ैसला उन हदीसों की बिना पर किया जावे तो रूस और चीन के लाखों कम्युनिस्ट कहलाने वाले इनसान भारत या पाकिस्तान के लाखों



اپنا گھر بنا ہوا ہے، جس پر اُن کی دودھ دینے والی سندر اور تندرست گائیں ہیں یا دوسرے جانور پلے ہوئے ہیں اور جس پر اُن کی الگ چھوٹی سی کھیتی باڑی اور انگور کی ٹٹی ہے، اِس سب کی آمدنی الگ۔ ہم نے حساب لگا کر دیکھا کہ ازبیکستان کے اندر چار پانچ آدمیوں کے ایک چھوٹے سے کسان کنبے کی آمدنی کسی طرح ہمارے سکوں میں دوہزار روپئے ماہوار سے کم نہیں ہوتی، اور کھانے پینے کی چیزیں موٹے طور پر دلی یا لاہور سے زیادہ مہنگی نہیں ہیں۔ اِن کھانے پینے کی چیزوں کی بہتائت تو وہاں ہے ہی۔ ازبیکستان کے مسلمان کسانوں کے گھروں میں گھس گھس کر ہم نے اپنی آنکھوں سے اُن کی حالت کو دیکھا ہے۔ گھنٹوں اُن کے مردوں، عورتوں اور بچوں سے باتیں کی ہیں۔ اُن کے ساتھ کھانا کھایا ہے۔ ہم پوری ذمہ داری کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ ازبیکستان کے وہ مسلمان کسان بھارت یا پاکستان کے ایک ہزار روپیہ ماہوار تنخواہ پانے والے بابوؤں سے کہیں زیادہ خوش اور خوشحال ہیں۔ ازبیکستان میں روئی ادھک ہوتی ہے۔ سارے روس کو روئی وہیں سے جاتی ہے۔ ہم نے اُن کے کھیتوں میں پیدا ہوئے روئی کے ڈوڈوں کو دیکھا۔ ہم دیکھ کر دنگ رہ گئے۔ اُن کا ایک ایک ڈوڈا بھارت یا پاکستان کے اچھے سے اچھے روئی کے ڈوڈوں سے کم سے کم بارہ گنا بڑا تو ہوتا ہی ہے۔ ہمیں* نہیں معلوم کہ مسٹر محمد علی اور اُن کے ہمخیال لوگ کس کمیونزم کو مٹانا چاہتے ہیں، کیوں مٹانا چاہتے ہیں اور کس برتے پر مٹانا چاہتے ہیں۔ پیسے اور تلوار نے آج تک دنیا میں نہ تاریخی طاقتوں یعنی اِتہاسک شکتیوں کی باڑھ کو روکا اور نہ روک سکتے ہیں۔

ہم یہاں روس کی، ازبیکستان کی یا چین کی تعلیم، وہاں کی بچوں کی دیکھ ریکھ، وہاں کے گھریلو دھندوں اور وہاں کی کاریگریوں، دستکاریوں اور کارخانوں کی چرچا کر کے اِس نوٹ کو لمبا کرنا نہیں چاہتے۔ ازبیکستان کے کسانوں کی حالت کو بھی ہم نے کیول نمونے کے طور پر بیان کیا ہے۔ ہمیں آنکھ کھول کر دنیا کو دیکھنا چاہئے اور بڑے دل سے سب کو سمجھنے کی کوشش کرنی چاہئے۔

اب رہی مذہب کی بات۔ رسول کریم سے سیکڑوں بار پوچھا گیا کہ 'اِسلام' کسے کہتے ہیں، 'مسلم' کون ہے، 'ایمان' کا کیا مطلب ہے اور 'مومن' کی کیا تعریف ہے؟ اِس طرح کی حدیثیں صحیح بخاری اور صحیح مسلم میں بھری پڑی ہیں۔ ہمیں یقین ہے کہ ہمارے یہ کہتے ہی اِس طرح کی پچاسوں حدیثوں ہر پڑھے لکھے مسلمان کو یاد آجائیں گی۔ یہاں اُنہیں دہرانے کی ضرورت نہیں ہے۔ ہم بڑی نمرتا اور اِنکسار کے ساتھ کہنا چاہتے ہیں کہ اگر کسی اِنسان کے مسلم یا مومن ہونے کا فیصلہ اُن حدیثوں کی بنا پر کیا جاوے تو روس اور چین کے لاکھوں کمیونسٹ کہلانے والے اِنسان بھارت یا پاکستان کے لاکھوں

डर दिखाई दिया हो कि भारत भी कुछ उसी बे-दीनी और ला-मज़हबी की तरफ़ जा रहा है और भारत को इस ग़लत रास्ते से हटा कर फिर से ठीक रास्ते पर लाने के लिये उन्हें ख़ुदा और मज़हब से इनकार न करने वाली अमरीकी सरकार की मदद कारगर दिखाई देती हो.

ख़ुदा और मज़हब का मामला बड़ा नाज़ुक मामला है. थोड़ी देर के लिये इससे हट कर हम मिस्टर मुहम्मद अली और उनके ख़याल के लोगों से यह कहना चाहते हैं कि वह दुनिया की अब तक की तारीख़ और इस समय की हालत को पूरी तरह ध्यान में रखते हुए इस सारे सवाल पर ग़ौर करने की कोशिश करें. यह ज़माना एक नए और ऊंचे मानी में इनसानी मसावात यानी इनसानी बराबरी का ज़माना है. आदमी आदमी के बीच की हज़ारों बरसों की दीवारें टूट रही हैं. इनसानी दुनिया तेज़ी के साथ एक होती जा रही है और एक कुनबा बनती जा रही है. हमने कलाम मजीद को बहुत प्रेम और श्रद्धा के साथ अनेक बार पढ़ा है. दुनिया उस तरफ़ बढ़ रही है जिसे क़ुरान में "अल्लाह का कुनबा" कहा गया है. हज़ारों बरस से नीचे दबे हुए इनसान ऊपर आ रहे हैं और बहुत दिनों तक ऊपर रहने वाला को इसी बराबरी को क़ायम करने के लिये कुछ नीचे उतरना पड़ रहा है. यह है दुनिया की आजकल की गति. और यही मशीयते एज़दी यानी ईश्वर की इच्छा है. मिस्टर मुहम्मद अली और उनकी तरह सोचने वाले लोगों को, चाहे वह पाकिस्तान में हों या भारत में या कहीं भी, यह मालूम होना चाहिये कि उन कम्युनिस्ट देशों में से जिन्हें वह मिटाना चाह रहे हैं आज सोवियत रूस के अन्दर मुस्लिम देश उज़बेकिस्तान में, जिसके शहर समरक़न्द, ताशक़न्द और बुख़ारा किसी समय दुनिया की तहज़ीब के मरकज़ माने जाते थे और जो आज से सौ बरस पहले दुनिया के ग़रीब से ग़रीब और वीरान से वीरान देशों में गिना जाता था, आज रूसी कम्युनिज़म के दौर में एक मामूली किसान को केवल आठ घंटे मेहनत करके शाम को जो मज़दूरी मिलती है वह है :— चार सेर आलू, दो सेर फल और सब्ज़ी, तीन पाव दूध, पाव भर गोश्त और इन सबके अलावा दस या बारह रूबुल नक़्द. एक रूबुल बराबर होता है हिन्दुस्तानी एक रुपये दो आने के. अगर चार या पांच आदमियों के किसी किसान कुनबे में दो आदमी भी—एक मर्द, एक औरत या दो भाई या बाप बेटे—खेत में काम करते हैं तो वह शाम को इसका ठीक दुगना सामान घर लेकर आते हैं. कलेक्टिव फ़ार्म यानी मुश्तरका खेती की पैदावार की बिक्री से यह मज़दूरी, सरकार का हिस्सा और सब ख़र्चे देने के बाद जो हर किसान परिवार को नक़्द बचता है वह अलग. इस सबके अलावा हर किसान परिवार की कुछ न कुछ अपनी निजी मिलकियत की ज़मीन भी है जिस पर उस परिवार का



ڈر دکھائی دیا ہو کہ بھارت بھی کچھ اسی بے دینی اور لامذہبی کی طرف جا رہا ہے اور بھارت کو اس غلط راستے سے ہٹا کر پھر سے ٹھیک راستے پر لانے کے لئے انہیں خدا اور مذہب سے انکار نہ کرنے والی امریکی سرکار کی مدد کارگر دکھائی دیتی ہو۔

خدا اور مذہب کا معاملہ بڑا نازک معاملہ ہے۔ تھوڑی دیر کے لئے اس سے ہٹ کر ہم مسٹر محمد علی اور ان کے خیال کے لوگوں سے یہ کہنا چاہتے ہیں کہ وہ دنیا کی اب تک کی تاریخ اور اس سمے کی حالت کو پوری طرح دھیان میں رکھتے ہوئے اس سارے سوال پر غور کرنے کی کوشش کریں۔ یہ زمانہ ایک نئے اور اونچے معنی میں انسانی مساوات یعنی انسانی برابری کا زمانہ ہے۔ آدمی آدمی کے بیچ کی ہزاروں برسوں کی دیواریں ٹوٹ رہی ہیں۔ انسانی دنیا تیزی کے ساتھ ایک ہوتی جا رہی ہے اور ایک کنبہ بنتی جا رہی ہے۔ ہم نے کلام مجید کو بہت پریم اور شردھا کے ساتھ انیک بار پڑھا ہے۔ دنیا اس طرف بڑھ رہی ہے جیسے قرآن میں "اللہ کا کنبہ" کہا گیا ہے۔ ہزاروں برس سے نیچے دبے ہوئے انسان اوپر آ رہے ہیں اور بہت دنوں تک اوپر رہنے والوں کو اسی برابری کو قائم کرنے کے لئے کچھ نیچے اترنا پڑ رہا ہے۔ یہ ہے دنیا کی آجکل کی گتی۔ اور یہی مشیت ایزدی یعنی ایشور کی اچھا ہے۔ مسٹر محمد علی اور ان کی طرح سوچنے والے لوگوں کو، چاہے وہ پاکستان میں ہوں یا بھارت میں یا کہیں بھی، یہ معلوم ہونا چاہئے کہ ان کمیونسٹ دیشوں میں سے جنہیں وہ مٹانا چاہ رہے ہیں آج سوویت روس کے اندر مسلم دیش ازبیکستان میں، جس کے شہر سمرقند تاشقند اور بخارا کسی سمے دنیا کی تہذیب کے مرکز مانے جاتے تھے اور جو آج سے سو برس پہلے دنیا کے غریب سے غریب اور ویران سے ویران دیشوں میں گنا جاتا تھا، آج روسی کمیونزم کے دور میں ایک معمولی کسان کو کیول آٹھ گھنٹے محنت کر کے شام کو جو مزدوری ملتی ہے وہ ہے :— چار سیر آلو، دو سیر پھل اور سبزی، تین پاؤ دودھ، پاؤ بھر گوشت اور ان سب کے علاوہ دس یا بارہ روبل نقد۔ ایک روبل برابر ہوتا ہے ہندستانی ایک روپیہ دو آنہ کے۔ اگر چار یا پانچ آدمیوں کے کسی کسان کنبہ میں دو آدمی بھی—ایک مرد ایک عورت یا دو بھائی یا باپ بیٹے—کھیت میں کام کرتے ہیں تو وہ شام کو اس کا ٹھیک دوگنا سامان گھر لے کر آتے ہیں۔ کلکٹیو فارم یعنی مشترکہ کھیتی کی پیداوار کی بکری سے یہ مزدوری، سرکار کا حصہ اور سب خرچ دینے کے بعد جو ہر کسان پریوار کو نقد بچتا ہے وہ الگ۔ اس سب کے علاوہ ہر کسان پریوار کی کچھ نہ کچھ اپنی نجی ملکیت کی زمین بھی ہے جس پر اس پریوار کا

# अमरीका में मिस्टर मुहम्मद अली और राजकुमारी अमृत कौर

हाल में समाचार पत्रों के अन्दर दो छोटी छोटी ख़बरें एक साथ छपी थीं. पाकिस्तान के बड़े वज़ीर मिस्टर मुहम्मद अली और भारत की सेहत वज़ीर राजकुमारी अमृत कौर दोनों उन दिनों अमरीका में थे. पहली ख़बर यह थी कि मिस्टर मुहम्मद अली ने वहां यह विचार प्रगट किया कि दुनिया को बचाने के लिये दुनिया से कम्युनिज़्म को मिटाना ज़रूरी है और उसे मिटाने के दो ही साधन हैं—पैसा और तलवार. इसके लिये अमरीका, पाकिस्तान और दूसरे इसी तरह के देशों को मिलकर कोशिश करनी चाहिये. दूसरी ख़बर यह थी कि राजकुमारी अमृत कौर ने अमरीकी जनता से कहा कि भारत के लोग बड़े कट्टर, हट धर्मी और अन्धविश्वासी हैं, इसी लिये वह बच्चों की पैदाइश को रोकने के साइन्सी तरीक़ों को काम में नहीं लाते. इससे भारत की आबादी बढ़ती जा रही है. यही भारत की सबसे बड़ी मुसीबत है. राजकुमारी अमृत कौर ने अमरीकी जनता को यह भी सूचना दी कि भारत सरकार हज़ारों अस्पतालों के ज़रिये और तरह तरह से यह कोशिश कर रही है कि लोग बच्चों की पैदाइश रोकने के इन तरीक़ों को जानें, उनकी क़दर करें और उन्हें काम में लावें. यह कोशिश एक बड़े पैमाने पर गांव गांव में की जा रही है ताकि देश बढ़ती हुई आबादी की इस मुसीबत से बच सके.

मिस्टर मुहम्मद अली के विचार इस मामले में सबको पहले से मालूम थे. राजकुमारी अमृत कौर के विचार पैदाइश रोकने के सम्बन्ध में भी दुनिया से छिपे हुए नहीं थे. फिर भी इन दोनों की यह तक़रीरें हमें यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि पाकिस्तान और भारत किधर जा रहे हैं.

मिस्टर मुहम्मद अली एक ऐसे राज के बड़े वज़ीर की हैसियत से बोल रहे थे जो अपने को इस्लामी राज कहता है, और जिसे अपने इस्लामी होने का फ़ख़्र है. ख़ुद मिस्टर मुहम्मद अली अपने को मुसलमान मानते और कहते हैं. ज़ाहिर है उन्हें ख़ुदा और मज़हब को न मानने वाले कम्युनिज़्म और कम्युनिस्टों से नाराज़गी है और उन्हें इनसे दुनिया को ख़तरा दिखाई देता है. इस नास्तिकता और बेदीनी को दुनिया से मिटाने के लिये और ख़ुदा और मज़हब को लोगों के दिलों में फिर से जमाने के लिये उन्हें पैसा और तलवार दो ही सबसे अच्छे साधन दिखाई देते हैं. यह भी मुमकिन है कि चीन के बड़े वज़ीर चाउ-एन-लाई के भारत आने और जवाहर लाल जी के चीन जाने जैसी घटनाओं से और इधर फ़ौलाद के नए कारख़ाने की बाबत रूस और भारत की बातचीत से मिस्टर मुहम्मद अली को यह



# امریکہ میں مسٹر محمد علی اور راج کماری امرت کور

حال میں سماچار پتروں کے اندر دو چھوٹی چھوٹی خبریں ایک ساتھ چھپی تھیں ۔ پاکستان کے بڑے وزیر مسٹر محمد علی اور بھارت کی صحت وزیر راج کماری امرت کور دونوں اُن دنوں امریکہ میں تھے ۔ پہلی خبر یہ تھی کہ مسٹر محمد علی نے وہاں یہ وچار پرگٹ کیا کہ دنیا کو بچانے کے لئے دنیا سے کمیونزم کو مٹانا ضروری ہے اور اُسے مٹانے کے دو ہی سادھن ہیں—پیسہ اور تلوار ۔ اس کے لئے امریکہ، پاکستان اور دوسرے اِسی طرح کے دیشوں کو ملکر کوشش کرنی چاہئے ۔ دوسری خبر یہ تھی کہ راج کماری امرت کور نے امریکی جنتا سے کہا کہ بھارت کے لوگ بڑے کٹر، ہٹ دھرمی اور اندھ وشواسی ہیں، اِسی لئے وہ بچوں کی پیدائش کو روکنے کے سائنسی طریقوں کو کام میں نہیں لاتے ۔ اِس سے بھارت کی آبادی بڑھتی جا رہی ہے ۔ یہی بھارت کی سب سے بڑی مصیبت ہے ۔ راج کماری امرت کور نے امریکی جنتا کو یہ بھی سوچنا دی کہ بھارت سرکار ہزاروں اسپتالوں کے ذریعہ اور طرح طرح سے یہ کوشش کر رہی ہے کہ لوگ بچوں کی پیدائش روکنے کے اِن طریقوں کو جانیں، اُن کی قدر کریں اور اُنھیں کام میں لاویں ۔ یہ کوشش ایک بڑے پیمانے پر گاؤں گاؤں میں کی جا رہی ہے تاکہ دیش بڑھتی ہوئی آبادی کی اِس مصیبت سے بچ سکے ۔

مسٹر محمد علی کے وچار اِس معاملے میں سب کو پہلے سے معلوم تھے ۔ راج کماری امرت کور کے وچار پیدائش روکنے کے سمبندھ میں بھی دنیا سے چھپے ہوئے نہیں تھے ۔ پھر بھی اِن دونوں کی یہ تقریریں ہمیں یہ سوچنے پر مجبور کرتی ہیں کہ پاکستان اور بھارت کدھر جا رہے ہیں ۔

مسٹر محمد علی ایک ایسے راج کے بڑے وزیر کی حیثیت سے بول رہے تھے جو اپنے کو اسلامی راج کہتا ہے، اور جسے اپنے اسلامی ہونے کا فخر ہے ۔ خود مسٹر محمد علی اپنے کو مسلمان مانتے اور کہتے ہیں ۔ ظاہر ہے انھیں خدا اور مذہب کو نہ ماننے والے کمیونزم اور کمیونسٹوں سے ناراضگی ہے اور اُنھیں اِن سے دنیا کو خطرہ دکھائی دیتا ہے ۔ اِس ناستکتا اور بے دینی کو دنیا سے مٹانے کے لئے اور خدا اور مذہب کو لوگوں کے دلوں میں پھر سے جمانے کے لئے اُنھیں پیسہ اور تلوار دو ہی سب سے اچھے سادھن دکھائی دیتے ہیں ۔ یہ بھی ممکن ہے کہ چین کے بڑے وزیر چاؤ ۔ این ۔ لائی کے بھارت آنے اور جواہر لال جی کے چین جانے جیسی گھٹناؤں سے اور اِدھر فولاد کے نئے کارخانے کی بابت روس اور بھارت کی بات چیت سے مسٹر محمد علی کو یہ

अधिक हों और उनकी शक्ति सचमुच पड़ी सड़ती हो तो उसमें मशीनों और मिलों पर इस तरह का ज़ोर अर्थ शास्त्र की निगाह से समझदारी की बात नहीं मानी जा सकती. न यह विज्ञान यानी साइन्स है और न इसमें जनता का भला ( welfare ) है. यह है नंगा पूंजीवाद, थोड़े से लोगों को बड़े बड़े मुनाफ़े कमाने का मौक़ा देना और आम ग़रीब जनता को उन मुनाफ़ों के लिये चुसने देना.

यह देखकर दिल दुखता है कि आज़ाद भारत में, पहली आज़ाद सरकार के नीचे, और महात्मा गांधी के मरने के इतने थोड़े दिनों के अन्दर, बड़ी मशीनों और बड़े पैमाने पर और कम से कम मज़दूर लगा कर अधिक से अधिक माल पैदा करने का चसका हम में इतना बढ़ जावे कि देश की परिस्थिति और जनता के असली हित की तरफ़ हमारी निगाह ही न जा सके. हमें इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी के यह शब्द याद आ रहे हैं :—"लोग मज़दूरों और मज़दूरी की बचत करते चले जाते हैं, यहां तक कि हज़ारों आदमी भूखे मरने के लिये खुली गलियों में जा पड़ते हैं."

मालूम होता है कि भारत सरकार इस तहक़ीक़ाती कमेटी की सिफ़ारिशों से बहुत कुछ सहमत है. यह ऐलान हो चुका है कि तहक़ीक़ाती कमेटी का चेयरमैन 'तिजारत और उद्योग धन्दों का डिप्टी मिनिस्टर' बनाया जायगा, इसलिये ताकि वह इस "सोचे समझे बदलाव" (planned conversion) को अमल में लाने में मदद दे सके.

इस सबका निचोड़ यह है कि हमारे गांव, हमारे ग़रीबों के झोपड़ों, उनकी दस्तकारियों, उनके उद्योग धन्दों, और देश के लाखों बल्कि करोड़ों बेकारों को सब्र के साथ उस दिन का इन्तज़ार करना चाहिये जिस दिन हमारे चोटी के आदमी इस बात को समझ सकें कि भारत की जनता का भला इस में है कि लोगों के हाथ पैरों की शक्ति और मशीनों की शक्ति दोनों का अपनी अपनी जगह उपयोग किया जावे और स्वतन्त्र कारीगर और दूसरे के लिये मेहनत करने वाला मज़दूर दोनों के बीच एक ऐसा उचित, समझदारी का, देश के हालात से मिलता हुआ और अमली सामंजस्य क़ायम किया जावे, जिससे सब को रोज़ी मिल सके, आज़ाद कारीगर के लिये दुनिया में जगह रहे और साइन्स को भी उन्नति का पूरा मैदान मिले. मिल मालिकों की बची खुची जूठन पर हमें लाखों बुनकरों को नहीं पालना, बल्कि हमारे लाखों आज़ाद बुनकरों के करघों से जो मैदान बचे वह मिलों को देना है. हम यदि शान्ति और नम्रता से समझने की कोशिश करें तो गांधी जी यही चाहते थे और इसी में देश की जनता का भला है.

26. 10. '54 —सुन्दरलाल



ادھک ھوں اور اُن کی شکتی سچ مچ پڑی سڑتی ھو تو اُس میں مشینوں اور ملوں پر اِس طرح کا زور ارتھ شاستر کی نگاہ سے سمجھداری کی بات نہیں مانی جا سکتی. نہ یہ وگیان یعنی سائنس ھے اور نہ اِس میں جنتا کا بھلا (welfare) ھے. یہ ھے ننگا پونجی واد، تھوڑے سے لوگوں کو بڑے بڑے منافعے کمانے کا موقع دینا اور عام غریب جنتا کو اُن منافعوں کے لئے چسنے دینا.

یہ دیکھ کر دل دکھتا ھے کہ آزاد بھارت میں، پہلی آزاد سرکار کے نیچے، اور مہاتما گاندھی کے مرنے کے اِتنے تھوڑے دنوں کے اندر، بڑی مشینوں اور بڑے پیمانے پر اور کم سے کم مزدور لگا کر ادھک سے ادھک مال پیدا کرنے کا چسکا ھم میں اتنا بڑھ جاوے کہ دیش کی پرستھتی اور جنتا کے اصلی ھت کی طرف ھماری نگاہ ھی نہ جا سکے. ھمیں اس سمبندھ میں مہاتما گاندھی کے یہ شبد یاد آ رھے ھیں :—"لوگ مزدوروں اور مزدوری کی بچت کرتے چلے جاتے ھیں، یہاں تک کہ ھزاروں آدمی بھوکھے مرنے کے لئے کھلی گلیوں میں جا پڑتے ھیں."

معلوم ھوتا ھے کہ بھارت سرکار اس تحقیقاتی کمیٹی کی سفارشوں سے بہت کچھ سہمت ھے. یہ اعلان ھو چکا ھے کہ تحقیقاتی کمیٹی کا چیرمین 'تجارت اور اُدیوگ دھندوں کا ڈپٹی منسٹر' بنایا جائے گا، اِس لئے تاکہ وہ "اِس سوچے سمجھے بدلاؤ" (planned conversion) کو عمل میں لانے میں مدد دے سکے.

اِس سب کا نچوڑ یہ ھے کہ ھمارے گاؤں، ھمارے غریبوں کے جھونپڑوں، اُن کی دستکاریوں، اُن کے اُدیوگ دھندوں اور دیش کے لاکھوں بلکہ کروڑوں بیکاروں کو صبر کے ساتھ اُس دن کا انتظار کرنا چاھئے جس دن ھمارے چوٹی کے آدمی اس بات کو سمجھ سکیں کہ بھارت کی جنتا کا بھلا اِسی میں ھے کہ لوگوں کے ھاتھ پیروں کی شکتی اور مشینوں کی شکتی دونوں کا اپنی اپنی جگہ اُپیوگ کیا جاوے اور سوتنتر کاریگر اور دوسروں کے لئے محنت کرنے والا مزدور دونوں کے بیچ ایک ایسا اُچت، سمجھداری کا، دیش کے حالات سے ملتا ھوا اور عملی سامنجسیہ قائم کیا جاوے، جس سے سب کو روزی مل سکے، آزاد کاریگر کے لئے دنیا میں جگہ رھے اور سائنس کو بھی اُنتی کا پورا میدان ملے. مل مالکوں کی بچی کھچی جوٹھن پر ھمیں لاکھوں بنکروں کو نہیں پالنا، بلکہ ھمارے لاکھوں آزاد بنکروں کے کرگھوں سے جو میدان بچے وہ ملوں کو دینا ھے. ھم یدی شانتی اور نمرتا سے سمجھنے کی کوشش کریں تو گاندھی جی یہی چاھتے تھے اور اسی میں دیش کی جنتا کا بھلا ھے.

—سندر لال 26. 10. '54

तक और दूसरा उसके बाद. हाथ करघों को जो थोड़ी सी खास रियायतें इस समय मिली हुई हैं उन्हें पहले काल में "और अधिक नहीं बढ़ाया जायगा." इसके अलावा कमेटी ने सरकार से सिफ़ारिश की है कि "एक खास एजन्सी इस बात के लिये क़ायम की जाय कि वह इस बात को देखे कि इस बदलाव में जो खर्च करना पड़ेगा उसे कैसे और किस ढंग से किया जाय." सीधी सादी भाशा में इस सिफ़ारिश का मतलब यह है कि वह धन्दा जिसे हम हाथ करघों का धन्दा कहते हैं देश की आर्थिक व्यवस्था से "दरजे दरजे" ( by stages ) बिल्कुल खत्म कर दिया जावे. फ़िलहाल थोड़े से ऐसे करघे रहने दिये जायेंगे जो ऐसा "नफ़ीस और बहुत नफ़ीस माल तैयार करते हैं" जिसे विदेशों में बेच कर बदले में "विदेशी सिक्के" मिल सकते हैं.

यह "बदलाव" का काम पूरी योजना के साथ कुछ दिनों से बराबर चल रहा है. इसी का नतीजा है कि हाथ बुनकरों की बहुत बड़ी तादाद बिल्कुल बेरोजगार हो चुकी है, और जो रह गए हैं उनमें से अधिकांश, जो चन्द साल पहले तक स्वतंत्र कारीगर थे, अब उन थोड़े से लोगों के लिये रोज़ की मजदूरी करते हैं जिनके पास थोड़ा बहुत पैसा जमा था और जो आसानी से पहले दरजे से निकलकर दूसरे दरजे में पहुंच गए हैं और अब तीसरे दरजे में मिलकर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व खत्म कर देने के लिये तैयार बैठे हैं.

इस सारी समस्या में जो सब से बड़ा पहलू बेरोज़गारी का है उस पर कमेटी ने ध्यान तक नहीं दिया. मालूम होता है कमेटी को सब से बड़ी चिन्ता इसी बात की थी कि किसी तरह कपड़ा मिलों के रास्ते से हाथ करघों की इस निकम्मी अड़चन को दूर किया जावे. उसकी निगाह में हाथ करघों की अगर कोई थोड़ी बहुत उपयोगिता है तो वह इतनी ही कि उनके ज़रिये कुछ "विदेशी सिक्के" मिल सकें. इसीलिये "बदलाव" के जमाने में हाथ करघों में तैयार हुए "मोटे और दरमियाने माल के मुक़ाबले में नफ़ीस और बहुत नफ़ीस माल को" और "मामूली खाकी माल के मुक़ाबले में रंगे छपे बढ़िया माल को" दूसरे दरजे में बने रहने की इजाज़त दी जायगी, और सरकार बड़ी दया करके उन्हें इस बीच के जमाने में "ज़िन्दा रखने का फ़ैसला कर सकती है."

अब रहा खद्दर, सो उसके बारे में कमेटी की सिफ़ारिश है कि एक और "खास तहक़ीक़ात की जानी चाहिये और चारों तरफ़ के जितने हालात खद्दर के धन्दे से सम्बन्ध रखते हैं (या उस पर असर रखते हैं) उन सब को निगाह में रखते हुए खद्दर के धन्दे के बारे में आखरी फ़ैसला होना चाहिये."

जिस देश में आदमियों की कमी हो उसमें यदि हर काम के लिये मशीनों और मिलों पर इस तरह जोर दिया जावे तो कुछ समझ में आ सकता है. पर जिस देश में आदमी इतने



تک اور دوسرا اُس کے بعد. ھاتھ کرگھوں کو جو تھوڑی سی خاص رعایتیں اِس سمئے ملی ھوئی ھیں اُنھیں پہلے کال میں "اور آدھک نہیں بڑھایا جائیگا." اِس کے علاوہ کمیٹی نے سرکار سے سفارش کی ھے کہ "ایک خاص ایجنسی اِس بات کے لئے قایم کی جائے کہ وہ اِس بات کو دیکھے کہ اِس بدلاؤ میں جو خرچ کرنا پڑیگا اُسے کیسے اور کس ڈھنگ سے کیا جائے." سیدھی سادی بھاشا میں اس سفارش کا مطلب یہ ھے کہ وہ دھندا جسے ھم ھاتھ کرگھوں کا دھندا کہتے ھیں دیش کی آرتھک ویوستھا سے "درجے درجے" (by stages) بالکل ختم کردیا جاوے. فی الحال تھوڑے سے ایسے کرگھے رھنے دیئے جاینگے جو ایسا "نفیس اور بہت نفیس مال تیار کرتے ھیں" جسے ودیشوں میں بیچ کر بدلے میں "ودیشی سکے" مل سکتے ھیں.

یہ "بدلاؤ" کا کام پوری یوجنا کے ساتھ کچھ دنوں سے برابر چل رھا ھے. اِسی کا نتیجہ ھے کہ ھاتھ بنکروں کی بہت بڑی تعداد بالکل بیروزگار ھوچکی ھے' اور جو رہ گئے ھیں اُن میں سے ادھیکانش' جو چند سال پہلے تک سوتنتر کاریگر تھے' اب تھوڑے سے اُن لوگوں کے لئے روز کی مزدوری کرتے ھیں جن کے پاس تھوڑا بہت پیسہ جمع تھا اور جو آسانی سے پہلے درجے سے نکل کر دوسرے درجے میں پھونچ گئے ھیں اور اب تیسرے درجے میں مل کر اپنا سوتنتر استتو ختم کر دینے کے لئے تیار بیٹھے ھیں.

اِس ساری سمسیا میں جو سب سے بڑا پہلو بے روزگاری کا ھے اُس پر کمیٹی نے دھیان تک نہیں دیا. معلوم ھوتا ھے کمیٹی کو سب سے بڑی چنتا اِسی بات کی تھی کہ کسی طرح کپڑا ملوں کے راستے سے ھاتھ کرگھوں کی اِس نکمی اڑچن کو دور کیا جاوے. اُس کی نگاہ میں ھاتھ کرگھوں کی اگر کوئی تھوڑی بہت اُپیوگتا ھے تو وہ اتنی ھی کہ اُن کے ذریعہ کچھ "ودیشی سکے" مل سکیں. اِسی لئے "بدلاؤ" کے زمانے میں ھاتھ کرگھوں میں تیار ھوئے "موٹے اور درمیانے مال کے مقابلے میں نفیس اور بہت نفیس مال کو" اور "معمولی خاکی مال کے مقابلے میں رنگے چھپے بڑھیا مال کو" دوسرے درجے میں بنے رھنے کی اجازت دی جائے گی' اور سرکار بڑی دیا کر کے اُنھیں اِس بیچ کے زمانے میں "زندہ رکھنے کا فیصلہ کر سکتی ھے."

اب رھا کھدر' سو اُس کے بارے میں کمیٹی کی سفارش ھے کہ ایک اور "خاص تحقیقات کی جانی چاھئے اور چاروں طرف کے جتنے حالات کھدر کے دھندے سے سمبندھ رکھتے ھیں (یا اُس پر اثر رکھتے ھیں) اُن سب کو نگاہ میں رکھتے ھوئے کھدر کے دھندے کے بارے میں آخری فیصلہ ھونا چاھئے."

جس دیش میں آدمیوں کی کمی ھو اُس میں یدی ھر کام کے لئے مشینوں اور ملوں پر اِس طرح زور دیا جاوے تو کچھ سمجھ میں آ سکتا ھے. پر جس دیش میں آدمی اتنے

कर दुख होता है. कमेटी से जो आशाएं की गई थीं वह सब गलत साबित हुई.

कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार इस समय भारत में कुल इक्कीस लाख नव्वे हज़ार करघे हैं जिन में केवल बारह लाख ऐसे हैं जो "व्यापारी ढंग से सफलता के साथ चल रहे हैं." रिपोर्ट के यह आंकड़े ठीक नहीं माने जा सकते. कमेटी ने खुद अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि उसने "कहीं कहीं जहां तहां नमूने के तौर पर कुछ करघे गिनवा कर उनके आधार पर सारे भारत के लिये यह आंकड़े तैयार कर लिये." पर यदि इन आंकड़ों को ठीक भी मान लिया जावे तब भी एक बात स्पश्ट है कि कमेटी ने केवल उन करघों को लिया है जो "कमेटी की तहक़ीक़ात के समय" चल रहे थे. हमें मालूम है कि इस से कहीं अधिक तादाद उन करघों की है जो कुछ साल पहले तक चल रहे थे और जो अब चीथड़े हुए या जलाने की तीलियां बने हुए कोनों में पड़े हैं, और जिन पर काम करने वाले कारीगरों के पास अब सिवा इसके कोई चारा नहीं कि या तो कहीं कोई और रोज़ी ढूंढें या भूखे मरें. यू० पी० बुनकर फ़ेडरेशन के सदर की हैसियत से दौरा करते हुए उत्तर प्रदेश के कई ज़िलों के बहुत से गांव में इस तरह के हज़ारों अभागे बुनकरों, उनके बाल बच्चों और उनके करघों की इस दुर्दशा को हमने अपनी आंखों से देखा है. इस तरह के करघों की ओर ध्यान न देने में ही कमेटी को अपने काम में सुविधा दिखाई दी. जो करघे कमेटी की तहक़ीक़ात के समय तक चल रहे थे उनमें से भी कमेटी ने जो कुछ सुझाव दिये हैं वह केवल उन करघों के बारे में हैं जो उस समय तक कमेटी की निगाह में "व्यापारी ढंग से सफलता के साथ चल रहे थे," यानी जो मिलों के ज़बरदस्त मुक़ाबले और चारों तरफ़ की विरोधी परिस्थिति के होते हुए भी किसी तरह थोड़ा बहुत मुनाफ़ा कमा रहे हैं. बाक़ी सब लगभग पिछत्तर फ़ीसदी करघों के लिये, जो हमारे आज़ाद होने के दिन तक चल रहे थे और कुछ अब भी चल रहे हैं, कमेटी के अनुसार अब दुनिया में कोई जगह नहीं रही और न रहनी चाहिये.

अब हमें यह देखना है कि जो करघे अभी तक "व्यापारी ढंग से मुनाफ़ा कमा रहे हैं" उनके बारे में कमेटी का क्या सुझाव है. कमेटी ने हमारे सारे कपड़े और बुनाई के धन्दे को तीन हिस्सों या तीन दरजों में बांटा है :—एक हाथ करघे, दूसरे छोटे पैमाने पर बिजली आदि की शक्ति से चलने वाले करघे और तीसरे कपड़ा मिलें. इसके बाद कमेटी का सुझाव है कि "हाथ करघों के धन्दे को दरजे दरजे बदल कर पहले छोटे पैमाने पर बिजली आदि की शक्ति से चलने वाले करघों के धन्दे में बदल दिया जाय और फिर कपड़ा मिलों में बदल दिया जाय." इस "बदलाव (Conversion)" के समय को दो कालों में बांटा गया है, पहला सन 1960



کر دکھ ہوتا ھے ۔ کمیٹی سے جو آشائیں کی گئی تھیں وہ سب غلط ثابت ہوئیں ۔

کمیٹی کی رپورٹ کے انوسار اِس سمئے بھارت میں کل اکیس لاکھ نوے ہزار کرگھے ھیں جن میں کیول بارہ لاکھ ایسے ھیں جو "ویاپاری ڈھنگ سے سپھلتا کے ساتھ چل رہے ھیں." رپورٹ کے یہ آنکڑے ٹھیک نہیں مانے جاسکتے ۔ کمیٹی نے خود اپنی رپورٹ میں لکھا ھے کہ اُس نے "کہیں کہیں جہاں تہاں نمونے کے طور پر کچھ کرگھے گنوا کر اُن کے آدھار پر سارے بھارت کے لئے یہ آنکڑے تیار کرلئے ." پر یدی اِن آنکڑوں کو ٹھیک بھی مان لیا جاوے تب بھی ایک بات اسپشٹ ھے کہ کمیٹی نے کیول اُن کرگھوں کو لیا ھے جو "کمیٹی کی تحقیقات کے سمئے" چل رہے تھے ۔ ھمیں معلوم ھے کہ اِس سے کہیں ادھک تعداد اُن کرگھوں کی ھے جو کچھ سال پہلے تک چل رہے تھے اور جو اب چیتھڑے ہوئے یا جلانے کی تیلیاں بنے ہوئے کونوں میں پڑے ھیں' اور جن پر کام کرنے والے کاریگروں کے پاس اب سوا اِس کے کوئی چارہ نہیں کہ یا تو کہیں کوئی اور روزی ڈھونڈیں یا بھوکھے مریں ۔ یو ۔ پی ۔ بنکر فیڈریشن کے صدر کی حیثیت سے دورہ کرتے ہوئے اُترپردیش کے کئی ضلعوں کے بہت سے گاؤں میں اِس طرح کے ہزاروں ابھاگے بنکروں' اُن کے بال بچوں اور اُن کے کرگھوں کی اِس درگشا کو ھم نے اپنی آنکھوں سے دیکھا ھے ۔ اِس طرح کے کرگھوں کی اور دھیان نہ دینے میں ھی کمیٹی کو اپنے کام میں سودھا دکھائی دی ۔ جو کرگھے کمیٹی کی تحقیقات کے سمئے تک چل رہے تھے اُن میں سے بھی کمیٹی نے جو کچھ سجھاؤ دئے ھیں وہ کیول اُن کرگھوں کے بارے میں ھیں جو اُس سمئے تک کمیٹی کی نگاہ میں "ویاپاری ڈھنگ سے سپھلتا کے ساتھ چل رہے تھے" یعنی جو ملوں کے زبردست مقابلے اور چاروں طرف کی وِرودھی پرستھتی کے ہوتے ہوئے بھی کسی طرح تھوڑا بہت منافع کما رہے ھیں ۔ باقی سب لگ بھگ پچھتر فیصدی کرگھوں کے لئے' جو ھمارے آزاد ہونے کے دن تک چل رہے تھے اور کچھ اب بھی چل رہے ھیں' کمیٹی کے انوسار اب دنیا میں کوئی جگہ نہیں رھی اور نہ رہنی چاھئے ۔

اب ھمیں یہ دیکھنا ھے کہ جو کرگھے ابھی تک "ویاپاری ڈھنگ سے منافع کما رہے ھیں" اُن کے بارے میں کمیٹی کا کیا سجھاؤ ھے ۔ کمیٹی نے ھمارے سارے کپڑے اور بنائی کے دھندے کو تین حصوں یا تین درجوں میں بانٹا ھے :—ایک ھاتھ کرگھے' دوسرے چھوٹے پیمانے پر بجلی آدی کی شکتی سے چلنے والے کرگھے اور تیسرے کپڑا ملیں ۔ اِس کے بعد کمیٹی کا سجھاؤ ھے کہ "ہاتھ کرگھوں کے دھندے کو درجے درجے بدل کر پہلے چھوٹے پیمانے پر بجلی آدی کی شکتی سے چلنے والے کرگھوں کے دھندے میں بدل دیا جائے اور پھر کپڑا ملوں میں بدل دیا جائے." اِس "بدلاؤ (Conversion)" کے سمئے کو دو کالوں میں بانٹا گیا ھے' پہلا سن 1960

जनता ने दिल्ली में, लखनऊ में, बाराबङ्की में और देश भर में श्री रफ़ी अहमद के लिये जो गहरा प्रेम दरशाया और उनके चले जाने पर जो शोक मनाया वह जनता के दिल की चीज़ थी. एक जवाहर लाल जी को छोड़ कर देश भर में शायद ही कोई मिनिस्टर आज आम जनता में इतना सबको प्यारा हो जितना श्री रफ़ी अहमद थे. हमारा उनका भी पच्चीस बरस से ऊपर का गहरा और घनिश्ट सम्बन्ध था. साम्प्रदायिक मामले में श्री रफ़ी अहमद उतने ही पाक साफ़ और बेलाग थे जितना कोई भी इन्सान हो सकता है. वह अद्भुत आदमी थे जिन्हें कांग्रेसी और ग़ैर कांग्रेसी, हिन्दू सभाई और जन संघी, सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट सब एक बराबर प्यार करते थे और जिन पर सब को एक बराबर भरोसा था, क्योंकि एक पार्टी विशेश के होते हुए भी उनके बड़े दिल के अन्दर सब के लिये जगह थी, वह किसी के साथ ग़ैरियत बरतना न जानते थे, सब को ज़रूरत के वक़्त मदद देते थे, आड़े वक़्त में सब के काम आते थे. जनता के सामने इस की सैकड़ों मिसालें हैं. छोटे से छोटे काम करने वालों और जनता के मामूली से मामूली लोगों से वह जिस खुले दिल से मिलते थे उससे मालूम होता था कि हकूमत का घमन्ड उन्हें छू भी नहीं गया था. जिस तरह से उन्होंने कन्ट्रोलों को हटाया और चीज़ों के भाव कम किये उससे पता चलता था कि वह जनता के आदमी थे, और जनता का हित करने की उनमें सूझ और साहस दोनों मौजूद थे. बड़े दरजे तक वह एक आदर्श शासक और शासकों के लिये एक आदर्श थे. प्रेम, उदारता, सरलता, निस्स्वार्थता और सेवा भाव की वह मूर्ति थे. लाखों और करोड़ों हिन्दुस्तानियों के दिलों में उनकी याद बरसों बनी रहेगी. हमारी यही ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति और उनके प्यारे कुटुम्बियों को धीरज दें.

28. 10. '54 — सुन्दरलाल

## भारत सरकार और हमारे ग़रीब बुनकर

हमारा देश जब से आज़ाद हुआ है तब से हमारी हाथ के कपड़े की दस्तकारी तेज़ी से मिटती चली जा रही है, जिससे हमारे लाखों बुनकरों और उससे मिलते जुलते धन्दों में लगे हुए दूसरे कारीगरों में बेकारी बढ़ती जा रही है. भारत सरकार ने हाल में एक बुनकरी तहक़ीक़ाती कमेटी ( टैक्सटाइल इन्क्वायरी कमेटी ) नियुक्त की थी. लोगों को आशा हुई थी कि यह कमेटी सरकार को कुछ ऐसी बातें सुझाएगी जिनसे हमारा हाथ करघों का धन्दा फिर से चमक सके और गांवों और शहरों दोनों में बेकारी घट सके. कमेटी ने अपनी रिपोर्ट सरकार को दे दी. रिपोर्ट को पढ़



جنتا نے دلی میں، لکھنؤ میں، بارہ بنکی میں اور دیش بھر میں شری رفیع احمد کے لئے جو گہرا پریم درشایا اور اُن کے چلے جانے پر جو شوک منایا وہ جنتا کے دل کی چیز تھی۔ ایک جواہر لال جی کو چھوڑ کر دیش بھر میں شاید ہی کوئی منسٹر آج عام جنتا میں اتنا سب کو پیارا ہو جتنا شری رفیع احمد تھے۔ ہمارا اُن کا بھی پچیس برس سے اوپر کا گہرا اور گھنشٹ سمبندھ تھا۔ سامپردایک معاملہ میں شری رفیع احمد اتنے ہی پاک صاف اور بے لاگ تھے جتنا کوئی بھی اِنسان ہو سکتا ہے۔ وہ ادبھت آدمی تھے جنھیں کانگریسی اور غیر کانگریسی، ہندو سبھائی اور جن سنگھی، سوشلسٹ اور کمیونسٹ سب ایک برابر پیار کرتے تھے اور جن پر سب کو ایک برابر بھروسہ تھا، کیونکہ ایک پارٹی وشیش کے ہوتے ہوئے بھی اُن کے بڑے دل کے اندر سب کے لئے جگہ تھی، وہ کسی کے ساتھ غیریت برتنا نہ جانتے تھے، سب کو ضرورت کے وقت مدد دیتے تھے، آڑے وقت میں سب کے کام آتے تھے۔ جنتا کے سامنے اِس کی سیکڑوں مثالیں ہیں۔ چھوٹے سے چھوٹے کام کرنے والوں اور جنتا کے معمولی سے معمولی لوگوں سے وہ جس کھلے دل سے ملتے تھے اُس سے معلوم ہوتا تھا کہ حکومت کا گھمنڈ اُنھیں چھو بھی نہیں گیا تھا۔ جس طرح سے اُنھوں نے کنٹرولوں کو ہٹایا اور چیزوں کے بھاؤ کم کئے اُس سے پتہ چلتا تھا کہ وہ جنتا کے آدمی تھے، اور جنتا کا ہت کرنے کی اُن میں سوجھ اور ساہس دونوں موجود تھے۔ بڑے درجے تک وہ ایک آدرش شاسک اور شاسکوں کے لئے ایک آدرش تھے۔ پریم، اُدارتا، سرلتا، نسوارتھتا اور سیوا بھاؤ کی وہ مورتی تھے۔ لاکھوں اور کروڑوں ہندستانیوں کے دلوں میں اُن کی یاد برسوں بنی رہیگی۔ ہماری یہی ایشور سے پرارتھنا ہے کہ وہ اُن کی آتما کو شانتی اور اُن کے پیارے کٹمبیوں کو دھیرج دیں۔

—سندر لال 28 . 10 . '54

## بھارت سرکار اور ہمارے غریب بنکر

ہمارا دیش جب سے آزاد ہوا ہے تب سے ہماری ہاتھ کے کپڑے کی دستکاری تیزی سے مٹتی چلی جا رہی ہے، جس سے ہمارے لاکھوں بنکروں اور اُس سے ملتے جلتے دھندوں میں لگے ہوئے دوسرے کاریگروں میں بیکاری بڑھتی جا رہی ہے۔ بھارت سرکار نے حال میں ایک بنکری تحقیقاتی کمیٹی ( ٹیکسٹائل انکوائری کمیٹی ) نیکت کی تھی، لوگوں کو آشا ہوئی تھی کہ یہ کمیٹی سرکار کو کچھ ایسی باتیں سجھائیگی جن سے ہمارا ہاتھ کرگھوں کا دھندا پھر سے چمک سکے اور گاؤں اور شہروں دونوں میں بیکاری گھٹ سکے۔ کمیٹی نے اپنی رپورٹ سرکار کو دے دی۔ رپورٹ کو پڑھ

तक पक्के ईश्वर भक्त थे. पर वह सब धर्मों की एकता में भी पूरा विश्वास रखते थे. किसी तरह की साम्प्रदायिक या प्रान्तीय या कोई और तंग नज़री या छुआ छूत उनमें छू भी नहीं गई थी. हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बंगाली और हिन्दुस्तानी उनके लिये सब बराबर थे. गीता और क़ुरान उनके लिये एक से आदर की पुस्तकें थीं. उनकी आख़री बीमारी में जब मौत उनके सामने नाच रही थी हमें एक दिन कई घंटे उनके पास बैठने का सौभाग्य मिला. बार बार उनकी लड़खड़ाती हुई ज़बान से महात्मा गांधी की प्रार्थना के मशहूर भजन की यही लाइन निकल रही थी :—

"ईश्वर अल्लाह तेरे नाम—सब को सम्मति दे भगवान."

बाबू नित्यानन्द चैटरजी एक ग़रीब गृहस्थ थे. पर उनकी ग़रीबी ख़ुद अपनी मोल ली हुई थी. जवानी में धन कमाने के उनके लिये बहुत से रास्ते खुले हुए थे. वह चाहते तो ख़ूब कमा सकते थे. पर उन्होंने अपना जीवन देश को आज़ाद कराने की कोशिशों में खपा देना अधिक पसन्द किया. वह हद दरजे के नेक, सच्चे, ईमानदार, कुनबापरवर, मेहमां नवाज़ और प्रेम की साक्षात मूर्ति थे. राजकाज से बाहर किसी अपने साथ बुराई करने वाले का एक पल के लिये भी बुरा चेतना उनके लिये नामुमकिन था. अख़बारों में चमकने की न उनमें कभी इच्छा हुई और न इसकी शायद उनमें योग्यता ही थी. हमारी क़ौमी आज़ादी की इमारत में वह सजावट के पत्थर बनकर कभी न चमके. पर इसमें ज़रा भी शक नहीं कि वह उन मुबारिक और ख़ुश-क़िस्मत लोगों में से थे जिनकी लाशों पर यह इमारत ऊंची की गई है और आज खड़ी दिखाई दे रही है. हमें यह भी मालूम है कि दुनिया की बड़ी से बड़ी और सुन्दर से सुन्दर इमारतें सजावट के पत्थरों के सहारे नहीं खड़ी रहतीं. वह उन पत्थरों और कंकड़ों के सहारे खड़ी रहती हैं जो बुनियादों में पड़े होते हैं और जिनकी तरफ़ कभी किसी यात्री या दर्शक की निगाह तक नहीं जा सकती. जिन नौजवानों के दिलों में सच्ची देश सेवा और मानव सेवा की लगन है उनके लिये ऐसी ज़िन्दगियां काफ़ी सबक़ देने वाली हैं.

20. 10. '54 —सुन्दरलाल

## श्री रफ़ी अहमद किदवाई

23 अक्तूबर सन 1954 की शाम को दिल्ली में श्री रफ़ी अहमद किदवाई की अचानक मृत्यु सारे देश के लिये एक अत्यन्त शोक भरी घटना थी.

इस मौक़े की फ़ौजी सलामियों और सरकारी टीपटाप से हमें कोई वास्ता नहीं. दुनिया की सरकारें अपनी शक्ति और अपनी धाक को और मज़बूत करने के लिये ऐसे सब अवसरों से फ़ायदा उठाती ही हैं. यहां हमें मतलब केवल स्वर्गीय श्री रफ़ी अहमद किदवाई के व्यक्तित्व से है.



تک پکے ایشور بھگت تھے . پر وہ سب دھرموں کی ایکتا میں بھی پورا وشواس رکھتے تھے . کسی طرح کی سامپردائک یا پرانتیہ یا کوئی اور تنگ نظری یا چھواچھوت اُن میں چھو بھی نہیں گئی تھی . ھندو، مسلمان، عیسائی، بنگالی اور ھندستانی اُن کے لئے سب برابر تھے . گیتا اور قرآن اُن کے لئے ایک سے آدر کی پستکیں تھیں . اُن کی آخری بیماری میں جب موت اُن کے سامنے ناچ رھی تھی ھمیں ایک دن کئی گھنٹے اُن کے پاس بیٹھنے کا سوبھاگیہ ملا . بار بار اُن کی لڑکھڑاتی ھوئی زبان سے مہاتما گاندھی کی پرارتھنا کے مشہور بھجن کی یہی لائن نکل رھی تھی :—

" ایشور الله تیرے نام—سب کو سمتی دے بھگوان ."

بابو نتیا نند چیٹرجی ایک غریب گریھستھ تھے ، پر اُن کی غریبی خود اپنی مول لی ھوئی تھی . جوانی میں دھن کمانے کے اُن کے لئے بہت سے راستے کھلے ھوئے تھے . وہ چاھتے تو خوب کما سکتے تھے . پر اُنھوں نے اپنا جیون دیش کو آزاد کرانے کی کوششوں میں کھپا دینا ادھک پسند کیا . وہ حد درجے کے نیک، سچے، ایماندار، کنبہ پرور، مہماں نواز اور پریم کی ساکشات مورتی تھے . راج کاج سے باھر کسی اپنے ساتھ برائی کرنے والے کا ایک پل کے لئے بھی برا چیتنا اُن کے لئے نا ممکن تھا . اخباروں میں چمکنے کی نہ اُن میں کبھی اِچھا ھوئی اور نہ اِس کی شاید اُن میں یوگتا ھی تھی . ھماری قومی آزادی کی عمارت میں وہ سجاوٹ کے پتھر بن کر کبھی نہ چمکے . پر اِس میں ذرا بھی شک نہیں کہ وہ اُن مبارک اور خوش قسمت لوگوں میں سے تھے جن کی لاشوں پر یہ عمارت اونچی کی گئی ھے اور آج کھڑی دکھائی دے رھی ھے . ھمیں یہ بھی معلوم ھے کہ دنیا کی بڑی سے بڑی اور سندر سے سندر عمارتیں سجاوٹ کے پتھروں کے سہارے نہیں کھڑی رھتیں . وہ اُن پتھروں اور کنکڑوں کے سہارے کھڑی رھتی ھیں جو بنیادوں میں پڑے ھوتے ھیں اور جن کی طرف کبھی کسی یاتری یا درشک کی نگاہ تک نہیں جا سکتی . جن نوجوانوں کے دلوں میں سچی دیش سیوا اور مانو سیوا کی لگن ھے اُن کے لئے ایسی زندگیاں کافی سبق دینے والی ھیں .

20 . 10 . '54 —سندر لال

## شری رفیع احمد کدوائی

23 اکتوبر سن 1954 کی شام کو دلی میں شری رفیع احمد کدوائی کی اچانک مرتیو سارے دیش کے لئے ایک اتیفت شوک بھری گھٹنا تھی .

اِس موقع کی فوجی سلامیوں اور سرکاری ٹیپ ٹاپ سے ھمیں کوئی واسطہ نہیں . دنیا کی سرکاریں اپنی شکتی اور اپنی دھاک کو اور مضبوط کرنے کے لئے ایسے سب اوسروں سے فایدہ اُٹھاتی ھی ھیں . یہاں ھمیں مطلب کیول سورگیہ شری رفیع احمد کدوائی کے ویکتتو سے ھے .

के पीछे बाथरूम से मिली हुई कीचड़ में पड़ी एक गोल सी अजीब चीज़ दिखाई दी. उसे इम्तहान के लिये भेजा गया. पता चला कि बम बहुत ख़तरनाक था. इत्तफ़ाक़ से रात को फेंकने वाले का निशाना चूक गया. बम बजाय कमरे के अंदर गिरने के बाथरूम के पीछे की नरम मिट्टी में गिरा और वहीं फंसकर रह गया. ख़ानसामां की पोशाक में कमरे के पीछे से उस बम को फेंकने वाला नौजवान यही नित्यानन्द चैटरजी था. पुलीस फेंकने वाले या उसके किसी साथी का सुराग़ न लगा सकी.

इसी तरह की और भी घटनाएं इस समय हमारी याद के सामने हैं. पर हम यहां बाबू नित्यानन्द की जीवनी लिखने नहीं बैठे. श्री अरविन्द घोश जिस ज़माने में कलकत्ते से बैठे हुए देश के क्रान्तिकारी आन्दोलन की रहनुमाई कर रहे थे उस ज़माने में अरविन्द बाबू के और इस प्रान्त के बीच में जो इने गिने लोग सन्देश लाने लेजाने का काम करते थे उनमें से एक बाबू नित्यानन्द चैटरजी थे. लोकमान्य तिलक और लाला लाजपत राय दोनों से उनके गहरे सम्बन्ध थे. यह थी बाबू नित्यानन्द की शुरू की ज़िन्दगी.

तब से लेकर मौत के दिन तक बाबू नित्यानन्द चैटर-जी का सारा जीवन अपनी छोटी सी शक्ति के अनुसार देश की सेवा में ही बीता. सन 1908 के उस उर्दू अख़बार "स्वराज्य" के साथ, जिसने भारत भर में शायद सबसे ज़ियादा एडिटर जेल और काले पानी भेजे, बाबू नित्यानन्द का पूरा सम्बन्ध था. हिन्दी अख़बार "कर्मयोगी" के जो सन 1909 में निकल कर सन 1910 में बन्द हो गया नित्यानन्द जी मैनेजर थे. प्रयाग पबलिशिंग कम्पनी के जो 'कर्म योगी' निकालती थी नित्यानन्द जी मैनेजिंग डाइरेक्टर थे. सन 1918 के साप्ताहिक "भविश्य" और सन 1919 के दैनिक "भविश्य" दोनों के वह मैनेजर थे. "नया हिन्द" के वह मैनेजर थे ही. अख़बारों, ख़ासकर क़ौमी अख़बारों और प्रेस के काम का उन्हें बहुत गहरा तजुर्बा था.

जन सेवा की भी बाबू नित्यानन्द में गहरी लगन थी. सन 1908 के अवध के भयंकर अकाल से लेकर सन 1934 के बिहार भूकम्प तक जगह जगह उन्होंने जान लड़ा कर और डट कर दुखियों की सेवा की. सन 1919 में इलाहाबाद होमरूल लीग के दफ़्तर को वही संभाले हुए थे. सन 1919 के बाद से वह महात्मा गांधी के सच्चे प्रशंसकों में से थे.

सन 1930 और सन 1932 के सत्याग्रह आन्दोलनों में उनका घर सब देश भक्तों और काम करने वालों के लिये आश्रय की जगह थी. सन 1930 में बहुत दिनों तक प्रान्तीय कांगरेस का और आन्दोलन का दोनों का दफ़्तर उन्हीं के घर में रहा.

बाबू नित्यानन्द चैटरजी शुरू उमर से लेकर आख़ीर



کے پیچھے باتھ روم سے ملی ہوئی کیچڑ میں پڑی ایک گول سی عجیب چیز دکھائی دی . اُسے امتحان کے لئے بھیجا گیا . پتہ چلا کہ بم بہت خطرناک تھا . اتفاق سے رات کو پھینکنے والے کا نشانا چوک گیا . بم بجائے کمرے کے اندر گرنے کے باتھ روم کے پیچھے کی نرم مٹی میں گرا اور وھیں پھنسکر رہ گیا . خانساماں کی پوشاک میں کمرے کے پیچھے سے اُس بم کو پھینکنے والا نوجوان یہی نتیانند چیٹر جی تھا . پولیس پھینکنے والے یا اُس کے کسی ساتھی کا سراغ نہ لگا سکی .

اِسی طرح کی اور بھی گھٹنائیں اِس سمے ھماری یاد کے سامنے ھیں . پر ھم یہاں بابو نتیانند کی جیونی لکھنے نہیں بیٹھے . شری آروند گھوش جس زمانے میں کلکتے سے بیٹھے ہوئے دیش کے کرانتی کاری آندولن کی رھنمائی کررھے تھے اُس زمانے میں آروند بابو کے اور اِس پرانت کے بیچ میں جو اِنے گنے لوگ سندیش لانے لیجانے کا کام کرتے تھے اُن میں سے ایک بابو نتیانند چیٹر جی تھے . لوکمانیہ تلک اور لالہ لاجپت رائے دونوں سے اُن کے گہرے سمبندھ تھے . یہ تھی بابو نتیانند کی شروع کی زندگی .

تب سے لیکر موت کے دن تک بابو نتیا نند چیٹر جی کا سارا جیون اپنی چھوٹی سی شکتی کے انوسار دیش کی سیوا میں ھی بیتا . سن 1908 کے اُس اُردو اخبار " سوراجیہ " کے ساتھ' جس نے بھارت بھر میں شاید سب سے زیادہ ایڈیٹر جیل اور کالے پانی بھیجے' بابو نتیا نند کا پورا سمبندھ تھا . ھندی اخبار " کرم یوگی " کے جو سن 1909 میں نکل کر سن 1910 میں بند ھوگیا نتیا نند جی منیجر تھے . پریاگ پبلشنگ کمپنی کے جو ' کرم یوگی ' نکالتی تھی نتیا نند جی مینیجنگ ڈائرکٹر تھے . سن 1918 کے ساپتاھک " بھوشیہ " اور سن 1919 کے دینک " بھوشیہ " دونوں کے وہ مینیجر تھے . " نیا ھند " کے وہ مینیجر تھے ھی . اخباروں' خاص کر قومی اخباروں اور پریس کے کام کا اُنھیں بہت گہرا تجربہ تھا .

جن سیوا کی بھی بابو نتیا نند میں گہری لگن تھی . سن 1908 کے آودھ کے بھینکر آکال سے لے کر سن 1934 کے بہار بھوکمپ تک جگہ جگہ اُنھوں نے جان لڑا کر اور ڈٹ کر دکھیوں کی سیوا کی . سن 1919 میں الہ آباد ھوم رول لیگ کے دفتر کو وھی سنبھالے ہوئے تھے . سن 1919 کے بعد سے وہ مہاتما گاندھی کے سچے پرشنسکوں میں سے تھے .

سن 1930 اور سن 1932 کے ستیاگرہ آندولنوں میں اُن کا گھر سب دیش بھگتوں اور کام کرنے والوں کے لئے آشرے کی جگہ تھی . سن 1930 میں بہت دنوں تک پرانتیہ کانگریس کا اور آندولن کا دونوں کا دفتر اُنھیں کے گھر میں رھا .

بابو نتیا نند چیٹرجی شروع عمر سے لے کر آخیر

# हमारी राय

# ہماری رائے

## बाबू नित्यानन्द चैटरजी

सोलह अक्तूबर सन 1954 को दिन के दो बजकर बीस मिनट पर "नया हिन्द" के मैनेजर बाबू नित्यानन्द चैटरजी का इलाहाबाद में स्वर्गवास हो गया. बाबू नित्यानन्द नया हिन्द परिवार में सब से बड़े थे. परिवार के दूसरे लोग अपनी अपनी उमर के अनुसार उन्हें 'दादा' या 'बाबा' कहा करते थे. उनकी उमर लगभग तिहत्तर बरस की थी. कई महीने से वह बीमार चले आते थे. बीमारी की हालत में भी "नया हिन्द" परिवार के दूसरे लोगों को आए दिन हर छोटे बड़े काम में उनसे जो नेक और क़ीमती सलाह मिलती रहती थी, उसका मिलना अब हमेशा के लिये बन्द हो गया. पर आजकल के ज़माने में उमर के लिहाज़ से उनकी मृत्यु कोई अचरज की बात नहीं थी. उनके लिये वह मानसिक और शारीरिक कश्टों से छुटकारा थी. हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति और उनके कुटुम्बियों को धीरज दें.

बाबू नित्यानन्द उन पुराने त्यागी देश भक्तों में से थे जिन्होंने सन 1905 में बंगाल के दो टुकड़े किये जाने के बाद इस देश को अंग्रेज़ी राज के पंजों से आज़ाद करने का बीड़ा उठाया था और जिनका सारा जीवन इसी धुन में बीता. इन पंक्तियों के लेखक का बाबू नित्यानन्द के साथ पूरे अड़तालीस साल का गहरा सम्बन्ध था. इस देश की आज़ादी के इतिहास के बहुत से पन्ने ऐसे हैं जो आगे की नसलों की निगाह से हमेशा ओझल ही रहेंगे. शायद यही अच्छा भी है. आगे की नसलों पर सब बातों को याद रखने का बोझ क्यों डाला जाय. फिर भी इस अवसर पर हम बाबू नित्यानन्द के शुरू के जीवन की एक छोटी सी घटना बयान करते हैं.

आज से लगभग छियालीस बरस पहले एक दिन सुबह को कुछ अख़बारों में यह ख़बर छपी कि पिछली रात इलाहाबाद के अंगरेज़ी कलब के एक कमरे में इस प्रान्त के कुछ बड़े बड़े अंगरेज़ हाकिमों की एक बैठक हुई थी. नए आन्दोलन को दबाने की तरकीबें सोची जा रही थीं. बैठक शान्ति से हो गई. पर अगले दिन सुबह को बैठक वाले कमरे

## بابو نتیانند چیٹرجی

سولہ اکتوبر سن 1954 کو دن کے دو بجکر بیس منٹ پر 'نیا ھند' کے مینیجر بابو نتیانند چیٹرجی کا الہ آباد میں سورگ واس ھوگیا . بابو نتیانند "نیا ھند" پریوار میں سب سے بڑے تھے . پریوار کے دوسرے لوگ اپنی اپنی عمر کے انوسار انھیں 'دادا' یا 'بابا' کہا کرتے تھے . اُن کی عمر لگ بھگ تہتر برس کی تھی . کئی مہینے سے وہ بیمار چلے آتے تھے . بیماری کی حالت میں بھی "نیا ھند" پریوار کے دوسرے لوگوں کو آئے دن ھر چھوٹے بڑے کام میں اُن سے جو نیک اور قیمتی صلاح ملتی رھتی تھی اُس کا ملنا اب ھمیشہ کے لئے بند ھوگیا . پر آج کل کے زمانے میں عمر کے لحاظ سے اُن کی مرتیو کوئی اچرج کی بات نہیں تھی . اُن کے لئے وہ مانسک اور شاریرک کشٹوں سے چھٹکارا تھی . ھم بھگوان سے پرارتھنا کرتے ھیں کہ وہ اُن کی آتما کو شانتی اور اُن کے کٹمبیوں کو دھیرج دیں .

بابو نتیانند اُن پرانے تیاگی دیش بھکتوں میں سے تھے جنھوں نے سن 1905 میں بنگال کے دو ٹکڑے کئے جانے کے بعد اِس دیش کو انگریزی راج کے پنجوں سے آزاد کرنے کا بیڑا اُٹھایا تھا اور جن کا سارا جیون اِسی دھن میں بیتا . اِن پنکتیوں کے لیکھک کا بابو نتیانند کے ساتھ پورے اڑتالیس سال کا گہرا سمبندھ تھا . اِس دیش کی آزادی کے اِتہاس کے بہت سے پنے ایسے ھیں جو آگے کی نسلوں کی نگاہ سے ھمیشہ اوجھل ھی رھینگے . شاید یہی اچھا بھی ھے . آگے کی نسلوں پر سب باتوں کو یاد رکھنے کا بوجھ کیوں ڈالا جائے . پھر بھی اِس اوسر پر ھم بابو نتیانند کے شروع کے جیون کی ایک چھوٹی سی گھٹنا بیان کرتے ھیں .

آج سے لگ بھگ چھیالیس برس پہلے ایک دن صبح کو کچھ اخباروں میں یہ خبر چھپی کہ پچھلی رات الہ آباد کے انگریزی کلب کے ایک کمرے میں اِس پرانت کے کچھ بڑے بڑے انگریز حاکموں کی ایک بیٹھک ھوئی تھی . نئے آندولن کو دبانے کی ترکیبیں سوچی جارھی تھیں . بیٹھک شانتی سے ھوگئی . پر اگلے دن صبح کو بیٹھک والے کمرے

लाशेंग की गर्दन पर मां येह की आंखों के गरम गरम आंसू टपकने लगे. वह खड़ा हो गया और दोनों बाहों में बूढ़ी मां को समेट लिया.

वह बोला—"मां, यह सच है. मैं तुम्हारा ही बेटा हूं."

मां यह को इतनी बातें करनी थीं कि वह कहां से शुरू करें, समझ नहीं पा रही थीं. सिसकियां लेते हुये वह बोली-"मेरा मन यह सोचकर ही घृना से भर जाता है. जमींदार जेंग का अत्याचार तो आकाश की ऊंचाई और समुद्र की गहराई से भी ज्यादा था. उसकी तो बोटी बोटी काटकर कुत्तों को खिला देनी चाहिये. तुम्हें मुझसे बीस बरस तक अलग रक्खा गया. सारा परिवार इधर उधर छिन्न भिन्न रहा. यदि चेयरमैन माओ का राज न आता तो मैं शायद तुम्हें देख भी न पाती. तुम्हारे पिता, तुम्हारे बड़े भाई, तुम्हारी बहिन जेड,....जेड इतनी प्यारी लड़की है. बीस साल तक मेरे साथ तकलीफ़ उठाती रही."



لاشینگ کی گردن پر ماں یہہ کی آنکھوں کے گرم گرم آنسو ٹپکنے لگے. وہ کھڑا ہوگیا اور دونوں ہاتھوں میں بوڑھی ماں کو سمیٹ لیا.

وہ بولا—"ماں، یہ سچ ہے. میں تمہارا ہی بیٹا ہوں."

ماں یہ کو اتنی باتیں کرنی تھیں کہ وہ کہاں سے شروع کریں، سمجھ نہیں پا رہی تھیں. سسکیاں لیتے ہوئے وہ بولی—"میرا من یہ سوچ کر ہی گھرنا سے بھر جاتا ہے. زمیندار جینگ کا اتیاچار تو آکاش کی اونچائی اور سمندر کی گہرائی سے بھی زیادہ تھا. اس کی تو بوٹی کاٹ کر کتوں کو کھلا دینی چاہئیے. تمہیں مجھ سے بیس برس تک الگ رکھا گیا. سارا پریوار ادھر ادھر چھن بھن رہا. یدی چیئرمین ماؤ کا راج نہ آتا تو میں شاید تمہیں دیکھ بھی نہ پاتی. تمہارے پتا، تمہارے بڑے بھائی، تمہاری بہن جیڈ......'جیڈ' اتنی پیاری لڑکی ہے. بیس سال تک وہ میرے ساتھ تکلیف اٹھاتی رہی."

---

के अंग अंग को विश्वास दिलाना चाहती थी कि उसका भाई आ गया है.

वह बोली—"मां, यह बिल्कुल सच है. एक हज़ार बार सच है, एक लाख बार सच है. जिस दिन तुमने मुझे बताया था उसी के दूसरे दिन मैंने इस विषय पर जे-पिंग से बातें की थीं. जब वह गल्ला पहुंचाने गया था, समय निकाल कर वह शेंज्या फ़ील्ड गांव भी गया. जे-पिंग ने उसे ढूंढ निकाला. मैं उनसे गांव के सरकारी दफ़्तर में मिल कर आ रही हूं. गांव के मेयर उन्हें यहां आने से पहले नाश्ता करा रहे हैं."

ख़ुशी के कारन मां येह को अपना शरीर हल्का होकर उड़ता हुआ मालूम होने लगा. वह आनन्द से विभोर हो उठीं. आंखों के सामने धुंधलापन छा गया और सारी दुनिया नाचती दिखाई देने लगी. छन भर के लिये वह यह भी भूल गईं कि वह कहां बैठी हैं. जब तक उसे होश आये जेड जा चुकी थी. बूढ़ी मां आंखें मल मल कर देखने लगीं कि कहीं अब तक सपना तो नहीं देख रही थीं. ज़मीन पर कपड़ा रक्खा था, सुई और डोरा भी वैसे ही रक्खा था. उसे सामने की सड़क पर आदमियों की एक टोली उसी की तरफ़ आती दिखलाई पड़ी.

मां येह आंख फाड़ फाड़ कर देखने लगीं. जितना ही वह देखने का प्रयत्न करतीं, उनकी परेशानी उतनी ही बढ़ जाती. उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि उस टोली में उनका कोई लड़का नहीं है, वह अवश्य ही कोई दूसरा व्यक्ति होगा. टोली उसके घर के नज़दीक आ गई थी, पर उसे अब भी साफ़ नहीं दिखलाई पड़ता था. अब सब लोग उसके क़रीब आ गये थे. भावावेग में उसका शरीर हिलने लगा,

जेड दौड़ती हुई ऊपर आई और मां को संभालते हुये बोली—"मां, यह देखो, भाई लाशेंग आ गये!"

धुंधली नज़रों से मां येह ने देखा कि उसके सामने एक लम्बा आदमी सिर झुकाये खड़ा है. वह बोला—"मां!" उसका गला भर आया था. वह आगे बढ़ कर अपने हाथों से उसका मुंह ऊंचा करना चाहती थी लेकिन वह हिल भी न सकी. तब तक सब आदमी इकट्ठा हो गये थे और वह उनके बीच घिर गई.

जेड ने लैम्प जला कर रोशनी की और सब लोगों को बैठाया. मां येह धीरे धीरे अपने को पूरी तौर से संभाल चुकी थीं और अब उनकी समझ में आया कि उनके सामने क्या हो रहा है. वह उठ खड़ी हुईं और हाथ में लैम्प लेकर अजनबी के नज़दीक गईं. उसका सिर थोड़ा सा झुका कर उसने उसकी गर्दन के पास एक निशान ढूंढने का प्रयत्न किया. उसके लड़के की पैदाइश की निशानी—गर्दन पर काला निशान—उस व्यक्ति की गर्दन पर था.

"मेरे बेटे!...तुम वास्तव में लाशेंग ही हो", वह बोली.



کے انگ انگ کو وشواس دلانا چاھتی تھی کہ اس کا بھائی آ گیا ھے.

وہ بولی—"ماں' یہ بالکل سچ ھے. ایک ھزار بار سچ ھے' ایک لاکھ بار سچ ھے.

جس دن تم نے مجھے بتایا تھا اُسی کے دوسرے دن میں نے اِس وشے پر زے-پنگ سے باتیں کی تھیں. جب وہ غلہ پہونچانے گیا تھا' سمے نکال کر وہ شینجیا فیلڈ گاؤں بھی گیا. زے. پنگ نے اُسے ڈھونڈھ نکالا. میں اُن سے گاؤں کے سرکاری دفتر میں ملکر آ رھی ھوں. گاؤں کے میئر انھیں یہاں آنے سے پہلے ناشتہ کرا رھے ھیں."

خوشی کے کارن ماں یہہ کو اپنا شریر ھلکا ھو کر اُڑتا ھوا معلوم ھونے لگا. وہ آنند سے وبھور ھو اُٹھیں. آنکھوں کے سامنے دھندھلاپن چھا گیا اور ساری دنیا ناچتی دکھائی دینے لگی. چھن بھر کے لئے وہ یہ بھی بھول گئیں کہ وہ کہاں بیٹھی ھیں. جب تک اُسے ھوش آئے جیڈ جا چکی تھی. بوڑھی ماں آنکھیں مل مل کر دیکھنے لگیں کہ کہیں اب تک سپنا تو نہیں دیکھ رھی تھیں. زمین پر کپڑا رکھا تھا' سوئی اور ڈورا بھی ویسے ھی رکھا تھا. اُسے سامنے کی سڑک پر آدمیوں کی ایک ٹولی اُسی کی طرف آتی دکھائی پڑی.

ماں یہہ آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر دیکھنے لگیں. جتنا ھی وہ دیکھنے کا پریتن کرتیں' اُن کی پریشانی اُتنی ھی بڑھ جاتی. اُس نے اپنے من میں نشچے کر لیا کہ اُس ٹولی میں اُن کا کوئی لڑکا نہیں ھے' وہ اوشیہ ھی کوئی دوسرا ویکتی ھوگا. ٹولی اُس کے گھر کے نزدیک آ گئی تھی' پر اُسے اب بھی صاف نہیں دکھائی پڑتا تھا. اب سب لوگ اس کے قریب آ گئے تھے. بھاوآویگ میں اس کا شریر ھلنے لگا.

جیڈ دوڑتی ھوئی اُوپر آئی اور ماں کو سنبھالتے ھوئے بولی—" ماں' یہ دیکھو' بھائی لاشینگ آ گئے!"

دھندھلی نظروں سے ماں یہہ نے دیکھا کہ اس کے سامنے ایک لمبا آدمی سر جھکائے کھڑا ھے. وہ بولا—"ماں!" اُس کا گلا بھر آیا تھا. وہ آگے بڑھکر اپنے ھاتھوں سے اُس کا منھ اونچا کرنا چاھتی تھی لیکن وہ ھل بھی نہ سکی. تب تک سب آدمی اکٹھا ھو گئے تھے اور وہ اُن کے بیچ گھر گئی.

جیڈ نے لیمپ جلا کر روشنی کی اور سب لوگوں کو بیٹھایا. ماں یہہ دھیرے دھیرے اپنے کو پوری طور سے سنبھال چکی تھیں اور اب اُن کی سمجھ میں آیا کہ اُن کے سامنے کیا ھو رھا ھے. وہ اُٹھ کھڑی ھوئیں اور ھاتھ میں لیمپ لیکر اجنبی کے نزدیک گئیں. اُس کا سر تھوڑا سا جھکا کر اُس نے اُس کی گردن کے پاس ایک نشان ڈھونڈھنے کا پریتن کیا. اس کے لڑکے کی پیدائش کی نشانی—گردن پر کالا نشان—اس ویکتی کی گردن پر تھا.

"میرے بیٹے!...تم واستو میں لاشینگ ھی ھو" وہ بولی.

पड़ता है. पहिले वह खुद वहां जाकर देखे कि क्या हाल है और फिर बाद में तय किया जायेगा कि आगे क्या हो."

उसने जेड को चेतावनी दी कि मां येह को अभी कुछ न बताये क्योंकि उनकी उम्मीदों को बढ़ा देने से और उन्हें ज्यादा आतुर बनाने से कोई लाभ नहीं है.

जिस दिन गांव वालों की टोली शहर को जाने वाली थी जेड ने चुपके से वह समझौता पत्र जिससे बच्चों की अदला बदली हुई थी जे-पिंग को दे दिया. गांव के अधिकारियों से उसने जाने के पहले ही एक परिचय पत्र भी प्राप्त कर लिया.

एक के बाद दूसरा दिन गुज़रता गया. गांव की टोली वापस आई और दूसरी बार ग़ल्ला देने के लिये फिर वापस चली गयी. जब भी जेड दूसरी तरफ़ के ढाल को जाती वह खड़ी होकर जे-पिंग के आने का इन्तज़ार करती. अब वह आशा लिये हुए आतुर खड़ी रहती थी.

मां येह ने देखा कि आजकल उसकी लड़की जेड ज्यादा चिन्तित रहती है. यदि घर में जेड के पास काम नहीं रहता था तो वह खाना खाते ही भाग निकलती थी.

मां येह एक दिन उस पर नाराज़ हुईं और कहा—"तुम्हारा विवाह होने जा रहा है, पर तुम तैयारियां क्यों नहीं करतीं ? गांव का आवश्यक काम फिर भी हो सकता है."

एक दिन शाम के वक्त कमरे के कोने में बैठी हुई मां येह लड़की के लिये कुछ अच्छे कपड़े सी रही थीं. सूरज डूबने ही वाला था. थक कर मां येह चूर हो चुकी थीं. वह उठ खड़ी हुईं और आंख मलने लगीं. सोचा कि शाम की ठंडक में फ़सल को पानी ही दे आएं. घर से बाहर निकलते ही देखा कि गांव के सरकारी दफ़्तर से जेड दौड़ती हुई चली आ रही है. बूढ़ी मां येह खड़ी, चिन्ता से भरी नज़रों से जेड का दौड़ कर आना देखती रहीं.

हांपती हुई जेड आई और मां के गले में हाथ डाल कर लटकते हुये बोली—"मां, बहुत अच्छी ख़बर है, बहुत बड़ी बात मुझे कहना है."

"क्या बात है ? तुम हमेशा ऐसा ही कहती हो" मां बोलीं.

जेड ने पहले माथे पर से पसीना पोंछा और बोली—"मां, क्या मेरी बातों पर विश्वास करोगी ? भाई आया है ! वही भाई जिसके बारे में तुम उस दिन रात में बतला रही थीं !"

"कौन भाई ?"

"वही भाई जिसके बदले में तुमने मुझे लिया था, लाशेंग !"

मां येह आश्चर्य चकित रह गईं. एक छन रुक कर वह बोलीं—"जेड, अब तुम बड़ी हो गई हो. बेवक़ूफ़ी की बातें तुम्हें शोभा नहीं देतीं."

जेड तो ख़ुशी से पागल हो रही थी. मां के कन्धों को दोनों हाथों से पकड़ कर उन्हें हिलाने लगी. वह मां के शरीर



پڑتا ہے . پہلے وہ خود وہاں جا کر دیکھے کہ کیا حال ہے اور پھر بعد میں طے کیا جائے گا کہ آگے کیا ہو ."

اُس نے جیڈ کو چیتاونی دی کہ ماں یہہ کو ابھی کچھ نہ بتائے کیونکہ اُنکی اُمیدوں کو بڑھا دینے سے اور اُنھیں زیادہ آتور بنانے سے کوئی لابھ نہیں ہے .

جس دن گاؤں والوں کی ٹولی شہر کو جانے والی تھی جیڈ نے چپکے سے وہ سمجھوتہ پتر جس سے بچوں کی ادلا بدلی ہوئی تھی زے - پنگ کو دے دیا . گاؤں کے ادھیکاریوں سے اُس نے جانے کے پہلے ہی ایک پریچے پتر بھی پراپت کر لیا .

ایک کے بعد دوسرا دن گذرتا گیا . گاؤں کی ٹولی واپس آئی اور دوسری بار غلہ دینے کے لئے پھر واپس چلی گئی . جب بھی جیڈ دوسری طرف کے ڈھال کو جاتی وہ کھڑی ہو کر زے - پنگ کے آنے کا انتظار کرتی . اب وہ آشا لئے ہوئے آتور کھڑی رہتی تھی .

ماں یہہ نے دیکھا کہ آجکل اُس کی لڑکی جیڈ زیادہ چنتت رہتی ہے . یدی گھر میں جیڈ کے پاس کام نہیں رہتا تھا تو وہ کھانا کھاتے ہی بھاگ نکلتی تھی .

ماں یہہ ایک دن اُس پر ناراض ہوئیں اور کہا—" تمہارا وواہ ہونے جا رہا ہے پر تم تیاریاں کیوں نہیں کرتیں ؟ گاؤں کا آوشیک کام پھر بھی ہو سکتا ہے ."

ایک دن شام کے وقت کمرے کے کونے میں بیٹھی ہوئی ماں یہہ لڑکی کے لئے کچھ اچھے کپڑے سی رہی تھیں . سورج ڈوبنے ہی والا تھا . تھک کر ماں یہہ چور ہو چکی تھیں . وہ اُٹھ کھڑی ہوئیں اور آنکھ ملنے لگیں . سوچا کہ شام کی ٹھنڈک میں فصل کو پانی ہی دے آئیں . گھر سے باہر نکلتے ہی دیکھا کہ گاؤں کے سرکاری دفتر سے جیڈ دوڑتی ہوئی چلی آ رہی ہے . بوڑھی ماں یہہ کھڑی' چنتا سے بھری نظروں سے جیڈ کا دوڑ کر آنا دیکھتی رہیں .

ہانپتی ہوئی جیڈ آئی اور ماں کے گلے میں ہاتھ ڈال کر لٹکتے ہوئے بولی—" ماں' بہت اچھی خبر ہے' بہت بڑی بات مجھے کہنا ہے ."

" کیا بات ہے ؟ تم ہمیشہ ایسا ہی کہتی ہو" ماں بولیں .

جیڈ نے پہلے ماتھے پر سے پسینہ پونچھا اور بولی—" ماں' کیا میری باتوں پر وشواس کروگی ؟ بھائی آیا ہے ! وہی بھائی جس کے بارے میں تم اُس دن رات میں بتلا رہی تھیں !"

" کون بھائی ؟"

"وہی بھائی جس کے بدلے میں تم نے مجھے لیا تھا' لاشینگ !"

ماں یہہ آشچریہ چکت رہ گئیں . ایک چھن رک کر وہ بولیں—" جیڈ' اب تم بڑی ہوگئی ہو . بیوقوفی کی باتیں تمہیں شوبھا نہیں دیتیں ."

جیڈ تو خوشی سے پاگل ہو رہی تھی . ماں کے کندھوں کو دونوں ہاتھوں سے پکڑ کر اُنھیں ہلانے لگی . وہ ماں کے شریر

बड़ी बड़ी मूंछें बार बार उभर आती थीं. हालांकि उसे पापा येह की सभी बातें याद नहीं थीं, फिर भी अब वह उसे पहिले से भी कहीं ज्यादा प्यारे थे, पहिले से भी ज्यादा बड़े और हजार गुना ज्यादा समीप मालूम देते थे. जेड की बातें सुन कर मां येह टुकुर टुकुर जेड को ताकने लगीं. उसका मन भर आया......वह न मालूम कितनी बातें कहना चाहती थी. जेड के बोलने के पहिले ही मां येह ने पूछा—"जेड, क्या सोच रही हो ? मुझसे घृना तो नहीं करतीं ? हम लोगों के संग रहकर तुम्हें इतना दुख उठाना पड़ा......"

जेड ज्यादा बरदाश्त न कर सकी. उसकी आंखों से आसुओं की धारा बह चली. मां के वक्षस्थल पर सिर रखकर वह फूट फूट कर रोने लगी.

वह बोली—"मां, तुम ऐसा क्यों कहती हो ? जमींदार वर्ग लड़कियों की कोई क़ीमत ही नहीं समझता. जेंग परिवार मुझे पाल पोस कर बड़ा ही नहीं करना चाहता था. मेरी जगह पर जमींदार के घर में मेरे भाई को व्यर्थ ही दुख उठाना पड़ा. मेरे ही कारन आज परिवार इधर उधर बिखरा पड़ा है. कैसी परिस्थितियों में पापा की मृत्यु हुई ! मेरा बस चले तो मैं जेंग की हड्डियां चबा डालूं."

मां येह लड़की के चेहरे को धीरे धीरे सहलाने लगीं. वह बोलीं—"प्यारी बच्ची, तुम बहुत अच्छी लड़की हो. तुम जानती हो कि उचित क्या है. अब तो चेयरमैन माओ आ गये हैं और मैं शान के साथ कह सकती हूं कि तुम्हारा पालन पोसन उचित ढंग से किया है. तुम्हारी शादी का दिन क़रीब आते देख कर ही मुझे तुम्हारे भाई की याद हो आई. कौन जानता है कि वह आज जीवित भी है या नहीं !"

× × ×

उस रात जेड घन्टों जागती रही. सरपत की बनी दीवार के छेदों से चांदनी की लम्बी तिरछी लकीरें बन कर कमरे में आ रही थीं, फिर भी वह सो न सकी.

दूसरे ही दिन उसने कुल बातें जे-पिंग को बतलाईं. जेड ने स्वयं जेचुआन जाने की इच्छा प्रगट की. कुछ सोचकर जे-पिंग बोला—"यह आवश्यक नहीं है. यदि जमींदार जेंग की पोल पूरी तरह न खुल गयी होती तब जेड की बातें आवश्यक होतीं. जेचुआन में तो कितने पहिले कृशि सुधार हो चुका है और जेंग को सज़ा भी मिल चुकी है. जहां तक उसके जेचुआन जाने का प्रश्न है, उसे तो यही मालूम करना है कि उसका भाई जीवित भी है या नहीं ? यदि वह जीवित हो तो कितनी आनन्द की बात होगी. लेकिन यदि वह मर गया हो, तब तो मां येह का दुख और भी बढ़ जायेगा. "जे-पिंग ने जेड के सामने अपने विचार रक्खे—कुछ ही दिनों में उसे अपने गांव वालों के साथ पुहो नगर में ग़ल्ला पहुंचाने जाना है. वहां से शेंज्या फ़ील्ड गांव क़रीब 60 ली



بڑی بڑی مونچھیں بار بار اُبھر آتی تھیں. حالانکہ اُسے پاپا یہہ کی سبھی باتیں یاد نہیں تھیں. پھر بھی اب وہ اُسے پہلے سے بھی کہیں زیادہ پیارے تھے، پہلے سے بھی زیادہ بڑے اور ہزار گنا زیادہ سمیپ معلوم دیتے ھے. جیڈ کی باتیں سن کر ماں یہہ ٹکر ٹکر جیڈ کو تاکنے لگیں. اُس کا من بھر آیا..... وہ نہ معلوم کتنی باتیں کہنا چاہتی تھیں. جیڈ کے بولنے کے پہلے ھی ماں یہہ نے پوچھا—" جیڈ، کیا سوچ رہی ھو؟ مجھ سے گھرنا تو نہیں کرتیں؟ ھم لوگوں کے سنگ رہ کر تمہیں اتنا دکھ اُٹھانا پڑا......"

جیڈ زیادہ برداشت نہ کر سکی. اُس کی آنکھوں سے آنسوؤں کی دھارا بہ چلی. ماں کے وکش استھل پر سر رکھکر وہ پھوٹ پھوٹ کر رونے لگی.

وہ بولی—" ماں، تم ایسا کیوں کہتی ھو؟ زمیندار ورگ لڑکیوں کی کوئی قیمت ھی نہیں سمجھتا. جینگ پریوار مجھے پال پوس کر بڑا ھی نہیں کرنا چاھتا تھا. میری جگہ پر زمیندار کے گھر میں میرے بھائی کو ویرتھ ھی دکھ اُٹھانا پڑا. میرے ھی کارن آج پریوار اِدھر اُدھر بکھرا پڑا ھے. کیسی پرستھتیوں میں پاپا کی مرتیو ھوئی! میرا بس چلے تو میں جینگ کی ھڈیاں چبا ڈالوں."

ماں یہہ لڑکی کے چہرے کو دھیرے دھیرے سہلانے لگیں. وہ بولیں—" پیاری بچی، تم بہت اچھی لڑکی ھو. تم جانتی ھو کہ اُچت کیا ھے. اب تو چیرمین ماؤ آگئے ھیں اور میں شان کے ساتھ کہ سکتی ھوں کہ تمہارا پالن پوسن اُچت ڈھنگ سے کیا ھے. تمہاری شادی کا دن قریب آتے دیکھ کر ھی مجھے تمہارے بھائی کی یاد ھو آئی. کون جانتا ھے کہ وہ آج جیوت بھی ھے یا نہیں!"

× × ×

اُس رات جیڈ گھنٹوں جاگتی رھی. سرپت کی بنی دیوار کے چھیدوں سے چاندنی کی لمبی ترچھی لکیریں بن کر کمرے میں آ رھی تھیں، پھر بھی وہ سو نہ سکی.

دوسرے ھی دن اس نے کل باتیں زے - پنگ کو بتلائیں. جیڈ نے سوئم زیچوان جانے کی اِچھا پرگٹ کی، کچھ سوچ کر زے - پنگ بولا—" یہ آوشیک نہیں ھے. یدی زمیندار جینگ کی پول پوری طرح نہ کھل گئی ھوتی تب جیڈ کی باتیں آوشیک ھوتیں. زیچوان میں تو کتنے پہلے کرشی سدھار ھو چکا ھے اور جینگ کو سزا بھی مل چکی ھے. جہاں تک اسکے زیچوان جانے کا پرشن ھے، اسے تو یہی معلوم کرنا ھے کہ اُس کا بھائی جیوت بھی ھے یا نہیں؟ یدی وہ جیوت ھو تو کتنی آنند کی بات ھوگی. لیکن یدی وہ مر گیا ھو، تب تو ماں یہہ کا دکھ اور بھی بڑھ جائے گا. زے - پنگ نے جیڈ کے سامنے اپنے وچار رکھے—کچھ ھی دنوں میں اُسے اپنے گاؤں والوں کے ساتھ پرھو نگر میں غلہ پہونچانے جانا ھے. وھاں سے شینجیا فیلڈ گاؤں قریب 60 لی

गांव में आने के तीसरे साल ही पापा येह् छुप कर शेंज्या फ़ील्ड गांव में अपने बच्चे को देखने के लिये गये. जब वह लौट कर घर आये तो ग़ुस्से से कांप रहे थे. शेंज्या फ़ील्ड में उसे मालूम हुआ कि उन लोगों के गांव छोड़ देने के बाद ज़मींदार के घर दो बच्चे पैदा ये थे. यह दोनों ही लड़के थे. इसलिये अब येह् का लड़का गुलाम जैसा माना जाता था. उसके कपड़े फटे पुराने होते थे. बार बार मार खाते रहने से उसके बदन पर नीले दाग़ की धारियां सी पड़ गई थीं. पापा येह् छुप कर अपने बेटे से मिले थे और कुछ देर बातें भी कीं थीं. बातें करने के लिये बहुत थोड़ा समय मिल पाया था, फिर भी पापा येह् ने देख लिया था कि उनका बेटा बड़ा ही होनहार और नटखट था.

मां येह् ने घर की पुरानी कहानी जेड को सुनाते हुये कहा कि शेंज्या फ़ील्ड से लौट कर आने के बाद पापा येह इतने क्रुद्ध थे कि दिन भर उन्होंने खाना ही नहीं खाया. घर में क़दम रखते ही चिल्लाकर उन्होंने कहा था—"क्या तुम लोग जानते हो अमीर आदमियों का हृदय किस धातु का बना होता है ?"

जेड मां येह् की बात शुरू से ही बड़े ध्यान पूर्वक सुन रही थी. जब उसे अपने पिता की बातें मालूम हुईं तो वह बहुत ज्यादा परेशान हो उठी और उसका मन अस्थिर हो उठा. उसने सपने में भी ऐसी बातें नहीं सोची थीं. अपने जीवन में तो जेड ने सदा दरिद्रता, अभाव, परेशानी ही देखी थी. उसे इसका गुमान भी कैसे हो सकता था कि वह एक जमींदार की बेटी है. उसने हमेशा ज़मींदारों को, कुमिन्तांग अधिकारियों को, जन-साधारन पर अन्याय ही करते देखा था. उसकी अपनी समझ में ज़मींदार और उस वर्ग के लोगों में मनुश्यता नाम-मात्र को भी नहीं होती थी, पर फिर भी वह स्वयं उसी वर्ग में पैदा हुई थी. उसका दिमाग़ चक्कर खाने लगा.

पर धीरे धीरे जेड ने अपने को संभाल लिया. वह मां से बोली—"मां, ज़मींदार वर्ग के लोगों में दिल नहीं होता, उनमें दिल की जगह पत्थर होता है. यदि कोई ज़मींदार है तो यह लाज़मी है कि वह नृशंस और अत्याचारी होगा. पापा येह् वहां गये ही क्यों ? क्या उन्हें ज़मींदारों की यह विशेशता नहीं मालूम थी ?

मां येह् ने धीरे से सिर हिलाया और कहा—"चिन्तित मत हो. तुम्हारे पिता येह् तुम्हें बहुत प्यार करते थे. वह कहा करते थे कि बच्चा बच्चा ही है, चाहे वह लड़का हो या लड़की. प्यारी जेड के भाग्य में तकलीफ़ उठाना ही लिखा था, तभी तो वह हमारे परिवार में आ पड़ी. यदि तुम्हारा भाई तुम्हें परेशान करता था तो पापा येह् उसे बहुत डांटते थे. यही कारन था कि वह तुम से बहुत डरता था."

जेड की आंखें लाल हो रही थीं. पापा येह् की उसे धुंधली सी याद थी. उसकी याद में पापा के ऊपरी होंठों पर



گاؤں میں آنے کے تیسرے سال ھی پاپا یہ چھپ کر شینجیا فیلڈ گاؤں میں اپنے بچے کو دیکھنے کے لئے گئے ۔ جب وہ لوٹ کر گھر آئے تو غصہ سے کانپ رہے تھے ۔ شینجیا فیلڈ میں اُسے معلوم ھوا کہ اُن لوگوں کے گاؤں چھوڑ دینے کے بعد زمیندار کے گھر دو بچے پیدا ھوئے تھے ۔ یہ دونوں ھی لڑکے تھے ۔ اِس لئے اب یہ کا لڑکا غلام جیسا مانا جاتا تھا ۔ اُس کے کپڑے پھٹے پرانے ھوتے تھے۔ بار بار مار کھاتے رھنے سے اُس کے بدن پر نیلے داغ کی دھاریاں سی پڑ گئی تھیں ۔ پاپا یہ چھپ کر اپنے بیٹے سے ملے تھے اور کچھ دیر باتیں بھی کی تھیں ۔ باتیں کرنے کے لئے بہت تھوڑا سمے مل پایا تھا' پھر بھی پاپا یہ نے دیکھ لیا تھا کہ اُن کا بیٹا بڑا ھی ھونہار اور نٹ کھٹ تھا ۔

ماں یہ نے گھر کی پرانی کہانی جیڈ کو سناتے ھوئے کہا کہ، شینجیا فیلڈ لوٹ کر آنے کے بعد پاپا یہ اتنے کرودھ تھے کہ دن بھر اُنھوں نے کھانا ھی نہیں کھایا ۔ گھر میں قدم رکھتے ھی چلا کر اُنھوں نے کہا تھا—"کیا تم لوگ جانتے ھو امیر آدمیوں کا ھردے کس دھاتو کا بنا ھوتا ھے ؟"

جیڈ ماں یہ کی بات شروع سے ھی بڑے دھیان پوروک سن رھی تھی ۔ جب اُسے اپنے پتا کی باتیں معلوم ھوئیں تو وہ بہت زیادہ پریشان ھو اُٹھی اور اس کا من آ اِستھر ھو اُٹھا ۔ اس نے سپنے میں بھی ایسی باتیں نہیں سوچی تھیں ۔ اپنے جیون میں تو جیڈ نے سدا دردرتا' ابھاؤ' پریشانی ھی دیکھی تھی' اُسے اُس کا گمان بھی کیسے ھو سکتا تھا کہ وہ ایک زمیندار کی بیٹی ھے۔ اُس نے ھمیشہ زمینداروں کو' کومنتانگ ادھیکاریوں کو' جن سادھارن پر انیائے ھی کرتے دیکھا تھا ۔ اُس کی اپنی سمجھ میں زمیندار اور اُس ورگ کے لوگوں میں منشیئتا نام ماتر کو بھی نہیں ھوتی تھی' اور پھر بھی وہ سویم اُسی ورگ میں پیدا ھوئی تھی۔ اُس کا دماغ چکر کھانے لگا ۔

پر دھیرے دھیرے جیڈ نے اپنے کو سنبھال لیا ۔ وہ ماں سے بولی—" ماں' زمیندار ورگ کے لوگوں میں دل نہیں ھوتا' اُن میں دل کی جگہ پتھر ھوتا ھے ۔ یدی کوئی زمیندار ھے تو یہ لازمی ھے کہ نرشنس اور اتیاچاری ھوگا ۔ پاپا یہ وھاں گئے ھی کیوں ؟ کیا اُنھیں زمینداروں کی یہ وشیشتا نہیں ملوم تھی ؟"

ماں یہ نے دھیرے سے سر ھلایا اور کہا—" چنتت مت ھو ۔ تمہارے پتا یہہ تمھیں بہت پیار کرتے تھے ۔ وہ کہا کرتے تھے کہ بچہ بچہ ھی ھے ' چاھے وہ لڑکا ھو یا لڑکی ۔ پیاری جیڈ کے بھاگیہ میں تکلیف اُٹھانا ھی لکھا تھا' تبھی تو وہ ھمارے پریوار میں آ پڑی ۔ یدی تمہارا بھائی تمھیں پریشان کرتا تھا تو پاپا یہہ اُسے بہت ڈانٹتے تھے۔ یہی کارن تھا کہ وہ تم سے بہت ڈرتا تھا ۔"

جیڈ کی آنکھیں لال ھو رھی تھیں ۔ پاپا یہہ کی اُسے دھندلی سی یاد تھی' اُس کی یاد میں پاپا کے اُوپری ھونٹھوں پر

के यहां से चले जाने के समय तक का ख़र्च चलाने के लिये वह उन्हें पांच यूनिट चावल देगा.

इस प्रकार मां येह् के लड़का पैदा होने के एक माह के अन्दर ही येह् परिवार को शेंज्या फ़ील्ड खेत छोड़ देना पड़ा. बहुत दिनों तक वह इधर उधर भटकते रहे और अन्त में जेचुआन के सीमान्त इलाक़े कीचाऊ की सीमा के क़रीब दाया घाटी में ठहर गये. वहां पापा येह् कोयला खोदते थे, नमक की चट्टानें काटते थे या फिर जलाने की लकड़ी काट कर बेचते थे. उनका जीवन बहुत मुश्किल से चल पाता था. 1936 में भयंकर अकाल पड़ा.

येह् अपने दोनों बच्चों को लेकर घर से निकल पड़े और भीख मांगने लगे. भीख मांगते मांगते वह जेचुआन के चीड़ के पेड़ वाले गांव में पहुंचे. यहां ज़मींदार लियू ने उन्हें कुछ काम दिया. मां येह् खाना पकाया करती थी और पापा येह् खेत में काम करते थे. यूचिंग, जो अब नौ साल का हो गया था, ज़मींदार की भेड़बकरियां चराने जाया करता था, पर उसे तनख़्वाह नहीं मिलती थी. उनको कुल इतना ही मिल पाता था जिसमें वह अपना और अपनी छोटी बच्ची का पेट भर सकते थे. ज़मींदार लियू कहा करता था कि उसने येह् दम्पति पर बड़ी दया की थी. ऐसी ही दया की नौकरी वह क़रीब एक साल करते रहे. फिर पापा येह् ने पहाड़ पर थोड़ी ज़मीन साफ़ कर खेती करने की आज्ञा मांगी. लियू ने उन्हें थोड़ी ज़मीन दे दी और उसका लगान भी तय हो गया, यद्यपि यह किसी को भी पता नहीं था कि उस ज़मीन का असली मालिक कौन है.

उस पहाड़ी ज़मीन की मिट्टी पथरीली थी और उसकी तह बहुत पतली थी. वह कितनी भी मेहनत करते पर अनाज की बालियां लम्बी न होती थीं और फलियां भी बहुत ही छोटी होती थीं. इस मामूली से भी रद्दी फ़सल की रक्षा करने के लिये उन्हें जंगली सूअरों, चूहों, पहाड़ी बकरियों आदि से बराबर लोहा लेते रहना पड़ता था. इसके बाद भी उन्हें ज़मींदार लियू और कुमिन्तांग अधिकारी ली का अन्याय सहना पड़ता था और उनकी मांग पूरी करनी पड़ती थी. पापा येह् को बहुत मेहनत करनी पड़ती थी. जब वे थक कर चूर हो जाते थे तो बहुधा झल्लाकर कहा करते थे कि मैं अपना सब कुछ खेती में लगा देता हूं पर घर ले जाने के लिये उपज में नहीं के बराबर मिलता है. भाग्यवश पास पड़ोस के अन्य किसान बड़े मिलनसार थे. वे एक दूसरे की मदद करने में सदैव तत्पर रहते थे. एक दूसरे को बड़ी आसानी से उधार दे दिया करते थे और हर प्रकार सहायता करते थे. ऐसी परिस्थितियों में दिक़्क़तों से संघर्ष करते हुए येह् दम्पति फिर से अपना घर बसाने में सफल हुये.

येह् दम्पति अपने उस बच्चे के बारे में सदा चिंतित रहते थे जिसे उन्हें ज़मींदार जांग को दे देना पड़ा था. नये



کے یہاں سے چلے جانے کے سمئے تک کا خرچ چلانے کے لئے وہ اُنھیں پانچ یونٹ چاول دیگا۔

اِس پرکار ماں یہ کے لڑکا پیدا ہونے کے ایک ماہ کے اندر ھی یہ پریوار کو شینجیا فیلڈ کھیت چھوڑ دینا پڑا. بہت دنوں تک وہ اِدھر اُدھر بھٹکتے رہے اور انت میں زیچوان کے سیمانت علاقے کیچاؤ کی سیما کے قریب دایا گھاٹی میں ٹھہر گئے۔ وھاں پاپا یہ کوئلہ کھودتے تھے، نمک کی چٹانیں کاٹتے تھے یا پھر جلانے کی لکڑی کاٹ کر بیچتے تھے۔ اُن کا جیون بہت مشکل سے چل پاتا تھا۔ 1936 میں بھینکر اکال پڑا۔

یہ اپنے دونوں بچوں کو لیکر گھر سے نکل پڑے اور بھیکھ مانگنے لگے۔ بھیکھ مانگتے مانگتے وہ زیچوان کے چیڑ کے پیڑ والے گاؤں میں پہونچے. یہاں زمیندار لیو نے اُنھیں کچھ کام دیا۔ ماں یہ کھانا پکایا کرتی تھی اور پاپا یہ کھیت میں کام کرتے تھے۔ یوچنگ، جو اب نو سال کا ھوگیا تھا، زمیندار کی بھیڑ بکریاں چرانے جایا کرتا تھا، پر اُسے تنخواہ نہیں ملتی تھی۔ اُن کو کل اتنا ھی مل پاتا تھا جس میں وہ اپنا اور اپنی چھوٹی بچی کا پیٹ بھرسکتے تھے۔ زمیندار لیو کہا کرتا تھا کہ اس نے یہ دمپتی پر بڑی دیا کی تھی۔ ایسی ھی دیا کی نوکری وہ قریب ایک سال کرتے رہے. پھر پاپا یہ نے پہاڑ پر تھوڑی زمین صاف کر کھیتی کرنے کی آگیاں مانگی۔ لیو نے اُنھیں تھوڑی زمین دے دی اور اُس کا لگان بھی طے ھوگیا، یدی یہ کسی کو بھی پتہ نہیں تھا کہ اُس زمین کا اصلی مالک کون ھے۔

اُس پہاڑی زمین کی مٹی پتھریلی تھی اور اُس کی تہ بہت پتلی تھی۔ وہ کتنی بھی محنت کرتے پر اناج کی بالیاں لمبی نہ ھوتی تھیں اور پھلیاں بھی بہت ھی چھوٹی ھوتی تھیں۔ اِس معمولی سے بھی ردی فصل کی رکشا کرنے کے لئے اُنھیں جنگلی سوروں، چوھوں، پہاڑی بکریوں آدی سے برابر لوھا لیتے رہنا پڑتا تھا۔ اُس کے بعد بھی اُنھیں زمیندار لیو اور کومنتانگ ادھیکاری لی کا انیائے سہنا پڑتا تھا اور اُن کی مانگ پوری کرنی پڑتی تھی۔ پاپا یہ کو بہت محنت کرنی پڑتی تھی۔ جب وہ تھک کر چور ھو جاتے تھے تو بہودھا جھلا کر کہا کرتے تھے کہ میں اپنا سب کچھ کھیتی میں لگا دیتا ھوں پر گھر لے جانے کے لئے اُپج میں نہیں کے برابر ملتا ھے۔ بھاگیہ وش پاس پڑوس کے انیہ کسان بڑے ملنسار تھے۔ وہ ایک دوسرے کی مدد کرنے میں سدیوتتپر رہتے تھے۔ ایک دوسرے کو بڑی آسانی سے اُدھار دے دیا کرتے تھے اور ھر پرکار سہائتا کرتے تھے۔ ایسی پرستھتیوں میں دقتوں سے سنگھرش کرتے ھوئے یہ دمپتی پھر سے اپنا گھر بسانے میں سپھل ھوئے۔

یہ دمپتی اپنے اُس بچے کے بارے میں سدا چنتت رہتے تھے جسے اُنھیں زمیندار جانگ کو دے دینا پڑا تھا. نئے

इक्कीस वर्ष पहिले मां येह् और उसके पति जेचुआन के शेंज्या खेत में ज़मींदार जांग की ज़मींदारी में रह कर खेती करते थे. उसकी कोठी के पास ही उनकी फूस की एक मड़ैया थी. चांद के बारहवें महीने की चौबीसवीं तारीख़ को रात में जब ठंडी बरफ़ीली हवा चल रही थी मां येह् के दूसरा बच्चा हुआ. वह लड़का था. तीन दिन बाद ज़मींदार की पत्नी के लड़की पैदा हुई. ज़मींदार जांग के परिवार में पिछली तीन पीढ़ी से एक लड़का बराबर होता आया था जिससे उनका वंश चलता रहता था. ज़मींदार जांग भी यही चाहता था कि उसे पुत्र की प्राप्ति हो ताकि वह अपना वंश चला सके और जो उसकी सम्पत्ति का अधिकारी हो सके. जब उसके यहां बेटी ही पैदा हुई तो वह बहुत भुनभुनाया. पर वह अपना असन्तोश प्रगट करने में घबराता था क्योंकि उसकी पत्नी धनी और प्रभावशाली परिवार की थी. वह अत्यन्त सुन्दर भी थी. इसलिये जांग उसे प्यार भी करता था और उससे डरता भी बहुत था. उसकी पत्नी उसकी मनोदशा से भली भांति परिचित थी. यद्यपि वह जानती थी कि उसका पति शीघ्र ही कोई उपपत्नी नहीं ले आयेगा पर इसकी सम्भावना तो हमेशा ही थी.

उसने पति से कहा—"तुम तो समझदार और योग्य व्यक्ति हो. कोई ऐसी तरकीब क्यों नहीं सोचते कि घर में एक पुत्र आ जाय."

× × ×

नया साल शुरू होने पर ज़मींदार जांग ने अपने कारिन्दे को येह् परिवार से पिछला क़र्ज़ वसूल करने के लिये भेजा. इस बार उन्होंने येह् परिवार को बहुत तंग किया और जब येह् परिवार बहुत ही ज़्यादा लाचार हो गया तो यह प्रस्ताव रक्खा कि यदि वह अपने नवजातु बालक शिशु को उनकी लड़की से बदलने को तैयार हो जायें तो वह लगान के बारे में उनसे कोई समझौता कर लेंगे. नहीं तो उनका ( येह् परिवार वालों का ) नया साल बड़ा ही भयंकर बीतेगा. ज़मींदार के ही हाथों में उन दिनों किसानों का जीवन रहता था. मजबूर होकर, आंखों में आंसू भर कर और मन पर हज़ारों मन का बोझ लाद कर येह् दम्पति ने इसे मंज़ूर किया. अन्त समय में भी ज़मींदार ने कुछ नयी और कठोर शर्तें जोड़ दीं. उसी रात शर्तनामा लिखा गया और उस पर हस्ताक्षर किये गये. येह् दम्पति ने मंज़ूर किया कि इस समझौते को वे हमेशा गुप्त रक्खेंगे, ज़मींदार की कोठी से 50 ली के क्षेत्र के अन्दर वे नहीं रहेंगे और येह् परिवार का कोई भी व्यक्ति ज़मींदार जांग की ज़मीन पर कभी क़दम नहीं रक्खेगा. जांग ने यह वादा किया कि वह ज़मीन का लगान दो पिकल अनाज की जगह एक पिकल अनाज कर देगा जिसके बदले में वह उनका बैल लेगा. येह् परिवार



اکیس ورش پہلے ماں یہ اور اُس کے پتی زیچوان کے شینجیا کھیت میں زمیندار جانگ کی زمینداری میں رہکر کھیتی کرتے تھے ۔ اُس کی کوٹھی کے پاس ھی اُن کی پھوس کی ایک مڑیا تھی۔ چاند کے بارھویں مہینے کی چوبیسویں تاریخ کو رات میں جب ٹھنڈی برفیلی ھوا چل رھی تھی ماں یہ کے دوسرا بچہ ھوا ۔ وہ لڑکا تھا ۔ تین دن بعد زمیندار کی پتنی کے لڑکی پیدا ھوئی ۔ زمیندار جانگ کے پریوار میں پچھلی تین پیڑھی سے ایک لڑکا برابر ھوتا آیا تھا جس سے ان کا ونش چلتا رھتا تھا۔ زمیندار جانگ بھی یہی چاھتا تھا کہ اُسے پتر کی پراپتی ھوتا کہ وہ اپنا ونش چلاسکے اور جو اُس کی سمپتی کا ادھیکاری ھوسکے۔ جب اُس کے یہاں بیٹی ھی پیدا ھوئی تو وہ بہت بھنبھنایا ۔ پر وہ اپنا اسنتوش پرگٹ کرنے میں گھبراتا تھا کیونکہ اُس کی پتنی دھنی اور پربھاؤ شالی پریوار کی تھی ۔ وہ اتینت سندر بھی تھی ۔ اِس لئے جانگ اُسے پیار بھی کرتا تھا اور اُس سے ڈرتا بھی بہت تھا ۔ اُس کی پتنی اُس کی منو دشا سے بھلی بھانت پریچت تھی ۔ یدپی وہ جانتی تھی کہ اُس کا پتی شیگرہ ھی کوئی اُپ پتنی نہیں لے آئیگا پر اُس کی سمبھاونا تو ھمیشہ ھی تھی۔

اس نے پتی سے کہا—"تم تو سمجھدار اور یوگیہ ویکتی ھو ۔ کوئی ایسی ترکیب کیوں نہیں سوچتے کہ گھر میں ایک پتر آجائے"

× × ×

نیا سال شروع ھونے پر زمیندار جانگ نے اپنے کارندے کو یہ پریوار سے پچھلا قرض وصول کرنے کے لئے بھیجا ۔ اِس بار اُنھوں نے یہ پریوار کو بہت تنگ کیا اور جب یہ پریوار بہت ھی زیادہ لاچار ھوگیا تو یہ پرستاؤ رکھا کہ یدی وہ اپنے نوجات بالک ششو کو اُن کی لڑکی سے بدلنے کو تیار ھوجائیں تو وہ لگان کے بارے میں اُن سے کوئی سمجھوتہ کرلینگے ۔ نہیں تو اُن کا ( یہ پریوار والوں کا ) نیا سال بڑا ھی بھینکر بیتےگا ۔ زمیندار کے ھی ھاتھوں میں اُن دنوں کسانوں کا جیون رھتا تھا ۔ مجبور ھوکر، آنکھوں میں آنسو بھرکر اور من پر ھزاروں من کا بوجھ لاد کر یہ دمپتی نے اِسے منظور کیا ۔ انت سمئے میں بھی زمیندار نے کچھ نئی اور کٹھور شرطیں جوڑ دیں ۔ اُسی رات شرط نامہ لکھا گیا اور اُس پر ھستاکشر کئے گئے ۔ یہ دمپتی نے منظور کیا کہ اِس سمجھوتے کو وے ھمیشہ گپت رکھینگے، زمیندار کی کوٹھی سے 50 لی کے چھیتر کے اندر وے نہیں رھینگے اور یہ پریوار کا کوئی ویکتی زمیندار جانگ کی زمین پر کبھی قدم نہیں رکھیگا ۔ جانگ نے یہ وعدہ کیا کہ وہ زمین کا لگان دو پکل اناج کی جگہ ایک پکل اناج کردیگا جس کے بدلہ میں وہ اُن کا بیل لیگا ۔ یہ پریوار

मां बोलीं—"यह तो ठीक है, पर क्या यह भी तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे परिवार का कोई सदस्य आज भी वहां है ?"

जेड परेशान हो गई. उसे तो यही मालूम था कि कीचाऊ में उसके परिवार के कुल चार सदस्य आये थे—वह, उसकी मां, पिता और बड़ा भाई. जब वह सात बरस की थी उसका पिता एक बार जेचुआन गया था. जब वह दस बरस की थी तब फिर उसका पिता जेचुआन गया था. उसके बाद ही उन्होंने सुना कि उसकी मृत्यु हो गई थी. उसकी मां को पूरा विश्वास था कि उसके पति की मृत्यु का कारन कुरूप जमींदार जांग ही था. जब जेड तेरह वर्श की थी उसके बड़े भाई को कुमिन्तांग के लोग फ़ौज में काम करने के लिये पकड़ ले गये थे. इसके बाद उसका भी नाम फिर कभी नहीं सुनाई पड़ा. उसकी मां ने कई बार सोचा कि वह जेचुआन जाकर जमींदार जांग से मिल कर दो दो बातें करके अपना पुराना हिसाब चुकता कर ले, पर कीचाऊ के सरकारी अफ़सरों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने उसे व्यर्थ में ही परेशान न होने के लिये बहुत समझाया. उन लोगों ने कहा कि जेचुआन के रास्ते में ऊंची पहाड़ियां हैं और रास्ते ख़राब हैं और फिर वह बूढ़ी हो चुकी है. फिर चेयरमैन माओ द्वारा दी गई प्रेरना के बल पर जेचुआन के किसानों ने स्वयं ही वहां के जमींदार से सभी किसानों के लिये पुराने ज़ुल्मों की क़ीमत बसूल ली होगी. बच कर तो वह कहीं जा ही नहीं सकता था.

जमींदार कुमिन्तांग द्वारा नियुक्त कई गावों का शासक भी था. जब गांव में उसका मुक़दमा हो रहा था उसने कई बार अपने बेटे के बारे में प्रश्न भी किये थे. वह यही कहती थी कि उसके बेटे को जमींदार ली-ही ले गया था.

जेड बोली—"मैं जानती हूं मां, भाई यूचिंग को जमींदार ले गया है.

मां ने कहा—"मेरी प्यारी बच्ची, तुम्हारे एक भाई और भी है. मैंने तुम्हें बीस बरस तक पाल पोस कर बड़ा किया है पर तुम्हें बराबर अन्धकार में रक्खा है. तुम उसी काग़ज़ के पुलिन्दे को लेकर मेरे यहां आई थीं." काग़ज़ के पुलिन्दे की ओर इशारा करते हुए मां की आंखों से आंसू लुढ़क पड़े, पर उसने फ़ौरन पोंछ डाले.

जेड को यह बात सुन कर बड़ा अचम्भा हुआ. वह जैसे आकाश में पहुंच गई हो. उसने पूछा—"मां, क्या यह सच है ?"

बूढ़ी मां ने बेटी की आंखों में आंखें डाल कर कहा—"ध्यान दे कर सुनो. मैंने तुम्हें बीस बरस तक दुख और सुख में अपनी बेटी की तरह पाला है, पर तुम मेरे कोख की जन्मी नहीं हो. जमींदार पाकमार्क जांग ही वास्तव में तुम्हारा बाप है !"



ماں بولیں—"یہ تو ٹھیک ھے پر کیا یہ بھی تمھیں معلوم ھے کہ تمھارے پریوار کا کوئی سدسیہ آج بھی وھاں ھے؟"

جیڈ پریشان ھوگئی. اُسے تو یہی معلوم تھا کہ کیچاؤ میں اُس کے پریوار کے کل چار سدسیہ آئے تھے—وہ، اُس کی ماں، پتا اور بڑا بھائی. جب وہ سات برس کی تھی اُس کا پتا ایک بار زیچوان گیا تھا. جب وہ دس برس کی تھی پھر اس کا پتا زیچوان گیا تھا. اُس کے بعد ھی اُنھوں نے سنا کہ اُس کی مرتیو ھوگئی تھی. اُس کی ماں کو پورا وشواس تھا کہ اُس کے پتی کی مرتیو کا کارن کروپ زمیندار جانگ ھی تھا. جب جیڈ تیرہ ورش کی تھی اُس کے بڑے بھائی کو کومنتانگ کے لوگ فوج میں کام کرنے کے لئے پکڑ لے گئے تھے. اِس کے بعد اُس کا بھی نام پھر کبھی نہیں سنائی پڑا. اُس کی ماں نے کئی بار سوچا کہ وہ زیچوان جاکر زمیندار جانگ سے ملکر دو دو باتیں کرکے اپنا پرانا حساب چکتا کرلے، پر کیچاؤ کے سرکاری افسروں اور پارٹی کاریہ کرتاؤں نے اسے ویرتھ میں ھی پریشان نہ ھونے کے لئے بہت سمجھایا. اُن لوگوں نے کہا کہ زیچوان کے راستے میں اُونچی پہاڑیاں ھیں اور راستے خراب ھیں اور پھر وہ بوڑھی ھوچکی ھے. پھر چیئرمین ماؤ دوارا دی گئی پریرنا کے بل پر زیچوان کے کسانوں نے سویم ھی وھاں کے زمیندار سے سبھی کسانوں کے لئے پرانے ظلموں کی قیمت وصول لی ھوگی. بچ کر تو وہ کہیں جا ھی نہیں سکتا تھا.

زمیندار کومنتانگ دوارا نیکت کئی گاؤں کا شاسک بھی تھا. جب گاؤں میں اُس کا مقدمہ ھو رھا تھا اس نے کئی بار اپنے بیٹے کے بارے میں پرشن بھی کئے تھے. وہ یہی کہتی تھی کہ اُس کے بیٹے کو زمیندار لی - ھی لے گیا تھا.

جیڈ بولی—"میں جانتی ھوں ماں، بھائی یوچنگ کو زمیندار لے گیا ھے.

ماں نے کہا—"میری پیاری بچی، تمھارے ایک بھائی اور بھی ھے. میں نے تمھیں بیس برس تک پال پوس کر بڑا کیا ھے پر تمھیں برابر اندھکار میں رکھا ھے. تم اُسی کاغذ کے پلندے کو لیکر میرے یہاں آئی تھیں." کاغذ کے پلندے کی اور اشارہ کرتے ھوئے ماں کی آنکھوں سے آنسو لڑھک پڑے، پر اس نے فوراً پونچھ ڈالے.

جیڈ کو یہ بات سنکر بڑا اچنبھا ھوا. وہ جیسے آکاش میں پہونچ گئی ھو. اُس نے پوچھا—"ماں، کیا یہ سچ ھے؟"

بوڑھی ماں نے بیٹی کی آنکھوں میں آنکھیں ڈالکر کہا—"دھیان دیکر سنو. میں نے تمھیں بیس برس تک دکھ اور سکھ میں اپنی بیٹی کی طرح پالا ھے، پر تم میرے کوکھ کی جنمی نہیں ھو. زمیندار پاکمارک جانگ ھی واستو میں تمھارا باپ ھے!"

यदि चेयरमैन माओ का राज न आया होता तो मैं तुम्हारे लिये एक कंघा भी न ख़रीद सकती.

जेड बोली—"मां, आजकल दहेज़ की कौन चिन्ता करता है? कपड़ा एक दो दिन बाद सी लिया जायेगा."

मां ने उत्तर दिया—"अब तुम मुझसे अलग ही होने वाली हो. आज रात मैं तुमसे कुछ बातें करना चाहती हूं. आज मैं तुझे कहीं भी न जाने दूंगी."

जेड ने सोचा—"आज मां बहुत चिन्तित हैं. शायद वह जे-पिंग के यहां जाकर नहीं रहना चाहतीं. पुराने लोगों का दृष्टिकोन ही कुछ दूसरी तरह का होता है. लेकिन मैं भी क्या करूं? मां की गोद में बैठ कर खेलने वाली उम्र तो अब रही नहीं. मां का जीवन तो तकलीफ़ों में ही गुज़रा है. उन्हें कुछ दिन तो आराम के, ख़ुशी के बिताने को मिलने ही चाहियें. मुझे क्या? मेरी उम्र तो अभी केवल इक्कीस वर्ष की ही है. इतनी जल्दी भी क्या है? कुछ दिन बाद ही शादी हो जायेगी."

अपनी मां को सोने के कमरे में पहुंचाते हुए जेड ने सोचा कि वह अपने विवाह को कुछ वर्षों के लिये टाल देगी.

× × ×

लकड़ी के एक पुराने सन्दूक़ से मां ने कपड़े में लिपटा हुआ काग़ज़ का एक पुलिन्दा निकाला. वह एक पुराने दस्तावेज़ को, जो ख़ुद वर्षों तक बक्स में रक्खे रहने के कारन पीला और जर्जर हो गया था, अपनी बेटी को दिखाना चाहती थी. उसने दस्तावेज़ को कमरे में रक्खी चौकोर मेज़ पर फैला दिया और जेड को वहीं बैठने का आदेश दिया.

जेड को ध्यान आया कि सभी बातें इतनी सरल नहीं थीं जितनी सरलता से उसने अपने मन में तय कर डाला था. कुछ परेशान, कुछ खोयी खोयी सी वह अपनी मां के चेहरे पर अपनी नज़र जमाये बैठी रही. खखार कर गला साफ़ करने के बाद मां येह धीरे से बोलीं—"जेड, तुम्हें मालूम है, हम लोग यहां कहां से आये हैं?"

जेड ने उत्तर दिया—"हां, तुम्हीं ने तो बतलाया था कि हम लोग पहिले दक्षिनी जेचुआन के शेंज्या फ़ील्ड में रहते थे."

मां बोलीं—"ठीक, पर हम लोग वहां से कीचाऊ प्रान्त के इस पहाड़ी इलाक़े में क्यों चले आये?"

जेड की समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी मां परिवार के इस पुराने इतिहास को क्यों दुहरा रही थीं. फिर भी वह प्रत्येक प्रश्न का उत्तर अपनी पूरी जानकारी के अनुसार देती थी. उसने कहा कि ज़मींदार जांग ने उन्हें वहां से निकाल दिया था.



یدی چیئرمین ماؤ کا راج نہ آیا ہوتا تو میں تمہارے لئے ایک کنگھا بھی نہ خرید سکتی ۔

جیڈ بولی—"ماں، آج کل دھیز کی کون چنتا کرتا ہے؟ کپڑا ایک دو دن بعد سی لیا جائیگا ۔"

ماں نے اُتر دیا—"تم مجھ سے الگ ہی ہونے والی ہو ۔ آج رات میں تم سے کچھ باتیں کرنا چاہتی ہوں ۔ آج میں تجھے کہیں بھی نہ جانے دونگی ۔"

جیڈ نے سوچا—"آج ماں بہت چنتت ہیں ۔ شاید وہ زے-پنگ کے یہاں جاکر نہیں رہنا چاہتیں ۔ پرانے لوگوں کا درشٹی کون ہی کچھ دوسری طرح کا ہوتا ہے ۔ لیکن میں بھی کیا کروں؟ ماں کی گود میں بیٹھکر کھیلنے والی عمر تو اب رہی نہیں ، ماں کا جیون تو تکلیفوں میں ہی گذرا ہے ۔ انہیں کچھ دن تو آرام کے، خوشی کے بتانے کو ملنے ہی چاہئیں ۔ مجھے کیا؟ میری عمر تو ابھی کیول اکیس ورش کی ہی ہے ۔ اتنی جلدی بھی کیا ہے؟ کچھ دن بعد ہی شادی ہوجائیگی ۔"

اپنی ماں کو سونے کے کمرے میں پہونچاتے ہوئے جیڈ نے سوچا کہ وہ اپنے وواہ کو کچھ ورشوں کے لئے ٹال دیگی ۔

× × ×

لکڑی کے ایک پرانے صندوق سے ماں نے کپڑے میں لپٹا ہوا کاغذ کا ایک پلندا نکالا ۔ وہ ایک پرانے دستاویز کو، جو خود ورشوں تک بکس میں رکھے رہنے کے کارن پیلا اور جرجر ہوگیا تھا، اپنی بیٹی کو دکھانا چاہتی تھی ۔ اس نے دستاویز کو کمرے میں رکھی چوکور میز پر پھیلا دیا اور جیڈ کو وہیں بیٹھنے کا آدیش دیا ۔

جیڈ کو دھیان آیا کہ سبھی باتیں اتنی سرل نہیں تھیں جتنی سرلتا سے اُس نے اپنے من میں طے کر ڈالا تھا ۔ کچھ پریشان، کچھ کھوئی کھوئی سی وہ اپنی ماں کے چہرے پر اپنی نظر جمائے بیٹھی رہی ۔ کھکھار کر گلا صاف کرنے کے بعد ماں یہ دھیرے سے بولیں—"جیڈ، تمہیں معلوم ہے، ہم لوگ یہاں کہاں سے آئے ہیں؟"

جیڈ نے اُتر دیا—"ہاں، تمہیں نے تو بتلایا تھا کہ ہم لوگ پہلے دکشنی زیچوان کے شینجیا فیلڈ میں رہتے تھے ۔"

ماں بولیں—"ٹھیک، پر ہم لوگ وہاں سے کیچاؤ پرانت کے اُس پہاڑی علاقے میں کیوں چلے آئے؟"

جیڈ کی سمجھ میں نہیں آرہا تھا کہ اُس کی ماں پریوار کے اس پرانے اِتہاس کو کیوں دوہرا رہی تھیں ۔ پھر بھی وہ پرتئیک پرشن کا اُتر اپنی پوری جانکاری کے انوسار دیتی تھی ۔ اس نے کہا کہ زمیندار جانگ نے انہیں وہاں سے نکال دیا تھا ۔

चूल्हे पर चढ़े बर्तन को जल्दी में ढक कर जेड अपनी मां के बग़ल में आ गई और बोली—"मां, तुम दुखी क्यों हो रही हो ? मैंने तो सब तुम से पूछ कर ही किया है. यह तो शुभ घड़ी होगी. जे-पिंग के परिवार में तो केवल तीन ही व्यक्ति हैं. यदि मेरे संग तुम भी वहीं चलो, तो भी उन लोगों को कोई आपत्ति नहीं होगी. उनके खेत भी हमारे खेत से मिले हुए हैं. क्या तुम यह सोचती हो कि जे-पिंग तुम्हारा ख़्याल नहीं रक्खेगा ? यदि ऐसा हुआ, तो मैं तो हूं ! मैं तो पूरा ध्यान रक्खूंगी ही. पर ऐसा हो ही नहीं सकता. जिसकी शिक्षा कम्यूनिस्ट पार्टी में हुई है वह अच्छा और दृढ़ ही होगा. पर यदि तुम वहां ठीक न रह सकीं तो तुम्हारे ही साथ मैं भी यहीं लौट आऊंगी."

मां येह ने अपनी बेटी के कन्धे पर हाथ रख कर कहा—"प्यारी बच्ची, बेवक़ूफ़ी की बातें मत करो. यह तुम्हारे जीवन में सब से महत्वपूर्न घटना है. ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहिये जिस से तुम्हारे भविश्य पर आंच आये. मैं तुम्हारे लिये कुछ न कर सकी, रह रह कर यही ख़्याल मेरे मन में उठता है, और मैं दुखी हो जाती हूं."

एक लम्बी सांस लेकर मां येह ने अपने आंसू पोंछ डाले, पर वह अपने भावोद्वेग को न रोक सकी. जब जेड फिर खाना बनाने चली गई, वह स्वयं उठ कर पिछवाड़े के बराम्दे में चली आई. बाहर चारों ओर चान्दनी छिटकी हुई थी. ठंडी ठंडी हवा चीड़ के जंगलों को चीर कर पहाड़ के ढालों से उतर कर आ रही थी. सामने के बाग़ को पार करते ही पहाड़ों ही की शृंखला शुरू हो जाती थी. इसी पहाड़ पर एक पथरीली सड़क थी जो सीधे 'स्वर्ग द्वार' घाटी तक पहुंचती थी, जहां से दक्षिनी ज़ेचुआन का इलाक़ा शुरू हो जाता था. मां को यह सड़क नहीं दिखाई पड़ रही थी. थोड़ी देर तक वह रोती रही. उसे जेड का बार बार पुकारना भी नहीं सुनाई पड़ा.

जब खाना तैयार हो गया, जेड बाहर आई और मां को खाना खाने के लिये अन्दर लिवा ले गई. इस दिन मां ठीक से न खा सकी, उसका मन मरा हुआ था. बेटी के बार बार कहने पर वह बड़ी मुश्किलों से थोड़ा सा भात खा सकी.

गांव में यदि किसी सभा का कार्यक्रम नहीं रहता था तो जेड़ खाना खाने के बाद बहुधा गांव के स्कूल में जाकर अख़बार पढ़ा करती थी. स्कूल पहाड़ी के नीचे था. पर आज उसकी मां ने उसे नहीं जाने दिया.

"जेड, आज बाहर मत जाओ", मां ने कहा. "आज हम लोग बैठ कर उन कपड़ों को सियेंगे जो हम लोगों को विजय के फलस्वरूप उस समय मिले थे जब जमींदार की जायदाद का किसानों में बंटवारा हो रहा था. तुम्हारे लिये नये कपड़े बनायेंगे. कल उन्हें सीकर पूरा कर देंगे. दिन में मुझे ज्यादा साफ़ दिखाई देता है. प्यारी बच्ची,



چولھے پر چڑھے برتن کو جلدی سے ڈھک کر جیڈ اپنی ماں کے بغل میں آگئی اور بولی—"ماں، تم دکھی کیوں ہو رہی ہو؟ میں نے تو سب تم سے پوچھ کر ہی کیا ہے. یہ تو شبھ گھڑی ہوگی. زے - پنگ کے پریوار میں تو کیول تین ہی ویکتی ہیں . یدی میرے سنگ تم بھی وہیں چلو، تو بھی اُن لوگوں کو کوئی آپتی نہیں ہوگی . اُن کے کھیت بھی ہمارے کھیت سے ملے ہوئے ہیں. کیا تم یہ سوچتی ہو کہ زے - پنگ تمہارا خیال نہیں رکھیگا ؟ یدی ایسا ہوا، تو میں تو ہوں ! میں تو پورا دھیان رکھونگی ہی. پر ایسا ہو ہی نہیں سکتا. جس کی شکشا کمیونسٹ پارٹی میں ہوئی ہے وہ اچھا اور درڑھ ہی ہوگا. پر یدی تم وہاں ٹھیک نہ رہ سکیں تو تمہارے ہی ساتھ میں بھی یہیں لوٹ آؤنگی ."

ماں یہ نے اپنی بیٹی کے کندھے پر ہاتھ رکھکر کہا—"پیاری بچی، بیوقوفی کی باتیں مت کرو . یہ تمہارے جیون میں سب سے مہتوپورن گھٹنا ہے . ایسی کوئی بات نہیں ہونی چاہئے جس سے تمہارے بھوشیہ پر آنچ آئے . میں تمہارے لئے کچھ نہ کرسکی، رہ رہ کر یہی خیال میرے من میں اُٹھتا ہے، اور میں دکھی ہو جاتی ہوں ."

ایک لمبی سانس لیکر ماں یہ نے اپنے آنسو پونچھ ڈالے، وہ اپنے بھاؤدویگ کو نہ روک سکی . جب جیڈ پھر کھانا بنانے چلی گئی، وہ سویم اُٹھکر پچھواڑے کے برآمدے میں چلی آئی . باہر چاروں اور چاندنی چھٹکی ہوئی تھی . ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا چیڑ کے جنگلوں کو چیرکر پہاڑ کے ڈھالوں سے اُتر کر آرہی تھی . سامنے کے باغ کو پار کرتے ہی پہاڑوں کی شرنکھلا شروع ہوجاتی تھی. اِسی پہاڑ پر ایک پتھریلی سڑک تھی جو سیدھے 'سورگ دوار' گھاٹی تک پہونچتی تھی، جہاں سے دکشنی زیچوان کا علاقہ شروع ہوجاتا تھا . ماں کو یہ سڑک نہیں دکھائی پڑ رہی تھی. تھوڑی دیر تک وہ روتی رہی. اُسے جیڈ کا بار بار پکارنا بھی نہیں سنائی پڑا .

جب کھانا تیار ہوگیا، جیڈ باہر آئی اور ماں کو کھانا کھانے کے لئے اندر لوالیگئی . اِس دن ماں ٹھیک سے نہ کھاسکی، اُس کا من بھرا ہوا تھا . بیٹی کے بار بار کہنے پر وہ بڑی مشکلوں سے تھوڑا سا بھات کھاسکی .

گاؤں میں یدی کسی سبھا کا کاریہ کرم نہیں رہتا تھا تو جیڈ کھانا کھانے کے بعد بہودھا گاؤں کے اسکول میں جاکر اخبار پڑھا کرتی تھی . اِسکول پہاڑی کے نیچے تھا . پر آج اُس کی ماں نے اُسے نہیں جانے دیا .

"جیڈ آج باہر مت جاؤ" ماں نے کہا. "آج ہم لوگ بیٹھکر اُن کپڑوں کو سئیں گے جو ہم لوگوں کو وجئے کے پھل سوروپ اُس سمے ملے تھے جب زمیندار کی جائداد کا کسانوں میں بٹوارہ ہو رہا تھا . تمہارے لئے نئے کپڑے بنائینگے . کل اُنھیں سی کر پورا کردینگے. دن میں مجھے زیادہ صاف دکھائی دیتا ہے. پیاری بچی،

# पुनर्मिलन !

( लेखक—री-कु; अनुवादक—कामेश्वर अग्रवाल )

सूरज को पच्छिमी पहाड़ों के पीछे छुपे हुए काफी देर हो चुकी थी. जब जेड-येह और जे-पिंग अपने चीड़ के पेड़ों वाले गांव के नज़दीक पहुंचे अंधेरा घना हो चला था. वह अपना विवाह करने की नोटिस सरकारी ज़िला दफ़्तर में देकर वापस लौट रहे थे. कुछ ही मिन्टों में जेड-येह हांपती हुई अपने घर में दाख़िल हुई. इस घर में वह और उसकी मां रहती थी. घर छोटा सा था जिस पर खपरैल पड़ी हुई थी. इसकी दीवारें भी कच्ची थीं और सरपत और पतले बांसों की मदद से बनाई गई थीं.

बूढ़ी मां खाना पका रही थी. वह साठ बरस की हो चली थी. अंधेरे में उसे बर्तन भी नहीं सूझ रहे थे. वह बार बार परेशान हो उठती थी. चूल्हे से निकलने वाली आग की लपटें उस अंधेरे में बिजली का काम देती थीं और इनकी छाया रह रह कर दीवारों पर नाच पड़ती थी.

घर में क़दम रखते ही जेड ने कहा—"मां, मैं वापस आ गई. अब तुम आराम करो. मैं घर का काम पूरा कर दूंगी."

चमचा उसके हाथ में देते हुए मां ने दुख भरे स्वर में कहा—"तुम लोग धीरे धीरे क्यों नहीं चला करतीं ? सांस नहीं लेते बन रहा है."

दियासलाई ढूंढ कर जेड ने तेल का दिया जलाया. सरकंडे की दीवार से छन छन कर आने वाली शाम की ठंडी हवा उस छोटे से दिये से टकरा रही थी. चूल्हे के नज़दीक ही, लकड़ी के एक स्टूल पर मां येह बैठ गई और टिमटिमाती रोशनी में अपनी नज़रें जेड पर जमा दीं: लम्बी तनी हुई भौं, गोल गोल काली आंखें, मुंह पर छाई हुई लाली, जेड के अंग अंग से ख़ुशी फूटी पड़ रही थी. अचानक मां के मुंह पर का भाव बदल गया और वह परेशान दिखने लगीं. वह कुछ पूछना चाहती थी, पर शब्द उसके मुंह से निकल नहीं रहे थे.

शान्ति भंग करते हुए जेड ही बोली—"मां, हम लोगों ने शुभ दिन तय कर लिया है. ज़िला-नायक का कहना है कि अगले माह की पांचवीं तारीख़ को वह हमारे गांव में नये प्रमान पत्र देंगे. यह दिन बहुत ही ख़ुशी का होगा. उनका कहना है कि हमारा विवाह भी उसी दिन हो. मैंने जे-पिंग से भी बातें कर ली हैं."

मां, कुछ चौंक कर बोलीं—"पांचवीं को !" उनकी आंखों से आंसू लुढ़क कर उनके चेहरे की झुर्रियों में दिखाई देने लगे. अपना मुंह दोनों हाथों के बीच कर के वह सुबकने लगीं.

# پنرملن !

( لیکھک—شی - کو؛ انوواد‌ک—کامیشور اگروال )

سورج کو پچھمی پہاڑوں کے پیچھے چھپے ہوئے کافی دیر ہو چکی تھی. جب جیڈ - یہ اور زے - پنگ اپنے چیڑ کے پیڑوں والے گاؤں کے نزدیک پہونچے اندھیرا گھنا ہوچلا تھا . وہ اپنا وواہ کرنے کی نوٹس سرکاری ضلع دفتر میں دیکر واپس لوٹ رہے تھے . کچھ ہی منٹوں میں جیڈ - یہ ہانپتی ہوئی اپنے گھر میں داخل ہوئی . اِس گھر میں وہ اور اُس کی ماں رہتی تھی . گھر چھوٹا سا تھا جس پر کھپریل پڑی ہوئی تھی. اِس کی دیواریں بھی کچی تھیں اور سرپت اور پتلے بانسوں کی مدد سے بنائی گئی تھیں .

بوڑھی ماں کھانا پکا رہی تھی . وہ ساٹھ برس کی ہوچلی تھی . اندھیرے میں اُسے برتن بھی نہیں سوجھ رہے تھے . وہ بار بار پریشان ہو اُٹھتی تھی . چولھے سے نکلنے والی آگ کی لپٹیں اُس اندھیرے میں بجلی کا کام دیتی تھیں اور اُن کی چھایا رہ رہ کر دیواروں پر ناچ پڑتی تھی .

گھر میں قدم رکھتے ہی جیڈ نے کہا—"ماں' میں واپس آ گئی . اب تم آرام کرو . میں گھر کا کام پورا کردونگی ."

چمچا اُس کے ہاتھ میں دیتے ہوئے ماں نے دکھ بھرے سور میں کہا—"تم لوگ دھیرے دھیرے کیوں نہیں چلا کرتیں ؟ سانس بھی لیتے نہیں بن رہا ہے ."

دیاسلائی ڈھونڈھ' کر جیڈ نے تیل کا دیا جلایا . سرکنڈے کی دیوار سے چھن چھن کر آنے والی شام کی ٹھنڈی ہوا اُس چھوٹے سے دئیے سے ٹکرا رہی تھی . چولھے کے نزدیک ہی' لکڑی کے ایک اِسٹول پر ماں یہ بیٹھ گئی اور ٹمٹماتی روشنی میں اپنی نظریں جیڈ پر جمادیں . لمبی تنی ہوئی بھوں' گول گول کالی آنکھیں' منھ پر چھائی ہوئی لالی' جیڈ کے انگ انگ سے خوشی پھوٹی پڑ رہی تھی . اچانک ماں کے منھ پر کا بھاو بدل گیا اور وہ پریشان دیکھنے لگی . وہ کچھ پوچھنا چاہتی تھی پر شبد اُس کے منھ سے نکل نہیں رہے تھے .

شانتی بھنگ کرتے ہوئے جیڈ ہی بولی—"ماں' ہم لوگوں نے شبھ دن طے کرلیا ہے . ضلع - نایک کا کہنا ہے کہ اگلے ماہ کی پانچویں تاریخ کو وہ ہمارے گاؤں میں نئے پرمان پتر دینگے . یہ دن بہت ہی خوشی کا ہوگا . اُن کا کہنا ہے کہ ہمارا وواہ بھی اُسی دن ہو . میں نے زے - پنگ سے بھی باتیں کرلی ہیں."

ماں کچھ چونک کر بولیں—"پانچویں کو !" اُن کی آنکھوں سے آنسو لڑھک کر ان کے چہرے کی جھریوں میں دکھائی دینے لگے . اپنا منھ دونوں ہاتھوں کے بیچ کرکے وہ سبکنے لگیں .

5. क्या हम अपनी औरतों को बराबरी का दर्जा देने के लिये तैयार हैं ?

6. क्या हम पिछड़ी जातियों को जगाने पर तैयार हैं ?

7. क्या हम पूंजीवादी संस्थाओं और ताल्लुक़ेदारी को मिटाने के लिये तैयार हैं ?

8. क्या हम तैयार हैं कि हिन्दुस्तान में सौ फ़ीसदी सैक्यूलर राज हो ?

9. क्या हम तैयार हैं कि तमाम ऐसी संस्थाएं जो साम्प्रदायिक और राजनैतिक हैं दोनों ही मिटा दी जायें ?

10. क्या हम यह मानने और इस पर अमल करने के लिये तैयार हैं कि मजहब समाजी नहीं शख्सी है ?

11. क्या हम तैयार हैं कि हमारे पहनावे, बोल चाल, रहन सहन और हमारे नामों से मजहब और फ़िर्क़े की छाप मिटा दी जाये ?

12. क्या हम तमाम समाजी संस्थाओं ( जैसे स्कूल, कालिज, अस्पताल वग़ैरा ) को फ़िर्क़ादारी अड्डा बनाने से रोकेंगे और उन्हें नाम और काम से इन्तहाई सैक्यूलर बनाने की कोशिश करेंगे ?

13. क्या हम मजहबी आधार को छोड़ कर साइन्टिफ़िक और डैमोक्रेटिक आधार वाले क़ानून अपना सकते हैं ?

14. क्या हम औरतों और अछूतों को सरकारी सहायता दिये जाने पर राजी हैं ?

15. क्या हम तैयार हैं कि इस देश का विधान इन चौदह बातों के आधार पर हो ?

यह सवालात वह हैं जिनका हल हमारी समस्याओं का हल हैं. अगर इनका जवाब हमारे पास 'हां' है तो समझिये कि देश का कल्यान हो गया और अगर नहीं, तो मेरा जवाब सुन लीजिये :

"न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में"

---



5. کیا ہم اپنی عورتوں کو برابری کا درجہ دینے کے لئے تیار ہیں ؟

6. کیا ہم پچھڑی جاتیوں کو جگانے پر تیار ہیں؟

7. کیا ہم پونجی‌وادی سنستھاؤں اور تعلقہ‌داری کو مٹانے کے لئے تیار ہیں ؟

8. کیا ہم تیار ہیں کہ ہندستان میں سو فیصدی سیکولر راج ہو ؟

9. کیا ہم تیار ہیں کہ تمام ایسی سنستھائیں جو سامپردائک اور راج‌نیتک ہیں دونوں ہی مٹادی جائیں ؟

10. کیا ہم یہ ماننے اور اِس پر عمل کرنے کے لئے تیار ہیں کہ مذہب سماجی نہیں شخصی ہے؟

11. کیا ہم تیار ہیں کہ ہمارے پہناوے، بول چال، رہن سہن اور ہمارے ناموں سے مذہب اور فرقہ کی چھاپ مٹادی جائے؟

12. کیا ہم تمام سماجی سنستھاؤں ( جیسے اسکول، کالج، اسپتال وغیرہ ) کو فرقہ‌واری اڈا بنانے سے روکیں گے اور اُنھیں نام اور کام سے انتہائی سیکولر بنانے کی کوشش کریں گے؟

13. کیا ہم مذہبی آدھار کو چھوڑکر سائنٹفک اور ڈیموکریٹک آدھار والے قانون اپنا سکتے ہیں؟

41. کیا ہم عورتوں اور اچھوتوں کو سرکاری سہائتا دیئے جانے پر راضی ہیں؟

51. کیا ہم تیار ہیں کہ اِس دیش کا ودھان اِن چودہ باتوں کے آدھار پر ہو ۔

یہ سوالات وہ ہیں جن کا حل ہماری سمسیاؤں کا حل ہیں. اگر اُن کا جواب ہمارے پاس 'ہاں' ہے تو سمجھئے کہ دیش کا کلیان ہوگیا' اور اگر 'نہیں' تو میرا جواب سن لیجئے :

"نہ سمجھوگے تو مٹ جاؤ گے اے ہندستاں والو
تمہاری داستاں تک بھی نہ ہوگی داستانوں میں"

विकास एक सा हुआ है और अब भ हो रहा है. इब्रानी ज़बान के पुराने अहदनामे का तूफ़ाने नूह और मनुस्मृति का "जलप्लावन" एक सा है. सगोत्रवाद का रिवाज भी भारतवर्ष में अर्बों और मिस्रियों की तरह था. अर्बों और मिस्रियों के इतिहास में और भारत के इतिहास में महाभारत के समय तक सगी बहनों से भी शादी की मिसालें मिलती हैं जो साइन्टिफ़िक और मनोवैज्ञानिक आधारों पर बन्द हो गई.

## "हिन्दुस्तान की कलचरी समस्या"

भारती कलचरी समस्या के हल को खोजने से पहले हमें यहां के घिनावने वातावरन को बदलना होगा. हमारी जनता के बहुत बड़े अंग पर नैतिक गुलामी (Moral slavery) छाई हुई है. मजहब के ठेकेदार—चाहे ब्राह्मन हों या सैयद या शेख़ या पादरी साहब, राजा और नवाब, और पूंजीपति—तमाम भारती जनता को ग़ुलामी के चंगुल में जकड़े हुए हैं. सच्ची ख़ुद्दारी, सच्ची स्वाधीनता, सच्ची नागरिकता और भाईचारापन, आदमी आदमी के बीच सच्चा प्यार और सच्चा ब्योहार यह सब कुछ वह बातें हैं जिनके विशय में न सताये हुए सोचते हैं न सताने वाले. पढ़ने लिखने के बाद अगर कोई दलित जाति का आदमी इधर ध्यान देता है तो वह केवल बदले की भावना से और सताने वाली जातियां उनकी तहरीकों को कुचलने के लिये नये जाल बिछाती हैं. भारती समाज में आदमी नहीं पैदा होते बल्कि हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई वग़ैरा पैदा होते हैं. यह कहना झूट है कि हिन्दुस्तानी को बुनियादी आजादी का पैदाइशी हक़ हासिल है. हमारे भाई बड़े फ़ख़्र के साथ इसे बर्दाश्त करते हैं कि उन्हें उनके बुनियादी हक़ न मिलें. हम ख़ुश हैं हमें भले ही मजहबी किताबें पढ़ने को न मिलें, होटलों में छुआ छूत हो, कुएं पर पानी न भरने दिया जाये, मन चाहा ब्याह न कर सकें, मन चाहा रोज़गार न कर सकें !

इस समाज में घृना और नफ़रत ने इन्सानियत के टुकड़े टुकड़े कर दिये हैं, आजादी और डेमोक्रेसी का नाम लेकर इन्सानी सूझ बूझ का मज़ाक़ न उड़ाएं. क्या हम सचमुच एक राष्ट्र के लिये एक कलचर चाहते हैं ? अगर हां तो क्या हम तैयार हैं :—

1. तमाम भारती जनता को खाने पीने, पूजा पाट और शादी ब्याह में बराबरी का स्थान देने के लिये ?

2. जात पात को तोड़ने वाले सरकारी क़ानूनों को मानने के लिये ?

3. जात पात का भेद फैलाने वालों को मुजरिम क़रार देने के लिये ?

4. क्या हम तैयार हैं कि सरकारी नौकरी पाने और पार्लिमेंट की मेम्बरी ग्रहन करने से पहले अपने जात पात को छोड़ दें ?



وکاس ایک سا ہوا ہے اور اب بھی ہو رہا ہے ۔ عبرانی زبان کے پرانے عہدنامے کا طوفان نوح اور منوسمرتی کا "جل پلاون" ایک سا ہے ۔ سگوتروواد کا رواج بھی بھارت ورش میں عربوں اور مصریوں کی طرح تھا ۔ عربوں اور مصریوں کے اِتہاس میں اور بھارت کے اِتہاس میں مہابھارت کے سمے تک سگی بہنوں سے بھی شادی کی مثالیں ملتی ہیں جو سائنٹفک اور منوویگیانک آدھاروں پر بند ہوگئیں ۔

## "ہندستان کی کلچری سمسیا"

بھارتی کلچری سمسیا کے حل کو کھوجنے سے پہلے ہمیں یہاں کے گھناؤنے واتاورن کو بدلنا ہوگا ۔ ہماری جنتا کے بہت بڑے انگ پر نیتک غلامی (Moral slavery) چھائی ہوئی ہے ۔ مذہب کے ٹھیکیدار—چاہے برہمن ہوں یا سید یا شیخ یا پادری صاحب، راجہ اور نواب، اور پونجی پتی—تمام بھارتی جنتا کو غلامی کے چنگل میں جکڑے ہوئے ہیں۔ سچی خودداری، سچی سوادھینتا، سچی ناگرکتا اور بھائی چارہ پن، آدمی آدمی کے بیچ سچا پیار اور سچا بیوہار یہ سب کچھ وہ باتیں ہیں جن کے وشے میں نہ ستائے ہوئے سوچتے ہیں نہ ستانے والے ۔ پڑھنے لکھنے کے بعد اگر کوئی دلت جاتی کا آدمی اِدھر دھیان دیتا ہے تو وہ کیول بدلہ کی بھاؤنا سے اور ستانے والی جاتیاں اُن کی تحریکوں کو کچلنے کے لئے نئے جال بچھاتی ہیں ۔ بھارتی سماج میں آدمی نہیں پیدا ہوتے بلکہ ہندو، مسلمان، سکھ، عیسائی وغیرہ پیدا ہوتے ہیں ۔ یہ کہنا جھوٹ ہے کہ ہندستانی کو بنیادی آزادی کا پیدائشی حق حاصل ہے ۔ ہمارے بھائی بڑے فخر کے ساتھ اِسے برداشت کرتے ہیں کہ اُنہیں ان کے بنیادی حق نہ ملیں ۔ ہم خوش ہیں ہمیں بھلے ہی مذہبی کتابیں پڑھنے کو نہ ملیں، ہوٹلوں میں چھواچھوت ہو، کنوئیں پر پانی نہ بھرنے دیا جائے، من چاہا بیاہ نہ کرسکیں، من چاہا روزگار نہ کرسکیں !

اس سماج میں گھرنا اور نفرت نے انسانیت کے ٹکڑے ٹکڑے کردئے ہیں، آزادی اور ڈیموکریسی کا نام لیکر انسانی سوجھ بوجھ کا مذاق نہ اڑائیں ۔ کیا ہم سچ مچ ایک راشٹر کے لئے ایک کلچر چاہتے ہیں؟ اگر ہاں تو کیا ہم تیار ہیں :—

1. تمام بھارتی جنتا کو کھانے پینے، پوجا پاٹ اور شادی بیاہ میں برابری کا استھان دینے کے لئے ؟

2. ذات پات کو توڑنے والے سرکاری قانونوں کو ماننے کے لئے؟

3. ذات پات کا بھید پھیلانے والوں کو مجرم قرار دینے کے لئے ؟

4. کیا ہم تیار ہیں کہ سرکاری نوکری پانے اور پارلیمنٹ کی ممبری گرہن کرنے سے پہلے اپنے ذات پات کو چھوڑ دیں ؟

मुसलमानों के मेल का नतीजा हैं. पुराने हिन्दुस्तानी हर चीज़ को उबाल कर या भात बना कर दूध, दही, मट्ठा या गोश्त से खाते थे. आज भी ग़रीब देहाती गेहूं, जौ, चना, मटर, जुवार, बाजरा और दूसरे अनाज उबाल कर खाते हैं. तवे और रोटी का इस्तेमाल हमें मुसलमानों से मिला है. यह दोनों शब्द भी संस्कृत, प्राकृत या अपभ्रंश के नहीं हैं. हिन्दुओं के रसोईघर जैसी पवित्र जगह में इन मुसलमानी चीज़ों का बाईकाट न हो सका.

दूसरों के देवता भी हमारी सभ्यता में अपनाये गये हैं. हिन्दुओं का बहुत बड़ा देवता "शिव" द्राविड़ों का देवता था. वेदों का खंडन करने वाले बुद्ध जी भगवान का अवतार माने जाते हैं. हिन्दुस्तानी ज्योतिश और देवमाला यूनानी ज्योतिश और देवमाला से मिलते जुलते हैं. यूनानी हारस्कोप और हमारी जन्म कुन्डली के होड़ा चक्र एक ही है. यूनानियों के रास चक्र को आज सभी हिन्दुस्तानी अपना कहते हैं. हमारी चरक संहिता के नुस्खे भी यूनानी दवाओं के नुस्ख़ों से मिलते जुलते हैं. आख़िर यह तहज़ीब के मेल जोल ही के तो नतीजे हैं.

मोहनजोदड़ो की लगभग चार हज़ार बरस पुरानी तहज़ीब के ख़ात्मे के बाद दो हज़ार बरस तक आर्य सभ्यता शिल्प कला के क्षेत्र में बांझ सी रही. इस सिलसिले में सब से पहला चित्रकार तीसरी सदी ईसा से पहले मौर्यों के ज़माने में हुआ. अशोक की लाटें, अजन्ता की गुफाएं वग़ैरा यूनानी और ईरानी तहज़ीब के मेल जोल का नतीजा हैं. चिकने खम्बों पर शेरों की मूर्तियां आसुरी कला की देन हैं और सांडों की मूर्तियां ईरानी कला का प्रभाव हैं जो छटी सदी ईसा से पहले ईरान में दारा के समय में अक्सर बनाई गई हैं. इसके अलावा शिलाओं पर शाही फ़रमान खुदवाने का रिवाज भी ईरानी है. अशोक से पहले किसी हिन्दुस्तानी राजा ने ऐसा नहीं किया और न ही ऐसे लाट बनवाए. हिन्दुस्तानी मूर्ति कला में गांधार शैली भी यूनानियों की देन है. आज हज़ारों ही मूर्तियां यूनानी ढंग की अफ़ग़ानिस्तान से मथरा तक मिलती हैं.

इसी तरह हिन्दुस्तानी ड्रामों में भी यूनानी असर पड़ा है. यहां के नाटकों में पर्दे का रिवाज न था, ड्राप पर्दा के लिये संस्कृत का शब्द यवनिका ज़ाहिर करता है कि यह यूनानी देन है, क्योंकि हिन्दुस्तानी यूनानियों को यवन कहते थे.

मज़हब के दायरे में भी तहज़ीबें एक दूसरे से मेल खाती रहीं, यूनानी, मिस्री, बेबीलोनियन, पैगनिज़्म ( Pagnism ) एक सी हैं और देवमालाएं भी एक हैं. सभों में पेड़, पौदों, पहाड़ों, झरनों और नदियों के पूजने का रिवाज एक सा था और सभी देशों में ख़ुदा के तसव्वुर का



مسلمانوں کے میل کا نتیجہ ھیں. پرانے ہندستانی ھر چیز کو اُبال کر یا بھات بنا کر دودھ‘ دھی‘ مٹھا یا گوشت سے کھاتے تھے. آج بھی غریب دیہاتی گیہوں‘ جو‘ چنا‘ مٹر‘ جوار‘ باجرہ اور دوسرے اناج اُبال کر کھاتے ھیں. توے اور روٹی کا استعمال ھمیں مسلمانوں سے ملا ھے. یہ دونوں شبد بھی سنسکرت‘ پراکرت یا اپبھرنش کے نہیں ھیں. ہندوؤں کی رسوئی گھر جیسی پوتر جگہ میں اِن مسلمانی چیزوں کا بائیکاٹ نہ ھوسکا.

دوسروں کے دیوتا بھی ھماری سبھیتا میں اپنائے گئے ھیں. ہندوؤں کا بہت بڑا دیوتا "شیو" دراوڑوں کا دیوتا تھا. ویدوں کا کھنڈن کرنے والے بدھ جی بھگوان کا اوتار مانے جاتے ھیں. ہندستانی جیوتش اور دیومالا یونانی جیوتش اور دیومالا سے ملتے جلتے ھیں. یونانی ھارسکوپ اور ھماری جنم کنڈلی کے ھوڑا چکر ایک ھی ھیں. یونانیوں کے راس چکر کو آج سبھی ہندستانی اپنا کہتے ھیں. ھماری چرک سنہتا کے نسخے بھی یونانی دواؤں کے نسخوں سے ملتے جلتے ھیں. آخر یہ تہذیب کے میل جول ھی کے تو نتیجے ھیں.

موہن جودڑو کی لگ بھگ چار ھزار برس کی پرانی تہذیب کے خاتمے کے بعد دو ھزار برس تک آریہ سبھیتا شلپ کلا کے چھیتر میں بانجھ سی رھی. اِس سلسلے میں سب سے پہلا چترکار تیسری صدی عیسیٰ سے پہلے موریوں کے زمانے میں ھوا. اشوک کی لاٹیں‘ اجنتا کی گپھائیں وغیرہ یونانی اور ایرانی تہذیب کے میل جول کا نتیجہ ھیں. چکنے کھمبوں پر شیروں کی مورتیاں آسوری کلا کی دین ھے اور سانڈوں کی مورتیاں ایرانی کلا کا پربھاؤ ھے جو چھٹی صدی عیسیٰ سے پہلے ایران میں دارا کے سمئے میں اکثر بنائی گئی ھیں. اِس کے علاوہ شلاؤں پر شاھی فرمان کھدوانے کا رواج بھی ایرانی ھے. اشوک سے پہلے کسی ہندستانی راجا نے ایسا نہیں کیا اور نہ ھی ایسے لاٹ بنوائے. ہندستانی مورتی کلا میں گاندھار شیلی بھی یونانیوں کی دین ھے. آج ھزاروں ھی مورتیاں یونانی ڈھنگ کی افغانستان سے متھرا تک ملتی ھیں.

اسی طرح ہندستانی ڈراموں میں بھی یونانی اثر پڑا ھے. یہاں کے ناٹکوں میں پردے کا رواج نہ تھا‘ ڈراپ پردہ کے لئے سنسکرت کا شبد یونیکا ظاھر کرتا ھے کہ یہ یونانی دین ھے‘ کیونکہ ہندستانی یونانیوں کو یون کہتے تھے.

مذھب کے دائرے میں بھی تہذیبیں ایک دوسرے سے میل کھاتی رھیں‘ یونانی‘ مصری‘ بیبی لونین‘ پیگنزم (Pagnism) ایک سی ھیں اور دیومالائیں بھی ایک ھیں. سبھوں میں پیڑ‘ پودوں‘ پہاڑوں‘ جھرنوں اور ندیوں کے پوجنے کا رواج ایک سا تھا اور سبھی دیشوں میں خدا کے تصور کا

## 'हिन्दुस्तान में तहज़ीबों का मेल जोल'

मैंने इस जगह ख़ास तौर पर इस सुर्ख़ी की ज़रूरत समझी जिसके दो अमर कारन हैं—(1) हर देश के कलचर का सब से अहम और टिकाऊ पहलू यही है. (2) मैं इतिहास के आधार पर तहज़ीबों के मेल जोल का ख़ाका पेश करना चाहता हूं. कलचर में पहनावा, कला और साहित्य के ख़ास स्थान होते हैं. लिहाज़ा मैं पहनावे से शुरू करता हूं.

आर्यों के यहां बसने से पहले दो क़िस्म के कपड़े पहने जाते थे—एक धोती और दूसरा शाल या चादर. उनके आने पर मर्दों के पहनाव में पगड़ी और दरापी (एक तरह की बन्डी) और औरतों में चोली का रिवाज हुआ. यह पहनावे मध्य एशिया की देन हैं. चोली और दरापी को छोड़ कर आम जनता आम तौर से बग़ैर सिले कपड़े पहनती थी. लेकिन सूती धागे का इस्तेमाल होता था, कम से कम दरापी तो सिली ही जाती थी. आज के वह तमाम लिबास जिन्हें हम हिन्दुस्तानी कहते हैं बिदेसी हैं. अचकन जो लखनऊ के नवाबों और देहली के मुग़लों के यहां बदलते बदलते शेरवानी बन गया दर असल पहली सदी ईसवी में कुशानों की देन है. कुशान सिपाहियों और कनिश्क की मूर्तियों में भी अचकन दिखाया गया है. ग़ालिबन कुशान इसे मध्य एशिया से लाये थे. कुर्ता हिन्दुस्तानी और यूनानी तहज़ीब के मेल जोल ने पैदा किया. यूनानी कुर्ते का नाम टयूनिक है जो हिन्दुस्तानी कुर्ते से 90 फ़ी सदी मिलता जुलता है. कुर्ता किस ज़बान का शब्द है यह नहीं कहा जा सकता. संस्कृत, प्राकृत, पाली या अपभ्रंश किसी से भी इसका नाता नहीं जुड़ता. पाइजामा भी कुशानों की ही देन है जिसको अब मुसलमानी समझा जा रहा है. गांधी टोपी, पुर्तगाली टोपी की तरह है जो मध्य काल में पुर्तगालियों और मिस्रियों से यहां पहुंची थी. औरतों के गहनों में नथ और कान की बालियां मुसलमानों की देन हैं. नथ की तो यहां तक शुद्धि हुई कि यह बाज़ बाज़ हिन्दू जातियों में सुहाग की निशानी बन गई. इन गहनों के लिये संस्कृत भाषा में शब्द नहीं हैं और न यह पुरानी मूर्तियों में ही नज़र आते हैं.

हमारे बहुत से खाने बिदेसी हैं जिन्हें आज हम भारती भोजन कहते हैं. हमें बहुत से खाने मुसलमानों के सम्पर्क में आने से मिले. हिन्दुस्तान में आम तौर से दूध की मिठाइयों का रिवाज था. मुसलमानों ने हमें अनाज की मिठाइयां भी दीं. हम आज भी ग़ालिबन इसी वजह से पेड़ा, बर्फ़ी जैसी देर में हज़म होने वाली मिठाई ब्रत के दिन खाते हैं, लेकिन अनाज नहीं खाते. हल्वा, क़ोर्मा, ज़र्दा, फ़ीरीनी सब की सब मुसलमानों से ही मिली हैं. ख़ुद हल्वाई का लफ़्ज़ फ़ारसी है. पूड़ी कचौड़ी और रोटी जैसे खाने भी



## ' ھندستان میں تہذیبوں کا میل جول '

میں نے اِس جگہ خاص طور پر اِس سرخی کی ضرورت سمجھی جس کے دو امر کارن ھیں—(1) ھر دیش کے کلچر کا سب سے اھم اور ٹکاؤ پہلو یہی ھے. (2) میں اتہاس کے آدھار پر تہذیبوں کے میل جول کا خاکہ پیش کرنا چاھتا ھوں. کلچر میں پہناوا' کلا اور ساھتیہ کے خاص استھان ھوتے ھیں. لہذا میں پہناوے سے شروع کرتا ھوں.

آریوں کے یہاں بسنے سے پہلے دو قسم کے کپڑے پہنے جاتے تھے—ایک دھوتی اور دوسرا شال یا چادر. اُن کے آنے پر مردوں کے پہناؤ میں پگڑی اور دراپی (ایک طرح کی بنڈی) اور عورتوں میں چولی کا رواج ھوا. یہ پہناوے مدھیہ ایشیا کی دین ھیں. چولی اور دراپی کو چھوڑ کر عام جنتا عام طور سے بغیر سلے کپڑے پہنتی تھی. لیکن سوتی دھاگے کا استعمال ھوتا تھا' کم سے کم دراپی تو سلی ھی جاتی تھی. آج کے وہ تمام لباس جنہیں ھم ھندستانی کہتے ھیں بدیسی ھیں. اچکن جو لکھنؤ کے نوابوں اور دھلی کے مغلوں کے یہاں بدلتے بدلتے شیروانی بن گیا دراصل پہلی صدی عیسوی میں کشانوں کی دین ھے. کشان سپاھیوں اور کنشک کی مورتیوں میں بھی اچکن دکھایا گیا ھے. غالباً کشان اِسے مدھیہ ایشیا سے لائے تھے. کرتا ھندستانی اور یونانی تہذیب کے میل جول نے پیدا کیا. یونانی کرتے کا نام ٹیونک ھے جو ھندستانی کرتے سے 90 فی صدی ملتا جلتا ھے. کرتا کس زبان کا شبد ھے یہ نہیں کہا جا سکتا. سنسکرت' پراکرت' پالی یا اپبھرنش کسی سے بھی اِس کا ناتا نہیں جڑتا. پاجامہ بھی کشانوں ھی کی دین ھے جس کو اب مسلمانی سمجھا جا رہا ھے. گاندھی ٹوپی' پرتگالی ٹوپی کی طرح ھے جو مدھیہ کال میں پرتگالیوں اور مصریوں سے یہاں پہونچی تھی. عورتوں کے گہنوں میں نتھ اور کان کی بالیاں مسلمانوں کی دین ھیں. نتھ کی تو یہاں تک شدھی ھوئی کہ یہ بعض بعض ھندو جاتیوں میں سہاگ کی نشانی بن گئی. ان گہنوں کے لئے سنسکرت بھاشا میں شبد نہیں ھیں اور نہ یہ پرانی مورتیوں میں ھی نظر آتے ھیں.

ھمارے بہت سے کھانے بدیسی ھیں جنہیں آج ھم بھارتی بھوجن کہتے ھیں. ھمیں بہت سے کھانے مسلمانوں کے سمپرک میں آنے سے ملے. ھندستان میں عام طور سے دودھ کی مٹھائیوں کا رواج تھا. مسلمانوں نے ھمیں اناج کی مٹھائیاں بھی دیں. ھم آج بھی غالباً اِسی وجہ سے پیڑا' برفی جیسی دیر میں ھضم ھونے والی مٹھائی برت کے دن کھاتے ھیں لیکن اناج نہیں کھاتے. حلوہ' قورمہ' زردہ' فیرینی سب کی سب مسلمانوں سے ھی ملی ھیں. خود حلوائی کا لفظ فارسی ھے. پوری کچوری اور روٹی جیسے کھانے بھی

देसी सांचों में ढाल लिया गया है. नैतिक अस्तर भी विदेसी प्रभावों से अदलते बदलते रहे हैं.

3. हमारा कलचर हमेशा से साइन्टिफ़िक और विकास आत्मिक सिद्धान्तों का हासिल रहा है ख़्वाह उनको इख़लाक़ी रंग से पेश किया गया हो या धार्मिक (creedal). साइंटिफ़िक आधार पर किसी चीज़ को ग्रहन करने या छोड़ने से लचर अमर होता है. आज के साइंस और मशीन के जुग में वही पहनावा काम सकता है जो कल पुर्ज़ों से न उलझे. चुस्ती और काम की सहूलियत के लिये हमें धोती के बजाय नैकर और पतलून ही पहनना होगा. इसलिये हमें चाहिये कि हम हर सयासी और समाजी कारोबार में साइंटिफ़िक तरीक़ों को इस्तेमाल करें. अगर अक़्ल से कोई बात सही जंचती है तो उसके अपना लेने में हर्ज ही क्या है, बला से वह राम और कृश्न के रहन सहन में न रही हो.

4. हिन्दुस्तानी कलचर जिन्सयाती और कलात्मक ( sexual and artistic ) बुनियादों पर ही फला फूला है. हमारे नाच गाने, हमारी मुसव्वरी, हमारे साहित्य, हमारे त्योहार और यहां तक कि हमारे रस्मोरिवाज में भी उनकी छाप है. हमारे देवी देवताओं की कहानियां भी हुस्नो इश्क़ की हदों से बाहर नहीं हैं. हमारे मौजूदा लोक गीत, राग रंग और नाच गाने जो त्योहारों पर मन्दिरों और हर देहाती घरों में सुनाई पड़ते हैं इस कथन को और भी साफ़ कर देते हैं. हमारे घरों की तस्वीरों, मन्दिर की मूर्तियों और साहित्य में एक ऊंचे दर्जे की जिन्सी मिठास है जो अमरीका और फ़्रांस के बालरूम और होटलों को नसीब नहीं. यह जिन्सी मिठास छिछली नहीं इन्तहाई कलात्मक और बुलन्द है जो भरथरी हरी को तवाइफ़ की दूकान से उठाकर स्वर्ग के रास्ते पर खड़ा कर सकती है. हिन्दुस्तानी कलचर के इस पहलू में कुछ ऐसी ज़िन्दगी है कि उन्हें छोड़ने के बाद कलचर पर मुर्दनी छा जाती है. मुसलमानों ने भी इसे अपने कलचर में तमाम मज़हबी पाबन्दियों को ठुकरा कर अपना लिया. हिन्दुस्तान की ईद, यहां की शब्बरात और यहां के मुसलमानों के शादी ब्याह इस्लामी नहीं हिन्दुस्तानी हैं.

5. हिन्दुस्तानी कलचर में इन्तहाई सादगी है लेकिन इस सादगी के भी साम्राजी अन्दाज़ हैं जो पुराने सामन्तवादी जुग से अंग्रेज़ी साम्राजशाही तक बराबर पनपती रही. मैंने रूखा सूखा खाना देखा लेकिन सोने के बर्तनों में. मैंने ख़ुशी से भूक सहने वालों को देखा जो घी और अनाज जलती आग में झोंक देते हैं. मैंने ऐसे नंगे देखे जो मरने पर रेशमी कफ़न पाते हैं. मुझे हिन्दुस्तानी सादगी पसन्द है, इसे कलचर में स्थान मिलना चाहिये, लेकिन साम्राज के और मज़हब के रंदे इस पर न चलने पायें. मैं ख़ुदकुशी को सादगी नहीं कह सकता.



دیسی سانچوں میں ڈھال لیا گیا ھے ۔ نیتک استر بھی بدیسی پربھاؤں سے ادلتے بدلتے رھے ھیں ۔

3. ھمارا کلچر ھمیشہ سے سائنٹفک اور وکاس آتمک سدھانتوں کا حاصل رھا ھے خواہ اُن کو اخلاقی رنگ سے پیش کیا گیا ھو یا دھارمک (creedal). سائنٹفک آدھار پر کسی چیز کو گرھن کرنے یا چھوڑنے سے کلچر امر ھوتا ھے۔ آج کے سائنس اور مشین کے جگ میں وھی پہناوا کام دے سکتا ھے جو کل پرزوں سے نہ اُلجھے ۔ چستی اور کام کی سہولیت کے لئے ھمیں دھوتی کے بجائے نیکر اور پتلون ھی پہننا ھوگا ۔ اس لئے ھمیں چاھئیے کہ ھم اپنے ھر سیاسی اور سماجی کاروبار میں سائنٹفک طریقوں کو استعمال کریں ۔ اگر عقل سے کوئی بات سہی جنچتی ھے تو اُس کے اپنالینے میں ھرج ھی کیا ھے' بلا سے وہ رام اور کرشن کے رھن سہن میں نہ رھی ھو ۔

4. ھندستانی کلچر جنسیاتی اور کلاتمک (sexual and artistic) بنیادوں پر ھی پھلا پھولا ھے ۔ ھمارے ناچ گانے' ھماری مصوری' ھمارے ساھتیہ' ھمارے تیوھار اور یہاں تک کہ ھمارے رسم و رواج میں بھی اُن کی چھاپ ھے ۔ ھمارے دیوی دیوتاؤں کی کہانیاں بھی حسن و عشق کی حدوں سے باھر نہیں ھیں ۔ ھمارے موجودہ لوک گیت' راگ رنگ اور ناچ گانے جو تیوھاروں پر مندروں اور ھر دیہاتی گھروں میں سنائی پڑتے ھیں اِس کتھن کو اور بھی صاف کر دیتے ھیں ۔ ھمارے گھروں کی تصویروں' مندر کی مورتیوں اور ساھتیہ میں ایک اُونچے درجہ کی جنسی متھاس ھے جو امریکہ اور فرانس کے بال روم اور ھوٹلوں کو نصیب نہیں. یہ جنسی متھاس چھچھلی نہیں انتہائی کلاتمک اور بلند ھے جو بھرتری ھری کو طوائف کی دوکان سے اُٹھا کر سورگ کے راستہ پر کھڑا کر سکتی ھے ۔ ھندستانی کلچر کے اِس پہلو میں کچھ ایسی زندگی ھے کہ انھیں چھوڑنے کے بعد کلچر پر مردنی چھا جاتی ھے ۔ مسلمانوں نے بھی اِسے اپنے کلچر میں تمام مذھبی پابندیوں کو ٹھکرا کر اپنا لیا ۔ ھندستان کی عید' یہاں کی شب برات اور یہاں کے مسلمانوں کے شادی بیاہ اِسلامی نہیں ھندستانی ھیں ۔

5. ھندستانی کلچر میں انتہائی سادگی ھے لیکن اِس سادگی کے بھی سامراجی انداز ھیں جو پرانے سامنت وادی جگ سے انگریزی سامراج شاھی تک برابر پنپتی رھی ۔ میں نے روکھا سوکھا کھانا دیکھا لیکن سونے کے برتنوں میں ۔ میں نے خوشی سے بھوک سہنے والوں کو دیکھا جو گھی اور اناج جلتی آگ میں جھونک دیتے ھیں ۔ میں نے ایسے ننگے دیکھے جو مرنے پر ریشمی کفن پاتے ھیں ۔ مجھے ھندستانی سادگی پسند ھے' اِسے کلچر میں استھان ملنا چاھئے لیکن سامراج کے اور مذھب کے رندے اُس پر نہ چلنے پائیں ۔ میں خودکشی کو سادگی نہیں کہہ سکتا ۔

मुसलमान शासकों की इस अदूरदर्शता का यह नतीजा निकला कि उनमें ऊंच नीच की गन्दी भावना पैदा हो गई. यूरोप की जातियों ने भी यहां की जाहिल जनता में भेद भाव को और मजबूत बनाकर अपना उल्लू सीधा किया. धार्मिक मिशनरियों ने भी (चाहे मुसलमान हों या ईसाई) यहां की जहालत को प्रचार का साधन बनाया और हमेशा हिन्दू मुसलमान और शूद्र ब्राह्मन वग़ैरा के अन्दरूनी भेद को उभारते रहे. ईसाई पादरी दलित को ईसाई बनाकर उनमें ब्राह्मनों से बुजुर्ग होने का जुनून भरते रहे. यहां तक कि बीसवीं सदी में कलचरी मतभेद उस चरम सीमा पर पहुंच गया जहां देश कलचर के नाम पर दो टुकड़े हो गया.

अगर हम रवादारी से आज के कलचर का जाइज़ा लें तो मालूम होगा कि हमारे देश में जाति जाति, प्रान्त प्रान्त, यहां तक कि शहर शहर और देहात देहात के कलचर और भाशा में फ़र्क़ है. कोई बंगाली, कोई मद्रासी, कोई पंजाबी, कोई यू० पी० का निवासी कलचरी ऐतबार से एक दूसरे से मेल नहीं खाता. ख़ुशक़िस्मती से पिछले कुछ दिनों में अंग्रेज़ी कलचर और अंग्रेज़ी भाशा ने पूरे भारत के कलचरी एकता के साधन जुटा दिये थे. आज भी अगर पंजाबी और बंगाली में रोटी बेटी का संबंध होता है तो कहने को वह भले ही हिन्दुस्तानियत के नाम पर हो मगर ऐसे कामों में अंग्रेज़ी कलचर और अंग्रेज़ी असर उजागर मालूम होते हैं, इसके लिये हमको अंग्रेज़ों का अहसानमन्द होना चाहिये. धोती और तहमद में, कुर्ते और अचकन में, पायजामा और शलवार में, डाढ़ी डाढ़ी में, मूंछे मूंछे में, तस्बीह और जनेऊ में चाहे जो भी भेद भाव हो लेकिन सूट और टाई की दुनिया में, घुटे हुए चहरों की दुनिया में तमाम फ़िर्क़ों के हिन्दुस्तानी एक से नज़र आते हैं. मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और गिर्जाघरों में चाहे जितना भी बैर भाव हो लेकिन होटलों, तफ़रीहगाहों, आराम घरों में सब एक से हैं.

## 'हिन्दुस्तानी कलचर के टिकाऊ पहलू'

1. लचक (flexibility)—इस विशय पर काफ़ी बहस हो चुकी है. सिर्फ़ इतना कहना है कि 'इन्क़लाब' जो आदमीयत की जान है कुचलने न पाये और यह लचक अमर हो जाये. हम वक़्त के तक़ाज़ों के अनुसार अदलते बदलते रहें, ख़्वाह कलचर हो या भाशा या कोई और मामला हो.

2. हिन्दुस्तानी कलचर का आधार हमेशा से धर्म रहा है और आज भी है. इसके साथ साथ हम यह भी मानने को तैयार हैं कि हिन्दू धर्म मजहब के नाम पर मजहब नहीं है जिसके लिये हम अंग्रेज़ी शब्द (creed) इस्तेमाल करते हैं दरअसल हिन्दुस्तानी कलचर में उसकी प्रधानता धर्म की रवादारी और नैतिक बुनियादों पर है. रवादारी की तो यह इन्तहा है कि हमारे कलचर की हर बात बिदेसी है जिसे



مسلمان شاسکوں کی اِس آدوردرشتا کا یہ نتیجہ نکلا کہ اُن میں اُونچ نیچ کی گندی بھاونا پیدا ہوگئی. یورپ کی جاتیوں نے بھی یہاں کی جاہل جنتا میں بھید بھاؤ کو اور مضبوط بناکر اپنا اُلو سیدھا کیا. دھارمک مشنریوں نے بھی (چاہے مسلمان ہوں یا عیسائی) یہاں کی جہالت کو پرچار کا سادھن بنایا اور ہمیشہ ہندو مسلمان اور شودر براہمن وغیرہ کے اندرونی بھید کو اُبھارتے رہے. عیسائی پادری دلت کو عیسائی بناکر اُن میں براہمنوں سے بزرگ ہونے کا جنون بھرتے رہے. یہاں تک کہ بیسویں صدی میں کلچری مت بھید اُس چرم سیما پر پہونچ گیا جہاں دیش کلچر کے نام پر دو ٹکڑے ہوگیا.

اگر ہم رواداری سے آج کے کلچر کا جائزہ لیں تو معلوم ہوگا کہ ہمارے دیش میں جاتی جاتی' پرانت پرانت' یہاں تک کہ شہر شہر اور دیہات دیہات کے کلچر اور بھاشا میں فرق ہے. کوئی بنگالی' کوئی مدراسی' کوئی پنجابی' کوئی یوپی کا نواسی کلچری اعتبار سے ایک دوسرے سے میل نہیں کھاتا. خوش قسمتی سے پچھلے کچھ دنوں میں انگریزی کلچر اور انگریزی بھاشا نے پورے بھارت کے کلچری ایکتا کے سادھن جُٹا دیئے تھے. آج بھی اگر پنجابی اور بنگالی میں روٹی بیٹی کا سمبندھ ہوتا ہے تو کہنے کو وہ بھلے ہی ہندستانیت کے نام پر ہو مگر ایسے کاموں میں انگریزی کلچر اور انگریزی اثر اُجاگر معلوم ہوتے ہیں' اِس کے لئے ہم کو انگریزوں کا احسان مند ہونا چاہئے. دھوتی اور تہمد میں' کرتے اور اچکن میں' پائجامہ اور شلوار میں' ڈاڑھی ڈاڑھی میں' مونچھے مونچھے میں' تسبیح اور جنیؤ میں چاہے جو بھی بھید بھاؤ ہو لیکن سوٹ اور ٹائی کی دنیا میں' گھٹے ہوئے چہروں کی دنیا میں تمام فرقوں کے ہندستانی ایک سے نظر آتے ہیں. مندروں' مسجدوں' گردواروں اور گرجا گھروں میں چاہے جتنا بھی بیربھاؤ ہو لیکن ہوٹلوں' تفریح گاہوں' آرام گھروں میں سب ایک سے ہیں.

## 'ہندستانی کلچر کے ٹکاؤ پہلو'

1. لچک (flexibility)—اِس وشے پر کافی بحث ہو چکی ہے. صرف اتنا کہنا ہے کہ 'انقلاب' جو آدمیت کی جان ہے کچلنے نہ پائے اور یہ لچک امر ہو جائے. ہم وقت کے تقاضوں کے انوسار ادلتے بدلتے رہیں' خواہ کلچر ہو یا بھاشا یا کوئی اور معاملہ ہو.

2. ہندستانی کلچر کا آدھار ہمیشہ سے دھرم رہا ہے اور آج بھی ہے. اِس کے ساتھ ساتھ ہم یہ بھی ماننے کو تیار ہیں کہ ہندو دھرم مذہب کے نام پر مذہب نہیں ہے جس کے لئے ہم انگریزی شبد' (creed) استعمال کرتے ہیں دراصل ہندستانی کلچر میں اُس کی پردھانتا دھرم کی رواداری اور نیتک بنیادوں پر ہے. رواداری کی تو یہ انتہا ہے کہ ہمارے کلچر کی ہر بات بدیسی ہے جسے

हावी रहा. यह दमन अर्से तक चलता रहा. तब समय ने महात्मा बुद्ध को जन्म दिया. महात्मा बुद्ध ने आदमी और आदमियत का मूल्य आंका, उन्होंने तमाम भारती जनता को भाईचारा, प्रेम, मोहब्बत और रहम का संदेश दिया जिसे दलितों ने अपनाया, जिसका राजे महाराजाओं ने भी स्वागत किया. मगर कुछ ही अर्से बाद ब्राह्मनवाद ने शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट वग़ैरा को जन्म दिया, जिन्होंने बौद्धों को रौंद डाला. एक राश्ट्र, एक कलचर की भावना दब गई, धार्मिक कट्टरपन फिर उभरा. उसके बाद आठवीं सदी ईसवी में एक नई सभ्यता, भाईचारापन लिये हुए, इस्लाम के नाम से हिन्दुस्तान में दाख़िल हुई. यह इस्लाम शंकराचार्य और कुमरिल भट्ट के कट्टरपन पर छाता चला गया. भारत वासियों ने मन्दिर की जगह मस्जिद देखे जहां राजा रंक और फ़क़ीर बराबर थे. ऐसी दशा में ब्राह्मनवादी सभ्यता से ईमान का बदला लेती हुई हिन्दुस्तानियत इस्लामी सभ्यता क़बूल करने लगी और क़बूल करती चली गई. मगर इस्लामी सभ्यता भी शंकराचारी सभ्यता से अपना दामन न बचा सकी. नतीजे के तौर पर इस्लाम में भी ऊंच नीच का जहर फैलने लग गया. मुसलमानों में भी फ़िर्क़ेवारी जमाअतें बन गईं और इस्लामी तहज़ीब में पनपने की शक्ति मर गई. मुसलमान रूढ़िवादी हो गये. हट धर्मी एक सीमा पर पहुंच गई. इस्लाम इन्सानियत का आख़िरी विकास है. इसके आगे विकास का नाम न लो वर्ना भविश्य में ब्राह्मनवाद की तरह इस इस्लाम को भी बोरिया बिस्तर समेटना पड़ेगा......इन सभ्यताओं के टकराव से और लेन देन से कुछ तरक़्क़ी पसंद सुधारकों को समानता का सबक़ देने का मौक़ा मिला. इस सिलसिले में कबीर और नानक के नाम आगे हैं. कबीर ने ब्राह्मनवाद और इस्लाम की दाख़िली सभ्यता का नंगा रूप आम लोगों के सामने रखा. नानक ने छूत छात को ठुकराकर एक ईश्वर की उपासना का गीत गाया. उसके बाद जब दूसरी यूरपी जातियां हिन्दुस्तान आईं तो उन्होंने भी अपनी भाशा, रहन सहन और साहित्य वग़ैरा से न चाहते हुए भी एक कलचर के ख़्याल को बढ़ावा दिया और सारे देश में जागरन की लहर दौड़ गई.

हिन्दुस्तान में सैकड़ों बरस की कोशिश पर भी कलचरी एकता अब तक क़ाइम न हो सकी, इसकी एक ख़ास वजह यह भी है कि हिन्दुस्तान की साधारन जनता साम्राजियत और ऊंच नीच की आड़ में जान बूझकर जहालत का शिकार बनाई गई, यहां तक कि मुसलमान बादशाहों ने भी अपने दरबारों में केवल ब्राह्मनों, छत्रियों और ऊंची जात वालों को बढ़ावा और मान दिया, रौंदी और मली हुई जातों की तरफ़ किसी का ध्यान ही नहीं गया. इस्लामी साम्राजशाही भी तरक़्क़ी पसन्द अनासर (तत्त्वों) को मिलती रही.



حاوی رہا. یہ دمن عرصے تک چلتا رہا. تب سمے نے مہاتما بدھ کو جنم دیا . مہاتما بدھ نے آدمی اور آدمیت کا مولیہ آنکا' اُنھوں نے تمام بھارتی جنتا کو بھائی چارا' پریم' محبت اور رحم کا سندیش دیا جسے دلتوں نے اپنایا' جس کا راجے مہاراجاؤں نے بھی سواگت کیا . مگر کچھ ھی عرصہ بعد براھمن واد نے شنکراچاریہ اور کمارل بھٹ وغیرہ کو جنم دیا' جنھوں نے بودھوں کو روند ڈالا . ایک راشٹر' ایک کلچر کی بھاونا دب گئی' دھارمک کٹرپن پھر اُبھرا . اُس کے بعد آٹھویں صدی عیسوی میں ایک نئی سبھیتا' بھائی چارا پن لئے ھوئے' اسلام کے نام سے ھندستان میں داخل ھوئی . یہ اسلام شنکراچاریہ اور کمارل بھٹ کے کٹرپن پر چھاتا چلا گیا . بھارت واسیوں نے مندر کی جگہ مسجد دیکھے جہاں راجہ رنک اور فقیر برابر تھے . ایسی دشا میں براھمن وادی سبھیتا سے ایمان کا بدلہ لیتی ھوئی ھندستانیت اسلامی سبھیتا قبول کرنے لگی اور قبول کرتی چلی گئی . مگر اسلامی سبھیتا بھی شنکراچاری سبھیتا سے اپنا دامن نہ بچاسکی . نتیجے کی طور پر اسلام میں بھی اُونچ نیچ کا زھر پھیلنے لگ گیا . مسلمانوں میں بھی فرقہ واری جماعتیں بن گئیں اور اسلامی تہذیب میں پنپنے کی شکتی مرگئی. مسلمان روڑھی وادی ھوگئے . ھٹ دھرمی ایک سیما پر پہونچ گئی . اسلام انسانیت کا آخری وکاس ھے . اِس کے آگے وکاس کا نام نہ لو ورنہ بھوشیہ میں براھمن واد کی طرح اِس اسلام کو بھی بوریا بستر سمیٹنا پڑےگا......ان سبھیتاؤں کے ٹکراؤ سے اور لین دین سے کچھ ترقی پسند سدھارکوں کو سمانتا کا سبق دینے کا موقع ملا . اِس سلسلے میں کبیر اور نانک کے نام آگے ھیں. کبیر نے براھمن واد اور اسلام کی داخلی سبھیتا کا ننگا روپ عام لوگوں کے سامنے رکھا . نانک نے چھوت چھات کو ٹھکرا کر ایک ایشور کی اُپاسنا کا گیت گایا . اس کے بعد جب دوسری یورپی جاتیاں ھندستان آئیں تو اُنھوں نے بھی اپنی بھاشا' رھن سھن اور ساھتیہ وغیرہ سے نہ چاھتے ھوئے بھی ایک کلچر کے خیال کو بڑھاوا دیا اور سارے دیش میں جاگرن کی لہر دوڑ گئی .

ھندستان میں سیکڑوں برس کی کوشش پر بھی کلچری ایکتا اب تک قائم نہ ھوسکی' اس کی ایک خاص وجہ یہ بھی ھے کہ ھندستان کی سادھارن جنتا سامراجیت اور اُونچ نیچ کی آڑ میں جان بوجھ کر جہالت کا شکار بنائی گئی' یہاں تک کہ مسلمان بادشاھوں نے بھی اپنے درباروں میں کیول براھمنوں' چھتریوں اور اُونچی ذات والوں کو بڑھاوا اور مان دیا' روندی اور ملی ھوئی جاتوں کی طرف کسی کا دھیان ھی نہیں گیا . اسلامی سامراج شاھی بھی ترقی پسند عناصر (تتوں) کو ملتی رھی .

उसके सामने चार तरह के खाने, चार तरह की चीज़ें, जैसे किताब, हथियार, तराज़ू और गन्दा बर्तन रखे जाते हैं. बच्चा जिस तरह के खाने और जिस क़िस्म की चीज़ों की तरफ़ लपकता है उस से उसके वर्न का अन्दाज़ा लगाया जाता है. यह रिवाज वर्न व्यवस्था की लचक के कारन ही पैदा हुआ था. बच्चा जन्म से तो शूद्र वर्न* का है ही उसके भविश्य के वर्न का अटकल पच्चू मालूम करने के यही सब तरीक़े पैदा किये गये थे.

समाज में आर्थिक सुखों, दुखों और पेशे की पेचीदगियों ने धीरे धीरे ऊंच नीच की विचार धारा को इतना उभारा कि आपस में एक वर्न का दूसरे वर्न से रोटी बेटी का सम्बन्ध बिल्कुल ही टूट गया. इस तरह समाज की आर्थिक व्यवस्था में समानता न होने के कारन धार्मिक कट्टरपन का भयानक भूत ऊंच नीच और छुआ छूत के नाम पर इतना आगे बढ़ा कि आज समाज की पिछली रूप रेखा ही बदल गई, लेकिन इस फ़र्ज़ी धार्मिक कट्टरपन की आड़ के बावजूद समाज की पाचन शक्ति अपना काम करती रही, हारे हुए क्षत्री शूद्र बन गये, जीते हुए यूनानी, शक और हुन वग़ैरा राजपूत बनकर क्षत्री बन बैठे और ब्राह्मनों ने उनका ख़ान्दानी सिलसिला चांद और सूरज से मिला दिया.

आख़िरकार पूंजीवादी और साम्राजी विचार धारा आगे बढ़ी और साथ ही धार्मिक कट्टरपन का झूटा आडम्बर भी ओढ़ती गई. ब्राह्मनों ने वास्तविकता और स्वाभिमान को पूंजीवाद के हाथ बेच दिया और झूटे विचारों के नये नये हथियार गढ़ गढ़ कर पूंजीवाद और सामंतवाद को सौंपा. इस तरह अवाम के असली सुखों का चित्र केवल साम्राजी महलों, दरबारों और शहरों तक ही सीमित होकर रह गया. समाजी न्याय का गला दबा दिया गया. बराबरी, भाई चारापन का नाम लेना पाप हो गया. ग़रीब जनता पर छुआ छूत, बेगार वग़ैरा दमन के हथियार चलने लगे, पिसी हुई जनता अंधेरी झोपड़ी से कोई कालिदास, कोई विक्रमादित्य, कोई भरथरी हरि और कोई चानक्य न पैदा कर सकी.

## 'सुधार की ओर'

नई रोशनी में परखने पर पता लगता है कि हिन्दुस्तानी कलचर हमेशा से ही बीमार सी रही है. उस पर मज़ा यह कि भारती रहन सहन पर हिन्दू साम्राजशाही और पूंजीवाद

* मुझे इस समय नहीं याद आ रहा है ग़ालिबन मनुस्मृति में इसकी चर्चा है कि जो शब्दों का सही उच्चारन न कर सके वह मलेच्छ है. शूद्र मलेच्छ नहीं होते थे. इसी कारन आदमी जन्म से शूद्र है. यूनानी वग़ैरा इसी वजह से मलेच्छ कहलाए क्योंकि वह संस्कृत न जानते थे. मलेच्छपन को अपनाने से या दूर कर देने से वर्न बदल जाता है. इसका भी ज़िक्र क़रीब क़रीब उन्हीं शब्दों में ग़ालिबन मनुस्मृति में है.



اُس کے سامنے چار طرح کے کھانے' چار طرح کی چیزیں' جیسے کتاب' ھتھیار' ترازو' اور گندہ برتن رکھے جاتے ھیں . بچہ جس طرح کے کھانے اور جس قسم کی چیزوں کی طرف لپکتا ھے اُس سے اُس کے ورن کا اندازہ لگایا جاتا ھے. یہ رواج ورن ویوستھا کی لچک کے کارن ھی پیدا ھوا تھا. بچہ جنم سے تو شودر ورن* کا ھے ھی اُس کے بھوشیہ کے ورن کا اٹکل پچو معلوم کرنے کے یہی سب طریقے پیدا کئے گئے تھے .

سماج میں آرتھک سکھوں' دکھوں اور پیشے کی پیچیدگیوں نے دھیرے دھیرے اُونچ نیچ کی وچار دھارا کو اتنا اُبھارا کہ آپس میں ایک ورن کا دوسرے ورن سے روٹی بیٹی کا سمبندھ بالکل ھی ٹوٹ گیا . اِس طرح سماج کی آرتھک ویوستھا میں سمانتا نہ ھونے کے کارن دھارمک کٹرپن کا بھیانک بھوت اُونچ نیچ اور چھواچھوت کے نام پر اتنا آگے بڑھا کہ آج سماج کی پچھلی روپ ریکھا ھی بدل گئی' لیکن اِس فرضی دھارمک کٹرپن کی آڑ کے باوجود سماج کی پاچن شکتی اپنا کام کرتی رھی' ھارے ھوئے چھتری شودر بن گئے' جیتے ھوئے یونانی' شک اور ھن وغیرہ راجپوت بن کر چھتری بن بیٹھے اور براھمنوں نے اُن کا خاندانی سلسلہ چاند اور سورج سے ملا دیا .

آخرکار پونجی وادی اور سامراجی وچار دھارا آگے بڑھی اور ساتھ ھی دھارمک کٹرپن کا جھوٹا آڈمبر بھی اوڑھتی گئی . براھمنوں نے واستوکتا اور سوابھیمان کو پونجی واد کے ھاتھ بیچ دیا اور جھوٹے وچاروں کے نئے نئے ھتھیار گڑھ گڑھ کر پونجی واد اور سامنت واد کو سونپا . اس طرح عوام کے اصلی سکھوں کا چتر کیول سامراجی محلوں' درباروں اور شہروں تک ھی سیمت ھوکر رہ گیا . سماجی نیائے کا گلا دبا دیا گیا . برابری' بھائی چارا پن کا نام لینا پاپ ھوگیا . غریب جنتا پر چھواچھوت' بیگار وغیرہ دمن کے ھتھیار چلنے لگے' پسی ھوئی جنتا اندھیری جھونپڑی سے کوئی کالیداس' کوئی وکرمادتیہ' کوئی بھرتری ھری اور کوئی چانکیہ نہ پیدا کرسکی .

## 'سدھار کی اور'

نئی روشنی میں پرکھنے پر پتہ لگتا ھے کہ ھندستانی کلچر ھمیشہ سے ھی بیمار سی رھی ھے . اُس پر مزا یہ کہ بھارتی رھن سہن پر ھندو سامراج شاھی اور پونجی واد

* مجھے اِس سمے نہیں یاد آرھا ھے غالباً منوسمرتی میں اِس کی چرچا ھے کہ جو شبدوں کا سہی اُچارن نہ کرسکے وہ ملیکچھ ھے . شودر ملیکچھ نہیں ھوتے تھے . اِسی کارن آدمی جنم سے شودر ھے . یونانی وغیرہ اِسی وجہ سے ملیکچھ کہلائے کیونکہ وہ سنسکرت نہ جانتے تھے . ملیکچھ پن کو اپنانے سے یا دور کردینے سے ورن بدل جاتا ھے . اِس کا بھی ذکر قریب قریب اُنہیں شبدوں میں غالباً منوسمرتی میں ھے .

अलग अलग पेशे अलग अलग जातों के बनने का कारन बन गये. नाई, धोबी, लोहार कुम्हार, सुनार वग़ैरा जातें पेशों की बिना पर आजतक पाई जाती हैं. लेकिन इन पेशेवर जातों में कोई छूतछात न थी, रोटी बेटी का सम्बन्ध भी राइज था. धीरे धीरे यही पेशे जातों और ख़ान्दानों के रूप में आए. एक ही पेशे के लोग तादाद बढ़ने के साथ साथ अलग अलग जगहों पर जाकर बसने लगे. उनमें जान पहिचान और ख़ान्दानी सिलसिला मालूम करने के लिये उस ख़ान्दान या क़बीले के पहले बुज़ुर्ग के नाम पर गोत्रवाद भी चल पड़ा. ग़ालिबन जातों, गोत्रों के क़ाइम हो जाने के बाद जिन पेशों ने जैसी जैसी आर्थिक तरक़्क़ी की वैसी वैसी उनमें ऊंच नीच और छुआछूत की विचार धारा भी पैदा हो गई जिससे उस ज़माने की सामाजिक ज़िन्दगी में उलझनें पड़ने लगीं. पंडित समाज को ( जो कि अक़्लमन्दों और लीडरों का समाज था ) रोक थाम की सूझी. लेकिन वह इस ज़हर को समाज से उतार न सका, अलबत्ता उसने इसे आगे बढ़ने से रोकने के लिये वर्न व्यवस्था का एक अलग रास्ता निकाला. पूरे समाज को चार बड़े वर्नों में बांट दिया गया. वह लोग जो विद्या पढ़ने पढ़ाने और पूजापाठ कराने का काम करते थे ब्राह्मन कहलाए. यही लोग राष्ट्र के दिमाग़ी अंग हुए और राष्ट्र और समाज की हर संस्था पर छाये हुए रहे. वह लोग जो सिपाहगीरी का काम करते थे, छत्री कहलाए. यह राष्ट्र के रक्षक होते थे और चूंकि उस समय फ़ौजी सरकारें होती थीं इसलिये उन्हीं में से राजा भी होते थे. तिजारत और खेती बाड़ी का धन्दा करने वाले वैश्य कहलाए, लेकिन यह लोग न शिल्पकार होते थे, न दस्तकार और न ही ख़ुद हल वग़ैरा इस्तेमाल करते थे. वह वर्न जो इन कामों को अंजाम देता था और इन तीनों वर्नों की सेवा करता था, शूद्र कहलाया. समाज में वर्न व्यवस्था हो जाने के बाद भी हर वर्न में रोटी बेटी के सम्बन्ध की छूट थी, बल्कि एक वर्न में पैदा होने वाला पेशा तब्दील करने के बाद दूसरे वर्न को अख़्तयार कर सकता था. मिसाल के तौर पर वेदव्यास जी पैदाइश के ऐतबार से चिड़ीमार थे. नारद मुनि किसी शूद्र दासी से पैदा हुए थे. रावन पैदाइश के ऐतबार से ब्राह्मन था जो अपने कर्म से कुछ के कुछ हो गये. यही बात मनुस्मृति के एक सूत्र* से भी जाहिर है और यही बात हिन्दुओं के चालू कर्म संस्कार की बिगड़ी हुई रूप रेखा से भी साबित होती है. जैसे नामकर्न संसकार की रस्म में ब्राह्मन जहां बच्चों का रास का नाम बताता है वहीं वह बच्चों का वर्न भी बताता है कि वह ब्राह्मन वर्न है, देवता वर्न है, शूद्र वर्न है या राक्षस वर्न है वग़ैरा वग़ैरा. अन्न प्रासन संसकार में बच्चों को नहला धुला कर अच्छे कपड़े पहना कर एक जगह बिठाया जाता है जहां

* जन्मना जायते शूद्रः संसकारा द्विज उच्यते:



الگ پیشے الگ الگ ذاتوں کے بننے کا کارن بن گئے. نائی٬ دھوبی٬ لوہار٬ کمھار٬ سونار وغیرہ ذاتیں پیشوں کی بنا پر آج تک پائی جاتی ھیں. لیکن ان پیشہ‌ور ذاتوں میں کوئی چھوت‌چھات نہ تھی٬ روٹی بیٹی کا سمبندھ بھی رائج تھا. دھیرے دھیرے یہی پیشے ذاتوں اور خاندانوں کے روپ میں آئے. ایک ھی پیشے کے لوگ تعداد بڑھنے کے ساتھ ساتھ الگ الگ جگہوں پر جاکر بسنے لگے. اُن میں جان پہچان اور خاندانی سلسلہ معلوم کرنے کے لئے اُس خاندان یا قبیلے کے پہلے بزرگ کے نام پر گوترواد بھی چل پڑا. غالباً ذاتوں٬ گوتروں کے قائم ھوجانے کے بعد جن پیشوں نے جیسی جیسی آرتھک ترقی کی ویسی ویسی اُونچ نیچ اور چھواچھوت کی وچار دھارا بھی پیدا ھوگئی جس سے اُس زمانے کی سماجک زندگی میں اُلجھنیں پڑنے لگیں. پنڈت سماج کو ( جو کہ عقلمندوں اور لیڈروں کا سماج تھا ) روک تھام کی سوجھی. لیکن وہ اِس زھر کو سماج سے اُتار نہ سکا٬ البتہ اُس نے اِسے آگے بڑھنے سے روکنے کے لئے ورن ویوستھا کا ایک الگ راستہ نکالا. پورے سماج کو چار بڑے ورنوں میں بانٹ دیا گیا. وہ لوگ جو ودیا پڑھنے پڑھانے اور پوجا پاٹھ کرانے کا کام کرتے تھے براھمن کہلائے. یہی لوگ راشٹر کے دماغی انگ ھوئے اور راشٹر اور سماج کی ھر سنستھا پر چھائے ھوئے رھے. وہ لوگ جو سپاہ‌گیری کا کام کرتے تھے٬ چھتری کہلائے. یہ راشٹر کے رکچھک ھوتے تھے اور چونکہ اُس سمے فوجی سرکاریں ھوتی تھیں اِس لئے اُنھیں میں سے راجہ بھی ھوتے تھے. تجارت اور کھیتی باڑی کا دھندا کرنے والے ویش کہلائے٬ لیکن یہ لوگ نہ شلپکار ھوتے تھے٬ نہ دستکار اور نہ ھی خود ھل وغیرہ استعمال کرتے تھے. وہ ورن جو اُن کاموں کو انجام دیتا تھا اور اِن تینوں ورنوں کی سیوا کرتا تھا٬ شودر کہلایا. سماج میں ورن واوستھا ھوجانے کے بعد بھی ھر ورن میں روٹی بیٹی کے سمبندھ کی چھوٹ تھی٬ بلکہ ایک ورن میں پیدا ھونے والا پیشہ تبدیل کرنے کے بعد دوسرے ورن کو اختیار کرسکتا تھا. مثال کے طور پر ویدویاس جی پیدائش کے اعتبار سے چڑیمار تھے. نارومنی کسی شودر داسی سے پیدا ھوئے تھے. راون پیدائش کے اعتبار سے براھمن تھا جو اپنے کرم سے کچھ کے کچھ ھوگئے. یہی بات منوسمرتی کے ایک سوتر* سے بھی ظاھر ھے اور یہی بات ھندؤں کے چالو کرم سنسکار کی بگڑی ھوئی روپ ریکھا سے بھی ثابت ھوتی ھے. جیسے نام کرن سنسکار کی رسم میں براھمن جہاں بچوں کا راس کا نام بتاتا ھے وھیں وہ بچوں کا ورن بھی بتاتا ھے کہ وہ براھمن ورن ھے٬ دیوتا ورن ھے٬ شودر ورن ھے یا راکچھس ورن ھے وغیرہ وغیرہ. انّ پراسن سنسکار میں بچوں کو نہلا دھلاکر اچھے کپڑے پہناکر ایک جگہ بٹھایا جاتا ھے جہاں

* جنمنا جایتے شودرا سنسکارا دوج اوچیتے.

भी. इस भावना के अंतरगत आगे चलकर उस कट्टरपन से काम लिया गया जो देश के लिये रोग बन गया और पूरा समाज झूठे बड़प्पन और तंगनज़री में फंस गया.

आख़िर कलचर का सवाल ही क्यों उठा ? देश के कोने कोने में आज "हमारा कलचर—हमारी तहज़ीब—और हमारी सभ्यता की गूंज सी है. आख़िर क्यों ? इसका केवल एक जवाब है कि हिन्दुस्तानी जनता के सामने क़ौमी नेताओं ने जो इतिहास रखा उसमें ग़लतबयानी है, तंगनज़री है और झूठा अभिमान है जिसके प्रभाव से जनता अहंकार की भूल भुलैयां में फंस गई और उसे कलचर का स्थान, मौजूदा कलचर का रूप और उसके बहाव का रुख़ नहीं दिखाई पड़ता. हमारी जनता का एक अंग वह है जो देसी और राश्ट्री प्रभावों के कारन पीछे की तरफ़ देख रहा है और पुराने इस्टैंडर्ड को मद्दे नज़र रखते हुए शुद्धि और पुनर्उद्धार ( Revivalism ) का हामी है और दूसरा वह है जो पच्छिम की तरफ़ देख रहा है और अपने कलचर के ढांचे को पच्छिमी सभ्यता के रंग रूप में बदल देना चाहता है. यह दोनों ही रुझान ग़लत हैं. तीसरा एक ऐसा भी दल है जो इन्तहाई रवादारी से काम ले रहा है जो देसी और विदेसी सभी प्रभावों को क़बूल करते हुए अपने कलचर को विकास की तरफ़ ले जा रहा है. वास्तव में यही ग्रुप देश की और देश के कलचर की सेवा और हिफ़ाज़त कर रहा है.

भारती कलचर की महानता उसकी लचक और रवादारी में है. पूर्व एतिहासिक काल ( Pre-historical age ) से लेकर आज तक यह लचक और रवादारी क़ायम है. यहां के कलचर में शक, हुन और यूनानी तूफ़ानों के छोटे मोटे झकोले इस तरह पच गए कि हिन्दुस्तानी हवा में उनकी मौजूदगी का कोई जाहिर असर नहीं मालूम पड़ता बल्कि हर विदेसी प्रभाव देसी प्रभावों में दूध और पानी की तरह ऐसा घुल मिल गया कि एक को दूसरे से अलग करना नामुमकिन है.

हमारे कलचर में जात पात की व्यवस्था बहुत पुरानी है और आज तक किसी न किसी पहलू से क़ायम भी है. जाहिर में उसमें कट्टरपन है लेकिन वास्तव में यह व्यवस्था भी बहुत लचकीली ( flexible ) रही है जिसके लिये इतिहास ख़ुद गवाह है. इसके अलावा भारती कलचर की पाचन शक्ति भी इस व्यवस्था के लचकीलेपन को साबित करती है.

वैदिक काल का इतिहास इस बात का गवाह है कि लोगों के पुश्तैनी धन्दों पर चलती रहने वाली रस्मों ने ही जातों को जन्म दिया. यह जग लोगों की संसारी जरूरतों के लिये विकास का पहला जुग था. क़रीब क़रीब सभी धन्दे पेशे के ऐतबार से बराबर थे. इसलिये पेशों के तब्दील करने की कोई जरूरत न समझी जाती थी. इसी कारन से अलग



ہی . اِس بھاؤنا کے انترگت آگے چلکر اُس کٹرپن سے کام لیا گیا جو دیش کے لئے روگ بن گیا اور پورا سماج جھوٹے بڑپن اور تنگ نظری میں پھنس گیا .

آخر کلچر کا سوال ہی کیوں اُٹھا ؟ دیش کے کونے کونے میں آج "ہمارا کلچر— ہماری تہذیب—اور ہماری سبھیتا" کی گونج سی ہے . آخر کیوں ؟ اِس کا کیول ایک جواب ہے کہ ہندستانی جنتا کے سامنے قومی نیتاؤں نے جو اِتہاس رکھا اُس میں غلط بیانی ہے، تنگ نظری ہے اور جھوٹا ابھیمان ہے جس کے پربھاؤ سے جنتا اہنکار کی بھول بھلیاں میں پھنس گئی، اور اُسے کلچر کا استھان، موجودہ کلچر کا روپ اور اُس کے بہاؤ کا رخ نہیں دکھائی پڑتا . ہماری جنتا کا ایک انگ وہ ہے جو دیسی اور راشٹری پربھاؤں کے کارن پیچھے کی طرف دیکھ رہا ہے اور پرانے اسٹینڈرڈ کو منظر رکھتے ہوئے شدھی اور پنرادھار (Revivalism) کا حامی ہے اور دوسرا وہ ہے جو پچھم کی طرف دیکھ رہا ہے اور اپنے کلچر کے ڈھانچے کو پچھمی سبھیتا کے رنگ روپ میں بدل دینا چاہتا ہے . یہ دونوں ہی رجحان غلط ہیں . تیسرا ایک ایسا بھی دل ہے جو انتہائی رواداری سے کام لے رہا ہے جو دیسی اور ودیسی سبھی پربھاؤں کو قبول کرتے ہوئے اپنے کلچر کو وکاس کی طرف لیجا رہا ہے . واستو میں یہی گروپ دیش کی اور دیش کے کلچر کی سیوا اور حفاظت کر رہا ہے .

بھارتی کلچر کی مہانتا اُس کی لچک اور رواداری میں ہے . پورو اِتیہاسک کال (Pre-historical age) سے لیکر آج تک یہ لچک اور رواداری قائم ہے . یہاں کے کلچر میں شاک، ہن اور یونانی طوفانوں کے چھوٹے موٹے جھکولے اِس طرح پچ گئے کہ ہندستانی ہوا میں اُن کی موجودگی کا کوئی ظاہرا اثر نہیں معلوم پڑتا بلکہ ہر ودیسی پربھاؤ دیسی پربھاؤں میں دودھ اور پانی کی طرح ایسا گھل مل گیا کہ ایک کو دوسرے سے الگ کرنا ناممکن ہے .

ہمارے کلچر میں جات پات کی ویوستھا بہت پرانی ہے اور آج تک کسی نہ کسی پہلو سے قائم بھی ہے . ظاہر میں اُس میں کٹرپن ہے لیکن واستو میں یہ ویوستھا بھی بہت لچکیلی (flexible) رہی ہے جس کے لئے اِتہاس خود گواہ ہے . اِس کے علاوہ بھارتی کلچر کی پاچن شکتی بھی اِس ویوستھا کے لچکیلےپن کو ثابت کرتی ہے .

ویدک کال کا اِتہاس اِس بات کا گواہ ہے کہ لوگوں کے پشتینی دھندوں پر چلتی رہنے والی رسموں نے ہی ذاتوں کو جنم دیا . یہ جگ لوگوں کی سنساری ضرورتوں کے لئے وکاس کا پہلا جگ تھا . قریب قریب سبھی دھندے پیشے کے اعتبار سے برابر تھے . اِس لئے پیشوں کے تبدیل کرنے کی کوئی ضرورت نہ سمجھی جاتی تھی . اِسی کارن سے الگ

को खुदा बना देती है और मादे का ज्ञान रूहानी दृष्टिकोनों को झुठला देता है और नये रूहानी दृष्टिकोन जो सचमुच बुलन्द होते हैं मालूम हो जाते हैं. सांप को सांप न समझ कर देवता समझना माटीवाद की तौहीन है, सांप को सांप समझने के बाद किसी बुलन्द मर्तबा देवता की खोज अध्यात्मवाद की वृद्धि है. कहने का मतलब यह है कि दोनों की तरक़्क़ी एक साथ होती है और दोनों का पतन भी एक साथ होता है.

इस सिलसिले में यह बता देना ज़रूरी है कि कलचर का विकास एक से दूसरी और दूसरी से तीसरी सीढ़ी पर नहीं हुआ है. इसमें अक्सर रुकाव, उलझाव और गिराव भी पैदा हुए हैं. इतिहास से पता चलता है कि जब भी कोई नई विचार धारा आई तो रूढ़िवादियों (conservatives) ने रास्ते में रोड़ा अटकाया. कभी कभी इन रूढ़िवादियों की जीत भी हो गई और कलचर का विकास कुछ अरसे के लिये मन्द भी पड़ गया लेकिन पूरे तौर से कलचर आगे की तरफ़ ही बढ़ता रहा. जैसे पर्वत पर चढ़ने वाला कभी ऊंचे चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है और कभी नीचे उतरता हुआ लेकिन अन्त में वह ऊंचाई पर ही होता है. कलचर भी गिराव को सहन करते हुए ऊंचा ही उठता जाता है और मजमुई हैसियत से समाज को फ़ायदा होता है.

## हिन्दुस्तानी कलचर की रूप रेखा

मौजूदा कलचर की बुनियादी रूप रेखा परखने के लिये हमें अपने गुज़रे हुए दिनों के इतिहास की तरफ़ जाना होगा, हालांकि इस से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हमारे पूर्वजों में इतिहास की प्रथा न थी, फिर भी हमें कुछ ज्ञान अपने देश के साहित्य, धर्म ग्रंथों, शिल्प कलाओं और अपने देश के चालू रस्म रिवाजों से मिलता है जो हमें अपने देश की पुरानी सभ्यता की झलक दिखा देते हैं. इससे हम हिन्दुस्तान के कलचरी विकास का अन्दाज़ा लगा सकते हैं. इस अन्दाज़े से भी जो कुछ हमें अपने इतिहास का ज्ञान प्राप्त होता है वह राज महलों, दरबारों और विद्वानों की कल्पनाओं का इतिहास है. वह सच्चा भारत जो यहां के देहातों में फैला हुआ था, जो हमारे जन समूह का भारत था, उसका कुछ पता नहीं. उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के जागरन के जुग में दो विचारों के अधीन हमारे देश के इतिहास की पुस्तकें लिखी गईं. पहली भावना में अंग्रेज़ियत प्रधान है जिस के लिखने वाले ज़्यादातर अंग्रेज़ हैं. इन इतिहासों में अंग्रेज़ी हित है जिस में हर तरह से भारती कलचर को अंग्रेज़ी कलचर से बुरा साबित करने की कोशिश की गई है ताकि अंग्रेज़ी राज की जड़ें मज़बूत हों. दूसरी भावना नेशनेलिज़्म है जो पच्छिमी इतिहासकारों को जवाब भी है और चुनौती



کو خدا بنا دیتی ہے اور مادے کا گیان روحانی درشٹی کونوں کو جھٹلا دیتا ہے اور نئے روحانی درشٹی کون جو سچ مچ بلند ہوتے ہیں معلوم ہو جاتے ہیں. سانپ کو سانپ نہ سمجھکر دیوتا سمجھنا ماٹی واد کی توہین ہے، سانپ کو سانپ سمجھنے کے بعد کسی بلند مرتبہ دیوتا کی کھوج ادھیاتم واد کی بردھی ہے ۔ کہنے کا مطلب یہ ہے کہ دونوں کی ترقی ایک ساتھ ہوتی ہے اور دونوں کا پتن بھی ایک ساتھ ہوتا ہے ۔

اس سلسلے میں یہ بتا دینا ضروری ہے کہ کلچر کا وکاس ایک سے دوسری اور دوسری سے تیسری سیڑھی پر نہیں ہوا ہے ۔ اس میں اکثر رکاو، اُلجھاؤ اور گراؤ بھی پیدا ہوئے ہیں ۔ اتہاس سے پتہ چلتا ہے کہ جب بھی کوئی نئی وچار دھارا آئی اور روڑھی وادیوں (conservatives) نے راستہ میں روڑا اٹکایا ۔ کبھی کبھی اِن روڑھی وادیوں کی جیت بھی ہوگئی اور کلچر کا وکاس کچھ عرصے کے لئے مند بھی پڑ گیا لیکن پورے طور سے کلچر آگے کی طرف ہی بڑھتا رہا ۔ جیسے پربت پر چڑھنے والا کبھی اونچے چڑھتا ہوا دکھائی پڑتا ہے اور کبھی نیچے اُترتا ہوا لیکن انت میں وہ اونچائی پر ہی ہوتا ہے ۔ کلچر بھی گراؤ کو سہن کرتے ہوئے اونچا ہی اُٹھتا جاتا ہے اور مجموعی حیثیت سے سماج کو فائدہ ہوتا ہے ۔

## ہندستانی کلچر کی بنیادی روپ ریکھا

موجودہ کلچر کی بنیادی روپ ریکھا پرکھنے کے لئے ہمیں اپنے گذرے ہوئے دنوں کے اِتہاس کی طرف جانا ہوگا، حالانکہ اس سے انکار نہیں کیا جاسکتا کہ ہمارے پوروجوں میں اِتہاس لکھنے کی پرتھا نہ تھی، پھر بھی ہمیں کچھ گیان اپنے دیش کے ساہتیہ، دھرم گرنتھوں، شلپ کلاؤں اور اپنے دیش کے چالو رسم رواجوں سے ملتا ہے جو ہمیں اپنے دیش کی پرانی سبھیتا کی جھلک دکھا دیتے ہیں ۔ اِس سے ہم ہندستان کے کلچری وکاس کا اندازہ لگا سکتے ہیں ۔ اِس اندازے سے بھی جو کچھ ہمیں اپنے اِتہاس کا گیان پراپت ہوتا ہے وہ راج محلوں، درباروں اور ودوانوں کی کلپناؤں کا اِتہاس ہے ۔ وہ سچا بھارت جو یہاں کے دیہاتوں میں پھیلا ہوا تھا، جو ہمارے جن سموہ کا بھارت تھا، اُس کا کچھ پتہ نہیں ۔ اُنیسویں اور بیسویں صدی کے جاگرن کے جگ میں دو وچاروں کے ادھین ہمارے دیش کے اِتہاس کی پستکیں لکھی گئیں ۔ پہلی بھاؤنا میں انگریزیت پردھان ہے جس کے لکھنے والے زیادہ‌تر انگریز ہیں ۔ اِن اِتہاسوں میں انگریزی ہت ہے جس میں ہر طرح سے بھارتی کلچر کو انگریزی کلچر سے برا ثابت کرنے کی کوشش کی گئی ہے تاکہ انگریزی راج کی جڑیں مضبوط ہوں ۔ دوسری بھاؤنا نیشنلزم ہے جو پچھمی اِتہاس‌کاروں کو جواب بھی ہے اور چنوتی

कोई भी नया धर्म सही अर्थों में नया नहीं होता बल्कि चालू धर्म या चालू कलचर का विकास होता है.

विकास के इसी उसूल के आधार पर इन्सान नेचर की पूजा से चल कर एक ईश्वर की पूजा तक पहुंचा है, जब इन्सान प्यास बुझाने के लिये नदी और तालाबों का मोहताज था, जब वह नहीं सोच सकता था कि यह क्यों सूख जाते हैं, उनमें पानी कहां से आता है, पानी हासिल करने के दूसरे क्या साधन हैं, जब वह साये के लिये घने पेड़ों का मोहताज था तो वह नदी, तालाबों और घने पेड़ों की पूजा करने लगा ताकि वह रूठ कर सूख न जाएं. जब इन्सान ने कुआं खोद कर पानी निकाल लिया, घर बनाकर साया पैदा कर लिया, आग जला कर गरमी पैदा कर ली तो उसकी कल्पना ने पानी के लिये पानी का देवता, आग के लिये आग का देवता पैदा किया और उनकी पूजा करने लगा. जैसे जैसे आग और पानी वग़ैरा के साइन्टिफिक आधार मालूम होते गये, देवताओं और उनके महत्व में कमी आती गई और आज का इन्सान एक ईश्वर को हर चीज़ का आधार मानने लगा. जब इन्सान नेचर के हर भेद को अक़्ल की पकड़ में पायेगा तो वह यक़ीनन ख़ुदा की शक्ति से भी इन्कार कर देगा.

कलचर के सुलझाव और उलझाव या बुलन्दी और पस्ती का सम्बन्ध विज्ञान से बहुत गहरा है. कलचर के धार्मिक मैदान में हर समाज में शुरू में बहुत से देवता माने गये जितने ही ज़्यादा देवता थे, समाज में उतनी ही भ्रांतियां या लाइल्मियां थीं. जैसे जैसे साइन्स ने एक एक गुत्थी का सुलझाव पेश किया, देवता घटते गये. पहनावा, रहन सहन, खान पान सभी कुछ साइन्स की खोज पर बदलते रहते हैं.

कलचर दो क़िस्म का होता है, एक का आधार आत्मा है और दूसरे का प्रकृति, जिन्हें हम अध्यात्मवादी आधार और माटीवादी माद्दी आधार भी कहते हैं. पहले क़िस्म के कलचर में क़ायदा क़ानून, धर्म, साहित्य, विज्ञान, समाज व्यवस्था और राजनीति वग़ैरा शामिल हैं. क्योंकि यह सब इन्सान के व्योहारिक जीवन, चरित्र और आत्म विकास पर रोशनी डालते हैं जिनका बाहरी दुनिया से कोई सम्बन्ध नहीं होता. दूसरे क़िस्म का कलचर बाहरी दुनिया से सम्बन्ध रखता है. जो दुनिया आग, हवा, पानी, धरती, धात, पौदों, जानवरों और दूसरी माद्दी चीज़ों से घिरी है. इस कलचर में खेती बाड़ी के तरीक़े, आने जाने के साधन, धातों के बर्तन, हथियारों आदि के इस्तेमाल शामिल हैं. दोनों क़िस्म के कलचरों में हदबन्दी की लकीर खींचना कठिन है जिसका ख़ास कारन दोनों का एक दूसरे से उलझाव है. वास्तव में अध्यात्मवादी कलचर माटीवादी कलचर की शुरूआत है. जहालत माद्दे



وئی بھی نیا دھرم سہی ارتھوں میں نیا نہیں ہوتا بلکہ چالو دھرم یا چالو کلچر کا وکاس ہوتا ہے ۔

وکاس کے اِسی اصول کے آدھار پر انسان نیچر کی پوجا سے چل کر ایک ایشور کی پوجا تک پہونچا ہے' جب انسان پیاس بجھانے کے لئے ندی اور تالابوں کا محتاج تھا' جب وہ نہیں سوچ سکتا تھا کہ یہ کیوں سوکھ جاتے ہیں' ان میں پانی کہاں سے آتا ہے' پانی حاصل کرنے کے دوسرے کیا سادھن ہیں' جب وہ سایہ کے لئے گھنے پیڑوں کا محتاج تھا تو وہ ندی' تالابوں اور گھنے پیڑوں کی پوجا کرنے لگا تاکہ وہ روٹھ کر سوکھ نہ جائیں ۔ جب اِنسان نے کنواں کھود کر پانی نکال لیا' گھر بنا کر سایہ پیدا کر لیا' آگ جلا کر گرمی پیدا کر لی تو اُس کی کلپنا نے پانی کے لئے پانی کا دیوتا' آگ کے لئے آگ کا دیوتا پیدا کیا اور اُن کی پوجا کرنے لگا ۔ جیسے جیسے آگ اور پانی وغیرہ کے سائنٹفک آدھار معلوم ہوتے گئے' دیوتاؤں اور اُن کے مہتو میں کمی آتی گئی اور آج کا انسان ایک ایشور کو ہر چیز کا آدھار ماننے لگا ۔ جب اِنسان نیچر کے ہر بھید کو عقل کی پکڑ میں پائے گا تو وہ یقیناً خدا کی شکتی سے بھی انکار کر دیگا ۔

کلچر کے سلجھاؤ اور اُلجھاؤ یا بلندی اور پستی کا سمبندھ وگیان سے بہت گہرا ہے ۔ کلچر کے دھارمک میدان میں ہر سماج میں شروع میں بہت سے دیوتا مانے گئے ہیں ۔ جتنے ہی زیادہ دیوتا تھے' سماج میں اُتنی ہی بھرانتیاں یا لاعلمیاں تھیں ۔ جیسے جیسے سائنس نے ایک ایک گتھی کا سلجھاؤ پیش کیا' دیوتا گھٹتے گئے ۔ پہناوا' رہن سہن' کھان پان سبھی کچھ سائنس کی کھوج پر بدلتے رہتے ہیں ۔

کلچر دو قسم کا ہوتا ہے' ایک کا آدھار آتما ہے اور دوسرے کا پرکرتی' جنھیں ہم ادھیاتم وادی آدھار اور ماٹی وادی مادی آدھار بھی کہتے ہیں ۔ پہلے قسم کے کلچر میں قاعدہ قانون' دھرم' ساہتیہ' وگیان' سماج ویوستھا اور راج نیتی وغیرہ شامل ہیں ۔ کیونکہ یہ سب اِنسان کے بیوہارک جیون' چرتر اور آتم وکاس پر روشنی ڈالتے ہیں جن کا باہری دنیا سے کوئی سمبندھ نہیں ہوتا ۔ دوسرے قسم کا کلچر باہری دنیا سے سمبندھ رکھتا ہے ۔ جو دنیا آگ' ہوا' پانی' دھرتی' دھات' پودوں' جانوروں اور دوسری مادی چیزوں سے گھری ہے ۔ اِس کلچر میں کھیتی باڑی کے طریقے' آنے جانے کے سادھن' دھاتوں کے برتن' ہتھیاروں آدی کے استعمال شامل ہیں ۔ دونوں قسم کے کلچروں میں حدبندی کی لکیر کھینچنا کٹھن ہے جس کا خاص کارن دونوں کا ایک دوسرے سے اُلجھاؤ ہے ۔ واستو میں ادھیاتم وادی کلچر ماٹی وادی کلچر کی شروعات ہے ۔ جہالت مادے

# हिन्दुस्तानी कलचर

( चरन सरन नाज़ )

**कलचर क्या है ?**

कलचर के सम्बन्ध में कुछ कहने से पहले यह समझ लेना बहुत ज़रूरी है कि कलचर क्या है. किसी भी देश का कलचर समय की बहती हुई धाराओं के आधार पर बनता आया है. कलचर अपनी प्रकृति से विकासमय ( evolutionary ) है और इसलिये कलचर के विकास का तारीख़ी मुताला ( एतिहासिक अध्ययन ) सम्भव है. कलचर के एतिहासिक विकास के कुछ अटल उसूल हैं जो हर देश, हर क़ौम के कलचर पर परखे जा सकते हैं. हम अपने लेख में पहले उन्हीं उसूलों पर प्रकाश डालेंगे.

इन्सानी समाज अपनी इन्तहाई जंगली अवस्था से मनोवैज्ञानिक, साइन्टिफ़िक और नये नये मालूमात के आधार पर, जिन्हें इन्सानी ज़रूरतों ने पैदा किया, क़दम क़दम आगे बढ़ता हुआ आज की सुधरी हुई हालत ( जो अब तक भी पूरी नहीं है ) पर पहुंचा है. इस प्रकार समाज उसके कलचरी विकास की एक सीढ़ी सी है, जिसका ऊपरी सिरा ओझल है. किसी भी समय का कलचर उस समय के आदमियों के मनोवैज्ञानिक, दिमाग़ी, रूहानी और साइन्टिफ़िक जानकारी का मोहताज है. किसी भी समय के कलचर को बुरा कहना या किसी भी समय के आदमी को असभ्य बतलाना अन्याय होगा. जिस समय के लोगों के जीवन सम्बन्धी या संसार सम्बन्धी ज्ञान में जितना फैलाव होता है या ओछापन होता है, उस समय के लोगों के कलचर और धर्म भी उसी सीमा में रहते हैं. शुरू ज़माने में सारी दुनिया में आदमी की क़ुर्बानी का रिवाज था. उस ज़माने में लोगों को खेती बाड़ी के तरीक़े नहीं मालूम थे और न वह नेचर से ही फ़ायदा उठाना जानते थे, उनमें समाजी तत्व की भी कमी थी. लोग एक दूसरे से काम लेना और एक दूसरे के काम आना भी नहीं जानते थे. ऐसी हालत में उनके देवी देवता अगर नर हत्या से ख़ुश होते थे तो उसमें ताज्जुब की क्या बात है ? ख़ालिस लड़ाई की प्रवृत्ति ( instinct ) के आधार पर उन लोगों में हारे हुओं का क़त्ले आम ही लड़ाई का धर्म समझा जाता था. जब धीरे धीरे यह ज्ञान हुआ कि इन्सान इन्सान के काम आ सकता है, वह पैदावार के कामों में, सेवा करने में सहायता दे सकता है तो क़त्ले आम की जगह ग़ुलामी ने ले ली और इन्सानी प्रवृत्ति में आहिस्ता आहिस्ता दया और धर्म दाख़िल हो गये. कलचर ख़ुद बख़ुद संवरने लगा. कोई भी नया कलचर,

# ھندستانی کلچر

( چرن سرن ناز )

**کلچر کیا ھے ؟**

کلچر کے سمبندھ میں کچھ کہنے سے پہلے یہ سمجھ لینا بہت ضروری ھے کہ کلچر کیا ھے . کسی بھی دیش کا کلچر سمے کی بہتی ھوئی دھاراؤں کے آدھار پر بنتا آیا ھے . کلچر اپنی پرکرتی سے وکاس مئے (evolutionary) ھے اور اِس لئے کلچر کے وکاس کا تاریخی مطالعہ ( اتہاسک ادھین ) سمبھو ھے . کلچر کے اتہاسک وکاس کے کچھ اٹل اصول ھیں جو ھر دیش' ھر قوم کے کلچر پر پرکھے جا سکتے ھیں . ھم اپنے لیکھ میں پہلے اُنھیں اُصولوں پر پرکاش ڈالیں گے .

اِنسانی سماج اپنی انتہائی جنگلی اوستھا سے منوویگیانک' سائنٹفک اور نئے نئے معلومات کے آدھار پر' جنھیں انسانی ضرورتوں نے پیدا کیا' قدم قدم آگے بڑھتا ھوا آج کی سدھری ھوئی حالت ( جو اب تک بھی پوری نہیں ھے ) پر پہونچا ھے . اِس پرکار سماج اُس کے کلچری وکاس کی ایک سیڑھی سی ھے' جس کا اُوپری سرا اوجھل ھے . کسی بھی سمے کا کلچر اُس سمے کے آدمیوں کے منوویگیانک' دماغی' روحانی اور سائنٹفک جانکاری کا محتاج ھے . کسی بھی سمے کے کلچر کو برا کہنا یا کسی بھی سمے کے آدمی کو اسبھیہ بتلانا انیائے ھوگا . جس سمے کے لوگوں کے جیون سمبندھی یا سنسار سمبندھی گیان میں جتنا پھیلاؤ ھوتا ھے یا اوچھا پن ھوتا ھے' اُس سمے کے لوگوں کے کلچر اور دھرم بھی اُسی سیما میں رھتے ھیں . شروع زمانے میں ساری دنیا میں آدمی کی قربانی کا رواج تھا . اُس زمانے میں لوگوں کو کھیتی باڑی کے طریقے نہیں معلوم تھے اور نہ وہ نیچر سے ھی فائدہ اُٹھانا جانتے تھے' اُن میں سماجی تتو کی بھی کمی تھی . لوگ ایک دوسرے سے کام لینا اور ایک دوسرے کے کام آنا بھی نہیں جانتے تھے . ایسی حالت میں اُن کے دیوی دیوتا اگر نرھتیا سے خوش ھوتے تھے تو اس میں تعجب کی کیا بات ھے ؟ خالص لڑائی کی پرورتی (instinct) کے آدھار پر اُن لوگوں میں ھارے ھوؤں کا قتل عام ھی لڑائی کا دھرم سمجھا جاتا تھا . جب دھیرے دھیرے یہ گیان ھوا کہ انسان انسان کے کام آ سکتا ھے' وہ پیداوار کے کاموں میں' سیوا کرنے میں سہائتا دے سکتا ھے تو قتل عام کی جگہ غلامی نے لے لی اور انسانی پرورتی میں آھستہ آھستہ دیا اور دھرم داخل ھوگئے . کلچر خود بخود سنورنے لگا . کوئی بھی نیا کلچر'

चीन के मशहूर महात्मा लाओत्ज़े हज़रत ईसा से 604 वर्ष पहले हुए थे. उनके उपदेशों का चीन पर बड़ा गहरा असर पड़ा. लाओत्ज़े कहते हैं—

"आदमी को चाहिये कि अपना सब काम ख़ुदी को अलग रखकर सरल और सादे ढंग से करे. उसके किसी भी काम में ख़ुदी या घमंड न हो, न अपने पराये और तेरे मेरे का फ़रक़ हो. इनसान की सेवा उसकी पूजा हो. यही आदमी का 'ताओ' यानी धर्म है."

हज़रत ईसा ने इसी तरह का उपदेश देते हुए कहा था—

"देखो, व्रत के दिन भी तुम ख़ुद तो ख़ूब खाते हो और दूसरों को कश्ट देते हो. तुम सब तरह की बुराई करते रहते हो. क्या ऐसे ही व्रत की आज्ञा दी गई थी ? क्या यह व्रत ईश्वर को मंज़ूर हो सकता है ? जिस व्रत की आज्ञा दी गई थी वह यह है—जिन बुराइयों ने तुम्हें बांध रखा है उनका बन्धन तोड़ डालो, दुखियों को आज़ाद करो, भूखे को अपनी रोटी में से रोटी दो, जो बेघर हैं उन्हें अपने घर में जगह दो, जो नंगे हैं उन्हें कपड़े पहिनाओ. सब दुखी इनसानों की सेवा में अपने को खपा डालो, यही सबसे बड़ा व्रत है."

बुद्ध भगवान जब धर्म प्रचार करते हुए निकले तो जहां भी दुखियों और बीमारों का पता पाते वहां ज़रूर ही उनकी सेवा करने ठहर जाते. उन्होंने अपने भक्तों को उपदेश दिया कि—

"भिक्षुओ ! निश्काम सेवा ही परम धर्म है. सेवा का धर्म जात पांत व धर्म के भेद भाव को नहीं मानता. भिक्षु नर (आदमी) के रूप में नारायन (अल्लाह) को देखता है और जन (इन्सान) के रूप में जर्नादन (ख़ालिक़) का दर्शन करता है. वह ख़ुद दुखों और मुसीबतों का स्वागत करता है और अपनी सेवा के ज़रिये इस धरती में स्वर्ग की रचना करता है."

सिखों के चौथे गुरू के एक चेले जब संगत में शामिल हुए तो उन्होंने अपने सुपुर्द जूठे बरतन मांजने का काम लिया. सुबह उठते ही बरतन मांजने का काम शुरू करते थे और काम समाप्त करते आधी रात बीत जाती थी. गुरू के चरनों में बैठ कर सतसंग सुनने का भी उन्हें समय नहीं मिलता था, जबकि उनके दूसरे गुरू भाई सुबह से लेकर रात तक भजन और सतसंग में ही अपना समय बिताते थे. जब गुरू जी ने समाधि ली तो जनता समझती थी कि गुरू के जो चेले रात दिन भजन गाया करते थे उन्हीं में से किसी को गुरू अपना वारिस बनाएंगे. लेकिन जब गुरू का हुक्मनामा खोला गया तो उसमें से उस जूठे बरतन मांजने वाले का नाम निकला जिसे एक दिन भी भजन गाने और संगत में बैठने का मौक़ा नहीं मिला था. और यही बरतन मांजने वाले गुरू अर्जुन देव के नाम से सिखों के प्रसिद्ध गुरू हुए.



چین کے مشہور مہاتما لاؤتزے حضرت عیسیٰ سے 604 ورش پہلے ہوئے تھے ۔ اُن کے اُپدیشوں کا چین پر گہرا اثر پڑا ۔ لاؤتزے کہتے ہیں—

" آدمی کو چاہئے کہ اپنا سب کام خودی کو الگ رکھکر سرل اور سادے ڈھنگ سے کرے ۔ اُس کے کسی بھی کام میں خودی یا گھمنڈ نہ ہو' نہ اپنے پرائے اور تیرے میرے کا فرق ہو' انسان کی سیوا اُس کی پوجا ہو ۔ یہی آدمی کا 'تاؤ' یعنی دھرم ہے ۔"

حضرت عیسیٰ نے اِسی طرح کا اُپدیش دیتے ہوئے کہا تھا—

"دیکھو' برت کے دن بھی تم خود تو خوب کھاتے ہو اور دوسروں کو کشٹ دیتے ہو ۔ تم سب طرح کی برائی کرتے رہتے ہو ۔ کیا ایسے ہی برت کی آگیاں دی گئی تھی ؟ کیا یہ برت ایشور کو منظور ہوسکتا ہے ؟ جس برت کی آگیاں دی گئی تھی وہ یہ ہے—جن برائیوں نے تمہیں باندھ رکھا ہے اُن کا بندھن توڑ ڈالو' دکھیوں کو آزاد کرو' بھوکھے کو اپنی روٹی میں سے روٹی دو' جو بےگھر ہیں انھیں اپنے گھر میں جگہ دو' جو ننگے ہیں اُنھیں کپڑے پہناؤ ۔ سب دکھی انسانوں کی سیوا میں اپنے کو کھپا ڈالو' یہی سب سے بڑا برت ہے ۔"

بدھ بھگوان جب دھرم پرچار کرتے ہوئے نکلے تو جہاں بھی دکھیوں اور بیماروں کا پتہ پاتے وہاں ضرور ہی اُن کی سیوا کرنے ٹھہر جاتے ۔ اُنھوں نے اپنے بھکتوں کو اُپدیش دیا کہ—

" بھکشو ! نشکام سیوا ہی پرم دھرم ہے ۔ سیوا کا دھرم جات پات و دھرم کے بھید بھاؤ کو نہیں مانتا ۔ بھکشو نر ( آدمی ) کے روپ میں نارائن ( اللہ ) کو دیکھتا ہے اور جن ( انسان ) کے روپ میں جناردن ( خالق ) کا درشن کرتا ہے ۔ وہ خود دکھوں اور مصیبتوں کا سواگت کرتا ہے اور اپنی سیوا کے ذریعے اِس دھرتی میں سورگ کی رچنا کرتا ہے ۔"

سکھوں کے چوتھے گرو کے ایک چیلے جب سنگت میں شامل ہوئے تو اُنھوں نے اپنے سپرد جھوٹھے برتن مانجنے کا کام لیا ۔ صبح اُٹھتے ہی برتن مانجنے کا کام شروع کرتے تھے اور کام سماپت کرتے آدھی رات بیت جاتی تھی ۔ گرو کے چرنوں میں بیٹھ کر ست سنگ سننے کا بھی اُنھیں سمے نہیں ملتا تھا' جبکہ اُن کے دوسرے گرو بھائی صبح سے لے کر رات تک بھجن اور ست سنگ میں ہی اپنا سمے بتاتے تھے ۔ جب گرو جی نے سمادھی لی تو جنتا سمجھتی تھی کہ گرو کے جو چیلے رات دن بھجن گایا کرتے تھے اُنھیں میں سے کسی کو گرو اپنا وارث بنائینگے ۔ لیکن جب گرو کا حکمنامہ کھولا گیا تو اس میں سے اُس جوٹھے برتن مانجنے والے کا نام نکلا جسے ایک دن بھی بھجن گانے اور سنگت میں بیٹھنے کا موقع نہیں ملا تھا ۔ اور یہی برتن مانجنے والے گرو ارجن دیو کے نام سے سکھوں کے پرسدھ گرو ہوئے ۔

छायावादी कवियों को एक तरफ़ रख माखनलाल चतुर्वेदी से लेकर 'बच्चन', 'अंचल' तक के काव्यों में हमें उर्दू शैली और भाव जहां कहीं मालूम पड़ते हैं. उर्दू की नई रोमानी कविता ने निसंदेह हिंदी कवियों की कहन पर प्रभाव डाला है.

[ आल इंडिया रेडियो के सौजन्य से ]

---

# सेवा धर्म

( विश्वम्भरनाथ पांडे )

जैन साधुओं को आदेश देते हुए भगवान महावीर कहते हैं—"अगर कोई साधू किसी रोगी या मुसीबत में पड़े आदमी को छोड़ कर तपस्या करने लगता है, शास्त्र पढ़ने में लग जाता है, तो वह अपराधी है और संघ में रहने के क़ाबिल नहीं है. सेवा ख़ुद एक बड़ा भारी तप है. सेवा करने के लिये सदा दुखियों की, दीन दुखियों की, पतित और दलितों की खोज में रहना चाहिये."

एक बार मोहम्मद साहब से किसी ने पूछा कि ईमान क्या है ? उन्होंने जवाब दिया—"सब्र करना और दूसरों की भलाई और सेवा करना." एक हदीस में आता है कि मोहम्मद साहब ने कहा कि "सब इन्सानी समाज अल्लाह का कुनबा है और उन सब में अल्लाह का सबसे प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुनबे की भलाई और सेवा करता है."

सेवा का महत्व दर्शाते हुए गीता कहती है—

"मोक्ष केवल उन्हीं को मिल सकता है और उन्हीं के पाप धुल सकते हैं जिनकी दुविधा मिट गई है और जिन्होंने अपनी कामनाओं को जीत लिया है और जो सदा सबके भले और सबकी सेवा में लगे रहते हैं."

गोस्वामी तुलसीदास ने रामायन में लिखा है—

"परहित सरस धर्म नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नहिं अघ भाई."

शेख़ सादी ने अपनी मशहूर किताब 'करीमा' में लिखा है—

"सच्ची दौलत सेवा से ही मिलती है.

"सेवा से सौभाग्य मिलता है.

"यदि तू सेवा के लिये कमर कस ले तो कभी न मिलने वाली दौलत का दरवाज़ा तेरे लिये खुल जावेगा.

"सेवा से भीतर की आत्मा रोशन होती है."



چھایا وادی کویوں کو ایک طرف رکھ ماکھن لال چترویدی سے لیکر ' بچن ' ' انچل ' تک کے کاویوں میں ہمیں اُردو شیلی اور بھاؤ جہاں کہیں معلوم پڑتے ہیں. اُردو کی نئی رومانی کویتا نے نسندیہ ہندی کی کہن پر پربھاؤ ڈالا ہے .

[ آل انڈیا ریڈیو کے سوجنیہ سے ]

---

# سیوا دھرم

( وشومبھر ناتھ پانڈے )

جین سادھوؤں کو آدیش دیتے ہوئے بھگوان مہاویر کہتے ہیں—" اگر کوئی سادھو کسی روگی یا مصیبت میں پڑے آدمی کو چھوڑ کر تپسیا کرنے لگتا ہے' شاستر پڑھنے میں لگ جاتا ہے' تو وہ اپرادھی ہے اور سنگھ میں رہنے کے قابل نہیں ہے . سیوا خود ایک بڑا بھاری تپ ہے . سیوا کرنے کے لئے سدا دکھیوں کی' دین دکھیوں کی' پتت اور دلتوں کی کھوج میں رہنا چاہئے ."

ایک بار محمد صاحب سے کسی نے پوچھا کہ ایمان کیا ہے؟ اُنھوں نے جواب دیا—" صبر کرنا اور دوسروں کی بھلائی اور سیوا کرنا ." ایک حدیث میں آتا ہے کہ محمد صاحب نے کہا کہ " سب انسانی سماج اللہ کا کنبہ ہے اور اُن سب میں اللہ کا سب سے پیارا وہ ہے جو اللہ کے اس کنبے کی بھلائی اور سیوا کرتا ہے ."

سیوا کا مہتو درشاتے ہوئے گیتا کہتی ہے—

" موکش کیول اُنھیں کو مل سکتا ہے اور اُنھیں کے پاپ دھل سکتے ہیں جن کی دوبدھا مٹ گئی ہے اور جنھوں نے اپنی کامناؤں کو جیت لیا ہے اور جو سدا سب کے بھلے اور سب کی سیوا میں لگے رہتے ہیں ."

گوسوامی تلسی داس نے رامائن میں لکھا ہے—

" پرہت سرس دھرم نہیں بھائی'
پر پیڑا سم نہیں اگھ بھائی ."

شیخ سعدی نے اپنی مشہور کتاب ' کریما ' میں لکھا ہے—

" سچی دولت سیوا سے ملتی ہے .

" سیوا سے سربھاگیہ ملتا ہے .

" یدی تو سیوا کے لئے کمر کس لے تو کبھی نہ ملنے والی دولت کا دروازہ تیرے لئے کھل جاویگا .

سیوا سے بھیتر کی آتما روشن ہوتی ہے ."

अर्थात् एक नीड़ नश्ट होने पर दूसरा नीड़ फिर से बनाया जा सकता है. एक अज्ञात उर्दू कवि की यह उक्ति देखिये—

चार तिनके आशियां के जल गये तो जल गये,
फिर भी हो सकती हैं शाखे गुल पे तामीरें बहुत.

कितनी अधिक भावों में समानता है. इस भाव की समानता को निश्चय ही आकस्मिक नहीं कहा जा सकता. हमारे प्रगतिशील कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' की एक उक्ति बहुत प्रसिद्ध है—

मैं नहीं आया तुम्हारे द्वार, पथ ही मुड़ गया था.

प्रेमी प्रेमिका के घर जान बूझ कर नहीं गया, वरन जिस रास्ते पर चल रहा था वह ख़ुद ही उधर मुड़ गया. अब उर्दू का एक शेर और ग़ौर फ़रमाइये—

मुशकिलों से लाये थे समझा बुझा के दिल को हम,
दिल हमें समझा बुझा कर कूये जानां ले चला.

कविता की गहराई तक पहुंचिये, कानों में यह लाइनें गूंजती हैं—

दिल हमें समझा बुझा कर कूये जानां ले चला.

हिन्दी में नरेन्द्र शर्मा की एक लाइन पर विचार कीजिये—
"फिर एक बार साकार बनो मेरे युग युग के आकर्षण."

इस मुक़ाबले में डाक्टर इक़बाल की बहुत मशहूर ग़ज़ल है, उसका एक शेर मुलाहिज़ा हो—

कभी ऐ हक़ीक़ते मुन्तज़िर, नज़र आ लिबासे मजाज़ में.
कि हज़ारों सिजदे तपड़ रहे हैं, तेरी जबीने नियाज़ में.

हिन्दी के किन किन नौजवान कवियों ने उर्दू के, और उर्दू के किन किन शायरों ने हिन्दी के कौन कौन से भाव निर्संकोच अपना लिये हैं, अगर इसकी खोज की जावे तो उसका पूरा गोशवारा तैयार करना पड़ेगा. हिन्दी में उर्दू के भावों से या उर्दू में हिन्दी के भावों से प्रेरना लेना गुनाह नहीं, किन्तु उस पर अपनी असलियतपन का दावा नहीं करना चाहिये.

हम यह पहिले ही बता चुके हैं कि मध्यकाल में हिन्दी और उर्दू के क्षेत्र में दो बातें समान थीं : (१) एक राजदरबार तथा (२) सूफ़ियाना भक्ति प्रधान सांस्कृतिक भाव धारा. ठीक उसी तरह आधुनिक काल के प्रारम्भ में राश्ट्रीय भाव दोनों भाशाओं में समान रूप से पाये जाते हैं. हाली का मुसद्दस और मैथिली शरण की भारत भारती एक ही राश्ट्रीय सामाजिक आदर्श से रंगी हुई हैं. साहित्य का जानने वाला विद्यार्थी यह निश्चय पूर्वक कह सकता है कि भारत भारती मुसद्दस से प्रभावित हुई है. डाक्टर इक़बाल, चकबस्त आदि उर्दू के राश्ट्रीय कवि हिन्दी में लोक प्रिय हुये हैं. 'प्रसाद', 'पंत', 'निराला' 'महादेवी वर्मा' जैसे पक्के



ارتھات ایک نیڑ نشٹ ہونے پر دوسرا نیڑ پھر سے بنایا جا سکتا ھے . ایک اگیات اردو کوی کی یہ اُکتی دیکھئے—

چار تنکے آشیاں کے جل گئے تو جل گئے'
پھر بھی ہوسکتی ہیں شاخ گل پہ تعمیریں بہت.

کتنی ادھک بھاوں میں سمانتا ھے . اِس بھاؤ کی سمانتا کو نشچے ھی آکسمک نہیں کہا جا سکتا . ھمارے پرگتی شیل کوی شومنگل سنگھ ' سمن ' کی ایک اُکتی بہت پرسدھ ھے—

میں نہیں آیا تمہارے دوار' پتھ ھی مڑ گیا تھا .

پریمی پریمکا کے گھر جان بوجھ کر نہیں گیا' ورن جس راستے پر چل رھا تھا وہ خود ھی اُدھر مڑ گیا. اب اُردو کا ایک شعر اور غور فرمائیے—

مشکلوں سے لائے تھے سمجھا بجھا کے دل کو ھم'
دل ھمیں سمجھا بجھا کر کوئے جاناں لے چلا .

کویتا کی گہرائی تک پہونچئے' کانوں میں یہ لائنیں گونجتی ھیں—

دل ھمیں سمجھا بجھا کر کوئے جاناں لے چلا .

ھندی میں نریندر شرما کی ایک لائن پر وچار کیجئے—

" پھر ایک بار ساکار بنو میرے یگ یگ کے آکرشن ."

اس مقابلہ میں ڈاکٹر اقبال کی بہت مشہور غزل ھے' اُس کا ایک شعر ملاحظہ ھو—

کبھی اے حقیقت منتظر' نظر آ لباس مجاز میں'
کہ ھزاروں سجدے تڑپ رھے ھیں' تری جبین نیاز میں.

ھندی کے کن کن نوجوان کویوں نے اردو کے' اور اردو کے کن کن شاعروں نے ھندی کے کون کون سے بھاؤ نسنکوچ اپنا لئے ھیں' اگر اس کی کھوج کی جاوے تو اُس کا پورا گوشوارہ تیار کرنا پڑے گا . ھندی میں اُردو کے بھاؤں سے یا اُردو میں ھندی کے بھاؤں سے پریرنا اپنا گناہ نہیں . کنتو اُس پر اپنی اصلیت پن کا دعویٰ نہیں کرنا چاھئے .

ھم یہ پہلے ھی بتا چکے ھیں کہ مدھیہ کال میں ھندی اور اُردو کے چھیتر میں دو باتیں سمان تھیں : (1) ایک راج دربار تتھا (2) صوفیانہ بھکتی پردھان سانسکرتک بھاؤ دھارا . ٹھیک اُسی طرح آدھونک کال کے پرارمبھ میں راشٹریہ بھاؤ دونوں بھاشاؤں میں سمان روپ سے پائے جاتے ھیں . حالی کا مسدس اور میتھلی شرن کی بھارت بھارتی ایک ھی راشٹریہ سماجک آدرش سے رنگی ھوئی ھیں. ساھتیہ کا جاننے والا ودیارتھی یہ نشچے پوروک کہ سکتا ھے کہ بھارت بھارتی مسدس سے پربھاوت ھوئی ھے. ڈاکٹر اقبال' چکبست آدی اُردو کے راشٹریہ کوی ھندی میں بہت لوک پریئے ھوئے ھیں . 'پرساد' 'پنت' 'نرالا' مہادیوی ورما' جیسے پکے

## हिन्दी उर्दू काव्य की समानताएं

इस पद्य को पढ़कर उतरे हुये नशे के मुहावरे का इस्तेमाल ज़फ़र की उस मशहूर ग़ज़ल की याद दिलाता है—

"न किसी की चश्म का नूर हूं,
न किसी के दिल का क़रार हूं."

जिसका एक मिसरा है—

"जो बिगड़ गया वह नसीब हूं,
जो उतर गया वो ख़ुमार हूं."

छायावाद के बाद हिन्दी में जो अन्य धारायें चलीं, जैसे माखनलाल चतुर्वेदी, भगवती चरन वर्मा, हरिकृश्न प्रेमी, नवीन धारायें, उनमें उर्दू की विशेशता लिये भावों की प्रचुरता मालूम पड़ती है. साक़ी, प्याला, शमा, पतंग आदि प्रतीक तो अब तक चले आ रहे हैं. 'बच्चन' की 'मधुशाला' तो प्रसिद्ध ही है. उमर ख़ैयाम के प्रभाव से हिंदी में न मालूम कितने ही उर्दू, फ़ारसी के रोमन्टिक भावों को आसरा मिला है. इस तरह हिंदी उर्दू के भावों की बराबरी के अनगिनत उदाहरन दिये जा सकते हैं. महादेवी वर्मा की यह उक्ति लीजिये—

एक ज्वाला के बिना मैं राख का घर हूं.

और इसकी तुलना कीजिये—

आग थे इब्तदाये इश्क में हम,
अब जो है ख़ाक इंतहा यह है.

और दिनकर की यह उक्ति लीजिये—

जब गीतकार मर गया चांद रोने आया,
चांदनी मचलने लगी कफ़न बन जाने को.

चांदनी के कफ़न बन जाने की बात ठीक उर्दू में भी इसी तरह कही गई है. सुनिये उस्ताद ज़ोक़ का एक शेर है—

अफ़सुरदा दिल के वास्ते क्या चांदनी का लुत्फ़,
लिपटा पड़ा है जिस तरह मुर्दा कफ़न के साथ.

और बच्चन ने तो अपनी प्रेरना उर्दू के मयख़ाने से ही ली है. उनका एक वाक्य लीजिये—

बजी नफ़ीरी और नमाज़ी भूल गया अल्ला ताला

और उसकी तुलना कीजिये इस शेर से और देखिये कौन सा ज़्यादा बुलंद है—

नमाज़ कैसी कहां का रोज़ा,
अभी तो शग़ले शराब में हूं.
ख़ुदा की याद आये किस तरह से,
बुतों के क़हरे हबाब में हूं.

या यह लीजिये बच्चन की एक कविता—

"नीड़ का निर्माण फिर फिर"

अपना घोंसला बनाने, नीड़ का निर्मान करने की बात ख़ास तौर से उर्दू से ही आई है. चमन, आशियां, आशियां पर बिजली गिरना आदि प्रतीक ठीक उर्दू के हैं. फिर से सुनिये—

"नीड़ का निर्माण फिर फिर"

## ھندی اُردو کاویہ کی سمانتائیں

اِس پدیہ کو پڑھکر اُترے ھوئے نشے کے محاورے کا استعمال ظفر کی اُس مشہور غزل کی یاد دلاتا ھے—

" نہ کسی چشم کا نور ھوں،
نہ کسی کے دل کا قرار ھوں."

جس کا ایک مصرہ ھے—

" جو بگڑ گیا وہ نصیب ھوں،
جو اُتر گیا وہ خمار ھوں"

چھایا واد کے بعد ھندی میں جو انیہ دھارائیں چلیں، جیسے ماکھن لال چترویدی، بھگوتی چرن ورما، ھری کرشن پریمی، نوین دھارائیں، اُن میں اُردو کی وشیشتا لئے بھاوں کی پرچورتا معلوم پڑتی ھے. ساقی، پیالہ، شمع، پتنگ آدی پرتیک تو اب تک چلے آ رھے ھیں. 'بچن' کی 'مدھو شالا' تو پرسدھ ھی ھے. عمر خیام کے پربھاؤ سے ھندی میں نہ معلوم کتنے ھی اُردو، فارسی کے رومنٹک بھاوں کو آسرا ملا ھے. اِس طرح ھندی اُردو کے بھاؤں کی برابری کے اَنگنت اُداھرن دئے جا سکتے ھیں. مہادیوی ورما کی یہ اُکتی لیجئے—

ایک جوالا کے بنا میں راکھ کا گھر ھوں.

اور اِس کی تولنا کیجئے—

آگ تھے ابتدائے عشق میں ھم،
اب جو ھے خاک انتہا یہ ھے.

اور دنکر کی یہ اُکتی لیجئے—

جب گیتکار مر گیا چاند رونے آیا،
چاندنی مچلنے لگی کفن بن جانے کو.

چاندنی کے کفن بن جانے کی بات ٹھیک اُردو میں بھی اِسی طرح کہی گئی ھے. سنئیے اُستاد ذوق کا ایک شعر ھے—

افسردہ دل کے واسطے کیا چاندنی کا لطف،
لپٹا پڑا ھے جس طرح مردہ کفن کے ساتھ.

اور بچن نے تو اپنی پریرنا اُردو کے میخانے سے ھی لی ھے. اُن کا ایک واکیہ لیجئے—

بجی نفیری اور نمازی بھول گیا اللہ تعالیٰ

اور اُس کی تولنا کیجئے اِس شعر سے اور دیکھئے کون سا زیادہ بلند ھے—

نماز کیسی کہاں کا روزہ،
ابھی تو شغل شراب میں ھوں.
خدا کی یاد آئے کس طرح سے،
بتوں کے قہر حباب میں ھوں.

یا یہ لیجئے بچن کی ایک کویتا—

" نیڑ کا نرمانڑ پھر پھر "

اپنا گھونسلا بنانے، نیڑ کا نرمانڑ کرنے کی بات خاص طور سے اُردو سے ھی آئی ھے. چمن، آشیاں، آشیاں پر بجلی گرنا آدی پرتیک ٹھیک اُردو کے ھیں. پھر سے سنیئے—

" نیڑ کا نرمانڑ پھر پھر "

ग़ालिब ने इसी भाव को मीठा घुमाव दे कर एक जीवन व्याख्या कर दी है.

इशरते क़तरा है दरिया में फ़ना हो जाना,
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना.

इस जीवन व्याख्या के कारन ही ग़ालिब का यह शेर बहुत ही ऊंचे दर्जे का है.

गोस्वामी तुलसीदास की एक उक्ति है—

जित देखूं तित तोय,
कंकर पत्थर ठीकरी, भई आरसी मोय.

अर्थात परब्रह्म की व्यक्त सत्ता में उसकी अव्यक्त सत्ता का सौंदर्य प्रकट हो रहा है. इसी बात को एक उर्दू कवि इस तरह कहता है—

निगह मेरी हक़ीक़त आशना मालूम होती है,
नज़र जिस शै पे पड़ती है ख़ुदा मालूम होती है.

हिन्दी के पुराने प्रतीक उर्दू शायरों ने, और आजकल के हिन्दी कवियों ने उर्दू की कहन को बे रोक टोक अपना लिया है.

यह तो केवल भाव परम्परा की बात हुई. मध्य कालीन हिन्दी काव्य में चंद बरदायी से लेकर आगे तक फ़ारसी अरबी शब्द आये हैं. किसी में कम, तो किसी में ज्यादा. जहां काव्य अधिक शुद्ध धार्मिक धरातल पर रहा, फ़ारसी अरबी के शब्दों का प्रयोग कम हुआ, जहां यह धार्मिक धरातल पिछड़ गया वहां फ़ारसी अरबी का बेरोक टोक प्रयोग होने लगा. गोस्वामी तुलसीदास ने ख़ुद अपनी कविता-वली के सुन्दर कांड में फ़ारसी शब्दों का बख़ूबी इस्तेमाल किया है. यह इस बात का सूचक है कि आम बोलचाल की भाशा में उन दिनों फ़ारसी अरबी शब्दों का बहुतायत से उपयोग होता था. मुसलमान राजाओं के समय में ऐसा होना स्वाभाविक भी है. कबीर से लगा कर भारतेन्दु हरिश्चंद तक ऐसी अनेक नज़्म गिनाई जा सकती हैं जिनमें हिन्दी के मशहूर कवियों ने उर्दू शब्दों को बहुत नफ़ासत और सलीक़े के साथ इस्तेमाल किया है.

आजकल की कविता के क्षेत्र में हम पर उर्दू का ज़बरदस्त असर हुआ है. छायावाद के पूर्वकाल में अयोध्यासिंह उपाध्याय के चोखे चौपदे इस बात की मिसाल हैं. हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों को यह मालूम है कि 'प्रसाद' जी का छायावादी काव्य ''आंसू'' अनेक स्थलों पर उर्दू के प्रतीकों और भावों को लेकर चला है—.

मादकता से आये तुम
संज्ञा से चले गये थे
हम व्याकुल पड़े बिलखते थे
उतरे हुये नशे से



غالب نے اِسی بھاؤ کو میٹھا گھماؤ دیکر ایک جیون ویاکھیا کردی ھے .

عشرت قطرہ ھے دریا میں فنا ھوجانا'
درد کا حد سے گذرنا ھے دوا ھوجانا .

اِس جیون کی ویاکھیا کے کارن ھی غالب کا یہ شعر بہت ھی اُونچے درجہ کا ھے .

گوسوامی تلسی داس کی ایک اُکتی ھے—

جت دیکھوں تت توئے'
کنکر پتھر ٹھیکری' بھئی آرسی موئے.

ارتھات پربرھم کی ویکت ستا میں اُس کی اویکت ستا کا سوندریہ پرکٹ ھو رھا ھے . اِسی بات کو ایک اُردو کوی اِس طرح کہتا ھے—

نگہہ میری حقیقت آشنا معلوم ھوتی ھے'
نظرجس شے پہ پڑتی ھےخدا معلوم ھوتی ھے.

ھندی کے پرانے پرتیک اُردو شاعروں نے' اور آجکل کے ھندی کویوں نے اُردو کی کہن کو بے روک ٹوک اپنا لیا ھے .

یہ تو کیول بھاؤ پرمپرا کی بات ھوئی . مدھیہ کالین ھندی کاویہ میں چند بردائی سے لے کر آگے تک فارسی عربی شبد آئے ھیں . کسی میں کم' تو کسی میں زیادہ . جہاں کاویہ ادھک شدھ دھارمک دھراتل پر رھا' فارسی عربی کے شبدوں کا پریوگ کم ھوا' جہاں یہ دھارمک دھراتل پچھڑ گیا وھاں فارسی عربی بے روک ٹوک پریوگ ھونے لگا . گو سوامی تلسی داس نے خود اپنی کویتاولی کے سندر کانڈ میں فارسی شبدوں کا بخوبی استعمال کیا ھے . یہ اِس بات کا سوچک ھے کہ عام بول چال کی بھاشا میں اُن دنوں فارسی عربی شبدوں کا بہوتایت سے اُپیوگ ھوتا تھا . مسلمان راجاؤں کے سمے میں ایسا ھونا سوابھاوک بھی ھے کبیر سے لگا کر بھارتیندو ھریشچند تک ایسی انیک نظم گنائی جا سکتی ھیں جن میں ھندی کے مشہور کویوں نے اُردو شبدوں کو بہت نفاست اور سلیقے کے ساتھ استعمال کیا ھے .

آجکل کی کویتا کے چھیتر میں ھم پر اُردو کا زبردست اثر ھوا ھے. چھایا واد کے پورو کال میں ایودھیا سنگھ اُپادھیائے کے چوکھے چوپدے اس بات کی مثال ھیں . ھندی ساھتیہ کے ودیارتھیوں کو یہ معلوم ھے کہ ' پرساد ' جی کا چھایا وادی کاویہ " آنسو " انیک استھلوں پر اُردو کے پرتیکوں اور بھاوں کو لے کر چلا ھے .

مادکتا سے آئے تم
سنگیا سے چلے گئے تھے
ھم ویاکل پڑے بلکھتے تھے
اُترے ھوئے نشے سے

के पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद को जगा रहा है कि उठो नमाज़ का वक़्त आ गया. ख़याल रहे कि क़ुरान शरीफ़ में मुहम्मद साहब को एक जगह काली कमली वाले कहा है. साफ़ है कि ऊपर की उर्दू कविता में हिन्दी की भाव शैली तो है ही, हिन्दी के उपादान भी हैं, इस सिलसिले में 'जागिये गोपाल लाल' वाला पद एकदम याद आ जाता है. हिन्दी के लोक गीतों में काली कमली का ज़िक्र आता है. भगवान कृश्न को भी काली कमरिया वाले कहा गया है.

जिस तरह उर्दू में हिन्दी उपादान, 'प्रतीक और भाव-शैली प्रकट हुई है, ठीक उसी तरह हिन्दी में उर्दू का सूफ़ियाना रंग भी निखरा है. यह रंग ख़ास उर्दू रंग का है. मलूकदास जी कहते हैं—

> दर्द दिवाने बावरे अलमस्त फ़क़ीरा,
> एक अक़ीदा लै रहे ऐसे मन धीरा.
> प्रेम प्याला पीवते बिसरे सब साथी,
> आठ पहर यूं झूमते ज्यों माता हाथी.

एक मिसाल और लीजिये—

> इश्क़ चमन महबूब का जहां न जावे कोय,
> जावे सो जीवे नहीं जिये सो बौरा होय.
> ऐ तबीब उठ जाव घर अबस छुयेगा हाथ,
> चढ़ी इश्क़ की क़ैफ़ यह उतरे सिर के साथ.

इसी तरह उर्दू वालों ने भी हिन्दी के पुराने भावों को बहुत भावुकता पूर्वक अपनाया है. इसके लिये एक ही मिसाल काफ़ी है. गोस्वामी तुलसीदास की कहावत है—

> कबहुंक अम्ब अवसर पाए,
> मेरिये सुधि ध्याइवी कछु करुण कथा सुनाय.

इसी भाव को उर्दू शायर उस्ताद ज़ौक़ ने यों बयान किया है—

> वो कब सुनने लगे क़ासिद मगर हां यूं सुना देना,
> मिला कर दूसरों की दास्तां में दास्तां मेरी.

चूंकि तुलसीदास राम से आत्म निवेदन करना चाहते हैं, इसलिये उनका तर्ज़ेबयान दूसरा ही है. लेकिन भाव, जज़बा एक ही है और उस जज़बे के इज़हार के लिये दूसरों के दास्तान के इस्तेमाल की तरकीब भी बिलकुल एक है. मतलब यह है कि एक चीज़ है जिसे हम भाव परम्परा कह सकते हैं. इसी भाव परम्परा के साथ कहने का ढंग भी जुड़ा हुआ है. हिन्दी उर्दू की अभ्यंतर बराबरी की जड़ निश्चय ही वह सर्वमान्य भाव परम्परा है जो मध्यकाल की हिन्दी उर्दू की जड़ है.

सिंधु में बिंदु के समा जाने, जीव के परमात्म तत्व में लीन हो जाने वाली भाव परम्परा से जो परिचित हैं, उनके लिये यह काव्य पंक्ति नई नहीं है—

> "इशरते क़तरा है दरिया में फ़ना हो जाना"

کے پیغمبر حضرت محمد کو جگا رہا ہے کہ اُٹھو نماز کا وقت آگیا۔ خیال رہے کہ قرآن شریف میں محمد صاحب کو ایک جگہ کالی کملی والے کہا ہے۔ صاف ہے کہ اُوپر کی اُردو کویتا میں ہندی کی بھاؤشیلی تو ہے ہی، ہندی کے اُپادان بھی ہیں۔ اِس سلسلے میں 'جاگیئے گوپال لال' والا پد ایکدم یاد آجاتا ہے۔ ہندی کے لوک گیتوں میں کالی کملی کا ذکر آتا ہے۔ بھگوان کرشن کو بھی کالی کمریا والے کہا گیا ہے۔

جس طرح اُردو میں ہندی اُپادان' پریتک اور بھاؤشیلی پرکٹ ہوئی ہے' ٹھیک اُسی طرح ہندی میں اُردو کا صوفیانہ رنگ بھی نکھرا ہے۔ یہ رنگ خاص اُردو رنگ کا ہے۔ ملوک داس جی کہتے ہیں—

> درد دیوانے باورے المست فقیرا'
> ایک عقیدہ لے رہے ایسے من دھیرا۔
> پریم پیالہ پیوتے بسرے سب ساتھی'
> آٹھ پہر یوں جھومتے جیوں ماتا ہاتھی۔

ایک مثال اور لیجئیے—

> عشق چمن محبوب کا جہاں نہ جاوے کوئے'
> جاوے سو جاوے نہیں جیئے سو بورا ہوئے۔
> اے طبیب اُٹھ جاؤ گھر عبث چھوئیگا ہاتھ'
> چڑھی عشق کی کیف یہ اُترے سر کے ساتھ۔

اِسی طرح اُردو والوں نے بھی ہندی کے پرانے بھاؤں کو بہت بھاوکتا پوروک اپنایا ہے۔ اِس کے لئے ایک ہی مثال کافی ہے۔ گوسوامی تلسی داس کی ایک کہاوت ہے—

> کبھونک امب اوسر پائے'
> میرئیے سدھی دھیائوی کچھ کرن کتھا سنائے۔

اِسی بھاؤ کو اُردو شاعر اُستاد ذوق نے یوں بیان کیا ہے—

> وہ کب سننے لگے قاصد مگر ہاں یوں سنا دینا'
> ملاکر دوسروں کی داستاں میں داستاں میری۔

چونکہ تلسی داس رام سے آتم نویدن کرنا چاہتے ہیں' اِس لئے اِن کا طرز بیان دوسرا ہی ہے۔ لیکن بھاؤ' جذبہ ایک ہی ہے اور اُس جذبے کے اِظہار کے لئے دوسروں کے داستان کے استعمال کی ترکیب بھی بالکل ایک ہے۔ مطلب یہ ہے کہ ایک چیز ہے جسے ہم بھاؤ پرمپرا کہہ سکتے ہیں۔ اِسی بھاؤ پرمپرا کے ساتھ کہنے کا ڈھنگ بھی جڑا ہوا ہے۔ ہندی اُردو کی ابھینتر برابری کی جڑ نشچے ہی وہ سروماننیہ بھاؤ پرمپرا ہے جو مدھیہ کال کی ہندی اُردو کی جڑ ہے۔

سندھو میں بندو کے سما جانے' جیو کے پرماتم تتو میں لین ہوجانے والی بھاؤ پرمپرا سے جو پریچت ہیں' اُن کے لئے یہ کاویہ پنکتی نئی نہیں ہے—

> "عشرت قطرہ ہے دریا میں فنا ہوجانا"

विचार धाराएं भी आपस में मिली जुलीं और एकरंग हो गईं. कबीर की यह लाइनें कौन नहीं जानता—

हमन हैं इश्क़ मस्ताना
हमन को होशियारी क्या
रहे आज़ाद या जग में,
हमन दुनिया से यारी क्या
कबीरा इश्क़ का माता,
दुई को दूर कर दिल से
जो चलना राह लाज़िम है,
हमन सिर बोझ भारी क्या

कबीर की इस उक्ति से यह बात भी साबित हो जाती है कि खड़ी बोली की एक शैली उर्दू का विकास आगे चल कर इसी ढर्रे पर होने वाला था.

हिन्दी में प्रेम गाथाएं मशहूर ही हैं. मलिक मोहम्मद जायसी की पदमावत इसके लिये सबसे अधिक मशहूर है. इस शैली की प्रेम कहानियां मुसलमानों द्वारा ही लिखी गई हैं. इन भावुक और उदार मुसलमानों ने हिन्दू जीवन के साथ अपनी सहानुभूति ज़ाहिर की और फ़ारसी की मसनवी शैली को भारतीय दृष्टि से सजा कर जनता की ज़बान में प्रेम की पीर का वर्नन किया. मजेदार बात यह है कि इन कहानियों की हस्तलिपियां मुसलमानों के ही घरों में पाई जाती हैं. बात यह है कि मध्यकाल में सूफ़ी मत, भक्ति समुदाय, योग और तांत्रिक मत सिद्धान्त एक दूसरे में घुल मिल गये थे. गिरधर की उपासिका मीरा इश्क़ का प्याला पीती थी और हाल आते आते बेसुध होकर नाच उठती थी, तो इधर आपसी प्रेम की पीर के साथ ही, योगियों के अनुसार सिर पर करवत लेने की बात भी करते थे. इस वजह से मिली जुली विचार धारा, भाव धारा और काव्य उपादान का विस्तार और प्रचार होता था. यही वह भूमि है जिसके सबब पुराने ज़माने से हिन्दी के भाव विचार और उर्दू में हिन्दी के भाव विचार और शैलियां मालूम होती रहीं, जैसे—

उठ मेरे काली कमली वाले,
रात चली है जोगिन बनकर,
ओस से अपने मुंह को धोकर,
लट छिटकाये बाल संभाले.
उठ मेरे काली—
रो के हमारा नाम जो लेगा,
नालए दिल से काम जो लेगा,
टूट पड़ेंगे अर्श से तारे.
उठ मेरे काली—

उर्दू की यह एक मशहूर कविता है जिसका मतलब यह है कि रात का पिछला पहर है और उस वक़्त ईश्वर इस्लाम



وچار دھارائیں بھی آپس میں ملی جلیں اور ایک رنگ ہوگئیں ۔ کبیر کی یہ لائنیں کون نہیں جانتا—

ہمن ہے عشق مستانہ
ہمن کو ہوشیاری کیا
رہے آزاد یا جگ میں،
ہمن دنیا سے یاری کیا
کبیرا عشق کا ماتا،
دوئی کو دور کر دل سے
جو چلنا راہ لازم ہے،
ہمن سر بوجھ بھاری کیا

کبیر کی اِس اُکتی سے یہ بات بھی ثابت ہوجاتی ہے کہ کھڑی بولی کی ایک شیلی اُردو کا وکاس آگے چلکر اِسی ڈھرے پر ہونے والا تھا ۔

ہندی میں پریم گاتھائیں مشہور ہی ہیں ۔ ملک محمد جائسی کی پدماوت اِس کے لئے سب سے ادھک مشہور ہے ۔ اِس شیلی کی پریم کہانیاں مسلمانوں دوارا ہی لکھی گئی ہیں ۔ ان بھاوک اور اُدار مسلمانوں نے ہندو جیون کے ساتھ اپنی سہانبھوتی ظاہر کی اور فارسی کی مثنوی شیلی کو بھارتیہ درشٹی سے سجاکر جنتا کی زبان میں پریم کی پیر کا ورنن کیا ۔ مزیدار بات یہ ہے کہ اِن کہانیوں کی ہست لپیاں مسلمانوں کے ہی گھروں میں پائی جاتی ہیں ۔ بات یہ ہے کہ مدھیہ کال میں صوفی مت، بھکتی سمودائے، یوگ اور تانترک مت سدھانت ایک دوسرے میں گھل مل گئے تھے ۔ گردھر کی اُپاسکا میرا عشق کا پیالہ پیتی تھی اور حال آتے آتے بےسدھ ہوکر ناچ اُٹھتی تھی، تو ادھر آپسی پریم کی پیر کے ساتھ ہی، یوگیوں کے انوسار سر پرکروت لینے کی بات بھی کرتے تھے ۔ اِس وجہ سے ملی جلی وچاردھارا، بھاؤ دھارا اور کاویہ اُپادان کا وستار اور پرچار ہوتا تھا ۔ یہی وہ بھومی ہے جس کے سبب پرانے زمانے سے ہندی کے بھاؤ وچار اور اُردو میں ہندی کے بھاؤ وچار اور شیلیاں معلوم ہوتی رہیں جیسے—

اُٹھ میرے کالی کملی والے،
رات چلی ہے جوگن بن کر،
اوس سے اپنے منھ کو دھوکر،
لٹ چھٹکائے بال سنبھالے ۔
اُٹھ میرے کالی—
روکے ہمارا نام جو لیگا،
نالۂ دل سے کام جو لیگا،
ٹوٹ پڑینگے عرش سے تارے ۔
اُٹھ میرے کالی—

اُردو کی یہ ایک مشہور کویتا ہے جس کا مطلب یہ ہے کہ رات کا پچھلا پہر ہے اور اُس وقت ایشور اِسلام

# हिन्दी उर्दू काव्य की समानताएं

( स्वामी कृश्नानन्द सोख़्ता )

हिन्दी और उर्दू का रिश्ता दो बहनों का सा है, जो अलग अलग घर ब्याही गई हैं. चूंकि वह बहनें हैं, इसलिये उनके रूप गुन समान हैं, सिवाय इसके कि जिस घर वह ब्याही गई हैं, उसका असर उन पर पड़ा है. हमने सजा कर संवार कर भाशा को हिन्दी बनाया, दूसरों ने बाहर से लाई हुई सजावट की चीज़ों से सजा कर उसी भाशा को उर्दू का नाम दे दिया. नामों के इस भेद के बावजूद सांचे ढांचे के शुद्ध स्वदेशीपन को चोट न पहुंचे, इस अहतियात को निगाह में रखते हुए उर्दू के मशहूर शायर उस्ताद दाग़ ने ज़बान की व्याख्या करते हुए ग़ज़ल कही है—

अब दिल है मुक़ाम बेकसी का
यूं घर न तबाह हो किसी का
इतनी ही तो बस कसर है तुम में
कहना नहीं मानते कसी का
कहते हैं उसे ज़बाने उर्दू
जिसमें न हो रंग फ़ारसी का

इस बरायनाम भेद के होते हुये भी बनावट, अदायगी और ज़ोर के लिहाज़ से उर्दू हिन्दी की न मिटने वाली समानता यानी बराबरी और एकसेपन को अधिक विस्तार या तफ़सील से बताने की आवश्यकता नहीं.

दृश्टि की व्यापकता ( नज़र की वसअ़त ) शायर या कवि के स्वभाव का एक गुन है. एक ज़बान के शायर ने दूसरी ज़बान के शायर की ख़ूबियों ( विशेशताओं ) की झूम झूम कर दाद दी है. जिस बोली से उसे वास्ता पड़ा उसके लफ़्ज़ों की माहियत या असलियत को जान कर उन लफ़्ज़ों के इस्तेमाल से उसने अपनी रचनाओं को रचा. हिन्दुस्तान के सांस्कृतिक इतिहास में इस विचार धारा का ऐलान सबसे पहले मलिक मोहम्मद जायसी ने किया था—

तुरकी, अरबी, हिन्दवी; भाशा जेतीं आहिं
जामें मारग प्रेम का; सबै सराहाह ताहिं

उर्दू भाशा और साहित्य के विकास का इतिहास लिखने वाले विद्वान अमीर ख़ुसरो, कबीर, रहीम ख़ानख़ानां, तुलसीदास, बिहारी वग़ैरा सबकी गिन्ती उर्दू के आगे आने वाले ख़ाके की बुनियाद रखने वालों में करते हैं, और यह स्वाभाविक भी है. हमारे इतिहास के बीच के ज़माने में हिन्दुओं और मुसलमानों का जो सम्मिलन हुआ उसके नतीजे में हमारे यहां सूफ़ी मत, योग, भक्ति वग़ैरा धार्मिक

# ھندی اُردو کاویہ کی سمانتائیں

( سوامی کرشنانند سوختہ )

ھندی اور اُردو کا رشتہ دو بہنوں کا سا ھے' جو الگ الگ گھر بیاھی گئی ھیں . چونکہ وہ بہنیں ھیں' اس لئے اُن کے روپ گن سمان ھیں' سوائے اِس کے کہ جس گھر وہ بیاھی گئی ھیں' اُس کا اثر اُن پر پڑا ھے . ھم نے سجاکر سنوار کر بھاشا کو ھندی بنایا' دوسروں نے باھر سے لائی ھوئی سجاوٹ کی چیزوں سے سجاکر اُسی بھاشا کو اُردو کا نام دے دیا . ناموں کے اِس بھید کے باوجود سانچے ڈھانچے کے شدھ سودیشی‌پن کو چوٹ نہ پہونچے' اِس احتیاط کو نگاہ میں رکھتے ھوئے اُردو کے مشہور شاعر اُستاد داغ نے زبان کی ویاکھیا کرتے ھوئے غزل کہی ھے—

اب دل ھے مقام بیکسی کا
یوں گھر نہ تباہ ھو کسی کا
اتنی ھی تو بس کسر ھے تم میں
کہنا نہیں مانتے کسی کا
کہتے ھیں اُسے زبان اُردو
جس میں نہ ھو رنگ فارسی کا

اِس برائے نام بھید کے ھوتے ھوئے بھی بناوٹ' ادائیگی اور زور کے لحاظ سے اُردو ھندی کی نہ مٹنے والی سمانتا یعنی برابری اور ایک سے پن کو ادھک وستار یا تفصیل سے بتانے کی آوشیکتا نہیں .

درشٹی کی ویاپکتا ( نظر کی وسعت ) شاعر یا کوی کے سوبھاؤ کا ایک گن ھے . ایک زبان کے شاعر نے دوسری زبان کے شاعر کی خوبیوں ( وشیشتاؤں ) کی جھوم جھوم کر داد دی ھے . جس بولی سے اُسے واسطہ پڑا اُس نے لفظوں کی ماھیت یا اصلیت کو جان کر اُن لفظوں کے استعمال سے اُس نے اپنی رچناؤں کو رچا . ھندستان کے سانسکرتک اتہاس میں اِس وچاردھارا کا اعلان سب سے پہلے ملک محمد جائسی نے کیا تھا—

ترکی' عربی' ھندوی؛ بھاشا جیتیں آھیں
جا میں مارگ پریم کا؛ سبے سراھنھیں تاھیں

اُردو بھاشا اور ساھتیہ کے وکاس کا اتہاس لکھنے والے ودوان امیر خسرو' کبیر' رحیم خانخاناں' تلسی داس' بہاری وغیرہ سبکی گنتی اُردو کے آگے آنے والے خاکے کی بنیاد رکھنے والوں میں کرتے ھیں' اور یہ سوابھاوک بھی ھے . ھمارے اِتہاس کے بیچ کے زمانے میں ھندوؤں اور مسلمانوں کا جو سملن ھوا اُس کے نتیجے میں ھمارے یہاں صوفی‌مت' یوگ' بھکتی وغیرہ دھارمک

इसलिये मेरे नज़दीक तो ज़िन्दगी बसर करने का बेहतरीन सलीक़ा सिर्फ़ उसे हासिल है जो इस दुनिया में अक़्ली ज़िन्दगी बसर करता है. जो दूसरों को और अपने को तकलीफ़ पहुंचाए बग़ैर इस ज़िन्दगी को तमाम ज़ेहनी व जिस्मानी लज़्ज़तों से इस तरह लुत्फ़ उठाता है जैसे भीगे हुए कपड़े को सख़्ती से निचोड़ दिया जाता है. ऐसा आदमी दूसरों के भी काम आता है और अपने काम भी आता है. दूसरों को भी जहां तक मुमकिन हो सके ख़ुश रखता है. सोसाइटी को भी आगे बढ़ाता है और ख़ुद भी आगे बढ़ता है. ख़ुद भी जीता है और दूसरों को भी जीने में सहारा देता है. और इसके साथ साथ न ख़ुदा से डरता है और न बन्दे से, बल्कि इस के नज़दीक जो चीज़ अक़्लन दुरुस्त होती है, डंके की चोट उसका ऐलान करता है और परवाह नहीं करता कि दुनिया इसकी दुश्मन हो जायेगी. बेशक़ ऐसा इन्सान इस ज़मीन की ऐसी दौलत है कि उसके क़दमों की ख़ाक पर आसमान के सितारों को भी निछावर किया जा सकता है, और उसके वजूद के दरवाज़े पर चांद सूरज रोशनी की भीक मांगने जा सकते हैं.

लगे हाथों कुछ अपने मुताल्लिक़ भी कह दूं ! यह सही है कि मैं भटक कर जल्द राहे रास्त पर आ जाता या जल्द आ जाने की कोशिश ज़रूर करता हूं, लेकिन तजुर्बा व अक़्ल के बावजूद अब भी बार बार भटक जाता हूं.

कौन कह सकता है कि उस क़बीले के हक़ में जिसमें कि मैं एक फ़र्द हूं शायद यह बार बार भटक जाना ही मुनासिब व मुफ़ीद हो ! किसे मालूम है कि जब हम भटक जाते हैं, उस वक़्त राहे रास्त पर होते हैं या जिस वक़्त हम राहे रास्त पर होते हैं उस वक़्त भटके हुए होते हैं.

मुख़्तसर यह कि हम लोगों पर बड़े अफ़सोस या बड़ी ख़ुशी के साथ यह चस्पां किया जा सकता है—

अब भी इक उम्र पै जीने का न अन्दाज़ आया
ज़िन्दगी छोड़ दे पीछा मेरा, मैं बाज़ आया

---



اس لئے میرے نزدیک تو زندگی بسر کرنے کا بہترین سلیقہ صرف اُسے حاصل ھے جو اِس دنیا میں عقلی زندگی بسر کرتا ھے ۔ جو دوسروں کو اور اپنے کو تکلیف پہونچائے بغیر اِس زندگی کو تمام ذھنی و جسمانی لذتوں سے اِس طرح لطف اُٹھاتا ھے جیسے بھیگے ھوئے کپڑے کو سختی سے نچوڑ دیا جاتا ھے ۔ ایسا آدمی دوسروں کے بھی کام آتا ھے اور اپنے کام بھی آتا ھے ۔ دوسروں کو بھی جہاں تک ممکن ھوسکے خوش رکھتا ھے ۔ سوسائٹی کو بھی آگے بڑھاتا ھے اور خود بھی آگے بڑھتا ھے ۔ خود بھی جیتا ھے اور دوسروں کو بھی جینے میں سہارا دیتا ھے ۔ اور اس کے ساتھ ساتھ نہ خدا سے ڈرتا ھے اور نہ بندے سے، بلکہ اِس کے نزدیک جو چیز عقلاً درست ھوتی ھے، ڈنکے کی چوٹ اُس کا اعلان کرتا ھے اور پرواہ نہیں کرتا کہ دنیا اس کی دشمن ھوجائیگی ۔ بیشک ایسا انسان اِس زمین کی ایسی دولت ھے کہ اس کے قدموں کی خاک پر اسمان کے ستاروں کو بھی نچھاور کیا جاسکتا ھے، اور اُس کے وجود کے دروازے پر چاند سورج روشنی کی بھیک مانگنے جاسکتے ھیں ۔

لگے ھاتھوں کچھ اپنے متعلق بھی کہدوں ! یہ صحیح ھے کہ میں بھٹک کر جلد راہ راست پر آجاتا یا جلد اجانے کی کوشش ضرور کرتا ھوں، لیکن تجربہ و عقل کے باوجود اب بھی بار بار بھٹک جاتا ھوں ۔

کون کہہ سکتا ھے کہ اُس قبیلے کے حق میں جس میں کہ میں ایک فرد ھوں شاید یہ بار بار بھٹک جانا ھی مناسب و مفید ھو ! کسے معلوم ھے کہ جب ھم بھٹک جاتے ھیں، اُس وقت راہ راست پر ھوتے ھیں یا جس وقت ھم راہ راست پر ھوتے ھیں اُس وقت بھٹکے ھوئے ھوتے ھیں ۔

مختصر یہ کہ ھم لوگوں پر بڑے افسوس یا بڑی خوشی کے ساتھ یہ چسپاں کیا جاسکتا ھے—

اب بھی اک عمر پہ جینے کا نہ انداز آیا
زندگی چھوڑ دے پیچھا میرا، میں باز آیا

---

एक तबक़ा है इन्क़लाबी. यह तबक़ा माज़ी ( भूत ) से मुकम्मिल तौर पर मुंह फेर कर सोसाइटी को मुस्तक़बिल ( भविश्य ) के सांचे में ढालने की कोशिश करता रहता है.

एक तबक़ा है फ़लसफ़ियों और साइन्सदानों का—यह तबक़ा हर शै को फ़लसफ़े और साइन्स की ऐनक से देखता है और अक़्ली ज़िन्दगी बसर करने का शौक़ करता है.

इस तबक़े के नज़दीक ख़ुदा एक फ़र्ज़ी चीज है. इख़लाक़ सिर्फ़ इज़ाफ़ी और अहद बदलती हुई सोसाइटी के साथ बदलता और नेकी बदी के जदीद तसव्वरात ( आधुनिक मान्यताएं ) पैदा करता है. इस तबक़े की इन्तहाई कोशिश यह है कि इन्सान एक मुकम्मिल अक़्ली ज़िन्दगी बसर करके एक ऐसी दिमाग़ी कैफ़ियत पैदा कर ले जो जिस्मानी सेहत, क़ल्बी राहत, और ज़हनी आसूदगी ( आराम ) के साज़ो सामान पैदा कर दे.

मुख़्तसर यह कि इल्लते ज़िन्दगी ( ज़िन्दगी का लक्ष ) मक़सदे ज़िन्दगी और सलीक़ए ज़िन्दगी का मसला इस क़दर हैरतनाक तौर पर पेचीदा और इस क़दर बेअन्त फैलाव रखता है कि इन्सान, जो अभी तक तिफ़्ले मकतब से ज्यादा हैसियत हासिल नहीं कर सकता है, सरेदस्त ज़िन्दगी की कोई मुकम्मिल शरीयत पेश करने से क़तई माज़ूर ( असहाय ) है.

लेकिन यह भी कोई आक़िलाना बात न होगी कि अपनी इस मजबूरी के सामने हम हाथ पांव ढीले कर दें और ख़ामोश होकर बैठ जाएं.

बहरहाल मुनासिब यह मालूम होता है कि वह जिस्मानी और जेहनी तौर पर तन्दुरुस्त और क़वी ( मज़बूत ) रहे. जिस्मानी सेहत को बरक़रार बनाने के जो उसूल हैं उनसे हर पढ़ा लिखा आदमी वाक़िफ़ है, लेकिन जेहनी तन्दुरुस्ती के उसूल अच्छे अच्छे तालीमयाफ़्ता लोगों को भी मालूम नहीं हैं.

फ़ासिद ख़्यालात, नस्ली, मज़हबी और क़ौमी तास्सुबात और इसके साथ ही ख़ौफ़, गुस्सा, ग़म और नफ़रत, इन्सान के ज़ेहन को बीमार कर देते हैं. इसलिये हर साहिबे नज़र का फ़र्ज़ है कि वह ठंडे दिल से अपने बातिन का जायज़ा ले और देखे कि इन अमराज़ में से कोई मर्ज़ इसके ज़ेहन को दबाये तो नहीं हुए है.

बीमार जिस्म आसानी से दुरुस्त हो जाता है लेकिन बीमार जेहन का इलाज मुश्किल है और ज़ेहनी अमराज़ से सिर्फ़ वही लोग नजात हासिल कर सकते हैं जिन्हें इल्मे हिकमत की दौलत हासिल है. और इसके साथ साथ इनका दिल इस क़दर मसर्रतों से भर जाता है कि उसमें ग़म दाख़िल ही नहीं हो सकता. मिर्ज़ा ग़ालिब ने कहा है :—

ग़म नहीं होता है आज़ादों को बेश अज़ यक नफ़स
बर्क़ से करते हैं रोशन शमए मातमख़ाना हम



ایک طبقہ ھے اِنقلابی . یہ طبقہ ماضی ( بھوت ) سے مکمل طور پر منھ پھیر کر سوسائٹی کو مستقبل ( بھوشیہ ) کے سانچے میں ڈھالنے کی کوشش کرتا رھتا ھے .

ایک طبقہ ھے فلسفیوں اور سائنسدانوں کا — یہ طبقہ ھر شے کو فلسفے اور سائنس کی عینک سے دیکھتا ھے اور عقلی زندگی بسر کرنے کا شوق کرتا ھے .

اِس طبقہ کے نزدیک خدا ایک فرضی چیز ھے . اخلاق صرف ایک اضافی اور عہد بدلتی ھوئی سوسائٹی کے ساتھ بدلتا اور نیکی بدی کے جدید تصورات ( آدھونک مانیہ تائیں ) پیدا کرتا ھے . اِس طبقہ کی انتہائی کوشش یہ ھے کہ انسان ایک مکمل عقلی زندگی بسر کرکے ایسی دماغی کیفیت پیدا کر لے جو جسمانی صحت، قلبی راحت، اور ذھنی آسودگی ( آرام ) کے سازو ساماں پیدا کر دے .

مختصر یہ کہ علت زندگی ( زندگی کا لکش ) مقصد زندگی اور سلیقۂ زندگی کا مسئلہ اِس قدر حیرت ناک طور پر پیچیدہ اور اس قدر بے انت پھیلاؤ رکھتا ھے کہ انسان، جو ابھی تک طفل مکتب سے زیادہ حیثیت حاصل نہیں کر سکتا ھے، سردست زندگی کی کوئی مکمل شریعت پیش کرنے سے قطعی معذور ( اسہائے ) ھے .

لیکن یہ بھی کوئی عاقلانہ بات نہ ھوگی کہ اپنی اس مجبوری کے سامنے ھم ھاتھ پاؤں ڈھیلے کردیں اور خاموش ھوکر بیٹھ جائیں .

بہرحال مناسب یہ معلوم ھوتا ھے کہ وہ جسمانی اور ذھنی طور پر تندرست اور قوی ( مضبوط ) رھے . جسمانی صحت کو برقرار بنانے کے جو اصول ھیں اُن سے ھر پڑھا لکھا آدمی واقف ھے، لیکن ذھنی تندرستی کے اصول اچھے اچھے تعلیم یافتہ لوگوں کو بھی معلوم نہیں ھیں .

فاسد خیالات، نسلی، مذھبی اور قومی تعصبات اور اِس کے ساتھ ھی خوف، غصہ، غم اور نفرت انسان کے ذھن کو بیمار کردیتے ھیں . اِس لئے ھر صاحب نظر کا فرض ھے کہ وہ ٹھنڈے دل سے اپنے باطن کا جائزہ لے اور دیکھے کہ اِن امراض میں سے کوئی مرض اِس کے ذھن کو دبائے تو نہیں ھوئے ھیں .

بیمار جسم آسانی سے درست ھوجاتا ھے لیکن بیمار ذھن کا علاج مشکل ھے اور ذھنی امراض سے صرف وھی لوگ نجات حاصل کرسکتے ھیں جنھیں علم حکمت کی دولت حاصل ھے . اور اس کے ساتھ ساتھ ان کا دل اِسقدر مسرتوں سے بھر جاتا ھے کہ اس میں غم داخل ھی نہیں ھوسکتا . مرزا غالب نے کہا ھے :—

غم نہیں ھوتا ھے آزادوں کو بیش از یک نفس
برق سے کرتے ھیں روشن شمع ماتم خانہ ھم

# जीने का सलीक़ा

( जोश मलीहाबादी )

ज़िन्दगी क्योंकर बसर की जाय, यह उन लोगों से नहीं पूछा जा सकता जिन्हें जीने के लाले पड़े हों. वह लोग, फ़ाक़ों से जिनका जिस्म दुबला और जहालत से जिनकी अक़्ल मोटी हो, ज़िन्दगी बसर करने के सलीक़े से क्योंकर वाक़िफ़ हो सकते हैं. अलबत्ता यह मसला उन लोगों का है जिन्हें मुआशी फ़राग़त ( आर्थिक निश्चिन्तता ) और ज़ेहनी बेदारी ( मानसिक विकास ) हासिल है.

इन्सान दौड़ता, धूपता, सर खपाता और पसीना बहाता है, महज़ इसलिये कि ज़िन्दा रहने के वास्ते जिन चीज़ों की ज़रूरत है उन्हें मुहय्या कर ले. लेकिन कोई अल्लाह का बन्दा एक लमहे के वास्ते भी इस बात पर ग़ौर नहीं करता कि मैं यह जो कुछ ख़ून पसीना एक कर रहा हूं वह तो महज़ इसलिये है कि मैं ज़िन्दा रह सकूं. लेकिन ज़िन्दा रहने का मक़सद क्या है, किसी को ख़्वाब में भी उसका ख़्याल नहीं आता.

एक तबक़ा ज़िन्दगी के बाब ( बारे में ) इस तरह सोचता है कि अपनी तमाम तमन्नाओं, तमाम ख़्वाहिशों, ग़रज़े कि अपनी तमाम हस्ती को, अपने पैदा करने वाले की मर्ज़ी के सुपुर्द कर देना ही ज़िन्दगी का वाहिद मक़सद है.

लेकिन एक तबक़ा ऐसा है, और यह बहुत ही बड़ा तबक़ा है, जो ख़्याल करता है कि भाड़ में जाय नेकी बदी और अच्छाई बुराई, यारों को तो अपने हलवे मांडे से काम. आप भले तो जग भला. जिस तरह और जिस ज़रिये से बन पड़े कमाओ, कमाओ, नौकरी करके कमाओ—चोरी डकैती करके कमाओ—मिलें और कारख़ाने खोल कर कमाओ, अमीर बन कर कमाओ, औरत फ़रोश बन कर कमाओ, ठेके ले कर कमाओ—पैग़म्बर बन कर कमाओ—अलग़रज़ हर तरह और हर तरीक़े से कमाओ, ख़ूब जी भर कर पूरे ख़ुलूस के साथ कमाओ—कमाते कमाते मर जाओ और अगर आवागमन हो तो पैदा हो फिर कमाओ, फिर कमाओ.

यह तबक़ा समझता है कि इस कायनात की उम्र को देखते हुए, जो शायद करोड़ों अरबों साल से भी ज़ायद हो, हमारी यह बूंद भर साठ सत्तर साल की ज़िन्दगी भी कोई ऐसी चीज़ है जिस पर निगाह पड़ सके. इस हक़ीर, पोच और लचर वाहिमों पर ग़ौर करना एक अहमक़ाना वक़्त की बरबादी के सिवा और कुछ नहीं. इसलिये बस खाओ पिओ, मज़े उड़ाओ और मर जाओ.

# جینے کا سلیقہ

( جوش ملیح آبادی )

زندگی کیونکر بسر کی جائے، یہ اُن لوگوں سے نہیں پوچھا جا سکتا جنھیں جینے کے لالے پڑے ہوں . وہ لوگ، فاقوں سے جن کا جسم دبلا اور جہالت سے جن کی عقل موٹی ہو، زندگی بسر کرنے کے سلیقے سے کیونکر واقف ہو سکتے ہیں . البتہ یہ مسئلہ اُن لوگوں کا ہے جنھیں معاشی فراغت ( آرتھک نشچنتتا ) اور ذہنی بیداری ( مانسک وکاس ) حاصل ہے .

اِنسان دوڑتا، دھوپتا، سرکھپاتا اور پسینہ بہاتا ہے، محض اِس لئے کہ زندہ رہنے کے واسطے جن چیزوں کی ضرورت ہے اُنھیں مہیا کر لے . لیکن کوئی اللہ کا بندہ ایک لمحے کے واسطے بھی اس بات پر غور نہیں کرتا کہ میں یہ جو کچھ خون پسینہ ایک کر رہا ہوں وہ تو محض اِس لئے ہے کہ میں زندہ رہ سکوں . لیکن زندہ رہنے کا مقصد کیا ہے، کسی کو خواب میں بھی اِس کا خیال نہیں آتا .

ایک طبقہ زندگی کے باب ( بارے میں ) اِس طرح سوچتا ہے کہ اپنی تمام تمناؤں، تمام خواہشوں، غرضیکہ اپنی تمام ہستی کو، اپنے پیدا کرنے والے کی مرضی کے سپرد کر دینا ہی زندگی کا واحد مقصد ہے .

لیکن ایک طبقہ ایسا ہے، اور یہ بہت ہی بڑا طبقہ ہے، جو خیال کرتا ہے کہ بھاڑ میں جائے نیکی بدی اور اچھائی برائی، یاروں کو تو اپنے حلوے مانڈے سے کام . آپ بھلے تو جگ بھلا . جس طرح اور جس ذریعہ سے بن پڑے کماؤ، کماؤ، نوکری کرکے کماؤ—چوری ڈکیتی کرکے کماؤ—ملیں اور کارخانے کھول کر کماؤ، امیر بن کر کماؤ، عورت فروش بن کر کماؤ، ٹھیکے لے کر کماؤ—پیغمبر بن کر کماؤ—الغرض ہر طرح اور ہر طریقہ سے کماؤ، خوب جی بھر کر پورے خلوص کے ساتھ کماؤ—کماتے کماتے مر جاؤ اور اگر آواگمن ہو تو پیدا ہو پھر کماؤ، پھر کماؤ .

یہ طبقہ سمجھتا ہے کہ اِس کائنات کی عمر کو دیکھتے ہوئے، جو شاید کروڑوں، اربوں سال سے بھی زائد ہو، ہماری یہ بوند بھر ساٹھ ستر سال کی زندگی بھی کوئی ایسی چیز ہے جس پر نگاہ پڑ سکے . اس حقیر، پوچ اور لچر واہموں پر غور کرنا ایک احمقانہ وقت کی بربادی کے سوا اور کچھ نہیں . اس لئے بس کھاؤ پیو، مزے اُڑاؤ اور مر جاؤ .

इनसे मिलते जुलते सब में अलग अलग सन्यासी, यति, मंडलेश, साधू, बैरागी, उदासी, मठाधीश, संत, महन्त, फ़क़ीर, दरवेश, औलिया, सज्जादा नशीन, शेख़, पीर, मुरशिद, तकियादार, मिस्कीन, भिक्षु, स्थानकवासी, श्रमन, थीर, महाथीर, मांक, नन, वग़ैरा वग़ैरा सब धर्मों में होते हैं, जिनकी तादाद बहुत पर जिनमें सच्चे साधू या तपस्वी कोई बिरले ही मिलते हैं.

सबके अपने अपने मठ, अखाड़े, धर्मशाला, विहार, लामासरी, दरगाह, तकिया, ख़ानक़ाह वग़ैरा हैं, जिनमें से अधिकतर का इन्तज़ाम बहुत ही ख़राब होता है और बहुत से तो पाप के अड्डे होते हैं.

मशहूर जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने अपनी किताब Chips from a German Workshop में बड़ी तफ़सील और सुन्दरता के साथ दिखाया है कि तिब्बत के बौद्ध मठों और योरप के ईसाई रोमन कैथलिक गिरजों में एक एक चीज़ और एक एक रिवाज कितने ग़ज़ब के मिलते जुलते हैं.

सब धर्म वालों ने अपने अपने अनगिनत टुकड़े कर रक्खे हैं. एक एक की बहुत सी अलग अलग सम्प्रदाएं हैं. बहुत से पंथ हैं. बहुत से फ़िर्क़े हैं. हिन्दुओं में इनकी तादाद सैकड़ों है. ईसाइयों में भी सैकड़ों है और इसलाम में कम से कम कोड़ियों. यह बात यूं तो बड़े दुख की बात है पर इससे एक अच्छी बात का पता चलता है कि लोग अपने धर्म के असली रूप को अपनी सूझ बूझ के अनुसार बदल लेते हैं. इसका मतलब यह है कि वह धर्म के मालिक हैं, धर्म उनका मालिक नहीं. इसका यह भी अच्छा सबूत है कि लोग एक मज़हब से दूसरे मज़हब में भी चले जाते हैं.

हिन्दू धर्म में एक और ख़ास चीज़ है जो मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि दूसरे किसी धर्म में नहीं है. वह है हिन्दुओं की जात पात. पर हिन्दू जात पात का मामला इतना पेचीदा और बड़ा है कि उसके लिये अलग लेख की आवश्यकता है.

———



اِن سے ملتے جلتے سب میں الگ الگ سنیاسی، یتی، منڈلیش، سادھو، بیراگی، اُداسی، متھا دھیش، سنت، مہنت، فقیر، درویش، آولیا، سجادہ نشین، شیخ، پیر، مرشد، تکیہ‌دار، مسکین، بھکشو، آستھانک داسی، شرمن، تھیر، مہاتھیر، مانک، نن وغیرہ وغیرہ سب دھرموں میں ہوتے ہیں، جن کی تعداد بہت پر جن میں سچے سادھو یا تپسوی کوئی برلے ہی ملتے ہیں۔

سب کے اپنے اپنے متھ، آکھاڑے، دھرم شالا، وھار، لاما سری، درگاہ، تکیہ، خانقاہ وغیرہ ہیں، جن میں سے آدھکتر کا انتظام بہت ہی خراب ہوتا ہے اور بہت سے تو پاپ کے اڈے ہوتے ہیں۔

مشہور جرمن ودوان میکس‌مولر نے اپنی کتاب Chips from a German Workshop میں بڑی تفصیل اور سندرتا کے ساتھ دکھایا ہے کہ تبت کے بودھ متھوں اور یورپ کے عیسائی رومن کیتھلک گرجوں میں ایک ایک چیز اور ایک ایک رواج کتنے غضب کے ملتے جلتے ہیں۔

سب دھرم والوں نے اپنے اپنے آنگنت تکڑے کر رکھے ہیں۔ ایک ایک کی بہت سی الگ الگ سمپردائیں ہیں۔ بہت سے پنتھ ہیں۔ بہت سے فرقے ہیں۔ ھندوں میں اِن کی تعداد سیکڑوں ہے۔ عیسائیوں میں بھی سیکڑوں ہے اور اسلام میں کم سے کم کوڑیوں۔ یہ بات یوں تو بڑے دکھ کی بات ہے پر اِس سے ایک اچھی بات کا پتہ چلتا ہے کہ لوگ اپنے دھرم کے اصلی روپ کو اپنی سوجھ بوجھ کے آنوسار بدل لیتے ہیں۔ اِس کا مطلب یہ ہے کہ وہ دھرم کے مالک ہیں، دھرم اُن کا مالک نہیں۔ اِس کا یہ بھی اچھا ثبوت ہے کہ لوگ ایک مذہب سے دوسرے مذہب میں بھی چلے جاتے ہیں۔

ھندو دھرم میں ایک اور خاص چیز ہے جو موٹے طور پر کہا جاسکتا ہے کہ دوسرے کسی دھرم میں نہیں ہے۔ وہ ہے ھندوں کی جات پات۔ پر ھندو جات پات کا معاملہ اتنا پیچیدہ اور بڑا ہے کہ اُس کے لئے الگ لیکھ کی آوشیکتا ہے۔

———

जीवन और अधिक दिलचस्प और ख़ुश करने वाला होता. पर इस की जगह आजकल अधिकतर इन्हें देख कर एक दूसरे से चिढ़ और नफ़रत बढ़ती है. कारन यह है कि हमारे धार्मिक नेता जो रहनुमाई करने की जगह लोगों को और गुमराह करते हैं, अपने लोगों में समझ और प्रेम की जगह नफ़रतें और गुस्से अधिक पैदा करते हैं. वह अपने अपने लोगों को यही बताते रहते हैं कि जो लोग उनकी तरह चोटी नहीं रखते, डाढ़ी रखते हैं, या डाढ़ी नहीं रखते, चोटी रखते हैं, या दूसरी तरह के कपड़े पहनते हैं, या दूसरी चीजें खाते पीते हैं, या दूसरी बोली बोलते हैं, या किसी दूसरी बोली में दुआ प्रार्थना करते हैं वह सब ग़ैर हैं जिनसे बचना चाहिये, बल्कि दुशमन हैं जिन्हें दबाना चाहिये.

सब मज़हबों वाले अपनी पूजा के स्थानों को अलग अलग नामों से पुकारते हैं. इन नामों का अर्थ अकसर एकसा होता है. गिरजा को 'ख़ुदा का घर' भी कहते हैं. मन्दिर को 'देवालय' भी कहते हैं. उसके भी वही मानी हैं. मस्जिद को 'बैतुल्लाह' कहते हैं. इसके मानी भी ख़ुदा का घर है. गिरजा, मस्जिद या मन्दिर बनाने में सब ऊँची ऊँची आसमान को छूने की कोशिश करने वाली शिखर, कलश, गोपुर, मिनारा, गुम्बद, डोम, स्टीपल वग़ैरा बनाते हैं. लोगों का पूजा इबादत के लिये बुलाने के सबके कोई न कोई ढंग हैं. कोई अज़ान देते हैं, कोई घंटा बजाते हैं, कोई घड़ियाल. मरे हुओं का कोई श्राद्ध करते हैं, कोई फ़ातहा पढ़ते हैं, कोई दुआएं पढ़ते हैं. मरने के बाद कोई भोज खिलाते हैं, कोई कन्दूरी और कोई और और तरह की दावतें देते हैं. सब के कोई न कोई धार्मिक गुरु होते हैं. हिन्दू गुरु के शिश्य होते हैं, मुसलमान पीर के मुरीद कहलाते हैं और ईसाइ सेन्ट के डिसाइपल होते हैं. कोई आसन पर बैठता है, कोई सज्जादे पर. कोई घुटने टेक कर नमाज़ पढ़ता है. कोई पलौथी मार कर संध्या करता है. कोई साश्टांग दंडवत करता है, कोई परिक्रमा या तवाफ़ करता है. कोई पूजा करने में शरीर के अलग अलग भागों को बार बार हाथ लगाता है और अलग अलग मंत्र पढ़ता जाता है. कोई घुटनों के बल खड़ा हो जाता है, कोई अपनी एड़ियों के बल घूमता है—ढंग अलग अलग, मतलब सबका एक.

हिन्दुओं में पंडे, पुरोहित, पुजारी, याजक, धर्माधिकारी, और आचार्य होते हैं. मुसलमानों में मुअज़्ज़न, मुजाविर, मुतवल्ली, मुल्ला, मुफ़्ती, आलिम, मुजतहिद, इमाम और ख़लीफ़ा होते हैं. पारसियों में दस्तूर और मोबिद होते हैं. यहूदियों में स्क्राइब, फ़ैरीसी और रब्बी होते हैं. बौद्धों में फुंगी, लामा, बोन्ज़ होते हैं. इसी तरह के दरजनों नाम ईसाइयों में हैं वग़ैरा, वग़ैरा.



جیون اور آدھک دلچسپ اور خوش کرنے والا ھوتا. پر اِس کی جگہ آجکل آدھکتر اِنھیں دیکھکر ایک دوسرے سے چڑھ اور نفرت بڑھتی ھے. کارن یہ ھے کہ ھمارے دھارمک نیتا جو رھنمائی کرنے کی جگہ لوگوں کو اور گمراہ کرتے ھیں، اپنے لوگوں میں سمجھ اور پریم کی جگہ نفرتیں اور غصے آدھک پیدا کرتے ھیں. وہ اپنے اپنے لوگوں کو یہی بتاتے رھتے ھیں کہ جو لوگ اُن کی طرح چوٹی نہیں رکھتے، ڈاڑھی رکھتے ھیں، یا ڈاڑھی نہیں رکھتے، چوٹی رکھتے ھیں، یا دوسری طرح کے کپڑے پہنتے ھیں، یا دوسری چیزیں کھاتے پیتے ھیں، یا دوسری بولی بولتے ھیں، یا کسی دوسری بولی میں دعا، پرارتھنا کرتے ھیں، وہ سب غیر ھیں جن سے بچنا چاھئے، بلکہ دشمن ھیں جنھیں دبانا چاھئے.

سب مذھبوں والے اپنی پوجا کے استھانوں کو الگ الگ ناموں سے پکارتے ھیں. اِن ناموں کا آرتھ اکثر ایک سا ھوتا ھے. گرجا کو 'خدا کا گھر' بھی کہتے ھیں. مندر کو 'دیوالئے' بھی کہتے ھیں. اُس کے بھی وھی معنی ھیں. مسجد کو 'بیت اللہ' کہتے ھیں. اِس کے معنی بھی خدا کا گھر ھے. گرجا، مسجد یا مندر بنانے میں سب اُونچی اُونچی آسمان کو چھونے کی کوشش کرنے والی شکھر، کلش، گوپر، منارا، گمبد، ڈوم، اسٹیپل وغیرہ بناتے ھیں. لوگوں کو پوجا عبادت کے لئے بلانے کے سب کے کوئی نہ کوئی ڈھنگ ھیں. کوئی اذان دیتے ھیں، کوئی گھنٹا بجاتے ھیں، کوئی گھڑیال. مرے ھوؤں کا کوئی شرادھ کرتے ھیں، کوئی فاتحہ پڑھتے ھیں، کوئی دعائیں پڑھتے ھیں. مرنے کے بعد کوئی بھوج کھلاتے ھیں، کوئی کندوری اور کوئی اور اور طرح کی دعوتیں دیتے ھیں. سب کے کوئی نہ کوئی دھارمک گرو ھوتے ھیں. ھندو گرو کے ششیہ ھوتے ھیں، مسلمان پیر کے مرید کہلاتے ھیں، اور عیسائی سینٹ کے ڈسائپل ھوتے ھیں. کوئی آسن پر بیٹھتا ھے، کوئی سجادہ پر. کوئی گھٹنے ٹیککر نماز پڑھتا ھے، کوئی پلوتھی مارکر سندھیا کرتا ھے. کوئی ساشٹانگ ڈنڈوت کرتا ھے، کوئی پرکرما یا طواف کرتا ھے. کوئی پوجا کرنے میں شریر کے الگ الگ بھاگوں کو بار بار ھاتھ لگاتا ھے اور الگ الگ منتر پڑھتا جاتا ھے. کوئی گھٹنوں کے بل کھڑا ھوجاتا ھے، کوئی اپنی ایڑیوں کے بل گھومتا ھے—ڈھنگ الگ الگ، مطلب سب کا ایک.

ھندوؤں میں پنڈے، پروھت، پجاری، یاجک، دھرمادھیکاری اور آچاریہ ھوتے ھیں. مسلمانوں میں موذن، مجاور، متولی، ملا، مفتی، عالم، مجتھد، اِمام اور خلیفہ ھوتے ھیں. پارسیوں میں دستور اور موبد ھوتے ھیں. یہودیوں میں اسکرائب، فیریسی اور ربی ھوتے ھیں. بودھوں میں پھنگی، لامہ، بونز ھوتے ھیں. اِسی طرح کے درجنوں نام عیسائیوں میں ھیں وغیرہ وغیرہ

## धर्मों के अलग अलग रीत रिवाज

रूह यानी आत्मा की दरजे बदरजे तरक़्क़ी के लिये हिन्दू 'योग' और सूफ़ी 'सलूक' दोनों में हर तरह के गोश्त से परहेज़ ज़रूरी बताया गया है. हज़रत अली जो सबसे पहले सूफ़ी माने जाते हैं कहा करते थे कि :—"अपने पेटों को जानवरों की क़बरें मत बनाओ."

आदमी की क़ुदरती ख़्वाहिशों और कमज़ोरियों को जहां एक तरफ़ क़ाबू में करना ज़रूरी है वहां कभी कभी और एक दरजे तक उन्हें खुले मौक़ा देना भी ज़रूरी हो जाता है. इसीलिये सब धर्मों में किसी न किसी रूप में जानवरों की बलि और क़ुरबानी जैसी चीज़ें रक्खी गई हैं. यह चीज़ें सब धर्मों में ऐसी ही हैं जैसी हर आदमी के शरीर के अन्दर और सुन्दर से सुन्दर आदमी के अन्दर मैले से भरी हुई अंतड़ियां होती हैं. केवल ईसाइयों, बौद्धों और जैनियों में क़ुरबानी का रिवाज नहीं है. हर मज़हब ने इन चीज़ों पर रोक थाम भी लगाई है और रोक थाम के रास्ते बताए हैं.

भागवत में लिखा है :—

"लोगों में स्त्री पुरुश का एक दूसरे की तरफ़ झुकाव और गोश्त और शराब की इच्छा होती ही है. उसे जगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती. इन चीज़ों पर रोक थाम रखने के लिये शादी का रिवाज और यज्ञों का रिवाज डाला गया है. इन से बचे रहना बहुत ज़्यादा अच्छा है."

इन्जील में लिखा है :—

"जो लोग अपने को रोक नहीं सकते उन्हें चाहिये कि शादी कर लें. क्योंकि अन्दर अन्दर जलते रहने से शादी कर लेना ज़्यादा अच्छा है."

हर धर्म के मानने वाले किसी न किसी तरह का अपना बाहरी निशान भी रखते हैं. कोई सर पर पीछे की तरफ़ चोटी रखते हैं, कोई दाढ़ी रखते हैं, कोई सब बाल बढ़ाते हैं और कोई कुछ ईसाई पादरियों की तरह ख़ास तरह सर मुंडवाते हैं. कोई बाएं कन्धे के ऊपर से जनेऊ डालते हैं, और माथे पर तरह तरह के तिलक लगाते हैं. कोई कमर के चारों तरफ़ ज़ुन्नार बांधते हैं. कोई टोपियों पर हेलाल और सितारा लगाते हैं, और कोई अपनी गरदनों में क्रास लटकाते हैं. लगभग सब जन्तर मन्तर या गंडे तावीज़ जैसी चीज़ों में भी विश्वास रखते हैं और उन्हें पहनते हैं. गहरे विश्वास के कारन इन चीज़ों का उनके ऊपर असर भी होता है. सब धर्म वालों की ख़ास ख़ास पोशाकें हैं. यह पोशाकें कहीं क़ौमी या राश्ट्री मानी जाती हैं और कहीं धार्मिक. यह सब अलग अलग चीज़ें अगर केवल कला या सुन्दरता की निगाह से पहनी जातीं ताकि एक दूसरे को अच्छी लगें, या अगर इनके साथ थोड़ा बहुत सच्चा भक्ति भाव भी होता, तो इन सब रंग बिरंगी चीज़ों से आदमी की सुन्दरता बढ़ती, नई नई चीज़ें सबको अच्छी लगतीं, और हमारा समाजी

## دھرموں کے الگ الگ ریت رواج

روح یعنی آتما کی درجہ بدرجہ ترقی کے لئے ھندو 'یوگ' اور صوفی 'سلوک' دونوں میں ھر طرح کے گوشت سے پرھیز ضروری بتایا گیا ھے. حضرت علی جو سب سے پہلے صوفی مانے جاتے ھیں کہا کرتے تھے کہ :—"اپنے پیٹوں کو جانوروں کی قبریں مت بناؤ."

آدمی کی قدرتی خواھشوں اور کمزوریوں کو جہاں ایک طرف قابو میں کرنا ضروری ھے وھاں کبھی کبھی اور ایک درجہ تک انہیں کھلے موقع دینا بھی ضروری ھوجاتا ھے. اسی لئے سب دھرموں میں کسی نہ کسی روپ میں جانوروں کی بلی اور قربانی جیسی چیزیں رکھی گئی ھیں یہ چیزیں سب دھرموں میں ایسی ھی ھیں جیسی ھر آدمی کے شریر کے اندر اور سندر سے سندر آدمی کے اندر میلے سے بھری ھوئی انتڑیاں ھوتی ھیں. کیول عیسائیوں' بودھوں اور جینیوں میں قربانی کا رواج نہیں ھے. ھر مذھب نے ان چیزوں پر روک تھام بھی لگائی ھے اور روک تھام کے راستے بتائے ھیں.

بھاگوت میں لکھا ھے :—

"لوگوں میں استری پورش کا ایک دوسرے کی طرف جھکاؤ اور گوشت اور شراب کی اچھا ھوتی ھی ھے. اسے جگانے کی آوشیکتا نہیں پڑتی. ان چیزوں پر روک تھام رکھنے کے لئے شادی کا رواج اور یگیوں کا رواج ڈالا گیا ھے. ان سے بچے رھنا بہت زیادہ اچھا ھے."

انجیل میں لکھا ھے :—

"جو لوگ اپنے کو روک نہیں سکتے انہیں چاھئے کہ شادی کرلیں. کیونکہ اندر اندر جلتے رھنے سے شادی کرلینا زیادہ اچھا ھے."

ھر دھرم کے ماننے والے کسی نہ کسی طرح کا اپنا باھری نشان بھی رکھتے ھیں. کوئی سر پر پیچھے کی طرف چوٹی رکھتے ھیں' کوئی داڑھی رکھتے ھیں' کوئی سب بال بڑھاتے ھیں اور کوئی کچھ عیسائی پادریوں کی طرح خاص طرح سر منڈواتے ھیں. کوئی بائیں کندھے کے اوپر سے جنیو ڈالتے ھیں' اور ماتھے پر طرح طرح کے تلک لگاتے ھیں. کوئی کمر کے چاروں طرف زنار باندھتے ھیں. کوئی ٹوپیوں پر ھلال اور ستارا لگاتے ھیں' اور کوئی اپنی گردنوں میں کراس لٹکاتے ھیں. لگ بھگ سب جنتر منتر یا گنڈے تعویز جیسی چیزوں میں بھی وشواس رکھتے ھیں اور انہیں پہنتے ھیں. گہرے وشواس کے کارن ان چیزوں کا ان کے اوپر اثر بھی ھوتا ھے. سب دھرم والوں کی خاص خاص پوشاکیں ھیں. یہ پوشاکیں کہیں قومی یا راشٹری مانی جاتی ھیں اور کہیں دھارمک. یہ سب الگ الگ چیزیں اگر کیول کلا یا سندرتا کی نگاہ سے پہنی جاتیں تاکہ ایک دوسرے کو اچھی لگیں' یا اگر ان کے ساتھ تھوڑا بہت سچا بھکتی بھاؤ بھی ھوتا' تو ان سب رنگ برنگی چیزوں سے آدمی کی سندرتا بڑھتی' نئی نئی چیزیں سب کو اچھی لگتیں' اور ھمارا سماجی

रास्ता दिखा दिया है. ईश्वर हम से और कुछ नहीं चाहता सिवाय इसके कि हम सबके साथ इन्साफ़ करें, सब से प्रेम करें, सब पर दया करें, नम्रता के साथ झुक कर चलें." (माइका)

जो कोई किसी बैल की हत्या करता है उसने मानो एक आदमी की हत्या की." (इसाया)

"ऐ ईश्वर तूने हम से क़ुरबानी करने के लिये और चढ़ावे चढ़ाने के लिये नहीं कहा. तू ने हमारे कान खोल दिये हैं. तुझे आग में आहुतियों और पाप के चढ़ावों की जरूरत नही है. मैं अपने ईश्वर के भजन गाऊंगा और उसे धन्यवाद दूंगा. ईश्वर इससे ख़ुश होगा. सींगों और खुरों वाले बैलों और साडों की हत्या से ख़ुश नहीं होगा." (साम्स, अध्याय 40 और 69)

"जो कोई अपनी ख़ुदी को पाएगा वह अपने असल जीवन को खोदेगा और जो कोई अपनी ख़ुदी को मिटा देगा वह असली जीवन को हासिल करेगा." (इन्जील)

यहां ख़ुदी से मतलब आदमी का छोटा आपा है और असल जीवन से मतलब सबके साथ मिल कर सबका मिला जुला आपा है. वही अल्लाह है.

सूफ़ी कहता है :—

"बेख़ुदी की तरफ़ कोशिश करके बढ़, तब तू अपने असली आपे को पा सकेगा. अल्लाह सब ठीक जानता है. तू अपनी ख़ुदी का ग़ुलाम कब तक बना रहेगा? इस ख़ुदी से बाहर निकल. रीत रिवाज के नापाक जूतों को बाहर उतार कर ईश्वर के मन्दिर में जा और उसके चमत्कार देख."

कबीर साहब ने कहा है :—

"जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं"
प्रेम गली अति सांकरी, वा में दो न समाहिं"

इसी ख़याल को सूफ़ी ने इन शब्दों में जाहिर किया है :—

"हम मोतक़िदे दावए बातिल नहीं होते
सीने में किसी शख़्स के दो दिल नहीं होते"

एक और सूफ़ी ने कहा है :—

"मेरे जुब्बे यानी कुरते के अन्दर सिवा ख़ुदा के कोई और है ही नहीं."

यही ख़याल सूफ़ियों ने फ़ारसी और अरबी के शेरों में जगह जगह और तरह तरह से जाहिर किया है.

क़ुरान में लिखा है :—

"लंय्यनालल्लह लोहूमोहा वला देमावोहा व लाकिंय्यना लोहुत्तक़वा मिनकुम." (क़ुरान, 22—37)

यानी—"क़ुरबानी के जानवरों का ख़ून या गोश्त अल्लाह को नहीं पहुंचता. अल्लाह को सिर्फ़ तुम्हारे दिल का तक़वा पहुंचता है यानी यह कि तुम बुरे कामों से बचे रहो."



راستہ دکھا دیا ھے ۔ ایشور ہم سے اور کچھ نہیں چاھتا سوائے اِس کے کہ ہم سب کے ساتھ اِنصاف کریں، سب سے پریم کریں، سب پر دیا کریں اور نمرتا کے ساتھ جھک کر چلیں ۔" ( مائیکا )

"جو کوئی کسی بیل کی ہتیا کرتا ھے اُس نے مانو ایک آدمی کی ہتیا کی ۔" ( اِسایا )

"اے ایشور تونے ہم سے قربانی کرنے کے لئے اور چڑھاوے چڑھانے کے لئے نہیں کہا ۔ تونے ھمارے کان کھول دیئے ھیں ۔ تجھے آگ میں آھوتیوں اور پاپ کے چڑھاؤں کی ضرورت نہیں ھے ۔ میں اپنے ایشور کے بھجن گاؤنگا اور اُسے دھنیہ باد دونگا ۔ ایشور اِس سے خوش ھوگا ۔ سینگوں اور کھروں والے بیلوں اور سانڈوں کی ہتیا سے خوش نہیں ھوگا ۔"
( سامس، ادھیائے 40 اور 69 )

"جو کوئی اپنی خودی کو پائیگا وہ اپنے اصل جیون کو کھودیگا اور جو کوئی اپنی خودی کو مٹادیگا وہ اصلی جیون کو حاصل کریگا ۔" ( انجیل )

یہاں خودی سے مطلب آدمی کا چھوٹا آپا ھے اور اصل جیون سے مطلب سب کے ساتھ ملکر سب کا ملا جلا آپا ھے ۔ وھی اللہ ھے ۔

صوفی کہتا ھے :—

"بےخودی کی طرف کوشش کرکے بڑھ، تب تو اپنے اصلی آپے کو پاسکیگا ۔ اللہ سب ٹھیک جانتا ھے ۔ تو اپنی خودی کا غلام کب تک بنا رھیگا ؟ اِس خودی سے باھر نکل ۔ ریت رواج کے ناپاک جوتوں کو باھر اُتار کر ایشور کے مندر میں جا اور اُس کے چمتکار دیکھ ۔"

کبیر صاحب نے کہا ھے :—

"جب میں تھا تب ھری نہیں، اب ھری ھیں میں ناھیں
"پریم گلی اَتی سانکری، وامیں دو نہ سماھیں ۔"

اِسی خیال کو صوفی نے اِن شبدوں میں ظاھر کیا ھے :—

"ھم معتقد دعوئ باطل نہیں ہوتے
سینے میں کسی شخص کے دو دل نہیں ھوتے"

ایک اور صوفی نے کہا ھے :—

"میرے جبے یعنی کرتے کے اندر سوا خدا کے کوئی اور ھے ھی نہیں ۔"

یہی خیال صوفیوں نے فارسی اور عربی کے شعروں میں جگہ جگہ اور طرح طرح سے ظاھر کیا ھے ۔

قرآن میں لکھا ھے :—

"لن ینال اللہ لحومہا ولا دماؤھا ولکن ینالہ التقوی منکم"
( قرآن 22—37 )

یعنی—"قربانی کے جانوروں کا خون یا گوشت اللہ کو نہیں پہونچتا ۔ اللہ کو صرف تمہارے دل کا تقوی پہونچتا ھے یعنی یہ کہ تم برے کاموں سے بچے رھو ۔"

है. तुम ग़लत समझते हो. अज का अर्थ वह दाने हैं जिन में अभी अंकुर नहीं फूटे. तुम्हें यज्ञ में बेगुनाह बकरों को नहीं मारना चाहिये. यह भले लोगों का धर्म नहीं है. यह ज़माना नेक काम करने का ज़माना है. तुम्हें जानवरों की हत्या बन्द कर देनी चाहिये."

(महाभारत शान्ति पर्व अध्याय 345)

महात्मा बुद्ध ने इस देश में जो बड़े बड़े धार्मिक सुधार किये उन में एक यह था कि उन्होंने जानवरों की क़ुरबानी को क़रीब क़रीब बन्द करा दिया. मांस का खाना इस देश में वह पूरी तरह बन्द नहीं कर पाए, पर उन्होंने उसे बहुत कम कर दिया और लाखों के जीवन में से बिलकुल मिटा दिया. राजा बिम्बसार के यहां जाकर उन्होंने जानवरों की क़ुरबानी को रोका. जैन धर्म के मानने वालों में भी जानवरों की हिन्सा से और मांस खाने से परहेज़ किया जाता है.

हज़रत ईसा से पहले यहूदियों में भी जानवरों की क़ुरबानी का रिवाज था. यहूदी ईश्वर के नाम पर आग में आहुतियां दिया करते थे और उसी में जानवरों को मार कर डाला करते थे. इन्जील में बार बार और जगह जगह इस रिवाज को बन्द करने का उपदेश दिया गया है. लिखा है :-

"जाओ और बात का असली मतलब समझो. मैं (ईश्वर) दया यानी रहम चाहता हूं, क़ुरबानी नहीं." (मैथ्यु)

"मैं चाहता था तुम्हें ईश्वर का ज्ञान हो. यह नहीं चाहता था कि तुम जानवरों को काट कर आग में उनकी आहुती दो." (होसिया)

"ईश्वर की आज्ञा मानना जानवरों की क़ुरबानी करने से अच्छा है और सच्चाई पर ध्यान देना मेंढे की चरबी से बेहतर है." (साम)

"अल्लाह कहता है—"अगर मुझे भूक लगती तब भी मैं तुझ से न कहता क्योंकि दुनिया और दुनिया की सब चीज़ें मेरी हैं. क्या मैं बकरों का गोश्त खाऊंगा या सांडों का ख़ून पियूंगा ? ईश्वर को धन्यवाद दो और नेक काम करने की अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करो." (साम्स)

"मैं (अल्लाह) बैलों, मेमनों या बकरों के ख़ून से ख़ुश नहीं होता. फ़िज़ूल के चढ़ावे मुझे मत चढ़ाओ. नहीं तो जब तुम मुझसे प्रार्थनाएं करोगे, मैं नहीं सुनूंगा, क्योंकि तुम्हारे हाथ ख़ून में रंगे हुए हैं." (इसाया)

"ईश्वर के सामने अपना टूटा हुआ दिल और अपनी ग़लतियों के लिये पछतावा ले कर जाओ. यही सच्ची क़ुर्बानी है. जो ऐसा करता है ईश्वर उसी को अपनाता है. (साम्स)

"क्या मैं ईश्वर के सामने जले हुए गोश्त की आहुतियां लेकर जाऊंगा ? क्या मैं साल भर के छोटे छोटे बछड़ों का गोश्त लेकर जाऊंगा ? क्या हमारा मालिक सैकड़ों भेड़ों और तेल के दरयाओं से ख़ुश होगा ? उसने हमें नेकी का



ھے . تم غلط سمجھتے ھو . اج کا ارتھ وہ دانے ھیں جن میں ابھی انکر نہیں پھوٹے . تمھیں یگیہ میں بے گناہ بکروں کو نہیں مارنا چاھئے. یہ بھلے لوگوں کا دھرم نہیں ھے . یہ زمانہ نیک کام کرنے کا زمانہ ھے . تمھیں جانوروں کی ھتیا بند کر دینی چاھئے ."

( مہابھارت شانتی پرو آدھیائے 345 )

مہاتما بدھ نے اس دیش میں جو بڑے دھارمک سدھار کئے اُن میں ایک یہ تھا کہ اُنھوں نے جانوروں کی قربانی کو قریب قریب بند کرا دیا . مانس کا کھانا اِس دیش میں وہ پوری طرح بند نہیں کر پائے' پر اُنھوں نے اُسے بہت کم کر دیا اور لاکھوں کے جیون میں سے بالکل مٹا دیا . راجا بمبسار کے یہاں جا کر اُنھوں نے جانوروں کی قربانی کو روکا . جین دھرم کے ماننے والوں میں بھی جانوروں کی ھنسا سے اور مانس کھانے سے پرھیز کیا جاتا ھے .

حضرت عیسیٰ سے پہلے یہودیوں میں بھی جانوروں کی قربانی کا رواج تھا . یہودی ایشور کے نام پر آگ میں آھوتیاں دیا کرتے تھے اور اُسی میں جانوروں کو مار کر ڈالا کرتے تھے . انجیل میں بار بار اور جگہ جگہ اِس رواج کو بند کرنے کا اُپدیش دیا گیا ھے . لکھا ھے :—

" جاؤ اور بات کا اصلی مطلب سمجھو . میں ( ایشور ) دیا یعنی رحم چاھتا ھوں' قربانی نہیں ." ( میتھیئو )

" میں چاھتا تھا تمھیں ایشور کا گیان ھو . یہ نہیں چاھتا تھا کہ تم جانوروں کو کاٹ کو آگ میں اُن کی آھوتی دو ." ( ھوسیا )

" ایشور کی آگیاں ماننا جانوروں کی قربانی کرنے سے اچھا ھے اور سچائی پر دھیان دینا مینڈھے کی چربی سے بہتر ھے ." ( سام )

اللہ کہتا ھے "—اگر مجھے بھوک لگتی تب بھی میں تم سے نہ کہتا کیونکہ دنیا اور دنیا کی سب چیزیں میری ھیں. کیا میں بکروں کا گوشت کھاؤنگا یا سانڈوں کا خون پیونگا ؟ ایشور کو دھنیہ واد دو اور نیک کام کرنے کی اپنی پرتگیاؤں کو پورا کرو ." ( سامس )

"میں ( اللہ ) بیلوں' میمنوں یا بکروں کے خون سے خوش نہیں ھوتا . فضول کے چڑھاوے مجھے مت چڑھاؤ . نہیں تو جب تم مجھ سے پرارتھنائیں کروگے' میں نہیں سنونگا' کیونکہ تمھارے ھاتھ خون میں رنگے ھوئے ھیں ." ( اِسایا )

"ایشور کے سامنے اپنا ٹوٹا ھوا دل اور اپنی غلطیوں کے لئے پچھتاوا لیکر جاؤ . یہی سچی قربانی ھے . جو ایسا کرتا ھے ایشور اُسی کو اپناتا ھے ." ( سامس )

"کیا میں ایشور کے سامنے جلے ھوئے گوشت کی آھوتیاں لیکر جاؤنگا' کیا میں سال بھر کے چھوٹے چھوٹے بچھڑوں کا گوشت لیکر جاؤنگا؟ کیا ھمارا مالک سیکڑوں بھیڑوں اور تیل کے دریاؤں سے خوش ھوگا؟ اس نے ھمیں نیکی کا

करते हैं. हिन्दू जप करते है. मुसलमान अज़कार, ईसाई लितानी. हिन्दू उपवास रखते हैं, मुसलमान रोजा, और ईसाई फ़ास्ट. हिन्दू रतजगा या जागरन करते हैं, मुसलमान शबबेदारी और ईसाई विजिल. सबका मतलब यही है कि दिल अल्लाह पर जमे और अल्लाह दिल में आकर बैठे.

हिन्दू, मुसलमान और यहूदी सब आजकल यह भी मानते हैं कि ख़ास ख़ास मौक़ों पर जानवरों की बलि देने या उनकी क़ुरबानी करने से ईश्वर अल्लाह को खुश किया जा सकता है. सब में जानवरों की क़ुरबानी का रिवाज है. खुशक़िस्मती से सब यह भी मानते हैं कि मान्स खाना कभी कभी छोड़ देने से रूहानी तरक़्क़ी में मदद मिलती है. मुसलमान सूफ़ी इसे 'तर्के हैवानात' कहते हैं और कभी कभी चालीस दिन तक और कोई कोई ज़िन्दगी भर के लिये गोश्त खाना छोड़ देते हैं. सब यह भी मानते हैं कि अपनी ख़ाहिश को रोकना, नफ़्सकुशी यानी तृश्ना त्याग बड़े ऊंचे असूल हैं.

जानवर की क़ुरबानी का असली मतलब यह है कि हमारे अन्दर जो जानवर या दरिन्दा बैठा हुआ है यानी हमारी खुदी, हमारा काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार उन्हें मार कर ख़त्म किया जाय. बकरा, भैंसा, घोड़ा, ऊंट, गाय और आदमी तक की क़ुरबानी इन ही अर्थों में करनी चाहिए. पर उलटा होता यह है कि हमारे अन्दर की वही खुदी अपने को बचाने के लिये क़ुरबानी के असल मतलब को भुला कर शब्दों को चिपट जाती है और अपनी जगह बेगुनाह जानवरों की बलि चढ़ाकर अपनी तसल्ली कर लेती है. सच यह है कि उस ईश्वर अल्लाह को, जो रहमान और रहीम है, जो शिवशंकर है, सिवाय आदमी की खुदी की क़ुरबानी के और कोई क़ुरबानी क़बूल नहीं हो सकती.

वैदिक धर्म में जिसे 'गोमेध' कहते थे उसी को पार्सी धर्म की किताब 'ज़िन्दावस्ता' में 'गोमेज़' कहा गया है. विद्वान लोग इनके दूसरे दूसरे और अच्छे अच्छे अर्थ भी लगाते हैं. पर जो तफ़सील गोमेध की किताबों में दी हुई है वह काफ़ी दर्दनाक है. हिन्दू मन्दिरों में ख़ासकर देवी की मूर्तियों के सामने बकरे, भैंसे, मुरग़े, कबूतर सब की क़ुरबानियां आज भी होती हैं. सब धर्म वालों ने हमें यह समझाने की कोशिश की है कि हमें जल्दी से जल्दी इन रिवाजों से बाहर निकल आना चाहिये.

महाभारत के शान्ति पर्व में लिखा है कि एक बार ऋषियों और देवों में इस बात पर बहस हुई कि यज्ञ में जानवरों का मारना चाहिये या नहीं. आख़ीर में ऋषियों ने फ़ैसला किया कि यज्ञ में जानवरों का ख़ून नहीं बहाना चाहिये. लिखा है कि :—

"वेदों का कहना यह है कि बीजों यानी नाज के दानों से यज्ञ करना चाहिये. 'अज' शब्द के मानी यहां बकरा नहीं

کرتے ہیں۔ ہندو جپ کرتے ہیں، مسلمان اذکار، عیسائی لتانی۔ ہندو اُپواس رکھتے ہیں، مسلمان روزہ اور عیسائی فاسٹ۔ ہندو رتجگا یا جاگرن کرتے ہیں، مسلمان شب بیداری اور عیسائی وجل۔ سب کا مطلب یہی ہے کہ دل اللہ پر جمے اور اللہ دل میں آکر بیٹھے۔

ہندو، مسلمان اور یہودی سب آجکل یہ بھی مانتے ہیں کہ خاص خاص موقعوں پر جانوروں کی بلی دینے یا اُن کی قربانی کرنے سے ایشور اللہ کو خوش کیا جا سکتا ہے۔ سب میں جانوروں کی قربانی کا رواج ہے۔ خوش قسمتی سے سب یہ بھی مانتے ہیں کہ مانس کھانا کبھی کبھی چھوڑ دینے سے روحانی ترقی میں مدد ملتی ہے۔ مسلمان صوفی اسے 'ترک حیوانات' کہتے ہیں اور کبھی کبھی چالیس دن تک اور کوئی کوئی زندگی بھر کے لئے گوشت کھانا چھوڑ دیتے ہیں۔ سب یہ بھی مانتے ہیں کہ اپنی خواہش کو روکنا، نفس کشی یعنی ترشنا تیاگ بڑے اونچے اصول ہیں۔

جانور کی قربانی کا اصلی مطلب یہ ہے کہ ہمارے اندر جو جانور یا درندہ بیٹھا ہوا ہے یعنی ہماری خودی، ہمارا کام، کرودھ، لوبھ، موہ اور اہنکار انہیں مار کر ختم کیا جائے۔ بکرا، بھینسا، گھوڑا، اونٹ، گائے اور آدمی تک کی قربانی ان ہی ارتھوں میں کرنی چاہئے۔ پر الٹا ہوتا یہ ہے کہ ہمارے اندر کی وہی خودی اپنے کو بچانے کے لئے قربانی کے اصل مطلب کو بھلا کر شبدوں کو چمٹ جاتی ہے اور اپنی جگہ بے گناہ جانوروں کی بلی چڑھا کر اپنی تسلی کر لیتی ہے۔ سچ یہ ہے کہ اُس ایشور اللہ کو جو رحمان اور رحیم ہے، جو شیو شنکر ہے سوائے آدمی کی خودی کی قربانی کے اور کوئی قربانی قبول نہیں ہوسکتی۔

ویدک دھرم میں جسے 'گومیدھ' کہتے تھے اُسی کو پارسی دھرم کی کتاب 'ژنداوستا' میں 'گومیز' کہا گیا ہے۔ ودوان لوگ اِن کے دوسرے دوسرے اور اچھے اچھے ارتھ بھی لگاتے ہیں۔ پر جو تفصیل گومیدھ کی کتابوں میں دی ہوئی ہے وہ کافی دردناک ہے۔ ہندو مندروں میں خاصکر دیوی کی مورتیوں کے سامنے بکرے، بھینسے، مرغے، کبوتر سب کی قربانیاں آج بھی ہوتی ہیں۔ سب دھرم والوں نے ہمیں یہ سمجھانے کی کوشش کی ہے کہ ہمیں جلدی سے جلدی اِن رواجوں سے باہر نکل آنا چاہئے۔

مہابھارت کے شانتی پرو میں لکھا ہے کہ ایک بار رشیوں اور دیوؤں میں اِس بات پر بحث ہوئی کہ یگیہ میں جانوروں کو مارنا چاہئے یا نہیں۔ آخر میں رشیوں نے فیصلہ کیا کہ یگیہ میں جانوروں کا خون نہیں بہانا چاہئے۔ لکھا ہے کہ:—

" ویدوں کا کہنا یہ ہے کہ بیجوں یعنی ناج کے دانوں سے یگیہ کرنا چاہئے۔ 'اج' شبد کے معنی یہاں بکرا نہیں

सुख को दुगना, चौगुना कर देंगे और सब को सब की अच्छी अच्छी बातों से सीख मिल सकेगी. आज की दुनिया में अलग अलग मुल्कों के शासकों और राजकाजी नेताओं का मिलना जितना जरूरी है उतना ही धार्मिक नेताओं का मिलना ज़रूरी है. दुनिया एक होती जा रही है. मिलना हमें है ही, फिर चाहे नफ़रतों, दंगों और जंगों के लिये अलग अलग संगठन, तनज़ीमें और पैक्ट करके एक दूसरे से टकराएं और एक दूसरे को मिटाएं और चाहे प्रेम, एकता, अमन और शान्ति के नाम पर एक दूसरे को गले लगाएं. पहला रास्ता बरबादी और मौत का रास्ता है और पाप है. दूसरा रास्ता ख़ुशहाली और जिन्दगी का रास्ता है और यही सच्चा धर्म है. सबके भले का और सब को बराबर बराबर जिस्मानी और रूहानी ख़ूराक पहुंचाने का यही एक रास्ता है.

सब धर्मों में अपने अपने ढंग से संस्कार, सुन्नत, दीक्षा, और बपतिस्मा भी होते हैं. मुसलमान इन्हें 'तक़दीस' कहते हैं, हिन्दू 'उपनयन', और पारसी 'नवजोत'. मतलब सबका एक है, दिल को साफ़ करना और ऊंचा ले जाना. हिन्दू धर्म की किताबों में लिखा है कि संस्कार के जरिये आदमी एक तरह फिर से पैदा होता है. हज़रत ईसा इसीलिये कहा करते थे—"फिर से बच्चों की तरह हो जाओ." इनमें से कुछ तरीक़े अभी तक बहुत अच्छे तरीक़े हैं. नहाने, धोने, वज़ू और पाकी पर इन में बहुत ज़ोर दिया जाता है. पाकी या सफ़ाई पर सबसे ज्यादा ज़ोर शायद पारसी धर्म में दिया गया है. पारसी किताब वेन्देदाद में लिखा है :—

"ज़िन्दगी से उतर कर पाकीज़गी आदमी के लिये सबसे अधिक भलाई की चीज़ है. यह पाकीज़गी उसमें आती है जो अपने को पाक विचारों, पाक शब्दों, और पाक कामों से लगातार पाक करता रहता है."

ईसाइयों में एक कहावत है—"ख़ुदा की अच्छाइयों को अपने अन्दर लाने की कोशिश से उतर कर अगर कोई चीज़ है तो वह पाकीज़गी यानी शुद्धता है."

कहा जाता है कि किसी नौजवान ईसाई को पादरी बनाते वक़्त उससे पूछा गया कि—"पाकीज़गी ख़ुदा की अच्छाइयों को अपने अन्दर लाने की कोशिश के ठीक पहले आनी चाहिये या ठीक बाद में ?" उसने जवाब दिया—"पहले भी और बाद में भी." उसकी बात बिलकुल ठीक थी. पाकीज़गी यानी शुद्धता के इसी ऊंचे असूल को पिछले ज़माने के हिन्दू इस बुरी हद तक खींच कर ले गए कि उस से अपने में हज़ारों जातें और उपजातें बना डालीं और छुआछूत जैसी बुरी चीज़ चला दी.

भगवान को याद करते वक़्त मन को एक तरफ़ लगाने के लिये सब धर्मों वाले माला या तसबीह या रोज़री इस्तेमाल



سکھ کو دوگنا چوگنا کر دینگے اور سب کو سب کی اچھی اچھی باتوں سے سیکھ مل سکے گی. آج کی دنیا میں الگ الگ ملکوں کے شاسکوں اور راج کاجی نیتاؤں کا ملنا جتنا ضروری ہے اُتنا ہی دھارمک نیتاؤں کا ملنا ضروری ہے. دنیا ایک ہوتی جا رہی ہے. ملنا ہمیں ہے ہی، پھر چاہے نفرتوں، دنگوں اور جنگوں کے لئے الگ الگ سنگٹھن، تنظیمیں اور پیکٹ کر کے ایک دوسرے سے ٹکرائیں اور ایک دوسرے کو مٹائیں اور چاہے پریم، ایکتا، امن اور شانتی کے نام پر ایک دوسرے کو گلے لگائیں. پہلا راستہ بربادی اور موت کا راستہ ہے اور پاپ ہے، دوسرا راستہ خوشحالی اور زندگی کا راستہ ہے اور یہی سچا دھرم ہے. سب کے بھلے کا اور سب کو برابر برابر جسمانی اور روحانی خوراک پہونچانے کا یہی ایک راستہ ہے.

سب دھرموں میں اپنے اپنے ڈھنگ سے سنسکار، سنت، دیکشا اور بپتسمہ بھی ہوتے ہیں. مسلمان انہیں 'تقدیس' کہتے ہیں، ہندو 'اُپ نین' اور پارسی 'نوجوت'. مطلب سب کا ایک ہے، دل کو صاف کرنا اور اونچا لے جانا. ہندو دھرم کی کتابوں میں لکھا ہے کہ سنسکار کے ذریعہ آدمی ایک طرح پھر سے پیدا ہوتا ہے. حضرت عیسیٰ اسی لئے کہا کرتے تھے—"پھر سے بچوں کی طرح ہو جاؤ." ان میں سے کچھ طریقے ابھی تک بہت اچھے طریقے ہیں. نہانے، دھونے، وضو اور پاکی پر ان میں بہت زور دیا جاتا ہے. پاکی یا صفائی پر سب سے زیادہ زور شاید پارسی دھرم میں دیا گیا ہے. پارسی کتاب 'وینديداد' میں لکھا ہے :—

"زندگی سے اُتر کر پاکیزگی آدمی کے لئے سب سے ادھک بھلائی کی چیز ہے. یہ پاکیزگی اُس میں آتی ہے جو اپنے کو پاک وچاروں، پاک شبدوں اور پاک کاموں سے لگاتار پاک کرتا رہتا ہے."

عیسائیوں میں ایک کہاوت ہے—"خدا کی اچھائیوں کو اپنے اندر لانے کی کوشش سے اُتر کر اگر کوئی چیز ہے تو وہ پاکیزگی یعنی شدھتا ہے."

کہا جاتا ہے کہ کسی نوجوان عیسائی کو پادری بناتے وقت اُس سے پوچھا گیا کہ—"پاکیزگی خدا کی اچھائیوں کو اپنے اندر لانے کی کوشش کے ٹھیک پہلے آنی چاہئے یا ٹھیک بعد میں؟" اُس نے جواب دیا—"پہلے بھی اور بعد میں بھی." اُس کی بات بالکل ٹھیک تھی. پاکیزگی یعنی شدھتا کے اِسی اونچے اصول کو پچھلے زمانے کے ہندو اس بری حد تک کھینچ کر لے گئے کہ اُس سے اپنے میں ہزاروں جاتیں اور اُپ جاتیں بنا ڈالیں اور چھوا چھوت جیسی بری چیز چلا دی.

بھگوان کو یاد کرتے وقت من کو ایک طرف لگانے کے لئے سب دھرموں والے مالا یا تسبیح یا روزری استعمال

भी बहुत दूर चले जाते हैं और प्रेम और मेल मिलाप की जगह नफ़रत और लड़ाई का कारन बन जाते हैं. जमाने के साथ साथ इन त्योहारों का रंग रूप भी कभी कभी इतना बदल जाता है कि त्योहार की असलियत में और उसके आजकल के मनाने के ढंग में कोई नाता ही नहीं रह जाता.

यहां एक और बात की तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी है. लगभग हर ज़माने और हर देश में शायरी, नाटक, ड्रामा, नाचना, गाना, बजाना, चित्रकारी, पच्चीकारी, मीनाकारी, मकान बनाना, बाग़ लगाना, कपड़े बनाना, शहर बसाना, जैसी कलाओं और कारीगरियों की जितनी उन्नति मज़हब से हुई है उतनी और किसी चीज़ से नहीं हुई. दुनिया के बड़े से बड़े हुनरमंदों और कलावन्तों ने अधिकतर मज़हब से ही नई नई सूझ बूझ पाई है और शक्ति हासिल की है. दुनिया भर में कला और हुनर के अच्छे से अच्छे नमूने मज़हब के मैदान में ही मिलते हैं. यह बात है भी क़ुदरती. सच्चा मज़हब वही है जो आदमी के अन्दर की ऊंची से ऊंची भावनाओं और उमंगों को जगावे, उजागर करे और पूरा करे. अच्छे से अच्छे हुनर और कला इन्हीं भावनाओं से पैदा होती हैं. सबके भले की भावना इन्हीं भावनाओं में से एक और शायद सबसे ऊंची भावना है. इस भावना ने दुनिया के कलावंतों को सबसे अधिक आगे बढ़ाया है. मज़हब का भी यही निचोड़ है. इस तरह मज़हब लोगों को इन्द्रिय सुख देने का भी बड़ा साधन होता है. इसी तस्वीर का दूसरा रुख़ यह है कि जब जब पंडे, पुरोहितों, मुल्ला, पादरियों की नासमझी या नालायक़ी की वजह से मज़हब में गिरावट आई है या लोगों की माद्दा-परस्ती और ऐशपरस्ती ने धर्म को नीचे घसीटा है तब तब कला और हुनर में भी भद्दापन, भोंडापन, जंगलीपन, ग़ैरियत, नफ़रत और अन्याय दिखाई देने लगे हैं. जो चीज़ आदमी के दिल के अन्दर झाड़ू देकर उसे साफ़ करेगी वही उस घर को रोशन करेगी और वही आदमी की भावनाओं, कला और दस्तकारियों को ऊंचा ले जाएगी.

आजकल हमारे अधिकतर त्योहार और उनको मनाने के ढंग हम में एक दूसरे से अलहदगी और नफ़रत पैदा करते हैं. यहां तक कि यह त्योहार मारकाट, ख़ून ख़राबियों और बदले की भावनाओं की जड़ बन रहे हैं. तमाम योरप में पिछले हज़ार बरस तक अधिकतर यही हाल रहा है. हिन्दुस्तान में आज भी बहुत दर्जे तक यही हाल है. अगर अलग अलग मज़हबों के अगुआ अपने अपने दिमाग़ों को साफ़ कर सकें और अपने दिलों को ऊंचा ले जा सकें तो उन्हें चाहिये कि एक साथ मिल बैठकर प्रेम के साथ सब धर्मों के त्योहारों में से ख़ास ख़ास को चुन लें और फिर अपने अपने धर्म के मानने वालों को सलाह दें कि उन त्योहारों को सब मिलकर मनाएं. इस तरह हर धर्म वाले अपने और दूसरों के सबके



بھی بہت دور چلے جاتے ھیں اور پریم اور میل ملاپ کی جگہ نفرت اور لڑائی کا کارن بن جاتے ھیں ۔ زمانے کے ساتھ ساتھ ان تیوھاروں کا رنگ روپ بھی کبھی کبھی اتنا بدل جاتا ھے کہ تیوھار کی اصلیت میں اور اس کے آجکل کے منانے کے ڈھنگ میں کوئی ناتا ھی نہیں رہ جاتا ۔

یہاں ایک اور بات کی طرف دھیان دینا ضروری ھے ۔ لگ بھگ ھر زمانے اور ھر دیش میں شاعری، ناٹک، ڈراما، ناچنا، گانا، بجانا، چترکاری، پچی کاری، مینا کاری، مکان بنانا، باغ لگانا، کپڑے بنانا، شہر بسانا، جیسی کلاؤں اور کاریگریوں کی جتنی اُنتی مذھب سے ھوئی ھے اُتنی اور کسی چیز سے نہیں ھوئی ۔ دنیا کے بڑے سے بڑے ھنرمندوں اور کلاونتوں نے ادھک تر مذھب سے ھی نئی نئی سوجھ بوجھ پائی ھے اور شکتی حاصل کی ھے ۔ دنیا بھر میں کلا اور ھنر کے اچھے سے اچھے نمونے مذھب کے میدان میں ھی ملتے ھیں ۔ یہ بات ھے بھی قدرتی ۔ سچا مذھب وھی ھے جو آدمی کے اندر کی اونچی سے اونچی بھاوناؤں اور اُمنگوں کو جگاوے، اُجاگر کرے اور پورا کرے ۔ اچھے سے اچھے ھنر اور کلا اُنھیں بھاوناؤں سے پیدا ھوتی ھیں ۔ سب کے بھلے کی بھاونا اِنھیں بھاوناؤں میں سے ایک اور شاید سب سے اونچی بھاونا ھے ۔ اِس بھاونا نے دنیا کے کلاونتوں کو سب سے ادھک آگے بڑھایا ھے ۔ مذھب کا بھی یہی نچوڑ ھے ۔ اِس طرح مذھب لوگوں کو اندریہ سکھ دینے کا بھی بڑا سادھن ھوتا ھے ۔ اِسی تصویر کا دوسرا رخ یہ ھے کہ جب جب پنڈے، پروھتوں، ملا، پادریوں کی ناسمجھی یا نالائقی کی وجہ سے مذھب میں گراوٹ آئی ھے یا لوگوں کی مادہ‌پرستی اور عیش‌پرستی نے دھرم کو نیچے گھسیٹا ھے تب تب کلا اور ھنر میں بھی بھدا پن، غیریت، نفرت اور انیائے دکھائی دینے لگے ھیں ۔ جو چیز آدمی کے دل کے اندر جھاڑو دے کر اُسے صاف کرے گی وھی اُس گھر کو روشن کرے گی اور وھی آدمی کی بھاوناؤں، کلا اور دستکاریوں کو اونچا لے جائے گی ۔

آجکل ھمارے ادھک تر تیوھار اور اُن کو منانے کے ڈھنگ ھم میں ایک دوسرے سے علیحدگی اور نفرت پیدا کرتے ھیں ۔ یہاں تک کہ یہ تیوھار مار کاٹ، خون خرابیوں اور بدلے کی بھاوناؤں کی جڑ بن رھے ھیں ۔ تمام یورپ میں پچھلے ھزار برس تک ادھک تر یہی حال رھا ھے ۔ ھندستان میں آج بھی بہت درجہ تک یہی حال ھے ۔ اگر الگ الگ مذھبوں کے اگوا اپنے اپنے دماغوں کو صاف کر سکیں اور اپنے دلوں کو اونچا لے جا سکیں تو اُنھیں چاھئے کہ ایک ساتھ مل بیٹھکر پریم کے ساتھ سب دھرموں کے تیوھاروں میں سے خاص خاص کو چن لیں اور پھر اپنے اپنے دھرم کے ماننے والوں کو صلاح دیں کہ اُن تیوھاروں کو سب ملکر منائیں۔ اِس طرح ھر دھرم والے اپنے اور دوسروں کے سب کے

नया हिन्द

نیا ہند

जिल्द 17 नवम्बर सन '54 नम्बर 5

نمبر 5 نومبر سن '54 جلد 17

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ھے، ھندستانی بولی،
'نیا ھند' پہنچے گا گھر - گھر لئے پریم کی جھولی ۔

# धर्मों के अलग अलग रीत रिवाज

( डाक्टर भगवान दास )

दुनिया के सब धर्मों में जिस तरह बुनियादी सच्चाइयां या सदाचार के नियम एक से हैं उसी तरह ऊपर के रीत रिवाज, खेल तमाशे, खुशी और रंज के त्योहार भी लगभग एक से होते हैं. हिन्दुओं में सत्यनारायन की कथा होती है तो मुसलमानों में मौलूद शरीफ. मुसलमान मुहर्रम में अपने खास महापुरुषों को याद करते हैं तो हिन्दू पितृपक्ष में अपने पुरखों को याद करते हैं. वह इकादशी का व्रत रखते हैं तो यह रमज़ान में रोज़े रखते हैं. हिन्दुओं का चांद्रायन व्रत तो बिलकुल रमज़ान से मिलता हुआ है. उनका रामलीला का जुलूस निकलता है तो उनके दुलदुल और ताज़िया निकलते हैं. ईसाइयों और दूसरे धर्म वालों के भी इसी तरह के खास खास त्योहार हैं. अठवारे के दिनों में भी किसी ने किसी को पाक मान रखा है तो किसी ने किसी को वैदिक धर्म वाले आम तौर पर चांद की हर पहली, आठवीं और ग्यारहवीं तारीख़ को पाक मानते हैं. यहूदी सनीचर को, मुसलमान जुमा को, ईसाई इतवार को. कहीं कहीं हिन्दू मंगल को खास दिन मानते हैं. यही इनके अलग अलग आराम करने के दिन समझे जाते हैं.

आदमी के दिल की मांग सब जगह कुदरती तौर पर एक ही सी होती है. वह कभी खेल तमाशा चाहता है, कभी हंसना, कभी रोना और कभी अपने ईश्वर अल्लाह की याद में खाने पीने को भी भूल जाना चाहता है. अन्दर की इस मांग का पूरा करने के लिये तरीक़े अलग अलग हैं, पर बात वही है. अफ़सोस केवल इतना है कि यह खेल तमाशे और रीत रिवाज अधिकतर अपने धर्म के बुनियादी असूलों से

# دھرموں کے الگ الگ ریت رواج

( ڈاکٹر بھگوان داس )

دنیا کے سب دھرموں میں جس طرح بنیادی سچائیاں یا سداچار کے نیم ایک سے ھیں اُسی طرح اُوپر کے ریت رواج، کھیل تماشے، خوشی اور رنج کے تیوھار بھی لگ بھگ ایک سے ھوتے ھیں ۔ ھندوؤں میں ستیہ نارائن کی کتھا ھوتی ھے تو مسلمانوں میں مولود شریف ۔ مسلمان محرم میں اپنے خاص مہاپرشوں کو یاد کرتے ھیں تو ھندو پتر پکش میں اپنے پرکھوں کو یاد کرتے ھیں۔ وہ اِکادشی کو برت رکھتے ھیں تو یہ رمضان میں روزے رکھتے ھیں ۔ ھندؤں کا چاندرائن برت تو بالکل رمضان سے ملتا ھوا ھے ۔ اُن کا رام لیلا کا جلوس نکلتا ھے تو اُن کے دلدل اور تازیہ نکلتے ھیں ۔ عیسائیوں اور دوسرے دھرم والوں کے بھی اِسی طرح کے خاص خاص تیوھار ھیں ۔ اٹھوارے کے دنوں میں بھی کسی نے کسی کو پاک مان رکھا ھے تو کسی نے کسی کو ۔ ویدک دھرم والے عام طور پر چاند کی ھر پہلی، آٹھویں اور گیارھویں تاریخ کو پاک مانتے ھیں ۔ یہودی سنیچر کو، مسلمان جمعہ کو، عیسائی اتوار کو ۔ کہیں کہیں ھندو منگل کو خاص دن مانتے ھیں ۔ یہی اِن کے الگ الگ آرام کرنے کے دن سمجھے جاتے ھیں ۔

آدمی کے دل کی مانگ سب جگہ قدرتی طور پر ایک ھی سی ھوتی ھے۔ وہ کبھی کھیل تماشا چاھتا ھے، کبھی ھنسنا کبھی رونا اور کبھی اپنے ایشور اللہ کی یاد میں کھانے پینے کو بھی بھول جانا چاھتا ھے ۔ اندر کی اس مانگ کو پورا کرنے کے لئے طریقے الگ الگ ھیں، پر بات وھی ھے ۔ افسوس کیول اتنا ھے کہ یہ کھیل تماشے اور ریت رواج ادھکتر اپنے دھرم کے بنیادی اصولوں سے

नया हिन्द — نیا ہند

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी — ہندستانی کلچر سوسائٹی

का — کا

## माहवारी परचा — ماھواری پرچا

### नवम्बर 1954 نومبر


| क्या किस से | सफ़ा صفحہ | کیا کس سے |
|---|---|---|
| 1. धर्मों के अलग अलग रीत रिवाज—डाक्टर भगवानदास | 193 | 1. دھرموں کے الگ الگ ریت رواج—ڈاکٹر بھگوان داس |
| 2. जीने का सलीक़ा—जोश मलीहाबादी | 202 | 2. جینے کا سلیقہ—جوش ملیحابادی |
| 3. हिन्दी उर्दू काव्य की समानताएं—स्वामी कृश्नानन्द सोख़ता | 205 | 3. ھندی اُردو کاویہ کی سمانتائیں—سوامی کرشنانند سوختہ |
| 4. सेवा धर्म—विश्वम्भरनाथ पांडे | 211 | 4. سیوا دھرم—وشومبھر ناتھ پانڈے |
| 5. हिन्दुस्तानी कलचर—चरन सरन नाज़ | 213 | 5. ھندستانی کلچر—چرن سرن ناز |
| 6. पुनर्मिलन ! ( कहानी ) — लेखक — शी-कू; अनुवादक—कामेश्वर अग्रवाल | 226 | 6. پنر ملن ! ( کہانی )—لیکھک شی- کو؛ انوادک—کامیشوراگروال |
| 7. हमारी राय— | 237 | 7. ھماری رائے— |
| बाबू नित्यानन्द चैटरजी—सुन्दरलाल; श्री रफ़ी अहमद किदवाई—सुन्दरलाल; भारत सरकार और हमारे ग़रीब बुनकर—सुन्दरलाल; अमरीका में मिस्टर मोहम्मद अली और राज-कुमारी अमृत कौर—सुन्दरलाल; एक नेक फ़्रांसीसी नेता—सुन्दरलाल; पंचायतों की आज़ादी—सुरेशराम भाई; "एकदम निकम्मी" —सुरेशराम भाई; जवाहरलाल जी और हिन्दुस्तान का भविश्य—सुरेशराम भाई. | | بابو نتیا نند چیٹر جی—سندر لال؛ شری رفیع احمد کدوائی—سندر لال؛ بھارت سرکار اور ھمارے غریب بنکر—سندرلال؛ امریکہ میں مسٹر محمد علی اور راج کماری امرت کور—سندرلال؛ ایک نیک فرانسیسی نیتا—سندرلال؛ پنچایتوں کی آزادی—سریش رام بھائی؛ "ایک دم نکمی"—سریش رام بھائی؛ جواھر لال جی اور ھندستان کا بھوشیہ—سریش رام بھائی . |
| 8. कुछ किताबें | 261 | 8. کچھ کتابیں |



क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल.
एक परचा—दस आने.

قیمت—ھندستان میں چھ روپیہ سال، باھر دس روپیہ سال،
ایک پرچہ—دس آنے .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद–3

مینیجر
'نیا ھند'
145، متھی گنج، الٰہ آباد-3

# नया हिन्द — نیا ہند



एडीटर – ताराचंद, भगवानदीन, सैयद महमूद, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، سید محمود، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی



## इस नम्बर के ख़ास लेख

★ धर्मों के अलग अलग रीत रिवाज—डाक्टर भगवानदास
★ हिन्दी उर्दू काव्य की समानताएं—स्वामी कृश्नानन्द सोख़्ता
★ सेवा धर्म—विश्वम्भर नाथ पांडे
★ हिन्दुस्तानी कलचर—चरन सरन नाज़

## हमारी राय

★ भारत सरकार और हमारे ग़रीब बुनकर—सुन्दरलाल;
★ अमरीका में मिस्टर मोहम्मद अली और राजकुमारी अमृत कौर—सुन्दरलाल
★ पंचायतों की आज़ादी—सुरेशराम भाई
★ जवाहरलाल जी और हिन्दुस्तान का भविष्य—सुरेशराम भाई

## اِس نمبر کے خاص لیکھ

★ دھرموں کے الگ الگ ریت رواج—ڈاکٹر بھگوان داس
★ ھندی اُردو کاویہ کی سمانتائیں—سوامی کرشنانند سوختہ
★ سیوا دھرم—وشومبھر ناتھ پانڈے
★ ھندستانی کلچر—چرن سرن ناز

## ھماری رائے

★ بھارت سرکار اور ھمارے غریب بنکر—سندرلال
★ امریکہ میں مسٹر محمد علی اور راج کماری امرت کور—سندرلال
★ پنچایتوں کی آزادی—سریش رام بھائی
★ جواھر لال جی اور ھندستان کا بھوشیہ—سریش رام بھائی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ھندستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

नवम्बर 1954 نومبر

क़ीमत दस आना — قیمت دس آنہ

# गीता और क़ुरान

## लेखक–पंडित सुन्दरलाल

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

## हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

## महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

## पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइं उन का दर्दनाक आंखों देखा बनन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

## बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

---

**मिलने का पता—**

**मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.**

# گیتا اور قرآن

## لیکھک—پنڈت سندر لال

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے ۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے ۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ ۔

## ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے ۔

سو صفحے کی کتاب ۔ قیمت صرف بارہ آنے ۔

## مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذہبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا ۔

قیمت بارہ آنے ۔

## پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن ۔ اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں ۔ قیمت چار آنے ۔

## بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے ۔ قیمت صرف دو آنے ۔

---

**ملنے کا پتہ—**

**مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' اِلہ آباد**

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

---

# भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ. 'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

# फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दोरुपया.

## विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है.

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

# هندستانی کلچر سوسائٹی کي کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی . پوری جانکاری کے لئے لکھئے .

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا .

---

# بھارت کا ودھان

پورا ھندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ھوا . 'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزي سے انوادت .

ھر بھارت واسی کا فرض ھے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ھے اُسے اچھی طرح سمجھے . بھارت کے ھر گھر میں اس پستک کا رھنا ضروری ھے .

آسان بامحاورہ بھاشا . رایل اٹھ پیجی بڑا سائز . لگ بھگ چار سو پنّے . کپڑے کی سندر جلد . قیمت کیول ساڑھے سات روپئے .

# فرقہ بندی پر باپو

سمپادک — شری شریکرشن داس

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا .

بھارت کے آزاد ھونے پر یہ اور بھی ضروری ھو گیا ھے کہ ھر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اِس زھر کو اپنے اندر سے صاف کرے .

سندر جلد . اچھا کاغذ . دو سو صفحے . قیمت دو روپیہ .

## ونوبا کا سندیش

لیکھک — سریش رامبھائی

ایک شبد — مہاتما بھگوان دین

ونوبا جي کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ھے . اِس چھوٹي سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ھوا اور اِس کا مقصد کیا ھے .

پہلا ایڈیشن ھاتھوں ھاتھ نکل گیا . یہ دوسرا ایڈیشن ھے . صفحے 25 دام کیول دو آنے .

ملنے کا پتہ —

مینیجر' 'نیا ھند' 145, مٹھي گنج' الہ آباد.

को उठाना पड़ेगा और हिम्मत के साथ मैदान में आना होगा. अगर हम यह ख़्याल करेंगे कि हमारे बुज़ुर्ग चचा ताऊ जो सियासी आज़ादी में अपने को मिटा दिये वही नई लड़ाई में भी आगे बढ़ेंगे तो यह ज़्यादती होगी. यह उम्मीद करना कि वह ऐसा समरस समाज बनाने में मदद देंगे जिसमें कोई किसी को नोचता न हो और जो शासन मुक्त भी हो तो यह नाइन्साफ़ी होगी. क्योंकि अक्सर सिपाही दो लड़ाइयों में नहीं लड़ते हैं. एक लड़ाई के सिपाही दूसरी में कारगर नहीं हुआ करते. हमको अपने उन बुज़ुर्गों का एहसानमन्द होना चाहिये कि सियासी ग़ुलामी से मुल्क को मुक्त करके आर्थिक और सामाजिक आज़ादी के लिये रास्ता साफ़ कर दिया. अगर उनमें से कुछ हमारे साथ आते हैं तो सर आंखों पर. अगर नहीं आते तो कोई शिकायत नहीं होना चाहिये और हमें अकेले ही चलना होगा. और जब एक रहबर सामने आ गया है तब तो हमें आगे बढ़ने में हिचकना ही नहीं चाहिये. अपने भूदान, सम्पत्तिदान, श्रमदान, बुद्धिदान, और प्रेमदान के प्रोग्रामों के ज़रिये सन्त विनोबा ने भूदान यज्ञ मूलक ग्राम उद्योग प्रधान अहिंसात्मक क्रान्ति के लिये बिगुल बजा दिया है. वह भाई बहन जो नई मान्यताओं में, अवाम की ताक़त में, जन शक्ति में, प्रेम बल में यक़ीन करते हैं वह इस लड़ाई में शामिल होंगे. इस नई क्रान्ति के लिये एक दो नहीं, सौ पचास नहीं, हज़ारों और लाखों की तादाद में, हर गांव पीछे पांच या छः लोगों की ज़रूरत होगी. ख़ुशी की बात है कि उन्होंने आना शुरू कर दिया. हमें उम्मीद है कि वह और अधिक तादाद में आयेंगे और झंडा लेकर आगे बढ़ेंगे. मालिक से दुआ है कि नई लड़ाई के नए सिपाहियों को हिम्मत, निडरता और सच्चाई दे ताकि वह क़दम बक़दम आगे बढ़ते चले जायें और मुल्क के प्रति इस वक़्त अपना फ़र्ज़ अदा कर सकें !

16. 8. '54 —सुरेशराम भाई



کو اُٹھانا پڑے گا اور همت کے ساتھ میدان میں آنا هوگا . اگر هم یه خیال کرینگے که همارے بزرگ چچا تاؤ جوسیاسی آزادی میں اپنے کو مٹا دئے وهی نئی لڑائی میں بھی آگے بڑھینگے تو یه زیادتی هوگی . یه اُمید کرنا که وه ایسا سمرس سماج بنانے میں مدد دینگے جس میں کوئی کسی کو نوچتا نه هو اور جو شاسن مکت بھی هو تو یه ناانصافی هوگی . کیونکه اکثر سپاهی دو لڑائیوں میں نهیں لڑتے هیں . ایک لڑائی کے سپاهی دوسری میں کارگر نهیں هوا کرتے . هم کو اپنے اِن بزرگوں کا احسان‌مند هونا چاهئے که سیاسی غلامی سے ملک کو مکت کر کے آرتھک اور سماجک آزادی کے لئے راسته صاف کردیا . اگر اِن میں سے کچھ همارے ساتھ آتے هیں تو سر آنکھوں پر . اگر نهیں آتے تو کوئی شکایت نهیں هونا چاهئے اور همیں اکیلے هی چلنا هوگا . اور جب ایک رهبر سامنے آگیا هے تب تو همیں آگے بڑھنے میں هچکنا هی نهیں چاهئے . اپنے بھودان' سمپتی دان' شرم دان' بدھی دان اور پریم دان کے پروگراموں کے ذریعه' سنت ونوبا نے بھودان یگیه مولک گرام اُدیوگ پردهان اهنساتمک کرانتی کے لئے بجا دیا هے . وه بھائی بهن جو نئی مانیهتاؤں میں' عوام کی طاقت میں' جن شکتی میں' پریم بل میں یقین کرتے هیں وه اِس لڑائی میں شامل هونگے . اِس نئی کرانتی کے لئے ایک دو نهیں' سو پچاس نهیں' هزاروں اور لاکھوں کی تعداد میں' هر گاؤں پیچھے پانچ یا چھ لوگوں کی ضرورت هوگی. خوشی کی بات هے که اُنهوں نے آنا شروع کر دیا. همیں اُمید هے که وه اور ادهک تعداد میں آئینگے اور جھنڈا لے کر آگے بڑھینگے. مالک سے دعا هے که نئی لڑائی کے نئے سپاهیوں کو همت' نڈرتا اور سچائی دے تاکه وه قدم به قدم آگے بڑھتے چلےجائیں اور ملک کے پرتی اِس وقت اپنا فرض ادا کر سکیں !

16 . 8 . '54 —سریش رام‌بھائی

त्याग करेंगे ? कहा जाता है कि सिवाय अपनी जंजीरों के उनके पास त्याग करने को और कुछ है ही नहीं. लेकिन नहीं, ऐसा नहीं है. एक चीज जितनी दुखिया या ग़रीब के पास है उतनी ही बड़े से बड़े अमीर या हाकिम या राजा के पास है. वह है मालिकी का ख़्याल. अगर अमीर को अपने चार लाख रुपये या चार हज़ार एकड़ ज़मीन की मालकियत का हर वक़्त ध्यान रहता है तो ग़रीब को अपने चार पैसे या चार हाथ ज़मीन का हर दम ख़्याल बना रहता है. दोनों को अपनी मिलकियत का एहसास रहता है. इस तरह गोकि एक अमीर है और दूसरा ग़रीब, दोनों एक ही दर्जे में आ जाते हैं. दोनों को ज़्यादा पैसा या ज़्यादा ज़मीन की मालकियत की तमन्ना रहती है. यही वजह है कि बड़े कहलाये जाने वाले लोग छोटे कहलाये जाने वालों को लूटते हैं या एक देहाती की भाशा में कहीं तो "नोचते" हैं हालांकि मेहनत करने की ताक़त व लायक़ी बड़ों के मुक़ाबिले छोटों में कहीं ज़्यादा होती है. इसलिये अगर हम अपना ख़ास और सच्चा स्वराज हासिल करना चाहते हैं तो मालिकी के ख़्याल को अपने अन्दर से क़तई निकालना होगा. हमको अब यह क़ुबूल करना चाहिये कि हमारे पास जो कुछ भी है उसका मालिक वही एक परवर्दिगार, सृर्जनहार है और वह हमें महज़ थाती के तौर पर इस्तेमाल करने की ख़ातिर मिली है. लिहाज़ा ग़रीबों को मैदान में आगे बढ़ कर ऐलान करना होगा कि हमारे पास जो ज़मीन है वह कुल गांव की है और अब आपस में 'मैं-मेरी,-तू-तेरी' नहीं चलेगी. इतना होते ही गांव की हवा में फ़र्क़ पड़ जायेगा और ग़रीबों या छोटों के जबरदस्त लोक-मत के आगे अमीर या बड़े पल भर भी नहीं टिक सकेंगे. वह भी नई सूरत को देख कर अपनी ज़मीन या दौलत की मालिकी समाज के सिपुर्द कर देंगे. ऐसी हालत पैदा हो जाने पर गांव की कुल जमीन गांव के लोग आपस में मिल बैठ कर बांट लेंगे और जितनी जिसकी ज़रूरत होगी उसको मिलेगी. तब मालिकी गांव की होगी और जोतने वाला अपनी जमीन पर थाती के तौर पर खेती करेगा. तब गांव में हर एक के पास रोज़गार होगा और गांव के लोग अपनी ज़रूरत की चीजें जैसे कपड़ा, गुड़, तेल, जूता, दवा दारू वग़ैरा अपने आप बना लेंगे. तालीम भी वह अपने ढंग से अपने बच्चों को देंगे और उनकी अपनी अदालत होगी और अपनी ही शान्ति व सत्याग्रह सेना होगी. गांव गांव न कोई बेज़मीन रहेगा न बेरोज़गार. सब मिल कर काम करेंगे, मिलकर आराम करेंगे और मिलकर ख़ुशी मनाएंगे. इस तरह नई लड़ाई से समाज के अन्दर नई मान्यतायें क़ायम होंगी और ग्राम राज के लिये रास्ता खुलेगा.

अब सवाल यह है कि नई लड़ाई में शरीक कौन होगा ? इसके लिये सिपाही कहां से मिलेंगे ? यह काम नौजवानों



تیاگ کرینگے ؟ کہا جاتا ھے کہ سوائے اپنی زنجیروں کے اُن کے پاس تیاگ کرنے کو اور کچھ ھے ھی نہیں ۔ لیکن نہیں' ایسا نہیں ھے ۔ ایک چیز جتنی دکھیا یا غریب کے پاس ھے اتنی ھی بڑے سے بڑے امیر یا حاکم یا راجا کے پاس ھے ۔ وہ ھے مالکی کا خیال ۔ اگر امیر کو اپنے چار لاکھ روپئے یا چار ھزار ایکڑ زمین کی مالکیت کا ھر وقت دھیان رھتا ھے تو غریب کو اپنے چار پیسے یا چار ھاتھ زمین کا ھر دم خیال بنا رھتا ھے. دونوں کو اپنی اپنی ملکیت کا احساس رھتا ھے. اس طرح گوکہ ایک امیر ھے اور دوسرا غریب' دونوں ایک ھی درجہ میں آ جاتے ھیں ۔ دونوں کو زیادہ پیسہ یا زیادہ زمین کی مالکیت کی تمنا رھتی ھے ۔ یہی وجہ ھے کہ بڑے کہلائے جانے والے لوگ چھوٹے کہلائے جانے والوں کو لوٹتے ھیں یا ایک دیہاتی کی بھاشا میں کہیں تو " نوچتے " ھیں حالانکہ محنت کرنے کی طاقت و لائقی بڑوں کے مقابلہ چھوٹوں میں کہیں زیادہ ھوتی ھے ۔ اس لئے اگر ھم اپنا خاص اور سچا سوراج حاصل کرنا چاھتے ھیں تو مالکی کے خیال کو اپنے اندر سے قطعئی نکالنا ھوگا ۔ ھم کو اب یہ قبول کرنا چاھئے کہ ھمارے پاس جو کچھ بھی ھے اس کا مالک وھی ایک پروردگار' سرجن ھار ھے اور وہ ھمیں محض تھاتی کے طور پر استعمال کرنے کی خاطر ملی ھے ۔ لہذا غریبوں کو میدان میں آگے بڑھ کر اعلان کرنا ھوگا کہ ھمارے پاس جو زمین ھے وہ کل گاؤں کی ھے اور اب آپس میں ' میں ۔ میری' تو ۔ تیری ' نہیں چلے گی ۔ اتنا ھوتے ھی گاؤں کی ھوا میں فرق پڑ جائے گا اور غریبوں یا چھوٹوں کے زبردست لوک مت کے آگے امیر یا بڑے پل بھر بھی نہیں ٹک سکینگے ۔ وہ بھی نئی صورت کو دیکھکر اپنی زمین یا دولت کی مالکی سماج کے سپرد کر دینگے ۔ ایسی حالت پیدا ھو جانے پر گاؤں کی کل زمین گاؤں کے لوگ آپس میں مل بیٹھ کر بانٹ لینگے اور جتنی جس کی ضرورت ھوگی اس کو ملے گی ۔ تب مالکی گاؤں کی ھوگی اور جوتنے والا اپنی زمین پر تھاتی کے طور پر کھیتی کرے گا ۔ تب گاؤں میں ھر ایک کے پاس روزگار ھوگا اور گاؤں کے لوگ اپنی ضرورت کی چیزیں جیسے کپڑا' گڑ' تیل' جوتا' دوا دارو وغیرہ اپنے آپ بنا لینگے ۔ تعلیم بھی وہ اپنے ڈھنگ سے اپنے بچوں کو دینگے اور اُن کی اپنی عدالت ھوگی اور اپنا ھی شانتی و ستیاگرہ سینا ھوگی ۔ گاؤں گاؤں نہ کوئی بے زمین رھے گا نہ بے روزگار ۔ سب مل کر کام کرینگے' مل کر آرام کرینگے اور مل کر خوشی منائینگے ۔ اس طرح نئی لڑائی سے سماج کے اندر نئی مانیہ تائیں قائم ھونگی اور گرام راج کے لئے راستہ کھلیگا ۔

اب سوال یہ ھے کہ نئی لڑائی میں شریک کون ھوگا ؟ اس کے لئے سپاہی کہاں سے ملینگے ؟ یہ کام نوجوانوں

**आज़ादी की लड़ाई ख़त्म हुई और दूसरी लड़ाई, आर्थिक और समाजी आज़ादी की लड़ाई, शुरू होनी चाहिये.**

**अब सवाल** यह है कि उस नई लड़ाई की बुनियाद क्या हो ? आम जनता इस स्वराज को पाने के लिये किस तरह आगे बढ़े ? ज़ाहिर है कि अगर हम लोग हथियार या डंडे का सहारा लेते हैं तो ज़रूर हारेंगे. क्योंकि जिनके हाथ में ताक़त आज है और जिनके ख़िलाफ़ हमें लड़ना है उनके पास एक से एक ख़ौफ़नाक हथियार हैं ( और उन्हें दूसरों से मिल भी सकते हैं ) कि जिनका हमें ख़्वाब में भी ख़्याल नहीं आ सकता. अगर हम क़ानून या एसेम्बली व पार्ल्यामेंट का सहारा लेते हैं तब भी हारेंगे. क्योंकि जिनके ख़िलाफ़ हमें लड़ना है क़ानून आज पूरी तरह उनका ताबेदार है और उनकी मर्ज़ी पर चलता है. इस वजह से दुखिया ग़रीबों के सामने बस एक ही रास्ता रह जाता है—वही एक रास्ता कि अपने बल, अपनी क़ुव्वत से लड़ें. और मालिक भी उन्हीं की मदद करता है जो अपनी मदद करते हैं. इसलिये सच्चा स्वराज पाने का एक ही ज़रिया है—अपनी शक्ति या जन शक्ति मुहैया की जाये.

उसके बाद सवाल यह उठता है कि आख़िर जन शक्ति कैसे मुहैया हो ? उसका संगठन किस तरह किया जाये ? कौन नहीं जानता कि हिन्दुस्तान की वह जनता जो अपने सर का पसीना एड़ी तक बहाती है उसकी मेहनत पर चन्द दौलतमन्द ज़िन्दा हैं और जिन लाखों देहातों में वह लोग रहते हैं उनको चूसकर चन्द शहर जगमगाते हैं. फिर भी हम सब दुखी हैं. इसकी वजह क्या है ? ज़रा ग़ौर करने पर पता चलेगा कि हम मेहनत तो करते हैं पर दिलों में फ़र्क़ है, एक दूसरे से ज़्यादा दूर होते चले जा रहे हैं. आपस में प्यार बहुत कम है और दिन दिन कम होता जा रहा है. ख़ान्दान बंट रहे हैं. इस प्रेम की कमी की वजह से हमारी ज़िन्दगी वैसी ही नीरस हो रही है जैसे वह नमक जो नमकीन न रह गया हो. इसलिये ज़रूरत इस बात की है कि हम एक दूसरे के नज़दीक आयें और दुख सुख में साथी बनें. जहां प्रेम है, वहां सब कुछ है. जहां प्रेम नहीं वहां कुछ भी नहीं. लेकिन प्रेम कैसे हासिल हो ? प्रेम की फ़सल कैसे उगाई जाये ? मगर यह सवाल इतना टेढ़ा नहीं है क्योंकि रात दिन हमें प्रेम की मिसालें मिलती हैं. मां अपने बच्चे से प्यार करती है. सो किस तरह करती है ? अपने को भूल कर, अपने को तरह तरह की तकलीफ़ें देकर, अपने आप कुछ त्याग करके. उसकी यही चाह रहती है कि बच्चे की ख़ातिर अपने को पूरा मिटा ही दूं. इससे हम यह सबक़ सीखते हैं कि प्रेम वहीं है जहां त्याग है, क़ुर्बानी है. इसलिये जितना ज़्यादा त्याग एक दूसरे के लिये करेंगे उतना ही आपस में प्रेम बढ़ेगा.

इस पर कोई पूछेंगे कि ग़रीब के पास है ही क्या जो



آزادی کی لڑائی ختم هوئی اور دوسری لڑائی' آرتھک اور سماجی آزادی کی لڑائی' شروع هونی چاهئے.

اب سوال یه هے که اس نئی لڑائی کی بنیاد کیا هو؟ عام جنتا اس سوراج کو پانے کے لئے کس طرح آگے بڑھے؟ ظاهر هے که اگر هم لوگ هتھیار یا ڈنڈے کا سهارا لیتے هیں تو ضرور هارینگے . کیونکه جن کے هاتھ میں طاقت آج هے اور جن کے خلاف همیں لڑنا هے ان کے پاس ایک سے ایک خوفناک هتھیار هیں ( اور انهیں دوسروں سے مل بھی سکتے هیں ) که جن کا همیں خواب میں بھی خیال نهیں آسکتا . اگر هم قانون یا اسیمبلی و پارلیامنٹ کا سهارا لیتے هیں تب بھی هارینگے . کیونکه جن کے خلاف همیں لڑنا هے قانون آج پوری طرح ان کا تابعدار هے اور ان کی مرضی پر چلتا هے . اس وجه سے دکھیا غریبوں کے سامنے بس ایک هی راسته ره جاتا هے—وهی ایک راسته که اپنے بل' اپنی قوت سے لڑیں . اور مالک هی انهیں کی مدد کرتا هے جو اپنی مدد کرتے هیں . اس لئے سچا سوراج پانے کا ایک هی ذریعه هے—اپنی شکتی یا جن شکتی مهیا کی جائے .

اس کے بعد سوال یه اُٹھتا هے که آخر جن شکتی کیسے مهیا هو؟ اس کا سنگٹھن کس طرح کیا جائے؟ کون نهیں جانتا که هندستان کی وه جنتا جو اپنے سر کا پسینه ایڑی تک بهاتی هے اس کی محنت پر چند دولت مند زنده هیں اور جن لاکھوں دیهاتوں میں وه لوگ رهتے هیں ان کو چوس کر چند شهر جگمگاتے هیں . پھر بھی هم سب دکھی هیں . اس کی وجه کیا هے؟ ذرا غور کرنے پر پته چلیگا که هم محنت تو کرتے هیں پر دلوں میں فرق هے' ایک دوسرے سے زیاده دور هوتے چلے جارهے هیں . آپس میں پیار بهت کم هے اور دن دن کم هوتا جارها هے . خاندان بنٹ رهے هیں. اس پریم کی کمی کی وجه سے هماری زندگی ویسی هی نیرس هورهی هے جیسے وه نمک جو نمکین نه ره گیا هو. اِس لئے ضرورت اِس بات کی هے که هم ایک دوسرے کے نزدیک آئیں اور دکھ سکھ میں ساتھی بنیں . جهاں پریم هے' وهاں سب کچھ هے . جهاں پریم نهیں وهاں کچھ بھی نهیں . لیکن پریم کیسے حاصل هو؟ پریم کی فصل کیسے اُگائی جائے؟ مگر یه سوال اتنا ٹیڑھا نهیں هے کیونکه رات دن همیں پریم کی مثالیں ملتی هیں . ماں اپنے بچے سے پیار کرتی هے . سو کس طرح کرتی هے؟ اپنے کو بھول کر' اپنے کو طرح طرح کی تکلیفیں دے کر' اپنے آپ کچھ تیاگ کر کے . اِس کی یهی چاه رهتی هے که بچے کی خاطر اپنے کو پورا مٹا هی دوں . اِس سے هم یه سبق سیکھتے هیں که پریم وهیں هے جهاں تیاگ هے' قربانی هے . اس لئے هم جتنا زیاده تیاگ ایک دوسرے کے لئے کرینگے اتنا هی آپس میں پریم بڑھے گا .

اس پر کوئی پوچھینگے که غریب کے پاس هے هی کیا جو

यह मौक़ा मिला है कि अपनी मर्जी के मुताबिक़, जनता की खुदमुख्तार ताक़त के आधार पर, अपने मुल्क का निर्मान कर सकें. लेकिन आजादी के बाद सात साल बीतने के बावजूद हिन्दुस्तान के आम रहने वालों को आजादी का कोई खास मजा नहीं आया, जिन्दगी में कोई खास लज्जत नहीं पैदा हुई और ज्यादातर तो पहले के मुक़ाबिले ज्यादा दुखी हैं. इसकी वजह भी है. वह यह है कि आजादी के साथ वह इन्क़लाब नहीं आया जो कि आना चाहिये था. कुछ हद तक यह सही है कि हमने अहिंसा की ताक़त से स्वराज लिया. मगर यह कुछ ही हद तक सही है क्योंकि अगर हमारे स्वराज के पीछे सोलह आने अहिंसा ही होती तो आजादी के बाद जो हम सब में सुस्ती और बैर भाव वग़ैरा दोश हैं वह न होते. इसलिये यह आजादी महज़ हकूमत के बदलाव की ही एक शकल है. इसको इन्क़लाब नहीं कहते. कहीं ज्यादा बड़ी वजह यह है कि आजादी के पहले समाज में जो मान्यतायें थीं वही आज भी चालू हैं. जैसे ऊंचा ओहदा, ऊंचा मकान, ऊंचा महल, ऊंची जात, ऊंची इज्जत, ऊंची डिग्री, ऊंची तनख्वाह, हाथ काम से ऊंची नफ़रत वग़ैरा. जाहिर है कि अगर यह नाप हमारे समाज में बदस्तूर बने रहते हैं तो शराफ़त या इन्सानियत के दर्जे में हम और हमारा मुल्क और भी गिरेंगे और हिन्दुस्तान नाम का यह क़िला धड़ाम से गिरेगा. इसका यह मतलब नहीं कि हम आजादी की कोई क़ीमत नहीं करते. हम फिर अर्ज करेंगे कि पिछले दो हजार बरस के हमारे इतिहास के अन्दर यह सबसे बड़ी चीज है. लेकिन इसके यह मानी नहीं कि अपने मुल्क में जो आज असलियत है उससे आंख बचाई जाये. हमारे समाज में भंगी की हालत देखिये, हमेशा के जैसा नीचा और गुलाम है. आज भी हरिजन और ब्राह्मन साथ साथ अक्सर नहीं बैठते. इन हरिजनों को हमारे मन्दिर में जगह नहीं है, पर वह मन्दिर भी गन्दगी के नमूने हैं और उन मन्दिरों के ठेकेदार पन्डों को आत्म ज्ञान कितना है या नेक चलन कितने हैं यह तो भगवान ही जानता होगा. या फिर हमारे घरों में अपनी बहनों की हालत देखिये. जो एक जमाने में देवी थी आज वह चूल्हे की दासी बनी हुई है और इस तरह हमारे समाज का आधा हिस्सा पस्त पड़ा है. यह चीजें अगर बनी रहती हैं और दुखिया का दुख नहीं दूर होता है तो हमारा ख्याल है कि अपनी आजादी को भी हम ज्यादा दिन क़ायम नहीं रख सकते. इसलिये एक बुनियादी इन्क़लाब की सख्त दरकार है. दूसरे लफ़्जों में हमारे यहां के ग़रीब से ग़रीब और दुखी से दुखी आदमी को आर्थिक और समाजी आजादी हासिल होनी चाहिये. गांव गांव को अपने विकास व तरक़्क़ी की आजादी होनी चाहिये, यानी ग्राम राज क़ायम होना चाहिये. यह काम जल्दी से जल्दी होना चाहिये वर्ना मुल्क ख़तरे में है. कहने का मक़सद यह है कि एक लड़ाई यानी सियासी



یہ موقع ملا ہے کہ اپنی مرضی کے مطابق، جنتا کی خود مختار طاقت کے آدھار پر، اپنے ملک کا نرمان کرسکیں ۔ لیکن آزادی کے بعد سات سال بیتنے کے باوجود ہندستان کے عام رہنے والوں کو آزادی کا کوئی خاص مزا نہیں آیا، زندگی میں کوئی خاص لذت نہیں پیدا ہوئی اور زیادہتر تو پہلے کے مقابلہ زیادہ دکھی ہیں ۔ اِسکی وجہ بھی ہے ۔ وہ یہ ہے کہ آزادی کے ساتھ وہ انقلاب نہیں آیا جو کہ آنا چاہئے تھا ۔ کچھ حدتک یہ صحیح ہے کہ ہم نے اہنسا کی طاقت سے سوراج لیا ۔ مگر یہ کچھ ہی حدتک صحیح ہے کیونکہ اگر ہمارے سوراج کے پیچھے سولہ آنے اہنسا ہی ہوتی تو آزادی کے بعد جو ہم سب میں سستی اور بیربھاؤ وغیرہ دوش ہیں وہ نہ ہوتے ۔ اس لئے یہ آزادی محض حکومت کے بدلاؤ کی ہی ایک شکل ہے ۔ اس کو انقلاب نہیں کہتے ۔ کہیں زیادہ بڑی وجہ یہ ہے کہ آزادی کے پہلے سماج میں جو مانیہتائیں تھیں وہی آج بھی چالو ہیں ۔ جیسے اُونچا عہدہ، اُونچا مکان، اُونچا محل، اُونچی ذات، اُونچی عزت، اُونچی ڈگری، اُونچی تنخواہ، ہاتھ کے کام سے اُونچی نفرت وغیرہ ۔ ظاہر ہے کہ اگر یہ ناپ ہمارے سماج میں بدستور بنے رہتے ہیں تو شرافت یا انسانیت کے درجہ میں ہم اور ہمارا ملک اور بھی گرینگے اور ہندستان نام کا یہ قلعہ دھڑام سے گریگا ۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ ہم آزادی کی کوئی قیمت نہیں کرتے ۔ ہم پھر عرض کرینگے کہ پچھلے دو ہزار برس کے ہمارے اتہاس کے اندر یہ سب سے بڑی چیز ہے ۔ لیکن اس کے یہ معنی نہیں کہ اپنے ملک میں جو آج اصلیت ہے اس سے آنکھ بچائی جائے ۔ ہمارے سماج میں بھنگی کی حالت دیکھئے، ہمیشہ کے جیسا نیچا اور غلام ہے ۔ آج بھی ہریجن اور براہمن ساتھ ساتھ اکثر نہیں بیٹھتے ۔ ان ہریجنوں کو ہمارے مندر میں جگہ نہیں ہے، پر وہ مندر بھی گندگی کے نمونے ہیں اور ان مندروں کے ٹھیکیدار پنڈوں کو آتم گیان کتنا ہے یا نیک چلن کتنے ہیں یہ تو بھگوان ہی جانتا ہوگا ۔ یا پھر ہمارے گھروں میں اپنی بہنوں کی حالت دیکھئے ۔ جو ایک زمانہ میں دیوی تھی آج وہ چولھے کی داسی بنی ہوئی ہے اور اس طرح ہمارے سماج کا آدھا حصہ پست پڑا ہے ۔ یہ چیزیں اگر بنی رہتی ہیں اور دکھیا کا دکھ نہیں دور ہوتا ہے تو ہمارا خیال ہے کہ اپنی آزادی کو بھی ہم زیادہ دن قائم نہیں رکھ سکتے ۔ اس لئے ایک بنیادی انقلاب کی سخت درکار ہے ۔ دوسرے لفظوں میں ہمارے یہاں کے غریب سے غریب اور دکھی سے دکھی آدمی کو آرتھک اور سماجی آزادی حاصل ہونی چاہئے ۔ گاؤں گاؤں کو اپنے وکاس و ترقی کی آزادی ہونی چاہئے، یعنی گرام راج قائم ہونا چاہئے ۔ یہ کام جلدی سے جلدی ہونا چاہئے ورنہ ملک خطرہ میں ہے ۔ کہنے کا مقصد یہ ہے کہ ایک لڑائی یعنی سیاسی

आई हुई है, लेकिन दक्खिन बिहार में सूखा पड़ रहा है. पानी का यह बंटवारा एक दम ग़लत है. लेकिन यह ग़लत इसी वजह से है कि जमीन का बंटवारा आपने ग़लत कर रखा है. मुझे गांव की कुल जमीन दान में दे डालिये और जमीन का दोबारा बंटवारा कीजिये. जिस तरह प्रेम से घर में रहते हैं इस तरह यह सब कीजिये. तब आप देखेंगे कि पानी का भी बंटवारा ठीक तरह से हो जायेगा. इसी तरह उन्होंने एक जगह यह कहा कि "बाढ़ का जो संकट आया है इसे बर्दान में बदल सकते हैं. यह संकट भगवान ने आपकी जांच के लिये भेजा है. वह यह बताते हैं कि अपने पास जो भी है इसे इस वक़्त दूसरों के लिये लुटाना चाहिये." उन्होंने ख़ास तौर से अपील व्यापारी समाज से की और उससे कहा कि चीजों के दाम न बढ़ाइये.

बाढ़ के बाद जो आफ़तें आती हैं उनकी तरफ़ नेताओं या कारकुनों का ध्यान कम जाता है. बरसात के बाद तरह तरह की बीमारियां और दूसरी मुसीबतें आ घेरती हैं. अपने निजी अनुभव की रोशनी में बाबा ने यह सुझाव पेश किये.

1. पीने के लिये उबले हुए पानी का इस्तेमाल कीजिये.

2. बहुत पके या सड़े हुए फल और ख़राब तरकारियां न खाइये.

3. बाज़ार की मिठाई और गन्दी चीज़ न खाइये.

4. गांवों को साफ़ सुथरा रखिये और गांवों के सब लोग, छोटे बड़े, अमीर ग़रीब, विद्यार्थी शिक्षक, मिलकर फावड़ा, कुदाली और टोकरी लेकर लग जाइये.

एक तरफ़ हमारे नेता या अख़बार हैं जो बुलन्द आवाज़ से करोड़ों रुपये की मांग दिल्ली सरकार से कर रहे हैं, दूसरी तरफ़ विनोबा जी इनका ही एक हिस्सा बन कर गांव के सभी रहने वालों से प्रेम से रहने और अपनी मदद ख़ुद करने की अपील कर रहे हैं. पहली बात के मुक़ाबले में दूसरी बात पागलपन जैसी मालूम होगी. लेकिन वक़्त जल्द ही यह साबित कर देने वाला है कि अपनी मदद ख़ुद करे बग़ैर कोई दूसरा रास्ता नहीं है. यानी जमीन की निजी मालकी ख़तम होकर गांव की मालकी होनी चाहिये और गांव के धन्धों को, जिनका मरकज़ चर्खा है, दोबारा चलाना चाहिए. इसके अलावा कोई दूसरी सूरत नहीं है. हम चाहते हैं कि हमारे सार्वजनिक कार्यकरता इस चीज़ पर शान्ति के साथ ग़ौर करें और इन्सानियत की तरफ़ क़दम बढ़ायें.

28. 9. '54 —सुरेशराम भाई

## नई लड़ाई नये सिपाही

आज से सात साल पहले हमने जो आज़ादी हासिल की वह हमारे इतिहास की एक बेमिसाल घटना है. शायद दो हज़ार बरस के बाद हम हिन्दुस्तान वालों को पहली बार



آئی ہوئی ہے، لیکن دکھن بہار میں سوکھا پڑ رہا ہے. پانی کا یہ بنٹوارہ ایکدم غلط ہے. لیکن یہ غلط اسی وجہ سے ہے کہ زمین کا بنٹوارہ آپ نے غلط کر رکھا ہے. مجھے گاؤں کی کل زمین دان میں دے ڈالئے اور زمین کا دوبارہ بنٹوارہ کیجئے. جس طرح پریم سے گھر میں رہتے ہیں اس طرح یہ سب کیجئے. تب آپ دیکھینگے کہ پانی کا بھی بنٹوارہ ٹھیک طرح سے ہوجائیگا." اسی طرح انہوں نے ایک جگہ یہ کہا کہ "باڑھ کا جو سنکٹ آیا ہے اسے بردان میں بدل سکتے ہیں. یہ سنکٹ بھگوان نے آپ کی جانچ کے لئے بھیجا ہے. وہ یہ بتاتے ہیں کہ اپنے پاس جو بھی ہے اسے اس وقت دوسروں کے لئے لٹانا چاہئے." انہوں نے خاص طور سے اپیل ویاپاری سماج سے کی اور اس سے کہا کہ چیزوں کے دام نہ بڑھائیے.

باڑھ کے بعد جو آفتیں آتی ہیں ان کی طرف نیتاؤں یا کارکنوں کا دھیان کم جاتا ہے. برسات کے بعد طرح طرح کی بیماریاں اور دوسری مصیبتیں آگھیرتی ہیں. اپنے نجی انوبھو کی روشنی میں بابا نے یہ سجھاؤ پیش کئے:

1. پینے کے لئے اُبلے ہوئے پانی کا استعمال کیجئے.

2. بہت پکے یا سڑے ہوئے پھل اور خراب ترکاریاں نہ کھائیے.

3. بازار کی مٹھائی اور گندی چیز نہ کھائیے.

4. گاؤں کو صاف ستھرا رکھئے اور گاؤں کے سب لوگ، چھوٹے بڑے، امیر غریب، ودیارتھی شکشک، مل کر پھاوڑا، کدالی اور ٹوکری لےکر لگ جائیے.

ایک طرف ہمارے نیتا یا اخبار ہیں جو بلند آواز سے کروڑوں روپیہ کی مانگ دلی سرکار سے کر رہے ہیں، دوسری طرف ونوبا جی ان کا ہی ایک حصہ بن کر گاؤں کے سبھی رہنے والوں سے پریم سے رہنے اور اپنی مدد خود کرنے کی اپیل کررہے ہیں. پہلی بات کے مقابلہ میں دوسری بات پاگل پن جیسی معلوم ہوگی. لیکن وقت جلد ہی یہ ثابت کردینے والا ہے کہ اپنی مدد خود کرے بغیر کوئی دوسرا راستہ نہیں ہے. یعنی زمین کی نجی مالکی ختم ہوکر گاؤں کی مالکی ہونی چاہئے اور گاؤں کے دھندھوں کو، جن کا مرکز چرخہ ہے، دوبارہ چلانا چاہئے. اس کے علاوہ کوئی دوسری صورت نہیں ہے. ہم چاہتے ہیں کہ ہمارے سارو جنک کاریہ کرتا اس چیز پر شانتی کے ساتھ غور کریں اور اِنسانیت کی طرف قدم بڑھائیں.

28 . 9 . '54 —سریش رام بھائی.

## نئی لڑائی نئے سپاہی

آج سے سات سال پہلے ہم نے جو آزادی حاصل کی وہ ہمارے اتہاس کی ایک بےمثال گھٹنا ہے. شاید دو ہزار برس کے بعد ہم ہندستان والوں کو پہلی بار

कि यह कांग्रेसी सरकार निकम्मी है और कोई मदद नहीं करना चाहती. इसके ख़िलाफ़ कांग्रेसवाले ऐसी तस्वीर पेश करते थे मानो सरकार ने इस वक़्त जो ख़िदमत की है वह या उससे ज्यादा ख़िदमत न कभी किसी ने की और न की जा सकती है. लेकिन जब अकेले बैठते तो सत्य क़बूल करते थे. एक कांग्रेसी भाई ने क़बूल किया कि यह चुनावपूर्व मौसम है और इसका हमें फ़ायदा उठाना चाहिये. दूसरे भाई ने (वह कांग्रेसी M. L. A. थे) कहा कि मदद क्या है अपनी हस्ती साबित करने का एक ज़रिया है. सौ बातों की एक बात यह है कि इतनी भयानक बाढ़ आने पर भी हमारे नेता या सियासी कारकुन अपने भेद भाव नहीं दूर कर सके और अपनी आदत से बाज न आये. नहीं, नहीं, उन्होंने मुल्क का कुछ ख्याल न करके इससे भी अपना निजी फ़ायदा उठाना मुनासिब समझा.

इस बाढ़ से हम जिन नतीजों पर पहुंचे वह यह हैं:

(1) लोगों में एक दूसरे के दुख का एहसास बहुत कम है.

(2) उनके पास करने को कोई काम नहीं है.

(3) उन्हें हैरत होती है कि भला मिलकर भी इस आफ़त का सामना किया जा सकेगा.

सन्त विनोबा को यह सब देख कर बहुत ही तकलीफ़ हुई. लेकिन उनकी प्रार्थना सभाओं में जो इन्तहाई भीड़ होती थी, पांच हजार से कम नहीं और कहीं कहीं बीस हजार तक, इससे पता चलता था कि जनता इनका संदेश सुनना चाहती है. हर जगह उन्होंने एक चीज़ पर ज़ोर दिया :

> "गांवों के अन्दर सब लोग एक ख़ान्दान या कुनबे की तरह रहिये. ख़ाली मत बैठिये. कम से कम चर्ख़ ही चलाइये. जिनको कम नक़सान हुआ है वह उनकी मदद करें जिनको ज्यादा नक़सान हुआ है."

उन्होने अपने पांव पर खड़े होने और एक दूसरे की मदद करने की अपील की. उन्होंने इस अमर सच की उन्हें याद दिलाई कि बांटने पर दुख घटता है और सुख बढ़ता है. उनके कहने का सार यही था—"अपने सुख दुख में एक हो जाओ." इसलिये उन्होंने मांग की कि मुझे अब पूरे के पूरे गांव दान में दीजिये. "बाढ़ से यह साफ़ पता चल जाता है कि सारी भूमि गोपाल की है." और एक दिन एक ज़मींदार साहब बाबा के पास कुछ गुस्से में आ कर बोले—"बड़े दुख की बात है कि जब बाढ़ से हम मरे जा रहे हैं तभी आप दान मांग रहे हैं." बाबा ने शान्ति के साथ जवाब दिया—"जी हां. इस वजह से दान मांग रहा हूं क्योंकि आप मरे जा रहे हैं. क्या इस दुनिया से जाने के पहले आप दान कर के नहीं जाना चाहते?" एक दूसरी जगह पर बाबा ने कहा—"उत्तर बिहार में बाढ़



کہ یہ کانگریسی سرکار نکمی ھے اور کوئی مدد نہیں کرنا چاھتی . اس کے خلاف کانگریس والے ایسی تصویر پیش کرتے تھے مانو سرکار نے اس وقت جو خدمت کی ھے وہ یا اس سے زیادہ خدمت نہ کبھی کسی نے کی اور نہ کی جاسکتی ھے . لیکن جب اکیلے بیٹھتے تو ستیہ قبول کرتے تھے . ایک کانگریسی بھائی نے قبول کیا کہ یہ چناؤ - پورو موسم ھے اور اس کا ھمیں فائدہ اُٹھانا چاھئیے . دوسرے بھائی نے ( وہ کانگریسی M.L.A. تھے ) کہا کہ مدد کیا ھے اپنی ھستی ثابت کرنے کا ایک ذریعہ ھے . سو باتوں کی ایک بات یہ ھے کہ اتنی بھیانک باڑھ آنے پر بھی ھمارے نیتا یا سیاسی کارکن اپنے بھیدبھاؤ نہیں دور کرسکے اور اپنی عادت سے باز نہ آئے . نہیں، نہیں، انہوں نے ملک کا کچھ خیال نہ کرکے اس سے بھی اپنا نجی فائدہ اُٹھانا مناسب سمجھا .

اس باڑھ سے ھم جن نتیجوں پر پہونچے وہ یہ ھیں :

(1) لوگوں میں ایک دوسرے کے دکھ کا احساس بہت کم ھے .

(2) ان کے پاس کرنے کو کوئی کام نہیں ھے .

(3) انہیں حیرت ھوتی ھے کہ بھلا مل کر بھی اس آفت کا سامنا کیا جاسکیگا .

سنت ونوبا کو یہ سب دیکھکر بہت ھی تکلیف ھوئی . لیکن ان کی پرارتھنا سبھاؤں میں جو انتہائی بھیڑ ھوتی تھی، پانچ ھزار سے کم نہیں اور کہیں کہیں بیس ھزار تک، اس سے پتہ چلتا تھا کہ جنتا ان کا سندیش سننا چاھتی ھے . ھر جگہ انہوں نے ایک چیز پر زور دیا :

> "گاؤں کے اندر سب لوگ ایک خاندان یا کنبہ کی طرح رھیئے. خالی مت بیٹھئے . کم سے کم چرخہ ھی چلائیے . جن کو کم نقصان ھوا ھے وہ ان کی مدد کریں جن کو زیادہ نقصان ھوا ھے ."

انہوں نے اپنے پاؤں پر کھڑے ھونے اور ایک دوسرے کی مدد کرنے کی اپیل کی . انہوں نے اس امر سچ کی انہیں یاد دلائی کہ بانٹنے پر دکھ گھٹتا ھے اور سکھ بڑھتا ھے . ان کے کہنے کا سار یہی تھا—"اپنے سکھ دکھ میں ایک ھو جاؤ ." اس لئے انہوں نے مانگ کی کہ مجھے اب پورے کے پورے گاؤں دان میں دیجئے. "باڑھ سے یہ صاف پتہ چل جاتا ھے کہ ساری بھومی گوپال کی ھے." اور ایک دن ایک زمیندار صاحب بابا کے پاس کچھ غصہ میں آکر بولے—"بڑے دکھ کی بات ھے کہ جب باڑھ سے ھم مرے جارھے ھیں تبھی آپ دان مانگ رھے ھیں ." بابا نے شانتی کے ساتھ جواب دیا—"جی ھاں . اس وجہ سے دان مانگ رھا ھوں کیونکہ آپ مرے جارھے ھیں . کیا اس دنیا سے جانے کے پہلے آپ دان کرکے نہیں جانا چاھتے؟" ایک دوسری جگہ پر بابا نے کہا—"اگر بہار میں باڑھ

दिये हैं. पर हमारे पास तो कोई ऐसा औज़ार है नहीं जिसके ज़रिये से यह नुक़सान नापा जा सके. हम तो सिर्फ़ उन गांव के बारे में कह सकते हैं जो हमने ख़ुद देखे. लिहाज़ा एक गांव के बारे में नुक़सान की तफ़सील दिखला कर सब्र करेंगे. संघ्य बुज़ुर्ग नाम का गांव नरहन रेलवे स्टेशन के नज़दीक है. इसका रक़बा 1700 बीघा, आबादी क़रीब 6000, घर या ख़ान्दान क़रीब एक हज़ार. इस गांव में तक़रीबन तीन-चौथाई मकान गिरे थे और आधी फ़सल बरबाद हुई थी. साधारन हिसाब से, फ़सल का नुक़सान क़रीब 76,000 रुपये का हुआ. लेकिन इस सब से ज़्यादा नुक़सान की बात यह थी कि लोग घरों पर एक दम बेकार बैठे थे. औरतें तो अपने घरलू काम में लगी थीं, मगर मर्द 100 फ़ी सदी ही हाथ पर हाथ धरे ख़ाली वक़्त गुज़ार रहे थे. उनको देखकर ऐसा लगता था कि भगवान ने उनके लिये हाथ बिला ज़रूरत के दिये हैं. उनके पास करने को क़तई कोई काम नहीं था. मानो गांव का हर आदमी एक ऐसे मन्दिर का पुजारी था जिसमें तीन देवता थे—सुस्ती, बेकारी और पर-निन्दा (ग़ैर की बुराई). सब से ज़्यादा तकलीफ़दह बात यह थी कि किसी को अपने पड़ोसी के दुख का एहसास नहीं था. अक्सर ऐसा दिखलाई पड़ा कि जो अच्छी तरह खाते पीते, मज़ा करते थे, उनके ठाठ पहले के जैसे ही जारी थे और ग़रीब पड़ोसी जिसका मकान गिर गया है, सामान बेकार हो गया है, उसकी तरफ़ उनका ध्यान ज़रा भी नहीं जाता था. एक जगह हमने देखा कि एक बुढ़िया जिसका मकान गिर गया है, रो रही थी. पर कोई उसकी मदद को नहीं आता था.

बाढ़ज़दा लोगों को जो मदद दी गई है उसके बारे में तो जितना कहा जाए थोड़ा है. नेता लोग, एम. एल. ए. और एम. पी. ज़्यादातर ऐसे ही गांव तक पहुंच पाते थे जो रेलवे स्टेशन के या मोटर की सड़क के पास हों. सरकारी अफ़सर जो इस काम के लिये भेजा जाता है उसे मानो इस काम में कोई दिलचस्पी ही नहीं है.वह गांव के रईस या बड़े बड़े हाथी वाले बाबू साहब के पास पहुंचता है जहां उसको मेज़ कुर्सी मिल सके. और यह बाबू साहब अपने दरबारियों के कहने के मुताबिक़ सरकारी इमदाद तक़सीम करा देते हैं. नतीजा यह है कि जिन्हें मदद नहीं मिलनी चाहिये, इन्हें मिल जाती है और जो असल में ज़रूरतमन्द हैं उनकी सुनवाई भी नहीं होती. उन ग़रीबों की कहीं पहुंच भी नहीं है. इसलिये वह महज़ सब्र करके रह जाते हैं और जो देहात ज़्यादा अन्दर को हैं वहां तो न कोई मदद गई है और न बाहर से ही कोई पूछने आया. इस इमदाद का एक बड़ा और ख़तरनाक पहलू यह भी है कि ग़ैर कांग्रेसी सियासतदानों ने यह रुख़ अख़्तयार किया



دیئےہیں . پر ہمارے پاس تو کوئی ایسا اوزار ہےنہیں جس کے ذریعہ سے یہ نقصان ناپا جا سکے. ہم تو صرف اِن گاؤں کے بارے میں کہہ سکتے ہیں جو ہم نے خود دیکھے , لہذا ایک گاؤں کے بارے میں نقصان کی تفصیل دکھلا کر صبر کرینگے . سنگھ بزرگ نام کا گاؤں نرہن ریلوے اسٹیشن کے نزدیک ہے . اس کا رقبہ 1700 بیگھا' آبادی قریب 6000' گھر یا خاندان قریب ایک ہزار . اِس گاؤں میں تقریباً تین-چوتھائی مکان گرے تھے اور آدھی فصل برباد ہوئی تھی . سادھارن حساب سے' فصل کا نقصان قریب 76,000 روپیہ کا ہوا . لیکن اس سب سے زیادہ نقصان کی بات یہ تھی کہ لوگ گھروں پر ایکدم بیکار بیٹھے تھے . عورتیں تو اپنے گھریلو کام میں لگی تھیں' مگر مرد 100 فی صدی ہی ہاتھ پر ہاتھ دھرے خالی وقت گذار رہے تھے . اُن کو دیکھکر ایسا لگتا تھا کہ بھگوان نے اُن کے لئے ہاتھ بلا ضرورت کے دیئے ہیں. اُن کے پاس کرنےکو قطعی کوئی کام نہیں تھا . مانو گاؤں کا ہر آدمی ایک ایسے مندر کا پجاری تھا جس میں تین دیوتا تھے—سستی' بیکاری اور پرنندا ( غیر کی برائی ) . سب سے زیادہ تکلیف دہ بات یہ تھی کہ کسی کو اپنے پڑوسی کے دکھ کا احساس نہیں تھا . اکثر ایسا دکھلائی پڑا کہ جو اچھی طرح کھاتے پیتے' مزہ کرتے تھے' اُن کے ٹھاٹھ پہلے کے جیسے ہی جاری تھے اور غریب پڑوسی جس کا مکان گر گیا ہے' سامان بیکار ہو گیا ہے' اس کی طرف اُن کا دھیان ذرا بھی نہیں جاتا تھا . ایک جگہ ہم نے دیکھا کہ ایک بوڑھیا جسکا مکان گر گیا ہے' رو رہی تھی . پر کوئی اس کی مدد کو نہیں آتا تھا .

باڑھ زدہ لوگوں کو جو مدد دی گئی ہے اس کے بارے میں تو جتنا کہا جائے تھوڑا ہے . نیتا لوگ' ایم . ایل . اے اور ایم . پی' زیادہ تر ایسے ہی گاؤں تک پہونچ پاتے تھے جو ریلوے اسٹیشن کے یا موٹر کی سڑک کے پاس ہوں . سرکاری افسر جو اس کام کے لئے بھیجا جاتا ہے اسے مانو اس کام میں کوئی دلچسپی ہی نہیں ہے . وہ گاؤں کے رئیس یا بڑے بڑے ہاتھی والے بابو صاحب کے پاس پہونچتا ہے جہاں اس کو میز کرسی مل سکے. اور یہ بابو صاحب اپنے درباریوں کے کہنے کے مطابق سرکاری امداد تقسیم کرا دیتے ہیں . نتیجہ یہ ہے کہ جنہیں مدد نہیں ملنی چاہئے' انہیں مل جاتی ہے اور جو اصل میں ضرورتمند ہیں ان کی سنوائی بھی نہیں ہوتی . ان غریبوں کی کہیں پہونچ بھی نہیں ہے . اس لئے وہ محض صبر کرکے رہ جاتے ہیں . اور جو دیہات زیادہ اندر کو ہیں وہاں تو نہ کوئی مدد گئی ہے اور نہ باہر سے ہی کوئی پوچھنے آیا . اس امداد کا ایک بڑا اور خطرناک پہلو یہ بھی ہے کہ غیر کانگریسی سیاست دانوں نے یہ رخ اختیار کیا

## हमारी राय

हम दरभंगा ज़िले के समस्तीपुर सब डीविज़न के सात थानों में गए. ताजपुर, मोहद्दीनगर, दलसिंगसराय, समस्तीपुर, वारिसनगर, रोटरा और संघ्य और सदर सब डिवीजन के बहेड़ा और बरौल थानों के कुछ हिस्सों में गए. ज्यादातर सफ़र पैदल ही रहा मगर पानी गहरा होने पर नाव का भी इस्तेमाल किया. जगह जगह पानी इतना गहरा था कि नाववाले मल्लाहों तक को कोई अन्दाज उसकी गहराई का नहीं था. क्या दरया और क्या खेत के चूर मिल कर एक हो गए थे और पानी ही पानी नजर आता था. और क्योंकि ऐसी बाढ़ पहले कभी नहीं आई थी इसलिये कोई कह नहीं सकता था कि कहां कितनी गहराई होगी. नतीजा यह हुआ कि जिन फ़ास्लों को तय करने में तीन तीन घंटे लगने चाहिये थे इनकी जगह छः छः घंटे लगे. कई मुक़ाम ऐसे थे जैसे संघ्य (नरहन स्टेशन के नजदीक), संघ्य थाना, पोखराम और बंदा जहां हम सुबह के साढ़े चार बजे के चले चलाए दोपहर के बारह बजे या इस के भी बाद पहुंचे. कभी कभी जब क़ुदरत बहुत मेहरबान हो जाती थी तो ऊपर से घनघोर पानी पड़ा करता था और हम लोग बाबा (संत विनोबा को हम इसी नाम से पुकारते हैं) के पीछे विना किसी छाते या बरसाती के चलते चले जाते थे. कई मुक़ाम ऐसे थे जैसे पतीली, हांसा, समरथा, संघ्य और हतौड़ी जो एकदम जज़ीरा जैसे मालूम पड़ते थे. उन के चारों तरफ़ पानी ही पानी था.

इस बाढ़ से नुक़सान कितना हुआ इसका ठीक तख़मीना तो लगाना नामुमकिन सा ही है. जहां तक देखने से पता चलता था मकान तो अंगिन्ती गिरे थे. फ़सलें कितनी बरबाद हुईं इस का भी कोई हिसाब नहीं लगाया जा सकता. और न पैसे से इसे चुकाया ही जा सकता है. जानवर भी बीसयों के तादाद में बह गए. ख़ुशी की बात है कि आदमी की जानें बहुत कम गईं. जितनी बड़ी यह बाढ़ थी उस लिहाज़ से जानें बहुत ही थोड़ी, नहीं के बराबर, ज़ाया हुईं. इस से पता चलता है कि आम जनता वक़्त से जाग गई थी और बहादुरी के साथ उस ने इस आफ़त का सामना किया. बड़ी ख़मोशी, हिम्मत और जवांमर्दी के साथ उन्होंने इसका मुक़ाबला किया जिस पर हर कोई फ़ख़ कर सकता है. बाढ़ का पहला हमला जुलाई के तीसरे हफ़्ते में हुआ. ढाई तीन हफ़्ते के अन्दर यह बाढ़ घट गई. लेकिन अगस्त के तीसरे हफ़्ते में बाढ़ फिर तेज़ी पकड़ गई और इस मर्तबा पहले के मुक़ाबले ज्यादा ख़ौफ़नाक थी. अगस्त के आख़री हफ़्ते में वह भी उतर गई. कभी कभी वह फिर भी धमकाती है, लेकिन अब तो वक़्त निकल गया और उम्मीद है कि इस साल अब और न आयेगी.

बिहार में बाढ़ से जो नुक़सान हुआ है इस का अन्दाज़ा लगाते हुए एक से एक तीरअन्दाज़ी बयान प्रेस में नेताओं ने

## ہماری رائے

ہم دربھنگا ضلع کے سمستی پور سب ڈویژن کے سات تھانوں میں گئے. تاجپور، محدی نگر، دلسنگسرائے، سمستی پور، وارثنگر، روترا اور سنگھیہ اور صدر سب ڈویژن کے بہیڑا اور برول تھانوں کے کچھ حصوں میں گئے. زیادہ تر سفر پیدل ہی رہا مگر پانی گہرا ہونے پر ناؤ کا بھی استعمال کیا. جگہ جگہ پانی اتنا گہرا تھا کہ ناؤ والے ملاحوں تک کو کوئی انداز اس کی گہرائی کا نہیں تھا. کیا دریا اور کیا کھیت کے چور مل کر ایک ہوگئے تھے اور پانی ہی پانی نظر آتا تھا. اور کیونکہ ایسی باڑھ پہلے کبھی نہیں آئی تھی اس لئے کوئی کہہ نہیں سکتا تھا کہ کہاں کتنی گہرائی ہوگی. نتیجہ یہ ہوا کہ جن فاصلوں کو طے کرنے میں تین تین گھنٹے لگنے چاہئے تھے ان کی جگہ چھ چھ گھنٹے لگے. کئی مقام ایسے تھے جیسے سنگھیہ (نرہن اسٹیشن کے نزدیک)، سنگھیہ تھانہ، پوکھرام اور بندہ جہاں ہم صبح کے ساڑھے چار بجے کے چلے چلائے دوپہر کے بارہ بجے یا اس کے بھی بعد پہونچے. کبھی کبھی جب قدرت بہت مہربان ہو جاتی تھی تو اوپر سے گھنگھور پانی پڑا کرتا تھا اور ہم لوگ بابا (سنت ونوبا کو ہم اسی نام سے پکارتے ہیں) کے پیچھے بنا کسی چھاتے یا برساتی کے چلتے چلے جاتے تھے. کئی مقام ایسے تھے جیسے پتیلی، ہانسا، سمرتھا، سنگھیہ اور ہتھوڑی جو ایکدم جزیرہ جیسے معلوم پڑتے تھے. ان کے چاروں طرف پانی ہی پانی تھا.

اس باڑھ سے نقصان کتنا ہوا اس کا ٹھیک تخمینہ تو لگانا ناممکن سا ہی ہے. جہاں تک دیکھنے سے پتہ چلتا تھا مکان تو انگنتی گرے تھے. فصلیں کتنی برباد ہوئیں اس کا بھی کوئی حساب نہیں لگایا جا سکتا. اور نہ پیسے سے اُسے چکایا ہی جا سکتا ہے. جانور بھی بیسیوں کی تعداد میں بہ گئے. خوشی کی بات ہے کہ آدمی کی جانیں بہت کم گئیں. جتنی بڑی یہ باڑھ تھی اس لحاظ سے جانیں بہت ہی تھوڑی، نہیں کے برابر، ضائع ہوئیں. اس سے پتہ چلتا ہے کہ عام جنتا وقت سے جاگ گئی تھی اور بہادری کے ساتھ اس نے اس آفت کا سامنا کیا. بڑی خاموشی، ہمت اور جوانمردی کے ساتھ اُنہوں نے اس کا مقابلہ کیا جس پر ہر کوئی فخر کر سکتا ہے. باڑھ کا پہلا حملہ جولائی کے تیسرے ہفتہ میں ہوا. ڈھائی تین ہفتے کے اندر یہ باڑھ گھٹ گئی. لیکن اگست کے تیسرے ہفتہ میں باڑھ پھر تیزی پکڑ گئی اور اس مرتبہ پہلے کے مقابلہ زیادہ خوفناک تھی. اگست کے آخری ہفتہ میں وہ بھی اُتر گئی. کبھی کبھی وہ پھر بھی دھمکاتی ہے، لیکن اب تو وقت نکل گیا اور اُمید ہے کہ اس سال اب اور نہ آئے گی.

بہار میں باڑھ سے جو نقصان ہوا ہے اس کا انداز لگاتے ہوئے ایک تیراندازی بیان پریس میں نیتاؤں نے

मगर प्रेम की फ़सल हर साल बढ़ती ही जायेगी और लोग अपनी क़ुर्बानी के लिये हर दम तैयार रह कर एक दूसरे की हमदर्दी में शरीक होकर सारे मुल्क को मज़बूत और ठोस बना लेंगे जिस पर न बाहर के हमले का असर होगा और अन्दर बदअम्नी पैदा होने का तो सवाल ही नहीं. हम यह ख़्याली बात नहीं कह रहे हैं. ऐसा ज़माना आयेगा, आ रहा है और आना शुरू हो गया है. भूदान यज्ञ आन्दोलन को थोड़ी बहुत जो कुछ भी कामयाबी अब तक मिली वह प्रेम की ताक़त की कामयाबी को ख़ूब ज़ाहिर करती है. लेकिन हां, हम क़ुबूल करते हैं कि वैलफ़ेअर स्टेट के मक़सद की तरफ़ जहां कांग्रेस और कांग्रेसी हुकूमत का ज़ोर लग रहा है, वहां दूसरी सियासी पार्टियों, व्यापारी तबक़ा, पढ़े लिखे और नौकर पेशा भाई बहनों का भी. दरअसल उनका पलड़ा इस वक़्त बहुत भारी है. इसके ख़िलाफ़ ग्रामराज की तरफ़ बहुत कम ही ताक़त अब तक लगी है. लेकिन जो कुछ लगी है वह जनता की अपनी ताक़त है जिसे कोई दूसरा दुनयवी सहारा नहीं. इन दोनों ताक़तों का मुक़ाबिला है कि मुल्क वैलफ़ेअर स्टेट की तरफ़ बढ़े या ग्राम राज की तरफ़. आज मुल्क के नौजवान भाई बहनों के आगे सबसे बड़ा सवाल यही है कि इन दोनों में से वह कौनसी राह चुनते हैं और किस तरफ़ अपना कंधा लगाना चाहते हैं.

23. 8 '54 —सुरेशराम भाई

## बाढ़ पीड़ित दरभंगा में

उत्तर बिहार के लोग बाढ़ के आदी हैं. मगर इस साल के जैसी बाढ़ शायद कभी नहीं आई. शायद इसकी वजह यह है कि इस बार की बाढ़ उस बड़ी बाढ़ का हिस्सा है जो पच्छिमी योरप के कुछ हिस्सों से लेकर ठेठ पूरब चीन तक आई और जिस ने सब से ज़्यादा तबाही चीन में की. पच्छिम के तरफ़ के देशों में इसकी ख़फ़गी कम होती चली गई है. हिन्दुस्तान में सब से ज़्यादा नुक़सान आसाम को पहुंचा, इस के बाद बंगाल और फिर बिहार. लेकिन उत्तर बिहार में छोटी बड़ी बहुतसी नदियां बहती हैं जिनकी वजह से उस बाढ़ में सारे उत्तर बिहार ने एक बड़े भारी समुन्दर का सा रूप ले लिया, ऐसा समुन्दर जिसके पूरब में कोसी नदी है, पच्छिम में गुंडक नदी, उत्तर में हिमालय पहाड़ और दक्खिन में गंगा. इस वजह से उत्तर बिहार को ज़बर्दस्त नुक़सान पहुंचा, गुंडक, बूढ़ी गुंडक, लखन दई, बागमती, कोसी और उनकी अनगिन्ती छोटी बड़ी शाखें एक दूसरे से मिल गईं. अगस्त के दूसरे और तीसरे हफ़्ते में सन्त विनोबा जी के साथ हमारा इत्तफ़ाक़ दरभंगा ज़िला में पैदल सफ़र करने का हुआ जब हमने बहुत नज़दीक से वहां की दर्दभरी हालत को देखा.



مگر پریم کی فصل ہر سال بڑھتی ہی جائیگی اور لوگ اپنی قربانی کے لئے ہر دم تیار رہ کر ایک دوسرے کی ہمدردی میں شریک ہوکر سارے ملک کو مضبوط اور ٹھوس بنالینگے جس پر نہ باہر کے حملہ کا اثر ہوگا اور اندر بدامنی پیدا ہونے کا تو سوال ہی نہیں ۔ ہم یہ خیالی بات نہیں کہہ رہے ہیں ۔ ایسا زمانہ آئیگا' آرہا ہے اور آنا شروع ہوگیا ہے ۔ بھودان یگیہ آندولن کو تھوڑی بہت جو کچھ بھی کامیابی اب تک ملی وہ پریم کی طاقت کی کامیابی کو خوب ظاہر کرتی ہے ۔ لیکن ہاں' ہم قبول کرتے ہیں کہ ویلفیئر اسٹیٹ کے مقصد کی طرف جہاں کانگریس اور کانگریسی حکومت کا زور لگ رہا ہے' وہاں دوسری سیاسی پارٹیوں' ویاپاری طبقہ' پڑھے لکھے اور نوکر پیشہ بھائی بہنوں کا بھی ۔ دراصل ان کا پلڑا اس وقت بہت بھاری ہے۔ اس کے خلاف گرام راج کی طرف بہت کم ہی طاقت اب تک لگی ہے۔ لیکن جو کچھ لگی ہے وہ جنتا کی اپنی طاقت ہے جسے کوئی دوسرا دنیوی سہارا نہیں ۔ ان دونوں طاقتوں کا مقابلہ ہے کہ ملک ویلفیئر اسٹیٹ کی طرف بڑھے یا گرام راج کی طرف ۔ آج ملک کے نوجوان بھائی بہنوں کے آگے سب سے بڑا سوال یہی ہے کہ ان دونوں میں سے وہ کونسی راہ چنتے ہیں اور کس طرف اپنا کندھا لگانا چاہتے ہیں ۔

23 . 8 .'54 —سریش رام بھائی

## باڑھ پیڑت دربھنگا میں

اُتر بہار کے لوگ باڑہ کے عادی ہیں ۔ مگر اس سال کے جیسی باڑہ شاید کبھی نہیں آئی۔ شاید اِسکی وجہ یہ ہے کہ اس بار کی باڑہ اس بڑی باڑہ کا حصہ ہے جو پچھمی یورپ کے کچھ حصوں سے لے کر ٹھیٹھ پورب چین تک آئی اور جس نے سب سے زیادہ تباہی چین میں کی ۔ پچھم کے طرف کے دیشوں میں اس کی خنگی کم ہوتی چلی گئی ہے ۔ ھندستان میں سب سے زیادہ نقصان آسام کو پہونچا' اس کے بعد بنگال اور پھر بہار ۔ لیکن اُتر بہار میں چھوٹی بڑی بہت سی ندیاں بہتی ہیں جن کی وجہ سے اس باڑہ میں سارے اُتر بہار نے ایک بڑے بھاری سمندر کا سا روپ لے لیا' ایسا سمندر جس کے پورب میں کوسی ندی ہے' پچھم میں گنڈک ندی' اُتر میں ہمالیہ پہاڑ اور دکھن میں گنگا ۔ اس وجہ سے اُتر بہار کو زبردست نقصان پہونچا ۔ گنڈک' بوڑھی گنڈک' لکھن دئی' باگمتی' کوسی اور ان کی اَنگنتی چھوٹی بڑی شاخیں ایک دوسرے سے مل گئیں ۔ اگست کے دوسرے اور تیسرے ہفتہ میں سنت ونوبا جی کے ساتھ ہمارا اتفاق دربھنگا ضلع میں پیدل سفر کرنے کا ہوا جب ہم نے بہت نزدیک سے وہاں کی درد بھری حالت کو دیکھا ۔

## हमारी राय

बनते चले जाते हैं. फिर जो इस लूट खसोट में नाकामयाब रहते हैं इनके लिये सरकार पैनशन देती है. आज हिन्दुस्तान में काफ़ी भेद भाव और दर्जे बने हुए हैं. वैलफ़ेअर स्टेट के मानी होते हैं कि समाज के उस ढांचे में और भी दरारें पैदा करना और मुल्क को कमज़ोर बनाना.

तीसरा और सबसे अहम ख़तरा यह है कि बाहर से अगर किसी मुल्क का हमारे मुल्क पर हमला होता है तो जो मरकज़ या केन्द्र से हुक्म आयेगा वही लोग करेंगे. मान लीजिये कि दुश्मन के डर में आकर या किसी और कमज़ोरी से मरकज़ ने हथियार डालना तय कर दिया तो इसके मानी हुए सारे मुल्क ने हार क़ुबूल कर ली और अपनी आज़ादी ख़त्म. या इस तरह मरकज़ ने किसी बाहरी मुल्क से कोई ख़ास फ़ौजी समझौता कर लिया जैसे पाकिस्तान ने अमरीका से किया, तो हमारा मुल्क दूसरे के हाथों में चला गया. जब जनता से सलाह मशविरा करने का कोई सवाल ही नहीं है तो जो नाच देहली वालों को नाचना मंज़ूर हो वही सारे मुल्क को नाचना होगा.

और यह तो ज़ाहिर ही है कि वैलफ़ेअर स्टेट में मुल्क के सारे रोज़गार व कारोबार मरकज़ के हाथ में आ जाते हैं. तो लाज़िमी तौर पर हमारे हिन्दुस्तान जैसे मुल्क में जहां आज इतनी दर्दनाक बेकारी है वहां वह और भी संगीन हो जायेगी.

इस तरह जिस पहलू से भी देखें वैलफ़ेअर स्टेट का ख़्याल व नक़्शा हमारे देश के लिये नुक़सानदेह ही नहीं तबाहकुन है. हमें इस वक़्त राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के वह लफ़्ज़ याद आ रहे हैं जो उन्होंने गत 20 अप्रैल को बौद्ध गया में एक ज़ाहिर सभा में कहे थे. उन्होंने क़ुबूल किया था कि आज़ादी के बाद जनता को हम आज़ाद बनाने की तरफ़ क़दम बढ़ाने की बजाय उसे नये नये क़ानूनों में बांधते जा रहे हैं जिसका नतीजा अच्छा ही होगा ऐसा नहीं कहा जा सकता. हाल ही में किसी सूबे के चीफ़ जस्टिस ने भी इसी तरह के ख़्याल ज़ाहिर किये हैं.

ख़ुलासा यह है कि वैलफ़ेअर स्टेट का ख़्याल महज़ विदेशी ही नहीं उसका नमूना भी हमारे लिये मौज़ूं नहीं है. इसके ख़िलाफ़ हमको बज़ाहिर एक ऐसा समाज बनाना है जिसमें दर्जा न हो, जो पानी की मानिन्द एक रस या समरस हो, जहां हुकूमत का हाथ कम से कम हो, यानी जो शासन मुक्त हो और जहां कोई किसी को नोचता या लूटता न हो, यानी जो शोशन रहित हो. इसी को हम दूसरे लफ़्ज़ों में ग्रामराज कह सकते हैं, गांव गांव ख़ुदमुख़्तार हो और सब मिलकर हिन्दुस्तान के इस तरह के जुज़ या हिस्से हों जैसे एक जिस्म के जुज़ हाथ, नाक, कान, सर वग़ैरा होते हैं. एक की ख़ुशी में दूसरे की ख़ुशी हो और एक के दुख में दूसरे का दुख हो. ग्रामराज में कोई फ़सल आए न आए

## ہماری رائے

بنتے چلے جاتے ہیں ۔ پھر جو اس لوٹ کھسوٹ میں ناکامیاب رہتے ہیں ان کے لئے سرکار پنشن دیتی ہے ۔ آج ہندستان میں کافی بھیدبھاو اور درجے بنے ہوئے ہیں ۔ ویلفیئراسٹیٹ بنانے کے معنی ہوتے ہیں کہ سماج کے اس ڈھانچہ میں اور بھی دراریں پیدا کرنا اور ملک کو کمزور بنانا ۔

تیسرا اور سب سے اہم خطرہ یہ ہے کہ باہر سے اگر کسی ملک کا ہمارے ملک پر حملہ ہوتا ہے تو جو مرکز یا کیندر سے حکم آئیگا وہی لوگ کرینگے ۔ مان لیجئے کہ دشمن کے ڈر میں آکر یا کسی اور کمزوری سے مرکز نے ہتھیار ڈالنا طے کردیا تو اس کے معنی ہوئے سارے ملک نے ہار قبول کرلی اور اپنی آزادی ختم ۔ یا اسی طرح مرکز نے کسی باہری ملک سے کوئی خاص فوجی سمجھوتہ کرلیا جیسے پاکستان نے امریکہ سے کیا، تو ہمارا ملک دوسرے کے ہاتھوں میں چلا گیا ۔ جب جنتا سے صلاح مشورہ کرنے کا کوئی سوال ہی نہیں ہے تو جو ناچ دلی والوں کو ناچنا منظور ہو وہی سارے ملک کو ناچنا ہوگا ۔

اور یہ تو ظاہر ہی ہے کہ ویلفیئراسٹیٹ میں ملک کے سارے روزگار و کاروبار مرکز کے ہاتھ میں آجاتے ہیں ۔ تو لازمی طور پر ہمارے ہندستان جیسے ملک میں جہاں آج اتنی دردناک بیکاری ہے وہاں وہ اور بھی سنگین ہوجائیگی ۔

اس طرح جس پہلو بھی دیکھیں ویلفیئراسٹیٹ کا خیال و نقشہ ہمارے دیش کے لئے نقصاندہ ہی نہیں تباہ کن ہے ۔ ہمیں اس وقت راشٹرپتی ڈاکٹر راجیندر پرشاد کے وہ لفظ یاد آرہے ہیں جو انہوں نے گت 20 اپریل کو بودھ گیا میں ایک ظاہر سبھا میں کہے تھے ۔ انہوں نے قبول کیا تھا کہ آزادی کے بعد جنتا کو ہم آزاد بنانے کی طرف قدم بڑھانے کی بجائے اسے نئے نئے قانونوں میں باندھتے جا رہے ہیں جس کا نتیجہ اچھا ہی ہوگا ایسا نہیں کہا جاسکتا ۔ حال ہی میں کسی صوبہ کے چیف جسٹس نے بھی اس طرح کے خیال ظاہر کئے ہیں ۔

خلاصہ یہ ہے کہ ویلفیئراسٹیٹ کا خیال محض ودیشی ہی نہیں اس کا نمونہ بھی ہمارے لئے موزوں نہیں ہے ۔ اس کے خلاف ہم کو بظاہر ایک ایسا سماج بنانا ہے جس میں درجہ نہ ہو، جو پانی کی مانند ایک رس یا سمرس ہو، جہاں حکومت کا ہاتھ کم سے کم ہو، یعنی جو شاسن مکت ہو اور جہاں کوئی کسی کو نوچتا یا لوٹتا نہ ہو یعنی جو شوشن رہت ہو ۔ اسی کو ہم دوسرے لفظوں میں گرام راج کہہ سکتے ہیں، گاؤں گاؤں خود مختار ہو اور سب مل کر ہندستان کے اس طرح کے جز یا حصے ہوں جیسے ایک جسم کے جز ہاتھ، ناک، کان، سر وغیرہ ہوتے ہیں ۔ ایک کی خوشی میں دوسرے کی خوشی ہو اور ایک کے دکھ میں دوسرے کا دکھ ہو ۔ گرام راج میں کوئی فصل آئے نہ آئے

यहां वैलफ़ेअर स्टेट बनाने के मानी होंगे कि हमारा खाना पीना, कपड़ा लत्ता, तालीम, दवा दारू, हर चीज में हम सरकार के मोहताज बन जायें और हमारी हर हरकत या चहलपहल सरकार के कन्ट्रोल में रहे. इसका नतीजा यह होगा कि मान लीजिये, जैसा आज है भी, उत्तर बिहार में बाढ़ आई तो उसके मुआयने के लिये नई दिल्ली से वफ़द या कमीशन आएगा, वह मौक़ा महल की जांच करेगा, देहली वापिस लौट कर अपनी रिपोर्ट पेश करेगा, तब देहली के दफ़्तर से पटना के दफ़्तर को हुक्म जारी होंगे, फिर पटना के दफ़्तर से कलक्टरों के दफ़्तरों में काराज़ दौड़ेंगे, फिर वहां से सबडिविज़न या थानों में और तब कहीं काम का नम्बर आयेगा. इस बीच जो जनता बाढ़ से परेशान हो रही है वह तो तबाह ही हो जायेगी, क्योंकि वैलफ़ेअर स्टेट है, एक दूसरे की मदद कोई करेगा नहीं, जो कुछ करे सरकार करे. और इसके साथ साथ मान लीजिये कि गोदावरी नदी में भी बाढ़ आ गई. तब देहली वाले सोचेंगे कि आंध्र का मसला ज्यादा भयानक है या उत्तर बिहार का और वह किसे मदद करे या न करें या किसको मदद कम करे और किसको ज्यादा. इतना लम्बा चौड़ा मुल्क, और उसकी सारी ताक़त देहली में लाकर समेट दी गई तो इधर जनता हाय हाय करेगी, उधर देहली के हुक्काम तार और फ़ोन की टन टन से घबरा जायेंगे कि कहां जायें कहां न जायें, क्या करें क्या न करें. यह बात एक दूसरी मिसाल से ज्यादा साफ़ हो सकेगी. मान लीजिये इस जहान के बनाने वाले ने यहां वैलफ़ेअर स्टेट बनाने का तय किया होता तो वह अपने सब बन्दों के दिल, दिमाग़, नाक, कान, आंख सब अपने पास रक्खे होते और महज़ धड़ व हड्डियां आदमी को दे दी होती. अब किसी को कुछ देखने की जरूरत पड़ी तो आंख के लिये तार भेज रहा है, किसी को चलने की जरूरत पड़ी तो टांग की मांग करता. नतीजा यह होता कि वह इतना परेशान हो जाता, इतना परेशान हो जाता कि उसे दम मारने की भी फ़ुर्सत नहीं मिलती. लेकिन उसने यह न करके हर आदमी को स्वावलम्बी बनाया, हर एक को सब साधन दे दिये और आज़ाद छोड़ दिया. उस का फल यह हुआ कि आज वह क्षीर सागर में ऐसे आराम से सोता है कि बहुत से लोग उसकी हस्ती तक को मानने से इन्कार करते हैं!

वैलफ़ेअर स्टेट का दूसरा खतरनाक पहलू यह है इसमें समाज में भेद भाव शिद्दत से होता है. हर एक कोई एक दूसरे को लूटने व नोचने की कोशिश में रहता है. जो इस फ़न में ज्यादा माहिर हो गया उसने ज्यादा कमाई कर ली, उसे ज्यादा सहूलियत हासिल हो गई और वह उतना ही बड़ा आदमी हो गया, चाहे वह ब्योपार में हो या सरकारी मुलाज़िमत में. इस तरह ऊपर से नीचे तक दर्जे पर दर्जे



یہاں ویل فیئر اسٹیٹ بنانے کے معنی ہونگے کہ ہمارا کھانا پینا، کپڑا لتا، تعلیم، دوا دارو، ہر چیز میں ہم سرکار کے محتاج بن جائیں اور ہماری ہر حرکت یا چہل پہل سرکار کے کنٹرول میں رہے۔ اِس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ مان لیجئے، جیسا آج ہے بھی، اُتر بہار میں باڑہ آئی، تو اس کے معائنے کے لئے نئی دلی سے وفد یا کمیشن آئے گا، وہ موقع محل کی جانچ کرے گا، دہلی واپس لوٹ کر اپنی رپورٹ پیش کرے گا، تب دہلی کے دفتر سے پٹنہ کے دفتر کو حکم جاری ہونگے، پھر پٹنہ کے دفتر سے کلکٹروں کے دفتروں میں کاغذ دوڑینگے، پھر وہاں سے سب ڈویزن یا تھانوں میں اور تب کہیں کام کا نمبر آئے گا۔ اس بیچ جو جنتا باڑہ سے پریشان ہو رہی ہے وہ تو تباہ ہی ہو جائے گی، کیونکہ ویل فیئر اسٹیٹ ہے، ایک دوسرے کی مدد کوئی کریگا نہیں، جو کچھ کرے سرکار کرے۔ اور اِس کے ساتھ ساتھ مان لیجئے کہ گوداوری ندی میں بھی باڑہ آ گئی۔ تب دہلی والے سوچینگے کہ آندھر کا مسئلہ زیادہ بھیانک ہے یا اُتر بہار کا اور وہ کسے مدد کرے یا نہ کرے یا کس کو مدد کم کرے اور کسی کو زیادہ۔ اتنا لمبا چوڑا ملک، اور اس کی ساری طاقت دہلی میں لاکر سمیٹ دی گئی تو اِدھر جنتا ہائے ہائے کرے گی، اُدھر دہلی کے حکام، تار اور فون کی ٹن ٹن سے گھبرا جائینگے کہ کہاں جائیں کہاں نہ جائیں، کیا کریں کیا نہ کریں۔ یہ بات ایک دوسری مثال سے زیادہ صاف ہو سکے گی۔ مان لیجئے اس جہان کے بنانے والے نے یہاں ویل فیئر اسٹیٹ بنانے کا طے کیا ہوتا تو اپنے سب بندوں کے دل، دماغ، ناک، کان، آنکھ سب اپنے پاس رکھے ہوتے اور محض دھڑ و ہڈیاں آدمی کو دے دی ہوتیں۔ اب کسی کو کچھ دیکھنے کی ضرورت پڑی تو آنکھ کے لئے تار بھیج رہا ہے، کسی کو چلنے کی ضرورت پڑی تو ٹانگ کی مانگ کرتا نتیجہ یہ ہوتا کہ وہ اتنا پریشان ہو جاتا، اتنا پریشان ہوجاتا کہ اسے دم مارنے کی بھی فرصت نہیں ملتی۔ لیکن اس نے یہ نہ کرکے ہر آدمی کو سواولمبی بنایا، ہر ایک کو سب سادھن دے دئے اور آزاد چھوڑ دیا۔ اس کا پھل یہ ہوا کہ آج وہ شیر ساگر میں ایسے آرام سے سوتا ہے کہ بہت سے لوگ اس کی ہستی تک کو ماننے سے انکار کرتے ہیں!

ویل فیئر اسٹیٹ کا دوسرا خطرناک پہلو یہ ہے کہ اس میں سماج میں بھیدبھاو شدت سے ہوتا ہے۔ ہر ایک کوئی ایک دوسرے کو لوٹنے و نوچنے کی کوشش میں رہتا ہے۔ جو اس فن میں زیادہ ماہر ہوگیا اس نے زیادہ کمائی کرلی، اسے زیادہ سہولیت حاصل ہوگئی اور وہ اتنا ہی بڑا آدمی ہوگیا، چاہے وہ بیوپار میں ہو یا سرکاری ملازمت میں۔ اس طرح اُوپر سے نیچے تک درجے پر درجے

यहां पर तीसरे ठैहराव पर विचार करेंगे. उसका नाम है "Planned development" (प्लांड डिवैलपमेन्ट) यानी योजना बन्द विकास. इस ठैहराव का पहला जुमला यह है—

"The objective of the Congress is the establishment of a co-operative Commonwealth and a Welfare State."

(कांग्रेस का मक़सद है कि एक कोआप्रेटिव कामनवैल्थ और एक वैलफ़ेअर हुकूमत क़ायम की जाये)

पाठक देखेंगे कि "कोआप्रेटिव कामनवैल्थ" और "वैलफ़ेअर" इन दो ख़्यालों के लिये हम कोई देसी लफ़्ज़ नहीं दे सके और हमारा ख़्याल है कि ऐसा करना नामुमकिन नहीं तो मुश्किल ज़रूर है क्योंकि उनके पीछे जो विचार है वह क़तई अंग्रेज़ी या मग़ारिबी है. यों "वैलफ़ेअर" स्टेट की जगह "कल्यान राज" लफ़्ज़ लिखे जाने लगे हैं लेकिन "वैलफ़ेअर" और "कल्यान" में बहुत भारी फ़र्क़ है, शायद उसी तरह का फ़र्क़ है जैसा "Stateless" और "शासन मुक्त" में. कैसी बदक़िस्मती की बात है कि हिन्दुस्तान जैसे आज़ाद मुल्क की कांग्रेस जैसी बड़ी और पुरानी संस्था या पार्टी का मक़सद ऐसे लफ़्ज़ों में ज़ाहिर किया जाये जिसको बाहर वाले तो समझ सकें पर ख़ुद हिन्दुस्तान के लोग नहीं. इससे इस संस्था की ग़रीब ख़्याली का पता चलता है और यह भी साफ़ मालूम हो जाता है कि उसके सोचने का ढंग किस क़दर प्रदेसी है. जहां विचार या ख़्याल की मोहताजगी है वहां किस तरह लोगों के अन्दर नई जान फूंकी जा सकती है हम नहीं समझ सकते.

मामूली तौर से "वैलफ़ेअर" के मानी हैं "बेहतरी." कहते भी हैं कि मैं आपका "वैलफ़ेअर" यानी "बेहतरी" चाहता हूं. इधर चन्द बरसों से ही इंगलैन्ड और अमरीका में "वैलफ़ेअर स्टेट" का ख़्याल बुलन्द हुआ है और आम जनता की तरफ़ से न उठकर हुकूमती दायरों की तरफ़ से उठा है. उसकी तह में यह जज़बा है कि रिआया की बेहतरी का ज़िम्मा सरकार का है. चुनांचे ज़िन्दगी के ज़्यादा से ज़्यादा पहलुओं पर सरकार को हावी होना चाहिये. यही वजह है कि आज इंगलैन्ड और अमरीका में, बूढ़े लोग हों या बेरोज़गार जवान हों, उनकी परवरिश हुकूमत करती है और बतौर पैन्शन के उन्हें कुछ देती है. वहां आये दिन हर चीज़ के लिये क़ानून बनते चले जा रहे हैं, मानो जनता दिन दिन अपाहिज होती जा रही हो. मगर ख़ैर इंगलैन्ड और अमरीका के पास दौलत, दूसरे मुल्कों पर उनका गुप्त या ज़ाहिर असर है और दुनिया के वह साहूकार भी ठैहरे, जिस वजह से वह इस तरह पैन्शन दे सकते और अपना काम चला सकते हैं. लेकिन हमारे देस की तो हालत ही दूसरी है.



یہاں پر تیسرے ٹھہراؤ پر وچار کرینگے . اِس کا نام ھے "Planned development" پلانڈ ڈیولپمنٹ یعنی یوجنا بند وکاس . اس ٹھہراؤ کا پہلا جملہ یہ ھے—

"The objective of the Congress is the establishment of a co-operative common-wealth and a Welfare State"

( کانگریس کا مقصد ھے کہ ایک کوآپریٹو کامن ویلتھ اور ایک ویل فیئر حکومت قائم کی جائے )

پاٹھک دیکھیں گے کہ "کوآپریٹو کامن ویلتھ" اور "ویل فیئر" اِن دو خیالوں کے لئے ھم کوئی دیسی لفظ نہیں دے سکے اور ھمارا خیال ھے کہ ایسا کرنا ناممکن نہیں تو مشکل ضرور ھے کیونکہ اُن کے پیچھے جو وچار ھے وہ قطعی انگریزی یا مغربی ھے . یوں " ویل فیئر اسٹیٹ " کی جگہ " کلیان راج " لفظ لکھے جانے لگے ھیں لیکن " ویل فیئر " اور " کلیان " میں بہت بھاری فرق ھے ، شاید اِسی طرح کا فرق ھے جیسا "Stateless" اور " شاسن مکت " میں . کیسی بدقسمتی کی بات ھے کہ ھندستان جیسے آزاد ملک کی کانگریس جیسی بڑی اور پرانی سنستھا یا پارٹی کا مقصد ایسے لفظوں میں ظاھر کیا جائے جس کو باھر والے تو سمجھ سکیں پر خود ھندستان کے لوگ نہیں . اِس سے اس سنستھا کی غریب خیالی کا پتہ چلتا ھے اور یہ بھی صاف معلوم ھو جاتا ھے کہ اس کے سوچنے کا ڈھنگ کس قدر پردیسی ھے . جہاں وچار یا خیال کی محتاجگی ھے وھاں کس طرح لوگوں کے اندر نئی جان پھونکی جا سکتی ھے ھم نہیں سمجھ سکتے .

معمولی طور سے " ویل فیئر " کے معنی ھیں " بہتری ." کہتے بھی ھیں کہ میں آپ کا " ویل فیئر " یعنی " بہتری " چاھتا ھوں . ادھر چند برسوں سے ھی انگلینڈ اور امریکہ میں " ویل فیئر اسٹیٹ " کا خیال بلند ھوا ھے اور عام جنتا کی طرف سے نہ اُٹھ کر حکومتی دائروں کی طرف سے اُٹھا ھے . اِس کی تہ میں یہ جذبہ ھے کہ رعایا کی بہتری کا ذمہ سرکار کا ھے . چنانچہ زندگی کے زیادہ سے زیادہ پہلوؤں پر سرکار کو حاوی ھونا چاھئے . یہی وجہ ھے کہ آج انگلینڈ و امریکہ میں، بوڑھے لوگ ھوں یا بے روزگار جوان ھوں، ان کی پرورش حکومت کرتی ھے اور بطور پینشن کے انھیں کچھ دیتی ھے . وھاں آئے دن ھر چیز کے لئے قانون بنتے چلے جا رھے ھیں، مانو جنتا دن دن اپاھج ھوتی جا رھی ھو . مگر خیر انگلینڈ اور امریکہ کے پاس دولت، دوسرے ملکوں پر ان کا گپت یا ظاھر اثر ھے اور دنیا کے وہ ساھوکار بھی ٹھہرے، جس وجہ سے وہ اس طرح پنشن دے سکتے اور اپنا کام چلا سکتے ھیں . لیکن ھمارے دیس کی تو حالت ھی دوسری ھے .

रत्न" मानी "राज-रत्न" और "पद्म-विभूशन" मानी "सरकार विभूशन." तो जैसा राज वैसा उनका रत्न और वैसा उनका विभूशन. इसका नतीजा होगा कि आदमी की असली क़ाबलियत या हुनर की उतनी क़दर नहीं होगी जितनी इस बात की कि हुकूमत की निगाह में वह कहां तक और कितना उपयोगी है और आड़े वक्त काम आनेवाला है. यही वजह है कि आम जनता की निगाह में मैडिल की इज्ज़त नहीं रहती और शायद इसी वजह से पुराने ज़माने में हमारे रिशी, मुनी और विद्वानों ने मैडिल या ख़िताब की कोई परवाह नहीं की.

इस सिलसिले में एक ख़्याल और भी आता है. वह यह कि श्री राजा जी और डाक्टर राधा कृशनन को "भारत-रत्न" के मैडिल से क्या नई इज्ज़त या नई प्रेरना हासिल होने वाली है? शायद इसमें पाने वाले की इतनी इज्ज़त नहीं जितनी कि देने वाले की. मगर दिल में एक और भी ख़्याल आये बिना नहीं रहता कि जब डाक्टर राधा कृशनन उप-राष्ट्रपति हैं तो उन्हीं को मैडिल देना कहां तक शोभा की बात है. हम डाक्टर राधा कृशनन को अपने मुल्क की बहुत आला हस्तियों में शुमार करते हैं और मानते हैं कि वह हिन्दुस्तान के उन चन्द ख़िदमतगारों में से हैं जिन्होंने मुल्क की इज्ज़त को चार चांद लगाये हैं और दुनिया में उसकी शान बढ़ाई है. लेकिन इस वक़्त तो वह सिर्फ़ एक को, राश्ट्रपति को छोड़ कर, हुकूमत के सब से बड़े ओहदेदार हैं. राश्ट्रपति की ग़ैरहाज़िरी में वही उनका सब काम अंजाम देते हैं. इस तरह यह मैडिल अपने द्वारा ही अपने को देना जैसा लगता है. ईश्वर न करे कि आगे चलकर मौजूदा सरकार या दूसरी सरकारें ख़ुद अपने हाकिमों को इस तरह मैडिल देना शुरू कर दें. तब तो क्या सरकार और क्या पब्लिक, दोनों के लिये शर्म की बात होगी.

हम बड़े अदब के साथ कहना चाहते हैं कि इन मैडिलों से कुल मिलाकर हमें ख़ुशी नहीं हुई और सरकार के इस कारनामे पर हम उसे मुबारकबाद नहीं दे सकते. हम सिफ़ारिश करेंगे कि सरकार इस तरह के नाहक़ बोझ अपने ऊपर न ले और जो ख़िताब या मैडिल जिसे मिलना है वह जनता की तरफ़ से आप से मिलने दे. जैसी जिसकी ख़िदमत होगी जनता ख़ुद उसे वैसे नाम से पुकारेगी, जैसे उसने तिलक को लोकमान्य और गांधी को महात्मा कहा और कहती रहेगी.

22. 8. '54 —सुरेशराम भाई

## "वैलफ़ेअर स्टेट" बनाम ग्राम राज

जुलाई के महीने में कुल हिन्द कांग्रेस कमेटी की एक बैठक अजमेर में हुई. उसमें कुल मिलाकर 13 ठैहराव पास हुए. उनमें से कई महत्वपूर्न हैं. लेकिन हम इस वक़्त



رتن" معنی "راج رتن" اور "پدم وبھوشن" معنی "سرکار وبھوشن." تو جیسا راج ویسا ان کا رتن اور ویسا ان کا وبھوشن. اس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ آدمی کی اصلی قابلیت یا ہنر کی اتنی قدر نہیں ہوگی جتنی اس بات کی کہ حکومت کی نگاہ میں وہ کہاں تک اور کتنا اُپیوگی ہے اور آڑے وقت کام آنے والا ہے. یہی وجہ ہے کہ عام جنتا کی نگاہ میں میڈل کی عزت نہیں رہتی اور شاید اِسی وجہ سے پرانے زمانے میں ہمارے رشی، منی اور ودوانوں نے میڈل یا خطاب کی کوئی پرواہ نہیں کی.

اِس سلسلہ میں ایک خیال اور بھی آتا ہے. وہ یہ کہ شری راجا جی اور ڈاکٹر رادھا کرشنن کو "بھارت رتن" کے میڈل سے کیا نئی عزت یا نئی پریرنا حاصل ہونے والی ہے؟ شاید اِسمیں پانے والے کی اتنی عزت نہیں جتنی کہ دینے والے کی. مگر دل میں ایک اور بھی خیال آئے بنا نہیں رہتا کہ جب ڈاکٹر رادھا کرشنن اُپ راشٹر پتی ہیں تو اُنہیں کو میڈل دینا کہاں تک شوبھا کی بات ہے. ہم ڈاکٹر رادھا کرشنن کو اپنے ملک کی بہت اعلیٰ ہستیوں میں شمار کرتے ہیں اور مانتے ہیں کہ وہ ہندستان کے ان چند خدمتگاروں میں سے ہیں جنھوں نے ملک کی عزت کو چار چاند لگائے ہیں اور دنیا میں اس کی شان بڑھائی ہے. لیکن اس وقت تو وہ صرف ایک کو، راشٹر پتی کو چھوڑ کر، حکومت کے سب سے بڑے عہدیدار ہیں. راشٹر پتی کی غیر حاضری میں وہی اُن کا سب کام انجام دیتے ہیں. اِس طرح یہ میڈل اپنے دوارا ہی اپنے کو دینا جیسا لگتا ہے. ایشور نہ کرے کہ آگے چل کر موجودہ سرکار یا دوسری سرکاریں خود اپنے حاکموں کو اس طرح میڈل دینا شروع کر دیں. تب تو کیا سرکار اور کیا پبلک، دونوں کے لئے شرم کی بات ہوگی.

ہم بڑے ادب کے ساتھ کہنا چاہتے ہیں کہ اِن میڈلوں سے کل ملا کر ہمیں خوشی نہیں ہوئی اور سرکار کے اِس کارنامے پر ہم اِسے مبارکباد نہیں دے سکتے. ہم سفارش کرینگے کہ سرکار اِس طرح کے ناحق بوجھ اپنے اوپر نہ لے اور جو خطاب یا میڈل جسے ملنا ہے وہ جنتا کی طرف سے آپ سے ملنے دے. جیسی جس کی خدمت ہوگی جنتا خود اِسے ویسے نام سے پکارے گی، جیسے اس نے تلک کو لوکمانیہ اور گاندھی کو مہاتما کہا اور کہتی رہے گی.

22 . 8 . '54 سریش رام بھائی

## "ویل فیئر اسٹیٹ" بنام گرام راج

جولائی مہینے میں کل ہند کانگریس کمیٹی کی ایک بیٹھک اجمیر میں ہوئی. اس میں کل ملا کر 13 ٹھہراؤ پاس ہوئے. ان میں سے کئی مہتوپورن ہیں. لیکن ہم اس وقت

# चार मैडिल !

तारीख़ 15 अगस्त को नई दिल्ली से राष्ट्रपति की तरफ़ से एक अजीब व ग़रीब ऐलान निकला. इस ऐलान में दो तरह के, या कहना चाहिये चार तरह के, मैडिलों की तक़सीम का इज़हार किया गया :—"भारत-रत्न" मैडिल और "पद्म-विभूशन" मैडिल में तीन दर्जे या वर्ग किये गये—पहला वर्ग, दूसरा वर्ग और तीसरा वर्ग. इस ऐलान में बताया गया है कि भारत के विधान की धारा 18 के मुताबिक़ ख़िताब नहीं बांटे जा सकते लेकिन देश के बड़े बड़े साइन्सदां, इन्जीनियर, कलाकार वग़ैरा को उनके काम के सिलसिले में यह मैडिल दिये जा रहे हैं.

अंग्रेज़ी दस्तूर के मुताबिक़ मैडिल छाती पर लटकाए जाते हैं और दरबार या ख़ुशी या जल्से के मौक़े पर लोग उन्हें लगा कर आते हैं. हमें नहीं मालूम कि सर, ख़ान-बहादुर या रायबहादुर की तरह लोग अपने नाम के आगे "भारत-रत्न" या "पद्म-विभूशन" लिख सकेंगे या नहीं. लिखें न लिखें, यह कोई अहमियत की चीज नहीं है. असल बात यह है कि इन मैडिलों की ज़रूरत क्या पड़ी ? जवाब होगा कि सेवाओं के एवज़ में दिये गये हैं ताकि दूसरे लोगों का भी उत्साह बढ़े. तो क्या हम उसके यह मानी लगायें कि आजाद हिन्दुस्तान में बड़े या ऊंचे काम की तरफ़ लोगों के अन्दर प्रेरना पैदा करने के लिये इस वक़्त तक जहां ऊंची तनख़्वाहें दी जाती हैं अब ( आज़ादी के सात साल बाद ) मैडिल की भी दरकार महसूस होने लगी ? कोई कहेगा कि यह इन्सानी कमज़ोरी (Human weakness) है लेकिन हम इसे अपने मुल्क की बदक़िस्मती समझते हैं कि ख़िदमत करने या नेकी के काम करने के लिये सोने या चांदी के मैडिल से हमें बहलावा दिया जाये. अंग्रेज़ों ने ऊंची तनख़्वाह का क़ायदा जारी किया क्योंकि उन्हें ख़ुद ऊंची तनख़्वाहें लेनी थीं और चाहिये भी थीं. हमने इस क़ायदे को जारी रखा है जिसकी वजह से जिस्मानी काम को या हाथ से मेहनत करने को जिस नफ़रत के साथ पहले देखा जाता था आज भी उसी तरह देखा जाता है. बजाय इसके कि हम इस दस्तूर को ख़तम करते, मैडिल बांटने का सिलसिला और जारी कर दिया. आगे चलकर उन मैडिल वालों या उनके चाहने वालों की एक जात ही खड़ी हो जाने वाली है जो हुकूमत की ख़ुशनूदी के फ़न में अपने को माहिर कर लेती है. कल नतीजा यह होगा कि अच्छी प्रेरनाएं पैदा होने की बजाय नामुनासिब प्रेरनाएं पैदा होंगी और लोगों के आपस के फ़र्क़ और भी बढ़ेंगे.

ज़ाहिर है कि हर सरकार इनाम, इक्राम या मैडिल अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ तक़सीम करती है. यानी "भारत



# چار میڈل!

تاریخ 15 اگست کو نئی دلی سے راشٹرپتی کی طرف سے ایک عجیب و غریب اعلان نکلا. اس اعلان میں دو طرح کے، یا کہنا چاہئے چار طرح کے، میڈلوں کی تقسیم کا اظہار کیا گیا :— "بھارت رتن" میڈل اور "پدم وبھوشن" میڈل. پدم وبھوشن میڈل میں تین درجے یا ورگ کئے گئے—پہلا ورگ، دوسرا ورگ اور تیسرا ورگ. اس اعلان میں یہ بتایا گیا ھے کہ بھارت کے ودھان کی دھارا 18 کے مطابق خطاب نہیں بانٹے جاسکتے لیکن دیش کے بڑے بڑے سائنس داں، انجینیر، کلاکار وغیرہ کو ان کے کام کے صلے میں یہ میڈل دئے جارھے ھیں.

انگریزی دستور کے مطابق میڈل چھاتی پر لٹکائے جاتے ھیں اور دربار یا خوشی یا جلسہ کے موقع پر لوگ انہیں لگا کر آتے ھیں. ھمیں نہیں معلوم کہ سر، خان بہادر، یا رائے بہادر کی طرح لوگ اپنے نام کے آگے "بھارت رتن" یا "پدم وبھوشن" لکھ سکینگے یا نہیں. لکھیں نہ لکھیں، یہ کوئی اھمیت کی چیز نہیں ھے. اصل بات یہ ھے کہ ان میڈلوں کی ضرورت کیا پڑی؟ جواب ھوگا کہ سیواؤں کے عیوض میں دئے گئے ھیں تاکہ دوسرے لوگوں کا بھی اُتساہ بڑھے. تو کیا ھم اس کے یہ معنی لگائیں کہ آزاد ھندستان میں بڑے یا اُونچے کام کی طرف لوگوں کے اندر پریرنا پیدا کرنے کے لئے اس وقت تک جہاں اُونچی تنخواھیں دی جاتی ھیں اب (آزادی کے سات سال بعد) میڈل کی بھی درکار محسوس ھونے لگی. کوئی کہیگا کہ یہ انسانی کمزوری (Human weakness) ھے لیکن ھم اسے اپنے ملک کی بدقسمتی سمجھتے ھیں کہ خدمت کرنے یا نیکی کے کام کرنے کے لئے سونے یا چاندی کے میڈلوں سے ھمیں بہلاوا دیا جائے. انگریزوں نے اُونچی تنخواہ کا قاعدہ جاری کیا کیونکہ انہیں خود اُونچی تنخواھیں لینی تھیں اور چاھئیں بھی تھیں. ھم نے اس قاعدہ کو جاری رکھا ھے جس کی وجہ سے جسمانی کام کو یا ھاتھ سے محنت کرنے کو جس نفرت کے ساتھ پہلے دیکھا جاتا تھا آج بھی اس طرح دیکھا جاتا ھے. بجائے اس کے کہ ھم اس دستور کو ختم کرتے، میڈل بانٹنے کا سلسلہ اور جاری کردیا. آگے چلکر ان میڈل والوں یا اُن کے چاھنے والوں کی ایک جات ھی کھڑی ھو جانے والی ھے جو حکومت کی خوشنودی کے فن میں اپنے کو ماھر کر لیتی ھے. کل نتیجہ یہ ھوگا کہ اچھی پریرنائیں پیدا ھونے کے بجائے نامناسب پریرنائیں پیدا ھونگی اور لوگوں کے آپس کے فرق اور بھی بڑھینگے.

ظاھر ھے کہ ھر سرکار انعام، اکرام یا میڈل اپنی مرضی کے مطابق تقسیم کرتی ھے. یعنی "بھارت

लोगों की जान के मुक़ाबले अपनी शान को ज्यादा ऊँचा समझे. इस ठैहराव से भी यह नहीं साफ़ साफ़ पता चलता कि क्या समाजवादी सरकार किसी मौक़े पर गोली चलाने की छूट देगी या नहीं ? इस तरह कांग्रेस प्रधान का ख़त और प्रजा समाजवादी पार्टी के ठैहराव, दोनों इस बात में चुप हैं कि सरकार की तरफ़ से गोली चलनी चाहिये या नहीं. और अगर चले तो कब ? लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि इन दोनों के पीछे एक ही जज़्बा काम कर रहा है—वह यह कि अपने घरेलू मामले में हमको अहिंसा और शान्ति के रास्ते से तय कर लेने चाहिये.

लेकिन सब मामलों में, ख़ासकर आर्थिक मामलों में, दो फ़रीकों में से एक फ़रीक सरकार ज़रूर रहती है. इसलिये हमारा ख़याल है कि हमारे देश में शान्ति या अमन का वातावरन तब तक क़ायम नहीं हो सकता जब तक सरकार अपने पर कुछ पाबन्दी न करे और पुलिस या मिलिटरी का सहारा न ले. इस वास्ते हिन्दुस्तान में लोकशाही राज्य के ख़ूबसूरती और शान्ति के साथ चलने के लिये यह ज़रूरी है कि सरकार की तरफ़ से यह साफ़ साफ़ ज़ाहिर हो जाये कि देश के भीतरी मामलों में वह गोली या हिंसा का रास्ता नहीं अख़्तियार करेगी.

इस सिलसिले में, पाठकों को यह जानकर ख़ुशी होगी कि तारीख़ 22 जुलाई को, बैरिया ( मुज़फ़्फ़रपुर ज़िला ) गांव में प्रार्थना प्रवचन में श्री विनोबा जी ने क्या कहा था ? उनकी राय है :

> सार्वजनिक कार्यकर्ता भिन्न भिन्न सवालों को लेकर अपने आन्दोलन या तहरीक चलाते रहें. लेकिन वह इस बात का ध्यान रखें कि किसी मौक़े पर भी हिंसा का रास्ता न लिया जाये. इसी तरह से सरकार को भी यह ऐलान कर देना चाहिये कि देश के मामलों में वह कभी बन्दूक़ का इस्तेमाल नहीं करेगी.

यह मसला ऐसा गम्भीर है कि जिस पर क्या सरकारी अहलकार और क्या राजनीतिक या सामाजिक कार्यकर्ता, सबको इसपर गहराई से ग़ौर करना चाहिये. क्या हम यह उम्मीद करें कि कांग्रेस और प्रजा समाजवादी पार्टियों के लोग—अपनी निजी सार्वजनिक हैसियत में, और सरकारी शासन के अलमबर्दार की हैसियत में—यह ज़ाहिर करेंगे कि अपनी जिम्मेदारियों और फ़र्ज़ को निभाने में वह हिंसा की ताक़तों का आश्रय अब नहीं लेंगे. अगर वह ऐसा करते हैं तो इससे मुल्क को एक बड़ी अच्छी रहनुमाई हासिल होगी. इससे लोगों के अन्दर एक ज़बरदस्त आत्म विश्वास पैदा होगा. इससे हमारी शान्ति और तरक़्क़ी का रास्ता खुल जायेगा और हम दुनिया की निगाह में भी, सही माने में, ऊँचा उठेंगे.

30. 9. '54 —सुरेशराम भाई



لوگوں کی جان کے مقابلے اپنی شان کو زیادہ اُونچا سمجھے . اِس ٹھہراؤ سے بھی یہ نہیں صاف صاف پتہ چلتا کہ کیا سماج وادی سرکار کسی موقعے پر گولی چلانے کی چھوٹ دیگی یا نہیں ؟ اِس طرح کانگریس پردھان کا خط اور پرجا سماج‌وادی پارٹی کے ٹھہراؤ' دونوں اِس بات میں چپ ھیں کہ سرکار کی طرف سے گولی چلنی چاہئے یا نہیں . اور اگر چلے تو کب؟ لیکن اِس سے اِنکار نہیں کیا جاسکتا کہ اِن دونوں کے پیچھے ایک ھی جزبہ کام کررھا ھے—وہ یہ کہ اپنے گھریلو معاملے میں ھم کو اھنسا اور شانتی کے راستے سے طے کرلینے چاھئے .

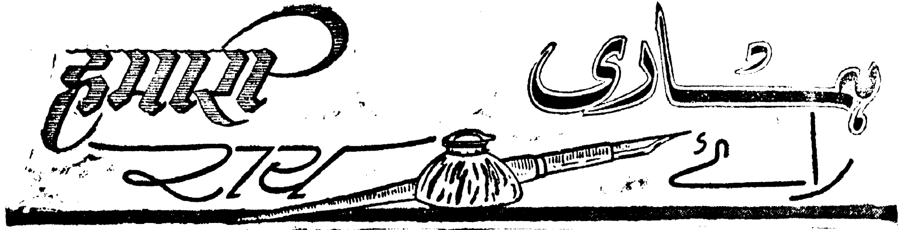
لیکن سب معاملوں میں' خاص کر آرتھک معاملوں میں' دو فریقوں میں سے ایک فریق سرکار ضرور رھتی ھے . اِس لئے ھمارا خیال ھے کہ ھمارے دیش میں شانتی یا امن کا واتاورن تب تک قائم نہیں ھو سکتا جب تک سرکار اپنے پر کچھ پابندی نہ کرے اور پولس یا میلٹری کی گولی کا سہارا نہ لے . اِس واسطے ھندستان میں لوک شاھی راجیہ کے خوبصورتی اور شانتی کے ساتھ چلنے کے لئے یہ ضروری ھے کہ سرکار کی طرف سے یہ صاف ظاھر ھو جائے کہ دیش کے بھیتری معاملوں میں وہ گولی یا ھنسا کا راستہ نہیں اختیار کرے گی .

اِس سلسلے میں' پاٹھکوں کو یہ جان کر خوشی ھوگی کہ تاریخ 22 جولائی کو' بیریا ( مظفرپور ضلع ) گاؤں میں پرارتھنا پروچن میں شری ونوبا جی نے کیا کہا تھا ؟ اُن کی رائے ھے :

> ساروجنک کاریہ‌کرتا بھن بھن سوالوں کو لے کر اپنے آندولن یا تحریک چلاتے رھیں . لیکن وہ اِس بات کا دھیان رکھیں کہ کسی موقع پر بھی ھنسا کا راستہ نہ لیا جائے . اِسی طرح سے سرکار کو بھی یہ اعلان کر دینا چاھئے کہ دیش کے معاملوں میں وہ کبھی بندوق کا اِستعمال نہیں کرے گی .

یہ مسئلہ ایسا گمبھیر ھے کہ جس پر کیا سرکاری اھلکار اور کیا راجنتک یا سماجک کاریہ‌کرتا' سب کو اِس پر گہرائی سے غور کرنا چاھئے . کیا ھم یہ اُمید کریں کہ کانگریس اور پرجا سماج‌واد پارٹیوں کے لوگ—اپنی نجی ساروجنک حیثیت میں اور سرکاری شاسن کے المبردار کی حیثیت میں—یہ ظاھر کرینگے کہ اپنی ذمہ‌داریوں اور فرض کو نبھانے میں وہ ھنسا کی طاقتوں کا آشرئیے اب نہیں لینگے . اگر وہ ایسا کرتے ھیں تو اِس سے ملک کو ایک بڑی اچھی رھنمائی حاصل ھوگی . اِس سے لوگوں کے اندر ایک زبردست آتم وشواس پیدا ھوگا . اِس سے ھماری شانتی اور ترقی کا راستہ کھل جائے گا اور ھم دنیا کی نگاہ میں بھی' صحیح معنی میں' اُونچا اُٹھینگے .

—سریش رام بھائی 30. 9. '54




## देश की मांग

हाल ही में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने प्रदेश कांग्रेस कमेटियों के सभापति के नाम एक चिट्ठी भेजी है. उसमें उन्होंने इस बात पर बड़ा दुख जाहिर किया है कि हमारे सार्वजनिक जीवन में लोगों का झुकाव किसी न किसी तरह की हिंसात्मक कार्रवाई की तरफ़ बढ़ता जा रहा है. इस ढंग को उन्होंने खतरनाक कहा है और लोकशाही राज्य की जड़ के खिलाफ़ बताया है. उनका यह भी कहना है :

> जब हम अपनी आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे थे तो हिंसा के खिलाफ़ थे. ऐसी सूरत में आज जब हमने आज़ादी हासिल कर ली है, तब हमें हिंसा के और भी खिलाफ़ होना चाहिये. आजकल तो अपने सवालों को हल करने के लिये हमारे पास लोकशाही साधन और मशीनरी भी मौजूद है.

कांग्रेस प्रधान की इस सूचना का हम दिल से स्वागत करते हैं. उनका यह सलाह देना कि अब हमको अपने सवाल हल करने में बन्दूक़ या डंडे की मदद नहीं लेनी चाहिये, बहुत ही सुहावनी सलाह है. लेकिन उनकी चिट्ठी से यह नहीं पता चलता कि क्या वह यह भी चाहेंगे कि हिन्दुस्तान के सभी प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारें घरेलू मामलों में हिंसा का सहारा लेना छोड़ दें और उनकी पुलिस आदि केवल शान्तिमय तरीक़ों पर जनता की सेवा करें. थोड़े दिन हुए ट्रावनकोर-कोचीन प्रदेश में गोली चली थी. उस घटना पर प्रजा समाजवादी पार्टी ने अपना बहुत अफ़सोस प्रकट किया और थोड़े दिन हुए जब दिल्ली में उसकी कार्य समिति की बैठक हुई तो एक प्रस्ताव भी प्रजा समाजवादी पार्टी ने पास किया. उसमें कहा गया है कि जब यह डर हो कि जनता की तरफ़ से ईंट पत्थर फेंके जायेंगे, या यह समझा जाये कि भीड़ कोई और खतरनाक रूप ले लेगी, या उससे शान्ति को खतरा पैदा होगा, तो ऐसी हालतों में पुलिस का गोली चलाना या लोगों को मारना इन्साफ़ से दूर है. और कोई भी लोकशाही सरकार यह नहीं बर्दाश्त करेगी कि

## دیش کی مانگ

حال ہی میں پنڈت جواہر لال نہرو نے پردیش کانگریس کمیٹیوں کے سبھاپتی کے نام ایک چٹھی بھیجی ھے. اُس میں اُنہوں نے اِس بات پر بڑا دکھ ظاہر کیا ھے کہ ہمارے سارو جنک جیون میں لوگوں کا جھکاؤ کسی نہ کسی طرح کی ہنساتمک کارروائی کی طرف بڑھتا جارہا ھے. اِس ڈھنگ کو اُنہوں نے خطرناک کہا ھے اور لوک شاہی راجیہ کی جڑ کے خلاف بتایا ھے. اُن کا یہ بھی کہنا ھے :

> جب ہم اپنی آزادی کی لڑائی لڑ رہے تھے تو ہنسا کے خلاف تھے. ایسی صورت میں آج جب ہم نے آزادی حاصل کرلی ھے، تب ہمیں ہنسا کے اور بھی خلاف ہونا چاہئے. آجکل تو اپنے سوالوں کو حل کرنے کے لئے ہمارے پاس لوک شاہی سادھن اور مشینری بھی موجود ھے.

کانگریس پردھان کی اِس سوچنا کا ہم دل سے سواگت کرتے ھیں. اُن کا یہ صلاح دینا کہ اب ہم کو اپنے سوال حل کرنے میں بندوق یا ڈنڈے کی مدد نہیں لینی چاہئے، بہت ہی سہاونی صلاح ھے. لیکن اُن کی چٹھی سے یہ نہیں پتہ چلتا کہ کیا وہ یہ بھی چاہینگے کہ ہندستان کے سبھی پرانتیہ اور کیندریہ سرکاریں گھریلو معاملوں میں ہنسا کا سہارا لینا چھوڑ دیں اور اُن کی پولیس آدی کیول شانتی مئے طریقوں پر جنتا کی سیوا کریں. تھوڑے دن ہوئے ٹراونکور-کوچین پردیش میں گولی چلی تھی. اُس گھٹنا پر پرجا سماجوادی پارٹی نے اپنا بہت افسوس پرکٹ کیا اور تھوڑے دن ہوئے جب دلی میں اُس کی کاریہ سمتی کی بیٹھک ہوئی تو ایک پرستاؤ بھی پرجا سماجوادی پارٹی نے پاس کیا. اُس میں کہا گیا ھے کہ جب یہ ڈر ہو کہ جنتا کی طرف سے اینٹ پتھر پھینکے جائینگے، یا یہ سمجھا جائے کہ بھیڑ کوئی اور خطرناک روپ لے لیگی یا اُس سے شانتی کو خطرہ پیدا ہوگا، تو ایسی حالتوں میں پولس کا گولی چلانا یا لوگوں کو مارنا اِنصاف سے دور ھے. اور کوئی بھی لوک شاہی سرکار یہ نہیں برداشت کریگی کہ

## सुनिये काका साहब !

लिखने वाली—रेहाना तैयब जी; निकालने वाले—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा; लिखावट—हिन्दी; सफ़ा—270; दाम—दो रुपया चार आना.

तैयब जी खानदान से आज़ादी के आन्दोलन से दिलचस्पी रखने वाले सभी वाक़िफ़ हैं. रेहाना जी उसी बाग़ की एक फूल हैं. काका साहब ने इच्छा ज़ाहिर की कि रेहाना जी अपने खानदान के बारे में उन्हें कुछ सुनायें और उन्होंने कहा—सुनिये काका साहब ! यह नाम रेहाना जी की शैली से मेल खाता है. उनकी क़लम ऐसी चलती है जैसी उनकी ज़बान चलती हो. कहीं बनावट नहीं, सीधी सपाट बात ! जैसे दो आदमी बातें कर रहे हों.

रेहाना जी पारसी हैं, अंग्रेज़ी वातावरन में रहीं, गुजराती अंग्रेज़ी के बाद उनकी भाशा बनी. पर हिन्दी वह इतनी अच्छी लिख लेती हैं कि देखकर आश्चर्य होता है.

यह किताब ऐसे तो एक बड़े खानदान का स्मरन है. पर इस के आगे इस किताब का विस्तार है. यह एक समय का एक संक्षिप्त समाजी इतिहास है. इसमें बड़े अच्छे क़िस्सों का जिकर है. उनसे सबक़ मिलते हैं, उन्होंने हमारे जीवन पर क्या असर डाला, इसकी झांकी मिलती है.

एक बार जो इस पुस्तक को उठा लेगा वह इसे बिना पूरा किये न छोड़ेगा, यह मुझे विश्वास है. इतनी अच्छी पुस्तक और ख़राब छपाई, यह देखकर मन कुढ़ जाता है. आशा है प्रकाशक दोबारा अच्छे टाइप में इस अनमोल रत्न को छापेंगे.

—मुस्तफ़ा हैदर नक़वी

## भूदान तहरीक का ख़ाका

लिखने वाले—मुहम्मद हुसैन अन्सारी त्यागी; निकालने वाले—अन्सारी मंज़िल भदाई (बनारस); लिखावट—उर्दू; सफ़्हा—23; दाम—चार आने.

मुहम्मद हुसैन साहब अन्सारी ने गांधी जी की बहुत सेवा की है. महात्मा जी ने अपने ख़त में उन्हें लिखा है—"जिस तरह तुमने हमारी सेवा की है वैसे ही देश की सेवा करते रहो, मैं तुमको अब भी अपना बेटा ही मानता हूं." अन्सारी साहब गांधी भक्त हैं और गांधी जी के उसूलों पर चलना चाहते हैं. आजकल विनोबा जी के भूदान पर अपनी सारी ताक़त लगाए हैं. सर्वोदय साहित्य उर्दू में बहुत कम है. अन्सारी साहब ने यह किताब लिखकर भूदान का परिचय उर्दू प्रेमी जनता से कराया है.

इस किताब में भूदान की तहरीक, उसकी शुरूआत, उसके दर्शन, उसकी तरक़्क़ी, सब पर थोड़ी थोड़ी रोशनी पड़ती है और गांववाला जो शब्दों के बवन्डर में नहीं फंसता इस किताब को पढ़कर भूदान को मोटे तौर पर अच्छी तरह समझ सकता है.

—मुस्तफ़ा हैदर नक़वी



## سنیئے کاکا صاحب !

لکھنے والی—ریحانہ طیب جی؛ نکالنے والے—ہندستانی پرچار سبھا؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے—270 دام—دو روپیہ چار آنہ۔

طیب جی خاندان سے آزادی کے آندولن سے دلچسپی رکھنے والے سبھی واقف ہیں۔ ریحانہ جی اُسی باغ کی ایک پھول ہیں۔ کاکا صاحب نے اچھا ظاہر کی کہ ریحانہ جی اپنے خاندان کے بارے میں اُنھیں کچھ سنائیں اور اُنھوں نے کہا—سنیئے کاکا صاحب ! یہ نام ریحانہ جی کی شیلی سے میل کھاتا ہے۔ اُن کی قلم ایسی چلتی ہے جیسی اُن کی زبان چلتی ہو۔ کہیں بناوٹ نہیں، سیدھی سپاٹ بات ! جیسے دو آدمی باتیں کر رہے ہوں۔

ریحانہ جی پارسی ہیں، انگریزی واتاورن میں رہیں، گجراتی انگریزی کے بعد ان کی بھاشا بنی۔ پر ہندی وہ اتنی اچھی لکھ لیتی ہیں کہ دیکھکر آشچریہ ہوتا ہے۔

یہ کتاب ایسے تو ایک بڑے خاندان کا اسمرن ہے۔ پر اِس کے آگے اِس کتاب کا وستار ہے۔ یہ ایک سمئے کا ایک سنکچھپت سماجی اِتہاس ہے۔ اِس میں بڑے اچھے قصوں کا ذکر ہے، اُن سے سبق ملتے ہیں، اُنھوں نے ہمارے جیون پر کیا اثر ڈالا، اس کی جھانکی ملتی ہے۔

ایک بار جو اِس پستک کو اُٹھائے گا وہ اِسے بنا پورا کئے نہ چھوڑے گا، یہ مجھے وشواس ہے۔ اتنی اچھی پستک اور خراب چھپائی، یہ دیکھکر من کڑھ جاتا ہے۔ آشا ہے پرکاشک دوبارا اچھے ٹائپ میں اِس انمول رتن کو چھاپیں گے۔

—مصطفیٰ حیدر نقوی

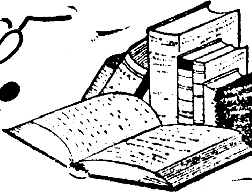
## بھودان تحریک کا خاکہ

لکھنے والے—محمد حسین انصاری تیاگی؛ نکالنے والے—انصاری منزل بھدہی (بنارس)؛ لکھاوٹ—اُردو؛ صفحے—23؛ دام—چار آنہ۔

محمد حسین صاحب انصاری نے گاندھی جی کی بہت سیوا کی ہے۔ مہاتما جی نے اپنے خط میں اُنھیں لکھا ہے—"جس طرح تم نے ہماری سیوا کی ہے ویسے ہی دیش کی کرتے رہو، میں تم کو اب بھی اپنا بیٹا ہی مانتا ہوں۔" انصاری صاحب گاندھی بھگت ہیں اور گاندھی جی کے اصولوں پر چلنا چاہتے ہیں۔ آجکل ونوباجی کے بھودان پر اپنی ساری طاقت لگائے ہیں۔ سروودے ساہتیہ اُردو میں بہت کم ہے۔ انصاری صاحب نے یہ کتاب لکھکر بھودان کا پریچے اُردو پریمی جنتا سے کرایا ہے۔

اس کتاب میں بھودان کی تحریک، اُس کی شروعات، اُس کے درشن، اُس کی ترقی، سب پر تھوڑی تھوڑی روشنی پڑتی ہے اور گاؤں والا جو شبدوں کے بونڈر میں نہیں پھنستا اِس کتاب کو پڑھکر بھودان کو موٹے طور پر اچھی طرح سمجھ سکتا ہے۔

—مصطفیٰ حیدر نقوی

# कुछ किताबें  کچھ کتابیں

## हिन्दी पाठावली—दूसरी किताब

संपादक—गिरिराज किशोर, नरेन्द्र अंजरिया; निकालने वाले—गुजराती विद्यापीठ, अहमदाबाद; लिखावट—हिन्दी; सफ़े—178; दाम—एक रुपया चार आना.

यह पुस्तक विद्यापीठ ने अपनी तीसरी परीक्षा के लिये तैयार की है. इसमें गद्य और पद्य दोनों हैं. इस संग्रह में पाठों और काव्यों के चुनने में भाशा की सरलता और उसके बहाव का ख़्याल रखा गया है.

यह पुस्तक हमारी पाठावलियों से बिल्कुल अलग है. हमारी पुस्तकें कठिन, ठस, नीरस और बेमतलब सी इसके मुक़ाबिले में दीख पड़ती हैं. इस पुस्तक से हमें प्रेरना लेनी चाहिये.

हिन्दी के विकास में अहिन्दी भाशियों ने शायद अधिक सहयोग दिया है, हम तो केवल रोड़े ही अटकाते रहे हैं. हमारी परम्परा रही है कि यदि कोई थोड़ा करे तो हम अधिक आभार मानते हैं. पर हम यह सब कुछ भूल गए हैं. आज अहिन्दी भाशी लेखकों की रचनाएं हमारे कोर्स में कहां हैं ? दक्खिन में बहुत से हिन्दी प्रचारक हिन्दी में रचनाएं करते हैं, पर हम अपने घमन्ड में उन्हें कोई स्थान नहीं देते.

विद्यापीठ ने यह पुस्तक तैयार करके हमें रास्ता दिखाया है. इसमें हिन्दी के लेखक और अहिन्दी भाशी हिन्दी लेखकों की रचनाएं एक साथ रखी गई हैं, इसमें उर्दू के साथ भी भेद भाव नहीं बरता गया. यह है वह हिन्दी जो सबकी हिन्दी होगी, जो राश्ट्र भाशा होगी. हमारी पुस्तकों की हिन्दी अप्रगतिशील और 'कूप जल' के समान है, बहता नीर इस पुस्तक की हिन्दी है.

आशा है विद्यापीठ दूसरे संग्रह भी शीघ्र निकालेगी और सारे देश में इन संग्रहों का स्वागत होगा.

—मुस्तफ़ा हैदर नक़वी

## ھندی پاٹھا ولی—دوسری کتاب

سمپادک—گری راج کشور، نریندر انجریا؛ نکالنے والے—گجراتی ودیاپیٹھ، اہمدآباد؛ لکھاوٹ—ھندی؛ صفحے 178؛ دام—اک روپیہ چار آنہ.

یہ پستک ودیاپیٹھ نے اپنی تیسری پریکشا کے لئے تیار کی ھے. اِس میں گدیہ اور پدیہ دونوں ھیں. اِس سنگرہ میں پاٹھوں اور کاویوں کے چننے میں بھاشا کی سرلتا اور اُس کے بہاؤ کا خیال رکھا گیا ھے.

یہ پستک ھماری پاٹھاولیوں سے بالکل الگ ھے. ھماری پستکیں کٹھن، ٹھس، نیرس اور بے مطلب سی اِس کے مقابلے میں دیکھ پڑتی ھیں. اِس پستک سے ھمیں پریرنا لینی چاھئے.

ھندی کے وکاس میں اھندی بھاشیوں نے شاید ادھک سہیوگ دیا ھے، ھم تو کیول روڑے ھی اٹکاتے رھے ھیں. ھماری پرمپرا رھی ھے کہ یدی کوئی تھوڑا کرے تو ھم ادھک آبھار مانتے ھیں. پر ھم یہ سب کچھ بھول گئے ھیں. آج اھندی بھاشی لیکھکوں کی رچنائیں ھمارے کورس میں کہاں ھیں؟ دکھن میں بہت سے ھندی پرچارک ھندی میں رچنائیں کرتے ھیں، پر ھم اپنے گھمنڈ میں اُنہیں کوئی استھان نہیں دیتے.

ودیاپیٹھ نے یہ پستک تیار کرکے ھمیں راستہ دکھایا ھے. اِس میں ھندی کے لیکھک اور اھندی بھاشی ھندی لیکھکوں کی رچنائیں ایک ساتھ رکھی گئی ھیں، اِس میں اُردو کے ساتھ بھی بھیدبھاؤ نہیں برتا گیا. یہ ھے وہ ھندی جو سب کی ھندی ھوگی، جو راشٹر بھاشا ھوگی. ھماری پستکوں کی ھندی اپرگتی شیل اور 'کوپ جل' کے سمان ھے، بہتا نیر اِس پستک کی ھندی ھے.

آشا ھے ودیاپیٹھ دوسرے سنگرہ بھی شیگھر نکالیگی اور سارے دیش میں اِن سنگرھوں کا سواگت ھوگا.

—مصطفیٰ حیدر نقوی

बोली में पचास साठ फ़ी सदी द्राविड़ी लफ़्ज़ हैं, चालीस फ़ी सदी तुर्की, अर्बी, फ़ार्सी, अंग्रेज़ी वग़ैरा के. आर्य भाशा के मुश्किल से पांच फ़ी सदी लफ़्ज़ होंगे और वह भी ज्यादातर पूजा पाठ के जिनका हमारे जीवन से, हमारे काम धन्दों से, बहुत ही कम वास्ता है.

जो कुछ मैं ऊपर लिख आया हूं उसका वास्ता बोली से है, लिखी से नहीं. लिखी को पंडित साहित्य भाशा भी कहते हैं जो असल में साहत ( मरी हुई ) ज़बान है. लिखी में आजकल जो धांधली मचाई जा रही है वह सब पर रौशन है और ख़ूबी यह कि धांधली मचाने वाले बड़े विद्वान और महाबीर गिने जाते हैं, क्योंकि न उन्होंने अपनी बोली कभी पढ़ी और न कोई किताब इल्म बोली की पढ़ी.

तीसरा दृश्य इससे भी अनोखा है. खेती बाड़ी और कपड़ा बुनने को छोड़कर जितने लफ़्ज़ हाथ के काम की बाबत हैं वह लगभग सब तुर्की, फ़ार्सी और दूसरी बिदेसी बोलियों के हैं, रोटी और तवा ही नहीं, पकाना, उबालना, भूनना और शायद तलना भी तुर्की है. येही हाल सीने पिरोने का है. सीना पिरोना ही नहीं, तुरपना, बख़िया, संजाफ़, गोट, कुर्ता, पाजामा, क़मीज़, काट वग़ैरा तक़रीबन सभी बिदेसी. तुरखान, लोहार, राज, मज़दूर के जितने औज़ार हैं उनका नाम बिदेसी, यहां तक कि मेख़, कील, बिरन्जी तीनों लफ़्ज़ तुर्की के. समझ में नहीं आता यह हमारी कोरी भारती सभ्यता जिसपर हम सब नाज़ करते हैं कितने पानी में थी. और तो और, पढ़ने लिखने में भी क़लम, दवात, काग़ज़, स्याही पेंसिल वग़ैरा सब बिदेसी. संस्कृत का भी यही हाल है. लफ़्ज़ लिपि फ़ार्सी में से लिया गया. मेला स्याही और मेलानदिक दवात यूनानी में से.

चौथा दृश्य तो इल्म बोली का एक अनटूट क़ानून है जो सब ज़बानों पर लागू है, लेकिन जो हमारी बोली में आसानी से परखा जा सकता है. क़ानून यह है कि बोली का बोली पर असर पड़ता है, लिखी का नहीं या नहीं के बराबर. इन दो हज़ार बरसों में संस्कृत का हमारी बोली पर बराय नाम ही साया पड़ा. इसी तरह मुसलमानों की लिखी भाशा फ़ार्सी थी या अर्बी. लेकिन बोली उन मुसलमानों की जो यहां आये तुर्की थी, इसलिये बिदेसी लफ़्ज़ों में अक्सर लफ़्ज़ तुर्की के हैं. उसकी सबसे अच्छी मिसाल शायद तम्बाकू की है. तम्बाकू लफ़्ज़ तो आया अमरीका से जहां से तम्बाकू आया, लेकिन उसके बारे में और जितने लफ़्ज़ हमारी बोली में आए तक़रीबन सब तुर्की के है—जैसे हुक्क़ा, क़लई, कुल्फ़ी, नै, नैचा, गट्टा, चिलम, तवा, सुल्फ़ा, पेचवान, शायद हुक्क़ा पीना भी किसी लफ़्ज़ का तरजुमा हो. साफ़ है कि हमारे हिन्दी वालों को इस क़ानून से अपनी जानकारी बढ़ानी चाहिये.



بولی میں پچاس ساٹھ فی صدی دراوڑی لفظ ھیں، چالیس فی‌صدی ترکی، عربی، فارسی، انگریزی وغیرہ کے . آریہ بھاشا کے مشکل سے پانچ فی‌صدی لفظ ھونگے اور وہ بھی زیادہ تر پوجا پاٹھ کے جن کا ھمارے جیون سے، ھمارے کام دھندوں سے، بہت ھی کم واسطا ھے .

جو کچھ میں اوپر لکھ آیا ھوں اس کا واسطا بولی سے ھے، لکھی سے نہیں . لکھی کو پنڈت ساھتیہ بھاشا بھی کہتے ھیں جو اصل میں ساھت ( مری ھوئی ) زبان ھے . لکھی میں آجکل جو دھاندھلی مچائی جا رھی ھے وہ سب پر روشن ھے اور خوبی یہ کہ یہ دھاندھلی مچانے والے بڑے ودوان اور مہابیر گنے جاتے ھیں، کیونکہ نہ اُنھوں نے اپنی بولی کبھی پڑھی اور نہ کوئی کتاب علم بولی کی پڑھی .

تیسرا درشیہ اس سے بھی انوکھا ھے . کھیتی باڑی اور کپڑا بننےکو چھوڑ کر جتنے لفظ ھاتھ کے کام کی بابت ھیں وہ لگ بھگ سب ترکی، فارسی اور دوسری بدیسی بولیوں کے ھیں، روٹی اور توا ھی نہیں، پکانا، اُبالنا، بھوننا اور شاید تلنا بھی ترکی ھے . یہی حال سینے پرونے کا ھے . سینا پرونا ھی نہیں، ترپنا، بخیہ، سنجاف، گوٹ، کرتا، پاجامہ، قمیض، کٹ وغیرہ تقریباً سبھی بدیسی . ترکھان، لوھار، راج، مزدور کے جتنے اوزار ھیں ان کا نام بدیسی، یہاں تک کہ میخ کیل، برنجی تینوں لفظ ترکی کے . سمجھ میں نہیں آتا یہ ھماری کوری بھارتی سبھیتا جس پر ھم سب ناز کرتے ھیں کتنے پانی میں تھی . اور تو اور، پڑھنے لکھنے میں بھی قلم، دوات، کاغذ، سیاھی، پنسل وغیرہ سب بدیسی، سنسکرت کا بھی یہی حال ھے . لفظ لپی فارسی میں سے لیا گیا میلا، سیاھی اور میلا ندھک دوات یونانی میں سے .

چوتھا درشیہ تو علم بولی کا ایک ان ٹوٹ قانون ھے جو سب زبانوں پر لاگو ھے، لیکن جو ھماری بولی میں آسانی سے پرکھا جا سکتا ھے . قانون یہ ھے کہ بولی کا بولی پر اثر پڑتا ھے، لکھی کا نہیں یا نہیں کے برابر . ان دو ھزار برسوں میں سنسکرت کا ھماری بولی پر برائے نام ھی سایہ پڑا . اِسی طرح مسلمانوں کی لکھی بھاشا فارسی تھی یا عربی . لیکن بولی ان مسلمانوں کی جو یہاں آئے ترکی تھی، اِس لئے بدیسی لفظوں میں اکثر لفظ ترکی کے ھیں . اِس کی سب سے اچھی مثال شاید تمباکو کی ھے. تمباکو لفظ تو آیا امریکہ سے جہاں سے تمباکو آیا، لیکن اس کے بارے میں اور جتنے لفظ ھماری بولی میں آئے تقریباً سب ترکی کے ھیں جیسے—حقہ، قلعی، کلفی، نے، نیچہ، گٹا، چلم، توا، سلفہ، پیچوان، شاید حقہ پینا بھی کسی ترکی لفظ کا ترجمہ ھو . صاف ھے کہ ھمارے ھندی‌والوں کو اس قانون سے اپنی جانکاری بڑھانی چاھئے .

स्वरों को वह कैसे बोलते थे. द्रावड़ी बोली की वह आवाजें जो आर्य भाषा में बिल्कुल नहीं थीं—जैसे मोरधन्य ट, ठ, ड, ढ, ड़े और ण वग़ैरा—इस भाषा और प्राकृत में जोर पकड़ गईं. ग्रामर भी बदली. और अगरचे कुछ लफ़्ज़ आर्य भाषा के और ख़ासकर वह जिनका वास्ता पूजा पाठ से था इस प्राकृत में लिये गये. देसी भाषा के लफ़्ज़ जो प्राकृत में आये सत्तर, अस्सी फ़ीसदी से कम न थे. फ़र्क़ सिर्फ़ इतना रहा कि देशी भाषा के लफ़्ज़ जो प्राकृत में लिये गये ज्यों के त्यों लिये गये और आर्य भाषा के जो लिये गये उन्हें छोटा करके और देसी गलों के म्वाफ़िक़ बनाकर लिया गया.

इस प्राकृत में से निकलीं हमारी सारी हिन्दुस्तान की बोलियां और इस प्राकृत में से ही गढ़ी गई वह लिखी भाशा जिसे लोग संस्कृत कहते हैं. लिखी और बोली में बड़ा फ़र्क़ यह है कि लिखी के लफ़्ज़ लम्बे होते रहते हैं और बोली के छोटे. बड़ी कोशिशों से इस लिखी में आर्य भाशा के कुछ लफ़्ज़ और ठूंसे गये, लेकिन फिर भी बहुत से लफ़्ज़ देसी बोली के ही इसमें लिये गये लेकिन ज़रा उनकी शकल बिगाड़ कर यानी लम्बी करके. संस्कृत में कितने लफ़्ज़ आर्य भाशा के और कितने देसी बोली के, इसकी अभी तक किसी ने पूरी जांच नहीं की. लेकिन मेरा अनुमान यह है कि इसमें कम से कम 50 फ़ी सदी लफ़्ज़ द्रावड़ी के, 20 फ़ी सदी तुर्की, अर्बी वग़ैरा के हैं जो यहां की प्राकृत में रम गये थे. इन लफ़्ज़ों को आर्य भाशा का जताने के लिये इन लफ़्ज़ों की झूटी आर्य धातु ( जड़ें ) बनाई गयीं और उसपर ऐसा मुलम्मा चढ़ाया गया कि हमारे अक्सर लोग, अनपढ़ ही नहीं विद्वान भी, संस्कृत को शुद्ध आर्य भाशा समझते हैं. जिसे देखो वह यही कहता है कि हिन्दुस्तान की बोलियां संस्कृत में से निकलीं और तमाशा यह है कि इसके सबूत में अक्सर वही शब्द पेश करता है जो संस्कृत ने हमारी देसी बोली से लिये. चुनांचे हाल ही में मैंने पंडित सुन्दर लाल जैसे आज़ाद दिमाग़ का एक आर्टिकिल पढ़ा जिसमें उन्होंने यह साबित करने की कोशिश की थी कि मद्रास की जो द्रावड़ी ज़बानें कहलाती हैं उनमें बहुत से संस्कृत के लफ़्ज़ लिये गये हैं और इसलिये मद्रास वालों को हिन्दी सीखने में मुश्किल नहीं होनी चाहिये. मुझे अब याद नहीं कि मिसाल के तौर पर कौन से लफ़्ज़ पंडित जी ने संस्कृत के बताये थे, लेकिन वह सब नीर, पाप, चोर, बैर, चूमना, माला की क़िस्म के थे जो संस्कृत ने द्रावड़ी से लिये हैं. यहां इतना और जता देने की जरूरत है कि हमारी हिन्दुस्तानी, पंजाबी, राजस्थानी, ब्रज वग़ैरा पुरानी द्रावड़ी यानी प्राकृत के बहुत ज्यादा नजदीक हैं बनिस्बत तामिल, तैलेगू या मल्यालम के. डाक्टर एच. हेरास (H. Heras) की यह राय सच्ची मालूम होती है कि हिन्दुस्तानी और पंजाबी बोलियां ही द्रावड़ी से नहीं निकलीं, उनके बोलने वाले भी अस्ल़ी द्रावड़ी हैं. आज हमारी



سوروں کو وہ کیسے بولتے تھے. دراوڑی بولی کی وہ آوازیں جو آریہ بھاشا میں بالکل نہیں تھیں—جیسے موردھینہ ٹ، ٹھ، ڈ، ڈھ، ڑ اور اڑاں وغیرہ—اس بھاشا اور پراکرت میں زور پکڑ گئیں. گرامر بھی بدلی. اور اگرچہ کچھ لفظ آریہ بھاشا کے اور خاصکر وہ جن کا واسطا پوجا پاٹھ سے تھا اس پراکرت میں لئے گئے. دیسی بھاشا کے لفظ جو پراکرت میں آئے ستر، اسی فی‌صدی سے کم نہ تھے. فرق صرف اتنا رہا کہ دیسی بھاشا کے لفظ جو پراکرت میں لئے گئے جیوں کے تیوں لئے گئے اور آریہ بھاشا کے جو لئے گئے انہیں چھوٹا کر کے اور دیسی گلوں کے موافق بنا کر لیا گیا.

اس پراکرت میں سے نکلیں ہماری ساری ہندستان کی بولیاں اور اس پراکرت میں سے ہی گڑھی گئی وہ لکھی بھاشا جسے لوگ سنسکرت کہتے ہیں. لکھی اور بولی میں بڑا فرق یہ ہے کہ لکھی کے لفظ لمبے ہوتے رہتے ہیں اور بولی کے چھوٹے. بڑی کوششوں سے اس لکھی میں آریہ بھاشا کے کچھ لفظ اور ٹھونسے گئے، لیکن پھر بھی بہت سے لفظ دیسی بولی کے ہی اس میں لئے گئے، لیکن ذرا ان کی شکل بگاڑ کر یعنے لمبی کر کے. سنسکرت میں کتنے لفظ آریہ بھاشا کے اور کتنے دیسی بولی کے، اس کی ابھی تک کسی نے پوری جانچ نہیں کی. لیکن میرا انومان یہ ہے کہ اس میں کم سے کم 50 فی‌صدی لفظ دراوڑی کے، 20 فی‌صدی ترکی، عربی وغیرہ کے ہیں جو یہاں کی پراکرت میں رم گئے تھے. ان لفظوں کو آریہ بھاشا کا جتانے کے لئے ان لفظوں کی جھوٹی آریہ دھاتو ( جڑیں ) بنائی گئیں اور اس پر ایسا ملمع چڑھایا گیا کہ ہمارے اکثر لوگ، انپڑھ ہی نہیں ودوان بھی، سنسکرت کو شدھ آریہ بھاشا سمجھتے ہیں. جسے دیکھو وہ یہی کہتا ہے کہ ہندستان کی بولیاں سنسکرت میں سے نکلیں اور تماشا یہ ہے کہ اس کے ثبوت میں اکثر وہی شبد پیش کرتا ہے جو سنسکرت نے ہماری دیسی بولی سے لئے. چنانچہ حال ہی میں میں نے پنڈت سندر لال جیسے آزاد دماغ کا ایک آرٹیکل پڑھا جس میں اُنہوں نے یہ ثابت کرنے کی کوشش کی تھی کہ مدراس کی جو دراوڑی زبانیں کہلاتی ہیں ان میں بہت سے سنسکرت کے لفظ لئے گئے ہیں اور اس لئے مدراس والوں کو ہندی سیکھنے میں مشکل نہیں ہونی چاہئے. مجھے اب یاد نہیں کہ مثال کے طور پر کون سے لفظ پنڈت جی نے سنسکرت کے بتائے تھے لیکن وہ سب نیر، پاپ، چور، بیر، چومنا، مالا کی قسم کے تھے جو سنسکرت نے دراوڑی سے لئے ہیں. یہاں اتنا اور جتادینے کی ضرورت ہے کہ ہماری ہندستانی، پنجابی، راجستھانی، برج وغیرہ پرانی دراوڑی یعنی پراکرت کے بہت زیادہ نزدیک ہیں بنسبت تامل، تیلیگو یا ملیالم کے. ڈاکٹر ایچ. ہیراس (H. Heras) کی یہ رائے سچی معلوم ہوتی ہے کہ ہندستانی اور پنجابی بولیاں ہی دراوڑی سے نہیں نکلیں، ان کے بولنے والے بھی اصلی دراوڑی ہیں. آج ہماری

चाची, ताऊ, ताई, बाबा, दादा, दादी, नाना, नानी, मामा, मामी, मौसी, मौसा वग़ैरा. लेकिन शादी ब्याह की रिश्तेदारियों में अक्सर आर्य भाषा आ धमकी है—जैसे सास, ससुर, नन्दोई, नन्द, साला, साली, देवर, देवरानी जेट, जेठानी, बहू, विधवा, सुहागिन वग़ैरा. यहां देसी बोली से मुराद है उस बोली की जो आर्यों के आने से पहले यहां बोली जाती थी. यह द्रावड़ी ज़बान थी जिसमें मिस्री, तुर्की और दूसरी पच्छिमी ज़बानों की काफ़ी पुट थी. आर्य भाषा से मुराद है उस बोली की जो आर्य हिन्दुस्तान में आने से पहले बोलते थे.

निज की रिश्तेदारियों और ब्याह की रिश्तेदारियों में यह अन्तर क्यों? यह फ़र्क़ उस ज़माने की यादगार है जब आर्यों ने हिन्दुस्तान में आकर यहां के आदमियों को तो मार भगाया और उनकी औरतों को ज़बरदस्ती घर में रख लिया. बावजूद हमारे पुरानों की कहानियों के इसमें तो आजकल शक की गुंजाइश नहीं कि जब आर्य क़ौम यहां आई थी वह चरवाहा थी और इधर उधर घूमती फिरती थी. न उन्हें खेती बाड़ी का काम अच्छी तरह से आता था, न वह मकान वग़ैरा बनाना जानते थे. उनसे यहां के लोग बहुत ज्यादा सुलझे हुए थे. जो बच्चे हुए उन्होंने अपनी माओं की बोली सीखी. क़ुदरती तौर पर जो निजी रिश्तेदारियां थीं वह बराबर देसी बोली की रहीं और जो आर्यों से ब्याह की सी रिश्तेदारियां क़ायम हुईं उन पर आर्य भाषा का असर पड़ा.

दूसरा दृश्य भी इससे मिला जुला है. जैसा कि ऊपर लिख आया हूं, आर्य जब यहां आए तो ख़ासे उजड्ड थे. यहां के द्रावड़ी ख़ासे सुसंस्कृत थे. जब दो क़ौमें मिलती हैं, एक उजड्ड और एक सुसंस्कृत, तो चाहे मुल्की फ़तह उजड्डों की ही हो, जो कलचर पैदा होता है वह सारा नहीं तो बहुत कुछ सुसंस्कृत फ़रीक़ का ही होता है. चुनांचे यहां भी ऐसा ही हुआ. आर्य अपने देवताओं—अग्नि, इन्द्र, मृत्यु वग़ैरा—को छोड़ कर शिव जी के पांव पड़े और पीपल को पूजने लगे जो दोनों द्रावड़ों के देवता थे. चूंकि बोली कलचर का सब से बड़ा अंग है इसलिये यहां एक ऐसी बोली पैदा हुई जिसे वेदों के ज़माने में भाशा कहते थे और जो बाद में प्राकृत कहलाने लगी. इसमें द्रावड़ी 95 फ़ीसदी नहीं तो 90 फ़ी सदी घुस गई और आर्य भाषा पीछे रह गई. सब से ज्यादा असर तो उनकी आवाज़ों में हुआ. आर्य भाषा की जितनी आवाज़ें ऐसी थीं जो देसी बोली में नहीं पाई जाती थीं वह ऐसी ग़ायब हुईं जैसे गधे के सर से सींग, मसलन भाशा की ग़ैन, ख़े, क़ाफ़, जो जाती रहीं और अगर मुसलमान उन आवाज़ों को फिर यहां पर न लाते तो हमें उनका ज्ञान ही न होता, जैसे हमें इनके स्वरों ऋ, ॠ, लृ, ॡ का अब तक ज्ञान नहीं कि इन



چاچی، تاؤ، تائی، بابا، دادا، دادی، نانا، نانی، ماما، مامی، موسی، موسا وغیرہ۔ لیکن شادی بیاہ کی رشتہ داریوں میں اکثر آریہ بھاشا آدھمکی ھے—جیسے ساس، سسر، نندوئی، نند، سالا، سالی، دیور، دیورانی، جیٹھ، جٹھانی، بہو، ودھوا، سہاگن، وغیرہ . یہاں دیسی بولی سے مراد ھے اس بولی کی جو آریوں کے آنے سے پہلے یہاں بولی جاتی تھی . یہ دراوڑی زبان تھی جس میں مصری، ترکی اور دوسری پچھمی زبانوں کی کافی پٹ تھی . آریہ بھاشا سے مراد ھے اس بولی کی جو آریہ ھندستان میں آنے سے پہلے بولتے تھے .

نج کی رشتہ داریوں اور بیاہ کی رشتہ داریوں میں یہ انتر کیوں؟ یہ فرق اُس زمانہ کی یادگار ھے جب آریوں نے ھندستان میں آکر یہاں کے آدمیوں کو تو مار بھگایا اور اُن کی عورتوں کو زبردستی گھر میں رکھ لیا . باوجود ھمارے پرانوں کی کہانیوں کے اِس میں تو آجکل شک کی گنجائش نہیں کہ جب آریہ قوم یہاں آئی تھی وہ چرواھا تھی اور اِدھر اُدھر گھومتی پھرتی تھی . نہ انہیں کھیتی باڑی کا کام اچھی طرح سے آتا تھا، نہ وہ مکان وغیرہ بنانا جانتے تھے . ان سے یہاں کے لوگ بہت زیادہ سلجھے ھوئے تھے . جو بچے ھوئے انہوں نے اپنی ماؤں کی بولی سیکھی۔ قدرتی طور پر جو نجی رشتہ داریاں تھیں وہ برابر دیسی بولی کی رھیں اور جو آریوں سے بیاہ کی سی رشتہ داریاں قائم ھوئیں اُن پر آریہ بھاشا کا اثر پڑا .

دوسرا درشیہ بھی اس سے ملا جلا ھے . جیسا کہ اُوپر لکھ آیا ھوں، آریہ جب یہاں آئے تو خاصے اُجڈ تھے . یہاں کے دراوڑی خاصے سوسنسکرت تھے . جب دو قومیں ملتی ھیں، ایک اُجڈ اور ایک سوسنسکرت، تو چاھے ملکی فتح اُجڈوں کی ھو، جو کلچر پیدا ھوتا ھے وہ سارا نہیں تو بہت کچھ سوسنسکرت فریق کا ھی ھوتا ھے . چنانچہ یہاں بھی ایسا ھی ھوا . آریہ اپنے دیوتاؤں—اگنی - اندر - مرتیو وغیرہ—کو چھوڑکر شوجی کے پاؤں پڑے اور پیپل کو پوجنے لگے جو دونوں دراوڑوں کے دیوتا تھے . چونکہ بولی کلچر کا سب سے بڑا انگ ھے اِسلئے یہاں ایک ایسی بولی پیدا ھوئی جسے ویدوں کے زمانہ میں بھاشا کہتے تھے اور جو بعد میں پراکرت کہلانے لگی۔ اس میں دراوڑی 95 فیصدی نہیں تو 90 فیصدی گھس گئی اور آریہ بھاشا پیچھے رہ گئی۔ سب سے زیادہ اثر تو ان کی آوازوں میں ھوا۔ آریہ بھاشا کی جتنی آوازیں ایسی تھیں جو دیسی بولی میں نہیں پائی جاتی تھیں وہ ایسی غائب ھوئیں جیسے گدھے کے سر سے سینگ، مثلاً آریہ بھاشا کی غ، خ، ف، ق، ز جاتی رھیں اور اگر مسلمان ان آوازوں کو پھر یہاں پر نہ لاتے تو ھمیں ان کا گیان ھی نہ ھوتا، جیسے ھمیں ان کے سوروں رر، رری، لر، لری کا اب تک گیان نہیں کہ ان

# बोली—एक इतिहास (तवारीख़)

(मदन गोपाल)

इल्म बोली के माहिर कहते हैं कि हर देस की बोली उस देस की पुराने सामाजिक जीवन का सच्चा इतिहास होती है. किताबें झूटी हो सकती हैं और अगर वह एक फ़रीक़ या एक फ़रीक़ के ढिंडोरचियों ने लिखी हों तो अक्सर झूटी होती हैं, लेकिन बोली कभी झूट नहीं बोलती और न बोल सकती है.

बोली के इस एतिहासिक रूप की मिसाल जो आम तौर पर हिन्दुस्तान में मशहूर है वह अंग्रेज़ी की है. जहां तक मुझे जानकारी है हमने अपनी किसी बोली के एतिहासिक रूप को परखा ही नहीं, इसलिये मैं पहले अंग्रेज़ी मिसाल दर्ज करता हूं. ग्यारहवीं सदी में जब विलियम अव्वल ने इंग्लिस्तान फ़तह किया तो इंग्लिस्तान में जो बोली बोली जाती थी वह सेक्सन (Saxon) कहलाती थी. विलियम और उसके साथी नार्मन (Norman) एक क़िस्म की फ़्रांसीसी बोलते थे. उस ज़माने में सोना चांदी तो कम होता था मगर आदमी का धन उसके डंगर (जानवर) हुआ करते थे. हमारे इस शब्द 'धन' के असली माने हैं ही डंगर. जब नार्मनों की हुकूमत जम गई तो वह सारे डंगरों के मालिक बन बैठे. जीते डंगरों की रखवाली सेक्सन लोग करते थे, इसलिये जीते डंगरों का नाम भी सेक्सन ही रहा. लेकिन चूंकि उन डंगरों का गोश्त खाते थे नार्मन, इसलिये उनके गोश्त का नाम नार्मन हुआ. मसलन Cow (गाय) सेक्सन और उसका गोश्त Beef नार्मन लफ़्ज़ है. इसी तरह से Sheep (भेड़), Pig (सूअर) और Deer (हिरन) सेक्सन ज़बान के लफ़्ज़ हैं, लेकिन उनके गोश्त के लिये Mutton, Pork और Venison तीनों नाम नार्मन बोली के हो गये. जीते और मरे हुए जानवरों के नाम का यह फ़र्क़ ग्यारहवीं बारहवीं सदी की धांधली का एक ऐसा सच्चा नक़्शा खींचता है जो जबतक अंग्रेज़ी ज़बान ज़िन्दा है क़ायम रहेगा.

हमारी बोली में भी हमारे पुराने सामाजिक जीवन की काफ़ी यादगारें क़ायम हैं, लेकिन चूंकि हमारे देस में हमें अपनी बोली सिखाने का दस्तूर आम नहीं इसलिये वह यादगारें हमारे ध्यान में नहीं लाई जातीं. दो चार नमूने अपनी समझ के अनुसार मैं नीचे दे रहा हूं.

हमारी बोली में जितनी निज की (पेट की) रिश्तेदारियां हैं वह सब ठेठ देसी बोली की हैं—जैसे मां, बाप, बेटा, बेटी, बहन, भाई, भाभी या भावज, जीजा, जीजी, चाचा,

# بولی—ایک اِتہاس (تواریخ)

(مدن گوپال)

عام بولی کے ماہر کہتے ہیں کہ ہر دیس کی بولی اس دیس کی پرانے ساماجک جیون کا سچا اتہاس ہوتی ہے. کتابیں جھوٹی ہوسکتی ہیں اور اگر وہ ایک فریق کے ڈھنڈورچیوں نے لکھی ہوں تو اکثر جھوٹی ہوتی ہیں لیکن بولی کبھی جھوٹ نہیں بولتی اور نہ بول سکتی ہے.

بولی کے اِس اتیہاسک روپ کی مثال جو عام طور پر ہندستان میں مشہور ہے انگریزی کی ہے. جہاں تک مجھے جانکاری ہے ہم نے اپنی کسی بولی کے اتیہاسک روپ کو پرکھا ہی نہیں، اس لئے میں پہلے انگریزی مثال درج کرتا ہوں. گیارھویں صدی میں جب ولیم اول نے انگلستان فتح کیا تو انگلستان میں جو بولی بولی جاتی تھی وہ سیکسن (Saxon) کہلاتی تھی. ولیم اور اس کے ساتھی نارمن (Norman) ایک قسم کی فرانسیسی بولتے تھے. اس زمانہ میں سونا چاندی تو کم ہوتا تھا مگر آدمی کا دھن اس کے ڈنگر (جانور) ہوا کرتے تھے. ہمارے اس شبد 'دھن' کے اصلی معنے ہیں ہی ڈنگر. جب نارمنوں کی حکومت جم گئی تو وہ سارے ڈنگروں کے مالک بن بیٹھے. جیتے ڈنگروں کی رکھوالی سیکسن لوگ کرتے تھے، اس لئے جیتے ڈنگروں کا نام بھی سیکسن ہی رہا. لیکن چونکہ ان ڈنگروں کا گوشت کھاتے تھے نارمن، اس لئے ان کے گوشت کا نام نارمن ہوا. مثلاً Cow (گؤ) سیکسن اور اس کا گوشت Beef نارمن لفظ ہے. اسی طرح سے Sheep (بھیڑ) Pig (سور) اور Deer (ہرن) سیکسن زبان کے لفظ ہیں، لیکن ان کے گوشت کے لئے Mutton، Pork اور Venison تینوں نام نارمن بولی کے ہوگئے. جیتے اور مرے ہوئے جنوروں کے نام کا یہ فرق گیارھویں بارھویں صدی کی دھاندھلی کا ایک ایسا سچا نقشہ کھینچتا ہے جو جب تک انگریزی زبان زندہ ہے قائم رہیگا.

ہماری بولی میں بھی ہمارے پرانے ساماجک جیون کی کافی یادگاریں قائم ہیں، لیکن چونکہ ہمارے دیس میں ہمیں اپنی بولی سکھانے کا دستور عام نہیں اس لئے وہ یادگاریں ہمارے دھیان میں نہیں لائی جاتیں. دو چار نمونے اپنی سمجھ کے انوسار میں نیچے دے رہا ہوں.

ہماری بولی میں جتنی نج کی (پیٹ کی) رشتہ داریاں ہیں وہ سب ٹھیٹھ دیسی بولی کی ہیں—جیسے ماں، باپ، بیٹا، بیٹی، بہن، بھائی، بھابی یا بھاوج، جیجا، جی جی، چاچا،

देवता की सलाह से ऐसा ही फ़ैसला किया था. शायद उसको यह नहीं मालूम था कि नील नदी मिस्र में भी बहती है.

नाचते नाचते न्याम न्याम क़बीले के जादूगर डाक्टर ने नील नदी के देवता से जिसको वह हर साल भेंट दिया करता था, सलाह करने के लिये नदी में कूद पड़ा. उसकी इस हरकत को देखकर चुनाव बोर्ड के प्रतिधियों ने आश्चर्य के कारन दांतों तले उंगली दबाली. फिर वह बड़े जोश के साथ पानी पर अपनी जादुई छड़ी मारता हुआ धारे की तरफ़ बढ़ने लगा, पर तुरन्त ही उसने एक डुबकी लगाई. ऊपर उभरने पर इसका मुंह चुनाव की झोपड़ी के सामने था. उसके बाद वह नदी से निकल कर देवता की राय को प्रगट करने के लिये क़बीले के सरदार की तरफ़ बढ़ा. चूंकि नील के देवता ने स्वतंत्र सभा के पक्ष में राय देने की सलाह दी थी, इसलिये सरदार ने पूरे क़बीले समेत इसको वोट दिया.

इस चुनाव के नतीजे की घोशना होते ही सारे मिश्र में ख़ुशी की लहर दौड़ गई क्योंकि मिस्रियों की सूडान की समस्या पर बर्तानिया ऐसे शक्तिशाली देश के मुक़ाबले में सफलता प्राप्त हो गई. इसके अलावा इस नतीजे ने स्वेज़ कैनाल की समस्या पर बर्तानिया और मिस्र के झगड़े में मिस्र की पोज़ीशन पहले के बनिस्बत अधिक मज़बूत कर दी.

वास्तव में इस चुनाव के नतीजे ने बर्तानिया को गहरे सोच में डाल दिया है. स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए और सूडान में अपने मिटते हुए प्रभाव को दोबारा जमाने के लिये वर्तानिया ने हाथ पैर मारना शुरू कर दिया है. दुनिया ने इसका पहला प्रदर्शन सूडानी पार्लियामेन्ट के उद्घाटन के दिन यानी पहली मार्च' 4 को देखा जब कि दक्खिनी क़बीले और स्वतंत्र सभा के मेम्बरों ने सारे शहर ख़ारतूम में बलवा कर दिया और हवाई अड्डे पर जनरल नजीब के ख़िलाफ़ नारे लगाए जहां वह उद्घाटन की रस्म में शामिल होने के लिये क़ाहिरा से हवाई जहाज़ से आये थे.

इस बलवे के नतीजे में 3 आदमियों ने अपनी जान से हाथ धोया और सैकड़ों ज़खमी हुए और पार्लियामेन्ट का उद्घाटन न हो सका. पर राष्ट्री संगठन सभा के नेता और सूडान के नये प्रधान मंत्री इसमाईल अज़हरी की सख़्त कोशिश और सुरक्षा के विशेश प्रबंध करने पर 10 माच '54 को सूडानी पार्लियामेन्ट का उद्घाटन वहां के गवर्नरजनरल सर राबर्ट हू के हाथों हुआ.

अज़हरी के मंत्री मन्डल ने अपने चुनाव के प्रोग्राम को अमली जामा पहनाने की पूरी कोशिश करना शुरू कर दिया है. पर अब देखना यह है कि बर्तानिया के शड़यंत्र का मुक़ाबला करने में कहां तक सफलता होती है.

---

دیوتا کی صلاح سے ایسا هی فیصلہ کیا تھا . شاید اُس کو یہ نہیں معلوم تھا کہ نیل ندی مصر میں بھی بہتی هے .

ناچتے ناچتے نیام نیام قبیلے کے جادوگر ڈاکٹر نے نیل ندی کے دیوتا سے' جس کو وہ هر سال بھینٹ دیا کرتا تھا' صلاح کرنے کے لئے ندی میں کود پڑا. اُس کی اس حرکت کو دیکھ کر چناؤ بورڈ کے پرتینیدھیوں نے آشچریہ کے کارن دانتوں تلے اُنگلی دبالی . پھر وہ بڑے جوش کے ساتھ پانی پر اپنی جادوئی چھڑی مارتا هوا دھارے کی طرف بڑھنے لگا' پر ترنت هی اُس نے ایک ڈبکی لگائی. اُوپر اُبھرنے پر اس کا منھ چناؤ کی جھونپڑی کے سامنے تھا . اُس کے بعد وہ ندی سے نکل کر دیوتا کی رائے کو پرگٹ کرنے کے لئے قبیلے کے سردار کی طرف بڑھا . چونکہ نیل کے دیوتا نے سوتنتر سبھا کے پکش میں رائے دینے کی صلاح دی تھی' اس لئے سردار نے پورے قبیلے سمیت اس کو ووٹ دیا .

اِس چناؤ کے نتیجے کی گھوشنا هوتے هی سارے مصر میں خوشی کی لہر دوڑ گئی کیونکہ مصریوں کو سوڈان کی سمسیا پر برطانیہ ایسے شکتیشالی دیش کے مقابلے میں سپھلتا پراپت هوگئی . اِس کے علاوہ اس نتیجے نے سویز کینال کی سمسیا پر برطانیہ اور مصر کے جھگڑے میں مصر کی پوزیشن پہلے کے بنسبت ادھک مضبوط کردی .

واستو میں اِس چناؤ کے نتیجے نے برطانیہ کو گہرے سوچ میں ڈال دیا هے. استھتی کی گمبھیرتا کو سمجھتے هوئے اور سوڈان میں اپنے مٹتے هوئے پربھاؤ کو دوبارہ جمانے کے لئے برطانیہ نے هاتھ پیر مارنا شروع کردیا هے . چنانچہ دنیا نے اس کا پہلا پردرشن سوڈانی پارلیامنٹ کے اُدگھاٹن کے دن یعنی پہلی مارچ 54' کو دیکھا جب کہ دکھنی قبیلے اور سوتنتر سبھا کے ممبروں نے سارے شہر خارتوم میں بلوہ کردیا اور هوائی اڈے پر جنرل نجیب کے خلاف نعرے لگائے جہاں وہ اُدگھاٹن کی رسم میں شامل هونے کے لئے قاهرہ سے هوائی جہاز سے آئے تھے .

اس بلوے کے نتیجے میں 35 آدمیوں نے اپنی جان سے هاتھ دھویا اور سیکڑوں زخمی هوئے اور پارلیامنٹ کا اُدگھاٹن نہ هوسکا . پر راشٹری سنگٹھن سبھا کے نیتا اور سوڈان کے نئے پردھان منتری اِسمعیل اظہری کی سخت کوشش اور سرکشا کے وشیش پربندھ کرنے پر 15 مارچ 54' کو سوڈانی پارلیامنٹ کا اُدگھاٹن وهاں کے گورنر جنرل سر رابرٹ هو کے هاتھوں هوا .

اظہری کے منتری منڈل نے اپنے چناؤ کے پروگرام کو عملی جامہ پہنانے کی پوری کوشش کرنا شروع کردیا هے . پر اب دیکھنا یہ هے کہ برطانیہ کے شڑینتر کا مقابلہ کرنے میں کہاں تک سپھلتا هوتی هے .

प्रतिनिधियों को तेज़ धूप में बैठना पड़ा. लम्बे, दुबले पतले, नङ्गे और काले पुरुशों ने नाच शुरू किया. अपने पुरुशों के नाच से प्रभावित होकर बीच बीच में स्त्रियां जङ्गी नारे लगाती थीं. जब सरदार ने अपना बायां हाथ उठाया तो नाचने वालों ने जो कि थककर पसीने में तर हो चुके थे, नाच बन्द कर दिया. फिर तुरन्त ही औरतों ने नक़्क़ारे बजाना शुरू किया जिनकी आवाज़ से जंगल और रेगिस्तान गूंजने लगे. कुछ मिनट के बाद पूरा क़बीला सरदार के सामने झुक गया. सरदार के दोनों हाथ आकाश की तरफ़ उठाने पर सब लोगों ने खड़े होकर जोर का नारा लगाया. फिर सरदार ने कुछ आश्चर्यजनक शब्द कहे जिसके बाद क़बीले के सब मर्दों ने सरदार का हाथ चूमा और अदब के साथ जादूगर डाक्टर के फ़ैसले का इन्तिज़ार करने लगे.

राश्ट्री संगठन सभा और स्वतंत्र सभा के प्रतिनिधि अलग बिलकुल शान्ति पूर्वक खड़े हुए इन न टलने वाली रस्मों के समाप्त होने का इन्तिज़ार कर रहे थे. हालांकि दोनों का काम अपनी अपनी सभाओं के लिये वोट प्राप्त करना था पर वह जानते थे कि जादूगर डाक्टर के फ़ैसले पर सारा क़बीला वोट देगा और इस सिलसिले में उनकी कोई भी कोशिश बिलकुल बेकार साबित होगी.

जादूगर डाक्टर ने अपनी हड्डियों और परों की टोपी समेत ज़मीन के देवताओं से सलाह करने के लिये अपना सर ज़मीन पर टेक दिया. देवताओं से सलाह करने में उसको पांच मिनट लगे. इसके बाद वह यकायक खड़ा हो गया. इसका सारा बदन अकड़ा हुआ था और उसने अपनी जादूई छड़ी को आकाश की तरफ़ उठा दिया.

दोनों सभाओं के प्रतिनिधियों ने समझ लिया कि उनके भाग्य के फ़ैसले का समय आ गया. उनकी आंखें इस प्रकार से छड़ी पर गड़ी हुई थीं जैसे कि वह घेरे से बाहर निकल जायेंगी. यकायक जादूगर डाक्टर ने औरतों की तालियों की आवाज़ पर युद्ध नृत्य शुरू कर दिया, फिर तीन बार गहरे झटके के साथ चक्कर काटने के बाद वह राश्ट्री संगठन सभा के प्रतिनिधि के सामने खड़ा हो गया और अपनी छड़ी उठा कर उसको आशीर्वाद दिया. उसने छड़ी को बड़े अदब से चूमकर जादूगर डाक्टर के सामने अपना सर झुका दिया.

इन रोचक रस्मों के बाद सरदार खड़ा हो गया और झोंपड़ी की तरफ़ चल पड़ा. उसके लड़ाकू पुरुश शान्ति पूर्वक उसके पीछे हो लिये ताकि जादूगर डाक्टर के फ़ैसले के अनुसार राश्ट्री संगठन सभा के पक्ष में वोट दें.

पर न्याम न्याम नामक अर्द्ध जंगली क़बीले ने इसके बिलकुल उलटा फ़ैसला किया. उन्होंने स्वतंत्र सभा के पक्ष में राय दी, क्योंकि उनके जादूगर डाक्टर ने नील नदी के



پرتیندھیوں کو تیز دھوپ میں بیٹھنا پڑا. لمبے، دبلے پتلے، ننگے اور کالے پرشوں نے ناچ شروع کیا. اپنے پرشوں کے ناچ سے پربھاوت ہوکر بیچ بیچ میں استریاں جنگی نعرے لگاتی تھیں. جب سردار نے اپنا بایاں ہاتھ اٹھایا تو ناچنے والوں نے جو کہ تھک کر پسینے میں تر ہوچکے تھے، ناچ بند کردیا۔ پھر ترنت ہی عورتوں نے نقارے بجانا شروع کیا جن کی آواز سے جنگل اور ریگستان گونجنے لگے۔ کچھ منٹ کے بعد پورا قبیلہ سردار کے سامنے جھک گیا۔ سردار کے دونوں ہاتھ آکاش کی طرف اٹھانے پر سب لوگوں نے کھڑے ہوکر بڑے زور کا نعرہ لگایا۔ پھر سردار نے کچھ آشچریہ جنک شبد کہے جس کے بعد قبیلے کے سب مردوں نے سردار کا ہاتھ چوما اور ادب کے ساتھ جادوگر ڈاکٹر کے فیصلے کا انتظار کرنے لگے۔

راشٹری سنگٹھن سبھا کے پرتیندھی الگ بالکل شانتی پوروک کھڑے ہوئے اِن نہ ٹلنے والی رسموں کے سماپت ہونے کا انتظار کر رہے تھے۔ حالانکہ دونوں کا کام اپنی اپنی سبھاؤں کے لئے ووٹ پراپت کرنا تھا پر وہ جانتے تھے کہ جادوگر ڈاکٹر کے فیصلے پر سارا قبیلہ ووٹ دیگا اور اِس سلسلے میں ان کی کوئی بھی کوشش بالکل بیکار ثابت ہوگی۔

جادوگر ڈاکٹر نے اپنی ہڈیوں اور پروں کی ٹوپی سمیت زمین کے دیوتاؤں سے صلاح کرنے کے لئے اپنا سر زمین پر ٹیک دیا۔ دیوتاؤں سے صلاح کرنے میں اُس کو پانچ منٹ لگے۔ اِس کے بعد وہ یکایک کھڑا ہوگیا۔ اُس کا سارا بدن اکڑا ہوا تھا اور اس نے اپنی جادوئی چھڑی کو آکاش کی طرف اُٹھا دیا۔

دونوں سبھاؤں کے پرتیندھیوں نے سمجھ لیا کہ اُن کے بھاگیہ کے فیصلے کا سمے آگیا۔ اُن کی آنکھیں اِس پرکار سے چھڑی پر گڑی ہوئی تھیں جیسے کہ وہ گھیرے سے باہر نکل جائینگی۔ یکایک جادوگر ڈاکٹر نے عورتوں کی تالیوں کی آواز پر یدھ نرتیہ شروع کردیا، پھر تین بار گہرے جھٹکے کے ساتھ چکر کاٹنے کے بعد وہ راشٹری سنگٹھن سبھا کے پرتیندھی کے سامنے کھڑا ہوگیا اور اپنی چھڑی اُٹھاکر اُس کو آشیرباد دیا۔ اُس نے چھڑی کو بڑے ادب سے چوم کر جادوگر ڈاکٹر کے سامنے اپنا سر جھکا دیا۔

اِن روچک رسموں کے بعد سردار کھڑا ہوگیا اور جھونپڑی کی طرف چل پڑا۔ اُس کے لڑاکو پرش شانتی پوروک اُس کے پیچھے ہولئے تاکہ جادوگر ڈاکٹر کے فیصلے کے انوسار راشٹری سنگٹھن سبھا کے پکش میں ووٹ دیں۔

پر نیام نیام نامک اردھ جنگلی قبیلے نے اِس کے بالکل اُلٹا فیصلہ کیا۔ انہوں نے سوتنتر سبھا کے پکش میں رائے دی کیونکہ اُن کے جادوگر ڈاکٹر نے نیل ندی کے

इन्हीं कारनों से राष्ट्री संगठन सभा चुनाव में भारी बहुमत से सफल हो गई और बर्तानिया की पूर्न सहायता के बावजूद स्वतंत्र सभा बुरी तरह से हार गई.

दक्खिनी सूडान के चुनाव का आंखों देखा हाल एक अरबी जरनलिस्ट ने यूं लिखा है :—

दक्खन के पांच ज़िलों में जहां हबशी क़बीले आबाद हैं, चुनाव की कार्यवाही आश्चर्यजनक ढंग से हुई. वोटर अपने उम्मेदवारों के पीछे क़तार बांध कर खड़े हो जाते थे. और अन्तर्राश्ट्री चुनाव बोर्ड के प्रतिनिधि उस उम्मेदवार को चुन लेते थे जिसके पीछे सब से अधिक वोटर खड़े होते थे. दक्खिन भाग के गुन्जान जंगली क्षेत्रों में चुनाव की कार्य-वाही की सूचना बिगुल और नक़्क़ारों से दी गई थी. अपनी झोपड़ियों को छोड़कर क़बीले के लोग अपने सब सामान और जानवरों समेत चुनाव के केन्द्रों की तरफ़ चल पड़े. कई दिन के सफ़र के बाद अपने देश के भाग्य का फ़ैसला करने के लिये तपती धूप में चुनाव केन्द्र पर सब इकट्ठा हुए. कहीं कहीं तो चुनाव प्रतिनिधियों को वोटिंग कई कई दिन तक मुलतवी करनी पड़ी क्योंकि क़बीले नाच गाने या अच्छी फ़सल तैयार होने के कारन अपने विश्वासों के अनुसार धार्मिक रस्मों को पूरा करने में लगे हुए थे.

इन कठिनाइयों का अंदाज़ा करते हुए पहले ही से चुनाव बोर्ड ने अपने प्रतिनिधियों को क़बीलों में वोटिंग कराने के लिये दो तीन हफ़्ते का समय दे दिया था ताकि सब क़बीले आसानी से वोट दे सकें. बहुत से नीलूती क़बीले अपने सब से अच्छे कपड़ों को पहन कर वोट देने के लिये आये. उनकी कमर में एक सफ़ेद कपड़ा लिपटा था और गले में हड्डियों और मूंगे का हार था. हर क़बीले का सरदार सब से आगे सांड पर सवार होकर चलता था. उसके पीछे क़बीले का जादूगर डाक्टर अपने साज़ो सामान यानी आदमी की खोपड़ियां, हड्डियां, जड़ी बूटियां और जादूई लकड़ियों के साथ होता था. उसके बाद स्त्रियां अपने बच्चों को गोद में लिये हुए या पीठ पर बांधे चलती थीं. औरतों के पीछे मर्द रहते थे. कठिन और लम्बे रास्तों को तय करने के लिये उन लोगों के पास क़बाइली धार्मिक गीतों के अलावा दिल बहलाने का और कोई ज़रिया न था.

सूडान के सब से अधिक लड़ाकू शीलूक नामक क़बीले के सब स्त्री पुरुश मनज़िलें तय करते हुए चुनाव के केन्द्र तक पहुंचे जहां मिट्टी और फूस की एक झोंपड़ी चिलचिलाती हुई धूप में खड़ी थी. चुनाव प्रतिनिधियों ने क़बीले के सरदार और उसके प्रसिद्ध लड़ाकू साथियों का बढ़कर स्वागत किया और उसको मोतियों और मूंगों की मालायें भेंट कीं.

थोड़ी देर के बाद क़बीले का युद्ध नृत्य शुरू हुआ जिसको देखने के लिये अमरीका और बेलजियम के



اِنھیں کارنوں سے راشٹری سنگٹھن سبھا چناؤ میں بھاری بہومت سے سپھل ہوگئی اور برطانیہ کی پورن سہائتا کے باوجود سوتنتر سبھا بری طرح سے ہار گئی ۔

دکھنی سوڈان کے چناؤ کا آنکھوں دیکھا حال ایک عربی جرنلسٹ نے یوں لکھا ھے :—

دکھن کے پانچ ضلعوں میں جہاں حبشی قبیلے آباد ھیں، چناؤ کی کاریہ واھی آشچریہ جنک ڈھنگ سے ھوئی ۔ ووٹر اپنے اُمیدواروں کے پیچھے قطار باندھ کر کھڑے ھو جاتے تھے اور انٹرراشٹری چناؤ بورڈ کے پرتیندھی اُس اُمیدوار کو چن لیتے تھے جسکے پیچھے سب سے ادھک ووٹر کھڑے ھوتے تھے. دکھن بھاگ کے گنجان جنگلی چھیتروں میں چناؤ کی کاریہ واھی کی سوچنا بگل اور نقاروں سے دی گئی تھی ۔ اپنی جھونپڑیوں کو چھوڑ کر قبیلے کے لوگ اپنے سب سامان اور جانوروں سمیت چناؤ کے کیندروں کی طرف چل پڑے ۔ کئی دن کے سفر کے بعد اپنے دیش کے بھاگیہ کا فیصلہ کرنے کے لئے تپتی دھوپ میں چناؤ کیندر پر سب اِکٹھا ھوئے ۔ کہیں کہیں تو چناؤ پرتیندھیوں کو ووٹنگ کئی کئی دن تک ملتوی کرنی پڑی کیونکہ قبیلے ناچ گانے یا اچھی فصل تیار ھونے کے کارن اپنے وشواسوں کے انوسار دھارمک رسموں کے پورا کرنے میں لگے ھوئے تھے ۔

اِن کٹھنائیوں کا اندازہ کرتے ھوئے پہلے ھی سے چناؤ بورڈ نے اپنے پرتیندھیوں کو قبیلوں میں ووٹنگ کرانے کے لئے دو تین ھفتے کا سمے دے دیا تھا تاکہ سب قبیلے آسانی سے ووٹ دے سکیں. بہت سے نیلوتی قبیلے اپنے سب سے اچھے کپڑوں کو پہن کر ووٹ دینے کے لئے آئے ۔ ان کی کمر میں ایک سفید کپڑا لپٹا تھا اور گلے میں ھڈیوں اور مونگے کا ھار تھا ۔ ھر قبیلے کا سردار سب سے آگے سانڈ پر سوار ھوکر چلتا تھا ۔ اُس کے پیچھے قبیلے کا جادوگر ڈاکٹر اپنے ساز و سامان یعنی آدمی کی کھوپڑیاں، ھڈیاں، جڑی بوٹیاں اور جادوئی لکڑیوں کے ھوتا تھا ۔ اُس کے بعد اِستریاں اپنے بچوں کو گود میں لئے ھوئے یا پیٹھ پر باندھے چلتی تھیں ۔ عورتوں کے پیچھے مرد رھتے تھے ۔ کٹھن اور لمبے راستوں کو طے کرنے کے لئے اُن لوگوں کے پاس قبائلی دھارمک گیتوں کے علاوہ دل بہلانے کا اور کوئی ذریعہ نہ تھا ۔

سوڈان کے سب سے ادھک لڑاکو شیلوک قبیلے کے سب اِستری پرش منزلیں طے کرتے ھوئے چناؤ کے کیندر تک پہونچے جہاں مٹی اور پھوس کی ایک جھونپڑی چلچلاتی ھوئی دھوپ میں کھڑی تھی ۔ چناؤ پرتیندھیوں نے قبیلے کے سردار اور اُس کے پرسدھ لڑاکو ساتھیوں کا بڑھکر سواگت کیا اور اُس کو موتیوں اور مونگوں کی مالائیں بھینٹ کیں ۔

تھوڑی دیر کے بعد قبیلے کا یدھ نرتیہ شروع ھوا جس کو دیکھنے کے لئے امریکہ اور بیلجیم کے

बहरहाल संसार का यह अनोखा चुनाव 6 नवम्बर, '53 को शुरू हुआ और 10 दिसम्बर, '53 तक जाकर ख़तम हुआ. 56 साला ग़ुलामी के बाद सूडानियों को अपने भविश्य के मुताल्लिक़ फ़ैसला करने का मौक़ा मिला.

यूं तो चार पार्टियां—राश्ट्री संगठन सभा, स्वतंत्र सभा, सोशलिस्ट पार्टी और दक्खिनी राजनैतिक संस्था—चुनाव के मैदान में उतरीं पर वास्तव में मुक़ाबला पहली दो पार्टियों में ही हुआ. राश्ट्री संगठन सभा 1938 में स्थापित हुई थी. सूडान से बर्तानिया की प्रधानता का अन्त, नील की घाटी का संगठन और देश में सोशलिस्ट शासन की स्थापना, इसके खास उद्देश्य हैं. 1945 ई० में कुछ जाग्रत और इनक़लाबी विचार वाले नौजवानों के शामिल हो जाने से इस सभा ने ज़ोर पकड़ना शुरू किया जिसके कारन सूडान में बर्तानिया को अपनी प्रधानता ख़तरे में पड़ती दिखाई दी और उसकी साज़िशों से इस सभा में फूट पड़ गई और वह इसमाईल अज़हरी और मुहम्मद नूरउद्दीन के नेतृत्व में दो भागों में बंट गई. पर नील नदी की घाटी के संगठन और सूडान से बर्तानिया के निकलने की मांग करते रहे. मिश्र में जनरल नजीब के हाथ में शासन आजाने पर दोनों दल फिर अज़हरी के नेतृत्व में संगठित हो गये. राश्ट्री संगठन सभा के मुक़ाबले में बर्तानिया ने स्वतंत्र सभा क़ायम कराई जिस का उद्देश्य सूडान की पूरी आज़ादी बताया गया. 1945 में बर्तानिया ने इस सभा को शक्तिशाली बनाने के लिये सूडान के बहुत बड़े धार्मिक नेता सर अब्दुर रहमान अल मेहदी को इसका लीडर बनाया. इस लक्ष्य को हासिल करने के लिये बर्तानिया ने दक्खिनी सूडान के काले आदिवासियों में साम्प्रदायिक भावना पैदा करके, इनको स्वतंत्र सभा की सहायता के लिये तैयार किया. वास्तव में स्वतंत्र सभा के लीडरों का काम सरकारी पदों की गद्दियों पर विराजमान होने के अलावा और कुछ नहीं रहा और इस सभा का असर सिर्फ़ बर्तानिया की सहायता के कारन रहा. पर जैसे जैसे राश्ट्री भावना उभरती गई इस सभा का प्रभाव भी कम होता गया.

राश्ट्री संगठन सभा ने अपने चुनाव प्रचार में राश्ट्री और धार्मिक भावनाओं को उभारा. इसकी सहायता में मिश्र से आये हुए लाखों परचे बांटे गये जिसमें उनको एक धर्म और एक जात मिश्रियों का साथ देने पर आमादा किया गया था. स्वतंत्र सभा ने अपने चुनाव के प्रोग्राम में सूडान की पूर्न स्वतंत्रता और जनता के आर्थिक सुधार पर ज़ोर दिया था पर सूडान के 95 फ़ी सदी अनपढ़ लोगों के लिये पूर्न स्वतंत्रता और आर्थिक सुधार के शब्द कोई मानी नहीं रखते थे मगर इस्लामी भाई चारे और बड़े भाई के संगठन के नारे अवश्य उनके दिल को मोहने वाले थे.



بہرحال سنسار کا یہ انوکھا چناؤ 6 نومبر '53 کو شروع ہوا اور 10 دسمبر '53 تک جا کر ختم ہوا. 56 سالہ غلامی کے بعد سوڈانیوں کو اپنے بھوشیہ کے متعلق فیصلہ کرنے کا موقع ملا.

یوں تو چار پارٹیاں—راشٹریہ سنگٹھن سبھا، سوتنتر سبھا، سوشلسٹ پارٹی اور دکھنی راجنیتک سنستھا—چناؤ کے میدان میں اُتریں پر واستو میں مقابلہ پہلی دو پارٹیوں میں ہی ہوا. راشٹریہ سنگٹھن سبھا 1938 میں استھاپت ہوئی تھی. سوڈان سے برطانیہ کی پردھانتا کا انت، نیل کی گھاٹی کا سنگٹھن اور دیش میں سوشلسٹ شاسن کی استھاپنا، اُس کے خاص اُدیش ہیں. 1945 میں کچھ جاگرت اور انقلابی وچار والے نوجوانوں کے شامل ہوجانے سے اِس سبھا نے زور پکڑنا شروع کیا جس کے کارن سوڈان میں برطانیہ کو اپنی پردھانتا خطرے میں پڑتی دکھائی دی اور اُس کی سازشوں سے اِس سبھا میں پھوٹ پڑ گئی اور وہ اسمعیل اظہری اور محمد نورالدین کے نیترتو میں دو بھاگوں میں بٹ گئی. پر نیل ندی کی گھاٹی کے سنگٹھن اور سوڈان سے برطانیہ کے نکلنے کی مانگ کرتے رہے. مصر میں جرنل نجیب کے ہاتھ میں شاسن آجانے پر دونوں دل پھر اظہری کے نیترتو میں سنگٹھت ہو گئے. راشٹری سنگٹھن سبھا کے مقابلہ میں برطانیہ نے سوتنتر سبھا قائم کرائی جس کا اُدیش سوڈان کی پوری آزادی بتایا گیا. 1945 میں برطانیہ نے اِس سبھا کو شکتشالی بنانے کے لئے سوڈان کے بہت بڑے دھارمک نیتا سر عبدالرحمان المہدی کو اِس کا لیڈر بنایا. اِس لکش کو حاصل کرنے کے لئے برطانیہ نے دکھنی سوڈان کے کالے آدی واسیوں میں سامپردائک بھاونا پیدا کر کے، ان کو سوتنتر سبھا کی سہائتا کے لئے تیار کیا. واستو میں سوتنتر سبھا کے لیڈروں کا کام سرکاری پدوں کی گدیوں پر وراجمان ہونے کے علاوہ اور کچھ نہیں رہا اور اس سبھا کا اثر صرف برطانیہ کی سہائتا کے کارن رہا. جیسے جیسے راشٹری بھاونا اُبھرتی گئی اس سبھا کا پربھاؤ بھی کم ہوتا گیا.

راشٹری سنگٹھن سبھا نے اپنے چناؤ پرچار میں راشٹری اور دھارمک بھاوناؤں کو ابھارا. اُس کی سہائتا میں مصر سے آئے ہوئے لاکھوں پرچے بانٹے گئے جس میں اُن کو ایک دھرم اور ایک جات مصریوں کا ساتھ دینے پر آمادہ کیا گیا تھا. سوتنتر سبھا نے اپنے چناؤ کے پروگرام میں سوڈان کی پورن سوتنترتا اور جنتا کے آرتھک سدھار پر زور دیا تھا، پر سوڈان کے 95 فیصدی انپڑھ لوگوں کے لئے پورن سوتنترتا اور آرتھک سدھار کے شبد کوئی معنی نہیں رکھتے تھے مگر اسلامی بھائی چارے اور بڑے بھائی کے سنگٹھن کے نعرے اوشیہ اُن کے دل کو موہنے والے تھے.

नवीन मिस्र के अरबों ने इस देश का नाम 'सूदान' यानी काली बस्ती रक्खा. नवीन मिस्र के पहले स्वतंत्र महाराजा मुहम्मद अली ने सूडान को अपने शासनाधिकार में ले लिया, पर 1841 ई० में उनकी मौत के बाद उनके उत्तराधिकारियों की कमज़ोरी के कारन सूडान में चारों तरफ़ गड़बड़ी फैल गई, जिससे खिन्न होकर दुर्वेश नामक सांप्रदाय के नेता मुहम्मद अहमद अलमहदी ने मिस्री शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और बड़ी घमासान लड़ाइयों के बाद मिस्री और उनकी सहायता पर आई हुई अंग्रेज़ी सेना का बिलकुल सफ़ाया करके पूर्न स्वतंत्रता प्राप्त करली. पर कुछ ही साल के बाद अंग्रेज़ों ने लार्ड किचनर के सेनापतित्व में आधुनिक हथियारों से लैस एक बड़ी सेना के साथ सूडान पर हमला करा दिया. हथियारों की कमी और लड़ाई के तकनीक में निपुन न होने के बावजूद देशभक्त दुरवेशों ने कई स्थानों पर बड़ी वीरता से उसका सामना किया, पर अन्त में घमासान युद्ध के बाद वह 1898 ई० में खारतूम के युद्ध में हार गये और सूडान साम्राज्यवादी ताज का एक अंग बन गया.

चूंकि मिस्र की ज़िन्दगी नील नदी पर निर्भर है इस लिये मिश्री जनता सदा से इच्छक रही है कि पूरे नील नदी पर उसकी प्रधानता रहे. इसलिये अंग्रेज़ी राजनैतिक नेताओं ने मिस्रियों की इस भावना का ख़याल रखते हुए और उनको प्रसन्न करने के लिये सूडान में मिश्र और बर्तानिया के साझे का शासन स्थापित किया, पर असलियत में सूडान पर शासन करने का पूर्न अधिकार बृटिश गवर्नर जनरल के हाथ में रखा गया.

मगर मिस्री नेता कभी इस तरह के प्रबंध से संतुश्ट नहीं रहे और सूडान की समस्या पर मिस्र में बर्तानिया के विरुद्ध बराबर आवाज़ उठती रही और प्रदर्शन होते रहे. 1936 ई० में मिस्र की आज़ादी के बाद से सूडान को मिस्र के साथ मिलाने की मांग ज़ोर पकड़ती गई, यहां तक कि 1951 ई० में वफ़द पार्टी की सरकार के 1936 ई० के मिस्री अंग्रेज़ी सम्झौते को तोड़ कर फ़ारुक़ (मिस्र के भूतपूर्व राजा) को सूडान का भी राजा घोशित कर दिया.

जुलाई सन '52 में मिश्र में फ़ौजी क्रांति के बाद जनरल नजीब के हाथ में देश का शासन आ गया. चूंकि वह पैदाइशी सूडानी हैं इसलिये मिश्रियों की तरह सूडानियों में भी नील की घाटी के संगठन की भावना बहुत उभर गई. मिश्री सरकार के दबाव और सूडान में आये दिन के अपने विरुद्ध आन्दोलनों से असमर्थ होकर बर्तानिया ने इस समस्या पर आम चुनाव कराने के लिये यू० एन० ओ० के फ़ैसले को स्वीकार कर लिया. अमरीका, बेलजियम, भारत, पाकिस्तान के प्रतिनिधि चुनाव बोर्ड में शामिल थे. भारत के प्रतिनिधि श्री शिवकुमार सेन इस बोर्ड के अध्यक्ष चुने गये.



نوین مصر کے عربوں نے اِس دیش کا نام ' سودان ' یعنی کالی بستی رکھا . پہلے سوتنتر مہاراجہ محمد علی نے سوڈان کو اپنے ساشنادھیکار میں لے لیا' پر 1841ع میں اُن کی موت کے بعد ان اُترادھیکاریوں کی کمزوری کے کارن سوڈان میں چاروں طرف گڑبڑی پھیل گئی' جس سے کھن ھوکر درویش نامک سامپردائے کے نیتا محمد احمد المہدی نے مصری شاسن کے ورودھ ودروھ کر دیا اور بڑی گھماسان لڑائیوں کے بعد مصری اور اُن کی سہائتا پر آئی ھوئی انگریزی سینا کا بالکل صفایا کرکے پورن سوتنترتا پراپت کرلی . پر کچھ ھی سال کے بعد انگریزوں نے لارڈ کچنر کے سیناپتتو میں آدھونک ھتھیاروں سے ایس ایک بڑی سینا کے ساتھ سوڈان پر حملہ کرا دیا . ھتھیاروں کی کمی اور لڑائی کے تکنیک میں نپن نہ ھونے کے باوجود دیش بھکت درویشوں نے کئی استھانوں پر بڑی ویرتا سے اُس کا سامنا کیا' پر انت میں گھماسان یدھ کے بعد وہ 1898ع میں خارتوم کے یدھ میں ھار گئے اور سوڈان سامراجیہ وادی تاج کا ایک انگ بن گیا .

چونکہ مصر کی زندگی نیل ندی پر نربھر ھے اِس لئے مصر جنتا سدا سے اِچھک رھی ھے کہ پورے نیل ندی پر اُس کی پردھانتا رھے . اس لئے انگریزی راجنیتک نیتاؤں نے مصریوں کی اِس بھاؤنا کا خیال رکھتے ھوئے اور اُن کو پرسن کرنے کے لئے سوڈان میں مصر اور برطانیہ کے ساجھے کا شاسن استھاپت کیا' پر اصلیت میں سوڈان پر شاسن کرنے کا پورن ادھیکار برٹش گورنر جنرل کے ھاتھ میں رکھا گیا .

مگر مصری نیتا کبھی اس طرح کے پربندھ سے سنتشٹ نہیں رھے اور سوڈان کی سمسیا پر مصر میں برطانیہ کے ورودھ برابر آواز اُٹھتی رھی اور پردرشن ھوتے رھے . 1936ع میں مصر کی آزادی کے بعد سے سوڈان کو مصر کے ساتھ ملانے کی مانگ زور پکڑتی گئی یہاں تک کہ 1951ع میں وفد پارٹی کی سرکار کے 1936 کے مصری انگریزی سمجھوتے کو توڑ کر فاروق (مصر کے بھوتپورو راجا) کر سوڈان کا بھی راجا گھوشت کر دیا .

جولائی سن '52 میں مصر میں فوجی کرانتی کے بعد جنرل نجیب کے ھاتھ میں دیش کا شاسن آگیا . چونکہ وہ پیدایشی سوڈانی ھیں اِس لئے مصریوں کی طرح سوڈانیوں میں بھی نیل کی گھاٹی کے سنگٹھن کی بھاونا بہت ابھر آئی . مصری سرکار کے دباؤ اور سوڈان میں آئے دن کے اپنے ورودھ آندولنوں سے اسمرتھ ھو کر برطانیہ نے اِس سمسیا پر عام چناؤ کرانے کے لئے یو . این . او کے فیصلہ کو سویکار کر لیا . امریکہ بیلجیم' بھارت اور پاکستان کے پرتیندھی چناؤ بورڈ میں شامل تھے. بھارت کے پرتیندھی شری شوکمار سین اِس بورڈ کے ادھیکش چنے گئے.

नहीं सकता कल क्या होगा या अगले छन ही क्या होगा?"

बेयरा ने बिल लाकर मुझे दिया. उसका होटल मेरे होटल के दूसरी तरफ़ था, इसलिये दरवाज़े से निकलते ही हम लोग विपरीत दिशाओं में मुड़ गये. रास्ते में ठंडी हवायें और गिरती हुई बर्फ़ मुंह पर थपेड़े दे रही थीं पर मैं प्रसन्न चित्त चला जा रहा था. आसमान काला हो चला था और उसमें बर्फ़ से लदे हुये घर और सड़कें रह रह कर चमक रही थीं.

نہیں سکتا کل کیا ہوگا یا اگلے چھن ہی کیا ہوگا؟"

بیرا نے بل لا کر مجھے دیا . اُس کا ہوٹل میرے ہوٹل کے دوسری طرف تھا' اِس لئے دروازے سے نکلتے ہی ہم لوگ وپریت دشاؤں میں مڑ گئے . راستے میں ٹھنڈی ہوائیں اور گرتی ہوئی برف منھ پر تھپیڑے دے رہی تھیں پر میں پرسن چت چلا جا رہا تھا . آسمان کالا ہو چلا تھا اور اُسمیں برف سے لدے ہوئے گھر اور سڑکیں رہ رہ کر چمک رہی تھیں .

---

# "सूडान"

( ज़मीर हसन काज़िमी )

उत्तर में मिस्र, दक्खिन में बृटिश यूगेन्डा और बेलजियन कांगो, पूरब में इथोपिया, उत्तर पूरब में लाल सागर, पच्छिम में फ्रेंच इक्वीटोरियल अफ़रीक़ा और उत्तर पच्छिम में लीबिया से सूडान घिरा है. इसका रक़बा दस लाख वर्ग मील है और आबादी अस्सी लाख है. देश का अधिकतर हिस्सा रेगिस्तान और कम उपजाऊ है. दक्खिन भाग में जहां साल में दो बार बारिश होती है, गुंजान जंगल हैं जिन में रबर और महोगनी के पेड़ बहुतायत से उगते हैं.

नील नदी इसी देश से होकर गुज़रती है. सफ़ेद नील केन्द्रीय अफ़रीक़ा की विक्टोरिया नामक झील से निकल कर सूडान में दाख़िल होती है. ख़ारतूम में उसमें इथोपिया के पहाड़ों से निकली हुई नीली नील नामक नदी मिलती है. नील नदी की उपजाऊ घाटी में रूई बहुतायत से पैदा होती है और विदेशों को भेजी जाती है. रेगिस्तानी क्षेत्रों में बबूल के लाखों पेड़ उगे हैं. इनसे बहुत बड़ी मात्रा में गोंद प्राप्त की जाती है और संसार के बहुत से देशों में भेजी जाती है. ख़ारतूम यहां की राजधानी है और देश का अकेला आधुनिक ढंग पर आबाद नगर है. यह सफ़ेद और नीले नीले के सङ्गम पर बसा हुआ है. लाल सागर पर स्थित सूडान और सुआक़ीन यहां के बंदरगाह हैं जो ख़ारतूम और दूसरे प्रसिद्ध नगर बर्बर से रेलवे द्वारा मिले हुए हैं.

लगभग बारह सौ साल पहले इस्लाम धर्म यहां अरबों के ज़रिये पहुंचा. यहां के निवासी बहुत काले थे, इसलिये

---

# "سوڈان"

( ضمیر حسن کاظمی )

اُتر میں مصر' دکھن میں برٹش یوگینڈا اور بیلجین کانگو' پورب میں اِتھوپیا' اُتر پورب میں لال ساگر' پچھم میں فرینچ ایکوٹوریل افریقہ اور اُتر پچھم میں لیبیا سے سوڈان گھرا ہے . اِس کا رقبہ دس لاکھ ورگ میل ہے اور آبادی اسی لاکھ ہے . دیش کا ادھکتر حصہ ریگستان اور کم اُپجاؤ ہے . دکھن بھاگ میں جہاں سال میں دو بار بارش ہوتی ہے' گنجان جنگل ہیں جن میں ربر اور مہوگنی کے پیڑ بہوتایت سے اُگتے ہیں .

نیل ندی اِسی دیش سے ہو کر گذرتی ہے . سفید نیل کیندریہ افریقہ کی وکٹوریا نامک جھیل سے نکل کر سوڈان میں داخل ہوتی ہے . خارتوم میں اُس میں اِتھوپیا کے پہاڑوں سے نکلی ہوئی نیلی نیل نامک ندی ملتی ہے . نیل ندی کی اُپجاؤ گھاٹی میں روئی بہوتایت سے پیدا ہوتی ہے اور ودیشوں کو بھیجی جاتی ہے . ریگستانی چھیتروں میں ببول کے لاکھوں پیڑ اُگے ہیں . ان سے بہت بڑی ماترا میں گوند پراپت کی جاتی ہے اور سنسار کے بہت سے دیشوں میں بھیجی جاتی ہے . خارتوم یہاں کی راجدھانی ہے اور دیش کا اکیلا آدھونک ڈھنگ پر آباد نگر ہے . یہ سفید اور نیلے نیل کے سنگم پر بسا ہوا ہے . لال ساگر پر استھت سوڈان اور سواقین یہاں کے بندرگاہ ہیں جو خارتوم اور دوسرے پرسدھ نگر بربر سے ریلوے دوارا ملے ہوئے ہیں .

لگ بھگ بارہ سو سال پہلے اسلام دھرم یہاں عربوں کے ذریعہ پہونچا . یہاں کے نواسی بہت کالے تھے' اِس لئے

"इस जानकारी के बाद अब मेरे पास कोई काम तो था नहीं. लेकिन फूलों के उन गुच्छों का क्या किया जाय? मैंने उस बुड्ढी स्त्री से कहा कि उन्हें वह आह-चाओ को दे दे. आह-चाओ तो मुझे देख कर ऐसा भागी थी जैसे मैं कोई भेड़िया हूं और उसे दबोच लूंगा. मेरी इच्छा तो नहीं थी कि यह फूल मैं उसे दूं. फिर भी मैंने उन्हें उसको दे दिया ताकि मैं मां से कह सकूं कि आह-शुन उन्हें पाते ही बड़ी प्रसन्न हो गई थी जिससे मां को सन्तोश हो जाय. कौन ऐसी छोटी बातों की परवाह करता है? सब यही चाहते हैं कि किसी प्रकार सिर पर से बला टले. नया साल शुरू होते ही मैं अध्यापन कार्य फिर शुरू कर दूंगा. मुझे कनफ्यूशियस की विचारधारा पढ़ानी पड़ती है.

मैंने आश्चर्य चकित होकर पूछा—"क्या तुम्हारा विशय कनफ्यूशियस है?"

उसने उत्तर दिया—"और क्या? तुम समझते थे मैं अंग्रेजी पढ़ाता हूं. पहले मेरे दो विद्यार्थी थे. एक ओडेसे की किताब पढ़ता था दूसरा मेंशियस की. हाल ही में एक लड़की ने "कैनन फ़ार गर्ल्स" पढ़ना शुरू किया है. मैं हिसाब भी नहीं पढ़ाता. कारन यह नहीं है कि मैं पढ़ा नहीं सकता. वह पढ़ना ही नहीं चाहते."

"मैं सोच भी नहीं सकता था कि तुम इस तरह की किताबें पढ़ाते होगे!"

"उनके बाप चाहते हैं कि उन्हें यही पढ़ाया जाय. मैं तो बाहर का रहने वाला हूं. इसलिये मेरे लिये सब एक ही जैसा है. कौन इन बातों की परवाह करे?"

उसका चेहरा लाल हो गया था जैसे उसने बहुत शराब पी ली हो, पर आखों में वह ज्योति नहीं थी. मैंने भी एक लम्बी सांस ली और कुछ देर तक गुम सुम बैठा रहा. सीढ़ी पर खटखट की आवाज हुई और कुछ ग्राहक ऊपर कमरे में आये. पहला ग्राहक नाटे क़द का गोल मुंह का था, दूसरा लम्बा था और उसके चेहरे पर लम्बी सी लाल नाक थी. उसके पीछे और भी कई व्यक्ति थे. उनके पदचाप से कमरा हिलने लगा. मैंने लू-वी-फू की ओर देखा और फिर बेयरा से बिल लाने के लिये कहा.

जाने के लिये तैयार होते हुये मैंने प्रश्न किता—"क्या तुम्हें गुज़र-बसर करने भर के लिये तनख्वाह मिल जाती है?"

उसने उत्तर दिया—"मुझे बीस डालर प्रतिमाह मिलता है और काम चला सकने के लिये इतना काफ़ी है."

"आगे क्या करने का इरादा है?"

"कह नहीं सकता. इरादा करने से भी क्या फ़ायदा? क्या आज तक अपनी इच्छानुसार काम कर पाया हूं? मैं तो अब किसी चीज़ के बारे में निश्चित नहीं रहता, कह



"اِس جانکاری کے بعد اب میرے پاس کوئی کام تو تھا نہیں. لیکن پھولوں کے اُن گچھوں کا کیا کیا جائے ؟ میں نے اُس بڈھی استری سے کہا کہ اُنھیں وہ آہ . چاؤ کو دے دے. آہ . چاؤ تو مجھے دیکھکر ایسا بھاگی تھی جیسے میں کوئی بھیڑیا ھوں اور اُسے دبوچ لونگا . میری اچھا تو نہیں تھی کہ یہ پھول میں اُسے دوں . پھر بھی میں نے اُنھیں اُس کو دے دیا تاکہ میں ماں سے کہہ سکوں کہ آہ . شن اُنھیں پاتے ھی بڑی پرسن ھو گئی تھی جس سے ماں کو سنتوش ھوجائے . کون ایسی چھوٹی باتوں کی پرواہ کرتا ھے ؟ سب ھی چاھتے ھیں کہ کسی پرکار سر پر سے بلا ٹلے . نیا سال شروع ھوتے ھی میں ادھیاپن کاریہ پھر شروع کر دونگا . مجھے کنفوشیس کی وچار دھارا پڑھانی پڑتی ھے ."

میں نے آشچریہ چکت ھو کر پوچھا—" کیا تمہارا وشے کنفوشیس ھے ؟"

اُس نے اُتر دیا—" اور کیا ؟ تم سمجھتے تھے میں انگریزی پڑھاتا ھوں . پہلے میرے دو ودیارتھی تھے . ایک اوڈیسے کی کتاب پڑھتا تھا' دوسرا مینشیس کی. حال ھی میں ایک لڑکی نے " کینن فار گرلس " پڑھنا شروع کیا ھے. میں حساب بھی نہیں پڑھاتا . کارن یہ نہیں ھے کہ میں پڑھا نہیں سکتا . وہ پڑھنا ھی نہیں چاھتے ."

" میں سوچ ھی نہیں سکتا تھا کہ تم اس طرح کی کتابیں پڑھاتے ھوگے !"

" اُن کے باپ چاھتے ھیں کہ اُنھیں یہی پڑھایا جائے . میں تو باھر کا رھنے والا ھوں . اِس لئے میرے لئے سب ایک ھی جیسا ھے . کون اِن باتوں کی پرواہ کرے ؟"

اس کا چہرہ لال ھوگیا تھا جیسے اس نے بہت شراب پی لی ھو' پر آنکھوں میں وہ جیوتی نہیں تھی . میں نے بھی ایک لمبی سانس لی اور کچھ دیر تک گم سم بیٹھا رھا . سیڑھی پر کھٹ کھٹ کی آواز ھوئی اور کچھ گراھک اُوپر کمرے میں آئے . پہلا گراھک ناٹے قد کا گول منھ کا تھا' دوسرا لمبا تھا اور اُس کے چہرے پر لمبی سی لال ناک تھی . اس کے پیچھے اور بھی کئی ویکتی تھے . اُن کے پد چاپ سے کمرہ ھلنے لگا . میں نے لو . وی . فو کی طرف دیکھا اور پھر بیرا سے بل لانے کے لئے کہا .

جانے کے لئے تیار ھوتے ھوئے میں نے پرشن کیا—" کیا تمھیں گذر بسر کرنے بھر کے لئے تنخواہ مل جاتی ھے ؟"

اُس نے اُتر دیا—" مجھے بیس ڈالر پرتی ماہ ملتا ھے اور کام چلا سکنے کے لئے اتنا کافی ھے ."

" آگے کیا کرنے کا اِرادہ ھے ؟"

" کہہ نہیں سکتا . اِرادہ کرنے سے بھی کیا فائدہ ؟ کیا آج تک اپنی اچھا نوسار کام کر پایا ھوں ؟ میں تو اب کسی چیز کے بارے میں نشچت نہیں رھتا' کہہ

ही था. इसलिये मैं इस बार चांग-फू के घर के सामने वाली लकड़ी की टाल तक गया. दूकानदार की मां दूकान में थीं. उन्होंने मुझे पहचान लिया और दूकान में आने के लिये कहा. शिश्टाचार की बातें समाप्त होने के बाद मैंने उनसे यहां आने का कारन बतलाया. मैंने चांग-फू के बारे में पूछा. मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह इतनी लम्बी सांस लेकर बोलेंगी. "कितने दुख की बात है कि आह-शुन के भाग्य में इन सुन्दर फूलों का पहिनना नहीं बदा था !"

फिर उसने मुझे पूरी कहानी सुनाई. उसने बतलाया— "शायद पिछले बसन्त के बाद से ही वह दुबली और पीली पड़ती दिखाई देने लगी थी. बाद के दिनों में तो वह रोने लगती थी और किसी के कारन पूछने पर उत्तर भी नहीं देती थी. कभी कभी वह रात भर रोती रहती. चांग-फू की बरदाश्त से बात बाहर हो जाती तो वह बिगड़ उठता—"इतनी बड़ी हो जाने पर शादी न हो पाने के कारन ही वह पागल हो गई है." जब हेमन्त आया, उसे जुकाम हो गया और उसने चारपाई पकड़ ली और फिर उसे कभी न छोड़ा. कुछ ही दिन पहले उसकी मौत हो गई. मरने के समय उसने चांग-फू को बतलाया कि वह अपने मां के ही समान बीमार हो गई थी. खांसने से उसे खून आता था और रात में बुखार भी तेज़ हो जाता था. उसने अब तक यह बात छिपा रक्खी थी ताकि उसे परेशानी न हो. एक दिन शाम को उसका चचा चांग-कैंग अपना रुपया मांगने आया. जब उसने रुपये देने में असमर्थता प्रगट की तो वह मुस्कराते हुये बोला— "इतना घमंड मत करो. तुम्हारा आदमी तो मेरे जैसा भी नहीं है." वह बड़ी परेशान हो गई पर लज्जा के कारन कुछ भी पूछ न सकती थी, केवल रो सकती थी. रोकर मन हल्का कर लिया. चांग ने उसे बतलाया कि उसका भावी पति उसके कितने योग्य था, पर अब तो बहुत देर हो चुकी थी. उसे विश्वास न हुआ. इसलिये वह बोली—"अच्छा है कि मैं ऐसी हूं. किसी को मेरे कारन परेशानी तो नहीं होती."

उस बुड्ढी औरत ने भी कहा—"सचमुच यदि उसका पति चांग-कैंग जैसा भी न होता तो उसे बहुत कश्ट उठाना पड़ता. कैसा आदमी वह होता ? जब वह उसकी अर्थी को उठवाने आया तो मैंने उसे देखा था. वह साफ़ कपड़े पहने था और समाज में रहने योग्य था. उसने मुझे बताया था कि नाव पर बड़ी मेहनत से काम करके वह कुछ पैसे बचा सका था ताकि वह शादी कर सके और अब उसकी भावी पत्नी भी मर गयी. अवश्य ही वह भला आदमी रहा होगा चांग-कैंग ने इसके बारे में जो कुछ भी कहा झूठ था. कितने दुख की बात है कि आह-शुन ने ऐसे पेशेवर झूठे की बातों में विश्वास कर लिया और अकारन ही मर गई. पर कोई किसी को क्यों दोश दे जब अपना भाग्य ही खोटा हो."



هی تها . اِس لئے میں اِس بار چانگ . فو کے گهر کے سامنے والی لکڑی کی ٹال تک گیا . دوکاندار کی ماں دوکان میں تهیں . اُنہوں نے مجهے پہچان لیا اور دوکان میں آنے کے لئے کہا . ششٹاچار کی باتیں سماپت هونے کے بعد میں نے اُن سے یہاں آنے کا کارن بتلایا . میں نے چانگ . فو کے بارے میں پوچها . مجهے اُمید نہیں تهی کہ وہ اتنی لمبی سانس لے کر بولینگی—" کتنے دکھ کی بات هے کہ آہ . شن کے بهاگیہ میں اِن سندر پهولوں کا پہننا نہیں بدا تها ."

" پهر اُس نے مجهے پوری کہانی سنائی . اس نے بتلایا— "شاید پچهلے بسنت کے بعد سے هی وہ دبلی اور پیلی پڑتی دکهائی دینے لگی تهی . بعد کے دنوں میں تو وہ رونے لگتی تهی اور کسی کے کارن پوچهنے پر اُتر بهی نہیں دیتی تهی . کبهی کبهی وہ رات بهر روتی رهتی . چانگ . فو کے برداشت سے بات باهر هو جاتی تو وہ بگڑ اُٹهتا—" اتنی بڑی هو جانے پر شادی نہ هو پانے کے کارن هی وہ پاگل هو گئی هے ." جب هیمنت آیا اُسے زکام هوگیا اور اُس نے چارپائی پکڑ لی اور پهر اُسے کبهی نہ چهوڑا . کچھ هی دن پہلے اُس کی موت هوگئی . مرنے کے سمئے اُس نے چانگ . فو کو بتلایا کہ وہ اپنے ماں کے هی سمان بیمار هو گئی تهی . کهانسنے سے اُسے خون آتا تها اور رات میں بخار بهی تیز هو جاتا تها . اُس نے اب تک یہ بات چهپا رکهی تهی تاکہ اُسے پریشانی نہ هو . ایک دن شام کو اُس کا چچا چانگ . کینگ اپنا روپیہ مانگنے آیا . جب اُس نے روپئے دینے میں اسمرتهتا پرگٹ کی تو وہ مسکراتے هوئے بولا—" اتنا گهمنڈ مت کرو . تمہارا آدمی تو میرے جیسا بهی نہیں هے ." وہ بڑی پریشان هوگئی پر لجا کے کارن کچھ بهی پوچھ نہ سکتی تهی' کیول رو سکتی تهی . رو کر من هلکا کر لیا . چانگ نے اُسے بتلایا کہ اس کا بهاوی پتی اُس کے کتنا یوگیہ تها' پر اب تو بہت دیر هو چکی تهی . اُسے وشواس نہ هوا . اس لئے بولی—" اچها هے کہ میں ایسی هوں . کسی کو میرے کارن پریشانی تو نہیں هوتی ."

" اُس بڈهی عورت نے بهی کہا—" سچ مچ یدی اس کا پتی چانگ - کینگ جیسا بهی نہ هوتا تو اُسے بہت کشٹ اُٹهانا پڑتا. کیسا آدمی وہ هوتا؟ جب وہ اُس کی ارتهی کو اُٹهوانے آیا تو میں نے اُسے دیکها تها . وہ صاف کپڑے پہنے تها اور سماج میں رهنے یوگیہ تها . اس نے مجهے بتایا تها کہ ناؤ پر بڑی محنت سے کام کر کے وہ کچھ پیسے بچا سکا تها تاکہ وہ شادی کر سکے اور اب اُس کی بهاوی پتنی بهی مر گئی . اوشیہ هی وہ بهلا آدمی رها هوگا . چانگ - کینگ نے اُس کے بارے میں جو کچھ بهی کہا جهوٹ تها . کتنے دکھ کی بات هے کہ آہ . شن نے ایسے پیشہ ور جهوٹے کی باتوں میں وشواس کر لیا اور اکارن هی مر گئی . پر کوئی کسی کو کیوں دوش دے جب اپنا بهاگیہ هی کهوٹا هو ."

के विचार मेरे स्वप्न ही थे. दूसरे ही छन मुझे अपने विचारों पर बड़ी हंसी आई और मैं उन्हें भूल भी गया.

"मुझे मालूम नहीं था कि उसे एक बार नक़ली फूलों के लिये मार पड़ चुकी है. पर जब मां ने इस बात का जिक्र किया, मुझे खीर खाने वाली घटना याद आ गई. मैंने तायुयान की दूकानों में वह फूल ढूंढा पर वहां न मिला. जब मैं सीनान गया तब वहां से लाया."

बाहर कैमीलिया के पेड़ पर लदी हुई बर्फ़ के फिसल कर गिरने से हल्की सी आवाज हुई और मेरा ध्यान भी उचट गया. बर्फ़ के बोझ से वह पेड़ झुका जा रहा था. उसकी टहनियां अब फिर सीधी हो गईं और उसमें लगे लाल फूल अब पहले से भी अधिक चमकने लगे. आकाश का स्लेटी रंग भी गहरा होता जा रहा था. गौरैय्यों की चूं-चूं शुरू हो गई थी. शाम हो चली थी. जमीन के बरफ़ से ढकी होने के कारन उन्हें खाने को कुछ भी नहीं मिला था. वह सब जल्दी ही अपने घोंसले में चली गयीं और हर तरफ़ फिर शान्ति छा गयी.

खिड़की के बाहर झांक कर उसने प्याला खाली कर दिया और सिगरेट के कश खींचते हुये बोला—"सीनान में मैं नक़ली फूल खरीद पाया. यह तो मुझे मालूम नहीं था कि जिन फूलों के लिये उसे मार पड़ी थी वह वैसे ही थे जैसे मैं लाया था. यह भी 'वेलवेट' ( एक प्रकार का चिकना मखमली कपड़ा ) के बने थे. मुझे यह भी मालूम नहीं था कि उसे गहरा लाल रंग पसन्द था या हल्का गुलाबी, इस लिये मैं उसके लिये दोनों रंग के एक एक गुच्छे लेता आया."

"आज दोपहर को खाना खाने के बाद मैं चांग-फू के घर गया. इसी काम के लिये मैं एक दिन ज्यादा रुक गया था. उसका घर ठीक उसी जगह पर पहले ही जैसा था. पर घर में एक अजीब उदासी छायी हुई दिखाई देती थी. शायद यह मेरे मस्तिश्क की कोरी कल्पना ही रही हो. उसका लड़का और छोटी लड़की आह-चाओ बाहर दरवाजे पर ही खड़े थे. आह-चाओ पहले से बहुत बड़ी हो गई थी पर उसकी बहिन से उसमें बड़ी असमानता थी. मुझे आते देखकर वह घर के अन्दर चली गई. लड़के से पूछने पर पता लगा कि चांग-फू घर पर नहीं था. "और तुम्हारी बड़ी बहिन ?" मैंने पूछा. वह घूर कर मेरी तरफ़ देखने लगा और प्रश्न किया—"उससे क्या काम है ?" मुझे वह बड़ा भयानक दिखने लगा जैसे मेरे ऊपर हमला करना चाहता हो. चुपचाप मैं लौट आया, आजकल मेरा यही हाल होता है...."

"तुम अन्दाज नहीं लगा सकते कि आजकल मुझे किसी के यहां जाने में कितना डर लगता है. मुझे मालूम है कि लोग मेरा आना नहीं पसन्द करते और इसी कारन स्वयं अपने से घृना करने लग गया हूं. यह जानकर अब मैं किसी के यहां जाता भी नहीं हूं. पर मां का सहेजा हुआ काम तो करना



کے وچار میرے سوپن ھی تھے. دوسرے ھی چھن مجھے اپنے وچاروں پر بڑی ھنسی آئی اور میں اُنھیں بھول بھی گیا."

"مجھے معلوم نہیں تھا کہ اُسے ایک بار نقلی پھولوں کے لئے مار پڑچکی ھے. پر جب ماں نے اس بات کا ذکر کیا' مجھے کھیر کھانے والی گھٹنا یاد آگئی. میں نے تایویاں کی دوکانوں میں وہ پھول ڈھونڈھا پر وھاں نہ ملا. جب میں سینان گیا تب وھاں سے لایا."

باھر کیموایا کے پیڑ پر لدی ھوئی برف کے پھسل کر گرنے سے ھلکی سی آواز ھوئی اور میرا دھیان بھی اُچٹ گیا. برف کے بوجھ سے وہ پیڑ جھکا جا رھا تھا. اُس کی ٹہنیاں اب پھر سیدھی ھوگئیں اور اُس میں لگے لال پھول اب پہلے سے بھی ادھک چمکنے لگے. آکاش کا سلیٹی رنگ بھی گھرا ھوتا جا رھا تھا. گوریّوں کی چوں چوں شروع ھوگئی تھی. شام ھو چلی تھی. زمین کے برف سے ڈھکی ھونے کے کارن اُنھیں کھانے کو کچھ بھی نہیں ملا تھا. وہ سب جلدی ھی اپنے گھونسلوں میں چلی گئیں اور ھر طرف پھر شانتی چھا گئی.

کھڑکی کے باھر جھانک کر اُس نے پیالہ خالی کر دیا اور سگریٹ کے کش کھینچتے ھوئے بولا—"سینان میں میں نقلی پھول خرید پایا. یہ تو مجھے معلوم نہیں تھا کہ جن پھولوں کے لئے اُسے مار پڑی تھی وہ ویسے ھی تھے جیسے میں لایا تھا. یہ بھی ویلویت ( ایک پرکار کا چکنا مخملی کپڑا ) کے بنے تھے. مجھے یہ بھی معلوم نہیں تھا کہ اُسے گھرا لال رنگ پسند تھا یا ھلکا گلابی' اِس لئے دونوں رنگ کے ایک ایک گچھے لیتا آیا."

"آج دوپہر کو کھانا کھانے کے بعد میں چانگ. فو کے گھر گیا. اِسی کام کے لئے میں ایک دن زیادہ رک گیا تھا. اُس کا گھر ٹھیک اُسی جگہ پر پہلے ھی جیسا تھا. پر گھر میں ایک عجیب اُداسی چھائی ھوئی دکھائی دیتی تھی. شاید وہ میرے مستشک کی کوری کلپنا ھی رھی ھو. اس کا لڑکا اور چھوٹی لڑکی آہ. چاؤ باھر دروازے پر ھی کھڑے تھے. آہ. چاؤ پہلے سے بہت بڑی ھوگئی تھی پر اُس کی بہن سے اُس میں بڑی اسمانتا تھی. مجھے آتے دیکھکر وہ گھر کے اندر چلی گئی. لڑکے سے پوچھنے پر پتہ لگا کہ چانگ. فو گھر پر نہیں تھا. "اور تمھاری بہن ؟" میں نے پوچھا. وہ گھور کر میری طرف دیکھنے لگا اور پرشن کیا—"اُس سے کیا کام ھے ؟" وہ بڑا بھیانک دیکھنے لگا جیسے میرے اُوپر حملہ کرنا چاھتا ھو. چپ چاپ میں لوٹ آیا' آجکل میرا یہی حال ھوتا ھے..."

"تم انداز نہیں لگا سکتے کہ آجکل مجھے کسی کے یہاں جانے میں کتنا ڈر لگتا ھے. مجھے معلوم ھے کہ لوگ میرا آنا نہیں پسند کرتے اور اِسی کارن میں سویم اپنے سے گھرنا کرنے لگ گیا ھوں. یہ جان کر اب میں کسی کے یہاں جاتا بھی نہیں ھوں. پر ماں کا سہیجا ھوا کام تو کرنا

किसी स्त्री को अपने बालों में लाल रंग के नक़ली फूल लगाये देखा. उसे वह इतना सुन्दर लगा कि वह उसके लिये मचल उठी और न मिलने पर रात भर रोती रही. ग़ुस्से में उसके पिता ने उसे मारा भी. दो तीन दिन तक उसकी आंखें सूजी रहीं. इस प्रकार के लाल फूल दूसरे शहर से आते थे और 'एस' नगर में नहीं मिलते थे, इसलिये उसे उन फूलों के पाने की कोई आशा भी नहीं थी. चूंकि मैं इस बार इधर आ रहा था, मेरी मां ने दो फूल ख़रीद कर उसको देने के लिये कहा."

"इस काम से परेशान होने के बजाय मुझे ख़ुशी ही हुई. आह-शुन के लिये कुछ कर सकने की उम्मीद में मैं प्रसन्न हो उठा. पारसाल के पहिले जब मैं मां को लिवाने आया था चांग-फू घर में ही था और मैंने उससे घंटों बातें भी की थीं. उसने मुझे अपने घर गेहूं के आटे की खीर जिसमें वह चीनी भी मिलाते थे, खाने के लिये निमंत्रित किया. यह तो तुम समझते ही हो कि मल्लाह के घर में सफ़ेद चीनी मिलने का मतलब है कि वह ग़रीब नहीं है और अच्छा खाता पीता है. मैंने निमंत्रिन तो स्वीकार कर लिया पर आग्रह किया कि मैं बहुत थोड़ा ही खाऊंगा. उसने मेरी बात को मंज़ूर करते हुये आह-शुन से कहा—इन विद्वानों को भूक नहीं लगती. तुम थोड़ा सामान लाओ पर उसमें चीनी ज्यादा मिला देना. पर जब वह लायी तो मैंने देखा कि वह कटोरा इतना बड़ा था कि शायद मैं दिन भर खाता रहता ! फिर भी मैंने खाना शुरू कर दिया. यह सही है कि मेरा प्याला चांग-फू के प्याले से छोटा था. मैंने इसके पहिले ऐसी खीर नहीं खाई थी. यह मीठी थी और बहुत स्वादिश्ठ न थी. थोड़ी सी खाने के बाद मैं खाना बन्द करने की ही सोच रहा था कि मेरी दृष्टि आह-शुन पर पड़ी. उसे देखकर मेरी हिम्मत नहीं पड़ी कि मैं खाने की तीलियां रख दूं. मैंने उसकी आंखों में आशा और निराशा दोनों के ही भाव देखे —निराशा के इसलिये कि शायद उसने अच्छी न पकायी हो और आशा के इसलिये कि हम और खीर खायेंगे. मैंने सोचा कि यदि मैं प्याले में खीर पड़ी रहने दूंगा तो उसे बहुत दुख होगा, इसलिये मैंने उतनी ही तेज़ी से खाना शुरू किया जैसे यांग-फू खा रहा था. तब मैंने महसूस किया जबरदस्ती खाने का क्या मतलब होता है. मुझे याद है जब मेरे पेट में केंचुये पड़ गये थे मुझे चीनी के साथ दवा खानी पड़ी थी और मरी हालत ऐसी ही हो गई थी. फिर भी मुझे दुख नहीं हुआ क्योंकि जब वह खाली प्याले उठाने आई तो उसके ओठों पर संतोश की मुस्कराहट खेल रही थी उस दिन रात में पेट ख़राब रहने के कारन यथार्थ में मुझे नींद नहीं आई और खट्टी खट्टी डकारें आती रहीं पर मैं ईश्वर से यही मनाता रहा कि आह-शुन हमेशा प्रफुल्लित रहे. इस प्रकार



کسی اِستری کو اپنے بالوں میں لال رنگ کے نقلی پھول لگائے دیکھا. اُسے وہ اِتنا سندر لگا کہ وہ اُس کے لئے مچل اُٹھی اور نہ ملنے پر رات بھر روتی رہی . غصے میں اُس کے پتا نے اُسے مارا بھی . دو تین دن تک اُس کی آنکھیں سوجی رہیں . اِس پرکار کے لال پھول دوسرے شہر سے آتے تھے اور 'ایس' نگر میں نہیں ملتے تھے' اِس لئے اُسے اُن پھولوں کے پانے کی کوئی آشا بھی نہیں تھی . چونکہ میں اِس بار اِدھر آرہا تھا' میری ماں نے دو پھول خرید کر اُس کو دینے کے لئے کہا ."

"اِس کام سے پریشان ہونے کے بجائے مجھے خوشی ہی ہوئی . آہ-شن کے لئے کچھ کرسکنے کی اُمید میں میں پرسن ہو اُٹھا. پار سال کے پہلے جب میں ماں کو لوانے آیا تھا چانگ-فو گھر میں ہی تھا اور میں نے اُس سے گھنٹوں باتیں بھی کی تھیں . اُس نے مجھے اپنے گھر گیہوں کے آٹے کی کھیر جس میں وہ چینی بھی ملاتے تھے' کھانے کے لئے نمنترت کیا . یہ تو تم سمجھتے ہی ہو کہ ملاح کے گھر میں سفید چینی ملنے کا مطلب ہے کہ وہ غریب نہیں ہے اور اچھا کھاتا پیتا ہے . میں نے نمنترن تو سویکار کرلیا پر آگرہ کیا کہ میں بہت تھوڑا ہی کھاؤنگا . اُس نے میری بات کو منظور کرتے ہوئے آہ-شن سے کہا—اِن ودوانوں کو بھوک نہیں لگتی . تم تھوڑا سامان لاؤ پر اس میں چینی زیادہ ملا دینا . پر جب وہ لائی تو میں نے دیکھا کہ وہ کٹورا اِتنا بڑا تھا کہ شاید میں دن بھر کھاتا رہتا ! پھر بھی میں نے کھانا شروع کردیا . یہ صحیح ہے کہ میرا پیالہ چانگ-فو کے پیالے سے چھوٹا تھا . میں نے اِس کے پہلے ایسی کھیر نہیں کھائی تھی . یہ میٹھی تھی اور بہت سوادشٹ نہ تھی . تھوڑی سی کھانے کے بعد میں کھانا بند کرنے کی ہی سوچ رہا تھا کہ میری درشٹی آہ-شن پر پڑی . اُسے دیکھکر میری ہمت نہیں پڑی کہ میں کھانے کی تیلیاں رکھدوں . میں نے اس کی آنکھوں میں آشا اور نراشا دونوں کے ہی بھاو دیکھے—نراشا کے اس لئے کہ شاید اُس نے اچھی نہ پکائی ہو اور آشا کے اِس لئے کہ ہم اور کھیر کھاینگے . میں نے سوچا کہ یدی میں پیالے میں کھیر پڑی رہنے دونگا تو اسے بہت دکھ ہوگا' اِس لئے میں نے اُتنی ہی تیزی سے کھانا شروع کیا جیسے چانگ-فو کھا رہا تھا . تب میں نے محسوس کیا کہ زبردستی کھانے کا کیا مطلب ہوتا ہے . مجھے یاد ہے جب میرے پیٹ میں کینچوے پڑگئے تھے مجھے چینی کے ساتھ دوا کھانی پڑی تھی اور میری حالت ایسی ہی ہوگئی تھی . پھر بھی مجھے دکھ نہیں ہوا کیونکہ جب وہ خالی پیالے اُٹھانے آئی تو اس کے ہونٹھوں پر سنتوش کی مسکراہٹ کھیل رہی تھی . اُس دن رات میں پیٹ خراب رہنے کے کارن یتھارتھ میں مجھے نیند نہیں آئی اور کھٹی کھٹی ڈکاریں آتی رہیں پر میں ایشور سے یہی مناتا رہا کہ آہ-شن ہمیشہ پرپھلت رہے . اِس پرکار

है........पर तुम मेरी तरफ़ ऐसे क्यों देख रहे हो ?..... क्या मैं सचमुच बहुत बदल गया हूं ? मुझे आज भी वह दिन याद है जब हम दोनों टयूटेलरी के मन्दिर में जाते थे और वहां मूर्तियों की दाढ़ी पकड़ कर खींचते थे. दिन दिन भर हम लोग बहस करते थे कि चीन में क्रान्तिकारी परिवर्तन कैसे किये जा सकते हैं और कभी कभी तो बहस करते करते आपस में लड़ भी जाते थे. लेकिन अब तो मैं बहुत शान्त और समझौता करने वाला हूं. कभी कभी तो मैं सोचता हूं कि यदि मैं अपने पुराने मित्रों से मिलूं तो वह शायद ही मुझे अपना मित्र मानने को तैयार होंगे. जो कुछ भी हो, मैं जैसा हूं तुम्हारे सामने हूं."

उसने रुक कर सिगरेट निकाला और मुंह में रख कर उसे जला लिया, फिर बोला—"तुम्हारे चेहरे से तो मुझे आभास होता है कि तुममें मेरे लिये अब भी आशा है. यह सही है कि पहिले के मुक़ाबले में मैं बहुत ही कुन्दज़ेहन हो गया हूं पर कुछ चीज़ें हैं जिनसे बहुत प्रभावित भी होता हूं. यही कारन है कि तुम्हारे आगे मैं कृतज्ञ भी हूं पर परेशानी भी बहुत अनुभव करता हूं. मुझे दुख इसी बात का है कि मेरे उन तमाम दोस्तों को जिन्हें मेरे बारे में, मेरे भविश्य के बारे में अभी भी कुछ आशा है, उन्हें बाद में कुछ दुख होगा." कुछ छन रुक कर उसने सिगरेट के कश खींचे और मुंह से धुंआं निकालते हुए फिर बोला—"आज ही यहां आने के कुछ ही पहले मैंने एक बेवक़ूफ़ी की है पर मैं उस पर खुश हूं. मेरा वह पड़ोसी जो पूरब की तरफ़ रहता था, चांग-फू कहलाता था. वह मल्लाह था. उसके एक लड़की थी जिसका नाम था आह-शुन. जब तुम मेरे घर आते थे, उसे अवश्य देखा होगा. पर तुमने ध्यान नहीं दिया होगा क्योंकि वह छोटी थी. बड़ी होने पर भी वह सुन्दरी नहीं हुई. साधारन सी लम्बे मुंह की, पीली पड़ कर रह गई. लेकिन उसकी आंखें बहुत बड़ी थीं और बरौनियां भी असाधारन रूप से बड़ी थीं. ऐसी साफ़ आंखें थीं कि उसकी सफ़ेदी की तुलना उत्तर के आसमान से की जा सकती थी जब हवा न बह रही हो और बादल का एक भी टुकड़ा न हो. वह बड़ी योग्य लड़की थी. जब वह छोटी थी तभी उसके मां की मृत्यु हो गई. अपने छोटे भाई और बहन की देख भाल करने की ज़िम्मेदारी उसी पर आ गई. उसे अपने पिता की भी फ़िक्र करनी पड़ती थी और यह सब वह बड़ी ख़ूबी से कर लेती थी. वह कंजूस भी थी. इसलिये धीरे धीरे उसके परिवार ने उन्नति कर ली. शायद ही कोई ऐसा पड़ोसी रहा हो जो उसकी तारीफ़ नहीं करता था. चांग-फू भी उसकी बड़ाई करता था. इस बार जब मैं घर से यहां आ रहा था, मां ने उसे याद किया था. बड़े बूढ़ों की याददाश्त बहुत अच्छी होती है. मां ने बतलाया कि एक बार आह-शुन ने



ھے...پر تم میری طرف ایسے کیوں دیکھ رھے ھو ؟...کیا میں سچ‌مچ بہت بدل گیا ھوں؟ مجھے آج بھی وہ دن یاد ھے جب ھم دونوں ٹیوٹیلری کے مندر میں جاتے تھے اور وھاں مورتیوں کی داڑھی پکڑ کر کھینچتے تھے. دن دن بھر ھم لوگ بحث کرتے تھے کہ چین میں کرانتکاری پریورتن کیسے کئے جاسکتے ھیں اور کبھی کبھی تو بحث کرتے کرتے آپس میں لڑ بھی جاتے تھے. لیکن اب تو میں بہت شانت اور سمجھوتہ کرنے والا ھوں. کبھی کبھی تو میں سوچتا ھوں کہ یدی میں اپنے پرانے متروں سے ملوں تو وہ شاید ھی مجھے اپنا متر ماننے کو تیار ھونگے. جو کچھ بھی ھو، میں جیسا ھوں تمہارے سامنے ھوں."

اس نے رک کر سگریٹ نکالا اور منھ میں رکھ کر اسے جلا لیا، پھر بولا—"تمہارے چہرے سے تو مجھے آبھاس ھوتا ھے کہ تم میں میرے لئے اب بھی آشا ھے. یہ صحیح ھے کہ پہلے کے مقابلے میں میں بہت ھی کاندذھن ھو گیا ھوں پر کچھ چیزیں ھیں جن سے بہت پربھاوت بھی ھوتا ھوں. یہی کارن ھے کہ تمہارے آگے میں کرتگیہ بھی ھوں پر پریشانی بھی بہت انوبھو کرتا ھوں. مجھے دکھ اِس بات کا ھے کہ میرے اِن تمام دوستوں کو جنھیں میرے بارے میں، میرے بھوشیہ کے بارے میں ابھی بھی کچھ آشا ھے، انھیں بعد میں کچھ دکھ ھوگا." کچھ چھن رک کر اُس نے سگریٹ کے کش کھینچے اور منھ سے دھواں نکالتے ھوئے پھر بولا—"آج بھی یہاں آنے کے کچھ ھی پہلے میں نے ایک بیوقوفی کی ھے پر میں اُس پر خوش ھوں. میرا وہ پڑوسی جو پورب کی طرف رھتا تھا، چانگ-فو کہلاتا تھا. وہ ملاح تھا. اُس کے ایک لڑکی تھی جس کا نام تھا آہ-شن. جب تم میرے گھر آتے تھے، اُسے آوشیہ دیکھا ھوگا. پر تم نے دھیان نہیں دیا ھوگا کیونکہ وہ چھوٹی تھی. بڑی ھونے پر وہ سندری نہیں ھوئی. سادھارن سی لمبے منھ کی، پیلی پڑ کر رہ گئی. لیکن اُس کی آنکھیں بہت بڑی تھیں اور برونیاں بھی اسادھارن روپ سے بڑی تھیں. ایسی صاف آنکھیں تھیں کہ اُس کی سفیدی کی تولنا اُتر کے آسمان سے کی جاسکتی تھی جب ھوا نہ بہ رھی ھو اور بادل کا ایک بھی ٹکڑا نہ ھو. وہ بڑی یوگیہ لڑکی تھی. جب وہ چھوٹی تھی تبھی اُس کے ماں کی مرتیو ھوگئی. اپنے چھوٹے بھائی اور بہن کی دیکھ بھال کرنے کی ذمہ‌داری اُسی پر آگئی. اُسے اپنے پتا کی بھی فکرکرنی پڑتی تھی اور یہ سب وہ بڑی خوبی سے کرلیتی تھی. وہ کنجوس بھی تھی. اس لئے دھیرے دھیرے اُس کے پریوار نے اُنتی کرلی. شاید ھی کوئی ایسا پڑوسی رھا ھو جو اُس کی تعریف نہیں کرتا تھا. چانگ-فو بھی اُس کی بڑائی کرتا تھا. اِس بار جب میں گھر سے یہاں آرھا تھا، میں نے اُسے یاد کیا تھا. بڑے بزرگوں کی یادداشت بہت اچھی ھوتی ھے. ماں نے بتلایا کہ ایک بار آہ-شن نے

को लेकर क़ब्रिस्तान में गया. यह सोच कर कि मैं अपने प्यारे भाई को फिर से देख सकूंगा, मुझे बड़ी ख़ुशी हुई. मेरे लिये यह एक नया अनुभव था. क़ब्र के नज़दीक पहुंच कर हम लोगों ने देखा कि नदी सचमुच किनारा काट रही थी और पानी क़ब्र से केवल दो फ़ीट की दूरी पर था. क़रीब दो साल से उस क़ब्र पर नयी मिट्टी नहीं लगाई गयी थी. मैं उसी बर्फ़ीली ज़मीन पर खड़ा हो गया और मज़दूरों से कहा—"खुदाई शुरू करो."

मैं बहुत साधारन आदमी हूं. मुझे यह महसूस हुआ कि उस समय मेरी आवाज़ बड़ी अस्वाभाविक थी और इससे ज़्यादा बड़ी आज्ञा मैंने ज़िन्दगी में और कभी नहीं दी थी. पर मज़दूरों के लिये इसमें कोई नयापन नहीं था. वे खोदने में जुट गये. जब वह काफ़ी खोद चुके और ताबूत के घेरे तक पहुंच गये, मैंने झांक कर देखा और ताबूत को सचमुच सड़ा हुआ पाया. ताबूत क़रीब क़रीब पूरा टूट चुका था. लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े ही इधर उधर पड़े थे. मेरे हृदय की धड़कन बढ़ गई. मैं अपने भाई को जो देखने वाला था. पर मुझे घोर आश्चर्य हुआ जब मैंने देखा कि बिस्तर, कपड़े, लाश सभी नदारद थीं. मैंने सोचा कि सभी चीज़ें गल गयी होंगी. पर बाल तो सब से देर में और मुश्किल से गल पाता है. शायद कुछ बाल अब भी पड़े हों. इसलिये मैं कीचड़ में उस स्थान पर जहा तकिया रही होगी उसके बाल ढूढ़ने लगा. पर कुछ पता न लगा."

मैंने देखा कि उसकी आंखें लाल होती जा रही थीं, पर यह शराब का प्रभाव था. उसने खाया कुछ भी नहीं, केवल शराब पीता रहा और क़रीब एक पिन्ट पी गया होगा. अब उसकी शकल और चेहरे के हाव भाव वैसे ही हो रहे थे जैसे मैं अपने पुराने दोस्त लू-वी-फू में देखा करता था. मैंने बेयरा से दो पिंट शराब और गरम करने को कहा. फिर उसी की तरफ़ मुड़ कर उसकी बातें सुनने में लग गया.

"वास्तव में उस क़ब्र को पुरानी जगह से हटाने की कोई आवश्यकता बाक़ी नहीं रह गयी थी. मेरे लिये केवल यही काम बाक़ी था कि ज़मीन को फिर बराबर करवा दूं और ताबूत को वापस कर दूं. हालांकि ताबूत ख़रीद कर फिर वापिस करना अजीब बात थी और दाम भी कम मिलते पर वह दूकानदार उसे ज़रूर वापस ले लेता. इस प्रकार मैं अपने ख़र्चे के लिये कुछ पैसे ज़रूर बचा लेता. पर मैंने ऐसा नहीं किया. मैंने ताबूत में बिस्तरा बिछा कर पुरानी क़ब्र की थोड़ी मिट्टी उसमें रख कर उसको अपने पिता की क़ब्र के बग़ल में एक नयी क़ब्र में रख दिया. चूंकि क़ब्र के चारों तरफ़ मुझे ईंट का घेरा बनवाना था इसलिये कल दिन भर मैं उसी में वयस्त रहा. इस प्रकार से मैंने यह काम पूरा किया. कम से कम मेरी मां को सन्तोश देने के लिये काफ़ी



کو لے کر قبرستان میں گیا. یہ سوچ کر کہ میں اپنے پیارے بھائی کو پھر دیکھ سکوں گا، مجھے بڑی خوشی ہوئی. میرے لئے یہ ایک نیا انوبھو تھا. قبر کے نزدیک پہونچ کر ہم لوگوں نے دیکھا کہ ندی سچ مچ کنارا کاٹ رہی تھی اور پانی قبر سے کیول دو فیٹ کی دوری پر تھا. قریب دو سال سے اُس قبر پر نئی مٹی نہیں لگائی گئی تھی. میں اسی برفیلی زمین پر کھڑا ہوگیا اور مزدوروں سے کہا—"کھدائی شروع کرو."

"میں بہت سادھارن آدمی ہوں. مجھے یہ محسوس ہوا کہ اُس سمے میری آواز بڑی اسوابھاوک تھی اور اِس سے زیادہ بڑی آگیاں میں نے زندگی میں اور کبھی نہیں دی تھی. پر مزدوروں کے لئے اِس میں کوئی نیاپن نہیں تھا. وہ کھود نے جٹ گئے. جب وہ کافی کھود چکے اور تابوت کے گھیرے تک پہونچ گئے، میں نے جھانک کر دیکھا اور تابوت کو سچ مچ سڑا ہوا پایا. تابوت قریب قریب پورا ٹوٹ چکا تھا. لکڑی کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑے ہی اِدھر اُدھر پڑے تھے. میرے ہردے کی دھڑکن بڑھ گئی. میں اپنے بھائی کو جو دیکھنے والا تھا. پر مجھے گھور آشچریہ ہوا جب میں نے دیکھا کہ بستر، کپڑے، لاش سبھی ندارد تھیں. میں نے سوچا کہ سبھی چیزیں گل گئی ہونگی. پر بال تو سب سے دیر میں اور مشکل سے گل پاتا ہے. شاید کچھ بال اب بھی پڑے ہوں. اِس لئے میں کیچڑ میں اُس استھان پر جہاں تکیہ رہی ہوگی اُس کے بال ڈھونڈھنے لگا. پر کچھ پتہ نہ لگا."

میں نے دیکھا کہ اُس کی آنکھیں لال ہوتی جارہی تھیں، پر یہ شراب کا پربھاؤ تھا. اُس نے کھایا کچھ بھی نہیں، کیول شراب پیتا رہا اور قریب ایک پنٹ پی گیا ہوگا. اب اس کی شکل اور چہرے کے ہاؤ بھاؤ ویسے ہی ہو رہے تھے جیسے میں اپنے پرانے دوست لو-وی-فو میں دیکھا کرتا تھا. میں نے بیرا سے دو پنٹ شراب اور گرم کرنے کو کہا. پھر اُس کی طرف مڑکر اُس کی باتیں سننے میں لگ گیا.

"واستو میں اُس قبر کو پرانی جگہ سے ہٹانے کی کوئی آوشیکتا باقی نہیں رہ گئی تھی. میرے لئے کیول یہی کام باقی تھا کہ زمین کو پھر برابر کروا دوں اور تابوت کو واپس کردوں. حالانکہ تابوت خرید کر پھر واپس کرنا عجیب بات تھی اور دام بھی کم ملتے پر وہ دوکاندار اسے ضرور واپس لے لیتا. اِس پرکار میں اپنے خرچ کے لئے وہ پیسے ضرور بچا لیتا. میں نے ایسا نہیں کیا. میں نے تابوت میں بسترا بچھاکر پرانی قبر کی تھوڑی مٹی اُس میں رکھکر اُس کو اپنے پتا کی قبر کے بغل میں ایک نئی قبر میں رکھ دیا. چونکہ قبر کے چاروں طرف مجھے اینٹ کا گھیرا بنوانا تھا اِس لئے کل دن بھر میں اُسی میں ویست رہا. اِس پرکار سے میں نے یہ کام پورا کیا. کم سے کم میری ماں کو سنتوش دینے کے لئے کافی

मंगवाया जाय. अन्त में बेयरा की पसन्द से ही तीन चीजें आईं—सूखी तली फलियां, ठंडा गोश्त और तली मछलियां.

एक हाथ में शराब का प्याला लिये और दूसरे हाथ की उंगलियों के बीच सिगरेट दबाये वह मुस्कराकर बोला—"जब मैं लौट कर वापस आया तब मैंने देखा कि मैं कितना बुद्धू हूं. जब मैं छोटा था यदि मक्खियों को एक जगह इकट्ठा देखता था तो उन्हें डराकर उड़ा दिया करता था, पर दूसरे ही छन वह उसी जगह फिर आ बैठती थीं. हालांकि यह काम बुद्धूपन ही का था और मैं भी ऐसा ही समझता था पर मुझे उन पर दया भी आ जाती थी. मैं सोचता था क्या वह उड़ कर स्वयं नहीं जा सकती थीं ?"

मैं मुस्कराकर बोला—"उत्तर देना तो मुश्किल है. शायद मैं भी उन मक्खियों के सामने एक छोटे से घेरे में ही घूमता रहा हूं. लेकिन तुम क्यों उड़कर यहीं वापस आ गये ?"

"बेकार ही !" वह बोला और एक ही घूंट में ही प्याला खाली कर दिया। फिर सिगरेट के कश पर कश खींचकर आंखें खोलते हुये बोला—"बेकार ही ! पर तुम्हें जल्दी ही मालूम हो जायेगा."

बेयरा तुरन्त गरम ताजी शराब लाया और टेबिल पर तश्तरियां सजा दीं. ताजी तली वस्तुओं की सुगन्ध ऊपर के कमरे में फैल गई और अब कमरे का वातावरन ज़ियादा प्रसन्नतामय हो रहा था.

वह बोलता रहा—"तुमको शायद पहिले ही से मालूम है कि मेरे एक छोटा भाई था जो तीन ही साल की उम्र में मर गया था और यहीं दफ़न किया गया था. मुझे तो उसकी शकल की याद भी नहीं रही, पर मां कहती है कि वह बड़ा प्यारा लड़का था और मुझसे बहुत हिला हुआ था. अब भी उसकी याद करके मां रोया करती हैं. इस बसन्त में हमारे एक चचेरे भाई ने लिखा कि उसके क़ब्र के पास की मिट्टी बहुत नम हो गई है और यदि हम लोगों ने मरम्मत न कराई तो नदी में गिर जायेगी. जब मां को यह मालूम हुआ तो वह बहुत चिन्तित हुई और कई रात सो न पाईं. वह स्वयं पत्र पढ़ लेती हैं. लेकिन मैं क्या कर सकता था ? न मेरे पास पैसा था, न समय इस सिलसिले में कुछ भी कर सकना असम्भव दीख रहा था. नये साल की छुट्टी के अवसर का लाभ उठा कर मैंने यहां आ पाया हूं ताकि उसके क़ब्र की मरम्मत करवा दूं ."

एक प्याला शराब और पीकर वह फिर बोला—"क्या उत्तर में भी ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ता है ? वहां बर्फ़ की मोटी तहों में और बर्फ़ के नीचे भी फूल नहीं जमते. इसलिये कल मैंने एक छोटा सा ताबूत ख़रीदा. मैंने सोचा कि क़ब्र में गड़ा हुआ ताबूत अवश्य ख़राब हो गया होगा. मैंने कपड़े और बिस्तर ख़रीदे और चार मजदूरों



منگوایا جائے. انت میں بیرا کی پسند سے ہی تین چیزیں آئیں—سوکھی تلی پھلیاں، ٹھنڈا گوشت اور تلی مچھلیاں.

ایک ہاتھ میں شراب کا پیالہ لئے اور دوسرے ہاتھ کی انگلیوں کے بیچ میں سگریٹ دبائے وہ مسکرا کر بولا—"جب میں لوٹ کر واپس آیا تو میں نے دیکھا کہ میں کتنا بدھو ہوں. جب میں چھوٹا تھا یدی مکھیوں کو ایک جگہ اکٹھا دیکھتا تھا تو انہیں ڈرا کر اڑا دیا کرتا تھا' پر دوسرے ہی چھن وہ اسی جگہ پھر آ بیٹھتی تھیں. حالانکہ یہ کام بدھوپن ہی کا تھا اور میں بھی ایسا ہی سمجھتا تھا پر مجھے اُن پر دیا بھی آجاتی تھی. میں سوچتا تھا کیا وہ اُڑکر سویم نہیں جاسکتیں تھیں؟"

میں مسکراکر بولا—"اُتر دینا تو مشکل ہے. شاید میں بھی اُن مکھیوں کے سامنے ایک چھوٹے سے گھیرے میں ہی گھومتا رہا ہوں. لیکن تم کیوں اُڑکر یہاں واپس آگئے؟"

"بیکار ہی!" وہ بولا اور ایک ہی گھونٹ میں پیالہ خالی کردیا. پھر سگریٹ کے کش پر کش کھینچ کر آنکھیں کھولتے ہوئے بولا—بیکار ہی! پر تمہیں جلد ہی معلوم ہوجائیگا."

بیرا ترنت گرم تازی شراب لایا اور ٹیبل پر طشتریاں سجا دیں. تازی تلی وستوؤں کی سوگندھ اوپر کے کمرے میں پھیل گئی اور اب کمرے کا واتاورن زیادہ پرسنتا مے ہو رہا تھا.

وہ بولتا رہا—"تم کو شاید پہلے ہی سے معلوم ہے کہ میرا ایک چھوٹا بھائی تھا جو تین ہی سال کی عمر میں مر گیا تھا اور یہیں دفن کیا گیا تھا. مجھے تو اُس کی شکل کی یاد بھی نہیں رہی' پر ماں کہتی ہے وہ بڑا پیارا لڑکا تھا اور مجھ سے بہت ہلا ہوا تھا. اب بھی اُس کی یاد کرکے ماں رویا کرتی ہیں. اِس بسنت میں ہمارے ایک چچیرے بھائی نے لکھا کہ اس کے قبر کے پاس کی مٹی بہت نم ہوگئی ہے اور یدی ہم لوگوں نے مرمت نہ کرائی تو ندی میں گر جائےگی. جب ماں کو یہ معلوم ہوا تو وہ بہت چنتت ہوئیں اور کئی رات سو نہ پائیں. وہ سویم پتر پڑھ لیتی ہیں. لیکن میں کیا کرسکتا تھا؟ نہ میرے پاس پیسہ تھا' نہ سمے. اِس سلسلے میں کچھ بھی کرسکنا اسمبھو دکھ رہا تھا. نئے سال کی چھٹی کے اوسر کا لابھ اُٹھاکر میں یہاں آپایا ہوں تاکہ اُس کے قبر کی مرمت کروادوں."

ایک پیالہ شراب اور پی کر وہ پھر بولا—"کیا اُتر میں بھی ایسی پرستھتی کا سامنا کرنا پڑتا ہے؟ وہاں برف کی موٹی تہوں میں اور برف کے نیچے بھی پھول نہیں جمتے. اِس لئے کل میں نے ایک چھوٹا سا تابوت خریدا. میں نے سوچا کہ قبر میں گڑا ہوا تابوت اوشیہ خراب ہوگیا ہوگا. میں نے کپڑے اور بستر خریدے اور چار مزدوروں

इस बार सीढ़ी पर कोई काफ़ी धीरे धीरे चढ़ रहा था. मैंने सोचा यह कोई ग्राहक ही होगा. जब आख़िरी सीढ़ी पर पैरों की आवाज़ आई मैंने अपना सिर उठा कर इस तरह देखा जैसे आनेवाले के आने से मुझे परेशानी हुई हो और मैं उठ खड़ा हुआ. मुझे इसकी तनिक भी आशा नहीं थी कि यहां मेरी अपने एक मित्र से भेंट हो जायेगी. शायद वह मुझे अब भी मित्र कहने देगा. आनेवाला मेरा सहपाठी था और जब मैं अध्यापक था, वह भी मेरे साथ ही काम करता था. हालांकि वह बहुत बदल गया था पर मैं उसे देखते ही पहचान गया. पहले के स्वस्थ और फुर्तीले लू-वी-फ़ू के मुक़ाबले में अब वह थोड़ा सुस्त हो गया था.

"अरे ! वी-फ़ू, तुम यहां ! मुझे रत्ती भर उम्मीद नहीं थी कि तुमसे यहां भेंट हो जायेगी."

"अच्छा, तुम हो ! मैंने भी कभी नहीं सोचा था. . . ."

मैंने उससे साथ देने के लिये कहा पर काफ़ी हिचक के बाद वह तैयार हुआ. मुझे यह बहुत अजीब लगा और मेरे मन को तकलीफ़ हुई. उसके बाल आज भी पहले की ही तरह बिखरे थे और चेहरा लम्बा और पीला था, वह अब पहिले से दुबला था. वह बड़ा शान्त था. सम्भव है उसका उत्साह मर चुका हो. घनी भौं के नीचे उसकी आंखों में अब पहिले की तेज़, पैनी दृष्टि नहीं थी. पर जब उसने आंगन की तरफ़ नज़र डाली तो मुझे उसकी आंखों में वही पुरानी चमक दिखाई दी जो मैं स्कूल के दिनों में देखा करता था.

मैं ख़ुश हो कर, पर कुछ डरता हुआ बोला "क्यों. हम लोग क़रीब दस साल बाद मिल रहे हैं ? बहुत दिन पहिले मैंने सुना था कि तुम सीनान में हो पर मैं इतना निकम्मा और सुस्त हूं कि तुम्हें पत्र भी न लिख सका."

उसने उत्तर दिया—"मैं ठीक ही हूं. क़रीब दो साल से मैं तायुयान में हूं. मेरी मां भी मेरे साथ है. जब मैं उन्हें वापस लेने आया था तो मालूम हुआ कि तुम यहां से जा चुके हो."

मैंने प्रश्न किया—"तायुयान में क्या कर रहे हो ?

"प्रान्तीय अधिकारी के परिवार में पढ़ा रहा हूं."

"और उसके पहले क्या करते थे ?"

अपनी जेब से एक सिगरेट निकाल कर उसने जलायी और मुंह से धुएं के गोले निकालते हुये वह बोला—"उसके पहिले ?. . .,यों ही कुछ नहीं. . . . .बेकार ही था."

उसने मुझसे मेरे बारे में पूछा. बेयरा को बुला कर एक प्याला और लाने के लिया कहकर मैंने अपनी हालत संक्षेप में बता दी. मैं चाहता था कि वह भी जल्दी ही दो प्याले मदिरा पी कर अपने को थोड़ा गरमा ले. हम लोगों ने साथ खाने के लिये और चीज़ें भी मंगवाई. पहिले तो हम लोग आपस में शिष्टाचार का ध्यान नहीं रखते थे पर इस बार हम दोनों में से कोई भी निश्चय न कर पाया कि क्या



اِس بار سیڑھی پر کوئی کافی دھیرے دھیرے چڑھ رہا تھا . میں نے سوچا یہ کوئی گراہک ہی ہوگا . جب آخری سیڑھی پر پیروں کی آواز آئی میں نے اپنا سر اُٹھاکر اِس طرح دیکھا جیسے آنے والے کے آنے سے مجھے پریشانی ہوئی ہو اور میں اُٹھ کھڑا ہوا . مجھے اُسکی تنک بھی آشا نہیں تھی کہ یہاں میری اپنے ایک متر سے بھینٹ ہوجائیگی . شاید وہ مجھے اب بھی متر کہنے دےگا . آنے والا میرا سہپاٹھی تھا اور جب میں ادھیاپک تھا وہ بھی میرے ساتھ ہی کام کرتا تھا . حالانکہ وہ بہت بدل گیا تھا پر میں اُسے دیکھتے ہی پہچان گیا . پہلے کے سوستھ اور پھرتیلے لو-وی-فو کے مقابلے میں اب وہ تھوڑا سست ہوگیا تھا .

"ارے ! وی-فو تم یہاں ! مجھے رتی بھر اُمید نہیں تھی کہ تم سے یہاں بھینٹ ہوجائیگی ."

"اچھا تم ہو ! میں نے بھی کبھی نہیں سوچا تھا . . . ."

میں نے اُس سے ساتھ دینے کے لئے کہا پر کافی ہچک کے بعد وہ تیار ہوا . مجھے یہ بہت عجیب لگا اور میرے من کو تکلیف ہوئی . اُس کے بال آج بھی پہلے کی طرح بکھرے تھے اور چہرہ لمبا اور پیلا تھا وہ اب پہلے سے دبلا تھا . وہ بڑا شانت تھا . سمبھو ہے اس کا اُتساہ مرچکا ہو . گھنی بھوں کے نیچے اُسکی آنکھوں میں اب پہلے کی تیز پینی درشٹی نہیں تھی . پر جب اُس نے آنگن کی طرف نظر ڈالی تو مجھے اُسکی آنکھوں میں وہی پرانی چمک دکھائی دی جو میں اسکول کے دنوں میں دیکھا کرتا تھا .

میں خوش ہوکر پر کچھ ڈرتا ہوا بولا—"کیوں ہم لوگ قریب دس سال بعد مل رہے ہیں؟ بہت دن پہلے میں نے سنا تھا کہ تم سینان میں ہو پر میں اِتنا نکما اور سست ہوں کہ تمہیں پتر بھی نہ لکھ سکا ."

اُس نے اُتر دیا—"میں ٹھیک ہی ہوں . قریب دو سال سے میں تایویان میں ہوں . میری ماں بھی میرے ساتھ ہے . جب میں انہیں واپس لینے آیا تھا تو معلوم ہوا کہ تم یہاں سے جاچکے ہو ."

میں نے پرشن کیا—"تایویان میں کیا کر رہے ہو؟"

"پرانتیہ ادھیکاری کے پریوار میں پڑھا رہا ہوں ."

"اور اُس کے پہلے کیا کرتے تھے؟"

اپنی جیب سے ایک سگریٹ نکال کر اُس نے جلائی اور منھ سے دھوئیں کے گولے نکالتے ہوئے وہ بولا—"اُس کے پہلے؟ . . . یونہی کچھ نہیں . . . . بیکار ہی تھا ."

اُس نے مجھ سے میرے بارے میں پوچھا . بیرا کو بلاکر ایک پیالہ اور لانے کے لئے کہکر میں نے اپنی حالت سنچھیپ میں بتادی . میں چاہتا تھا کہ وہ بھی جلدی ہی دو پیالے مدرا پی کر اپنے کو تھوڑا گرما لے . ہم لوگوں نے ساتھ کھانے کے لئے اور چیزیں بھی منگوائیں . پہلے تو ہم لوگ آپس میں شِشٹاچار کا دھیان نہیں رکھتے تھے پر اس بار ہم دونوں میں کوئی بھی نشچے نہیں کرپایا کہ کیا

पुराने पांच टेबिल लगे हुए थे. केवल दीवार की खिड़की में अब शीशे के दरवाज़े लगा दिये गये थे जहां पहिले लकड़ी के दरवाज़े थे.

"एक प्याला पीली शराब, फलियों के दस टुकड़े और काफ़ी मात्रा में चटनी दो." मैंने आर्डर दिया.

बेयरा को यह आर्डर देते हुए, मैं पीछे जाकर खिड़की से लगी मेज़ के सहारे बैठ गया. ऊपर का कमरा खाली था. इसलिये मैं सब से अच्छी सीट पर बैठा ताकि मैं नीचे आंगन का पूरा दृश्य देख सकूं. वह आंगन शायद शराब की दूकान का हिस्सा नहीं था. पहिले भी जब मैं यहां आता, घंटों ऐसे ही आंगन को देखता रहता. बर्फ़ पड़ती रहने पर भी मैं अकसर घंटों बैठा रहता था. पर अब मैं उत्तर में रहने लगा था, इसलिये यह दृश्य मेरे लिये नए थे. प्लम के पेड़ बर्फ़ से होड़ ले रहे थे जैसे उन्हें बर्फ़ गिरने से कोई परेशानी ही न हो. दालान के बग़ल में ही अब भी कैमीला का एक पेड़ था जिसमें सुर्ख़ लाल फूल खिले थे. गहरी हरी रंग की पत्तियों में, जब बर्फ़ गिर रही हो, यह फूल आग जैसे चमकते थे. तभी ज़मीन पर पड़ी बर्फ़ मुझे पिघलती महसूस हुई. उत्तर की सूखी बर्फ़ीली हवा से जहां एक बार हवा चलने से बर्फ़ उड़कर आकाश में धुन्ध बना देती थी, यहां का मौसम कितना भिन्न था !

"शराब आ गई, महोदय !" बेयरा ने लापरवाही से कहा और प्याला, खाना खाने की तीलियां, शराब की केतली और रकाबियां मेज़ पर सजा दीं. मेज़ की तरफ़ मुड़ कर बैठते हुये मैंने बर्तनों को ठीक किया और प्याले में शराब डाल ली. मुझे एहसास होने लगा कि हालांकि मेरा घर उत्तर में नहीं था फिर भी यहां आने पर मैं अजनबी लग रहा था. उत्तर की सूखी बर्फ़ जो पाउडर की भांति उड़ती थी और यहां की कोमल बर्फ़ जो बदन में चिप जाती थी दोनों ही मुझे दूसरी, बाहरी मालूम दे रही थीं. उदासी भरी मुद्रा में ही मैंने प्याला मुंह से लगाया. शराब अच्छी थी और फलियां भी अच्छी पकी थीं, केवल चटनी बड़ी पतली थी, पर क्या किया जाय, 'एस' नगर के लोग तेज़ चटनी पसन्द ही नहीं करते थे.

शायद दोपहर होने के कारन दूकान में शराब की दूकान सा वातावरन नहीं था. मैं अब तक तीन प्याले शराब पी चुका था पर अभी तक बाक़ी चार मेज़ें खाली ही पड़ीं थीं. मैं अकेलापन महसूस कर रहा था, फिर भी इच्छा यह नहीं थी कि और लोग भी आ जायं. इसलिये जब मैं सीढ़ियों पर किसी के पैर पड़ने की आवाज़ सुनता था तो मेरे अन्दर असन्तोश की ही भावना उठती थी और जब सामने बेयरा ही दिखाई पड़ता था तो बड़ा सन्तोश होता था. इसी तरह मैंने दो प्याले शराब और पी डाली.



پرانے پانچ ٹیبل لگے ھوئے تھے. لیکن دیوار کی کھڑکی میں اب شیشے کے دروازے لگا دیئے گئے تھے جہاں پہلے لکڑی کے دروازے تھے .

" ایک پیالہ پیلی شراب' پھلیوں کے دس ٹکڑے اور کافی ماترا میں چٹنی دو " میں نے آرڈر دیا .

بیرا کو یہ آرڈر دیتے ھوئے' میں پیچھے جا کر کھڑکی سے لگی میز کے سہارے بیٹھ گیا . اوپر کا کمرہ خالی تھا . اِس لئے میں سب سے اچھی سیٹ پر بیٹھا تا کہ میں نیچے آنگن کا پورا درشیہ دیکھ سکوں . وہ آنگن شاید شراب کی دوکان کا حصہ نہیں تھا . پہلے جب بھی میں یہاں آتا' گھنٹوں ایسے ھی آنگن کو دیکھتا رھتا . برف پڑتی رھنے پر بھی میں اکثر گھنٹوں بیٹھا رھتا تھا . پر اب میں اُتر میں رھنے لگا تھا' اِس لئے یہ درشیہ میرے لئے نئے تھے . پلم کے پیڑ برف سے ھوڑ لے رھے تھے جیسے اُنھیں برف گرنے سے کوئی پریشانی ھی نہ ھو . دالان کے بغل میں ھی اب بھی کیمیلا کا ایک پیڑ تھا جس میں سرخ لال پھول کھلے تھے . گہری ھری رنگ کی پتیوں میں' جب برف گر رھی ھو' یہ پھول آگ جیسے چمکتے تھے . تبھی زمین پر پڑی برف مجھے پگھلتی محسوس ھوئی . اُتر کی سوکھی برفیلی ھوا سے جہاں ایک بار ھوا چلنے سے برف اُڑ کر آکاش میں دھند بنا دیتی تھی' یہاں کا موسم کتنا بھن تھا !

" شراب آ گئی' مہودئے ! " بیرا نے لاپرواھی سے کہا اور پیالہ' کھانا کھانے کی تیلیاں' شراب کی کیتلی اور رکابیاں میز پر سجا دیں . میز کی طرف مڑ کر بیٹھتے ھوئے میں نے برتنوں کو ٹھیک کیا اور پیالے میں شراب ڈال لی . مجھے احساس ھونے لگا کہ حالانکہ میرا گھر اُتر میں نہیں تھا پھر بھی یہاں آنے پر میں اجنبی لگ رھا تھا . اُتر کی سوکھی برف جو پاؤڈر کی بھانتی اُڑتی تھی اور یہاں کی کومل برف جو بدن میں چپک جاتی تھی دونوں ھی مجھے دوسری' باھری معلوم دے رھی تھیں . اُداسی بھری مدرا میں ھی میں نے پیالہ منھ سے لگایا. شراب اچھی تھی اور پھلیاں بھی اچھی پکیں تھیں' کیول چٹنی بڑی پتلی تھی' پر کیا کیا جائے' 'ایس' نگر کے لوگ تیز چٹنی پسند ھی نہیں کرتے تھے .

شاید دوپہر ھونے کے کارن دوکان میں شراب کی دوکان سا واتاورن نہیں تھا . میں اب تک تین پیالے شراب پی چکا تھا پر ابھی تک باقی چار میزیں خالی ھی پڑیں تھیں . میں اکیلا پن محسوس کر رھا تھا' پھر بھی اِچھا یہ نہیں تھی کہ اور لوگ بھی آجائیں . اِس لئے جب میں سیڑھیوں پر کسی کے پیر پڑنے کی آواز سنتا تھا تو میرے اندر اسنتوش کی ھی بھاؤنا اُٹھتی تھی اور جب سامنے بیرا ھی دیکھائی پڑتا تھا تو بڑا سنتوش ھوتا تھا . اِسی طرح میں نے دو پیالے شراب اور پی ڈالی .

# मदिरालय में

लेखक—लू-शुन

अनुवादक—कामेश्वर अग्रवाल

उत्तर से दूर दक्खिन जाते समय मैं अपने गांव में भी रुका था और वहां से "एस" नगर को गया. यह नगर मेरे गांव से लगभग 10 मील की दूरी पर है और नाव से आधे दिन में ही वहां कोई पहुंच सकता है. क़रीब एक साल तक मैंने यहां के एक स्कूल में पढ़ाया है. आधा जाड़ा बीत चुका था. बर्फ़ भी गिर चुकी थी और अब ठंडक काफ़ी बढ़ गई थी. घर की याद और यात्रा की थकन ने मुझे मजबूर कर दिया कि मैं लो-जू होटल में रुक कर कुछ दिन आराम करूं. यह होटल इससे पहले यहां नहीं था. यह एक छोटा सा शहर था. मैंने सोचा कि घूम फिर कर अपने पुराने दोस्तों से मिल लूं. पर किसी से भी भेंट न हो सकी. वह सभी काम धन्दों में लग कर बाहर चले गये थे. जब मैं स्कूल के सामने से गुज़रा तो देखा उसका नाम और फाटक दोनों ही बदल गये हैं. उस शहर के लिये मैं अब पूरा अजनबी था. दो घंटे में ही मेरा सब उत्साह ख़तम हो गया और यहां आने का मुझे अफ़सोस होने लगा.

जिस होटल में मैं रुका था, वहां केवल कमरे किराये पर दिये जाते थे, खाना नहीं दिया जाता था. चावल और दूसरी चीज़ें बाहर से मंगानी पड़ती थीं और उनका स्वाद बहुत ख़राब होता था, जैसे मिट्टी सान कर रख दी गई हो. खिड़की के बाहर एक दीवार थी जिस पर लाल पीले धब्बे पड़ गये थे और काई जम गयी थी. ऊपर आकाश था जो मुर्दे के समान सफ़ेद पड़ गया था, जिसकी सारी रंगीनियां ख़तम हो चुकी थीं. बर्फ़ भी गिरने लगी थी. मामूली सा खाना खाने को तो मिला पर खाली समय बिताने का वहां कोई साधन न जुट सका. इसलिये मैंने सोचा कि अपनी पुरानी परिचित शराब की छोटी सी दूकान पर जाकर समय बिताऊं. यह दूकान होटल के पास ही थी और बैरेल हाउस के नाम से मशहूर थी. कमरे में ताला डाल कर मैं मदिरालय के लिये चल दिया. शराब पीने की मुझे इतनी इच्छा नहीं थी जितनी इस बात की कि किसी प्रकार समय बीत जाय. बैरेल हाउस अब भी उसी स्थान पर था. उसका साइनबोर्ड भी नहीं बदला था. पर बैरेल हाउस के तमाम कर्मचारी बदल गये थे. उनमें कोई मेरा परिचित नहीं था. यहां भी मैं अजनबी था. एक जानकार की भांति मैं सीढ़ी से होता हुआ दूसरी मंजिल पर जा बैठा. ऊपर के कमरे में वही

# مدرالئے میں

لیکھک — لوشن

انووادک — کامیشور اگروال

اُتر سے دور دکھن جاتے سمے میں اپنے گاؤں میں بھی رکا تھا اور وہاں سے "ایس نگر" کو گیا. یہ نگر میرے گاؤں سے لگ بھگ 10 میل کی دوری پر ہے اور ناؤ سے آدھے دن میں ہی وہاں کوئی پہونچ سکتا ہے. قریب ایک سال تک میں نے یہاں کے ایک اسکول میں پڑھایا ہے. آدھا جاڑا بیت چکا تھا، برف بھی گر چکی تھی اور اب ٹھنڈک کافی بڑھ گئی تھی. گھر کی یاد اور یاترا کی تھکن نے مجھے مجبور کر دیا کہ میں لو. زو ہوٹل میں رک کر کچھ دن آرام کروں. یہ ہوٹل اس سے پہلے یہاں نہیں تھا. یہ ایک چھوٹا سا شہر تھا. میں نے سوچا کہ گھوم پھر کر اپنے پرانے دوستوں سے مل لوں. پر کسی سے بھی بھینٹ نہ ہو سکی. وہ سبھی کام دھندوں میں لگ کر باہر چلے گئے تھے. جب میں اسکول کے سامنے سے گذرا تو دیکھا اس کا نام اور پھاٹک دونوں ہی بدل گئے ہیں. اس شہر کے لئے میں اب پورا اجنبی تھا. دو گھنٹے میں ہی میرا سب اُتساہ ختم ہو گیا اور یہاں آنے کا مجھے افسوس ہونے لگا.

جس ہوٹل میں میں رکا تھا وہاں کیول کمرے کرائے پر دئے جاتے تھے، کھانا نہیں دیا جاتا تھا. چاول اور دوسری چیزیں باہر سے منگانی پڑتی تھیں اور ان کا سواد بہت خراب ہوتا تھا، جیسے مٹی سان کر رکھ دی گئی ہو. کھڑکی کے باہر ایک دیوار تھی جس پر لال پیلے دھبے پڑ گئے تھے اور کائی جم گئی تھی. اوپر آکاش تھا جو مردے کے سمان سفید پڑ گیا تھا، جس کی ساری رنگینیاں ختم ہو چکی تھیں. برف بھی گرنے لگی تھی. معمولی سا کھانا کھانے کو تو ملا پر خالی سمے بتانے کا وہاں کوئی سادھن نہ جٹ سکا. اس لئے میں نے سوچا کہ اپنی پرانی پرچت شراب کی چھوٹی سی دوکان پر جا کر سمے بتاؤں. یہ دوکان ہوٹل کے پاس ہی تھی اور بیرل ہاؤس کے نام سے مشہور تھی. کمرے میں تالا ڈال کر میں مدرالئے کے لئے چل دیا. شراب پینے کی مجھے اتنی اچھا نہیں تھی جتنی اس بات کی کہ کسی پرکار سمے بیت جائے. بیرل ہاؤس اب بھی اُسی استھان پر تھا. اُس کا سائن بورڈ بھی نہیں بدلا تھا. پر بیرل ہاؤس کے تمام کرمچاری بدل گئے تھے. اُن میں کوئی میرا پرچت نہیں تھا. یہاں بھی میں اجنبی تھا. ایک جانکار کی بھانتی میں سیڑھی سے ہوتا ہوا دوسری منزل پر جا بیٹھا. اوپر کے کمرے میں وہی

ज्यादा शिकार होती है, जात पात, छुआछूत, भाषा, पार्टी आदि के फ़र्क़ों के कारन आपसी कशमकश जितनी ज्यादा बढ़ती है उतना ही ज्यादा प्लानिंग कमीशन को खुशी होगी.

सौ बातों की एक बात यह है कि प्लानिंग कमीशन ने अपने सामने वही पैमाना और आदर्श रख छोड़े हैं जो पच्छिम के मुल्कों के सामने हैं और जहां प्रेम के मुक़ाबिले क़ानून व हथियार की पनाह बात बात पर ली जाती है, जहां इन्सान को इन्सान उतना नहीं जितना मशीन का एक पुर्जा समझा जाता है. अगर यही हालत बनी रही तो हमें इसमें कोई शक नहीं है कि हिन्दुस्तान में ग़रीबी और तबाही तेज़ रफ़्तार से बढ़ेगी और हो सकता है कि जल्दी ही हमें किसी विदेशी ताक़त की पनाह लेना पड़े. अब जब सरकार दूसरी योजना पर विचार कर रही है तो बड़े अदब के साथ हम कहना चाहते हैं कि उसे इन मद्दों पर ग़ौर करना चाहिये और इन तीन साल की असलियत की रोशनी में आगे के काम की बुनियाद खड़ी होनी चाहिये, मुल्क को और मुल्क के हर गांव को अपने पैरों पर खड़ा करने की कोशिश करनी चाहिये और जनता को सीधे, सच्चे, ईमान, प्रेम और मेहनत के रास्ते पर लाना चाहिये. —सुरेशराम भाई



زیادہ شکار ہوتی ہے، جات پات، چھواچھوت، بھاشا، پارٹی آدی کے فرقوں کے کارن آپسی کشمکش جتنی زیادہ بڑھتی ہے اتنا ہی زیادہ پلاننگ کمیشن کو خوشی ہوگی۔

سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ پلاننگ کمیشن نے اپنے سامنے وہی پیمانے اور آدرش رکھ چھوڑے ہیں جو پچھم کے ملکوں کے سامنے ہیں اور جہاں پریم کے مقابلہ قانون و ہتھیار کی پناہ بات بات پر لی جاتی ہے، جہاں انسان کو انسان اتنا نہیں جتنا مشین کا ایک پرزہ سمجھا جاتا ہے۔ اگر یہی حالت بنی رہی تو ہمیں اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ ہندستان میں غریبی اور تباہی تیز رفتار سے بڑھیگی اور ہو سکتا ہے کہ جلدی ہی ہمیں کسی ودیشی طاقت کی پناہ لینا پڑے۔ اب جب سرکار دوسری یوجنا پر وچار کر رہی ہے تو بڑے ادب کے ساتھ ہم کہنا چاہتے ہیں کہ اسے ان مدوں پر غور کرنا چاہئے اور ان تین سال کی اصلیت کی روشنی میں آگے کے کام کی بنیاد کھڑی ہونی چاہئے، ملک کو اور ملک کے ہر گاؤں کو اپنے پیروں پر کھڑا کرنے کی کوشش کرنی چاہئے اور جنتا کو سیدھے، سچے ایمان، پریم اور محنت کے راستے پر لانا چاہئے۔

—سریش رام بھائی۔

रही थीं. मगर हुकूमत की मशीनरी और उसके रवैये से वह इतना तंग आ गई कि उन्होंने वह काम छोड़ दिया और अब गौ सेवा का काम करने कश्मीर चली गई हैं. ज़ाहिर है कि अगर सरकारी बन्दोबस्त में ईमान, लगन और ख़िदमत की बू होती तो वह ऐसा हरगिज़ न करतीं. हुकूमत के निज़ाम के खोखला होते जाने का इस से ज़्यादा क्या नमूना हो सकता है? प्लानिंग कमीशन के मेम्बर ख़ुद उस मशीन का हिस्सा हैं. इसलिये उन्हें अन्दर ही अन्दर उस मशीन की असलियत की जानकारी न होने पर हमें कोई ताज्जुब नहीं है. शहर या गांव कहीं भी चले जाइये सरकारी दफ़्तरों की हालत पर और हुक्कामों के रंग ढंग पर कोई भी दो आंसू बहाये बिना नहीं रहेगा.

और जहां तक तीसरे दावे की बात है कि नया नज़रिया पैदा हो रहा है, हमें नहीं मालूम कि श्री कृष्णमाचारी की मुराद क्या है? क्या महज़ सरकारी नौकरियों में इज़ाफ़ा हो जाने से नया नज़रिया पैदा हो जाता है? हम बड़े अदब के साथ यह जानना चाहते हैं कि ख़ुद प्लानिंग कमीशन के मेम्बरों के विचार, अमल या काम में कोई नया नज़रिया पैदा हुआ या नहीं? कहने की ज़रूरत नहीं कि महज़ कुछ दफ़्तरों के बढ़ जाने या देश विदेश से ऊंची तनख़्वाह पर माहिरों के आजाने से नया नज़रिया नहीं आ जाता. नया नज़रिया हम तभी मानेंगे जब प्लानिंग कमीशन अपने मेम्बरों या मुल्क पर नये मूल्यों के लिये ज़ोर दे. हम जानना चाहेंगे कि क्या आज हमारे हुक्कामों की वही तमन्नायें नहीं हैं जो पहले थीं, जैसे ज़्यादा से ज़्यादा तनख़्वाह कम से कम जिस्मानी काम, आम जनता से अलग रहन सहन, आलीशान इमारतें और आडम्बर, बड़ी बड़ी फ़ौजें और बड़े बड़े हथियार वग़ैरा? क्या आज पैसे की लालसा उस से कम है जो अंग्रेज़ी राज के ज़माने में थी? क्या आज हाथ के काम के लिये नफ़रत उससे कम है जो अंग्रेज़ी दौर में थी? क्या आपस की छूआ छूत और दूसरे भेद भाव कम हुए हैं? क्या मुल्क के अन्दर चोरी डकैती और दूसरी बदअमनियां कम हुई हैं? क्या गांव में पहले से ज़्यादा शान्ति, सकून और मोहब्बत है? हर सवाल के जवाब में दुख पूर्वक हर एक को यही कहना होगा कि "नहीं, नहीं." ऐसी हालत में हमें नहीं मलूम कि किस बिना पर प्लानिंग कमीशन के नायबसदर यह समझ रहे हैं कि लोगों का नज़रिया बदल गया. या शायद देहातों में विदेशी या शहराती माल पहुंचने, देहात में सनीमा खुल जाने, गांव में मोटरें दौड़ने को उन्होंने तरक़्क़ी की निशानी मान लिया. अगर ऐसा है तो बड़ी नम्रता के साथ हम कहना चाहते हैं कि वह सख़्त ग़ल्ती पर हैं. अगर यही तरक़्क़ी है तब तो कहना होगा कि जनता जितनी ज़्यादा पैसा परस्त बनती है, हाथ का काम हाथ से जितना कम करती है, रोज़ाना ज़रूरत के सामान में दूसरों की मोहताज बनती है, चोरी, डकैती, ऐयाशी वग़ैरा ऐबों की जितनी



رہی تھیں . مگر حکومت کی مشینری اور اس کے رویہ سے وہ اتنا تنگ آگئیں کہ انہوں نے وہ کام چھوڑ دیا اور اب گؤسیوا کا کام کرنے کشمیر چلی گئیں ہیں . ظاہر ہے کہ اگر سرکاری بندوبست میں ایمان' لگن اور خدمت کی بو ہوتی تو وہ ایسا ہرگز نہیں کرتیں . حکومت کے نظام کے کھوکھلا ہوتے جانے کا اس سے زیادہ کیا نمونہ ہوسکتا ہے؟ پلاننگ کمیشن کے ممبر خود اس مشین کا حصہ ہیں . اس لئے انہیں اندر ہی اندر اس مشین کی اصلیت کی جانکاری نہ ہونے پر ہمیں کوئی تعجب نہیں ہے . شہر یا گاؤں' کہیں بھی چلے جائیے سرکاری دفتروں کی حالت پر اور حکاموں کے رنگ ڈھنگ پر کوئی بھی دو آنسو بہائے بنا نہیں رہے گا .

اور جہاں تک تیسرے دعوے کی بات ہے کہ نیا نظریہ پیدا ہورہا ہے' ہمیں نہیں معلوم کہ شری کرشناماچاری کی مراد کیا ہے؟ کیا محض سرکاری نوکریوں میں اضافہ ہوجانے سے نیا نظریہ پیدا ہوجاتا ہے؟ ہم بڑے ادب کے ساتھ یہ جاننا چاہتے ہیں کہ خود پلاننگ کمیشن کے ممبروں کے وچار' عمل یا کام میں کوئی نیا نظریہ پیدا ہوا یا نہیں؟ کہنے کی ضرورت نہیں کہ محض کچھ دفتروں کے بڑھ جانے یا دیش ودیش سے اونچی تنخواہ پر ماہروں کے آجانے سے نیا نظریہ نہیں آجاتا . نیا نظریہ ہم تبھی مانیں گے جب پلاننگ کمیشن اپنے ممبروں یا ملک پر نئے مولیوں کے لئے زور دے . ہم جاننا چاہیں گے کہ کیا آج ہمارے حکاموں کی وہی تمنائیں نہیں ہیں جو پہلے تھیں' جیسے زیادہ سے زیادہ تنخواہ' کم سے کم جسمانی کام' عام جنتا سے الگ رہن سہن' عالیشان عمارتیں اور آڈمبر' بڑی بڑی فوجیں اور بڑے بڑے ہتھیار وغیرہ ؟ کیا آج پیسے کی لالسا اس سے کم ہے جو انگریزی راج کے زمانہ میں تھی؟ کیا آج ہاتھ کے کام کے لئے نفرت اس سے کم ہے جو انگریزی دور میں تھی؟ کیا آپس کی چھوا چھوت اور دوسرے بھید بھاؤ کم ہوئے ہیں؟ کیا ملک کے اندر چوری' ڈکیتی اور دوسری بدامنیاں کم ہوئی ہیں؟ کیا گاؤں میں پہلے سے زیادہ شانتی' سکون اور محبت ہے؟ ہر سوال کے جواب میں دکھ پوروک ہر ایک کو یہی کہنا ہوگا کہ "نہیں' نہیں." ایسی حالت میں ہمیں نہیں معلوم کہ کس بنا پر پلاننگ کمیشن کے نائب صدر یہ سمجھ رہے ہیں کہ لوگوں کا نظریہ بدل گیا . یا شاید دیہاتوں میں ودیشی یا شہراتی مال پہونچنے' دیہات میں سنیما کھل جانے' گاؤں میں موٹریں دوڑنے کو انہوں نے ترقی کی نشانی مان لیا . اگر ایسا ہے تو بڑی نمرتا کے ساتھ ہم کہنا چاہتے ہیں کہ وہ سخت غلطی پر ہیں . اگر یہی ترقی ہے تب تو کہنا ہوگا کہ جنتا جتنی زیادہ پیسہ پرست بنتی ہے' ہاتھ کا کام ہاتھ سے جتنا کم کرتی ہے' روزانہ ضرورت کے سامان میں دوسروں کا محتاج بنتی ہے' چوری' ڈکیتی' عیاشی' وغیرہ عیبوں کی جتنی

( 5 ) पांचवीं हालत में ऊपर के दोनों दर्जों की आमदनी बढ़ती है और नीचे वालों की घटती है लेकिन कुल की आमदनी दुगुनी हो जाती है.

( 6 ) छटी हालत में मालदार की आमदनी पौने तीन बढ़ती है, साईकिल वाले की वैसी ही वनी रहती है और नीचे वालों की आधी रह जाती है.

( 7 ) सातवीं हालत में मालदार की तीन गुनी के क़रीब बढ़ती है और नीचे वालों की आमदनी घटकर दसवें हिस्से पर आजाती है !

देखने की बात यह है कि प्लानिंग कमीशन की योजना से जो मुल्क की औसत आमदनी दुगनी होने की कोशिश है सो कौनसी हालत पैदा होने वाली है. जाहिर है कि क्या पढ़े लिखे लोगों के बीच और क्या देहात के दस्तकारों के बीच बेरोजगारी बढ़ रही है, यानी समाज के नीचे वाले दोनों दर्जों की आमदनी घट रही है और ऊपर वालों की आमदनी बढ़ रही है. इसलिये ऊपर वाली सूरतों में से ( 5 ), ( 6 ) या ( 7 ) के जैसी चीज़ सामने आ रही है, न कि ( 3 ) या ( 4 ) जैसी और ( 1 ) या ( 2 ) का तो सवाल उठता ही नहीं. इस लिये हमें इस बात की कोई खुशी महसूस नहीं होती कि इस योजना से मुल्क की आमदनी दुगुनी या इसी तरह आगे के दो बरस में आज से दस फ़ी सदी ज्यादा बढ़ जायेगी. हां मुट्ठी भर लोग जिनके हाथ में रोजगार हैं वह जरूर मालामाल और खुश हो जायेंगे. मगर 85 का दुख बढ़े और 15 का सुख बढ़े तो उसे खुशहाली नहीं बरबादी ही कहा जायेगा. हम तो यहां तक जाने को तैयार हैं कि मुल्क की औसत आमदनी आज के जैसी रहे मगर नीचे वाले 85 का सुख बढ़ जाये और ऊपर के 15 का घट जाये. या अगर ऊपर वालों का न घटे तो कम से कम नीचे वालों का तो न घटे. जब तक हमारे देश की प्लानिंग में यह रंग नहीं आता तब तक हमें डर है कि सारी योजनायें मुल्क को अन्दर से कमजोर करेंगी और हमारी आजादी को उनसे जबरदस्त खतरा है.

जहां तक श्री कृशनामाचारी का दूसरा दावा है कि हुकूमत के निज़ाम में सुधार हो रहा है उसके बारे में तो कुछ कहने की जरूरत नहीं है. कौन नहीं जानता कि मुल्क में रिशवत-खोरी बढ़ ही रही है. दफ़्तर के बाबुओं और चपरासियों को बाहर की आमदनी के बिना अक्सर संतोश ही नहीं होता और पुलिस भी पहले के मुक़ाबिले कहीं ज्यादा जालिम और मनचली होती जा रही है. और इन्तजाम में बढ़ती हुई खराबी का एक ठोस सबूत हमारे पास और भी है. हमारे प्रेमी पाठक शायद जानते हों कि महात्मा गांधी की सरनाम चेली और सेवक श्री मीरा बहन जिला टेहरी गढ़वाल में बड़े पैमाने पर एक विकास योजना चलाने जा



(5) پانچویں حالت میں اوپر کے دونوں درجوں کی آمدنی بڑھتی ھے اور نیچے والوں کی گھٹتی ھے لیکن کل کی آمدنی دگنی ہو جاتی ھے .

(6) چھٹی حالت میں مالدار کی آمدنی پونے تین بڑھتی ھے، سائیکل والے کی ویسی ھی بنی رھتی ھے اور نیچے والوں کی آدھی رہ جاتی ھے .

(7) ساتویں حالت میں مالدار کی تین گنی کے قریب بڑھتی ھے اور نیچے والوں کی آمدنی گھٹ کر دسویں حصہ پر آجاتی ھے !

دیکھنے کی بات یہ ھے کہ پلاننگ کمیشن کی یوجنا سے جو ملک کی اوسط آمدنی دگنی ھونے کی کوشش ھے سو کونسی حالت پیدا ھونے والی ھے . ظاھر ھے کہ کیا پڑھے لکھے لوگوں کے بیچ اور کیا دیہات کے دستکاروں کے بیچ بیروزگاری بڑھ رھی ھے، یعنی سماج کے نیچے والے دونوں درجوں کی آمدنی گھٹ رھی ھے اور اوپر والوں کی آمدنی بڑھ رھی ھے . اس لئے اوپر والی صورتوں میں سے (5)، (6) یا (7) کے جیسی چیز سامنے آرھی ھے، نہ کہ (3) یا (4) جیسی اور (1) یا (2) کا تو سوال اٹھتا ھی نہیں . اس لئے ھمیں اس بات کی کوئی خوشی محسوس نہیں ھوتی کہ اس یوجنا سے ملک کی آمدنی دگنی یا اسی طرح آگے کے دو برس میں آج سے دس فیصدی زیادہ بڑھ جائیگی . ھاں مٹھی بھر لوگ جن کے ھاتھ میں روزگار ھیں وہ ضرور مالامال اور خوش ھوجائینگے . مگر 85 کا دکھ بڑھے اور 15 کا سکھ بڑھے تو اسے خوشحالی نہیں بربادی ھی کہا جائیگا . ھم تو یہاں تک جانے کو تیار ھیں کہ ملک کی اوسط آمدنی آج کے جیسی رھے مگر نیچے والے 85 کا سکھ بڑھ جائے اور اوپر کے 15 کا گھٹ جائے . یا اگر اوپر والوں کا نہ گھٹے تو کم سے کم نیچے والوں کا تو نہ گھٹے . جب تک ھمارے دیش کی پلاننگ میں یہ رنگ نہیں آتا تب تک ھمیں ڈر ھے کہ ساری یوجنائیں ملک کو اندر سے کمزور کرینگی اور ھماری آزادی کو ان سے زبردست خطرہ ھے .

جہاں تک شری کرشنا ماچاری کا دوسرا دعویٰ ھے کہ حکومت کے نظام میں سدھار ھورھا ھے اس کے بارے میں تو کچھ کہنے کی ضرورت نہیں ھے . کون نہیں جانتا کہ ملک میں رشوت خوری بڑھ ھی رھی ھے، دفتر کے بابوؤں اور چپراسیوں کو باھر کی آمدنی کے بنا اکثر سنتوش ھی نہیں ھوتا اور پولس بھی پہلے کے مقابلہ کہیں زیادہ ظالم اور من چلی ھوتی جارھی ھے . اور انتظام میں بڑھتی ھوئی خرابی کا ایک ٹھوس ثبوت ھمارے پاس اور بھی ھے . ھمارے پریمی پاٹھک شاید جانتے ھوں کہ مہاتما گاندھی کی سرنام چیلی اور سیوک شری میرا بہن ضلع ٹھہری گڑھوال میں بڑے پیمانہ پر ایک وکاس یوجنا چلانے جا

होगा जो उस से मन माना नफ़ा कमा लेंगे. इसी वजह से हमें श्री कृश्नामाचारी के इस बयान पर कोई ख़ुशी नहीं होती कि दो साल बाद मुल्क की औसत आमदनी दस फ़ी सदी बढ़ जायेगी. सवाल यह नहीं है कि आमदनी कितनी बढ़ती है बल्कि यह कि किसकी बढ़ती है.

आज हमारे शहर क्या, देहात क्या, वहां की आबादी को हम मोटे तौर से चार हिस्सों में बांट सकते हैं: (1)(A) हाथी या मोटर वाले यानी बहुत मालदार लोग, (2) (B) घोड़ा गाड़ी या साइकिल रखने वाले ख़ुशहाल लोग, (3)(C) साधारन ग़रीब, और (4) (D) बहुत ग़रीब जिन्हें एक जून खाने को मिले तो दूसरे की उम्मीद नहीं. हर सौ आदमी पीछे क़रीब 5 हाथी या मोटर वाले हैं, 10 ख़ुशहाल, 45 ग़रीब और 40 बहुत ही ग़रीब. उनकी आमदनी का निस्बत आज क़रीब इस तरह का है:

$$120 : 70 : 9 : 1$$

इस निसबत के आंकड़ों में तरमीम की गुंजाइश काफ़ी है. बहुत ग़रीब और बहुत अमीर में आज एक और 120 के मुक़ाबिले कहीं ज्यादा का फ़र्क़ है. मगर मोटे तौर पर यह हिसाब सही माना जा सकता है. अब हम देखें कि औसत आमदनी दुगुनी होने की क्या क्या सूरतें हैं. वैसे सूरतें तो बहुत सी हैं मगर नीचे वाली पर आसानी से ध्यान जाता है.

बुनियादी सूरत वह है जो हमने ऊपर दी है :

$$A + B + C + D = T$$

( जहां $A = 120$, $B = 70$, $C = 9$, $D = 1$, और $T = 220$ )

अब दुगने की हालतें यह हैं :

$$A + B + 21 (C + D) = 2T \ldots (1)$$
$$2A + 2B + 2C + 2D = 2T \ldots (2)$$
$$2{\cdot}6\,A + B + C + D = 2T \ldots (3)$$
$$(2{\cdot}3)\,A + (1{\cdot}5)\,B + C + D = 2T \ldots (4)$$
$$(2{\cdot}4)\,A + (1{\cdot}5)A + 1/2(C + D) = 2T \ldots (5)$$
$$(2{\cdot}7)\,A + B + 1/2\,(C + D) = 2T \ldots (6)$$
$$(2{\cdot}3)\,A + B + 1/10\,(C + D) = 2T \ldots (7)$$

अब ग़ौर करने की बात यह है कि :

( 1 ) पहली हालत में मोटर या साईकिल वालों की आमदनी पहले जैसी रहती है और नीचे दर्जे वालों की 21 गुनी बढ़ जाती हैं जिससे कुल आमदनी दुगुनी हो जाती है.

( 2 ) दूसरी हालत में ऊपर से नीचे तक हर एक की आमदनी ठीक दुगुनी होती है.

( 3 ) तीसरी हालत में मोटरवाले की आमदनी ढाई गुनी से ज्यादा बढ़ जाती है और दूसरे सबों की वैसी ही रहती है.

( 4 ) चौथी हालत में ऊपर के दोनों दर्जे की आमदनी बढ़ती है.



ہوگا جو اس سے من مانا نفع کما لینگے. اِسی وجہ سے ہمیں شری کرشناماچاری کے اس بیان پر کوئی خوشی نہیں ہوتی کہ دو سال بعد ملک کی اوسط آمدنی دس فیصدی بڑھ جائے گی. سوال یہ نہیں ہے کہ آمدنی کتنی بڑھتی ہے بلکہ یہ کہ کسکی بڑھتی ہے.

آج ہمارے شہر کیا، دیہات کیا، وہاں کی آبادی کو ہم موٹے طور سے چار حصوں میں بانٹ سکتے ہیں: (1) (A) ہاتھی یا موٹر والے یعنی بہت مالدار لوگ، (2) (B) گھوڑا گاڑی یا سائیکل رکھنے والے خوشحال لوگ، (3) (C) سادھارن غریب اور (4) (D) بہت غریب جنہیں ایک جون کھانے کو ملے تو دوسرے کی اُمید نہیں. ہر سو آدمی پیچھے قریب پانچ ہاتھی یا موٹر والے ہیں، 10 خوشحال، 45 غریب اور 40 بہت ہی غریب. اُن کی آمدنی کا نسبت آج قریب قریب اس طرح کا ہے:

$$120 : 70 : 9 : 1$$

اِس نسبت کے آنکڑوں میں ترمیم کی گنجائش کافی ہے. بہت غریب اور بہت امیر میں آج ایک اور 120 کے مقابلے کہیں زیادہ کا فرق ہے. مگر موٹے طور پر یہ حساب صحیح مانا جاسکتا ہے. اب ہم دیکھیں کہ اوسط آمدنی دگنی ہونے کی کیا کیا صورتیں ہیں. ویسے صورتیں تو بہت سی ہیں مگر نیچے والی پر آسانی سے دھیان جاتا ہے.

بنیادی صورت وہ ہے جو ہم نے اوپر دی ہے:

$$A + B + C + D = T$$

( جہاں $A = 120$، $B = 70$، $C = 9$، $D = 1$ اور $T = 220$ )

اب دگنے کی حالتیں یہ ہیں:

$$A + B + 21 (C + D) = 2T \ldots (1)$$
$$2A + 2B + 2C + 2D = 2T \ldots (\;)$$
$$2{\cdot}6A + B + C + D = 2T \ldots (3)$$
$$(2{\cdot}3)A + (1{\cdot}5)B + C + D = 2T \ldots (4)$$
$$(2{\cdot}4)A + (1{\cdot}5)A + 1/2(C + D) = 2T \ldots (5)$$
$$(2{\cdot}7)A + B + 1/2(C + D) = 2T \ldots (6)$$
$$(2{\cdot}8)A + B + 1/10(C + D) = 2T \ldots (7)$$

اب غور کرنے کی بات یہ ہے کہ:

(1) پہلی حالت میں موٹر یا سائیکل والوں کی آمدنی پہلے جیسی رہتی ہے اور نیچے درجے والوں کی 21 گنی بڑھ جاتی ہیں جس سے کل آمدنی دگنی ہوجاتی ہے.

(2) دوسری حالت میں اوپر سے نیچے تک ہر ایک کی آمدنی ٹھیک دگنی ہوتی ہے.

(3) تیسری حالت میں موٹر والے کی آمدنی ڈھائی گنی سے زیادہ بڑھ جاتی ہے اور دوسرے سبوں کی ویسی ہی رہتی ہے.

(4) چوتھی حالت میں اوپر کے دونوں درجے کی آمدنی بڑھتی ہے.

(3) जितने ज्यादा लोगों को सरकार अपनी मुलाज़िमत में ला सके उतना ही लोगों का नज़रिया बदला और उनमें नई आदतें, नई ज़िन्दगी की तड़प पैदा हो गई.

श्री कृष्नामाचारी या प्लानिंग कमीशन की भाशा में हम इन तीनों बातों को तरक़्क़ी की कसौटी कह सकते हैं. आज अमरीका और इंगलेन्ड या यूरोप के दूसरे मुल्कों में ऐसा हो भी रहा है. वहां पर तहज़ीब या सभ्यता का नाप ही यही है कि आदमी कितना ज्यादा साबुन, तेल, कपड़ा, जूता, मोटर, बिजली वग़ैरा खर्च करता है. अपने ज़ाती जिस्म की वह जितनी ज्यादा ख़िदमत करता है उतना ही बढ़ा चढ़ा माना जाता है और ऊंचा समझा जाता है. आज बताया जाता है कि अमरीका में फ़ी आदमी रोज़ाना 160 पौंड काग़ज़ खर्च होता है. इसके मानी यह हुए कि हिन्दुस्तान जैसे मुल्क के आदमी के मुक़ाबिले जहां सिर्फ़ एक पौंड काग़ज़ खर्च होता है अमरीका का आदमी 160 गुना ज्यादा विद्वान या तालीमयाफ़्ता है ! मगर कौन नहीं जानता कि यूरोप के मुल्कों में जो ऊंच नीच और भेद भाव हैं, अमीर ग़रीब का जो फ़र्क़ है, समाज के अन्दर जो ऐयाशी, चोरी, डकैती व दूसरे फ़ेल हो रहे हैं उनसे एशिया के मुल्क जितने दूर रह सकें अच्छा है. फिर वह मुल्क कितने ज्यादा भयभीत हैं और वहां की जनता रुपये पैसे के पीछे कितनी पागल है और मशीन की कितनी ज्यादा गुलाम हो गई है. अगर हम हिन्दुस्तान वालों के आगे भी मग़रिब के यह आदर्श अपने सामने रहे तो हम उनके बराबर तो तरक़्क़ी पर पहुंच ही नहीं सकते, उनके ऐब और ख़राबियां ज़रूर हमारे अन्दर घर कर लेंगे. इसलिये पच्छिम के पैमाने हमारे ऊपर न लागू हो सकते हैं और न लागू होने चाहियें. हमारे यहां तो एक ही पैमाना चल सकता है—इन्सानियत का, सारी दुनिया से भाईचारा और सब की भलाई, पड़ोसी की ख़िदमत और आपसी मस्ले या सवालों का हल, क़ानून या तलवार व बम के ज़ोर से नहीं बल्कि प्रेम से. यही हमारे मुल्क के आर्थिक और सियासी निज़ाम का आधार होना चाहिये. और इसी लिहाज़ से हम श्री कृष्नामाचारी के बयान पर साफ़ साफ़ विचार करना चाहते हैं.

श्री कृष्नामाचारी ने पंच साला योजना की तीन साल की कामयाबी का ख़ास पहलू यह बताया है कि मुल्क में पैदावार बहुत काफ़ी बढ़ी है. यह बड़ी खुशी की बात है. मगर महज़ पैदावार बढ़ना काफ़ी नहीं होता. ज़रूरी यह है कि ज़रूरतमन्द को ज़रूरत की चीज़ हासिल हो या चीज़ हासिल करने का ज़रिया उसे मिले. अगर पैदावार बढ़ती रहे मगर लोगों में ज़रूरतें पूरा करने की ताक़त पहले जैसी ही कमज़ोर रहे तो वह सोचने की बात है क्योंकि ऐसे इज़ाफ़े से महज़ चन्द व्यापारियों या दूसरे लोगों का ही फ़ायदा



(3) جتنے زیادہ لوگوں کو سرکار اپنی ملازمت میں لا سکے اتنا ھی لوگوں کا نظریہ بدلا اور ان میں نئی عادتیں' نئی زندگی کی تڑپ پیدا ھوگئی .

شری کرشنا ماچاری یا پلاننگ کمیشن کی بھاشا میں ھم ان تینوں باتوں کو ترقی کی کسوٹی کہ سکتے ھیں . آج امریکہ اور انگلینڈ یا یورپ کے دوسرے ملکوں میں ایسا ھو بھی رھا ھے . وھاں پر تہذیب یا سبھیتا کا ناپ ھی یہی ھے کہ آدمی کتنا زیادہ صابن' تیل' کپڑا' جوتا' موٹر' بجلی وغیرہ خرچ کرتا ھے . اپنے ذاتی جسم کی وہ جتنی زیادہ خدمت کرتا ھے اتنا ھی بڑھا چڑھا مانا جاتا ھے اور اونچا سمجھا جاتا ھے . آج بتایا جاتا ھے کہ امریکہ میں فی آدمی روزانہ 160 پونڈ کاغذ خرچ ھوتا ھے . اِس کے معنی یہ ھوئے کہ ھندستان جیسے ملک کے آدمی کے مقابلہ جہاں صرف ایک پونڈ کاغذ خرچ ھوتا ھے امریکہ کا آدمی 160 گنا زیادہ ودوان یا تعلیم یافتہ ھے ! مگر کون نہیں جانتا کہ یورپ کے ملکوں میں جو اونچ نیچ اور بھید بھاؤ ھیں' امیر غریب کا جو فرق ھے' سماج کے اندر جو عیاشی' چوری ڈکیتی و دوسرے فعل ھو رھے ھیں ان سے ایشیا کے ملک جتنے دور رہ سکیں اچھا ھے . پھر وہ ملک آج کتنے زیادہ بھے بھیت ھیں اور وھاں کی جنتا روپے پیسے کے پیچھے کتنی پاگل ھے اور مشین کی کتنی زیادہ غلام ھوگئی ھے . اگر ھم ھندستان والوں کے آگے بھی مغرب کے یہ آدرش اپنے سامنے رھے تو ھم ان کے برابر تو ترقی پر پہونچ ھی نہیں سکتے' اُن کے عیب اور خرابیاں ضرور ھمارے اندر گھر کرلیں گے. اِس لئے پچھم کے پیمانے ھمارے اوپر نہ لاگو ھوسکتے ھیں اور نہ لاگو ھونے چاھئیں. ھمارے یہاں تو ایک ھی پیمانہ چل سکتا ھے— انسانیت کا' ساری دنیا سے بھائی چارا اور سب کی بھلائی' پڑوسی کی خدمت اور آپسی مسئلہ یا سوالوں کا حل' قانون یا تلوار و بم کے زور سے نہیں بلکہ پریم سے . یہی ھمارے ملک کے آرتھک اور سیاسی نظام کا آدھار ھونا چاھئے . اور اِسی لحاظ سے ھم شری کرشناماچاری کے بیان پر صاف صاف وچار کرنا چاھتے ھیں .

شری کرشنا ماچاری نے پنچ سالہ یوجنا کی تین سال کی کامیابی کا خاص پہلو یہ بتایا ھے کہ ملک میں پیداوار بہت کافی بڑھی ھے . یہ بڑی خوشی کی بات ھے . مگر محض پیداوار بڑھنا کافی نہیں ھوتا . ضروری یہ ھے کہ ضرورت مند کو ضرورت کی چیز حاصل ھو یا چیز حاصل کرنے کا ذریعہ اُسے ملے . اگر پیداوار بڑھتی رھے مگر لوگوں میں ضرورتیں پورا کرنے کی طاقت پہلے جیسی ھی کمزور رھے تو وہ سوچنے کی بات ھے کیونکہ ایسے اضافہ سے محض چند بیوپاریوں یا دوسرے لوگوں کا ھی فائدہ

श्री कृश्नामाचारी ने बताया कि योजना जबसे शुरू हुई तब से अब तक के दौरान में हिन्दुस्तान की माली हालत बहुत कुछ सुधर गई है. मसलन जहां 1952-53 में ग़ल्ला 44 लाख टन हुआ वहां 1953-54 में 89 लाख टन हुआ- और मिलों में तैयार होने वाले माल की 1951 में जहां 117 इकाइयां हुईं, 1952 में 129 और 1953 में 135. इस सब से वह इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि इस योजना के पूरा होते होते मुल्क की आमदनी दस फ़ी सदी बढ़ जायेगी.

दूसरे सवाल के जवाब में श्री वी० टी० कृश्नामाचारी कहते हैं कि पिछले तीन साल में इन्तज़ाम के मुख़्तलिफ़ हिस्सों का फिर से संगठन किया गया है और एक वेलफ़ेअर (Welfare) इन्तज़ाम की ज़रूरतों को पूरा करने के लिये बुनियादें डाली जा रही हैं.

तीसरे सवाल के जवाब में उनका फ़रमाना है कि ऐसी सहूलियत के साथ जिसका पता भी नहीं लगता, लोगों के अन्दर काम करने और सोच विचार करने की पुरानी आदतें छूट रही हैं. आख़िर में उन्होंने ऐलान किया कि योजना कुल मिलाकर कामयाबी के साथ चल रही है और इस बात की पूरी उम्मीद है कि उसके मक़सद पांच साल वाली मुद्दत में हासिल हो ही जायेंगे.

प्लानिंग कमीशन के नायब सदर के इस बयान पर हम, क्या प्लानिंग कमीशन, क्या हिन्द सरकार और क्या सूबे की सरकारें, सब को मुबारकबाद देते हैं. हमें यक़ीन है कि अगर किसी अंग्रेज़ से कहा जाता कि 1757 से लेकर 1947 तक, यानी 190 साल में हिन्दुस्तान के विकास की हर पांच साल की रिपोर्ट तैयार करो तो इन 48 बयानों से ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी कर रहा है और अगर इसी तरह हुकूमते बर्तानिया को मौक़ा मिलता रहे तो 190 साल गवाह हैं, अगले कुछ सालों में हिन्दुस्तान कहीं से कहीं पहुंच जायेगा और अंग्रेज़ी हुकूमत से बहतर बरकत हिन्दुस्तान के लिये कोई दूसरी हो नहीं सकती. मगर इतिहास गवाह है कि इन 190 बरस में हिन्दुस्तान की वह गई गुज़री हालत हो गई कि अंग्रेज़ी हुकूमत को हटाए बिना चारा नहीं था और आख़िर वह हट ही गई. ठीक इसी तरह के ख़्याल हमारे अन्दर श्री वी० टी० कृश्नामाचारी के रेडियो ब्राडकास्ट को पढ़ कर पैदा हो रहे हैं. उनके तीनों सवाल जवाब का निचोड़ अगर साफ़ लफ़्ज़ों में कहें तो यह है:

(1) जनता का जितना ज्यादा पैसा सरकार ख़र्च कर दे उतनी ही ज्यादा मुल्क की तरक़्क़ी.

(2) मिलों में जितना ज्यादा माल तैयार हो उतना ही मुल्क ख़ुशहाल.



شری کرشناماچاری نے بتایا کہ یوجنا جب سے شروع ہوئی تب سے اب تک کے دوران میں ہندستان کی مالی حالت بہت کچھ سدھر گئی ہے . مثلاً جہاں 1952-53 میں غلہ 44 لاکھ ٹن ہوا وہاں 1953-54 میں 89 لاکھ ٹن ہوا . اور ملوں میں تیار ہونے والے مال کی 1951 میں جہاں 117 اکائیاں ہوئیں، 1952 میں 129 اور 1953 میں 135 . اس سب سے وہ اس نتیجہ پر پہونچے ہیں کہ اس یوجنا کے پورا ہوتے ہوتے ملک کی آمدنی دس فیصدی بڑھ جائے گی .

دوسرے سوال کے جواب میں شری وی . ٹی . کرشناماچاری کہتے ہیں کہ پچھلے تین سال میں انتظام کے مختلف حصوں کا پھر سے سنگٹھن کیا گیا ہے اور ایک ویل فیئر (Welfare) انتظام کی ضرورتوں کو پورا کرنے کے لئے بنیادیں ڈالی جا رہی ہیں .

تیسرے سوال کے جواب میں ان کا فرمانا ہے کہ ایسی سہولیت کے ساتھ جس کا پتہ بھی نہیں لگتا لوگوں کے اندر کام کرنے اور سوچ وچار کرنے کی پرانی عادتیں چھوٹ رہی ہیں . آخر میں اُنھوں نے اعلان کیا کہ یوجنا کل ملا کر کامیابی کے ساتھ چل رہی ہے اور اس بات کی پوری اُمید ہے کہ اس کے مقصد پانچ سال والی مدت میں حاصل ہو ہی جائینگے .

پلاننگ کمیشن کے نائب صدر کے اس بیان پر ہم کیا پلاننگ کمیشن، کیا ہند سرکار اور کیا صوبے کی سرکاریں، سب کو مبارکباد دیتے ہیں . ہمیں یقین ہے کہ اگر کسی انگریز سے کہا جاتا کہ 1757 سے لیکر 1947 تک، یعنی 190 سال میں ہندستان کے وکاس کی ہر پانچ سال کی رپورٹ تیار کرو تو اُن 48 بیانوں سے ایسا لگتا کہ ہندستان دن دونی رات چوگنی ترقی کر رہا ہے اور اگر اسی طرح حکومت برطانیہ کو موقع ملتا رہے تو 190 سال گواہ ہیں، اگلے کچھ سالوں میں ہندستان کہیں سے کہیں پہونچ جائے گا اور انگریزی حکومت سے بہتر برکت ہندستان کے لئے کوئی دوسری ہو ہی نہیں سکتی . مگر اتہاس گواہ ہے کہ ان 190 برس میں ہندستان کی وہ گئی گذری حالت ہو گئی کہ انگریزی حکومت کو ہٹائے بنا چارہ نہیں تھا اور آخر وہ ہٹ ہی گئی . ٹھیک اسی طرح کے خیال ہمارے اندر شری وی . ٹی . کرشناماچاری کے ریڈیو براڈکاسٹ کو پڑھ کر پیدا ہو رہے ہیں . ان کے تینوں سوال جواب کا نچوڑ اگر صاف لفظوں میں کہیں تو یہ ہے :

(1) جنتا کا جتنا زیادہ پیسہ سرکار خرچ کر دے اتنی ہی زیادہ ملک کی ترقی .

(2) ملوں میں جتنا زیادہ مال تیار ہو اتنا ہی ملک خوشحال .

# योजना के तीन साल

हिन्द सरकार की तरफ़ से मुल्क में पंच बरसी योजना के नाम से जो एक योजना चल रही है उसका खाका तो पार्लिमेन्ट के सामने हमारे प्रधान मंत्री ने दिसम्बर सन 1952 में पेश किया था लेकिन उसका अमल जून 1951 से शुरू किया गया बताया जाता है. इस तरह इस योजना के तीन साल पूरे हुए और सन 1954 की जून से चौथा साल शुरू हुआ. इस मौक़े पर प्लानिंग कमीशन के नायब सदर, श्री वी० टी० कृशनामाचारी ने एक ब्राडकास्ट अंग्रेज़ी में किया जिसमें उन्होंने तीन साल के कारनामों पर तफ़सील के साथ रोशनी डाली.

उन्होंने कहा कि योजना को महज़ कुछ प्रोजैक्टों या कामों की कड़ी नहीं समझनी चाहिये बल्कि यह उस कोशिश की नुमायां है जो हिन्दुस्तान के लोग अपने लिये एक नई जिन्दगी पैदा करने की ख़ातिर कर रहे हैं. श्री कृशनामाचारी का कहना है कि हम नए नमूने का समाज बनाना चाहते हैं और लोगों के अन्दर नया नज़रिया, नया ज्ञान और नये रहन सहन के लिये ख़्वाहिश पैदा करना चाहते हैं. इस मक़सद को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने ब्राडकास्ट में तीन सवालों के जवाब दिये :

1. इस योजना में जो प्रोजैक्ट या काम हैं वह कैसी तरक़्क़ी कर रहे हैं ?
2. विकास की स्कीमों और प्रोग्रामों को ख़ूबी से अंजाम देने के लिये इन्तज़ामी और टैकनिकल दायरों में सुधार की बुनियाद डाली जा रही है या नहीं ?
3. क्या ख़ास मक़सद में यानी नये नज़रिये और बहतर जिन्दगी की ख़्वाहिश पैदा होने में कहां तक कामयाबी हासिल हो रही है ?

कहने की ज़रूरत नहीं कि ख़ुद गढ़े हुए तीनों सवालों के जवाब में श्री वी० टी० कृशनामाचारी ने यही कहा कि "ख़ूब है ! ख़ूब है !" पहले सवाल के जवाब में उनका कहना है कि सन 1952 के शुरू में इस योजना का तख़मीना 1800 करोड़ रुपये के क़रीब था. दिसम्बर 1952 में इस योजना की लागत 2069 करोड़ रुपये रक्खी गई और अब उसे तरक़्क़ी देकर 2244 करोड़ रुपये कर दिया गया है. उसमें अब तक जो ख़र्च हुआ उसका हिसाब यह है :

| साल | रुपया (करोड़ में) |
|---|---|
| 1951-52 | 262 |
| 1952-53 | 271 |
| 1953-54 | 412 |

और अगले दो साल में इस तरह और ख़र्च करना है :

| | |
|---|---|
| 1954-55 | 565 |
| 1955-56 | 745 |

# یوجنا کے تین سال

ہند سرکار کی طرف سے ملک میں پنچ برسی یوجنا کے نام سے جو ایک یوجنا چل رہی ہے اس کا خاکہ تو پارلیامنٹ کے سامنے ہمارے پردھان منتری نے دسمبر سن 1952 میں پیش کیا تھا لیکن اس کا عمل جون 1951 سے شروع کیا گیا بتایا جاتا ہے. اس طرح اس یوجنا کے تین سال پورے ہوئے اور سن 1954 کی جون سے چوتھا سال شروع ہوا. اِس موقع پر پلاننگ کمیشن کے نائب صدر شری وی. ٹی. کرشناماچاری نے ایک براڈکاسٹ انگریزی میں کیا جس میں اِنہوں نے تین سال کے کارناموں پر تفصیل کے ساتھ روشنی ڈالی.

اُنہوں نے کہا کہ یوجنا کو محض کچھ پروجیکٹوں یا کاموں کی کڑی نہیں سمجھنا چاہئے بلکہ یہ اس کوشش کی نمایاں ہے جو ہندوستان کے لوگ اپنے لئے ایک نئی زندگی پیدا کرنے کی خاطر کر رہے ہیں. شری کرشنا ماچاری کا کہنا ہے کہ ہم نئے نمونے کا سماج بنانا چاہتے ہیں اور لوگوں کے اندر نیا نظریہ، نیا گیان اور نئے رہن سہن کے لئے خواہش پیدا کرنا چاہتے ہیں. اس مقصد کو دھیان میں رکھتے ہوئے اُنہوں نے اپنے براڈکاسٹ میں تین سوالوں کے جواب دئے :

1. اِس یوجنا میں جو پروجیکٹ یا کام ہیں وہ کیسی ترقی کر رہے ہیں ؟

2. وکاس کی اسکیموں اور پروگراموں کو خوبی سے انجام دینے کے لئے انتظامی اور ٹیکنیکل دائروں میں سدھار کی بنیاد ڈالی جا رہی ہے یا نہیں ؟

3. کیا خاص مقصد میں یعنی نئے نظریہ اور بہتر زندگی کی خواہش پیدا ہونے میں کہاں تک کامیابی حاصل ہو رہی ہے ؟

کہنے کی ضرورت نہیں کہ خود گڑھے ہوئے تینوں سوالوں کے جواب میں شری وی. ٹی. کرشناماچاری نے یہی کیا کہ "خوب ہے! خوب ہے!" پہلے سوال کے جواب میں اِن کا کہنا ہے کہ سن 1952 کے شروع میں اِس یوجنا کا تخمینہ 1800 کروڑ روپئے کے قریب تھا. دسمبر 1952 میں اس یوجنا کی لاگت 2069 کروڑ روپئے رکھی گئی اور اب اِسے ترقی دے کر 2244 کروڑ روپیئے کردیا گیا ہے. اس میں اب تک جو خرچ ہوا اس کا حساب یہ ہے :

| سال | روپیہ ( کروڑ میں ) |
|---|---|
| 1951-52 | 262 |
| 1952-53 | 271 |
| 1953-54 | 412 |

اور اگلے دو سال میں اس طرح اور خرچ کرنا ہے :

| | |
|---|---|
| 1954-55 | 565 |
| 1955-56 | 745 |

नाटक, संगीत, समाज, जैसी कलचरी संस्थाएं भी खड़ी हो जाती हैं. नये नये रोजगार निकलते हैं और अच्छे से अच्छे पढ़े लिखे लोगों को भी काम मिलने लगता है.

गांव के इस नये जीवन का असर शहरों पर भी पड़ता है. किसानों और गांव के लोगों का रहन सहन ऊंचा होने लगता है. उनमें तरह तरह की चीज़ों की मांग बढ़ती है. शहरों के तरह तरह के बने हुए पक्के माल की खपत बढ़ती है. उनके मकान बनने लगते हैं. राज मजदूरों और बढ़ई लोहारों को काम मिलता है. इस सब से गांव और शहर दोनों में बेकारी घटती और खुशहाली बढ़ती है. इसी से गांव के लोगों का काम की खोज में शहर आना घटता है. यह सब बातें मिलकर एक ऐसा आर्थिक चक्र चल जाता है जिससे सब जगह नये नये रोजगार खुलने लगते हैं.

मैं फिर कह देना चाहता हूं कि भूमि का फिर से बंटवरा उन बहुत से कामों में से एक काम है जिनसे देश की बेकारी दूर हो सकती है. और वह एक ऐसा काम है जिससे देश की आम जनता में अपने ऊपर भरोसा पैदा होता है, स्वाभिमान बढ़ता है, और जनता अपनी छिपी हुई शक्ति को पहचानने लगती है. गांधी जी जिस राम राज की बात कहा करते थे वह हम किसी तरह भी इस देश में ला सकते हैं तो इसी तरह ला सकते हैं. गांवों में ही भारत के असली प्रान हैं. वहीं भारत की सच्ची शक्ति छिपी है.

---

# ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता.

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

---



ناٹک، سنگیت، سماج، جیسی کلچری سنستھائیں بھی کھڑی ھو جاتی ھیں. نئے نئے روزگار نکلتے ھیں اور اچھے سے اچھے پڑھے لکھے لوگوں کو بھی کام ملنے لگتا ھے.

گاؤں کے اس نئے جیون کا اثر شہروں پر بھی پڑتا ھے. کسانوں اور گاؤں کے لوگوں کا رہن سہن اونچا ھونے لگتا ھے. اُن میں طرح طرح کی چیزوں کی مانگ بڑھتی ھے. شہروں کے طرح طرح کے بنے پکے مال کی کھپت بڑھتی ھے. اُن کے مکان بننے لگتے ھیں. راج مزدوروں اور بڑھئی لہاروں کو کام ملتا ھے. اس سب سے گاؤں اور شہر دونوں میں بیکاری گھٹتی اور خوشحالی بڑھتی ھے. اسی سے گاؤں کے لوگوں کا کام کی کھوج میں شہر آنا گھٹتا ھے. یہ سب باتیں ملکر ایک ایسا آرتھک چکر چل جاتا ھے جس سے سب جگہ نئے نئے روزگار کھلنے لگتے ھیں.

میں پھر کہدینا چاھتا ھوں کہ بھومی کا پھر سے بٹوارہ اُن بہت سے کاموں میں سے ایک کام ھے جن سے دیش کی بیکاری دور ھوسکتی ھے. اور وہ ایک ایسا کام ھے جس سے دیش کی عام جنتا میں اپنے اوپر بھروسہ پیدا ھوتا ھے، سوابھیمان بڑھتا ھے، اور جنتا اپنی چھپی ھوئی شکتی کو پہچاننے لگتی ھے. گاندھی جی جس رام راج کی بات کہا کرتے تھے وہ ھم کسی طرح بھی اس دیش میں لا سکتے ھیں تو اسی طرح لا سکتے ھیں. گاؤں میں ھی بھارت کے اصلی پران ھیں. وھیں بھارت کی سچی شکتی چھپی ھے.

---

# عیسیٰ کا سندیش

لیکھک — ڈاکٹر جے. سی. کمارپا.

انوادک — سریش رام بھائی.

اس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ھے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ھے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ھے.

مہاتما گاندھی نے اس کتاب کے بارے میں کہا ھے کہ

"ھر آستک سے، چاھے وہ عیسائی ھو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ھو، میری سفارش ھے کہ اسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ.

ملنے کا پتہ.

مینیجر، 'نیا ھند' 145 مٹھی گنج، الہ آباد.

---

कितनी भूमि मिल सकेगी. इसका ठीक ठीक जवाब 'भूमि बंटवारा कमीशन' ही दे सकेगा. पर जो आंकड़े हमें मिल सकते हैं उनसे मोटे तौर पर हम अन्दाजा लगा सकते हैं. उत्तर प्रदेश जमींदारी उन्मूलन और भूमि सुधार क़ानून ने यह रोक लगा दी है कि आगे के लिए कोई आदमी तीस एकड़ से ज्यादा खेती की ज़मीन नहीं ख़रीद सकता. अब अगर तीस एकड़ से ऊपर के खेत उत्तर प्रदेश में बंटवारे के लिए मिल जावें तो हमें पचास लाख एकड़ भूमि मिलेगी. इससे कई लाख परिवारों की बेकारी दूर हो सकेगी और उन्हें रोज़ी मिल सकेगी. अलग अलग प्रान्तों की अलग अलग हालत है. फिर भी इसी तरह पर हमें बम्बई में 64 लाख एकड़, मध्य प्रदेश में 66 लाख एकड़ और मद्रास में 35 लाख एकड़ भूमि बंटवारे के लिए मिल सकती है. यह कुल दो सौ पंद्रह लाख एकड़ भूमि हुई. इतनी भूमि पर अगर लोगों को सहकारी ढंग से बसाया जाय तो लगभग बीस लाख परिवारों को आसानी से काम दिया जा सकता है और अच्छी तरह खाना, कपड़ा और रहने को घर दिया जा सकता है. करोड़ों लोगों को इस तरह बेकारी और अर्धबेकारी के चंगुल में छुड़ाया जा सकता है. यह तादाद बहस करने की नहीं है, बल्कि समझदारी और साइन्सी ढंग से ज़मीन का बंटवारा करने की है.

आचार्य विनोबा भावे को कहा जाता है कि उनके भूमि यज्ञ में कई लाख एकड़ भूमि दान मिल चुकी है. इस तरह क़ानून की मदद से उन जैसे सच्चे सेवकों का समय बचाया जा सकता है और ग़रीबों का दुख जल्दी दूर किया जा सकता है. नहीं तो आजकल के हिसाब से तो उनका काम कई सदी में जाकर पूरा होगा. इस तरह के बंटारे में हमें यह भी देख लेना होगा कि जिस किसी को ज़मीन दी जाये वह उसे अच्छी तरह जोत बो भी सकता है या नहीं.

सरकार की पहली पांच बरसी योजना में यह भी कहा गया है कि हमें सहकारी खेती को बढ़ाना और मदद देना चाहिये. यह बात उन जोतों के लिए ही ठीक बैठती है और चल सकती हे जो नई भूमि तोड़ कर या भूमि के नये बंटवारे में बनाये गये हों. जिन लोगों को नये खेत मिलेंगे वह अधिकतर ग़रीब होंगे. पूंजी की उनके पास कमी रहेगी. सहकारी खेती में, यानी मिलकर खेती करने में, उन्हें साफ़ लाभ दिखाई देगा. जिन जिन देशों में सहकारी खेती सफल हुई है वहां का तजरुबा हमें यही बताता है कि भूमि के नये बंटवारे से जिन लोगों को खेत मिलते हैं वही सहकारी खेती में अगुआ होते हैं. उनकी देखा देखी फिर दूसरे लोग शामिल होने लगते हैं. इस तरह पूरे गांव के आर्थिक और सामाजिक जीवन में एक नई लहर दौड़ने लगती है और सारे गांव में एक नई जान आ जाती है. इससे जनता के जीवन में स्कूल,



کتنی بھومی مل سکیگی. اِس کا ٹھیک ٹھیک جواب 'بھومی بٹوارہ کمیشن' ہی دے سکیگا. پر جو آنکڑے ہمیں مل سکتے ہیں اُن سے موٹے طور پر ہم اندازہ لگا سکتے ہیں. اُتر پردیش زمینداری انمولن اور بھومی سدھار قانون نے یہ روک لگا دی ہے کہ آگے کے لئے کوئی آدمی تیس ایکڑ سے زیادہ کھیتی کی زمین نہیں خرید سکتا. اب اگر تیس ایکڑ سے اُوپر کے کھیت اُتر پردیش میں بٹوارے کے لئے مل جاویں تو ہمیں پچاس لاکھ ایکڑ بھومی ملیگی. اِس سے کئی لاکھ پریواروں کی بیکاری دور ہوسکیگی اور اُنھیں روزی مل سکیگی. الگ الگ پرانتوں کی الگ الگ حالت ہے. پھر بھی اِسی طرح پر ہمیں بمبئی میں 64 لاکھ ایکڑ' مدھیہ پردیش میں 66 لاکھ ایکڑ اور مدراس میں 35 لاکھ ایکڑ بھومی بٹوارے کے لئے مل سکتی ہے. یہ کل دو سو پندرہ لاکھ ایکڑ بھومی ہوئی. اتنی بھومی پر اگر لوگوں کو سہکاری ڈھنگ سے بسایا جائے تو لگ بھگ بیس لاکھ پریواروں کو آسانی سے کام دیا جاسکتا ہے اور اچھی طرح کھانا' کپڑا' اور رہنے کو گھر دیا جاسکتا ہے. کروڑوں لوگوں کو اِس طرح بیکاری اور اردھ بیکاری کے چنگل سے چھڑایا جاسکتا ہے. یہ تعداد بحث کرنے کی نہیں ہے' بلکہ سمجھداری اور سائنسی ڈھنگ سے زمین کا بٹوارہ کرنے کی ہے.

آچاریہ ونوبابھاوے کو کہا جاتا ہے کہ اُن کے بھومی یگیہ میں کئی لاکھ ایکڑ بھومی دان میں مل چکی ہے. اِس طرح قانون کی مدد سے اُن جیسے سچے سیوکوں کا سمے بچایا جاسکتا ہے اور غریبوں کا دکھ جلدی دور کیا جاسکتا ہے. نہیں تو آجکل کے حساب سے تو اُن کا کام کئی صدی میں جاکر پورا ہوگا. اِس طرح کے بٹوارے میں ہمیں یہ بھی دیکھ لینا ہوگا کہ جس کسی کو زمین دی جاوے وہ اُسے اچھی طرح جوت بو بھی سکتا ہے یا نہیں.

سرکار کی پہلی پانچ برسی یوجنا میں یہ بھی کہا گیا ہے کہ ہمیں سہکاری کھیتی کو بڑھانا اور مدد دینا چاہئے. یہ بات اُن جوتوں کے لئے ہی ٹھیک بیٹھتی ہے اور چل سکتی ہے جو نئی بھومی توڑ کر یا بھومی کے نئے بٹوارے میں بنائے گئے ہوں. جن لوگوں کو نئے کھیت ملینگے وہ ادھکتر غریب ہی ہونگے. پونجی کی اُن کے پاس کمی رہیگی. سہکاری کھیتی میں' یعنی ملکر کھیتی کرنے میں' اُنھیں صاف لابھ دکھائی دے گا. جن جن دیشوں میں سہکاری کھیتی سپھل ہوئی ہے وہاں کا تجربہ ہمیں یہی بتاتا ہے کہ بھومی کے نئے بٹوارے سے جن لوگوں کو کھیت ملتے ہیں وہی سہکاری کھیتی میں اگوا ہوتے ہیں. اُن کی دیکھا دیکھی پھر دوسرے لوگ شامل ہونے لگتے ہیں. اِس طرح پورے گاؤں کے آرتھک اور سماجک جیون میں ایک نئی لہر دوڑنے لگتی ہے اور سارے گاؤں میں ایک نئی جان آجاتی ہے. اِس سے جنتا کے جیون میں اِسکول'

लिए जरूरी है कि हर सूबे या हर प्रदेश में एक 'भूमि बंटवारा कमीशन' बनाया जाय जिसका काम यह हो कि हर जगह की खेती की हालत देखकर यह तय करे कि अलग अलग जिलों और तहसीलों में आर्थिक जोत क्या मानी जाय ? उस आर्थिक जोत से तिगुनी से अधिक भूमि किसी के पास न रहने दी जाय. इस तरह जितनी जमीन मिले उसे बेजमीन खेत मजदूरों में बांट दी जाय. यदि फिर भी कुछ जमीन बचे तो उसे उन किसानों को दी जाय जिनके पास भूमि तो है पर आर्थिक जोत से कम है.

इस सम्बन्ध में एक सवाल यह उठ सकता है कि बड़ी बड़ी जोतों को तोड़कर छोटी कर देने से देश की नाज की पैदावार कम तो नहीं हो जायगी, खासकर जबकि अब भी हमारे देश में नाज की कमी है ?

इसके जवाब में हमें यह कहना है कि हमारे जैसे देश की हालत में अर्थशास्त्र का यह एक माना हुआ असूल है कि पैदावार की इकाई, यानी एक जोत, अगर एक खास मात्रा से कम हो तब भी पैदावार कम होती है और अगर एक खास मात्रा से अधिक हो तब भी सारे देश की पैदावार कम होती है. हमारे देश के अर्थशास्त्र जानकारों ने छोटी छोटी जोतों के नुक़सान को तो सोचा पर इस तरह की बड़ी बड़ी जोतों के नुक़सान की तरफ़ ध्यान नहीं दिया. इस तरह की बड़ी बड़ी जोतों की न तो ठीक ठीक जुताई होती है, न ठीक ठीक बोआई. ऐसी जोतों का सारा काम एक न एक तरह के बेगार के जरिये होता है. पुराने जमाने में जब बड़े बड़े जमींदारों और सामंतों का बोलबाला था हर आदमी का मान उतना ही अधिक होता था जितनी उसके पास भूमि होती थी. इसी असूल पर हमारे यहां के जमींदारों और ठाकुरों ने भी बड़ी बड़ी जोतों पर क़बजा कर रखा था. पर इन बड़ी बड़ी जोतों का ठीक प्रबंध बहुत ही कम होता था. नतीजा यह कि एक तरफ़ तो भूमि बेकार पड़ी रहती थी और दूसरी तरफ़ काम करने वालों का समय बेकार जाता था. इस सम्बन्ध में यही हालत आजकल की बड़ी बड़ी जोतों की है. ठीक ठीक भूमि बंटवारे का मतलब यह है कि हम दोनों तरफ़ की इस बुराइ को दूर करें. हमें विश्वास है कि इससे बेकारी भी घटेगी और देश में नाज की पैदावार भी बढ़ेगी.

जाहिर है कि बंटवारा केवल उन बड़ी जोतों का होना चाहिये जिन का प्रबन्ध, जैसा हमने ऊपर बताया, ठीक नहीं है. जिन थोड़ी सी बड़ी जोतों पर अच्छी तरह से खेती की जा रही है, चाहे वह खेती आजकल के नये साइन्सी ढंग से होती हो और चाहे पुराने हिन्दुस्तानी ढंग से, ऐसी बड़ी जोतों का बंटवारा हमें नहीं करना है.

अब सवाल यह रहता है कि इस तरह बंटवारे के लिए



لئے ضروری ھے کہ ھر صوبے یا ھر پردیش میں ایک 'بھومی بٹوارہ کمیشن' بنایا جائے جس کا کام یہ ھو کہ ھر جگہ کی کھیتی کی حالت دیکھکر یہ طے کرے کہ الگ الگ ضلعوں اور تحصیلوں میں آرتھک جوت کیا مانی جائے ؟ اُس آرتھک جوت سے تگنی سے ادھک بھومی کسی کے پاس نہ رھنے دی جائے . اِس طرح جتنی زمین ملے اُسے بےزمین کھیت مزدوروں میں بانٹ دی جائے . یدی پھر بھی کچھ زمین بچے تو اُسے اُن کسانوں کو دی جائے جن کے پاس بھومی تو ھے پر آرتھک جوت سے کم ھے .

اِس سمبندھ میں ایک سوال یہ اُٹھ سکتا ھے کہ بڑی بڑی جوتوں کو توڑ کر چھوٹی کردینے سے دیش کی ناج کی پیداوار کم تو نہیں ھوجائیگی، خاصکر جب کہ اب بھی ھمارے دیش میں ناج کی کمی ھے ؟

اِس کے جواب میں ھمیں یہ کہنا ھے کہ ھمارے جیسے دیش کی حالت میں ارتھ شاستر کا یہ ایک مانا ھوا اُصول ھے کہ پیداوار کی اکائی، یعنی ایک جوت، اگر ایک خاص ماترا سے کم ھو تب بھی پیداوار کم ھوتی ھے اور اگر ایک خاص ماترا سے ادھک ھو تب بھی سارے دیش کی پیداوار کم ھوتی ھے . ھمارے دیش کے ارتھ شاستر جانکاروں نے چھوٹی چھوٹی جوتوں کے نقصان کو تو سوچا پر اِس طرح کی بڑی بڑی جوتوں کے نقصان کی طرف دھیان نہیں دیا . اِسطرح کی بڑی بڑی جوتوں کی نہ تو ٹھیک ٹھیک جتائی ھوتی ھے، نہ ٹھیک ٹھیک بوائی . ایسی جوتوں کا سارا کام ایک نہ ایک طرح کے بیگار کے ذریعہ ھوتا ھے . پرانے زمانے میں جب بڑے بڑے زمینداروں اور سامنتوں کا بول بالا تھا ھر آدمی کا مان اُتنا ھی ادھک ھوتا تھا جتنی اُس کے پاس بھومی ھوتی تھی . اِسی اُصول پر ھمارے یہاں کے زمینداروں اور ٹھاکروں نے بھی بڑی بڑی جوتوں پر قبضہ کر رکھا تھا . پر اِن بڑی بڑی جوتوں کا ٹھیک پربندھ بہت ھی کم ھوتا تھا . نتیجہ یہ کہ ایک طرف تو بھومی بیکار پڑی رھتی تھی اور دوسری طرف کام کرنے والوں کا سمے بیکار جاتا تھا. اس سمبندھ میں یہی حالت آجکل کی بڑی بڑی جوتوں کی ھے . ٹھیک ٹھیک بھومی بٹوارے کا مطلب یہ ھے کہ ھم دونوں طرف کی اِس برائی کو دور کریں. ھمیں وشواس ھے کہ اِس سے بیکاری بھی گھٹیگی اور دیش میں ناج کی پیداوار بھی بڑھیگی .

ظاھر ھے کہ بٹوارہ کیول اُن بڑی بڑی جوتوں کا ھونا چاھئے جن کا پربندھ، جیسا ھم نے اُوپر بتایا، ٹھیک نہیں ھے . جن تھوڑی سی بڑی جوتوں پر اچھی طرح سے کھیتی کی جا رھی ھے، چاھے وہ کھیتی آجکل کے نئے سائنسی ڈھنگ سے ھوتی ھو اور چاھے پرانے ھندستانی ڈھنگ سے، ایسی بڑی جوتوں کا بٹوارہ ھمیں نہیں کرنا ھے .

اب سوال یہ رھتا ھے کہ اِس طرح بٹوارے کے لئے

पंच बरसी योजना को तीसरे साल में ही सुधारना और बदलना पड़ा और इससे आगे के पांच साल की जो दूसरी योजना होगी उसका रूप अभी से झलकने लगा है. बेकारी नाम के इस महारोग से छुटकारा पाने के लिए हमें कई और क़दम बढ़ाने होंगे. सरकारी योजना में भी इसकी कुछ चर्चा की गयी है. पर अब आवश्यकता इस बात की है कि कम से कम समय में हम अपने आर्थिक ढांचे को इस तरह बदलें कि बेकारी भी बिलकुल दूर हो जाय और साथ ही साथ देश के हर आदमी की माली हालत और कलचरी जीवन दोनों ऊचे उठ सकें और हमारा देश और हमारा राज सब के लिए भलाई और कल्यान का राज हो.

सरकारी योजना में भूमि के नये सिरे से बंटवारे की चर्चा भी की गयी है और यह असूल भी मान लिया गया है कि किसी भी एक खेती पेशा आदमी के पास एक ख़ास मात्रा या मिक़दार से अधिक भूमि नहीं होनी चाहिये. अब सवाल यह होता है कि यह अधिक से अधिक भूमि एक आदमी के पास कितनी हो ? सरकारी योजना समिति की राय है कि यह अधिक से अधिक भूमि आर्थिक जोत का तिगुना होनी चाहिये. इससे अधिक भूमि किसी के पास नहीं रहने देनी चाहिये. आर्थिक जोतका मतलब उतनी जमीन है जितनी में एक आदमी का गुज़ारा अच्छी तरह चल सके. सरकारी योजना समिति की राय में चार एकड़ जमीन में एक आदमी का गुज़ारा अच्छी तरह चल सकता है. इस तरह एक परिवार में अगर हम चार आदमी गिन लें तो एक खेतिहर परिवार के लिए पंद्रह या सोलह एकड़ ज़मीन 'आर्थिक जोत' कही जा सकती है. पर इस बारे में कोई कड़ा नियम नहीं बनाया जा सकता. क्योंकि देश के अलग अलग प्रान्तों में ही नहीं, एक एक प्रान्त के अलग अलग हिस्सों में भी अलग अलग तरह की भूमि है जिसके कारन आर्थिक जोत भी सब जगह अलग अलग होगी. आज से पांच साल पहले कांग्रेस खेती सुधार समिति के सामने गवाही देते हुए हमने कहा था कि मोटे तौर पर उत्तर प्रदेश में पंद्रह एकड़ ज़मीन आर्थिक जोत है. हमने यह भी कहा था कि खेती के काम में आर्थिक जोत हमें उसी तरह तय करनी चाहिये जिस तरह उद्योग धंधों में या बड़े बड़े कल कारख़ानों में हम एक मजदूर की दिन भर की कम से कम मजदूरी तय करते हैं. दोनों में निगाह ठीक ठीक गुज़ारा चलने पर रहनी चाहिये. इस तरह जिन लोगों के पास उचित से अधिक भूमि है उनसे भूमि लेकर दूसरे खेतिहरों में बांटना बहुत कठिन काम नहीं होना चाहिये.

हमारे देश में इन सब सुधारों के लिए ठीक ठीक आंकड़ों की भी बहुत ही कमी है. बेकारी दूर करने के लिए सबसे पहले भूमि का ठीक ठीक बंटवारा ज़रूरी है. इस बंटवारे के



پنچ برسی یوجنا کو تیسرے سال میں ہی سدھارنا اور بدلنا پڑا اور اِس سے آگے کے پانچ سال کی جو دوسری یوجنا ہوگی اُس کا روپ ابھی سے جھلکنے لگا ہے. بیکاری نام کے اِس مہاروگ سے چھٹکارا پانے کے لئے ہمیں کئی اور قدم بڑھانے ہونگے. سرکاری یوجنا میں بھی اِس کی کچھ چرچا کی گئی ہے. پر اب آوشیکتا اِس بات کی ہے کہ کم سے کم سمے میں ہم اپنے آرتھک ڈھانچے کو اِس طرح بدلیں کہ بیکاری بھی بالکل دور ہو جائے اور ساتھ ہی ساتھ دیش کے ہر آدمی کی مالی حالت اور کلچری جیون دونوں اونچے اُٹھ سکیں اور ہمارا دیش اور ہمارا راج سب کے لئے بھلائی اور کلیان کا راج ہو.

سرکاری یوجنا میں بھومی کے نئے سرے سے بنٹوارے کی چرچا بھی کی گئی ہے اور یہ اُصول بھی مان لیا گیا ہے کہ کسی بھی ایک کھیتی پیشہ آدمی کے پاس ایک خاص ماترا یا مقدار سے ادھک بھومی نہیں ہونی چاہئے. اب سوال یہ ہوتا ہے کہ یہ ادھک سے ادھک بھومی ایک آدمی کے پاس کتنی ہو؟ سرکاری یوجنا سمتی کی رائے ہے کہ یہ ادھک سے ادھک بھومی آرتھک جوت کا تگنا ہونی چاہئے. اِس سے ادھک بھومی کسی کے پاس نہیں رہنی دینی چاہئے. آرتھک جوت کا مطلب اُتنی زمین ہے جتنی میں ایک آدمی کا گذارا اچھی طرح چل سکے. سرکاری یوجنا سمتی کی رائے میں چار ایکڑ زمین میں ایک آدمی کا گذارا اچھی طرح چل سکتا ہے. اِس طرح ایک پریوار میں اگر ہم چار آدمی گن لیں تو ایک کھیتہر پریوار کے لئے پندرہ یا سولہ ایکڑ زمین 'آرتھک جوت' کہی جاسکتی ہے. پر اِس بارے میں کوئی کڑا نیم نہیں بنایا جاسکتا. کیونکہ دیش کے الگ الگ پرانتوں میں ہی نہیں، ایک ایک پرانت کے الگ الگ حصوں میں بھی الگ الگ طرح کی بھومی ہے جس کے کارن آرتھک جوت بھی سب جگہ الگ الگ ہوگی. آج سے پانچ سال پہلے کانگریس کھیتی سدھار سمتی کے سامنے گواہی دیتے ہوئے ہم نے کہا تھا کہ موٹے طور پر اُترپردیش میں پندرہ ایکڑ زمین آرتھک جوت ہے. ہم نے یہ بھی کہا تھا کہ کھیتی کے کام میں آرتھک جوت ہمیں اُسی طرح طے کرنی چاہئے جس طرح اُدیوگ دھندھوں میں یا بڑے بڑے کل کارخانوں میں ہم ایک مزدور کی دن بھر کی کم سے کم مزدوری طے کرتے ہیں. دونوں میں نگاہ ٹھیک ٹھیک گذارا چلنے پر رہنی چاہئے. اِس طرح جن لوگوں کے پاس اُچت سے ادھک بھومی ہے اُن سے بھومی لیکر دوسرے کھیتہروں میں بانٹنا بہت کٹھن کام نہیں ہونا چاہئے.

ہمارے دیش میں اِن سب سدھاروں کے لئے ٹھیک ٹھیک آنکڑوں کی بھی بہت ہی کمی ہے. بیکاری دور کرنے کے لئے سب سے پہلے بھومی کا ٹھیک ٹھیک بٹوارہ ضروری ہے. اِس بٹوارے کے

घंटे लगभग चार खरब पांच अरब हो जाते हैं. उनका अनुमान है कि सन 1941 में इन चार खरब पांच अरब घंटों में से लगभग आधा समय बेकार गया. यह अनुमान बिलकुल ठीक हो, या न हो पर इस बात में तो कोई संदेह नहीं हो सकता कि इस तरह की छिपी अर्ध बेकारी हमारे देश में बहुत बढ़ी हुई है. इसका केवल यही एक इलाज है कि कुछ लोगों को खेती से हटा कर दूसरे धन्धों में लगाया जाय. या खेती के लिये नई भूमि तोड़ी जाय और उस नई भूमि पर या इस तरह की नयी भूमियों पर इनमें से बहुत से लोगों को ले जाकर लगाया और बसाया जाय. अब हमें यह देखना है कि भूमि के फिर से बंटवारे के जरिये इस सवाल को कहां तक और किस तरह हल किया जा सकता है.

भूमि के उचित और ठीक ठीक बंटवारे का असर हमारे शहरों की बेकारी पर भी पड़ेगा. हमारे देश में छोटे छोटे किसान आजकल अपने खेत, घर और गांव छोड़ कर शहरों में नौकरी की खोज में आते रहते हैं. इसका कारन यह नहीं है कि शहर उन्हें अच्छे लगते हैं और वह शहरों के प्रेम से शहरों की तरफ खिंच आते हैं. कारन केवल यह है कि उनके घर और गांव की रोजगारी हालत और खाने पीने, पैसे की तंगी उन्हें घर छोड़ने पर मजबूर कर देती है. हिन्दुस्तान का किसान जन्म और स्वभाव से ही खुली हवा और वहां के प्राकृतिक जीवन का प्रेमी होता है. पर लगान का बोझ, महाजन का क़र्ज़ा और तक़ाज़ा, घर की गिरती हुई हालत, सब मिलकर उसे मजबूर कर देते हैं कि वह गांव छोड़ कर कहीं और रोजी ढूंढ़े. इसलिये यदि भूमि के ठीक ठीक बंटवारे से ऐसी हालत पैदा हो सके जिससे आजकल की एक एक जोत या एक एक खेत पर जितने आदमियों का बोझ है वह कम हो जाये और आम किसानों के लिए गांव का रोजगारी और समाजी जीवन इतना अच्छा हो जाये कि वह गांव में ही रह सकें तो गांव के लोगों का शहरों में नौकरी के लिये आना बंद हो जावे या कम से कम बहुत ही कम हो जावे. इस तरह जो लोग गांव से भाग कर शहरों के कारखानों में, मिलों में, घरों कीनौकरी में, होटलों में, दफ़्तरों में, स्टेशनों पर, रिक्शा चलाने में और तरह तरह के कामों में भरे हुए हैं उनकी तादाद बहुत कम हो जायगी.

सरकारी पंच बरसी योजना में भी यह सुझाव रखा गया है कि जो जमीनें परती पड़ी हुई हैं उन्हें तोड़ कर नये खेत बनाये जायं तो सन 1955-56 तक लगभग 7 लाख एकड़ नई जमीन खेती के लिये मिल सकती है. इसमें से अगर हर खेतिहर को 10 एकड़ भूमि दी जाय तो साढ़े सात लाख खेतिहर परिवारों को बेकारी के चंगुल से छुड़ाया जा सकता है. यहां तक तो बात ठीक है. पर अब इतने ही से काम नहीं चल सकता. देश में बेकारी इतनी तेज़ी से बढ़ रही है कि सरकारी



گھنٹے لگ بھگ چار کھرب پانچ ارب ہوجاتے ہیں. اُن کا انومان ہے کہ سن 1941 میں اِن چار کھرب پانچ ارب گھنٹوں میں سے لگ بھگ آدھا سمے بیکار گیا. یہ انومان بالکل ٹھیک ہو یا نہو پر اِس بات میں تو کوئی سندیہ نہیں ہو سکتا کہ اِس طرح کی چھپی اردھ بیکاری ہمارے دیش میں بہت بڑھی ہوئی ہے. اِس کا کیول یہی ایک علاج ہے کہ کچھ لوگوں کو کھیتی سے ہٹا کر دوسرے دھندھوں میں لگایا جائے. یا کھیتی کے لئے بھومی توڑی جائے اور اُس نئی بھومی پر یا اِس طرح کی نئی بھومیوں پر اِن میں سے بہت سے لوگوں کو لے جا کر لگایا اور بسایا جائے. اب ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ بھومی کے پھر سے بٹوارے کے ذریعے اس سوال کو کہاں تک اور کس طرح حل کیا جا سکتا ہے.

بھومی کے اُچت اور ٹھیک ٹھیک بٹوارے کا اثر ہمارے شہروں کی بیکاری پر بھی پڑے گا. ہمارے دیش میں چھوٹے چھوٹے کسان آج کل اپنے کھیت، گھر اور گاؤں چھوڑ کر شہروں میں نوکری کی کھوج میں آتے رہتے ہیں. اِس کا کارن یہ نہیں ہے کہ شہر اُنہیں اچھے لگتے ہیں اور وہ شہروں کے پریم سے شہروں کی طرف کھنچ آتے ہیں. کارن کیول یہ ہے کہ اُن کے گھر اور گاؤں کی روزگاری حالت اور کھانے پینے، پیسے کی تنگی انہیں گھر چھوڑنے پر مجبور کر دیتی ہے. ہندستان کا کسان جنم اور سوبھاؤ سے ہی کھلی ہوا اور وہاں کے پراکرتک جیون کا پریمی ہوتا ہے. پر لگان کا بوجھ، مہاجن کا قرضہ اور تقاضہ، گھر کی گرتی ہوئی حالت، سب مل کر اُسے مجبور کر دیتے ہیں کہ وہ گاؤں چھوڑ کر کہیں اور روزی ڈھونڈے. اِس لئے یدی بھومی کے ٹھیک ٹھیک بٹوارے سے ایسی حالت پیدا ہو سکے جس سے آجکل کی ایک ایک جوت یا ایک ایک کھیت پر جتنے آدمیوں کا بوجھ ہے وہ کم ہوجائے اور عام کسانوں کے لئے گاؤں کا روزگاری اور سماجی جیون اِتنا اچھا ہوجائے کہ وہ گاؤں میں ہی رہ سکیں تو گاؤں کے لوگوں کا شہروں میں نوکری کے لئے آنا بند ہوجاوے یا کم سے کم بہت ہی کم ہوجاوے. اِس طرح جو لوگ گاؤں سے بھاگ کر شہروں کے کارخانوں میں، ملوں میں، گھروں کی نوکری میں، ہوٹلوں میں، دفتروں میں، اِسٹیشنوں پر، رکشا چلانے میں اور طرح طرح کے کاموں میں بھرے ہوئے ہیں اُن کی تعداد بہت ہی کم ہوجائے گی.

سرکاری پنچ برسی یوجنا میں بھی یہ سجھاؤ رکھا گیا ہے کہ جو زمینیں پرتی پڑی ہوئی ہیں اُنہیں توڑ کر نئے کھیت بنائے جائیں تو سن 56-1955 تک لگ بھگ 75 لاکھ ایکڑ نئی زمین کھیتی کے لئے مل سکتی ہے. اس میں سے اگر ہر کھیتیہر کو 10 ایکڑ بھومی دی جائے تو ساڑھے سات لاکھ کھیتیہر پریواروں کو بیکاری کے چنگل سے چھڑایا جا سکتا ہے. یہاں تک تو بات ٹھیک ہے. پر اَب اِتنے ہی سے کام نہیں چل سکتا. دیش میں بیکاری اتنی تیزی سے بڑھ رہی ہے کہ سرکاری

होता. फ़सल बोने और काटने के समय अधिक काम होता है. पर साल में कुछ महीने ऐसे होते हैं जब किसान अधिकतर बेकार रहता है. इस तरह की मौसमी बेकारी का इलाज एक तो यह है कि उन दिनों सिंचाई वगैरा का अच्छा प्रबन्ध किया जावे और दूसरे यह कि किसानों के अन्दर उनके घरों में और गांव में छोटे छोटे घरेलू उद्योग धन्दों को बढ़ाया जावे, जिन से वह बेकार भी न रहें और उनकी आमदनी भी बढ़े.

तीसरी—तीसरी तरह की बेकारी कभी कभी आए दिन की ज़रूरत की चीज़ों की मांग एकदम कम हो जाने से पैदा हो जाती है. पूंजीवादी व्यवस्था में यानी सरमायादारी के निज़ाम में इस तरह की बेकारी हर आठ दस बरस के बाद एक बार आती ही है. कुछ न कुछ दिनों के बाद या तो लोगों के पास चीज़ें ज़्यादा हो जाती हैं या उनकी ख़रीदने की ताक़त इतनी कम हो जाती है कि इच्छा होते हुए भी वह और चीज़ें नहीं ख़रीद सकते. बाज़ार में चीज़ें बढ़ जाती हैं और उन चीज़ों को पैदा करने वाले मज़दूर कम से कम कुछ दिनों के लिये बेकार हो जाते हैं. कारख़ानों में मज़दूरों की छटनी होने लगती है. कारख़ानों के मालिक कहने लगते हैं कि माल की पैदावार ज़्यादा हो गई, उसे कम करने की ज़रूरत है. इस तरह की बेकारी भी आजकल हमारे देश में काफ़ी है.

इस तरह की बेकारी लगभग हर देश में हर आठ दस बरस के बाद क्यों आती रहती है इस सवाल पर अर्थशास्त्र के बड़े बड़े विद्वानों की अलग अलग राय है. इस समय हम इन अलग अलग मतों की छान बीन में नहीं पड़ना चाहते. केवल इतना कह देना काफ़ी है कि समय समय पर इस तरह की बेकारी पूंजीवाद यानी सरमायादारी में स्वाभाविक और लाज़मी है.

चौथी—चौथी तरह की बेकारी को हम नीम बेकारी या अर्ध बेकारी या छिपी बेकारी भी कह सकते हैं. इसका मतलब यह है कि किसी किसी काम में जितने लोग लगे होते हैं उतनों की उस काम में असल में ज़रूरत नहीं होती. हम ऊपर कह चुके हैं कि भारतवर्ष अधिकतर गांव में बसा हुआ है. खेती का धन्धा यहां का सबसे बड़ा धन्धा है. जानकार लोगों की राय है कि आज जितने लोग हमारे यहां खेती के काम में लगे हुए हैं उनमें से यदि कुछ खेती से हटा कर दूसरे कामों में लगा दिये जायं तो उससे देश की नाज की पैदावार हरगिज़ कम नहीं होगी. अर्थशास्त्र के एक विद्वान का कहना है कि यदि हमारे देश में खेती के काम में लगा हुआ हर मज़दूर दिन में आठ घंटे भी काम करे तो साल में हर मज़दूर के ढाई हज़ार घंटे हो जाते हैं. इस तरह खेती में लगे हुए कुल आदमियों के साल भर के



ہوتا. فصل بونے اور کاٹنے کے سمے ادھک کام ہوتا ہے. پر سال میں کچھ مہینے ایسے ہوتے ہیں جب کسان ادھک تر بیکار رہتا ہے. اِس طرح کی موسمی بیکاری کا علاج ایک تو یہ ہے کہ اُن دنوں سنچائی وغیرہ کا اچھا پربندھ کیا جاوے اور دوسرے یہ کہ کسانوں کے اندر اُن کے گھروں میں اور گاؤں میں چھوٹے چھوٹے گھریلو اُدیوگ دھندوں کو بڑھایا جاوے، جن سے وہ بیکار بھی نہ رہیں اور اُن کی آمدنی بھی بڑھے.

تیسری—تیسری طرح کی بیکاری کبھی کبھی آئے دن کی ضرورت کی چیزوں کی مانگ ایک دم کم ہوجانے کے پیدا ہو جاتی ہے. پونجی وادی ویوستھا میں یعنی سرمایہ‌داری کے نظام میں اس طرح کی بیکاری ہر آٹھ دس برس کے بعد ایک بار آتی ہی ہے. کچھ نہ کچھ دنوں کے بعد یا تو لوگوں کے پاس چیزیں زیادہ ہو جاتی ہیں یا اُن کی خریدنے کی طاقت اتنی کم ہو جاتی ہے کہ اچھا ہوتے ہوئے بھی وہ اور چیزیں نہیں خرید سکتے. بازار میں چیزیں بڑھ جاتی ہیں اور ان چیزوں کو پیدا کرنے والے مزدور کم سے کم کچھ دنوں کے لئے بیکار ہوجاتے ہیں. کارخانوں میں مزدوروں کی چھٹنی ہونے لگتی ہے. کارخانوں کے مالک کہنے لگتے ہیں کہ مال کی پیداوار زیادہ ہوگئی، اُسے کم کرنے کی ضرورت ہے. اِس طرح کی بیکاری بھی آجکل ہمارے دیش میں کافی ہے.

اِس طرح کی بیکاری لگ بھگ ہر دیش میں ہر آٹھ دس برس کے بعد کیوں آتی رہتی ہے اِس سوال پر ارتھ شاستر کے بڑے بڑے ودوانوں کی الگ الگ رائے ہے. اس سمے ہم اِن الگ الگ متوں کی چھان بین میں نہیں پڑنا چاہتے. کیول اتنا ہی کہہ دینا کافی ہے کہ سمے سمے پر اِس طرح کی بیکاری پونجی واد یعنی سرمایہ‌داری میں سوابھاوک اور لازمی ہے.

چوتھی—چوتھی طرح کی بیکاری کو ہم نیم بیکاری یا اردھ بیکاری یا چھپی بیکاری بھی کہہ سکتے ہیں. اِس کا مطلب یہ ہے کہ کسی نہ کسی کام میں جتنے لوگ لگے ہوتے ہیں اُتنوں کی اُس کام میں اصل میں ضرورت نہیں ہوتی. ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ بھارت ورش ادھکتر گاؤں میں بسا ہوا ہے. کھیتی کا دھندھا یہاں کا سب سے بڑا دھندھا ہے. جانکار لوگوں کی رائے ہے کہ آج جتنے لوگ ہمارے یہاں کھیتی کے کام میں لگے ہوئے ہیں اُن میں سے یدی کچھ کھیتی سے ہٹا کر دوسرے کاموں میں لگا دئے جائیں تو اُس سے دیش کی ناج کی پیداوار ہرگز کم نہیں ہوگی. ارتھ شاستر کے ایک ودوان کا کہنا ہے کہ یدی ہمارے دیش میں کھیتی کے کام میں لگا ہوا ہر مزدور دن میں آٹھ گھنٹے بھی کام کرے تو سال میں ہر مزدور کے ڈھائی ہزار گھنٹے ہوجاتے ہیں. اِس طرح کھیتی میں لگے ہوئے کل آدمیوں کے سال بھر کے

# बेकारी का हल

( डाक्टर वी. बी. सिंह, लखनऊ )

## आल इंडिया रेडियो के सौजन्य से एक ब्राडकास्ट के आधार पर

हमारे देश में बेकारी का सवाल दिन दिन बढ़ता जा रहा है. आजकल इसकी बहुत चर्चा है. बेकारी शहरों और क़सबों में ही नहीं, गांव में भी फैली हुई है. कहा जाता है कि भारतवर्ष गांव में बसा है. इसका मतलब यह है कि इस मुल्क का सब से बड़ा सवाल गांव का सवाल है. यानी नए भारत की फिर से तामीर गांव से ही शुरू होगी. इसलिये बेकारी का इलाज भी गांव ही से शुरू होना चाहिए. इलाज किसी रोग का होता है. बेकारी भी एक बहुत बड़ा और भयानक सामाजिक रोग है. जिस तरह और रोग कई तरह के होते हैं, जैसे बुख़ार कई तरह का होता है, उसी तरह बेकारी भी कई तरह की होती है. इन में चार ख़ास तरह की बेकारियां यह हैं :—

पहली—वह बेकारी जो बड़ी मशीनों के चालू हो जाने से पैदा हो जाती है. जब मशीनों का इस्तेमाल बढ़ता है तो उसकी वजह से कुछ लोग बेकार हो जाते हैं. ज्यों ज्यों मशीनें ज़ियादा बढ़िया आती जाती हैं त्यों त्यों बेकारी और बढ़ती जाती है. आजकल भी हिन्दुस्तान के कल कारख़ानों में यही बात हो रही है. पहले जिस पुतली घर में एक मज़दूर दो मशीनें चला सकता था उस में अब वही एक मज़दूर पहले से अच्छी मशीनें लग जाने के कारन चार चला सकता है. इस तरह बाक़ी मज़दूर बेकार हो जाते हैं. इस तरह की बेकारी का असर सब उद्योग धंदों और तिजारत में लगे हुए मज़दूरों और धीरे धीरे दफ़्तर में काम करने वाले लोगों सब पर पड़ता है. एक समय ऐसा आता है जब इस तरह की बेकारी का असर एक देश के ज़रिये सब देशों पर और सब देशों के रोज़गारी ढांचों पर पड़ता है.

मशीनों से पैदा होने वाली इस बेकारी का असर गांव पर भी पड़ता है. हमारे गांव में जो बेकारी बढ़ती जा रही है उसकी भी एक वजह यह है. मिसाल के लिये पहले गांव में सौ आदमी अपनी बैलगाड़ियां ले कर शहर आते थे और उससे अपनी रोज़ी कमाते थे. पर अब एक ट्रक ने सौ बैलगाड़ी वालों को बेकार कर दिया.

दूसरी—दूसरी तरह की बेकारी मोसमी बेकारी है. खेतिहर देशों में किसानों के लिये पूरे साल भर का काम नहीं

# بیکاری کا حل

( ڈاکٹر وی . بی. سنگھ، لکھنؤ )

## آل انڈیا ریڈیو کے سوجنیہ سے ایک براڈکاسٹ کے آدھار پر

ھمارے دیش میں بیکاری کا سوال دن دن بڑھتا جا رھا ھے . آجکل اِس کی بہت چرچا ھے. بیکاری شہروں اور قصبوں میں ھی نہیں، گاؤں میں بھی پھیلی ھوئی ھے. کہا جاتا ھے کہ بھارت ورش گاؤں میں بسا ھے . اِس کا مطلب یہ ھے کہ اِس ملک کا سب سے بڑا سوال گاؤں کا سوال ھے . یعنی نئے بھارت کی پھر سے تعمیر گاؤں سے ھی شروع ھوگی . اِس لئے بیکاری کا علاج بھی گاؤں سے ھی شروع ھونا چاہئے . علاج کسی روگ کا ھوتا ھے . بیکاری بھی ایک بہت بڑا اور بھیانک سماجک روگ ھے . جس طرح اور روگ کئی طرح کے ھوتے ھیں، جیسے بخار کئی طرح کا ھوتا ھے، اُسی طرح بیکاری بھی کئی طرح کی ھوتی ھے . اِن میں چار خاص طرح کی بیکاریاں یہ ھیں :—

پہلی—وہ بیکاری جو بڑی بڑی مشینوں کے چالو ھوجانے سے پیدا ھوجاتی ھے . جب مشینوں کا استعمال بڑھتا ھے تو اُس کی وجہ سے کچھ لوگ بیکار ھو جاتے ھیں . جیوں جیوں مشینیں زیادہ بڑھیا آتی جاتی ھیں تیوں تیوں بیکاری اور بڑھتی جاتی ھے . آجکل بھی ھندستان کے کل کارخانوں میں یہی بات ھو رھی ھے . پہلے جس پتلی گھر میں ایک مزدور دو مشینیں چلا سکتا تھا اُس میں اب وھی ایک مزدور پہلے سے اچھی مشینیں لگ جانے کے کارن چار چلا سکتا ھے . اِس طرح باقی مزدور بیکار ھو جاتے ھیں . اِس طرح کی بیکاری کا اثر سب اُدیوگ دھندوں اور تجارت میں لگے ھوئے مزدوروں اور دھیرے دھیرے دفتر میں کام کرنے والے لوگوں سب پر پڑتا ھے . ایک سمے ایسا آتا ھے جب اِس طرح کی بیکاری کا اثر ایک دیش کے ذریعہ سب دیشوں پر اور سب دیشوں کے روزگاری ڈھانچوں پر پڑتا ھے .

مشینوں سے پیدا ھونے والی اِس بیکاری کا اثر گاؤں پر بھی پڑتا ھے . ھمارے گاؤں میں جو بیکاری بڑھتی جا رھی ھے اُس کی بھی ایک وجہ یہ ھے . مثال کے لئے پہلے گاؤں میں سو آدمی اپنی بیل گاڑیاں لے کر شہر آتے تھے اور اُس سے اپنی روزی کماتے تھے . پر اب ایک ٹرک نے سو بیل گاڑی والوں کو بیکار کر دیا .

دوسری—دوسری طرح کی بیکاری موسمی بیکاری ھے. کھیتیہر دیشوں میں کسانوں کے لئے پورے سال بھر کا کام نہیں

की जरूरत नहीं, उसकी जात में विश्वास काफ़ी है. ऐसे दर्शन से सभा में एक आदमी चमक सकता है, बहुत से नहीं. अर्थात यह दर्शन सामंतवादी है और वेदों के जनवादी दर्शन के उलटा है.

जो नई जनवादी सभ्यता और कलचर आयेगा, वह वेदों के जमाने की सभ्यता की तरह जनवादी होगा, लेकिन वह ज्यादा ख़ुशहाल और सम्पन्न होगा क्योंकि अब आदमी के पास पैदावार के साधन बहुत बढ़ गए हैं. साइन्स ने क़ुदरत के बारे में बहुत सा ज्ञान हासिल कर लिया है. साइन्स की ईजादों को जनता अधिक जनता के हित के लिये अमल में लाया जायग, उतना ही कल वह आगे बढ़ेगी, उतना ही लोगों को पढ़ने लिखने, सोचने, शरीर को स्वस्थ और सुन्दर बनाने का मौक़ा मिलेगा, और उतना ही सभा में ज्यादा लोग चमकेंगे.

बुर्जवा सभ्यता इस दिशा में एक हद तक आगे बढ़ती है, वह डार्विन के विकासवाद, डिगरोट के भौतिकवाद और हेगल के द्वंदात्मकवाद को तो मान लेती है, लेकिन उसके लिये इससे आगे बढ़ना मार्क्स के द्वंदात्मक भौतिकवाद और ऐतिहासिक विकास को मानना कठिन हो जाता है क्योंकि ऐसा मानने से बुर्जवा कलचर के अपने अस्तित्व पर चोट पड़ती है क्योंकि उसे यह मानना पड़ता है कि अब संसार पूंजीवाद से निकलकर अपने क़ुदरती विकास के रास्ते पर जरूर आगे बढ़ेगा और पूंजीवादी जमाने की बुर्जवा कलचर को नये जनवादी और साम्यवादी कलचर को स्थान देना होगा.



کی ضرورت نہیں، اُس کی جات میں وشواس کافی هے. ایسے درشن سے سبھا میں ایک آدمی چمک سکتا هے، بہت سے نہیں. ارتھات یہ درشن سامنت وادی هے اور ویدوں کے جن وادی درشن کے اُلٹا هے.

جو نئی جن وادی سبھیتا اور کلچر آئے گا، وہ ویدوں کے زمانے کی سبھیتا کی طرح جن‌وادی هوگا، لیکن وہ زیادہ خوشحال اور سمپن هوگا کیونکہ اب آدمی کے پاس پیداوار کے سادھن بہت بڑھ گئے هیں. سائنس نے قدرت کے بارے میں بہت سا گیان حاصل کر لیا هے. سائنس کی ایجادوں کو جتنا ادھک جنتا کے هت کے لئے عمل میں لایا جائے گا، اُتنا هی کل وہ آگے بڑھے گی اُتنا هی لوگوں کو پڑھنے لکھنے، سوچنے، شریر کو سوستھ اور سندر بنانے کا موقع ملے گا، اور اتنا هی سبھا میں زیادہ لوگ چمکیں گے.

برزوا سبھیتا اِس دشا میں ایک حد تک آگے بڑھتی هے، وہ ڈارون کے وکاس‌واد، ڈگروٹ کے بھوتک‌واد اور هیگل کے دوندآتمک‌واد کو تو مان لیتی هے، لیکن اُس کے لئے اِس سے آگے بڑھنا مارکس کے دوندآتمک بھوتک‌واد اور اِتہاسک وکاس کو ماننا کٹھن هو جاتا هے کیونکہ ایسا ماننے سے برزوا کلچر کے اپنے استتو پر چوٹ پڑتی هے کیونکہ اُسے یہ ماننا پڑتا هے کہ اب سنسار پونجی‌واد سے نکل‌کر اپنے قدرتی وکاس کے راستے پر ضرور آگے بڑھیگا اور پونجی‌وادی زمانے کی برزوا کلچر کو نئے جن‌وادی اور سامیہ‌وادی کلچر کو استھان دینا هوگا.

---

इतिहासकार या जीव विज्ञान शास्त्री के अभाव में अनेकों जातियों, धर्मों, भाशाओं और सभ्यताओं के अवशेश भी शेश नहीं रहे—ठीक उसी प्रकार कला के क्षेत्र में भी सही आलोचना और मूल्यांकन के प्रभाव में कितने ही जीवन और कृतियां अनजानी ही पड़ी रह जाती हैं.

—चेख़व

اتہاسکار یا جیو وگیان شاستری کے ابھاؤ میں انیکوں جاتیوں، دھرموں، بھاشاؤں اور سبھتاؤں کے اوشیش بھی شیش نہیں رهے—ٹھیک اُسی پرکار کلا کے چھیتر میں بھی صحیح آلوچنا اور مولیانکن کے ابھاؤ میں کتنے هی جیون اور کرتیاں انجانی پڑی رہ جاتی هیں.

—چیخو

---

आजादी की लड़ाई में क़ौमी कलचर भी एक बहुत बड़ा हथियार होता है. लेकिन जिस तरह क़ौमी आज़ादी आंदोलन की बागडोर बुर्ज़वा और मंभले वर्ग के हाथ में थी. हमारे कलचर का नेतृत्व भी इसी तबक़े के हाथ में था. जिस तरह अंग्रेजों ने कहा था कि पूर्व के पास कुछ भी अपना गर्व के लायक़ नहीं है, उसी तरह हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के नेताओं ने उनके जवाब में कहना शुरू किया कि हमें पच्छिम से कुछ भी नहीं सीखना, हमारा अतीत (माज़ी) बहुत ही शानदार है, उससे हमें हर तरह का ज्ञान और शिक्षा मिल सकती है.

इसमें शक नहीं कि हमारा अतीत (माज़ी) शानदार है, लेकिन राजा राम मोहन राय और गोपाल कृश्न गोखले आदि नेताओं की इस रवायत और परम्परा को भुला दिया कि हमें अपना अंधविश्वास और रूढ़िवाद छोड़कर पच्छिम से नये विचार सीखने चाहियें क्योंकि जिस तरह पहले हिन्दुस्तानी कलचर यूनान, ईरान से नये विचार लेकर स्वस्थ और सुन्दर बना था उसी तरह अब पच्छिम से साइंटिफ़िक विचार लेकर ही आगे बढ़ सकता था.

हक़ीक़त यह थी कि हिन्दुस्तान में बीसवीं सदी के शुरू तक. जैसा कि लेनिन ने सन १९०८ में लिखा था, हिन्दुस्तान में कारख़ानादारी बढ़ने से मजदूरों की तादाद और चेतना इतनी बढ़ गई थी कि वह हिन्दुस्तान के राश्ट्रीय आंदोलन को वर्ग संघर्श के रूप में आगे बढ़ा सकते थे और उनके नेतृत्व में मजदूर और मेहनतकश जनता का जनवादी कलचर आगे बढ़ सकता था. लेकिन हमारे राश्ट्रीय आंदोलन के मंभले और बुर्ज़वा वर्ग के नेताओं ने मज़दूर वर्ग और जनवादी कलचर को नज़र अंदाज़ किया और एक ऐसे दर्शन और कलचर को प्रोत्साहन दिया जिसका मक़सद यह सिखाना था कि आम लोग भेड़ बकरियों की तरह होते हैं, वह अपने आप कुछ नहीं कर सकते, कुछ एक नेता या ख़ास आदमी हमारी क़ौम की क़िस्मत को पलट सकते हैं. ऐसे दर्शन से जाहिर है कि जनवादी नहीं, जनविरोधी कलचर जन्म लेता है. किसी और की बात जाने दीजिये. कांग्रेस में पंडित जवाहर लाल कलचर के सब से बड़े नेता रहे हैं, वह मार्क्स वादी और तरक़्क़ी पसंद कहलाते रहे हैं. वह अपनी पुस्तक 'विश्व इतिहास की झांकियां.' में लिखते हैं—"साधारन मर्द और औरतें आम तौर पर साहसी भावना के नहीं होते..... बड़े नेताओं में कुछ ऐसी बातें होती हैं, जिन से वह सारी जाति में जान पैदा कर देते हैं और उससे बड़े काम करवा लेते हैं." (सफ़ह छः)

यह अवतारवाद का दर्शन है, जिसका मतलब जनता को एक नेता की पूजा करना और उसमें अंधी श्रद्धा रखना सिखाना है. उसके कामों और आदर्शों को देखने और परखने



آزادی کی لڑائی میں قومی کلچر بھی ایک بہت بڑا ہتھیار ہوتا ھے. لیکن جس طرح قومی آزادی آندولن کی باگ ڈور برزوا اور منجھلے ورگ کے ھاتھ میں تھی' ھمارے کلچر کا نیترتو بھی اِسی طبقے کے ھاتھ میں تھا. جس طرح انگریزوں نے کہا تھا کہ پورو کے پاس کچھ بھی اپنا گرو کے لائق نہیں ھے' اُسی طرح ھمارے راشٹریہ آندولن کے نیتاؤں نے اُن کے جواب میں کہنا شروع کیا کہ ھمیں پچھم سے کچھ بھی نہیں سیکھنا ھے' ھمارا اتیت ( ماضی ) بہت ھی شاندار ھے' اسے سے ھمیں ھر طرح کا گیان اور شکشا مل سکتی ھے.

اِس میں شک نہیں کہ ھمارا اتیت ( ماضی ) شاندار ھے' لیکن راجا رام موھن رائے اور گوپال کرشن گوکھلے آدی نیتاؤں کی اِس روایت اور پرمپرا کو بھلا دیا کہ ھمیں اپنا اندھ وشواس اور رُوڑھی واد چھوڑ کر پچھم سے نئے وچار سیکھنے چاھئیں کیونکہ جس طرح پہلے ھندستانی کلچر یونان' ایران سے نئے وچار لیکر سوستھ اور سندر بنا تھا اُسی طرح اب پچھم سے سائنٹیفک وچار لیکر ھی آگے بڑھ سکتا تھا.

حقیقت یہ تھی کہ ھندستان میں بیسویں صدی کے شروع تک' جیسا کہ لینن نے سن 1908 میں لکھا تھا' ھندستان میں کارخانہ داری بڑھنے سے مزدوروں کی تعداد اور چیتنا اتنی بڑھ گئی تھی کہ وہ ھندستان کے راشٹریہ آندولن کو ورگ سنگھرش کے روپ میں آگے بڑھا سکتے تھے اور اُن کے نیترتو میں مزدور اور محنت کش جنتا کا جن وادی کلچر آگے بڑھ سکتا تھا. لیکن ھمارے راشٹریہ آندولن کے منجھلے اور برزوا ورگ کے نیتاؤں نے مزدور ورگ اور جن وادی کلچر کو نظرانداز کیا اور ایک ایسے درشن اور کلچر کو پروتساھن دیا جس کا مقصد یہ سکھانا تھا کہ عام لوگ بھیڑ بکریوں کی طرح ھوتے ھیں' وہ اپنے آپ کچھ نہیں کر سکتے' کچھ ایک نیتا یا خاص آدمی ھماری قوم کی قسمت کو پلٹ سکتے ھیں. ایسے درشن سے ظاھر ھے کہ جن وادی نہیں' جن ورودھی کلچر جنم لیتا ھے. کسی اور کی بات جانے دیجئے. کانگریس میں پنڈت جواھر لال کلچر کے سب سے بڑے نیتا رھے ھیں. وہ مارکس وادی اور ترقی پسند کہلاتے رھے ھیں. وہ اپنی پستک ' وشو اتہاس کی جھانکیاں ' میں لکھتے ھیں—" سادھارن مرد اور عورتیں عام طور پر ساھسی بھاونا کے نہیں ھوتے. . . بڑے نیتاؤں میں کچھ ایسی باتیں ھوتی ھیں' جن سے وہ ساری جاتی میں جان پیدا کر دیتے ھیں اور اُس سے بڑے کام کروا لیتے ھیں." ( صفحہ چھ )

یہ اوتار واد کا درشن ھے' جس کا مطلب جنتا کو ایک نیتا کی پوجا کرنا اور اُس میں اندھی شردھا رکھنا سکھانا ھے. اُس کے کاموں اور آدرشوں کو دیکھنے اور پرکھنے

मक़सद हिन्दुस्तान को तरक़्क़ी देना नहीं बल्कि उसका शोशन करना था.

यह ठीक है कि जिस देश का आर्थिक शोशन हो, उस देश में कलचर के स्रोत भी सूख जाते हैं. इसलिये यह सच है कि ब्रिटिश राज्य में हमारा देश कलचर के मामले में बहुत पीछे पड़ गया और साम्राज्य ने अपने गुलाम कलचर को हमारे ऊपर लादा. लेकिन इस बारे में इतना ही कहना काफ़ी नहीं होगा. अंग्रेज अपने देश में मंझले जमाने की सामंती सभ्यता से आगे जा चुके थे. वह अपने साथ एक नई विचारधारा और नई सभ्यता लाये थे जो काफ़ी साइंटिफ़िक थी. हिन्दुस्तान की सामंतशाही और पुरानी सभ्यता से उसकी सीधी टक्कर थी. इसलिये उन्होंने सामंतशाही के साथ हिन्दुस्तानी सभ्यता के पिछड़ेपन को भी दूर करना शुरू किया. हिन्दुस्तानी राश्ट्रीयता के पिता राजा राम मोहन राय ने भी अंधविश्वास और रूढ़िवाद के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द की, ब्रह्मसमाज की नींव डाली और पच्छिम से साइंटिफ़िक विचार सीखने की प्रेरना दी.

लेकिन अंग्रेजी हुक्मरानों का यह जोश ग़दर सन 1857 के बाद ख़त्म हो गया. इसके बाद उन्होंने हिन्दुस्तान में अपनी लूट खसोट की हुकूमत को पक्का करने के लिये हमारी जनता की लूट खसोट पर पलने वाले वर्गों से नाता जोड़ा. रियासतों में सामंतों को अपना गुलाम बना कर क़ायम रहने दिया, जमींदारी को पक्का किया और विक्टोरिया के स्नेह और सहानुभूति भरे फ़रमान के जरिये मज़हबी आजादी के नाम पर, अंधविश्वास, रूढ़िवाद और तास्सुब को मजबूत करने की छूट दी.

अब ब्रिटिश सरकार का पुरानी सामंतशाही से नहीं जनता से विरोध शुरू हुआ. उसने 'विद्रोही' जनता को हर तरह दबाना और कुचलना शुरू किया. लेकिन जनता को परास्त करने और ज़ेहनी तौर पर गुलाम बनाने के लिये हमारे देश की जनवादी कलचर को कुचलना और दबाना भी जरूरी था. इसलिये हिन्दुस्तान के इतिहास को, जो तमाम कलचर का स्रोत होता है ग़लत रंग से पेश किया गया. हालांकि हिन्दुस्तानी जनता जितनी मेहनत करती है, उतनी शायद किसी और देश की जनता को करनी पड़ती हो, लेकिन हमें बताया गया कि हिन्दुस्तान गर्म देश है, इसलिये उसके वासी सुस्त होते हैं, सदा हारने और गुलाम रहने के लिये पैदा हुए हैं. पूर्व के पास कुछ भी गर्व करने लायक़ नहीं है, अगर उसे तरक़्क़ी करनी है तो भूल जाये कि वह पूर्व है, उसे सब कुछ पच्छिम से सीखना होगा.

उन्नीसवीं सदी के अन्त और बीसवीं सदी के शुरू में जब क़ौमी आजादी का आन्दोलन आगे बढ़ा तो क़ौमी कलचर की तरफ़ भी लोगों का ध्यान गया, क्योंकि क़ौमी



مقصد ہندستان کو ترقی دینا نہیں بلکہ اس کا شوشن کرنا تھا ۔

یہ ٹھیک ہے کہ جس دیش کا آرتھک شوشن ہو، اس دیش میں کلچر کے سروت بھی سوکھ جاتے ہیں ۔ اِس لئے یہ سچ ہے کہ برٹش راج میں ہمارا دیش کلچر کے معاملے میں بہت پیچھے پڑ گیا اور سامراج نے اپنے غلام کلچر کو ہمارے اوپر لادا ۔ لیکن اس بارے میں اتنا ہی کہنا کافی نہیں ہوگا ۔ انگریز اپنے دیش میں منجھلے زمانے کی سامنتی سبھیتا سے آگے جا چکے تھے ۔ وہ اپنے ساتھ ایک نئی وچار دھارا اور نئی سبھیتا لائے تھے جو کافی سائنٹیفک تھی ۔ ہندستان کی سامنت شاہی اور پرانی سبھیتا سے اُن کی سیدھی ٹکر تھی ۔ اِس لئے انھوں نے سامنت شاہی کے ساتھ ہندستانی سبھیتا کے پچھڑے پن کو بھی دور کرنا شروع کیا ۔ ہندستانی راشٹریتا کے پتا راجا رام موہن رائے نے بھی اندھ وشواس اور روڑھی واد کے خلاف آواز بلند کی، برہم سماج کی نیو ڈالی اور پچھم سے سائنٹفک وچار سیکھنے کی پریرنا دی ۔

لیکن انگریزی حکمرانوں کا یہ جوش غدر سن 1857 کے بعد ختم ہو گیا ۔ اس کے بعد انھوں نے ہندستان میں اپنی لوٹ کھسوٹ کی حکومت کو پکا کرنے کے لئے ہماری جنتا کی لوٹ کھسوٹ پر پلنے والے ورگوں سے ناتا جوڑا ۔ ریاستوں میں سامنتوں کو اپنا غلام بنا کر قائم رہنے دیا، زمینداری کو پکا کیا اور وکٹوریا کے اسنیہہ اور سہانبھوتی بھرے فرمان کے ذریعہ مذہبی آزادی کے نام پر، اندھ وشواس، روڑھی واد اور تعصب کو مضبوط کرنے کی چھوٹ دی ۔

اب برٹش سرکار کا پرانی سامنت شاہی سے نہیں، جنتا سے وررودھ شروع ہوا ۔ اُس نے 'ودروہی' جنتا کو ہر طرح دبانا اور کچلنا شروع کیا ۔ لیکن جنتا کو پراست کرنے اور ذہنی طور پر غلام بنانے کے لئے ہمارے دیش کے جن وادی کلچر کو کچلنا اور دبانا بھی ضروری تھا ۔ اِس لئے ہندستان کے اتہاس کو، جو تمام کلچر کا سروت ہوتا ہے غلط رنگ سے پیش کیا گیا ۔ حالانکہ ہندستانی جنتا جتنی محنت کرتی ہے، اتنی شاید کسی اور دیش کی جنتا کو کرنی پڑتی ہو، لیکن ہمیں بتایا گیا کہ ہندستان گرم دیش ہے، اس لئے اُس کے واسی سست ہوتے ہیں، سدا ہارنے اور غلام رہنے کے لئے پیدا ہوئے ہیں ۔ پورب کے پاس کچھ بھی گرو کرنے لائق نہیں ہے، اگر اُسے ترقی کرنی ہے تو بھول جائے کہ وہ پورب ہے، اُسے سب کچھ پچھم سے سیکھنا ہوگا ۔

اُنیسویں صدی کے انت اور بیسویں صدی کے شروع میں جب قومی آزادی کا آندولن آگے بڑھا تو قومی کلچر کی طرف بھی لوگوں کا دھیان گیا، کیونکہ قومی

आम जनता पर भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा और हिन्दू मुसलमानों को मज़हबी बराबरी मिली. अकबर ने ख़ूरेज़ियों और मुसीबतों में दिन काटे थे और अपनी आंखों से सल्तनतों के उलट फेर देखे थे. ज़िन्दगी के इस तजुर्बे से उसने समझ लिया था कि जब तक हिन्दू मुसलमान एक दूसरे को ग़ैर समझ कर लड़ते रहेंगे, हिन्दुस्तान में कोई भी राज अधिक दिनों क़ायम नहीं रह सकता. चुनांचे उसने राजपूतों की तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाया और हिन्दू मुसलमानों में मेल क़ायम किया. इतना ही नहीं, हिन्दुस्तानी राजनीति की परम्पारा को लेकर नया राजकाजी ढांचा बनाया जिसके बारे में जादूनाथ सरकार ने अपनी तारीख़ में लिखा है कि वह ईरानी राजकाजी ढांचे का हिन्दुस्तानी रूप था. देश की प्रम्परा के मुताबिक़ गांव की ख़ुदमुख़तारी और स्वावलम्बन बहाल की गई.

अमन क़ायम होने से काम धंधे और व्यापार बढ़ा. लोगों में ख़ुशहाली आई. साहित्य और कला की उन्नति हुई. जब आपस का मेल जोल और प्रेम बढ़ता है और जब आदमी अंधविशास और तास्सुब को छोड़ कर स्वतंत्र रूप से सोचने लगता है और जब उसका अपनी निर्मान शक्ति में विश्वास बढ़ता है, तो कलचर और सभ्यता का विकास होता है. मंझले ज़माने में हिन्दुस्तानी साहित्य, अदब और कला ने बेहद तरक़्क़ी की. ताजमहल मंझले ज़माने के हमारे कलचर का शाहकार है.

समंती ढांचे के अन्दर जितनी तरक़्क़ी हो सकती थी उतनी हिन्दुस्तान शाजहां के ज़माने तक कर चुका था. अब इस ढांचे के अन्दर रह कर आगे बढ़ना मुमकिन नहीं था. इसलिये यह सामंती व्यवस्था औरंगज़ेब के ज़माने में टूटनी शुरू हो गई. पंजाब, महाराष्ट्र और भरतपुर आदि में नई शक्तियां उभरने लगीं. दरअसल सामंतवाद ने जिन जातियों को दबाकर रखा था, वह अब उभर रही थीं. सामंती व्यवस्था की तरक़्क़ी में जो व्यापारी पूंजी लगी थी, वह विकास चाहती थी. इसलिये नई शक्तियों के पीछे व्यापारियों का हाथ था. जिसका मतलब है कि हिन्दुस्तान सामंती व्यवस्था से पूंजीवादी व्यवस्था की तरफ़ बढ़ रहा था.

जब कोई देश एक सामाजिक व्यवस्था से दूसरी सामाजिक व्यवस्था की तरफ़ जाने लगता है तो उसको वही कष्ट सहना पड़ता है, जो एक मां को बच्चा जनते समय सहना पड़ता है. हमारे देश की अट्ठारहवीं सदी की ख़ाना जंगी का कारन यह था कि पुराना समाज नये समाज को जन्म दे रहा था. उस समय विदेशी व्यापारियों ने दख़लंदाज़ी कर के हमारे देश के ऐतिहासिक विकास को रोक दिया और इस ख़ानाजंगी से फ़ायदा उठा कर अंग्रेज़ों ने एक ऐसा ग़ैरमुल्की राज क़ायम कर लिया जिसका



عام جنتا پر بھی بہت اچھا پربھاؤ پڑا اور ہندو مسلمانوں کو مذہبی برابری ملی ۔ اکبر نے خوں‌ریزیوں اور مصیبتوں میں دن کاٹے تھے اور اپنی آنکھوں سے سلطنتوں کے اُلٹ پھیر دیکھے تھے ۔ زندگی کے اِس تجربے سے اس نے سمجھ لیا تھا کہ جب تک ہندو مسلمان ایک دوسرے کو غیر سمجھکر لڑتے رہینگے' ہندستان میں کوئی بھی راج ادھک دنوں قائم نہیں رہ سکتا. چنانچہ اُس نے راجپوتوں کی طرف دوستی کا ہاتھ بڑھایا اور ہندو مسلمانوں میں میل قائم کیا. اُتنا ہی نہیں' ہندستانی راج نیتی کی پرمپرا کو لیکر نیا راجکاجی ڈھانچہ بنایا جس کے بارے میں جادو ناتھ سرکار نے اپنی تاریخ میں لکھا ہے کہ وہ ایرانی راجکاجی ڈھانچے کا ہندستانی روپ تھا ۔ دیش کی پرمپرا کے مطابق گاؤں کی خود مختاری اور سواولمبن بحال کی گئی ۔

امن قائم ہونے سے کام دھندھے اور ویاپار بڑھا ۔ لوگوں میں خوشحالی آئی ۔ ساہتیہ اور کلا کی اُنتی ہوئی ۔ جب آپس کا میل جول اور پریم بڑھتا ہے اور جب آدمی اندھ وشواس اور تعصب کو چھوڑ کر سوتنتر روپ سے سوچنے لگتا ہے اور جب اُسکا اپنی نرمان شکتی میں وشواس بڑھتا ہے' تو کلچر اور سبھیتا کا وکاس ہوتا ہے ۔ منجھلے زمانے میں ہندستانی ساہتیہ' ادب اور کلا نے بےحد ترقی کی ۔ تاج محل منجھلے زمانے کے ہماری کلچر کا شاہکار ہے ۔

سامنتی ڈھانچے کے اندر جتنی ترقی ہوسکتی تھی اُتنی ہندستان شاہجہاں کے زمانے تک کرچکا تھا ۔ اب اِس ڈھانچے کے اندر رہ کر آگے بڑھنا ممکن نہیں تھا ۔ اس لئے یہ سامنتی ویوستھا اورنگزیب کے زمانے میں ٹوٹنی شروع ہوگئی. پنجاب' مہاراشٹر اور بھرتپور آدی میں نئی شکتیاں اُبھرنے لگیں ۔ دراصل سامنت واد نے جن جاتیوں کو دباکر رکھا تھا' وہ اب اُبھر رہی تھیں ۔ سامنتی ویوستھا کی ترقی میں جو ویاپاری پونجی لگی تھی وہ وکاس چاہتی تھی ۔ اِس لئے نئی شکتیوں کے پیچھے ویاپاریوں کا ہاتھ تھا ۔ جس کا مطلب ہے کہ ہندستان سامنتی ویوستھا سے پونجی‌وادی ویوستھا کی طرف بڑھ رہا تھا ۔

جب کوئی دیش ایک سماجک ویوستھا سے دوسری سماجک ویوستھا کی طرف جانے لگتا ہے تو اُس کو وہی کشٹ سہنا پڑتا ہے' جو ایک ماں کو بچہ جنتے سمے سہنا پڑتا ہے ۔ ہمارے دیش کی اٹھارھویں صدی کی خانہ جنگی کا کارن یہ تھا کہ پرانا سماج نئے سماج کو جنم دے رہا تھا ۔ اُس سمے ودیشی ویاپاریوں نے دخل اندازی کر کے ہمارے دیش کے ایتہاسک وکاس کو روک دیا اور اِس خانہ جنگی سے فائدہ اُٹھا کر انگریزوں نے ایک ایسا غیرملکی راج قائم کر لیا جس کا

माहौल और परम्परा को जरूर अपनाता है. फिर मुसलमान हमलावरों ने हिन्दू औरतों से शादियां कीं और बहुत से हिन्दुओं ने इस्लाम क़बूल किया. इन औरतों और मर्दों के ज़ेहन में हिन्दुस्तानी दर्शन और परम्परा खूब बस चुकी थी. इसलिये उन्होंने इस्लाम को भी नया रंग दिया जो अरब और ईरान के इस्लाम से मुख़्तलिफ़ था. उसे हिन्दुस्तानी इस्लाम कहा जाय तो ग़लत नहीं होगा.

हिन्दुस्तान में शीया और सुन्नी दोनों आये और हिन्दुस्तान में जो नये मुसलमान बने उनमें से ब्राह्मन और ऊंची जातियों के लोग तो सैयद और शेख़ कहलाये और दूसरे डोम, मीरासी छोटी जातों में गिने जाने लगे. जब मज़हबी जोश ख़त्म हुआ तो सुन्नी और शीयों में ख़ूब लड़ाइयां होने लगीं. सुन्नी और शीया राजे एक दूसरे को हराने लगे. लोगों ने अपनी आंखों देखा कि लड़ाइयां मज़हब के नाम पर गद्दियों के लिये हो रही हैं और हविस को मज़हब का नाम देकर नाहक़ ख़ून बहाया जा रहा है.

मुसलमानों के हमलों से जहां बहुत मत मतांतर टूटे थे वहां जात पात, धर्म कर्म और पूजा पाठ के बंधन सख़्त भी हो गये थे. क्योंकि जिन पंडितों और हिन्दुओं ने इस्लाम क़बूल करने से इनकार किया था उन्होंने इस्लामी विचारधारा से अपने आप को और अपने हममज़हबों को बचाये रखने के लिये विचार और अंधविश्वास की दीवारों को और मज़बूत बना दिया था.

चार पांच सदी के ख़ून ख़राबे, बदअमनी, तास्सुब और अंधविश्वास से हिन्दू मुसलमान दोनों ही तंग आ चुके थे और उन्होंने हिन्दू राजाओं को हिन्दुओं के और मुसलमानों को मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ते देख कर लड़ाई को अकारन समझ लिया और हिन्दू मुस्लिम जनता में आपस का मेलजोल बढ़ने लगा. जिससे भक्ति आन्दोलन ने जन्म लिया और इस आन्दोलन को संत, कवियों और सूफ़ी शायरों और दुरवेशों का सहयोग प्राप्त था. कबीर, नानक, तुलसीदास, मुईनुद्दीन चिश्ती, बाबा फ़रीद, निज़ामुद्दीन औलिया, रहमान, रसखान, सूरदास, तुक्काराम, वारिसशाह और बुल्लेशाह ने भक्ति और तसव्वुफ़ के दरिया बहाये. आदमी और आदमी में प्रेम बढ़ाया. इस आन्दोलन ने लोगों के पुराने अक़ीदों को बदल दिया और इन साधु संतों ने अगली तीन चार सदी तक कलचर सभ्यता और समाज पर गहरा असर डाला. उन्होंने वेद, क़ुरान, मुल्ला और ब्राह्मन को चैलेंज किया और आदमी को जात पात और मज़हबी तास्सुब के दलदल से निकाल कर सीधी और सच्ची राह दिखाई.

अकबर ने इसी भक्ति आन्दोलन के असर से दीन-इलाही नाम से अपना दरबारी मज़हब चलाया. जिसका



ماحول اور پرمپرا کو ضرور اپناتا ھے. پھر مسلمان حملہ آوروں نے ھندو عورتوں سے شادیاں کیں اور بہت سے ھندؤں نے اِسلام قبول کیا. اِن عورتوں اور مردوں کے ذھن میں ھندستانی درشن اور پرمپرا خوب بس چکی تھی. اس لئے اُنھوں نے اِسلام کو بھی نیا رنگ دیا جو عرب اور ایران کے اِسلام سے مختلف تھا. اُسے ھندستانی اِسلام کہا جائے تو غلط نہیں ھوگا.

ھندستان میں شیعہ اور سنی دونوں آئے اور ھندستان میں جو نئے مسلمان بنے اُن میں سے براھمن اور اُونچی جاتیوں کے لوگ تو سید اور شیخ کہلائے اور دوسرے ڈوم، میراثی چھوٹی جاتوں میں گنے جانے لگے. جب مذھبی جوش ختم ھوا تو سنی اور شیعوں میں خوب لڑائیاں ھونے لگیں. سنی اور شیعہ راجے ایک دوسرے کو ھرانے لگے. لوگوں نے اپنی آنکھوں دیکھا کہ لڑائیاں مذھب کے نام پر گدیوں کے لئے ھو رھی ھیں اور ھوس کو مذھب کا نام دیکر ناحق خون بہایا جا رھا ھے.

مسلمانوں کے حملوں سے جہاں بہت سے مت متانتر ٹوٹے تھے وھاں جات پات، دھرم کرم اور پوجا پاٹھ کے بندھن سخت بھی ھوگئے تھے. کیونکہ جن پنڈتوں اور ھندؤں نے اِسلام قبول کرنے سے انکار کیا تھا انھوں نے اِسلامی وچاردھارا سے اپنے آپ کو اور اپنے ھم مذھبوں کو بچائے رکھنے کے لئے وچار اور اندھ وشواس کی دیواروں کو اور مضبوط بنا دیا تھا.

چار پانچ صدی کے خون خرابے، بدامنی، تعصب اور اندھ وشواس سے ھندو مسلمان دونوں ھی تنگ آچکے تھے اور انھوں نے ھندو راجاؤں کو ھندؤں کے اور مسلمانوں کو مسلمانوں کے خلاف لڑتے دیکھکر لڑائی کو اکارن سمجھ لیا اور ھندو مسلم جنتا میں آپس کا میل جول بڑھنے لگا. جس سے بھکتی آندولن نے جنم لیا اور اِس آندولن کو سنت، او کویوں اور صوفی شاعروں اور درویشوں کا سہیوگ پراپت تھا. کبیر، نانک، تلسی داس، معین الدین چشتی، بابا فرید، نظام الدین اولیا، رحمان، رس کھان، سورداس، تکارام، وارث شاہ اور بلے شاہ نے بھکتی اور تصوف کے دریا بہائے. آدمی اور آدمی میں پریم بڑھایا. اِس آندولن نے لوگوں کے پرانے عقیدوں کو بدل دیا اور اِن سادھو سنتوں نے اگلی تین چار صدی تک کلچر، سبھیتا اور سماج پر گہرا اثر ڈالا. اُنھوں نے وید، قرآن، ملا اور براھمن کو چیلینج کیا اور آدمی کو جات پات اور مذھبی تعصب کے دلدل سے نکالکر سیدھی اور سچی راہ دکھائی.

اکبر نے اِسی بھکتی آندولن کے اثر سے دین الٰہی نام سے اپنا درباری مذھب چلایا. جس کا

और अपने साथ गुप्त जमाने का वैश्णव मत ले गये जो महाभारत की मदद से जनता में फैलने लगा. मुसलमान बहुत से मतमतांतरों और देवताओं की जगह एक ईश्वर या अल्लाह को मानते थे और उनका मजहब उस समय के हिन्दु धर्म या शंकराचार्य के अद्वैतवाद के मुक़ाबिले में बहुत सादा और बाअमल था. हिन्दुस्तान के लोगों पर इसका असर पड़ने लगा और ब्राह्मनों ने अपने दर्शनों को भी नये हालात के अनुसार ढालना शुरू किया. रामानुज ने शंकराचार्य की शिक्षा के मुक़ाबिले में अपना मत चलाया जिसकी परम्परा हिन्दुस्तानी थी; लेकिन वह इस्लाम की तरह सादा था और लोगों की समझ में आ सकता था. हावेल लिखता है—"इस्लाम की तलवार भगवान के हाथ में जर्राही का चाक़ू था, जिसके जरिये उस ज्ञान के वृक्ष से, जो उसने भारतवर्श में लगाया था, सड़ी हुई और बेकार शाखों को काटा."

मुसलमानों से पहले भी शक, सुंग, कुशान और हुन आदि हमलावर बाहर से आये, लेकिन उन्होंने हिन्दुस्तानी कलचर और दर्शन को अपनाया और हिन्दुस्तानी बन कर रहने लगे. लेकिन मुसलमानों में ग़ैरमामूली जोश था, जीवन शक्ति थी, हिन्दू धर्म की पेचीदगियों को ख़ुद हिन्दुस्तानी जनता नहीं समझती थी, हमलावर उसे क्या स्वीकार करते. राजनीतिक जीतों के साथ उन्होंने कलचर के साधनों पर भी क़ब्ज़ा कर लिया और ख़ुद हिन्दू बनने के बजाय, हिन्दुस्तानियों को मुसलमान बनाते रहे. जब अपने ही गोरखधंधे में उलझ जाने से हिन्दू धर्म और हिन्दुस्तानी कलचर का विकास रुक गया था इस्लाम फलफूल रहा था.

इस्लाम की नई शक्ति के असर से हिन्दू धर्म और हिन्दू कलचर में भी हरकत पैदा हुई. सिर्फ़ इतना ही नहीं कि मुसलमानों की आमद के कारन पिछड़े मुए दक्खिन का विकास हुआ बल्कि महमूद ग़ज़नवी और मुहम्मद ग़ौरी के हमलों के बाद जब यहां हिन्दुस्तानी मुसलमान राजाओं की राजधानियां बनीं तो कलाकारों को जो अब मुसलमान बन चुके थे अपनी कला को नये रूप में पेश करने का मौक़ा मिला. इन मुसलमान राजाओं के दरबारों में हिन्दु कलचर खूब फला फूला. उन की मस्जिदों, महलों, बाग़ों और हमामों में हिन्दुस्तानी शिल्पी कला का रंग साफ़ उजागर है. महमूद भी क़न्नौज और मथुरा से हिन्दू कारीगरों को पकड़ कर ले गया था. उसने ग़ज़नी में जो मस्जिद बनवाई, उसमें भी दसवीं सदी के मंदिरों का रंग झलकता है. लेकिन इन सब इमारतों में इस्लाम की सादगी और हमलावरों की जुरअत का निरालापन एक ख़ास बात है. उनमें हुस्न के साथ सादगी और वक़ार पैदा हो गया है.

जहां हिन्दू धर्म पर इस्लाम का असर पड़ा वहां इस्लाम भी हिन्दू धर्म से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था. कोई भी धर्म या दर्शन जब दूसरे देश में जाता है तो उसके



اور اپنے ساتھ گپتا زمانے کا ویشنو مت لے گئے جو مہابھارت کی مدد سے جنتا میں پھیلنے لگا۔ مسلمان بہت سے مت متانتروں اور دیوتاؤں کی جگہ ایک ایشور یا اللہ کو مانتے تھے اور اُنکا مذہب اُس سمے کے ہندو دھرم یا شنکراچاریہ کے ادویتواد کے مقابلے میں بہت سادہ اور باعمل تھا۔ ہندستان کے لوگوں پر اِس کا اثر پڑنے لگا اور براہمنوں نے اپنے درشنوں کو بھی نئے حالات کے انوسار ڈھالنا شروع کیا۔ رامانج نے شنکراچاریہ کی شکچھا کے مقابلے میں اپنا مت چلایا جسکی پرمپرا ہندستانی تھی؛ لیکن وہ اِسلام کی طرح سادہ تھا اور لوگوں کی سمجھ میں آسکتا تھا۔ ہاویل لکھتا ھے—"اِسلام کی تلوار بھگوان کے ہاتھ میں جراحی کا چاقو تھا' جس کے ذریعہ اُس گیان کے برکش سے' جو اُس نے بھارت ورش میں لگایا تھا' سڑی ہوئی اور بیکار شاخوں کو کاٹا۔"

مسلمانوں سے پہلے بھی شک' سنگ' کشان اور ھن آدی حملہ آور باہر سے آئے' لیکن اُنھوں نے ہندستانی کلچر اور درشن کو اپنایا اور ہندستانی بنکر رہنے لگے۔ لیکن مسلمانوں میں غیرمعمولی جوش تھا' جیون شکتی تھی' ہندو دھرم کی پیچیدگیوں کو خود ہندستانی جنتا نہیں سمجھتی تھی' حملہ آور اُسے کیا سویکار کرتے۔ راجنیتک جیتوں کے ساتھ اُنھوں نے کلچر کے سادھنوں پر بھی قبضہ کرلیا اور خود ہندو بننے کے بجائے' ہندستانیوں کو مسلمان بناتے رہے۔ جب اپنے ہی گورکھ دھندھے میں اُلجھ جانے سے ہندو دھرم اور ہندستانی کلچر کا وکاس رک گیا تھا اِسلام پھل پھول رہا تھا۔

اِسلام کی نئی شکتی کے اثر سے ہندو دھرم اور ہندو کلچر میں بھی حرکت پیدا ہوئی۔ صرف اتنا ہی نہیں کہ مسلمانوں کی آمد کے کارن پچھڑے ہوئے دکھن کا وکاس ہوا بلکہ محمود غزنوی اور محمد غوری کے حملوں کے بعد جب یہاں ہندستانی مسلمان راجاؤں کی راجدھانیاں بنیں تو کلاکاروں کو جو اب مسلمان بن چکے تھے اپنی کلا کو نئے روپ میں پیش کرنے کا موقع ملا۔ اِن مسلمان راجاؤں کے درباروں میں ہندو کلچر خوب پھلا پھولا۔ اُن کی مسجدوں' محلوں' باغوں اور حماموں میں ہندستانی شلپی کلا کا رنگ صاف اُجاگر ھے۔ محمود بھی قنوج اور متھرا سے ہندو کاریگروں کو پکڑ کر لے گیا تھا۔ اس نے غزنی میں جو مسجد بنوائی' اس میں بھی دسویں صدی کے مندروں کا رنگ جھلکتا ھے۔ لیکن اِن سب عمارتوں میں اِسلام کی سادگی اور حملہ آوروں کی جرات کا نرالاپن ایک خاص بات ھے۔ اُن میں حسن کے ساتھ سادگی اور وقار پیدا ہوگیا ھے۔

جہاں ہندو دھرم پر اِسلام کا اثر پڑا وہاں اِسلام بھی ہندو دھرم سے پربھاوت ہوئے بنا نہیں رہ سکتا تھا۔ کوئی بھی دھرم یا درشن جب دوسرے دیش میں جاتا ھے تو اُس کے

कला, साहित्य, दर्शन और साइंस हर तरह के ज्ञान का स्रोत ( चश्मा ) जनता और उसका अमल है. पैदावार के साधनों की तरक़्क़ी रुक जाने से जनता और सरकार का ताल्लुक़ टूट जाता है, तब यह स्रोत बंद हो जाता है और कलचर पिछड़ जाता है. कलचर को फिर आगे बढ़ाने के लिये पैदावार के साधनों को आगे बढ़ाना और जनता और हकूमत में सम्बन्ध जोड़ना जरूरी होता है. वरना काम नहीं चल सकता.

इस समय हिन्दुस्तानी कलचर और सभ्यता इतनी बढ़ी हुई थी कि बाहर से सुंग, कुश, हुन कोई भी जाति आई, उसने इसकी महानता को स्वीकार किया और हमारे समाज ने उन्हें अपने अन्दर समो लिया.

लेकिन बाहर के हमले बढ़ते गये और आवा जाई के काफ़ी साधन न होने के कारन बड़े राज्य बन बन कर टूटते रहे और देश फिर छोटी रियासतों में बंट गया. फिर आदमी दुनिया में अपनी जिम्मेदारी को भूल कर दूसरी दुनिया की बातें करने लगा. फिर किताबों और नियमों को आदमी से ज्यादा अहमियत मिलने लगी. जात पात के झगड़े बढ़ गये. शंकराचार्य ने बुद्ध मत के मक़ाबिले में जो नया मत चलाया उसमें भी माद्दी दुनिया को नज़र अंदाज़ किया गया. बद्ध मत संघों का मत था. लोग गृहस्थ छोड़कर संघों में जा रहे थे जिससे ख़राबियां पैदा हो रही थीं. लेकिन हिन्दु मत में गृस्थ धर्म को भी महानता प्राप्त थी. जो आदमी गृहस्थ का पालन अच्छी तरह नहीं करता था, हिन्दु धर्म उसे अच्छा नहीं समझता था. शंकराचार्य ने बौद्ध भिक्षुओं की तरह गृहस्थ छोड़कर साधु और महन्त बनने की रीति चलाई और इन साधुओं और महन्तों के लिये बुद्ध मत के संघों की तरह मठ खोले. इनमें भजन से मुक्ति चाहने वाले बेअमल आदमी भर गये. हमारे समाज की ख़राबियां दूर होने की जगह बढ़ती ही गई. शंकराचार्य को दूसरा बुद्ध ठीक ही कहा जाता है. दोनों सुधारवादी थे और दोनों ने ख़्वाहिशों को छोड़ कर मुक्ति का मार्ग बताया. बाअमल दुनिया को संघों और मठों में तब्दील किया.

जब दर्शन का अमल से सम्बन्ध नहीं रहता, तो उसका काम बाल की खाल उतारना हो जाता है. विचारधारा आगे बढ़ने के बजाय गोलचक्र में या भूल भलैयों में भटकने लगती है, इससे कलचर का विकास भी रुक जाता है. अब हिन्दू दर्शन अध्यात्मकवाद या रूहानियत की गुत्थियां सुलझा रहा था और उसमें मत मतांतर की कितनी ही बेकार की शाख़ें फूट आई थीं. आम आदमी भ्रम और अचरज में पड़ गया था.

इस समय हिन्दुस्तान पर मुसलमानों का हमला हुआ और बेहरकत जिन्दगी में उथल पुथल पैदा हुई. बहुत से पंडित हमले की ज़द से बचने के लिये दक्षिन में चले गये



کلا، ساھتیہ، درشن اور سائنس ھر طرح کے گیان کا سروت ( چشمہ ) جنتا اور اُس کا عمل ھے . پیداوار کے سادھنوں کی ترقی رک جانے سے جنتا اور سرکار کا تعلق ٹوٹ جاتا ھے، تب یہ سروت بند ھوجاتا ھے اور کلچر پچھڑ جاتا ھے . کلچر کو پھر آگے بڑھانے کے لئے پیداوار کے سادھنوں کو آگے بڑھانا اور جنتا اور حکومت میں سمبندھ جوڑنا ضروری ھوتا ھے، ورنہ کام نہیں چل سکتا .

اُس سمے ھندستانی کلچر اور سبھیتا اتنی بڑھی ھوئی تھی کہ باھر سے سنگ، کش، ھن کوئی بھی جاتی آئی، اُس نے اِس کی مہانتا کو سوئیکار کیا اور ھمارے سماج نے اُنھیں اپنے اندر سمولیا .

لیکن باھر کے حملے بڑھتے گئے اور آواجائی کے کافی سادھن نہ ھونے کے کارن بڑے راج بن بن کر ٹوٹتے رھے اور دیش پھر چھوٹی ریاستوں میں بنٹ گیا . پھر آدمی دنیا میں اپنی ذمہ‌داری کو بھول کر دوسری دنیا کی باتیں کرنے لگا . پھر کتابوں اور نیموں کو آدمی سے زیادہ اھمیت ملنے لگی . جات پات کے جھگڑے بڑھ گئے . شنکراچاریہ نے بدھ مت کے مقابلے میں جو نیا مت چلایا اُس میں بھی مادی دنیا کو نظر انداز کیا گیا . بدھ مت سنگھوں کا مت تھا . لوگ گرھستھ چھوڑکر سنگھوں میں جا رھے تھے جس سے خرابیاں پیدا ھو رھی تھیں . لیکن ھندو مت میں گرھستھ دھرم کو بھی مہانتا پراپت تھی . جو آدمی گرھستھ کا پالن اچھی طرح نہیں کرتا تھا، ھندو دھرم اُسے اچھا نہیں سمجھتا تھا . شنکراچاریہ نے بودھ بھکشوؤں کی طرح گرھستھ چھوڑ کر سادھو اور مہنت بننے کی ریتی چلائی اور اِن سادھوؤں اور مہنتوں کے لئے بدھ مت کے سنگھوں کی طرح مٹھ کھولے . انمیں بھجن سے مکتی چاھنے والے بےعمل آدمی بھر گئے . ھمارے سماج کی خرابیاں دور ھونے کی جگہ بڑھتی ھی گئیں . شنکراچاریہ کو دوسرا بدھ ٹھیک ھی کہا جاتا ھے . دونوں سدھاروادی تھے اور دونوں نے خواھشوں کو چھوڑکر مکتی کا مارگ بتایا . با عمل دنیا کو سنگھوں اور مٹھوں میں تبدیل کیا .

جب درشن کا عمل سے سمبندھ نہیں رھتا، تو اُس کا کام بال کی کھال اُتارنا ھو جاتا ھے . وچاردھارا آگے بڑھنے کے بجائے گول چکر میں یا بھول بھلیوں میں بھٹکنے لگتی ھے، اِس سے کلچر کا وکاس بھی رک جاتا ھے . اب ھندو درشن ادھیاتمک‌واد یا روحانیت کی گتھیاں سلجھا رھا تھا اور اُس میں مت متانتر کی کتنی ھی بےکار کی شاخیں پھوٹ آئی تھیں . عام آدمی بھرم اور اچرج میں پڑگیا تھا .

اِس سمے ھندستان پر مسلمانوں کا حملہ ھوا اور بےحرکت زندگی میں اُتھل پتھل پیدا ھوئی . بہت سے پنڈت حملے کی زد سے بچنے کے لئے دکھن میں چلے گئے

मिला दिया गया है. कृश्न अर्जुन से कहते हैं कि क्षत्रि का धर्म लड़ना है. अपने उस धर्म का पालन करो. मरने मारने की चिन्ता में न पड़ो. न कोई किसी को मारता है और न कोई मरता है. आत्मा अमर है, वह मर नहीं सकती. जीत जाओगे तो इस दुनिया पर राज करोगे और मर जाओगे तो स्वर्ग में राज करोगे.

ख्वाहिशों के त्याग की जगह अमल का पैग़ाम फिर गूँज उठा. 'पंचतंत्र' में लिखा है—"लक्ष्मी तो सिंह के समान बाअमल लोगों को हासिल होती है. 'भाग्य देता है, यह कमज़ोर लोग कहा करते हैं. इसलिये भाग्य को छोड़ कर अपनी शक्ति से पुरुशार्थ करो. अगर यत्न करने से भी कामयाबी न हो, तो देखना चाहिये कि यत्न में क्या ख़राबी है." फिर लिखा है—"पिछले जन्म में किये हुए काम को ही तक़दीर कहते हैं. इसलिये आदमी को आलस्य छोड़ कर मेहनत करनी चाहिये." इस पुस्तक में यह भी कहा गया है कि जिस जाति के अमल और वचन में अंतर आ जाता है, वह नाश को प्राप्त होती है.

अमल के कारन ही फिर एक मज़बूत और बड़ा राज्य क़ायम करने की ज़रूरत थी. तभी खेती बाड़ी, व्यापार और कला आगे बढ़ सकती थी, तभी आपस के झगड़े ख़त्म हो सकते थे, तभी बाहर के हमलों से देश की रक्षा हो सकती थी. उस समय उथल पुथल का ज़माना था. रोम का महान राज्य टूट रहा था. सारे देश के एक मज़बूत राज्य की ज़रूरत को महसूस करते हुए ही महाभारत में लिखा है कि तुम्हारा स्वर्ग तुम्हारी राजनीति है. और विनसिंट' स्मिथ आदि यूरोपीयन विद्वानों ने भी लिखा है कि महाभारत का बुनियादी नुक्ता एक मरकज़ी हकूमत क़ायम करना है. इसीलिये कुरुक्षेत्र का महाभारत युद्ध हुआ था.

इस विचारधारा को गुप्त राज्य में अमली रूप मिला और इसी बात को लेकर महाकवि कालीदास ने 'रघुवंश' महाकाव्य रचा. इसमें रामचन्द्र के पूर्वज रघू को लेकर एक महान, पराक्रमी और इन्साफ़ पसन्द राजा के गुन बयान किये गये हैं. दर असल यह सामंतवाद की तरक़्क़ी का ज़माना था. सामंतवाद की तरक़्क़ी से ज़िन्दगी आगे बढ़ रही थी. राजा को जनता का सहयोग प्राप्त था. वह उनका नेता था और अपने अमल से सारी जनता को हरकत में लाता था. अमल से उनका लोक और परलोक दोनों संवरते थे. यहां माद्दी और आत्मिक दर्शनों में एक प्रकार का मेल और समझौता हो गया था. इसीलिये इस ज़माने में महाभारत और गीता का प्रचार ख़ास तौर पर हुआ. इसीलिये कलचर की तरक़्क़ी हो सकी. कालिदास जैसा महाकवि पैदा हुआ. कुमारिल भट्ट ने ज़मीन के घूमने, चन्द्र ग्रहन और सूर्य ग्रहन के नियम मालूम किये.



ملا دیا گیا هے. کرشن ارجن سے کہتے هیں که چھتری کا دهرم لڑنا هے. اپنے اِس دهرم کا پالن کرو. مرنے مارنے کی چنتا میں نه پڑو. نه کوئی کسی کو مارتا هے اور نه کوئی مرتا هے. آتما امر هے، وہ مر نہیں سکتی. جیت جاؤگے تو اِس دنیا پر راج کروگے اور مرجاؤگے تو سورگ میں راج کروگے.

خواهشوں کے تیاگ کی جگه عمل کا پیغام پھر گونج اُٹھا. 'پنچ تنتر' میں لکھا هے—"لکشمی تو سنگھ کے سمان با عمل لوگوں کو حاصل هوتی هے. 'بھاگیه دیتا هے' یه کمزور لوگ کہا کرتے هیں. اس لئے بھاگیه کو چھوڑکر اپنی شکتی سے پروشارتھ کرو. اگر یتن کرنے سے بھی کامیابی نه هو' تو دیکھنا چاهئے که یتن میں کیا خرابی هے." پھر لکھا هے—"پچھلے جنم میں کئے هوئے کام کو هی تقدیر کہتے هیں. اس لئے آدمی کو آلسیه چھوڑکر محنت کرنی چاهئے." اس پستک میں یه بھی کہا گیا هے که جس جاتی کے عمل اور وچن میں انتر آ جاتا هے' وہ ناش کو پراپت هوتی هے.

عمل کے کارن هی پھر ایک مضبوط اور بڑا راج قائم کرنے کی ضرورت تھی. تبھی کھیتی باڑی' ویاپار اور کلا آگے بڑھ سکتی تھی' تبھی آپس کے جھگڑے ختم هوسکتے تھے' تبھی باهر کے حملوں سے دیش کی رکشا هوسکتی تھی. اُس سمے اُتھل پتھل کا زمانه تھا. روم کا مہان راج ٹوٹ رها تھا. سارے دیش کے ایک مضبوط راج کی ضرورت کو محسوس کرتے هوئے هی مہابھارت میں لکھا هے که تمہارا سورگ تمہاری راجنیت هے. اور ونسینٹ اِسمتھ آدی یوروپین ودوانوں نے بھی لکھا هے که مہابھارت کا بنیادی نکته ایک مرکزی حکومت قائم کرنا هے. اسی لئے کروچھیتر کا مہابھارت یدھ هوا تھا.

اس وچاردھارا کو گپت راج میں عملی روپ ملا اور اِسی بات کو لیکر مہاکوی کالیداس نے 'رگھوونش' مہاکاویه رچا. اس میں رامچندر کے پوروج رگھو کو لیکر ایک مہان' پراکرمی اور انصاف پسند راجا کے گن بیان کئے گئے هیں. دراصل یه سامنتواد کی ترقی کا زمانه تھا. سامنتواد کی ترقی سے زندگی آگے بڑھ رهی تھی. راجا کو جنتا کا سہیوگ پراپت تھا. وہ اُنکا نیتا تھا اور اپنے عمل سے ساری جنتا کو حرکت میں لاتا تھا. عمل سے اُنکا لوک اور پرلوک دونوں سنورتے تھے. یہاں مادی اور آتمک درشنوں میں ایک پرکار کا میل اور سمجھوته هوگیا تھا. اسی لئے اِس زمانے میں مہابھارت اور گیتا کا پرچار خاص طور پر هوا. اِسی لئے کلچر کی ترقی هوسکی. کالیداس جیسا مہاکوی پیدا هوا. کمارل بھٹ نے زمین کے گھومنے' چندر گرهن اور سوریه گرهن کے نیم معلوم کئے.

को बड़ी तसल्ली देता था. गो इस तरह एक तबक़ा मेहनत से पिसता रहा, लेकिन एक तबक़े को सोचने समझने का अधिक मौक़ा मिला, दर्शन और कला में उन्नति हुई, और कलचर आगे बढ़ता रहा. और इस ज़माने का आदमी माद्दी कम और आत्मिक अधिक हो गया.

बुद्ध के सुधार के बाद भी आक़ा और गुलाम का सम्बन्ध वही रहा. यह तो ठीक है कि अशोक ने कलिंग की तबाही के बाद लड़ाई से तौबा कर ली, लेकिन इस लड़ाई से वह जो दो लाख आदमी गुलाम बना कर लाये थे, उन्हें छोड़ देने का किसी इतिहासकार ने ज़िक्र नहीं किया, क्योंकि वह छोड़े नहीं गये. बुद्ध ने यज्ञों में पशुओं की बलि बन्द करने के लिये अहिंसा का जो प्रचार किया था, उसे बाग़ी गुलामों को शान्ति करने के लिये भी काम में लाया गया.

गुलामी की व्यवस्था से भी कलचर बहुत आगे बढ़ा. लेकिन अब यह व्यवस्था टिकने वाली नहीं थी. खेती बाड़ी और व्यापार बहुत आगे बढ़ गया था. पैदावार के साधनों के साथ नया राजकाजी ढांचा और नई विचारधारा जन्म ले रही थी. अब सुधार से नहीं तब्दीली से ही कलचर आगे बढ़ सकता था. खौलने के बाद, पानी जब दोबारा ठंडा होता है, तो मिलावट और गन्दगी फिर उसमें मिल जाती है. संघों में ख़राबियां पैदा हो गईं. भिक्षु आरामतलब और फ़िज़ूल में बाल की खाल उतारने वाले बन गये. ख़्वाहिशों के त्याग के नाम पर इस दुनिया की और ज़िन्दगी की ज़िम्मेदारियों को नज़रअंदाज़ किया जाने लगा. इतिहास में अशोक को 'महान' और 'देवानामप्रिय' कह कर बहुत ग़लत उछाला गया है. अशोक के ज़माने में हमारा कलचर इतना ही आगे बढ़ा है कि अशोक ने पत्थर के मकान बनाये. और ग़लत दर्शनों का प्रचार करके आदमी के विचारों के गिर्द भी दीवार खड़ी कर दी. कहां हमारी परम्परा यह थी कि जिस सभा में कोई आदमी न चमके, या सिर्फ़ एक आदमी चमके वह सभा, सभा नहीं है, कहां अशोक का यह कहना कि जैसे बाप अपने बेटे का पालन करता है, मैं अपनी प्रजा का पालन करूंगा! किसी राजा या एक व्यक्ति की सारी क़ौम का पिता बनने और उसके लिये सोचने का कोई अधिकार नहीं है. जिसका नतीजा यह हुआ कि लोग बेहिस और बेअमल हो गये, अशोक के बेटे बाहर के हमलों को नहीं रोक सके और मौर्य राज नश्ट हो गया.

दरअसल यह पिछड़ी हुई गुलामी की व्यवस्था का नाश था. इसके बाद गुप्त राज, नई आर्थिक व्यवस्था और नई विचारधारा पर क़ायम हुआ. महाभारत, और गीता के भागवत मत में इस दुनिया और मौत के बाद की दुनिया को



کو بڑی تسلی دیتا تھا ۔ گو اِس طرح ایک طبقہ محنت سے پستا رہا، لیکن ایک طبقے کو سوچنے سمجھنے کا ادھک موقع ملا، درشن اور کلا میں اُنتی ہوئی، اور کلچر آگے بڑھتا رہا ۔ اور اِس زمانہ کا آدمی مادی کم اور آتمک ادھک ہوگیا ۔

بدھ کے سدھار کے بعد بھی آقا اور غلام کا سمبندھ وہی رہا ۔ یہ تو ٹھیک ھے کہ اشوک نے کلنگ کی تباھی کے بعد لڑائی سے توبہ کر لی، لیکن اِس لڑائی سے وہ جو دو لاکھ آدمی غلام بنا کر لائے تھے، اُنھیں چھوڑ دینے کا کسی اتہاس‌کار نے ذکر نہیں کیا، کیونکہ وہ چھوڑے نہیں گئے ۔ بدھ نے یگیوں میں پشوؤں کی بلی بند کرنے کے لئے اھنسا کا جو پرچار کیا تھا، اِسے باغی غلاموں کو شانت کرنے کے لئے بھی کام میں لایا گیا ۔

غلامی کی ویوستھا سے بھی کلچر بہت آگے بڑھا ۔ لیکن اب یہ ویوستھا ٹکنے والی نہیں تھی ۔ کھیتی باڑی اور ویاپار بہت آگے بڑھ گیا تھا ۔ پیداوار کے سادھنوں کے ساتھ نیا راج‌کاجی ڈھانچہ اور نئی وچار دھارا جنم لے رھی تھی ۔ اب سدھار سے نہیں تبدیلی سے ہی کلچر آگے بڑھ سکتا تھا ۔ کھولنے کے بعد پانی جب دوبارہ ٹھنڈا ھوتا ھے، تو ملاوٹ اور گندگی پھر اِس میں مل جاتی ھے ۔ سنگھوں میں خرابیاں پیدا ھوگئیں ۔ بھکشو آرام طلب اور فضول میں بال کی کھال اُتارنے والے بن گئے ۔ خواھشوں کے تیاگ کے نام پر اِس دنیا کی اور زندگی کی ذمہ داریوں کو نظرانداز کیا جانے لگا ۔ اتہاس میں اشوک کو 'مہان' اور 'دیوانام‌پریہ' کہ کر بہت غلط اُچھالا گیا ھے ۔ اشوک کے زمانے میں ھمارا کلچر اِتنا ھی آگے بڑھا ھے کہ اشوک نے پتھر کے مکان بنائے ۔ اور غلط درشنوں کا پرچار کر کے آدمی کے وچاروں کے گرد بھی دیوار کھڑی کر دی ۔ کہاں ھماری پرمپرا یہ تھی کہ جس سبھا میں کوئی آدمی نہ چمکے، یا صرف ایک آدمی چمکے وہ سبھا، سبھا نہیں ھے، کہاں اشوک کا یہ کہنا کہ جیسے باپ اپنے بیٹے کا پالن کرتا ھے، میں اپنی پرجا کا پالن کرونگا ! کسی راجا یا ایک ویکتی کو ساری قوم کا پتا بننے اور اُس کے لئے سوچنے کا کوئی ادھیکار نہیں ھے ۔ جس کا نتیجہ یہ ھوا کہ لوگ بےحس اور بےعمل ھوگئے، اشوک کے بیٹے باھر کے حملوں کو نہیں روک سکے اور موریہ راج نشٹ ھوگیا ۔

دراصل یہ پچھڑی ھوئی غلامی کی ویوستھا کا ناش تھا ۔ اس کے بعد گپت راج، نئی آرتھک ویوستھا اور نئی وچار دھارا پر قائم ھوا ۔ مہابھارت اور گیتا کے بھاگوت مت میں اِس دنیا اور موت کے بعد کی دنیا کو

से यह कलचर बहुत बदनाम हो गया. उस समय एक राजा के घर में बुद्ध का जन्म हुआ और उन्होंने इस कलचर में बहुत कुछ सुधार किया.

सुधार और तब्दीली में बड़ा फ़रक़ है. कलचर में तब्दीली तो उस समय आती है, जब पैदावार के साधन बदलते हैं और उन पर क़ायम समाज बदलता है. लेकिन सुधार में पैदावार के साधन और समाज वैसा ही रहता है. उसमें जो ख़राबियां आ जाती हैं उन्हें उसी समाज की सीमा में रहते हुए दूर करने की कोशिश की जाती है. जैसे पानी उबालने से पानी ही रहता है, लेकिन उसमें जो मिलावट आ जाती है, उबलने से वह नीचे बैठ जाती है. सुधार भी समाज के लिये ऐसा ही अमल है. ब्राह्मनों ने वेदों के नाम पर ज्ञान और विद्या की तिजारत शुरू कर दी थी और आत्मा की सुरक्षा और मुक्ति के लिये देवताओं की क़ुर्बानी देनी शुरू कर दी थी. बुद्ध ने ब्राह्मनों की इजारादारी तोड़ने के लिये वेदों को मानने से इनकार किया. यज्ञों में क़ुर्बानी का विरोध करके नेक कामों और ख़्वाहिशों के त्याग को मुक्ति या निर्वान का साधन बताया. बुद्ध आत्मा को नहीं मानते थे लेकिन कहते थे कि एक जन्म से दूसरे जन्म में आदमी के कामों के संस्कार उसके साथ जाते हैं.

इसका मतलब है कि आत्मा को न मानते हुए भी बुद्ध का दर्शन माद्दी नहीं आत्मिक था. और उन्होंने जिस समानता का प्रचार किया वह भी माद्दी नहीं आत्मिक थी. मोटी तौर पर उनका कहना था कि आक़ा और ग़ुलाम दोनों को मौत आती है. दोनों मौत के सामने एक समान हैं. इसलिये आओ हम दुनिया की ख़्वाहिशों को छोड़ कर मौत का हल ढूँढें.

हावेल ने अपने इतिहास में लिखा है कि बुद्ध ने जो संघ खोले थे उनमें ग़ुलामों को दाख़िल नहीं किया जाता था और ग़ुलामों के अलावा ऐसे लोग भी दाख़िल नहीं हो सकते थे, जिन्हें दूसरों का क़र्ज़ देना होता था, जो अपराधी और डाकू थे या राजा के कर्मचारी थे.

कहने का मतलब यह है कि वेदों के ज़माने के बाद काम की तक़सीम के कारन ग़ुलामी का ज़माना शुरू हुआ जिसमें नये दर्शनों और नये कलचर ने जन्म लिया. इस दर्शन का निचोड़ यह था कि एक नदी की तरह ज़िन्दगी का सिलसिला जारी रहता है. आदमी एक जन्म के बाद दूसरा जन्म लेता है. किसी जन्म में आक़ा ग़ुलाम और ग़ुलाम आक़ा बन सकता है. ग़ुलाम को सेवा का काम ईमानदारी से करना चाहिये, इस सेवा का फल उसे अगले जन्म में मिलेगा. यह बिचार मेहनत से पिसने वाले आदमी







سے یہ کلچر بہت بدنام ہوگیا ۔ اُس سمے ایک راجا کے گھر میں بدھ کا جنم ہوا اور اُنھوں نے اس کلچر میں بہت کچھ سدھار کیا ۔

سدھار اور تبدیلی میں بڑا فرق ہے ۔ کلچر میں تبدیلی تو اُس سمے آتی ہے، جب پیداوار کے سادھن بدلتے ہیں اور اُن پر قائم سماج بدلتا ہے ۔ لیکن سدھار میں پیداوار کے سادھن اور سماج ویسا ہی رہتا ہے ۔ اس میں جو خرابیاں آجاتی ہیں اُنھیں اُسی سماج کی سیما میں رہتے ہوئے دور کرنے کی کوشش کی جاتی ہے ۔ جیسے پانی اُبالنے سے پانی ہی رہتا ہے، لیکن اُس میں جو ملاوٹ آجاتی ہے، اُبلنے سے وہ نیچے بیٹھ جاتی ہے ۔ سدھار بھی سماج کے لئے ایسا ہی عمل ہے ۔ براہمنوں نے ویدوں کے نام پرگیان اور ودیا کی تجارت شروع کر دی تھی اور آتما کی سرکچھا اور مکتی کے لئے دیوتاؤں کو قربانی دینی شروع کر دی تھی ۔ بدھ نے براہمنوں کی اجارداری توڑنے کے لئے ویدوں کو ماننے سے انکار کیا ۔ یگیوں میں قربانی کا وِرودھ کر کے نیک کاموں اور خواہشوں کے تیاگ کو مکتی یا نروان کا سادھن بتایا. بدھ آتما کو نہیں مانتے تھے لیکن کہتے تھے کہ ایک جنم سے دوسرے جنم میں آدمی کے کاموں کے سنسکار اُس کے ساتھ جاتے ہیں ۔

اِس کا مطلب ہے کہ آتما کو نہ مانتے ہوئے بھی بدھ کا درشن مادی نہیں آتمک تھا ۔ اور اُنھوں نے جس سمانتا کا پرچار کیا وہ بھی مادی نہیں آتمک تھی ۔ موٹے طور پر اُن کا کہنا تھا کہ آقا اور غلام دونوں کو موت آتی ہے، دونوں موت کے سامنے ایک سمان ہیں ۔ اِس لئے آؤ ہم دنیا کی خواہشوں کو چھوڑ کر موت کا حل ڈھونڈھیں ۔

ھاویل نے اپنے اتہاس میں لکھا ہے کہ بدھ نے جو سنگھ کھولے تھے اُن میں غلاموں کو داخل نہیں کیا جاتا تھا اور غلاموں کے علاوہ ایسے لوگ بھی داخل نہیں ہو سکتے تھے، جنھیں دوسروں کا قرض دینا ہوتا تھا، جو اپرادھی اور ڈاکو تھے یا راجا کے کرمچاری تھے ۔

کہنے کا مطلب یہ ہے کہ ویدوں کے زمانے کے بعد کام کی تقسیم کے کارن غلامی کا زمانہ شروع ہوا جس میں نئے درشنوں اور نئے کلچر نے جنم لیا ۔ اِس درشن کا نچوڑ یہ تھا کہ ایک ندی کی طرح زندگی کا سلسلہ جاری رہتا ہے ۔ آدمی ایک جنم کے بعد دوسرا جنم لیتا ہے ۔ کسی جنم میں آقا غلام اور غلام آقا بن سکتا ہے ۔ غلام کو سیوا کا کام ایمانداری سے کرنا چاہئیے، اِس سیوا کا پھل اُسے اگلے جنم میں ملےگا. یہ وچار محنت سے پسنے والے آدمی

कृपा का फल बताना शुरू किया. और देवताओं को प्रसन्न करने के लिये यज्ञ होने लगे और उसमें पशुओं और मनुश्यों तक की बलि दी जाने लगी. ब्राह्मनों ने ज्ञान की तिजारत शुरू कर दी. ज़िन्दगी के तजुरबे से वेद की बात को ज्यादा अहमियत दी जाने लगी. आदमी ने जो नियम, असूल और क़ायदे अपनी बेहतरी के लिये बनाये थे, उन्हें आदमी से बेहतर समझा जाने लगा. आदमी की हिफ़ाज़त की जगह नियमों और असूलों की हिफ़ाज़त के लिये ख़ुद आदमी क़ुरबान होने लगा.

पंडितों के बेअमल हो जाने के कारन वह धरती पर रहने के बजाय हवा में उड़ने लगे और उनका दर्शन कम से कम माद्दी और अधिक से अधिक आत्मिक होता गया. आख़िर यजुर्वेद में "आत्मा ही को सब चीज़ों का नाप और कसौटी मान लिया गया." यजुर्वेद के ही एक मंत्र का मतलब है—

"आत्मा का नाश करने वाला आदमी मौत के बाद अंधेरे में लिपटे हुए लोकों में भटकता रहता है."

ज़ाहिर है कि आदमी उन माद्दी दर्शनों से मुंह मोड़ कर आत्मा की तरफ़ बढ़ रहा था. वह अपने ज्ञान से सिर्फ़ इस दुनिया को ही नहीं मौत के बाद की दुनिया को भी समझने की कोशिश कर रहा था. और वह इस दुनिया और मौत के बाद की दुनिया में सम्बन्ध जोड़ने की फ़िक्र में था. दर्शनों और उपनिशदों में आदमी इस खोज में लगा हुआ मालूम होता है. चूंकि उसका तजरुबा और इस तजरुबे से हासिल किया हुआ ज्ञान इन सब सवालों का जवाब नहीं दे सकता था, इसलिए उसने अपने आपको विचारों में तब्दील किया और आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग और नरक की सृश्टि करके अपने इस सवाल का जवाब दिया.

बच्चा जैसे बड़ा होकर अपनी मासूमियत खोता है, लेकिन ज्ञान और विद्या में वह आगे बढ़ता है इसी तरह वेद के ज़माने के आदमी ने काम करने वालों और काम कराने वालों में तक़सीम होकर अपनी समानता और प्रसन्नता तो खो दी लेकिन वह ज्ञान और इल्म में आगे बढ़ा. यज्ञ और देवताओं की पूजा करते हुए भी वह दुनिया-वादी तौर पर ईमानदार था और ईमानदारी से ज़िन्दगी के नये सवालों का हल ढूंढता था. सांख्य शास्त्र में लिखा है कि असत्य से सत्य का जन्म नहीं हो सकता. उस वक़्त का आदमी भी पूरी ईमानदारी से ज्ञान की खोज में लगा हुआ था. वह आक़ा और गुलाम की तक़सीम को भी ज़िन्दगी की एक सचाई मानता था. उसका नया कलचर उसकी नई विचारधारा का नया रूप था.

नियमों और असूलों की ज्यादा पाबन्दी और देवताओं को ख़ुश करने के लिये आदमियों और पशुओं की क़ुर्बानी



کرپا کا پھل بتانا شروع کیا۔ اور دیوتاؤں کو پرسن کرنے کے لئے یگ ہونے لگے اور اُس میں پشوؤں اور منشیوں تک کی بلی دی جانے لگی۔ براہمنوں نے گیان کی تجارت شروع کر دی۔ زندگی کے تجربے سے وید کی بات کو زیادہ اہمیت دی جانے لگی۔ آدمی نے جو نیم، اصول اور قائدے اپنی بہتری کے لئے بنائے تھے، اُنہیں آدمی سے بہتر سمجھا جانے لگا۔ آدمی کی حفاظت کی جگہ نیموں اور اصولوں کی حفاظت کے لئے خود آدمی قربان ہونے لگا۔

پنڈتوں کے بے عمل ہو جانے کے کارن وہ دھرتی پر رہنے کے بجائے ہوا میں اُڑنے لگے اور اُن کا درشن کم سے کم مادی اور ادھک سے ادھک آتمک ہوتا گیا۔ آخر یجر وید میں آتما ہی کو سب چیزوں کا ناپ اور کسوٹی مان لیا گیا۔ یجروید کے ہی ایک منتر کا مطلب ہے—

" آتما کا ناش کرنے والا آدمی موت کے بعد اندھیرے میں لپٹے ہوئے لوگوں میں بھٹکتا رہتا ہے۔"

ظاہر ہے کہ آدمی اُن مادی درشنوں سے منہ موڑ کر آتما کی طرف بڑھ رہا تھا۔ وہ اپنے گیان سے صرف اِس دنیا کو ہی نہیں موت کے بعد کی دنیا کو بھی سمجھنے کی کوشش کر رہا تھا۔ اور وہ اِس دنیا اور موت کے بعد کی دنیا میں سمبندھ جوڑنے کی فکر میں تھا۔ درشنوں اور اُپنشدوں میں آدمی اِس کھوج میں لگا ہوا معلوم ہوتا ہے۔ چونکہ اُس کا تجربہ اور اِس تجربے سے حاصل کیا ہوا گیان اِن سب سوالوں کا جواب نہیں دے سکتا تھا، اِس لئے اس نے اپنے آپ کو وچاروں میں تبدیل کیا اور آتما، پرماتما، سورگ اور نرک کی سرشٹی کر کے اپنے اِس سوال کا جواب دیا۔

بچہ جیسے بڑا ہو کر اپنی معصومیت کھوتا ہے، لیکن گیان اور ودیا میں وہ آگے بڑھتا ہے، اِسی طرح وید کے زمانہ کے آدمی نے کام کرنے والوں اور کام کرانے والوں میں تقسیم ہوکر اپنی سمانتا اور پرسنتا تو کھو دی لیکن وہ گیان اور علم میں آگے بڑھا۔ یگیہ اور دیوتاؤں کی پوجا کرتے ہوئے بھی وہ بنیادی طور پر ایماندار تھا اور ایمانداری سے زندگی کے نئے سوالوں کا حل ڈھونڈھتا تھا۔ سانکھیہ شاستر میں لکھا ہے کہ اِستیہ سے ستیہ کا جنم نہیں ہو سکتا۔ اُس وقت کا آدمی بھی پوری ایمانداری سے گیان کی کھوج میں لگا ہوا تھا۔ وہ آقا اور غلام کی تقسیم کو بھی زندگی کی ایک سچائی مانتا تھا۔ اُس کا نیا کلچر اُس کی نئی وچار دھارا کا نیا روپ تھا۔

نیموں اور اصولوں کی زیادہ پابندی اور دیوتاؤں کو خوش کرنے کے لئے آدمیوں اور پشوؤں کی قربانی

वेदों के ज़माने का कलचर उस ज़माने के पैदावार के साधनों और राजकाजी ढांचे की विचारधारा का ही एक रूप था. बेशक देवताओं में उस समय के आदमी का विश्वास था. लेकिन उसने क़ुदरत जैसी ज़बर्दस्त विरोधी की तबाही से बचने के लिये घर बनाये थे, ज़मीन जोतना और बोना सीखा था. इसके अलावा वह पशु पालता था, गाय का दूध पीता था और उससे मक्खन निकालता और घोड़े पर चढ़ता था. उसने आग को अपना साथी और मददगार बनाया था. और धात को ढालना सीख लिया था. यह आदमी की बहुत बड़ी कामयाबी थी और इससे अपने आप में उसका विश्वास बढ़ा था. अपने इस विश्वास को ज़ाहिर करने के लिये उसने हवा से भी तेज़ तक़रीर और ख़याल को ईजाद किया था.

आदमी साझी मेहनत से क़ुदरत को जीत रहा था. सब लोग आपस में मेलजोल से रहते थे, सभी समाज के फ़ायदे के लिये काम करते थे. सब सुरक्षा के लिये क़ायदे क़ानून बनाते थे. उनमें कोई ऊंच नीच और जात पात का भेद नहीं था. लोग भिन्न भिन्न काम करते हुए भी एक समान एक घर में रहते थे. एक वेद मंत्र में कहा है—

"मैं शिल्पी हूं, मेरा पिता वैद्य है, और मेरी मां उपले पाथने का काम करती है. अलग अलग पेशों और मार्गों पर चलते हुए हम एक घर में निवास करते हैं."

धीरे धीरे पैदावार के साधनों की तरक़्क़ी हुई और मेहनत तक़सीम हो गई. इससे चार वर्न वजूद में आये. ब्राह्मन का काम केवल पढ़ना पढ़ाना रह गया. मेहनत से उनका नाता टूट गया. लेकिन आदमी हमेशा अमल और तजरुबे से सीखता है. विचार के साथ जब मेहनत का पसीना मिलता है, तभी उसका ज्ञान ताज़ा रहता है. इस तक़सीम के कारन वेदों के ज़माने का समाज टूटने लगा. फिर आर्यों ने हिन्दुस्तान की दूसरी जातियों, द्राविड़ और कौल आदि, को हरा कर अपना ग़ुलाम या दास बनाना शुरू किया. जो कोई जितना बड़ा पंडित होता था उसे उतने ही अधिक दास दान में मिलते थे. विचार और अमल में जो दरार पड़ी वह धीरे धीरे बढ़ती ही गई. सोचने और काम करने वालों की दो जमातें बन जाने ही से यूनान की पुरानी सभ्यता नशट हुई थी. इस तक़सीम के कारन वेदों के ज़माने का पुराना समाज टूट गया और क़बीलों के अलग अलग राज्य बने. इन राज्य या रियासतों में ब्राह्मन और क्षत्रिय पढ़ते पढ़ाते और क़ायदे क़ानून बनाते और राज का काम करते थे. दूसरे लोग मेहनत करके उनके लिये जीने के साधन जुटाते थे और उनकी सेवा के लिये दासों की बहुत बड़ी तादाद होती थी.

अब ब्राह्मन और क्षत्रिय दूसरों की मेहनत पर पलने वाला वर्ग था. उसने आदमी की कामयाबी को देवताओं की



ویدوں کے زمانے کا کلچر اُس زمانے کے پیداوار کے سادھنوں اور راج کاجی ڈھانچے کی وچار دھارا کا ہی ایک روپ تھا. بےشک دیوتاؤں میں اُس سمے کے آدمی کا وشواس تھا. لیکن اس نے قدرت جیسی زبردست وِرودھی کی تباھی سے بچنے کے لئے گھر بنائے تھے' زمین جوتنا اور بونا سیکھا تھا. اِس کے علاوہ وہ پشو پالتا تھا' گائے کا دودھ پیتا تھا اور اُس سے مکھن نکالتا اور گھوڑے پر چڑھتا تھا. اُس نے آگ کو اپنا ساتھی اور مددگار بنایا تھا اور دھات کو ڈھالنا سیکھ لیا تھا. یہ آدمی کی بہت بڑی کامیابی تھی اور اس سے اپنے آپ میں اُس کا وشواس بڑھتا تھا . اپنے اس وشواس کو ظاھر کرنے کے لئے اس نے ھوا سے بھی تیز تقریر اور خیال کو ایجاد کیا تھا .

آدمی ساجھی محنت سے قدرت کو جیت رھا تھا. سب لوگ آپس میں میل جول سے رھتے تھے' سبھی سماج کے فائدے کے لئے کام کرتے تھے . سب سرکھچھا کے لئے قاعدے قانون بناتے تھے . اُن میں کوئی اونچ نیچ اور جات پات کا بھید نہیں تھا . لوگ بھن بھن کام کرتے ھوئے بھی ایک سمان ایک گھر میں رھتے تھے . ایک وید منتر میں کہا ھے—

" میں شلپی ھوں' میرا پتا وید ھے' اور میری ماں اُپلے پاتھنے کا کام کرتی ھے . الگ الگ پیشوں اور مارگوں پر چلتے ھوئے ھم ایک گھر میں نواس کرتے ھیں ."

دھیرے دھیرے پیداوار کے سادھنوں کی ترقی ھوئی اور محنت تقسیم ھوگئی. اِس سے چار ورن وجود میں آئے . براھمنوں کا کام کیول پڑھنا پڑھانا رہ گیا . محنت سے اُن کا ناتا ٹوٹ گیا . لیکن آدمی ھمیشہ عمل اور تجربے سے سیکھتا ھے . وچار کے ساتھ جب محنت کا پسینہ ملتا ھے' تبھی اُس کا گیان تازہ رھتا ھے . اِس تقسیم کے کارن ویدوں کے زمانے کا سماج ٹوٹنے لگا . پھر آریوں نے ھندستان کی دوسری جاتیوں' 'دراوڑ اور کول آدی' کو ھرا کر اپنا غلام یا داس بنانا شروع کیا . جو کوئی جتنا بڑا پنڈت ھوتا تھا اُسے اتنے ھی ادھک داس دان میں ملتے تھے . وچار اور عمل میں جو دراڑ پڑی وہ دھیرے دھیرے بڑھتی ھی گئی . سوچنے اور کام کرنے والوں کی دو جماعتیں بن جانے ھی سے یونان کی پرانی سبھیتا نشٹ ھوئی تھی . اِس تقسیم کے کارن ویدوں کے زمانے کا پرانا سماج ٹوٹ گیا اور قبیلوں کے الگ الگ راج بنے . اِن راج یا ریاستوں میں براھمن اور چھتری پڑھتے پڑھاتے اور قاعدے قانون بناتے اور راج کا کام کرتے تھے . دوسرے لوگ محنت کرکے اُن کے لئے جینے کے سادھن جٹاتے تھے اور اُن کی سیوا کے لئے داسوں کی بہت بڑی تعداد ھوتی تھی .

اب براھمن اور چھتری دوسروں کی محنت پر پلنے والا ورگ تھا . اُنھوں نے آدمی کی کامیابی کو دیوتاؤں کی

एक आदमी चमके वह सभा, सभा नहीं होती. सभा वह होती है, जिसमें सब मिल कर चमकें और हर एक आदमी दूसरे को चमकाने में मदद दे."

'सभ्यता' जिसका मतलब तहज़ीब है, सभा शब्द से बना है. तहज़ीब का कलचर से गहरा सम्बन्ध है. तजरुबे और अमल से आदमी जितना ऊंचा उठता है उतना ही वह कलचर्ड या संस्कृत कहलाता है. और जितना वह इस कलचर को व्यवहार में लाता है उतना ही तहज़ीब आगे बढ़ती है. कलचर आदमी के अन्दर से सम्बन्ध रखती है जिससे उसका मन और शरीर स्वस्थ और मज़बूत बनता है. तहज़ीब या सभ्यता इस कलचर के बाहरी रूप का नाम है. जिस देश या क़ौम के लोगों का जितना ऊंचा कलचर होगा, उतना ही वह मेल जोल से रहेंगे, अपने काम सलाह मशविरे से करेंगे और सभा में ऊंची और सच्ची बात कहेंगे. इन सब बातों के कारन वह मुहज़्ज़ब या संस्कृत कहलायेंगे. उनकी कलचर, उनके खाने, पहनने और रहने सहने, कविता और कला में ज़ाहिर होगी.

जब किसी देश या क़ौम के लोग कलचर में पिछड़ जांय यानी वह सचाई और इन्साफ़ का साथ छोड़ दें, उनके करने और कहने में फ़रक़ आ जाय, लेकिन खाने पहनने और रहने सहने में तड़क भड़क रहे, यानी कलचर के ऊपरी रूप, तहज़ीब में वैसी ही तड़क भड़क रहे, तो वह तहज़ीब खोखली कहलाती है. उस में बनावट और पाखंड आ जाता है. वह तहज़ीब ज्यादा दिनों टिकने वाली नहीं होती.

इसका कारन क्या है? कलचर और तहज़ीब में तब्दीली क्यों आती है? दुनिया के शुरू से अब तक एक ही कलचर और तहज़ीब क्यों न हुई? तब्दीली में कोई क्रम या सिलसिला है या वह तब्दीली अचानक आ जाती है?

किसी ज़माने में पैदावार के जो साधन होते हैं, उन्हीं के मुताबिक़ उस ज़माने के सामाजिक सम्बन्ध क़ायम होते हैं और एक राजकाजी ढांचा बनता है. फिर इन सबके मेल से उस ज़माने की कलचर जन्म लेती है. हम कलचर को पैदावार के साधनों और राजकाजी ढांचे से अलग नहीं कर सकते. इन तीनों का आपस में गहरा सम्बन्ध है. माउत्से तुंग ने अपनी पुस्तक 'चीन की नई जमहूरियत' में कलचर की व्याख्या इस तरह की है—

"A given culture is the ideological reflection of the political economy of a given society."

( यानी किसी ज़माने का कलचर, उस ज़माने के समाज की आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था की विचारधारा का अक्स या रूप होता है. )



ایک آدمی چمکے وہ سبھا' سبھا نہیں ہوتی . سبھا وہ ہوتی ہے' جس میں سب مل کر چمکیں اور ہر ایک آدمی دوسرے کو چمکانے میں مدد دے ."

" سبھئیتا " جس کا مطلب تہذیب ہے' سبھا شبد سے بنا ہے . تہذیب کا کلچر سے گہرا سمبندھ ہے . تجربے اور عمل سے آدمی جتنا اونچا اٹھتا ہے اتنا ہی وہ کلچرڈ یا سنسکرت کہلاتا ہے . اور جتنا وہ اِس کلچر کو ویوہار میں لاتا ہے اتنا ہی تہذیب آگے بڑھتی ہے . کلچر آدمی کے اندر سے سمبندھ رکھتا ہے جس سے اُس کا من اور شریر سوستھ اور مضبوط بنتا ہے . تہذیب یا سبھئیتا اِس کلچر کے باہری روپ کا نام ہے. جس دیش یا قوم کے لوگوں کا جتنا اونچا کلچر ہوگا' اتنا ہی وہ میل جول سے رہینگے' اپنے کام صلاح مشورے سے کرینگے اور سبھا میں اونچی اور سچی بات کہیں گے . اِن سب باتوں کے کارن وہ مہذب یا سنسکرت کہلائیں گے . اُن کا کلچر اُن کے کھانے' پہننے اور رہنے سہنے' کویتا اور کلا میں ظاہر ہوگی .

جب کسی دیش یا قوم کے لوگ کلچر میں بچھڑ جائیں یعنی وہ سچائی اور انصاف کا ساتھ چھوڑ دیں' اُن کی کرنے اور کہنے میں فرق آجائے' لیکن کھانے پہننے اور رہنے سہنے میں تڑک بھڑک رہے' یعنی کلچر کے اوپری روپ' تہذیب میں ویسی ہی تڑک بھڑک رہے' تو وہ تہذیب کھوکھلی کہلاتی ہے . اُس میں بناوٹ اور پاکھنڈ آجاتا ہے . وہ تہذیب زیادہ دنوں ٹکنے والی نہیں ہوتی .

اِس کا کارن کیا ہے ؟ کلچر اور تہذیب میں تبدیلی کیوں آتی ہے ؟ دنیا کے شروع سے اب تک ایک ہی کلچر اور تہذیب کیوں نہ ہوئی ؟ تبدیلی کی کیا ضرورت تھی ؟ اگر ضرورت تھی' تو کیا اُس تبدیلی میں کوئی کرم یا سلسلہ ہے یا وہ تبدیلی اچانک آجاتی ہے ؟

کسی زمانے میں پیداوار کے جو سادھن ہوتے ہیں' اُنہیں کے مطابق اُس زمانے کے سماجک سمبندھ قائم ہوتے ہیں اور ایک راج کاجی ڈھانچا بنتا ہے . پھر اِن سب کے میل سے اُس زمانے کی کلچر جنم لیتی ہے . ہم کلچر کو پیداوار کے سادھنوں اور راج کاجی ڈھانچے سے الگ نہیں کر سکتے . اِن تینوں کا آپس میں گہرا سمبندھ ہے . ماؤتسے تنگ نے اپنی پستک " چین کی نئی جمہوریت " میں کلچر کی ویاکھیا اِس طرح کی ہے—

"A given culture is the idealogical reflection of the political economy of a given society."

( یعنی کسی زمانے کا کلچر' اس زمانے کے سماج کی آرتھک اور جنیتک ویوستھا کی وچار دھارا کا عکس یا روپ ہوتا ہے . )

बजाय उन्हें अपना दोस्त बनाते हैं और समाजी ज़िन्दगी के नियम बनाते हैं. यह दुनिया को अमल के ज़रिये तबदील करने का ढंग है.

लेकिन एक दूसरा ढंग है. वह दुनिया को तबदील करने के बजाय अपने आपको भावनाओं और विचारों में तब्दील करने का ढंग है. पहले इसी तरीक़े का नाम मज़हब और फिर दर्शन पड़ा.

यूरोपियन विद्वानों ने वेदों को देवमाला की पुस्तकें लिखा है. इस पर आर्य समाजी विद्वानों को एतराज़ है. वह कहते हैं कि वेद देवमाला की नहीं दर्शन की पुस्तकें हैं. हमारा ख़याल है कि वेदों के बारे में यह दोनों बातें सच हैं. उस समय मनुष्य जो कुछ देखता था उसे अपनी कल्पना से देवता का नाम दे देता था. इस में उस का तजरुबा और दर्शन दोनों शामिल रहते थे. उस समय माद्दी और अध्यात्मिक की बहस में वह नहीं पड़ा था. जिस तरह बच्चे रोटी या फल खाते हैं और ज़िंदा समझ कर उससे बातें भी करते हैं. वेद के ज़माने का मनुश्य बच्चे क तरह मासूम था, वह क़ुदरत को भोगता भी था और उसे ज़िंदा समझ कर उससे बातें भी करता था.

वेदों का ज़माना हज़ारों साल तक फैला हुआ है. उस ज़माने में आदमी ने दोनों तरफ़ तरक़्क़ी की. उसने अपनी शक्ति और समझ के मुताबिक़ प्रकृति को भी तब्दील किया और उसने अपने आपको भी विचारों और भावनाओं में बदला. वह सूरज से गर्मी हासिल करता था, उसे अपने खेतों को उगाने वाला समझता था, और उसे देवता समझ कर बल और शक्ति मांगता था. सुबह होती थी, तो वह ऊशा को देख कर नाच उठता था और फिर क़ुदरत को अपने मतलब के लिये तबदील करने को कमर कस लेता था.

उस ज़माने में आदमी आदमी में भेद नहीं था. ज्ञान और धन सबका साझा होता था. लोग जत्थों में मिल कर रहते थे. किसी काम को करने से पहले आपस में सलाह मशविरा करते थे. एक वेद मंत्र का अर्थ है—"हम सब आपस में मिल कर रहा करें. मिल कर आपस में सलाह मशविरा करें. हम सबके विचार या मन एक समान हों."

सलाह मशविरा के लिये सभायें होती थीं. लिखा है—

"हे सभा ! हम तेरा नाम भली भांति जानते हैं. तुझ में मनुश्य इकट्ठे होते हैं, तेरे जो भी सभासद हैं, वह सब सच बोलने वाले हैं."

इस सभा में सब लोगों को बराबर का दर्जा हासिल था और उम्मीद की जाती थी कि सभी लोग ऊंची और सच्ची बात कहेंगे. लिखा है—

"जिस सभा में सब आदमी न चमकें और जिसमें सिर्फ़



بجائے اُنھیں اپنا دوست بناتے ھیں او سماجی زندگی کے نیم بناتے ھیں . یہ دنیا کو عمل کے ذریعہ تبدیل کرنے کا ڈھنگ ھے .

لیکن ایک دوسرا ڈھنگ ھے . وہ دنیا کو تبدیل کرنے کے بجائے اپنے آپ کو بھاوناؤں اور وچاروں میں تبدیل کرنے کا ڈھنگ ھے . پہلے اِسی طریقے کا نام مذھب اور پھر درشن پڑا .

یوروپین ودوانوں نے ویدوں کو دیو مالا کی پستکیں لکھا ھے . اِس پر آریہ سماجی ودوانوں کو اعتراض ھے . وہ کہتے ھیں کہ وید دیومالا کی نہیں درشن کی پستکیں ھیں . ھمارا خیال ھے کہ ویدوں کے بارے میں یہ دونوں باتیں سچ ھیں . اُس سمے منشیہ جو کچھ دیکھتا تھا اُسے اپنی کلپنا سے دیوتا کا نام دے دیتا تھا . اِس میں اُس کا تجربہ اور درشن دونوں شامل رھتے تھے . اُس سمے مادی اور ادھیاتمک کی بحث میں وہ نہیں پڑا تھا . جس طرح بچے روٹی یا پھل کھاتے ھیں اور زندہ سمجھ کر اُس سے باتیں بھی کرتے ھیں . وید کے زمانے کا منشیہ بچے کی طرح معصوم تھا، وہ قدرت کو بھوگتا بھی تھا اور اُسے زندہ سمجھ کر اُس سے باتیں بھی کرتا تھا .

ویدوں کا زمانہ ھزاروں سال تک پھیلا ھوا ھے . اُس زمانے میں آدمی نے دونوں طرف ترقی کی . اُس نے اپنی شکتی اور سمجھ کے مطابق پرکرتی کو بھی تبدیل کیا اور اس نے اپنے آپ کو بھی وچاروں اور بھاوناؤں میں بدلا . وہ سورج سے گرمی حاصل کرتا تھا، اُسے اپنے کھیتوں کو اُگانے والا سمجھتا تھا، اور اُسے دیوتا سمجھ کر بل اور شکتی مانگتا تھا . صبح ھوتی تھی، تو وہ اُوشا کو دیکھکر ناچ اُٹھتا تھا اور پھر قدرت کو اپنے مطلب کے لئے تبدیل کرنے کو کمر کس لیتا تھا .

اُس زمانےمیں آدمی آدمی میں بھید نہیں تھا. گیان اور دھن سب کا ساجھا ھوتا تھا . لوگ جتھوں میں مل کر رہتے تھے . کسی کام کو کرنے سے پہلے آپس میں صلاح مشورہ کرتے تھے . ایک وید منتر کا ارتھ ھے—" ھم سب آپس میں مل کر رھا کریں، مل کر آپس میں صلاح مشورہ کریں . ھم سب کے وچار یا من ایک سمان ھوں ."

صلاح مشورہ کے لئے سبھائیں ھوتی تھیں . لکھا ھے—

" ھے سبھا ! ھم تیرا نام بھلی بھانت جانتے ھیں . تجھ میں منشیہ اِکٹھے ھوتے ھیں، تیرے جو بھی سبھاسد ھیں، وہ سب سچ بولنے والے ھیں ."

اِس سبھا میں سب لوگوں کو برابر کا درجہ حاصل تھا اور اُمید کی جاتی تھی کہ سبھی لوگ اُونچی اور سچی بات کہیں گے . لکھا ھے—

" جس سبھا میں سب آدمی نہ چمکیں اور جس میں صرف

का जिक्र है, वह असीरियन के भी देवता थे. पहले पहल आदमी ने अपने जीवन के अनुभव और ज्ञान को देवमाला ( Mythology ) में ही जाहिर किया क्योंकि वह उस समय अपने ज्ञान के बुनियादी उसूलों को नहीं समझता था. दुनिया के बारे में वह अपने ज्ञान को देवता के नाम से जाहिर करता था. आर्य जब हिन्दुस्तान में आये तो वह इन्द्र, वरुन और सूर्य आदि देवताओं के रूप में कुछ ज्ञान और कलचर अपने साथ लाये. उनके आने से पहले भी यहां द्राविड़ और कोल बसते थे. वह भी हज़ारों साल से क़ुदरत के बारे में जानकारी हासिल करते और उसे अमल में लाते रहे थे. उनका एक कलचर था जो सिंध में फल फूल रहा था. मोहन जोदडो और हडप्पा के खंडरों की खुदाई से पता चला है कि उनका कलचर बहुत तरक़्क़ी कर चुका था. वह रुई उगाते थे, कपड़े पहनते थे और अपने बरतनों और दूसरी चीज़ों पर नक़्क़ाशी करते थे. इसके अलावा मोहन जोदड़ो से एक नृतकी की मूर्ति मिली है जो बहुत सुन्दर है और पता चलता है कि उस समय भी नाचने की कला बहुत आगे बढ़ी हुई थी. आर्यों ने उनके तजरुबे से फ़ायदा उठाया. उन्होंने असीरिया के अपने तजरुबे को इन लोगों के तजरुबे से मिला कर एक नये कलचर को जन्म दिया. उन्होंने यहां आकर नये ढंग से रहना सहना और नये ढंग से सोचना सीखा. हिन्दुस्तान एक विशाल देश है. उसके मैदानों, नदियों और पहाड़ों का नये आने वालों पर असर पड़ना ज़रूरी था. नये देश और नये हालात में रहते हुए उनकी नज़र बहुत गहरी और बहुत ऊंची हो गई. नज़र बदलने से उनकी देवमाला के पुराने मानी बदल गये और उसमें नये देवता भी शामिल हुए. इस बारे में जिन लोगों ने खोज की है उनका कहना है कि विश्नु और शिव बिल्कुल हिन्दुस्तानी देवता हैं. विश्नु एक हरे भरे सुन्दर पहाड़ के प्रतीक हैं और शिव बर्फ़ से ढके काले नंगे पहाड़ के प्रतीक हैं. आगे चल कर जब आर्य पहाड़ों से उतर कर मैदान में पहुंचे तो इन देवताओं के माने और बदले. विश्नु कामयाब और खुशहाल ज़िन्दगी के और शिव नाकाम और निराश ज़िन्दगी के प्रतीक बन गये. अब माद्दी और आत्मिक दर्शन अलग अलग होने लगा.

माद्दी और आत्मिक दर्शनों को शुरू ही से समझ लेना ज़रूरी है क्योंकि कलचर को आगे बढ़ाने में इन दोनों दर्शनों का बड़ा हाथ है और आज माद्दी दर्शन और आत्मिक दर्शन में ज़बर्दस्त टक्कर हो रही है. इसी टक्कर का फ़ैसला होना है.

'टेक्स्ट बुक आफ़ मार्क्सिस्ट फ़िलासफ़ी' में लिखा है कि शुरू का आदमी तबाही की दुनिया में रहता था. वह अपनी सुरक्षा के ढंग सोचता था. एक ढंग जिसे हम अच्छी तरह जानते हैं क़ुदरत पर क़ाबू पाने का है. हम घर बनाते हैं, कपड़े बुनते हैं. आग और बिजली से दुश्मनी ठानने के





کا ذکر ہے' وہ اسیرین کے بھی دیوتا تھے ۔ پہلے پہل آدمی نے اپنے جیون کے انوبھو اور گیان کو دیو مالا Mythology میں ہی ظاہر کیا کیونکہ وہ اُس سمے اپنے گیان کے بنیادی اصولوں کو نہیں سمجھتا تھا ۔ دنیا کے بارے میں وہ اپنے گیان کو دیوتا کے نام سے ظاہر کرتا تھا ۔ آریہ جب ہندستان میں آئے تو وہ اِندر' ورن اور سوریہ آدی دیوتاؤں کے روپ میں کچھ گیان اور کلچر اپنے ساتھ لائے ۔ اُن کے آنے سے پہلے بھی یہاں دراوڑ اور کول بستے تھے ۔ وہ بھی ہزاروں سال سے قدرت کے بارے میں جانکاری حاصل کرتے اور اُسے عمل میں لاتے رہے تھے ۔ اُن کا ایک کلچر تھا جو سندھ میں پھل پھول رہا تھا ۔ موھن جودڑو اور ھڑپا کے کھنڈروں کی کھدائی سے پتہ چلا ھے کہ اُن کا کلچر بہت ترقی کرچکا تھا ۔ وہ روئی اُگاتے تھے' کپڑے پہنتے تھے اور اپنے برتنوں اور دوسری چیزوں پر نقاشی کرتے تھے ۔ اِس کے علاوہ موھن جودڑو سے ایک نرتکی کی مورتی ملی ھے جو بہت سندر ھے اور پتہ چلتا ھے کہ اُس سمے بھی ناچنے کی کلا بہت آگے بڑھی ہوئی تھی ۔ آریوں نے اُن کے تجربے سے فائدہ اُٹھایا ۔ انھوں نے اسیریا کے اپنے تجربے کو اِن لوگوں کے تجربے سے ملاکر ایک نئے کلچر کو جنم دیا ۔ انھوں نے یہاں آکر نئے ڈھنگ سے رھنا سہنا اور نئے ڈھنگ سے سوچنا سیکھا ۔ ھندستان ایک وشال دیش ھے ۔ اُس کے میدانوں' ندیوں اور پہاڑوں کا نئے آنے والوں پر اثر پڑنا ضروری تھا ۔ نئے دیش اور نئے حالات میں رھتے ہوئے اُن کی نظر بہت گہری اور بہت اُونچی ہوگئی ۔ نظر بدلنے سے اُن کی دیومالا کے پرانے معنی بدل گئے اور اُس میں نئے دیوتا بھی شامل ہوئے ۔ اِس بارے میں جن لوگوں نے کھوج کی ھے اُن کا کہنا ھے کہ وشنو اور شو بالکل ھندستانی دیوتا ھیں ۔ وشنو ایک ھرے بھرے سندر پہاڑ کے پرتیک ھیں اور شو برف سے ڈھکے کالے ننگے پہاڑ کے پرتیک ھیں ۔ آگے چلکر جب آریہ پہاڑوں سے اُتر کر میدانوں میں پہونچے تو اِن دیوتاؤں کے معنے اور بدلے ۔ وشنو کامیاب اور خوشحال زندگی کے اور شو ناکام اور نراش زندگی کے پرتیک بن گئے ۔ اب مادی اور آتمک درشن الگ الگ ہونے لگا ۔

مادی اور آتمک درشنوں کو شروع ھی سے سمجھ لینا ضروری ھے کیونکہ کلچر کو آگے بڑھانے میں اِن دونوں درشنوں کا بڑا ھاتھ ھے اور آج مادی درشن اور آتمک درشن میں زبردست ٹکر ہو رہی ھے ۔ اِسی ٹکر کا فیصلہ ہونا ھے ۔

'ٹیکسٹ بک آف مارکسسٹ فلاسفی' میں لکھا ھے کہ شروع کا آدمی تباھی کی دنیا میں رھتا تھا ۔ وہ اپنی سرکچھا کے ڈھنگ سوچتا تھا ۔ ایک ڈھنگ جسے ھم اچھی طرح جانتے ھیں قدرت پر قابو پانے کا ھے ۔ ھم گھر بناتے ھیں' کپڑا بنتے ھیں ۔ آگ اور بجلی سے دشمنی ٹھاننے کے

दूसरी पुस्तक यजुर्वेद है. 'यजुर' का मतलब है—काम में लाना, अमल करना. इसलिये यजुर-वेद का मतलब है जानकारी या ज्ञान को अमल में लाना.

ऋग्वेद और यजुर्वेद के इन अर्थों से हम इन नतीजों पर पहुंचते हैं कि हिन्दुस्तान के शुरू के बाशिंदों—हमारे पूर्वजों ने—कुदरत के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करने और उसे अमल में लाने की कोशिश की. इस तरह उन्होंने अपने कलचर को आगे बढ़ाया. ज्ञान के बारे में उनके मन में कोई तास्सुब नहीं था. जिस चीज़ को वह मुफ़ीद देखते थे उसी को अपना लेते थे और जिसे अपनाते थे, उस पर अमल करते थे. विद्वानों का कहना है कि वेदों के मंत्र ऋशियों ने बनाये या रचे नहीं, बल्कि देखे हैं. इसका भी यही मतलब हुआ कि वेदों के मंत्र कवि के विचार की उड़ान या कल्पना की चीज़ नहीं, बल्कि मनुश्य के तजुरुबे का निचोड़ है. उसने अपने जीवन में जो कुछ देखा और किया उसे मंत्रों में लिख दिया. ज़ाहिर है कि आदमी जो कुछ देखता और करता है, उसे लिख देना आसान नहीं है. आदमी जो कुछ देखता है और करता है उसके साथ उसका अनजाने ही एक दिमाग़ी सम्बन्ध जुड़ जाता है और इस सम्बन्ध के ज़रिये वह अपने अंदर एक असर क़बूल करता रहता है. यह असर जमा होते होते उसकी आत्मा में एक बीज सा बन जाता है. इस बीज में बहुत से बाहरी तत्व मिले होते हैं. जैसे बीज अंकुर फूटने से पहले ज़मीन के अन्दर एक अरसे तक पलता रहता है, यह बीज भी आदमी की आत्मा में परवरिश पाता रहता है, और एक दिन अचानक उसका खोल टूट कर अलग हो जाता है और उसमें से एक सुन्दर और कोमल अंकुर फूटता है—यह आदमी का ज्ञान या कल्चर का फल होता है, जिसे वह मंत्र, छंद, शेर, नसर, मूर्ति या चित्र में ज़ाहिर करता है. कलचर अतालवी शब्द Cultus से निकला है, जिसका मतलब है जोतना, अपने अन्दर बीज बोना.

वेदों के बनाने वाले बहुत से ऋशि थे. उनमें मर्द भी थे, औरतें भी. यानी वेद मनुश्य के साझे के ज्ञान का भंडार है. कोई भी मंत्र या शेर किसी भी एक आदमी के तजरुबे का नतीजा नहीं होता. एक आदमी दूसरों के तजरुबों से भी सीखता है. वह जो कुछ करते और कहते हैं, उससे असर लेता है. यह तजरुबा और असर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विरासत में मिलता है. इसलिये ऋशियों ने जो वेद मन्त्र देखे थे, वह उन सब मनुश्यों के तजरुबे का निचोड़ थे जो उस समय तक कुदरत की जानकारी हासिल करने और उसे अमल में लाने के लिये जूझते रहे थे.

इतिहासकारों का कहना है कि आर्य लोग असीरिया से आये थे क्योंकि वेदों में जिन इन्द्र और वरुन आदि देवताओं



دوسری پستک یجروید ھے . 'یجر' کا مطلب ھے—کام میں لانا، عمل کرنا . اس لئے یجر وید کا مطلب ھے—جانکاری یا گیان کو عمل میں لانا .

رگ وید اور یجر وید کے ان ارتھوں سے ھم ان نتیجوں پر پہونچتے ھیں کہ ھندستان کے شروع کے باشندوں—ھمارے پوروجوں نے—قدرت کے بارے میں ادھک سے ادھک جانکاری حاصل کرنے اور اسے عمل میں لانے کی کوشش کی . اِس طرح اُنھوں نے اپنے کلچر کو آگے بڑھایا . گیان کے بارے میں اُن کے من میں کوئی تعصب نہیں تھا . جس چیز کو وہ مفید دیکھتے تھے اُسی کو اپنا لیتے تھے اور جسے اپناتے تھے، اس پر عمل کرتے تھے . ودوانوں کا کہنا ھے کہ ویدوں کے منتر رشیوں نے بنائے یا رچے نہیں، بلکہ دیکھے ھیں . اِس کا بھی یہی مطلب ھوا کہ ویدوں کے منتر کوی کے وچار کی اُڑان یا کلپنا کی چیز نہیں، بلکہ منشیہ کے تجربے کا نچوڑ ھے . اُس نے اپنے جیون میں جو کچھ دیکھا اور کیا اُسے منتروں میں لکھ دیا . ظاھر ھے کہ آدمی جو کچھ دیکھتا اور کرتا ھے، اُسے لکھ دینا آسان نہیں ھے . آدمی جو کچھ دیکھتا ھے اور کرتا ھے اُس کے ساتھ اُس کا انجانے ھی ایک دماغی سمبندھ جڑ جاتا ھے اور اِس سمبندھ کے ذریعہ وہ اپنے اندر ایک اثر قبول کرتا رھتا ھے . یہ اثر جمع ھوتے ھوتے آتما میں ایک بیج سا بن جاتا ھے . اِس بیج میں بہت سے باھری تتو ملے ھوتے ھیں . جیسے بیج انکر پھوٹنے سے پہلے زمین کے اندر ایک عرصے تک پلتا رھتا ھے، یہ بیج بھی آدمی کی آتما میں پرورش پاتا رھتا ھے، اور ایک دن اچانک اُس کا خول ٹوٹ کر الگ ھو جاتا ھے اور اُس میں سے ایک سندر اور کومل انکر پھوٹتا ھے—یہ آدمی کا گیان یا کلچر کا پھل ھوتا ھے، جسے وہ منتر، چھند، شعر، نثر، مورتی یا چتر میں ظاھر کرتا ھے . کلچر اطالوی شبد Cultus سے نکلا ھے، جسکا مطلب ھے جوتنا، اپنے اندر بیج بونا .

ویدوں کے بنانے والے بہت سے رشی تھے . اُنمیں مرد بھی تھے، عورتیں بھی . یعنی وید منشیہ کے ساجھے کے گیان کا بھنڈار ھے . کوئی بھی منتر یا شعر کسی بھی ایک آدمی کے تجربے کا نتیجہ نہیں ھوتا . ایک آدمی دوسروں کے تجربوں سے بھی سیکھتا ھے . وہ جو کچھ کرتے اور کہتے ھیں، اُس سے اثر لیتا ھے . یہ تجربہ اور اثر ایک پیڑھی سے دوسری پیڑھی کو وراثت میں ملتا ھے . اِس لئے رشیوں نے جو وید منتر دیکھے تھے، وہ اُن سب منشیوں کے تجربے کا نچوڑ تھے جو اُس سمے تک قدرت کی جانکاری حاصل کرنے اور اُسے عمل میں لانے کے لئے جوجھتے رھے تھے .

اِتہاسکاروں کا کہنا ھے کہ آریہ لوگ اسیریا سے آئے تھے کیونکہ ویدوں میں جن اِندر اور ورن آدی دیوتاؤں

# हिन्दुस्तानी कलचर

( हंसराज रहबर )

[ पिछले साल हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने हिन्दुस्तानी कलचर पर इनामी लेख लिखाए थे. तीस विद्वानों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया था. देश के तीन जिम्मेदार और बड़े विद्वान व्यक्ति जज बनाए गए थे. उन्होंने मेहनत से सारे लेखों को पढ़कर अपना निर्णय दिया है. इन लेखकों में से कई को इनाम मिला है. चाहिये यह था कि उन लेखों को पहले छापा जाता जिनको इनाम मिला है. लेकिन वह सब लेख अंग्रेज़ी में हैं और अनुवाद करने में समय लगेगा. इसीलिए हम पहले उन लेखों को छाप रहे हैं जो हिन्दी और उर्दू में हैं.

इन लेखों में जो विचार ज़ाहिर किये गए हैं उनका 'नया हिन्द' से कोई सम्बन्ध नहीं है. इस प्रतियोगिता में हर विचारधारा के लोगों ने भाग लिया है और इसी लिए इन लेखों में हर विचारधारा पढ़ने को मिलेगी. हम 'नया हिन्द' के पाठकों के सामने यह सामग्री इसलिये पेश कर रहे हैं कि वह सब विचारों को सामने रख कर अपना विचार बना सकें और सही कलचर की रूप रेखा सामने आ सके—एडीटर ]

मेरा ख़्याल है कि प्रकृति के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करना और उसे अमल में लाने का नाम कलचर है.

जिस देश या जाति ने प्रकृति के बारे में जितनी अधिक जानकारी हासिल की और अपने जीवन में उस जानकारी पर जितना अमल किया उतना ही उसका कलचर आगे बढ़ा और उस देश या जाति की तरक़्क़ी हुई.

हिन्दुस्तान ने प्रकृति के बारे में धीरे धीरे जितना ज्ञान हासिल किया और उस ज्ञान को अपने अमली जीवन में ढाला उसी का नाम हिन्दुस्तानी कलचर है.

वेद—हिन्दुस्तान के शुरू के बाशिंदों—आर्यों के, ज्ञान के भंडार हैं और वह दुनिया की सबसे पुरानी पुस्तकें मानी जाती हैं. वेद शब्द 'विद्' धातु से बना है, जिसका मतलब है—जानना. वेदों में भी सबसे पहली पुस्तक ऋग्वेद है. 'रिग्' का मतलब है—नेचर या प्रकृति, और वेद का मतलब हम पहले बता चुके हैं—जानकारी. इसलिये रिग् वेद का मतलब हुआ—क़ुदरत के बारे में जानकारी.

# ھندستانی کلچر

( ھنس راج رھبر )

[ پچھلے سال ھندستانی کلچر سوسائٹی نے ھندستانی کلچر پر انعامی لیکھ لکھائے تھے . تیس ودوانوں نے اِس پرتی یوگتا میں بھاگ لیا تھا . دیش کے تین ذمہ‌دار اور بڑے ودوان جج بنائے گئے تھے . اُنھوں نے محنت سے سارے لیکھوں کو پڑھکر اپنا نرنے دیا ھے . اِن لیکھکوں میں سے کئی کو اِنعام ملا ھے . چاھئیے یہ تھا کہ اُن لیکھوں کو پہلے چھاپا جاتا جن کو اِنعام ملا ھے . لیکن وہ سب لیکھ انگریزی میں ھیں اور انوواد کرنے میں سمے لگے گا . اس لئے ھم پہلے اُن لیکھوں کو چھاپ رھے ھیں جو ھندی اور اُردو میں ھیں .

اِن لیکھوں میں جو وچار ظاھر کئے گئے ھیں اُن کا 'نیا ھند' سے کوئی سمبندھ نہیں ھے . اِس پرتی یوگتا میں ھر وچار دھارا کے لوگوں نے بھاگ لیا ھے اور اِسی لئے اِن لیکھوں میں ھر وچار دھارا پڑھنے کو ملےگی . ھم 'نیا ھند' کے پاٹھکوں کے سامنے یہ سامگری اِس لئے پیش کر رھے ھیں کہ وہ سب وچاروں کو سامنے رکھ کر اپنا وچار بناسکیں اور صحیح کلچر کی روپ ریکھا سامنے آسکے—ایڈیٹر ]

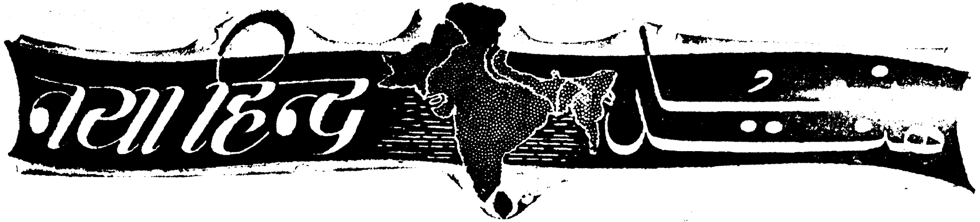
  

میرا خیال ھے کہ پرکرتی کے بارے میں ادھک سے ادھک جانکاری حاصل کرنا اور اُسے عمل میں لانے کا نام کلچر ھے .

جس دیش یا جاتی نے پرکرتی کے بارے میں جتنی ادھک جانکاری حاصل کی اور اپنے جیون میں اُس جانکاری پر جتنا عمل کیا اتنا ھی اُس کا کلچر آگے بڑھا اور اُس دیش یا جاتی کی ترقی ھوئی .

ھندستان نے پرکرتی کے بارے میں دھیرے دھیرے جتنا گیان حاصل کیا اور اُس گیان کو اپنے عملی جیون میں ڈھالا اُسی کا نام ھندستانی کلچر ھے .

وید—ھندستان کے شروع کے باشندوں—آریوں کے' گیان کے بھنڈار ھیں اور وہ دنیا کی سب سے پرانی پستکیں مانی جاتی ھیں . وید شبد 'ود' دھاتو سے بنا ھے' جسکا مطلب ھے—جاننا . ویدوں میں بھی سب سے پہلی پستک رگ وید ھے . 'رگ' کا مطلب ھے—نیچر یا پرکرتی' اور وید کا مطلب ھم پہلے بتا چکے ھیں—جانکاری . اس لئے رگ‌وید کا مطلب ھوا—قدرت کے بارے میں جانکاری .




जिल्द 17 सितम्बर-अक्तूबर सन '54 नम्बर 3-4

نمبر 3-4 ستمبر - اکتوبر سن '54 جلد 17

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ھے، ھندستانی بولی،
'نیا ھند' پہنچے گا گھر - گھر لئے پریم کی جھولی .

---

## "किसान राजा"

( ज़ुबैर रिज़वी )

मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी
ऊंचे परबत मेरे हैं यह नीली छतरी मेरी
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

रंग बिरंगे पेड़ों की यह झूमती डारें मेरी
खलियानों पर मेरा क़ब्ज़ा धान की बालें मेरी
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

खेत हैं मेरे, सागर मेरा, चंचल लहरें मेरी
मस्त पवन, घनघोर घटाएं, ऊदी झीलें मेरी
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

फूल, शगूफ़े, कच्ची कलियां, हरी भरी फुलवारी
खेत का हर हर पौदा मेरा गुलशन की हर क्यारी
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

धरती के सीने में मैंने अपना ख़ून समोया
तपती धूप में नाज उगाने बीज यह मैंने बोया
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

अपने घर में भूक उगाई जग में हुन बरसाया
महलों को उजियारा बख़्शा कुटिया को अंधियारा
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

दाना दाना आज मगर है एक उपी तलवार
देहला देगी सारे जग को आज मेरी ललकार
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

डाली डाली पत्ती पत्ती पर है मेरा अधिकार
मुस्काए है आज दरांती फ़सल खड़ी तैयार
मैं राजा हूं इस नगरी का सारी धरती मेरी

---

## "کسان راجه"

( زبیر رضوی )

میں راجه ھوں اس نگری کا ساری دھرتی میری
اونچے پربت میرے ھیں یه نیلی چھتری میری
میں راجه ھوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

رنگ برنگے پیڑوں کی یه جھومتی ڈاریں میری
کھلیانوں پر میرا قبضه دھان کی بالیں میری
میں راجه ھوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

کھیت ھیں میرے، ساگر میرا، چنچل لہریں میری
مست پون، گھنگھور گھٹائیں، اودی جھیلیں میری
میں راجه ھوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

پھول، شگوفے، کچی کلیاں، ھری بھری پھلواری
کھیت کا ھر ھر پودا میرا گلشن کی ھر کیاری
میں راجه ھوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

دھرتی کے سینے میں میں نے اپنا خون سمویا
تپتی دھوپ میں ناج اگانے بیج یه میں نے بویا
میں راجه ھوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

اپنے گھر میں بھوک اگائی جگ میں ھن برسایا
محلوں کو اجیارا بخشا کٹیا کو اندھیارا
میں راجه ھوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

دانه دانه آج مگر ھے ایک اپی تلوار
دھلا دے گی سارے جگ کو آج میری للکار
میں راجه ھوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

ڈالی ڈالی پتی پتی پر ھے میرا ادھیکار
مسکائے ھے آج درانتی فصل کھڑی تیار
میں راجه ھوں اس نگری کا ساری دھرتی میری

---

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

# ھندستانی کلچر سوسائٹی

क

کا

# माहवारी परचा

# ماھواری پرچا

## सितम्बर-अक्तूबर 1954 ستمبر-اکتوبر

क्या किस से | सफ़ा صفحہ | کیا کس سے


1. "किसान राजा" (कविता)—जुबैर रिज़वी ... 123
2. हिन्दुस्तानी कलचर—हंसराज रहबर ... 124
3. बेकारी का हल—डाक्टर वी. वी. सिंह ... 141
4. योजना के तीन साल—सुरेशराम भाई ... 148
5. मदिरालय में (कहानी)—लेखक लू-शुन—अनुवादक कामेश्वर अग्रवाल ... 155
6. सूडान—ज़मीर हसन काज़िमी ... 165
7. बोली—एक इतिहास (तवारीख़)—मदन गोपाल 171
8. कुछ किताबें ... 175
9. हमारी राय— ... 177
   देश की मांग—सुरेशराम भाई; चार मैडिल !—सुरेशराम भाई; "वैलफ़ेयर स्टेट" बनाम ग्रामराज—सुरेशराम भाई; बाढ़ पीड़ित दरभंगा में—सुरेशराम भाई; नई लड़ाई नये सिपाही—सुरेशराम भाई.

1. " کسان راجہ " ( کویتا )—زبیر رضوی ...
2. ھندستانی کلچر—ھنس راج رھبر ...
3. بیکاری کا حل—ڈاکٹر وی . بی . سنگھ ...
4. یوجنا کے تین سال—سریش رامبھائی ...
5. مدرالئے میں ( کہانی )—لیکھک لو. شن—انوواڈک کامیشور اگروال ...
6. سوڈان—ضمیر حسن کاظمی ...
7. بولی—ایک اِتہاس ( تواریخ ) ...
8. کچھ کتابیں ...
9. ھماری رائے— ...
   دیش کی مانگ—سریش رامبھائی؛ چار میڈل—سریش رامبھائی؛ " ویل فیئراسٹیٹ " بنام گرام راج—سریش رامبھائی؛ باڑھ پیڑت دربھنگا میں—سریش رامبھائی؛ نئی لڑائی نئے سپاھی—سریش رامبھائی .


क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल,
एक परचा—दस आने.

قیمت—ھندستان میں چھہ روپیہ سال' باھر دس روپیہ سال'
ایک پرچہ—دس آنے .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مینیجر
'نیا ھند'
145' مٹھی گنج' الہ آباد .

# नया हिन्द  نیا ہند


एडीटर — ताराचंद, भगवानदीन, सैयद महमूद, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر — تاراچند، بھگوان دین، سید محمود، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर — सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر — سریش رام بھائی، مجیب رضوی




## इस नम्बर के ख़ास लेख

## اس نمبر کے خاص لیکھ


- हिन्दुस्तानी कलचर—हंस राज रहबर
- बेकारी का हल—डाक्टर बी. बी. सिंह
- योजना के तीन साल—सुरेशराम भाई
- बोली—एक इतिहास (तवारीख़)—मदन गोपाल

- ہندستانی کلچر — ہنس راج رہبر
- بیکاری کا حل — ڈاکٹر بی. بی. سنگھ
- یوجنا کے تین سال — سریش رام بھائی
- بولی — ایک اتہاس (تواریخ) — مدن گوپال

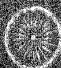

### हमारी राय

### ہماری رائے


- देश की मांग—सुरेशराम भाई
- "वैलफ़ेयर स्टेट" बनाम ग्रामराज—सुरेशराम भाई
- नई लड़ाई नये सिपाही—सुरेशराम भाई

- دیش کی مانگ — سریش رام بھائی
- "ویلفیئر اسٹیٹ" بنام گرام راج — سریش رام بھائی
- نئی لڑائی نئے سپاہی — سریش رام بھائی



स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद  ہندستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

सितम्बर - अक्तूबर 1954 ستمبر - اکتوبر

क़ीमत दस आना

قیمت دس آنہ

# हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें

# ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं

نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

| नाम किताब | लेखक | दाम | | | لیکھک | نام کتاب |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. शेर ओ शायरी | श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय | 8 | 0 | 0 | شری ایودھیا پرساد گوئیلی | 1. شعر و شاعری |
| 2. शेर ओ सुख़न | ,, | 8 | 0 | 0 | ,, | 2. شعر و سخن |
| 3. गहरे पानी पैठ | ,, | 2 | 8 | 0 | ,, | 3. گہرے پانی پیٹھ |
| 4. हमारे आराध्य | श्री बनारसीदास चतुर्वेदी | 3 | 0 | 0 | شری بنارسی داس چترویدی | 4. ہمارے آرادھیہ |
| 5. संस्मरण | ,, | 3 | 0 | 0 | ,, | 5. سنسمرن |
| 6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां | श्री जगदीशचन्द्र जैन | 3 | 0 | 0 | شری جگدیش چندر جین | 6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں |
| 7. ज्ञान गंगा | श्री नारायण साद जैन | 6 | 0 | 0 | شری نارائن پرساد جین | 7. گیان گنگا |
| 8. पथ चिन्ह | श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी | 2 | 0 | 0 | شری شانتی پریہ دویدی | 8. پتھ چنہ |
| 9. पंच प्रदीप | शान्ति एम. ए. | 2 | 0 | 0 | شانتی ایم ۔ اے | 9. پنچ پردیپ |
| 10. आकाश के तारे धरती के फूल | श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर | 2 | 0 | 0 | شری کنھیالال مشر پربھاکر | 10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول |
| 11. मुक्ति दूत | श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए. | 5 | 0 | 0 | شری ویریندر کمار جین ایم ۔ اے | 11. مکتی دوت |
| 12. मिलन यामिनी | श्री बच्चन | 4 | 0 | 0 | شری بچن | 12. ملن یامنی |
| 13. रजत रश्मि | डाक्टर रामकुमार वर्मा | 2 | 8 | 0 | ڈاکٹر رام کمار ورما | 13. رجت رشمی |
| 14. मेरे बापू | श्री तन्मय बुख़ारिया | 2 | 8 | 0 | شری تنمے بکھاریا | 14. میرے باپو |
| 15. विश्व संघ की ओर | पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला | 3 | 0 | 0 | پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا | 15. وشو سنگھ کی اور |
| 16. भारतीय अर्थशास्त्र | श्री भगवानदास केला | 5 | 0 | 0 | شری بھگوان داس کیلا' | 16. بھارتیہ ارتھ شاستر |
| 17. भारतीय शासन | ,, | 3 | 0 | 0 | ,, | 17. بھارتیہ شاسن |
| 18. नागरिक शास्त्र | ,, | 2 | 4 | 0 | ,, | 18. ناگرک شاستر |
| 19. साम्राज्य और उनका पतन | ,, | 2 | 8 | 0 | ,, | 19. سامراج اور اُن کا پتن |
| 20. भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन | ,, | 1 | 4 | 0 | ,, | 20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن |
| 21. सर्दोवय अर्थ व्यवस्था | ,, | 1 | 8 | 0 | ,, | 21. سروودے ارتھ ویوستھا |
| 22. हमारी आदिम जातियां | श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय | 3 | 8 | 0 | شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے | 22. ہماری آدم جاتیاں |
| 23. अर्थशास्त्र शब्दावली | श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला | 2 | 0 | 0 | شری دیا شنکر دوبے ایم ۔ اے ۔ ایل ایل ۔ بی ۔ گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا | 23. ارتھ شاستر شبداولی |
| 24. नागरिक शिक्षा | भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे | 1 | 8 | 0 | شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے | 24. ناگرک شکشا |
| 25. राष्ट्र मंडल शासन | श्री दयाशंकर दुबे | 1 | 8 | 0 | دیا شنکر دوبے | 25. راشٹر منڈل شاسن |
| 26. जवानो | महात्मा भगवानदीन | 3 | 0 | 0 | مہاتما بھگوان دین | 26. جوانو |
| 27. मारने की हिम्मत ! | ,, | 1 | 0 | 0 | ,, | 27. مارنے کی ہمت |
| 28. सलौना सच | ,, | 0 | 8 | 0 | ,, | 28. سلونا سچ |
| 29. मेरे साथी | ,, | 1 | 0 | 0 | ,, | 29. میرے ساتھی |

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ
مینیجر 'نیا ہند'
145' مٹھی گنج' الہ آباد-3

# झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप ए ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के. पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चित है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र के क़ायल हैं. वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, उम्दा छपाई, दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ी सदी कमीशन.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

# جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے ' فراق '

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے . آج کی اردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے‘ اب آپ کو اردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی . غلامی‘ انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی .

" اِن کویتاؤں میں انتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاؤ کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر کی ہیں ."

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

'' جھنکار میں پرکاشت 72 اردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں ."

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اِسنیہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا آنند لینگے اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے‘ یہ نشچت ہے."

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

" ہم اُن کی ( کویتاؤں کی ) شکتی‘ تازگی اور سوتر کے قائل ہیں . وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے . کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے ."

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

" جھنکار' کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے ."—' نیا سماج ' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا . سندر جلد‘ بڑھیا کاغذ . عمدہ چھپائی. دام صرف تین روپیہ . دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن .

ملنے کا پتہ—

منیجر ' نیا ہند ' 145‘ مٹھی گنج الہ آباد .

# गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुशों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने ( क़ुदसिया ज़ैदी ने ) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए

# کاندھی بابا

لیکھک — قدسیہ زیدی

دو شبد — جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے، جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں، اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ، اہنسا، پریم اور تیاگ کا اُپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اُترتا چلا جاتا ہے. ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے. اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اُٹھانے والے اُپدیش بھی.

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "انہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے. وہ اسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے.....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے."

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے.

---

# भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

**मैनेजर, 'नया हिन्द'**

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

# بھاشا

لیکھک — لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی. راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی.

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ.

ملنے کا پتہ—

**مینیجر، 'نیا ہند'**

145 مٹھی گنج، الہ آباد.

## महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

## अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

# आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

# मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 45, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद,

# مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے انے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں ۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے .

## اہنساتمک انقلاب کا راستہ

لیکھک--شری منظر علی سوختہ

اس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں انقلاب لایا جا سکتا ہے .

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے .

## آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

## مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر ' نیا ہند ' 145' متھی گنج ' الہآباد ,

# गीता और क़ुरान

## लेखक–पंडित सुन्दरलाल

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

## हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

## महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और इसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

## पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइं उन का दर्दनाक आंखों देखा बनन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

## बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

---

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145. मुट्ठीगंज. इलाहाबाद.

# گیتا اور قران

## لیکھک—پنڈت سندر لال

اِس کتاب میں ھندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ھیں. گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیاے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آئتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ھے.

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاھیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ھے.

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ.

## ھندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ھیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے.

سو صفحے کی کتاب. قیمت صرف بارہ آنے.

## مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذھبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا.

قیمت بارہ آنے.

## پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن. اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں. قیمت چار آنے.

## بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ‌وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ھے. قیمت صرف دو آنے.

---

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ھند' 145 مٹھی گنج، اِلہ آباد.

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

---

## भारत का विधान

### पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ. 'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

## फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

### सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दोरुपया.

## विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है. पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

---

# ھندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی . پوری جانکاری کے لئے لکھئے .

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا .

---

## بھارت کا ودھان

### پورا ھندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا . 'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انوِوادت .

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھے . بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رھنا ضروری ہے .

آسان بامحاورہ بھاشا . رایل اٹھ پیجی بڑا سائز . لگ بھگ چار سو پنّے . کپڑے کی سندر جلد . قیمت کیول ساڑھے سات روپئے .

## فرقہ بندی پر باپو

### سمپادک—شری شریکرشن داس

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا .

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اِس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے .

سندر جلد . اچھا کاغذ . دو سو صفحے . قیمت دو روپیہ .

## ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے . اِس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اِس کا مقصد کیا ہے . پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا . یہ دوسرا ایڈیشن ہے . صفحے 25، دام کیول دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'، 145، مٹھی گنج، الہ آباد.

सरकार के सामने विद्यार्थी हाथ फैलाकर कभी नहीं गया. कभी किसी ने नहीं चाहा कि गोरे अफ़सर जनता के बीच में आकर भाषन दें. बल्कि अगर कोई साहसी अंग्रेज़ या बर्तानी सरकार का हिन्दुस्तानी अफ़सर बीच में आ भी जाता था तो लोग नफ़रत से मुंह मोड़ लेते थे. जिस दिन लोग यह समझ लेंगे कि कांग्रेस सरकार जनता की सरकार नहीं है उस दिन कांग्रेस मन्त्रियों के साथ भी लोग यही व्यौहार करेंगे. लेकिन आज कांग्रेस को जनता की सरकार समझा जाता है और इसीलिये दावा है कि मन्त्री को जनता के बीच में आना पड़ेगा. जब मन्त्री इन्कार करते हैं तो यही दावा अधिकार को उकसाता है. जब अधिकार को हिंसक हथियार दिखाये जाते हैं तो दूसरी तरफ भी जोश बढ़ता है. तभी यह विचार पैदा होता है कि हमें अपनी मांग के लिये आन्दोलन करना चाहिये. आन्दोलन को दबाने के लिये मन्त्री गोली चलवाने की धमकी देते हैं. इस धमकी को विद्यार्थी सामूहिक रूप से स्वीकार करते हैं एक बात उनके दिल में साफ़ होती है और वह यह है कि संगठित ताक़त के आगे सरकार की फ़ौज और पुलिस हेच है. वह निडर होकर जुलूस ले चलते हैं. सरकार उनमें डर पैदा करने के लिये पुलिस के दस्ते भेजती है. अब यहां संघर्ष चलता है, होड़ लगती है. न जाने क्यों विद्यार्थी इतना मज़बूत है कि वह पुलिस से नहीं डरता और यह भी होता है कि पुलिस को अपनी हीनता का अनुभव कराने के लिये वह कभी कभी कुछ अनुचित क़दम भी उठा लेता है. खिसयानी बिल्ली खम्भा नोचती है. सरकार को जब अपनी हार दिखाई पड़ती है और जब वह देखती है कि उसकी शक्ति को विद्यार्थी हीन मानते हैं तो वह किसी न किसी बहाने से गोली चलाती है. गोया यह बत.ती है कि हम धमकी ही नहीं देते सचमुच हम में शक्ती है.

यही जड़ है जिसकी वजह से बार बार गोली चलती है. सवाल इस बात का नहीं है कि गोली पहले चली कि विद्यार्थियों ने आग पहले लगाई. सवाल यह है कि कांग्रेस सरकार फ़ौज की सरकार है या जनता की. दोनों सूरतों में मन्त्रियों के आचारन में जमीन आसमान का फ़र्क़ रहेगा. इसलिये जरूरी है कि कांग्रेसी मन्त्री अपना रास्ता तय कर लें. अगर पुलिस फ़ौज के वह मन्त्री हैं तो उनका मौजूदा रुख किसी को नहीं अखरेगा, फिर गोली चलाने की नौबत नहीं आयगी. अगर वह अपने को जनता का समझते ? और चाहते हैं कि गोली न चले तो उन्हें अपना मौजूदा व्यौहार बदलना होगा. जितनी जल्दी से जल्दी वह अपने रुख का ऐलान कर दें उतना ही अच्छा है.

30. 6. '54 —मुजीब रिज़वी



سرکار کے سامنے ودیارتھی ہاتھ پھیلاکر کبھی نہیں گیا. کبھی کسی نے نہیں چاہا کہ گورے افسر جنتا کے بیچ میں آکر بھاشن دیں. بلکہ اگر کوئی ساہسی انگریز یا برطانی سرکار کا ہندستانی افسر بیچ میں آ بھی جاتا تھا تو لوگ نفرت سے منہ موڑ لیتے تھے . جس دن لوگ یہ سمجھ لینگے کہ کانگریس سرکار جنتا کی سرکار نہیں ہے اس دن کانگریس منتریوں کے ساتھ بھی لوگ یہی ویوہار کرینگے . لیکن آج کانگریس کو جنتا کی سرکار سمجھا جاتا ہے اور اسی لئے دعویٰ ہے کہ منتری کو جنتا کے بیچ میں آنا پڑیگا. جب منتری انکار کرتے ہیں تو یہی دعویٰ ادھیکار کو اکساتا ہے . جب ادھیکار کو ہنسک ہتھیار دکھائے جاتے ہیں تو دوسری طرف بھی جوش بڑھتا ہے . تب ہی یہ وچار پیدا ہوتا ہے کہ ہمیں اپنی مانگ کے لئے آندولن کرنا چاہئے . آندولن کو دبانے کے لئے منتری گولی چلوانے کی دھمکی دیتے ہیں . اس دھمکی کو ودیارتھی ساموہک روپ سے سویکار کرتے ہیں . ایک بات ان کے دل میں صاف ہوتی ہے اور وہ یہ ہے کہ سنگٹھت طاقت کے آگے سرکار کی فوج اور پولیس ہیچ ہے . وہ نڈر ہوکر جلوس لے چلتے ہیں. سرکار ان میں ڈر پیدا کرنے کے لئے پولیس کے دستے بھیجتی ہے . اب یہاں سنگھرش چلتا ہے' ہوڑ لگتی ہے . نہ جانے کیوں ودیارتھی اتنا مضبوط ہے کہ وہ پولیس سے نہیں ڈرتا اور یہ بھی ہوتا ہے کہ پولیس کو اپنی ہینتا کا انوبھو کرانے کے لئے وہ کبھی کبھی کچھ انچت قدم بھی اٹھا لیتا ہے . کھسیانی بلی کھمبا نوچتی ہے. سرکار کو جب اپنی ہار دکھائی پڑتی ہے اور جب وہ دیکھتی ہے کہ اسکی شکتی کو ودیارتھی ہین مانتے ہیں تو وہ کسی نہ کسی بہانے سے گولی چلاتی ہے . گویا یہ بتاتی ہے کہ ہم دھمکی ہی نہیں دیتے سچ مچ ہم میں شکتی ہے.

یہی جڑ ہے جسکی وجہ سے بار بار گولی چلتی ہے . سوال اس بات کا نہیں ہے کہ گولی پہلے چلی کہ ودیارتھیوں نے آگ پہلے لگائی . سوال یہ ہے کہ کانگریس سرکار پولیس فوج کی سرکار ہے یا جنتا کی. دونوں صورتوں میں منتریوں کے آچرن میں زمین آسمان کا فرق رہیگا . اس لئے ضروری ہے کہ کانگریسی منتری اپنا راستہ طے کرلیں. اگر پولیس فوج کے وہ منتری ہیں تو ان کا موجودہ رخ کسی کو نہیں اکھریگا' پھر گولی چلانے کی نوبت نہیں آئیگی . اگر وہ اپنے کو جنتا کا سمجھتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ گولی نہ چلے تو انہیں اپنا موجودہ بیوہار بدلنا ہوگا . جلدی جلدی سے جلدی وہ اپنے رخ کا اعلان کردیں اتنا ہی اچھا ہے .

—مجیب رضوی 30 . 7 . 54

सरकार उन लोगों की है जिनके हाथ में पैसा है और लड़के भी उन्हीं के हैं जिनके हक़ में पैसा है. लड़का बुरा हो या अच्छा पर मां बाप को प्यारा होता है, वह कभी पसन्द नहीं कर सकते कि उनके बच्चों पर गोली चलाई जाये. अगर उनको यक़ीन हो जाये कि मज़दूर और किसानों की तरह ही यह सरकार हमारे बच्चों पर भी गोली चलाती है तो वह अपना सहयोग सरकार से वापस ले लें. सरकार इस बात को समझती है. जब जब विद्यार्थियों पर गोली चलती है, सरकार कहती है कि गुन्डों ने क़ानून को ख़तरे में डाल दिया था इसलिये गोली चलानी पड़ी. इस तरह वह विद्यार्थियों को पीछे डाल देती है और गुन्डों को आगे कर देती है और यह सिद्ध करती है कि नागरिकों को आफ़त से बचाने के लिये गोली चलाना ज़रूरी था.

दूसरा सवाल यह भी उठ खड़ा होता है कि विद्यार्थी बार बार सरकार के ख़िलाफ़ क्यों खड़े होते हैं. कुछ चीज़ें तो आम हैं. इन पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है. लेकिन एक बात बहुत ख़ास है और आजतक के सारे आन्दोलनों में वह पाई जाती है. वह है मन्त्रियों का अनुचित व्यवहार. जब जब लोग उनसे मिलने जाते हैं और अपनी मांगें उनके सामने रखते हैं तो वह तर्क से नहीं धमकी से जवाब देते हैं. धमकी दूसरे में ग़ुस्सा पैदा करती है. कायर धमकी से दब जाते हैं और हमें, इस बात की ख़ुशी है कि हमारे नौजवान कायर नहीं हैं. इन्दौर की दुर्घटना में भी यह बात साफ़ दिखाई पड़ती है. एक प्रिन्सिपल का तबादला कर दिया जाता है. उनसे विद्यार्थी अपार श्रद्धा रखते हैं. विद्यार्थी शिक्षा मन्त्री से मिलना चाहते हैं और प्रार्थना करना चाहते हैं कि वह तबादले को रोक दें. दो एक दिन तबादला रुक सकता था. दावत बाज़ियों से दो एक दिन की फ़ुरसत मन्त्री जी ले सकते थे. अगर मन्त्री जी प्यार से विद्यार्थियों को समझाते और तर्क से उन्हें जीतने की कोशिश करते तो इन्दौर की दुर्घटना न होती. मैं यह नहीं कहता हूं कि एक दिन में विद्यार्थी मान जाते लेकिन यह ज़रूर है कि विद्यार्थी जुलूस न निकालते, जोश में न आते और अगर मन्त्री जी के पक्ष में कुछ जान होती तो वह मान भी जाते. आदमियों की जान लेने से बेहतर होता कि सरकार के मन्त्री अपना कुछ समय बर्बाद कर लेते.

मध्य भारत की सरकार को दोश क्या दिया जाय ? हर कांग्रेसी सरकार यही करती है. एक तरफ़ जनता की सरकार होने का दावा है और दूसरी तरफ़ पुलिस और फ़ौज का हर बात में सहारा लिया जाता है. दोनों विरोधी बातें हैं. पुलिस और फ़ौज के बल पर राज्य करने वालों के पास जनता के प्रतिनिधि मांग लेकर नहीं जाते. अंग्रेज़ी



سرکار اُن لوگوں کی ہے جن کے ہاتھ میں پیسہ ہے اور لڑکے بھی انہیں کے ہیں جن کے ہاتھ میں پیسہ ہے ۔ لڑکا برا ہو یا اچھا پر ماں باپ کو پیارا ہوتا ہے، وہ کبھی پسند نہیں کر سکتے کہ اُن کے بچوں پر گولی چلائی جائے ۔ اگر اُن کو یقین ہوجائے کہ مزدور اور کسانوں کی طرح ہی یہ سرکار ہمارے بچوں پر بھی گولی چلاتی ہے تو وہ اپنا سہیوگ سرکار سے واپس لے لیں۔ سرکار اِس بات کو سمجھتی ہے۔ جب جب ودیارتھیوں پر گولی چلتی ہے، سرکار کہتی ہے کہ غنڈوں نے قانون کو خطرے میں ڈالدیا تھا اِس لئے گولی چلانی پڑی ۔ اِس طرح وہ ودیارتھیوں کو پیچھے ڈال دیتی ہے اور غنڈوں کو آگے کر دیتی ہے اور یہ سدھ کرتی ہے کہ ناگرکوں کو آفت سے بچانے کے لئے گولی چلانا ضروری تھا ۔

دوسرا سوال یہ بھی اٹھ کھڑا ہوتا کہ ودیارتھی بار بار سرکار کے خلاف کیوں کھڑے ہوتے ہیں ۔ کچھ چیزیں تو عام ہیں۔ اِن پر بہت کچھ لکھا جا چکا ہے ۔ لیکن ایک بہت خاص ہے اور آج تک کے سارے آندولنوں میں وہ پائی جاتی ہے ۔ وہ ہے منتریوں کا اَن اُچت بیوہار ۔ جب جب لوگ اُن سے ملنے جاتے ہیں اور اپنی مانگیں ان کے سامنے رکھتے ہیں تو وہ ترک سے نہیں دھمکی سے جواب دیتے ہیں ۔ دھمکی دوسرے میں غصہ پیدا کرتی ہے ۔ کائر دھمکی سے دب جاتے ہیں اور ہمیں اِس بات کی خوشی ہے کہ ہمارے نوجوان کائر نہیں ہیں ۔ اندور کی درگھٹنا میں بھی یہ بات صاف دکھائی پڑتی ہے ۔ ایک پرنسپل کا تبادلہ کر دیا جاتا ہے ۔ اُن سے ودیارتھی اپار شردھا رکھتے ہیں ۔ ودیارتھی شکشا منتری سے ملنا چاہتے ہیں اور پرارتھنا کرنا چاہتے ہیں کہ وہ تبادلے کو روک دیں ۔ دو ایک دن تبادلہ رک سکتا تھا ۔ دعوت بازیوں سے دو ایک دن کی فرصت منتری جی لے سکتے تھے ۔ اگر منتری جی پیار سے ودیارتھیوں کو سمجھاتے اور ترک سے اُنہیں جیتنے کی کوشش کرتے تو اندور کی درگھٹنا نہ ہوتی ۔ میں یہ نہیں کہتا ہوں کہ ایک دن میں ودیارتھی مان جاتے لیکن یہ ضرور ہے کہ ودیارتھی جلوس نہ نکالتے، جوش میں نہ آتے اور اگر منتری جی کے پکش میں کچھ جان ہوتی تو وہ جان بھی جاتے ۔ آدمیوں کی جان لینے سے بہتر ہوتا کہ سرکار کے منتری اپنا کچھ سمے برباد کر لیتے ۔

مدھیہ بھارت کی سرکار کو دوش کیا دیا جائے؟ ہر کانگریس سرکار یہی کرتی ہے ۔ ایک طرف جنتا کی سرکار ہونے کا دعویٰ ہے اور دوسری طرف پولیس اور فوج کا ہر بات میں سہارا لیا جاتا ہے ۔ دونوں ورودھی باتیں ہیں۔ پولیس اور فوج کے بل پر راج کرنیوالوں کے پاس جنتا کے پرتیندھی مانگ لےکر نہیں جاتے ۔ انگریز

## इन्दौर की दुर्घटना

अभी हाल में इन्दौर में गोलियां चली हैं. सरकार का कहना है कि विद्यार्थी क़ाबू से बाहर हो गये थे. इसलिये यह क़दम उठाना पड़ा. यह घटना होते ही मन्त्री महोदय ने दुख प्रगट किया और सारी जिम्मेदारी गुन्डों के सर थोपी. उन्होंने अपने क़दम को ठीक साबित करने के लिये यह भी कहा कि हर सरकार को यही क़दम उठाना चाहिये जब क़ानून को इस तरह का ख़तरा पैदा हो जाये. हमारे पास इन्दौर की कोई ऐसी ख़बर नहीं है जिसके आधार पर हम सच और झूठ के पक्ष में कुछ लिख सकें. हम केवल दुख ही प्रकट कर सकते हैं. हाई कोर्ट का जलाया जाना बहुत दुखदायक घटना है और गोली चलना उससे भी बड़ी दुर्घटना है.

आज जब इस घटना पर सोचते हैं तो बार बार यह सवाल उठता है यह गुन्डे कौन हैं? क्या गुन्डों से मतलब उन लोगों से है जो आम तरीक़े से चोरी बदमाशी करते हैं? अगर ऐसा है तो हमें यह कहने में कोई झिझक नहीं है कि यह बात सरासर झूट है. इस तरह के गुन्डे हाई कोर्ट जलाने नहीं जाते हैं और न उन्हें मन्त्रियों से मिलने में कोई दिलचस्पी होती हैं हो सकता है कि इस तरह के गुन्डे जुलूस के साथ शामिल हो जायें और दूसरों की जेब काटें. लेकिन यह कभी नहीं हो सकता कि पुलिस की गोली चलती हो और वह मैदान में डटे रहें. झूट बोलना ऐसे भी शोभा नहीं देता और अपने विरोधी के चरित्र पर इलज़ाम लगाना और भी बुरी बात है. लेकिन मालूम होता है कि सरकार अंग्रेज़ों की परम्परा को निभाती है. अंग्रेज़ों के लिये हर कांग्रेसी गुन्डा था और कांग्रेसियों के लिये आज हर विरोधी गुन्डा है. हाई कोर्ट को जलाने वालों को गुन्डा कहे बिना भी परिस्थिति की भयानकता की जानकारी जनता को दी जा सकती थी. शायद उस समय जनता सरकार के पक्ष की तरफ़ ज़्यादा झुकती. पर लगता है कि विरोधियों को गुन्डा कहने के पीछे कोई ख़ास तत्व है. यह तत्व क्या है?

विद्यार्थी किसी बेजान चीज़ का नाम नहीं है यह संज्ञा है उन लड़के लड़कियों की जो शिक्षा संस्थाओं में पढ़ते हैं. यह किस के लड़के लड़कियां होते हैं? यह उनके लड़के लड़कियां होते हैं जो ख़ुशहाल हैं, जो बड़े-बड़े ओहदों पर हैं, जो कारख़ाने दार हैं, जो ज़मीदार हैं. इन्हीं महा पुरुषों की सन्तानों के बीच दो एक फ़ी सैकड़ा ऐसे भी होते हैं जो बड़े और भद्र घरानों से ताल्लुक़ नहीं रखते हैं. गुन्डे कहने का भेद यहां छिपा हुआ है अपनी औलाद को गाली कैसे दी जाय, उसे दोशी कैसे ठहराया जाय. इसलिये जो घटना होती है उसे गुन्डों के सर मढ़ दिया जाता है.



## اندور کی درگھٹنا

ابھی حال میں اندور میں گولیاں چلی ہیں. سرکار کا کہنا ہے کہ ودیارتھی قابو سے باہر گئے تھے. اس لئے یہ قدم اٹھانا پڑا. یہ گھٹنا ہوتے ہی منتری مہودے نے دکھ پرکٹ کیا اور ساری ذمہ‌داری غنڈوں کے سر تھوپی. انہوں نے اپنے قدم کو ٹھیک ثابت کرنے کے لئے یہ بھی کہا کہ ہر سرکار کو یہی قدم اٹھانا چاہئے جب قانون کو اس طرح کا خطرہ پیدا ہوجائے. ہمارے پاس اندور کی کوئی ایسی خبر نہیں ہے جس کے آدھار پر ہم سچ اور جھوٹ کے پکش میں کچھ لکھ سکیں. ہم کیول دکھ ہی پرکٹ کر سکتے ہیں. ہائی‌کورٹ کا جلایا جانا بہت دکھ دائک گھٹنا ہے اور گولی چلنا اس سے بھی بڑی درگھٹنا ہے.

آج جب درگھٹنا پر ہم سوچتے ہیں تو بار بار یہ سوال اٹھتا ہے کہ یہ غنڈے کون ہیں؟ کیا غنڈوں سے مطلب ان لوگوں سے ہے جو عام طریقے سے چوری بدمعاشی کرتے ہیں؟ اگر ایسا ہے تو ہمیں یہ کہنے میں کوئی جھجھک نہیں ہے کہ یہ بات سراسر جھوٹ ہے. اس طرح کے غنڈے ہائی‌کورٹ جلانے نہیں جاتے ہیں اور نہ انہیں منتریوں سے ملنے میں کوئی دلچسپی ہوتی ہے. ہوسکتا ہے کہ اس طرح کے غنڈے جلوس کے ساتھ شامل ہو جائیں اور دوسروں کی جیب کاٹیں. لیکن یہ کبھی نہیں ہوسکتا کہ پولیس کی گولی چلتی ہو اور وہ میدان میں ڈٹے رہیں. جھوٹ بولنا ایسے بھی شوبھا نہیں دیتا اور اپنے ورودھی کے چرتر پر الزام لگانا اور بھی بری بات ہے. لیکن معلوم ہوتا ہے کہ سرکار انگریزوں کی پرمپرا کو نبھاتی ہے. انگریزوں کے لئے ہر کانگریسی غنڈا تھا اور کانگریسیوں کے لئے آج ہر ورودھی غنڈہ ہے. ہائی‌کورٹ کو جلانے والوں کو غنڈہ کہے بنا بھی پرستھتی کی بھیانکتا کی جانکاری جنتا کو دی جا سکتی تھی. شاید اس سمے جنتا سرکار کے پکش کی طرف زیادہ جھکتی. پر لگتا ہے کہ ورودھیوں کو غنڈا کہنے کے پیچھے کوئی خاص تتو ہے. یہ تتو کیا ہے؟

ودیارتھی کسی بے جان چیز کا نام نہیں ہے. یہ سنگیا ہے اُن لڑکے لڑکیوں کی جو شکشا سنستھاؤں میں پڑھتے ہیں. یہ کس کے لڑکے لڑکیاں ہوتے ہیں؟ یہ ان کے لڑکے لڑکیاں ہوتے ہیں جو خوشحال ہیں، جو بڑے بڑے عہدوں پر ہیں، جو کارخانے دار ہیں، جو زمیندار ہیں. انہیں مہاپرشوں کی سنتانوں کے بیچ دو ایک فی سیکڑہ ایسے بھی ہوتے ہیں جو بڑے اور بھدر گھرانوں سے تعلق نہیں رکھتے ہیں. غنڈے کہنے کا بھید یہاں چھپا ہوا ہے. اپنی اولاد کو گالی کیسے دی جائے، اسے دوشی کیسے ٹھہرایا جائے. اس لئے جو گھٹنا ہوتی ہے اسے غنڈوں کے سر منڈھ دیا جاتا ہے.

## हमारी राय

अमरीका कोशिश कर रहा था क्योंकि बिना अंग्रेज़ी फ़ौजों स्वेज़ नहर से हटे मिस्र मीडो के सम्बन्ध में सोचने पर तैयार नहीं था. शायद अमरीका को यह उम्मीद बंधी है कि मिस्र, सुलह के बाद, मीडो में शामिल हो जाएगा.

सुलह की एक शर्त यह है कि यदि तुर्की पर कोई हमला होगा तो नहर स्वेज़ में अंग्रेज़ फ़ौजें फिर आजाएंगीं. यह बहुत ख़तरनाक शर्त है तुर्की मीडो में है और मीडो रूस के ख़िलाफ़ एक फ़ौजी संगठन है जिस के जन्मदाता अमरीकी हैं. अमरीका वाले झूट मूट के हमले का बवन्डर खड़ा करने में माहिर हैं. कोरिया की मिसाल सामने है. इस तरह जब भी अमरीका का मन स्वेज़ पर क़ब्ज़ा कराने का चाहेगा वह तुर्की पर हमले की कहानी गढ़ेगा और बरतानी फ़ौजें फिर मिस्र की छाती पर चढ़ बैठेंगी. बात चीत के बीच अंग्रेज़ों ने ज़ोर दिया था कि मिस्र यह बात मान ले कि यदि ईरान पर हमला होगा तो बरतानी फ़ौजें नहर स्वेज़ में आजाएंगीं. पर मिस्र ने इस बात को नहीं माना और अंग्रेज़ इस मांग पर डटे रहे. इस सम्बन्ध में तुर्की और ईरान में केवल इतना अन्तर है कि तुर्की मीडो का मेम्बर है और ईरान होने जा रहा है. अगर कल ईरान पर हमला हुआ तो तुर्की मीडो का मेम्बर होने के नाते मैदान में आएगा. तब बरतानी फ़ौजें स्वेज़ में आजाएंगी. इस तरह मिस्र की आज़ादी को हर दम ख़तरा बना रहता है. इसी लिये मिस्र की आज़ादी की ख़ुशी मनाते समय हम चिन्तित भी हैं.

एक बात का ख़तरा और दिखाई पड़ रहा है. खटका है कहीं मिस्र मीडो में न शामिल हो जाए. क्योंकि सुलह होते ही अमरीकी राजदूत फ़ौजी और आर्थिक सहायता की थैलियां लेकर सत्ताधीशों के पास पहुंचने लगे हैं. मिस्र के मीडो में न शामिल होने से अभी तक मीडो बन नहीं सका. अमरीका वालों ने मिस्र पर बहुत ज़ोर डाला पर उन्होंने देखा कि जब तक बरतानिया स्वेज़ नहर नहीं छोड़ता मिस्र क़ाबू में नहीं आने का. मिस्र छोड़ने का कारन श्री चर्चिल ने यह बताया है कि ऐटम बम की लड़ाई में स्वेज़ का कोई उपयोग नहीं है. लेकिन लगता है इस तुरन्त सुलह के पीछे कोई दूसरा भेद है. वाशिंगटन में आइज़नहावर ने चर्चिल पर ज़ोर दिया कि वह मिस्र से समझौता कर लें. चर्चिल को झुकना पड़ा. ख़ुलासा यह है कि जिन परिस्थितियों में यह समझौता हुआ है वह ख़तरे की सूचक हैं.

हम आशा करते हैं कि मिस्र सतर्क रहेगा और न तो अपनी आज़ादी को दोबारा ख़तरे में पड़ने देगा और न बुरी से बुरी परिस्थिति में भी मीडो में शामिल होकर एशिया के दूसरे देशों की आज़ादी को ख़तरे में नहीं डालेगा.

30.7.'54 —मुजीब रिज़वी

## ہماری رائے

امریکہ کوشش کر رہا تھا کیونکہ بنا انگریزی فوجوں کے سوئز نہر سے ہٹے مصر میڈو کے سمبندھ میں سوچنے پر تیار نہیں تھا ۔ شاید امریکہ کو یہ امید بندھی ہے کہ مصر صلح کے بعد میڈو میں شامل ہوجائیگا ۔

صلح کی ایک شرط یہ ہے کہ یدی ترکی پر کوئی حملہ ہوگا تو نہر سوئز میں انگریز فوجیں پھر آجائینگی ۔ یہ بہت خطرناک شرط یہ ہے ۔ ترکی میڈو میں ہے اور میڈو روس کے خلاف ایک فوجی سنگٹھن ہے جس کے جنم داتا امریکی ہیں ۔ امریکہ والے جھوٹ موٹ کے حملے کا بونڈر کھڑا کرنے میں ماہر ہیں ۔ کوریا کی مثال سامنے ہے ۔ اس طرح جب بھی امریکہ کا من سوئز پر قبضہ کرانے کا چاہے گا وہ ترکی پر حملے کی کہانی گڑھے گا اور برطانی فوجیں پھر مصر کی چھاتی پر چڑھ بیٹھیں گی ۔ بات چیت کے بیچ انگریزوں نے زور دیا تھا کہ مصر یہ بات مان لے کہ یدی ایران پر حملہ ہوگا تو برطانی فوجیں پھر نہر سوئز میں آجائینگی ۔ پر مصر نے اس بات کو نہیں مانا اور انگریزی مانگ پر ڈٹے رہے ۔ اس سمبندھ میں ترکی اور ایران میں کیول اِتنا انتر ہے کہ ترکی میڈو کا ممبر ہے اور ایران ہونے جا رہا ہے ۔ اگر کل ایران پر حملہ ہوا تو ترکی میڈو کا ممبر ہونے کے ناتے میدان میں آئیگا ۔ تب برطانی فوجیں سوئز میں آجائیں گی ۔ اس طرح مصر کے آزادی کو ہر دم خطرہ بنا رہتا ہے ۔ اس لئے مصر کی آزادی کی خوشی مناتے سمے ہم چنتت بھی ہیں ۔

ایک بات کا خطرہ اور دکھائی پڑ رہا ہے ۔ کھٹکا ہے کہیں مصر میڈو میں نہ شامل ہوجائے ۔ کیونکہ صلح ہوتے ہی امریکی راجدوت فوجی اور آرتھک سہائتا کی تھیلیاں لیکر ستادھیشوں کے پاس پہونچنے لگے ہیں ۔ مصر کے میڈو میں نہ شامل ہونے سے ابھی تک میڈو بن نہیں سکا ۔ امریکہ والوں نے مصر پر بہت زور ڈالا پر انہوں نے دیکھا کہ جب تک برطانیہ سوئز نہر نہیں چھوڑتا مصر قابو میں نہیں آئیگا ۔ مصر چھوڑنے کا کارن شری چرچل نے یہ بتایا ہے کہ ایٹم بم کی لڑائی میں سوئز کا کوئی اپیوگ نہیں ہے ۔ لیکن لگتا ہے اِس ترنت صلح کے پیچھے کوئی دوسرا بھید ہے ۔ واشنگٹن میں آئزن ہاور نے چرچل پر زور دیا کہ وہ مصر سے سمجھوتا کرلیں ۔ چرچل کو جھکنا پڑا ۔ خلاصہ یہ ہے جن پرستھیتیوں میں یہ سمجھوتہ ہوا ہے وہ خطرے کی سوچک ہیں ۔

ہم آشا کرتے ہیں کہ مصر سترک رہے گا اور نہ تو اپنی آزادی کو دوبارہ خطرے میں پڑنے دے گا اور نہ بری سے بری پرستھتی میں بھی میڈو میں شامل ہوکر ایشیا کے دوسرے دیشوں کی آزادی کو خطرے میں نہیں ڈالے گا ۔

— مجیب رضوی 30.7.54

इन्हें देनी पड़ीं. मिस्र को जगलोलपाशा ऐसे महान पुरुश मिल गए और उनकी शक्ति के सामने अंग्रेज़ों को अधिक झुकना पड़ा. 1922 में मिस्र का अपना राजा हो गया और उसकी अपनी पार्लियामेन्ट बन गई. इसका मतलब यह नहीं था कि मिस्र आज़ाद हो गया था, गुलामी ने केवल रूप बदल लिया था. अंग्रेज़ अब भी पूरी तरह से हावी थे, फ़ारूक़ के समय तक वह मिस्र के मामलों में हावी रहे. लेकिन अंग्रेज़ों का विरोध भी लगातार बढ़ता रहा. मिस्र में बड़े बड़े पाशा हैं, यह लोग ज़मींदार होते हैं. ज़मींदारों के ख़ून में साज़िश होती है. इसीलिये यहां बहुत सी सरकारें बनती बिगड़ती रहीं. लेकिन जो भी सरकार आई उसने अंग्रेज़ों के मिस्र छोड़ने पर ज़ोर दिया.

अंग्रेज़ स्वेज़ नहर पर क़बज़ा रखना चाहते थे क्योंकि पूरबी ऐशिया के देशों पर वह उसी सूरत में राज कर सकते थे. लेकिन मिस्र वाले अंग्रेज़ फ़ौजों की वापसी की मांग कर रहे थे. अंग्रेज़ मिस्रियों को बहलाना चाहते थे और इस मांग को दबाने के लिये फ़ारूक़ साहब को इस्तेमाल करते थे. लेकिन जनता में जोश बहुत था और नतीजा फ़ारूक़ के गद्दी से हटाए जाने में निकला.

अंग्रेज़ों को शायद उम्मीद थी कि नजीब सरकार बहुत दिन नहीं चल सकेगी. ,वह अपनी साज़िशों पर भी निर्भर करते थे. लेकिन उनकी उम्मीद के ख़िलाफ़ नजीब सरकार ख़तम होने के बजाए मज़बूत होती गई और साथ ही लोगों में अंग्रेज़ों का विरोध भी बढ़ता गया. अंग्रेज़ों ने सुलह की बात चीत शुरू की. पर उसी दरमियान में करनल नासिर और प्रेसीडेन्ट नजीब के झगड़े खड़े हो गए. अंग्रेज़ों को एक बार फिर उम्मीद बंधी कि यह सरकार ख़तम हो जाएगी. लेकिन इस बार भी उनकी आशा पूरी न हुई. कई बार सुलह होने लगी लेकिन अंग्रेज़ों ने इसी उम्मीद पर सुलह न की. इस गड़बड़ में कनज़रवेटिव पार्टी के नेताओं का भी हाथ था. वह लोग अपनी सरकार को सुलह न करने पर मजबूर करते थे. लेबर पार्टी का भी एक अंग कनज़रवेटिव नेताओं से मिल गया था. कहा जाता है कि इडेन साहब हमेशा सुलह के हक़ में थे. और जब जब चर्चिल साहब को वह तैयार करते थे, पार्टी वाले विरोधी चर्चिल साहब को झुका लेते थे.

लेकिन इस बार इडेन साहब ने चर्चिल साहब को सुलह करने पर तैयार कर ही लिया. इसका श्रेय किसको है ? इस प्रश्न पर बहुत से लोग अटकते हैं. ऐसा लगता है कि जहां इडेन साहब हार गए थे वहां डलेस साहब जीत गए हैं. उन्होंने चर्चिल पर ज़ोर डाला कि वह सुलह कर लें और उन्होंने सुलह कर ली. ज़ाहिर है कि इस सुलह की



انہیں دینی پڑیں ۔ مصر کو ذاغ لول پاشا ایسے مہمان پرش مل گئے اور ان کی شکتی کے سامنے انگریزوں کو ادھک جھکنا پڑا ۔ 1922 میں مصر کا اپنا راجا ہوگیا اور اسکی اپنی پارلیمینٹ بن گئی ۔ اس کا مطلب یہ نہیں تھا کہ مصر آزاد ہوگیا تھا، غلامی نے کیول روپ بدل لیا تھا ۔ انگریز اب بھی پوری طرح حاوی تھے، فاروق کے سمے تک وہ مصر کے معاملوں میں حاوی رہے ۔ لیکن انگریزوں کا ورودھ بھی لگاتار بڑھتا رہا ۔ مصر میں بڑے بڑے پاشا ہیں ۔ یہ لوگ زمیندار ہوتے ہیں ۔ زمینداروں کے خون میں سازش ہوتی ہے ۔ اس لئے یہاں بہت سی سرکاریں بنتی بگڑتی رہیں ۔ لیکن جو بھی سرکار آئی اس نے انگریزوں کے مصر چھوڑنے پر زور دیا ۔

انگریز سویز نہر پر قبضہ رکھنا چاہتے تھے کیونکہ پوربی ایشیا کے دیشوں پر وہ اسی صورت میں راج کرسکتے تھے ۔ لیکن مصر والے انگریز فوجوں کی واپسی کی مانگ کر رہے تھے ۔ انگریز مصریوں کو بہلانا چاہتے تھے اور اس مانگ کو دبانے کے لئے فاروق صاحب کو استعمال کرتے تھے ۔ لیکن جنتا میں جوش بہت تھا اور نتیجہ فاروق کے گدی سے ہٹائے جانے میں نکلا ۔

انگریزوں کو شاید امید تھی کہ نجیب سرکار بہت دن نہیں چل سکے گی ۔ وہ اپنی سازشوں پر بھی نربھر کرتے تھے ۔ لیکن ان کی امید کے خلاف نجیب سرکار ختم ہونے کے بجائے مضبوط ہوتی گئی اور ساتھ ہی لوگوں میں انگریزوں کا ورودھ بھی بڑھتا گیا ۔ انگریزوں صلح کی بات چیت شروع کی ۔ پر اسی درمیان میں کرنل ناصر اور پریسیڈینٹ نجیب کے جھگڑے کھڑے ہو گئے ۔ انگریزوں کو ایک بار پھر امید بندھی کہ یہ سرکار ختم ہوجائے گی ۔ لیکن اس بار بھی ان کی آشا پوری نہ ہوئی ۔ کئی بار صلح ہونے لگی لیکن انگریزوں نے اسی امید پر صلح نہ کی ۔ اس گڑبڑ میں کنزرویٹو پارٹی کے نیتاؤں کا بھی ہاتھ تھا ۔ یہ لوگ اپنی سرکار کو صلح نہ کرنے پر مجبور کرتے تھے ۔ لیبر پارٹی کا بھی ایک انگ کنزرویٹو نیتاؤں سے مل گیا تھا ۔ کہا جاتا ہے کہ ایڈن صاحب ہمیشہ صلح کے حق میں تھے اور جب جب چرچل صاحب کو وہ تیار کرتے تھے، پارٹی والے ورودھی چرچل صاحب کو جھکا لیتے تھے ۔

لیکن اس بار ایڈن صاحب نے چرچل صاحب کو صلح کرنے پر تیار کر ہی لیا ۔ اس کا شریے کس کو ہے ؟ اس پرشن پر بہت سے لوگ اٹکتے ہیں ۔ ایسا لگتا ہے کہ جہاں ایڈن صاحب ہار گئے تھے وہاں ڈلیس صاحب جیت گئے ہیں ۔ انہوں نے چرچل پر زور ڈالا کہ وہ صلح کرلیں اور انہوں نے کرلی ۔ ظاہر ہے کہ اس صلح کی

हालत में हम इस नतीजे पर पहुंच सकते हैं कि हमारे वैज्ञानिक महज़ पच्छिमी वैज्ञानिकों के नक़्शों की नक़ल उतारना जानते हैं और ख़ुद कोई काम ही नहीं कर सकते.

यह एक बहुत सख़्त राय है. हम ख़ुद इस राय से न इत्तफ़ाक़ करते हैं और न करना चाहते हैं. लेकिन अगर वनस्पति को रंगने के लिये जो सरकारी हुक्म है उसे वह पूरा नहीं कर सके हैं तो इसके अलावा किसी दूसरे नतीजे पर नहीं पहुंचा जा सकता. लेकिन हमारे वैज्ञानिकों की नाकामयाबी की एक वजह ज़रूर हमारी समझ में आती है. वह यह कि बड़े ब्योपारियों ने दबाव डाला हो. इसे कौन नहीं जानता कि वनस्पति के रंग दिये जाने पर उसकी पहचान आसानी से की सकेगी और फिर घी की मिलावट एकदम बन्द हो जायेगी. इसका असर बनस्पति के कारोबार पर भी पड़ सकता है. इस तरह यह मुमकिन हो सकता है कि वनस्पति के कारख़ाने वालों ने हमारे वैज्ञानिकों के आगे रोड़े डाल दिये हों. लेकिन अगर यह सही बात है तब हमारे वैज्ञानिकों का फ़र्ज़ है कि इस बात को खुले आम ज़ाहिर कर दें और अपनी आबरू पर पानी न पड़ने दें. अगर सरकार की जानकारी या ग़ैर जानकारी में वनस्पति को मिल वाले हमारे वैज्ञानिकों की मेहनत को बेकार बना रहे हैं तो विज्ञान के नाम पर उनको चाहिये कि दुनिया को बतादें कि यह असलियत है जो वनस्पति को रंगने से रोक रही है. अगर हमारे वैज्ञानिक ऐसा नहीं करते हैं तो एक तरफ़ से सरकार उन्हें बदनाम करेगी जिस तरह फ़ाइनेन्स मिनिस्टर ने पालियामेन्ट में किया और दूसरी तरफ़ से वह जनता का विश्वास खोएंगे. आज़ाद और नौजवान हिन्दुस्तान के वैज्ञानिकों का एक फ़र्ज़ सब फ़र्ज़ों से ऊपर है और वह है अपने अन्तःकरन या ईमान के प्रति सच्चा और वफ़ादार होना.

14. 6. '54 —सुरेशराम भाई



حالت میں ہم اس نتیجے پر پہونچ سکتے ہیں کہ ہمارے ویگیانک محض پچھمی ویگیانکوں کے نقشوں کی نقل اُتارنا جانتے ہیں اور خود کوئی کام ہی نہیں کر سکتے .

یہ ایک بہت سخت رائے ہے. ہم خود اس رائے سے نہ اتفاق کرتے ہیں اور نہ کرنا چاہتے ہیں. لیکن اگر ونسپتی کو رنگنے کے لئے جو سرکاری حکم ہے اسے وہ پورا نہیں کرسکے ہیں تو اس کے علاوہ کسی دوسرے نتیجہ پر نہیں پہونچا جا سکتا . لیکن ہمارے ویگیانکوں کی ناکامیابی کی ایک وجہ ضرور ہماری سمجھ میں آتی ہے . وہ یہ کہ بڑے بیوپاریوں نے دباؤ ڈالا ہو . اسے کون نہیں جانتا کہ ونسپتی کے رنگ دیئے جانے پر اس کی پہچان آسانی سے کی جا سکے گی اور پھر گھی کی ملاوٹ ایکدم بند ہو جائے گی . اس کا نتیجہ ونسپتی کے کاروبار پر بھی پڑ سکتا ہے . اس طرح ممکن ہو سکتا ہے کہ ونسپتی کے کارخانہ والوں نے ہمارے ویگیانکوں کے آگے روڑے ڈال دیئے ہوں. لیکن اگر یہ صحیح بات ہے تب ہمارے ویگیانکوں کا فرض ہے کہ اس بات کو کھلے عام ظاہر کر دیں اور اپنی آبرو پر پانی نہ پڑنے دیں . اگر سرکار کی جانکاری یا غیر جانکاری میں ونسپتی کی مل والے ہمارے ویگیانکوں کی محنت کو بیکار بنا رہے ہیں تو وگیان کے نام پر ان کو چاہیئے کہ دنیا کو بتا دیں کہ یہ اصلیت ہے جو ونسپتی کو رنگنے سے روک رہی ہے . اگر ہمارے ویگیانک ایسا نہیں کرتے ہیں تو ایک طرف سے سرکار انہیں بدنام کریگی جس طرح فائنینس منسٹر نے پارلیامنٹ میں کیا اور دوسری طرف سے وہ جنتا کا وشواس کھوئیں گے . آزاد اور نوجوان ہندستان کے ویگیانکوں کا ایک فرض سب فرضوں سے اوپر ہے اور وہ ہے اپنے انتہ کرن یا ایمان کے پرتی سچا اور وفادار ہونا .

14. 6. '54 — سریش رام بھائی

## मिस्र और बरतानिया का समझौता

मिस्र और बरतानिया का झगड़ा 1882 से शुरू होता है जब बरतानिया ने फ्रांस के साथ मिल कर मिस्र पर हमला किया था. कुछ दिनों अंग्रेज़ और फ्रांसीसी साथ रहे और बाद में समझौता कर के मिस्र पर अंग्रेज़ों ने क़बज़ा जमा लिया और मराको और अलजीरिया पर फ्रांसीसी राज करने लगे. यह दोनों विदेशी ताक़तें कभी भी इन देशों की जनता का दिल नहीं जीत पाईं. जनता के आन्दोलनों से मजबूर होकर समय समय पर रियायतें

## مصر اور برطانیہ کا سمجھوتا

مصر اور برطانیہ کا جھگڑا 1882 سے شروع ہوتا ہے جب برطانیہ نے فرانس کے ساتھ ملکر مصر پر حملہ کیا تھا . کچھ دنوں انگریز اور فرانسیسی ساتھ رہے اور بعد میں سمجھوتہ کر کے مصر پر انگریزوں نے قبضہ جما لیا اور مراکو اور الجیریا پر فرانسیسی راج کرنے لگے . یہ دونوں ودیشی طاقتیں کبھی بھی اِن دیشوں کی جنتا کا دل نہیں جیت پائیں . جنتا کے آندولنوں سے مجبور ہوکر سمے سمے پر رعائتیں

आम लोगों की सेहत गिरने के अलावा सच्चे घी का कारोबार व सनअत ठप हो रहे हैं. अपने जवाब में हमारे फ़ाइनेन्स मिनिस्टर ने कहा कि "वनस्पति को रंग देने की बात सरकार ने मान ली है. मगर दिक़्क़त यही है कि कोई ऐसी मुनासिब चीज़ अब तक नहीं मिली है जो वनस्पति को रंग भी दे और ख़ुद उसका रंग कभी कोई मिटा न सके."

बड़ी ख़ुशी की बात है कि मुल्क व्यापी वनस्पति के बारे में मांग को हमारी सरकार ने क़बूल कर लिया है. मगर इस पर यक़ीन मुश्किल से आता है कि वनस्पति को रंग देने के लिये मुनासिब चीज़ अब तक नहीं मिल सकी. आसानी से दिया जा सकने वाला और बेगुनाह पीला रंग बिना किसी दुशवारी के हल्दी से हासिल किया जा सकता है. हमें मालूम हुआ है कि बंगाल के मशहूर साइन्सदां और पुराने ग्राम सेवक डाक्टर सतीश चन्द्रदास गुप्ता ने चुनौती के साथ ऐलान किया है कि वनस्पति के रंग देने की चीज़ न मिल सकने की बात ग़लत है. उनका दावा है कि यह काम बख़ूबी अन्जाम दिया जा सकता है. लेकिन नक़्क़ारख़ाने में तूती की कौन सुनता है. सरकार ने उनकी बात अनसुनी कर दी और वनस्पति दिन दूनी रात चौगुनी रफ़्तार से हमारे घरों, शहरों और क़स्बों को तबाह कर रहा है.

अगर सरकार को सचमुच इस बात की फ़िक्र है कि वनस्पति को रंगा जाये तो वह यह काम सतीश बाबू के सिपुर्द कर सकती है और फिर उनके काम की जांच अपने ऐक्सपर्टों और माहिरों से करा सकती है. या वह अपनी मिनिस्टरी आफ़ साइन्टिफ़िक रिसोरसेज़ ( Ministry of Scientific Resoruces ) को हुक्म दे सकती है कि फ़लां मुद्दत के अन्दर यह काम कर डालना है. हमारा ख़्याल है कि सरकार यह काम मज़े में करा सकती है क्योंकि उसके मातहत सारे मुल्क में खोज और रिसर्च करने की लैब्रोट्रियां हैं जहां पर यह तक सोचा जा रहा है कि ऐटम की ताक़त को शान्ति के काम में किस तरह लाया जाये. इतने बड़े काम के सामने वनस्पति को रंगने का काम तो बहुत छोटा मालूम पड़ता है. लेकिन अगर सरकारी लैब्रोट्रियां यह काम नहीं कर पाती हैं तो फिर कौन यक़ीन करेगा कि वह कोई और बड़ा काम ठीक तरह से कर सकेंगी. अगर वाक़ई हमारे देश के वैज्ञानिक और माहिर लोग वनस्पति के रंगने के काम में फ़तह नहीं पा सके हैं तब तो हमें उनकी अक़्ल व क़ाबलियत व जफ़ाकशी के बारे में दोबारा सोचना पड़ेगा और हमारा ख़्याल है कि फिर इंजीनियरिंग व फ़ौजी वग़ैरा महकमों में तो वह और भी नाकारा साबित होंगे. ऐसी



عام لوگوں کی صحت گرنے کے علاوہ سچے گھی کا کاروبار و صنعت ٹھپ ہو رہے ہیں ۔ اپنے جواب میں ہمارے فائینینس منسٹر نے کہا کہ "ونسپتی کو رنگ دینے کی بات سرکار نے مان لی ہے ۔ مگر دقت یہی ہے کہ کوئی ایسی مناسب چیز اب تک نہیں ملی ہے جو ونسپتی کو رنگ بھی دے سکے اور خود اسکا رنگ کبھی کوئی مٹا نہ سکے ۔"

بڑی خوشی کی بات ہے کہ ملک ویاپی ونسپتی کے بارے میں مانگ کو ہماری سرکار نے قبول کرلیا ہے ۔ مگر اس پر یقین مشکل سے آتا ہے کہ ونسپتی کو رنگ دینے کے لئے مناسب چیز اب تک نہیں مل سکی ۔ آسانی سے دیا جا سکنے والا اور بیگناہ پیلا رنگ بنا کسی دشواری کے ہلدی سے حاصل کیا جاسکتا ہے ۔ ہمیں معلوم ہوا ہے کہ بنگال کے مشہور سائنس داں اور پرانے گرام سیوک ڈاکٹر ستیش چندر داس گپتا نے چنوتی کے ساتھ اعلان کیا ہے کہ ونسپتی کو رنگ دینے کی چیز نہ مل سکنے کی بات غلط ہے ۔ ان کا دعوی ہے کہ یہ کام بخوبی انجام دیا جاسکتا ہے ۔ لیکن نقارخانہ میں طوطی کی کون سنتا ہے ۔ سرکار نے انکی بات آن سنی کردی اور ونسپتی دن دونی رات چوگنی رفتار سے ہمارے گھروں، شہروں اور قصبوں کو تباہ کر رہا ہے ۔

اگر سرکار کو سچ مچ اس بات کی فکر ہے کہ ونسپتی کو رنگا جائے تو وہ یہ کام ستیش بابو کے سپرد کرسکتی ہے اور پھر ان کے کام کی جانچ اپنے ایکسپرٹوں اور ماہروں سے کراسکتی ہے ۔ یا وہ اپنی منسٹری آف سائینٹیفک رسورسیز (Ministry of Scientific Resources) کو حکم دے سکتی ہے کہ فلاں مدت کے اندر یہ کام کر ڈالنا ہے ۔ ہمارا خیال ہے کہ سرکار یہ کام مزے میں کراسکتی ہے کیونکہ اس کے ماتحت سارے ملک میں بھی کھوج اور ریسرچ کرنے کی لیبرٹریاں ہیں جہاں پر یہ تک سوچا جا رہا ہے کہ ایٹم کی طاقت کو شانتی کے کام میں کس طرح لایا جائے ۔ اتنے بڑے کام کے سامنے ونسپتی کو رنگنے کا کام تو بہت چھوٹا معلوم پڑتا ہے ۔ لیکن اگر سرکاری لیبرٹریاں یہ کام نہیں کر پاتی ہیں تو پھر کون یقین کریگا کہ وہ کوئی اور بڑا کام ٹھیک طرح سے کر سکینگی ۔ اگر واقعی ہمارے دیش کے ویگیانک اور اور ماہر لوگ ونسپتی کے رنگنے کے کام میں فتح نہیں پا سکے ہیں تب تو ہمیں ان کی عقل و قابلیت و جفاکشی کے بارے میں دوبارہ سوچنا پڑیگا اور ہمارا خیال ہے کہ پھر انجینیرنگ و فوجی وغیرہ محکموں میں تو وہ اور بھی ناکارہ ثابت ہونگے ۔ ایسی

पर कोई समझदार आदमी कैसे पहुंच सकता है कि जिसको जितना ग़ल्ला चाहिये उतना मिलने लगा. आज भी हिन्दुस्तान में हज़ारों लाखों को भर पेट भोजन क्या एक जून भी ठीक से खाना नहीं मिलता. और अगर इसका सबूत ही चाहिये तो नई दिल्ली स्टेशन से दिल्ली स्टेशन तक पैदल चल कर मज़े में हासिल किया जा सकता है. दूर की बात छोड़ दें, रेल की पटरी के पास वह तकलीफ़देह नज़्ज़ारे देखने को मिलेंगे जिन से साफ़ पता चल जायेगा कि फ़ाइनेन्स मिनिस्टर साहब कहां तक सच बोल रहे हैं. या फिर दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता या मद्रास के होटलों के आगे जूठन के ढेरों को देखिये जहां इन्सान की औलाद, कुत्ता और कौए अपने अपने हिस्से के लिये लड़ते दीखते हैं. या उनको जाने दें. अपने पढ़े लिखे नौजवानों को लें. उनके बारे में तो सरकारी रिपोर्टें ख़ुद ही बताती हैं कि वह बेरोज़गारी के शिकार हैं और कोई सूरत उनके काम से लगने की नहीं पैदा हो रही है.

इसके अलावा हर आदमी यह जानता है कि अनाज या कोई चीज़ पैदा करना एक बात है मगर उसका तक़सीम हो जाना, और ठीक तक़सीम हो जाना, बिल्कुल दूसरी बात है. पैदा होने पर ही यह नहीं कहा जा सकता कि जिसको जितना मिलना चाहिये उतना मिल गया. अगर ऐसा हुआ करता तो शायद इस दुनिया की शकल ही कुछ दूसरी होती और ग़रीब अमीर में या मालिक मज़दूर में आज ज़मीन आसमान जैसे फ़र्क़ न होते.

हमें अफ़सोस है कि फ़ाइनेन्स मिनिस्टर जैसी ज़िम्मेदार हस्ती इस तरह का प्रचार करे. हम बड़े अदब के साथ यह कहना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान के सब मिनिस्टर मिल कर भी अगर असलियत छुपा कर ग़लत बात के प्रचार में लग जायें तो भी उनकी मेहनत उसी तरह बेकार साबित होगी जैसे बहते पानी के आगे बालू की दीवार खड़ी करना. इसके ख़िलाफ़ अगर हालत असलियत में अच्छी है तो मुश्क की तरह उसका असर ख़ुद बख़ुद फैलेगा और कोई प्रचार की ख़ास ज़रूरत नहीं पड़ेगी. आज़ाद व नये हिन्दुस्तान की बुनियाद भूटे प्रचार के बजाय सच्ची असलियत पर खड़ी करना हर इन्सान का फ़र्ज़ है, पर अगर वह मिनिस्टर है तब तो और भी ज़्यादा.

28. 6. '54 —सुरेशराम भाई



پر کوئی سمجھدار آدمی کیسے پہونچ سکتا ہے کہ جس کو جتنا غلہ چاہئے اتنا ملنے لگا۔ آج بھی ہندستان میں ہزاروں لاکھوں کو بھر پیٹ بھوجن کیا ایک جون بھی ٹھیک سے کھانا نہیں ملتا۔ اور اگر اس کا ثبوت ہی چاہئے تو نئی دلی اسٹیشن سے دلی اسٹیشن تک پیدل چل کر مزے میں حاصل کیا جا سکتا ہے۔ دور کی بات چھوڑ دیں، ریل کی پٹری کے پاس وہ تکلیف دہ نظارے دیکھنے کو ملینگے جن سے صاف پتہ چل جائے گا کہ فائنینس منسٹر صاحب کہاں تک سچ بول رہے ہیں۔ یا پھر دلی، بمبئی، کلکتہ یا مدراس کے ہوٹلوں کے آگے جوٹھن کے ڈھیروں کو دیکھئے جہاں انسان کی اولاد، کتا اور کوئے اپنے اپنے حصے کے لئے لڑتے دیکھتے ہیں۔ یا ان کو جانے دیں۔ اپنے پڑھے لکھے نوجوانوں کو لیں۔ ان کے بارے میں تو سرکاری رپورٹیں خود ہی بتاتی ہیں کہ وہ بے روزگاری کے شکار ہیں اور کوئی صورت ان کے کام سے لگنے کی نہیں پیدا ہو رہی ہے۔

اس کے علاوہ ہر آدمی یہ جانتا ہے کہ اناج یا کوئی چیز پیدا کرنا ایک بات ہے مگر اس کا تقسیم ہو جانا، اور ٹھیک تقسیم ہو جانا، بالکل دوسری بات ہے۔ پیدا ہونے پر ہی یہ نہیں کہا جا سکتا کہ جسکو جتنا ملنا چاہئے اتنا مل گیا۔ اگر ایسا ہوا کرتا تو شاید اس دنیا کی شکل ہی کچھ دوسری ہوتی اور غریب امیر میں یا مالک مزدور میں آج زمین آسمان کے جیسے فرق نہ ہوتے۔

ہمیں افسوس ہے کہ فائنینس منسٹر جیسی ذمہ دار ہستی اس طرح کا پرچار کرے۔ ہم بڑے ادب کے ساتھ یہ کہنا چاہتے ہیں کہ ہندستان کے سب منسٹر مل کر بھی اگر اصلیت چھپا کر غلط بات کے پرچار میں لگ جائیں تو بھی ان کی محنت اسی طرح بیکار ثابت ہوگی جیسے بہتے پانی کے آگے بالو کی دیوار کھڑی کرنا۔ اس کے خلاف اگر حالت اصلیت میں اچھی ہے تو مشک کی طرح اس کا اثر خود بخود پھیلے گا اور کوئی پرچار کی خاص ضرورت نہیں پڑیگی۔ آزاد و نئے ہندستان کی بنیاد جھوٹے پرچار کے بجائے سچی اصلیت پر کھڑی کرنا ہر انسان کا فرض ہے، پر اگر وہ منسٹر ہے تب تو اور بھی زیادہ۔

—سریش رام بھائی 28. 6. '54

# वनस्पति और हमारे वैज्ञानिक

पार्लियामेन्ट के पिछले बजट इजलास में वनस्पति घी पर भी कुछ चर्चा चली. पीलीभीत की रानी चन्द्रावती लखमपाल ने उसे नुक़सानदह बताया और कहा कि उससे

# ونسپتی اور ہمارے ویگیانک

پارلیامنٹ کے پچھلے بجٹ اجلاس میں ونسپتی گھی پر بھی کچھ چرچا چلی۔ پیلی بھیت کی رانی چندراوتی لکھمپال نے اسے نقصان دہ بتایا اور کہا کہ اس سے

में इफ़रात से खाना और कपड़ा होता था. मगर वाक़या है कि अंग्रेज़ी अमलदारी के अन्दर हिन्दुस्तान में जितने अकाल, और एक से एक भयानक अकाल, पड़े उतने हमारे मुल्क के इतिहास में कभी नहीं पड़े. और आंकड़ों के लिहाज़ से. यह भी आसानी से साबित किया जा सकता है कि हिन्दुस्तान के बाशिन्दों को रहने सहने के लिये मकान का बन्दोबस्त है.

मगर असलियत कुछ और ही है. मार्च 1953 में पार्लियामेन्ट के सामने एक बयान देते हुए मरकज़ी फ़ूड मिनिस्टर श्री रफ़ी अहमद क़िदवई ने कहा था कि इस साल 2 करोड़ 76 लाख से ज़्यादा यानी तीन करोड़ के लगभग आदमियों को ख़ूराक की तंगी का शिकार होना पड़ा. उन्होंने तफ़सील देते हुए बतलाया था:

| सूबा | लाख में तादाद |
|---|---|
| मद्रास | 85 |
| बम्बई | 60 |
| मैसूर | 43 |
| राजस्थान | 26 |
| विंध्य प्रदेश | 22 |
| मध्य प्रदेश | 15 |
| हैद्राबाद | 14 |
| मध्य भारत | 8 |
| सौराष्ट्र | 3 |

उन्होंने यह भी कहा कि बिहार, पच्छिम बंगाल और उत्तर प्रदेश में गये साल अकाल की हालतों से ज़्यादा परेशानी थी, मगर इस साल नहीं.

यह इत्तला रफ़ी साहब ने 12 मार्च 1953 को दी थी. इत्तफ़ाक़ की बात है कि उसी दिन बीकानेर शहर में राजस्थान फ़ैमीन कमिश्नर ( Famine Commissioner ) ने प्रेस नुमाइन्दों के सामने एक बयान में कहा कि इस साल बीकानेर डिवीज़न के दो तिहाई हिस्से की हालत बहुत ख़राब है और चार लाख से ऊपर आदमी अकाल की गिरफ़्त में हैं. उन्होंने यह भी बताया कि इसी तरह जोधपुर और उदयपुर डिविज़नों की हालत है जहां 18 लाख आदमी इस महामारी के शिकार हुए हैं.

भला कौन मान लेगा कि 1953-54 में हालत इतनी बदल गई कि हर एक को भर पेट खाना मिलने लगा. हमें यह भी नहीं भूलना है कि पंचसाला योजना जिसे कहा जाता है वह 1951 में शुरू हुई और यह अकाल उसके दूसरे साल में ही पड़ गये. यह हो सकता है कि फ़ाइनेन्स और फ़ूड मिनिस्ट्रियों को सूबों से ख़बर आ गई हो कि काफ़ी ग़ल्ला 1953-54 में पैदा हो गया है. मगर इस से इस नतीजे



میں هندستان میں افراط سے کھانا اور کپڑا ہوتا تھا . مگر واقعہ ہے کہ انگریزی عمل‌داری کے اندر هندستان میں جتنے اکال' اور ایک سے ایک بھیانک اکال' پڑے اتنے ہمارے ملک کے اتہاس میں کبھی نہیں پڑے . اور آنکڑوں کے لحاظ سے یہ بھی آسانی سے ثابت کیا جاسکتا ہے کہ هندستان کے باشندوں کو رہنے سہنے کے لئے مکان کا بندوبست ہے .

مگر اصلیت کچھ اور ہی ہے . مارچ 1953 میں پارلیامنٹ کے سامنے ایک بیان دیتے ہوئے مرکزی فوڈ منسٹر شری رفیع احمد قدوئی نے کہا تھا کہ اس سال 2 کروڑ 76 لاکھ سے زیادہ یعنی تین کروڑ کے لگ بھگ آدمیوں کو خوراک کی تنگی کا شکار ہونا پڑا. انہوں نے تفصیل دیتے ہوئے بتلایا تھا :

| صوبہ | لاکھ میں تعداد |
|---|---|
| مدراس | 85 |
| بمبئی | 60 |
| میسور | 43 |
| راجستھان | 26 |
| وندھیہ پردیش | 22 |
| مدھیہ پردیش | 15 |
| حیدرآباد | 14 |
| مدھیہ بھارت | 8 |
| سوراشٹر | 3 |

انہوں نے یہ بھی کہا کہ بہار' پچھم بنگال اور اتر پردیش میں گئے سال اکال کی حالتوں سے زیادہ پریشانی تھی' مگر اس سال نہیں .

یہ اطلاع رفیع صاحب نے 12 مارچ 1953 کو دی تھی . اتفاق کی بات ہے کہ اسی دن بیکانیر شہر میں راجستھان فیمین کمشنر (Famine Commissioner) نے پریس نمائندوں کے سامنے ایک بیان میں کہا کہ اس سال بیکانیر ڈویژن کے دو تہائی حصے کی حالت بہت خراب ہے اور چار لاکھ سے اوپر آدمی اکال کی گرفت میں ہیں . انہوں نے یہ بھی بتایا کہ اسی طرح جودھپور اور ادے پور ڈیویژنوں کی حالت ہے جہاں 18 لاکھ آدمی اس مہاماری کے شکار ہوئے ہیں .

بھلا کون مان لے گا کہ 1953-54 میں حالت اتنی بدل گئی کہ ہر ایک کو بھر پیٹ کھانا ملنے لگا. ہمیں یہ بھی نہیں بھولنا ہے کہ پنچ سالہ یوجنا جسے کہا جاتا ہے وہ 1951 میں شروع ہوئی اور یہ اکال اس کے دوسرے سال میں ہی پڑ گئے . یہ ہو سکتا ہے کہ فائنینس اور فوڈ منسٹریوں کو صوبوں سے خبر آ گئی ہو کہ کافی غلہ 1953-54 میں پیدا ہو گیا ہے . مگر اس سے اس نتیجہ

निकल पड़ते हैं. इस तक़रीह में जो स्पीचें वह जगह जगह देते हैं उनमें असलियत की जगह प्रचार की ज़्यादा महक आती है. अकसर तक़रीरों में एक ख़तरनाक संतोश रहता है और बाज़ में अजीब व ग़रीब जानकारी भरी होती है. यह सब ख़ुसूसियत हमें केन्द्री फ़ाइनेन्स मिनिस्टर की एक स्पीच में मिलीं जिसकी तरफ़ हम अपने प्रेमी पाठकों का ध्यान खींचना चाहते हैं.

यह भाशन श्री चिन्तामन देशमुख ने 25 मई को दिया जब वह बम्बई में रिज़र्व बैंक आफ़ इन्डिया के मुलाज़िमों के रहने के लिये दो करोड़ रुपये के ख़र्च से बनी एक बस्ती का उदघाटन कर रहे थे. उन्होंने अपनी तक़रीर के दौरान में जो लफ़्ज़ कहे उसके कुछ हिस्से का अनुवाद हम नीचे दे रहे हैं:

> "लोगों की दो बुनियादी ज़रूरतों—खाने और कपड़े—का मुनासिब व वाजिब इन्तज़ाम हमारी पहली पंचसाला योजना में हो गया. मेरा ख़्याल है कि अब दूसरी पंचसाला योजना में ज़रूरत इस बात की है कि रहाइश या मकान बनाने के काम पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाये. इसमें शहरों के अन्दर मकानों पर ज़्यादा तवज्जह दी जाये ताकि शहरों में जो खींचा-तानी है उसमें कमी आये और नये सलम ( Slum ) या गन्दी बस्तियां वजूद में न आ सकें. ( स्टेट्समैन मई 27 )

श्री देशमुख के कहने का मन्शा यह है कि हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर रहने वाले हर इन्सान नाम के हर प्रानी को अब ज़रूरत के लायक़ खाना और कपड़ा मिलने लगा है. यानी सब बरसरे रोज़गार हैं या नौकरी में हैं और खाने पहनने की कोई तकलीफ़ किसी को नहीं है. और श्री देशमुख यह भी जताना चाहते हैं कि यह कमाल सरकार की बनाई पंचसाला योजना की करामात है.

हमें नहीं मालूम कि हमारे फ़ाइनेन्स मिनिस्टर जैसे जानकार व ज़िम्मेदार आदमी इस नतीजे पर किस तरह पहुंच गये. शायद वह आंकड़ों के बल पर ऐसा कह बैठे हैं. इधर कई बरस से आज़ाद भारत में अनाज बाहर से आ रहा था. मगर सरकारी रिपोर्ट है कि इस साल से अनाज आना बन्द हो गया है. बल्कि यहां तक ख़बर है कि सरकार चावल बाहर भी भेजने वाली है या भेज रही है. ज़रा देर के लिये हम यह मान लें कि यह आंकड़े सही हैं और हिन्दुस्तान में काफ़ी ग़ल्ला पैदा होने लगा है. मगर इससे कोई यह नतीजा कैसे निकाल सकता है कि हिन्दुस्तान के 36 करोड़ बाशिन्दों को ज़रूरत के लायक़, भर पेट भोजन मिलने लगा. अगर आंकड़े के बल पर ही राय क़ायम करनी है तब तो अंग्रेज़ भी कह सकते थे कि उनके ज़माने



نکل پڑتے ہیں۔ اس تفریح میں جو اسپیچیں وہ جگہ جگہ دیتے ہیں ان میں اصلیت کی جگہ پرچار کی زیادہ مہک آتی ہے۔ اکثر تقریروں میں ایک خطرناک سنتوش رہتا ہے اور بعض میں عجیب و غریب غیر جانکاری بھری ہوتی ہے۔ یہ سب خصوصیت ہمیں کیندری فائینینس منسٹر کی ایک اسپیچ میں ملیں جسکی طرف ہم اپنے پریمی پاٹھکوں کا دھیان کھینچنا چاہتے ہیں۔

یہ بھاشن شری چنتا من دیشمکھ نے 25 مئی کو دیا جب وہ بمبئی میں ریزرو بینک آف انڈیا کے ملازموں کے رہنے کے لئے دو کروڑ روپئے کے خرچ سے بنی ایک بستی کا ادگھاٹن کر رہے تھے۔ انہوں نے اپنی تقریر کے دوران میں جو لفظ کہے اس کے کچھ حصہ کا انوواد ہم نیچے دے رہے ہیں:

> ”لوگوں کی دو بنیادی ضرورتوں — کھانے اور کپڑے کا مناسب و واجب انتظام ہماری پہلی پنچ سالہ یوجنا میں ہوگیا۔ میرا خیال ہے کہ اب دوسری پنچ سالہ یوجنا میں ضرورت اس بات کی ہے کہ رہائش یا مکان بنانے کے کام پر زیادہ زور دیا جائے۔ اسمیں شہروں کے اندر مکانوں پر زیادہ توجہ دی جائے تاکہ شہروں میں جو کھینچا تانی ہے اسمیں کمی آئے اور نئے سلم (Slum) یا گندی بستیاں وجود میں نہ آسکیں۔“ ( اسٹیٹسمین مئی 27 )

شری دیشمکھ کے کہنے کا منشا یہ ہے کہ ہندستان کی سرزمین پر رہنے والے ہر انسان نام کے ہر پرانی کو اب ضرورت کے لائق کھانا اور کپڑا ملنے لگا ہے۔ یعنی سب برسر روزگار ہیں یا نوکری میں ہیں اور کھانے پہننے کی کوئی تکلیف کسی کو نہیں ہے۔ اور شری دیشمکھ یہ بھی جتانا چاہتے ہیں کہ یہ کمال سرکار کی بنائی پنچ سالہ یوجنا کی کرامات ہے۔

ہمیں نہیں معلوم کہ ہمارے فائینینس منسٹر جیسے جانکار و ذمہ دار آدمی اس نتیجہ پر کس طرح پہونچ گئے۔ شاید وہ آنکڑوں کے بل پر ایسا کہہ بیٹھے ہیں۔ ادھر کئی برس سے آزاد بھارت میں اناج باہر سے آرہا تھا۔ مگر سرکاری رپورٹ ہے کہ اس سال سے اناج آنا بند ہوگیا ہے۔ بلکہ یہاں تک خبر ہے کہ سرکار چاول باہر بھی بھیجنے والی ہے یا بھیج رہی ہے۔ ذرا دیر کے لئے ہم یہ مان لیں کہ یہ آنکڑے صحیح ہیں اور ہندستان میں کافی غلہ پیدا ہونے لگا ہے۔ مگر اس سے کوئی یہ نتیجہ کیسے نکال سکتا ہے کہ ہندستان کے 36 کروڑ باشندوں کو ضرورت کے لائق، بھر پیٹ بھوجن ملنے لگا۔ اگر آنکڑے کے بل پر ہی رائے قائم کرنی ہے تب تو انگریز بھی کہہ سکتے تھے کہ ان کے زمانہ

के भाइयों का काम केवल कांग्रेस को जिस तरह हो पटखी देना ही रह गया है ? क्या इस से वह हिन्दुओं को बचा लेंगे ? क्या हिन्दुओं को इन गंदे अंधविश्वासों और इन सड़े गले रीत रिवाजों में से निकालना या कम से कम निकालने की कोशिश करना उनका धर्म नहीं है ? कांग्रेस के नेताओं और कांग्रेसी अफ़सरों के बारे में तो इस सम्बन्ध में हम अपनी लेखनी को रोक कर ही रक्खें तो अच्छा है. उन्होंने राज सत्ता हाथ में ले ली, बहुत बड़ा काम किया. अब उनका काम रह गया है केवल जिस तरह हो सके राजगद्दी संभाले रखना ! हम इस घटना से केवल दो ही नतीजे निकाल सकते हैं :—

पहला यह कि इन बातों में लोगों के साथ किसी तरह की ज़बरदस्ती नहीं करनी चाहिए. उनके यहां रोज़ जा कर धरना देना जिसे हम लोग 'सत्याग्रह' कहते हैं, वह भी ख़ास हालतों में, ज़बरदस्ती हो जाती है. लोगों को बीच बीच में ख़ुद सोचने का मौक़ा भी देना चाहिये. हां, उन्हें जाकर प्रेम से समझाना चाहिये, पर वह भी जब वह सुनने को तैयार हों. हमें विश्वास है कि लोगों को सोचने समझने का मौक़ा मिले तो वह आम तौर पर कार्यकर्ताओं से और नेताओं से ज़्यादा समझदार होते हैं.

दूसरा यह कि इन अलग अलग धर्मों का ज़माना अब दुनिया से हमेशा के लिये उठ चुका. अब सांप निकल चुका केवल हम लकीरें पीट रहे हैं. दुनिया बहुत आगे बढ़ चुकी. अब दुनिया को सड़ी गली रूढ़ियों में फंसे हुए इन अलग अलग धर्मों की जगह एक ऐसे धर्म की ज़रूरत है, जिसमें कोई पूजा पाठ हो या न हो, ईश्वर पर विश्वास भी हो या न हो, लेकिन इनसानी बराबरी हो, मुहब्बत हो, नेकी हो, ईमानदारी हो, सच्चाई हो और इनसानियत हो. इन्सानी क़ौम की आगे की चढ़ाई बहुत टेढ़ी और कठिन पहाड़ की चढ़ाई है. सदियों का कचरा कमर पर बांध कर हम इस चढ़ाई को तय नहीं कर सकते. उस चढ़ाई को तय करने के लिये हमें अपने बोझ को हलका करना होगा और हिम्मत और उसूलों की निगाह से अपनी कमर को सीधा रखना होगा.

20. 7. '54 —सुन्दरलाल

## असलियत और प्रचार

नई दिल्ली की पार्लियामेन्ट या लोक सभा के लम्बे इजलास की थकान मिटाने के लिये हमारे ज़्यादातर मिनिस्टर आराम की ख़ातिर या तो अंग्रेज़ों की तरह पहाड़ी इलाक़ों पर चले जाते हैं या मुल्क में सैर सपाटे के लिये

کے بھائیوں کا کام کیول کانگریس کو جس طرح ہو پٹخنی دینا ہی رہ گیا ہے ؟ کیا اس سے وہ ہندوؤں کو بچالینگے ؟ کیا ہندوؤں کو اس گندے اندھ وشواسوں اور ان سڑے گلے ریت رواجوں میں سے نکالنا یا کم سے نکالنے کی کوشش کرنا ان کا دھرم نہیں ہے ؟ کانگریس کے نیتاؤں اور کانگریسی افسروں کے بارے میں تو اس سمبندھ میں ہم اپنی لیکھنی کو روک کر ہی رکھیں تو اچھا ہے ۔ انہوں نے راج ستا ہاتھ میں لے لی، بہت بڑا کام کیا ۔ اب اُن کا کام رہ گیا ہے کیول جس طرح ہو سکے راج گدی سنبھالے رکھنا ! ہم اِس گھٹنا سے کیول دو ہی نتیجے نکال سکتے ہیں :—

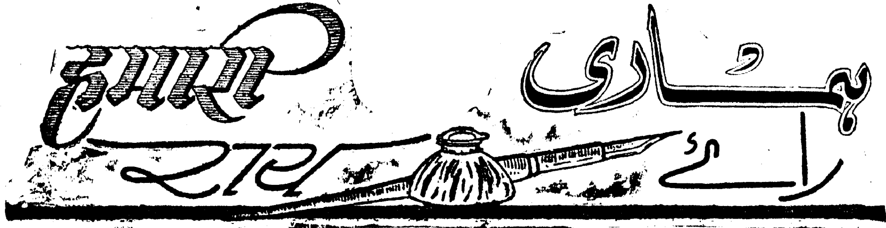
پہلا یہ کہ اِن باتوں میں لوگوں کے ساتھ کسی طرح کی زبردستی نہیں کرنی چاہئے ۔ اُن کے یہاں روز جاکر دھرنا دینا جسے ہم لوگ ' ستیا گرہ ' کہتے ہیں، وہ بھی خاص حالتوں میں، زبردستی ہو جاتی ہے ۔ لوگوں کو بیچ بیچ میں خود سوچنے کا موقع بھی دینا چاہئے ۔ ہاں، انہیں جاکر پریم سے سمجھانا چاہئے، پر وہ بھی جب وہ سننے کو تیار ہوں ۔ ہمیں وشواس ہے کہ لوگوں کو سوچنے سمجھنے کا موقع ملے تو وہ عام طور پر کاریہ کرتاؤں سے اور نیتاؤں سے زیادہ سمجھدار ہوتے ہیں ۔

دوسرا یہ کہ اِن الگ الگ دھرموں کا زمانہ اب دنیا سے ہمیشہ کے لئے اُٹھ چکا ۔ اب سانپ نکل چکا، کیول ہم لکیریں پیٹ رہے ہیں ۔ دنیا بہت آگے بڑھ چکی ۔ اب دنیا کو سڑی گلی روڑھیوں میں پھنسے ہوئے اِن الگ الگ دھرموں کی جگہ ایک ایسے دھرم کی ضرورت ہے، جسمیں کوئی پوجا پاٹھ ہو یا نہ ہو، ایشور پر وشواس بھی ہو یا نہ ہو، لیکن انسانی برابری ہو، محبت ہو، نیکی، ایمانداری ہو، سچائی ہو اور انسانیت ہو ۔ انسانی قوم کی آگے کی چڑھائی بہت ٹیڑھی اور کٹھن پہاڑ کی چڑھائی ہے ۔ صدیوں کا کچرا کمر پر باندھکر ہم اِس چڑھائی کو طے نہیں کر سکتے ۔ اس چڑھائی کو طے کرنے کے لئے ہمیں اپنے بوجھ کو ہلکا کرنا ہوگا اور ہمت اور اصولوں کی نگاہ سے اپنی کمر کو سیدھا رکھنا ہوگا ۔

20. 7. '54 — سندرلال

## اصلیت اور پرچار

نئی دلی کی پارلیامنٹ یا لوک سبھا کے لمبے اجلاس کی تھکان مٹانے کے لئے ہمارے زیادہ‌تر منسٹر آرام کی خاطر یا تو انگریزوں کی طرح پہاڑی علاقوں پر چلے جاتے ہیں یا ملک میں سیر سپاٹے کے لئے




## छुआ छूत

नागपुर से छै मील दूर बहादुरा नाम का एक गांव है. आबादी सब हिन्दुओं की है, जिनमें पचास साठ घर ऊंची जात के हिन्दुओं के हैं और दस पन्दरह घर हरिजन यानी अछूत समझे जाने वाले हिन्दुओं के. गांव में दो कुएं हैं. ऊंची जात वाले अपने पीने के लिए उन कुओं से पानी भरते हैं, और हरिजन कहलाने वाले गांव से आध मील दूर किसी नाले से पानी भर कर लाते हैं. उन्हें गांव के कुओं से पानी नहीं भरने दिया जाता.

सन 1948 में भारत का विधान पास हो गया. उस में कम से कम काग़ज़ के ऊपर छुआ छूत सारे हिन्दुस्तान से मिटा दी गई. बहादुरा के एक नेक हिन्दू लछमनराव उस्ताद ने चाहा कि उनके गांव के हरिजनों को भी गांव के कुओं से पानी भरने दिया जाय. लोगों को समझाया. ऊंची जात वालों ने न माना. आन्दोलन शुरू हो गया. छै बरस से यह आन्दोलन जारी है. हर हफ़्ते बड़े बड़े सुधारक, नेता, गांधी भक्त, यहां तक कि सरकारी अफ़सर और मिनिस्टर तक बहादुरा जा चुके हैं. हफ़्तों वहां बड़े बड़े कैम्प रहे, बड़ी बड़ी सभाएं हुईं. आन्दोलन जारी है. हम भी एक दिन बहादुरा जा चुके हैं. विनोबा भावे, राजेन्द्र बाबू और जवाहरलाल जी के अशीर्वाद तक बहादुरा के आन्दोलन को मिल चुके हैं. पर आज तक बहादुरा गांव के हरिजनों को गांव के कुओं से पानी लेने की इजाज़त नहीं मिल सकी.

इस सारे आन्दोलन की एक रिपोर्ट ग्यारह पन्नों की छपी हुई 'नया हिन्द' में रिव्यु के लिए हमारे पास आई है, और हम से सलाह भी मांगी गई है. हम हैरान हैं और शरमिन्दा हैं कि क्या कहें. जो धर्म इतना गिर गया हो, वह क्या सचमुच ज़िन्दा रहने का हक़दार है? और क्या दुनिया उसे ज़िन्दा रहने दे सकती है? हमारी बातों में कड़ुवापन हो सकता है. पर हम हैरान हैं कि क्या हमारे हिन्दू सभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

## چھوا چھوت

ناگپور سے چھ میل دور بہادرا نام کا ایک گاؤں ہے. آبادی سب ہندوؤں کی ہے، جن میں پچاس ساٹھ گھر اونچی جات کے ہندوؤں کے ہیں اور دس پندرہ گھر ہریجن یعنی اچھوت سمجھے جانے والے ہندوؤں کے. گاؤں میں دو کنوئیں ہیں. اونچی جات والے اپنے پینے کے لئے ان کنوؤں سے پانی بھرتے ہیں، اور ہریجن کہلانے والے گاؤں سے آدھ میل دور کسی نالے سے پانی بھر کر لاتے ہیں. انہیں گاؤں کے کنوؤں سے پانی نہیں بھرنے دیا جاتا.

سن 1948 میں بھارت کا ودھان پاس ہوگیا. اس میں کم سے کم کاغذ کے اوپر چھوا چھوت سارے ہندستان سے مٹا دی گئی. بہادرا کے ایک نیک ہندو لچھمن راؤ استاد نے چاہا کہ ان کے ہریجنوں کو بھی گاؤں کے کنوؤں سے پانی بھرنے دیا جائے. لوگوں کو سمجھایا. اونچی جات والوں نے نہ مانا. آندولن شروع ہوگیا. چھ برس سے یہ آندولن جاری ہے. ہر ہفتے بڑے بڑے سدھارک، نیتا، گاندھی بھگت، یہاں تک کہ سرکاری افسر اور منسٹر تک بہادرا جا چکے ہیں. ہفتوں وہاں بڑے بڑے کیمپ رہے، بڑی بڑی سبھائیں ہوئیں. آندولن جاری ہے. ہم بھی ایک دن بہادرا جا چکے ہیں. ونوبا بھاوے، راجیندر بابو اور جواہر لال جی کے آشیرواد تک بہادرا کے آندولن کو مل چکے ہیں. پر آج تک بہادرا گاؤں کے ہریجنوں کو گاؤں کے کنوؤں سے پانی لینے کی اجازت نہیں مل سکی.

اس سارے آندولن کی ایک رپورٹ گیارہ پنوں کی چھپی ہوئی "نیا ہند" میں ریویو کے لئے ہمارے پاس آئی ہے، اور ہم سے صلاح بھی مانگی گئی. ہم حیران ہیں اور شرمندہ ہیں کہ کیا کہیں. جو دھرم اتنا گر گیا ہو، وہ کیا سچ مچ زندہ رہنے کا حقدار ہے؟ اور کیا دنیا اسے زندہ رہنے دے سکتی ہے؟ ہماری باتوں میں کڑواپن ہوسکتا ہے. پر ہم حیران ہیں کہ کیا ہمارے ہندو سبھا اور راشٹری سویم سیوک سنگھ

## आज के कवि

लिखने वाले—ललित मोहन अवस्थी; निकालने वाले—करेन्ट पब्लिशर्स 'दीमाल' कानपूर; लिखावट हिन्दी; सफ़ हे—205, दाम तीन रुपया.

कला को समझने के लिये ज़रूरी है कि कलाकार को समझा जाय. दुनिया के बड़े बड़े कलाकार इस बात पर सहमत हैं कि कलाकार अपने इर्द गिर्द को समझता है, उस समझ को हज़म करता है और तब जो चीज़ लिखता है वह कामयाब होती है. बहुत सी रचनाओं की कामयाबी और नकामयाबी की जड़ लेखक के जीवन में होती है. इस लिये ज़रूरी है की लेखक को हर पहलू से जाना जाये और तब ही उसकी कला का सही अन्दाज़ा किया जायेगा. इसी दृश्टी कोन से "आज के कवि" लिखी गई है.

इस पुस्तक में चौदह कवियों का ज़िक्र है. सब के सब नये हैं, नौजवान हैं. कुछ प्रगतिशील हैं, कुछ अपने को प्रगतिशील नहीं कहते. इस तरह एक साथ बहुत से रूप और बहुत से विचार सामने आते हैं और सुन्दर, कम सुन्दर तय करने में असानी होती है. इस पुस्तक में चौदहों कवियों के चित्र दिये गये हैं और रचना के नमूने देने से पहले कवियों पर हमदर्दी से भरे अलोचनात्मक नोट दिये गये हैं.

इस में कोई शक नहीं कि अवस्थी जो ने मार्के की साहित्य सेवा की है और उन्हें बधाई मिलनी चाहिये.

इस सिलसिले में दूसरी किताबें अवस्थी जी लिख रहे हैं, जो कवि इस किताब में नहीं हैं, वह उसमें जगह पाएंगे. आने वाली किताबें जल्दी पूरी हों, यही हर साहित्य सेवी की अपील हो सकती है. —मुजीब रिज़वी

## परवाने की डायरी

लिखने वाले—मुहीउद्दीन इरफ़ान; निकालने वाले—मकतबा झंकार; चौक (मक़ाबिल कोतवाली) इलाहाबाद; लिखावट—उर्दू; सफ़्हा—154; दाम-दो रुपये चार आने.

इस किताब का नाम "परवाने की डायरी" है लेकिन रूप इसने ख़तों का ले लिया है. डायरी और ख़त के लिखने में फ़र्क़ है. जोशीली और जो विचार धारा इस किताब में अपनाई गई है वह क़ाज़ी मुहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार की है. लेकिन क़ाज़ी साहब की किताबें बहुत ऊंची हैं, उन तक पहुंचना आसान नहीं है. प्रेम कथा ख़ुद बहुत दिलचस्प नहीं होती, उसे अपने ताज़े अनुभव और सुन्दर सजीली भाशा से दिलचस्प बनाया जाता है. भाशा के नाम पर इस किताब में उर्दू की पिटी पिटाई शरमीली है और अनुभव के नाम पर कुछ भी नहीं देख पड़ता.

अदब की दुनिया में इस किताब का कोई मोल नहीं है. लेकिन मन बहलाव के लिये अच्छी है. —मुस्तफ़ा हैदर

## آج کے کوی

لکھنے والے — للت موہن اوستھی؛ نکالنے والے — کرنٹ پبلشرس' دی مال' کانپور؛ لکھاوٹ — ہندی؛ صفحے — 205؛ دام — تین روپیہ ۔

کلا کو سمجھنے کے لئے ضروری ہے کہ کلاکار کو سمجھا جائے ۔ دنیا کے بڑے بڑے کلاکار اس بات پر سہمت ہیں کہ کلاکار اپنے اردگرد کو سمجھتا ہے' اس سمجھ کو ہضم کرتا ہے اور تب جو چیز لکھتا ہے وہ کامیاب ہوتی ہے ۔ بہت سی رچناؤں کی کامیابی اور ناکامیابی کی جڑ لیکھک کے جیون میں ہوتی ہے ۔ اس لئے ضروری ہے کہ لیکھک کو ہر پہلو سے جانا جائے اور تب ہی اس کی کلا کا صحیح اندازہ کیا جائیگا ۔ اسی درشٹی کون سے "آج کے کوی" لکھی گئی ہے ۔

اس پستک میں چودہ کویوں کا ذکر ہے ۔ سب کے سب نئے ہیں' نوجوان ہیں ۔ کچھ پرگتی شیل ہیں' کچھ اپنے کو پرگتی شیل نہیں کہتے ۔ اس طرح ایک ساتھ بہت سے روپ اور بہت سے وچار سامنے آتے ہیں اور سندر' کم سندر طے کرنے میں آسانی ہوتی ہے ۔ اس پستک میں چودہوں کویوں کے چتر دئے گئے ہیں اور رچنا کے نمونے دینے سے پہلے کویوں پر ہمدردی سے بھرے آلوچناتمک نوٹ دئے گئے ہیں ۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ اوستھی جی نے معرکے کی ساہتیہ سیوا کی ہے اور انہیں بدھائی ملنی چاہئے ۔

اس سلسلے میں دوسری کتابیں اوستھی جی لکھ رہے ہیں' جو کوی اس کتاب میں نہیں ہیں' وہ اس میں جگہ پائیں گے ۔ آنے والی کتابیں جلدی پوری ہوں' یہی ہر ساہتیہ سیوی کی اپیل ہوسکتی ہے ۔ — مجیب رضوی

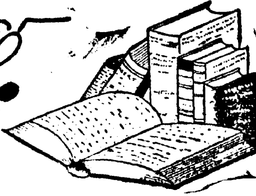
## پروانے کی ڈائری

لکھنے والے — محی الدین؛ نکالنے والے — مکتبہ جھنکار' چوک ( مقابل کوتوالی )' الہ آباد؛ لکھاوٹ — اردو؛ صفحے — 154؛ دام — دو روپیہ چار آنے :

اس کتاب کا نام " پروانے کی ڈائری " ہے لیکن روپ اس نے خطوں کا لے لیا ہے ۔ ڈائری اور خط کے لکھنے میں فرق ہے ۔ جو شیلی اور جو وچار دھارا اس کتاب میں اپنائی گئی ہے وہ قاضی محمد عبدالغفار کی ہے ۔ لیکن قاضی صاحب کی کتابیں اونچی ہیں' ان تک پہونچنا آسان نہیں ہے ۔ پریم کتھا خود بہت دلچسپ نہیں ہوتی' اسے اپنے تازے انوبھووں اور سندر سجیلی بھاشا سے دلچسپ بنایا جاتا ہے ۔ بھاشا کے نام پر اس کتاب میں اردو کی پٹی پٹائی نثر ملتی ہے اور انوبھو کے نام پر کچھ بھی نہیں دیکھ پڑتا ۔

ادب کی دنیا میں اس کتاب کا کوئی مول نہیں ہے ۔ لیکن من بہلاؤ کے لئے اچھی ہے ۔ — مصطفیٰ حیدر

# कुछ किताबें



# کچھ کتابیں

## ज़िन्दगी मुस्कराई

लिखने वाले—कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर; निकालने वाले—भारती ज्ञान पीठ, काशी; लिखावट हिन्दी; सफ़्हे—296; दाम चार रुपये.

"ज़िन्गी मुस्कराई" को पढ़ कर सचमुच ज़िन्दगी मुस्करा उठती है. पढ़ते जाइये, कभी आप का रस खतम नहीं होगा. जिस पन्ने को खोलेंगे उस पर ज़िन्दगी का संदेश अंकित रहेगा. अगर कोई किताब चरित्र निर्मान कर सकती है और नौजवानों को तरक़्क़ी की चोटी पर पहुंचा सकती है तो वह "ज़िन्दगी मुस्कराई" है. शैली इतनी रोचक है कि एक दफ़ा किताब उठाकर फिर बन्द करने का दिल नहीं चाहता. हर सतर एक नश्तर है जो दिल में गढ़ता जाता है. काश हर नौजवान तक यह किताब पहुंच सके.

इस पुस्तक में प्रभाकर जी के 43 स्केच और निबन्ध हैं. इन रचनाओं की पीठ पर प्रभाकर जी के गहरे अनुभव और तपस्या का हाथ है. हर रचना में नई ज़िन्दगा है, नई प्रेरना है. प्रभाकर जी के बहुत से विचारों से कोई सहमत न हो, यह सम्भव है. लेकिन "ज़िन्दगी मुस्कराई" की महानता से कोई इनकार नहीं कर सकता. अभी तक हिन्दी में अगर कोई रचना है और नौजवानों को बलवान बनाने का दावा कर सकती है तो "ज़िन्दगी मुस्कराई" के अलावा कोई दूसरी रचना नहीं हो सकती.

अगर कोई शुद्ध और सुन्दर भाशा लिखता है तो प्रभाकर जी को उसे गुरू मानना पड़ेगा. इस किताब की भाशा उन सब को चेलंज करती है जो कहते हैं कि बोल चाल की भाशा और होती है और साहित्य की भाशा और होती है. हिन्दी को संवारने का श्रेय प्रभाकर जी को है और इस अनमोल रत्न के लिये मैं भक्ति से उनके सामने सर झुकाता हूं.

यह किताब है जिस को यूनिवर्सिटी क्लासों में ज़रूर पढ़ाया जाना चाहिये और लाइब्रेरियों में तो इसे पहुंचना ही चाहिये.

—मुजीब रिज़वी

## زندگی مسکرائی

لکھنے والے—کنہیا لال مشر پربھاکر؛ نکالنے والے—بھارتیہ گیان پیٹھ، کاشی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے—296؛ دام چار روپیے۔

"زندگی مسکرائی" کو پڑھکر سچ مچ زندگی مسکرا اٹھتی ہے۔ پڑھتے جایئے، کبھی آپ کا رس ختم نہیں ہوگا۔ جس پنے کو کھولینگے اس پر زندگی کا سندیش انکت رہے گا۔ اگر کوئی کتاب چرتر نرمان کر سکتی ہے اور نوجوانوں کو ترقی کی چوٹی پر پہونچا سکتی ہے تو وہ "زندگی مسکرائی" ہے۔ شیلی اتنی روچک ہے کہ ایک دفعہ کتاب اٹھا کر پھر بند کرنے کا دل نہیں چاہتا۔ ہر سطر ایک نشتر ہے جو دل میں گڑتا جاتا ہے۔ کاش ہر نوجوان تک یہ کتاب پہونچ سکے۔

اِس پستک میں پربھاکر جی کے 43 اِسکیچ اور نبندھ ہیں۔ اِن رچناؤں کی پیٹھ پر پربھاکر جی کے گہرے انوبھو اور تپسیا کا ہاتھ ہے۔ ہر رچنا میں نئی زندگی ہے، نئی پریرنا ہے۔ پربھاکر جی کے بہت سے وچاروں سے کوئی سہمت نہ ہو، یہ سمبھو ہے۔ لیکن "زندگی مسکرائی" کی مہانتا سے کوئی انکار نہیں کر سکتا۔ ابھی تک ہندی میں اگر کوئی رچنا ہے اور نوجوانوں کو بلوان بنانے دعویٰ کر سکتی ہے تو وہ "زندگی مسکرائی" کے علاوہ کوئی دوسری رچنا نہیں ہوسکتی۔

اگر کوئی شدھ اور سندر بھاشا لکھنا چاہتا ہے تو پربھاکر جی کو اسے گرو ماننا پڑیگا۔ اِس کتاب کی بھاشا اُن سب کو چیلنج کرتی ہے جو کہتے ہیں کہ بول چال کی بھاشا اور ہوتی ہے اور ساہتیہ کی بھاشا اور ہوتی ہے۔ ہندی کو سنوارنے کا شریہ پربھاکر جی کو ہے اور اس انمول رتن کے لئے میں بھکتی سے ان کے سامنے سر جھکاتا ہوں۔

یہ وہ کتاب ہے جسکو یونیورسٹی کلاسوں میں ضرور پڑھایا جانا چاہئے اور لائبریریوں میں تو اِسے پہونچنا ہی چاہئے۔

—مجیب رضوی

आये थे. आज फिर इन्सान खतरे में घिरा है. बच्चे बूढ़े, औरत मर्द सब चीख रहे हैं. डैन्यूब का गुस्सा ठन्डा नहीं हो रहा, उसकी भूख नहीं मिट रही. इन्सानियत ने फिर पुकारा. आज यह सिपाही फिर एक साथ मैदान में आ गये.

जब खतरा होता है तो एका बढ़ता है. जब एका होता तो विश्वास बढ़ता है. जब विश्वास होता तो हथियार की जरूरत नहीं होती. बन्दूकें दूर पड़ी हैं—बहुत दूर, आदमियों से बहुत दूर. रूसी बन्दूकें आंख फाड़े अमरीकी बन्दूकों को देख रही है. अमरीकी बन्दूकें ताज्जुब से रूसी बन्दूकों को देख रही हैं, लेकिन खामोश हैं.

सिपाही सब भूल गये हैं—इन्सान हो गये हैं, केवल इन्सान—आदमियों को बचा रहे हैं, बूढ़ों को किनारे पर पहुंचा रहे हैं, बच्चों के सहारे बन रहे हैं. यह सब भूल गये हैं. केवल उन्हें खतरा याद है और खतरे से मानवता को बचाने का फ़र्ज़!

डैनयुब का खतरा मामूली है, बहुत साधारन. इस से भी बड़े खतरे हैं, हिटलर से भी बड़ा खतारा सामने है ऐटम बम का खतरा, हाईड्रोजन बम का खतरा, निपाम बम का खतरा. एक-दो, दस-बीस, हजार दस हजार, लाख दस लाख को ही खतरा नहीं है, सारी ज़िन्दगी खतरे में है, सारी मानवता खतरे में है. आज इन्सानियत फिर बुला रही है—अमरीकियों को, रूसियों को—सब को—मेल के लिये. आज रूसी और अमरीकी डैन्युब के खतरे के कारन मिले हैं. एक क़दम और आगे, मानवता को बचा लो, बन्दूकें फेंक दो, एक दूसरे को गले लगा लो....लेकिन शायद......ऐसा न हो सके......शायद हो सके! इन सिपाहियों की आंखें यही कह रही हैं. ज़रा इनमें देखो, ज़रा इनको पढ़ो. दूर नील गगन में आंसुओं की स्कीन पर क्या लिखा है—"हम ज़रूर मिलेंगे, दुनिया की जनता एक है, हम ज़रूर मिलेंगे......

—मुजीब रिज़वी



آئے تھے. آج پھر انسان خطرے میں گھرا ہے. بچے بوڑھے' عورت مرد سب چیخ رہے ہیں . ڈینیوب کا غصہ ٹھنڈا نہیں ہو رہا' اسکی بھوک نہیں مٹ رہی . انسانیت نے پھر پکارا. آج یہ سپاہی پھر ایک ساتھ میدان میں آ گئے .

جب خطرہ ہوتا ہے تو ایکا بڑھتا ہے . جب ایکا ہوتا ہے تو وشواس بڑھتا ہے . جب وشواس ہوتا ہے تو ہتھیار کی ضرورت نہیں ہوتی . بندوقیں دور پڑی ہیں — بہت دور' آدمیوں سے بہت دور . روسی بندوقیں آنکھیں پھاڑے امریکی بندوقوں کو دیکھ رہی ہیں' امریکی بندوقیں تعجب سے روسی بندوقوں کو دیکھ رہی ہیں' لیکن خاموش ہیں .

سپاہی سب بھول گئے ہیں — انسان ہو گئے ہیں' کیول انسان — آدمیوں کو بچا رہے ہیں' بڑھوں کو کنارے پہونچا رہے ہیں' بچوں کے سہارے بن رہے ہیں . یہ سب بھول گئے ہیں . کیول انہیں خطرہ یاد ہے اور خطرہ سے مانوتا کو بچانے کا فرض !

ڈینیوب کا خطرہ معمولی ہے' بہت سادھارن . اِس سے بھی بڑے خطرے ہیں' ہٹلر سے بھی بڑا خطرہ سامنے ہے . ایٹم بم کا خطرہ' ہائیڈروجن بم کا خطرہ' نپام بم کا خطرہ . ایک دو' دس بیس' ہزار دس ہزار' لاکھ دس لاکھ کو ہی خطرہ نہیں ہے' ساری زندگی خطرے میں ہے' ساری مانوتا خطرے میں ہے . آج انسانیت پھر بلا رہی ہے — امریکیوں کو' روسیوں کو — سب کو — میل کے لئے . آج روسی اور امریکی ڈینیوب کے خطرے کے کارن ملے ہیں . ایک قدم اور آگے؛ مانوتا کو بچا لو' بندوقیں پھینک دو' ایک دوسرے کو گلے لگا لو.....لیکن شاید ......ایسا نہ ہوسکے......شاید ہوسکے . اِن سپاہیوں کی آنکھیں یہی کہہ رہی ہیں . ذرا ان میں دیکھو' ذرا اِن کو پڑھو . دور نیل گگن میں آنسوؤں کی اسکرین پر کیا لکھا ہے — ہم ضرور ملینگے' دنیا کی جنتا ایک ہے' ہم ضرور ملینگے......

— مجیب رضوی

बहुत दिनों की बात नहीं है. यह सिपाही डैनयूब के किनारे आये थे—एक तरफ़ से अमरीकी, दूसरी तरफ़ से रूसी. जर्मन भाग रहे थे, जा रहे थे, अपने अन्त की तरफ़ बढ़ रहे थे. गोली चलना बन्द हो गया था. एक नारा गूंजा. ऐलान हुआ कि हमारी जीत हुई......और सब सिपाही सामने आ गये—अमरीकी सिपाही, रूसी सिपाही—सबने बन्दूक़ रख दी, गले मिल गये, एक दूसरे को उठा लिया, नाचने लगे.

लेकिन यह कब हुआ? जब ख़तरा था, जब इन्सानियत पर राक्षसों ने हमला किया था, जब ज़िन्दगी मौत के पन्जे में जकड़ गई थी, जब उजाले को अंधेरा खा रहा था, जब ज़िन्दगी की हर चीज़ मौत से डर रही थी. उस समय, उस युग में अमरीकी आये थे, रूसी आये थे! एक साथ आये थे, एक होकर आये थे...डैन्यूब इसकी गवाह है. जिस किनारे बैठ कर रूसियों ने अमरीकियों को वोडका दिया था और अमरीकियों ने रूसियों को सिगरेट पिलाए थे, जहां उन्होंने जीत के गीत गाये थे, जहां उन्होंने एक दूसरे को भविश्य की ज़िन्दगी का ख़ाका बताया था, जहां बैठ कर वह सब भूल गये थे, दिल खुल गये थे, बातें हो रही थीं, वह आनन्द विभोर हो रहे थे. ज़मीन का वह भाग जो डैन्यूब की लहरों को घेरे हुए था अगर पानी में डूबा नहीं है तो ज़रूर गवाही देगा.

उस वक़्त भी डैन्यूब में लहरें उठी थीं और आज भी उठ रही है. लेकिन दोनों की नियत में फ़र्क़ है. पहले की लहरों ने स्वागत किया था. आज की लहरें ग़ुस्सा है, ग़ज़बनाक हैं.

सिपाही एक दूसरे को पहचानते हैं. रूसी सिपाही आगे बढ़े. वोडका की बोतलें उन्होंने आगे बढ़ा दीं. उन्होंने नारे लगये—"दुनिया की जनता एक है." अमरीकी आगे बढ़े—एक क़दम, दो क़दम. मुंह पर मुस्कराहट छा गई. तभी किसी ने याद दिलाया कि आगे मौत है. रूसी सिपाहियों से मिले नहीं कि मैकार्थी तुम्हें फांसी के तख़्ते पर लटका देंगे. अमरीकी सिपाही परेशान हो गये. उनकी समझ में नहीं आता था कि क्या करें. ? पीछे हट जायें या आगे बढ़ कर गले लग जायें. अमरीकी सिपाहियों के मुंह पर दुख की रेखा रूसियों ने देखी. उन्होंने जैसे पढ़ा कि भाई मजबूर हैं, क्या करें. उसी मौन भाशा में रूसियों ने उत्तर दिया—कोई बात नहीं है. तुमने हमारी शुभ कामना स्वीकार कर ली है, इसका हमें विश्वास है. तुम हमें अपना दुश्मन न समझो, बस इतना ही हमें चाहिये.

आज यह सिपाही डैनयूब के किनारे फिर आये हैं. पहले हिटलर को भगाने आये थे. एक ख़तरा वह था, उसे मिटाने



بہت دنوں کی بات نہیں ہے ۔ یہ سپاہی ڈینیوب کے کنارے آئے تھے — ایک طرف سے امریکی، دوسری طرف سے روسی ۔ جرمن بھاگ رہے تھے، جا رہے تھے، اپنے انت کی طرف بڑھ رہے تھے۔ گولی چلنا بند ہوگیا تھا۔ ایک نعرہ گونجا ۔ اعلان ہوا کہ ہماری جیت ہوئی......اور سب سپاہی سامنے آگئے — امریکی سپاہی، روسی سپاہی — سب نے بندوق رکھ دی۔ گلے مل گئے، ایک دوسرے کو اٹھا لیا، ناچنے لگے ۔

لیکن یہ کب ہوا؟ جب خطرہ تھا، جب انسانیت پر راکشسوں نے حملہ کیا تھا، جب زندگی موت کے پنجے میں جکڑ گئی تھی، جب اجالے کو اندھیرا کھا رہا تھا، جب زندگی کی ہر چیز موت سے ڈر رہی تھی۔ اس سمے، اس یگ میں امریکی آئے تھے، روسی آئے تھے، ایک ہو کر آئے تھے......ڈینیوب اس کی گواہ ہے ۔ جس کنارے بیٹھکر روسیوں نے امریکیوں کو ووڈکا دیا تھا اور امریکیوں نے روسیوں کو سگریٹ پلائے تھے، جہاں انہوں نے جیت کے گیت گائے تھے، جہاں انہوں نے ایک دوسرے کو بھوشیہ کی زندگی کا خاکہ بتایا تھا، جہاں بیٹھکر وہ سب بھول گئے تھے، دل کھل گئے تھے، باتیں ہو رہی تھیں، وہ آنند وبھور ہو رہے تھے ۔ زمین کا وہ بھاگ جو ڈینیوب کی لہروں کو گھیرے ہوئے تھا اگر پانی میں ڈوبا نہیں ہے تو ضرور گواہی دیگا ۔

اس وقت بھی ڈینیوب میں لہریں اٹھی تھیں اور آج بھی اٹھ رہی ہیں ۔ لیکن دونوں کی نیت میں فرق ہے ۔ پہلے کی لہروں نے سواگت کیا تھا ۔ آج کی لہریں غصہ ہیں، غضبناک ہیں ۔

سپاہی ایک دوسرے کو پہچانتے ہیں۔ روسی سپاہی آگے بڑھے ۔ ووڈکا کی بوتلیں انہوں نے آگے بڑھادیں ۔ انہوں نے نعرے لگائے — 'دنیا کی جنتا ایک ہے'۔ امریکی آگے بڑھے — ایک قدم، دو قدم ۔ منہ پر مسکراہٹ چھا گئی۔ تب ہی کسی نے یاد دلایا کہ آگے موت ہے ۔ روسی سپاہیوں سے ملے نہیں کہ میکارتھی تمہیں پھانسی کے تختے پر لٹکا دینگے۔ امریکی سپاہی پریشان ہوگئے ۔ ان کی سمجھ میں نہیں آتا تھا کہ کیا کریں؟ پیچھے ہٹ جائیں یا آگے بڑھکر گلے لگ جائیں ۔ امریکی سپاہیوں کے منہ پر دکھ کی ریکھا روسیوں نے دیکھی ۔ انہوں نے جیسے پڑھا کہ بھائی مجبور ہیں، کیا کریں ۔ اسی مون بھاشا میں روسیوں نے اتر دیا — کوئی بات نہیں ہے ۔ تم نے ہماری شبھ کامنا سویکار کر لی ہے، اسکا ہمیں وشواس ہے ۔ تم ہمیں اپنا دشمن نہ سمجھو، بس اتنا ہی ہمیں چاہئے ۔

آج یہ سپاہی ڈینیوب کے کنارے پھر آئے ہیں ۔ پہلے ہٹلر کو بھگانے آئے تھے ۔ ایک خطرہ وہ تھا، اسے مٹانے

आजादी है झूठ बोलने की, आजादी है लूट मार करने की, हर उस चीज़ की आज़ादी है जिसकी आज़ादी नहीं होनी चाहिये. केवल एक बात की ही आज़ादी नहीं है सच बोलना सबसे बड़ा पाप है और उसकी सज़ा? मालूम है क्या है?—मौत! यही नहीं कि अपनी ज़मीन पर अमरीकी सच नहीं बोल सकते. यदि उन्होंने दूसरे देश में भी सच बोलने की कोशिश की तो उन्हें पकड़ लिया जायेगा, दूतावास के कमरों में ठूंस दिया जायगा, हवाई जहाज़ में बन्द कर के बूचड़खाने में भेज दिया जायेगा. वहां......वहां सदा के लिये सच की आवाज़ शान्त कर दी जायेगी.

ऐसी आज़ादी को कोई क्या कहे!

× × ×

पानी है कि उमड़ा ही आता है. लहरें किनारे से टकरा रही हैं. ज़मीन पीछे हटती जाती है. हार रही है या पानी ज़मीन को निगले जा रहा है! एक भयानक फुफकार सुनाई देती है, उसमें चीख़ भी मिली है. कहते है कि पानी पीछे हटता है, गुर्राता है और फिर पूरी ताक़त से किनारे पर हमला करता है. यह भी हो सकता है कि किनारा जानता हो कि उसकी हार निश्चित है. पर आसानी से हार मानना वह नहीं चाहता. धमकी हर लड़ाई में आख़री हथियार होता है. शायद कटता हुआ किनारा इसलिये फुफकार रहा हो!

बला का तूफ़ान है. डैन्यूब ने जैसे क़सम खा ली है, पुराना ज़माना होता, तो पूजा होती, डैन्यूब देवी को भेंट चढ़ाई जाती. लेकिन इस युग का इन्सान! कुछ अपने ऊपर अधिक विश्वास करने लगा है. किनारे पर पुरोहित नहीं हैं, इन्जीनियर हैं, विशेषज्ञ हैं. योजनायें बन रही हैं कि बाढ़ कैसे रोक दी जाये. डैन्यूब रुक जाये यह उसकी शान के ख़िलाफ़ है. रोकने की जितनी कोशिश होती है, उसका गुस्सा और बढ़ता है, वह और अधिक जोश में आती है.

ख़तरा बढ़ रहा है. आस्ट्रिया वाले क्या करें. हाथ पैर मारते हैं, लेकिन कामयाबी नहीं होती.

यह क्या? फ़ौज आ रही है. लेकिन यह फ़ौज एक देश की नहीं है. दोस्त नहीं है, एक तरफ़ अमरीकी हैं, दूसरी तरफ़ रूसी हैं. दोनों तरफ़ से पचास पचास सिपाही आ रहे हैं. यह सिपाही एक दूसरे से अपरिचित हों ऐसी बात नहीं. यह एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं, ख़ूब पहचानते हैं. इससे पहले भी डैन्यूब के किनारों पर यह मिल चुके हैं. तब डैन्यूब ने उनका स्वागत किया था. लेकिन आज नाराज़ है. क्यों का जवाब बहुत तीखा है. पर इस जवाब में बहुत से भेद छिपे हैं, इतिहास के पन्ने ही इस पर रोशनी डाल सकते हैं.



آزادی ہے جھوٹ بولنے کی، آزادی ہے لوٹ مار کرنے کی، ہر اُس چیز کی آزادی ہے جس کی آزادی نہیں ہونی چاہئے۔ کیول ایک بات کی ہی آزادی نہیں ہے۔ سچ بولنا سب سے بڑا پاپ ہے اور اس کی سزا؟ معلوم ہے کیا ہے؟—موت! یہی نہیں کہ اپنی زمین پر امریکی سچ نہیں بول سکتے۔ یدی اُنہوں نے دوسرے دیش میں بھی سچ بولنے کی کوشش کی تو اُنہیں پکڑ لیا جائے گا، دوتاواس کے کمروں میں ٹھونس دیا جائے گا، ہوائی جہاز میں بند کر کے بوچڑ خانے میں بھیج دیا جائیگا۔ وہاں......وہاں سدا کے لئے سچ کی آواز شانت کر دی جائیگی۔

ایسی آزادی کو کوئی کیا کہے!

+ × ×

پانی ہے کہ اُمڑا ہی آتا ہے۔ لہریں کنارے سے ٹکرا رہی ہیں۔ زمین پیچھے ہٹتی جاتی ہے۔ ہار رہی ہے یا پانی زمین کو نگلے جا رہا ہے! ایک بھیانک پھنکار سنائی دیتی ہے، اس میں چیخ بھی ملی ہے۔ کہتے ہیں کہ پانی پیچھے ہٹتا ہے، غراتا ہے اور پھر پوری طاقت سے کنارے پر حملہ کرتا ہے۔ یہ بھی ہو سکتا ہے کہ کنارا جانتا ہو کہ اُسکی ہار نشچت ہے۔ پر آسانی سے ہار ماننا وہ نہیں چاہتا۔ دھمکی ہر لڑائی میں آخری ہتھیار ہوتا ہے۔ شاید کٹتا ہوا کنارا اس لئے پھنکار رہا ہو!

بلا کا طوفان ہے۔ ڈینوب نے جیسے قسم کھا لی ہے۔ پرانا زمانہ ہوتا تو پوجا ہوتی، ڈینوب دیوی کو بھینٹ چڑھائی جاتی۔ لیکن اِس یگ کا اِنسان! کچھ اپنے اوپر ادھک وشواس کرنے لگا ہے۔ کنارے پر پروہت نہیں ہیں، انجینیر ہیں، وشیشگ ہیں۔ یوجنائیں بن رہی ہیں کہ باڑھ کیسے روک دی جائے۔ ڈینوب رک جائے، یہ اُسکی شان کے خلاف ہے۔ روکنے کی جتنی کوشش ہوتی ہے، اُسکا غصہ اور بڑھتا ہے، وہ اور ادھک جوش میں آتی ہے۔

خطرہ بڑھ رہا ہے۔ آسٹریا والے کیا کریں۔ ہاتھ پیر مارتے ہیں، لیکن کامیابی نہیں ہوتی۔

یہ کیا؟ فوج آ رہی۔ لیکن یہ فوج ایک دیش کی نہیں ہے، دوست نہیں ہے۔ ایک طرف امریکی ہیں، دوسری طرف روسی ہیں۔ دونوں طرف سے پچاس پچاس سپاہی آ رہے ہیں۔ یہ سپاہی ایک دوسرے سے اپریچت ہوں، ایسی بات نہیں۔ یہ ایک دوسرے کو اچھی طرح جانتے ہیں، خوب پہچانتے ہیں۔ اُس سے پہلے بھی ڈینوب کے کناروں پر یہ مل چکے ہیں۔ تب ڈینوب نے اِن کا سواگت کیا تھا۔ لیکن آج ناراض ہے۔ کیوں کا جواب بہت تیکھا ہے، پر اس جواب میں بہت سے بھید چھپے ہیں، اتہاس کے پنے ہی اس پر روشنی ڈال سکتے ہیں۔

को खत." मैंने उसे छोड़ दिया, लेकिन दूसरी खबर ढूंढते ढूंढते उस पर नज़र जा पड़ी. सोचा, पढ़ ही लूं. उस औरत लिखा है : "मैं सीलोन से अमरीका क्यों लाई गई हूं, मेरा क्या दोश है, मेरे पति से मुझे क्यों अलग कर दिया गया है, मेरे पास पैसे नहीं हैं, मैं यहां गुज़र कैसे करूंगी......? मैं अपने पति को बहुत प्यार करती हूं......मैं उस से अलग नहीं रह सकती."

मैंने आगे पढ़ना बेकार समझा. सोचा शायद बेचारी को इसलिये वापस भेज दिया गया हो क्योंकि उसने एक सीलोनी से शादी कर ली है. शादी—और एक गोरी अमरीकन की काले सीलोनी के साथ! लेकिन आगे की खबर और मज़ेदार है. मैं ग़ौर से पढ़ने लगा. कुछ ऐसा लगने लगा कि मुझे अपने सवाल का जवाब मिल रहा है. उस औरत से प्रेम उमड़ा, साहानुभूति बढ़ी, लेकिन फिर ख्याल हुआ कि हो न हो उस औरत ने कोई खतरनाक काम किया है. नहीं तो अमरीकी सरकार पागल नहीं है, किसी औरत को उसके पति से छुड़ाकर ले जाना मामूली परिस्थिति में समझ में नहीं आ सकता.

मैंने आगे पढ़ा. पता चला कि यह देवी जी श्री जोज़फ़ डी सिलवा की बीवी हैं. जौज़फ़ साहब ने सुप्रीम कोर्ट में दरख्वास्त दी कि अमरीकी दूतावास वाले उनकी बीवी को ज़बरदस्ती अमरीका भेज रहे हैं. कोर्ट सीलोनी सरकार को आदेश दे कि वह उसे अमरीका न जाने दे.

कोर्ट के फ़ैसले से पहले मिसेज़ सिलवा वाशिंगटन में हैं.

शायद सीलोनी सरकार के हाथ बंधे हैं! एक नागरिक की स्त्री को दूसरे देश वाले पकड़ कर ले गये. सरकार ख़ामोश है, कुछ नहीं बोलती है. पूरब में औरत को घर की इज्ज़त कहा जाता है. युगों से यह परम्परा चली आई है. जिसने स्त्री पर हाथ डाला, उसने इज्ज़त पर हाथ डाला. एक नागरिक की इज्ज़त देश की इज्ज़त होती है. जान चली जाये लेकिन इज्ज़त न जाये. पर यह बीती बातें हैं. लोग कहेंगे कि भावुक लोग ऐसी बातों को महत्व देते हैं. जो भी हो. लेकिन मैं सोचता हूं, सोचने पर मजबूर हूं. सीलोन की इज्ज़त दिन दहाड़े अमरीकी लूट कर ले गये और सीलोन सरकार ख़ामोश है!

मिसेज़ सिलवा का दोश क्या है? बहुत भयानक दोश है. अमरीकी सरकार को वह उलट देना चाहती थीं? उन्होंने आइज़न हावर को क़त्ल कराने की साज़िश की थी? नहीं, बिल्कुल नहीं. ऐसी कोई बात नहीं. केवल इतना दोश है कि उन्होंने एक किताब लिखी है. उस किताब का नाम है—"रोज़ेन बर्ग—उनका दोश?"



کو خط۔" میں نے اُسے چھوڑ دیا، لیکن دوسری خبر ڈھونڈھتے ڈھونڈھتے اُس پر نظر جا پڑی۔ سوچا، پڑھ ہی لوں۔ اُس عورت نے لکھا ہے : "میں سیلون سے امریکہ کیوں لائی گئی ہوں، میرا کیا دوش ہے، میرے پتی سے مجھے کیوں الگ کر دیا گیا ہے، میرے پاس پیسے نہیں ہیں، میں یہاں گزر کیسے کروں گی؟......میں اپنے پتی کو بہت پیار کرتی ہوں......میں اُس سے الگ نہیں رہ سکتی۔"

میں نے آگے پڑھنا بیکار سمجھا۔ سوچا شاید بیچاری کو اس لئے واپس بھیج دیا گیا ہو کیونکہ اُس نے ایک سیلونی سے شادی کرلی ہے۔ شادی — اور ایک گوری امریکن کی کالے سیلونی کے ساتھ! لیکن آگے کی خبر اور مزیدار ہے۔ میں غور سے پڑھنے لگا۔ کچھ ایسا لگنے لگا کہ مجھے اپنے سوال کا جواب مل رہا ہے۔ اُس عورت سے پریم اُمڑا، سہانوبھوتی بڑھی، لیکن پھر خیال ہوا کہ ہو نہ ہو اُس عورت نے کوئی خطرناک کام کیا ہے۔ نہیں تو امریکی سرکار پاگل نہیں ہے۔ کسی عورت کو اُس کے پتی سے چھڑا کر لیجانا معمولی پرستھتی میں سمجھ میں نہیں آسکتا۔

میں نے آگے پڑھا۔ پتہ چلا کہ یہ دیوی جی شری جوزف ڈی سلوا کی بیوی ہیں۔ جوزف صاحب نے سپریم کورٹ میں درخواست دی کہ امریکی دوتاواس والے ان کی بیوی کو زبردستی امریکہ بھیج رہے ہیں۔ کورٹ سیلونی سرکار کو آدیش دے کہ وہ اُسے امریکہ نہ جانے دے۔

کورٹ کے فیصلے سے پہلے مسز سلوا واشنگٹن میں ہیں۔

شاید سیلونی سرکار کے ہاتھ بندھے ہیں! ایک ناگرک کی استری کو دوسرے دیش والے پکڑ کر لے گئے۔ سرکار خاموش ہے، کچھ نہیں بولتی ہے۔ پورب میں عورت کو گھر کی عزت کہا جاتا ہے۔ یگوں سے یہ پرمپرا چلی آئی ہے۔ جس نے استری پر ہاتھ ڈالا، اس نے عزت پر ہاتھ ڈالا۔ ایک ناگرک کی عزت دیش کی عزت ہوتی ہے۔ جان چلی جائے، لیکن عزت نہ جائے۔ پر یہ بیتی باتیں ہیں۔ لوگ کہینگے کہ بھاوک لوگ ایسی باتوں کو مہتو دیتے ہیں۔ جو بھی ہو۔ لیکن میں سوچتا ہوں، سوچنے پر مجبور ہوں کہ سیلون کی عزت دن دہاڑے امریکی لوٹ کر لے گئے اور سیلون سرکار خاموش ہے!

مسز سلوا کا دوش کیا ہے؟ بہت بھیانک دوش ہے۔ امریکی سرکار کو وہ اُلٹ دینا چاہتی تھیں؟ اُنہوں نے آئزن ہاور کو قتل کرانے کی سازش کی تھی؟ نہیں، بالکل نہیں۔ ایسی کوئی بات نہیں۔ کیول اتنا دوش ہے کہ اُنہوں نے ایک کتاب لکھی ہے۔ اس کتاب کا نام ہے — "روزن برگ — اُن کا دوش؟"

महाराज तोंद पर हाथ घुमाते उधर से गुज़रे और उन्होंने कहा—"यह सब झूठ है. कौन है बड़ा विद्वान. जैसे अकबर के बाद सूखा पड़ा ही नहीं ?"

सब ने सुन लिया, कोई जवाब नहीं दिया.

किसान ने फिर कहा—"बनिया ने पानी गाड़ रखा है. भैया, इन लोगों को अपने मुनाफ़े से मतलब......!"

विश्वास न करते हुए दूसरों ने गरदन हिलाई. किसान झूटा बनने को तैयार नहीं है. इसने ज़रा जोश में आकर कहा—"तीन साल पहले तो हमारे गांव में ही एक बनिया पकड़ा गया था. बच्चू की ख़ूब पिटाई हुई. आंगन में पानी गाड़ रखा था. गांव वालों ने मिल कर पूजा कराई और पानी उखेड़ा. दूसरे घंटे ही अर्रा तोड़ पानी बरसा."

विश्वास और अविश्वास के बीच सबने किसान की बात मान ली. सब चुप हो गये.

उसी समय कड़कड़ाहट हुई और टपाटप बूंदें पड़ने लगीं. सब चिलाते हुए भागे—"बरसो देव, बरसो, दिल खोल कर बरसो."

लेकिन दूसरे चन धूप निकली हुई है.

× × ×

कल एक मित्र से बात हो रही थी. वह अमरीका हो आये हैं. इन्हें अमरीकी जीवन बहुत अच्छा लगता है. बोले—"अमरीका में हर तरह की आज़ादी है."

मैं चुप रहा.

उन्होंने भांपा कि मैं उनकी बात पर यक़ीन नहीं कर रहा हूं. शीघ्र ही उबल पड़े—"और कोई आज़ादी हो या न हो, लेकिन जिन्सी आज़ादी बेहद है, बेहद है ....."

मुझे हंसी आ गई. मुंह दबा कर हंसने को कौन कहे, मैं पूरी ताक़त लगा कर हंस पड़ा.

वह कुछ झेंप से गये.

उन मित्र का ही क्या. बहुत से आते हैं, अमरीका की आज़ादी को सराहते हैं. लेकिन जब जब उनसे प्रश्न किये जाते हैं वह जिन्सी आज़ादी और यह आज़ादी और वह आज़ादी का नाम गिनाने लगते हैं. वह झूट बोलते हैं, कैसे कहूं ? वह भरम में हैं ? हो सकता है. लेकिन वह भरम में हैं कि मैं भरम में हूं ? प्रश्न उठा और फिर शांत होने का उसने नाम न लिया. नींद ग़ायब हो गई. बरसात की रात में सितारे भी नहीं थे कि सितारे गिनता. घर में मच्छर बहुत हैं. अन्धेरे में उन्हें ही मारता रहा. कोई मच्छर मरा या नहीं, लेकिन कई जगह मेरे बदन में दर्द ज़रूर होने लगा. जब कुछ सम्भव न हो तो मैं अख़बार पढ़ता हूं. हिन्दुस्तान टाइम्स का पुराना नम्बर उठा लाया. पढ़ता रहा. एक कोने में ख़बर छपी थी. हैडिंग थी—"अमरीकी औरत का आइक



مہاراج توند پر ہاتھ گھماتے اُدھر سے گزرے اور اُنہوں نے کہا—"یہ سب جھوٹ ہے. کون ہے بڑا ودوان. جیسے اکبر کے بعد سوکھا پڑا ہی نہیں؟"

سب نے سن لیا' کوئی جواب نہیں دیا.

کسان نے پھر کہا—"بنیا نے پانی گاڑ رکھا ہے. بھیا' کوئی مرے یا جئے' اِن لوگوں کو اپنے منافع سے مطلب....."

وشواس نہ کرتے ہوئے دوسروں نے گردن ہلائی. کسان جھوٹا بننے کو تیار نہیں ہے. اُس نے ذرا جوش میں آکر کہا—"تین سال پہلے تو ہمارے گاؤں میں ہی ایک بنیا پکڑا گیا تھا. بچو کی خوب پٹائی ہوئی. آنگن میں پانی گاڑ رکھا تھا. گاؤں والوں نے ملکر پوجا کرائی اور پانی اُکھیڑا. دوسرے گھنٹے ہی ارا توڑ پانی برسا."

وشواس اور اوشواس کے بیچ سب نے کسان کی بات مان لی. سب چپ ہوگئے.

اسی سمے کڑکڑاہٹ ہوئی اور ٹپاٹپ بوندیں پڑنے لگیں. سب چلاتے ہوئے بھاگے "برسو دیو' برسو' دل کھول کر برسو."

لیکن دوسرے چھن دھوپ نکلی ہوئی ہے.

× × ×

کل ایک متر سے بات ہو رہی تھی. وہ امریکہ ہو آئے ہیں. انہیں امریکی جیون بہت اچھا لگتا ہے. بولے—"امریکہ میں ہر طرح کی آزادی ہے."

میں چپ رہا.

انہوں نے بھانپا کہ میں اُن کی بات پر یقین نہیں کر رہا ہوں. شیگھر اُبل پڑے—"اور کوئی آزادی ہو یا نہ ہو لیکن جنسی آزادی بےحد ہے' بےحد ہے."

مجھے ہنسی آگئی. منہ دبا کر ہنسنے کو کون کہے' میں پوری طاقت لگاکر ہنس پڑا.

وہ کچھ جھینپ سے گئے.

اُن متر کا ہی کیا. بہت سے آتے ہیں' امریکہ کی آزادی کو سراہتے ہیں. لیکن جب جب اُن سے پرشن کئے جاتے ہیں وہ جنسی آزادی اور یہ آزادی اور وہ آزادی کا نام گنانے لگتے ہیں. وہ جھوٹ بولتے ہیں' کیسے کہوں؟ وہ بھرم میں ہیں؟ ہوسکتا ہے. لیکن وہ بھرم میں ہیں کہ میں بھرم میں ہوں؟ پرشن اُٹھا اور پھر شانت ہونے کا اُس نے نام نہ لیا. نیند غائب ہوگئی. برسات کی رات میں ستارے بھی نہیں تھے کہ ستارے گنتا. گھر میں مچھر بہت ہیں. اندھیرے میں انہیں ہی مارتا رہا. کوئی مچھر مرا یا نہیں' لیکن کئی جگہ میرے بدن میں درد ضرور ہونے لگا. جب کچھ سمبھو نہ ہو تو میں اخبار پڑھتا ہوں. ہندستان ٹائمس کا پرانا نمبر اُٹھا لایا' پڑھتا رہا. ایک کونے میں خبر چھپی تھی. ہیڈنگ تھی—"امریکی عورت کا آئک

महाराज बिगड़ कर बोले—"हाथ पाओं धोना आफ़त हो गई है. भगवान बरस रहे हैं चुल्लू लगा के पी लेना. धरम करम भी करना मुश्किल हो गया है. एक ऐसे ही सुधार कर लिया है, पर इतना भी पूरा नहीं होने पाता. अब तो केवल सात दफ़ा लोटा मांजता हूं......"

मज़दूर ने पूछा—"महाराज पहले कितनी बार लोटा मांजते थे?"

महाराज ने खम्बा छोड़ते हुये कहा—"चौदह दफ़ा, समझे......लेकिन क्या करें, अब घूर खरबोटने लगे हैं......जै शिव शम्भू, जै शिव शम्भू......"

महाराज चले गए, सब ने जल्दी मचाई, दोनों ने प्यास बुझाई और अपने अपने स्थानों के लिये भागे.

सब ने कहा कि आज पानी बरस कर रहेगा. बादल घिरे रहे. लेकिन पानी नहीं बरसा.

बरसात में डेढ़ महीने और बाक़ी हैं. पानी नहीं बरसा. दो चार छींटे को पानी बरसना नहीं कहते. हर दिल में यह दुविधा उठ रही है कि पानी न बरसेगा तो क्या होगा? हर एक सोच रहा है कि पानी क्यों नहीं बरसता? जितने मुंह उतनी बातें. जिसको जिस चीज़ में दिलचस्पी है वह इसी का रोना रोता है. लेकिन एक रोना सब को है. वह रोना पेट का है. पानी नहीं बरसेगा तो रोटी नहीं मिलेगी!

इसी खम्बे पर फिर लोग इकट्ठा हैं. बहस पानी पर चल रही है.

प्रेस के मज़दूर ने कहा—"पानी बरसे कहां से! ऐटम बम, हाईड्रोजन बम छुड़ा छुड़ा कर बादल सुखा दिये हैं......"

तब ही किसी ने जैसे उसका सुधार किया—"बादल कहा सूख सकते हैं? पानी न हो तो बादल बनें ही क्यों? असल बात यह है कि ऐटम बम और हाइडरोजन बम के छूटने से जो गर्द उठी है, वह गर्द आसमान पर छा गई है. इसी कारन पानी नहीं बरसता है."

"कहते हैं कि पानी, अच्छा है नहीं बरसता. नहीं तो आसमान से ऐटम के कन गिरेंगे और बीमारी फैल जाएगी."

दूसरे आदमी ने व्यंग किया—"भूकों मरें, चाहे रोगी हो कर मरें, मरना तो है ही. जो चाहे करो भगवान!"

पास ही एक किसान खड़ा था. उसने सर हिलाया. कहने का मतलब यह था कि यह सब बातें काल्पनिक हैं. असली बात वह समझता है. तब ही मज़दूर ने उसे भांप लिया और बोला—"गांवों में तो त्राहि त्राहि मची होगी."

किसान बोला—"असल बात मैं बताऊं. जब राजा की नीयत ख़राब होती है तो सूखा पड़ता है. कहते हैं कि अकबर बादशाह के समय किसी मंत्री ने लगान बढ़ा दिया था और किसानों से ज़बरदस्ती लगान वसूला था. उस समय भी सूखा पड़ा था."



مہاراج بگڑ کر بولے—"ہاتھ پاؤں دھونا آفت ہو گئی ہے۔ بھگوان برس رہے ہیں۔ چلو لگا کر پی لینا۔ دھرم کرم بھی کرنا مشکل ہو گیا ہے۔ ایک ایسے ہی سدھار کر لیا ہے۔ پر اتنا بھی پورا نہیں ہونے پاتا ہے۔ اب تو کیول سات دفعہ لوٹا مانجھتا ہوں......"

مزدور نے پوچھا—"مہاراج پہلے کتنی بار لوٹا مانجھتے تھے؟"

"مہاراج نے کھمبا چھوڑتے ہوئے کہا—"چودہ دفعہ' سمجھے......لیکن کیا کریں' اب گھور کھربوٹنے لگے ہیں......جے شیو شمبھو' جے شیو شمبھو......"

مہاراج چلے گئے' سب نے جلدی مچائی' دونوں نے پیاس بجھائی اور اپنے اپنے استھانوں کے لئے بھاگے۔

سب نے کہا کہ آج پانی برس کر رہے گا۔ بادل گھرے رہے۔ لیکن پانی نہیں برسا۔

برسات میں ڈیڑھ مہینے اور باقی ہیں۔ پانی نہیں برسا۔ دو چار چھینٹے کو پانی برسنا نہیں کہتے۔ ہر دل میں یہ دبدھا اٹھ رہی ہے کہ پانی نہ برسے گا تو کیا ہوگا؟ ہر ایک سوچ رہا ہے کہ پانی کیوں نہیں برستا؟ جتنے منہ اتنی باتیں۔ جس کو جس چیز میں دلچسپی ہے وہ اسی کا رونا روتا ہے۔ لیکن ایک رونا سب کو ہے۔ وہ رونا پیٹ کا ہے۔ پانی نہیں برسے گا تو روٹی نہیں ملے گی!

اسی کھمبے پر پھر لوگ اکٹھا ہیں۔ بحث پانی پر چل رہی ہے۔

پریس کے مزدور نے کہا—"پانی برسے کہاں سے! ایٹم بم' ہائڈروجن بم چھڑا چھڑا کر بادل سکھا دئے ہیں......"

تب ہی کسی نے جیسے اس کا سدھار کیا—"بادل کہاں سوکھ سکتے ہیں؟ پانی نہ ہو تو بادل بنیں ہی کیوں؟ اصل بات یہ ہے کہ ایٹم بم اور ہائڈروجن بم کے چھوٹنے سے جو گرد اٹھی ہے' وہ گرد آسمان پر چھا گئی ہے۔ اسی کارن پانی نہیں برستا ہے۔"

" کہتے ہیں کہ پانی اچھا ہے نہیں برستا۔ نہیں تو آسمان سے ایٹم کے کن گریں گے اور بیماری پھیل جائے گی۔"

دوسرے آدمی نے ویلگ کہا—"بھوکوں مریں' چاہے روگی ہو کر مریں' مرنا تو ہے ہی۔ جو چاہے کرو بھگوان!"

پاس ہی ایک کسان کھڑا تھا۔ اس نے سر ہلایا۔ کہنے کا مطلب یہ تھا کہ یہ سب باتیں کالپنک ہیں۔ اصلی بات وہ سمجھتا ہے۔ تب ہی مزدور نے اسے بھانپ لیا اور بولا—" گاؤں میں تو تراہ تراہ مچی ہوگی۔"

کسان بولا—" اصل بات میں بتاؤں۔ جب راجا کی نیت خراب ہو جاتی ہے تو سوکھا پڑتا ہے۔ کہتے ہیں کہ اکبر بادشاہ کے سمے کسی منتری نے لگان بڑھا دیا تھا اور کسانوں سے زبردستی لگان وصولا تھا۔ اس سمے بھی سوکھا پڑا تھا۔"

# प्रवासी की डायरी

# پرواسی کی ڈائری

बादल आते हैं लोग आसमान को देखते हैं, घिरती घटाओं को देख कर उनके दिल गदगद हो जाते हैं.

लेकिन बादल बिना बरसे चले जाते हैं.

एक फ़ाइल दबाए बेफ़िक्र नौजवान कहता है—"क्या छटा है......बरसो बादल झूम के! क्या मज़ा आता है. रिम झिम फुआर और खिड़की पर खड़े हो कर सड़क पर भीगने वालों का दृश्य!

उसी समय लकड़ी चीरने वाला मज़दूर दरवाज़े पर आकर खड़ा होता है. आंख ऊपर उठाता है और कहता है, सांस खींच कर, मन उदास कर के—बरसो देव, काहे ग़रीबों के पीछे पड़े हो!

कोऊ काहू में मगन, कोऊ काहू में मगन.

एक सौ एक का टीका खींचे, पंडित महाबीर, जनेऊ को कान से बांधे बम्बे पर लोटा धो रहे हैं. मुंह से बिरहा की लय फूट रही है और धोते धोते 'हरे राम' भी कह लेते हैं.

पास के प्रेस से एक मज़दूर आता है. "महराज ज़रा जल्दी करो, पानी पी लूं, काम पर जाना है."

'क्या मज़ाक़ है! लूट मज़ा. कहां काम पर चला है? क्या काली घटा छाई है!" महाराज आनन्द विभोर हो कर बोले.

मज़दूर ने कहा—"इस सब को फ़ुरसत हो तो फिर क्या है! काम नहीं करूंगा तो खाऊंगा क्या?"

"चलते हैं भैंरो का नाम लेकर भंग छानेंगे, मन्दिर के बरामदे में बैठ कर रसखान का पाठ करेंगे, क्या आनन्द आता है!"

"महाराज जल्दी कर दो."

"क्या बक बक करता है. ज़रा दूर हठ, छूना न लेना."

मज़दूर ने फिर प्रार्थना की.

तब ही दो चार बूंदें टपकीं. महाराज ने बम्बे के नीचे पैर रगड़ते हुए कहा—"धन्य हो भगवान! जै सियाराम चन्द्र की जै!"

बम्बे पर दूसरा आदमी भी आ गया. उसने कहा—"महाराज जल्दी करो."

بادل آتے ھیں. لوگ آسمان کو دیکھتے ھیں' گھرتی گھٹاؤں کو دیکھکر اُن کے دل گد گد ھو جاتے ھیں .

لیکن بادل بن بر سے چلے جاتے ھیں .

ایک فائل دبائے بےفکر نوجوان کہتا ھے—"کیا چھٹا ھے'......برسو بادل جھوم کے! کیا مزا آتا ھے. رم جھم پھوار اور کھڑکی پر کھڑے ھوکر سڑک پر بھیگنے والوں کا درشیہ!

اُسی سمے لکڑی چیرنے والا مزدور دروازے پر آکر کھڑا ھوتا ھے . آنکھ اوپر اُٹھاتا ھے اور کہتا ھے—سانس کھینچ کر' من اُداس کرکے—برسو دیو' کا ھے غریبوں کے پیچھے پڑے ھو"!

کوؤ کاھو میں مگن' کوؤ کاھو میں مگن .

ایک سو ایک کا ٹیکا کھینچے' پنڈت مہابیر' جنیؤ کو کان سے باندھے بمبے پر لوٹا دھو رھے ھیں. منہ سے برھا کی لے پھوٹ رھی ھے اور دھوتے دھوتے 'ھرے رام' بھی کہ لیتے ھیں .

پاس کے پریس سے ایک مزدور آتا ھے . "مہاراج ذرا جلدی کرو' پانی پی لوں' کام پر جانا ھے ."

"کیا مذاق ھے. لوٹ مزا . کہاں کام پر چلا ھے' کیا کالی گھٹا چھائی ھے" مہاراج آنند وبھور ھوکر بولے .

مزدور نے کہا—"اس سب کو فرصت ھو تو پھر کیا ھے! کام نہیں کروں گا تو کھاؤں گا کیا؟"

"چلتے ھیں بھیرو کا نام لےکر بھنگ چھانیں گے . مندر کے برامدے میں بیٹھ کر رس کھان کا پاٹھ کریں گے ......کیا آنند آتا ھے ."

"مہاراج جلدی کردو"

"کیا بک بک کرتا ھے . ذرا دور ھٹ' چھو نہ لینا."

مزدور نے پھر پرارتھنا کی .

تب ھی دو چار بوندیں ٹپکیں . مہاراج نے بمبے کے نیچے پیر رگڑتے ھوئے کہا—"دھنیہ ھو بھگوان! جے سیارام چندر کی جے!"

بمبے پر دوسرا آدمی بھی آگیا . اُس نے کہا—"مہاراج جلدی کرو ."

मुझे दिये. मैंने देखा उसके हाथ मिट्टी में सने हुए थे. वह ज़रूर घुटनों के बल चल कर दूकान तक आया होगा. जल्दी जल्दी शराब पी कर दूसरों की हंसी और तानाबाज़ी की परवाह न करते हुए वह फिर घुटनों के बल ही खिसक खिसक कर वापस चला गया.

उसके बाद फिर काफ़ी दिनों तक कुंग का ज़िक्र नहीं आया. साल के आख़िर में मालिक फिर जब हिसाब बनाने लगा तो उसने कहा–"कुंग पर अभी भी 19 इकन्नियां बाक़ी हैं." शैतानी नाव वाले त्योहार में भी उसने यही कहा, पर उसके बाद हेमन्त के त्योहार के मौक़े पर हिसाब मिलाते समय उसने यह बात नहीं दुहराई. अगले साल भी कुंग नहीं दिखलाई पड़ा.

तब से आज तक कुंग नहीं दिखलाई पड़ा. शायद वह मर चुका हो, पर उसकी याद हमारे दिल में सदा ज़िन्दा रहेगी.

---

बड़े मज़ेदार आदमी हैं मंसाराम शास्त्री.

वे कई भाशाओं के विद्वान हैं और उनका जीवन एक इन्द्र धनुशी जीवन है, जिसमें अनेक रंग एक साथ समाये हुए हैं.

यों वे सदा अपनी पंडिताऊ हिन्दी में बोलते हैं, जिसमें फ़ारसी अरबी का बहिश्कार और संस्कृत का शृंगार होता है. हां, बोलते बोलते भारतीय संस्कृति पर बात आ जाये, तो भक्ति की धारा में बहने लगते हैं और उनकी हिन्दी शुद्ध संस्कृत में इस तरह बदल जाती है, जैसे लहर में लहर !

उनका जीवन एक इन्द्र धनुशी जीवन है, जिसमें अनेक रंग एक साथ समाये हुए हैं. भारतीय संस्कृति की शान्त धारा में तैरते तैरते वे अन्तर्राश्ट्रीय राजनीति के प्रचंड प्रवाह में कब आ जायें, इसे कोई नहीं जानता. हां, यह अकसर देखा है कि वह शान्त से उत्साह में आजायें, तो उनकी शुद्ध संस्कृत अंग्रेज़ी में इस तरह बदल जाती है, जैसे कांटे पर रेल !

उनकी बातें आगे बढ़ती रहती हैं और जाने कब अन्तर्राश्ट्रीय राजनीति से घरेलू जीवन पर आ जाती हैं. कमाल यह है कि हम उनकी बातें न समझ रहे हों, तब भी यह समझ सकते हैं, क्योंकि अब वे साधारन हिन्दी में बोल रहे होते हैं.

बड़े मज़ेदार आदमी हैं मंसाराम शास्त्री.

—कन्हैयालाल 'प्रभाकर'

---



مجھے دیئے. میں نے دیکھا کہ اس کے ہاتھ مٹی میں سنے ہوئے تھے. وہ ضرور گھٹنوں کے بل چلکر دوکان تک آیا ہوگا. جلدی جلدی شراب پی کر دوسروں کی ہنسی اور طعنہ بازی کی پرواہ نہ کرتے ہوئے وہ پھر گھٹنوں کے بل ہی کھسک کھسک کر واپس چلا گیا.

اس کے بعد پھر کافی دنوں تک کونگ کا ذکر نہیں آیا. سال کے آخر میں مالک پھر جب حساب بنانے لگا تو اس نے کہا—"کونگ پر ابھی بھی 19 اکنیاں باقی ہیں." شیطانی ناؤ والے تیوہار میں بھی اس نے یہی کہا. پر اس کے بعد ہیمنت کے موقعے پر حساب ملاتے سمے اس نے یہ بات نہیں دہرائی. اگلے سال بھی کونگ نہیں دکھلائی پڑا.

تب سے آج تک کونگ نہیں دکھلائی پڑا. شاید وہ مر چکا ہو، پر اسکی یاد ہمارے دل میں سدا زندہ رہےگی.

---

بڑے مزیدار آدمی ہیں منسارام شاستری.

وے کئی بھاشاؤں کے ودوان ہیں اور ان کا جیون ایک اندردھنشی جیون ہے، جسمیں انیک رنگ ساتھ سمائے ہوئے ہیں.

یوں وے سدا اپنی پنڈتاؤ ہندی میں بولتے ہیں، جسمیں فارسی، عربی کا بہشکار اور سنسکرت کا شرنگار ہوتا ہے. ہاں، بولتے بولتے بھارتیہ سنسکرتی پر بات آ جائے، تو بھکتی کی دھارا میں بہنے لگتے ہیں اور ان کی ہندی شدھ سنسکرت میں اس طرح بدل جاتی ہے، جیسے لہر میں لہر !

ان کا جیون ایک اندردھنوشی جیون ہے، جسمیں انیک رنگ ایک ساتھ سمائے ہوئے ہیں. بھارتیہ سنسکرتی کی شانت دھارا میں تیرتے تیرتے وہ انترراشٹری راجنیت کے پرچنڈ پرواہ میں کب آ جائیں، اسے کوئی نہیں جانتا. ہاں، یہ اکثر دیکھا ہے کہ وہ شانت سے اتساہ میں آجائیں، تو ان کی شدھ سنسکرت انگریزی میں اس طرح بدل جاتی ہے، جیسے کانٹے پر ریل !

ان کی باتیں آگے بڑھتی رہتی ہیں اور جانے کب انترراشٹری راجنیت سے گھریلو جیون پر آ جاتی ہیں. کمال یہ ہے کہ ہم ان کی باتیں نہ سمجھ رہے ہوں، تب بھی یہ سمجھ سکتے ہیں، کیونکہ اب وہ سادھارن ہندی میں بول رہے ہوتے ہیں.

بڑے مزیدار آدمی ہیں منسارام شاستری.

—کنہیالال 'پربھاکر'

---

"क्यों ?—"क्या हुआ था ?"

"वह फिर चोरी कर रहा था. इस बार वह मिस्टर लिंग के यहां चोरी करने गया था. कितना बुद्धू था वह ! प्रान्त भर में प्रतिष्ठित विद्वान के घर चोरी करने गया था."

"फिर क्या हुआ ?"

"होता क्या ! पहिले उसने कागज़ पर लिखा कि उसने चोरी की है. फिर उसे मार पड़ी. क़रीब क़रीब रात भर वह पिटता रहा. उसके पैर टूट गये."

"फिर उसके बाद ?"

"मालूम नहीं, फिर उसका क्या हुआ. शायद मर गया हो."

दूकान का मालिक फिर आगे प्रश्न करना बन्द कर अपने काम में लग गया.

हेमन्त के त्योहार के बाद, जैसे जैसे जाड़ा बढ़ता गया, ठंडी हवाएं बहने लगीं. मैं अपना अधिकांश समय चूल्हे के नज़दीक ही बैठा रहता. अपना रूई का कोट बराबर पहिने रहता. एक दिन दोपहर के समय जब दूकान में कोई भी ग्राहक नहीं था मैं बैठा बैठा ऊंघ रहा था तभी किसी ने पुकारा और एक प्याला शराब मांगी.

आवाज़ हालांकि बहुत ही धीमी थी पर परिचित सी थी. जब मैंने आखें खोलीं तो सामने कोई भी नहीं दिखाई पड़ा. जब मैंने खड़े होकर दरवाजे की तरफ़ झुक कर झांका तो मेज़ के क़रीब कुंग-ई-ची को बैठा देखा. वह चटाई पर पल्थी मारे बैठा था और फटी पुरानी एक बंडी पहने था. मुझे देखते ही उसने दुहराया—"एक प्याला गरम शराब दो."

अब मेरे मालिक का ध्यान भी उचट गया और उसने पूछा—"क्या कुंग-ई-ची आया है ? उस पर 19 इकन्नियां बाकी हैं."

कुंग ने उत्तर दिया—"वह मैं अदा कर दूंगा. आज तो मैं नक़द ले रहा हूं. हां, शराब अच्छी होनी चाहिये."

मालिक ने पहिले की ही तरह पूछा—"कुंग-ई-ची आजकल फिर चोरी करने लगे ?"

पर इस बार बिगड़ कर जवाब देने के बजाय कुंग बोला—"अपना मज़ाक़ अपने ही पास रक्खो."

"अच्छा ! यह मज़ाक़ है ? बताओ तुम्हारे पैर कैसे टूट गये ?"

कुंग ने दबी आवाज़ में उत्तर दिया—"गिर पड़ा था." उसकी आखें कह रही थीं कि इस बात को यहीं पर ख़तम कर दिया जाय. अब तक काफ़ी लोग इकट्ठा हो गये थे और सभी हंस रहे थे. शराब गरम कर मैंने उसकी तरफ़ बढ़ाई और उसने अपनी बंडी के जेब से पैसे निकाल कर



"کیوں ؟ کیا ہوا تھا ؟"

"وہ پھر چوری کر رہا تھا . اِس بار وہ مسٹر لنگ کے یہاں چوری کرنے گیا تھا . کتنا بدھو تھا وہ ! پرانت بھر میں پرتشٹھت ودوان کے گھر چوری کرنے گیا تھا ."

"پھر کیا ہوا؟"

"ہوتا کیا ! پہلے اُس نے کاغذ پر لکھا کہ اُس نے چوری کی ہے . پھر اُسے مار پڑی . قریب قریب رات بھر وہ پٹتا رہا . اُس کے پیر ٹوٹ گئے ."

"پھر اس کے بعد؟"

"معلوم نہیں' پھر اُسکا کیا ہوا . شاید مرگیا ہو ."

دوکان کا مالک پھر آگے پرشن کرنا بند کر اپنے کام میں لگ گیا .

ہیمنت کے تیوہار کے بعد' جیسے جیسے جاڑا بڑھتا گیا' ٹھنڈی ہوائیں بہنے لگیں . میں اپنا ادھیکانش سمے چولہے کے نزدیک ہی بیٹھا رہتا . اپنا روئی کا کوٹ میں برابر پہنے رہتا. ایک دن دوپہر کے سمے جب دوکان میں کوئی بھی گراہک نہیں تھا میں بیٹھا بیٹھا اُونگھ رہا تھا . تبھی کسی نے پکارا اور ایک پیالہ شراب مانگی.

آواز حالانکہ بہت ہی دھیمی تھی پر پریچت سی تھی. جب میں نے آنکھیں کھولیں تو سامنے کوئی بھی نہیں دکھائی پڑا . جب میں نے کھڑے ہوکر دروازے کی طرف جھک کر جھانکا تو میز کے قریب کونگ. ای. چی کو بیٹھا دیکھا. وہ ایک چٹائی پر پلتھی مارے بیٹھا تھا اور پھٹی پرانی ایک بنڈی پہنے تھا . مجھے دیکھتے ہی اُس نے دوہرایا—"ایک پیالہ گرم شراب دو ."

اب میرے مالک کا دھیان بھی اُچٹ گیا اور اُس نے پوچھا—"کیا کونگ . ای . چی آیا ہے ؟ اس پر 19 اکنیاں باقی ہیں ."

کونگ نے اُتر دیا—"وہ میں ادا کردونگا . آج تو میں نقد لے رہا ہوں . ہاں' شراب اچھی ہونی چاہئیے ."

مالک نے پہلے کی ہی طرح پوچھا—"کونگ. اِی. چی' آجکل پھر چوری کرنے لگے ؟"

پر اِس بار بگڑ کر جواب دینے کے بجائے کونگ بولا—"اپنا مذاق اپنے ہی پاس رکھو ."

"اچھا ! یہ مذاق ہے' تو بتاؤ تمہارے پیر کیسے ٹوٹ گئے ؟"

کونگ نے دبی آواز میں اُتر دیا—"گر پڑا تھا ." اُسکی آنکھیں کہہ رہی تھیں کہ اِس بات کو یہیں پر ختم کردیا جائے . اب تک کافی لوگ اِکٹھا ہوگئے تھے اور سبھی ہنس رہے تھے . شراب گرم کر میں نے اُسکی طرف بڑھائی اور اس نے اپنی پھٹی بنڈی کے جیب سے پیسے نکال کر

के बाद बड़ी आजिज़ी के साथ वह फिर बोला—"तुम नहीं लिख सकते ? देखो मैं तुम्हें बताता हूं. आगे से ध्यान रखना. तुमको यह लिखना जानना चाहिये क्योंकि आगे जब तुम अपनी दूकान खोलोगे तो तुमको ग्राहकों का हिसाब किताब रखना ही पड़ेगा."

मुझे वह दिन तो क़रीब नहीं नज़र आ रहा था जब मैं स्वयं अपनी दूकान खोलता और फिर मेरा मालिक भी अपना हिसाब लिखने में इस अक्षर का इस्तेमाल कभी भी नहीं करता था. कुछ परेशान होकर और कुछ मुस्कराते हुए मैंने उत्तर दिया—"पर तुमसे कौन कहता है कि मुझे पढ़ाओ, क्या अक्षर 'हुई' घास के तिरछेपन की तरह नहीं लिखा जाता है ?"

कुंग ख़ुश हो गया और मेज़ पर हाथ पटकते हुए बोला—"ठीक, ठीक ! लेकिन अक्षर 'हुई' तीन चार प्रकार से लिखा जाता है. क्या तुम्हें मालूम है ?" मैं ऊब गया था. उसको एक हल्की सी डांट बता कर मैं दूसरे कामों में लग गया. कुंग शराब में उंगली डालकर मेज़ पर उन अक्षरों को लिख कर मुझे समझाने जा रहा था, पर मेरा इस प्रकार का व्योहार देख कर वह हताश हो गया, उसने लम्बी सांस ली और चुप हो कर बैठ गया।

अकसर ऐसा होता था कि सराय में हंसी और गुल गपाड़ा सुन कर पास पड़ोस के बच्चे इकट्ठा हो जाते थे और कुंग-ई-ची को घेर लेते थे. कुंग उनमें से हर एक को मसालेदार फलियां देता था. उन्हें खाने के बाद भी बच्चे और पाने की आशा में उसको घेरे खड़े रहते थे. पर जब उसके पास फलियां ख़तम हो जाती थीं तो प्लेट को उलट कर वह बच्चों से कहता था—"अब आज ख़तम हो गइ, फिर दूसरे दिन मिलेंगी." बच्चों को जैसे विश्वास नहीं होता था. वह उचक उचक कर प्लेट देखने का प्रयत्न करते और उसमें कुछ न पा कर निराश हो जाते और फिर धीरे धीरे खेल में लग जाते थे.

कुंग-ई-ची बहुत ही मज़ेदार व्यक्ति था पर उसके बग़ैर भी हमारी दूकान चलती ही रहती थी.

हैमन्त के त्योहार के कुछ दिन पहिले जब हमारी दूकान का मालिक सालाना हिसाब किताब तैयार कर रहा था, हिसाब लिखते लिखते बोला—"कुंग-ई-ची बहुत दिनों से इधर नहीं आया. अभी भी उस पर 19 इकन्नियां बाक़ी हैं." तब मुझे भी इसका ख़याल हुआ कि इधर बहुत दिनों से कुंग-ई-ची दूकान पर नहीं आया.

उपस्थित ग्राहकों में से एक बोला—'वह आये भी कैसे ? पिछली बार जब वह पिटा था तो उसके दोनों पैर बेकार हो गये थे.'



کے بعد بڑی عاجزی کے ساتھ وہ پھر بولا—"تم نہیں لکھ سکتے؟ دیکھو میں تمہیں بتاتا ہوں. آگے سے دھیان رکھنا. تم کو وہ لکھنا جاننا چاہئے کیونکہ آگے جب تم اپنی دوکان کھولوگے تو تمکو گراہکوں کا حساب کتاب رکھنا ہی پڑیگا."

مجھے وہ دن تو قریب نہیں نظر آرہا تھا جب میں سویم اپنی دوکان کھولتا اور پھر میرا مالک بھی اپنا حساب لکھنے میں اِس اکشر کا استعمال کبھی بھی نہیں کرتا تھا. کچھ پریشان ہوکر اور کچھ مسکراتے ہوئے میں نے اتر دیا—"پر تم سے کون کہتا ہے کہ مجھے پڑھاؤ' کیا اکشر 'ہوئی' گھاس کے ترچھے پن کی طرح نہیں لکھا جاتا ہے؟"

کونگ خوش ہوگیا اور میز پر ہاتھ پٹکتے ہوئے بولا—"ٹھیک' ٹھیک! لیکن اکشر 'ہوئی' تین چار پرکار سے لکھا جاتا ہے. کیا تمہیں معلوم ہے؟" میں اوب گیا تھا. اسکو ایک ہلکی سی ڈانٹ بتاکر میں دوسرے کاموں میں لگ گیا. کونگ شراب میں انگلی ڈالکر میز پر ان اکشروں کو لکھکر مجھے سمجھانے جا رہا تھا' پر میرا اس پرکار کا بیوہار دیکھکر وہ ہتاش ہوگیا' اس نے لمبی سانس لی اور چپ ہوکر بیٹھ گیا.

اکثر ایسا ہوتا تھا کہ سرائے میں ہنسی اور غل غپاڑہ سنکر پاس پڑوس کے بچے اکٹھا ہوجاتے تھے اور کونگ. اِی. چی کو گھیر لیتے تھے. کونگ اُن میں سے ہر ایک کو مسالےدار پھلیاں دیتا تھا. انہیں کھانے کے بعد بھی بچے اور پانے کی آشا میں اسکو گھیرے کھڑے رہتے تھے. پر جب اُس کے پاس پھلیاں ختم ہوجاتی تھیں تو پلیٹ کو الٹ کر وہ بچوں سے کہتا تھا—"اب آج ختم ہوگئیں. پھر دوسرے دن ملینگی." بچوں کو جیسے وشواس نہیں ہوتا تھا. وہ اُچک اُچک کر پلیٹ دیکھنے کا پریتن کرتے اور اُس میں کچھ نہ پاکر نراش ہوجاتے اور پھر دھیرے دھیرے کھیل میں لگ جاتے.

کونگ. اِی. چی بہت ہی مزیدار ویکتی تھا پر اس کے بغیر بھی ہماری دوکان چلتی ہی رہتی تھی.

ہیمنت کے تیوہار کے کچھ دن پہلے جب ہماری دوکان کا مالک سالانہ حساب کتاب تیار کر رہا تھا' حساب لکھتے لکھتے بولا—"کونگ. ای. چی بہت دنوں سے اِدھر نہیں آیا. ابھی بھی اس پر 19 اکنیاں باقی ہیں. تب مجھے بھی اِسکا خیال ہوا کہ اِدھر بہت دنوں سے کونگ. ای. چی دوکان پر نہیں آیا.

اُپستھت گراہکوں میں سے ایک بولا—"وہ آئے بھی کیسے؟ پچھلی بار جب وہ پٹا تھا تو اُس کے دونوں پیر بیکار ہوگئے تھے."

कोई निश्चित साधन नहीं था. धीरे धीरे वह बहुत ग़रीब हो गया और भीक मांगने के लिये मजबूर होने लगा. उसकी लिखावट बड़ी सुन्दर थी, इसलिये उसे नक़ल करने का, दस्तावेज़ लिखने का काम अकसर मिल जाया करता था. पर उसमें कमज़ोरियां भी कम नहीं थीं. वह शराब पीने का आदी था और आलसी भी था. कुछ दिन काम करने के बाद वह अकसर काग़ज़ कलम लेकर ग़ायब हो जाता था. उसके बाद फिर कोई रास्ता नहीं रह जाता था, उसे छोटी मोटी चोरियां करनी ही पड़ती थीं. जब कई बार ऐसा हुआ तो उसे सबों ने नक़ल करने के लिये काम देना भी बन्द कर दिया. पर उस सराय में उसका व्योहार आदर्श व्यक्ति का हुआ करता था. वह अपना क़र्ज़ हमेशा चुका दिया करता था. ऐसा भी होता था कि जब उसके पास नक़द पैसे नहीं होते थे तो उसका नाम उधार के ग्राहकों की सूची पर आ जाता था पर महीना ख़तम होने के पहिले ही अपना नाम कटवा भी लेता था.

आधा प्याला शराब पीने के बाद कुंग अपनी स्वस्थ प्रकृति को वापस पा जाता था, लेकिन उसी समय कोई प्रश्न कर बैठता—"कुंग-ई-ची, क्या तुम सचमुच पढ़ना जानते हो?"

कुंग उसकी तरफ़ घृना भरी नज़रों से देखता, जैसे यह सवाल उसकी इज़्ज़त उतारने के लिये किया गया हो. पर दूसरे ग्राहक अपना सवाल पूछते—"यह क्या बात है कि तुमने कोई परीक्षा नहीं पास की?"

तब कुंग परेशान और दुखी दिखने लगता था. उसका चेहरा पीला पड़ जाता था और होंट बोलने के लिये हिलने लगते थे. पर धीमे स्वर में कही गई उसकी बातें शायद ही किसी की समझ में आती थीं. फिर सब लोग क़हक़हा मार कर हंसने लगते थे और सराय के वातावरन में ज़िन्दगी और ताज़गी आ जाती थी.

ऐसे मौक़ों पर मैं भी ग्राहकों की हंसी ख़ुशी में साथ दे देता था और मालिक की तरफ़ से मुझे डांट भी नहीं पड़ती थी. दर असल वह ख़ुद भी कुंग से ऐसे उल्टे सीधे सवाल पूछा करता था. यह सोच कर कि दूसरे ग्राहकों से बातें करने में कोई लाभ नहीं है, कुंग दूकान पर बच्चों के बीच खो जाता था एक बार उसने मुझसे पूछा—"क्या तुमने कभी स्कूल में पढ़ा है?"

जब मैंने हामी भरते हुए सिर हिलाया, उसने कहा—"अच्छा, तब मैं एक सवाल करूंगा? तुम 'हुई' अक्षर जो 'हुई-सियांग' में आता है कैसे लिखते हो?"

मैं सोचने लगा कि क्या अब एक भिकमंगा मेरी परीक्षा लेगा! मैंने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया और अपना मुंह दूसरी तरफ़ मोड़ लिया. कुछ देर चुप रहने



کوئی نشچت سادھن نہیں تھا. دھیرے دھیرے وہ بہت غریب ہوگیا اور بھیک مانگنے کے لئے مجبور ہونے لگا. اُسکی لکھاوٹ بڑی سندر تھی' اس لئے اُسے نقل کرنے کا' دستاویز لکھنے کا کام اکثر مل جایا کرتا تھا. پر اس میں کمزوریاں بھی کم نہیں تھیں. وہ شراب پینے کا عادی تھا اور آلسی بھی تھا. کچھ دن کام کرنے کے بعد وہ اکثر کاغذ قلم لے کر غائب ہو جاتا تھا. اس کے بعد پھر کوئی راستہ نہیں رہ جاتا تھا. اُسے چھوٹی موٹی چوریاں کرنی ہی پڑتی تھیں. جب کئی بار ایسا ہوا تو اُسے سبھوں نے نقل کرنے کے لئے کام دینا بھی بند کر دیا. پر اس سرائے میں اُسکا بیوہار آدرش ویکتی کا ہوا کرتا تھا. وہ اپنا قرض ہمیشہ چکا دیا کرتا تھا. ایسا بھی ہوتا تھا کہ جب اس کے پاس نقد پیسے نہیں ہوتے تھے تو اُسکا نام اُدھار کے گراہکوں کی سوچی پر آجاتا تھا پر وہ مہینہ ختم ہونے کے پہلے ہی اپنا نام کٹوا بھی لیتا تھا.

آدھا پیالہ شراب پینے کے بعد کونگ اپنی سوستھ پرکرتی کو واپس پا جاتا تھا' لیکن اُسی سمے کوئی پرشن کر بیٹھتا تھا—"کونگ - اِی - چی' کیا تم سچ مچ پڑھنا جانتے ہو؟"

کونگ اس کی طرف گھرنا بھری نظروں سے دیکھتا' جیسے یہ سوال اُسکی عزت اتارنے کے لئے کیا گیا ہو. پر دوسرے گراہک اپنا سوال پوچھتے—"یہ کیا بات ہے کہ تم نے کوئی پریکشا نہیں پاس کی؟"

تب کونگ پریشان اور دکھی دیکھنے لگتا تھا. اُسکا چہرہ پیلا پڑ جاتا تھا اور ہونٹ بولنے کے لئے ہلنے لگتے تھے. پر دھیمے سور میں کہی گئی اُسکی باتیں شاید ہی کسی کی سمجھ میں آتی تھیں. پھر سب لوگ قہقہہ مار کر ہنسنے لگتے تھے اور سرائے کے واتاورن میں زندگی اور تازگی آجاتی تھی.

ایسے موقعوں پر میں بھی گراہکوں کی ہنسی خوشی میں ساتھ دے دیتا تھا اور مالک کی طرف سے مجھے ڈانٹ بھی نہیں پڑتی تھی. دراصل وہ خود بھی کونگ سے ایسے اُلٹے سیدھے سوال پوچھا کرتا تھا. یہ سوچ کر کہ دوسرے گراہکوں سے باتیں کرنے میں کوئی لابھ نہیں ہے' کونگ دوکان پر بچوں کے بیچ کھو جاتا تھا. ایک بار اس نے مجھ سے پوچھا—"کیا تم نے کبھی اسکول میں پڑھا ہے؟"

جب میں نے حامی بھرتے ہوئے سر ہلایا' اُس نے کہا—"اچھا' تب میں ایک سوال کرونگا؟ تم 'ہوئی' اکشر جو 'ہوئی. سیانگ' میں آتا ہے کیسے لکھتے ہو؟"

میں سوچنے لگا کہ اب ایک بھکمنگا میری پریکشا لیگا! میں نے اُسکی باتوں پر دھیان نہیں دیا اور اپنا منھ دوسری طرف موڑ لیا. کچھ دیر چپ رہنے

पर मुझे खुद यह काम पुरा लगता था और मैं असंतुष्ट रहता था. मेरा मालिक डरावनी शक्ल का व्यक्ति था और ग्राहक सुस्त और थके हुये, कुन्द बुद्धि वाले होते थे. इसलिये किसी का प्रसन्न चित्त होकर उस दूकान में रहना असम्भव ही था. दूकान में हंसी तभी सुनाई पड़ती थी जब कुंग-ई-ची आता था. यही कारन है कि मुझे आज भी उसकी याद है.

ऊँची श्रेणी के ग्राहकों की आदत के विपरीत लम्बे गाउन वाला कुंग ही अकेला ऐसा ग्राहक था जो मेज़ के पास खड़ा होकर मदिरा पान करता था. वह ऊंचे क़द का हट्टा कट्टा आदमी था, फिर भी उसके चेहरे पर पीलापन छाया रहता था और चेहरे की झुर्रियों के बीच अकसर चोट के निशान भी दिखाई पड़ने लगते थे. उसकी लम्बी दाढ़ी, हमेशा बिना कंघी की हुई रहती थी. दाढ़ी में भी सफ़ेद बालों की धारियां दीख जाती थीं. हालांकि उसका गाउन लम्बा था पर वह इतना गंदा और पेवंददार था कि यह साफ़ पता लग जाता था कि कम से कम 10 बरस से तो धोया न गया होगा. वह बोलता इस तरह था कि आधी बात ही समझ में आती थी. जब भी वह सराय में आता था हर व्यक्ति उसकी तरफ़ देख कर मुस्कराने लगता और उन में से एक अवश्य कह बैठता—"कुंग-ई-ची, आज तो तुम्हारे चेहरे पर नये घाव के निशान दिखाई पड़ रहे हैं."

इन बातों की परवाह न करते हुये कुंग-ई-ची मेज़ के पास आकर दो प्याले शराब और एक प्लेट फलियों का आर्डर देता था और नौ इकन्नियां निकाल कर रख देता था. फ़ौरन ही कोई फिर बोल पड़ता—"तुमने फिर चोरी की होगी."

घूर कर उस व्यक्ति को देखते हुये वह उत्तर देता—"बेकार ही किसी भले आदमी को क्यों बदनाम करते हो?"

"क्या भले आदमी को बदनाम करता हूं? अभी परसों ही तो अपनी आखों के सामने तुम्हें पिटते हुये देखा है. तुमने 'हो' परिवार की किताबें चुराई थीं."

तब कुंग का चेहरा लाल हो जाता था और अपना विरोध प्रगट करते हुए वह उत्तर देता था—"किताबों का चुराना, चोरी नहीं.........किताबें ले लेना तो विद्वानों की आदत है, इसे चोरी नहीं कहते." फिर वह प्राचीन ग्रन्थों में से मिसालें देने लगता—"बड़ा आदमी वह है जो ग़रीबी में, अभाव में भी सन्तुष्ट रहता हो." और फिर उसका धारा प्रवाह भाशन चल निकलता. उस को शायद ही कोई समझ पाता. और तब तक भाशन चलता रहता जब तक सराय का हर ग्राहक हंसी से लोट पोट न हो जाता था.

गांव वालों के ही मुंह सुनने को मिला था कि कुंग-ई-ची को प्राचीन ग्रन्थों का अच्छा ज्ञान था. हालांकि उसने कोई परीक्षा कभी भी नहीं पास की थी. जीवन यापन का भी उसका



پر مجھے خود یہ کام برا لگتا تھا اور میں اسنتشٹ رہتا تھا۔ میرا مالک ڈراونی شکل کا ویکتی تھا اور گراہک سست اور تھکے ہوئے، کند بدھی والے ہوتے تھے۔ اس لئے کسی کا پرسن چت ہو کر اس دوکان میں رہنا اسمبھو ہی تھا۔ دوکان میں ہنسی تبھی سنائی پڑتی تھی جب کونگ - ای - چی آتا تھا۔ یہی کارن ہے کہ مجھے آج بھی اسکی یاد ہے۔

اونچی شرینی کے گراہکوں کی عادت کے وپریت لمبے گاؤن والا کونگ ہی اکیلا گراہک تھا جو میز کے پاس کھڑا ہو کر مدرا پان کرتا تھا۔ وہ اونچے قد کا ہٹا کٹا آدمی تھا، پھر بھی اس کے چہرے پر پیلا پن چھایا رہتا تھا اور چہرے کی جھریوں کے بیچ اکثر چوٹ کے نشان بھی دکھائی پڑنے لگتے تھے۔ اسکی لمبی داڑھی، ہمیشہ بنا کنگھی کی ہوئی رہتی تھی۔ داڑھی میں بھی سفید بالوں کی دھاریاں دیکھ جاتی تھیں۔ حالانکہ اسکا گاؤن لمبا تھا پر وہ اتنا گندا اور پیوند دار تھا کہ یہ صاف پتہ لگ جاتا تھا کہ کم سے کم 10 برس سے تو دھویا نہ گیا ہوگا۔ وہ بولتا اس طرح تھا کہ آدھی بات ہی سمجھ میں آتی تھی۔ جب بھی وہ سرائے میں آتا تھا ہر ویکتی اسکی طرف دیکھ کر مسکرانے لگتا اور ان میں سے ایک اوشیہ کہہ بیٹھتا—"کونگ - ای - چی، آج تو تمہارے چہرے پر نئے گھاؤ کے نشان دکھائی پڑ رہے ہیں۔"

ان باتوں کی پرواہ نہ کرتے ہوئے کونگ - ای - چی میز کے پاس آکر دو پیالے شراب اور ایک پلیٹ پھلیوں کا آرڈر دیتا تھا اور نو اکنیاں نکال کر رکھ دیتا تھا۔ فوراً ہی کوئی پھر بول پڑتا—"تم نے پھر چوری کی ہوگی۔"

گھور کر اس ویکتی کو دیکھتے ہوئے وہ اتر دیتا—"بیکار میں ہی کسی بھلے آدمی کو کیوں بدنام کرتے ہو؟"

"کیا؟ بھلے آدمی کو بدنام کرتا ہوں؟ ابھی پرسوں ہی تو اپنی آنکھوں کے سامنے تمہیں پٹتے دیکھا ہے۔ تم نے 'ہو' پریوار کی کتابیں چرائی تھیں۔"

تب کونگ کا چہرہ لال ہوجاتا تھا اور اپنا ورودھ پرگٹ کرتے ہوئے وہ اتر دیتا تھا—"کتابوں کو چرانا' چوری نہیں.....کتابیں لے لینا تو ودوانوں کی عادت ہے' اسے چوری نہیں کہتے۔" پھر وہ پراچین گرنتھوں میں سے مثالیں دینے لگتا—"بڑا آدمی وہ ہے جو 'غریبی میں' ابھاؤ میں بھی سنتشٹ رہتا ہو۔" اور پھر اسکا دھارا پرواہ بھاشن چل نکلتا۔ اس کو شاید ہی کوئی سمجھ پاتا۔ تب تک بھاشن چلتا رہتا تھا جب تک سرائے کا ہر گراہک ہنسی سے لوٹ پوٹ نہ ہوجاتا تھا۔

گاؤں والوں کے ہی منہ سننے کو ملا تھا کہ کونگ - ای - چی کو پراچین گرنتھوں کا اچھا گیان تھا۔ حالانکہ اس نے کوئی پریکشا کبھی پاس نہیں کی تھی۔ جیون یاپن کا بھی اسکا

लेखक—लू-सुन—मार्च 1919

# कुंग-ई-ची

अनुवादक—कामेश्वर अग्रवाल

लूचेन में शराब की दूकानें चीन के दूसरे शहरों की तरह नहीं हैं. लूचेन की दूकानों में एक चौकोर तख्ता सड़क की तरफ़ आगे बढ़ा कर रक्खा रहता है. उस पर गर्म पानी की केतली रखी रहती है. यह पानी शराब गरम करने के काम आता है. दोपहर में या फिर शाम को काम खतम करने के बाद लोग एक प्याला शराब लेने आते हैं. बीस बरस पहिले एक प्याले का दाम चार आने के क़रीब होता था पर अब दस आने लगते हैं. मेज़ के पास खड़े होकर लोग मदिरा पान करते हैं और शरीर को आराम देते हैं. साथ में लोग इकन्नी में मसालेदार फलियां या बांस की मुलायम पत्तियों की नमकीन भुंजिया लेते हैं. गोश्त खरीदने में बारह इकन्नियां लग जाती हैं. इस दूकान में आने वाले ज्यादातर ग्राहक छोटा कोट पहिनते हैं. उनके पास कभी भी पैसे ज्यादा नहीं होते हैं. लम्बा गाउन पहने हुए ग्राहक ही अन्दर जा कर कमरे में बैठते थे और आराम से शराब पीते हैं, बढ़िया नमकीन और गोश्त खाते हैं.

बारह बरस की उम्र ही से मैं 'सियेन-हेंग सराय' में वेटर का काम करने लगा था. शहर में दाखिल होते ही यह होटल मिलता है. सराय के मालिक का कहना था कि मैं शक्ल से इतना भोंदू दिखाई देता हूं कि लम्बा गाउन पहन वाले ऊंची श्रेणी के ग्राहकों के सामने मुझे नहीं भेजा जा सकता. इसलिये मुझे बाहर के कमरे में ही काम करना पड़ता था. अगरचे निचली श्रेणी के ग्राहक आम तरीक़े से मेरे काम से प्रसन्न रहते थे, लेकिन मुझे परेशान कर देने वालों की संख्या कम न थी. वह देखना चाहते थे कि कहीं मदिरा के प्याले में पानी तो नहीं है. प्याले में पीली शराब का ढलना और फिर प्याले का गरम पानी में रक्खा जाना वह बहुत ध्यान से देखते थे. इन तेज़ नज़रों के सामने शराब में मिलावट कर देना असम्भव था. इसलिये कुछ ही दिनों में मालिक ने यह तय कर दिया कि मैं इस काम के भी योग्य नहीं हूं मेरी सिफ़ारिश इतने प्रभावशाली व्यक्ति ने की थी कि दूकान का मालिक मुझे निकाल देने की सोच भी नहीं सकता था, इसलिये मेरा तबादला शराब गरम करने के काम में कर दिया गया.

इसके बाद से मैं बराबर बाहर की मेज़ के क़रीब खड़ा होकर शराब गरम करने के काम में लगा रहता था. अगरचे इस काम में मैं दूसरों को संतुष्ट कर देता था

لیکھک—لو - سن—مارچ 1919

# کونگ اِی- چی ۔

انوادک—کامیشور اگروال

لوچین میں شراب کی دوکانیں چین کے دوسرے شہروں کی طرح نہیں ہیں۔ لوچین کی دوکانوں میں ایک چوکور تختہ سڑک کی طرف آگے بڑھا کر رکھا رہتا ہے۔ اس پر گرم پانی کی کیتلی رکھی رہتی ہے۔ یہ پانی شراب گرم کرنے کے کام آتا ہے۔ دوپہر میں یا پھر شام کو کام ختم کرنے کے بعد لوگ ایک پیالہ شراب لینے آتے ہیں۔ بیس برس پہلے ایک پیالے کا دام چار آنے کے قریب ہوتا تھا پر اب دس آنے لگتے ہیں۔ میز کے پاس کھڑے ہو کر لوگ مدرا پان کرتے ہیں اور شریر کو آرام دیتے ہیں۔ ساتھ میں لوگ اکنی میں مسالے دار پھلیاں یا بانس کی ملایم پتیوں کی نمکین بھنجیا لیتے ہیں۔ گوشت خریدنے میں بارہ اکنیاں لگ جاتی ہیں۔ اس دوکان میں آنے والے زیادہ تر گراہک چھوٹا کوٹ پہنتے ہیں؟ اُن کے پاس کبھی بھی پیسے زیادہ نہیں ہوتے ہیں۔ لمبا گاؤن پہنے ہوئے گراہک ہی اندر جا کر کمرے میں بیٹھتے ہیں اور آرام سے شراب پیتے ہیں' بڑھیا نمکین اور گوشت کھاتے ہیں۔

بارہ برس کی عمر ہی سے میں سین ہینگ سرائے میں ویٹر کا کام کرنے لگا تھا۔ شہر میں داخل ہوتے ہی یہ ہوٹل ملتا ہے۔ سرائے کے مالک کا کہنا تھا کہ میں شکل سے اتنا بھوندو دکھائی دیتا ہوں کہ لمبے گاؤن پہننے والے اونچی شرینی کے گراہکوں کے سامنے مجھے نہیں بھیجا جا سکتا۔ اس لئے مجھے باہر کے کمرے میں ہی کام کرنا پڑتا تھا۔ اگرچہ نچلی شرینی کے گراہک عام طریقے سے میرے کام سے پرسن رہتے تھے' لیکن مجھے پریشان کر دینے والوں کی سنکھیا کم نہ تھی۔ وہ دیکھنا چاہتے تھے کہ کہیں مدرا کے پیالے میں پانی تو نہیں ہے۔ پیالے میں پیلی شراب کا ڈھلنا اور پھر پیالے کا گرم پانی میں رکھا جانا وہ بہت دھیان سے دیکھتے تھے۔ اِن تیز نظروں کے سامنے شراب میں ملاوٹ کر دینا اسمبھو تھا۔ اس لئے کچھ ہی دنوں میں مالک نے یہ طے کر دیا کہ میں اس کام کے یوگیہ نہیں ہوں۔ میری سفارش اتنے پربھاوشالی ویکتی نے کی تھی کہ دوکان کا مالک مجھے نکال دینے کی سوچ بھی نہیں سکتا تھا' اس لئے میرا تبادلہ شراب گرم کرنے کے کام میں کر دیا گیا۔

اس کے بعد سے میں برابر باہر کی میز کے قریب کھڑا ہو کر شراب گرم کرنے کے کام میں لگا رہتا تھا۔ اگرچہ اِس کام میں میں دوسروں کو سنتشٹ کر دیتا تھا

है. क्या बतायें यार, कभी कभी तो मुझे झेंपना पड़ता है. जब देखो मेरे नोट ले जाती है. सदा मेरे ही बगल में बैठती है. आज क्लास में बोली कि तबियत नहीं लग रही है. मैंने कहा चलिये घूम आइये. उसने कहा कि शाम को ठीक छः बजे काफ़ी हाउस में मिलूंगी. अकेले आना. ज़रा घूमने चलेंगे. लेकिन देखा चुड़ैल को ? मैं कब से प्रतीक्षा कर रहा हूं. और आप आई हैं एक चुग़द लेकर. भाई माफ़ करना. आज तुम से भी इस औरत की बदौलत झूंट बोलना पड़ा."

"कोई बात नहीं है आनन्द." जैसे किसी ने उठा कर उसे पटक दिया हो और उसको सांस कुछ छनों के बाद आई हो. आगे फिर उसने कहा—"छमा कर दो आनन्द. मैं भी छला गया हूं. इसको मैं जानता हूं. वाई. एम. सी. ए. में मेरे साथ बिलियर्ड खेलती है. इस में शक नहीं कि खेलती ख़ूब है. यार, मुझे क्या मालूम था यह पक्की चुड़ैल है. क्लब में मेरे पीछे पीछे घूमती है. बड़ा प्रेम का दम भरती है. आज बोली कि छः बजे काफ़ी हाउस में मिलना. तुमसे कुछ बातें करनी हैं. चलते चलते फिर याद दिलाया और कहा कि देखो अकेले आना. यार, यह लड़कियां भी क्या बला होती हैं ! मैंने तुमको टालना चाहा. छमा करना भाई बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी. देखो, अपने यार के साथ कमीनी कैसी जमी है, जैसे हम लोगों को पहचानती ही नहीं......!"

उसी समय कान्ता की मेज़ से एक ग़ुस्से भरी आवाज़ सुनाई दी--"क्या है ?"

बैरा बिल हाथ में लिये था. उसने कहा--"मेम साहब, बिल."

"अभी किसने मांगा है?" कान्ता की आवाज़ का संतुलन बिगड़ने लगा.

"वह साहब जो आपके साथ बैठे थे ना वह गए......"

तब ही टोक कर आश्चर्य भरी आवाज़ से कान्ता ने पूछा—"और बिल."

"कह गये हैं कि मेम साहब से ले लेना."

जल भुन कर कान्ता कबाब हो गई. ग़ुस्से से मुंह लाल हो गया और आते समय जिन आंखों में हंसी थी उनमें क्रोध छलक पड़ा. उसने ज़ोर से बैरे के हाथ के बिल छीन लिया और बोली—"कितने का है ?"

"मैडम, सात रुपये साढ़े पन्द्रह आने."

कान्ता झल्ला कर अपनी कुर्सी से उठी और काउन्टर की तरफ़ बढ़ी. आनन्द के टेबिल तक पहुंचते पहुंचते वह होंटों ही होंटों में भन्नाई—"चूना हो गया."

आनन्द ने गोपाल के कन्धे पर एक हाथ जमाया और ख़ुशी से उछल कर बोला--"चलो सब को चूना हो गया."

—मुजीब रिज़वी



ہے. کیا بتائیں یار، کبھی کبھی تو مجھے جھینپنا پڑتا ہے. جب دیکھو میرے نوٹ لے جاتی ہے. سدا میرے ہی بغل میں بیٹھتی ہے. آج کلاس میں بولی کہ طبیعت نہیں لگ رہی ہے. میں نے کہا چلئے گھوم آیئے. اُس نے کہا کہ شام کو ٹھیک چھ بجے کافی ہاؤس میں ملونگی، اکیلے آنا، ذرا گھومنے چلیں گے. لیکن دیکھا چڑیل کو ؟ میں کب سے پرتیکچھا کر رہا ہوں، اور آپ آئی ہیں ایک چغد لے کر. بھائی معاف کرنا. آج تم سے اِس عورت کے بدولت جھوٹ بولنا پڑا."

" کوئی بات نہیں ہے آنند." جیسے کسی نے اُٹھاکر اُسے پٹک دیا ہو اور اس کو سانس کچھ چھنوں کے بعد آئی ہو. آگے پھر اس نے کہا—" چھما کر دو آنند. میں بھی چھلا گیا ہوں. اِسکو میں جانتا ہوں. وائی. ایم. سی. اے. میں میرے ساتھ بلیرڈ کھیلتی ہے. اس میں شک نہیں کہ کھیلتی خوب ہے. یار، مجھے کیا معلوم تھا کہ یہ پکی چڑیل ہے. کلب میں میرے پیچھے پیچھے گھومتی ہے. بڑا پریم کا دم بھرتی ہے. آج بولی کہ چھ بجے کافی ہاؤس میں ملنا. تم سے کچھ باتیں کرنی ہیں. چلتے چلتے پھر یاد دلایا اور کہا کہ دیکھو اکیلے آنا. یار، یہ لڑکیاں بھی کیا بلا ہوتی ہیں! میں نے تم کو ٹالنا چاہا. چھما کرنا بھائی بدھی بھرشٹ ہوگئی تھی. دیکھو اپنے یار کے ساتھ کمینی کیسی جمی ہے جیسے ہم لوگوں کو پہچانتی ہی نہیں......!"

اُسی سمے کانتا کی میز سے ایک غصہ بھری آواز سنائی دی—" کیا ہے."

بیرا بل ہاتھ میں لئے تھا. اس نے کہا—" میم صاحب' بل."

" ابھی کس نے مانگا ہے ؟" کانتا کی آواز کا سنتولن بگڑنے لگا.

" وہ صاحب جو آپ کے ساتھ بیٹھے تھے نا. وہ گئے......"

تب ہی ٹوک کر آشچریہ بھری آواز سے کانتا نے پوچھا—" اور بل ؟"

"کہہ گئے ہیں کہ میم صاحب سے لے لینا."

جل بھن کر کانتا کباب ہوگئی. غصہ سے منھ لال ہوگیا اور آتے سمے جن آنکھوں میں ہنسی تھی اُن میں کرودھ چھلک پڑا. اس نے زور سے بیرے کے ہاتھ سے بل چھین لیا اور بولی—" کتنے کا ہے ؟"

" میڈم، سات روپئے ساڑھے پندرہ آنے."

کانتا جھلا کر اپنی کرسی سے اُٹھی اور کاؤنٹر کی طرف بڑھی. آنند کے ٹیبل تک پہنچتے پہنچتے وہ ہونٹوں ہی ہونٹوں میں بھنائی—" چونا ہوگیا."

آنند نے گوپال کے کندھے پر ایک ہاتھ جمایا اور خوشی سے اچھل کر بولا—" چلو سب کو چونا ہوگیا!"

—مجیب رضوی

पीछे से आकर उसकी कमर पर हाथ रक्खा और लोगों ने देखा कि उसका ब्लाउज् बहुत ही छोटा है. बस इतना कहिये कि बाडिस से कुछ बड़ा. उसने कहा—"हलो, क्षमा करना देर हो गई. तुम्हें प्रतीक्षा करनी पड़ी."

"मैं ही क्या, न जाने कितने वियोग में जला करते हैं, तुम हो भी तो कुछ ऐसी" साथी लड़के ने गदगद होकर मजाक़ किया.

"हट्टो" कहते कहते वह हंस पड़ी. न वह हंसी धीमी थी और न बहुत ऊंची. सुरीली, मधुर भनभनाहट के बीच संगीत फैला देने वाली.

यह क्या, आनन्द और गोपाल एक दूसरे के सामने खड़े हैं. आनन्द ने गोपाल को देखा और गोपाल ने आनन्द को.

दोनों की आंखें झुक गईं.

वह लड़की अब अपने टेबिल पर बैठ गई है. टेबिल कोने में है. आनन्द की टेबिल से दो टेबिल और आगे.

लड़का उसके साथ है. बैरा आर्डर ले रहा है. वह दोनों कुछ चुहल कर रहे हैं. केवल मुस्कान भरे चेहरे दीख पड़ते हैं. मौन भाषा का अर्थ लगाने में समय कौन बर्बाद करे!

"आओ गोपाल, काफ़ी पिओ" आनन्द ने निमन्त्रित किया.

आनन्द के मुंह पर लज्जा है और गोपाल शायद किसी अनहोनी से चिढ़ कर ओंठ चबा रहा है. गोपाल आनन्द की टेबिल पर बैठ गया. दोनों की आखें फिर मिलीं और झुक गईं. बैरा ने तभी पूछा—"सर, काफ़ी?"

"दो काफ़ी, दो मटन कटलेट."

गोपाल ने पूछा—"आनन्द, तुम्हारी मां बीमार थीं, तुम दवा लेने आये थे!"

आनन्द ने कहा—"तुम्हारे भी तो बाप बीमार हैं, तुम इन्जेकशन देने जा रहे थे."

दोनों की आंखें फिर मिलीं और एक दूसरे से क्षमा मांगती झुक गईं.

दोनों झेंपे थे और बैरा काफ़ी 'सर्व' कर रहा था.

काफ़ी की चुस्की लेते हुये आनन्द ने कहा—"गोपाल, इस लड़की को जानते हो?"

गोपाल ने जैसे कुछ कहते कहते अपने को रोका और बोला—"नहीं, क्यों?"

"यार अब तुमसे क्या छुपाएं. तुमसे बढ़कर मेरा कोई दोस्त नहीं है. मैं तुम्हें अपना भाई समझता हूं. लेकिन जानते हो, आज मैंने तुमको टालना चाहा. जानते हो क्यों?"

गोपाल ने कुछ कहने के लिये मुंह खोला लेकिन आनन्द ने अवसर नहीं दिया.

आनन्द ने आगे कहा—"इस लड़की का नाम कान्ता है. मेरे साथ पढ़ती है. मुझसे बहुत घुल मिलकर बातें करती



پیچھے سے آ کر اُسکی کمر پر ہاتھ رکھا اور لوگوں نے دیکھا کہ اُسکا بلاوز بہت ہی چھوٹا ہے. بس اتنا کہئے کہ باڈس سے کچھ بڑا. اُس نے کہا—" ہلو، چھما کرنا، دیر ہوگئی تمہیں پر تیکچھا کرنی پڑی."

" میں ہی کیا، نہ جانے کتنے ویوگ میں جلا کرتے ہیں، تم ہو بھی تو کچھ ایسی." ساتھی لڑکے نے گد گد ہو کر مذاق کیا.

" ہٹو " کہتے کہتے وہ ہنس پڑی. نہ وہ ہنسی دھیمی تھی اور نہ بہت اونچی. سریلی، مدھر، بھنبھناہٹ کے بیچ سنگیت پھیلا دینے والی.

یہ کیا؟ آنند اور گوپال ایک دوسرے کے سامنے کھڑے ہیں. آنند نے گوپال کو دیکھا اور گوپال نے آنند کو.

دونوں کی آنکھیں جھک گئیں.

وہ لڑکی اب اپنے ٹیبل پر بیٹھ گئی ہے. ٹیبل کونے میں ہے. آنند کی ٹیبل سے دو ٹیبل اور آگے.

لڑکا اس کے ساتھ ہے. بیرا آرڈر لے رہا ہے. وہ دونوں کچھ چہل کر رہے ہیں. کیول مسکان بھرے چہرے دیکھ پڑتے ہیں. مون بھاشا کا ارتھ لگانے میں سمے کون برباد کرے!

" آؤ گوپال، کافی پیئو." آنند نے نمنترت کیا.

آنند کے منھ پر لجا ہے اور گوپال شاید کسی انہونی سے چڑھ کر اونٹھ چبا رہا ہے. گوپال آنند کی ٹیبل پر بیٹھ گیا. دونوں کی آنکھیں پھر ملیں اور جھک گئیں. بیرا نے تب ہی پوچھا—" سر، کافی"

"دو کافی، دو مٹن کٹلیٹ."

گوپال نے پوچھا—" آنند، تمہاری ماں بیمار تھیں، تم دوا لینے آئے تھے!"

آنند نے کہا—" تمہارے بھی تو باپ بیمار ہیں، تم انجکشن دینے جا رہے تھے."

دونوں کی آنکھیں پھر ملیں اور ایک دوسرے سے چھما مانگتی جھک گئیں.

دونوں جھینپے تھے اور بیرا کافی سرو کر رہا تھا.

کافی کی چسکی لیتے ہوئے آنند نے کہا—" گوپال، اِس لڑکی کو جانتے ہو؟"

گوپال نے جیسے کچھ کہتے کہتے اپنے کو روکا اور بولا—"نہیں، کیوں؟"

" یار اب تم سے کیا چھپائیں. تم سے بڑھکر میرا کوئی دوست نہیں ہے. میں تمہیں اپنا بھائی سمجھتا ہوں. لیکن جانتے ہو، آج میں نے تمکو ٹالنا چاہا. جانتے ہو کیوں؟"

گوپال نے کچھ کہنے کے لئے منھ کھولا، لیکن آنند نے اوسر نہیں دیا.

آنند نے آگے کہا—" اِس لڑکی کا نام کانتا ہے. میرے ساتھ پڑھتی ہے. مجھ سے بہت گھل مل کر باتیں کرتی

से मिले कमरे में. बैरा आनन्द के पास आता है. आनन्द उसको घूरता है और कहता है—"ठहर जाओ, अभी बताता हूं."

बैरा गोपाल के पास जाता है. हाथ बांध कर खड़ा होता है. गोपाल कहीं खोया है. लेकिन एक चीज़ अवश्य है जो उसे इस दुनिया में खींच लाती है, वह है उसकी घड़ी. गोपाल ने हाथ उठा कर घड़ी देखी. तभी उसकी नज़र बैरे पर पड़ी. कुछ हड़बड़ाहट में उससे कहा—"ठहर जाओ, अभी बताता हूं."

बैरों का तो काम ही है कि वह घूम घूम कर टेबिलों पर बाबू लोगों का आर्डर लें. कहीं किसी को दो चार मिनट से ज्यादा बैठना पड़ गया और उसने मैनेजर से शिकायत कर दी तो छटी का दूध याद पड़ जायेगा. ऐसे भी कुछ लोग होते होंगे जो बैरे के आने की देरी को ठीक समझते हों, लेकिन इनकी तादाद बहुत कम होती है? बैरा तो नियम जानता है, उसे अपवाद से क्या मतलब. दूसरे बैरे ने आनन्द सामने झुककर फिर पूछा—"सर, काफ़ी?"

"नहीं, पानी दे जाओ" आनन्द ने बिना उसकी तरफ़ देखे आर्डर दिया.

उसी समय बैरा कहलाये जाने वाले किसी जन्तु ने गोपाल को भी छेड़ा.

"सिग्रेट दे जाओ" गोपाल ने डांट कर कहा और यह बात साफ़ कर दी कि उस का इस तरह बार बार पूछना गोपाल को अच्छा नहीं लगता.

दूसरे मिनट आनन्द पानी का गिलास मुंह से लगाये था और गोपाल छत की ओर धुआं उड़ा रहा था और आंख गड़ाये ताक रहा था जैसे कोई तसवीर उसके सामने खड़ी हो रही हो.

× × ×

काफ़ी हाउस की भनभन जैसे एकदम बन्द हो गई हो. सबकी नज़रें दरवाज़े की तरफ़ उठी हुई हैं. हर एक मेज़ पर से जैसे कह रहा है—ताड़ने वाले क़यामत की नज़र रखते हैं लेकिन कोई है जो बिना देखे चला आ रहा है. ऐसा तो नहीं कि उसे इसकी इच्छा नहीं कि लोग उसे न देखें और न यह ही कि वह लोगों को नहीं देख रहा है. शायद वह जानता है कि किसी तरफ़ न देखने से सब तरफ़ से लोग उसे देखते हैं. उसे अनुभव है और अनुभव आनन्द देने के लिये काफ़ी है. दरवाज़े पर आकर उसने चप्पल को ज़रा पटका. पटका तो पैर को लेकिन पूरे बदन में जाने कितनी लचक पैदा हो गई. यह लचक जैसे एक बिजली हो और उसकी चमक में लोगों ने देखा कि वह पीली साड़ी और सुफ़ैद ब्लाउज़ पहने है. उसने ऊपरी बदन को अदा से हिलाया और आगे बढ़ी. तभी एक व्यक्ति ने



سے ملے کمرے میں . بیرا آنند کے پاس آتا ہے. آنند اسکو گھورتا ہے اور کہتا ہے—"ٹھہر جاؤ' ابھی بتاتا ہوں."

بیرا گوپال کے پاس جاتا ہے . ہاتھ باندھ کر کھڑا ہوتا ہے. گوپال کہیں کھویا ہے. لیکن ایک چیز اوشیہ ہے جو اسے اس دنیا میں کھینچ لاتی ہے . وہ ہے اسکی گھڑی. گوپال نے ہاتھ اٹھاکر گھڑی دیکھی . تب ہی اسکی نظر بیرے پر پڑی. کچھ ہڑبڑاہٹ میں اس نے کہا—"ٹھہر جاؤ' ابھی بتاتا ہوں."

بیروں کا تو کام ہی ہے کہ وہ گھوم گھوم کر ٹیبلوں پر بابو لوگوں کا آرڈر لیں . کہیں کسی کو دو چار منٹ سے زیادہ بیٹھنا پڑ گیا اور اس نے منیجر سے شکایت کر دی تو چھٹی کا دودھ یاد پڑ جائیگا . ایسے بھی کچھ لوگ ہوتے ہونگے جو بیرے کے آنے کی دیری کو ٹھیک سمجھتے ہوں' لیکن ان کی تعداد بہت ہی کم ہوتی ہے. بیرا تو نیم جانتا ہے اسے اپواد سے کیا مطلب . دوسرے بیرے نے آنند کے سامنے جھک کر پھر پوچھا—" سر' کافی ؟"

" نہیں' پانی دے جاؤ " آنند نے بنا اس کی طرف دیکھے آرڈر دیا .

اسی سمے بیرا کہلائے جانیوالے کسی جنتو نے گوپال کو بھی چھیڑا .

" سگریٹ دے جاؤ " گوپال نے ڈانٹ کر کہا اور یہ بات صاف کر دی کہ اسکا اس طرح بار بار پوچھنا گوپال کو اچھا نہیں لگتا .

دوسرے منٹ آنند پانی کا گلاس منھ سے لگائے تھا اور گوپال چھت کی اور دھواں اڑا رہا تھا اور آنکھ گڑائے تاک رہا تھا جیسے کوئی تصویر اس کے سامنے کھڑی ہورہی ہو .

× × ×

کافی ہاوس کی بھن بھن جیسے ایکدم بند ہو گئی. سب کی نظریں دروازے کی طرف اٹھی ہوئی ہیں . ہر ایک ایک میز پر سے جیسے کہ رہا ہے—تاڑنے والے قیامت کی نظر رکھتے ہیں . لیکن کوئی ہے جو بنا دیکھے چلا آرہا ہے . ایسا تو نہیں کہ اسے اسکی اچھا نہیں کہ لوگ اسے نہ دیکھیں اور نہ یہ ہی کہ وہ لوگوں کو نہیں دیکھ رہا ہے . شاید وہ جانتا ہے کہ کسی طرف نہ دیکھنے سے سب طرف سے لوگ اسے دیکھتے ہیں . اسے انوبھو ہے اور انوبھو آنند دینے کے لئے کافی ہے . دروازے پر آکر اس نے چپل ذرا پٹکا . پٹکا تو پیر کو' لیکن پورے بدن میں نہ جانے کتنی لچک پیدا ہو گئی . یہ لچک جیسے ایک بجلی ہو اور اس کی چمک میں لوگوں نے دیکھا کہ وہ پیلی ساڑی اور سفید بلاوز پہنے ہے . اس نے اوپری بدن کو ادا سے ہلایا اور آگے بڑھی . تب ہی ایک ویکتی نے

लेकर बैठ गये हैं उन्हें किसी काम धन्दे से मतलब ही नहीं. माता जी हैं कि उन्हें गोपाल के सिवाय कोई दूसरा नाम ही याद नहीं. मैं तो दवा ही ढोते ढोते मरा जा रहा हूं. दर्जनों बच्चे हैं, दिन में कोई न कोई बीमार ही पड़ा करता है. अपने राम को तो सिविल लाइन के चार पांच चक्कर लगाने ही पड़ते हैं. और जो कुछ था तो था ही बाप जान छुट्टी लेकर आ धमके हैं. घन्टों से उनका इन्जेकशन ढूंढ रहा हूं......".

तभी आनन्द ने प्रश्न किया—"इन्जेकशन मिल गये ?"

गोपाल ने जेब में हांथ डाला, जैसे इन्जेकशन निकाल कर दिखाने जा रहा हो. लेकिन उसने दिखाया नहीं और कहा—" हां."

आनन्द बोला—"चलें मित्र, बुढ़िया चिल्ला चिल्ला के घर सर पर उठाये होगी बीमारी में आदमी, ऐसे भी चिड़-चिड़ा हो जाता है और वह ऐसे भी झांकर है. अब तक न जाने कितनी बार मेरा नाम ले चुकी होंगी. लेकिन यार अम्मां चाहती मुझे बहुत हैं."

गोपाल ने फिर घड़ी देखी. पैडिल पर पैर रक्खा और जाना निश्चय करके बोला—"अच्छा, आनन्द फिर कब मिलोगे ? यार, तुम्हारी अम्मां को देखने चलते, लेकिन बाबू जी का इन्जेकशन पहुंचाना है, कम्पाउन्डर आता होगा, अलफ हो जायेंगे.

× × ×

काफी हाउस का भी एक समाज है. इस समाज का मेम्बर होने के लिये कुछ विशेश गुनों का होना जरूरी है. या तो बाप ने पैसे खूब भेजे हों और या फिर खुद ने कहीं कमा लिये हों. पैसा तो होना ही चाहिये, साथ में अवकाश भी, और एक बात और. बात करने के लिये रोमांस और जीती जागती एक लड़की भी ताकि मित्र दूसरी टेबिल पर बैठे सिसकियां भर सकें और कहने को अपनो भी कोई हो सके. इस काफी हाउस में बहुत लोग आते हैं बैठते हैं, गप्पें मारते हैं, चले जाते हैं.

भोला की दुकान छोड़े अभी पांच ही एक मिनट हुए हैं. काफी हाउस खचाखच भरा है. किसी को किसी की फिक्र नहीं है सिग्रेट के धुएं उड़ रहे हैं और धुआं ऊपर उठ उठ कर औरतों की तस्वीरें बनाता जाता है—अमीर घराने की निरलज्ज, कालिज में पढ़ती अनगिनत लड़कियां बीचबीच में एंग्लो इन्डियन लड़कियों की बात भी आ जाती है. दूर किसी कोने में एक ऐसी गोश्टी भी बैठी होती है जिसे रति के साथ साथ राजनीति से भी दिलचस्पी है इस समय काफी हाउस खचाखच भरा है और इसी भीड़ में हमारे गोपाल और आनन्द भी बैठे हैं. लेकिन एक दूसरे से बहुत दूर. आनन्द हाल में है और गोपाल हाल



لے کر بیٹھ گئے ہیں. انہیں کسی کام دھندے سے مطلب ہی نہیں ہے. ماتا جی ہیں کہ انہیں گوپال کے سوائے کوئی دوسرا نام ہی یاد نہیں. میں تو دوا ہی ڈھوتے ڈھوتے مرا جا رہا ہوں. درجنوں بچے ہیں، دن میں کوئی نہ کوئی بیمار ہی پڑا کرتا ہے. اپنے رام کو تو سول لائن کے چار پانچ چکر لگانے ہی پڑتے ہیں. اور جو کچھ تھا تو تھا ہی باپ جان چھٹی لے کر آدھمکے ہیں. گھنٹوں سے اُن کا انجکشن ڈھونڈھ رہا ہوں......"

تب ہی نے آنند نے پرشن کیا—"انجکشن مل گئے؟"

گوپال نے جیب میں ہاتھ ڈالا. جیسے انجکشن نکال کر دکھانے جا رہا ہو. لیکن اُس نے دکھایا نہیں اور کہا—"ہاں."

آنند بولا—"چلیں متر، بڑھیا چلا چلا کے گھر سر پر اٹھائے ہوگی. بیماری میں آدمی، ایسے بھی چڑچڑا ہو جاتا ہے اور وہ ایسے بھی جھانکر ہیں. اب تک نہ جانے کتنی بار میرا نام لے چکی ہونگی. لیکن یار اماں چاہتی مجھے بہت ہیں."

گوپال نے پھر گھڑی دیکھی. پیڈل پر پیر رکھا اور جانا نشچے کرکے بولا—"اچھا، آنند، پھر کب ملوگے، یار تمہاری اماں کو دیکھنے چلتے، لیکن بابو جی کا انجکشن پہونچانا ہے، کمپاونڈر آتا ہوگا، الف ہوجائینگے."

× × ×

کافی ہاؤس کا بھی ایک سماج ہے. اِس سماج کا ممبر ہونیکے لئے کچھ وشیش گنوں کا ہونا ضروری ہے. یا تو باپ نے پیسے خوب بھیجے ہوں یا پھر خود نے کہیں کما لئے ہوں. پیسہ تو ہونا ہی چاہئے، ساتھ میں اوکاش بھی، اور ایک بات اور. بات کرنے کے لئے رومانس اور جیتی جاگتی ایک لڑکی بھی، تاکہ متر دوسری ٹیبل پر بیٹھے سسکیاں بھرسکیں اور کہنے کو اپنی بھی کوئی ہوسکے. اِس کافی ہاؤس میں بہت لوگ آتے ہیں، بیٹھتے ہیں، گپیں مارتے ہیں، چلے جاتے ہیں.

بھولا کی دوکان چھوڑے ابھی پانچ ہی ایک منٹ ہوئے ہیں، کافی ہاؤس کھچا کھچ بھرا ہے. کسی کو کسی کی فکر نہیں ہے. سگریٹ کے دھوئیں اڑ رہے ہیں اور دھواں اوپر اٹھ اٹھ کر عورتوں کی تصویریں بناتا جاتا ہے— امیر گھرانے کی، نرلج، کالج میں پڑھتی انگنت لڑکیاں، بیچ بیچ میں اینگلوانڈین لڑکیوں کی بات بھی آجاتی ہے. دور کسی کونے میں ایک ایسی گوشٹی بھی بیٹھی ہوتی ہے جسے رتی کے ساتھ ساتھ راجنیت سے بھی دلچسپی ہے. اِس سمے کافی ہاؤس کھچا کھچ بھرا ہے اور اِسی بھیڑ میں ہمارے گوپال اور آنند بھی بیٹھے ہیں. لیکن ایک دوسرے سے بہت دور. آنند ہال میں ہے اور گوپال ہال

आंखों में हंसी भर कर और मुंह को सीकर, सर नचाते हुये भोला ने गोपाल को घूरा.

गोपाल भावहीन रहा. वह अपनी घड़ी में मग्न था.

भोला ने लाल शीरे में पान डुबो कर मीठा बनाते हुये गोपाल को थमाया और कहा—"किसका इन्तजार है...?"

"नहीं तो......कहां......?" गोपाल मुंह बनाने लगे. शायद समझ में नहीं आया कि उत्तर क्या दूं. जल्दी से आंख पर चश्मा चढ़ा लिया और भोला को हुकुम दिया "एक मैक्रोपोल".

यह लेन देन हो ही रही थी कि पीछे से आनन्द ने 'हल्लो गोपाल' का शोर मचाया और साइकिल रोकने के लिये गोपाल के सर का सहारा लिया.

"हल्लो, पान खाओ आनन्द......."

"नहीं यार मैं पान तो खाता ही नहीं."

गोपाल ने फिर घड़ी देखी और ऐसा अभिव्यक्त किया कि जैसे उसे ठीक समय पर जरूरी काम के लिये जाना है.

"जाओ जाओ. फिर कब मिलोगे ? तुमसे तो मिलना ही नहीं होता." आनन्द ने कहा.

गोपाल ने उत्तर दिया—"नहीं, जल्दी नहीं है" और जैसे किसी बात को छिपाने के लिये उसने सिग्रेट जलाने का सहारा लिया.

"मैं तो चला गोपाल."

"ऐसी भी क्या जल्दी है ?" गोपाल कह तो गया लेकिन शीघ्र ही चेता. जाने या अनजाने उसकी आंख फिर घड़ी पर पहुंच गई.'

आनन्द ने कहा—"यार, तुम्हारे साथ घूमने की तबियत चाहती है, दिल चाहता है कि काफ़ी हाउस चलें. लेकिन क्या बतायें (एक मोटी सी गाली उसने दी, किसी दूसरे को नहीं स्वयं अपनी बहन को). अम्मा को खटिया पकड़ना था तो आज ही कल. बुढ़िया भी समय से बीमार पड़ती है. जब जब मैं अकेला घर पर रहता हूं उसे कोई रोग आ दबाता है......".

तुम्हारी अम्मां कब से बीमार हैं ?" गोपाल ने सहानभूति प्रकट की.

" दो महीने से भाई. नाक में दम आ गया है. अजीब मुसीबत है. नौकर दवा लाये यह उन्हें पसन्द नहीं हैं चाहती हैं कि हर समय मैं उनकी पट्टी पकड़े बैठा रहूं''.

जैसे कुछ सोच कर आनन्द ने आगे कहा—'गुरू तुम्हीं मजे में हो, कोई फ़िक्र न चिन्ता, मस्त राम घूमते हो, जाओ तुम्हें देर हो रही है"

"अरे कहां ? सारी मस्ती घुस गई. भगवान न करे कि घर में कोई छोटा हो. नाक में दम हो गया है. सब रोब जमाते हैं. भाई साहब आई० ऐ० यस० का इम्तहान



آنکھوں میں ہنسی بھرکر اور منہ کو سی کر، سر نچاتے ہوئے بھولا نے گوپال کو گھورا.

گوپال بھاؤہین رہا. وہ اپنی گھڑی میں مگن تھا.

بھولا نے لال شیرے میں پان ڈبوکر میٹھا بناتے ہوئے گوپال کو تھمایا اور کہا—"کس کا انتظار ہے......؟"

"نہیں تو......کہاں......؟" گوپال منہ بنانے لگے. شاید سمجھ میں نہیں آیا کہ اتر کیا دیں. جلدی سے آنکھ پر چشمہ چڑھا لیا اور بھولا کو حکم دیا "ایک میکرو پول."

یہ لین دین ہو ہی رہی تھی کہ پیچھے سے آنند نے 'ہلو گوپال' کا شور مچایا اور سائیکل روکنے کے لئے گوپال کے سر کا سہارا لیا.

"ہلو، پان کھاؤ آنند......"

"نہیں یار، میں پان تو کھاتا ہی نہیں."

گوپال نے پھر گھڑی دیکھی اور ایسا ابھویکت کیا کہ جیسے اسے ٹھیک سمے پر ضروری کام کے لئے جانا ہے.

"جاؤ جاؤ. پھر کب ملوگے؟ تم سے تو ملنا ہی نہیں ہوتا". آنند نے کہا.

گوپال نے اتر دیا—"نہیں، جلدی نہیں ہے" اور جیسے کسی بات کو چھپانے کے لئے اس نے سگریٹ جلانے کا سہارا لیا.

"میں تو چلا گوپال."

"ایسی بھی کیا جلدی ہے؟" گوپال کہہ تو گیا لیکن شیگھر ہی چیتا. جانے یا انجانے اسکی آنکھ گھڑی پر پہونچ گئی.

آنند نے کہا—"یار، تمہارے ساتھ گھومنے کی طبیعت چاہتی ہے، دل چاہتا ہے کہ کافی ہاؤس چلیں. لیکن کیا بتائیں (ایک موٹی سے گالی اس نے دی، کسی دوسرے کو نہیں، سویم اپنی بہن کو). اماں کو کھٹیا پکڑنا تھا تو آج ہی کل. بڑھیا بھی سمے سے بیمار پڑتی ہے. جب جب میں اکیلا گھر میں رہتا ہوں تو اسے کوئی نہ کوئی روگ آ دباتا ہے......؟"

"تمہاری اماں کب سے بیمار ہیں؟" گوپال نے سہانوبھوتی پرکٹ کی.

"دو مہینے سے بھائی. ناک میں دم آگیا ہے. عجیب مصیبت ہے. نوکر دوا لائے، یہ انہیں پسند نہیں ہے. چاہتی ہیں کہ ہر سمے میں انکی پٹی پکڑے بیٹھا رہوں." جیسے کچھ سوچکر آنند نے آگے کہا—"گرو تم ہی مزے میں ہو، کوئی فکر نہ چنتا، مست رام گھومتے ہو، جاؤ تمہیں دیر ہو رہی ہے."

"ارے کہاں؟ ساری مستی گھس گئی. بھگوان نہ کرے کہ گھر میں کوئی چھوٹا ہو. ناک میں دم ہوگیا ہے. سب رعب جماتے ہیں. بھائی صاحب آئی. اے. ایس کا امتحان

# चूना हो गया

भोला की दूकान पर पान, बीड़ी, सिगरेट, बरफ़ का पानी, कोकाकोला तो मिलता ही है. और भी कई चीजें मिलती हैं, उनका व्योपार जरा छुप के होता है. कुछ लोग यहां छुप कर आते हैं और बहुत से खुल्लम खुल्ला इस दूकान पर भीड़ लगाये रहते हैं. यहां चीजें ही नहीं मिलतीं आदमियों का मिलन भी होता है. यदि आप बाहर से आये हों और मित्रों का हाल-चाल मालूम करना हो तो भोला की दूकान पर चले जाइये. सिविल लाइन घूमने वाले लगभग सभी व्यक्तियों का हाल भोला को मालूम है. वह बता सकते हैं कि आपके मित्र कल सिविल लाइन आये थे या नहीं, वह कितनी देर सिविल लाइन में रहे और कौन कौन उनके साथ था. भोला की जानकारी से हमें कुछ लेना देना नहीं, अपना मतलब केवल दूकान से है. इसी दूकान पर गोपाल ने सायकिल रोकी और धूप का चश्मा बड़ी नजाकत से उतार कर बोला—"भोला, राजू तो नहीं आया ?"

"राजू ?" भोला कुछ सोचने लगे. फिर गोपाल की तरफ़ देखा और वैसे ही पान लगाते हुये बोला—"नहीं वह तो नहीं आये, कल तो थे, अच्छा माल चुना है."

कहा नहीं जा सकता कि गोपाल ने भोला की बात सुनी या नहीं चेहरे से कुछ ऐसा जरूर लगा कि राजू को पूछना तो सिर्फ़ नमस्ते के रूप में था, आगे कुछ बात नहीं थी. आगे बात बढ़ाये बिना गोपाल ने कहा—"एक पान देना."

"मीठा ?"

"खट्टा मैं कब खाता हूं ?"

भोला बरफ़ की सिल्ली से एक लगा लगाया पान उठाकर भावहीन मुद्रा से बीड़ा बनाने लगे. तभी उन्होंने देखा कि गोपाल बार बार घड़ी देख रहे हैं. भोला बहुत घाघ हैं. लौंडों की रग रग पहचानते हैं. वह जानते हैं कि उतावली से लड़के दो ही कारन से घड़ी देखते हैं, या तो किसी खास समय पर किसी लड़की ने सिविल लाइन में मिलने का वादा किया हो और या नई नई घड़ी खरीदी हो और बार बार दिखाकर मित्रों को निमन्त्रित करना हो कि वह पूछें—"कब खरीदी ?". जवाब फ़ौरन दिया जायेगा, लेकिन इस मुद्रा में कि जैसे यह बात पूछनी नहीं चाहिये थी. जवाब भी सुन लीजिये—"मेरी भाभी की बहन ने उपहार दिया है". और भी जवाब होते हैं. पर सब जवाबों का सारांश एक है—एक लड़की है, सुन्दर है उससे इतनी नजदीकी है कि उसने घड़ी भेंट की है.

# چونا ہوگیا

بھولا کی دوکان پر پان، بیڑی، سگریٹ، برف کا پانی، کوکا کولا تو ملتا ہی ہے. اور بھی کئی چیزیں ملتی ہیں، اُنکا بیوپار ذرا چھپ کے ہوتا ہے. کچھ لوگ یہاں چھپ کر آتے ہیں اور بہت سے کھلم کھلا اِس دوکان پر بھیڑ لگائے رہتے ہیں. یہاں چیزیں ہی نہیں ملتیں آدمیوں کا ملن بھی ہوتا ہے. یدی آپ باہر سے آئے ہوں اور متروں کا حال چال معلوم کرنا ہو تو بھولا کی دوکان پر چلے جایئے. سول لائن گھومنے والے لگ بھگ سبھی ویکتیوں کا حال بھولا کو معلوم ہے. وہ بتا سکتے ہیں کہ آپ کے متر کل سول لائن آئے تھے یا نہیں، وہ کتنی دیر سول لائن میں رہے، اور کون کون اُن کے ساتھ تھا. بھولا کی جانکاری سے ہمیں کچھ لینا دینا نہیں، اپنا مطلب کیول دوکان سے ہے. اِسی دوکان پر گوپال نے سائیکل روکی اور دھوپ کا چشمہ بڑی نزاکت سے اُتار کر بولا—"بھولا، راجو تو نہیں آیا ؟"

"راجو؟" بھولا کچھ سوچنے لگے. پھر گوپال کی طرف دیکھا اور ویسے ہی پان لگاتے ہوئے بولے—"نہیں، وہ تو نہیں آئے، کل تو تھے، اچھا مال چنا ہے."

کہا نہیں جا سکتا کہ گوپال نے بھولا کی بات سنی یا نہیں. چہرے سے کچھ ایسا ضرور لگا کہ راجو کو پوچھنا تو صرف نمستے کے روپ میں تھا، آگے کچھ بات نہیں تھی. آگے بات بڑھائے بنا گوپال نے کہا—"ایک پان دینا."

"میٹھا ؟"

"کھٹا میں کب کھاتا ہوں ؟"

بھولا برف کی سلی سے ایک لگا لگایا پان اُٹھاکر بھاؤہین مدرا سے بیڑا بنانے لگے. تب ہی اُنہوں نے دیکھا کہ گوپال بار بار گھڑی دیکھ رہے ہیں. بھولا بہت گھاگ ہیں. لونڈوں کی رگ رگ پہچانتے ہیں. وہ جانتے ہیں کہ اُتاولی سے لڑکے دو ہی کارن سے گھڑی دیکھتے ہیں، یا تو کسی خاص سمے پر کسی لڑکی نے سول لائن میں ملنے کا وعدہ کیا ہو اور یا نئی نئی گھڑی خریدی ہو اور بار بار دکھا کر متروں کو نمنترت کرنا ہو کہ وہ پوچھیں—"کب خریدی ؟" جواب فوراً دیا جائے گا لیکن اِس مدرا میں کہ جیسے یہ بات پوچھنی نہیں چاہئے تھی. جواب بھی سن لیجئے—"میری بھابی کی بہن نے اُپہار دیا ہے." اور بھی جواب ہوتے ہیں. پر سب جوابوں کا سارانش ایک ہے—ایک لڑکی ہے، سندر ہے، اُس سے اِتنی نزدیکی ہے کہ اُس نے گھڑی بھینٹ کی ہے.

में ज़ाहिर है रूस बहुत आगे बढ़ा हुआ है और रूस के सच्ची जमहूरियत यानी जनराज ( Democracy ) होने में और अमनपसन्द होने में कोई शक नहीं हो सकता.

हमने यहां ऑपेरा वग़ैरा देखे. कल इतवार था. एक बड़े आर्थोडाक्स गिरजे में हज़ारों आदमियों को दुआ करते और पूरे ईसाई रसूम से पूजा पाठ करते देखा, पादरी देखे, Nuns देखीं, सब अपने अपने विश्वास के अनुसार अपने अपने काम में लगे हुए. कल दोपहर को लैनिन और स्टालिन की समाधि पर हिन्दुस्तान की तरफ़ से फूल माला भी चढ़ा आये. माला पर रूसी ज़ुबान में यह लिखा दिया था—

India's affectionate homage<br>to<br>Lenin & Stalin<br>Founders of true Democracy<br>in this world<br>Indian Peace Delegation<br>June 1954

कम से कम एक लाख आदमियों की भीड़ रही होगी, कई घंटे में सब देख पाये. लेनिन और स्टालिन दोनों इस तरह लेटे हुए हैं मानो सो रहे हैं. रूसी जनता उसी भक्ति से उन्हें देखती है जिस तरह कोई अपने देवताओं को.

एक दिन यहां की तालीम के ढंग वग़ैरा पर तीन घंटे डिप्टी वज़ीर तालीम से गुफ़्तगू रही. हम ने नोट ले लिये हैं. पर वह तो लम्बी बात है. इसमें कोई शक नहीं हमें इन मुल्कों से बहुत सीखना है बशर्ते कि हम में ज़रा नम्रता आए और दुनिया भर के गुरु होने की अपनी डींग को हम छोड़ दें. पहले सीखें तो फिर कुछ सिखा भी सकें. अब देर हो गई. दूसरे ज़रूरी काम हैं. वहां तुम सबकी हालत और ख़ैरोआफ़ियत का बराबर ख्याल लगा रहता है. बाक़ी फिर. ख़ुश रहो.

तुम्हारा,<br>सुन्दर लाल.



میں ظاہر ہے روس بہت آگے بڑھا ہوا ہے اور روس کے سچی جمہوریت یعنی جن راج (Democracy) ہونے میں اور امن پسند ہونے میں کوئی شک نہیں ہوسکتا ۔

ہم نے یہاں آپرا وغیرہ دیکھے ۔ کل اتوار تھا ۔ ایک بڑے آرتھوڈاکس گرجے میں ہزاروں آدمیوں کو دعا کرتے اور پورے عیسائی رسوم سے پوجا پاٹھ کرتے دیکھا، پادری دیکھے، Nuns دیکھیں، سب اپنے اپنے وشواس کے انوسار اپنے اپنے کام میں لگے ہوئے۔ کل دوپہر کو لینن اور اسٹالن کی سمادھی پر ہندستان کی طرف سے پھول مالا بھی چڑھا آئے ۔ مالا پر روسی زبان میں یہ لکھا دیا تھا ۔

India's affectionate homage<br>to<br>Lenin & Stalin<br>Founders of true Democracy<br>in this world<br>Indian Peace Delegation<br>June 1954.

کم سے کم ایک لاکھ آدمیوں کی بھیڑ رہی ہوگی، کئی گھنٹے میں سب دیکھ پائے۔ لینن اور اسٹالن دونوں اس طرح لیٹے ہوئے ہیں مانو سو رہے ہیں ۔ روسی جنتا اسی بھگتی سے انہیں دیکھتی ہے جس طرح کوئی اپنے دیوتاؤں کو ۔

ایک دن یہاں کی تعلیم کے ڈھنگ وغیرہ پر تین گھنٹے ڈپٹی وزیر تعلیم سے گفتگو رہی ۔ ہم سب نے نوٹ لے لئے ہیں ۔ پر وہ تو لمبی بات ہے ۔ اس میں کوئی شک نہیں ہمیں ابھی ان ملکوں سے بہت سیکھنا ہے بشرطیکہ ہم میں ذرا نمرتا آئے اور دنیا بھر کے گورو ہونے کی اپنی ڈینگ کو ہم چھوڑ دیں ۔ پہلے سیکھیں تو پھر کچھ سکھا بھی سکیں ۔ اب دیر ہوگئی ۔ دوسرے ضروری کام ہیں ۔ وہاں تم سب کی حالت اور خیروعافیت کا برابر خیال لگا رہتا ہے ۔ باقی پھر ۔ خوش رہو ۔

تمہارا سندر لال

भी देते हैं. वहां एक बड़ा Amphi-theatre है जिसमें 20 हज़ार बच्चे एक साथ बैठकर खेल तमाशे देख सकते हैं. दोनों तरफ़ के जर्मन जर्मनी को फिर से एक और पूरी तरह आज़ाद करने को भी तैयार और ख़्वाहिशमन्द हैं. पच्छिमी जर्मनी में अमरीका का रुपया बहुत लगा हुआ है. पूर्वी जर्मनी में ऐसी कोई बात नहीं. आम जलसे में मेरी तक़रीर सब जर्मनों को बहुत पसन्द आई.

बर्लिन से मास्को आते हुए रास्ते में ब्रैस्ट (Brest) पड़ा. वहां के रूसियों ने स्टेशन पर ही हम सबका ख़ूब स्वागत किया. उसी गाड़ी में चीनी, जापानी, वेयतनामवाले, लंकावाले, बर्मी वग़ैरा भी थे. कोमोजो भी थे. ख़ूब लुत्फ़ रहा. पांच घंटे वहां ठहरे. एक ऑपेरा देखा. वहां का गाना बजाना, नाचना सब देखा. पंडित ओंकारनाथ ने उन्हें हिन्दुस्तानी गाना भी सुनाया. सबको अच्छा लगा. ख़ूब वक़्त गुज़रा.

मास्को में हम सारे शहर का चक्कर भी लगा चुके. क़रीब 50 लाख की आबादी है. 32 मंज़िल तक की इमारतें, बम्बई और कलकत्ते से कहीं चौड़ी चौड़ी सड़कें. सब ख़ुश मालूम होते हैं. सब काम में लगे हुए हैं. हिन्दुस्तान से सबको प्रेम नज़र आता है. गांधी जी का नाम सब जानते हैं. बहुत बड़ा आदमी मानते हैं. जवाहर लाल जी की भी सबके दिल में इज़्ज़त है. अमन का प्रचार यहां ख़ूब है. जंग का प्रचार करना क़ानूनी जुर्म है, जिस पर क़ैद की सज़ा दी जाती है. हमने यहां की ज़मीन के नीचे जाने वाली रेल देखी. बर्लिन में भी ऐसी रेल है, पर मास्को से उसका कोई मुक़ाबिला नहीं हो सकता. क़रीब 60 मील लम्बी यह ज़मीन के नीचे नीचे जाती है. नीचे नीचे इसकी भी चार मंज़िलें हैं. बिजली की सीढ़ियों से एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल जाते हैं और इसी तरह फिर ऊपर आते हैं. 23 लाख आदमी रोज़ाना इससे सफ़र करते हैं. मास्को दरिया मास्को शहर के बीच से बहता है. यह रेल मास्को नदी से ढाई सौ फ़ीट नीचे जाती है. स्टेशन बहुत बड़े बड़े और ख़ूबसूरत हैं. हज़ारों चित्रकारियां हैं. जिन कारीगरों ने काम किया है उनकी तस्वीरें जगह जगह बनी हैं. उनके नाम खुदे हैं. सब जगह दीवारों पर जनता के काम, जनता के कारनामे, जनता की एकता, जनता की ज़िन्दगी, यही सब दिखाया गया है. चीज़ देखने ही से सम्बन्ध रखती है. साइन्स की तरक़्क़ी तो है ही. वह तो इससे ज़्यादा और जगह भी होगी, पर यहां आकर यह मालूम होता है कि अगर सच मुच कहीं जनता का राज और जनता का बोलबाला है तो रूस में है. मुझे कई बातों में एशियाई आदर्श के ख़्याल से चीन ज़्यादा पसन्द है. चीन हमारे आदर्शों के ज़्यादा नज़दीक है. लेकिन साइन्स



بھی دیتے ہیں ۔ وہاں ایک بڑا Amphi theatre ہے جس میں 20 ہزار بچے ایک ساتھ بیٹھکر کھیل تماشے دیکھ سکتے ہیں. دونوں طرف کے جرمن جرمنی کو پھر سے ایک اور پوری طرح آزاد کرنے کو بھی تیار اور خواہشمند ہیں ۔ پچھمی جرمنی میں امریکہ کا روپیہ بہت لگا ہوا ہے ۔ پوربی جرمنی میں ایسی کوئی بات نہیں ۔ عام جلسہ میں میری تقریر سب جرمنوں کو بہت پسند آئی.

برلن سے ماسکو آتے ہوئے راستہ میں بریسٹ Brest پڑا ۔ وہاں کے روسیوں نے اسٹیشن پر ہی ہم سب کا خوب سواگت کیا ۔ روسی گاڑی میں چینی' جاپانی' ویت نام والے' لنکا والے' برمی وغیرہ بھی تھے ۔ کوموجو بھی تھے. خوب لطف رہا ۔ پانچ گھنٹے وہاں ٹھہرے ۔ ایک اوپرا دیکھا ۔ وہاں کا گانا' بجانا' ناچنا سب دیکھا ۔ پنڈت اونکار ناتھ نے انہیں ہندستانی گانا بھی سنایا. سبکو اچھا لگا ۔ خوب وقت گذرا ۔

ماسکو میں ہم سارے شہر کا چکر بھی لگا چکے ۔ قریب 50 لاکھ کی آبادی ہے. 32 منزل تک کی عمارتیں' بمبئی اور کلکتہ سے کہیں چوڑی چوڑی سڑکیں ۔ سب خوش معلوم ہوتے ہیں. سب کام میں لگے ہوئے ہیں. ہندستان سے سبکو پریم نظر آتا ہے ۔ گاندھی جی کا نام سب جانتے ہیں ۔ بہت بڑا آدمی مانتے ہیں ۔ جواہر لال جی کی بھی سب کے دل میں عزت ہے. امن کا پرچار یہاں خوب ہے ۔ جنگ کا پرچار کرنا قانونی جرم ہے' جس پر قید کی سزا دیجاتی ہے ۔ ہم نے یہاں کی زمین کے نیچے جانے والی ریل دیکھی ۔ برلن میں بھی ایسی ریل ہے' پر ماسکو سے اس کا کوئی مقابلہ نہیں ہوسکتا ۔ قریب 60 میل لمبی یہ زمین کے نیچے نیچے جاتی ہے. نیچے نیچے اسکی بھی چار منزلیں ہیں. بجلی کی سیڑھیوں سے ایک منزل سے دوسری منزل جاتے ہیں اور اسی طرح پھر اوپر آتے ہیں ۔ 23 لاکھ آدمی روزانہ اس سے سفر کرتے ہیں ۔ ماسکو دریا ماسکو شہر کے بیچ سے بہتا ہے ۔ یہ ریل ماسکو ندی سے ڈھائی سو فیٹ نیچے جاتی ہے. اسٹیشن بہت بڑے بڑے اور خوبصورت ہیں ۔ ہزاروں چترکاریاں ہیں ۔ جن کاریگروں نے کام کیا ہے انکی تصویریں جگہ جگہ بنی ہیں ۔ ان کے نام کھدے ہیں ۔ سب جگہ دیواروں پر جنتا کے کام' جنتا کے کارنامے' جنتا کی ایکتا' جنتا کی زندگی' یہی سب دکھایا گیا ہے ۔ چیز دیکھنے ہی سے سمبندھ رکھتی ہے ۔ سائنس کی ترقی ہے ہی ۔ وہ تو اس سے زیادہ اور جگہ بھی ہوگی' پر یہاں آکر یہ معلوم ہوتا ہے کہ اگر سچ مچ کہیں جنتا کا راج اور جنتا کا بول بالا ہے تو روس میں ہے ۔ مجھے کئی باتوں میں ایشیائی آدرش کے خیال سے چین زیادہ پسند ہے. چین ہمارے آدرشوں کے زیادہ نزدیک ہے ۔ لیکن سائنس

वन्देमातरम्
Freiheits-Kampfer
fur Indian
Surendranath Kar
1889-1923
Nripendra Nath Das Gupta
1897-1925
Nilay K. Das Gupta
1934-1938
Ashit Ranjan Sen Gupta
1902-1924

वन्देमातरम नागरी हर्फ़ों में खुदा है, बाक़ी रोमन हर्फ़ों में. जो दो सतरें जर्मन भाशा में हैं उनके मानी हैं :— "Fighter for the freedom of India यानी हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिये लड़ने वाले." चार नामों में पहला, दूसरा और चौथा हिन्दुस्तानी क्रान्तिकारी हैं जो अपनी किसी धुन में बर्लिन में आकर मरे और तीसरा एक और क्रान्तिकारी का लड़का है जो बर्लिन में ही पैदा हुआ और यहां ही मर गया. पत्थर के चारों तरफ़ फूल लगे हुए हैं. एक बूढ़ी जर्मन औरत इन फूलों को देखती रहती है और कभी कभी आकर पानी देती रहती है.

हमें यह भी मालूम हुआ कि पच्छिमी बर्लिन में ही कहीं पर हिन्दुस्तान के एक मुसलमान क्रान्तिकारी की भी क़ब्र है. पर हमें उसका पता लगाने और वहां जाने का वक़्त न मिल सका. पच्छिमी बर्लिन होने की वजह से और भी मुश्किल हो गया. हम पूर्वी बर्लिन में ठहरे थे और बीरेन्द्र बाबू अगले ही दिन किसी ज़रूरी काम से लन्दन चले गये. उस क़ब्र को देखने की हसरत दिल की दिल ही में रह गई.

बर्लिन की बमबारी और बर्बादी के निशान चारों तरफ़ फैले हुए हैं. चारों तरफ़ बड़ी बड़ी शानदार इमारतों के खंडर देखकर दुख भी होता है और इबरत भी. फिर भी पूर्वी बर्लिन वाले बहुत कुछ संभाल रहे हैं. उनका मज़दूरों और किसानों के लड़कों लड़कियों के लिये एक ख़ास स्कूल देख कर बड़ी तबियत ख़ुश हुई. प्राइमरी पास लोग लिये जाते हैं. तीन साल का कोर्स है. वहां से सीधे यूनिवर्सिटी जा सकते हैं. बहुत अच्छा बोर्डिंग स्कूल है. 800 लड़के लड़कियां रहते हैं. हमने उनसे बातें कीं, उनका रहना खाना देखा. बहुत पसन्द आया. एक Young Pioneers' Republic देखी. कई मील में बहुत ख़ूबसूरत बाग़, इमारतें और झील. 7 से 14 साल तक के लड़के लड़कियों के लिये. अपना सब इन्तज़ाम वह ख़ुद करते हैं. कुछ लड़के 15 से 25 तक के उन्हें मदद



بندے ماترم
Freiheit-Kampfer
fur Indian
Surendranath Kar
1889-1923
Nripendra Nath Daa Gupta
1897-1925
Nilay K. Das Gupta
1934-1938
Ashit Ranjan Sen Gupta
1902-1924

" بندے ماترم " ناگری حرفوں میں کھدا ہے، باقی رومن حرفوں میں . جو دو سطریں جرمن بھاشا میں ہیں ان کے معنی ہیں:— Fighter for the freedom of India. " یعنی ہندستان کی آزادی کے لئے لڑنے والے ." چار ناموں میں پہلا، دوسرا اور چوتھا ہندستانی کرانتی کاری ہیں جو اپنی کسی دھن میں برلن میں آکر مرے اور تیسرا ایک اور کرانتی کاری کا لڑکا ہے جو برلن میں ہی پیدا ہوا اور یہاں ہی مر گیا . پتھر کے چاروں طرف پھول لگے ہوئے ہیں . ایک بوڑھی جرمن عورت ان پھولوں کو دیکھتی رہتی ہے اور کبھی کبھی آکر پانی دیتی رہتی ہے .

ہمیں یہ بھی معلوم ہوا کہ پچھمی برلن میں ہی کہیں پر ہندستان کے ایک مسلمان کرانتی کاری کی بھی قبر ہے . پر ہمیں اس کا پتہ لگانے اور وہاں جانے کا وقت نہ مل سکا . پچھمی برلن ہونے کی وجہ سے اور بھی مشکل ہوگیا . ہم پوربی برلن میں ٹھہرے تھے اور بیریندر بابو اگلے ہی دن کسی ضروری کام سے لندن چلے گئے. اس قبر کو دیکھنے کی حسرت دل کی دل ہی میں رہ گئی .

برلن کی بمباری اور بربادی کے نشان چاروں طرف پھیلے ہوئے ہیں . چاروں طرف بڑی بڑی شاندار عمارتوں کے کھنڈر دیکھکر دکھ بھی ہوتا ہے اور عبرت بھی . پھر بھی پوربی برلن والے بہت کچھ سنبھال رہے ہیں . انکا مزدوروں اور کسانوں کے لڑکوں لڑکیوں کے لئے ایک خاص اسکول دیکھکر بڑی طبیعت خوش ہوئی . پرائمری پاس لوگ لئے جاتے ہیں . تین سال کا کورس ہے . وہاں سے سیدھے یونیورسٹی جاسکتے ہیں . بہت اچھا بورڈنگ اسکول ہے . 800 لڑکے لڑکیاں رہتے ہیں . ہم نے ان سے باتیں کیں، انکا رہنا کھانا دیکھا . بہت پسند آیا. ایک Young Pioneers' Republic دیکھی . کئی میل میں بہت خوبصورت باغ، عمارتیں اور جھیل . 7 سے 14 سال تک کے لڑکے لڑکیوں کے لئے . اپنا سب انتظام وہ خود کرتے ہیں . کچھ لڑکے 15 سے 25 تک کے انہیں مدد

क़रीब वैसी ही है जैसी इलाहाबाद में जनवरी में. फिर भी बर्लिन में और यहां भी मैं सब जगह बराबर धोती पहनता रहा. आजकल भी धोती ही पहनता हूं. जब से देहली से चला हूं सिर्फ़ एक दिन बर्लिन में शाम को दो घन्टे के लिये मोज़ा और पाजामा पहन लिया था. वह वाक़िया भी ख़ासा दिलचस्प है.

हुआ यह कि एक दिन बर्लिन में अचानक एक सज्जन बीरेन्द्रनाथ दास गुप्ता ने कहीं से मुझे फ़ोन किया कि वह मुझसे मिलने आना चाहते हैं. मैंने उसी वक़्त बुला लिया. आध घन्टे में एक साहब, छियासठ बरस की उम्र के, लेकिन मज़बूत, अंग्रेज़ी पोशाक में हिन्दुस्तानी, मेरे कमरे में दिखाई दिये और बड़ी मोहब्बत से मिले. पुराने बंग भंग के समय के हिन्दुस्तानी देश भक्त और क्रान्तिकारी थे. अब किसी फ़र्म में इनजीनियर हैं और ज़्यादातर योरूप में ही रहते हैं. आते जाते रहते हैं. ख़ूब बातें हुईं. वह मुझे पच्छिमी बर्लिन ( West Berlin ) सैर को ले गये. यह बात 22 मई की है. चलते वक़्त कहने लगे कि शाम को सर्दी ज़्यादा हो जायेगी, मोज़ा और गरम पाजामा ज़रूर पहन लीजिये. मैं धोती पहने ही जाना चाहता था. कुछ देर बहस होकर मैं उनकी बातों में आ गया. गरम पाजामा और मोज़ा निकाल कर पहन लिया. बाद में मालूम हुआ कि सर्दी का इतना डर नहीं था जितना वह मुझे धोती पहने साथ ले जाते हुए शर्माते थे, ख़ासकर पच्छिमी बर्लिन में. ख़ैर उनकी यह ख़्वाहिश भी आधी पूरी हुई. क्योंकि जब हम चलने लगे तो कुमारप्पा भी तैयार हो गये और कुमारप्पा वही धोती पहने और नंगे पांव रहे. सैर बहुत अच्छी रही. अन्डर ग्राउन्ड रेल से गये और आये. यहां हमारी धोतियों और कपड़ों को देखकर सब जगह लोग ख़ूब जमा हो जाते हैं. बीसियों पीछे पीछे चलने लगते हैं, लेकिन मोहब्बत के साथ. हिन्दुस्तान का हाल पूछते हैं और ख़ूब हाथ मिलाते हैं. बच्चों से तो इस अर्से में सैकड़ों ही से हाथ मिलाना पड़ा है. हर जगह यही हालत होती है. लोगों की आंखों में जो मोहब्बत और हमदर्दी होती है, उससे मालूम होता कि रंग का अभिमान ( Colour Pride ) अब दुनिया से जा रहा है और तेज़ी से जा रहा है इसका श्रेय हमें कम्यूनिज़्म को और रूस को देना ही होगा.

उस दिन की पच्छिमी बर्लिन की सैर में एक बात और भी बहुत ही ख़ास हुई. श्री बी. एन. दास गुप्ता हमें बर्लिन के एक क्रीमेटोरियम में ले गये. वहां उन्होंने एक जगह दिखाई जहां चार हिन्दुस्तानियों की राख दफ़न है. यह चारों बर्लिन में मरे, यहां ही फुंके और राख एक ख़ूबसूरत जगह दफ़न कर दी गई—चारों की एक ही जगह अलग अलग लेकिन पास पास. ऊपर एक पत्थर लगा है. उसके ऊपर जो शब्द खुदे हैं वह ज्यों के त्यों नीचे नक़ल करता हूं :



قریب ویسی ہی ہے جیسی الٰہ آباد میں جنوری میں۔ پھر بھی برلن میں بھی اور یہاں بھی میں سب جگہ برابر دھوتی پہنتا رہا۔ آجکل بھی دھوتی ہی پہنتا ہوں۔ جب سے دہلی سے چلا ہوں صرف ایک دن برلن میں شام کو دو گھنٹے کے لئے موزہ اور پاجامہ پہن لیا تھا۔ وہ واقعہ بھی خاصہ دلچسپ ہے۔

ہوا یہ کہ ایک دن برلن میں اچانک ایک سجن بیریندرناتھ داس گپتا نے کہیں سے مجھے فون کیا کہ وہ مجھ سے ملنے آنا چاہتے ہیں۔ میں نے اسی وقت بلا لیا۔ آدھ گھنٹے میں ایک صاحب، 66 برس کی عمر کے لیکن مضبوط، انگریزی پوشاک میں، ہندستانی، میرے کمرے میں دکھائی دیئے۔ بڑی محبت سے ملے۔ پرانے بنگ بھنگ کے سمے کے ہندستانی دیش بھگت اور کرانتی کاری تھے۔ اب کسی فرم میں انجینیر ہیں اور زیادہ‌تر یورپ میں ہی رہتے ہیں۔ آتے جاتے رہتے ہیں۔ خوب باتیں ہوئیں۔ وہ مجھے پچھمی برلن (West Berlin) سیر کو لے گئے۔ یہ بات 22 مئی کی ہے۔ چلتے وقت کہنے لگے کہ شام کو سردی زیادہ ہو جائے گی، موزہ اور گرم پاجامہ ضرور پہن لیجئے۔ میں دھوتی پہنے ہی جانا چاہتا تھا۔ کچھ دیر بحث ہو کر میں اُن کی باتوں میں آ گیا۔ گرم پاجامہ اور موزہ نکال کر پہن لیا۔ بعد میں معلوم ہوا کہ سردی کا اتنا ڈر نہیں تھا جتنا وہ مجھے دھوتی پہنے ساتھ لے جاتے ہوئے شرماتے تھے، خاص کر پچھمی برلن میں۔ خیر اُن کی یہ خواہش بھی آدھی پوری ہوئی۔ کیونکہ جب ہم چلنے لگے تو کمارپپا بھی تیار ہوگئے اور کمارپپا وہی دھوتی پہنے اور ننگے پاؤں رہے۔ سیر بہت اچھی رہی۔ انڈر گراؤنڈ ریل سے گئے اور آئے۔ یہاں ہمارے دھوتیوں اور کپڑوں کو دیکھکر سب جگہ لوگ خوب جمع ہوجاتے ہیں۔ بیسیوں پیچھے پیچھے چلنے لگتے ہیں، لیکن محبت کے ساتھ۔ ہندستان کا حال پوچھتے ہیں اور خوب ہاتھ ملاتے ہیں۔ بچوں سے تو اس عرصہ میں سیکڑوں ہی سے ہاتھ ملانا پڑا ہے۔ ہر جگہ یہی حالت ہوتی ہے۔ لوگوں کی آنکھوں میں جو محبت اور ہمدردی ہوتی ہے، اُس سے معلوم ہوتا ہے کہ رنگ کا ابھیمان (Colour Pride) اب دنیا سے جا رہا ہے۔ اس شریہ ہمیں کمیونزم کو اور روس کو دینا ہی ہوگا۔

اُس دن کی پچھمی برلن کی سیر میں ایک بات اور بھی بہت ہی خاص ہوئی۔ شری بی۔ این۔ داس گپتا ہمیں برلن کے ایک کریمیٹوریم میں لے گئے۔ وہاں انہوں نے ایک جگہ دکھائی جہاں چار ہندستانیوں کی راکھ دفن ہے۔ یہ چاروں برلن میں مرے، یہاں ہی پھنکے اور راکھ ایک خوبصورت جگہ دفن کر دی گئی—چاروں کی ایک ہی جگہ الگ الگ، لیکن پاس پاس۔ اوپر ایک پتھر لگا ہے۔ اس کے اوپر جو شبد کھدے ہیں وہ جیوں کے تیوں نیچے نقل کرتا ہوں :

# मास्को से ख़त

[ पूज्य पंडित जी ने इस ख़त से पहले एक ख़त मुझे बर्लिन से लिखा था. एक हफ़्ते के बाद यह दूसरा ख़त है. पहला एयरमेल से आया और जून के पहले हफ़्ते में मिला गया. यह ख़त मामूली डाक से आया और जुलाई के तीसरे हफ़्ते में मिला. पहला भी बहुत दिलचस्प था और अन्तरराश्ट्री हालत पर काफ़ी रोशनी डालता था. मेरी नालायक़ी से वह ख़त खो गया. इस नामाफ़ी गुनाह के लिये नया हिन्द के पाठकों से चमा चाहता हूं. दूसरा ख़त सेवा में हाज़िर है—मुजीब. ]

❀ ❀ ❀

Room No. 214
Soviet Hotel
Moscow.
6. 6. '54
Sunday.
7. 6. '54.
Monday.

डियर मुजीब,

एक ख़त तुम्हें बर्लिन से लिखा था. अब तक मिल गया होगा. 29, 30 बर्लिन की सैर करने के बाद 31 मई को हम छै आदमी बर्लिन से बज़रिये रेल मास्को के लिये रवाना हुए और 2 जून की शाम को मास्को पहुंचे. सफ़र में हर तरह का आराम रहा. हमारे रूसी मेज़बान ख़ासे मेहमा-नवाज़ हैं और काफ़ी मोहब्बती. मालूम होता है रूस सचमुच योरुप और एशिया का पुल है और दोनों तरफ़ के इन्सानों और दिलों को मिलाने का काम सब से अच्छा शायद रूस ही कर सकता है. रास्ते में एक केनेडियन दोस्त से जो यहां भी हमारे साथ ठहरे हुए हैं केनेडा की आज की हालत पर ख़ूब गुफ़्तगू हुई. मैंने कुछ नोट कर लिया है.

बर्लिन में सूरज रात को 9 बजे छिपता है और सुबह 3 बजे फिर निकल आता है. यानी रात सिर्फ़ 6 घंटे की होती है. यहां तो रूस से भी ज़्यादा अजीब हालत है. रास्ते में रात को 10 बजे के बाद हम बीच के एक स्टेशन पर खड़े थे. बिलकुल ऐसा समां था जैसा इलाहाबाद में जून में शाम को 7 बजे. दिन की रोशनी इतनी काफ़ी थी कि किताब पढ़ी जा सके. सर्दी यहां सब जगह क़रीब

# ماسکو سے خط

[ پوجیہ پنڈت جی نے اسی خط سے پہلے ایک خط مجھے برلن سے لکھا تھا . ایک ہفتے کے بعد یہ دوسرا خط ہے . پہلا ائیر میل سے آیا اور جون کے پہلے ہفتے میں مل گیا . یہ خط معمولی ڈاک سے آیا اور جولائی کے تیسرے ہفتے میں ملا . پہلا بھی بہت دلچسپ تھا اور انٹر راشٹری حالت پر کافی روشنی ڈالتا تھا . میری نالائقی سے وہ خط کھو گیا . اس نامعافی گناہ کے لئے نیا ہند کے پاٹھکوں سے چھما چاہتا ہوں. دوسرا خط سیوا میں حاضر ہے—مجیب. ]

❀ ❀ ❀

Room No. 214
Soviet Hotel
Moscow
6. 6. 54.
Sunday
7 .6 54.
Monday.

ڈیر مجیب،

ایک خط تمہیں برلن سے لکھا تھا . اب تک مل گیا ہوگا . 29، 30 برلن کی سیر کرنے کے بعد 31 مئی کو ہم چھ آدمی برلن سے بذریعہ ریل ماسکو کے لئے روانہ ہوئے اور 2 جون کی شام کو ماسکو پہونچے . سفر میں ہر طرح کا آرام رہا . ہمارے روسی میزبان خاصے مہماں نواز ہیں اور کافی محبتی . معلوم ہوتا ہے روس سچ مچ یورپ اور ایشیا کے بیچ کا پل ہے اور دونوں طرف کے انسانوں اور دلوں کو ملانے کا کام سب سے اچھا شاید روس ہی کرسکتا ہے . راستہ میں ایک کینیڈین دوست سے جو یہاں بھی ہمارے ساتھ ٹھہرے ہوئے ہیں کینیڈا کی آج کی حالت پر خوب گفتگو ہوئی . میں نے کچھ نوٹ کر لیا ہے .

برلن میں سورج رات کو 9 بجے چھپتا ہے اور صبح 3 بجے پھر نکل آتا ہے . یعنی رات صرف 6 گھنٹے کی ہوتی ہے . یہاں تو روس سے بھی زیادہ عجیب حالت ہے . راستے میں رات کو 10 بجے کے بعد ہم بیچ کے ایک اسٹیشن پر کھڑے تھے . بالکل ایسا سماں تھا جیسا الٰہ آباد میں جون میں شام کو 7 بجے . دن کی روشنی اتنی کافی تھی کہ کتاب پڑھی جا سکے . سردی یہاں سب جگہ قریب

बिना सरकारी सहायता के टिक नहीं पाता. 12 अप्रैल सन 1954 के हरिजन में विनोबा जी का मनी बहन पटेल के नाम एक पत्र छपा है. उसमें लिखा है: "कोशिश की जा रही है कि दस्तावेज़ी कार्रवाई और दाख़िल ख़ारिज बिना टिकट और रजिस्ट्री ख़र्चों के पूरी हो सकें. सरकारों से प्रार्थना की जायगी कि वह इस सम्बन्ध में ज़रूरी क़ानून और नियम बना दें." यही नहीं, उसी पत्र में आगे लिखा है: "हैदराबाद में सरकार के सहयोग से ज़मीन के बटवारे का काम शुरू कर दिया गया है. इसका नतीजा यह है कि भूदान वाले अब जिन जिन गांवों में जाते हैं वहां और अधिक ज़मीन दान में मिलती है." इस जगह यह बात समझ में नहीं आती कि दान में बढ़ौती का श्रेय सरकार के सहयोग को है या ज़मीन के बटवारे को ? ज़ाहिर है भूदान को सरकार की मदद ज़रूरी है, न सिर्फ़ असर डालने के लिये बल्कि क़ानून बना कर भूदान को क़ायम करने के लिये भी. फिर यह "हृदय परिवर्तन" कैसा है ?

यहां एक सवाल और खड़ा हो जाता है. वह यह है कि क्या बिना राजसत्ता को हाथ में लिये दूसरे आर्थिक और सामाजिक संस्थाओं का सुधार किया जा सकता है ? इस पर भी बहुत सोचना है. सर्वोदय के नेता राजसत्ता के बिना दूसरी संस्थाओं का सुधार सम्भव समझते हैं. उनका कहना है कि दूसरी संस्थाओं के सुधार के बाद राजकाजी ताक़तें ख़ुद सुधर जायेंगी. लेकिन ब्योहार में हम दूसरी बात देखते हैं. सर्वोदय ने भूदान से ज़मीन की समस्या हल करनी चाही, लेकिन सारे ब्योरों से पता चलता है कि भूदान की जो कुछ भी सफलता है वह सरकारी सहयोग के कारन है. अगर यह बात न होती और राजसत्ता के बग़ैर ज़मीन सुधार हो सकता तो विनोबा जी सरकार से क़ानून और नियम बनाने की प्रार्थना क्यों करते ? होना तो यह चाहिये था कि सुधार हो जाता और सरकार मजबूरन उसे मान लेती. भूदान में मिली ज़मीन के आंकड़ों से भी उलटी बात सिद्ध होती है. जहां जहां कांग्रेस सरकारें बहुत मज़बूत हैं वहीं वहीं भूदान में ज़मीन ज़्यादा मिली है और वहीं भूदान ज़्यादा मज़बूत है. यह भी ध्यान देने की बात है.

भूदान के आंकड़े निकलते रहते हैं. सब में मिली ज़मीन और दूसरे साधनों का ज़िक्र होता है लेकिन सर्वोदय की सब से बड़ी पूंजी 'हृदय परिवर्तन" के आंकड़े कभी नहीं निकलते हैं. अगर उन लोगों का नाम मालूम हो जाये तो 'हृदय परिवर्तन' की हम जांच कर सकेंगे. जब दिल बदल जाता है तो रहन सहन, आचार विचार, सब बदल जाते हैं. हमें यह देखना पड़ेगा कि ज़मीन के सम्बन्ध में जिनका दिल बदल जाता है कहीं दूसरे मामलों में उनका दिल काला का काला तो नहीं रहता ? आशा है 'हृदय परिवर्तन' करने वाले मुझे इस तजुरबे में सहयोग देंगे.



بنا سرکاری سہائتا کے ٹک نہیں پاتا. 12 اپریل 1954 کے ہریجن میں ونوبا جی کا منی بہن پٹیل کے نام ایک پتر چھپا ہے. اس میں لکھا ہے: "کوشش کی جا رہی ہے کہ دستاویزی کارروائی اور داخل خارج بنا ٹکٹ اور رجسٹری خرچوں کے پوری ہوسکیں. سرکاروں سے پرارتھنا کی جائیگی کہ وہ اس سمبندھ میں ضروری قانون اور نیم بنادیں." یہی نہیں اسی پتر میں آگے لکھا ہے: "حیدرآباد میں سرکار کے سہیوگ سے زمین کے بٹوارے کا کام شروع کردیا گیا ہے. اسکا نتیجہ یہ ہے کہ بھودان والے اب جن جن گاؤں میں جاتے ہیں وہاں اور ادھک زمین دان میں ملتی ہے." اس جگہ یہ بات سمجھ میں نہیں آتی کہ دان میں بڑھوتی کا شریہ سرکار کے سہیوگ کو ہے یا زمین کے بٹوارے کو؟ ظاہر ہے بھودان کو سرکار کی مدد ضروری ہے. نہ صرف اثر ڈالنے کے لئے بلکہ قانون بناکر بھودان کو قائم کرنے کے لئے بھی پھر یہ "ہردے پریورتن" کیسا ہے؟

یہاں ایک سوال اور کھڑا ہو جاتا ہے. وہ یہ ہے کہ کیا بنا راج ستا کو ہاتھ میں لئے دوسرے آرتھک اور سماجک سنستھاؤں کا سدھار کیا جا سکتا ہے؟ اس پر بھی بہت سوچنا ہے. سرودے کے نیتا راج ستا کے بنا دوسری سنستھاؤں کا سدھار سمبھو سمجھتے ہیں. ان کا کہنا ہے کہ دوسری سنستھاؤں کے سدھار کے بعد راج کاجی طاقتیں خود سدھر جائینگی. لیکن بیوہار میں ہم دوسری بات دیکھتے ہیں. سرودے نے بھودان سے زمین کی سمسیا حل کرنی چاہی. لیکن سارے بیوروں سے پتہ چلتا ہے کہ بھودان کی جو کچھ بھی سپھلتا ہے وہ سرکاری سہیوگ کے کارن ہے. اگر یہ بات نہ ہوتی اور راج ستا کے بغیر زمین سدھار ہو سکتا تو ونوبا جی سرکار سے قانون اور نیم بنانے کی پرارتھنا کیوں کرتے؟ ہونا تو یہ چاہئے تھا کہ سدھار ہو جاتا اور سرکار مجبوراً اسے مان لیتی. بھودان میں ملی زمین کے آنکڑوں سے بھی الٹی بات سدھ ہوتی ہے. جہاں جہاں کانگریس سرکاریں بہت مضبوط ہیں وہیں وہیں بھودان میں زمین زیادہ ملی ہے اور وہیں بھودان زیادہ مضبوط ہے. یہ بھی دھیان دینے کی بات ہے.

بھودان کے آنکڑے نکلتے رہتے ہیں. سب میں ملی زمین اور دوسرے سادھنوں کا ذکر ہوتا ہے. لیکن سرودے کی سب سے بڑی پونجی "ہردے پریورتن" کے آنکڑے کبھی نہیں نکلتے ہیں. اگر ان لوگوں کا نام معلوم ہو جائے تو ہردے پریورتن کی ہم جانچ کر سکیں گے. جب دل بدل جاتا ہے تو رہن سہن' آچار وچار' سب بدل جاتے ہیں. ہمیں یہ دیکھنا پڑیگا کہ زمین کے سمبندھ میں جن کا دل بدل جاتا ہے کہیں دوسرے معاملوں میں ان کا دل کالا کا کالا تو نہیں رہتا؟ آشا ہے "ہردے پریورتن" کرنے والے مجھے اس تجربے میں سہیوگ دینگے.

दंगों को अनशन करके समाप्त नहीं करा पाये. समय के अलावा परिस्थिति भी ज़रूरी है. मेवात में परिस्थिति दूसरी थी, इसलिये विनोबा जी मेवातियों को ज़मीन न दिला सके, लेकिन तिलंगाना में जा कर उन्हें बहुत सी ज़मीन मिल गई. विनोबा जी वही थे, समय वही था, लोगों के हृदय भी वही थे, केवल परिस्थिति बदली हुई थी. इस तरह से हम देखते हैं कि व्यक्ति, समय और परिस्थिति तीनों हृदय परिवर्तन के लिये ज़रूरी हैं. परिस्थिति पर समय और व्यक्ति दोनों निर्भर करते हैं. इस तरह परिस्थति प्रधान है.

जब परिस्थिति प्रधान है तो हृदय परिवर्तन से पहले उचित परिस्थिति का होना ज़रूरी है. विनोबा जी के बारे में तो मैं नहीं कह सकती, लेकिन उनके अच्छे काम करने वाले इस सच्चाई को जानते हैं. इसीलिये अपनी कामयाबी के लिये वह परिस्थिति तैय्यार करते हैं. दान देने वाले दो हैं. दोनों को अलग अलग ढंग से दान के लिये तैयार किया जाता है. ज़मींदार के पास ज़मीन है और किसान की ताक़त को भी अब वह महत्व देने लगा है. ज़मींदारों के दिमाग़ में भी यह बात बैठ गई है कि किसान ज़मीन पर क़ब्ज़ा करके ही रहेगा. किसान ज़मींदार का जो झगड़ा होगा उसके नतीजे से ज़मींदार को बुख़ार आता है. इस मनोविज्ञान से भूदान के नेता फ़ायदा उठाते हैं. वह जगह जगह पर ख़ून ख़राबे और लूट मार के क़िस्से सुनाते हैं. मुसलमान मौलवी नूह के तूफ़ान से डराता है और विनोबा जी के पन्डे कम्युनिस्टों की बरबादी से डराते हैं और उसे यह अश्वासन देते हैं कि अगर वह अपनी ज़मीन का कुछ हिस्सा भूदान में दे दे तो किसानों के ग़ुस्से को शान्त किया जा सकेगा और वह ख़ून ख़राबे से बच जायगा. एक तरफ़ ज़मींदार देखता है कि सब कुछ जा रहा है और दूसरी तरफ़ बहुत कुछ बच जाने की उसे उम्मीद मालूम होती है. इसलिये वह दान देता है. इसे "हृदय परिवर्तन" कैसे कहूं, मेरी समझ में नहीं आता.

दूसरी तरह के दानी किसान हैं. किसानों से धर्म के नाम पर अपील की जाती है. भूदान के सारे परि-भाषिक शब्दों को देख लीजिये. सब ऊपर की बात को साबित करते हैं. ज़मीन तो क्या, धर्म पर हमारा किसान जान भी दे सकता है. कोई माने या न माने लेकिन यह बात बिल्कुल ऐसी ही है कि जैसे शराब पिलाकर किसी को लूट लिया जाय. इस तरह परिस्थिति पैदा होती है, पर डाका भी पड़ता है. नशे की बातों को "हृदय परिवर्तन" नहीं कहा जा सकता.

हृदय परिवर्तन के बाद ऊपरी कन्ट्रोल की ज़रूरत नहीं रहती. लेकिन आश्चर्य है कि भूदानी हृदय परिवर्तन



دنگوں کو انشن کرکے سماپت نہیں کرا پائے. سمے کے علاوہ پرستھتی بھی ضروری ہے. میوات میں پرستھتی دوسری تھی، اس لئے ونوبا جی میواتیوں کو زمین نہ دلا سکے، لیکن تلنگانہ میں جاکر انہیں بہت سی زمین مل گئی. ونوبا جی وہی تھے، سمے وہی تھا، لوگوں کے ہردے بھی وہی تھے، کیول پرستھتی بدلی ہوئی تھی. اس طرح سے ہم دیکھتے ہیں کہ ویکتی، سمے اور پرستھتی تینوں ہردے پریورتن کے لئے ضروری ہیں. پرستھتی پر سمے اور ویکتی دونوں نربھر کرتے ہیں. اس طرح پرستھتی پردھان ہے.

جب پرستھتی پردھان ہے تو "ہردے پریورتن" سے پہلے اچت پرستھتی کا ہونا ضروری ہے. ونوبا جی کے بارے میں تو میں نہیں کہہ سکتی، ان کے اچھے کام کرنے والے اس سچائی کو جانتے ہیں. اسی لئے اپنی کامیابی کے لئے وہ پرستھتی تیار کرتے ہیں. دان دینے والے دو ہیں. دونوں کو الگ الگ ڈھنگ سے دان کے لئے تیار کیا جاتا ہے. زمیندار کے پاس زمین ہے اور کسان کی طاقت کو بھی اب وہ مہتو دینے لگا ہے. زمینداروں کے دماغ میں بھی یہ بات بیٹھ گئی ہے کہ کسان زمین پر قبضہ کرکے ہی رہیگا. کسان زمیندار کا جو جھگڑا ہوگا اس کے نتیجے سے زمیندار کو بخار آتا ہے. اس منووگیان سے بھودان کے نیتا فائدہ اٹھاتے ہیں. وہ جگہ جگہ پر خون خرابے اور لوٹ مار کے قصے سناتے ہیں. مسلمان مولوی نوح کے طوفان سے ڈراتا ہے اور ونوبا جی کے پنڈے کمیونسٹوں کی بربادی سے ڈراتے ہیں اور اسے یہ اشواسن دیتے ہیں کہ اگر وہ اپنی زمین کا کچھ حصہ بھودان میں دے دے تو کسانوں کے غصے کو شانت کیا جاسکیگا اور وہ خون خرابے سے بچ جائیگا. ایک طرف زمیندار دیکھتا ہے کہ سب کچھ جا رہا ہے اور دوسری طرف بہت کچھ بچ جانے کی اسے امید معلوم ہوتی ہے. اس لئے وہ دان دیتا ہے. اسے "ہردے پریورتن" کیسے کہوں، میری سمجھ میں نہیں آتا.

دوسری طرح کے دانی کسان ہیں. کسانوں سے دھرم کے نام پر اپیل کی جاتی ہے. بھودان کے سارے پاریبھاشک شبدوں کو دیکھ لیجئے. سب اوپر کی بات کو ثابت کرتے ہیں. زمین تو کیا، دھرم پر ہمارا کسان جان بھی دے سکتا ہے. کوئی مانے یا نہ مانے لیکن یہ بات بالکل ایسی ہی ہے کہ جیسے شراب پلاکر کسی کو لوٹ لیا جائے. اس طرح پرستھتی پیدا ہوتی ہے، پر ڈاکہ بھی پڑتا ہے. نشے کی باتوں کو "ہردے پریورتن" نہیں کہا جاسکتا.

"ہردے پریورتن" کے بعد اوپری کنٹرول کی ضرورت نہیں رہتی. لیکن آشچریہ ہے کہ بھودانی ہردے پریورتن

सहन हो सका, बाद में डिप्टी साहब ने उन्हें मना किया, लेकिन वह नहीं माने. यहां तक कि गाली गलौज की नौबत पहुंच गई. जमींदार साहब फिर भी नहीं माने. डिप्टी साहब गाली दे दे कर हार गये. अन्त में उन्होंने जमींदार से पूछा कि मैं इतनी गाली देता हूं, आपकी बेइज्ज़ती करता हूं, फिर आप क्यों आते हैं. उन्होंने कहा जनाब आप गाली अकेले में देते हैं और गाली मुझे लगती नहीं. लेकिन आपके दर्शन से मुझे बहुत फ़ायदा होता है. जब आपकी गाली खाकर मैं वापस जाता हूं तो गांव के भोले लोग यह नहीं समझते कि आप मुझे गाली देते हैं. वह मुझे और आपको गहरा दोस्त समझते हैं और इसलिये मेरा रोब मानते हैं. सच पूछिये तो इसी गाली के बदौलत मैं अपने इलाक़े में राज करता हूं.

यही क़िस्सा विनोबाजी के साथ भी है. वह कांग्रेस के ख़िलाफ़ बोलते रहें, मन्त्रियों को गाली देते रहें, लेकिन मन्त्री और अफ़सरों को जब लोग विनोबा जी के साथ देखते हैं तो राजसत्ता के असर को स्वीकार करते हैं और राजपुरोहित समझकर विनोबा जी की भक्ति करते हैं. इस तरह हम देखते हैं कि "हृदय परिवर्तन" का असर कम और राजसत्ता का असर ज्यादा भूदान के पीछे काम करता है.

भूदान वालों का कहना है कि वह "हृदय परिवर्तन" से ज़मीन लेते हैं. यह "हृदय परिवर्तन" है क्या ? कुछ लोग यह मानते हैं कि यह एक जादू है, एक चमत्कार है. कुछ लोग यह मानते हैं कि भावनाओं पर हमला करके मनुष्य को अपनी इच्छा के ख़िलाफ़ काम करने पर मजबूर किया जाता है. लेकिन मैं मानती हूं कि हृदय परिवर्तन एक प्रक्रिया है और उसका एक विज्ञान भी है मैं यह भी मानती हूं कि कोई भी आदर्श बिना "हृदय परिवर्तन" के हासिल नहीं किया जा सकता. नाम चाहे जो दे लीजिये लेकिन काम वही रहता है. सर्वोदयी हृदय परिवर्तन करता हैं, कम्युनिस्ट ऐजुकेट करता है. पर प्रक्रिया दोनों एक हैं. जो भी साधन चाहे अख्तियार किया जाय, आख़ीर में इस साधन का तो सहारा लेना ही पड़ता है.

जब यह विज्ञान है तो हमें यह जानना चाहिये कि वह विज्ञान क्या है ? वह विज्ञान यह है: हृदय परिवर्तन के लिये व्यक्ति, समय और परिस्थिति का होना ज़रूरी है. अनशन से हृदय परिवर्तन होता है, लेकिन हर एक के अनशन से नही. यह क्यों ? क्योंकि उचित व्यक्ति की ज़रूरत है. उचित व्यक्ति मिल जाने पर भी उचित समय का होना भी ज़रूरी है. गांधी जी अनशन के लिये उचित व्यक्ति थे. अनशन करके कलकत्ता के दंगे उन्होंने ख़तम करा दिये. लेकिन वही गांधी जी दूसरे समय दिल्ली के



سہن ہوسکا' بعد میں ڈپٹی صاحب نے انہیں منع کیا ۔ لیکن وہ نہیں مانے ۔ یہاں تک کہ گالی گلوچ کی نوبت پہنچ گئی ۔ زمیندار صاحب پھر بھی نہیں مانے ۔ ڈپٹی صاحب گالی دے دے کر ہار گئے ۔ انت میں انہوں نے زمیندار سے پوچھا کہ میں اتنی گالی دیتا ہوں' آپ کی بے عزتی کرتا ہوں' پھر آپ کیوں آتے ہیں ؟ انہوں نے کہا ۔ جناب آپ گالی اکیلے میں دیتے ہیں اور گالی مجھے لگتی نہیں ۔ لیکن آپ کے درشن سے مجھے بہت فائدہ ہوتا ہے ۔ جب آپ کی گالی کھاکر میں واپس جاتا ہوں تو گاؤں کے بھولے لوگ یہ نہیں سمجھتے کہ آپ مجھے گالی دیتے ہیں ۔ وہ مجھے اور آپ کو گہرا دوست سمجھتے ہیں اور اس لئے میرا رعب مانتے ہیں ۔ سچ پوچھئے تو اسی گالی کی بدولت میں اپنے علاقے میں راج کرتا ہوں ۔

یہی قصہ ونوبا جی کے ساتھ بھی ہے ۔ وہ کانگریس کے خلاف بولتے رہیں' منتریوں کو گالی دیتے رہیں' لیکن منتری اور افسروں کو جب لوگ ونوبا جی کے ساتھ دیکھتے ہیں تو راج ستا کے اثر کو سویکار کرتے ہیں اور راج پروہت سمجھکر ونوبا جی کی بھکتی کرتے ہیں ۔ اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ "ہردے پریورتن" کا اثر کم اور راج ستا کا اثر زیادہ بھودان کے پیچھے کام کرتا ہے ۔

بھودان والوں کا کہنا ہے کہ وہ "ہردے پریورتن" سے زمین لیتے ہیں ۔ یہ "ہردے پریورتن" ہے کیا ؟ کچھ لوگ یہ مانتے ہیں کہ یہ ایک جادو ہے' ایک چمتکار ہے ۔ کچھ لوگ یہ مانتے ہیں کہ بھاؤناؤں پر حملہ کر کے منش کو اپنی اچھا کے خلاف کام کرنے پر مجبور کیا جاتا ہے ۔ لیکن میں مانتی ہوں کہ "ہردے پریورتن" ایک پرکریا ہے اور اسکا ایک وگیان بھی ہے ۔ میں یہ بھی مانتی ہوں کہ کوئی بھی آدرش بنا "ہردے پریورتن" کے حاصل نہیں کیا جاسکتا ۔ نام چاہے جو دے لیجئے لیکن کام وہی رہتا ہے ۔ سرودئی ہردے پریورتن کرتا ہے' کمیونسٹ ایجوکیٹ (Educate) کرتا ہے ۔ پرکریا دونوں ایک ہیں ۔ جو بھی سادھن چاہے اختیار کیا جائے' آخر میں اس سادھن کا سہارا تو لینا ہی پڑتا ہے ۔

جب یہ وگیان ہے تو ہمیں یہ جاننا چاہئے کہ وہ وگیان کیا ہے ؟ وہ وگیان یہ ہے : ہردے پریورتن کے لئے ویکتی' سمے اور پرستھتی کا ہونا ضروری ہے ۔ انشن سے ہردے پریورتن ہوتا ہے' لیکن ہر ایک کے انشن سے نہیں ۔ یہ کیوں ؟ کیونکہ اچت ویکتی کی ضرورت ہے ۔ اچت ویکتی مل جانے پر بھی اچت سمے کا ہونا بھی ضروری ہے ۔ گاندھی جی انشن کے لئے اچت ویکتی تھے ۔ انشن کرکے کلکتہ کے دنگے انہوں نے ختم کرا دئے لیکن وہی گاندھی جی دوسرے سمے دلی کے

कैसे उम्मीद की जाय कि जयप्रकाश जी विनोबा जी के साथ डटे रहेंगे. चौथे क़िस्म के कुछ ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने भूदान को व्योपार का साधन बना लिया है. इसमें बिड़ला जी की कुछ प्रकाशन संस्थायें आती हैं और कुछ लेखक आते हैं जिनकी किताबें भूदान सम्मितियां बेचतीं हैं. भला व्योपारियों से संघर्ष के समय क्या उम्मीद की जा सकती है !

जब भी कोई भूदान पर ऐतराज़ करता है तो उसे अंग्रेज़ी पढ़ा लिखा और पश्चिमी विचार धाराओं का मानने वाला कहा जाता है. यह ख़ुद बहुत बड़ी कमज़ोरी है. दलील की कमी हमेशा इन बातों पर उतर आने पर मजबूर करती है. पढ़े लिखे लोग हर चीज़ को समझ कर समर्थन करते हैं. जब भूदान की कमज़ोरियों को वह देखते हैं और ठीक जवाब नहीं पाते हैं तो उसे अपना सहयोग नहीं देते हैं. इसी वजह से बुद्धिजीवी भूदान से अलग हैं. यही नहीं, जांचे परखे गांधीवादी नेता भी इससे अलग हैं. इनमें डाक्टर जे० सी० कुमारप्पा, मीरा बहन ऐसे व्यक्ति भी शामिल हैं.

हर काम करने के साधन भी शुद्ध होने चाहिये. भूदान के सहयोगियों की शुद्धता पर हमें शक है. आचार्य नरेन्द्र देव ने ठीक कहा है कि भूदान में ज़मीन डर और धार्मिक भावनाओं को इस्तेमाल करके ली गई है. विनोबा जी का जो प्रचार सरकार करती है क्या वह इसलिये करती है कि विनोबा जी उसको उखाड़ फेकें ? हर्गिज़ नहीं. प्रचार का यह साधन भूदान के लिये शुद्ध नहीं हो सकता. यह कहा जा सकता है कि सरकार प्रचार करती है, उसे विनोबा जी कैसे रोक सकते हैं ? वह रोकें या न रोकें लेकिन यह वह साधन है जिससे असर पैदा किया जाता है और इसी असर से डर पैदा होता है और डर से विनोबा जी को ज़मीन मिलती है. मेरे विचार में इस साधन का उपयोग उचित नहीं है.

विनोबा जी के साथ मन्त्री चलते हैं. सत्ता के असर से वह ज़मीन दिलाते हैं. उन्हीं के आदेश से सरकारी अफ़सर विनोबा जी की नौकरी बजाते हैं. उनकी नौकरी बजाना बहुत से लोगों का हृदय परिवर्तन करने के लिये काफ़ी है. इस बात को साफ़ करने के लिये ज़रूरी है कि मैं वह क़िस्सा लिख दूं जो एक मित्र ने मुझे बताया. वह मित्र डिप्टी कलैक्टर थे. अपने इलाक़े में दौरे पर जाया करते थे. जब वह दौरे पर चलते थे तो एक काने बदशकल ज़मींदार भी उनके साथ चलते थे. दोनों के ख़ेमे आमने सामने होते थे, लेकिन बीच का फ़ासला क़रीब दो तीन फ़र्लांग होता था. रोज़ सुबह ज़मींदार महोदय डिप्टी साहब के दर्शन को आते थे. दो एक दफ़ा उनका आना



کیسے اُمید کیجائے کہ جے پرکاش جی ونوبا جی کے ساتھ ڈٹے رهینگے ؟ چوتھے قسم کے کچھ ایسے بھی لوگ هیں جنھوں نے بھودان کو بیوپار کا سادھن بنا لیا ھے . اس میں برلا جی کی کچھ پرکاشن سنستھائیں آتی ھ ں اور کچھ لیکھک آتےھیں جن کی کتابیں بھودان سمتیاں بیچتی ھیں . بھلا بیوپاریوں سے سنگھرش کے سمے کیا اُمید کی جاسکتی ھے؟

جب بھی کوئی بھودان پر اعتراض کرتا ھے تو اُسے انگریزی پڑھا لکھا اور پچھمی وچار دھاراؤں کا ماننے والا کہا جاتا ھے . یہ خود بہت بڑی کمزوری ھے . دلیل کی کمی ھمیشہ اِن باتوں پر اُتر آنے پر مجبور کرتی ھے . پڑھے لکھے لوگ ھر چیز کو سمجھکر سمرتھن کرتے ھیں . جب بھودان کی کمزوریوں کو وہ دیکھتے ھیں اور ٹھیک جواب نہیں پاتے ھیں تو اُسے اپنا سہیوگ نہیں دیتے ھیں . اِسی وجہ سے بدھی جیوی بھودان سے الگ ھیں . یہی نہیں' جانچے پرکھے گاندھی وادی نیتا بھی اِس سے الگ ھیں . اِن میں ڈاکٹر جی . سی . کمارپا' میرا بہن ایسے ویکتی بھی شامل ھیں .

ھر کام کرنے کے سادھن بھی شدھ ھونے چاھیئں . بھودان کے سہیوگیوں کی شدھتا پر ھمیں شک ھے . آچاریہ نریندر دیو نے ٹھیک کہا ھے کہ بھودان میں زمین ڈر اور دھارمک بھاؤناؤں کو استعمال کر کے لی گئی ھے . ونوبا جی کا جو پرچار سرکار کرتی ھے کیا وہ اس لیئے کرتی ھے کہ ونوبا جی اُسکو اکھاڑ پھینکیں ؟ ھرگز نہیں . پرچار کا یہ سادھن بھودان کے لیئے شدھ نہیں ھوسکتا . یہ کہا جا سکتا ھے کہ سرکار پرچار کرتی ھے' اُسے ونوبا جی کیسے روک سکتے ھیں ؟ وہ روکیں' یا نہ روکیں لیکن یہ وہ سادھن ھے جس سے اثر پیدا کیا جاتا ھے اور اِسی اثر سے ڈر پیدا ھوتا ھے اور ڈر سے ونوبا جی کو زمین ملتی ھے . میرے وچار میں اِس سادھن کا اُپیوگ اُچت نہیں ھے .

ونوبا جی کے ساتھ منتری چلتے ھیں . ستا اثر سے وہ زمین دلاتے ھیں . اِنہیں کے آدیش سے سرکاری افسر ونوبا جی کی نوکری بجاتے ھیں . اُن کی نوکری بجانا بہت سے لوگوں کا "ھردے پریورتن" کرنے کے لیئے کافی ھے . اِس بات کو صاف کرنے کے لیئے ضروری ھے کہ میں وہ قصہ لکھ دوں جو ایک متر نے مجھے بتایا . وہ متر ڈپٹی کلکٹر تھے . اپنے علاقے میں دورے پر جایا کرتے تھے . جب وہ دورے پر چلتے تھے تو ایک کانے بد شکل زمیندار بھی اُن کے ساتھ چلتے تھے . دونوں کے خیمے آمنے سامنے ھوتے تھے' لیکن بیچ کا فاصلہ قریب دو تین فرلانگ ھوتا تھا . روز صبح زمیندار مہودے ڈپٹی صاحب کے درشن کو آتے تھے . دو ایک دفعہ ان کا آنا

पर या आजकल की कांग्रेस पर गांधी जी का कोई रंग दिखाई नहीं पड़ता तो मुझे कोई ताज्जुब नहीं होता. जहां गांधी जी हार गये क्या वहां विनोबा जी जीत जायेंगे ? जिन शक्तियों का सहारा लेकर गांधी जी सर्वोदय क़ायम न कर सके क्या उनका सहारा लेकर विनोबा जी जीत का सेहरा बांध सकेंगे ?

विनोबा जी इन्क़लाब लाना चाहते हैं, इससे कौन इन्कार कर सकता है. पर विनोबा जी केवल कमान्डर हैं. उनके नीचे बहुत से लेफ़्टिनेन्ट भी हैं. वही लोग जनता के बीच में काम करते हैं. ठीक है कि वह विनोबा जी के नाम पर काम करते हैं. लेकिन कल अगर जनता को ग़लत सलत बातें विनोबा जी के नाम पर बताई जाने लगें तो उसे वह यक़ीन कर लेंगे. कमान्डर पालिसी तै करता है और हुकुम देता है, पर उस हुकुम और पालिसी पर अमल लेफ़्टिनेन्ट कराते हैं. क्या विनोबा जी के आजकल के लेफ़्टिनेन्टों पर ऐतबार किया जा सकता है ? क्या इस बात का विश्वास है कि यह लेफ़्टिनेन्ट अपनी सेना उसी ढर्रे पर चलायेंगे जिस पर चलने के लिये विनोबा जी उन्हें आदेश देंगे ? मेरा विचार है कि अगर किसी को इस बात का विश्वास है तो उसे इन व्यक्तियों के बारे में कुछ कम जानकारी है. यह लोग विनोबा जी का साथ नहीं देंगे और विनोबा जी को बस यही कह कर तसल्ली करनी पड़ेगी कि क्या करूं ! इन्हीं लोगों से तो काम लेना है, इस तरह हम देखते हैं कि साधन रूप में भी भूदान कामयाब नहीं होता.

ऊपर जो बात हमने कही है उसके सबूत में बहुत कुछ लिखना पड़ेगा. लेकिन एक लेख में सब बातें नहीं आ सकतीं. इसलिये थोड़ा सा ज़िक्र उन व्यक्तियों का हो सकेगा जो विनोबा जी के ख़ास लेफ़्टिनेन्ट हैं. नम्बर एक कांग्रेसी सरकार और कांग्रेस कमेटियां. नम्बर दो कुछ ऐसे व्यक्ति जो कांग्रेस से बंधे हुए हैं और विनोबा जी के साथ हैं. तीसरे वह लोग जो दूसरी पार्टियों से ताल्लुक़ रखते हैं और विनोबा जी के समर्थक हैं. कांग्रेस सरकार और कांग्रेस कमेटियां विनोबा जी का साथ देंगी यह एक भ्रम है. दूसरे तरह के लेफ़्टिनेन्टों में बाबा राघव दास ऐसे लोग हैं. बाबा जी के बारे में स्वर्गीय किशोरीलाल मश्रुवाला बहुत कुछ लिख चुके हैं. उनके चरित्र पर मुझे रोशनी डालने की ज़रूरत नहीं. बस इतना कहना काफ़ी है कि वह आड़े वक़्त पर विनोबा जी का साथ नहीं दे सकते. तीसरे क़िस्म के व्यक्तियों में बाबू जयप्रकाश नारायन आते हैं. इनकी ढुल-मुल यक़ीनी बहुत ही मशहूर हो चुकी है. एक पार्टी से यह बंधे हैं जो सर्वोदय की स्प्रिट को नहीं मानती. पार्टी का यह अभी तक काम भी करते हैं. फिर



پر یا آجکل کی کانگریس پر گاندھی جی کا کوئی رنگ دکھائی نہیں پڑتا تو مجھے کوئی تعجب نہیں ہوتا. جہاں گاندھی جی ہار گئے کیا وہاں ونوبا جی جیت جائینگے ؟ جن شکتیوں کا سہارا لے کر گاندھی جی سروودے قائم نہ کر سکے کیا ان کا سہارا لے کر ونوبا جی جیت کا سہرا باندھ سکیں گے ؟

ونوبا جی انقلاب لانا چاہتے ہیں' اس سے کون انکار کر سکتا ہے . پر ونوبا جی کیول کمانڈر ہیں. اُن کے نیچے بہت سے لیفٹیننٹ بھی ہیں . وہی لوگ جنتا کے بیچ میں کام کرتے ہیں. ٹھیک ہے کہ وہ ونوبا جی کے نام پر کام کرتے ہیں . لیکن کل اگر جنتا کو غلط سلت باتیں ونوبا جی کے نام پر بتائی جانے لگیں تو اُسے وہ یقین کر لینگے . کمانڈر پالیسی طے کرتا ہے اور حکم دیتا ہے' پر اُس حکم اور پالیسی پر عمل لفٹیننٹ کراتے ہیں . کیا ونوبا جی کے آجکل کے لفٹیننٹوں پر اعتبار کیا جاسکتا ہے؟ کیا اس بات کا وشواس ہے کہ یہ لفٹیننٹ اپنی سینا اسی ڈھرے پر چلائیں گے جس پر چلنے کے لئے ونوباجی انہیں آدیش دینگے ؟ میرا وچار ہے کہ اگر کسی کو اس بات کا وشواس ہے تو اُسے اُن ویکتیوں کے بارے میں کچھ کم جانکاری ہے . یہ لوگ ونوبا جی کا ساتھ نہیں دینگے اور ونوبا جی کو بس یہی کہکر تسلی کرنی پڑے گی کہ کیا کروں' انہیں لوگوں سے تو کام لینا ہے ! اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ سادھن روپ میں بھی بھودان کامیاب نہیں ہوتا.

اوپر جو بات ہم نے کہی ہے اُس کے ثبوت میں بہت کچھ لکھنا پڑیگا. لیکن ایک لیکھ میں سب باتیں نہیں آ سکتیں . اس لیئے تھوڑا سا ذکر اُن ویکتیوں کا ہوسکیگا جو ونوباجی کے خاص لفٹیننٹ ہیں. نمبر ایک کانگریسی سرکار اور کانگریس کمیٹیاں . نمبر دو. کچھ ایسے ویکتی جو کانگریس سے بندھے ہوئے ہیں اور ونوبا جی کے ساتھ ہیں. تیسرے وہ لوگ جو دوسری پارٹیوں سے تعلق رکھتے ہیں اور ونوبا جی کے سمرتھک ہیں. کانگریس سرکار اور کانگریس کمیٹیاں ونوبا جی کا ساتھ دینگی یہ ایک بھرم ہے. دوسرے طرح کے لفٹیننٹوں میں بابا راگھو داس ایسے لوگ ہیں. باباجی کے بارے میں سورگیہ کشوری لعل مشرو والا بہت کچھ لکھ چکے ہیں. اُن کے چرتر پر مجھے روشنی ڈالنے کی ضرورت نہیں . بس اتنا کہنا کافی ہے کہ وہ آڑے وقت پر ونوبا جی کا ساتھ نہیں دے سکتے . تیسرے قسم کے ویکتیوں میں بابو جے پرکاش نرائن آتے ہیں . ان کی ڈھل مل یقینی بہت ہی مشہور ہو چکی ہے . ایک پارٹی سے یہ بندھے ہیں جو سروودے کی اسپرٹ کو نہیں مانتی . پارٹی کا یہ ابھی تک کام بھی کرتے ہیں . پھر

चाहा कि वह धर्म कमण्डल लेकर जनता को आने वाले युगों की तरक़्क़ी का सपना दिखाते रहें और जनता में बढ़ती बेचैनी को भगवान का वास्ता दे देकर शान्त रखें. राजपुरोहित जब दिल्ली पधारे तो उनका शानदार स्वागत हुआ. स्वर्गीय पटेल और पण्डित नेहरू के साथ विनोबा जी की तस्वीरें खिचीं. विनोबा जी सरकारी दफ़्तरों में भी घूमे और बापू के बाद नायब बापू का दर्जा उन्हें प्रदान कर दिया गया. उनका काम था सरकारी कामों को आशीश देना, दिन भर चर्खा कातना और शाम को परवचन और प्रार्थना करना. कितने दिन तक यह काम चलता रहा ज़रा कहना कठिन है. बस इतना समझ लीजिये कि जब विनोबा जी ने मेवातियों को ज़मीन दिलाने पर ज़ोर दिया और स्वर्गीय पटेल की पालिसी के ख़िलाफ़ दो चार दफ़ा वह बोले बस उनका कल्ला कट गया. इस वक़्त पूरे साधन मेरे पास नहीं हैं जो मैं सरदार पटेल के शब्द भी नक़ल कर सकूं. लेकिन वह शब्द इतने कड़े थे कि विनोबा जी तुरन्त दिल्ली से वर्धा चले आये. यह ठीक है कि उनके चेले मेवात में काम करते रहे लेकिन मुझे ख़ुद तजुरबा है कि सरकार से निपटने के लिये बार बार विनोबा जी को दिल्ली बुलाया गया, लोग उनसे मिलने वर्धा गये, लेकिन वह दिल्ली नहीं आये. सरकार उसका समर्थन करती है जिसका उपयोग उचित समझती है.

हम विनोबा जी की नेक नीयती में शक नहीं कर सकते. लेकिन इसमें भी विश्वास नहीं कर सकते कि भूदान के समर्थन में कांग्रेस नेकनीयत है. यहां पर यह कहा जा सकता है कि काम विनोबा जी का है, समर्थन जिसका जी चाहे करे. यह भी एक नुक़ता है जो अपनी बुद्धि में नहीं आता. विनोबा जी कांग्रेस से ज़्यादा चालाक नहीं हैं. सवाल यह चालाकी का है. ज़ाहिर बात है कि विनोबा जी हार जायेंगे. कांग्रेस को अगर यह उम्मीद हो कि वह हार जायगी तो वह समर्थन ही न करे. लोग यह भी कहते हैं कि समय आने पर ही इस बात का फ़ैसला होगा. लेकिन पानी में कूदने से पहले गहराई का अन्दाज़ा कर लेना ज़रूरी है !

यह भी मान लिया कि विनोबा जी कांग्रेस को छल लेंगे, कांग्रेस से मदद भी लेंगे और कांग्रेस को ख़तम भी कर देंगे. इस पर मैं ने बहुत सोचा, गांधी जी के भी तजुरबे को पढ़ा और सुना. आख़ीर दिनों में गांधी जी की जो हालत हो गई थी वह किसी से छिपी नहीं है. गांधी जी विनोबा जी के गुरू थे और उनसे कहीं ज़्यादा ताक़तवर थे. पर जिन लोगों का साथ उन्होंने किया उन्होंने गांधी जी को क़दम क़दम पर झुकाया. इसलिये जब भारत सरकार



چاہا کہ وہ دھرم کمنڈل لے کر جنتا کو آنے والے یگوں کی ترقی کا سپنا دکھاتے رہیں اور جنتا میں بڑھتی بےچینی کو بھگوان کا واسطہ دے دے کر شانت رکھیں ۔ راج پروہت جب دلی پدھارے تو اُن کا شاندار سواگت ہوا ۔ سورگیہ پٹیل اور پنڈت نہرو کے ساتھ ونوبا جی کی تصویریں کھنچیں ۔ ونوبا جی سرکاری دفتروں میں بھی گھومے اور باپو کے بعد نائب باپو کا درجہ انہیں پردان کر دیا گیا ۔ اُن کا کام تھا سرکاری کاموں کو آشیش دینا، دن بھر چرخہ کاتنا اور شام کو پرَوچن اور پرارتھنا کرنا ۔ کتنے دن تک یہ کام چلتا رہا ذرا کہنا کٹھن ہے ۔ بس اتنا سمجھ لیجئے کہ جب ونوبا جی نے میواتیوں کو زمین دلانے پر زور دیا اور سورگیہ پٹیل کی پالیسی کے خلاف دو چار دفعہ وہ بولے بس اُن کا کلا کٹ گیا ۔ اِس وقت پورے سادھن میرے پاس نہیں ہیں جو میں سردار پٹیل کے شبد بھی نقل کر سکوں ۔ لیکن وہ شبد اتنے کڑے تھے کہ ونوبا جی ترنت دلی سے وردھا چلے آئے ۔ یہ ٹھیک ہے کہ اُن کے چیلے میوات میں کام کرتے رہے، لیکن مجھے خود تجربہ ہے کہ سرکار سے نپٹنے کے لیئے بار بار ونوبا جی کو دلی بلایا گیا، لوگ اُن سے ملنے وردھا گئے، لیکن وہ دلی نہیں آئے ۔ سرکار اُسکا سمرتھن کرتی ہے جسکا اپیوگ اُچت سمجھتی ہے ۔

ہم ونوبا جی کی نیک نیتی میں شک نہیں کر سکتے ۔ لیکن اس میں بھی وشواس نہیں کر سکتے کہ بھودان کے سمرتھن میں کانگریس نیک نیت ہے ۔ یہاں یہ کہا جا سکتا ہے کہ کام ونوبا جی کا ہے، سمرتھن جسکا جی چاہے کرے ۔ یہ بھی ایک نکتہ ہے جو اپنی بدھی میں نہیں آتا ۔ ونوبا جی کانگریس سے زیادہ چالاک نہیں ہیں ۔ سوال یہ چالاکی کا ہے ۔ ظاہر بات ہے کہ ونوبا جی ہار جائیں گے ۔ کانگریس کو اگر یہ اُمید ہو کہ وہ ہار جائیگی تو وہ سمرتھن ہی نہ کرے ۔ لوگ یہ بھی کہتے ہیں کہ سمے آنے پر ہی اِس بات کا فیصلہ ہوگا ۔ لیکن پانی میں کودنے سے پہلے گہرائی کا اندازہ کر لینا ضروری ہے !

یہ بھی مان لیا کہ ونوبا جی کانگریس کو چھل لیں گے ۔ کانگریس سے مدد بھی لیں گے اور کانگریس کو ختم بھی کر دینگے ۔ اِس پر میں نے بہت سوچا، گاندھی جی کے بھی تجربے کو پڑھا اور سنا ۔ آخیر دنوں میں گاندھی جی کی جو حالت ہو گئی تھی وہ کسی سے چھپی نہیں ہے ۔ گاندھی جی ونوبا جی کے گرو تھے اور اُن سے کہیں زیادہ طاقتور تھے ۔ پر جن لوگوں کا ساتھ اُنہوں نے کیا انہوں نے گاندھی جی کو قدم قدم پر جھکایا ۔ اِس لیئے جب بھارت سرکار

के ऊपर बेहद ज़ोर देता है. व्यक्ति को ठीक करके ही वह सर्वोदय लाना चाहता है. इस तरह व्यक्ति प्रधान हुआ. यही बात मेरी समझ में नहीं आती कि व्यक्ति प्रधान है या भगवान ?

इस दार्शनिक बहस को हम छोड़कर सर्वोदय के अमली रूप पर आते हैं. इसका अमली रूप भूदान है. इसके इतिहास में हम बाद में जायगें. पहले यह तय कर लें कि भूदान है क्या ? शुरू शुरू में भूदान का मतलब था भारत की भूमि समस्या का हल. अब कहा जाता है कि सर्वोदय लाने का साधन. पहले इस पर विचार कर लें कि भूदान भारत की भूमि समस्या को हल कर सकता है या नहीं. इस पर ज्यादा सोच विचार करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि भूदान के नेता भी आज यह मानने लगे हैं कि भूदान से भूमि समस्या का हल नहीं होने का. आचार्य नरेन्द्र देव और मीरा बहन के बहुत से ऐतराज यहां ख़त्म हो जाते हैं. भूदान अपना दावा छोड़ देता है और अपने को साध्य के बजाय साधन क़रार देता है.

अब भूदान को साधन रूप में देखना होगा. भूदान के नेताओं का कहना है कि जनता में जागरन पैदा करके नया समाज बनाना है. उनका कहना यह भी है कि भूदान से सिर्फ़ वही लोग हमदर्दी दिखा सकते हैं जो आजकल के शासन को सुधार के नाक़ाबिल मानते हों और जिन पर यह बात अच्छी तरह ज़ाहिर हो गई हो कि यह सरकार आने वाले ज़माने का कामयाबी के साथ सामना नहीं कर सकती और इसका हटाया जाना ही निहायत ज़रूरी है. हमें देखना यह पड़ेगा कि भूदान ने अब तक किस हद तक जनता को जगाया है और भूदान के समर्थक कौन हैं ? पहले भूदान के समर्थकों को ले लें. भूदान के समर्थक कांग्रेसी मन्त्री और उनके नीचे काम करने वाले सरकारी अफ़सर हैं. तो क्या कांग्रेस ख़ुद अपने को मिटा देना चाहती है और नया समाज बनाना चाहती है, नया शासन पैदा करना चाहती है ? क्योंकि समर्थक की कसौटी यही है मेरा विचार है कि इस बात को कोई सूझ बूझ वाला आदमी कभी स्वीकार नहीं करेगा. कांग्रेस ने विनोबा जी का यह पहली बार साथ नहीं दिया. बात पुरानी हो गई है, पर उसे दोहरा देना यहां उचित मालूम होता है. गांधी जी के बाद विनोबा जी बड़ी आवभगत से दिल्ली बुलाये गये. यह कहना बेजा न होगा कि वह राजपुरोहित के रूप में वहां आये थे. यह नहीं कह सकती हूं कि विनोबा जी को अपनी नई गद्दी का कुछ ज्ञान था यह नहीं, लेकिन दिल्ली के सत्ताधीशों के दिमाग़ में यह बात साफ़ थी. जनता कांग्रेस से हट रही थी और उसको अपने में मिलाये रखने की ज़रूरत थी. लाल बुझक्कड़ों ने राजपुरोहित पद का अविष्कार किया और



کے اوپر بےحد زور دیتا ہے ۔ ویکتی کو ٹھیک کرکے ہی وہ سروودے لانا چاہتا ہے۔ اس طرح ویکتی پردھان ہوا ۔ اور یہی بات میری سمجھ میں نہیں آتی کہ ویکتی پردھان ہے یا بھگوان ؟

اس دارشنک بحث کو ہم چھوڑ کر سروودے کے عملی روپ پر آتے ہیں۔ اس کا عملی روپ بھودان ہے ۔ اس کے اتہاس میں ہم بعد میں جائینگے ۔ پہلے یہ طے کرلیں کہ بھودان ہے کیا ؟ شروع شروع میں بھودان کا مطلب تھا بھارت کی بھومی سمسیا کا حل ۔ اب کہا جاتا ہے کہ سروودے لانے کا سادھن۔ پہلے اس پر وچار کرلیں کہ بھودان بھارت کی بھومی سمسیا کو حل کرسکتا ہے یا نہیں ۔ اس پر زیادہ سوچ وچار کرنے کی ضرورت نہیں ہے کیونکہ بھودان کے نیتا بھی آج یہ ماننے لگے ہیں کہ بھودان سے بھومی سمسیا کا حل نہیں ہونے کا ۔ آچاریہ نریندردیو اور میرا بہن کے بہت اعتراض یہاں ختم ہو جاتے ہیں۔ بھودان اپنا دعویٰ چھوڑ دیتا ہے اور اپنے کو سادھیہ کے بجائے سادھن قرار دیتا ہے ۔

اب بھودان کو سادھن روپ میں دیکھنا ہوگا۔ بھودان کے نیتاؤں کا کہنا ہے کہ جنتا میں جاگرن پیدا کر کے نیا سماج بنانا ہے ۔ اُن کا کہنا یہ بھی ہے کہ بھودان سے صرف وہی لوگ ہمدردی دکھا سکتے ہیں جو آجکل کے شاسن کو سدھار کے ناقابل مانتے ہوں اور جن پر یہ بات اچھی طرح ظاہر ہوگئی ہو کہ یہ سرکار آنیوالے زمانے کا کامیابی کے ساتھ سامنا نہیں کر سکتی اور اس کا ہٹایا جانا ہی نہایت ضروری ہے ۔ ہمیں دیکھنا یہ پڑیگا کہ بھودان نے اب تک کس حد تک جنتا کو جگایا ہے اور بھودان کے سمرتھک کون ہیں ؟ پہلے بھودان کے سمرتھکوں کو لے لیں۔ بھودان کے سمرتھک کانگریسی منتری اور اُن کے نیچے کام کرنے والے سرکاری افسر ہیں ۔ تو کیا کانگریس خود اپنے کو مٹا دینا چاہتی ہے اور نیا سماج بنانا چاہتی ہے' نیا شاسن پیدا کرنا چاہتی ہے ؟ کیونکہ سمرتھک کی کسوٹی یہی ہے ۔ میرا وچار ہے کہ اس بات کو کوئی سوجھ بوجھ والا آدمی کبھی سویکار نہیں کریگا ۔ کانگریس نے ونوبا جی کا یہ پہلی بار ساتھ نہیں دیا ۔ بات پرانی ہو گئی ہے' پر اسے دوہرا دینا یہاں اُچت معلوم ہوتا ہے ۔ گاندھی جی کے بعد ونوبا جی بڑی آؤ بھگت سے دلی بلائے گئے ۔ یہ کہنا بیجا نہ ہوگا کہ وہ راج پروہت کے روپ میں وہاں آئے تھے ۔ یہ نہیں کہہ سکتی ہوں کہ ونوبا جی کو اپنی نئی گدی کا کچھ گیان تھا یا نہیں' لیکن دلی کے ستادھیشوں کے دماغ میں یہ بات صاف تھی ۔ جنتا کانگریس سے ہٹ رہی تھی اور اسکو اپنے میں ملائے رکھنے کی ضرورت تھی۔ لال بوجھکڑوں نے راج پروہت پد کا آوشکار کیا اور

तरीक़ों से साध्य को हासिल किया जाता है उसे साधन कहते हैं. सर्वोदय अगर आदर्श है तो वर्गहीन समाज साधन होगा. यह बात और साफ़ हो जाती है अगर कम्युनिज़्म पर हम रोशनी डालें. कम्युनिज़्म एक आदर्श है और मज़दूर वर्ग एक साधन है. पहले मज़दूर वर्ग दूसरे वर्गों से संघर्ष करेगा, वर्ग बनाने वाले आर्थिक ढांचों को अपने क़ब्ज़े में करेगा, दूसरे वर्गों को मज़दूर बना लेगा, फिर राज करेगा और तब कम्युनिज़्म के आदर्श तक पहुंचेगा, जहां शासन नहीं होगा. यदि सर्वोदय ठीक ढंग से चले तो पहले वर्ग हीन समाज बनाये और तब सर्वोदय को प्राप्त करे. जब समाज वर्गहीन हो जायेगा तो उस एक वर्ग का उदय होगा, सब वर्गों का नहीं. इस तरह फिर घूम घुमाकर इसी एक नुक़्ते पर पहुंचते हैं कि या सर्वोदय नामी आदर्श का नाम ही ग़लत है और या फिर सर्वोदय की जो रूप रेखा बताई जाती है वह ग़लत है. और इससे यह भी नतीजा निकलता है कि एक ख़ास दर्शन को मानने वाले समाज की ज़ोरदार मांग के सामने घुटने टेक देते हैं. आज के समाज की मांग है वर्गहीन समाज. सर्वोदय के नेता इस मांग को अपने दर्शन के साथ जोड़ लेते हैं. बीच का अन्तर-विरोध या तो उन्हें दिखाई नहीं पड़ता या वह उसे देखना नहीं चाहते.

सर्वोदय का ज़ोर व्यक्ति पर बहुत है. हो सकता है सर्वोदय का अर्थ यह लगाया जाये कि सर्वोदय समाज में हर व्यक्ति का उदय हो जायगा. यह बात भी कुछ समझ में नहीं आती. सारे व्यक्तियों का एक साथ एक बराबर उदय कैसे हो सकता है? मानसिक और जिस्मानी उदय का सम्बन्ध अर्थ से बहुत है. तो इसका मतलब यह होगा कि आर्थिक ढांचा बदला जाय और आर्थिक ढांचा बदल कर अगर सर्वोदय तक पहुंचना है तो वर्ग ख़त्म करने पड़ेंगे. जब वर्ग ख़त्म हो जायेंगे तो फिर वही समस्या खड़ी होगी. तब 'सर्व' में कौन शामिल होंगे जिनका उदय होगा?

एक बात और समझ में नहीं आती. वह यह है. सर्वोदयी कहते हैं कि भगवान सब कुछ है और भगवान ही के नाम पर वह सब काम करते हैं. जब भगवान सब कुछ हैं तो व्यक्ति कुछ भी नहीं है. लेकिन सर्वोदयी व्यक्ति का नाम लेकर बड़ा तुमार खड़ा करते हैं. कम्युनिज़्म कहता है कि व्यक्ति समाज का अंग है और उसे हर काम समाज के हित के लिये करना चाहिये. समाज इस तरह प्रधान हो जाता है और व्यक्ति का महत्व कम हो जाता है. सर्वोदयी इस पर शोर मचाते हैं. वह कहते हैं कि कम्युनिज़्म व्यक्ति को ख़त्म कर देता है. पर वह ख़ुद व्यक्ति को भगवान में ख़त्म कर देते हैं. समाज का नाम यदि भगवान रख दिया जाय तो दोनों एक जगह खड़े हैं. लेकिन सर्वोदय व्यक्ति



طریقوں سے سادھیہ کو حاصل کیا جاتا ہے اُسے سادھن کہتے ہیں ۔ سرودے اگر آدرش ہے تو ورگ ہین سماج سادھن ہوگا. یہ بات اور صاف ہو جاتی ہے اگر کمیونزم پر ہم روشنی ڈالیں ۔ کمیونزم ایک آدرش ہے اور مزدور ورگ ایک سادھن ہے ۔ پہلے مزدور ورگ دوسرے ورگوں سے سنگھرش کریگا' ورگ بنانے والے آرتھک ڈھانچوں کو اپنے قبضے میں کریگا' دوسرے ورگوں کو مزدور بنا لےگا' پھر راج کریگا اور تب کمیونزم کے آدرش تک پہونچےگا' جہاں شاسن نہیں ہوگا ۔ یدی سرودے ٹھیک ڈھنگ سے چلے تو پہلے ورگ ہین سماج بنائے اور تب سرودے کو پراپت کرے ۔ جب سماج ورگ ہین ہوجائیگا تو اس ایک ورگ کا اودے ہوگا' سب ورگوں کا نہیں ۔ اِس طرح پھر ہم گھوم گھما کر پھر اُسی ایک نقطے پر پہونچتے ہیں کہ یا سرودے نامی آدرش کا نام ہی غلط ہے اور یا پھر سرودے کی جو روپ ریکھا بتائی جاتی ہے وہ غلط ہے ۔ اور اِس سے یہ بھی نتیجہ نکلتا ہے کہ ایک خاص درشن کو ماننے والے سماج کی زوردار مانگ کے سامنے گھٹنے ٹیک دیتے ہیں ۔ آج کے سماج کی مانگ ہے ورگ ہین سماج۔ سرودے کے نیتا اِس مانگ کو اپنے درشن کے ساتھ جوڑ لیتے ہیں ۔ بیچ کا انتروِرودھ یا تو انہیں دکھائی نہیں پڑتا یا وہ اُسے دیکھنا نہیں چاہتے ۔

سرودے کا زور ویکتی پر بہت ہے۔ ہوسکتا ہے سرودے کا ارتھ یہ لگایا جائے کہ سرودے سماج میں ہر ویکتی کا اودے ہوجائیگا ۔ یہ بات بھی کچھ سمجھ میں نہیں آتی ۔ سارے ویکتیوں کا ایک ساتھ ایک برابر اودے کیسے ہوسکتا ہے ؟ مانسک اور جسمانی اودے کا سمبندھ ارتھ سے بہت ہے ۔ تو اِس کا مطلب یہ ہوگا کہ پہلے آرتھک ڈھانچہ بدلا جائے اور آرتھک ڈھانچہ بدل کر اگر سرودے تک پہونچنا ہے تو ورگ ختم کرنے پڑیں ۔ جب ورگ ختم ہوجائینگے تو پھر وہی سمسیا اُٹھ کھڑی ہوگی۔ تب 'سرو' میں کون شامل ہونگے کہ جن کا اودے ہوگا ؟

ایک بات اور سمجھ میں نہیں آتی۔ وہ یہ ہے۔ سرودئی کہتے ہیں کہ بھگوان سب کچھ ہے اور بھگوان ہی کے نام پر وہ سب کام کرتے ہیں ۔ جب بھگوان سب کچھ ہیں تو ویکتی کچھ بھی نہیں ہے ۔ لیکن سرودئی ویکتی کا نام لےکر بڑا طومار کھڑا کرتے ہیں ۔ کمیونزم کہتا ہے کہ ویکتی سماج کا انگ ہے اور اُسے ہر کام سماج کے ہِت کے لئے کرنا چاہئیے ۔ سماج اِس طرح پردھان ہوجاتا ہے اور ویکتی کا مہتو کم ہوجاتا ہے ۔ سرودئی اس پر شور مچاتے ہیں ۔ وہ کہتے ہیں کہ کمیونزم ویکتی کو ختم کردیتا ہے ۔ پر وہ خود ویکتی کو بھگوان میں ختم کردیتے ہیں ۔ سماج کا نام یدی بھگوان رکھ دیا جائے تو دونوں ایک جگہ کھڑے ہیں۔ لیکن سرودے ویکتی

खुद अपने ऊपर लागू करेगा. जब वर्ग नहीं होगा तो मतलब यह हुआ कि सब एक वर्ग के हो जायेंगे. जब सब एक वर्ग के हो जायेंगे तो 'सर्व' के 'उदय' की गुंजाइश कहां रहेगी ? क्या उस समय दूसरे प्रानी भी शामिल कर लिये जायेंगे ? और अगर नहीं तो सब के उदय का कोई मतलब नहीं है. सारे वर्ग ख़त्म होकर एक वर्ग बन जायेंगे और उसी वर्ग का उदय होगा. कम्युनिस्ट इस वर्ग को मज़दूर कहते हैं. सर्वोदयों ने अभी तक इसे कोई नाम नहीं दिया. व्यौहार और दर्शन में यही विरोध दीख पड़ता है. दर्शन के नाम से ही पता चलता है कि इस आधार पर बने समाज में बहुत से वर्ग होंगे और सब का उदय होगा. पर व्यौहार इस बात से इन्कार करता है. समझ में नहीं आता कि दर्शन को मानूं या व्यवहार को ?

यदि सर्वोदय में बहुत से वर्ग होंगे और सब का उदय होगा तो कोई न कोई क़ानून भी होगा और जब क़ानून होगा तो शासक भी होंगे. और जब शासक होंगे तो सर्वोदय के शासन हीन समाज का सपना झूटा निकलेगा.

सर्वोदियों का कहना है कि आध्यात्मिक शासन होगा जिसे व्यक्ति अपने ऊपर ख़ुद लागू करेगा. लेकिन प्रश्न है कि क्या यह आध्यात्मिक शासन कोई नई चीज़ है ? जवाब साफ़ है. यह चीज़ नई नहीं है. कब से इसका रिवाज पड़ा इसकी चर्चा बेकार है. लेकिन यह बात साफ़ है कि आज से नहीं बल्कि हज़ारहा बरस से इस शासन पर ज़ोर दिया जाता रहा है. जितने अवतार आये, पैग़म्बर आये, रिशी मुनी और वली आये, सब ने इस पर ज़ोर दिया. और यह बात भी साफ़ है कि इन लोगों के पैरोकारों की तादाद सर्वोदय के नेताओं के अनुयाइयों की तादाद से बहुत ज़्यादा है, श्रद्धा भी अपार है. यही नहीं, सर्वोदय के नेता भी इनमें से किसी न किसी के पैरोकार हैं. सोचना यह पड़ेगा कि जहां गुरु हार गये क्या वहां चेले जीत जायेंगे ? इतिहास बताता है कि आध्यात्मिक शासन समाज पर राज नहीं कर सका. जब अध्यात्मिक शासन ने राज शासन की जगह लेनी चाही तो वह कुरूप हो गया. फिर क्या उम्मीद की जाय कि आध्यात्मिक शासन इस युग में काम देगा जबकि जनसमूह उससे वैराग ले रहे हैं.

एक मित्र का यह भी कहना है कि सर्वोदय और वर्ग-हीन समाज में कोई विरोध नहीं है. पहले सर्वोदय होगा फिर वर्गहीन समाज. मतलब यह कि आजकल का जो समाज है उसमें वर्ग हैं. इन सब वर्गों का उदय होता रहेगा और फिर यह वर्ग ग़ायब हो जायेंगे. यहां यह बात समझ में नहीं आती कि सर्वोदय साधन है या साध्य. सर्वोदय दर्शन है और दर्शन आदर्श को जन्म देता है. इसलिये आदर्श भी सर्वोदय है. आदर्श सदा साध्य होता है और जिन



خود اپنے اوپر لاگو کرے گا. جب ورگ نہیں ہوگا تو مطلب یہ ہوا کہ سب ایک ورگ کے ہوجائینگے. جب سب ایک ورگ کے ہوجائینگے تو 'سرو' کے 'اودے' کی گنجائش کہاں رہے گی ؟ کیا اُس سمے دوسرے پرانی بھی شامل کر لیئے جائینگے ؟ اور اگر نہیں تو سب کے اودے کا کوئی مطلب نہیں ہے. سارے ورگ ختم ہوکر ایک ورگ بن جائینگے اور اُسی ورگ کا اودے ہوگا. کمیونسٹ اِس ورگ کو مزدور کہتے ہیں. سرودیوں نے ابھی تک اُسے کوئی نام نہیں دیا. بیوہار اور درشن میں یہی وِرودھ دیکھ پڑتا ہے. درشن کے نام سے پتہ چلتا ہے کہ اِس آدھار پر بنے سماج میں بہت سے ورگ ہونگے اور سب کا اودے ہوگا. پر بیوہار اِس بات سے انکار کرتا ہے. سمجھ میں نہیں آتا کہ درشن کو مانوں یا بیوہار کو ؟

یدی سرودے میں بہت سے ورگ ہونگے اور سب کا اودے ہوگا تو کوئی نہ کوئی قانون بھی ہوگا اور جب قانون ہوگا تو شاسک بھی ہونگے. اور جب شاسک ہونگے تو سرودے کے شاسن ہین سماج کا سپنا جھوٹا نکلے گا.

سرودیوں کا کہنا ہے کہ آدھیاتمک شاسن ہوگا جسے ویکتی اپنے اوپر خود لاگو کریگا. لیکن پرشن ہے کیا یہ ادھیاتمک شاسن کوئی نئی چیز ہے ؟ جواب صاف ہے. یہ چیز نئی نہیں ہے. کب سے اِس کا رواج پڑا اِسکی چرچا بیکار ہے. لیکن یہ بات صاف ہے کہ آج سے نہیں بلکہ ہزارہا برس سے اِس شاسن پر زور دیا جاتا رہا ہے. جتنے اوتار آئے' پیغمبر آئے' رشی منی اور ولی آئے' سب نے اِس پر زور دیا. اور یہ بات بھی صاف ہے کہ اِن لوگوں کے پیروکاروں کی تعداد سرودے کے نیتاؤں کے انویائیوں کی تعداد سے بہت زیادہ ہے' شردھا بھی اپار ہے. یہی نہیں' سرودے کے نیتا بھی اِن میں سے کسی نہ کسی کے پیروکار ہیں. سوچنا یہ پڑیگا کہ جہاں گرو ہار گئے کیا وہاں چیلے جیت جائینگے ؟ اتہاس بتاتا ہے کہ ادھیاتمک شاسن سماج پر راج نہیں کرسکا. جب آدھیاتمک شاسن نے راج شاسن کی جگہ لینی چاہی تو وہ کوروپ ہوگیا. پھر کیا اُمید کی جائے کہ ادھیاتمک شاسن اِس یگ میں کام دے گا جبکہ جن سمود اُس سے ویراگ لے رہے ہیں.

ایک متر کا یہ بھی کہنا ہے کہ سرودے اور ورگ ہین سماج میں کوئی وِرودھ نہیں ہے. پہلے سرودے ہوگا پھر ورگ ہین سماج. مطلب یہ کہ آجکل کا جو سماج ہے اس میں ورگ ہیں. اِن سب ورگوں کا اودے ہوتا رہے گا اور پھر یہ ورگ غائب ہوجائینگے. یہاں یہ بات سمجھ میں نہیں آتی کہ سرودے سادھن ہے یا سادھیہ؟ سرودے درشن ہے اور درشن آدرش کو جنم دیتا ہے. اِس لیئے آدرش بھی سرودے ہے. آدرش سدا سادھیہ ہوتا ہے اور جن

# सर्वोदय, भूदान और हृदय परिवर्तन

( कुमारी सरोज अग्रवाल )

विशय बहुत गम्भीर है और जिन व्यक्तियों का विशय से सम्बन्ध है वह भी आदरनीय और पूज्यनीय हैं, पर अपने विचार उस हद तक पहुंच चुके हैं जहां उन्हें अपने आदरनीय और पूज्यनीय व्यक्तियों के सामने रख देना ही चाहिये. विचारों को दबाने से दो ही नतीजे निकलते हैं. या आगे जानने की उत्कन्ठा सदा के लिये मर जाती है या सोचने विचारने की धारा चक्कर में फंस जाती है और मन और मस्तिश्क की शान्ती को भंग करती है. इसलिये अपने विचार पाठकों के सामने रख रही हूं ताकि गुरुजनों की कृपा से अपने को भटकाव से बचा लूं और हो सके तो जो कुछ मैंने इस सम्बन्ध में सीखा, पढ़ा और सुना है उसका कुछ अंश दूसरों को दे सकूं.

कई बार विचार हुआ कि सर्वोदय, भूदान और हृदय परिवर्तन पर लिखूं. बिना समझे समर्थन करना मेरी आदत नहीं और बिना समर्थक बने आलोचना करना मुझे भाता नहीं. फिर इस समस्या का हल कैसे होता ? जब क़लम उठाती तो ऐसा लगता कि इस विशय पर अभी पढ़ना बहुत कुछ बाक़ी है. जब आगे पढ़ती तो विरोधी विचार खड़े होने लगते. आज भी मैं चौराहे पर हूं. सर्वोदय पुरी जाऊं या उसके विरुद्ध, इसका निर्णय नहीं कर पा रही हूं. विवश होकर चौराहे से लिख रही हूं. इसलिये बातें भी चौमुखी होंगी, विचार संगठित नहीं होंगे, उनकी एक लड़ी नहीं होगी. फिर भी वह विचार मेरे ऐसे बहुत से नौजवानों के हृदय में उठते हैं और इन शंकाओं का समाधान सर्वोदय के नेताओं को ताक़त ही देगा.

मैंने 'सर्वोदय' पर बहुत सोचा, सर्वोदय एक आदर्श है, एक दर्शन है. इसको दर्शन रूप में भी पढ़ा और दर्शन के आधार पर जो व्योहार की इमारत खड़ी की गई है उसको भी खूब देखा. दोनों का मिलान करने पर कुछ विरोधी बातें दिखाई पड़ीं. सर्वोदय में दो शब्द हैं 'सर्व' और 'उदय'. इस तरह सर्वोदय दर्शन का मतलब है सब का उदय. सब में राजा और रंक सब शामिल हैं ( यह मेरा कहना नहीं है. सर्वोदय शास्त्री अपने साहित्य में राजा और रंक दोनों के साथ साथ उदय पर बहुत ज़ोर देते हैं ). लेकिन सर्वोदय को जब रूप दिया जाता है तो कहा जाता है कि सर्वोदय समाज में कोई वर्ग नहीं होगा और न कोई शासन होगा. जो शासन होगा वह आध्यात्मिक होगा और व्यक्ति उसे

# سرودے' بھودان اور ھردے پریورتن

( کماری سروج اگروال )

وشے بہت گمبھیر ہے اور جن ویکتیوں کا وشے سے سمبندھ ہے وہ بھی آدرنیہ اور پوجنیہ ہیں . پر اپنے وچار اس حد تک پہونچ چکے ہیں جہاں انہیں اپنے آدرنیہ اور پوجنیہ ویکتیوں کے سامنے رکھ دینا ہی چاہیئے . وچاروں کو دبانے سے دو ہی نتیجے نکلتے ہیں . یا آگے جاننے کی اُتکنٹھا سدا کے لیئے مر جاتی ہے یا سوچنے وچارنے کی دھارا چکر میں پھنس جاتی ہے اور من اور مستشک کی شانتی کو بھنگ کرتی ہے. اسلیئے اپنے وچار پاٹھکوں کے سامنے رکھ رہی ہوں تاکہ گرو جنوں کی کرپا سے اپنے کو بھٹکاؤ سے بچالوں اور ہوسکے تو جو کچھ میں نے اِس سمبندھ میں سیکھا' پڑھا اور سنا ہے اُس کا کچھ انش دوسروں کو دے سکوں .

کئی بار وچار ہوا کہ سرودے' بھودان اور ھردے پریورتن پر لکھوں . بنا سمجھے سمرتھن کرنا میری عادت نہیں اور بنا سمرتھک بنے آلوچنا کرنا مجھے بھاتا نہیں . پھر اِس سمسیا کا حل کیسے ہوتا ؟ جب قلم اٹھاتی تو ایسا لگتا کہ اِس وشے پر ابھی پڑھنا بہت کچھ باقی ہے . جب آگے پڑھتی تو ورودھی وچار کھڑے ہونے لگتے . آج بھی میں چوراہے پر ہوں . سرودےپوری جاؤں یا اُس کے ورُدھ' اِس کا نرنے نہیں کر پا رہی ہوں. ووش ہوکر چوراہے سے لکھ رہی ہوں . اِس لیئے باتیں بھی چومکھی ہونگی' وچار سنگٹھت نہیں ہونگے' انکی ایک لڑی نہیں ہوگی. پھر بھی وہ وچار میرے ایسے بہت سے نوجوانوں کے ھردے میں اٹھتے ہیں اور اِن شنکاؤں کا سمادھان سرودے کے نیتاؤں کو طاقت ہی دے گا .

میں نے 'سرودے' پر بہت سوچا. سرودے ایک آدرش ہے' ایک درشن ہے . اِسکو درشن روپ میں بھی پڑھا اور درشن کے آدھار پر جو بیوہار کی عمارت کھڑی کی گئی ہے اُسکو بھی خوب دیکھا. دونوں کا میلان کرنے پر کچھ ورودھی باتیں دکھائی پڑیں . سرودے میں دو شبد ہیں—'سرو' اور 'اودے' اِس طرح سرودے درشن کا مطلب ہے سب کا اودے . سب میں راجا اور رنک سب شامل ہیں . (یہ میرا کہنا نہیں ہے . سرودے شاستری اپنے ساہتیہ میں راجا اور رنک دونوں کے ساتھ ساتھ اودے پر بہت زور دیتے ہیں) . لیکن سرودے کو جب روپ دیا جاتاہے تو کہا جاتا ہے کہ سرودے سماج میں کوئی ورگ نہیں ہوگا اور نہ کوئی شاسن ہوگا. جو شاسن ہوگا وہ آدھیاتمک ہوگا اور ویکتی اُسے

को खास मार्ग पर रखा. इसलिये वह भारत की नवयात्रा के प्रथम पथदर्शक माने जा सकते हैं. उन्होंने जो कुछ थोड़ी बातें हमें बताई वह यह हैं :—

1. नई विद्या अंग्रेजों के पास है, वह हमें लेनी चाहिये.

2. उनकी विद्या को सीखने के लिये हमें उनकी भाशा भी सीखनी चाहिये.

3. ऐसा करने में नौकरी इत्यादि का आर्थिक फ़ायदा भी था, जो उसमें प्रेरना रूप हुआ.

4. नयापन ग्रहन करने में धर्म दृष्टि और मूर्ति पूजा इत्यादि बातों पर उन्होंने ध्यान दिया. ब्रह्म समाज की स्थापना की.

5. यह सब अपनत्व की रक्षा करते हुये करना चाहिये. वह ईसाई नहीं बने. फिर भी ईसाई धर्म का उन्होंने पूरा पूरा अभ्यास किया और इसमें ईसाई पादरियों से भी आगे निकल गये.

6. वह समय फ़्रान्स और अमरीकी क्रांति का था. उसकी क़दर उन्होंने की थी. लेकिन भारत के बारे में उनकी श्रद्धा यह रही कि अंग्रेज़ी राज भले आया, उससे लाभ उठायेंगे तो वह सुराज बन सकेगा.

अंग्रेज़ोंने अपना राज किस प्रकार से और किस हद तक व्यवस्थित बनाया उसका साफ़ चित्र देखने के लिये पाठकों को अपनी "हिन्दमां अंग्रेज़ी वेपारशाही" नाम की किताब को सूचित करके, इस बात को अधिक नहीं बढ़ाना चाहता. भारत के व्यापार, रोज़गार पर भी उसका क्या असर होने लगा वह भी इस किताब में मिल सकेगा.

यह सब बातें सबसे पहले बंगाल में साफ़ साफ़ दिखाई दीं. यह आसानी से समझ में आ सकता है, क्योंकि नया राज सबसे पहले यहीं क़ायम हुआ और उसी ढांचे के अनुसार सारे देश में फैला.

---



کو خاص مارگ پر رکھا . اس لیئے وہ بھارت کی نویاترا کے پرتھم پتھ درشک مانے جا سکتے ھیں . انھوں نے جو کچھ تھوڑی باتیں ھمیں بتائیں وہ یہ ھیں :—

1. نئی ودیا انگریزوں کے پاس ھے' وہ ھمیں لینی چاھیئے .

2. اُن کی ودیا کو سیکھنے کے لیئے ھمیں اُن کی بھاشا بھی سیکھنی چاھیئے .

3. ایسا کرنے میں نوکری اتیادی کا آرتھک فائدہ بھی تھا' جو اس میں پریرنا روپ ھوا .

4. نیا پن گرھن کرنے میں دھرم درشٹی اور مورتی پوجا اتیادی باتوں پر انھوں نے دھیان دیا . برھم سماج کی اِستھاپنا کی .

5. یہ سب اپنتو کی رکشا کرتےھوئے کرنا چاھیئے. وہ عیسائی نہیں بنے . پھر بھی عیسائی دھرم کا انھوں نے پورا پورا ابھیاس کیا اور اس میں عیسائی پادریوں سے بھی آگے نکل گئے .

6. وہ سمے فرانس اور امریکی کرانتی کا تھا . سکی قدر انھوں نے کی تھی . لیکن بھارت کے بارے میں اُن کی شردھا یہ رھی کہ انگریزی راج بھلے آیا اُس سے لابھ اُٹھائینگے تو وہ سوراج بن سکے گا .

انگریزوں نے اپنا راج کس پرکار سے اور کس حد تک ویوستھت بنایا اُس کا صاف چتر دیکھنے کے لیئے پاٹھکوں کو اپنی " ھندما انگریزی ویوپار شاھی " نام کی کتاب کو سوچت کر کے' اِس بات کو ادھک نہیں بڑھانا چاھتا . بھارت کے ویوپار' روزگار پر بھی اُسکا کیا اثر ھونے لگا وہ بھی اِس کتاب میں مل سکے گا .

یہ سب باتیں سب سے پہلے بنگال میں صاف صاف دکھائی دیں. یہ آسانی سے سمجھ میں آ سکتا ھے' کیونکہ نیا راج سب سے پہلے قائم ھوا اور اُسی ڈھانچے کے انوسار سارے دیش میں پھیلا .

बुद्धिवादी का था. अन्य देशों के साथ व्यापार और उससे प्राप्त धन, उन सुधारों को उस समय नया स्वरूप दे रहा था. लेकिन तब इस बात का किसी को खास खयाल न था. यह नया प्रभाव प्रगतिशील था, ऐसा आज हम कह सकते हैं.

भारती प्रजा को ईसाई बनाने में अंग्रेज भी रस लेते थे. यह ठीक है कि जितना पोर्चुगीज़ प्रजा उसमें रस लेती थी उतना वह नहीं लेते थे. फिर भी उन्होंने भारत में ईसाई मिशन शुरू किये. उस समय बंगाल में डच लोगों की यह प्रवृत्ति लम्बे अरसे से चल रही थी. अंग्रेज़ अपने व्यापार को ही मुख्य समझते थे. फिर भी धर्मान्तर की उस प्रवृत्ति का त्याग नहीं कर सकते थे. गोरी प्रजा का नई दुनिया में जो प्रयास शुरू हुआ वह इस्लाम का सामना करने के लिये और उसे दबाने के लिये. ऐसा करते करते उन्हें व्यापार की सूझी और उसमें उनके हरीफ़ होकर उन्होंने इस्लामी प्रजा को पीछे हटाया. इस में उन्हें सफलता प्राप्त हुई. इनके धर्म बदलाव के काम का जो मूल आवेग था वह केवल नाम मात्र के लिये चालू रहा.

मिशनरियों ने भारत के हिन्दुओं में ईसाई धर्म का प्रचार करने के प्रयत्न शुरू किये. प्रजा जीवन पर इसका प्रभाव तुरंत नज़र आने लगा, क्योंकि जैसे पहले हम कह चुके हैं—हम लोग संस्कृति के बारे में जागरूक प्रजा हैं.

यह प्रभाव सामाजिक ही नहीं बल्कि राजकाजी भी था. हमारे समाजिक रस्मो-रिवाज और धार्मिक अचार वगैरा परधर्मियों की आलोचना के पात्र बने. हमारी परम्पराओं पर नई आलोचनायें होने लगीं.

खानपान, लगन इत्यादि सभी चीज़ों में कुछ नया ढंग देखने को मिलने लगा. गोरों के कारन, शराब भी एक प्रतिष्ठित चीज़ बन सकती है, इसका भी हमें अनुभव हुआ. परिनाम स्वरूप शराब का उपयोग बढ़े, यह स्वाभाविक ही था और कपड़े आदि बातों में भी वैसे ही परिवर्तन का होना स्वभाविक था.

अंग्रेज़ों के आने से जो नया युग प्रारंभ हुआ उसके बारे में कुछ और भी ऐसी बातें बताई जा सकती हैं. यह चीज़ें उस समय की ऐतिहासिक सामग्री की छान बीन करके अधिक साफ़ चौकस और पूरी करने जैसी हैं. 1757 ईसवी से लेकर 1800 ईसवी तक के इस समय की परिस्थिति का संशोधन करके उस समय का सरेख इतिहास अब समाज के सामने रखना चाहिये.

राजा राम मोहन राय ने इस नये युग में पुनरुत्थान का काम किया. भारत को किस प्रकार का रूप रखना चाहिये उसके एक दो मुख्य मुद्दे तय करके उन्होंने प्रजा जीवन



بدھی وادی کا تھا . انیہ دیشوں کے ساتھ ویاپار اور اس سے پراپت دھن' ان سدھاروں کو اس سمے نیا روپ دے رہا تھا . لیکن تب اس بات کا کسی کو خاص خیال نہ تھا . یہ نیا پربھاؤ پرگتی شیل تھا' ایسا آج ہم کہہ سکتے ہیں .

بھارتی پرجا کو عیسائی بنانے میں انگریز بھی رس لیتے تھے . یہ ٹھیک ہے کہ جتنا پورچگیز پرجا اس میں رس لیتی تھی اتنا وہ نہیں لیتے تھے . پھر بھی انہوں نے بھارت میں عیسائی مشن شروع کیئے . اس سمے بنگال میں ڈچ لوگوں کی یہ پرورتی لمبے عرصے سے چل رہی تھی. انگریز اپنے ویاپار کو ہی مکھ سمجھتے تھے. پھر بھی دھرمانتر کی اس پرورتی کا تیاگ نہیں کر سکتے تھے . گوری پرجا کا نئی دنیا میں جو پریاس شروع ہوا وہ اسلام کا سامنا کرنے کے لیئے اور اسے دبانے کے لیئے . ایسا کرتے کرتے انہیں ویاپار کی سوجھی اور اس میں ان کے حریف ہوکر انہوں نے اسلامی پرجا کو پیچھے ہٹایا . اس میں انہیں سپھلتا پراپت ہوئی. ان کے دھرم بدلاؤ کے کام کا جو مول آویگ تھا وہ کیول نام ماتر کے لیئے چالو رہا .

مشنریوں نے بھارت کے ہندوؤں میں عیسائی دھرم کا پرچار کرنے کے پریتن شروع کیئے . پرجا جیون پر اس کا پربھاؤ ترنت نظر آنے لگا' کیونکہ جیسے پہلے ہم کہہ چکے ہیں — ہم لوگ سنسکرتی کے بارے میں جاگروک پرجا ہیں .

یہ پربھاؤ سماجک ہی نہیں بلکہ راجکاجی بھی تھا . ہمارے سماجک رسم و رواج اور دھارمک آچار پردھرمیوں کی آلوچنا کے پاتر بنے. ہماری پرمپراؤں پر نئی آلوچنائیں ہونے لگیں .

کھان پان' لگن اتیادی سبھی چیزوں میں کچھ نیا ڈھنگ دیکھنے کو ملنے لگا . گوروں کے کارن' شراب بھی ایک پرتشٹھت چیز بن سکتی ہے' اس کا ہمیں انوبھو ہوا. پرنام سوروپ شراب کا اپیوگ بڑھے' یہ سوابھاوک ہی تھا اور کپڑے آدی باتوں میں بھی ویسے ہی پریورتن کا ہونا سوابھاوک تھا .

انگریزوں کے آنے سے جو نیا یگ پرارمبھ ہوا اس کے بارے میں کچھ اور بھی ایسی باتیں بتائی جا سکتی ہیں . یہ چیزیں اس سمے کی اتہاسک سامگری کی چھان بین کر کے ادھک صاف' چوکس اور پوری کرنے جیسی ہیں. 1757 عیسوی سے لے کر 1800 عیسوی تک کے اس سمے کی پرستھتی کا سنشودھن کر کے اس سمے کا سریکھ اتہاس اب سماج کے سامنے رکھنا چاہیئے .

راجہ رام موہن رائے نے اس نئے یگ میں پنراتھان کا کام کیا . بھارت کو کس پرکار کا روپ رکھنا چاہیئے اس کے ایک دو مکھیہ مدے طے کر کے انہوں نے پرجا جیون

1830 ईसवी तक तो आज के पच्छिमी पकिस्तान को छोड़ कर क़रीब क़रीब सारा भारत अंग्रेज़ों के हाथ में चला गया था.

यह नया राज शुरू में हमें अखरा नहीं, बलिक संक्रांति काल की अव्यवस्था और पिंडारों के जुलम के बाद शान्ति प्रदान करने वाला मालूम हुआ और इसी वजह से जब यहां अंग्रेज़ी राज क़ायम हुआ तो उसमें हिन्दुस्तानी भी शामिल हुए और उन्होंने यह महसूस नहीं किया कि वह अपने देश की गुलामी को स्थिर करने में हिस्सा ले रहे हैं.

लेकिन नया युग अपने साथ नये प्रश्न और नई उथल पुथल तो लाया ही था. सचमुच एक ऐसी भारी सामाजिक क्रांति हुई थी जिसने अंत में सांस्कृतिक स्वरूप धारन किया और प्रजा के जीवन पर असर डाला. उसके मुख्य मुद्दे हमें देखने चाहियें.

अंग्रेज़ राजकर्ता भारत में रह कर राज नहीं करते थे. शुरू में हिमालय, नेपाल और ऐसे ही दूसरे पहाड़ी प्रदेशों में रहने और बस्तियों की स्थापना करने का इरादा था, लेकिन वह टिक नहीं पाया. भारत के पैसों से पांच पांच साल के बाद अंग्रेज़ घर जाते रहे और भारत पर राज करते रहे. मुसलमान जिस तरह भारत में रहकर भारत के बन गये, वैसे वह कभी भारत के नहीं बन पाए. इससे अंग्रेज़ों का राज वाक़ई परराज कहा जा सका और ऐसा बना.

राजकर्ताओं की हैसियत से अंग्रेज़ अपने आपको ऊंचा समझें यह स्वाभाविक है. ऊंच नीच के भाव से भरे पूरे भारत के सामाजिक वातावरन में तो उसकी संभावना अधिक थी. इस प्रकार अंग्रेज़ों के राज में भेद भाव और देशवासियों के लिये हीन भाव के बीज रोपे गये.

अफरीक़ा में जिस तरह बस्तियां स्थापित हुईं और अंग्रेज़ वहां बसे, ऐसा भारत में नहीं हुआ. इस वजह से आज जिस प्रकार दक्खनी अफ़्रीक़ा, केन्या वग़ैरा देशों में गोरी प्रजा है, उस प्रकार भारत में भारती गोरी प्रजा की बस्ती नहीं हैं, अलबत्ता ऐन्गलो इन्डियन जाति भारत में ज़रूर पैदा हुई, लेकिन उसका कारन भिन्न है.

उस समय अंग्रेज़ी राज की नौकरियों में, व्यापार में और लश्कर में भारती प्रजा के सहयोग की ज़रूरत थी. इसके लिये एक नये मध्यम वर्ग का निर्मान होने लगा. जिसका असर भारत के सामाजिक जीवन पर भिन्न भिन्न प्रकार से हुआ. दोनों प्रजाएं आपस में मिलने लगीं, लेकिन समानता के नाते नहीं. भारत वासी कुछ हीन भाव को लेकर चले वह स्वाभाविक ही था.

अंग्रेज़ प्रजा अपने साथ योरोप का नया सुधार लेकर आई थी. विज्ञान और धर्म के बारे में उसका स्वरूप



1830 عیسوی تک تو آج کے پچھمی پاکستان کو چھوڑ کر قریب قریب سارا بھارت انگریزوں کے ہاتھ میں چلا گیا تھا۔

یہ نیا راج شروع میں ہمیں اکھرا نہیں، بلکہ سنکرانتی کال کی اویوستھا اور پنڈاروں کے ظلم کے بعد شانتی پردان کرنیوالا معلوم ہوا اور اسی وجہ سے جب یہاں انگریزی راج قائم ہوا تو اس میں ہندستانی بھی شامل ہوئے اور انہوں نے یہ محسوس نہیں کیا کہ وہ اپنے دیش کی غلامی کو استھر کرنے میں حصہ لے رہے ہیں۔

لیکن نیا یگ اپنے ساتھ نئے پرشن اور نئی اتھل پتھل تو لایا ہی تھا. سچ مچ ایک ایسی بھاری سماجک کرانتی ہوئی تھی جس نے انت میں سانسکرتک سوروپ دھارن کیا اور پرجا کے جیون پر اثر ڈالا . اس کے مکھ مدے ہمیں دیکھنے چاہئیں۔

انگریز راج کرتا بھارت میں رہکر راج نہیں کرتے تھے . شروع میں ہمالیہ، نیپال اور ایسے ہی دوسرے پہاڑی پردیشوں میں رہنے اور بستیوں کی استھاپنا کرنیکا ارادہ تھا، لیکن وہ ٹک نہیں پایا . بھارت کے پیسوں سے پانچ پانچ سال کے بعد انگریز گھر جاتے رہے اور بھارت پر راج کرتے رہے . مسلمان جس طرح بھارت میں رہکر بھارت کے بن گئے، ویسے وہ کبھی بھارت کے نہیں بن پائے . اس سے انگریزوں کا راج وقعی پرراج کہا جاسکا اور ایسا بنا .

راجکرتاؤں کی حیثیت سے انگریز اپنے آپ کو اونچا سمجھیں یہ سوابھاوک ہے . اونچ نیچ کے بھاؤ سے بھرے پورے بھارت کے سماجک واتاورن میں تو اسکی سمبھاؤنا ادھک تھی . اس پرکار انگریزوں کے راج میں بھید بھاؤ اور دیش واسیوں کے لئے ہین بھاؤ کے بیج روپے گئے .

افریقہ میں جس طرح بستیاں استھاپت ہوئیں اور انگریز وہاں بسے، ایسا بھارت میں نہیں ہوا . اس وجہ سے آج جس پرکار دکھنی افریقہ، کینیا وغیرہ دیشوں میں گوری پرجا ہے، اس پرکار بھارت میں بھارتی گوری پرجا کی بستی نہیں ہے، البتہ اینگلوانڈین جاتی بھارت میں ضرور پیدا ہوئی، لیکن اسکا کارن بھن ہے .

اس سمے انگریزی راج کو نوکریوں میں، بیوپار میں اور لشکر میں بھارتی پرجا کے سہیوگ کی ضرورت تھی . اس کے لئے ایک نئے مدھیم ورگ کا نرمان ہونے لگا، جس کا اثر بھارت کے سماجک جیون پر بھن بھن پرکار سے ہوا . دونوں پرجائیں آپس میں ملنے لگیں، لیکن سمانتا کے ناتے نہیں . بھارت واسی کچھ ہین بھاؤ کو لیکر چلے وہ سوابھاوک ہی تھا .

انگریز پرجا اپنے ساتھ یورپ کا نیا سدھار لے کر آئی تھی . وگیان اور دھرم کے بارے میں اس کا سروپ

हमारा यक़ीन है कि सियासी आज़ादी की मुल्क को ज़रूरत थी और उसके निमित्त बापू पैदा हुए. उसी तरह आर्थिक आज़ादी की ज़रूरत है और उसके निमित्त विनोबा हो रहे हैं. सियासी आज़ादी की तरह आर्थिक आज़ादी भी आकर रहेगी.

—सुरेश रामभाई



ھمارا یقین ھے کہ سیاسی آزادی کی ملک کو ضرورت تھی اور اس کے نمت باپو پیدا ھوئے . اسی طرح آرتھک آزادی کی ضرورت ھے اور اس کے نمت ونوبا ھو رھے ھیں. سیاسی آزادی کی طرح آرتھک آزادی بھی آکر رھیگی .

—سریش رام بھائی

# राजा राम मोहन राय का युग

लेखक—मगन भाई देसाई

अनुवादक—कनुभाई नानालाल पटेल

राजा राम मोहन राय की पीढ़ी का समय उन्नीसवीं सदी का प्रारम्भ काल था. उस समय बंगाल में अंग्रेज़ों के नये राज का कारोबार ठीक ढंगसे जम चुका था. जहां तक बंगाल का सवाल है सन 1757 के बाद के दस साल में वहां राज्यक्रान्ति समाप्त हो चुकी थी और उस के बाद वहां राज का कारोबार व्यवस्थित करने के लिये हेस्टिंग्ज़ और कार्नवालीस जैसे चतुर अंग्रेज़ों ने काम किया था. पहले के नवाबी राज और मुग़ल राज में जो बदइन्तज़ामी थी उसके मुक़ाबले में यह नया ज़माना किसी हद तक अच्छा और स्थिर मालूम होता था. जनता के कर्ता धर्ता अंग्रेज़ों से मिलकर व्यापार धंधों से फ़ायदा उठा सकते थे और जमाबंदी के सिलसिले में कार्नवालीस ने ज़मींदार वर्ग की रचना भी कर ली थी.

मुग़ल सम्राटों में औरंगजेब ने हमारी प्रजा के धर्म और संस्कृति में दख़ल देकर ग़लती की थी. इस सम्बन्ध में हमारी प्रजा जागरूक है, यहां तक कि ज़रा ज़्यादा नाज़ुक प्रकृति की भी कही जा सकती है. इससे हम ने उस राज को जहां तहां से तोड़ डाला. नई रचना करने की ज़िम्मेदारी उस समय अगर किसी की थी भी तो वह मराठों की कही जा सकती है. लेकिन उस ज़िम्मेदारी को उठाने में वह नाकामयाब सिद्ध हुए. 1800 ईसवी तक तो उस राज का अंतिम समय नज़र आने लगा. राजकाजी दृष्टि से उस समय भारत छिन्न भिन्न था. उन्नीसवीं सदी के पहले पचीस सालों तक तो सारे रजवाड़े क़रीब क़रीब ख़त्म हो चुके थे और पूरा भारत अंग्रेज़ों के हाथ में चला गया था.

# راجا رام موھن رائے کا یگ

لیکھک—مگن بھائی دیسائی

انوادک—کانو بھائی نانا لال پٹیل

راجا رام موھن رائے کی پیڑھی کا سمے انیسویں صدی کا پرارمبھ کال تھا . اس سمے بنگال میں انگریزوں کے نئے راج کا کاروبار ٹھیک ڈھنگ سے جم چکا تھا . جہاں تک بنگال کا سوال ھے سن 1757 کے بعد کے دس سال میں وھاں راج کرانتی سماپت ھوچکی تھی اور اس کے بعد وھاں راج کا کاروبار ویوستھت کرنے کے لیئے ھیسٹنگز اور کارنوالیس جیسے چتر انگریزوں نے کام کیا تھا . پہلے کے نوابی راج اور مغل راج میں جو بدانتظامی تھی اس کے مقابلے میں یہ نیا زمانہ کسی حد تک اچھا اور استھر معلوم ھوتا تھا . جنتا کے کرتا دھرتا انگریزوں سے ملکر بیوپار دھندھوں سے فائدہ اٹھا سکتے تھے اور جمع بندی کے سلسلے میں کارنوالیس نے زمیندار ورگ کی رچنا بھی کرلی تھی .

مغل سمراٹوں میں اورنگزیب نے ھماری پرجا کے دھرم اور سنسکرتی میں دخل دے کر غلطی کی تھی . اس سمبندھ میں ھماری پرجا جاگروک ھے یہاں تک کہ ذرا زیادہ نازک پرکرتی کی بھی کہی جاسکتی ھے . اس سے ھم نے اس راج کو جہاں تہاں سے توڑ ڈالا . نئی رچنا کرنے کی ذمہ داری اس سمے اگر کسی کی تھی بھی تو وہ مراٹھوں کی کہی جاسکتی ھے . لیکن اس ذمہ داری کو اٹھانے میں وہ ناکامیاب سدھ ھوئے . 1800 عیسوی تک تو اس راج کا انتم سمے نظر آنے لگا . راجکاجی درشٹی سے اس سمے بھارت چھن بھن تھا . انیسویں صدی کے پہلے پچیس سالوں تک تو سارے رجواڑے قریب قریب ختم ھوچکے تھے اور پورا بھارت انگریزوں کے ھاتھ میں چلاگیا تھا.

वह मानता है कि यह बातें सही हैं. वह पूछता है कि ऐसी सूरत में क्या किया जाये. हम उससे अपील करते हैं :

आप इस गम्भीर सवाल पर विचार करें. हमारा ख्याल है कि अब इस देश में धरती की खरीद बिक्री नहीं होनी चाहिये, आपको जितनी जरूरत हो खेती करें मगर खेत पर मालकी अपनी न रहकर गांव की कर दीजिये. खेत गांव का, खेती आपकी. अगर आपको यह बात मंजूर हो तो अपनी जमीन का कुछ हिस्सा दान दीजिये.

वह उस पर गौर करता है और फिर बखुशी दान देता है. अब यह क्या है ? "हृदय परिवर्तन" है या "नैतिक दबाव" है या "समझ बूझ का काम" है ? हां, इसमें हृदय परिवर्तन जरूर है. मगर असल में यह किसान के घर की तरह, उनका हमदर्द बनकर, उनके सुख दुख में शरीक होना है. वह महसूस करता है कि अगर 'खेत गांव खेती आपकी" वाली चीज मैं मान लेता हूं और मेरी तरह दूसरे सभी गरीब या दुखी किसान मान लेते हैं तो उसके मानी होते हैं कि गांव के क़रीब अस्सी फ़ीसदी लोग उसे मान गये. फिर' आजकल लोकशाही या वोट का जमाना है. अस्सी के आगे बीस की नहीं चलेगी. इस तरह गांव के अन्दर की कुल जमीन गांव की हो जायेगी और जिसे जैसी जरूरत होगी मिलकर आपस में बांट लेंगे. इस तरह गरीब का दान "खेत गांव का खेती आपकी" वाले ख्याल के लिये सम्मति का दान है.

यही कारन है कि गरीबों ने ज्यादा तादाद में दान दिया. उन्हें देना ही चाहिये. इस वक़्त जरूरत है मुल्क को नीचे से, बुनियाद से तामीर करने की. इस काम में बैल वाले या बेजमीन किसानों का जितना ज्यादा हाथ लगे उतना ही अच्छा है. अगर हाथी घोड़े वाले या अमीर लोग अपना सहयोग नहीं देते तो न दें. कब तक नहीं देंगे ? अगर वह बिलकुल ही अलग रहते हैं तो नीचे वाले उनके यहां काम करने से इन्कार कर सकते हैं, उनके छक्के छुड़ा सकते हैं, क्योंकि नीचे वालों के बल पर ही, उनके कंधे पर ही, उनके सहारे से ही वह जीते हैं. इसलिये यह बड़ी ख़ुशी की बात है कि भूदान आन्दोलन ने ग़रीबों को मौक़ा दिया और वह आगे बढ़ कर नये भारत की नई रचना के काम में हिस्सा ले रहे हैं. इस से समाज के पुराने मूल्य बदलेंगे, नये मूल्य क़ायम होंगे. जिस तरह अंग्रेजी सरकार के पैरोकारों, सर, या खानबहादुरों या रायबहादुरों के कारन हिन्दुस्तान की सियासी आजादी की नाव नहीं ठैहरी, उसी तरह चन्द बड़े जमीनदारों या पूंजीपतियों के कारन आर्थिक आजादी की नाव नहीं ठैहरेगी.



وہ مانتا ہے کہ یہ باتیں صحیح ہیں ۔ وہ پوچھتا ہے کہ ایسی صورت میں کیا کیا جائے ۔ ہم اس سے اپیل کرتے ہیں :

آپ اس گمبھیر سوال پر وچار کریں ۔ ہمارا خیال ہے کہ اب اس دیش میں دھرتی کی خرید بکری نہیں ہونی چاہیئے ۔ آپ کو جتنی ضرورت ہو کھیتی کریں مگر کھیت پر مالکی اپنی نہ رکھکر گاؤں کی کر دیجئے ۔ کھیت گاؤں کا' کھیتی آپکی ۔ اگر آپکو یہ بات منظور ہو تو اپنی زمین کا کچھ حصہ دان دیجئے ۔

وہ اس پر غور کرتا ہے اور پھر بخوشی دان دیتا ہے ۔ اب یہ کیا ہے ؟ "ہردے پریورتن" ہے یا 'نیتک دباؤ" ہے یا "سمجھ بوجھ کا کام" ہے؟ ہاں' اس میں ہردے پریورتن ضرور ہے ۔ مگر اصل میں تو یہ کسان کے گھر کی طرح' اس کا ہمدرد بن کر' اس کے سکھ دکھ میں شریک ہونا ہے ۔ وہ محسوس کرتا ہے کہ اگر "کھیت گاؤں کا کھیتی آپکی" والی چیز میں مان لیتا ہوں اور میری طرح دوسرے سبھی غریب یا دکھی کسان مان لیتے ہیں تو اس کے معنی ہوتے ہیں کہ گاؤں کے قریب اسی فیصدی لوگ اسے مان گئے ۔ پھر' آجکل لوکشاہی یا ووٹ کا زمانہ ہے ۔ اسی کے آگے بیس کی نہیں چلیگی ۔ اس طرح گاؤں کے اندر کی کل زمین گاؤں کی ہو جائیگی اور جسے جیسی ضرورت ہوگی مل کر آپس میں بانٹ لینگے ۔ اس طرح غریب کا دان "کھیت گاؤں کا کھیتی آپکی" والے خیال کے لئے سمّتی کا دان ہے ۔

یہی کارن ہے کہ غریبوں نے زیادہ تعداد میں دان دیا ۔ انہیں دینا ہی چاہیئے ۔ اس وقت ضرورت ہے ملک کو نیچے سے' بنیاد سے تعمیر کرنے کی ۔ اس کام میں بیل والے یا بےزمین کسانوں کا جتنا زیادہ ہاتھ لگے اتنا ہی اچھا ہے ۔ اگر ہاتھی گھوڑے والے یا امیر لوگ اپنا سہیوگ نہیں دیتے تو نہ دیں ۔ کب تک نہیں دینگے؟ اگر وہ بالکل ہی الگ رہتے ہیں تو نیچے والے ان کے یہاں کام کرنے سے انکار کر سکتے ہیں' ان کے چھکے چھڑا سکتے ہیں' کیونکہ نیچے والوں کے بل پر ہی' ان کے کندھے پر ہی' ان کے سہارے سے ہی وہ جیتے ہیں ۔ اس لئے یہ بڑی خوشی کی بات ہے کہ بھودان آندولن نے غریبوں کو موقع دیا اور وہ آگے بڑھ کر نئے بھارت کی نئی رچنا کے کام میں حصہ لے رہے ہیں ۔ اس سے سماج کے پرانے مولیہ بدلینگے' نئے مولیہ قائم ہونگے ۔ جس طرح انگریزی سرکار کے پیروکاروں' سر یا خان بہادروں یا رائے بہادروں کے کارن ہندستان کی سیاسی آزادی کی ناؤ نہیں ٹھہری' اسی طرح چند بڑے زمینداروں یا پونجی پتیوں کے کارن آرتھک آزادی کی ناؤ نہیں ٹھہریگی ۔

जा रहा है. इसलिये ख्याल पैदा होता है कि देने वाले का दिल बदल रहा है या उसका "हृदय परिवर्तन" हो रहा है जो वह लेने के बजाय देता है. इसमें काफ़ी सच्चाई भी है. लेकिन "हृदय परिवर्तन" के बारे में कुछ लोगों का ख्याल है कि यह एक जादू है जिसका न कोई तरीक़ा है न विज्ञान, जो अचानक अपना रंग दिखाता है और शिकार करता है. दूसरे लोग यह मानते हैं कि उसमें मुख़ालिफ़ मज़हबी भावनाओं या इख़लाक़ी रुझानों पर बेजा दबाव डाला जाता है. शायद इसी वजह से आचार्य नरेन्द्र देव ने कहा कि भूदान का दायरा महदूद है और वह कोई नया जीवन देश को नहीं दे सकता. बहुत नम्रता के साथ हमारी अर्ज़ यह है कि "हृदय परिवर्तन" एक प्रक्रिया का नाम है जिसकी वैज्ञानिक बुनियाद है और अपना सच्चा तर्क है और जो दूसरे किसी भी काम या सिलसिले की तरह अमली और व्योहारिक है.

मगर सच बात यह है कि भूदान के काम का जो थोड़ा बहुत अनुभव हमने किया है उसमें "हृदय परिवर्तन" लफ़्ज़ों के इस्तेमाल की नौबत ही नहीं आई. वैसे हमने जानकर भी उनका इस्तेमाल नहीं किया. लेकिन हमारा ख्याल है कि इससे फ़ायदा ज्यादा ही हुआ. सो क्यों और कैसे ?

अपने देहात की आबादी को हम मोटे तौर पर चार हिस्सों में बांट सकते हैं : (1) बड़े ज़मींदार या हाथी वाले, (2) सुखी ज़मींदार या घोड़े वाले, (3) ग़रीब किसान या बैल वाले और (4) खेतिहर मज़दूर या बेज़मीन. किसी गांव में उनकी औसत आबादी यह है :

5 : 12 : 43 : 40

अब उन सब से भूदान आन्दोलन क्या उम्मीद करता है. हाथी वाले ज़मींदार थोड़ी ज़मीन रखकर ज्यादा से ज्यादा ज़मीन दान में दें, घोड़े वाले भाई अपनी ज़मीन का कम से कम छटा हिस्सा दान में दें और बैल वाले संकेत रूप में थोड़ी सी ज़मीन दें. मान लीजिये कि हाथी वाले और घोड़े वाले नहीं सुनते. अब चलें बैल वाले के पास. उससे हम कहते हैं :

(1) आप के पास जो थोड़ी सी ज़मीन है उसे हाथी वाले या घोड़े वाले हथिया लेना चाहते हैं.

(2) शादी ब्याह या दूसरे ख़र्चे के मौक़े पर आप अपनी ज़मीन रेहन रखते और फिर उसे खो बैठते हैं.

(3) अगर गांव में होने वाले कच्चे माल को बाहर शहरों या कारख़ानों में पक्का किया जाता है और आप बाहर का माल ही लेते रहे तो ग़ल्ला तीन सेर का हो या तीन छटांक का आपको क्या बचने वाला है ?



جارہا ہے۔ اسلئے خیال پیدا ہوتا ہے کہ دینے والے کا دل بدل رہا ہے یا اس کا ''ہردے پریورتن'' ہو رہا ہے جو وہ لینے کے بجائے دیتا ہے ۔ اس میں کافی سچائی بھی ہے ۔ لیکن ''ہردے پریورتن'' کے بارے میں کچھ لوگوں کا خیال ہے کہ یہ ایک جادو ہے جس کا نہ کوئی طریقہ ہے نہ وگیان' جو اچانک اپنا رنگ دکھاتا ہے اور شکار کرتا ہے ۔ دوسرے لوگ یہ مانتے ہیں کہ اس میں مخالف مذہبی بھاؤناؤں یا اخلاقی رجحانوں پر بیجا دباؤ ڈالا جاتا ہے۔ شاید اسی وجہ سے آچاریہ نریندردیو نے کہا کہ بھودان کا دائرہ محدود ہے اور وہ کوئی نیا جیون دیش کو نہیں دے سکتا ۔ بہت نمرتا کے ساتھ ہماری عرض یہ ہے کہ ''ہردے پریورتن'' ایک پرکریا کا نام ہے جس کی ویگیانک بنیاد ہے اور اپنا سچا ترک ہے اور جو دوسرے کسی بھی کام یا سلسلے کی طرح عملی اور ویوہارک ہے ۔

مگر سچ بات یہ ہے کہ بھودان کے کام کا جو تھوڑا بہت انوبھو ہم نے کیا ہے اس میں ''ہردے پریورتن'' لفظوں کے استعمال کی نوبت ہی نہیں آئی ۔ ویسے ہم نے جانکر بھی ان کا استعمال نہیں کیا ۔ لیکن ہمارا خیال ہے کہ اس سے فائدہ زیادہ ہی ہوا ۔ سو کیوں اور کیسے ؟

اپنے دیہات کی آبادی کو ہم موٹے طور پر چار حصوں میں بانٹ سکتے ہیں : (1) بڑے زمیندار یا ہاتھی والے' (2) سکھی زمیندار یا گھوڑے والے' (3) غریب کسان یا بیل والے اور (4) کھیتیہر مزدور یا بےزمین ۔ کسی گاؤں میں انکی اوسط آبادی یہ ہے :

5 : 12 : 43 : 40

اب ان سب سے بھودان آندولن کیا اُمید کرتا ہے ۔ ہاتھی والے زمیندار تھوڑی زمین رکھکر زیادہ سے زیادہ زمین دان میں دیں' گھوڑے والے بھائی اپنی زمین کا کم سے کم چھٹا حصہ دان میں دیں' اور بیل والے سنکیت روپ میں تھوڑی سی زمین دیں ۔ مان لیجیئے کہ ہاتھی والے اور گھوڑے والے نہیں سنتے۔ اب چلیں بیل والے کے پاس۔ اس سے ہم کہتے ہیں :

(1) آپ کے پاس جو تھوڑی سی زمین ہے اسے ہاتھی والے یا گھوڑے والے ہتھیا لینا چاہتے ہیں ۔

(2) شادی بیاہ یا دوسرے خرچ کے موقعہ پر آپ اپنی زمین رہن رکھتے اور پھر اسے کھو بیٹھتے ہیں ۔

(3) اگر گاؤں میں ہونے والے کچے مال کو باہر شہروں یا کارخانوں میں پکا کیا جاتا ہے اور آپ باہر کا مال ہی لیتے رہے تو غلہ تین سیر کا ہو یا تین چھٹانک کا آپ کو کیا بچنے والا ہے ؟

को क्या, दूसरों को क्या, सभी लोगों को इसे अपनी तरफ खींच लेना होगा.

अब हम हृदय परिवर्तन के सवाल पर आते हैं. शुरू में ही यह बता देना बहतर होगा कि भूदान यज्ञ की तहरीक एक ज़रिया ( साधन ) है न कि मक़सद. पिछले बौद्ध गया सम्मेलन के मौक़े पर विनोबा जी ने ख़ुद ही कहा था कि मेरी ज़िन्दगी "भूदान यज्ञ मौलक और ग्रामोद्योगिक प्रधान अहिंसात्मक क्रान्ति' के लिये समर्पित है इस क्रान्ति का मक़सद इन्सानी या सर्वोदय समाज या 'समरस' दंड ( सज़ा ) से अलग और शासन-मुक्त समाज क़ायम करना है. कौन नहीं जानता कि सर्वोदय विचार धारा का एक अपना दर्शन है, अपना शास्त्र है. यह ज़रूर है कि वह शास्त्र पच्छिमी मार्क्सवादी, साम्राजवादी या लोकशाही या लोकसुखी ( Welfare ) निज़ामों के शास्त्र वग़ैरा से मुख़्तलिफ़ है और अभी इस सम्बन्ध में ज्यादा साहित्य या अदब तैयार नहीं है. लेकिन दूसरी तरफ़, सच यह भी है कि वेदों से लेकर क़ुरान शरीफ़ तक, पैग़म्बरों ने जो कुछ कहा या उनके अलावा सन्तों की जो बानी है वह इन्सानी समाज या सर्वोदय समाज का ही साहित्य है.

दूसरे यह भी नहीं भूलना चाहिये कि भूदान आन्दोलन का मक़सद बेज़मीन आदमी को ज़मीन देकर पूरा नहीं हो जाता. वह तो उसका एक बहुत छोटा हिस्सा है. आज सारी दुनिया में ज़मीन ख़रीदी बेची जाती है, यानी तिजारत की चीज़ बन गई है. हिन्दुस्तान में इस मर्ज़ ने अंग्रेज़ों के आने के बाद ही जोर पकड़ा. अंग्रेज़ों ने पैसा प्रधान आर्थिक बन्दोबस्त क़ायम करके हम भारत माता की सन्तान को भारत माता का ही ब्योपारी बना दिया ! भूदान आन्दोलन इस ज्यादती को मिटा कर, धरती माता को 'माता' या पंच महाभूत की गद्दी पर फिर से बिठाना चाहता है. कहने की ज़रूरत नहीं कि अगर धरती का ब्यौपार देश में कुछ अर्से तक आज की तरह और जारी रहा तो देश तबाह हुए बिना नहीं रहेगा. आगे बढ़कर भूदान आन्दोलन का मक़सद है कि हर आदमी मेहनत करे और पैदावार करने का साधन उसे हासिल हो, मुल्क का हर गांव अपने पैरों पर खड़ा हो, प्रेम से मुल्क के सब सवाल हल होते हों, क्या भीतरी और क्या बाहरी, हमारे हर सवाल प्रेम और त्याग की बिना पर हल किये जायें और सारा मुल्क हकूमत नाम की चीज़ से ज्यादा से ज्यादा मुक्त या बरी होकर इन्सानी राह पर चले.

भूदान इस तरफ़ बढ़ने का पहला क़दम है. क्योंकि आजकल की दुनिया में 'लेना' और 'लाओ' ही ज्यादातर चलता है, मगर भूदान में देना' और 'दो' पर जोर दिया



و کیا، دوسروں کو کیا، سبھی لوگوں کو اسے اپنی طرف
کھینچ لینا ہوگا۔

اب ہم ہردے پریورتن کے سوال پر آتے ہیں۔ شروع
میں ہی یہ بتا دینا بہتر ہوگا کہ بھودان یگیہ کی تحریک
ایک ذریعہ ( سادھن ) ہے، نہ کہ مقصد۔ پچھلے بودھ گیا
سمیلن کے موقع پر ونوبا جی نے خود ہی کہا تھا کہ
میری زندگی "بھودان یگیہ مولک اور گرام ادیوگ پردھان
اہنسا تمک کرانتی" کے لیئے سمرپت ہے۔ اس کرانتی
کا مقصد انسانی یا سروودے سماج یا 'سمرس' ڈنڈ
( سزا ) سے الگ اور شاسن مکت سماج قائم کرنا ہے۔
کون نہیں جانتا کہ سروودے وچار دھارا کا اپنا درشن
ہے، اپنا شاستر ہے۔ یہ ضرور ہے کہ وہ شاستر پچھمی
مارکس وادی، سامراج وادی یا لوک شاہی یا لوک سکھی
(Welfare) نظاموں کے شاستر وغیرہ سے مختلف ہے
اور ابھی اس سمبندھ میں زیادہ ساہتیہ یا ادب تیار
نہیں ہے۔ لیکن دوسری طرف، سچ یہ بھی ہے کہ ویدوں
سے لے کر قرآن شریف تک، پیغمبروں نے جو کچھ کہا یا ان
کے علاوہ سنتوں کی جو بانی ہے وہ انسانی سماج یا سروودے
سماج کا ہی ساہتیہ ہے۔

دوسرے یہ بھی نہیں بھولنا چاہیئے کہ بھودان
آندولن کا مقصد بےزمین آدمی کو زمین دیکر پورا نہیں
ہو جاتا۔ وہ تو اس کا ایک بہت چھوٹا حصہ ہے۔ آج ساری
دنیا میں زمین خریدی بیچی جاتی ہے، یعنی تجارت
کی چیز بن گئی ہے۔ ہندستان میں اس مرض نے
انگریزوں کے آنے کے بعد ہی زور پکڑا۔ انگریزوں نے پیسہ
پردھان آرتھک بندوبست قائم کرکے ہم بھارت ماتا کی
سنتان کو بھارت ماتا کا ہی بیوپاری بنا دیا! بھودان
آندولن اس زیادتی کو مٹا کر، دھرتی ماتا کو 'ماتا' یا
پنچ مہابھوت کی گدی پر پھر سے بٹھانا چاہتا ہے۔
کہنے کی ضرورت نہیں کہ اگر دھرتی بیوپار دیش میں
کچھ عرصے تک آج کی طرح اور جاری رہا تو دیش تباہ
ہوئے بنا نہیں رہیگا۔ آگے بڑھ کر بھودان آندولن کا مقصد
ہے کہ ہر آدمی محنت کرے اور پیداوار کرنے کا سادھن
اسے حاصل ہو، ملک کا ہر گاؤں اپنے پیروں پر کھڑا ہو، پریم
سے ملک کے سب سوال حل ہوتے ہوں، کیا بھیتری اور
کیا باہری، ہمارے ہر سوال پریم اور تیاگ کی بنا پر
حل کیئے جائیں اور سارا ملک حکومت نام کی چیز سے
زیادہ سے زیادہ مکت یا بری ہوکر انسانی راہ پر چلے۔

بھودان اس طرف بڑھنے کا پہلا قدم ہے۔ کیونکہ
آجکل کی دنیا میں 'لینا' اور 'لاؤ' ہی زیادہ تر چلتا
ہے، مگر بھودان میں 'دینا' اور 'دو' پر زور دیا

तादाद में आए हैं. मगर इसकी खास वजह भी है. अंग्रेजों के ज़माने में हर हिन्दुस्तानी का फ़र्ज़ था, चाहे वह तालीमयाफ़्ता हो या अपढ़, कि मुल्क की आज़ादी के लिये उठाये जानेवाले हर क़दम के साथ हमदर्दी ज़ाहिर करे और सरकार जो कुछ भी करे उसकी मुख़ालिफ़त करे. मगर आज़ाद होने के बाद यह सूरत बदल गई. 14 अगस्त 1947 तक जहां हर सरकारी मुलाज़िम ग़द्दार या देश द्रोही समझा जाता था 15 अगस्त 1947 से वह देशभक्त और क़ौमी ख़िदमतगार समझा जाने लगा. इसलिये आज-कल हमारे बहुत से तालीमयाफ़्ता भाई इसी में संतोश और गर्व महसूस करते हैं कि वह अपनी ताक़त व ख़ूबियां सरकार की मदद में और मौजूदा निज़ाम क़ायम रखने में लगायें. उनका ऐसा करना ग़लत भी नहीं है. ईमान के साथ उनका यह ख़्याल है कि सरकार के साथ कंधे से कंधा लगा कर चलने पर मुल्क की तरक़्क़ी होगी. उनका ध्यान इस तरफ़ नहीं जाता कि मौजूदा सरकार समाज के उन्हीं हितों के स्वार्थों की ख़ुशनूदी में है जिनमें पिछली सरकार थी. इसलिये कम लोग ऐसे बचते हैं जो यह मानते हों कि अगर हिन्दुस्तान में सच्चा सुख और शान्ति क़ायम करना है तो हमें दूसरे हितों की तरफ़ मुख़ातिब होना पड़ेगा. इसलिये कोई ताज्जुब की बात नहीं कि भूदान जैसी तहरीक की तरफ़ उन तालीमयाफ़्ता लोगों में से कम का ही ध्यान जाता है. ऐसी तहरीक जिसका सरकारी स्कीमों से कोई वास्ता नहीं है, जो मौजूदा निज़ाम का कोई सहारा नहीं लेती और जो उसे बदल कर एक नया समाज बनाने का भी दावा करती है. इसलिये किसी भी ग़ैर सरकारी काम में जो नये तरीक़ों से हमारे सियासी, आर्थिक और समाजी मसअलों का हल ढूंढता हो, सिर्फ़ वही हमदर्दी दिखला सकते हैं जो मौजूदा निज़ाम को नाक़ाबिल सुधार मानते हों और जिन पर यह बात अच्छी तरह ज़ाहिर हो गई हो कि यह सरकार आनेवाले ज़माने का कामयाबी के साथ सामना नहीं कर सकती और उसका हटाया जाना ही निहायत ज़रूरी चीज़ है. लेकिन इस तरह के यक़ीन वालों में भी कई ख़्याल के लोग हो सकते हैं. कुछ का यह ख़्याल हो सकता है कि आहिस्ता आहिस्ता बदला जाये, कुछ सोचते हों कि जैसे भी हो जल्दी से जल्दी उसे बदला जाये और कुछ का यह इसरार हो सकता है कि तबदीली तो करना है और फ़ौरन करना है मगर कुछ बुनियादी उसूल नहीं छोड़ना हैं. यह एक वजह है कि हमारे पढ़े लिखे भाई बहनों की तवज्जह भूदान की तरफ़ कम गई है. लेकिन अगर भूदान वालों का यह दावा है कि उस से नया समाज क़ायम होगा और नया इन्सान दुनिया के सामने आयेगा तब आज नहीं तो कल, पढ़े लिखे लोगों

تعداد میں آئے ہیں. مگر اسکی خاص وجہ بھی ہے. انگریزوں کے زمانہ میں ہر ہندستانی کا فرض تھا' چاہے وہ تعلیم یافتہ ہو یا اپڑھ' کہ ملک کی آزادی کے لئے اٹھائے جانے والے ہر قدم کے ساتھ ہمدردی ظاہر کرے اور سرکار جو کچھ بھی کرے اسکی مخالفت کرے. مگر آزاد ہونے کے بعد یہ صورت بدل گئی. 14 اگست 1947 تک جہاں ہر سرکاری ملازم غدار یا دیش دروہی سمجھا جاتا تھا 15 اگست 1947 سے وہ دیش بھگت اور قومی خدمتگار سمجھا جانے لگا. اس لئے آجکل ہمارے بہت سے تعلیم یافتہ بھائی اسی میں سنتوش اور گرو محسوس کرتے ہیں کہ وہ اپنی طاقت و خوبیاں سرکار کی مدد میں اور موجودہ نظام قائم رکھنے میں لگائیں. ان کا ایسا کرنا غلط بھی نہیں ہے. ایمان کے ساتھ ان کا یہ خیال ہے کہ سرکار کے ساتھ کندھے سے کندھا لگا کر چلنے پر ملک کی ترقی ہوگی. ان کا دھیان اس طرف نہیں جاتا کہ موجودہ سرکار سماج کے انہیں ہتوں کے سوارتھوں کی خوشنودی میں ہے جن میں پچھلی سرکار تھی. اس لئے کم لوگ ایسے بچتے ہیں جو یہ مانتے ہوں کہ اگر ہندستان میں سچا سکھ اور شانتی قائم کرنا ہے تو ہمیں دوسرے ہتوں کی طرف مخاطب ہونا پڑیگا. اس لئے کوئی تعجب کی بات نہیں کہ بھودان جیسی تحریک کی طرف ان تعلیم یافتہ لوگوں میں سے کم کا ہی دھیان جاتا ہے. ایسی تحریک' جس کا سرکاری اسکیموں سے کوئی واسطہ نہیں ہے' جو موجودہ نظام کا کوئی سہارا نہیں لیتی اور جو اسے بدل کر ایک نیا سماج بنانے کا بھی دعویٰ کرتی ہے. اس لئے کسی بھی غیر سرکاری کام میں جو نئے طریقوں سے ہمارے سیاسی' آرتھک اور سماجی مسئلوں کا حل ڈھونڈھتا ہو' صرف وہی ہمدردی دکھلا سکتے ہیں جو موجودہ نظام کو ناقابل سدھار مانتے ہوں اور جن پر یہ بات اچھی طرح ظاہر ہوگئی ہو کہ یہ سرکار آنے والے زمانہ کا کامیابی کے ساتھ سامنا نہیں کر سکتی اور اس کا ہٹایا جانا ہی نہایت ضروری چیز ہے. لیکن اس طرح کے یقین والوں میں بھی کئی خیال کے لوگ ہو سکتے ہیں. کچھ کا یہ خیال ہوسکتا ہے کہ آہستہ آہستہ بدلا جائے' کچھ سوچتے ہوں کہ جیسے بھی ہو جلدی سے جلدی اسے بدلا جائے اور کچھ کا یہ اصرار ہو سکتا ہے کہ تبدیلی تو کرنا ہے اور فوراً کرنا ہے مگر کچھ بنیادی اصول نہیں چھوڑنا ہیں. یہ ایک وجہ ہے کہ ہمارے پڑھے لکھے بھائی بہنوں کی توجہ بھودان کی طرف کم گئی ہے. لیکن اگر بھودان والوں کا یہ دعویٰ ہے کہ اس سے نیا سماج قائم ہوگا اور نیا انسان دنیا کے سامنے آئے گا تب آج نہیں تو کل' پڑھے لکھے لوگوں

# हृदय परिवर्तन और भूदान

हमारे मुल्क की तारीख़ के विद्वानों के आगे यह एक दिलचस्प सवाल बना रहेगा—अंग्रेज़ों ने जो अपना राज यहां से हटाया तो "हृदय परिवर्तन" की वजह से या सोच समझकर फ़ायदे की निगाह से या देश काल की हालत से मजबूर होकर ? इसी तरह एक नया सवाल अब और पेश होता जा रहा है कि भूदान आन्दोलन में ग़रीब और अमीर लोग जो ज़मीन दे रहे हैं वह "हृदय परिवर्तन" की वजह से या मजबूरी से या किसी और वजह से. हाल ही में हमारे देश के तपे हुए नेता और बुज़ुर्ग, आचार्य नरेन्द्र देव जी ने इस तरह का शक ज़ाहिर किया है. उनका कहना है : क्योंकि भूदान तहरीक का आधार "हृदय परिवर्तन" है इसलिये उसका दायरा बंधा हुआ है और वह कोई नया जीवन दर्शन ( फ़लसफ़ए ज़िन्दगी ) नहीं दे सकता. उनका यह भी मत है कि उसमें ज़मीन अमीरों के मुक़ाबिले ग़रीबों ने ज़्यादा दी है और अमीरों ने जो दी है सो मौक़ा महल की वजह से और कुछ नाख़ुशी के साथ दी है. भूदान यज्ञ के इस उसूली या तात्विक पहलू पर रोशनी डालने और चर्चा छेड़ने के लिये हम आचार्य नरेन्द्र देव के बहुत अहसानमन्द हैं. हमें यक़ीन है कि इस चर्चा से हमारे मुल्क के दिमाग़ी काम करने वालों या बुद्धि जीवियों के भी शक कुछ दूर हो जायेंगे और मुल्क के पढ़े लिखे और ऊंचे दर्जे के लोगों का सहयोग भूदान आन्दोलन को मिलेगा.

आज भूदान आन्दोलन को तीन साल से ऊपर हो चुके हैं, उसका पैग़ाम मुल्क के पांच लाख में से एक लाख गांव तक पहुंच चुका है, क़रीब तीन लाख लोग दान दे चुके हैं और 34 लाख एकड़ के क़रीब ( यानी मुल्क की जोत की ज़मीन का एक फ़ीसदी ) ज़मीन मिल चुकी है. कहने की ज़रूरत नहीं कि अगर इस आन्दोलन को आचार्य नरेन्द्र देव जैसे हिम्मती और मुल्क के तालीम-याफ़्ता दिमाग़दार लोगों की मदद मिल गई होती तो उसने कहीं ज़्यादा तरक़्क़ी की होती. उनका अलग रहना जहां एक दुख की बात है वहां भूदान वालों के लिये एक सोचने और समझने की भी बात है कि ऐसा क्यों हो रहा है ? इसलिये हम ज़रा तफ़सील के साथ इस सवाल में जाना चाहते हैं.

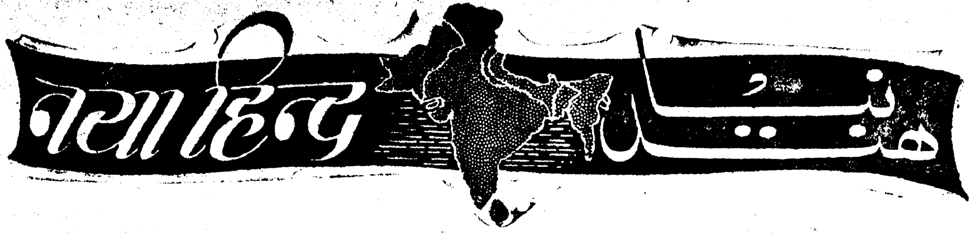
सब से पहले तो हम यह क़बूल करते हैं कि अब तक उसमें ऊंची तालीम पाए हुए या जिन्हें इन्टेलेक्चुअल (Intellectual ) कहा जाता है ऐसे लोग बहुत कम

# هردے پریورتن اور بھودان

ہمارے ملک کی تاریخ کے ودوانوں کے آگے یہ ایک دلچسپ سوال بنا رہے گا . انگریزوں نے جو اپنا راج یہاں سے ہٹایا تو " ہردے پریورتن " کی وجہ سے یا سوچ سمجھکر فائدہ کی نگاہ سے یا دیش کی حالت سے مجبور ہو کر ؟ اسی طرح ایک نیا سوال اب اور پیش ہوتا جا رہا ہے کہ بھودان آندولن میں غریب اور امیر لوگ جو زمین دے رہے ہیں وہ " ہردے پریورتن " کی وجہ سے یا مجبوری سے یا کسی اور وجہ سے . حال ہی میں ہمارے دیش کے تپے ہوئے نیتا اور بزرگ' آچاریہ نریندر دیو جی نے اس طرح کا شک ظاہر کیا ہے . ان کا کہنا ہے . کیونکہ بھودان تحریک کا آدھار " ہردے پر یورتن " ہے اس لیئے اس کا دائرہ بندھا ہوا ہے اور وہ کوئی نیا جیون درشن ( فلسفۂ زندگی ) نہیں دے سکتا . ان کا یہ بھی مت ہے کہ اس میں زمین امیروں کے مقابلہ غریبوں نے زیادہ دی ہے اور امیروں نے جو دی ہے سو موقع محل کی وجہ سے اور کچھ ناخوشی کے ساتھ دی ہے . بھودان یگیہ کے اس اصولی یا تاتوک پہلو پر روشنی ڈالنے اور چرچا چھیڑنے کے لیئے ہم آچاریہ نریندردیو کے بہت احسان مند ہیں . ہمیں یقین ہے کہ اس چرچا سے ہمارے ملک کے دماغی کام کرنے والوں یا بدھی جیویوں کے بھی شک کچھ دور ہو جائینگے اور ملک کے پڑھے لکھے اور اونچے درجہ کے لوگوں کا سہیوگ بھودان آندولن کو ملیگا .

آج بھودان آندولن کو تین سال سے اوپر ہوچکے ہیں' اس کا پیغام ملک کے پانچ لاکھ میں سے ایک لاکھ گاؤں تک پہنچ چکا ہے' قریب تین لاکھ لوگ دان دے چکے ہیں اور 34 لاکھ ایکڑ کے قریب ( یعنی ملک کی جوت کی زمین کا ایک فیصدی ) زمین مل چکی ہے . کہنے کی ضرورت نہیں کہ اگر اس آندولن کو آچاریہ نریندر دیو جیسے ہمتی اور ملک کے تعلیم یافتہ دماغ دار لوگوں کی مدد مل گئی ہوتی تو اس نے کہیں زیادہ ترقی کی ہوتی . ان کا الگ رہنا جہاں ایک دکھ کی بات ہے وہاں بھودان والوں کے لیئے ایک سوچنے اور سمجھنے کی بھی بات ہے کہ ایسا کیوں ہو رہا ہے؟ اس لیئے ہم ذرا تفصیل کے ساتھ اس سوال میں جانا چاہتے ہیں .

سب سے پہلے تو ہم یہ قبول کرتے ہیں کہ اب تک اس میں اونچی تعلیم پائے ہوئے یا جنہیں انٹیلیکچول ( Intellectual ) کہا جاتا ہے ایسے لوگ بہت کم





जिल्द 17 अगस्त सन '54 नम्बर 2


जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

## अब सुख के ज़माने आते हैं

( वाक़िफ़ रज़्ज़ाक़ी )

हम जीवन जोत जलाते हैं
वह अन्धयारा फैलाते हैं

हम अम्न के नारे लगाते हैं
वह ऐटम बम बरसाते हैं !

हम रूखी सूखी खाते हैं
वह मक्खन तोस उड़ाते हैं

हम ग़म के मारे रोते हैं
वह गीत ख़ुशी के गाते हैं

हम दिन भर मेहनत करते हैं
वह बे-मेहनत फल खाते हैं

वह कहते हैं बस काम करो
पर काम कहां हम पाते हैं

जो होना है सो हो जाये
हम आगे क़दम बढ़ाते हैं

हम उन को जगा कर छोड़ेंगे
दिन ग़फ़लत में जो गंवाते हैं

तुम आंखें मलकर देख तो लो
हर शय पै उजाले छाते हैं

आकाश पै बादल लहरा कर
धरती पै गुहर बरसाते हैं

गुल खिलते हैं फल लगते हैं
पतझड़ के मौसम जाते हैं

दिन दुख के 'वाक़िफ़' बीत गये
अब सुख के ज़माने आते हैं


جلد 17 اگست سن '54 نمبر 2


جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

## اب سکھ کے زمانے آتے ہیں

( واقف رزاقی )

ہم جیون جوت جلاتے ہیں
وہ اندھیارا پھیلاتے ہیں

ہم امن کے نعرے لگاتے ہیں
وہ ایٹم بم برساتے ہیں !

ہم روکھی سوکھی کھاتے ہیں
وہ مکھن توس اڑاتے ہیں

ہم غم کے مارے روتے ہیں
وہ گیت خوشی کے گاتے ہیں

ہم دن بھر محنت کرتے ہیں
وہ بے محنت پھل کھاتے ہیں

وہ کہتے ہیں بس کام کرو
پر کام کہاں ہم پاتے ہیں

جو ہونا ہے سو ہو جائے
ہم آگے قدم بڑھاتے ہیں

ہم ان کو جگا کر چھوڑیں گے
دن غفلت میں جو گنواتے ہیں

تم آنکھیں مل کر دیکھ تو لو
ہر شے پہ اجالے چھاتے ہیں

آکاش پہ بادل لہرا کر
دھرتی پہ گہر برساتے ہیں

گل کھلتے ہیں پھل لگتے ہیں
پت جھڑ کے موسم جاتے ہیں

دن دکھ کے 'واقف' بیت گئے
اب سکھ کے زمانے آتے ہیں

“नया हिन्द”

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

## माहवारी परचा

"نیا ہند"

# ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

## ماہواری پرچا

### अगस्त 1954 اگست


| क्या किस से | सफ़ा صفحہ | کیا کس سے |
|---|---|---|
| 1. अब सुख के ज़माने आते हैं ( कविता )—वाक़िफ़ रायबरेलवी | 65 | 1. اب سکھ کے زمانے آتے ہیں (کویتا)—(واقف رزاقی) |
| 2. हृदय परिवर्तन और भूदान—सुरेशराम भाई | 66 | 2. ہردے پریورتن اور بھودان—سریش رام بھائی |
| 3 राजा राम मोहन राय का युग—लेखक—मगन भाई देसाई; अनुवादक—कानू भाई नानालाल पटेल | 71 | 3. راجا رام موہن رائے کا یگ—لیکھک مگن بھائی دیسائی—انوادک—کانو بھائی نانالال پٹیل |
| 4. सर्वोदय, भूदान और हृदय परिवर्तन—कुमारी सरोज अग्रवाल | 75 | 4. سروودے، بھودان اور ہردے پریورتن—کماری سروج اگروال |
| 5. मास्को से ख़त—सुन्दरलाल | 85 | 5. ماسکو سے خط—سندر لال |
| 6. चूना हो गया ( कहानी )—मुजीब रिज़वी | 90 | 6. چونا ہوگیا ( کہانی )—مجیب رضوی |
| 7. कुंग-ई-ची — ( कहानी )—लेखक—लू. सुन; अनुवादक—कामेश्वर अग्रवाल | 96 | 7. کونگ-اِی-چی ( کہانی )—لیکھک—لو. سن؛ انووادک—کامیشور اگروال |
| 8. प्रवासी की डायरी—मुजीब रिज़वी | 102 | 8. پرواسی کی ڈائری—مجیب رضوی |
| 9 कुछ किताबें | 109 | 9. کچھ کتابیں |
| 10. हमारी राय-- छुआ छूत—सुन्दरलाल; असलियत और प्रचार—सुरेशराम भाई; वनस्पती और हमारे वैज्ञानिक—सुरेशराम भाई; मिस्र और बरतानिया का समझौता—मुजीब रिज़वी; इन्दौर की दुर्घटना--मुजीब रिज़वी. | 111 | 10. ہماری رائے — چھوا چھوت—سندرلال؛ اصلیت اور پرچار—سریش رام بھائی؛ بنسپتی اور ہمارے وگیانک—سریش رام بھائی؛ مصر اور برطانیہ کا سمجھوتہ—مجیب رضوی؛ اندور کی درگھٹنا—مجیب رضوی۔ |



क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा--दस आने.

मैनेजर
‘नया हिन्द’
146, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے۔

مینیجر
'نیا ہند'
146، مٹھی گنج، الہ آباد 3

# नया हिन्द

# نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, सैयद महमूद, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تاراچند، بھگوان دین، سید محمود، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی



## इस नम्बर के खास लेख

★ हृदय परिवर्तन और भूदान—सुरेशराम भाई

★ सर्वोदय भूदान और हृदय परिवर्तन—कुमारी सरोज अग्रवाल

★ मास्को से खत—सुन्दरलाल

★ कुंग-ई-ची (कहानी)—लू-शुन

हमारी राय :—

★ छुआ छूत—सुन्दरलाल

★ असलियत और प्रचार—सुरेश रामभाई

★ मिस्र और बरतानिया का समझौता—मुजीब रिज़वी

★ इन्दौर की दुर्घटना—मुजीब रिज़वी

## اس نمبر کے خاص لیکھ

★ ہردے پریورتن اور بھودان—سریش رام بھائی

★ سروودے بھودان اور ہردے پریورتن—کماری سروج اگروال

★ ماسکو سے خط—سندر لال

★ کونگ۔ ای۔ چی۔ (کہانی)—لو شن

ہماری رائے :—

★ چھوا چھوت—سندر لال

★ اصلیت اور پرچار—سریش رام بھائی

★ مصر اور برطانیہ کا سمجھوتہ—مجیب رضوی

★ اندور کی درگھٹنا—مجیب رضوی

स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

अगस्त 1954 اگست

क़ीमत दस आना     قیمت دس آنہ

## हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें · ہمارے یہاں ملنےوالی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं

نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

| | नाम किताब | लेखक | दाम | لیکھک | نام کتاب |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | शेर ओ शायरी | श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय | 8 0 0 | شری ایودھیا پرساد گوئلی | 1. شعر و شاعری |
| 2. | शेर ओ सुख़न | ,, | 8 0 0 | ,, | 2. شعر و سخن |
| 3. | गहरे पानी पैठ | ,, | 2 8 0 | ,, | 3. گہرے پانی پیٹھ |
| 4. | हमारे आराध्य | श्री बनारसीदास चतुर्वेदी | 3 0 0 | شری بنارسی داس چترویدی | 4. ہمارے آرادھیہ |
| 5. | संस्मरण | ,, | 3 0 0 | ,, | 5. سنسمرن |
| 6. | दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां | श्री जगदीशचन्द्र जैन | 3 0 0 | شری جگدیش چندر جین | 6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں |
| 7. | ज्ञान गंगा | श्री नारायण साद जैन | 6 0 0 | شری نارائن پرساد جین | 7. گیان گنگا |
| 8. | पथ चिन्ह | श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी | 2 0 0 | شری شانتی پریہ دویدی | 8. پتھ چنہ |
| 9. | पंच प्रदीप | शान्ति एम. ए. | 2 0 0 | شانتی ایم . اے | 9. پنچ پردیپ |
| 10. | आकाश के तारे धरती के फूल | श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर | 2 0 0 | شری کنہیالال مشر پربھاکر | 10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول |
| 11. | मुक्ति दूत | श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम ए. | 5 0 0 | شری ویریندر کمار جین ایم . اے | 11. مکتی دوت |
| 12. | मिलन यामिनी | श्री बच्चन | 4 0 0 | شری بچن | 12. ملن یامنی |
| 13. | रजत रश्मि | डाक्टर रामकुमार वर्मा | 2 8 0 | ڈاکٹر رام کمار ورما | 13. رجت رشمی |
| 14. | मेरे बापू | श्री तन्मय बुख़ारिया | 2 8 0 | شری تنمے بخاریا | 14. میرے باپو |
| 15. | विश्व संघ की ओर | पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला | 3 0 0 | پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا | 15. وشو سنگھ کی اور |
| 16. | भारतीय अर्थशास्त्र | श्री भगवानदास केला | 5 0 0 | شری بھگوان داس کیلا' | 16. بھارتیہ ارتھ شاستر |
| 17. | भारतीय शासन | ,, | 3 0 0 | ,, | 17. بھارتیہ شاسن |
| 18. | नागरिक शास्त्र | ,, | 2 4 0 | ,, | 18. ناگرک شاستر |
| 19. | साम्राज्य और उनका पतन | ,, | 2 8 0 | ,, | 19. سامراج اور اُن کا پتن |
| 20. | भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन | ,, | 1 4 0 | ,, | 20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن |
| 21. | सर्वोदय अर्थ व्यवस्था | ,, | 1 8 0 | ,, | 21. سرودے ارتھ ویوستھا |
| 22. | हमारी आदिम जातियां | श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय | 3 8 0 | شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے | 22. ہماری آدم جاتیاں |
| 23. | अर्थशास्त्र शब्दावली | श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला | 2 0 0 | شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل ۔ بی ۔ گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا | 23. ارتھ شاستر شبداولی |
| 24. | नागरिक शिक्षा | भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे | 1 8 0 | شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے | 24. ناگرک شکشا |
| 25. | राष्ट्र मंडल शासन | श्री दयाशंकर दुबे | 1 8 0 | دیا شنکر دوبے | 25. راشٹر منڈل شاسن |
| 26. | जवानो | महात्मा भगवानदीन | 3 0 0 | مہاتما بھگوان دین | 26. جوانو |
| 27. | मारने की हिम्मत ! | ,, | 1 0 0 | ,, | 27. مارنے کی ہمت |
| 28. | सलौना सच | ,, | 0 8 0 | ,, | 28. سلونا سچ |
| 29. | मेरे साथी | ,, | 1 0 0 | ,, | 29. میرے ساتھی |

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द'

ملنے کا پتہ

مینیجر 'نیا ہند'

हंसी आती है उन छे मिनिस्टरों के यह कहने पर कि यह प्रदेश इत्तफ़ाक़ से नहीं बल्कि तारीख़ की पैदाइश हैं.

सच है कि अक़ल हैरान है कि अगर कुर्ग अंग्रेज़ों ने अलग सूबा बना रक्खा था तो अब भी अलग प्रदेश क्यों रहे ? या अगर ग्वालियर और इन्दौर को मध्य भारत में मिलाया जा सकता है तो भोपाल को क्यों न मिलाया जाये ? या फिर रामपुर को उत्तर प्रदेश में मिलाने की वजह अलग से ( C ) प्रदेश क्यों न क़रार दिया जाये ? या कई रियासतें मिला कर जब विंध्य प्रदेश नया खड़ा किया गया तो उसे अजमेर वग़ैरा का दर्जा देने की बजाय सौराश्ट्र और राजस्थान की तरह ( B ) दर्जे में क्यों न रक्खा गया ? यह ठीक उसी तरह का बेतुका काम नज़र आता है जैसा अंग्रेज़ लोग मजबूरन या मसलहतन करते थे. लेकिन आज उनमें कोई वज़न नहीं मालूम होता.

मगर जैसा हमने ऊपर कहा ( C ) प्रदेशों के चीफ़ मिनिस्टरों को हम बधाई देते हैं जो उन्होंने इस ख़ूबसूरती के साथ अपनी वकालत की है. उनके ख़्याल की हम क़दर करते हैं. हम चाहते हैं कि नये सूबे या बड़े सूबे चाहने वाली जो जमाअतें हैं वह इस मेमोरेन्डम से सबक़ हासिल करें कि किस संजीदगी और ख़ुशमिज़ाजी के साथ कोई बात कही जाती है. इस काम में दिमाग़ के ठंडा रखने की जितनी ज़रूरत है उतनी और किसी चीज़ की नहीं. हमें यक़ीन है कि भाषावार कमीशन के सामने सभी मेमोरेन्डम ( C ) प्रदेश वालों की तरह से पेश हों तो उसका आधा बोझ हलका हो जाये और मुल्क की शान भी बढ़े. हम उम्मीद करते हैं कि वह कमीशन पूरे हिन्दुस्तान के नक़्शे को सामने रखते हुए ( C ) प्रदेशों के भविश्य के बारे में भी मुनासिब राय क़ायम करेगा.

9. 6. '54 —सुरेशराम भाई



ہنسی آتی ہے اُن چھ منسٹروں کے یہ کہنے پر کہ یہ پردیش اتفاق سے نہیں بلکہ تاریخ کی پیدائش ہیں۔

سچ ہے کہ عقل حیران ہے کہ اگر کُرگ انگریزوں نے الگ صوبہ بنا رکھا تھا تو اب بھی وہ الگ پردیش کیوں رہے ؟ یا اگر گوالیر اور اندور کو مدھیہ بھارت میں ملایا جا سکتا ہے تو بھوپال کو کیوں نہ ملایا جائے ؟ یا پھر رامپور کو اُتر پردیش میں ملانے کی وجہ الگ سے ( C ) پردیش کیوں نہ قرار دیا جائے ؟ یا کئی ریاستیں ملا کر جب وندھیہ پردیش نیا کھڑا کیا گیا تو اُسے اجمیر وغیرہ کا درجہ دینے کی بجائے سوراشٹر اور راجستھان کی طرح ( B ) درجہ میں کیوں نہ رکھا گیا ؟ یہ ٹھیک اسی طرح کا بے تکا کام نظر آتا ہے جیسا انگریز لوگ مجبوراً یا مصلحتاً کرتے تھے . لیکن آج ان میں کوئی وزن نہیں معلوم ہوتا .

مگر جیسا ہم نے اوپر کہا ( C ) پردیشوں کے چیف منسٹروں کو ہم بدھائی دیتے ہیں جو انہوں نے اس خوبصورتی کے ساتھ اپنی وکالت کی ہے . ان کے خیال کی ہم قدر کرتے ہیں . ہم چاہتے ہیں کہ نئے صوبے یا بڑے صوبے چاہنے والی جو جماعتیں ہیں وہ اس میمورنڈم سے سبق حاصل کریں کہ کس سنجیدگی اور خوش مزاجی کے ساتھ کوئی بات کہی جاتی ہے . اس کام میں دماغ کے ٹھنڈا رکھنے کی جتنی ضرورت ہے اتنی کسی اور چیز کی نہیں . ہمیں یقین ہے کہ بھاشا وار کمیشن کے سامنے سبھی میمورنڈم ( C ) پردیش والوں کی طرح سے پیش ہوں تو اس کا آدھا بوجھ ہلکا ہو جائے اور ملک کی شان بھی بڑھے . ہم اُمید کرتے ہیں کہ وہ کمیشن پورے ہندستان کے نقشہ کو سامنے رکھتے ہوئے ( C ) پردیشوں کے بھوشیہ کے بارے میں بھی مناسب رائے قائم کریگا .

سریش رام بھائی 9. 6. '54

के मैदान में उन प्रदेशों ने दूसरे बड़े प्रदेशों के मुक़ाबिले अब तक कहीं ज़्यादा तरक़्क़ी की है हालांकि हिन्द सरकार से ज़ाबते की मन्ज़ूरी वग़ैरा मिलने में अकसर देर भी लगी.

हम ( C ) प्रदेशों के चीफ़ मिनिस्टरों को दाद देते हैं. जिस ख़ूबी के साथ उन्होंने अपना मेमोरेन्डम तैयार किया उसके लिये हमारा दिली मुबारकबाद. लेकिन एक कसर बाक़ी रह गई. वह यह कि जब छै ( C ) प्रदेशों ने इस बहतरीन ढंग से काम किया और वहां की हकूमत ने जनता में जोश पैदा कर दिखलाया तो यह चीफ़ मिस्टर मांग करें कि कोई वजह नहीं है कि ( A ) और ( B ) प्रदेशों में छोटे छोटे हिस्से निकाल कर ( C ) की तादाद बढ़ा दी जाये ताकि सारा मुल्क ज़्यादा जोश से आगे बढ़े ! हम यह भी सिफ़ारिश ज़रूर करते मगर देखते क्या हैं कि देहली प्रदेश में आए दिन झगड़े और तू तू मैं मैं चल रही है. उधर अजमेर में कहीं संगीन हालत है और ऐसेम्बली क्या है दांव पेच की शतरंज बन गई है फिर विंध्य प्रदेश में भी वैसा ही नज़्ज़ारा है. इसके अलावा वहां के गवर्नर साहब को एक नया शौक़ पैदा हुआ है—एक ठंडी राजधानी खड़ी करना. इस के लिये उन्होंने अमरकंटक का मुक़ाम पसंद किया है. कुछ दिन वह और उनके मिनिस्टर वहां जाकर रहे भी. हमें डर है कि जल्दी ही लाखों रुपये की स्कीम से वहां ईंटों के महल चुनना शुरू हो जायेंगे. कहने का मतलब यह है कि जो बीमारियां ( A ) और ( B ) प्रदेशी के हुक्कामों या एसम्बली वालों को हैं उसके शिकार ( C ) वाले भी बहुत ज़्यादा हैं. शायद फ़ैशन में शुमार किये जाने की वजह से वहां ऐसा होता हो. मगर यह साफ़ है कि ( C ) प्रदेशों ने कोई ऐसा ठोस क़दम नहीं उठाया जिससे वहां की जनता को कोई कारगर फ़ायदा पहुंचा हो. हमें बड़े अफ़सोस के साथ कहना पड़ रहा है कि ( C ) प्रदेश में शामिल होने का नतीजा यह हुआ की रीवा, ओरछा, टीकमगढ़ और टेहरी गढ़वाल वग़ैरा में अब वनस्पति घी कसरत से पहुंचने लगा और क्या दूध, क्या घी, सभी अच्छी चीज़ों को नापैद कर रहा है. इसी तरह छओं ( C ) प्रदेशों में देहाती दस्तकारियां मिट रही हैं और बेकारी बढ़ रही है.

इसके अलावा उन प्रदेशों के मिनिस्टरों ने उस सादगी का नमूना भी नहीं पेश किया जो उनसे उम्मीद की जा सकती थी. न वहां के दूसरे सरकारी ख़र्चों में कोई ऐसी कमी दिखलाई पड़ती है जिसकी वजह से यह समझा जा सके कि किफ़ायत के लिहाज़ से छोटे प्रदेश रखना बेहतर होगा.



کے میدان میں ان پردیشوں نے دوسرے بڑے پردیشوں کے مقابلہ اب تک کہیں زیادہ ترقی کی ہے حالانکہ ہند سرکار سے ضابطہ کی منظوری وغیرہ ملنے میں اکثر دیر بھی لگی۔

ہم ( C ) پردیشوں کے چیف منسٹروں کی داد دیتے ہیں۔ جس خوبی کے ساتھ انہوں نے اپنا میمورنڈم تیار کیا اس کے لئے ہمارا دلی مبارک باد۔ لیکن ایک کسر باقی رہ گئی۔ وہ یہ کہ جب چھ ( C ) پردیشوں نے اس بہترین ڈھنگ سے کام کیا اور وہاں کی حکومت نے جنتا میں جوش پیدا کر دکھلایا تو یہ چیف منسٹر مانگ کریں کہ کوئی وجہ نہیں ہے کہ ( A ) اور ( B ) پردیشوں میں سے چھوٹے چھوٹے حصے نکال کر ( C ) کی تعداد بڑھا دی جائے تاکہ سارا ملک زیادہ جوش سے آگے بڑھے ! ہم یہ بھی سفارش ضرور کرتے مگر دیکھتے کیا ہیں کہ دہلی پردیش میں آئے دن جھگڑے اور تو تو میں میں چل رہی ہے۔ ادھر اجمیر میں کہیں سنگین حالت ہے اور اسمبلی کیا ہے داؤ پیچ کی شطرنج بن گئی ہے۔ پھر وندھیہ پردیش میں بھی ویسا ہی نظارہ ہے۔ اس کے علاوہ وہاں کے گورنر صاحب کو ایک نیا شوق پیدا ہوا ہے—ایک ٹھنڈی راجدھانی کھڑی کرنا۔ اس کے لئے انہوں نے امرکنٹک کا مقام پسند کیا ہے۔ کچھ دن وہ اور ان کے منسٹر وہاں جا کر رہے بھی۔ ہمیں ڈر ہے کہ جلدی ہی لاکھوں روپیہ کی اسکیم سے وہاں اینٹوں کے محل چننا شروع ہو جائینگے۔ کہنے کا مطلب یہ ہے کہ جو بیماریاں ( A ) اور ( B ) پردیش کے حکاموں یا اسمبلی والوں کو ہیں اس کے شکار ( C ) والے بھی بہت زیادہ ہیں۔ شاید فیشن میں شمار کئے جانے کی وجہ سے وہاں ایسا ہوتا ہو۔ مگر یہ صاف ہے کہ ( C ) پردیشوں نے کوئی ایسا ٹھوس قدم نہیں اٹھایا جس سے وہاں کی جنتا کو کوئی کارگر فائدہ پہونچا ہو۔ ہمیں بڑے افسوس کے ساتھ کہنا پڑ رہا ہے کہ ( C ) پردیش میں شامل ہونے کا نتیجہ یہ ہوا کہ ریوا' اورچھا' ٹیکم گڑھ اور ٹیہری گڑھوال، وغیرہ میں اب ونسپتی گھی کثرت سے پہونچنے لگا اور کیا دودھ' کیا گھی' سبھی اچھی چیزوں کو ناپید کر رہا ہے۔ اس طرح چھوں ( C ) پردیشوں میں دیہاتی دستکاریاں مٹ رہی ہیں اور بیکاری بڑھ رہی ہے۔

اس کے علاوہ اُن پردیشوں کے منسٹروں نے اس سادگی کا نمونہ بھی نہیں پیش کیا جو اُن سے امید کی جا سکتی تھی۔ نہ وہاں کے دوسرے سرکاری خرچوں میں کوئی ایسی کمی دکھلائی پڑتی ہے جس کی وجہ سے یہ سمجھا جا سکے کہ کفایت کے لحاظ سے چھوٹے پردیش رکھنا بہتر ہوگا۔

मई महीने की 11-12 तारीख को इन छओं प्रदेशों के चीफ मिनिस्टरों की कान्फ्रेंस शिमले से 12 मील दूर 'भागो' नाम के एक ठंडे मुक़ाम पर हुई जो हिमांचल प्रदेश में पड़ता है. उस कान्फ्रेंस के सदर अजमेर के चीफ मिनिस्टर श्री हरी भाउ उपाध्याय जी थे. उस कान्फ्रेन्स ने पांच सफ़्हे का लम्बा एक बयान प्रेस को दिया जो एक मेमोरेन्डम की शकल में उस कमीशन के सामने पेश किया जायेगा जिसके सिपुर्द हिन्दुस्तान के नये नक़्शे की तैयारी का काम किया गया है.

इस बयान को देखने पर पता चलता है कि इन प्रदेशों के चीफ मिनिस्टरों पर नेस्त नाबूद होने का हौआ छाया हुआ है और उन्हें काफ़ी डर इस बात का है कि अगर मुल्क के नक़्शे में कुछ भी तबदीली की गई है तो पहले हम ही शहीद किये जाने वाले हैं. उनका कहना है कि मुल्क की बहतरी के लिहाज़ से यह मुनासिब है कि मौजूदा सियासी निज़ाम को नहीं बदला जाये. पर अगर कुछ थोड़ी बहुत रद्दोबदल ज़रूरी समझी जाये भी तो कम से कम ( C ) दर्जे के प्रदेशों को बदस्तूर बने रहने दिया जाय. इसकी उन्होंने कई वजह गिनाई हैं :—

( 1 ) उनका जन्म किसी इत्तफ़ाक़ से नहीं बल्कि तारीख़ी सिलसिले से है.

( 2 ) यहां के लोग चाहते हैं कि यह बनी रहें. इसलिये उनकी राय को ठुकराना लोकशाही के खिलाफ़ होगा और विधान के उसूलों को नज़रअन्दाज़ करना होगा.

( 3 ) यह ग़लत ख़्याल है कि यह प्रदेश मरकज़ी सरकार पर बोझ हैं. यह ऐतराज़ असलियत से दूर है और सिर्फ़ वही लोग कर सकते हैं जिन्हें हालत की सच्ची जानकारी नहीं है.

( 4 ) हर प्रदेश की आमदनी व ख़र्च की सूरत बहुत अच्छी है और अगर केन्द्र से कुछ मदद आती है तो केवल उन योजनाओं वग़ैरा के लिये जो केन्द्र की सरकार तजवीज़ करती है. ऐसी मदद तो ( A ) और ( B ) प्रदेशों को भी दी जा रही है.

( 5 ) केन्द्र में आबकारी और आमदनी पर टैक्स से जो रुपया पहुंचता है उसमें वह ( A ) और ( B ) प्रदेशों से तो शिरकत करता है मगर ( C ) से नहीं. इस चीज़ में हमारा भी हक़ है जिसको कुछ लोग महसूस नहीं करते.

( 6 ) उन प्रदेशों में लोकशाही या प्रजातन्त्र का नमूना चल रहा है. इसकी वजह से लोगों में एक जोश पैदा हुआ है. इसका नतीजा है कि पंचसाला योजना में जिस दर्जे यहां वाले शिरकत कर सकते हैं उस हद तक दूसरे प्रदेश वाले नहीं कर सकते. यही कारन है कि विकास



مئی مہینہ کی 11-12 تاریخ کو ان چھؤں پردیشوں کے چیف منسٹروں کی کانفرنس شملہ سے 12 میل دور 'بھاگو' نام کے ایک ٹھنڈے مقام پر ہوئی جو ہماچل پردیش میں پڑتا ہے . اس کانفرنس کے صدر اجمیر کے چیف منسٹر شری ہری بھاؤ اپادھیایہ جی تھے . اس کانفرنس نے پانچ صفحے کا لمبا ایک بیان پریس کو دیا جو ایک میمورنڈم کی شکل میں اس کمیشن کے سامنے پیش کیا جائیگا جس کے سپرد ہندستان کے نئے نقشہ کی تیاری کا کام کیا گیا ہے .

اس بیان کو دیکھنے پر پتہ چلتا ہے کہ ان پردیشوں کے چیف منسٹروں پر نیست نابود ہونے کا ہوا چھایا ہوا ہے اور انہیں کافی ڈر اس بات کا ہے کہ اگر ملک کے نقشہ میں کچھ بھی تبدیلی کی گئی تو پہلے ہم ہی شہید کئے جانے والے ہیں . ان کا کہنا ہے کہ ملک کی بہتری کے لحاظ سے یہ مناسب ہے کہ موجودہ سیاسی نظام کو نہیں بدلا جائے . پر اگر کچھ تھوڑی بہت رد و بدل ضروری سمجھی جائے بھی تو کم سے کم (C) درجہ کے پردیشوں کو بدستور بنے رہنے دیا جائے . اسکی انہوں نے کئی وجہ گنائی ہیں :—

(1) ان کا جنم کسی اتفاق سے نہیں بلکہ تاریخی سلسلہ سے ہے .

(2) یہاں کے لوگ چاہتے ہیں کہ یہ بنی رہیں. اس لیئے انکی رائے کو ٹھکرانا لوکشاہی کے خلاف ہوگا اور ودھان کے اصولوں کو نظر انداز کرنا ہوگا .

(3) یہ غلط خیال ہے کہ یہ پردیش مرکزی سرکار پر بوجھ ہیں . یہ اعتراض اصلیت سے دور ہے اور صرف وہی لوگ کرسکتے ہیں جنہیں حالت کی سچی جانکاری نہیں ہے .

(4) ہر پردیش کی آمدنی و خرچ کی صورت بہت اچھی ہے اور اگر کیندر سے کچھ مدد آتی ہے تو کیول ان یوجناؤں وغیرہ کے لیئے جو کیندر کی سرکار تجویز کرتی ہے . ایسی مدد تو (A) اور (B) پردیشوں کو بھی دی جارہی ہے .

(5) کیندر میں آبکاری اور آمدنی پر ٹیکس سے جو روپیہ پہونچتا ہے اس میں وہ (A) اور (B) پردیشوں سے تو شرکت کرتا ہے مگر (C) سے نہیں . اس چیز میں ہمارا بھی حق ہے جس کو کچھ لوگ محسوس نہیں کرتے .

(6) ان پردیشوں میں لوکشاہی یا پرجاتنتر کا نمونہ چل رہا ہے. اسکی وجہ سے لوگوں میں ایک جوش پیدا ہوا ہے . اسکا نتیجہ ہے کہ پنچ سالہ یوجنا میں جس درجہ یہاں والے شرکت کرسکتے ہیں اس حد تک دوسرے پردیش والے نہیں کرسکتے . یہی کارن ہے کہ وکاس

जो प्रोजैक्ट चला रही है उनमें है. महज़ खेती की पैदावार बढ़ाने से कोई फ़ायदा नहीं होने वाला है जबतक गांव की जरूरत की दीगर चीज़ें भी गांव में नहीं तैयार होतीं. यानी खेती और ग्राम उद्योग एक ही चीज़ के दो पहलू हैं. या यों कहें कि गांव की एक आंख खेती है तो दूसरी ग्राम उद्योग है. उनमें से एक के भी बिगड़ने पर सारी शकल बिगड़ जाती है.

हम चाहते हैं कि क्या प्लानिंग कमीशन वाले और क्या मरकज़ी, क्या सूबे की सब सरकारें सभी इस पहलू पर ज़रा ग़ौर करें और सोचें कि नीलोखेड़ी का सारा काम एक फुलझड़ी जैसा हो कर क्यों रह गया? हमारा भरोसा है कि अगर नीलोखेड़ी से सरकार ने ठीक सबक़ सही तरीक़े पर सीख लिया और उसके मुताबिक़ सारी स्कीमों और योजनाओं में तबदीली कर दी तो अब तक की गई मेहनत फ़िज़ूल न कही जायेगी, क्योंकि सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आये तो भूला नहीं कहा जाता.

9. 6. '54 —सुरेशराम भाई

## सी-प्रदेशों का भविश्य

भारत के विधान में तीन तरह की स्टेट या प्रदेश मन्ज़ूर किये गये हैं: (A), (B) और (C). दर्जा (A) में ज़्यादातर वह बड़े प्रदेश हैं जो अंग्रेज़ों के ज़माने में गवर्नरों के सूबे कहलाते थे जैसे यूपी, बम्बई, मद्रास वग़ैरा. दर्जा (B) में वह इलाक़े हैं जो अंग्रेज़ों के ज़माने में छोटी बड़ी 600 से ऊपर रियासतें थीं और जिन्हें सरदार पटेल ने मिला मिला कर एक बड़ी शक्ल दी थी, जैसे सौराष्ट्र, मध्य भारत, त्रिकोची वग़ैरा. दर्जा (C) में वह इलाक़े हैं जो पहले चीफ़ कमिश्नर के सूबे कहे जाते थे या रियासतों की शकल में थे. दर्जा (C) में छै प्रदेश हैं: देहली, अजमेर, कुर्ग, भोपाल, हिमाचल और विंध्य प्रदेश.

जब से यह (C) प्रदेश बने तब से ही यह सवाल अकसर लोगों के सामने पैदा होता है कि आख़िर उनकी ज़रूरत क्या है? क्या अजमेर को राजस्थान में या भोपाल को मध्य भारत में नहीं शामिल किया जा सकता? फिर यह भी सुनने में आया कि जब पुराने रजवाड़ों को मिलाया जा रहा था उस वक़्त भी (C) रियासतों को अलग न रखने का सोचा जा रहा था मगर कुछ आला शख़सियतों की निजी पसंदगी और नापसंदगी भी उनके बनने का एक बाइस बन गई. बहरहाल आज, जैसा हमने ऊपर अर्ज़ किया, (C) दरजे में छै प्रदेश हैं.



جو پروجیکٹ چلا رہی ہے ان میں ہے. محض کھیتی کی پیداوار بڑھانے سے کوئی فائدہ نہیں ہونے والا ہے جب تک گاؤں کی ضرورت کی دیگر چیزیں بھی گاؤں میں نہیں تیار ہوتیں. یعنی کھیتی اور گرام ادیوگ ایک ہی چیز کے دو پہلو ہیں. یا یوں کہیں کہ گاؤں کی ایک آنکھ کھیتی ہے تو دوسری گرام ادیوگ ہے. ان میں سے ایک کے بھی بگڑنے پر ساری شکل بگڑ جاتی ہے.

ہم چاہتے ہیں کہ کیا پلاننگ کمیشن والے اور کیا مرکزی کیا صوبے کی سب سرکاریں سبھی اس پہلو پر ذرا غور کریں اور سوچیں کہ نیلوکھیڑی کا سارا کام ایک پھل جھڑی جیسا ہو کر کیوں رہ گیا؟ ہمارا بھروسہ ہے کہ اگر نیلوکھیڑی سے سرکار نے ٹھیک سبق صحیح طریقہ پر سیکھ لیا اور اس کے مطابق ساری اسکیموں اور یوجناؤں میں تبدیلی کر دی تو اب تک کی گئی محنت فضول نہ کہی جائے گی، کیونکہ صبح کا بھولا اگر شام کو گھر لوٹ آئے تو بھولا نہیں کہا جاتا.

9. 6. '54 —سریش رام بھائی

## سی-پردیشوں کا بھوشیہ

بھارت کے ودھان میں تین طرح کی اسٹیٹ یا پردیش منظور کیے گئے ہیں: (A)، (B) اور (C). درجہ (A) میں زیادہ تر وہ بڑے پردیش ہیں جو انگریزوں کے زمانہ میں گورنروں کے صوبے کہلاتے تھے جیسے یوپی، بمبئی، مدراس وغیرہ. درجہ (B) میں وہ علاقے ہیں جو انگریزوں کے زمانے میں چھوٹی بڑی 600 سے اوپر ریاستیں تھیں اور جنہیں سردار پٹیل نے ملا ملا کر بڑی شکل دی تھی، جیسے سوراشٹر، مدھیہ بھارت، ترو کوچین وغیرہ. درجہ (C) میں وہ علاقے ہیں جو پہلے چیف کمشنر کے صوبے کہے جاتے تھے یا ریاستوں کی شکل میں تھے. درجہ (C) میں چھ پردیش ہیں: دہلی، اجمیر، کرگ، بھوپال، ہماچل اور وندھیہ پردیش.

جب سے یہ (C) پردیش بنے تب سے ہی یہ سوال اکثر لوگوں کے سامنے پیدا ہوتا ہے کہ آخر ان کی ضرورت کیا ہے؟ کیا اجمیر کو راجستھان میں یا بھوپال کو مدھیہ بھارت میں نہیں شامل کیا جا سکتا؟ پھر یہ بھی سننے میں آیا کہ جب پرانے رجواڑوں کو ملایا جا رہا تھا اس وقت بھی (C) ریاستوں کو الگ نہ رکھنے کا سوچا جا رہا تھا مگر کچھ اعلیٰ شخصیتوں کی نجی پسندگی اور ناپسندگی بھی ان کے بننے کا ایک باعث بن گئی. بہرحال آج، جیسا ہم نے اوپر عرض کیا، (C) درجہ میں چھ پردیش ہیں.

## हमारी राय

किस नतीजे पर पहुंचे या उन्होंने उससे क्या सबक़ हासिल किया. हम मानते हैं कि इस तरह की बस्तियां बसाने का उन्हें तजुर्बा नहीं था और यह अपने ढंग की पहली कोशिश थी. लिहाजा कुछ न कुछ कमी रह जाना तो क़ुदरती बात थी. लेकिन हमारा ख़्याल है कि चाहे कितनी भी ख़ूबी व होशियारी से नीलोखेड़ी का काम क्यों न किया गया होता नतीजा यही या इससे मिलता जुलता होने वाला था. वजह यह है कि गांव या किसी बस्ती की तामीर का जो सांचा हमारी हकूमत या प्लानिंग कमीशन के पास है उस सांचे में उस मुल्क के गांव या बस्तियों को नहीं ढाला जा सकता. हमारा अपना ख़्याल है कि नीलोखेड़ी की नाकामयाबी की बुनियादी वजह सिर्फ़ एक है. वह यह कि उस बस्ती को खाने, कपड़े और दूसरी बुनियादी ज़रूरतों में अपने पांव पर खड़े करने की कोशिश ही नहीं की गई. कपड़ा और ज़रूरी सामान बाहर से ला ला कर तनख़्वाह या पैसे के ज़ोर पर गांव नहीं बसाये जासकते.

ज़रा सोचने की बात है कि आज हमारे गांव क्यों तबाह हैं. अनाज तो वहां होता है. मगर अनाज के अलावा बाक़ी सभी सामान जैसे कपड़ा, जूता, बर्तन, पान, बीड़ी, तम्बाकू, तेल वग़ैरा सभी बाहर से आते हैं. इसका मतलब है कि अनाज तीन सेर की जगह तीन छटांक का भी बिकने लग जाये मगर किसान के पास पैसा रह ही नहीं पायेगा. आज जहां हमारे देहाती भाई बर्बाद हैं शादी ब्याह और गांजा भांग शराब के नशों से, वहां बाज़ार साहूकार, और सरकार मिलकर उनका वजूद मिटा रहे हैं. क़सूर न सरकार का है न साहूकार का, न बाज़ार, वाले व्यापारियों का, बल्कि उस नज़ाम का जो हमको अंग्रेज़ों से विरासत में मिला है. जो ढांचा अंग्रेज़ों ने अपने मतलब के लिये क़ायम किया था वह बदस्तूर चलाया जा रहा है जिसकी वजह से देहातों की हालत दिन दूनी रात चौगुनी ख़राब हो रही है. जब तक देहातों की दौलत बाहर जाती है तब तक देहातों का भला नहीं हो सकता. दूसरे लफ़्ज़ों में देहातों में होने वाला कच्चा माल वहीं काम में आना चाहिये और वहीं उसका पक्का माल बने और वहीं वह ख़र्च हो और ख़र्च से जो बचे वह शहरों में जाये. अंधे बहरे का मेल हमारे देहातों में नहीं ठैहर सकता. आंखें एक की और ज़बान कान दूसरे की रखने से काम नहीं चलेगा. जहां का अनाज वहीं का कपड़ा, तेल वग़ैरा हो. इन्सानी जिस्म की तरह गांव की आर्थिक बनावट भी एक मुकम्मल चीज़ है जिसमें जोड़ की गुंजाइश नहीं है.

नीलोखेड़ी को उस मुकम्मल शकल में नहीं खड़ा किया गया जैसी कि ज़रूरत थी. यही कमी हमारी सरकार

## ہماری رائے

کس نتیجہ پر پہونچے یا انہوں نے اس سے کیا سبق حاصل کیا ۔ ہم مانتے ہیں کہ اس طرح کی بستیاں بسانے کا انہیں تجربہ نہیں تھا اور یہ اپنے ڈھنگ کی پہلی کوشش تھی ۔ لہذا کچھ نہ کچھ کمی رہ جانا تو قدرتی بات تھی۔ لیکن ہمارا خیال ہے کہ چاہے کتنی بھی خوبی و ہوشیاری سے نیلو کھیڑی کا کام کیوں نہ کیا گیا ہوتا نتیجہ یہی یا اس سے ملتا جلتا ہونے والا تھا ۔ وجہ یہ ہے کہ گاؤں یا کسی بستی کی تعمیر کا جو سانچا ہماری حکومت یا پلاننگ کمیشن کے پاس ہے اس سانچہ میں اس ملک کے گاؤں یا بستیوں کو نہیں ڈھالا جا سکتا ۔ ہمارا اپنا خیال ہے کہ نیلو کھیڑی کی ناکامیابی کی بنیادی وجہ صرف ایک ہے ۔ وہ یہ کہ اس بستی کو کھانے' کپڑے اور دوسری بنیادی ضرورتوں میں اپنے پاؤں پر کھڑے کرنے کی کوشش ہی نہیں کی گئی ۔ کپڑا اور ضروری سامان باہر سے لا لا کر تنخواہ یا پیسہ کے زور پر گاؤں نہیں بسائے جاسکتے ۔

ذرا سوچنے کی بات ہے کہ آج ہمارے گاؤں کیوں تباہ ہیں ۔ اناج تو وہاں ہوتا ہے ۔ مگر اناج کے علاوہ باقی سبھی سامان جیسے کپڑا' جوتا' برتن' پان' بیڑی' تمباکو' تیل وغیرہ سبھی باہر سے آتے ہیں ۔ اس کا مطلب ہے کہ اناج تین سیر کی جگہ تین چھٹانک کا بھی بکنے لگ جائے مگر کسان کے پاس پیسہ رہ ہی نہیں پائیگا ۔ آج جہاں ہمارے دیہاتی بھائی برباد ہو رہے ہیں شادی بیاہ اور گانجا بھانگ شراب کے نشوں سے' وہاں بازار' ساہوکار ملکر ان کا وجود مٹا رہے ہیں۔ قصور نہ سرکار کا ہے نہ ساہوکار کا' نہ بازار والے بیوپاریوں کا' بلکہ اس نظام کا جو ہم کو انگریزوں سے وراثت میں ملا ہے ۔ جو ڈھانچہ انگریزوں نے اپنے مطلب کے لئے قائم کیا تھا وہ بدستور چلایا جا رہا ہے جسکی وجہ سے دیہاتوں کی حالت دن دونی رات چوگنی خراب ہو رہی ہے ۔ جب تک دیہاتوں کی دولت باہر جاتی ہے تب تک دیہاتوں کا بھلا نہیں ہو سکتا ۔ دوسرے لفظوں میں دیہاتوں میں ہونے والا کچا مال وہیں کام میں آنا چاہیئے اور وہیں اس کا پکا مال بنے اور وہیں وہ خرچ ہو اور خرچ سے جو بچے وہ شہروں میں جائے ۔ اندھے بہرے کا میل ہمارے دیہاتوں میں نہیں ٹھہر سکتا ۔ آنکھیں ایک کی اور زبان کان دوسرے کی رکھنے سے کام نہیں چلے گا ۔ جہاں کا اناج وہیں کا کپڑا' تیل وغیرہ ہو ۔ انسانی جسم کی طرح گاؤں کی آرتھک بناوٹ بھی ایک مکمل چیز ہے جس میں جوڑ کی گنجایش نہیں ہے ۔

نیلو کھیڑی کی اس مکمل شکل میں نہیں کھڑا کیا گیا جیسی کہ ضرورت تھی ۔ یہی کمی ہماری سرکار

से बढ़ कर 33 फ़ी सदी हो गई. वहां के कारख़ाने मानो एक दम बर्बाद हो गये.

यह नतीजा है 1948 से लेकर 1953 तक की गई सरकारी कोशिशों का. छै साल की गाढ़ी कमाई ! नीलोखेड़ी बिना गये हम अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि वहां के लोगों की क्या दुर्दशा होगी और वह क्या कहते होंगे. सरकारी और अख़बारी हलक़ों का बयान यह है कि पंजाब सरकार ने जो अब वहां का काम हाथ में लिया है तो पहली चीज़ वह यह करने जा रही है कि पहले जो मिली जुली या (Collective) मिलकियत पर ज़ोर दिया जाता था उसकी बजाय अब निजी मिलकियत पर ज़ोर दिया जायेगा. उनका कहना यह है कि वहां के इर्द गिर्द जो आर्थिक हालत है और वहां पर बसने वाले ज़्यादातर लोगों का जो "बहुत ज़्यादा निजी पसन्द की तबियत" है इसकी वजह से यह तबदीली करना ज़रूरी है. वहां पर जो इन्जीनियरिंग का कारख़ाना और प्रेस वग़ैरा चलते हैं उन्हें पंजाब सरकार ने ले लिया है. ज़ाहिर बात है कि सरकारी काम की बदौलत और दूसरे सरकारी महकमों की मांग की वजह से नीलोखेड़ी के यह कारख़ाने दोबारा चलने लग जायेंगे. मगर इससे कौन इन्कार करेगा कि नीलोखेड़ी बसाने का न यह मक़सद था और न हो सकता है.

जैसा हमने ऊपर कहा हम नीलोखेड़ी देखने नहीं जा सके. लेकिन वहां से आने वाली रिपोर्टों के भरोसे पर इतना समझ में आ जाता है कि सरकार की मनशा यह थी कि नीलोखेड़ी एक अच्छा ख़ासा शहर बन जाये जहां तरह तरह के कारख़ाने और मौजूदा तर्ज़ के कारख़ाने चलते हों और सभी लोग रोज़ी से लगे रहें. हम नहीं कह सकते कि वहां जो कोआप्रेटिव चालू किये गये वह कितनी हद तक सच्चे कोआप्रेटिव थे और कितनी हद तक उनमें सरकारी लोगों या उस बस्ती के ही मालदार और असरदार लोगों का ज़्यादा हाथ था. मगर जब वहां के कारख़ाने ख़त्म हो गये तो उनसे इतना साफ़ पता चलता है कि उनमें जो चीज़ें तैयार होती थीं वह ऐसी नहीं थीं जो वहां के लोगों के लिये बहुत ज़रूरी हों और न ऐसी थीं जो देहली या दूसरे बड़े बाज़ारों में विदेश से आने वाले या बड़ी बड़ी मिलों में बने सामान का मुक़ाबिला कर सकें. उनकी खपत न नीलोखेड़ी में हुई और न बाहर बाज़ार में. लिहाज़ा वह बैठ गईं. इस वजह से नीलोखेड़ी का सारा काम ठंडा पड़ गया और बेरोज़गारी का हो जाना ताज्जुब की बात नहीं है.

हमें नहीं मालूम कि नीलोखेड़ी की नाकामयाबी पर प्लानिंग कमीशन वाले या केन्द्री सरकार के रहनुमा लोग



سے بڑھکر 33 فیصدی ہوگئی ۔ وہاں کے کارخانے مانو ایکدم برباد ہوگئے ۔

یہ نتیجہ ہے 1948 سے لے کر 1953 تک کی گئی سرکاری کوششوں کا ۔ چھ سال کی گاڑھی کمائی! نیلوکھیڑی بنا گئے ہم اندازہ لگا سکتے ہیں کہ وہاں کے لوگوں کی کیا درگشا ہوگی اور وہ کیا کہتے ہونگے ۔ سرکاری اور اخباری حلقوں کا بیان یہ ہے کہ پنجاب سرکار نے جو اب وہاں کا کام ہاتھ میں لیا ہے تو پہلی چیز وہ یہ کرنے جا رہی ہے کہ پہلے جو ملی جلی یا (Collective) ملکیت پر زور دیا جاتا تھا اس کی بجائے اب نجی ملکیت پر زور دیا جائیگا ۔ ان کا کہنا یہ ہے کہ وہاں کے ارد گرد جو آرتھک حالت ہے اور وہاں پر بسنے والے زیادہ‌تر لوگوں کا جو "بہت زیادہ نجی پسند کی طبیعت" ہے اسکی وجہ سے یہ تبدیلی کرنا ضروری ہے ۔ وہاں پر جو انجینیرنگ کا کارخانہ اور پریس وغیرہ چلتے ہیں انہیں پنجاب سرکار نے لے لیا ہے ۔ ظاہر بات ہے کہ سرکاری کام کی بدولت اور دوسرے سرکاری محکموں کی مانگ کی وجہ سے نیلو کھیڑی کے یہ کارخانے دوبارہ چلنے لگ جائینگے مگر اس سے کون انکار کریگا کہ نیلو کھیڑی بسانے کا نہ یہ مقصد تھا اور نہ ہوسکتا ہے ۔

جیسا ہم نے اوپر کہا ہم نیلو کھیڑی دیکھنے نہیں جا سکے ۔ لیکن وہاں سے آنے والی رپورٹوں کے بھروسہ پر اتنا سمجھ میں آ جاتا ہے کہ سرکار کی منشا یہ تھی کہ نیلو کھیڑی ایک اچھا خاصہ شہر بن جائے جہاں طرح طرح کے کارخانے اور موجودہ طرز کے کارخانے چلتے ہوں اور سبھی لوگ روزی سے لگے رہیں ۔ ہم نہیں کہ سکتے کہ وہاں جو کوآپریٹو چالو کیئے گئے وہ کتنی حد تک سچے کوآپریٹو تھے اور کتنی حد تک ان میں سرکاری لوگوں یا اس بستی کے ہی مالدار اور اثر دار لوگوں کا زیادہ ہاتھ تھا ۔ مگر جب وہاں کے کارخانے ختم ہوگئے تو ان سے اتنا صاف پتہ چلتا ہے کہ ان میں جو چیزیں تیار ہوتی تھیں وہ ایسی نہیں تھیں جو وہاں کے لوگوں کے لیئے بہت ضروری ہوں اور نہ ایسی تھیں جو دہلی یا دوسرے بڑے بازاروں میں ودیش سے آنے والے یا بڑی بڑی ملوں میں بنے سمان کا مقابلہ کر سکیں ۔ ان کی کھپت نہ نیلو کھیڑی میں ہوئی اور نہ باہر بازار میں ۔ لہذا وہ بیٹھ گئیں ۔ اس وجہ سے نیلو کھیڑی کا سارا کام ٹھنڈا پڑ گیا اور بیروزگاری کا ہوجانا تعجب کی بات نہیں ہے ۔

ہمیں نہیں معلوم کہ نیلوکھیڑی کی ناکامیابی پر پلاننگ کمیشن والے یا کیندری سرکار کے رہنما لوگ

पर शक नहीं कर सकते थे. मगर हमें ख्याल आया कि "स्टेट्समैन" ठेठ अंग्रेज़ी अखबार है और हो सकता है कि उसका नुमाइन्दा देहाती काम का तजुर्बा न रखता हो और इसलिये वह ठीक ठीक न समझ सका हो कि नीलोखेड़ी की असलियत क्या है. इसलिये हम अपने पुराने ख्याल पर जमे रहे कि प्लानिंग कमीशन जब वहां की बाग डोर लिये हुए है तो कोई शिकायत की गुंजाइश हो ही नहीं सकती.

लेकिन पिछले तीन महीनों में नीलोखेड़ी के बारे में एक के बाद एक खबरें आना शुरू हुई जिनसे हम सोचने लगे कि ज़रूर कोई न कोई घबराहट की बात है और फिर हमें "स्टेट्समैन" के नुमाइन्दे की रिपोर्ट की याद हो आई. मालूम यह हुआ कि पहली जनवरी 1954 को नीलोखेड़ी का इन्तज़ाम पंजाब सरकार के सिपुर्द कर दिया गया. वहां पर एक के बाद एक दुशवारियां खड़ी होने लगीं और प्लानिंग कमीशन का सेन्ट्रल कम्युनिटी प्रोजेक्ट ऐडमिनिस्ट्रेशन उनका सामना न कर सका और आखिर वहां की ज़िम्मेदारी तक वह न संभाल सका. यह भी पता चला कि वहां का काम डांवाडोल देखकर नई दिल्ली सरकार ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के अर्थशास्त्र महकमे की शाख देहली स्कूल आफ एकोनामिक्स (Delhi Shool of Economics) से दरख्वास्त की कि वहां के काम धाम पर एक रिपोर्ट तैयार करे. यह रिपोर्ट तो हमारे देखने में नहीं आई मगर 27 अप्रैल 1954 के "स्टेट्समैन" के एडीटर के लिखे मज़मून में उसके कुछ जुमले लिये गये हैं जो हम यहां देते हैं.

रिपोर्ट तैयार करने के लिये 1519 में से 150 खान्दानों की हालत को ग़ौर से देखा गया. यह 150 खान्दान योंही बिला किसी खास लिहाज़ के चुन लिये गये. 1952 तक बसाने का काम तो काफ़ी हद तक हो चुका था फिर भी बहुतेरा करने को बाक़ी था. खास बात यह कि जिन लोगों को मुलाज़मत पर लगाया गया उनमें 45 फ़ीसदी तो ग़ैर मुस्तक़िल काम पर थे और 35 फ़ीसदी को अपना काम बहुत ही ज़्यादा नापसन्द था. मई 1952 में आकर आर्थिक हालत खराब होना शुरू हो गई. सोचा यह गया था कि नीलोखेड़ी बुनियादी ज़रूरतों के मामले में स्वावलम्बी होगी और जहां तक होगा सहकारी या कोआप्रेटिव ढंग पर उसे चलाया जायेगा. लेकिन देहली स्कूल वालों ने जब 1953 में वहां की जांच दोबारा की तो पता चला कि "1947 और 1951 के दर्मियान जो बसाने का काम किया गया था वह सब खतम व नश्ट हो गया और हालत फिर वह हो गई जो 1947 की अगस्त से दिसम्बर तक यानी नीलोखेड़ी की शुरूआत के वक्त थी. बेरोज़गारी 5 फ़ीसदी





پر شک نہیں کرسکتے تھے ۔ مگر ہمیں خیال آیا کہ "اسٹیٹسمین" ٹھیٹھ انگریزی اخبار ہے اور ہوسکتا ہے کہ اسکا نمائندہ دیہاتی کام کا تجربہ نہ رکھتا ہو اور اسلیئے وہ ٹھیک ٹھیک نہ سمجھ سکا ہو کہ نیلوکھیڑی کی اصلیت کیا ہے ۔ اسلیئے ہم اپنے پرانے خیال پر جمے رہے کہ پلاننگ کمیشن جب وہاں کی باگ ڈور لیئے ہوئے ہے تو کوئی شکایت کی گنجائش ہو ہی نہیں سکتی ۔

لیکن پچھلے تین مہینوں میں نیلوکھیڑی کے بارے میں ایک کے بعد ایک خبریں آنا شروع ہوئیں جن سے ہم سوچنے لگے کہ ضرور کوئی نہ کوئی گھبراہٹ کی بات ہے اور پھر ہمیں "اسٹیٹسمین" کے نمائندہ کی رپورٹ کی یاد ہو آئی ۔ معلوم یہ ہوا کہ پہلی جنوری 1954 کو نیلوکھیڑی کا انتظام پنجاب سرکار کے سپرد کردیا گیا ۔ وہاں پر ایک کے بعد ایک دشواریاں کھڑی ہونے لگیں اور پلاننگ کمیشن کا سینٹرل کمیونٹی پروجیکٹ ایڈمنسٹریشن ان کا سامنا نہ کرسکا اور آخر وہاں کی ذمہداری تک وہ نہ سنبھال سکا ۔ یہ بھی پتہ چلا کہ وہاں کا کام ڈانواڈول دیکھکر نئی دلی سرکار نے دلی یونیورسٹی کے ارتھ شاستر محکمہ کی شاخ دہلی اسکول آف اکونامکس (Delhi School of Economics) سے درخواست کی کہ وہاں کے کام دھام پر ایک رپورٹ تیار کرے ۔ یہ رپورٹ تو ہمارے دیکھنے میں نہیں آئی مگر 27 اپریل 1954 کے "اسٹیٹسمین" کے ایڈیٹر کے لکھے مضمون میں اس کے کچھ جملے لیئے گئے ہیں جو ہم یہاں دیتے ہیں ۔

رپورٹ تیار کرنے کے لئے 1519 میں سے 150 خاندانوں کی حالت کو غور سے دیکھا گیا ۔ یہ 150 خاندان یونہی بلا کسی خاص لحاظ کے چن لیئے گئے ۔ 1952 تک بسانے کا کام تو کافی حد تک ہوچکا تھا پھر بھی بہتیرا کرنے کو باقی تھا ۔ خاص بات یہ کہ جن لوگوں کو ملازمت پر لگایا گیا ان میں 45 فیصدی تو غیر مستقل کام پر تھے اور 35 فیصدی کو اپنا کام بہت ہی زیادہ ناپسند تھا ۔ مئی 1952 میں آکر آرتھک حالت خراب ہونا شروع ہوگئی ۔ سوچا یہ گیا تھا کہ نیلوکھیڑی بنیادی ضرورتوں کے معاملہ میں سواولمبی ہوگی اور جہاں تک ہوگا سرکاری یا کوآپریٹو ڈھنگ پر اسے چلایا جائیگا ۔ لیکن دہلی اسکول والوں نے جب 1953 میں وہاں کی جانچ دوبارہ کی تو پتہ چلا کہ "1947 اور 1951 کے درمیان جو بسانے کا کام کیا گیا تھا وہ سب ختم و نشٹ ہوگیا اور حالت پھر وہ ہوگئی جو 1947 کی اگست سے دسمبر تک یعنی نیلوکھیڑی کی شروعات کے وقت تھی ۔ بیروزگاری 5 فیصدی

# नीलोखेड़ी की फुलझड़ी

दो बरस पहले की बात है. "नया हिन्द" के प्रेमी पाठक जानते हैं कि वर्धा के प्रोफ़ेसर ठाकुर दास बंग और कई साथियों के साथ हम इटावा गये थे जहां हमने एक अमरीकी माहिर की निगरानी में चलने वाली गांव सुधार योजना को ख़ूब अहत्यात से देखा समझा था. हम इस नतीजे पर पहुंचे थे कि इटावा योजना एक घर फूंक तमाशा है जो हमारी देहाती जनता को और भी ज्यादा तबाह व बर्बाद करेगी. वक़्त ने साबित कर दिया है कि हमारा ख्याल सही था. उन्हीं दिनों हमारा इरादा था कि आगे बढ़ कर देहली तक जायें और वहां से थोड़े से फ़ासिले पर पंजाब के सूबे की हद में नीलोखेड़ी नाम का जो मुक़ाम है उसे भी देख आयें. मगर वक़्त की तंगी की वजह से ऐसा न हो सका और हम अब तक नीलोखेड़ी नहीं जा सके.

नीलोखेड़ी एक शहराती बस्ती ( Township ) है जिसे सन 1947 के बाद से बसाया गया है. उसके सभी बाशिन्दे शरनार्थी हैं जो पाकिस्तान से आये हैं. सन 1952 तक वहां पर 1519 ख़ान्दान बसाये गये थे. यहां का सारा इन्तज़ाम मरकज़ी सरकार की देख रेख में था और सन 1952 के शुरू में उसकी सारी ज़िम्मेदारी प्लानिंग कमीशन की तरफ़ से सेन्ट्रल कम्युनिटी प्रोजेक्स ऐडमिनिस्ट्रेशन Central Community Projects Administration ) ने ले ली. इटावा की तरह की तरह नीलखेड़ी की भी बड़ी चर्चा थी और कहा जाता था कि यहां शहराती व देहाती दोनों तरह की स्कीम या कम्युनिटी प्रोजेक्ट चलाया जायेगा और सारे मुल्क के लिये मिसाल पेश करने वाला काम किया जायेगा. इसके साथ साथ यह भी दावे थे कि काश्तकारी बढ़ाने, आने जाने के ज़रिये फैलाने, और स्कूल, अस्पताल वग़ैरा खोलने के अलावा ख़ास ज़ोर "इन्सान बसाने" पर दिया जायेगा. हम उम्मीद करते थे कि चूंकि प्लानिंग कमीशन ख़ुद नीलोखेड़ी की कशती खे रहा है इसलिये वाक़ई ज़ोरदार नतीजे निकलेंगे और मुल्क की नई तामीर का नक़शा हमारे सामने आयेगा.

हमारा ख्याल था कि नीलोखेड़ी में ढंग से काम चल रहा है मगर 1953 के शुरू में दिल्ली के "स्टेट्समैन" अख़बार के ख़ास नुमाइन्दे की एक हैरतअंगेज़ रिपोर्ट छपी. उसमें लिखा था कि कोआपरेटिव के सरकारी तरीक़े पर जो योजना वहां चल रही है वह नाकाम साबित हुई है और बेरोज़गारी वग़ैरा शिद्दत से बढ़ रही है. ज़िम्मेदार अख़बार की तरफ़ से रिपोर्ट होने की वजह से हम उस



# نیلوکھیڑی کی پھل جھڑی

دوسرے برس پہلے کی بات ہے ۔ "نیا ہند" کے پریمی پاٹھک جانتے ہیں کہ وردھا کے پروفیسر ٹھاکر داس بنگ اور کئی ساتھیوں کے ساتھ ہم اٹاوہ گئے تھے جہاں ہم نے ایک امریکی ماہر کی نگرانی میں چلنے والی گاؤں سدھار یوجنا کو خوب احتیاط سے دیکھا سمجھا تھا ۔ ہم اس نتیجہ پر پہونچے تھے کہ اٹاوہ یوجنا ایک گھر پھونک تماشہ ہے جو ہماری دیہاتی جنتا کو اور بھی زیادہ تباہ و برباد کریگی ۔ وقت نے ثابت کردیا ہے کہ ہمارا خیال صحیح تھا ۔ انہیں دنوں ہمارا ارادہ تھا کہ آگے بڑھکر دہلی تک جائیں اور وہاں سے تھوڑے سے فاصلہ پر پنجاب کے صوبہ کی حد میں نیلوکھیڑی نام کا جو مقام ہے اسے بھی دیکھ آئیں، مگر وقت کی تنگی کی وجہ سے ایسا نہ ہوسکا اور ہم اب تک نیلوکھیڑی نہیں جاسکے ۔

نیلوکھیڑی ایک شہراتی بستی (Township) ہے جسے 1947 کے بعد سے بسایا گیا ہے ۔ اس کے سبھی باشندے شرنارتھی ہیں جو پاکستان سے آئے ہیں ۔ سن 1952 تک وہاں پر 1519 خاندان بسائے گئے تھے ۔ یہاں کا سارا انتظام مرکزی سرکار کی دیکھ ریکھ میں تھا اور سن 1952 کے شروع میں اسکی ساری ذمہ داری پلاننگ کمیشن کی طرف سے سینٹرل کمیونٹی پروجیکٹس ایڈ منسٹریشن (Central Community Projects Administration) نے لے لی ۔ اٹاوہ کی طرح نیلوکھیڑی کی بھی بڑی چرچا تھی اور کہا جاتا تھا کہ یہاں شہراتی و دیہاتی دونوں طرح کی اسکیم یا کمیونٹی پروجیکٹ چلایا جائیگا اور سارے ملک کے لئے مثال پیش کرنے والا کام کیا جائیگا ۔ اس کے ساتھ ساتھ یہ بھی دعوے تھے کہ کاشتکاری بڑھانے' آنے جانے کے ذریعے پھیلانے' اور اسکول' اسپتال وغیرہ کھولنے کے علاوہ خاص زور "انسان بسانے" پر دیا جائیگا ۔ ہم امید کرتے تھے کہ چونکہ پلاننگ کمیشن خود نیلوکھیڑی کی کشتی کو کھے رہا ہے اسلیئے واقعی زوردار نتیجے نکلینگے اور ملک کی نئی تعمیر کا نقشہ ہمارے سامنے آئیگا ۔

ہمارا خیال تھا کہ نیلوکھیڑی میں ڈھنگ سے کام چل رہا ہے ۔ مگر 1953 کے شروع میں دلی کے "اسٹیٹسمین" اخبار کے خاص نمائندہ کی ایک حیرت انگیز رپورٹ چھپی ۔ اسمیں لکھا تھا کہ کوآپریٹو کے سرکاری طریقہ پر جو یوجنا وہاں چل رہی ہے وہ ناکام ثابت ہوئی ہے اور بیروزگاری وغیرہ شدت سے بڑھ رہی ہے ۔ ذمہ دار اخبار کی طرف سے رپورٹ ہونے کی وجہ سے ہم اس

लोगों ने इस बात की तसदीक़ कर ली कि अगर मंहगाई की वजह उन्हें ज्यादा मिलना चाहिये तो इस हिसाब से मुल्क के दूसरे लोगों की आमदनियां ज्यादा हो गई हैं. नहीं, उन्हें नहीं ख्याल आया. अफ़सोस इस बात का है कि जब आचार्य कृपलानी जैसे उनके बुजुर्ग साथी ने कांग्रेस वालों को याद दिलाई तब भी उनके ऊपर कोई असर नहीं हुआ. मसल मशहूर है कि चिकने घड़े पर पानी का कोई असर ही नहीं होता.

शायद हमारे जवाब में कोई कांग्रेसी भाई कहेंगे कि हमने तनख्वाह वग़ैरा मुक़र्रर की तो कौन नाइन्साफ़ी की, अंग्रेज़ी पार्लियामेन्ट के मेम्बरों ने तो अपनी तनख्वाह एक हज़ार पौंड सालाना से डेढ़ हज़ार पौंड कर ली. इस दलील पर सिवाय तरस खाने के और क्या किया जा सकता है क्योंकि इंगलिस्तान हिन्दुस्तान नहीं है और न हिन्दुस्तान इंगलिस्तान है. लेकिन इंगलिस्तान की पार्लियामेन्ट वालों की एक ख़ुसूसियत है कि वह एक हद के अन्दर रह कर काम करते हैं और लोक राज का ख्याल रखते हैं. यह बात हिन्दुस्तान की पार्लियामेन्ट वालों के बारे में नहीं कही जा सकती है. कैसे दुख की चीज़ है कि हमारी पार्लियामेन्ट के बहुत से मेम्बर लोगों ने अपने रहने के कमरों को किराये पर उठा रक्खा है और जितना किराया खुद नहीं देते उनसे ज्यादा अपने किरायेदारों से वसूल कर लेते हैं. यानी अपने कमरों को भी उन्होंने आमदनी का ज़रिया बना लिया है. अब यह एक ऐसी बात है जिसे जान कर हर हिन्दुस्तानी की आंखें शर्म से डूब जायेंगी. जब मेम्बर लोग इस तरह नाजाइज़ आमदनी के पीछे पड़ेंगे तो उनसे मुल्क की बेहतरी की क्या उम्मीद की जा सकती है. उनको ख़ुदग़र्ज़ी के पुतले कहा जाये तो बेजा न होगा. एक मछली से सारा तालाब ही गंदा हो जाता है.

तिस पर भी कौन जाने कि हमारे हुक्काम और कांग्रेसी भाई हिन्दुस्तान को इंगलिस्तान बनाने के ख्वाब देखते हों तो हम उनसे यक़ीन व नम्रता के साथ कहना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान हरगिज़ इंगलिस्तान नहीं बनेगा, आज अपनी हकूमत के नशे में चूर हो कर कांग्रेस वाले या उनके हमख्याल जिस तरह चाहें जनता को तकलीफ़ दे लें लेकिन कल, कल नहीं तो परसों, इस मुल्क की जनता अपने पैरों पर खड़ी हो कर गांव गांव "ग्राम राज" क़ायम करेगी और मुल्क के अन्दर इन्साफ़ व ईमान की हकूमत या इन्सानी हकूमत क़ायम करेगी जिसमें मौजूदा पार्लियामेन्ट जैसी "बांझ" और "वैश्या" जमाअतों की कोई जगह नहीं होगी.

8. 6. '54 —सुरेशराम भाई



لوگوں نے اس بات کی تصدیق کر لی کہ اگر مہنگائی کی وجہ سے انہیں زیادہ ملنا چاہئے تو اس حساب سے ملک کے دوسرے لوگوں کی آمدنیاں زیادہ ہوگئی ہیں. نہیں، انہیں نہیں خیال آیا. افسوس اس بات کا ہے کہ جب آچاریہ کرپلانی جیسے ان کے بزرگ ساتھی نے کانگریس والوں کو یاد دلائی تب بھی ان کے اوپر کوئی اثر نہیں ہوا. مثل مشہور ہے کہ چکنے گھڑے پر پانی کا کوئی اثر ہی نہیں ہوتا.

شاید ہمارے جواب میں کوئی کانگریسی بھائی کہینگے کہ ہم نے تنخواہ وغیرہ مقرر کی تو کون نا انصافی کی، انگریزی پارلیامنٹ کے ممبروں نے تو اپنی تنخواہ ایک ہزار پونڈ سالانہ سے ڈیڑھ ہزار پونڈ کر لی. اس دلیل پر سوائے ترس کھانے کے اور کیا کیا جا سکتا ہے کیونکہ انگلستان ہندستان نہیں ہے اور نہ ہندستان انگلستان ہے. لیکن انگلستان کی پارلیامنٹ والوں کی ایک خصوصیت ہے کہ وہ ایک حد کے اندر رہ کر کام کرتے ہیں اور لوک راج کا خیال رکھتے ہیں. یہ بات ہندستان کی پارلیامنٹ والوں کے بارے میں نہیں کہی جا سکتی. کیسے دکھ کی چیز ہے کہ ہماری پارلیامنٹ کے بہت سے ممبر لوگوں نے اپنے رہنے کے کمروں کو کرایہ پر اٹھا رکھا ہے اور جتنا کرایہ خود نہیں دیتے اس سے زیادہ اپنے کرایہ داروں سے وصول کر لیتے ہیں. یعنی اپنے کمروں کو بھی انہوں نے آمدنی کا ذریعہ بنا لیا ہے. اب یہ ایک ایسی بات ہے جسے جان کر ہر ہندستانی کی آنکھیں شرم سے ڈوب جائیں گی. جب ممبر لوگ اس طرح ناجائز آمدنی کے پیچھے پڑیں گے تو ان سے ملک کی بہتری کی کیا امید کی جا سکتی ہے. ان کو خود غرضی کے پتلے کہا جائے تو بیجا نہ ہوگا. ایک مچھلی سے سارا تالاب ہی گندا ہو جاتا ہے.

تس پر بھی کون جانے کہ ہمارے حکام اور کانگریسی بھائی ہندستان کو انگلستان بنانے کے خواب دیکھتے ہوں تو ہم ان سے یقین و نمرتا کے ساتھ کہنا چاہتے ہیں کہ ہندستان ہرگز انگلستان نہیں بنیگا، آج اپنی حکومت کے نشہ میں چور ہو کر کانگریس والے یا ان کے ہم خیال جس طرح چاہیں جنتا کو تکلیف دے لیں لیکن کل، کل نہیں تو پرسوں، اس ملک کی جنتا اپنے پیروں پر کھڑی ہو کر گاؤں گاؤں "گرام راج" قائم کرے گی اور ملک کے اندر انصاف و ایمان کی حکومت یا انسانی حکومت قائم کرے گی جس میں موجودہ پارلیامنٹ جیسی "بانجھ" اور "ویشیا" جماعتوں کی کوئی جگہ نہیں ہوگی.

8. 6. '54 —سریش رام بھائی

(iii) मौजूदा दस्तूर के मुताबिक़ महज़ चालीस रुपया रोज़ भत्ता.

कांग्रेस की तरफ़ से आने वाली नई तजवीज़ की मुख़ालिफ़त आचार्य कृपलानी ने की और इसी तरह कम्युनिस्ट पार्टी के नाइब लीडर प्रोफ़ेसर मुकर्जी ने भी. मगर जहां अकसरयत पर सारे फ़ैसले होते हों वहां कम तादाद वालों की तरफ़ से अगर कोई अच्छी से अच्छी बात भी पेश की जाये तो वह बेकार सी साबित होती है. ताज्जुब इस बात का है कि जो नई तजवीज़ कांग्रेस मेम्बर ने पार्लियामेन्ट में पेश की वह कांग्रेस की तरफ़ से इस कमेटी में नहीं पेश की गई जिस के हवाले यह काम गया था. हिन्दुस्तान की कैसी बदक़िस्मती है कि इसकी सब से आला कही जाने वाली पार्लियामेन्ट नाम की सभा के मेम्बर अपने खाने पीने और रहने सहने के सवालों पर एक राय नहीं हो पाते. इसमें हम कांग्रेस पार्टी को सब में ज़्यादा क़सूरवार ठैहराये बिना नहीं रह सकते.

ऐसी हालत में जब देश की हाकिम कांग्रेस पार्टी के लोग निजी सवालों पर मिल जुल कर अमल नहीं कर सकते तो भला मुल्क की आम जनता से वास्ता रखने वाले और एक से एक पेचीदा सवालों पर किस तर एक राय हो सकते हैं. शायद यह दोश कांग्रेस पार्टी का इतना नहीं जितना पार्लियामेंट्री निज़ाम का है. जिस अंग्रेज़ी पार्लियामेंट की यह नक़ल है इस पार्लियामेन्ट के बारे में संजीदा अंग्रेज़ों ने "दुनिया भर की गप का अड्डा", "बच्चा" और "कोई सच्चा ईसाई इनका मेम्बर नहीं हो सकता" वग़ैरा लफ़्ज़ इस्तेमाल किये हैं और महात्मा गांधी जी ने पार्लियामेन्ट की मिसाल "एक बांझ औरत और वैश्या" से दी है. महात्मा गांधी ने यह भी कहा था कि पार्लियामेन्ट के मेम्बरों में "न सच्ची ईमानदारी होती है और न जानदार अन्तःकरन या ज़मीर." हिन्दुस्तान की पार्लियामेन्ट ने साबित कर दिखाया कि महात्मा गांधी के दोनों बयान सोलह आने सही व वाजिब हैं.

इसके अलावा मामूली इन्सानी लिहाज़ से भी देखें तो मानना होगा कि पार्लियामेन्ट वालों ने यह बिल पास कर के ज़्यादती की है. जिस वक़्त उन्होंने ऊपर वाले बिल को पास किया उस वक़्त उन्होंने अपने दिल पर हाथ रख कर देखा होता कि क्या उन्हें अपनी कांस्टीचुऐनसी के उन ग़रीबों की याद है जिन्होंने पुश्त दर पुश्त यह भी नहीं जाना कि भर पेट खाना किस चिड़या का नाम है. जिनको मुल्क की हर तरक़्क़ी तबाही एक से एक गहरे सागर में डबो देती है और जिनकी आंखों के आगे राज भले कोई आ जाये उजाला नज़र नहीं आता. या जाने दें उन ग़रीबों को. क्या हमारे हुक्मरां

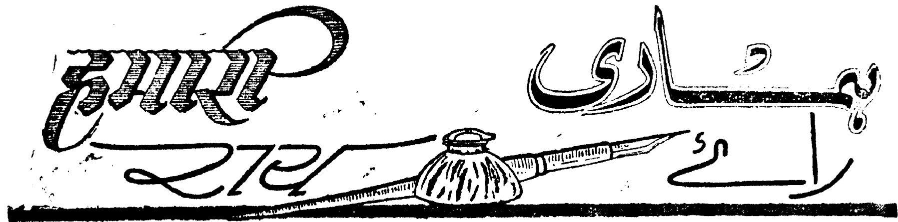


( iii ) موجودہ دستور کے مطابق محض چالیس روپیہ روز بھتہ .

کانگریس کی طرف سے آنے والی نئی تجویز کی مخالفت آچاریہ کرپلانی نے کی اور اسی طرح کمیونسٹ پارٹی کے نائب لیڈر پروفیسر مکرجی نے بھی. مگر جہاں اکثریت پر سارے فیصلے ہوتے ہوں وہاں کم تعداد والوں کی طرف سے اگر کوئی اچھی سے اچھی بات بھی پیش کی جائے تو وہ بیکار سی ثابت ہوتی ہے. تعجب اس بات کا ہے کہ جو نئی تجویز کانگریس ممبر نے پارلیامنٹ میں پیش کی وہ کانگریس کی طرف سے اس کمیٹی میں نہیں پیش کی گئی جس کے حوالے یہ کام گیا تھا . ہندستان کی کیسی بدقسمتی ہے کہ اسکی سب سے اعلیٰ کہی جانے والی پارلیامنٹ نام کی سبھا کے ممبر اپنے کھانے پینے اور رہنے سہنے کے سوالوں پر ایک رائے نہیں ہو پاتے . اس میں ہم کانگریس پارٹی کو سب میں زیادہ قصوروار ٹھہرائے بنا نہیں رہ سکتے .

ایسی حالت میں جب دیش کی حاکم کانگریس پارٹی کے لوگ نجی سوالوں پر مل جلکر عمل نہیں کرسکتے تو بھلا ملک کی عام جنتا سے واسطہ رکھنے والے اور ایک سے ایک پیچیدہ سوالوں پر کس طرح ایک رائے ہوسکتے ہیں. شاید یہ دوش کانگریس پارٹی کا اتنا نہیں جتنا پارلیامنٹری نظام کا ہے . جس انگریزی پارلیامنٹ کی یہ نقل ہے اس پارلیامنٹ کے بارے میں سنجیدہ انگریزوں نے "دنیا بھر کی گپ کا اڈا" "بچہ" اور "کوئی سچا عیسائی ان کا ممبر نہیں ہوسکتا" وغیرہ لفظ استعمال کئے ہیں اور مہاتما گاندھی جی نے پارلیامنٹ کی مثال " ایک بانجھ عورت اور ویشیا " سے دی ہے . مہاتما گاندھی نے یہ بھی کہا تھا کہ پارلیامنٹ کے ممبروں میں " نہ سچی ایمانداری ہوتی ہے اور نہ جاندار انتہ کرن یا ضمیر ." ہندستان کی پارلیامنٹ نے ثابت کر دکھایا کہ مہاتما گاندھی جی کے دونوں بیان سولہ آنے صحیح و واجب ہیں .

اس کے علاوہ معمولی انسانی لحاظ سے بھی دیکھیں تو ماننا ہوگا کہ پارلیامنٹ والوں نے یہ بل پاس کر کے زیادتی کی ہے . جس وقت انہوں نے اوپر والے بل کو پاس کیا اس وقت انہوں نے اپنے دل پر ہاتھ رکھکر دیکھا ہوتا کہ کیا انہیں اپنی کانسٹی چوینسی کے ان غریبوں کی یاد ہے جنہوں نے پشت درپشت یہ بھی نہیں جانا کہ بھر پیٹ کھانا کس چڑیا کا نام ہے. جن کو ملک کی ہر ترقی تباہی ایک سے ایک گہرے ساگر میں ڈبو دیتی ہے اور جن کی آنکھوں کے آگے راج بھلے کوئی آجائے اُجالا نظر نہیں آتا . یا جانے دیں ان غریبوں کو . کیا ہمارے حکمراں




## उनके मन की मौज

नई दिल्ली में जो हमारी पार्लियामेंट (या लोक सभा) है उसके मेम्बरों को अब तक कोई तनख्वाह नहीं मिलती थी. जिस दिन वह पार्लियामेंट की बैठक में हाज़िर हों उस दिन का वह चालीस रुपया भत्ता लेते थे. मगर पार्लियामेन्ट के पिछले इजलास में 14 मई को एक नया बिल उन्होंने पास किया जिसके मुताबिक़ उन्हें आइन्दा यह चीज़ें मिलेंगी :

( i ) तनख्वाह चार सौ रुपया माहवार.

( ii ) पार्लियामेन्ट की बैठक में हाज़िर होने पर इक्कीस ( Rs. 21/- ) रुपया रोज़.

( iii ) हिन्दुस्तान भर में कहीं भी रेल से आने जाने के लिये दूसरे दर्जे के दो मुफ़्त पास.

( iv ) उनको और उनके ख़ान्दान वालों को बीमारी में मुफ़्त दवा वग़ैरा.

( v ) मकान, टेलीफ़ोन व डाक की सहूलियतें.

( vi ) किन्हीं सरकारी कमेटियों के अगर वह मेम्बर हों तो सरकारी क़ायदे के मुताबिक़ रोज़ नया भत्ता, सफ़र ख़र्च वग़ैरा.

पार्लियामेन्ट के मेम्बर ख़ुद ही क़ानून बनाने वाले हैं, जो चाहे वह कर सकते हैं. स्याह या सफ़ेद जो भी करें उनके मन की मौज है. हम जानते हैं कि इस बिल के पास होते वक़्त जो वोट लिये गये उस में पंडित नेहरू व दीगर मिनिस्टरों ने हिस्सा नहीं लिया मगर बिल को यह शकल कांग्रेस पार्टी के एक मेम्बर की तजवीज़ के मुताबिक़ ही हासिल हुई. इसलिये यह मानना पड़ेगा कि कांग्रेसी मिनिस्टरों और कांग्रेस पार्टी की पूरी सलाह से यह काम किया गया. वैसे इस बिल का मसौदा बनाने का काम जिस कमेटी के सिपुर्द हुआ था उसने तो सिर्फ़ यह सिफ़ारिशें की थीं :

( i ) तनख्वाह तीन सौ रुपया माहवार.

( ii ) पार्लियामेंट की बैठक में हाज़िर होने पर बीस रुपया रोज़ या इन दोनों की बजाय,

## اُنکے من کی موج

نئی دہلی میں جو ہماری پارلیامنٹ (یا لوک سبھا) ہے اسکے ممبروں کو اب تک کوئی تنخواہ نہیں ملتی تھی۔ جس دن وہ پارلیامنٹ کی بیٹھک میں حاضر ہوں اس دن کا وہ چالیس روپیہ بھتہ لیتے تھے۔ مگر پارلیامنٹ کے پچھلے اجلاس میں 14 مئی کو ایک نیا بل انہوں نے پاس کیا جس کے مطابق انہیں آئندہ یہ چیزیں ملینگی :

( i ) تنخواہ چار سو روپیہ ماہوار۔

( ii ) پارلیامنٹ کی بیٹھک میں حاضر ہونے پر اکیس Rs. 21/- روپیہ روز۔

( iii ) ہندستان بھر میں کہیں بھی ریل سے آنے جانے کے لیئے دوسرے درجہ کے دو مفت پاس۔

( iv ) انکو اور انکے خاندان والوں کو بیماری میں مفت دوا وغیرہ۔

( v ) مکان، ٹیلیفون و ڈاک کی سہولیتیں۔

( vi ) کنہیں سرکاری کمیٹیوں کے اگر وہ ممبر ہوں تو سرکاری قاعدہ کے مطابق روز نیا بھتہ، سفر خرچ وغیرہ۔

پارلیامنٹ کے ممبر خود ہی قانون بنانے والے ہیں، جو چاہے وہ کرسکتے ہیں۔ سیاہ یا سفید جو بھی کریں ان کے من کی موج ہے۔ ہم جانتے ہیں کہ اس بل کے پاس ہوتے وقت جو ووٹ لیئے گئے اس میں پنڈت نہرو و دیگر منسٹروں نے حصہ نہیں لیا مگر بل کو یہ شکل کانگریس پارٹی کے ایک ممبر کی تجویز کے مطابق ہی حاصل ہوئی۔ اسلیئے یہ ماننا پڑیگا کہ کانگریسی منسٹروں اور کانگریس پارٹی کی پوری صلاح سے یہ کام کیا گیا۔ ویسے اس بل کا مسودہ بنانے کا کام جس کمیٹی کے سپرد ہوا تھا اس نے تو صرف یہ سفارشیں کی تھیں :

( i ) تنخواہ تین سو روپیہ ماہوار۔

( ii ) پارلیامنٹ کی بیٹھک میں حاضر ہونے پر بیس روپیہ روز یا ان دونوں کی بجائے،

"बाप बेटे" का हीरो बज़ारूफ़ है. वह एक नौजवान आदमी है और डाक्टरी का विद्यार्थी है, जीवन से निराश है और किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करता. इसी नौजवान के चारों तरफ़ पूरा नाविल घूमता है. जब यह नाविल पहले पहल निकला था तो नौजवानों ने इस की ख़ूब ले दे मचाई. वह लोग इस को नौजवानों पर हमला समझते थे. लेकिन यह यथार्थवादी नाविल है और उस समय नौजवानों की जो असली हालत थी उस का चित्रन इस में मिलता है.

यह नाविल दुनिया के साहित्य में एक नई परम्परा की बुनियाद है. जीवन को परखने, समझने और संवारने का सबक़ इस नाविल से मिलता है.

जामा मिल्लिया उर्दू और हिन्दी को साहित्य के अनमोल रत्न देता रहा है तुरगनेफ़ के "बाप बेटे" को पेश कर के उसने अपनी परम्परा को निभाया है. लेकिन हमें एक शिक़ायत है. वह यह है कि अनुवाद का स्तर गिरा दिया गया है. जामा मिल्लिया ने बहुत से अनुवाद छापे हैं और वह ऐसे हैं कि पढ़ कर यह कोई नहीं कह सकता कि यह अनुवाद हैं. लेकिन "बाप बेटे" का अनुवाद अनुवाद ही मालूम होता है. छपाई बेहद ख़राब है. इस से पढ़ने में ध्यान बट जाता है और लुत्फ़ में कमी आ जाती है. दाम भी ज़्यादा रक्खा गया है. उम्मीद है कि दूसरे ऐडीशन में यह कमियां पूरी कर ली जायेंगी.

—मुजीब रिज़वी

”باپ بیٹے“ کا ہیرو بزاروف ہے. وہ ایک نوجوان آدمی ہے اور ڈاکٹری کا ودیارتھی ہے، جیون سے نراش ہے اور کسی چیز پر وشواس نہیں کرتا۔ اسی نوجوان کے چاروں طرف پورا ناول گھومتا ہے۔ جب یہ ناول پہلے پہل نکلا تھا تو نوجوانوں نے اسکی خوب لے دے مچائی۔ وہ لوگ اسکو نوجوانوں پر حملہ سمجھتے تھے۔ لیکن یہ یتھارتھ وادی ناول ہے اور اس سمے نوجوانوں کی جو اصلی حالت تھی اس کا چترن اس میں ملتا ہے۔

یہ ناول دنیا کے ساہتیہ میں ایک نئی پرمپرا کی بنیاد ہے۔ جیون کو پرکھنے، سمجھنے اور سنوارنے کا سبق اس ناول سے ملتا ہے۔

جامعہ ملیہ اردو اور ہندی کو ساہتیہ کے انمول رتن دیتا رہا ہے۔ تورگنیف کے ”باپ بیٹے“ کو پیش کر کے اس نے اپنی پرمپرا کو نبھایا ہے۔ لیکن ہمیں ایک شکایت ہے۔ وہ یہ ہے کہ انوواد کا استر گرا دیا گیا ہے۔ جامعہ ملیہ نے بہت سے انوواد چھاپے ہیں اور وہ ایسے ہیں کہ پڑھکر یہ کوئی نہیں کہہ سکتا کہ یہ انوواد ہیں لیکن ”باپ بیٹے“ کا انوواد انوواد ہی معلوم ہوتا ہے۔ چھپائی بے حد خراب ہے. اس سے پڑھنے میں دھیان بٹ جاتا ہے اور لطف میں کمی آ جاتی ہے۔ دام بھی زیادہ رکھا گیا ہے۔ امید ہے کہ دوسرے ایڈیشن میں یہ کمیاں پوری کر لی جائیں گی۔

—مجیب رضوی

## शऊर

दो माही रसाला; एडीटर—एस. ए. हुसेनी; मैनेजिंग एडीटर—सर्वर डंडा; मिलने का पता—शऊर पब्लिकेशन्स; 699 उसमान पुरा, हैद्राबाद दकन; सालाना चन्दा—दो रुपया, सफ़ा 112. $\frac{20 \times 30}{16}$ में यह रिसाला निकलता है. एक कापी का दाम छः आना है. कवर पर ख़ूबसूरत कला चित्र है. इस रिसाले का मक़सद जनवादी और तरक़्क़ी पसन्द अदब की सेवा करना है.

इस रिसाले में कई अच्छे चित्र दिये गये हैं. उर्दू के अच्छे लिखाने वालों का इस को सहयोग हासिल है. कहानियां, नज़्में, व्यंग और चित्रकला पर लेख, सब अच्छे हैं. उम्मीद है कि दो चार नम्बर निकल कर यह रिसाला बन्द न हो जायेगा.

—मुजीब रिज़वी

## شعور

دو ماہی رسالہ؛ ایڈیٹر—ایس. اے. حسینی؛ مینیجنگ ایڈیٹر—سرور ڈنڈا؛ ملنے کا پتہ—شعور پبلیکیشنز، 699 عثمان پورہ، حیدرآباد دکن؛ سالانہ چندہ—دو روپیہ؛ صفحہ—112. $\frac{20 \times 30}{16}$ میں یہ رسالہ نکلتا ہے۔ ایک کاپی کا دام چھ آنہ ہے۔ کور پر خوبصورت کلا چتر ہے۔ اس رسالے کا مقصد جنوادی اور ترقی پسند ادب کی سیوا کرنا ہے۔

اس رسالے میں کئی اچھے چتر دئے گئے ہیں۔ اردو کے اچھے لکھنے والوں کا اس کو سہیوگ حاصل ہے۔ کہانیاں، نظمیں، ویَنگ اور چترکلا پر لیکھ، سب اچھے ہیں۔ امید ہے کہ دو چار نمبر نکل کر یہ رسالہ بند نہ ہو جائے گا۔

—مجیب رضوی

में अनुभव हासिल किया और अब "सेवा ग्राम" नाम का एक हिन्दी साप्ताहिक निकाल रहे हैं. इस अख़बार का लक्ष है—"ग्राम सेवा ही, देश सेवा है."

इस अख़बार में किसानों की मतलब की बातें होती हैं. उन के हित की सूचनायें होती हैं और अपने भाग्य को बदलने के लिये उन्हें नई नई बातें बताई जाती हैं. सच मुच इस अख़बार से किसानों को बहुत फ़ायदा होगा. गांव वालों के लिये बहुत अख़बार निकले हैं लेकिन इस टक्कर का कोई भी मेरी नज़र से नहीं गुज़रा.

इस अख़बार की छपाई बहुत ही सुन्दर होती है और इस की सजावट मन मोहक होती है. यूपी सरकार ने इस अख़बार को मंज़ूरी दी है. अगर जनता भी सहायता दे तो यह अख़बार तरक़्क़ी कर सकता है और देश की कुछ न कुछ सेवा कर सकता है.

—मुजीब रिज़वी

## मख़दूम के सौ शेर

संकलन करने वाले—वामिक़ जौनपुरी, वक़ार ख़लील, हफ़ीज़ इक़बाल; निकालने वाले—अदारा मतबुआत मख़ज़न, 235 मुग़लपुरा, हैद्राबाद दकन; लिखावट—उर्दू; दाम चार आना.

मख़दूम का परिचय देना बेकार है. उर्दू के दो चार शायरों का नाम जब भी लिया जाता है मख़दूम उस में ज़रूर आ जाते हैं. उन के बहुत से दीवान हैं. लेकिन इस छोटे से पैम्फ़लेट में संकलन करताओं ने कुल सौ शेर छांट कर रक्खे हैं. शुरू में क़ाज़ी अब्दुल ग़फ़्फ़ार ने "मख़दूम पर एक नज़र" की सुर्ख़ी से दो शब्द लिखे हैं. क़ाज़ी साहब ने मख़दूम की शायरी पर काफ़ी रोशनी डाली है. यह पैम्फ़लेट मख़दूम की शायरी को नमूने के तौर पर पेश करता है और इसे पढ़ कर मुझे यक़ीन है लोग मख़दूम की रचनाओं को ढूंढ कर पढ़ने की कोशिश करेंगे.

—मुजीब रिज़वी

## बाप बेटे

लिखने वाले—तुरगनेफ़; अनुवाद करने वाले—अनवर अज़ीम; निकालने वाले—मकतबा जामा लिमिटेड देली; लिखावट—उर्दू; सफ़ा 399; दाम—पांच रुपये.

तुरगनेफ़ की गिन्ती रूस के महान साहित्यकारों में होती है. यह अपनी रचनाओं में उन्नीसवीं सदी के बीच के युग का चित्रन करते हैं. उस समय की बाहरी घटनाओं और आदमियों के अन्दरूनी भावों को वह अच्छी तरह जानते हैं और उस का चित्रन भी इस तरह करते हैं मानो फ़ोटो सामने रख दें.



میں انوبھو حاصل کیا اور اب " سیوا گرام " نام کا ایک ہندی ساپتاہک نکال رہے ہیں ۔ اس اخبار کا لکش ہے—" گرام سیوا ہی، دیش سیوا ہے ۔"

اس اخبار میں کسانوں کی مطلب کی باتیں ہوتی ہیں ۔ اُن کے ہت کی سوچنائیں ہوتی ہیں اور اپنے بھاگیہ کو بدلنے کے لئے اُنہیں نئی نئی باتیں بتائی جاتی ہیں ۔ سچ مچ اِس اخبار سے کسانوں کو بہت فائدہ ہوگا ۔ گاؤں والوں کے لیئے بہت سے اخبار نکلے ہیں لیکن اِس ٹکر کا کوئی بھی میری نظر سے نہیں گزرا ۔

اِس اخبار کی چھپائی بہت ہی سندر ہوتی ہے اور اِسکی سجاوٹ من موہک ہوتی ہے ۔ یوپی سرکار نے اِس اخبار کو منظوری دی ہے ۔ اگر جنتا بھی سہائتا دے تو یہ اخبار ترقی کرسکتا ہے اور دیش کی کچھ نہ کچھ سیوا کرسکتا ہے ۔

—مجیب رضوی

## مخدوم کے سو شعر

سنکلن کرنے والے—وامق جونپوری، وقار خلیل، حفیظ اقبال؛ نکالنے والے—ادارہ مطبوعات مخزن، 235 مغلپورہ، حیدرآباد دکن؛ لکھاوٹ—اردو؛ دام—چار آنہ ۔

مخدوم کا پریچے دینا بیکار ہے ۔ اردو کے دو چار شاعروں کا نام جب بھی لیا جاتا ہے مخدوم اس میں ضرور آ جاتے ہیں ۔ اُن کے بہت سے دیوان ہیں ۔ لیکن اس چھوٹے سے پمفلٹ میں سنکلن کرتاؤں نے کل سو شعر چھانٹ کر رکھے ہیں ۔ شروع میں قاضی عبدالغفار نے "مخدوم پر ایک نظر" کی سرخی سے دو شبد لکھے ہیں ۔ قاضی صاحب نے مخدوم کی شاعری پر کافی روشنی ڈالی ہے ۔ یہ پمفلٹ مخدوم کی شاعری کو نمونے کے طور پر پیش کرتا ہے اور اسے پڑھکر مجھے یقین ہے لوگ مخدوم کی رچناؤں کو ڈھونڈھ کر پڑھنے کی کوشش کریں گے ۔

—مجیب رضوی

## باپ بیٹے

لکھنے والے—ترگنیف؛ انوواد کرنے والے—انور عظیم؛ نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لمیٹڈ دہلی؛ لکھاوٹ—اردو؛ صفحے 399؛ دام—پانچ روپئے ۔

ترگنیف کی گنتی روس کے مہان ساہتیہ کاروں میں ہوتی ہے ۔ یہ اپنی رچناؤں میں انیسویں صدی کے بیچ کے یگ کا چترن کرتے ہیں ۔ اُس سمے کی باہری گھٹناؤں اور آدمیوں کے اندرونی بھاؤں کو وہ اچھی طرح جانتے ہیں اور اُس کا چترن بھی اسطرح کرتے ہیں مانو فوٹو سامنے رکھدیں ۔

डाक्टर जगदीश ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि विद्यार्थियों की आपसी सहयोग कमेटियां बनी हुई हैं. तेज़ विद्यार्थी, कमज़ोर विद्यार्थियों की पूरी सहायता करते हैं. अध्यापक और विद्यार्थी में बहुत सहयोग है.

होड़बाज़ी के समर्थकों को न जाने यह बात कैसी लगे लेकिन चीन ने जो ढर्रा अपनाया है, वह ही तालीम को आगे बढ़ाने में और काम करने में मदद दे सकता है. होड़बाज़ी की जगह पर आपसी सहायता का भाव पैदा किया जाता है.

जब तक अध्यापक परेशान हाल हैं तब तक लोगों को सच्ची शिक्षा नहीं दी जा सकती है. चीन में अध्यापक की इज़्ज़त बेहद बढ़ गई है. सरकार "अपने अध्यापकों की सुख सुविधाओं का ध्यान रखती है. उन्हें कम कराये पर मकान मिलते हैं और बीमार हो जाने पर उनकी मुफ़्त चकित्सा (इलाज) का प्रबन्ध है." महिला अध्यापकों को ज़च्चा काल की आठ हफ़्ते की छुट्टी मिलती है. यह छुट्टी तनख़्वाह समेत होती है.

इसी पुस्तक में चीनी आधुनिक साहित्य पर भी रोशनी डाली गई है. वहां के बड़े बड़े लेखकों की जीवनी भी डाक्टर जगदेश ने दी है और साथ में चीनी साहित्य का मुख़्तसिर इतिहास भी दे दिया है.

अभी तक किसी पुस्तक में नये चीन के जेलों का हाल पढ़ने को नहीं मिला था. डाक्टर जगदीश चन्द्र ने उस पर भी रोशनी डाली है.

जगह जगह पर इतिहास का पुट मिलता है जो पुस्तक को दिलचस्प बनाता है. आख़ीर में डाक्टर साहब ने कुछ चीनी शब्दों के उच्चारन भी दिये हैं.

इस पुस्तक में चीन के बड़े बड़े शहरों का संक्षिप्त इतिहास मिलता है, साथ में उन शहरों की मशहूर इमारतों का भी इतिहास दिया गया है. यह पुस्तक चीन को समझने में बहुत हद तक सहायता देता है.

किताब हर एक के पढ़ने की है लेकिन दाम इतना है कि बहुत कम लोग पढ़ पायेंगे. अगर प्रकाशक सस्ते दाम का एडीशन निकाल दें तो अच्छा होगा.

—मुजीब रिज़वी

## सेवा ग्राम

एडीटर—ज्ञानेन्द्र प्रसाद जैन; लिखावट—हिन्दी; मिलने का पता—दरयागंज, देहली; सालाना चन्दा—पांच रुपया; एक कापी का दाम—दो आना.

श्री ज्ञानेन्द्र प्रसाद जैन हाल में अमरीका से जर्नलिज़्म की शिक्षा लेकर वापस आए हैं. कुछ दिन उन्होंने भारत



ڈاکٹر جگدیش نے اپنی پستک میں لکھا ہے کہ ودیارتھیوں کی آپسی سہیوگ کمیٹیاں بنی ہوئی ہیں. تیز ودیارتھی کمزور ودیارتھیوں کی پوری سہائتا کرتے ہیں. ادھیاپک اور ودیارتھی میں بہت سہیوگ ہے.

ہوڑ بازی کے سمرتھکوں کو نہ جانے یہ بات کیسی لگے لیکن چین نے جو ڈھرا اپنایا ہے' وہ ہی تعلیم کو آگے بڑھانے میں اور کام کرنے میں مدد دے سکتا ہے. ہوڑ بازی کی جگہ پر آپسی سہائتا کا بھاؤ پیدا کیا جاتا ہے.

جب تک ادھیاپک پریشان حال ہیں تب تک لوگوں کو سچی شکشا نہیں دی جاسکتی ہے. چین میں ادھیاپک کی عزت بے حد بڑھ گئی ہے. سرکار "اپنے ادھیاپکوں کی سکھ سودھاؤں کا دھیان رکھتی ہے. انہیں کم کرائے پر مکان ملتے ہیں اور بیمار ہو جانے پر اُن کی مفت چکتسا (علاج) کا پربندھ ہے." مہلا ادھیاپکوں کو زچہ کال کی آٹھ ہفتے کی چھٹی ملتی ہے. یہ چھٹی تنخواہ سمیت ہوتی ہے.

اِس پستک میں چینی آدھونک ساہتیہ پر بھی روشنی ڈالی گئی ہے. وہاں کے بڑے بڑے لیکھکوں کی جیونی بھی ڈاکٹر جگدیش نے دی ہے اور ساتھ میں چینی ساہتیہ کا مختصر اتہاس بھی دے دیا ہے.

ابھی تک کسی پستک میں نئے چین کے جیلوں کا حال پڑھنے کو نہیں ملا تھا. ڈاکٹر جگدیش چندر نے اُس پر بھی روشنی ڈالی ہے.

جگہ جگہ پر اتہاس کا پٹ ملتا ہے جو پستک کو دلچسپ بناتا ہے. آخیر میں ڈاکٹر صاحب نے کچھ چینی شبدوں کے اُچارن بھی دیئے ہیں.

اِس پستک میں چین کے بڑے بڑے شہروں کا سنچھپت اتہاس ملتا ہے' ساتھ میں اُن شہروں کی مشہور عمارتوں کا بھی اتہاس دیا گیا ہے. یہ پستک چین کو سمجھنے میں بہت حد تک سہائتا دیتی ہے.

کتاب ہر ایک کے پڑھنے کی ہے لیکن دام اتنا ہے کہ بہت کم لوگ پڑھ پائیں گے. اگر پرکاشک سستے دام کا ایڈیشن نکال دیں تو اچھا ہوگا.

—مجیب رضوی

## سیوا گرام

ایڈیٹر—گیانیندر پرساد جین؛ لکھاوٹ ہندی؛ ملنے کا پتہ—1 دریا گنج' دہلی' سالانہ چندہ—پانچ روپیہ؛ ایک کا دام—دو آنہ.

شری گیانیندر پرساد جین حال میں امریکہ سے جرنلزم کی شکشا لے کر واپس آئے ہیں. کچھ دن انہوں نے بھارت

# कुछ किताबें

# کچھ کتابیں

## चीनी जनता के बीच

लिखने वाले—डाक्टर जगदीश चन्द्र जैन; निकालने वाले—पीपिल्स पबलिशिंग हाउस लिमिटेड बम्बई 4; लिखावट—हिन्दी; सफ़्हे—256; दाम—चार रुपये.

भारती लेखकों ने नये चीन पर बहुत सी किताबें लिखी हैं. कुछ ने भारत में बैठ कर किताबों की मदद से और कुछ ने वहां जा कर चीज़ों को समझ कर. लेकिन डाक्टर जगदेश चन्द्र की किताब का मूल्य अधिक है क्योंकि वह पीकिंग यूनिवर्सिटी में सालों हिन्दी पढ़ाते रहे हैं. दूसरी किताबें अगर देखी, सुनी और पढ़ी पर निर्भर करती है. तो जगदीश जी की पुस्तक अनुभव पर निर्भर करती है. अनुभव ही इस किताब को दिलचस्प बनाता है जहां जहां उन्होंने अपने अनुभव चित्रित किये हैं वहां वहां किताब दिल को छूती है. नया चीन के लिये दिल में प्रेम पैदा होता है और जहां जहां उन्होंने आंकड़े गिनाये हैं और ऐसे विश्यों पर लिखा है जिन पर पहले ही बहुत कुछ लिखा जा चुका है वहां वहां पुस्तक नीरस हो गई है.

अगर पुस्तक का नाम "चीनी विद्यार्थियों के बीच" होता तो अच्छा होता. असल में उन्हें विद्यार्थियों और अध्यापकों के सम्बन्ध में ही लिखना चाहिये था. दो तीन अध्याय उन्होंने इस सम्बन्ध में लिखे हैं. उनको पढ़ कर आंख खुल जाती है. चीनी विद्यार्थियों के बारे में वह लिखते हैं:—

> "मैंने काफ़ी नज़दीक से चीन के विद्यार्थियों का अध्यन करने का प्रयत्न (कोशिश) किया और उन्हें सरल, सीधा, परिश्रमी (मेहनती) और अतियन्त (बहुत) सहीशोन (रवादार) पाया. परनिन्दा और नरथक (बेकार) वाद विवाद (बहस) में अपना समय नश्ट करते हुए उन्हें कभी नहीं देखा. फ़ैशन की ओर उनकी रुचि नहीं है. छात्रों की अपेक्षा (मुक़ाबिले) छात्राएं कुछ अधिक प्रतिभाशाली जान पड़ीं. व्यक्तिवाद के स्थान पर सामुहिकता की स्वस्थ भावना विद्यार्थियों में दिन पर दिन बढ़ रही है."

## چینی جنتا کے بیچ

لکھنے والے—ڈاکٹر جگدیش چندر جین؛ نکالنے والے—پیپلس پبلشنگ ہاؤس لمیٹڈ بمبئی 4؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحے 256؛ دام—چار روپئے۔

بھارتی لیکھکوں نے نئے چین پر بہت سی کتابیں لکھی ہیں۔ کچھ نے بھارت میں بیٹھکر کتابوں کی مدد سے اور کچھ نے وہاں جا کر چیزوں کو سمجھکر۔ لیکن ڈاکٹر جگدیش چندر کی کتاب کا مولیہ ادھک ہے کیونکہ وہ پیکنگ یونیورسٹی میں سالوں ہندی پڑھاتے رہے ہیں۔ دوسری کتابیں اگر دیکھی، سنی اور پڑھی پر نربھر کرتی ہیں تو جگدیش جی کی پستک انوبھو پر نربھر کرتی ہے۔ انوبھو ہی اس کتاب کو دلچسپ بناتا ہے۔ جہاں جہاں انہوں نے اپنے انوبھو چترت کئے ہیں وہاں وہاں کتاب دل کو چھوتی ہے، نیا چین کے لئے دل میں پریم پیدا ہوتا ہے اور جہاں جہاں انہوں نے آنکڑے گنائے ہیں ایسے وشیوں پر لکھا ہے جن پر پہلے ہی بہت کچھ لکھا جا چکا ہے وہاں وہاں پستک نیرس ہو گئی ہے۔

اگر پستک کا نام "چینی ودیارتھیوں کے بیچ" ہوتا تو اچھا ہوتا۔ اصل میں انہیں ودیارتھیوں اور ادھیاپکوں کے سمبندھ میں ہی لکھنا چاہئے تھا۔ دو تین ادھیائے انہوں نے اس سمبندھ میں لکھے ہیں۔ ان کو پڑھکر آنکھ کھل جاتی ہے۔ چینی ودیارتھیوں کے بارے میں وہ لکھتے ہیں:—

> "میں نے کافی نزدیک سے چین کے ودیارتھیوں کا ادھین کرنے کا پریتن (کوشش) کیا اور انہیں سرل، سیدھا، پرشرمی (محنتی) اور اتینت (بہت) سہی شون (روادار) پایا۔ پرنندا اور نرارتھک (بیکار) واد وواد (بحث) میں اپنا سمے نشٹ کرتے ہوئے انہیں کبھی نہیں دیکھا۔ فیشن کی اور ان کی رچی نہیں ہے۔ چھاتروں کی اپیکشا (مقابلے) چھاترائیں کچھ ادھک پرتبھا شالی جان پڑیں۔ ویکتی واد کے استھان پر سامو ہکتا کی سوستھ بھاونا ودیارتھیوں میں دن پر دن بڑھ رہی ہے۔"

हासिल करने के लिये बहुत मज़बूत इरादे और बहुत बड़ी हिम्मत की ज़रूरत है. अगर सारे पिछड़े देश इस बात को समझ लेते हैं और एक साथ खड़े हो जाते हैं तो शान्ति बहुत जल्दी क़ायम हो जायेगी. इस काम के लिये हम सबको एक हो जाना चाहिये और हमें यह प्रन करना चाहिये कि मरेंगे तो विश्व शान्ति के लिये और जियेंगे तो विश्व शान्ति के लिये !

حاصل کرنے کے لیئے بہت مضبوط ارادے اور بہت بڑی ہمت کی ضرورت ہے . اگر سارے پچھڑے دیش اس بات کو سمجھ لیتے ہیں اور ایک ساتھ کھڑے ہوجاتے ہیں تو شانتی بہت جلدی قائم ہو جائے گی . اس کام کے لیئے ہم سب کو ایک ہو جانا چاہیئے اور ہمیں یہ پرن کرنا چاہیئے کہ مرینگے تو وشو شانتی کے لیئے اور جئینگے تو وشو شانتی کے لیئے !

---

नन्दा कई दिनों से भूका था—पेट की ज्वाला से पीड़ित और रोग से दुखी. उसने देखा—सेठ राम गोपाल मीठे पूड़ों का थाल भरे, देवी कुंड पर बन्दरों को खिलाने जा रहे हैं. गिड़गिड़ा कर नन्दा ने कहा—"सेठ जी ! मैं कई दिनो से भूका हूं, जान निकली जा रही है. कुछ पूड़े मुझे भी दीजिये.

"अबे भूका है, तो शहर में जा कर मांग ?"

"शहर जाने की हिम्मत नहीं है सेठ जी ! बीमारी ने मुझे घर लिया है भूके की जान बचा ने से तो हनुमान जी आपपर प्रसन्न ही होंगे."

"अच्छा रहने दे, मुझे तेरे उपदेश की ज़रूरत नहीं है."

बड़े प्रेम से बन्दरों को खिला कर सेठ जी लौटे तो देखा नन्दा रास्ते पर पड़ा है. घृना के स्वर में आप ही आप बोले—"अभी तो बदमाश भूकों मर रहा था, इतने में सो भी गया !"

यह सुन कर भी नन्दा नहीं जगा. जागने को वह सोया ही न था !

نندا کئی دنوں سے بھوکا تھا—پیٹ کی جوالا سے پیڑت اور روگ سے دکھی . اس نے دیکھا—سیٹھ رام گوپال میٹھے پوڑوں کا تھال بھرے، دیوی کنڈ پر بندروں کو کھلا نے جا رہے ہیں . گڑگڑا کر نندا نے کہا—" سیٹھ جی ! میں کئی دنوں سے بھوکا ہوں جان نکلی جا رہی ہے . کچھ پوڑے مجھے بھی دیجئے ."

" ابے بھوکا ہے، تو شہر میں جاکر مانگ؟"

" شہر جانے کی ہمت نہیں ہے سیٹھ جی ! بیماری نے مجھے گھیر لیا ہے. بھوکے کی جان بچانے سے تو ہنومان جی آپ پر پرسن ہی ہونگے !"

"اچھا رہنے دے، مجھے تیرے اپدیش کی ضرورت نہیں ہے ."

بڑے پریم سے بندروں کو کھلاکر سیٹھ جی لوٹے تو دیکھا نندا راستے پر پڑا ہے . گھرنا کے سور میں آپ ہی آپ بولے—"ابھی تو بدمعاش بھوکوں مر رہا تھا، اتنے میں سو بھی گیا !"

یہ سن کر بھی نندا نہیں جگا . جاگنے کو وہ سویا ہی نہ تھا !

---

आजकल अजीब घटना हो रही है. आदमी विज्ञान की सहायता से ज्यादा से ज्यादा पैदावार बढ़ाने पर जुटा हुआ है. लेकिन फिर भी इस कोशिश का नतीजा बहुत से देशों की ग़रीबी नहीं दूर कर पाया. अब भी वहां लोग भूखों मरते हैं और हर तरह से दुखी हैं. हद यह हो गई है कि ज़िन्दा रहना भी बहुत मुश्किल हो गया है. ज़िन्दगी की फ़िक्र और परेशानी बढ़ती चली जा रही है. आधुनिक हथियार मनुष्य जाति का ख़ात्मा कर सकते हैं. सारे देशों की जनता इन हथियारों की भयानकता से डर रही है.

लड़ाई के आधुनिक तरीक़ों की जितनी भी निन्दा की जाये कम है. सिवाय नैतिकता का ही सवाल नहीं है. समाजी और आर्थिक दृष्टिकोन से भी यह लड़ाइयां बहुत ही भयंकर हैं. साम्राजी जो लड़ाइयां छेड़ते हैं उसमें बहुत सी अच्छी चीज़ें तबाह हो जाती है और उन थोड़े से लोगों को भी बहुत ज्यादा फ़ायदा नहीं होता. आम जनता को बरबादी के सिवा और कुछ नहीं मिलता. यही नहीं कि घरबार तबाह होता है बल्कि इससे कहीं ज्यादा बुरी बात यह होती है कि आदमियों का आचार गिर जाता है और वह जान से मारे जाते हैं. लड़ाइयों की निन्दा करने के लिये बस इतना ही काफ़ी है.

## आर्थिक लक्ष

मैंने जो बातें ऊपर कही हैं उनका मतलब एक है दुनिया की सरकारों को चाहिये कि वह ऐसा रास्ता अख़्तियार करें कि वह आम जनता की बुनियादी ज़रूरतों का पूरा कर सकें और उन्हें जनता को सुख पहुंचाने और उसकी भलाई करने का हर वक़्त ध्यान रहे दौलत किस तरह से इकट्ठा की जाये इसकी चिन्ता उन्हें नहीं होनी चाहिये. जब तक हम अपना दृष्टिकोन नहीं बदलते हैं, जब तक हम जनता की ज़रूरतों को पूरा नहीं करते हैं, जब तक हम अपने माली ढांचे को नए सिरे से खड़ा नहीं करते हैं जब तक हम अपनी कोशिशों से जनता की ज़रूरत का सामान नहीं पैदा करते, जब तक हम अन्तर्राष्ट्री व्योपार से फ़ायदा उठाने का मोह नहीं छोड़ते हैं. तब तक हम दुनिया में शान्ति नहीं क़ायम कर सकते हैं. साम्राजी सरकारों से काग़ज़ी समझौते चाहे जितनी अच्छी नीयत से किये जायें वह शान्ति का स्थाई नहीं बना सकते. सच्ची और स्थाई शान्ति केवल उसी वक़्त क़ायम हो सकता है जब हम संगठित हों और उसके लिये अमली कोशिश करें. आज की लड़ाई यक़ीनन आर्थिक गड़बड़ी का नतीजा है. अगर हम अपने आर्थिक ढांचे को बदल दें तो हम हमेशा के लिये शान्तिमय जीवन बिता सकते हैं. इसको



آج کل عجیب گھٹنا ہو رہی ہے ۔ آدمی وگیان کی سہائتا سے زیادہ سے زیادہ پیداوار بڑھانے پر جٹا ہوا ہے ۔ لیکن پھر بھی اِس کوشش کا نتیجہ بہت سے دیشوں کی غریبی نہیں دور کر پایا ۔ اب بھی وہاں لوگ بھوکوں مرتے ہیں ۔ اور ہر طرح سے دکھی ہیں ۔ حد یہ ہوگئی ہے کہ زندہ رہنا بھی بہت مشکل ہوگیا ہے ۔ زندگی کی فکر اور پریشانی بڑھتی چلی جا رہی ہے ۔ آدھونک ہتھیار منشیہ جاتی کا خاتمہ کر سکتے ہیں ۔ سارے دیشوں کی جنتا اِن ہتھیاروں کی بھیانکتا سے ڈر رہی ہے ۔

لڑائی کے آدھونک طریقوں کی جتنی بھی نندا کی جائے کم ہے ۔ سوائے نیتکتا کا ہی سوال نہیں ہے ۔ سماجی اور آرتھک درشٹی کون سے بھی یہ لڑائیاں بہت ہی بھینکر ہیں ۔ سامراجی جو لڑائیاں چھیڑتے ہیں اُس میں بہت سی اچھی چیزیں تباہ ہو جاتی ہیں اور اُن تھوڑے سے لوگوں کو بھی بہت زیادہ فائدہ نہیں ہوتا ۔ عام جنتا کو بربادی کے سوا اور کچھ نہیں ملتا ۔ یہی نہیں کہ گھر بار تباہ ہوتا ہے بلکہ اِس سے کہیں زیادہ بری بات یہ ہوتی ہے کہ آدمیوں کا آچار گر جاتا ہے اور وہ جان سے مارے جاتے ہیں ۔ لڑائیوں کی نندا کرنے کے لیئے بس اتنا ہی کافی ہے ۔

## آرتھک لکش

میں نے جو باتیں اوپر کہی ہیں اُن کا مطلب ایک ہے ۔ دنیا کی سرکاروں کو چاہیئے کہ وہ ایسا راستہ اختیار کریں کہ وہ عام جنتا کی بنیادی ضرورتوں کو پورا کر سکیں اور انہیں جنتا کو سکھ پہونچانے اور اُس کی بھلائی کرنے کا ہر وقت دھیان رہے ۔ دولت کس طرح سے اکٹھا کی جائے اسکی چنتا اُنہیں نہیں ہونی چاہیئے ۔ جب تک ہم اپنا درشٹی کون نہیں بدلتے ہیں، جب تک ہم جنتا کی ضرورتوں کو پورا نہیں کرتے ہیں، جب تک ہم اپنے مالی ڈھانچے کو نئے سرے سے کھڑا نہیں کرتے ہیں، جب تک ہم اپنی کوششوں سے جنتا کی ضرورت کے سامان پیدا نہیں کرتے ہیں، جب تک ہم انتر راشٹری بیوپار سے فائدہ اُٹھانے کا موہ نہیں چھوڑتے ہیں، تب تک ہم دنیا میں شانتی قائم نہیں کر سکتے ہیں ۔ سامراجی سرکاروں سے کاغذی سمجھوتے چاہیئے جتنی اچھی نیت سے لیئے جائیں وہ شانتی کو استھائی نہیں بنا سکتے ۔ سچی اور استھائی شانتی صرف اُسی وقت قائم ہو سکتی ہے جب ہم سنگٹھت ہوں اور اس کے لیئے عملی کوشش کریں ۔ آج کی لڑائی یقیناً آرتھک گڑبڑی کا نتیجہ ہے ۔ اگر ہم اپنے آرتھک ڈھانچے کو بدل دیں تو ہم ہمیشہ کے لئے شانتی مے جیون بِتا سکتے ہیں ۔ اسکو

जायें और ऐसे लोगों को समाज विरोधी समझा जाना चाहिये.

## बाज़ार

जो चीज़ें हम बनायें उनके लिये बाज़ार मौजूद होना चाहिये और यह सारा सामान आस पास की मन्डियों में बिक जाना चाहिये. मन्डियों पर कब्ज़ा करने की वजह से लड़ाइयां होती हैं. बर्तानिया, जर्मनी और जापान में मन्डियों पर असर जमाने की होड़ लगी थी. इसीलिये पिछली भयानक लड़ाई हुई थी. जो देश विकसित नहीं हैं वह उद्योग में बड़े देशों को कच्चा माल मुहैया करते हैं और इस कच्चे माल से जो इस्तेमाल का सामान बनता है उसको ख़रीदते हैं. अगर फ़्रान्स, हिन्दचीन में जमा रहना चाहता है तो इसका कारन यही है. हर देश को अपने ढंग पर विकसित होने का मौक़ा मिलना चाहिये. बाहर से कोई दख़लअन्दाज़ी नहीं होनी चाहिये. विदेशी दख़लअन्दाज़ी राष्ट्र की स्वतन्त्रता को ख़त्म करती है और लड़ाई झगड़े खड़े हो जाते हैं.

## खपत में भिन्नता

अगर हम सब मिल कर विदेशी दख़लअन्दाज़ी को नहीं रोक सकते तो हमें पिछड़े देशों की जनता को सीख देनी चाहिये और उनमें ऐसी आदत पैदा करनी चाहिये. ताकि ख़रीदते समय वह दूसरे देशों के सामान को अपने देश के सामान के मुक़ाबिले, में न ख़रीदें. यह बहुत मुश्किल सवाल है. इस पर अमल बहुत ही कठिन है. सबको लालच होती है कि विदेशी सामान सस्ता मिलेगा और देशी सामान से अच्छा मिलेगा, लेकिन विदेशी माल को न ख़रीदने की आदत पैदा करना ज़रूरी है. इसी से शान्ति स्थापित होगी. आर्थिक मैदान में हमें कछुए की नक़ल करनी पड़ेगी. अपनी रक्षा के लिये कछुआ अपने सारे अंग खोपड़ी में सकेल लेता है. हमको अपने राष्ट्र को कछुए की खोपड़ी बना लेना चाहिये और जब कोई दूसरा राष्ट्र हमसे नाजायज़ फ़ायदा उठाना चाहे तो हमें खोपड़ी में घुस जाना चाहिये.

बहुत से लोग "विश्व मन्डी" की चर्चा से मोहित होते हैं. लेकिन इस सवाल पर उन्होंने ग़ौर नहीं किया. आजकल इस तरह की चर्चा पूंजीपति करते हैं इन सब सम्बन्धों में सोवियत यूनियन ने अच्छी मिसाल क़ायम की है. वहां विदेशी व्यापार की इजारादारी राज्य के हाथ में है. वह लोग बाहरी व्योपारियों को विदेशी मन्डियों में घुसने नहीं देते और इन्हीं कारनों से रूस में अच्छी मज़दूरी मिलती है और काम करने वाले सुखी जीवन बताते हैं.



جائیں اور ایسے لوگوں کو سماج ورودھی سمجھا جانا چاہیئے ۔

## بازار

جو چیزیں ہم بنائیں اُن کے لئے بازار موجود ہونا چاہیئے اور یہ سارا سامان آس پاس کی منڈیوں میں بک جانا چاہیئے ۔ منڈیوں پر قبضہ کرنے کی وجہ سے لڑائیاں ہوتی ہیں ۔ برطانیہ، جرمنی اور جاپان میں منڈیوں پر اثر جمانے کی ہوڑ لگی تھی۔ اسی لئے پچھلی بھیانک لڑائی ہوئی تھی۔ جو دیش وکست نہیں ہیں وہ ادیوگ میں بڑے دیشوں کو کچا مال مہیا کرتے ہیں اور اس کچے مال سے جو استعمال کا سامان بنتا ہے اس کو خریدتے ہیں ۔ اگر فرانس ہند چین میں جما رہنا چاہتا ہے تو اس کا کارن یہی ہے ۔ ہر دیش کو اپنے ڈھنگ پر وکست ہونے کا موقع ملنا چاہیئے۔ باہر سے کوئی دخل اندازی نہیں ہونی چاہیئے ۔ ودیشی دخل اندازی راشٹر کی سوتنترتا کو ختم کرتی ہے اور لڑائی جھگڑے کھڑے ہو جاتے ہیں ۔

## کھپت میں بھنتا

اگر ہم سب مل کر ودیشی دخل اندازی کو نہیں روک سکتے تو ہمیں پچھڑے دیشوں کی جنتا کو سیکھ دینی چاہیئے اور ان میں ایسی عادت پیدا کرنی چاہیئے تاکہ خریدتے سمے وہ دوسرے دیشوں کے سامان کو اپنے دیش کے مقابلے میں نہ خریدیں ۔ یہ بہت مشکل سوال ہے ۔ اس پر عمل بہت ہی کٹھن ہے ۔ سب کو لالچ ہوتی ہے کہ ودیشی سامان سستا ملے گا اور دیشی سامان سے اچھا ملے گا لیکن ودیشی مال کو نہ خریدنے کی عادت پیدا کرنا ضروری ہے۔ اس سے شانتی استھاپت ہوگی ۔ آرتھک میدان میں ہمیں کچھوے کی نقل کرنی پڑے گی ۔ اپنی رکشا کے لئے کچھوا اپنے سارے انگ کھوپڑی میں سکیڑ لیتا ہے ۔ ہم کو اپنے راشٹر کو کچھوے کی کھوپڑی بنا لینا چاہیئے اور جب کوئی دوسرا راشٹر ہم سے ناجائز فائدہ اٹھانا چاہئے تو ہمیں کھوپڑی میں گھس جانا چاہیئے ۔

بہت سے لوگ "وشو منڈی" کی چرچا سے موہت ہوتے ہیں۔ لیکن اس سوال پر انہوں نے غور نہیں کیا ۔ آجکل اس طرح کی چرچا پونجی پتی کرتے ہیں ۔ ان سب سمبندھوں میں سوویت یونین نے اچھی مثال قائم کی ہے ۔ وہاں ودیشی بیوپار کی اجارہ داری راجیہ کے ہاتھ میں ہے۔ وہ لوگ باہری بیوپاریوں کو ودیشی منڈیوں میں گھسنے نہیں دیتے اور انہیں کارنوں سے روس میں اچھی مزدوری ملتی ہے اور کام کرنے والے سکھی جیون بتاتے ہیں ۔

शक्ति का कोई उपयोग नहीं होता. अगर होता भी है तो पूरा पूरा नहीं होता. इससे ज़ाहिर है कि जहां तक मुमकिन हो हमें इस शक्ति से काम लेना चाहिये. ऐसा करने पर कुछ बातों का हमें ध्यान रखना पड़ेगा. पहली बात तो यह है कि जब इन्सानी शक्ति का इस्तेमाल करना है तो "मेहनत बचाव" तरीक़ों पर ध्यान नहीं देना है. इसके बजाय पैदावार के ऐसे तरीक़े अपनाने हैं जिसमें बहुत ज़्यादा लोग हाथ बटा सकें. जनता का जो उपेक्षित भाग है इस तरह हम उसको सुख दे सकते हैं.

## मज़दूरी

मज़दूरी का आधार एक है. काम के बदले में मज़दूर को इतनी रक़म मिल जानी चाहिये कि उसे ज़रूरत के अनुसार खाना मिल सके और खाना ऐसा हो जो उसके जिस्म को मज़बूत रख सके. मज़दूर को ऐसी सुविधा होनी चाहिये जिससे वह उचित स्तर का जीवन बिता सके. लेकिन आजकल चीज़ों के दाम मज़दूरी तय करते हैं. इस तरह की प्रथा पूंजीवादी देशों में चालू है. ज़्यादातर हालतों में मज़दूरी रबड़ के समान है. बाज़ार भाव बढ़ गया है और ज़्यादा मुनाफ़ा हुआ तो मज़दूरी बढ़ जायगी, और अगर नहीं तो मज़दूरी घटेगी और छटनी होगी. लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिये. मज़दूरी का एक स्तर मुक़र्रर होना चाहिये जिससे कम मज़दूरी नहीं मिलेगी. जब फ़ायदा होता है तो मज़दूरी बढ़ती है और इसलिये जब घाटा हो तो मज़दूरी घटे यह बात उचित नहीं है. मज़दूर को इतना तो मिलना ही चाहिये जिससे वह साल भर तक अपनी ज़रूरतें पूरी कर सके.

हिन्दुस्तान में बहुत से लोग ऐसे हैं जिनके पास खेत नहीं हैं और वह लोग दूसरों के खेतों पर काम करते हैं. यह लोग बरसात के दिनों में ही काम कर पाते हैं और तब भी इन्हें पेट भरने के लिये रोटी नहीं मिल पाती. उन्हें इतना मिलना चाहिये कि वह साल भर तक एक उचितत स्तर पर जीवन बिता सकें. इससे खेत की पैदावार का दाम फ़ौरन बढ़ जायेगा और पूंजी का बटवारा उचित ढंग से होगा और ज़्यादा लोगों को सुख मिल सकेगा.

लोगों का दुखी होना, तनाव को बढ़ाता है. यह वह बीज है जिससे लड़ाई झगड़े पैदा होते हैं.

## खेती का स्थान

खेती को उद्योग का दर्जा नहीं मिलना चाहिये. उन सब बुराइयों को हम लोग जानते है जिनकी वजह से गेहूं की अच्छी फ़सलें जला दी गईं. फ़सलें इसलिये जलाई गईं ताकि स्टाक कम हो जाये और गेहूं का दाम बढ़ जाये. इस तरह की हरकतें समाज विरोधी समझी



شکتی کا کوئی اپیوگ نہیں ہوتا ۔ اگر ہوتا بھی ہے تو پورا پورا نہیں ہوتا ۔ اِس سے ظاہر ہے کہ جہاں تک ممکن ہو ہمیں اِس شکتی سے کام لینا چاہیئے ۔ ایسا کرنے میں کچھ باتوں کا ہمیں دھیان رکھنا پڑیگا ۔ پہلی بات تو یہ ہے کہ جب انسانی شکتی کا استعمال کرنا ہے تو "محنت بچاؤ" طریقوں پر دھیان نہیں دینا ہے ۔ اِس کے بجائے پیداوار کے ایسے طریقے اپنانے ہیں جس میں بہت زیادہ لوگ ہاتھ بٹا سکیں ۔ جنتا کا جو اپیکچھت بھاگ ہے اس طرح ہم اُس کو سکھ دے سکتے ہیں ۔

## مزدوری

مزدوری کا آدھار ایک ہے ۔ کام کے بدلے میں مزدور کو اتنی رقم مل جانی چاہیئے کہ اُسے ضرورت کے انوسار کھانا مل سکے اور کھانا ایسا ہو جو اس کے جسم کو مضبوط رکھ سکے ۔ مزدور کو ایسی سویدھا ہونی چاہیئے جس سے وہ اُچت استر کا جیون بتا سکے ۔ لیکن آجکل چیزوں کے دام مزدوری طے کرتے ہیں ۔ اِس طرح کی پرتھا پونجی وادی دیشوں میں چالو ہے ۔ زیادہ تر حالتوں میں مزدوری' ربڑ کے سمان ہے ۔ بازار بھاؤ بڑھ گیا اور زیادہ منافع ہوا تو مزدوری بڑھ جائے گی اور اگر نہیں تو مزدوری گھٹے گی اور چھنٹنی ہوگی ۔ لیکن ایسا نہیں ہونا چاہئے ۔ مزدوری کا ایک استر مقرر ہونا چاہیئے جس سے کم مزدوری نہیں ملے گی ۔ جب فائدہ ہوتا ہے تو مزدوری بڑھتی ہے اور اس لیئے جب گھاٹا ہو تو مزدوری گھٹے یہ بات اُچت نہیں ہے ۔ مزدور کو اتنا تو ملنا ہی چاہیئے جس سے وہ سال بھر تک اپنی ضرورتیں پوری کر سکے ۔

ہندستان میں بہت سے لوگ ایسے ہیں جن کے پاس کھیت نہیں ہیں اور وہ لوگ دوسروں کے کھیتوں پر کام کرتے ہیں ۔ یہ لوگ برسات کے دنوں میں ہی کام کر پاتے ہیں اور تب بھی انہیں پیٹ بھرنے کے لیئے روٹی نہیں مل پاتی ۔ انہیں اتنا ملنا چاہیئے کہ وہ سال بھر تک ایک اُچت استر پر جیون بتا سکیں ۔ اس سے کھیت کی پیداوار کا دام فوراً بڑھ جائے گا اور پونجی کا بٹوارہ اُچت ڈھنگ سے ہوگا اور زیادہ لوگوں کو سکھ مل سکے گا ۔

لوگوں کا دکھی ہونا' تناؤ کو بڑھاتا ہے ۔ یہ وہ بیج ہے جس سے لڑائی جھگڑے پیدا ہوتے ہیں ۔

## کھیتی کا استھان

کھیتی کو ادیوگ کا درجہ نہیں ملنا چاہیئے ۔ اُن سب برائیوں کو ہم سب جانتے ہیں جن کی وجہ سے گیہوں کی اچھی فصلیں جلا دی گئیں ۔ فصلیں اس لیئے جلائی گئیں تاکہ اسٹاک کم ہو جائے اور گیہوں کا دام بڑھ جائے ۔ اس طرح کی حرکتیں سماج وِرودھی سمجھی

को पूरी करके दूसरों की जरूरत पूरा नहीं करेगा. दूसरों की ज़रूरत को वह पूरा करेगा क्योंकि वह मजबूर है. घिर जाने पर उसे खाना और कपड़ा नहीं मुयस्सर होगा क्योंकि बुनियादी जरूरतों को वह विदेशों से मंगाकर पूरी करता है. लंका के ब्योपार से जो दौलत मिलती है. वह बाहर माल भेजने वाले और अन्दर माल लाने वाले के हाथों में पहुंचती है. इससे देश में बदअमनी फैलती है. चारों तरफ़ से घिर जाने पर लोग न तो रबड़ खा सकते हैं और न चाय की पत्तियां पहन सकते हैं. इसलिये लंका की सुरक्षा केवल एक तरीक़े से हो सकती है. उन्हें अपने आर्थिक जीवन को दूसरी तरह ढालना होगा ताकि राष्ट्र की बुनियादी ज़रूरतें पूरी हो सकें.

## धातु रूपी साधन

किसी खुले घर में अगर दौलत रक्खी हो तो राह चलते आदमी को लालच लगती है. अगर हम नहीं चाहते हैं कि चोर हमारे घर आयें तो हमें अपना घर बन्द रखना चाहिये. हमारे प्राकृतिक साधन हमारी विरासत हैं. मंचूरिया कोयले से माला माल है. इसी कोयले ने जापान को मन्चूरिया पर क़ब्ज़ा करने के लिये आकर्शित किया है. हमें अपने खदानों की ज़रूरत के अनुसार खुदाई करनी चाहिये और अपनी दौलत खोद खोद कर विदेशों को नहीं भेजनी चाहिये. जब हमारी ज़मीन के नीचे छिपी दौलत खत्म हो जाती है तब झगड़े शुरू होते हैं क्योंकि हम दूसरे की दौलत पर हाथ मारना चाहते हैं. जहां तक सम्भव हो हमें अपने ही साधनों के ऊपर निर्भर करना चाहिये और उन साधनों को इस तरह इस्तेमाल करना चाहिये जिससे कि उन साधनों को अगली नस्लें भी इस्तेमाल कर सकें. अमरीका में पेट्रोल बेहद खर्च होता है. उसका इस्तेमाल हर चीज़ में होने लगा है इसीलिये अमरीका ट्रान्सजोरडन, इराक़ और बोरनियो के तेल के कुओं पर ज़ुल्म ज्यादती और चालबाजी हर तरह से क़ब्ज़ा करना चाहता है. इस कारन ही वह एक लड़ाकू राष्ट्र बन गया है. इस चीज़ को खत्म करने के लिये हमें एक लम्बी योजना बनानी पड़ेगी.

## पैदावार के ढंग

अभी तक हमने इस बात पर विचार किया है कि हमें अपने प्राकृतिक साधनों को कैसे इस्तेमाल करना चाहिये. अब हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि कच्चे माल को अपने जरूरी सामान बनाने में हमें कौन से तरीक़े अपनाने चाहियें. इस बात पर ध्यान हमें उन देशों में खासकर देना चाहिये जो अभी पीछे हैं. एशिया के ज्यादातर देश पूरी तरह विकसित नहीं हैं. इन देशों में बेहद आदमी हैं. इन आदमियों की अधिकतर



کو پوری کرکے دوسروں کی ضرورت پورا نہیں کرے گا ۔ دوسروں کی ضرورت کو وہ پورا کرے گا کیونکہ وہ مجبور ہے ۔ گھر جانے پر اسے کھانا اور کپڑا نہیں میسر ہوگا کیونکہ بنیادی ضرورتوں کو وہ ودیشوں سے منگاکر پوری کرتا ہے ۔ لنکا کے بیوپار سے جو دولت ملتی ہے وہ باہر مال بھیجنے والے اور اندر مال لانے والے کے ہاتھوں میں پہونچتی ہے ۔ اس سے دیش میں بدامنی پھیلتی ہے ۔ چاروں طرف سے گھر جانے پر لوگ نہ تو ربڑ کھا سکتے ہیں اور نہ چائے کی پتیاں پہن سکتے ہیں ۔ اسلیئے لنکا کی سرکشا کیول ایک طریقے سے ہوسکتی ہے ۔ انہیں اپنے آرتھک جیون کو دوسری طرح ڈھالنا ہوگا تاکہ راشٹر کی بنیادی ضرورتیں پوری ہوسکیں ۔

## دھاتو روپی سادھن

کسی کھلے گھر میں اگر دولت رکھی ہو تو راہ چلتے آدمی کو لالچ لگتی ہے ۔ اگر ہم نہیں چاہتے ہیں کہ چور ہمارے گھر آئیں تو ہمیں اپنا گھر بند رکھنا چاہیئے ۔ ہمارے پراکرتک سادھن ہماری وراثت ہیں ۔ منچوریا کوئلے سے مالا مال ہے ۔ اسی کوئلے نے جاپان کو منچوریا پر قبضہ کرنے کے لئے آکرشت کیا ۔ ہمیں اپنے کھدانوں کی ضرورت کے انوسار کھدائی کرنی چاہیئے اور اپنی دولت کھود کھود کر ودیشوں کو نہیں بھیجنی چاہیئے ۔ جب ہماری زمین کے نیچے چھپی دولت ختم ہوجاتی ہے تب جھگڑے شروع ہوتے ہیں کیونکہ ہم دوسرے کی دولت پر ہاتھ مارنا چاہتے ہیں ۔ جہاں تک سمبھو ہو ہمیں اپنے ہی سادھنوں کے اوپر نربھر کرنا چاہیئے اور ان سادھنوں کو اسطرح استعمال کرنا چاہیئے جس سے کہ ان سادھنوں کو اگلی نسلیں بھی استعمال کرسکیں ۔ امریکہ میں پٹرول بےحد خرچ ہوتا ہے ۔ اس کا استعمال ہر چیز میں ہونے لگا ہے اسی لیئے امریکہ ٹرانس جورڈن، عراق اور بورنیو کے تیل کے کنوؤں پر ظلم، زیادتی اور چالبازی ہر طرح سے قبضہ کرنا چاہتا ہے ۔ اس کارن ہی وہ ایک لڑاکو راشٹر بن گیا ہے ۔ اس چیز کو ختم کرنے کے لئے ہمیں ایک لمبی یوجنا بنانی پڑیگی ۔

## پیداوار کے ڈھنگ

ابھی تک ہم نے اس بات پر وچار کیا ہے کہ ہمیں اپنے پراکرتک سادھنوں کو کیسے استعمال کرنا چاہیئے ۔ اب ہمیں اس بات پر دھیان دینا چاہیئے کہ کچے مال کو اپنے ضروری سامان بنانے میں ہمیں کون سے طریقے اپنانے چاہئیں ۔ اس بات پر دھیان ہمیں ان دیشوں میں خاصکر دینا چاہیئے جو ابھی پیچھے ہیں ۔ ایشیا کے زیادہ تر دیش پوری طرح وکست نہیں ہیں ۔ ان دیشوں میں بےحد آدمی ہیں ۔ ان آدمیوں کی ادھکتر

तो हम सब को जीविका दे सकते हैं और तब ही शान्ति से लोग रह सकते हैं. लेकिन शक्तिशाली राष्ट्र इन साधनों को हथियाने की कोशिश करते हैं. इससे राष्ट्रों के बीच तनाव बढ़ता है और पड़ोसी दुश्मन हो जाते हैं.

## आर्थिक योजना

कम से कम जो एक राष्ट्र जो कर सकता है वह यह है कि अपनी जनता को वह खाना, कपड़ा और मकान मुहय्या करे. यह उसका लक्ष होना चाहिये. इसके बाद अगर ज़मीन, पानी और धातु जैसे साधन मौजूद हों तो हमें व्योपार की तरफ़ झुकना चाहिये और देश परस्ती के सामान सप्लाई करने की कोशिश करनी चाहिये और तब ही बाहरी सामानों से अपने सामानों का बदलाव करना चाहिये. जब भी जन्जीर की कोई कड़ी इधर उधर होगी और या ग़लत निर्देश पर काम होगा तो फ़ोरन मुसीबत खड़ी हो जायेगी.

मिसाल के लिये हिन्दचीन को ले लीजिये. दुनिया में रबड़ की जितनी खपत है उसका पचासी प्रतिशत रबड़ हिन्द चीन में पैदा होती है. लेकिन हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि हिन्दचीन अकेले इतने रबड़ का इस्तेमाल कर सकता है. जो देश उद्योग में आगे बढ़े हैं और जिनका विकास बहुत हो चुका है उन्हें कच्चे माल की ज़रूरत पड़ती है. उनकी यह बुनयादी ज़रूरत कैसे पूरी हो सकती है? इस ज़रूरत को पूरा करने का एक ही तरीक़ा है और वह यह है कि ऐसे राष्ट्र कच्चे माल का पैदावार पर कन्ट्रोल रक्खें और उसके व्योपार को अपने हाथ में रक्खें. यही करने के लिये विदेशी दूसरे राष्ट्रों पर क़ब्ज़ा जमाने की कोशिश करते हैं. दुनिया में जो कुछ राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के अधीन हैं और ग़ुलाम मात्र हैं उसका बुनियादी कारन यही है. हिन्द चीन की जनता को इतनी मात्रा में रबड़ नहीं पैदा करना चाहिये. उसके बजाय ऐसी चीज़ों की पैदावार पर उन्हें ज़ोर देना चाहिये जिन से उन्हें खाना मिल सके, उन्हें कपड़ा मुहय्या हो सके और उनके मकान की दिक़्क़त दूर हो सके. उन्हें ऐसे बुनियादी उद्योग धन्धे खड़े करने चाहियें जिससे इस तरह का माली ढांचा तैयार हो सके. अगर अपने आर्थिक जीवन को वह इस रास्ते पर चला सकेंगे तो देशवासियों का जन समूह सुख की सांस ले सकेगा.

इसी तरह लंका में चाय और रबड़ ख़ूब पैदा होती है. जिस देश की आर्थिक रीढ़ ऐसी हो उसका भगवान ही मालिक है. लंका एक दीप है. ऐसा राष्ट्र जिसकी समुद्री शक्ति अधिक है वह आसानी से लंका को घेर सकता है और विदेशी उद्योग पतियों की ज़रूरत को पूरा करने पर मजबूर किया जा सकता है. ज़ाहिर है कि लंका अपनी ज़रूरतों



تو ہم سب کو جیوکا دے سکتے ہیں اور تب ہی شانتی سے لوگ رہ سکتے ہیں . لیکن شکتی شالی راشٹر ان سادھنوں کو ہتھیانے کی کوشش کرتے ہیں . اس سے راشٹروں کے بیچ تناؤ بڑھتا ہے اور پڑوسی دشمن ہو جاتے ہیں .

## آرتھک یوجنا

کم سے کم ایک راشٹر جو کرسکتا ہے وہ یہ ہے کہ اپنی جنتا کو وہ کھانا، کپڑا اور مکان مہیا کرے . یہ اس کا لکش ہونا چاہیئے . اس کے بعد اگر زمین، پانی اور دھاتو جیسے سادھن موجود ہوں تو ہمیں بیوپار کی طرف جھکنا چاہیئے اور دیش پرستی کے سامان سپلائی کرنے کی کوشش کرنا چاہیئے اور تب ہی باہری سامانوں سے اپنے سامانوں کا بدلاؤ کرنا چاہیئے . جب بھی زنجیر کی کوئی کڑی ادھر ادھر ہوگی اور یا غلط نردیش پر کام ہوگا تو فوراً مصیبت کھڑی ہو جائےگی .

مثال کے لئے ہند چین کو لے لیجئے . دنیا میں ربڑ کی جتنی کھپت ہے اس کا پچاسی پرتیشت ربڑ ہند چین میں پیدا ہوتی ہے. لیکن ہم کلپنا بھی نہیں کرسکتے کہ ہند چین اکیلے اتنے ربڑ کا استعمال کرسکتا ہے . جو دیش ادیوگ میں آگے بڑھے ہیں اور جنکا وکاس بہت ہوچکا ہے انہیں کچے مال کی ضرورت پڑتی ہے. ان کی یہ بنیادی ضرورت کیسے پوری ہوسکتی ہے ؟ اس ضرورت کو پورا کرنے کا ایک ہی طریقہ ہے اور وہ یہ ہے کہ ایسے راشٹر کچے مال کی پیداوار پر کنٹرول رکھیں اور اس کے بیوپار کو اپنے ہاتھ میں رکھیں . یہی کرنے کے لیئے ودیشی دوسرے راشٹروں پر قبضہ جمانے کی کوشش کرتے ہیں. دنیا میں جو کچھ راشٹر دوسرے راشٹروں کے ادھین ہیں اور غلام ماتر ہیں اس کا بنیادی کارن یہی ہے . ہند چین کی جنتا کو اتنی ماترا میں ربڑ نہیں پیدا کرنا چاہیئے . اس کے بجائے ایسی چیزوں کی پیداوار پر انہیں زور دینا چاہیئے جن سے انہیں کھانا مل سکے، انہیں کپڑا مہیا ہوسکے اور ان کے مکان کی دقت دور ہوسکے . انہیں ایسے بنیادی ادیوگ دھندے کھڑے کرنے چاہئیں جس سے اس طرح کا مالی ڈھانچہ تیار ہوسکے . اگر اپنے آرتھک جیون کو وہ اس راستے پر چلا سکیں گے تو دیش واسیوں کا جن سموہ سکھ کی سانس لے سکے گا .

اسی طرح لنکا میں چائے اور ربڑ خوب پیدا ہوتی ہے. جس دیش کی آرتھک ریڑھ ایسی ہو اس کا بھگوان ہی مالک ہے . لنکا ایک دیپ ہے . ایسا راشٹر جس کی سمندری شکتی ادھک ہے وہ آسانی سے لنکا کو گھیر سکتا ہے اور ودیشی ادیوگ پتیوں کی ضرورت کو پورا کرنے پر مجبور کیا جاسکتا ہے . ظاہر ہے کہ لنکا اپنی ضرورتوں

कामों से छुट्टी पा गया. उसके बाद इमाम साहब से मिलना चाहा लेकिन वक़्त की कमी के कारन न मिल सका. मुझको साढ़े बारह बजे यूनिवर्सिटी पहुंचना था. हम लोग यूनीवर्सिटी वापस आ गये.

दूसरे दिन मैंने चीन के अंग्रेज़ी अख़बार 'डेली न्यूज़ रिलीज़' में पढ़ा कि सिर्फ़ पीकिंग शहर में साठ से ज़्यादा मसजिदें हैं जिनमें हज़ारों मुसलमानों ने ईद की नमाज़ अदा की.

---

# अन्तर राश्ट्रीय बदअमनी—उसके कारन और इलाज

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

[ मई के तीसरे चौथे हफ़्ते में विश्व शान्ती कौंसिल की बैठक बर्लिन में हुई है. पन्डित सुन्दरलाल के नेतृत्व में भारत से एक प्रतिनिधि मंडल बर्लिन गया है. डाक्टर कुमारप्पा भी मन्डल के साथ हैं. यह मन्डल आजकल रूस का दौरा कर रहा है. डाक्टर कुमारप्पा ने शान्ती कौंसिल की बैठक में 27 मई को नीचे दिया भाशन दिया है. हम उसे अंग्रेज़ी से अनुवाद कर के प्रकाशित कर रहे हैं—एडीटर. ]

❀ ❀ ❀

आज यहां इस बात पर विचार करने के लिये इकट्ठा हुये हैं कि दुनिया की आजकल जो हालत है उसमें हम कैसे सुरक्षित रह सकें और किस तरह शान्ति रख सकें. जिधर भी नज़र उठती है हमें बदअमनी दिखाई पड़ती है चाहे समाजिक जीवन हो, चाहे आर्थिक हो, चाहे राजकाजी हो और चाहे निजी मामले हों, सब जगह गड़बड़ है. इसी वजह से राश्ट्रों के बीच भयंकर खिचाव है मेरा समय सीमित है इसलिये मैं बदअमनी के आर्थिक कारनों का ख़ाका ही पेश करूंगा और अपनी बुद्धि के अनुसार उनका इलाज बताने की कोशिश करूंगा.

प्रकृति ने दुनिया के ज़्यादातर देशों को खदान और दूसरे साधनों से मालामाल किया है. अगर हम अक़्ल से काम लें और इन साधनों को उचित ढंग से इस्तेमाल करें



کاموں سے چھٹی پا گیا. اُس کے بعد امام صاحب سے ملنا چاہا لیکن وقت کی کمی کے کارن نہ مل سکا ۔ مجھکو ساڑھے بارہ بجے یونیورسٹی پہونچنا تھا ۔ ہم لوگ یونیورسٹی واپس آگئے ۔

دوسرے دن میں نے چین کے انگریزی اخبار 'ڈیلی نیوز ریلیز' میں پڑھا کہ صرف پیکنگ شہر میں ساٹھ سے زیادہ مسجدیں ہیں جن میں ہزاروں مسلمانوں نے عید کی نماز ادا کی ۔

---

# انتر راشٹریہ بدامنی—اُس کے کارن اور علاج

( ڈاکٹر جے . سی . کماریپا )

[ مئی کے تیسرے چوتھے ہفتے میں وشو شانتی کونسل کی بیٹھک برلن میں ہوئی ہے ۔ پنڈت سندرلال کے نیترتو میں بھارت سے ایک پرتی ندھی منڈل برلن گیا ہے ۔ ڈاکٹر کماریپا بھی منڈل کے ساتھ ہیں ۔ یہ منڈل آج کل روس کا دورہ کر رہا ہے ۔ ڈاکٹر کماریپا نے شانتی کونسل کی بیٹھک میں 27 مئی کو نیچے دیا بھاشن دیا ہے ۔ ہم اُسے انگریزی سے انوواد کرکے پرکاشت کر رہے ہیں—ایڈیٹر ]

❀ ❀ ❀

آج یہاں اِس بات پر وچار کرنے کے لیئے اکٹھا ہوئے ہیں کہ دنیا کی آجکل جو حالت ہے اُس میں ہم کیسے سرکشت رہ سکیں اور کس طرح شانتی رکھ سکیں. جدھر بھی نظر اٹھتی ہے ہمیں بدامنی دکھائی پڑتی ہے. چاہے سماجک جیون ہو، چاہے آرتھک ہو، چاہے راج کاجی ہو اور چاہے نجی معاملے ہوں، سب جگہ گڑبڑ ہے ۔ اِسی وجہ سے راشٹروں کے بیچ بھیانکر کھنچاؤ ہے ۔ میرا سمے سیمت ہے اسلیئے میں بدامنی کے آرتھک کارنوں کا خاکہ ہی پیش کرونگا اور اپنی بدھی کے انوسار اُن کا علاج بتانے کی کوشش کرونگا ۔

پرکرتی نے دنیا کے زیادہ تر دیشوں کو کھدان اور دوسرے سادھنوں سے مالا مال کیا ہے ۔ اگر ہم عقل سے کام لیں اور اِن سادھنوں کو اُچت ڈھنگ سے استعمال کریں

थे जिससे मैं समझा कि यह तबलीग़ी लेक्चर की तरह की कोई चीज़ है. मसजिद के मेहराबों पर सुनहरे अक्षरों में ख़ूबसूरती के साथ अरबी आयतें लिखी थीं. दीवारों पर बहुत ख़ूबसूरत पच्चीकारी थी. आज मेरी ज़िन्दगी में पहला मौक़ा था कि मसजिद में हज़ारों चीनी लोगों के दर्मियान अकेला हिन्दुस्तानी अपने राष्ट्रीय लिबास शेरवानी, पैजामा और टोपी में बैठा हुआ था. लोग मुड़ मुड़ कर मुझ को देख रहे थे और बच्चे लगातार टकटकी बांधे थे जैसे सनीमा देख रहे हों.

अभी इमाम साहब का भाशन नहीं हुआ था कि एक लड़की कैमरा लेकर नमाज़ियों के बीच आई. शायद वह चीनी लड़की नहीं थी. उसने इमाम की और नमाज़ियों की कई तस्वीरें लीं, फिर उसने मेरी तस्वीर खींची क्योंकि मेरा लिबास उसको अजीब लग रहा था.

ठीक साढ़े दस बजे भाशन ख़त्म हुआ और नमाज़ की तैयारी शुरू हुई. पहले इमाम साहब पांच मौलानाओं के साथ खड़े हुये. यह लोग लम्बे लम्बे अबा की तरह की कोई चीज़ पहने थे और सिरों पर सफ़ेद पगड़ी बांधे थे. सब नमाज़ी बैठे थे. इमाम ने उन पांच मौलानाओं के साथ पहले कुछ अरबी की आयतें पढ़ीं. उसके बाद सब नमाज़ी यकबारगी खड़े हो गये. मैं भी सब के साथ खड़ा हो गया. फिर दो रकअत नमाज़ बिलकुल उसी तरीक़े पर हुई जैसे हिन्दुस्तान की मस्जिदों में होती है. नमाज़ के बाद इमाम ने ख़ुतबा पढ़ा और फिर उसके बाद दुआ मांगी गई. दुआ के बाद सब लोग उठ खड़े हुए और ख़ुश ख़ुश एक दूसरे से मुसाफ़हा करने लगे. ईद के नमाज़ के बाद हिन्दुस्तान की तरह यहां गले नहीं मिलते. इमाम और पांच मौलाना एक तरफ़ खड़े हो गये और लोग लाइन लगा कर और बारी बारी आ कर उनसे मुसाफ़हा कर रहे थे. मैंने भी ऐसा ही किया. बहुत से लोग मेरे पास आये. मैंने भी बढ़ कर उनसे मुसाफ़हा किया.

उसके बाद मैं सेहन में आया जहां फ़ंग साहब और राजेश मेरा इन्तज़ार कर रहे थे. लगभग एक हज़ार से ज़्यादा नमाज़ी इधर उधर ख़ुश ख़ुश टहल रहे थे. मैंने अपने कैमरे से मस्जिद की और नमाज़ियों की तस्वीरें खींचीं और अपनी तस्वीर भी इमाम साहब के साथ खिंचवाई. दूसरे लोगों के साथ भी मेरी तस्वीर खींची गई. इस सबसे फ़ुरसत पा कर मैंने झोले से चाकलेट और लेमनड्राप्स निकाले और बच्चों को बांटना शुरू किया. वह लेकर ख़ुश ख़ुश खा रहे थे. उनके साथी बुज़ुर्ग उनको बता रहे थे कि "थासिजनी ता इन्दू को को" ( यानी यह तुम्हारे हिन्दुस्तानी बड़े भाई हैं ) "शे शे" कहो. शे शे को चीनी भाषा में शुक्रिया को कहते हैं. साढ़े ग्यारह बजे मैं इन सब



تھے جس سے میں سمجھا کہ یہ تبلیغی لکچر کی طرح کی کوئی چیز ہے ۔ مسجد کے محرابوں پر سنہرے نقشوں میں خوبصورتی کے ساتھ عربی آیتیں لکھی تھیں ۔ دیواروں پر بہت خوبصورت پچیکاری تھی ۔ آج میری زندگی میں پہلا موقع تھا کہ مسجد میں ہزاروں چینی لوگوں کے درمیان اکیلا ہندوستانی اپنے راشٹریہ لباس شیروانی، پائجامہ اور ٹوپی میں بیٹھا ہوا تھا ۔ لوگ مڑ مڑ کر مجھکو دیکھ رہے تھے اور بچے لگاتار ٹکٹکی باندھے تھے جیسے سنیما دیکھ رہے ہوں ۔

ابھی امام صاحب کا بھاشن نہیں ہوا تھا کہ ایک لڑکی کیمرا لیکر نمازیوں کے بیچ آئی ۔ شاید وہ چینی لڑکی نہیں تھی ۔ اس نے امام کی اور نمازیوں کی کئی تصویریں لیں، پھر اس نے میری تصویر کھینچی کیونکہ میرا لباس اس کو عجیب لگ رہا تھا ۔

ٹھیک ساڑھے دس بجے بھاشن ختم ہوا اور نماز کی تیاری شروع ہوئی ۔ پہلے امام صاحب پانچ مولاناؤں کے ساتھ کھڑے ہوئے ۔ یہ لوگ لمبے لمبے عبا کی طرح کی کوئی چیز پہنے تھے اور سروں پر سفید پگڑی باندھے تھے ۔ سب نمازی بیٹھے تھے ۔ امام نے ان پانچ مولاناؤں کے ساتھ پہلے کچھ عربی کی آیتیں پڑھیں ۔ اس کے بعد سب نمازی یکبارگی کھڑے ہوگئے ۔ میں بھی سب کے ساتھ کھڑا ہوگیا ۔ پھر دو رکعت نماز بالکل اسی طریقے پر ہوئی جیسے ہندوستان کی مسجدوں میں ہوتی ہے ۔ نماز کے بعد امام نے خطبہ پڑھا اور پھر اس کے بعد دعا مانگی گئی ۔ دعا کے بعد سب لوگ اٹھ کھڑے ہوئے اور خوش خوش ایک دوسرے سے مصافحہ کرنے لگے ۔ عید کی نماز کے بعد ہندوستان کی طرح یہاں گلے نہیں ملتے ۔ امام اور پانچ مولانا ایک طرف کھڑے ہوگئے اور لوگ لائن لگاکر اور باری باری آکر ان سے مصافحہ کر رہے تھے ۔ میں نے بھی ایسا ہی کیا ۔ بہت سے لوگ میرے پاس آئے ۔ میں نے بھی بڑھکر ان سے مصافحہ کیا ۔

اس کے بعد میں صحن میں آیا جہاں فنگ صاحب اور راجیش میرا انتظار کر رہے تھے ۔ لگ بھگ ایک ہزار سے زیادہ نمازی اِدھر اُدھر خوش خوش ٹہل رہے تھے ۔ میں نے اپنے کیمرے سے مسجد کی اور نمازیوں کی تصویریں کھینچیں اور اپنی تصویر بھی امام صاحب کے ساتھ کھنچوائی ۔ دوسرے لوگوں کے ساتھ بھی میری تصویر کھینچی گئی ۔ اس سب سے فرصت پاکر میں نے جھولے سے چاکلیٹ اور لیمن ڈراپس نکالے اور بچوں کو بانٹنا شروع کیا ۔ وہ لیکر خوش خوش کھا رہے تھے ۔ ان کے ساتھی بزرگ ان کو بتا رہے تھے کہ "تھاسزنی تاإندو کوکو" (یعنی یہ تمہارے ہندوستانی بڑے بھائی ہیں) "شے شے" کہو ۔ شے شے کو چینی بھاشا میں شکریہ کو کہتے ہیں ۔ ساڑھے گیارہ بجے میں ان سب

फ़ंग साहब आ गये. फ़ौरन कपड़े बदल कर और नाश्ता करके उनके साथ डिपार्टमेंट तक आया इतने में मेरे साथी राजेश जी भी आ गये जो हमारे साथ चल कर देखना चाहते थे कि यहां के मुसलमान ईद कैसे मनाते हैं. अभी आठ बजने में 10 मिनट बाक़ी थे. हम लोग इधर उधर की बातें करने लगे. ठीक आठ बजे कार आ गई और हम उस पर बैठ कर मसजिद रवाना हो गये. रास्ते में मैंने देखा कि बहुत से मुसलमान मर्द औरतें, बूढ़े, बच्चे सिर पर सुफ़ैद टोपी लगाये साफ़ साफ़ कपड़े पहने मसजिदों की तरफ़ जा रहे थे. नौ बजे के लगभग हम लोग मसजिद पहुंच गये. यहां काफ़ी भीड़ थी लोग अन्दर बाहर आ जा रहे थे. फाटक को तरह तरह के रंग के बड़े बड़े झन्डों से ख़ूब सजाया गया था. लोग हम लोगों को ग़ौर से देख रहे थे. हम लोग मसजिद के अन्दर आ गये. यह हिस्सा भी छोटी छोटी लाल, पीली, हरी, नीली, झन्डियों से ख़ूब सजा हुआ था और जिनके फुरहरे हवा में लहरा लहरा कर अपनी बेपनाह ख़ुशियों को ज़ाहिर कर रहे थे और मौन भाशा में नमाज़ियों को 'ईद मुबारक' पेश कर रहे थे.

मिस्टर फ़ंग ने बताया कि यह पीकिंग शहर की सब से बड़ी मसजिद है और इसका नाम Tung Sze Pailou है. उन्होंने यह भी बताया कि यह मसजिद मिंग ख़ान्दान के समय में बनी है. आज भी यह बहुत अच्छी हालत में है. इसकी वजह यह है कि आजकल की चीनी सरकार इस मामले में बहुत दिलचस्पी लेती है और धार्मिक स्थानों और पुरानी यादगारों को अच्छी हालत में रखने के लिये माली सहायता देती है. इतने में मसजिद के इमाम आ गये. फ़ंग साहब ने हम लोगों को उनसे मिलाया. वह बहुत ख़ुश हुये. उन्होंने हम लोगों को एक कमरे में बैठाया यह कमरा वेटिंग रूम के क़िस्म का था और मसजिद के एक किनारे पर था. इसमें बैठने के लिये बहुत सी बेन्चें पड़ी थीं थोड़ी देर के बाद इमाम साहब चले गये. मैं भी कमरे से उठ कर सेहन में चला आया. वहां मर्द, औरतें, बच्चे, बूढ़े सब जमा थे. एक तरफ़ औरतों का कमरा था जिसके अन्दर बहुत सी बूढ़ी औरतें सिरों पर सफ़ेद कन्टोप पहने बैठी थीं. मर्द सिरों पर सफ़ेद गोल टोपी पहने थे. लड़कियां भी ज़्यादातर मर्दों की तरह सुफ़ेद टोपियां पहने थीं. यह बात मुझको अजीब लगी. हिन्दुस्तान में औरतें मर्दों के साथ मसजिद में नहीं आतीं. मर्द औरत सब नीले रंग की पतलून और उसी रंग का कालरदार कोट पहने हुये थे.

साढ़े नौ बजे वज़ू करके मैं मसजिद के अन्दर बरामदे में गया, वहां इमाम साहब माइक्रोफ़ोन पर चीनी भाशा में तक़रीर कर रहे थे और कभी कभी अरबी पढ़ते जाते



فنگ صاحب آ گئے۔ فوراً کپڑے بدل کر اور ناشتہ کر کے اُن کے ساتھ ڈیپارٹمنٹ تک آیا۔ اتنے میں میرے ساتھی راجیش جی بھی آ گئے جو ہمارے ساتھ چل کر دیکھنا چاہتے تھے کہ یہاں کے مسلمان عید کیسے مناتے ہیں۔ ابھی آٹھ بجنے میں دس منٹ باقی تھے۔ ہم لوگ ادھر اُدھر کی باتیں کرنے لگے۔ ٹھیک آٹھ بجے کار آ گئی اور ہم اس پر بیٹھ کر مسجد روانہ ہو گئے۔ راستے میں میں نے دیکھا کہ بہت سے مسلمان مرد عورتیں، بوڑھے، بچے سر پر سفید ٹوپی لگائے صاف صاف کپڑے پہنے مسجدوں کی طرف جا رہے تھے۔ نو بجے کے لگ بھگ ہم لوگ مسجد پہونچ گئے۔ یہاں کافی بھیڑ تھی۔ لوگ اندر باہر آ جا رہے تھے۔ پھاٹک کو طرح طرح کے رنگ کے بڑے بڑے جھنڈوں سے خوب سجایا گیا تھا۔ لوگ ہم لوگوں کو غور سے دیکھ رہے تھے۔ ہم لوگ مسجد کے اندر آ گئے۔ یہ حصہ بھی چھوٹی چھوٹی لال، پیلی، ہری، نیلی جھنڈیوں سے خوب سجا ہوا تھا۔ اور جن کے پھریرے ہوا میں لہرا لہرا کر اپنی بے پناہ خوشیوں کو ظاہر کر رہے تھے اور مون بھاشا میں نمازیوں کو 'عید مبارک' پیش کر رہے تھے۔

مسٹر فنگ نے بتایا کہ یہ پیکنگ شہر کی سب سے بڑی مسجد ہے اور اس کا نام Tung Sze Pailou ہے۔ انہوں نے یہ بتایا کہ یہ مسجد منگ خاندان کے سمے میں بنی ہے۔ آج بھی یہ بہت اچھی حالت میں ہے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ آج کل کی چینی سرکار اس معاملے میں بہت دلچسپی لیتی ہے اور دھارمک استھانوں اور پرانی یادگاروں کو اچھی حالت میں رکھنے کے لئے مالی سہائتا دیتی ہے۔ اتنے میں مسجد کے امام آ گئے۔ فنگ صاحب نے ہم لوگوں کو اُن سے ملایا۔ وہ بہت خوش ہوئے۔ انہوں نے ہم لوگوں کو ایک کمرے میں بٹھایا۔ یہ کمرہ ویٹنگ روم کے قسم کا تھا اور مسجد کے ایک کنارے پر تھا۔ اس میں بیٹھنے کے لئے بہت سی بینچیں پڑی تھیں۔ تھوڑی دیر کے بعد امام صاحب چلے گئے۔ میں بھی کمرے سے اُٹھ کر صحن میں چلا آیا۔ وہاں مرد، عورتیں، بچے، بوڑھے سب جمع تھے۔ ایک طرف عورتوں کا کمرہ تھا جس کے اندر بہت سی بوڑھی عورتیں سروں پر سفید کنٹوپ پہنے بیٹھی تھیں۔ مرد سروں پر سفید گول ٹوپی پہنے تھے۔ لڑکیاں بھی زیادہ تر مردوں کی طرح سفید ٹوپیاں پہنے تھیں۔ یہ بات مجھ کو عجیب لگی۔ ہندوستان میں عورتیں مردوں کے ساتھ مسجد میں نہیں آتیں۔ مرد عورت سب نیلے رنگ کی پتلون اور اسی رنگ کا کالردار کوٹ پہنے ہوئے تھے۔

ساڑھے نو بجے وضو کر کے میں مسجد کے اندر برآمدے میں گیا۔ وہاں امام صاحب مائکروفون پر چینی بھاشا میں تقریر کر رہے تھے اور کبھی کبھی عربی آیتیں پڑھتے جاتے

एक छोटा सा खाका लिख रहा हूं ताकि मेरे देश वासियों को सच्चाई समझने में मदद मिले.

ईद के दो दिन पहले मेरे एक चीनी लेक्चरर दोस्त मिस्टर यन पास आये और कहने लगे कि परसों ईद है. डिपार्टमेंट ने नमाज़ पढ़ने के लिये आपको पीकिंग शहर की सब से बड़ी मसजिद में भेजने का इन्तज़ाम किया है. दस बजे सुबह नमाज़ होगी, आप आठ बजे तैयार हो जाइयेगा. मैंने उनसे कहा—"लेकिन परसों तो मेरा क्लास है, उसका क्या होगा?" उन्होंने जवाब दिया कि ईद के दिन पूरे चीन में तमाम मुसलमानों की छुट्टी होती है, आपको फिक्र करने की ज़रूरत नहीं है. जो कुछ हो मुझ से कहिये. मैंने उनका शुक्रिया अदा किया और मैं अपने कमरे में चला आया. दूसरे दिन मैं शाम को टहल कर अपने कमरे में आया तो मालूम हुआ कि मेरे दूसरे चीनी दोस्त मिस्टर फंग, जो हिन्दी डिपार्टमेन्ट में लेक्चरर हैं मुझ से मिलने आये थे. मुझको न पाकर मेरी खोज में गये हैं. यह सुनकर मैं फ़ौरन उनकी तलाश में चल पड़ा. अभी मैं थोड़ी ही दूर चला था कि मिस्टर यन मिल गये. सलाम दुआ के बाद उन्होंने बताया कि हमारे डिपार्टमेन्ट ने मिस्टर फंग को मेरा दुभाशिया चुना है और यह कि वह मेरे साथ मसजिद में जायेंगे ताकि वह मुझ को हर चीज़ समझाते जायें और ज़रूरत के वक़्त मेरी मदद करें. मैंने उन से कहा कि मैं मसजिद के इमाम से भी मिलना चाहता हूं और उनसे आज के चीन में मुसलमानों की हालत, मजहबी आज़ादी, सरकार की सहायता, इस्लामी जमाअतें और उनका काम, उनका चुनाव, आम मुसलमानों पर उनका असर, सूअर और शराब के इस्तेमाल के बारे में आम मुसलमानों का ख़याल, मुसलमानी औरतों की हालत इन सब के बारे में पूछना चाहता हूं. उन्होंने इमाम का नाम मुझको बताया और कहा कि मिस्टर फंग आपके साथ रहेंगे और वह आपकी मदद करेंगे. इतने में मिस्टर फंग भी आ गये जो मुझको ढूंढते ढूंढते इधर निकल आये थे. उन्होंने मुझ से कहा कि कल आठ बजे सुबह आप बिल्कुल तैयार रहियेगा. मैं आपके साथ चलूंगा. मैंने उनसे पूछा कि जिस बस से हम लोग पीकिंग शहर जायेंगे (शहर से हमारी यूनिवर्सिटी लगभग दस मील के फ़ासले पर है) वह कितने बजे छूटती है? उन्होंने कहा कि डिपार्टमेंट ने यूनिवर्सिटी कार का प्रबन्ध किया है, हम लोग उसी से जायेंगे कार आठ बजे डिपार्टमेन्ट के सामने खड़ी रहेगी. फिर कुछ इधर उधर की बातें करके वह लोग चले गये और मैं यह सोचता हुआ कमरे में लौट आया कि अगर मैं अपने घर लिखूं कि यहां मुझको इतना आराम है तो क्या लोग यक़ीन कर सकेंगे!

दूसरे दिन नहा धोकर कपड़े बदल ही रहा था कि



ایک چھوٹا سا خاکہ لکھ رہا ہوں تاکہ میرے دیش واسیوں کو سچائی سمجھنے میں مدد ملے.

عید کے دو دن پہلے میرے ایک چینی لیکچرر دوست مسٹر ین میرے پاس آئے اور کہنے لگے کہ پرسوں عید ہے. ڈیپارٹمنٹ نے نماز پڑھنے کے لیئے آپ کو پیکنگ شہر کی سب سے بڑی مسجد میں بھیجنے کا انتظام کیا ہے, دس بجے صبح نماز ہوگی' آپ آٹھ بجے تیار ہو جائیگا. میں نے اُن سے کہا— "لیکن پرسوں تو میرا کلاس ہے' اُس کا کیا ہوگا؟" انہوں نے جواب دیا کہ عید کے دن پورے چین میں تمام مسلمانوں کی چھٹی ہوتی ہے' آپ کو فکر کرنے کی ضرورت نہیں ہے. جو کچھ ہو مجھ سے کہیئے. میں نے ان کا شکریہ ادا کیا اور میں اپنے کمرے میں چلا آیا. دوسرے دن میں شام کو ٹہل کر اپنے کمرے میں آیا تو معلوم ہوا کہ میرے دوسرے چینی دوست مسٹر فنگ جو ہندی ڈیپارٹمنٹ میں لیکچرر ہیں مجھ سے ملنے آئے تھے. مجھکو نہ پا کر میری کھوج میں گئے ہیں. یہ سن کر میں فوراً اُن کی تلاش میں چل پڑا. ابھی میں تھوڑی ہی دور چلا تھا کہ مسٹر ین مل گئے. سلام دعا کے بعد انہوں نے بتایا کہ ہمارے ڈیپارٹمنٹ نے مسٹر فنگ کو میرا دو بھاشیہ چنا ہے اور یہ کہ وہ میرے ساتھ مسجد میں جائینگے تاکہ وہ مجھکو ہر چیز سمجھاتے جائیں اور ضرورت کے وقت میری مدد کریں. میں نے اُن سے کہا کہ میں مسجد کے امام سے بھی ملنا چاہتا ہوں اور ان سے آج کے چین میں مسلمانوں کی حالت' مذہبی آزادی' سرکار کی سہائتا' اسلامی جماعتیں اور ان کا کام' ان کا چناؤ' عام مسلمانوں پر ان کا اثر' سور اور شراب کے استعمال کے بارے میں عام مسلمانوں کا خیال مسلمانی عورتوں کی حالت اِن سب کے بارے میں پوچھنا چاہتا ہوں. انہوں نے امام کا نام مجھ کو بتایا اور کہا کہ مسٹر فنگ آپ کے ساتھ رہیں گے اور وہ آپ کی مدد کرینگے. اتنے میں مسٹر فنگ بھی آگئے جو مجھکو ڈھونڈتے ڈھونڈتے ادھر نکل آئے تھے. انہوں نے مجھ سے کہا کہ کل آٹھ بجے صبح آپ بالکل تیار رہئے گا. میں آپ کے ساتھ چلوں گا. میں نے ان سے پوچھا کہ جس بس سے ہم لوگ پیکنگ شہر جائیں گے (شہر سے ہماری یونیورسٹی لگ بھگ دس میل کے فاصلے پر ہے) وہ کتنے بجے چھوٹتی ہے؟ انہوں نے کہا کہ ڈیپارٹمنٹ نے یونیورسٹی کار کا پربندھ کیا ہے' ہم لوگ اسی سے جائیں گے. کار آٹھ بجے ڈیپارٹمنٹ کے سامنے کھڑی رہے گی. پھر کچھ ادھر ادھر کی باتیں کر کے وہ لوگ چلے گئے اور میں یہ سوچتا ہوا کمرے میں لوٹ آیا کہ اگر میں اپنے گھر لکھوں کہ یہاں مجھکو اتنا آرام ہے تو کیا لوگ یقین کر سکیں گے!

دوسرے دن صبح نہا دھو کر کپڑے بدل ہی رہا تھا کہ

चीनी दोस्त हमसे ज़्यादा हमारा ख़्याल रखते हैं. सुना करते थे कि हृदय एक होने पर दिल की बात समझ में आ जाती है. लेकिन यहां तो वह कथन बिल्कुल सच है. इधर किसी ज़रूरत का एहसास हुआ नहीं कि उधर हमारे दोस्तों को पता चल जाता है और बिना कहे, बिना चर्चा किये हमारी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं. हम लोगों की ज़रूरतें पूरी करने के लिये चीनी भाई व्याकुल रहते हैं. जिस दिन उन्हें हम लोगों की सेवा करने का मौक़ा नहीं मिलता उस दिन वह लोग बेचैन रहते हैं. यहां के लोग और यहां का वातावरन हमें बहुत पसन्द आया. इतना पसन्द आया कि शब्दों में मैं उसे ज़ाहिर नहीं कर सकता. प्रभावित हो कर एक दिन मैंने और राजेश ने वर्मा जी से कहा कि हम लोग यहां कम से कम दस साल के लिये आये हैं. वर्मा जी ने डाक्टर ची से यह बात कह दी. उन्होंने कहा कि हम उन लोगों का पंद्रह बरस के लिये स्वागत करते हैं.

हम लोग आम चीनियों के लिये एक तमाशा हैं. एक दिन हम लोग हाई तीन बाज़ार गये, हम लोगों को देख कर बच्चों की एक भीड़ इकट्ठा हो गई और हर तरफ़ बच्चे "इन्दू रेन, इन्दू रेन" चिल्लाने लगे. रास्ता चलना मुश्किल हो गया. हम लोग बिल्कुल मदारियों की तरह मालूम हो रहे थे जिनके पीछे बच्चे तालियां बजा कर चलते हैं और वह अपना बन्दर लेकर आगे बढ़ जाते हैं. हम लोग अपना झोला लटकाये ख़ुशी से झूमते, अकड़ते चले जा रहे थे. "नी हाऊ, नी हाऊ" कहते आगे बढ़ जाते थे. वह लोग दूसरी तरफ़ से फिर आ कर सामने खड़े हो जाते थे. हम लोग बिल्कुल 'नये गांव ऊंट आया' कि मिसाल मालूम हो रहे थे.

अब पीकिंग की ईद का हाल सुनिये. पीकिंग आये अभी मुझे दो महीने भी न हुए थे. हिन्दुस्तान के ज़्यादातर लोगों की तरह चीन की जनता की मज़हबी आज़ादी के बारे में मुझको भी कुछ शक ही सा था, मगर यहां पर जो कुछ मुझको अनुभव हुआ उससे न केवल मेरा शक ही दूर हुआ बल्कि पूरा यक़ीन हो गया कि यहां के मुसलमानों को अपने मज़हबी मामले में उतनी ही आज़ादी है जितनी कि किसी भी देश के मुसलमान अपने लिये सोच सकते हैं. शुरू शुरू में मैं सोचता था कि इस नये वातावरन में नये नये आदमियों के दर्मियान पता नहीं मेरी ईद कैसे गुज़रे ? मगर अब गर्व से यह कह सकता हूं कि जितनी सहूलियतों के साथ 1000 मुसलमानों के साथ मिल कर पीकिंग शहर की सब से बड़ी मसजिद में मैंने नमाज़ पढ़ी बहुत से लोग उसकी कल्पना तक नहीं कर सकते. इसीलिये



چینی دوست ہم سے زیادہ ہمارا خیال رکھتے ہیں ۔ سنا کرتے تھے کہ ہردے ایک ہونے پر دل کی بات سمجھ میں آجاتی ہے، لیکن یہاں تو یہ کتھن بالکل سچ ہے ۔ ادھر کسی ضرورت کا احساس ہوا نہیں کہ ادھر ہمارے دوستوں کو پتہ چل جاتا ہے اور بنا کہے، بنا چرچا کئے ہماری ضرورتیں پوری ہوجاتی ہیں ۔ ہم لوگوں کی ضرورتیں پوری کرنے کے لئے چینی بھائی بیاکل رہتے ہیں۔ جس دن انہیں ہم لوگوں کی سیوا کرنے کا موقع نہیں ملتا اس دن وہ لوگ بےچین رہتے ہیں ۔ یہاں کے لوگ اور یہاں کا واتاورن ہمیں بہت پسند آیا ۔ اتنا پسند آیا کہ شبدوں میں اسے ظاہر نہیں کرسکتا ۔ پربھاوت ہوکر ایک دن میں نے اور راجیش نے ورما جی سے کہا کہ ہم لوگ یہاں کم سے کم دس سال کے لئے آئے ہیں۔ ورما جی نے ڈاکٹر چی سے یہ بات کہہ دی ۔ انہوں نے کہا کہ ہم ان لوگوں کا پندرہ برس کے لئے سواگت کرتے ہیں ۔

ہم لوگ عام چینیوں کے لئے ایک تماشہ ہیں ۔ ایک دن ہم لوگ ہائی تین بازار گئے، ہم لوگوں کو دیکھکر بچوں کی ایک بھیڑ اکٹھا ہوگئی اور ہر طرف بچے "اندو رین، اندو رین" چلانے لگے ۔ راستہ چلنا مشکل ہوگیا ۔ ہم لوگ بالکل مداریوں کی طرح معلوم ہو رہے تھے جن کے پیچھے بچے تالیاں بجاکر چلتے ہیں اور وہ اپنا بندر لیکر آگے بڑھ جاتے ہیں ۔ ہم لوگ اپنا جھولا لٹکائے خوشی سے جھومتے، اکڑتے چلے جارہے تھے ۔ "نی ہاؤ، نی ہاؤ" کہتے آگے بڑھ جاتے تھے ۔ وہ لوگ دوسری طرف سے پھر آکر سامنے کھڑے ہو جاتے تھے ۔ ہم لوگ بالکل 'نئے گاؤں اونٹ آیا' کی مثال معلوم ہو رہے تھے ۔

اب پیکنگ کی عید کا حال سنئے ۔ پیکنگ آئے مجھے ابھی دو مہینے بھی نہ ہوئے تھے ۔ ہندستان کے زیادہ تر لوگوں کی طرح چین کی جنتا کی مذہبی آزادی کے بارے میں مجھکو بھی کچھ شک ہی سا تھا، مگر یہاں پر جو کچھ مجھکو انوبھو ہوا اس سے نہ کیول میرا شک ہی دور ہوا بلکہ پورا یقین ہوگیا کہ یہاں کے مسلمانوں کو اپنے مذہبی معاملے میں اتنی ہی آزادی ہے جتنی کہ کسی دیش کے مسلمان اپنے لئے سوچ سکتے ہیں ۔ شروع شروع میں میں سوچتا تھا کہ اس نئے واتاورن میں نئے نئے آدمیوں کے درمیان پتہ نہیں میری عید کیسے گذرے ؟ مگر اب گرو سے یہ کہہ سکتا ہوں کہ جتنی سہولیتوں کے ساتھ 1000 مسلمانوں کے ساتھ ملکر پیکنگ شہر کی سب سے بڑی مسجد میں میں نے نماز پڑھی بہت سے لوگ اس کی کلپنا تک نہیں کر سکتے ۔ اسی لئے

के उस चरित्र को देखते हैं जो शेक्सपियर ने निर्मान किया है.

चरित्रों को जन्म देना लेखक का सब से महत्व पूर्न और सब से मुश्किल काम है. इस का तरीक़ा बहुत पेचीदा है. चरित्र निर्मान उस तरह नहीं हो सकता जिस तरह मशीन सामान पैदा करती है. इसलिये मशीन की पैदावार और लेखक की पैदावार का अनुमूलन करते समय दो अलग दृष्टिकोनों का सहारा लेना पड़ेगा.

( सिलसिले के लिये अगला अंक देखिये )



کے اس چرتر کو دیکھتے ہیں جو شیکسپیئر نے نرمان کیا ہے ۔

چرتروں کو جنم دینا لیکھک کا سب سے مہتو پورن اور سب سے مشکل کام ہے ۔ اس کا طریقہ بہت پیچیدہ ہے ۔ چرتر نرمان اس طرح نہیں ہو سکتا جس طرح مشین سامان پیدا کرتی ہے ۔ اس لئے مشین کی پیداوار اور لیکھک کی پیداوار کا انومولن کرتے سمے دو الگ درشٹی کونوں کا سہارا لینا پڑیگا ۔

( سلسلہ کے لئے اگلا انک دیکھئے )

---

# पीकिंग में मेरी पहली ईद !

( लेखक—मुख़तार अहमद )

[ श्री मुख़तार अहमद अभी हाल में पीकिंग गये हैं. पीकिंग यूनीवर्सिटी में वह उर्दू पढ़ाते हैं ऐसे वह 23 अप्रैल सन 1954 ई० को पीकिंग पहुंच गये थे लेकिन चीनियों की मेहमान्दारी ने अवकाश नहीं दिया कि इससे पहले वह कोई पत्र लिख सकें. बक़ौल उनके चीन का वातावरन कुछ इतना पसन्द आया कि वह उसी में डूब कर रह गये. पर अब यकबारगी चौंके हैं तो ख़त लिखने का विचार आया है. आशा है महान चीन का आंखों देखा हाल "नया हिन्द" के पाठकों को आगे भी पढ़ने को मिलता रहेगा और हिन्दुस्तान से चीन में जा कर हिन्दी, उर्दू पढ़ाने वाले साथी ख़त के रूप में ही वहां की जनता, उनकी मेहमान्दारी, उनकी चेतना से हमें परिचित कराते रहेंगे—एडीटर. ]

❀ ❀ ❀

इस साल पीकिंग में मैं ने ईद मनाई. उसका वर्नन बाद में करूंगा. पहले अपने बारे में और अपने चीनी दोस्तों के बारे में कह लूं.

यहां के लोग बहुत ही अच्छे हैं. हम लोगों की ज़रा सी तकलीफ़ पर बेचैन हो जाते हैं. हम लोगों को सबसे अच्छा होस्टल दिया गया है. इसमें केवल हिन्दुस्तानी ही रहते हैं. हम लोगों का रसोई घर अलग है इसमें शुद्ध हिन्दुस्तानी खाना पकता है. रसोई घर की मालिक प्रभा भाभी हैं. सब शाकाहारी भोजन करते हैं और मैं भी साग सब्ज़ी का आनन्द लेता हूं.

# پیکنگ میں میری پہلی عید !

( لیکھک ــــ مختار احمد )

[ شری مختار احمد ابھی حال میں پیکنگ گئے ہیں۔ پیکنگ یونیورسٹی میں وہ اردو پڑھاتے ہیں۔ ایسے وہ 23 اپریل سن 1954ء کو پیکنگ پہونچ گئے تھے لیکن چینیوں کی مہمانداری نے اوکاش نہیں دیا کہ اس سے پہلے وہ کوئی پتر لکھ سکیں ۔ بقول ان کے چین کا واتاورن کچھ اتنا پسند آیا کہ وہ اسی میں ڈوب کر رہ گئے ۔ اب یکبارگی چونکے ہیں تو خط لکھنے کا وچار آیا ہے ۔ آشا ہے مہان چین کا آنکھوں دیکھا حال "نیا ہند" کے پاٹھکوں کو آگے بھی پڑھنے کو ملتا رہیگا اور ہندستان سے چین میں جاکر ہندی، اردو پڑھانے والے ساتھی خط کے روپ میں ہی وہاں کی جنتا، ان کی مہمانداری، انکی چیتنا سے ہمیں پرچت کراتے رہیں گے ــــ ایڈیٹر ۔ ]

❀ ❀ ❀

اس سال پیکنگ میں میں نے عید منائی ۔ اس کا ورنن بعد میں کروں گا ۔ پہلے اپنے بارے میں اور اپنے چینی دوستوں کے بارے میں کہہ لوں ۔

یہاں کے لوگ بہت ہی اچھے ہیں ۔ ہم لوگوں کی ذرا سی تکلیف پر بے چین ہو جاتے ہیں ۔ ہم لوگوں کو سب سے اچھا ہوسٹل رہنے کو دیا گیا ہے ۔ اس میں کیول ہندستانی ہی رہتے ہیں ۔ ہم لوگوں کا رسوئی گھر الگ ہے ۔ اس میں شدھ ہندستانی کھانا پکتا ہے ۔ رسوئی گھر کی مالک پربھا بھابی ہیں ۔ سب شاکاہاری بھوجن کرتے ہیں اور میں بھی ساگ سبزی کا آنند لیتا ہوں ۔

ऐसे ऐसे अनुभवों का सहारा लिया जाता है जो निराधार हैं. हमें उन उपन्यासों में अपने ही जिन्स से काम उत्तेजना शान्त करने वाले दो व्यक्ति मिलते हैं जो एक दूसरे से जलते हैं, हमें ऐसी दुखी माएँ मिलती हैं जो अपने बच्चों से प्यार नहीं कर सकतीं, ऐसे आदमी दिखाई पड़ते हैं जो बिना किसी कारन के आत्महत्या करते हैं.

अकस्मात घटना जो आम तरीक़े से नहीं घटती है लेखक को आकर्शित कर सकती है, लेकिन वह उसको शीघ्र ही या कुछ दिनों के बाद ज्यों का त्यों लिख नहीं डालगा. एक आदमी या एक घटना दूसरों की तरह लखक को भी आश्चर्य में डाल सकती है लेकिन अगर मनुश्य की नैतिक मान्यता उसमें नहीं हैं तो वह आदमी या घटना लेखक को याद नहीं रह सकती. उपन्यास के चरित्र न तो तस्वीरों का ऐलबम होते हैं और न तो प्रश्नों की ऐसी फ़ाइल होते हैं जो व्यक्तियों के बारे में जानकारी रखने वाले विभाग रेकार्ड के तौर पर रखते हैं. यह चरित्र काल्पनिक होते हुए भी वास्तविक होते हैं. लेखक को जीवन का देखने और उसको अर्थ पहनाने का वरदान होता है. इसी वरदान से वह अपनी रचना के चरित्रों में जान पैदा कर देता है.

अपने पैदा किये हुए चरित्रों से लेखक दुनिया को आबाद करता है. ग्रीबोय डोफ़ ने 'विटवर्क्स ओ'' लिखा. क्या इस रचना से पहले रूस में कोई चात्सकी जैसा आदमी था? बेशक ऐसे लोग थे, लेकिन उनको ख़ुद पता नहीं था कि वह क्या हैं और उनके इर्द गिर्द के लोग भी अच्छी तरह से नहीं जानते थे कि वह क्या हैं. इस पुस्तक के बाद लोगों के बारे में कहा जाने लगा कि "यह एक चात्सकी है." गोगोल ने बहुत से व्यक्तियों को पीढ़ियों तक जिन्दा रक्खा. आज भी जब लोग किसी झूठे या डींगयल की बात सुनते हैं तो उसे जलस्टाकोफ़ का नाम देते हैं. नौजवान लोग लीसा, आसया और जीमा नामी लड़कियों से ऐसे प्रेम करते हैं जैसे वह सचमुच ही दुनिया में मौजूद हैं. गोर्की की उपन्यास "मां" की नायका हम को इतिहासी व्यक्ति मालूम होती है, हमारे लिये वह ऐसा चरित्र नहीं है जिस का गोर्की ने निर्मान किया है बल्कि वह जाती जागती औरत मालूम होती है.

पांचवीं सदी में जतलेन्ड में हैमलेट नामी क्या कोई शहज़ादा था? या डेन्मार्क के इतिहास गढ़ने वालों ने इस नाम के शहज़ादे का निर्मान किया है? आज इस इतिहासिक सच्चाई से किसी को कोई मतलब नहीं है. डेन्मार्क में हैमलेट की क़ब्र दिखाई जाती है. वहां जाने वाले लोग इस काल्पनिक क़ब्र को गौर से देखते हैं. उन्हें इसमें कोई भी शक नहीं है कि हैमलेट हाड़ मांस का पुतला था और वह ज़रूर इस दुनिया में मौजूद था क्योंकि वह अपने सामने हैमलेट



ایسے ایسے انوبھوؤں کا سہارا لیا جاتا ہے جو نرادھار ہیں۔ ہمیں ان اپنیاسوں میں اپنے ہی جنس سے کام اتیجنا شانت کرنے والے دو ویکتی ملتے ہیں جو ایک دوسرے سے جلتے ہیں، ہمیں ایسی دکھی مائیں ملتی ہیں جو اپنے بچوں سے پیار نہیں کر سکتیں، ایسے آدمی دکھائی پڑتے ہیں جو بنا کسی کارن کے آتم ہتیا کرتے ہیں۔

اکسمات گھٹنا جو عام طریقے سے نہیں گھٹتی ہے لیکھک کو آکرشت کر سکتی ہے، لیکن وہ اس کو شیگھر ہی یا کچھ دنوں کے بعد جیوں کا تیوں لکھ نہیں ڈالے گا۔ ایک آدمی یا ایک گھٹنا دوسروں کی طرح لیکھک کو بھی آشچریہ میں ڈال سکتی ہے لیکن اگر منشیہ کی نیتک مانیتائیں اس میں نہیں ہیں تو وہ آدمی یا گھٹنا لیکھک کو یاد نہیں رہ سکتی۔ اپنیاس کے چرتر نہ تو تصویروں کا البم ہوتے ہیں اور نہ تو پرشنوں کی ایسی فائل ہوتے ہیں جو ویکتیوں کے بارے میں جانکاری رکھنے والے وبھاگ ریکارڈ کے طور پر رکھتے ہیں۔ یہ چرتر کالپنک ہوتے ہوئے بھی واستوک ہوتے ہیں۔ لیکھک کو جیون کو دیکھنے اور اس کو ارتھ پہنانے کا وردان ہوتا ہے اسی وردان سے وہ اپنی رچنا کے چرتروں میں جان پیدا کر دیتا ہے۔

اپنے پیدا کئے ہوئے چرتروں سے لیکھک دنیا کو آباد کرتا ہے۔ گری بوئے ڈوف نے "وٹ ورکس او" لکھا۔ کیا اس رچنا سے پہلے روس میں کوئی چاتسکی جیسا آدمی تھا؟ بیشک ایسے لوگ تھے، لیکن ان کو خود پتہ نہیں تھا کہ وہ کیا ہیں اور ان کے ارد گرد کے لوگ بھی اچھی طرح سے نہیں جانتے تھے کہ وہ کیا ہیں۔ اس پستک کے بعد لوگوں کے بارے میں کہا جانے لگا کہ "یہ ایک چاتسکی ہیں۔" گوگول نے بہت سے ویکتیوں کو پیڑھیوں تک زندہ رکھا۔ آج بھی جب لوگ کسی جھوٹے یا ڈینگیل کی بات سنتے ہیں تو اسے جلستاکوف کا نام دیتے ہیں۔ نوجوان لوگ لیزا، آسیا اور جیما نامی لڑکیوں سے ایسے پریم کرتے ہیں جیسے وہ سچ مچ ہی دنیا میں موجود ہیں۔ گورکی کی اپنیاس "ماں" کی نائکا ہم کو اتہاسی ویکتی معلوم ہوتی ہے، ہمارے لئے وہ ایسا چرتر نہیں ہے جس کا گورکی نے نرمان کیا ہے بلکہ وہ جیتی جاگتی عورت معلوم ہوتی ہے۔

پانچویں صدی میں جٹ لینڈ میں ہیملٹ نامی کیا کوئی شہزادہ تھا؟ یا ڈنمارک کے اتہاس گڑھنے والوں نے اس نام کے شہزادے کا نرمان کیا ہے؟ آج اس اتہاسک سچائی سے کسی کو کوئی مطلب نہیں ہے۔ ڈنمارک میں ہیملٹ کی قبر دکھائی جاتی ہے۔ وہاں جانے والے لوگ اس کالپنک قبر کو غور سے دیکھتے ہیں۔ انہیں اس میں کوئی بھی شک نہیں ہے کہ ہیملٹ ہاڑ ماس کا پتلا تھا اور وہ ضرور اس دنیا میں موجود تھا کیونکہ وہ اپنے سامنے ہیملٹ

लिये कलाकार को ऊपरी दृष्टि को उस अनुभव से मिलाना पड़ता है जो दूसरों का है और जो बातें उन भावों के बारे में दूसरों ने कहीं हैं उन्हें भी उसे समझना होता है. तब ही उसके चरित्रों में समाज की झांकी मिलती है और यह चरित्र एक नमूना होते हैं. नमूने के बारे में जो आम तरीक़े से समझा जाता है वह ग़लत है. गिन्ती से नमूने का कोई सम्बन्ध नहीं है. अगर उपन्यास के चरित्र की तरह तीस लाख आदमी हैं तो यह कहना नामुमकिन है कि एक नमूने का चरित्र पेश करने में लेखक सफल रहा है और अगर उस चरित्र से मेल खाने वाले तीन हज़ार ही आदमी हैं तो यह कहना भी असम्भव है कि लेखक विफल रहा है. जैसा समाज होता है वैसा ही लेखक का जीवन होता है और जीवन के पर्दे पर जो घटनाएं हो रही हैं उन्हीं को लेखक दिखाता है. जीवन के घेरे से बाहर की कोई चीज़ वह पेश नहीं करता, वह आदमियों और राष्ट्रों का असली जीवन चित्रित करता है. जहां तक गिन्ती का सवाल है वहां तक चात्सकी के चरित्र नमूने के चरित्र नहीं हैं. लेकिन फिर भी अपने समय के रूसी प्रगतिशील दल की धुंधली आशा और ग़ुस्से को उन्होंने अपनी रचनाओं में पेश किया है. गांचारोफ़ ने आबलोमोफ़ के चरित्र का निर्मान इसलिये नहीं किया कि उनमें अनोखापन है बल्कि इसलिये कि उन जैसे लोगों के लिये समाज ने ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी है जिसमें वह हमेशा दुखी रहते हैं. 'अन्नाकेना' का प्रेम बेमिसाल है, उसमें बहुत गहराई है, लेकिन फिर भी सब लोग उसे समझ लेते हैं. हमारे समय के बुर्जवाई लेखक आज इतने बांझ क्यों हैं? कारन यह है कि वह जीवन से भागते हैं और अपनी रचनाओं में ऐसे लोगों का चित्रन करते हैं जो किसी रूप में भी दूसरे से नहीं मिलते. इसमें कोई शक नहीं कि ऐसे लोग मौजूद हैं और यह भी हो सकता है कि उन लोगों की तादाद हमारे अनुमान से ज़्यादा हो. लेकिन ऐसे लोगों का चित्रन पाठक के हृदय को नहीं छूता, क्योंकि उपन्यास में वह अपने और अपने युग की झांकी को ढूंढता है. मैं नहीं मानता हूं कि स्टैन्डहाल के समय में फ़्रांस के हर गली कूचे में जूलियन सारिल या लूशियन लेविन मिल सकते थे. मेरा ख़्याल है ऐसे चरित्र मुश्किल से मिलते हैं, लेकिन यह चरित्र भावों और झुकावों को इस तरह से पेश करते हैं जिस से समय की परिस्थिति का पता चलता है और यही भाव और रुझान आज भी मौजूद हैं, केवल उनका रूप बदल गया है इसी कारन स्टैन्डहाल आज तक पढ़े जाते हैं और भविष्य में भी बहुत दिनों तक पढ़े जाते रहेंगे

आधुनिक बुर्जवाई उपन्यास के चरित्रों में मानसिक भाव नहीं हैं बल्कि उनका आधार अजूबेपन पर है और



لیئے کلاکار کو اوپری درشٹی کو اس انوبھو سے ملانا پڑتا ہے جو دوسروں کا ہے اور جو باتیں ان بھاؤں کے بارے میں دوسروں نے کہی ہیں انہیں بھی اسے سمجھنا ہوتا ہے . تب ہی اس کے چرتروں میں سماج کی جھانکی ملتی ہے اور یہ چرتر ایک نمونہ ہوتے ہیں . نمونے کے بارے میں جو عام طریقے سے سمجھا جاتا ہے وہ غلط ہے . گنتی سے نمونے کا کوئی سمبندھ نہیں ہے . اگر اپنیاس کے چرتر کی طرح تیس لاکھ آدمی ہیں تو یہ کہنا ناممکن ہے کہ ایک نمونے کا چرتر پیش کرنے میں لیکھک سپھل رہا ہے اور اگر اس چرتر سے میل کھانے والے کل تین ہزار ہی آدمی ہیں تو یہ کہنا بھی اسمبھو ہے کہ لیکھک وپھل رہا ہے . جیسا سماج ہوتا ہے ویسا ہی لیکھک کا جیون ہوتا ہے اور جیون کے پردے پر جو گھٹنائیں ہو رہی ہیں انہیں کو لیکھک دکھاتا ہے . جیون کے گھیرے سے باہر کوئی چیز وہ پیش نہیں کرتا، وہ آدمیوں اور راشٹروں کا عملی جیون چترت کرتا ہے . جہاں تک گنتی کا سوال ہے وہاں تک چاتسکی کے چرتر نمونے کے چرتر نہیں ہیں . لیکن پھر بھی اپنے سمے کے روسی پرگتی شیل دل کی دھندلی آشا اور غصے کو انہوں نے اپنی رچناؤں میں پیش کیا ہے . گانچاروف نے آبلوموف کے چرتر کا نرمان اس لیئے نہیں کیا کہ ان میں انوکھاپن ہے بلکہ اس لیئے کہ ان جیسے لوگوں کے لیئے سماج نے ایسی پرستھتی پیدا کر دی ہے جس میں وہ ہمیشہ دکھی رہتے ہیں . 'انناکرینا' کا پریم بے مثال ہے، اس میں بہت گہرائی ہے، لیکن پھر بھی سب لوگ اسے سمجھ لیتے ہیں . ہمارے سمے کے برژوائی لیکھک آج اتنے بانجھ کیوں ہیں ؟ کارن یہ ہے کہ وہ جیون سے بھاگتے ہیں اور اپنی رچناؤں میں ایسے لوگوں کا چترن کرتے ہیں جو کسی روپ میں بھی دوسرے سے نہیں ملتے . اس میں کوئی شک نہیں کہ ایسے لوگ موجود ہیں اور یہ بھی ہو سکتا ہے کہ ان لوگوں کی تعداد ہمارے انومان سے زیادہ ہو . لیکن ایسے لوگوں کا چترن پاٹھک کے ہردے کو نہیں چھوتا، کیونکہ اپنیاس میں وہ اپنے اور اپنے یگ کی جھانکی کو ڈھونڈتا ہے . میں نہیں مانتا ہوں کہ اسٹینڈھال کے سمے میں فرانس کے ہر گلی کوچے میں جولین سارل یا لوشین لیون مل سکتے تھے . میرا خیال ہے ایسے چرتر مشکل سے ملتے ہیں، لیکن یہ چرتر بھاؤں اور جھکاؤں کو اس طرح سے پیش کرتے ہیں جس سے سمے کی پرستھتی کا پتہ چلتا ہے اور یہی بھاؤ اور رجحان آج بھی موجود ہیں، کیول ان کا روپ بدل گیا ہے . اسی کارن سے اسٹینڈھال آج تک پڑھے جاتے ہیں اور بھوشیہ میں بھی بہت دنوں تک پڑھے جاتے رہیں گے .

آدھونک برژوائی اپنیاس کے چرتروں میں مانسک بھاؤ نہیں ہیں بلکہ ان کا آدھار عجوبے پن پر ہے اور

चरित्रों का निर्मान करते समय उन तत्वों के हिस्सों को लेखक बदल देता है जिन से कि वह व्यक्ति बना है; उस व्यक्ति की आगे बढ़ने और पीछे हटने की सम्भावना को भी वह बदल देता है.

## एक चरित्र में बहुत से व्यक्ति छुपे होते हैं

जब 'गोया' ने लड़ाई के भयानक दृश्यों का चित्रन किया तो इन्सानी जिस्म के चीर फाड़ के से निकलने वाले नतीजों की उसने कोई परवाह नहीं की, लेकिन डेढ़ सौ बरस बाद इसकी रचना ने हमें ताज्जुब में डाल दिया. जिस तरह का चित्रन उस ने उस समय किया है वह बिलकुल सच है. लड़ाई की जो तस्वीर उसने खींची है वह उन चित्रों के मुक़ाबिले में सच्चाई के बहुत नज़दीक है जो कि कैनविस पर लड़ाई का दृश्य खींचने वालों ने हर देश और हर युग में खींची हैं.

आम तरीक़े से नाविल के चरित्र एक व्यक्ति के चरित्र की नक़ल नहीं होते बल्कि वह बहुत से व्यक्तियों के चरित्र की मिली जुली तस्वीर होते हैं. इनको बनाने में लेखक बहुत से व्यक्तियों से मिलता है. अपने निर्मित चरित्र में लेखक अपने जीवन का अनुभव भर देता है. लेखक के उपन्यास और कहानी को पढ़ कर नज़दीकी दोस्तों को ताज्जुब होता है क्योंकि उन्हें पता चलता है कि जानी पहचानी घटनाओं का रूप बदल गया है, क्योंकि उन्हें अपने शब्द दूसरे के मुंह से सुनने को मिलते हैं, क्योंकि उन्हें दिखाई पड़ता है कि लेखक ने अपने एक पुराने दोस्त का ऊपरी ढांचा एक ऐसे व्यक्ति को उढ़ा दिया है जिसकी जीवन कथा उस दोस्त से बिलकुल अलग है.

आधुनिक लेखक के दिमाग़ में तरह तरह के विचार उठते रहते हैं और वह उन का प्रयोग किया करता है. इन विचारों की जानकारी हासिल करना ज़रा मुश्किल है. हालांकि वह बिल्कुल हमारे बग़ल में रहता है लेकिन उसके चरित्र और उसकी जीवन कथा से हम पूरी तरह वाक़िफ़ नहीं होते. लेकिन अगर हम इस भेद को मालूम करना चाहते हैं कि प्रमानित उपन्यासों के चरित्र कैसे पैदा हुए हैं तो हमें लेखक के पत्रों का सहारा लेना पड़ेगा, उसकी डायरी और नोटबुक को पढ़ना पड़ेगा और उस समय के दूसरे लेखकों के संस्मरन से मदद लेनी पड़ेगी. इस तरह हम देखते हैं कि आम तरीक़े से उपन्यास के चरित्र का निर्मान उस व्यक्ति पर आधारित नहीं है जिस के व्यक्तित्व ने लेखक को आकर्शित किया है. लेखक बहुत से लोगों के व्यक्तित्व पर विचार करता है और तब जाकर अपने उपन्यास का चरित्र निर्मान करता है.

ऊपरी नज़र से देख कर रचना के चरित्र नहीं पैदा किये जा सकते. पक्का वास्तविक चरित्र पैदा करने के



چرتروں کا نرمان کرتے سمے ان تتوں کے حصوں کو لیکھک بدل دیتا ہے جن سے کہ وہ ویکتی بنا ہے، اس ویکتی کی آگے بڑھنے اور پیچھے ہٹنے کی سمبھاونا کو بھی وہ بدل دیتا ہے۔

## ایک چرتر میں بہت سے ویکتی چھپے ہوتے ہیں

جب "گویا" نے لڑائی کے بھیانک درشیوں کا چترن کیا تو انسانی جسم کے چیر پھاڑ کے سے نکلنے والے نتیجوں کی اس نے کوئی پرواہ نہیں کی، لیکن ڈیڑھ سو برس بعد اس کی رچنا نے ہمیں تعجب میں ڈال دیا۔ جس طرح کا چترن اس نے اس سمے کیا ہے وہ بالکل سچ ہے۔ لڑائی کی جو تصویر اس نے کھینچی ہے وہ ان چتروں کے مقابلے میں سچائی کے بہت نزدیک ہے جو کہ کینوس پر لڑائی کا درشیہ کھینچنے والوں نے ہر دیش میں اور ہر یگ میں کھینچی ہیں۔

عام طریقے سے ناول کے چرتر ایک ویکتی کے چرتر کی نقل نہیں ہوتے بلکہ وہ بہت سے ویکتیوں کے چرتر کی ملی جلی تصویر ہوتے ہیں۔ ان کو بنانے میں لیکھک بہت سے ویکتیوں سے ملتا ہے۔ اپنے نرمت چرتر میں لیکھک اپنے جیون کا انوبھو بھر دیتا ہے۔ لیکھک کے اپنیاس اور کہانی کو پڑھ کر نزدیکی دوستوں کو تعجب ہوتا ہے کیونکہ انہیں پتہ چلتا ہے کہ جانی پہچانی گھٹناؤں کا روپ بدل گیا ہے، کیونکہ انہیں اپنے شبد دوسرے کے منہ سے سننے کو ملتے ہیں، کیونکہ انہیں دکھائی پڑتا ہے کہ لیکھک نے اپنے ایک پرانے دوست کا اوپری ڈھانچہ ایک ایسے ویکتی کو اڑھا دیا ہے جس کی جیون کتھا اس دوست سے بالکل الگ ہے۔

آدھونک لیکھک کے دماغ میں طرح طرح کے وچار اٹھتے رہتے ہیں اور وہ ان کا پریوگ کیا کرتا ہے۔ ان وچاروں کی جانکاری حاصل کرنا ذرا مشکل ہے۔ حالانکہ وہ بالکل ہمارے بغل میں رہتا ہے لیکن اس کے چرتر اور اسکی جیون کتھا سے ہم پوری طرح واقف نہیں ہوتے۔ لیکن اگر ہم اس بھید کو معلوم کرنا چاہتے ہیں کہ پرمانت اپنیاسوں کے چرتر کیسے پیدا ہوئے ہیں تو ہمیں لیکھک کے پتروں کا سہارا لینا پڑیگا، اسکی ڈائری اور نوٹ بک کو پڑھنا پڑیگا اور اس سمے کے دوسرے لیکھکوں کے سنسمرن سے مدد لینی پڑے گی۔ اسطرح ہم دیکھتے ہیں کہ عام طریقے سے اپنیاس کے چرتر کا نرمان اس ویکتی پر آدھارت نہیں ہے جس کے ویکتتو نے لیکھک کو آکرشت کیا ہے۔ لیکھک بہت سے لوگوں کے ویکتتو پر وچار کرتا ہے اور تب جاکر اپنے اپنیاس کا چرتر نرمان کرتا ہے۔

اوپری نظر سے دیکھ کر رچنا کے چرتر نہیں پیدا کئے جا سکتے۔ پکا واستوک چرتر پیدا کرنے کے

क्यों चाहिये? हमारे यहां बहुत से लेखक हैं. अगर एक लेखक किसी चीज़ का चित्रन नहीं करता तो दूसरा उस कमी को पूरा कर देगा. कुछ लेखक अपनी कहानियों में सफ़े के सफ़े लिख मारते हैं जिनमें हृदय की गरमी नहीं होती है और जो पाठक को अपनी तरफ़ नहीं खींच पाते हैं. यह हरकत समालोचकों के ऐतराज़ से बचने के लिये की जाती है कि "लेकिन देखो इसने फ़लां चीज़ का चित्रन नहीं किया." यह परिस्थिति बहुत दुखदायक है.

कभी कभी लेखक से यह भी पूछा जाता है कि वह अपने हीरो के काल्पनिक नाम के पीछे किसी व्यक्ति का चित्रन कर रहा है. बहुत से पाठकों का विचार है कि लेखक उन्हीं व्यक्तियों का चित्रन करता है जो वास्तविक रूप में मौजूद हैं और जिन्हें वह जानता पहचानता है. मेरा विचार है कि लेखक शायद ही ऐसे लोगों को अपने उपन्यासों में जगह देता है जो वास्तविक रूप में मौजूद हों और अगर कभी ऐसे लोगों का चित्रन करता भी है तो उन्हें बदल देता है.

एलेक्सी टालस्टाय ने रूस के महान राजा पीटर पर आधारित कर के एक नाविल लिखा है और उससे बहुत पहले "पीटर का समय" नाम की कहानी भी उन्होंने लिखी थी. लेकिन नाविल और कहानी के पीटर में बड़ा अन्तर है. चूंकि लेखक बदल गया था इसलिये उसके हीरो में भी तबदीली आ गई. "नौजवान गार्ड" नामक उपन्यास का आधार एक सच्ची कहानी है लेकिन उस कहानी में लेखक ने बहुत सी तबदीलियां कर दी हैं.

एक कलाकार प्रकृति की नक़ल नासमझी से नहीं करता. प्रकृति को वह बदलता है और इस बदलाव से ऐसा रूप पैदा करता है जो असली बन जाता है. दो प्रेमियों की बात चीत अगर कोई शार्टहैंड में लिख ले तो उनका महत्व बहुत नहीं होगा और वह अधिक बनावटी दिखाई पड़ेगी. इसके मुक़ाबले में ऐसी बात चीत का चित्रन जब एक महान लेखक करता है तो उसका बड़ा महत्व होता है और वह बातें सच्ची मालूम होती हैं. लेखक इस बात चीत को सच्चाई से मिलाता है. कुछ चीज़ों को छोड़ देता है और कुछ का स्थान बदल देता है और साथ में वह बातें भी जोड़ देता है जो प्रेमियों ने सोची अवश्य हैं लेकिन जो उनके मुंह से नहीं निकली हैं. रंगीन फ़ोटोग्राफ़ी (जैसे पेन्टिंग, जो फ़ोटोग्राफ़ी की तरह होता है) व्यक्ति को कुरूप दिखाती है क्योंकि यह उसके ऊपरी बनाव का चित्रन करती है और या ज़्यादा से ज़्यादा ज़ाहिरी भावों को दिखा पाती है. असली कलाकार व्यक्ति के अन्दरूनी और बाहरी जीवन के मेल को दिखाता है और अपने हीरो के व्यक्तित्व को उभारता है.



کیوں چاہئیے؟ ہمارے یہاں بہت سے لیکھک ہیں۔ اگر ایک لیکھک کسی چیز کا چترن نہیں کرتا تو دوسرا اس کمی کو پورا کر دیگا۔ کچھ لیکھک اپنی کہانیوں میں صفحے کے صفحے لکھ مارتے ہیں جن میں ہردے کی گرمی نہیں ہوتی ہے اور جو پاٹھک کو اپنی طرف نہیں کھینچ پاتے ہیں۔ یہ حرکت سمالوچکوں کے اعتراض سے بچنے کے لئے کی جاتی ہے کہ "لیکن دیکھو اس نے فلاں چیز کا چترن نہیں کیا۔" یہ پرستھتی بہت دکھ دایک ہے۔

کبھی کبھی لیکھک سے یہ بھی پوچھا جاتا ہے کہ وہ اپنے ہیرو کے کالپنک نام کے پیچھے کس ویکتی کا چترن کر رہا ہے۔ بہت سے پاٹھکوں کا وچار ہے کہ لیکھک انہیں ویکتیوں کا چترن کرتا ہے جو واستوک روپ میں موجود ہیں اور جنہیں وہ جانتا پہچانتا ہے۔ میرا وچار ہے کہ لیکھک شاید ہی ایسے لوگوں کو اپنے اپنیاسوں میں جگہ دیتا ہے جو واستوک روپ میں موجود ہوں اور اگر کبھی ایسے لوگوں کا چترن کرتا بھی ہے تو انہیں بدل دیتا ہے۔

الکسی ٹالسٹائی نے روس کے مہان راجا پیٹر پر آدھارت کرکے ایک ناول لکھا ہے اور اس سے بہت پہلے "پیٹر کا سمے" نام کی کہانی بھی انہوں نے لکھی تھی۔ لیکن ناول اور کہانی کے پیٹر میں بڑا انتر ہے۔ چونکہ لیکھک بدل گیا تھا اسلئے اس کے ہیرو میں بھی تبدیلی آگئی۔ "نوجوان گارڈ" نامک اپنیاس کا آدھار ایک سچی کہانی ہے لیکن اس کہانی میں لیکھک نے بہت سی تبدیلیاں کردی ہیں۔

ایک کلاکار پرکرتی کی نقل ناسمجھی سے نہیں کرتا۔ پرکرتی کو وہ بدلتا ہے اور اس بدلاؤ سے ایسا روپ پیدا کرتا ہے جو اصلی بن جاتا ہے۔ دو پریمیوں کی بات چیت اگر کوئی شارٹ ہینڈ میں لکھ لے تو ان کا مہتو بہت نہیں ہوگا اور وہ ادھک بناوٹی دکھائی پڑیگی۔ اس کے مقابلے میں ایسی بات چیت کا چترن جب ایک مہان لیکھک کرتا ہے تو اس کا بڑا مہتو ہوتا ہے اور وہ باتیں سچی معلوم ہوتی ہیں۔ لیکھک اس بات چیت کو سچائی سے ملاتا ہے' کچھ چیزوں کو چھوڑ دیتا ہے کچھ کا استھان بدل دیتا ہے اور ساتھ میں وہ باتیں بھی جوڑ دیتا ہے جو پریمیوں نے سوچی اوشیہ ہیں لیکن جو ان کے منہ سے نہیں نکلی ہیں۔ رنگین فوٹو گرافی (جیسے پینٹنگ جو فوٹو گرافی کی طرح ہوتی ہے) ویکتی کو کروپ دکھاتی ہے کیونکہ یہ اس کے اوپری بناؤ کا چترن کرتی ہے اور یا زیادہ سے زیادہ ظاہری بھاؤں کو دکھا پاتی ہے۔ اصلی کلاکار ویکتی کے اندرونی اور باہری جیون کے میل کو دکھاتا ہے اور اپنے ہیرو کے ویکتتو کو ابھارتا ہے۔

चेकोफ़ के युग में रूस में घोर क्रान्तिकारी मौजूद थे. यह लोग बुद्धिमान थे और इनके इरादे मज़बूत थे. लेकिन चेकोफ़ ने उन मर्द और औरतों का चित्रन किया जो कि जीवन में नाकाम थे, हर वक़्त सपनों की दुनिया में रहते थे. बहुत ही नेक आदमी थे लेकिन ज़िन्दगी के भौंडेपन और नीचता के हाथों परेशान थे. चेकोफ़ के संस्मरन और पत्र जब हम पढ़ते हैं तो हमें चेकोफ़ का यह रूप दिखाई पड़ता है: वह बहुत ही सज्जन पुरुश हैं, दुख में डूबे रहते हैं, किसी के जोर से बोलने पर चुप हो जाते हैं, झगड़े झंझट की परिस्थितियों से दूर भागते हैं और अपने इर्द गिर्द के लोगों की विफलताओं और कमज़ोरियों का लिहाज़ रखते हैं. उनका यही रूप ज्यों का त्यों साहित्य में भी मौजूद है. वह अपने इसी रूप के आधार पर चरित्रों को चुनते थे और उसी से चरित्रों के सम्बन्ध में उनके रुख़ का पता चलता है.

"पुरफ़ोक" दोस्तोस्की ने अपनी जवानी में लिखा है. "दी ब्रोदर्स करमाज़ोफ़" उन्होंने बाद में लिखी. लेकिन पहली पुस्तक से ले कर अन्त तक उन्होंने औरतों के अन्दर की दुनिया का गहरा चित्रन कभी नहीं किया. उन्होंने औरतों को केवल भाग्य का रूप दिया है और वह रचना में हीरो का भाग्य पलटने के लिये आती हैं. उनके उपन्यासों में न आपसी प्रेम है और न दोस्ती. इस बात का सम्बन्ध ख़ुद उनके चरित्र से है. यह चीज़ उनके भाव, उनके अकेलेपन और उनकी सख़्त ज़िन्दगी में छुपी है.

जब कोई लेखक ऐसे लोगों का चित्रन करता है जिन्हें वह नहीं जानता या जिन्हें वह नहीं समझता तो हमेशा उसे नाकामी होती है. लेखक चाहे जिस कारन से ऐसा करे उसे कामयाबी कभी नहीं हो सकती.

बुर्जवाई व्यक्तिवाद के प्रचारक इल्ज़ाम लगाते हैं कि व्यक्ति को समाजवाद में ख़त्म कर दिया जाता है. लेकिन वास्तविकता इसके ख़िलाफ़ है, व्यक्ति के फलने फूलने में समाजवाद मदद देता है. अमरीका ऐसा देश है जहां पैदावार के साधन व्यक्तियों के हाथ में होते हैं, जहां इस ढंग के आर्थिक ढांचे की पूजा होती है, जहां पूंजीवाद को धर्म का रूप दे दिया गया है, वहां ज़रूर सब को एक तरह के ढांचे में ढाला जा रहा है. उनकी आत्मा को एक जैसा बनाया जा रहा है और यह काम ख़ूब तेज़ी से हो रहा है. दूसरी तरफ़ हम इस वास्तविकता की क़दर करते हैं कि रूसी मर्द और औरत एक आदर्श रखते हुए भी एक दूसरे से भिन्न हैं. वह एक हैं पर उनकी बनावट अलग अलग है. किसी लेखक से यह मांग कैसे की जा सकती है कि वह हर चीज़ व हर मनुश्य का चित्रन करे. हम ऐसा कैसे कर सकते हैं और हमें ऐसा करना भी



چیکوف کے یگ میں روس میں گھور کرانتکاری موجود تھے. یہ لوگ بدھیمان تھے اور اِن کے اِرادے مضبوط تھے . لیکن چیکوف نے اُن مرد اور عورتوں کا چترن کیا جو کہ جیون میں ناکام تھے، ہر وقت سپنوں کی دنیا میں رہتے تھے، بہت ہی نیک آدمی تھے لیکن زندگی کے بھونڈے پن اور نیچتا کے ہاتھوں پریشان تھے ۔ چیکوف کے سنسمرن اور پتر جب ہم پڑھتے تو ہمیں چیکوف کا یہ روپ دکھائی پڑتا ہے : وہ بہت ہی سجن پرش ہیں، دکھ میں ڈوبے رہتے ہیں، کسی کے زور سے بولنے پر چپ ہو جاتے ہیں، جھگڑے جھنجھٹ کی پرستھتیوں سے دور بھاگتے ہیں اور اپنے اِرد گرد کے لوگوں کی وپھلتاؤں اور کمزوریوں کا لحاظ رکھتے ہیں . اُن کا یہی روپ جیوں کا تیوں ساہتیہ میں بھی موجود ہے. وہ اپنے اسی روپ کے آدھار پر چرتروں کو چنتے تھے اور اسی سے چرتروں کے سمبندھ میں ان کے رخ کا پتہ چلتا ہے .

"پور فوک" دوستوسکی نے اپنی جوانی میں لکھا ہے. "دی برودرس کرمازوف" انہوں نے بعد میں لکھی. لیکن پہلی پستک سے لے کر انت تک انہوں نے عورتوں کے اندر کی دنیا کا گہرا چترن کبھی نہیں کیا . انہوں نے عورتوں کو کیول بھاگیہ کا روپ دیا ہے اور وہ رچنا میں ہیرو کا بھاگیہ پلٹنے کے لئے آتی ہیں . اُن کے اپنیاسوں میں نہ آپسی پریم ہے اور نہ دوستی . اِس بات کا سمبندھ خود ان کے چرتر سے ہے . یہ چیز ان کے بھاؤ، ان کے اکیلے پن اور ان کی سخت زندگی میں چھپی ہے .

جب کوئی لیکھک ایسے لوگوں کا چترن کرتا ہے جنہیں وہ نہیں جانتا یا جنہیں وہ نہیں سمجھتا تو ہمیشہ اسے ناکامی ہوتی ہے . لیکھک چاہے جس کارن سے ایسا کرے اسے کامیابی کبھی نہیں ہوسکتی .

بورژوائی ویکتی واد کے پرچارک الزام لگاتے ہیں کہ ویکتی کو سماج واد میں ختم کردیا جاتا ہے . لیکن واستوکتا اِس کے خلاف ہے ویکتی کے پھلنے پھولنے میں سماج واد مدد دیتا ہے . امریکہ ایسا دیش ہے جہاں پیداوار کے سادھن ویکتیوں کے ہاتھ میں ہوتے ہیں، جہاں اِس ڈھنگ کے آرتھک ڈھانچے کی پوجا ہوتی ہے، جہاں پونجی واد کو دھرم کا روپ دے دیا گیا ہے، وہاں ضرور سب کو ایک طرح کے ڈھانچے میں ڈھالا جا رہا ہے، اس کی آتما کو ایک جیسا بنایا جا رہا ہے اور یہ کام خوب تیزی سے ہو رہا ہے . دوسری طرف ہم اِس واستوکتا کی قدر کرتے ہیں کہ روسی مرد اور عورت ایک آدرش رکھتے ہوئے بھی ایک دوسرے سے بھن ہیں . وہ ایک ہیں پر انکی بناوٹ الگ الگ ہے . کسی لیکھک سے یہ مانگ کیسے کی جاسکتی ہے کہ وہ ہر چیز و ہر منشیہ کا چترن کرے . ہم ایسا کیسے کرسکتے ہیں اور ہمیں ایسا کرنا بھی

यही बात लेखक के साथ भी होती है. किसी चीज़ की छाप उसके दिमाग़ पर पड़ती है और दूसरी चीज़ से वह कोई दूसरी दिलचस्पी नहीं लेता. इसका कारन यह नहीं है कि लेखक भूलते बहुत हैं या सुस्त होते हैं बल्कि इसका कारन यह है कि लेखकों की प्रकृति और जीवन की विशेशता है. हर लेखक किसी समस्या की तह में पहुंच जाता है, किसी के हृदय में उतर जाता है और किसी को बिल्कुल नहीं समझ पाता है और अगर समझता भी है तो उसकी जानकारी ऊपरी होती है. दिलों की कुंजी लेखकों के पास होती है. किसी के पास कम दिलों की कुंजी होती है और किसी के पास ज्यादा दिलों की. लेकिन आज तक कोई ऐसा लेखक नहीं हुआ जो सारे दिलों की कुन्जी रखता हो.

हम देखते हैं कि लेखक अपनी रचनाओं में घूम फिर कर वही के वही चरित्र निर्मान करते हैं. जब हम पुराने साहित्य की बात करते है तो उसी आधार पर हम "तुर्गनेव की सुन्द्रियां" और "चैकोफ़ के चरित्र" की चर्चा करते हैं. इस क़िस्म के चारित्रों के निर्मान का सम्बन्ध युग से नहीं है, लेखकों की विशेशताओं ने इन्हें ख़ुद चुना है. क्या तुर्गनेव के युग में मेहनती और शक्ति पोशक स्त्रियां नहीं थी? क्या उस युग में भोग विलास से लोग आनन्दित नहीं होते थे? क्या वह अनुमान नहीं करते थे और भविश्यबानी नहीं किया करते थे? क्या उस समय कोई प्रेम सम्बन्ध सुखदायक साबित नहीं हुआ? तुर्गनेव ने मेहनती और शक्ति उपासक स्त्रियों का चित्रन किया है, सुख देने वाले प्रेम सम्बन्धों का भी वर्नन उन्होंने किया है. लेकिन उन हीरोइन का जो "तुर्गनेव की सुन्दरियां" कहलात हैं उनका चित्रन उन्होंने ख़ास प्रभाव से किया है और उनको नया अर्थ पहनाया है.

इस बात को तुर्गनेव के साहित्यक और दार्शनिक शौक़ों के आधार पर नहीं बयान किया जा सकता. यह भेद इस बात में भी नहीं है कि तुर्गनेव गोएटे या शैलिंग से प्रेम करते थे. अस्ल में तुर्गनेव को अभागी और पवित्र सुन्दरियों के अक्स की ज़रूरत थी, जिस की मदद से वह "बेकार लोगों" के समाज का चित्रन कर सकें और कुलीन लोगों के ढहते हुए समाज की तस्वीर पेश कर सकें. इस पर भी आप यह सोचने पर मजबूर हैं कि इन चित्रों के निर्मान में तुर्गनेव के अनुभवों का हाथ है. तुर्गनेव शायद ही किसी ऐसे चित्र से यथार्थ जीवन में मिले हों. लेकिन उन का ख़ुद का चरित्र और जीवन "तुर्गनेव सुन्दरियों" में से किसी एक चरित्र और उसके भाग्य की अकसर याद दिलाता है.



یہی بات لیکھک کے ساتھ بھی ہوتی ہے . کسی چیز کی چھاپ اُس کے دماغ پر پڑتی ہے اور دوسری چیز سے وہ کوئی دلچسپی نہیں لیتا . اِس کا کارن یہ نہیں ہے کہ لیکھک بھولتے بہت ہیں یا وہ سست ہوتے ہیں بلکہ اِس کا کارن یہ ہے کہ لیکھکوں کی پرکرتی اور جیون کی وشیشتا ہے . ہر لیکھک کسی سمسیا کی تہ میں پہونچ جاتا ہے، کسی کے ہردے میں اتر جاتا ہے اور کسی کو بالکل نہیں سمجھ پاتا ہے اور اگر سمجھتا بھی ہے تو اس کی جانکاری اوپری ہوتی ہے . دلوں کی کنجی لیکھکوں کے پاس ہوتی ہے. کسی کے پاس کم دلوں کی کنجی ہوتی ہے اور کسی کے پاس زیادہ دلوں کی . لیکن آج تک کوئی ایسا لیکھک نہیں ہوا جو سارے دلوں کی کنجی رکھتا ہو .

ہم دیکھتے ہیں کہ لیکھک اپنی رچناؤں میں گھوم پھر کر وہی کے وہی چرتر نرمان کرتے ہیں . جب ہم پرانے ساہتیہ کی بات کرتے ہیں تو اسی آدھار پر ہم " ترگنیو کی سندریاں " اور " چے کوف کے چرتر " کی چرچا کرتے ہیں. اِس قسم کے چرتروں کے نرمان کا سمبندھ یگ سے نہیں ہے، لیکھکوں کی وشیشتاؤں نے اِنہیں خود چنا ہے . کیا ترگنیو کے یگ میں محنتی اور شکتی پوشک استریاں نہیں تھیں ؟ کیا اُس یگ میں بھوگ ولاس سے لوگ آنندت نہیں ہوتے تھے ؟ کیا وہ انومان نہیں کرتے تھے اور بھوشیہ بانی نہیں کیا کرتے تھے ؟ کیا اُس سمے کوئی پریم سمبندھ سکھ دایک ثابت نہیں ہوا ؟ ترگنیو نے محنتی اور شکتی اُپاسک استریوں کا چترن کیا ہے، سکھ دینے والے پریم سمبندھوں کا بھی ورنن اُنہوں نے کیا ہے . لیکن ان ہیروئن کا جو " ترگنیو کی سندریاں " کہلاتی ہیں ان کا چترن انہوں نے خاص پربھاؤ سے کیا ہے اور ان کو نیا ارتھ پہنایا ہے .

اِس بات کو ترگنیو کے ساہتیک اور دارشنک شوقوں کے آدھار پر نہیں بیان کیا جا سکتا . یہ بھید اِس بات میں بھی نہیں ہے کہ ترگنیو گوئٹے یا شیلنگ سے پریم کرتے تھے . اصل میں ترگنیو کو ابھاگی اور پوتر سندریوں کے عکس کی ضرورت تھی، جس کی مدد سے وہ " بیکار لوگوں " کے سماج کا چترن کر سکیں اور کلین لوگوں کے ڈھتے ہوئے سماج کی تصویر پیش کر سکیں . اِس پر بھی آپ یہ سوچنے پر مجبور ہیں کہ اِن چتروں کے نرمان میں ترگنیو کے انوبھووں کا ہاتھ ہے . ترگنیو شاید ہی کسی ایسے چتر سے یتھارتھ جیون میں ملے ہوں . لیکن ان کا خود کا چرتر اور جیون " ترگنیو سندریوں " میں سے کسی ایک چرتر اور اُس کے بھاگیہ کی اکثر یاد دلاتا ہے .

उनकी यूनीवर्सिटियां बन गईं. कोरोलंको को देश निकाला मिला. यह लोग साहित्य के मैदान में जब उतरे तो इनके पास दरजनों किताबों का मवाद था, इनके आत्म ज्ञान का भंडार भरा पड़ा था.

"डैविड कूपर फ़ील्ड" "ओलीवर ट्विस्ट" और 'लिटिल डोरिट" लिखने से पहले डिकिंस ने भयानक परिस्थितियों का अनुभव किया था. बचपन में मुश्किलों के पहाड़ टूटे थे, उन्हें सख़्तियां झेलनी पड़ी थीं, एक लोहार के घर काम करना पड़ा था. बालज़ाक ने एक दफ़्तर में काम किया. कुछ दिनों ब्योपार करते रहे, जिमें कभी सफल न हुए. उन्होंने फ़्रांसीसी बुर्ज़्वाई समाज के ग़म ग़ुस्सों, दुख सुख, जोश निराशा का अनुभव किया और बाद में इन सब का वर्नन अपनी रचनाओं में किया.

पूंजीवादी देशों में लिखकर जीविका कमाना बहुत ही मुश्किल है. पेशेवर लेखक बनने से पहले पच्छमी यूरोप और ख़ास करके अमरीका के बहुत से मशहूर लेखक या मज़दूरी करते थे या डाक बांटते थे या जहाज़ों पर माल लादते उतारते थे. इनमें से कोई कोई सड़कों के किनारे फ़ोटो खींचते थे. कुछ बाल बनाने का पेशा करते थे और कुछ सोने की कानों की खोज में मारे मारे फिरते थे. इन लागों की बहुत से इन्सानों से मुलाक़ात हुई. इनको बहुत से उथल पुथल से गुज़रना पड़ा. इन अनुभवों से उपन्यास लिखने में इन लेखकों को सहायता मिली. उन्होंने पूंजीवादी समाज के कालेपन को ख़ुद अनुभव किया और उस समाज के उस पहलू का अपनी रचनाओं में पूरा वर्नन किया.

## अध्यन रचना की सीढ़ी है

रचना करने के लिये अध्यन ज़रूरी सीढ़ी है. लेखक लिख कर जो काम करता है पाठक वही काम पढ़कर करता है. कहानी में जो तफ़सील इशारों में दी जाती है उसे पाठक की कल्पना शक्ति पूरी कर लेती है. यह काम वह अपने अनुभव के घेरे के अन्दर ही करता है. अलग अलग पाठक उपन्यास के अलग अलग चरित्रों को अपने रंग में रंग लेती है या उसे बेरंग बना देती है, चरित्र को ऊपर उठा देती है या उसकी अहमियत को बहुत कम कर देती है. बहुत सी पाठक कान्फ़्रेंसों में मुझे इस बात का अनुभव हुआ है. इन कान्फ़्रेंसों में जब मेरे उपन्यासों पर चर्चा चली है तो बे इच्छा ही मेरा ध्यान अपनी बहुत सी साहित्यक ग़लतियों की तरफ़ गया है और इस बात का भी अनुभव हुआ है कि मानव प्रकृति एक दूसरे से कितनी भिन्न है. पाठक एक चरित्र के हृदय में उतर जाता है लेकिन दूसरे के प्रति वह उदासीन रहता है.



ان کی یونیورسٹیاں بن گئیں ۔ کورولنکو کو دیش نکالا ملا ۔ یہ لوگ ساہتیہ کے میدان میں جب اترے تو ان کے پاس درجنوں کتابوں کا مواد تھا، ان کے آتمک گیان کا بھنڈار بھرا پڑا تھا ۔

"ڈیوڈ کوپرفیلڈ"، "اولیور ٹوسٹ" اور "لٹل ڈورٹ" لکھنے سے پہلے ڈکنس نے بھیانک پرستھتیوں کا انوبھو کیا تھا۔ بچپن میں مشکلوں کے پہاڑ ٹوٹے تھے، انہیں سختیاں جھیلنی پڑی تھیں، ایک لوہار کے گھر کام کرنا پڑا تھا ۔ بالزک نے ایک دفتر میں کام کیا۔ کچھ دنوں بیوپار کرتے رہے جس میں کبھی سپھل نہ ہوئے ۔ انہوں نے فرانسیسی برژوائی سماج کے غم غصوں، دکھ سکھ، جوش نراشا کا انوبھو کیا اور بعد میں ان سب کا ورنن اپنی رچناؤں میں کیا ۔

پونجی وادی دیشوں میں لکھکر جیوکا کمانا بہت ہی مشکل ہے ۔ پیشہ ور لیکھک بننے سے پہلے پچھمی یورپ اور خاص کر کے امریکہ کے بہت سے مشہور لیکھک یا مزدوری کرتے تھے یا ڈاک بانٹتے تھے یا جہازوں پر مال لادتے اتارتے تھے ۔ ان میں سے کوئی کوئی سڑکوں کے کنارے فوٹو کھینچتے تھے ۔ کچھ بال بنانے کا پیشہ کرتے تھے اور کچھ سونے کی کانوں کی کھوج میں مارے مارے پھرتے تھے ۔ ان لوگوں کی بہت سے انسانوں سے ملاقات ہوئی ۔ ان کو بہت سے اتھل پتھل سے گزرنا پڑا ۔ ان انوبھوں سے اپنیاس لکھنے میں ان لیکھکوں کو سہایتا ملی ۔ انہوں نے پونجی وادی سماج کے کالے پن کو خود انوبھو کیا اور اس سماج کے اس پہلو کا اپنی رچناؤں میں پورا ورنن کیا۔

## ادھین رچنا کی سیڑھی ہے

رچنا کرنے کے لئے ادھین ضروری سیڑھی ہے۔ لیکھک لکھکر جو کام کرتا ہے پاٹھک وہی کام پڑھ کر کرتا ہے ۔ کہانی میں جو تفصیل اشاروں میں دی جاتی ہے اسے پاٹھک کی کلپنا شکتی پوری کرلیتی ہے ۔ یہ کام وہ اپنے انوبھو کے گھیرے کے اندر ہی کرتا ہے ۔ الگ الگ پاٹھک اپنیاس کے الگ الگ چرتروں کو اپنے رنگ میں رنگ لیتی ہے یا اسے بے رنگ بنا دیتی ہے، چرتر کو اوپر اٹھا دیتی ہے یا اس کی اہمیت کو بہت ہی کم کردیتی ہے ۔ بہت سی پاٹھک کانفرنسوں میں مجھے اس بات کا انوبھو ہوا ہے ۔ ان کانفرنسوں میں جب میرے اپنیاسوں پر چرچا چلی ہے تو بے اچھا ہی میرا دھیان اپنی بہت سی ساہتیک غلطیوں کی طرف گیا ہے اور اس بات کا بھی انوبھو ہوا ہے کہ مانو پرکرتی ایک دوسرے سے کتنی بھن ہے ۔ پاٹھک ایک چرتر کے ہردے میں اتر جاتا ہے لیکن دوسرے کے پرتی وہ اداسین رہتا ہے۔

उसने दूसरों से सम्बन्ध स्थापित किये हों, उनको समझा हो, उन सम्बन्धों के दुख सुख को खुद भोगा हो.

ऊपर जो बात मैंने कही है उससे मेरा मतलब यह नहीं है कि लेखक केवल उन्हीं चीजों का वर्नन करता है जिनका उसे अनुभव है. यही नहीं कि लेखक अपने खुद के अनुभवों को बदल देता है बल्कि वह अपने मुशाहदों को भी बदल देता है. लेकिन वह हमेशा उन लोगों का ही वर्नन करता है जिनके विचारों और भावों को वह समझ सकता है. साहित्य का यह बहुत ही जरूरी तत्व है. चरित्रों के कारनामों को समझने के लिए लेखक के लिए इतना अनुभव जरूरी है जो इस बात को जाहिर कर सके कि वह परिस्थितियां कौन सी थीं और क्यों थीं जिन में चरित्र मरते जीते और काम करते हैं.

बारम्बार हमें यह दिखाई पड़ता है कि एक नौजवान लेखक उभरता है और पूरी तरह चमकने से पहले ही साहित्य का यह सितारा डूब जाता है. पहली पुस्तक निकलती है. उनमें लेखक की प्रतिभा दिखाई पड़ती है, लोगों का ध्यान वह अपनी तरफ खींचती है. लेकिन दूसरी पुस्तक के निकलने की नौबत नहीं आती. इस तरह के कुछ ऐसे भी लेखक हैं जिन की दूसरी पुस्तक भी निकलती है और उसके बाद तीसरी भी पढ़ने को मिलती है. लेकिन इन किताबों को पढ़कर पाठक का भरम दूर हो जाता है. इस तरह की दुखद घटना का सम्बन्ध उन लेखकों की जीवन कथा से होता है. एक नौजवान जीवन के संघर्ष में अमली हिस्सा लेता है. वह एक इंजीनियर है, एक भूमि शस्त्री है, एक विद्यार्थी है, एक मजदूर है. उसे अनुभव होता रहता है और लिखने के लिए उसके पास कुछ जमा होता रहता है. अगर उसके पास रचना करने की प्रतिभा है तो वह पुस्तक के रूप में अपने अनुभव लिखता है. यह पुस्तक कामियाब होती है. लेकिन जब यही नौजवान पेशेवर लेखक बन जाता है तो वह अपने पिछले जीवन से बिलकुल अलग हो जाता है. उस समय वह नए नए अनुभव नहीं कर पाता, नई नई समस्याएं वह देख नहीं पाता. उस नौजवान लेखक की दूसरी और तीसरी किताबें विफल रहती हैं क्योंकि वह अनुभव के आधार पर नहीं लिखी जातीं. ऐसी रचनाओं का आधार अटकल पर होता है, इनको लिखने में लेखक साहित्यिक स्मृतियों पर निर्भर करता है, इन पुस्तकों का ढांचा पिटा पिटाया होता है.

याद कीजिए कि पुराने लेखकों का जीवन कितना पेचीदा और टेढ़ा मेढ़ा था. याद कीजिए कि साल्टी कोफ़ सचद्रीन को बहुत से शहरों में सरकारी नौकरी करनी पड़ी. वहां वह ऊंचे ओहदे पर रहे. दोस्तोवसकी को गुलामी की सजा मिली. गोर्की जगह जगह मारे मारे फिरे. यही जगहें



اس نے دوسروں سے سمبندھ استھاپت کئیے ہوں، ان کو سمجھا ہو، ان سمبندھوں کے دکھ سکھ کو خود بھوگا ہو۔

اوپر جو بات میں نے کہی ہے اس سے میرا مطلب یہ نہیں ہے کہ لیکھک کیول انہیں چیزوں کا ورنن کرتا ہے جن کا اسے انوبھو ہے۔ یہی نہیں کہ لیکھک اپنے خود کے انوبھوں کو بدل دیتا ہے بلکہ وہ اپنے مشاہدوں کو بھی بدل دیتا ہے۔ لیکن وہ ہمیشہ ان لوگوں کا ہی ورنن کرتا ہے جن کے وچاروں اور بھاؤں کو وہ سمجھ سکتا ہے۔ ساہتیہ کا یہ بہت ہی ضروری تتو ہے۔ چرتروں کے کارناموں کو سمجھنے کے لئیے لیکھک کے لئے اتنا انوبھو ضروری ہے جو اس بات کو ظاہر کر سکے کہ وہ پرستھتیاں کونسی تھیں اور کیوں تھیں جن میں چرتر مرتے جیتے اور کام کرتے ہیں۔

بارمبار ہمیں یہ دکھائی پڑتا ہے کہ ایک نوجوان لیکھک ابھرتا ہے اور پوری طرح چمکنے سے پہلے ہی ساہتیہ کا یہ ستارہ ڈوب جاتا ہے۔ پہلی پستک نکلتی ہے۔ اسمیں لیکھک کی پرتبھا دکھائی پڑتی ہے، لوگوں کا دھیان وہ اپنی طرف کھینچتی ہے۔ لیکن دوسرے پستک کے نکلنے کی نوبت نہیں آتی۔ اسطرح کے کچھ ایسے بھی لیکھک ہیں جن کی دوسری پستک بھی نکلتی ہے اور اسکے بعد تیسری بھی پڑھنے کو ملتی ہے۔ لیکن ان کتابوں کو پڑھکر پاٹھک کا بھرم دور ہو جاتا ہے۔ اسطرح کی دکھد گھٹنا کا سمبندھ ان لیکھکوں کی جیون کتھا سے ہوتا ہے۔ ایک نوجوان جیون کے سنگھرش میں عملی حصہ لیتا ہے۔ وہ ایک انجینیر ہے، ایک بھومی شاستری ہے، ایک ودیارتھی ہے، ایک مزدور ہے۔ اسے انوبھو ہوتا رہتا ہے اور لکھنے کے لئیے اس کے پاس کچھ جمع ہوتا رہتا ہے۔ اگر اسکے پاس رچنا کرنے کی پرتبھا ہے تو وہ پستک کے روپ میں اپنے انوبھو لکھتا ہے۔ یہ پستک کامیاب ہوتی ہے۔ لیکن جب یہی نوجوان پیشہ ور لیکھک بن جاتا ہے تو وہ اپنے پچھلے جیون سے بالکل الگ ہو جاتا ہے۔ اس سمے وہ نئے نئے انوبھو نہیں کر پاتا، نئی نئی سمسیائیں وہ دیکھ نہیں پاتا۔ اس نوجوان لیکھک کی دوسری اور تیسری کتابیں وپھل رہتی ہیں کیونکہ وہ انوبھو کے آدھار پر نہیں لکھی جاتیں۔ ایسی رچناؤں کا آدھار اٹکل پر ہوتا ہے، ان کو لکھنے میں لیکھک ساہتیک اسمرتیوں پر نربھر کرتا ہے، ان پستکوں کا ڈھانچہ پٹا پٹایا ہوتا ہے۔

یاد کیجئے کہ پرانے لیکھکوں کا جیون کتنا پیچیدہ اور ٹیڑھا میڑھا تھا۔ یاد کیجئے کہ سالتی کوف سچدرین کو بہت سے شہروں میں سرکاری نوکری کرنی پڑی۔ وہاں وہ اونچے عہدے پر رہے۔ دستوئیوسکی کو غلامی کی سزا ملی۔ گورکی جگہ جگہ مارے مارے پھرے۔ یہی جگہیں

सेवा" जैसे शब्दों का उपयोग साहित्य चर्चा के सम्बन्ध में लगभग अब हमारे यहां नहीं होता. लेकिन सचमुच ही यह शब्दार्थ से ख़ाली नहीं हैं, मज़ाक़ उड़ाने की चीज़ नहीं हैं. इन शब्दों में लेखक के कर्तव्य की उचित समझ छिपी हुई है. लेखक वह आदमी है जो छोटे से जीवन में बहुत से जन्म लेता है, जिसका फ़र्ज़ है कि वह जनता के दिल में गरमी पैदा करे, जो जनता में जोश पैदा करने के लिये अपने को साधन के रूप में इस्तेमाल करे. जिसका कर्तव्य है कि वह आदमी के अन्तरात्मा को रौशन करे, जिसे चाहिये कि वह अपने पाठकों के दिमाग़ी जालों और नज़र की धुंधलाहट को साफ़ करे ताकि वह जीवन को अधिक अच्छी तरह देख सकें और ज्यादा जीवन का आनन्द ले सकें, अधिक शान से ज़िन्दगी बिता सकें.

लेखक में सीखने की शक्ति होती है. वह अपनी जनता से प्रेम करता है और उसकी समस्याओं में दिलचस्पी लेता है लेकिन यह सोचना महज़ भोलापन है कि लेखक हर तरह के आदमियों को समझ सकता है. सब लोग एक दूसरे के भावों को समझते हैं. इन "सब" में लेखक भी शामिल हैं. लेकिन भावों को समझने की एक सीमा है अपने अनुभवों के घेरे से बाहर कोई किसी की भावनाओं को नहीं समझ सकता. एक ऐसा भाव जिस का अनुभव लेखक को नहीं है, जिसका लेखक के मानसिक ढांचे से कोई सम्बन्ध नहीं है, उस भाव को लेखक नहीं समझ सकता. अगर लेखक उस भाव का वर्नन करता है तो उसे उन किताबों का सहारा लेना पड़ेगा जिन में उस ख़ास भाव का वर्नन किया गया है. इस भाव का वर्नन तो हो जायेगा लेकिन इस वर्नन में मार्मिकता नहीं होगी, सत्य भी नहीं होगा. जिस तरह तर्क शास्त्री बहस में अटकल लगाया करते हैं उसी तरह लेखक अटकल लगाएगा. जिन किताबों या उपन्यास के पन्नों में इस तरह का वर्नन होता है वह नीरस होते हैं और उनकी कोई छाप पाठक के दिल पर नहीं पड़ती.

पच्छिम वालों का विचार है कि जीवन में जो ड्रामे होते हैं उनको लेखक केवल देखा करता है, उनमें हिस्सा नहीं लेता. यह विचार सचाई के विरुद्ध है. लेखक तमाशाई मात्र नहीं है, वह जीवन के मंच पर खेले जाने वाले ड्रामों में भाग लेता है. उपन्यास के पहले अध्याय को लिखने से पहले महीनों या सालों तैयारी होनी चाहिए. योजना बनाई जाए, नोट तैयार किये जाएं. लेखक सालों जीवन की समस्याओं के बीच रहा हो, उसने जीवन के सुख दुख ख़ुद झेले हों, कभी उसका दिल जोश से भर गया हो, उमंगें जाग उठी हों और कभी वह निराश हो गया हो,



سیوا" جیسے شبدوں کا اپیوگ ساہتیہ چرچا کے سمبندھ میں لگ بھگ اب ہمارے یہاں نہیں ہوتا. لیکن سچ مچ ہی یہ شبدارتھ سے خالی نہیں ہیں' مذاق اڑانے کی چیز نہیں ہیں. ان شبدوں میں لیکھک کے کرتویہ کی اچت سمجھ چھپی ہوئی ہے. لیکھک وہ آدمی ہے جو چھوٹے سے جیون میں بہت سے جنم لیتا ہے' جس کا فرض ہے کہ وہ جنتا کے دل میں گرمی پیدا کرے' جو جنتا میں جوش پیدا کرنے کے لیئے اپنے کو سادھن کے روپ میں استعمال کرے' جس کا کرتویہ ہے کہ وہ آدمی کی انترآتما کو روشن کرے' جسے چاہیئے کہ وہ اپنے پاٹھکوں کے دماغی جالوں اور نظر کی دھندلاہٹ کو صاف کرے تاکہ وہ جیون کو ادھک اچھی طرح دیکھ سکیں اور زیادہ جیون کا آنند لے سکیں' ادھک شان سے زندگی بتاسکیں.

لیکھک میں سیکھنے کی شکتی ہوتی ہے. وہ اپنی جنتا سے پریم کرتا ہے اور اسکی سمسیاؤں میں دلچسپی لیتا ہے. لیکن یہ سوچنا محض بھولا پن ہے کہ لیکھک ہر طرح کے آدمیوں کو سمجھ سکتا ہے. سب لوگ ایک دوسرے کے بھاؤں کو سمجھتے ہیں. ان "سب" میں لیکھک بھی شامل ہیں. لیکن بھاؤں کو سمجھنے کی ایک سیما ہے. اپنے انوبھوں کے گھیرے سے باہر کوئی کسی کی بھاؤناؤں کو نہیں سمجھ سکتا. ایک ایسا بھاؤ جس کا انوبھو لیکھک کو نہیں ہے' جس کا لیکھک کے مانسک ڈھانچے سے کوئی سمبندھ نہیں ہے' اس بھاؤ کو لیکھک نہیں سمجھ سکتا. اگر لیکھک اس بھاؤ کا ورنن کرتا ہے تو اسے ان کتابوں کا سہارا لینا پڑے گا جن میں اس خاص بھاؤ کا ورنن کیا گیا ہے. اس بھاؤ کا ورنن تو ہوجائے گا لیکن اس ورنن میں مارمکتا نہیں ہوگی' ستیہ بھی نہیں ہوگا. جسطرح ترک شاستری بحث میں اٹکل لگایا کرتے ہیں اسی طرح لیکھک بھی اٹکل لگائے گا. جن کتابوں یا اپنیاس کے پنوں میں اسطرح کا ورنن ہوتا ہے وہ نیرس ہوتے ہیں اور ان کی کوئی چھاپ پاٹھک کے دل پر نہیں پڑتی.

پچھم والوں کا وچار ہے کہ جیون میں جو ڈرامے ہوتے ہیں ان کو لیکھک کیول دیکھا کرتا ہے' ان میں حصہ نہیں لیتا. یہ وچار سچائی کے ورودھ ہے. لیکھک تماشائی ماتر نہیں ہے' وہ جیون کے منچ پر کھیلے جانے والے ڈراموں میں بھاگ لیتا ہے. اپنیاس کے پہلے ادھیائے کو لکھنے سے پہلے مہینوں یا سالوں تیاری ہونی چاہیئے. یوجنا بنائی جائے' نوٹ تیار کئے جائیں. لیکھک سالوں جیون کے سمسیاؤں کے بیچ رہا ہو' اس نے جیون کے سکھ دکھ خود جھیلے ہوں' کبھی اسکا دل جوش سے بھر گیا ہو' امنگیں جاگ اٹھی ہوں اور کبھی وہ نراش ہوگیا ہو'

अज्ञान और राष्ट्री घमन्ड की तरफ़ हो सकता है. यह दूसरी बात है कि अपने झुकाव को वह रईसाना ठाट बाट का ढांचा, धर्म और देश भक्ती का नाम दे दे.

पिछली सदी के महान रूसी लेखक इस बात से नहीं डरते थे जिसे आजकल उत्तेजना कहा जाता है. जब टाल्सटाय सन 1812 की लड़ाई की चर्चा करते हैं तो क्या यह बात साफ़ नहीं हो जाती कि उनकी सहानुभूति किधर है? क्या इस में किसी को शक है कि "स्पोटस मैन्स स्केचेज़" के लेखक को कौन सी चीज़ प्यारी है और किस चीज़ से उसे नफ़रत है. रूसी समाज के ऊंचे तबक़े वाले बेईमानों, बेरहमों और रूसी जनता के बीच होने वाले टकराव का वर्नन करते समय क्या साल्टीकोफ़ सेचड्रीन ने तटस्थ होने की कोशिश की है?

लेखक में किसी के प्रति हमदर्दी होने का मतलब यह नहीं है कि वह भोंडेपन और लाचारी से पक्षपात करे. लेखक लालच, जालसाज़ी और पाखन्ड से नफ़रत कर सकता है लेकिन वह एक कन्जूस, जालसाज़ और पाखन्डी को इन्सानी हमदर्दी से वंचित नहीं कर सकता. दुनिया को काले और सफ़ेद दो ही रंग में न रंगना चाहिये. प्रेम की तरह नफ़रत का भी सम्बन्ध जीवन और चलते फिरते आदमियों से होता है, नफ़रत कोई विचार मात्र नहीं है.

शालोकोफ़ पक्षपाती थे. उनके उपन्यास "सायल अप टर्न्ड" का एक लक्ष है. वह जानते थे कि किसानों की परिस्थिति में तबदीली आने का मतलब है समाज की तरक़्क़ी. चूंकि उनकी रचना का लक्ष तय था इसलिये वह कुलकों की आत्मा में घुस सके, बाहर ही नहीं रह गए. इसीलिये उनकी रचना तरह के ऊपर ही ऊपर ऊपर नहीं रह गई, एक इश्तहार नहीं बन गई जिस में होने वाली घटनाएं ज्यों की त्यों लिख दी गई हैं. उनकी रचनाओं में मनोवैज्ञानिक सचाई पाई जाती है, समाज की सतह के अन्दर जो कुछ ढका है उसका वर्नन मिलता है.

## कला बग़ैर भावना के नहीं होती

मेरा विचार है कि आज तक कोई कला ऐसी नहीं हुई है जिसे शुद्ध कहा जा सके और उसमें किसी तरह का वलवला न हो. जोश न हो. मैं यह भी मानता हूं कि बग़ैर भावुकता के भविश्य में भी कोई शुद्ध कला नहीं हो सकती.

शैली के भटकावों, रचना की कमज़ोरियों और दूसरी साहित्यिक त्रुटियों से आसानी से छुटकारा हासिल किया जा सकता है लेकिन जहां ठंडक हो, कोई उमंग न हो, कोई जोश न हो वहां जोश पैदा करना, भावों में आग लगाना बहुत मुशकिल है. "आत्मा की पुकार, प्रेरना और



اگیان اور راشٹری گھمنڈ کی طرف ہوسکتا ہے ۔ یہ دوسری بات ہے کہ اپنے جھکاؤ کو وہ رئیسانہ ٹھاٹ باٹ کا ڈھانچہ، دھرم اور دیش بھکتی کا نام دے دے ۔

پچھلی صدی کے مہان روسی لیکھک اس بات سے نہیں ڈرتے تھے جسے آجکل اُتیجنا کہا جاتا ہے ۔ جب ٹالسٹائے سن 1812 کی لڑائی کی چرچا کرتے ہیں تو کیا یہ بات صاف نہیں ہو جاتی کہ اُن کی سہانوبھوتی کدھر ہے؟ کیا اِس میں کسی کو شک ہے کہ "اسپورٹس مینس اسکیچز" کے لیکھک کو کون سی چیز پیاری ہے اور کس چیز سے اُسے نفرت ہے ۔ روسی سماج کے اونچے طبقے والے بےایمانوں، بےرحموں اور روسی جنتا کے بیچ ہونے والے ٹکراؤ کا ورنن کرتے سمے کیا سالٹی کوف سیچڈرین نے تٹستھ ہونے کی کوشش کی ہے؟

لیکھک میں کسی کے پرتی ہمدردی ہونے کا مطلب یہ نہیں ہے کہ وہ بھونڈےپن اور لاچاری سے پکشپات کرے ۔ لیکھک لالچ، جعل سازی اور پاکھنڈ سے نفرت کرسکتا ہے لیکن وہ ایک کنجوس، جعل ساز اور پاکھنڈی کو انسانی ہمدردی سے ونچت نہیں کرسکتا ۔ دنیا کو کالے اور سفید دو ہی رنگ میں نہ رنگنا چاہیئے ۔ پریم کی طرح نفرت کا بھی سمبندھ جیون اور چلتے پھرتے آدمیوں سے ہوتا ہے، نفرت کوئی وچار ماتر نہیں ہے ۔

شالو کوف پکش پاتی تھے ۔ اُن کے اپنیاس "سائل اپ ٹرنڈ" کا ایک لکش ہے ۔ وہ جانتے تھے کہ کسانوں کی پرستھتی میں تبدیلی آنے کا مطلب ہے سماج کی ترقی ۔ چونکہ اُن کی رچنا کا لکش طے تھا اِس لیئے وہ کلکوں کی آتما میں گھس سکے، باہر ہی نہیں رہ گئے ۔ اسی لیئے اُن کی رچنا سطح کے اوپر ہی اوپر نہیں رہ گئی، ایک اشتہار نہیں بن گئی جس میں ہونے والی گھٹنائیں جوں کی توں لکھ دی گئی ہیں ۔ اُن کی رچناؤں میں منوویگیانک سچائی پائی جاتی ہے، سماج کی سطح کے اندر جو کچھ ڈھکا ہے اس کا ورنن ملتا ہے ۔

## کلا بغیر بھاونا کے نہیں ہوتی

میرا وچار ہے کہ آج تک کوئی کلا ایسی نہیں ہوئی ہے جسے شدھ کہا جاسکے اور اس میں کسی طرح کا ولولہ نہ ہو، جوش نہ ہو ۔ میں یہ بھی مانتا ہوں کہ بغیر بھاوکتا کے بھوشیہ میں بھی کوئی شدھ کلا نہیں ہوسکتی ۔

شیلی کے بھٹکاؤں، رچنا کی کمزوریوں اور دوسری ساہتیک ترٹیوں سے آسانی سے چھٹکارا حاصل کیا جا سکتا ہے لیکن جہاں ٹھنڈک ہو، کوئی امنگ نہ ہو، کوئی جوش نہ ہو وہاں جوش پیدا کرنا، بھاوؤں میں آگ لگانا بہت مشکل ہے ۔ "آتما کی پکار، پریرنا اور

गुलाम बन कर. इस जादू का कोई इलाज नहीं है......" शायद वह सोचने लगा, कुछ चिन्तित सा हुआ और फिर उसी परेशानी में बोला—"पर एक इलाज है, बड़ा कारगर इलाज......"

छै बज गए थे, अनिल तकिये में मुंह गड़ाए चारपाई पर पड़े थे. कल्लन, मुराद, नन्कू, राम प्रसाद और दरजनों मज़दूर कोठे पर आ गए थे. सबके सब अनिल की तरफ़ बढ़े. व्यक्ति जैसे डर कर भाग गया. कल्लन ने कहा—"भैया जी."

और वह उठकर बैठ गए. एक दफ़ा आंख मली और सब की शकल देख कर मुसकरा दिए. बोले—"यार, रात भर बुरे बुरे सपने देखते रहे, इसलिए उठने में देर हो गई. मुंह हाथ धोलें, बस जुटते हैं काम में.

अवकाश के अंधियारे में जो अनिल मर गए थे संघर्ष के उजियाले में वह फिर जी उठे.

غلام بنکر. اِس جادو کا کوئی علاج نہیں ہے......" شاید وہ سوچنے لگا، کچھ چنتت سا ہوا اور پھر اسی پریشانی میں بولا—"پر ایک علاج ہے، بڑا کارگر علاج..."

چھ بج گئے تھے، انل تکیے میں منہ گڑائے چارپائی پر پڑے تھے. کلن، مراد، ننکو، رام پرشاد اور درجنوں مزدور کوٹھے پر آگئے تھے. سب کے سب انل کی طرف بڑھے. ویکتی جیسے ڈر کر بھاگ گیا. کلن نے کہا—"بھیا جی"

اور وہ اٹھکر بیٹھ گئے. ایک دفعہ آنکھ ملی اور سب کی شکل دیکھکر مسکرا دیئے. بولے—"یار، رات بھر برے برے سپنے دیکھتے رہے، اس لئے اٹھنے میں دیر ہوگئی. منہ ہاتھ دھولیں، بس جٹتے ہیں کام میں.

اوکاش کے اندھیارے میں جو انل مر گئے تھے سنگھرش کے اجیالے میں وہ پھر جی اٹھے.

---

# लेखक और उसकी कला

( लेखक—एलिया एहरन बर्ग; अनुवादक—मुजीब रिज़वी )

( गतांक से आगे )

## प्रगतिशील सहित्य और उसका मक़सद

बुर्ज़्वा विचार धारा के अनुयाई सोवियत लेखकों और पच्छिम के प्रगतिशील लेखकों पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि इनकी रचनाओं का आधार अपनी ख़ास विचार धारा को फैलाना होता है. यह लोग कहते हैं कि प्रगतिशील लेखकों की रचनाएं "टेनडेन्शस" होती है. फ़्रान्सीसी डिक्शनरी के इस शब्द का मतलब है:—किसी चीज़ की तरफ़ झुकाव. यह बिलकुल क़ुदरती बात है कि दूसरे लोगों की तरह लेखक भी किसी चीज़ से प्रेम करे और किसी चीज़ से नफ़रत. लेखकों और आम लोगों के भावनाओं में अन्तर ज़रूर है. लेकिन अन्तर इस बात का नहीं है कि लेखक दूसरों की तरह प्रेम और नफ़रत नहीं करता. बल्कि अन्तर इस बात में है कि लेखक की इन्द्रियां आम लोगों की इन्द्रियों से तेज़ चलती हैं. लेखक जल्द ही ऊपरी खाल को फाड़ कर तह में पहुंच जाता है. एक लेखक का झुकाव न्याय, बुद्धि और भाई चारे की तरफ़ हो सकता है, दूसरे का झुकाव समाजी नाबराबरी,

# لیکھک اور اُس کی کلا

(لیکھک—ایلیا اہرن برگ؛ انوواک—مجیب رضوی )

( گتانک سے آگے )

## پرگتی شیل ساہتیہ اور اُس کا مقصد

بورژوا وچاردھارا کے انویائی سوویت لیکھکوں اور پچھم کے پرگتی شیل لیکھکوں پر الزام لگاتے ہیں کہ اِن کی رچناؤں کا آدھار اپنی خاص وچار دھارا کو پھیلانا ہوتا ہے. یہ لوگ کہتے ہیں کہ پرگتی شیل لیکھکوں کی رچنائیں "ٹینڈینشس" ہوتی ہیں. فرانسیسی ڈکشنری کے اس شبد کا مطلب ہے :—کسی چیز کی طرف جھکاؤ. یہ بالکل قدرتی بات ہے کہ دوسرے لوگوں کی طرح لیکھک بھی کسی چیز سے پریم کرے اور کسی چیز سے نفرت. لیکھکوں اور عام لوگوں کے بھاؤناؤں میں انتر ضرور ہے. لیکن انتر اِس بات کا نہیں ہے کہ لیکھک دوسروں کی طرح پریم اور نفرت نہیں کرتا. بلکہ انتر اِس بات میں ہے کہ لیکھک کی اندریاں عام لوگوں کی اندریوں سے تیز چلتی ہیں. لیکھک جلد ہی اوپری کھال کو پھاڑ کر تہ میں پہونچ جاتا ہے. ایک لیکھک کا جھکاؤ نیائے، بدھی اور بھائی چارے کی طرف ہوسکتا ہے، دوسرے کا جھکاؤ سماجی نابرابری،

पछताए का होत है, जब चिड़िया चुग गईं खेत........अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, अपने बारे में सोचो, अब भी संभल जाओ......"

अनिल में शायद संघर्ष की ताक़त नहीं रह गई थी या हमदर्दी ने उनको मजबूर कर दिया था. वह उस व्यक्ति से लिपट गए और फूट फूट कर रो दिये. उस व्यक्ति ने उन पर जादू करना आरम्भ किया और फिर मेस्मरेज़म का उन पर पूरा असर हो गया. उस व्यक्ति ने कहा अपने बारे में सोचो और अनिल अपने बारे में सोचने लगे—

"क्या मैं नौकरी नहीं कर सकता था? ज़रूर कर सकता था. मैं वकील हो सकता था, बहुत अच्छा वकील. मैं...... मैं पुलीस अफ़सर हो सकता था. मेरे पास पैसे होते ..... वनिता होती......एक सुन्दर घर होता.........दो एक बच्चे......वनिता मेरे पास होती......लेकिन आज मेरी क्या हालत है......?यह फटे कुर्ते, यह लू, धूप, माना कि समाज को कुछ मैंने दिया लेकिन मुझे क्या मिला, मुझे क्या मिला?

अनिल का व्यक्ति समाज की क़ब्र फाड़ कर निकल आया था. उनकी नस नस पर उसने अपना जाल कस लिया था. कभी कभी इस सपने से जागने की वह कोशिश करते तो वह उन्हें थपकी देकर फिर सुला देता. वह सोचते रहे. जो जीवन आज तक उनका आदर्श था, उसी से उन्हें नफ़रत होने लगी. आज तक जिस पथ पर वह चले थे उसे वह भटकाऊ समझने लगे. बीच बीच में मज़दूरों के मुक़दमे, उनकी कुटियां, संघर्ष, उनकी दुर्दशा, अपने किए वादे अनिल को मिले लेकिन रास्ते का पत्थर समझ कर वह उन्हें फेंकते गए. अब रास्ता साफ़ दिखाई पड़ने लगा था. जीवन के चट्टान से मुंह मोड़ कर वह ढलान के पथ पर चल रहे थे और ढुलकते जा रहे थे. उसी स्थिति में उन्होंने पिता जी से भेंट की—

"पिता जी, मैं लौट आया."

"मैं जानता था बेटा, कूद लो जब तक तुम्हारे घुटनों में बूता है, जब उबाल ख़त्म होगा, ख़ून में ठंडक आएगी, तो आजाओगे......अब क्या इरादे हैं.... ?"

"जो आप कहें पिता जी......मैं नौकरी करूंगा, धन कमाऊंगा, आपकी सेवा करूंगा."

"अच्छा" पिता जी ने ऐसे कहा जैसे उनकी मांगी मुराद मिल गई हो.

अन्दर वाला इतमीनन से यह सब देखता रहा और कहीं अनिल की नींद उचट न जाए वह उन्हें थपथपाता रहा. पिता जी की "अच्छा" के साथ उसने कहा—"चले थे मुझ से लड़ने! तुम क्या हो? बड़ों बड़ों से मैंने टक्कर ली है. वह टोना किया है मैंने तुम पर बच्चू! कि ज़िन्दगी भर अब होश में नहीं आ सकते......पड़े रहो यूं ही, मेरे



پچھتائے کا ہوت ہے، جب چڑیاں چگ گئیں کھیت......
اب بھی کچھ نہیں بگڑا، اپنے بارے میں سوچو، اب بھی سنبھل جاؤ......"

انل میں شاید سنگھرش کی طاقت نہیں رہ گئی تھی یا ہمدردی نے اُن کو مجبور کردیا تھا. وہ اُس ویکتی سے لپٹ گئے اور پھوٹ پھوٹ کر رو دیئے. اُس ویکتی نے اُن پر جادو کرنا آرمبھ کیا اور پھر مسمریزم کا اُن پر پورا اثر ہوگیا. اُس ویکتی نے کہا اپنے بارے میں سوچو اور انل اپنے بارے میں سوچنے لگے—

"کیا میں نوکری نہیں کرسکتا تھا؟ ضرور کرسکتا تھا. میں وکیل ہوسکتا تھا، بہت اچھا وکیل. میں... میں ... ہوسکتا تھا. میرے پاس پیسے ہوتے......ونیتا ہوتی......ایک سندر گھر ہوتا......دو ایک بچے......ونیتا میرے پاس ہوتی......لیکن آج میری کیا حالت ہے......؟ یہ پھٹے کرتے، یہ لو، دھوپ، مانا کہ سماج کو کچھ میں نے دیا لیکن مجھے کیا ملا، مجھے کیا ملا؟

انل کا ویکتی سماج کی قبر پھاڑ کر نکل آیا تھا. اُن کی نس نس پر اس نے اپنا جال کس لیا تھا. کبھی کبھی اِس سپنے سے جاگنے کی وہ کوشش کرتے تو وہ انہیں تھپکی دےکر پھر سلا دیتا. وہ سوچتے رہے. جو جیون آج تک ان کا آدرش تھا، اسی سے انہیں نفرت ہونے لگی. آج تک جس پتھ پر وہ چلے تھے اسے وہ بھٹکاؤ سمجھنے لگے. بیچ بیچ میں مزدوروں کے مقدمے، ان کی کٹیاں، سنگھرش، ان کی دردشا، اپنے کئے وعدے انل کو ملے لیکن راستے کا پتھر سمجھکر وہ انہیں پھینکتے گئے. اب راستہ صاف دکھائی پڑنے لگا تھا. جیون کے چٹان سے منہ موڑ کر وہ ڈھلان کے پتھ پر چل رہے تھے اور ڈھلکتے جا رہے تھے. اسی استھتی میں انہوں نے پتا جی سے بھینٹ کی—

"پتا جی، میں لوٹ آیا"

"میں جانتا تھا بیٹا، کود لو جب تک تمہارے گھٹنوں میں بوتا ہے، جب اُبال ختم ہوگا، خون میں ٹھنڈک آئےگی، تو آجاؤگے......اب کیا ارادے ہیں......؟"

"جو آپ کہیں پتا جی......میں نوکری کروں گا، دھن کماؤں گا، آپ کی سیوا کروں گا."

"اچھا" پتا جی نے ایسے کہا جیسے ان کی مانگی مراد مل گئی ہو.

اندر والا اطمینان سے یہ سب دیکھتا رہا اور کہیں انل کی نیند اچٹ نہ جائے وہ انہیں تھپتھپاتا رہا. پتا جی کی "اچھا" کے ساتھ اس نے کہا—"چلے تھے مجھ سے لڑنے! تم کیا ہو؟ بڑوں بڑوں سے میں نے ٹکر لی ہے. وہ ٹونا کیا ہے میں نے تم پر بچو! کہ زندگی بھر اب ہوش میں نہیں آسکتے......پڑے رہو یوں ہی، میرے

लिखता रहता हूं, तुम सालगिरह मनाती हो, मैं किसी कुटिया में पड़ा रहता हूं......" कहते कहते उसे गुदगुदा देते हैं.

वनिता हंसती नहीं है, जल भुन कर कहती है—"यह सब बकवास है. असल में तुम किसी और से प्रेम करते हो."

"हां, जीवन से."

"अपने" वनिता ने करुन भाव से कहा और अनिल पर नज़र डाली जिस में हज़ारों अर्थ समोए थे.

"नहीं, "अपना", "सब" का अन्श है, इसलिये सब से."

दोनों कुछ देर मौन रहे. फिर चलने की तैयारी करते हुए अनिल ने कहा—"वनिता, तुम अपनी शादी में बुलाना ज़रूर, भूलना मत, जेल के बाहर रहा तो तुम्हें आशीर्वाद देने आऊंगा......"

वनिता रो पड़ी.

अरे यह क्या, इन को क्या हो गया, अभी अच्छे भले थे, इन्होंने टिसवे क्यों बहाने शुरू कर दिए? उन्हों ने ही तो वनिता से कहा था कि अपनी शादी पर ज़रूर बुलाना. और आज जब उसने बुलाया है तो—यह क्या? आंखें खुली हैं और उनमें से तरल पदार्थ इस धार से बूंद बूंद चू रहा है जैसे किसी देवता पर यह जल चढ़ा रहे हों!

अन्दर वाला व्यक्ति बोल उठा—"अब आए हो ठीक रास्ते पर, भटकना मत."

नहीं कहा जा सकता कि शराबी को नशे का आभास कब होता है? नशे पीने के बाद या नशा उतरने के बाद! शायद आज तक अनिल नशे में बदमस्त थे, उन्हें कुछ होश नहीं था. वनिता से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है, वह इन चक्करों में नहीं पड़ते. यह सब बातें नशे की थीं. और आज जब नशा उतर चुका है तो उन्हें लग रहा है कि बिना वनिता रूपी शराब मिले उनका सिर दर्द से फट जाएगा. लेकिन बेबस हैं. अब तीर हाथ से छूट चुका है, रो रहे हैं. कल तक वनिता के सम्बन्ध में उन्होंने नहीं सोचा था शायद यह समझ बैठे थे कि वह अपनी है ही, उस पर किसी दूसरे का अधिकार नहीं. जैसे लोग घर में पड़ी चीज़ की अपेक्षा करते हैं, यूं ही कोने कतरे में फेंक देते हैं. अनिल ने वनिता से कोई लगाव ज़ाहिर नहीं किया लेकिन वह कोने कतरे में पड़ी रही. नहीं तो आज जब वह दूसरे की हो रही है तो उन्हें कसक न होती, उनके आंसू न उमड़ते.

शायद अन्दर का व्यक्ति उन्हीं छनों के ताक में था जब कमज़ोरी अनिल पर छा जाए. सहानुभूति दिखाते हुए, तसल्ली देते हुए, चुमकारते हुए उसने कहा—"अब



لکھتا رہتا ہوں، تم سالگرہ مناتی ہو، میں کسی کٹیا میں پڑا رہتا ہوں" کہتے کہتے انل اسے گدگدا دیتے ہیں۔

ونتا ہنستی نہیں ہے، جل بھن کر کہتی ہے—"یہ سب بکواس ہے. اصل میں تم کسی اور سے پریم کرتے ہو."

"ہاں، جیون سے"

"اپنے" ونتا نے کرن بھاؤ سے کہا اور انل پر نظر ڈالی جس میں ہزاروں ارتھ سموئے تھے۔

"نہیں، "اپنا" "سب" کا انش ہے، اس لیئے سب سے."

دونوں کچھ دیر مون رہے۔ پھر چلنے کی تیاری کرتے ہوئے انل نے کہا—"ونتا، تم اپنی شادی میں بلانا ضرور، بھولنا مت، جیل کے باہر رہا تو تمہیں آشیرواد دینے آؤنگا."

ونتا رو پڑی۔

ارے یہ کیا، ان کو کیا ہوگیا، ابھی اچھے بھلے تھے، انہوں نے ٹسوے کیوں بہانے شروع کردیئے۔ انہوں نے ہی تو ونتا سے کہا تھا کہ اپنی شادی پر ضرور بلانا۔ اور آج جب اس نے بلایا ہے تو—یہ کیا؟ آنکھیں کھلی ہیں اور ان میں سے ترل پدارتھ اس دھار سے بوند بوند چو رہا ہے جیسے کسی دیوتا پر یہ جل چڑھا رہے ہوں!

اندر والا ویکتی بول اٹھا—"اب آئے ہو ٹھیک راستے پر، بھٹکنا مت."

نہیں کہا جاسکتا کہ شرابی کو نشے کا آبھاس کب ہوتا ہے؟ نشہ پینے کے بعد یا نشہ اترنے کے بعد! شاید آج تک انل نشے میں بدمست تھے، انہیں کچھ ہوش نہیں تھا۔ ونتا سے ان کا کوئی سمبندھ نہیں ہے، وہ ان چکروں میں نہیں پڑتے۔ یہ سب باتیں نشے کی تھیں۔ اور آج جب نشہ اتر چکا ہے تو انہیں لگ رہا ہے کہ بنا ونتا روپی شراب ملے ان کا سر درد سے پھٹ جائیگا۔ لیکن بے بس ہیں. اب تیر ہاتھ سے چھوٹ چکا ہے، رو رہے ہیں. کل تک ونتا کے سمبندھ میں انہوں نے نہیں سوچا تھا۔ شاید یہ سمجھ بیٹھے تھے کہ وہ اپنی ہے ہی، اس پر کسی دوسرے کا ادھیکار نہیں۔ جیسے لوگ گھر میں پڑی چیز کی اپیکشا کرتے ہیں، یوں ہی کونے کترے میں پھینک دیتے ہیں۔ انل نے ونتا سے کوئی لگاؤ ظاہر نہیں کیا لیکن وہ کونے کترے میں پڑی رہی۔ نہیں تو آج جب وہ دوسرے کی ہو رہی ہے تو انہیں کسک نہ ہوتی، ان کے آنسو نہ امڑتے۔

شاید اندر کا ویکتی انہیں چھنوں کے تاک میں تھا جب کمزوری انل پر چھا جائے۔ سہانوبھوتی دکھاتے ہوئے، تسلی دیتے ہوئے، چمکارتے ہوئے اس نے کہا—"اب

आनन्द का आभास करता हूं, जब इनकी जीत होती है तो मुझमें आगे बढ़ने का उत्साह पैदा होता है........ तुम क्या समझो इन सब बातों को.........''

''झूट, बकवास, अपने को धोका देते हो........ वनिता की बात करो यार, विन्ता की. अक़्ल पर पाले क्यों पड़े हैं?''

''वनिता!'' अनिल ने इस तरह कहा जैसे उसे सम्बोधित कर रहे हों. तुरन्त ही उन्होंने कार्ड फिर उठा लिया. कार्ड एक आईना बन गया जिस में केवल वनिता का चेहरा दिखाई पड़ रहा था और सब कुछ लुप्त हो गया था. अनिल ने वनिता को भगाने की कोशिश नहीं की और उस कार्ड पर नज़र जमाए रहे. उन्होंने देखा—

वनिता के घर अनिल जाते हैं. वह पाउडर लगा रही है, अनिल ने पानी का गिलास उस पर उंडेल दिया है. वह रुष्ट है. लेकिन ग़ुस्से में भी मुस्कान ने पीछा नहीं छोड़ा.........फिर वनिता की मां आ जाती हैं. वह प्यार से अनिल की बलाएं लेती हैं, एक लम्बा चिट्ठा खोल कर बैठ जाती हैं और बातें करते करते कहती हैं –

''अनिल, अब शादी कर डालो, क्या बुढ़ापे में व्याह रचाओगे?''

''हां, बावन बरस में, तेजस्वी बच्चे होंगे.'' अनिल जवाब देते हैं.

अन्दर के व्यक्ति ने इतमीनान की जैसे सांस ली और सराहना के स्वर में बोला—''हां, अब ठीक है. सोचो, कुछ अपने बारे में सोचो.........''

अनिल जैसे फिर व्यतीत से दामन छुड़ा कर भागे और अन्दर वाले व्यक्ति के पीछे दौड़े और जैसे उसे चेतावनी दी—''बच्चू! अगर फिर दिखाई पड़े तो कच्चा चबा जाऊंगा.'' अनिल ने कार्ड उठा कर कुरसी पर रख दिया. कुछ देर आंख बन्द किये लेटे रहे. शायद सो जाते लेकिन वनिता कब मानती है? आधमकी. बोली—''अनिल क्या तुम मुझसे व्याह नहीं कर सकते?''

अनिल ने कहा—''सफ़ेद हाथी बांधने का सामर्थ नहीं है.........मेरा जीवन तुम्हारा जीवन दो अलग राहें हैं जो कभी नहीं मिल सकतीं.''

''मैं तुम्हारा जीवन अपनाऊंगी, मुझसे इतने निराश क्यों हो?''

''निराश नहीं हूं.........तुम मुझसे कुछ मांगोगी, मैं तुम्हें क्या दूंगा? सब तो तो मज़दूरों को दे चुका हूं.........''

''मैं तुम से कुछ नहीं मांगूंगी.''

''वह तो तुम आज ही मांगती हो. देख लो न, तुम सनीमा दिखाने को बुलाती हो, मैं मज़दूरों की अरज़ी



آنند کا آبھاس کرتا ہوں، جب اِن کی جیت ہوتی ہے تو مجھ میں آگے بڑھنے کا اُتساہ پیدا ہوتا ہے......تم کیا سمجھو اِن سب باتوں کو......''

''جھوٹ، بکواس، اپنے کو دھوکا دیتے ہو...... ونتا کی بات کرو یار، ونتا کی، عقل پر پالے کیوں پڑے ہیں؟''

''ونتا!'' انل نے اِس طرح کہا جیسے وہ اُسے سمبودھت کر رہے ہوں. ترنت ہی انہوں نے کارڈ پھر اُٹھا لیا. کارڈ ایک آئینہ بن گیا جس میں کیول ونتا کا چہرہ ہی دکھائی پڑ رہا تھا اور سب کچھ لپت ہوگیا تھا. انل نے ونتا کو بھگانے کی کوشش نہیں کی اور اُس کارڈ پر نظر جمائے رہے. انہوں نے دیکھا—

ونتا کے گھر انل جاتے ہیں. وہ پاوڈر لگا رہی ہے، انل نے پانی کا گلاس اُس پر اُنڈیل دیا ہے. وہ رُشٹ ہے. لیکن غصے میں بھی مسکان نے پیچھا نہیں چھوڑا...... پھر ونتا کی ماں آجاتی ہیں. وہ پیار سے انل کی بلائیں لیتی ہیں، ایک لمبا چٹھا کھول کر بیٹھ جاتی ہیں اور باتیں کرتے کہتی ہیں—

''انل، اب شادی کر ڈالو، کیا بڑھاپے میں بیاہ رچاؤ گے؟''

''ہاں، باون برس میں، تیجسوی بچے ہونگے'' انل جواب دیتے ہیں.

اندر کے ویکتی نے اطمینان کی جیسے سانس لی اور سراہنا کے سور میں بولا—''ہاں، اب ٹھیک ہے، سوچو، کچھ اپنے بارے میں سوچو......''

انل جیسے پھر ویتیت سے دامن چھڑا کر بھاگے اور اندر والے ویکتی کے پیچھے دوڑے اور جیسے اُسے چیتاونی دی—''بچو! اگر پھر دکھائی پڑے تو کچا چبا جاؤں گا.'' انل نے کارڈ اٹھا کر کرسی پر رکھ دیا. کچھ دیر آنکھ بند کئے لیٹے رہے. شاید سو جاتے لیکن ونتا کب مانتی ہے؟ آدھمکی بولی—''انل تم کیا مجھ سے بیاہ نہیں کر سکتے؟''

انل نے کہا—''سفید ہاتھی باندھنے کا سامرتھ نہیں ہے... میرا جیون تمہارا جیون دو الگ راہیں ہیں جو کبھی نہیں مل سکتیں.''

''میں تمہارا جیون اپناؤں گی، مجھ سے اتنے نراش کیوں ہو؟''

''نراش نہیں ہوں......تم مجھ سے کچھ مانگوگی، میں تمہیں کیا دونگا؟ سب تو مزدوروں کو دے چکا ہوں......''

''میں تم سے کچھ نہیں مانگونگی''

''وہ تو تم آج ہی مانگتی ہو. دیکھ لو نہ، تم سنیما دکھانے کو بلاتی ہو، میں مزدوروں کی عرضی

में वनिता जीत गई. क़ानून की किताब अनिल ने सीने पर उलट ली और आसमान ताकने लगे. अपने इर्द गिर्द की दुनिया से दूर किसी आईने में उन्होंने अपना व्यतीत देखा—

वनिता फ़ाइल दबाए झूमती आती है. अनिल उसके आगे जा रहे हैं. वह दूर से पुकारती है—"अनिल, अनिल." अनिल केवल मुस्कुरा देते हैं और ठिटक जाते हैं वह क़रीब आती है. साड़ी का पल्लू ठीक करती है और गरदन को एक झटका देती है ताकि बाल ठीक हो जाएं. फिर कहती है—

"अनिल, सुना तुम बीमार हो गए थे, रात तुम्हारी तबियत ख़राब हो गई थी, मैं तो धक से रह गई...वह... वह......क्या नाम है जी उसका......वह तुम्हारा दोस्त कहता था......" अनिल अर्थ पूर्न हंसी हंसते हैं और सीधे सुभाव अपनी कलाई उसको थमा देते हैं और कहते हैं—

"देख लो, ठीक हूं."

अनिल चेत से गए. चारपाई से उठे. बम्बे के नीचे मुंह धोया और आकर क़ानून की किताब पढ़ने लगे. वनिता ने फिर प्रवेश किया लेकिन इस बार अनिल सतर्क थे और जैसे उन्होंने गरज कर हुक्म दिया कि अनिता वनिता कोई इस समय नहीं आ सकता, इस वक़्त मैं मुराद से ज़रूरी बातें कर रहा हूं. वनिता नहीं आई और श्री मुराद आजमान रहे. पढ़ते पढ़ते अनिल के मानस पटल पर मुराद का चित्र खिंचा. चुग्गी दाढ़ी का साईन बोर्ड लगाए, एक शेरवानी ओढ़े वह आ धमके. कुछ देर अपने मुक़दमे की बातें करते रहे. अनिल मन ही मन उनको जवाब देते रहे. दोनों ने प्रन किया कि मालिक को हरा कर रहेंगे. मज़दूर की जीत होगी, इसमें तो उन्हें कभी शंका ही नहीं है. मुराद कमरे से निकलते हैं. अनिल टाइप करने लगते हैं. मुराद बाहर निकल कर मज़दूरों से कहते हैं—

"क्या दिमाग़ पाया है अनिल बाबू ने.........सच, आज तक ऐसा क़ाबिल आदमी तो मैंने देखा ही नहीं.......बड़े बड़े देखे हैं.........लेकिन इन जैसा नहीं मिला.........बिना लिखे पढ़े झर झर टाइप मशीन पर टाइप कर लेते हैं! दिमाग़ है कि मशीन.........!" अनिल हंसी नहीं रोक सके और बोले—

"कितने भोले हैं यह लोग!"

"क्या मिलता है तुम्हें बेगारी कर के" अन्दर के व्यक्ति ने फिर व्यंग किया. उल्लास भरे स्वर में अनिल ने कहा—"जीवन मिलता है, निराशा दूर हो जाती है, मैं इनके बीच जा कर आनन्द विभोर हो जाता हूं, जब इन के जलूस लेकर सड़कों पर चलता हूं तो मैं आत्मिक



میں ونیتا جیت گئی۔ قانون کی کتاب انل نے سینے پر الٹ لی اور آسمان تاکنے لگے۔ اپنے اردگرد کی دنیا سے دور کسی آئینہ میں اُنہوں نے اپنا ویتیت دیکھا—

ونیتا فائل دبائے جھومتی آتی ہے۔ انل اس کے آگے جا رہے ہیں۔ وہ دور سے پکارتی ہے—" انل انل۔" انل کیول مسکرا دیتے ہیں اور ٹھٹک جاتے ہیں۔ وہ قریب آتی ہے۔ ساڑی کا پلو ٹھیک کرتی ہے اور گردن کو ایک جھٹکا دیتی ہے تا کہ بال ٹھیک ہو جائیں۔ پھر کہتی ہے—

" انل، سنا تم بیمار ہو گئے تھے، رات تمہاری طبیعت خراب ہوگئی تھی، میں تو دھک سے رہ گئی......وہ......وہ......کیا نام ہے جی اس کا......وہ تمہارا دوست کہتا تھا......" انل ارتھ پورن ہنسی ہنستے ہیں اور سیدھے سبھاؤ اپنی کلائی اس کو تھما دیتے ہیں اور کہتے ہیں—

" دیکھ لو، ٹھیک ہوں۔"

انل چیت سے گئے۔ چارپائی سے اٹھے۔ بمبے کے نیچے منہ دھویا اور آ کر قانون کی کتاب پڑھنے لگے۔ ونیتا نے پھر پرویش کیا لیکن اس بار انل سترک تھے اور جیسے انہوں نے گرج کر حکم دیا کہ انیتا ونیتا کوئی اس سمے نہیں آ سکتا، اس وقت میں مراد سے ضروری باتیں کر رہا ہوں۔ ونیتا نہیں آئی اور شری مراد براجمان رہے۔ پڑھتے پڑھتے انل کے مانس پٹل پر مراد کا چتر کھنچا۔ چگی داڑھی کا سائن بورڈ لگائے، ایک شیروانی اوڑھے وہ آدھمکے۔ کچھ دیر اپنے مقدمے کی باتیں کرتے رہے۔ انل من ہی من اُن کو جواب دیتے رہے۔ دونوں نے پرن کیا کہ مالک کو ہرا کر رہیں گے، مزدور کی جیت ہوگی، اس میں تو انہیں کبھی شنکا ہی نہیں ہے۔ مراد کمرے سے نکلتے ہیں۔ انل ٹائپ کرنے لگتے ہیں۔ مراد باہر نکل کر دوسرے مزدوروں سے کہتے ہیں—

" کیا دماغ پایا ہے انل بابو نے......سچ، آج تک ایسا قابل آدمی تو میں نے دیکھا ہی نہیں......بڑے بڑے دیکھے ہیں......لیکن ان جیسا نہیں ملا......بنا لکھے پڑھے جھر جھر ٹائپ مشین پر ٹائپ کر لیتے ہیں! دماغ ہے کہ مشین......!" انل ہنسی نہیں روک سکے اور بولے—

" کتنے بھولے ہیں یہ لوگ!"

" کیا ملتا ہے تمہیں بیگاری کر کے" اندر کے ویکتی نے پھر ویَنگ کیا۔ اُلہاس بھرے سور میں انل نے کہا—" جیون ملتا ہے، نراشا دور ہو جاتی ہے، میں ان کے بیچ جا کر آنند وبھور ہو جاتا ہوں، جب ان کے جلوس لے کر سڑکوں پر چلتا ہوں تو میں آتمک

अनिल ने सारे ख़तों को सीने से उठा कर कुर्सी पर फेंक दिया. लेकिन वह कार्ड ज्यों का त्यों हाथ में लिए रहे. आंखें उनकी कार्ड पर नहीं थीं लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसी के सम्बन्ध में वह सोच रहे हैं. अकस्मात धीरे स्वर में उन्होंने कहा—"वनिता !" फिर कार्ड को भी कुर्सी पर रख दिया.

"वनिता भी गई" अन्दर के व्यक्ति ने कहा.

"गई तो क्या हुआ, उसका ब्याह हो रहा है, अच्छा है."

"तुम्हें दुख नहीं ?"

"मुझे दुख क्यों ? मुझे ख़ुशी है"

"झूट मत बोलो, दाई से पेट मत छिपाओ, समझे. तुम कहते हो कि तुम्हें दुख नहीं है......"

"मुझे दुख क्यों हो ? वह मेरी कौन थी ? मेरा उसका कोई सम्बन्ध नहीं था."

"वह तुम्हारी थी, बुद्धू राम वह तुम्हारी थी."

जैसे इस कथन का सुबूत चाहते हों, जैसे वह चाहते हों कि कोई कहता रहे कि "वह तुम्हारा है, सदा से तुम्हारी है" उनके मन पुलकन हुई. बस इतना कहा जा सकता है कि उन्हें आनन्द आया. लेकिन फिर वह गुम सुम हो गए कुछ देर आसमान पर टकटकी बांधे देखते रहे, फिर उस कार्ड को उठा लिया. दो चार बार पढ़ा और पुलकित स्वर में बोले—"वनिता !"

अन्दर के व्यक्ति ने एक ज़ोर का ठहाका लगाया, हंसता ही चला गया.

जैसे सेंध पर चोर पकड़ जाए, अनिल लाल हो गए. कार्ड उठा कर ज़ोर से कुरसी पर उन्होंने फेंक दिया. क़ानून की किताब उठाली. नज़ीरें ढूंढने लगे. कल मुराद का मुक़दमा है, बेचारे की अट्ठाईस साल की नौकरी थी. मालिक ने ज़बानी नोटिस दे कर निकाल दिया है. वजह मालिक ही जानता है और शायद अब उसका वकील भी जानकारी रखता हो !

अनिल पढ़ते जाते थे लेकिन केवल आंखों से. मन कहीं और था. एक दो लाइन पढ़ते पढ़ते किताब ग़ायब हो जाती और वनिता सामने खड़ी हो जाती. वह झुंझला कर किताब के पन्ने को हाथ से साफ़ कर देते. जैसे किताब कोई आईना हो और उस पर वनिता की प्रतिबिम्ब आ रही हो. लेकिन फिर वही वनिता. वनिता हटती है तो मुराद सामने आता है, नज़ीरें, मुक़दमें, संघर्ष सब सामने आते हैं और आंख झपकते यह सब ग़ायब हो जाते हैं और वनिता सामने मुस्कुराने लगती है. वनिता और मुराद में यह संघर्ष चलता रहा. अन्त



انل نے سارے خطوں کو سینے سے اُٹھا کر کرسی پر پھینک دیا. لیکن وہ کارڈ جیوں کا تیوں ہاتھ میں لئے رہے. آنکھیں اُن کی کارڈ پر نہیں تھیں لیکن ایسا لگ رہا تھا جیسے اُسی کے سمبندھ میں وہ سوچ رہے ہیں. اکسمات دھیرے سور میں اُنھوں نے کہا—" ونتا ! " پھر کارڈ کو بھی کرسی پر رکھ دیا.

" ونتا بھی گئی " اندر کے ویکتی نے کہا.

" گئی تو کیا ہوا، اس کا بیاہ ہو رہا ہے، اچھا ہے "

" تمہیں دکھ نہیں ؟"

" مجھے دکھ کیوں ؟ مجھے خوشی ہے."

" جھوٹ مت بولو، دائی سے پیٹ مت چھپاؤ، سمجھے. تم کہتے ہو کہ تمہیں دکھ نہیں......"

" مجھے دکھ کیوں ہو؟ وہ میری کون تھی؟ میرا اس کا کوئی سمبندھ نہیں تھا."

" وہ تمہاری تھی، بدھو رام وہ تمہاری تھی."

جیسے اس کتھن کا ثبوت وہ چاہتے ہوں، جیسے وہ چاہتے ہوں کہ کوئی کہتا رہے کہ " وہ تمہاری ہے، سدا سے تمہاری ہے " اُن کے من میں پلکن ہوئی، بس اتنا کہا جا سکتا ہے کہ اُنھیں آنند آیا. لیکن پھر وہ گم سم ہوگئے. کچھ دیر آسمان پر ٹکٹکی باندھے دیکھتے رہے، پھر اس کارڈ کو اُٹھا لیا. دو چار بار پڑھا اور پلکت سور میں بولے—" ونتا ! "

اندر کے ویکتی نے ایک زور کا ٹھہاکا لگایا، ہنستا ہی چلا گیا.

جیسے سیندھ پر چور پکڑا جائے. انل لال ہوگئے، کارڈ اُٹھا کر زور سے کرسی پر اُنھوں نے پھینک دیا. قانون کی کتاب اُٹھا لی. نظیریں ڈھونڈنے لگے. کل مراد کا مقدمہ ہے، بیچارے کی اٹھائیس سال کی نوکری تھی. مالک نے زبانی نوٹس دے کر نکال دیا ہے. وجہ مالک ہی جانتا ہے اور شاید اب اس کا وکیل بھی جانکاری رکھتا ہو !

انل پڑھتے جاتے تھے لیکن کیول آنکھوں سے. من کہیں اور تھا. ایک دو لائن پڑھتے پڑھتے کتاب غائب ہوجاتی اور ونتا سامنے کھڑی ہو جاتی. وہ جھنجھلا کر کتاب کے پنے کو ہاتھ سے صاف کر دیتے. جیسے کتاب کوئی آئینہ ہو اور اس پر ونتا کی پرتی بمب آ رہی ہو. لیکن پھر وہی ونتا. ونتا ہٹتی ہے تو مراد سامنے آتا ہے، نظیریں، مقدمے، سنگھرش سب سامنے آتے ہیں اور آنکھ جھپکتے یہ سب غائب ہوجاتے ہیں اور ونتا سامنے مسکرانے لگتی ہے. ونتا اور مراد میں یہ سنگھرش چلتا رہا. انت

पड़े. उसी समय वह "कोई" ज़ोर से हंसा. वह कहता जाता था और हंसता जाता था—

"बुद्धू हो......मैं व्यक्ति हूं. बहुत सख्त जान हूं. मुझे समाज की क़ब्रस्तान में दफ़न कर देना चाहते हो .....? मैं आसानी से मिटने वाला नहीं हूं......मैं आख़री दम तक तुमसे लड़ूंगा......समझे......मैं पूछता हूं कि तुम क्या हो? इस समय भूके हो, किसी ने तुम्हें पूछा? इस समय अकेले हो. किसी ने तुम्हारा साथ दिया......? मेरी राय मानो, मुझे फलने फूलने दो...... तुम्हारे पास सब कुछ होगा. माना कि मुझे मिटाना तुम्हारा आदर्श है, लेकिन हर आदर्श के पूरा होने का समय होता है, तुम क्यों कटीले तारों से खेल रहे हो......? तुम्हें विश्वास है कि माली ढांचा ठीक हो जाने पर मैं ख़ुद मर जाऊंगा. फिर मुझे क्यों इस तरह मार रहे हो.........? मैं ख़ुद ही मर जाऊंगा......"

अनिल ने एक मोटी क़ानूनी किताब उठाई, टेबुल-लैम्प लिया और सोने के लिए आंगन की तरफ़ चल पड़े. जैसे ही मुड़े, दीवार पर कपड़े का पोस्ट बाक्स दिखाई पड़ा. एक नीले कपड़े का टुकड़ा और उसमें बहुत सी थैलियां. हर थैली पर किसी न किसी कार्यकर्ता का नाम लिखा है. अनिल ने अपने नाम वाली थैली में से सारी डाक निकाल ली. सारा सामान चारपाई पर रक्खा और दूसरे कमरे से कुर्सी उठा लाए. टेबुल-लैम्प जला कर कुर्सी पर रक्खा और तकिये का सहारा लेकर चारपाई पर चारों ख़ाने चित लेट गए.

"मेरे प्रश्नों का तुम ने उत्तर नहीं दिया" अन्दर का व्यक्ति फिर बोला.

अनिल ने उसकी बात सुनी अनसुनी कर दी. एक जमाही ली. जांघ पर हाथ मारा, एक तेज़ ध्वनि सुनसान कोठे के घेरे को चीरती शायद दूसरे सोने वालों के कानों तक भी पहुंची. ऊपर वाले कोठे से दूसरे साथी ने कहा—"क्या नींद नहीं आ रही ?"

"नहीं, कल मुक़दमे हैं, नज़ीरें देख रहा हूं........" अनिल ने किताब उठा ली थी और उसी पर नज़र गड़ाए यह सब कह गए.

पढ़ते पढ़ते उन्होंने घड़ी देखी, एक बज गए थे. बदन थकान से चूर था लेकिन नींद ग़ायब थी. क़ानून के रूखे विशय से तबीयत ऊब गई. अपने ख़तों को उन्होंने खोलना शुरू किया. एक पार्टी सर्कुलर था, एक मित्र की चिट्ठी थी, दो तीन मज़दूरों की अर्ज़ियां थीं और आख़री एक छपा कार्ड था. पता चला कि वनिता का ब्याह हो रहा है. उसी कार्ड पर लिखा था—'आना ज़रूर, आकर मुझ से मिलना भी, चोरों की तरह आकर भाग मत जाना, समझे!—वनिता."





پڑے . اسی سمے وہ "کوئی" زور سے ہنسا . وہ کہتا جاتا تھا اور ہنستا جاتا تھا—

"بدھو ہو......میں ویکتی ہوں' بہت سخت جان ہوں . مجھے سماج کی قبرستان میں دفن کر دینا چاہتے ہو......؟ میں آسانی سے مٹنے والا نہیں ہوں......میں آخری دم تک تم سے لڑوں گا......سمجھے......میں پوچھتا ہوں کہ تم کیا ہو؟ اس سمے بھوکے ہو' کسی نے تمہیں پوچھا؟ اس سمے اکیلے ہو' کسی نے تمہارا ساتھ دیا......؟ میری رائے مانو' مجھے پھلنے پھولنے دو......تمہارے پاس سب کچھ ہوگا. مانا کہ مجھے مٹانا تمہارا آدرش ہے' لیکن ہر آدرش کے پورا ہونے کا سمے ہوتا ہے . تم کیوں کٹیلے تاروں سے کھیل رہے ہو.......؟ تمہیں وشواس ہے کہ مالی ڈھانچہ ٹھیک ہو جانے پر میں خود مر جاؤں گا . پھر مجھے اِسطرح کیوں مار رہے ہو.......؟ میں خود ہی مر جاؤں گا......"

انل نے ایک موٹی قانونی کتاب اٹھائی' ٹیبل لیمپ لیا اور سونے کے لیئے آنگن کی طرف چل پڑے . جیسے ہی مڑے' دیوار پر کپڑے کا پوسٹ بکس دکھائی پڑا . ایک نیلے کپڑے کا ٹکڑا اور اس میں بہت سی تھیلیاں . ہر تھیلی پر کسی نہ کسی کاریہ کرتا کا نام لکھا ہے . انل نے اپنے نام والی تھیلی میں سے ساری ڈاک نکال لی . سارا سامان چارپائی پر رکھا اور دوسرے کمرے سے کرسی اٹھالائے . ٹیبل لیمپ جلا کر کرسی پر رکھا اور تکیے کا سہارا لے کر چارپائی پر چاروں خانے چت لیٹ گئے .

"میرے پرشنوں کا تم نے اتر نہیں دیا" اندر کا ویکتی پھر بولا .

انل نے اسکی بات سنی ان سنی کر دی . ایک جماہی لی . جانگ پر ہاتھ مارا' ایک تیز دھونی سنسان کوٹھے کے گھیرے کو چیرتی شاید دوسرے سونے والوں کے کانوں تک بھی پہونچی . اوپر والے کوٹھے سے دوسرے ساتھی نے کہا—"کیا نیند نہیں آ رہی؟"

"نہیں' کل مقدمے ہیں' نظیریں دیکھ رہا ہوں......" انل نے کتاب اٹھالی تھی اور اسی پر نظر گڑائے یہ سب کہہ گئے .

پڑھتے پڑھتے انہوں نے گھڑی دیکھی' ایک بج گئے تھے . بدن تھکان سے چور تھا لیکن نیند غائب تھی . قانون کے روکھے وشے سے طبیعت اوب گئی . اپنے خطوں کو انہوں نے کھولنا شروع کیا . ایک پارٹی سرکلر تھا' ایک مِتر کی چٹھی تھی' دو تین مزدوروں کی عرضیاں تھیں اور آخری ایک چھپا کارڈ تھا پتہ چلا کہ ونتا کا بیاہ ہو رہا ہے . اسی کارڈ پر لکھا تھا—"آنا ضرور' آ کر مجھ سے ملنا بھی' چوروں کی طرح آکر بھاگ مت جانا' سمجھے!—ونتا ."

कल्लन चौराहे पर जा कर बाएं हाथ सड़क पर मुड़ा और अनिल की आंखों से ओझल हो गया. अनिल ने ज़ीने के दरवाज़े के ऊपरी कोने को दोनों हाथ के पंजों से ज़ोर से पकड़ा और ऐसी कोशिश की कि जैसे उसके सहारे लटक रहे हों. एक ज़ोर की अंगड़ाई ली अंगड़ाई के साथ साथ मुंह खुला और खुलता ही चला गया, एक हाथ उन्होंने फैलते होंटों पर रख लिया. फिर "हो" का एक स्वर धीरे से गूंजा और ऐसी आवाज़ हुई जैसे ट्यूब से यकबारगी लेकिन धीरे से सीं कर के हवा निकल गई हो अनिल ज़ीने चढ़ने लगे...अब उनकी हालत बदल गई थी वही थकान, वही खुमार, वही बोझल आंखें, सब कुछ वही था जैसे पहले. कल्लन से मुलाक़ात के बाद जो स्थिति थी वह जैसे एक लिबास थी. एक लिबास बदल कर उन्होंने दूसरा बदल लिया था, केवल कल्लन से मुलाक़ात करने के लिए. अब फिर वही पहला लिबास धारन कर लिया है.

अनिल इस बार धीरे धीरे नहीं बल्कि तेज़ी से सीढ़ियां चढ़ने लगे. आख़री ज़ीने पर पहुंच कर उन्होंने घड़ी देखी. आश्चर्य के स्वर में बोले—"उफ़ ओह, बारह बज रहे हैं !" समय की गति के आभास ने उनमें भी तेज़ी पैदा कर दी. यह विचार उन्हें सता नहीं रहा था कि उन्हें सोना है बल्कि इस विचार से वह चिन्ता ग्रस्त हुए कि कल सुबह उठना है, बहुत से मज़दूरों को उन्होंने बुलाया है, उनके मुक़दमे के काग़ज़ टाइप करने हैं.

ज़ीने से वह दूसरे कमरे में घुसे. यहां पहुंच कर जैसे उन्हें कुछ सुनाई पड़ा. बाहरी कोई नहीं था. कोई था जो अन्दर से कुछ कह रहा था. इस "कोई" को वह अपनी जानकारी में मुरदा बना चुके थे. लेकिन कहीं सांस बाक़ी थी, अभी इस में ज़िन्दा हो जाने की ताक़त थी. वह आज न जाने क्यों जीवन पाने की कोशिश कर रहा था. उन्होंने सुना—

"क्या हर वक़्त मुक़दमे, अदालत, रिक्शे वाले, क़ुली, प्रेस, मज़दूर, यह कमेटी, वह कमेटी.....कुछ तुम्हारा भी है, कोई तुम्हारा भी है......तुम्हारी कोई ज़िन्दगी है ? न वक़्त तुम्हारा न बदन तुम्हारा......सब के लिए सोचा करते हो. कभी अपने लिए भी कभी कुछ सोचा है......? तुम को खाने की दिक़्क़त, पहनने की दिक़्क़त, सोने की दिक़्क़त, आराम नहीं, चैन नहीं......!"

अनिल ने होंट चबाए, जैसे उसका सिर कुचल रहे हों. वह अपने कमरे में घुसे. स्विच दबा दी. कुर्सी पर बैठ गए. मेज़ पर फ़ाइलों का अम्बार था. दो एक को उठा कर उन पर सरसरी नज़र दौड़ाई. फिर उन्हें वहीं रख दिया. एक कोने से तकिया उठाया और बाहर सोने के लिए चल



کلن چوراہے پر جا کر بائیں ہاتھ سڑک پر مڑا اور انل کی آنکھوں سے اوجھل ہو گیا . انل نے زینے کے دروازے کے اوپری کونے کو دونوں ہاتھ کے پنجوں سے زور سے پکڑا اور ایسی کوشش کی کہ جیسے اسکے سہارے لٹک رہے ہوں . ایک زور کی انگڑائی لی . انگڑائی کے ساتھ ساتھ منہ کھلا اور کھلتا ہی چلا گیا' ایک ہاتھ انہوں نے پھیلتے ہونٹوں پر رکھ لیا . پھر " ہو " کا ایک سور دھیرے سے گونجا اور ایسی آواز ہوئی جیسے ٹیوب سے یک بارگی لیکن دھیرے سے سیں کر کے ہوا نکل گئی ہو . انل زینے چڑھنے لگے . . اب ان کی حالت بدل گئی تھی . وہی تھکان' وہی خمار' وہی بوجھل آنکھیں' سب کچھ وہی تھا جیسے پہلے . کلن سے ملاقات کے بعد جو استھتی تھی وہ جیسے ایک لباس تھی . ایک لباس بدل کر انہوں نے دوسرا بدل لیا تھا' کیول کلن سے ملاقات کرنے کے لیئے . اب پھر وہی پہلا لباس دھارن کر لیا ہے.

انل اس بار دھیرے دھیرے نہیں بلکہ تیزی سے سیڑھیاں چڑھنے لگے . آخری زینے پر پہونچ کر انہوں نے گھڑی دیکھی . آشچریہ کے سور میں بولے—" اف اوہ' بارہ بج رہے ہیں !" سمے کی گتی کی آبھاس نے ان میں بھی تیزی پیدا کر دی . یہ وچار انہیں ستا نہیں رہا تھا کہ انہیں سونا ہے بلکہ اس وچار سے وہ چنتا گرست ہوئے کہ کل صبح اٹھنا ہے' بہت سے مزدوروں کو انہوں نے بلایا ہے' ان کے مقدمے کے کاغذ ٹائپ کرنے ہیں .

زینے سے وہ دوسرے کمرے میں گھسے . یہاں پہونچ کر جیسے انہیں کچھ سنائی پڑا . باہری کوئی نہیں تھا . کوئی تھا جو اندر سے کچھ کہ رہا تھا . اس "کوئی" کو وہ اپنی جانکاری میں مردہ بنا چکے تھے . لیکن کہیں سانس باقی تھی' ابھی اس میں زندہ ہو جانے کی طاقت تھی . وہ آج نہ جانے کیوں جیون پانے کی کوشش کر رہا تھا . انہوں نے سنا—

" کیا ہر وقت مقدمے' عدالت' رکشے والے' قلی' پریس' مزدور' یہ کمیٹی' وہ کمیٹی .....کچھ تمہارا بھی ہے' کوئی تمہارا بھی ہے......تمہاری کوئی زندگی ہے ؟ نہ وقت تمہارا' نہ بدن تمہارا......سب کے لیئے سوچا کرتے ہو . کبھی اپنے لیئے بھی کچھ سوچا ہے...... ؟ تمکو کھانے کی دقت' پہننے کی دقت' سونے کی دقت' آرام نہیں' چین نہیں......!"

انل نے ہونٹ چبائے' جیسے اس کا سر کچل رہے ہوں . وہ اپنے کمرے میں گھسے . سوچ دبا دی . کرسی پر بیٹھ گئے . میز پر فائلوں کا انبار تھا . دو ایک کو اٹھا کر ان پر سرسری نظر دوڑائی . پھر انہیں وہیں رکھ دیا . ایک کونے سے تکیہ اٹھایا اور باہر سونے کے لیئے چل

"गरमी, लू में आपको खाना भी नहीं मिला.........!" कल्लन कहता हुआ ज़ीने से उतरने लगा. उसके स्वर में सहानुभूति थी और साथ में कृतज्ञता भी.

अनिल फिर सोचने लगे. सोचते सोचते नींद का एक झोंका आया. चारपाई पर लेट रहे. फिर पता नहीं क्या हुआ. बस इतना पता है कि किसी ने जगाया और हाथ में शरबत का गिलास थमा दिया और वह गट गट पी गए और गिलास वापिस करते समय उन्होंने इस स्वर में कहा जैसे कल्लन को वह पहली बार देख रहे हैं—"कल्लन !"

भैया जी, मेरा चालान हो गया है, क्या करूं ? पुलिस वाला कहता था कि लाइसेन्स न होना बड़ा जुर्म है, बड़ी सज़ा मिलती है......"

अनिल ने पहली बार उसे नज़र भर कर देखा और फिर चारपाई से उठकर उसके कंधे पर हाथ फेरा और बोले—"घबराते क्यों हो, हम तो ज़िन्दा हैं, तुम लोग बहुत ज़्यादती करते हो, लाइसेन्स क्यों नहीं बनवाते......?"

'हमें जरको मालूम नहीं रहा ....."

"तुम को मालूम नहीं था, यह बात अफ़सर लोग थोड़े मानेंगे, उन्हें तो जुरमाना करने से मतलब वह तो जुरमाना छाप, दस्तख़त घसीट मशीन हैं. बलिहारी है तेरी राम राज्य. जाओ, घबराने की कोई बात नहीं है. सवेरे म्युनिसिपल बोर्ड जाकर लाइसेन्स बनवालेना. अपने यूनियन के सेक्रेट्री से मिल लो, उनको हम चिट्ठी लिखे देते हैं, वह लाइसेन्स बनवा देंगे. रिक्शा तो जमा नहीं करवा लिया......?"

"वही तो और दिक़्क़त है......"

"हां" अनिल ने इस तरह इस वाक्य का उच्चारन किया जैसे मामला बहुत गम्भीर है.

"फिर भी घबराने की कोई बात नहीं है. कल ठीक हो जाएगा. रात को जा कर सो रहो, सुबह आ जाना, लेकिन लाइसेन्स कल बन जाए, कोई ढाल ढाल नहीं होना चाहिए."

कल्लन की घबराहट कम हो गई. वह चलने लगा. अनिल उसे ज़ीने तक छोड़ने आए. उसकी पीठ पर हाथ सहलाया और हंसकर बोले—'बच्चू, पुलिस वालों ने मरम्मत तो नहीं की....... ?"

"नहीं..... ..."और वह मुसकरा दिया.

ज़ीने से उतर कर कल्लन ने अनिल को मुड़कर देखा. इन आंखों में बहुत कुछ था. भक्ति थी, अनिल की सराहना थी, पीछे न हटने का प्रन था और यह आंखें अनिल से वादा पक्का करा रही थीं कि कल कोई अड़चन तो नहीं आएगी, मेरा काम हो तो जाएगा, आप सुबह ही मिल जाएंगे न. अनिल ने कहा—"जाओ जाओ, सुबह आजाना, निश्चिन्त रहो, गहरी नींद सोना......"



" گرمی، لو میں آپ کو کھانا بھی نہیں ملا ......!"
کلن کہتا ہوا زینے سے اترنے لگا. اس کے سور میں سہانوبھوتی تھی اور ساتھ میں کرتگیتا بھی .

انل پھر سوچنے لگے . سوچتے سوچتے نیند کا ایک جھونکا آیا. چار پائی پر لیٹ رہے . پھر پتہ نہیں کیا ہوا . بس اتنا پتہ ہے کہ کسی نے جگایا اور ہاتھ میں شربت کا گلاس تھما دیا اور وہ غٹ غٹ پی گئے اور گلاس واپس کرتے سمے انہوں نے اس سور میں کہا جیسے کلن کو پہلی بار دیکھ رہے ہیں—" کلن !"

" بھیا جی، میرا چالان ہوگیا ہے، کیا کروں؟ پولس والا کہتا تھا کہ لائسنس نہ ہونا بڑا جرم ہے، بڑی سزا ملتی ہے......"

انل نے پہلی بار اسے نظر بھر کر دیکھا اور پھر چارپائی سے اٹھکر اسکے کندھے پر ہاتھ پھیرا اور بولے—"گھبراتے کیوں ہو، ہم تو زندہ ہیں، تم لوگ بہت زیادتی کرتے ہو، لائسنس کیوں نہیں بنواتے......؟"

" ہمیں جرکو معلوم نہیں رہا......"

" تم کو معلوم نہیں تھا، یہ بات افسر لوگ تھوڑے مانیں گے، انہیں تو جرمانہ کرنے سے مطلب . وہ تو جرمانہ چھاپ، دستخط گھسیٹ مشین ہیں . بلہاری ہے تیری رام راجیہ. جاؤ، گھبرانے کی کوئی بات نہیں ہے . سویرے میونسپل بورڈ جا کر لائسنس بنوا لینا . اپنے یونین کے سکریٹری سے مل لو، ان کو ہم چٹھی لکھے دیتے ہیں، وہ لائسنس بنوا دیں گے. رکشا تو جمع نہیں کروایا لیا......؟"

" وہی تو اور دقت ہے......"

" ہاں " انل نے اسطرح اس واکیہ کا اچچارن کیا جیسے معاملہ بہت گمبھیر ہے .

" پھر بھی گھبرانے کی کوئی بات نہیں ہے. کل ٹھیک ہو جائے گا . رات کو جا کر سو رہو، صبح آجانا، لیکن لائسنس کل بن جائے، کوئی ڈھیل ڈھال نہیں ہونی چاہیئے ."

کلن کی گھبراہٹ کم ہو گئی . وہ چلنے لگا . انل اسے زینے تک چھوڑنے آئے . اسکی پیٹھ پر سہلایا اور ہنس کر بولے—"بچو، پولیس والوں نے مرمت تو نہیں کی......؟"

" نہیں......" اور وہ مسکرا دیا .

زینے سے اتر کر کلن نے انل کو مڑ کر دیکھا . ان آنکھوں میں بہت کچھ تھا . بھگتی تھی، انل کی سراہنا تھی، پیچھے نہ ہٹنے کا پرن تھا اور یہ آنکھیں انل سے وعدہ پکا کرا رہی تھیں کہ کل کوئی اڑچن تو نہیں آئے گی، میرا کام تو ہو جائے گا، آپ صبح ہی مل جائیں گے نہ." انل نے کہا—"جاؤ جاؤ، صبح آجانا، نشچنت رہو، گہری نیند سونا......"

सनीमा में लोग पैसे बरबाद करते हैं. हम मुफ्त में वह सनीमा दिखा सकते हैं जिसमें इतना आनन्द मिलता है कि दो चार हफ़्ते मनोरंजन की ज़रूरत नहीं पड़ती......" कोई कुछ कहे, अनिल का मनोरंजन होता है. उनको ऐसी गोश्टी में आनन्द मिलता है.

ऐसी ही एक गोश्टी में कल्लन के नाम फ़ाल निकल पड़ी. उस ने बहुत इधर उधर की हांकी लेकिन एक न चली. वह समझता था कि लोग उसकी हंसी उड़ाएंगे. लेकिन यहां हंसी नहीं उड़ाई गई. अनिल सुनते रहे और उसकी पीठ ठोंकते रहे. हर ठोंक पर कल्लन की श्रद्धा बढ़ रही थी, अनिल को वह अपना भाग्य सौंप देने को तैयार हो रहा था. गोश्टी लम्बी खिंच गई, बारह बज गए. अनिल चलने लगे. कल्लन ने कहा "बाबू जी फिर कब ?" दूसरे रिक्शे वाले ने कान ऐंठ कर कल्लन को प्यार से एक चपत मारी—"बाबू जी नहीं बेटा, भैया जी, साथी !" अनिल ने कहा "जब मन चाहे".

कई रोज़ से अनिल प्रेस मज़दूरों के झगड़ों में फंसे थे. रिक्शे वालों की तरफ़ नहीं गए थे. उन्होंने पूछा—"कहो कल्लन, सब कुशल मंगल.' अब वह बिल्कुल बदल से गए थे. जैसे ताज़ा दम होकर सिपाही मौज में आता है, अनिल को भी मौज आने लगी. कल्लन से बोले—"ज़रा एक गिलास पानी देना."

पानी पिया नहीं, पूरा मग मुंह पर छिड़क लिया. फिर रिक्शे वालों की एक लम्बी लिस्ट गिनाई. सब का हाल चाल पूछा, कुछ चलने वाले मुक़दमों के सम्बन्ध में पूछ ताछ की. कल्लन ने सब का जवाब या 'हां' कह कर दिया और या कह दिया कि मुझे पता नहीं भैया जी. अनिल फिर कुछ देर रुके, केवल मिन्टों के लिये. रात के सन्नाटे को तोड़ते हुए उन्होंने फिर कहा—

"इतनी रात गए कहां भटक रहे हो, कोई ख़ास बात......?"

"हां भैया जी, हमारा चालान हो गया है......मुझे कुछ पता नहीं था. पुलिस वाला आया......"

'अच्छा" अनिल ने इस स्वर में कहा जैसे यह जताया हो कि मैं सब समझ गया. फिर दोनों मुट्ठी बांध कर उनपर सिर रख दिया. कुछ सोचते रहे. उनके पैर ताल दे रहे थे. विचारों का कारवां चल पड़ा था. बैंड बज रहा था. सोचते सोचते उन्होंने जेब में हाथ डाला. इकन्नी और पैसा निकाला. पैसा जेब में वापिस डाल दिया. इकन्नी कल्लन को दी और कहा—"ज़रा दो पैसे की चीनी और दो पैसे की बर्फ़ लाना. प्रेस वालों का मुक़दमा था. दिन भर खड़े खड़े तबीयत परेशान हो गई. न जाने किस का मुंह देखा था कि खाने को भी नहीं मिला......लू बहुत चलने लगी है, गरमी का बम जैसे फट गया है......"



سنیما میں لوگ پیسے برباد کرتے ہیں ۔ ہم مفت میں وہ سنیما دکھا سکتے ہیں جس میں اتنا آنند ملتا ہے کہ دو چار ہفتے منورنجن کی ضرورت نہیں پڑتی..." کوئی کچھ کہے، انل کا منورنجن ہوتا ہے، ان کو ایسی گوشٹی میں آنند ملتا ہے ۔

ایسی ہی ایک گوشٹی میں کلن کے نام فال نکل پڑی ۔ اس نے بہت اِدھر اُدھر کی ہانکی لیکن ایک نہ چلی ۔ وہ سمجھتا تھا کہ لوگ اسکی ہنسی اڑائیں گے ۔ لیکن یہاں ہنسی نہیں اڑائی گئی ۔ انل سنتے رہے اور اسکی پیٹھ ٹھونکتے رہے ۔ ہر ٹھونک پر کلن کی شردھا بڑھ رہی تھی، انل کو وہ اپنا بھاگیہ سونپ دینے کو تیار ہو رہا تھا ۔ گوشٹی لمبی کھنچ گئی، بارہ بج گئے ۔ انل چلنے لگے ۔ کلن نے کہا "بابو جی پھر کب؟" دوسرے رکشے والے نے کان اینٹھ کر کلن کو پیار سے ایک چپت ماری —"بابو جی نہیں بیٹا، بھیا جی، ساتھی!" انل نے کہا "جب من چاہے ۔"

کئی روز سے انل پریس مزدوروں کے جھگڑوں میں پھنسے تھے ۔ رکشے والوں کی طرف نہیں گئے تھے ۔ انہوں نے پوچھا—"کہو کلن، سب کشل منگل ۔" اب وہ بالکل بدل سے گئے تھے ۔ جیسے تازہ دم ہوکر سپاہی موج میں آتا ہے، انل کو بھی موج آنے لگی ۔ کلن سے بولے—"ذرا ایک گلاس پانی دینا ۔"

پانی پیا نہیں، پورا مگ منہ پر چھڑک لیا ۔ پھر رکشے والوں کی ایک لمبی لسٹ گنائی ۔ سب کا حال چال پوچھا، کچھ چلنے والے مقدموں کے سمبندھ میں پوچھ تاچھ کی ۔ کلن نے سب کا جواب یا 'ہاں' کہہ کر دیا اور یا کہہ دیا کہ مجھے پتہ نہیں بھیا جی ۔ انل پھر کچھ دیر رکے، کیول منٹوں کے لئے ۔ رات کے سناٹے کو توڑتے ہوئے انہوں نے پھر کہا—

"اتنی رات گئے کہاں بھٹک رہے ہو، کوئی خاص بات......؟"

"ہاں بھیا جی، ہمارا چالان ہو گیا ہے......مجھے کچھ پتہ نہیں تھا ۔ پولیس والا آیا......"

"اچھا" انل نے اس سور میں کہا جیسے یہ جتایا ہو کہ میں سب سمجھ گیا ۔ پھر دونوں مٹھی باندھ کر ان پر سر رکھ دیا ۔ کچھ سوچتے رہے ۔ ان کے پیر تال دے رہے تھے ۔ وچاروں کا کارواں چل پڑا تھا، بینڈ بج رہا تھا ۔ سوچتے سوچتے انہوں نے جیب میں ہاتھ ڈالا ۔ اکنی اور پیسہ نکالا ۔ پیسہ جیب میں واپس ڈال دیا ۔ اکنی کلن کو دی اور کہا—"ذرا دو پیسے کی چینی اور دو پیسے کی برف لانا ۔ پریس والوں کا مقدمہ تھا ۔ دن بھر کھڑے کھڑے طبیعت پریشان ہوگئی ۔ نہ جانے کس کا منہ دیکھا تھا کہ کھانے کو بھی نہیں ملا......لو بہت چلنے لگی ہے، گرمی کا بم جیسے پھٹ گیا ہے......"

"देखने को जवान. सूनने को पानी ! एक लुगाई तक तो है नहीं, बातें बनाता है. चुप रह यार, कान न खा."

अनिल रिक्शा यूनियन में भी काम करते हैं. सारे रिक्शे वालों से सम्पर्क है. सब उनका आदर करते हैं. वह हैं भी तो आदर के योग्य. रिक्शे वाले कहते हैं—"अनिल मनुश्य नहीं हैं—वह अपने लिये क्या करते हैं ? वह मनुश्य ही क्या जो अपने लिये कुछ न करे ? वह चाहते तो लाट गवरनर हो सकते थे, नहीं तो चार पांच सौ की नौकरी तो कहीं गई ही नहीं थी. लेकिन नहीं, वह तो हम लोगों के पीछे अपने को बर्बाद किये हैं. मज़दूरों के हित के आगे उन्हें कोई सुधि ही नहीं है." रिक्शे वाले जानते हैं कि उनके पास खाने को भी पैसे नहीं हैं. इसी कारन जहां किसी के घर के आगे अनिल मिल जाएंगे तो उन्हें वह ज़बरदस्ती खाने के लिये पकड़ ले जाएगा. जिसके पास खाने को न पैसे हों न अपने समय पर खुद का अधिकार हो वह फ़िल्में कैसे देख सकता है, अपना मनोरंजन कैसे कर सकता है ? लेकिन और वस्तुओं की तरह मनोरंजन भी ज़रूरी है. अनिल मनोरंजन भी करते हैं. लेकिन इनका मनोरंजन अनोखा है—न फ़िल्म, न ड्रामा, न रेडियो, न संगीत सभा, न नाच, न गाना. मज़दूरों की किसी टोली में बैठ जाते हैं और किसी को पकड़ कर उसकी जीवन कथा सुनने लगते हैं. वह पहले नहीं बताता. उसे वह बनाते हैं, छेड़ते हैं. सभी हंसते हैं. वह फिर नहीं बताता. तब अनिल पीठ ठोंक कर कहते हैं—"बताओ यार, कुछ ताक़त मिले. हंसी की एक खूराक तन्दुरुस्ती बढ़ाती है, तुम तो ऐसे कंजूस हो कि मुरदे के मुंह में पानी भी न चुआओ." अनिल की बात अब नहीं टाली जा सकती. वह व्यक्ति अपनी राम कथा ले कर बैठ जाता है. इस गोश्टी में दूसरे पात्रों से सब को हमदर्दी होती है. लेकिन सब पात्रों में एक अभागा पात्र ऐसा है जिसको सब हंसी उड़ाते हैं. वह पत्नी है. जिसके जो मुंह में आता है कहता है. हर आदमी ताक में रहता है कि शब्द चूके और वह आवाज़ें फेंके. काश बेचारी पत्नी यह सब सुन सकती ! लेकिन कहां गांव में पिया की राह जोहती हुई वह और कहां हज़ारों लाखों खेतों के पार यह शहर ! यह कहानी कहीं खत्म नहीं होती है, बढ़ती ही जाती है. इसको खत्म करना पड़ता है. जब अनिल को नींद आने लगती है या समय ज़्यादा हो जाता है तो गोश्टी खत्म हो जाती है. हो सकता है फिर कभी इस कहानी की बारी न आए, यह भी हो सकता है कि फिर किसी दिन आरम्भ हो जाए. यह भी कोई मनोरंजन है ? न इसका कुछ नियम न उसूल. अजीब लंगड़ा, लूला मनोरंजन है ! लेकिन मनोरंजन है. अनिल गर्व से कहते हैं—"क्या सनीमा



"دیکھنے کو جوان سوننے کو پانی ! ایک لگائی تک تو ہے نہیں، باتیں بناتا ہے ۔ چپ رہ یار، کان نہ کھا ۔"

انل رکشا یونین میں بھی کام کرتے ہیں ۔ سارے رکشا والوں سے سمپرک ہے ۔ سب اُن کا آدر کرتے ہیں ۔ وہ ہیں بھی تو آدر کے یوگیہ ۔ رکشے والے کہتے ہیں—"انل منشیہ نہیں ہیں ۔ وہ اپنے لئے کیا کرتے ہیں ؟ وہ منشیہ ہی کیا جو اپنے لئے کچھ نہ کرے ۔ وہ چاہتے تو لاٹ گورنر ہوسکتے تھے، نہیں تو چار پانچ سو کی نوکری تو کہیں گئی ہی نہیں تھی ۔ لیکن نہیں، وہ تو ہم لوگوں کے پیچھے اپنے کو برباد کئے ہیں ۔ مزدوروں کے ہت کے آگے انہیں کوئی سدھ ہی نہیں ۔" رکشے والے جانتے ہیں کہ اُن کے پاس کھانے کو بھی پیسے نہیں ہیں ۔ اسی کارن جہاں کسی کے گھر کے آگے انل مل جائیں گے تو انہیں وہ زبردستی کھانے کے لئے پکڑ لے جائے گا ۔ جس کے پاس کھانے کو نہ پیسے ہیں نہ اپنے سمے پر خود کا ادھیکار ہو وہ فلمیں کیسے دیکھ سکتا ہے، اپنا منورنجن کیسے کرسکتا ہے ؟ لیکن اور وستوؤں کی طرح منورنجن بھی ضروری ہے ۔ انل منورنجن بھی کرتے ہیں ۔ لیکن اِن کا منورنجن انوکھا ہے—نہ فلم، نہ ڈرامہ، نہ ریڈیو، نہ سنگیت سبھا، نہ ناچ، نہ گانا ۔ مزدوروں کی کسی ٹولی میں بیٹھ جاتے ہیں اور کسی کو پکڑ کر اسکی جیون کتھا سننے لگتے ہیں ۔ وہ پہلے نہیں بتاتا ۔ اسے وہ بناتے ہیں، چھیڑتے ہیں ۔ سبھی ہنستے ہیں ۔ وہ پھر نہیں بتاتا ۔ تب انل پیٹھ ٹھونک کر کہتے ہیں—"بتاؤ یار، کچھ طاقت ملے ۔ ہنسی کی ایک خوراک تندرستی بڑھاتی ہے، تم تو ایسے کنجوس ہو کہ مردہ کے منہ میں پانی بھی نہ چواؤ ۔" انل کی بات اب نہیں ٹالی جاسکتی، وہ ویکتی اپنی رام کتھا لیکر بیٹھ جاتا ہے ۔ اس گوشٹی میں دوسرے پاتروں سے سب کو ہمدردی ہوتی ہے ۔ لیکن سب پاتروں میں ایک ابھاگا پاتر ایسا ہے جس کی سب ہنسی اُڑاتے ہیں ۔ وہ پتنی ہے ۔ جس کے جو منہ میں آتا ہے کہتا ہے ۔ ہر آدمی تاک میں رہتا ہے کہ شبد چوکے اور وہ آوازے پھینکے ۔ کاش بیچاری پتنی یہ سب سن سکتی ! لیکن کہاں گاؤں میں پیا کی راہ جوہتی ہوئی وہ اور کہاں ہزاروں لاکھوں کھیتوں کے پار یہ شہر ! یہ کہانی کہیں ختم نہیں ہوتی ہے، بڑھتی ہی جاتی ہے ۔ اسکو ختم کرنا پڑتا ہے ۔ جب انل کو نیند آنے لگتی ہے یا سمے زیادہ ہو جاتا ہے تو گوشٹی ختم ہو جاتی ہے ۔ ہوسکتا ہے پھر کبھی اس کہانی کی باری نہ آئے، یہ بھی ہوسکتا ہے کہ پھر کسی دن آرمبھ ہو جائے ۔ یہ بھی کوئی منورنجن ہے ؟ نہ اس کا کچھ نیم نہ اصول ۔ عجیب لنگڑا لولا منورنجن ہے ! لیکن منورنجن ہے ۔ انل گرو سے کہتے ہیں—"کیا سنیما

नहीं किया, यह समझने में उसे देर नहीं लगी. जैसे एक बिजली कौंधी और सावन की अंधेरी रात में घास पर चमकता किसी सुन्दर घसियारिन का बिछिया उसे दिखाई पड़ गया. वह तुरन्त बाहर आ गया. ताला खुल गया था लेकिन दरवाज़ा उसने नहीं खोला.

"कहो साथी, क्या बात है ?" उसने मुंह पर हंसी ओढ़ने की कोशिश की. अपने को हर तरह से तैयार होने की बेकार चेष्टा की. लेकिन जमाही आ ही गई. आंखों में भी कुछ तरल भर आया. यह आंसू हरगिज़ नहीं थे. मशीन चलते चलते जाम हो रही थी, उसमें तेल दिया गया था. प्रकृति अपना काम करती ही रहती है. वह कोठे पर पड़ी चारपाई पर बैठ गया और आगे के दामन से आंख पोंछ ली.

"आपकी तबीयत कुछ खराब दीख पड़ती है, सिर में दर्द है क्या...?" दूसरे व्यक्ति ने कहा.

"नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूं ..ऐसे ही...." अनिल ने ऐसे उत्तर दिया जैसे कह रहे हों कि कोई बात नहीं है. भला मैं कहीं बीमार पड़ सकता हूं ! कहना ठीक नहीं है कि उत्तर के भाव वह थे जो शाहनुमा चोर सफ़ाई के समय अभिव्यक्त करते हैं ! लेकिन वास्तविकता पर जो शब्दों का परदा उन्होंने डाला था उसके अन्दर से भाव की फ़ोकस लाइट स्थिति का पूरा चित्र पेश कर रही थी. उन्होंने ठंडी सांस लेकर फिर कहा—"रात बहुत हो गई है, नींद लग रही है. कहो क्या बात है ?"

दूसरा व्यक्ति कल्लन है. सोलह या अट्ठारह साल की उम्र होगी. आदमी गम्भीर है. बोलता कम है और काम ज़्यादा करता है. पेशा किसानी है और रिक्शा चलाने का धंधा करता है. पन्द्रह बीस दिन हुए गांव से आया है. कुछ भी नहीं जानता. पुराने घाग रिक्शे वाले गर्व से कहते हैं—"बच्चू! रिक्शा चलाना हंसी ठट्ठा नहीं है, खेत में हंसिया चलाना नहीं है, न बैल के दुम के पीछे टिकटिक करना है. अम्मा का दूध निकल पड़ेगा...... !" वह सुनता रहता है. जवाब में केवल मुस्करा देता है. वह कुछ भी नहीं जानता. उसे केवल इतना मालूम है कि रिक्शा कैसे चलाया जाता है, मालिक से रिक्शा किन किन शर्तों पर लिया जाता है, उसको रिक्शा मिलने का कौन समय है और उसे रिक्शा कब जमा करना है. वह इलाहाबाद के मुहल्ले, सड़कें और स्थान भी नहीं जानता. किराये का दर भी उसे नहीं मालूम. अभी अभी तो आया है. महीने दो महीने में "डराइवर" चाचा के कथनानुसार चुस्त हो जाएगा. वह जब बात करता है तो पिता की बात करता है, माता की बात करता है, घर वालों की—वह तो है ही नहीं. दूसरे रिक्शे वाले तब ही तो कहते हैं



نہیں کیا' یہ سمجھنے میں اُسے دیر نہیں لگی. جیسے ایک بجلی کوندھی اور ساون کی اندھیری رات میں گھاس پر چمکتا کسی سندر گھسیارن کا بچھیا اُسے دکھائی پڑگیا. وہ فوراً باہر آگیا. تالا کھل گیا تھا لیکن دروازہ اُس نے نہیں کھولا.

"کہو ساتھی' کیا بات ہے؟" اُس نے منہ پر ہنسی اوڑھنے کی کوشش کی' اپنے کو ہر طرح سے تیار ہونے کی بیکار چیشٹا کی. لیکن جماہی آہی گئی. آنکھوں میں بھی کچھ ترل بھر آیا. یہ آنسو ہرگز نہیں تھے. مشین چلتے چلتے جام ہو رہی تھی' اس میں تیل دیا گیا تھا. پرکرتی اپنا کام کرتی ہی رہتی ہے. وہ کوٹھے پر پڑی چارپائی پر بیٹھ گیا اور آگے کے دامن سے آنکھ پونچھ لی.

"آپ کی طبیعت کچھ خراب دیکھ پڑتی ہے' سر میں درد ہے کیا......؟" دوسرے ویکتی نے کہا.

"نہیں' میں بالکل ٹھیک ہوں...ایسے ہی..." انل نے ایسے اُتر دیا جیسے کہ رہے ہوں کہ کوئی بات نہیں ہے. بھلا میں کہیں بیمار پڑسکتا ہوں! کہنا ٹھیک نہیں ہے کہ اُتر کے بھاؤ وہ تھے جو شاہ نما چور صفائی کے سمے ابھی ویکت کرتے ہیں! لیکن واستوکتا پر جو شبدوں کا پردہ انہوں نے ڈالا تھا اُس کے اندر سے بھاؤ کی فوکس لائٹ استھتی کا پورا چتر پیش کر رہی تھی. انہوں نے ٹھنڈی سانس لیکر پھر کہا—"رات بہت ہوگئی ہے' نیند لگ رہی ہے. کہو کیا بات ہے؟"

دوسرا ویکتی کلن ہے. سولہ یا اٹھارہ سال کی عمر ہوگی. آدمی گمبھیر ہے. بولتا کم ہے اور کام زیادہ کرتا ہے. پیشہ کسانی ہے اور رکشا چلانے کا دھندا کرتا ہے. پندرہ بیس دن ہوئے گاؤں سے آیا ہے. کچھ بھی نہیں جانتا. پرانے گھاگ رکشے والے گرو سے کہتے ہیں—"بچو! رکشا چلانا ہنسی ٹھٹھا نہیں ہے' کھیت میں ہنسیا چلانا نہیں ہے' نہ بیل کے دم کے پیچھے ٹک ٹک کرنا ہے. اماں کا دودھ نکل پڑے گا......!" وہ سنتا رہتا ہے. جواب میں کیول مسکرا دیتا ہے. وہ کچھ بھی نہیں جانتا. اُسے کیول اتنا معلوم ہے کہ رکشا کیسے چلایا جاتا ہے' مالک سے رکشا کن کن شرطوں پر لیا جاتا ہے' اُس کو رکشا ملنے کا کون سمے ہے اور اُسے رکشا کب جمع کرنا ہے. وہ الہ آباد کے محلے' سڑکیں اور استھان بھی نہیں جانتا. کرایے کا در بھی اُسے نہیں معلوم. ابھی ابھی تو آیا ہے. مہینے دو مہینے میں "ڈرائیور" چاچا کے کتھن انوسار چست ہو جائے گا. وہ جب بات کرتا ہے تو پتا کی بات کرتا ہے' ماتا کی بات کرتا ہے' گھر والوں کی—وہ تو ہے ہی نہیں. دوسرے رکشے والے تب ہی تو کہتے ہیں—

वह छानने लगा. कई काग़ज़ निकले. रास्ते चलते लोग अपना दुखड़ा उसे लिख कर दे जाते हैं. वह जेब में डाल लेता है और फिर अवकाश के समय सबकी फ़ाइल बना लेता है. मित्र गन उसके जेब को इसी से चलता फिरता रेकार्ड रूम कहते हैं! जो चीज़ उसको चाहिये वह नहीं मिल रही है.

"बाबू जी, आपके पास आए हैं. दो घंटे से राह जोख रहे हैं" उसके कान में आवाज़ गई. वह बोला कुछ नहीं. बड़ी बड़ी रोबीली आंखें उसकी तन गईं. उसने नज़र भर कर उस व्यक्ति की तरफ़ देखा. वह दरवाज़े के बाहर खड़ा था और उससे कुछ कहना चाहता था.

उसे झुंझलाहट हुई. कुरते के दोनों जेब उसने उलट दिये. कुछ चिटें गिरीं और उनमें फंसा हुआ कुछ पैसा—कुल एक पैसा और एक इकन्नी. रात के सन्नाटे में इकन्नी और पैसे ने मिल कर शोर नहीं किया क्योंकि काग़ज़ों से इनकी दोस्ती हो गई थी. दोस्त दोस्त के काम न आए तो दोस्ती क्या? पैसों को चोट न आ जाए इसलिये काग़ज़ पहले ही फ़र्श पर बिछ गए. पैसे उसने उठा लिए. दाएं हाथ की हथेली पर रख कर उन्हें देखा, शायद गिन रहा था. फिर अपनी मूर्खता पर मुसकराया और इकन्नी और पैसे को जेब में ठूंस लिया.

"अनिल बाबू, आप से ज़रा काम रहा......" वही आवाज़ फिर उसके कान में गई. उसने सुना. शायद उत्तर देना चाहा. लेकिन मुंह तक बात आ कर रह गई. उसकी उठी गरदन फिर झुक गई. उसने नीचे गिरे काग़ज़ों को झाड़ झाड़ कर फिर जेब के तहख़ाने में ठूंसना शुरू कर दिया. छन से एक गूंज हुई और लोहे की एक चाबी फ़र्श पर चमकती हुई दिखाई पड़ी. उसने उसे उठा लिया. इसकी खोज में तो वह अभी तक झक मार रहा था. कोई जानदार वस्तु होती तो वह इस समय ज़रूर मार बैठता, अगर न मारता तो बिगड़ता ज़रूर ही. लेकिन क्या करे बेवक़ूफ़ तो है नहीं जो भैंस के आगे बीन बजाए. काग़ज़ों को जेब में ठूंस कर वह आगे बढ़ गया.

तब फिर आवाज़ आई—"अनिल बाबू, आप से काम रहा." तुरन्त उसने उत्तर दिया "क्या है?" उसकी आवाज़ तेज़ थी. उस आवाज़ का अर्थ था कि मुझे मत छेड़ो. मैं इस समय कुछ सुनने को तैयार नहीं हूं. "क्या है?" कह कर वह आगे बढ़ गया. आगे वाले कमरे में रोशनी जलाई और अपने कमरे का दरवाज़ा खोल दिया. दरवाज़ा खोलते खोलते वह बदल गया था. वह दुखी था. "क्या है?" उसने मन ही मन में दुहराया कई रूप में "क्या है?" उसके सामने आया. उसकी समझ में आ गया कि इन दोशब्दों से बने वाक्य का उपयोग उसने उचित



وہ چھاننے لگا۔ کئی کاغذ نکلے۔ راستے چلتے لوگ اپنا دکھڑا اسے لکھ کر دے جاتے ہیں۔ وہ جیب میں ڈال لیتا ہے اور پھر اوکاش کے سمے سب کی فائل بنا لیتا ہے۔ متر گن اس کے جیب کو اسی سے چلتا پھرتا ریکارڈ روم کہتے ہیں! جو چیز اس کو چاہیئے وہ نہیں مل رہی ہے۔

"بابو جی، آپ کے پاس آئے ہیں۔ دو گھنٹے سے راہ جوکھ رہے ہیں" اس کے کان میں آواز گئی۔ وہ بولا کچھ نہیں۔ بڑی بڑی رعبیلی آنکھیں اس کی تن گئیں۔ اس نے نظر بھر کر اس ویکتی کی طرف دیکھا۔ وہ دروازے کے باہر کھڑا تھا اور اس سے کچھ کہنا چاہتا تھا۔

اسے جھنجھلاہٹ ہوئی۔ کرتے کے دونوں جیب اس نے الٹ دیئے۔ کچھ چٹھیں گریں اور ان میں پھنسا ہوا کچھ پیسہ—کل ایک پیسہ اور ایک اکنی۔ رات کے سناٹے میں اکنی اور پیسے نے ملکر شور نہیں کیا کیوں کہ کاغذوں سے ان کی دوستی ہو گئی تھی۔ دوست دوست کے کام نہ آئے تو دوستی کیا؟ پیسوں کو چوٹ نہ آ جائے اس لئے کاغذ پہلے ہی فرش پر بچھ گئے۔ پیسے اس نے اٹھا لیئے۔ دائیں ہاتھ کی ہتھیلی پر رکھ کر انہیں دیکھا، شاید گن رہا تھا۔ پھر اپنی مورکھتا پر مسکرایا اور اکنی اور پیسے کو جیب میں ٹھونس لیا۔

"انل بابو، آپ سے ذرا کام رہا....." وہی آواز پھر اس کے کان میں گئی۔ اس نے سنا۔ شاید اتر دینا چاہا۔ لیکن منہ تک بات آکر رہ گئی۔ اسکی اٹھی گردن پھر جھک گئی۔ اس نے نیچے گرے کاغذوں کو جھاڑ جھاڑ کر پھر جیب کے تہ خانے میں ٹھونسنا شروع کر دیا۔ چھن سے ایک گونج ہوئی اور لوہے کی ایک چابی فرش پر چمکتی ہوئی دکھائی پڑی۔ اس نے اسے اٹھا لیا۔ اسکی کھوج میں تو وہ ابھی تک جھک مار رہا تھا۔ کوئی جاندار وستو ہوتی تو وہ اس سمے ضرور مار بیٹھتا، اگر نہ مارتا تو بگڑتا ضرور ہی۔ لیکن کیا کرے۔ بیوقوف تو ہے نہیں جو بھینس کے آگے بین بجائے۔ کاغذوں کو جیب میں ٹھونس کر وہ آگے بڑھ گیا۔

تب پھر آواز آئی—"انل بابو، آپ سے کام رہا۔" ترنت اس نے اتر دیا "کیا ہے؟" اسکی آواز تیز تھی۔ اس آواز کا ارتھ تھا کہ مجھے مت چھیڑو۔ میں اس سمے کچھ سننے کو تیار نہیں ہوں۔ "کیا ہے؟" کہہ کر وہ آگے بڑھ گیا۔ آگے والے کمرے میں روشنی جلائی اور اپنے کمرے کا دروازہ کھول دیا۔ دروازہ کھولتے کھولتے وہ بدل گیا تھا۔ وہ دکھی تھا۔ "کیا ہے؟" اس نے من ہی من دہرایا۔ کئی روپ میں "کیا ہے؟" اس کے سامنے آیا۔ اسکی سمجھ میں آگیا کہ ان دو شبدوں سے بنے واکیہ کا اپیوگ اس نے اچت

# एक रात

( मुजीब रिज़वी )

'अच्छा, सबेरे छै बजे मिल लेना, यहीं मिलूंगा" कहता हुआ वह एक ज़ीना चढ़ गया. एक साथ कई आवाज़ें आईं—"नमस्ते". जैसे उत्तर देने की उसे इच्छा न हो या उसने नमस्ते के इस शोर को सुना ही न हो, वह दो चार ज़ीने और ऊपर चढ़ गया. तब शायद नीचे खड़े व्यक्तियों की आवाज़ परदे फाड़ती हुई उस केन्द्र पर पहुंची जहां से बटन दबते ही कान में घंटी बजने लगती है. वह कुछ चेता एक सीढ़ी और चढ़ते चढ़ते मरियल, धीमी आवाज़ में बोला—"नमस्ते". फिर पीछे मुड़ कर देखा. लोग जा चुके थे. उसने लम्बी सांस ली. बाएं हाथ से ज़ीने की दीवार का सहारा लिया और दायां हाथ मुंह पर फेरा. छंगुली बाईं आंख पर रक्खी और अंगूठा दाईं आंख पर और ऊपर की पलक की पुतली पर दबाने लगा. अंगूठा और छंगुली नाक रूपी चीनी दीवार के नीचे आ कर रुक गईं. इन बिन्दुओं पर उसने ज़रा शक्ति का इस्तेमाल किया. फिर पूरा हाथ मुंह पर मला और पीछे गुद्दी पर मलता हुआ सीने पर हाथ रोक लिया. ऐसा लगा जैसे कुछ पोंछ रहा हो, लेकिन क्या पोंछ रहा है? दिन की थकान?—हो सकता है. दिन भर खटता रहा है. नींद? यह भी सम्भव है. ग्यारह बज रहे हैं, नींद आ ही रही होगी. लेकिन शायद वह कुछ और पोंछ रहा है. मुंह देखिए, आंख देखिये, चाल देखिये. सब क़लई खोल रहे हैं. क्या वह आंसू पोंछ रहा है? हो सकता है. लेकिन नहीं. उसकी आंखें भीगी नहीं हैं, आंसू गालों पर नहीं ढलके हैं वह ज़ीने पर चढ़ता जाता है और ठंडी सांसें भरता जाता है. ज़रा पलकें देखिये यह स्थिर क्यों हैं? क्या उनके पीछे कोई तूफ़ान छिपा है!

वह आखरी सीढ़ी पर पहुंच गया वहीं ठिठका. सारे कोठे पर एक विहंगम दृष्टि डाली. फिर आंखें झपकाईं. ऊपर वाले दांतों की पंक्ति से नीचे वाले होंट का दाहना कोना दबा लिया और ज़ीने से मिले हुए दरवाज़े में दाहना पैर रख दिया. उसी समय किसी की आवाज़ आई. "आ गए." उसने सुना और बस इतना बोल सका—"हां……!……"फिर वह एक क़दम आगे बढ़ा. बाएं हाथ की तरफ़ स्विच थी. रोशनी कर दी. उसी कमरे के बाद एक कमरा है और उसी कमरे में उसके कमरे का दरवाज़ा है. उसने जेब में हाथ डाला और कुछ चीज़ ढूंढने लगा. लेकिन शायद नहीं मिली. कुरते के दोनों जेब

# ایک رات

( مجیب رضوی )

"اچھا" سویرے چھ بجے مل لینا' یہیں ملونگا" کہتا ہوا وہ ایک زینہ چڑھ گیا. ایک ساتھ کئی آوازیں آئیں— "نمستے." جیسے اُتر دینے کی اسے اچھا نہ ہو یا اس نے نمستے اِس شور کو سنا ہی نہ ہو' وہ دو چار زینے اور اوپر چڑھ گیا. تب شاید نیچے کھڑے ویکتیوں کی آواز پردے پھاڑتی ہوئی اُس کیندر پر پہونچی جہاں سے بٹن دبتے ہی کان میں گھنٹی بجنے لگتی ہے. وہ کچھ چیتا. ایک سیڑھی اور چڑھتے چڑھتے مریل' دھیمی آواز میں بولا— "نمستے." پھر پیچھے مڑ کر دیکھا. لوگ جا چکے تھے. اُس نے ایک لمبی سانس لی. بائیں ہاتھ سے زینے کی دیوار کا سہارا لیا اور دایاں ہاتھ منہ پر پھیرا. چھنگلی بائیں آنکھ پر رکھی اور انگوٹھا دائیں آنکھ پر اور اوپر کی پلک کو پتلی پر دبانے لگا. انگوٹھا اور چھنگلی ناک روپی چینی دیوار کے نیچے آکر رک گئیں. اِن بندوں پر اس نے ذرا شکتی کا استعمال کیا. پھر پورا ہاتھ منہ پر ملا اور پیچھے گدی پر ملتا ہوا سینے پر ہاتھ روک لیا. ایسا لگا جیسے کچھ پونچھ رہا ہو' لیکن کیا پونچھ رہا ہے؟ دن کی تھکان؟—ہوسکتا ہے. دن بھر کھٹتا رہا ہے. نیند؟ یہ بھی سمبھو ہے. گیارہ بج رہے ہیں' نیند آ ہی رہی ہوگی. لیکن شاید وہ کچھ اور پونچھ رہا ہے. منہ دیکھئے' آنکھ دیکھئے' چال دیکھئے. سب قلعی کھول رہے ہیں. کیا وہ آنسو پونچھ رہا ہے؟ ہوسکتا ہے. لیکن نہیں. اس کی آنکھیں بھیگی نہیں ہیں' آنسو گالوں پر نہیں ڈھلکے ہیں. وہ زینہ چڑھتا جاتا ہے اور ٹھنڈی سانسیں بھرتا جاتا ہے. ذرا پلکیں دیکھئے. یہ استھر کیوں ہیں؟ کیا اُن کے پیچھے کوئی طوفان چھپا ہے!

وہ آخری سیڑھی پر پہونچ گیا. وہیں ٹھٹکا. سارے کوٹھے پر ایک وہنگم درشٹی ڈالی. پھر آنکھیں جھپکائیں. اوپر والے دانتوں کی پنکتی سے نیچے والے ہونٹ کا داہنا کونا دبا لیا اور زینے سے ملے ہوئے دروازے میں داہنا پیر رکھ دیا. اسی سمے کسی کی آواز آئی— "آگئے." اس نے سنا اور بس اتنا بول سکا— "ہاں.. ں.." پھر وہ ایک قدم آگے بڑھا. بائیں ہاتھ کی طرف سوچ تھی. روشنی کردی. اسی کمرے کے بعد ایک کمرہ ہے اور اسی کمرے میں اس کے کمرے کا دروازہ ہے. اس نے جیب میں ہاتھ ڈالا اور کچھ چیز ڈھونڈھنے لگا. لیکن شاید نہیں ملی. کرتے کے دونوں جیب

तैयार हुए और इस तरह तीन या चार पीढ़ी के बाद—ग्यारहवीं सदी के आख़ीर तक—हमारे लोगों को महसूस हुआ कि सिर्फ़ स्वराज्य होना ही काफ़ी नहीं है; ऐसा होने के लिये उसे सुराज भी होना चाहिये और पर राज्य चला जाना चाहिये; क्योंकि हम भी एक राष्ट्र हैं. इस प्रकार की विशेष राष्ट्रीय नाबराबरी का उदय पिछली सदी का एक महान और नया लक्षन है.

इस अनुभव से जाना गया कि भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करनी चाहिये. राष्ट्र की हैसियत से उसे एक स्वतंत्र राज्य बनना चाहिये; वरना उसका विकास नहीं हो सकता यह राजा राम मोहन राय के युग से अलग होता हुआ युगांतर था.

इस विचार के कारन एक ऐसा समय आया कि अंग्रेज़ भी इच्छा या अन इच्छा से समझ गये कि भारत छोड़ने में ही उनका हित छुपा है, वरना भारत तो जायगा ही, लेकिन उसके साथ भारत की दोस्ती से भी हाथ धो बैठेंगे. नतीजा यह कि दोनों देश दोस्ती के साथ अलग हुए और इस तरह एक महान क्रांति हुई. हिन्द ने राष्ट्र के तौर पर और 'पोलिटिकल स्टेट' की हैसियत से नया जन्म लिया. हिन्द के सांस्कृतिक विकास में योरप की यह नई बात शामिल हो चुकी और हमारी सांस्कृति उसी प्रमान में ज़्यादा विकसित हो कर फिर से इस युग में अपनी प्राचीन यात्रा आगे बढ़ाने के लायक़ हो सकी.

इस नव यात्रा के समय हमारे प्रजा की आत्मा को आगे बढ़ने का मंत्र गांधी जी ने दिया. टैगोर के कहे अनुसार ऐसा ही मंत्र ग्यारहवीं सदी में राजा राम मोहन राय ने उस काल के लिये दिया था जिसे हम ऊपर देख चुके हैं.

इस यात्रा का इतिहास हमारी स्वतंत्रता का इतिहास है. वह एक सांस्कृतिक चीज़ है—केवल राजकाजी नहीं. उस इतिहास को उनके मुख्य मुख्य सूत्रधारों के ज़रिये देखने का हमने सोच रखा है जिनके द्वारा उनकी बीती हुई पांच पीढ़ियां गिनाई जा सकें. उन पीढ़ियों को सिलसिलेवार उसके बाद देखेंगे.

( बाक़ी फिर )



تیار ہوئے' اور اس طرح تین یا چار پیڑھی کے بعد—گیارھویں صدی کے آخیر تک—ہمارے لوگوں کو محسوس ہوا کہ صرف سوراجیہ ہونا ہی کافی نہیں ہے؛ ایسا ہونے کے لئے سوراج بھی ہونا چاہئے اور پر راجیہ چلا جانا چاہئے؛ کیونکہ ہم بھی ایک راشٹر ہیں۔ اس پرکار کی وشیش راشٹریہ نابرابری کا اُدے پچھلی صدی کا ایک مہان اور نیا لکشن ہے۔

اس انوبھو سے جانا گیا کہ بھارت کو سوتنترتا پراپت کرنی چاہئے۔ راشٹر کی حیثیت سے اسے ایک سوتنتر راجیہ بننا چاہئے؛ ورنہ اسکا وکاس نہیں ہو سکتا۔ یہ راجا رام موہن رائے کے یگ سے الگ ہوتا ہوا یوگانتر تھا۔

اس وچار کے کارن ایک ایسا سمے آیا کہ انگریز بھی اچھا یا ان اچھا سے سمجھ گئے کہ بھارت چھوڑنے میں ہی اُن کا ہت چھپا ہے' ورنہ بھارت تو جائیگا ہی' لیکن اس کے ساتھ بھارت کی دوستی سے بھی ہاتھ دھو بیٹھیں گے۔ نتیجہ یہ کہ دونوں دیش دوستی کے ساتھ الگ ہوئے اور اسطرح ایک مہان کرانتی ہوئی۔ ہند نے راشٹر کے طور پر اور ' پولیٹیکل اسٹیٹ ' کی حیثیت سے نیا جنم لیا۔ ہند کے سانسکرتک وکاس میں یورپ کی یہ نئی بات شامل ہو چکی اور ہماری سانسکرتی اسی پرمان میں زیادہ وکست ہو کر پھر سے اس یگ میں اپنی پراچین یاترا آگے بڑھانے کے لائق ہو سکی۔

اس نو یاترا کے سمے ہمارے پرجا کی آتما کو آگے بڑھنے کا منتر گاندھی جی نے دیا۔ ٹیگور کے کہے انوسار ایسا ہی منتر گیارھویں صدی میں راجا رام موہن رائے نے اس کال کے لئے دیا تھا جسے ہم اوپر دیکھ چکے ہیں۔

اس یاترا کا اتہاس ہماری سوتنترتا کا اتہاس ہے۔ وہ ایک سانسکرتک چیز ہے—کیول راجکاجی نہیں۔ اس اتہاس کو اُن کے مکھیہ مکھیہ سوتردھاروں کے ذریعہ دیکھنے کا ہم نے سوچ رکھا ہے جن کے دوارا اُن کی بیتی ہوئی پانچ پیڑھیاں گنائی جا سکیں۔ اُن پیڑھیوں کو سلسلہ وار اسکے بعد دیکھینگے۔

( باقی پھر )

अंग्रेजी में 'कल्चरल स्टेट' कहा जाय. जिसे 'पोलिटिकल स्टेट' या नेशन स्टेट' कहा जाय वैसा अलग राष्ट्रभाव का खयाल हमें न था. डच, अंग्रेज़, फ्रेंच इत्यादि प्रजा इस दूसरे प्रकार के खयाल की थी. यूरप में उस खयाल का उदय हुआ था और वहां की प्रजा उसे लेकर दुनिया में निकल पड़ी थी.

राज्य संस्था के बारे में ऐसी भावना उस समय भारत में एक नयी चीज़ थी इससे अंग्रेज़ों के सम्पर्क में आने पर राजा राम मोहन राय ने उसका सांस्कृतिक मूल्य आंका. उन्होंने देखा कि इस नयी प्रजा के पास जो नयी विद्या है, उसे भारत को उनकी भाशा के ज़रिये प्राप्त करना चाहिये. अरबी, फ़ारसी, और संस्कृत के इस महा पंडित ने एक नयी भाशा के ज़रिये जो नया ख़ज़ाना प्राप्त हो सकता था उसे देखा और भारत की सांस्कृतिक संपत्ति के और प्रजाकीय विकास के पक्ष में उसे अपनाने का आदेश दिया. उसमें उन्होंने भारत और इंग्लिस्तान के समान हितको देखा.

अपनी 'पोलिटिकल स्टेट' की भावना के कारन विलियम बैन्टिक और मेकाले को उसमें अपने राज्य संगठन का हित नज़र आया और राजा राम मोहन राय को उसमें अपने लोगों की संस्कृति का और विद्या का विकास नज़र आया. इस प्रकार ताल में ताल मिल गई. फलस्वरूप भारत में अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना के उपाय किये गये. राजा राम मोहन राय को इसमें ग़ुलामी का अनुभव नहीं हुआ. अंग्रेज़ी राज्य की नयी तासीर वह न देख सके; उस समय यह बात समझ में आने योग्य थी भी नहीं. भारत के देशी राज्य भी 'नेशन स्टेट' राष्ट्रीय राज्य के भाव को साफ़ तौर से नहीं समझे थे. इस वजह से वह अन्दर ही अन्दर लड़ते रहे और अंग्रेज़ों के साथ भी उन्होंने एक नये देशी राज्य की तरह ही बर्ताव किया.

उस समय की देशी राज्य व्यवस्था के मुक़ाबले में, अन्य प्रकार से भी अंग्रेज़ी राज्य व्यवस्था हमारे कुछ लोगों को अच्छी लगी और ग़ैर होते हुए भी वह उन्हें अखरी नहीं; एक कारन यह भी सही, लेकिन उसे हमने ग़ुलामी नहीं माना क्योंकि हमारा मुख्य विचार सांस्कृतिक स्वराज्य के आदर्श का था.

लेकिन धीरे धीरे अनुभव से वह विचार पलटता गया. जैसे जैसे अंग्रेज़ी राज्य आगे बढ़ा वैसे वैसे उस बात का खयाल हमें आता गया. नयी प्रजा के और उसकी राष्ट्र दृष्टि के विचार देखने, जानने और पढ़ने को मिले. इस प्रकार से हम अपने देश और उसके हित के प्रति देखने लगे और उसके मुताबिक़ आगे बढ़ाने के लिये



انگریزی میں ' کلچرل اسٹیٹ ' کہا جائے . جسے ' پولیٹکل اسٹیٹ ' یا ' نیشن اسٹیٹ ' کہا جائے ویسا الگ راشٹر بھاو کا خیال ہمیں نہ تھا . ڈچ' انگریز' فرینچ اتیادی پرجا اِس دوسرے پرکار کے خیال کی تھی . یورپ میں اُس خیال کا اُدے ہوا تھا اور وہاں کی پرجا اسے لیکر دنیا میں نکل پڑی تھی .

راجیہ سنستھا کے بارے میں ایسی بھاونا اُس سمے بھارت میں ایک نئی چیز تھی . اس سے انگریزوں کے سمپرک میں آنے پر راجا رام موہن رائے نے اُس کا سانسکرتک مولیہ آنکا . اُنہوں نے دیکھا کہ اس نئی پرجا کے پاس جو نئی ودیا ہے' اُسے بھارت کو ان کی بھاشا کے ذریعے پراپت کرنا چاہیئے . عربی' فارسی اور سنسکرت کے اس مہا پنڈت نے ایک نئی بھاشا کے ذریعے جو نیا خزانہ پراپت ہو سکتا تھا اُسے دیکھا اور بھارت کی سانسکرتک سمپتی کے اور پرجاکیہ وکاس کے پکھش میں اُسے اپنانے کا آدیش دیا . اُس میں اُنہوں نے بھارت اور انگلستان کے سمان ہت کو دیکھا .

اپنی ' پولیٹکل اسٹیٹ ' کی بھاونا کے کارن ولیم بینٹنک اور میکولے کو اُس میں اپنے راجیہ سنگٹھن کا ہت نظر آیا اور راجا رام موہن رائے کو اُسمیں اپنے لوگوں کی سنسکرتی کا اور ودیا کا وکاس نظر آیا . اس پرکار تال میں تال مل گئی . پھل سوروپ بھارت میں انگریزی راجیہ کی استھاپنا کے اپائے کیئے گئے . راجا رام موہن رائے کو اس میں غلامی کا انوبھو نہیں ہوا . انگریزی راجیہ کی نئی تاثیر وہ نہ دیکھ سکے؛ اُس سمے یہ بات سمجھ میں یوگیہ تھی بھی نہیں . بھارت کے دیشی راجیہ بھی 'نیشن اسٹیٹ' راشٹریہ راجیہ کے بھاؤ کو صاف طور سے نہیں سمجھے تھے . اس وجہ سے وہ اندر ہی اندر لڑتے رہے اور انگریزوں کے ساتھ بھی انہوں نے ایک نئے دیشی راجیہ کی طرح ہی برتاؤ کیا .

اُس سمے کی دیشی راجیہ ویوستھا کے مقابلے میں' انیہ پرکار سے بھی انگریزی راجیہ ویوستھا ہمارے کچھ لوگوں کو اچھی لگی اور غیر ہوتے ہوئے بھی وہ انہیں اکھری نہیں؛ ایک کارن یہ بھی سہی' لیکن اسے ہم نے غلامی نہیں مانا کیونکہ ہمارا مکھیہ وچار سانسکرتک سوراجیہ کے آدرش کا تھا .

لیکن دھیرے دھیرے انوبھو سے وہ وچار پلٹتا گیا . جیسے جیسے انگریزی راجیہ آگے بڑھا ویسے ویسے اس بات کا خیال ہمیں آتا گیا . نئی پرجا کے اور اسکی راشٹر درشٹی کے وچار دیکھنے' جاننے اور پڑھنے کو ملے . اس پرکار سے ہم اپنے دیش اور اُس کے ہت کے پرتی دیکھنے لگے اور اُس کے مطابق آگے بڑھانے کے لیئے

इस प्रकार के युग परिवर्तन का अन्त भी उसी के अनुरूप हुआ. भारत की पसन्दगी से ही स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल अंग्रेज बना. इन दो महापुरुषों की दृष्टि में जो विश्व एकता की भावना और विश्व विजयी प्रेम भाव था, उसने इस डेढ़ सौ, दो सौ साल के भारत के इतिहास को गढ़ने का मुख्य काम किया है. इस लम्बे युग का प्रधान सुर यही रहा है, और उसे आगे लेकर विश्व संगीत को जन्म देने का काम हिन्द के इतिहास पर निश्चय रूप से आ पड़ा है.

अंग्रेज राज्यकाल की इस सदी का इतिहास कुछ निखर रहा है, इस समय उसका एक और अति महत्व का लक्षण भी देखने लायक है, क्योंकि वह इन दो युग पुरुषों के नवविधान का हूबहू निर्देशक भी है.

इस लक्षण को हमने सरल भाषा में ऊपर देखा. राजा राममोहन राय ने अंग्रेज राज्यकाल की स्थापना का मंत्र दिया, गांधी जी उसकी उत्थापना का मंत्र दिया. इस चीज़ को ज़रा गहराई में जा कर देखने की ज़रूरत है. इन दोनों समय पर भारत और इंग्लिस्तान के नेताओं ने एक मत से बर्ताव किया. वह ध्यान रखने योग्य चीज़ हमने ऊपर देखी. ऊपर से देखने पर यह क्या विचित्र लगे ऐसा नहीं है? बीसवीं सदी में अंग्रेज राज्य त्याग के लिये तैयार हों और भारतवासी उससे पहले की सदी में पर राज्य स्वीकार करने के लिये तैयार हों यह घटना समझने योग्य है. दूसरे ढंग से कहें तो राजा राम मोहन राय जैसे उदारमतवादी व्यक्ति भारत की गुलामी में सहयोग दें, यह आज की दृष्टि से विचित्र नज़र आता है. वैसे ही गांधी जैसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के आदर्श में श्रद्धा रखने वाले व्यक्ति अंग्रेजों को जाने को कहें यह भी उतना ही विचित्र कहा जायगा.

एक दृष्टि से देखें तो यह विचित्रता दूर हो जाती है और इस पूरे युग के इतिहास के क्रमिक विकास को एक धागे में पिराया जा सकता है. यह दृष्टि हमारी प्रजा के विकास की है जिस के द्वारा इस युग में राज्य संस्था के विषय में हमारे प्रजा के विचारों में नवपूर्ति और नवदर्शन हुआ है. यह वही दृष्टि है. उसे संक्षेप में देखें वरना वास्तव में यह घटना ऐसी गम्भीर बात है कि उसका पूरा विवेचन करने के लिये एक ग्रंथ लिखा जा सकता है.

राजा राम मोहन राय और उनके पहले के समय में राज्य संस्था के बारे में हमारे विचार एक ऐसे प्रकार के थे जो उस समय के यूरप के विचारों से भिन्न थे. हमारी दृष्टि नीति धर्म या संस्कृत परायन समाज व्यवस्था की थी जिसके आधार पर राजा और राज्य उसके प्रमुख अंग की हैसियत से रहते थे. हमारे विचार ऐसे थे जिसे



اس پرکار کے یگ پریورتن کا انت بھی اسی کے انوروپ ہوا ۔ بھارت کی پسندگی سے ہی سوتنتر بھارت کا پرتھم گورنر جنرل انگریز بنا ۔ اِن دو مہاپرشوں کی درشٹی میں جو وشو ایکتا کی بھاونا اور وشو وجئی پریم بھاو تھا' اُس نے اِس ڈیڑھ سو دو سال کے بھارت کے اِتہاس کو گڑھنے کا مکھیہ کام کیا ہے ۔ اِس لمبے یگ کا پردھان سر یہی رہا ہے اور اُسے آگے لیکر وشو سنگیت کو جنم دینے کا کام ہند کے اِتہاس پر نشچے روپ سے آ پڑا ہے ۔

انگریز راجیہ کال کی اِس صدی کا اِتہاس کچھ نکھر رہا ہے' اِس سمے اس کا ایک اور اتی مہتو کا لکشن بھی دیکھنے لائق ہے' کیونکہ وہ اِن دو یگ پرشوں کے نو ودھان کا ہوبہو نردیشک بھی ہے ۔

اِس لکشن کو ہم نے سرل بھاشا میں اوپر دیکھا ۔ راجا رام موہن رائے نے انگریز راجیہ کال کی استھاپنا کا منتر دیا' گاندھی جی نے اسکی اتھاپنا کا منتر دیا ۔ اِس چیز کو ذرا گہرائی میں جاکر دیکھنے کی ضرورت ہے ۔ اِن دونوں سمے پر بھارت اور انگلستان کے نیتاؤں نے ایک مت سے برتاؤ کیا ۔ وہ دھیان رکھنے یوگیہ چیز ہم نے اوپر دیکھی ۔ اوپر سے دیکھنے پر یہ کیا وچتر لگے ایسا نہیں ہے ؟ بیسویں صدی میں انگریز راجیہ تیاگ کے لیئے تیار ہو اور بھارت واسی اس سے پہلے کی صدی میں پر راجیہ سویکار کرنے کے لیئے تیار ہو یہ گھٹنا سمجھنے یوگیہ ہے ۔ دوسرے ڈھنگ سے کہیں تو راجا رام موہن رائے جیسے اُدارمت وادی ویکتی بھارت کی غلامی میں سہیوگ دیں' یہ آجکی درشٹی سے وچتر نظر آتا ہے ۔ ویسے ہی گاندھی جیسے 'وسودھیو کٹمبکم' کے آدرش میں شردھا رکھنے والے ویکتی انگریزوں کو جانے کو کہیں یہ بھی اتنا ہی وچتر کہا جائیگا ۔

ایک درشٹی سے دیکھیں تو یہ وچترتا دور ہوجاتی ہے اور اِس پورے یگ کے اِتہاس کے کرمک وکاس کو ایک دھاگے میں پرویا جاسکتا ہے ۔ یہ درشٹی ہماری پرجا کے وکاس کی ہے جس کے دوارا اِس یگ میں راجیہ سنستھا کے وشے میں ہمارے پرجا کے وچاروں میں نوپورتی اور نودرشن ہوا ہے ۔ یہ وہی درشٹی ہے ۔ اسے سنکشیپ میں دیکھیں ورنہ واستو میں یہ گھٹنا ایسی گمبھیر بات ہے کہ اُس کا پورا وویچن کرنے کے لیئے ایک گرنتھ لکھا جاسکتا ہے ۔

راجا رام موہن رائے اور ان کے پہلے کے سمے میں راجیہ سنستھا کے بارے میں ہمارے وچار ایک ایسے پرکار کے تھے جو اس سمے کے یورپ کے وچار سے بھن تھے ۔ ہماری درشٹی نیتی دھرم یا سنسکرت پراین سماج ویوستھا کی تھی جس کے آدھار پر راجا اور راجیہ اس کے پرمکھ انگ کی حیثیت سے رہتے تھے ۔ ہمارے وچار ایسے تھے جسے

विकास यात्रा में कदम कदम पर बाधा रूप होने वाली रुकावटों को दूर किया और आज के नवयुग के जगत व्यापी मानव प्रेम की हमें शिक्षा दी.

राजा राम मोहन राय ने भारत के आधुनिक युग की नींव डाली और उस समय एक ऐसी राष्ट्रीय हलचल उन्होंने शुरू की जिसके ज़ोर पर उस समय की गिरावट से उन्नति के मार्ग पर भारत अग्रसर हुआ.

इसी ढंग से देखते हुए भारत में जो दूसरा नया युग शुरू हुआ वह अंग्रेज़ों के राज्य के क़रीब 100 साल बाद भारत की जो परिस्थिति हमारे सामने आने लगी उसमें से पैदा हुआ. राजा राम मोहन राय के आदेशानुसार चलते हुए भारत को जो दूसरा अनुभव हुआ वह था पर राष्ट्र की गुलामी का, उसके अपमान का, राष्ट्रीय आत्मा के ह्रास का, हतक-इज़्ज़ती और प्रजा के अपनत्व की अवनति होने के डर का.

यह नया नतीजा भी उतना ही मर्म भेदी और घातक था. उस समय भी नवपथ प्रदर्शक की ज़रूरत थी क्योंकि पुराने युग की शिक्षा काफ़ी न थी. उसकी शक्ति कम साबित होती थी. इस समय वैसी ही प्रचंड प्रतिभा वाले भारत के महान पुरुष गांधी जी हमें मिले. टैगोर ने जिन शब्दों का उपयोग राजा के लिये किया था, हम इस नये युग का मार्ग दिखाने वाले के लिये भी उन्हीं शब्दों का उपयोग कर सकते हैं.

इस दृष्टि से देखें तो भारत के इन दोनों महापुरुषों की प्रतिभा में काफ़ी समानता थी. दोनों धर्म पुरुष थे, देश भक्त थे, मानवता के प्रेमी थे और महान हिन्दू थे.

ख़ास विशेषता यह कि दोनों अंग्रेज़ प्रजा के दोस्त थे और हिन्दी तथा अंग्रेज़ दोनों के इकट्ठे कल्याण में श्रद्धा रखने वाली एक मिली जुली नीति में विश्वास रखते थे. लेकिन समय का खेल ऐसा था कि एक ने भारत में अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना में योग दिया, दूसरे ने उसे उखाड़ने में. दोनों के काम प्रजाओं के हित में थे. बाहरी दृष्टि से देखने पर वह चाहे विचित्र और विरोधी प्रतीत होते हों, परन्तु ठीक और ग़ौर से देखने पर एक ही प्रकार का काम इन दोनों महापुरुषों ने किया है. दोनों के समकालीन गवर्नर जनरलों को याद करने से एक सुन्दर उदाहरण देखने को मिलता है. दोनों उनके मित्र थे और आपस में मदद करने के लिये उत्सुक थे. बैन्टिक और राम मोहन राय ने और माउन्टबेटन और गांधी जी ने मित्रों की तरह बर्ताव किया. दोनों ने आपस में मदद ली और दी और इस तरह अपने अपने देशों का काम किया.



وکاس یاترا میں قدم قدم پر بادھا روپ ہونے والی رکاوٹوں کو دور کیا اور آج کے نویگ کے جگت ویاپی مانو پریم کی ہمیں شکشا دی ۔

راجا رام موہن رائے نے بھارت کے آدھونک یگ کی نیو ڈالی اور اس سمے ایک ایسی راشٹریہ ہلچل انہوں نے شروع کی جس کے زور پر اس سمے کی گراوٹ سے اُنتی کے مارگ پر بھارت اگرسر ہوا ۔

اسی ڈھنگ سے دیکھتے ہوئے بھارت میں جو دوسرا نیا یگ شروع ہوا وہ انگریزوں کے راجیہ کے قریب 100 سال بعد بھارت کی جو پرستھتی ہمارے سامنے آنے لگی اس میں سے پیدا ہوا ۔ راجا رام موہن رائے کے آدیشانوسار چلتے ہوئے بھارت کو جو دوسرا انوبھو ہوا وہ تھا پر راشٹر کی غلامی کا، اس کے اپمان کا، راشٹریہ آتما کے ہراس کا، ہتک عزتی کا اور پرجا کے اپنتو کی اونتی ہونے کے ڈر کا ۔

یہ نیا نتیجہ بھی اتنا ہی مرم بھیدی اور گھاتک تھا ۔ اس سمے بھی نوپتھ پردرشک کی ضرورت تھی کیونکہ پرانے یگ کی شکشا کافی نہ تھی ۔ اسکی شکتی کم ثابت ہوتی تھی ۔ اس سمے ویسی ہی پرچنڈ پرتبھا والے بھارت کے مہان پرش گاندھی جی ہمیں ملے ۔ ٹیگور نے جن شبدوں کا اپیوگ راجا کے لئے کیا تھا، ہم اس نئے یگ کا مارگ دکھانے والے کے لئے بھی انہیں شبدوں کا اپیوگ کر سکتے ہیں ۔

اس درشٹی سے دیکھیں تو بھارت کے ان دونوں مہاپرشوں کی پرتبھا میں کافی سمانتا تھی ۔ دونوں دھرم پرش تھے، دیش بھکت تھے، مانوتا کے پریمی تھے اور مہان ہندو تھے ۔

خاص وشیشتا یہ کہ دونوں انگریز پرجا کے دوست تھے اور ہندی تتھا انگریز دونوں کے اکٹھے کلیان میں شردھا رکھنے والی ایک ملی جلی نیتی میں وشواس رکھتے تھے ۔ لیکن سمے کا کھیل ایسا تھا کہ ایک نے بھارت میں انگریزی راجیہ کی استھاپنا میں یوگ دیا، دوسرے نے اسے اکھاڑنے میں ۔ دونوں کے کام پرجاؤں کے ہت میں تھے ۔ باہری درشٹی سے دیکھنے پر وہ چاہے وچتر اور ورودھی پرتیت ہوتے ہوں پرنتو ٹھیک اور غور سے دیکھنے پر ایک ہی پرکار کا کام ان دونوں مہاپرشوں نے کیا ہے ۔ دونوں کے سمکالین گورنر جنرلوں کو یاد کرنے سے ایک سندر ادھارن دیکھنے کو ملتا ہے ۔ دونوں ان کے متر تھے اور آپس میں مدد دینے کے لئے اتسک تھے ۔ بینٹنک اور رام موہن رائے نے اور ماؤنٹ بیٹن اور گاندھی جی نے متروں کی طرح برتاؤ کیا ۔ دونوں نے آپس میں مدد لی اور دی اور اس طرح اپنے دیشوں کا کام کیا ۔

# राजा राम मोहन राय से गांधी जी

लेखक—मगनभाई देसाई
अनुवादक—कानुभाई नानालाल पटेल

<u>हिन्द की स्वतंत्रता का इतिहास</u>

राजा राममोहन राय का युग यानी ईसवी सन 1772 से 1833 तक रहा है. उस जमाने में अंग्रेजों का राज्य बंगाल में स्थिर हो चुका था और उसकी योग्य स्थापना स्थिर ढंग से करने के बारे में अंग्रेज राज्यकर्ता सोच रहे थे. वह समय अंग्रेजों के राज्य का स्थापना युग था.

गांधी जी का समय ई० सन 1869 से 1948 तक रहा. इस समय में अंग्रेजों का राज्य पूरी तरह से जमकर बाद में उखड़ने लगा. जिस तरह चूल पर की गई लिपाई की पपड़ी उखड़ने से पहले ऊंची नीची होती है वैसा ही कुछ इस समय हुआ. यह समय अंग्रेजी राज्य के उखड़ने का युग था.

स्थापना युग के हिन्द का नेतृत्व राम मोहन राय ने किया. यह जो मैं कहता हूं वह भारतवर्ष के उस महान पुरुष की किसी प्रकार की निंदा या बुराई के तौर पर नहीं कहता. बल्कि इसमें मैं उनकी पूरी प्रशंसा करता हूं. उस युग में भारत ने कुछ नया ही अनुभव किया. हथियार होते हुए, शक्ति होते हुए, ताक़त होते हुए और पूरी सूझ समझ होते हुए भी सैकड़ों मील दूरी से आये हुए चंद अंग्रेजों के सामने भारत परास्त होकर उनके लोभ और व्यापार का ग्रास हुआ और हिन्द का कोई राजा उसे इस प्रकार गुलाम होने से बचा नहीं सका. यह ठीक है जैसा कि अंग्रेज इतिहासकार सिली ने कहा है कि अंग्रेजों ने हमें अपने ही हाथों से, अपने ही धन से और अपने ही लश्कर से परास्त किया और अपना काम निकाला. लेकिन ऐसा होना तो और विचित्र बात है. इस विचित्रता से हमारी प्रजा सहम गई; फिर भी नये राज्यकर्ताओं में उसने कुछ निश्चिन्तता और झूठी सच्ची व्यवस्था की झलक देखी.

इतिहास यह जरूर कहता है जिस प्रकार के विचित्र परिवर्तन के रुख को पहचान कर देश को मार्ग दिखाने की बड़ी जिम्मेदारी राजा राम मोहन राय ने पूरी की. कवि श्री टैगोर के शब्दों में कहें तो—

अपनी प्रतिभा और अडिग आत्मबल के कारन उन्होंने यह समझ लिया कि हमारी राष्ट्रआत्मा को अपने विकास के लिये सृजनात्मक पुरुषार्थ शुरू करने की फ़ौरन ज़रूरत है. इस सदी के वह महान पथप्रदर्शक थे. उन्होंने हमारी

# راجا رام موھن رائے سے گاندھی جی

لیکھک—مگن بھائی دیسائی
انوادک—کانو بھائی نانا لال پٹیل

<u>ھند کی سوتنترتا کا اتہاس</u>

راجا رام موھن رائے کا یگ عیسوی سن 1772 سے 1833 رھا ھے . اُس زمانے میں انگریزوں کا راجیہ بنگال میں استھر ھوچکا تھا اور اسکی یوگیہ استھاپنا استھر ڈھنگ سے کرنے کے بارے میں انگریز راج کرتا سوچ رھے تھے . وہ سمے انگریزوں کے راجیہ کا استھاپنا یگ تھا .

گاندھی جی کا سمے عیسوی سن 1869 سے 1948 تک رھا . اس سمے میں انگریزوں کا راجیہ پوری طرح سے جم کر بعد میں اکھڑنے لگا . جس طرح چول پر کی گئی لپائی کی پپڑی اکھڑنے سے پہلے اونچی نیچی ھوتی ھے ویسا ھی کچھ اُس سمے ھوا . یہ سمے انگریزی راجیہ کے اُکھڑنے کے یگ تھا .

استھاپنا یگ کے ھند کا نیترتو رام موھن رائے نے کیا . یہ جو میں کہتا ھوں وہ بھارت ورش کے اُس مہان پرش کی کسی پرکار کی نندا یا برائی کے طور پر نہیں کہتا . بلکہ اِسمیں میں اُن کی پوری پرشنسا کرتا ھوں . اس یگ میں بھارت نے کچھ نیا ھی انوبھو کیا . ھتھیار ھوتے ھوئے' شکتی ھوتے ھوئے' طاقت ھوتے ھوئے اور پوری سوجھ سمجھ ھوتے ھوئے بھی سیکڑوں میل دوری سے آئے ھوئے چند انگریزوں کے سامنے بھارت پراست ھو کر ان کے لوبھ اور ویاپار کا گراس ھوا اور ھند کا کوئی راجا اُسے اس پرکار غلام ھونے سے بچا نہیں سکا . یہ ٹھیک ھے جیسا کہ انگریز اتہاس کار سلی نے کہا ھے کہ انگریزوں نے ھمیں اپنے ھی ھاتھوں سے' اپنے ھی دھن سے اُور اپنے ھی لشکر سے پراست کیا اور اپنا کام نکالا . لیکن ایسا ھونا تو اور وچتر بات ھے . اس وچترتا سے ھماری پرجا سہم گئی؛ پھر بھی نئے راجیہ کرتاؤں میں اس نے کچھ نشچنتتا اور جھوٹی سچی ویوستھا کی جھلک دیکھی .

اِتہاس یہ ضرور کہتا ھے کہ اس پرکار کے وچتر پریورتن کے رخ کو پہچان کر دیش کو مارگ دکھانے کی بڑی ذمہ داری راجا رام موھن رائے نے پوری کی . کوی شری ٹیگور کے شبدوں میں کہیں تو—

اپنی پرتبھا اور اڈگ آتم بل کے کارن اُنھوں نے یہ سمجھ لیا کہ ھماری راشٹر آتما کو اپنے وکاس کے لئے سرجناتمک پروشارتھ شروع کرنے کی فوراً ضرورت ھے . اِس صدی کے وہ مہان پتھ پردرشک تھے . اُنھوں نے ھماری

और हृदय को अपील करने का अहिंसक तरीक़ा काम में लेते हैं. इस तरह तीन बरस के भीतर ज़मींदारों ने बेज़मीनों में बांटने के लिये 30 लाख एकड़ से ज़्यादा ज़मीन दान में दी है. सन 1957 तक भारत के सारे बेज़मीन किसानों में मुफ़्त बांटने के लिये काफ़ी ज़मीन प्राप्त करने की और इस तरह खेती के मैदान में पूर्न अहिंसक तरीक़ों से क्रान्ति करने की आशा रक्खी जाती है. जब यह काम हो जायेगा तब आशा है कि ज़मींदार और किसान साथ साथ काम करेंगे और उनमें से हर एक अपनी बुद्धि और शक्ति का उपयोग सब के भले को आगे बढ़ाने में करेगा.

इससे ज़्यादा इस संबन्ध में आपसे कहने का मेरे पास समय नहीं है. लेकिन आप देख सकते हैं कि गांधी जी के नेतृत्व में भारती शान्ति आन्दोलन सिर्फ़ युद्ध और नाइन्साफ़ी की निन्दा करने से आगे बढ़ा है और उसने संघर्ष के सारे कारनों का जड़ से अन्त करने के लिये व्यक्ति और समाज के जीवन में घुसने की कोशिश की है. इस तरह गांधी जी ने शान्ति के लिये भारत की शोध की एक अहम दिशा प्रदान की है. मैं आशा करता हूं कि यहां इकट्ठे होने वाले हम लोग इस महान आन्दोलन का अध्यन करेंगे जो गांधी जी ने शुरू किया है क्योंकि हमें लगता है कि मानव सम्बन्धों में रहे सारे संघर्श को दूर करने के लिये ऐसे चौतरफ़ा प्रयत्न हुए बिना युद्ध की निन्दा करने वाली परिशदें भरने से कुछ नहीं होगा. जब तक व्यक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन से अहिंसा कम न हो, तब तक अन्तर्राश्ट्री शान्ति की आशा रखना बेकार है. यही गांधी जी की ख़ास देन है और भारत में अहिंसा और शान्ति के लिये जो काम हो रहा है उसमें से यही सन्देश मैं आप के पास लाया हूं.

---

कुछ नट खट जब बुद्ध को काफ़ी गालियां दे चुके तब बुद्ध हंसते हुए बोले—

"भद्र! यह तो बताओ, यदि कोई दाता दान करे और भिकारी न ले तो वह वस्तु किस के पास रहेगी?"

"दाता के पास."

"ऐसी बात है तो जो तुम गालियां मुझे दे रहे हो, मैं नहीं लेना चाहता."

---



اور ھردے کو اپیل کرنے کا اھنسک طریقہ کام میں لیتے ھیں . اِس طرح تین برس کے بھیتر زمینداروں نے بےزمینوں میں بانٹنے کے لیئے 30 لاکھ ایکڑ سے زیادہ زمین دان میں دی ہے . سن 1957 تک بھارت کے سارے بے زمین کسانوں میں مفت بانٹنے کے لیئے کافی زمین پراپت کرنے کی اور اِس طرح کھیتی کے میدان میں پورن اھنسک طریقوں سے کرانتی کرنے کی آشا رکھی جاتی ہے . جب یہ کام ھوجائیگا تب آشا ھے کہ زمیندار اور کسان ساتھ ساتھ کام کرینگے اور اُن میں سے ھر ایک اپنی بدھی اور شکتی کا اپیوگ سب کے بھلے کو آگے بڑھانے میں کریگا .

اِس سے زیادہ اِس سمبندھ میں آپ سے کہنے کا میرے پاس سمے نہیں ھے . لیکن آپ دیکھ سکتے ھیں کہ گاندھی جی کے نیترتو میں بھارتی شانتی آندولن صرف یدھ اور ناانصافی کی نندا کرنے سے آگے بڑھا ھے اور اُس نے سنگھرش کے سارے کارنوں کا جڑ سے انت کرنے کے لیئے ویکتی اور سماج کے جیون میں گھسنے کی کوشش کی ھے . اِس طرح گاندھی جی نے شانتی کے لیئے بھارت کی شودھ کی ایک اھم دشا پردان کی ھے . میں آشا کرتا ھوں کہ یہاں اِکٹھے ھونے والے ھم لوگ اِس مہان آندولن کا ادھین کرینگے جو گاندھی جی نے شروع کیا ھے کیونکہ ھمیں لگتا ھے کہ مانو سمبندھوں میں رھے سارے سنگھرش کو دور کرنے کے لیئے ایسے چوطرفہ پرتین ھوئے بنا یدھ کی نندا کرنے والی پریشدیں بھرنے سے کچھ نہیں ھوگا . جب تک ویکتک، ساماجک، راجنیتک اور آرتھک جیون سے اھنسا کم نہ ھو، تب تک انترراشٹری شانتی کی آشا رکھنا بےکار ھے . یہی گاندھی جی کی خاص دین ھے اور بھارت میں اھنسا اور شانتی کے لیئے جو کام ھو رھا ھے اُسمیں سے یہی سندیش میں آپ کے پاس لایا ھوں .

---

کچھ نٹ کھٹ جب بدھ کو کافی گالیاں دے چکے تب بدھ ھنستے ھوئے بولے—

" بھدر! یہ تو بتاؤ، یدی کوئی داتا دان کرے اور بھکاری نہ لے تو وہ وستو کس کے پاس رھے گی؟"

" داتا کے پاس "

" ایسی بات ھے تو جو تم گالیاں مجھے دے رھے ھو، میں نہیں لینا چاھتا ."

---

तब राष्ट्र कपास, रबड़, जूट वग़ैरा जैसे कच्चे माल, कोयला और पेट्रोल जैसे ईंधनों, खेनिज पदार्थों, युद्ध में काम आने वाले दूसरे पदार्थों और बाज़ारों के लिये आपस में छीना झपटी मचाते हैं और लड़ते झगड़ते हैं. इसी लिये दुनिया में युद्ध होते हैं. इस तरह जिस युद्ध और साम्राज्यवाद का जन्म होता है, उनका अन्त सिर्फ़ प्रस्ताव पास करने से नहीं हो सकता.

गांधी जी ने चरखे के लिये जो आन्दोलन किया वह उनकी इस इच्छा का प्रतीक था कि आर्थिक मैदान से युद्ध और साम्राज्यवाद के कारनों का अन्त किया जाये और विकेन्द्रित, स्वावलम्बी ढंग पर गांव का आर्थिक ढांचा खड़ा किया जाये, जिसका मक़सद स्थानी कच्चे माल से दूर के बाज़ारों के लिये नहीं, बल्कि स्थानी ज़रूरत पूरी करने के लिये उत्पादन करना हो. जब तक शांतिवादी लोग युद्ध और साम्राज्यवाद के इस बिल्कुल साफ़ कारन की अपेक्षा करेंगे और बेअमल बन कर बड़े पैमाने के उत्पादन के सामने झुकते रहेंगे, तब तक भले वह युद्ध और कमज़ोर देशों के दमन और शोशन के ख़िलाफ़ प्रचार करते रहें उसका कोई नतीजा नहीं होगा. उलटे उनका प्रचार इन बुराइयों को बढ़ाने में ही मदद करेगा. इसी लिये गांधी जी ने घरेलू धन्धों और ग्रामोद्योगों का आन्दोलन किया था.

इतना ही नहीं, उद्योगीकरन का मतलब है मुट्ठी भर लोगों के हाथ में सत्ता का केन्द्रीकरन और जनता के बहुत बड़े भाग को लाचार और बेबस बनाना. गांधी जी को इस बात का डर था, क्योंकि कुछ लोगों के हाथ में सत्ता का ऐसा केन्द्रीकरन ग़ुलामी, शोशन और लड़ाई झगड़े को ही जन्म दे सकता है. इसलिये उन्होंने भारत से आग्रह पूर्वक कहा कि अगर वह शान्तिपूर्न और अहिंसक बनना चाहता है तो उसे विकेन्द्रित ढंग से गरेलू धन्धों के ज़रिये उत्पादन करना चाहिये जिसमें व्यक्ति अपने उद्योग धन्धे ख़ुद या पड़ोसियों के सहयोग से चलाना सीखता है.

### ( ii ) खेती

शान्तिवादी को यह देखना चाहिये कि मज़दूर को उसके औज़ार छीन कर ग़ुलाम न बनाया जाये क्योंकि उसका नतीजा देर सवेर शोशन और लड़ाई झगड़े में ही निकलेगा. उदाहरन के लिये ज़मीन जब जोतने वाले किसान के हाथ में नहीं होती, तब यही होता है. इसलिये गांधी जी के मरने के बाद से शान्ति आन्दोलन में भाग लेने वाले उनके चेले ज़मींदारों से ज़मीन ले कर काश्तकारों को देने के काम में लगे हुए हैं. उनका तरीक़ा जबरन ज़मीन छीन लेने का हिंसक तरीक़ा नहीं है; वह ज़मींदारों की बुद्धि

نیا ہند

تب راشٹر کپاس، ربڑ، جوٹ وغیرہ جیسے کچے مال، کوئلہ اور پیٹرول جیسے ایندھنوں، کھنج پدارتھوں، یدھ میں کام آنے والے دوسرے پدارتھوں اور بازار کے لیئے آپس میں چھینا جھپٹی مچاتے ہیں اور لڑتے جھگڑتے ہیں. اسی لیئے دنیا میں یدھ ہوتے ہیں. اس طرح جس یدھ اور سامراجیہ واد کا جنم ہوتا ہے، انکا انت صرف پرستاؤ پاس کرنے سے نہیں ہوسکتا.

گاندھی جی نے چرخے کے لیئے جو آندولن کیا وہ انکی اس اچھا کا پرتیک تھا کہ آرتھک میدان سے یدھ اور سامراجیہ واد کے کارنوں کا انت کیا جائے اور وکیندرت، سواولمبی ڈھنگ پر گاؤں کا آرتھک ڈھانچہ کھڑا کیا جائے، جسکا مقصد استھانی کچے مال سے دور کے بازاروں کے لیئے نہیں، بلکہ استھانی ضرورتیں پوری کرنے کے لیئے اتپادن کرنا ہو. جب تک شانتی وادی لوگ یدھ اور سامراجیہ واد کے اس بالکل صاف کارن کی اپیکشا کریں گے اور بےعمل بنکر بڑے پیمانے کے اتپادن کے سامنے جھکتے رہیں گے، تب تک بھلے وہ یدھ اور کمزور دیشوں کے دمن اور شوشن کے خلاف پرچار کرتے رہیں اسکا کوئی نتیجہ نہیں ہوگا. الٹے انکا پرچار ان برائیوں کو بڑھانے میں ہی مدد کریگا. اسی لیئے گاندھی جی نے گھریلو دھندھوں اور گرامودیوگوں کا آندولن کیا تھا.

اتنا ہی نہیں، ادیوگیکرن کا مطلب ہے مٹھی بھر لوگوں کے ہاتھ میں ستا کا کیندریکرن اور جنتا کے بہت بڑے بھاگ کو لاچار اور بے بس بنانا. گاندھی جی کو اس بات کا ڈر تھا، کیونکہ کچھ لوگوں کے ہاتھ میں ستا کا ایسا کیندریکرن غلامی، شوشن اور لڑائی جھگڑے کو ہی جنم دے سکتا ہے. اسلیئے انہوں نے بھارت سے آگرہ پوروک کہا کہ اگر وہ شانتی پورن اور اہنسک بننا چاہتا ہے تو اسے وکیندرت ڈھنگ سے گھریلو دھندھوں کے ذریعے اتپادن کرنا چاہیئے جسمیں ویکتی اپنے ادیوگ دھندے خود یا پڑوسیوں کے سہیوگ سے چلانا سیکھتا ہے.

### ( ii ) کھیتی

شانتی وادی کو یہ دیکھنا چاہیئے کہ مزدور کو اسکے اوزار چھین کر غلام نہ بنایا جائے کیونکہ اسکا نتیجہ دیر سویر شوشن اور لڑائی جھگڑے میں ہی نکلیگا. اداہرن کے لیئے زمین جب جوتنے والے کسان کے ہاتھ میں نہیں ہوتی، تب یہی ہوتا ہے. اسلیئے گاندھی جی کے مرنے کے بعد سے شانتی آندولن میں بھاگ لینے والے انکے چیلے زمینداروں سے زمین لیکر کاشتکاروں کو دینے کے کام میں لگے ہوئے ہیں. انکا طریقہ جبراً زمین چھین لینے کا ہنسک طریقہ نہیں ہے؛ وہ زمینداروں کی بدھی

देन मिली है उसमें उन्होंने बताया है कि एक अहिंसक आदमी अहिंसक साधनों के ज़रिये राजनीतिक दमन का विरोध कैसे कर सकता है.

उन्होंने विकेन्द्रित राजनीतिक व्यवस्था की भी हिमायत की थी, जिसमें सत्ता मुट्ठी भर लोगों के हाथ में नहीं रहती. आज हम लोकशाही या लोगोंके राज की बात तो कहते हैं, लेकिन राज्य में सत्ता का केन्द्रीकरन जितना आज होता है, उतना पहले कभी नहीं हुआ था. आज राज्य हमारे खान पान, मकानों, अद्योगों, खेती, व्यापार बानिज्य, यात्रा, पैसे, आने जाने के साधनों —सच पूछा जाय तो हमारे रोज के जीवन पर असर डालने वाली हर चीज़ पर—कन्ट्रोल रखता है इस स्थिति का सब से बुरा पहलू यह है कि जब सत्ता कुछ शक्तिशाली लोगों या शासन करने वाले कमगिनत हाथ में केन्द्रित हो जाती है तब लोगों को शासकों की सत्ता की प्यास पूरी करने के लिए बेज़बान जानवरों की तरह युद्ध में ढकेला जाता है. लोग अपने लिए खुद सोचने के आदी न होने के कारन राज्य के खिलाफ़ खड़े नहीं हो सकते. इसलिए शासक उन्हें आसानी से सेना में भर्ती कर लेते हैं और दूसरे राष्ट्र से लड़ाते हैं.

इसलिये गांधी जी मानते थे कि आज के ऐसे सत्ताधारी राज्य का अन्त करने का एकमात्र इलाज यह है कि सच्ची लोकशाही या लोकराज की स्थापना की जाये, जो अपने कामकाज की खुद व्यवस्था करने वाले गांवों जैसे छोटे समूहों में ही मुमकिन हो सकता है. इन गांव प्रजातंत्रों की बुनियाद पर ही वह राष्ट्र का राजनीतिक जीवन खड़ा करने की आशा रखते थे, जिसमें रक्षा और विदेशी मामलों जैसे विशयों की ही केन्द्रित व्यवस्था होनी चाहिये.

गांधी जी की इस सीख में भी आज के शांतिवादी के लिये विचार का काफ़ी मसाला है. केवल ऐसी राजनीतिक व्यवस्था में ही लोग अपना शासन खुद कर सकते हैं और तभी वह इतने मज़बूत बनेंगे कि अपनी मरज़ी के खिलाफ़ युद्ध में घसीटे जाने का डट कर विरोध कर सकें.

### 3. आर्थिक जीवन में

#### (i) उद्योग-धन्धे

इसमें कोई शक नहीं कि आज दुनिया के राष्ट्रों के बीच जो कशमकश और तनातनी चली आ रही है, उसका काफ़ी बड़ा कारन कच्चे माल की और बाज़ारों की खोज है. जब उत्पादन छोटे पैमाने पर होता है, तो स्थानीय कच्चे माल और बाज़ारों से काम चल जाता है और लड़ाई झगड़े और संघर्ष का कारन नहीं रहता. लेकिन जब उत्पादन बड़े पैमाने पर होता है, जैसा कि उद्योगीकरन में होता है,



دین ملی ہے اسمیں انہوں نے بتایا ہے کہ ایک اہنسک آدمی اہنسک سادھنوں کے ذریعے راجنیتک دمن کا ورودھ کیسے کر سکتا ہے ۔

انہوں نے وکیندرت راجنیتک ویوستھا کی بھی حمایت کی تھی، جس میں ستا مٹھی بھر لوگوں کے ہاتھ میں نہیں رہتی ۔ آج ہم لوک شاہی یا لوگوں کے راج کی بات تو کہتے ہیں، لیکن راج میں ستا کا کیندریکرن جتنا آج ہوتا ہے، اتنا پہلے کبھی نہیں ہوا تھا ۔ آج راجیہ ہمارے کھان پان، مکانوں، ادیوگوں، کھیتی، ویاپار بانجیہ، یاترا، پیسے، آنے جانے کے سادھنوں — سچ پوچھا جائے تو ہمارے روز کے جیون پر اثر ڈالنے والی ہر چیز پر — کنٹرول رکھتا ہے ۔ اس استھتی کا سب سے برا پہلو یہ ہے کہ جب ستا کچھ شکتی شالی لوگوں یا شاسن کرنے والے کمگنت ہاتھ میں کیندرت ہو جاتی ہے تب لوگوں کو شاسکوں کی ستا کی پیاس پوری کرنے کے لیئے بے زبان جانوروں کی طرح یدھ میں ڈھکیلا جاتا ہے ۔ لوگ اپنے لیئے خود سوچنے کے عادی نہ ہونے کے کارن راجیہ کے خلاف کھڑے نہیں ہو سکتے ۔ اس لیئے شاسک انہیں آسانی سے سینا میں بھرتی کر لیتے ہیں اور دوسرے راشٹر سے لڑاتے ہیں ۔

اسلیئے گاندھی جی مانتے تھے کہ آج کے ایسے ستا دھاری راجیہ کا انت کرنے کا ایک ماتر علاج یہ ہے کہ سچی لوک شاہی یا لوک راج کی استھاپنا کی جائے، جو اپنے کام کاج کی خود ویوستھا کرنے والے گاؤں جیسے چھوٹے سموہوں میں ہی ممکن ہوسکتا ہے ۔ ان گاؤں پرجاتنتروں کی بنیاد پر ہی وہ راشٹر کا راجنیتک جیون کھڑا کرنے کی آشا رکھتے تھے، جس میں رکشا اور ودیشی معاملوں جیسے وشیوں کی ہی کیندرت ویوستھا ہونی چاہیئے ۔

گاندھی جی کی اس سیکھ میں بھی آج کے شانتی وادی کے لیئے وچار کا کافی مسالہ ہے ۔ کیول ایسی راجنیتک ویوستھا میں ہی لوگ اپنا شاسن خود کرسکتے ہیں اور تبھی وہ اتنے مضبوط بنیں گے کہ اپنی مرضی کے خلاف یدھ میں گھسیٹے جانے کا ڈٹ کر ورودھ کرسکیں ۔

### 3—آرتھک جیون میں

#### (i) ادیوگ دھندے

اسمیں کوئی شک نہیں کہ آج دنیا کے راشٹروں کے بیچ جو کشمکش اور تناتنی چلی آ رہی ہے، اسکا کافی بڑا کارن کچے مال کی اور بازاروں کی کھوج ہے ۔ جب اتپادن چھوٹے پیمانے پر ہوتا ہے، تو استھانیہ کچے مال اور بازاروں سے کام چل جاتا ہے اور لڑائی جھگڑے اور سنگھرش کا کارن نہیں رہتا ۔ لیکن جب اتپادن بڑے پیمانے پر ہوتا ہے، جیسا کہ ادیوگیکرن میں ہوتا ہے،

की स्थापना और प्रचार किया गया. भारत में प्रतिदिन के जीवन में अहिंसा का प्रयोग करने और दुख का अनुभव कर सकने वाले प्रानियों को कष्ट न पहुंचाने या उनकी हत्या न करने की सीख देने की दिशा में यह पहला अमली क़दम था. गांधी जी बेशक शाकाहारी थे और भारत के हम लोगों को यह देखकर थोड़ा ताज्जुब होता है कि यहां इकट्ठे होने वाले हम में से बहुत से लोगों ने, जो शांतिवाद में विश्वास रखते हैं, अभी तक भोजन के बारे में अहिंसा का पहला अमली प्रयोग भी शुरू नहीं किया है. हमें लगता है कि जब तक हम रोजाना ज़िन्दगी में—भोजन में भी—अहिंसा की शुरूआत नहीं करते, तब तक पब्लिक जीवन में उसे दाखिल करना बहुत कठिन है.

(ii) जो अहिंसा का पालन करे उसमें भारतीय विचार के अनुसार ख़ुद पर भरोसा करने का या आत्म त्याग का भी बड़ा गुन होना ही चाहिये. भोगी मनुश्य वह है जो अपने ही सुख और आनन्द की चिन्ता करता है; ऐसा मनुश्य लाज़िमी तौर पर दूसरों के संघर्ष में आता है. लेकिन जो मनुश्य अपने आप पर संयम रख सकता है, वह दूसरों के साथ होने वाले झगड़े से अपने को बचा सकता है, उसकी ज़रूरतें थोड़ी और सादी होती हैं और जब उसे पता चलता है कि उन ज़रूरतों की पूर्ति में दूसरों से उसका झगड़ा होता है, तब वह उनके लिये कोशिश करना छोड़ सकता है. इसलिए ऐसी हर चीज़ से, जो मनुश्य को अपनी इच्छा पर चलने वाला और भोग विलास का दास बनाती है—जैसे शराब या बनावटी साधनों के ज़रिये बेरोक टोक भोग—इन से बचना चाहिये.

भारत में सदियों से जो सिखाया गया है और गांधी जी ने जिसे बार बार दोहराया है आत्म संयम का यह पाठ अभी हममें से बहुतेरे लोगों को सीखना बाक़ी है 'जो तरह तरह के माल असबाब, धन दौलत वग़ैरा परिग्रह से अपने को घिरा रखना चाहते हैं और ज़रूरतें बढ़ाने में विश्वास रखते हैं. परिग्रह का यह कभी न शान्त होने वाला लोभ और स्वेच्छाचार संघर्ष और हिंसा को जन्म देने के सिवा और कुछ कर ही नहीं सकते. इसलिए शांति और अहिंसा के प्रेमी के लिए गांधी जी ने अपने बुज़ुर्गों की परम्परा के अनुसार ऊंचे से ऊंचे फ़र्ज़ के रूप में संक्षेप में यह बता दिया है कि जीवन के हर मैदान में—खान पान, विशय भोग वग़ैरा हर बात में—ब्रह्मचर्य या कठोर आत्म संयम का पालन किया जाये.

## 2. राजकाजी जीवन में

लड़ाई झगड़े और युद्ध का एक कारन है लोगों के एक दल के ज़रिये दूसरे दल को दबाना. जैसा कि आप सब जानते हैं, इस सम्बन्ध में हमें गांधी जी की जो बड़ी



کی استھاپنا اور پرچار کیا گیا. بھارت میں پرتی دن کے جیون میں اہنسا کا پریوگ کرنے اور دکھ کا انوبھو کر سکنے والے پرانیوں کو کشٹ نہ پہونچانے یا اُن کی ہتیا نہ کرنے کی سیکھ دینے کی دشا میں یہ پہلا عملی قدم تھا. گاندھی جی بے شک شاکاہاری تھے اور بھارت کے ہم لوگوں کو یہ دیکھکر تھوڑا تعجب ہوتا ہے کہ یہاں اکٹھے ہونے والے ہم میں سے بہت سے لوگوں نے، جو شانتی واد میں وشواس رکھتے ہیں، ابھی تک بھوجن کے بارے میں اہنسا کا پہلا عملی پریوگ بھی شروع نہیں کیا ہے. ہمیں لگتا ہے کہ جب تک ہم روزانہ زندگی میں—بھوجن میں بھی—اہنسا کی شروعات نہیں کرتے، تب تک پبلک جیون میں اسے داخل کرنا بہت کٹھن ہے.

(ii) جو اہنسا کا پالن کرے اسمیں بھارتیہ وچار کے انوسار خود پر بھروسہ کرنے کا یا آتم تیاگ کا بھی بڑا گن ہونا ہی چاہیئے. بھوگی منشیہ وہ ہے جو اپنے ہی سکھ اور آنند کی چنتا کرتا ہے؛ ایسا منشیہ لازمی طور پر دوسروں کے سنگھرش میں آتا ہے. لیکن جو منشیہ اپنے آپ پر سنیم رکھ سکتا ہے، وہ دوسروں کے ساتھ ہونے والے جھگڑے سے اپنے کو بچا سکتا ہے، اسکی ضرورتیں تھوڑی اور سادی ہوتی ہیں اور جب اسے پتہ چلتا ہے کہ اُن ضرورتوں کی پورتی میں دوسروں سے اسکا جھگڑا ہوتا ہے، تب وہ اُن کے لیئے کوشش کرنا چھوڑ سکتا ہے. اس لیئے ایسی ہر چیز سے، جو منشیہ کو اپنی اِچھا پر چلنے والا اور بھوگ ولاس کا داس بناتی ہے—جیسے شراب یا بناوٹی سادھنوں کے ذریعے بے روک ٹوک بھوگ—اِن سے بچنا چاہیئے.

بھارت میں صدیوں سے جو سکھایا گیا ہے اور گاندھی جی نے جسے بار بار دوہرایا ہے آتم سنیم کا یہ پاٹھ ابھی ہم میں سے بہتیرے لوگوں کو سیکھنا باقی ہے، جو طرح طرح کے مال اسباب، دھن دولت وغیرہ پریگرہ سے اپنے کو گھرا رکھنا چاہتے ہیں اور ضرورتیں بڑھانے میں وشواس رکھتے ہیں. پریگرہ کا یہ کبھی نہ شانت ہونے والا لوبھ اور سویچھاچار سنگھرش اور ہنسا کو جنم دینے کے سوا اور کچھ کر ہی نہیں سکتے. اس لیئے شانتی اور اہنسا کے پریمی کے لیئے گاندھی جی نے اپنے بزرگوں کی پرمپرا کے انوسار اونچے سے اونچے فرض کے روپ میں سنکشیپ میں یہ بتا دیا ہے کہ جیون کے ہر میدان میں—کھان پان، وشے بھوگ وغیرہ ہر بات میں—برہمچریہ یا کٹھور آتم سنیم کا پالن کیا جائے.

## 2—راجکاجی جیون میں

لڑائی جھگڑے اور یدھ کا ایک کارن ہے لوگوں کے ایک دل کے ذریعے دوسرے دل کو دبانا. جیسا کہ آپ سب جانتے ہیں، اس سمبندھ میں ہمیں گاندھی جی کی جو بڑی

# भारत में शान्ति के लिये आन्दोलन

( डाक्टर भारतन कुमारप्पा )

[ इस साल अप्रैल महीने में दुनिया भर के पैसिफ़िस्ट जापान में जमा हुए थे. डाक्टर कुमारप्पा भारत के नुमाइन्दे के रूप में वहां गए थे. उनके भाशन को हम 'हरिजन' से नक़ल करके पाठकों के सामने पेश कर रहे हैं—एडीटर. ]

❀ ❀ ❀

हम में से ज़्यादातर लोगों को ऐसा लगता है कि शान्ति आन्दोलनों का हाल में ही जन्म हुआ है. लेकिन भारत में शान्ति और अहिंसा का आन्दोलन लगभग दो हज़ार बरस पहले शुरू हुआ था. हमारे देश के अच्छे से अच्छे ऋशि मुनियों, पैग़म्बरों और साधु संतों की पीढ़ियों ने उसके पीछे अपना गम्भीर विचार और शक्ति लगाई है. इसलिये दस मिनिट के समय में भारत के इस आन्दोलन के बारे में कुछ कहने की कोशिश करना बड़ा कठिन है. गांधी जी ने शान्ति के लिये भारत की इस खोज को और आगे बढ़ाया और उसका विकास किया. यहां मुझे शांति के लिये गांधी जी ने जो काम किया उसके कुछ बुनियादी उसूलों की चर्चा तक ही ज़्यादातर सीमित रहना पड़ेगा.

गांधी जी के नेतृत्व में भारत में जो शान्ति आन्दोलन हुआ, वह सिर्फ़ युद्ध का विरोध करने और मार काट के भयंकर हथियारों का निन्दा करने से कहीं आगे बढ़ा हुआ था. लड़ाई से नफ़रत शान्ति की खोज में केवल पहला क़दम है. इस परिशद् में मैंने जो भाशन सुने हैं, उनसे मुझे यह लगता रहा है कि गांधी जी ने शांति के मक़सद को आगे बढ़ाने में जो भारी मदद पहुंचाई है, उसे हम में से बहुत से अभी तक भी शायद नहीं समझ पाये हैं.

गांधी जी जानते थे कि केवल युद्ध की निन्दा करने से ही युद्ध बन्द नहीं होंगे. हमें युद्ध के कारनों का जड़ से अंत करना चाहिये. यह कारन क्या हैं ?

## 1. व्यक्ति के जीवन में

( i ) मानव भावना की कठोरता:—भगवान बुद्ध के समय से यानी 2500 बरस से भी ज़्यादा अरसे से भारत में हमें सिखाया गया है कि किसी को कश्ट न पहुंचाया जाये. लेकिन लोगों को रोज़ रोज़ के जीवन में अहिंसा का व्यवहार करने की आदत डाले बिना ऐसी शिक्षा अपने आप में बेकार साबित होती. इसलिये भारत में शाकाहारवाद

# بھارت میں شانتی کے لیئے آندولن

( ڈاکٹر بھارتن کمارپا )

[ اس سال اپریل مہینے میں دنیا بھر کے پیسیفسٹ جاپان میں جمع ہوئے تھے . ڈاکٹر کمارپا بھارت کے نمائندہ کے روپ میں وہاں گئے تھے . ان کے بھاشن کو ہم 'ہریجن' سے نقل کر کے پاٹھکوں کے سامنے پیش کر رہے ہیں—ایڈیٹر . ]

❀ ❀ ❀

ہم میں سے زیادہ تر لوگوں کو ایسا لگتا ہے کہ شانتی آندولنوں کا حال میں ہی جنم ہوا ہے . لیکن بھارت میں شانتی اور اہنسا کا آندولن لگ بھگ دو ہزار برس پہلے شروع ہوا تھا . ہمارے دیش کے اچھے سے اچھے رشی منیوں' پیغمبروں اور سادھو سنتوں کی پیڑھیوں نے اس کے پیچھے اپنا گمبھیر وچار اور شکتی لگائی ہے . اس لیئے دس منٹ کے سمے میں بھارت کے اس آندولن کے بارے میں کچھ کہنے کی کوشش کرنا بڑا کٹھن ہے . گاندھی جی نے شانتی کے لیئے بھارت کی اس کھوج کو اور آگے بڑھایا اور اسکا وکاس کیا . یہاں مجھے شانتی کے لیئے گاندھی جی نے جو کام کیا اسکے کچھ بنیادی اصولوں کی چرچا تک ہی زیادہ تر سیمت رہنا پڑیگا .

گاندھی جی کے نیترتو میں بھارت میں جو شانتی آندولن ہوا' وہ صرف یدھ کا ورودھ کرنے اور مارکاٹ کے بھینکر ہتھیاروں کی نندا کرنے سے کہیں آگے بڑھا ہوا تھا . لڑائی سے نفرت شانتی کی کھوج میں کیول پہلا قدم ہے . اس پریشد میں میں نے جو بھاشن سنے ہیں' ان سے مجھے یہ لگتا رہا ہے کہ گاندھی جی نے شانتی کے مقصد کو آگے بڑھانے میں جو بھاری مدد پہونچائی ہے' اسے ہم میں سے بہت سے ابھی تک بھی شاید نہیں سمجھ پائے ہیں .

گاندھی جی جانتے تھے کہ کیول یدھ کی نندا کرنے سے ہی یدھ بند نہیں ہونگے . ہمیں یدھ کے کارنوں کا جڑ سے انت کرنا چاہیئے . یہ کارن کیا ہیں ؟

## 1—ویکتی کے جیون میں

( i ) مانو بھاونا کی کٹھورتا :—بھگوان بدھ کے سمے سے یعنی 2500 برس سے بھی زیادہ عرصہ سے بھارت میں ہمیں سکھایا گیا ہے کہ کسی کو کشٹ نہ پہونچایا جائے . لیکن لوگوں کو روز روز کے جیون میں اہنسا کا ویوہار کرنے کی عادت ڈالے بنا ایسی شکشا اپنے آپ میں بیکار ثابت ہوتی . اس لیئے بھارت میں شاکاہار واد

रैन सोहानी नील गगन पर तारों की दीवाली
कलियां चिटकें ख़ुशबू फैले भूले डाली डाली
सोना उगले भूला भूले खेतों की हरयाली
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

❀

जंग हुई तो मच जाएगी घर घर हाहाकार
टूट टूट कर रह जाएंगे मन बीना के तार
शोर में खो कर रह जाएगी पायल की भंकार
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

❀

नगरी नगरी लूट मचेगी जब होगी बमबारी
गली गली आज़ाद फिरेगी, मौत, भूक, बेकारी
जल जाएंगे चाँद सितारे, खेत, चमन, फुलवारी
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

❀

हो जाएंगे आशाओं के शीशमहल वीरान
संगीनों की नोक पै तौले जाएंगे इन्सान
टूट गिरेंगे मन्दिर मस्जिद चुप होगा भगवान
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

❀

बोल, कि हम संसार में अब जंग न होने देंगे
सोग में सुन्दर लालों के ममता को न रोने देंगे
धरती के सीने में जंग के बीज न बोने देंगे
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

---



رین سہانی نیل گگن پر تاروں کی دیوالی
کلیاں چٹکیں خوشبو پھیلے جھولے ڈالی ڈالی
سونا اگلے جھولا جھولے کھیتوں کی ہریالی
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان، سمے پہچان، ترانے کھول دے

❀

جنگ ہوئی تو مچ جائیگی گھر گھر ہاہاکار
ٹوٹ ٹوٹ کر رہ جائیں گے من بینا کے تار
شور میں کھو کر رہ جائے گی پایل کی جھنکار
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان، سمے پہچان، ترانے کھول دے

❀

نگری نگری لوٹ مچے گی جب ہوگی بمباری
گلی گلی آزاد پھرے گی موت، بھوک، بیکاری
جل جائینگے چاند ستارے، کھیت، چمن، پھلواری
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان، سمے پہچان، ترانے کھول دے

❀

ہو جائیں گے آشاؤں کے شیش محل ویران
سنگینوں کی نوک پر تولے جائیں گے انسان
ٹوٹ گریں گے مندر مسجد چپ ہوگا بھگوان
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان، سمے پہچان، ترانے کھول دے

❀

بول، کہ ہم سنسار میں اب جنگ نہ ہونے دینگے
سوگ میں سندر لالوں کے ممتا کو نہ رونے دینگے
دھرتی کے سینے میں جنگ کے بیج نہ بونے دینگے
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان، سمے پہچان، ترانے کھول دے

---

# नया हिन्द

# نیا ہند

जिल्द 17 जुलाई सन '54 नम्बर 1

جلد 17 جولائی سن 54' نمبر 1

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔


## परचम खोल दे

( ज़ुबैर रिज़वी )

परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे
जंग न होने पाए, फ़िज़ा में नीला परचम खोल दे
पूरब की जानिब से बढ़ा है ख़ून का एक व्योपारी
जग में चारों ओर है उसके नाम से एक बेज़ारी
जाग ज़रा हुश्यार वगरना घाव पड़ेंगे कारी
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

*

मेरे देस, तेरी धरती पर पैर न रखने पाए
बाग़ों, खेतों, खलयानों में आग न लगने पाए
शोलों की आग़ोश में तेरा नाज न जलने पाए
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

*

मेरे देस, यों ही लहराएं रंग बिरंगे आँचल
गागर भर भर लाएं यूं ही यह काले काले बादल
बिन्दिया चमके नैन कटोरों में मुसकाए काजल
परचम खोल दे
ओ मूर्ख इन्सान, समय पहचान, तराने घोल दे

*

## پرچم کھول دے

( زبیر رضوی )

پرچم کھول دے
او مورکھ انسان' سمے پہچان' ترانے کھول دے
جنگ نہ ہونے پائے' فضا میں نیلا پرچم کھول دے
پورب کی جانب سے بڑھا ہے خون کا اک بیوپاری
جگ میں چاروں اور ہے اسکے نام سے اک بیزاری
جاگ ذرا ہوشیار وگرنہ گھاؤ پڑیں گے کاری
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان' سمے پہچان' ترانے کھول دے

*

میرے دیس' تیری دھرتی پر پیر نہ رکھنے پائے
باغوں' کھیتوں' کھلیانوں میں آگ نہ لگنے پائے
شعلوں کی آغوش میں تیرا ناج نہ جلنے پائے
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان' سمے پہچان' ترانے کھول دے

*

میرے دیس' یونہی لہرائیں رنگ برنگے آنچل
گاگر بھر بھر لائیں یونہی یہ کالے کالے بادل
بندیا چمکے نین کٹوروں میں مسکائے کاجل
پرچم کھول دے
او مورکھ انسان' سمے پہچان' ترانے کھول دے

*

## सुधार

जुलाई के अंक में सफ़हे एक से शुरू होते हैं. लेकिन ग़लती से इस सफ़हे का नम्बर नहीं बदला जा सका. पाठकों से निवेदन है कि 417 सफ़हे को सफ़ह नम्बर एक समझा जाए. चार फ़रमे के बाद ग़लती सुधार ली गई है.

इस ग़लती के लिये हम पाठकों से क्षमा चाहते हैं.

—मैनेजर

## سدھار

جولائی کے انک میں صفحے ایک سے شروع ہوتے ہیں . لیکن غلطی سے اس بار صفحہ کا نمبر نہیں بدلا جاسکا . پاٹھکوں سے نویدن ہے کہ 417 صفحہ کو صفحہ نمبر ایک سمجھا جائے . چار فرمے کے بعد غلطی سدھار لی گئی ہے .

اس غلطی کے لئے ہم پاٹھکوں سے چھما چاہتے ہیں .

—مینیجر

"नया हिन्द"

"نیا ہند"

# हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

# माहवारी परचा

# ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

# ماہواری پرچا

जुलाई 1954 جولائی

क्या किस से — सफा صفحہ — کیا کس سے


1—परचम खोल दे (कविता)—ज़ुबैर रिज़वी ... 1

2—भारत में शान्ति के लिये आन्दोलन—डाक्टर भारतन कुमारप्पा ... 3

3—राजा राम मोहन राय से गांधी जी—लेखक मगन भाई देसाई; अनुवादक—कानुभाई नानालाल पटेल ... 8

4—एक रात (कहानी)—मुजीब रिज़वी ... 13

5—लेखक और उसकी कला—लेखक एलिया एहरन बर्ग; अनुवादक—मुजीब रिज़वी ... 26

6—पीकिंग में मेरी पहली ईद—लेखक मुख्तार अहमद; अनुवादक—मुजीब रिज़वी ... 37

7—अन्तर राष्ट्रीय बदअमनी—उसके कारन और इलाज—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा ... 42

8—कुछ किताबें ... 49

9—हमारी राय— ... 53

उनके मन की मौज—सुरेशराम भाई; नीलोखेड़ी की फुलझड़ी—सुरेशराम भाई; सी प्रदेशों का भविश्य—सुरेशराम भाई.

1—پرچم کھول دے (کویتا)—زبیر رضوی

2—بھارت میں شانتی کے لیئے آندولن—ڈاکٹر بھارتن کمارپا

3—راجا رام موہن رائے سے گاندھی جی—لیکھک مگن بھائی دیسائی؛ انوادک—کانو بھائی نانا لال پٹیل

4—ایک رات (کہانی)—مجیب رضوی

5—لیکھک اور اس کی کلا—لیکھک ایلیا اہرن برگ؛ انوادک—مجیب رضوی

6—پیکنگ میں میری پہلی عید—لیکھک مختار احمد؛ انوادک—مجیب رضوی

7—انتر راشٹریہ بدامنی—اس کے کارن اور علاج—ڈاکٹر جے. سی. کمارپا

8—کچھ کتابیں

9—ہماری رائے—

ان کے من کی موج—سریش رام بھائی؛ نیلوکھیڑی کی پھلجھڑی—سریش رام بھائی؛ سی پردیشوں کا بھوشیہ—سریش رام بھائی۔



कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

# नया हिन्द
# نیا ہند


एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, सैयद महमूद, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تاراچند، بھگوان دین، سید محمود، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی


❀ ❀ ❀ ❀ ❀

इस नम्बर के खास लेख

اس نمبر کے خاص لیکھ


- परचम खोल दे (कविता)—जुबैर रिज़वी
- एक रात (कहानी)—मुजीब रिज़वी
- पीकिंग में मेरी पहली ईद—लेखक मुख़्तार अहमद; अनुवादक—मुजीब रिज़वी
- अन्तर राष्ट्रीय बदअमनी—उसके कारन और इलाज—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा

- پرچم کھول دے (کویتا)—زبیر رضوی
- ایک رات (کہانی)—مجیب رضوی
- پیکنگ میں میری پہلی عید—لیکھک مختار احمد؛ انوادک—مجیب رضوی
- انتر راشٹریہ بدامنی—اس کے کارن اور علاج—ڈاکٹر جے. سی. کمارپا

हमारी राय

- उनके मन की मौज—सुरेशराम भाई
- नीलोखेड़ी की फुलझड़ी—सुरेशराम भाई

ہماری رائے

- ان کے من کی موج—سریش رام بھائی
- نیلوکھیڑی کی پھل جھڑی—سریش رام بھائی



हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद

ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

जुलाई 1954 جولائی